PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references

BY
PANDIT HARGOVIND DAS T SHETH

MOTILAL BANARSIDASS
Delhi Varanasi Patna Madras

पाइअ-सद्द-महण्णवो

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अनल्प अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोश

कर्ता

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

मुख्य कार्यालय बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७

शाखाएँ चौक, वाराणसी २२१ ००१
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ६०० ००४

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् ग्रन्थाङ्क ७
द्वितीय संस्करण वाराणसी, १९६३
पुनर्मुद्रण दिल्ली, १९८६

ISBN 81-208-0239-x

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए-४५,
फेज़-१, नारायणा, नई दिल्ली २८ द्वारा मुद्रित।

PUBLISHER'S NOTE

The present *Pāia-sadd-mahannavo* or 'The Great Ocean of Prākrit Words' is a comprehensive Prākrit-Hindī Dictionary compiled by Pt Hargovind Das Trikam Chand Sheth and was first published slightly less than six decades ago in 1928 It is a pioneer work, being the result of several years' single-minded devotion and indefatigable labour on the part of the compiler, to whom the students and scholars of the Prākrit language will ever remain grateful

The work is of immense value since in addition to serving the needs of the students of Prākrit it has also proved very much helpful to researchers in understanding Old-Hindi words of obscure origin as well as all the other languages of the Middle Indo-Aryan group including Old-Rajasthani, Old-Gujarati, Old Marathi, Old-Bengali, Old-Maithili etc

After its first appearance in 1928 the work remained out of print for a number of years when its rare copies were sold at fabulous prices–a fact further attesting to its importance, utility and popularity To fulfil a pressing need a long awaited second edition was brought out by the Prākrit Text Society in 1963 and in view of a persistent demand this reprint is being issued after a long gap for the benefit of the interested scholars

The Publishers hope that the work will inspire talented scholars for further intensive research in the field culminating, so we wish, in a more comprehensive dictionary of the language including also the cognate Apabhramśa language and literature

संकेत—सूची

अ	=	अव्यय ।
अक	=	अकर्मक धातु ।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा ।
(अशो)	=	अशोक शिलालेख ।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक धातु ।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य ।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त ।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त ।
क्रि	=	क्रियापद ।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण ।
गु०	=	गुजराती ।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा ।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग ।
[दे]	=	देश्य-शब्द ।
न	=	नपुंसकलिङ्ग ।
पुं	=	पुंलिङ्ग ।
पुंन	=	पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग ।
पुंस्त्री	=	पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग ।

(पै)	=	पैशाची भाषा ।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त ।
ब	=	बहुवचन ।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त ।
भवि	=	भविष्यत्काल ।
भूका	=	भूतकाल ।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त ।
(मा)	=	मागधी भाषा ।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त ।
वि	=	विशेषण ।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा ।
स	=	सर्वनाम ।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त ।
सक	=	सकर्मक धातु ।
स्त्री	=	स्त्रीलिङ्ग ।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिङ्ग ।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त ।

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफ़रेन्सेज़] के संकेतों का विवरण

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
अंग	=	अंगविज्जा	प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी—५, १९५७	
अग	=	अगचूलिआ	हस्तलिखित।	
अंत	=	अंतगडदसाओ	⁂ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	पत्र
अच्चु	=	अच्चुअसयअं	वाणीविलास प्रेस, मद्रास १८७२	गाथा
अजि	=	अजिअसंतिथय	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	,,
अज्झ	=	अध्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १९३३	,,
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर	,,
अणु	=	अणुओगदारसुत्त	१ राय धनपतिसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६	
			२ आगमोदय समिति, १९२४ बम्बई,	पत्र
अनु	=	अणुत्तरोववाइअदसा	⁂ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२०	पत्र
अभि	=	अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६	पृष्ठ
अवि	=	अविमारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरीज़	,,
आउ	=	आउरपच्चक्खाणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६	गाथा
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	,,
आक	=	१ आवश्यककथा	हस्तलिखित	
		२ आवश्यक-एर्त्सेलुंगन्	डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८९७	पृष्ठ
आख्या	=	आख्यानकमणिकोश	प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी—५	
आचा	=	आचारांगसूत्र	⁂ १ डॉ. डबल्यु शुब्रिंग् संपादित, लाइपज़िग, १९१०	
			+ २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
			३ प्रो. रवजीभाई देवराज-संपादित, राजकोट, १९०६	,,
आचानि	=	आचारांग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६	गाथा
आचू	=	आवश्यकचूर्णि	हस्तलिखित	अध्ययन
आत्म	=	आत्मसंबोधकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
आत्महि	=	आत्महितोपदेश-कुलक	,,	,,
आत्मानु	=	आत्मानुशास्ति-कुलक	,,	,,
आनि	=	आवश्यकनिर्युक्ति	१ यशोविजय-जैन-ग्रंथमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।	

⁂ ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची छपी हुई है, इससे ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द-सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते हैं। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत की हुई है, वहाँ पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

+ इन संस्करणों में श्रुतस्कन्ध, अध्ययन और उद्देश के अङ्क समान होने पर भी सूत्रों के अङ्क भिन्न भिन्न हैं। इससे इस कोष में जिस संस्करण से जो शब्द लिया गया है उसी का सूत्राङ्क वहाँ पर दिया गया है। अंक की गिनती उसी उद्देश्य या अध्ययन के प्रथम सूत्र से आरम्भ की गई है।

† स्वर्गीय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी, बी. ए., एल् एल्., बी. से प्राप्त।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
आप	=	आराधनाप्रकरण	शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	गाथा
आरा	=	आराधनासार	मानिकचंद-दिगंबर-जैन-ग्रंथमाला, संवत् १९७३	,,
आव	=	आवश्यकसूत्र	हस्तलिखित	
आवटि	=	आवश्यक टिप्पण	देवचन्द लालभाई	
आवदी	=	आवश्यक दीपिका	विजयदानसूरि ग्रंथमाला	
आवपगा	=	आवश्यकसूत्रे पत्रे गाथा	(हरिभद्र टीका)	
आवम	=	आवश्यकसूत्र मलयगिरि टीका	हस्तलिखित	
इंदि	=	इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	गाथा
इक	=	दि कोस्मोग्राफी देर् इंदेर्	* डॉ. डबल्यु. किर्फेल-कृत, लाइपजिग, १९२०	
उत्त	=	उत्तराध्ययनसूत्र	१ राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६	अध्ययन, गाथा
			२ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३ ...	,,
			+ ३ हस्तलिखित	,,
उत्त	=	उत्तराध्ययन सूत्र	देवचन्द लालभाई	
उत्त का	=	,,	डॉ. जे कारपेंटिअर-संपादित, १९२१ ..	,,
उत्तनि	=	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	हस्तलिखित	,,
उत्तर	=	उत्तररामचरित	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५ ..	पृष्ठ
उप	=	उपदेशपद	हस्तलिखित	गाथा
उप टी	=	उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित	मूल-गाथा
उपप	=	उपदेशपचाशिका	† ,, . ..	गाथा
उप पृ	=	उपदेशपद	जैन विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा	पृष्ठ
उर	=	उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४	अंश, तरंग
उव	=	उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी टेसिटोरि-संपादित, १९१३	
उवकु	=	उवदेशकुलक	† हस्तलिखित ...	गाथा
उवर	=	उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६७ ...	,,
उवा	=	उवासगदसाओ	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८९० ...	
ऊरु	—	ऊरुभंग	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	पृष्ठ
ओघ	=	ओघनिर्युक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९ ...	गाथा
ओघ भा	=	ओघनिर्युक्ति-भाष्य	,, ...	,,
औप	=	औपपातिकसूत्र	* डॉ इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८८३ ...	
कप्प	=	कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८७९	
कप्पू	=	कर्पूरमञ्जरी	* हार्वर्ड् ओरिएन्टल् सिरीज, १९०१ ...	
कम्म १	=	कर्मग्रंथ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा, १९१८	गाथा
कम्म २	=	,, दूसरा	* ,, ,, ,,	,,
कम्म ३	=	,, तीसरा	* ,, ,, १९१९	,,
कम्म ४	=	,, चौथा	* ,, ,, १९२३	,,

+ सुखबोधा नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्त-लिखित प्रति आचार्य श्रीविजय-मेघसूरिजी के भंडार से श्रद्धेय श्रीयुत् के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पत्र १८६ हैं।

† श्रद्धेय श्रीयुत् के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
[illegible] ५	=	कर्मग्रन्थ पांचवा	१ भीमसिंह माणेक बम्बई, संवत् १९६८		गाथा
			२ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६८		,,
[illegible] ६	=	,, छठा	,,		,,
[illegible]	=	[illegible]	जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७		पत्र
[illegible]	=	[illegible]	आत्मानन्द जैन-सभा, भावनगर, १९[illegible]		पृष्ठ
[illegible]	=	[illegible]	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज		,,
[illegible]	=	[illegible] (भाण)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरीज, नं. ८, १९१८		,,
[illegible]	=	[illegible]	† हस्त-लिखित		गाथा
[illegible]	=	[illegible]-भाष्य	आत्मानन्द सभा		
,, गा०	=	,, गाथा	,,		
[illegible]	=	[illegible]	● डॉ [illegible] संपादित, लाइपजिग, १९०५		
[illegible]	=	[illegible]	अमुद्रित		
[illegible]	=	[illegible]	वामनाचार्यकृत टीका युक्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई		पृष्ठ
[illegible]	=	[illegible]	● डॉ एच् जेकोबी-संपादित, जेड्-डी-एम्-जी, खंड ३४, १८८०		
[illegible]	=	[illegible] (व्यायोग)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरीज, नं ८, १९१८		पृष्ठ
[illegible]	=	[illegible]प्रतिबोध	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, १९२०		,,
[illegible]	=	[illegible]	● बंबई-संस्कृत सिरीज, १९००		,,
[illegible]	=	[illegible]	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९		पृष्ठ
[illegible]	=	[illegible]	जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा, १९१४		,,
[illegible]	=	[illegible]	† हस्तलिखित		गाथा
[illegible]	=	[illegible]	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८		,,
[illegible]	=	[illegible]	● बंबई-संस्कृत-सिरीज, १८८७		
[illegible]	=	[illegible]	१ हस्तलिखित		अधिकार, गाथा
			२ [illegible] कोठारी, अहमदाबाद, संवत् १९८०		,,
			३ सेठ [illegible] अहमदाबाद, १९२४		,,
[illegible]	=	[illegible]	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८ (?)		गाथा
[illegible]	=	[illegible]	राय धनपतसिंह बहादुर, कलकत्ता, १८८[illegible]		,,
[illegible]	=	[illegible]	+ १ डॉ [illegible] संपादित, लाइपजिग, १८८१ (?)		,,
			२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११		,,
[illegible]	=	[illegible]	स्व संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८		गाथा
[illegible]	=	[illegible]	[illegible], बम्बई, १९१३ (?)		,,
[illegible]	=	[illegible]	भीमसिंह माणेक, बम्बई संवत् १९६[illegible]		गाथा

† [illegible] द्वारा प्राप्त।

[illegible] 'गाथासप्तशती'। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु [illegible] करीब [illegible] गाथाएँ [illegible] और [illegible] १००० । [illegible] है, परन्तु [illegible] का प्रामाणीपन है। ७०० के बाद [illegible] है वह [illegible] के ही [illegible] है।

सकेत		ग्रंथ का नाम	सस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
गुरु	=	गुरुप्रदक्षिणाकुलक	अम्बालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९६३	.	गाथा
गोय	=	गौतमकुलक	भीमसिंह माणेक, बम्बई, सवत् १९६५	...	,,
चउ	=	चउसरणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा भावनगर, सवत् १९६६	..	,,
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, सवत् १९६२	..	,,
चउ	=	चउपन्नमहापुरिसचरियं	प्राकृत ग्रथ-परिषद्, वाराणसी—५, १९६१		,,
चड	=	प्राकृतलक्षण	* एसियाटिक सोसायटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०	...	
चद	=	चदपन्नत्ति	हस्तलिखित ..	...	पाहुड
चारु	=	चारुदत्त	त्रिवेन्द्र-सस्कृत-सिरीज		पृष्ठ
चेइय	=	चेइयवदणमहाभास	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, सवत् १९६२	..	गाथा
चैत्य	=	चैत्यवन्दन भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, सवत् १९६२	...	,,
ज	=	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१ देवचद लालभाई पु० फड, बम्बई, १९१०	.	वक्षस्कार
			२ हस्तलिखित	...	,,
जय	=	जयतिहुअण स्तोत्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम, प्रथमावृत्ति	..	गाथा
जिन	=	जिनदत्ताख्यान	सिंघी जैन सिरीज		
जी	=	जीवविचार	आत्मानन्द जैन-पुस्तक-प्रचारक-मडल, आगरा, संवत् १९७८		,
जीत	=	जीतकल्प	हस्तलिखित ...	.	
जीव	=	जीवाजीवाभिगमसूत्र	देवचद लालभाई पुस्तकोद्धार फड, बम्बई, १९१९	...	प्रतिपत्ति
जीवस	=	जीवसमासप्रकरण	† हस्तलिखित	...	गाथा
जीवा	=	जीवानुशासनकुलक	अम्बालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	,,
जो	=	ज्योतिष्करण्डक	हस्तलिखित ...	...	पाहुड
टि	=	+ टिप्पण (पाठान्तर)	.. ...	..	
टी	=	‡ टीका	... ...	...	
ठा	=	ठाणगसुत्त (स्थनागसूत्र)	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१८–१९२०	...	ठाण०
णदि	=	णदिसूत्र	१ हस्तलिखित	...	
			२ आगमोदय समिति, बम्बई, १९२४	...	पत्र
णमि	=	णमिऊण स्मरण	स्व-सपादित, कलकत्ता, सवत् १९७८	...	गाथा
णाया	=	णायाधम्मकहासुत्त	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	..	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
तदु	=	तंदुलवेयालियपयन्नो	१ हस्तलिखित	...	
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फड, बम्बई, १९६२	...	पत्र
ति	=	तिजयपहुत्त	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
तित्थ	=	तित्थुग्गालियपयन्नो	हस्तलिखित ...	...	
ती	=	तीर्थंकल्प	हस्तलिखित	...	कल्प
त्रि	=	त्रिपुरदाह (डिम)	गायकवाड ओरिएण्टल् सिरीज, न ८ १९१८	..	पृष्ठ

† श्रद्धेय श्रीयुत् के० प्रे० मोदी द्वारा प्राप्त ।

+ पाठान्तर वाले सस्करणो के जो पाठान्तर हमे उपादेय मालूम पडे हे उन्हे भी इस कोष मे स्थान दिया है और प्रमाण के पास 'टि' शब्द जोड दिया है जिससे उस शब्द को उसी स्थान के टिप्पन का समझना चाहिए ।

‡ जहां पर प्रमाण मे ग्रथ-सकेत और स्थान-निर्देश के अनन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहां उस ग्रथ के उसी स्थान की टीका के प्राकृताश से मतलब है ।

संकेत		ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
द	=	दंडकप्रकरण	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
			२ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८	...	,,
दंस	=	दर्शनशुद्धिप्रकरण	हस्तलिखित	...	तत्त्व
दसअगस्त्य दसचू }	=	दशवैकालिक अगस्त्य सिंहचूर्णि	P. T. S. ..	...	
दस	=	दशवैकालिकसूत्र	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९००	...	अध्ययन०
			२ डॉ० जीवराज घेलाभाई, ग्रहमदाबाद, १९१२	...	,,
दसचू	=	दशवैकालिकचूलिका	,, ,, ,,	...	चूलिका०
दसनि	=	दशवैकालिकनिर्युक्ति	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९००	.	अध्ययन, गाथा
			२ देवचन्द लालभाई		
दसवृद्ध	=	दशवैकालिक वृद्ध विवरण	मुद्रित चूर्णि, ऋषभदेव केसरीमल		
दसा	=	दशाश्रुतस्कन्ध	हस्तलिखित	.	,,
दीव	=	दीवसागरपन्नत्ति	,	...	
दूत	=	दूतघटोत्कच	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज		पृष्ठ
दे	=	देशीनाममाला	बम्बई संस्कृत-सिरीज, १८८०		वर्ग, गाथा
देव	=	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	हस्तलिखित	.	
देवेन्द्र	=	देवेन्द्र [illegible]	,,		
देवेन्द्र	=	देवेन्द्रनरकेन्द्रप्रकरण	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९२२	.	गाथा
द्र	=	द्रव्यसित्तरी	१ जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९५८	..	,,
			२ शा० वेणीचंद सूरचंद, म्हेसाणा, १९०६	..	,,
द्रव्य	=	द्रव्यसंग्रह	जैन-ग्रंथ रत्नाकर-कार्यालय, बंबई, १९०६	..	,,
[illegible]	=	[illegible]	काव्यमाला, सप्तम गुच्छक, बंबई, १८९०		,,
धर्म	=	धर्मरत्नप्रकरण सटीक	१ जैन विद्या-प्रसारक वर्ग, पालीताणा, १९०५	..	मूल-गाथा
			२ हस्तलिखित	..	,,
धम्मि	=	धम्मिलहिंडी (वसुदेवहिंडी अन्तर्गत)	आत्मानन्द सभा	..	
[illegible]	=	[illegible]	हस्तलिखित	..	गाथा
धर्मसं	=	धर्मसंग्रह	जैन विद्या-प्रसारक-वर्ग, पालीताणा, १९०५		अधिकार
[illegible]	=	[illegible]	आत्मानन्द सभा		
[illegible]	=	धर्मविधिप्रकरण सटीक	[illegible], १९२४	.	पत्र
[illegible]	=	[illegible]	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९१६—१८	..	गाथा
[illegible]	=	[illegible]	जैन-आत्मानन्द-सभा, भावनगर, १९१८	..	पृष्ठ
[illegible]	=	[illegible]	[illegible] बंगाल, १९२४	.	पृष्ठ
[illegible]	=	[illegible]	निर्णयसागर प्रेस, बंबई	..	,,
[illegible]	=	[illegible]	P. T. S.		
[illegible]	=	[illegible] (अप्रसिद्ध),	[illegible]		

[illegible]

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
नव	=	नवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर	...	गाथा
			२ आद्य-जैन धर्म-प्रवर्तक-सभा, अहमदावाद, १९०६	.	,,
नाट	=	‡ नाटकीयप्राकृतशब्दसूची			
निचू	=	निशीथचूर्णि	हस्तलिखित	...	उद्देश
निर	=	निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित	...	वर्ग, अध्य०
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२२	.	,,
निसा	=	निशाविरामकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
निसी	=	निशीथसूत्र	हस्तलिखित	...	उद्देश
पउम	=	पउमचरिअ	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति		पर्व, गाथा
पउम	=	पउमचरिय	प्राकृत-ग्रंथ-परिषद्, वाराणसी—५	...	,,
पच	=	पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित	.	द्वार, गाथा
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	...	,,
पंचभा	=	पंचकल्पभाष्य	हस्तलिखित	..	
पंचव	=	पंचवस्तु	,, ...		द्वार
पंचा	=	पंचासकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचासक
पंचू	=	पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित .	...	
पनि	=	पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पंरा	=	पंचरात्र	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
पंसू	=	पंचसूत्र	हस्तलिखित .	...	सूत्र

---

‡ सेंट्रल लाइब्रेरी, वडोदा में स्थित एक मुखपृष्ठ-हीन पुस्तक में गृहीत, जिसके पूर्व भाग में क्रमदीश्वर का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भागमें 'प्राकृताभिधानम्' शीर्षक से कतिपय ग्रंथो से उद्धृत प्राकृत शब्दो की एक छोटी सी सूची छपी हुई है। इस सूची मे उन ग्रंथो के जो संक्षिप्त नाम और पृष्ठाङ्क दिए गये है वे ही नाम तथा पृष्ठाङ्क ज्यो के त्यो प्रस्तुत कोष मे भी यथास्थान 'नाट' के बाद रखे गये हैं। उक्त पुस्तक मे उन ग्रंथो के संक्षिप्त नामो तथा संस्करणो का विवरण इस तरह है,—

मालती	101	मालतीमाधवम्	Calcutta Edition of 1830
चैत	,,	चैतन्यचन्द्रोदयम्	,, 1854
विक्र	,,	विक्रमोर्वशी	,, 1830
साहित्य	,,	साहित्यदर्पण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	,,	उत्तररामचरित	Calcutta Edition of 1831
रत्ना	,,	रत्नावली	,, 1832
मृच्छ	,,	मृच्छकटिक	,, 1832
प्राप्र	,,	प्राकृतप्रकाश	Mr Cowell's Edition of 1854
शकु	,,	शकुन्तला	Calcutta Edition of 1840
मालवि	,	मालविकाग्निमित्र	Tulberg's Edition of 1850
वेणि	,,	वेणिसंहार	Muktaram's Edition of 1855
पाप्र	,,	संक्षिप्तसारस्य प्राकृताध्याय.	
महावी	,,	महावीरचरितम्	Trithen's Edition of 1848
पिंग	,,	पिंगल.	Ms.

† श्रद्धेय के. प्रो. मोदी द्वारा प्राप्त।

	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
=	[illegible]	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	•	
=	[illegible]	शा बालाभाई ककलभाई अहमदाबाद संवत् १९६२		गाथा
=	[illegible]	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई १९१?		
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मंडल, आगरा १९२१		
=	[illegible]	राय धनपतसिंह बहादुर, बनारस, संवत् १९४०	•	पद
=	[illegible]	आगमोदय समिति बम्बई, १९१९		श्रुतस्कन्ध, द्वार
=	[illegible]	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	•	गाथा
=	[illegible]	१ , संवत् १९३४		+ द्वार
		२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई १९२२–२५		,,
=	[illegible]	आत्मानन्द जैन सभा भावनगर, संवत् १९७४		गाथा
=	[illegible]	* बी. बी. [illegible] कंपनी, भावनगर संवत् १९७३	••	
=	[illegible]	गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज, नं. ४, १९१७		पृष्ठ
=	[illegible]	डा. आर्. पिशेल् कृत, १९००		पैरा
=	[illegible]	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	•••	
=	[illegible]	१ हस्तलिखित	•••	गाथा
		२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२		,
=	[illegible]	,,	•••	,,
=	[illegible]	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	•	,,
=	[illegible]	विविध सम्पूर्ण सिरीज		पृष्ठ
=	[illegible]	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१०		,,
=	[illegible]	विविध सम्पूर्ण सिरीज		,,
=	[illegible]	१ हस्तलिखित	•	गाथा
=	[illegible] (मार्कण्डेयकृत)	[illegible], विशाखापट्टणम्		पृष्ठ
=	[illegible]	* पंजाब युनिवर्सिटी, लाहौर, १९१३		
=	[illegible]	* १ [illegible], लंडन, १८[illegible]	••	
		* २ वंगीय-साहित्य-परिषद् कलकत्ता, १९१४		
=	[illegible]	* शाह [illegible] भूराभाई, बनारस, १९११	•	
=	[illegible]	* [illegible], अहमदाबाद, संवत् १९६८		
=	[illegible]	[illegible], बनारस, १९१९		गाथा
=	[illegible]	[illegible] सिरीज	•••	पृष्ठ
=	[illegible]	हस्तलिखित	•	उद्देश
=	[illegible]	* १ [illegible] सभा, बम्बई संवत् १९३४	•••	
		२ [illegible]		भाग, उद्देश
		३ [illegible] समिति, बम्बई, १९१८-१९१९-१९२१		,,
=	[illegible]	१ [illegible], [illegible], संवत् १९६६	•	गाथा
		२ [illegible] अहमदाबाद, संवत् १९६२		,,
=	[illegible]	[illegible]		

[illegible]

[illegible]

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
भवि	=	भविसत्तकहा	१ डा. एच् जेकोबी संपादित १६१८	
			२ गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, १६२३	
भाव	=	भावकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई १६१३	गाथा
भास	=	भाषारहस्य	सेठ मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद	„
मंगल	=	मंगलकुलक	† हस्तलिखित	„
मध्य	=	मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरीज	पृष्ठ
मन	=	मनोनिग्रहभावना	† हस्तलिखित	गाथा
महा	=	आउसगेव्यालते एरस्यालुंगन् इन् महाराष्ट्री	डा. एच् जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८८६	
महानि	=	महानिशीथसूत्र	हस्तलिखित	अध्ययन
मा	=	मालविकाग्निमित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १६१५	पृष्ठ
माल	=	मालतीमाधव	„ „	„
मुणि	=	मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित	गाथा
मुद्रा	=	मुद्राराक्षस	बम्बई-संस्कृत-सिरीज १६१५	पृष्ठ
मृच्छ	=	मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १६१६	„
			२ बम्बई संस्कृत-सिरीज, १८९६	„
मै	=	मैथिलीकल्याण	माणिकचन्द-दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, बम्बई, १९७३	„
मोह	=	मोहराजपराजय	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं ६, १६१८	„
यति	=	यतिशिक्षापञ्चाशिका	† हस्तलिखित	गाथा
रंभा	=	रंभामंजरी	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८८६	„
रत्न	=	रत्नत्रयकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
रयण	=	रयणसेहरनिवकहा	स्व-संपादित, बनारस, १६१८	पृष्ठ
राज	=	अभिधानराजेन्द्र	जैन-प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम	
राय	=	रायपसेणीसुत्त	१ हस्तलिखित	
			२ आगमोदय-समिति बम्बई, १६२५	पत्र
रुक्मि	=	रुक्मिणी-हरण (ईहामृग)	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं ८ १६१८	पृष्ठ
लघु	=	लघुसंग्रहणी	भीमसिंह माणेक, बम्बई, १६०८	गाथा
लहुअ	=	लघुअजितशान्ति स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १६७८	„
लोक	=	लोकप्रकाश	देवचन्द लालभाई	
वज्जा	=	वज्जालग्ग	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता	पृष्ठ
वव	=	व्यवहारसूत्र, सभाष्य	१ हस्तलिखित	उद्देश्य
			२ मुनि माणेक संपादित, भावनगर, १६२६	„
वसु	=	वसुदेवहिंडी	१ हस्तलिखित	
			२ आत्मानन्द सभा	
वा	=	वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १६१५	पृष्ठ
वाभ	=	वाग्भटालंकार	„ १६१६	„
वि	=	विषयत्यागोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	गाथा

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिनसे अंक दिए गए हैं वह
=	[illegible]	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१८	पृष्ठ
=	[illegible]	माणिकचन्द्र दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७२	,,
=	[illegible]	आगमोदय-समिति बम्बई १९२३	गाथा
=	[illegible]	स्व-सम्पादित कलकत्ता संवत् १९७६	अनुच्छेद अध्या०
=	[illegible]	स्व-सम्पादित, बनारस, संवत् १९७४-७६	गाथा
=	[illegible]	स्व-सम्पादित बनारस, वीर-संवत् २४४१	•
=	[illegible]	निर्णयसागर प्रेस बम्बई, १८९४	पृष्ठ
=	[illegible]	निर्णयसागर प्रेस बम्बई, १९१५	
=	[illegible]	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल अहमदाबाद, १९२०	गाथा
=	[illegible]	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	मूलगाथा
=	[illegible]	१ श्रीयुत केशवलाल प्रेमचन्द संपादित १९०४	गाथा
		२ जैन धर्म सभा	
=	[illegible]	† हस्तलिखित	,,
=	[illegible]	* बम्बई संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरीज, १९१६	
=	[illegible]	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३	पृष्ठ
=	[illegible]	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	गाथा
=	[illegible]	१ हस्तलिखित	
		२ [illegible] प्रेस रिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	पृष्ठ
=	[illegible]	१ [illegible] बम्बई, संवत् १९६८	गाथा
		२ [illegible] जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७३	,,
=	[illegible]	हस्तलिखित	प्रस्ताव
=	[illegible] (देवेन्द्रसूरि-कृत)	,	
=	[illegible]	१ जैन [illegible] मंडल, बम्बई, १९११	गाथा
		२ [illegible] पुस्तक-प्रकाशक-मंडल, आगरा, १९२१	,
=	[illegible]	१ हस्तलिखित	,,
		२ जैन धर्म प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	,,
=	[illegible]	जैन ग्रन्थ-प्रकाशक-सभा, अहमदाबाद, १९१६	पत्र
=	[illegible]	† हस्तलिखित	गाथा
=	[illegible]	,	,,
=	[illegible]	१ स्व-सम्पादित, बनारस, १९१७	,,
		२ [illegible] ग्रन्थमाला, [illegible] अहमदाबाद, १९२४	,,
=	[illegible]	* [illegible] सम्पादित, १९२१	
	[illegible]	जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९७४	गाथा
=	[illegible]	[illegible] बम्बई, १९१८	पृष्ठ
	[illegible]	[illegible] सिरीज, [illegible] १९१८	•
=	[illegible]	जैन धर्म प्रसारक-सभा भावनगर, संवत् १९६४	गाथा

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
सम्मत्त	=	सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार-फंड, बम्बई, १९१६		पत्र
सम्य	=	सम्यक्त्वस्वरूप पचीसो	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३		गाथा
सम्यक्त्वो	=	सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	† हस्तलिखित		,,
सा	=	सामान्यगुणोपदेशकुलक	,,	..	,,
सार्ध	=	गणधरसार्धशतकप्रकरण	जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६		,,
सिक्खा	=	शिक्षाशतक	† हस्तलिखित		,,
सिग्घ	=	सिग्घमवहरउ-स्मरण	स्व संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	..	,,
सिरि	=	सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२३		,,
सुख	=	सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡ हस्तलिखित	.	अध्ययन, गाथा
सुज्ज	=	सूर्यप्रज्ञप्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	पाहुड
सुपा	=	सुपासनाहचरिअ	स्व-संपादित बनारस, १९१८-१९		पृष्ठ
सुर	=	सुरसुंदरीचरिअ	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	..	परिच्छेद, गाथा
सूअ	=	सूअगडांगसुत्त	+ १ भीमसिंह माणेक, बंबई, १९३६		श्रुतस्कंध, अध्य०
			२ आगमोदय समिति, बंबई, संवत् १९१७	.	,,
सूअनि	=	सूत्रकृताङ्गनिर्युक्ति	१ हस्तलिखित		श्रुतस्कंध
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, संवत् १९७३	..	गाथा
			३ भीमसिंह माणेक ,, ,, १९३६	..	,,
सूक्त	=	सूक्तमुक्तावली	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९२२	.	पत्र
सूत्रचू	=	सूत्रकृतांगचूर्णि	P T S		
से	=	सेतुबंध	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १८९५	..	आश्वासक, पत्र
स्वप्न	=	स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	.	पृष्ठ
हम्मीर	=	हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं. १०, १९२०		,,
हास्य	=	हास्यचूडामणि (प्रहसन)	,,	.	,,
हि	=	हितोपदेशकुलक	† हस्तलिखित		गाथा
हित	=	हितोपदेशसारकुलक	,,		,,
हे	=	हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	* १ डॉ. आर् पिशेल्-संपादित, १८७७	..	पद, सूत्र
			२ बंबई-संस्कृत-सिरीज, १९००	..	,,
हेका	=	हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९०१	...	पृष्ठ

---

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पणी ।

+ सूत्र के अंक इन दोनों में भिन्न भिन्न हैं, प्रस्तुत कोष में सूत्रांक केवल भी. मा. के संस्करण के दिए गये हैं ।

प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का व्याकरण और कोश प्रधान साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण अनेक हैं, जिनमे चंड का प्राकृतलक्षण, वररुचि का प्राकृतप्रकाश, हेमाचार्य का सिद्धहेम (अष्टम अध्याय), मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व और लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका मुख्य हैं। और अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणो की सख्या अल्प होने पर भी उनमे जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विद्वान् डॉ पिशल् का प्राकृतव्याकरण सर्वश्रेष्ठ है जो अतिविस्तृत और तुलनात्मक है। परन्तु प्राकृत-कोष के विषय मे यह बात नही है। प्राकृत के प्राचीन कोषो मे अद्यापि पर्यन्त केवल दो ही कोष उपलब्ध हुए हैं—पण्डित धनपाल-कृत पाइअलच्छीनाममाला और हेमाचार्य-प्रणीत देशीनाममाला। इनमे पहला अतिसक्षिप्त—दो सौ से भी कम पद्यो मे ही समाप्त और दूसरा केवल देश्य शब्दो का कोष है। इनके सिवा अन्य कोई भी प्राकृत का कोष न होनेसे प्राकृत के हरएक अभ्यासी को अपने अभ्यास मे बहुत असुविधा होती थी, खुद मुझे भी अपने प्राकृत-ग्रन्थो के अनुशीलन-काल मे इस अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इससे आज से करीब पनरह साल पहले पूज्यपाद, प्रात - स्मरणीय, गुरुवर्य शास्त्र-विशारद जैनाचार्य श्री १००८ श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।

इसी अरसे मे श्री राजेन्द्र सूरिजी का अभिधानराजेन्द्र नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और अभी दो वर्ष हुए इसका अन्तिम भाग भी बाहर हो गया है। बडी बडी सात जिल्दो मे यह कोष समाप्त हुआ है। इस सपूर्ण कोष का मूल्य २६०) रुपये हैं जो परिश्रम और ग्रन्थ-परिमाण मे अधिक नही कहे जा सकते। यद्यपि इस कोष की विस्तृत आलोचना करने की न तो यहा जगह है, न आवश्यकता ही, तथापि यह कहे विना नही रहा जा सकता कि इसकी तय्यारी मे इसके कर्ता और उसके सहकारियो को सचमुच घोर परिश्रम करना पडा है और प्रकाशन मे जैन श्वेताम्बर सघ को भारी धन-व्यय। परन्तु खेद के साथ कहना पडता है कि इसमे कर्ता को सफलता की अपेक्षा निष्फलता ही अधिक मिली है और प्रकाशक के धनका अपव्यय ही विशेष हुआ है। सफलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को थोडे गौर से देखने पर यह सहज ही मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राकृत भाषाओ का पर्याप्त ज्ञान था और न प्राकृत शब्द-कोष के निर्माण की उतनी प्रबल इच्छा, जितनी जैन दर्शन-शास्त्र और तर्क-शास्त्र के विषय मे अपने पाण्डित्यप्रख्यापन की धून। इसी धून ने अपने परिश्रम को योग्य दिशा में ले जानेवाली विवेक-बुद्धि का भी ह्रास कर दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण, केवल पचहत्तर से भी कम प्राकृत जैन पुस्तको के ही, जिनमे अर्धमागधी के दर्शनविषयक ग्रथो की बहुलता है, आधार पर किया गया है और प्राकृत की ही इतर मुख्य शाखाओ के तथा विभिन्न विषयो के अनेक जैन तथा जैनेतर ग्रन्थो मे एक का भी उपयोग नही किया गया है। इससे यह कोष व्यापक न होकर प्राकृत भाषा का एकदेशीय कोष हुआ है। इसके सिवा प्राकृत तथा सस्कृत ग्रन्थो के विस्तृत अशो को और कही-कही तो छोटे-बडे[1] सपूर्ण ग्रन्थ को ही अवतरण के रूप मे उद्धृत करने के कारण पृष्ठ-सख्या मे बहुत बडा होने पर भी शब्द-सख्या मे ऊन ही नही, बल्कि आधार-भूत ग्रथो मे आए हुए कई[2] उपयुक्त शब्दो को छोड देने से और विशेषार्थ-हीन[3] अतिदीर्घ सामासिक शब्दो की भरती से वास्तविक शब्द-सख्या मे यह कोष अतिन्यून भी है। इतना ही नहीं, इस कोष मे आदर्श पुस्तको की, असावधानी की और प्रेस की तो असंख्य अशुद्धियाँ हैं ही, प्राकृत भाषा के अज्ञान से सबन्ध रखनेवाली भूलो की भी कमी नही है। और सबसे बढकर दोष इस कोष मे यह है कि वाचस्पत्य, अनेकान्तजयपताका, अष्टक, रत्नाकरावतारिका आदि केवल सस्कृत के और जैन इतिहास जैसे

---

१ जैसे 'चेइय' शब्द की व्याख्या मे प्रतिमाशतक नामक सटीक सस्कृत ग्रन्थ को आदि से लेकर अन्त तक उद्धृत किया गया है। इस ग्रथ की श्लोक-सख्या करीब पाँच हजार है।

२ अक्क = अर्क आदि।

३ जैसे अइ-तिक्ख-रोस, अइ-दुक्ख-धम्म, अइ-तिव्व-कम्म-विगम, अकुसल-जोग-णिरोह, अचियत्ते(?)उर-पर-घर-प्पवेस, अजिम्म(?)-कत-णयणा, अजस सय-विसप्पमाण-हियय, अजहण्णुको(?)स-पएसिय आदि। इन शब्दो का इनके अवयवो की अपेक्षा कुछ भी विशेष अर्थ नही है।

[illegible] शब्दों के संस्कृत और गुजराती [illegible] पर से कोरी निजी कल्पना से ही बनाये हुए प्राकृत शब्दों की इसमें खूब [illegible] है, [illegible] की प्रामाणिकता ही एकदम नष्ट हो गई है। ये और अन्य अनेक [illegible] दोषों के कारण साधारण [illegible] के लिए [illegible] निरुपयोगी [illegible] है, विद्वानों के लिए भी उतना ही [illegible] है।

[illegible] और [illegible] तथा [illegible] साहित्य के [illegible] शब्दों से [illegible], आवश्यक अवतरणों से युक्त, [illegible] का [illegible] । इस अभाव की पूर्ति के लिये मैंने अपने उक्त विचार को कार्य-रूप में परिणत [illegible] दिया गया, जिसका फल प्रस्तुत कोष के रूप में चौदह वर्षों के कठोर [illegible] है।

[illegible] कठिनाइयाँ मुझे झेलनी पड़ी हैं उनमें सर्व-प्रथम प्राकृत के शुद्ध पुस्तकों के विषय में थी। [illegible] पूर्ण होने पर भी आजतक वह [illegible] रूप में प्रकाशित ही नहीं हुआ है। और [illegible] के हाथ से लिखी जाने के कारण प्रायः अशुद्ध ही हुआ करते हैं, परन्तु आजकल जो प्राकृत की [illegible] अशुद्धियों से खाली नहीं है। अलबत्ता, यूरोप की और इस देश की कुछ पुस्तकें ऐसी [illegible] जिनमें अशुद्धियाँ बहुत ही कम हैं और जो कुछ [illegible] भी गई हैं वे उनमें टिप्पणी में दिए हुए अन्य प्रतियों के [illegible] संस्करणों की संख्या बहुत ही अल्प—नगण्य है। वस्तुतः यह बड़े खेद की बात है [illegible] प्राचीन पुस्तकों के संशोधन में [illegible] हस्तलिखित पुस्तकों का उपयोग करने की ओर उनके [illegible] शुद्ध करने की तकलीफ ही नहीं उठाते। इसका नतीजा यह होता है कि संशोधक की बुद्धि में [illegible] अशुद्ध भी क्यों न हों, पाठकों को देखने को मिलता है। प्राकृत के इतर [illegible] प्राचीन आगम ग्रन्थों की भी यही अवस्था है। कई वर्षों के पहले [illegible] राय धनपतसिंहजी बहादुर ने अनेक आगम-ग्रन्थ भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न संशोधकों से संपादित [illegible] संशोधकों से संपादित होने के कारण बहुत ही अशुद्ध छपे थे। किन्तु अभी कुछ ही वर्ष हुए हमारी [illegible] के कागज, छपाई, सफाई आदि बाह्य शरीर की सजावट [illegible] की पुनरावृत्ति ही है। क्योंकि, न किसी में प्राचीन पुस्तकों के पाठान्तर दिये [illegible] और टीका के [illegible] की ओर ध्यान दिया गया है और न तो प्रथम संस्करण की साधारण [illegible] है। क्या ही अच्छा हो यदि श्रीआगमोदयसमिति के कार्य-कर्ताओं का ध्यान इस तथ्य की [illegible] (प्रकाशित और अप्रकाशित) आगम ग्रन्थों का [illegible] प्रकाशित करें जिसकी अनिवार्य आवश्यकता है।

[illegible] और [illegible] प्राकृत [illegible] अशुद्ध होने के कारण आवश्यकतानुसार [illegible] पुस्तकों का [illegible] भिन्न-भिन्न [illegible] से मिलान करके उनमें से शुद्ध प्राकृत शब्दों का [illegible] और अशुद्ध [illegible] है। और [illegible] उसमें [illegible] अशुद्धियों का भी यथाशक्ति [illegible] किया गया है और [illegible] अशुद्धियों का उल्लेख भी [illegible] पर विचार करने की सुविधा [illegible] आधुनिक विद्वानों की हुई [illegible] भी हुई है। [illegible] कि इस कोष का [illegible] प्राकृत के सुप्रसिद्ध [illegible]

१ [illegible]

२ [illegible] में प्रकाशित [illegible]

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ व्यय के बारे मे थी। मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी नही थी कि इस महान् ग्रंथ की तय्यारी के लिए पुस्तकादि आवश्यक साधनो के और सहायक मनुष्यों के वेतन-खर्च के अतिरिक्त प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूँ। और मुफ्त मे किसी से आर्थिक सहायता लेना मै पसन्द नही करता था। इससे इस कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमे उन अग्रिम ग्राहको को हर पचीस रुपये मे इस संपूर्ण ग्रन्थ की एक कॉपी देने की व्यवस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण तो नही, किन्तु बहुत-कुछ कम हो गई। इस योजना को इतने दूर तक सफल बनाने का अधिक श्रेय कलकत्ता के जैन श्वेताम्बर श्रीसघ के अग्रगण्य नेता श्रीमान् सेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई को है, जिन्होने शुरु से ही इसकी सरक्षकता का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तरह से इस कार्य मे सहायता की है, जिसके लिए मै उनका चिर कृतज्ञ हूँ। इसी तरह अहमदाबाद निवासी श्रद्धेय श्रीयुत् केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी बी ए., एल्एल् बी. का भी मैं बहुत ही उपकृत हूँ कि जिन्होने कई मुद्रित पुस्तको मे दी हुई प्राकृत शब्द सूचियो पर से एकत्रित किया हुआ एक बडा शब्द सग्रह मुझे दिया था, इतना ही नही, बल्कि समय समय पर प्राकृत की अनेक हस्त-लखित तथा मुद्रित पुस्तको का जोगाड कर दिया था और उक्त योजना मे ग्राहक-सख्या बढा देने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रात स्मरणीय, पूज्यपाद, गुरुवर्य मुनिराज श्रीअमीविजयजी महाराज, पूज्य जैनाचार्य श्रीविजयमोहन सूरिजी, ज. यु. भट्टारक श्रीजिनचारित्रसूरिजी तथा स्वतन्त्र-सम्पादक विद्वद्वर्य श्रीयुत् अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी का भी मै हृदय स उपकार मानता हूँ कि जिनकी प्रेरणा से अग्रिम ग्राहको की वृद्धि द्वारा मुझे इस कार्य मे सहायता मिली है। उन महानुभावो को, जिनके शुभ नाम इसी ग्रन्थ मे अन्यत्र दी हुई अग्रिम-ग्राहक-सूची मे प्रकाशित किए गए हैं[1], अनेकानेक धन्यवाद है कि जिन्होने यथाशक्ति अल्पाधिक सख्या मे इस पुस्तक की कॉपियाँ खरीद कर मेरा यह कार्य सरल कर दिया है। यहा पर मेरे मित्र श्रीयुत् सेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल और श्रीमान् बाबू डालचदजी सिघी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन दोनो महाशयो ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार यथेष्ट सख्या मे इस कोष की कॉपियाँ खरीदने के अतिरिक्त मुझे इस कार्य के लिये समय समय पर बिना सूद ऋण देने की भी कृपा की थी। यह कहने मे कोई अत्युक्ति नही है कि यदि उक्त सब महानुभावो की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कोष का प्रकाशन मेरे लिए मुश्किल ही नही, असभव था।

यहा इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पडता है कि आज से करीब दस वर्ष पहले मेरे सहाध्यापक श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम्. ए महाशय ने और मैंने मिलकर एक प्रस्ताव विशिष्ट पद्धति का प्राकृत इग्लिश कोष तैयार करने के लिए कलकत्ता-विश्वविद्यालय मे उपस्थित किया था, परन्तु उस समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राकृत-हिन्दी कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ तब उसे देखकर कलकत्ता-विश्वविद्यालय के कर्णधार स्वर्गीय ऑनरेबल जस्टिस आशुतोष मुकर्जी इतने सतुष्ट हुए कि उन्होने तुरत ही विश्वविद्यालय की तरफ से हम दोनो के तत्त्वावधान मे इसी तरह के प्रमाण-युक्त एक प्राकृत-इङ्गिलश कोश तैय्यार और प्रकाशित करने का न केवल प्रस्ताव ही पास करवाया, बल्कि उसको कार्य-रूप मे परिणत करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था भी करायी है। इसके लिए उनको जितने धन्यवाद दिये जायँ, कम हैं। यहाँ पर मैं कलकत्ता-विश्वविद्यालय की भी प्रशंसा किए विना नही रह सकता कि जिसके द्वारा मुझे इस कार्य मे समय, पुस्तक आदि की अनेक सुविधाएँ मिली हैं, जिससे यह कार्य अपेक्षा-कृत शीघ्रता से पूर्ण हो सका है। इस कोष के उपोद्घात से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ऐतिहासिक जटिल प्रश्नो को सुलझाने मे श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम. ए. ने अपने कीमती समय का विना सकोच भोग देकर मुझे जो सहायता की है उसके लिए मैं उनका अन्त -करण से आभार मानता हूँ।

इस कोष के मुद्रण-कार्य के आरम्भ से लेकर प्राय शेष होने तक, समय समय पर जैसे जैसे जो अतिरिक्त हस्त-लिखित और मुद्रित पुस्तकें या सस्करण मुझे प्राप्त होते जाते थे वैसे वैसे उनका भी यथेष्ट उपयोग इस कोष मे किया जाता था। यही कारण है कि तब तक के अमुद्रित भाग के शब्द उनके रेफरेंसो के साथ साथ प्रस्तुत कोष मे ही यथास्थान शामिल कर दिए जाते थे और मुद्रित अश के शब्दो का एक अलग सग्रह तय्यार किया जाता था जो परिशिष्ट[2] के रूप मे इसी ग्रथ मे अन्यत्र प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करते हुए तृतीय भाग के छपने तक जिन अतिरिक्त पुस्तको का उपयोग किया गया था उनकी एक अलग सूची भी तृतीय भाग मे दी गई थी। उसके बाद के अतिरिक्त पुस्तको की अलग सूची इसमे न देकर प्रथम की दोनो (द्वितीय और तृतीय भाग मे प्रकाशित) सूचियो की जो एक साधारण सूची यहाँ दी जाती है उसीमे उन पुस्तको का भी वर्णानुक्रम से यथास्थान समावेश किया गया है, जिससे पाठको को अलग अलग रेफरेंस-सूचियाँ देखने की तकलीफ न हो।

उक्त परिशिष्ट मे केवल उन्ही शब्दो को स्थान दिया गया है जो पूर्व-सग्रह मे न आने के कारण एकदम नये हैं या आने पर भी लिंग या अर्थ मे पूर्वागत शब्द की अपेक्षा विशेषता रखते हैं। केवल रेफरेंस की विशेषता को लेकर किसी शब्द को परिशिष्ट मे पुनरावृत्ति नही की गई है।

---

१. 'अग्रिम-ग्राहक सूची' का अश द्वितीय सस्करण मे नही छापा गया है—संपादक।

२. 'परिशिष्ट' का सपूर्ण अश इस द्वितीय संस्करण मे यथास्थान समावेश कर दिया गया है—सपादक।

[illegible] मात्र भारतवर्ष की [illegible] और [illegible] राष्ट्र भाषा के योग्य होने के [illegible] है।

[illegible] प्राकृत भाषाओं के विविध विषय[illegible] जैन एवं जैनेतर प्राचीन ग्रंथों से (जिनकी कुल संख्या [illegible]) [illegible] प्रतिशब्दों से, हिन्दी अर्थों से, सभी आवश्यक अवतरणों से और संपूर्ण प्रमाणों से [illegible] तो भी जो कुछ मनुष्य-स्वभाव-सुलभ त्रुटियाँ या भूलें हुई हों उनको सुधारने के लिए [illegible] ऐसी भूलों के विषय में मुझे सतर्क करेंगे ताकि द्वितीयावृत्ति में तदनुसार [illegible] प्रामाणिक पद्धति से [illegible], मैं उनका चिर-कृतज्ञ रहूँगा।

यदि [illegible] प्राकृत-साहित्य के अध्ययन में थोड़ी भी सहायता पहुँचेगी तो मैं अपने इस दीर्घ-काल-व्यापी परिश्रम को सफल समझूँगा।

[illegible]
[illegible]

हरगोविन्द दास टि. सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो भाषा अतिप्राचीन काल मे इस देश के आर्य लोगों की कथ्य भाषा—बोलचाल की भाषा—थी, जिस भाषा में भगवान् महावीर और बुद्धदेव ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस भाषा को जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध-विषयक विपुल साहित्य की रचना कर अपनाई है, जिस भाषा मे श्रेष्ठ काव्य-निर्माण द्वारा प्रवरसेन हाल आदि महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस भाषा के मौलिक साहित्य के आधार पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रन्थों की रचना हुई है, संस्कृत के नाटक ग्रन्थो मे संस्कृत-भिन्न जिस भाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषा से भारतवर्ष की वर्तमान समस्त आर्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों मे आजकल भी बोली जाती हैं, इन सब भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-वाचक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आजतक किया जाता है, जैसे प्राथमिक प्राकृत, आर्ष या अर्धमागधी प्राकृत, पाली प्राकृत, पैशाची प्राकृत, शौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत, बंगला प्राकृत आदि।

प्राकृत किसे कहते हैं ?

भारतवर्ष की अर्वाचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परस्पर सम्बन्ध

भाषातत्त्व के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कथ्य भाषाएँ इन पाँच भागो मे विभक्त की जा सकती हैं —(१) आर्य (Aryan), (२) द्राविड़ (Dravidian), (३) मुण्डा (Munda), (४) मन्-ख्मेर (Mon-khmer) और (५) तिब्बत-चीना (Tibeto-Chinese)

भारत की वर्तमान भाषाओं में मराठी, बँगला, ओडिया, बिहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और काश्मीरी भाषा आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसी तथा अंग्रेजी, जर्मनी आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी आर्य भाषा से है। भाषा-गत सादृश्य को देखकर भाषा-तत्त्व ज्ञाताओं का यह अनुमान है कि इस समय विच्छिन्न और बहु-दूरवर्ती भारतीय आर्य-भाषा-भाषी समस्त जातियाँ और उक्त युरोपीय भाषा भाषी सकल जातियाँ एक ही आर्य-वंश से उत्पन्न हुई हैं।

तेलगु, तामिल और मलयालम प्रभृति भाषाएँ द्राविड भाषा के अन्तर्गत हैं, कोल तथा सॉथाली भाषा मुण्डा भाषा के अन्तर्भूत हैं, खासी भाषा मन्ख्मेर भाषा का और भोटानी तथा नागा भाषा तिब्बत-चीना भाषा का निदर्शन है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी आर्य भाषा से सम्बन्ध नही रखती, अतएव ये सभी अनार्य भाषाएँ हैं। यद्यपि ये अनार्य भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूर्व भाग मे बोली जाती हैं तथापि अंग्रेजी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी आदि आर्य भाषाओं का जो वंश गत ऐक्य उपलब्ध होता है, इन अनार्य भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नही देखा जाता है।

ये सब कथ्य भाषाएँ आजकल जिस रूप मे प्रचलित हैं, पूर्वकाल में उसी रूप मे न थीं, क्योंकि कोई भी कथ्य भाषा कभी एक रूप मे नही रहती। अन्य वस्तुओं की तरह इसका रूप भी सर्वदा बदलता ही रहता है—देश, काल और व्यक्ति-गत उच्चारण के भेद से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनके द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह लक्ष्य मे नहीं आता। पूर्वकाल की भाषा के संरक्षित आदर्श के साथ तुलना करने पर बाद मे ही वह जाना जाता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श संरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य मे स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, अशोक लिपि तथा उसके बाद की लिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमे प्रथम की दो भाषाएँ कभी जन साधारण की कथ्य भाषा न थीं, केवल लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थीं। अवशिष्ट भाषाएँ कथ्य और लेख्य उभय रूप मे प्रचलित थीं। इस

[illegible] भाषाएँ [illegible] रूप से व्यवहृत नहीं होतीं, इसी कारण वे मृत भाषा (dead languages) कहलाती हैं। [illegible] आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राचीन आर्य भाषाओं में से [illegible] क्रमशः रूपान्तरित होकर आधुनिक [illegible] आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

[illegible] प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक [illegible] भाषाओं में परिणत हुईं, इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिणति क्रम

[illegible] ग्रियर्सन ने अपनी लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में [illegible] आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है, उसके अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य भाषाओं में [illegible] प्राचीन है। इसका समय अनेक विद्वानों के मत में खिस्ताब्द-पूर्व दो हजार वर्ष (20[illegible]) और प्रो. मेक्समूलर के मत में खिस्ताब्द-पूर्व बारह सौ वर्ष (1200 B. C.) है। यह वेद-भाषा क्रमशः परिमार्जित होती हुई ब्राह्मण, उपनिषद् और यास्क के निरुक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होकर लौकिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि आदि के पद प्रभृति के [illegible] प्राप्त करने के कारण यह संस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा [illegible] के लिए जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने से वेद-भाषा [illegible] भी 'संस्कृत' शब्द [illegible] प्रयुक्त होने लग गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—वेद भाषा को लौकिक संस्कृत के रूप में परिणत होने में—प्रायः डेढ़ [illegible] है। पाणिनि का समय गोल्डस्टूकर के मत में खिस्ताब्द पूर्व सप्तम शताब्दी और बोथलिंक के मत में [illegible] चतुर्थ शताब्दी है।

[illegible] उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ. हॉर्नलि और सर ग्रियर्सन के मन्तव्य के अनुसार आर्य [illegible] भिन्न-भिन्न समय में भारतवर्ष में आये थे। पहले आर्यों के एक दल ने यहाँ आकर मध्यदेश में अपने [illegible] स्थापना की थी। इसके कई सौ वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे दल ने भारत में प्रवेश कर प्रथम दल के आर्यों को मध्यदेश की चारों ओर भगा कर उनके स्थान को अपने अधिकार में किया और मध्यदेश में ही अपना वासस्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिए करना पड़ा है कि [illegible] पंजाब, सिन्ध, गुजरात, राजपूताना, महाराष्ट्र, अयोध्या, बिहार, बंगाल और उड़ीसा [illegible] भाषाओं में परस्पर जो निकटता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [[illegible]] के साथ इन सब प्रान्तों की भाषाओं में जो भेद पाया जाता है उस निकटता और भेद का अन्य [illegible] दूसरे दल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सभ्यता [illegible] वेद और वैदिक [illegible]।

[illegible] आधुनिक [illegible] कोई [illegible] को, कोई [illegible] कोई [illegible] आर्यों की आदिम निवास-भूमि मानते हैं [illegible] किन्तु [illegible] विद्वान् [illegible] के द्वारा [illegible] कि [illegible] और [illegible] प्रथम निर्णीत हुआ। [illegible] आर्य [illegible] करते थे। [illegible] भारतवर्ष में आकर और निवास किया। [illegible] और [illegible] निवास [illegible] है। [illegible] विद्वान् ने [illegible] सिद्ध किया है, [illegible]।

उक्त वेद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-लोगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण मे वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से

प्राकृत-भाषाओं का प्रथम स्तर (खिस्त-पूर्व २००० से खिस्त-पूर्व ६००)

पूर्व काल मे आए हुए प्रथम दल के जिन आर्यों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों मे उपनिवेशों का उल्लेख किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-काल मे अपने-अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में, दूसरे दल के आर्यों की वेद-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक आर्य भाषाओं का तात्कालिक साहित्य मे कोई निदर्शन न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और इसके पूर्व की उन समस्त कथ्य भाषाओं को सर ग्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākrits) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय खिस्त-पूर्व २००० से खिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण मे तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती है।

वैदिक युग मे जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमे परवर्ति-काल में अनेक परिवर्तन हुए जिनमे ऋ ॠ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, सयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य है। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण मे रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर

प्राकृत-भाषाओं का द्वितीय स्तर (खिस्त-पूर्व ६०० से खिस्ताब्द ६००)

(second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् खिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी से लेकर खिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रहीं। भगवान् महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकार मे, भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं मे से एक मे दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा मे न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा मे लिखने के लिए अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमश. साहित्य की भाषाओं मे परिणत होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश मे प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-पुस्तकों की अर्ध-मागधी और पूर्व मगध मे प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाली भाषा उत्पन्न हुई। पाली भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। खिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे वहाँ-वहाँ की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में खुदवाए। इन अशोक शिलालेखों मे द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के असंदिग्ध सर्व-प्राचीन निदर्शन संरक्षित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग मे—प्राय खिस्तीय पचम शताब्दी के पूर्व मे भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सब विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकांश विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा मे विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर ग्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खासकर उसके शेष भाग मे प्रचलित विविध अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय

प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर या आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति (खिस्ताब्द ६००)

स्तर की प्राकृत (Tertiary Prākrits)' कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय खिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमे अधिकाश विभक्तियों का लोप हुआ है, एव भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के बोधक स्वतन्त्र शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणशील भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण आगे 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास

[illegible] द्वितीय स्तर की [illegible] प्राकृत भाषाओं के शब्दों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन [illegible] और [illegible] के सम्बन्ध में यहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

[illegible] संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आधुनिक [illegible] हैं। कई प्राकृत-वैयाकरणों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों में इसी मत का समर्थन किया है। [illegible] करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की जरूरत है।

[illegible] प्राकृत वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं के शब्द, संस्कृत शब्दों के साहश्य और पार्थक्य के अनुसार [illegible] तीन भागों में विभक्त किए हैं —(१) तत्सम, (२) तद्भव और (३) देश्य या देशी।

(१) [illegible] संस्कृत और प्राकृत में [illegible] हैं उनको 'तत्सम' या 'संस्कृतसम' कहते हैं, जैसे—अञ्जलि, [illegible] कङ्कर, [illegible] चित्त, घन, जन, कह्लार, उद्धार, डिम्ब, ढक्का, तिमिर, दल, [illegible] नव, वारि, सुन्दर, [illegible], गच्छन्ति, हरन्ति प्रभृति।

(२) [illegible] संस्कृत से वर्ण-लोप, वर्णागम अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न हुए हैं वे 'तद्भव' अथवा [illegible] हैं। जैसे—[illegible], मार्ष = मारिस, [illegible], ईर्ष्या = ईसा, उद्गम = उग्गम, कृष्ण = कसण, खर्जूर = [illegible], ध्यान = झाण, दंश = डस, माघ = णाह, त्रिदश = तिअस, [illegible], [illegible] = चोर, भार्या = भारिआ, मेघ = मेह, अरण्य = रण्ण, लेश = लेस, [illegible], विवृति = [illegible], पृथ्वी = [illegible], मकारौ = [illegible], भविष्यति = होहिइ इत्यादि।

(३) [illegible] संस्कृत के साथ कुछ भी सादृश्य नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, उनको 'देश्य' या 'देशी' [illegible], [illegible] (दर्शन), [illegible] (हस्ती), [illegible] (कौलिक), उग्रचित (अपगत), [illegible] (उपधान), एलविल [illegible], [illegible] (सत्र), [illegible] (वार्त्तिक) [illegible], [illegible] (विस्मृत), [illegible], [illegible], [illegible] (पुत्र), [illegible] (नूपुर), [illegible], रत्ति [illegible] (परस्य), [illegible], [illegible], [illegible] प्रभृति।

[illegible] पार्थक्य के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और [illegible] प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति स्थानों से सबन्ध [illegible] है। [illegible] भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है। भरत-[illegible] भाषाओं से जो मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शूरसेनी, [illegible] नाम हैं, चण्ड के प्राकृत व्याकरण में जो [illegible] पैशाचिकी और [illegible] नाम [illegible] में जो [illegible] महाराष्ट्राश्रया, शौरसेनी, गौडी और लाटी [illegible], शौरसेनी, पैशाची और चूलिकापैशाचिक [illegible] जिन नामों का निर्देश

[illegible footnotes]

किया है और मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के कतिपय श्लोकों को उद्धृत कर महाराष्ट्री, आवन्ती, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीकी, मागधी, प्राच्या और दाक्षिणात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं मे द्राविड़ और ओढ्रज इन दो विभाषाओं के, ग्यारह पिशाच-भाषाओं में काञ्चीदेशीय, पाण्डय, पाञ्चाल, गौड, मागध, व्राचड, दाक्षिणात्य, शौरसेन, कैकय और द्राविड़ इन दस पिशाच-भाषाओं के और सताईस अपभ्रंशों में व्राचड, लाट, वैदर्भ, वार्वर, आवन्त्य, पाञ्चाल, टाक्क, मालव, कैकय, गौड, उड्ड, हैव, पाण्ड्य, कौन्तल, सिंहल, कालिङ्ग, प्राच्य, कार्णाट, काञ्च, द्राविड, गौर्जर, आभीर और मध्यदेशीय इन तेईस अपभ्रंशों के जिन नामों का उल्लेख किया है वे उस भिन्न-भिन्न देश से ही संबन्ध रखते हैं जहाँ-जहाँ वह-वह भाषा उत्पन्न हुई है।[1] षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता ने 'शूरसेन[2] देश में उत्पन्न भाषा शौरसेनी कही जाती है, मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच-देशों की भाषा पैशाची और चूलिकापैशाची है' यह लिखते हुए यही बात अधिक स्पष्ट रूप मे कही है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से तत्सम आदि शब्दों की प्रकृति

पूर्व मे प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जो तीन प्रकार दिखाए हैं उनमे प्रथम प्रकार के तत्सम शब्द संस्कृत से ही सब देशों के प्राकृतो मे लिये गए हैं, दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी काल-क्रम से भिन्न-भिन्न देश मे भिन्न-भिन्न रूप को प्राप्त हुए हैं और तीसरे प्रकार के देश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैयाकरणों का यही मत है।

देश्य शब्द

मूल

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये तृतीय प्रकार के देशीशब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पंजाब और मध्यदेश मे प्रचलित वैदिक काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पंजाब और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में उस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं उन्हीं से ये देशीशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य मे देशीशब्दों के अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ हयात थीं, इस बात का प्रमाण व्यास के महाभारत, भरत के नाट्यशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनों के ज्ञाताधर्मकथा, विपाकश्रुत, औपपातिकसूत्र तथा राजप्रश्नीय आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है[3]। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा', 'देशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ मे ही किया गया है। चंड ने अपने प्राकृत व्याकरण मे जहाँ देशीप्रसिद्ध[4] प्राकृत

---

१. ये श्लोक 'पैशाची' और 'अपभ्रंश' के प्रकरण मे दिए गए हैं।

२. 'शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते।
मगधोत्पन्नभाषा तां मागधीं सम्प्रचक्षते।
पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत्॥" (षड्भाषाचन्द्रिका, पृष्ठ २)।

३ "नानाचर्मभिराच्छन्ना नानाभाषाश्च भारत। कुशला देशभाषासु जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वरा" (महाभारत, शल्यपर्व ४६, १०३)।
"अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि देशभाषाविकल्पनम्।"
"अथवा च्छन्दतः कार्या देशभाषा प्रयोक्तृभिः" (नाट्यशास्त्र १७, २४, ४६)।
"नात्यन्तं संस्कृतेनैव नात्यन्तं देशभाषया। कथां गोष्ठीषु कथयंल्लोके बहुमतो भवेत्" (कामसूत्र १, ४, ५०)।
"तते णं से मेहे कुमारे ...... अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए ...... होत्था", "तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ अड्ढा.. ...... अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (ज्ञाताधर्मकथासूत्र, पत्र ३८, ९२)।
"तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया णाम गणिया होत्था.. ...अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (विपाकश्रुत, पत्र २१-२२)।
'तए णं दढपइण्णे दारए ...... अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औपपातिक सूत्र, पेरा १०९)।
"तए णं से दढपतिण्णे दारए.. ...... अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" (राजप्रश्नीयसूत्र, पत्र १४८)।

४ "सिद्धं प्रसिद्धं प्राकृतं त्रेधा त्रिप्रकारं भवति—संस्कृतयोनि ...... ,संस्कृतसमं .. ,देशीप्रसिद्धं तच्चेद हर्षितं = ल्हसिअं"(प्राकृतलक्षण पृष्ठ १-२)।

[illegible] उल्लेख किया है वहाँ भी, देशी शब्द का अर्थ देशीभाषा ही है। ये सब देशी या प्रादेशिक भाषाएँ भिन्न-भिन्न प्रदेशों [illegible] भाषाएँ थीं। इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की कथ्य भाषा के साथ अनेक [illegible] था वैसे किसी किसी अंश में भेद भी था। जिस जिस अंश में इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश [illegible] था उनमें से जिन भिन्न-भिन्न नामों ने और धातुओं ने प्राकृतसाहित्य में स्थान पाया है वे ही हैं [illegible] देशी या देश्य शब्द।

[illegible] इन समस्त देश्य शब्दों में अनेक नाम और धातुओं को संस्कृत नामों के और धातुओं के [illegible] तद्भव-विभाग में अन्तर्गत किए हैं। यही कारण है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी [illegible] केवल देशी नामों का ही संग्रह किया है और देशी धातुओं का अपने प्राकृत-व्याकरण में संस्कृत धातुओं के आदेश-रूप से उल्लेख किया है, यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों ने इनकी गणना देशी धातुओं में ही [illegible]। ये सब नाम और धातु संस्कृत के नाम और धातुओं के आदेश-रूप से निष्पन्न करने पर भी तद्भव नहीं कहे जा [illegible] संस्कृत के साथ इनका कुछ भी सादृश्य नहीं है।

कोई कोई पाश्चात्य भाषातत्त्वज्ञ का यह मत है कि उक्त देशी शब्द और धातु भिन्न भिन्न देशों की द्राविड़, मुण्डा [illegible] भाषाओं से लिए गए हैं। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक अनार्य भाषाओं में इन देशी-[illegible] का प्रयोग उपलब्ध हो तो यह अनुमान करना असंगत नहीं है। किन्तु जबतक यह प्रमाणित न हो [illegible] शब्द और धातु वर्तमान अनार्य भाषाओं में प्रचलित हैं, तबतक 'ये देशी शब्द और धातु प्रादेशिक आर्य [illegible] गृहीत हुए हैं' यह कहना ही अधिक संगत प्रतीत होता है। इन अनार्य भाषाओं में दो एक देश्य शब्द और [illegible] भी ये अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत भाषाओं में लिए गए हैं' यह अनुमान न कर 'प्राकृत भाषाओं [illegible] शब्द और धातु अनार्य भाषाओं में गए हैं' यह अनुमान किया जा सकता है। हाँ, जहाँ ऐसा अनुमान [illegible] हम यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होंगे कि 'ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं से ही [illegible] आर्य और अनार्य ये उभय जातियाँ जब एक स्थान में मिलित हो गई हैं तब कोई कोई [illegible] शब्द और धातु [illegible] भाषाओं में प्रवेश करना असंभव नहीं है।

[illegible] (P. [illegible] II) [illegible] के मत में वैदिक और लौकिक संस्कृत में भी अनेक शब्द द्राविड़ीय भाषाओं [illegible] है। यह बात भी संदिग्ध ही है, क्योंकि द्राविड़ीय भाषा के जिस साहित्य में ये सब शब्द पाये जाते हैं वह [illegible] साहित्य से प्राचीन नहीं है। इससे 'वैदिक साहित्य में ये सब शब्द द्राविड़ीय भाषा से गृहीत हुए हैं' [illegible] की भाषा से ही अनार्यों की भाषा में ये सब शब्द लिए गए हैं' यह अनुमान ही [illegible] प्रतीत होता है।

[illegible] देशी भाषाओं में से ये सब देशी शब्द प्राकृत साहित्य में गृहीत हुए हैं वे पूर्वोक्त प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं के [illegible] और उनकी समसामयिक हैं। खिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी के पहले ये सब [illegible] भाषाएँ प्रचलित थीं। इससे ये देश्य शब्द अर्वाचीन नहीं, किन्तु उतने ही प्राचीन हैं जितने कि वैदिक शब्द।

[illegible] स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति—वैदिक या लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु प्रथम स्तर की प्राकृतों से

[illegible] व्युत्पत्ति में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करते हुए प्राकृत भाषाओं की [illegible] शास्त्रों के टीकाकारों ने भी तद्भव और तत्सम शब्दों में स्थित

[illegible] देशीशब्द के १२७, १२२, १३८, १४६, १३९, १४१, १७४ संख्यक सूत्र और चतुर्थ पाद [illegible] ३०, ३१, ३२ संख्यक सूत्र।

[illegible]

'तत्' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है[1]। कतिपय प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

'प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्' (हेमचन्द्र प्रा० व्या०)।

'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते' (प्राकृतसर्वस्व)।

'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम्' (प्राकृतचन्द्रिका)।

'प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता' (षड्भाषाचन्द्रिका)।

'प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः' (प्राकृतसंजीवनी)।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द 'प्रकृति' शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोष में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है[2] और गौण या लाक्षणिक अर्थ तबतक नहीं लिया जाता जबतक मुख्य अर्थ में बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा[3] जन साधारण लेने में किसी तरह का बाध भी नहीं है। इससे उक्त व्युत्पत्ति के स्थान में 'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्' अथवा 'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्' यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त तीन प्रकारों में तत्सम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति उन्होंने संस्कृत मानी है, तीसरे प्रकार के देश्य शब्दों की नहीं, अथच देश्य को भी प्राकृत कहा है। इससे देश्य प्राकृत में यह व्युत्पत्ति[4] लागू नहीं होती। प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व के सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की मार्जित भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रखता है। अशिक्षित, अज्ञ और बालक लोग किसी काल में साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त देशों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कथ्य भाषा चालू रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होती है। शिक्षित लोगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत के प्रसंग में उस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी, यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत-भाषी पात्रों के उल्लेख से प्रमाणित होता है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो लौकिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इसको जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काल के पण्डित लोगों में संस्कृत की तरह और भिन्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की माफिक संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बालक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ-भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत-भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा किसी देश में किसी काल में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए 'संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है' इसकी अपेक्षा 'क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या लौकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं' यही सिद्धान्त विशेष युक्तिसंगत है। आजकल के भाषा तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर देखा जाता है। यह सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

---

१. 'प्रकृतेः संस्कृतादागतं प्राकृतम्' (वाग्भटालंकारटीका २, २), 'संस्कृतरूपायाः प्रकृतेरुत्पन्नत्वात् प्राकृतम्' (काव्यादर्श की प्रेमचन्द्र-तर्कवागीश-कृत टीका १, ३३)।

२. 'प्रकृतिर्योनिशिल्पिनोः। पौरामात्यादिलिंगेषु गुणसाम्यस्वभावयोः। प्रत्ययात् पूर्विकायां च' (अनेकार्थसंग्रह ८७६-७)।

३. 'स्वाम्यमात्यः सुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गबलानि च।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च॥ (अभिधानचिन्तामणि ३, ३७८)।
'यत् कात्यः—अमात्याद्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः' (अ० चि० ३, ३७८ की टीका)।

४. कोई कोई आधुनिक विद्वान् प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, देखो 'पाली-प्रकाश' का प्रवेशक पृष्ठ ३४-३६।

[illegible] का मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों से स्पष्ट प्रतीत [illegible]। [illegible] के एक श्लोक की व्याख्या में [illegible] की ग्यारहवीं शताब्दी के जैन-विद्वान् नमिसाधु [illegible] —

"[illegible] सकलो वचनव्यापारः प्रकृतिः, तत्र भवं सैव वा प्राकृतम्। आरि-[illegible] वचनमुच्यते। [illegible] विशेषान् [illegible] निभेदानाप्नोति। अत एव शास्त्रकृता [illegible] समस्तरणात् [illegible]।"

इस [illegible] का सारांश यह है कि—'प्रकृति' शब्द का अर्थ है लोगों का व्याकरण आदि के संस्कारों से रहित स्वाभाविक [illegible] प्राकृत। अथवा 'प्राक् कृत' पद से प्राकृत शब्द बना है, 'प्राक् कृत' का अर्थ है 'पहले किया गया'। [illegible] ग्रन्थों की भाषा आर्ष वचन में—सूत्र में अर्धमागधी कही गई है जो [illegible] और [illegible] भाषाओं का मूल है। यह अर्धमागधी भाषा ही प्राकृत है। यही प्राकृत, [illegible] संस्कार करने से भिन्नता को प्राप्त करता हुआ संस्कृत आदि [illegible] अर्धमागधी प्राकृत से संस्कृत और अन्यान्य प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। इसी कारण से [illegible] संस्कृत आदि बाद में निर्देश किया है। पाणिन्यादि व्याकरणों में बताए हुए नियमों के [illegible]।

"[illegible]" (द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका १, १८)।

"[illegible] गीयते।" (हेमचन्द्र-काव्यानुशासन, पृष्ठ १)।

[illegible] सिद्धसेन दिवाकर और आचार्य हेमचन्द्र जैसे समर्थ विद्वानों का जिनदेव की वाणी [illegible] 'कृत्रिम' कहने का भी रहस्य यही है कि प्राकृत जनसाधारण की मातृभाषा होने के [illegible] और संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप बनावटीपन से पूर्ण होने के हेतु कृत्रिम है।

---

१. [illegible] शौरसेनी च।

[illegible]" (काव्यालंकार २, १२)।

[illegible] (प्रकरण) से, [illegible] भाषा में था। यह बहुत काल से लुप्त हो [illegible] है।

[illegible] ॥१४॥

[illegible] गुणैर्नाभिभाविता ॥१५॥

[illegible]" (काव्यादर्श पृ० ६८-६६)।

२. [illegible]॥"

(आचारांगसूत्र [illegible] प्राचीन गाथा)।

"[illegible] प्राकृत [illegible]॥"

[illegible] और [illegible] की टीका पृ० १ में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत [illegible]।

[illegible]" (काव्या[illegible])। [illegible] प्राकृत-व्याकरण में प्राकृत की प्रकृति संस्कृत [illegible] क्योंकि [illegible] प्राकृत [illegible] की गई है और [illegible] कि व्याकरण-[illegible] और [illegible] काव्यानुशासन में प्रति-[illegible] की [illegible] प्रमाण [illegible]।

[illegible]।

केवल जैन विद्वानों मे ही यह मत प्रचलित न था, खिस्त की आठवीं शताब्दी के जैनेतर महाकवि वाक्पतिराज ने भी अपने 'गउडवहो' नामक महाकाव्य मे इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों मे व्यक्त किया है '—

"[१]सयलाम्रो इम वाया विसति एत्तो य णेंति वायाम्रो ।
एंति समुद्द् चिय णेंति सायराम्रो च्चिय जलाइं ॥९३॥"

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा मे सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निर्गत हुई हैं, जल (आ कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र मे ही (वाष्प रूप से) बाहर होता है। वाक्पति के इस पद्य का मर्म यही है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि सस्कृत आदि सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

खिस्त की नवम शताब्दी के जैनेतर कवि राजशेखर ने भी अपने 'बालरामायण' मे नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

"यद् योनि किल सस्कृतस्य सुदृशा जिह्वासु यन्मोदते, यत्र श्रोत्रपथावतारिणि कटुर्भाषाक्षराणा रस' ।
गद्य चूर्णपद पद रतिपतेस्तत् प्राकृत यद्वचस्ताँल्लाटाल्ललिताङ्गि पश्य नुदती दृष्टेर्निमेषव्रतम् ॥" (४८, ४९)।

जैन और जैनेतर विद्वानों के उक्त वचनों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों मे भी यह मत प्रबल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति सस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा लौकिक सस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। वह यह कि प्राकृत के अनेक शब्द और प्रत्ययों का लौकिक सस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने मे आता है। प्राकृत भाषा साक्षाद्रूप से लौकिक सस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी सभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान हैं। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं, ताकि उक्त कथन की सत्यता मे कोई सदेह नहीं हो सकता।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१. प्राकृत मे अनेक जगह सस्कृत ऋकार के स्थान मे उकार होता है, जैसे—वृन्द = वुन्द, ऋतु = उउ, पृथिवी = पुहवी, वैदिक साहित्य मे भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं, जैसे—कृत = कुठ (ऋग्वेद १, ४६, ४)।

२ प्राकृत मे सयुक्त वर्णवाले कई स्थानों मे एक व्यञ्जन का लोप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है, जैसे—दुर्लभ = दूलह, विश्राम = वीसाम, स्पर्श = फास, वैदिक भाषा मे भी वैसा होता है, यथा—दुर्लभ = दूळभ (ऋग्वेद ४, ९, ८), दुर्णाश = दूणाश (शुक्लयजु प्रातिशाख्य ३, ४३)।

३. सस्कृत व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत मे सर्वत्र लोप होता है, जैसे—तावत् = ताव, यशस् = जस, वैदिक साहित्य मे भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—पश्चात् = पश्चा (अथर्वसहिता १०, ४, ११), उच्चात् = उच्चा (तैत्तिरीयसहिता २, ३, १४), नीचात् = नीचा (तैत्तिरीयसहिता १, २, १४)।

४ प्राकृत मे संयुक्त र और य का लोप होता है, जैसे—प्रगल्भ = पगब्भ, श्यामा = सामा, वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—अ-प्रगल्भ = अ-पगल्भ (तैत्तिरीयसहिता ४, ५, ६१), त्र्यच = त्रिच (शतपथब्राह्मण १, ३, ३, ३३)।

५ प्राकृत मे सयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, यथा—पात्र = पत्त, रात्रि = रत्ति, साध्य = सज्झ इत्यादि, वैदिक भाषा मे भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोदसीप्रा = रोदसिप्रा (ऋग्वेद १०, ८८, १०), अमात्र = अमत्र (ऋग्वेद ३, ३६, ४)।

६. प्राकृत मे सस्कृत द का अनेक जगह ड होता है, जैसे—दण्ड = डण्ड, दंस = डंस, दोला = डोला, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं है, जैसे—दुर्दभ = दूडभ (वाजसनेयसंहिता ३, ३६), पुरोदास = पुरोडाश (शुक्ल-यजु प्रातिशाख्य ३, ४४)।

---

१. सकला इद वाचो विशन्तीतश्च निर्यन्ति वाच । आयन्ति समुद्रमेव निर्यन्ति सागरादेव जलानि ॥९३॥

[illegible] प्राकृत में [illegible] होता है, यथा—बहिर = बहिर [illegible] = बाह. वेद-भाषा में भी ऐसा पाया जाता है, [illegible] (तैत्तिरीय [illegible] २, ८)।

८. प्राकृत में अनेक शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वर का आगम होता है, जैसे—क्लिष्ट = किलिट्ठ, [illegible] = [illegible]। वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग विरल नहीं हैं, यथा—सहस्र्य = सहस्रिय, स्वर्ग = सुवर्ग [illegible]) तन्व = तनुव स्व = सुव (तैत्तिरीयआरण्यक ७ २२, १, ६, २, ७)।

[illegible] प्राकृत में अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के प्रथमा के एकवचन में ओ होता है, जैसे—देवो, जिणो, सो इत्यादि. [illegible] प्रथमा के एकवचन में कहीं-कहीं ओ देखा जाता है, यथा—संवत्सरो अजायत (ऋग्वेदसंहिता १०, १९०, [illegible] १९०, [illegible])।

१०. तृतीया विभक्ति के बहुवचन में प्राकृत में देव आदि अकारान्त शब्दों के रूप देवेहि, गंभीरेहि, जेट्ठेहि [illegible]। वैदिक साहित्य में भी इसीके अनुरूप देवेभि, गम्भीरेभि, ज्येष्ठेभि आदि रूप मिलते हैं।

[illegible] प्राकृत की तरह वैदिक भाषा में भी चतुर्थी के स्थान में षष्ठी विभक्ति होती है[1]।

[illegible] प्राकृत में पञ्चमी के एकवचन में देवा, वच्छा, जिणा आदि रूप होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसी प्रकार के [illegible] प्रभृति उपलब्ध होते हैं।

[illegible] प्राकृत में द्विवचन के स्थान में बहुवचन ही होता है. वैदिक भाषा में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग [illegible]—'इन्द्रावरुणौ' के स्थान में 'इन्द्रावरुणा', 'मित्रावरुणौ' की जगह 'मित्रावरुणा', 'यौ सुरथौ रथितमौ [illegible]' के बदले 'या सुरथा रथीतमा दिविस्पृशा अश्विना', 'नरौ द्वौ' के स्थल में 'नरा द्वे' आदि।

इस तरह अनेक युक्ति और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु वैदिक संस्कृत [illegible] जिस प्रथम स्तर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्व में कही गई है उसीसे हुई है। इससे [illegible] आवश्यक है कि संस्कृत के अनेक आलंकारिकों ने और प्राकृत के प्रायः समस्त [illegible] 'तद्भव' शब्द का जो व्यवहार 'संस्कृतभव' अर्थ में किया है वह किसी तरह [illegible]। [illegible] 'तत्' शब्द से संस्कृत के स्थान में वैदिक काल के प्राकृत का ग्रहण कर 'तद्भव' शब्द [illegible] संस्कृत में लिया गया है उससे उत्पन्न' इसी अर्थ में करना चाहिए। [illegible] इन दोनों का साधारण मूल वैदिक काल का प्राकृत अर्थात् पूर्वोक्त प्राथमिक प्राकृत या [illegible]। इससे यहाँ पर 'तद्भव' शब्द का वैज्ञानिक अर्थ 'संस्कृतभव' नहीं, किन्तु 'वैदिक काल के प्राकृत से [illegible]' समझना चाहिए।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रधान भेद

[illegible] के अनुसार [illegible] वैदिक संस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और [illegible] संस्कृत [illegible] समस्त प्राकृत भाषाओं में [illegible] है, तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं [illegible] उसी साहश्य के तारतम्य पर निर्भर करता है जो [illegible] में पाया जाता है। जिस प्राकृत भाषा के तद्भव शब्दों का वैदिक और लौकिक [illegible] वह उतनी ही प्राचीन और जिसके तद्भव शब्दों का उभय संस्कृत के साथ [illegible] अर्वाचीन मानी जा सकती है, क्योंकि अधिक भेद के उत्पन्न होने में समय भी [illegible] है।

[illegible] साहित्य में [illegible] स्थान पाया है उनके [illegible] अनुसार [illegible] तीन मुख्य काल विभागों में बाँटे [illegible] ([illegible]), (३) शेष युग [illegible]

[1] [illegible]

प्रथम युग (ख्रिस्त-पूर्व ४०० से ख्रिस्त के बाद १००)

(क) हीनयान बौद्धों के त्रिपिटक, महावंश और जातक-प्रभृति ग्रन्थों की पाली भाषा।
(ख) पैशाची और चूलिकापैशाची।
(ग) जैन अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा।
(घ) अंग-ग्रन्थ-भिन्न प्राचीन सूत्रों की और पउम-चरिअ आदि प्राचीन ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) अशोक-शिलालेखों की एवं परवर्ति-काल के प्राचीन शिलालेखों की भाषा।
(च) अश्वघोष के नाटकों की भाषा।

मध्ययुग (ख्रिस्तीय १०० से ५००)

(क) त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों की और बाद के कालिदास-प्रभृति के नाटकों की शौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री भाषाएँ।
(ख) सेतुबन्ध, गाथासप्तशती आदि काव्यों की महाराष्ट्री भाषा।
(ग) प्राकृत व्याकरणों में जिनके लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं वे महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची भाषाएँ।
(घ) दिगम्बर जैन ग्रन्थों की शौरसेनी और परवर्ति-काल के श्वेताम्बर ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) चंड के व्याकरण में निर्दिष्ट और विक्रमोर्वशी में प्रयुक्त अपभ्रंश भाषा।

शेष युग (ख्रिस्तीय ५०० से १००० वर्ष)

भिन्न-भिन्न प्रदेशों की परवर्ती काल की अपभ्रंश भाषाएँ।

अब इन तीन युगों में विभक्त प्रत्येक भाषा का लक्षण और विशेष विवरण, उक्त क्रम के अनुसार (१) पालि, (२) पैशाची, (३) चूलिकापैशाची, (४) अर्धमागधी, (५) जैन महाराष्ट्री, (६) अशोकलिपि, (७) शौरसेनी, (८) मागधी, (९) महाराष्ट्री, (१०) अपभ्रंश इन शीर्षकों में क्रमशः दिया जाता है।

---

(१) पालि

हीनयान बौद्धों के धर्म-ग्रन्थों की भाषा को पालि कहते हैं। कई विद्वानों का अनुमान है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से बना है[1]। 'पङ्क्ति' शब्द का अर्थ है 'श्रेणी'[2]। प्राचीन बौद्ध लेखक अपने ग्रन्थ में धर्म-शास्त्र की वचन-पङ्क्ति को उद्धृत करते समय इसी पालि शब्द का प्रयोग करते थे, इससे बाद के समय में बौद्ध धर्म-शास्त्रों की भाषा का ही नाम पालि हुआ। अन्य विद्वानों का मत है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से नहीं, परन्तु 'पल्लि' पर से हुआ है। पल्लि' शब्द असल में संस्कृत नहीं, परन्तु प्राकृत है, यद्यपि अन्य अनेक प्राकृत शब्दों की तरह यह भी पीछे से संस्कृत में लिया गया है। पल्लि शब्द जैनों के प्राचीन अंग ग्रन्थों में भी पाया जाता है[3]। 'पल्लि' शब्द का अर्थ है ग्राम या गाँव। 'पालि' का अर्थ गाँवों में बोली जाती भाषा—ग्राम्य भाषा—होता है। 'पङ्क्ति' पर से 'पालि' होने की कल्पना जितनी क्लेश साध्य है 'पल्लि' पर से 'पालि' होना उतना ही सहज-बोध्य है। इससे हमें पिछला मत ही अधिक संगत मालूम होता है। 'पालि' केवल ग्रामों की ही भाषा थी, इससे उसका यह नाम हुआ है यह बात नहीं है। बल्कि प्रदेश-विशेष के ग्रामों की तरह शहरों के भी जन-साधारण की यह भाषा थी, परन्तु संस्कृत के अनन्य-भक्त

निर्देश और व्युत्पत्ति

---

१ "पङ्क्ति = पक्ति = पति = पटिट = पटि = पलि = पल्लि = पालि, अथवा पङ्क्ति = पत्ति = पट्टि = पल्लि = पालि" (पालिप्रकाश, प्रवेशक, पृष्ठ ९)।

२ "सेतुस्सि तन्तिपन्तीसु नालियं पालि कथ्यते" (अभिधानप्रदीपिका ९९६)।

३ देखो, विपाकश्रुत (पत्र ३८, ३९)।

[illegible] से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक घृणा[1] को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना [illegible] हो जाने के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना आश्चर्य-[illegible] नहीं मालूम पड़ता।

[illegible] भाषा समूह में पालि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक साहश्य देखा जाता है। इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं में पालि भाषा सर्वापेक्षा प्राचीन मालूम पड़ती है।

पालि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है। बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से इस भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है। परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई [illegible] नहीं है। डॉ॰ कोनो (Dr. Konow) और सर ग्रियर्सन ने इस भाषा का पैशाची भाषा के साथ साहश्य देखकर पैशाची भाषा जिस देश में प्रचलित थी उसी देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है, यद्यपि पैशाची भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतैक्य नहीं है। डॉ॰ कोनो के मत से पैशाची भाषा का उत्पत्ति-स्थान विन्ध्याचल का दक्षिण प्रदेश है और सर ग्रियर्सन [illegible] '[illegible] उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रान्त है, वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि कोंकण-[illegible] इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ उसने पालि भाषा की उत्पत्ति हुई हो।' परन्तु पालि भाषा अशोक के गुजरात-[illegible] गिरनार के शिलालेख के अनुरूप होने के कारण यह मगध में नहीं, किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त में उत्पन्न [illegible] में सिंहल देश में ले जाई गई है' यही मत विशेष संगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त उदाहरणों से [illegible] गिरनार-शिलालेख के साथ साहश्य और पूर्व-प्रान्त स्थित धौलि (खंडगिरि) शिलालेख के साथ पार्थक्य देखा जाता है—

संस्कृत	पालि	गिरनारशिला॰	धौलिशिला॰
[illegible]	[illegible], [illegible]	राञो	लजिने
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] मुनि [illegible] चटर्जी का कहना है कि 'बुद्धदेव[2] के समस्त उपदेश मागधी भाषा में [illegible] के समय [illegible] शौरसेनी प्राकृत में अनुवादित हुए थे और वे ही [illegible] सौ वर्ष में पालि-भाषा के [illegible]। [illegible] पालि भाषा का शौरसेनी और मागधी की अपेक्षा पैशाची के साथ ही [illegible] साहश्य है, जो निम्नोक्त उदाहरणों से स्पष्ट जाना जाता है।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	० ([illegible])	० ([illegible])
[illegible]	ग ([illegible])	ग ([illegible])	० ([illegible])	० ([illegible])
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	० ([illegible])
[illegible]	[illegible]	ज ([illegible])	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	र ([illegible])	ल ([illegible])

1 [illegible]

2 [illegible] (ध[illegible], पृ॰ [illegible])।

3 [illegible] Vol. I, p. 57.

4 [illegible]

5 [illegible]

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
श (वश)	स (वस)	स (वस)	स (वस)	श (वश)
ष (मेष)	स (मेस)	स (मेस)	स (मेस)	श (मेश)
स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	श (शालश)
न (वचन)	न (वचन)	न (वचन)	ण (वअण)	ण (वअण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पस्ट)
र्थ (अर्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	स्त (अस्त)
स्[1] (वृक्ष.)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ए (लुक्खे)

उत्पत्ति-समय

पालि भाषा की उत्पत्ति का समय खिस्त के पूर्व षष्ठ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु वह काल बुद्धदेव की समसामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पालि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य की भाषा है। सम्भवतः यह भाषा खिस्त के पूर्व चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में उत्पन्न हुई थी।

इस पालि-भाषा से आधुनिक सिंहली भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत शब्द से साधारणतः पालि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही समझी जाती हैं। इससे, और पालि भाषा के अनेक स्वतन्त्र कोष होने से, प्रस्तुत कोष में पालि भाषा के शब्दों को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए पालि भाषा की विशेष आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

निदर्शन

गुणाढ्य ने [2]बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी थी, जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण प्राकृतप्रकाश, आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृत-सर्वस्व और संक्षिप्तसार आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल-चरित तथा [3]काव्यानुशासन में, मोहराज-पराजय नामक नाटक में और दो-एक षड्भाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में पैशाची नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती [4]रुद्रट, [5]केशवमिश्र आदि संस्कृत के आलंकारिकों ने इसका उल्लेख किया है। वाग्भट ने इस भाषा को [6]'भूतभाषित' के नाम से अभिहित की है।

विनियोग

[7]वाग्भट तथा [8]केशवमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और [9]षड्भाषा-चन्द्रिकाकार ने राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

---

१. पुंलिंग में प्रथमा के एक वचन का प्रत्यय।

२. आचार्य उद्द्योतन की कुवलय माला मे, दण्डी के काव्यादर्श में, बाण के हर्षचरित मे, धनञ्जय के दशरूपक में, सुबन्धु की वासवदत्ता मे और अन्यान्य प्राकृत-संस्कृत ग्रंथो मे इसका उल्लेख पाया जाता है। क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेवभट्ट-प्रणीत कथासरित्सागर इसी बृहत्कथा का संस्कृत अनुवाद है। इस बृहत्कथा के ही भिन्न-भिन्न अंशो के आधार पर बाण, श्रीहर्ष, भवभूति आदि संस्कृत के महाकवियो की कादम्बरी, रत्नावली, मालतीमाधव-प्रभृति अनेक संस्कृत ग्रंथो की रचना की गई है।

३. पृष्ठ २२९, २३३।

४. काव्यालंकार २, १२।

५. 'संस्कृतं प्राकृतं चैव पैशाची मागधी तथा' (अलङ्कार शेखर, पृष्ठ ५)।

६. 'संस्कृतं प्राकृतं तस्यापभ्रंशो भूतभाषितम्' (वाग्भटालङ्कार २, १)।

७ 'यद् भूतैरुच्यते किञ्चित् तद्भौतिकमिति स्मृतम्' (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

८. 'पैशाचीं तु पिशाचाद्याः प्राहुः' (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

९. रक्षःपिशाचनीचेषु पैशाचीद्वितयं भवेत् ॥३५॥' (षड्भाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

[illegible] प्राकृतचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे [illegible] के श्लोकों को उद्धृत करते हैं —

'[illegible] [illegible]नेपाल[illegible]तथा ।
[illegible] [illegible]नाम्नथा ।
[illegible] पिशाचदेशा [illegible]'

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के

'काञ्चीदेशीयपाण्ड्ये च पाञ्चाल गौड-मागधम् ।
व्राचड दाक्षिणात्य च शौरसेन च कैकयम् ॥
शाबरं द्राविडं चैव एकादश पिशाचजाः ।'

इस वचन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके [illegible] में इन तीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है, यथा—'कैकय शौरसेन च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्य'।

[illegible] और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश [illegible] दूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं। इतने दूरवर्ती प्रदेश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं? [illegible] पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों में रहनेवाली किसी जाति विशेष की भाषा हो तो [illegible] इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल में किसी एक देश विशेष में रहनेवाली पिशाच-प्राय मनुष्य-जाति [illegible] भिन्न भिन्न देशों में फैली हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो। मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर [illegible] प्रदेशों की भाषा है, इससे यह भी संभव है कि यह पहले कैकय देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसी के [illegible] शूरसेन और पञ्चाल तक फैल गई हो। मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची कही है इससे [illegible] भी हो सकता है। सर ग्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान [illegible] अफगानिस्थान का प्रान्त प्रदेश है और बाद में वहाँ से ही संभवत उसका अन्य देशों में [illegible] है। किन्तु डा. होर्नले का इस विषय में और ही मत है। उनका कहना यह है कि अनार्य जाति के लोग [illegible] भाषा का [illegible] रूप से उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा [illegible] भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है। हमें सर ग्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक [illegible] मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश में मिलता जुलता है।

[illegible] शौरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन [illegible] भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शौरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय-पैशाची को [illegible] है। पाञ्चाल पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके [illegible]) के जो उदाहरण दिये हैं इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल [illegible] कैकय पैशाची से [illegible] और [illegible] के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुतरां [illegible] पाञ्चाल पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय-पैशाची ही हो सकती है।

[illegible] कि मार्कण्डेय ने [illegible] उन पर से शौरसेन पैशाची का

[illegible] प्रदेश का नाम कैकय, [illegible] का नाम [illegible] प्रदेश का नाम [illegible], [illegible]

[illegible]

[illegible]

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी संवन्ध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैकय-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो भेद उन्होंने वतलाए हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेनी के। इससे इनको शोरसेन-पैशाची न कह कर मागध-पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भलीभाँति दिखा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, सस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग मे उस प्रदेश मे प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल सस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग मे भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग का पैशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा संभवत इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा मे रची गई थी, किन्तु वह आजकल उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और काव्य मे पैशाची भाषा के जो निदर्शन पाते है वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा खिस्त की द्वितीय शताब्दी से पॉचवीं शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

समय।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस-जिस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों मे वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

लक्षण

वर्ण-भेद

१. ज्ञ, न्य और ण्य के स्थान मे ञ्ञ होता है, यथा—प्रज्ञा = पञ्ञा; ज्ञान = ञ्ञान, कन्यका = कञ्ञका, अभिमन्यु = अभिमञ्ञु, पुण्य = पुञ्ञ।

२. ण और न के स्थान मे न होता है, जैसे—गुण = गुन, कनक = कनक।

३ त और द की जगह त होता है, जैसे—भगवती = भगवती, शत = सत, मदन = मतन, देव=तेव।

४. लकार ळ मे वदलता है, यथा—सील=सीळ, कुल = कुळ।

५ ट्ठ की जगह ट्ठ और तु होता है, जैसे—कुटुम्वक, कुटुम्वक, कुतुम्वक।

६. महाराष्ट्री के लक्षण मे असंयुक्त-व्यञ्जन-परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अंकवाले जो नियम वतलाए गए हैं वे शौरसेनी भाषा मे लागू होते है, किन्तु पैशाची में नहीं, यथा—लोक = लोक; शाखा = साखा, भट = भट, मठ = मठ, गरुड = गरुड, प्रतिभास = पतिभास, कनक = कनक, शपथ = सपथ, रेफ = रेफ, शवल = सवळ, यशस् = यस, करणीय = करणीय, अगार = इंगार, दाह = दाह।

७. यादृश आदि शब्दों का दृ परिणत होता है ति में, यथा—यादृश = यातिस, सदृश = सतिस।

नाम-विभक्ति

१ अकारान्त शब्द की पञ्चमी का एकवचन आतो और आतु होता है, जैसे—जिनातो, जिनातु।

आख्यात

१ शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों की जगह ति और ते होता है; यथा—गच्छति, गच्छते, रमति, रमते।

२ भविष्य-काल मे स्सि के वदले एय्य होता है, जैसे—भविष्यति = हुवेय्य।

३ भाव और कर्म मे ईअ तथा इज्ज के स्थान मे इय्य होता है, यथा—पठ्यते = पठिय्यते, हसिय्यते।

कृदन्त

१ त्वा प्रत्यय के स्थान मे कहीं तून और कहीं त्थून और द्धून होते है, यथा पठित्वा = पठितून, गत्वा = गन्तून, नष्ट्वा = नत्थून, नद्धून, तष्ट्वा = तत्थून, तद्धून।

(३) चूलिकापैशाची

चूलिकापैशाची भाषा के लक्षण आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में और पण्डित लक्ष्मीधर ने अपनी षड्भाषाचन्द्रिका में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालचरित और काव्यानुशासन में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हम्मीरमदमर्दन नामक नाटक में और दो-एक छोटे-छोटे षड्भाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ नमूने देखने में आते हैं।

[illegible] प्राकृतलक्षण, प्राकृतप्रकाश, संक्षिप्तसार और प्राकृतसर्वस्व वगैरः प्राकृत-व्याकरणों में और संस्कृत के अलंकार ग्रन्थों में चूलिकापैशाची का कोई उल्लेख नहीं है, अथ च आचार्य हेमचन्द्र ने और पं॰ लक्ष्मीधर ने चूलिकापैशाची के जो लक्षण दिए हैं वे [illegible] वररुचि, क्रमदीश्वर और मार्कण्डेय प्रभृति वैयाकरणों ने पैशाची भाषा के लक्षणों में ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि उन वैयाकरणगण चूलिकापैशाची को पैशाची भाषा के अन्तर्भूत ही मानते थे, स्वतन्त्र भाषा के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानचिन्तामणि नामक संस्कृत कोष ग्रन्थ के "भाषा षड् [illegible] (काण्ड २,१९९) इस वचन की 'संस्कृत-प्राकृत-मागधी-शौरसेनी-[illegible]' यह व्याख्या करते हुए चूलिकापैशाची का अलग उल्लेख नहीं करते। इससे मालूम पड़ता है कि वे भी चूलिकापैशाची को पैशाची का ही एक भेद मानते हैं। हमारा भी यही मत है। इससे यहाँ पर इस [illegible] पैशाची भाषा के [illegible] प्रकरण में कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और [illegible] पं॰ लक्ष्मीधर ने इस भाषा के जो लक्षण दिए हैं वे नीचे उद्धृत किए जाते हैं। इनके सिवा सभी अंशों में इस भाषा का पैशाची से कोई पार्थक्य नहीं है।

लक्षण

१. वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है[1], यथा—नगर = नकर, [illegible] = [illegible], राजा = राचा, निर्झर = निच्छर, तडाग = तटाक, ढक्का = ठक्का, मदन = मतन, मधुर = मथुर, [illegible] = [illegible], भगवती = फकवती।
२. र के स्थान में विकल्प से ल होता है, यथा—रुद्र = लुद्द, रुद्द।

(४) अर्धमागधी

भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषा में देते थे[2]। इसी उपदेश के अनुसार उनके समसामयिक [illegible] अर्धमागधी भाषा में ही आचाराङ्ग-प्रभृति सूत्र-ग्रन्थों की रचना की थी[3]। ये ग्रन्थ उस समय लिखे नहीं गए थे, [illegible] परम्परा से कण्ठ-पाठ द्वारा संरक्षित होते थे। दिगम्बर जैनों के मत में ये समस्त ग्रन्थ विलुप्त हो गए हैं, परन्तु श्वेताम्बर जैन दिगम्बरों के इस मन्तव्य से सहमत नहीं हैं। श्वेताम्बरों के मत के अनुसार ये सूत्र ग्रन्थ महावीर-निर्वाण के बाद ९८० अर्थात् विक्रमाब्द ५१० में वलभी (वर्तमान वळा, [illegible]) में श्री देवर्धिगणि क्षमाश्रमण ने वर्तमान आकार में लिपिबद्ध किए। उस समय [illegible] [illegible] आदि प्रारम्भ हुई। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों ने कण्ठ-पाठ-द्वारा बहु शताब्दियों [illegible] [illegible] जैन मुनियों ने भी अपनी शिष्य-परम्परा से मुख-पाठ द्वारा करीब एक हज़ार वर्ष तक [illegible]। दूसरा यह है कि जैन धर्म में सूत्र-पाठों के शुद्ध उच्चारण के लिए खूब ज़ोर दिया [illegible] [illegible] का विपरीत उच्चारण करने में दोष माना गया है। फिर भी सूत्र-[illegible] [illegible] यह मानना ही पड़ेगा कि भगवान् महावीर के समय की अर्ध-

---

[1] [illegible] (हे॰ प्रा॰ ४, ३२५)।

[2] [illegible]।

[illegible]

[3] [illegible]

मागधी भाषा के इन ग्रन्थों में, अज्ञातभाव से ही क्यों न हो, भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना असभव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह शब्द-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान है। इतना ही नहीं, बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे[1] और कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ-साथ अवश्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव कण्ठ-पाठ के रूप मे स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना, अन्तत: उस-उस समय के लोंगो को समझाने के उद्देश्य से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान् महावीर के निर्वाण से करीब दो सो वर्ष के बाद (खिस्त-पूर्व ३१०) चन्द्रगुप्त के राजत्व-काल मे मगध देश मे बारह वर्षो[2] का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को निर्वाह के लिए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (दक्षिण देश) मे जाना पड़ा था। उस समय वे सूत्र ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हे भूल से गए थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में संघ ने एकत्रित होकर जिस-जिस साधु को जिस-जिस अङ्ग ग्रन्थ का जो-जो अश जिस-जिस आकार मे याद रह गया था, उस उस से उस-उस अङ्ग ग्रन्थ के उस-उस अश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया[3]। इस घटना से जैसे अङ्गग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ मे आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा मे, मगध के पार्श्ववर्ती प्रदेशो की भाषाओं की तुलना मे दूरवर्ती महाराष्ट्रप्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश मे प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि उक्त दीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्ती इस दक्षिण देश मे ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नही है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योकि उसके विना उपदेश-द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि उन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव, उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को लेकर उनमे से कईएक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे, जिससे अङ्गों के पुन सकलन मे उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश मे स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद वलभी (सौराष्ट्र) और मथुरा मे जैन ग्रन्थों को लिपि बद्ध करने के लिए मुनि-समेलन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य जो जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनका भी क्रमश. विस्मरण हो चला था और यदि वही दशा कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समग्र जैन शास्त्रों के लोप हो जाने का डर था जो वास्तव मे सत्य था। संभवत: इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशो मे विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या मे आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों मे योग-दान किया था। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अश जिस रूप मे प्राप्त हुआ उसी रूप मे वह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनियों के भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे चिर-काल तक विचरने के कारण उन प्रदेशों की भिन्न-भिन्न भाषाओं का,

---

१. "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धंत।
थीबालवायणत्थं पाययमुइय जिणवरेहिं ॥"
(आचारदिनकर मे श्रीवर्धमानसूरि द्वारा उत्धृत की हुई प्राचीन गाथा)।
"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणा नृणा चारित्रकाङि्क्षणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञै सिद्धान्त प्राकृत कृत ॥"
(हरिभद्रसूरि की दशवैकालिक टीका मे और हेमचन्द्र के काव्यानुशासन मे उद्धृत प्राचीन श्लोक)।

२. देखो Annual Report of Asiatic Society, Bengal, 1898 मे डॉ. हॉर्नलि का लेख।

३. "इतश्च तस्मिन् दुष्काले कराले कालरात्रिवत्। निर्वाहार्थं साधुसङ्घस्तीर नीरनिधेर्ययौ ॥५५॥
अगुण्यमान तु तदा साधूना विस्मृतं श्रुतम्। अनभ्यसनतो नश्यत्यधीत धीमतामपि ॥५६॥
संघोऽथ पाटलीपुत्रे दुष्कालान्तेऽखिलोऽमिलत्। यदङ्गाध्ययनोद्देशाद्यासीद् यस्य तदाददे ॥५७॥
ततश्चैकादशाङ्गानि श्रीसंघोऽमेलयत् तदा। दृष्टिवादनिमित्त च तस्थौ किञ्चिद् विचिन्तयन् ॥५८॥
नेपालदेशमार्गस्थ भद्रबाहु च पूर्विणम्। ज्ञात्वा संघ समाह्वातुं तत प्रैषीन्मुनिद्वयम् ॥५९॥
(स्थविरावलीचरितं, सर्ग ९)।

[illegible] प्राकृत भाषाओं के [illegible] धर्म-ग्रन्थों की भाषा [illegible] अंग-ग्रन्थों में, [illegible] ग्रन्थ के भिन्न भिन्न अंशों में और कहीं कहीं तो [illegible] परस्पर भाषा भेद नजर आता है। सम्भवतः भिन्न भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के [illegible] विक्रम की सप्तम शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि ने अपनी निशीथ-[illegible] यह वैकल्पिक लक्षण किया है। भाषा परिवर्तन के उक्त [illegible] की भाषा में, पाटलिपुत्र के सम्मेलन के बाद से, आमूल या [illegible] भाषा-भेद हुआ है और सेकड़ों की तादाद में उसके प्राचीन [illegible] सूत्रों के [illegible] उच्चारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-ग्रन्थ [illegible] पाटलिपुत्र के सम्मेलन के बाद निर्मित या दृढ़ किया गया था।

[illegible] उचित प्रतीत होता है कि [1]समवायांग सूत्र में निर्दिष्ट अंग-ग्रन्थ-[illegible] कहीं-कहीं जो थोड़ा-बहुत [illegible] बिगाड़ और ह्रास पाया जाता है [illegible] घटनाओं का जो उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसका [illegible] घटनाओं में [illegible] जाता है।

[illegible] सूत्र, [illegible] औपपातिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अन्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में [illegible] किया गया है, [illegible] और अनुयोगद्वारसूत्र में जिस भाषा को 'ऋषिभाषिता' कहा [illegible] गया है और [illegible] पर से [illegible] आचार्य हेमचन्द्र आदि ने जिस भाषा को 'आर्ष' [illegible] (ऋषियों की भाषा) [illegible] वह वस्तुतः एक ही भाषा है, अर्थात् अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्ष ये तीनों एक ही भाषा के भिन्न-भिन्न नाम हैं, जिनमें पहला उसके उत्पत्ति-स्थान से और [illegible] जैन सूत्रों की भाषा यही अर्ध-[illegible]। आचार्य हेमचन्द्र ने [illegible] प्राकृत व्याकरण में आर्ष प्राकृत के जो लक्षण और उदाहरण

[1] [illegible] १२५।

[illegible] पृष्ठ १, १—पत्र १६)।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बताए हैं उनसे तथा 'अत एत् सौ पुंसि मागध्याम्'[1] (हे० प्रा० ४, २८७) इस सूत्र की व्याख्या में जो "यदपि[2] "पोराणमद्धमागहभासानियय हवइ सुत्तं[3]" इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात्, न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" यह कहकर उसी के अनन्तर जो दशवैकालिक सूत्र से उद्धृत 'कयरे आगच्छइ, से तारिसे जिइंदिए" यह उदाहरण दिया है उससे उक्त बात निर्विवाद सिद्ध होती है।

डॉ जेकोबी ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है।[5] डॉ. पिशल ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण मे डॉ जेकोबी की इस बात का सप्रमाण खडन किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्ष और अर्धमागधी इन दोनो मे परस्पर भेद नहीं है, एव प्राचीन जैन सूत्रो की—गद्य और पद्य दोनों की भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है[6]। परवर्ती काल के जैन प्राकृत ग्रन्थो की भाषा अल्पाश मे अर्धमागधी की और अधिकाश मे महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती है, परन्तु प्राचीन जैन सूत्रो की भाषा को, जो शौरसेनी आदि भाषाओ की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई भी, अपनी उन अनेक खासियतो से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत मे दृष्टिगोचर नहीं होती है, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नही दिया जा सकता।

पडित बेचरदास अपने गुजराती प्राकृत-व्याकरण की प्रस्तावना मे जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को[7] प्राकृत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विफल चेष्टा करते हुए डॉ. जेकोबी से भी दो कदम आगे बढ गए है, क्योंकि डॉ जेकोबी जब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निबद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री बताते हैं तब पडित बेचरदास, प्राकृत भाषाओं के इतिहास जानने की तनिक भी परवाह न रखकर, अर्वाचीन महाराष्ट्री से इस प्राचीन अर्धमागधी को अभिन्न सिद्ध करने जा रहे है। पडित बेचरदास ने अपने सिद्धान्त के समर्थन मे जो दलीलें पेश की है वे अधिकाश मे भ्रान्त सस्कारों से उत्पन्न होने के कारण कुछ महत्त्व न रखती हुई भी कुतूहल-जनक अवश्य हैं। उन दलीलों का साराश यह है—(१) अर्धमागधी मे महाराष्ट्री से मात्र दो चार रूपों की ही विशेषता, (२) आचार्य हेमचन्द्र का इस भाषा के लिए स्वतन्त्र व्याकरण या शौरसेनी आदि की तरह अलग-अलग सूत्र न बनाकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या आर्ष प्राकृत मे ही इसको अन्तर्गत करना, (३) इसमे मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव, (४) निशीथचूर्णिकार के अर्धमागधी के दोनो मे एक भी लक्षण की इसमे असगति, (५) प्राचीन जैन ग्रन्थो मे इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्देश, (६) नाट्य-शास्त्र मे और प्राकृत-व्याकरणों मे निर्दिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता।

अर्धमागधी महाराष्ट्री से भिन्न है

---

१. मागधी भाषा मे अकारान्त पुलिंग शब्द के प्रथमा के एकवचन मे 'ए' होता है।

२. इसका अर्थ यह है कि प्राचीन आचार्यो ने "पुराना सूत्र अर्धमागधी भाषा मे नियत है" इत्यादि वचन-द्वारा आर्ष भाषा को जो अर्धमागधी भाषा कही है वह प्राय मागधी भाषा के इसी एक एकारवाले विधान को लेकर, न कि आगे कहे जानेवाले मागधी भाषा के अन्य लक्षण के विधान को लेकर।

३. इसी वचन के आधार पर डॉ. हॉर्नलि का चण्ड-कृत प्राकृतलक्षण के इन्ट्रोडक्शन (पृष्ठ १८-१९) मे यह लिखना कि हेमचन्द्र के मत मे 'पोराण' आर्ष प्राकृत का एक नाम है, भ्रम-पूर्ण है, क्योकि यहाँ पर 'पोराण' यह सूत्र का ही विशेषण है, भाषा का नही।

४. आवश्यकसूत्र के पारिष्ठापनिकाप्रकरण (दे० ला० पु० फ० पत्र ६२८) मे यह सपूर्ण गाथा इस तरह है —
"पुव्वावरसजुत्त वेरग्गकरं सततमविरुद्ध। पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं॥"

५ Kalpa Sutra, Sacred Books of the East, VoL. XII.

६ Grammatik dei Prākrit-Sprachen, 16-17

७ जैसे आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण मे महाराष्ट्री भाषा के अर्थ मे प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है वैसे पंडित बेचरदास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में, जो केवल हेमाचार्य के ही प्राकृत व्याकरण के आधार पर रचा गया है, सर्वत्र साहित्यिक महाराष्ट्री के अर्थ मे ही प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है।

प्रथम दलील के उत्तर में हमें यहाँ अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त में महाराष्ट्री से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो संक्षिप्त सूची दी गई है, वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डॉ. बनारसीदास की 'अर्धमागधी रीडर', मुनि रत्नचन्द्रजी की 'जैन सिद्धान्त कौमुदी' और डॉ. पिशल का 'प्राकृत व्याकरण' मौजूद है, जिनमें प्रचुर [illegible] संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का संग्रह है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के 'आर्षम्' सूत्र से, इसकी स्पष्ट और सर्व-भेद-ग्राही व्यापक व्याख्या से और जगह-जगह किए हुए आर्ष के सोदाहरण उल्लेखों से दूसरी दलील की निर्मूलता सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई दो-एक विशेषताओं के कारण चूलिकापैशाची अन्य भाषा मानी जा सकती है, अथवा आठ-दस विशेषताओं को लेकर शौरसेनी, मागधी और पैशाची भाषाओं को भिन्न-भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई वजह नहीं है कि उसी वैयाकरण के द्वारा प्रकारान्तर से अत्यन्त स्पष्ट रूप से बताई हुई वैसी ही अनेक विशेषताओं के कारण आर्ष या अर्धमागधी भी भिन्न भाषा न कही जाय। तीसरी दलील की जड़ यह भ्रान्त संस्कार है कि 'वही भाषा अर्धमागधी कही जाने योग्य हो सकती है, जिसमें मागधी भाषा का आधा अंश हो'। इसी भ्रान्त संस्कार के कारण चौथी दलील में उद्धृत निशीथचूर्णि के अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का सरल और सीधा अर्थ भी उक्त पंडितजी की समझ में नहीं आया है। इस भ्रान्त संस्कार का निराकरण और निशीथचूर्णिकार द्वारा बताए हुए अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का और इसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकरण में आगे चलकर आर्षमागधी के सूत्र की आलोचना के समय किया जायगा, जिससे इन दोनों दलीलों के उत्तरों को यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं दलील भी प्राचीन आचार्यों के द्वारा जैन सूत्र-ग्रन्थों की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द को 'महाराष्ट्री' के अर्थ में घसीटने से ही हुई है। मालूम पड़ता है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण में 'प्राकृत' शब्द को केवल महाराष्ट्री के लिए रिजर्व कर रखा है, वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' शब्द को भी वे एकमात्र महाराष्ट्री के ही अर्थ में मुकर्रर किया हुआ समझ बैठे हैं[3]। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत शब्द का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कथ्य भाषा – लोक-भाषा। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति भी वास्तव में इसी अर्थ से संगति रखती है यह हम पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं। खिस्त की षष्ठ शताब्दी के आचार्य दण्डी ने अपने काव्यादर्श में—

'शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी। याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु संनिधिम्॥' (१, ३५)।

इन सुस्पष्ट शब्दों में यही बात कही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत शब्द मुख्यतः प्रादेशिक लोक-भाषा का ही वाचक है और इससे साधारणतः सभी प्रादेशिक कथ्य भाषाओं के अर्थ में इसका प्रयोग होता आया है। दण्डी के समय तक के सभी प्राचीन ग्रंथों में इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार देखा जाता है। खुद दंडी ने भी महाराष्ट्री भाषा को [illegible] 'प्रकृष्ट' शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है[4]। दण्डी के महाराष्ट्री को 'प्रकृष्ट प्राकृत' कहने के बाद ही से [illegible] प्रसिद्धि होने के कारण, महाराष्ट्री के अर्थ में 'प्रकृष्ट' शब्द को छोड़कर केवल [illegible] शब्द का भी प्रयोग हेमचन्द्र आदि, किन्तु दण्डी से पीछे के ही विद्वानों ने, कहीं कहीं किया है। पंडितजी ने वररुचि [illegible] से लेकर [illegible] आचार्यों का महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार करने की जो बात उक्त टिप्पणी में [illegible] है [illegible] होता है कि उन्होंने न तो वररुचि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही [illegible] है, क्योंकि वररुचि ने तो 'शेषं महाराष्ट्रीवत्' (प्राकृतप्रकाश १२, ३२) कहते हुए इस [illegible] में महाराष्ट्री शब्द का ही प्रयोग किया है, न कि प्राकृत शब्द का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारपालचरित में 'पाइमाहि [illegible] (१, १) के [illegible] का निर्देश कर और देशीनाममाला (१, ४) में 'विशेष' शब्द लगाकर 'प्राकृत' का प्रयोग साधारण

१. [illegible] । आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' (हे० प्रा० १, ३)।

२. [illegible] १, ४६, १, ५७, १, ७९, १, ११८, १, १२१, १, १५१, १, १७७, १, २२८, १, [illegible] २, ८९, २, १०१, २, १०४, २, १४६, २, १७४, २, १६२, और ४, २८७ सूत्रों की व्याख्या।

३. [illegible] 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाना [illegible] आवे छे, अने [illegible] महाराष्ट्री नहीं।' (प्राकृ- [illegible] ।

४. 'महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः' (काव्यादर्श १, ३४)।

लोक-भाषा के ही अर्थ मे ही किया है। आचार्य दण्डी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि खिस्त की नववीं शताब्दी के कवि राजशेखर[1], ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसाधु[2], उन्नीसवीं शताब्दी के प्रेमचन्द्रतर्कवागीश प्रभृति[3] प्रभूत जैन और जैनेतर विद्वानों ने इसी अर्थ मे प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभ्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आजतक प्राकृत शब्द प्रादेशिक कथ्य भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणत. सभी और विशेषत. कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा भगवान् महावीर की उपदेश-भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुधर्मस्वामि-प्रणीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय मे प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्ध मगध-प्रदेश (जहाँ भगवान् महावीर और सुधर्मस्वामी का उपदेश और विचरण होना प्रसिद्ध है) की लोक-भाषा (अर्धमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर मगध से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महराष्ट्र (जहाँ न तो भगवान् महावीर का और न सुधर्मस्वामी का ही उपदेश या विहार होना जाना गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)' यह असगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना-शक्ति का परिचय देना है। इसी सिलसिले में पंडितजी ने अनुयोगद्वार सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि उक्त पडितजी अनुयोगद्वार की गाथा के पूर्वार्ध का यहाँ पर उल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ पाते और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते है इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिर्फ उत्तरार्ध-सहित इस गाथा पर ही प्रकरण-सगति के साथ जरा गौर से विचार करने का कष्ट उठाते, तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हवाला देने का साहस और अनुयोगद्वार के कर्त्ता पर अर्धमागधी के विस्मरण का व्यङ्ग-बाण छोड़ने की धृष्टता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है तृतीय अग-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र के सम्पूर्ण स्वर-प्रकरण को अनुयोगद्वार-सूत्र मे उद्धृत किया गया है जिसमे वह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है :—

"सक्कता पागता चेव दुहा भणिईओ आहिया। सरमडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता॥"

इसका शब्दार्थ है—"संस्कृत और प्राकृत ये दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (षड्ज-प्रभृति) में ऋषिभाषिता—आर्ष भाषा प्रशस्त है।" यहाँ पर प्रकरण है सामान्यत: गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार को अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार युक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों मे किया है। इस तरह इस गाथा में पहले गीत की भाषाओं का सामन्य रूप से निर्देश कर बाद मे इन भाषाओं में जो प्रशस्त है वह 'ऋषिभाषिता' इस विशेष रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का 'प्रादेशिक लोक-भाषा' यह सामान्य अर्थ न लेकर पंडितजी के कथनानुसार 'महाराष्ट्री' यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार को करना आवश्यक है, कैसे हो सकता है? क्या उस समय अन्य लोक-भाषाओं मे गीत होते ही न थे? गीत का ठेका क्या सस्कृत और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था? यह कभी सभावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के "पसत्था इसिभासिता" इस वचन से अर्धमागधी की सूचना ही नहीं, बल्कि उसका श्रेष्ठपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप मे बताया है। इससे पडितजी के उस कथन में कुछ भी सत्यांश नजर नहीं आता है, जो उनसे सूत्रकार के अर्धमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया गया है।

जैसे बौद्धसूत्रों की मागधी (पालि) से नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों मे निर्दिष्ट मागधी भिन्न है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी से नाट्य-शास्त्र की या प्राकृत व्याकरणों की अर्धमागधी भी अलग है। इससे बौद्धसूत्रों की मागधी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की मागधी से मेल न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा भी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की अर्धमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अर्धमागधी ही कही जा सकती है।

---

१. 'परुसो सक्कअ बंधो पाउअ-बंधोवि होइ सुउमारो' (कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

२. 'सूरसेन्यपि प्राकृतभाषैव, तथा प्राकृतमेवापभ्रंश' (काव्यालङ्कार-टिप्पण २, १२)।

३. 'सर्वासामेव प्राकृतभाषाणां'—(काव्यादर्श-टीका १, ३३), 'तादृशीरयनेन देशनामोपलक्षिता सर्वा एव भाषा' प्राकृतसंज्ञयोच्यन्त इति सूचितम्' (काव्यादर्श-टीका १, ३५)।

[illegible] नाट्य शास्त्र में जिन सात भाषाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है।[1] इसी [illegible] इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। इससे [illegible] अर्धमागधी कही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी और जैन सूत्रों की [illegible] अपेक्षा इतना अधिक भेद है कि वह एक दूसरे से अभिन्न कभी [illegible] नहीं कही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी भाषा के लक्षण बताकर उसी [illegible] अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—"[3]शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्धमागधी" [illegible] अर्थात् शौरसेनी भाषा के निकटवर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस लक्षण के [illegible] नाट्य शास्त्र के उस वचन को उद्धृत किया है, जिसमें अर्धमागधी के प्रयोगार्ह [illegible] पर चेट, राजपुत्र और सेठों की उक्ति का उल्लेख कर अर्धमागधी का [illegible] मालूम होता है कि भरत का अर्धमागधी विषयक उक्त वचन और मार्कण्डेय का [illegible] अर्धमागधी के लिए ही रचित है जैन सूत्रों की अर्धमागधी के साथ उसका कोई [illegible] है। [illegible] ने अपने प्राकृत व्याकरण में अर्धमागधी का जो लक्षण किया है वह यह है—"[4]महाराष्ट्रीमिश्रा [illegible] अर्थात् महाराष्ट्री से मिश्रित मागधी भाषा ही अर्धमागधी है। जान पड़ता है, क्रमदीश्वर का यह लक्षण भी [illegible] अर्धमागधी के [illegible] क्योंकि उक्त नाट्यशास्त्र में जिन पात्रों के लिए अर्धमागधी के प्रयोग का नियम [illegible] उन पात्रों की भाषा भिन्न भिन्न है। सम्भवतः इसी भिन्नता के कारण ही क्रमदीश्वर ने [illegible] भिन्न-भिन्न लक्षण किए हैं।

[illegible] जैन सूत्रों की अर्धमागधी में इतर भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री के लक्षण अधिक [illegible] है। [illegible] साहित्यिक महाराष्ट्री के लक्षण साहित्यिक महाराष्ट्री ने जैन अर्धमागधी में नहीं [illegible] अर्धमागधी भाषा साहित्यिक महाराष्ट्री भाषा से अधिक प्राचीन है और [illegible] अर्धमागधी महाराष्ट्री का मूल कही जा सकती है।[5] डॉ. हॉर्नले ने जैन अर्धमागधी [illegible] परवर्ती काल में उत्पन्न नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और [illegible] आर्ष नाम से एक भाषा के लक्षण किए हैं और उनके उदाहरण साधारण [illegible] परन्तु वहाँ अर्धमागधी के प्राचीन जैन ग्रन्थों से उदाहरण लिए हैं [illegible] है। इससे प्रतीत होता है कि आचार्य हेमचन्द्र ने भी एक ही भाषा के प्राचीन [illegible] महाराष्ट्री मानकर आर्ष प्राकृत को महाराष्ट्री का मूल आधार किया है।

[illegible] जो पाये जाते हैं उनसे मागधी में ही अर्धमागधी भाषा [illegible] भाषा के [illegible] न मिलने से यह अर्धमागधी कहलाने योग्य नहीं [illegible] अर्धमागधी शब्द को मागधी भाषा के प्राचीन

1. [illegible] (१७, ८८)।

2. [illegible] १७, ४८।

[illegible]

में ग्रहण करना, अर्थात् 'अर्ध मागध्या' यह व्युत्पत्ति कर 'जिसका अर्धांश मागधी भाषा वह अर्धमागधी' ऐसा करना। वस्तुत अर्धमागधी शब्द की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह अर्थ ही। अर्धमागधी शब्द की वास्तविक व्युत्पत्ति है 'अर्धमगधस्येयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध देश के अर्धांश की जो भाषा वह अर्धमागधी'। यही बात खिस्त की सातवीं शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि महत्तर ने निशीथचूर्णि नामक ग्रन्थ मे "पोराणमद्धमागहभासानियय हवइ सुत्त" इस उल्लेख के 'अर्धमागध' शब्द की व्याख्या के प्रसङ्ग में इन स्पष्ट शब्दों मे कही है —"मगहद्धविसयभासानिबद्ध अद्धमागह" अर्थात् मगध देश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होने के कारण प्राचीन सूत्र 'अर्धमागध' कहा जाता है।

अर्धमागधी शब्द की संगत-व्युत्पत्ति

परन्तु, अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध अथवा मगध और शूरसेन का मध्यवर्ती प्रदेश (अयोध्या) होने पर भी जैन अर्धमागधी मे मागधी और शौरसेनी भाषा के विशेष लक्षण देखने मे नहीं आते। महाराष्ट्री के साथ ही इसका अधिक सादृश्य नजर आता है। यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस सादृश्य का कारण क्या है? सर ग्रियर्सन ने अपने प्राकृत-भाषाओं के भौगोलिक विवरण मे यह स्थिर किया है कि जैन अर्धमागधी मध्यदेश (शूरसेन) और मगध के मध्यवर्ती देश (अयोध्या) की भाषा थी एव आधुनिक पूर्वीय हिन्दी उससे उत्पन्न हुई है। किन्तु हम देखते है कि अर्धमागधी के लक्षणो के साथ मागधी, शौरसेनी और आधुनिक पूर्वीय हिन्दी का कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्री प्राकृत और आधुनिक मराठी भाषा के साथ उसका सादृश्य अधिक है। इसका कारण क्या? किसीने अभीतक यह ठीक-ठीक नही बताया है। यह सम्भव है, जैसा हम पाटलिपुत्र के सम्मेलन के प्रसग मे ऊपर कह आये है, चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल मे (खिस्त-पूर्व ३१०) बारह वर्षों के अकाल के समय जैन मुनि-संघ पाटलीपुत्र से दक्षिण की ओर गया था। उस समय वहाँ के प्राकृत के प्रभाव से अंग-ग्रन्थों की भाषा का कुछ-कुछ परिवर्तन हुआ था। यही महाराष्ट्री प्राकृत का आर्ष प्राकृत के साथ सादृश्य का कारण हो सकता है।

जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-स्थान और उसका 'महाराष्ट्री' के साथ सादृश्य का कारण

सर आर. जि. भाण्डारकर जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-समय खिस्तीय द्वितीय शताब्दी मानते हैं। उनके मत मे कोई भी साहित्यिक प्राकृत भाषा खिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी से पहले की नहीं है। शायद इसी मत का अनुसरण कर डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपनी Origin and Development of Bengalee Language नामक पुस्तक मे (Introduction, page 18) समस्त नाटकीय प्राकृत-भाषाओं का और जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-काल खिस्तीय तृतीय शताब्दी स्थिर किया है। परन्तु त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटको का निर्माण-समय अन्तत. खिस्त की दूसरी शताब्दी के बाद का न होने से और अश्वघोष-कृत बौद्ध-धर्म-विषयक नाटकों के जो कतिपय अंश डॉ ल्युडर्स ने प्रकाशित किए हैं उनका समय खिस्त की प्रथम शताब्दी निश्चित होने से यह प्रमाणित होता है कि उस समय भी नाटकीय प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं। और डॉ ल्युडर्स ने यह स्वीकार किया है कि अश्वघोष के नाटकों मे जैन अर्धमागधी भाषा के निदर्शन है। इससे जैन अर्धमागधी की प्राचीनता का यह भी एक विश्वस्त प्रमाण है। इसके अतिरिक्त, डॉ जेकोबी जैन सूत्रों की भाषा और मथुरा के शिलालेखों (खिस्तीय सन् ८३ से १७६) की भाषा से यह अनुमान करते है कि जैन अग ग्रन्थों की अर्धमागधी का काल खिस्त-पूर्व चतुर्थ शताब्दी का शेष भाग अथवा खिस्त-पूर्व तृतीय शताब्दी का प्रथम भाग है। हम डॉ. जेकोबी के इस अनुमान को ठीक समझते है जो पाटलिपुत्र के उस सम्मेलन से सगति रखता है जिसका उल्लेख हम पूर्व कर चुके है।

उत्पत्ति-समय

सस्कृत के साथ महाराष्ट्री के जो प्रधान-प्रधान भेद है, उनकी सक्षिप्त सूची महाराष्ट्री के प्रकरण मे दी जायगी। यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्धमागधी की जो मुख्य-मुख्य विशेषताएँ है उनकी सक्षिप्त सूची दी जाती है। उससे अर्ध मागधी के लक्षणों के साथ महाराष्ट्री के लक्षणो की तुलना करने पर यह अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है कि महाराष्ट्री की अपेक्षा अर्धमागधी की वैदिक और लौकिक सस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्धमागधी की प्राचीनता का एक श्रेष्ठ प्रमाण कहा जा सकता है।

लक्षण

वर्ण-भेद

१ दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान मे प्राय सर्वत्र ग और अनेक स्थलो में त और य होता है, जैसे—

ग—प्रकल्प = पगप्प, आकर = आगर, आकाश = आगास, प्रकार = पगार, श्रावक = सावग, विवर्जक = विवज्जग, निषेवक = णिसेवग, लोक = लोग, आकृति = आगइ।

[illegible]—पत्र ३१७), [illegible] = सामाणिय (ठा० ३२२) विसुद्धिक = विसुद्धिअ (ठा० ३२२) पथिक = [illegible] ३६३), [illegible] = [illegible] (ठा० ३६३), [illegible] = रोमञ्जिन (ठा० ३६७), वीरासनिक = वीरासणिय (ठा० ३६७), [illegible] (ठा० ३६८) [illegible] = [illegible] (ठा० ३६६) सीमंतर = सीमंतय (ठा० ४५८), नरकात् = नरकातो (ठा० ४५८ [illegible] = [illegible] (ठा० ४५६), [illegible] = [illegible] (ठा० ४५६), सनत्कुमारेण = सणंकुमारेण (विपाकश्रुत—पत्र ७), [illegible] (विपा० ७ टि) [illegible] = [illegible] (विपा० ७), [illegible] = [illegible] (विपा ४ १८) इत्यादि।

ग—[illegible] = [illegible] = मोय वगैरह।

२. [illegible] प्रायः कायम रहता है। कहीं-कहीं उसका त और य होता है, जैसे—सागर = [illegible], [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], जागर = जागर [illegible] = [illegible], भगवन् = [illegible] (ठा० ३६७) [illegible] = सायर।

३. [illegible] अनादि [illegible] और ज के स्थान में त और य उभय ही होता है। य के उदाहरण, जैसे—नाराच = [illegible] (ठा० ३६८, ४५०), प्रवचन = पावयण (ठा० ४५१), [illegible] (विपा० १०, ३०), [illegible], [illegible] = [illegible], मोच = मोय, आचार्य = आयरिय। ज के कुछ निदर्शन ये हैं—[illegible] = [illegible] (सूय० २, १, १०) [illegible] (ठा० ३५७) पूजा = पूया (ठा० ३५८), [illegible] (ठा० ४५६), [illegible] = [illegible] (विपा० ४ टि), [illegible], [illegible], [illegible] = [illegible]।

४. [illegible] प्रायः कायम रहता है, कहीं-कहीं उसका य होता है, यथा—वन्दते = वदति, नमस्यति = नमसति, [illegible] (सूय २, ७, विपा—पत्र ६), [illegible] = [illegible] (सूय २, ६, ५), सतत = सतत (सूय १, १, ४, १२), [illegible] (ठा—पत्र ३१७) [illegible] (ठा० ३४६), धैवत = धेवत (ठा० ३६३), जाति = जाति, [illegible], [illegible] (विपा—४), [illegible], [illegible] (विपा० ६), [illegible] (विपा० ६, ७, ८), [illegible], [illegible] (विपा० ७, ८), [illegible] (विपा० १५, १६), [illegible]।

५. [illegible] और द ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं-कहीं य भी होता है, जैसे—

द—[illegible] (पण्ण), [illegible], [illegible] (सूय २, ७), [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] (ठा०—पत्र क्रमशः ३२१, ३६३, ४५८, ४५६) इत्यादि।

य—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] (ठा—पत्र क्रमशः ३१७, ३४६, ३६३, ३६७, ४५०, ४५१, ४५८, ४५६), [illegible], [illegible] (विपा० पत्र ४) इत्यादि।

[illegible] वगैरह।

६. [illegible] के स्थान में प्रायः सर्वत्र व ही होता है, यथा—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] इत्यादि।

७. [illegible] प्रायः कायम रहता है, अनेक स्थानों में इसका त देखा जाता है, जैसे—

[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] प्रभृति।

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] (ठा० पत्र क्रमशः ३१७, ३२२, ३३३, ३५७, ३५८, ३६३, ३६४ ३७०, ३८०, ३८६), [illegible] (ठा० ३२२, ३२४) इत्यादि।

८. [illegible] के स्थान में स, ष, और य होता है, यथा—

[illegible] (सूय १, १, ३, १३) इत्यादि।

[illegible] (ठा० ३५८ ३६३) इत्यादि।

[illegible] (ठा० ३४१) वगैरह।

९. [illegible] प्रायः सर्वत्र लोप होता है और [illegible] के स्थान में [illegible] नहीं होता। [illegible]

आता है। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अनुसार उक्त लुप्त व्यञ्जनों के दोनों तरफ अवर्ण (अ या आ) होने पर लुप्त व्यञ्जन के स्थान मे 'य्' होता है। 'गउडवहो' मे यह 'य्' अधिक मात्रा मे (उक्त व्यञ्जनों के पूर्व में अवर्ण-भिन्न स्वर रहने पर भी) पाया जाता है। परन्तु जैन अर्धमागधी मे, जैसा हम ऊपर देख चुके है, प्राय. उक्त व्यञ्जनों के स्थान मे अन्य अन्य व्यञ्जन होते है और कहीं कहीं तो वही व्यञ्जन कायम रहता है। हॉ, कहीं कहीं उक्त व्यञ्जनों के स्थान मे अन्य व्यञ्जन होने या वही व्यञ्जन रहने के बदले महाराष्ट्री की तरह लोप भी देखा जाता है, किन्तु यह लोप वहॉ पर ही देखने मे आता है जहॉ उक्त व्यञ्जनों के बाद अ या आ से भिन्न कोई स्वर होता है, जैसे—लोक. = लोअो, रोचित = रोइत, भोजिन् = भोइ, आतुर = आउर, आदेशि = आएसि, कायिक = काइय, आवेश = आएस वगैरह।

१०. शब्द के आदि मे, मध्य मे और सयोग मे सर्वत्र ए की तरह न भी होता है, जैसे—नदी = नई, ज्ञातपुत्र = नायपुत्त, आरनाल = आरनाल, अनल = अनल, अनिल = अनिल, प्रज्ञा = पन्ना, अन्योन्य = अन्नमन्न, विज्ञ = विन्नु, सर्वज्ञ = सव्वन्नु इत्यादि।

११. एव के पूर्व के अम् के स्थान मे आम् होता है, यथा—यामेव = जामेव, तामेव = तामेव, क्षिप्रमेव = खिप्पामेव, एवमेव = एवामेव, पूर्वमेव = पुव्वामेव इत्यादि।

१२. दीर्घ स्वर के बाद के इति वा के स्थान मे ति वा और इ वा होता है, जैसे—इन्द्रमह इति वा = इदमहे ति वा, इदमहे इ वा इत्यादि।

१३. यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते हैं, जैसे—यथाख्यात = अहक्खाय, यथाजात = अहाजात, यथानामक = जहाणामए, यावत्कथा = आवकहा, यावज्जीव = जावज्जीव।

वर्णागम

१. गद्य मे भी अनेक स्थलों में समास के उत्तर शब्द के पहले म आगम होता है, यथा—निरयगामी, उड्ढंगारव, दीहगारव, रहस्सगारव, गोणमाइ, मामाइयमाइयाई, अजहएणमणुक्कोस, अदुक्खमसुहा आदि। महाराष्ट्री के पद्य में पादपूर्ति के लिए ही कहीं कहीं म् आगम देखा जाता है, गद्य में नहीं।

शब्द-भेद

१. अर्धमागधी में ऐसे प्रचुर शब्द हैं जिनका प्रयोग महाराष्ट्री मे प्राय उपलब्ध नहीं होता, यथा—अज्झत्थिय, अज्झोववरणण, अणुवीति, आघवणा, आघवेत्तग, आणापाणू, आवीकम्म, कएहुइ, केमहालय, दुरूढ, पच्चत्थिमिल्ल, पाउकुव्व, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महतिमहालिया, वक्क, विउस इत्यादि।

२ ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत बड़ी है जिनके रूप अर्धमागधी और महाराष्ट्री मे भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते है :—

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
अभियागम	अब्भाअम	तच्च (तथ्य)	तच्छ
आउटण	आउंचण	तेगिच्छा	चिइच्छा
आहरण	उआहरण	दुवालसग	बारसंग
उप्पि	उवरिं, अवरिं	दोच्च	दुइअ
किया	किरिआ	नितिय	णिच्च
कीस, केस	केरिस	निएय	णिअअ
केवच्चिर	किअच्चिर	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण्ण
गेहि	गिद्धि	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
चियत्त	चइअ	पाय (पात्र)	पत्त
छच	छक्क	पुढो (पृथक्)	पुहं, पिहं
जाया	जत्ता	पुरेकम्म	पुराकम्म
णिगण, णिगिण (नग्न)	णग्ग	पुव्वि	पुव्वं
णिगिणिण (नाग्न्य)	णग्गत्तण	माय (मात्र)	मत्त, मेत्त
तच्च (तृतीय)	तइअ	माहण	बम्हण

[illegible]	[illegible]	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	हिमिए
[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] प्रभृति [illegible] के रूप अर्धमागधी में मिलते हैं, [illegible] [illegible] नहीं।

नामविभक्ति

1. [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में प्रायः [illegible] और क्वचित् [illegible] होता है, किन्तु [illegible] [illegible] [illegible]।
2. [illegible] [illegible] होता है [illegible] महाराष्ट्री में [illegible]।
3. [illegible] [illegible] में [illegible] होता है जैसे—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] महाराष्ट्री में यह नहीं है।
4. [illegible] [illegible] में [illegible] होता है, यथा—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]। महाराष्ट्री में [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।
5. [illegible] [illegible] में [illegible] की तरह [illegible] और [illegible] होता है, जब कि महाराष्ट्री में [illegible] और [illegible]।
6. [illegible] [illegible] के [illegible] में [illegible] रूप भी देखा जाता है।

[illegible] [illegible] और [illegible] की षष्ठी का बहुवचन [illegible] अर्धमागधी में [illegible] है जो महाराष्ट्री में नहीं है।

आख्यातविभक्ति

[illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] है—[illegible], [illegible], [illegible] इत्यादि। महाराष्ट्री में [illegible] [illegible] होता है।

धातुरूप

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] प्रभृति प्रयोगों में [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] महाराष्ट्री में ये भिन्न भिन्न प्रकार के देखे जाते हैं।

[illegible]

[illegible] [illegible] होते हैं—

[illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible]।

[illegible]।

[illegible]।

[illegible], [illegible]।

[illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]।

[illegible]।

[illegible]।

[illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]।

तद्धित

१. तर प्रत्यय का तराय रूप होता है; यथा—अणिट्ठतराए, अप्पतराए, बहुतराए, कंततराए इत्यादि।

२. आउमो, आउसंतो, गोमी, वुमिम, भ यवतो, पुरत्थिम, पच्चत्थिम, ओयसी, दोसिणो, पोरेवच्च आदि प्रयोगों में मतुप् और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में देखे जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न तरह के होते हैं।

महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका उल्लेख विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है।

---

(५) जैन महाराष्ट्री

नाम-निर्देश और साहित्य

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थो की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया गया है। इस भाषा मे तीर्थंकर और प्राचीन मुनियों के चरित्र, कथाएँ, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल, स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी भिन्न भाषा का उल्लेख नहीं किया है। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, काव्य और नाटक-ग्रन्थो मे महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के ग्रन्थो की भाषा में कुछ कुछ पार्थक्य देख कर इसको 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। इस भाषा मे प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण विशेष रूप से मौजूद होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है।

समय

जैन महाराष्ट्री के कतिपय ग्रन्थ प्राचीन हैं। यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों मे स्थान पा सकती है। पयन्ना-ग्रन्थ, निर्युक्तियाँ, पउमचरिअ, उपदेशमाला प्रभृति ग्रन्थ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं। बृहत्कल्प-भाष्य, व्यवहारसूत्र-भाष्य, विशेषावश्यक-भाष्य, निशीथचूर्णि, धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा प्रभृति ग्रन्थ मध्य-युग और शेष-युग मे रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान है। दशम शताब्दी के बाद रचे गये प्रवचन-सारोद्धार, उपदेशपदटीका, सुपासनाहचरिअ, उपदेशरहस्य प्रभृति ग्रन्थो की भाषा भी प्राय प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप हैं। इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ये ग्रन्थ आधुनिक काल मे रचित होने पर भी उसकी भाषा, संस्कृत की तरह, अतिप्राचीन काल मे ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता हैं कि जैन महाराष्ट्री क्रमश परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-लोप-बहुल महाराष्ट्री मे रूपान्तरित हुई है।

लक्षण

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमे से अनेक इस भाषा मे भी पाये जाते हैं। ऐसे लक्षणों मे कुछ ये है :—

१. क के स्थान मे अनेक स्थलों में ग।
२ लुप्त व्यञ्जनों के स्थान मे य्।
३. शब्द के आदि और मध्य मे भी ण की तरह न।
४ यथा और यावत् के स्थान में क्रमश जहा और जाव की तरह अहा और आव भी।
५. समास मे उत्तर पद के पूर्व मे 'म्' का आगम।
६ पाय, माय, तेगिच्छग, पडुप्पएण, साहि, सुहुम, सुमिण आदि शब्दों का भी, पत्त, मेत्त, चेइच्छय आदि की तरह प्रयोग।
७ तृतीया के एकवचन मे कहीं कहीं सा प्रत्यय।
८ आइक्खइ, कुव्वइ प्रभृति धातु-रूप।
९ सोच्चा, किच्चा, वदित्तु आदि त्वा प्रत्यय के रूप।
१० कड, वावड, संवुड, प्रभृति त-प्रत्ययान्त रूप।

---

(६) अशोक-लिपि

सम्राट अशोक ने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलाओं में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख [illegible] तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं —

(१) [illegible] के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें र का लोप नहीं देखा जाता।

(२) पूर्व भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें र के स्थान में [illegible] है।

(३) [illegible] भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की उस भाषा में हैं जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	[illegible] (पंजाब)	धौलि (उड़ीसा)	गिरनार (गुजरात)
[illegible]	देवा[illegible]	देवानपिय	देवानंपियस
[illegible]	रजा	लाजिने	राजो, रञो
[illegible]	—	दुगनि	पच्छा
[illegible]	सुस्रुषा	सुसूसा	सुसुसा
[illegible]	[illegible], नास्ति	नथि, नथि, नथा	नास्ति

इन शिलालेखों का समय खिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति भगवान महावीर की एवं सम्भवत: बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।[2]

---

(७) सौरसेनी

[illegible] नाटकों में प्राकृत गद्यांश सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अश्वघोष के नाटकों में एक [illegible] तरह की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पालि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और [illegible] नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भास के, कालिदास के और इनके बाद के [illegible] नाटकों में सौरसेनी के निदर्शन देखे जाते हैं।

[illegible], हेमचन्द्र, क्रमदीश्वर, [illegible] और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के लक्षण और उदाहरण [illegible] हैं।

[illegible], रुद्रट और वाग्भट आदि संस्कृत के अलङ्कारिकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

[illegible] नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख है, उन्होंने नाटक में नायिका और सखियों के लिए इस भाषा [illegible] प्रयोग बताया है।[3]

[illegible] भाषा [illegible] नहीं है,[4] परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या भाषा के जो लक्षण दिये गये हैं [illegible] भाषा पर से यह मालूम होता है कि सौरसेनी से इस भाषा [illegible] नहीं है। इससे हमने भी प्रस्तुत कोश में उसका अलग उल्लेख न करके [illegible] ही अन्तर्भाव किया है।

[illegible], [illegible] भी एक तरह की सौरसेनी भाषा में ही रचित है। यह भाषा [illegible] और प्राकृत व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के मिश्रण से बना हुई है। इस [illegible] है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा [illegible] मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री से प्राचीन है।

[illegible] प्रमाण, और [illegible] सिद्ध किया है कि [illegible] परन्तु जैन महावीर स्वामी के [illegible] हुए हैं।

[illegible] (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

[illegible] (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति[1] सूरसेन देश अर्थात् मथुरा प्रदेश से हुई है।

वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सौरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है[2]। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतरां, सौरसेनी प्राकृत का मूल भी वैदिक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही वैदिक युग में प्रचलित सूरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तन-हीन मृत-भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल की सौरसेनी ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय की सौरसेनी भाषा का आकार धारण किया। पिछले समय की यह सौरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जकड़े जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर मृत-भाषा में परिणत हुई है।

प्रकृति

अश्वघोष के नाटकों में जिस सौरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोकलिपि की सम-सामयिक कही जा सकती है। भास के नाटकों की सौरसेनी का और जैन सौरसेनी का समय सम्भवतः खिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी मालूम होता है।

समय

महाराष्ट्री भाषा के साथ सौरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो लक्षण उसके प्रकरण मे दिये जायँगे उनमे महाराष्ट्री के साथ सौरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह ज्ञात होता है कि अनेक स्थलों मे महाराष्ट्री की अपेक्षा सौरसेनी का संस्कृत के साथ पार्थक्य कम और सादृश्य अधिक है।

लक्षण

वर्ण-भेद

१. स्वर-वर्णों के मध्यवर्ती असंयुक्त त और द के स्थान में द होता है; यथा—रजत = रअद, गदा = गदा।
२. स्वरों के बीच असंयुक्त थ का ह और ध दोनों होते हैं, जैसे—नाथ = णाध, णाह।
३. र्य के स्थान में य्य और ज्ज होता है, यथा—आर्य = अय्य, अज्ज, सूर्य = सुय्य, सुज्ज।

नाम-विभक्ति

१. पञ्चमी के एकवचन में दो और दु ये दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व के अकार का दीर्घ होता है; यथा—जिनात् = जिणादो, जिणादु।

आख्यात

१. ति और ते प्रत्ययों के स्थान में दि और दे होता है; जैसे—हसदि, हसदे, रमदि, रमदे।
२. भविष्यत्काल के प्रत्यय के पूर्व में स्सि लगता है, यथा—हसिस्सिदि, करिस्सिदि।

सन्धि

१ अन्त्य मकार के बाद इ और ए होने पर ण् का वैकल्पिक आगम होता है, यथा—युक्तम् इदम् = जुत्तं णिमं, जुत्तमिमं, एवम् एतत् = एवं णेदं, एवमेदं।

कृदन्त

१. त्वा प्रत्यय के स्थान मे इअ, दूण और त्ता होते हैं, यथा—पठित्वा = पढिअ, पढिदूण, पढित्ता।

---

१. पन्नवणासूत्र के "सोत्तियमइया (?मई य) चेदी वीयभयं सिंधुसोवीरा। महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मासपुरिवट्टा" (पत्र ६१)। इस पाठ पर "चेदिषु शुक्तिकावती, वीतभय सिन्धुषु, सौवीरेषु मथुरा, सूरसेनेषु पापा, भङ्गे(? ङ्गि)षु मासपुरिवट्टा" इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मलयगिरि ने सूरसेन देश की राजधानी पावा बतलाकर आजकल के विहार प्रदेश को ही सूरसेन कहा है। नेमिचन्द्रसूरि ने अपने प्रवचनसारोद्धारनामक ग्रंथ मे पन्नवणासूत्र के उक्त पाठ को अविकल रूप में उद्धृत किया है। इसकी टीका मे श्रीसिद्धसेनसूरि ने आचार्य मलयगिरि की उक्त व्याख्या को 'अतिव्यवहृत' कहकर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है —'शुक्तीमती नगरी चेदयो देश, वीतभयं नगरं सिन्धुसौवीरा जनपद, मथुरा नगरी सूरसेनाख्यो देश, पापा नगरी भङ्गयो देश', मासपुरी नगरी वर्तो देश.' (दे० ला० संस्करण, पत्र ४४६)।

२. प्राकृतप्रकाश (१२, २)।

(८) मागधी

[illegible] अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के खाल्सी, मिरट, लौरिया [illegible], [illegible], रामपुरवा, धौलि और जौगड ([illegible]) प्रभृति स्थानों के अशोक-शिलालेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं। नाटकीय मागधी के सब प्राचीन नमूने अश्वघोष के नाटकों के खण्डित अंशों में मिलते हैं। भास के [illegible], [illegible] और मृच्छकटिक प्रभृति नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

[illegible] के प्राकृतप्रकाश, चण्ड के प्राकृतलक्षण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), क्रमदीश्वर के संक्षिप्त-सार [illegible] भाषार्णव [illegible] और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि प्रायः समस्त प्राकृत व्याकरणों में मागधी भाषा के [illegible] और [illegible] दिया गया है।

[illegible] के नाट्यशास्त्र में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटक में राजा के अन्तःपुर में रहनेवाले, सुरंग [illegible], [illegible] प्रभृति पात्रों के लिए और विपत्ति में नायक के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है। [illegible] मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोहल के '[illegible]' इस वचन से मालूम होता है कि भरत के कहे हुए उक्त पात्रों के अतिरिक्त भिक्षु, क्षपणक [illegible] भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रट, वाग्भट, हेमचन्द्र आदि आलंकारिकों ने भी अपने-अपने [illegible] इस भाषा का [illegible] किया है।

[illegible] ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मगध देश की सीमा के बाहर भी अशोक के शिलालेखों में जो [illegible] कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी [illegible] था। सम्भवतः राज-भाषा होने के कारण ही नाटकों में सर्वत्र ही राजा के [illegible] इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन भिक्षु और [illegible], सम्भवतः [illegible] नाटकों में इनकी भाषा भी मागधी ही निर्दिष्ट की गई है।

[illegible] — मूल होने का सम्मान शौरसेनी को दिया है। इसीका [illegible] शौरसेनी से ही मागधी की सिद्धि कही है। किन्तु मागधी और शौरसेनी आदि प्राचीन [illegible] देखा जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब [illegible] और समकालीन हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश की उत्पन्न नहीं हुई हैं। [illegible] भाषा में [illegible] जैसे मागधी में [illegible] भाषा [illegible]।

[illegible] के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा का निदर्शन है। [illegible] नाटकों की और प्राकृत व्याकरणों की मागधी [illegible] की मागधी [illegible] है।

[illegible] तीन भाषाएँ [illegible] ही प्रकार-भेद—रूपान्तर हैं। भरत ने शाबरी [illegible], किन्तु मार्कण्डेय ने [illegible] भाषा में [illegible] और [illegible]।

[illegible]

शाकारी आदि भाषाएँ मागधी के अन्तर्गत हैं

कठहार और यन्त्र-जीवी लोगों की भाषा को शावरी कहते है[१]। इन तीनों भाषाओं के जो लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटकों के उक्त पात्रों की भाषा मे पाये जाते हैं उनमें और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरणों में तथा नाटकों के मागधी-भाषा-भाषी पात्रों की भाषा मे इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि उक्त तीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं कही जा सकती। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत कोष मे इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

मृच्छकटिक के पात्र माथुर और दो द्यूतकारों की भाषा को 'ढक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'ढक्की' को ही 'टाकी' नाम से निर्देश किया है, यह उनके वहाँ पर उद्धृत किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है[२]। मार्कण्डेय ने पदान्त में उ, तृतीया के एकवचन मे ए, पञ्चमी के बहुवचन मे हुम

ढक्की या टाकी भाषा

आदि जो इस भाषा के लक्षण दिए है उनपर से इसमे अपभ्रंश का ही विशेष साम्य नजर आता है। इस लिए मार्कण्डेय ने वहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिश्चन्द्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है[३]' वह मत हमे भी संगत मालूम पड़ता है।

लक्षण

मागधी भाषा का सौरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों मे मागधी भाषा साधारणत सौरसेनी के ही अनुरुप है।

वर्ण-भेद

१. र के स्थान में सर्वत्र ल होता है[४]; यथा—नर = णल, कर = कल।
२. श, ष और स के स्थान मे तालव्य श होता है, यथा—शोभन = शोहण, पुरुष = पुलिश, सारस = शालश।
३. संयुक्त ष और स के स्थान मे दन्त्य सकार होता है, यथा—शुष्क = शुस्क, कष्ट = कस्ट, स्खलति = स्खलदि, बृहस्पति = बुहस्पदि।
४. ट्ट और ष्ठ के स्थान मे स्ट होता है, यथा—पट्ट = पस्ट, सुष्ठु = शुस्टु।
५. स्थ और र्थ की जगह स्त होता है, जैसे—उपस्थित = उवस्तिद, सार्थ = शस्त।
६. ज, द्य और य के बदले य होता है, यथा—जानाति = याणदि, दुर्जन = दुय्यण, मद्य = मय्य, अद्य = अय्य, याति = यादि, यम = यम।
७. न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज के स्थान में ञ्ञ होता है, यथा—अन्य = अञ्ञ, पुण्य = पुञ्ञ, प्रज्ञा = पञ्ञा, अञ्जलि = अञ्ञलि।
८. अनादि छ के स्थान मे श्च होता है, यथा—गच्छ = गश्च, पिच्छिल = पिश्चिल।
९. क्ष की जगह स्क होता है[५], जैसे—राक्षस = लस्कश, यक्ष = यस्क।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुलिंग-शब्द के प्रथमा के एकवचन मे ए होता है, यथा—जिन = यिणे, पुरुष = पुलिशे।
२. अकारान्त शब्द के षष्ठी का एकवचन स्स ओर आह होता है, यथा—जिनस्य = यिणस्स, यिणाह।
३. अकारान्त शब्द के षष्ठी के बहुवचन मे आण और आहँ ये दोनों होते है, जैसे—जिनानाम् = यिणाण, यिणाहँ।
४. अस्मत् शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप हगे होता है।

---

१. "चाण्डाली पुक्सादिषु। अगारकरव्याधाना काष्ठयन्त्रोपजीविनाम्। योज्या शबरभाषा तु" (नाट्यशास्त्र १७, ५३-४)।

२ "प्रयुज्यते नाटकादौ द्यूतादिव्यवहारिभि·।
वणिग्भिर्हीनदेहैश्च तदाहुष्टक्कभाषितम्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ ११०)।

३. "हरिश्चन्द्रस्त्विमा भाषामपभ्रंश इतीच्छति" (प्राकृतस० पृष्ठ ११०)।

४. मार्कण्डेय यह नियम वैकल्पिक मानते हैं, "रस्य लो वा भवेत्" (प्राकृतस० पृष्ठ १०१)।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के अनुसार 'क्ष' की जगह जिह्वामूलीय 'ᳵक' होता है, देखो हे० प्रा० ४, २९६।

(९) महाराष्ट्री

प्राकृत [illegible] की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। सेतुबन्ध, गाथासप्तशती, गउडवहो, कुमारपालचरित [illegible] इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। गाथा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की [illegible] कि बाद के नाटकों में गद्य में शौरसेनी बोलनेवाले पात्रों के लिए संगीत या पद्य में महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि कालिदास से लेकर उसके बाद के [illegible] नाटकों के पद्य में प्रायः महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

[illegible] अपने प्राकृतलक्षण में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष लक्षण न देकर भी आर्ष प्राकृत [illegible] और जैन महाराष्ट्री के लक्षणों के साथ साधारण भाव से इसके लक्षण दिए हैं। वररुचि ने अपने [illegible] में इस भाषा के 'महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष लक्षण और उदाहरण दिए हैं। [illegible] हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर 'प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही [illegible] और उदाहरण बताए हैं। क्रमदीश्वर का संक्षिप्तसार, त्रिविक्रम की प्राकृतव्याकरणसूत्रवृत्ति, लक्ष्मीधर की [illegible] और मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व प्रभृति प्राकृत-व्याकरणों में इस भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये [illegible] हैं। [illegible] प्राकृत वैयाकरणों ने महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण किया है और शौरसेनी, मागधी प्रभृति [illegible] महाराष्ट्री के साथ जो भेद हैं वे ही बतलाए हैं।

[illegible] अलंकार-शास्त्रों में भी भिन्न भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भरत के नाट्य-शास्त्र में '[illegible]' भाषा का निर्देश है, किन्तु इसके विशेष लक्षण नहीं दिए गए हैं। सम्भवतः यह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि भरत ने महाराष्ट्री का [illegible] उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतचन्द्रिका के [illegible] और [illegible] मार्कण्डेय के [illegible] में महाराष्ट्री और दाक्षिणात्या का भिन्न भिन्न भाषा के रूप में [illegible] किया गया है। दण्डी के काव्यादर्श में

"[illegible] प्राकृतं विदुः।
[illegible] सेतुबन्धादि यन्मयम् ॥" (१, ३४)।

इस श्लोक में महाराष्ट्री भाषा का और इसकी उत्कृष्टता का स्पष्ट उल्लेख है। दण्डी के समय में महाराष्ट्री प्राकृत [illegible] कि इसके बाद के अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ में उस प्राकृत शब्द का [illegible] भाषाओं का वाचक है। रुद्रट का काव्यालंकार, वाग्भटालंकार, पाइअलच्छी-[illegible], हेमचन्द्र का प्राकृत [illegible] ग्रन्थों में महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अलंकार-[illegible] और देशीनाममाला इन कोष ग्रन्थों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

[illegible] महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश में उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का अर्थ [illegible] राष्ट्र का [illegible] है और [illegible] इसी विशाल राष्ट्र के अन्तर्गत है, इससे 'महाराष्ट्री' [illegible] है। किन्तु [illegible] इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कहा है। [illegible] महाराष्ट्री प्राकृत से ही आधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्री प्राकृत [illegible] इसमें कोई सन्देह नहीं [illegible] है।

[illegible] में महाराष्ट्र को ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रकृति संस्कृत कही है। [illegible] आदि वैयाकरणों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मूल [illegible] है। किन्तु हम यह पहले ही [illegible] प्रमाणित कर आए हैं कि कोई भी [illegible] भिन्न भिन्न प्रदेशों में प्रचलित आर्यों की कथ्य भाषाओं

१ [illegible]

२ [illegible] ॥" ([illegible])।

३ [illegible]

से ही सभी प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है, सुतरां महाराष्ट्री भाषा की उत्पत्ति प्राचीन कालके महाराष्ट्र-निवासी आर्यों की कथ्य भाषा से हुई है।

कौन समय आर्यों ने महाराष्ट्र मे सर्व-प्रथम निवास किया था, इस बात का निर्णय करना कठिन है, परन्तु अशोक के पहले प्राकृत भाषा महाराष्ट्र देश मे प्रचलित थी, इस विषय मे किसीका मत भेद नहीं है। उस समय महाराष्ट्र देश मे प्रचलित प्राकृत से क्रमश काव्यीय और नाटकीय महाराष्ट्री भाषा उत्पन्न हुई है। प्राकृतप्रकाश का कर्ता वररुचि यदि वृत्तिकार कात्यायन से अभिन्न व्यक्ति हो तो यह स्वीकार करना होगा कि महाराष्ट्री ने अन्तत खिस्त-पूर्व दो सौ वर्ष के पहले ही साहित्य मे स्थान पाया था। लेकिन महाराष्ट्री भाषा के तद्भव शब्दो मे व्यञ्जन वर्णों के लोप की बहुलता देखने से यह विश्वास नहीं होता कि यह भाषा उतनी प्राचीन है। वररुचि का व्याकरण संभवत खिस्त के बाद ही रचा गया है। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री मे महाराष्ट्री प्राकृत के प्रभाव का हमने पहले उल्लेख किया है। महाराष्ट्री भाषा मे रचित जो सब साहित्य इस समय पाया जाता है उसमें खिस्त के बाद की महाराष्ट्री के ही निदर्शन देखे जाते हैं। प्राचीन महाराष्ट्री का कोई साहित्य उपलब्ध नही है। प्राचीन महाराष्ट्री में बाद की महाराष्ट्री की तरह व्यञ्जन-वर्ण-लोप की अधिकता नही थी, इस बात के कुछ निदर्शन चण्ड के व्याकरण मे मिलते हैं। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री मे प्राचीन महाराष्ट्री भाषा का सादृश्य रक्षित है।

समय

भरत ने नाट्यशास्त्र में आवन्ती और वाह्लीकी भाषा का उल्लेख कर नाटको मे धूर्त पात्रो के लिए आवन्ती का और द्यूतकारों के लिए वाह्लीकी का प्रयोग कहा है। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व मे 'आवन्ती स्यान्महाराष्ट्रीशौरसेन्योस्तु सकरात्' और 'आवन्त्यामेव वाह्लीकी किन्तु रस्यात्र लो भवेत्' यह कह कर इनका सक्षिप्त लक्षण-निर्देश किया है। मार्कण्डेय ने आवन्ती भाषा के जो त्वा के स्थान मे तूण और भविष्यत् काल के प्रत्यय के स्थान मे ज ओर ज्जा प्रभृति लक्षण बतलाए हैं वे महाराष्ट्री के साथ साधारण है। उनके दिए हुए किराद, वेदस, पेच्छदि प्रभृति उदाहरणों मे जो तकार के स्थान मे दकार है वहाँ शौरसेनी के साथ इसका (आवन्ती का) सादृश्य है परन्तु वह भी सर्वत्र नहीं है, जैसे उनके दिए हुए होइ, सुव्वइ, लिजइ, भएणए आदि उदाहरणो मे। इसी तरह वाह्लीकी में जो र का ल होता है वही एकमात्र मागधी का सादृश्य है। इसके सिवा सभी अशो मे यह भी आवन्ती की तरह महाराष्ट्री के ही सादृश है। सुतरा, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री के ही अन्तर्गत कही जा सकती है। इससे हमने भी इनका इस कोष मे अलग निर्देश नहीं किया है।

आवन्ती और वाह्लीकी महाराष्ट्री के अन्तर्गत है

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भाषा के वे भेद नीचे दिए जाते है जो महाराष्ट्री और सस्कृत के साथ अन्य प्राकृत भाषाओं के सादृश्य और पार्थक्य की तुलना के लिए भी अधिक उपयुक्त है।

लक्षण

स्वर

१ अनेक जगह भिन्न स्वरों के स्थान मे भिन्न-भिन्न स्वर होते है, जैसे—समृद्धि = सामिद्धि, ईषत् = ईसि, हर = हीर, ध्वनि = झुणि, शय्या = सेज्जा, पद्म = पोम्म, यथा = जह सदा = सइ, स्त्यान = थीण, सास्ना = सुण्हा, शासार = ऊमार, ग्राह्य = गेज्झ, आली = ओली, इति = इअ, पथिन् = पह, जिह्वा = जीहा, द्विवचन = दुवअण, पिण्ड = पेंड, द्विधाकृत = दोहाइअ, हरीतकी = हरडई, कश्मीर = कम्हार, पानीय = पाणिअ, जीर्ण = जुण्ण, हीन = हूण, पीयूष = पेऊस, मुकुल = मउल, भ्रुकुटि = भिउडि, क्षुत = छीअ, मुसल = मूसल, तुण्ड = तोड, सूक्ष्म = सण्ह, उद्व्यूढ = उव्वीढ, वातूल = वाउल, नूपुर = णेउर, तूणीर = तोणीर, वेदना = विअणा, स्तेन = थूण, मनोहर = मणहर, गो = गउ, गाअ, सोच्छ्वास = सूसास।

२. महाराष्ट्री मे ऋ, ॠ, ऌ, ॡ ये स्वर सर्वथा लुप्त हो गये है।

३ ऋ के स्थान मे भिन्न-भिन्न स्वर एव रि होता है, यथा—तृण = तण, मृदुक = माउक्क, कृपा = किवा, मातृ = माइ, माउ, वृत्तान्त = वुत्तंत, मृषा = मुसा, मूसा, मोसा, वृन्त = विंट, वेंट, वोंट, ऋतु = उउ, रिउ, ऋद्धि = रिद्धि, ऋक्ष = रिच्छ, सदृश = सरिस, दृप्त = दरिअ।

४ ऌ के स्थान मे इलि होता है, जैसे—क्लृप्त = किलित्त, क्लृन्न = किलिण्ण।

५ ऐ का प्रयोग भी प्राय महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान मे सामान्यत. ए और विशेषत अइ होता है, यथा—शैल = सेल, ऐरावण = एरावण, वैद्य = वेज्ज, वैधव्य = वेहव्व, सैन्य = सेण्ण, सइण्ण, कैलाश = केलास, कइलास, दैव = देव्व, दइव, ऐश्वर्य = अइसरिअ, दैन्य = दइण्ण।

८. [illegible] में [illegible] नहीं है। इसके स्थान में सामान्यतः भो और विशेष स्थलों में उ या अउ [illegible] यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = सुउरिस, [illegible] = [illegible], [illegible] = कउरव, गौड = गउड, [illegible]।

असंयुक्त व्यञ्जन

१. [illegible] क, ग, च, ज, त, द, प, य, व इन व्यञ्जनों का प्राय लोप होता है, जैसे क्रमशः—लोक = लोअ, नग = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] = [illegible], त्रिलोक = तिलोअ, [illegible] = [illegible]।

२. [illegible] ख, घ, थ, ध और भ के स्थान में ह होता है, यथा क्रमशः—शाखा = साहा, [illegible] = [illegible], नाथ = णाह, [illegible]।

३. [illegible] ट का ड होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

४. [illegible] ठ का ढ होता है, जैसे—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

५. [illegible] ड का ल प्रायः होता है, यथा—[illegible] = [illegible], तडाग = तलाअ।

६. [illegible] त का अनेक स्थलों में ड होता है, यथा—प्रतिभाति = पडिहाइ, प्रवृत्ति = पउत्ति, व्यापृत = वावड, [illegible]।

७. [illegible] के स्थान में सर्वत्र ण होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], नदी = णई, [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

८. [illegible] के कहीं-कहीं व और कहीं-कहीं लोप होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

९. [illegible] के स्थान में कहीं [illegible] कहीं-कहीं [illegible] और कहीं-कहीं ये दोनों होते हैं, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१०. [illegible] होता है, जैसे—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

११. [illegible] होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१२. [illegible] होता है, जैसे—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१३. [illegible] होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१४. [illegible] होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१५. [illegible] होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१६. [illegible] होता है, जैसे—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

१७. [illegible] होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

संयुक्त व्यञ्जन

१. [illegible] होता है, जैसे—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

२. [illegible] होता है, यथा—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

३. [illegible] होता है, जैसे—[illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible]।

[illegible]

[illegible]

४. द्य, य्य और र्य का ज होता है, यथा—मद्य = मज्ज, जय्य = जज्ज, कार्य = कज्ज ।
५. ध्य और ह्य का झ होता है; यथा—ध्यान = झाण, साध्य = सज्झ, गुह्य = गुज्झ, सह्य = सज्झ ।
६. र्त का प्रायः ट होता है, जैसे—नर्तकी = णट्टई, कैवर्त = केवट्ट ।
७. ष्ट के स्थान मे ठ होता है, यथा—मुष्टि = मुट्ठि, पुष्ट = पुट्ठ, काष्ठ = कट्ठ, इष्ट = इट्ठ ।
८. म्न का ण होता है, यथा—निम्न = णिण्ण, प्रद्युम्न = पज्जुण्ण ।
९. ज्ञ का ण और ज होता है, जैसे—ज्ञान = णाण, जाण, प्रज्ञा = पण्णा, पज्जा ।
१०. स्त का थ होता है, जैसे—हस्त = हत्थ, स्तोत्र = थोत्त, स्तोक = थोव ।
११ ड्म और क्म का प होता है; यथा—कुड्मल = कुपल, रुक्मिणी = रुप्पिणी ।
१२. ष्प और स्प का फ होता है, यथा—पुष्प = पुप्फ, स्पन्दन = फंदण ।
१३. ह्व का भ होता है, यथा—जिह्वा = जिब्भा, विह्वल = विब्भल ।
१४ न्म और ग्म का म होता है, जैसे—जन्मन् = जम्म, मन्मथ = मम्मह, युग्म = जुग्म, तिग्म = तिम्म ।
१५. श्म, ष्म, स्म और ह्म का म्ह होता है, यथा—काश्मीर = कम्हार, ग्रीष्म = गिम्ह, विस्मय = विम्हअ, ब्राह्मण = बम्हण ।
१६. श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण और क्ष्ण के स्थान में ण्ह होता है, यथा—प्रश्न = पण्ह, उष्ण = उण्ह, स्नान = ण्हाण, वह्नि = वण्हि, पूर्वाह्ण = पुव्वण्ह, तीक्ष्ण = तिण्ह ।
१७ ह्ल का ल्ह होता हे, यथा—प्रह्लाद = पल्हाअ, कह्लार = कल्हार ।
१८. संयोग मे पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स का लोप होता है, जैसे—भुक्त = भुत्त, मुग्ध = मुद्ध, षट्पद = छप्पअ, खड्ग = खग्ग, उत्पल = उप्पल, मुद्गर = मुग्गर, सुप्त = सुत्त, निश्चल = णिच्चल, निष्ठुर = णिट्ठुर, स्खलित = खलिअ ।
१९ सयोग मे परवर्ती म, न और य का लोप होता है, यथा—स्मर = सर, लग्न = लग्ग, व्याध = वाह ।
२० सयोग मे पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी ल, व और र का लोप होता है, यथा—उल्का = उक्का, विक्लव = विक्कव, शब्द = सद्द, पक्व = पक्क, अर्क = अक्क, चक्र = चक्क ।
२१. संयुक्त अक्षरों के स्थान मे जो-जो आदेश ऊपर कहा है उसका और सयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर जो-जो व्यञ्जन बाकी रहता है उसका, यदि वह शब्द के आदि मे न हो तो, द्वित्व होता है, जैसे—ज्ञात्वा = णच्चा, मद्य = मज्ज, भुक्त = भुत्त, उल्का = उक्का । परन्तु वह आदेश अथवा शेष व्यञ्जन यदि वर्ग का द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर हो तो द्वित्व न होकर उसके पूर्व मे आदेश अथवा शेष व्यञ्जन के अनन्तर-पूर्व व्यञ्जन का आगम होता है, यथा—लक्षण = लक्खण, पश्चात् = पच्छा, इष्ट = इट्ठ, मुग्ध = मुद्ध ।

विश्लेषण

१ र्ह, र्श, र्ष के मध्य मे और संयोग मे परवर्ती ल के पूर्व मे स्वर का आगम होकर सयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण किया जाता है; यथा—अर्हत् = अरह, अरिह, अरुह, आदर्श = आयरिस, हर्ष = हरिस, क्लिष्ट = किलिट्ठ ।

व्यत्यय

१. अनेक शब्दों मे व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है, यथा—करेणू = कणेरू, आलान = आणाल, महाराष्ट्र = मरहट्ठ, हरिताल = हलिआर, लघुक = हलुअ, ललाट = णडाल, गुह्य = गुय्ह, सह्य = सय्ह ।

सन्धि

१. समास मे कहीं-कहीं ह्रस्व स्वर के स्थान मे दीर्घ और दीर्घ के स्थान मे ह्रस्व होता है, यथा—अन्तर्वेदि = अन्तावेइ, पतिगृह = पइहर, यमुनातट = जँउणअड, नदीस्रोत = णइसोत्त ।
२ स्वर पर रहने पर पूर्व स्वर का लोप होता है, जैसे—त्रिदशेश = तिअसीस ।
३. सयुक्त व्यञ्जन का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, जैसे—आस्य = अस्स, मुनीन्द्र = मुणिंद, चूर्ण = चुण्ण, नरेन्द्र = णरिंद, म्लेच्छ = मिलिच्छ, नीलोत्पल = णीलुप्पल ।

सन्धि-निषेध

१ उद्वृत्त (व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट रहे हुए) स्वर की पूर्व स्वर के साथ प्राय सन्धि नहीं होती है, यथा—निशाकर = णिसाअर, रजनीकर = रअणीअर ।

[illegible] नहीं होता है, जैसे— [illegible] = [illegible], [illegible] = एमर।
[illegible] नहीं होता है, यथा— [illegible] दशुईंदो।
[illegible] नहीं होता है, यथा— [illegible], घन्नलिनो एहिए।
[illegible] नहीं होता है, जैसे— [illegible]।

[illegible]

[illegible] होता है, जैसे— [illegible] = [illegible]।

[illegible] होता है और [illegible] भिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग में अकार का आकार [illegible]।

[illegible] अन्य प्रत्यय में पूर्व के [illegible] होता है, [illegible]।

[illegible] स्थान में [illegible] और [illegible] के स्थान में [illegible] और [illegible] इन स्वतन्त्र शब्दों [illegible], [illegible] = [illegible], [illegible]।

[illegible] होता है।

[illegible] और [illegible] होता है।

[illegible] और [illegible] होता है।

[illegible] और [illegible] होता है।

[illegible]

[illegible] में [illegible] और नपुंसक [illegible] भी है, यथा— [illegible]।

[illegible] होता है, यथा— [illegible]।

[illegible] में पुंलिंग और स्त्रीलिंग [illegible] होता है, यथा— [illegible]।

[illegible]

[illegible] है।

[illegible] होते हैं और [illegible] में [illegible]।

[illegible]

(१०) अपभ्रंश

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है कि "भूयासोऽपशब्दा अल्पीयास शब्दा । एकैकस्य हि शब्दस्य वहवोऽपभ्रंशा, सद्यथा—गौरित्यस्स शब्दस्य गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्येवमादयोऽपभ्रंशा" अर्थात् अपशब्द बहुत और शब्द (शुद्ध) थोड़े हैं, क्योंकि एक एक शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं, जैसे 'गौ' इस शब्द के गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्यादि अपभ्रंश हैं।

'अपभ्रंश' शब्द का सामान्य और विशेष अर्थ

यहाँ पर 'अपभ्रंश' शब्द अपशब्द के अर्थ में ही व्यवहृत है और अपशब्द का अर्थ भी 'संस्कृत-व्याकरण से असिद्ध शब्द' है, यह स्पष्ट है। उक्त उदाहरणों मे 'गावी' और 'गोणी' ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन[1] जैन-सूत्र-ग्रन्थों मे पाया जाता है और चंड[2] तथा आचार्य[3] हेमचन्द्र आदि प्राकृत-वैयाकरणों ने भी ये दो शब्द अपने-अपने प्राकृत-व्याकरणों मे लक्षण-द्वारा सिद्ध किये है। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में पहले प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश करते हुए काव्य मे व्यवहृत आभीर-प्रभृति की भाषा को अपभ्रंश कही हैं और बाद मे यह लिखा है कि 'शास्त्र मे संस्कृत भिन्न सभी भाषाएँ अपभ्रंश कही गई है'[4]। यहाँ पर दण्डी ने शास्त्र-शब्द का प्रयोग महाभाष्य-प्रभृति व्याकरण के अर्थ मे ही किया है। पतञ्जलि-प्रभृति संस्कृत-वैयाकरणों के मत मे संस्कृत-भिन्न सभी प्राकृत-भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है। परन्तु प्राकृत-वैयाकरणों के मत मे अपभ्रंश भाषा प्राकृत का ही एक अवान्तर भेद है। काव्यालंकार की टीका मे नमिसाधु ने लिखा है कि "प्राकृतमेवापभ्रंश." (२, १२) अर्थात् अभ्रंश भी शौरसेनी, मागधी आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है। उक्त क्रमिक उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय मे जिस अपभ्रंश शब्द का 'संस्कृत-व्याकरण-असिद्ध (कोई भी प्राकृत)' इस सामान्य अर्थ मे प्रयोग होता था उसने आगे जाकर क्रमश 'प्राकृत का एक भेद' इस विशेष अर्थ को धारण किया है। हमने भी यहाँ पर अपभ्रंश शब्द का इस विशेष अर्थ मे ही व्यवहार किया है।

निदर्शन

अपभ्रंश भाषा के निदर्शन विक्रमोर्वशी, धर्माभ्युदय आदि नाटक-ग्रन्थों मे, हरिवंशपुराण, पउमचरिअ (स्वयंभूदेवकृत) भविसयत्तकहा, संजममंजरी, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमारचरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित्र, करकंडुचरित, जयतिहुअणस्तोत्र, विलासवईकहा, सणकुमारचरिअ, सुपासनाहचरिअ, कुमारपालचरित, कुमारपाल-प्रतिबोध, उपदेशतरंगिणी प्रभृति काव्यग्रन्थों मे, प्राकृतलक्षण, सिद्धहेमचन्द्रव्याकरण (अष्टम अध्याय), संक्षिप्तसार, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतसर्वस्व वगैरह व्याकरणों मे और प्राकृतपिङ्गल नामक छन्द-ग्रन्थ मे पाये जाते है।

प्रकृति और समय

डॉ. हॉर्नलि के मत मे जिस तरह आर्य लोगों की कथ्य भाषाएँ अनार्य लोगों के मुख से उच्चारित होने के कारण जिस विकृत रूप को धारण कर पायी थीं वह पैशाची भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा नहीं है, उस तरह आर्यों की कथ्य भाषाएँ भारत के आदिम-निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन है। डॉ हॉर्नलि के इस मत का सर ग्रियर्सन-प्रभृति आधुनिक भाषातत्त्वज्ञ स्वीकार नहीं करते है। सर ग्रियर्सन के मत मे भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य और व्याकरण मे नियन्त्रित होकर जन-साधारण मे अप्रचलित होने के कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश है। ये अपभ्रंश-भाषाएँ खिस्तीय पञ्चम शताब्दी के बहुत काल पूर्व से ही कथ्य भाषाओं के रूप मे व्यवहृत होती थीं, क्योंकि चण्ड के प्राकृत-व्याकरण मे और कालिदास की विक्रमोर्वशी मे इसके निदर्शन पाये जाने के कारण यह निश्चित है कि खिस्तीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही ये साहित्य मे स्थान पाने लगी थीं। ये अपभ्रंश भाषाएँ प्राय दशम शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाएँ थीं। इसके बाद फिर जन-साधारण मे अप्रचलित होने से जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे ही हिन्दी, बंगला, गुजराती वगैरह आधुनिक

---

१ 'खीरीणियाओ गावीओ", 'गोण वियाल" (आचा २, ४, ५)।
"णगरगावीओ" (विपा १, २ – पत्र २६)।
"गोणीण संगेल्ल" (व्यवहारसूत्र, उ० ४)।

२. "गोर्वावी" (प्राकृतलक्षण २, १६)। ३. "गोणादय" (हे० प्रा० २, १७४)।

४. "आभीरादिगिर काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृता ।
शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम्" (१, ३६)।

आर्य कथ्य भाषाएँ हैं। इनका उत्पत्ति-समय ख्रिस्त की नववीं या दसवीं शताब्दी है। सुतरा, अपभ्रंश-भाषाएँ ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर नववीं या दशवीं शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाओं के रूप में प्रचलित थीं। इन अपभ्रंश भाषाओं की प्रकृति वे विभिन्न प्राकृत-भाषाएँ हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपभ्रंशों की उत्पत्ति के पूर्वकाल में प्रचलित थीं।

भेद

अपभ्रंश के बहुत भेद हैं, प्राकृतचन्द्रिका में इसके ये सताईस भेद बताये गए हैं।

"व्राचडो लाटवैदर्भावुपनागरनागरौ। बार्बरावन्त्यपाञ्चालटाक्कमालवकैकया ॥
गौडोड्रहैवपाश्चात्यपाण्ड्यकौन्तलसैंहला। कालिंगयप्राच्यकार्णाटिकाञ्च्यद्राविडगौर्जरा ॥
आभीरो मध्यदेशीय सूक्ष्मभेदव्यवस्थिता। सप्तविंशत्यपभ्रंशा वैतालादिप्रभेदत[1] ॥

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका से सताईस अपभ्रंशों के जो लक्षण और उदाहरण उद्धृत किए हैं[2]। वे इतने अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं कि खुद मार्कंडेय ने भी इनको सूक्ष्म कह कर नगण्य बताये हैं और इनका पृथग्-पृथग् लक्षण-निर्देश न कर उक्त समस्त अपभ्रंशों का नागर, व्राचड और उपनागर इन तीन प्रधान भेदों में ही अन्तर्भाव माना है[3]। परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का उत्पत्ति स्थान भिन्न-भिन्न प्रदेश है और जिनकी प्रकृति भी भिन्न-भिन्न प्रदेश की भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ हैं तब वे अपभ्रंश भाषाएँ भी भिन्न-भिन्न ही हो सकती हैं और उन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वास्तव में बात यह है कि वे सभी अपभ्रंश भिन्न भिन्न होने पर भी साहित्य में निबद्ध न होने के कारण उन सब के निदर्शन ही उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इसीसे प्राकृतचन्द्रिकाकार न उनके स्पष्ट लक्षण ही कर पाये हैं और न तो उदाहरण ही अधिक दे सके हैं। यही करण है कि मार्कण्डेय ने भी इन भेदों को सूक्ष्म कहकर टाल दिये हैं। जिन अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य-निबद्ध होने से निदर्शन पाये जाते हैं उनके लक्षण और उदाहरण आचार्य हेमचन्द्र ने केवल अपभ्रंश के सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के तीन विशेष नामों से दिये हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने 'अपभ्रंश' इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने 'नागरापभ्रंश' इस विशेष नाम से जो लक्षण और उदाहरण दिये हैं वे राजस्थानी-अपभ्रंश या राजपूताना तथा गुजरात प्रदेश के अपभ्रंश से ही संबन्ध रखते हैं। व्राचडापभ्रंश के नाम से सिन्धप्रदेश के अपभ्रंश के लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में दिये हैं, और उपनागर-अपभ्रंश का कोई लक्षण न देकर केवल नागर और व्राचड के मिश्रण को 'उपनागर-अपभ्रंश' कहा है। इसके सिवा सौरसेनी-अपभ्रंश के निदर्शन मध्यदेश के अपभ्रंश में पाये जाते हैं। अन्य अन्य प्रदेशों के अथवा महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी और पैशाची भाषाओं के जो अपभ्रंश थे उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से कोई निदर्शन भी नहीं पाये जाते हैं।

भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषा का उत्पत्ति स्थान भी भारतवर्ष का भिन्न भिन्न प्रदेश है। रुद्रट ने और वाग्भट ने

उत्पत्ति-स्थान

अपने अपने अलङ्कार-ग्रन्थ में यह बात सक्षेप में अथच स्पष्ट रूप में इस तरह कही है —

"षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंश" (काव्यालङ्कार २, १२)।

"अपभ्रंशस्तु यच्छुद्ध तत्तद्देशेषु भाषितम्" (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर दशम शताब्दी पर्यन्त भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेश में कथ्य भाषाओं के

आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं की प्रकृति

रूप में प्रचलित जिस जिस अपभ्रंश भाषा से भिन्न-भिन्न प्रदेश की जो जो आधुनिक आर्य कथ्य भाषा (Modern Vernacular) उत्पन्न हुई है उसका विवरण यों है —

---

१. वगीयसाहित्यपरिषत्-पत्रिका, १३१७।

२. "टाक्क टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽववारणीयम्। तुबहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। सबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारबहुला औढ्री। सवीप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या सैंहली। हियुक्ता कालिंगी। प्राच्या तद्देशीयभाषाढ्या। ज(भ)ट्टादिबहुलाऽऽभीरी वर्णविपर्ययात् कार्णाटी। मध्यदेशीया तद्देशीयाढ्या। सस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तटक्कभाषाग्रहणम्। रत(ल)हभा व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफ व्यत्येन द्राविडी। ढकारबहुला वैतालिकी। एओबहुला काञ्ची। शेषा देशभाषाविभेदात्।"

३. "नागरो व्राचडश्चोपनागरश्चेति ते त्रय। अपभ्रंशा, परे सूक्ष्मभेदत्वान्न पृथङ् मता." (प्रा० स० पृष्ठ ३)। "अन्येषामपभ्रंशानामेष्वेवान्तर्भाव" (प्रा० स० पृष्ठ १२२)।

महाराष्ट्री-अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी भाषा।
मागधी-अपभ्रंश की पूर्व शाखा से बंगला, उड़िया और आसामी भाषा।
मागधी अपभ्रंश की विहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया।
अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।
सोरसेनी-अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, बाँगरू, हिन्दी या उर्दू ये पाश्चात्य हिन्दी भाषा ।
नागर-अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषा।
पालि से सिंहली और माल्दीवन।
टाकी अथवा ढाकी से लहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी।
टाकी-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रभाव-युक्त) से पूर्वीय पंजाबी।
व्राचड-अपभ्रंश से सिन्धी भाषा।
पैशाची-अपभ्रंश से काश्मीरी भाषा।

लक्षण नागर-अपभ्रंश के प्रधान लक्षण ये हैं —

वर्ण-परिवर्तन

१. भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं, यथा—कृत्य = कच्च, काच्च, वचन = वेण, वीण, बाहु = वाह, बाहा, बाहु, पृष्ठ = पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि, तृण = तण, तिण, तृण, सुकृत = सुकिद, सुकृद, लेखा = लिह, लीह, लेह।
२ स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में प्राय क्रमश ग, घ, द, ध, व और भ होता है, यथा—विच्छेदकर = विच्छोहगर, सुख = सुघ, कथित = कधिद, शपथ = शवध, सफल = सभल।
३ अनादि और असंयुक्त म के स्थान में वैकल्पिक सानुनासिक व होता है, यथा—कमल = कवँल, कमल, भ्रमर = भवँर, भमर।
४. संयोग में परवर्ती र का विकल्प से लोप होता है, यथा—प्रिय = पिय, प्रिय, चन्द्र = चन्द, चन्द्र।
५. कहीं-कहीं संयोग के परवर्ती य का विकल्प से र होता है, जैसे—व्यास = व्रास, वास, व्याकरण = व्रागरण, वागरण।
६. महाराष्ट्री में जहाँ म्ह होता है वहाँ अपभ्रंश में म्भ और म्ह दोनों होते हैं, यथा— ग्रीष्म = गिम्भ, गिम्ह, श्लेष्म = सिम्भ, सिम्ह।

नाम-विभक्ति

१ विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व प्राय होता है, यथा—श्यामल = सामल., खड्गाः = खग्ग, दृष्टि = दिट्ठि, पुत्री = पुत्ति।
२. साधारणत सातों विभक्ति के जो प्रत्यय हैं वे नीचे दिये जाते हैं। लिंग-भेद में और शब्द-भेद में अनेक विशेष प्रत्यय भी हैं, जो विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये गए हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उ, हो	०
द्वितीया	,,	०
तृतीया	एं	हिं
चतुर्थी	सु, हो, स्सु	हं, ०
पञ्चमी	हे, हु	हुं
षष्ठी	सु, हो, स्सु	हं, ०
सप्तमी	इ, हि	हिं

आख्यात विभक्ति

		एकवचन	बहुवचन
१.	१ पु०	उ	हुं
	२ पु०	हि	हु
	३ पु०	इ, ए	हिं

२. मध्यम पुरुष के एकवचन में आज्ञार्थ में इ, उ और ए होते हैं, यथा—कुरु = करि, करु, करे।
३ भविष्यत्काल में प्रत्यय के पूर्व में स आगम होता है, यथा—भविष्यति = होसइ।

कृदन्त

१. तव्य-प्रत्यय के स्थान में इएव्वउ, एव्वउ और एवा होता है, यथा—कर्तव्य = करिएव्वउं, करेव्वउ, करेवा।
२ त्वा के स्थान में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु, होते हैं, यथा—कृत्वा = करि, करिउ, करिवि, करवि, करेप्पि, करेप्पिणु करेवि, करेविणु।
३ तुम्-प्रत्यय की जगह एव, अण अणह, अणहिं एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते हैं, यथा—कर्तुम् = करेव, करण, करणह करणहिं करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु।
४. शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान में अणअ होता है, जैसे—कर्तृ = करणअ, मारयितृ = मारणअ।

तद्धित

१ त्व और ता के स्थान में प्पण होता है, यथा—देवत्व = देवप्पण, महत्व = वड्डप्पण।

हम पहले यह कह आये हैं कि वैदिक और लौकिक संस्कृत के शब्दों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा में वर्ण लोप-प्रभृति परिवर्तन जितना अधिक प्रतीत हो, वह उतनी ही परवर्ती काल में उत्पन्न मानी जानी चाहिए। इस नियम के अनुसार, हम देखते हैं कि महाराष्ट्री प्राकृत में व्यञ्जनों का लोप सर्वापेक्षा अधिक है, इससे वह अन्यान्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है। परन्तु अपभ्रंश में उक्त नियम का व्यत्यय देखने में आता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यद्यपि महाराष्ट्रीके बाद ही उत्पन्न हुई हैं तथापि महाराष्ट्री में जो व्यञ्जन वर्ण-लोप देखा जाता है, अपभ्रंश में उसकी अपेक्षा अधिक नहीं, बल्कि कम ही वर्ण-लोप पाया जाता है और ऋ स्वर तथा संयुक्त रकार भी विद्यमान है। इस पर से यह अनुमान करना असंगत नहीं है कि वर्ण-लोप की गति ने महाराष्ट्री प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर उसको (महाराष्ट्री को) अस्थि-हीन-माँस पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिणत कर दिया। अपभ्रंश में इसीकी प्रतिक्रिया शुरू हुई, और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को भिन्न आदर्श में गठित करने की चेष्टा हुई। उस चेष्टा का ही यह फल है कि पिछले समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

अपभ्रंशों का भिन्न आदर्श में गठन

प्राकृत पर संकृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परित्याग कर उस समय की कथ्य भाषा में धर्मोपदेश को लिपिबद्ध करने की प्रथा प्रचलित की थी। इससे जो दो नया साहित्य-भाषाओं का जन्म हुआ था, वे जैन सूत्रों की अर्धमागधी और बौद्ध-धर्म-ग्रन्थ की पालि भाषा है। परन्तु ये दो साहित्य-भाषाएँ और अन्यान्य समस्त प्राकृत-भाषाएँ संस्कृत के प्रभाव को उल्लंघन नहीं कर सकी है। इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत-भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप में गृहीत हुए हैं। ये शब्द तत्सम कहे जाते हैं। यद्यपि इन तत्सम शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत-भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और रक्षण पाया था, तो भी यह स्वीकार करना ही होगा कि ये सब शब्द परवर्ती काल की प्राकृत-भाषाओं में जो अपरिवर्तित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत-साहित्य का ही प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत के ही प्रभाव से बौद्धों में एक मिश्र-भाषा उत्पन्न हुई थी। महायान-बौद्धों के महावैपुल्य-सूत्र नामक कतिपय सूत्र ग्रन्थ हैं। ललितविस्तर, सद्धर्म-पुण्डरीक, चन्द्रप्रदीपसूत्र प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं। इन ग्रंथों की भाषा में अधिकांश शब्द तो संस्कृत के हैं ही, अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी संस्कृत की विभक्ति लगा-कर उनको भी संस्कृत के अनुरूप किये गए हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने इस भाषा को 'गाथा' नाम दिया है। परन्तु यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि इसका यह 'गाथा' नाम असंगत है, क्योंकि यह संस्कृत-मिश्रित-प्राकृत का प्रयोग उक्त ग्रंथों के केवल पद्यांशों में ही नहीं, बल्कि गद्यांश में भी देखा जाता है। इससे इन ग्रंथों की भाषा को 'गाथा' न कहकर 'प्राकृत-मिश्र-संस्कृत' या 'संस्कृत मिश्र-प्राकृत' अथवा संक्षेप में मिश्र-भाषा ही कहना उचित है।

गाथा-भाषा

डॉ. बर्नफ और डॉ राजेन्द्र लाल मित्र का मत है कि, 'संस्कृत भाषा, क्रमश परिवर्तित होती हुई प्रथम गाथा भाषा के रूप में और बाद के पालि-भाषा के आकार में परिणत हुई है। इस तरह गाथा भाषा संस्कृत और पालि की मध्यवर्ती

होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पालि के) लक्षणों से आक्रान्त है।' यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है, क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं कि संस्कृत-भाषा क्रमशः परिवर्तित होकर पालि भाषा में परिणत नहीं हुई है, किन्तु पालि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही उत्पन्न हुई है। और, गाथा-भाषा पालि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा-भाषा के समस्त ग्रन्थों का रचना-काल ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर ख्रिस्त की तृतीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत तो पालि भाषा की समकालीन हो सकती है, न कि पालि भाषा की पूर्वावस्था। यह भाषा संस्कृत के प्रभाव को कायम रखकर विभिन्न प्राकृत-भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमें सन्देह नहीं है। यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोष में स्थान नहीं दिया गया है।

गाथा-भाषा का थोड़ा नमूना ललितविस्तर से यहाँ उद्धृत किया जाता है —

"अध्रुव त्रिभव शरदभ्रनिभ, नटरङ्गसमा जगि जन्मि च्युति।
गिरिनद्यसम लघुशीघ्रजव, व्रजतायु जगे यथ विद्यु नभे ॥ १ ॥'
"उदकचन्द्रसमा इमि कामगुणा, प्रतिबिम्ब इवा गिरिघोष यथा।
प्रतिभासममा नटरङ्गसमास्तथ स्वप्नसमा विदितार्यजनै ॥ १ ॥" (पृष्ठ २०४, २०६)।

बुद्धदेव और इसके सारथी की आपस में बातचीत —

"एषो हि देव पुरुषो जरयाभिभूत, क्षीणेन्द्रिय सुदुःखितो बलवीर्यहीन।
बन्धुजनेन परिभूत अनाथभूत, कार्यासमर्थ अपविद्ध वनेव दारु॥
कुलधर्म एष अयमस्य हि त्वं भणाहि, अथवापि सर्वजगतोऽस्य इयं ह्यवस्था।
शीघ्रं भणाहि वचनं यथभूतमेतत्, श्रुत्वा तथार्थमिह योनि सचिन्तयिष्ये॥
नैतस्य देव कुलधर्म न राष्ट्रधर्म, सर्वे जगस्य जर यौवन धर्षयाति।
तुभ्यपि मातृपितृबान्धवज्ञातिसंघो, जरया अमुक्त नहि अन्यगतिर्जनस्य॥
धिक् सारथे अबुधबालजनस्य बुद्धिर्यद् यौवनेन मदमत्त जरां न पश्ये।
आवर्तयस्त्विह रथं पुनरहं प्रवेक्ष्ये, किं मह्य क्रीडरतिभिर्जरया श्रितस्य॥"

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा जा चुका है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और वह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमशः मार्जित और नियन्त्रित होकर अन्त में लौकिक संस्कृत में परिणत हुआ है; एवं प्राकृत के अन्तर्गत समस्त तत्सम शब्द संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत में और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं; प्राकृत के अन्तर्गत तद्भव शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत न होकर प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमशः परिवर्तित होकर परवर्ती काल के प्राकृत में स्थान पाये हैं और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत में अपरिवर्तित रूप में ही रह गये हैं, इसी तरह प्राकृत के अधिकांश देशी-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-भिन्न अन्यान्य प्रदेशों के आर्य-उपनिवेशों की प्राकृत-भाषाओं से ही बाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं, इससे उन्होंने (देशी शब्दों ने) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और लौकिक संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है। इस पर से यह सहज ही समझा जा सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है।

अब इस जगह हम यह बताना चाहते हैं कि प्राकृत से न केवल वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषाएँ उत्पन्न ही हुई हैं, बल्कि संस्कृत ने मृत होकर साहित्य-भाषा में परिणत होने पर भी अपनी अंग-पुष्टि के लिए प्राकृत से ही अनेक शब्दों का संग्रह किया है। ऋग्वेद आदि में प्रयुक्त वंक (वक्र), वहू (वधू), मेह (मेघ), पुराण (पुरातन), तितउ (चालनी), उच्छेक (उत्सेक), प्रभृति शब्द और लौकिक संस्कृत में प्रचलित तितउ (चालनी), आवुत्त (भगिनीपति), खुर (क्षुर), गोखुर (गोक्षुर), गुग्गुलु (गुल्गुलु), छुरिका (क्षुरिका), अच्छ (ऋक्ष), कच्छ (कक्ष), पियाल (प्रियाल), गल्ल (गण्ड), चन्दिर (चन्द्र), इन्दिर (इन्द्र), शिथिल (श्लथ), मरन्द (मकरन्द), किसल (किसलय), हाला (सुराविशेष), हेवाक (व्यसन), दाढा (दंष्ट्रा), खिडकिका (लघुद्वार, भाषा मे खिडकी), जारुज (जरायुज), पुराण (पुरातन) वगैरह शब्द प्राकृत

से ही अविकल रूप में गृहीत हुए हैं और सारिप (मार्द), जहिप्यसि (हास्यसि), ब्रूमि (ब्रवीमि), निकृन्तन (निकर्तन), लटभ (सुन्दर), प्रभृति प्राकृत के ही मूल शब्द मार्जित कर संस्कृत में लिए गए हैं।

प्राकृत-भाषाओं का उत्कर्ष

कोई भी कथ्य भाषा क्यों न हो, वह सर्वदा ही परिवर्तन-शील होती है। साहित्य और व्याकरण उसको नियम के बन्धन में जकड़कर गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं। इसका फल यह होता है कि साहित्य की भाषा क्रमश. कथ्य भाषा से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित मृत-भाषा में परिणत होती है। साहित्य की हरकोई भाषा एक समय की कथ्य भाषा से ही उत्पन्न होती है और वह जब मृत-भाषा में परिणत होती है तब कथ्य भाषा से फिर एक नयी साहित्य की भाषा की सृष्टि होती है। इस तरह एक समय की कथ्य भाषा से ही वैदिक और लौकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में दुर्बोध होने पर अर्धमागधी, पालि आदि प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया था। ये सब प्राकृत-भाषाएँ भी समय पाकर जन-साधारण में दुर्बोध हो जाने पर संस्कृत की तरह मृत-भाषा में परिणत हो गईं और भिन्न-भिन्न प्रदेश की अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं। अपभ्रंश-भाषाएँ भी जब दुर्बोध होकर मृत-भाषाओं में परिणत हो चलीं तब हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी प्रभृति आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में गृहीत हुई हैं। उक्त समस्त कथ्य भाषाएँ उस उस युग की साहित्य की मृत-भाषाओं की तुलना में अवश्य ऐसे कतिपय उत्कर्षों से विशिष्ट होनी चाहिए जिनकी बदौलत ही ये उस-उस समय की मृत-भाषाओं को साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थीं। अब यहाँ हमें यह जानना जरूरी है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई भाषा का सर्व-प्रथम उद्देश्य होता है अर्थ-प्रकाश। इसलिए जिस भाषा के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने अल्प प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जाय वह उतना ही उत्कृष्ट भाषा मानी जाती है। इन दो कारणों के वश होकर ही भाषा का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न कथ्य-भाषाओं से नयी नयी साहित्य भाषाओं की उत्पत्ति होती है। वैदिक संस्कृत क्रमश लुप्त होकर लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति उक्त दो कारणों से ही हुई थी। वैदिक शब्द-समूह अप्रचलित होने पर उसके अनावश्यक प्रकृति और प्रत्ययों को बाद देकर जो सहज ही समझ में आ सके वैसी प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा में लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी। संस्कृत-भाषा के प्रकृति प्रत्यय काल-क्रम से अप्रचलित होकर जब दुख-बोध्य हो उठे तब उस समय की कथ्य भाषाओं से ही स्पष्टार्थक सुखोच्चारण-योग्य, मधुर और कोमल प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अनावश्यक, दुर्बोध, कष्टोच्चारणीय, कठोर और कर्कश प्रकृति-प्रत्यय सन्धि-समासों का वर्जन कर अर्धमागधी, पाली और अन्यान्य प्राकृत-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं। यदि इन सब नूतन साहित्य-भाषाओं में संस्कृत की अपेक्षा अर्थ-प्रकाश की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुख से उच्चारण-योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कभी भी संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा को साहित्य के सिंहासन से च्युत करने में समर्थ न होतीं। काल-क्रम से ये सब प्राकृत-साहित्य-भाषाएँ भी जब व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में दुर्बोध हो चलीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाओं ने इनको हटाकर साहित्य-भाषाओं का स्थान अपने अधिकार में किया। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत भाषाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-भाषाओं में वह कौन-सा गुण था जिससे ये अपने पहले की प्राकृत साहित्य-भाषाओं को पराजय कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकीं ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण चरम सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता, वह दोष में परिणत हो जाता है। संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में यह उत्कर्ष था कि इनमें संस्कृत के कर्कश और कष्टोच्चारणीय असंयुक्त और संयुक्त व्यञ्जन वर्णों के स्थान में सब कोमल और सुखोच्चारणीय वर्ण व्यवहृत होते थे। किन्तु इस गुण की भी सीमा है, महाराष्ट्री प्राकृत में यह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया यहाँतक कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का एकदम ही लोप कर उनके स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गठित होने लगे। इससे इन शब्दों के उच्चारण सुख-साध्य होने के बदले अधिकतर कष्टसाध्य हुए, क्योंकि बीच बीच में व्यञ्जन-वर्णों से व्यवहित न होकर केवल स्वर-परम्परा का उच्चारण करना कष्टकर होता है। इस तरह प्राकृत-भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत में आकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो उठा। इसकी प्रतिक्रिया-

स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठा कर सुखोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में उन्नीत हुईं। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के उस दोष का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन संस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुईं। आधुनिक आर्य-भाषाओं में पूर्व-वर्ती प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सम्बन्ध में प्राकृत और संस्कृत को मिश्रित कर उभय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके तद्भव और देश्य शब्दों में प्राकृत की कोमलता और मधुरता है और तत्सम शब्दों में संस्कृत की ओजस्विता। आधुनिक आर्य-भाषाओं में संस्कृत और प्राकृत दोनों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि ये संस्कृत और प्राकृतों के अनावश्यक लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों का वर्जन कर, उनके बदले भिन्न भिन्न स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकाशित कर और संस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परित्याग कर विश्लेषण-शील-भाषा में परिणत हुई हैं। इस तरह इन भाषाओं ने अल्प आयास से वक्ता के अर्थ को अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। उक्त गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। उनके ग्रन्थों से, प्राकृत के उत्कर्ष के संबन्ध में, कुछ वचन यहाँ पर उद्धृत किए जाते हैं —

[1]"अमिअं पाउअ-कव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति।
कामस्स तत्त-तत्तिं कुणंति, ते कह ण लज्जंति ? ॥ (हाल की गाथासप्तशती १, २)।

अर्थात् जो लोग अमृतोपम प्राकृत-काव्य को न तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथच काम-तत्त्व की आलोचना करते हैं उनको शरम क्यों नहीं आती ?

'[2]उम्मिल्लइ लायण्णं पयय-च्छायाए सक्कय-वयाणं।
सक्कय सक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥' (वाक्पतिराज का गउडवहो ६५)।

संस्कृत शब्दों का लावण्य प्राकृत की छाया से ही व्यक्त होता है, संस्कृत-भाषा के उत्कृष्ट संस्कार में भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है।

'[3]णवमत्थ-दंसणं संनिवेस-सिसिराओ बंध-रिद्धीओ।
अविरलमिणमो आभुवण बंधमिह णवर पययम्मि ॥' (गउडवहो ७२)।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आजतक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचनावाली प्रबन्ध-संपत्ति कहीं भी है तो वह केवल प्राकृत में ही।

'[4]हरिस-विसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण।
इह बहि-हुत्तो अंतो मुहो य हिययस्स विप्फुरइ ॥' (गउडवहो ७४)।

प्राकृत-काव्य पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अभूत-पूर्व हर्ष होता है कि जिससे दोनों आँखे एक ही साथ विकसित और मुद्रित होती हैं।

'[5]परुसो सक्कअ-बंधो पाउअ बंधोवि होइ सुउमारो।
पुरिस-महिलाणं जेत्तिअमिहंतर तेत्तिअमिमाण ॥' (राजशेखर की कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

संस्कृत-भाषा कर्कश और प्राकृत भाषा सुकुमार है। पुरुष और महिला में जितना अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी उतना ही प्रभेद है।

---

१ अमृतं प्राकृतकाव्यं पठितुं श्रोतुं च ये न जानन्ति। कामस्य तत्त्वचिन्तां कुर्वन्ति, ते कथं न लज्जन्ते ? ॥

२ उन्मीलति लावण्यं प्राकृतच्छायया संस्कृतपदानाम्। संस्कृतसंस्कारोत्कर्षणेन प्राकृतस्यापि प्रभावः ॥

३. नवमार्थदर्शनं संनिवेशशिशिरा बन्धर्द्धयः। अविरलमिदमाभुवनबन्धमिह केवलं प्राकृते ॥

४ हर्षविशेषो विकासको मुकुलीकारकश्चाक्ष्णोः। इह बहिर्मुखोऽन्तर्मुखश्च हृदयस्य विस्फुरति ॥

५ परुषः संस्कृतबन्धः प्राकृतबन्धस्तु भवति सुकुमारः। पुरुषमहिलयोर्यावदिहान्तरं तावदनयोः ॥

'गिर श्रव्या दिव्या प्रकृतिमधुरा प्राकृतगिर ।
सुभव्योऽपभ्रंश सरसरचनं भूतवचनम् ।' (राजशेखर का बालरामायण १, ११) ।

संस्कृत-भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश-भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है।

'[1]सक्कय-कव्वस्सत्थं जेण न याणंति मंद-बुद्धीया ।
सव्वाणवि सुह-बोह तेणेम पाययं रइय ॥
गूढत्थ-देसि-रहिय सुललिय-वन्नेहिं विरइयं रम्म ।
पायय-कव्व लोए कस्स न हियय सुहावेइ ?॥ (महेश्वरसूरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-काव्य के अर्थ को समझ नहीं पाते हैं। इसलिए यह ग्रन्थ उस प्राकृत-भाषा में रचा जाता है जो सब लोगों को सुख-बोध्य है।

गूढार्थक देशी-शब्दों से रहित और सुललित पदों में रचा हुआ सुन्दर प्राकृत-काव्य किसके हृदय को सुखी नहीं करता ?

'[2]उज्झउ सक्कय-कव्वं सक्कय-कव्व च निम्मिय जेण ।
वस-हर व पलित्त तडयडतट्टत्तणं कुणइ ॥'
(वज्जालग्ग (?) से अपभ्रंशकाव्यत्रयी की प्रस्ता०, पृष्ठ ७६ में उद्धृत) ।

संस्कृत-काव्य को छोड़ो और जिसने संस्कृत काव्य की रचना की उसका भी नाम मत लो, क्योंकि वह (संस्कृत) जलते हुए बाँस के घर की तरह 'तड़ तड़ तट्ट' आवाज करता है—श्रुतिकटु लगता है।

"[3]पाइअ-कव्वम्मि रसो जो जायइ तह व छेय-भणिएहिं ।
उययस्स य वासिय-सीयलस्स तित्तिं न वच्चामो ॥
ललिए महुरक्खरए जुवई-यण-वल्लहे स-सिंगारे ।
सते पाइय-कव्वे को सक्कइ सक्कयं पढिउ ? ॥" (जयवल्लभ का वज्जालग्ग, पृष्ठ ६)

प्राकृत-भाषा की कविता में और विदग्ध के वचनों में जो रस आता है उससे, वासी और शीतल जल की तरह, तृप्ति नहीं होती है—मन कभी ऊबता नहीं है—उत्कण्ठा निरन्तर बनी ही रहती है।

जब सुन्दर, मधुर, शृङ्गार-रस-पूर्ण और युवतियों को प्रिय ऐसा प्राकृत-काव्य मौजूद है तब संस्कृत पढ़ने को कौन जाता है ?

---

१ संस्कृतकाव्यस्यार्थं येन न जानन्ति मन्दबुद्धय । सर्वेषामपि सुखबोध तेनेद प्राकृत रचितम् ॥
गूढार्थदेशीरहित सुललितवर्णैर्विरचित रम्यम् । प्राकृतकाव्य लोके कस्य न हृदय सुखयति ? ॥

२ उज्झयता संस्कृतकाव्य संस्कृतकाव्य च निर्मित येन । वंशगृहमिव प्रदीप्त तडतडतट्टत्वं करोति ॥

३ प्राकृतकाव्ये रसो यो जायते तथा वा छेकभणितै । उदकस्य च वासितशीतलस्य तृप्ति न व्रजाम ॥
ललिते मधुराक्षरे युवतिजनवल्लभे सशृङ्गारे । सति प्राकृतकाव्ये क शक्नोति संस्कृतं पठितुम् ? ॥

इस कोष में स्वीकृत पद्धति

१. प्रथम काले टाइपो में क्रम से प्राकृत शब्द, उसके बाद सादे टाइपो मे उस प्राकृत शब्द के लिङ्ग आदि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्राकेट) मे काले टाइपो मे प्राकृत शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द, उसके अनन्तर सादे टाइपो मे हिन्दी भाषा मे अर्थं और तदनन्तर सादे टाइपो मे ब्राकेट मे प्रमाण (रेफरेंस) का उल्लेख किया गया है।

२. शब्दो का क्रम नागरी वर्ण-माला के अनुसार इस तरह रखा गया है —अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, क, ख, ग आदि। इस तरह अनुस्वार के स्थान की गणना सस्कृत-कोषो की तरह पर-सवर्ण अनुनासिक व्यञ्जन के स्थान मे न कर अन्तिम स्वर के बाद और प्रथम व्यञ्जन के पूर्व मे ही करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत मे[1] व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान मे अनुनासिक का होना कही भी अनिवार्य नही है और प्राचीन हस्त लिखित पुस्तको मे प्राय सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।

३. प्राकृत शब्द का प्रयोग विशेष रूप से आर्ष (अर्धमागधी) और महाराष्ट्री भाषा के अर्थ मे और सामान्य रूप से आर्ष से लेकर अपभ्रंश भाषा तक के अर्थ मे किया जाता है। प्रस्तुत कोष के 'प्राकृत-शब्द-महार्णव' नाम मे प्राकृत-शब्द सामान्य अर्थ मे ही गृहीत है। इसमे यहाँ[2] आर्ष, महाराष्ट्री, शौरसेनी, अशोक-शिलालिपि, देश्य, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची तथा अपभ्रंश भाषाओ के शब्दो का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और साहित्य की दृष्टि से इन सब भाषाओ मे आर्ष और महाराष्ट्री का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनो के शब्द यहाँ पूर्ण रूप से लिए गये हैं और शौरसेनी आदि भाषाओ के प्राय उन्ही शब्दो को स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (आर्ष और महाराष्ट्री) से विशेष भेद रखते है अथवा जिनका प्राकृत रूप नही पाया गया है, जैसे—'य्येव', 'विध्रुव', 'सपाद-इत्तअ', 'सभावीअदि' वगैरह। इन भेद की पहिचान के लिए प्राकृत से इतर भाषा के शब्दो और आख्यात-कृदन्त के रूपो के आगे सादे टाइपो मे कोष्ठ मे उस उस भाषा का सक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे[3] '(शौ)', '(मा)' इत्यादि। परन्तु सौरसेनी आदि मे भी जो शब्द या रूप प्राकृत के ही समान है वहाँ ये भेद-दर्शक चिह्न नही दिए गए हैं।

   (क) आर्ष और महाराष्ट्री से सौरसेनी आदि भाषाओ के जिन शब्दो मे सामान्य (सर्व-शब्द-साधारण) भेद है उनको इस कोष मे स्थान देकर पुनरावृत्ति-द्वारा ग्रन्थ के कलेवर को विशेष वढाना इसलिए उचित नही समझा गया है कि वह सामान्य भेद प्राकृत-भाषाओ के साधारण अभ्यासी से भी अज्ञात नही है और वह उपोद्घात मे भी उस उस भाषा के लक्षण-प्रसङ्ग मे दिखा दिया गया है जिससे वह सहज ही ख्याल मे आ सकता है।

   (ख) आर्ष और महाराष्ट्री मे भी परस्पर उल्लेखनीय भेद है। तिस पर भी यहाँ उनका भेद-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि इन दोनो मे इतर भाषाओ से अपेक्षा-कृत समानता अधिक है, दूसरा, प्रकृति की अपेक्षा प्रत्ययो मे ही विशेष भेद हैं जो व्याकरण से सम्बन्ध रखता है, कोष से नही, तीसरा, जैन ग्रथकारो ने महाराष्ट्री-ग्रथो मे भी आर्ष प्राकृत के शब्दो का अविकल रूप मे अधिक व्यवहार कर उनको महाराष्ट्री का रूप दे दिया है[4]।

४. प्राकृत मे यश्रुतिवाला[5] नियम खूब ही अव्यवस्थित है। प्राकृत-प्रकाश, सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और प्राकृतपिंगल आदि मे इस नियम का एकदम अभाव है जबकि आर्ष, जैन महाराष्ट्री तथा गउडवहो-प्रभृति ग्रन्थो मे इस नियम का हद से ज्यादा आदर देखा जाता हैं, यहाँ तक कि एक ही शब्द मे कही तो यश्रुति है और कही नही, जैसे 'पअ' और 'पय', 'लोअ' और 'लोय'। इस कोष मे ऐसे शब्दो की पुनरावृत्ति न कर कोई भी (यश्रुतिवाले 'य', से रहित या सहित) एक ही शब्द लिया गया है। इससे क्रम तथा इतर समान शब्द की

---

१. देखो प्राकृतप्रकाश, सूत्र ४, १४, १७, हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, २५, और प्राकृतसर्वस्व, सूत्र, ४, २३ आदि।

२ प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १-३) आदि मे इनसे अतिरिक्त और भी प्राच्या, शाकारि आदि अनेक उपभेद बताए गए हैं, जिनका समावेश यहाँ सौरसेनी आदि इन्ही मुख्य भेदो मे यथास्थान किया गया है।

३. इन सक्षिप्त नामो का विवरण सकेत-सूची मे देखिए।

४. इसी से डा. पिशल् आदि पाश्चात्य विद्वानो ने आर्ष-भिन्न जैन प्राकृत-ग्रथो की भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। देखो डा. पिशल् का प्राकृतव्याकरण और डा. टेसेटोरी की उपदेशमाला की प्रस्तावना।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण का सूत्र १, १८०।

तुलना की सुविधा के लिए आवश्यकतानुरूप कहीं कहीं रेफरेंसवाले शब्द के 'अ' के स्थान में 'य' और 'य' की जगह 'अ' किया गया है।

आर्ष ग्रन्थों में यश्रुतिवाले 'य' की तरह 'त' का प्रयोग भी बहुत ही पाया जाता है, जैसे 'अय' (अज) के स्थान में 'अत', 'अईअ' (अतीत) की जगह 'अतीय' आदि। ऐसे शब्दों की भी इस कोष में बहुधा पुनरावृत्ति न करके त-वर्जित शब्दों को ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

६ संयुक्त शब्दों को उनके क्रमिक स्थान में अलग न देकर मूल (पूर्व भागवाले) शब्द के भीतर ही उत्तर भागवाले शब्द अकारादि क्रम से काले टाइपों में दिए गए हैं और उसके पूर्व ° (ऊर्ध्व बिन्दी) का चिह्न दिया गया है। ऐसे शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द भी काले टाइपों में ° चिह्न दे कर दिए गए हैं। विशेष स्थानों में पाठकों की सुगमता के लिए संयुक्त शब्द उसके क्रमिक स्थान में अलग भी बतलाये गए हैं और उसके अर्थ तथा रेफरेंस के लिए मूल शब्द में जहाँ वे दिए गए हैं, देखने की सूचना की गई है।

(क) इन संयुक्त शब्दों में जहा 'देखो°——' से जिस शब्द को देखने को कहा गया है वहा उस शब्द के उसी मूल शब्द के भीतर देखना चाहिए न कि अन्य शब्द के अन्दर।

७ त, त्तण (त्व), आ, या (तल्), अर, यर, तराग (तर), अम, तम (तम) आदि सुगम और सर्वत्र-साधारण प्रत्ययवाले शब्दों में प्रत्ययों को छोडकर केवल मूल शब्द ही यहाँ लिए गए हैं। परन्तु जहाँ ऐसे प्रत्ययों में रूप आदि की विशेषता है वहा प्रत्यय-सहित शब्द भी लिए गए हैं।

८ धातुओं के सब रूप सादे टाइपों में और कृदन्तों के रूप काले टाइपों में धातु के भीतर दिए गए हैं।

(क) भाव तथा कर्म-कर्तरि रूपों का निर्देश भी धातु के भीतर 'कर्म—' से ही किया गया है।[1]

(ख) भूत कृदन्त के रूप तथा अन्य आख्यात तथा कृदन्त के विशिष्ट रूप बहुधा अलग अलग अपने क्रमिक स्थान में दिए गए हैं।

९. जिन सस्करणों से शब्द संग्रह किया गया है उनमें रही हुई संपादन की या प्रेस की भूलों को सुधार कर शुद्ध शब्द ही यहा दिए गए हैं। पाठकों के ज्ञानार्थ साधारण भूलों को छोडकर विशेष भूलवाले पाठ रेफरेंस के उल्लेख के अनन्तर पूर्व में ज्यों के त्यों उद्धृत भी किये गए हैं और भूलवाले भाग की शुद्धि कोस में '?' (शङ्काचिह्न) के बाद बतला दी गई है, जैसे देखो **क्षोभ, वब्भ** आदि शब्द।

(क) जहाँ भिन्न भिन्न ग्रंथों में या एक ही ग्रंथ के भिन्न भिन्न स्थानों में या सस्करणों में एक ही शब्द के अनेक संदिग्ध रूप पाये गए हैं और जिनके शुद्ध रूप का निर्णय करना कठिन जान पडा है वहाँ पर ऐसे रूपवाले सब शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं और तुलना के लिए ऐसे प्रत्येक शब्द के अन्त भाग में 'देखो—' लिख कर इतर रूप भी सूचाया गया है, जैसे देखो '**पुक्खलच्छिभय, पोक्खलच्छिलय**' '**पेसल, पेसलेस**, '**भयालि, सयालि**' आदि शब्द।

१०. एक ही ग्रंथ के एक या भिन्न भिन्न सस्करणों के अथवा भिन्न भिन्न ग्रंथों के पाठ-भेदों के सभी शुद्ध शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं, जैसे—**परिज्झुसिय** (भगवतीसूत्र २५—पत्र ९२३) और **परिझुसिय** (भग २५ टी—पत्र ९२५), **णिव्विदेज्ज** (भी. मा. का सूत्रकृताग १, २, ३, १२) और **णिव्विदेज्ज** (आ स. का सूत्रकृताग १, २, ३, १२), **पविरल्लिय** (आ. स. का प्रश्नव्याकरण १, ५—पत्र ९१) और **पवित्थरिल्ल** (अभिधानराजेंद्र का प्रश्नव्याकरण १, ५), **सामकोट्ठ** (समवायाग-सूत्र, पत्र १५३) और **सामिकुट्ठ** प्रवचनसारोद्धार, द्वार ७) प्रभृति।

११. संस्कृत की तरह प्राकृत में भी कम से कम शब्द के आदि के 'व' तथा 'ब' के विषय में गहरा मत-भेद है। एक की शब्द कहीं वकारादि पाया जाता है तो कहीं बकारादि। जैसे भगवतीसूत्र मे 'वत्थि' है तो विपाकश्रुत मे बत्थि' छपा है। इससे ऐसे शब्दों को दोनों स्थानों में न देकर जो 'ब' या 'व' उचित जान पडा है उसी एक स्थल में वह शब्द दिया गया है और उभय प्रकार के शब्दों के रेफरेंस भी वहाँ ही दिये गये हैं। हाँ, जहाँ दोनों अक्षरों के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से उल्लेख पाया गया है वहाँ दोनों स्थलों में वह शब्द दिया गया है, जैसे '**बप्फाउल**' और '**वप्फाउल**'[1] आदि।

१२ लिङ्गादि-द्योतक संक्षिप्त शब्द प्राकृत शब्द से ही संबन्ध रखते हैं, संस्कृत-प्रतिशब्द से नहीं।

(क) जहाँ अर्थ भेद में लिङ्ग आदि का भी भेद है वहाँ उस अर्थ के पूर्व में ही भिन्न लिंग आदि का सूचक शब्द दे दिया गया है। जहा ऐसा भिन्न शब्द नहीं दिया है वहाँ उसके पूर्व के अर्थ या अर्थों के समान ही लिंग आदि समझना चाहिए।

---

१ देशीनाममाला ६, ९२ का टीका।

(ख) प्राकृत मे लिंग-विधि खूब ही अनियमित है। प्राकृत वैयाकरणो ने भी कुछ अति सक्षिप्त परन्तु [1]व्यापक सूत्रो के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है । प्राचीन ग्रंथो मे एक ही शब्द का जिस-जिस लिंग मे योग जहाँ तक हमे दृष्टिगोचर हुआ है, उस-उस लिंग का निर्देश इस कोष मे उस शब्द के पास कर दिया गया है। जहाँ लिंग मे विशेष विलक्षणता पाई गई है वहाँ उस ग्रंथ का अवतरण भी दे दिया गया है ।

(ग) जहाँ स्त्रीलिंग का विशेष रूप पाया गया है वहाँ उस अर्थ के बाद 'स्त्री—' निर्देश करके रेफरेंस के साथ दिया गया है ।

(घ) प्राकृत मे अनेक ग्रंथो मे अव्यय के बाद विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानो मे अव्यय-सूचक 'अ' के बाद प्राय लिंग बोधक शब्द भी दिया गया है, जैसे 'वला' के बाद 'अ. स्त्री' = (अव्यय तथा स्त्रीलिंग) ।

१३. देश्य शब्दो के संस्कृत प्रतिशब्द के स्थान मे केवल देश्य का सक्षिप्त रूप 'दे' ही काले टाइपो मे कोष्ठ मे दिया गया है ।

(क) जो धातु वास्तव मे देश्य होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्याकरणो मे संस्कृत धातु के आदेश कह कर तद्भव बतलाये गये हैं उनके संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान मे 'दे' न देकर प्राचीन वैयाकरणो की मान्यता बतलाने के उद्देश्य से वे वे आदेशि सस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इससे सस्कृत से बिलकुल विसदृश रूपवाले इन देश्य धातुओ को वास्तविक तद्भव समझने की भूल कोई न करे ।

(ख) जो धातु तद्भव होने पर भी प्राकृत व्याकरणो मे उसको अन्य धातु का आदेश बतलाया गया है उस धातु के व्याकरण-प्रदर्शित आदेशि सस्कृत रूप के बाद वास्तविक सस्कृत रूप भी दिखलाया गया है यथा पेच्छ के [दृश्, प्र + ईक्ष्] आदि ।

(ग) प्राचीन ग्रंथो मे जो शब्द देश्य रूप से माना गया है परन्तु वास्तव मे जो देश्य न होकर तद्भव ही प्रतीत होता है, ऐसे शब्दो का सस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए सस्कृत प्रतिशब्द के पूर्व मे 'दे' दिया गया है ।

(घ) जो शब्द वास्तव मे देश्य ही है, परन्तु प्राचीन व्याख्याकारो ने उसको तद्भव बतलाते हुए उसके जो परिमार्जित—छिल-छाल कर बनाये हुए संस्कृत—रूप अपने ग्रंथो मे दिये है, परन्तु जो सस्कृत-कोषो मे नही पाये जाते हैं, ऐसे सस्कृत-प्रतिरूपो को यहाँ स्थान न देते हुए केवल 'दे' ही दिया गया है ।

(ङ) जो शब्द देश्य रूप मे सदिग्ध है उसके प्रतिशब्द के पूर्व मे 'दे' भी दिया है ।

१४. प्राचीन व्याख्याकारो के दिये हुए सस्कृत-प्रतिशब्द से भी जो अधिक समानतावाला संस्कृत प्रतिशब्द है वही यहाँ पर दिया गया है, जैसे 'एहाणिय' के प्राचीन प्रतिशब्द 'स्नापित' के बदले 'स्नानित' ।

१५. अनेक अर्थवाले शब्दो के प्रत्येक अर्थ १, २, ३ आदि अको के बाद क्रमश दिये गये हैं और प्रत्येक अर्थ के एक या अनेक रेफरेंस उस अर्थ के बाद सादे ब्राकेट मे दिये हैं।

(क) धातु के भिन्न-भिन्न रूपवाले रेफरेंसो मे जो-जो अर्थ पाये गये हैं वे सब १, २, ३ के अको से देकर क्रमश धातु के आख्यात तथा कृदन्त के रूप दिये गये हैं और उस-उस रूपवाले रेफरेंस का उल्लेख उसी रूप के बाद ब्राकेट मे कर दिया गया है ।

(ख) जिस शब्द का अर्थ वास्तव मे सामान्य या व्यापक है, किन्तु प्राचीन ग्रथो मे उसका प्रयोग प्रकरण-वश विशेष या संकीर्ण अर्थ मे हुआ है, ऐसे शब्द का सामान्य या व्यापक अर्थ ही इस कोष मे दिया गया है, यथा—'हत्थिच्चग' का प्रकरण-वश होता 'हाथ के योग्य आभूषण' यह विशेष अर्थ यहाँ पर न देकर 'हाथ सम्बन्धी' यह सामान्य अर्थ ही दिया गया है। 'णक्खत्त (नाक्षत्र)' आदि तद्धितान्त शब्दो के लिए भी यही नियम रखा गया है।

१६. शब्द-रूप, लिंग, अर्थ की विशेषता या सुभाषित की दृष्टि से जहाँ अवतरण देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर वह, पर्याप्त अश मे, अर्थ के बाद और रेफरेंस के पूर्व मे दिया गया है ।

(क) अवतरण के बाद कोष्ठ मे जहाँ अनेक रेफरेंसो का उल्लेख है वहाँ पर केवल सर्व-प्रथम रेफरेंस का ही अवतरण से सबन्ध है, शेष का नही ।

१७. एक ही ग्रथ के जिन अनेक सस्करणो का उपयोग इस कोष मे किया गया है, रेफरेंस मे साधारणत सस्करण-विशेष का उल्लेख न करके केवल ग्रथ का ही उल्लेख किया गया है । इससे ऐसे रेफरेंसवाले शब्द को सब सस्करणो का या सस्करण-विशेष का समझना चाहिए ।

---

१. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, ३३ से ३५ ।

(क) जहाँ पर संस्करण-विशेष के उल्लेख की खास आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर रेफरेंस की संकेत-सूची में दिये हुए संस्करण के १, २ आदि अंक रेफरेंस के पूर्व में दिये हैं, जैसे पेसल और पेसलेस शब्दों के रेफरेंस 'आचा' के पूर्व में '२' का अंक आगमोदय-समिति के संस्करण का और '३' का अंक प्रो० रवजी भाई के संस्करण का बोधक है।

१८. जहाँ कहीं प्राकृत के किसी शब्द के रूप की, अर्थ की अथवा संयुक्त शब्द आदि की समानता या विशेषता के लिये प्राकृत के ही ऐसे शब्दान्तर की तुलना बतलाना उपयुक्त जान पड़ा है वहाँ पर रेफरेंस के बाद 'देखो—' से उस शब्द को देखने की सूचना की गई है।

१९. जहाँ कहीं 'देखो' के बाद काले टाइपों में दिये हुए प्राकृत शब्द के अनन्तर सादे टाइपों में लिंगादि बोधक या संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है वहाँ उसी लिंग आदिवाले या संस्कृत प्रतिशब्दवाले ही प्राकृत शब्द से मतलब है, न कि उसके समान इतर प्राकृत शब्द से। जैसे अ शब्द के 'देखो च अ' के च से पुंलिंग च को छोड़कर दूसरा ही अव्यय-भूत च शब्द, और ओसार के 'देखो ऊसार=उत्सार' के 'ऊसार' से तीसरा ही ऊसार शब्द देखना चाहिए, पहले, दूसरे और चौथे ऊसार शब्द को नहीं।

उक्त नियमों से अतिरिक्त जिन नियमों का अनुसरण इस कोष में किया गया है वे आधुनिक नूतन पद्धति के संस्कृत आदि कोषों के देखनेवालों से परिचित और सुगम होने के कारण खुलाने की जरूरत नहीं रखते।

पाइअ-सद्द-महण्णवो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस समूहं, भासिअणेगतवाय-ललिअत्थं ।
पासिअ-लोआलोअं, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्कित्तिम-साउ-पयं, अइसइअ सयल-वाणि-परिणमिरं ।
वाय अवाय-रहिअं, पणमामि जिणिंद-देवाण ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, अवलोइअ सत्थ सत्थमइविउलं ।
सद्द महण्णव-णामं, रएमि कोसं स-वण्ण-कमं ॥ ३ ॥

अ

अ पु [अ] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १, १, प्रामा) । २ विष्णु, कृष्ण (से १, १) ।

अ देखो च अ (श्रा १४, जी २, पउम ११३, १४, कुमा) ।

अ [दे] देखो इव, 'चदो अ' (प्राकृ ७६) ।

अ° अ [अ] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, 'अहमरण' (सुर ७, २४८), 'सव्वनिसेहे मओऽकारो' (विसे १२३२) । २ विरोध, उल्टापन, 'अधम्म' (गाया १, १८) । ३ अयोग्यता, अनुचितपन, 'अयाल' (पउम २२,८५) । ४ अल्पता, थोडापन, 'अधण' (गउड), 'अचेल' (सम ४०) । ५ अभाव, अविद्यमानता, 'अगुण' (गउड) । ६ भेद, भिन्नता, 'अमणुस्स' (णंदि) । ७ सादृश्य, तुल्यता, 'अचक्खुदसण' (सम १५) । ८ अप्रशस्तता, बुरापन, 'अभाइ' (चारु २६) । ९ लघुपन, छोटाई, 'अतड' (बृह १) ।

अ पु [क] १ सूर्य, सूरज (से ७, ६३) । २ अग्नि, आग । ३ मयूर, मोर (से ६,४३) । ४ न पानी, जल (से १,१) । ५ शिखर, टोच (से ६,४३) । ६ मस्तक, सिर (से ६,१८) ।

°अ वि [°ज] उत्पन्न, जात (गा ६७१) ।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १, १३) ।

अअर देखो अवर (पि १६५) ।

अअर देखो आयर (पि १६५) ।

अइ अ [अयि] १-२ सभावना और आमत्रण अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, २०५, स्वप्न ५८) ।

अइ अ [अति] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व मे लगता है और नीचे के अर्थों मे से किसी एक को सूचित करता है—१ अतिशय, अतिरेक, 'अइउण्ह', 'अइभत्ति', 'अइचिंतत' (श्रा १४, रभा, गा २१४) । २ उत्कर्ष, महत्त्व, 'अइवेग' (कप्प) । ३ पूजा, प्रशसा, 'अइजाय' (ठा ४) । ४ अतिक्रमण, उल्लघन, 'अइउक्कसो' (दस ५,४,४२) । ५ ऊपर, ऊंचा, 'अइमच', 'अइपडागा' (औप, णाया १,१) । ६ निन्दा, 'अइराडिय' (बृह १) ।

अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अव्यय, 'अइवहइ' (सूअ १, २, ३, ५) ।

अइ सक [आ + इ] आगमन करना, आ गिरना, 'अइति नाराया' (स ३८३) ।

अइइ स्त्री [अदिति] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०) ।

अइइ सक [अति+इ] १ उल्लघन करना । २ गमन करना । ३ प्रवेश करना । वकृ अइंत (से ६, २६, कप्प) । सकृ अइच्च (सूअ १, ७, २८) ।

अइउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिगत, प्राप्त (सूअ १, ५, १, १२) ।

अइंच सक [अति + अञ्च्] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना । २ उल्लघन करना । ३ अक दूर जाना (से १३, ८, ८६) ।

अइंचिअ वि [अत्यञ्चित] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ (से १३,८) । २ उल्लघित, अतिक्रान्त (से १३,८) । ३ दूर गया हुआ (से १३, ८६) ।

अइछ देखो अइच (से १३, ८) ।

अइछिअ देखो अइचिअ (से १३, ८) ।

अइछण न [अत्यञ्चन] १ उल्लघन (से १३, ३८) । २ आकर्षण, खीचाव (से ८ ६४) ।

अइंत देखो अइइ = अति + इ ।

अइंत वि [अनायत्] १ नहीं आता हुआ। २ जो जाना न जाता हो, 'गाहाहि पणइणीहि य खिज्जइ चित्तं अइंतीहिं' (वज्जा ४)।

अइंदिय वि [अतीन्द्रिय] इन्द्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह (विसे २८१८)।

अइंमुत्त देखो अइमुत्त (प्राकृ ३२)।

अइक्कम अक [अतिक्रम्] गुजरना, बीतना, 'देवधणस्स समम्रो अइकमइ दुद्धरस्स रायस्स' (सम्मत्त १७४)। देखो अइक्कम = अति + क्रम्।

अइकाय पु [अतिकाय] १ महोरग—जातीय देवों का एक इन्द्र (ठा २)। २ रावण का एक पुत्र (से १६, ५६)। ३ वि बडा शरीरवाला (णाया १, ८)।

अइक्कंत वि [अतिक्रान्त] १ अतीत, गुजरा हुआ, 'अइक्कंतजोव्वणा' (ठा ५)। २ तीर्ण, पार पहुँचा हुआ (आव)। ३ जिसने त्याग किया हो वह, 'सव्वसिणेहाइक्कंता' (औप)।

अइक्कम सक [अति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना, 'अइक्कमइ' (भग)। वकृ अइक्कमंत, अइक्कममाण (सुपा २३८, भग)। कृ अइक्कमणिज्ज (सूत्र, २,७)।

अइक्कम पु [अतिक्रम] १ उल्लंघन (गा ३४८)। २ व्रत या नियम का आंशिक खण्डन (ठा ३, ४)।

अइक्कमण न [अतिक्रमण] ऊपर देखो (सुपा २३८)।

अइक्ख वि [अतीक्ष्ण] तीक्ष्णतारहित, 'अइक्खा वेयरणी' (तदु ४६)।

अइक्ख वि [अनीक्ष्य] अदृश्य, 'अइक्खा वेयरणी' (तदु ४)।

अइगच्छ } अक [अति + गम्] १ गुजरना,
अइगम } बीतना। २ सक. पहुँचना। ३ प्रवेश करना। ४ उल्लंघन करना। ५ जाना, गमन करना। वकृ अइगच्छमाण (णाया १,१)। संकृ अइगम्म (आचा), 'अइगतूण अगोग' (विसे ६०८)।

अइगम पु [अतिगम] प्रवेश (विसे ३८६)।

अइगमण न [अतिगमन] १ प्रवेश-मार्ग (णाया १, २)। २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना (भग)।

अइगय वि [दे] १ आया हुआ। २ जिसने प्रवेश किया हो वह (दे १,५७), 'ससुरकुलम्मि अइगओ, दिट्ठा य सगउरव तत्थ' (उप ५६७ टी)। ३ न मार्ग का पीछला भाग (दे १, ५७)।

अइगय वि [अतिगत] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ, 'हिंडतस्स अइगय वरिसमेग' (महा, से १०, १८, विसे ७ टी)।

अइगय वि [अतिगत] प्राप्त, 'एवं बुद्धिमइगओ गब्भे सवसइ दुक्खिओ जीवो' (तदु १३)।

अइचिर अ [अतिचिरम्] बहुत काल तक (गा ३४६)।

अइच्च देखो अइइ = अति + इ।

अइच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना। अइच्छइ (हे ४,१६२)।

अइच्छ सक [अति+क्रम्] उल्लंघन करना। अइच्छइ (ओघ ५१८)। वकृ अइच्छंत (उत्त १८)।

अइच्छा स्त्री [अदित्सा] १ देने की अनिच्छा। २ प्रत्याख्यान विशेष (विसे ३५०४)।

अइच्छिय वि [गत] गया हुआ, गुजरा हुआ (पउम ३, १२२, उप पृ १३३)।

अइच्छिय वि [अतिक्रान्त] अतिक्रान्त, उल्लंघित (पाअ, विसे ३५८२)।

अइजाय पुं [अतिजात] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र (ठा ४)।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] १ जो न देखा गया हो वह। २ न कर्म, दैव, भाग्य (भवि)। °उव्व, °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न देखा गया हो वह (गा ४१४, ७४८)।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] जो देखा न गया हो वह (हास्य १४६)।

अइट्ठ वि [अनिष्ट] १ अप्रिय। २ खराब, दुष्ट, 'जो पुण खलु खुद्दु अइट्ठसग्गु, तो किमब्भत्थउ देइ अग्गु' (भवि)।

अइट्ठा सक [अति + स्था] उल्लंघन करना। संकृ अइट्ठिय (उत्त ७)।

अइट्ठिय वि [अतिष्ठित] अतिक्रान्त, उल्लंघित (उत्त ७)।

अइण न [दे] गिरि-तट, तराई, पहाड का निम्न भाग (दे १, १०)।

अइण न [अजिन] चर्म, चमडा (पाअ)।

अइणिय वि [दे अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (दे १,२४)।

अइणिय } वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ (से
अइणीय } ६, ५६)। २ जो दूर ले जाया गया हो (प्राप)।

अइणीअ वि [अतिगत] गत, गया हुआ (सुख २,१३)।

अइणीय वि [दे अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (महा)।

अइणु वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से उतरा हुआ (षड्)।

अइतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (उप १०३१ टी)।

अइतेया स्त्री [अतितेजा] पक्ष की चौदहवी रात (सुज्ज १०,१४)।

अइदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य, भावार्थ (उप ८६८, ८७६)।

अइदुसमा } स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो दुस्स-
अइदुस्समा } मदुस्समा (पउम २०, ८३,
अइदूसमा } ६०, उप पृ १४७)।

अइदंपज्ज देखो अइदंपज्ज (पंचा १४)।

अइधाडिय वि [अतिधाटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (पण्ह १,३)।

अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करनेवाला, रोकनेवाला (कुमा)।

अइन्न न [अजीर्ण] १ बदहजमी, अपच। २ वि जो हजम न हुआ हो वह। ३ जो पुराना न हुआ हो, नूतन (उव)।

अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ। °याण न [°दान] चोरी (आचा)।

अइपंडुकंबलसिला स्त्री [अतिपाण्डुकम्बलशिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला (ठा ४)।

अइपडाग पु [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८)। २ स्त्री पताका के ऊपर की पताका (णाया १, १)।

अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला,

'जो दव्वखेत्तकालभावकयं जं जहिं जया काले। तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणाम वियाणाहि' (बृह १)।

अइपाइअ वि [अतिपातिक] हिंसा करनेवाला (सूअ २, १, ५७)।

अइपास पुं [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर-देव (तित्थ)।

अइपास सक [अति+दृश्] अतिशय देखना, खूब देखना। अइपासइ (सूअ १, १, ४, ६)।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बडी सवेर (सुर ७, ७८)।

अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] १ तृप्त न होता हुआ भोजन करनेवाला। २ न. तीन वार से अधिक भोजन (पिंड ६४७)।

अइप्पसंग पु [अतिप्रसङ्ग] १ अतिपरिचय (पञ्चा१०)। २ तर्क-शास्त्र मे प्रसिद्ध अति-व्याप्ति-नामक दोष (स १६६, उवर ४८)।

अइप्पसंगि वि [अतिप्रसङ्गिन्] अतिप्रसंग दोषवाला (अज्झ १०)।

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बडी सवेर (गा ६८)।

अइबल वि [अतिबल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली (औप)। २ न अतिशय बल, विशेष सामर्थ्य। ३ बडा सैन्य (हे ४, ३५४)। ४ पु एक राजा, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्वीय चतुर्थ भव मे पिता या पितामह था (आचू)। ५ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८)। ६ भरत क्षेत्र मे आगामी चौवीसी मे होनेवाला पाँचवा वासुदेव (सम ५)। ७ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)।

अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास नामक ग्यारहवें गणधर की माता (आचू)।

अइभूइ पु [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पंचम वासुदेव के पूर्व-जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १७६)।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकर्ष। २ बहुत जमीन (से३, ४२)। ३ गृहस्थों के घर का वह भाग, जहाँ साधुओं का प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो, 'अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी' (दस ५, १, २४)।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मट्टी (जीव ३)।

अइमत्त } **अइमाय** } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाण से अधिक (उव ठा ९)।

अइमुंक, **अइमुंत**, **अइमुंतय**, **अइमुत्त**, **अइमुत्तय** } पु [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म मे मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र था और जिसने बहुत छोटी ही उम्र मे भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अन्त)। २ कंस का एक छोटा भाई (आव)। ३ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ८)। ४ माधवी लता (पाअ, स ३५)। ५ न अन्तगडदसा नामक अंग-ग्रन्थ का एक अध्ययन (अन्त)। (हे १, २६,१७८, पि २४६)।

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त, 'अव्वो अइअ-म्मि तुमे, णवरं जइ सा न जूरिहिइ' (हे २, २०४)। २ करनेवाला, 'ठाणाइय' (औप)।

अइय वि [अतिग] प्राप्त (राय १३४)।

°अइय वि [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र। २ दया-पात्र, दया करने योग्य (से ९, ३१)।

अइयच्छ देखो **अइगच्छ**।

अइयण न [अत्यदन] बहुत खाना, अधिक भोजन करना (वव २)।

अइयय वि [अतिगत] गया हुआ (स ३०३)।

अइयर सक [अति+चर्] १ उल्लंघन करना। २ व्रत को दूषित करना। वक्र अइयरत (सुपा ३५४)।

अइया सक [अति+या] जाना, गुजरना (उत्त २०)।

अइया स्त्री [अजिका] बकरी, छागी (उप २३७)।

°अइया स्त्री [दयिता] स्त्री, पत्नी (से ९, ३१)।

अइयाण न [अतियान] १ गमन, गुजरना। २ राजा वगैरह का नगर आदि मे धूम-धाम से प्रवेश करना (ठा ४)।

अइयाय वि [अतियात] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०)।

अइयार पु [अतिचार] उल्लंघन, अतिक्रमण (भवि)। २ गृहीत व्रत या नियम मे दूषण लगाना (श्रा ६)।

अइर अ [अचिर] जल्दी, शीघ्र (स्वप्न ३७)।

अइर न [अजिर] आंगन, चौक (पाअ)।

अइर पु [दे] आयुक्त, गांवका राज-नियुक्त मुखिया (दे १, १६)।

अइर न [दे अंतर] देखो **अयर**=अंतर (सुपा ३०)।

अइर वि [दे] अतिरोहित (पिंड ५६०, ५६१)।

अइरजुवइ स्त्री (दे) नई वहू, दुलहिन (दे १, ४८)।

अइरत्त पु [अतिरात्र] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह (ठा ६)।

अइरत्त वि [अतिरक्त] १ गाढा लाल। २ विशेष रागी। °**कंबलसिला**, °**कंबला** स्त्री [°कम्बलशिला, कम्बला] मेरु पर्वत के पाडुक वन मे स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवो का जन्माभिषेक किया जाता है (ठा २ ३)।

अइरा अ [अचिरात्] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५)।

अइरा } **अइराणी** } स्त्री [अचिरा] पाँचवें चक्रवर्ती और सोलहवे तीर्थंकर-देव की माता (सम १५२, पउम २०, ४२)।

अइराणी स्त्री [दे] १ इन्द्राणी। २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री (दे १,५८)।

अइरावण पु [ऐरावण] इन्द्र का हाथी(पाअ)।

अइरावय पु [ऐरावत] इन्द्र का हाथी(भवि)।

अइराहा स्त्री [अचिराभा] बिजली, चपला (दे १, ३४ टी)।

अइरि न [अतिरि] धन या सुवर्ण का अति-क्रमण करनेवाला, धनाढ्य (षड्)।

अइरिप पु [दे] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी (दे १,२६)।

अइरित्त वि [अतिरिक्त] १ बचा हुआ, अवशिष्ट (पउम ११८,११६)। २ अधिक, ज्यादा (ठा २, १), 'पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलओ' (मार्व ६३)। °सिज्जासणिय वि [शय्यासनिक] लम्बी-चौडी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु) (आचा)।

अइरूव वि [अतिरूप] १ सुरूप, सुडौल (पउम २०,११३)। २ पु भूत-जातीय देवविशेष (पराग १)।

अइरेइय वि [अतिरेकित] अतिरेक-युक्त, अतिप्रभूत (राय ७८ टी)।

अइरेग पु [अतिरेक] १ आधिक्य, अधिकता, 'माइरेगअट्ठवासजायय' (णाया १, ५)। २ अतिशय (जीव ३)।

अइरेण } अ [अचिरेण] जल्दी, शीघ्र (गा
अइरेण } १३५, पउम ६२, ४, उवर ४०)।

अइरेय देखो अइरेग (णाया १, १)।

अइव अ [अतीव] अतिशय, अत्यन्त,
'रिन्न अइव महत,
चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स।
ता त सव्व सुपुरिस।
अप्पायत्त करेजासु॥' (महा)।

अइवट्टण न [अतिवर्त्तन] उल्लघन, अतिक्रमण (आचा)।

अइवत्त सक [अति + वृत्] अतिक्रमण करना। अइवत्तइ (आचा)।

अइवत्तिय वि [अतिव्रतिक] १ जिसका उल्लघन किया गया हो वह। २ प्रधान, मुख्य। ३ उल्लंघन करनेवाला (आचा)।

अइवय सक [अति + वृत्] उल्लंघन करना। सइ अइवइत्ता (सूअ २, २, ६५)।

अइवय सक [अति + व्रज्] १ उल्लघन करना। २ संमुख जाना। ३ प्रवेश करना। अइवयति (पराह १,८)। वकृ 'नियगवयए अइवयन गयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा' (णाया १, १, कप्प)।

अइवय सक [अति + पत्] उल्लघन करना। २ सम्मुख करना। ३ प्रवेश करना। ४ भव करना। ५ गिर जाना, 'भवरे रण-भीम-सद्द-सद्दा मगाम्मि अइवयति' (पराह १, ३), 'नोमपया ममार अइवयंति' (पराह १,५)। वकृ जरं वा मरीररूव-विणासिणि मरीर वा अइवयमाणि निवारेसि' (णाया १, ८), अइवयत (कप्प)। प्रयो अइवाएमाण (आचा, ठा ७)।

अइवह सक [अति + वह्] वहन करने मे समर्थ होना। अइवहइ (सूअ १, २, ३, ५)।

अइवाइ वि [अतिपातिन्] १ हिंसक (सूअ १, ५)। विनश्वर (विसे १५७८)।

अइवाइत्तु वि [अतिपातयितृ] मारनेवाला (ठा ३, २)।

अइवाइय वि [अतिपातिक] ऊपर देखो (सूअ २, १)।

अइवाएत्तु देखो अइवाइत्तु (ठा ७)।

अइवाएमाण देखो अइवय = अति + पत्।

अइवाय पु [अतिपात] १ हिंसा आदि दोष (ओव ४६)। २ विनाश, 'पाणाइवाएण' (णाया १, ५)।

अइवाय पु [अतिवात] १ उल्लघन। २ भयकर पवन, तूफान (उप ७६८ टी)।

अइवाह सक [अति + वाहय्] बीताना, गुजारना, 'सो अइवाहेइ दुन्नि दिणे' (धर्मवि ३३)।

अइविरिय वि [अतिवीर्य] १ बलिष्ठ, महापराक्रमी। २ पु इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५)। ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा (पउम ३७, ३)।

अइविसाल वि [अतिविशाल] १ बहुत बडा, विस्तीर्ण। २ स्त्री यमप्रभ नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी (दीव)।

अइस [अप] वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का (हे ४, ४०३)।

अइसइ वि [अतिशयिन्] अतिशय वाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक (सुपा २५७)।

अइसइअ वि [अतिशयित] ऊपर देखो (पाअ)।

अइसयण देखो अइसधाण, 'भिनगाणतिसयण न कायव्व' (पचा ७, २१)।

अइसंधाण [अतिसधान] ठगाई, वचना, 'भियगाणइसधाण सामयवुड्ढी य जयणा य' (पचा ७)।

अइसक्कणा स्त्री [अतिष्वष्कणा] उत्तेजना, प्रेरणा, बढावा (निसी)।

अइसय सक [अति + शी] मात करना। वकृ 'परबलम् अइसयतो' (पउम ६०, १८)।

अइसय पु [अतिशय] १ श्रेष्ठता, उत्तमता (कुमा १, ५)। २ महिमा, प्रभाव, 'नयणाइसओ' (महा)। ३ बहुत, अत्यन्त (सुर, १२, ८१)। ४ चमत्कार (उर १, ३)। °भरिय वि [°भृत] पूर्ण, पूरा भरा हुआ (पाअ)।

अइसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, सपत्ति, गौरव (हे १, १५१)।

अइसाइ वि [अतिशायिन्] १ श्रेष्ठ (धम्म ६ टी)। २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री °णी (सुपा ११४)।

अइसायण न [अतिशायन] उत्कृष्टता, उत्कर्ष (चेइय ७३३)।

अइसार पु [अतिसार] सग्रहणी रोग, जठर की व्याधि-विशेष (लहुअ १५)।

अइसेस पु [अतिशेष] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य (सम ५६)। २ बचा हुआ, अवशिष्ट (ठा ४, २)। ३ अतिशय वाला (विसे ५७२)।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ प्रभावशाली, महिमान्वित। २ समृद्ध (राज)।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ महिमान्वित। २ समृद्ध, ज्ञान आदि के अतिशय से सम्पन्न (सट्ठि ४२ टी)।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ऊपर देखो (ओघ ३०)।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ज्ञात, जाना हुआ (वव १)।

अइहर पु [अतिभर] हद, अवधि, मर्यादा, 'सत्तीय को अइहरो ?' (अच्चु २३)।

अइहारा स्त्री [दे] बिजली, चपला (दे १, ३४)।

अइहि पु [अतिथि] जिसके आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु (आचा)। °सविभाग पु [°सविभाग] साधु को भोजन आदि का निर्दोष दान (धर्म ३)।

अई सक [गम्] जाना, गमन करना। अईइ (हे ४, १६२, कुमा), अइति (गउड)।

अईअ पु [अतीत] १ भूतकाल (पच६०)। २ वि जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ, 'जे अ अईआ सिद्धा' (पडि)। ३ अतिक्रान्त (सूअ

१, १०, सार्ध ४, विसे ८०८)। ४ जो दूर हो गया हो (उत्त १५)।

अईअ } अ [अतीव] बहुत, विशेष, अत्यन्त
अईव } (भग ७, १, पण्ह १, २)।

अईसंत वि [अ + दृश्यमान] जो दिखता न हो (से १, ३५)।

अईसय देखो अइसय (पउम ३,१०५, ७५, २६)।

अईसार पु [अतीसार] रोग-विशेष, संग्रहणी रोग (सुख १,३)।

अईसार पु [अतीसार] १ संग्रहणी रोग। २ इस नाम का एक राजा (ठा ५,३)।

अउ देखो आउ = स्त्री, 'उल्लमिश्रो तमरूवो वलयागारो अउक्काश्रो' (पव २५५)।

अउअ न [अयुत] १ दस हजार की संख्या। २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अउअंग न [अयुताङ्ग] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अउंठ वि [अकुण्ठ] निपुण, कार्य-दक्ष (गउड)।

अउचित्त न [औचित्य] उचितपन (प्राकृ १०)।

अउज्झ वि [अयोध्य] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह (सम१३७)। २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि (ठा ४)।

अउज्झा स्त्री [अयोध्या] नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवंश के राजाओं की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है (ठा २)।

अउण वि [एकोन] जिसमें एक कम हो वह। यह शब्द बीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई संख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस संख्या से एक कम होता है। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५९ (कप्प)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] उनसत्तर, ६९ (कप्प) °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २९ (णाया १, १३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५९ (कप्प)। °पन्न, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] उनपचास, ४९ (जी ३९, पउम १०२, ७०)। देखो एगूण।

अउणतीसइ स्त्री देखो अउण-त्तीस (उत्त ३६, २४०)।

अउणप्पन्न देखो अउणापन्न (जीवस २०८)।

अउणासट्ठि देखो अउण-सट्ठि (सुज्ज ६)।

अउणोणिव्वित्ति स्त्री [अपुनर्निवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष (अच्चु १०)।

अउण्ण } न [अपुण्य] १ पाप (सुर ६,
अउन्न } २०)। २ त्रि अपवित्र। ३ पुण्य-रहित, पापी (पउम २८, ११२, सुर २, ५१)।

अउम देखो ओम (सुभा १४)।

अउमर वि [अद्मर] खानेवाला, भक्षक (प्राकृ २८)।

अउल वि [अतुल] असाधारण, अद्वितीय (उप ७२८ टी, पण्ह १, ४)।

अउलीन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुजाति, संकर (गा २५३)।

अउव्व वि [अपूर्व] अनोखा, अद्वितीय (गा ११६)।

अउस पु [दे] उपासक, पूजारी (प्रयौ ८२)।

अए अ [अये] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (कप्पू)।

अओ अ [अतस्] १ यहां से लेकर (सुपा ४७८)। २ इसलिए, इस कारण से (उप ७३०)।

अओ° [अयस्°] लोह। °घण पु [घन] लोहे का हथौडा, 'सीसंपि भिंदंति अओघणेहिं' (सूअ १, ५, २, १४)। °मय वि [°मय] लोहे की बनी हुई चीज (सूअ २, २)। °मुह पु [°मुख] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (ठा ५)। ३ वि लोहे की माफिक मजबूत मुंह वाला, 'पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं' (सूअ १, ५, २, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] एक नगरी (उप ७६४)।

अओग्ग वि [अयोग्य] नालायक (स ७६४)।

अओज्झा देखो अउज्झा (प्रति ११५)।

अं अ [दे] स्मरण-द्योतक अव्यय, 'अं दट्ठव्वा मालइलआ' (प्राकृ ८०)।

अंक पु [अङ्क] १ उत्संग, कोला (स्वप्न २१६)। २ रत्न की एक जाति (कप्प)। ३ नौ की एक संख्या, 'कासी विक्कमवच्छरम्मि य गए बाणंकसुन्नोडुवे' (सुर १६, २४९)। ४ संख्या-दर्शक चिह्न, १, २, ३ (पण्ण २)। ५ नाटक का एक अंश, 'सुरगणा मणुस्सभवणाडएसु निज्झाइआ अंका' (धण ४५)। ६ सफेद मणि की एक जाति (उत्त ३४)। ७ चिह्न, निशान (चंद २०)। ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणों में से एक (पण्ह १, ४)। ९ आसन-विशेष (चंद ४)। °कण्ड पुन. [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अंक रत्नों का है (ठा १०)। °करेल्लुग, °करेल्लुअ पुं [°करेल्लुक] पानी में होनेवाली एक जाति की वनस्पति (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] अंक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला (कप्प)। °धर पु [°धर] चन्द्रमा (जीव ३)। °धाई स्त्री [°धात्री] पांच प्रकार की धाई-माताओं में से एक, जिसका काम बालक को उत्संग में ले उसका जी बहलाना है (णाया १, १)। °लिवि स्त्री [°लिपि] अठारह लिपियों में की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष (सम ३५)। °वणिय पु [°वणिक्] अंक-रत्नों का व्यापारी (राय)। °वालि, °वाली स्त्री [°पालि, °पाली] आलिंगन (काप्र १९४)। °हर देखो °धर (जीव ३)।

अंक [दे अङ्क] निकट, समीप, पास (दे १, ५)।

अंक पुन [अङ्क] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

अंककरेलुअ, °ग देखो अंक-करेल्लुअ (आचा २, १, ८, ५)।

अंकण न [अङ्कन] १ चिह्नित करना (आव)। २ बैल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना (पण्ह १,१)। ३ वि अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला, 'अंकण जोइसस्स सूर' (कप्प)।

अंकणा स्त्री [अङ्कना] ऊपर देखो (णाया १, १७)।

अंकदास पु [अङ्कदास] बालक को उत्संग में लेकर उसका जी बहलानेवाला नौकर (सम्मत्त २१७)।

अंकवाणिय देखो अंक-वणिय (राय १२६)।

अकार पु [दे] सहायता, मदद (दे १,६)।

अंकावई स्त्री [अङ्कावती] १ महाविदेह क्षेत्र के रम्य नामक विजय की राजधानी (ठा २)। मेरु की पश्चिम दिशा मे बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा मे वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत (ठा ४, २)।

अकिअ न [दे] आलिंगन (दे १,११)।

अकिअ वि [अङ्कित] चिह्नित, निशानवाला (ओप)।

अकिइल्ल पु [दे] नट, नर्तक, नचवैया (णाया १, १)।

अकुडग पु [अड्कुटक] नागदन्तक, खूँटी ताव (ज १)।

अकुर पु [अड्कुर] प्ररोह, फुनगी (जी ६)।

अकुरिय वि [अड्कुरित] अकुर-युक्त, जिसमे अकुर उत्पन्न हुए हों वह (उवा)।

अकुस पु [अड्कुश] १ आकडी, लोहे का एक हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं, 'अकुसेण जहा णागो धम्मे सपडिवाइओ' (उत्त २२)। २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। ३ सीता का एक पुत्र, कुस (पउम ६७, १६)। ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबू मे रखनेवाला (गउड)। ५ एक देव-विमान (राज)। ६ पुन गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २)।

अकुस पुन [अड्कुश] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। २ पु अकुशाकार खूँटी (राय ३७)।

अकुसइय न [दे अकुशित] अकुश के आकार-वाली चीज (दे १, ३८, से ६, ६३)।

अकुसय पु [अड्कुशक] देखो अकुस। २ सन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-पूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवो को काटता है (ओप)।

अंकुसा स्त्री [अड्कुशा] चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी (पव २८)।

अकुसिअ वि [अड्कुशित] अकुश की तरह मुडा हुआ (से १४, २६)।

अकुसी स्त्री [अड्कुशी] देखो अकुसा (सति १०)।

अकूर देखो अकुर, 'मा पुण विरतमित्ता निबंकुरे विसेसेइ' (सुपानि ६१ टी)।

अकेल्लण न [दे] घोडा आदि को मारने का चाबुक, कोडा, ओंगी (ज ४)।

अकेल्लि पु [दे] अशोक-वृक्ष (दे१, ७)।

अकोल्ल पु [अङ्कोठ] वृक्ष-विशेष (हे १,२००)।

अग व पु [अङ्ग] १ इस नाम का एक देश, जिसको आजकल विहार कहते हैं (सुर २, ६७)। २ रामका एक सुभट (पउम ५६,३७)। ३ न आचाराग सूत्र आदि बारह जैन आगम-ग्रथ (विपा २, १)। ४ वेदाग, वेद के शिक्षादि छ अग (आचू)। ५ कारण, हेतु (पव १)। ६ आत्मा, जीव (भवि)। ७ पुन शरीर (प्रासू ८४)। ८ शरीरके मस्तक आदि अवयव (कम्म १, ३४)। ९ अ मित्रता का आम-न्त्रण, सम्बोधन (राय)। १० वाक्यालकार मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (ठा ४)। °इ पु [°जित्] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी (निर)। °इसि पु [°र्षि] चपा नगरी का एक ऋषि (आचू)। [°चूलिया] स्त्री [°चूलिका] अग-ग्रथो का परिशिष्ट (पक्खि)। °च्छहिय वि [°छिन्नाङ्ग] जिसका अग काटा गया हो वह (सूअ २, २, ६३)। °जाय वि [°जात] बच्चा, लडका (उप ६४८)। °द देखो °य = °द (ठा ८)। °पविट्ठ न [°प्रविष्ट] १ बारह जैन अग-ग्रन्थो मे से कोई भी एक (कम्म १, ६)। २ अग-ग्रथो का ज्ञान (ठा २, १)। °बाहिर न [°बाह्य] १ अग-ग्रथो के अतिरिक्त जैन आगम (आचू)। २ अग-ग्रथो से भिन्न जैन आगमो का ज्ञान (ठा २)। °मग न [°ङ्ग] १ अंग-प्रत्यग (राय)। २ हर एक अवयव (पड्)। °मदिर न [°मन्दिर] चम्पा नगरी का एक देव-गृह (भग १, १)। °मद्द, °मद्दय पु [°मर्द, °मर्दक] १ शरीर की चपी करनेवाला नोकर। २ वि शरीर को मलनेवाला, चपी करनेवाला (सुपा १०८, महा, भग ११, १)। °य पु [°द] १ वाली नामक विद्याधरराज का पुत्र (पउम १०, १०, ५६, ३७)। २ न बाजूबद, केहुटा (पण्ह १, ४)। °य वि [°ज] १ शरीर मे उत्पन्न। २ पु पुत्र, लडका (उप १३४ टी)। °या स्त्री [°जा] कन्या, पुत्री (पाअ)। °रक्ख, °रक्खग वि [°रक्ष, °रक्षक] शरीर को रक्षा करनेवाला (सुपा ५२७, इक)। °राग, °राय पु [°राग] शरीर मे चन्दनादि का विलेपन (औप, गा १८६)। °राय पु [°राज] १ अगदेश का राजा (उप ७६५)। अग देश का राजा कर्ण (णाया १, १६, वेणी १०४)। °रिसि देखो °इसि। °रुह वि [°रुह] देखो °य = °ज (सुपा ५१२, पउम ५६, ३२)। °रुहा स्त्री [°रुहा] पुत्री, लडकी (सुपा १५०)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] १ शरीर के स्फुरण का शुभा-शुभ फल बतलानेवाली विद्या (उत्त ८)। २ उस नाम का एक जैन ग्रथ (उत्त ८)। °वियार पु [°विचार] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १५)। °सभूय वि [°सभूत] सतान, बच्चा (उप ६४८)। °हारय पु [°हारक] शरीर के अवयवो के विक्षेप, हाव-भाव (अजि ३१)। °दाण न [°दान] पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिह्न (निसी)।

अग पु [अङ्ग] भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४)। २ न लगातार बारह दिनो का उपवास (सवोध ५८)। °ज देखो °य (धर्मवि १२६)। °हर वि [°धर] अङ्ग-ग्रंथो का जानकार (विचार ४७३)।

अग वि [आङ्ग] १ शरीर का विकार (ठा ८)। २ शरीर-सबधी, शारीरिक (सुअ २, २)। ३ न शरीर के स्फुरण आदि विकारो के शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-शास्त्र (सम ४६)।

°अग वि [चङ्ग] सुन्दर, मनोहर (भवि)।

अगइया स्त्री [अङ्गदिका] एक नगरी, तीर्थ-विशेष (उप ५५२)।

अंगगीभाव पु [अङ्गाङ्गीभाव] अभेद-भाव, अभिन्नता, 'अगगीभावेण परिणएणन्नसरिस-जिणधम्मे' (सुपा २१८)।

अगण न [अङ्गण] आगन, चौक (सुर ३, ७१)।

अंगणा स्त्री [अङ्गना] स्त्री, औरत (सुर ३, १८)।

अगदिआ देखो अङ्गइया (ती)।

अगवड्ढण न [दे] रोग, बीमारी (दे १, ४७)।

अंगवलिज्ज न [दे] शरीर को मोडना (दे १, ४२)।

अगार पु [अङ्गार] १ जलता हुआ कोयला (हे १, ४७)। २ जैन साधुओ के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)। °मद्दग पु [°मर्दक] एक अभव्य जैन-आचार्य (उप २५४)। °वई स्त्री [°वती] नुनुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी)।

अगारग } पु [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो अगारय } (गा २६१)। ३ मगल-ग्रह (पण्ह १, ५)। ४ पहला महाग्रह (ठा २)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६०)।

अगारिय वि [अङ्गारित] कोयले की तरह जला हुआ, विवर्ण (नाट, आचा)।

अगाल देखो अगार, 'निदड्ढगालनिभ' (पिंड ६७५)।

अगालग देखो अगारग (राज)।

अगालिय न [दे] ईख का टुकडा (दे १, २८)।

अगालिय देखो अगारिय (आचा)।

अंगि पु [अङ्गिन्] १ प्राणी, जीव (गण ८)। २ वि शरीरवाला। ३ अग-ग्रन्थो का ज्ञाता (कप्प)।

अगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है (ठा ७)।

अगिरस वि [आङ्गिरस] १ अगिरस-गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७)। २ पु एक तापस (पउम ४, ८६)।

अंगीकड } वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत (ठा ५, अगीकय } सुपा ५२६)।

अगीकर } सक [अङ्गी+कृ] स्वीकार अगीकुण } करना। अगीकरेइ (महा, नाट)। अगीकरेहि (स ३०६) संकृ अंगीकरेऊण (विसे २६४२)।

अगुअ पुं [इङ्गुद] १ वृक्ष-विशेष। २ न इगुद वृक्ष का फल (हे १, ८९)।

अंगुट्ठ पु [अङ्गुष्ठ] अगूठा (ठा १०) °पसिण पु [°प्रश्न] १ एक विद्या। २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन (ठा १०)।

अगुट्ठी स्त्री [दे] सिरका अवगुण्ठन, घूघट (दे १, ६, स २८४)।

अंगुत्थल न [दे] अगुठी, अगुलीय (दे १, ३१)।

अगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] सतान, बच्चा (उप २६४)।

अगुम सक [पूरय्] पूर्त्ति करना, पूरा करना। अगुमइ (हे ८, ६८)।

अगुमिय वि [पूरित] पूर्ण किया हुआ (कुमा)।

अंगुरि, °री स्त्री [अङ्गुलि, °ली] उगली (गा २७७)।

अंगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्यभाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष (भग ३, ७)। °पोहत्तिय वि [°पृथक्त्वक] दो से लेकर नव अगुल तक का परिमाण वाला (जीव १)।

अगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उगली (कुमा)। °कोस पु [°कोश] अगुलि-त्राण, दास्ताना (राय)। °प्फोडण न [°स्फोटन] उगली फोडना, कडाका करना (तदु)।

अगुलिअ } न [अङ्गुलीयक] अगुठी अगुलिज्जक } (दे ५, ६, कप्प, पि २५२)। अगुलिज्जग }

अगुलिणी स्त्री [दे] प्रियगु, वृक्ष-विशेष (दे १, ३२)।

अगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो अंगुलि (कप्प)।

अगुलीय } पुन [अङ्गुलीयक] अगुठी अगुलीयग } (सुर १०, ६४), 'पायवडि-अगुलीयय } एण सामिय। समप्पिओ अगुलेज्जक } अगलीयओ तीए' (पउम ५४, अंगुलेयय } ६, सुर १, १३२, पि २५२, पउम ४६, ३९)।

अंगुलेयग देखो अगुलेयय (सुख २, २६)।

अगुवंग } न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अगोवग } अवयव (पण्ण २३)। २ नख वगैरह शरीर के छोटे-छोटे अवयव, 'नहकेसम-सुअगुलीओट्ठा खलु अगोवगाणि' (उत्त ३)। °णाम न [°नामन्] शरीर के अवयवो के निर्माण मे कारण-भूत कर्म-विशेष (कम्म १, ३४, ४८)।

अगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोडकर बाकी शरीर का स्नान (उप पृ २३)।

अंघो अ [अङ्ग] भय-सूचक अव्यय (प्राप्र ३६, प्रयौ २०५)।

अच सक [कृष्] १ खीचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। ४ उठाना। अचइ (हे ४,१८७)। सकृ अचेइत्ता (आव)।

अच सक [अञ्च्] पूजना, पूजा करना। अचए (भवि)।

अच सक [अञ्च्] जाना। अचति (पचा १६, २३), 'अञ्चु गइ पूयणम्मि य', 'सोधीए पारमचइ' (बृह ४)।

अंचल पु [अञ्चल] कपडे का शेष भाग (कुमा)।

अंचि पु [अञ्चि] गमन, गति (भग १५)।

अचि पु [आञ्चि] आगमन, आना (भग १५)।

अंचिय वि [अञ्चित] १ युक्त, सहित (सुर ४, ६७)। २ पूजित (सुपा २१८)। ३ प्रशस्त, श्लाघित (प्रासू १८)। ४ न एक प्रकार का नृत्य (ठा ४, ४, जीव ३)। ५ एक बार का गमन (भग १५)। °यचि पु [°ाञ्चि] १ गमनागमन, आना जाना (भग १५)। २ ऊचा-नीचा होना (ठा १०)।

अचियरिभिय न [अञ्चितरिभित] एक तरह का नाट्य (राय ५३)।

अचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण (स१०२)।

अछ सक [कृष्] १ खीचना, 'अछति वासु-देव अगडतडम्मि ठिय सत' (विसे ७९४)। २ अक. लम्बा होना। वकृ अछमाण (विसे ७९९)। प्रयो अछावेइ (णाया १, १)।

अछण न [कर्षण] खीचाव (पण्ह २, ५)।

अछिय वि [दे] आकृष्ट, खीचा हुआ (दे १, १४)।

अंज सक [अञ्ज्] आजना। कृ अंजियव्व (स ५४३)।

अजण पु [अञ्जन] १ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। २ देव-विशेष (सिरि ६६७)।

अजण पु [अञ्जन] १ पर्वत-विशेष (ठा ५)। २ एक लोकपाल देव (ठा ४)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है (ठा २, ३, ८)। ४ वृक्ष-विशेष (आव)। ५ न एक जाति का रत्न (णाया १, १)। ६ देवविमान-विशेष (सम ३५)। ७ काजल, कज्जल (प्रासू ३०)। ८ जिसका

सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य (जी ४)। ९ आँखको आँजना (सूअ १, ६)। १० तैल आदि मे शरीर की मालिश करना (राज)। ११ लेप (स ५८२)। १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-काण्ड का दशवाँ अंश-विशेष (ठा १०)। °केसिया स्त्री [°केशिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १७, राय)। °जोग पु [°योग] कला-विशेष (कप्प)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °पुलय पु [°पुलक] एक जाति का रत्न (ठा १०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा ८)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)। °रिट्ठ पु [°रिष्ट] इन्द्र-विशेष (भग ३, ८)। °सलागा स्त्री [°शलाका] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा। २ अंजन लगाने की सलाई (सूअ १, ५)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] आँख मे अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्तिवाला (निसी)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक सती स्त्री, हनूमान् की माता (पउम १५, १२)।

अंजणइसिआ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ (दे १, ३७)।

अंजणई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

अंजणईस न [दे] देखो अंजणइसिआ (दे १, ३७)।

अंजणग देखो अंजण।

अंजणा स्त्री [अञ्जना] १ हनूमान की माता (पउम १, ६०)। २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी (ठा २, ४)। ३ एक पुष्करिणी (ज ४)। °तणय पु [°तनय] हनूमान् (पउम ४७, २८)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान् की माता (पउम १८, ५८)।

अंजणाभा स्त्री [अञ्जनाभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)।

अंजणिआ स्त्री [दे] देखो अंजणइसिआ (दे १, ३७)।

अंजणी स्त्री [अञ्जनी] कज्जल का आधार-पात्र (कुम्मा १, ४)।

अंजलि, °ली पुंस्त्री [अञ्जलि] १ हाथ का संपुट (हे १, ३५)। एक या दोनों संकुचित हाथों को ललाट पर रखना, 'एगेण वा दोहि वा करसिरोहि हत्थेहि णिडालसंसिएहि अंजली भण्णति' (निचू)। ३ कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम (प्रासू ११०, स्वप्न ६३)। °उड पु [°पुट] हाथ का संपुट (महा)। °करण न [°करण] विनय-विशेष, नमन (दे)। °पग्गह पु [°प्रग्रह] १ नमन, हाथ जोडना (भग १४, ३)। २ संभोग-विशेष (राज)।

अंजस वि (दे) ऋजु, सरल (दे १, १४)।

अंजिय वि [अञ्जित] आँजा हुआ, अंजन-युक्त किया हुआ (से ६, ४८)।

अंजु वि [ऋजु] १ सरल, अकुटिल, 'अंजुधम्मं जहा तच्चं, जिणाण तं सुणेह मे' (सूअ १, १, १, ४, ८)। २ संयम मे तत्पर, संयमी, 'पुट्ठोवि नाइवत्तइ अंजू' (आचा)। ३ स्पष्ट, व्यक्त (सूअ १, १)।

अंजुआ स्त्री [अञ्जुका] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

अंजू स्त्री [अञ्जू] १ एक सार्थवाह की कन्या (विपा १, १०)। २ 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन (विपा १, १)। ३ एक इन्द्राणी (ठा ८)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)।

अंठि पुन [अस्थि] हड्डी, हाड (षड्), 'अहिअमहुरस्स अवसं अजोग्गदाए अणंठी न भक्खीअदि' (चारु ६)।

अंड, अंडअ, अंडग न [अण्ड, °क] १ अंडा (कप्प, ओप)। २ अंड-कोश (महानि ४)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का तृतीय अध्ययन (णाया १, १)। °कड वि [°कृत] जो अण्डे मे बनाया गया हो, 'बंभणा माहणा एगे, आह अण्डकडे जगे' (सूअ १, ३)। °बंध पु [°बन्ध] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला (गउड)। °वाणियय पु [°वाणिजक] अण्डों का व्यापारी (विपा १, ३)।

अंडग, अंडय पुं [अण्डज] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जन्तु, पक्षी, साँप, मछली वगैरह (ठा ३, १, ८)। २ रेशम का धागा। ३ रेशमी वस्त्र (उत्त २६)। ४ शण का वस्त्र (सूअ २, २)।

अंडय पुं [दे, अण्डज] मछली, मत्स्य (दे १, १६)।

अंडाउय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होनेवाला (पउम १०२, ६७)।

अंत पुं [अन्त] १ स्वरूप, स्वभाव (से ६, १८)। २ प्रान्त भाग (से ६, १८)। ३ सीमा, हद (जी ३३)। ४ निकट, नजदीक (विपा १, १)। ५ भग, विनाश (विसे ३४५४, जी ४८)। ६ निर्णय, निश्चय (ठा ३)। ७ प्रदेश, स्थान, 'एगंतमंतमवक्कमइ' (भग ३, २)। ८ राग और द्वेष, 'दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणो' (आचा)। ९ रोग, बीमारी (विसे ३४५४)। १० वि इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस वस्तु (पण्ह २, ४)। ११ मनोहर, सुन्दर (से ६, १८)। १२ नीच, क्षुद्र, तुच्छ (कप्प)। °कर वि [°कर] उसी जन्म मे मुक्ति पानेवाला (सूअ १, १५)। °करण वि [°करण] नाशक (पण्ह १, ६)। °काल पु [°काल] १ मृत्यु काल। २ प्रलय काल (से ५, ३२)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मुक्ति, संसार का अन्त करना (ठा ४, १)। °कुल न [°कुल] क्षुद्र कुल (कप्प)। °गड वि [°कृत्] उसी जन्म मे मुक्ति पानेवाला (उप ४६१)। °गडदसा स्त्री [°कृद्दशा] जैन अंग-ग्रंथो मे आठवाँ अंग-ग्रंथ (अणु १)। °चर वि [°चर] भिक्षा मे नीरस पदार्थो की ही खोज करनेवाला (पण्ह २, १)।

अंत वि [अन्त्य] अन्तिम, अन्त का (पण्ण १५)। °क्खरिया स्त्री [°ाक्षरिका] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद (पण्ण १)। २ कला-विशेष (कप्प)।

अंत न [अन्त्र] आंत (सुपा १८२, गा ५८५)।

अंत अ [अन्तर्] मध्य मे, बीच मे (हे १, १४)। °उर न [°पुर] देखो अंतेउर (नाट)। °करण, °क्करण [°करण] मन, हृदय, 'कण्णारसपरवसंतकरणेण' (उत्त ६ टी, नाट)। °गय वि [°गत] मध्यवर्ती, बीचवाला (हे १, ६०)। °द्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश (आव)। °द्धाण न [°धान] अदृश्य होना, तिरोहित होना

(उप १३६ टी)। °द्धाणी स्त्री [°र्धानी] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या (सूअ २, २)। °द्धाभूअ वि [°धाभूत] नष्ट, विगत, 'नट्ठेत्ति वा विगतेत्ति वा अंतद्धाभूतेत्ति वा एगट्ठा' (आचू)। °प्पाअ पुं [°पात] अन्तर्भाव, समावेश (हे २, ७७)। °भाव पु [°भाव] समावेश (विसे)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कुछ कम मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त (जी १४)। °रद्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश, 'वुड्ढी सइअन्तरद्धा' (श्रा १६)। °रद्धा स्त्री [°अद्धा] मध्य-काल, बीच का समय (गच्छा)। °रप्प पु [°आत्मन्] आत्मा, जीव (हे १, १४)। °रहिय, °रिहिद (शौ) वि [°हित] १ व्यवहित, अन्तराल-युक्त (आचा)। २ गुप्त, अदृश्य (सम ३६, उप १६६ टी, अभि १२०)। °विइ पु [°वेदि] गंगा और यमुना के बीच का देश (कुमा)।

°अंत वि [°कान्त] सुन्दर, मनोहर (से १, ५६)।

अंतअ वि [आयान्] आता हुआ (से ६, ४६)।

अंतअ वि [अन्तग] पार-गामी, पार-प्राप्त (से ६, १८)।

अंतअ वि [अन्तद] १ अविनाशी, शाश्वत। २ जिसकी सीमा न हो वह (से ६,१८)।

अंतअ } वि [अन्तक] १ मनोहर, सुन्दर
अंतग } (से ६, १८)। २ अन्तर्गत, समाविष्ट (सूअ १, १५)। ३ पर्यन्त, प्रान्त भाग, 'जे एव परिभासंति अन्तए ते समाहिए' (सूअ १,३)। ४ यम, मृत्यु (से ६, १८, उप ६६६ टी), 'समागम कंखति अन्तगस्स' (सूअ १, ७)।

अंतग वि [अन्तग] १ पार-गामी। २ दुस्त्यज, जो कठिनाई से छोड़ा जा सके, 'विचारण अन्तग मोय निरवेक्खो परिव्वए' (सूअ १, ६)।

अंतगय देखो अंत-गय (वव १)।

°अंतण न [यन्त्रण] बन्धन, नियन्त्रण (प्रयौ २४)।

अंतद्धाण वि [अन्तर्धान] तिरोधान-कर्त्ता (पिंड ५००)।

अंतब्भाव देखो अंत-भाव (अज्झ १४२)।

अंतर न [अन्तर] १ मध्य, भीतर, 'गामंतरे पविट्ठो सो' (उप ६ टी)। २ भेद, विशेष, फरक (प्रासू १६८)। ३ अवसर, समय (गाया १, २)। ४ व्यवधान (ज १)। ५ अवकाश, अन्तराल (भग ७,८)। ६ विवर, छिद्र (पाअ)। ७ रजोहरण। ८ पात्र। ९ पुं. आचार, कल्प। १० सूत के कपड़े पहनने का आचार, सौत्र कल्प (कप्प)। °कप्प पु [°कल्प] जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण (पंचू)। °कंद पु [°कन्द] कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °करण न [°करण] आत्मा का शुभ अध्य-वसाय-विशेष (पंच)। °गिह न [°गृह] १ घर का भीतरी भाग। २ दो घरों के बीच का अंतर (बृह ३)। °णई स्त्री [°नदी] छोटी नदी (ठा ६)। °दीव पु [°द्वीप] १ द्वीप-विशेष (जी २३)। २ लवण समुद्र के बीच का द्वीप (पण्ण १)। °सत्तु पु [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि (सुपा ८५)।

अंतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच में डालना। अंतरेहि, अंतरेमि (विक्र १३६)।

अंतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी, 'सय-लसुराणंपि अंतरो अप्पाणो' (अच्चु २०)। २ मानसिक (उवर ७१)।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी (विसे २०२७)।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष (विसे २३०३)।

अंतरपल्ली स्त्री [अन्तरपल्ली] मूल स्थान से ढाई गव्यूत की दूरी पर स्थित गाँव (पव७०)।

अंतरमुहुत्त देखो अंत-मुहुत्त (पंच २,१३)।

अंतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीच में (उप ६५४)। २ पहले, पूर्व में (कप्प)।

अंतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष, जो दान आदि करने में विघ्न करता है (ठा २)। २ विघ्न, रुकावट (पण्ह २,१)।

अंतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो (सुपा ६०१)।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला भाग (सुख १, १५)।

अंतराय पुन. [अन्तराय] देखो अंतराइय (ठा २, ४, स २०३)।

अंतराल पु [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग (अभि ८२)।

अंतरावण पुन [अन्तरापण] दूकान, हाट (चारु ३)।

अंतरावास पु [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल (कप्प)।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश (भग १७, १०, स्वप्न ७०)। °जाय वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु (आचा २, ५)। °पासणाह पु [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के पास का एक जैन-तीर्थ और वहाँ की भगवान श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति (ती)।

अंतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-संबंधी, आकाश का (जी ५)। २ ग्रहों के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र (सम ४६)।

अंतरिज्ज न [अन्तरीय] १ वस्त्र, कपड़ा। २ शय्या का नीचला वस्त्र, 'अंतरिज्ज णाम णियंसणं, अहवा अंतरिज्ज नाम सेजाए हेट्ठिल्ल पोत्तं' (निचू १५)।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटीसूत्र (दे १, ३५)।

अंतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वेशवाटिक गच्छ की एक शाखा (कप्प)।

अंतरित } वि [अन्तरित] व्यवहित, अंतर-
अंतरिय } वाला (सुर ३, १४३, से १, २७)।

अंतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अंत (ज २)।

अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोड़ा व्यवधान (राय)।

अंतरीय न [अन्तरीप] द्वीप, 'सरवरगिहत-राले जिणभवणं आसि अंतरीय व' (धर्मवि १४३)।

अंतरेण अ [अन्तरेण] विना, सिवाय (उत्त १)।

अतरेण अ [अन्तरेण] बीच में, मध्य में (स ७६७)।

अतलिक्ख देखो अंतरिक्ख (णाया १, १, चार ७)।

°अति देखो पति (से ६, ६६)।

अतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य (ठा १)।

अतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट (उत्त १)। २ अवसान, अंत, 'अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अंतियं' (आचा १,८)। ३ अन्तिम, चरम (सूअ २, २)।

अतीहरी स्त्री [दे] दूती (दे १, ३५)।

अतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला, बीचक (हे १, ६०)।

अतेउर न [अन्तःपुर] १ राजस्त्रियों का निवासगृह। २ रानी, 'मणकुमारो वि तेसिं वदणत्थं सअंतेउरो गओ तमुज्जाणं' (महा)।

अंतेउरिगा, अतेउरिया, अतेउरी स्त्री [आन्तःपुरिकी, °री] १ अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री, रानी (उत्त ६ टी, सुपा २२८, २८६)। २ रोगी का नाममात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या (वव ५)।

अतेड्डी स्त्री [दे] १ मध्य, बीच। २ उदर, पेट। ३ वल्लीन, तरंग (दे १, ५५)।

अंतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य (कप्प)।

अंतेवुर देखो अंतेउर (प्रति ५७)।

अतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर, 'गामतो संतता' (उत्त ६ टी, सुर ३, ७८)। °खरिया स्त्री [°खरिका] नगर में रहनेवाली वेश्या (वव १५)। °गइया स्त्री [°गतिका] स्थान से निकल सामने जाना 'सव्वाए रिद्धीए अतोगइयाए तदायम्म' (सुर १५, २६१)। °गय वि [°गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट (उत्त ६८६ टी)। °णिअसणी स्त्री [°निवसनी] जैन साध्वियों को पहनने का एक वस्त्र (बृह ३)। °दहण न [°दहन] हृदय-दाह (सुर)। °मज्झावसाणिय पुन [°मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद (राय)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त्त] कम मुहूर्त्त, ४८ मिनिट से कम समय (कप्प)। °वाहिणी स्त्री [°वाहिनी] क्षुद्र नदी (ठा २, ३)। °वीसंभ पु [°विश्रम्भ] हार्दिक विश्वास (हे १ ६०)। °सल्ल न [°शल्य] १ भीतरी शल्य, घाव (ठा ८)। २ कपट, माया (ओघ)। °साला स्त्री [°शाला] घरका भीतरी भाग, 'कोलालभंड अतोसालाहितो बहिया णीणेइ' (उवा, पि ३४३)। °हुत्त वि [°मुख] भीतर, 'अंतोहुत्त डज्झइ जायासुण्णे घरे हलिअउत्तो' (गा ३७३)।

अतोहुत्त वि [दे] अधोमुख, औंधा मुंह वाला (दे १, २१)।

अत्रडी (अप) स्त्री [अन्त्र] आंत, आंतो (हे ४, ४४५)।

°अद पुं [चन्द्र] १ चन्द्रमा, चांद 'पसुवइणो रोसारुणपडिमासंकंतगोरिमुहअंद' (गा १)। २ कपूर (से ६, ४७)। °राअ पुं (°राग) चन्द्रकान्त मणि (से ६, ४७)।

°अदरा स्त्री [°कन्दरा] गुफा (से ६, ४७)।

°अदल पु [कन्दल] वृक्ष-विशेष (से ७, ४७)।

°अदावेढि (शौ) देखो अतावेइ (हे ४, २८६)।

अंदु, अदुया स्त्री [अन्दु] शृंखला, जंजीर (औप, स ५३०)।

अदेउर (शौ) देखो अतेउर (हे ४, २६१)।

अदोल अक [अन्दोल्] १ हिचकना, झूलना। २ कपना, हिलना। ३ संदिग्ध होना, 'अदोलइ दोलानु व माणो गरुओवि विलयाए' (स ५२१)। वकृ अंदोलत, अंदोलिंत, अदोलमाण (से ८,५१,११,२५, सुर ३,११६)।

अदोल सक [अन्दोलय्] कपाना, हिलाना। वकृ अंदोलत (सुर ३, ६७)।

अदोलग पु [आन्दोलक] हिंडोला (राय)।

अदोलण न [आन्दोलन] १ हिचकना, झूलना (सुर ४, २२५)। २ हिंडोला। ३ मार्ग-विशेष (सूअ १, ११)।

अदोलय देखो अंदोलग (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलनेवाला, कपानेवाला (गा २३७)।

अदोलिर वि [आन्दोलितृ] झुलनेवाला (सुपा ७८)।

अदोहण देखो अदोलण।

अंध वि [अन्ध] १ अन्धा, नेत्र-हीन (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञानरहित 'एए ण अंधा मूढा तमप्पइट्ठा' (भग ७, ७)। °कंटइज्ज न [°कण्टकीय] अंध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना (आचा)। °तम न [°तमस] निविड अन्धकार (सूअ १, ५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (बृह ४)।

अंध पु [अन्ध] पांचवां नरक का चौथा नरकेन्द्रक, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

अंध पु व [अन्ध्र] इस नाम का एक देश (पउम ६८, ६७)।

अंध वि [आन्ध्र] आन्ध्र देश का रहनेवाला (पण्ह १, १)।

अंधधु पु [दे] कूप, कुँआ (दे १, १८)।

अंधकार देखो अंधयार (चद ४)।

अंधग पु [दे] वृक्ष, पेड (भग १८, ४)। °वण्हि पु [°वह्नि] स्थूल अग्नि (भग १८,४)।

अंधग देखो अंध (भग १८, ४)। °वण्हि पु [°वह्नि] सूक्ष्म अग्नि (भग १८, ४)। °वण्हि पु (°वृष्णि) यदुवंश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था (अंत २)।

अंधय, अंधयग पु [अन्धक] १ अंधा, नेत्र-हीन (पण्ह १, २)। २ वानर-वंश का एक राजकुमार (पउम ६, १८६)।

अंधयार पुन [अन्धकार] अंधेरा, अंधकार (कप्प, स ४२६)। °पक्ख पु [°पक्ष] कृष्णपक्ष (सुज्ज १३)।

अंधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा (भवि)।

अंधयारिय वि [अन्धकारित] अंधकार-वाला (से १, १५, ७३)।

अंधरअ, अंधल वि [अन्ध] अंधा, नेत्रहीन (गा ७०४, हे २, १७३)।

अंधलरिड्डी स्त्री [अन्धयित्री] अंध बनानेवाली एक विद्या (सुपा ८२८)।

अंधार पु [अन्धकार] अंधेरा (ओघ १११, २७०)।

अंधार सक [अन्धकारय्] अन्धकार-युक्त करना। कर्म. 'मेहुच्छन्ने सूरे अंधारिज्जइ न किं भुवणं' (कुप्र ३८७)।

अंधारिय वि [अन्धकारित] अंधकार वाला (सुपा ५४, सुर ३, २३०)।

अंधाव सक [अन्धय्] अंधा करना। अंधावेइ (विक्र ८४)।

अंधिअ वि [अन्धित] अन्ध बना हुआ (सम्मत्त १२१)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] द्यूत-विशेष (दे २, १)।

अंधिआ स्त्री [आन्धिका] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (उत्त ३६,१४७)।

अंधिल्लग वि [अन्ध] अन्धा, जन्मान्ध (पण्ह २, ५)।

अंधिल्लय देखो अंधिल्लग; (पिंड ५७२)।

अंधीकिद (शौ) वि [अन्धीकृत] अंध किया हुआ (स्वप्न ४६)।

अंधु पु [अन्धु] कूप, कुँआ (प्रामा, दे १,१८)।

अंधेल्लग देखो अंधिल्लग (पिण्ड)।

°अंप पु [कम्प] कंपन (से ५, ३२)।

अंब पु [अम्ब] एक जात के परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को दुःख देते हैं (सम २८)।

अंब पुं [आम्र] १ आम का पेड़। २ न. आम, आम्र-फल (हे १, ८४)। °गट्ठिया स्त्री [दे] आम की आंठी, गुठली (निचू १५)। °चोयग न [दे] १ आम का छिलका (निचू १५)। २ आम की छाल (आचा २,७,२)। °डगल न [दे] आम का टुकड़ा (निचू १५) °डालग न [दे] आम का छोटा टुकड़ा (आचा २,७,२)। °पेसिया स्त्री [°पेशिका] आम का लम्बा टुकड़ा (निचू १५)। °भित्त न [दे] आम का टुकड़ा (निचू १५)। °सालग न [दे] आम की छाल (निचू १५)। °सालवण न [°शालवन] चैत्य-विशेष (राय)।

अंब न [अम्ल] १ तक्र, मट्ठा (ज ३)। २ खट्टा रस। ३ खट्टी चीज (विसे)। ४ वि निष्ठुर वचन बोलनेवाला (बृह १)।

अंब वि [आम्ल] १ खट्टी वस्तु। २ मट्ठे से संस्कृत चीज (ज ३)।

अंब वि [ताम्र] लाल, रक्तवर्णवाला (से ३, ३४)।

अंबग देखो अंब = आम्र (अणु) °ट्ठिया स्त्री [°अस्थि] आम की गुठली (अणु)।

अंबट्ठ पु [अम्बष्ठ] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह (सूअ १, ९)।

अंबड पु [अम्बड] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर मोक्ष जायगा (औप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौवीसी मे २२ वाँ तीर्थंकर होगा (ठा ९)।

अंबड वि [दे] कठिन (दे १,१६)।

अंबधाई स्त्री [अम्बाधात्री] धाई माता (सुपा २६८)।

अंबमसी स्त्री [दे] कठिन और वासी कनिक (दे १, ३७)।

अंबय देखो अंब (सुपा ३३८)।

अंबर पुन [अम्बर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)।

अंबर न [अम्बर] १ आकाश (पाअ, भग २, २)। २ वस्त्र, कपड़ा (पाअ, निचू १)। °तिलय पु [°तिलक] पर्वत-विशेष (आव)। °वत्थ न [°वस्त्र] स्वच्छ वस्त्र (कप्प)।

अंबरस पुन [अम्बरस] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।

अंबरिस पुन [अम्बरीष] १ भठ्ठी, भाड़ (भग ३, ६)। २ कोष्ठक (जीव)। ३ पु नारक-जीवों को दुःख देनेवाले एक प्रकार के परमाधार्मिक देव (पव १८०)।

अंबरिसि पु [अम्बर्षि] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण (आव)।

अंबरीस देखो अंबरिस।

अंबरीसि देखो अंबरिसि।

अंबसमिआ } देखो अंबमसी।
अंबसमी }

अंबहुंडी स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी (महानि २)।

अंबा स्त्री [अम्बा] १ माता, मा (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (संति १०)। ३ वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

अंबाड सक [खरण्ट्] खरडना, लेप करना, 'चमढेंति खरण्टेंति अंबाडेंति त्ति वुत्तं भवति' (निचू ४)।

अंबाड सक [तिरस्+कृ] उपालम देना, तिरस्कार करना, 'तओ हक्कारिय अंबाडिआ भणिआ य' (महा)।

अंबाडग } पु [आम्रातक] १ आमला का
अंबाडय } (पण्ण १, पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल (अनु ६)।

अंबाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत (महा)। २ उपालब्ध (स ५१२)।

अंबिआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)। °समय पुं [°समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान (ती ४)।

अंबिर न [आम्र] आम का फल (दे १,१५)।

अंबिल पु [आम्ल] १ खट्टा रस (सम ४१)। २ वि. खटाई वाली चीज, खट्टी वस्तु (ओघ ३४०)। ३ नामकर्म-विशेष (कम्म १,४१)।

अंबिलिया स्त्री [अम्लिका] १ इमली का पेड़ (उप १०३१ टी)। २ इमली का फल (श्रा २०)।

अंबु न [अम्बु] पानी, जल (पाअ)। °अ, °ज न [°ज] कमल, पद्म (अच्चु ५५, कुमा)। °णाह पुं [°नाथ] समुद्र (वव ६)। °रुह न [°रुह] कमल (पाअ)। °वह पुं [°वह] मेघ, वारिस (गउड)। °वाह पु [°वाह] मेघ, वारिस (गउड)।

अंबुपिसाअ पु [दे] राहु (गा ८०४)।

अंबुसु पु [दे] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ (दे १, ११)।

अंबेट्टिआ } स्त्री [दे] एक प्रकार का जूआ,
अंबेट्टी } मुष्टि-द्यूत (दे १, ७)

अंबेसि पु [दे] द्वार-फलक, दरवाजे का तख्ता (दे १, ८)।

अंबोच्ची स्त्री [दे] फूलों को बिननेवाली स्त्री (दे १, ६, नाट)।

अंभ पु [अम्भस्] पानी, जल (श्रा १२)।

अंभु (अप) पु [अश्मन्] पत्थर, पाषाण (पड्)।

अंभो पुं [अम्भस्] पानी, जल। °अ न [°ज] कमल (दे ७, ३८)। °इणी स्त्री [°जिनी] कमलिनी, पद्मिनी (मै ६१)। °निहि पु [°निधि] समुद्र (श्रा १२)।

°रुह न [°रुह] कमल, पद्म, 'कुभंभोरुहसर-जलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो' (उप ६ टी)।

अभोहि पु [अम्भोधि] समुद्र (कुप्र २७१)।

अंस पु [अंश] १ भाग, अवयव, खड, टुकडा (पाअ)। २ भेद, विकल्प (विसे)। ३ पर्याय, धर्म, गुण (विसे)।

अंस पु [अंश] विद्यमान कर्म, सत्ता-स्थित कर्म, 'अंस इति सतकम्म भन्नई' (कम्म ६,६)। °हर वि [°धर] भागीदार (उत्त १३, २२)।

अंस } पु [अंस] कान्ध, कधा (णाया असलग } १, १८, तदु)।

अंसि देखो अंस = अस्र।

अंसि स्त्री [अश्रि] १ कोण, कोना (उप पृ ६८)। २ धार, नोक (ठा ८)।

अंसिया स्त्री [अंशिका] भाग, हिस्सा (बृह ३)।

अंसिया स्त्री [अर्शिका] १ बवासीर का रोग (भग १६, ३)। २ नासिका का एक रोग (निचू ३)। ३ फुनसी, फोडा (निचू ३)।

अंसु पु [अंशु] किरण (लहुअ ६)। °मालि पु [°मालिन्] सूर्य, सूरज (रयण १)।

अंसु देखो अंसुय = अंशुक (पच ३, ४०)।

अंसु पु [अंशु] किरण। °मत, °वत वि [°मत्] १ किरणवाला। २ पु सूर्य (प्राकृ ३५)।

अंसु न [अश्रु] आँसू, नेत्र-जल। °मत, °वत वि [°मत्] अश्रुवाला (प्राकृ ३५)।

अंसु } न [अश्रु] आसू, नेत्र-जल (हे १, अंसुय } २६, कुमा)।

अंसुय न [अंशुक] १ वस्त्र, कपडा (से ६, ८२)। २ बारीक वस्त्र (बृह २)। ३ पोशाक, वेश (कप्प)।

अंसोत्थ देखो अस्सोत्थ (पि ७४, १५२, ३०६)।

अह पु न [अहस्] मन, 'मउय व वाहिओ सो निरहमा तेण जनपनाहेण' (धर्मवि १४६)।

अंहि पु [अंहि] पाद, पाँव (कप्पू)।

अकइ वि [अकृति] असख्यात, अनन्त (ठा ३)।

अकड देखो अयड (गा ६६५)।

अकडतलिम वि [दे] १ स्नेह रहित। जिसने शादी न की हो वह (दे १, ६०)।

अकपण वि [अकम्पन] १ कप रहित। २ पुं रावण का एक पुत्र (से १४,७०)।

अकपिय वि [अकम्पित] १ कम्परहित २ पु भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर (सम १६)।

अकज्ज देखो अकय = अकृत्य (उव)।

अकण्ण } वि [अकर्ण] १ कर्ण रहित। अकन्न } २-३ पु. स्वनामख्यात एक अत-र्द्वीप और उसमे रहनेवाला (ठा ४, २)।

अकप्प पु [अकल्प] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बाहर का आचरण (कप्प)।

अकप्प वि [अकल्प्य] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदि अग्राह्य वस्तु (वव १)।

अकप्पिय पु [अकल्पिक] जिसको शास्त्र का पूरा-पूरा ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु (वव १)।

अकप्पिय देखो अकप्प = अकल्प्य (दस ५)।

अकम वि [अक्रम] १ क्रम रहित। २ क्रिवि एक साथ (कुमा)।

अकम्म } न [अकर्मन्, °क] १ कर्म अकम्मग } का अभाव (बृह १)। २ पु मुक्त, सिद्ध जीव (आचा)। ३ कृषि आदि कर्म रहित (देश, भूमि वगैरह) (जी २४)। °भूमग, °भूमय वि [°भूमक] अकर्म-भूमि मे उत्पन्न होने वाला (जीव १)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, भूमी] जिस भूमि मे कल्प वृक्षो से ही आवश्यक वस्तुओ की प्राप्ति होने से कृषि वगैरह कर्म करने की आवश्यकता नही है वह, भोग-भूमि (ठा ३, ४)। °भूमिय वि [°भूमिज] अकर्म-भूमि मे उत्पन्न (ठा ३, १)।

अकम्हा अ [अकस्मात्] अचानक, निष्का-रण (सुपा ५६६)।

अकय वि [अकृत] नही किया हुआ (कुमा)। °मुह वि [°मुख] अपठित, अशिक्षित (बृह ३)। °त्थ वि [°र्थ] असफल (नाट)।

अकय वि [अकृत्य] १—२ करने के अयोग्य या अशक्य। ३ न अनुचित काम। °कारि वि [°कारिन्] अकृत्य को करनेवाला (पउम ८०, ७१)।

अकय्य (मा) ऊपर देखो (नाट)।

अकरण न [अकरण] १ नही करना (कस) २ मैथुन, 'जइ सेवति अकरण पचण्हवि बाहिरा हुंति' (वव ३)।

अकाइय वि [अकायिक] १ शारीरिक चेष्टा से रहित। २ पु मुक्तात्मा (भग ८, २)।

अकाम पु [अकाम] १ अनिच्छा (सूअ २, ६)। २ वि इच्छारहित, निष्काम (सुपा २०६)। °णिज्जरा स्त्री [°निर्जरा] कर्म-नाश की अनिच्छा से बुभुक्षा आदि कष्टो को सहन करना (ठा ४,४)।

अकामग } [अकामक] ऊपर देखो। अकामय } ३ अवाञ्छनीय, इच्छा करने के अयोग्य (पण्ह १, १, णाया १, १)।

अकामिय वि [अकामिक] निराश (विपा १, १)।

अकाय वि [अकाय] १ शरीररहित। २ पु मुक्तात्मा (ठा २, ३)।

अकार पु [अकार] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण (विसे ४६५)।

अकारग पु [अकारक] १ अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग (णाया १, १३)। २ वि अकर्ता (सूअ १, १)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला (सूअ १, १)।

अकासि अ [दे] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्, 'अकासि लज्जाए' (दे १, ८)।

अकिंचण वि [अकिञ्चन] १ साधु, मुनि, भिक्षुक (पण्ह २, ५)। २ गरीब, निर्धन, दरिद्र (पाअ)।

अकिट्ठ वि [अकृष्ट] नहीं जोती हुई जमीन 'अकिट्ठजाय-' (पउम ३३, १४)।

अकिट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेशरहित, बाधा-रहित,

'पेच्छामि तुज्झ यत,
  सगामे कत्तएसु दियहेसु।
मह नाहेण विणिहय,
  रामेण अकिट्ठकम्मेण' (पउम ५३, ५२)।

अकिरिय वि [अक्रिय] १ आलसी, निरुद्यम। २ अशुभ व्यापार से रहित (ठा ७)। ३ परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक (णंदि)। °ाय वि [°त्मन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य (सूअ १, १०)।

अकिरिया स्त्री [अक्रिया] १ क्रिया का अभाव (भग २६, २)। २ दुष्ट क्रिया, खराब व्यापार (ठा ३, ३)। ३ नास्तिकता (ठा ८)। °वाइ वि [°वादिन्] परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक (ठा ४,४)।

अकीरिय देखो अकिरिय, 'जे केइ लोगम्मि अकीरियाया, अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति' (सूअ १, १०)।

अकुइया स्त्री [अकुचिका] देखो अकुय।

अकुओभय वि [अकुतोभय] जिसको किसी तरफ से भय न हो वह, निर्भय (आचा)।

अकुंठ वि [अकुण्ठ] अपने कार्य में निपुण (गउड)।

अकुय वि [अकुच] निश्चल, स्थिर (निचू १)। स्त्री अकुइया (कप्प)।

अकोप्प वि [अकोप्य] रम्य, सुन्दर (पण्ह १, ४)।

अकोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह (पड्)।

अकोस देखो अक्कोस = आक्रोश।

अकोसायंत वि [अकोशायमान] विकसता हुआ, 'रविकिरणतरुणबोहियअकोसायंतपउम-गंभीरवियडणाभे' (औप)।

अक्क पु [अर्क] १ सूर्य, सूरज (सुर १०, २२३)। २ आक का पेड़ (प्रासू १६८)। ३ सुवर्ण, सोना, 'जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ रयणक्कसंजोगो' (रयण ५४)। रावण का एक सुभट (पउम ५६,२)। °तूल न [°तूल] आक की रूई (पण्ण १)। °तेअ पु [°तेजस्] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५,४६)। °बोंदीया स्त्री [°बोन्दिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

अक्क पु [दे] दूत, संदेश-हारक (दे १,६)।

°अक्क देखो चक्क (गा ५३०, मे १, ५)।

अक्कअ वि [अकृत] नहीं किया गया। °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न किया गया हो (मे १२, ५०)।

अक्कड देखो अक्खड (आउ ५३)।

अक्कंत वि [आक्रान्त] १ बलवान् के द्वारा दबाया हुआ (णाया १, ८)। २ घेरा हुआ, ग्रस्त (आचा)। ३ परास्त, अभिभूत (सूअ १, १, ४)। ४ एक जाति का निर्जीव वायु (ठा ५, ३)। ५ न आक्रमण, उल्लंघन (भग १, ३)। °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दबा हुआ (सूअ १, १, ४)।

अक्कत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध (दे १,६)।

अक्कंत वि [अकान्त] अनिष्ट, अनभिलषित, अनभिमत (सूअ १, १, ४, ६)।

अक्कंद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना (प्रामा)। वकृ अक्कंदंत (सुपा ५७४)।

अक्कंद (अप) देखो अक्कम = आ + क्रम्। अक्कंदइ, संकृ. अक्कंदिऊण (सण)।

अक्कंद पुं [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना (सुर २, ११४)।

अक्कंद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक (दे १, १५)।

अक्कंदावणय वि [आक्रन्दक] रुलानेवाला (कुमा)।

अक्कंदिय न [आक्रन्दित] विलाप, रोदन (से ४, ६४, पउम ११०, ५)।

अक्कम सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना, दबाना। २ परास्त करना। वकृ अक्कमंत (पि ४८१)। संकृ अक्कमित्ता (पण्ह १,१)।

अक्कम पुं [आक्रम] १ दबाना, चढाई करना। २ पराभव (आव)।

अक्कमण न [आक्रमण] १—२ ऊपर देखो (से १४, ६६)। ३ पराक्रम (विसे १०४६)। ४ वि आक्रमण करनेवाला (से ६, १)।

अक्कमिअ देखो अक्कंत = आक्रान्त (काप्र १७२, सुपा १२७)।

अक्कसाला स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती। २ उन्मत्त-सी स्त्री (दे १,५८)।

अक्का स्त्री [दे] बहिन (दे १, ६)।

अक्का स्त्री [अक्का] कुट्टनी, दूती (कुप्र १०)।

अक्कासी स्त्री [अक्कासी] व्यन्तर-जातीय एक देवी (ती ६)।

अक्किज्ज वि [अक्रेय] खरीदने के अयोग्य (ठा ६)।

अक्किट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेश-वर्जित (जाव ३)। २ बाधारहित (भग ३, २)।

अक्किट्ठ वि [अकृष्ट] अविलिखित (भग ३,२)।

अक्किय वि [अक्रिय] क्रियारहित (विसे २२०६)।

अक्कुट्ट वि [दे] अध्यासित, अधिष्ठित (दे १, ११)।

अक्कुस सक [गम्] जाना। अक्कुसइ (हे ४, १६२)।

अक्कुहय वि [अकुहक] निष्कपट, मायारहित (दस ६, २)।

अक्कूर पु [अक्रूर] श्रीकृष्ण के चाचा का नाम (रुक्मि ४६)।

अक्कूर वि [अक्रूर] क्रूरतारहित, दयालु (पव २३६)।

अक्केज्ज देखो अक्किज्ज।

अक्केल्लय वि [एकाकिन्] अकेला, एकाकी (नाट)।

अक्कोड पु [दे] छाग, बकरा (दे १,१२)।

अक्कोडण न [आक्रोडन] इकट्ठा करना, संग्रह करना (विसे)।

अक्कोस न [अक्रोश] जिस ग्राम के अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह,
'खेत्तं चलमचलं वा, इंदमणिंदं सकोसमक्कोसं। वाघातम्मि अकोसं, अडवीजले सावए तेणे' (बृह ३)।

अक्कोस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना। वकृ अक्कोसंत (सुर १२, ४०)।

अक्कोस पु [आक्रोश] कटु वचन, शाप, भर्त्सना (सम ४०)।

अक्कोसग वि [आक्रोशक] आक्रोश करनेवाला (उत्त २)।

अक्कोसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सना (णाया १, १६)।

अक्कोसिअ वि [आक्रोशित] कटु वचनों से जिसकी भर्त्सना की गई हो वह (सुर ६, २३४)।

अक्कोह वि [अक्रोध] १ अल्प-क्रोधी (ज २)। २ क्रोधरहित (उत्त २)।

अक्ख पु [अक्ष] १ जीव, आत्मा (ठा १)। २ रावण का एक पुत्र (से १४, ६५)। ३

चन्दनक, समुद्र में होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर का जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं (श्रा १)। ४ पहिया की धुरी, कील (श्रोघ ५४६)। ५ चौसर का पासा (धण ३२)। ६ बिभीतक, बहेड़ा का वृक्ष (से ६, ४४)। ७ चार हाथ या ९६ अङ्गुलों का एक मान (अणु, म्म)। ८ रुद्राक्ष (अणु ३)। ९ न इन्द्रिय (विसे ९१, धण ३२)। १० द्यूत, जूआ (से ६, ४४)। °चम्म न [°चर्मन्] पखाल, मसक, 'अक्खचम्म उट्टुगंडदेस' (णाया १, ६)। °पाडय न [°पाटक] बीज का टुकड़ा, 'राएणा हाहारवं करेमाणेण पहओ सो मुणओ अक्खपाडएणत्ति' (स २५५)। °माला स्त्री [°माला] जपमाला (पउम ६६, ३१)। °लया स्त्री [°लता] रुद्राक्ष की माला (दे)। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र, 'तो लोओ। गहियक्खवत्तहत्थो एइ गिहे वद्धावणत्थं' (सुपा ५८५)। °वलय न [°वलय] रुद्राक्ष की माला (दे २, ८१)। °वाअ पु [°पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि (सिसे १५०८)। °वाडग पु [°वाटक] अखाड़ा (जीव ३)। °सुत्तमाला स्त्री [°सूत्रमाला] जपमाला (अणु३)।

अक्खअ देखो अक्खा = आ + ख्या। अक्खइ (सण)।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित (सण)।

अक्खउहिणी देखो अक्खोहिणी (प्राकृ३०)।

अक्खंड वि [अखण्ड] १ सपूर्ण। २ अखण्डित। ३ निरन्तर, अविच्छिन्न, 'अक्ख-ण्डपयावेहिँ रहसोंसुहुं गया कुमरो' (सुपा २९६)।

अक्खंडल पु [आखण्डल] इन्द्र (पाअ)।

अक्खंडिअ वि [अखण्डित] १ संपूर्ण, खण्ड रहित (से ३, १०)। २ अविच्छिन्न, निरन्तर (उत्त ८, १०)।

अक्खण देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खड सक [आ + स्कन्द्] आक्रमण करना, 'पक्खडइ सिया हियए, अक्खडइ सहिलयाण सवत्तं' (वा ६६)।

अक्खणवेल न [दे] १ मैथुन, संभोग। २ शाम, सन्ध्या काल (दे १, ५६)।

अक्खणिआ स्त्री [दे] विपरीत मैथुन (पाअ)।

अक्खम वि [अक्षम] १ असमर्थ (सुपा-३७०)। २ अयुक्त, अनुचित (ठा ३, ३)।

अक्खय वि [अक्षत] १ घावरहित, व्रण शून्य (सुर २, ३३)। २ अखण्डित, संपूर्ण (सुर ६, १११)। ३ पु. व अखण्ड चावल (सुपा ३२६)। °यार वि [°चार] निर्दोष आचरणवाला (वव ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ क्षय का अभाव (उवर ८३)। २ जिसका कभी नाश न हो वह (सम १)। °निहि पुन [°निधि] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)। °तइया स्त्री [°तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया (श्रानि)।

अक्खर पुन [अक्षर] १ अक्षर, वर्ण (सुपा ६५६)। २ ज्ञान, चेतना, 'नक्खरइ अणुव-श्रोगेवि, अक्खर, सो य चेयणाभावो' (विसे ४५५)। ३ वि अविनश्वर, नित्य (विसे ४५७)। °त्थ पु [°ार्थ] शब्दार्थ (अभि १५१)। °पुट्ठिया स्त्री [°पुष्टिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °समास पु [°समास] १ अक्षरों का समूह। २ श्रुत-ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

अक्खरुड पु [दे] १ अखरोट वृक्ष। २ न अखरोट वृक्ष का फल (पएण १६)।

अक्खलिय वि [दे] १ जिसका प्रतिशब्द हुआ हो वह, प्रतिध्वनित (दे १, २७)। २ आकुल, व्याकुल (सुर ८, ८८)।

अक्खलिय वि [अस्खलित] १ अबाधित, निरुपद्रव (कुमा)। २ जो गिरा न हो वह, अपतित (नाट)।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा (दे १, ३५)।

अक्खा सक [आ + ख्या] कहना, बोलना। वइ अक्खाइ (सण, धर्म ३)। कवकृ अक्खिज्जंत (सुर ११, १६०)। कृ अक्खेअ, अक्खाइयव्व (विसे २६४०, गा २८०)। हेकृ अक्खाउ (दस ८, मन ३ टी)।

अक्खा स्त्री [आख्या] नाम (विसे १६११)।

अक्खाइ वि [आख्यायिन्] कहनेवाला, उपदेशक, 'अधम्मक्खाई' (णाया १, १८, विपा १, १)।

अक्खाइय न [आख्यातिक] क्रियापद, क्रिया-वाचक शब्द (विसे)।

अक्खाइय वि [अक्षितिक] स्थायी, अनश्वर, शाश्वत, 'एव ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पाय-णपसत्ता वेढंति अक्खाइयबीएण अप्पाणं कम्मवधणेण' (पण्ह १, २)।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वार्ता, कहानी (कप्पू, माम ५०)।

अक्खाउ वि [आख्यातृ] कहनेवाला (सूअ १, १, ३, १३)।

अक्खाग पु [आख्याक] म्लेच्छों की एक जाति (सूअ १, ५)।

अक्खाडग } पु [अक्षवाटक] १ जूआ
अक्खाडय } खेलने का अड्डा। २ अखाड़ा, व्यायाम-स्थान (उप पृ १३०)। ३ प्रेक्षकों को बैठने का आसन (ठा ४, २)।

अक्खाण न [आख्यान] १ कथन, निवेदन (कुमा)। २ वार्ता, उपकथा (पउम ४८, ७७)।

अक्खाणय न [आख्यानक] कहानी, वार्ता (उप ५९७ टी)।

अक्खाय वि [आख्यात] १ प्रतिपादित, कथित (सुपा ३६५)। २ न क्रियापद (पण्ह २, २)।

अक्खाय न [अखात] हाथी को पकड़ने के लिए किया जाना गढा, खड्डा (पाअ)।

अक्खाया स्त्री [आख्याता] एक प्रकार की जैन दीक्षा, 'अक्खायाए सुदसणो सेट्ठी सामिणा पडिबोहिओ' (पंचू)।

अक्खि न [अक्षि] आँख, नेत्र (हे १, ३३, ३५, स २, १०४, प्राप्र, स्वप्न ६१)।

अक्खिअ वि [आक्षिक] पासा से जूआ खेलनेवाला, जुआड़ी (दे ७, ८)।

अक्खिअ वि [आख्यात] प्रतिपादित, कथित (श्रा १४)।

अक्खितर न [अभ्यन्तर] आँख का भीतर (विपा १, १)।

अक्खिज्जंत देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] सब तरह से प्रेरित (सिरि ३६६)।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] १ व्याकुल। २ जिस पर टीका की गई हो वह। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ (सुर ३,११५)। ४ सामर्थ्य से लिया हुआ (से ४, ३१)।

अक्खित्त न [अक्षेत्र] मर्यादित क्षेत्र के बाहर का प्रदेश (निचू १)।

अक्खिव सक [आ + क्षिप्] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना। २ रोकना। ३ गँवाना। ४ व्याकुल करना। ५ फेंकना। ६ स्वीकार करना, 'अक्खिवइ पुरिसगार' (उवर ४६)। हेकृ अक्खिविउं (निर १, १), 'तओ न जुत्तमिह कालम् अक्खिविउ' (स २०५, पि ५७७)। कर्म 'अक्खिप्पइ य मे वाणी' (स २३, प्रामा)।

अक्खिव सक [आ+क्षिप्] आक्रोश करना। अक्खिवति (सिरि ८३१)।

अक्खिवण न [आक्षेपण] व्याकुलता, घबराहट (पण्ह १, ३)।

अक्खीण वि [अक्षीण] १ ह्रास-शून्य, क्षय-रहित, अखूट (कप्प)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण (कुमा)। °महाणसिय वि [°महानसिक] जिसको निम्नोक्त अक्षीण महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह (पण्ह २, १) °महाणसी स्त्री [°महानसी] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति जिससे थोडा भी भिक्षान्न दूसरे सैकडों लोगों को यावत्-तृप्ति खिलाने पर भी तबतक कम न हो, जबतक भिक्षान्न लानेवाला स्वयं उसे न खाय (पव २७०)। °महालय वि [°महालय] जिससे थोडी जगह में भी बहुत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त (गच्छ २)।

अक्खुअ वि [अक्षत] अक्षीण, त्रुटि-शून्य, 'अक्खुआयारचरित्ता' (पडि)।

अक्खुडिअ वि [अखण्डित] संपूर्ण, अखण्ड, त्रुटिरहित, 'अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कतोवि सबालवुड्ढजणो' (सुपा११६)।

अक्खुण्ण वि [अक्षुण्ण] जो टूटा हुआ न हो, अविच्छिन्न (बृह १)।

अक्खुद्द वि [अक्षुद्र] १ गंभीर, अतुच्छ (दव्व ५)। २ दयालु, करुण (पचा२)। ३ उदार (पचा ७)। ४ सूक्ष्म बुद्धिवाला (धर्म २)।

अक्खुद्द न [अक्षौद्र्य] क्षुद्रता का अभाव (उप ६१५)।

अक्खुपुरी स्त्री [अक्षपुरी] नगरी-विशेष (णाया २)।

अक्खुब्भमाण वि [अक्षुभ्यमान] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो (उप पृ ६२)।

अक्खुभिय देखो अक्खुहिय (णदि ४६)।

अक्खुहिय वि [अक्षुभित] क्षोभरहित, अक्षुब्ध (मण)।

अक्खूण वि [अक्षूण] अन्यून, परिपूर्ण, 'भोयणवत्थाहरणं सपायतेणं सव्वमक्खूणं' (उप ७२८ टी)।

अक्खेअ देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खेव पु [अ+क्षेप] शीघ्रता, जल्दी (सुपा १२६)।

अक्खेव पु [आक्षेप] १ आकर्षण, खींच कर लाना (पण्ह १, ३)। २ सामर्थ्य, अर्थ की संगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलाना (उप १००२)। ३ आशंका, पूर्वपक्ष (भग २, १, विसे १४३६)। ४ उत्पत्ति, 'दइवेण फलक्खेवे अइप्पसंगो भवे पयडो' (उवर ४८)।

अक्खेवग पु [आक्षेपक] १ खींचकर लाने-वाला, आकर्षक। २ समर्थक पद, अर्थसंगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलानेवाला शब्द (उप६६६)। ३ सान्निध्यकारक (उवर १८८)।

अक्खेवणी स्त्री [आक्षेपणी] श्रोताओं के मन को आकर्षण करनेवाली कथा (औप)।

अक्खेवि वि [आक्षेपिन्] आकर्षण करने-वाला, खींचकर लानेवाला (पण्ह १, ३)।

अक्खोड सक [कृष्] म्यान से तलवार को खींचना, बाहर करना। अक्खोडइ (हे४,१८७)।

अक्खोड सक [आ + स्फोटय्] थोडा या एक बार झटकना। अक्खोडिज्जा। वकृ अक्खोडन (दस ४)।

अक्खोड पु [अक्षोट] १ अखरोट का पेड। २ न अखरोट वृक्ष का फल (पण्ण १७, सण)। ३ राजकुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट (वव १ टी)।

अक्खोड पु [आस्फोट] प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २)।

अक्खोडिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ, बाहर निकला हुआ (खड्ग) (कुमा)।

अक्खोभ, अक्खोह पु [अक्षोभ] १ क्षोभ का अभाव, घबराहट का अभाव (णाया१,६)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमि-नाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था (अंत १, ७)। ३ न 'अन्तकृद्दशा' सूत्र का एक अध्ययन (अंत १, ७)। ४ वि क्षोभरहित, अचल, स्थिर (पण्ह २,५, कुमा)।

अक्खोहणिज्ज वि [अक्षोभणीय] जो क्षुब्ध न किया जा सके (सुपा ११४)।

अक्खोहिणी स्त्री [अक्षौहिणी] एक बडी सेना, जिसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोडे और १०९३५० पैदल होते हैं (पउम ५५, ७, ११)।

अखंड वि [अखण्ड] परिपूर्ण, खण्डरहित (औप)।

अखंडल पु [आखण्डल] इन्द्र (पउम ४६, ४४)।

अखंडिय वि [अखण्डित] नहीं टूटा हुआ, परिपूर्ण (पचा १८)।

अखप्पण वि [दे] स्वच्छ, निर्मल, 'आयव-त्ताइ। धारिति, ठविति पुरो अखप्पणं दप्पणं केवि' (सुपा ७४)।

अखज्ज वि [अखाद्य] जो खाने लायक न हो (णाया १,१६)।

अखत्त न [अक्षात्र] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलुम, 'यपइ विज्जावलिओ,
अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो'
(धम्म ८ टी)।

अखम देखो अक्खम (कुमा)।

अखरय पु [दे] भृत्य-विशेष, एक प्रकार का दास (पिंड ३६७)।

अखलिअ देखो अक्खलिय = अस्खलित (कुमा)।

अखादिम वि [अखाद्य] खाने के अयोग्य, अभक्ष्य, 'कुपहे धावति, अखादिम खादति' (कुमा)।

अखाय वि [अखात] नहीं खुदा हुआ। °तल न [°तल] छोटा तलाव (पाअ)।

अखिल वि [अखिल] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण (कुमा)। २ ज्ञान आदि गुणों से पूर्ण; 'अखिले अगिद्धे अणिएअचारी' (सूअ १, ७)।

अखुट्ट वि [दे] अखूट (भवि)।

अखुड्डिअ वि [अतुडित] अखूट, परिपूर्ण (कुमा)।

अखुडिअ देखो अक्खुडिअ (कुमा)।

अखेयण्ण वि [अखेदज्ञ] अकुशल, अनिपुण (सूअ १,१०)।

अखोड देखो अक्खोड + प्रास्फोट (पव २ टी)।

अखोहा स्त्री [अक्षोभा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)।

अग पुं [अग] १ वृक्ष, पेड। २ पर्वत, पहाड (से ६,४१), 'उच्चागमठाणलट्ठसंठिय' (कप्प)।

अगइ स्त्री [अगति] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म (ठा २, २)। २ निरुपाय (अणु ६६)।

अगंठिम न [अग्रन्थिम] १ कदली-फल, केला (बृह १)। २ फल की फांक, टुकड़ा (निचू १६)।

अगडिगेह वि [दे] यौवनोन्मत्त, जवानी से उन्मत्त बना हुआ (दे १, ८०)।

अगडूयग वि [अकण्डूयक] नहीं खुजलानेवाला (सूअ २, २)।

अगंथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित। २ पुंस्त्री निर्ग्रन्थ, जैन साधु, 'पाव कम्म अकुव्वमाणे एस महं अगंथे वियाहिए' (आचा)।

अगंधण पुं [अगन्धन] इस नाम की सर्पों की एक जाति, 'नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे' (दस २)।

अगड पुं [दे अवट] कूप, इनारा (सुर ११, ८६ उत्त)। °तड न [°तट] इनारा का किनारा (विसे)। °दत्त पुं [°दत्त] इस नाम का एक राजकुमार (उत्त)। °दद्दुर पुं [°दर्दुर] कुँए का मेंढक, अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो (गाया १ ८)।

अगड पुं [अवट] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह (दस ७०५)।

अगड वि [अकृत] नहीं किया हुआ (वव ६)।

अगणि पुं [अग्नि] आग (जी ६)। °काय पुं [°काय] अग्नि के जीव (भग ७,१०)। °मुह पुं [°मुख] देव, देवता (आचू)।

अगणिअ वि [अगणित] अवगणित, अपमानित (गा ४८४; पउम ११७, १४)।

अगणिज्जंत वि [अगण्यमान] जो गुणने में न आता हो, जिसकी आवृत्ति न की जाती हो; 'अगणिज्जंती नासे विज्जा' (प्रासू ६६)।

अगत्थि } पुं [अगस्ति, °क] १ इस नाम का एक ऋषि। २ वृक्ष-विशेष (दे ६, १३३; अनु)। ३ एक तारा, अठासी महाग्रहों में ५४ वाँ महाग्रह (ठा २, ३)।
अगत्थिय }

अगन्न वि [अगण्य] १ जिसकी गिनती न हो सके वह (उप ७२८ टी)।

अगन्न वि [अकर्ण्य] नहीं सुनने लायक, अश्रव्य (भवि)।

अगम पुं [अगम] १ वृक्ष, पेड, 'दुमा य पायवा रुक्खा अ(? अ) गमा विडिमा तरू' (दसनि १,३५)। २ वि स्थावर, नहीं चलने वाला (महानि ४)।

अगम न [अगम] आकाश, गगन (भग २० २)।

अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमें एक सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरह पद्य हो, 'गाहाइ अगमियं खलु कालियसुयं' (विसे ५४९)।

अगम्म वि [अगम्य] १ जाने के अयोग्य। २ स्त्री भोगने के अयोग्य, भगिनी, पर स्त्री आदि (भवि; सुर १०, ५२)। °गामि वि [°गामिन्] पर स्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक (पण्ह १,२)।

अगय न [अगद] औषध, दवाई (सुपा ४४७)।

अगय पुं [दे] दैत्य, दानव (दे १,६)।

अगर पुंन [अगरु] सुगन्धि काष्ठ-विशेष (पण्ह २ ५)।

अगरल वि [अगरल] सुविभक्त, स्पष्ट, 'अगरलाए अमम्मणाए [illegible] भासाए भासेइ' (औप)।

अगरु देखो अगर (कुमा)।

अगरुअ वि [अगरुक] बडा नहीं, छोटा, लघु (गउड)।

अगरुलहु वि [अगुरुलघु] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह, जैसे आकाश, परमाणु वगैरह (विसे)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिससे जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है (कम्म १,४७)।

अगलदत्त पुं [अगडदत्त] एक रथिक-पुत्र (महा)।

अगलय देखो अगर (औप)।

अगहण पुं [दे] कापालिक, एक ऐसे सम्प्रदाय के लोग, जो माथे की खोपडी में ही खाने-पीने का काम करते हैं (दे १, ३१)।

अगहिल्ल वि [अग्रहिल] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल (उप ५९७ टी)। °राय पुं [°राज] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रमण से बनावटी पागल बना था (ती २१)।

अगाढ वि [अगाध] अथाह, बहुत गहरा; 'अगाढपण्णेसु वि भाविअप्पा' (सूअ १,१३)।

अगामिय वि [अग्रामिक] ग्रामरहित, 'अगामियाए अडवीए' (ओप)।

अगार पुं [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४८४)।

अगार न [अगार] १ गृह, घर (सम ३७)। २ पुं गृहस्थ, गृही, संसारी (दस १)। °त्थ वि [°स्थ] गृही, (आचा)। °धम्म पुं [°धर्म] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म (औप)।

अगारग वि [अकारक] अकर्ता (सूअनि ३०)।

अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही (सूअ २,६)।

अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री (वव ४)।

अगाल देखो अयाल (स ८२)।

अगाह वि [अगाध] गहरा, गंभीर (पाअ)।

अगिणि देखो अग्गि (सम्मि १२)।

अगिला स्त्री [अग्लानि] अखिन्नता, उत्साह (ठा ५ १)।

अगिला स्त्री [दे] अवज्ञा, तिरस्कार (दे १, १७)।

अगीय वि [अगीत] शास्त्रों का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु) (उप ८३३ टी)।

अगीयत्थ वि [अगीतार्थ] ऊपर देखो (वव १) ।

अगुज्झहर वि [दे] गुप्त बात को प्रकाशित करनेवाला (दे १,४३) ।

अगुण देखो अउण (पि २६५) ।

अगुण वि [अगुण] १ गुणरहित, निर्गुण (गउड) । २ पु दोष, दूषण (दस ५) ।

अगुणासी देखो एगूणासी (पव २४) ।

अगुणि वि [अगुणिन्] गुण-वर्जित, निर्गुण (गउड) ।

अगुरु, अगुरुअ वि [अगुरु] १ बड़ा नहीं सो, छोटा, लघु । २ पुन. सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु चन्दन, 'धूवेण किं अगुरुणो किंसु ककणेण' (कप्पू, पउम २,११) ।

अगुरुलहु, अगुरुलहुअ देखो अगुरुलहु (सम ५१, ठा १०) ।

अगुलु देखो अगुरु, 'मसतिणिमागुलुचंदणाइ' (निचू २) ।

अग्ग न [अग्रव] प्रकर्ष (उत्त २०, १५) ।

अग्ग पुन [दे] १ परिहास । २ वर्णन (मल्लि ४७) ।

अग्ग न [अग्र] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग (कुमा) । २ पूर्वभाग, पहले का भाग (निचू १) । ३ परिमाण, 'अग्गं ति वा परिमाणं ति वा एगट्ठा' (आचू १) । ४ वि प्रधान, श्रेष्ठ (सुपा २४८) । ५ प्रथम, पहला (आव १) । °क्खंध पु [°स्कन्ध] सैन्य का अग्र भाग (से ३,४०) । °गामिग वि [°गामिक] अग्रगामी, आगे जानेवाला (स १४७) । °ज देखो °य (दे ६, ४६) । °जम्म [°जन्मन्] देखो °य (उप ७२८ टी) । °जाय [°जात] देखो °य (आचा) । °जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग । °णिय, °णी वि [°णी] अगुआ, मुखिया, नायक (कप्प, नाट) । °तावस पु [°तापस] ऋषि-विशेष का नाम (सुज्ज १०) । °द्ध न [°ार्ध] पूर्वार्ध (निचू १) । °पिंड पु [°पिण्ड] एक प्रकार का भिक्षान्न (आचा) । °प्पहार वि [°प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला (आव १) । °बीय वि [°बीज] जिसमे बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-भाग ही कारण होता है, जैसे आम, कोरंटक आदि वनस्पति (पण्ण १, ठा ४ १) । °मणि पु [°मणि] मुख्य, श्रेष्ठ, शिरोमणि (उप ७२८ टी) । °महिसी स्त्री [°महिषी] पट-रानी (सुपा ४६) । °य वि [°ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला । २ पु. ब्राह्मण । ३ बड़ा भाई । ४ स्त्री बड़ी बहन (नाट) । °लोग पु [°लोक] मुक्तिस्थान, सिद्धि-क्षेत्र (श्रा १२) । °हत्थ पु [°हस्त] १ हाथ का अग्र-भाग (उवा) । २ हाथ का अवलम्बन सहारा (से ४,३) । ३ अंगुली (पाअ) ।

अग्ग न [अग्र] १ प्रभूत, बहु । २ उपकार (आचानि २८५) । °भाव न [°भाव] धनिष्ठा-नक्षत्र का गोत्र (जं ७ पत्र ५००) । °माहिसी देखो °महिसी (उत्त १६, १) ।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (से ८,४४) । २ प्रधान, मुख्य (उत्त १४) ।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे (कुमा) ।

अग्गंथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित । २ पु जैन साधु (औप) ।

अग्गक्खंध पु [दे] रणभूमि का अग्रभाग (दे १,२७) ।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड़ बन्द करने की लकड़ी, आगल (दस ५,२) । २ पु एक महा-ग्रह (सुज्ज २०) । °पासय पु [°पाशक] जिसमे आगल दिया जाता है वह स्थान (आचा २,१,५) । °पासाय पु [°प्रासाद] जहाँ आगल दिया जाता है वह घर (राय) ।

अग्गल वि [दे] अधिक, 'वीसा एक्कग्गला' (पिंग) ।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुड़का (पाअ) ।

अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बन्द किया गया हो वह (सुर ६,१०) ।

अग्गवेअ पुं [दे] नदी का पूर (दे १,२६) ।

अग्गह पु [आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश (सूअ १,१,३, स ५१३) ।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान (सुर १२, ४६) । २ नहीं लेना (से ११,६८) ।

अग्गहण न [दे अग्रहण] अनादर, अवज्ञा (दे १,१७, से ११,६८) ।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य मे मनाया जाता उत्सव, जिसको गुज-राती भाषा में 'अग्घयणी' कहते हैं (सुपा २३) ।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी (सूअ १,१३) ।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित । २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ (षड्) ।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक, 'दक्खिन्नदयाकलिओ अग्गाणी सयलवणिय-सत्थस्स' (सुर ६,१३८) ।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति (चारु ७) ।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गभीर, 'खीरा-दहिण्व्व अग्गाहा' (गुरु ४) ।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम (सुपा ५४५) ।

अग्गाहार पुं [दे अग्राहार] उच्च जीविका (सुख २,१३) ।

अग्गि पुं [अग्नि] नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७) । °मत, °वंत वि [°मत्] अग्निवाला (प्राकृ ३५) । °हुत्त देखो °होत्त (उत्त २५,१६, सुख २५,१६) ।

अग्गि पु स्त्री [अग्नि] १ आग, वह्नि (प्रासू २२), 'एस पुण कावि अग्गी' (सट्ठि ६१) । २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३) । ३ लोकान्तिक देव-विशेष (आवम) । °आरिआ स्त्री [°कारिका] अग्नि-कर्म, होम (कप्पू) । °उत्त पु [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम (सम १५३) । °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवो की एक अवा-न्तर जाति (पण्ण १) । °कोण पु [°कोण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा (सुपा ६८) । °जस पु [°यशस्] देव-विशेष (दीव) । °ज्जोय पु [°द्योत] भगवान् महा-वीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आचू) । °ट्ठ वि [°स्थ] आग मे रहा हुआ (हे ४,४२६) । °ट्ठोम पु [°ष्टोम] यज्ञ विशेष (पि १०,१५६) । °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकनेवाली एक विद्या (पउम ७, १३६) । °दत्त पु [°दत्त] १ भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव (तित्थ) । २ भद्रबाहु

स्वामी का एक शिष्य (कप्प)। °दाण पु [°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (पउम २०,१८२)। °देव पु [°देव] देव-विशेष (दीव)। °भूइ पु [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर (कप्प)। २ भगवान् महावीर का पूर्वीय अठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आचू)। °माणव पु [°माणव] अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। °माली स्त्री [°मालि] एक इन्द्राणी (दीव)। °वेस पु [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि (णंदि)। २ न एक गोत्र (कप्प)। °वेस पु [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि (ज)। २ दिवस का बाइसवां मुहूर्त (चंद १०)। °वेसायण पु [°वेश्यायन] १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र (णंदि, स २२५)। २ अग्निवेश-गोत्र में उत्पन्न (कप्प)। ३ गोशालक का एक दिक्चर (भग १५)। ४ दिन का बाइसवां मुहूर्त (सम ५१)। °सक्कार पु [°संस्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना (आवम)। °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालकी का नाम (सम)। °सम्म पु [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण (आचा)। °सिह पु [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता (सम १५२)। २ अग्निकुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। °सिह पु [°सिंह] एक जैन मुनि (उप ८८६)। °सिहा-चारण पु [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में [illegible] गमन करने की शक्ति वाला साधु (पव ६८)। °सीह पु [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (ठा ९)। °सेण पु [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें [illegible] (तित्थ, सम १५३)। °होत्त न [°होत्र] १ अग्न्याधान, होम (विसे १८४०)। २ पु ब्राह्मण (पउम ३५,६)। °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूअ १, ७)। °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला (सुपा ७०)।

अग्गिअ पु [अग्निक] १ [illegible] (आव)। २ [illegible] गोत्र, जिसे [illegible] हो जाता है (विसे १,१ [illegible] २०४८)।

अग्गिअ पु [दे] इन्द्रगोप, एक जातिका क्षुद्र कीट (दे १,५३)। २ वि मन्द (दे १,५३)।

अग्गिआय पु [दे] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष (पड्)।

अग्गिच्च वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी। २ पु लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १,८)। ३ न गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है (ठा ७)।

अग्गिच्चाभ न [आग्नेयाभ] देव-विमान विशेष (सम १४)।

अग्गिज्झ वि [अग्राह्य] लेने के अयोग्य (पउम ३१,५८)।

अग्गिम वि [अग्रिम] १ प्रथम पहला (कप्पू)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (सुपा १)।

अग्गियय पु [आग्नेयक] इस नाम का एक राजपुत्र (उप ६३७)।

अग्गिल देखो अग्गिझ = अग्निल (सुज २०)।

अग्गिलिअ देखो अग्गिम (पचव २)।

अग्गिल्ल पु [अग्निल] एक महाग्रह (ठा २, ३)।

अग्गिल्ल वि [अग्रिम] अग्रवर्ती (सिरि ४०६)।

अग्गीय देखो अगीय (उप ८४०)।

अग्गीवय न [दे] घर का एक भाग (पउम १६, ६४)।

अग्गुन्छ वि [दे] प्रमित, निश्चित (पड्)।

अग्गे अ [अग्रे] आगे, पहले (पिंग)। °यण वि [तन] आगे का, पहले का (आवम)। °सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक (श्रा २८)।

अग्गेई स्त्री [आग्नेयी] अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (पउम १८)।

अग्गेणिअ न [अग्रायणीय] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग (सम२६)।

अग्गेणी देखो अग्गेई (आवम)।

अग्गेणीय देखो अग्गेणिय (णंदि)।

अग्गेज वि [आग्नेय] अग्नि (कोण) सम्बन्धी (अणु २१५)।

अग्गेय वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का (पउम १२,१२६ विसे १६६०)। २ न शस्त्र-विशेष (सुर ८, ४१)। ३ एक गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७)। ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (भवि)।

अग्गोदय न [अग्रोदक] समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि (सम ७६)।

अग्घ अक [राज्] विराजना, शोभना, चमकना। अग्घइ (हे ४,१००)।

अग्घ सक [आ-घ्रा] सूँघना। सकृ अग्घेऊण (सम्मत्त १४२)।

अग्घ सक [अर्ह्] योग्य होना, लायक होना, 'कल ण अग्घइ' (णाया १,८)।

अग्घ सक [अर्घ्] १ अच्छी कीमत से वेचना। २ आदर करना, सम्मान करना, 'पहिएण पुणो भणियं, तुब्भेहिं म्हिट्ठि। कम्मि नयरम्मि। गतव्व मो साहइ, पणिय अग्घिस्सए जत्थ' (सुपा ५०१)। वकृ अग्घायमाण (णाया १, १)।

अग्घ पु [अर्घ] १ एक देव विमान (देवेन्द्र १४२)। २ पूजा (राय १००)।

अग्घ पु [अर्घ] १ मछली की एक जाति (जीव ३)। २ पूजा-सामग्री (णाया १, १६)। ३ पूजा में जलादि देना (कुमा)। ४ मूल्य, मोल, कीमत (निचू २)। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र (गाउड)।

अग्घ वि [अर्घ्य] १ पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य (कप्पू)। २ कीमती, बहुमूल्य (प्राप)।

अग्घव सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घवइ (हे ४, ६६)।

अग्घविय वि [पूर्ण] १ भरा हुआ, सपूर्ण। २ पूरा किया गया (सुपा १०६, कुमा)।

अग्घविय वि [अर्घित] पूजित, सत्कृत, सम्मानित (से ११, १६, गउड)।

अग्घा सक [आ + घ्रा] सूंघना। वकृ अग्घाअत, अग्घायमाण (गा ५६५, णाया १,८)। कवकृ अग्घाइज्जमाण (पण्ण २८)।

अग्घाइ वि [आघ्रायिन्] सूंघनेवाला, 'भम-मरपउमग्घाइणि। वारियवामे। सहसु दियहं' (काप्र २६४)।

अग्घाइअ वि [आघ्रात] सूंघा हुआ (गा ६७)।

अग्घाइज्जमाण देखो अग्घा।

अग्घाइर वि [आघ्रातृ] सूंघनेवाला। स्त्री °री (गा ८८६)।
अग्घाड सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घाडइ (हे ४, १६९)।
अग्घाड } पु [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग,
अग्घाडग } चिचडा, लटजीरा (दे १,८, पराग १)।
अग्घाण वि [दे] तृप्त, सन्तुष्ट (दे १, १८)।
अग्घाय वि [आघ्रात] सूंघा हुआ (पाअ)।
अग्घायमाण देखो अग्घ = अर्घ्।
अग्घायमाण देखो अग्घा।
अग्घिय वि [राजित] विराजित, शोभित (कुमा)
अग्घिय वि [अर्घित] १ बहुमूल्य, कीमती, 'अग्घिय नाम बहुमोल्लं' (निचू २)। २ पूजित (दे १,१०८, से २०२)।
अग्घोदय न [अर्घोदक] पूजा का जल (अभि ११८)।
अघ न [अघ] १ पाप, कुकर्म (कुमा)। २ वि शोचनीय, शोक का हेतु 'अघ बम्हणभाव' (प्रयौ ८०)।
अघो देखो अहो (नाट)।
अचक्खु पुंन [अचक्षुस्] १ आँख के सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन (कम्म १, १०)। २ आँख को छोड बाकी इन्द्रिय और मन से होनेवाला सामान्य ज्ञान (द १६)। ३ वि अन्धा, नेत्रहीन (कम्म ४)। °दंसण न [दर्शन] आँख को छोड बाकी इन्द्रिया और मनसे होनेवाला सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अचक्षुर्दर्शन को रोकनेवाला कर्म (ठा ६)। °फास पु [°स्पर्श] अन्धकार, अंधेरा (णाया १, १४)।
अचक्खुस वि [अचाक्षुष] जो आँख से देखा न जा सके (पराह १, १)।
अचक्खुस्स वि [अचक्षुष्य] जिसको देखने का मन न चाहता हो (बृह ३)।
अचर वि [अचर] पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ, स्थावर (दस)।
अचल वि [अचल] १ निश्चल, स्थिर (आचा)। २ पु यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अंत ३)। एक बलदेव का नाम (पव २०६)। ४ पर्वत, पहाड (गउड १२०)। ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी (पउम ८५,४)। °पुर न [°पुर] ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर (कप्प)। °प्प न [°त्मन्] हस्तप्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या (इक)। °भाय पु [°भ्रातृ] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर (कप्प)।
अचल पु [अचल] छठवाँ रुद्र पुरुष (विचार ४७२)।
अचल न [दे] १ घर। २ घर का पिछला भाग। ३ वि. कहा हुआ। ४ निष्ठुर, निर्दय। ५ नीरस, मूखा (दे १, ५३)।
अचला स्त्री [अचला] पृथिवी। २ एक इन्द्राणी (णाया २)।
अचित वि [अचिन्त] निश्चिन्त, चिन्तारहित।
अचित वि [अचिन्त्य] अनिर्वचनीय, जिसकी चिन्ता भी न हो सके वह, अद्भुत (लहुअ ३)।
अचितणिज्ज } वि [अचिन्तनीय] ऊपर
अचितणीअ } देखो (अभि २०३, महा)।
अचितिय वि [अचिन्तित] आकस्मिक, असंभावित (महा)।
अचित्त वि [अचित्त] जीव-रहित, अचेतन, 'चित्तमचित्तं वा णेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा' (दस ४)।
अचियत } वि [दे] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर
अचियत्त } (सूअ २, २, पराह २, ३)। २ न अप्रीति, द्वेष (ओघ २६१)।
अचिरजुवइ देखो अइरजुवइ (दे १,१८ टी)।
अचिरा देखो अइरा (पउम ३७, ३७)।
अचिराभा स्त्री [अचिराभा] बिजली, विद्युत् (पउम ४२, ३२)।
अचिरेण देखो अइरेण (प्रारू)।
अचेयण वि [अचेतन] चैतन्यरहित, निर्जीव (पराह १, २)।
अचेल न [अचेल] १ वस्त्रों का अभाव। २ अल्प-मूल्यक वस्त्र। ३ थोडा वस्त्र (सम ४०)। ४ वि वस्त्र-रहित, नग्न। ५ जीर्ण वस्त्र वाला। ६ अल्प वस्त्र वाला। ७ कुत्सित वस्त्र वाला, मैला, 'तह थोव-जुन्न-कुत्थियचेलेहिंवि भरणए अचेलोत्ति' (विसे २६०१)। °परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना (सम ४०, भग ८, ८)।
अचेलग } वि [अचेलक] १ वस्त्र-रहित,
अचेलय } नग्न। २ फटा-टूटा वस्त्र वाला। ३ मलिन वस्त्र वाला। ४ अल्प वस्त्र वाला। ५ निर्दोष वस्त्र वाला, ६ अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करनेवाला (ठा ५, ३),

'परिसुद्धजिराग-कुच्छियथोवानियत्तभोगभोगेहिं'।
मुरगओ मुच्छारहिया, संतेहि अचेलया हुंति'
(विसे २५९९)।

अच्च सक [अर्च्] पूजना, सत्कार करना। अच्चेइ (ओप)। अच्च (दे २,३५ टी)। कवकृ. अच्चिज्जंत (सुपा ७८)। कृ अच्चणिज्ज (णाया १,१)।
अच्च पु [अर्च्य] १ लव (काल-मान) का एक भेद (कप्प)। २ वि पूज्य, पूजनीय (हे १, १७७)।
अच्चंग न [अत्यङ्ग] विलासिता के प्रधान अंग, भोग के मुख्य साधन, 'अच्चंगाए च भोगओ माए' (पंचा १)।
अच्चंत वि [अत्यन्त] हद से ज्यादा, अत्यधिक बहुत (सुर ३,२२)। °थावर वि [°स्थावर] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ (श्रावम)। °दूसमा स्त्री [°दुष्षमा] देखो दुस्समदुस्समा (पउम २०, ७)।
अच्चंतिअ वि [आत्यन्तिक] १ अत्यन्त अधिक, अतिशयित। २ जिसका नाश कभी न हो वह, शाश्वत (सूअ २, ६)।
अच्चग वि [अर्चक] पूजक (चैत्य १२)।
अच्चग्गल वि [अत्यर्गल] निरंकुश, अनियन्त्रित (मोह ८७)।
अच्चण न [अर्चन] पूजा, सम्मान (सुर ३, १३, सत्त १२ टी)।
अच्चणा स्त्री [अर्चना] पूजा (अच्चु ५७)।
अच्चणिया स्त्री [अर्चनिका] अर्चन, पूजा (राय १०८)।
अच्चत्त वि [अत्यक्त] नहीं छोडा हुआ, अपरित्यक्त (उप पृ १०७)।
अच्चत्थ वि [अत्यर्थ] १ अतिशयित, बहुत

(पराह १, १)। २ गभीर अर्थ वाला (राय)। ३ क्रिवि ज्यादा, अत्यंत (सुर १,७)।

अच्चब्भुय वि [अत्यद्भुत] बड़ा आश्चर्य-जनक (प्रासू ४२)।

अच्चय पु [अत्यय] १ विपरीत आचरण (बृह ३)। विनाश, मरण (उव)।

अच्चय वि [अर्चक] पूजक, 'अगणचयाण च चिरतणाणं, जहारिहं रक्खणवड्ढणानि' (विवे ७० टी)।

अच्चर / अच्चरिअ / अच्चरीअ } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (विक्र ६८, प्रबो १७, रंभा, भवि, नाट)।

अच्चहम वि [अत्यधम] अति नीच (कप्पू)।

अच्चा स्त्री [अर्चा] पूजा, सत्कार (गउड)।

अच्चा स्त्री [अर्चा] १ शरीर, देह (सूत्र १,१३, १८, १,१५,१८, २,२,६, ठा १ पत्र १६)। २ लेश्या चित्त-वृत्ति (सूत्र १,१३,१७, १, १५,१८)। ३ ऐश्वर्य (ठा ३ १—पत्र ११८)।

अच्चासण पु [अत्यशन] पक्ष का बारहवाँ दिन, द्वादशी तिथि (सुज्ज १० १८)।

अच्चासणया स्त्री [अत्यासनता] खूब बैठना, देर तक या बारबार बैठना (ठा ६)।

अच्चासणया स्त्री [अत्यशनता] खूब खाना (ठा ६)।

अच्चासण्ण / अच्चासन्न } न [अत्यासन्न] अति समीप खूब नजदीक (भग १,१, उवा)।

अच्चासाइअ / अच्चासादिय } वि [अत्याशातित] अपमानित, हैरान किया गया (ठा १० भग ३, २)।

अच्चासाय सक [अति + शातय्] अपमान करना, हैरान करना। वकृ. अच्चासाएमाण (ठा १०)। हेकृ. अच्चासाइत्तए (भग ३,२)।

अच्चाहिअ / अच्चाहिय } वि [अत्याहित] १ महा भीति, बड़ा भय। २ झूठा अभय (स्वप्न ४८)। ३ ऐसा उग्गमी कार्य, जिसमें प्राण-नाश की सम्भावना हो (अभि ३८)।

अच्चि स्त्री [अर्चिस्] १ कान्ति, तेज (भा २ ५)। २ अग्नि की ज्वाला (परह १)। ३ किरण (राय)। ४ दीप की शिखा (उत ३)। ५ न लोकान्तिक देवों का एक विमान (सम १४)। °मालि पु [°मालिन्] १ सूर्य, रवि (सूत्र १, ६)। २ वि किरणों से शोभित (राय)। ३ न लोकान्तिक देवों का एक विमान (सम १४)। °माली स्त्री [°माली] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १)। २ 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम (णाया २)। ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम (ठा ४,२)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] चन्द्र और सूर्य की एक अग्र-महिषी का नाम (भग १० ५, इक)।

अच्चिअ वि [अर्चित] १ पूजित, सत्कृत (गा १५०)। २ न विमान-विशेष (जीव ३, पत्र १३७)।

अच्चित्त देखो अचित्त (ओघ २२ सुर १२, २७)।

अच्चीकर सक [अर्ची + कृ] १ प्रशंसा करना। २ खुशामद करना। अच्चीकरेइ। वकृ. अच्चीकरत (निचू ५)।

अच्चीकरण न [अर्चीकरण] १ प्रशंसा। २ खुशामद,

'अच्चीकरणं रयणो, गुणवयणं त समासओ दुविहं।
सतमसतं च तहा, पच्चक्खपरोक्खमेक्केक्कं।' (निचू ५)।

अच्चुअ पु [अच्युत] १ विष्णु (अच्चु ५)। २ बारहवाँ देवलोक (सम ३९)। ३ ग्यारहवाँ और बारहवाँ देवलोक का इन्द्र (ठा २,३)। ४ अच्युत-देवलोकवासी देव, 'त चेव आरण-च्चुय ओहिएणाणेण पासंति' (विसे ६९६)। °नाह पु [°नाथ] बारहवाँ देवलोक का इन्द्र (भवि)। °वइ पु [°पति] इन्द्र-विशेष (सुपा ६१)। °वडिंसग न [°ावतंसक] विमान-विशेष का नाम (सम ४१)। °सग्ग पु [°स्वर्ग] बारहवाँ देवलोक (भवि)।

अच्चुअ पुन [अच्युत] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३५)।

अच्चुआ स्त्री [अच्युता] छठवें और सातवें तीर्थंकर की शासनदेवी (संति ९, १०)।

अच्चुइंद पु [अच्युतेन्द्र] ग्यारहवाँ और बारहवाँ देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष (पउम ११९, ७)।

अच्चुक्कड वि [अत्युत्कट] अत्यन्त उग्र (श्रावक)।

अच्चुग्ग वि [अत्युग्र] अत्यन्त उग्र (पव २३४)।

अच्चुच्च वि [अत्युच्च] खूब ऊँचा, विशेष उन्नत (उप ९८६ टी)।

अच्चुट्ठिय वि [अत्युत्थित] अकार्य करने को तैय्यार (सूअ १, १४)।

अच्चुण्ह वि [अत्युष्ण] खूब गरम (ठा ५, ३)।

अच्चुत्तम वि [अत्युत्तम] अति श्रेष्ठ (कप्पू)।

अच्चुदय न [अत्युदक] १ बड़ी वर्षा (ओघ ३०)। २ प्रभूत पानी (जीव ३)।

अच्चुदार वि [अत्युदार] अत्यन्त उदार (स ६००)।

अच्चुन्नय वि [अत्युन्नत] बहुत ऊंचा (कप्प)।

अच्चुब्भड वि [अत्युद्भट] अति-प्रबल (भवि)।

अच्चुवयार पु [अत्युपकार] महान् उपकार (गा ५१४)।

अच्चुवयार पु [अत्युपचार] विशेष सेवा-सुश्रूषा (गा ५१४)।

अच्चुव्वाय वि [अत्युद्वात] अत्यन्त थका हुआ (बृह ३)।

अच्चुसिण वि [अत्युष्ण] अधिक गरम (आचा २, १, ७)।

अच्चे अक [अति + इ] १ अतिक्रान्त होना, गुजरना। २ सक उल्लंघन करना। अच्चेइ (उत्त १३, ३१, सूअ १, १५, ८)।

अच्चे सक [अत्या + इ] त्याग करवाना। अच्चेही (सूअ १, २, ३, ७)।

अच्चेअर न [आश्चर्य] आश्चर्य, विस्मय (विक्र १५)।

अच्छ अक [आस्] बैठना। अच्छइ (हे १, २१४)। वकृ. अच्छंत, अच्छमाण (सुर ७, १३, णाया १, १)। कृ. अच्छि-यव्व अच्छेयव्व (पि ५७०, सुर १२ २२८)।

अच्छ सक [आ + छिद्] १ काटना, छेदना। २ खींचना। अच्छे (आचा १,१,२, ३)। संकृ. अच्छित्तु (श्रावक २२५), अच्छेत्तु (पिंड ३६८)।

अच्छ वि [अच्छ] १ स्वच्छ, निर्मल (कुमा)। २ पु स्फटिक रत्न (पव २७५)। ३ पु व आर्य देश-विशेष (प्रव २७५)।

अच्छ पुं [ऋक्ष] रीछ, भालू (पण्ह १, १)।

अच्छ वि [आच्छ] अच्छ देश मे उत्पन्न (पण्ण ११)।

अच्छ पु [अच्छ] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। २ न. तीन वार औटा हुआ स्वच्छ पानी (पिंड)।

अच्छ न [दे] १ अत्यन्त, विशेष। २ शीघ्र, जल्दी (दे १, ४६)।

°अच्छ वि [अक्षि] आख, नेत्र (कुमा)।

°अच्छ पु [कच्छ] १ अधिक पानीवाला प्रदेश। २ लताओ का समूह। ३ तृण, घास (से ६, ४७)।

°अच्छ पु [वृक्ष] वृक्ष, पेड (से ६,४७)।

अच्छअ पु [अक्षक] १ बहेडा का वृक्ष। २ न स्वच्छ जल (से ६, ४७)।

अच्छअर न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (कुमा)।

अच्छंद वि [अच्छन्द] जो स्वाधीन न हो, पराधीन, 'अच्छंदा जे ण भुंजंति ण से चाइत्ति वुच्चइ' (दस २)।

अच्छक्क देखो अत्थक्क (गउड)।

अच्छण न [आसन] १ बैठना (णाया १, १)। २ पानकी वगैरह मुखासन (ओघ ७८)। °घर न [°गृह] विश्राम स्थान (जीव ३)।

अच्छण न [दे] १ सेवा, शुश्रूषा (बृह ३)। २ देखना, अवलोकन (वव १)। ३ अहिंसा, दया (दस ८)।

अच्छणिउर न [अच्छनिकुर] अच्छनिकुराग को चोरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, १)।

अच्छणिउरंग न [अच्छनिकुराङ्ग] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २,१)।

अच्छण्ण वि [अच्छन्न] अगुप्त, प्रकट (बृह ३)।

अच्छभल्ल पु [ऋक्षभल्ल] रीछ, भालू (दे १, ३७, पण्ह १, १)।

अच्छभल्ल पु [दे] यक्ष, देव-विशेष (दे १, ३७)।

अच्छरआ देखो अच्छरा (पड्)।

अच्छरय पु [आस्तरक] शय्या पर बिछाने का वस्त्र-विशेष (णाया १, १)।

अच्छरसा } स्त्री [अप्सरस्] १ इन्द्र की
अच्छरा } पटरानी (ठा ६)। २ 'ज्ञाता-धर्मकथा' का एक अध्ययन (णाया २)। ३ देवी (पउम ७, ४१)। ४ रूपवती स्त्री (पण्ह १, ४)।

अच्छरा स्त्री [दे अप्सरा] चुटकी, चुटकी का आवाज (सूत्र २,२,५८)।

अच्छराणिवाय पु [दे] १ चुटकी। २ चुटकी बजाने मे जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय (पण्ण ३६)।

अच्छरिअ }
अच्छरिज्ज } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (हे १, ५८, प्रयो ८२)।
अच्छरीअ }

अच्छल न [अच्छल] निर्दोषता, अनपराध (दे १, १०)।

अच्छवि वि [अच्छवि] जैन-दर्शन मे जिसको स्नातक कहते है वह जीवन्मुक्त योगी (भग २५, ६)।

अच्छविकर पु [अक्षपिकर] एक प्रकार का मानसिक विनय (ठा ८)।

अच्छहल्ल पु [ऋक्षभल्ल] रीछ, भालू (पाअ)।

अच्छा स्त्री [अच्छा] वरुण देश की राजधानी (पव २७५)।

°अच्छा स्त्री [कक्षा] गर्व, अभिमान (से ६, ४७)।

अच्छाइ वि [आच्छादिन्] ढकनेवाला, आच्छादक (स ७५१)।

अच्छायण न [आच्छादन] १ ढकना (दे ७, ४५)। २ वस्त्र, कपडा (आचा)।

अच्छायणा स्त्री [आच्छादना] ढकना, आच्छादित करना (वव ३)।

अच्छायत वि [अच्छातान्त] तीक्ष्ण, धार-दार (पाअ)।

अच्छि त्रि [अक्षि] आँख, नेत्र (हे १. ३३, ३५)। °चमढण न [°मलन] आख का मलना (बृह २)। णिमीलिय न [निमीलित] १ आँख को मूँदना, मीचना। २ आँख मिचने मे जो समय लगे वह, 'अच्छिणिमीलियमेत्त, णत्थि सुह दुक्खमेव अणुबद्ध। णरए णेरइआए, अहोणिस पच्चमाणाए' (जीव ३)। °पत्त न [°पत्र] आख का पक्ष्म, पपनी (भग १४, ८)। °वेहग पु [°वेधक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष (उत्त ३६)। °रोडय पु [°रोडक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष (उत्त ३६)। °ल्ल वि [°मत्] १ आंख वाला प्राणी। २ चतुरिन्द्रिय जन्तु (उत्त ३६)। °मल पु [°मल] आंख का मैल, कीट्ट (निचू ३)।

अच्छिंद सक [आ + छिद्] १ थोडा छेद करना। २ एक वार छेद करना। ३ बलात्कार से छीन लेना। वकृ अच्छिंदमाण (भग ८, ३)।

अच्छिंद पु [अक्षीन्द्र] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)।

अच्छिंदण न [आच्छेदन] १ एक वार छेदना (निचू ३)। २ छीनना। ३ थोडा छेद करना, थोडा काटना (भग १५)।

अच्छिक्क वि [दे] अस्पृष्ट, नही छुआ हुआ (वव १)।

अच्छिघरुल्ल वि [दे] अप्रीतिकर। २ पु वेश, पोशाक (दे १, ४१)।

अच्छिज्ज वि [आच्छेद्य] १ जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय (पिंड)। २ पु जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)।

अच्छिज्ज वि [अच्छेद्य] जो तोडा न जा सके (ठा ३,२)।

अच्छित्ति स्त्री [अच्छित्ति] १ नाश का अभाव, नित्यता। २ वि नाश-रहित (विसे)। °णय पु [°नय] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष (पव)।

अच्छिद्द वि [अच्छिद्र] १ छिद्र-रहित, निविड, गाढ (ज २)। २ निर्दोष (भग २,५)।

अच्छिण्ण } वि [आच्छिन्न] १ बलात्कार
अच्छिन्न } से छीना हुआ। २ छेदा हुआ, तोडा हुआ (पाअ)।

अच्छिण्ण } वि [अच्छिन्न] १ नही तोडा
अच्छिन्न } हुआ, अलग नही किया हुआ (ठा १०)। २ अव्यवहित, अन्तर-रहित (गउड)।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने के अयोग्य (सुपा २८१)।

अच्छिप्पंत वि [अस्पृशत्] स्पर्श नहीं करता हुआ (श्रा १२)।

अच्छिय वि [आसित] बैठा हुआ (पि ४८०, ५६५)।

अच्छिवडण न [दे] आँख का मूँदना (दे १, ३६)।

अच्छिविअच्छि स्त्री [दे] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान (दे १, ४१)।

अच्छिहरिल्ल } देखो अच्छिघरुल्ल (दे
अच्छिहरुल्ल } १, ४१)।

अच्छी देखो अच्छि (रंभा)।

अच्छुक्क न [दे] अक्षि-रूप-तुला आंख का कोटर (सुपा २०)।

अच्छुत्ता स्त्री [अच्छुप्ता] १ एक विद्याधिष्ठात्री देवी (ति ८)। २ भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी की शासनदेवी (संति १०)।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ (षड्)।

अच्छुल्लूढ वि [दे] निष्कासित, बाहर निकाला हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ (बृह १)।

अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज (ठा ३, २, ४)।

अच्छेर, अच्छेरग, अच्छेरय न [आश्चर्य] १ विस्मय, चमत्कार (हे १,५८)। २ पुन विस्मय-जनक घटना, अपूर्व घटना (ठा १०, १३८)। °कर वि [°कर] विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला (श्रा १४)।

अच्छोड सक [आ + छोटय्] १ पटकना, पछाड़ना। २ सिंचना, छिड़कना, 'अच्छोडेमि सिलाए तिल तिल त्ति नु छिंदामि' (सुर १५ २३, सुर २, २४५)।

अच्छोड पु [आच्छोट] १ सिंचन। २ आस्फालन करना, पटकना (ओघ ३५७)।

अच्छोडण न [आच्छोटन] १ सिंचन। २ आस्फालन (सुर १३, ४१ सुपा ५८३, वेणी १०६)। ३ मृगया, शिकार (दे १, ३८)।

अच्छोडाविय वि [दे आच्छोटित] बंधित, बंधाया हुआ (स ५२५, ५२६)।

अच्छोडिअ वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ, अच्छोडियखग्ग (स १६०)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] सिक्त, सींचा हुआ (सुर २, २४५)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] पटका हुआ, आस्फालित (कुप्र ४३३)।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य, 'सो मुणओव्व अच्छिप्पो कुलुग्गयाण, न उण पुरिसो' (सुपा ४८७)।

अज देखो अय = अज (पउम ११ २५,२६)।

अजगर देखो अयगर (भवि)।

अजड पु [दे] जार, उपपति (षड्)।

अजड वि [अजड] १ पक्व, विकसित (गउड)। २ निपुण, चतुर (कुमा)।

अजम वि [दे] १ सरल, ऋजु (षड्)। २ जमाईन (पभा १५)।

अजय वि [अयत] १ पाप-कर्म से अविरत, नियम-रहित (कम्म ४)। २ अनुद्योगी, यत्न-रहित (ओघो ५४)। ३ उपयोग-शून्य, बेख्याल (सुपा ५२२)। ४ क्रिवि बेख्याल से, अनुपयोग से, 'अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ' (दस ४, उवर ४ टी)।

अजय पु [अजय] षट्पद छंद का एक भेद (पिंग)।

अजयणा स्त्री [अयतना] अनुपयोग, ख्याल नहीं रखना, गफलती (गच्छ ३)।

अजर वि [अजर] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढ़ापा-वर्जित। २ पु देव, देवता (आवम)। ३ मुक्त आत्मा (ओघ)।

अजराउर वि [दे] उष्ण, गरम (दे १,४५)।

अजरामर वि [अजरामर] १ बुढ़ापा और मृत्यु से रहित, 'नत्थि कोइ जगम्मि अजरामरो' (महा)। २ न मुक्ति, मोक्ष। ३ स्त्री °रा विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

अजस पु [अयशस्] १ अपयश, अपकीर्त्ति (उव ७६८)। °कित्तिणाम न [°कीर्तिनामन्] अपकीर्त्ति का कारण-भूत एक कर्म (सम ६७)।

अजस्स क्रिवि [अजस्र] निरन्तर, हमेशा, 'आमरणमजस्सं सव्वपरिमाणविरहिओ' (पचा ७)।

अजा देखो अया (कुमा)।

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, मूर्ख (रयण ८५)।

अजाणअ वि [अज्ञायक] अनजान, जानकारी-रहित (गा)।

अजाणणा स्त्री [अज्ञान] जानकारी-रहित, बेसमझी 'अयाणणाए तज्जत्ती न कया तम्मि' (श्रा २८)।

अजाणुय वि [अज्ञायक] अज्ञ, नहीं जाननेवाला (ठा ३, ४)।

अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अनिष्पन्न। °कप्प पु [°कल्प] शास्त्रों को पूरा-पूरा नहीं जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ, 'गीयत्थ जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ अ' (धर्म ३)। °कप्पिय पु [°कल्पिक] अगीतार्थ जैन साधु (गच्छ १)।

अजिअ वि [अजित] १ अपराजित, अपराभूत। २ पु दूसरे तीर्थंकर का नाम (अजि १)। ३ नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव (संति ७)। ४ एक भावी बलदेव (ती २१)। °बला स्त्री [°बला] भगवान् अजितनाथ की शासनदेवी (पव २७)। °सेण पु [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा (आव)। २ चौथा कुलकर (ठा १०)। ३ एक विख्यात जैन मुनि (अंत ४)।

अजिअ पु [अजित] भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)।

°नाह पु [°नाथ] नववां रुद्र पुरुष (विचार ४७३)।

अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित, अचेतन (कम्म १, १५)।

अजिअ वि [अजय्य] जो जीता न जा सके (सुपा ८५)।

अजिया स्त्री [अजिता] १ भगवान् अजितनाथ की शासनदेवी (संति ६)। २ चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या (तित्थ)।

अजिण न [अजिन] १ हरिण आदि पशुओं का चमड़ा (उत्त ५, दे ७, २७)। २ वि जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया है वह (भा १५)। ३ जिन भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु, 'अजिणा जिणसंकासा, जिणा इवावितहं वागरेमाणा' (औप)।

अजिण्ण देखो अइन्न = अजीर्ण (श्राव)।

अजियवर पु [अजितवर] ग्यारह रुद्रों में आठवां रुद्र पुरुष (विचार ४७३)।

अजिर न [अजिर] आंगन, चौक (गउड)।

अजीर } देखो अइन्न = अजीर्ण (वव १,
अजीरय } णाया १,१३)।

अजीरण देखो अइन्न = अजीर्ण (पिंड २७, पव १३१)।

अजीव पु [अजीव] अचेतन, निर्जीव, जड पदार्थ (नव २)। °काय पुं [°काय] धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ (भग ७,१०)।

अजुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतोना (दे १, १७)।

अजुअ न [अयुत] दश हजार, 'दोरिण्ण सहस्सा रहाण, पच अजुयाणि हयाण' (महा)।

अजुअलवण्ण पु [अयुगलपर्ण] सतौना (दे १,४८)।

अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इमली का पेड (दे १, ४८)।

अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य, अनुचित (विसे)। °कारि वि [°कारिन्] अयोग्य कार्य करनेवाला (सुपा ६०४)।

अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] युक्ति-शून्य, अन्याय्य (सुर १२, ५४)।

अजुय देखो अउअ, 'पच अजुयाणि हयाण सत्त कोडीओ पाइक्कजणाण' (सुव ६, १)।

अजेअ वि [अजय] जो जीता न जा सके, 'सो मउडरयणपहावेण अजेआ दोमुहराया' (महा)।

अजोग पु [अयोग] मन, वचन और काया के सब व्यापारो का जिसमे अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण (औप)।

अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य, लायक नही वह (नीचू ११)।

अजोगि पु [अयोगिन्] १ सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी। २ मुक्त आत्मा (ठा २,१, कम्म ४, ४७, ५०)।

अज्ज सक [अर्ज्] पेदा करना, उपार्जन करना, कमाना। अजइ (हे ४,१०८)। सकृ अज्जिय (पिग)।

अज्ज वि [अर्य] १ वैश्य। २ स्वामी, मालिक (दे १, ५)।

अज्ज वि [आर्य] १ निर्दोष। २ आर्य-गोत्र मे उत्पन्न (णदि ४९)। ३ शिष्ट-जनोचित, 'अज्जाइ कम्माइ करेहि राय' (उत्त १३,३२)। °खउड पुं [°खपुट] एक जैन आचार्य (कुप्र ४४०)।

अज्ज वि [आर्य] १ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा ४,२)। २ मुनि, साधु (कप्प)। ३ सत्यकार्य करनेवाला (वव १)। ४ पूज्य, मान्य (विपा १, १)। ५ पु मातामह (निसी)। ६ पितामह (णाया १, ८)। ७ एक ऋषि का नाम (णदि)। ८ न गोत्र-विशेष (णदि)। ९ जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओ के पूर्व मे यह शब्द प्राय लगता है, जैसे अज्जवइर, अज्जचंदणा, अज्जपोमिला (कप्प)। °उत्त पु [°पुत्र] १ पति, भर्ता (नाट)। २ मालिक का पुत्र (नाट)। °घोस पु [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८)। °मगु पु [°मङ्गु] एक प्राचीन जैनाचार्य (साध २२)। °मिस्स वि [°मिश्र] पूज्य, मान्य (अभि १३)। °समुद्द पु [°समुद्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (साध २२)।

अज्ज अ [अद्य] आज (सुर २, १९७)। °त्त वि [°तन] अधुनातन, आजकल का (रभा)। °त्ता स्त्री [°ता] आज कल (कप्प)। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] आज से ले कर (उवा)।

अज्ज पु [दे] १ जिनेन्द्र देव। २ बुद्ध देव (दे १, ५)।

अज्ज न [आज्य] घी, घृत (पाअ)।

अज्ज° देखो रि = ऋ।

अज्ज अ [अद्य] आज (गा ५८)।

अज्जत वि [आयत्] आगामी। °काल पु [°काल] भविष्य काल (पाअ)।

अज्जहिज्जो अ [अद्यह्य] आजकल (उप पृ ३२४)।

अज्जकालिअ वि [अद्यकालिक] आजकल का (अणु १५८)।

अज्जग देखो अज्जय = अर्जक, 'अज्जगतरुमजरिव्व' (सुपा ५३)।

अज्जग देखो अज्जय = आर्यक (निर १, १)।

अज्जण सक [अर्ज्] उपार्जन करना। सकृ अज्जणित्ता (सूअ १, ५, २, २३)।

अज्जण } [अर्जन] उपार्जन, पेदा करना
अज्जणण } (श्रा १२, सत्त १८), 'रज्ज केरिसमेव करेसुवाय तदज्जणे' (उप ७ टी)।

अज्जम पु [अर्यमन्] १ सूर्य (पि २६१)। २ देव-विशेष (ज ७)। ३ उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ४ न उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र (ठा २, ३)।

अज्जय पु [आर्यक] १ मातमह, मा का बाप (पउम ९०, २)। २ पितामह, पिता का पिता (भग ९, ३३), 'ज पुण अज्जय-पज्जय-जणयजियअत्थमज्झओ दाण परमत्थओ कलक तय तु पुरिसाभिमाणीण' (सुर १, २२०)।

अज्जय वि [अर्जक] १ उपार्जन करनेवाला, पेदा करनेवाला (सुपा १२४)। २ पु वृक्ष-विशेष (पण्ण १)।

अज्जय पुं [दे] १ सुरस नामक तृण। २ पुरेटक नामक तृण (दे १, ५४)। ३ तृण, घास (निचू ११)।

अज्जल पुं [आर्येल] म्लेच्छो की एक जाति (पण्ण १)।

अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता (नव २९)।

अज्जव (अप) देखो अज्ज = आर्य। °खड पु [खण्ड] आर्य-देश (भवि)।

अज्जवया स्त्री [आर्जव] ऋजुता, सरलता (पक्खि)।

अज्जवि वि [आर्जविन्] सरल, निष्कपट (आचा)।

अज्जविय न [आर्जव] सरलता (सूअ १, ५, २, २३)।

अज्जा स्त्री [आर्या] १ साध्वी (गच्छ २)। २ गौरी, पार्वती (दे १, ५)। ३ आर्या छन्द (ज २)। ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ५ मान्या, पूज्या स्त्री (पि १०६, १४३, १४५)। ६ एक कला (औप)।

अज्जा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (हे २, ८३)।

अज्जाय वि [अजात] अनुत्पन्न, 'अज्जायस्सियरस्सवि एस सहावो त्ति दुग्घड जाए' (धर्मस २७०)।

अज्जाव सक [आ + ज्ञापय्] आज्ञा करना, हुकुम फरमाना। कृ अज्जावेयव्व (सूअ २, १)।

अज्जिअ वि [अर्जित] उपार्जित, पेदा किया हुआ (श्रा १४)।

अज्जिआ स्त्री [आर्यिका] १ मान्या, पूज्या स्त्री। २ साध्वी, सन्यासिनी (सम ६५; पि ४४८)। ३ माता की माता (दस ७)। ४ पिता की माता (स २५५)।

अज्जिड्डीअ वि [दे] दत्त, दिया हुआ (वव १ टी)।

अज्जिणग देखो अज्जणग (उप ६६४)।

अज्जीव देखो अजीव, 'धम्माधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा' (नव १०)।

अज्जु (अप) अ [अद्य] आज (हे ४, ३४३; भवि; पिंग)।

अज्जुअ (शौ) देखो अज्ज = आर्य (नाट)।

अज्जुआ (शौ) देखो अज्जा = आर्या (पि १०५)।

अज्जुण पु [अर्जुन] १ तीसरा पाण्डव (णाया १, १६)। २ वृक्ष-विशेष (णाया १, ६; औप)। ३ गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)। ४ न श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना, 'सव्वज्जुणसुवण्णगमई' (औप)। ५ तृण-विशेष (पण्ण १)। ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प (णाया १, ६)।

अज्जुणग } [अर्जुनक] १—६ ऊपर देखो।
अज्जुणय } ७ एक माली का नाम (अंत १८)।

अज्जू स्त्री [आर्या] सास, श्वश्रू (हे १, ७७)।

अज्जोग देखो अजोग = अयोग (पंच १)।

अज्जोगि देखो अजोगि (पंच १)।

अज्जोरुह न [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

अज्झक्ख वि [अध्यक्ष] अधिष्ठाता (कप्पू)।

अज्झ पु [दे] यह (पुरुष मनुष्य) (दे १, ५०)।

अज्झत्त देखो अज्झप्प (सूअ १, २, २, १२)।

अज्झत्थ वि [दे] आगत, आया हुआ (दे १, १०)।

अज्झत्थ } न [अध्यात्म] १ आत्मा में, आत्म-
अज्झप्प } संबंधी, आत्म-विषयक (उत्त १, आचा)। २ मन में मन संबंधी, मनो-विषयक (उत्त ६; सूअ १, १६, ४)। ३ मन, चित्त, 'अज्झप्पसमाहियप्पा' (दसनि १, २६)। ४ शुभ-ध्यान, 'अज्झप्प-रए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू' (दस १०,१५)। ५ पु आत्मा (ओघ ७४५)। °जोग पु [°योग] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता (सूअ १, १६, ४)। °दोस पु [°दोष] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ (सूअ १, ६)। °वत्तिय वि [°प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होनेवाला शोक, चिन्ता आदि (सूअ २, २, १६)। °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि (ओघ ७४५)। °संवुड वि [°संवृत] मनो-निग्रही, मन को काबू में रखनेवाला (आचा)। °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र (पण्ह २, १)। °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि (आचू १)। °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मन-शुद्धि (आचू १)।

अज्झत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्म-विषयक, आत्मा या मन से संबंध रखनेवाला (विपा १, १; भग २, १)।

अज्झत्थीअ देखो अज्झत्थिय (पव १२१)।

अज्झप्पिअ वि [आध्यात्मिक] १ अध्यात्म का जानकार (अज्झ २)। २ अध्यात्म सम्बन्धी (सूअनि ६४)।

अज्झय वि [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी (दे १, १७)।

अज्झयण पुंन [अध्ययन] १ शब्द, नाम (चंद १)। २ पढ़ना, अभ्यास (विसे)। ३ ग्रन्थ का एक अंश (विपा १, १)।

अज्झयणि वि [अध्ययनिन्] पढ़ने वाला, अभ्यासी (विसे १४६५)।

अज्झयाव सक [अधि + आप्] पढ़ाना, सीखाना। अज्झयाविंति (विसे ३१६६)।

अज्झवस सक [अध्यव + सो] विचार करना, चिंतन करना। वकृ अज्झवसंत (सुपा ५६५)।

अज्झवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन,
अज्झवसाण } विचार, आत्म-परिणाम, 'तो कुमरेण भणियं, मुणिपुंगव ! रहसुहज्झवसाणंपि। किं इयफलयं जायइ ?' (सुपा ५६९; प्रासू १०४; विपा १, २)।

अज्झवसाय पु [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक संकल्प (आचा; कम्म ४, ८२)।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] निश्चित, (धर्मसं ४२८)।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह (औप)। २ न चिन्तन, विचार (अणु)।

अज्झवसिय न [दे] मुंडा हुआ मुंह (दे १, ४०)।

अज्झसिय वि [दे] देखा हुआ, दृष्ट (दे १, ३०)।

अज्झस्स सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, अभिशाप देना। अज्झस्सइ (दे १, १३)।

अज्झस्स } वि [आक्रुष्ट] जिस पर आक्रोश
अज्झस्सिय } किया गया हो वह (दे १, १३)।

अज्झहिय वि [अध्यधिक] अत्यंत, अतिशयित (महा)।

अज्झा स्त्री [दे] १ असती, कुलटा। २ प्रशस्त स्त्री। ३ नवोढा, दुलहिन। ४ युवती स्त्री। ५ यह (स्त्री) (दे १, ५०; गा ८३८, ८९८; वज्जा ६४)।

अज्झा } सक [अधि + इ] अध्ययन करना,
अज्झाअ } पढ़ना। अज्झामि; (सुख २, १३)। हेकृ अज्झाइउं (सुख २, १३)।

अज्झाअ सक [अध्यापय्] पढ़ाना। कर्म अज्झाइज्जइ (सुख २, १३)।

अज्झाइअव्व वि [अध्येतव्य] पढ़ने योग्य, 'सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ' (दस ६, ४, ३)।

अज्झाय पु [अध्याय] १ पठन, अभ्यास (नाट)। २ ग्रन्थ का एक अंश (विसे १११०; प्राप)।

अज्झारुह पु [अध्यारुह] १ वृक्ष-विशेष। २ वृक्षों के ऊपर बढ़नेवाली वल्ली या शाखा वगैरह (पण्ण १)।

अज्झारोव पु [अध्यारोप] आरोप, उपचार (धर्मसं ३५२, ३५३)।

अज्झारोवण न [अध्यारोपण] १ आरोपण, ऊपर चढ़ाना। २ पूछना, प्रश्न करना (विसे २६२८)।

अज्झारोह पु [अध्यारोह] देखो अज्झारुह (सूअ २, ३, ७, १८, १६)।

अज्झाव देखो अज्झाअ = अध्यापय्। अज्झावेइ (सुख २,१३)। वकृ अज्झावअंत (हास्य १२८)।

अज्झावग देखो अज्झावय (दसनि १, ? टी)।

अज्झावण न [अध्यापन] पाठन (सिरि २७)।

अज्झावणा स्त्री [अध्यापना] पढाना (कम्म १, ६०)।

अज्झावय वि [अध्यापक] पढानेवाला, शिक्षक, गुरु (वसु, सुर ३, २६)।

अज्झावस अक [अध्या+वस्] रहना, वास करना। वकृ अज्झावसत (उवा)।

अज्झास पु [अध्यास] १ ऊपर बैठना। २ निवास-स्थान (सुपा २०)।

अज्झासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना (राज)।

अज्झासिअ वि [अध्यासित] १ आश्रित, अधिष्ठित। २ स्थापित, निवेशित (नाट)।

अज्झाहय वि [अध्याहृत] १ उत्तेजित, 'मीयलेणं मुरहिगंधमट्टियागवेण हत्थी अज्झाहओ वण सभरेई' (महा)।

अज्झीण वि [अक्षीण] १ अक्षय, अखूट। २ न• अध्ययन (विसे ९५८)।

अज्झुववज्ज देखो अज्झोववज्ज (पि ७७, ओप)।

अज्झुववण्ण देखो अज्झोववण्ण (विपा १, १)।

अज्झुववाय देखो अज्झोववाय (उप पृ २८१)।

अज्झुसिअ वि [अध्युषित] आश्रित (पिंट ४५०)।

अज्झुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित (ओघ ३१३)।

अज्झेउ वि [अध्येतृ] पढनेवाला (विसे १४९५)।

अज्झेल्ली स्त्री [दे] दोहने पर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया (दे १, ७)।

अज्झेसणा स्त्री [अध्येषणा] अधिक प्रार्थना, विशेष याचना (राज)।

अज्झोयरग, अज्झोयरय पु [अध्यवपूरक] १ साधु के लिए अधिक रसोई करना। २ साधु के लिए बढाकर की हुई रसोई (ओप, पव ६७)।

अज्झोल्लिआ स्त्री [दे] वक्ष-स्थल के आभूषण मे की जाती मोतियों की रचना (दे १, ३३)।

अज्झोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत (पण्ण ३४)।

अज्झोववज्ज अक [अध्युप+पद्] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना। अज्झोववज्जइ (पि ७७)। भविअज्झोववज्जिहिइ (ओप)।

अज्झोववण्ग, अज्झोववन्न वि [अध्युपपन्न] अत्यंत आसक्त (विपा १,२, णाया १, २, महा, पि ७७)।

अज्झोववाय पु [अध्युपपाद] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता (पण्ह २,५)।

अज्झावणा देखो अज्झावणा, 'पसमो पसन्नवयणो विहिणा सव्वाणज्झावणाकुसलो' (सबोध २४)।

अट, अट्ट सक [अट्] भ्रमण करना, घूमना। अटइ (षड्, हे १, १९५), परिअट्टइ (हे ४, २३०)।

अट्ट सक [क्वथ्] क्वाथ करना। अट्टइ (हे ४, ११९, षड्, गउड)।

अट्ट अक [शुष्] सूखना, शुष्क होना। अट्टति (से ५, ६१)। वकृ अट्टंत (से ५, ७३)।

अट्ट वि [आर्त] १ पीडित, दुःखित (विपा १,१)। २ ध्यान-विशेष—इष्ट-संयोग, अनिष्ट-वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना (ठा ४, १)। °ण्ण वि [°ज्ञ] पीडित की पीडा को जाननेवाला (षड्)।

अट्ट वि [ऋत] गत, प्राप्त (णाया १, १, भग १२, २)।

अट्ट पुन [अट्ट] १ दूकान, हाट (श्रा १४)। २ महल के ऊपर का घर, अटारी (कुमा)। ३ आकाश (भग २०, २)।

अट्ट वि [दे] १ कृश, दुर्बल। २ बडा, महान्। ३ निर्लज्ज, बेशरम। ४ आलसी, सुस्त। ५ पु. शुक, तोता। ६ शब्द, आवाज। ७ न सुख। ८ झूठ, असत्योक्ति (दे १, ५०)।

अट्टट्ट वि [दे] गया हुआ, गत (दे १, १०)।

अट्टट्टहास पु [अट्टट्टहास] देखो अट्टहास (उव)।

अट्टण न [अट्टन] १ व्यायाम, कसरत (ओप)। २ पुं इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल (उत्त ४)। °साला स्त्री [°शाला] व्यायाम-शाला, कसरत-शाला (ओप, कप्प)।

अट्टण न [अटन] परिभ्रमण (धर्म ३)।

अट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवृत्ति (प्राकृ ३१)।

अट्टमट्ट वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निकम्मा (सुख ५,८)।

अट्टमट्ट पुं [दे] १ आलवाल, कियारी (हे २, १७४)। २ अशुभ सकल्प-विकल्प, पाप-सबद्ध अव्यवस्थित विचार,

'अणवट्ठिय मणो जस्स झाइ बहुयाइं अट्टमट्टाइं।
त चिंतिय च न लहइ, सचिणइ य पावकम्माइ' (उव)।

अट्टय पु [अट्टक] १ हाट, दूकान (श्रा १२)। २ पात्र के छिद्र को बन्द करने मे उपयुक्त द्रव्य-विशेष (वृह १)।

अट्टयक्कली स्त्री [दे] कमर पर हाथ रखकर खडा रहना (पाअ)।

अट्टहास पु [अट्टहास] बहुत हंसना, खिलखिला कर हंसना (पि २७१)।

अट्टालग, अट्टालय पुन [अट्टालक] महल का उपरि-भाग, अटारी (सम १३७, पउम २, ६)।

अट्टि स्त्री [आर्ति] पीडा, दुःख (आचा)।

अट्टिय वि [आर्तित] शोकादि से पीडित, 'अट्टा अट्टियचित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति' (ओप)।

अट्टिय वि [अर्दित] व्याकुल, व्यग्र, 'अट्टदुहट्टियचित्ता' (ओप)।

अट्ठ पु [अर्थ] सयम (सूअ १,२,२,१९)।

अट्ठ पुन [अर्थ] ५ वस्तु, पदार्थ (उवा २; अच्चु), 'अट्ठदंसी' (सूअ १, १४), 'अट्ठाइ, हेऊइ, पसिणाइ' (भग २, १)। २ विषय, 'इंदियट्ठा' (ठा ६)। ३ शब्द का अभिधेय, वाच्य (सूअ १,६)। ४ मतलब, तात्पर्य (विपा २,१, भास १८)। ५ तत्त्व, परमार्थ, 'तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं, अट्ठ न याणाह अहिज्ज वेए' (उत्त १२, ११), 'इओ चुएसु दुहमट्ठदुग्गं' (सूअ १, १०, ९)। ६ प्रयोजन, हेतु (हे २,२३)। ७ अभिलाष, इच्छा, 'अट्ठो भंते! भागेहिं, हता अट्ठो' (णाया १,१६, उत्त ३)। ८ उद्देश्य, लक्ष्य (सूअ १, २, १)। ९ धन, पैसा (श्रा १४, आचा)। १० फल, लाभ, 'अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा णिरट्ठाणि उ वज्जए' (उत्त १)। ११ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १)। °कर पु [°कर]। १ मन्त्री। २ निमित्त शास्त्र का विद्वान् (ठा ४, ३)। °जाय वि [°जातार्थ]

जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह, 'अट्ठेण जस्स कज्जं सजात एस अट्ठजाओ य' (वव २)। °जाय वि [°याच] धनार्थी, धन की चाहवाला (वव २)। °सइय वि [°शतिक] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि) (ज २)। °सेण प [°सेन] देखो अट्टिसेण, देखो अत्थ=अर्थ।

अट्ठ त्रि ब. [अष्टन] संख्या-विशेष, आठ, ८ (जी ४१)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] अठतालीसवाँ (पउम ८८,१२६)। °चत्तालीस त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (पि ४४५)। °ट्ठमिया स्त्री [°ष्टमिका] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष (सम ७७)। °तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (नाट)। °तीस त्रि [°त्रिंशत्] संख्या-विशेष, अठतीस (सम ६५, पि ४४२, ४४५)। °तीसइम वि [°त्रिंश] अठतीसवाँ (पउम ३८, ५८)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर, ७८ की संख्या (पि ४४६)। °त्तीस त्रि [°त्रिंशत्] अठतीस (सुपा ६५९, पि ४४५)। °दस त्रि [°दशन्] अठारह, १८ (सति ३)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत] एक सौ अठारहवाँ (पउम ११८,१२०)। °दह त्रि [°दशन] अठारह, १८ की संख्या (पिंग)। °पएसिय वि [°प्रदेशिक] आठ अवयव वाला (ठा १०)। °पया स्त्री [°पदा] एक वृत्त, छन्द-विशेष (पिंग) °पाहरिअ वि [°प्राहरिक] आठ प्रहर संबंधी (सुर १५, २१८)। °भाइया स्त्री [°भागिका] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलों का एक परिमाण (अणु)। °म न [°म] तेला लगातार तीन दिनों का उपवास (सुर ८,५५)। °मंगल पुन [°मङ्गल] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु (राय)। °मभत्त पुन [°मभक्त] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास (णाया १,१)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] तेला करनेवाला (विपा २, १)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष, अष्टमी (विपा २, १)। °मुत्ति पु [°मूर्ति] महादेव, शिव (ठा ६)। °याल त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (सति)। °वन्न त्रि [°पञ्चाशत्] संख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८ (कम्म १, ३२)। °वरिस. °वारिस वि [°वार्षिक] आठ वर्ष की उम्र का (सुर २,१४६, ८ १०१)। °विह वि [°विध] आठ प्रकार का (जी २४)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] अट्ठाईस (कम्म १, ५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] संख्या-विशेष, अड़सठ (पि ४४२-६)। °समइय वि [°सामयिक] जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह (औप)। °सय न [°शत] एक सौ आठ, १०८ (ठा १०)। °सहस्स न [°सहस्र] एक हजार और आठ (औप)। °सामइय देखो °समइय (ठा ८)। °सिर वि [°शिरस्, °सिर] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला (औप)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण। °हत्तर वि [°सप्ततितम] अठत्तरवाँ (पउम ७८, ५७)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर की संख्या ७८ (सम ८६)। °हा अ [°धा] आठ प्रकार का (पि ४५१)।

°अट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकड़ी (प्रयौ ७४)।

अट्ठंग वि [अष्टाङ्ग] जिसका आठ अंग हो वह। °णिमित्त न [°निमित्त] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो (सूअ १, १२)। °महाणिमित्त न [°महानिमित्त] अनन्तर-उक्त अर्थ (कप्प)।

अट्ठंस वि [अष्टास्र] अष्ट-कोण (सूअ २,१, १५)।

अट्ठदिट्ठि स्त्री [अष्टदृष्टि] योग की आठ दृष्टियाँ, वे ये हैं:—मित्रा, तारा, बला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रभा और परा (सिरि ६२३)।

अट्ठय न [अष्टक] आठ का समूह (वव १)।

अट्ठा स्त्री [अष्टा] १ मुष्टि, 'चउहिं अट्ठाहिं लोयं करेइ' (ज २, स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज (पचव २)।

अट्ठा स्त्री [आस्था] श्रद्धा, विश्वास (सूअ २,१)।

अट्ठा स्त्री [अर्थ] लिए, वास्ते, 'तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा' (सुर ६, ६, ठा ५, २)। °दंड पु [°दण्ड] काय के लिए की गई हिंसा (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [अष्टाविंश] अठाईसवाँ (पिंग)।

अट्ठाइस } स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-
अट्ठाईस } विशेष, अठाईस (पिंग, पि ४४२)।

अट्ठाण न [अस्थान] १ अयोग्य स्थान (ठा ६, विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरह (वव७)। ३ अयोग्य, गैरव्याजवी 'अट्ठाणमेयं कुसला वयंति, दगेण जे सिद्धिमुयाहरंति' (सूअ १, ७)।

अट्ठाण न [आस्थान] सभा, सभा-गृह (ठा ५, १)।

अट्ठाणउइ स्त्री [अष्टानवति] अठानवे, ९८ (सम ९९)।

अट्ठाणउय वि [अष्टानवत] अठानवेवाँ ९८वाँ (पउम ९८, ७८)।

अट्ठाणवइ देखो अट्ठाणउइ (कुप्र २१६)।

अट्ठाणिय वि [अस्थानिक] अपात्र, अनाश्रय, 'अट्ठाणिए होइ बहू गुणाणं जेऽणाणसंकाइ मुसं वएज्जा' (सूअ १, १३)।

अट्ठायमाण वकृ [अतिष्ठत्] नहीं बैठता हुआ (पचा १६)।

अट्ठार } त्रि ब [अष्टादशन्] संख्या
अट्ठारस } विशेष, अठारह (पउम ३५, ७६, सति ९)। °विह वि [°विध] अठारह प्रकार का (सम ३५)।

अट्ठारसग न [अष्टादशक] १ अठारह का समूह (पंचा १४, ३)। २ वि जिसका मूल्य अठारह मुद्रा हो वह (पव १११)।

अट्ठारसम वि [अष्टादश] १ अठारहवाँ (पउम १८,५८)। २ न लगातार आठ दिनों का उपवास (णाया १, १)।

अट्ठारसिय वि [अष्टादशिक] अठारह वर्ष की उम्र का (वव ४)।

अट्ठारह } देखो अट्ठार (षड्, पिंग)।
अट्ठाराह }

अट्ठावण्ण } स्त्रीन [अष्टापञ्चाशत्] संख्या-
अट्ठावन्न } विशेष, पचास और आठ, ५८ (पि २६५, सम ७४)।

अट्ठावन्न वि [अष्टापञ्चाश] अठावनवाँ (पउम ५८, १६)।

अट्ठावय पुं [अष्टापद] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास (पण्ह १, ४)। २ न एक जाति का जुआ (पण्ह १,४)। ३ द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह (पण्ह १, ४)। ४ सुवर्ण, सोना (धण ८)। °सेल पु [°शैल] १ मेरु-पर्वत। २ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे, 'जम्मि तुमं अहिसित्तो, जत्थ य सिवसुक्खसंपय पत्तो। तं अट्ठावयसेलं, सीसामेला गिरिपुनम्मं' (धण ८)।

अट्ठावय न [अर्थपद] गृहस्थ (दस ३ ४)।
अट्ठावय न [अर्थपद] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र (सूअ १,६ पण्ह १,४)।
अट्ठावीस स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस, २८ (पि ४४२, ४४५)।
अट्ठावीसइ स्त्री [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८। °विह वि [°विध] अठाईस प्रकार का (पि ४५१)।
अट्ठावीसइम वि [अष्टाविंश] १ अठाईसवाँ (पउम २८ १४१)। २ न. तेरह दिनों के लगातार उपवास (णाया १,१)।
अट्ठासट्ठि स्त्री [अष्टाषष्टि] संख्या-विशेष, अठसठ, ६८ (पिंग)।
अट्ठासि } स्त्री [अष्टाशीति] संख्या-विशेष
अट्ठासीइ } अठासी, ८८ (पिंग, सम ७३)।
अट्ठासीअ वि [अष्टाशीत] अठासीवाँ (पउम ८८, ४४)।
अट्ठाह न [अष्टाह] आठ दिन (णाया १ ८)।
अट्ठाहिया स्त्री [अष्टाहिका] १ आठ दिनों का एक उत्सव (पंचा ८)। २ उत्सव (णाया १,८)।
अट्ठि वि [अर्थिन्] प्रार्थी, गरजवाला, अभिलाषी (आचा)।
अट्ठि पु [अस्थि] १ हड्डी, हाड, 'अयं अट्ठी' (सूअ २, १, १६)। २ फल की गुठ्ठी (दस ५,१,७३)।
अट्ठि } स्त्रीन [अस्थि, °क] १ हड्डी, हाड
अट्ठिग } (कुमा, पण्ह १, ३)। २ जिसमें
अट्ठिय } बीज उत्पन्न न हुए हो ऐसा अपरिपक्व फल (बृह १)। ३ पु कापालिक, 'अट्ठी विज्जा कुच्छियभिक्खू' (बृह १, वव २)। °मिंजा स्त्री [°मिञ्जा] हड्डी के भीतर का रस (ठा ३,४)। °सरक्ख पु [°सरजस्क] कापालिक (वव ८)। °सेण न [°षेण] १ वत्सगोत्र की शाखारूप एक गोत्र। २ पु उस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी सन्तान (ठा ७)।
अट्ठिय वि [अर्थिक] १ गरजू, याचक, प्रार्थी (सूअ १, २, ३)। २ अर्थ का कारण, अर्थ सम्बन्धी। ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारणभूत, 'पसन्ना लाभइस्सति विउलं अट्ठियं सुयं' (उत्त १)।
अट्ठिय वि [आर्थिक] १ अर्थ का कारण, अर्थसम्बन्धी। २ मोक्ष का कारण (उत्त १)।
अट्ठिय वि [अर्थित] अभिलषित, प्रार्थित (उत्त १)।
अट्ठिय वि [अस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित (पण्ह १ ३)। २ चंचल, चपल (से २, २४)।
अट्ठिय वि [आस्थिक] हड्डी-सम्बन्धी, हाड का, 'अट्ठिय रस सुणआ' (भत १४२)।
अट्ठिय वि [आस्थित] स्थित, रहा हुआ, (से १, ३५)।
अट्ठिय पु [अस्थिक] १ वृक्ष-विशेष। २ न फल-विशेष, अस्थिक वृक्ष का फल (दस ५, १, ७३)।
अट्ठिल्लय पु [अस्थि] फल की गुठ्ठी (पिंड ६०३)।
अट्ठुत्तर वि [अष्टोत्तर] आठ से अधिक (औप)। °सय न [°शत] एक सौ और आठ (काल)। °सय वि [°शततम] एक सौ आठवाँ (पउम १०८, ५०)।
अड } देखो अट्ठ = अष्टन् (पिंग, पि ४४२,
अड } १४६, भग, सम १३४)।
अड सक [अट्] भ्रमण करना, फिरना, 'अडति समारे' (पण्ह १,१)। वकृ अडमाण (णाया १, १४)।
अड पु [अवट] १ कूप, इनारा (पाअ)। २ कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिए जो गर्त किया जाता है वह (हे १, २७१)। °अड देखो तड = तट (गा ११७, से १, ५५)।
अडइ } स्त्री [अटवि, °वी] भयानक जंगल
अडई } वन (सुपा १८१, नाट)।
अडडिभय न [दे] विपरीत मैथुन (दे १, ४२)।
अडक्खम्म सक [दे] संभालना, रक्षण करना। कर्म 'अडखम्मिज्जति सव्वरिआहि वणो' (दे १, ४१)।
अडखम्मिअ वि [दे] संभाला हुआ, रक्षित (दे १,४१)।
अडड न [अटट] 'अटटाग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४)।
अडडंग न [अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४)।
अडण न [अटन] भ्रमण, घूमना (ठा ६)।
अडणी स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता (दे १ १६)।
अडपल्लण न [दे] वाहन-विशेष (जीव)।
अडयणा } स्त्री [दे] कुलटा व्यभिचारिणी
अडया } स्त्री (दे १, १८, पाअ, गा २-४, ६६२, वज्जा ८६)।
अडयाल न [दे] प्रशंसा, तारीफ (पण्ण २)।
अडयाल } स्त्रीन [अष्टचत्वारिंशन्] अठ-
अडयालीस } तालीस, ४८ की संख्या (जीव ३, सम ७०)। °सय न [°शत] एक सौ और अठतालीस, १४८ (कम्म २, २५)।
अडवडण न [दे] स्खलना, रुक-रुक चलना, 'तुरयावि परिस्संता अडवडणं काउमारद्धा' (सुपा ६४५)।
अडव } स्त्री [अटवि, °वी] भयंकर जंगल,
अडवी } गहरा वन (पण्ह १, १, महा)।
अडसट्ठि स्त्री [अष्टषष्टि] अठसठ (पि ४४२)। °म वि [°तम] अठसठवाँ (पउम ६८,५१)।
अडाड पु [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, १९)।
अडिल्ल पुं [अटिल] एक जाति का पक्षी (पण्ण १)।
अडिल्ला स्त्री [अडिल्ला] छन्द-विशेष (पिंग)।
अडोलिया स्त्री [अटोलिका] १ एक राजपुत्री, जो युवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी। २ मूषिका, चूही (बृह १)।
अडोविय वि [अटोपित] भरा हुआ (पण्ह १, ३)।
अड्ड वि [दे] जो आडे आता हो बीच में बाधक होता हो वह, 'सो कोहाडओ अड्डो आवडिओ' उप १४६ टी)।
अड्डक्ख सक [क्षिप्] फेंकना, गिराना। अड्डक्खइ (हे ४, १४३, षड्)।
अड्डक्खिय वि [क्षिप्त] फेंका हुआ (कुमा)।
अड्डण न [अड्डन] १ चर्म, चमडा। २ ढाल, फलक, 'नवमुग्गवरअड्डणढक्किआजाणुभीमणसरीरा' (सुर २, ५)।
अड्डिय वि [दे] आरोपित (वव १ टी)।
अड्डिया स्त्री [अड्डिका] मल्लों की क्रिया-विशेष (विसे ३३५७)।

अड्ढ देखो अद्ध = अर्ध (हे २,४१; चंद १०; सुर ६, १२६; महा)।

अड्ढ वि [आढ्य] १ सपन्न, वैभव-शाली, धनी (पाअ; उवा)। २ युक्त, सहित (पचा १२)। ३ पूर्ण, परिपूर्ण; 'विगुणमवि गुणड्ढ' (प्रासू ७१)।

अड्ढअक्कली स्त्री [दे] देखो अट्टयक्कली (दे १, ४७)।

अड्ढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ प्रारब्ध (से १३, ६)।

अड्ढाइज्ज } वि [अर्धतृतीय] ढाई (सम
अड्ढाइय } १०१; सुर १,४८, भवि; विस १८०१)।

°अड्ढिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ (से ५,७२)।

अड्ढुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढे तीन, 'अड्ढुट्ठाउ सयाउ' (पि ४५०)।

अड्ढेज्ज न [आढ्यत्व] धनीपन, श्रीमताई (ठा १०)।

अड्ढेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमत ने किया हुआ सत्कार (ठा १०)।

अड्ढोरुग पु [अर्धोरुक] जैन साध्वियों के पहनने का एक वस्त्र (ओघ ३१५)।

अढ (अप) देखो अट्ठ = अष्टन् (पि ६७ ३०४, ४४२, ४४५)।

अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ (पि ४४५)।

अढारसग देखो अट्ठारसग (विउ ४०२)।

अढारसम देखो अट्ठारसम (भग १८, णाया १, १८)।

अण अ [°अ, अन°] देखो अ° (हे २,१९०, से ११, ६४)।

अण सक [अण्] १ आवाज करना। २ जाना। ३ जानना। ४ समझाना। अणइ (विसे ३४४१)।

अण पु [अण] १ शब्द, आवाज। २ गमन, गति (विसे ३४४०)। ३ कषाय, क्रोध आदि मानस दोष (विसे १२२८)। ४ पानी, आसेवन, अतिचार (वव)। ५ न. पाप (पण्ह १, १)। ६ कर्म (पाया)। ७ वि कुत्सित, निन्द्य (विसे २७६३ टी)।

अण पुं [अन] देखो अणताणुबंधि (कम्म २, ५, १४, २६)।

अण पु [अनस्] शकट गाडी (धर्म २)।

अण देखो अण्ण = अन्य, 'अणहिअआवि पिआए' (से ११, १६, २०)।

अण न [ऋण] १ करजा, ऋण (हे १,१४१)। २ कर्म (उत्त १)। °धारग वि [°धारक] करजदार, ऋणी (णाया १, १७)। °बल वि [°बल] उत्तमर्ण, लेनदार (पण्ह १, २)। °भजग वि [°भञ्जक] देउलिया (पण्ह १,३)।

°अण देखो गण (से ६, ६६)।

°अण देखो जण 'अणणु महिलाअणु रमतम्म' (गा ४४) गुरुअणपरवस पिअ कि (काप्र ६१); 'दाणअणाण' (अच्चु ३२)।

°अण देखो तण (से ६, ६६)।

°अणअरढ देखो अणवरय (नाट)।

अणइवर वि [अनतिवर] जिससे बडकर दूसरा न हो, सर्वोत्तम, 'अच्छराओ अणइवरसोमचारुरुवाओ' (ओप)।

अणइवुट्ठि स्त्री [अनतिवृष्टि] अवृष्टि, वर्षा का अभाव, 'दुब्भिक्खडमरदुम्मारिईइअइवुट्ठी अणाइ-वुट्ठी य' (सबोध २)।

अणईइ वि [अनीति] ईति-रहित, शलभादि-कृत उपद्रव से रहित 'अणईइपत्ता' (ओप)।

अणंग पु [अनङ्ग] १ काम, विषयाभिलाष, रमणेच्छा (श्रा १६, आव ६)। २ कामदेव, मन्मथ (गा २३३ गउड, कप्पू)। ३ एक राज-कुमार जो आनन्दपुर के राजा जीतारि का पुत्र था (गच्छ २)। ४ न विषय-सेवन के मुख्य अंगों के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अंग (ठा ५ २)। ५ बनावटी लिंग आदि (ठा ५, २)। ६ बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन शास्त्र (विसे ८४४)। ७ वि शरीर-रहित, अंग-हीन, मृत 'तहरूअ सह गुण अणगो वह गुण हु वियति कोमुमा बाणा' (उउ), 'पडिमसमुज्झे पडई पयगो, स्तागरत्तो हवई अणंगो' (सत ४८)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] रति कामदेव की पत्नी (सुपा ६६७)। °पडिसेविणी स्त्री [°प्रतिषेविणा] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री (ठा ५, २)। °पविट्ठ न [°प्रविष्ट] बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन ग्रन्थ (विसे ५५०)। °बाण पु [°बाण] काम के बाण (गा ७४८)। °लवण पु [°लवन] रामचन्द्रजी का एक पुत्र, लव (पउम ६७,६)। °सर पु [°शर] काम के बाण (गा १०००)। °सेणा स्त्री [°सेना] द्वारका की एक विख्यात गणिका (णाया १, ५, १६)।

अणत पुं [अनन्त] चालू अवसर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर-देव, 'विमलमणत च जिण' (पडि)। २ विष्णु, कृष्ण (पउम ५, १२२)। ३ शेष नाग (से ६,८६)। ४ जिसमें अनन्त जीव हों ऐसी वनस्पति कन्द-मूल वगैरह (ओघ ४१)। ५ न केवल-ज्ञान (णाया १ ८)। ६ आकाश (भग २०, २)। ७ वि नाश-वर्जित, शाश्वत (सूअ १,१,४, पण्ह १,३)। ८ नि सीम, अपरिमित, असंख्य से भी कहीं अधिक (विसे)। ९ प्रभूत, बहुत, विशेष (प्रासू २६; ठा ४ १)। °काइय वि [°कायिक] अनन्त जीववाली वन-स्पति, कन्द-मूल आदि (धर्म २)। °काय पु [°काय] कन्द-मूल आदि अनन्त जीववाली वनस्पति (पण्ण १)। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] अनन्त वार (जी ४४)। °जीव पु [°जीव] देखो °काइय (पण्ण १)। °जीविय वि [°जीविक] देखो °काइय (भग ८,३)। °णाण न [°ज्ञान] केवल-ज्ञान (दस २)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ (सूअ १, ६)। °दंसि वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ (पउम ४८, १०७)। °पासि वि [°दर्शिन्] ऐरवत क्षेत्र के बीसवें जिन-देव (तित्थ)। °मिस्सिया स्त्री [°मिश्रिका] सत्यामृषा भाषा का एक भेद, जैसे अनन्तकाय से मिश्र प्रत्येक वनस्पति में मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना (पण्ण ११)। °मीसय न [°मिश्रक] देखो °मिस्सिया (ठा १०)। °रह पु [°रथ] विख्यात राजा दशरथ के बड़े भाई का नाम (पउम २२, १०१)। °विजय पु [°विजय] भरतक्षेत्र के २४ वें आर ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावी तीर्थं-कर का नाम (सम १५४)। °वीरिय वि [°वीर्य] १ अनन्त बलवाला। २ पु एक केवलज्ञानी मुनि का नाम (पउम १४,१५८)। ३ एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे (आचू १)। ४ भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर का नाम (ती २१)। °संसारिय वि [°संसारिक] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पानेवाला (उप ३६०)। °सेण पु [°सेन] १ चौथा

कुलकर (सम १५०)। २ एक अन्तकृद् मुनि (अन ३)।

अणंतइ पुं [अनन्तजित्] चालू काल के चौदहवें जिन-देव, (पउम ५, १४८)।

अणंतग } १ देखो अणंत (ठा ५,३)। २ न. अणंतय } वस्त्र-विशेष (ओघ ३६)। ३ पु ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (सम १५३)।

अणंतय न [अनन्तक] वस्त्र, कपड़ा (पव २)।

अणंतर वि [अनन्तर] १ व्यवधान-रहित, अव्यवहित, 'अणंतर चय चइत्ता' (णाया १,८)। २ पु. वर्तमान समय (ठा १०)। ३ क्रिवि बाद में पीछे (विपा १, १)।

अणंतरहिय वि [अनन्तर्हित] १ अव्यवहित, व्यवधान-रहित (आचा)। २ सजीव, सचित्त, चेतन (निचू ७)।

अणंतसो अ [अनन्तशस्] अनन्त वार (द ४५)।

अणंताणुबंधि पु [अनन्तानुबन्धिन्] अनन्त काल तक आत्मा को संसार में भ्रमण करानेवाले कषायों की चार चौकड़ियों में प्रथम चोकड़ी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ (सम १६)।

अणंस वि [अनंश] अखण्ड (धर्मसं ७०६)।

अणक्क पु [दे] १ एक म्लेच्छ देश। २ एक म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)।

अणक्ख पु [दे] १ रोष, गुस्सा, क्रोध (सुपा १३,१३०,६१०, भवि)। २ लज्जा (स ३७६)।

अणक्खर न [अनक्षर] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्ण के बिना संपर्क के, छींकना, चुटकी बजाना, सिर हिलाना आदि संकेतों से दूसरे का अभिप्राय जानना (णंदि)।

अणगार वि [अनगार] १ जिसने घर-बार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि (विपा १, १, भग १७, ३)। २ घर-रहित, भिक्षुक, भीखमँगा (ठा ६)। ३ पु भरतक्षेत्र के भावी पांचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम (सम १५४)।

°सुय न [°श्रुत] 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ २, ५)।

अणगार वि [ऋणकार] १ करजा करनेवाला। २ दुष्ट शिष्य, अपात्र (उत्त १)।

अणगार वि [अनाकार] आकृति-शून्य, आकाररहित, 'उवलभव्ववहाराभावओ नाणगार च' (विसे ६५)।

अणगारि पु [अनगारिन्] साधु, यति, मुनि (सम ३७)।

अणगारिय वि [आनगारिक] साधु-सम्बन्धी, मुनि का (विसे २६७३)।

अणगाल पुं [अकाल] दुर्भिक्ष, अकाल (बृह ३)।

अणगिण वि [अनग्न] १ जो नंगा न हो, वस्त्रो से आच्छादित। २ पु कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है (तंदु)।

अणग्घ देखो अनघ (कुप्र १)।

अणग्घ वि [ऋणघ्न] ऋण-नाशक, कर्मनाशक (दस)।

अणग्घ } वि [अनर्घ्य] १ अमूल्य, बहुमूल्य, अणग्घेय } कीमती (आव ४), 'रयणाइं अणग्घेयाइं हुंति पचप्पयारवण्णाइं' (उप ५६७ टी, स ८०)। २ महान्, गुरु। ३ उत्तम, श्रेष्ठ, 'तं भगवंतं अणह नियमत्तीए अणग्घभत्तीए, सक्कारेमि' (विवे ६५, ७१)।

अणघ वि [अनघ] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ (पचव ४)।

अणच्छ देखो करिस = कृष्। अणच्छइ (हे ४, १८७)।

अणच्छिआर वि [दे] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ (दे १, ४८)।

अणज्ज वि [अन्याय्य] अयोग्य, जो न्याययुक्त नहीं (पण्ह १, १)।

अणज्ज वि [अनार्य] आर्य-भिन्न, दुष्ट, खराब, पापी (पण्ह १, १, अभि १२३)।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो। °खंड पु [°खण्ड] अनार्य देश, (भवि ३१२, २)।

अणज्झवसाय पु [अनध्यवसाय] अव्यक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान (विसे ६२)

अणज्झाय पु [अनध्याय] १ अध्ययन का अभाव। २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल (नाट)।

अणट्ट वि [अनार्त] आर्त-ध्यान से रहित, 'अणट्टा कित्ति पव्वए' (उत्त १८, ५०)।

अणट्ठ पु [अनर्थ] १ नुकसान, हानि (णाया १, ६, उप ६ टी)। २ प्रयोजन का अभाव (आव ६)। ३ वि निष्कारण, वृथा, निष्फल (निचू १, पण्ह २, १)।

°दंड पु [°दण्ड] निष्कारण हिंसा, विना ही प्रयोजन दूसरे की हानि (सूअ २, २)।

अणड पु [दे] जार, उपपति (दे १,१८, षड्)।

अणड्ढ वि [अनर्ध] विभाग-रहित, अखण्ड (ठा ३, ३)।

अणण्ण वि [अनन्य] १ अभिन्न, अपृथग्भूत (निचू १)। २ मोक्ष-मार्ग, 'अणण्णं चरमाणे से ण छणे ण छणावए' (आचा)। ३ असाधारण, अद्वितीय (सुपा १८६, सुर १, ७)। °तुल्ल वि [°तुल्य] असाधारण, अनुपम (उप ६४८ टी)। °दंसि वि [°दर्शिन्] पदार्थ को सत्य-सत्य देखनेवाला (आचा)। °परम वि [°परम] संयम, इन्द्रिय-निग्रह, 'अणण्णपरमे णाणी, णो पमाए कयाइवि' (आचा)। °मण, °मणस वि [°मनस्क] एकाग्र चित्तवाला, तल्लीन (औप, पउम ९, ६३)। °समाण वि [°समान] असाधारण, अद्वितीय (उप ५६७ टी)।

अणत्त वि [अनात्त] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २,३)।

अणत्त वि [अनार्त्त] अपीडित, 'दव्वावइमाईसु अत्तमणत्ते गवेसणं कुणइ' (वव १)।

अणत्त वि [ऋणार्त्त] ऋण से पीडित (ठा ३, ४)।

अणत्त वि [अनात्र] दुःखकर, सुख-नाशक, 'णेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता वा' (भग १४, ६)।

अणत्त न [दे] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (दे १, १०)।

अणत्थ देखो अणट्ठ (पउम ६२, ४, श्रा २७, सण)।

अणथत वकृ [अतिष्ठत्] १ नहीं रहता हुआ। २ अस्त होता हुआ, 'अणथते दिवसयरे जो चयइ चउव्विहंपि आहार' (पउम १४ १३४)।

अणन्न देखो अणण्ण (सुपा १८६, सुर १, ७, पउम ६, ६३)।

अणपन्निय देखो अणवण्णिय (भग १०,२)।

अणप्प वि [अनर्प्य] अर्पण करने के अयोग्य या अशक्य (ठा ६)।

अणप्प वि [अनल्प] अधिक, बहुत (औप)।

अणप्प पु [अनात्मन्] निज से भिन्न, आत्मा से पर (पउम ३७, २२)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ निर्बोध मूर्ख। २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन (निचू १)। °वसग वि [°वश] परवश, पराधीन (पउम ३७, २२)।

अणप्प पु [दे] खड्ग, तलवार (दे १, १०)।

अणप्पिय वि [अनर्पित] १ नहीं दिया हुआ। २ साधारण, सामान्य, अविशेषित (ठा १०)। °णय पु [°नय] सामान्य-ग्राही पक्ष (विसे)।

अणब्भंतर वि [अनभ्यन्तर] भीतरी तत्त्व को नहीं जाननेवाला, रहस्य-अनभिज्ञ, 'अणब्भंतरा गु अम्हे मदणगदस्स वुत्ततस्स' (अभि ६१)।

अणभिग्गह न [अनभिग्रह] 'सर्वे देवा वन्द्या' इत्यादि रूप मिथ्यात्व का एक भेद (श्रा ६)।

अणभिग्गहिय न [अनभिग्रहिक] ऊपर देखो (ठा २, १)।

अणभिग्गहिय वि [अनभिगृहीत] १ कदाग्रह-शून्य (श्रा ६)। २ अस्वीकृत (उत २८)।

अणभिण्ण } वि [अनभिज्ञ] अजान निर्बोध
अणभिन्न } (श्रा १७८, सुपा १६८)।

अणभिलप्प वि [अनभिलाप्य] अनिर्वचनीय, जो वचन से न कहा जा सके (लहुअ ७)।

अणमिस वि [अनिमिष] १ विकसित, खिला हुआ (सुर ३, १८३)। २ निमेष-रहित पलक-वर्जित (सुपा ३१८)।

अणय पु [अनय] अनीति, अन्याय (श्रा २८, स ४०२)।

अणयार देखो अणगार (पउम ११, ८)।

अणरण्ण पु [अनरण्य] [illegible] का एक राजा था, दीक्षा से ग्रस्त हुआ था (पउम १०, ८०)।

अणरिह } वि [अनर्ह] अयोग्य नालायक
अणरिह } (कुमा) [illegible]
अणरह } [illegible]

अणराय पुं. [दे] [illegible] (दे १)।

अणराय वि [अराजक] राज-शून्य जिसमे राजा न हो वह (बृह १)।

अणराह पु [दे] सिर मे पहनी जाती रंग-बिरंगी पट्टी (दे १, २४)।

अणरिक्क वि [दे] अवकाश-रहित फुरसत-रहित (दे १, २०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य (निचू १६)।

अणरिह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक
अणरह } (गाथा १, १)।

अणल अ [अनलम्] असमर्थ (आचा २, ५, १, ७)।

अणल पु [अनल] १ अग्नि, आग (कुमा)। २ वि असमर्थ। ३ अयोग्य, 'अणलो अपचलोत्ति य होंति अजोगो य एगट्ठा' (निचू ११)।

अणव वि [ऋणवन्] १ करजदार। पु दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त (चंद)।

अणवकय वि [अनपकृत] जिसका अपकार न किया गया हो वह (उव)।

अणवगल्ल वि [अनवग्लान] ग्लानि-रहित, निरोग,
'सड्ढस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स, जंतुणो एगे ऊससनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ' (ठा २, ४)।

अणवच्च वि [अनपत्य] सन्तान-रहित, निर्वंश (सुपा २५६)।

अणवज्ज न [अनवद्य] १ पाप का अभाव, कर्म का अभाव (सूअ १, १ २)। २ वि निर्दोष, निष्पाप (पडू)।

अणवज्ज वि [अणवर्ज्य] ऊपर देखो (विसे)।

अणवट्ठप्प वि [अनवस्थाप्य] १ जिसको फिर से दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करनेवाला (बृह ४)। २ न गुरु प्रायश्चित्त का एक भेद (ठा ३, ४)।

अणवट्ठिय वि [अनवस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित (प्रासू १३७, सुर ४, ७६)। २ चंचल, अस्थिर, 'अणवट्ठियं च चित्तं' (सुर १२, १३८)। ३ पल्य-विशेष, माप-विशेष (कम्म ४, ७३)।

अणवण्णिय पु [अणपन्निक, अणपर्णिक] वानव्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४, [illegible] १०, २)।

अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनियमित असमजस (दे १, १३६)।

अणवत्था स्त्री [अनवस्था] १ अवस्था का अभाव (उव)। २ एक तर्क-दोष (विसे)। ३ अव्यवस्था, 'जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य। अणवत्था संसारे, कम्मवसा सव्वजीवाणं' (पिंड १०७)।

अणवदग्ग वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित, निस्सीम (भग १, १)। २ अविनाशी (सूअ २, ५)।

अणवद्द वि [अनवद्य] निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध (प्राकृ २१)।

अणवन्निय देखो अणवण्णिय (औप)।

अणवयग्ग देखो अणवदग्ग (सम १२५, पण्ह १, ३, प्राप)।

अणवयमाण वकृ [अनपवदत्] १ अपवाद नहीं करता हुआ। २ सत्यवादी (वव ३)।

अणवरय वि [अनवरत] १ सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न। २ न सदा, हमेशा (गा २८०, ६)।

अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असाधारण, अद्वितीय (कुमा)।

अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक, अचिन्तित (पाअ)।

अणवाह वि [अबाध] बाधा-रहित, निर्बाध (सुपा १६८)।

अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित, जिसकी परवाह न हो।

अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] १ नहीं देखा हुआ। २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ। °कारि वि [°कारिन्] साहसिक। °कारिया स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उव ७६८ टी)।

अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उपवास (सम ११६)।

अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी (आचा)।

अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र (औप, गा २७२, से ६, ३)।

अणह वि [दे] अक्षत, क्षति-रहित, अणुशून्य (दे १, १३, सुपा ६, ३३, सण)।

अणह न [अनभस्] भूमि, पृथिवी (से ६, ३)।

अणहप्पणय वि [दे] अनष्ट, विद्यमान (दे १, ४८)।

अणहवगय वि [दे] तिरस्कृत, भर्त्सित (षड्)।

अणहा स्त्री [अधुना] इस समय (प्राकृ ८०)।

अणहारय पुं [दे] खल, खला, जिसका मध्य-नीचा हो वह जमीन (दे १, ३८)।

अणहिअअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय (प्राप, गा ४१)।

अणहिगय वि [अनधिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पु वह साधु, जिसको शास्त्रों का ज्ञान न हो, अगीतार्थ (वव १)।

अणहिण्ण देखो अणभिण्ण (प्राप)।

अणहियास वि [अनध्यास] असहिष्णु, सहन नहीं करनेवाला (उत्त)।

अणहिल } न [अणहिल्ल] गुजरात देश की
अणहिल्ल } प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है (ती २६, कुमा)। °वाडय न [पाटक] देखो अणहिल (गु १०, मुणि १०८८८)।

अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त (संग १६१)।

अणहुल्लिय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह (सम्मत्त १४३)।

अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)। °णिहण, निहण वि [°निधन] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत (उव, सम्म ६५, श्राव ४)। °मत, °वत वि [मत्] अनादि काल से प्रवृत्त (पउम ११८, ३२, भवि)।

अणाइज्ज वि [अनादेय] १ अनुपादेय, ग्रहण करने के अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी ग्राह्य नहीं समझा जाता है (कम्म १,२७)।

अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)।

अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला (भग १, १)।

अणाइय वि [अणातीत] पापी, पापिष्ठ (भग १, १)।

अणाइय पु [ऋणातीत] संसार, दुनिया (भग १, १)।

अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया गया हो वह (उप ८३३ टी)।

अणाइल वि [अनाविल] १ अकलुषित, निर्मल (पण्ह २, १)।

अणाईअ देखो अणाइय (उप १०३१ टी, पि ७०)।

अणाउ } पु [अनायुष्क] १ जिन-देव (सूअ
अणाउय } १, ६)। २ मुक्तात्मा, सिद्ध (ठा १)।

अणाउल वि [अनाकुल] अव्याकुल, धीर (सूअ १, २, २, णाया १, ८)।

अणाउत्त वि [अनायुक्त] उपयोग-शून्य, बे-ख्याल, असावधान (ओप)।

अणाएज्ज देखो अणाइज्ज (सम १५६)।

अणागय पु [अनागत] १ भविष्य काल, 'अणागयमपस्सता, पच्चुप्पन्नगवेसगा। ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे' (सूअ १,३,४)। २ वि भविष्य में होनेवाला (सूअ १,२)। °द्धा स्त्री [°द्धा] भविष्य काल (नव ४२)।

अणागलिय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ (उवा)।

अणागलिय वि [अनाकलित] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित (णाया १,६)। २ अपरिमित, 'अणागलियतिव्वचंडरोस सप्परूवं विउव्वइ' (उवा)।

अणागार वि [अनाकार] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य (ठा १०)। २ विशेषता-रहित (कम्म ४,१२)। ३ न दर्शन, सामान्य ज्ञान (सम ६५)।

अणाजीव वि [अनाजीव] १ आजीविका-रहित। २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने-वाला। ३ नि स्पृह, निरीह (दस ३)।

अणाजीवि वि [अनाजीविन्] ऊपर देखो, 'अगिलाई अणाजीवी' (पडि, निचू १)।

अणाड पु [दे] जार, उपपति (दे १, १८)।

अणाढिय वि [अनादृत] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत (श्राव ३)। २ पुं जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव (ठा २,३)। ३ स्त्री जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव की राज-धानी (जीव ३)।

अणाणुगामिय वि [अनानुगामिक] १ पीछे नहीं जानेवाला (ठा ५,१)। २ न अवधि-ज्ञान का एक भेद (णंदि)।

अणादि देखो अणाइ (स ६८३)।

अणादिय } देखो अणाइय (इक, पण्ह १,१;
अणादीय } ठा ३,१)।

अणादेज्ज देखो अणाइज्ज (पण्ह १, ३)।

अणाभिग्गह न [अनाभिग्रह] मिथ्यात्व का एक भेद (पच ४, २)।

अणाभोग पु [अनाभोग] १ अनुपयोग, बे-ख्याली, असावधानी (श्राव ४)। २ न मिथ्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१)।

अणामिय वि [अनामिक] १ नाम-रहित। २ पु असाध्य रोग (तदु)। ३ स्त्री, कनिष्ठागुली के ऊपर की अगुली।

अणाय वि [अज्ञात] नहीं जाना हुआ, अपरि-चित (पउम २४, १७)।

अणाय पु [अनाक] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक (से १, १)।

अणाय पु [अनात्मन्] आत्म-भिन्न, आत्मा से परे (सम १)।

अणायग वि [अनायक] नायक-रहित (पउम ६६, ७०)।

अणायग वि [अज्ञातक] स्वजन-रहित, अकेला (निचू ६)।

अणायग वि [अज्ञायक] अजान, निर्बोध (निचू ११)।

अणायतण } न [अनायतन] १ वेश्या आदि
अणाययण } नीच लोगों का घर (दस ५,१)। २ जहाँ सज्जन पुरुषों का ससर्ग न होता हो वह स्थान (पण्ह २, ४)। ३ पतित साधुओं का स्थान (श्राव ३)। ४ पशु, नपुसक वगैरह के संसर्गवाला स्थान (ओघ ७६३)।

अणायत्त वि [अनायत्त] पराधीन (पउम २६, २६)।

अणायर पु [अनादर] अ-बहुमान, अपमान (पाअ)।

अणायरण न [अनाचरण] अनाचार, खराब आचरण।

अणायरणया स्त्री [अनाचरण] ऊपर देखो (नम ८१)।

अणायरिय देखो अणज्ज = अनार्य (पण्ह १, १; पउम १८, ३०)।

अणायार देखो अणागार = अनाकार (विसे)।

अणायार पु [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण (म १८८)। २ गृहीत नियमो का जान-बूझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग (वव १)।

अणारिय देखो अणज्ज = अनार्य (उवा)।

अणारिस वि [अनार्ष] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह (पउम ११, ८०)।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (नाट)।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुक्त, अकथित, नही बुलाया हुआ (उवा)।

अणालवय पु [अनालपक] मौन, नही बोलना (पाअ)।

अणाव सक [आ + नायय्] मगवाना, अणावेमि (सिरि ६४६)।

अणावरण वि [अनावरण] १ आवरण-रहित। २ न केवल-ज्ञान (सम्म ७१)।

अणाविअ वि [आनायित] मगवाया हुआ (सिरि ६६, ७१८)।

अणाविट्ठि } स्त्री [अनावृष्टि] वर्षा का अभाव
अणावुट्ठि } (पउम २०, ८७, सम ६०)।

अणाविल वि [अनाविल] १ निर्मल, स्वच्छ (गउड)।

अणासमि वि [अनाशमिन] अनिच्छु, निस्पृह (सूअ १)।

अणासण देखो अणसण (सूअ १,२,१,१४)।

अणासय पु [अनाश, °क] अनशन, भोजनाभाव, 'ताहन लोएण अणासएण' (सूअ १, ७, १३)।

अणासव वि [अनाश्रव] १ आश्रव-रहित। २ पुं आश्रव का अभाव, संवर। ३ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

अणासिय वि [अनाशित] भूखा (सूअ १, ५, २)।

अणाह वि [अनाथ] १ स्वामि-रहित (निचू ३)। २ [illegible], [illegible]। ३ पुं, गरीब, बेचारा (णाया १, ८)। ४ पु एक जैन मुनि (उत्त २०)।

अणाहार पु [अनाहार] एक दिन का उपवास (सबोध ५८)।

अणाहि } वि [अनाधि, °क] मानसिक
अणाहिय } पीडा से रहित (से ३, ४४, पि ३६५)।

अणाहिट्ठि पु [अनाधृष्टि] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३)।

अणिइण देखो अणगिण (विचार २२)।

अणिइय वि [अनियत] १ अनियमित, अव्यवस्थित। २ पु संसार (भग ९,३३)।

अणिउंचिय वि [अनिकुञ्चित] टेढा नही किया हुआ, सरल (गउड)।

अणिउंत }
अणिउंतय } देखो अइमुत्त (दे १, ३८; हे
अणिउंत्तय } १, १७८, कुमा)।

अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अप्रतिबद्ध, 'अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयकरे भिक्खू अणाविलप्पा' (सूअ १, ७, २८)।

अणिंदिय वि [अनिन्दित] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम (धर्म १)। २ पु किन्नर देव की एक जाति (पण्ण १)।

अणिंदिय वि [अनिन्द्रिय] १ इन्द्रिय-रहित। २ पु मुक्त जीव। ३ केवलज्ञानी (ठा १०)। ४ वि अतीन्द्रिय, जो इन्द्रियो से जाना न जा सके, 'नय निवाइ तग्गहणे लिंगपि अणिंदियत्तणओ' (सुर १२,४८, स १६८, विसे १८९२)।

अणिंदिया स्त्री [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादा (नव ४३)। °वाइ वि [°वादिन्] अक्रियावादी (ठा ८)।

अणिकिणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेना जिसमे २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोडे और १०९३५ प्यादे हो (पउम ५६, ६)।

अणिक्खित्त वि [अनिक्षिप्त] नही छोडा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न, 'अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' (उवा, औप)।

अणिगण }
अणिगिण } देखो अणगिण (जीव ३, सम १७)।

अणिग्गह वि [अनिग्रह] स्वच्छन्द, असंयत (पण्ह १, २)।

अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी (नव २४, प्रासू ६५)। °भावणा स्त्री [°भावना] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन (पव ६७)। °णुप्पेहा स्त्री [°नुप्रेक्षा] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ४, १)।

अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, द्वेष्य (उव)।

अणिट्ठिय वि [अनिष्ठित] असंपूर्ण (गउड)।

अणिण देखो अणिरिण (नाट)।

अणिदा स्त्री [दे अनिदा] १ विना ख्याल किये की गई हिंसा (भग १६, ५)। २ चित्त की विकलता। ३ ज्ञान का अभाव (भग १,२)।

अणिमा पुस्त्री [अणिमन्] आठ सिद्धियो मे एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति (पउम ७ १३६)।

अणिमिस न [अनिमिष] फल-विशेष (दस ५, १, ७३)।

अणिमिस } वि [अनिमिष, °मेष] १ निमेष
अणिमेस } शून्य (सुर ३, १७३)। २ पु मत्स्य, मछली (दस ५, १)। ३ देव, देवता (वव १, श्रा १६)। °नयण पु [नयन] देव, देवता (विसे ३४८९)।

अणिय न [अनीक] सैन्य, लश्कर (कप्प)।

अणिय न [अनृत] असत्य, झूठ (ठा १०)।

अणिय न [दे] धार, अग्र-भाग (पण्ह २,२)।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य (उव)।

अणियट्ट पु [अनिवर्त] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा १,५,१)। २ एक महाग्रह (ठा २, ३)।

अणियट्टि वि [अनिवर्तिन्] १ निवृत्त नही होनेवाला, पीछे नही लौटनेवाला (आव)। २ न शुक्ल-ध्यान का एक भेद (ठा ४,१)। ३ पुं एक महाग्रह (सुज २०)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल मे होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १०४)।

अणियट्टि वि [अनिवृत्ति] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित (कर्म २, २)। २ नववां गुण-स्थानक (कर्म २)। °करण न [°करण] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष (आचा)। °बादर न [°बादर] १ नववां गुण-स्थानक। २ नववें गुण-स्थानक में प्रवृत्त जीव (भाव ८)।

अणियण देखो अणगिण (जीव ३)।

अणियय वि [अनियत] १ अव्यवस्थित, अनियमित (उव)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है (ठा १०)।

अणियाः देखो अणिदा (पिंड)।

अणिया स्त्री [दे] धार, अग्र-भाग, गुजराती में 'अणी' 'मग्गाणियाइ पइया' (धर्मवि १७)।

अणिरिक्क वि [दे] परतन्त्र, पराधीन। (कप्र ५५, गा ६६१)।

अणिरिण वि [अनृण] ऋण-वर्जित, उऋण, अनृणी (अभि ८६, चारु ६६)।

अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ। (सूत्र १, १२)। २ एक अन्त-कृद् मुनि (अन्त ४)।

अणिल पु [अनिल] १ वायु, पवन (कुमा)। २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम (तित्थ)। ३ राक्षस-वंशीय एक राजा (पउम ५, २६८)।

अणिला स्त्री [अनिला] बाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या (पव ६)।

अणिल्ल न [दे] प्रभात, सवेरा (दे १,१६)।

अणिस न [अनिश] निरन्तर, सदा, हमेशा (गा २६२, प्रासू २६)।

अणिसट्ठ } वि [अनिसृष्ट] १ अनिक्षिप्त। अणिसिट्ठ } २ असमत, अननुज्ञात। ३ ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जो सब की अनुमति से ली न गई हो, साधु की भिक्षा का एक दोष (पिंड, ओघ)।

अणिसीह वि [अनिशीथ] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढ़ा या पढ़ाया जाय (आवम)।

अणिस्सकड वि [अनिश्रीकृत] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्व-साधारण (धर्म २)।

अणिस्सा स्त्री [अनिश्रा] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव (उत्त)।

अणिस्सिय वि [अनिश्रित] १ अनासक्त, आसक्तिरहित (सूत्र १, १६)। २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावटरहित (दस ९)। ३ अनाश्रित, किसी के सहाय्य की इच्छा न रखनेवाला (उत्त १६)। ४ न ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के बिना ही होता है (ठा ६)।

अणिह वि [अनीह] १ धीर, सहिष्णु (सूत्र १,२,२)। २ निष्कपट, सरल (सूत्र १,८)। ३ निर्मम, निःस्पृह (आचा)।

अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित (सूत्र १,२, २, ३०)।

अणिह वि [दे] १ सदृश, तुल्य। २ न मुख, मुँह (दे १, ५१)।

अणिहय वि [अनिहत] अहत नहीं मारा हुआ। °रिउ पु [°रिपु] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३)।

अणीइस वि [अनीदृश] इस माफिक नहीं, विलक्षण (स ३०७)।

अणीय न [अनीक] सेना, लश्कर (ओघ)।

अणीयस पु [अनीयस] एक अन्तकृद् मुनि का नाम (अन्त ३)।

अणीस वि [अनीश] असमर्थ (अभि ६०)।

अणीसकड देखो अणिस्सकड (धर्म २)।

अणीहारिम वि [अनिर्हारिम] गुफा आदि में होनेवाला मरण-विशेष (भग १३, ८)।

अणु अ [अनु] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को बतलाता है, १ समीप, नजदीक, 'अणुकुंडल' (गउड)। २ लघु, छोटा 'अणु-गाम' (उत्त ३)। ३ क्रम, परिपाटी, 'अणुगुरु' (बृह १)। ४ में, भीतर, 'अणुजत्त' (महा)। ५ लक्ष्य करना, 'अणु जिएण अकारि सगीय इत्थीहिं' (कुमा), 'अणु धार मदट्टभमोत्तिए तुह असिम्मि सचविया' (गउड)। ६ योग्य, उचित 'अणुजुत्ति' (सूत्र १,४,१)। ७ वीप्सा, 'अणुदिण' (कुमा)। ८ बीच का भाग, 'अणु-दिसा' (वि ८१३)। ६ अनुकूल, हितकर, 'अणुधम्म' (सूत्र १,२,१)। १० प्रतिनिधि, 'अणुप्पभु' (निचू २)। ११ पीछे, बाद, 'अणु-मज्जण' (गउड)। १२ बहुत अत्यन्त 'अणुवर' (मा ६२)। १३ मदद करना, सहायता करना 'अणुपरिहारि' (ठा ३,४)। १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, देखो 'अणुक्कम' 'अणु-मग्गि'।

अणु वि [अणु] १ थोडा, अल्प (पण्ह २,३)। २ छोटा (आचा)। ३ पु परमाणु (सम्म १३६)। °मय वि [°मत] उत्तम कुल श्रेष्ठ वंश (कप्प)। °विरइ स्त्री [°विरति] देखो देसविरइ (सम्म १, १८)।

अणु पु [दे] धान-विशेष चावल की एक जाति (दे १ ५)।

°अणु स्त्री [तनु] शरीर, 'सुअणु' (गा २६६)।

अणुअ देखो अणु = अणु (पाअ)।

अणुअ वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (गा १८४ ३८५)।

अणुअ पु [दे] १ आकृति आकार। २ पुंस्त्री धान्य-विशेष (दे १ ५२, श्रा १८)।

अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करनेवाला 'अधम्माणुए' (विपा १, १)।

अणुअ वि [अनुज] १ पीछे से उत्पन्न। २ पु. छोटा भाई। ३ स्त्री छोटी बहिन (अभि ८२ पउम २८ १०९)।

अणुअच्च सक [अनु + कृष्] पीछे खींचना। सक्र अणुअच्चिवि (भवि)।

अणुअप सक [अनु + कम्प्] दया करना। कृ अणुअपणिज्ज (हास्य १४४)।

अणुअपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा (नि ०, २४, गा १६३)।

अणुअपि वि [अनुकम्पिन्] दयालु, करुणा करनेवाला (अभि १७३)।

अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करनेवाला अनुसरण करनेवाला (विसे ३४०२)।

अणुअत्ति देखो अणुवत्ति (पुष्फ ०२६)।

अणुअर वि [अनुचर] १ सहायताकारी, सह-चर (पाअ)। २ सेवक, नोकर (प्रामा)।

अणुअर वि [अनुचर] अनुसरण-कर्ता (हास्य १२१)।

अणुअट्ट न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६)।

अणुआ स्त्री [दे] लाठी (दे १, ५२)।

अणुआर पु [अनुकार] अनुकरण (नाट)।

अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने-वाला (नाट)।

अणुआस पु [अनुकाश] प्रकाश विकास (णाया १ [illegible])।

अणुइअ पु [दे] धान्य-विशेष, चणा (दे १, २१)।

अणुइअ देखो अणुचिअ।

अणुइण्ण वि [अनुचीर्ण] १ आचार [illegible] हुआ। २ नहीं गिरा हुआ अपतित [illegible] अणुइण्णगत्ता निद्दु [illegible] (पाट)।

अणुइण्ण वि [अनुद्गीर्ण] बाहर नहीं निकला हुआ (ओघ)।

अणुइण्ण देखो अणुचिण्ण।

अणुइण्ण देखो अणुदिण्ण।

अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल (गा ५०३)।

अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। भवि अणुऊलइस्सं (पि ५२८)।

अणुओअ पुं [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन (ओघ २)। २ पृच्छा, प्रश्न (अभि ८८)।

अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ (णदि)।

अणुओग देखो अणुओअ (विसे ६)।

अणुओग पुं [अनुयोग] सम्बन्ध (उ १७)।

अणुओगि पुं [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य, 'अणुओगी लोगाणं नर ससयणासओ दढ होइ' (पचव ८)।

अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य (णदि)।

अणुओयण न [अनुयोजन] सम्बन्धन, जोड़ना (निचू १३८०)।

अणुकंप सक [अनु+कम्प्] १ दया करना। २ भक्ति करना। ३ हित करना। वकृ अणुकंपत (नाट)। कृ अणुकंपणिज्ज, अणुकंपणीअ (अभि ६४; स्वप्न १५)।

अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य (उ १ २०)।

अणुकंप } वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु,
अणुकंपय } करुण। २ भक्त, भक्तिमान् (उत्त १३), [illegible] देवेण हरिणेगमेसिणा' (कप्प)। ३ स्थिर 'आयाणुकंपए णाममेगे, णो पराणुकंपए' (ठा ४, ४)।

अणुकंपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा (वव ३)। २ भक्ति, सेवा, 'माइअणुकंपणट्ठाए' (कप्प)।

अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] कृपा, दया (आवम [illegible]), 'पाणिदयावरपहट्ठो अणुकंपिया [illegible]' (स्वप्न)। °दाण न [°दान] [illegible] [illegible] (ठा [illegible])।

अणुकंपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु (माल ८०)। २ भक्ति करनेवाला (सूअ १, ३, २)।

अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनुकम्पा की गई हो वह (नाट)।

अणुकड्ढ सक [अनु + कृष्] १ खींचना। २ अनुसरण करना। वकृ अणुकड्ढमाण, अणुकड्ढेमाण (विपा १, १ टी)।

अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण (पच ५)।

अणुकड्ढिय वि [अनुकृष्ट] अनुवृत्त, अनुसृत (स १८२)।

अणुकप्प पुं [अनुकल्प] १ बड़े पुरुषों के मार्ग का अनुसरण। २ वि महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला, 'णाणचरणट्ठयाणं पुव्वायरियाण अणुकित्ति कुणइ अणुगच्छइ गुणधारी अणुकप्प त वियाणाहि' (पचभा)।

अणुकम पुं [अनुक्रम] परिपाटी, क्रम (महा)। °सो अ [°शस्] क्रम से, परिपाटी से (जी २८)।

अणुकर सक [अनु + कृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुकरेइ (स ४३६)।

अणुकरण न [अनुकरण] नकल (वव ३)।

अणुकह सक [अनु + कथय्] अनुवाद करना, पीछे बोलना।

अणुकहण न [अनुकथन] अनुवाद (सूअ १, १३)।

अणुकार पुं [अनुकार] अनुकरण, नकल (वृ)।

अणुकारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, 'तिव्वाणुकारिणा महग्घेण' (महा)।

अणुकिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल, 'पुव्वायरियाण नाणगहणेण य नयनिहाणेसु य अणुकिइ [illegible]' (पचू)।

अणुकिण्ण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ (पउम ६१, ८)।

अणुकित्तण न [अनुकीर्तन] वर्णन, प्रशंसा, श्लाघा (पउम ६३, ८३)।

अणुकित्ति देखो अणुकिइ (पचभा)।

अणुकुंचिय वि [अनुकुञ्चित] १ नीचे रखा हुआ। २ ऊँचा किया हुआ (निचू ८)।

अणुकुण सक [अनु + कृ] अनुकरण करना। अणुकुणइ (विक्र १२६)।

अणुकूल देखो अणुऊल (हे २, २१७)।

अणुकूलण न [अनुकूलन] अनुकूल करना, प्रसन्न करना 'त वइइ। तम्मज्झे जिट्ठसुणी तच्चित्तणुकूलणत्थं ज' (सुपा २३४)।

अणुकूलि वि [अनुकूलिन्] अनुकूल-कारक, 'सुहथिरजोगाणुकूलिणो भणिया' (सबोध ०)।

अणुक्कंत वि [अन्वाक्रान्त] आचरित, अनुष्ठित (आचा)।

अणुक्कंत वि [अनुक्रान्त] आचरित, विहित, अनुष्ठित, 'एस विही अणुक्कंते माहणेण मइमया (आचा)।

अणुक्कम सक [अनु + क्रम्] क्रम से बहना। भवि अणुक्कमिस्सामि (जीवस १)।

अणुक्कम सक [अनु + क्रम्] अतिक्रमण करना। वकृ अणुक्कमत (सूअ १, ५, १, ७)।

अणुक्कम देखो अणुकम (महा, नव १६)।

अणुक्कमण न [अनुक्रमण] गमन, गति, (सूअ १, ५, २, २१)।

अणुक्कुइअ वि [अनुकुचित] थोड़ा सकुचित (पव ६२)।

अणुक्कोस पुं [अनुक्रोश] दया, करुणा (ठा ८, ८)।

अणुक्कोस पुं [अनुत्कर्ष] १ उत्कर्ष का अभाव। २ वि २ उत्कर्षरहित (भग ८, १०)।

अणुक्खित्त वि [अनुत्क्षिप्त] ऊँचा न किया हुआ, 'दिट्ठं पराणुक्खित्तमुहं एसो मग्गो पुनरहण' (गा ५०६)।

अणुग वि [अनुग] अनुचर, नौकर (दे ७, ६६)।

अणुग वि [अनुग] अनुसरण-कर्ता (गच्छ ३, ३१)।

अणुगंतव्व देखो अणुगम = अनु + गम्।

अणुगंपा स्त्री [अनुकम्पा] करुणा, दया (स १५८)।

अणुगंपिय वि [अनुकम्पित] जिस पर करुणा की गई हो वह (स ८०५)।

अणुगच्छ देखो अणुगम = अनु + गम्। अणुगच्छइ; वकृ अणुगच्छंत, अणुगच्छमाण

(नाट; सूत्र १,१४)। कवकृ °अणुगच्छिज्जंत (णाया १,२)। सकृ अणुगच्छित्ता (कप्प)।

अणुगच्छग देखो अणुगमग (पुप्फ ४०८)।

अणुगच्छिर वि [अनुगामिन्] अनुसरण करनेवाला (मण)।

अणुगज्ज अक [अनु+गर्ज्] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ अणुगज्जे-माण (णाया १, १८)।

अणुगम सक [अनु+गम्] १ अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना। २ जानना, समझना। ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का स्पष्टीकरण करना। कर्म अणुगम्मइ (विसे ६१३)। ववकृ अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण (उप ६ टी सुपा ७८;२०८)। सकृ. अणुगम्म (सूत्र १, १४)। कृ अणुगंतव्व (सुर ७, १७६, पराह १)।

अणुगम पु [अनुगम] १ अनुसरण, अनुवर्त्तन (दे २,६१)। २ जानना, ठीक-ठीक समझना, निश्चय करना (ठा १)। ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के अर्थ का स्पष्टीकरण (वव १)। ४ अन्वय, एक की सत्ता मे दूसरे की विद्यमानता (विसे २९०)। ५ व्याख्या, टीका (विसे १३ ५७), अणुगम्मइ तेण तहिं, तओ व अणुगम-णमेव वाणुगमो। 'अणुणोणुरूवओ वा, ज सुत्तत्थाणमणुसरणं' (विसे ९१३)।

अणुगमण न [अनुगमन] ऊपर देखो।

अणुगमिअ वि [अनुगत] अनुसृत (कुप्र ४३)।

अणुगमिर वि [अनुगन्तृ] अनुसरण करने-वाला (दे ६, १२७)।

अणुगय वि [अनुगत] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह (पराह १, ४)। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे)। ३ अनुवृत्त, जो पूर्व मे बराबर चला आया हो (पराह १, ३)। ४ अतिक्रान्त (विसे ६५६)।

अणुगर देखो अणुकर। अणुगरेइ (स ३३४)। वकृ. अणुगरित (स ६८)।

अणुगरण देखो अणुकरण (कुप्र १७६)।

अणुगवेस सक [अनु+गवेष्] खोजना, शोधना, तलाश करना। अणुगवेसइ (कस)। वकृ. अणुगवेसेमाण (भग ८, ५)। कृ अणुगवेसियव्व (कस)।

अणुगह देखो अणुग्गह = अनु + ग्रह् (नाट)।

अणुगहिअ देखो अणुगिहिअ (दे ८ २६)।

अणुगाम पु [अणुग्राम] १ छोटा गाँव, (उत्त ३)। २ उपपुर, शहर के पास का गाव (ठा ५, २)। ३ विवक्षित गाँव से दूसरा गाव, 'गामाणुगाम दुइज्जमाणे' (विपा १, १, ओप, आचा)।

अणुगामि } वि [अनुगामिन्, °मिक]
अणुगामिय } १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (औप)। २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण (ठा ३, ३)। ३ अवधिज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८)। ४ अनुचर सेवक (सूत्र १, २, ३)।

अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, नकालची (महा; धर्म ५, स ६३०)।

अणुगिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल (श्रा १)।

अणुगिण्ह देखो अणुग्गह = अनु + ग्रह। वकृ अणुगिण्हमाण, अणुगिण्हेमाण (निर १, १, णाया १, १६)।

अणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] अत्यन्त आसक्त, लोलुप (सूत्र १, ७)।

अणुगिद्धि स्त्री [अनुगृद्धि] अत्यासक्ति (उत्त ३२)।

अणुगिल सक [अनु + गृ] भक्षण करना। सकृ अणुगिलित्ता (णाया १, ७)।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर मेह-रवानी की गई हो वह (स १४, १६३)।

अणुगीय वि [अनुगीत] १ पीछे कहा हुआ, अनूदित। २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि (उत्त १३)। ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्तित, वर्णित। ४ न. गाना, गीत, उज्जाणे मत्त-भिंगाणुगीए' (पउम ३३, १४८)।

अणुगुण वि [अनुगुण] १ अनुकूल, उचित, योग्य (नाट)। २ तुल्य, सदृश गुणवाला, जाण अलंकारसमो, विहवो
मइलेइ तेवि वड्ढंतो।
विच्छाएइ मियंक, तुसार-
वरिसो अणुगुणोवि' (गउड)।

अणुगुरु वि [अनुगुरु] गुरु-परम्परा के अनु-सार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह (बृह १)।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुकूल (स ३७८)।

अणुगेज्झ वि [अनुग्राह्य] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र (प्राप)।

अणुगेण्ह देखो अणुग्गह = अनु+ ग्रह्। अणुगेण्हतु (पि ५१२)।

अणुग्गह सक [अनु + ग्रह्] कृपा करना, मेहरबानी करना। कृ अणुग्गहइदव्व, अणु-ग्गाहिदव्व (शौ) (नाट)।

अणुग्गह पु [अनुग्रह] १ कृपा, मेहरबानी (कप्पू)। २ उपकार (औप)। ३ वि जिस पर अनुग्रह किया जाय वह (वव १)।

अणुग्गह पु [अनवग्रह] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान,
'णो गोयरे णो वणगोणियाए, णो बद्ध
दुज्झंति य जत्थ गावो।
अरणत्थ गोणेहिसु जत्थ खुरणं, स उग्गहो
सेसमणुग्गहो तु' (बृह ३)।

अणुग्गहिअ }
अणुग्गहीअ } वि [अनुगृहीत] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी
अणुग्गिहीअ } (महा; सुपा १६२, स ६७)।

अणुग्घाइम न [अनुद्घातिम] १ महा-प्राय-श्चित का एक भेद (ठा ३,४)। २ वि महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ३,४)।

अणुग्घाइय वि [अनुद्घातिक] १ अनुद्घातिक नामक महा प्रायश्चित का पात्र (ठा ५, ३)। २ न ग्रन्थांश-विशेष, जिसमे अनुद्घातिक प्रायश्चित का वर्णन है (पराह २, ५)।

अणुग्घाय वि [अनुद्घात] १ उद्घात-रहित। २ न निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमे अनु-द्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है, 'उग्घायम-णुग्घाय आरोवण तिविहमो निसीह तु' (आव ३)।

अणुग्घाय न [अनुद्घात] गुरु-प्रायश्चित्त (वव १)।

अणुग्घायण न [अणोद्घातन] कर्मों का नाश (आचा)।

अणुग्घास सक [अनु + ग्रासय्] खीलाना, भोजन कराना, 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा' (निसी ८)। वकृ. अणुग्घासंत (निचू ७)।

अणुचय पु [अनुचय] फैलाकर इकट्ठा करना (उत पृ १५)।

अणुचर सक [अनु + चर्] १ सेवा करना। २ पीछे-पीछे जाना, अनुसरण करना। ३ अनुष्ठान करना। अणुचरइ (आचा ६)। अणुचरंति (स १३०)। कर्म. अणुचरिज्जइ। (विसे २५५८)। वकृ. अणुचरंत (पुप्फ ३१३)। सकृ. अणुचरित्ता (चउ १८)।

अणुचर देखो अणुअर (उत २८)।

अणुचरग वि [अनुचरक] सेवा करनेवाला (पव ६६)।

अणुचरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ (कप्प)।

अणुचि सक [अनु + च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। सकृ. अणुचिऊण (महा)।

अणुचिंत सक [अनु + चिन्त्] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिंते (सथा ८६)। वकृ. अणुचिंतेमाण (णाया १,१)। सकृ. अणुचीइ, अणुचीइति, अणुवीइ (आचा, सूअ १, १, ३, १३; दस ७)।

अणुचितण न [अनुचिन्तन] सोच-विचार, पर्यालोचन (आव ८)।

अणुचिंता स्त्री [अनुचिन्ता] ऊपर देखो (आव ८)।

अणुचिट्ठ सक [अनु + स्था] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ। (महा)।

अणुचिण्ण वि [अनुचीर्ण] १ अनुष्ठित, आचरित, विहित 'सीहनिक्कीलिया य तवा, विचित्ताणि य अणुचिण्णाणि' (आव २८६)। २ प्राप्त, मिला हुआ 'गयाकालमणुचिण्णा ...' (आचा)। ३ परिचित (...)।

अणुचिण्णवय वि [अनुचीर्णव्रत] जिसने अनशन किया हो वह (आचा)।

अणुचिन्न देखो अणुचिण्ण (सुपा १६५; ... ७४; पुप्फ ...)।

अणुचिय वि [अनुचित] अयोग्य (बृह १)।

अणुचीइ, अणुचीइति देखो अणुचिंत।

अणुच्च वि [अनुच्च] ऊंचा नहीं, नीचा।
°कुइय वि [°कुचिक] नीची और अस्थिर शय्या वाला (कप्प)।

अणुच्छहंत वि [अनुत्सहमान] उत्साह नहीं रखता हुआ (पउम १८,१८)।

अणुज्झिज्ज वि [अनुज्झित] नहीं छोडा हुआ, अ-त्यक्त (गउड २३८)।

अणुज्झित्त वि [अनुत्थित] १ गर्व-रहित, विनीत। २ स्फीत, समृद्ध। ३ मन में उत्पन्न, सवाच, 'पडिबिद्ध नयर तुमे, नरिंदचक्क पयाव-विसरपि। गहवलयमणुच्छित्तं धुवेव्व, परियत्तइ शरीरं' (गउड)।

अणुच्छूढ वि [अनुत्क्षिप्त] अव्यक्त, नहीं छोडा हुआ (गा ५२६)।

अणुज पु [अनुज] छोटा भाई (स ३८८)।

अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में, 'अरण्णया अणुजत्त निग्गओ पेच्छइ कुसुमिय चूयं' (महा)।

अणुजत्ता स्त्री [अनुयात्रा] निर्गम, निःसरण (पिंड ८८)।

अणुजा सक [अनु + या] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ (विसे ७१६)।

अणुजाइ वि [अनुयायिन्] अनुसरण करने-वाला (सुपा ८०५)।

अणुजाइ स्त्री [अनुयाति] अनुसरण (धर्म-वि ८६)।

अणुजाण न [अनुयान] १ पीछे-पीछे चलना। २ महोत्सव-विशेष, रथयात्रा (बृह १)।

अणुजाण सक [अनु + ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणइ (उव)। भूका. अणुजाणित्था (पि ५१०)। हेकृ. अणुजाणित्तए (ठा २ १)।

अणुजाणण न [अनुज्ञान] अनुमति, सम्मति (सुज्ज ९ ६)।

अणुजाणावण न [अनुज्ञापन] अनुमति देना 'अणुजाणावणगिज्जिमा' (पव ६ ३)।

अणुजाणिय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमत (सुपा ५३८)।

अणुजाय वि [अनुयात] १ अनुगत, अनुसृत (उत १३७ टी)।

अणुजाय वि [अनुजात] १ पीछे से उत्पन्न। २ सदृश, तुल्य 'वसभाणुजाए' (सुज्ज १२)।

अणुजीव सक [अनु + जीव्] आश्रय करना। अणुजीवंति (उत १८, १८)।

अणुजीवि वि [अनुजीविन्] १ आश्रित, नोकर, सेवक 'पयडंइ चिय अणुजीविवच्छलं' (सुपा ३३८; पाअ; स ४८३)। °त्तण न [°त्व] आश्रय, नोकरी (पि ५६७)।

अणुजुंज सक [अनु + युज्] प्रश्न करना। कर्म. अणुजुज्जते (धर्मसं २०३)।

अणुजुत्ति स्त्री [अनुयुक्ति] योग्य युक्ति, उचित न्याय (सुअ १ ३, ३)।

अणुजेट्ठ वि [अनुज्येष्ठ] १ बडे के नजदीक का (आवम)। २ छोटा, उतरता (पउम २२, ८६)।

अणुजोग देखो अणुओअ (ठा १०)।

अणुज्ज वि [अनूर्ज] उत्साह-रहित, अनुत्साही, हताश (कप्प)।

अणुज्ज वि [अनोजस्क] तेजरहित, फीका, 'अणुज्ज दीणवयणा विहरइ' (कप्प)।

अणुज्ज वि [अनृजु] उद्देश्य रहित (धर्म १)।

अणुज्जा स्त्री [अनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (पउम ३८, २८)।

अणुज्जा देखो अणोज्जा (आचा २ १५, ३)।

अणुज्जिय वि [अनर्जित] बल-रहित, निर्बल (बृह ३)।

अणुज्जुय वि [अनृजुक] असरल, वक्र, टेढी (गा ७८६)।

अणुज्झा सक [अनु + ध्या] चिन्तन करना, ध्यान करना। सकृ. अणुज्झाइत्ता (आवम)।

अणुज्झाण न [अनुध्यान] चिन्तन, विचार (आवम)।

अणुज्झा देखो अणुज्झा। वकृ. अणुज्झायंत (सुपा)।

अणुज्झिअअ वि [दे] १ प्रवर, प्रधान, ... । २ जागरूक, ... (दे)।

अणुज्झिज्ज वि [अनुवर्तिन्] ... (...) ।

अणुट्ठ वि [अनुत्थ] नहीं उठा हुआ ... (आव ...)।

अणुट्ठा सक [अनु+स्था] १ अनुष्ठान करना ... । २ करना। कृ. अणु-

ट्ठियव्व, अणुट्ठेअ (सुपा ५३७, सुर १४, ८५)।

अणुट्ठाइ वि [अनुष्ठायिन्] अनुष्ठान करनेवाला (आचा)।

अणुट्ठाण न [अनुष्ठान] १ कृति। २ शास्त्रोक्त विधान (आचा)।

अणुट्ठाण न [अनुत्थान] क्रिया का अभाव (उवा)।

अणुट्ठावण न [अनुष्ठापन] अनुष्ठान कराना (कस)।

अणुट्ठिअ वि [अनुष्ठित] विधि में संपादित, विहित, किया हुआ (पड्; सुर ४ १९९)।

अणुट्ठिय वि [अनुत्थित] १ बैठा हुआ। २ आलसी, प्रमादी (आचा)।

अणुट्ठियव्व देखो अणुट्ठा।

अणुट्ठुभ न [अनुष्टुप्] एक प्रसिद्ध छन्द 'पचक्खरगणणाए अणुट्ठुभाए हवंति दस सहस्सा (सुपा ६५९)।

अणुट्ठेअ देखो अणुट्ठा

अणुण देखो अणुणी। अणुणह (भवि)।

अणुणंत देखो अणुणी।

अणुणय पु [अनुनय] विनय, प्रार्थना (महा; अभि ११९)।

अणुणाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करनेवाला, 'गज्जियसद्दस्स अणुणाइणा' (कप्प)।

अणुणाय पु [अनुनाद] प्रतिध्वनि प्रतिशब्द (विसे ३२०८)।

अणुणाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पचू)।

अणुणास पुन [अनुनास] अनुनासिक, जो नाक से बोला जाता है वह अक्षर। २ वि सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त (ठा ७) काकस्सर-मणुणासं च' (जीव ३ टी)।

अणुणासिअ पु [अनुनासिक] देखो ऊपर का पहला अर्थ (पण्ण ६)।

अणुणी सक [अनु + नी] १ अनुनय करना, विनय करना, प्रार्थना करना। २ समझाना, दिलासा देना, सान्त्वना देना। वकृ अणुणंत, 'पुरोहियं तं कमसोऽणुणंत' (उत्त १४ भवि), अणुणेंत (गा ६०२)। कवकृ अणुणिज्जंत, अणुणिज्जमाण, अणुणीअमाण (सुपा ३६७, से २, १६, पि ५३६)।

अणुणीअ वि [अनुनीत] जिसका अनुनय किया गया हो वह (दे ८, ४८)।

अणुणेंत देखो अणुणी।

अणुण्णय वि [अनुन्नत] १ नीचा नम्र (दस ५, १)। २ गर्वरहित, निरभिमानी 'एत्थवि भिक्खू अणुण्णए विणीए' (सूअ १ १६)।

अणुण्णव सक [अनु + ज्ञापय्] १ अनुमति देना। २ आज्ञा देना, हुकुम देना। कर्म अणुण्णविज्जइ (उवा)। वकृ अणुण्णवेमाण (ठा ६)। कृ अणुण्णवेयव्व (ओघ ३८५ टी)। संकृ अणुण्णवित्ता, अणुण्णविअ (आवम; आचा २ २, ६)।

अणुण्णवणया } स्त्री [अनुज्ञापना] १ अनु-
अणुण्णवणा } मति, सम्मति। २ आज्ञा, फरमाइश (सम ४४, ओघ ३८८ टी)।

अणुण्णवणी स्त्री [अनुज्ञापनी] अनुमति-प्रकाशक भाषा अनुमति लेने का वाक्य (ठा ४,३)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ अनुमति, अनुमोदन (सुअ २ २)। २ आज्ञा। °कप्प पु [°कल्प] जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शास्त्रीय विधान (पंचभा)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ पठन विषयक गुरु-आज्ञा-विशेष (अणु ३)। २ सूत्र के अर्थ का अध्ययन (वव १)।

अणुण्णाय वि [अनुज्ञात] १ जिसको आज्ञा दी गई हो वह। २ अनुमत, अनुमोदित (ठा ३, ४)।

अणुण्ह वि [अनुष्ण] ठंडा जो गरम नहीं है वह (पि ३१२)।

अणुतड पु [अनुतट] भेद पदार्थों का एक जाति का पृथक्करण, जैसे संतप्त लोहे को हथौड़े से पीटने से स्फुलिंग (चिनगारी) पृथक् होते हैं (ठा ५)।

अणुतडिया स्त्री [अनुतटिका] १ ऊपर देखो (पण्ण ११)। २ तलाव, द्रह आदि का भेद (भास ७)।

अणुतप्प अक [अनु+तप] अनुताप करना, पछताना। अणुतप्पइ (स १८४)।

अणुतप्पि वि [अनुतापिन्] पश्चात्ताप करनेवाला (वव)।

अणुताव सक [अनु + तापय्] तपाना। संकृ अणुतावित्ता (सूअ २, ४, १०)।

अणुताव पु [अनुताप] पश्चात्ताप (पाअ; स १८४)।

अणुतावय वि [अनुतापक] पश्चात्ताप करानेवाला (सूअ २, ७, ८)।

अणुतावि देखो अणुतप्पि (उप ७२८ टी)।

अणुत्त वि [अनुक्त] अकथित (पंच ५)।

अणुत्तत देखो अणुवत्त।

अणुत्तप्प वि [अनुत्त्रप्य] १ परिपूर्ण शरीर। २ पूर्ण शरीरवाला, 'होइ अणुत्तप्पो सो अविगलइंदियपडिपुण्णो' (वव २)।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम (ठा १०)। २ एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम (अनु)। ३ छोटा, 'अणुत्तरा नाया' (पउम ९, ४)। °ग्गा स्त्री [°ग्र्या] एक पृथिवी, जहां मुक्त जीवों का निवास है (सूअ १ ६)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवलज्ञानी (सुअ १ २, ३)। °विमाण न [°विमान] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक (भग ६ ६)। °ोववाइय वि [°ौपपातिक] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न (अनु)। °ोववाइयदसा स्त्री ब [°ौपपातिकदशा] नववां जैन अंग-ग्रंथ (अनु)।

अणुत्थाण देखो अणुट्ठाण (स ६४६)।

अणुत्थाह वि [अनुत्साह] हतोत्साह निराश (कुमा)।

अणुदत्त पु [अनुदात्त] नीचे से बोला जानेवाला स्वर (बृह १)।

अणुदय पु [अनुदय] १ उदय का अभाव। २ कर्म-फल के अनुभव का अभाव (कम्म २ १३ १४, १५)।

अणुदवि न [दे] प्रभात सुबह (दे १, १९)।

अणुदिअ वि [अनुदित] जिसका उदय न हुआ हो (भग)।

अणुदिअस न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशा (नाट)।

अणुदिज्जंत वि [अनुदीयमान] उदय में न आता हुआ (भग)।

अणुदिण न [अनुदिन] प्रतिदिन, हमेशा (कुमा)।

अणुदिण्ण } वि [अनुदित] १ उदय को
अणुदिन्न } अप्राप्त। २ फल-दान में अतत्पर

(कर्म) (भग १, २, ३), 'उदिरिएण = उदित' (भग १, ४, ७ टी)।

अणुदिण्ण } वि [अनुदीरित] १ जिसकी
अणुदिन्न } उदीरणा दूर भविष्य में हो। २ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो (भग १, ३)।

अणुदिय वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त 'मिच्छत्तं जमुदिन्नं तं खीणं अणुदियं च उवसंतं' (भग १ ३ टी)।

अणुदियह न [अनुदिवस] प्रतिदिन हमेशा (सुर १ ११५)।

अणुदिव न [दे] प्रभात, प्रातःकाल (दे)।

अणुदिसा } स्त्री [अनुदिक्] विदिक्,
अणुदिसी } ईशान कोण आदि विदिशा (विसे २७०० टी, पि ६८, ४१३, कप्प)।

अणुद्दिट्ठ वि [अनुद्दिष्ट] जिसका उद्देश्य न किया गया हो वह (पराह २, १)।

अणुद्ध वि [अनूर्ध्व] ऊंचा नहीं, नीचा (कुमा)।

अणुद्धय वि [अनुद्धत] नम्र, भद्र, विनयी (उप ७६८ टी)।

अणुद्धरि पु [अनुद्धरिन] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु (कप्प)।

अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] १ जिसका उद्धार न किया गया हो वह। २ बाहर नहीं निकाला हुआ, 'जं पुणा नाक्मन्त अणुद्धियं दव्य...' (श्रा ४०)।

अणुद्धुय वि [अनुद्धृत] अपरिचक्त, नहीं लाया हुआ (कप्प)।

अणुधम्म पु [अणुधर्म] गृहस्थ-धर्म (सिरि)।

अणुधम्म पु [अनुधर्म] अनुकूल—हितकर धर्म 'एसाणुधम्मो मुणिणा पवेइओ' (सूत्र १ २, १)। °चारि वि [°चारिन] हितकर धर्म का अनुयायी, धर्म-कर्मी (सूत्र १, २, १)।

अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनुकूल, धर्मोचित 'एस णु अणुधम्मिय तस्स' (आचा)।

अणुधाव सक [अनु + धाव्] पीछे दौड़ना। वकृ अणुधावंत (सुर ४, २४)।

अणुधावण न [अनुधावन] पीछे दौड़ना (सुपा ४२४)।

अणुधाविर वि [अनुधावितृ] पीछे दौड़नेवाला (उप ७२८ टी)।

अणुनाइ वि [अनुनादिन] प्रतिध्वनि करनेवाला (कप्प)।

अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह, 'आहवणे मोक्कलय अणुनायाए तए नाह' (सुपा ४७७)।

अणुनास देखो अणुणास (जीव ३ टी)।

अणुन्नव देखो अणुण्णव। वकृ अणुन्नवेमाण (ठा ५, ३)। कृ अणुन्नवेयव्व (कस)। संकृ अणुन्नवेत्ता (कस)।

अणुन्नवणा देखो अणुण्णवणा (ओघ ६३०, कस)।

अणुन्नवणी देखो अणुण्णवणी (ठा ४, १)।

अणुन्ना देखो अणुण्णा (सुर ४, १३३, प्रासू १८१)।

अणुन्नाय देखो अणुण्णाय (ओघ १, महा)।

अणुपथ पु [अनुपथ] १ समीप का मार्ग (कस)। २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास (बृह १)।

अणुपत्त वि [अनुप्राप्त] प्राप्त, मिला हुआ (सुर ४, २११)।

अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त (कुप्र ४०१)।

अणुपयट्ट वि [अनुप्रवृत्त] अनुसृत, अनुगत (महा)।

अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बदला प्रतिग्रहण (सबोध ३८)।

अणुपरियट्ट सक [अनुपरि + अट्] घूमना, परिभ्रमण करना। संकृ अणुपरियट्टित्ताण, 'से ण भंते महिड्डिए, पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ?' (भग १८, ७)। कृ अणुपरियट्टियव्व (णाया १, ६)। हेकृ अणुपरियट्टेउ (णाया १, ६)।

अणुपरियट्ट सक [अनुपरि + वृत्] फिरना, फिरते रहना, 'दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ' (आचा)। वकृ अणुपरियट्टमाण (आचा)। संकृ अणुपरियट्टित्ता (औप)।

अणुपरियट्टण न [अनुपर्यटन] परिभ्रमण (सूत्र १ १, १)।

अणुपरियट्टण न [अनुपरिवर्तन] परिवर्तन, फिरना (भग १, ६)।

अणुपरिवट्ट देखो अणुपरियट्ट = अनुपरि + वृत्। वकृ अणुपरिवट्टमाण (पि २८६)।

अणुपरिवाडि, °डी स्त्री [अनुपरिपाटि, °टी] अनुक्रम (से १५ ६६, पउम २०, ११, ३२, १६)।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] 'परिहारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (ठा ३, ४)।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] ऊपर देखो (ठा ३, ४)।

अणुपवन्न वि [अनुप्रपन्न] प्राप्त (सूत्र २, ३, २१)।

अणुपवाएत्तु वि [अनुप्रवाचयितृ] पढ़ानेवाला, पाठक, उपाध्याय (ठा ५, २)।

अणुपवाय देखो अणुप्पवाय = अनुप्र + वाचय्।

अणुपविट्ठ वि [अनुप्रविष्ट] पीछे से प्रविष्ट (णाया १, १, कप्प)।

अणुपविस सक [अनुप्र + विश्] १ पीछे से प्रवेश करना। २ प्रवेश करना, भीतर जाना। अणुपविसइ (कप्प)। वकृ अणुपविसंत (निचू २)। संकृ अणुपविसित्ता (कप्प)।

अणुपवेस पु [अनुप्रवेश] प्रवेश, भीतर जाना। (निचू ७)।

अणुपस्स सक [अनु + दृश्] पर्यालोचन करना, विवेचना करना। संकृ अणुपस्सिय (सूत्र १, २, २)।

अणुपस्सि वि [अनुदर्शिन] पर्यालोचक, विवेचक (आचा)।

अणुपाल सक [अनु + पालय्] १ अनुभव करना। २ रक्षण करना। ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना। अणुपालेइ (महा)। वकृ 'मायामोसमणुपालेंतो' (पडि), अणुपालित, अणुपालेमाण (महा)। संकृ अणुपालेऊण, अणुपालित्ता, अणुपालिय (महा, कप्प, पि ५७०)।

अणुपालण न [अनुपालन] रक्षण, प्रतिपालन (पंचभा)।

अणुपालणा देखो अणुपालणा (विसे २५२० टी)।

अणुपालिय वि [अनुपालित] रक्षित, प्रतिपालित (ठा ८)।

अणुपास देखो अणुपस्स। वकृ. अणुपासमाण (दसचू २)।

अणुपिट्ठ न [अनुपृष्ठ] अनुक्रम, 'अणुपिट्ठसिद्धाइं' (सम्म)।

अणुपिहा देखो अणुपेहा (द्रव्य ३५)।

अणुपुंख न [अनुपुङ्ख] मूल तक, अन्त-पर्यन्त, 'अणुपुंखमावडंतावि आनया तम्म कमवा हुति' (कुप्र ३३)।

अणुपुव्व वि [अनुपूर्व] क्रमवार, आनुक्रमिक (ठा ४, ४)। क्रिवि क्रमशः (पाअ)। °सो [शस्] अनुक्रम से (आचा)।

अणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम (णाय)।

अणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] ऊपर देखो (पाअ)।

अणुपेक्खा स्त्री [अनुप्रेक्षा] भावना, चिन्तन, विचार (पउम १४, ७७)।

अणुपेहण न [अनुप्रेक्षण] ऊपर देखो (उप १४२ टी)।

अणुपेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] ऊपर देखो (पि ३२३)।

अणुपेहि वि [अनुप्रेक्षिन्] चिन्तन-कर्ता (सूअ १, १०, ७)।

अणुप्पइन्न वि [अनुप्रकीर्ण] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित (कप्प)।

अणुप्पणी सक [अनुप्र + णी] १ प्रणय करना। २ प्रसन्न करना। वकृ. अणुप्पणत (उप पृ २८)।

अणुप्पगंथ [अणुप्रग्रन्थ] सन्तोषी, अल्प परिग्रह वाला (ठा ६)।

अणुप्पगंथ वि [अनुप्रग्रन्थ] ऊपर देखो (ठा ६)।

अणुप्पण्ण वि [अनुत्पन्न] अविद्यमान (नीचू ५)।

अणुप्पत्त देखो अणुपत्त (कप्प)।

अणुप्पदा सक [अनुप्र+दा] दान देना, फिर-फिर देना। अणुप्पदेइ (कस)। कृ अणुप्पदायव्व (कस)। हेकृ अणुप्पदाउं (उवा)।

अणुप्पदाण न [अनुप्रदान] दान, फिर-फिर दान देना (आव ६)।

अणुप्पभु पु [अनुप्रभु] स्वामी के स्थानापन्न, प्रतिनिधि (निचू २)।

अणुप्पया देखो अणुप्पदा। अणुप्पएइ (कस)। हेकृ अणुप्पयाउं (उवा)।

अणुप्पयाण देखो अणुप्पदाण (आचा)।

अणुप्पवत्त सक [अनुप्र + वृत्] अनुसरण करना। हेकृ अणुप्पवत्तए (विसे २२०७)।

अणुप्पवाइत्तु } वि [अनुप्रवाचयितृ]
अणुप्पवाएत्तु } अध्यापक पाठक पढानेवाला (ठा ४, १ गच्छ १)।

अणुप्पवाद पु [अनुप्रवाद] कथन (सूअ २, ७, १३)।

अणुप्पवाय सक [अनुप्र+वाचय्] पढाना। वकृ अणुप्पवाएमाण (ज ३)।

अणुप्पवाय न [अनुप्रवाद] नववा पूर्व बारहवे जैन अग-ग्रन्थ का एक अश-विशेष (ठा ६)।

अणुप्पविट्ठ देखो अणुपविट्ठ (कम)।

अणुप्पवित्ति स्त्री [अनुप्रवृत्ति] अनुप्रवेश अनुगम (विसे २१६०)।

अणुप्पविस देखो अणुपविस। अणुप्पविसइ (उवा)। सकृ अणुप्पवेसेत्ता (निचू १)।

अणुप्पवेस देखो अणुपवेस (नाट)।

अणुप्पवेसण न [अनुप्रवेशन] देखो अणुपवेस (नाट)।

अणुप्पसाद (शौ) सक [अनुप्र + सादय्] प्रसन्न करना। अणुप्पसादेदि (नाट)।

अणुप्पसूय वि [अनुप्रसूत] उत्पन्न पैदा किया हुआ (आचा)।

अणुप्पाइ वि [अनुपातिन्] युक्त, सबद्ध, सबन्धी (निचू १)।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुकूल, इष्ट (सूअ १, ७)।

अणुप्पेंत वि [अनुत्प्रयत्] दूर करता, हटाता हुआ,

जम्मि अविसएणहियत्तणेण ते
गारव वलग्गंति।
त विसममणुप्पेंतो गरुयाण विही खलो होइ' (गउड)।

अणुप्पेच्छ देखो अणुप्पेह,

'तह पुव्वि किं न कय, न वाहए
जेण मे समत्थोवि।
एण्हिं किं कस्स व कुप्पिमोत्ति धीरा।
अणुप्पेच्छ' (उव)।

अणुप्पेसिय वि [अनुप्रेषित] पीछे से भेजा हुआ (नाट)।

अणुप्पेह सक [अनुप्र + ईक्ष्] चिन्तन करना, विचारना अणुप्पेहंति (पि ३२३)। कृ अणुप्पेहियव्व (पमू १)।

अणुप्पेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] चिन्तन, भावना विचार, स्वाध्याय-विशेष (उत्त २९)।

अणुप्फास पु [अनुस्पर्श] अनुभाव, प्रभाव, 'लोहस्सेव अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि' (दस ६)।

अणुफुसिय वि [अनुप्रोञ्छित] पोछा हुआ, साफ किया हुआ (स ७४८)।

अणुबध सक [अनु + बन्ध्] १ अनुसरण करना। २ सबन्ध बनाये रखना। अणुबधति (उत्तर ७१)। वकृ. अणुबधत (वेणी १८३)। कवकृ अणुबधीअमाण अणुबधिज्जमाण (नाट)। हेकृ अणुबधिदु (शौ) (मा ६)।

अणुबध पु [अनुबन्ध] १ सततपन निरन्तरता विच्छेद का अभाव (ठा ६ उवर १२८)। २ सबन्ध (स १३८ गउड)। ३ कर्मों का सबन्ध (पचा १५)। ४ कर्मों का विपाक, परिणाम (उवर ४, पचा १८)। ५ स्नेह, प्रेम (स २७६),

नयणाण पडउ वज्ज, अहवा वज्जस्स
वड्डिन किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुबध जाणि कुव्वति' (सुर ४ २०)। ६ शास्त्र के आरम्भ में कहने लायक अधिकारी विषय, प्रयोजन और सबन्ध (आव १)। ७ निर्बन्ध आग्रह (स ४५८)।

अणुबधअ वि [अनुबन्धक] अनुबन्ध करनेवाला (नाट)।

अणुबधण न [अनुबन्धन] अनुकूल बन्धन (उत्त २९, ४५, सुख २९, ४५)।

अणुबंधणा स्त्री [अनुबन्धना] अनुसन्धान, विस्मृत अर्थ का सन्धान (पचा १२,४५)।

अणुबधि वि [अनुबन्धिन्] अनुबन्धवाला, अनुबन्ध करनेवाला (धर्म २ स १२७)।

अणुबंधिअ न [दे] हिक्का-रोग, हिचकी (दे १, ४४)।

अणुबंधेइ वि [अनुबन्धिन्] विच्छेद-रहित, अनुगमवाला, अविनश्वर (उप २३३)।

अणुवज्झ, **अणुवद्ध** वि [अनुबद्ध] १ बंधा हुआ, संबद्ध (से ११, ६०)। २ सतत, अविच्छिन्न, 'अणुवद्धनिव्ववेरा परोप्पर वेयणं उदीरेंति' (पण्ह १, १)। ३ व्याप्त (णाया १, २)। ४ प्रतिबद्ध (णाया १, २)। ५ अयत, बहुत 'अणुवद्धनिरन्तरवेयणानु' (पण्ह १, १)। ६ उत्पन्न (उत्तर ६२)।

अणुवद्ध वि [अनुबद्ध] १ अनुगत (पंचा ६ २०)। २ पीछे बंधा हुआ (सिरि ८८४)।

अणुवूह देखो **अणुवूह**।

अणुब्भड वि [अनुद्भट] अनुद्धत, अनुल्वण (उत्त २)।

अणुब्भूय वि [अनुद्भूत] अप्रकट, अनुत्पन्न (नाट)।

अणुभअ देखो **अणुभव** = अनुभव (नाट)।

अणुभव सक [अनु + भू] १ अनुभव करना, जानना, समझना। २ कर्मफल को भोगना। अणुभवंति (पि ४७५)। वकृ. **अणुभवंत** (पि ४७५)। संकृ. **अणुभविअ, अणुभवित्ता** (नाट; पण्ह १, १)। हेकृ. **अणुभविउं** (उत्त १८)।

अणुभव पुं [अनुभव] १ ज्ञान, बोध, निश्चय (पंचा ५)। २ कर्म-फल का भोग (विसे)।

अणुभवण न [अनुभवन] ऊपर देखो (श्राव ४; विसे २०६०)।

अणुभवि वि [अनुभविन्] अनुभव करनेवाला (विसे १६५८)।

अणुभव्व वि [अनुभव्य] आसन्न भव्य (संबोध ४४)।

अणुभाग पुं [अनुभाग] १ प्रभाव, माहात्म्य (सुज १५, ४)। २ शक्ति, सामर्थ्य (पंचसं ३)। ३ रस, फल विपाक (सुअ १,५,१)। ४ [illegible] कर्म-पुद्गलों की फल उत्पन्न करने की शक्ति [illegible] (कम्म १,२ टी; [illegible])। °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना (ठा ४, २)।

अणुभाव, **अणुभाग** पुं [अनुभाव] १-४ ऊपर देखो (प्राप्र; ठा ३, ३; [illegible])। ५ मानसिक भाव को सूचन करनेवाली [illegible] चेष्टा (नाट)। ६ [illegible] माहात्म्य (पि ३५५)।

अणुभावग वि [अनुभावक] बोधक, सूचक (आवम)।

अणुभास सक [अनु + भाष्] १ अनुवाद करना, कही हुई बात को उसी शब्द में शब्दान्तर में या दूसरी भाषा में कहना। २ चिन्तन करना 'अणुभासइ गुरुवयणं' (श्राव ६, वव ३)। वकृ. **अणुभासयंत, अणुभासमाण** (स १८४; विसे ३५१२)।

अणुभासण न [अनुभाषण] अनुवाद, उक्त बात का कहना (नाट)।

अणुभासणा स्त्री [अनुभाषणा] ऊपर देखो (ठा ५, ३; विसे ३५२० टी)।

अणुभासय वि [अनुभाषक] अनुवादक, अनुवाद करनेवाला (विसे ३२१७)।

अणुभासयंत देखो **अणुभास**।

अणुभुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना। वकृ. **अणुभुंजमाण** (स १६)।

अणुभूइ स्त्री [अनुभूति] अनुभव (विसे १६११)।

अणुभूय वि [अनुभूत] ज्ञात निश्चित (महा)। °**पुव्व** वि [°पूर्व] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह (णाया १, १)।

अणुभूस सक [अनु + भूष] भूषित करना, शोभित करना। अणुभूसेदि (शौ) (नाट)।

अणुमइ स्त्री [अनुमति] अनुमोदन, सम्मति (श्रा ६)।

अणुमनव्व देखो **अणुमण्ण** (विसे २६६०)।

अणुमग्ग न [ं] पीछे-पीछे, 'तव विनिंतयंती अणुमग्गेणेव चलियाहं' (सुर ८,१८२ महा)। °**गामि** वि [°गामिन्] पीछे-पीछे जानेवाला (पि ८०१)।

अणुमज्ज सक [अनु + मृज्] विचार करना। संकृ. **अणुम ज्जित्ता** (जीवा १६६)।

अणुमण्ण, **अणुमन्न** सक [अनु + मन्] अनुमति देना, अनुमोदन करना। अणुमण्णे अणुमन्नए (पि ४७६, महा)। वकृ. **अणुमण्णमाण** (उत्त ३१)। संकृ. **अणुमन्निऊण** (महा)।

अणुमन्निय, **अणुमय** वि [अनुमत] अनुमोदित, सम्मत (उत्त पु २६१)।

अणुमर सक [अनु + मृ] १ मरना। २ सती होना, पति के मरने के बाद जलना, 'अ देव-

लिणो अणुमरति' (श्राउ ३५)। भवि अणुमरिहिइ (पि ५२२)।

अणुमर अक [अनु + मृ] क्रम से मरना, पीछे-पीछे मरना, 'इय पारपरमरणे अणुमरइ सहस्सो जाव' (पिंड २७४)।

अणुमरण न [अनुमरण] ऊपर देखो (गउड)।

अणुमहत्तर वि [अनुमहत्तर] मुखिया का प्रतिनिधि (निचू ३)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय (णा ३४५, ठा ४, ८)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अभिप्राय-ज्ञान (सुअ १ १३,२०)। २ अनुसार (तदु २७)।

अणुमाण सक [अनु + मानय्] अनुमान करना। संकृ. **अणुमाणइत्ता** (वव १)।

अणुमाय वि [अणुमात्र] बहुत थोडा, थोडा परिमाणवाला (दस ५, २)।

अणुमाल अक [अनु + मालय्] शोभित होना चमकना। संकृ. **अणुमालिवि** (भवि)।

अणुमिण सक [अनु + मा] अटकल से जानना। कर्म अणुमिणिज्जइ (धर्मसं १२१६) अणुमीयए (दसनि ४,३०)।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य (से ७३)।

अणुमेरा स्त्री [अनुमर्यादा] मर्यादा हद (कप्प)।

अणुमोइय वि [अनुमोदित] अनुमत, सम्मत, प्रशंसित (श्राउ, भवि)।

अणुमोय सक [अनु + मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना। अणुमोयए (उत्त)। अणुमोएमो (तंदु १८)।

अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करनेवाला (निचू)।

अणुमोयण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति, प्रशंसा (उत्त; पंचा ६)।

अणुम्मुक्क वि [अनुन्मुक्त] नहीं छोडा हुआ (पण्ह १, ४)।

अणुम्मुह वि [अनुन्मुख] अनभिमुख, विमुख 'ति माइन्न अणुम्मुहो निहुरोसि त्ति' (महा)।

अणुय पुं [अणुक] धान्य विशेष (पण्ण १५६)।

अणुयपा देखो **अणुकंपा** (गउड, स ११४)।

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनु + वृत् । अणुयत्तट (भवि)। वकृ. अणुयत्तत, अणुयत्तमाण (पंचभा, विसे १४५१)। सकृ. अणुयत्तिऊण (गउड)।

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनुवृत्त (भवि)।

अणुयत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करना (बृह १)। २ अनुसरण। ३ अनुकूल वर्तन (जीव १)।

अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित (सुपा १३०)।

अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनुष्ठित (णाया १, १)।

अणुया देखो अणुण्णा (सूअ २, १)।

अणुयाव देखो अणुताव (स १८३)।

अणुयास पु [अनुकाश] विशेष विकास (णाया १, १)।

अणुरंगा स्त्री [दे] गाडी (बृह १)।

अणुरंगि वि [अनुरङ्गिन] अनुकरण-कर्ता (सुज्ज १०, ८)।

अणुरंगिय वि [अनुरञ्जित] रंगा हुआ (भवि)।

अणुरंज सक [अनु + रञ्जय्] अनुरागी करना, प्रीणित करना। वकृ अणुरंजअत (नाट)। सकृ अणुरंजिअ (नाट)।

अणुरंजण न [अनुरञ्जन] राग, आसक्ति (विसे २९७७)।

अणुरंजिएल्लय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त किया हुआ, अनुरागी बनाया
अणुरंजिय } हुआ (ज ३, महा)।

अणुरक्क वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-प्राप्त (नाट)।

अणुरज्ज अक [अनु + रञ्ज्] अनुरक्त होना, प्रेमी होना, 'अणुरज्जति खणेण जुवईउ खणेण पुण विरज्जति' (महा)।

अणुरत्त देखो अणुरक्क (णाया १, १६)।

अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ, आहूत (णाया १, ६)।

अणुराइ } वि [अनुरागिन्] अनुराग-
अणुराइल्ल } वाला, प्रेमी (स ३३०, महा, सुर १३, १२०)।

अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति (सुर ४, २२८)।

अणुरागय वि [अन्वागत] १ पीछे आया हुआ। २ ठीक-ठीक आया हुआ। ३ न स्वागत (भग २, १)।

अणुरागि देखो अणुराइ (महा)।

अणुराय देखो अणुराग (प्रासू १११)।

अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष (सम ६)।

अणुरुंध सक [अनु + रुध्] १ अनुरोध करना। २ स्वीकार करना। ३ आज्ञा का पालन करना। ४ प्रार्थना करना। ५ अक अधीन होना। कर्म अणुरुंधिज्जइ (हे ४, २४८ प्रामा)।

अणुरूअ } वि [अनुरूप] १ योग्य, उचित
अणुरूव } (से ६, ३६)। २ अनुकूल (सुपा ११०)। ३ सदृश, तुल्य (णाया १, १६)। ४ न. समानता, योग्यता (सम्म)।

अणुरोह पुं [अनुरोध] १ प्रार्थना, 'ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेव आगतव्व' (महा)। २ दाक्षिण्य, दक्षिणता (पाअ)।

अणुरोहि वि [अनुरोधिन्] अनुरोध करनेवाला (स १२१)।

अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ (गा ३४५, सुर ३, २२६, सूक्त ७)।

अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] १ पीछे से मिला हुआ। २ फिर से मिला हुआ (नाट)।

अणुलाव पु [अनुलाप] फिर-फिर बोलना (ठा ७)।

अणुलिंप सक [अनु + लिप्] १ पोतना, लेप करना। २ फिर से पोतना। संकृ अणुलिंपित्ता (पि ५८२)। हेकृ. अणुलिंपित्तए (पि ५७८)।

अणुलिंपण न [अनुलेपन] लेप, पोतना (पराह २, ३)।

अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ (कप्प)।

अणुलिह सक [अनु + लिह्] १ चाटना। २ छूना। वकृ अणुलिहंत (सम १३१), 'गयणयलमणुलिहत' (पउम ३६, १२)।

अणुलेवण न [अनुलेपन] १ लेप, पोतना (स्वप्न ६४)। २ फिर से पोतना (पराग २)।

अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ, 'कम्माणुलेविओ सो' (पउम ८२, ७५)।

अणुलोम सक [अनुलोमय्] १ क्रम से रखना। २ अनुकूल करना। सकृ अणुलोमइत्ता (ठा ६)।

अणुलोम न [अनुलोम] १ अनुक्रम, यथाक्रम, 'वत्थ दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थ' (सुर १६, ४८)।

अणुलोम वि [अनुलोम] सीधा, अनुकूल (ज २)।

अणुल्लग देखो अणुल्लय (सुख ३६, १३०)।

अणुल्लण वि [अनुल्वण] अनुद्धत, अनुद्भट (बृह ३)।

अणुल्लय पु [अनुल्लक] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु (उत्त ३६)।

अणुल्लाव पुं [अनुल्लाप] खराब कथन, दुष्ट उक्ति (ठा ३)।

अणुव पु [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, १६)।

अणुवइट्ठ वि [अनुपदिष्ट] १ अ-कथित, अ-व्याख्यात। २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो, 'अणुवइट्ठ नाम ज णो आयरियपरपरागय' (नीचू ११)।

अणुवउत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान (विसे)।

अणुवएस पु [अनुपदेश] १ अयोग्य उपदेश (पचा १२)। २ उपदेश का अभाव। ३ स्वभाव (ठा २, १)।

अणुवओग वि [अनुपयोग] १ उपयोग-रहित। २ उपयोग का अभाव, असावधानता (अणु)।

अणुवक्क वि [अनुवक्र] अत्यत वक्र, बहुत टेढा, 'जाव अगारओ रासि विअ अणुवक परिगमण ण करेदि' (माल ६२)।

अणुवदण न [अनुवन्दन] प्रति-नमन, प्रतिप्रणाम (सार्धं ३६)।

अणुवक्क देखो अणुवंक (पि ७४)।

अणुवक्ख वि [अनुपाख्य] नाम-रहित, अनिर्वचनीय (बृह १)।

अणुवक्खड वि [अनुपस्कृत] सस्कार-रहित (पाक) (निचू १)।

अणुवच्च सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना। अणुवच्चइ (हे ४, १०७)।

अणुवच्चिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (कुमा)।

अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] १ अना-श्रित। २ आजीविका-रहित (पंचा १४)।

अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] अभाववान, ध्यान-शून्य (अभि १३१)।

अणुवज्ज सक [गम्] जाना। अणुवज्जइ (हे ८, १६२)।

अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुश्रूषा करना (दे १, ४१)।

अणुवज्जण न [दे] सेवा-शुश्रूषा (दे १,४१)।

अणुवज्जिअ वि [दे] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [दे] गत, गया हुआ (दे १, ८१)।

अणुवट्ट देखो अणुवत्त=अनु + वृत्। कृ अणुवट्टणीअ (नाट)।

अणुवट्टि देखो अणुवत्ति=अनुवर्तिन् (विसे २८१७)।

अणुवड सक [अनु + पत्] अभिन्न होना। अणुवडइ (उवर ७१)।

अणुवडिअ वि [अनुपतित] पीछे गिरा हुआ (हम्मीर ४०)।

अणुवत्त सक [अनु + वृत्] १ अनुसरण करना। २ सेवा-शुश्रूषा करना। ३ अनुकूल वरतना। ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए नीचे के सूत्र में जाना। अणुवत्तइ (स ८२)। वकृ अणुवत्तत, अणुवत्तत, अणुवत्तमाण (प्राप्र; विसे ३४६८ नाट)। कृ अणुवट्टणीअ, अणु-वत्तणीअ, अणुवत्तियव्व (नाट, उव १०३१ टी)।

अणुवत्त वि [अनुद्वृत्त] अनुत्पन्न (पिंड १८)।

अणुवत्त वि [अनुवृत्त] १ अनुसृत, अनुगत। २ अनुकूल किया हुआ। ३ प्रवृत्त (वव २)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, सेवा करनेवाला (उव)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुसरण-कर्ता (सूप १, २, २, ३२)।

अणुवत्तण न [अनुवर्तन] १ अनुसरण (स ७३६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति (गा २६४)। ३ पूर्व सूत्र के पद का अन्वय के लिए नीचे के सूत्र में जाना (विसे ३४६८)।

अणुवत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] ऊपर देखो (उवर १४८)।

अणुवत्तय देखो अणुवत्तग, 'अन्नमन्नच्छंदाणु-वत्तया' (णाया १, ३)।

अणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुसरण (स ४५६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति। ३ अनुगम (विसे ७०५)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्तिन्] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, भक्त, सेवक,

'तुह चंदि ! चलणकमलाणुवत्तिणो कह ण सजमिज्जंति।
सेरिहवहमकियमहिमहीरमाणेण व जमेण' (गउड)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्तिन्] ऊपर देखो (धर्मवि ५२, मोह १०२)।

अणुवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, बेजोड़, अद्वितीय (श्रा २७)।

अणुवमा स्त्री [अनुपमा] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य (जीव ३)।

अणुवमिय वि [अनुपमित] देखो अणुवम (सुपा ६८)।

अणुवय देखो अणुव्वय (पउम २, ९२)।

अणुवय सक [अनु + वद्] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिर से कहना। वकृ अणु-वयमाण (आचा)।

अणुवरय वि [अनुपरत] १ असंयत, अवि-रती (ठा २, १)। २ क्रिवि निरन्तर हमेशा (रयण २४)।

अणुवलद्धि स्त्री [अनुपलब्धि] १ अभाव, अप्राप्ति। २ अभाव-ज्ञान, 'दुविहा अणुवलद्धीउ' (विसे १६८२)।

अणुवलब्भमाण वि [अनुपलभ्यमान] जो उपलब्ध न होता हो, जो जानने में न आता हो (दसनि १)।

अणुवलेवय वि [अनुपलेपक] उपलेप-रहित, अलिप्त (पण्ह १, २)।

अणुवसंत वि [अनुपशान्त] अशान्त, कुपित (उव १६)।

अणुवसम पु [अनुपशम] उपशम का अभाव (उव)।

अणुवसु वि [अनुवसु] रागवाला, प्रीतिवाला (आचा)।

अणुवह न [अनुपथ] पीछे, 'कुमराणुवहेण सो लग्गो' (उप ६ टी)।

अणुवहण न [अनुवहन] वहन, 'तवोवहाण-मुयाणमणुवहण' (धु १३५)।

अणुवहय वि [अनुपहत] अविनाशित (पिंड)।

अणुवहुआ स्त्री [दे] नवोढा स्त्री, दुलहिन (दे १, ४८)।

अनुवाइ वि [अनुपातिन्] १ अनुसरण करनेवाला (ठा ६)। २ सम्बन्ध रखनेवाला (सम १५)।

अणुवाइ वि [अनुवादिन्] अनुवाद करने-वाला, उक्त अर्थ को कहनेवाला (सूअ १, १२; सत्त १४ टी)।

अणुवाइ वि [अनुवाचिन्] पढ़नेवाला, अभ्यासी, 'सव्वन्नवीसवरिसो अणुवाई सव्वसु-त्तस्स' (सत्त १८ टी)।

अणुवाएज्ज वि [अनुपादेय] ग्रहण करने के अयोग्य, (श्रावम)।

अणुवाद देखो अणुवाय=अनुवाद (विसे ३४७७)।

अणुवादि देखो अणुवाइ=अनुपातिन् (उत्त १६, ६)।

अणुवाय पु [अनुपात] १ अनुसरण (पण्ण १७)। २ सबन्ध, संयोग (भग १२, ४)। ३ आगमन (पंचा ७)।

अणुवाय पु [अनुवात] १ अनुकूल पवन (राय)। २ वि अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान (भग १६, ६)।

अणुवाय वि [अनुपाय] उपाय-रहित, निरु-पाय (उप पृ १४)।

अणुवाय पुं [अनुवाद] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना (उवा दे १, १३१)।

अणुवायण न [अनुपातन] अवतारण, उता-रना (धम २)।

अणुवायय वि [अनुवाचक] पढ़नेवाला, अभिवाचक, 'पोत्थमहो स्टीए एत्थ पयाणु-वायओ भणिओ' (सुपा ६१६)।

अणुवाल देखो अणुपाल। वकृ अणुवालेंत (स २३)। संकृ अणुवालिऊण (स १०२)।

अणुवालण न [अनुपालन] रक्षण, परिपालन (आचा)।

अणुवालणा स्त्री [अनुपालना] १ ऊपर देखो (पचू)। २ °कप्प पु [°कल्प] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान (पचभा)।

अणुवालय वि [अनुपालक] १ रक्षक, परिपालक। २ पु. गोशालक के एक भक्त का नाम (भग २४, २०)।

अणुवास सक [अनु+वासय्] व्यवस्था करना। अणुवासेज्जासि (आचा)।

अणुवास पु [अनुवास] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वहीं वास करना (पचभा)।

अणुवासण न [अनुवासन] १ ऊपर देखो। २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढाना (णाया १, १३)।

अणुवासणा स्त्री [अनुवासना] ऊपर देखो (पचभा, णाया १, १३) °कप्प पु [°कल्प] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था (पचभा)।

अणुवासग वि [अनुपासक] १ सेवा नहीं करनेवाला। २ पुं जैनेतर गृहस्थ (निचू ८)।

अणुवासर न [अनुवासर] प्रतिदिन, हमेशा (सुर १, २४१)।

अणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुकूल वर्तन (कुमा)। २ अनुसरण (उप ८३३ टी)।

अणुविद्ध वि [अनुविद्ध] सबद्ध, जुडा हुआ (से ११, १५)।

अणुविस सक [अनु+विश्] प्रवेश करना। अणुविसंति (सिक्खा ७७)।

अणुविहाण न [अनुविधान] १ अनुकरण। २ अनुसरण (विसे २०७)।

अणुवीइ स्त्री [अनुवीचि] अनुकूलता, 'वेयाणुवीइ मा कासि चोइज्जतो गिलाइ से भुज्जो' (सूअ १, ४, १, १६)।

अणुवीइ, अणुवीई, अणुवीति, अणुवीतिय अ [अनुविचिन्त्य] विचार कर, पर्यालोचना कर (पि ५९३, आचा, दस ७)। देखो अणुचिंत।

अणुवीइत्तु, अणुवीय देखो अणुवीई (सूअ १, १२, २, १, १०, १)।

अणुवूह सक [अनु+वृह्] अनुमोदन करना, प्रशसा करना। अणुवूहेइ (कप्प)।

अणुवूहेत्तु वि [अनुबृंहितृ] अनुमोदन करने वाला (ठा ७)।

अणुवेद सक [अनु+वेदय्] अनुभव करना। वकृ अणुवेदयत (सूअ १, ५, १)।

अणुवेध, अणुवेह पु [अनुवेध] १ अनुगम, अन्वय, सम्बन्ध (धर्मस ७१२, ७१५)। २ संमिश्रण (पिंड ५६)।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव (स ४०३)।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा (पाअ)।

अणुवेलवर पु [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र (सम ३३)।

अणुवेह देखो अणुप्पेह। वकृ. अणुवेहमाण (सूअ १, १०)।

अणुव्वइय वि [अनुव्रजित] अनुसृत (स ६८७)।

अणुव्वज सक [अनु+व्रज] १ अनुसरण करना। २ सामने जाना। अणुव्वजे (सूअ १, ६, १, ३)।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम (ठा ५, १)।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो (ठा ५, १)।

अणुव्वय पु [अणुव्रत] श्रावक-धर्म (पचा १०, ८)।

अणुव्वयण न [अनुव्रजन] अनुगमन (धर्मवि ५४)।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करनेवाला, 'अन्नमन्नमणुव्वया' (णाया १, ३)।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री (उत्त २०)।

अणुव्वस वि [अनुवश] अधीन, आयत्त, 'एव तुब्भे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वसा' (सूअ १, ३, ३)।

अणुव्वाण वि [अनुद्वान] १ अ-बन्ध, खुला हुआ (उप २११ टी)। २ स्निग्ध, चिकना, 'पव्वाए किंचिउव्वाणमेव किंचिच होअणुव्वाए' (ओघ ४८८)।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] अ-खिन्न, खेद-रहित (णाया १, ८, गा २८५)।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार, 'एव तिरिक्खे मणुयासुरेसु चउरन्तणंतं तयणुव्विवाग (सूअ १,५,२)।

अणुव्वीइय देखो अणुवीइ (जीव)

अणुसक्क सक [अनुस+क्रम्] अनुसरण करना। अणुसकमति (उत्त १३,२५)।

अणुसग पु [अनुषङ्ग] १ प्रसग, प्रस्ताव (प्रासू ३६, भवि)। २ संसर्ग, सोहबत, 'मज्झठिई पुण एसा, अणुसङ्गेण हवन्ति गुण-दोसा' (सट्ठि २८, २७)।

अणुसगिअ वि [आनुषङ्गिक] प्रासङ्गिक (प्रवि १५)।

अणुसंचर सक [अनुस+चर्] १ परिभ्रमण करना। २ पीछे चलना। अणुसंचरइ (आचा, सूअ १, १०)।

अणुसंज देखो अणुसज्ज। अणुसजति (पव ८८)।

अणुसध सक [अनुस+धा] १ खोजना, ढूढना, तलाश करना। २ विचार करना। ३ पूर्वापर का मिलान करना। अणुसधेमि (पि ५००)। सकृ अणुसधिवि (भवि)।

अणुसंधण, अणुसधाण न [अनुसधान] गवेषणा, खोज (सबोध ४४)। २ पूर्वापर की सगति (धर्मस ३०३)।

अणुसधण, अणुसधाण न [अनुसधान] १ खोज, शोध। २ विचार, चिन्तन, 'अत्ताणुसधणपरा सुसावगा एरिसा हुति' (श्रा २०)। ३ पूर्वापर का मिलान (पचा १२)।

अणुसधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का, निरन्तर हिचकी (दे १, ५९)।

अणुसंभर सक [अनु+स्मृ] याद करना। अणुसभरइ (दसनि ४, ५५)।

अणुसवेयण न [अनुसवेदन] १ पीछे से जानना। २ अनुभव करना (आचा)।

अणुससर सक [अनुस+सृ] गमन करना, भ्रमण करना, 'जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ' (आचा)।

अणुससर सक [अनुस+स्मृ] स्मरण करना, याद करना। अणुससरइ (आचा)।

अणुसज्ज अक [अनु+सज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन

करना। २ प्रीति करना। ३ परिचय करना। अणुसज्जन्ति (स)। भूका अणुसज्जित्था (भग ६,७)

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसञ्जना] अनुसरण, अनुवर्तन (वव १)।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी गई हो वह, शिक्षित (सुर ११, २६)।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख, उपदेश (ठा ३, ३)। २ स्तुति, श्लाघा 'अणुसट्ठी य थुइ त्ति एगट्ठा' (वव १)। ३ आज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति, 'इच्छामो अणुसट्ठि पव्व ज देह मे भयवं' (सुर ६, २०६)।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण (भग ४१, १)।

अणुसय पु [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद (से २, १६)। २ गर्व, अभिमान (अणु)।

अणुसर सक [अनु + सृ] पीछा करना, अनुवर्तन करना। अणुसरइ (सण)। वकृ **अणुसरंत** (महा)। कृ **अणुसरियव्व** (ठा ५, १)।

अणुसर सक [अनु + स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। वकृ **अणुसरंत** (पउम ६६, ८)। कृ **अणुसरियव्व** (आवम)।

अणुसरण न [अनुसरण] १ पीछा करना। २ अनुवर्तन (विसे ६१३)।

अणुसरण न [अनुस्मरण] अनुचिन्तन, याद करना (पचा १, स २३१)।

अणुसरि देखो **अणुसारि**, 'आलोयण परिहारो वत्तो वत्तीए पययणाणुसरी' (संबोध ८)।

अणुसरिउ वि [अनुस्मर्तृ] याद करनेवाला (विसे ६०)।

अणुसरिच्छ } वि [अनुसदृश] १ समान,
अणुसरिस } तुल्य (पउम ६४, ८०)। २ योग्य, लायक (से ११, ११५; पउम ८५, २६)।

अणुसार पु [अनुस्वार] १ वर्ण-विशेष, बिन्दी। २ वि अनुस्वारित वर्ण (विसे ५०१)।

अणुसार पुं [अनुसार] अनुसरण, अनुवर्तन (गउड; भवि)। २ सादृश्य, तुलना, 'दरिया-णुसारओ दव्वनुसारओ गुणरूवा सव्वं' (माघ १४४)।

अणुसारि वि [अनुसारिन्] अनुसरण करने वाला (गउड, स १०१; माघ २६)।

अणुसास सक [अनु + शास्] १ सीख देना, उपदेश देना। २ आज्ञा करना। ३ शिक्षा करना, सजा देना। अणुसासति (पि १७२)। वकृ **अणुसासंत** (पि ३६७)। कवकृ **अणुसासिज्जंत** (सुपा २७३)। कृ **अणुसासणिज्ज** (कुमा)। हेकृ **अणुसासिउं** (पि ५७६)।

अणुसासण न [अनुशासन] १ सीख, उपदेश (सूअ १, १५)। २ आज्ञा, हुकुम (सूअ १, २, ३)। ३ शिक्षा, सजा (पचा ६)। ४ अनुकम्पा दया, 'अणुकंप त्ति वा अणुसासणं ति वा एगट्ठा' (पचचू)।

अणुसासणा स्त्री [अनुशासना] ऊपर देखो (णाया १, १३)।

अणुसासिय वि [अनुशासित] शिक्षित (उत्त १, पि १७३)।

अणुसिक्खिर वि [अनुशिक्षितृ] सीखनेवाला,
'जं जं करेमि जं जं, जंपसि जह जह
तुम नियच्छेमि।
तं तं अणुसिक्खिरीए, दीहो दिअहो ण संपडइ'। (गा ३७८)।

अणुसिट्ठ देखो **अणुसट्ठ** (सूअ १, ३, ३)।

अणुसिट्ठि देखो **अणुसट्ठि** (ओघ १७३; बृह १, उत्त १०)।

अणुसिण वि [अनुष्ण] गरम नहीं वह, ठण्ढा (कम्म १, ४६)।

अणुसील सक [अनु + शीलय्] पालन करना, रक्षण करना। अणुसीलइ (सण)।

अणुसुत्ति वि [दे] अनुकूल (दे १, २५)।

अणुसुमर सक [अनु + स्मृ] याद करना। अणुसुमरइ (धम्मवि ५६)। प्रयो अणुसुमरावेइ (धम्मवि ६५)।

अणुसुय अक [अनु + स्वप्] सोने का अनुकरण करना। अणुसुयइ (तंदु १३)।

अणुसूआ स्त्री [दे] शीघ्र ही प्रसव करनेवाली स्त्री (दे १, २३)।

अणुसूय वि [अनुस्यूत] अनुविद्ध, मिला हुआ (सूम २, ३)।

अणुसूयग वि [अनुसूचक] जासूस की एक श्रेणी,
'सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग सव्वसूयगा एव।
पुरिसा कयवित्तीया, वसति सामतनगरेसु।
महिला कयवित्तीया वसति सामतनगरेसु॥'
(वव १)।

अणुसेढि स्त्री [अनुश्रेणि] १ सीधी लाइन। २ न लाइनसर (पि ६६, ३०४)।

अणुसोय पु [अनुस्रोतस्] १ अनुकूल प्रवाह (ठा ४, ४)। २ वि अनुकूल, 'अणु-सोयमुहो लोगो पडिसोओ आसमो सुविहियाण' (दसचू २)। ३ न. प्रवाह के अनुसार,
'अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि
पडिसोयलद्धलक्खेण।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेण।'
(दसचू २)।

अणुसोय सक [अनु + शुच्] सोचना, चिन्ता करना, अफसोस करना। वकृ **अणु-सोयमाण** (सुपा १२३)।

अणुस्सर देखो **अणुसर** = अनु + स्मृ। संकृ **अणुस्सरित्ता** (सूअ १, ७, १६)।

अणुस्सर देखो **अणुसर** = अनु + सृ। वकृ. **अणुस्सरंत** (स १४०)।

अणुस्सरण न [अनुस्मरण] चिन्तन करना, याद करना (उप, स ५३५)।

अणुस्सार पु [अनुस्वार] १ अनुस्वार, बिन्दी। २ वि अनुस्वारवाला अक्षर, अनुस्वार के साथ जिसका उच्चारण हो वह (णंदि, विसे ५०३)।

अणुस्सुय वि [अनुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित (सूअ १, ६)।

अणुस्सुय वि [अनुश्रुत] १ अवधारित (उत्त ५)। २ सुना हुआ (सूअ १, २, ३)। ३ न भारत-आदि पुराण-शास्त्र (सूअ १, ३, ४)।

अणुहर सक [अनु + हृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुहरइ (पि ४७७)।

अणुहरिय वि [अनुहृत] जिसका अनुकरण किया गया हो वह, अनुकृत,
'अणुहरिय धीर तुमे, चरियं नियवंस-
पुव्वपुरिसाणं।
नरए-महानरवइणो, [illegible]'
(महा)।

अणुहव सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहवइ (पि ४७५)। वकृ **अणुहवमाण** (सुर ३, १०१)। कृ **अणुहवियव्व**, अणु-

हवणीय (पउम १७,१४, सुपा ५८१)। संकृ अणुहवेऊण, अणुहविउ (प्राकृ, पचा २)।

अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव (स २८७)।

अणुहविय वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह (सुपा ६)।

अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला, सदृशवर्ती (कुमा)।

अणुहाव देखो अणुभाव (स ४०३ ६५६)।

अणुहियामण न [अन्वध्यामन] धर्य से सहन करना (ज २)।

अणुहु सक [अनु + भू] अनुभव करना। वकृ अणुहुंत (पउम १०२ १५८)।

अणुहुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना, भोगना। अणुहुंजइ (भवि)।

अणुहुत्त देखो अणुहूअ (गा ६५६)।

अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह (कुमा)। २ न अनुभव (से ८, २७)।

अणुहो सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहोंति (पि ४७५)। वकृ अणुहोंत (पउम १०६, १७)। कवकृ अणुहोईअंत, अणुहोइज्जंत, अणुहोइज्जमाण, अणुहोईअमाण (पड्)। कृ अणुहोदव्व (शौ) (अभि १३१)।

अणूकप्प देखो अणुकप्प, 'एत्तो वोच्छ अणूकप्पं' (पचभा)।

अणूण वि [अनून] कम नहीं, अधिक (कुमा)।

अणूय } पु [अनूप] अधिक जलवाला देश,
अणूव } जल-बहुल स्थान (विसे १७०३, वव ८)।

अणेअ वि [अनेक] देखो अणेक्क (कुमा अभि २४६)।

अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल, चपल (दे १, ३०)।

अणेक्क } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत
अणेग } (ओप, प्रासू ५३)। °करण न [°करण] पर्याय, धर्म, अवस्था (सम्म १०६)। °राइय वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होने-वाला, अनेक रात सबन्धी (उत्सवादि) (कप्प)। °सो अ [°शस्] अनेक बार (आ १४)।

अणेगंत पु [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव (विसे)। °वाय पुं [°वाद] स्याद्वाद, जैनों का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में सापेक्ष स्वीकार,

'जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो
सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स'
(सम्म १६६)।

अणेगंतिय वि [अनेकान्तिक] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित (भग १, १)।

अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थों को सर्वथा अलग-अलग माननेवाला, अक्रियावाद-मत का अनुयायी (ठा ८)।

अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ (उप ७६८ टी)।

अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प (आक)।

अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य, जानने के अशक्य (महा)।

अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण, 'जे धम्मं सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिसं' (सूअ १, ११)।

अणेवभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र 'अणेवभूयंपि वेयणं वेदंति' (भग ५,५)।

अणेस देखो अण्णेस। वकृ अणेसंत (नाट)।

अणेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश (महा)।

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव (उवा)।

अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि) (ठा ३, १, णाया १, ५)।

अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री (ठा ५, २)।

अणोकंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहिं अणोक्कंता' (ओप)।

अणोग्गह देखो अणुग्गह = अनवग्रह, 'नागरगो सवट्टो अणोग्गहो' (बृह ३)।

अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] नहीं घिसा हुआ, असाजित (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध (णाया १, ८)।

अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आचू)।

अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो (कप्प)।

अणोणअ वि [अनवनत] नहीं झुका हुआ (से १, १)।

अणोत्तप्प देखो अणुत्तप्प (पव ६४)।

अणोम वि [अनवम] हीन-रहित, परिपूर्ण (आचा)।

अणोमाण न [अनपमान] अनादर का अभाव, सत्कार, 'एव उग्गमदोसा विजढा
पइरिक्कया अणोमाणं।
मोहतिगिच्छा य कया,
विरियायारो य अणुचिण्णो'
(ओघ २८६)।

अणोरपार वि [दे] १ प्रचुर, प्रभूत (आवम)। २ अनादि-अनन्त (पचा १५, जी ४४)। ३ अति विस्तीर्ण (पण्ह १, ३)।

अणोरुम्मिअ वि [अनुद्वान] अ-शुष्क, गीला (कुमा)।

अणोलय न [दे] प्रभात, प्रातःकाल (दे १, १६)।

अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनुपूर्वी का एक भेद, क्रम-विशेष (अणु)।

अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर देखो (पि ७७)।

अणोल्ल वि [अनार्द्र] १ शुष्क, सूखा हुआ (गा ५५१)। °मण वि [°मनस्क] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय (काप्र ८६)।

अणोवदग्ग वि [अनवदग्र] अनन्त (सूअ १, १२, ६)।

अणोवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, अद्वितीय (पउम ७६, २६, सुर ३, १३०)।

अणोवमिय वि [अनुपमित] ऊपर देखो (पउम २, ६३)।

अणोवसखा स्त्री [अनुपसंख्या] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव (सूअ २, १२)।

अणोवहिय वि [अनुपधिक] १ परिग्रह-रहित, सतोषी। २ सरल, अकपटी (आचा)।

अणोवाहणग } वि [अनुपानत्क] जूता-
अणोवाहणय } रहित, जो जूता न पहिना हो (ओप, पि ७७)।

[illegible]

अणुसारि वि [अनुसारिन्] [illegible]

अणुसास सक [अनु + शास्] १ सीख देना, [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible] । अणुसासंत [illegible] । अणुसासिज्जर [illegible] । अणुसासिअ [illegible]

अणुसासण न [अनुशासन] १ सीख, [illegible]

अणुसासणा स्त्री [अनुशासना] [illegible]

अणुसासिय वि [अनुशासित] [illegible]

अणुसिक्खिर वि [अनुशिक्षितृ] [illegible]

[illegible] सिक्खिर [illegible]।

अणुसिट्ठ देखो अणुसट्ठ (सुअ १, २, ३)।

अणुसिट्ठि देखो अणुसट्ठि [illegible]

अणुसिय वि [अनुसृत] [illegible]

अणुसील सक [अनु + शीलय्] [illegible] । अणुसीलइ [illegible]।

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

अणुसेढि स्त्री [अनुश्रेणि] १ सीधी लाइन। २ [illegible] (वि ६६ २०४)।

अणुसोय पु [अनुस्रोतस्] १ [illegible]। २ [illegible]

'अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि

[illegible]।

[illegible]

(दस २)।

अणुसोय सक [अनु + शुच्] [illegible] । वकृ. अणुसोयमाण (सुअ १३२)।

अणुस्सर देखो अणुसर = अनु + सृ। संकृ अणुस्सरित्ता (सुअ १, ७, १६)।

अणुस्सर देखो अणुसर = अनु + स्मृ। वकृ अणुस्सरंत (स १८०)।

अणुस्सरण न [अनुस्मरण] [illegible]

अणुस्सार पु [अनुस्वार] १ [illegible] । २ [illegible]

अणुस्सुय वि [अनुत्सुक] [illegible] (सुअ १, ६)।

अणुस्सुय वि [अनुश्रुत] १ [illegible] । २ [illegible] (सुअ १, २, १)। ३ [illegible] (सुअ १, ३, ४)।

अणुहर सक [अनु + हृ] [illegible]

अणुहरिय वि [अनुहृत] [illegible]

[illegible]

अणुहव सक [अनु + भू] [illegible] अणुहविअ [illegible], अणु-

हवणीय (पउम १७,१४; सुपा ५८१)। संकृ अणुहवेऊण, अणुहविउं (प्राकृ; पचा २)।

अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव (स २८७)।

अणुहविअ वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह (सुपा ६)।

अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला, नकलची (कुमा)।

अणुहाव देखो अणुभाव (स ४०३ ६५६)।

अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य से सहन करना (ज २)।

अणुहु सक [अनु + भू] अनुभव करना। वकृ अणुहुंत (पउम १०३, १५२)।

अणुहुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना, भोगना। अणुहुंजइ (भवि)।

अणुहुत्त देखो अणुहूअ (गा ६५६)।

अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह (कुमा)। २ न अनुभव (से ८, २७)।

अणुहो सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहोति (पि ४७५)। वकृ अणुहोंत (पउम १०६, १७)। कवकृ अणुहोईअत, अणुहोइज्जत, अणुहोइज्जमाण, अणुहोईअमाण (पड्)। कृ अणुहोदव्व (शौ) (अभि १३१)।

अणूकप्प देखो अणुकप्प, 'एत्तो वोच्छ अणूकप्प' (पचभा)।

अणूण वि [अनून] कम नहीं, अधिक (कुमा)।

अणूय } पु [अनूप] अधिक जलवाला देश,
अणूव } जल-बहुल स्थान (विसे १७०३, वव ८)।

अणेअ वि [अनेक] देखो अणेक्क (कुमा अभि २८६)।

अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल, चपल (दे १, ३०)।

अणेक्क } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत
अणेग } (ओप, प्रासू ५३)। °करण न [°करण] पर्याय, धर्म, अवस्था (सम्म १०६)। °राइय वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होनेवाला, अनेक रात सबन्धी (उत्सवादि) (कप्प)। °सो अ [°शस्] अनेक बार (श्रा १४)।

अणेगंत पु [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव (विसे)। °वाय पु [°वाद] स्याद्वाद, जैनो का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मो का भी एक वस्तु मे सापेक्ष स्वीकार,

'जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो
सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स'
(सम्म १६६)।

अणेगंतिय वि [अनैकान्तिक] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित (भग १, १)।

अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थो को सर्वथा अलग-अलग माननेवाला, अक्रियावाद-मत का अनुयायी (ठा ८)।

अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ (उप ७६८ टी)।

अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प (आक)।

अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य, जानने को अशक्य (महा)।

अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण, 'जे धम्मं सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिसं' (सूअ १, ११)।

अणेवभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र 'अणेवंभूयपि वेयणं वेदंति' (भग ५,५)।

अणेस देखो अण्णेस। वकृ अणेसंत (नाट)।

अणेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश (महा)।

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव (उना)।

अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि) (ठा ३, १; णाया १, ५)।

अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री (ठा ५, २)।

अणोक्कंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहिं अणोक्कंता' (ओप)।

अणोग्गह देखो अणुग्गह = अनवग्रह, 'नागरगो सवट्टो अणोग्गहो' (बृह ३)।

अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] नहीं घिसा हुआ, अमार्जित (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध (णाया १, ८)।

अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आचू)।

अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो (कप्प)।

अणोणअ वि [अनवनत] नहीं झुका हुआ (से १, १)।

अणोत्तप्प देखो अणुत्तप्प (पव ६४)।

अणोम वि [अनवम] हीन-रहित, परिपूर्ण (आचा)।

अणोमाण न [अनपमान] अनादर का अभाव, सत्कार, 'एव उग्गमदोसा विजढा
पडरिक्कया अणोमाण।
मोहतिगिच्छा य कया,
विरियायारो य अणुचिण्णो'
(ओघ २८६)।

अणोरपार वि [दे] १ प्रचुर, प्रभूत (आवम)। २ अनादि-अनन्त (पचा १५, जी ४४)। ३ अति विस्तीर्ण (पण्ह १, ३)।

अणोरुम्मिअ वि [अनुद्वान] अ-शुष्क, गीला (कुमा)।

अणोलय न [दे] प्रभात, प्रातःकाल (दे १, १६)।

अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनुपूर्वी का एक भेद, क्रम-विशेष (अणु)।

अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर देखो (पि ७७)।

अणोल्ल वि [अनार्द्र] १ शुष्क, सूखा हुआ (गा ५४१)। °मण वि [°मनस्क] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय (काप्र ८६)।

अणोवदग्ग वि [अनवदग्र] अनन्त (सूअ १, १२, ६)।

अणोवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, अद्वितीय (पउम ७६, २६; सुर ३, १३०)।

अणोवमिय वि [अनुपमित] ऊपर देखो (पउम २, ६३)।

अणोवसखा स्त्री [अनुपसंख्या] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव (सूअ २, १२)।

अणोवहिय वि [अनुपधिक] १ परिग्रह-रहित, सतोषी। २ सरल, अकपटी (आचा)।

अणोवाहणग } वि [अनुपानत्क] जूता-
अणोवाहणय } रहित, जो जूता न पहिना हो (ओप, पि ७७)।

[illegible]

[illegible] [अज्ञान] [illegible]

[illegible]

अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री। २ पति की बहिन, ननद। ३ फूफा, पिता की बहिन (दे १, ५१)।

अण्णु } वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख
अण्णुअ } (षड् ; गा १८८)।

अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (गउड)।

अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण (उप पृ २२४)।

अण्णे सक [अनु + इ] अनुसरण करना। अण्णेइ (विसे २५२६)। अण्णेन्ति (पि ८६३)। कवकृ अण्णिज्जमाण (अन्वीयमान) (विपा १, १)।

अण्णेस सक [अनु + इष्] १ खोजना, ढूँढना, तलाश करना। २ चाहना, वाञ्छना। ३ प्रार्थना करना। अण्णेसइ (पि १६३)। वकृ अण्णेसंत, अण्णेसअत, अण्णेसमाण (महा; कप्प)।

अण्णेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश, तहकीकात (उप ६ टी)।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] १ खोज, तहकीकात (आप)। २ प्रार्थना (आचा)। ३ गृहस्थ से दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा, ३, ४)।

अण्णेसय वि [अन्वेषक] गवेषक (पव ७१)।

अण्णेसि वि [अन्वेषिन्] खोज करनेवाला (आचा)।

अण्णेसिय वि [अन्वेषित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, 'अण्णेसिया सव्वओ तुब्भे न कहिंचि दिट्ठा' (महा)।

अण्णोण्ण देखो अण्णुण्ण, 'अण्णोण्णसमणुवद्धं णिच्छयओ भणियविसय तु' (पचा ६, स्वप्न ५२)।

अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लंघित (दे १, ३६)।

अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना। अण्हइ (हे ४, ११०; षड्)। अण्हाइ (औप)। अण्हए (कुमा)।

°अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन, 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' (उवा)।

अण्हग } पु [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण
अण्हय } हिंसादि (पण्ह १,१,५, औप)।

°अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास (गा ६३)।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ (दे १, २१)।

अतक्किअ वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक 'अतक्कियमेव एस्सि वसणमह पत्ता' (महा)। २ ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित (सम ८)। ३ क्रिवि 'अतक्किय चेव विणिग्गओ रायहत्थी' (महा)।

अतड वि [अतट] छोटा किनारा, 'अतडव वातों गो चेव मग्गो' (बृह १)।

अतण्हाअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा रहित, निःस्पृह (अच्चु ६४)।

अतत्त न [अतत्त्व] असत्य, झूठ, गैरव्याजवी (उप ५०८)।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ, निर्भीक (कुमा)।

अतत्थ वि [अतथ्य] असत्य, झूठा (आचा)।

अतर देखो अयर (पव १, कम्म ४, भवि)।

अतव पुन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव (उत्त २३)। २ वि तप-रहित (बृह ४)।

अतव पु [अस्तव] अ-प्रशंसा, निन्दा (कुमा)।

अतसी देखो अयसी (पण्ण १)।

अतह वि [अतथ] असत्य, अ-वास्तविक, झूठा (सूअ १,१,२, आचा)।

अतह वि [अतथा] उस माफिक नहीं,

'जाओ च्चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण वित्तीओ।

ताओ च्चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति हिययाइं' (गउड)।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य (णाया १, ६, १४)।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो (सूअ १, ३, २)।

अतिउट्ट अक [अति + त्रुट्] १ खूब टूटना, टूट जाना। २ सब बन्धन से मुक्त होना। अतिउट्टइ (सूअ १, १५, ५)।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] १ उल्लंघन करना। २ व्याप्त होना। °तिउट्टइ (सूअ १, १५, ६ टी)।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त। २ अनुगत, व्याप्त, 'जंसी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो' (सूअ १,५, १,१२)।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध संघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति। २ वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो (पण्ण १)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतित्थसिद्धा य मरुदेवी' (नव ४६)।

अतिहि देखो अइहि।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] १ अति-निबिड। २ क्रिवि अत्यंत, बहुत, 'अतीगाढं भीओ जणवाहिंतो' (पउम ८, ११३)।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, असाधारण (पण्ह १, १)।

अतुलिय वि [अतुलित] असाधारण, अद्वितीय (भवि)।

अत्त देखो अप्प = आत्मन् (सुर ३, १७४ सम ५८ आदि)। °लाभ पु [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति (कम्म २, २५)।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दुःखित, हैरान (सुर ३, १४३ कुमा)।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (णाया १, १)। २ स्वीकृत, मञ्जूर किया हुआ (ठा २, ३)। ३ पु ज्ञानी मुनि (बृह १)।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी। २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग। ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,

'नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए' (वव १०)। ४ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, १०)। ५ एकान्त हितकर (भग १४, ६)। ६ प्राप्त, मिला हुआ (वव १०), 'अत्तप्पसण्णलेस्से' (उत्त १२)।

अत्त वि [आत्र] दुःख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादक (भग १८, ६)।

अत्त अ [अत्र] यहाँ, इस स्थान में (नाट)। °भव वि [°भवत्] पूज्य, माननीय (अभि ६१, पि २६३)।

अत्तअ देखो अच्चय = अत्यय (प्राकृ २१)।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिससे कर्म-

[illegible]

अणोइय [आदेय] [illegible]

अणोइय [आसन्न] [illegible]

[illegible]

अणाभ [अरम] [illegible]

अरा मग [अर्वत्] [illegible]

अरारिरिया [illegible]

[illegible]

डूब गया, अदृश्य हुआ (ओघ ५०७, महा, सुपा १५५)। २ हीन, हानि-प्राप्त (ठा ४,३)।
अत्थयारिआ स्त्री [दे] सखी, वयस्या (दे १ १६)।
अत्थर सक [आ+स्तृ] बिछाना शय्या करना, पसारना। अत्थरइ (उव)। संकृ. अत्थरिऊण (महा)।
अत्थरण न [आस्तरण] १ बिछौना, शय्या (से १८, ५०)। २ बिछाना, शय्या करना (विसे २३२२)।
अत्थरय वि [आस्तरक] १ आच्छादन करनेवाला (राय)। २ पु बिछौने के ऊपर का वस्त्र (भग ११, ११, कप्प)।
अत्थरय वि [अस्तरजस्क] निर्मल, शुद्ध (भग ११, ११)।
अत्थवण देखो अत्थमण (भवि)।
अत्थसिद्ध पु [अर्थसिद्ध] पक्ष का दशवाँ दिवस, दशमी तिथि (सुज्ज १०, १४)।
अत्था देखो अट्ठा = आस्था।
अत्था } सक [अस्ताय्] अस्त होना,
अत्थाअ } डूब जाना, अदृश्य होना। अत्थाइ, अत्थाए (पउम ७३, ३५)। अत्थाअति (से ७, २३)। वकृ अत्थाअंत (से ७, ६६)।
अत्थाअ वि [अस्तमित] अस्त हुआ, डूबा हुआ, 'तावच्चिय दिवसयरो अत्थाओ विगयकिरणसंघाओ' (पउम १०,६६, से ६,५२)।
अत्थाइया स्त्री [दे] गोष्ठी मण्डप (स ३६)।
अत्थाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान (सुर १, ८०)।
अत्थाणिय वि [अस्थानिन्] गैर-स्थान में लगा हुआ, 'अत्थाणियनयणहिं' (भवि)।
अत्थाणी स्त्री [आस्थानी] सभा-स्थान (कुमा)।
अत्थाणीअ वि [आस्थानीय] सभा-सम्बन्धी (कुप्र ७८)।
अत्थाम वि [अस्थामन्] बल-रहित, निर्बल (गाया १,१)।
अत्थार पु [दे] सहायता, साहाय्य (दे १,६, गाया)।
अत्थारिय पु [दे] नौकर, कर्मचारी (वव ६)।
अत्थावग्गह देखो अत्थुग्गह (पण्ण ५)।
अत्थावत्ति स्त्री [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान, जैसे 'देवदत्त पुष्ट है और दिन में नहीं खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात में खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान (उप ६६८)।
अत्थाह वि [अस्ताघ] १ अथाह, थाह-रहित, गभीर (गाया १, १४)। २ नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमें डूब सके इतना गहरा जलाशय (बृह ४)। ३ पु अतीत चौवीसी में भारत में समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थंकर-देव (पव ६)।
अत्थाह वि [दे] देखो अत्थग्घ (दे १, ५४, भवि)।
अत्थि वि [अर्थिन्] १ याचक, माँगनेवाला (सुर १०,१००)। २ धनी, धनवाला (पचा)। ३ मालिक, स्वामी (विसे)। ४ गरजू, चाहनेवाला,

'धणओ धणत्थियाणं, कामत्थीणं च सव्वकामकरो।
सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो ॥' (महा)।

अत्थि न [अस्थि] हाड, हड्डी (महा)।
अत्थि अ [अस्ति] १ सत्त्व-सूचक अव्यय है, 'अत्थेगइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया' (ओप), 'अत्थि णं भंते ! विमाणाइं' (जीव ३)। २ प्रदेश, अवयव, 'चत्तारि अत्थिकाया' (ठा ४, ४)। °अवत्तव्व वि [°अवक्तव्य] सप्तभङ्गी का पाचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ,

'सब्भावे आइट्ठो देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिअवत्तव्वं च होइ दविअं विअप्पवसा' (सम्म ३८)।

°काय पु [°काय] प्रदेशों का—अवयवों का समूह (सम १०)। °णत्थवत्तव्व वि [°नास्त्यवक्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ,

'सब्भावासब्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिणत्थवत्तव्वयं च दविअं विअप्पवसा' (सम्म ४०)।

°त्त न [°त्व] सत्व, विद्यमानता, हयाती (सुर २, १४२)। °त्ता स्त्री [°ता] सत्व, हयाती (उप पृ ३७४)। °त्तिनय पु [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय (विसे ५३७)। °नत्थि वि [°नास्ति] सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु,

'अह देसो सब्भावे देसोसब्भावपज्जवे निअओ।
तं दविअमत्थिनत्थि अ, आएसविसेसिअं जम्हा' (सम्म ३७)।

°नत्थिप्पवाय न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व (सम २६)।
अत्थिक्क न [आस्तिक्य] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास (श्रा , पुप्फ ११०)।
अत्थिय देखो अत्थि = अर्थिन् (महा, औप)।
अत्थिय वि [अर्थिक] धनी, धनवान् (हे २, १५६)।
अत्थिय न [अस्थिक] १ हड्डी, हाड। २ पु वृक्ष-विशेष। ३ न बहु बीजवाला फल-विशेष (पण्ण १)।
अत्थिय वि [आस्तिक] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखनेवाला (धर्म २)।
अत्थिर देखो अथिर (पचा १२)।
अत्थीकर सक [अर्थी+कृ] प्रार्थना करना, याचना करना। अत्थीकरेइ (निचू ४)। वकृ अत्थीकरत (निचू ४)।
अत्थीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना (निचू ४)।
अत्थु सक [आ+स्तृ] बिछाना, शय्या करना। कर्म अत्थुव्वइ, कवकृ अत्थुव्वंत (विसे २३२१)।
अत्थुअ वि [आस्तृत] बिछाया हुआ (पाअ, विसे २३२१)।
अत्थुग्गह पुं [अर्थावग्रह] इन्द्रिय और मन द्वारा होनेवाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान (सम ११, ठा २, १)।
अत्थुग्गहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय (भग ११, ११)।
अत्थुड वि [दे] लघु, छोटा, (दे १, ६)।

अत्थुरण न [दे आस्तरण] बिछौना (स ६७)।

अत्थुरिय वि [दे आस्तृत] बिछाया हुआ (स २३८, दे १, ११३)।

अत्थुवड न [दे] भल्लातक, भिलावा वृक्ष का फल (दे १, २३)।

अत्थेक वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित (से १२, ४८)।

अत्थोग्गह देखो अत्थुग्गह (सम ११)।

अत्थोग्गहण देखो अत्थुग्गहण (भग ११, ११)।

अत्थेंडिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ (महा)।

अत्थोभय वि [अस्तोभक] 'तु', 'च' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित (सूत्र) (बृह १)।

अत्थोवग्गह देखो अत्थुग्गह (पएण १५)।

अथक्क न [दे] १ अकाण्ड अनवसर, अकस्मात् (षड्)। २ वि पसरनेवाला, फेलनेवाला (कुमा)।

अथव्वण पु [अथर्वण] चौथा वेद शास्त्र (कप्प, णाया १, ५)।

अथिर वि [अस्थिर] १ चञ्चल, चपल (कुमा)। २ अनित्य, विनश्वर (कुमा)। ३ अदृढ, शिथिल (ओघ)। ४ निर्बल (वव २)। ५ मजबूती से नहीं बैठा हुआ, नहीं जमा हुआ (अभ्यास) 'अथिरस्स पुव्वगहियस्स, वत्तणा ज इह थिरीकरणं' (पंचा १२)। °णाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

अद सक [अद्] खाना, भोजन करना। अदइ, अदए (षड्)।

अदम्मण देखो अद्दमण (पचभा)।

अदसण पु [दे] चोर, डाकू (दे १, २६, षड्)।

अदंसिया स्त्री [अदर्शिका] एक प्रकार की मीठी चीज (पएण १७)।

अदक्खु वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ। २ असर्वज्ञ (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदक्ष] अनिपुण, अकुशल (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदृश्य] १ नहीं देखनेवाला, अन्धा। २ असर्वज्ञ, 'अदक्खुव! दक्खुवाहियं सद्दहसु अदक्खुदंसणा' (सूअ १, २, ३)।

अदण न [अदन] भोजन (बृह १)।

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ (पएह १, ३)। °हार वि [°हार] चोर (आचा)। °हारि वि [°हारिन्] चोर (सूअ १,५,१)। °दाण न [°दान] चोरी (सम १०)। °दाणवेरमण न [°दानविरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत (पएह २ ३)।

अदन्न देखो अण्ण (निरि ३१०)।

अदब्भ वि [अदभ्र] अनल्प, बहुत (ज ३)।

अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर (निचू २)।

अदिइ देखो अइइ (ठा २, ३)।

अदिण्ण देखो अदत्त (ठा १)।

अदित्त वि [अदृप्त] १ दर्प-रहित, नम्र (बृह १)। २ अहिंसक (ओघ ३०२)।

अदिन्न देखो अदत्त (सम १०)।

अदिस्स देखो अदिस्स (सम ६०, सुपा १५३)।

अदिहि स्त्री [अधृति] अधीरता, धीरज का अभाव (पाअ)।

अदीण वि [अदीन] दीनता-रहित। °सत्तु पु [°शत्रु] हस्तिनापुर का एक राजा (णाया १, ८)।

अदु अ [दे] १ आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब (आचा)। २ इससे (सूअ १, २, २)।

अदु अ [दे] १ अथवा, या (सूअ १, ४, २, १५, उत्त ८, १२, दसचू २, १८)। २ अधिकारान्तर का सूचक (सूअ १, ४, २, ७)।

अदुत्तर अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, बाद (णाया १, १)।

अदुय न [अद्रुत] अशीघ्र, धीरे-धीरे (भग ७,६) °बंधण न [°बन्धन] दीर्घ काल के लिए बन्धन (सूअ २, २)।

अदुव } अ [दे] या, अथवा, और, 'इमेज अदुवा } पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे' (दस ५, ५, आचा)।

अदोलि } वि [अदोलिन्] स्थिर, निश्चल अदोलिर } (कुमा)।

अद्द वि [आर्द्र] १ गीला, भीगा हुआ, अकठिन (कुमा)। २ पु इस नाम का एक राजा। ३ एक प्रसिद्ध राजकुमार और पीछे से जैन मुनि। ४ वि आर्द्र राजा के वंशज। ५ नगर-विशेष (सूअ २, ६)। °कुमार पु [°कुमार] एक राजकुमार और बाद में जैन मुनि, 'अद्दकुमारो दढप्पहारी अ' (पडि)। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] कन्द-विशेष, नागर मोथा (श्रा २०)। °मलग न [°मलक] १ हरा आमला। २ पीलु-वृक्ष की कली (धर्म २)। ३ शण वृक्ष की कली (पत्र ४)। °रिट्ठ पु [°रिष्ट] कोमल कौआ (आवम)।

अद्द पु [अब्द] १ मेघ, वर्षा, बारिश (हे २, ७९)। २ वर्ष, संवत्सर, संवत् (सुर १३, ७०)।

अद्द पु [अर्द] आकाश (भग २०, २)।

अद्द पुन [दे] १ परिहास। २ वर्णन (सक्षि ४७)।

अद्द सक [अर्द्] मारना, पीटना (वव १०)।

अद्दइअ न [अद्वैत] १ भेद का अभाव। २ वि भेद-रहित ब्रह्म वगैरह (नाट)।

अद्दइज्ज वि [आर्द्रीय] १ आर्द्रकुमार-सम्बन्धी। २ इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ २, ६)।

अद्दसण न [अदर्शन] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना (सुर ७, २४८)। २ वि परोक्ष, जिसका दर्शन न हो 'एक्कग्गचित्ताइ हाहित्ति मज्झ अद्दसणाइं इण्हिं' (सुपा ६१७)। ३ नहीं देखनेवाला, अन्धा। ४ 'थीणद्धी' या अधम निद्रा वाला (गच्छ १, पत्र १०७)। °भूअ, °हूय वि [°भूत] जो अदृश्य हुआ हो (सुर १०, ५६, महा)।

अद्दण } वि [दे] आकुल, व्याकुल (दे १, अद्दण्ण } १५, बृह १ निचू १०)।

अद्दन्न देखो अद्दण्ण (सुर १, १४)।

अद्दव वि [आद्रव] गला हुआ (आव ६)।

अद्दव्व न [अद्रव्य] अवस्तु, वस्तु का अभाव, (पचा ३)।

अद्दह सक [आ + द्रह] उबालना, पानी-तेल वगैरह को खूब गरम करना। अद्दहेइ, अद्दहेमि, सक्र अद्दहेत्ता (उवा)।

अद्दहिय वि [आहित] रखा हुआ, स्थापित (विपा १, ६)।

अद्दा स्त्री [आर्द्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

अद्दाअ पुं [दे] १ आदर्श, दर्पण (दे १, १४; पण्ण १५; निचू १३)। °पसिण पुं [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे दर्पण में देवता का आगमन होता है (ठा १०)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] चिकित्सा का एक प्रकार, जिसमें बीमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित करने से वह नीरोग होता है (वव ५)।

अद्दाइअ वि [दे] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र (सूअ १)।

अद्दाग [दे] देखो अद्दाअ (सम १२३)।

अद्दि पुं [अद्रि] पहाड़, पर्वत (गउड)।

अद्दिट्ठ वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ (सुर १, १८२)। २ दर्शन का अविषय (सम्म ६६)।

अद्दिय वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ भिगाया हुआ (विक्र २३)।

अद्दिय वि [अर्दित] पीड़ा हुआ, पीड़ित (वज्जा १०)।

अद्दिस्स वि [अदृश्य] देखने के अयोग्य या अशक्य (सुर ८, १२०; सुपा ८५; श्रा २७)।

अद्दिस्संत } वकृ. [अदृश्यमान] नहीं
अद्दिस्समाण } दिखाता हुआ (सुपा १७४, ८५७)।

अद्दीण वि [अदीन] क्षोभ को अप्राप्त, अतुच्छ, निर्भीक (पण्ह २, १)।

अद्दीण देखो अदीण (ओघ ५३७)।

अद्दुदुमाअ वि [दे] पूर्ण, भरा हुआ (षड्)।

अद्देस वि [अदृश्य] देखने के अशक्य (स १९०)।

अद्देसीकारिणी स्त्री [अदृश्यीकारिणी] अदृश्य बनानेवाली विद्या (सुपा ४७४)।

अद्देस्सीकरण वि [अदृश्यीकरण] १ अदृश्य करना। २ अदृश्य करनेवाली विद्या, 'किंपुण विज्जाणिज्झा अद्देस्सीकरणसंगओ वावि' (सुपा ४५५)।

अद्दोहि वि [अद्रोहिन्] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित (धर्म ३)।

अद्ध पुन [अर्ध] १ आधा (कुमा)। २ खण्ड, अंश (पि ४०२)। °करिस पुं [°कर्ष] परिमाण-विशेष, पल का आठवाँ भाग (अणु)। °कुडव, °कुलव पुं [°कुडव, °कुलव] एक प्रकार का धान्य का परिमाण (राय)। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] एक अहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करनेवाला नक्षत्र (चंद १०)। °खल्ला स्त्री [°खल्वा] एक प्रकार का जूता (बृह ३)। °घडय पुं [°घटक] आधा परिमाणवाला घड़ा, छोटा घड़ा (उवा)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ आधा चन्द्र (गा ५७१)। २ गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना (उप ५२८ टी)। ३ न एक हथियार (उप पृ ३६५)। ४ अर्ध चन्द्र के आकारवाले सोपान (णाया १, १)। ५ एक तरह का बाण, 'एसो तुह निसियसिरं छिंदामि अद्धचंदेण' (सुर ८, ३८)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] गति-विशेष (ठा ७)। °चक्कि पुं [°चक्रिन्] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव (सम्म १ १२)। °च्छट्ठ, °छट्ठ वि [°षष्ठ] साढ़े पाँच (पि ४५०; सम १००)। °ट्ठम वि [°अष्टम] साढ़े सात (ठा ८)। °णाराय न [°नाराच] चौथा संहनन, शरीर के हाड़ों की रचना-विशेष (जीव १)। °णारीसर पुं [°नारीश्वर] शिव, महादेव (रणा)। °तइय वि [°तृतीय] ढाई (पउम ४८, ८५)। °तेरस वि [°त्रयोदश] साढ़े बारह (भग)। °तेवन्न वि [°त्रिपञ्चाश] साढ़े बावन (सम १०४)। °द्ध वि [°अर्ध] चौथा भाग, चौथा (वव ३)। °नवम वि [°नवम] साढ़े आठ (पि ४५०)। °नाराय देखो °णाराय (कम्म १, ३८)। °पंचम वि [°पञ्चम] साढ़े चार (सम १०२)। °पलिअंक वि [°पर्यङ्क] आसन-विशेष (ठा ५, १)। °पहर पुं [°प्रहर] ज्योतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °बब्बर पुं [°बर्बर] देश-विशेष (पउम २७, ५)। °मागहा, °ही स्त्री [°मागधी] प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिसमें मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है, 'पोराण-मद्धमागहभासानियय हवइ सुत्त' (हे ४, २८७; पि १६; सम ६०; पउम २,३४)। °मास पुं [°मास] पक्ष, पनरह दिन (दे १०)। °मासिय वि [°मासिक] पाक्षिक, पक्ष-सम्बन्धी (महा)। °यंद देखो °चंद (उप ७२८ टी)। °रज्जिय वि [°राज्यिक] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक (विपा १, ६)। °रत्त पुं [°रात्र] मध्य रात्रि का समय, निशीथ (गा २३१)। °वेयाली स्त्री [°वेताली] विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °संकासिया स्त्री [°सांकाश्यिका] एक राज-कन्या का नाम (आव ४)। °सम न [°सम] एक वृत्त, छन्द-विशेष (ठा ७)। °हार पुं [°हार] १ नवसरा हार (राय, औप)। २ इस नाम का एक द्वीप। ३ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °हारभद्द [°हारभद्र] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारमहाभद्द पुं [°हारमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °हारमहावर पुं [°हारमहावर] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °हारवर पुं [°हारवर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ उनका अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °हारवरभद्द पुं [°हारवरभद्र] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारवरमहावर पुं [°हारवरमहावर] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारोभास पुं [°हारावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °हारोभासभद्द पुं [°हारावभासभद्र] अर्धहारावभास नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारोभासमहाभद्द पुं [°हारावभासमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °हारोभासमहावर पुं [°हारावभासमहावर] अर्धहारावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारोभासवर पुं [°हारावभासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °ढ़य पुं [°ढ़क] एक प्रकार का परिमाण, आढक का आधा भाग (ठा ३, १)।

अद्ध पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (महा, गाया)।

अद्धंत पुं [दे] १ पर्यन्त, अन्त भाग (दे १, १८; से ६, ३२; पाअ), 'भरिजंतसिद्धपहद्धंतो (विक्र १०१)। २ पुंव कतिपय कईएक (से १३ ३२)।

अद्धक्खण न [दे] १ प्रतीक्षा करना, राह देखना (दे १, ३४)। २ परीक्षा करना (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ न [दे] १ संज्ञा करना, इशारा करना, सकेत करना (दे १ ३४)।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आंख वाला (महानि ३)।

अद्धज } स्त्री [दे अर्धजङ्घा] एक प्रकार
अद्धजंघी } का जूता, मोचक नामक जूता, जिसे गुजराती मे 'मोजडी' कहते हैं (दे १, ३३, २ ७, ६ १३६)।

अद्धद्धा स्त्री [दे अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग (सत्त ६ टी)।

अद्धपेडा स्त्री [अर्धपेटा] सन्दूक के अर्ध भाग के आकारवाली गृह-पंक्ति मे भिक्षाटन (उत्त ३०, १६)।

अद्धर पु [अध्वर] यज्ञ, याग (पात्र)।

अद्धर वि [दे] प्रच्छन्न, गुप्त, 'तम्हा एयम्म चिट्ठियमद्धरट्ठिओ चेव पिच्छामि, तओ राया नप्पिट्ठिलग्गो' (सम्मत १६१)।

अद्धविआर न [दे] १ मण्डन, भूषा, 'मा कुण अद्धविआरं' (दे १, ४३)। २ मण्डल, छोटा मडल (दे १, ४३)।

अद्धा स्त्री [दे अद्धा] १ काल समय, वक्त, (ठा २ १, नव ८२)। २ सकेत (भग ११ ११)। ३ लब्धि, शक्ति-विशेष (विसे)। ४ अ तत्त्वत वस्तुत। ५ साक्षात्, प्रत्यक्ष (पिंग)। ६ दिवस। ७ रात्रि (सत्त ६ टी)। °काल पु [°काल] सूर्य आदि की क्रिया (परि-भ्रमण) से व्यक्त होनेवाला समय, 'सूरकिरिया-विसिट्ठो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो। अद्धा-कालो भण्णइ' (विसे)। °छेय पु [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल (पच)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना (आचू ६)। °मीसय न [°मिश्रक] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा (ठा १०)। °मीसिया स्त्री [°मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पण्ण ११)। °समय पु [°समय] सर्व-सूक्ष्म काल (पण्ण ४)।

अद्धाण पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (णाया १, १४, सुर ३,२२७)। °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग (वव ४, वृह ३)।

अद्धाण पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता, 'हवइ सलाभ सरम्म अद्धाण' (सुर ८, १३)। °सीसय न [°शीर्षक] जहा पर सपूर्ण सार्थ के लोग आगे जाने के लिए एकत्र हो वह मार्ग-स्थान (वव ४)।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक, मुसाफिर (वृह १)।

अद्धासिय वि [अध्यासित] १ अधिष्ठित, आश्रित (सुर ७, २१४, उप २६८ टी)। २ आरूढ (स ६३०)।

अद्धि देखो **इड्ढि**,
'घरणा वहिरपरम्मा ते चिअ जीअति
माणुसे लोए।
ण सुणति खलवअणं, खलाण अद्धि न
पेच्छति' (गा ७०८)।

अद्धिइ स्त्री [अधृति] धीरज का अभाव, अधीरज (पउम ११८, ३६)।

अद्धुइअ वि [अर्धोदित] थोडा कहा हुआ (पि १५८)।

अद्धुग्घाड वि [अर्धोद्घाट] आधा खुला, 'अद्धोग्घाडा थणया' (पउम ३८, १०७)।

अद्धुट्ठ त्रि [अर्धचतुर्थ] साढे तीन (सम १०१, विसे ६६३)।

अद्धुत्त वि [अर्धोक्त] थोडा कहा हुआ (वव १०)।

अद्धुव वि [अध्रुव] १ चचल, अस्थिर, विनश्वर (स ७३६ पचा १६, पउम २६, ३०)। २ अनियत (आचा)।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] १ द्विधा-भूत, दो टुकडेवाला, खण्डित। २ क्रिवि आधा-आधा जैसे हो,
'अद्धेअद्धप्फुडिआ, अद्धेअद्धकडक्खअमिलावेटा।
पवअभुआहअनिसढा अद्धेअद्धसिहरा पडति
महिहरा ॥' (से ६, ६६)।

अद्धोरु } देखो **अड्ढोरुग** (दे ३, ४५, ओघ
अद्धोरुग } ६७६)।

अद्धोवमिय वि [अद्धौपम्य, अद्धौपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा काल (ठा २, ४, ८)।

अध अ [अधस्] नीचे (आचा, पि १६०)।

अध (शौ) अ [अथ] अब, बाद (कप्पू)।

अधइ (शौ) [अथ किम्] १ हाँ। २ और क्या। ३ जरूर, अवश्य (कप्पू)।

अध अ [अधम्] नीचे (पि ३४५)।

अधट्ठ त्रि [अधृष्ट] अ-धीठ (कुमा)।

अधण त्रि [अधन] निर्धन, गरीब,
'रमइ विहवी विसेसे, थिइमेत्त थोयवित्थरो
महइ।
मग्गइ सरीरमधणो, रोई जीए चिय कयत्थो ॥'
(गउड, मण)

अधणि त्रि [अधनिन्] धन-रहित, निर्धन (श्रा १८)।

अधण्ण वि [अधन्य] अकृतार्थ निन्द्य (पण्ह १,१)।

अधम देखो **अहम** (उत्त ६)।

अधमण्ण } वि [अधमर्ण] करजदार, देनदार
अधमन्न } (धमवि १४६, १३५)।

अधम्म पु [अधर्म] १ पाप-कार्य, निषिद्ध कर्म, अनीति, 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विह-रइ' (णाया १, १८)। २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरह को स्थिति करने मे सहायता पहुचाती है (सम २, नव ५)। ३ वि धर्म-रहित, पापी (विपा १, १)। °केउ पु [°केतु] पापिष्ठ (णाया १, १८)। °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी (विपा १, १)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] पाप का उपदेश देनेवाला (भग ३, ७)। °त्थिकाय पु [°ास्तिकाय] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो (अणु)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] पापी, पापिष्ठ (उप ७२८ टी)।

अधम्मिट्ठ वि [अधमिष्ट] १ धर्म को नही करनेवाला (भग १२, २)। २ महा-पापी, पापिष्ठ (णाया १, १८)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय (भग १२, २)।

अधम्मिट्ठ त्रि [अधर्मिष्ट] पापियो का प्यारा (भग १२, २)।

अधम्मिय देखो **अहम्मिय** (ठा ४, १)।

अधर देखो **अहर** (उवा, सुपा १३८)।

अधवा (शौ) देखो **अहवा** (कप्पू)।

अधा स्त्री [अधस्] अधो-दिशा, नीचली दिशा (ठा ६)।

अधि देखो **अहि** = अधि।

अधिइ देखो अद्धिइ (सुपा २५६)।
अधिकरण देखो अहिगरण (पण्ह १, २)।
अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादा (बृह १)।
अधिगम देखो अहिगम (धर्म २, विसे २२)।
अधिगरण देखो अहिगरण (निचू १)।
अधिगरणिया देखो अहिगरणिया (पएण २१)।
अधिगार देखो अहिगार (सुअनि ५८)।
अधिण्ण } (अप) वि [अधीन] आयत्त,
अधिन्न } परवश (पि ६१, हे ४, ४२७)।
अधिमासग पु [अधिमासक] अधिक मास (निचू २०)।
अधिरोविअ वि [अधिरोपित] आरोपित, 'मणाधिरोविओ सो' (धर्मवि १३७)।
अधीगार देखो अहिगार (सुअनि १८०)।
अधीय देखो अहीय (उत्त २० २२)।
अधीस वि [अधीश] नायक, अधिपति (कुम्मा २३)।
अधुव देखो अद्धुव (णाया १, १, पउम ६५, ४६)।
अधो देखो अहो = अधस् (पि ३४०)।
अनंदि स्त्री [अनन्दि] अमङ्गल, अकुशल, 'त मोएउ अनंदि' (अजि ३७)।
अनन्न देखो अणण्ण (कुमा)।
अनय देखो अणय (सुपा ३७१)।
अनल देखो अणल (हे १, २२८, कुमा)।
अनागय देखो अणागय (भग)।
अनागार देखो अणागार (भग)।
अनाय देखो अणाय (सुपा ४७०, पि ३८०)।
अनालफ (चूप) वि [अनारम्भ] पाप-रहित (कुमा)।
अनालफ (चूप) वि [अनालम्भ] अहिंसक, दयालु (कुमा)।
अनिगिण देखो अणगिण (सम १७)।
अनिदाया } देखो अणिदा (पएण ३४)।
अनिदाया }
अनिमित्ती स्त्री [अनिमित्ती] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।
अनियमिय वि [अनियमित] १ अव्यवस्थित। २ असयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करनेवाला, 'गओ य नरय अनियमियप्पा' (पउम ११४, २६)।
अनियट्टि देखो अणियट्टि (सम २६, कम्म २, सत्त ७१ टी)।
अनियय देखो अणियय (ओघ २)।
अनिरुद्ध देखो अणिरुद्ध (अंत १४)।
अनिल देखो अणिल (हे १, २२८, कुमा)।
अनिसट्ठ देखो अणिसट्ठ (ठा ३, ४)।
अनिहारिम } देखो अणाहारिम (भग ठा
अनीहारिम } २, ४)।
अनु (अप) देखो अण्णहा (कुमा)।
अनुकूल देखो अणुकूल (सुपा ४७४)।
अनुग्गह देखो अणुग्गह (अभि ८१)।
अनुचिट्ठिय देखो अणुट्ठिय (स १५)।
अनुज्जुय देखो अणुज्जुय (पि ५७)।
अनुहव देखो अणुहव = अनु + भू। वकृ अनुहवंत (रंभा)।
अन्न देखो अण्ण (सुपा ३६०, प्रासू ४३, पण्ह २, १, ठा ३, २, ५, १, आ ६)।
अन्नइय देखो अण्णइय (भवि)।
अन्नओ देखो अण्णओ। °हुत्त क्रिवि [°मुख] दूसरी तरफ (सुर ३, १३६)।
अन्नत्तो देखो अण्णत्तो (कुमा)।
अन्नत्थ } देखो अण्णत्थ (आचा, स १५०,
अन्नत्थ } कुमा)।
अन्नदो देखो अण्णत्तो (कुमा)।
अन्नमन्न देखो अण्णमण्ण (णाया १, १)।
अन्नन्न देखो अण्णण्ण (महा, कुमा)।
अन्नय पु [अन्वय] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूम की सत्ता, नियमित सम्बन्ध (उप ४१३ स ६५१)।
अन्नयर देखो अण्णयर (सुपा ३७०)।
अन्नया देखो अण्णआ (महा)।
अन्नव देखो अण्णव (सुपा ८५, ५२६)।
अन्नह देखो अण्णह (सुर १, १५६, कुमा)।
अन्नहा देखो अण्णहा (पउम १००, २४, महा, सुर १, ११३, प्रासू ७)।
अन्नहि देखो अण्णहि (कुमा)।
अन्ना स्त्री [दे] माता, जननी (दस ७, १६, १६)।
अन्नाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] आक्रान्त, 'तुम एंआउसो कासवा। मम तवेण अन्नाइट्ठे समाणे अतो छएह मासाए पित्तजरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव काल करेस्ससि' (भग १५)।
अन्नाण देखो अण्णाण = अज्ञान (कुमा, सुर १, १५, महा, उवर ६५, कम्म ४, ६, ११)।
अन्नाणि देखो अण्णाणि (उव, सुपा ५८८)।
अन्नाणिअ देखो अण्णाणिअ (पउम ४, २७)।
अन्नाय देखो पहला और दूसरा अण्णाय (सुर ६, २, सुपा २५६, सुर २ ६, २०२, सम्म ६६, सुपा २३३, सुर २, १६५, सुपा, ३०८), 'नाएण ज न सिद्ध को खलु सहलो तयत्थमन्नाओ ?' (उप ७१८ टी)।
अन्नारिस देखो अण्णारिस (हे १, १४२, महा)।
अन्नाहुत्त वि [दे] पराङ्मुख (सुख २,१७)।
अन्नि वि [अन्यदीय] परकीय, 'अन्न वा अन्नि वा' (सूअ २, २, ६)।
अन्निज्जमाण देखो अण्णिज्जमाण (णाया १, १६)।
अन्निय देखो अण्णिय।
अन्नियसुय पु [अन्निकासुत] एक विख्यात जैन मुनि (उव)।
अन्निया देखो अण्णिया (सथा ५६)।
अन्नुत्ति स्त्री [अन्योक्ति] साहित्य-प्रसिद्ध एक अलङ्कार (मोह ३७, सम्मत्त १४५)।
अन्नुन्न } देखो अण्णुण्ण (हे १, १५६,
अन्नुमन्न } कप्प)।
अन्नूण वि [अन्यून] अ-हीन (धर्मवि १२६)।
अन्नेस देखो अण्णेस। वकृ अन्नेसमाण (उप ६ टी)।
अन्नेसण देखो अण्णेसण (सुर १०, २२८, सण)।
अन्नेसणा देखो अण्णेसणा (ठा ३, ४)।
अन्नेसय वि [अन्वेषक] गवेषक, खोज करनेवाला (स ५३५)।
अन्नेसि } देखो अण्णेसि (पि ५१६,
अन्नेसिय } आचा)।
अन्नोन्न देखो अण्णोण्ण (कुमा, महा)।
अप स्त्री ब. [अप्] पानी, जल (सुज्ज

१०)। °काय पु [°काय] पानी के जीव (द १३)।

अपइट्ठाण देखो अप्पइट्ठाण (आचा, ठा ४, ३)।

अपइट्ठिअ पु [अप्रतिष्ठित] १ नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६)। देखो अप्पइट्ठिअ।

अपइट्ठिय देखो अप्पइट्ठिय (ठा ४, १)।

अपएस वि [अप्रदेश] १ निरंश, अवयव-रहित (भग २०, ५)। २ पु खराब स्थान (पचा ७)।

अपंग पु [अपाङ्ग] १ नेत्र का प्रान्त भाग। २ तिलक। ३ वि हीन अंग वाला (नाट)।

अपंडिअ वि [दे] अ-नष्ट, विद्यमान (षड्)।

अपंडिअ [अपण्डित] १ सद्बुद्धि-रहित (बृह १)। २ मूर्ख (अच्चु ४)।

अपकरिस पु [अपकर्ष] ह्रास (धर्मसं ८३७)।

अपगंड वि [अपगण्ड] १ निर्दोष। २ न फेन, पानी का फाग (सूअ १, ३)।

अपचय पु [अपचय] अपकर्ष, हीनता (उत्त १)।

अपच्च देखो अवच्च, 'अपच्चणिव्विसेसाणि सत्ताणि' (पि ३६७)।

अपच्चय पु [अप्रत्यय] अविश्वास (पण्ह १, २)।

अपच्चल वि [अप्रत्यल] १ असमर्थ। २ अयोग्य (नच्चू ११)।

अपच्छ वि [अपथ्य] १ अ-हितकर (पउम ८२, ७२)। २ न नहीं पचनेवाला भोजन, 'घेवेण अपच्छामिवणेण रोगुव्व वट्टेइ' (सुपा ४३८)।

अपच्छिम वि [अपश्चिम] अन्तिम (णंदि, पाअ, उप २६४ टी)।

अपज्जत्त } वि [अपर्याप्त] १ अपर्याप्ति,
अपज्जत्तग } असमर्थ (गउड)। २ पर्याप्ति (आहारादि ग्रहण करने की शक्ति) से रहित (ठा २, १ नव ४)। °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

अपज्जवसिय वि [अपर्यवसित] १ नाश-रहित (सम्म ६१)। २ अन्त-रहित (ठा १)।

अपडिच्छिर वि [दे] जड-बुद्धि, मूर्ख (दे १, ४३)।

अपडिण्ण } वि [अप्रतिज्ञ] १ प्रतिज्ञा-
अपडिन्न } रहित, निश्चय-रहित (आचा)। २ राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित (सूअ १, ३, ३)। ३ फल की इच्छा न रखकर अनुष्ठान करनेवाला, निष्काम, 'गन्धेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीण अपडिन्नमाहु' (सूअ १,६)।

अपडिपोग्गल वि [अप्रतिपुद्‌गल] दरिद्र, निर्धन (निचू ५)।

अपडिबद्ध वि [अप्रतिबद्ध] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक, 'अपडिबद्धो अनलो व्व' (पण्ह २ ५)। २ आसक्ति-रहित (पव १०४)।

अपडिवाइ देखो अप्पडिवाइ (ठा ६, ओघ ५३०, णंदि)।

अपडिसलीण वि [अप्रतिसलीन] असंयत, इन्द्रिय आदि जिसके काबू में न हों (ठा ८, २)।

अपडिहट्टु अ [अप्रतिहृत्य] न दे कर (कस, बृह ३)।

अपडिहय देखो अप्पडिहय (णाया १, १६)।

अपडीकार वि [अप्रतीकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (पण्ह १ १)।

अपडुप्पण्ण } वि [अप्रत्युत्पन्न] १ अ-वर्त-
अपडुप्पन्न } मान, अ-विद्यमान (पि १६३)। २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल (वव ६)।

अपणट्ठ वि [अप्रनष्ट] नाश को अप्राप्त (सुर ४, २४०)।

अपत्त देखो अप्पत्त (बृह १, ठा ५, २, सूअ १, १४)।

अपत्तिअत वकृ [अप्रतियत्] विश्वास नहीं करता हुआ (गा ६७८, पि ४८७)।

अपत्तिय देखो अप्पत्तिय (भग १६, ३, पचा ७)।

अपत्थ देखो अपच्छ (उत्त ७, पचा ७)।

अपभासिय देखो अवभासिय = अपभाषित (वव १)।

अपमत्त देखो अप्पमत्त (आचा)।

अपमाण न [अप्रमाण] १ झूठा, असत्य (श्रा १२)। २ वि ज्यादा, अधिक (उत्त २४)।

अपमाय वि [अप्रमाद] १ प्रमाद-रहित। २ पु प्रमाद का अभाव, सावधानी (पण्ह २, १)।

अपय वि [अपद] १ पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरह पैर रहित वस्तु (णाया १, ८)। २ पुं मुक्तात्मा, 'अपयस्स पयं नत्थि' (आचा)। ३ सूत्र का एक दोष (बृह १, विसे)।

अपय स्त्री [अप्रज] सन्तानरहित (बृह १)।

अपर देखो अवर (निचू २०)। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य (विसे २४६१)।

अपरच्छ वि [अपराक्ष] असमक्ष, परोक्ष (पण्ह १, ३)।

अपरद्ध देखो अवरज्झ (कप्प)।

अपरंतिया स्त्री [अपरान्तिका] छन्द-विशेष (अजि ३४)।

अपराइय वि [अपराजित] १ अ-पराभूत (पण्ह १, ४)। २ पु सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ३ भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ४ उत्तम-पङ्क्ति के देवों की एक जाति (सम५६)। ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ६ एक महाग्रह (ठा २,३)। ७ न अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास (सम ५६)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार (ठा ४,२)।

अपराइया स्त्री [अपराजिता] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ आठवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ अंगारक ग्रह की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १)। ४ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ५ ओषधि-विशेष (ती ७)। ६ अञ्जनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी (ती २)।

अपराजिय देखो अपराइय (कप्प, सम ५६ १०२, ठा २, ३)।

अपराजिया देखो अवराइया (ठा २, ३)।

अपराजिया स्त्री [अपराजिता] १ भगवान मल्लिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। २ पक्ष की दशवीं रात (सुज्ज १०, १४)।

अपरिग्गह वि [अपरिग्रह] १ धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित (पण्ह २, ३)। २

ममत्व-रहित, निर्मम, 'अपरिग्गहा अणारभा भिक्खू ताणं परिव्वए' (सूत्र १, १, ४)।

अपरिग्गहा स्त्री [अपरिग्रहा] वेश्या (वव २)।

अपरिग्गहिआ स्त्री [अपरिगृहीता] १ वेश्या, कन्या वगैरह अविवाहिता स्त्री (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा (धर्म २)। ३ घर-दासी। ४ पनहारी। ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या (श्राद्ध ५)।

अपरिच्छण्ण } वि [अपरिच्छन्न] १ नहीं अपरिच्छन्न } ढका हुआ, अनावृत (वव ३)। २ परिवार रहित (वव १)।

अपरिणय वि [अपरिणत] १ रूपान्तर को अप्राप्त (ठा २, १)। २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष। (आचा)।

अपरित्त वि [अपरीत] अपरिमित, अनन्त (पण्ण १८)।

अपरिसेस वि [अपरिशेष] सब, सकल, निःशेष (पण्ह १, २, पउम ३, १४०)।

अपरिहारिय वि [अपरिहारिक] १ दोषों का परिहार नहीं करनेवाला। (आचा)। २ पु जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (निचू २)।

अपवग्ग पु [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (सुर ८, १०६, सत ११)।

अपविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित (से ७, ११)। २ न गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन करके तुरन्त ही भाग जाना (गुभा २३)।

अपह वि [अप्रभ] निस्तेज (दे १, १६४)।

अपहत्थ देखो अवहत्थ (भवि)।

अपहारि वि [अपहारिन्] अपहरण करने-वाला (स २१७)।

अपहिय वि [अपहृत] छीना हुआ (पउम ७६, ५)।

अपहु वि [अप्रभु] १ असमर्थ। २ नाथ-रहित, अनाथ (पउम १०१, ३५)।

अपाइय वि [अपात्रित] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित, 'नो कप्पइ निग्गंथीए अपाइयाए होत्तए' (कस)।

अपाउड वि [अपावृत] नहीं ढका हुआ, वस्त्र-रहित, नग्न (ठा ५, १)।

अपादाण न [अपादान] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है (विसे २११७)।

अपाण न [अपान] १ पान का अभाव। (उत्त ८४५)। २ पानी जैसा ठंढा पेय वस्तु-विशेष। (भग १५)। ३ पुन अपान वायु। ४ गुदा (सुपा ६२०)। ५ वि जल-वर्जित, निर्जल (उपवास), 'छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं' (ज २)।

अपायावगम पु [अपायापगम] जिनदेव का एक अतिशय (सवाय २)।

अपार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (सुपा ४५०)।

अपारमग्ग पु [दे] विश्राम, विश्रान्ति (दे १, ४३)।

अपाव वि [अपाप] १ पाप-रहित (सूत्र १, १, ३)। २ न पुण्य (उत्त)।

अपावा स्त्री [अपापा] नगरी-विशेष जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, वह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और विहार से आठ माईल पर है (राज)।

अपिट्ठ वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (षड्)।

अपिय वि [अप्रिय] अनिष्ट (जीव १)।

अपिह अ [अपृथक्] अ-भिन्न (कुमा)।

अपुणबंधग } वि [अपुनर्बन्धक] फिर से अपुणबंधय } उत्कृष्ट कर्मबन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करने वाला (पचा ३, उप २५३, ६५१)।

अपुणब्भव पु [अपुनर्भव] १ फिर से नहीं होना। २ वि जिसमें फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद (पण्ह २, ४)।

अपुणब्भाव वि [अपुनर्भाव] फिर से नहीं होनेवाला (पच १)।

अपुणभव देखो अपुणब्भव (कुमा)।

अपुणरागम पु [अपुनरागम] १ मुक्त आत्मा। २ मुक्ति, मोक्ष (दसचू १)।

अपुणरावत्तग } पु [अपुनरावर्त्तक] १ अपुणरावत्तय } फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त आत्मा। २ मोक्ष, मुक्ति (पि ३४३, औप, भग १ १)।

अपुणरावत्ति पु [अपुनरावर्तिन्] मुक्त आत्मा (पि ३४३)।

अपुणराविन्ति पु [अपुनरावृत्ति] मोक्ष, मुक्ति (पडि)।

अपुणरुत्त वि [अपुनरुक्त] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित, 'अपुणरुत्तेहिं महा-वित्तेहिं संथुणइ' (राय)।

अपुणागम देखो अपुणरागम (पि ३४३)।

अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से नहीं आना। २ फिर से अनुत्पत्ति, 'अपुणा-गमणाय व त तिमिर उम्मूलिअ रविणा' (गउड)।

अपुण्ण न [अपुण्य] १ पाप। २ वि पुण्य-रहित, कम-नसीब, हत-भाग्य (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [अपूर्ण] अधूरा, अपरिपूर्ण (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [दे] आक्रान्त (षड्)।

अपुत्त } वि [अपुत्र, °क] १ पुत्र-रहित अपुत्तिय } (सुपा ४१२, ३१४)। २ स्वजन-रहित, निर्मम, निःस्पृह (आचा)।

अपुन्न देखो अपुण्ण (णाया १, १३)।

अपुम न [अपुंस्] नपुंसक (ओघ २२३)।

अपुल्ल देखो अप्पुल्ल (चंड)।

अपुव्व वि [अपूर्व] १ नूतन नवीन। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक। ३ असाधारण, अद्वितीय (हे ४, २७०, उत्त ६ टी)। °करण न [°करण] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम (आचा)। २ आठवां गुण-स्थानक (पव २२४, कम्म २, ६)।

अपूय } पु [अपूप] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ, अपूव } पूडी (ओप, पण्ण ३६, दे १, १३४, ६, ८१)।

अपेक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। हेकृ अपेक्खिदुं (शौ) (नाट)।

अपेच्छ वि [अप्रेक्ष्य] १ देखने के अशक्य। २ देखने के अयोग्य (उत्त)।

अपेय वि [अपेय] पीने के अयोग्य, मद्य आदि (कुमा)।

अपेय वि [अपेत] गया हुआ, नष्ट, 'अपय-चक्खु' (बृह १)।

अपेहय वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (आव ४)।

अपोरिसिय } वि [अपौरुषिक] पुरुष से
अपोरिसीय } ज्यादा परिमाण वाला, अगाध (णाया १, ५, १४)।

अपोरिसीय वि [अपौरुषेय] पुरुष से नहीं बनाया हुआ, नित्य (ठा १०)।

अपोह सक [अप + ऊह्] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना। अपोहए (विसे ५६१)।

अपोह पु [अपोह] १ निश्चय-ज्ञान (विसे ३९६)। २ पृथग्भाव, भिन्नता (ओघ ३)।

अप्प देखो अत्त = आप्त, 'अप्पत्तभनिमित्त पटमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि' (णाया १, १)।

अप्प वि [अल्प] १ थोड़ा स्तोक (सुपा २८०, स्वप्न ६७)। २ अभाव (जीव ३, भग १४, १)।

अप्प पु [आत्मन्] १ आत्मा, जीव, चेतन (णाया १, १)। २ निज, स्व, 'अप्पणा अप्पणो कम्मक्खय करित्तए' (णाया १, ५)। ३ देह शरीर (उत्त ३)। ४ स्वभाव, स्वरूप (आचा)। °घाइ वि [°घातिन] आत्म-हत्या करनेवाला (उप ३५७ टी)। °छंद वि [°च्छन्द] स्वैरी, स्वच्छन्दी (उप ८३३ टी)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ आत्मज्ञ (हे २, ८३)। २ स्वाधीन (निचू १)। °ज्जोइ पु [°ज्योतिस्] ज्ञानस्वरूप 'किंजोइरय पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति णिद्दिट्ठो' (विसे)। °ण्णु वि [°ज्ञ] आत्म-ज्ञानी (षड्)। °वस वि [°वश] स्वतन्त्र, स्वाधीन (पाअ, पउम ३७, २२)। °वह पु [°वध] आत्म-हत्या, अपघात (सुर २, १९६, ५, २३७)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं माननेवाला (णदि)।

अप्प पु [दे] पिता, बाप (दे १, ६)।

अप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेट करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पअइ (नाट)। सकृ अप्पिअ (सुपा २८०)। कृ अप्पेयव्व (सुपा २६५, ५१६)।

अप्पआस देखो अप्पगास (नाट)।

अप्पआस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। अप्पआसइ (षड्)।

अप्पइट्ठाण पुन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का बीचला आवास (सम २ ठा ५, ३)।

अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] १ अप्रतिबद्ध। २ अशरीरी, शरीर-रहित (आचा २, १६ १२)। देखो अपइट्ठिअ।

अप्पउलिय वि [अपक्वौषधि] नहीं पकी हुई फल फलहरी (स ५०)।

अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-गमक, अ-निश्चायक (हेतु) (धर्मसं १२२३)।

अप्पभरि वि [आत्मम्भरि] अवेलपेट्ठ, स्वार्थी (उप ५५०)।

अप्पकंप वि [अप्रकम्प] निश्चल, स्थिर (ठा १०)।

अप्पकेर वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (प्रामा)।

अप्पक्क वि [अपक्व] नहीं पका हुआ, कच्चा (सुपा ४१३)।

अप्पग देखो अप्प (आव ४, आचा)।

अप्पगास पु [अप्रकाश] प्रकाश का अभाव, अन्धकार (निचू १)।

अप्पगुत्ता स्त्री [दे] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष (दे १, २९)।

अप्पजाणुअ वि [आत्मज्ञ] आत्मा का जानकार (प्राकृ १८)।

अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] अज्ञ, मूर्ख (प्राकृ १८)।

अप्पज्झ वि [दे] आत्म-वश, स्वाधीन (दे १, १४)।

अप्पडिआर वि [अप्रतिकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (मा ४३)।

अप्पडिकंटय वि [अप्रतिकण्टक] प्रतिपक्ष-शून्य प्रतिस्पर्धि-रहित (राय)।

अप्पडिकम्म वि [अप्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, 'सुण्णागारे व अप्पडिकम्मे' (पण्ह २, ५)।

अप्पडिक्कंत वि [अप्रतिक्रान्त] दोष से अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह (औप)।

अप्पडिकुट्ठ वि [अप्रतिक्रुष्ट] अनिवारित, नहीं रोका हुआ (ठा २, ४)।

अप्पडिचक्क वि [अप्रतिचक्र] अतुल्य, असमान (णदि)।

अप्पडिण्ण } देखो अपडिण्ण (आचा)।
अप्पडिन्न }

अप्पडिबंध पु [अप्रतिबन्ध] १ प्रतिबन्ध का अभाव। २ वि प्रतिबन्ध-रहित (सुपा ६०८)।

अप्पडिबद्ध देखो अपडिबद्ध (उत्त २९, पि २१८)।

अप्पडिबुद्ध वि [अप्रतिबुद्ध] १ अ-जागृत। २ कोमल, सुकुमार (अभि १९१)।

अप्पडिम वि [अप्रतिम] असाधारण, अनुपम (उप ७६८ टी, सुपा ३५)।

अप्पडिरूव वि [अप्रतिरूप] ऊपर देखो (उप ७२८ टी)।

अप्पडिलद्ध वि [अप्रतिलब्ध] अप्राप्त (णाया १, १)।

अप्पडिलेस्स वि [अप्रतिलेश्य] असाधारण मनो-बलवाला (औप)।

अप्पडिलेहण न [अप्रतिलेखन] अपर्यवेक्षण, अनवलोकन, नहीं देखना (आव ६)।

अप्पडिलेहणा स्त्री [अप्रतिलेखना] ऊपर देखो (कप्प)।

अप्पडिलेहिय वि [अप्रतिलेखित] अ-पर्यवेक्षित, अनवलोकित, नहीं देखा हुआ (उवा)।

अप्पडिलोम वि [अप्रतिलोम] अनुकूल (भग २५, ७, अभि २४)।

अप्पडिवरिय पु [अप्रतिवृत] प्रदोष काल (बृह १)।

अप्पडिवाइ वि [अप्रतिपातिन्] १ जिसका नाश न हो ऐसा, नित्य (सुर १४, २९)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को विना उत्पन्न किये नहीं जाता (विसे)।

अप्पडिहत्थ वि [अप्रतिहस्त] असमान, अद्वितीय (से १३, १२)।

अप्पडिहय वि [अप्रतिहत] १ किसी से नहीं रुका हुआ (पण्ह २, ५)। २ अखण्डित, अबाधित, 'अप्पडिहयसासणे' (णाया १,१६)। ३ विसंवाद-रहित 'अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे' (भग १, १)।

अप्पडीबद्ध देखो अपडिबद्ध, 'निम्ममनिरहंकारा निअयसरीरेवि अप्पडीबद्धा' (सुपा ६०)।

अप्पड्ढिय वि [अल्पर्द्धिक] थोडी ऋद्धि-वाला, अल्प वैभववाला (सुपा ४३०)।

अप्पण न [अर्पण] १ भेट, उपहार, दान (श्रा २७)। २ प्रधान रूप से प्रतिपादन (विसे १८४३)।

अप्पण देखो अप्प = आत्मन् (आचा, उत्त १, महा, हे ४, ४२२)।

अप्पण वि [आत्मीय] स्वकीय, निजका, 'नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि होंति सुद्धाण' (सट्ठि १०५)।

अप्पणय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (पउम ५०,१६, सुपा २७६ हे २,१५३)।

अप्पणा अ [स्वयम्] स्वय, आप, निज, खुद (पड्)।

अप्पणिज्ज } वि [आत्मीय] स्वकीय,
अप्पणिज्जिय } स्वीय (ठा १, आवम)।

अप्पणो अ [स्वयम्] आप, खुद, निज, 'विअसंति अप्पणो चेव कमलसरा' (हे २, २०६)।

अप्पण्ण देखो अक्कम = आ + क्रम्। अप्पण्णइ (प्राकृ ७३)।

अप्पण्णुअ देखो अप्पजाणुअ = आत्मज्ञ, अल्पज्ञ (प्राकृ १८)।

अप्पतक्किय वि [अप्रतर्कित] अवितर्कित, असभावित (स ५३०)।

अप्पत्त पुन [अपात्र] १ अयोग्य, नालायक, कुपात्र, 'अण्णेवि हु अप्पत्ता पररिद्धिं नेय विसहंति' (सुर ३, ४५, गा १५७)। २ वि आधार-रहित, भाजन-शून्य (सुर १३, ४५)।

अप्पत्त वि [अपत्र] १ पत्ता मे रहित (वृक्ष) (सुर ३, ४५)। २ पाख मे रहित (पक्षी) (सूअ १, १४)।

अप्पत्त वि [अप्राप्त] अलब्ध, अनवाप्त (सुर १३,४५, ओघ ८६)। °कारि वि [°कारिन्] वस्तु का विना स्पर्श किये ही (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करनेवाला, 'अप्पत्तकारि णयणं' (विसे)।

अप्पत्ति स्त्री [अप्राप्ति] नही पाना (सुर ४, २१३)।

अप्पत्तिय पुन [अप्रत्यय] अविश्वास (स ६६७, सुपा ५१२)।

अप्पत्तिय न [अप्रीति] १ अप्रीति, प्रेम का अभाव (ठा ४, ३)। २ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, १, २)। ३ मानसिक पीडा (आचा)। ४ अपकार (निचू १)।

अप्पत्तिअ वि [अपात्रिक] पात्र-रहित, आधार-वर्जित (भग १६, ३)।

अप्पत्तियण न [अप्रत्ययन] अविश्वास, अश्रद्धा (उप ३१२)।

अप्पत्थ वि [अप्रार्थ्य] १ प्रार्थना करने के अयोग्य। २ नही चाहने लायक (सुपा ३३६)।

अप्पत्थण न [अप्रार्थन] १ अयाञ्चा। २ अनिच्छा, अचाह (उत्त ३२)।

अप्पत्थिय वि [अप्रार्थित] १ अयाचित। २ अनभिलषित, अवाछित (ज ३)। °पत्थय, °पत्थिय वि [°प्रार्थक, °र्थिक] मरणार्थी, मौत को चाहनेवाला, 'कीस ण एस अप्पत्थिय-पत्थए दुरतपतलक्खणे' (भग ३, २, णाया १, ८, पि ७१)।

अप्पत्थुय वि [अप्रस्तुत] प्रसग के अनुपयुक्त, विषयान्तर (सुपा १०६)।

अप्पदुट्ठ वि [अप्रद्विष्ट] जिसपर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर (ओघ ७४४)।

अप्पदुस्समाण वकृ [अप्रद्विष्यत्] द्वेष नही करता हुआ (अत १२)।

अप्पप्प वि [अप्राप्य] प्राप्त करने के अशक्य (विसे २८८७)।

अप्पभाय न [अप्रभात] १ बनी सवेर। २ वि प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित, 'अज्ज पुण अप्पभाए गयणे' (सुर ११, ११०)।

अप्पभु वि [अप्रभु] १ असमर्थ (भग)। २ पु मालिक से भिन्न, नौकर वगैरह (धर्म ३)।

अप्पमज्जिय वि [अप्रमार्जित] साफ नही किया हुआ (उवा)।

अप्पमत्त वि [अप्रमत्त] प्रमाद-रहित, साव-धान, उपयोगवाला (पण्ह २,५, हे १,२३१, अभि १८५)। °संजय पुंस्त्री [°संयत] १ प्रमाद-रहित मुनि। २ न सातवा गुण-स्थानक (भग ३, ३)।

अप्पमाण देखो अपमाण (बृह ३, पण्ह २,३), 'अइक्कमित्ता जिणरायआणं, तवंति तिव्वं तवमप्पमाणं। पढंति नाणं तह दिंति दाणं, सव्वंपि तेसिं कयमप्पमाणं' (सत्त २०)।

अप्पमाय पु [अप्रमाद] प्रमाद का अभाव (निचू १)।

अप्पमेअ वि [अप्रमेय] १ जिसका माप न हो सके, अनन्त (पउम ७५, २३)। २ जिसका ज्ञान न हो सके (धर्म १)। ३ प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह (पण्ह १, ४)।

अप्पय देखो अप्प (उव, पि ४०१)।

अप्परिचत्त वि [अपरित्यक्त] नही छोडा हुआ, अपरिमुक्त (सुपा ११०)।

अप्परिवडिय वि [अपरिपतित] अनष्ट, विद्यमान (श्रा ६)।

अप्पलहुअ वि [अप्रलघुक] महान्, बडा (से १, १)।

अप्पलीण वि [अप्रलीन] असबद्ध सङ्ग-वर्जित (सूअ १ १, ४)।

अप्पलीयमाण वकृ [अप्रलीयमान] आसक्ति नही करता हुआ (आचा)।

अप्पवित्त वि [अप्रवृत्त] प्रवृत्ति-रहित (पंचा १४)।

अप्पवित्ति स्त्री [अप्रवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव (धर्म १)।

अप्पसत्त वि [अप्रशान्त] अशान्त, कुपित (पंचा २)।

अप्पससणिज्ज वि [अप्रशंसनीय] प्रशसा के अयोग्य (तदु)।

अप्पसज्झ वि [अप्रसह्य] १ सहने के अश-क्य। २ सहन करने के अयोग्य (वव ७)।

अप्पसण्ण वि [अप्रसन्न] उदासीन (नाट)।

अप्पसत्थ वि [अप्रशस्त] अचारु, असुन्दर, खराब (ठा ३, ३, भग, श्रा ४)।

अप्पसत्तिय वि [अल्पसात्त्विक] अल्प सत्त्व वाला, 'मुसमत्थाविसमत्था कीरति अप्पसत्तिया पुरिसा' (सूअ १, ४, १)।

अप्पसारिय वि [अप्रसारक] निर्जन, विजन (स्थान) (उर १७०)।

अप्पहवंत वकृ [अप्रभवत्] समर्थ नही होता हुआ, नही पहुँच सकता हुआ (स ३०५)।

अप्पहिय वि [अप्रथित] १ अविस्तृत। २ अप्रसिद्ध (सुपा १२५)।

अप्पाअप्पि स्त्री [दे] उत्कण्ठा, औत्सुक्य (पिंग)।

अप्पाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न (सूअ २, ७)।

अप्पाउय वि [अल्पायुष्क] थोडा आयु-वाला (ठा ३, ३, पउम १४, ३०)।

अप्पाउरण वि [अप्रावरण] १ नग्न। २ न वस्त्र का अभाव। ३ वस्त्र नही पहनने का नियम (पचा ५, पव ४)।

अप्पाण देखो अप्प = आत्मन् (पण्ह १, २, ठा २, २, प्राप्र, हे ३, ५६)। °रक्खि वि [°रक्षिन] आत्मा की रक्षा करनेवाला (उत्त ४)।

अप्पाबहु } न [अल्पबहुत्व] न्यूनाधिकता,
अप्पाबहुय } कम-वेशीपन (नव ३२, ठा ८, २)।

अप्पावय वि [अप्रावृत] १ वस्त्र-रहित, नग्न (पण्ह २, १)। २ खुला हुआ, बन्द नहीं किया हुआ (सूअ १, ५, १)।

अप्पाविय वि [अर्पित] दिया हुआ (सुपा ३३१)।

अप्पाह सक [स + दिश्] सदेश देना, खबर पहुँचाना। अप्पाहइ (षड्, हे ४, १८०)। अप्पाहेइ (गा ६३२)। सक्र अप्पाहट्टु, अप्पाहिवि (पि ५७७, भवि)।

अप्पाह सक [आ + भाष्] सभाषण करना। अप्पाहइ (प्राकृ ७०)।

अप्पाह सक [अधि + आपय्] पढाना, सीखाना। कर्म अप्पाहिज्जइ (से १० ७४)। वक्र अप्पाहेंत (से १०,७१)। हेक्र अप्पा-हेउ (पि २८६)।

अप्पाहणी स्त्री [दे] सदेश, समाचार (पिंड ४३०)।

अप्पाहण्ण न [अप्राधान्य] मुख्यता का अभाव, गोणता (पचा १, भास ११)।

अप्पाहिय वि [सदिष्ट] सदेश दिया हुआ (भवि)।

अप्पाहिय वि [अध्यापित] १ पाठित, शिक्षित (से ११, ३८, १४, ६१)। २ न सीख, उपदेश, 'अप्पाहियमरण' (उप ५६२ टी)।

अप्पिड्डि विड्डय [अल्पर्द्धिक] अल्प सपत्ति वाला (भग, पउम २, ७४)।

अप्पिण सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेट करना, देना, 'अहीगेवि वारगेण अप्पिणइ' (आक)। अप्पिणामि (पि ५५७)। अप्पि-णति (विसे ७ टी)।

अप्पिणण न [अर्पण] दान, भेट (उप १७४)।

अप्पिणिच्चिय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (भग)।

अप्पिय वि [अर्पित] १ दिया हुआ, भेंट दिया हुआ (निसा १, २, हे १, ६३)। २ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट, 'जह दवियमप्पिय त तहव अत्थित्ति पज्जवनयस्स' (सम्म ४२)। ३ पु पर्यायार्थिक नय, अप्पि-यमय विसेसो सामन्नमणप्पियनयस्स' (विसे)।

अप्पिय वि [अप्रिय] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर (भग १, ५, विपा १, १)। २ न मन का दुःख। ३ चित्त की शका, 'अदु णाईण व सुहीण वा अप्पिय दट्ठु एगता होति' (सूअ १, ४, १, १४)।

अप्पीइ स्त्री [अप्रीति] अप्रेम, अरुचि (सुपा २६४)।

अप्पीकय वि [आत्मीकृत] आत्मा से सबद्ध (विसे)।

अप्पुट्ठ वि [अस्पृष्ट] नही छूआ हुआ, असयुक्त, 'ज अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुति पचक्खा' (सम्म ८१)।

अप्पुट्ठ वि [अपृष्ट] नही पूछा हुआ (सुपा १११)।

अप्पुण्ण वि [दे आपूर्ण] पूर्ण (षड्)।

अप्पुल्ल वि [आत्मीय] आत्मा मे उत्पन्न (हे २, १६३, षड्, कुमा)।

अप्पुव्व देखो अपुव्व, 'अप्पुव्वो पडिवक्खो जीवियमवि चयइ मह कज्जे' (सुपा ३११)।

अप्पेयव्व देखो अप्प = अर्पय्।

अप्पोलि स्त्री [अप्रज्वलिता] कच्ची फल-फुलहरी (श्रा २१)।

अप्पोह वि [दे] पील-रहित, नक्कर (बृह ३)।

अप्फडिअ वि [आस्फालित] आस्फालित, आहत (विसे २६९२ टी)।

अप्फाल सक [आ + स्फालय्] १ आस्फो-टन करना, हाथ से आघात करना। २ ताडना, पीटना। ३ ताल ठोकना। अप्फालेइ (महा)। कवक्र अप्फालिज्जत (राय)। सक्र अप्फा-लिऊण (काप्र १९८, महा)।

अप्फालण न [आस्फालन] १ ताल ठोकना। २ ताडन, आघात (गा ५४८, से ५, २२, सुपा ८७)।

अप्फालिय वि [आस्फालित] १ हाथ से ताडित, आहत (पि ३११)। २ वृद्धि प्राप्त, उन्नत (राज)।

अप्फुंद सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना। २ जाना, 'सभाराओ व्व णह अप्फुंदइ मलिअरविअर कुसुमरओ' (से ६, ५७)।

अप्फुडिय देखो अफुडिय (ज २, दस ६)।

अप्फुण्ण वि [दे आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ (हे ४, २५८)।

अप्फुण्ण वि [अपूर्ण] अपूर्ण, अधूरा (गउड)।

अप्फुण्ण } वि [दे आपूर्ण] पूर्ण, भरा
अप्फुन्न } हुआ (दे १, २०, सुर १०, १७०, पाअ), 'महया पुत्तसोएण अप्फुन्ना समाणी' (निर १, १)।

अप्फुल्लय देखो अप्पुल्ल (गउड)।

अप्फोआ स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

अप्फोड सक [आ + स्फोटय्] १ आस्फा-लन करना, हाथ से ताल ठोकना। २ ताडन करना। वक्र अप्फोडत (णाया १, ८, सुर १३, १८२)।

अप्फोडण न [आस्फोटन] आस्फालन (गउड)।

अप्फोडिय } वि [आस्फोटित] १ आस्फा-
अप्फोलिय } लित, आहत। २ न आस्फा-लन आघात (पण्ह १, ३, कप्प)।

अप्फोया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राय ८० टी)।

अप्फोव वि [दे] वृक्षादि से व्याप्त, गहन, निविड (उत्त १८)।

अफल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (द्र १)।

अफाय पु [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।
अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित (भग)। २ खराब स्पर्श वाला (सूत्र १, ५, १)।
अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव (भग ५,६)। २ अग्राह्य (भिक्षा) (ठा ३,१)।
अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त (सुर ३ १०६, २१३, गा २६६, उप ७२८ टी)।
अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नही टूटा हुआ (कुमा)।
अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य (भग)।
अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित (कुमा)।
अफुस्स देखो अफुस (ठा ३, २)।
अबभ न [अब्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (पण्ह १ ४)। °चारि वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नही पालनेवाला (पि ४०५, ५१५)।
अबद्धिय पु [अबद्धिक] 'कर्मो का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा माननेवाला एक निह्नव—जैनाभास। २ न उसका मत (ठा ७, विसे)।
अबल वि [अबल] बल रहित, निर्बल (पउम ४८, ११७)।
अबला स्त्री [अबला] स्त्री, महिला, जनाना (पाअ)।
अबस पु [अबश] वडवानल (से १, १)।
अबहिट्ठ न [दे अवहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (सूत्र १, ६)।
अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ, धर्म-तत्पर (आचा)।
अबहिल्लेस) वि [अबहिलेश्य] जिसकी अबहिल्लेस्स) चित्त-वृत्ति बाहर न घूमती हो, सयत (भग, पण्ह २, ५)।
अबाधा देखो अबाहा (जीव ३)।
अबाह पु [अबाह] देश-विशेष (इक)।
अबाहा स्त्री [अबाधा] १ बाध का अभाव (ओघ ५२ भा, भग १४, ८)। २ व्यवधान, अन्तर (सम १६)। ३ बाध-रहित समय (भग)।
अबाहिर अ [अबहिस्] बाहर नही, भीतर (कुमा)।
अबाहिरय वि [अबाह्य] भीतरी, आभ्यन्तर (वव १)।
अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर (बृह १)।
अबीय देखो अबीय (कप्प)।
अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नही जान कर, 'केमिचि तक्काइ अबुज्झ भाव' (सूत्र १, १३, २०)।
अबुद्ध वि [अबुध] १ अजान, मूर्ख। (दस २)। २ अविवेकी (सूत्र °, ११)।
अबुद्धिय) वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख अबुद्धीय) (णाया १, १७, सूत्र १, २,१, पउम ८, ७४)।
अबुह वि [अबुध] १ अजान। (सूत्र १, २, १, जी १)। २ मूर्ख, बेवकूफ (पण्ह १, १)।
अबोह वि [अबोध] १ बोध-रहित, अजान। २ पु ज्ञान का अभाव (धर्म १)।
अबोहि पुस्त्री [अबोधि] १ ज्ञान का अभाव (सूत्र २,६)। २ जैन धर्म की अप्राप्ति। ३ बुद्धि-विशेष का अभाव (भग १, ६)। ४ मिथ्या-ज्ञान, 'अबोहिं परियाणामि बोहिं उवसप-ज्जामि' (आव ४)। ५ वि बोधि-रहित (भग)।
अबोहिय न [अबोधिक] ऊपर देखो (दस ६, सूत्र १, १ २)।
अब्° स्त्री व [अप्°] पानी, जल (श्रा २३)।
अब्बभ देखो अबभ (सुपा ३१०)।
अब्बभण्ण) न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का अब्बम्हण्ण) अभाव (नाट, प्रयो ७६)।
अब्बीय देखो अबीय (चेइय ७३८)।
अब्बुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति (दे १, ४२)।
अब्बुय पु [अर्बुद] पर्वत-विशेष, जो आज-कल 'आबू' नाम से प्रसिद्ध है (राज)।
अब्बुय न [अर्बुद] जमा हुआ शुक्र और शोणित (तदु ७)।
अब्भ न [अभ्र] १ आकाश। (राय, पाअ)। २ मेघ, बादल (ठा ४, ४, पाअ)।
अब्भ सक [आ + भिद्] भेदन करना। अब्भे (आचा १, १, २, ३)।
अब्भग सक [अभि + अञ्ज्] तेल आदि से मर्दन करना, मालिश करना। अब्भंगइ, अब्भगेइ (महा)। सक्र अब्भगिउ, अब्भं-गेत्ता, अब्भगित्ता (ठा ३, १, पि २३४)। हेक्र अब्भगेत्तए (कस)।
अब्भग पु [अभ्यङ्ग] तेल-मर्दन, मालिश (निचू ३)।
अब्भगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो (णाया १, १, महा)।
अब्भगिएल्लय) वि [अभ्यक्त] तेलादि से अब्भगिय) मर्दित, मालिश किया हुआ (ओघ ८२, कप्प)।
अब्भतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, मे (गा ६२३)। २ वि भीतर का, भीतरी (राय, महा)। ३ समीप का, नजदीक का (सम्बन्धी) (ठा ८)। °ठाणिज्ज वि [°स्थानीय] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोग (विपा १, ३)। °तव पुं [°तपस्] विनय, वेया-वृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायो-त्सर्ग रूप अन्तरग तप (ठा ६)। °परिसा स्त्री [°परिषद्] मित्र आदि समान जनो की सभा (राय)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] अवधि-ज्ञान का एक भेद (विसे)। °सबुका स्त्री स्त्री [°शम्बूका] भिक्षा की एक चर्या, गति-विशेष (ठा ६)। °सगडुद्धिया स्त्री [°शक-टोर्द्धिका] कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।
अब्भतर वि [अभ्यन्तर] भीतरी, भीतर का (ज ७, ठा २, १, पण्ण ३६)।
अब्भसि वि [अभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट नही होने-वाला (नाट)। २ अनष्ट (कुमा)।
अब्भक्खइज्ज देखो अब्भक्खा
अब्भक्खण न [दे] अकीर्त्ति, अपयश (दे १, ३१)।
अब्भक्खा सक [अभ्या + ख्या] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना। अब्भक्खाइ (भग ५, ७)। क्र. अब्भक्खइज्ज (आचा)।
अब्भक्खाण न [अभ्याख्यान] झूठा अभि-योग, असत्य दोषारोप (पण्ह १,२)।
अब्भट्ठ देखो अब्भत्थिय, 'उ(?अ)ब्भट्ठपरि-न्नाय' (पिंड २८१)।
अब्भड अ [दे] पीछे जाकर (हे ४, ३६५)।
अब्भणुजाण सक [अभ्यनु + ज्ञा] अनुमति,

देना, सम्मति देना। अब्भणुजाणिम्मदि (शौ) (पि ५३४)।

अब्भणुण्णा [अभ्यनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (राज)।

अब्भणुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत समत (ठा ५, १)।

अब्भणुन्ना देखो अब्भणुण्णा।

अब्भणुन्नाय देखो अब्भणुण्णाय (णाया १, १, कप्प, सुर ३, ८८)।

अब्भण्ण न [अभ्यर्ण] १ निकट, नजदीक। २ वि समीपस्थ (पउम ९८ ६८)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ८८, ५८)।

अब्भत्त वि [अभ्यक्त] १ तेलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ। २ सिक्त, सींचा हुआ, 'दिमि-दिमि चब्भत्तभूरिकेयारो, पत्तो वासारत्तो' (सुर २ ७८)।

अब्भत्थ वि [अभ्यस्त] पठित, शिक्षित (सुपा ६७)।

अब्भत्थ सक [अभि + अर्थय] १ सत्कार करना। २ प्रार्थना करना। अब्भत्थम्ह (पि ४७०)। सक्त अब्भत्थइअ, अब्भत्थिअ (नाट)। कृ अब्भत्थणीय (अभि ७०)।

अब्भत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार। २ प्रार्थना (कप्पू, हे ४, ३८४)।

अब्भत्थणा } स्त्री [अभ्यर्थना] १ आदर,
अब्भत्थणिया } सत्कार (से ४, ४८)। २ प्रार्थना, विज्ञप्ति (वा ११, सुर १, १६), 'न सहेइ अब्भत्थणियं, असइ
गयाणवि पिट्ठिमसाइ।
दट्ठूण भासुरमुहं खलसीहं
को न बीहेइ' (वज्जा १२)।

अब्भत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ आदृत, सत्कृत। २ प्रार्थित (सुर १, २१)।

अब्भन्न देखो अब्भण्ण (पाअ)।

अब्भपडल न [दे] उपधातु-विशेष, भोडल, अभ्रक अबरक (उत्त ३६, ७५)।

अब्भपिसाअ पु [दे अभ्रपिशाच] राहु (दे १, ४२)।

अब्भय पु [अर्भक] बालक, बच्चा (पाअ)।

अब्भय पु [अभ्रक] अबरख (जी ४)।

अब्भरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त, गौरवशाली (बृह १)।

अब्भवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त (सुख २, १७)।

अब्भवहार पु [अभ्यवहार] भोजन, खाना (विसे २२१)।

अब्भवालुया स्त्री [दे] अभ्रक का चूर्ण (उत्त ३६ ७५)।

अब्भव्व देखो अभव्व, 'अब्भव्वाण सिद्धा णंतगुणा णंतया भव्वा' (पंच ८४)।

अब्भस सक [अभि + अस्] सीखना, अभ्यास करना। वकृ अब्भसंत (स ६०६)। कृ अब्भसियव्व (सुर १४, ८५)।

अब्भसण न [अभ्यसन] अभ्यास (दसनि १)।

अब्भसिय वि [अभ्यस्त] सीखा हुआ (सुर १, १८० ६, १६)।

अब्भहर पु [दे] अभ्रक (पव ३, ३०)।

अब्भहिय वि [अभ्यधिक] विशेष, ज्यादा (सम २ सुर १ १७०)।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या + गम्] समुख आना, सामने आना। अब्भाअच्छइ (षट्)।

अब्भाइक्ख देखो अब्भक्ख। अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा (आचा)।

अब्भागम पु [अभ्यागम] १ समुपागमन। २ समीप स्थिति (निचू ७)।

अब्भागमिय } वि [अभ्यागत] १ समु-
अब्भागय } पागत। २ पु आगन्तुक, पाहुन, अतिथि (सूअ १,२,३ सुपा ५)।

अब्भायत्त } वि [दे] प्रत्यागत, वापस आया
अब्भायत्थ } हुआ (दे १, ३१)।

अब्भास पु [अभ्यास] गुणकार (अणु ७४, पिंड ५५५)।

अब्भास न [अभ्यास] १ निकट, नजदीक (से ६, ६०, पाअ)। २ वि समीपवर्ती, पार्श्व-स्थित (पाअ)। ३ पु शिक्षा, पढाई, सीख। ४ आवृत्ति (पाअ, बृह १)। ५ आदत (ठा ४, ४)। ६ आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार (धर्म २)। ७ गणित का संकेत-विशेष (कम्म ४, ७८, ८३),

अब्भास सक [अभि + अस्] अभ्यास करना, आदत डालना,
'जं अब्भासइ जीवो, गुणं च दोसं च
एत्थ जम्मम्मि।
तं पावइ परलोए, तेण य
अब्भास-जाएण' (धर्म २, भवि)।

अब्भाहय वि [अभ्याहत] आघात-प्राप्त (महा)।

अब्भिग देखो अब्भग = अभि+अञ्ज्। प्रयो अब्भिगावेइ (पि २३४)।

अब्भिग देखो अब्भग = अभ्यग (णाया १, १८)।

अब्भिगण देखो अब्भगण (कप्प)।

अब्भिगिय देखो अब्भगिय (कप्प)।

अब्भितर देखो अब्भतर (कप्प, स ७, पण्ह ३ ५, णाया १, १३)।

अब्भितरओ अ [अभ्यन्तरतस] १ भीतर से। २ भीतर में (आवम)।

अब्भितरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर का, अन्तरग (सम ६७, कप्प, णाया १, १)।

अब्भितरुद्धि पु [अभ्यन्तरोर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनो पैर के अगूठो को मिलाकर और पृष्णियो को बाहर फैलाकर किया जाता ध्यान-विशेष (चेइय ४८७)।

अब्भिट्ठ वि [दे] सगत, सामने आकर भिडा हुआ, 'हत्थी हत्थीण समं अब्भिट्टो रहवरो सह रहेण' (पउम ६, १८२, ८८, २७)।

अब्भिड सक [सं+गम्] सगति करना, मिलना। अब्भिडइ (कुमा, हे ४ १६४)। अब्भिडसु (सुपा १५२)।

अब्भिडिअ वि [संगत] सगत युक्त (पाअ, दे १, ७८)।

अब्भिडिअ वि [दे] सार, मजबूत (दे १, ७८)।

अब्भिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित (धर्म २)।

अब्भुअअ देखो अब्भुदय (से १५, ६५, स ३०)।

अब्भुक्ख सक [अभि + उक्ष्] सीचना करना। वकृ अब्भुक्खत (वज्जा ८६)।

अब्भुक्खण न [अभ्युक्षण] सिंचन करना, छिडकाव (स ५७६)।

अब्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल (बृह १)।

अब्भुक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त (स ३४०)।

अब्भुगम पु [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति (सूत्र १,१४)।

अब्भुग्गय वि [अभ्युद्गत] १ उन्नत। २ उत्पन्न (णाया १, १)। ३ ऊँचा किया हुआ, उठाया हुआ (ओप)। ४ चारो तरफ फैला हुआ (सद १८)।

अब्भुग्गय वि [अभ्रोद्गत] ऊँचा उन्नत (णा १२, ५)।

अब्भुच्चय पु [अभ्युच्चय] समुच्चय (भास ६५)।

अब्भुज्जय वि [अभ्युद्यत] १ उद्यत, उद्यम-युक्त (णाया १, ५)। २ तैयार (णाया १, १, सुपा २२२)। ३ पु एकाकी विहार (पव्व १२ टी)। ४ जिनकल्पिक मुनि (पचव ४)।

अब्भुट्ठ उभ [अभ्युत्+स्था] १ आदर करने के लिए खड़ा होना। २ प्रयत्न करना। ३ तैयारी करना। अब्भुट्ठेइ (महा)। वकृ अब्भुट्ठमाण (स ८१६)। संकृ अब्भुट्ठित्ता (भग)। हेकृ अब्भुट्ठित्तए (ठा २, १)। कृ अब्भुट्ठेयव्व (ठा ८)।

अब्भुट्ठण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खड़ा होना (से १०,११)।

अब्भुट्ठा देखो अब्भुट्ठ।

अब्भुट्ठाण देखो अब्भुट्ठण (सम ५१ सुपा ३७६)।

अब्भुट्ठिय वि [अभ्युत्थित] १ सम्मान करने के लिए जो खड़ा हुआ हो (णाया १, ८)। २ उद्यत, तैयार, 'अब्भुट्ठिएसु मेहेसु' (णाया १, १, पडि)।

अब्भुट्ठेत्तु [अभ्युत्थातृ] अभ्युत्थान करने-वाला (ठा ५, १)।

अब्भुण्णय वि [अभ्युन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (पण्ह १, ४)।

अब्भुण्णयत वकृ [अभ्युन्नयत्] १ ऊँचा करता हुआ। २ उत्तेजित करता हुआ, 'तीएवि जलंति दीवत्तिमब्भुण्णमंतीए' (गा २६४)।

अब्भुत्त अक [स्ना] स्नान करना। अब्भुत्तइ (हे ४, १४)। वकृ अब्भुत्तंत (कुमा)।

अब्भुत्त अक [प्र+दीप्] १ प्रकाशित होना। २ उत्तेजित होना। अब्भुत्तइ (हे ४ १५२)। अब्भुत्तए (कुमा)। प्रयो अब्भुत्तेति (से ५, ५९)।

अब्भुत्तिअ वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशित। २ उत्तेजित (से १५, ३८)।

अब्भुत्थ वि [अभ्युत्थ] उत्पन्न, 'पुव्वभवब्भु-त्थसिणेहाओ' (महा)।

अब्भुत्थ } देखो अब्भुट्ठा। वकृ अब्भुत्थत
अब्भुत्था } (से १२, १८)। संकृ अब्भु-त्थित्ता (काल)।

अब्भुदय पु [अभ्युदय] १ उन्नति, उदय (प्रयौ २६), 'अब्भुदयभूयब्भुदय लद्धूण नरभव मुदीहद्ध' (उप ७६८ टी)।

अब्भुद्धर सक [अभ्युद्+धृ] उद्धार करना। अब्भुद्धरामि (भवि)।

अब्भुद्धरण न [अभ्युद्धरण] १ उद्धार (स ६४३)। २ वि. उद्धार-कारक (हे ४,३३४)।

अब्भुन्नय देखो अब्भुण्णय (णाया १, १)।

अब्भुब्भड वि [अभ्युद्भट] अत्युद्भट विशेष उद्धत (भवि)।

अब्भुय न [अद्भुत] १ आश्चर्य विस्मय (उप ७६८ टी)। २ वि आश्चर्य-कारक (राय, सुपा, ३५)। ३ पु साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसो मे से एक,

'विम्हयकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो
रसो होइ।
हरिसविसाउप्पत्तो, लक्खणओ अब्भुओ नाम'
(अणु)।

अब्भुवगच्छ सक [अभ्युप+गम्] १ स्वीकार करना। २ पास जाना। प्रयो सकृ अब्भुवगच्छाविय (पि १६३)।

अब्भुवगच्छाविअ वि [अभ्युपगमित] स्वीकार कराया हुआ, 'ताहे तेहिं कुमारेहि सवो मज पाएत्ता अब्भुवगच्छाविओ विगयमओ चिंतेइ' (आक पृ ३०)।

अब्भुवगम पु [अभ्युपगम] १ स्वीकार, अङ्गीकार (सम १४५, स १७०)। २ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष (बृह १, सूत्र १, १२)।

अब्भुवगमणा स्त्री [अभ्युपगमना] स्वीकार, अङ्गीकार (उप ८०९)।

अब्भुवगय वि [अभ्युपगत] १ स्वीकृत (सुर ६, ५८)। २ समीप मे गया हुआ (आचा)।

अब्भुववण्ण वि [अभ्युपपन्न] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत (नाट, पि १६३ २७६)।

अब्भुववत्ति स्त्री [अभ्युपपत्ति] अनुग्रह, मेहरबानी (अभि १०४)।

अब्भुवे सक [अभ्युप+इ] स्वीकार करना। अब्भुवेजामि (णाया १ १६ टी, पत्र २०५)।

अब्भो देखो अब्बो (षड्)।

अब्भोक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त सींचा हुआ (सुर ६ १६१)।

अब्भोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (पिंड १६०)।

अब्भोय (अप) देखो आभोग (भवि)।

अब्भोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत। °ा स्त्री [°ा] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना (ठा ४, ३)।

अब्हिड देखो अब्भिड। अब्हिडइ (षड्)।

अब्हुत्त देखो अब्भुत्त अब्हुत्तइ (षड्)।

अभग्ग वि [अभग्न] १ अखण्डित, अत्रुटित (पडि)। २ इस नाम का एक चोर (विपा १, १)।

अभत्त वि [अभक्त] १ भक्ति नही करनेवाला (कुमा)। २ न भोजन का अभाव (वव ७)। °ट्ठ पु [°ार्थ] उपवास (आचू, पडि, सुपा ३१७)। °ट्ठिय वि [°ार्थिक] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह (पचव २)।

अभय न [अभय] १ भय का अभाव, धैर्य (राय)। २ जीवित, मरण का अभाव (सूत्र १,६)। ३ वि भय-रहित, निर्भीक (आचा)। ४ पु राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १, णाया १, १)। °कुमार पु [°कुमार] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि)। °दय वि [°दय] भय-विनाशक, जीवित-दाता (पडि)। °दाण न [°दान] जीवित-दान (पण्ह २, ४)। °देव पु [°देव] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारो का नाम (मुणि १०८७४, गु १४, ती ४०, सार्ध ७३)। °प्पदाण न [°प्रदान] जीवित का दान (सूत्र १,६)। °वत्त न [°वत्त्व] निर्भयता,

अभय (सुपा १८)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम (पिंड)।

अभयकर वि [अभयकर] अभय देनेवाला, अहिंसक (सूअ १, ६, २८)।

अभयकरा स्त्री [अभयकरा] भगवान् अभिनन्दन की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)।

अभया स्त्री [अभया] १ हरीतकी, हर्रे, हरड़ई (निचू १५)। २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम (ती ३५)।

अभयारिट्ठ न [अभयारिष्ट] मद्य-विशेष (सूअ १ ८)।

अभवसिद्धिय } पु [अभवसिद्धिक, अभव्य, अभवसिद्धीय } मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (ठा २, २ णंदि ठा १)।

अभविय } वि [अभव्य] १ असुन्दर अचारु अभव्व } (विसे)। २ पु मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (विसे कम्म ३,२३)।

अभाअ वि [अभाग] अस्थान, अयोग्य स्थान (से ८,८२)।

अभाइ वि [अभागिन्] अभागा, हत-भाग्य कमनसीब (चारु २६)।

अभागधेज्ज वि [अभागधेय] ऊपर देखो (पउम २८ ८६)।

अभाव पु [अभाव] १ ध्वंस नाश (बृह १)। २ अविद्यमानता, असत्त्व (पंचा ३)। ३ असम्भव (दस १)। ४ अशुभ परिणाम (उत्त १)।

अभाविअ वि [अभावित] अयोग्य, अनुचित (ठा १०, बृह १)।

अभावुग वि [अभावुक] जिसपर दूसरे के संग की असर न पड सके वह, 'विसहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुग तम्हा' (सुपा १७५, ओघ ७७३)।

अभासग } वि [अभाषक] १ बोलने की अभासय } शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह। २ नहीं बोलनेवाला। ३ पु केवल त्वग्-इन्द्रियवाला एकेन्द्रिय जीव। ४ मुक्त आत्मा (ठा २, ४; भग; अणु)।

अभासा स्त्री [अभाषा] १ असत्य वचन। २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन (भा २५, ३)।

अभि अ [अभि] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ समुख, सामने, 'अभिमुहणाय' (ओघ)। २ चारो ओर, समन्तात्, 'अभिदो' (स्वप्न ४२)। ३ बलात्कार 'अभिओग' (धर्म २)। ४ उल्लघन, अतिक्रमण 'अभिकंत' (आचा)। ५ अत्यन्त ज्यादा 'अभिदुग्ग' (सूअ १, ५, २)। ६ लक्ष्य 'अभिमुह'। ७ प्रतिकूल, 'अभिवाय' (आचा)। ८ विकल्प। ९ सभावना (निचू १)। १० निरर्थक भी इस अव्यय का प्रयोग होता है, 'अभिमतिय' (सुर १६, ६२)।

अभिअण पु [अभिजन] १ कुल। २ जन्म-भूमि (नाट)।

अभिआवण्ण वि [अभ्यापन्न] समुख-आगत (सूअ १, ४, २)।

अभिइ स्त्री [अभिजित्] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३)।

अभिइ सक (अभि + इ] सामने जाना, समुख जाना। वकृ अभितंत (उत्त १८२ टी)।

अभिउज देखो अभिजुज। सकृ. अभि-उंजिय (ठा ३, ४, दस १०)।

अभिओअ } पुं [अभियोग] १ आज्ञा, अभिओग } हुकुम (ओप ठा १०)। २ बलात्कार, 'अभिओगे अ निओगे' (आ ५)। ३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना (धर्म २)। ४ अभिभव, पराभव (आव ५)। ५ कार्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि,

'दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य
होइ नायव्वो।
दव्वम्मि होइ जोगो विज्जा मंता य भावम्मि'
(ओघ ५६७)।

६ गर्व, अभिमान (आव ५)। ७ आग्रह, हठ (नाट)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] विद्या-विशेष (गाया १,१६)। देखो अहिओय।

अभिओग पु [अभियोग] उद्यम, उद्योग (सिरि ५८)।

अभिओगी स्त्री [आभियोगी] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) मे उत्पन्न होने का हेतु है (बृह १)।

अभिओयण न [अभियोजन] देखो अभि-ओग (आव; पएण २०)।

अभिगण } देखो अहंगण (नाट, रत्ना)।
अभिजण }

अभिकंख सक [अभि + काङ्क्ष्] इच्छा करना, चाहना। अभिकंखेज्जा (आचा)। वकृ अभिकखमाण (दस ६, ३)।

अभिकखा स्त्री [अभिकाङ्क्षा] अभिलाषा, इच्छा (आचा)।

अभिकखि } वि [अभिकाङ्क्षिन्] अभि-अभिकखिर } लाषी, इच्छुक (पि ४०५, सुपा १२६)।

अभिकंत वि [अभिक्रान्त] १ गत, अति-क्रान्त, 'अणभिकंतं च वयं सपेहाए' (आचा)। २ समुख गत। ३ आरब्ध। ४ उल्लघित (आचा सूअ २, २)।

अभिक्कम सक [अभि + क्रम्] १ जाना, गुजरना। २ सामने जाना। ३ उल्लघन करना। ४ शुरू करना। वकृ. अभिक्कममाण (आचा)। सकृ अभिक्कम्म (सूअ १,१,२)।

अभिक्कम पु [अभिक्रम] १ उल्लघन। २ प्रारम्भ। ३ समुख-गमन। ४ गमन, गति (आचा)।

अभिक्खं } अ [अभीक्ष्ण] बारबार (उप अभिक्खण } १४७ टी, ठा २,४, वव ३)।

अभिक्खा स्त्री [अभिख्या] नाम (विसे १०४८)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] प्राप्त करना। अभिगच्छइ (दस ४, २१, २२, ६, २, २)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] सामने जाना। अभिगच्छति (भग २, ९)।

अभिगच्छणया स्त्री [अभिगमन] समुख-गमन (ओप)।

अभिगच्छणा देखो अभिगच्छणया (वव १)।

अभिगज्ज अक [अभि + गर्ज्] गर्जना, खूब जोर से आवाज करना। वकृ अभि-गज्जंत (गाया १, १८, सुर १३, १८२)।

अभिगम देखो अभिगच्छ। कृ अभिगम-णीय (उ ६७९)।

अभिगम पुं [अभिगम] १ प्राप्ति, स्वीकार (पक्खि)। २ आदर, सत्कार (भग २, ५)। ३ (गुरु का) उपदेश, सीख (गाया १, १)।

४ ज्ञान, निश्चय (पव १४६)। ५ सम्यक्त्व का एक भेद (ठा २, १)। ६ प्रवेश (से ८, ३३)।

अभिगमण न [अभिगमन] ऊपर देखो (स्वप्न १६, णाया १, १२)।

अभिगमि वि [अभिगमिन्] १ आदर करने वाला। २ उपदेशक। ३ निश्चय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला ५ स्वीकार करने वाला, प्राप्त करने वाला (पण्ण ३४)।

अभिगअ वि [अभिगत] १ प्राप्त। २ सम्मुख। ३ उपदिष्ट। ४ प्रविष्ट (बृह १)। ५ ज्ञात, निश्चित (णाया १, १)।

अभिगहिय न [अभिग्रहिक] मिथ्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१)।

अभिगिज्झ अक [अभि + गृध्] अति लोभ करना, आसक्त होना। वकृ अभिगिज्झंत (सूत्र २, २)।

अभिगिण्ह } सक [अभि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकारना। अभि-
अभिगिन्ह }
गिण्हह (कप्प)। संकृ अभिगिन्हित्ता, अभिगिज्झ (पि ५८२, ठा २ १)।

अभिग्गह पु [अभिग्रह] १ प्रतिज्ञा, नियम। (ओघ ३)। २ जैन साधुओं का आचार-विशेष (बृह १)। ३ प्रत्याख्यान, (नियम-विशेष) का एक भेद (आव ६)। ४ कदाग्रह, हठ (ठा २, १)। ५ एक प्रकार का शारीरिक विनय (वव १)।

अभिग्गहणी स्त्री [अभिग्रहणी] भाषा का एक भेद, असत्य-मृषा वचन (सबोध २१)।

अभिग्गहिय वि [अभिग्रहिक] अभिग्रह वाला (ठा २, १, पव ६)।

अभिग्गहिय वि [अभिगृहीत] १ जिसके विषय में अभिग्रह किया गया हो वह (कप्प, पव ६)। २ न अवधारण, निश्चय (पण्ण ११)।

अभिघट्ट सक [अभि + घट्ट] वेग से जाना। कवकृ अभिघट्टिज्जमाण (राय)।

अभिघाय पु [अभिघात] प्रहार, मार पीट, हिंसा (पण्ह १, १, बृह ४)।

अभिचंद पु [अभिचन्द्र] १ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अंत ३)। २ इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५५)। ३ मुहूर्त-विशेष। (सम ५१)।

अभिजण देखो **अभिअण** (स्वप्न २६)।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की संतति) (कप्प)।

अभिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता, खानदानी (उत्त ११)।

अभिजाण सक [अभि + ज्ञा] जानना। वकृ **अभिजाणमाण** (आचा)।

अभिजात पु [अभिजात] पक्ष का ग्यारहवाँ दिन (सुज्ज १०,१४)।

अभिजाय वि [अभिजात] १ उत्पन्न, 'अभिजायसड्ढो' (उत्त १४)। २ कुलीन (राज)।

अभिजुंज सक [अभि + युज्] १ मन्त्र-तन्त्रादि से वश करना। २ कोई कार्य में लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्मरण कराना, याद दिलाना। संकृ **अभिजुंजिय, अभिजुंजियाण, अभिजुंजित्ता** (भग २, ५ सूत्र १ ५ ७ आचा भग ३, ५)।

अभिजुत्त वि [अभियुक्त] १ व्रत-नियम में जिसने दूषण न लगाया हो वह (णाया १, १४)। २ जानकार, पण्डित (णदि)। ३ दुश्मन से घिरा हुआ (वेणी १२०)।

अभिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ, लोलुपता, आसक्ति (सम ७१, पण्ह १, ५)।

अभिज्झिअ वि [अभिध्यित] अभिलषित, वाञ्छित (पण्ण २८)।

अभिट्टिअ वि [अभीष्ट] अभिलषित (वज्जा १६४)।

अभिट्ठुय वि [अभिष्टुत] वर्णित, श्लाघित, प्रशंसित (आव २)।

अभिडुय देखो **अभिदूद्रुय** (सूत्र १, २, ३)।

अभिणअत } देखो **अभिणी**
अभिणइज्जत }

अभिणंद सक [अभि + नन्द्] १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। २ आशीर्वाद देना। ३ प्रीति करना। ४ खुशी मनाना। ५ चाहना, इच्छा करना। ६ बहुमान करना, आदर करना। अभिणंदइ (स १६३)। वकृ **अभिणंदंत** (ओप, णाया १, १, पउम ५, १३०)। कवकृ **अभिणंदिज्जमाण** (ठा ६, णाया १, १)।

अभिणंदिय वि [अभिनन्दित] जिसका अभिनन्दन किया गया हो वह (सुपा ३१०)।

अभिणंदण न [अभिनन्दन] १ अभिनन्दन। २ पु वर्तमान अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ जिनदेव (सम ८३)। ३ लोकोत्तर श्रावणमास। (सुज्ज १०)।

अभिणय पु [अभिनय] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्य-क्रिया (ठा ४, ४)।

अभिणव वि [अभिनव] नूतन, नया (जीव ३)।

अभिणिक्खंत वि [अभिनिष्क्रान्त] दीक्षित, प्रव्रजित (स २७८)।

अभिणिगिण्ह सक [अभिनि + ग्रह्] रोकना, अटकाना। संकृ **अभिणिगिज्झ** (पि ३३१, ५९१)।

अभिणिचारिया स्त्री [अभिनिचारिका] भिक्षा के लिए गति-विशेष (वव ४)।

अभिणिपया स्त्री [अभिनिप्रजा] अलग-अलग रही हुई प्रजा (वव ९)।

अभिणिबुज्झ सक [अभिनि + बुध्] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना। अभिणिबुज्झए (विसे ८१)।

अभिणिबोह पु [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मति-ज्ञान (सम्म ८६)।

अभिणियट्टण न [अभिनिवर्त्तन] पीछे लौटना, वापस जाना (आचा)।

अभिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] १ तीव्र रूप से निविष्ट। २ आग्रही (उत्त १४)।

अभिणिवेस पु [अभिनिवेश] आग्रह, हठ (णाया १, १२)।

अभिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] कदाग्रही (अज्झ १५७)।

अभिणिवेह पु [अभिनिवेध] उलटा मापना (आवम)।

अभिणिव्वागड वि [दे अभिनिर्व्याकृत] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरह) (वव १, ६)।

अभिणिव्वट्ट सक [अभिनि + वृत्] रोकना, प्रतिषेध करना, 'से मेहावी अभिणिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च' (आचा)।

अभिणिव्वट्ट सक [अनिर् + वृत्] १ संपादित करना, निष्पन्न करना। २ उत्पन्न करना। संकृ—अभिणिव्वट्टित्ता, (भग ५, ८)।

अभिणिव्वट्ट वि [अभिनिर्वृत्त] १ निष्पन्न। २ उत्पन्न 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूआ अभिसंजाया अभिणिव्वट्टा अभिसंवुड्ढा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खंता अणुपुव्वेण महामुणी' (आचा)।

अभिणिव्वुड वि [अभिनिर्वृत्त] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त (सूअ १, २, १)। २ शान्त, अकुपित (आचा)। ३ पाप से निवृत्त (सूअ १, ३, १)।

अभिणिसज्जा स्त्री [अभिनिषद्या] जैन साधुओं के रहने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिसट्ठ देखो अभिणिसिट्ठ (सुज्ज ६)।

अभिणिसिट्ठ वि [अभिनिसृष्ट] बाहर निकला हुआ (जीव ३)।

अभिणिसेहिया स्त्री [अभिनैषेधिकी] जैन साधुओं के स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिस्सव अक [अभिनिर् + स्रु] निकलना। अभिणिस्सवंति (राय ७८)।

अभिणी सक [अभि + नी] अभिनय करना, नाट्य करना। वकृ अभिणअंत (मै ७५)। कवकृ अभिणइज्जंत (सुपा ३५६)।

अभिणूम न [अभिनूम] माया, कपट (सुअ १, २, १)।

अभिण्ण वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण (उप ५८०)।

अभिण्ण वि [अभिन्न] १ अत्रुटित, अविदारित, अखण्डित (उवा, पचा ११)। २ भेदरहित, अपृथग्भूत (बृह ३)।

अभिण्णपुड पु [दे] खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के जिसको रास्ता पर रख देते हैं (दे १, ८८)।

अभिण्णाण न [अभिज्ञान] निशानी, चिह्न (श्रा १४)।

अभिण्णाय वि [अभिज्ञात] जाना हुआ, विदित (आचा)।

अभितज्ज सक [अभि + तर्ज्] तिरस्कार करना, ताडन करना। वकृ अभितज्जेमाण (णाया १, १८)।

अभितत्त वि [अभितप्त] १ तपाया हुआ, गरम किया हुआ (सूअ १, ८, १, २७)।

अभितव सक [अभि + तप्] १ तपाना। २ पीड़ा करना, 'चत्तारि अगणिओ समारभित्ता जेहिं कूरकम्मा भितविंति, बाल' (सूअ १, ५, १, १३)। कवकृ अभितप्पमाण, 'ते तत्थ चिट्ठंतिभितप्पमाणा मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता' (सूअ १, ५, १, १३)।

अभिताव सक [अभि + तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ पीडित करना। अभितावयंति (सूअ १, ५, १, २१, २०)।

अभिताव पु [अभिताप] १ दाह। २ पीडा (सूअ १, ५, १, २, ६)।

अभितास सक [अभि + त्रासय्] त्रास उपजाना, भयभीत करना। वकृ अभितासेमाण (णाया १, १८)।

अभित्थु सक [अभि + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना। अभित्थुणंति, अभित्थुणामि (पि ४९४, विसे १०५४)। वकृ अभित्थुणमाण (कप्प)। कवकृ अभित्थुव्वमाण (रयण ९८)।

अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, श्लाघित (सथा)।

अभिथु देखो अभित्थु। वकृ. अभिथुणंत (णाया १, १)। कवकृ अभिथुव्वमाण (कप्प, ठा ६)।

अभिदुग्ग वि [अभिदुर्ग] १ दुःखोत्पादक स्थान। २ अतिविषम स्थान (सूअ १, ५, १, १७)।

अभिदो (शौ) अ [अभित.] चारों ओर से (स्वप्न ४२)।

अभिद्दव सक [अभि + द्रु] पीड़ा करना, दुःख उपजाना, हैरान करना, 'नुदंति वायाहिं अभिद्दव णरा' (आचा २, १६, २)।

अभिद्दविय वि [अभिद्रुत] उपद्रुत, हैरान किया हुआ (सुर १२, ६७)।

अभिद्दुय देखो अभिद्दविय (णाया १, ९; स ५६)।

अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक, कहनेवाला (विसे ३८७२)।

अभिधार सक [अभि + धारय्] १ चिन्तन करना। २ स्पष्ट करना। अभिधारए (दस ५, २, २५; उत्त २, २१), अभिधारयामो (सूअ २, ६, १६)। वकृ अभिधारयंत (उत्तनि ३)।

अभिधारण न [अभिधारण] धारणा, चिन्तन (बृह ३)।

अभिधेज्ज } पु [अभिधेय] अर्थ, वाच्य,
अभिधेय } पदार्थ (विसे १ टी)।

अभिनंद देखो अभिणंद। वकृ अभिनंदमाण (कप्प)। कवकृ अभिनंदिज्जमाण (महा)।

अभिनंदण देखो अभिणंदण (कप्प)।

अभिनंदि स्त्री [अभिनन्दि] आनन्द, खुशी, 'पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं' (अजि ३७)।

अभिनिक्खंत देखो अभिणिक्खंत (आचा)।

अभिनिक्खम अक [अभिनिर् + क्रम्] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना गृहवास से बाहर निकलना। वकृ अभिनिक्खमंत (पि ३९७)।

अभिनिगिण्ह देखो अभिणिगिण्ह (आचा)।

अभिनिबुज्झ देखो अभिणिबुज्झ। अभिनिबुज्झइ (विसं ९८)।

अभिनिवट्ट देखो अभिणिवट्ट। संकृ अभिनिवट्टित्ताण (पि ५८३)।

अभिनिविट्ठ देखो अभिणिविट्ठ (भग)।

अभिनिवेस सक [अभिनि + वेशय्] १ स्थापन करना। २ करना। अभिनिवेसए (दस ८, ५९)।

अभिनिवेसिय न [अभिनिवेशिक] मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नहीं मानने का दुराग्रह (श्रा ६, कम्म ४, ५१)।

अभिनिव्वट्ट देखो **अभिणिव्वट्ट** (कप्प, आचा)।

अभिनिव्वट्ट अक [अभिनि + वृत्] पृथक् होना। वकृ. **अभिनिव्वट्टमाण** (सूत्र २, ३, २१)।

अभिनिव्वट्ट सक [अभिनिर् + वृत्] जीतना। सकृ 'कोसाओ असि अभिनिव्वट्टित्ता (सूत्र २, १, १६)।

अभिनिव्वागड वि [अभिनिर्व्याकृत] विभिन्न द्वार वाला (मकान)। (वव १ टी)।

अभिनिव्विट्ठ वि [अभिनिर्विष्ट] सजात, उत्पन्न (कप्प)।

अभिनिव्वुड देखो **अभिणिव्वुड** (पि २१९)।

अभिनिसढ वि [अभिनि सट] जिसका स्कन्ध प्रदेश बाहर निकल आया हो वह (भग १५, पत्र ६६६)।

अभिनिस्सव देखो **अभिणिस्सव** अभिनिस्सवति (राय ७५)।

अभिनिस्सव अक [अभिनि + स्रु] टपकना, झरना। अभिनिस्सवइ (भग)।

अभिन्न देखो **अभिण्ण** (प्राप्र)।

अभिन्नाण देखो **अभिण्णाण** (ओघ ४३९, सुर ७, १०१)।

अभिन्नाय देखो **अभिण्णाय** (कप्प)।

अभिपज्झाणिय वि [अभिपर्याणित] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ (कुमा)।

अभिपवुट्ठ वि [अभिप्रवृष्ट] बरसा हुआ (आचा २, ३, १, १)।

अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय सम्बन्धी, मन कल्पित (अणु)।

अभिप्पाय पु [अभिप्राय] आशय मन-परिणाम (आचा, स ३४, सुपा २६२)।

अभिप्पेय वि [अभिप्रेत] इष्ट, अभिमत (स २३)।

अभिभव सक [अभि + भू] पराभव करना, परास्त करना। अभिभवइ (महा)। सकृ. **अभिभविय, अभिभूय** (भग ६, ३३, पण्ह १, २)।

अभिभव पुं [अभिभव] पराभव, पराजय, तिरस्कार (आचा, दे १, ५७)।

अभिभवण न [अभिभवन] ऊपर देखो (सुपा ४७९)।

अभिभास सक [अभि + भाष्] सभाषण करना। अभिभासे (पि १६६)।

अभिभूइ स्त्री [अभिभूति] पराभव, अभिभव (द्र ३०)।

अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, पराजित (आचा, सुर ४, ७९)।

अभिमजु देखो **अभिमण्णु** (हे ४, ३०५)।

अभिमत सक [अभि + मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से सस्कारना। सकृ. **अभिमतिऊण, अभिमतिय** (निचू १, आवम)।

अभिमंतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से सस्कारित (सुर १६, ६२)।

अभिमन्न सक [अभि + मन्] १ अभिमान करना। २ सम्मत करना। अभिमन्नइ (विसे २१९०, २६०३)।

अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत (सूत्र २, ४)।

अभिमाण पु [अभिमान] अभिमान, गर्व (निचू १)।

अभिमार पु [अभिमार] वृक्ष विशेष (राज)।

अभिमुह वि [अभिमुख] १ समुख, सामने स्थित। २ क्रिवि सामने (भग)।

अभिमुहिय वि [अभिमुखित] समुख किया हुआ (सूअनि १४६)।

अभियागम पु [अभ्यागम] समुख आगमन (सूत्र १, १, ३, २)।

अभियावन्न वि [अभ्यापन्न] संमुख प्राप्त (सूत्र १, ४, २, २८)।

अभिरइ स्त्री [अभिरति] १ रति, सभोग। २ प्रीति, अनुराग, (विसे ३२२३)।

अभिरम अक [अभि + रम्] १ क्रीडा करना, सभोग करना। २ प्रीति करना। ३ तल्लीन होना, आसक्ति करना। अभिरमइ (महा)। वकृ. **अभिरमत, अभिरममाण** (सुपा १२०, णाया १, २, ४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, 'अभिरमियकुमुयवणसड ससिमडल पलोयइ' (सुपा ३४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] सभुक्त, 'जेणाभिरमिय परकलत्त' (धर्मवि १२८)।

अभिरमिय, अभिरय वि [अभिरत] १ अनुरक्त (सुपा ३४)। २ तल्लीन, तत्पर, 'साहू तवनियमसजमाभिरया' (पउम ३७, ६३, स १२२)।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर (णाया १, १३, स्वप्न ४५)।

अभिराम सक [अभि + रामय्] तत्परता मे कार्य मे लगाना। अभिरामयति (दस ६, ४, १)।

अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसद, मन का अभिमत (णाया १, १, उत्रा, सुपा ३४४, महा)।

अभिरुय सक [अभि + रुच्] पसंद पडना, रुचना। अभिरुयइ (महा)।

अभिरूयसि वि [अभिरूपिन्] सुन्दर रूप वाला, मनोहर (आचा २, ४, २, १)।

अभिरुह सक [अभि + रुह्] १ रोकना। २ ऊपर चढना, आरोहना। सकृ

'चत्तारि साहिए मासे बहवे
पाणजाइया आगम्म।
अभिरुज्झ काय विहरिसु,
आरुहिया ण तत्थ हिंसिसु'
(आचा)।

अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारो ओर से निरुद्ध, रोका हुआ (णाया १, ९)।

अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो, 'परचक्करायाभिरोहिया', ('परचक्रराजेनापरसैन्यनृपतिनाभिरोहिता सर्वत कृतनिरोधा या सा तथा' टी) (णाया १, ९)।

अभिलघ सक [अभि + लङ्घ्] उल्लघन करना। वकृ **अभिलंघमाण** (णाया १, १)।

अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य निर्वचनीय (आचू १)।

अभिलस सक [अभि + लष्] चाहना, वाञ्छना। अहिलसइ (उव)।

अभिलाअ, अभिलाव पु [अभिलाप] १ शब्द, ध्वनि (ठा ३, १, भास २७)। २ सभाषण (णाया १,८, विसे)।

अभिलास पु [अभिलाष] इच्छा, चाह (णाया १,९, प्रयौ ६१)।

अभिलासि, अभिलासिण वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला, इच्छुक (वसु, स ६५४, पउम ३१, १२८)।

अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी (उप ३५७ टी)।

अभिलोयण न [अभिलोकन] जहाँ खडे रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान (पण्ह २, ४)।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो (पण्ह २, ८)।

अभिवंद सक [अभि + वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना। वकृ अभिवंदत (पउम ७३, ६), कृ 'जे माहुणो ते अभिवंदियव्वा' (गोय १४), अभिवंदणिज्ज (निसे २६८३)।

अभिवंदणा स्त्री [अभिवन्दना] प्रणाम, नमस्कार (चेइय ६३६)।

अभिवंदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने वाला (ओप)।

अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] वढना, बडा होना, उन्नत होना। अभिवड्ढामो, भूका. अभिवड्ढित्था (कप्प)। वकृ अभिवड्ढेमाण (ज ७)।

अभिवड्ढि देखो अभिवुड्ढि (इक)।

अभिवड्ढि देखो अहिवड्ढि (सुज १० १२ टी)।

अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] १ वढाया हुआ। २ अधिक मास। ३ अधिक मासवाला वर्ष (सम ५६, चन्द ११)।

अभिवड्ढे सक [अभि + वर्धय्] वढाना। अभिवड्ढेति (सुज ६)। वकृ अभिवड्ढेमाण (सुज ६)। सकृ अभिवड्ढेत्ता (सुज ६)।

अभिवत्त वि [अभिव्यक्त] आविर्भूत (धर्मसं ८८)।

अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव (उप २८५)।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने जाना। वकृ अभिवयत (णाया १, ८)।

अभिवाइय वि [अभिवादित] प्रणत, नमस्कृत (सुपा ३१०)।

अभिवात पु [अभिवात] १ सामने का पवन। २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन (आचा)।

अभिवाद } सक [अभि + वादय्] प्रणाम
अभिवाय } करना, नमस्कार करना। अभिवाएइ (महा)। अभिवादये (विसे १०५४)। वकृ अभिवायमाण (आचा)। कृ अभिवायणिज्ज (सुपा ५६८)।

अभिवाय देखो अभिवात (आचा)।

अभिवायण न [अभिवादन] प्रणाम, नमस्कार (आचा, दसचू)।

अभिवाहरण न [अभिव्याहरण] बुलाहट, पुकार (पंचा २)।

अभिवाहार पु [अभिव्याहार] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब (विसे ३३६६)।

अभिविहि पुस्त्री [अभिविधि] मर्यादा, व्याप्ति (पंचा १५, विसे ८७८)।

अभिवुट्ठि स्त्री [अभिवृष्टि] वृष्टि, वर्षा (पव ४०)।

अभिवुड्ढ देखो अभिवड्ढ। सकृ अभिवुड्ढित्ता (सुज १)।

अभिवुड्ढि स्त्री [अभिवृद्धि] १ वृद्धि, वढाव। २ उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ज ७)।

अभिवुड्ढे देखो अभिवड्ढे। सकृ अभिवुड्ढेत्ता (सुज ६)।

अभिवेदणा स्त्री [अभिवेदना] अत्यन्त पीडा (सूअ १, ५, १, १६)।

अभिव्वंजण न [अभिव्यञ्जन] देखो अभिवत्ति (सूअ १, १, १)।

अभिव्वाहार देखो अभिवाहार (विसे ३४१२)।

अभिसंकण न [अभिशङ्कन] शंका, वहम (मवोध ८६)।

अभिसंका स्त्री [अभिशङ्का] संशय, संदेह (सूअ १, ६, १, १४)।

अभिसंकि वि [अभिशङ्किन्] १ संदेह करनेवाला। २ भीरु, डरनेवाला, 'उज्जु मारा-भिसंकी मरणा पमुच्चति' (आचा, णाया १, १८)।

अभिसंग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (ठा ३, ४)।

अभिसंजाय वि [अभिसंजात] उत्पन्न (आचा)।

अभिसंथुण सक [अभिसं + स्तु] स्तुति करना, वर्णन करना। वकृ अभिसंथुणमाण (णाया १, ८)।

अभिसंधारण न [अभिसंधारण] पर्यालोचन, विचारना (आचा)।

अभिसंधि पुस्त्री [अभिसंधि] आशय, अभिप्राय (उप २११ टी)।

अभिसंधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात्त (आचा)।

अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादुर्भूत (आचा)।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त (आचा)।

अभिसंवुड्ढ वि [अभिसंवृद्ध] वढा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त (आचा)।

अभिसमण्णागय } वि [अभिसमन्वागत]
अभिसमन्नागय } १ अच्छी तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत (भग ५, ४)। २ व्यवस्थित (सूअ २,१)। ३ प्राप्त, लब्ध (भग १५, कप्प, णाया १, ८)।

अभिसमागम सक [अभिसमा + गम्] १ सामने जाना। २ प्राप्त करना। ३ निर्णय करना, ठीक-ठीक जानना। सकृ अभिसमागम्म (आचा, दस ५)।

अभिसमागम पु [अभिसमागम] १ सम्मुख गमन। २ प्राप्ति। ३ निर्णय (ठा ३, ४)।

अभिसमे सक [अभिसमा+इ] देखो अभिसमागम = अभिसमा + गम्। अभिसमेइ (ठा ३, ४)। सकृ अभिसमेच्च (आचा)।

अभिसर सक [अभि + सृ] प्रिय के पास जाना। वकृ अभिसरत (मोह ६१)।

अभिसरण न [अभिसरण] १ सामने जाना, सम्मुख गमन (पण्ह १, १)। २ प्रिय के पास जाना (कुमा)।

अभिसव पु [अभिषव] १ मद्य आदि का अर्क। २ मद्य मांस आदि से मिश्रित चीज (पव ६)।

अभिसारिआ देखो अहिसारिआ (गा ८७१)।

अभिसिंच सक [अभि + सिच्] अभिषेक करना। अभिसिंचति (कप्प)। कवकृ. अभिसिंचमाण (कप्प)। प्रयो, हेकृ अभिसिंचावित्तए (पि ५७८)।

अभिसित्त वि [अभिषिक्त] जिसका अभिषेक किया गया हो वह (आवम)।

अभिसेअ } पुं [अभिषेक] १ राजा, आचार्य
अभिसेग } आदि पद पर आरूढ करना (सथा, महा)। २ स्नान-महोत्सव, 'जिणाभिसेगे' (सुपा ५०)। ३ स्नान (औप, स ३२)। ४ जहां पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान (भग)। ५ शुक्र शोणित का संयोग, 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसभूया' (आचा १, ६, १)। ६ वि आचार्य आदि पद के योग्य (बृह ३)। ७ अभिषिक्त (निचू १५)।

अभिसेगा स्त्री [अभिषेका] १ साध्वी, संन्यासिनी (निचू १५)। २ साध्वियों की मुखिया, प्रवर्तिनी (धर्म ३, निचू ६)।

अभिसेज्जा स्त्री [अभिशय्या] देखो अभिणिसज्जा (वव १)। २ भिन्न स्थान (विसे ३४६१)।

अभिसेवण न [अभिषेवण] पूजा, सेवा, भक्ति (पउम १४, ४६)।

अभिसेवि वि [अभिषेविन्] सेवा कर्ता (सूअ २, ६, ४४)।

अभिस्सग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (विसे २६६७)।

अभिहट्टु अ [अभिहृत्य] बलात्कार करके, जबरदस्ती करके (आचा, पि ५७७)।

अभिहड वि [अभिहृत] १ सामने लाया हुआ (पचा १३)। २ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)।

अभिहण सक [अभि+हन्] मारना, हिंसा करना (पि ४६६)। वकृ. **अभिहणमाण** (ज ३)।

अभिहणण न [अभिहनन] अभिघात, हिंसा (भग ८, ७)।

अभिहय वि [अभिहत] मारा हुआ, आहत (पडि)।

अभिहा स्त्री [अभिधा] नाम, आख्या (सण)।

अभिहाण न [अभिधान] १ नाम, आख्या (कुमा)। २ वाचक, शब्द (वव ६)। ३ कथन, उक्ति (विसे)।

अभिहाण न [अभिधान] १ उच्चारण (सूअनि १३८)। २ कथन, उक्ति (धर्मसं ११११)। ३ कोशग्रन्थ (चेइय ७४)।

अभिहिय वि [अभिहित] कथित, उक्त (आचा)।

अभिहेअ वि [अभिधेय] वाच्य, पदार्थ (विसे ८४१)।

अभीइ } स्त्री [अभिजित्] १ नक्षत्र-
अभीजि } विशेष (सम ८, १५)। २ पु. एक राजकुमार (भग १३, ६)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अनु)।

अभीरु वि [अभीरु] १ निडर, निर्भीक (आचा)। २ स्त्री मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

अभेज्झ देखो अभिज्झ (पण्ह १, ३)।

अभोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (णाया १, १६)। °घर न [°गृह] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर (बृह १)।

अम सक [अम्] १ जाना। २ आवाज करना। ३ खाना। ४ पीडना। ५ अक रोगी होना, 'अम गत्याईसु' (विसे ३४५३), 'अम रोगे वा' (विसे ३४५४)। अमइ (विसे ३४५३)।

अमग्ग पु [अमार्ग] १ कुमार्ग, खराब रास्ता (उव)। २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ, 'अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि' (आव ४)। ३ कुमत, कुदर्शन (दस)।

अमग्घाय पु [अमाघात] १ द्रव्य का अहरण। २ मारिनिवारण, अभय घोषणा (पचा ६)।

अमच्च पु [अमात्य] मन्त्री, प्रधान (औप, सुर ४, १०४)।

अमच्च पु [अमर्त्य] देव, देवता (कुमा)।

अमज्झ वि [अमध्य] १ मध्य रहित, अखण्ड (ठा ३, २)। २ परमाणु (भग २०, ६)।

अमण न [अमन] १ ज्ञान, निर्णय (ठा ३, ४)। २ अन्त अवसान (विसे ३४५३)।

अमण } वि [अमनस्क] १ अप्रीतिकर,
अमणक्ख } अभीष्ट (ठा ३, ३)। ३ मनरहित (आव ४, सूअ २, ४, २)।

अमणाम वि [अमनआप] अनिष्ट, अमनोहर (सम १४६, विपा १, १)।

अमणाम वि [अमनोम] ऊपर देखो (भग, विपा १, १)।

अमणाम वि [अवनाम] पीड़ा-कारक, दुःखोत्पादक (सूअ २, १)।

अमणुस्स पुं [अमनुष्य] १ मनुष्य भिन्न देव आदि (णदि)। २ नपुंसक (निचू १)।

अमत्त न [अमत्र] भाजन, पात्र (सूअ १,६)।

अमम वि [अमम] १ ममता-रहित, निःस्पृह (पण्ह २, ५, सुपा ५००)। २ पु आगामी काल में होने वाले एक जिनदेव का नाम (सम १५३)। ३ युग्म रूप में होने वाले मनुष्यों की एक जाति (ज ४)। ४ दिन के २५ वां मुहूर्त का नाम (चंद १०)। °त्त वि [°त्व] निःस्पृह, ममता-रहित (पचव ४)।

अमय वि [अमत्र] विकार-रहित,

'अमओ य होइ जीवो, कारणविरहा जहेव आगासं।

समयं च होअनिच्चं, मिम्मयघडतंतुमाईयं'

(विसे)।

अमय न [अमृत] १ अमृत, सुधा (प्रासू ६६)। २ क्षीर समुद्र का पानी (राय)। ३ पु मोक्ष, मुक्ति (सम्म १६७, प्रासू)। ४ वि नहीं मरा हुआ, जीवित, 'अमओ ह नय विमुआमि' (पउम ३३, ८२)। °कर पु [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७६८ टी)। °किरण पुं [°किरण] चन्द्र (सुपा ३७७)। °कुंड पुं [°कुण्ड] चन्द्र, चाँद (श्रा २७)। °घोस पुं [°घोष] एक राजा का नाम (सथा)। °फल न [°फल] अमृतोपम फल (णाया १, ६)। °मइय—°मय वि [°मय] अमृत-पूर्ण (कुमा, सुर ३, १२१, २३३)। °मऊह पु [°मयूख] चन्द्र (मै ६८)। °ल्लरि, °वल्लरी स्त्री [°वल्लरि, °री] अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, गुडूची (श्रा २०, पव ४)। °वास पु [°वर्ष] सुधा-वृष्टि (आचा)। देखो अमिय = अमृत।

अमय पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १, १५)। २ असुर, दैत्य (षड्)।

अमयघडिअ पु [दे. अमृतघटित] चन्द्रमा, चाँद (कुप्र २१)।

अमयणिग्गम पु [दे. अमृतनिर्गम] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १, १५)।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-सम्बन्धी, 'अमरा आउहमेया' (पउम ६१, ४६)।

अमर पु [अमर] १ देव, देवता (पात्र)। २ मुक्त आत्मा (औप)। ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ४ अनन्तवीर्य नामक भावी जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम (ती २१)। ५ वि मरणरहित, 'पावंति अविग्घेण जीवा अयरामरं ठाणं' (पडि)। °कंका स्त्री [°कङ्का] एक नगरी का नाम (उप ६४८ टी)। °केउ पु [°केतु] एक राजकुमार (दंस)। °गिरि पुं [°गिरि] मेरु पर्वत (पउम ९५, ३७)। °गेह न [°गेह] स्वर्ग (उप ७२८ टी)। °चन्दण न [°चन्दन] १ हरि-चन्दन वृक्ष। २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ (पात्र)। °तरु पु [°तरु] कल्पवृक्ष (सुपा ४४)। °दत्त पु [°दत्त] एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम (धम्म)। °नाह पु [°नाथ] इन्द्र (पउम १०१, ७५)। °पुर न [°पुर] स्वर्ग (पउम २ १४)। °पुरी स्त्री [°पुरी] स्वर्गपुरी, अम-रावती (उप पृ १०५)। °पभ पु [°प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६९)। °वइ पु [°पति] इन्द्र (पउम १०१, ७०, सुर १, १)। °वहू स्त्री [°वधू] देवी (महा)। °सामि पु [°स्वामिन्] इन्द्र (विसे १४३९ टी)। °सेण पु [°सेन] १ एक राजा का नाम (दंस)। २ एक राज-कुमार का नाम (णाया १, ८)। °लय त्रि [°लय] स्वर्ग, 'चविउममरालयाए' (उप ७२८ टी, सुपा ३५)। °वई स्त्री [°वती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी (पात्र)। २ मर्त्य लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेन की राजधानी (उप ९८६ टी)।

अमरंगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी (श्रा २७)।

अमरिंद पु [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र (भवि)।

अमरिस पु [अमर्ष] १ असहिष्णुता (हे २, १०५)। २ कदाग्रह (उत्त ३४)। ३ क्रोध, गुस्सा (पण्ह १, ३, पात्र)।

अमरिसण न [अमर्षण] १—३ ऊपर देखो। ४ वि असहिष्णु, क्रोधी (पण्ह १,४)। ५ सहिष्णु, क्षमाशील (सम १५३)।

अमरिसण वि [अमसृण] उद्यमी, उद्योगी (सम १५३)।

अमरिसिय वि [अमर्षित] १ मत्सरी, असहिष्णु (आवम, स ५९५)।

अमरी स्त्री [अमरी] देवी (कुमा)।

अमरीस पु [अमरेश] इन्द्र (चेइय ३१०)।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ (उत्र, सुपा ३४)। २ पु भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम (राज)।

अमला स्त्री [अमला] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (ठा ८)।

अमवस्सा देखो **अमावस्सा** (पचा १९, २०)।

अमाइ } वि [अमायिन्] निष्कपट, सरल
अमाइल्ल } (आचा, ठा १०, द्र ४७)।

अमाघाय देखो **अमग्घाय** (उवा)।

अमाण वि [अमान] १ गर्वरहित, नम्र (कप्प)। २ असंख्य, 'ठाणट्ठाणविलोइज्जमाणमाणोसहिसमूहो' (उत्र ६ टी)।

अमाय वि [अमात] नहीं समाया हुआ, 'सुमाहुवग्गस्स मणे अमायां' (सत्त ३५)।

अमाय वि [अमाय] निष्कपट, सरल (कप्प)।

अमायि देखो **अमाइ** (भग)।

अमारि स्त्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दान (सुपा ११२)। °घोस पु [°घोष] अहिंसा की घोषणा (सुपा ३०९)। °पडह पु [°पटह] हिंसा निषेध का डिंडिम, 'अमारिपडहं च घोसावेइ' (रयण ९०)।

अमावसा } स्त्री [अमावास्या] तिथि
अमावस्सा } विशेष, अमावस (कप्प, सुपा
अमावासा } २२६, णाया १, १०, चंद १०)।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिए अशक्य, असंख्य (कप्प)।

अमिज्झ न [अमेध्य] १ अशुचि वस्तु 'भरियममिज्झस्स दुरहिगंधस्स' (उप ७२८ टी)। २ विष्ठा (सुपा ३१३)।

अमित्त पुन [अमित्र] रिपु, दुश्मन (ठा, ४, ४, से ५, १७)।

अमिय देखो **अमय**=अमृत (प्रासू १, गा २, विसे, आवम, पिंग)। °कुंड न [°कुण्ड] नगर विशेष का नाम (सुपा ५७८)। °गइ स्त्री [°गति] एक छन्द का नाम (पिंग)। °णाणि पुं [°ज्ञानिन्] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १५३)। °भूय वि [°भूत] अमृत तुल्य (आउ)। °मेह पु [°मेघ] अमृतवर्षा (ज ३)। °रुइ पु [°रुचि] चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा १६)।

अमिय वि [अमित] परिमाण रहित, असंख्य, अनन्त (भग ५, ४, सुपा ३१, श्रा २७)। °गइ पु [°गति] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारों का इन्द्र (ठा २, ३)। °जस पु [°यशस्] एक चक्रवर्ती राजा का नाम (महा)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] १ सर्वज्ञ (विसे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम (सम १५३)। °तेय पु [°तेजस्] एक जैन मुनि का नाम (उप ७६८ टी)। °बल पु [°बल] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५,४)। °वाहण पु [°वाहन] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का नाम (ठा २, ३)। °वेग पु [°वेग] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६१)। °ासणिय वि [°ासनिक] एक स्थान पर नहीं बैठनेवाला, चंचल (कप्प)।

अमिल न [दे] ऊन का बना हुआ वस्त्र (श्रा १८)। २ पुं मेष, भेड (ओघ ३६८)।

अमिल वि [दे आमिल] अमिल देश में बना हुआ (आचा २, ५, १ ५)।

अमिला स्त्री [अमिला] १ बीसवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। २ पाडी, छोटी भैंस (बृह १)।

अमिलाण } वि [अम्लान] १ म्लान-
अमिलाय } रहित, ताजा, हृष्ट (सुर ३,६५, भग ११,११)। २ पु कुरण्टक वृक्ष। ३ न कुरण्टक वृक्ष का पुष्प (दे १,३७)।

अमु स [अदस्] वह, अमुक (पि ४३२)।

अमुअ स [अमुक] वह, कोई, अमका ढमका (ओघ ३२ भा, सुपा ३१४)।

अमुअ देखो **अमय**=अमृत (प्रासू ५१, गा ६७६)।

अमुअ देखो **अमय**=अमय (काप्र ७७७)।

अमुअ वि [अस्मृत] स्मरण में नहीं आया हुआ (भग ३, ६)।

अमुइ वि [अमोचिन्] नहीं छोडनेवाला (उव)।

अमुग देखो **अमुअ**=अमुक (कुमा)।

अमुगत्थ वि [अमुत्र] अमुक स्थान में (सुपा ६०२)।

अमुण वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (बृह १)।

अमुणिय वि [अज्ञात] अविदित (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [अज्ञान] मूर्ख, अजान (पण्ह १, २)।

अमुत्त वि [अमुक्त] अपरित्यक्त (ठा १०)।

अमुत्त वि [अमूर्त्त] रूपरहित, निराकार (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग } न [अमुदग्र] १ अतीन्द्रिय
अमुयग्ग } मिथ्याज्ञान विशेष, जैन देवताओं के पुद्गलरहित शरीर को देखकर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय (ठा ७)।

अमुस वि [अमृष] सच्चा, सत्य, 'अमुसे वरे' (सूत्र १, १०, १२)।

अमुसा स्त्री [अमृषा] सत्यवचन (सूत्र १, १०)। °**वाइ** वि [°वादिन्] सत्यवादी (कुमा)।

अमुह वि [अमुख] निरुत्तर (वव ६)।

अमुहरि वि [अमुखरिन्] अवाचाल, मित-भाषी (उत्त १)।

अमूढ वि [अमूढ] अमुग्ध, विचक्षण (णाया १, ६)। °**णाण** न [°ज्ञान] सत्य ज्ञान (आवम)। °**दिट्ठि** स्त्री [°दृष्टि] १ सम्यग्दर्शन (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि (उत्त २)। ३ वि अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि (गच्छ १)।

अमूस वि [अमृष] सत्यवादी (कुमा)।

अमेज्ज देखो **अमिज्ज** (भग ११,११)।

अमेज्झ देखो **अमिज्झ** (महा)।

अमोल्ल वि [अमूल्य] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य (गउड, सुपा ५१६)।

अमोसलि न [दे. अमुशलि] वस्त्रादि निरीक्षण का एक प्रकार (ओघ २६५)।

अमोसा देखो **अमुसा** (कुमा)।

अमोह वि [अमोघ] १ अवन्ध्य, सफल (सुपा ८३, ५७५)। २ पु सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा विशेष (भग ३, ६)। एक यक्ष का नाम (विपा १,४)। °**दंसि** वि [°दर्शिन्] १ ठीक-ठीक देखनेवाला (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष। ३ पु. यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। °**पहारि** वि [°प्रहारिन्] अचूक प्रहार करनेवाला, निशानबाज (महा)। °**रह** पु [°रथ] इस नाम का एक रथिक (महा)।

अमोह पु [अमोह] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह (विसे)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ३ वि मोहरहित, निर्मोह (सुपा ८३)।

अमोह पु [अमोघ] १ सूर्य-बिम्ब के नीचे कभी-कभी दीखती श्याम आदि वर्णवाली रेखा (अणु १२१)। २ पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)।

अमोहण न [अमोहन] १ मोह का अभाव (वव १०)। २ वि. मुग्ध नहीं करनेवाला (कप्प)।

अमोहा स्त्री [अमोघा] १ एक जम्बूवृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है (जीव ३)। २ एक पुष्करिणी (दीव)।

अम्म देखो **अंब**=आम्ल (उर २, ६)।

अम्मएव पुं [आम्रदेव] एक जैन आचार्य (पव २७६, गा ६०६)।

अम्मगा देखो **अम्मया** (उवा)।

अम्मच्छ वि [दे] असंबद्ध (षड्)।

अम्मड देखो **अंबड** (औप)।

अम्मडी (अप) स्त्री [अम्बा] माता, माँ (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअचिय न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४६)।

अम्मधाई देखो **अंबधाई** (विपा १, ६)।

अम्मया स्त्री [अम्बा] १ माता, जननी (उवा)। २ पाचवें वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)।

अम्महे (शौ) अ हर्ष-सूचक अव्यय (हे ४, २८४)।

अम्मा स्त्री [दे अम्बा] माता, माँ (दे १, ५)। °**पिइ**, °**पिउ**, °**पियर**, °**पीइ** पु ब [°पितृ] माँ-बाप, माता-पिता (वव ३, कप्प, सुर ३, ८३, ठा ३,१, सुर ३,८८, ७,१७०)। °**पेइय** वि [°पैतृक] माँ-बाप-सबन्धी (भग १, ७)।

अम्माइआ स्त्री [दे] अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे-पीछे जानेवाली स्त्री (दे १,२२)।

अम्मो अ [?] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय (हे २, २०८, स्वप्न २६)। २ माता का संबोधन, हे माँ (उवा, कुमा)।

अम्मोगइया स्त्री [दे] संमुख-गमन, स्वागत करने के लिए सामने जाना, 'राया सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ' (सुख २, १३)।

अम्मोस वि [अमर्ष्य] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य (सुपा ४८७)।

अम्ह स [अस्मद्] हम, निज, खुद (हे २, ६६, १४२)। °**केर**, °**क्केर**, °**च्चय** वि [°ीय] अस्मदीय, हमारा (हे २, ६६, सुपा ४६६)।

अम्हत्त वि [दे] प्रमृष्ट, प्रमार्जित (षड्)।

अम्हार } (अप) वि [अस्मदीय] हमारा
अम्हारय } (षड्, कुमा)।

अम्हारिच्छ वि [अस्मादृक्ष] हमारे जैसा (प्रामा)।

अम्हारिस वि [अस्मादृश] हमारे जैसा (हे १, १४२, षड्)।

अम्हेच्चय वि [अस्माक] अस्मदीय, हमारा (कुमा, हे २, १४९)।

अम्हो अ [अहो] आश्चर्य-सूचक अव्यय (षड्)।

अय पु [अग] १ पहाड़, पर्वत। २ साँप, सर्प। ३ सूर्य, सूरज (श्रा २३)।

अय पु [अज] १ छाग, बकरा (विपा १,४)। २ पूर्वभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ महादेव। ४ विष्णु। ५ रामचन्द्र। ६ ब्रह्मा। ६ कामदेव (श्रा २३)। ८ महाग्रह-विशेष (ठा ६)। ९ बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य (पउम ११, २५)। °**करक** पु [°करक] एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। °**वाल** पु [°पाल] आभीर (श्रा २३)।

अय पु [अय] १ गमन, गति (विसे २७६३, श्रा २३)। २ लाभ, प्राप्ति। ३ अनुभव (विसे)। ४ न पुण्य (ठा १०)। ५ भाग्य, नसीब (श्रा २३)।

अय न [अक] १ दु ख। २ पाप (श्रा २३)।

अय न [अयस्] लोहा, लोह (ओघ ६२)। °आगर पु [°आकर] १ लोहे की खान (निचू ५)। २ लोहे का कारखाना (ठा ८)। °कंत, °क्खंत पु [°कान्त] लोह-चुम्बक (आवम)। °कडिल्ल न [दे °कडिल्ल] कटाह (ओघ)। °कुंडी स्त्री [°कुण्डी] लोहे का भाजन-विशेष (विपा १,६)। °कोट्ठय पु [°कोष्ठक] लोहे का कुशूल लोहे का गोला, 'पोट्ट अयकोट्ठओ व्व वट्ट' (उवा)। °गोलय पु [°गोलक] लोहे का गोला (आ १९)। °दव्वी स्त्री [°दर्वी] लोहे की कडछी या करछुल, जिससे दाल, कढी आदि हिलाया जाता है (दे २, ७)। °पाय न [°पात्र] लोहे का भाजन। °सलागा स्त्री [°शलाका] लोहे की सलाई (उप २११ टी)।

अय सक [अय्] १ गमन करना, जाना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। वकृ **अयमाण** (सम ९३)।

अयच्छ सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। अयच्छइ (हे ४, १८७)।

अयच्छिर वि [कर्षिन्] कर्षणशील, खींचनेवाला (कुमा)।

अयड पु [अकाण्ड] १ अनुचित समय (महा)। २ अकस्मात्, हठात् (पउम ५,१६४, से ४४, गउड)। ३ क्रिवि अनधारित, अतर्कित (पाअ)।

अयत वकृ [आयत्] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ (आवम)।

अयन्तिअ वि [अयन्त्रित] अनादरणीय (उत्त २०, ८२)।

अयपिर वि [अजल्पितृ] नहीं बोलनेवाला, मौनी (पि २९६, ५९६)।

अयपुल पु [अयपुल] गोशालक का एक शिष्य (भग ८, ५)।

अयस पु [आदर्श] दर्पण, काँच। °मुह पुं [°मुख] १ इस नाम का एक द्वीप। २ द्वीप-विशेष का निवासी (इक)।

अयसंधि वि [इदसंधि] उपयुक्त कार्य को यथासमय करनेवाला (आचा)।

अयकरय पु [अयकरक] एक महाग्रह (सुज २०)।

अयक्क } पु [दे] दानव, असुर (दे १,६)।
अयग }

अयगर पु [अजगर] अजगर, मोटा साँप (पण्ह १, १, पउम ६३, ५४)।

अयड पु [दे अवट] कूप, कुंआ (दे १,१८)।

अयण न [अतन] सतत होना, निरन्तर होना (विसे ३५७८)।

अयण न [अयन] १ गमन। २ प्राप्ति, लाभ (विसे ८३)। ३ ज्ञान, निर्णय (विसे ८३)। ४ गृह, मन्दिर, 'चंडियायण' (स ४३५)। ५ वि प्रापक, प्राप्त करनेवाला (विसे ९६०)। ६ पुन वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है (ठा २, ४),

'एक्के अअणे दिअहा, बीए रअणीओ
　　होंति दीहाओ।
विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे च्चेअ वड्ढंति'
　　(गा ८४६)।

अयण न [अदन] १ भक्षण। २ खुराक, भोजन (स १३०, उर ८, ७)।

अयणु वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (सुर ३, १९६)।

अयणु वि [अतनु] स्थूल, मोटा, महान् (सण)।

अयतच्चिअ वि [दे] पुष्ट, उपचित (दे १, ४७)।

अयर वि [अजर] वृद्धावस्थारहित 'अयरामर ठाण' (पडि, उव)।

अयर पुन [अतर] १ सागर, समुद्र (द २८)। २ समय का मान विशेष, सागरोपम (सग २१,२५, धण ४३)। ३ वि तरने के अशक्य (बृह १)। ४ असमर्थ, अशक्त (निचू १)। ५ ग्लान, बीमार (बृह १)।

अयरामर वि [अजरामर] १ जरा और मरण से रहित (नव २)। २ न मुक्ति, मोक्ष (पउम ८, १२७)।

अयल देखो अचल = अचल (पाअ, गउड, उप पृ १०५, अत ३, पउम ८५,४, सम ८८, कप्प, सम १६)।

अयला देखो अचला (पउम १२०, १५६)।

अयस देखो अजस (गउड, प्रासू २३, १५३, गा १७८)।

अयंसि वि [अयशस्विन्] अजसी, यशोरहित, कीर्ति शून्य (गउड)।

अयसि } स्त्री [अतसी] धान्य-विशेष, अलसी,
अयसी } तीसी (भग, ठा ७, णाया १, ५)।

अया स्त्री [अजा] १ बकरी। २ माया, अविद्या। ३ प्रकृति, कुदरत (हे ३, ३२ षड्)। °किवाणिज्ज पुं [°कृपाणीय] न्याय-विशेष, जैसे बकरी के गले पर अनवारी छुरी पडती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना (आचा)। °पाल पु [°पाल] आभीर, बकरी चरानेवाला (स २६०)। °वय पु [°व्रज] बकरी का वाडा (भग १६,३)।

अयागर देखो अय-आगर (ठा ८)।

अयाण न [अज्ञान] ज्ञान का अभाव (सत्त ६३)।

अयाण वि [अज्ञ, अज्ञान] अजान, अज्ञानी, मूर्ख (ओघ ७४, पउम २२, ८३, गा २७५, दे ७, ७३)।

अयाणअ वि [अज्ञायक] ऊपर देखो (पाअ, भवि)।

अयाणंत देखो अजाणंत (ओघ ११)।

अयाणमाण देखो अजाणमाण (नव ३९)।

अयाणिय देखो अजाणिय (उप ७२८ टी)।

अयाणुय देखो अजाणुय (सुर ३,१९८, सुपा ५४३)।

अयार पु [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४७८)।

अयाल पु [अकाल] अयोग्य समय, अनुचित काल (पउम २२, ८५)।

अयालि पु [दे] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे १, १३)।

अयालिय वि [अकालिक] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न, 'पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू' (रंभा)।

अयि देखो अइ = अयि (हे २, २१७)।

अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा, दुलहिन (षड्)।

अयोमय देखो अओ-मय (अंत १६)।

अय्यावत्त (शौ) पु [आर्यावर्त] भारत, हिन्दुस्तान (कुमा)।

अय्युण (मा) देखो अज्जुण (हे ४, २९२)।

अर पु [अर] १ धुरी, पहिये के बीचका काष्ठ। २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ

चक्रवर्ती राजा, 'सुमिणे अर महरिह पासइ जणणी अरो तम्हा' (आव २, सम ५३, उत्त १८)। ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा। (ती २१)।

°अर पु [°कर] १ किरण। गा ३४३, से १, १७)। २ हस्त, हाथ (से १, २८)। ३ शुल्क, चुगी (से १, २८)।

अरइ स्त्री [अरति] अर्श, मसा (आचा २, १३, १)।

अरइ स्त्री [अरति] १ बेचैनी। (भग, आचा, उत्त२)। °कम्म न [°कर्मन्] अरति का हेतुभूत कर्मविशेष (ठा ६)। °परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह] अरति को सहन करना (पच ८)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष (कम्म १)। °रइ स्त्री [°रति] सुख दुःख (ठा १)।

°अरग देखो तरग (से २, २६)।

अरजर पुन [अरञ्जर] घडा, जल-घट (ठा ४, ४)।

°अरक्ख देखो वरक्ख (से ६, ४४)।

अरक्खरी स्त्री [अराक्षरी] नगरी-विशेष (आक)।

अरग देखो अर (पण्ह २, ४, भग ३, ५)।

अरज्झिय वि [अरहित] निरन्त, रसतत, 'अरज्झियाभितावा' (सूअ १, ५, १)।

अरड्डु पु [अरट्टु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

अरण न [अरण] हिंसा (उव)।

अरणि पु [अरणि] १ वृक्ष-विशेष। २ इस वृक्ष की लकडी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पेदा होती है (आवम, णाया १, १८)।

अरणि पुस्त्री [दे] १ रास्ता, मार्ग। २ पक्ति, कतार। (पड्)।

अरणिया स्त्री [अरणिका] वनस्पति-विशेष (आचा)।

अरणेट्टय पु [दे अरणेटक] पत्थरो के टुकडो से मिली हुई सफेद मिट्टी (जी ३)।

अरण्ण वि [आरण्य] जगल मे रहने वाला (सूअ १, १, १, १६)।

अरण्ण न [अरण्य] वन, जगल (हे १, ६६)। °वडिंसग न [°ावतंसक] देवविमान विशेष (सम ३६)। °साण पुं [°श्वन्] जंगली कुत्ता (कुमा)।

अरण्णय वि [आरण्यक] जगली, जगल-वासी (अभि ५२)।

अरत्त वि [अरक्त] राग-रहित, नीराग (आचा)।

अरन्न देखो अरण्ण (कप्प, उव)।

अरवाग पु [दे] एक अनार्य देश, अरब देश (पव २७४)।

अरमतिया स्त्री [अरमन्तिका] अरमणता, कार्य मे अतत्परता (उवा)।

अरय देखो अर (खेत्त १०८)।

अरय वि [अरजस्] १ रजोगुण-रहित (पउम ६, १४६)। २ एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। ३ वि धूलीरहित, निर्मल (कप्प)। ४ न पाचवें देव लोक का एक प्रतर (ठा ६)। ५ रजोगुण का अभाव, 'अरो य अरय पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं' (उत्त १८)।

अरय वि [अरत] अनासक्त, नि स्पृह (आचा)।

अरय पुंन [अरजस्] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१)।

अरया स्त्री [अरजा] कुमुद नामक विजय की राजधानी (ज ४)।

अरयणि पु [अरत्नि] परिमाण विशेष, खुली अगुलीवाला हाथ (ठा ४, ४)।

अरर न [अरर] १ युद्ध। २ ढकना। °कुरी स्त्री [°कुरी] नगरी-विशेष (धम्म ६ टी)।

अररि पुन [अररि] किवाड, द्वार (प्रामा)।

अरल न [दे] १ चीरी, कीट-विशेष। २ मशक, मच्छड (दे १, ९३)।

अरलाया स्त्री [दे] चीरी, कीट-विशेष (दे १, २६)।

अरलु देखो अरड्डु (पउम ४२, ८)।

अरविंद न [अरविन्द] कमल, पद्म (पण्ह २, ४)।

अरविंदर वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १,४५)।

अरस पु [अरस] रसरहित, नीरस (णाया १, ५)।

अरस पु [अर्शस्] व्याधि-विशेष, बवासीर (श्रा २२)।

अरस न [अरस] तप-विशेष, निर्विकृति तप (सबोध ५८)।

अरह वि [अर्हन्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (पड्, हे २, १११)। २ पुं जिनदेव, तीर्थंकर (सम्म ६७)। °मित्त पु [°मित्र] एक व्यापारी का नाम (गच्छ २)।

अरह देखो अरिह = अर्ह। अरहइ (प्राकृ २८)।

अरह वि [अरहस्] १ प्रकट। २ जिससे कुछ भी न छिपा हो। ३ पु जिनदेव, सर्वज्ञ (ठा ४, १, ६)।

अरह वि [अरथ] परिग्रहरहित (भग)।

अरहत वकृ [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (पड्, हे २, १११, भग ८, ५)। २ पु जिन भगवान्, तीर्थंकरदेव (आचा, ठा ३, ४)।

अरहंत वि [अरहोन्तर्] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जाननेवाला। २ पु जिन भगवान् (भग २,१)।

अरहत वि [अरथान्त] १ निःस्पृह, निर्मम। २ पु जिनदेव (भग)।

अरहत वकृ [अरहयत्] १ अपने स्वभाव को नहीं छोडनेवाला। २ पु जिनेश्वर देव (भग)।

अरहट्ट पु [अरघट्ट] अरहट, रहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र विशेष (गा ४९०, प्रासू ५५), 'भमिओ कालमणत अरहट्टघडिव्व जलमज्झे' (जीवा १)।

अरहट्टिय वि [अरघट्टिक] अरहट चलानेवाला (कुप्र ५८)।

अरहणा स्त्री [अर्हणा] १ पूजा। २ योग्यता (प्राकृ २८)।

अरहण्णय पु [अरहन्नक] एक व्यापारी का नाम (णाया १, ८)।

अरहन्न पु [अर्हन्न] एक जैन मुनि का नाम (सुख २, ६)।

अराइ पु [अराति] रिपु, दुश्मन (कुमा)।

अराइ स्त्री [अरात्रि] दिन, दिवस (कुमा)।

अरागि वि [अरागिन्] रागरहित, वीतराग (पउम ११७, ४१)।

अरि देखो अरे (तदु ५०, ५२ टी)।

अरि पु [अरि] दुश्मन, रिपु (पउम ७३,१६)। °छव्वग्ग पु [°षड्वर्ग] छ आन्तरिक

'‚—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (सूअ १,१,४)। °दमण वि [°दमन] १ रिपु विनाशक। २ पु. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरु थे (पउम २०,७)। °दमणी स्त्री [°दमनी] विद्या विशेष (पउम ७, १४५)। °विद्धसी स्त्री [°विध्वसिनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या (पउम ७, १४०)। °सतास पु [°सत्रास] राक्षसवंश मे उत्पन्न लङ्का का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हत वि [°हन्तृ] १ रिपु-विनाशक। २ पु जिनदेव (श्रावम)।

अरिअल्लि पुस्त्री [दे] व्याघ्र, शेर (दे १,२४)।

अरिंजय पु [अरिञ्जय] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र। २ न नगर-विशेष (पउम ५, १०६, इक, मुर ५, १०३)।

अरिट्ठ पु [अरिष्ट] १ वृक्ष-विशेष (पएण १)। २ पनरहवें तीर्थंकर का एक गणधर (सम १५२)। ३ पुन एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)। ४ न गोत्र-विशेष, जो माएडव्य गोत्र की शाखा है (ठा ७)। ५ रत्न की एक जाति (उत्त ३४, ४, सुपा ६)। ६ फल-विशेष, रीठा (पएण १७, उत्त ३४, ४)। ७ अनिष्ट-सूचक उत्पात (आचू)। °णेमि, °नेमि पु [°नेमि] वर्तमान काल के बाईसवें जिनदेव (सम १७, अत ५, कप्प, पडि)।

अरिट्ठा स्त्री [अरिष्टा] कच्छ नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३)।

अरित्त न [अरित्र] पतवार, कन्हर, नाव की पीछे का डाड, जिससे नाव दाहिने-बायें घुमायी जाती है (धर्मवि १३२)।

अरिरिहो अ [अरिरिहो] पादपूरक अव्यय (हे २, २१७)।

अरिस देखो अरस (णाया १, १३)।

अरिसल्ल } अरिसिल्ल } वि [अर्शस्वत्] बवासीर रोगवाला (पात्र, विपा १,७)।

अरिह वि [अर्ह] १ योग्य, लायक (सुपा २६६, प्राप्र)। २ पु जिनदेव (औप)।

अरिह सक [अर्ह्] १ योग्य होना। २ पूजा के योग्य होना। ३ पूजा करना। अरिहइ (महा)। अरिहेति (भग)।

अरिह देखो अरह = अर्हत (हे २, १११, पड्)। °दत्त, °दिण्ण पु [°दत्त] जैन मुनि-विशेष का नाम (कप्प)।

अरिहणा देखो अरहणा (प्राक्ट २८)।

अरिहंत देखो अरहत = अर्हत् (हे २, १११, पड्, णाया १, १)। °चेइय न [°चैत्य] १ जिन-मन्दिर (उवा, आचू)। °सासण न [°शासन] १ जैन आगम-ग्रन्थ। २ जिन-आज्ञा। (पण्ह २, ५)।

°अरु देखो तरु (से २, १६, ५, ८५)।

अरु वि [अरुज्] रोग-रहित (तदु ४६)।

अरु देखो अरुव (तदु ४६)।

अरुग न [दे अरुक] व्रण, घाव, 'अरुग इहरा कुत्थइ' (बृह ३)।

अरुतुद वि [अरुन्तुद] १ मर्म-वेधक। २ मर्म-स्पर्शी, 'इय तदरुतुदवायावाणेहिं विधियस्सावि' (सम्मत्त १५८)।

अरुण पु [अरुण] १ सूर्य सूरज (से ३, ६)। २ सूर्य का सारथी। ३ सन्ध्याराग, सन्ध्या की लाली (से ८, ७)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-विशेष, 'गतूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तओ उदही' (दीव)। ६ एक ग्रह-देवता का नाम (ठा २, ३, पत्र ७८)। ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३, पत्र ६६)। ८ देव-विशेष (णादि)। ९ रक्त रग, लाली। (गउड)। १० न. विमान विशेष (सम १४)। ११ वि. रक्त, लाल (गउड)। °कंत न [°कान्त] देवविमान-विशेष (उवा)। [°कील] न [°कील] देवविमान-विशेष (उवा)। °गगा स्त्री [°गङ्गा] महाराष्ट्र-देश की एक नदी (ती २८)। °गव न [°गव] देवविमान-विशेष (उवा)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देवविमान का नाम (उवा)। °प्पभ, °प्पह न [°प्रभ] इस नाम का एक देवविमान (उवा)। °भद्द पु [°भद्र] एक देवता का नाम (सुज्ज १६)। °भूय न [°भूत] एक देवविमान (उवा)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] देव-विशेष (सुज्ज १६)। °महावर पु [°महावर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (इक)। °वडिंसय न [°ावतसक] एक देवविमान (उवा)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान (उवा)। °ाभ न [°ाभ] देवविमान-विशेष (उवा)।

अरुण न [दे] कमल, पद्म (दे १, ८)।

अरुण पुन [अरुण] १ एक देव-विमान। (देवेन्द्र १३१)। °प्पभ पु [°प्रभ] १ अनुवेलन्धर नामक नागराज का एक आवास-पर्वत। २ उस पर्वत का निवासी देव। (ठा ४, २, पत्र २२६)। °ाभ पु [°ाभ] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

अरुणिम पुस्त्री [अरुणिमन्] लाली, रक्तता; 'पाणिपल्लवारुणिमरमणीय' (सुपा ५८)।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल (गउड)।

अरुणुत्तरवडिसग न [अरुणोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देवविमान (सम १४)।

अरुणोद पुं [अरुणोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)।

अरुणोदय पु [अरुणोदक] समुद्र-विशेष (भग)।

अरुणोववाय पु [अरुणोपपात] ग्रन्थ-विशेष का नाम (णदि)।

अरुय वि [अरुष्] व्रण, घाव (सूअ १, ३, ३)।

अरुय वि [अरुज्] निरोगी, रोगरहित (सम १, अजि २१)।

अरुह देखो अरह = अर्हत् (हे २,१११, पड, भवि)।

अरुह वि [अरुह] १ जन्मरहित। २ पु मुक्त आत्मा (पव २७५, भग १, १)। ३ जिन देव (पउम ५, १२२)।

अरुह देखो अरिह = अर्ह्। अरुहसि (अभि १०४)। वकृ अरुहमाण (पड्)।

अरुह वि [अर्ह] योग्य (उत्तर ८४)।

अरुहंत देखो अरहंत = अर्हत् (हे २, १११, पड्)।

अरुहत वि [अरोहत्] १ नही उगता हुआ, जन्म नही लेता हुआ (भग १, १)।

अरुव वि [अरूप] रूपरहित, अमूर्त, (पउम ७५, २६)।

अरूवि वि [अरूपिन्] ऊपर देखो (ठा ६, ३, आचा, पराग १)।

अरे अ [अरे] १-२ संभाषण और रति-कलह का सूचक अव्यय (हे २,२०१, षड्)।

अरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आक्षेप। २ विस्मय, आश्चर्य। ३ परिहास, ठट्ठा (मक्षि ३८, ४७)।

अरोअ अक [उन्+लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ (हे ४, २०२, कुमा)।

अरोअअ पु [अरोचक] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि (श्रा २२)।

अरोइ वि [अरोचिन्] अरुचि वाला, रुचि-रहित, 'अरोइ अत्ये कहिए विलावो' (गोय ७)।

अरोग वि [अरोग] रोगरहित (भग १८, १)। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, नीरोगता (उप ७२८ टी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] नीरोग, रोग-रहित। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, तदुरुस्ती (महा)।

अरोग्ग } देखो आरोय = आरोग्य (आचा २,
अरोय } १५, २)।

अरोस वि [अरोष] १ गुस्सा-रहित। २-३ पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पराह १, १)।

अल न [अल] १ विच्छू के पुच्छ का अग्र भाग,

'अलमेव विच्छुआण, मुहमेव
अहीण तह य मंदस्स।
दिट्ठि-व्विय पिसुणाणं,
सव्व सव्वस्स भय-जणय'
(प्रासू १९)।

२ अलादेवी का एक सिंहासन (णाया २)। ३ वि समर्थ (आचा)। °पट्ट न [°पट्ट] विच्छू की पूंछ जैसे आकारवाला एक शस्त्र (विपा १, ६)।

°अल देखो तल (गा ७५, से १, ७८)।

अल अ [अलम्] १ पर्याप्त, पूर्ण, 'अलमाणद जणतीए' (सुर १३, २१)। २ प्रतिषेध, निवारण, वस (उप २, ७)।

अलं अ [अलम्] अलङ्कार, भूषा (सूअनि २०२)।

अलंकर सक [अलं+कृ] भूषित करना, विराजित करना। अलकरेति (पि ५०६)। वकृ. अलंकरंत (माल १४३)। सकृ. अल-करिअ (पि ५८१)। प्रयो, कर्म. अलकरा-वीयउ (स ६४)।

अलकरण न [अलङ्करण] १ आभूषण, अल-कार (रयण ७४, भवि)। २ वि शोभा-कारक, 'मज्झमलोअस्स अलकरणि सुलोअणि' (विक्र १४)।

अलकरिय वि [अलकृत] सुशोभित, विभूपित, 'किं नयरमलकरिय जम्ममहेण तए महापुरिस।' (सुपा ५८४, सुर ४, ११८)।

अलकार पु [अलङ्कार] १ शास्त्र-विशेष, साहित्यशास्त्र (सिरि ५५, सिक्खा २)। २ पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

अलंकार पु [अलकार] १ भूषण, गहना (औप, राय)। २ भूषा, शोभा (ठा ४, ४)। °सहा स्त्री [°सभा] भूषा-गृह, शृङ्गार-घर (इक)।

अलंकारिय पु [अलंकारिक] नापित, नाई, हजाम (णाया १, १३)। °कम्म न [°कर्मन्] हजामत, क्षौर कर्म (णाया १, १३)। °सहा स्त्री [°सभा] हजामत वनाने का स्थान (णाया १, १३)।

अलकिय वि [अलकृत] १ विभूपित, सुशो-भित (कप्प, महा)। २ न सगीत का एक गुण (जीव ३)।

अलकुण देखो अलकर। अलकुणति (रयण ५२)।

अलव वि [अलङ्घ्य] १ उल्लघन करने के अयोग्य (सुर १, ४१)। २ उल्लघन करने के अशक्य (उप ५६७ टी)।

अलघणिय } वि [अलङ्घनीय] ऊपर देखो
अलघणीय } (महा, सुपा ६०१, पि ६६, नाट)।

अलप पु [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे १, १३)।

अलवुसा स्त्री [अलम्बुषा] १ एक दिक्कुमारी देवी का नाम। (ठा ८)। २ गुल्म-विशेष। (पाअ)।

अलभि स्त्री [अलाभ] अप्राप्ति (ओघ २३, भा)।

अलका स्त्री [अलका] नगरी-विशेष, पहले प्रतिवासुदेव की राजधानी (पउम २०, २०१)। देखो अलया।

अलक्ख पु [अलक्ष] १ इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अत १८)। २ न. 'अतगडदसा' सूत्र के एक अध्ययन का नाम। (अत १८)।

अलक्ख वि [अलक्ष्य] लक्ष्य में न आ सके ऐसा (सुर ३, १३६, महा)।

अलक्खमाण वि [अलक्ष्यमाण] जो पहि-चाना न जा सकता हो, गुप्त (उप ५९३ टी)।

अलक्खिय वि [अलक्षित] १ अज्ञात, अपरिचित। (से १३, ४५)। २ न पहचाना हुआ। (सुर ४, १४०)।

अलग देखो अलय = अलक (महा)।

अलगा देखो अलया (अत १)।

अलग्ग न [दे] कलक देना, दोष का झूठा आरोप (दे १, ११)।

अलचपुर न [अचलपुर] नगर-विशेष (कुमा)।

अलज्ज वि [अलज्ज] निर्लज्ज, बेशरम (पराह १, ३)।

अलज्जिर वि [अलज्जालु] ऊपर देखो (गा ६०, ४४५, ६६१, महा)।

अलट्टपलट्ट न [दे] पार्श्व का परिवर्तन (दे १, ४८)।

अलत्त पु [अलक्त] आलता, स्त्रियाँ हाथ-पेर को लाल करने के लिए जो रग लगाती हैं वह (अनु ५)।

अलत्तय पु [अलक्तक] १ ऊपर देखो। (सुपा ४०६)। २ वि आलता से रँगा हुआ (अनु)।

°अलधोय देखो कलधोय (से ६, ४६)।

अलमजुल वि [दे] आलसी, सुस्त (दे १, ४६)।

अलमत्थु वि [अलमस्तु] १ समर्थ। २ निषेधक, निवारक। (ठा ४, २)।

अलमल पु [दे] दुर्दान्त बैल (दे १,२५)।

अलमलवसह पु [दे] उन्मत्त बैल (दे १, २५)।

अलय न [दे] विद्रुम, प्रवाल (दे १, १६, भवि)।

अलय पु [अलक] १ विच्छू का काटा। (विपा १, ६)। २ केश, घुँघराले बाल। (पाअ, स ६६)।

अलया स्त्री [अलका] कुबेर की नगरी (पाअ, णाया १, ८)। देखो अलका।

अलव वि [अलप] मौनी, नहीं बोलनेवाला (सूअ २ ६)।

अलवलवसह पु [दे] धूर्त बैल (पड)।

अलस वि [अलस] १ आलसी, सुस्त (प्रासू ७)। २ मन्द, धीमा (पाअ)। ३ पु क्षुद्र कीट-विशेष, भू-नाग, वर्षाऋतु में सर्प सरीखा लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है वह (जी १५, पुप्फ २६५)।

अलस वि [दे] १ मधुर आवाजवाला, 'ख अलस कलमंजुल' (पाअ)। २ कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ। ३ न मोम (दे १, ५०)।

°अलस देखो कलस (से १, ६, ११, ४०, गा ३६६)।

अलसग } पु [अलसक] १ विसूचिका रोग
अलसय } (उवा)। २ श्वयथु, सूजन (आचा)।

अलसाइअ वि [अलसायित] जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द (गा ३५०)।

अलसाय अक [अलसाय्] आलसी होना, आलसी की तरह काम करना। अलसाअइ (पि ५५८)। वकृ अलसायंत अलसायमाण (से १४, १, उप पृ ३१५, गच्छ १)।

अलसी देखो अयसी (आचा, पड्, हे २, ११)।

अला स्त्री [अला] १ इस नाम की एक देवी (ठा ६)। २ एक इन्द्राणी का नाम (णाया २)। °वडिंसग न [°वतंसक] अलादेवी का भवन (णाया २)।

°अला देखो कला (गा ६५७)।

अलाउ न [अलाबु] तुम्बी फल, लोकी, तुम्बा (औप प्रासू १५२)।

अलाऊ } स्त्री [अलाबू] तुम्बी-लता
अलाबू } (कुमा, पड्)।

अलाय न [अलात] १ उल्मुक, जलता हुआ काष्ठ (दे १,१०७, ओघ २१ भा)। २ अङ्गार, कोयला (से ३, ३४)।

अलावणी स्त्री [अलाबुवीणा] वीणा-विशेष (प्राकृ ३७)।

अलावु देखो अलाउ (ज ३)।

अलावू देखो अलाऊ (पि १४१, २०१)।

अलाह पु [अलाभ] नुकसान, गैरलाभ, 'ववहरमाणाण पुणो होइ सुलाहा कयावलाहो वा' (सुपा ४४६)।

अलाहि देखो अल (उव ७२८ टी, हे २,१८९, णाया १, १, गा १२७)।

अलि पु [अलि] भ्रमर (कुमा)। °उल न [°कुल] भ्रमरों का समूह (हे ४, २५३)। °विरुय न [°विरुत] भ्रमर का गुञ्जारव (पाअ)।

अलि पुस्त्री [अलि] वृश्चिक राशि (विचार १०६)।

अलिअल्ली स्त्री [दे] १ कस्तूरी। २ व्याघ्र, शेर (दे १, ५६)।

अलिआ स्त्री [दे] सखी (दे १, १६)।

अलिआर न [दे] दूध (दे १, २३)।

अलिंजर न [अलिञ्जर] १ घडा, कुम्भ (ठा ४, २)। २ कुण्ड पात्र-विशेष (दे १, ३७)।

अलिंजरअ पुं [अलिञ्जरक] १ घडा (उवा)। रंगने का कुंडा, रंग-पात्र (पाअ)।

अलिंद न [अलिन्द] पात्र-विशेष, एक प्रकार का जलपात्र (ओघ ४७६)।

अलिंदग पुं [अलिन्दक] १ द्वार का प्रकोष्ठ (स ४७६)। २ घर के बाहर के दरवाजे का चौक। ३ बाहर का अग्र भाग (बृह २, राज)।

अलिंदय पुन [आलिन्दक] धान्य रखने का पात्र-विशेष (अणु १५१)।

अलिग पु [दे] वृश्चिक, विच्छू (दे १, ११)।

अलिणी स्त्री [अलिनी] भ्रमरी (कुमा)।

अलित्त न [अरित्र] नोका खेवने का डांड, चप्पू (आचा २, ३ १)।

अलिय न [अलिक] कपाल (पाअ)।

अलिय न [अलीक] १ मृषावाद, असत्य वचन (पाअ)। २ वि झूठा, खोटा, 'अलिअ-पोरुमालाव'—(पाअ)। ३ निष्फल, निरर्थक (पण्ह १, २)। °वाइ वि [°वादिन्] मृषावादी (पउम ११, २७ महा)।

अलिल्ल सक [कथय्] कहना, बोलना। अलिल्लह (पिंग)।

अलिल्लह न [दे] १ छन्द विशेष का नाम। २ वि अप्रयोजक, नियमरहित (पिंग)।

अलिल्ला स्त्री [अलिल्ला] इस नाम का एक छन्द (पिंग)।

अलीग } देखो अलिय = अलीक (सुर ४,
अलीय } २२३, सुपा ३००, महा)।

अलीवहू स्त्री [अलिवधू] भ्रमरी (कुमा)।

अलीसअ स्त्री पु [दे] शाक-वृक्ष, साग का पेड (दे १, २७)।

अलुक्खि वि [अरूक्षिन्] कोमल (भग ११, ४)।

अलेसि वि [अलेश्यिन्] १ लेश्यारहित। २ पु मुक्त आत्मा (ठा ३, ४)।

अलोग पु [अलोक] जीव-पुद्गल आदि रहित आकाश (भग)।

अलोणिय वि [अलवणिक] लूणरहित नमक-शून्य, 'नय अलोणिय सिल कोइ चट्टेइ' (महा)।

अलोय देखो अलोग (सम १)।

अलोभ पु [अलोभ] १ लोभ का अभाव, संतोष। २ वि लोभरहित, संतोषी (भग, उत्त)।

अलोल वि [अलोल] अलम्पट, निर्लोभ (दस १०, पि ८५)।

अलोह देखो अलोभ (कप्प)।

अल्ल न [दे] दिन, दिवस (दे १, ५)।

अल्ल देखो अद्द (हे १, ८२)।

अल्ल अक [नम्] नमना, नीचे झुकना। ओअल्लंति (से ६, ४३)।

अल्लई स्त्री [आर्द्रकी] लता-विशेष, आर्द्रक-लता (पण्ण १७)।

अल्लग देखो अल्लय = आर्द्रक (धर्म २)।

अल्लत्थ सक [उत् + क्षिप्] ऊंचा फेंकना। अल्लत्थइ (हे ४, १४४)।

अल्लत्थ न [दे] १ जलार्द्र, गीला पखा। २ केयूर, भूषण-विशेष (दे १, ५४)।

अल्लत्थिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊंचा फेंका हुआ (कुमा)।

अल्लय न [आर्द्रक] आदी, अदरक (जी ६)। °तिअ न [°त्रिक] आदी, हल्दी और कचूर (जी ६)।

अल्लय वि [दे] परिचित, ज्ञात (दे १,१२)।

अल्लय पु [अल्लक] इस नाम का एक विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्द्योतन-

सूरि का उपाध्याय अवस्था का नाम (सुर १६, २३६)।

अल्लल्ल पु [दे] मयूर, मोर (दे १, १३)।

अल्लविय [अप] देखो आलत्त = आलपित (भवि)।

अल्ला स्त्री [दे] माता, मा (दे १,५)।

अल्लि } देखो अल्ली। अल्लिइ (षड्)।
अल्लिअ } अल्लिअइ (दे १,५८, हे ४,५४)। वकृ अल्लिअत (से १२, ७१, पउम १२, ५१)।

अल्लिअ सक [उप + सृप्] समीप मे जाना। अल्लिअइ (हे ४,१३६)। वकृ अल्लिअत (कुमा)। प्रयो अल्लियावेइ (पि ४८२, ५०१)।

अल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ (गा ४४०)।

अल्लियावण न [आलायन] आलीन करना, श्लिष्ट करना, मिलान (भग ८ ६)।

अल्लिल्ल पु [दे] भमरा (षड्)।

अल्लिव सक [अर्पय्] अर्पण करना। अल्लिवइ (हे ४,३९, भवि, पि १९६,४८५)।

अल्ली } सक [आ + ली] १ आना। २
अल्लीअ } प्रवेश करना। ३ जोडना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ अक सगत होना। अल्लीअइ (हे ४, ५४)। भूका अल्लीसी (प्रामा) हेकृ अल्लीउं (बृह ६)।

अल्लीण वि [आलीन] १ आश्लिष्ट। २ आगत। ३ प्रविष्ट। ४ सगत। ५ योजित। ६ थोडा लीन (हे ४, ५४)। ७ आश्रित (कप्प)। ८ तल्लीन, तत्पर (वव १०)।

अल्लेस वि [अलेश्य] लेश्यारहित (कम्म ४, ५०)।

अल्लोग देखो अलोग (द्रव्य १६)।

अल्हाद पु [आह्लाद] खुशी, प्रमोद, आनन्द (प्राप्र)।

अव अ [अप] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विपरीतता, उल्टापन, 'अवकय, अवगुय'। २ वापसी, पीछेपन, 'अवक्कमइ'। ३ बुरापन, खराबपन, 'अवमग्ग, अवसद्द'। ४ न्यूनता, कमी, 'अवड्ढ'। ५ रहितपन, वियोग, 'अवबाण'। ६ वाहरपन, 'अवक्कमण'।

अव अ [अव] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ निम्नता, 'अवइएण'। २ पीछेपन, 'अवचुल्ली'। ३ तिरस्कार, अनादर, 'अवगणत'। ४ खराबी, बुराई, 'अवगुण'। ५ गमन। ६ अनुभव (राज)। ७ हानि, ह्रास, 'अवक्कास'। ८ अभाव, 'अवलद्धि'। ९ मर्यादा (विसे ८२)। १० निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'अवपुट्ठ, अवगल्ल'।

अव सक [अव्] १ रक्षण करना, 'अवतु मुणिणो य पयकमल' (रयण ९)। २ जाना, गमन करना। ३ इच्छा करना। ४ जानना। ५ प्रवेश करना। ६ सुनना। ७ माँगना, याचना। ८ करना, बनाना। ९ चाहना। १० प्राप्त करना। ११ आलिङ्गन। १२ मारना, हिंसा करना। १३ जलाना। १४ अक प्रीति करना। १५ तृप्त होना। १६ प्रकाशना। १७ बढना। अव (श्रा २३, विसे २०२०)।

अव पु [अव] शब्द, आवाज (श्रा २३)।

अवअक्ख सक [दृश्] देखना। अवअक्खइ (हे ४, १८१, कुमा)।

अवअक्खिअ न [दे] निवापित मुख, मुंडाया हुआ मुंह (दे १,४०)।

अवअच्छ न [दे] कक्षा-वस्त्र (दे १,२६)।

अवअन्छ अक [ह्लाद्] आनन्द पाना, खुश होना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छ सक [ह्लादय्] खुश करना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छिअ [दे] देखो अवअक्खिअ (दे १, ४०)।

अवअच्छिअ वि [ह्लादित] १ हृष्ट, आह्लाद प्राप्त। २ खुश किया हुआ, हर्षित (कुमा)।

अवअज्झ सक [दृश्] देखना। अवअज्झइ (षड्)।

अवअणिअ वि [दे] असघटित, असयुक्त (दे १, ४३)।

अवअण्ण पु [दे] ऊखल, शृगल (दे १,२६)।

अवअत्त वि [अपवृत्त] स्खलित (से १०, १८)।

अवआस सक [दृश्] देखना। अवआसइ (हे ४, १८१, कुमा)।

अवइ वि [अव्रतिन्] व्रतशून्य, अविरत, असंयत (बृह १)।

अवइण्ण वि [अवतीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ। २ जन्मा हुआ (कप्पू, पउम ७९, २८)।

अवइद (शौ) वि [अवचित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (अभि ११७)।

अवइद (शौ) वि [अपकृत] १ जिसका अहित किया गया हो वह। २ न अपकार, अहित (चारु ४०)।

अवइन्न देखो अवइण्ण (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [अवकुब्ज्] नीचे नमना। सकृ अवउज्जिय (आचा २, १, ७)।

अवउज्झ सक [अप + उज्झ्] परित्याग करना। छोड देना। सकृ अवउज्झिऊण (बृह ३)।

अवउज्झ° देखो अववह।

अवउडग } देखो अवओडग (णाया १, २,
अवउडय } अनु)।

अवउठण न [अवगुण्ठन] १ ढकना। २ मुंह ढकने का वस्त्र, घूँघट (चारु ७०)।

अवऊढ वि [अवगूढ] आलिगित, 'सभावहू-अवऊढो णववारिहरोव्व विज्जुलापडिभिन्नो' (हे २, ६, स ४६६)।

अवऊसण न [अपवसन] तपश्चर्या-विशेष (पचा १६)।

अवऊसण न [अपजोषण] ऊपर देखो (पचा १६)।

अवऊहण न [अवगूहन] आलिङ्गन (गा ३३४, ५५९, वज्जा ७४)।

अवएड पु [अवएज] तापिका-हस्त, पात्र-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवएस पु [अपदेश] बहाना, छल (पाअ)।

अवओडग न [अवकोटक] गले को मरोडना, कृकाटिका को नीचे ले जाना (विपा १, २)। °बंधण न [°बन्धन] १ हाथ और सिर को पृष्ठ भाग से बाँधना (पण्ह १, २)। २ वि रस्सी से गला और हाथ को मोडकर पृष्ठ भाग के साथ जिसको बाधा जाय वह (विपा १, २)।

अवग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग (सुर ३, १२४, ११, ६१)।

अवग पु [दे] कटाक्ष (दे १, १५)।

अवगु } वि [दे अपावृत] नहीं ढका
अवगुय } हुआ, खुला (औप पण्ह २, ४)।

अवगुण सक [दे] खोलना। अवगुणेज्जा (आचा २, २, २, ४)।

अवंचिअ वि [अवाञ्चित] अधोमुख, अवाङ्मुख (वज्जा १०)।

अवंचिअ वि [अवञ्चित] नहीं ठगा हुआ (वज्जा १०)।

अवंझ वि [अवन्ध्य] सफल, अचूक (सुपा ३२५)। °पवाय न [°प्रवाद] ग्यारहवा पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष (सम २६)।

अवंतर वि [अवान्तर] भीतरी, बीच का (आवम)।

अवंति पु [अवन्ति] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

अवंति } स्त्री [अवन्ति, °न्ती] १ मालव देश।
अवंती } २ मालव देश की राजधानी, जो आजकल राजपूताना मे 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है (महा, सुपा ३९६, आवम)। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] आजीविक मत मे प्रसिद्ध काल-विशेष (भग २४, १)। °वद्धण पु [°वर्धन] इस नाम का एक राजा (आव ४)। °सुकुमाल पु [°सुकुमाल] एक श्रेष्ठि-पुत्र, जो आर्यसुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा लेकर देव-लोक के नलिनीगुल्म विमान मे उत्पन्न हुआ है (पडि)। °सेण पु [°षेण] एक राजा (आक)।

अवंदिम वि [अवन्द्य] वन्दन करने के अयोग्य, प्रणाम के अयोग्य (दसचू १)।

अवकंख सक [अव + काङ्क्ष्] १ चाहना। २ देखना। अवकंखइ (भग)। वकृ अवकंखमाण (णाया १, ६)।

अवकंत देखो अवक्कंत, 'कुमरोवि मत्थराओ उट्ठेत्ता सरिणयमवकंतो' (महा)।

अवकप्प सक [अव + कल्पय्] कल्पना करना, मान लेना। अवकप्पंति (सूअ १, ३, ३, ३)।

अवकय वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह (उव)। २ अपकार, अहित (सुपा ६४१)।

अवकर सक [अप + कृ] अहित करना। अवकरेंति (सूअ १, ४, १, २३)।

अवकरिस पु [अपकर्ष] अपकर्ष, ह्रास, हानि (सम ६०)।

अवकलुसिय वि [अपकलुषित] मलिन (गउड)।

अवकस सक [अव + कृष्] त्याग करना। संकृ अवकसित्ता (चउ १४)।

अवकारि वि [अपकारिन्] अहित करने वाला (पउम ६, ८५)।

अवकिण्ण वि [अवकीर्ण] परित्यक्त (दे १, १३०)।

अवकिण्णग } पु [अपकीर्णक] करकण्डु
अवकिण्णय } नामक एक जैन महर्षि का पूर्व नाम (महा)।

अवकित्ति स्त्री [अपकीर्ति] अपयश (दे १, ६०)।

अवकिदि स्त्री [अपकृति] अपकार, अहित (प्राकृ १२)।

अवकीरण न [अवकरण] छोडना, त्याग, उत्सर्ग (आव ५)।

अवकीरिअ वि [दे अवकीर्ण] विरहित, वियुक्त (दे १, ३८)।

अवकीरियव्व वि [अवकरितव्य] त्याज्य, छोडने लायक (पण्ह १, ५)।

अवकूजिय न [अपकूजित] हाथ को ऊँचा-नीचा करना (निचू १७)।

अवकेसि पु [अवकेशिन्] फल-वन्ध्य वनस्पति (उर २, ८)।

अवकोडक देखो अवओडग (पण्ह १, १)।

अवक्कंत वि [अपक्रान्त] १ पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ (सुपा २६२, उप १३४ टी, महा)। २ निकृष्ट, जघन्य (ठा ६)।

अवक्कंत पु [अवक्रान्त] प्रथम नरक भूमि का ग्यारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५)।

अवक्कंति स्त्री [अपक्रान्ति] १ अपसरण। २ निर्गमन (णाया १, ८)।

अवक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] गमन गति (आचा)।

अवक्कम अक [अप + क्रम्] १ पीछे हटना। २ बाहर निकलना। अवक्कमइ (महा, कप्प)। वकृ अवक्कममाण (विपा १,६)। संकृ अवक्कमइत्ता, अवक्कम्म (कप्प, वव १)।

अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना। अवक्कमइ (भग)। संकृ अवक्कमित्ता (भग)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना (ठा ५,२)। २ पलायन, भागना, 'निग्गमणमवक्कमणं निस्सरणं पलायणं च एगट्ठा' (वव १०)। ३ पीछे हटना (णाया १, १)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] अवतरण, 'उत्तरावक्कमणं' (भग ६, ३३)।

अवक्कय पु [अवक्रय] भाडा, भाटि (बृह १)।

अवक्कय वि [अपकृत] जिसका अहित किया गया हो वह (चउ)।

अवक्करस पु [दे] दारु, मद्य (दे १, ४६, पाअ)।

अवक्करिस } पु [अपकर्ष] हानि, अपचय
अवक्कास } (विसे १७६६, भग १२, ५)।

अवक्कास पु [अवकर्ष] ऊपर देखो (भग १२, ५)।

अवक्कास पु [अप्रकाश] अन्धकार, अँधेरा (भग १२, ५)।

अवक्कोस पु [अवक्रोश] मान, अहंकार (सम ७१)।

अवक्ख सक [दृश्] देखना। अवक्खइ (षड्)। अवक्खए (भवि)। वकृ अवक्खंत (कुमा)।

अवक्खंद पु [अवस्कन्द] १ शिविर, छावनी, सैन्य का पडाव। २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन, घेरा (हे २, ४, स ४१२)।

अवक्खर पु [अवस्कर] पुरीष, विष्ठा (प्राकृ २१)।

अवक्खारण न [अपक्षारण] १ निर्भर्त्सना, कठोर वचन। २ सहानुभूति का अभाव (पण्ह १, २)।

अवक्खेव पुं [अवक्षेप] विघ्न, बाधा (विपा १, ६)।

अवक्खेवण न [अवक्षेपण] १ बाधा, अन्तराय। २ क्रिया-विशेष, नीचे जाना। (आवम, विसे २४६२)।

अवखेर सक [दे] १ खिन्न करना। २ तिरस्कार करना। अवखेरइ (भवि)। वकृ अवखेरंत (भवि)।

अवग पुन [दे· अवक] जल मे होने वाली वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १८)।
अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति। २ गोपनीय स्थान (सुपा ३४५)।
अवगड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण। २ पानी का फेन (सूअ १, ६)।
अवगतव्व देखो अवगम = अवगम्।
अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवगच्छइ (महा)। अवगच्छे (स १५२)।
अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना, निकल जाना। अवगच्छइ (महा)।
अवगण } सक [अव + गणय्] अनादर
अवगण्ण } करना, तिरस्कारना। वकृ अवगणत (श्रा २७)। संकृ अवगण्णिय (आरा १०५)।
अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा अनादर (दे १, २७)।
अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात,
अवगण्णिय } तिरस्कृत (दे, जीव १)।
अवगढ वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल (दे १, ३०)।
अवगन्न देखा अवगण। अवगन्नइ (भवि)। संकृ अवगन्निवि (भवि)।
अवगन्निय देखो अवगण्णिय (सुपा ४२१, भवि)।
अवगम पु [अपगम] १ अपसरण (सुपा ३०२)। २ विनाश (स १५३, विसे ११८२)।
अवगम सक [अव + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। संकृ अवगमित्तु (सार्ध ६३)। कृ अवगतव्व (स ५२६)।
अवगम पु [अवगम] १ ज्ञान। २ निर्णय, निश्चय (विसे १८०)।
अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो (स ६७०, विसे १८६, ४०१)।
अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित
अवगय } (सुपा २१८)। २ निश्चित, अवधारित (दे ३, २३, स १४०)।
अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट (णाया १, १, दस १०, १६)।
अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, अहित करना। अवगरेइ (स ६३६)।
अवगरिस देखो अवकरिस विसे (१५८३)।
अवगल वि [दे] आक्रान्त (षड्)।
अवगल्ल वि [अवग्लान] बीमार (ठा २, ४)।
अवगहण न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण (पव २७३)।
अवगाढ देखो ओगाढ (ठा १, भग, स १७२)।
अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने वाला (विसे २८२२)।
अवगार पु [अपकार] अपकार, अहित-करण (सुर २, ४३)।
अवगारय वि [अपकारक] अपकार-कारक (स ६६०)।
अवगारि वि [अपकारिन्] ऊपर देखो (स ६६०)।
अवगास पु [अवकाश] १ फुरसत (महा)। २ जगह, स्थान (आवम)। ३ अवस्थान, अवस्थिति (ठा ४, ३)।
अवगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। अवगाहइ (सण)।
अवगाह पुं [अवगाह] १ अवगाहन। २ अवकाश (उत्त २८)।
अवगाहण न [अवगाहन] अवगाहन, 'तित्थावगाहणत्थ आगतव्व तए तत्थ' (सुपा ५६३)।
अवगाहणा देखो ओगाहणा (ठा ४, ३, विसे २०८८)।
अवगिंचण न [दे· अवविचन] पृथक्करण (उप पृ ६६)।
अवगिज्झ देखो ओगिज्झ। संकृ अवगिज्झिय (कप्प)।
अवगीय वि [अवगीत] निन्दित (उप पृ १८१)।
अवगुंठण देखो अवउंठण (दे १, ६)।
अवगुंठिय वि [अवगुण्ठित] आच्छादित (महा)।
अवगुण पु [अवगुण] दुर्गुण, दोष (हे ४, ३९५)।
अवगुण सक [अव + गुणय्] खोलना, उद्घाटन करना। अवगुणेज्जा (आचा २, २, २, ४)। अवगुणति (भग १५)।
अवगूढ वि [अवगूढ] १ आलिंगित (हे २, १६८)। २ व्याप्त (णाया १, ८)।
अवगूढ न [दे] व्यलीक, अपराध (दे १,२०)।
अवगूहण न [अवगूहन] आलिंगन (सुर १४, २२०, पउम ७४, २४)।
अवगूहाविय वि [अवगूहित] आश्लेषित (स ६९९)।
अवग्ग वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट। २ पु. अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु (उप ८७४)।
अवग्गह देखो उग्गह (पव ३०)।
अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गह (विसे १८०)।
अवच देखो अवय = अवच (भग)।
अवचइय वि [अपचयिक] अपकर्षप्राप्त, ह्रासवाला (आचा)।
अवचय पु [अपचय] ह्रास, अपकर्ष (भग ११, ११, स २८२)।
अवचय पु [अवचय] इकट्ठा करना (कुमा)।
अवचयण न [अवचयन] ऊपर देखा (दे ३, ५६)।
अवचि अक [अप + चि] हीन होना, कम जाना। अवचिज्जइ (भग)। अवचिज्जति (भग २५, २)।
अवचि } सक [अव+चि] इकट्ठा करना
अवचिण } (फूल आदि को वृक्ष से तोड कर)। अवचिणइ (नाट)। भवि अवचिणिस्स (पि ५३१)। हेकृ अवचिणेदु (शौ) (पि ५०२)।
अवचिय वि [अवचित] हीन, ह्रासप्राप्त (विसे ८९७)।
अवचिय वि [अपचित] इकट्ठा किया हुआ (पाअ)।
अवचुण्णिय वि [अवचूर्णित] तोडा हुआ, चूर-चूर किया हुआ (महा)।
अवचुल्ल पु [अवचुल्ल] चूल्हे का पीछला भाग (पिंडभा ३४)।
अवचूल देखो ओऊल (णाया १, १६, पत्र २१९)।
अवच्च वि [अवाच्य] १ बोलने के अयोग्य। २ बोलने के अशक्य (धर्मसं ६६८)।
अवच्च न [अपत्य] संतान, बच्चा (कप्प, आव १, प्रासू ८३)। °व वि [°वत्] संतानवाला (सुपा १०६)।
अवच्चिज्ज देखो अवच्चीय (सूअनि २०५)।

अवच्चीय वि [अपत्यीय] सतानीय, सतान-सवन्धी (ठा ६)।

अवच्छुण्ण न [दे] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन (दे १, ३६)।

अवच्छेय पु [अवच्छेद] विभाग, अश (ठा ३, ३)।

अवछंद वि [अपच्छन्दस्क] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दोदोष-दुष्ट (पिंग)।

अवजस पु [अपयशस्] अपकीर्ति (उप पृ १८७)।

अवजाण सक [अप+ज्ञा] १ अपलाप करना, 'बालस्स मदय बीय ज च कड अवजाणई भुज्जो' (सूत्र १, ४, १, २६)।

अवजाय पु [अपजात] पिता की अपेक्षा हीन वभववाला पुत्र (ठा ४, १)।

अवजिब्भ पुं [अपजिह्व] दूसरी नरक-पृथिवी का आठवा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ६)।

अवजीव वि [अपजीव] जीवरहित मृत, अचेतन (गउड)।

अवजुय वि [अवयुत] पृथग्भूत, भिन्न (वव ७)।

अवज्ज न [अवद्य] १ पाप (पण्ह २, ४)। २ वि निन्दनीय (सूत्र १, १, २)।

अवज्जस सक [गम्] जाना, गमन करना। अवजसइ (हे ४, १६२)। वकृ अवज्जसत (कुमा)।

अवज्जा स्त्री [अवज्ञा] अनादर (स ६०४)।

अवज्झ वि [अवध्य] मारने के अयोग्य (णाया १, १६)।

अवज्झ सक [दृश्] देखना (सक्षि ३६)।

अवज्झस न [दे] १ कटी, कमर। २ वि कठिन (दे १, ५६)।

अवज्झा स्त्री [अवध्या] १ अयोध्या नगरी (इक)। २ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

अवज्झाण न [अपध्यान] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान (सुपा ५४६, उप ४६६, सम ५०, विसे ३०१३)।

अवज्झाण } पुन [अपध्यान] दुर्ध्यान, 'चउ-
अवझाण } व्विहो अवज्झाणो' (श्रावक २८६, पचा १, २३, सबोध ४५)।

अवज्झाय वि [अपध्यात] १ दुर्ध्यान का विषय। २ अवज्ञात, तिरस्कृत (णाया १,१४)।

अवज्झाय (अप) देखो उवज्झाय (दे १,३७)।

अवट्ट सक [अप+वृत्] घुमाना, फिराना, 'अवट्ट अवट्ट त्ति वाहरंते कण्णहारे रज्जुपरि-वत्तणुज्जएसु निज्जामएसु अयडम्मि चेव गिरि-सिहरनिवडिय पिव विवन्न जाणवत्त' (स ३५५)।

अवट्ट अक [अप+वृत्] पीछे हटना। अव-ट्टइ (प्राकृ ७२)।

अवट्टा स्त्री [आवर्त्ता] राजमार्ग से बाहर की जगह (उप ६६१)।

अवट्ठभ पु [अवष्टम्भ] अवलम्बन, आश्रय (पउम २६ २०, स ३३१)।

अवट्ठभ पु [अवष्टम्भ] दृढता, हिम्मत (धर्मवि १४०)।

अवट्ठभ देखो अवठभ। कर्म अवट्ठभति (स ७४९)।

अवट्ठभण } न [अवष्टम्भन] अवलम्बन,
अवट्ठहण } सहारा (स ७४६ टी, ७४६)।

अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] रोका हुआ (द्रव्य २७)।

अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] १ अवलम्बित। २ आक्रान्त, 'अवट्ठद्धा महाविमाणेण' (स ५८४)।

अवट्ठव सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना, सहारा लेना। सकृ अवट्ठविअ (विक्र ६४)।

अवट्ठाण न [अवस्थान] १ अवस्थिति, अवस्था। २ व्यवस्था (वृह ५)।

अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ अवगाहन करके स्थित (सूत्र १,६,११)। २ कर्म-बन्ध विशेष, प्रथम समय मे जितनी कर्म-प्रकृतियो का बन्ध हो द्वितीय आदि समयो मे भी उतनी ही प्रकृतियो का जो बन्ध हो वह (पच ५,१२)।

अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहनेवाला (भग)। २ नित्य, शाश्वत (ठा ३,३)। ३ जो बढता-घटता न हो (जीव ३)।

अवट्ठिइ स्त्री [अवस्थिति] अवस्थान (ठा ३, ४, विसे ७५८)।

अवठभ सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना। सकृ

'घाएण मओ, सद्देण मई, चोज्जेण वाहवहुयावि।
अवठभिऊण घणुह वाहेणवि मुक्किया पाणा' (वज्जा ४६)।

अवठभ पुं [दे] ताम्बूल, पान (दे १, ३६)।

अवड पु [अवट] कूप, कुंआ (गउड)।

अवड } पु [दे] १ कूप, कुआ। २ आराम,
अवडअ } बगीचा (दे १, ५३)।

अवडअ पु [दे] १ चञ्चा, घास-फूस का पुतला, तृण-पुरुष (दे १, २०)।

अवडक पु [अवटङ्क] प्रसिद्धि, ख्याति, 'जण-कयावडकेण निग्घिणसम्मो णाम' (महा)।

अवडक्किअ वि [दे] कूप आदि मे गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह (दे १, ४७)।

अवडाह सक [उत्+क्रुश्] ऊंचे स्वर से रुदन करना। अवडाहेमि (दे १, ४७)।

अवडाहिअ न [दे] १ ऊंचे स्वर से रोदन (दे १, ४७)। २ वि उत्कृष्ट (षड्)।

अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १, २१)।

अवडु पु [अवटु] कृकाटिका, घटी या घाटी, कण्ठमणि (पाअ)।

अवडुअ पु [दे] उदूखल, उलूखल (दे १,२६)।

अवडुल्लिअ वि [दे] कूप आदि मे गिरा हुआ (षड्)।

अवड्डा स्त्री [दे] कृकाटिका, घट्टी, गर्दन का ऊंचा हिस्सा (भग १५, पत्र ६७६)।

अवड्ढ वि [अपार्ध] १ आधा (सुज्ज १०)। २ आधा दिन, 'अवड्ढ पच्चक्खाइ' (पडि, भग १६, ३)। ३ आधे से कम (भग ७, १, नव ४१)। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ नक्षत्र-विशेष (चद १०)। २ मुहूर्त-विशेष (ठा ६)।

अवण पु [दे] १ पानी का प्रवाह। २ घर का फलहक (दे १, ५५)।

अवण न [अवन] १ गमन। २ अनुभव (णदि, विसे ८३)।

अवणण देखो अवणयण (पिंड ४७३)।

अवणद्ध वि [अवनद्ध] १ संबद्ध, जोडा हुआ (सुर २, ७)। २ आच्छादित (भग)।

अवणम अक [अव+नम्] नीचे नमना। वकृ अवणमत (राय)।

अवणमिय वि [अवनत] अवनत (सुपा ४२६)।

अवणमिअ वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ (सुर २, ४१)।

अवणय वि [अवनत] नमा हुआ (दस ५)।

अवणय पु [अपनय] १ अपनय, हटाना (ठा ८)। २ निन्दा (पव १४०, विसे १४०३ टी)।

अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना (सुपा ११, स ४८३, उप ४१६)।

अवणाम पुं [अवनाम] ऊर्ध्व गमन, ऊंचा जाना, 'तुलाए णामावणामव्व' (धर्मस २४२)।

अवणि स्त्री [अवनि] पृथिवी, भूमि (उत्त ३३६ टी)।

अवणित देखो अवणी = अप + नी।

अवणिंद पु [अवनीन्द्र] राजा, भूप (भवि)।

अवणिअ देखो अवणीय, 'त कुरणसु चित्तनिवसणमवणियनीमेसदोममल' (विवे १३८)।

अवणी देखो अवणि (सुपा ३१०)। °**सर** पु [°श्वर] राजा, भूमिपति (भवि)।

अवणी सक [अप + नी] दूर करना, हटाना। अवणेइ, अवणेमि (महा)। वकृ अवणित, अवणेत (निचू १, सुर २, ८)। कवकृ अवणेज्जंत (उप १४६ टी)। कृ अवणेअ (द्र ३७)।

अवणीय वि [अपनीत] दूर किया हुआ (सुपा ५४)।

अवणीयवयण न [अपनीतवचन] निन्दा-वचन (आचा २, ४, १, १)।

अवणेंत देखो अवणी = अप + नी।

अवणोय पु [अपनोद] अपनयन, हटाना (विसे ६८२)।

अवणोयण न [अपनोदन] अपनयन, दूरी करण (स ६२१)।

अवण्ण वि [अवर्ण] १ वर्णरहित, रूपरहित (भग)। २ पु निन्दा (पचव ४)। ३ अपकीर्ति (ओघ १८४ भा)। °**व** वि [°वत्] निन्दक, 'तेसिं अवण्णव वाले महामोह पकुव्वइ' (सम ५१)। °**वाय** पुं [°वाद] निन्दा (द्र २६)।

अवण्ण न [दे] अवज्ञा, निरादर (दे १, १७)।

अवण्णा स्त्री [अवज्ञा] निरादर, तिरस्कार (औप)।

अवण्हअ पुं [अपह्नव] अपलाप (षड्)।

अवण्हवण न [अपह्नवन] अपलाप (आचा)।

अवण्हाण न [अवस्नान] साबुन आदि से स्नान करना (णाया १, १३, विपा १, १)।

अवतंस देखो अवयंस = अवतंस (कुमा)।

अवतस पु [अवतस] मेरुपर्वत (सुज्ज ९)।

अवतंसिय वि [अवतंसित] विभूषित (कुमा)।

अवतट्ठ वि [अवतष्ट] तनूकृत, छिला हुआ (सूअ १, ५, २)।

अवतट्ठि देखो अवयट्ठि = अवतष्टि (सूअ १, ७)।

अवतारण न [अवतारण] १ उतारना। २ योजना करना (विसे ६४०)।

अवतासण न [अवत्रासन] डराना (पव ७३ टी)।

अवतित्थ न [अपतीर्थ] कुत्सित घाट, खराब किनारा (सुपा १५)।

अवत्त वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट (विसे)। २ कम उमर वाला (बृह १)। ३ असस्कृत (गच्छ १)। ४ पु देखो अवग्ग (निचू २)।

अवत्त वि [अवात] पवनरहित (गच्छ १)।

अवत्त वि [अवाप्त] प्राप्त, लब्ध।

अवत्त न [अवत्र] आमन विशेष (निचू १)।

अवत्तय वि [दे] विमस्थुल, अव्यवस्थित (दे १,३४)।

अवत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ वचन से कहने के अशक्य, अनिर्वचनीय। २ सप्तभगी का चतुर्थ भग,

'अत्थतरभूएहि अ नियएहि दोहि समयमाईहि। वयणविसेसाईअं दव्वमवत्तय पडइ' (सम्म ३६)।

अवत्तिअ न [अव्यक्तिक] १ एक जैनाभास मत, निह्नवप्रचालित एक मत। २ वि इस मत का अनुयायी (ठा ७)।

अवत्थतर न [अवस्थान्तर] जुदी दशा, भिन्न अवस्था (सुर ३, २०६)।

अवत्थग वि [अपार्थक] १ निरर्थक, व्यर्थ। २ असम्बद्ध अर्थवाला (सूत्र वगैरह) (विसे)।

अवत्थद्ध वि [अवष्टब्ध] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह (णाया १,१८)।

अवत्थय वि [अपार्थक] निरर्थक (विसे ९९९ टी)।

अवत्थरा स्त्री [दे] पाद-प्रहार, लात मारना (दे १,२२)।

अवत्था स्त्री [अवस्था] दशा, अवस्थिति (ठा ८, कुमा)।

अवत्थाण न [अवस्थान] अवस्थिति (ठा ४, १, स ६२७ महा, सुर १, २)।

अवत्थाव सक [अव + स्थापय्] १ स्थिर करना ठहराना। २ व्यवस्थित करना। हेकृ अवत्थाविदु, अवत्थावइदु (शौ) (पि ५७३, नाट)।

अवत्थाविद (शौ) वि [अवस्थापित] अवस्थित किया हुआ (नाट)।

अवत्थिय देखो अवट्ठिय (महा, स २७४)।

अवत्थिय वि [अवस्तृत] फैलाया हुआ, प्रसारित (णाया १, ८)।

अवत्थु न [अवस्तु] १ अभाव, असत्त्व (भवि, श्रावम)। २ वि निरर्थक, निष्फल (पराह १, २)।

अवथभ देखो अवठभ। सकृ. अवथभिय (चेइय ४८१)।

अवदग्ग देखो अवयग्ग (सूअ २, २, ५)।

अवदल वि [अपदल] १ नि सार, सार-रहित। २ कच्चा, अपक्व (ठा ४, ४)।

अवदहण न [अवदहन] दम्भन, गरम लोहे के कोश आदि से चर्म (फोडे आदि) पर दागना (णाया १, ४)।

अवदाण न [अवदान] शुद्ध कर्म (ती १५)।

अवदाअ वि [अवदात] १ पवित्र, निर्मल, 'दिणयरकरावदाय भत्त पेहित्तु चक्खुणा सम्म' (सुपा ४११)। २ श्वेत, सफेद (पराह १, ४, पाअ)।

अवदार न [अपद्वार] १ छोटी खिडकी। २ गुप्त द्वार (उप ९९१)।

अवदाल सक [अव + दलय्] खोलना। अवदालेइ (औप)। सकृ अवदालेत्ता (औप)।

अवदालिय वि [अवदलित] विकसित, विजृम्भित, 'अवदालियपुडरीयनयणे' (औप, पराह १, ४, उवा)।

अवदिसा स्त्री [अपदिक्] भ्रान्त दिशा (स ९२६)।

अवदेस देखो अवएस (अभि ७६)।

अवद्दार } देखो अवदार (णाया १, २, अवद्दाल } प्राप्)।

अवद्दाहणा स्त्री देखो अवदहण (विपा १, १)।

अवद्दुस न [दे] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती में जिसको 'राचरचिलु' कहते हैं (दे १, ३०)।

अवद्धस पु [अवध्वस] विनाश (ठा ४, ४)।

अवधसि वि [अपध्वसिन्] विनाशकारक (उत्त ४, ७)।

अवधार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। कृ अवधारियव्व (पचा ३)।

अवधारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (श्रा ३०)।

अवधारणा स्त्री [अवधारणा] दीर्घकाल तक याद रखने की शक्ति (सम्मत्त ११८)।

अवधारिय वि [अवधारित] निश्चित, निर्णीत (वसु)।

अवधारियव्व देखो अवधार।

अवधाव सक [अप + धाव्] पीछे दौडना। अवधावइ (सण)। वकृ अवधावंत (स २३२)।

अवधिक्का स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक (पण्ह १, १)।

अवधीरिय वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित (बृह १, ४)।

अवधुण } सक [अव + धू] १ परित्याग अवधूण } करना। २ अवज्ञा करना। सकृ अवधूणिअ, अवधूणिअ (माल २३२, वेणी ११०)।

अवधूय वि [अवधूत] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (ओघ १८ भा टी)। २ विक्षिप्त (आव ४)।

अवनिद्दय पु [अपनिद्रक] उजागर, निद्रा का अभाव (सुर ६, ८३)।

अवन्न देखो अवण्ण = अवर्ण (भग, उव, ओघ ३५१)।

अवन्ना देखो अवण्णा (ओघ ३८२ भा, सुर १६, १३१, सुपा ३७२)।

अवपगुण } सक [दे] खोलना। अवपगुणे अवपगुर } (सूअ १, २, २, १३)। अवपगुरे (दस ५, १, १८)।

अवपक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, तवी, छोटा तवा (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवपुट्ठ वि [अवस्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह,

'जीए ससिकतमणिमदिराइ
निसि ससिकरावपुट्ठाइ।
वियलियवाहजलाइ रोयतिव,
तरणितवियाइ' (सुपा ३)।

अवपुसिय वि [दे] सघटित, सयुक्त (दे १, ३६)।

अवपूर सक [अव + पूरय्] पूर्ण करना। अवपूरति (स ७१२)।

अवपेक्ख सक [अवप्र + ईक्ष] अवलोकन करना। अवपेक्खइ (उत्त ६, १३)।

अवप्पओग पु [अपप्रयोग] उलटा प्रयोग, विरुद्ध औषधियों का मिश्रण (बृह १)।

अवप्फार पु [अवस्फार] विस्तार, फेलाव, 'ता किमिमिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएण' (स २८८)।

अवबध पु [अवबन्ध] बन्ध, बन्धन (गउड)।

अवबद्ध वि [अवबद्ध] बँधा हुआ, नियन्त्रित (धर्म ३)।

अवबाण वि [अपबाण] बाणरहित (गउड)।

अवबुज्झ सक [अव + बुध्] १ जानना। २ समझना, जत्थ त मुज्झमी राय, पेच्चत्थ नावबुज्झसे' (उत्त १८, १३)। वकृ अवबुज्झमाण (स ८५)। सकृ अवबुज्झेऊण (स १६७)।

अवबोह पु [अवबोध] १ ज्ञान, बोध (सुपा १७)। २ विकास (गउड)। ३ जागरण (धर्म २)। ४ स्मरण, याद (आचा)।

अवबोहय वि [अवबोधक] अवबोध-कारक, 'भवियकमलावबोहय, मोहमहातिमिरपसरभरसूर' (काल)।

अवबोहि पु [अवबोधि] १ ज्ञान। २ निश्चय, निर्णय (आचू १, विसे ११५४)।

अवभास अक [अव + भास्] चमकना, प्रकाशित होना।

अवभास पु [अवभास] प्रकाश (सुज्ज ३)।

अवभास पु [अवभास] ज्ञान (धर्मस १३३३)।

अवभासण वि [अवभासन] प्रकाश-कर्त्ता (सुख १, ४०)।

अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशक (विसे ३१७, २०००)।

अवभासि वि [अवभासिन्] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला (गउड)।

अवभासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (विसे)।

अवभासिय वि [अपभाषित] आक्रुष्ट, अभिशप्त (वव १)।

अवम देखो ओम (आचा)।

अवमग्ग पु [अपमार्ग] कुमार्ग, खराब रास्ता (कुमा)।

अवमग्ग पु [अपामार्ग] वृक्ष-विशेष, चिचडा, लटजीरा (दे १, ८)।

अवमच्चु पु [अपमृत्यु] अकाल मृत्यु, बिना मौत मरण (दे ६, ३, कुमा)।

अवमज्ज सक [अव + मृज्] पोछना, झाडना, साफ करना। सकृ अवमज्जिऊण (स ३४८)।

अवमण्ण सक [अव + मन्] तिरस्कार करना। अवमण्णति (उवर १२०)।

अवमद्द पु [अवमर्द] मर्दन, विनाश (पण्ह १, २)।

अवमद्दग वि [अवमर्दक] मर्दन करने वाला (णाया १, १६)।

अवमन्न सक [अव + मन्] अवज्ञा करना, निरादर करना। अवमन्नइ (महा)। वकृ अवमन्नत (सूअ १,३,४) सकृ अवमन्निऊण (महा)।

अवमन्निय } वि [अवमत] अवज्ञात, अव- अवमय } गणित (सुर १६, १२७, महा, उव)।

अवमाण पु [अपमान] तिरस्कार (सुर १, २३५)।

अवमाण पुन [अवमान] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ परिमाण (ठा ४, १)।

अवमाण सक [अव + मानय्] अवगणना करना। अवमाणइ (भवि)।

अवमाणण न [अवमानन] अनादर, अवज्ञा (पण्ह १, ५, औप)।

अवमाणण न [अपमानन] तिरस्कार, अपमान (स १०)।

अवमाणणा स्त्री [अवमानना] अवगणना (काल)।

अवमाणि वि [अवमानिन्] अवज्ञा करने वाला (अभि ९६)।

अवमाणिअ वि [अपमानित] तिरस्कृत (से १०,६६, सुपा १०८)।

अवमाणिअ वि [अवमानित] १ अवज्ञात, अनादृत (सुर २, १७९)। २ अपूरित, 'अव-माणियदोहला' (भग ११, ११)।

अवमार पु [अपस्मार] भयंकर रोग विशेष, पागलपन (आचा)।

अवमारिग्र वि [अपस्मारित, °रिक] अप-स्मार रोग वाला (आचा)।

अवमारुय पु [अवमारुत] नीचे चलता पवन (गउड)।

अवमिच्चु देखो अवमच्चु (प्राप्)।

अवमिय वि [दे] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित (बृह ३)।

अवमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (स ५६६)।

अवमेह वि [अपमेघ] मेघ-रहित (गउड)।

अवय देखो अपय = अपद (सूत्र १, ८, ११)।

अवय न [अब्ज] कमल, पद्म (पएण १)।

अवय वि [अवच] १ नीचा, अनुच्च (उत्त ३)। २ जघन्य, हीन, अश्रेष्ठ (सूअ १, १०)। ३ प्रतिकूल (भग १, ६)।

अवयंस पु [अवतंस] १ शिरोभूषण विशेष (कुमा, गा १७३)। २ कान का आभूषण (पाअ)।

अवयंस सक [अवतंसय्] भूषित करना। अवअंसअंति (गि १४२, ४६०)।

अवयक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। अवयक्खइ (णाया १, ६)। वकृ. अवयक्खंत, अवयक्खमाण (णाया १, ६, भग १०, २)।

अवयक्ख सक [अव + ईक्ष्] १ देखना। २ पीछे से देखना। वकृ. अवयक्खत (ओघ १८८ भा)।

अवयक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा (णाया १, ६)।

अवयग्ग न [दे] अन्त, अवसान (भग १, १)।

अवयच्छ सक [अव + गम्] जानना। अव-यच्छइ (स ११३)। संकृ. अवयच्छिय (स २१०)।

अवयच्छ सक [दृश्] देखना। अवयच्छइ (हे ४, १८१)। वकृ. अवयच्छत (कुमा)।

अवयच्छिय वि [दृष्ट] देखा हुआ (णाया १, ८)।

अवयच्छिय वि [दे] प्रसारित, 'फुकारपव-णपिलुणियमवयच्छियमयगरमहा यं' (स ११३)।

अवयज्झ सक [दृश्] देखना। अवयज्झइ (हे ४, १८१)। संकृ. अवयज्झिऊण (कुमा)।

अवयट्टि स्त्री [अवतष्टि] तनूकरण, पतला करना (आचा)।

अवयट्ठि वि [अवस्थायिन्] अवस्थिति करने वाला, स्थिर रहने वाला (आचा)।

अवयट्ठि स्त्री [अवकृष्टि] आकर्षण (आचा)।

अवयट्ठिअ वि [दे] युद्ध में पकड़ा हुआ (दे १, ४६)।

अवयण न [अवचन] कुत्सित वचन, दूषित भाषा (ठा ६)।

अवयर सक [अव + तॄ] १ नीचे उतरना। २ जन्म ग्रहण करना। अवयरइ (हे १, १७२)। वकृ. अवयरंत, अवयरमाण (पउम ८२, ६३, सुपा १८१)। संकृ. अव-यरिउ (प्रासू)।

अवयरिअ पु [दे] वियोग, विरह (दे १, ३६)।

अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह। २ न. अपकार, अहित-करण, 'को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए किं व' (सुपा ४२१)।

अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ। २ नीचे उतरा हुआ (सुर ६, १८६)।

अवयव पु [अवयव] १ अंश, विभाग। २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश (दसनि १, हे १, २४५)।

अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १, विसे २३५०)।

अवयाढ देखो ओगाढ (नाट, गउड)।

अवयाण न [दे] खींचने की डोरी, लगाम (दे १, २४)।

अवयाय पु [अववाय] अपराध, दोष (उप १०३१ टी)।

अवयाय वि [अवदात] निर्मल (सिरि १०२७)।

अवयार पु [अपकार] अहित-करण (स ४३७, कुमा, प्रासू ६)।

अवयार पु [अवतार] १ उतरना। २ देहा-न्तर-धारण, जन्म-ग्रहण। ३ मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना, 'अज्ज! एव तुम देवावयारो विय आगईए' (स ४१६, भवि)। ४ संगति, योजना (विसे १००८)। ५ प्रवेश (विसे १०४३)।

अवयार पु [अवतार] समावेश (पव ८६)।

अवयार पु [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें इख से दतवन आदि किया जाता है (दे १, ३२)।

अवयारण न [अवतारण] उतारना (सिरि १००४)।

अवयारय देखो अवगारय (स ६६०)।

अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला (स १७६, विवे ७६)।

अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ (स ४२)।

अवयास सक [श्लिष्] आलिंगन करना। अवयासइ (हे ४, १९०)। कवकृ. अव-यासिज्जमाण (औप)। संकृ. अवयासिय (णाया १, २)।

अवयास सक [अव + काश्] प्रकट करना। संकृ. अवयासेऊण (तदु)।

अवयास देखो अवगास (गउड, कुमा)।

अवयास पु [श्लेष] आलिंगन (ओघ २४४ भा)।

अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन (बृह १)।

अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ (विपा १, ४)।

अवयासिय वि [श्लिष्ट] आलिंगित (कुमा, पाअ)।

अवयासिणी स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर (दे १, ४६)।

अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न (श्रा २७, महा)। °हा अ [°था] अन्यथा (पचा ८)।

अवर न [अपर] १ पिछला काल या देश (महा)। २ पिछले काल या देश मे रहा हुआ, पाश्चात्य (सम १८ महा)। ३ पश्चिम दिशा मे स्थित, 'अवरद्दारेण' (स ६४६)। °कङ्का स्त्री [°कङ्का] १ धातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी। २ इस नाम के 'ज्ञातधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया १, १६)। °ण्ह पु [°ाह्ण] १ दिन का अन्तिम प्रहर (ठा ८, ९)। २ दिन का उत्तरी भाग (आचू १, गा २६६, प्रासू ५४)। °दाहिण पु [°दक्षिण] १ नैऋत्य कोण। २ वि नैऋत्य भाग मे स्थित (पचा २)। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण (वव ७)। °फाणु पु [°पार्ष्णि] एडी, पैर का पिछला भाग (...)। °राय पु [°रात्र] देखो अवरत्त=अपरात्र (आचा)। °विदेह पु [°विदेह] महाविदेह नामक वर्ष का पश्चिम भाग (ठा २, ३ पडि)। °विदेहकूड न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (ज ४)। देखो अपर।

अवर स [अवर] ऊपर देखो (महा, णाया १, १; वव ७, पचा २)।

अवरंमुह वि [अपराङ्मुख] १ सम्मुख। २ तत्पर (पि २६६)।

अवरन्न्ह देखो अपरन्ह (पण्ह १, ३)।

अवरज्ज पु [दे] १ गत दिन। २ आगामी दिन। ३ प्रभात, सुबह (दे १, ५६)।

अवरज्झ अक [अप + राध्] १ अपराध करना, गुनाह करना। २ नष्ट होना। अवरज्झइ (महा उव)। वकृ अवरज्झन्त (राज)।

अवरत्त पु [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग (भग, णाया १, १)।

अवरत्त वि [अपरक्त] १ विरक्त, उदास (उप पृ ३०८)। २ नाराज, नाखुश (मुद्रा २६७)।

अवरत्तअ } पु [दे] पश्चात्ताप, अनुताप (दे
अवरत्तेअ } १, ४५, पाअ)।

अवरदक्खिणा देखो अवर-दाहिणा (पव १०६)।

अवरद्ध न [अपराद्ध] १ अपराध, गुनाह (सुर २, १२१)। २ वि जिसने अपराध किया हो वह, अपराधी, 'सगडे दारए मम अंतेउरंमि अवरद्धे' (विपा १, ४, स २८)। ३ विनाशित, नष्ट किया हुआ (णाया १, १)।

अवरद्धिअ वि [अपराधिक] १ अपराधी, दोषी। २ पु लूता-स्फोट। ३ सर्पादि-दंश (पिंड १४)।

अवरद्धिग } पुस्त्री [अपराधिक] १ सर्प-
अवरद्धिय } दंश। २ फुनसी, छोटा फोडा (ओघ ३४१, पिंड)।

अवरा स्त्री [अपरा] विदेहवर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

अवरा स्त्री [अपरा] पश्चिम दिशा (पव १०६)।

अवराइया देखो अपराइया (पउम २५, १, ज ४, ठा २, ३)।

अवराइस देखो अण्णाइस (षड्, हे ४, ४१३)।

अवराजिय देखो अपराइय (इक)।

अवराजिया देखो अपराइया (इक)।

अवराह पु [अपराध] १ अपराध, गुनाह (आव १)। २ अनिष्ट, बुराई, 'अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमेत्त परो होइ' (प्रासू १२२)।

अवराह पु [दे] कटी, कमर (दे १, २८)।

अवराहिय न [अपराधित] १ अपराध, गुनाह, 'जपइ जणो महल्ल कस्सवि अवराहिय जाय' (पउम ६४, २५, स ३२०)। २ अपकार, अनिष्ट, अहित,

'गिरि चडिआ खति प्फरइं, पुणु डालइं मोडंति।
तोवि महद्दुम सउणाह, अवराहिउ न करंति' (हे ४, ४५)।

अवराहिल्ल वि [अपराधिन्] अपराधी (प्राकृ ५०)।

अवराहुत्त वि [अपराभिमुख] १ पराङ्मुख। २ पश्चिम दिशा की तरफ मुँह किया हुआ (आव ४)।

अवरि } अ [उपरि] ऊपर (दे १,२६, प्राप्र)।
अवरिं }

अवरिक्क वि [दे] अवसररहित, अनवसर (दे १, २०)।

अवरिगलिअ वि [अपरिगलित] पूर्ण, भरपूर (से ११, ८८)।

अवरिज्ज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण (दे १, ३६, षड्)।

अवरिल्ल वि [उपरि] उत्तरीय वस्त्र, चादर (हे २, १६६, कुमा, गउड, पाअ)।

अवरिल्ल वि [अपरीय] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा सबन्धी, 'तो ण तुब्भे अवरिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह' (णाया १, ६)।

अवरिहड्ढपुसण न [दे] १ अकीर्त्ति, अजस। २ असत्य, झूठ। ३ दान (दे १, ६०)।

अवरुंड सक [दे] आलिङ्गन करना। अवरुंडइ (दे १ ११, सुर ३, १८२, भवि)। कर्म अवरुंडिज्जइ (दे १, ११)। सकृ अवरुंडिऊण (दे १, ११, स ४२१)।

अवरुंडण } न [दे] आलिङ्गन (भवि, पाअ,
अवरुंडिअ } दे १, ११)।

अवरुत्तर पु [अपरोत्तर] १ वायव्य कोण। २ वि वायव्य कोण मे स्थित (भग)।

अवरुत्तरा स्त्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा, पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा (वव ७)।

अवरुद्ध वि [अवरुद्ध] घिरा हुआ (विसे २६७५)।

अवरुप्पर देखो अवरोप्पर (कुमा, रंभा)।

अवरुह अक [अव + रुह्] नीचे उतरना। अवरुहेहि (मै १४)।

अवरुव्व देखो अपुव्व (प्राकृ ८५)।

अवरोप्पर } वि [परस्पर] आपस मे (हे ४,
अवरोवर } ४०६ गउड, सुपा २०, सुर ३, ७६, षड्)।

अवरोह पु [अवरोध] १ अन्तःपुर, जनानखाना (सुपा ६३)। २ अन्तःपुर मे रहनेवाली स्त्री (विपा १, ८)। ३ नगर को सैन्य से घेरना (निचू ८)। ४ संक्षेप (विसे ३५५५)। ५ प्रतिबन्ध, 'कह सव्वत्थित्तावरोहोत्ति' (विसे १७२३)। °जुवइ स्त्री [°युवति] अन्तःपुर की स्त्री (पि ३८७)।

अवरोह पु [अवरोह] उगनेवाला (तृण आदि) (गउड)।

अवरोह पु [दे] कटि, कमर (दे १, २८)।

अवलंब सक [अव + लम्ब्] १ सहारा लेना, आश्रय लेना। २ लटकना। अवलंबइ (कस)। अवलंबेइ (महा)। वकृ अवलंबमाण (सम्म ५८)। कवकृ अवलंबिज्जंत (पि ३६७)। सकृ अवलंबिऊण, अवलंबिय (आव ५, आचा २, १, ६)। हेकृ

अवलंबित्तए (दस ५)। कृ अवलंबणिय अवलंबिअव्व (से १०, २६)।

अवलंब } पु [अवलम्ब, °क] १ सहारा,
अवलंबग } आश्रय (श्रा १६)। २ वि लट-कनेवाला (ओप, वव ४)। ३ सहारा लेनेवाला (पच ८०)।

अवलंबण न [अवलम्बन] १ लटकना। २ आश्रय, सहारा (ठा ५, २, राय)।

अवलंबणया स्त्री [अवलम्बनता] अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७५)।

अवलंबि वि [अवलम्बिन] अवलम्बन करनेवाला (गउड, निचू २३२६)।

अवलंबिय वि [अवलम्बित] १ लटका हुआ। २ आश्रित (णाया १, १)।

अवलंबिर देखो अवलंबि (गा ३६७)।

अवलक्खण न [अपलक्षण] खराब लक्षण, बुरी आदत (भवि)।

अवलग्ग वि [अवलग्न] १ आरूढ। २ लगा हुआ, संलग्न (महा)।

अवलत्त वि [अपलपित] अपह्नुत, छिपाया हुआ (स २१०)।

अवलद्ध वि [अपलब्ध] अनादर से प्राप्त (ठा ६)।

अवलद्धि स्त्री [अवलब्धि] अप्राप्ति (भग)।

अवलय न [दे] घर, मकान (दे १, ७३)।

अवलव सक [अप + लप्] १ असत्य बोलना। २ सत्य को छिपाना। वकृ अवलविज्जंत (सुपा १३२)। कृ अवलव-णिज्ज (सुपा ३१५)।

अवलाव पु [अपलाप] अपह्नव (निचू १)।

अवलिअ न [दे] असत्य, झूठ (दे १,२२)।

अवलिंब पु [अवलिम्ब] जीव या पुद्गलों से व्याप्त स्थान-विशेष (ठा २, ४)।

अवलिच्छअ वि [दे] अप्राप्त, अनासादित (से ६, ७८)।

अवलित्त वि [अवलिप्त] व्याप्त (सूअ १, १३, १४)।

अवलित्त वि [अवलिप्त] १ लिप्त। २ गर्वित, 'अ।सो सढोवलित्तो, आलवण-तप्परो अइपमाई।
एए ठिओवि मण्णइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मित्ति' (उव)।

अवलुअ देखो अवलुय (आचा २,३,१,६)।

अवलुआ स्त्री [दे] क्रोध, गुस्सा (दे १,३६)।

अवलुत्त वि [अवलुप्त] लोप-प्राप्त (नाट)।

अवलेअ } पु [अवलेप] १ अहंकार, गर्व।
अवलेव } २ लेप, लेपन (पाअ महा, नाट)। ३ अवज्ञा, अनादर (गउड)।

अवलेह पु [अवलेह] चटनी (वज्जा १०४)।

अवलेहणिया स्त्री [अवलेखनिका] १ बाँस का छिलका (ठा ४,२)। २ धूलि आदि झाड़ने का एक उपकरण (निचू १)।

अवलेहि } स्त्री [अवलेखि, °का] १ बाँस
अवलेहिया } का छिलका (कम्म १, २०)। २ लेप विशेष (पव ४)। ३ चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध (पभा ३२)।

अवलोअ सक [अव+लोक्] देखना, अव-लोकन करना। वकृ अवलोअंत, अवलोए-माण (स्वप्न ३६, णाया १, १) संकृ अव-लोइऊण (काल)। कृ. अवलोयणीय (सुपा ७०)।

अवलोग } पु [अवलोक] अवलोकन, दर्शन
अवलोय } (उप ६८६ टी, सुपा ६, स २७६, गउड)।

अवलोयण न [अवलोकन] १ दर्शन, विलो-कन (गउड)। २ स्थान-विशेष, 'तुंग अव-लोयणं चेव' (पउम ८०,४)। ३ शिखर-विशेष (ती ४)।

अवलोयणी स्त्री [अवलोकनी] देवी-विशेष (सम्मत्त १६०)।

अवलोव पु [अपलोप] छिपाना, लोप करना (पण्ह १, २)।

अवलोवणी स्त्री [अपलोपनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

अवलोह वि [अपलोह] लोहरहित (गउड)।

अवल्लय न [दे अवल्लक] नौका खेवने का उपकरण-विशेष (आचा २, ३, १)।

अवल्लाव } पु [दे अपलाप] असत्यकथन,
अवल्लावय } अपलाप (दे १, ३८)।

अवव न [अवव] संख्या-विशेष, 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववंग न [अववाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववक्कल वि [अपवल्कल] त्वचारहित (गउड)।

अववक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, छोटा तवा (भग ११, ११)।

अववग्ग पु [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (आवम)।

अववट्टण न [अपवर्तन] १ अपवरण। २ कर्मपरमाणुओं की दीर्घ स्थिति को छोटी करना (पंच ५)।

अववट्टणा स्त्री [अपवर्तना] ऊपर देखो (पंच ५)।

अववत्त वि [अपवृत्त] १ वापस लौटा हुआ। २ अपसृत (दे १, १५०)।

अववरक पु [अपवरक] कोठरी, छोटा घर (मुद्रा ८१)।

अववह सक [अप+वह्] बाहर फेंकना, दूर हटाना। कर्म अ उज्झइ (पंचा १६, ६)।

अववाइअ वि [आपवादिक] अपवाद-संबंधी (अज्झ १०८)।

अववाइय वि [अपवादिक] अपवादवाला (नाट)।

अववाय पु [अपवाद] १ विशेष नियम, अप-वाद (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद (पण्ह २,२)। ३ अनुज्ञा, संमति (निचू १)। ४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत (निचू ५)।

अववास सक [अव+काश्] अवकाश देना, जगह देना। अववासइ (प्राप्र)।

अववाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। अववाहइ (प्राप्र)।

अवविह पु [अवविध] गोशालक के एक भक्त का नाम (भग ८, ५)।

अववीड पु [अवपीड] निष्पीडन, दबाना (गउड)।

अववीडण न [अवपीडन] ऊपर देखो (गउड)।

अवस वि [अवश] १ अस्वाधीन, पराधीन (सूअ १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन (से १, १)।

अवस वि [अवश] अकाम, अनिच्छु (धर्मसं ७००)।

अवस अ [अवश्यम्] अवश्य, जरूर, निश्चय (हे ४, ४२७)।

अवसउण न [अपशकुन] अनिष्ट-सूचक निमित्त, खराब शकुन (ओघ ८१ भा, गा २६१, सुपा ३६३)।

अवसकि वि [अपशङ्किन्] अपसरण-कर्ता (सूअ १ १२, ४)।

अवसक्क सक [अव + ष्वष्क्] पीछे हट जाना। अवसक्केज्जा (आचा)।

अवसक्कण न [अवष्वष्कण] अपसरण, पीछे हटना (पचा १३)।

अवसक्कि वि [अवष्वष्किन्] पीछे हटने वाला (आचा)।

अवसण्ण वि [दे] भरा हुआ, ढाका हुआ (षड्)।

अवसण्ण वि [अवसन्न] निमग्न, 'नागो जहा पंकजलावसण्णो' (उत्त १३, ३०)।

अवसद्द पु [अपशब्द] १ अशुद्ध शब्द (सुर १६, २४८)। २ खराब वचन (हे १, १७२)। ३ अपकीर्ति, अपयश (कुमा)।

अवसप्प अक [अव + सृप्] पीछे हटाना। २ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसप्पति (पि १७३)।

अवसप्पण न [अपसर्पण] अपसरण, अपवर्तन (पउम ५६, ७८)।

अवसप्पि वि [अपसर्पिन] १ पीछे हटनेवाला। २ निवृत्त होनेवाला (सूअ १, २, २)।

अवसप्पिय वि [अपसर्पित] १ अपसृत। २ निवृत्त। ३ अवतीर्ण (भवि)।

अवसप्पिणी देखो ओसप्पिणी (भग ३, २, भवि)।

अवससिआ (दे) देखो अवससी (दे १ ३७)।

अवसय वि [अपशद] नीच, अधम (ठा ४, ४)।

अवसर अक [अप+सृ] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। अवसरइ (हे १, १७२)। कृ अवसरियव्व (उप १४६ टी)।

अवसर सक [अव+सृ] आश्रय करना। 'तह ओसरणम् अवसरित्ता' (चउ १८)।

अवसर पु [अवसर] १ काल, समय (पाअ)। २ प्रस्ताव, मौका (प्रासू ५७, (महा)।

अवसरण देखो ओसरण (पव ६२)।

अवसरण न [अपसरण] १ पीछे हटना। २ निवृत्ति (गउड)।

अवसरिय वि [आवसरिक] सामयिक, समयोपयुक्त (सण)।

अवसरीर पु [अपशरीर] रोग, व्याधि, 'सव्वावसरीरहिओ' (उप ५६७ टी)।

अवसवस वि [अपस्ववश] पराधीन, परतन्त्र (णाया १, १६)।

अवसव्व न [अपसव्य] वाम पार्श्व (णंदि १५६)।

अवसव्वग न [अपसव्यक] शरीर का दहिना भाग (उप पृ २०८)।

अवसह पु [आवसथ] घर, मकान (उत्त ३२)।

अवसह न [दे] १ उत्सव। २ नियम (दे १, ५८)।

अवसाइअ वि [अप्रसादित] प्रसन्न नहीं किया हुआ (से १०, ६३)।

अवसाण न [अवसान] १ नाश। २ अन्त भाग (गउड, पि ३६६)।

अवसाय पु [अवश्याय] हिम, वर्फ (गउड)।

अवसारिअ वि [अप्रसारित] न फैला हुआ, अविस्तारित (से, १)।

अवसारिअ वि [अपसारित] १ आकृष्ट, खींचा हुआ (से १, १)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (सुपा २२२)।

अवसावण न [अवस्रावण] १ काँजी (वृह १)। २ भात वगैरह का पानी (सूक्त ८६)।

अवसावणिया स्त्री [अवस्वापनिका] सुलानेवाली विद्या (धर्मवि १२४)।

अवसिअ वि [अपसृत] पीछे हटा हुआ (से १३, ६३)।

अवसिअ वि [अवसित] १ समाप्त, परिपूर्ण। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे २४८२)।

अवसिज्ज अक [अव + सद्] हारना, पराजित होना, 'एक्कोवि नावसिज्जइ' (विसे २८८४)।

अवसित्त वि [अवसिक्त] सींचा हुआ (रंभा ३१)।

अवसिद (शौ) वि [अवसित] समाप्त, पूर्ण (अभि १३३, प्रति १०६)।

अवसिद्धत पु [अपसिद्धान्त] दूषित सिद्धांत (विसे २४५७, ६)।

अवसीय अक [अव + सद्] क्लेश पाना, खिन्न होना। वकृ अवसीयत (पउम ३३, १३१)।

अवसुअ अक [उद् + वा] सूखना, शुष्क होना। अवसुअइ (षड्)।

अवसेअ पुं [अवसेक] सिंचन, छिड़काव (अभि २१०)।

अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य (विसे २६७१)।

अवसें (अप) देखो अवस (हे ४, ४२७)।

अवसेण देखो अवसं, 'अवसेण भुंजियव्वा (पउम १०२, २०१)।

अवसेस पु [अवशेष] १ अवशिष्ट, बाकी (सुपा ७७)। २ वि सब, सर्व (उप २११ टी)।

अवसेसिय वि [अवशेषित] १ समाप्त किया हुआ, पार पहुँचाया हुआ (से ४, ४७)। २ बाकी का, अवशिष्ट (भग)।

अवसेह सक [गम्] जाना। अवसेहइ (हे ४, १६२)। अवसेहति (कुमा)।

अवसेह अक [नश्] भागना, पलायन करना। अवसेहइ (हे ४, १७८, कुमा)।

अवसोइया स्त्री [अवस्वापिका] निद्रा (सुपा ६०६)।

अवसोग वि [अपशोक] १ शोक-रहित। २ देव-विशेष (दीव)।

अवसोण वि [अपशोण] थोडा लाल (गउड)।

अवसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] निद्रा (सुपा ८७)।

अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत (आवम, आव ४)। °कम्म न [°कर्मन्] आवश्यक क्रिया (आचू १)। °करणिज्ज वि [°करणीय] अवश्य करने लायक कर्म, सामयिक आदि। °किरिया स्त्री [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान (आचू १)। °किच्च वि [°कृत्य] आवश्यक कार्य (दे)।

अवस्स अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय (पि ३१५)।

अवस्सप्पिणी देखो अवसप्पिणी (संबोध ४८)।

अवस्साअ देखो अवसाय (विक्र)।

अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलग्न (अनु ६)।

अवह सक [रच्] निर्माण करना, बनाना। अवहइ (हे ४, ६४)।

अवह न [उभय] दोनों, युगल (हे २, १३८)।

अवह वि [अवह] न वहता हुआ, जो चालू नहीं है, बंद, 'ओसप्पिणीइ अवहो इमाइ जाओ तओ य सिद्धिपहो (धर्मवि १५१)।

अवहट्ट स्त्री [अपहृति] विनाश (विसे २०-१९)।

अवहट्ट वि [दे] अभिमानी, गर्वित (दे १, २३)।

अवहट्टु देखो अवहर=अप+हृ।

अवहड वि [अपहृत] ले लिया गया, छीना हुआ (सुपा २६६, पण्ह १, ३)।

अवहड वि [अवहृत] ऊपर देखो (प्राकृ)।

अवहड न [दे] मुसल (दे १, ३२)।

अवहण्ण पु [दे] ऊखल, ओखल, उदूखल (दे १, २६)।

अपहत्थ पुं [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊंचा किया हुआ हाथ, 'अवहत्थेण हओ कुमरो' (महा)।

अवहत्थ सक [अपहस्तय्] १ हाथ को ऊंचा करना। २ त्याग करना, छोड देना। अवहत्थेइ (महा)। संकृ अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण (पि ५८६, महा)।

अवहत्थरा स्त्री [दे] लात मारना, पाद-प्रहार (दे १, २२)।

अवहत्थिय वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (महा, काप्र ५२४, गा ३५३, सुपा १६३, णदि)।

अवहय वि [अपहत] नष्ट, नाश-प्राप्त (से १४, २८)।

अवहय वि [अघातक] अहिंसक (ओघ ७५०)।

अवहर सक [गम्] जाना। अवहरइ (हे ४, १६२)।

अवहर अक [नश्] भाग जाना, पलायन करना। अवहरइ (हे ४, १७८, कुमा)।

अवहर सक [अप+हृ] १ छीन लेना, अपहरण करना। २ भागाकार करना, भाग देना। अवहरइ (महा) अवहरेज्जा (उवा)। कवकृ अवहरिज्जंत, अवहीरमाण (सुर ३, १४२, भग २५, ४, णाया १, १८)। संकृ अवहरिऊण, अवहट्टु (महा, आचा भग)।

अवहर सक [अप+हृ] परित्याग करना। संकृ. अवहट्टु (सूअ १, ४, १, १७)।

अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेनेवाला (गा १५६)।

अवहरण न [अपहरण] छीन लेना (कुमा, सुपा २५०)।

अवहरिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (सुर ३, १४१, कुम्मा ६)।

अवहस सक [अव, अप+हस्] तुच्छ करना, तिरस्कार करना, उपहास करना। अवहसइ (णाया १, १८)।

अवहसिय वि [अप°, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित (णाया १, ८, सुर १२, ६७)।

अवहाउ सक [दे] आक्रोश करना। अवहाडेमि (दे १, ४७ टी)।

अवहाडिअ वि [दे] उत्कुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे १, ४७)।

अवहाण न [अवधान] १ ख्याल, उपयोग (सुर १०, ७१, कुमा)। २ ज्ञान, जानना (वसे ८२)।

अवहाय पु [दे] विरह, वियोग (दे १, ३६)।

अवहाय अ [अपहाय] छोड कर, त्याग कर (भग १९)।

अवहार सक [अव+धारय्] निर्णय करना, निश्चय करना। कर्म अवहारिज्जइ (स १६६)। हेकृ अवहारेउ (भास १६)।

अवहार (अप) देखो अवहर=अप+हृ। अवहारइ (भवि)। संकृ अवहारिवि (भवि)।

अवहार पु [अपहार] १ अपहरण (पण्ह १, ३, सुपा २७५)। २ दूर करना, परित्याग (णाया १, ६)। ३ चोरी (सुपा ४४६)। ४ बाहर करना, निकालना (निचू ७)। ५ भागाकार (भग २५, ४)। ६ नाश, विनाश (सुर ७, १२५)।

अवहार पु [अवधार] निश्चय, निर्णय। °व वि [वत्] निश्चय वाला (ठा १०)।

अवहार पु [अवधार्य] ध्रुव राशि, गणित-प्रसिद्ध राशिविशेष (सुज्ज १०, ६ टी)।

अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (से ११, १५, स १६६)।

अवहारय वि [अपहारक] छीननेवाला, अपहरण करनेवाला (सुर ११, १२)।

अवहारि वि [अपहारिन्] अपहारक, छीननेवाला (सुपा ५०३)।

अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित (स ५७६, पउम २३, ६, सुपा ३३१)।

अवहाव सक [कृप्] दया करना, कृपा करना। अवहावेइ (पड्, हे ४, १५१)। अवहावसु (कुमा)।

अवहाविअ वि [अवधावित] गमन के लिए प्रेरित (सिरि ४३४)।

अवहास पु [अवभास] प्रकाश, तेज (गउड, प्राप्र)।

अवहासिणी स्त्री [अवहासिनी] नासारज्जु, 'मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का' (गा ६६४)।

अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (सुपा १४२)।

अवहि देखो ओहि (सुपा ८६, ५७८, विसे ८२, ७३७)।

अवहिट्ठ वि [दे] दर्पित, अभिमानी, गर्वित (षड्)।

अवहिट्ठ न [दे] मैथुन, संभोग (सूअ १, ९, १०)।

अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (पउम २०, ६६, सुर ११, ३२, सुपा ४१३)।

अवहिय वि [अपहित] अहित (चड)।

अवहिय वि [अवधृत] नियमित (विसे २६३३)।

अवहिय न [अवधृत] अवधारण (वव १)।

अवहिय वि [अवहित] सावधान, ख्यालवाला (पाअ, महा, णाया १, २, पउम १०, ६५,

सुपा ४२३)। °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त (सुपा ६)।

अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ (कुमा)।

अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला (नाट, पि १२०)।

अवहीय वि [अपधीक] निन्द्य बुद्धिवाला, दुर्बुद्धि (पराह १, २)।

अवहीर सक [अव + धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। अवहीरेइ (महा)। वकृ अवहीरत (सुपा ३१२)। कवकृ अवहीरिज्जन (सुपा ३०६)। सकृ अवहीरिऊण (महा)।

अवहीरण न [अवधीरण] अवहेलना, तिरस्कार (गा १४६, अभि ६८ गउड)।

अवहीरणा स्त्री [अवधीरणा] ऊपर देखो (से १३, १६ वेणी १८)।

अवहीरमाण देखो अवहर = अप + हृ।

अवहीरिअ वि [अवधीरित] अवज्ञात, तिरस्कृत (से ११ ७, गउड)।

अवहील देखो अवहीर। अवहीलह (सण)।

अवहीला स्त्री [अवहेला] अनादर (सिरि १७६)।

अवहूय वि [अवधूत] मार भगाया हुआ (सवाव ५०)।

अवहेअ वि [दे] दया-योग्य, कृपा-पात्र (दे १, २२)।

अवहेड सक [मुच्] छोड़ना त्याग करना। अवहेडइ (हे ४, ६१)। सकृ अवहेडिउ (कुमा)।

अवहेडग } पुन [अवहेटक] आधे सिर का
अवहेडय } दर्द, आधा सीसी रोग (उत्तनि ३)।

अवहेडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ, अवमोटित (उत्त १२)।

अवहेरि } स्त्री [अवहेला] अवगणना, तिर-
अवहेरी } स्कार (उप २६०, ५६७ टी, भवि, सुपा २६१ महा)।

अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक (सुपा १०६)।

अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला (सूअ २ ६ ५३)।

अवहोअ पु [दे] विरह, वियोग (षड्)।

अवहोडय देखो अवओडग, 'सो बद्धो अवहोडएण' (सुव २, २५)।

अवहोमुह वि [उभयमुख] दोनो तरफ मुह वाला (प्राकृ ३०)।

अवहोल अक [अव + दोलय्] १ झूलना। २ सदेह करना। वकृ अवहोलन्त (गाया १, ८)।

अवाइ वि [अपायिन्] १ दुखी। २ दोषी, अपराधी, 'निविभचमचवाई होइ अवाई य नेहलोएवि' (सुपा ०७५)।

अवाईण वि [अवाचीन] अधोमुख (गाया १, १)।

अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत (गाया १, १)।

अवाउड वि [अ-व्यापृत] किसी कार्य में न लगा हुआ (उप पृ ३०२)।

अवाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर (गाया १, १, ठा ५, १)।

अवाडिअ वि [दे] वञ्चित, प्रतारित (षड्)।

अवाण देखो अपाण (पाअ, विपा १, ६)।

अवाय पु [अपाय] पानी का आगमन (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाय] भाग्यरहित (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाग] वृक्षरहित (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाक] पाकरहित (श्रा २३)।

अवाय पु [अवाय] प्राप्ति (श्रा २३)।

अवाय पु [अपाय] १ अनर्थ, अनिष्ट (ठा १)। २ दोष, दूषण (सुर ८, १२०)। ३ उदाहरण-विशेष (ठा ४, ३)। ४ विनाश (धर्म १)। ५ वियोग, पार्थक्य (णदि)। ६ सशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (ठा ४, ४, णदि)। °दंसि वि [°दर्शिन्] भावी अनर्थों को जाननेवाला (ठा ८, द्र ४६)। °विजय न [°विचय, °विजय] ध्यान-विशेष (ठा ४,२)।

अवाय पु [अवाय] सशय रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद (ठा ८, ४, णदि)।

अवाय वि [अम्लान] अम्लान, म्लानरहित, ताजा 'अवायमल्लमंडिया' (स ३८२)।

अवायाण न [अपादान] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण (ठा ८, विसे २०६६)।

अवार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (से ६८)।

अवार पु [दे] दूकान, हाट (दे १, १२)।

अवारी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे १, १२)।

अवालुआ स्त्री [दे] होठ का प्रान्त भाग (दे १, २८)।

अवाव पु [अवाप] रसोई, पाक। °कहा स्त्री [°कथा] रसोई सम्बन्धी कथा (ठा ४, २)।

अवास } (अप) देखो अवसे (षड्)।
अवासें }

अवाह पु [अवाह] देश-विशेष (इक)।

अवाहा देखो अबाहा (ओप)।

अवि अ [अपि] निम्नलिखित अर्थो का सूचक अव्यय—१ प्रश्न (से ५, ४)। २ अवधारण, निश्चय (आचा गा ५०२)। ३ समुच्चय (विसे ३५५१, भग १ ७)। ४ सभावना (विसे ३५४८, उत्त ३)। ५ विलाप (पाअ)। ६-७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (आचा, पउम ८, १४६, षड्)।

अवि पु [अवि] १ अज। २ मेष (विसे १७७४)।

अविअ वि [दे] उक्त, कथित (दे १, १०)।

अविअ वि [अवित] रक्षित (दे ५, ३५)।

अविअ अ [अपिच] विशेषण-सूचक अव्यय (पचा ७, २१)।

अविअ अ [अपिच] समुच्चय-द्योतक अव्यय (सुर ०, २८६ भग ३, २)।

अविअ पु [अविक] मेष, भेड (आचा)।

अविउ वि [अविन्] अज, मूर्ख (भट्टि ४६)।

अविउक्कतिय वि [अव्युत्क्रान्तिक] उत्पत्ति-रहित (भग)।

अविउसरण न [अव्युत्सर्जन] अपरित्याग, पास मे रखना (भग)।

अविकप वि [अविकम्प] निश्चल (पचा १८, ३५)।

अविकरण न [अविकरण] गृहीत वस्तुओ को यथास्थान न रखना (बृह ३)।

अविक्ख देखो अवेक्ख। अविक्खइ (महा)। हेकृ अविक्खिउ (स ३०७)। कृ अविक्खणिज्ज (विसे १७१६)।

अविक्खग वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (विसे १०१६)।

अविक्खण न [अवेक्षण] अवलोकन, निरीक्षण (नवि)।

अविक्खण न [अपेक्षण] अपेक्षा परवाह (विसे १७१६)।

अविक्खा देखो अवेक्खा (कुमा)।

अविक्खिय वि [अपेक्षित] १ अपेक्षित। २ न अपेक्षा, परवाह, 'नाविक्खिय न्भाए' (श्रा १८)।

अविक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (सुपा ७२)।

अविगइय वि [अविकृतिक] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी (सूअ २, २)।

अविगडिय वि [अविकटित] अनालोचित (वव १)।

अविगप्प देखो अवियप्प (सुर ४, १८६)।

अविगप्पग वि [अविकल्पक] १ विकल्प-रहित। २ न कल्पना-रहित प्रत्यक्ष ज्ञान (धर्मसं ७४०)।

अविगल वि [अविकल] अखण्ड, पूर्ण (उप ७८३)।

अविगिच्छ वि [अविचिकित्स्य] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि, 'तावपुड गरलाए, जह बहुनाडीए विगिच्छो वाही। दोसाएममेसाए, तह अविगिच्छो गुणादोसो' (श्रा १२)।

अविगीय पु [अविगीत] अगीतार्थ, शास्त्र के रहस्य का अनभिज्ञ साधु (वव ३)।

अविग्गह वि [अविग्रह] १ शरीर-रहित। २ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित (सुपा २३४)। ३ सरल, सीधा (भग)। °गइ स्त्री [°गति] अकुटिल गति (भग १४, ५)।

अविच्छ वि [अवीप्स्य] वीप्सारहित, व्याप्ति रहित (षड्)।

अविजाणय वि [अविज्ञायक] अनजान, मूर्ख (सूअ १, ५, १)।

अविज्ज वि [अबीज] बीजशक्ति से रहित (पउम ११, २५)।

अविणय पु [अविनय] विनय का अभाव (ठा ३, ३)।

अविणयवइ } पु [दे] जार, उपपति (दे १, अविणयवर } १८)।

अविणयवई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे १, १८)।

अविणिद्द वि [अविनिद्र] निद्रा विच्छेदरहित (गा ६६)।

अविण्णा स्त्री [अविज्ञा] अनुपयोग, ख्याल का अभाव (सूअ १, १, १)।

अवितह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (महा, उत्त)।

अविद } अ [अविद, °दा] विषाद-सूचक अविदा } अव्यय (पि २२, स्वप्न ५८)।

अविधि पुस्त्री [अविधि] १ विरुद्ध विधि। २ विधि का अभाव (बृह ३ आतु १)।

अविन्नाण वि [अविज्ञान] १ अजान। २ अज्ञात, अपरिचित (पउम ५, २१६)।

अवियड्ढ वि [अविदग्ध] अनिपुण (सुपा ५८२)।

अवियत्त न [अप्रीतिक] १ प्रीति का अभाव (ठा १०)। २ वि अप्रीतिकारक (पण्ह १, १)।

अवियत्त वि [अव्यक्त] अस्फुट, अस्पष्ट, 'अवियत्त दसण अणगार' (सम्म ६५)।

अवियप्प वि [अविकल्प] १ भेदरहित, 'वजणपजायस्स उ पुरिसो पुरिसो त्ति निच्चमवियप्पो' (सम्म ३५)। २ क्रिवि निःसंशय, संशयरहित, 'सविअप्पनिव्विअप्पं इय पुरिस जो भणिज अवियप्प' (सम्म ३५)।

अवियाउरी स्त्री [दे अविजनयित्री] वन्ध्या स्त्री (णाया १, २)।

अवियाणय देखो अविजाणय (आचा)।

अविरइ स्त्री [अविरति] १ विराम का अभाव, अनिवृत्ति। २ पाप कर्म से अनिवृत्ति (सम १०, पण्ह २,५)। ३ हिंसा (कम्म ४)। ४ अब्रह्म, मैथुन (ठा ६)। ५ विरति-परिणाम का अभाव (सूअ २,२)। ६ वि विरतिरहित (नाट)। °वाय पु [°वाद] १ अविरति की चर्चा। २ मैथुन-चर्चा (ठा ६)।

अविरइय वि [अविरतिक] विरति से रहित, पापनिवृत्ति से वर्जित, पाप कर्म में प्रवृत्त (भग, कस)।

अविरत्त वि [अविरक्त] वैराग्यरहित (णाया १, १४)।

अविरय वि [अविरत] १ विरामरहित, अविच्छिन्न (गा १५५)। २ पाप निवृत्ति से रहित (ठा २, १)। ३ चतुर्थ गुणस्थानक वाला जीव (कम्म ४,६३)। ४ क्रिवि सदा, हमेशा (पाअ)। °सम्मद्दिट्ठि स्त्री [°सम्यग्दृष्टि] चतुर्थ गुणस्थानक (कम्म २,२)।

अविरल वि [अविरल] निविड, घन (णाया १, १)।

अविरहि वि [अविरहिन्] विरहरहित (कुमा)।

अविराम वि [अविराम] १ विरामरहित। २ क्रिवि निरन्तर, हमेशा (पाअ)।

अविराय वि [अविलीन] अभ्रष्ट (कुमा)।

अविराहिय वि [अविराधित] अखण्डित, आराधित (भग १५)।

अविरिय वि [अवीर्य] वीर्यरहित (भग)।

अविल पु [दे] १ पशु। २ वि कठिन (दे १, ५२)।

अविलम्बिय वि [अविलम्बित] विलम्ब-रहित, शीघ्र (कप्प)।

अविला स्त्री [अविला] मेषी, भेडी (पाअ)।

अविवेग पु [अविवेक] १ विवेक का अभाव। २ वि विवेकरहित। °वंत वि [°वत्] अविवेकी (पउम ११३, ३१)।

अविसंधि वि [अविसंधि] पूर्वापर विरोध से रहित, संगत, सबद्ध (औप)।

अविसंवाइ वि [अविसंवादिन्] विसंवाद-रहित, प्रमाण भूत, सत्य (कुमा, सुर ६, १७८)।

अविसम वि [अविषम] सदृश, तुल्य (कुमा)।

अविसाइ वि [अविषादिन्] विषादरहित (पण्ह २, १)।

अविसेस वि [अविशेष] तुल्य, समान (ठा २,३, उप ८७७)।

अविसेसिय वि [अविशेषित] (ठा १०)।

अविस्स न [अविश्र] मांस और रुधिर (पव ४०)।

अविस्साम वि [अविश्राम] १ विश्रामरहित (पण्ह १,१)। २ क्रिवि निरन्तर, सदा (उप ७२८ टी)।

अविहड पु [दे] बालक, बच्चा (बृह १)।
अविहव वि [अविभव] दरिद्र (गउड)।
अविहवा स्त्री [अविधवा] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सधवा (णाया १,१)।
अविहा देखो अविदा (अभि २२४)।
अविहाड वि [अविघाट] अविकट (वव ७)।
अविहाविअ वि [दे] १ दीन, गरीब। २ न मौन (दे १, ५६)।
अविहाविअ वि [अविभावित] अनालोचित (गउड)।
अविहि देखो अविधि (दस १)।
अविहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (षड्)।
अविहिंत वकृ [अविघ्नत्] नहीं मारता हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ,
'वज्झेमित्ति परिणओ, संपत्तीए विमुच्चई वेरा।
अविहिंतोवि न मुच्चइ, किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स' (ओघ ६०)।
अविहिंस वि [अविहिंस] अहिंसक (आचा)।
अविहिंसा स्त्री [अविहिंसा] अहिंसा (सूअ १, २, १)।
अविहीर वि [अप्रतीक्ष] प्रतीक्षा नहीं करने वाला (कुमा)।
अविहेडय वि [अविहेटक] आदर करनेवाला (दस १०, १०)।
अवी देखो अवि (उत्त २०, ३८)।
अवीइय अ [अविविच्य] अलग न हो कर (भग १०, २)।
अवीइय [अविचिन्त्य] विचार न कर (भग १०, २)।
अवीअ वि [अद्वितीय] १ असाधारण, अनुपम (कुमा)। २ एकाकी, असहाय (विपा १,२)।
अवुक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना। अवुक्कइ (हे ४, ३८)। वकृ. अवुक्कंत (कुमा)।
अवुड्ढ वि [अवृद्ध] तरुण, जवान (कुमा)।
अवुग्गह देखो अविग्गह (ठा ५, १)।
अवुह देखो अबुह (सण)।
अवूह देखो अवोह (णाया १, १)।
अवे सक [अव + इ] जानना। अवेमि (विसे १७७३)।
अवे अक [अप+इ] दूर होना, हटना। अवेइ (स २०)। अवेह (मुद्रा १६१)।
अवेक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना। अवेक्खइ (महा)।
अवेक्ख सक [अव+ईक्ष्] अवलोकन करना। अवेक्खाहि (स ३१७) संकृ अवेक्खिऊण (स ५२७)।
अवेक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा, परवाह (सुर ३, ८४, स ५६२)।
अवेक्खि वि [अपेक्षिन्] अपेक्षा करनेवाला (गउड)।
अवेक्खिय वि [अपेक्षित] जिसकी अपेक्षा हुई हो वह (अभि २१९)।
अवेक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (अभि १९६)।
अवेय वि [अपेत] रहित, वर्जित (विसे २०१३)। °रुइ वि [°रुचि] रुचि-रहित, निरीह (उत्त ७२८ टी)।
अवेय, अवेयग वि [अवेद, °क] १ पुरुष-वेदादि वेद से रहित (पण्ण १)। २ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त (ठा २, १)।
अवेसि देखो अवेसि (दे १, ८, पाअ)।
अवेह देखो अवेक्ख = अव + ईक्ष्। अवेहइ (सूअ ६)।
अवोअड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्पष्ट (भास ७६)।
अवोच्छिण्ण देखो अव्वोच्छिण्ण (आचा)।
अवोच्छित्ति देखो अव्वोच्छित्ति (ठा ५, ३)।
अवोह सक [अप+ऊह्] १ विचार करना। २ निर्णय करना। अवोहए (आवम)।
अवोह पु [अपोह] १ विकल्पज्ञान, तर्क-विशेष। २ त्याग, वर्जन (उप ९९७)। ३ निर्णय, निश्चय (णंदि)।
अव्वईभाव पु [अव्ययीभाव] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु)।
अव्वंग वि [अव्यङ्ग] अक्षत, अखण्ड (वव ७)।
अव्वंग न [अव्यङ्ग] १ पूर्ण अंग, पूरा शरीर। २ वि अविकल, अन्यून, संपूर्ण; 'परिहियअव्वंगधोयसियवसणा' (धर्मवि १७, १५)।
अव्वक्खित्त वि [अव्याक्षिप्त] १ विक्षेप-रहित। २ तल्लीन, एकाग्र (उत्त २०)।
अव्वग्ग वि [अव्यग्र] व्यग्रताशून्य, अनाकुल (उत्त १५)।
अव्वत्त, अव्वत्तय वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट, अस्फुट (उप ७६८ टी, सुर ४, २१४, श्रा २७)। २ छोटी उमर का बालक, बच्चा (निचू १८)। ३ अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यानभिज्ञ (साधु) (धर्म २, आचा)। ४ पु. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि (ठा ७)। ५ न सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति (आवम)। °मय न [°मत] एक जैनाभास मत (विसे)।
अव्वत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ अवचनीय। २ पुं कर्मबन्ध विशेष, जब जीव सर्वथा कर्मबन्धरहित होकर फिर जो कर्मबन्ध करे वह (पंच ५, १२)।
अव्वत्तिय देखो अवत्तिय (औप, विसे, आवम)।
अव्वभिचारि वि [अव्यभिचारिन्] ऐकान्तिक (पंचा २, ३७)।
अव्वय न [अव्यय] 'च' आदि निपात (चेइय ६८३)।
अव्वय न [अव्रत] १ व्रत का अभाव (श्रा १६, सम १३२)। २ वि व्रतरहित (विसे २५४२)।
अव्वय वि [अव्यय] १ अक्षय, अखूट (सुपा ३२१)। २ नित्य, शाश्वत (भग २, १)।
अव्ववसिय वि [अव्यवसित] १ अनिश्चित, संदिग्ध। २ अपराक्रमी (ठा ३, ४)।
अव्वसण वि [अव्यसन] १ व्यसन-रहित। २ पुन लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन (जं ७)।
अव्वह वि [अव्यथ] १ व्यथारहित। २ न निश्चल ध्यान (ठा ४, १, औप)।
अव्वहिय वि [अव्यथित] १ अपीडित (पंचा ५)। २ निश्चल (बृह १)।
अव्वा स्त्री [अर्वाक्] पर से भिन्न, 'णो हव्वाए णो पाराए' (सूअ २, १, ६)।
अव्वा स्त्री [दे अम्बा] माता, जननी (दे १, ५, षड्)।
अव्वाइद्ध वि [अव्याविद्ध] १ अविपर्यस्त, अविपरीत। २ न सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव (बृह १, गच्छ २)।

अव्वागड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्फुट (आचा, सत्त ९ टी)।

अव्वाण वि [आव्यान] थोड़ा स्निग्ध (ओघ ४८८)।

अव्वाबाह वि [अव्याबाध] १ हरज-रहित, बाधा-वर्जित (आव ३)। २ न रोग का अभाव (भग १८, १०)। ३ सुख (आवम)। ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति (भग १, १)। ५ पुं लोकान्तिक देव-विशेष (णाया १, ८)।

अव्वाबाह पुन [अव्याबाध] एक देवविमान (देवेन्द्र १४५)।

अव्वावड वि [अव्यापृत] १ जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित। २ एक प्रकार का वास्तु (बृह ३)।

अव्वावन्न वि [अव्यापन्न] अविनष्ट, नाश को अप्राप्त (भग १, ७)।

अव्वावार वि [अव्यापार] व्यापार-वर्जित (स ५०)।

अव्वाहय वि [अव्याहत] १ रुकावट-वर्जित (ठा ४,४, सुपा ८६)। २ अनुपहत, आघात-रहित (गुदि)। °पुव्वावरत्त न [°पूर्वापरत्व] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन) (राय)।

अव्वाहार पु [अव्याहार] न बोलना, मौन (पाअ)।

अव्वाहिय वि [अव्याहृत] न बुलाया हुआ (जीव ३, आचा)।

अव्विरय वि [अविरत] विरति-रहित (सट्ठि ८)।

अव्वो अ नीचे के अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय—१ सूचना। २ दुःख। ३ संभाषण। ४ अपराध। ५ विस्मय। ६ आनन्द। ७ आदर। ८ भय। ९ खेद। १० विषाद। ११ पश्चात्ताप, 'अव्वो हरंति हिययं,

तहवि न वेसा हवंति जुवईण।

अव्वो किंपि रहस्सं, मुणंति धुत्ता जणब्भहिआ॥

अव्वो सुपहायमिणं,

अव्वो अज्जम्ह सप्फलं जीअं।

अव्वो अइअम्मि तुमे, नवरं जइ सा न

जूरिहिइ॥' (हे २, २०४)।

अव्वोगड वि [अव्याकृत] १ अविशेषित (बृह २)। २ बँटाव-रहित (दसा ३)। ३ नहीं बाँटा हुआ। ४ अस्फुट, अस्पष्ट। ५ न एक प्रकार का वास्तु (बृह ३)।

अव्वोच्छिण्ण वि [अव्युच्छिन्न, अव्यवच्छिन्न] १ अन्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित (वव ७)। २ नित्य। ३ अव्याहत (गउड)।

अव्वोच्छित्ति स्त्री [अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति] १ सातत्य, प्रवाह, बीच में विच्छेद का अभाव, परंपरा से बराबर चला आना (आवम)। °नय पु [°नय] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी माननेवाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय (भग ७, ३)।

अव्वोच्छिन्न देखो अव्वोच्छिण्ण (ओघ ३२२, स २५६)।

अव्वोयड देखो अव्वोगड (भग १०,४, भास ७१)।

अस सक [अश्] व्याप्त करना। असइ, असए (षड्)।

अस अक [अस्] होना। अस्मि, 'हाहा हओहमस्मि त्ति कट्टु' (भग १५)। अंसि (प्राप)। अत्थि (हे ३, १४६, १४७, १४८)। भूका आसि, आसी (भग, उवा)।

अस सक [अश्] भोजन करना, खाना। असइ, 'भत्तमसणोमालूर नासइ दोसोवि जत्थाही' (सार्ध १०६, भवि)। वकृ असंत (भवि)। कृ असियव्व (सुपा ४३८)।

अस वि [असत्] अविद्यमान, असत्, 'दुहओ ण विणस्संति, नो य उप्पज्जए अस' (सूअ १, १, १, १६)।

असइ स्त्री [असृति] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल। २ धान्य मापने का एक परिमाण। ३ उससे मापा हुआ धान्य (अणु, णाया १,७)।

असइ स्त्री [दे असत्त्व] अभाव, अविद्यमानता, 'पढमं जईण दाऊण,

अप्पणा पणमिऊण पारेइ।

असईय सुविहियाणं, भुंजेइ य कयदिसालोओ' (उवा)।

असइं, असइ, असई } अ [असकृत्] अनेक वार, बार-बार (भवि, आचा, उप ८३३ टी)।

असई स्त्री [असती] १ कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (सुपा ६)। २ दासी (भग ८,६)। °पोस पुं [°पोष] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन, 'असईपोसं च वज्जिज्जा' (श्रा २२)। °पोसणया स्त्री [°पोषणा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि)।

असउण पुन [अशकुन] अपशकुन (पचा ७)।

असंक वि [अशङ्क] १ शङ्का-रहित, असंदिग्ध। २ निडर, निर्भय (आचा, सुर २, २६)।

असंकल वि [अशृङ्खल] शृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित (कुमा)।

असंकि वि [अशङ्किन्] संदेह न करने वाला (सूअ १, १, २)।

असंकिलिट्ठ वि [असंक्लिष्ट] १ संक्लेश-रहित। २ विशुद्ध, निर्दोष (ओप, पण्ह २,१)।

असंख वि [असंख्य] संख्या-रहित, परिमाण-रहित (सुपा ५६६, जी २७, ४०)।

असंख न [असंख्य] सांख्य मत से भिन्न दर्शन (सुपा ५६६)।

असंखड स्त्रीन [दे] कलह, झगड़ा, 'जत्थ य समणीणमसंखडाइं गच्छम्मि नेव जायंति' (गच्छ ३, ११)। स्त्री °डी (पव १०६)।

असंखड न [दे] कलह, झगड़ा (निचू १)।

असंखडिय वि [दे] कलह करने वाला, झगड़ाखोर (बृह १)।

असंखय देखो असंख = असंख्य (स ८५)।

असंखय वि [असंस्कृत] १ संस्कार हीन। २ संधान करने के अशक्य (राज)।

असंखिज्ज वि [असंख्येय] गिनती या परिमाण करने के अशक्य (नव ३५)।

असंखिज्जय देखो असंखेज्जय (अणु)।

असंखेज्ज देखो असंखिज्ज (भग)।

असंखेज्जइ° वि [असंख्येय] असंख्यातवाँ। °भाग पुं [°भाग] असंख्यातवाँ हिस्सा (औप, भग)।

असंखेज्जय पुन [असंख्येयक] गणना-विशेष (अणु)।

असंग वि [असङ्ग] १ निस्सङ्ग, अनासक्त (पण्ण २)। २ पुं आत्मा (आचा)। ३ मुक्त जीव। ४ न मोक्ष, मुक्ति (पंचव ३, औप)।

असंगय न [दे] वस्त्र, कपड़ा (दे १,३४)।

असंगहिय वि [असंगृहीत] १ जिसका संग्रह न किया गया हो वह। २ अनाश्रित (ठा ८)।

असंगहिय वि [असंग्रहिक] १ संग्रह न करने वाला। २ पुं नैगम नय का एक भेद (विसे)।

असंगिअ पु [दे] १ अश्व, घोडा। २ वि. अनवस्थित, चञ्चल (दे १, ५५)।

असंघयण वि [असंहनन] संहनन से रहित। २ वज्र, ऋषभ, नाराच आदि प्राथमिक तीन संहननों से रहित (निचू २०)।

असंजण न [असञ्जन] नि:सङ्गता, अनासक्ति (निचू १)।

असंजम पुं [असंयम] १ हिंसा, झूठ आदि सावद्य अनुष्ठान (सूअ १ १३)। २ हिंसा आदि पाप-कार्यों से अनिवृत्ति (धर्म ३)। ३ अज्ञान (आचा)। ४ असमाधि (वव १)।

असंजय वि [असंयत] १ हिंसा आदि पाप कार्य से अनिवृत्त (सूअ १ १०)। २ हिंसा आदि करने वाला (भग ६ ३)। ३ पु साधु भिन्न गृहस्थ (आचा)।

असंजल पु [असंज्वल] १ ऐरवत वर्ष के एक जिनदेव का नाम (सम १५३)।

असंजोगि वि [असंयोगिन्] १ संयोग-रहित। २ पु मुक्त जीव, मुक्तात्मा (ठा २,१)।

असंत वकृ [असत्] १ अविद्यमान (नव ३३)। २ झूठ, असत्य (पण्ह १ २)। ३ असुंदर, अचारु (पण्ह २, २)।

असंत देखो अस = अश्।

असंत वि [अशान्त] शान्तरहित, क्रुद्ध (पण्ह [illegible])।

असत्त वि [असत्त्व] सत्त्व-रहित, बल-शून्य (पण्ह १, [illegible])।

असंथड वि [दे असंस्तृत] अशक्त, असमर्थ (आचा, बृह ५)।

असंथरत वकृ [दे असंस्तरत्] १ समर्थ न होता हुआ। २ खोज न करता हुआ (वव [illegible])। ३ तृप्त न होता हुआ (ओघ १८२)।

असंथरण न [दे असंस्तरण] १ निर्वाह का अभाव (बृह १)। २ पर्याप्त लाभ का अभाव ([illegible])। ३ असमर्थता, अशक्ति, असमर्था ([illegible])।

असंथरमाण वकृ [दे असंस्तरमाण] देखो असंथरत (वव ४, ओघ १८१)।

असंविम वि [असंविम] संधान रहित अखण्ड (बृह ५)।

असंभंत पु [असम्भ्रान्त] प्रथम नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ४)।

असंभव्व वि [असंभाव्य] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा (श्रा १२)।

असंभावणीय वि [असंभावनीय] ऊपर देखो (महा)।

असंलप्प वि [असंलप्य] अनिर्वचनीय (अणु)।

असंलोय पु [असंलोक] १ अप्रकाश। २ वह स्थान जिसमे लोगो का गमनागमन न हो, भीडरहित स्थान (आचा)।

असंवर पु [असंवर] आश्रव, संवर का अभाव (ठा ५, २)।

असंवरीय वि [असंवृत] १ अनाच्छादित। २ नहीं रुका हुआ (कुमा)।

असंवुड वि [असंवृत] असंयत, पाप-कर्म से अनिवृत्त (सूअ १, १, ३)।

असंसइय वि [असंशयित] असंदिग्ध (सूअ २, २)।

असंसट्ठ वि [असंसृष्ट] १ दूसरे से न मिला हुआ (बृह २)। २ लेप-रहित (औप)। ३ स्त्री पिण्डैषणा का एक भेद (पव ९६)।

असंसत्त वि [असंसक्त] १ अमिलित (उत्त २)। २ अनासक्त (दस ८, उत्त ३)।

असंसय वि [असंशय] १ संशय-रहित (बृह १)। २ क्रिवि नि:संदेह, नक्की (अभि ११०)।

असंसार पु [असंसार] संसार का अभाव, मोक्ष (जीव १)।

असंसि वि [अस्रंसिन्] अविनश्वर (कुमा)।

असक्क वि [अशक्य] जिसको न कर सके वह (सुपा ६५१)।

असक्क वि [अशक्त] असमर्थ (कुमा)।

असक्कय वि [असंस्कृत] संस्कार-रहित (पण्ह १, २)।

असक्कय वि [असत्कृत] सत्कार-रहित (पण्ह १, २)।

असक्कणिज्ज वि [अशकनीय] अशक्य (कुमा)।

असग्गाह, **असग्गह**, **असग्गाह** पु [असद्ग्रह] १ कदाग्रह (उप ६७२, सुपा १३४)। २ अति-निर्बन्ध, विशेष आग्रह (भवि)।

असच्च न [असत्य] १ झूठ वचन (प्रासू १५१)। २ वि झूठा (पण्ह १ २)। °मोस न [°मृष] झूठ से मिला हुआ सत्य (द्र २२)। °वाइ वि [°वादिन्] झूठ बोलने वाला (सम ५०, पउम ११, ३४)। °ामोस न [°ामृष] न सत्य और न झूठ ऐसा वचन (आचा)। °ामोसा स्त्री [°ामृषा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पच १)। °संध वि [°संध] १ असत्य-प्रतिज्ञ। २ असत्य अभिप्राय वाला (महा, पण्ह १, २)।

असज्ज, **असज्जमाण** वकृ [असजत्] संग न करता हुआ (आचा, उत्त १८)।

असज्झाइय वि [अस्वाध्यायिक] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण (पव २६८)।

असज्झाय पु [अस्वाध्याय] अनध्याय वह काल जिसमें पठन-पाठन का निषेध किया गया है (गच्छ ३, ३०)।

असड्ढ वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित (कुमा)।

असढ वि [अशठ] सरल निष्कपट (सुपा ५५०)। °करण वि [°करण] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला (बृह ६)।

असण न [अशन] १ भोजन, खाना (निचू ११)। २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ (पव ४)।

असण पु [असन] १ बीजक नामक वृक्ष (पण्ण १, णाया १, १, औप, पाअ, कुमा)। २ न. क्षेपण, फेंकना (विसे २७६५)।

असणि पुस्त्री [अशनि] १ एक प्रकार की बिजली (सुज्ज २०)। २ पु एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

असणि पुस्त्री [अशनि] १ वज्र (पाअ)। २ आकाश से गिरता अग्नि-कण (पण्ण १)। ३ वज्र का अग्नि (जी ६)। ४ अग्नि (स ३३२)। ५ अस्त्रविशेष (स ३८५)। °प्पह पु [°प्रभ] रावण के मामा का नाम (से १२, ६१)। °मेह पु [°मेघ] १ वह वर्षा जिसमें ओले गिरते हैं। २ अति भयंकर वर्षा प्रलय-मेघ (भग ७ ६)। °वेग पु [°वेग] विद्याधरों का एक राजा (पउम ६ १५८)।

असणी स्त्री [अशनी] एक इन्द्राणी (ठा ४, १)।
असणी स्त्री [अशनी] जिह्वा जीभ, 'अवखाणमणी कम्माण मोहणं तह वयाण बंभ च' (सुपा ७, ४२)।
असण्ण वि [असंज्ञ] संज्ञारहित, अचेतन (लहुअ ६)।
असण्णि वि [असंज्ञिन्] १ संज्ञि-भिन्न, मनोज्ञान से रहित (जीव) (ठा २, २)। २ सम्यग्दृष्टि भिन्न, जैनेतर (भग १, २)। °सुय न [°श्रुत] जैनेतर शास्त्र (णंदि)।
असत्त वि [अशक्त] असमर्थ (सुर ३, २४४, १०, १७४)।
असत्त वि [असक्त] अनासक्त (आचा)।
असत्त न [असत्त्व] अभाव, असत्ता (णंदि)।
असत्ति स्त्री [अशक्ति] सामर्थ्य का अभाव। °मत वि [°मत्] असमर्थ, अशक्त (पउम ६६, ३६)।
असत्थ वि [अस्वस्थ] अतंदुरुस्त बीमार (सुर ३, १२७)।
असत्थ न [अशस्त्र] १ शस्त्र-भिन्न। २ संयम, निर्दोष अनुष्ठान (आचा)।
असद्द पु [अशब्द] १ अकीर्ति, अपयश (गच्छ २)। २ वि शब्दरहित (बृह ३)।
असद्ध वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित। स्त्री °द्धी (उप पृ ३६८)।
असन्नि देखो असण्णि (भग, जी ४३)।
असबल वि [अशबल] १ अमिश्रित। २ निर्दोष, पवित्र (पण्ह २, १)।
असब्भ वि [असभ्य] अशिष्ट, जंगली (स ६५०)। °भासि वि [भाषिन्] असभ्य-भाषी (सुर ६ २१)।
असब्भाव पु [असद्भाव] १ यथार्थता का अभाव, झूठ (पिंड)। २ वि असत्य, अयथार्थ (उत्त ३, औप)।
असब्भावि वि [असद्भाविन्] झूठा, असत्य (महा)।
असब्भूय वि [असद्भूत] असत्य (भग)।
असम वि [असम] १ असमान, असाधारण (सुर ३, २४)। २ एक, तीन, पांच आदि एकाई संख्या वाला विषम। °सर पु [°शर] कामदेव (गउड)।

असमवाइ न [असमवायिन्] नैयायिक और वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष (विसे २०९६)।
असमंजस वि [असमञ्जस] १ अव्यवस्थित, गैरव्याजवी (आचा, सुर २, १३१, सुपा ६२३, उव १००८)। २ क्रिवि अव्यवस्थित रूप से (पाअ)।
असमिक्खिय वि [असमीक्षित] अनालोचित, अविचारित (पण्ह १, २)। °कार वि [°कारिन्] साहसिक। °कारिया स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उव ७६८ टी)।
असरास्य वि [दे] निर्दय, निष्ठुर हृदय वाला (दे १, ४०)।
असलील वि [अश्लील] असभ्य भाषा (मोह ८७)।
असव पु [असु] प्राण, 'विउत्तासवो विअ ठिओ कंचि कालं' (स ३५७)।
असवण्ण वि [असवर्ण] असमान, असाधारण (सण)।
असवार पु [अश्ववार] घुड़सवार (धर्मवि ४१)।
असह वि [असह] १ असहिष्णु (कुमा, सुपा ६२०)। २ असमर्थ (वव १)। ३ खेद करने वाला (पाअ)।
असहण वि [असहन] असहिष्णु, क्रोधी (पाअ)।
असहाय वि [असहाय] १ सहायरहित (भग)। २ एकाकी (बृह ४)।
असहिज्ज वि [असाहाय्य] १ सहायता-रहित। २ सहायता का अनिच्छुक (उवा)।
असहीण वि [अस्वाधीन] परतन्त्र, पराधीन (दस ८)।
असहु वि [असह] १ असहिष्णु (उव)। २ असमर्थ, अशक्त (ओघ ३६, भा)। ३ बीमार, ग्लान (निचू १)। ४ सुकुमार, कोमल (ठा ३, ३)।
असहेज्ज देखो असहिज्ज (भग)।
असागारिय वि [असागारिक] गृहस्थों के आवागमन से रहित स्थान (वव ३)।
असाढभूइ पु [अषाढभूति] एक जैन मुनि (पिंड ४७४)।

असाढय न [असाढक] तृण-विशेष (पण्ण १, पत्र ३३)।
असाय न [असात] दुःख, पीडा (पण्ह १, १),
'रागवसा इह जीवा,
दुल्लहलोयम्मि गाढमणुरत्ता।
जं वेइंति असायं, कत्तो तं हुंदि नरएवि'
(सुर ८, ७६)।
°वेयणिज्ज न [°वेदनीय] दुःख का कारण-भूत कर्म (ठा २ ४)।
असार } वि [असार, °क] निस्सार, सार-
असारय } रहित (महा, कुमा)।
असारा स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केला का पेड़ (दे १, १२)।
असालिय पुस्त्री [दे] सर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २४)।
असासय वि [अशाश्वत] अनित्य, विनश्वर (णाया १, १ गा २४७)।
असाहण न [असाधन] असिद्धि (सुर ४, २४८)।
असाहारण वि [असाधारण] अतुल्य, अनुपम (भग, दस)।
असि पु [असि] १ खड्ग, तलवार (पाअ)। २ इस नाम की नरकपाल देवों की एक जाति (भग ३, ६)। ३ स्त्री बनारस की एक नदी का नाम (ती ३८)। °कुड न [°कुण्ड] मथुरा का एक तीर्थ-स्थान (ती ७)। °घाय पु [°घात] तलवार का घाव (पउम ५६, २५)। °चम्मपाय न [°चर्मपात्र] तलवार की म्यान, कोश (भग ३, ५)। °धारा स्त्री [°धारा] तलवार की धार (उत्त १९)। °धेणु, °धेणुआ स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी (गउड, पाअ)। °पत्त न [°पत्र] १ तलवार (विपा १, ६)। २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्र (भग ३, ६)। ३ तलवार की पतरी (जीव ३)। ४ पु नरकपाल देवों की एक जाति (सम २९)। °पुत्तगा स्त्री [°पुत्रिका] छुरी (उप पृ ३३४)। °मुट्ठि स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ (पाअ)। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार (ठा ७)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार (विपा १, ३)। °वण न [°वन] खड्गाकार पत्ते वाले वृक्षों का जंगल (पण्ह १, १)। °वत्त देखो

[°पत्त] (से ३, ४२)। °हर वि [°धर] तलवार-वाला, योद्धा (से ६ १८)। °हारा देखो °धारा (उव)।

असिइ (अप) देखो असीइ (सण)।

असिण न [अशन] भोजन, खाना, 'अगण-पिंड परिहुविज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणा इवा अवहारा इवा' (आचा २, १, ५, १)।

असित्थ न [असिक्थ] आटा लगे हुए हाथ या वर्तन का कपडे से छना हुआ धोवन (पडि)।

असिद्ध वि [असिद्ध] १ अनिष्पन्न। २ तर्क-शास्त्र प्रसिद्ध दुष्ट हेतु (विसे २८२४)।

असिय वि [अशित] भुक्त, खादित (पाअ; सुपा २१२)।

असिय वि [असित] १ कृष्ण, श्वेतरहित (पाअ)। २ अशुभ (विसे)। ३ अबद्ध, अ-यन्त्रित (सूअ १, २, १), 'सिया एगे अणु-गच्छंति, असिया एगे अणुगच्छंति' (आचा)। °क्ख पु [°ाक्ष] यक्ष-विशेष (सण)।

असिय न [दे] दात्र, दाँती (दे १, १४)।

असियव्व देखो अस = अश्।

असिलेसा स्त्री [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष (सम ११)।

असिलोग पु [अश्लोक] अकीर्त्ति, अजस (सम १२)।

असिव न [अशिव] १ विनाश। २ असुख। ३ देवतादि कृत उपद्रव (ओघ ७)। ४ मारी रोग (वव ४)।

असिविण पु [अस्वप्न] देव, देवता (प्रामा)।

असिव्व देखो असिव (वव ७, प्राप्र)।

असिसुई स्त्री [अशिश्वी] शिशुरहित स्त्री (प्राकृ २८)।

असिह वि [अशिख] शिखारहित (वव ४)।

असीइ स्त्री [अशीति] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० (सम ८८)। °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ (पउम ८०, ७४)।

असीइग वि [अशीतिक] अस्सी वर्ष की उम्र वाला (तंदु १७)।

असीम वि [असीमन] निस्सीम, 'असीमत-भत्तिराएण' (उप ७२८ टी)।

असील वि [अशील] १ दुःशील, असदा-चारी (पण्ह १, २)। २ न असदाचार, अब्रह्मचर्य। °मत वि [°वत्] १ अब्रह्मचारी (ओघ ७७७)। २ असंयत (सूअ १, ७)।

असु पु व [असु] १ प्राण (स ३८३)। २ न चित्त। ३ ताप (प्राप्र; वृप ५१)।

असु देखो असु (प्राप्र)।

असुइ वि [अशुचि] १ अपवित्र, अस्वच्छ, मलिन (ओप, वव ३)। २ न अमेध्य, विष्ठा (ठा ६; प्रासू १६६)।

असुइ वि [अश्रुति] शास्त्रश्रवण-रहित (भग ७, ६)।

असुईकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया हुआ (उप ७२८ टी)।

असुग पु [असुक] देखो असु = असु (हे १, १७७)।

असुज्झंत वि [अदृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ, 'अन्नपि ज असुज्झंत। भुजतएण रत्ति' (पउम १०३, २५)।

असुणि वि [अश्रोतृ] न सुननेवाला, 'अलि-यपयपिरि अणिमित्तकोवणे असुणि सुणसु मह वयणं' (वज्जा ७२)।

असुद्ध वि [अशुद्ध] १ अस्वच्छ, मलिन। २ न मैला, अशुचि। °विसोहय पु [°विशो-धक] भंगी, मेहतर (सुर १६, १६५)।

असुभ देखो असुह = अशुभ (सम ६७, भग)।

असुय वि [अश्रुत] न सुना हुआ (ठा ४, ४)। °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के बिना ही होनेवाली बुद्धि—ज्ञान (णंदि)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ (महा, णाया १,१, पउम ६५,१४)।

असुय वि [असुत] पुत्ररहित (उत्त २)।

असुर पु [असुर] १ दैत्य, दानव (पाअ)। २ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति (पण्ह १, ४)। ३ दास-स्था-नीय देव (आउ ३६)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (ठा १, १, महा)। °राय पु [°राज] असुरों का इन्द्र (पि ४००)। °वदि पुं [°वन्दिन्] राक्षस (से ६, ५०)।

असुरिंद पु [असुरेन्द्र] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष (णाया १, ८, सुपा ७७)।

असुह न [अशुभ] १ अमंगल, अनिष्ट (सुर ४, १६३)। २ पाप-कर्म (ठा ४, ४)। ३ वि खराब, असुन्दर (जीव १, कुमा)। °णाम न [°नामन्] अशुभ फल देनेवाला कर्म-विशेष (सम ६७)।

असुह न [असुख] दुःख (ठा ३, ३)।

असूअ सक [असूय्] असूया करना। असू-एहि (मै ७)।

असूया स्त्री [असूचा] १ सूचना का अभाव। २ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना (निचू १०)।

असूया स्त्री [असूया] असूया, असहिष्णुता (दस)।

असूरिय वि [असूर्य] १ सूर्यरहित, अन्ध-कारमय स्थान। २ पु नरक स्थान (सूअ १, ५, १)।

असेव्व देखो असिव (प्राप्र)।

असेव्व वि [असेव्य] सेवा के अयोग्य (गउड)।

असेस वि [अशेष] निःशेष, सर्व (प्राप)।

असोअ } पु [अशोक] १ देव-विशेष (राय
असोग } ८१)। २ पुंन एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। °वडिसय पुन [°वतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राय ५६)।

असोग पु [अशोक] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (औप)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। हरा रंग (राय)। ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष (सम १५२)। ५ देव-विशेष (जीव ३)। ६ न तीर्थ-विशेष (ती १०)। ७ यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। ८ वि शोक रहित। °चंद पु [°चन्द्र] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक (आवम)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ७७)। °ललिय पु [°ललित] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५३)। °वण न [°वन] अशोक वृक्षों वाला वन (भग)। °वणिया स्त्री [°वनिका] अशोक वृक्ष वाला बगीचा (णाया १, १६)। °सिरि पु [°श्री] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक (विसे ८६२)।

असोगा स्त्री [अशोका] १ इस नाम की एक इन्द्राणी (ठा ४, १)। २ भगवान् श्री शीतलनाथ की शासनदेवी (पव २७)। ३ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८६)।

असोभण वि [अशोभन] असुन्दर, खराब (पउम ६६, १६)।

असोय देखो **असोग** (भग, महा, रभा)।

असोय पु [अश्वयुक्] आश्विन मास (सम २९)।

असोय वि [अशोच] १ शौचरहित (महा)। २ न शौच का अभाव, अशुचिता। °वाइ त्रि [°वादिन्] अशौच को ही माननेवाला (ओघ ३१८)।

असोयणया स्त्री [अशोचनता] शोक का अभाव (पक्खि)।

असोया देखो **असोगा** (ठा २, ३, मति ६)।

असोल्लिय वि [अपक्व] कच्चा (उवा)।

असोहि स्त्री [अशोधि] १ अशुद्धि। २ विराधना (ओघ ७८८)। °ठाण न [°स्थान] १ पाप-कर्म। २ अशुद्धि स्थान। ३ दुर्जन का संसर्ग। ४ अनायतन (ओघ ७६३)।

अस्स न [आस्य] मुख, मुँह (गा ९८६)।

अस्स त्रि [अस्व] १ द्रव्यरहित, निर्धन। २ २ निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि (आचा)।

अस्स पु [अश्व] १ घोडा (उप ७६८ टी)। २ अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ ऋषि-विशेष (जं ७)। °कण्ण पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी (णदि)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पराण १)। °करण न [°करण] जहाँ घोडा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल (आचा २, १०, १८)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] पहले प्रतिवासुदेव का नाम (सम १५३)। °तर पुस्त्री [°तर] खच्चड (पराण १)। °मुह पु [°मुख] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (णदि, पराण १)। °मेह पु [°मेघ] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है (अणु)। °सेण पु [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता (पव ११)। २ एक महाग्रह का नाम (चन्द २०)।

°यर पुं [°दर] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२)।

अस्स न [अस्र] १ अश्रु, आँसू। २ रुधिर, खून (प्राकृ २६)।

अस्संख वि [असंख्य] सख्या-रहित (उप १७)।

अस्संगिअ वि [दे] आसक्त (षड्)।

अस्संघयणि वि [असंहननिन्] संहनन रहित, किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित (भग)।

अस्संजम देखो **असंजम** (उव)।

अस्संजय वि [अस्वयत] १ गुरु की आज्ञानुसार चलनेवाला, अस्वच्छंदी (श्रा ३१)।

अस्संजय देखो **असंजय** (उव)।

अस्संदम पु [अश्वन्दम] अश्व-पालक (सुपा ६४५)।

अस्संच देखो **असंच**, 'मुणिणो हवउ वयणमसंच' (उप १४६ टी)।

अस्सण्णि देखो **असण्णि** (विसे ५१६)।

अस्सत्थ पु [अश्वत्थ] वृक्ष-विशेष, पीपल (नाट)।

अस्सत्थ वि [अस्वस्थ] रोगी, बीमार (सुर ३, १५१, माल ६५)।

अस्सन्नि देखो **असण्णि** (सुर १४,६६, कम्म ४, २, ३)।

अस्सम पु [आश्रम] १ स्थान, जगह। २ ऋषियों का स्थान (अभि ६६, स्वप्न २५)।

अस्समिअ वि [अश्रमित] श्रमरहित, अनभ्यामी (भग)।

अस्सवार देखो **असवार** (सम्मत्त १४२)।

अस्सस अक [आ+श्वस्] आश्वासन लेना। हेकृ. अस्ससिदुं (शौ) (अभि १२०)।

अस्साइय वि [आस्वादित] जिसका आस्वादन किया गया हो वह (दे)।

अस्साएमाण देखो **अस्साय** = आस्वादय्।

अस्साद सक [आ+सादय्] प्राप्त करना। अस्सादेंति, अस्सादेस्सामो (भग १५)।

अस्साद सक [आ+स्वादय्] आस्वादन करना।

अस्सादण देखो **अस्सायण** (सुज १०, १६)।

अस्सादिय वि [आसादित] प्राप्त किया हुआ (भग १५)।

अस्साय देखो **अस्साद** = आ+सादय्।

अस्साय देखो **अस्साद** = आ+स्वादय्। वकृ. **अस्साएमाण** (भग १२, १)। कृ **अस्सायणिज्ज** (णाया १, १२)।

अस्साय देखो **असाय** (कम्म २,७, भग)।

अस्सायण पु [आश्वायन] १ अश्व ऋषि का संतान (जं ७)। २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र (इक)।

अस्साविं वि [आस्राविन्] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र, 'जहा अस्साविणिं नावं जाइअंधो दुरूहए' (सूअ १, १,२)।

अस्सास सक [आ+श्वासय्] आश्वासन देना, दिलासा देना। अस्सासअदि (शौ) (पि ४६०)। अस्सासि (उत्त २,४०, पि ४६१)।

अस्सासण पु [आश्वासन] एक महाग्रह (सुज २०)।

अस्सि स्त्री [अश्रि] १ कोण, घर आदि का कोना (ठा ६)। २ तलवार आदि का अग्रभाग—धार (उप पृ ६६)।

अस्सि पु [अश्विन्] अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)।

अस्सिणी स्त्री [अश्विनी] इस नाम का एक नक्षत्र (सम ८)।

अस्सिय वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त, 'विरागमेगमस्सिओ' (वसु, ठा ७, सथा १८)।

अस्सु पुन [अश्रु] आँसू, 'अस्सू' (सक्षि १७)।

अस्सु (शौ) न [अश्रु] आँसू (अभि ५९, स्वप्न ८५)।

अस्सुक वि [अशुल्क] जिसकी चुंगी या फीस माफ की गई हो वह (उप ५६७ टी)।

अस्सुद (शौ) देखो **असुय** = अश्रुत (अभि १६३)।

अस्सुअ वि [अस्मृत] याद नहीं किया हुआ (भग)।

अस्सेसा देखो **असिलेसा** (सम १७, विसे ३४०८)।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की पूर्णिमा (चंद १०)।

अस्सोइ स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की अमावस (सुज्ज १०, ६ टी) देखो **आसोया**।

अस्सोकता स्त्री [अश्वोत्क्रान्ता] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पाँचवी मूर्च्छना (ठा ७)।

अस्सोत्थ देखो अस्सत्थ (पि ८४, ३०७ ३०६)।

अस्सोयव्व वि [अश्रोतव्य] सुनने के अयोग्य (सुर १४, २)।

अह अ [अथ] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अब बाद (स्वप्न ८३, द ३१, कुमा)। २ अथवा, और

'उज्जउ सीसं अह होउ बंधणं चयउ
सव्वहा लच्छी।
पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ॥'
(प्रासू ३)।

३ मंगल (कुमा)। ४ प्रश्न। ५ समुच्चय। ६ प्रतिवचन, उत्तर (बृह १)। ७ विशेष (ठा ८)। ८ यथार्थता, वास्तविकता (विसे १२७६)। ९ पूर्वपक्ष (विसे १९८३)। १०-११ वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (सूअ १, ७, पचा १६)।

अह न [अहन्] दिवस, दिन (श्रा १४, पाअ)।

अह अ [अधस्] नीचे (सुर २, ३८)। °लोग पु [°लोक] पाताल-लोक (सुपा ४०)। °त्थ वि [°स्थ] नीचे रहा हुआ, निम्न-स्थित (पउम १०२, ६५)।

अह स [अदस्] यह, वह (पाअ)।

अह न [दे] दुःख (दे १, ६)।

अह न [अघ] पाप (पाअ)।

अह° देखो अहा (हे १,२४५, कुमा)। °क्कम, °क्कमो अ [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम से (ओघ ५ भा, स ६)। °क्खाय, °खाय न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम (ठ ५,२, नव २६, कुमा)। °क्खायसंजय वि [°ख्यातसंयत] परिपूर्ण संयम वाला (भग २५, ७)। °च्छंद देखो अहाछंद (नि)। °त्थ वि [°स्थ] ठीक-ठीक रहा हुआ, यथास्थित (ठा ९, ३)। °त्थ वि [°र्थ] सार्थक (ठा ५, ३)। °प्पहाण अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से (भग १५)।

अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ, अच्छा (नाट, प्रयौ ५)।

अहंकार पु [अहंकार] अभिमान, गर्व (सूअ १, ६, स्वप्न ८२)।

अहंकारि वि [अहंकारिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (गउड)।

अहंणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा (पिंग)।

अहकम्म देखो अहेकम्म (पिंड १३८)।

अहण वि [अधन] निर्धन, धनरहित (विसे २८१२)।

अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर (नाट)।

अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे (भग)।

अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्य, हतभाग्य (सुर २, ३७)।

अहन्निस देखो अहण्णिस (सुपा ४६२)।

अहम वि [अधम] अधम, नीच (कुमा)।

अहमंति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (ठा १०)।

अहमहमिआ, अहमहमिगया, अहमहमिगा } स्त्री [अहमहमिका] मैं इसमें पहले हो जाऊं ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा (गा ५८०, सुपा ५४, १३२, १४८)।

अहमिंद पु [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देवजाति विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (इक)। २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ, 'सयइ पुण रायाणो नरिंद। सव्वेवि अहमिंदा' (सुर १, १२६)।

अहम्म देखो अधम्म (सूअ १, १, २, भग नव ६, सुर २,४४, सुपा २५८, प्रासू १३६)।

अहम्म वि [अधर्म्य] धर्मच्युत, धर्मरहित, गैरव्याजबी (सण)।

अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी (श्रावम)।

अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म रहित, पापी (सुपा १७२)।

अहम्मिट्ठ देखो अधम्मिट्ठ (भग १२, २, (राय)।

अहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी (विपा १, १)।

अहय वि [अहत] १ अनुबद्ध, अव्यवच्छिन्न (ठा ८, पत्र ४१८)। २ अक्षत, अपरिहत (सूअ २, २)। ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो (चंद १९)। ४ नया, नूतन (भग ८, ६)।

अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ (दे १, १७)।

अहर पु [अधर] १ होठ, ओष्ठ (गदि)। २ वि नीचे का, नीचला (पण्ह १, ३)। ३ नीच, अधम (पण्ह १, २)। ४ दूसरा, अन्य (प्रामा)। °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति, 'अहरगइं निंति कम्माइं' (पिंड)।

अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत (सुपा ४७)।

अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर, सिलवट (उवा)। °लोट्ट पु [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर, लोढा (उवा)।

अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित (सुपा ४)।

अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत,
'उयरेण धरंतीए, नरयरणमिम महप्पह देवि।
अहरीभूयमसेसं, जयंपि तुह रयणगब्भाए'
(सुपा ३५)।

अहरुट्ठ पुन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ (पण्ह १, ३, हे १, ८४ षड्)।

अहरेम देखो अहिरेम। अहरेमइ (हे ४, १६९)।

अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ (कुमा)।

अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (प्रासू १३५, रंभा)।

अहलंद न [यथालन्द] पाँच रात का समय (पव ७०)।

अहलंदि देखो अहालंदि (पव ७०)।

अहव देखो अहवा (हे १, ६७)।

अहवइ (अप) देखो अहवा (कुमा)।

अहवण, अहवा } अ [अथवा] १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (अणु, सूअ २, २)। २ या, अथवा (बृह १, निचू १, पचा ३, हे १, ६७)।

अहव्व देखो अभव्व (गा ३६०)।

अहव्वण पु [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र (ओप)।

अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री (दे १, १८)।

अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक

अव्यय—१ आमन्त्रण । २ खेद । ३ आश्चर्य । ४ दुःख । ५ आविष्य प्रार्थ (हे २ २१७ था १४ षष्ठू गा ६५६)।

अहा° अ [यथा] जैसे, माफिक, अनुसार (हे १, २४५)। °छंद वि [°च्छन्द] १ स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ८३३ टी)। २ न मरजी के अनुसार (वव २)। °जाय वि [°जात] १ नग्न, प्रावरण-रहित (हे १, १८५)। २ न जन्म के अनुसार। ३ जैन साधुओं में दीक्षा ... के परिमाण के अनुसार किया जाता नमन—नमस्कार (धर्म २)। °णुपुव्वी स्त्री [°नुपूर्वी] यथाक्रम, अनुक्रम (णाया १, १ ... ८)। °तच्च न [°तत्त्व] तत्त्व के अनुसार (भग २ १)। °तच्च न [°तथ्य] ... (सम १६)। °पडिरूव वि [°प्रतिरूप] १ उचित, योग्य (ओघ)। २ ... यथायोग्य (विपा १, १)। °पवत्त वि [°प्रवृत्त] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्तित (णाया १, ८)। २ न आत्मा का परिणाम-विशेष (स ४७)। °पवित्तिकरण न [°प्रवृत्तिकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष (कम्म २)। °बायर वि [°बादर] ... (णाया १, १)। °भूय वि [°भूत] तात्त्विक, वास्तविक (ठा १, १)। °राइणिय, °रायणिय न [°रात्निक] यथा-ज्येष्ठ, बड़े के क्रम से (णाया १ १, आचा)। °रिय न [ऋजु] सरलता के अनुसार (आचा)। °रिह न [°र्ह] यथोचित (ठा २, १)। २ वि उचित, योग्य (धर्म १)। °रीय न [°रीत] १ रीति के अनुसार। २ स्वभाव के माफिक (भग ५, २)। °लंद पु [°लन्द] काल का एक परिमाण, पानी से भीजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय (पव)। °वगास न [°वकाश] अवकाश के अनुसार (सूअ २, ३)। °वच्च वि [°पत्य] पुत्रस्थानीय (भग ३, ७)। °संथड वि [°संस्तृत] शयन के योग्य (आचा)। °संविभाग पु [°संविभाग] साधु को दान देना (उवा)। °सच्च न [°सत्य] वास्तविकता, सचाई (आचा)। °सत्ति न [°शक्ति] शक्ति के अनुसार (पंचू ४)। °सुत्त न [°सूत्र] आगम के अनुसार (सम ७७)। °सुह न [°सुख] इच्छानुसार (णाया १, १ भग)। °सुहुम वि [°सूक्ष्म] सारभूत (भग ३, १)। देखो अह°।

अहालंद वि [यथालन्द] यथानुज्ञात (राज), इच्छानुसार (समय) (आचा २, ७, १, २)।

अहालंदि पु [यथालन्दिन्] 'यथालन्द' अनुष्ठान करने वाला मुनि (पव ७०)।

अहासखड वि [दे] निष्कम्प, निश्चल (निचू २)।

अहासल वि [अहास्य] हास्य-रहित (सुपा ६१०)।

अहाह अ [अहाह] देखो अहह (हे २, २१७)।

अहि देखो अभि (गउड, पाअ, पंचव ४)।

अहि अ [अधि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आधिक्य, विशेषता, 'अहिगय, अहिमाम'। २ अधिकार, सत्ता, 'अहिगय'। ३ ऐश्वर्य, 'अहिट्ठाण'। ४ ऊंचा, ऊपर 'अहिट्ठा'।

अहि पुं [अहि] १ सर्प, सांप (पण्ण १ प्रासू १६, ३६, १०५)। २ शेष नाग (पिंग)। °च्छत्ता स्त्री [°च्छत्रा] नगरी-विशेष (णाया १, १६, टी ७)। °मड पुन [°मृतक] साप का मुर्दा (णाया १ ६)। °वइ पु [°पति] शेष नाग (अच्चु ६०)। °विछिअ पु [°वृश्चिक] सर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली वृश्चिक जाति (कुमा)।

अहिअल न [दे] क्रोध, गुस्सा (दे १ ३६, षड्)।

अहिआअ न [अभिजात] कुलीनता, खानदानी (गा ३८)।

अहिआइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता (षड्)।

अहिआर पु [दे] लोक यात्रा, जीवन-निर्वाह (दे १, २६)।

अहिउत्त वि [दे] व्याप्त, खचित (गउड)।

अहिउत्त वि [अभियुक्त] १ विद्वान्, पण्डित। २ उद्यत, उद्योगी (पाअ)। ३ शत्रु से घिरा हुआ (वेणी १२८ टि)।

अहिऊर सक [अभि + पूरय्] पूर्ण करना, व्याप्त करना। कर्म अहिऊरिज्जति (गउड)।

अहिऊल सक [दह्] जलाना, दहन करना। अहिऊलइ (हे ४, २०८, षड्, कुमा)।

अहिओग पु [अभियोग] १ सबन्ध (गउड)। २ दोषारोपण (स २२६)। देखो अभिओअ (भवि)।

अहिंद पु [अहीन्द्र] १ सर्पों का राजा शेष नाग (अच्चु १)। २ श्रेष्ठ सर्प (कुमा)। °उर न [°पुर] वासुकि-नगर। °उरणाह पु [°पुरनाथ] विष्णु अच्युत (अच्चु २६)।

अहिंसग वि [अहिंसक] हिंसा न करने वाला (ओघ ७४७)।

अहिंसण न [अहिंसन] अहिंसा (धर्म २)।

अहिंसय देखो अहिंसग (पण्ह २ १)।

अहिंसा स्त्री [अहिंसा] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख न देना (निचू २, धर्म ३, सूअ १, ११)।

अहिंसिय वि [अहिंसित] अमारित, अपीडित (सूअ १, १, ४)।

अहिकख देखो अभिकख वक्त अहिकखंत (पंचव ४)।

अहिकखिर वि [अभिकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (सण)।

अहिकंखि देखो अहिकखिर (सूअ १, १२, २२)।

अहिकय वि [अधिकृत] जिसका अधिकार चलता हो वह प्रस्तुत (विसे १५८)।

अहिकरण देखो अहिगरण (निचू ४)।

अहिकरणी देखो अहिगरणी (ठा ८)।

अहिकार देखो अहिगार (उत्त १४, १७)।

अहिकारि देखो अहिगारि (रभा)।

अहिकिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार कर, उद्देश्य कर (आचू १)।

अहिक्खण न [दे] उपालंभ, उलहना (दे १, ३५)।

अहिक्खित्त वि [अधिक्षिप्त] १ तिरस्कृत। २ निन्दित। ३ स्थापित। ४ परित्यक्त। ५ क्षिप्त (नाट)।

अहिक्खिव सक [अधि + क्षिप्] १ तिरस्कार करना। २ फेंकना। ३ निन्दना। ४ स्थापित करना। ५ छोड देना। अहिक्खिवउ (उव)। अहिक्खिवाहि (स ३२६)। वक्त अहिक्खिवंत (पउम ६५, ४४)।

अहिक्खेव पु [अधिक्षेप] १ तिरस्कार। २ स्थापन। ३ प्रेरणा (नाट)।

अहिखिव देखो अहिक्खिव वक्र अहिखिवत (स ५७)।

अहिग देखो अहिय = अधिक (विसे १६४३ टी)।

अहिखीर सक [दे] १ पकडना। २ आघात करना। अहिखीरइ (भवि)।

अहिगंध वि [अधिगन्ध] अधिक गन्ध वाला (गउड)।

अहिगम सक [अधि + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। ३ प्राप्त करना। कृ अहिगम्म (सम्म १६७)।

अहिगम सक [अभि + गम्] १ सामने जाना २ आदर करना। कृ अहिगम्म (सण)।

अहिगम पु [अधिगम] १ ज्ञान (विसे ६०८)।

'जीवाईणमहिगमो मिच्छत्तस्स खओवसमभावे' (धर्म ०)। २ उपलम्भ, प्राप्ति (दे ७, १४)। ३ गुरु आदि का उपदेश (विसे २६७५)। ४ सेवा, भक्ति (सम ५१)। ५ न गुरु आदि के उपदेश से होनेवाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्यक्त्व (सुपा ६४८)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १ सम्यक्त्व का एक भेद। २ सम्यक्त्व वाला (पव १४५)।

अहिगम देखो अभिगम (औप, से ८, ३३, गउड)।

अहिगमण न [अधिगमन] १ ज्ञान। २ निर्णय। ३ प्राप्ति, उपलम्भ (विसे)।

अहिगमय वि [अधिगमक] जनानेवाला, बतलानेवाला (विसे ५०३)।

अहिगमिय वि [अधिगत] १ ज्ञात। २ निश्चित (सुर १, १८१)।

अहिगम्म देखो अहिगम = अधि + गम्।

अहिगम्म देखो अहिगम = अभि + गम्।

अहिगय वि [अधिकृत] १ प्रस्तुत (रयण ३६)। २ न प्रस्ताव, प्रसग (राज)।

अहिगय वि [अधिगत] १ उपलब्ध, प्राप्त (उत्त १०)। २ ज्ञात (दे ६, १४८)। ३ पु गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु (वव १)।

अहिगर पु [दे] अजगर (जीव १)।

अहिगरण पुन [अधिकरण] १ युद्ध, लडाई (उप पृ २६८)। २ असयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति (उप ८७२)। ३ आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु (ठा २, १)। ४ पाप जनक क्रिया (णाया १, ५)। ५ आधार (विसे ८४)। ६ भेंट, उपहार (बृह १)। ७ कलह, विवाद (बृह १)। ८ हिंसा का उपकरण, 'मोहघेण य रइय हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरणं' (विवे ६१)। °कड, °कर वि [°कर] कलहकारक (सूअ १, २ २, आचा)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति में ले जानेवाली क्रिया (पण्ह १, २)। °सिद्धंत पु [°सिद्धान्त] आनुषगिक सिद्धि करनेवाला सिद्धान्त (सूअ १, १२)।

अहिगरणी स्त्री [अधिकरणी] लोहार का एक उपकरण (भग १६, १)। °खोडि स्त्री [°खोटि] जिसपर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ (भग १६, १)।

अहिगरणिया } स्त्री [आधिकरणिकी] देखो अहिगरणीया } अहिगरण-किरिया (सम १०, ठा २, १, नव १७)।

अहिगरी [दे] अजगरिन, स्त्री अजगर (जीव २)।

अहिगार पु [अधिकार] १ वैभव, सपत्ति, 'नियअहिगारणुरूवं जम्मणमहिम विहिस्सामो' (सुपा ४१)। २ हक, सत्ता (सुपा ३५०)। ३ प्रस्ताव, प्रसग (विसे ४८७)। ४ ग्रन्थ-विभाग (वसु)। ५ योग्यता, पात्रता (प्रासू १३५)।

अहिगारि } वि [अधिकारिन्] १ अमल-अहिगारिय } दार, राज-नियुक्त सत्ताधीश, 'ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे' (सुपा ३५०, श्रा २७)। २ पात्र, योग्य (प्रासू १३५, सण)।

अहिगिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार करके (उवर ३६, ६६)।

अहिघाय पु [अभिघात] आस्फालन, आघात (गउड)।

अहिच्छत्ता स्त्री [अहिच्छत्रा] नगरी-विशेष, कुरुजगल देश की प्राचीन राजधानी (सिरि ७८)।

अहिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता (प्राप्र)।

अहिजाण सक [अभि + ज्ञा] पहिचानना भवि अहिजाणिस्सदि (शौ) (पि ५३४)।

अहिजाय वि [अभिघात] कुलीन (भग ६ ३३)।

अहिजुंज देखो अभिजुज। सक्र अहिजुंजिय (भग)।

अहिजुत्त देखो अभिजुत्त (प्रवो ८४)।

अहिज्ज सक [अधि + इ] पढना, अभ्यास करना। अहिज्जइ (श्रत २)। वक्र अहिज्जत, अहिज्जमाण (उप १६६ टी, उवा)। सक्र अहिज्जित्ता, अहित्ता (उत्त १, सूअ १,१२) हेक्र अहिज्जिउ (दस ४)।

अहिज्ज वि [अधिज्य] धनुष की डोरी पर चडाया हुआ (वाण) (दे ७, ६२)।

अहिज्ज } वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण अहिज्जग } (पि २६६, प्राकृ, दस)।

अहिज्जण न [अध्ययन] पठन, अभ्यास (विसे ७ टी)।

अहिज्जाण (शौ) देखो अहिण्णाण (प्राकृ ८७)।

अहिज्जाविय वि [अध्यापित] पाठित, पढाया हुआ (उप पृ ३३)।

अहिज्जिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त (सुर ८, १२१, उप ५३० टी)।

अहिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ-रहित, अलुब्ध (भग ६,३)।

अहिट्ठ सक [अधि + ष्ठा] करना। अहिट्ठए (दस ६, ४, २)।

अहिट्ठग वि [अधिष्ठक] अधिष्ठाता, विधायक, कारक,

'नासदीपलिअकेसु, न निसिज्जा न पीढए।
निग्गथापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा' (दस ६, ५५)।

अहिट्ठण देखो अहिट्ठाण (पंचा ७, ३३)।

अहिट्ठा सक [अधि + स्था] १ ऊपर चलना। २ आश्रय लेना। ३ रहना, निवास करना। ४ शासन करना। ५ करना। ६ हराना। ७ आक्रमण करना। ८ ऊपर चढ बैठना। ६ वश करना। अहिट्ठेइ (निचू ५), 'ता अहिट्ठेहि इम रज्ज' (स २०४)। अहिट्ठेजा (पि २५२, ४६६)। वकृ. अहिट्ठत (निचू ५)। कवकृ अहिट्ठिज्जमाण (ठा ४, १)। संकृ. अहिट्ठेइत्ता (निचू १२)। हेकृ. अहिट्ठित्तए (बृह ३)।

अहिट्ठाण न [अधिष्ठान] १ बैठना (निचू ५)। २ आश्रयण (सूअ १, २,३)। ३ मालिक बनना (आचा)। ४ स्थान, आश्रय (स ४९६)।

अहिट्ठायग वि [अधिष्ठायक] अध्यक्ष, अधिपति (कुप्र २१९)।

अहिट्ठावण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना (निचू ५)।

अहिट्ठिय वि [अधिष्ठित] १ अध्यासित (णाया १, १४)। २ अधीन किया हुआ (णाया १, १४)। ३ आक्रान्त, आविष्ट (ठा ५, २)।

अहिठाण न [अधिष्ठान] अपान-प्रदेश (पव १३५)।

अहिडुय वि [दे. अभिद्रुत] पीडित, 'अहिडुय पीडिअं परद्ध च' (पाअ)।

अहिणंद देखो अभिणंद। वकृ. अहिणदमाण (पउम ११, १२०) कवकृ अहिणंदिज्जमाण, अहिणदीअमाण (नाट, पि ५६३)।

अहिणंदण देखो अभिणदण (पउम २०,३०, भवि)।

अहिणदि वि [अभिनन्दिन्] आनन्द मानने वाला (स ६७७)।

अहिणदिय देखो अभिणंदिय (पउम ८, १२३, स १४)।

अहिणय देखो अभिणय (कप्पू; सण)।

अहिणव पु [अभिनव] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन (से १,९)। २ वि. नूतन, नया (णाया १, १, सुपा ३३०)।

अहिणवेमाण देखो अहिणी।

अहिणवेमाण देखो अहिणु।

अहिणाण देखो अहिण्णाण (भवि)।

अहिणिवोह पु [अभिनिवोध] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान (पण्ण २९)।

अहिणिवस सक [अभिनि + वस्] वसना, रहना। वकृ. अहिणिवसमाण (मुद्रा २३१)।

अहिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] आग्रह-ग्रस्त (स २७३)।

अहिणिवेस पु [अभिनिवेश] आग्रह, हठ (स ६२३, अभि ९५)।

अहिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] आग्रही (पि ४०५)।

अहिणी स्त्री [अहि] नागिन (वज्जा ११४)।

अहिणी देखो अभिणी। वकृ. अहिणवेमाण (सुर ३, १५०)।

अहिणील वि [अभिनील] हरा, हरा रग वाला (गउड)।

अहिणु सक [अभि + नु] स्तुति करना, प्रशसना। वकृ. अहिणवेमाण (सुर ३,७७)।

अहिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित, अपृथग्भूत (गा २६५, ३८०)।

अहिण्णाण न [अभिज्ञान] चिह्न, निशानी (अभि १३)।

अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निपुण, ज्ञाता (हे १, ५६)।

अहितत्त वि [अभितप्त] तापित, सतापित (उत्त २)।

अहित्ता देखो अहिज्ज = अधि + इ।

अहिदायग वि [अभिदायक] देने वाला, दाता (सुपा ५४)।

अहिदेवया स्त्री [अधिदेवता] अधिष्ठाता देव (सुपा ६०, कप्पू)।

अहिद्दव सक [अभि + द्रु] हैरान करना। अहिद्दवति (स ३९३)। भवि अहिद्दविस्सइ (स ३९६)।

अहिद्दुय वि [अभिद्रुत] हैरान किया हुआ (स ५१४)।

अहिधाव सक [अभि + धाव्] दौडना, सामने दौड कर जाना। वकृ अहिधावत (सि १३, २९)।

अहिनाण } देखो अहिण्णाण (श्रा १६, सुपा
अहिन्नाण } २५०)।

अहिनिवेस देखो अहिणिवेस (स १२५)।

अहिपच्चुअ सक [ग्रह्] ग्रहण करना। अहिपच्चुअइ (हे ४, २०९, षड्)। अहिपच्चुअति (कुमा)।

अहिपच्चुअ सक [आ + गम्] आना। अहिपच्चुअइ (हे ४, १६३)।

अहिपच्चुइअ वि [आगत] आयात (कुमा)।

अहिपच्चुइअ न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४९)।

अहिपड सक [अभि + पत्] सामने आना। अहिपडति (पव १०६)।

अहिपास सक [अधि + दृश्] १ अधिक देखना। २ समान रूप से देखना। अहिपासए (सूअ १, २, ३, १२)।

अहिप्पाय देखो अभिप्पाय (महा, कप्पू)।

अहिप्पेय देखो अभिप्पेय (उप १०३१ टी, स ३४)।

अहिभव देखो अभिभव (गउड)।

अहिमंजु पु [अभिमन्यु] अर्जुन के एक पुत्र का नाम (कुमा)।

अहिमंतण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करना, मन्त्र से सस्कारना (भवि)।

अहिमंतिअ वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से सस्कृत (महा)।

अहिमज्जु }
अहिमण्णु } देखो अहिमंजु (कुमा, षड्)।
अहिमन्नु }

अहिमय वि [अभिमत] समत, इष्ट (स २००)।

अहिमयर पु [अहिमकर] सूर्य, रवि (पाअ)।

अहिमर पुं [अभिमर] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला (सुर १, ९८)। २ गजादिघातक (विसे १७६४)।

अहिमाण पु [अभिमान] गर्व, अहकार (प्रासू १७, सण)।

अहिमाणि वि [अभिमानिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (स ४३१)।

अहिमार पु [अभिमार] वृक्ष-विशेष, 'एगं अहिमारदारुअ अग्गी' (उत्तनि ३)।

अहिमास } पु [अधिमास, °क] अधिक
अहिमासग } मास (अनु १, निचू २०)।

अहिमुह वि [अभिमुख] समुख, सामने रहा हुआ (से १, ४४, पउम ८, १९७; गउड)।

अहिमुहिहूअ } वि [अभिमुखीभूत] सामने
अहिमुहीहूअ } आया हुआ (पउम १२, १०५ ४५, ६)।

अहिय वि [अधिक] १ ज्यादा, विशेष (औप, जी २७, स्वप्न ४०)। २ क्रिवि बहुत, अत्यन्त (महा)।

अहिय वि [अहित] अहितकर, शत्रु, दुश्मन (महा, सुपा ६९)।

अहिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त, 'अहियसुओ पडिवज्जिय एगल्लविहारपडिम सो' (सुर ४, १५४)।

अहिया स्त्री [अधिका] भगवान् श्रीनमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

अहियाइ देखो अहिजाइ (षड्)।

अहियाय देखो अहिजाय (पात्र)।

अहियार पु [अभिचार] शत्रु के वध के लिए किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग (गउड)।

अहियार देखो अहिगार (स ५४३, पात्र, मुद्रा २६६, नाट्टि ७ टी, भवि, दे ७, ३२)।

अहियारि देखो अहिगारि (दे ६, १०८)।

अहियास सक [अधि+आस्, अधि+सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना। अहियासइ, अहियासए, अहियासेइ (उव, महा)। कर्म अहियासिज्जति (भग)। वकृ अहियासेमाण (आचा)। संकृ अहियासित्ता, अहियासेत्तु (सूत्र १, ३, ४, आचा) हेकृ अहियासित्तए (आचा)। कृ अहियासियव्व (उप ५४३)।

अहियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु (बृह १)।

अहियासण न [अध्यासन अधिसहन] सहन करना (उप ५३६, स १६२)।

अहियासण न [अधिकाशन] अधिक भोजन, अजीर्ण (ठा ६)।

अहियासिय वि [अध्यासित, अधिषोढ] सहन किया हुआ (आचा)।

अहिर पु [आभीर] अहीर, गोवाला (गा ८११)।

अहिरम देखो अभिरम। वकृ अहिरमंत (सुपा १५८)।

अहिरम अक [अभि+रम्] क्रीडा करना, संभोग करना। अहिरमदि (शौ) (नाट)। हेकृ अभिरमिदु (शौ) (नाट)।

अहिरम्म वि [अभिरम्य] सुन्दर, मनोहर (भवि)।

अहिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर (पात्र)।

अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने वाला (सण)।

अहिराय पु [अधिराज] १ राजा (बृह ३)। २ स्वामी, पति (सण)।

अहिरज्ज न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व (नाट्ट ७)।

अहिरिअ देखो अहिरीअ (पिंड ६३१)।

अहिरीअ वि [अह्रीक] निर्लज्ज, बेशरम (हे २, १०४)।

अहिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका (दे १, २७)।

अहिरीमाण वि [दे अहारिन्, अह्रीमनस्] १ अमनोहर, मन को प्रतिकूल। २ अलज्जा-कारक, 'एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्ख-माणे परिव्वए, जे य हिरी, जे य अहिरीमाणा' (आचा १, ६, २)।

अहिरूव वि [अभिरूप] १ सुन्दर, मनोहर (अभि २११)। २ अनुरूप, योग्य (विक्र ३८)।

अहिरेम सक [पू] पूरा करना, पूर्ति करना। अहिरेमइ (हे ४, १६६)।

अहिरोइअ वि [दे] पूर्ण (षड्)।

अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढना, आरोहण (मा ४०)।

अहिरोहि वि [अधिरोहिन्] ऊपर चढने वाला (अभि १७०)।

अहिरोहिणी स्त्री [अधिरोहिणी] निःश्रेणी, सीढी (दे ८, २६)।

अहिल वि [अखिल] सकल, सब (गउड, रंभा)।

अहिलख, अहिलघ, अहिलक्ख सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभि-लाष करना। अहिलखइ, अहिलघइ (हे ४, १९२), 'अहिल-क्खति सुअति अ रइवावार विलासिणीहिअ-आइ' (से १०, ५७)।

अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से जानने योग्य (गउड)।

अहिलव सक [अभि+लप्] सभाषण करना, कहना। कवकृ अहिलप्पमाण (स ८४)।

अहिलस सक [अभि+लष्] अभिलाष करना, चाहना। अहिलसइ (महा)। वकृ अहिलसत (नाट)।

अहिलसिय वि [अभिलषित] वाञ्छित (सुर ४, २८८)।

अहिलसिर वि [अभिलाषिन्] अभिलाषी, इच्छुक (दे ६, ५९)।

अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्धन विशेष (णाया १, १७)।

अहिलाव पु [अभिलाप] शब्द, आवाज (ठा २, ३)।

अहिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, वाञ्छा, चाह (गउड)।

अहिलासि वि [अभिलाषिन्] चाहनेवाला (नाट)।

अहिलिअ न [दे] १ पराभव। २ क्रोध, गुस्सा (दे १, ५७)।

अहिलिह सक [अभि+लिख्] १ चिन्ता करना। २ लिखना। अहिलिहति (मुद्रा १०८)। संकृ, अहिलिहिअ (वेणी २५)।

अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊँचा स्थान (पण्ह २, ४)।

अहिलोल वि [अभिलोल] चपल, चञ्चल (गउड)।

अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] लोलुपता, तृष्णा (से ३,४७)।

अहिल्ल वि [दे] धनवान्, धनी (दे १, १०)।

अहिल्लिया स्त्री [अहिल्या] एक सती स्त्री (पण्ह १, ८)।

अहिव [अधिप] १ ऊपरी, मुखिया (उप ७२८ टी)। २ मालिक, स्वामी (गउड)। ३ राजा, भूप, 'दुट्ठाहिवा दडपरा हवति' (गोय ८)।

अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो (णाया १ ८, गउड, सुर ६, ६२)।

अहिवज्जु देखो अहिमज्जु (षड्)।

अहिवदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत (स ६४१)।

अहिवज्जु देखो अहिमज्जु (षड्)।

अहिवड अक [अधि+पत्] क्षीण होना। वकृ 'एव निस्सारे माणुसत्तणे जीविए अहि-वडते' (तदु ३३)।

अहिवड सक [अधि+पत्] आना। वकृ. अहिवडत (राज)।

अहिवड्ढ देखो अभिवड्ढ अहिवड्ढामो (कप्प)।

अहिवड्ढि, अहिवड्ढि स्त्री [अभिवृद्धि] उत्तर प्रोष्ठ-पदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता (सुज्ज १०, १२, ज ७—पत्र ४६८)।

अहिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] बढाया हुआ (स २८७)।

अहिवण्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला (दे १, ३३)।

अनिवण्णु } अहिवन्नु } देखो अहिमंजु (षड्, कुमा।

अहिवल्ली स्त्री [अहिवल्ली] नागवल्ली (सिरि ८७)।

अहिवस सक [अधि+वस्] निवास करना, रहना। वकृ अहिवसंत (स २०८)।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित (स ३१४)।

अहिवायण देखो अभिवायण (भवि)।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक (भवि)।

अहिवास पु [अधिवास] वासना, संस्कार (दे ७, ८७)।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान (पचा ८)।

अहिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी (चेइय ६८७)।

अहिवासिअ वि [अधिवासित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (दस ३, १ टी)।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी (दे १, २५)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, संदेह (पउम ४२, २१)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भय, डर (सूअ १, १२, १७)।

अहिसंजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण (गउड)।

अहिसंधारण न [अभिसंधारण] अभिप्राय (पचा ६, ३६)।

अहिसंधि पुंस्त्री [अभिसंधि] अभिप्राय, आशय (पण्ह १, २, स ४६३)।

अहिसंधि पु [दे] बारबार (दे १, ३२)।

अहिसक्कण पुंन [अभिष्वष्कण] संमुख गमन (पव २)।

अहिसर सक [अभि+सृ] १ प्रवेश करना। २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना। प्रयो., कर्म. अभिसारीअदि (शौ) (नाट)। हेकृ. अभिसारिदुं (शौ) (नाट)।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप गमन (स ५३३)।

अहिसरिअ वि [अभिसृत] १ प्रिय के समीप गत। २ प्रविष्ट (आवम)।

अहिसहण न [अधिसहन] सहन करना (ठा ६)।

अहिसाअ देखो अक्कम = आ + क्रम्। अहिसाअइ (प्राकृ ७३)।

अहिसाम वि [अभिश्याम] काला, कृष्ण वर्ण वाला (गउड)।

अहिसाय वि [दे] पूर्ण, पूरा (दे १, २०)।

अहिसारण न [अभिसारण] १ आनयन (से १०, ६२)। २ पति के लिए संकेत स्थान पर जाना (गउड)।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत (से १, १३)।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री (कुमा)।

अहिसिअ न [दे] १ अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना (दे १, ३०)। २ वि. अनिष्ट ग्रह से भयभीत (षड्)।

अहिसिंच देखो अभिसिंच। अहिसिंचइ (महा)। संकृ अहिसिंचिऊण (स ११६)।

अहिसिंचण न [अभिषेचन] अभिषेक (सम १२५)।

अहिसित्त देखो अभिसित्त (महा, सुर ८, ११६)।

अहिसेअ देखो अभिसेअ (सुपा ३७, नाट)।

अहिसोढ वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ (उप १४७ टी)।

अहिस्संग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (नाट)।

अहिहय वि [अभिहत] १ आघात-प्राप्त (से ५, ७७)। २ मारित, व्यापादित (से १४, १२)।

अहिहर सक [अभि + हृ] १ लेना। २ उठाना। ३ अक. शोभना, विराजना। ४ प्रतिभास होना, लगना,

'वीयाभरणा अकयएणमंडणा
अहिहरंति रमणीओ।
सुएणाओ व कुसुमफलतरम्मि
सहयारवल्लीओ।
इह हि हलिद्दाहयदविडसा-
मलीगंडमंडलानील।
फलमसअलपरिणामावलंबि
अहिहरइ चूयाणं' (गउड)।

अहिहर न [दे] १ देवकुल, पुराना देवमन्दिर। २ वल्मीक (दे १, ५७)।

अहिहव सक [अभि + भू] पराभव करना, जीतना। अहिहवंति (स १६८) कर्म अहिहवीयंति (स ६६८)।

अहिहाण न [दे अभिधान] वर्णन, प्रशंसा (दे १, २१)।

अहिहाण देखो अभिहाण (स १६५, गउड, सुर ३, २५, पात्र)।

अहिहू देखो अहिहव। कवकृ अहिहूअमाण (अभि ३७)।

अहिहूअ वि [अभिभूत] पराभूत, परास्त (दे १, १५८)।

अही सक [अधि + इ] पढ़ना। कर्म अहीयइ (विसे ३१६६)।

अही स्त्री [अही] नागिन, सर्पिणी (जीव २)।

अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगडा (निचू १०)।

अहीगार देखो अहिगार, 'मेसेसु अहीगारो, उवगरणसरीरमुक्खेसु' (आचानि २९४)।

अहीण वि [अधीन] आयत्त, अधीन (पण्ह २, ४)।

अहीण वि [अ-हीन] अन्यून, पूर्ण (विपा १, १, उवा)।

अहीय देखो अहिय = अधिक (पव १६४)।

अहीय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त, 'वेया अहीया ण भवंति ताणं' (उत्त १५, १२, णाया १, १४, स ७८)।

अहीरग वि [अहीरक] तन्तुरहित (फलादि) (जी १२)।

अहीरु वि [अभीरु] निडर, निर्भीक (भवि)।

अहीलास देखो अहिलास, 'देहम्मि अहिलासो' (तंदु ४१)।

अहीसर पु [अधीश्वर] परमेश्वर (प्रामा)।

अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य (गउड)।

अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आजकल (ठा ३, ३, नाट)।

अहुणि (पै) देखो अहुणा (प्राकृ १२७)।

अहुलण त्रि [अमार्जक] अनाशक (कुमा)।

अहुल्ल वि [अफुल्ल] अविकसित (कुमा)।
अहुवंत वकृ [अभवत्] न होता हुआ (कुमा)।
अहूण देखो अहीण = अहीन (कुमा)।
अहूय वि [अभूत] जो न हुआ हो °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो (कुमा)।
अहे अ [अधस्] नीचे (आचा)। °कम्म न [°कर्मन्] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष (पिंड)। °काय पु [°काय] शरीर का नीचला हिस्सा (सूअ १, ४, १)। °चर वि [°चर] बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरह जन्तु (आचा)। °तारग पु [°तारक] पिशाच-विशेष (पण्ण १)। °दिसा स्त्री [°दिक्] नीचे की दिशा (आचा)। °लोग पु [°लोक] पाताल-लोक (ठा ३, २)। °वाय पु [°वात] नीचे बहनेवाला वायु (पण्ण १)। २ अपान-वायु पर्दन (आवम)। °वियड वि [°विकट] भित्त्यादिरहित स्थान, खुला स्थान, 'तंसि भगवं अपडिन्ने अहेवियडे अहियासए दविए' (आचा)। °सत्तमा स्त्री [°सप्तमी] सातवीं या अन्तिम नरकभूमि (सम ४१, णाया १, १६, १६)। देखो अहो = अधस्।
अहे देखो अह = अथ (भग १, ६)।
अहेउ पु [अहेतु] १ सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास (ठा ५, १)। २ वि कारणरहित, नित्य (सूअ १, १, १)। °वाय पु [°वाद] आगमवाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड़कर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद (सम्म १४०)।
अहेउय वि [अहेतुक] हेतुवर्जित, निष्कारण (पउम ६३, ४)।
अहेकम्म पुन [अधःकर्मन्] १ अधोगति में ले जाने वाला कर्म। २ भिक्षा का आधाकर्म दोष (पिंड ६०)।
अहेसणिज्ज वि [यथैषणीय] संस्काररहित, कोरा, 'अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा' (आचा)।
अहेसर पु [अहरीश्वर] सूर्य, सूरज (महा)।
अहो देखो अह = अधस् (सम ३६, ठा २, २, ३, १, भग, णाया १, १, पउम १०२, ८१, आव ३)।
°करण न [°करण] कलह, झगड़ा (निचू १०)। °गइ स्त्री [°गति] १ नरक या तिर्यञ्च-योनि। २ अवनति (पउम ८०, ४६)। °गामि वि [°गामिन्] दुर्गति में जानेवाला (सम १५३, श्रा ३३)। °तरण न [°तरण] कलह, झगड़ा (निचू १०)। °मुह वि [°मुख] अधोमुख, अवनत मुख, लज्जित (सुर २, १५८, ३, १३५, सुपा २४२)। °लोइय वि [°लौकिक] पाताल लोक से सबन्ध रखनेवाला (सम १४२)। °हि वि [°अवधि] १ नीचे दर्जा का अवधिज्ञान वाला (राय)। २ पुस्त्री नीचे दर्जा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, २)।
अहो अ [अहनि] दिवस में, 'अहो य राओ य सिवाभिलासिणो' (पउम ३१, १२८, पण्ह २, १)।
अहो अ [अहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य। २ खेद, शोक। ३ आमन्त्रण, सबोधन। ४ वितर्क। ५ प्रशसा। ६ असूया, द्वेष (हे २, २१७, आचा, गउड)। °दाण न [°दान] आश्चर्य कारक दान (उत्त २, कप्प)। °पुरिसिगा, °पुरिसिया स्त्री [°पुरुषिका] गर्व, अभिमान (स १२३, २८८)। °विहार पु [°विहार] सयम का आश्चर्यजनक अनुष्ठान (आचा)।
अहो अ [अहो] दीनता-सूचक अव्यय (अणु १६)।
अहो° पुन [अहन्] दिन, दिवस (पिंग)। °णिस, निस, निसि न [°निश] रात और दिन, दिन-रात, 'णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पचमाणाणं' (सूअ १, ५, १, श्रा ५०), 'अतो अहोनिमिस्स उ' (विसे ८७३)। °रत्त पु [°रात्र] १ दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर (ठा २, ४), 'तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया कयतेण' (पउम ४३, ३१)। २ चार प्रहर का समय (जो २)। °राइया स्त्री [°रात्रिकी] ध्यानप्रधान अनुष्ठान विशेष (पचा १८, आव ४, सम २१)। °राइदिय न [°रात्रिन्दिव] दिनरात (भग, ओप)।
अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, २५, गा ७७१)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे अयाराइसद्दसकलणो
णाम पढमो तरगो समत्तो।

आ

आ पु [आ] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण (प्रामा)। इन अर्थों का सूचक अव्यय—२ अ मर्यादा, सीमा, 'आसमुद्द' (गउड, विसे ८०८)। ३ अभिविधि, व्याप्ति 'आकूलसिरं पलित्थभासो' (कुमा, विसे ८०८)। ४ ईषदर्थ, अल्पता, 'आणीलकयदुरं वरएण' (गउड), 'आसव' (से ६, ३१, विसे १२३५)। ५ समन्तात्, चारों ओर, 'अणुकङ्कनमा विवइण्णमरमकवरीविलसियमम्मि' (गउड, विसे ८७५)। ६ अभिव्याप्ता, विशेषता, 'आदीण' (सूअ १,५)। ७ स्मरण, याद (पड्)। ८ विस्मय, आश्चर्य (ठा ५)। ९-१० क्रियाशब्द के योग में अर्थविस्तृति और विपर्यय, 'आरहइ', 'आगच्छइ' (पड्, कुमा)। ११ वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (णाया १,२)। १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पड् २, १, ७६)।

आ अ [आ] नीचे, अघ (राय ३५, ३६)।

आ अ [आस्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद (गा ६२६)। २ दुःख। ३ गुस्सा, क्रोध (कप्पू)।

आ सक [या] जाना। 'अन्नो ण आमि छेत्त' (गा ८२१)।

आअ वि [दे] १ अत्यंत, बहुत। २ दीर्घ, लम्बा। ३ विषम, कठिन। ४ न. लोह, लोहा। ५ मुसल, मूषल (दे १, ७३)।

आअ वि [आगत] आया हुआ, 'पत्थति आअरोसा' (से १२, ६८, कुमा)।

आअअ वि [आगत] आया हुआ (से ३, ४, १२, १८, गा ३०१)।

आअअ वि [आयत] लम्बा, विस्तीर्ण (से ११, ११),
'मरगयसूईविद्धं व मोत्तिअं पिअइ आअअग्गीवो।
मोरो पाउसआले तणग्गलग्गं उअअविंदुं'
(गा ३६४)।

आअड्ढ सक [कृप्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। आअड्ढइ (षड्)।

आअतव्व देखो आगम = आ + गम्।

आअतुअ देखो आगंतुय (स्वप्न २०, अभि १२१)।

आअपिअ देखो आकपिय (से १०, ५१)।

आअंब वि [आताम्र] थोड़ा लाल (से ६,३१, सूर २, ११०)।

°आअब पु [कादम्ब] हस, पक्षि-विशेष (से ६, ३१)।

आअक्ख मक [आ + चक्ष्] कहना, बोलना, उपदेश करना। आयक्खाहि (भग)। कर्म आअक्खीअदि (शौ) (नाट)। भूकृ. आअक्खिद (शौ) (नाट)।

आअच्छ देखो आगच्छ। आअच्छइ (षड्)। सकृ आअच्छिअ, आअच्छिऊण (नाट, पि ५८१, ५८४)।

आअड्ड अक [दे] परवश होकर चलना। आअड्डइ (दे १, ६६)।

आअड्ड अक [व्या + पृ] व्यापृत होना, काम मे लगना। आअड्डइ (सण, षड्)। आअड्डेइ (हे ४, ८१)।

आअड्डिअ वि [दे] परवशचलित, दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ (दे १, ६८)।

आअड्डिअ वि [व्यापृत] कार्य मे लगा हुआ (कुमा)।

आअण्णण देखो आयन्नण (गा ६५६)।

आअत्ति देखो आयइ (पिंग)।

आअद देखो आगय (प्राकृ १२, सक्षि ६)।

आअम देखो आगम (अच्यु ७, अभि १८४, गा ४७६, स्वप्न ४८, मुद्रा ८३)।

आअमण देखो आगमण (से ३, २०, मुद्रा १८७)।

आअर सक [आ + दृ] आदर करना, सत्कार करना। आअरइ (षड्)।

आअर न [दे] १ उदूखल, ऊखल। २ कूर्च (दे १, ७४)।

आअल्ल पु [दे] १ रोग, बीमारी (दे १, ७५, पाअ)। २ वि चचल, चपल (दे १,७५)। देखो आयल्लया।

आअल्लि } स्त्री [दे] झाडी, लताओ से निविड
आअल्ली } प्रदेश (दे १, ६१)।

आअव्व अक [वेप्] कॉपना। आअव्वइ (षड्)।

आआमि देखो आगामि (अभि ८१)।

आआस देखो आयस (षड्)।

आआसतअ [दे] देखो आयासतल (षड्)।

आइ सक [आ + दा] ग्रहण करना, लेना। आइएज्जा (सूअ १,७,२६)। आइयंति (भग)। कर्म. आइयइ (कस)। सकृ आइत्तूण, आयइत्ता, आइत्तु (आचा, सूअ १, १२, पि ५७७)। प्रयो आइयावेंति (सूअ २,१)। कृ आइयव्व (कस)।

आइ पु [आदि] १ प्रथम, पहला (सुर २, १३२)। २ वगैरह, प्रभृति (जी ३)। ३ समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव, अंश। ६ प्रधान, मुख्य, 'इअ आससति निसीह। सिहदत्ताइणो दिआ तुज्झ' (कुमा, सूअ १, १५)। ७ उत्पत्ति (सम्म ६५)। ८ ससार, दुनया (सूअ १, ७)। °गर वि [°कर] १ आदि प्रवर्त्तक (सम १)। २ पु. भगवान् ऋषभदेव (पउम २८,३६)। °गुण पु [°गुण] सहभावी गुण (श्राव ४)। °णाह पु [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव (श्रावम)। °तित्थयर पुं [°तीर्थंकर] भगवान् ऋषभदेव (णदि)। °देव पु [°देव] भगवान् ऋषभदेव (सुर २, १३२)। °म पु [°म] प्रथम, आद्य, पहला (आव ५)। °मूल न [°मूल] मुख्य कारण (आचा) °मोक्ख पु [°मोक्ष] ससार से छुटकारा, मोक्ष। २ शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा, 'इत्थीओ जे ण सेवंति आइमोक्खा हि ते जणा' (सूअ १,७)। °राय पु [°राज] भगवान् ऋषभदेव (ठा ६)। °वराह पुं [°वराह] कृष्ण, नारायण (से ७, २)।

आइ वि [आदिन्] खानेवाला (पचा १८, ३६)।

आइ स्त्री [आजि] सग्राम, लडाई (सथा)।

आइअंतिय देखो अच्चतिय (भग १२, ६)।

आइं अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय (भग ३, २)।

आइखगा } स्त्री [दे] १ देवता विशेष,
आइखणिया } कर्ण-पिशाचिका देवी (पत्र
आइखिणिया } २,७३ टी—पत्र १८२, बृह १)। २ डोमिनी, चाडाली (बृह १)।

आइंग न [दे] वाद्य-विशेष (पउम ३, ८७, ६६, ६)।

आइंच देखो आयंच। आइंचइ (उवा)।

आइच देखो अक्कम = आ + क्रम्। आइचइ (प्राकृ ७३)।

आइच्चवार पुं [आदित्यवार] रविवार (कुप्र ४११)।

आइच्चिय वि [आदित्यिक] आदित्य-संबन्धी (सूअनि ८ टी)।

आइछ देखो आअड्ढ। आइछइ (हे ४,१८७)।

आइक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, उपदेश देना, बोलना, आइक्खइ (उवा)। वकृ. आइक्खमाण (णाया १,१२)। हेकृ. आइक्खित्तए (उवा)।

आइक्खग वि [आख्यायक] कहनेवाला, वक्ता (पण्ह २, ४)।

आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश (बृह ३)।

आइक्खिय वि [आख्यात] उक्त, उपदिष्ट (स ३२)।

आइक्खिया स्त्री [आख्यायिका] १ वार्त्ता, कहानी (णाया १, १)। २ एक प्रकार की मैली विद्या, जिसमे चाण्डालिनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है (ठा ६)।

आइग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, खिन्न (पाअ)।

आइग्घ सक [आ + घ्रा] सूँघना। आइग्घइ, आइग्घाइ (षड्)। हेकृ. आइग्घिउ (कुमा)।

आइञ्च अ [दे] कदाचित्, कोईवार (पराग १८—पत्र ४८५)।

आइच्च पु [आदित्य] १ सूर्य, सूरज, रवि (सम ५६)। २ लोकान्तिक देव-विशेष (णाया १, ८)। ३ न देवविमान-विशेष। ४ पु तन्निवासी देव (पव)। ५ वि आद्य, प्रथम (सुज्ज २०)। ६ सूर्य-सम्बन्धी 'आइच्चे ण मासे' (सम ५६)। °गइ पु [°गति] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५,२६१)। °जस पु [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखारूप सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई थी (पउम ५,३ सुर २, १३४)। °पभ न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर (पउम ५,८२)। °पीढ न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृतिचिह्न—पाद-पीठ (आवम)। °रक्ख पु [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राजपुत्र (पउम ५,१६६)। °रय पु [°रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा (पउम ८, २३४)।

आइज्ज देखो आएज्ज (नव १५)।

आइज्जमाण वकृ [आर्द्रीक्रियमाण] आर्द्र किया जाता, भीजाया जाता (आचा)।

आइज्जमाण देखो आढा = आ + दृ।

आइट्ठ वि [आदिष्ट] १ उक्त, उपदिष्ट (सुर ४, १०१)। २ विवक्षित (सम्म ३८)।

आइट्ठ वि [आविष्ट] अधिष्ठित, आश्रित (कस)।

आइट्ठि स्त्री [आदिष्टि] धारणा (ठा ७)।

आइड्ढि स्त्री [आत्मर्द्धि] आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य (भग १० ३)।

आइड्ढिय वि [आत्मर्द्धिक] आत्मीय शक्ति-सम्पन्न (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (हम्मीर १७)।

आइण्ण देखो आइन्न = (दे) (तदु २०)।

आइण्ण देखो आइन्न (औप, भग ७, ८, हे ३ १३८)।

आइत्त वि [आदीप्त] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित (णाया १, १)।

आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत, 'तुज्झ मित्ते जा परस्स आइत्ता' (जीवा १०)।

आइत्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला (ठा ७)।

आइत्तूण देखो आइ = आ + दा।

आइत्थ न [आतिथ्य] अतिथि-सत्कार (प्राकृ २१)।

आइदि स्त्री [आकृति] आकार (प्राप्र, स्वप्न २०)।

आइद्ध वि [आविद्ध] १ प्रेरित (से ७,१०)। २ स्पृष्ट, छूआ हुआ (से ३, ३५)। ३ पहना हुआ, परिहित (आक ३८)।

आइद्ध वि [आदिग्ध] व्याप्त (णाया १, १)।

आइन्न वि [आकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (सुर १, ४६, ३, ७१)। २ पु वस्त्र दायक कल्पवृक्ष (ठा १०)।

आइन्न वि [आचीर्ण] आचरित, विहित (आचा, चैत्य ४६)।

आइन्न वि [आदीर्ण] उद्विग्न, खिन्न, 'आइ-न्नाइ पियराइ तीए पुच्छंति दिव्व-देवन्न' (सुपा ५६७)।

आइन्न पु [दे] जात्यश्व, कुलीन घोडा (पराह १, ४)।

आइप्पण न [दे] १ आटा (गा १६६ दे १, ७८) २ घर की शोभा के लिए जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह। ३ चावल के आटा का दूध। ४ घर का मराडन—भूषण (दे १, ७८)।

आइय (अप) वि [आयात] आया हुआ (भवि)।

आइय वि [आचित] १ सञ्चित, एकत्रीकृत। २ व्याप्त, आकीर्ण। ३ ग्रथित, गुम्फित (कप्प, ओप)।

आइय वि [आदृत] आदरप्राप्त (कप्प)।

आइयण न [आदान] ग्रहण, उपादान (पराह १, ३)।

आइयणया स्त्री [आदान] ग्रहण, उपादान (ठा २, १)।

आइरिय देखो आयरिय = आचार्य (हे १, ७३)।

आइल वि [आविल] मलिन, कलुष, अस्वच्छ (पराह १, ३)।

आइल्ल } वि [आदिम] प्रथम, पहला
आइल्लिय } (सम १२६, भग)। 'आइल्लियासु तिसु लेसासु' (पराग १७, विसे २६२४)।

आइवाहिअ पु [आतिवाहिक] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है,

'काहे अमाणवत्ता अग्गिमुहा,
आइवाहिआ तव पुरिसा।
अइलंघेहिंति मम अच्चुआ।
तमगहणनिउणयरकतार'
(अच्चु ८५)।

आइवाहिग पु [आतिवाहिक] मार्गदर्शक (वासुदेवहिंडी पत्र १५)।

आइस सक [आ + दिश्] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसह (पि ४७१)। वकृ. आइसंत (सुर १६, १३)।

आइसण वि [दे] उज्झित, परित्यक्त (दे १, ७१)।

आईण वि [आदीन] १ अतिदीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न दूषित भिक्षा (सूअ १, १०)।

आईण पु [दे] जातिमान् अश्व, कुलीन घोडा (णाया १, १७)।

आईण } न [आजिन,°क] १ चमडे का बना
आईणग } हुआ वस्त्र (णाया १, १, आचा)। १ पु द्वीप-विशेष। २ समुद्र विशेष (जीव ३)। °भद्द पु [°भद्र] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °महावर पुं [°महावर] आजिन और आजिनवर नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वर पु [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ आजिन और **आजिनवर** समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरभद्द पु [°वरभद्र] आजिनवरद्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] देखो अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वराभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वराभासमहाभद्द पु [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ

(जीव ३)। °वरोभासमहावर पुं [वराव-भासमहावर] अजिनवराभास नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभासवर [°वरावभासवर] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (जीव ३)।

आईनीइ स्त्री [आदिनीति] सामरूप पहली राजनीति (सुपा ४६२)।

आईय देखो आइ=आदि (जी ७, काल)।

आइय वि [आतीत] १ विशेष-ज्ञात। २ समार-प्राप्त समार में घूमनेवाला (आचा)।

आईल पुंन [आचील] पान का थूकना (पव)।

आईव अक [आ + दीप्] चमकना। वकृ आईवमाण (महानि)।

आईसर पु [आदीश्वर] भगवान् ऋषभदेव (सिरि ५५१)।

आउ स्त्री [दे] १ पानी, जल (दे १, ६१)। २ इस नाम का एक नक्षत्र-देव (ठा २, ३)। °काय, °काय पु [°काय] जल का जीव (उप ६८५, पएण १)। °काइय, °काइय पु [°कायिक] जल का जीव (पएण १, भग २४, १३)। °जीव पु [°जीव] जल का जीव (सूत्र १, ११)। °बहुल वि [°बहुल] १ जल-प्रचुर। २ रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काण्ड (सम ८८)।

आउ अ [दे] अथवा, या, 'आउ पलोहेइ मं अज्जउत्तवेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चय चेव अज्जउत्तोत्ति' (स ३४६)।

आउ, आउअ न [आयुष्] १ आयु, जीवन-काल (कुमा, रयण १६)। २ उमर, वय (गा ३२१)। ३ आयु के कारणभूत कर्म-पुद्गल (ठा ८)। °काल पु [°काल] मरण, मृत्यु (आचा)। °क्खय पुं [°क्षय] मरण, मौत (विपा १, १०)। °क्खेम न [°क्षेम] आयु-पालन, जीवन (आचा)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] वैद्यकशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, (आव)। °व्वेय पु [°वेद] वैद्यक, चिकित्सा-शास्त्र (विपा १, ७)।

आउच सक [आ + कुञ्चय्] सकुचित करना, समेटना। सकृ आउचिवि (अप) (भवि)।

आउचण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्रसक्षेप (कस)।

आउचणा स्त्री [आकुञ्चना] ऊपर देखो (धर्म ३)।

अउंचिअ वि [आकुञ्चित] १ सकुचित। २ उठा कर धारण किया हुआ (से ६, १७)।

आउंजि वि [आकुञ्चिन्] १ सकुचनेवाला। २ निश्चल (गउड)।

आउट देखो आउट्ट=आ-वर्तय्। आउटावेमि (णाया १, ५)।

आउट अक [आ + कुञ्च्] सकोचना, प्रयो, सकृ आउटावित्तु (पव ५)।

आउटण न [आकुञ्चन] आवर्जन (पचा १७, १६)।

आउटण न [आकुञ्चन] सकोच, गात्र-सक्षेप (हे १, १७७)।

आउवालिय वि [दे] आप्लावित, डूबाया हुआ, पानी आदि द्रवपदार्थ से व्याप्त (पाय)।

आउक, आउग देखो आउ=आयुष् (सुपा ६५५, भग ६, ३)।

आउच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना। वकृ आउच्छंत, आउच्छमाण (से १२, २१, ४७)। सकृ आउच्छिऊण, आउच्छिय (महा, सुपा ६१)।

आउच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुज्ञा (गा ४७, ५००)।

आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रश्न (पचा १२, २६)।

आउच्छा स्त्री [आपृच्छा] आज्ञा (कुप्र १२४)।

आउच्छिय वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह (से १२, ६४)।

आउज्ज देखो आओज=आतोद्य (हे १, १५६)।

आउज्ज पुं [आवर्ज] १ समुख करना। २ शुभ क्रिया (पएण ३६)।

आउज्ज वि [आवर्ज्य] सम्मुख करने योग्य (आवम)।

आउज्ज वि [आयोज्य] जोडने योग्य, सम्बन्ध करने योग्य (विसे ७४ ३२६६)।

आउज्जिय वि [आतोद्यिक] वाद्य बजानेवाला (सुपा १६६)।

आउज्जिय वि [आयोगिक] उपयोगवाला, सावधान (भग २, ५)।

आउज्जिय वि [आवर्जित] समुख किया हुआ (पएण ३६)।

आउज्जिया स्त्री [आवर्जिका] क्रिया, व्यापार (आवम)। °करण न [°करण] शुभ व्यापार-विशेष (पएण ३६)।

आउज्जीकरण न [आवर्जीकरण] शुभ व्यापार-विशेष (पएण ३६)।

आउट्ट सक [आ + वृत्]. १ करना। २ भूलाना। ३ व्यवस्था करना। ४ अक समुख होना, तत्पर होना। ५ निवृत्त होना। ६ घूमना, फिरना। आउट्टइ, आउट्टति (भग ७, १, निचू ३)। वकृ आउट्टंत (सम २२)। सकृ आउट्टिऊण (राज)। हेकृ आउट्टित्तए (कप्प)। प्रयो आउट्टावेमि (णाया १, ५ टी)।

आउट्ट सक [आ + कुट्ट्] छेदन करना, हिंसा करना। आउट्टामो (आचा)।

आउट्ट वि [आवृत्त] १ निवृत्त, पीछे फिरा हुआ (उप ६६८), 'दप्पकए वाउट्टे जइ खिसति तत्थवि तहेव' (बृह ३)। २ भ्रामित, भुलाया हुआ (उप ६००)। ३ ठीक-ठीक व्यवस्थित (आचा)। ४ कृत, विहित (राज)।

आउट्ट पु [आकुट्ट] छेदन, हिंसा (सूत्र १, १)।

आउट्ट, आउट्टिअ वि [आदृत] आदर-युक्त (पिंड ३१६, पव ११२)।

आउट्टण न [आकुट्टन] हिंसा (सूत्र १, १)।

आउट्टण न [आवर्त्तन] १ आराधन, सेवा, भक्ति (वव १, ६)। २ अभिमुख होना, तत्पर होना (सूत्र १, १०)। ३ अभिलाषा, इच्छा (आचा)। ४ घूमाना, भ्रमण। ५ निवृत्ति (सूत्र १, १०)। ६ करना, क्रिया, कृति (राज)।

आउट्टणया स्त्री [आवर्त्तनता] अपायज्ञान (णदि)।

आउट्टणा स्त्री [आवर्त्तना] ऊपर देखो (निचू २)।

आउट्टावण न [आवर्त्तन] अभिमुख करना, तत्पर करना (आचा २)।

आउट्टि स्त्री [आकुट्टि] १ हिंसा, मारना (आचा, उव)। २ निर्दयता (आप १८)।

आउट्टि स्त्री [आवृत्ति] देखो आउट्टण = आवर्तन (वव १, १ २, १०, सूअ १, १, आचा)। ५ बार-बार करना, पुन पुन क्रिया (सुज्ज १२)।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] १ मारनेवाला, हिंसक, 'जाए काएण णाउट्टी' (सूअ)। २ अकार्य-कारक (दसा)।

आउट्टि वि [दे] साढे तीन, 'एगे पुण एवमा-हंसु ता आउट्टि चदा आउट्टि सूरा सव्वलोयं ओभासेंति (सुज्ज १९)।

आउट्टिम वि [आकुट्टस्य] कूटकर बैठाने योग्य (जैन सिक्के मे अक्षर) (दसनि २, १७)।

आउट्टिय देखो आउट्ट = आवृत्त (दसा)।

आउट्टिय पुं [आकुट्टिक] दण्ड-विशेष (भत्त २७)।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित (सूअ)।

आउट्टिया स्त्री [आकुट्टिका] पास मे आकर मरना (पचा १५, १८)।

आउट्ठ वि [आतुष्ट] सतुष्ट (निचू १)।

आउड सक [आ+जोडय्] सबन्ध करना, जोडना। कवकृ आउडिज्जमाण (भग ५, ४)।

आउड सक [आ+कुट्] १ कूटना, पीटना। २ ताडन करना, आघात करना। आउडेइ (ज ३)। कवकृ आउडिज्जमाण (भग ५, ४)।

आउड सक [लिख्] लिखना, 'इति कट्टु णामग आउडेइ' सकृ. आउडित्ता (ज ३—पत्र २६०)।

आउडिय वि [आकुटित] आहत, ताडित (ज ३—पत्र २२२)।

आउड्ड अक [मस्ज्] मज्जन करना, डूबना। आउड्डइ (हे ४, १०१, षड्)।

आउड्डिअ वि [मग्न] डूबा हुआ, तल्लीन (कुमा)।

आउण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त 'कुसुमफलाउण्णहत्थेहिं' (पउम ८, २०३)।

आउत्त वि [आयुक्त] १ उपयोग वाला, सावधान (कप्प)। २ क्रिवि उपयोग-पूर्वक (सा)। ३ न पुरीषोत्सर्ग, फराकत जाना (?) (उप ६८५)। ४ पु गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया (दे १, १६)।

आउत्त वि [आगुप्त] १ सक्षिप्त (ठा ३, १)। २ सयत (भग)।

आउत्थ वि [आत्मोत्थ] आत्म-कृत (वव ४)।

आउर वि [आतुर] १ रोगी, बीमार (णदि)। २ उत्कण्ठित। ३ दुखित, पीडित (प्रासू २८, ६५)।

आउर न [दे] १ लडाई, युद्ध। २ वि बहुत। ३ गरम (दे १, ६५, ७६)।

आउरिय वि [आतुरित] दु खित, पीडित (आचा)।

आउल वि [आकुल] १ व्याप्त (औप)। २ व्यग्र (आव)। ३ व्याकुल, दु खित। ४ सकीर्ण (स्वप्न ७३)। ५ पु समूह (विसे ७००)।

आउल सक [आकुलय्] १ व्याप्त करना। २ व्यग्र करना। ३ दु खी करना। ४ सकीर्ण करना। ५ प्रचुर करना। कवकृ—आउ-लिज्जत, आउलीअमाण (महा, पि ५६३)।

आउलि स्त्री [आतुलि] वृक्ष-विशेष (दे ५, ५)।

आउलिअ वि [आकुलित] आकुल किया हुआ (गा २५, पउम ३३, १०६, उप पृ ३२)।

आउलीकर सक [आकुली+कृ] देखो आउल= आकुलय्। आउलीकरेंति (भग)। कवकृ आउलीकिअमाण (नाट)।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबडाया हुआ (सुर २, १०)।

आउल्लय न [दे] जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण (सिरि ४२४)।

आउस अक [आ + वस्] रहना, वास करना। वकृ आउसंत (सम १)।

आउस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना। आउसइ (भग १५)। आउसेज्ज, आउसेमि (उवा)।

आउस सक [आ + मृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ आउसत (सम १)।

आउस सक [आ + जुष्] सेवा करना। वकृ आउसत (सम १)।

आउस न [दे] कूर्च (दे १, ६५)। क्षुरकर्म (नंदीटि टिप्पनक)

आउस देखो आउ = आयुष् (कुमा)।

आउस } वि [अयुष्मत्] चिरायु, दीर्घायु
आउसंत } (सम २६, आचा)।

आउसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भ-र्त्सन (णाया १, १८, भग १५)।

आउस्स देखो आउस = आ + क्रुश्। आउ-स्सति (णाया १, १८)।

आउस्स पु [आक्रोश] दुर्वचन, असभ्य वचन (सूअ १, ३, ३, १८)।

आउस्सिय वि [आवश्यक] १ जरूरी। २ क्रिवि जरूर, अवश्य (पण्ण ३६)। °करण न [°करण] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार। २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति (पण्ण ३६)।

आउह न [आयुध] १ शस्त्र, हथियार (कुमा)। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °घर न [°गृह] शस्त्रशाला (ज)। °घरसाला स्त्री [°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (ज)। °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी (ज)। °गार न [°गार] शस्त्रगृह (औप)।

आउहि वि [आयुधिन्] योद्धा, शस्त्रधारक (विसे)।

आऊड अक [दे] जुए मे पण करना। आऊ-डइ (दे १, ६६)।

आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए मे की जाती प्रतिज्ञा (दे १, ६८)।

आऊर सक [आ + पूरय्] भरना, पूर्त्ति करना, भरपूर करना। आऊरेइ (महा)। कृ. आऊरयत, आऊरमाण (पउम) १०२, ३३, से १२, २८)। कवकृ आऊरिज्जमाण (पि ५३७)। सकृ आऊरिवि (अप) (भवि)।

आऊरिय वि [आपूरित] भरा हुआ, व्याप्त (सुर २, १६६)।

आऊसिय वि [आयूषित] १ प्रविष्ट। २ सकुचित (णाया १, ८)।

आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य उपादेय। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है (सम ६७)।

आएस वि [ऐष्यत्] आगामी, भविष्य में होने वाला (सूअ १, २, ३, २०)।

आएस पुं [आदेश] १ अपेक्षा। २ प्रकार, रीति (णंदि १८४)। ३ वि नीचे देखो (पिंड २३०)।

आएस देखो आवेस (भग १४, २)।

आएस } पु [आदेश] १ उपदेश, शिक्षा। आएसग } २ आज्ञा, हुकुम (महा)। ३ विवक्षा, सम्मति (सम्म ३७)। ४ अतिथि, मेहमान (सूअ २, १, ५६)। ५ प्रकार, भेद, 'जीवे ण भंते। कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे' (भग ६, ४, जीव २, विसे ४०३)। ६ निर्देश (निचू)। ७ प्रमाण, 'जाव न बहुप्पसन्न ता मीसं एस इन्व आएसो' (पिंड २१)। ८ इच्छा, अभिलाषा, देखो आएसि। ९ दृष्टान्त, उदाहरण, 'वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज अन्नतरएण' (आचानि २६७)। १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र (विसे ४०५)। ११ उपचार, आरोप, 'आएसो उवयारो' (विसे ३४,८८)। १२ शिष्ट सम्मत, 'बहुसुयमाइएण तु,

न बाहियएणेहि जुगप्पहाणेहिं।

आएसो सो उ भवे,

अहवावि नयतरविगप्पो' (वव २,८)।

आएसण न [आदेशन] ऊपर देखो (महा)।

आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा वगैरह का कारखाना, शिल्पशाला (आचा २, २,२,१०, औप)।

आएसि वि [आदेशिन्] १ आदेश करनेवाला। २ अभिलाषी, इच्छुक (आचा)।

आएसिय वि [आदिष्ट] जिसको आज्ञा दी गई हो वह (भवि)।

आएसिय वि [आदेशिक] १ आदेश सबन्धी। २ विवाह आदि के जिमन में बचे हुए वे खाद्य-पदार्थ जिनको श्रमणों में बाँट देने का सकल्प किया गया हो (पिंड २२६)।

आओ अ [दे] अथवा, या, 'हंत किमेयंति, किं ताव सुविणओ, आओ इंदजाल, आओ मइविब्भमो, आओ सच्चय चेवत्ति' (स ४५४)।

आओग पु [आयोग] १ लाभ, नफा (औप)। २ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना (भग)। ३ परिकर, सरजाम (औप)।

आओग पु [आयोग] अर्थोपाय, अर्थोपार्जन का साधन (सूअ २, ७, २)।

आओग्ग पुं [आयोग्य] परिकर, सरजाम (औप)।

आओज्ज पुन [आयोग्य] वाद्य, बाजा (महा, पड्)।

आओज्ज वि [आयोज्य] संबन्ध-योग्य, जोडने योग्य (विसे २३)।

आओड मक [आ + खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेडना। आओडावेति (विपा १,६)।

आओडण न [आक्रोलन] मजबूत करना (से ६, ६)।

आओडिअ वि [दे] ताडित, मारा हुआ (से ६, ६)।

आओध अक [आ + युध्] लडना। आओधेहि (वेणि १११)।

आओस सक [आ + क्रुश्, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना। आओसइ (निर १, १) आओसेज्जमि, आओसेमि (उवा)। कवकृ. आओसेज्जमाण (अंत २२)।

आओस पु [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल (ओघ ६१ भा)।

आओसणा स्त्री [आक्रोशना] निर्भर्त्सना, तिरस्कार (निर १, १)।

आओहण न [आयोधन] युद्ध, लडाई (उप ६४८ टी, सुर ६, २२०)।

आत वि [अन्त्य] अन्त का (पचा १८,३६)।

आकख सक [आ + काङ्क्ष्] चाहना, इच्छना। आकखिहि (भवि)।

आकंखा स्त्री [आकाङ्क्षा] चाह, इच्छा, अभिलाषा (विसे ८५६)।

आकंखि वि [आकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (आचा)।

आकद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना। आकदामि (पि ८८)।

आकंदिय न [आक्रन्दित] १ आक्रन्दन, रोदन। २ वि. जिसने आक्रन्दन किया हो वह (दे ७, २७)।

आकप अक [आ + कम्प्] १ थोडा काँपना। २ तत्पर होना। ३ आराधन करना। संकृ. आकंपइत्ता, आकंपइत्तु (राज)।

आकंप पु [आकम्प] १ थोडा काँपना। २ आराधन (वव)। ३ तत्परता, आवर्जन (राज)।

आकपण न [आकम्पन] ऊपर देखो (वव, धर्म)।

आकंपिय वि [आकम्पित] ईषत् चलित, कम्पित (उप ७२८ टी)।

आकपिय वि [आकम्पित] आवर्जित, प्रसन्न किया हुआ (पिंड ४३६)।

आकड्ढ पु [आकर्ष] खींचाव। °विकड्ढि स्त्री [°विकृष्टि] खींच-तान (भग १५)।

आकड्ढण न [आकर्षण] खींचाव (निचू)।

आकड्ढिय वि [दे] बाहर निकाला हुआ, 'पुव्व व वच्छ तीए निब्भच्छिया

ता धरित्तु गलयम्मि।

पच्छिमअसोगवणियादारेणाकड्ढिया

झत्ति॥' (धर्मवि १३३)।

आकण्णण न [आकर्णन] श्रवण (नाट)।

आकण्णिय वि [आकर्णित] श्रुत, सुना हुआ (आचा)।

आकदि देखो आकिंदि (सक्षि ९)।

आकम्हिय वि [आकस्मिक] अकस्मात् होनेवाला, विना ही कारण होनेवाला, 'वज्झनिमित्ताभावा ज भयमाकम्हियं तंति' (विसे ३४५१)।

आकर पु [आकर] १ खान। २ समूह (कुमा)।

आकस देखो आगस। आकसिस्सामो (आचा २, ३, १, १५) हेकृ आकसित्तए (आचा २, ३, १, १५)।

आकार देखो आगार (कुमा, द १३)।

आकास देखो आगास (भग)।

आकासिय वि [दे] पर्याप्त, काफी (षड्)।

आकिइ स्त्री [आकृति] स्वरूप, आकार (हे १, २०९)।

आकिंचण न [आकिञ्चन्य] निस्पृहता, निष्परिग्रहता, 'आकिंचणं च बभ च जइधम्मो' (नव २३)।

आकिंचणया स्त्री [आकिञ्चनता] ऊपर देखो (सम १२०)।

आकिंचणिय } देखो आकिंचण (आचू, सुपा आकिंचन्न } ६०८)।

आकिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (धर्मवि १५)।

आकिदि देखो आकिइ (कुमा)।

आकुंच सक [आ + कुञ्च्] संकोच करना। आकुंचइ, संकृ आकुंचिवि (अप) (भवि)।

आकुंचण न [आकुञ्चन] संकोच, संक्षेप (सम्म १३३, विसे २८६२)।

आकुंचिय वि [आकुञ्चित] संकुचित, 'रुद्ध गलय आकुंचियाओ धमणीओ पसरिया वियणा' (सुर ४, २३८)।

आकुट्ठ न [आकुष्ट] १ आक्रोश। २ वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३, ३२)।

आकुल दे आउल (कप्प)।

आकूय न [आकूत] १ इङ्गित, इशारा (उप ७२८ टी)। २ अभिप्राय (विसे ६२८)।

आकेवलिय वि [आकेवलिक] असंपूर्ण (आचा)।

आकोडण न [आकोटन] कूट कर घुसेडना (पण्ह १, ३)।

आकोस देखो अक्कोस = आक्रोश (पच ४, २३)।

आकोसाय अक [आकोशाय्] विकसित होना। वकृ आकोसायंत (पण्ह १, ४)।

आक्कंद (मा) देखो आकंद। आक्कंदामि (पि ८८)।

आखच (अप) सक [आ + कृप्] पीछे खींचना। संकृ आखचिवि (भवि)।

आखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (सुपा ८७)। °धणुह न [°धनुष्] इन्द्रधनुष् (उप ६८६ टी)। °भूइ पु [°भूति] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गोतम-स्वामी (पउम ११८, १०२)।

आगइ स्त्री [आगति] आगमन (आचा, विसे २१४६)।

आगइ देखो आकिइ (महा)।

आगंतव्व देखो आगम = आ + गम्।

आगंतगार } न [आगन्त्रगार] धर्मशाला,
आगंतार } मुसाफिरखाना (औप, आचा)।

आगंतु वि [आगन्तृ] आनेवाला (सूअ)।

आगंतुं देखो आगम = आ + गम्।

आगंतुग } वि [आगन्तुक] १ आनेवाला।
आगंतुय } २ अतिथि (स ४७१, नाट २४, सुपा ३२६, ओघ २१६)। ३ कृत्रिम, अस्वाभाविक (सुर १३, १०)।

आगंतूण देखो आगम = आ + गम्।

आगंप सक [आ + कम्पय्] कँपाना, हिलाना। वकृ आगंपयंत (स ३३१, ४४३)।

आगंपिय देखो आकंपिय (पउम ३४, ४३)।

आगच्छ सक [आ + गम्] आना, आगमन करना। आगच्छइ (महा)। भवि आगच्छिस्सइ (पि ५२३)। वकृ आगच्छंत, आगच्छमाण (काल, भग)। हेकृ आगच्छित्तए (पि ५७८)।

आगत देखो आगय (सुर २, २४८)।

आगत्ती स्त्री [दे] कूप तुला (दे १, ६३)।

आगम सक [आ + गम्] १ आना, आगमन करना। २ जानना। भवि आगमिस्स (पि ५२३, ५६०)। वकृ. आगममाण (आचा)। संकृ आगंतूण, आगमेत्ता, आगम्म (पि ५८१, ५८२, औप)। कृ आगंतव्व (सुपा १२)। हेकृ आगंतुं (काल)।

आगम पु [आगम] १ समागम (पच, १४५)। २ ज्ञान, जानकारी, 'चोद्दसविज्जाठाणाण आगमे कए' (सुख २, १३)।

आगम पु [आगम] १ आगमन (से १४, ७५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त (जी ४८)। °कुसल वि [°कुशल] सिद्धान्तों का जानकार (उत्त)। °ज्ज वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्राक्)। °णीइ स्त्री [°नीति] आगमोक्त विधि (धर्म २)। °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्राक्)। °परतंत वि [°परतन्त्र] सिद्धान्त के अधीन (पचव)। °वलिय वि [°वलिक] सिद्धान्तों का अच्छा जानकार (भग ८, ८)। °ववहार पु [°व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार (वव)।

आगम सक [आ + गम्] प्राप्त करना। संकृ आगमित्ता (सूअ २, ७, ३६)।

आगमण न [आगमन] आगमन (आ ४)।

आगमि वि [आगमिन्] आने वाला, आगामी (विसे ३१५४)।

आगमिअ वि [आगमित] विदित, ज्ञात, 'तत्थ अच्छंतो आगमिओ' (सुपा १, ३)।

आगमिय वि [आगमिक] १ शास्त्र-सम्बन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित (उवर १५१)। २ शास्त्रोक्त वस्तु को ही माननेवाला (सम्म १४२)।

आगमिर वि [आगन्तृ] आनेवाला, आगमन करनेवाला (सण)।

आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] १ आगामी, होनेवाला (पउम ११८, ६३)। २ आनेवाला (सम १५३)।

आगमिस्सा स्त्री [आगमिष्यन्ती] भविष्य-काल, 'अईअकालम्मि आगमिस्साए' (पंच ६०)।

आगमेस } देखो आगमिस्स (अंत १६,
आगमेसि } औप)।

आगम्म देखो आगम = आ + गम्।

आगय वि [आगत] १ आया हुआ (प्रासू ५)। २ उत्पन्न (णाया १, ७)।

आगर देखो आकर = आकर (आचा, उप ८३३ टी)।

आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक, खान का काम करनेवाला (पण्ह १, २)।

आगरिस पु [आकर्ष] १ ग्रहण, उपादान (विसे २७८०, सम १४७)। २ खींचाव (विसे २७८०, हे १, १७७)। ३ ग्रहण कर छोड देना (आचू)। ४ प्राप्ति (भग २५, ७)।

आगरिस सक [आ + कृष्] खींचना। वकृ आगरिसंत (धर्मसं ३७२)।

आगरिसग वि [आकर्षक] १ खींचनेवाला। २ पु अयस्कान्त, लोह-चुम्बक (आवम)।

आगरिसण न [आकर्षण] खींचाव (सम्मत्त २१५)।

आगरिसणी स्त्री [आकर्षणी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।

आगरिसिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (सुपा १६६, महा)।

आगल सक [आ + कलय्] १ जानना। २ लगाना। ३ पहुँचाना। ४ संभावना करना। आगलेइ (उव)। आगलेंति (भग ३, २)। संकृ 'हरिय खम्मम्मि आगलेऊण' (महा)।

आगल्ल वि [आग्लान] ग्लान, बीमार (बृह १)।

आगस सक [आ + कृष्] खींचना। आगसाहि (आचा २, ३, १, १४)। संकृ. आगसिउ (निसे २२२)।

आगह देखो आगाह। संकृ आगहइत्ता (दस ५, १, ३१)।

आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत (विसे २२०४)।

आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दु:साध्य, 'कडुगोसहव्व आगाढरोगिणो रोगममदच्छ' (उप ७२८ टी), 'नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीए वा अन्नमन्नस्स मोए आइइत्तए, नन्नत्थ आगढेहिं रोगायंकेहिं' (कस)। २ अपवाद, खास कारण (पचभा)। ३ अत्यन्त गाढ (निचू)। °जोग पु [°योग] योग-विशेष, गणि-योग (ओघ ५८८)। °पण्ण न [°प्रज्ञ] शास्त्र आगम, 'आगाढपण्णेसु य भावियप्पा' (वव)। °सुय न [°श्रुत] आगम-विशेष (निचू)।

आगामि वि [आगामिन्] आनेवाला (सुपा ९)।

आगार सक [आ + कराय्] बुलाना, आह्वान करना। सकृ आगारेऊण (आव)।

आगार न [आगार] १ घर, गृह (णाया १, १, महा)। २ वि गृहस्थ, गृही (ठा)। °त्थ वि [°स्थ] गृही (पि ३०९)।

आगार पु [आकार] १ अपवाद (उप ७२८ टी, पडि)। २ इंगित, चेष्टा-विशेष (सुर ११, १६२)। ३ आकृति, रूप (सुपा ११७)।

आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-सबन्धी (विसे)।

आगारिय वि [आकारित] १ आहूत। २ उन्मारित, परित्यक्त (आव)।

आगाल पु [आगाल] १ समान प्रदेश मे रहना। २ सम भाव से रहना (आचा)। ३ उदीरणा-विशेष (राज)।

आगास पुन [आकाश] आकाश, अन्तराल (उवा)। °गमा स्त्री [°गमा] विद्या-विशेष, जिसके बल मे आकाश मे गमन कर सकता है (पउम ७, १४४)। °गामि वि [°गामिन्] आकाश मे गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति (आचा)। °जोइणी स्त्री [°योगिनी] पक्षि-विशेष, 'आगासजोइणीए निसुओ सद्दोवि वामपासम्मि' (सुपा १८५)। °त्थिकाय पु [°ास्तिकाय] आकाश-प्रदेशो का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य (पण्ण १)। °थिग्गल न [दे] मेघरहित आकाश का भाग (आवम)। °फलिह, °फालिय पु [°स्फटिक] निर्मल स्फटिक-रत्न (राय, औप)। °फालिया स्त्री [°फालिका] एक मीठा द्रव्य (पण्ण १७)। °इवाइ वि [°ातिपातिन्] विद्या आदि के बल से आकाश मे गमन करनेवाला (औप)।

आगासिय वि [आकाशित] आकाश को प्राप्त (औप)।

आगासिय वि [आकर्षित] खीचा हुआ (औप)।

आगासिया स्त्री [आकाशिकी] आकाश मे गमन करने की लब्धि-शक्ति (सूअनि १६३)।

आगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, स्नान करना। आगाहइत्ता (दस ५, १, ३१)।

आगिइ स्त्री [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति (सुर २, २२, विपा १, १)।

आगिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (सुपा २३२)।

आगी देखो आगिइ, 'छिण्णावलिरुयगागी-दिसासु सामाइय न ज तासु' (विसे २७०७)।

आगु पु [आकु] अभिलाष, इच्छा (आक)।

आघ देखो आघव। 'सूत्रकृताग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दसवाँ अध्ययन (सूअ १,१०)।

आघंस सक [आ + घृष्] घर्षण करना (निचू)।

आघंस सक [आ + घृष्] घिसना, थोडा घिसना। आघसिज्ज (आचा २, २, १, ४)।

आघस वि [आघर्ष] जल के साथ घिसकर जो पिया जा सके वह (पिंड ५०२)।

आघसण न [आघर्षण] एक बार का घर्षण (निचू)।

आघयण न [दे] वध-स्थान (णाया १, ६—पत्र १६७)।

आघव सक [आ + ख्या] १ कहना, उपदेश देना। २ ग्रहण करना। आघवेइ (ठा)। कवकृ आघविज्जए (भग)। भूका आघं (सूअ, पि ८८)। वकृ आघवेमाण (पि ४४)। हेकृ आघवित्तए (पि ८८)।

आघवणा स्त्री [आख्यान] कथन, उक्ति (णाया १, ९)।

आघवइत्तु वि [आख्यायक] कथक, वक्ता, उपदेशक (ठा ४, ४)।

आघविय वि [आख्यात] उक्त, कहा हुआ (पि ४४)।

आघविय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत (अणु २०)।

आघवेत्तग वि [आख्यापयितृक] उपदेष्टा, वक्ता (आचा)।

आघस सक [आ + घस्] थोडा घिसना। आघसावेज्ज (निचू)।

आघा सक [आ + ख्या] कहना। (आचा)।

आघा सक [आ + घ्रा] सूँघना। वकृ आघायत (उप ३५७ टी)।

आघाय वि [आख्यात] कथित, उक्त (आचा)।

आघाय वि [आख्यात] १ उक्त, कथित (सूअ १, १३, २)। २ न उक्ति, कथन (सूअ १, १, २, १)।

आघाय पुं [आघात] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। २ विनाश (उत्त ५, ३२, सुख ५, ३२)।

आघाय पुं [आघात] १ वध। २ चोट, प्रहार (कुमा, णाया १, ९)।

आघायत देखो आघा = आ + घ्रा।

आघाव देखो आघव। आघावेइ (पि ८८; २०२)।

आघुट्ठ वि [आघुष्ट] घोषित, जाहिर किया हुआ (भवि)।

आघुम्म अक [आ + घूर्ण्] डोलना, हिलना, काँपना, चलना।

आघुम्मिय वि [आघूर्णित] डोला हुआ, कम्पित, चलित, 'आघुम्मियनयणजुओ' (पउम १०, ३२, ८७, ५६)।

आघोस सक [आ + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना। आघोसेह (स ९०)।

आघोसण न [आघोषण] ढिंढोरा, घोषणा (महा)।

आचक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना। वकृ आचक्खंत (पि २५, ८८, नाट)।

आचक्खिद (शौ) वि [आख्यात] उक्त, कथित (अभि २००)।

आचरिअ वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित। २ न आचरण (प्रासू १११)।

आचाम सक [आ + चामय्] चाटना, खाना, पीना। वकृ आचामत (कुप्र ३६)।

आचार देखो आयार = आचार (कुमा)।

आचारिअ देखो आयरिय = आचार्य (प्राप)।

आचिक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना। कृ आचिक्खणीय (स ४०)।

आचिक्खिअ वि [आख्यात] कथित, उक्त (स ११६)।

आचुण्णिअ वि [आचूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पउम १७, १२०)।

आचेलक्क न [आचेलक्य] १ वस्त्र का अभाव (कप्प)। २ वि आचार-विशेष, 'आचेलक्को धम्मो' (पंचा)।

आच्छेदण न [आच्छेदन] १ नाश। २ वि नाशक (कुमा)।

आजम्ब देखो आगम + आ = गम्। आजम्बइ (प्राकृ ८४)।

आजाइ देखो आयाइ (ठा, स १७८)।

आजि देखो आइ = आजि (कुमा, दे १,४६)।

आजीरण पु [आजीरण] स्वनामख्यात एक जैन मुनि, 'आजीरणो य गीओ' (सया ६७)।

आजीव } पु [आजीव] १ आजीविका,
आजीवग } जीवन निर्वाह का उपाय, 'आजीवमेय तु अबुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियामुवेंति' (सूअ)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपनी जाति, कुल आदि की समानता बतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना (ठा ३, ४)। ३ गोशालक मत का अनुयायी साधु (पन्न)। ४ धन का समूह (सूअ)।

आजीवग पु [आजीवक] १ धन का गर्व (सूअ)। २ सकल जीव (जीव ३ टी)। देखो आजीवय।

आजीवण न [आजीवन] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (वव)।

आजीवणा स्त्री [आजीवना] ऊपर देखो (दस, जीत)।

आजीवय देखो आजीवग, 'आजीवयदिट्ठ तेण पउराणीनिजानिहुल्लपोडीजोणिपमुहायसहस्सा भवंतीमिसाया' (जीव ३)।

आजीविअ वि [आजीविक] गोशालक के मत का अनुयायी (पएण २०, उवा)।

आजीविआ स्त्री [आजीविका] १ निर्वाह (धात)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (उत्त)।

आजुत्त वि [आयुक्त] अप्रमादी (निचू)।

आजुज्झ अक [आ + युध्] लड़ना। हेकृ आजुज्झिदु (शौ) (वेणी १२४)।

आजुह न [आयुध] हथियार (मै २४)।

आजोज्ज देखो आओज्ज (विसे १५०३)।

आडंबर पु [आडम्बर] १ आटोप, ऊपरी दिखाव (पाअ)। २ वाद्य की आवाज (ठा)। ३ यक्ष-विशेष (आचू)। ४ न यक्ष का मन्दिर (पव)।

आडंवर पु [आडम्बर] वाद्य-विशेष, पटह (अणु १२८)।

आडंबरिल्ल वि [आडम्बरवत्] आडम्बरी (पाअ)।

आडविय वि [दे] १ चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ (षड्)।

आडविय वि [आटविक] जंगल में रहनेवाला, जंगली (स १२१)।

आडह सक [आ + दह्] चारो ओर से जलाना। आडहइ (पि २२२, २२३)। आडहति (पि २२२, २२३)।

आडह सक [आ + धा] स्थापन करना, नियुक्त करना। आडहइ। संकृ आडहेत्ता (ओप)।

आडाडा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६४)।

आडासेतीय पु [आडासेतीक] पक्षि-विशेष (पएह १, १)।

आडि स्त्री [आटि] १ पक्षि-विशेष। २ मत्स्य-विशेष (दे ८, २४)।

आडियत्तिय पु [दे] शिबिका-वाहक पुरुष (?) (स ५३७, ५४१)।

आडुआल सक [दे] मिश्र करना, मिलाना। आडुआलइ (दे १, ६६)।

आडुआलि पु [दे] मिश्रता, मिलावट (दे १, ६६)।

आडोय देखो आडोव = आटोप (सुपा २६२)।

आडोलिय वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (णाया १, १८)।

आडोव सक [आ + टोपय्] १ आडम्बर करना। २ पवन द्वारा फुलाना। आडोवेइ (भग)। संकृ आडोवेत्ता (भग)।

आडोव पु [आटोप] आडम्बर (उवा, सण)।

आडोविअ वि [दे] आरोपित, गुस्सा किया हुआ (दे १, ७०)।

आडोविअ वि [आटोपिक] आटोपवाला, स्फारित (पएह १, ३)।

आढई स्त्री [आढकी] वनस्पति-विशेष (पएण १)।

आढग पुन [आढक] १ चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण। २ चार सेर परिमित चीज (ओप, सुपा ६७)।

आढत्त वि [दे] आक्रान्त, 'एत्थंतरम्मि विजयवम्मनरवइणा आढत्तो लच्छिनिलयसामी सूरतेओ नाम नरवई (स १५०)।

आढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध (ओघ ४८२, हे २, १३८)।

आढत्तिअ } वि [आरब्ध] प्रारंभ किया हुआ
आढविअ } (मंगल २३, चेइय १४८)।

आढप्प° देखो आढव।

आढय देखो आढग (महा, ठा ३, १)।

आढव सक [आ + रभ्] आरंभ करना, शुरू करना। आढवइ (हे ४, १५५, धम्म २२)। कर्म आढप्पइ, आढवीअइ (हे ४, २५४)।

आढा सक [आ + दृ] आदर करना, मानना। आढाइ (उवा)। वकृ आढामाण, आढायमाण (पि ५००, आचा)। कवकृ आढज्जमाण (आचा)।

आढा स्त्री [आदर] सम्मान (पव २—गाथा १५५, संबोध ५५)।

आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित (हे १, १४३)।

आढिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट। २ गणनीय, माननीय। ३ अप्रमत्त, उद्युक्त। ४ गाढ, निबिड (दे १, ७४)।

आण सक [ज्ञा] जानना, 'किं न आणह एअं' (से १३, ३)। आणमि (से १५, २८), 'अमिअं पाउअकव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति' (गा २)। आणे (अभि १६७)।

आण सक [आ + णी] लाना, आनयन करना, ले आना। आणइ (पि १७, भवि)। वकृ आणमाणे (णाया १, १६)। हेकृ आणिवि (अप) (भवि)।

आण पुं [आन] १ श्वासोच्छ्वास, साँस। २ श्वास के पुद्गल (पएण)।

°आण देखो जाग = यान (चारु ८)।

आणच्छ देखो आअच्छ । आणच्छइ (पड्)।

आणत्त देखो आणी।

आणतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव (ठा ४, ३)। २ अनुक्रम, परिपाटि, 'आणतरियत्ति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेत्ति वा एगट्ठा' (आचू)।

आणद अक [आ + नन्द्] आनन्द पाना, खुश होना।

आणंद सक [आ + नन्दय्] खुश करना। आणंदेदि (शौ) (नाट)। कृ आणंदिअव्व (रयण १०)।

आणंद पु [आनन्द] १ अहोरात्र का सोलहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)।

आणंद पुं [आनन्द] १ हर्ष, खुशी (कुमा)। २ भगवान् शीतलनाथ के मुख्य-शिष्य (सम १५२)। ३ पोतनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था (पउम ५, ५२)। ४ भावी छठवाँ बलदेव (सम १५४)। ५ नागकुमार-जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १)। ६ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ८ भगवान् महावीर के एक साधु शिष्य का नाम (कप्प)। ९ भगवान् महावीर के दस मुख्य उपासकों (श्रावक-शिष्य) में पहला (उवा)। १० देव-विशेष (ज, दीव)। ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम (निर २, १)। १२ 'उपासगदसा' सूत्र का एक अध्ययन (उवा)। १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (भग)। १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर २, १)। १५ व देश-विशेष (पउम ९८, ६६)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (बृह)। °रक्खिय पु [°रक्षित] स्वनामख्यात एक जैन साधु (भग)।

आणंदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष (सुपा ४४०)। २ वि खुश करनेवाला, आनन्ददायक (स ३१३, रयण ३, सण)।

आणंदवड } पु [दे] पहली वार की रज-
आणंदवस } स्वला का रक्त वस्त्र (गा ४५७, दे १, ७२, पड्)।

आणंदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष, मेरु की पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८)। २ इस नाम की एक पुष्करिणी (राज)।

आणंदिय वि [आनन्दित] १ हर्षप्राप्त (औप)। २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३)।

आणंदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहनेवाला (भवि)।

आणक्ख सक [परि + ईक्ष्] परीक्षा करना। हेकृ आणक्खेउं (ओघ ३६)।

आणच्छ देखो आअच्छ । आणच्छइ (पड्)।

आणट्ठ वि [आनष्ट] सर्वथा नष्ट (उत्त १८, ५०, सुख १८, ५०)।

आणण न [आनन] मुख, मुँह (कुमा)।

आणण न [आनयन] लाना (महा)।

आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह (णाया १, ८, सुर ४, १००)।

आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम (अभि ८१)। °अर त्रि [°कर] आज्ञाकारक, नौकर (से ११, ६५)। °किंकर वि [°किङ्कर] नौकर (पण्ह)। °हर वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक (अभि ८१)।

आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो (उवा, पि ८८)।

आणत्थ न [आनर्थ्य] अनर्थता (समु १५०)।

आणप (अशो) देखो आणव = आ + ज्ञपय्। आणपयति (पि ४)।

आणपाण देखो आणापाण (नव ६)।

आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य (सूअ १, ४, २, १५)।

आणम अक [आ + अन्] श्वास लेना। आणमति (भग)।

आणमणी देखो आणवणी (भास १८, पि ८८, २४८)।

आणय पुन [आनत] १ देवलोक-विशेष (सम ३५)। २ पु उस देवलोक-वासी देव (उत्त)।

आणय पुंन [आनत] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

आणयण न [आनयन] लाना, आनना (श्रा १४, स ३७६)।

आणव सक [आ + ज्ञपय्] आज्ञा देना, फरमाना। आणवइ, आणवेसि (पउम ३३, १००, ९८)। वकृ आणवेमाण (पि ५५१)। कृ आणवेयव्व (महा)।

आणव देखो आणाव = आ + नायय्।

आणवण न [आज्ञापन] आज्ञा, आदेश, फरमाइश (उवा, प्रामा)।

आणवण न [आनायन] मँगवाना (सुपा ५७८)।

आणवणिय वि [आज्ञापनिक] आज्ञा फरमानेवाला (राय २५)।

आणवणिया स्त्री [आज्ञापनिका, आनायनिका] देखो दोनों आणवणी (ठा २, १)।

आणवणी स्त्री [आज्ञापनी] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना। २ हुकुम करने से होनेवाला कर्मबन्ध (नव १९)।

आणवणी स्त्री [आनायनी] १ क्रिया-विशेष, मँगवाना। २ मँगवाने से होनेवाला कर्म-बन्ध (नव १९)।

आणा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (ओघ ६०)। २ उपदेश, 'एसा आणा निग्गंथिया' (आचा)। ३ निर्देश, 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा' (वव)। ४ आगम, सिद्धान्त (विसे ८९४, णदि)। ५ सूत्र की व्याख्या (औप)। °ईसर पु [°ईश्वर] आज्ञा फरमानेवाला मालिक (विपा १, १)। °जोग पु [°योग] १ आज्ञा का सम्बन्ध (पंचा)। २ शास्त्र के अनुसार कृति, 'पाव विसाइतुल्लं आणाजोगो अ मंतसमो' (पचव)। °रुइ स्त्री [°रुचि] सम्यक्त्व-विशेष (उत्त)। २ वि आगमों पर श्रद्धा रखनेवाला (पच)। °व वि [°वत्] आज्ञा माननेवाला (पंचा)। °वत्त न [°पत्र] आज्ञापत्र, हुकुमनामा (से १, १८)। °ववहार पु [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष (पचा)। °विजय न [°विचय, °विजय] धर्मध्यान-विशेष, जिसमें आज्ञा— आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है (औप)।

आणाइ पु [दे] शकुनि, पक्षी (दे १, ६४)।

आणाइत्त त्रि [आज्ञावत्] आज्ञा मानने-वाला (पउम)।

आणाइय वि [आनायित] मँगाया हुआ (कुमा ७, २१)।

आणापाण पु [आनप्राण] १ श्वासोच्छ्वास (आव १०४)। २ श्वासोच्छ्वास-परिमित समय (अणु)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति (भग ६, ४)।

आणापाणु स्त्री [आनप्राण] ऊपर देखो, 'आणापाणूओ' (भग २५, ५)।

आणापाणुय पु [आनप्राणक] श्वासो-च्छ्वास-परिमित काल (कप्प)।

आणाम पु [आनाम] श्वास अन्तःश्वास (भग)।

आणामिय वि [आनामित] १ थोड़ा नमाया हुआ (पण्ह १, ४)। २ अधीन किया हुआ (पउम ६८, ३७)।

आणाल पु [आलान] १ बन्धन। २ हाथी बाँधने की रज्जु—डोरी। ३ जहाँ पर हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ, खील (हे २, ११७; प्राप्र)। °क्खंभ, °खंभ पुं [°स्तम्भ] जहाँ हाथी बाँधा जाता है वह खम्भा (हे २, ९७)।

आणाव देखो आणव = आ + ज्ञपय्। आणा-वइ (स १२६)। कवकृ. आणाविज्जंत (सुपा ३२३)। कृ. आणावेयव्व (आचा)।

आणाव सक [आ + नायय्] मँगवाना। आणावइ (भवि)। संकृ. आणाविय (नाट)।

आणाव (अप) सक [आ + नी] लाना। आणावइ (प्राकृ १२०)।

आणावण न [आनायन] दूर से मँगवाना, 'सममाणवणे पेसणा धीया माणागमेण अन्नेहिं' (संबोध ७)।

आणावण न [आज्ञापन] आज्ञा, हुकुम (पण्ह)।

आणाविय वि [आज्ञापित] जिसको हुकुम किया गया हो वह, फरमाया हुआ (सुपा २५१)।

आणाविय वि [आनायित] मँगाया हुआ (सुपा ३८५)।

आणि देखो आणी। कृ. आणियव्व (रयण ६)। संकृ. आणिय (नाट)।

आणिअ वि [आनीत] लाया हुआ (हे १, १०१)।

आणिअ [दे] देखो आढिअ (दे १, ७४)।

आणिक्क वि [दे] टेढ़ा, वक्र (से ६, ८६)।

आणिक्क न [दे] तिर्यक् मैथुन (दे १, ६१)।

आणी सक [आ + नी] लाना। कर्म. आणीअइ (पि ५४८)। वकृ. 'आणतीए गुणेसु, दोसेसु परमुहं कुणतीए' (सुद्रा २३६)। संकृ. आणीय (विसे ९१६)। कवकृ. आणिज्जंत (सुपा १६३)।

आणीय वि [आनीत] लाया हुआ (हे १, १०१; काल)।

आणुअ न [दे] १ मुख, मुँह (दे १, ६२, षड्)। २ आकार, आकृति (दे १, ६२)।

आणुओगिअ वि [आनुयोगिक] व्याख्या-कर्ता (णंदि ५१)।

आणुकंपिय वि [आनुकम्पिक] दयालु, कृपालु (राज)।

आणुगामि वि [अनुगामिन्] नीचे देखो (विसे ७३६)।

आणुगामिय वि [आनुगामिक] १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (भग)। २ न अवधिज्ञान का एक भेद (श्रावम)।

आणुगुण्ण } न [आनुगुण्य] १ औचित्य,
आणुगुन्न } अनुरूपता (पंचा ६, २६)। २ अनुकूलता (धर्मसं ११८६)।

आणुधम्मिय वि [आनुधर्मिक] उत्तर धर्म-वालों को भी अभीष्ट, सर्वधर्म-सम्मत (आचा)।

आणुपाणु देखो आणापाणु (कम्म ५, ४०)।

आणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] अनुक्रम, परिपाटी (निर १, १)।

आणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] क्रम, परिपाटी (अणु)। °णाम, °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

आणुलोमिअ वि [आनुलोमिक] अनुलोम, अनुकूल, मनोहर (दस ७, ५६)।

आणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] अनुसरण (ग ६१)।

आणूव पुं [अनूप] जलप्रदेश (धर्मसं ६२६)।

आणूव पु [दे] श्वपच, डोम (दे १, ६४)।

आणे सक [आ + नी] लाना, ले आना। आणेइ (महा)। कृ. आणेयव्व (सुपा १६३)। संकृ. आणेऊण (महा)।

आणे सक [ज्ञा] जानना। आणेइ (नाट)।

आणेसर देखो आणा-ईसर (श्रा १०)।

आत देखो आय = आत्मन् (ठा १)।

आतव देखो आयंब = आताम्र (स २६१)।

आतित्थ देखो आइत्थ (कुप्र १००, २८६)।

आत्त देखो अत्त = आत्मन्, 'आत्तहियं खु दुहेण लब्भइ' (सूअ १, २, २, ३०)।

आत्त देखो अत्त = आत्त (अणु २१)।

आत्त त्रि [आत्मीय] स्वकीय (अणु २१)।

आदंस } देखो आयंस (गा २०४, प्रति
आदंसग } ८, सूअ १, ४)।

आद (शौ) देखो अत्त = आत्मन् (द्रव्य ६)।

आद देखो आइ = आ + दा। आदए (सूअ १, ८, १६)।

आदण्ण } वि [दे] आकुल, व्याकुल, घब-
आदन्न } ड़ाया हुआ (उप पृ २२१, हे ४, ४२२)।

आदयाण वि [आददान] ग्रहण करता हुआ (श्रु १३८)।

आदर देखो आयर = आ + दृ। आदरइ (हे ४, ८३)।

आदरिस देखो आयंस (कुमा, दे २, १०७)।

आदाउ वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला (विसे १५६८)।

आदाण देखो आयाण (ठा ४, १), 'तस्मा-दाणेण सज्झामि तुमं' (पउम ६५, ६०, उवा)।

आदाण न [आर्द्रहण] उबाला हुआ, गरम किया हुआ (जल तैल आदि) (उवा)।

आदाणिय न [आदानीय] लाभ, नफा (गुल ४, ६)।

आदाणीय देखो आयाणीय (कप्प)।

आदाय देखो आया = आ + दा।

आदि देखो आइ = आदि (कप्प, सूअ १, ५)।

आदिच्च देखो आइच्च (ठा ५, ३, ८)।

आदिच्छा स्त्री [आदित्सा] ग्रहण करने की इच्छा (श्राव)।

आदिज्ज देखो आएज्ज (भग)।

आदिट्ठ देखो आइट्ठ (अभि २०६)।

आदित्त देखो आइच्च (वज्जा १६०)।

आदित्तु वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला (ठा ७)।

आदिय सक [आ + दा] ग्रहण करना। आदियइ (उवा)। प्रयो. आदियावेंति (सूअ २, १)।

आदिल्ल } देखो आइल्ल (पि ५९५)।
आदिल्लग }

आदी स्त्री [आदी] इस नाम की एक महानदी (ठा ५, ३)।

आदीण वि [आदीन] १ अत्यंत दीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न दूषित भिक्षा। °भोइ वि [°भोजिन्] दूषित भिक्षा को लेनेवाला, 'आदीणभोईवि करेति पावं' (सूअ १, १०)।

आदीणिय वि [आदीनिक] अत्यन्त दीन-सबन्धी, 'आदीणिय दुक्कडिय पुरत्था' (सूअ १, ५)।

आदु (शौ) देखो अदु (त्रि ९०)।

आदेज्ज देखो आएज्ज (पराह १, ४)।

आदेस देखो ओएस = आदेश (कुमा, वव २ ८)।

आदेस पु [आदेश] व्यपदेश, व्यवहार (सूअ १, ८, ३)। देखो आएस = आदेश (सूअ २, १, ५६)।

आधरिस सक [आ + धर्षय्] परास्त करना, तिरस्कारना। आधरिसिमि (आवम)।

आधा देखो आहा (पिंड)।

आधार देखो आहार = आधार (पराह २,५)।

आधोरण पु [आधोरण] हस्तिपक, महावत, हाथीवान् (धर्मवि १३६)।

आनय देखो आणय (अनु)।

आनामिय देखो आणामिय (पराह १, ४)।

आपण देखो आवण (अभि १८८)।

आपण्ण देखो आवण्ण (अभि ६५)।

आपत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (संबोध ३५, पव १४९)।

आपाइय वि [आपादित] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह। २ उत्पादित, जनित (विसे १७४९)।

आपायण न [आपादन] संपादन (श्रावक ८२, पचा ६, १६)।

आपीड पु [आपीड] शिरोभूषण (श्रा २८)।

आपीण देखो आवीण (गउड)।

आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना, सम्मति लेना। आपुच्छइ (महा)। वकृ. आपुच्छंत (पि ३९७)। कृ. आपुच्छणीय (णाया १, १)। संकृ आपुच्छित्ता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिउं, आपुच्छिय (पि ५८२, ५८३, कप्प, ठा ५, १)।

आपुच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुमति (णाया १, ६)।

आपुट्ठ वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह (सुर १०, ५१)।

आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे १, २०)।

आपूर पु [आपूर] पूरनेवाला, 'मयणामरापूर सरिसं' (कप्प)।

आपूर देखो आऊर। कर्म. आपूरिज्जइ (महा)। वकृ. आपूरमाण, आपूरेमाण (भग, राय)।

आपेड }
आपेड्ड } देखो आपीड (पि १२२, महा)।
आपेल्ल }

आप्पण न [दे] पिष्ट, आटा (षड्)।

आफंस पु [आस्पर्श] अल्प स्पर्श (हे १,४४)।

आफर पु [दे] द्यूत, जुआ (दे १, ६३)।

आफाल सक [आस्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना। संकृ आफालित्ता, आफालिऊण (पि ५८२, ५८६)।

आफालण देखो अप्फालण (गा ५४६)।

आफुण्ण वि [दे] आक्रान्त (अणु १६२)।

आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाड़ना (पराह १, ३)।

आबंध सक [आ + बन्ध्] मजबूत बाँधना। वकृ. आबंधंत (हे १, ७)। संकृ आबंधिऊण (पि ५८६)।

आबंध पु [आबन्ध] संबन्ध, संयोग (गउड)।

आबद्ध वि [आबद्ध] बंधा हुआ (स ३५८)।

आबाहा स्त्री [आबाधा] १ अल्प बाधा (णाया १, ४)। २ अन्तर (सम १५)। ३ मानसिक पीडा (बृह)।

आभंकर पु [आभङ्कर] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ न विमान-विशेष (सम ८)।

°पभंकर न [°प्रभङ्कर] विमान-विशेष (सम ८)।

आभक्खाण देखो अब्भक्खाण (उवा)।

आभट्ठ वि [आभाषित] १ कथित, उक्त (सुपा १५१)। २ संभाषित (सुर २,२४८)।

आभरण न [आभरण] अलंकार, आभूषण (पि ६०३)।

आभव्व वि [आभव्य] होने योग्य, संभाव्य (वव, सुपा ३०७)।

आभा स्त्री [आभा] प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा, औप)।

आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी, 'अणेगाण जम्ममरणाण आभागी भवेज' (वसु, णाया १, १८)।

आभार पु [आभार] बोझ, भार (सुपा २३६)।

आभास सक [आ + भाष्] कहना, संभाषण करना। आभासइ (हे ४, ४४७)।

आभास पु [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो। २ विपरीत, 'करणाभासेहिं' (कुमा)।

आभासिय पु [आभाषिक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पराह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाला, 'कहि णं भंते! आभासियमणुयाणं आभासियदीवे नामं दीवे' (जीव ३, ठा ४, २)।

आभासिय देखो आभट्ठ (निर)।

आभिओइअ देखो आभिओगिय (महा)।

आभिओग पु [आभियोग्य] १ किंकर-स्थानीय देव-विशेष (ठा ४, ४)। २ नौकर, किंकर (राय)। ३ किंकरता, नौकरी (दस ९, २)।

आभिओगा स्त्री [आभियोग्या] आभियोगिक भावना (उत्त ३६, २५५)।

आभिओगि वि [आभियोगिन्] किंकर-स्थानीय देव (दस ६)।

आभिओगिय वि [आभियोगिक] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलानेवाला (पराण २०)। २ नौकर स्थानीय देव-विशेष (णाया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म (पंचा, महा)।

आभिओगिय वि [आभियोगिन] वशीकरण आदि से संस्कृत (श्राव)।

आभिओग्ग देखो आभिओग (पण्ण २०)।

आभिग्गहिअ वि [आभिग्रहिक] १ अभिग्रह-सबन्धी (पंचा ४, ८)। २ न मिथ्यात्व-विशेष (पच ४, २)।

आभिग्गहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा से संबन्ध रखनेवाला। २ प्रतिज्ञा का निर्वाह करनेवाला (श्राव)। ३ न. मिथ्यात्व-विशेष (श्रा ६)।

आभिणंदिय पु [आभिनन्दित] श्रावण मास (चंद)।

आभिट्ट } वि [दे] प्रवृत्त, 'आभिट्ट पर-
आभिडिय } मरण' (पउम ४,८२,६,१६२, वज्जा ४२)।

आभिणिबोहिग देखो आभिणिबोहिय (धर्मसं ८२३)।

आभिणिबोहिय न [आभिनिबोधिक] इन्द्रिय और मन से होनेवाला प्रत्यक्षज्ञान-विशेष (सम ३३)।

आभिप्पाइअ वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-वाला (अणु १४५)।

आभिसेक्क वि [आभिषेक्य] १ अभिषेक के योग्य (निर १, १)। २ मुख्य, प्रधान, 'आभि-सेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह' (औप)।

आभीर } पुं [आभीर] एक शूद्र-जाति,
आभीरिय } अहीर, गोवाला (सूअ १, ८, सुर १, ६२)।

आभूअ वि [आभूत] उत्पन्न (निर १, १)।

आभेडिय [दे] देखो आभिट्ट (उप पृ ४२)।

आभोइअ वि [आभोगित] देखा हुआ (कप्प)।

आभोग पुं [आभोग] १ विलोकन, देखना (उत्त १८७)। २ प्रदेश, स्थान (सुर २, २२१)। ३ उपकरण, साधन (ओप ३६)। ४ प्रति-लेखन (ओप ३)। ५ उपयोग, ख्याल (भग)। ६ विस्तार (णाया १, १)। ७ ज्ञान, जानना (भग २५, ६, ठा ४)। देखो आभोय = आभोग।

आभोगण न [आभोगन] ऊपर देखो (णंदि)।

आभोगि वि [आभोगिन] परिपूर्ण, 'जह समत्तो तिरयाओ जाओ जगतिरयाभोगी' (सुपा २७५)। °णी स्त्री [°नी] मानसिक निर्णय उत्पन्न करानेवाली विद्या-विशेष (वृह)।

आभोय सक [आ + भोगय्] १ देखना। २ जानना। ३ ख्याल करना। आभोएइ (उवा, णाया)। वकृ आभोएमाण (कप्प)। संकृ आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ (दस ५, महा, पचव)।

आभोय पुं [आभोग] १ सर्प की फणा (स ६१०)। २ देखो आभोग (श्राव, महा, सुर ३, ३२)।

आम अ [आम] अनुमति प्रकाशक अव्यय—हाँ (गा ४१७, सुर २, २४५, स ४५६)।

आम अ [भवन्] आप (प्राकृ ८१)।

आम पु [आम] १ रोग, पीडा (से ६, ४४)। २ वि. अपक्व, कच्चा (श्रा २०)। ३ अशुद्ध, अपवित्र (आचा)। °जर पु [°ज्वर] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार (गा ५१)।

आमइ वि [आमयिन] रोगी (वव १)।

आम अ [आम] १ स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ (सुख २, १३)। २ अतिशय, अत्यन्त (धर्मसं ६४६)।

आमंड न [दे] बनावटी आमला का फल, कृत्रिम आमलक (उप पृ २१४, उप १४५ टी)।

आमंडण न [दे] भाण्ड, पात्र (दे १, ६८)।

आमंत सक [आ + मन्त्रय्] १ आह्वान करना, संबोधन करना। २ अभिनन्दन करना। वकृ आमंतेमाण (आचा)। संकृ आमंतित्ता (कप्प), आमंतिय (सूअ १, ४)।

आमंतण न [आमन्त्रण] आह्वान, संबोधन (वव)। °वयण न [°वचन] संबोधन-विभक्ति (विसे ३४७७)।

आमंतणी स्त्री [आमन्त्रणी] १ संबोधन की भाषा, आह्वान की भाषा (दस ६)। २ आठवीं संबोधन-विभक्ति (ठा ८)।

आमंतिय वि [आमन्त्रित] संबोधित (विपा १, ६)।

आमग देखो आम (णाया १, ६)।

आमग्घाय पु [अमाघात] अमारि-प्रदान, हिंसा-निवारण (पचा ६, १५, २०, २१)।

आमज्ज सक [आ + मृज्] एक वार साफ करना। आमज्जेज्ज (आचा)। वकृ आमज्जंत (निचू)। प्रयो. आमज्जावेत (निचू)।

आमद्द पु [आमर्द] संघर्ष, आघात (कुमा)।

आमय पु [आमय] रोग, दर्द (स ५६६, स्वप्न ६०)। °करणी स्त्री [°करणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आमय वि [आमत] संमत, अनुमत (विसे १३६)।

आमराय पु [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा (ती ७)।

आमरिस पु [आमर्ष] स्पर्श (विसे ११०६)।

आमल पुन [आमलक] आमला का फल (सम्मत्त १५६)।

आमलई स्त्री [आमलकी] आमला का पेड (दे)।

आमलकप्पा स्त्री [आमलकल्पा] नगरी-विशेष (णाया २, १)।

आमलग पु [आमरक] १ चारो ओर से मारना। २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन (ठा १०)।

आमलग } पुन [आमलक] १ आमला का
आमलय } पेड (ठा ४)। २ आमला का फल, 'मुक्खोवाओ आमलगो विव करतले देसिओ भगवया' (वसु, कुमा)।

आमलय न [दे] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान (दे १, ६७)।

आमसिण वि [आमसृण] १ थोडा चिकना। २ उल्लसित (से १२, ४३)।

आमिल्ल सक [आ + मुच्] छोडना। आमिल्लइ (भवि)।

आमिस न [आमिष] नैवेद्य (पचा ६, २६, कुप्र ४२३, ती १३)।

आमिस न [आमिष] १ मांस (णाया १, ४)। २ वि मनोहर, सुन्दर (से ६, ३१)। ३ आसक्ति का कारण, 'आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा' (उत्त १४)। ४ आहार, फलादि भोज्य वस्तु (पचा ६)।

आमुंच सक [आ + मुच्] १ छोडना। २ उतारना। ३ पहनना। वकृ आमुंचत (आक ३८)।

आमुक्क वि [आमुक्त] १ त्यक्त (गा ५३६, गउड)। २ उतारा हुआ (आक ३८)। ३ परि-हित (वेणी १११ टी)।

आमुट्ठ वि [आमृष्ट] १ स्पृष्ट। २ उलटा किया हुआ (ओघ)।

आमुय सक [आ + मुच्] छोड़ना, त्यागना। आमुयइ (गउड)।

आमुस सक [आ + मृश्] थोड़ा या एक वार स्पर्श करना। वकृ आमुसत, आमुसमाण (ठा १, आचा, भग ८, ३)।

आमेडणा स्त्री [आम्रेडना] विपर्यस्त करना, उलटा करना (पण्ह १, ३)।

आमेल पु (दे) लट, जटा (दे १, ६२)।

आमेल, आमेलग, आमेलय पुं [आपीड] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरोभूषण (हे १, १०५, पि १२२, भग ६, ३३)।

आमेल्ल देखो आमेल = आपीड (उवा २०६)।

आमेल्लिअ वि [आपीडित] अवतंसित, शिरोभूषण से विभूषित (से ६, २१)।

आमोअ अक [आ + मुद्] खुश होना। सकृ आमोएवि (अप) (भवि)।

आमोअ पुं [दे आमोद] हर्ष, खुशी (दे १, ६४)।

आमोअ पुं [आमोद] सुगन्ध, अच्छी गन्ध (से १, २३)।

आमोअ पुं [आमोद] वाद्य विशेष (राय ४६)।

आमोअअ वि [आमोदक] १ सुगन्ध उत्पन्न करनेवाला। २ आनन्द-जनक (से ६, ४०)।

आमोअअ वि [आमोदद] सुगन्ध देनेवाला (से ६, ४०)।

आमोइअ वि [आमोदित] हृष्ट, हर्षित (भवि)।

आमोक्ख पु [आमोक्ष] मोक्ष, मुक्ति, पूर्ण छुटकारा (सूअ १, १, ४, १३)।

आमोक्खा स्त्री [आमोक्षा] १ छुटकारा। २ परित्याग (सूअ १, ३, पि ४६०)।

आमोड पुं [दे] जूट, लट, समूह (दे १, ६२)।

आमोडग न [आमोटक] १ वाद्य-विशेष (आचू)। २ फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्धन (उत्तनि ३)।

आमोडण न [आमोटन] थोड़ा मोड़ना (पण्ह १, १)।

सामोडिअ वि [आमोटित] मर्दित (माल ६०)।

आमोद, आमोय देखो आमोअ (स्वप्न ५२, सुर ३, ४१, काल)।

आमोय पुं [आमोक] कतवार-पुञ्ज, कतवार का ढेर, कूड़े का पुञ्ज (आचा २, ७, ३)।

आमोरअ वि [दे] विशेषज्ञ, अच्छा जानकार (दे १, ६६)।

आमोस पुं [आमर्श, °र्ष] स्पर्श, छूना, 'सफरिसणमामोसो' (पण्ह २, १ टी, विसे ७८१)।

आमोस पु [आमोष] चोर (उत्त ६, २८)।

आमोसग वि [आमोषक] १ चोर, चोरी करनेवाला (ठा ५, २)। २ चोरो की एक जाति (उर २, ६)।

आमोसहि पु [आमर्शौषधि] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र मे ही सब रोग नष्ट होते हैं (पण्ह २, १, औप)।

आय पु [आय] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा (अणु)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। ३ कारण, हेतु (विसे १२२६, २६७६)। ४ अध्ययन, पठन (विसे ६५८)। ५ गमन (विसे २७६२)।

आय पु [आय] अध्ययन, शास्त्रांश-विशेष (अणु २५०)।

आय वि [आज] १ अज-सम्बन्धी। २ बकरे के बाल से उत्पन्न (वस्त्रादि) (आचा)।

आय वि [आगत] आया हुआ (काल)।

आय वि [आत्त] गृहीत, 'आयचरित्तो करेइ सामण्णं, (सथा ३६)।

आय पुं [आगस्] १ पाप। २ अपराध, गुनाह (श्रा २३)।

आय पुस्त्री [आत्मन्] १ आत्मा, जीव (सम १)। २ निज, स्वय, 'अहालहुस्सगाइ रयणाइ गहाय आयाए एगतमत अवक्कमति' (भग ३, २)। ३ शरीर, देह (णाया १, ८)। ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण (आचा)। °गुत्त वि [°गुप्त] सयत, जितेन्द्रिय, 'आयगुत्ता जिइंदिया' (सूअ)। °जोगि वि [°योगिन्] मुमुक्षु, ध्यानी (सूअ)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु, 'एव से भिक्खू आयट्ठी' (सूअ)। °तत वि [°तन्त्र] स्वाधीन, स्वतन्त्र (राज)। °तत्त न [°तत्त्व] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय (आचा)। °प्पमाण वि [°प्रमाण] साढे तीन हाथ का परिमाण वाला (पव)। °प्पवाय न [°प्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग ग्रन्थ का एक भाग, सातवा पूर्व (सम २६)। °भाव पु [°भाव] १ आत्म-स्वरूप। २ निज अभिप्राय (भग)। ३ विषयासक्ति 'विणइज्जओ सव्वह आयभाव' (सूअ)। °य पु [°ज] पुत्र, लड़का (भवि)। °रक्ख वि [°रक्ष] अङ्गरक्षक (णाया १, ८)। °व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्मगुणो से सपन्न (आचा)। °हम्म वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति मे ले जानेवाला। २ देखो आहाकम्म (पिंड)।

आय° देखो आउ, 'किंचायरक्खिओ जो पुरिसो सो होइ वरिससयआऊ' (सुपा ४५३)।

आयइ स्त्री [आयति] भविष्य काल (सुर ४, १३१)।

आयइजणग न [आयतिजनक] तपश्चर्या-विशेष (पव २७१)।

आयइत्ता देखो आइ = आ + दा।

आयंक पु [आतङ्क] १ दुःख। २ पीडा (आचा)। ३ दुःसाध्य रोग, आशु-घाती रोग (औप)।

आयंकि वि [आतङ्किन्] रोगी, रोग युक्त (ठा ५, ३, टी—पत्र ३४२)।

आयंगुल न [आत्माङ्गुल] परिमाण का एक भेद,

'जेण जया मणूसा, तेसिं ज होइ माणरूव तु।
त भणियमिहायगुलमणियमाण पुण इम तु।'
(विसे ३५० टी)।

आयंच सक [आ + तञ्च्] सींचना, छिड़कना। आयचइ, आयचामि (उवा)।

आयंचणिया स्त्री [आतञ्चनिका] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमे वह पात्र बनाने के समय मिट्टीवाला पानी रखता है (भग १५)।

आयंचणी स्त्री [आतञ्चनी] ऊपर देखो (भग १५)।

आयंत वि [आचान्त] जिसने आचमन किया हो वह (णाया १, १, स १८१)।

आयंत देखो आया = आ + या।

आयंतम वि [आत्मतम] आत्मा को खिन्न करनेवाला (ठा ४, २)।

आयंतम वि [आत्मतमस्] १ अज्ञानी, अजान। २ क्रोधी (ठा ४, २)।

आयंदम वि [आत्मदम] १ आत्मा को शान्त

[illegible]नेवाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करनेवाला। २ अश्व आदि को संयत रखने को सिखानेवाला (ठा ४, २)।

आयंप पुं [आकम्प] १ काँपना, हिलना। २ कँपानेवाला (पउम ६६, २८)।

आयंपिय वि [आकम्पित] कँपाया हुआ (स ३५३)।

आयंब अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयंबइ (हे ४, १४७)।

आयंब } वि [आताम्र] थोड़ा लाल
आयंबिर } (औप; सुर ३, ११०; सुपा ६, १४८)।

आयंबिल न [आचाम्ल] तप-विशेष, आंबिल ([illegible])। °वड्ढमाण न [°वर्धमान] तपश्चर्या-विशेष (अंत ३२; महा)।

आयंबिलिय वि [आचाम्लिक] आम्बिल-तप करनेवाला (ठा ५; पण्ह २, १)।

आयंभर } वि [आत्मम्भरि] स्वार्थी, अकेल-
आयंभरि } पेटू (ठा ४, ३)।

आयंव अक [आ + कम्प्] काँपना, हिलना (प्राकृ)।

आयंस } पुं [आदर्श] १ दर्पण (पण्ह १,४;
आयंसग } सुज्ज १,२)। २ बैल आदि के गले का भूषण-विशेष (अणु)। °मुह पुं [°मुख] १ द्वीप-विशेष। २ उसमें निवासी मनुष्य (ठा ४, २)।

आयक्ख देखो आइक्ख। आयक्खाहि (भग)।

आयग वि [आजक] देखो आय = आज (आचा)।

आयज्झ अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयज्झइ (हे ४, १४७; षड्)। वकृ आयज्झंत (कुमा)।

आयट्ट सक [आ + वर्तय्] १ फिराना, घुमाना। २ उबालना। वकृ आयट्टंत (से ५, ७५; ८, १६)। कवकृ आयट्टिज्जमाण (सुपा ४, ६)।

आयट्टण न [आवर्तन] फिराना (सुपा ४२०)।

आयड्ढ सक [आ + कृष्] खींचना। आयड्ढइ (महा)। कर्म. आयड्ढिज्जइ (से ४, २०)। संकृ आयड्ढिऊण (महा)।

आयड्ढण न [आकर्षण] आकर्षण, खींचाव (सुर १२, ७६; गा ११८)।

आयड्ढि स्त्री [आकृष्टि] ऊपर देखो (गउड; दे ६, २१)।

आयड्ढि पुं [दे] विस्तार (दे १, ६८)।

आयड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (काल; कप्पू)।

आयण्ण सक [आ + कर्णय्] सुनना, श्रवण करना। आअण्णेइ (गा ३६५)। वकृ आअण्णंत (से १, ६५; गा ८६५, ६४३)। संकृ आयण्णिऊण (उवा)।

आयण्णण न [आकर्णन] श्रवण (महा)।

आयण्णिय वि [आकर्णित] सुना हुआ (उवा)।

आयत्त वकृ [आददान] ग्रहण करता हुआ (सूअ २, १)।

आयत्त वि [आयत्त] अधीन, स्ववश (गा ३६६)।

आयन्न देखो आयण्ण। वकृ आयन्नंत (सुर १, २८७)।

आयन्नण देखो आयण्णण (सुर ३, २१०)।

आयम सक [आ + चम्] आचमन करना, कुल्ला करना। हेकृ आयमित्तए (कप्प)। वकृ आयममाण (ठा ५)।

आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच (श्रा १२; गा ३३०; निचू ५; स ७०६, २५२)।

आयमिअ देखो आगमिअ (हे १, १७८)।

आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आयय वि [आयत] १ लम्बा, विस्तृत (उवा; पउम ८, २१५)। २ पुं मोक्ष (सूअ १,२)।

आयय सक [आ + दद्] ग्रहण करना। आयए, आययंति (दस ५, २, ३१; उत ३, ७)। वकृ आययमाण (पिंड १०७)।

आययण न [आयतन] १ परिग्रहण (सूअ १, ६, १६)। २ उपादान कारण (सूअ १, १२, ४)।

आययण न [आयतन] १ घर, गृह (गउड)। २ आश्रय, स्थान (आचा)। ३ देव-मन्दिर (आवम)। ४ धार्मिक जनों का एकत्र होने का स्थान,

'जत्थ साहम्मिया बहवे सीलवंता बहुस्सुया।
चरित्तायारसंपन्ना आययणं तं वियाणाहि' (धम्म)। ५ कर्म-बन्ध का कारण (आचा)। ६ निर्णय, निश्चय (सूअ १, ६)। ७ निर्दोष स्थान (सार्ध १०६)।

आयर सक [आ + चर्] आचरना, करना। आयरइ (महा, उव)। वकृ आयरंत, आयरमाण (भग)। कृ आयरियव्व (स १)।

आयर पुं [आकर] १ खानि, खान। २ समूह (काल कप्पू)।

आयर देखो आयार = आचार (पुप्फ ३५६)।

आयर पुं [आदर] १ सत्कार, सम्मान (गउड)। २ परिग्रह, असंतोष (पण्ह १,५)। ३ स्थान, मकान (कप्पू)।

आयरंग पुं [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा (पउम २७, ६)।

आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान (पडि)।

आयरण न [आदरण] आदर (भग १२, ५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] परंपरा का रिवाज (चेइय २५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान (सट्टि १४५, उवर १८५)।

आयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित, कृत (उवा)। २ न शास्त्र-सम्मत चाल-चलन,

'असढेण समाइन्नं जं कत्थइ केणइ असावज्जं।
न निवारियमन्नेहि य, बहुमणुमयमेयमायरियं'
(उप ८१३)।

आयरिय पुं [आचार्य] १ गण का नायक, मुखिया (आवम)। २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक (भग १, १)। ३ अर्थ पढ़ानेवाला (भग ८, ८)।

आयरिस देखो आयंस (हे २, १०५)।

आयल्ल अक [लम्ब्] १ व्याप्त होना। २ लटकना, 'वेमत्ताउ सवि ओएसइ, परिमोक्खु नियति आयल्लइ' (भवि)।

आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी, 'मयणसरनिहुरियंगी सहसा आयल्लयं पत्ता' (पउम ८, १८६), 'विद्धा अणंगबाणेहिं नत्ति आयल्लयं पत्तो' (सुर १६, १९०), 'ति उण गिरसअम मयणायल्लअ अनणो उद्देहि असारेहि गिदेमि' (कप्पू)। देखो आअल्ल।

आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त, व्याप्त (उप १०३१ टी; भवि)।

आयव पुं [आतपत्र] भरतक्षेत्र का २४वाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

आयव वि [आतप] १ उद्योत, प्रकाश (गा ४६)। २ ताप, घाम (उत्त)। ३ न. मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। °णाम, °नाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद (सम ६७)।

आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (णाया १, १)।

आयवत्त पु [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान (इक)।

आयवा स्त्री [आतपा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी। २ इस नाम का 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २, १)।

आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित (गउड, निचू १)।

आयसी स्त्री [आयसी] लोहे का कोश (पण्ह १, १)।

आया देखो आय = आत्मन्।

आया सक [आ + या] आना, आगमन करना। आयति (सुपा ५७)। आयाइति, आयाइसु (कप्प)। वकृ आयत।

आया सक [आ + दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना। आयइज्ज (उत्त ६)। कृ आया-णिज्ज (ठा ६)। संकृ आयाए, आदाय, आयाय (कस, कप्प, महा)।

आयाइ स्त्री [आजाति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा १०)। २ जाति, प्रकार। ३ आचार, आचरण (आचा)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ ससार, जगत्। २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम (ठा १०)।

आयाइ स्त्री [आयाति] १ आगमन। २ उत्पत्ति, गर्भ से वाहर निकलना (ठा २, ३)। ३ आयति, भविष्य काल (दसा)।

आयाए देखो आया = आ + दा।

आयाण पुंन [आदान] १ ग्रहण, स्वीकार (आचा)। २ इन्द्रिय (भग ५, ४)। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु (ठा ४, सूअ २,७)। ४ कारण, हेतु, 'सति मे तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं' (सूअ १, १), 'किंवा दुक्खायाणं अट्टज्झाणं समारुहसि' (पउम ६५, ४८)। ५ आदि, प्रथम (अणु)।

आयाण न [आदान] १ संयम, चरित्र (सूअ १, १३, २२)। २ [illegible] आदेय, उपादेय (सूअ १, १४, १७; तदु २०)। °पय न [°पद] ग्रन्थ का प्रथम शब्द (अणु १४०)।

आयाण न [आयान] १ आगमन। २ अश्व का एक आभरण-विशेष (गउड)।

आयाम सक [आ + यमय्] लम्बा करना। कवकृ. आयामिज्जत (से १० ९)। संकृ आयामेत्ता, आयामेत्ताण (भग, पि ५८३)।

आयाम सक [आ + यम्] शौच करना, शुद्धि करना। आयामइ (पव १०६ टी)।

आयाम सक [दा] देना, दान करना। आया-मेइ (भग १५)। संकृ आयामेत्ता (भग १५)।

आयाम पु [आयाम] लम्बाई, दैर्घ्य (सम २, गउड)।

आयाम पु [दे] वल, जोर (दे १, ६५)।

आयाम न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आयंविल, 'नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आयामं' (आचानि २७२, २७३)।

आयाम, **आयामग** } न [आचाम] अवस्रावण, चावल आदि का पानी (ओघ ३५६, उत्त १५)।

आयामणया स्त्री [आयामनता] लम्बाई (भग)।

आयामि वि [आयामिन्] लम्बा (गउड)।

आयामुही स्त्री [आयामुखी] इस नाम की एक नगरी (स ४३१)।

आयाय देखो आया = आ + दा।

आयाय वि [आयात] आया हुआ (पउम १४, १३०, दे १,६६, कुम्मा १६)।

आयार सक [आ + कारय्] बुलाना, आह्वान करना। आआरेदि (शौ) (नाट)। संकृ आआ-रिअ, आयारेऊण (नाट, स ५७८)।

आयार पु [आकार] १ आकृति, रूप (णाया १, १)। २ इङ्गित, इशारा (पाअ)।

आयार पु [आकार] 'आ' अक्षर (कुप्र ३२)।

आयार पु [आचार] १ आचरण, अनुष्ठान (ठा २,३, आचा)। २ चाल-चलन, रीत-भात (पउम ६३, ८)। ३ वारह जैन अङ्गग्रन्थो मे पहला ग्रन्थ, 'आयारपढमसुत्ते' (उप ६८०)। ४ निपुण शिष्य (भग १, १)। °क्खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४)। °भडग, °भडय न [°भाण्डक] ज्ञानादि का उपकरण—साधन (णाया १, १, १६)।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स ७७)।

आयारिय वि [आकारित] १ आहूत, बुलाया हुआ (पउम ६१, २५)। २ न आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन (से १३, ८०, अभि २०९)।

आयाव सक [आ + तापय्] सूर्य के ताप मे शरीर को थोडा तपाना। २ शीत, आतप आदि को सहन करना। वकृ आयावत (पउम ९, ६१), आयावित (काल), आयावेत (पउम २६, २१), आयावेमाण (महा, भग)। हेकृ आयावेत्तए (कस)। संकृ आयाविय (आचा)।

आयाव पुं [आताप] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष (भग १३, ६)।

आयाव पु [आताप] आतप-नामकर्म (पच ५, १३७)।

आयावग वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (सूअ २, २)।

आयावण न [आतापन] एक वार या थोडा आतप आदि को सहन करना (णाया १,१६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] शीतादि सहन करने का स्थान (भग ९, ३३)।

आयावणया, **आयावणा** } स्त्री [आतापना] ऊपर देखो (ठा ३, ५)।

आयावय वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (पण्ह २, १)।

आयावल, **आयावलय** } पु [दे] सवेर का तडका, वालातप (दे १, ७०, पाअ)।

आयावि वि [आतापिन्] देखो आयावय (ठा ४)।

आयास सक [आ + यासय्] तकलीफ देना, खिन्न करना। आआसति (पि ४९०)। संकृ आआसिअ (मा ४५)।

आयास पु [आयास] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद (गउड)। २ परिग्रह, असन्तोष (पण्ह १, ५)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (पण्ह १)।

आयास देखो आयस (षड्)।

आयास देखो आगास (पउम ९६, ४०, हे १, ८४)। °तिलय न [°तिलक] नगर-विशेष (भवि)।

आयासइत्तिअ वि [आयासयितृ] तकलीफ देनेवाला (श्रभि ६३)।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रशाला, घर के ऊपर की खुली छत (कुप्र ४९२)।

आयासतल न [दे] प्रासाद का पृष्ठ भाग (दे १,७०)।

आयासलव न [दे] पक्षिगृह, नीड (दे १, ७२)।

आयासिअ वि [आयासित] परिश्रान्त, खिन्न (गा १९०)।

आयाहम्म वि [आत्मघ्न] १ आत्मविनाशक। २ न आधाकर्म दोष (पिंड ६५)।

आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना (उवा)। °पयाहिण वि [°प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होनेवाला (विपा १, १)। °पयाहिणा स्त्री [°प्रदक्षिणा] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा (ठा १)।

आयु देखो आउ = आयुष्। °वत वि [°वत्] चिरायुष्क, दीर्घ आयुवाला (पण्ह १, ४)।

आर पु [आर] १ इहलोक, यह जन्म (सूत्र १,२,१,८, १६,२८, १,८,६)। २ मनुष्य-लोक (सूत्र १, ६, २८)। ३ नुकीली लोहे की कील (कुप्र ४३४)। ४ न गृहस्थपन (सूत्र १, २, १, ८)।

आर पु [आर] १ मंगल-ग्रह (पउम १७, १०८, सुर १०, २२४)। २ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ६)। ३ वि अर्वाक्तन, पूर्व का (सूत्र १,६)।

°आरअ वि [°कारक] कर्ता, करनेवाला (गा १७६, ३४८)।

आरओ अ [आरतस्] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् (सुम १, ८, स ६४३)। २ समीप में, पास में (उत्त ३३१)। ३ शुरू कर के, प्रारम्भ कर के (विसे २२८४)।

आरओ अ [आरतस्] पीछे से (राज २४६ टी)।

आरदर वि [दे] १ अनेकान्त। २ संकट, व्याप्त (दे १, ७८)।

आरभ सक [आ + रभ्] १ शुरू करना। २ हिंसा करना। आरभइ (हे ४, १५५)। वकृ आरभत (गा ४२, से ८, ८२)। संकृ आरंभइत्ता, आरभिअ (नाट)।

आरभ पु [आरम्भ] १ शुरूआत, प्रारम्भ (हे १, ३०)। २ जीव-हिंसा, वध (श्रा ७)। ३ जीव, प्राणी (पण्ह १, १)। ४ पाप-कर्म (आचा)। °य वि [°ज] पाप-कार्य से उत्पन्न (आचा)। °विणय पु [°विनय] आरंभ का अभाव। °विणइ वि [°विनयिन्] आरंभ से विरत (आचा)।

आरभग } पु [आरम्भक] १ ऊपर देखो
आरभय } (सूत्र २, ६)। २ वि शुरू करनेवाला (विसे ६२८, उप पृ ३)। ३ हिंसक, पाप-कर्म करनेवाला (आचा)।

आरभि वि [आरम्भिन्] १ शुरू करनेवाला (गउड)। २ पाप-कार्य करनेवाला (उप ८६६)।

आरभिअ पु [दे] मालाकार, माली (दे १, ७१)।

आरभिअ वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (भवि)।

आरभिअ देखो आरभ = आ + रभ्।

आरभिया स्त्री [आरम्भिकी] १ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाली क्रिया। २ हिंसक क्रिया से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १, नव १७)।

आरक्ख न [आरक्ष्य] कोतवाल का ओहदा, कोतवाली, आरक्षकता (सुख ३, १)।

आरक्ख वि [आरक्ष] १ रक्षण करनेवाला (दे १, १५)। २ पु कोतवाल, नगर का रक्षक (पाअ)।

आरक्खग वि [आरक्षक] १ रक्षण करनेवाला, त्राता (कप्प, सुपा ३५१)। २ पुं. क्षत्रियों का एक वंश। ३ वि उस वंश में उत्पन्न (ठा ६)।

आरक्खि वि [आरक्षिन्] रक्षक, त्राता (ठा ३, १, ओघ २६०)।

आरक्खिग } वि [आरक्षिक] १ रक्षक,
आरक्खिय } त्राता। २ पु कोतवाल (निचू १, १६, सुपा ३३६, महा, स १२७, १५१)।

आरज्झ सक [आ + राध्] आराधन करना। आरज्झइ (प्राकृ ६८)।

आरज्झ वि [आराध्य] पूज्य, माननीय (मन्तु ७१)।

आरड सक [आ + रट्] १ चिल्लाना, बूम मारना। २ रोना। वकृ आरडत (उप १२८ टी)। संकृ आरडिऊण (महा)।

आरडिअ न [दे] १ विलाप, क्रन्दन। २ वि. चित्र-युक्त (दे १, ७५)।

आरण पु [आरण] १ देवलोक-विशेष (अनु, सम ३९, इक)। २ उस देवलोक का निवासी देव, 'त चेव आरणच्चुय ओहीनाणेण पासति' (सग २२१, विसे ६९६)।

आरण पुन [आरण] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

आरण न [दे] १ अधर, होठ। २ फलक (दे १, ७६)।

आरणाल न [आरनाल] काजी, सावूदाना (दे १, ६७)।

आरणाल न [दे] कमल, पद्म (दे १, ६७)।

आरण्ण वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी (से ८, ५९)।

आरण्णग } वि [आरण्यक] १ जंगली, जंगल-
आरण्णय } निवासी, जंगल में उत्पन्न (उप २२६, सा)। २ न शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष, (पउम ११, १०)।

आरण्णिय वि [आरण्यिक] जंगल में बसनेवाला (तापस आदि) (सूत्र २, २)।

आरत वि [आरत] १ थोडा रक्त (आचा)। २ अत्यन्त अनुरक्त (पण्ह २, ४)।

आरत्तिय न [आरात्रिक] आरती (सुर १०, १६, कुमा)।

आरद्ध वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (काल)।

आरद्ध वि [दे] १ बढा हुआ। २ सतृष्ण, उत्सुक। ३ घर में आया हुआ (दे १, ७५)।

आरनाल देखो आरणाल = आरनाल (पाअ)।

आरनाल न [दे] कमल, पद्म (षड्)।

आरन्निय देखो आरण्णिय (सूत्र २, २, २१)।

आरब देखो आरव।

आरब्भ नीचे देखो।

आरभ देखो आरभ = आ + रभ्। आरभइ (हे ४, १५५, उत्तर १०)। वकृ. आरभंत, आरभमाण (ठा ७)। संकृ. आरब्भ (विसे ७६५)।

आरभड न [आरभट] १ नृत्य का एक भेद (ठा ४, ४)। २ इस नाम का एक मुहूर्त्त, 'छच्चेव य आरभडो सोमित्तो पंचमगुलो होई' (गणि)।

आरभड न [आरभट] एक तरह की नाट्य-विधि (राय ५४)। °भसोल न [°भसोल] नाट्यविधि-विशेष (राय ५४)।

आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष (ओघ १६२ भा)।

आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि-विशेष (राय)।

आरय वि [आरत] १ उपरत। २ अपगत (सूअ १, १५)।

आरय वि [आऽरत] उपरत, सर्वथा निवृत्त (सूअ १, ४, १, १; १, १०, १३)।

आरव पु [आरव] शब्द, आवाज, ध्वनि (सण)।

आरव पुं [आरब] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश (पराह १, १)।

आरव, आरवग वि [आरब] अरब देश मे उत्पन्न, अरब देश का निवासी। स्त्री. °वी (णाया १, १)।

आरविंद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी (गउड)।

आरस सक [आ + रस्] चिल्लाना, बूम मारना। वकृ आरसंत (उत्त १९)। हेकृ. आरसिउ (काल)।

आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट, बूम। २ चिल्लाया हुआ (विपा १, २)।

आरसिय पुं [आदर्श] दर्पण (कहावली)।

आरह देखो आरभ। आरहइ (षड्)। संकृ. आरहिअ (अभि ९०)।

आरहंत, आरहंतिय वि [आर्हत] अर्हन् का, जिन-देव सम्बन्धी, 'आरहंतेहिं' (दस ९, ४, ४, पव २—गाथा १७०)।

आरा स्त्री [आरा] लोहे की सलाई, पैने मे डाली जाती लोहे की खीली (पराह १, १, स ३८)।

आरा अ [आरात्] १ अर्वाक्, पहले (दे १, ६३)। २ पूर्व-भाग (विसे १७४०)।

आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत। २ प्राप्त (दे १, ७०)।

आराडि स्त्री [आराटि] चीत्कार, चिल्लाहट (सुख २, १५)।

आराडी स्त्री [दे] देखो आरडिअ (दे १, ७५)।

आराम पु [आराम] बगीचा, उपवन (ओप, णाया १ १)।

आराम पुंन [आराम] बगीचा, उपवन, 'आरा-माणी' (आचा २, १०, २)।

आरामिअ पुं [आरामिक] माली (कुमा)।

आराव पुं [आराव] शब्द, आवाज (स ६७७, गउड)।

आराह सक [आ + राधय्] १ सेवा करना, भक्ति करना। २ ठीक-ठीक पालन करना। आराहइ, आराहेइ (महा, भग)। वकृ. आराहंत (रयण ७०)। सकृ आरा-हित्ता, आराहेत्ता, आराहिऊण (कप्प, भग, महा)। हेकृ. आराहिउ (महा)।

आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य (आरा ११)।

आराहग वि [आराधक] १ आराधन करने-वाला। २ मोक्ष का साधक (भग ३, १)।

आराहण न [आराधन] १ सेवना (आरा ११)। २ अनशन (राज)।

आराहणा स्त्री [आराधना] १ सेवा, भक्ति। २ परिपालन (णाया १, १२, पंचा ७)। ३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्त्तन (पक्खि)। ४ जिसका आराधन किया जाय वह (आरा १)।

आराहणा स्त्री [आराधना] आवश्यक, साम-यिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

आराहणी स्त्री [आराधनी] भाषा का एक प्रकार (दस ७)।

आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परि-पालित (सम ७०)। १ अनुरूप, योग्य (स ६२३)।

आरिट्ट वि [दे] यात, गत, गुजरा हुआ (षड्)

आरिय न [आऋत] आगमन (राय १०१)।

आरिय देखो अज्ज=आर्य। (भग, षड्, सुपा १२८, पउम १४, ३०, सुर ८, ९३)।

आरिय वि [आरित] सेवित, 'आरिओ आय-रिओ सेवितो वा एगट्ठत्ति' (आचू)।

आरिय वि [आकारित] आहूत, बुलाया हुआ, 'आरिओ आगारिओ वा एगट्ठा' (आव)।

आरिया देखो अज्जा=आर्या (प्राकृ)।

आरिल्ल वि [दे] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो (दे १, ६३)।

आरिस वि [आर्ष] ऋषि-सम्बन्धी (कुमा)।

आरिहय देखो आरहत (दस १ १ टी)।

आरुग्ग देखो आरोग्ग=आरोग्य, 'आरुग्ग-बोहिलाभ समाहिवरमुत्तम दितु' (पडि)।

आरुट्ठ वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, रुष्ट (पउम ५३, १४१)।

आरुण्ण (अप) सक [आ + श्लिष्] आलिङ्गन करना। आरुण्णइ (प्राकृ ११९)।

आरुभ देखो आरुह=आ + रुह्। वकृ. आरुभमाण (कस)।

आरुवणा देखो आरोवणा (विसे २९२८)।

आरुस सक [आ + रुष्] क्रोध करना, रोष करना। सकृ आरुस्स (सूअ १, ५)।

आरुसिय वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, कुपित (णाया १, २)।

आरुह सक [आ + रुह्] ऊपर चढना, ऊपर बैठना। आरुहइ (षड्, महा)। आरुहेइ (भग)। वकृ. आरुहंत, आरुहमाण (से ५, १९, श्रा३६)। सकृ. आरुहिऊण, आरुहिय (महा, नाट)। हेकृ आरुहिउं (महा)।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात, 'गामारुह म्हि गामे, वसामि नअरट्ठिइ ण आणामि। णाअरिआए पइणो हरेमि जा होमि सा होमि' (गा ७०५)।

आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना (णाया १, २, गा ६३०, सुपा २०३, विपा १, ७ गउड)।

आरुहण न [आरोहण] आरोपण, ऊपर चढाना (पव १५५, राय १०६)।

आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित। २ ऊपर बैठाया हुआ (से ८, १३)।

आरुहिय, आरूढ वि [आरूढ] १ ऊपर चढा हुआ (महा)। २ कृत, विहित, 'तीए पुरओ पइण्णा आरुहिया दुक्करा मए सामि' (पउम ८, १६१)।

आरेइअ वि [दे] १ मुकुलित, संकुचित। २ भ्रान्त। ३ मुक्त (दे १, ८७)। ४ रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, ८७, पाअ)।

आरेण अ [आरेण] १ समीप, पास (उप ३३६ टी)। २ अर्वाक्, पहले (विसे २०१७)। ३ प्रारम्भ कर (विसे २२८४)।

आरोअ अक [उत् + लस्] विकसित होना, उल्लास पाना। आरोअइ (हे ४, २०२)।

आरोअणा देखो आरोवणा (ठा ४, १, विसे २६२७)।

आरोइअ [दे] देखो आरेइअ (षड्)।

आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना, आरोगना। आरोग्गइ (दे १, ६६)।

आरोग्ग न [आरोग्य] एकासन तप (संबोध ५८)।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का अभाव (ठा ४, ३ उत्त)। २ वि रोग-रहित, नीरोग (कप्प)। ३ पुं एक ब्राह्मणोपासक का नाम (उप ५४०)।

आरोग्गरिअ वि [दे] रक्त, रंगा हुआ (षड्)।

आरोग्गिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे १, ६६)।

आरोद्ध वि [दे] १ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ। २ गृहागत, घर में आया हुआ (षड्)।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ क्षेम, कुशल। २ नीरोगता 'आरोग्गमेव पत्तया' (आचा २, १५, ६)।

आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना, इकट्ठा करना, आरोलइ (हे ४, १०२ षड्)।

आरोलिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (कुमा)।

आरोव सक [आ + रोपय्] १ ऊपर चढ़ाना, ऊपर रखना। २ स्थापन करना। आरोवइ (हे ४, ४८)। संकृ आरोवेत्ता, आरोविउं, आरोविऊण (गा, कुमा, महा)।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढ़ाना (सुपा ८६)। [illegible] (दे १ १०८)।

आरोवणा स्त्री [आरोपणा] १ ऊपर चढ़ाना। २ प्रायश्चित्त विशेष (वव १)। ३ प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार। ४ प्रश्न, पर्यनुयोग (विसे २६२७, २६२८)।

आरोविअ वि [आरोपित] १ चढ़ाया हुआ। २ सम्पादित (महा पाअ)।

आरोस पुं [आरोष] १ म्लेच्छ देश विशेष। २ वि उस देश का निवासी (पण्ह १, १, कम)।

आरोसिअ वि [आरोषित] कोपित, रुष्ट किया हुआ (से ६, ६६, भवि, दे १ ७०)।

आरोह सक [आ + रुह्] ऊपर चढ़ना, बैठना। आरोहइ (कप्प)।

आरोह सक [आ + रोहय्] ऊपर चढ़ाना। कृ आरोहइयव्व (वव १)।

आरोह पुं [आरोह] १ सवार, हाथी घोड़ा आदि पर चढ़नेवाला (से १३, ८५)। २ ऊँचाई (बृह)। ३ लम्बाई (वव १, ५)।

आरोह पुं [दे] स्तन, थन, चूँची (दे १, ६३)।

आरोहग वि [आरोहक] १ सवार होनेवाला। २ हस्तिपक, पीलवान हाथी का रक्षक (औप)।

आरोहि वि [आरोहिन्] ऊपर देखो (गउड)।

आरोहिय वि [आरूढ] ऊपर बैठा हुआ, ऊपर चढ़ा हुआ (भवि)।

आल न [दे] अनर्थक, मृषा (सिरि ८६४)।

आल न [दे] १ छोटा प्रवाह। २ वि कोमल, मृदु (दे १, ७३)। ३ आगत (स्भा)।

आल न [आल] कलङ्कारोप, दोषारोपण (स ४३३), 'न दिज्ज कस्सवि कूडआलं' (सत्त २)।

°आल देखो जाल (गा ५५, से १, २६, ५, ८५, ६, ५६)।

°आल देखो जाल (से ५, ८५, ६, ५६)।

°आल देखो ताल, 'ममम्मिम रामनि हम्मिआलवकियाउ (से ६, ५६)।

आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान में रखा हुआ (कप्प)।

आलइअ वि [आलयिन्] गृही, घरवाला (आचा)।

आलइय वि [आलगित] पहना हुआ (आचा २, १५, ५)।

आलंकारिय वि [आलङ्कारिक] १ अलंकार-सम्बन्धी। २ हजाम-सम्बन्धी।। ३ अलंकार के योग्य, 'आलंकारियं भंड उवणेह' (जीव ३)।

आलंकिअ वि [दे] पङ्गु किया हुआ (दे १, ६८)।

आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भीजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतने से लेकर पाँच अहोरात्र तक का काल (विसे)।

आलंदिअ वि [आलन्दिक] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करनेवाला (विसे)।

आलंब सक [आ + लम्ब्] आश्रय करना, सहारा लेना। सकृ आलंबिय (भास ११)।

आलंब पुं [आलम्ब] आश्रय, आधार (सुपा ६३५)।

आलंब न [दे] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है (दे १, ६४)।

आलंबण न [आलम्बन] १ आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह (णाया १, १)। २ कारण, हेतु, प्रयोजन (आवम, आचा)।

आलंबणा स्त्री [आलम्बना] ऊपर देखो (पि ३६७)।

आलंबि वि [आलम्बिन्] अवलम्बन करनेवाला, आश्रयी (गउड)।

आलंभिय न [आलम्भिक] १ नगर-विशेष (ठा १)। २ भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देश (भग ११, १२)।

आलंभिया स्त्री [आलम्भिका] नगरी-विशेष (भग ११, १२)।

आलक्क पुं [दे] पागल कुत्ता (भत्त १२५)।

आलक्ख सक [आ + लक्षय्] १ जानना। २ चिह्न से पहिचानना। आलक्खिमो (गउड)।

आलक्खिय वि [आलक्षित] १ ज्ञात, परिचित। २ चिह्न से जाना हुआ (गउड)।

आलग्ग वि [आलग्न] लगा हुआ, संयुक्त (स ५, ३३)।

आलत्त वि [आलपित] सम्भाषित, आभाषित (पउम १६, ४२, सुपा २०८, श्रा ६)।

आलत्तय देखो अलत्त (गउड, गा ९४६)।

आलत्थ पुं [दे] मयूर, मोर (दे १, ६५)।

आलद्ध वि [आलब्ध] १ संस्पृष्ट। २ संयुक्त। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ। ४ मारा हुआ (नाट)।

आलप्प वि [आलाप्य] कहने के योग्य, निर्वचनीय, 'सदसदणभिलप्पालप्पमेग अरोग' (नहृअ ८)।

आलभ सक [आ + लभ्] प्राप्त करना। आलभिआ (उत्तर ११)।

आलभण न [आलभन] विनाशन (धर्मसं ८८२)।

आलभिया स्त्री [आलभिका] नगरी-विशेष (उवा, भग ११, २)।

आलय पुन [आलय] गृह घर, स्थान (महा, गा १३५)।

आलय पुन [आलय] बौद्धदर्शन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष (धर्म ६६५, ६६६ ६६७)।

आलयण न [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६, ८, ५८)।

आलव सक [आ + लप्] १ कहना, बातचीत करना। २ थोड़ा या एक बार कहना। वकृ आलवंत (गा ११८, अभि ३८), आलवमाण (ठा ४)। आलविऊण (महा), आलविय (नाट)।

आलवण न [आलपन] संभाषण, बातचीत, वार्तालाप (ओघ ११३, उत्त १२८ टी, श्रा १६, दे १, ५६, स ६६)।

आलवाल न [आलवाल] कियारी, थांवला (पाअ)।

आलस वि [आलस] आलसी, सुस्त (भग १२, २)। °त्त न [°त्व] आलस, सुस्ती (श्रा २३)।

आलसिय त्रि [आलसित] आलसी, मन्द (भग १२, २)।

आलसुय देखो आलसिय, 'सावि सायमीला आलसुया कुडिला' (सम्मत्त ५३)।

आलस्स पुन [आलस्य] सुस्ती, 'आलस्सो रणरणओ' (वज्जा १६२)।

आलस्स न [आलस्य] आलस, सुस्ती (कुमा, सुपा २५१)।

आलस्सि त्रि [आलस्यिन्] आलसी, सुस्त (गच्छ २, १)।

आलाअ देखो आलाव (गा ४२८, ६१६, मै १६)।

आलाण देखो आणाल (पाअ, से ५, १७, महा)।

आलाणिय वि [आलानित] नियन्त्रित, मजबूती से बाँधा हुआ, 'दढभुयदडालाणियकमलाकरिणी निवो ममरसीहो' (सुपा ४)।

आलाव पु [आलाप] १ संभाषण, बातचीत (श्रा ६)। २ अल्प भाषण (ठा ५)। ३ प्रथम भाषण (ठा ४)। ४ एक बार की उक्ति (भग ५, ४)।

आलावक देखो आलावग (गुज्ज ८)।

आलावग पुं [आलापक] पेरा, पैराग्राफ, परिच्छेद, ग्रन्थ का अंश-विशेष (ठा २, २)।

आलावण न [आलापन] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष। °बंध पु [°बन्ध] बन्ध-विशेष (भग ८, ६)।

आलावण न [आलापन] आलाप, संभाषण (वज्जा १२४)।

आलावणी स्त्री [आलापनी] वाद्य-विशेष (वज्जा ८०)।

आलास पु [दे] वृश्चिक, बिच्छू (दे १, ६१)।

आलाहि देखो अलाहि (पड्)।

आलि पु [अलि] भ्रमर, भमरा, भौंरा (पडि)।

आलि देखो आली (राय, पाअ)।

आलिंग सक [आ + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, भेटना, गले लगाना। आलिंगइ (महा)। संकृ आलिंगिऊण (महा)। हेकृ आलिंगिउ (महा)।

आलिंग पु [आलिङ्ग] वाद्य-विशेष (राय)।

आलिंग वि [आलिङ्ग्य] १ आलिङ्गन करने योग्य। २ पुं वाद्य-विशेष (जीव ३)।

आलिंगण न [आलिङ्गन] आलिंगन, भेंट (कप्पू)। °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] गाल या कपोल का उपधान—तकिया, शरीर-प्रमाण उपधान (भग ११, ११)।

आलिंगणिया स्त्री [आलिङ्गनिका] देखो आलिंगणवट्टि (जीव ३)।

आलिंगिणी स्त्री [आलिङ्गिनी] जानु आदि के नीचे रखने का तकिया (पव ८४)।

आलिंगिय वि [आलिङ्गित] आश्लिष्ट, जिसका आलिंगन किया गया हो वह (काल)।

आलिंद पु [आलिन्द] बाहर के दरवाजे के चोकट्टे का एक हिस्सा (अभि १५६, अवि २८)।

आलिंप सक [आ + लिप्] पोतना, लेप करना। आलिंपइ (उव)। हेकृ आलिंपित्तए (कस)। वकृ आलिंपंत। प्रयो. आलिंपावंत (निचू ३)।

आलिंपण न [आलेपण] १ लेप करना, विलेपन (रयण ५५)। २ जिसका लेप होता है वह चीज (निचू १२)।

आलिआ देखो आवलिआ (पच ५, १४५)।

आलित्त न [आलित्र] जहाज चलाने का काष्ठ-विशेष (आचा २, ३, १, ६)।

आलित्त वि [आलिप्त] खरण्टित, खरडा हुआ, लिपा हुआ (पिंड २३४)।

आलित्त वि [आदीप्त] १ चारों ओर से जला हुआ, 'जह आलित्ते गेहे कोइ पसुत्तं नरं तु बोहेज्जा' (उत्त १,३, णाया १,१,१४)। २ न आग लगनी, आग से जलना, 'कोट्टिमघरे वसते आलित्तम्मि वि न डज्झइ' (वव ४)।

आलिद्ध वि [आश्लिष्ट] आलिंगित (भग १६, ३, सुर ३, २२२)।

आलिद्ध वि [आलीढ] चखा हुआ, आस्वादित (से ६, ५६)।

आलिसंदग पु [दे आलिसन्दक] धान्य-विशेष (ठा ५, ३, भग ६, ७)।

आलिसिंदय पु [दे आलिसिन्दक] ऊपर देखो (ठा ५, ३)।

आलिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। आलिहइ (हे ४, १८२)। वकृ आलिहंत (नाट)।

आलिह सक [आ + लिख्] १ विन्यास करना, स्थापन करना। २ चित्र करना, चितरना या चित्र बनाना। वकृ. आलिहमाण (सुर १२,४०)।

आलिहिअ वि [आलिखित] चित्रित (सुर १, ८७)।

आली सक [आ + ली] १ लीन होना, आसक्त होना। २ आलिंगन करना। ३ निवास करना। वकृ. आलीयमाण (गउड)।

आली स्त्री [आली] १ पंक्ति, श्रेणी। २ सखी, वयस्या (हे १, ८३)। ३ वनस्पति-विशेष (णाया १, ३)।

आलीढ वि [आलीढ] १ आसक्त, 'आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला' (पडि)। २ न. आसन-विशेष (वव १)।

आलीढ पुन [आलीढ] योद्धा का युद्ध समय का आसन-विशेष (वव १)।

आलीण वि [आलीन] १ लीन, आसक्त, तत्पर (पउम ३२,६)। २ आलिंगित, आश्लिष्ट (कप्प)।

आलीवग वि [आदीपक] जलानेवाला, आग सुलगानेवाला (णाया १ २)।

आलीयमाण देखो आली = आ + ली।

आलील न [दे] समीप का भय, पास का डर (दे १, ६५)।

आलीवग देखो आलीयग (पण्ह १, ३)।

आलीवण न [आदीपन] आग लगाना (दे १ ८१, विपा १, १)।

आलीविअ वि [आदीपित] आग से जलाया हुआ (पि २४४)।

आलु पुन [आलु] कन्द विशेष आलू (श्रा २०)।

आलुंकी स्त्री [आलुकी] वल्ली-विशेष (पव १०)।

आलुंख सक [दह्] जलाना, दाह देना। आलुंखइ (हे ४, २०८ षड्)।

आलुंख सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। आलुंखइ (हे ४ १८२)।

आलुंखण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (गउड)।

आलुंखिअ वि [स्पृष्ट] स्पृष्ट, छूआ हुआ (से १,२१, पाअ)।

आलुंखिअ वि [दग्ध] जला हुआ (सुर ६ २०३)।

आलुंघ सक [स्पृश्] छूना। आलुंघइ (प्राप्र ५४)।

आलुंप सक [आ + लुम्प्] हरण करना। आलुंपइ (आचा)।

आलुंप वि [आलुम्प] अपहारक, हरण करने-वाला, छीन लेनेवाला (आचा)।

आलुग देखो आलु (पण्ण १)।

आलुगा स्त्री [दे] घटी, छोटा घड़ा (उप ६६०)।

आलुयारि [दे] निर्गत, ध्वस्त विप्रयोजित, 'ता दिन्ना [illegible] आलुयारिअ-[illegible]' (सुपा ३८३)।

आलोइय } वि [आलोकित] चित्रित 'रति आलोइयय } पभिट्ठे [illegible]-

रगणि न खम' (अच्चु २५, से २, ४५, गा ६४१, गउड)।

आलेट्‌ठुं } देखो आसिलिस।
आलेट्‌ठुअ }

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप, 'आलेव-निमित्तं च देवीओ वलयालंकियवाहाओ घसंति चंदणं' (महा)।

आलेवण न [आलेपन] १ लेप विलेपन। २ जिनका लेप किया जाता है वह वस्तु, 'जे भिक्खू रत्ति आलेवणजाय पडिग्गाहेत्ता' (निचू १२)।

आलेसिय वि [आश्लेषित] आलिंगन कराया हुआ (चेइय ३७६)।

आलेह पु [आलेख] चित्र (आवम)।

आलेहिअ वि [आलेखित] चित्रित (महा)।

आलोअ सक [आ + लोक्] देखना, विलोकन करना। वकृ आलोअत, आलोइत, आलोएमाण (गा ५४६, उप पृ ४३, आचा)। कवकृ आलोकत (से १, २५)। संकृ आलोएऊण, आलोइत्ता (काल, ठा ६)।

आलोअ सक [आ + लोच्] १ देखना। २ गुरु को अपना अपराध कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। आलोएइ (भग)। वकृ आलोअत (पडि)। संकृ आलोएत्ता, आलो-इअ (भग, पि ५८२)। हेकृ आलोइत्तए (ठा २, १)। कृ आलो-एयव्व, आलोएइयव्व (उप ६८२, ओघ ७६६)।

आलोअ पु [आलोक] १ तेज, प्रकाश (से २, १२)। २ विलोकन, अच्छी तरह देखना (ओघ ३)। ३ पृथ्वी का समान-भाग, सम भू-भाग (ओघ ५६५)। ४ गवाक्षादि प्रकाश-स्थान (आचा)। ५ जगत्, संसार (आव)। ६ ज्ञान (पण्ह १, ४)।

आलोअग } वि [आलोचक] आलोचना
आलोअय } करनेवाला (श्रा ८०, पुप्फ ३५५, ३६०)।

आलोअण न [आलोकन] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण (ओघ ५६ भा), 'अन्नाणोपगयतम्मा, [illegible]मुणि मंसंति बुद्धीओ। ता १२ विराउन, ठंति च्चिय [illegible]' (गउड)।

आलोअण न [आलोचन] नीचे देखो (पण्ह २, १, प्रासू २४)।

आलोअणा स्त्री [आलोचना] १ देखना, बतलाना। २ प्रायश्चित के लिए अपने दोषो को गुरु को बता देना। ३ विचार करना (भग १७, २, श्रा ४२, स ५०६)।

आलोइअ वि [आलोचित] दृष्ट, निरीक्षित (से ६, ६४)।

आलोइअ वि [आलोचित] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ (पडि)।

आलोइअ देखो आलोअ = आ + लोच्।

आलोइत्तु वि [आलोकयितृ] देखने वाला, द्रष्टा (सम १५)।

आलोइल्ल वि [आलोकवत्] प्रकाश-युक्त (वज्जा १६०)।

आलोकत देखो आलोअ = आ + लोक्।

आलोग देखो आलोअ = आलोक (ओघ ५६५)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (पउम ६८, ५७)।

आलोच देखो आलोअ = आ + लोच्। वकृ. आलोचत (सुपा ३०७)। संकृ. आलो-चिऊण (स ११७)।

आलोचण देखो आलोअण (उप ३३२)।

आलोड सक [आ + लोडय्] हिलोरना, मथन करना। संकृ आलोडिवि (अप) (सण)।

आलोडिय } वि [आलोडित] मथित,
आलोलिय } हिलोरा हुआ, 'आलोडिया य नयरी' (पउम ५३, १२६, उप १५२ टी)।

आलोयण न [आलोकन] गवाक्ष (उत्त १६, ४)।

आलोव सक [आ + लोपय्] आच्छादित करना। कवकृ आलोविज्जमाण (स ३८२)।

आलोय देखो आलोअ = आलोक, 'मते अत्थाणेवि भेमज्जे मोयणे पियागमणे' (रंभा)।

आलोविय वि [आलोपित] आच्छादित, ढका हुआ (णाया १, १)।

आव वि [यावत्] जितना। आवति (पि ३६६)।

आव अ [यावत्] जब तक, जब लग। °कह वि [°कथ] देखो °कहिय (विसे १२६३, श्रा १)। °कह अ [°कथम्]

यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त (आव)। °कहा स्त्री [°कथा] जीवन-पर्यन्त, 'धण्णा आवकहाए गुरुकुलवास न मुंचति' (उप ६८१)। °कहिय वि [°कथिक] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहनेवाला (ठा ६; उप ५२०)।

आव पुं [आप] १ प्राप्ति, लाभ (पण्ह २, १)। २ जल का समूह। °बहुल न [°बहुल] देखो आउ-बहुल (कम)।

आव सक [आ+या] आना, आगमन करना, 'वणवसिराणवि निच्चं आवइ निद्दामुह ताण' (सुपा ६४७)। आवेइ (नाट)। आवति (सग १६२)।

आवआस सक [उप+गूह्] आलिंगन करना। आवआसइ (प्राक ७४)।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति, विपत्, संकट (सम ५७, सुपा ३२१, सुर ४, २१५, प्रासू ५, १५६)।

आवग पु [दे] अपामार्ग, वृक्ष विशेष, लटजीरा (दे १, ६२)।

आवंडु वि [आपाण्डु] थोडा सफेद, फीका (गा २६५)।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो (से ६, ७४)।

आवंत देखो जावत, 'आवंती के यावंती लोगंसि समणा य माहणा य' (आचा १, ४, २, ३, १, ५, २, १, ४, पि ३५७)।

आवग्गण न [आवल्गन] अश्व पर चढने की कला (भवि)।

आवच्चेज्ज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय (कप्प)।

आवज्ज देखो आओज्ज (हे १, १५६)।

आवज्ज अक [अ+पद्] प्राप्त होना, लागू होना। आवजइ (कस)। कृ आवज्जियव्व (पण्ह २, ५)।

आवज्ज सक [आ+वर्जू] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना, 'आवजंति गुणा खलु अबुहंपि जणं अमच्छरियं' (स ११)।

आवज्ज सक [आ+पद्] प्राप्त करना। आवजई (उत्त ३२, १०३)। आवज्जे (सूअ १, १,२,१६, २०), आवज्जसु (सुख २,६)।

आवज्ज } वि [आवर्ज, °क] प्रीत्युत्पादक
आवज्जग } (पिंड ४३८)।

आवज्जण न [आवर्जन] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना (आचू)। ३ उपयोग, ख्याल। ४ उपयोग-विशेष। ५ व्यापार-विशेष (विसे ३०५१)।

आवज्जिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ अभिमुख किया हुआ (महा, सुर ६, ३१, सुपा २३२)। °करण न [°करण] व्यापार-विशेष (आचू)।

आवज्जिय देखो आउज्जिअ = आतोद्यिक (कुमा)।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका मे कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार (औप, विसे ३०५०)।

आवट्ट अक [आ+वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना। २ विलीन होना। ३ सक शोषण करना, सुखाना। ४ पीडना, दुःखी करना। आवट्टइ (हे ४, ४१६, सूअ १, ५, २)। वकृ आवट्टमाण (से ५, ८०)।

आवट्ट देखो आवत्त (आचा, सुपा ६४, सूअ १, ३)।

आवट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवर्तन (प्राकृ ३१)।

आवट्टिआ स्त्री [दे] १ नवोढा, दुलहिन। २ परतन्त्र स्त्री (दे १, ७७)।

आवड देखो आवत्त = आवर्त (राय ३०)।

आवड सक [आ+पत्] १ आना, आगमन करना। २ आ लगना। वकृ. आवडंत (प्रासू १०६)।

आवडण न [आपतन] १ गिरना (से ६, ४२)। २ आ लगना (स ३८४)।

आवणवीहि स्त्री [आपणवीथि] १ हट्ट-मार्ग, बाजार। २ रथ्या-विशेष, एक तरह का मुहल्ला (राय १००)।

आवडिअ वि [आपतित] १ गिरा हुआ (महा)। २ पास मे आया हुआ (से १४, ३)।

आवडिअ वि [दे] १ संगत, संबद्ध (दे १, ७८, पाअ)। २ सार, मजबूत (दे १, ७८)।

आवण पु [आपण] १ हाट, दूकान (णाया १, १, महा)। २ बाजार (प्रामा)।

आवणिय पु [आपणिक] सौदागर, व्यापारी (पाअ)।

आवण्ण वि [आपन्न] १ आपत्ति-युक्त। २ प्राप्त (गा ४६७)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री (अभि १२४)।

आवण्ण वि [आपन्न] आश्रित (सूअ १, १, १, १६)।

आवत्त सक [आ+वृत्] आना, 'नावत्तइ नागच्छइ पुणो भवे तेण अपुणरावित्ति' (चेइय ३९६)।

आवत्त अक [आ+वृत्] १ परिभ्रमण करना। २ बदलना। ३ चक्राकार घूमना। ४ सक पठित पाठ को याद करना। ५ घुमाना। आवत्तइ (सूक्त ५१)। वकृ. अत्तमाण, आवत्तमाण (हे १, २७१, कुमा)।

आवत्त पु [आवर्त्त] १ चक्राकार परिभ्रमण (स्वप्न ५६)। २ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ३ महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम (ठा २, ३)। ४ एक खुरवाला पशु-विशेष (पण्ह १, १)। ५ एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १)। ६ पर्वतविशेष (ठा ८)। ७ मणि का एक लक्षण (राय)। ८ ग्राम-विशेष (आवम)। ९ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष, 'दुवालसावत्ते किति-कम्मे' (सम २१)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर विशेष (इक)। °यित वकृ [°यमान] दक्षिण की तरफ चक्राकार घूमनेवाला (भग ११, ११)।

आवत्त पुन [आवर्त्त] १ एक तरह का जहाज (सिरि ३८३)। २ न लगातार २५ दिनो का उपवास (संबोध ५८)।

आवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (पाअ)।

आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण (हे २, ३०)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष (राय)।

आवत्तय पु [आवर्त्तक] देखो आवत्त। १० वि. चक्राकार भ्रमण करनेवाला (हे २, ३०)।

आवत्ता स्त्री [आवर्त्ता] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम (इक)।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] १ दोष-प्रसंग, 'सव्व-विमोक्खावत्ती' (विसे १६३४)। २ आपदा, कष्ट। ३ उत्पत्ति (विसे ६६)।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (धर्मसं ४७३)।

आवडि स्त्री [आवृति] आवरण (वजि ६)।

आवड देखो आवग्ग (पउम ३४, ३०, णाया १, ९, सुर २४६, हम्मीर १६०)।

आवड पुं [आवर्त्त] देखो आवत्त, 'नि ति-दम्म वावावड' (उप २१)।

आवड देखो आवड। वकृ आवडत आवड-माण (पउम ३, १३ णाया १, १, ८)।

आवगा स्त्री [आपगा] नदी (पाअ, स ६१२)।

आवया स्त्री [आपद्] आपदा, विपद् दुःख (पाअ वज्जा ८९),

'न गणंति पुव्वनेहं, न य
नीइं नेव लोय-अववायं।
नय भाविआवयाओ, पुरिसा
महिलाण आयत्ता' (सुर २, १८६)।

आवर सक [आ + वृ] आच्छादन करना, ढकना। कर्म आवरिज्जइ (भग ६, ३३)। वकृ आवरिज्जमाण (णा ११)। संकृ आवरित्ता (ठा)।

आवरण न [आवरण] १ आच्छादन करनेवाला, ढकनेवाला, तिरोहित करनेवाला (कम ७१ गाया १, ८)। २ वास्तु-विद्या (ठा ९)।

आवरणिज्ज वि [आवरणीय] १ आच्छादनीय। २ ढकनेवाला, आच्छादन करनेवाला ([illegible])।

आवरिय वि [आवृत] आच्छादित, तिरोहित, 'मालरिया हम्मीहिं' (निर १)।

आवरिसण न [आवर्षण] छिड़कना, सिंचन (कु १)।

आवरिसण न [आवर्षण] सुगंध जल की वृष्टि ([illegible])।

आवलिया स्त्री [दे] [illegible], मत्स्य पकड़ने का [illegible] विशेष (दे १, ७१)।

आवलण न [आवलन] मोड़ना (पण्ह १, १)।

आवलि स्त्री [आवलि] १ पङ्क्ति, श्रेणी (पाअ)। २ पुं एक दिक्कुमार का नाम (पउम ५, १५)।

आवलिआ स्त्री [आवलिका] १ पंक्ति, श्रेणी (भग)। २ क्रम, परिपाटी (सुज १०)। ३ असंख्य-समय-रूप, एक सूक्ष्म काल-परिमाण (नव ६, ७)। °पविट्ठ वि [°प्रविष्ट] श्रेणी से व्यवस्थित (भग)। °बाहिर वि [°बाह्य] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ (भग)।

आवलिय वि [आवलित] वेष्टित (सुअनि २००)।

आवली स्त्री [आवली] १ पंक्ति, श्रेणी (पाअ)। २ रावण की एक कन्या का नाम (पउम ८, ११)।

आवस सक [आ + वस्] रहना, वास करना। आवसेज्जा (सूअ १, १२)। वकृ 'आगारं आवसंता वि' (सूअ १, ६)।

आवसह पुं [आवसथ] १ घर, आश्रय, स्थान (सूअ १, ८)। २ मठ, सन्यासियों का स्थान (पण्ह है २, १८०)।

आवसहिय पुं [आवसथिक] १ गृहस्थ, गृही (सूअ २, ७)। २ सन्यासी (सूअ २, ७)।

आवसिय, आवस्सग, आवस्सय वि [आवश्यक] १ अवश्य-कर्तव्य, जरूरी। २ न सामयिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म (उव, दस १०, णदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र (आवम)। °णुओग पु [°ानुयोग] आवश्यक सूत्र की व्याख्या (विसे १)।

आवस्सय पुन [आपाश्रय] १—३ ऊपर देखो। ४ आधार आश्रय (विसे ८७४)।

आवस्सिया स्त्री [आवश्यकी] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष (उत्त २६)।

आवह सक [आ + वह्] धारण करना, वहन करना, 'वेरोवि गिहिपसंगो जइणो सुद्धस्स पंकमावहइ' (उव), 'णो पूयणं तवसा आवहेज्जा' (स १, ७)।

आवह वि [आवह] धारण करनेवाला (श्राप्रा)।

आवा सक [आ + पा] १ पीना। २ भोग में लाना, उपभोग करना। कृ 'वत उच्छमि आवेउं, सेय ते मरणं भवे' (दस २, ७)।

आवाइया स्त्री [आवापिका] प्रयान होम, 'पहुआए पत्तआवाइयाए' (स ७७७)।

आवाग पु [आपाक] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (उप ६४८, विसे २८६ टी)।

आवाड पु [आपात] भीलों की एक जाति, 'तेण कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णाम चिलाया परिवसंति' (ज ३)।

आवाणय न [आपाणक] दूकान, 'भिन्नाइ आवाणयाइ' (स ५३०)।

आवाय पुन [आपात] अभ्यागम, आगमन (पव ६१, ६१ टी)।

आवाय देखो आवाग (श्रा २३)।

आवाय पु [आपात] १ प्रारम्भ, शुरुआत (पाअ, से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरत (श्रा २३)। ४ पतन, गिरना (श्रा २३)। ५ सम्बन्ध, संयोग (उव, कम्म)।

आवाय पु [आवाप] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान। २ आलवाल। ३ प्रक्षेप, फेंकना। ४ शत्रु की चिन्ता। ५ बोना, वपन (श्रा २३)।

आवायण न [आपादन] सम्पादन, (धर्मसं १०९८)।

आवाल देखो आलवाल (धर्मवि १६,११२)।

आवाल, आवालय न [दे] जल के निकट का प्रदेश (दे २, ७०)।

आवाव देखो आवाग = आवाप। °कहा स्त्री [°कथा] रसोई सम्बन्धी कथा, विकथा विशेष (ठा ४, २)।

आवास पु [आवास] १ वास-स्थान (ठा ६, पाअ)। २ निवास, अवस्थान, रहना (पण्ह १, ४, ओप)। ३ पक्षि-गृह, नीड (वव १, १)। ४ पडाव, डेरा (सुपा २७६, उप पृ १३०)। °पव्वय पु [°पर्वत] रहने का पर्वत (इक)।

आवास, आवासग देखो आवस्सय = आवश्यक (पि ३४८, ओघ ६३८, विसे ८७०)।

आवासणिया स्त्री [आवासनिका] आवास-स्थान (स १२२)।

आवासय न [आवासक] १ आव-जरूरी। २ नित्य-कर्त्तव्य धर्मानुष्ठान (ठा ४, ४३, विसे ८७८)। ३ पु पक्षि-गृह, नीड (वव १,१)। ४ वि सम्कारायायक, वासक। ५ आच्छादक (विसे ८७५)।

आवासि वि [आवासिन्] रहनेवाला, 'एगंतनियावासी' (उव)।

आवासिय वि [आवासित] सन्निवेशित, पडाव डाला हुआ (सुपा ४७६, सुर १, १)।

आवाह सक [आ + वाहय्] १ सानिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना। २ बुलाना। संकृ आवाहिवि (अप) (भवि)।

आवाह पु [आबाध] पीडा, बाधा (विपा १, ६)।

आवाह पु [आवाह] १ नव-परिणीता वधू को वर के घर लाना (पराह २, ४)। २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव (जीव ३)।

आवाहण न [आवाहन] आह्वान (विसे १८८३)।

आवाहिय वि [आवाहित] १ बुलाया हुआ, आहूत (भवि)। २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु, 'एव च भरणंतेरण आवाहियाइ सत्थाइ' (सुर ८, ४२)।

आवि न [दे] १ प्रसव-पीडा। २ वि नित्य, शाश्वत। ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १, ७३)।

आवि अ [चापि] समुच्चय-द्योतक अव्यय (कप्प)।

आवि अ [आविस्] प्रकटता-सूचक अव्यय (सुर १४, २११)।

आविअ सक [आ + पा] पीना, 'जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं' (दस १, २)।

आविअ वि [आवृत] आच्छादित (से ६, ६२)।

आविअ पु [दे] १ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष। २ वि मथित, आलोडित (दे १, ७६)। ३ प्रोत (दे १, ७६, पाअ, षड्)।

आविअ वि [आविच] अविच-देशोत्पन्न (राय)।

आविअज्झा स्त्री [दे] १ नवोढा, दुलहिन। २ परतन्त्रा, पराधीन स्त्री (दे १, ७७)।

आविध सक [आ + व्यध्] १ विंधना। २ पहनना। ३ मन्त्र से अधीन करना। आविंध (आक ३८)। आविंधामो (पि ४८९), 'पालव वा सुवरणसुत्त वा आविंधेज्ज पिरिणवेज्ज वा' (आचा २, १३, २०)। कर्म आविज्झइ (उव)।

आविधण न [आव्यधन] १ पहनना। २ मन्त्र से आविष्ट करना, मन्त्र से अधीन करना (पराह १ २, आक ३८)।

आविक्कम्म पुंन [आविष्कर्मन्] प्रकट-कर्म, प्रकटरूप से किया हुआ काम (आचा २, १५, ५)।

आविग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, उदासीन (से ६, ८६, १३, ६३, दे ७, ६३)।

आविट्ठ वि [आविष्ट] १ आवृत, व्याप्त (सम ५१, सुपा १८७)। २ प्रविष्ट (सूअ १, ३)। ३ अधिष्ठित, आश्रित (ठा ५, भास ३६)।

आविट्ठ वि [आविष्ट] भूत आदि के उपद्रव से युक्त (सम्मत्त १७३)।

आविद्ध वि [आविद्ध] परिहित पहना हुआ (कप्प)।

आविद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (दे १, ६३)।

आविब्भाव पु [आविर्भाव] १ उत्पत्ति। २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति, 'आविब्भावतिरोभाव-मेत्तपरिणामिदव्वमेवाय' (विसे)।

आविब्भूय वि [आविर्भूत] १ उत्पन्न। २ प्रादुर्भूत (कप्प)। ३ अभिव्यक्त (सुर १४, २११)।

आविल वि [आविल] १ मलिन, अस्वच्छ (सम ५१)। २ आकुल, व्याप्त (सूअ १, १५)।

आविलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (षड्)।

आविलुपिअ वि [आकाङ्क्षित] अभिलषित (दे १, ७२)।

आविस सक [आ + विश्] प्रवेश करना, घुसना। आविसेइ (सम्मत्त १७३)।

आविस अक [आ + विश्] १ सबद्ध होना युक्त होना। २ सक, उपभोग करना, सेवना, 'परदारमाविसामित्ति' (विसे ३२५६),

'ज ज समय जीवो, आविसई जेरा जेरा भावेरा।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुह बवए कम्म' (उव)

आविहव अक [आविर् + भू] १ प्रकट होना। २ उत्पन्न होना। आविहवइ (स ४८)।

आविहूअ देखो आविब्भूय (स ७१८)।

आवी देखो आवि = आविस्, 'आवी वा जइ वा रहस्से' (उत्त १, १७, सुख १, १७)। °कम्म देखो आविकम्म (आचा २, १५, ५)।

आवीअ वि [आपीत] १ पीत। २ शोषित (से १३, ३१)।

आवीइ वि [आवीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न, 'गब्भप्पभिइमावीइसलिलच्छेए सर व सूसत। अरणुसमय मरमारणे, जीयति जरणो कहं भरणइ?' (सुपा ६५१)। °मरण न [°मरण] मररण-विशेष (भग १३, ७)।

आवीकम्म न [आविष्कर्मन्] १ उत्पत्ति। २ अभिव्यक्ति (ठा ६, कप्प)।

आवीड सक [आ + पीड्] १ पीडना। २ दबाना। आवीडइ (सरण)।

आवीण न [आपीन] स्तन, थन (गउड)।

आवील देखो आवेड = आपीड (स ३१५)।

आवील देखो आवीड। सक आवीलियाण (आचा २, १, ८, १)।

आवीलण न [आपीडन] समूह, निचय (गउड)।

आवुअ पु [आवुक] नाटक की भाषा में पिता, बाप (नाट)।

आवुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे २, १०२)।

आवुत्त पुं [दे] भगिनी पति (अभि १८३)।

आवुद वि [आवृत] ढका हुआ (प्राकृ ८, १२)।

आवुदि स्त्री [आवृति] आवरण (प्राकृ ८, १२)।

आवूर देखो आपूर = आ + पूरय्। वकृ आवूरेंत (पउम ७६, ८)। कवकृ आवूरिज्ज-माण (स ३८२)।

आवूरण न [आपूरण] पूर्ति (स ४३६)।

आवूरिय देखो आऊरिय (पउम ६४, ५२, स ७७)।

आवेअ सक [आ + वेदय्] १ विनति करना, निवेदन करना। २ बतलाना। आवेएइ (महा)।

आवेअ पुं [आवेग] कष्ट, दुख (से १०, ५७, ११, ७२)।

आवेड देखो आवा।

आवेड्ढिय वि [आवेष्टित] वेष्टित, घिरा हुआ (गा २८)।

आवेड } आवेडय } देखो आमेल (हे २, २३४, कुमा)।

आवेढ पु [आवेष्ट] १ वेष्टन। २ मराडलाकार करना (से ७, २७)।

आवेढण न [आवेष्टन] ऊपर देखो (गउड, पि ३०४)।

आवेढिय वि [आवेष्टित] १ चारों ओर से वेष्टित (भग १६, ६, उप पृ ३०७)। २ एक बार वेष्टित (ठा)।

आवेयण न [आवेदन] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाश-करण (गउड, दे ७, ८७)।

आवेरअ वि [दे] १ विशेष आसक्त। २ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (षड्)।

आवेस सक [आ + वेशय्] भूताविष्ट करना। संकृ आवेसिऊण (स ६४)।

आवेस पु [आवेश] १ अभिनिवेश। २ जोश। ३ भूतग्रह। ४ प्रवेश (नाट)।

आवेसण न [आवेशन] शून्यगृह, 'आवेसण-सभापवासु पणियसालासु एगया वासो' (आचा)।

आस देखो अस्स = अस्र (प्राकृ २६)।

आस अक [आस्] बैठना। वकृ 'अजयं आसमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ' (दस ४)। हेकृ आसित्तए, आसइत्तए, आसइत्तु (पि ५७८, कस, दस ६, ५८)।

आस पु [अश्व] १ अश्व, घोड़ा (णाया १, १७)। २ देव-विशेष, अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा)। ३ अश्विनी नक्षत्र (चंद २०)। ४ मन, चित्त (पण्ह २)। °कण्ण, °कन्न पु [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी (ठा ४, २)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। °तर पुं [°तर] खच्चर (श्रा १८)। °त्थाम पुं [°स्थामन्] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र (कुमा)। °द्धअ पु [°ध्वज] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४२)। °धम्म पु [°धर्म] दूसरा पूर्वोक्त अर्थ (पउम ५, ८२)। °धर वि [°धर] अश्व को धारण करनेवाला (औप)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (इक, ठा २, ३)। °मक्खिया स्त्री [°मक्षिका] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव ३६७)। °मद्दग, °मद्दय पु [°मर्दक] अश्व का मर्दन करनेवाला (णाया १, १७)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने

सामुच्छेदिक पंथ चलाया था (ठा ७)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी (ठा ४,२)। °मेह पु [°मेध] यज्ञ-विशेष (पउम ११, ४२)। °रह पु [°रथ] घोड़ा-गाड़ी (णाया १, १)। °वार पुं [°वार] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया (सुपा २१४)। °वाह-णिया स्त्री [°वाहनिका] घोड़े की सवारी, घोड़े पर सवार होकर फिरना (विपा १, ६)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता (कप्प)। २ पंचवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। °रोह पु [°रोह] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया (से १२, ६६)।

आस पुस्त्री [आश] भोजन, 'मासासाए पाय-रासाए' (सूअ २, १)।

आस पु [आस] क्षेपण, फेंकना (विसे २७६५)।

आस न [आस्य] मुख, मुँह (णाया १, ८)।

आसइ वि [आश्रयिन्] आश्रय-स्थित, 'थभा-सइणी जाया सा देवी सालभंजिव्व' (धर्मवि १८७)।

आसंक सक [आ + शङ्क्] १ संदेह करना, संशय करना। २ अक भयभीत होना। आसंकइ (स ३०)। वकृ आसकंत, आस कमाण (नाट, माल ८३)।

आसंका स्त्री [आशङ्का] शङ्का, भय, वहम, संशय (सुर ६, १२१, महा, नाट)।

आसंकि वि [आशङ्किन्] आशङ्का करने-वाला (गा २०५)।

आसंकिय वि [आशङ्कित] १ संदिग्ध, संश-यित। २ संभावित (महा)।

आसंकिर वि [आशङ्कितृ] आशंका करने-वाला, वहमी (सुर १४, १७, गा २०६)।

आसग पुं [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६)।

आसंग पुं [आसङ्ग] १ आसक्ति, अभिष्वंग। २ संबन्ध। (गउड)। ३ राग (आचा)।

आसंगि वि [आसङ्गिन्] १ आसक्त। २ संबन्धी, संयोगी (गउड)। स्त्री. °णी (गउड)।

आसंघ सक [सं + भावय्] १ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। आसंघइ (से १५, ६०)। कृ- आसंघत (से १५, ६२)।

आसंघ पु [दे] १ श्रद्धा, विश्वास (सुपा ५२६, षड्)। २ अध्यवसाय, परिणाम (से १,१५)। ३ आशंसा, इच्छा, चाह (गउड)।

आसंघा स्त्री [दे] १ इच्छा, वाञ्छा (दे १, ६३)। २ आसक्ति (मै २)।

आसंघिअ वि [दे] १ अध्यवसित। २ अव-धारित (से १०, ६६)। ३ संभावित (कुमा, स १३७)।

आसंजिअ वि [आसक्त] पीछे लगा हुआ (सुर ८, ३०, उत्तर ६१)।

आसंदय न [आसन्दक] आसन-विशेष (आचा, महा)।

आसंदय पुन [आसन्दक] आसन-विशेष, मंच (सुअ ६, १)।

आसंदाण न [आसन्दान] अवष्टम्भन, अव-रोध, रुकावट (गउड)।

आसंदिआ स्त्री [आसन्दिका] छोटा मञ्च (सूअ १, ४, २, १५, गा ६६७)।

आसंदी स्त्री [आसन्दी] आसन-विशेष, मञ्च (सूअ १, ६, दस ६, ५४)।

आसंधी स्त्री [अश्वगन्धी] वनस्पति-विशेष (सुपा ३२४)।

आसंबर त्रि [आशाम्बर] १ दिगम्बर, नग्न (प्रामा)। २ जैन का एक मुख्य भेद। ३ उसका अनुयायी (स २)।

आससइय वि [असंशयित] संशय रहित (सूअ २, २, १६)।

आसंसण न [आशंसन] इच्छा, अभिलाषा (मास ६५)।

आससा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, इच्छा (आचा)।

आससि वि [आशंसिन्] अभिलाषी, इच्छा करनेवाला (आचा)।

आससिअ वि [आशंसित] अभिलषित (गा ७६)।

आसक्खय पु [दे] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद (दे १, ६७)।

आसग देखो आस = अश्व (णाया १,१२)।

आसगलिअ वि [दे] आक्रान्त, 'आसगलिओ तिव्वकम्मपरिणईए' (स ४०४)।

आसगलिअ वि [दे] प्राप्त, 'एव विसयविमुद्ध-चित्तणेण लद्धिओ धम्मसंपाओ, आसगलियं बोधिबीयं' (स ६७६)।

आसज्ज अ [आसाद्य] प्राप्त करके (विसे ३०)।

आसड पुं [आसड] विक्रम की तेरहवी शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (विवे १४३)।

आसण न [आसन] १ जिसपर बैठा जाता है वह चौकी आदि (आव ४)। २ स्थान, जगह (उत्त १, १)। ३ शय्या (आचा)। ४ बैठना, उपवेशन (ठा ६)।

आसणिअ वि [आसनित] आसन पर बैठाया हुआ (स २६२)।

आसण्ण न [आसन्न] १ समीप, पास। २ वि समीपस्थ (गउड)। देखो आसन्न।

आसत्त वि [आसक्त] लीन, तत्पर (महा; प्रासू ६४)।

आसत्त वि [आसक्त] १ नीचे लगा हुआ (राय ३५)। २ पुं. नपुसक का एक भेद, वीर्यपात होने पर भी स्त्री का आलिंगन कर उसके कक्षादि अंगो मे जुडकर सोनेवाला नपुंसक (पव १०६)।

आसत्ति स्त्री [आसक्ति] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता (कुमा)।

आसत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड (पउम ५३, ७६)।

आसत्थ वि [आश्वस्त] १ आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ। २ विश्रान्त (णाया १,१, सम १५२, पउम ७, ३८, दे ७, २८)।

आसन्न देखो आसण्ण (कुमा, गउड)। °वत्ति वि [°वर्तिन्] नजदीक मे रहनेवाला (सुपा ३५१)।

आसम पु [आश्रम] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान (पण्ह १,३, औप)। २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और भैक्ष्य (सन्यास) ये चार प्रकार की अवस्था (पचा १०)।

आसमपय न [आश्रमपद] तापसो के आश्रम से उपलक्षित स्थान (उत्त ३०, १७)।

आसमि वि [आश्रमिन्] आश्रम मे रहनेवाला, ऋषि, मुनि वगैरह (पचव १)।

आसय अक [आस्] बैठना। आसयति (जीव ३)।

आसय सक [आ + श्री] १ आश्रय करना, अवलम्बन करना। २ ग्रहण करना। आसयइ (कप्प)। वकृ. आसयंत (विसे ३२२)।

आसय पुं [आशक] खानेवाला (आचा)।

आसय पु [आश्रय] आधार, अवलम्बन (उप ७१४, सुर १३, ३६)।

आसय पुं [आशय] १ मन, चित्त, हृदय (सुर १३, ३६, पाअ)। २ अभिप्राय (सूअ १, १५)।

आसय न [दे] निकट, समीप (दे १, ६५)।

आसरिअ वि [दे] समुख-आगत, सामने आया हुआ (दे १, ६६)।

आसव अक [आ + स्रु] धीरे-धीरे झरना, टपकना। वकृ. आसवमाण (आचा)।

आसव सक [आ + स्रु] आना, 'आसवदि जेण कम्म परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो' (द्रव्य २६)।

आसव पु [आश्रव] सूक्ष्म छिद्र, देखो, 'सयासव' (भग १, ६)।

आसव पु [आसव] मद्य, दारू (उप ७२८ टी)।

आसव पुं [आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्मबन्ध होता है वह हिंसा आदि (ठा २, १)। २ वि. श्रोता, गुरु-वचन को सुननेवाला (उत्त १)। °सक्कि वि [°सक्तिन्] हिंसादि मे आसक्त (आचा)।

आसवण न [दे] वास-गृह, शय्या-घर (दे १, ६६)।

आसवाहिया स्त्री [अश्ववाहिका] अश्व-क्रीडा (धर्मवि ४)।

आसाअ सक [आ + सादय्] स्पर्श करना, छूना। आसाएज्जा। वकृ. आसायमाण (आचा २, ३, २, ३)।

आसस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना, विश्राम लेना। आससइ, आससमु (पि ८८, ४६६)।

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा (पण्ह १, ३)।

आससा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, 'जेसिं तु परिमाए, त दुट्ठं आससा हाइ' (विसे २५१६)।

आससिय वि [आश्वस्त] आश्वासन-प्राप्त (स ३७८)।

आसा स्त्री [आशा] १ आशा, उम्मीद (औप, से १, २६, सुर ३, १७७)। २ दिशा (उप ६४८ टी)। ३ उत्तर रुचक पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८)।

आसाअ सक [आ + स्वाद्] स्वाद लेना, चखना, खाना। आसायति (भग)। वकृ. आसाअंत, आसाएत, आसायमाण (नाट, से ३, ४१, णाया १, १)।

आसाअ सक [आ + सादय्] प्राप्त करना। वकृ. आसाएंत (से ३, ४५)।

आसाअ सक [आ + शातय्] अवज्ञा करना, अपमान करना। आसाएज्जा (महानि ५)। वकृ आसायत, आसाएमाण (श्रा ६, ठा ४)।

आसाअ पु [आस्वाद] १ स्वाद, रस (गा ५६३, से ६, ६८, उप ७६८ टी)। २ तृप्ति (से १, २६)।

आसाअ पु [आऽस्वाद] स्वाद का बिलकुल अभाव (तंदु ४५)।

आसाअ देखो आसय = आश्रय (तदु ४५)।

आसाअ पु [आसाद] प्राप्ति (से ६, ६८)।

आसाइअ वि [आशातित] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (पुप्फ ४५४)। २ न. अवज्ञा, तिरस्कार (विवे ६२)।

आसाइअ वि [आस्वादित] चखा हुआ, थोडा खाया हुआ (से ५, ४६)।

आसाइअ वि [आसादित] प्राप्त, लब्ध (हेका ३०, भवि)।

आसाढ पु [आषाढ] १ आसाढ मास (सम ३६)। २ एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था (ठा ७)। °भूइ पु [°भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि (कुम्मा २६)।

आसाढा स्त्री [आषाढा] नक्षत्र-विशेष (ठा २)।

आसाढी स्त्री [आषाढी] आषाढ मास की पूर्णिमा (सुज)।

आसाढी स्त्री [आषाढी] १ आषाढ मास की पूर्णिमा। २ आषाढ मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

आसादेत्तु वि [आस्वादयितृ] आस्वादन करनेवाला (ठा ७)।

आसामर पु [आशामर] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम (पउम १५३)।

आसायण न [आस्वादन] स्वाद लेना, चखना (पउम ३२, ७४; णाया १, ६; सुपा २०८)।

आसायण न [आशातन] १ नीचे देखो (निचू १६)। २ अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन (निचू)।

आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्त्तन, अपमान, तिरस्कार (पडि)।

आसारव सक [आ + सारय्] तदुरुस्त करना, वीणा को ठीक करना। संकृ आसारिऊण (सिरि ८६४)।

आसार पुं [आसार] तदुरुस्ती, वीणा को ठीक करना (कुप्र १३६)।

आसार पुं [आसार] वेग से पानी का बरसना, (से १, ३०; सुपा ६०६)।

आसारिय वि [आसारित] ठीक किया हुआ, 'आसारिया तुरंतेरा वीणा' (कुप्र १३६)।

आसालिय पुंस्त्री [आसालिक] १ सर्प की एक जाति (पराण १, १)। २ स्त्री विद्या-विशेष (पउम ७२, ६४, ५२, ६)।

आसावत्ती स्त्री [आशापत्री] ... नारी (ती १५)।

आसावि वि [आस्राविन्] झरनेवाला, सच्छिद्र (सूअ, १, ११)।

आसास सक [आ + श्वास्] आशा करना, उम्मीद करना। आसासदि (वेणी ३०)।

आसास सक [आ + श्वासय्] आश्वासन देना, सान्त्वना करना। आसासइ (उत्त १६)। वकृ आसासंत, आसासिंत (से ११, ८७, ८८, १२)।

आसास पुं [आश्वास] १ आश्वासन, सान्त्वना (गउड ८३; सुपा ८३; उप ६६२)। २ विश्राम (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष (णाया)।

आसासय पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, द्वीप या घर, मंच, परिच्छेद, अध्याय (से २, ४९)। २ वि. आश्वासन देनेवाला, 'नरनाह आसासय पुरिसुत्तम' (कुप्र ३८)।

आसासण पुं [आसासन] बीज-जातक वृक्ष (दे)।

आसासन न [आश्वासन] १ सान्त्वना, दिलासा (सुर ६, १९०; १२, ५१; उप पृ ५७)। २ द्वीपों के देश-विशेष (ठा २, ३)।

आसासण पु [आश्वासन] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि. आश्वासन-दाता (कुप्र ११०)।

आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (से ११, १३६; सुर ४, २८)।

आसि सक [आ + श्रि] आश्रय करना। संकृ॰ आसिज्ज (आचा ६६)।

आसि देखो अस = अस्।

आसि वि [आशिन] खानेवाला, भोजक (सट्ठि १३)।

आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक, 'दुट्ठे वि य जो आसे दमेइ त आसियं विंति' (वव ४)।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त (कप्प, सुर ३, १८, से ६, ६५, विसे ८५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित (पउम ३२, ६६)।

आसिअ देखो आसित्त (णाया १, १; कप्प, औप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित (दे १, ६७; सूत्र कृ० चूर्णी नू० गा २८५)।

आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन (से ८, ६३)।

आसिआ देखो आसी = आशिष् (षड्)।

आसिच सक [आ + सिच्] सींचना। कर्म आसिच्चंत (नेइय ५५१)।

आसिण वि [आशिन्] खानेवाला, भोक्ता, 'ममासिणम्स' (पउम २६, ३७)।

आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास (पाअ)।

आसित्त वि [आसिक्त] १ थोड़ा सिक्त (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सींचा हुआ (आवम)। ३ पुं नपुंसक का एक भेद (पुष्प १२८)।

आसित्तिरा स्त्री [दे] माया-विशेष, 'सिता-लदि आसित्तियसो माया दजं साविंति' (गुब्ब १०, १३)।

आसियागार देखो आसीवार (पृष १, १४, १६)।

आसिल पुं [आसिल] एक महर्षि (सूअ १, ३, ४, ३)।

आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित (नाट)।

आसिलिस सक [आ + श्लिष्] आलिंगन करना। हेकृ आलेट्ठुअ, आलेट्ठु (हे २, १६४)।

आसिसा देखो आसी = आशिष् (महा; अभि १३३)।

आसी देखो अस् = अस्।

आसी स्त्री [आशी] दाढा (विसे)। °विस पु [°विष] १ जहरिला साँप, 'आसी दाढा तग्गयविसामीविसा मुणेयव्वा' (जीव १ टी; प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा ७, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि विशेष को प्राप्त (भग ८, १)।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद (सुर १, १३८)। °वयण न [°वचन] आशीर्वाद (सुपा ४६०)। °वाय पु [°वाद] आशीर्वाद (सुर १२, ४३; सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ, 'नमिऊण आसीणा तओ' (वसु)।

आसीवअ पु [दे] दरजी, कपड़ा सीनेवाला (दे १, ६६)।

आसीसा देखो आसी = आशिष् (षड्)।

आसु पुन [अश्रु] आँसू (सक्षि १७)।

आसु ⎫ अ [आशु] शीघ्र, तुरंत, जल्दी (सार्ध
आसुं ⎭ १८, महा, काल)। °कार पु [°कार] १ हिंसा, मारना। २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरह (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित, 'आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए' (आउ ६)। °पण्ण वि [°प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि। २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी (सूअ १, ६, १४)।

आसुर वि [आसुर] असुर-सम्बन्धी (ठा ४, ४; आउ ३६)।

आसुरत्त न [आसुरत्व] क्रोधीपन, गुस्सा (उप ८, ८५)।

आसुरिय पु [आसुरिक] १ असुर, असुर रूप से उत्पन्न (राज)। २ वि असुर-सम्बन्धी (सूअ २, २, २७)।

आसुरीय वि [असुरीय] असुर-संबन्धी,

'आसुरीय दिस वाला गच्छति अवसातम' (उत ७, १०)।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] १ शीघ्र क्रुद्ध। २ अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित (विपा १, ६)।

आसूणि न [आशूनिन] १ बलिष्ठ बनाने-वाली खुराक। २ रसायन-क्रिया (सूत्र १, ६)।

आसूणी स्त्री [आशूनी] श्लाघा, प्रशंसा (सूत्र १ ६, १५)।

आसूणिय वि [आशूनित] थोडा न्यून किया हुआ (पण्ह १, ३)।

आसूय न [दे] औपयाचितक, मनौती (पिंड ४०५)।

आसेअणय वि [आसेचनक] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह (दे १,७२)।

आसेव सक [आ + सेव्] १ सेवना। २ पालना। ३ आचरना। आसेवए (आप ६७)।

आसेवण न [आसेवन] १ परिपालन, संरक्षण (सुपा ४३८)। २ आचरण (स २७१)। ३ मैथुन, रतिसंभोग (दसचू १, पव १७०)।

आसेवणया } स्त्री [आसेवना] १ परिपालन
आसेवणा } (सूत्र १, १४)। २ विपरीत आचरण (पव)। ३ अभ्यास (आचू)। ४ शिक्षा का एक भेद (धर्म ३)।

आसेवा स्त्री [आसेवा] ऊपर देखो (सुपा १०)।

आसेविअ वि [आसेवित] १ परिपालित। २ अभ्यस्त (आचा)। ३ आचरित, अनुष्ठित (स ११८)।

आसोअ पु [अश्वयुज्] आश्विन मास (रयण ३६)।

आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष संबन्धी (गउड)।

आसोइया स्त्री [दे. आसोतिका] औषधि-विशेष, 'आसोइयाइमीस चोल घुसिए कुसुमस-मीस' (सुपा ३६७)।

आसोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन पूर्णिमा (इक)।

आसोई } स्त्री [आश्वयुजी] १ आश्विन
आसोया } मास की पूर्णिमा। २ आश्विन मास की अमावस (सुज १०, ७, ६)।

आसोकंता स्त्री [आशोक्रान्ता] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

आसोत्थ पु [अश्वत्थ] पीपल का पेड (पण्ण १ उप २३६)।

आह सक [ब्रू] कहना। भूका—आहंसु, आहु (कप्प)।

आह सक [काङ्क्ष्] चाहना, इच्छा करना। आहइ (हे ४, १६२, षड्)। वकृ आहंत (कुमा)।

आहडल देखो आखंडल (हम्मीर १५)।

आहतु देखो आहण।

आहच्च अ [दे] १ अन्यथा। २ निष्कारण (वव १)। °भाव पु [°भाव] कादाचित्कता (पव १०७ टी)।

आहच्च न [दे] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय (दे १, ६२)। २ अ शीघ्र, जल्दी (आचा)। ३ कदाचित्, कभी (भग ६, १०)। ४ उप-स्थित होकर (आचा)। ५ व्यवस्था कर (सूत्र २, १)। ६ विभक्त कर (आचा)। ७ छीन कर (दसा)।

आहच्चा स्त्री [आहत्या] प्रहार, आघात (भग १५)।

आहट्ट न [दे] देखो आहट्टु = दे (पव ७३ टी)।

आहट्टु स्त्री [दे] प्रहेलिका, पहेलियाँ, बुझौवल, 'नेसु न विम्हयइ सय आहट्टुकुहेडएहिं य' (पव ७३)।

आहट्टु देखो आहर = आ + हृ।

आहड [आहृत] १ छीन लिया हुआ। २ चोरी किया हुआ (सुपा ६४३)। ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित (स १८८)।

आहड न [दे] सीत्कार, सुरत शब्द (षड्)।

आहण सक [आ + हन्] आघात करना, मारना। आहणामि (पि ४६६)। संकृ आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता (पि ५६१, ५८५, ५८२)। हेकृ आहतु (पि ५७६)।

आहण सक [आ + हन्] उठाना। संकृ आहु [? हु] णिय (राय १८, २१)।

आहणण न [आहनन] आघात (उप ३६६)।

आहणाविय वि [आघातित] आहत कराया हुआ (स ५२७)।

आहत्तहीय न [याथातथ्य] १ यथावस्थित-पन, वास्तविकता। २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि। ३ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन (सूत्र १, १३, पि ३३५)।

आहम्म सक [आ + हम्म्] आना, आगमन करना। आहम्मइ (हे ४, १६२)।

आहम्मिअ वि [अधार्मिक] अधर्म-संबन्धी (दस ८, ३१)।

आहम्मिअ वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी (सम ५१)।

आहय वि [आहत] आघात प्राप्त, प्रेरित (कप्प)।

आहय वि [आहृत] १ आकृष्ट, खींचा हुआ। २ छीना हुआ (उप २११ टी)।

आहर सक [आ + हृ] १ छीनना, खींच लेना। २ चोरी करना। ३ खाना, भोजन करना। आहरइ (पि १७३)। कवकृ आहरिज्जमाण (ठा ३)। संकृ आहट्टु (पि २८६)। हेकृ आहरित्तए (तदु)।

आहर सक [आ + हृ] लाना। आहराहि (सूत्र १ ४, २, ४), आहरेमो (सूत्र २, २, ५५)।

आहरण पुन [आहरण] १ उदाहरण, दृष्टान्त (ओघ ५३६, उप २६३,६५१)। २ आह्वान, बुलाना (सुपा ३१७)। ३ ग्रहण, स्वीकार। ४ व्यवस्थापन (आचा)। ५ आनयन, लाना (सूत्र २, २)।

आहरण पुन [आभरण] भूषण, अलंकार, 'देहे आहरणा बहू' (श्रा १२, कप्पू)।

आहरणा स्त्री [दे] खर्राट, नाक का खरखर शब्द (ओघ २)।

आहरिसिय वि [आधर्षित] तिरस्कृत, भर्त्सित, 'आहरिसिओ दूओ सभत्तेण नियत्तिओ' (आवम)।

आहल्ल (अप) अक [आ + चल्] हिलना, चलना, 'नंदनइ दंतपंती आहल्लइ, खलइ जीहा' (भवि)।

आहल्ला स्त्री [आहल्या] विद्याधर-राज की एक कन्या (पउम १३, ३५)।

आहव सक [आ + ह्वे] बुलाना। आहवगु

(धर्मवि ८)। संकृ आहविउं, आहविऊण (धर्मवि ६८, सम्मत्त २१७)।

आहव पुं [आहव] युद्ध लड़ाई (पाअ, सुपा २८८, धारा ४१)।

आहवण } न [आह्वान] १ बुलाना।
आहव्वण } २ ललकारना (श्रा १२, सुपा ६०, पउम ६१, ३०, स ६४)।

आहविअ देखो आहूअ = आहूत (ती ४)।

आहव्व वि [आभाव्य] शास्त्रोक्त क्षेत्रादि (पंचा ११, ३०, पव १०५)।

आहव्वणी स्त्री [आह्वानी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आहा सक [आ + ख्या] कहना। कर्म. आहिज्जइ (पि ५४४), आहिज्जंति (कप्प)।

आहा सक [आ + धा] स्थापन करना। कर्म आहिज्जइ (सूअ २, २)। हेकृ आहेउ (सूअ १, ६)। संकृ आहाय (उत्त ५)।

आहा स्त्री [आभा] कान्ति, तेज (कप्पू)।

आहा स्त्री [आधा] १ आश्रय, आधार (पिंड)। २ साधु के निमित्त आहार के लिए मन-प्रणिधान (पिंड)। °कड वि [°कृत] आधा-कर्म-दोष से युक्त (स १८८)। °कम्म न [°कर्मन्] १ साधु के लिए आहार पकाना। २ साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (पण्ह २, ३, ठा ३, ४)। °कम्मिअ वि [°कर्मिक] देखो पूर्वोक्त अर्थ (भग)।

आहाण न [आधान] १ स्थापन। २ स्थान, आस्पद, 'नयरगुणाण' (धात ४, उवर २६)।

आहाण } न [आख्यान, °क] १ उक्ति,
आहाणय } वचन। २ किंवदन्ती, कहावत, लोकोक्ति (सुर २, ६६, उप ७२८ टी)।

आहातहिय वि [याथातथ्य] सत्य, वास्तविक (सूअ २,१,२७)। देखो आहत्तहीय।

आहार सक [आ + हारय्] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। आहारइ, आहारेंति (भग)। वकृ आहारेमाण (कप्प)। कवकृ आहारिज्जमाण (भग)। हेकृ आहारित्तए, आहारेत्तए (कप्प)। कृ. आहारेयव्व (ठा ३)।

आहार पुं [आहार] १ खुराक, भोजन (स्वप्न ६०, प्रासू १०४)। २ खाना, भक्षण (पव)। ३ न देखो आहारग (पव १०२, ६८)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] भुक्त आहार को खल और रस के रूप मे बदलने की शक्ति (भग ६, ४)। °पोसह पुं [°पोषध] व्रत विशेष, जिसमे आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग किया जाता है (श्राव ६)। °सण्णा स्त्री [°संज्ञा] आहार करने की इच्छा (ठा ४)।

आहार पु [आधार] १ आश्रय, अधिकरण (सुपा १२८, सया १०३)। २ आकाश (भग २०, २)। ३ अवधारण, याद रखना (पुप्फ ३५६)।

आहारग न [आहारक] १ शरीर विशेष, जिसको चोदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है (ठा २, २)। २ वि भोजन करनेवाला (ठा २, २)। ३ आहारक शरीर-वाला (विसे ३७५)। ४ आहारक शरीर उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह (कप्प)। °जुगल न [°युगल] आहारक शरीर और उसके अंगोपाङ्ग (कम्म २, १७, २४)। °णाम न [°नामन्] आहारक शरीर का हेतु भूत कर्म (कम्म १, ३३)। °दुग न [°द्विक] देखो °जुगल (कम्म २, ३, ८, १७)।

आहारण वि [आधारण] १ धारण करने-वाला। २ आधार-भूत (से ६, ५०)।

आहारण वि [आहारण] आकर्षक (से ६, ५०)।

आहारय देखो आहारग (ठा ६, भग, पण्ण २८, ठा ४, १, कर्म १, ३७)।

आहाराइणिया स्त्री [याथारात्निकता] यथा-ज्येष्ठ, ज्येष्ठानुक्रम (कप्प)।

आहारि वि [आहारिन्] आहार-कर्त्ता (भत्त १११)।

आहारिम वि [आहार्य] १ खाने योग्य। २ जल के साथ खाया जा सके ऐसा योग्य चूर्ण-विशेष (पिंड ५०२)।

आहारिम वि [आहार्य] आहार के योग्य, खाने लायक (निचू ११)।

आहारिय वि [आहारित] १ जिसने आहार किया हो वह, 'तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स' (णाया १, १९)। २ भक्षित, भुक्त (भग)।

आहारणा स्त्री [आभारणा] अपरिगणना, गणना का अभाव (गउड)।

आहावणा स्त्री [आभावना] उद्देश्य (पिंड ३६१)।

आहाविअ वि [आधावित] दौड़ा हुआ (सिरि ७५२)।

आहाविर वि [आधावितृ] दौडनेवाला (सण)।

आहास देखो आभास = आ + भाष्। सकृ आहासिवि (अप) (भवि)।

आहाह अ [आहाह] आश्चर्य-द्योतक अव्यय (हे २, २१७)।

आहि पुस्त्री [आधि] मन की पीडा (धम्म १२ टी)।

आहिआइ स्त्री [आभिजाति] कुलीनता, खानदानी (से १, ११)।

आहिआई स्त्री [आभिजाती] कुलीनता (गा २८५)।

आहिंड सक [आ + हिण्ड्] १ गमन करना, जाना। २ परिश्रम करना। ३ घूमना, परिभ्रमण करना। वकृ आहिंडंत, आहिंडेमाण (उप २६४ टी, णाया १,१)। संकृ. आहिंडिय (महा, स १९३)।

आहिंडग } वि [आहिण्डक] चलनेवाला,
आहिंडय } परिभ्रमण करनेवाला (ओघ ११५, ११८, औप)।

आहिक्क न [आधिक्य] अधिकता (विसे २८८७)।

आहिजाइ देखो आहिआइ (महा)।

आहिजाई देखो आहिआई (गा २४)।

आहितुंडिअ पु [आहितुण्डिक] गारुडिक, सपहरिया, सपेरा (मुद्रा ११६)।

आहित्थ वि [दे] १ चलित, गत। २ कुपित, क्रुद्ध (दे १,७६, जीव ३ टी)। ३ आकुल, घबराया हुआ (दे १, ७६, से १३, ८३, पाअ), 'आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोस-भरियं च' (जीव ३ टी)।

आहिद्ध वि [दे] १ रुद्ध, रुका हुआ। २ गलित, गला हुआ (षड्)।

आहिपच्च न [आधिपत्य] मुखियापन, नेतृत्व (उप १०३१ टी)।

आहिय वि [आहित] १ स्थापित, निवेशित (ठा ४)। २ सम्पूर्ण हितकर (सूअ)। ३ निर्णीत,

निर्मित (पाअ)। °ग्गि पु [°ाग्नि] अग्नि-होत्रीय ब्राह्मण (पउम ३५, ५)।

आहिय वि [आहित] १ व्याप्त, 'अचिरेणा-हिओ एम जलोयरवाहिणा' (कुप्र ४३)। २ जनित उत्पादित। ३ प्रथित, प्रसिद्धि-प्राप्त (सूत्र १, २, २, २९)। ४ सर्वथा हितकारी (सूत्र १ २, २, २७)।

आहिय वि [आख्यात] कहा हुआ, प्रति-पादित, उक्त (पएण ३३, सुज्ज १९)।

आहियार पु [अधिकार] अधिकार, सत्ता, हक (पउम ५५, ८)।

आहिवत्त देखो आहिपत्त (काल)।

आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि से गृहीत, पति-बुद्धि से स्वीकृत (से १३,१७)।

आहीर पु [आहीर] १ देश-विशेष (कप्प)। २ शूद्र जाति विशेष, अहीर (सूत्र १, १)। ३ इस नाम का एक राजा (पउम ९८, ६४)। स्त्री °री—अहीरिन (सुपा ३६०)।

आहु सक [आ + ह्वे] बुलाना। कृ आहु-णिज्ज (औप)।

आहु [आ + हु] दान करना, त्याग करना। कृ आहुणिज्ज (णाया १, १)।

आहु अ [आहु] अथवा, या (नाट)।

आहु पुं [दे] घूक, उल्लू (दे १, ६१)।

आहु देखो आह = ब्रू।

आहुइ वि [आहोतृ] दाता, त्यागी (णाया १, १)।

आहुइ स्त्री [आहुति] १ हवन, होम (गउड)। २ होम का पदार्थ, बलि (स १७)।

आहुदुर / आहुदुरु पु [दे] बालक, बच्चा (दे १, ६६)।

आहुड न [दे] १ सीत्कार, सुरत समय का शब्द। २ पणित, विक्रय, बेचना (दे १,७४)।

आहुड अक [दे] गिरना। आहुडइ (दे १, ६९)।

आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुआ (दे १, ६९)।

आहुण सक [आ + धु] कँपाना, हिलाना। कवकृ आहुणिज्जमाण (णाया १, ९)।

आहुणिय वि [आधुनिक] १ आजकल का, नवीन। २ पु ग्रह-विशेष (ठा २, ३)।

आहुत्त न [दे अभिमुख] सम्मुख, सामने, 'कुमरोवि पहाविओ तयाहुत्त' (महा, भवि)।

आहूअ वि [आहूत] बुलाया हुआ (पाअ)।

आहूअ पु [आहूक] पिशाच-विशेष (इक)।

आहूअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात, 'आहूओ से गब्भो' (वसु)।

आहेउं देखो आहा = आ + धा।

आहेड / आहेडग / आहेडय पुन [आखेट, °क] शिकार, मृगया (सुपा १९७, स ६७, दे)।

आहेडिय वि [आखेटिक] मृगया-सम्बन्धी, 'आहेडियभसणेण' (सम्मत्त २२९)।

आहेण न [दे] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह (आचा २, १, ४)।

आहेय वि [आधेय] १ स्थाप्य। २ आश्रित (विसे ६२४)।

आहेर देखो आहीर (विसे १४५४)।

आहेवच्च न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन (सम ८६)।

आहेवण न [आक्षेपण] १ आक्षेप। २ क्षोभ उत्पन्न करना (पण्ह १, २)।

आहोअ देखो आभोग (से १, ४९, ६, ३१ गा ८८, गउड)।

आहोअ देखो आभोय = आ + भोजय्। संकृ आहोइऊण (स ५५)।

आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट (स ४८५)।

आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग ही जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान (कप्प)।

आहोड सक [ताडय्] ताडन करना, पिटना आहोडइ (हे ४, २७)।

आहोरण [आधोरण] हस्तिपक, महावत (पाअ, स ३६९)।

आहोहि / आहोहिय वि [आधोवधिक] अवधि-ज्ञानी का एक भेद, नियत क्षेत्र को अवधिज्ञान से देखनेवाला (भग, सम ६६)।

इअ पाइअसद्दमहण्णवे आयाराइसद्दसकलणो विइओ तरंगो समत्तो।

इ

इ पु [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-वर्ण (प्रामा)। २–३ वाक्यालङ्कार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कप्प, हे २, ११७, षड्)।

इ देखो इइ (उवा)।

इ सक [इ] १ जाना, गमन करना। २ जानना। एइ, एति (कुमा)। वकृ एंत (कुमा)। संकृ इच्चा (आचा)। हेकृ इत्तए, एत्तए (कप्प, कस)।

इअहरा देखो इयरहा (प्राकृ ३७)।

इइ अ [इति] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ समाप्ति (आचा)। २ अवधि, हद (विसे)। ३ मान, परिमाण (पव ८४)। ४ निश्चय (निचू २,१५)। ५ हेतु, कारण (ठा ३)। ६ एवम, इस तरह, इस प्रकार (उत्त २२)। देखो इति।

इओ अ [इतस्] १ इससे, इस कारण (पि १७५)। २ इस तरफ (सुपा ३८४)। ३ इस (लोक) से (विसे २५८७)।

इओअ अ [इतश्च] प्रस्तावान्तर-सूचक अव्यय (श्रा २८)।

इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा, गर्हा (सूअ १ २)।

इंखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो (सूअ १, २)।

इंगार } इंगाल } देखो अगार (पि १०२, जी ६, प्रास)। °कम्म न [°कर्मन्] कोयला आदि तय्यार करने का और बेचने का व्यापार (पडि)। °सगडिया स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का बर्तन (भग)।

इंगालडाह पुन [अङ्गारदाह] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (आचा २, १०, २)।

इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संबन्धी (दस ५)।

इंगालग देखो अगारग (ठा २, ३)।

इंगालय देखो इंगालग (सुज्ज २०)।

इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा, गंडेरी (दे १, ७९ पाअ)।

इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो इंगाल-कम्म (श्रा २२)।

इंगिअ न [इङ्गित] इशारा, संकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा (पाअ)। °ज्ञ, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] इशारे से समझनेवाला (प्राप्र, हे २, ८३; पि २७६)। °मरण न [°मरण] अनशन-विशेष (भग)।

इंगिअण्णुअ देखो इंगिअज्ञ (प्राकृ १८)।

इंगिणी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-विशेष (सम ३३)।

इंगुद न [इङ्गुद] इंगुदी वृक्ष का फल (सुख, [illegible] ९)।

इंगुद } इंगुअ } [illegible] [इङ्गुदी] वृक्ष-विशेष, [illegible] [illegible], [illegible] (प्रास, [illegible])।

इंचिअ वि [दे] [illegible], [illegible] (दे १ ८०)।

[illegible] देखो [illegible] (से ८ ६१)।

[illegible]

इंद पुं [इन्द्र] १ देवताओं का राजा, देवराज (ठा २)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक; 'णरिंद' (गउड), देविंद' (कप्प)। ३ परमेश्वर, ईश्वर (ठा ४)। ४ जीव, आत्मा, 'इंदो जीवो सव्वो-वलद्धिभोगपरमेसरत्तणओ' (विसे २९९३)। ५ ऐश्वर्य-शाली (आवम)। ६ विद्याधरों का प्रसिद्ध राजा (पउम ६,२, ७,८)। ७ पृथ्वी-काय का एक अधिष्ठायक देव (ठा ५, १)। ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ९ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर (सम १५२)। १० सप्तमी तिथि (कप्प)। ११ मेघ, वर्षा, 'किं जयइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो' (दसनि १०४)। १२ न देवविमान-विशेष (सम ३७)। °इ पु [°जित्] १ इस नाम का राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६२)। २ रावण के एक पुत्र का नाम (से १२, ८८)। °ओव देखो °गोव (पि १६८)। °काइय पु [°कायिक] त्रीन्द्रिय जीव विशेष (पण्ण १)। °कील पु [°कील] दरवाजा का एक अवयव (औप)। °कुंभ पु [°कुम्भ] १ बड़ा कलश (राय)। २ स्थान-विशेष (णाया १, ६)। °केउ पु [°केतु] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र यष्टि (पण्ह १, ४, २, ४)। °खील देखो °कील (औप, पि २०६)। °गाइय देखो °काइय (उत ३६)। °गाह पुं [°ग्रह] इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है, 'इंदग्गहा इवा खंदग्गहा इवा' (भग ३, ७)। °गोव, °गोवग, °गोवय पु [°गोप] वर्षा ऋतु में होनेवाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'गाकुन गाय' कहते हैं (उप ३२, सुर २, ८७, जी १७, पि १६८)। °गाह पु [°ग्रह] ग्रह-विशेष (जीव ३)। °ग्गि पु [°ग्नि] १ विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (अणु)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] अधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २,३)। °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मदत्त की एक पत्नी (उत्त १३)। °जाल न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट (स ४४४)। °जालि, °जालिअ वि [°जालिन, °क] मायावी, बाजीगर (ठा ४, सुपा २०३)।

°जुइण्ण पु [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। °ज्झय पु [ध्वज] बड़ी ध्वजा (पि २९९)। °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र द्वारा भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत से उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपलक्ष में किया गया उत्सव (आचू २०)। °णील पुन [°नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०)। °तरु पु [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था (पउम २०, २८)। °त्त न [°त्व] १ स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म। २ राजत्व। ३ प्राधान्य (सुपा २५३)। °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ९३६)। २ एक जैन मुनि (विपा २,७)। °दिण्ण पु [°दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प)। °धणु न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह। २ विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८,१८६)। °नील देखो °णील (पउम ३, १३२)। °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्णपक्ष की पहली तिथि (ठा ४)। °पुर न [°पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पृ १२६)। २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी (उप ९३६)। °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम (कप्प)। °प्पभ पु [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था (पउम ५, २६१)। °भूइ पु [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी (सम १९, १५२)। °मह पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव। २ आश्विन पूर्णिमा (ठा ४, २)। °माली स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी (पउम ६, १)। °मुद्धाभिसित्त पु [°मूर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवीं तिथि, सप्तमी (चंद १०)। °मेह पु [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१)। °य पु [°क] १ देखो इन्द्र (ठा ६)। २ नरक विशेष। ३

द्वीप-विशेष। ४ न. विमान विशेष (इक)। °याल देखो °जाल (महा)। °रह पु [°रथ] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °राय पुं [°राज] इन्द्र (तित्थ)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज (णाया १, १)। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसयत की पत्नी (पउम ५, ५१)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद मे ग्यारह अक्षर होते हैं (पिंग)। °वसु स्त्री [°वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी (राज)। °वाय पु [°वात] एक माण्डलिक राजा (भवि)। °वारण पु [°वारण] इन्द्र का हाथी, ऐरावत (कुमा)। °सम्म पु [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण (आवम)। °सामणिअ पु [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि-वाला देव (महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी (राज)। °सुअ पु [°सुत] इन्द्र का लडका, जयन्त (दे ६,१९)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ इन्द्र का सैन्य। २ एक महानदी (ठा ५, ३)। °हणु देखो °वणु (हे १, १८७)। °उह न [°युध] इन्द्रधनु (णाया १,१)। °उहप्पभ पु [°युधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६)। °मअ पु [°मय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६,६७)।

इंद पुन [इन्द्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१)।

इंद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-सबन्धी (णाया १, १)। २ न संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण (आवम)।

इंदगाइ पुं [दे] साथ मे सलग्न रहनेवाले कीट-विशेष (दे १, ८१)।

इंदग्गि पु [दे] बर्फ, हिम (दे १, ८०)।

इंदग्गिधूम न [दे] बर्फ, हिम (दे १, ८०)।

इंदड्ढलअ पु [दे] इन्द्र का उत्थापन (दे १, ८२)।

इंदमह वि [दे] १ कुमारी मे उत्पन्न। २ न कुमारता, यौवन (दे १, ८१)।

इंदमहकामुअ पु [दे. इन्द्रमहकामुक] कुत्ता, श्वान (दे १, ८२, पाअ)।

इंदा स्त्री [इन्द्रा] १ एक महानदी (ठा ५, ३)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)।

इंदा स्त्री [ऐन्द्री] पूर्व-दिशा (ठा १०)।

इंदाणी स्त्री [इन्द्राणी] १ इन्द्र की पत्नी (सुर १, १७०)। २ एक राज-पत्नी (पउम ६, २१९)।

इंदासणि पु [इन्द्राशनि] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

इंदिदिर पुं [इन्दिन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौंरा (पाअ, दे १, ७९)।

इंदिय पुन [इन्द्रिय] १ आत्मा का चिह्न, ज्ञान के साधन-भूत इन्द्रिय—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन, 'त तारिस नो पयलेंति इंदिया' (दसचू १, १९, ठा ६)। २ अग, शरीर के अवयव, 'नो निग्गथे इत्थीण इंदियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ' (उत्त १६)। °अवाय पु [°ापाय] इन्द्रियो द्वारा होनेवाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (पण्ण १५)। °ओगाहणा स्त्री [°ावग्रहणा] इन्द्रियो द्वारा उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (पण्ण १५)। °जय पुं [°जय] १ इन्द्रियो का निग्रह, इन्द्रियो को वश मे रखना, 'अजि-इंदिएहि चरणं, कट्ठ व घुणेहि कीरइ असार। तो धम्मत्थीहिं दढ्ढ, जइअव्व इंदियजयम्मि' (इंदि ४)। २ तपो-विशेष (पव २७०)। °ट्ठाण न [°स्थान] इन्द्रियो का उपादान कारण, जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरह (सूअ १, १)। °णिव्वत्तणा स्त्री [°निर्वर्त्तना] इन्द्रियो के आकार की निष्पत्ति (पण्ण १५)। °णाण न [°ज्ञान] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान (वव १०)। °त्थ पु [°ार्थ] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगेरह (ठा ६)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओ के रूप मे वदले हुये आहार को इन्द्रियो के रूप मे परिणत करता है (पण्ण १)। °विजय पु [°विजय] देखो °जय (पचा १८)। °विसय पु [°विषय] देखो °त्थ (उत्त ५)।

इंदिय न [इन्द्रिय] लिंग, पुरुष-चिह्न (धर्मसं ६८१)।

इंदियाल देखो इंद-जाल (सुपा ११७, महा)।

इंदियाल } देखो इंद-जालि, 'तुह कोउयत्थ-
इंदियालि } मित्थ विहिय मे खयरइंदियालेण' (सुपा २४२), 'जह एस इंदियाली, दसइ खणनस्सराइ रूवाइ' (सुपा २४३)।

इंदियालीअ देखो इंद-जालिअ, 'न भवामि अहं खयरो नरपुगव ! इंदियालीओ' (सुपा २४३)।

इंदिर पु [इन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौंरा, 'झंकारमुहरिंदिराइ' (विक्र २९)।

इंदिरा स्त्री [इन्दिरा] लक्ष्मी (सम्मत्त २२६)।

इंदीवर न [इन्दीवर] कमल, पद्म (पउम १०, ३९)।

इंदु पु [इन्दु] चन्द्र, चन्द्रमा (पाअ)।

इंदुत्तरवडिंसग न [इन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष (सम ३७)।

इंदुर पुस्त्री [उन्दुर] चूहा, मूषक (नाट)।

इंदोकंत न [इन्दुकान्त] विमान-विशेष (सम ३७)।

इंदोव देखो इंद-गोव (पाअ, दे १, ७६)।

इंदोवत्त पु [दे] इन्द्रगोप, कीट-विशेष (दे १, ८१)।

इंद्र देखो इंद = इन्द्र (पि २६८)।

इंध न [चिह्न] निशानी, चिह्न (हे १, १७७, २, ५०, कुमा)।

इंधण न [इन्धन] १ इंधन, जलावन, लकडी वगैरह दाह्य-वस्तु (कुमा)। २ अस्त्र-विशेष (पउम ७१, ६४)। ३ उद्दीपन, उत्तेजन (उत्त १४)। ४ पलाल, पुआल, तृण वगैरह, जिससे फल पकाये जाते हैं (निचू १५)। °साला स्त्री [°शाला] वह घर, जिसमे जलावन रक्खे जाते हैं (निचू १६)।

इंधिय वि [इन्धित] उद्दीपित, प्रज्वलित (बृह ४)।

इक्क न [दे] प्रवेश, पैठ, 'इक्कमप्पए पवेसण' (विसे ३४८३)।

इक्क देखो एक्क (कुमा, सुपा ३७७, द ४०, पाअ, प्रासू १०, कस, सुर १०, २१२, श्रा १०, द २१, रयण २, श्रा ६, पउम ११, ३२)।

इक्कड पुं [इक्कड] तृण-विशेष (पण्ह २, ३, पण्ण १)।

इक्कड वि [ऐक्कड] इक्कड तृण का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

इक्कण वि [दे] चोर, चुरानेवाला (दे १,८०), 'वाहुलयामूलेसु रइयाओ जणमणिक्कणाओ उ। वाहुसरियाउ तीसे' (स ७६)।

इक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, ६६)।

इक्किक्क वि [एकैक] प्रत्येक (जी ३३, प्रासू ११८, उर ८ ८२)।

इक्कियाल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६)।

इक्कुस न [दे] नीलोत्पल, कमल (दे १, ७६)।

इक्ख सक [ईक्ष्] देखना। इक्खइ (उव)। इक्ख (सूअ १, २, १, २१)।

इक्खग वि [ईक्षक] देखनेवाला (गा ५५७)।

इक्खण न [ईक्षण] अवलोकन, प्रेक्षण (पउम १०१, ७)।

इक्खाउ देखो इक्खागु (विक्र ६८)।

इक्खाग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश में उत्पन्न (तित्थ)।

इक्खाग } पुं [इक्ष्वाकु] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय
इक्खागु } राजवंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश। २ इस वंश में उत्पन्न (भग ९, ३३, कप्प, औप, अजि १३)। ३ कोशल देश (णाया १, ८)। °भूमि स्त्री [°भूमि] अयोध्या नगरी (आव २)।

इक्खु पुं [°इक्षु] १ ईख ऊख (हे २, १७, ति १०७)। २ धान्य विशेष, 'वरट्टिका' नाम का धान्य (श्रा १८)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] गंडेरी, ईख का टुकड़ा (आचा)। °घर न [°गृह] [illegible] विशेष (विसे)। °चोयग न [°] ईख का छिलका (आचा)। °डालग न [°] ईख की [illegible] एक भाग (आचा)। [illegible] (निचू ९)। °वंसिया स्त्री [°वंशिका] [illegible] (निचू १६)। °भित्ति स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा (निचू १६)। °मेरग न [°मेरक] [illegible] ईख के टुकड़े (आचा)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] ईख की लाठी, [illegible] (आचा)। °वाड पुं [°वाट] ईख का [illegible] [illegible] (वाव ३)। °सालग न [दे] १ ईख की [illegible] शाखा (आचा)। २ ईख की [illegible] (निचू १६)। देखो उच्छु।

इग देखो एग (कम्म १, ८, ३३, सुपा ४०६, श्रा १६ [illegible] ८, ति ५०२, पव ८४, सम ७१)।

इगयाल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६)।

इगवीसइम वि [एकविंश] एकवीसवाँ (पव ४६)।

इगुचाल वि [एकचत्वारिंशत्] सख्या-विशेष, ४१—चालीस और एक (भग, पि ४४५)।

इगुणवीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवाँ (पव ४६)।

इगुणीस } स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस (पव
इगुवीस } १८, कम्म ६, ५६)।

इगुसट्ठि स्त्री [एकोनषष्टि] उनसठ (कम्म ६, ६१)।

इग्ग वि [दे] भीत, डरा हुआ (दे १, ७६)।

इग्ग देखो एक्क (नाट)।

इग्घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत (दे १, ८०)।

इच्चा देखो इ सक।

इच्चाइ पुंन [इत्यादि] वगैरह, प्रभृति (जी ३)।

इच्चेव अ [इत्येवम्] इस प्रकार, इस माफिक (सूअ १, ३)।

इच्छ सक [इष्] इच्छा करना, चाहना। इच्छइ (उव, महा)। वकृ इच्छंत, इच्छमाण (उत्त १, पचा ५)।

इच्छ सक [आप् + स् = ईप्स्] प्राप्त करने को चाहना। कृ इच्छियव्व (वव १)।

इच्छकार देखो इच्छा-कार (पडि)।

इच्छक्कार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द (पंचा १२, ४)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] पक्ष की ग्यारहवी रात्रि, 'जयन्ति-अपराजिया य ग(? इ)च्छा य' (सुज्ज १०, १४)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा (उवा, प्रासू ४८)। °कार पु [°कार] स्वकीय-इच्छा, अभिलाष (पडि)। °छंद वि [°च्छन्द] इच्छा के अनुकूल (आव ३)। °णुलोम वि [°नुलोम] इच्छा के अनुकूल (पएण ११)। °णुलोमिय वि [°नुलोमिक] इच्छा के अनुकूल (आचा)। °पणिय वि [°प्रणीत] इच्छानुसार किया हुआ (आचा)। °परिमाण न [°परिमाण] परिग्रह वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पाँचवाँ व्रत (ठा ५)। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा (पण्ह १, ३)। °लोभ पु [°लोभ] प्रबल लोभ (ठा ६)। °लोभिय वि [°लोभिक] महालोभी (ठा ६)। °लोल पु [°लोल] १ महान् लोभ। २ वि. महालोभी (बृह ६)।

°इच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा (श्राव)।

इच्छिय [इष्ट] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित (सुर ४, १५३)।

इच्छिय वि [ईप्सित] प्राप्त करने को चाहा हुआ, अभिलषित (भग, सुपा ६२५)।

इच्छिय वि [इच्छित] जिसकी इच्छा की गई हो वह (भग)।

इच्छिर वि [एषितृ] इच्छा करनेवाला (कुमा)।

इच्छु देखो इक्खु (कुमा, प्रासू ३३)।

इच्छु वि [इच्छु] अभिलाषी (गा ७४०)।

इज्ज सक [आ + इ] आना, आगमन करना। वकृ. इज्जंत,

'विणयम्मि जो उवाएण, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्व सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए ॥' (दस ९, २, ४)।

इज्ज पुंन [इज्या] यज्ञ, याग, 'भिक्खट्ठा बभइज्जमि' (उत्त १२, ३)।

इज्जा स्त्री [इज्या] १ याग, पूजा। २ ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन (अणु ठा १०)।

इज्जा स्त्री [दे] माता, जननी (अणु)।

इज्जिसिय वि [इज्यैषिक] पूजा का अभिलाषी (भग ९, ३३)।

इज्झ अक [इन्ध्] चमकना (हे २, २८)। वकृ इज्झमाण (राय)।

इट्टग पु [दे] सेवई, गु० सेव (पिंडनि० गा० ४६१, ४६६)।

इट्टगा स्त्री [इष्टका] नीचे देखो (पण्ह २, २, विंड)।

इट्टगा स्त्री [दे] खाद्य विशेष, सेव (पिंड ४६१, ४६६, ४७२)।

इट्टवाय देखो इट्टा-वाय (सम्मत्त १३७)।

इट्टा स्त्री [इष्टका] ईंट (गउड, हे २, ३४)। °पाय, °वाय पु [°पाक] ईंटों का पकना। २ जहाँ पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान (ठा ८)।

इट्टाल न [इट्टाल] इंट का टुकडा (दस ५, १, ६५)।

इट्ठ वि [इष्ट] १ अभिलषित, अभिप्रेत, वाञ्छित (विपा १, १, सुपा ३७०)। २ पूजित, सत्कृत (औप)। ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अविरुद्ध (उप ८८२)।

इट्ठ न [इष्ट] १ स्वाभ्युपगत, स्व-सिद्धान्त (धर्मसं ५१९)। २ न तपो-विशेष, निर्विकृति-तप (सम्बोध ५८)। ३ यागक्रिया (म ७१३)।

इट्ठि स्त्री [इष्टि] १ इच्छा, अभिलाषा, चाह (सुपा २४६)। २ याग-विशेष (अभि २२७)।

°इट्ठि स्त्री [कृष्टि] खीचाव, खीचना (गा १८)।

इडा स्त्री [इडा] शरीर के बाएँ भाग मे स्थित नाडी (कुमा)।

इड्डुर न [दे] गाडी (ओघ ४७६)।

इड्डुरग } न [दे] रसोई ढकने का बडा पात्र
इड्डुरय } (राय १४०)।

इड्डुरिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मिठाई (सुपा ४८५)।

इड्ढ वि [ऋद्ध] ऋद्धि-सम्पन्न (भग)।

इड्ढि स्त्री [ऋद्धि] १ वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति (सुर ३, १७)। २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य (उत्त ३)। ३ पदवी (ठा ३,४)। °गारव न [°गौरव] सम्पत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होनेपर उसकी लालसा (सम २, ठा ३, ४)। °पत्त वि [°प्राप्त] ऋद्धिशाली (पराग ११, सुपा ३६०)। °म, °मत वि [°मत्] ऋद्धिवाला (निचू १, ठा ६)।

इड्ढिंसिय वि [दे] याचक-विशेष, माँगन की एक जाति (भग ६, ३३ टी)।

इणं } अ [एतत्] यह (दे १, ७६)।
इणमो }

°इण्ण देखो दिण्ण (से ४, ३५)।

°इण्ण देखो क्रिण्ण (से ८, ७१)।

इण्ह न [चिह्न] चिह्न, निशान (से १, १२, षड्)।

°इण्हा स्त्री [तृष्णा] तृष्णा, प्यास, स्पृहा (गा ६३)।

इण्हि अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त (दे १, ७६, पाअ)।

इतरेतरासय पु [इतरेतराश्रय] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा (धर्मसं ११५८)।

इति देखो इइ (वि १८)। °हास पुं [°हास] पूर्ववृत्तान्त, अतीतकाल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त (कप्प)। २ पुराणशास्त्र (भग)।

इत्तए देखो इ सक।

इत्तर वि [इत्वर] १ अल्प, थोडा (अणु)। २ अल्प-कालिक, थोडे समय के लिए जो किया जाता हो वह (ठा ६)। ३ थोडे समय तक रहनेवाला (श्रा १६)। °परिग्गहा स्त्री [°परिग्रहा] थोडे समय के लिए रक्खी हुई वेश्या, रखैल, रखात आदि (आव ६)। °परिग्गहिया स्त्री [°परिगृहीता] देखो °परिग्गहा (आव ६)।

इत्तरिय वि [इत्वरिक] ऊपर देखो (निचू २, आचा, उवा, पचा १०)।

इत्तरिय देखो इयर (सूअ २, २)।

इत्तरी स्त्री [इत्वरी] थोडे काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि (पचा १)।

इत्तहे (अप) अ [अत्र] यहा पर (कुमा)।

इत्ताहे अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त, अधुना (पाअ)।

इत्ति देखो इइ (कुमा)।

इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना (हे २, १५६, कुमा, प्रासू १३८ षड्)।

इत्तिरिय वि [इत्वरिक] अल्पकालिक, जो थोडे समय के लिए किया जाता हो (स ४६, विसे १२६५)।

इत्तिल देखो इत्तिय (हे २, १५६)।

इत्तो देखो इओ (श्रा १७)।

इत्तोअ देखो इओअ (श्रा १४)।

इत्तोप्प [दे] यहाँ से लेकर इत प्रभृति (पाअ)।

इत्थ अ [अत्र] यहाँ, इसमे (कप्प, कुमा, प्रासू १४१)।

इत्थं अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पराग २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकारवाला, नियमित (जीव १)।

इत्थंथ वि [इत्थंस्थ] इस तरह रहा हुआ (दस ६, ४, ७)।

इत्थत्थ पु [इत्यर्थ] वह अर्थ (भग)।

इत्थत्थ पु [स्त्र्यर्थ] स्त्री-विषय (वि १६२)।

इत्थयं देखो इत्थ (श्रा १२)।

इत्थि स्त्रीन [स्त्री] महिला, नारी, 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, ३)।

इत्थि } स्त्री [स्त्री] जनाना, औरत, महिला
इत्थी } (सूअ २, २, हे २, १३०)। °कला स्त्री [°कला] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला (ज २)। °कहा स्त्री [°कथा] स्त्री-विषयक वार्तालाप (ठा ४)। °णपुसग पुन [°नपुसक] एक प्रकार का नपुसक (निचू १)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय मे स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है (णाया १, ८)। °परिसह पु [°परिषह] ब्रह्मचर्य (भग ८, ८)। °विप्पजह वि [°विप्रजह] १ स्त्री का परित्याग करनेवाला। २ पु मुनि, साधु (उत्त ८)। °वेद, °वेय पु [°वेद] १ स्त्री को पुरुष सग की इच्छा। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है (भग, पराग २३)।

इत्थेण त्रि [स्त्रैण] स्त्रियो का समूह, स्त्री-जन, 'लज्जसि किं न महतो दीणाओ मारिसित्थेणा' (उप ७२८ टी)।

इदाणिं देखो इयाणि (आचा)।

इदाणि (शौ) देखो इयाणि (प्राकृ ८७)।

इदाणीं } देखो इयाणि (संक्षि १६)।
इदाणी }

इदिवित्त (शौ) न [इतिवृत्त] इतिहास (मोह १२८)।

इदुर न [दे] धान्य रखने का एक तरह का पात्र (अणु १५१)।

इद्दुदड पु [दे] भौंरा, मधुकर (दे १, ७६)।

इद्धग्गिधूम न [दे] तुहिन, हिम (षड्)।

इद्धि देखो इड्ढि (षड्)।

इध (शौ) देखो इह (हे ४, २६८)।

इब्भ पुं [इभ्य] धनी, आढ्य (पाअ)।

इब्भ पु [दे] वणिक्, व्यापारी (१, ७६)।

इभ पुं [इभ] हाथी, हस्ती (जं २, कुमा)।

इभपाल पुं [इभपाल] महावत (सम्मत्त १५७)।

इम स [इदम्] यह (हे ३, ७२)।

इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (प्राकृ)।

इय देखो इस (प्राप्र)।

इय देखो इट (षड्, हे १, ६८, औप)।

इय न [दे] प्रवेश, पैठ (आवम)।

इय वि [इत] १ गत, गया हुआ (सूअ १, ६)। २ प्राप्त, 'इरियासिओ जन्तीतो जयम्मि मनुस्स निगनदो' (धर्म ७१ विसे)। ३ ज्ञात, जाना हुआ (आचा)।

इयण्हि अ [इदानीम्] हाल में, इस समय, अधुना (ठा , ३)।

इयर वि [इतर] १ अन्य, दूसरा (जी ४६, प्रासू १००)। २ हीन, जघन्य (आचा १, ६, २)।

इयरहा अ [इतरथा] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से (सम्म १, ६०)।

इयरेयर वि [इतरेतर] अन्योन्य, परस्पर (गा)।

इयाणि } अ [इदानीम्] हाल में, इस इयाणि } समय (भग, पि १४४)।

इर देखो किल (हे २, १८६, नाट)।

इरमंदिर पु [दे] करभ, ऊँट (दे १, ८१)।

इराव पु [दे] हाथी (दे १, ८०)।

इरावई (वी) स्त्री [इरावती] नदी-विशेष (नाट)।

°इरि देखो गिरि, 'सिन्दूरिपवरगिरि' (पउम १० २७)।

इरिण न [ऋण] कर्जा, ऋण (नाट ६६)।

इरिण न [दे] कनक, सुवर्ण (दे १, ७६, नाट)।

इरिय सक [ईर्] जाना, गति करना। इरिसमाण (आव १८, २६ सुर १८, २६)।

इरिया स्त्री [दे] कुटी, कुटिया (दे १, ८०)।

इरिया स्त्री [ईर्या] गमन, गति, चलना (कप्प)। °वह पु [°पथ] १ मार्ग में जाना (पाक्ष ५८)। २ जाने का मार्ग, रास्ता (सम १५ १०)। ३ केवल शरीर से होनेवाली क्रिया (सूअ २, २)। °वहिय न [°पथिक] केवल शरीर की चेष्टा से होनेवाला कर्म-बन्ध-विशेष (सूअ २, २ भग ८, ८)। °वहिया स्त्री [°पथिकी] गमनागमन के बाद किया जाता प्रतिक्रमण, जिन विशेष

(पडि, ठा ०)। °समिइ स्त्री [°समिति] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग पूर्वक चलना (ठा ८)। °समिय वि [°समित] विवेक पूर्वक चलनेवाला (विपा २, १)।

इल पु [इल] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृहपति—गृहस्थ (णाया २)। २ न इलादेवी के सिंहासन का नाम (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] इल नामक गृहस्थ की स्त्री (णाया २)।

°इलअ देखो किलन (से ३, ४७)।

इला स्त्री [इला] १ पृथिवी, भूमि (से २, ११)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)। ३ इल नामक गृहस्थ की पुत्री (णाया २)। ४ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८)। ५ राजा जनक की माता (पउम २१, ३३)। ६ इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता (आवम)। °कूड न [°कूट] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर (ठा ८)। °पुत्त पु [°पुत्र] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त में नाच करते-करते ही शुद्ध भावना से केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (आचू)। °वइ पु [°पति] एलापत्य गोत्र का आदि पुरुष (णंदि)। °वडंसय न [°वतंसक] इलादेवी का प्रासाद (णाया २)।

इलाइपुत्त देखो इला-पुत्त, 'धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी' (पडि)।

इलिया स्त्री [इलिका] क्षुद्र जीव विशेष, चीनी और चावल में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १७)।

इली स्त्री [इली] शस्त्र विशेष, एक जाति की तलवार की तरह का हथियार (पण्ह १, ३)।

इल्ल पु [दे] १ प्रतीहार, चपरासी। २ सवित्र, शत्रो। ३ वि दरिद्र, गरीब। ४ कातर, भीरु। ५ काला, कृष्ण वर्णवाला (दे १, ८२)।

इल्लपुलिअ पु [दे] व्याघ्र, शेर (षड्)।

इल्लि पु [दे] १ शार्दूल, व्याघ्र। २ सिंह। ३ छाता (दे १, ८२)।

इल्लिर वि [दे] शालित, इल्लिरणकुल्लामिस्पल्ल

अकुल्लामवेल्लिअमल्लिआमक्कतल्लएए' (विक्र २३)।

इल्लिया स्त्री [इल्लिका] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १६)।

इल्लीर न [दे] १ आसन-विशेष। २ छाता। ३ दरवाजा, गृह-द्वार (दे १, ८३)।

इव अ [इव] इन अर्थों का द्योतक अव्यय— १ उपमा। २ सादृश्य, तुलना। ३ उत्प्रेक्षा (हे २, १८२, सण)।

इसअ वि [दे] विस्तीर्ण (षड्)।

इसणा देखो एसणा (रंभा)।

इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा (नाट)।

इसि पु [ऋषि] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा (उत्त १२, अवि १४)। २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष (ठा २, ३)। °गुत्त पु [°गुप्त] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। २ न जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। °गुत्तिय न [°गुप्तीय] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। °दास पु [°दास] १ इस नाम का एक सेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी। २ 'अनुत्तरोववाइदसा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। °दत्त, °दिण्ण पु [°दत्त] एक जैन मुनि (कप्प)। °पालिय पु [°पालित] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम (सम १५३)। °पालिया स्त्री [°पालिता] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)। °भद्दपुत्त पु [भद्रपुत्र] एक जैन श्रावक (भग ११, १२)। °भासिय न [°भाषित] १ अंगग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र (आवम)। २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन (ठा १०)। °वाइ, °वाइय, °वादिय पु [°वादिन्] व्यन्तरों की एक जाति (औप, पण्ह १, ४)। °वाल पु [°पाल] १ ऋषिवादि-व्यन्तरों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। २ पाँचवें वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। °वालिय पु [°पालित] ऋषिवादि-व्यन्तरों के एक इन्द्र का नाम (इक)।

इसिण पु [इसिन] अनार्य देश विशेष (णाया १, १)।

इसिणय वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश में उत्पन्न (णाया १, १, इक)।
इसिया स्त्री [इषिका] सलाई, शलाका (सुअ २, १)।
इसु पुं [इषु] वाण (पाअ)।
इस्स वि [एष्यत्] १ भविष्य काल, 'अुत्त संपयमिस्स' (विसे)। २ होनेवाला, भावी, 'समरइ भूय मिस्स' (विसे ५०८)।
इस्सर देखो ईसर (प्राप्र, पि ८७, ठा २, ३)।
इस्सरिय देखो ईसरिय (पउम ५, २७०, सम १३, प्रासू ७५)।
इस्सा स्त्री [ईर्ष्या] द्रोह, असूया (उत्त ३४, २३)।
इस्सास पुं [इष्वास] १ धनुष, कार्मुक, शरासन। २ बाण-क्षेपक, तीरदाज (प्राप्र)।
इह पु [इभ] हाथी, हस्ती (प्राप्र)।
इह अ॰ [इदानीम्] इस समय, अधुना (प्राकृ ८०)।
इह अ [इह] यहाँ, इस जगह (आचा, स्वप्न २२)। °पारलोइय वि [ऐहिकपारलौकिक] इस और परलोक से सम्बन्ध रखनेवाला (स १५६)। °भविय वि [ऐहभविक] इस जन्म सबन्धी (भग)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक (ठा ३, प्रासू ७५, १५३)। °लोय, °लोइय वि [ऐहलौकिक] इस जन्म-सबन्धी, वर्तमान जन्म-सबन्धी (कप्प, सुपा ४०८, पगह १, ३, म ४८१), 'इहलोयपारलोइयसुहाइ सव्वाइ तेण दिन्नाइ' (स १५५)।
इहअ, इहइ } ऊपर देखो (षड्, पउम २१, ७)।
इहइ अ [इदानीम्] हाल, सप्रति, इस समय (पाअ)।
इह, इहय } देखो इह = इह (औप, धा १४)।
इहरहा, इहरा } देखो इयर-हा (उप ८६०, भत्त ३६, हे २, २१२)।
इहरा देखो इहइ = इदानीम् (गउड)।
इहामिय देखो ईहामिय (पि ९४)।
इहिं अ [इह] यहा (रभा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे इआराइसद्दसकलणो णाम तइओ तरंगो समत्तो ॥

ई

ई पु [ई] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर विशेष (प्रामा)।
ईअ स [एतत्, इदम्] यह (पि ४२६, ४२६)।
ईअ अ [इति] इस तरह, 'ईय मणोविसईण' (विसे ५१४)।
ईइ पुस्त्री [ईति] धान्य वगैरह को नुकसान पहुँचानेवाला चूहा आदि प्राणि-गण (औप)।
ईइस वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का, इसके समान (महा, स १५)।
ईजिह अक [ध्रा] तृप्त होना। ईजिहइ (प्राकृ ६५)।
°ईड देखो कीड = कीट, 'दुद्दंसणणिवईडसारिच्छं' (गा ३०)।
ईडा स्त्री [ईडा] स्तुति (चेइय ८६८)।
ईण वि [ईन] प्रार्थी, अभिलापी, 'आहाकड चेव निकाममीणे' (सुअ १, १०, ८)।
°ईण देखो दीण (से ८, ६१)।
ईति देखो ईइ (सम ६०)।
ईदिस देखो ईइस (स १४०, अभि १८२, कप्पू)।
ईर सक [ईर्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। ३ गमन करना। ४ फेंकना। ईरेइ (विसे १०६०), कृ 'ठाणगमणगुणजोगजुजणजुगतरनिवातियाए दिट्ठीए ईरियव्वं' (पगह २, १)। भूकृ ईरिद (शौ) (अभि ३०)।
ईरिय वि [ईरित] प्रेरित (विसे ३१४४)।
ईरिया देखो इरिया (सम १०; ओघ ७४८, सुर २, १०४)।
ईरिस देखो ईइस (कुमा, स्वप्न ५५)।
ईस न [दे] खूँटा, खीला, कीलक (दे १, ८४)।
ईस सक [ईर्ष्] ईर्ष्या करना, द्वेष करना। ईसाअति (गा २४०)।
ईस पु [ईश] देखो ईसर = ईश्वर (कुमा, पउम १०२, ५८)। २ न ऐश्वर्य, प्रभुता (पगण २)।
ईस देखो ईसि (कप्पू)।
ईसअ पु [दे] रोझ, हरिण की एक जाति (दे १, ८४)।
ईसत्थ न [इष्वस्त्रशास्त्र] धनुर्वेद, बाण-विद्या (औप, पगह १, ५), 'विन्नाणनाणकुसला ईसत्थकयस्समा वीरा' (पउम ६८, ४०, पि ११७)।
ईसर पु [दे] मन्मथ, कामदेव (दे १, ८४)।
ईसर पु [ईश्वर] १ परमेश्वर, प्रभु (हे १, ८४)। २ महादेव, शिव (पउम १०६, १२)। ३ स्वामी, पति (कुमा)। ४ नायक, मुखिया (विपा १, १)। ५ देवताओं का एक आवास, वेलधर देवो का आवास विशेष (सम ७३)। ६ एक पाताल कलश (ठा ४, २)। ७ आढ्य, धनी (सुपा ४३६)। ८ ऐश्वर्य शाली, वैभवी (जीव ३)। ९ युवराज। १० माण्डलिक, सामन्त-राजा। ११ मन्त्री (अणु)। १२ इन्द्र विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र (ठा २, ३)। १३ पाताल-विशेष (ठा ४)। १४ एक राजा का नाम। १५ एक जैन मुनि (महानि ६)। १६ यक्ष विशेष (पव २७)।

ईसर पु [ईश्वर] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न (अणु २७)।

ईसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन (पउम ८६, ६३)।

ईसा स्त्री [ईषा] १ लोकपालों की अग्रमहिषियों की एक पार्षदा (ठा ३, २)। २ पिशाचेन्द्र की एक परिषद् (जीव ३)। ३ हल का एक काष्ठ (दे ७, ६६)।

ईसा स्त्री [ईर्ष्या] ईर्ष्या, द्रोह (गउड)। °रोस पु [°रोष] क्रोध, गुस्सा (कप्पू)।

ईसाइअ वि [ईर्ष्यायित] जिसको ईर्ष्या हुई हो वह (सुपा ६१)।

ईसाण पु [ईशान] १ देवलोक-विशेष, दूसरा देवलोक (सम २)। २ दूसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा, ईशान कोण (सुपा ९८)। ४ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ५ दूसरे देवलोक के निवासी देव (ठा १०)। ६ प्रभु, स्वामी (विसे)। °वडिंसग न [°ावतंसक] विमान-विशेष का नाम (सम २५)।

ईसाण पुं [ईशान] अहोरात्र का ग्यारहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

ईसाणा स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण (ठा १०)।

ईसाणी स्त्री [ऐशानी] १ ईशान-कोण। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)।

ईसालु वि [ईर्ष्यालु] ईर्ष्यालु, असहिष्णु, द्वेषी (महा, गा ६३४, प्रासू)। स्त्री °णी (पउम ३६, ४५)।

ईसास देखो इस्सास, 'ईसासट्ठाण' (निर, पि १६२)।

ईसि अ [ईषत्] १ थोड़ा, अल्प (पण्ण ३६)। २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्त-भूमि (सम २२)। °पब्भार वि [°प्राग्भार] थोड़ा अवनत (पव १८)। °पब्भारा स्त्री [°प्राग्भारा] पृथिवी-विशेष, सिद्धि क्षेत्र (ठा ८, सम २२)।

ईसिअ न [ईर्ष्यित] १ ईर्ष्या, द्वेष (गा ५१०)। २ वि जिसपर ईर्ष्या की गई हो वह (दे २, १६)।

ईसिअ न [दे] १ भील के सिर पर का पत्र-पुट, भीलों की एक तरह की पगड़ी। २ वि. वशीकृत, वश किया हुआ (दे १, ८४)।

ईसि } देखो ईसि (महा, सुर २, ६६, कम्म,
ईसीं } पि १०२)।

ईह सक [ईक्ष्, ईह्] १ देखना। २ विचारना। ३ चेष्टा करना। ईहए (विसे ५६१)। वकृ ईहंत, ईहमाण (गउड, सुपा ८८, विसे २५८), संकृ 'अनिमाणो ईहिऊण मइपुव्वं' (पव ८६, विसे २५७)।

ईहण न [ईहन] नीचे देखो (आचू १)।

ईहा स्त्री [ईहा] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श (णाया १, १, सुपा ५७२)। २ चेष्टा, प्रयत्न (ओघ ३)। ३ मति-ज्ञान का एक भेद (पण्ण १५, ठा ५)। ४ इच्छा (स ६१२)। °मिग, °मिय पु [°मृग] १ वृक, भेड़िया (णाया १, १; भग ११, ११)। २ नाटक का एक भेद (राय)।

ईहा स्त्री [ईक्षा] अवलोकन, विलोकन (औप)।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टित (सूअ १, १, ३)। २ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत (विसे २५७)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ईआराइसद्दसंकलणो णाम चउत्थो तरंगो समत्तो ॥

उ

उ पुं [उ] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष (प्रामा)। २ उपयोग रखना, ध्यान करना 'उत्ति उवओगकरणे' (विसे ३१६८)। ३ गति क्रिया (प्राकम)।

उ अ [उ] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय— १ संबोधन, आमन्त्रण। २ कोपवचन, आक्षेप। ३ अनुकम्पा, दया। ४ नियोग, हुकुम। ५ विस्मय, आश्चर्य। ६ अङ्गीकार, स्वीकार। ७ प्रश्न, पृच्छा (हे २, २१७)।

उ अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विशेष। २ [illegible] ([illegible] १)।

उ अ [तु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ समुच्चय, और (गच्छ)। २ अवधारण, निश्चय (पाअम)। ३ किन्तु, परन्तु (ठा ३, १)। ४ नियोग, आज्ञा। ५ प्रशंसा। ६ विनिग्रह। ७ भय की निवृत्ति (उत्त)। ८ पादपूर्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है (उत्त)।

उ देखो उव, 'उवो उर' (षड् ३, १, ६८)।

उ° अ [उत्] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय— १ ऊँचा, ऊर्ध्व, 'उन्नत' (पाअम)। २ विपरीत, उलटा, 'उप्पह' (विसे)। ३ अभाव, अतिक्रम, 'उत्तर' (णाया १, १)। ४ ज्यादा, विशेष, 'उक्कोविय' (उप पृ ७८, विसे ३५७६)।

उअ अ [दे] विलोकन करो, देखो (दे १, ८६ टी, हे २, २११)।

उअ अ [उत] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विकल्प, अथवा। २ वितर्क, विमर्श (सुपा)। ३ प्रश्न, पृच्छा। ४ समुच्चय। ५ बहुत, अतिशय (हे १, १७२)।

उअ अ [दे] ऋजु, सरल (षड्)।

उअ देखो उव (गा ५०, से ६, ६)।

उअ न [उद] पानी, जल। °सिंधु पुं [°सिन्धु] समुद्र, सागर (पि ३४०)।

उअ वि [उदञ्च्] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित। °महिहर पुं [°महिधर] हिमाचल-पर्वत (गउड)।
उअअ न [उदक] पानी, जल (गा ५३, से ६, ८८)।
उअअ देखो उदय (से १०, ३१)।
उअअ न [उदर] पेट, उदर (से ६, ८८)।
उअअ वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे १, ८८)।
उअअद (शौ) देखो उवगय (नाट)।
उअआरअ वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (गा ५०)।
उअआरि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (विक २५)।
उअइज्ज वि [उपजीव्य] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य (से ६, ६)।
उअऊह सक [उप + गूह्] आलिंगन करना। सकृ. उअऊहेऊण (पि ५८६)।
उअएस देखो उवएस (गा १०१)।
उअंचण न [उदञ्चन] १ ऊँचा फेंकना। २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र (दे ४,११)।
उअंचिद (शौ) वि [उदञ्चित] १ ऊँचा उठाया हुआ, ऊँचा फेंका हुआ (नाट)।
उअंत पुं [उदन्त] हकीकत, वृत्तान्त, समाचार (पाअ, प्रामा)।
उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (पि ६४)।
उअक्किअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे १, १०७)।
उअगअ देखो उवगय (गा ६४४)।
उअचित्त वि [दे] अपगत, निवृत्त (दे १, १०८)।
उअजीवि वि [उपजीविन्] आश्रित (अभि १८६)।
उअज्झाअ देखो उवज्झाय (नाट)।
उअट्टी स्त्री [दे] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाडी, 'उअट्टी उचओ नीवी' (पाअ)।
उअट्ठिअ देखो उवट्ठिय (प्राप)।
उअणिअ, उअणीअ } देखो उवणीय (प्राकृ ६)।
उअण्णास देखो उवण्णास (नाट)।
उअत्तत देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।
उअत्थाण देखो उवट्ठाण (नाट)।
उअत्थिअ देखो उवट्ठिय (से ११, ७८)।
उअदिट्ठ देखो उवइट्ठ (नाट)।
उअभुत्त देखो उवभुत्त (रभा)।
उअभोग देखो उवभोग (नाट)।
उअमिज्जंत वकृ [उपमीयमान] जिसकी तुलना की जाती हो वह (काप्र ८९६)।
उअर न [उदर] पेट (कुमा)।
उअरिं, उअरि } देखो उवरिं (गा ६४, से ८, ६५)।
उअरी स्त्री [दे] शाकिनी, देवी-विशेष (दे १, ६८)।
उअरुज्झ देखो उवरुज्झ। उअरुज्झदि (शौ) (नाट)।
उअरोअ, उअरोह } देखो उवरोह (प्राप, नाट)।
उअलद्ध देखो उवलद्ध (नाट)।
उअविट्ठअ न [औपविष्टक] आसन (प्राकृ १०)।
उअविय वि [दे] उच्छिष्ट, 'इहरा मे णिसि भत्त उअविय चेव गुरुमादी' (वृह १)।
उअसप्प देखो उवसप्प। उअसप्प (रुक्मि ५१)।
उअसम, उअसम्म } देखो उवसम = उप + शम्। उअसमइ, उवसम्मइ (प्राकृ ६६)
उअह अ [दे] देखो, देखिए (दे १, ९८, प्राप्र)।
उअहस देखो उवहस। उअहसइ (प्राकृ ३४)।
उअहार देखो उवहार (नाट)।
उअहारी स्त्री [दे] दोग्ध्री, दोहनेवाली स्त्री (दे १, १०८)।
उअहि पु [उदधि] १ समुद्र, सागर (गउड)। २ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजकुमार (पउम ५, १६६)। ३ काल परिमाण, सागरोपम (सुर २, १३६)। ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, ११७)। देखो उदहि।
उअहि देखो उवहि = उपधि (पच ६)।
उअहुज्जंत देखो उवभुज।
उअहोअ देखो उवभोग (प्रवो ३०, नाट)।
उआअ देखो उवाय (नाट)।
उआअण देखो उवायण (माल ४६)।
उआर देखो उराल (सुपा ६०७, कप्पू)।
उआर देखो उवयार (षड्, गउड)।
उआलभ देखो उवालभ = उपा + लभ्। कृ. उआलंभणिज्ज (नाट)।
उआलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ (गा २०१)।
उआलभ देखो उआलभ = उपा + लभ्। उआलभेमि (त्रि ८२)।
उआलि स्त्री [दे] अवतंस, शिरोभूषण (दे १, ९०)।
उआस वि [उद्वास] नीचे देखो (पिंग)।
उआस देखो उवास = उपा + आस्। कवकृ. उआसिज्जमाण (हास्य १४०)।
उआसीण वि [उदासीन] १ उदासी, दिलगीर। २ मध्यस्थ, तटस्थ (स ५४६, नाट)।
उआहरण देखो उदाहरण (मन ३)।
उइ सक [उप + इ] समीप जाना। उएइ उएउ (पि ४९३)।
उइ अक [उद् + इ] उदित होना। उएइ (रभा)। वकृ उइयत (रभा)।
उइ देखो उउ, 'अन्नोवि हुंतु उइओ सरिसा परं तें' (रभा)। °राय पु [°राज] वसन्त ऋतु (रभा)।
उइअ वि [उदित] १ उदय प्राप्त, उद्गत (सुपा १२७)। २ उक्त, कथित (विसे २३३, ८४६)। °परक्कम पु [°पराक्रम] इक्ष्वाकुवंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६)।
उइअ वि [उचित] योग्य, लायक (से ८, १०३)।
उइतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, १०३, कुमा)।
उइंद पु [उपेन्द्र] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था (हे १, ६)।
उइट्ठ वि [अपकृष्ट] हीन, सकुचित, 'आउसिय-अक्खचम्मउइट्ठगंडदेसं' (णाया १, ८)।
उइण्ण देखो उदिण्ण (ठा ५, विसे ५०३)।
उइण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न (आवम)।
उइन्न देखो ओइण्ण (सम्मत्त ७७)।
उइयत देखो उइ = उद् + इ।
उईण देखो उदीण (राय)।
उईर देखो उदीर, 'उईरेइ अइपीडं' (श्रा २७)। वकृ उईरंत (पुप्फ १३)। सकृ उईरइत्ता (सूअ १, ६)।

उईरण देखो उदीरण (ठा ४, पुप्फ १६५)।

उईरणया } देखो उदीरणा (विसे २५१५
उईरणा } टी, कम्मप १५८, विसे २९९२)।

उईरिय देखो उदीरिय (पुप्फ २१६)।

उउ स्त्री [ऋतु] १ ऋतु, दो मास का काल विशेष, वसन्त आदि छः प्रकार का काल (ओघ भा ३)। 'उऊण', 'उऊइ' (कप्प)। २ स्त्री-कुसुम, रजो दर्शन स्त्री-धर्म (ठा ५, २)। °बद्ध पु [°बद्ध] शीत और उष्णकाल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय (ओघ २६, २९०, ३४८)। °मास पुं [°मास] १ श्रावण मास (वव १ टी)। २ तीस दिनवाला मास (सम)। °य वि [°ज] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होनेवाला (पण्ह २, ५, णाया १, १), 'उउयकुसुमसर-पवरपुरिसउडुयसमल्लाणुगनेवरणविहोसु। गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा' (णाया १, १७)।

°संधि पुंस्त्री [°संधि] ऋतु का संधि-काल, ऋतु का अन्त समय (आचा)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५)। देखो उडु = उउ।

उउंबर देखो उंबर = उदुम्बर (कुमा, हे १, २७०, षड्)।

उउबद्धिय न [ऋतुबद्ध] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवासानुष्ठान (आचा २, २, ७)।

उऊखल } पुंन [उदूखल] उलूखल, गूगल
उऊहल } (कुमा, षड्, हे १, १७१)

उएट्ट पु [दे] शिल्प-विशेष (अणु १४९)।

उओग्गिअ वि [दे] सम्बद्ध, संयुक्त (षड्)।

उं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ गर्हा, निन्दा। २ विस्मय। ३ खेद। ४ वितर्क। ५ सूचना (प्राकृ ७९)।

उंघ अक [नि + द्रा] नींद लेना। उंघइ (हे ४, १२)।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्कारा (दे १, १०९)।

उंछ पुंन [उञ्छ] भिक्षा (सूअ १, २, ३, १४)।

उंछ पुं [उञ्छ] भिक्षा, माधुकरी (उप ६७७, आचा ४२४)।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छापने का काम करने वाला शिल्पी, छापी, जो कपड़ा छापता है, छींट बनाता है वह (दे १, ९८, पाअ)।

उंछ सक [सिच्] सींचना, छींटकना। उंछिज्ञा (राज)। भवि—उंछिस्सइ (सुपा १३६)।

उंज मक [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना, 'अहमवि उंजेमि तह किंपि' (धम्म ८ टी)।

उंजायण न [उञ्जायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ-गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

उंजिअ वि [सिक्त] सिक्त, छींटका हुआ (सुपा १३६)।

उंड } वि [दे] १ गभीर, गहरा (दे १,
उंडग } ८५, सुपा १५, उप १४७ टी, ठा
उंडय } १०, श्रा १६)। २ पु पिण्ड, 'वालाई ममउडग मज्जाराई विराहेज्जा' (ओघ २४६ भा)। ३ चलते समय पैर में पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीचड़, कर्दम (ओघ ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मास पिंड, 'हियपउडए' (विपा १, ५)।

उंडग } न [दे] स्थण्डिल, स्थान, जगह (दस
उंडुअ } ४, १, ५, १, ८७)।

उंडल न [दे] १ मञ्च, मचान, उच्चासन। २ निकर, समूह (दे १, १२९)।

उंडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष (राज)।

उंडी स्त्री [दे] पिण्ड, गोलाकार वस्तु, 'तत्थ णं एगा वग्घऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति' (णाया १, ३)।

उंदर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, चूहा (गउड,
उंदुर } पण्ह १, १, उप्प, दे १, १०२)।

उंदु न [दे] मुख, मुँह (मणु २९)। °रुक्क न [दे] मुँह से वृषभ आदि की तरह आवाज करना (मणु २९)।

उंदुरअ पु [दे] लम्बा दिवस (दे १, १०४)।

उंदुरु पुंस्त्री [उन्दुरु] मूषक, चूहा (दस २, ७)।

उंब पुं [उम्ब] वृक्ष-विशेष, 'निंबंबउंबउंबर' (उप १०३१ टी)।

उंबर पु [उदुम्बर] १ वृक्ष विशेष, गूलर का पेड़ (पण्ण १)। २ न गूलर का फल (प्राम)। ३ देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (दे १, ९०)। °दत्त पुं [°दत्त] १ यक्ष-विशेष (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, ७)। °पंचग, °पणग न [°पञ्चक] वड, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पाच वृक्षो के फल (सुपा ४९, भग ६, ३३)। °पुप्फ न [°पुष्प] गूलर का फूल (भग ६, ३३)।

उंबर वि [दे] बहुत, प्रचुर (दे १, ९०)।

उंबरउप्फ न [दे] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति (दे १, ११९)।

उंबरय पुं [दे] कुष्ठ रोग का एक भेद (सिरि ११५)।

उंबा स्त्री [दे] बन्धन (दे १, ८९)।

उंबी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ (दे १, ८६, सुपा ४७३)।

उंवेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पएण १)।

उंभ सक [दे] पूर्ति करना, पूरा करना (राज)।

उकिट्ठ देखो उक्किट्ठ (पिंग)।

उकुरुडिया [दे] देखो उक्कुरुडिया (निर १, १)।

उक्क वि [उत्क] १ उत्सुक, उत्कण्ठित (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम (पउम १०, २०)।

उक्क वि [उक्त] कथित (पिंग)।

उक्क न [दे] पाद-पतन, पाव पर गिर कर नमस्कार करना (दे १, ८५)।

उक्कअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ (षड्)।

उक्कंचण } न [दे] १ झूठी प्रशंसा करना,
उक्कंचणया } खुशामद (णाया १, २)। २ ऊँचा करना, उठाना (सूअ २, २)। ३ काहू निकालना (निचू ५)। ४ घूस, रिशवत (दसा २)। ५ मूर्ख पुरुष को ठगनेवाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए निश्चेष्ट रहना (ओघ)। °दीव पु [°दीप] ऊँचा रहनेवाला प्रदीप (भत्त)।

उक्कंछण न [दे] देखो उक्कंचण (राज)।

उक्कंठ अक [उत् + कण्ठ्] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना। उक्कंठेहि (से ७३)। वकृ उक्कंठंत (से ६३)। हेकृ. उक्कंठिउं (धी) (अभि १४७)।

उक्कंठा स्त्री [उत्कण्ठा] उत्सुकता, औत्सुक्य (हे १, २५, ३०)।

उक्कंठिय, उक्कंठिर, उक्कंठुलय वि [उत्कण्ठित] उत्सुक (गा ५४२, सुर ३, ८९, पउम ११, ११८, वज्जा ९०)।

उक्कंड वि [उत्कण्डित] खूब छटा हुआ, विशेष कण्डित (पिंड १७१)।

उक्कंडय सक [उत्कण्टय्] पुलकित करना, 'दियसेवि भूअसभावणाए उक्कटयति अगाड' (गउड)।

उक्कंडय वि [उत्कण्टक] पुलकित, रोमाञ्चित (गउड)।

उक्कडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत (दे १, ९२)।

उक्कंडिअ वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (षड्)।

उक्कन वि [उत्क्रान्त] ऊँचा गया हुआ (भवि)।

उक्कति, उक्कती स्त्री [दे] देखो उक्कदा (दे १, ८७)।

उक्कद वि [दे] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित (षड्)।

उक्कदल वि [उत्कन्दल] अंकुरित (गउड)।

उक्कदि, उक्कदी स्त्री [दे] कूपतुला (दे १, ८७)।

उक्कंप अक [उत्+कम्प्] काँपना, हिलना।

उक्कंप पु [उत्कम्प] कम्प, चलन (सण, गा ७३५)।

उक्कंपिय वि [उत्कम्पित] १ चञ्चल किया हुआ (राज)। २. न. कम्प, हिलन, 'णीसासुक्कंपिअपुलइएहिं जाणंति णचिउ धण्णा। अम्हारिसीहिं दिट्ठे, पिअम्मि अप्पावि वीसरिओ' (गा ३९१)।

उक्कंपिय वि [दे] धवलित, सफेद किया हुआ (कप्प)।

उक्कंबण न [दे. अवकम्बन] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बाँधना, घर का संस्कार-विशेष (बृह १)।

उक्कंबिय वि [दे. अवकम्बित] काठ से बाँधा हुआ (राज)।

उक्कच्छ वि [उत्कच्छ] स्फुट, स्पष्ट (पिंग)।

उक्कच्छा स्त्री [उत्कच्छा] छन्द-विशेष (पिंग)।

उक्कच्छिआ स्त्री [औपकक्षिकी] जैन साध्वियों को पहनने का वस्त्र-विशेष (ओघ ६७७)।

उक्कउड्ड वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल (षड्)।

उक्कट्टि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हानि (बृह १)।

उक्कट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, 'महता उक्कट्ठिसीहणादकलकलरवेण' (सुज्ज १९—पत्र २७८)। देखो उक्कट्ठि।

उक्कड वि [उत्कट] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर (णंदि, महा)। २ विशाल, विस्तीर्ण (कप्प, सुर १, १०९)। ३ प्रबल (उवा, सुर ९, १७२)।

°उक्कड देखो दुक्कड (उप ६४६)।

उक्कडिय वि [दे] तोडा हुआ, छिन्न (पाअ)।

उक्कडिय देखो उक्कुडुय (कस)।

उक्कड्ढ सक [उत्+कर्षय्] उत्कृष्ट करना, बढाना। उक्कड्ढए (कम्म ५, ९८ टी)।

उक्कड्ढग पुं [अपकर्षक] १ चोर की एक-जाति—जो घर से धन आदि ले जाते हैं। २ जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते हैं। ३ चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक (पण्ह १, ३ टी)।

उक्कड्ढिय वि [उत्कर्षित] १ उत्पाटित, उठाया हुआ। २ एक स्थान से उठा कर अन्यत्र स्थापित (पिंड ३९१)।

उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उत्सुक (से ६, १६)।

उक्कत्त सक [उत्+कृत्] काटना, कतरना। वकृ. उक्कत्तत (सुपा २१६)।

उक्कत्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ, छिन्न (विपा १, २)।

उक्कत्तण न [उत्कर्त्तन] काट डालना, छेदन (पुप्फ ३८४)।

उक्कत्तिय देखो उक्कत्त = उत्कृत्त (पउम ५९, २४)।

उक्कत्थण न [उत्कत्थन] उखाडना (पण्ह १, १)।

उक्कप्प पु [उत्कल्प] शास्त्र-निषिद्ध आचरण (पचभा)।

उक्कनाह पुं [दे] उत्तम अश्व की एक जाति (सम्मत्त २१६)।

उक्कम सक [उत्+क्रम्] १ ऊँचा जाना। २ उलटे क्रम से रखना। वकृ उक्कमंत (आवम)। सकृ उक्कमिऊण (विसे ३५३१)।

उक्कम पु [उत्क्रम] उलटा क्रम, विपरीत क्रम (विसे २७१)।

उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्व गमन। २ बाहर जाना (समु १७२)।

उक्कम्मिन वि [उपक्रान्त] १ प्रारब्ध। २ क्षीण, 'अन्भागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवतीए। एगस्स गती य आगती, विदुम ता सरण ण मन्नइ।' (सूअ १, २, ३, १७)।

उक्कर सक [उत्+कृ] खोदना। कवकृ. उक्करिज्जमाण (आवम)।

उक्कर पुं [उत्कर] १ समूह, सघात, 'सक्क-रुक्कररसड्ढे' (सुपा ५१८)। २ कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित (णाया १, १)।

उक्करड देखो उक्कर = उत्कर, 'कसावि उत्तरीय गहिऊण कओ अ उक्करडो' (सिरि ७९५)।

उक्करड पु [दे] १ अशुचि राशि। २ जहाँ मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान (आ २७, सुपा ३५५)।

उक्करिअ वि [दे] १ विस्तीर्ण, आयत। २ आरोपित। ३ खण्डित (षड्)।

उक्करिअ वि [उत्कीर्ण] खोदित, खोदा हुआ, 'टकुक्करियव्व निचलनिहित्तलोयणा' (महा)।

उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊँचा किया हुआ (स्वप्न ३९)।

उक्कारिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद-विशेष (भग ५, ४)।

उक्कारस सक [उत्+कृष्] १ खींचना। २ गर्व करना, बडाई करना। वकृ. उक्करिसंत (से १४, ९)।

उक्करिस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (उव, विसे १७९९)।

उक्करिसण न [उत्कर्षण] १ उत्कर्ष, बढाई, महत्त्व। २ उत्खनन, खोदना ;
'उम्मिल्लइ लायण्णं
पययच्छायाए सक्कयवयाणं।
सक्कयसक्कारुक्करिसणेण
पययस्सवि पहावो ॥' (गउड)।

उक्करिसिय वि [उत्कृष्ट] खींच निकाला हुआ, उन्मूलित (से १८, ३)।

उक्कल देखो उक्कड (ठा ५, ३)।

उक्कल सक [उत् + कल्] उत्कट रूप से बाँधना। उक्कलइ (सुज्ज २, २७)।

उक्कल वि [उत्कल] १ धर्म-रहित। २ न चोरी (पण्ह १, ३, टी)। ३ पुं देश विशेष, जिसको आजकल 'उड़िया' या 'उड़ीसा' कहते हैं (प्रवा ७८)।

उक्कलंब सक [उत् + लम्बय्] फाँसी लटकाना। उक्कलंबेमि (स ६३)।

उक्कलंबण न [उल्लम्बन] फाँसी लटकाना। (स ३५८)।

उक्कला देखो उक्कलिया (उत्त ३६, १३८)।

उक्कलिअ वि [दे] उकला हुआ, गुजराती में 'उकळेलु', 'उक्कलियसिरविदंडुक्कलिय' (विचार २०५)।

उक्कलिया स्त्री [उत्कलिका] १ लूता, मकड़ी का प्रकार का कीट जो जाल बनाता है, 'उक्कलियं' (आव)। २ नीचे की तरफ बहनेवाला वायु (जी ७)। ३ छोटा समुदाय, समूह विशेष (ठा ३, १)। ४ लहरी, तरंग (राज)। ५ हर-हर कर तरंग की तरह चलनेवाला वायु (आचा)।

उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कसइ (हे ४, १६२, कुमा)। प्रयो उक्कसावेइ। वकृ उक्कसावेत (निचू १०)।

उक्कम देखो ओक्कम। वकृ उक्कममाण (कप्प)। कृ उक्कमित्तए (आचा २, ३, १, १५)।

उक्कम देखो उक्कुम (कुमा)।

उक्कस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (सूअ १, १, ४, १२), 'तम्मी पइउक्कसो' (दस ५, २, ४५)।

उक्कसण न [उत्कर्षण] १ अभिमान करना (सूअ १, १३)। २ ऊँचा जाना। ३ निवर्तन, निवृत्ति। ४ प्रेरणा (राज)।

उक्कसाइ वि [उत्कशायिन्] सकारादि के लिए उत्कण्ठित (उत्त ३)।

उक्कसाइ वि [उत्कषायिन्] प्रबल कषाय-वाला (उत्त १५)।

उक्कस्स अक [अप + कृष्] १ ह्रास प्राप्त होना, हीन होना। २ फिसलना, गिरना, पैर रपटने से गिर जाना। वकृ उक्कसमाण (ठा ५)।

उक्कस्स पु [उत्कर्ष] १ गर्व, अभिमान (सूअ १, १, ४, २)। २ अतिशय, उत्कृष्टता (भवि)।

उक्कस्स वि [उत्कर्षवत्] १ उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा, 'उक्कस्सठिईयाए' (ठा १, १,), 'उक्कस्सा उदीरणाए' (कम्मप १६६)। २ अभिमानी, गर्विष्ठ (सूअ १, १)।

उक्का स्त्री [उल्का] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अगार सा गिरता है (श्रोघ ३१० भा, जी ६)। २ छिन्न-मूल दिग्दाह (आचू)। ३ अग्नि-पिण्ड (ठा ८)। ४ आकाश-वह्नि (दस ४)। °मुह पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष। २ उसके निवासी लोक (ठा ४, २)। °वाय पु [°पात] तारा का गिरना, लूका गिरना। (भग ३, ६)।

उक्का स्त्री [दे] कूप-तुला (दे १, ८७)।

उक्काम सक [उत् + क्रामय्] दूर करना, पीछे हटाना, 'उक्कामयति जीवं धम्माओ तेण ते कामा' (दसनि २—पत्र ८७)।

उक्कारिया देखो उक्करिया (पण्ण ११, भास ७)।

उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढने का विधान न हो (ठा २, १)।

उक्कास देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (भग १२, ५)।

उक्काम वि [दे] उत्कट, ज्यादा से ज्यादा (षड्)।

उक्कामिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ (दे १, ११४)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ ज्यादा (पव—गा १५)। २ पुं. इमली आदि के पत्तों का समूह (दस ५, १, ३४)। ३ लगातार दो दिन का उपवास (संबोध ५८)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ उत्कृष्ट उत्तम (हे १, १२८; द २६)। २ फल का शस्त्र द्वारा किया हुआ टुकडा (दस ५, १, ३४)।

उक्किट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] हर्षध्वनि, आनन्द की आवाज (ग्रौप, भग २, १)। देखो उक्कट्ठि।

उक्किण्ण वि [उत्कीर्ण] १ खोदित, खोदा हुआ (अभि १८२)। २ नष्ट (आचू २)।

उक्कित्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ (से ५, ५१)।

उक्कित्तण न [उत्कीर्त्तन] १ कथन (पउम ११८, ६३)। २ प्रशंसा, श्लाघा (चउ १)।

उक्कित्तिय वि [उत्कीर्त्तित] कथित, कहा हुआ (सुज्ज २० टी)।

उक्किन्न वि [उत्कीर्ण] १ चर्चित, उपलिप्त, 'चंदणोक्किन्नगायसरीरे' (तदु २६)। २ खोदा हुआ (दसनि २, १७)।

उक्किर सक [उत् + कॄ] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरह का शस्त्र से लिखना। उक्किरइ (पि ४७७)।

उक्किरणग न [उत्करणक] अक्षत आदि से बढाना, बधावा, वर्धापन, 'पुप्फारहणगाइं उक्किरणगाइं। पूयं च चेइयाणं तेवि सरज्जेसु कारिंति' (धर्मवि ४६)।

उक्किरिय देखो उक्करिअ = उत्कीर्ण (श्रा १४, सुपा ५१८)।

उक्कीर देखो उक्किर। उक्कीरमि (अणु)। वकृ उक्कीरमाण (अणु)।

उक्कीरिअ देखो उक्करिअ = उत्कीर्ण (उप पृ ३१५)।

उक्कीलिय न [उत्क्रीडित] उत्तम क्रीडा (पउम ११५, ६)।

उक्कीलिय वि [उत्कीलित] कीलक से नियन्त्रित, 'उक्कीलिउव्व परियंभिउव्व गुत्तुव्व मुक्कजीउव्व' (सुपा ४७५)।

उक्कुंचण न [उत्कुञ्चन] ऊँचे चढाना (सूअ २, २, ६२)।

उक्कुट्ठ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे १, ६१)।

उक्कुक्कुर अक [उत् + स्था] उठना, खड़ा होना। उक्कुक्कुरइ (हे ४, १७, षड्)।

उक्कुज्ज अक [उत् + कुब्ज्] ऊँचा होकर नीचा होना। सक्र उक्कुज्जिय (आचा)।

उक्कुज्जिय न [उत्कूजित] अव्यक्त शब्द (नीचू)।

उक्कुट्ठ न [उत्कुष्ट] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण (आचा, निचू १, ४)।

उक्कुट्ठ वि [उत्कृष्ट] ऊँचे स्वर से आक्रुष्ट (दे १, ४७)।

उक्कुडुग } वि [उत्कुटुक] आसन-विशेष, उक्कुडुय } निषद्या-विशेष (भग ७, ६, ओघ १५६ भा, णाया १, १)। स्त्री उक्कुडुई (ठा ५ १)। °आसणिय वि [°आसनिक] उत्कुटुक-आसन से स्थित (ठा ५, १)।

उक्कुद्द अक [उत् + कूर्द्] कूदना, उछलना। उक्कुद्दइ (उत्त २७, ५)।

उक्कुरुआ देखो उक्कुरुडिया (ती ११)।

उक्कुरुड पु देखो उक्कुरुडी (कुप्र ५५)।

उक्कुरुड पु [दे] राशि, ढेर (दे १, ११०)।

उक्कुरुडिगा } स्त्री [दे] घूरा, कूडा डालने उक्कुरुडिया } की जगह (उव ५६३ टी, विपा उक्कुरुडी } १, १, णाया १, २, दे १, ११०)।

उक्कुस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कुसइ (हे ४, १६२)।

उक्कुस वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ (कुमा)।

उक्कूइय न [उत्कूजित] अव्यक्त महा-ध्वनि (पण्ह १, १)।

उक्कूल वि [उत्कूल] १ सन्मार्ग से भ्रष्ट करनेवाला। २ किनारे से बाहर का। ३ न. चोरी (पण्ह १, ३)।

उक्कूव अक [उत् + कूज्] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना। वकृ. उक्कूवमाण (विपा १, ८, निर ३, १)।

उक्केर पु [उत्कर] १ समूह, राशि, ढेर (कुमा, महा)। २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को वढाना (विसे २५१४)। ३ भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह (राज)।

उक्केर पु [दे] उपहार, भेट (दे १, ६६)।

उक्केल्लाविय वि [दे] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ, 'राइणा उक्केलियाइ चोल्लयाइं, निरूवियाइं समन्तओ, जाव दिट्ठ कत्थइ सुवण्णं, कत्थइ रुप्पय, कत्थइ मणिमोत्तियपवालाइ' (महा)।

उक्कोट्टिय वि [दे] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ (स ६३९)।

उक्कोड न [दे] राज-कुल मे दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार (वव १ टी)।

उक्कोडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत (दे १, ९२, पण्ह १, ३, विपा १, १)।

उक्कोडिय वि [दे] घूस लेकर कार्य करनेवाला, घुसखोर (णाया १, १, औप)।

उक्कोडी स्त्री [दे] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (दे १, ९४)।

उक्कोय वि [उत्कोप] प्रखर, उत्कट (सण)।

उक्कोयण देखो उक्कोवण (भवि)।

उक्कोया स्त्री [उत्कोचा] १ घूस, रिशवत। २ मूर्ख को ठगने मे प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोडी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना (राज)।

उक्कोल पु [दे] घाम, धूप, गरमी (दे १, ८७)।

उक्कोवण न [उत्कोपन] उद्दीपन, उत्तेजन, 'मयणुक्कोवणं' (भवि)।

उक्कोविअ वि [उत्कोपित] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ (उप पृ ७८)।

उक्कोस सक [उत् + क्रुश्] १ रोना, चिल्लाना। २ तिरस्कार करना। वकृ उक्कोसत (राज)।

उक्कोस वि [उत्कर्ष] उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य (पचा १, २)।

उक्कोस पु [उत्कर्ष] १ प्रकर्ष, अतिशय, 'उक्कोसजहन्नेणं अतमुहुत्त चिय जियंति' (जी ३८, औप)। २ गर्व, अभिमान (सूअ १, २, २, २९, सम ७१, ठा ४, ४—पत्र २७४)।

उक्कोस वि [उत्कृष्ट] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक, 'सुरनेरइयाणं ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं' (जी ३६), 'कोसतिग च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं' (जी ३२), 'तओ वियडतीओ पडिगाहित्तए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा' (ठा ३, उव)।

उक्कोस पुं [उत्क्रोश] १ कुरर, पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। २ वि. जोर से चिल्लानेवाला (राज)।

उक्कोसण न [उत्क्रोशन] १ क्रन्दन। २ निर्भर्त्सन, तिरस्कार,

'उक्कोसणतज्जणताडणाओ
अवमाणहीलणाओ य।
मुणिणो मुणियपरभवा
दढप्पहारिव्व विसहंति' (उव)।

उक्कोसा स्त्री [उत्कोशा] कोशानामक एक प्रसिद्ध वेश्या (धर्म वि ९७)।

उक्कोसिअ वि [उत्क्रोशित] भर्त्सित, तिरस्कृत, दुतकारा हुआ (उप पृ ७८)।

उक्कोसिअ वि[उत्कर्षिन्] देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (कप्प, भत्त ३७)।

उक्कोसिअ पु [उत्कौशिक] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि। २ न. गोत्र-विशेष, 'थेरस्स ण अज्जवइरसेणस्स उक्कोसियगोत्तस्स (कप्प)।

उक्कोसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

उक्कोसिया स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, आधिक्य (भग)।

उक्कोस्स देखो उक्कोस=उत्कृष्ट (विसे ५८७)।

उक्ख सक [उक्ष्] सींचना (सूअ २, २, ५५)।

उक्ख [उक्ष] १ संबन्ध (राज)। २ जैन साध्वियो के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश (बृह १)।

उक्ख देखो उच्छ = उक्षन् (पाअ)।

उक्खइअ वि [उत्खचित] व्याप्त, भरा हुआ (से १, ३३)।

उक्खड सक [उत् + खण्डय्] तोडना, टुकडा करना। वकृ उक्खडंत (नाट)।

उक्खड पु [दे] १ सघात, समूह। २ स्फुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उक्खडण न [उत्खण्डन] उत्कर्त्तन, विच्छेदन (विक्र २८)।

उक्खडिअ वि [उत्खण्डित] खण्डित, छिन्न (से ५, ४३)।

उक्खडिअ वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ (से १, ११२)।

उक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ घेरा डालना। २ छल से शत्रु-सैन्य को मारना (पण्ह १, २)।

उक्खंभ पुं [उत्तम्भ] अवलम्ब, सहारा (संथा)।

उक्खंभिय देखो उत्थंभिय (भवि)।

उक्खंभिय न [औत्तम्भिक] अवलम्ब, सहारा (राज)।

उक्खडमड्डा अ [दे] पुन: पुन:, बारबार, 'उक्खडमड्डत्ति वा भुज्जो भुज्जोत्ति वा पुणो पुणोत्ति वा एगट्ठा' (वव १)।

उक्खण सक [उत् + खन्] उखाड़ना, उच्छेदन करना, काटना। उक्खणाहि (पण्ह १, १)। संकृ उक्खणिऊण (नीतू १)। कर्म उक्खम्मति (पि ५४०)। वकृ उक्खम्मंत (से ७, २८)। हृ उक्खम्मिअव्व (से १०, २६)।

उक्खण सक [दे] खांडना, मुसल वगैरह से शालि आदि का छिलका दूर करना (दे १, ११५)।

उक्खण वि [दे] अवकीर्ण, चूर्णित (षड्)।

उक्खणण न [उत्खनन] उन्मूलन, उत्पाटन (पण्ह १, १)।

उक्खणण न [दे] खांडना, निस्तुषीकरण (दे १, ११५ टी)।

उक्खणिअ न [दे] खण्डित, निस्तुषीकृत (दे १, ११५)।

उक्खत्त देखो उक्खय (पि ९०, १९३, १९६)।

उक्खम्म° देखो उक्खण = उत् + खन्।

उक्खय वि [उत्खात] १ उखाड़ा हुआ, उन्मूलित (णाया १, ७; हे १, ६७; षड्; गा)। २ खुदा हुआ, उत्पाटित, '[illegible] पत्ता, [illegible] वहि भरतो। [illegible], [illegible] दुपाे' (सुपा ४००)।

उक्खल } देखो उऊहल (हे २, ९०; सूअ
उक्खलय } १, ४, २, १२)।

उक्खलिय वि [दे उत्खलित] [illegible], [illegible] (से ६, २६)।

उक्खलिया } स्त्री [दे] स्थाली, पाक-स्थिति
उक्खली } (दे १ ८८)। '[illegible] [illegible] माउलिंगाणं [illegible] [illegible]' (पिंड १)।

उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली, भाजन-विशेष (आचा २, १, १)।

उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत (उत्तर ६७)।

उक्खाय देखो उक्खय (हे १, ६७; गा २७३)।

उक्खाल सक [उत् + खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना। संकृ उक्खल-इत्ता (रमा)।

उक्खिण देखो उक्खण = उत् + खन्। उक्खिणमि (भवि)। संकृ उक्खिणिवि (अप) (भवि)।

उक्खिणग वि [दे] १ अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित। २ आच्छन्न, गुप्त। ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला (दे १, १३०)।

उक्खित्त } वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ।
उक्खित्तय } २ ऊँचा उठाया हुआ (पाअ)। ३ ऊँचा किया हुआ (णाया १, १)। ४ उन्मूलित, उत्पाटित (राज)। ५ बाहर निकाला हुआ (पण्ह २, १)। ६ उत्थित (पिंग)। ७ न. गेय-विशेष (राय, ठा ४, ४)। °चरय वि [°चरक] पाक पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियमवाला (साधु) (पण्ह २, १)।

उक्खिप्प देखो उक्खिव = उत् + क्षिप्।

उक्खिय वि [उक्षित] सिक्त, सींचा हुआ; 'चंदणोक्खियगायसरीरे' (सूअ २, २, ५५, कप्पू)।

उक्खिरह सक [दे] उगाड़ना। प्रयो., हेकृ. 'उक्खिरहाविउं माउत्तो पुत्तो' (ती ७)।

उक्खिव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना, 'गुरुस्स य भावओ चेव नामं उक्खि-विस्सामो' (स १६२)।

उक्खिव सक [उत् + क्षिप्] १ फेंकना। २ ऊँचा करना। ३ उठाना। ४ बाहर करना। ५ काटना। ६ उठाना। उक्खिवइ (गुरु ५६)। वकृ 'पाणि उक्खिवंती न मज्जति राइदा सुगेज्जा' (उर ३)। संकृ उक्खिवयिउ, उक्खिप्प (पि ५७५, आचा २, २, ३)। कवकृ उक्खिप्पंत, उक्खिप-प्पमाण (से ६, ३५, पण्ह १, ४), उक्खिप्पंत (से २, १३)।

उक्खिवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना। २ वि दूर करनेवाला (कुमा)।

उक्खिवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना (बृह १)।

उक्खिवियि देखो उक्खित्त (सुर २, १८०)।

उक्खुड पु [दे] १ उन्मुक, मलात, मशाल। २ समूह। ३ वस्त्र का एक अंश, अञ्चल (दे १, १२८)।

उक्खुड सक [तुड्] तोड़ना, टुकड़ा करना। उक्खुडइ (हे ४, ११६)।

उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खण्डित, छिन्न, भिन्न (कुमा, से ४, २१, सुपा २६२)। २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ,
'एत्तियकाला इणिह, उक्खुडिय
सालिमाइय नाउ।
तुह जोग्ग तो सहसा,
पुणो पुणो कुट्टिय हियय'
(सुपा १५)।

उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ, 'रएण दुरदतुक्खुत्तविसवलिय तिलच्छेत्तं' (गा ७६६)।

उक्खुब्भ अक [उत् + क्षुभ्] क्षुब्ध होना। उक्खुब्भइ (प्राकृ ७५)।

उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, ४)।

उक्खुलप सक [दे] गुजवाना। संकृ उक्खु-लंपिय (आचा २, १, ६, २)।

उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ प्राप्त (से ७, १६)।

उक्खेव पु [उत्क्षेप] १ उत्पाटन, उन्मूलन (ओप)। २ ऊँचा करना (गउड)। ३ जो उठाया जाय वह, 'उक्खेवे निक्खेवे महल्ल-माणम्मि' (पिंड ५७०)।

उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका (उत्त, विपा १, २, ३, ४)।

उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकने-वाला। २ पुं एक जाति का पंखा, व्यजन-विशेष (पण्ह २, ५)।

उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना (पउम ६७, ५०)। २ उन्मूलन, उत्पाटन (सूअ २, १)।

उक्खेविअ वि [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप) (भवि)।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उत्क्षिप्त, उडाया हुआ (पाअ)। २ छिन्न, उखाडा हुआ (दे १, १०५, १११)।

उग अक [उत् + गम्] उदित होना। उगइ (नाट)।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित (पिंग)।

उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उगुणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] ऊनपचास, ४९ (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणवीसा स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस, १९ (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उनहत्तर, ६९, 'उगुणुत्तराई' (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुनउइ स्त्री [एकोननवति] नवासी, ८९ (कम्म ६, ३०)।

उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी, ७९ कम्म ६, ३०)।

उग्ग अक [उद् + गम्] उदित होना। उग्गे (पिंग)। वकृ. उग्गंत, 'देव ! पणयजणकल्लाणक्कदुद्दविसट्टुग्गंतमिह-(?हि)। राणुगारिणो' (धर्मा ५)।

उग्ग सक [उद् + घाटय्] खोलना। उग्गइ (हि ४, ३३)।

उग्ग वि [उग्र] १ तेज, तीव्र, प्रबल (पउम ८३, ४)। २ पु क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी (ठा ३, १)। °वई स्त्री [°वती] ज्योति -शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात (ज ७)। °सिरि पु [°श्रीक] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश (पउम ५, २६४)। °सेण पु [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा (णाया १, १६, अंत)।

उग्गठ सक [उत् + ग्रन्थ्] खोलना, गाँठ खोलना। सकृ उग्गठिऊण (हम्मीर १७)।

उग्गध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित (गउड)।

उग्गच्छ } अक [उद् + गम्] उदय
उग्गम } होना। उग्गच्छदि (शौ) (नाट)। उग्गमइ (वज्जा १६)। उग्गमेज्ज (काल)। वकृ. उग्गमंत, उग्गममाण (सुपा ३८, पण्ण १)।

उग्गम पु [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव, 'तत्थुग्गमो पसूई पभवो एमाई होंति एगट्ठा' (राज)। २ उदय, 'सूरुग्गमो' (सुर ३, २५०)। ३ उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला एक भिक्षा दोष (ओघ ६५, ५३० भा, ठा १०)।

उग्गमण न [उद्गमन] उदय (सिरि ४२८, सुज्ज ९)।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित (निचू २)।

उग्गय वि [उद्गत] उत्पन्न, जात (आव ३)। २ उदित, उदय-प्राप्त (सुर ३, २४७)। ३ व्यवस्थित (राज)।

उग्गह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण करना। करना। उग्गहइ (हे ४,९४)।

उग्गह सक [उद् + ग्रह] ग्रहण करना। उग्गहेइ (भग)। सकृ उग्गहित्ता (भग)।

उग्गह पु [अवग्रह] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान-विशेष (विसे)। २ अवधारण, निश्चय (उत्त)। ३ प्राप्ति, लाभ (आचू)। ४ पात्र, भाजन (पचा ३)। ५ साध्वियो का एक उपकरण (ओघ ६६६, ६७६)। ६ योनिद्वार (बृह ३)। ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु (पण्ह १, ३)। ८ आश्रय, आवासस्थान, वसति (आचा), 'आहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता' (णाया १, १)। ९ वह वस्तु, जिसपर अपना प्रभुत्व हो, अधीन चीज (बृह ३)। १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारो तरफ की शरीर-प्रमाण जमीन, 'अणुजाणह मे मिउग्गहं' (पडि)। °णंत, °णंतग न [°ानन्त, °क] जैन साध्वियो का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जाघिया, लँगोट, 'छादतोग्गहणंत' (बृह ३)। °पट्ट, °पट्टग पुन [°पट्ट, °क] देखो पूर्वोक्त अर्थ, 'नो कप्पइ निग्गंथाए उग्गहणंतगं वा उग्गहपट्टगं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा' (बृह ३)।

उग्गह पुं [अवग्रह] परोसने के लिए उठाया हुआ भोजन (सूअ २, २, ७३)।

उग्गहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान, 'अत्थाणं उग्गहणं अवग्गहं' (विसे १७९)।

उग्गहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित (कुमा)।

उग्गहिअ वि [अवगृहीत] १ सामान्य रूप से ज्ञात। २ परोसने के लिए उठाया हुआ (ठा १)। ३ गृहीत। ४ आनीत। ५ मुख मे प्रक्षिप्त, 'तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते,—जं च उग्गिण्हइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति' (वव २, ८)।

उग्गहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ (दे १, १०४)।

उग्गा सक [उद् + गै] १ ऊँचे स्वर से गान करना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना,

'उग्गाइ गाइ हसइ,
असवुडो सय करेइ कदप्पं।
गिहिकज्जचिंतगो वि य,
ओसन्ने देइ गेण्हइ वा' (उव)।

वकृ उग्गायंत (सुर ८, १८९)। कवकृ उग्गीयमाण (पउम २, ४१)।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] १ अति गाढ, प्रबल (उप ९८६ टी, सुपा ९४)। २ स्वस्थ, तन्दुरुस्त (बृह १)।

उग्गामिय वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (सुख १, १४)।

उग्गायत देखो उग्गा।

उग्गार } पु [उद्गार] १ वचन, उक्ति, 'ते
उग्गाल } पिसुणा जे ण सहंति णिग्गुणा परगुणुग्गारे' (गउड)। २ शब्द, आवाज, ध्वनि, 'तियसरहपेल्लियघणो णहदुंदुहिबहलगज्जिउग्गारो', 'अहिताडियकंसुग्गारझणझणापडिरवाहोओ' (गउड)। ३ डकार। ४ वमन, ओकाई (नाट, कस), 'जिणझाणालणडज्झतमयणधूमुग्गारेण पिव केसकलावेण (स ३१३, निचू १०)। ५ जल का छोटा प्रवाह, 'उग्गालो छिछोली' (पाअ)। ६ रोमन्थ, पगुराना, 'रोमंथो उग्गालो' (पाअ)।

उग्गाल पु [दे. उद्गाल] पान की पिचकारी (पव ३८)।

उग्गाल पुं [उद्गार] निर्गम, बाहर निकलना (पव ४)।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना 'नावग्गहणयाए पनवइ पनवणाए भावणाए उग्गाहेइ' (उवा)। संकृ 'उग्गाहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ' (उवा)।

उग्गाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, 'उग्गाहेंति नाणाविहाओ विगिच्छा-संहियाओ' (स १७)।

उग्गाह सक [उद् + ग्राहय्] १ तगादा करना। २ ऊँचे से चलना। उग्गाहइ (प्राह ७२)।

उग्गाह पु देखो उग्गाहा (पिंग)।

उग्गाहण न [उद्ग्राहण] तगादा, दी हुई चीज की मांग (सुपा ५७८)।

उग्गाहणिआ स्त्री [उद्ग्राहणिका] ऊपर देखो, 'उग्गाहणाणयाण पासम्मि गओ तया सामि। उग्गाहणियाहेउ' (सुपा ६३२)।

उग्गाहणी स्त्री [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो (उ ६)।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष (पिंग)।

उग्गाहिअ वि [दे उद्ग्राहित] १ गृहीत, लिया हुआ। २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। ३ प्रवर्तित (दे १, १३७)। ४ उत्पाटित, ऊँचे उठाया हुआ (पाअ स २१७)।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तली हुई वस्तु। (पव ४, ४)।

उग्गिण्ण } वि [उद्गीर्ण] १ उक्त, कथित
उग्गिन्न } (सार)। २ वान्त, उद्गीर्ण (णाया १, १)। ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ,

'उग्गिण्णखग्गावहत्थ सवणोद्धर
स्सइरि विप्पहुपा।
[illegible]
[illegible] (सुर १६, १८७)
[illegible]
[illegible] पुण जावा।
[illegible]
[illegible] (सुपा ४२८)।

उग्गिर सक [उद् + गृ] ...। उग्गिरेइ (सुपा १२१)। वकृ उग्गिरंत (कप्प)।

उग्गिरण न [उद्गरण] १ वान्ति, वमन कय। २ उक्ति, कथन

'मालमिणोवि भ्रमरमाणवयणा
तं परम्म न करेंति।
नूह्दुम्मुग्गिरणाय, सहू
दयहिय्य गभीरा' (उव)।

उग्गिल सक [उद् + गृ] १ कहना, बोलना। २ डकार करना। ३ उलटी करना, वमन करना। ४ उठाना। वकृ 'अग्गिजालुग्गिलन वयणं' (णाया १, ८)। संकृ उग्गिलित्ता (कम्म), उग्गिलेत्ता (निचू ७)।

उग्गिलिअ देखो उग्गिण्ण (पाअ)।

उग्गीय वि [उद्गीत] १ उच्च स्वर से गाया हुआ (दे १.१६३)। २ न संगीत गीत, गान (से १, ६५)।

उग्गीयमाण देखो उग्गा।

उग्गीर देखो उग्गिर। वकृ 'सग्ग उग्गीरंतो इयियव्वहूरं, ह्यासनोयाए' (सुपा १५८)।

उग्गीरिअ देखो उग्गिण्ण, 'उग्गीरिओ ममोवरि, जमजीहादीहतरलकरवालो' (सुपा १५८)।

उग्गीव वि [उद्ग्रीव] उत्कण्ठित, उत्सुक (कुमा)। °किय वि [°कृत] उत्कण्ठित किया हुआ (उत्त १०३१ टी)।

उग्गुलुच्छिआ स्त्री [दे] हृदय-रस का उछलना, भावोद्रेक (दे १, ११८)।

उग्गोव सक [उद् + गोपय्] १ खोजना। २ प्रकट करना। ३ विमुग्ध करना। वकृ 'इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हिरण्णुत्तरं वा जाव सुवण्णरासिं वा पासमाणे पासति उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ' (भग १६, ६)।

उग्गोवणा स्त्री [उद्गोपना] १ खोज, गवेषणा,

'[illegible]
य उग्गोवणा य वोद्धव्वा।
[illegible] नामा
एगट्ठिया होंति' (पिंड ७३)।

२ देखो उग्गम। 'उग्गम उग्गोवणा मग्गणा य एगट्ठियाणि एयाणि' (पिंड ८५)।

उग्गोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त, 'उग्गोविओ घन्तो भमन्तो' (भग १६, ६)।

उग्घ देखो उग्ग। उग्घइ (षड्)।

उग्घट्टि } स्त्री [दे] अवतंस, शिरो-भूषण (दे
उग्घट्टी } १, ९०)।

उग्घड सक [उद् + घाटय्] खोलना (प्रामा)।

उग्घड अक [उद् + घट्] खुलना। उग्घडइ (सिरि ५०४)। उग्घडंति (धर्म वि ७६)।

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ (धम वि ७७)।

उग्घडिअ वि उद्घाटित] खुला हुआ। २ छिन्न, नष्ट किया हुआ (से ११, १३०)।

उग्घर वि [उद्गृह] गृहत्यागी, जिसने घरबार छोड कर सन्यास लिया हो वह, साधु,

'चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छियं लहइ'
(णाया १, १० टी)।

उग्घव देखो अग्घव। उग्घवइ (हे ४, १६९ टि, गाज)।

उग्घसिय न [अवघर्षित] घर्षण (राय ६७)।

उग्घाअ पु [दे] १ समूह, सघात (दे १. १२६, स ७७, ४३६, गउड, से ५, ३४)। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १,१२६)।

उग्घाअ पु [उद्घात] १ आरम्भ, प्रारम्भ 'उग्घाओ आरंभो' (पाअ)। २ प्रतिघात ठोकर लगना। ३ लघूकरण, भाग-पात (ठा ३)। ४ उपोद्घात, भूमिका (विसे १३४८)। ५ ह्रास (ठा ५, २)। ६ न प्रायश्चित्त-विशेष। ७. निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त प्रायश्चित्त का वर्णन है, 'उग्घायमणुग्घाय आरोवण तिविहमो निसीह तु' (भाव ३)।

उग्घाअ सक [उद् + घातय्] विनाश करना। उग्घाएइ (उत्त २९, ६)।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] १ लघु, छोटा। २ न लघु प्रायश्चित्त (ठा ३)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित (ठा १०)। २ न लघु प्रायश्चित्त (ठा ५)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] लघु प्रायश्चित्त वाला (वव १)।

उग्घाइय न [उद्घातक] लघु प्रायश्चित्त (वव)।

उग्घाड सक [उद् + घाटय्] १ खोलना। २ प्रकट करना। ३ बाहर करना। उग्घाडइ (हे ४, ३३)। उग्घाडए (महा)। संकृ. उग्घाडिऊण (महा)। कृ. उग्घाडिअव्व (श्रा १६)। कवकृ. उग्घाडिज्जंत (से ५, १२)।

उग्घाड पु [उद्घाट] प्रकट, प्रकाश 'जिनु कम्रो बहुएहिं उग्घाडो नियकम्माण' (सिरि ५२८)।

उग्घाड देखो उग्घाड = उद् + घाटय्। हेकृ. 'त जिणहम्म्स दार केणवि नो सक्किय उघाडेउं' (सिरि ५२८)।

उग्घाड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ, अनाच्छादित (पउम ३६, १०७)। २ थोडा बन्द किया हुआ, 'उग्घाडकवाडउग्घाडणाए' (आव ८)। ३ व्यक्त प्रकट। ४ परिपूर्ण, अन्यून, 'एत्थंतरम्मि उग्घाडपोरिसीमूयगो बंनी पत्तो' (सुपा ६७)।

उग्घाडण न [उद्घाटन] १ खोलना (आव ४)। २ बाहर करना, बाहर निकालना (उप पृ ३६७)।

उग्घाडणा स्त्री [उद्घाटना] ऊपर देखो (आव ४)।

उग्घाडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ। २ प्रकटित, प्रकाशित (से २, ३७)।

उग्घायण न [उद्घातन] १ नाश, विनाश (आचा)। २ पूज्य-स्थान, उत्तम जगह। ३ सगेवर मे जाने का मार्ग (आचा २, ३)।

उग्घार पु [उद्घार] सिञ्चन, छिडकाव, 'विणितरुहिरुग्घारं निवडिओ धरणिवट्टे' (सुर ५६८)।

उग्घिट्ठ } वि [उद्घृष्ट] सघृष्ट, 'नमिरसुर-
उग्घुट्ठ } किरीडुग्घिट्ठपायारविंदे' (नहुअ ४, से ६, ८०)।

उग्घुट्ठ वि [उद्घुष्ट] घोषित, उद्घोषित (सुर १०, १८, सण), 'अमरवहुग्घुट्ठजयजयारव' (महा)।

उग्घुट्ठ वि [दे] उत्प्रोञ्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित (दे १, ६६), 'उरघालिरवेणीमुह-यणलग्गुग्घुट्ठमहिरिआ जणअसुआ' (से ११, १०२)।

उग्घुस सक [मृज्] साफ करना, मार्जन करना। उग्घुसइ (हे ४, १०५)।

उग्घुस सक [उद् + घुष्] देखो उग्घोस। संकृ. उग्घुसिअ (नाट)।

उग्घुसिअ वि [मृष्ट] मार्जित, साफ किया हुआ (कुमा)।

उग्घोस सक [उद् + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना। उग्घोसेह (विपा १, १)। वकृ. उग्घोसेमाण (विपा १, १, णाया १, ५)। कवकृ. उग्घोसिज्जमाग (विपा १, २)।

उग्घोस पु [उद्घोष] नीचे देखो (स्वप्न २१)।

उग्घोसणा स्त्री [उद्घोषणा] डुग्गी पिटवाना, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना (विपा १ १)।

उग्घोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ, 'उग्घोसियसुनिम्मल व आयसमडलतल' (पण्ह २, ५)।

उग्घोसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया हुआ, घोषित (भवि)।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर (षड्)।

उचिय वि [उचित] योग्य, लायक, अनुरूप (कुमा, महा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] विवेकी (उप ७६८ टी)।

उच्च न [दे] नाभि-तल (दे १, ८६)।

उच्च } वि [उच्च, °क, उच्चैस्] १ ऊँचा
उच्चअ } (कुमा)। २ उत्तम, उत्कृष्ट (हे २, १५४, सूअ १, १०)। °च्छंद वि [°च्छन्दस्] स्वैर, स्वेच्छाचारी (पण्ह १, २)। °णागरी देखो °नागरी (कप्प)। °त्त न [त्व] १ ऊँचाई (सम १२, जी २८)। २ उत्तमता (ठा ४, १)। °त्तभयग, °त्तभयय पु [°त्वभृतक] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथासमय नियत काम लिया जाय वह नोकर (राज, ठा ४, १)। °त्तरिया स्त्री [°त्तरिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °त्थवणय न [°स्थापनक] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, 'धण्णस्स ण अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहानामए करगगीवा इवा कुंडिया-गीवा इवा उच्चत्थवणए इवा' (अनु)। °वचिआ स्त्री [°विचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे-तैसे रखना,

'कह तपि तुइ ण णाअ जह सा
आसदिआए वहुआए।
काऊण उच्चवचिअं तुह
दमणलेहला पडिआ'
(गा ६६७)।

°वाय पु [°वाद] प्रशसा, श्लाघा (उप ७२८ टी)। देखो उच्चा।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ (काल)।

उच्चडिय वि [दे] ऊँचा चढाया हुआ (हम्मीर २८)।

उच्चंतय पु [उच्चन्तग] दन्त रोग, दाँत मे होनेवाला रोग-विशेष (राज)।

उच्चपिअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा, आयत (दे १, ११६)। २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रोदा हुआ, 'सीस उच्चपिअं' (तदु)।

उच्चड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेका हुआ (दे १, १०६)।

उच्चत्त वि [उत्त्यक्त] पतित, त्यक्त (पाअ)।

उच्चत्तवरत्त न [दे] १ दोनो तरफ का स्थूल भाग। २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्त्तन (दे १, १३६)। ३ दोनो तरफ से ऊँचा-नीचा करना (पाअ)।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ, मजबूत (दे १, ६७)

उच्चदिअ वि [दे] मुषित, चुराया हुआ (षड्)।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ (दे १, १००)।

उच्चय सक [उत् + त्यज्] त्याग देना, छोड देना। कृ उच्चयणिज्ज (पउम ६६, २८)।

उच्चय पु [उच्चय] १ समूह, राशि, 'रयणो-च्चय विसाल' (सुपा ३४, कप्प)। २ ऊँचा ढेर करना (भग ८, ६)। ३ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाडी (पाअ)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर चीजो को बाँधना (भग ८, ६)।

उच्चय पु [अपचय] इकट्ठा करना, एकत्री-करण (दे २, ५६)।

उच्चर [illegible] [उत् + चर्] १ पार जाना, [illegible]। २ [illegible], जेलना। ३ [illegible]। ४ बाहर निक- [illegible] (सुर [illegible]) 'मरुदेसेण य [illegible] निमियानि- [illegible] मज्जूनेहिं। चिनिय [illegible] सए [illegible] निगडो संपय, [illegible] निविय [illegible]' (महा)। [illegible]

[illegible]
[illegible] बाहो'
(गा ३०७)।

उच्चारण [illegible] [उच्चारण] कथन, उच्चारण, 'सिद्ध- [illegible]' (सुपा [illegible])।

उच्चरिअ [illegible] [उच्चरित] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त, [illegible] नाम [illegible] (गा)। २ [illegible] (गा [illegible])।

उच्चलण न [उच्चलन] [illegible], [illegible] ([illegible])।

उच्चलिअ [illegible] [उच्चलित] [illegible] (नि)।

उच्चल्ल [illegible] [दे] १ [illegible]। २ [illegible] (दे)।

उच्चाल [illegible] [उत् + चल्] १ [illegible], [illegible]।

उच्चालिअ वि [उच्चलित] १ गत, गया हुआ। २ [illegible]
[illegible]
[illegible]।
[illegible]
[illegible]'
([illegible])।

उच्च [illegible] [illegible] १ [illegible], [illegible]। २ [illegible] ([illegible])। °गोत्त, °गोय न [°गोत्र] १ [illegible]। २ [illegible] (कम्म २, [illegible])। °त्त

न [°व्रत] १ महाव्रत (उत्त १)। २ वि महाव्रतधारी (उत्त १५)।

उच्चाअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (ओघ ४१८)। २ पुं श्रमनिगत परिश्रम (सुपा ३३२)।

उच्चाइय वि [दे उत्त्याजित] उत्थापित, उठाया हुआ, 'उच्चाइया नागं' (स २०६)।

उच्चाग पुं [उच्चाग] हिमाचल पर्वत। °य वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न, 'उच्चागयठाण-लट्ठसंठिय' (कप्प)।

उच्चाड वि [दे] विपुल, विशाल (दे १, ६०)।

उच्चाड सक [दे] १ रोकना, निवारना। २ अक अतिक्रमण करना, दिक्कत होना (हे २, १९३ टि)।

उच्चाडण न [उच्चाटन] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना। २ मन्त्र विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उठायी जा सकती है, 'उच्चाडणथंभणमोहणाइ सव्वपि मह करयल- त्थं' (सुपा ५९९)।

उच्चाडणी स्त्री [उच्चाटनी] विद्या विशेष जिससे द्वारा वस्तु अपने स्थान से उठायी जा सकती है (सुर १३, ८१)।

उच्चाडिर वि [दे] १ रोकनेवाला, निवारण करनेवाला। २ अकाम करनेवाला, दिक्कीर [illegible], [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]'
(हे २ १९३)।

उच्चार सक [उत् + चारय्] १ बोलना, उच्चारण करना। २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना। उच्चारेइ (उवा)। वकृ उच्चारयन्त (स १०७)। उच्चारेमाण (कप्प, णाया १ १)। कृ उच्चारियव्व (गा)।

उच्चार पुं [उच्चार] १ उच्चारण। २ विष्ठा, मलोत्सर्ग (पव १० उवा, सुपा ६११)।

उच्चार वि [दे] विमल स्वच्छ (दे १, ९७)।

उच्चारण न [उच्चारण] कथन 'इदि [illegible]' ([illegible])।

उच्चारिअ वि [दे] गृहीत [illegible] (दे १, ११८)।

उच्चारिअ वि [उच्चारित] १ कथित, उक्त। २ पाखाना गया हुआ (राज)।

उच्चाल सक [उत् + चालय्] १ ऊँचा फेंकना। २ दूर करना। संकृ 'उच्चालइय निहणिंसु अदुवा आसणाओ खलइंसु' (आचा)।

उच्चालइय वि [उच्चालयितृ] दूर करनेवाला त्यागनेवाला, 'जं जाणेज्जा उच्चालइयं तं जाणेज्जा दुरालइयं' (आचा)।

उच्चालिअ वि [उच्चालित] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित, 'उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए' (ओघ ७४८, दसनि ४५)।

उच्चाव सक [उच्चय्] ऊँचा करना, उठाना। संकृ उच्चावइत्ता, 'दोवि पाए उच्चावइत्ता सम्मओ समंत समभिलोएज्ज' (पण्ण १७)।

उच्चावय वि [उच्चावच] १ ऊँचा और नीचा (णाया, १, १, पण्ण ३४)। २ उत्तम और अधम (भग १५)। ३ अनुकूल और प्रतिकूल (भग १, ६)। ४ असमञ्जस, अव्य-वस्थित (णाया १, १६)। ५ विविध, नाना-विध, 'उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खू थामवं' (उत्त ८)। ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम, तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोस-होववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स' (उवा, ओघ)।

उच्चाविअ वि [उच्चित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १३०)।

उच्चिट्ठ अक [उत् + स्था] खड़ा होना। उच्चिट्ठ (प्राक)।

उच्चिट्ठिम वि [दे] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज, 'उच्चिट्ठिम मुहमजाय' (पाअ)।

उच्चिण सक [उत् + चि] फूल वगैरह को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना। उच्चि-णइ (हे ४, २४१)। कर्म उच्चिणाउ (नि)।

उच्चिणण न [उच्चयन] अवचयन, एकत्रीकरण (सुपा ४९६)।

उच्चिणिय वि [उच्चित] इकट्ठा किया हुआ, एकत्रित (पाअ)।

उच्चिणिर वि [उच्चेतृ] फूल वगैरह को चुनने-वाला (कुमा)।

उच्चिय देखो उचिय, 'तस्स सुग्गोच्चियपत्र-त्तणेण संतोसमणुपत्ता' (उप १६६ टी)।

उच्चिवलय न [दे] कलुषित जल, मैला पानी (पाअ)।

उच्चुंच वि [दे] दृप्त, गर्विष्ठ, अभिमानी (दे १, ६६)।

उच्चुग वि [दे] अनवस्थित (षड्)।

उच्चुड अक [उत् + चुड्] अपसरण करना, हटना। वकृ. उच्चुडंत (गउड ७३३)।

उच्चुप्प सक [चट्] चढ़ना, आरूढ होना, ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ (हे ४, २५६)।

उच्चुप्पिअ वि [दे. चटित] आरूढ ऊपर चढ़ा हुआ (दे १, १००)।

उच्चुरण [दे] उच्छिष्ट, जूठा (षड्)।

उच्चुलउलिअ न [दे] कुतूहल से शीघ्र शीघ्र जाना (दे १, १२१)।

उच्चुड वि [दे] १ उद्विग्न, खिन्न। २ अधि-रूढ, आरूढ। ३ भीत, डरा हुआ (दे १, १२७)।

उच्चूड पु [उच्चूड] निशान का नीचे लट-कता हुआ शृंगारित वस्त्रांश (उत्त ४४६)।

उच्चूर वि [दे] नानाविध, बहुविध (राज)।

उच्चूल पु [अवचूल] १ निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश (उप ४४६ टी)। २ अधो-शिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर—खड़ा किया हुआ (विपा १, ६)।

उच्चे देखो उच्चिण। उच्चेइ (हे ४, २४१)। हेकृ. उच्चेउं (गा १५६)।

उच्चेय वि [उच्चेतस्] चिन्तातुर मनवाला (पाअ)।

उच्चेल्लर न [दे] १ ऊसर भूमि। २ जघन-स्थानीय केश (दे १, १३६)।

उच्चेव वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे १, ६७)।

उच्चोड पु [दे] शोषण, 'चंदणुच्चोडकारी चडो देहस्स दाहो' (कप्पू, प्राप)।

उच्चोदय पु [उच्चोदय] चक्रवर्ती का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)।

उच्चोल पुं [दे] १ खेद, उद्वेग। २ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी (दे १, १३१)।

उच्छ पु [उक्षन्] बैल, वृषभ (हे २, १७)।

उच्छ पु [दे] १ आँत का आवरण (दे १, ८५)। २ वि न्यून, हीन, 'उच्छत्त वा न्यून-त्वम्' (पण्ह २, १)।

उच्छअ पु [उत्सव] क्षण, उत्सव (हे २, २२)।

°उच्छअ वि [पृच्छक] प्रश्न-कर्ता (गा ९०)।

उच्छइअ वि [उच्छदित] आच्छादित, 'पालवउच्छइयवच्छयलो' (काल)।

उच्छंखल वि [उच्छृङ्खल] १ शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, बन्धन-शून्य। २ उद्धत, निर-कुश (गउड)।

उच्छंखलिअ वि [उच्छृङ्खलित] अवरोध-रहित किया हुआ, खुला किया हुआ, 'उच्छं-खलियवणाण मोहरगं किंपि पवणाण' (गउड)।

उच्छंग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भाग, 'मउडुच्छंग-परिग्गहमियकजोण्हावभासिणो पमुवइणो' (गउड, से १०,२)। २ क्रोड, गोद, कोरा (पाअ), 'उच्छंगे णिविसेत्ता' (आवम)। ३ पृष्ठ देश (ओप)।

उच्छंगिअ वि [उत्सङ्गित] कोरा, कोली या गोद में लिया हुआ (उप ६४८ टी)।

उच्छंगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ (दे १, १०७)।

उच्छघ देखो उत्थघ (हे ४, ३६ टी)।

उच्छंट पु [दे] झपट से की हुई चोरी (दे १, १०१, पाअ)।

उच्छट्ट पु [दे] चोर, डाकू (दे १, १०१)।

उच्छडिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी का माल (दे १, ११२)।

°उच्छण न [प्रच्छन] प्रश्न, पूछना (गा ५००)।

उच्छण्ण देखो उच्छन्न (हे १, ११४)।

उच्छत न [अपच्छत्र] १ अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती में 'ढाकपि-छोडो'। २ मृषावाद, झूठ वचन (पण्ह १, २)।

उच्छन्न वि [उत्सन्न] छिन्न, खण्डित, नष्ट (कुमा, सुपा ३८४)।

उच्छप्प सक [उत् + सर्पय्] उन्नत करना, प्रभावित करना। उच्छप्पइ (सुपा ३५२)। वकृ. उच्छप्पंत (सुपा २९६)।

उच्छप्पण न [उत्सर्पण] उन्नति, अभ्युदय (सुपा २७१)।

उच्छप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] ऊपर देखो, 'जिणपवयणम्मि उच्छप्पणाउ कारेइ विवि-हाओ' (सुपा २०६, ६४६)।

उच्छल अक [उत् + शल्] १ उछलना, ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना। वकृ. उच्छलंत (कप्प, गउड)।

उच्छलण न [उच्छलन] उछलना (दे १, ११८, ६, ११५)।

उच्छलिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, ऊँचा गया हुआ (गा ११७, ६२४, गउड)। २ प्रसृत, फैला हुआ, 'ता ताण वरगवो। उच्छालयो छलिउ पिव गंध गोसीमचंदणव-णस्स' (सुपा ३८५)।

उच्छलिर वि [उच्छलितृ] उछलनेवाला (धर्मवि १४, कुप्र ३७३)।

उच्छल्ल देखो उच्छल। उच्छल्लइ (पि ३२७)- 'उच्छल्लति समुद्दा' (हे ४, ३२६)।

उच्छल्ल वि [उच्छल] उछलनेवाला (भवि)।

उच्छल्लणा स्त्री [दे] आवर्त्तना, अपप्रेरणा, 'कण्डप्पहारनिद्दयआरक्खियखरफरुसवयणत-ज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया' (पण्ह १, ३)।

उच्छल्लिअ देखो उच्छलिअ (भवि)।

उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल काटी गई हो वह, 'तरुणो उच्छल्लिआ य दतीहिं' (दे १, १११)।

उच्छव देखो उच्छअ (कुमा)। २ उत्सेक (भवि)।

उच्छविअ न [दे] शय्या, बिछौना (दे १, १०३)।

उच्छह सक [उत् + सह्] उद्यम करना। वकृ. उच्छह (दस ६, ३, ६)।

उच्छह अक [उत् + सह्] उत्साहित होना। वकृ. उच्छहंत (भवि)।

उच्छाहय वि [उत्सहित] उत्साह-युक्त (सण)।

उच्छाइअ वि [अवच्छादित] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ६१, ४२, सुर ३, ७१)।

उच्छाडिअ (अप) वि [अवच्छादित] ढका हुआ (भवि)।

उच्छाण देखो उच्छ = उक्षन् (प्रामा)।

उच्छाय पु [उच्छ्राय] उत्सेध, ऊँचाई (ठा ७)।

उच्छाय सक [अव+छादय्] आच्छादन [illegible]। [illegible] उच्छाइऊण (चेइय ८४)।

उच्छायण वि [अवच्छादन] आच्छादक, [illegible] (स ३२३)।

उच्छायण वि [उच्छादन] नाशक (स ३३ [illegible] ५६३)।

उच्छायणया } स्त्री [उच्छादना] १ उच्छेद,
उच्छायणा } विनाश (भग १५)। २ व्यव-[illegible], [illegible] (राज)।

उच्छार [illegible] उत्थार=आ+क्रम् (हे ४, १६० टी)।

उच्छाल [illegible] [उत्+शालय्] उछालना, [illegible]। वकृ. उच्छालिंत (कुम्मा ४)।

उच्छालण न [उच्छालन] उछालना, [illegible] (कुम्मा ४)।

उच्छालिअ वि [उच्छालित] फेंका हुआ, [illegible] (कुमा ६[illegible])।

उच्छास देखो ऊसास (पि ६८)।

उच्छाह सक [उत्+साहय्] उत्साह [illegible], [illegible]। उच्छाहइ (सुपा [illegible])।

उच्छाह पुं [उत्साह] १ उत्साह (ठा २,१)। २ [illegible] (सूत्र २०)। ३ [illegible] (दे २०)। ४ पराक्रम, [illegible]। ५ सामर्थ्य, शक्ति (धात्रु १, [illegible] पउम २० ११८)।

उच्छाह पुं [दे] सूत्र का डोरा (दे १,९७)।

उच्छाहण न [उत्साहन] [illegible] (स [illegible] टी)।

उच्छाहिअ वि [उत्साहित] प्रोत्साहित, [illegible]।

उच्छिंद सक [उत्+छिद्] [illegible]। [illegible] उच्छिंदिअ (सुर ८४)।

उच्छि[illegible] न [दे] [illegible]।

उच्छि[illegible] वि [उच्छि[illegible]] [illegible] का [illegible]।

उच्छि[illegible] [उत्क्षेपण] [illegible]।

उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] जूठा, उच्छिष्ट (सुपा ११७; ३७४ श्रा १२८)।

उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] अशिष्ट, असभ्य (दस ३, १ टी)।

उच्छिण्ण वि [उच्छिन्न] उच्छिन्न, उन्मूलित (ठा ५)।

उच्छित्त वि [दे] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। २ विक्षिप्त, पागल (दे १, १२४)।

उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ (से ५, ६१, पाअ)।

उच्छित्त देखो उद्विग्ग (से २, २१, गउड)।

उच्छित्त वि [उत्सिक्त] सींचा हुआ, सिक्त (दे १, १२३)।

उच्छिन्न देखो उच्छिण्ण (कप्प)।

उच्छिप्पंत देखो उक्खिव।

उच्छिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा (राज)।

उच्छिरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा (षड्)।

उच्छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे १, ९५)। २ वि अवजीर्ण (षड्)।

उच्छु देखो उक्खु (पाअ, गा ७४१, पि १७७, श्रौप ७७८, दे १ ११७)। °जंत न [°यन्त्र] ईख पेरने का साँचा (दे ६, ५१)।

उच्छु पुं [दे] पवन, वायु (दे १, ८५)।

उच्छुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (हे २, २२)।

उच्छुअ न [दे] डरते-डरते की हुई चोरी (दे १, ९५)।

उच्छुअरण न [दे] ईख का खेत (दे १, ११७)।

उच्छुआर वि [दे] गहन, ढका हुआ (दे १, ११५)।

उच्छुडिअ वि [दे] १ चोरी करके ले भागा। २ अवद्रुत, दौड़ा हुआ (दे १, १२५)।

उच्छुग देखो उच्छुअ (सुर ८,६१)। °भूय वि [°भूत] जो उत्कण्ठित हुआ हो (सुर २, २१८)।

उच्छुच्छु वि [दे] दृप्त, अभिमानी (दे १, ९६)।

उच्छुण्ण वि [उत्क्षुण्ण] १ आक्रान्त, दबाया हुआ, 'उच्छुण्णं मंति न रिट्ठिम्मि' (पाअ)। २ आकीर्ण,

'रइणाणि अणुच्छुण्णा,
बीसत्थ मारुएण वि अणालिद्धा।
तिमिसेहिवि परिहरिया,
पवणमेहिं मलिआ सुवेलुच्छगा'
(से १०, २)।

उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त। २ पतित (श्रौप २२० भा)।

उच्छुभ सक [अप+क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना। उच्छुभइ (भग १५)।

उच्छुभण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना (पव ७३ टी)।

उच्छुर वि [दे] अविनश्वर स्थायी (दे १, ९०)।

उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत। २ ईख, ऊख (दे १, ११७)।

उच्छुल्ल पुं [दे] १ अनुवाद। २ खेद, उद्वेग (दे १, १३१)।

उच्छूढ वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ (षड्)।

उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उज्झित (णाया १, १ उप)। २ मुषित, चुराया हुआ (राज)। ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (श्रौप)।

उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो। 'उच्छूढ-सरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्न ति' (उव पि ६६)।

उच्छूर देखो उल्लूर=तुड (हे ४, ११६ टि)।

उच्छूल देखा उसूल (उप)।

उच्छेअ पु [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन, 'एगन्तुच्छेअम्मिवि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं' (सम्म १८)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति, 'उच्छेयो सुत्तत्थाणं ववच्छेओत्ति वुत्तं भवति' (चेइय ?)।

उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन, 'निहिं एस सामी णयणुच्छेयणे समत्थं' (सुपा ३३५)।

उच्छेर अक [उत्+श्रि] १ ऊँचा होना, उन्नत होना। २ अधिक होना, अतिरिक्त होना। वकृ उच्छेरंत (पाअ १६८)।

उच्छेव पु [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना (पव २, ८)।

उच्छेव पु [उत्क्षेप] प्रक्षेप (पव ४)।

उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो (से ६, २५)।

उच्छेवण न [दे] घृत, घी (दे १, ११६)।

उच्छेह पु [उत्सेध] ऊँचाई (दे १, १३०)।

उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुडाया हुआ, मुक्त किया हुआ, 'उच्छोडिय-बंधो सो रन्ना भणिओ य भद्द! उवविससु' (सुर १, १०५), 'पासट्टियपुरिसेहिं तक्खणमुच्छोडिया य से बधा' (सुर २, ३६)।

उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित। २ न पिशुनता, चुगली (राज)।

उच्छोल सक [उत्+मूलय्] उन्मूलन करना, उखाडना। वकृ. उच्छोलंत (राज)।

उच्छोल सक [उत्+क्षालय्] प्रक्षालन करना, धोना। वकृ. उच्छोलंत (निचू १७)। प्रयो, वकृ उच्छोलावत (निचू १६)।

उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन, 'उच्छोलणं च कक्कं च तं विज्जं परियाणिया' (सूअ १, ६, औप)।

उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन (दस ४)।

उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल, 'नहदंतकेसरोमे जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ' (उव)।

उच्छोलित्तु वि [उत्क्षालयितृ] डुबोनेवाला, निमग्न करनेवाला (सूअ २, २, १८)।

उज्जु देखो उज्जु (आचा, कप्प)।

उज्जुअ देखो उज्जुअ (नाट)।

उज्ज देखो ओय = ओजस् (कप्प)।

उज्ज न [ऊर्ज] १ तेज, प्रताप। २ बल (कप्प)।

उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनि]
उज्जइणी } नगरी-विशेष, मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है (चारु ३९, पि ३८६)।

उज्जगल न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती। २ वि दीर्घ, लम्बा (दे १, १३५)।

उज्जगरय पु [उज्जागरक] १ जागरण, निद्रा का अभाव,

'जत्थ न उज्जगरओ,
जत्थ न ईसा विसूरणं माणं।
सब्भावचाडुयं जत्थ,
नत्थि नेहो तहिं नत्थि'
(वज्जा ६८)।

उज्जग्गिर न [उज्जागर] जागरण, निद्रा का अभाव (दे १, ११७, वज्जा ७४)।

उज्जग्गुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल (दे १ ११३)।

उज्जड वि [दे] उजाड, वसति-रहित (दे १, ९६),

'उक्किण्णरयभरोणयत-
लजज्जरभूविसट्टविलविसमा
थोउज्जडक्कविडवा इमाओ
ता उन्दरथलीओ' (गउड)।

उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढा (दे १, १११)।

उज्जम अक [उद्+यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना। उज्जमइ (धम्म १४)। उज्जमह (उव)। वकृ. उज्जमंत, उज्जममाण (पण्ह १, ३), 'ए करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणावि संजमतवेसु' (सूअ १, १३)। कृ उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व (सुर १४, ८३, सुपा २८७, २२४)। हेकृ. उज्जमिउ (उव)।

उज्जम पु [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न (उव, जी ५०, प्रासू ११५)।

उज्जमण (अप) न [उद्यापन] उद्यापन, व्रत-समाप्ति-कार्य (भवि)।

उज्जमि वि [उद्यमिन्] उद्योगी (कुप्र ४१६)।

उज्जमिय (अप) वि [उद्यापित] समापित (व्रत) (भवि)।

उज्जम्ह अक [उत्+जृम्भ्] जोर से जँभाई लेना। उज्जम्हइ (प्राकृ ६४)।

उज्जय हि [उद्यत] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्न-शील (पाअ, काप्र १६६, गा ४४८)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (आचा)।

उज्जयंत पु [उज्जयन्त] गिरनार पर्वत, 'इय उज्जयंतकप्पं, अविप्पं जो करेइ जिणभत्तो' (ती, विवे १८), 'ता उज्जयंतसत्तुंजएसु तित्थेसु दोसुवि जिणिंदे' (मुणि १०९७५)।

उज्जर वि [दे] १ मध्य-गत, भीतर का। २ पुं निर्जरण, क्षय (तंदु ४१)।

उज्जल अक [उद्+ज्वल्] १ जलना। २ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलति (विक्र ११४)। वकृ. उज्जलंत (णादि)।

उज्जल वि [उज्ज्वल] १ निर्मल, स्वच्छ (भग ७, ८, कुमा)। २ दीप्त, चमकीला (कप्प, कुमा)।

उज्जल वि [दे] देखो उज्जल्ल (हे २, १७४ टि)।

उज्जलंग वि [उज्ज्वलन] चमकीला, देदीप्यमान, 'जालुज्जलणगअवरंव कत्थइ पयत अइवेगचचल सिहिं' (कप्प)।

उज्जलिअ पुं [उज्ज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ८)।

उज्जलिअ वि [उज्ज्वलित] १ उद्दीप्त, प्रकाशित (पउम ११८, ८८, ओप)। २ ऊँची ज्वालाओं से युक्त (जीव ३)। ३ न उद्दीपन (राज)।

उज्जल्ल वि [दे] स्वेद-सहित, पसीनावाला, मलिन, 'मुडा कडूविणट्ठगा उज्जल्ला असमाहिया' (सूअ १, ३)। २ बलवान, बलिष्ठ (हे २, १७४)।

उज्जल्ल न [औज्ज्वल्य] उज्ज्वलता (गा ६२६)।

उज्जल्ला स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ९७)।

उज्जव अक [उद्+यत्] प्रयत्न करना। वकृ 'सुट्ठुवि उज्जवमाण पचेव करंति रित्तय समणा' (उव)।

उज्जवण देखो उज्जावण (भवि)।

उज्जह सक [उद्+हा] प्रेरणा करना। संकृ. उज्जहित्ता (उत्त २७, ७)।

उज्जाअर } पु [उज्जागर] जागरण, निद्रा
उज्जागर } का अभाव (गा ४८२, वज्जा ७६)।

उज्जाडिअ वि [दे] उजाड किया हुआ (भवि)।

उज्जाण न [उद्यान] उद्यान, बगीचा, उपवन (अणु, कुमा)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] गोष्ठी, गोठ (णाया १, १)। °पालअ, °वाल वि [°पालक, °पाल] बगीचा का रक्षक, माली (सुपा २०८, ३०५)।

उज्जाणिअ वि [औद्यानिक] उद्यान-संबंधी, बगीचा का (भग १४, १)।

उज्जाणिअ वि [दे] निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (दे १, ११३)।

उज्जाणिआ } स्त्री [औद्यानिका] गोष्ठी,
उज्जाणिगा } गोठ, 'उज्जाणं जत्थ लोगो उज्जाणिआए वच्चइ' (निचू ८, स १५१)।

उज्जाणी स्त्री [औद्यानी] गोष्ठी, गोठ (कुमा ८१)।

उज्जायण न [उज्जायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १ टी)।

उज्जाल सक [उत् + ज्वालय्] उज्ज्वल करना, [illegible] करना। संकृ. उज्जालिउं (श्रावक ३६)।

उज्जाल सक [उद् + ज्वालय्] १ जलाना [illegible]। २ [illegible]। संकृ उज्जालिय, उज्जालिया (दस ४ भाग)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] जलाना (दस ४)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] उज्ज्वल करना (पिंड ६८८)।

उज्जालय वि [उज्ज्वालक] आग सुलगानेवाला (सूत्र १, ७, ४)।

उज्जालिअ वि [उज्ज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुर ६ १७३)।

उज्जावण न [उद्यापन] व्रत की समाप्ति-क्रिया (श्रा)।

उज्जावित्र वि [दे] विकसित (षड्)।

[illegible] देखो उज्जुअ (गाथा १ १६),

[illegible], [illegible]

[illegible] निर्गमिया [illegible]।

[illegible]

[illegible] (पडि)।

[illegible] वि [दे] [illegible], [illegible], [illegible] (दे १ ११२)।

[illegible] न [उद्योतन] १ दुर्जीवन, [illegible], [illegible] (पिंड ४८८)। २ [illegible] (सम)।

[illegible] वि [उद्योतित] [illegible], [illegible] (पिंड २७१)।

[illegible] वि [ऋजु] सरल, निष्कपट, सीधा [illegible]। °[illegible] वि [°कृत] १ [illegible]। °[illegible] वि [°[illegible]] [illegible] [illegible] °[illegible] वि [°[illegible]] [illegible] [illegible] °[illegible] वि [°मति] [illegible]

को जानना। २ वि उक्त मनो-ज्ञानवाला (पण्ह २, १ भाव)। °वालिया स्त्री [°वालिका] नदी विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था (कप्प स ८३२)। °सुत्त पु [°सूत्र] वर्तमान वस्तु को ही माननेवाला नय विशेष (ठा ७)। °सुय पु [°श्रुत] देखो पूर्वोक्त अर्थ 'पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुत्रो णयविही मुणेयव्वो' (अणु)। °हत्थ पु [°हस्त] दाहिना हाथ (श्रोघ ४११)।

उज्जु पु [ऋजु] संयम (सूत्र १, १३, ७)।

उज्जुअ वि [ऋजुक] ऊपर देखो (आचा, कुमा, गा १५६, ३४२)।

उज्जुआइअ वि [ऋजुकारित] सरल किया हुआ (से १३ २०)।

उज्जुग देखो उज्जुअ (पि ५७)।

उज्जुत्त वि [उद्युक्त] उद्यमी, प्रयत्नशील (सुर ८, १५, पाअ)।

उज्जुरिअ वि [दे] १ क्षीण, नष्ट। २ शुष्क, सूखा (दे १, ११)।

उज्जूढ वि [उद्व्यूढ] धारण किया हुआ (संबोध ५३)।

उज्जेणग पु [उज्जयनक] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम (श्रावू ८)।

उज्जेणी देखो उज्जइणी (महा, पाअ ३३३)।

उज्जोअ सक [उद् + द्योतय्] प्रकाश करना, उद्योत करना। उज्जोएइ (महा)। वकृ उज्जोयंत, उज्जोइत, उज्जोयमाण, उज्जोएमाण (णाया १, १, सुपा ८७, सुर ८, ८७ सुपा २८२, जीव ३)।

उज्जोअ पुं [उद्योग] प्रयत्न उद्यम (पउम ३, १२६ सम्म ३९ सुक्क २८, २६)।

उज्जोअ पु [उद्योत] १ प्रकाश, उजेला। °गर वि [°कर] प्रकाशक 'लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे' (पडि, पाअ ३ १, १०७)। २ न्यूनाधिक का कारण भूत कर्म-विशेष (कम्म १० कम्म १)। °स्थ न [°[illegible]] [illegible] (कम्म २, १२८)।

उज्जोअग वि [उद्योतक] प्रकाशक 'लोग उज्जोअगाणं' (पडि)।

उज्जोअण न [उद्योतन] १ प्रकाश, प्रकाशन। २ वि प्रकाश करनेवाला (उप ७२८ टी)। ३ पु. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (गु ७, सार्ध ६२)।

उज्जोअय वि [उद्द्योतक] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करनेवाला (उर ८, १२)।

उज्जोइंत देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्।

उज्जोइअ वि [उद्द्योतित] प्रकाशित (सम १५३, सुपा २०५)।

उज्जोएमाण देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्।

उज्जोमिआ स्त्री [दे] रश्मि रस्सी (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्। वकृ उज्जोवत, उज्जोवयत, उज्जोवेंत, उज्जोवेमाण (पउम २१, १५, स २०७, ६३१ ठा ८)।

उज्जोवण न [उद्द्योतन] प्रकाशन (स ६३१)।

उज्जोविय देखो उज्जोइय (कप्प, णाया १, १, पण्ह १, ८, पउम , १६०, स ३६)।

उज्झ सक [उज्झ्] त्याग करना, छोड़ देना। उज्झइ (महा)। कवकृ. उज्झिज्जमाण (उप २११ टी)। संकृ उज्झिअ, उज्झिउ, उज्झिऊण (अभि ६०, पि ५७६, राज)। हेकृ उज्झित्तए (णाया १, ८)। कृ उज्झियव्व (उप ५६७ टी)।

उज्झ पु [उज्झ, उद्‌ध्य] उपाध्याय, पाठक (सिरि ३१६८)।

उज्झअ } वि [उज्झक] त्याग करनेवाला,
उज्झग } छोड़नेवाला (सूत्र १, ३, उप १७८ टी)।

उज्झण न [उज्झन] परित्याग (उप १७६, पु ८०३ पउम १, ६०, श्रीप)।

उज्झणया } स्त्री [उज्झना] परित्याग (उप
उज्झणा } ५६३, श्राव ४)।

उज्झणिअ वि [दे] विक्रीत, बेचा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (षड्)।

उज्झमण न [दे] पलायन, भागना (दे १, १०३)।

उज्झमाण वि [दे] पलायित, भागा हुआ (षड्)।

उज्झर पु [निर्झर] पर्वत से गिरनेवाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना (गाया १, १, पउम गा ६१६)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति, जल प्राय (हि ४)।

उज्झरिअ वि [दे] टेढी नजर से देखा हुआ। २ विक्षिप्त। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ। ४ परित्यक्त, उज्झित (दे १, १३३)।
उज्झल वि [दे] प्रबल, बलिष्ठ (षड्)।
उज्झलिअ वि [दे] १ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ। २ विक्षिप्त (षड्)।
उज्झस पु [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न (दे १, ६५)।
उज्झसिअ वि [दे] उत्कृष्ट, उत्तम (षड्)।
°उज्झा देखो अउज्झा (उप पृ ३७४)।
उज्झाय पु [उपाध्याय] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक (महा, सुर १, १८०)।
उज्झासि वि [उद्भासिन्] चमकनेवाला, देदीप्यमान, 'ककणुज्झासिहत्था' (रंभा)।
उज्झिअव्विअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद। २ वि निन्दनीय। ३ कथनीय (दे ३, ५५)।
उज्झिय वि [उज्झित] १ परित्यक्त, विमुक्त (कुमा)। २ भिन्न (श्राव ४)। ३ न परित्याग (अणु)। °य पु [°क] एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, २)।
उज्झिय वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (षड्)।
उज्झिया स्त्री [उज्झिता] एक सार्थवाह-पत्नी (णाया १, ७)।
उट्ट पुस्त्री [उष्ट्र] ऊँट, करभ (विपा १, ६, हे २, ३४, उवा)। स्त्री उट्टी (राज)।
उट्टार पु [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट,
'अह ते तुरउट्टारे बहुभडमयरे मुमत्यकमलवणे। लीनायति जहिच्छं समरतलाए कुमारगया' (पउम ६८, ३०)।
उट्टिगा देखो उट्टिया (धर्मसं ७८)।
उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] ऊँट सम्बन्धी। ऊँट
उट्टियय } के रोंओं का बना हुआ (ठा ५, ३, ओघ ७०६)। ३ पु भृत्य, नौकर (कुमा)। ४ घडा, घट (उवा)।
उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घडा, घट, कुम्भ (विपा १,६, उवा)। °समण पु [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु, जो बडे घडे मे बैठ कर तपस्या करता है (ओप)।
उट्ठ अक [उत् + स्था] उठना, खडा होना। उट्ठइ (हे ४,१७, महा)। उट्ठेइ (पि ३०६)। वकृ उट्ठत (गा ३८२, सुपा २६६), उट्ठित (सुर ८, ४३, १३, ५३)। संकृ. उट्ठाय, उट्ठित्तु, उट्ठित्ता, उट्ठेत्ता (राज, आचा, पि ५८२)। हेकृ उट्ठिउ (उप पृ २५८)।
उट्ठ वि [उत्थ] उत्थित उठा हुआ (ओघ ७० उवा)। °वइस अप [°पवेश] उठ-बैठ (हे ४, ४२३)।
उट्ठ पुं [ओष्ठ] ओठ अधर (सम १२५, सुपा ५२३)।
उट्ठ पु [उष्ट्र] जलचर जतु-विशेष (सूअ १, ७, १५)।
उट्ठण देखो उट्ठाण (धर्मवि १३०)।
उट्ठभ सक [अव + स्तभ्] १ आलम्बन देना, सहारा देना। २ आक्रमण करना कर्म उट्ठब्भइ (हे ४, ३६५)। सकृ 'उट्ठभिया एगया काय' (आचा १, ६, ३, ११)।
उट्ठवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना (ओघ २१४, दे १, ८२)।
उट्ठविय वि [उत्थापित] उत्पाटित, उठाया हुआ, खडा किया हुआ, 'सा मणियं उट्ठविया भणइ किमागमणकारण सुयहे' (सुर ६, १६०)।
उट्ठा देखो उट्ठ = उत् + स्था (प्रामा)।
उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान, 'उट्ठाए उट्ठेइ' (णाया १, १, ओप)।
उट्ठाइ वि [उत्थाइन्] उठनेवाला (आचा)।
उट्ठाइअ वि [उत्थित] १ जो तैयार हुआ हो, प्रगुण (पउम १२, ६६)। २ उत्पन्न, उत्थित (स ३७६)।
उट्ठाइअ देखो उट्ठाविअ (उवा)।
उट्ठाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना (उव), 'मग्गमलिलेहिं घडासु अ वोच्छिज्जइ पसरिअ महिरउट्ठाण' (से १३, ३७)। २ उद्भव, उत्पत्ति (णाया १,१४)। ३ आरम्भ, प्रारम्भ (भग १५)। ४ उद्वसन, बाहर निकलना (णदि)। °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (णदि)।
उट्ठाय देखो उट्ठ = उत् + स्था।
उट्ठाव सक [उत् + स्थापय्] उठाना। उट्ठावेइ (महा)।
उट्ठावण देखो उट्ठवण (कस)।
उट्ठावण देखो उवट्ठावण, 'पव्वावणविहिमुट्ठावण च अज्जाविहिं निरवसेस' (उव)।
उट्ठावणा देखो उवट्ठावणा (भत्त २५)।
उट्ठाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खडा किया हुआ (नाट)। २ उत्पातित, 'तुमए उट्ठाविओ कली एस' (उप ६४८ टी)।
उट्ठिउ, उट्ठित, उट्ठित्ता, उट्ठित्तु } देखो उट्ठ = उत् + स्था।
उट्ठिय वि [उत्थित] उत्थित, खडा हुआ (सुर ३, ६६)। २ उत्पन्न, उद्भूत (पण्ह १, ३), 'विहीसिया कावि उट्ठिया एसा' (सुपा ५४१)। ३ उदित, उदय-प्राप्त, 'उट्ठियम्मि सूरे' (अणु)। उद्यत, उद्युक्त (आचा)। ५ उद्वसित, बाहर निकला हुआ (ओघ ६५ भा)।
उट्ठिर वि [उत्थातृ] उठनेवाला (सण)।
उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित, रोमाञ्चित (ओघ, कुमा)।
उट्ठीअ (अप) देखो उट्ठिय (पिंग)।
उट्ठुभ } अक [अव + ष्ठीव्] थूकना।
उट्ठुह } उट्ठुभति, उट्ठुभइ (पि १२०), उट्ठुहइ (भग १५)। संकृ उट्ठुहइत्ता (भग १५)।
उठिअ (अप) देखो उट्ठिय (पिंग—पत्र ५८१)।
°उड पुन [कुट] घट, कुम्भ,
'पडिवक्खमण्णुपुजे लावण्णउडे अणगगअकुभे। पुरिससअहिअअधरिए कीस थणती थणे वहसि' (गा २६०)
°उड पु [कूट] समूह, राशि, 'सप्पी जहा अडउड भत्तार जो विहिंसइ' (सम ७१)।
°उड देखो पुड (उवा, महा, गउड, गा ६६०, सुर २, १३, प्रासू ३६)।
उडक पु [उटङ्क] एक ऋषि, तापस-विशेष (निचू १२)।
उडव वि [दे] लिप्त, लिपा हुआ (षड्)।
उडज, उडय, उडव } पु [उटज] ऋषि-आश्रम, पर्णशाला, पत्तो से बना हुआ घर (अभि १११, प्रति ८४, अभि ३७, स १०), 'उडवो तावसगेह' (पाअ),

[illegible] ... सुजामि महुमंग्गिन्नं। [illegible] ... मदं' (निचू १)।

उडाहिअ वि [दे] [illegible], [illegible] हुआ (षड्)।

उडिअ वि [दे] [illegible] (षड्)।

उडिंब पु [दे] [illegible], [illegible], वाद्य-विशेष (दे १, ९८)।

उडु पु [उडु] [illegible] विमान (देवेन्द्र १३१)। °प्पभ पु [°प्रभ] उडु नामक विमान के [illegible] विमान (देवेन्द्र १३८)। °मज्झ पु [°मध्य] उडुविमान के [illegible] विमान (देवेन्द्र १३८)। °[illegible]वत्त पु [°[illegible]वर्त] उडुविमान [illegible] विमान (देवेन्द्र १३८)। °सिट्ठ पु [°सृष्ट] उडुविमान के [illegible] विमान (देवेन्द्र १३८)।

उडु न [उडु] १ [illegible] (पाअ)। २ विमान-विशेष ([illegible] ९६)। °प, °व पु [°प] १ चन्द्र, चन्द्रमा ([illegible] १६, २९६)। २ [illegible] ([illegible] १२२)। ३ [illegible] ([illegible] १६, २९६)। °वइ पु [°पति] [illegible] ([illegible] १, ८)। °वर पु [°पर] [illegible] ([illegible])।

उडु [illegible] ([illegible] घोघ १२३ भा)।

उडुवाडिया स्त्री [उडुवाटिका] जैन मुनियों [illegible] ([illegible])।

[illegible] न [दे] [illegible] ([illegible] १, १०३)।

[illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] १ [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ([illegible] ९६)। २ [illegible]

[illegible]

[illegible]

उड्डुम देखो उद्दम (उत्त ३६, १३८)।

उड्डुम पु [दे] खटमल, खटकीरा, ढङ्किम (दे १, ९६)।

उड्डुहण पु [दे] चोर, डाकू (दे १, ९१)।

उड्डाअ पु [दे] उद्दाम, उदय, उद्भव (दे १, ९१)।

उड्डाण न [उड्डयन] उड़ान, उड़ना, 'मोरोवि मऊर घिप्पइ, हत तद्धम्मि उड्डाणे' (सुर ८, ४२)।

उड्डाण पु [दे] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि। २ कुरर, पक्षि-विशेष। ३ विष्ठा, पुरीष। ४ मनोरथ, अभिलाष। ५ वि गर्विष्ठ, अभिमानी (दे १, १२८)।

उड्डामर वि [उड्डामर] उद्भट, प्रबल (कुप्र १४४)।

उड्डामर वि [उड्डामर] १ भय भीति। २ आडम्बरवाला, टीपटापवाला (पाअ)।

उड्डामरिअ वि [उड्डामरित] भय-भीत किया हुआ (कप्पू)।

उड्डाव सक [उद् + डायय्] उड़ाना। उड्डावइ (भवि)। वकृ उड्डावंत (हे ४, ३५२)।

उड्डाव वि [उड्डायक] उड़ानेवाला (पिंड ४८१)।

उड्डावण न [उड्डायन] १ उड़ाना, 'मत्तजल-वायसुड्डावणेण जलसद्दुमणे विमिमि' (कुमा)। २ आकर्षण, 'तिवउड्डावणे' (गाया १, १८)।

उड्डाविअ वि [उड्डायित] उड़ाया हुआ (गा ११० [illegible])।

उड्डाविर वि [उड्डायितृ] उड़ानेवाला (वज्जा ९४)।

उड्डास पु [दे] संताप, परिताप (दे १, ९९)।

उड्डाह पु [उड्डाह] १ मलिन कार्य, [illegible] ([illegible] २०८)। २ मालिन्य, [illegible], [illegible] ([illegible] २२१)।

उड्डिअ वि [ओड्र] [illegible] (राज)।

उड्डिअ वि [दे] [illegible], फेंका हुआ (षड्)।

उड्डिअंत देखो उड्डी = उद् + डी।

उड्डिआ[illegible] न [दे] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] '[illegible]'

'कुसुमं यत्रोड्डीय क्षुरिकाग्राह्याघवेन सगृह्य। पादाङ्गुलिनिर्गच्छति, तद्विज्ञातव्यमुड्डिआहरणं' (दे १, १२१)।

उड्डिय वि [उड्डीन] उड़ा हुआ, 'तरुउड्डिय-पक्खिसमुल्ल पो' (धर्मवि १३६)।

उड्डिहिअ वि [दे] ऊपर फेंका हुआ (पाअ)।

उड्डी अक [उद् + डी] उड़ना। उड्डेइ, उड्डिति (पि ४७४)। वकृ उड्डिअंत, उड्डेंत (दे ६, ६४ उप १०३१ टी)। संकृ उड्डेऊण, उड्डेवि (पि ५८६, भवि)।

उड्डी स्त्री [औड्री] लिपि-विशेष, उत्कल देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

उड्डीण वि [उड्डीन] उड़ा हुआ (णाया १, १, पाअ, सुपा ४६४)।

उड्डुअ पु [दे] उकार, उद्गार, 'जंभाइएणं उड्डुएण वायनिसग्गेणं' (पडि)।

उड्डुइय } पु [दे] देखो उड्डुअ (चेइय
उड्डोअ } ४३८, ४३६)।

उड्डुवाडिय पु [उड्डुवाटिक] भगवान् महावीर के एक गण का नाम (कप्प)। देखो उडुवाडअ।

उड्डुहिअ देखो उड्डुहिअ (दे १, १३७)।

उड्डोय देखो उड्डुअ (राज)।

उड्ढ न [ऊर्ध्व] १ ऊपर, ऊँचा (भग)। २ [illegible], [illegible], 'उड्ढणिरोहो मुट्ठ' (गुह ३)। ३ वि उत्तम मुख्य 'ग्रहत्ताए नो उड्ढत्ताए परिणमति' (भग ६, ३, आवम)। ४ [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] ६)। ५ ऊपर का, [illegible] ([illegible])। °कण्डूयग पु [°कण्डूयक] [illegible] [illegible] [illegible] ऊपर भाग में [illegible] ([illegible] ११ ६)। °काय पु [°काय] [illegible] ([illegible] (राज)। °गार पु [°गार] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] १, ५, २, ८)। °गम वि [°गम] ऊपर [illegible] ([illegible] ४४६)। °गामि वि [°गामिन्] ऊपर [illegible] ([illegible] १५२)। °चर वि [°चर] ऊपर [illegible], [illegible] [illegible] ([illegible]) ([illegible])। °दिसा स्त्री [°दिश्] [illegible] ([illegible] ६)। °रेणु पु [°रेणु] [illegible], [illegible]

श्रच्छाश्रच्छणिका (इक)। °लोग, °लोय पु [°लोक] स्वर्ग, देव-लोक (ठा ५, ३, भग)। °वाय पु [°वात] ऊँचा गया हुआ वायु, वायु-विशेष (जीव १)।

उड्ढ ऊपर देखो, 'उड्ढजाणू अहोसिरे झाण-कोट्ठोवगए' (भग १, १, महा, श्रा ३३)।

उड्ढक न [दे] मार्ग का उन्नत भू-भाग (सूश्र १, २)।

उड्डल } पु [दे] उल्लास, विकास (दे १,
उड्डुह } ९१)।

उड्ढविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १४६)।

उड्ढा स्त्री [ऊर्ध्वा] ऊर्ध्व-दिशा (ठा ६)।

उड्ढि [दे] देखो उड्ढि (सुज्ज १०, ८)।

उड्ढि देखो वुड्ढि (पड्)।

उड्ढि देखो इड्ढि (पड्)।

उड्ढिय देखो उद्धरिअ = उद्धृत (रभा)।

उड्ढिया स्त्री [दे] १ पात्र-विशेष (स १७३)। २ कम्बल वगैरह श्रोढने का वस्त्र (स ५८६)।

उण देखो पुण = पुनर् (पिंड ८२)।

उण न [ऋण] ऋण, करजा (पड्)।

उण }
उणा } देखो पुण (प्रामा, प्रासू ६१, कुमा,
उणाइ } हे १, ६५)।

उणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनचास, ४९ (देवेन्द्र ६६)।

उणाइ पु [उणादि] व्याकरण का एक प्रकरण (पण्ह २, २)।

उणाइ पु [दे] प्रिय, पति, नायक, 'उणाइ-साहट्ठोल्ला प्रियार्थे' (सक्षि ४७)।

उणो देखो पुण (गउड, पि ३४२, हे १,६५)।

उण्ण न [ऊर्ण] भेड या बकरी के रोम, रोआँ। देखो उन्न। °कप्पास पु [°कार्पास] ऊन, भेड के रोम (निचू १)। °णाभ पु [°नाभ] मकडी, कीट-विशेष (राज)।

°उण्ण देखो पुण्ण = पूर्ण (से ८, ६१, ६५)।

उण्णअ सक [उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। उण्णअइ (प्राकृ ७४)।

उण्णइ स्त्री [उन्नति] उन्नति, अभ्युदय (गा ४६७)।

उण्णइज्जमाण देखो उण्णी।

उण्णम अक [उद् + नम्] ऊंचा होना, उन्नत होना। वकृ. उण्णमंत (पि १६६)। सकृ. उण्णमिय (आचा २, १, ५)।

उण्णम वि [दे] समुन्नत, ऊँचा (दे १, ८८)।

उण्णय वि [उन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (अभि २०६)। २ गुणवान्, गुणी (णाया १, १)। ३ अभिमानी (सूअ १, १६)। ४ न अभिमान, गर्व (भग १२, ५)।

उण्णय पु [उन्नय] नीति का अभाव (भग १२, ५)।

उण्णा स्त्री [ऊर्णा] ऊन, भेड के रोम (आवम)। °पिपीलिया स्त्री [°पिपीलिका] चींटी, जन्तु-विशेष (दे ६,४८)।

उण्णाअक वि [उन्नायक] १ उन्नति-कारक। २ पुन छन्द शास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल की संज्ञा (पिंग)।

उण्णाग पु [उन्नाक] ग्राम-विशेष (आवम)।

उण्णाम पु [उन्नाम] १ उन्नति, ऊँचाई (से ६, ५६)। २ गर्व, अभिमान। १ गर्व का कारण-भूत कर्म (भग १२, ५)।

उण्णाम सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना (से ४, ५६)।

उण्णामिय वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (गा १६, २५६, से ६, ७१)।

उण्णाल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। उण्णालइ (प्राकृ ७५)।

उण्णालिय वि [दे] १ कृश, दुर्बल। २ उन्नमित, ऊँचा किया हुआ (दे १, १३६)।

उण्णिअ वि [उन्नीत] वितर्कित, विचारित (से १३, ७७)।

उण्णिअ वि [औणिक] ऊन का बना हुआ (ठा ६, ३, ओघ ७०६, ८६ भा)।

उण्णिद्द वि [उन्निद्र] १ विकसित, उल्लसित (गउड)। २ निद्रा-रहित (माल ८५)।

उण्णी सक [उद् + नी] १ ऊँचा ले जाना। २ कहना। भवि उण्णेह (विसे ३५८५)। कवकृ उण्णइज्जमाण (राज)।

उण्णुइअ पु [दे] १ हुँकार। २ आकाश की तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज (दे १, १३२)। ३ वि. गर्वित, 'एव भणिओ सतो उण्णुइओ सो कहेइ सव्व तु' (वव २, १०)।

उण्ह पु [उष्ण] १ आतप, गरमी (णाया १, १)। २ वि गरम, तप्त (कुमा)।

उण्हवण न [उष्णन] गरम करना (पिंड २४०)।

उण्हिआ स्त्री [दे] कृसर, खिचडी (दे १, ८८)।

उण्हीस पुन [उष्णीष] पगडी, मुकुट (हे २, ७५)।

उण्होदयभड पु [दे] भ्रमर, भमरा, भौंरा (दे १,१२०)।

उण्होला स्त्री [दे] कीट-विशेष (आवम)।

उताहो अ [उताहो] अथवा, या (वि ८५)।

उत्त वि [उक्त] कथित, अभिहित (सुर १०, ७६, स ३७८)

उत्त वि [उप्त] १ बोया हुआ। २ निष्पादित, उत्पादित, 'देवउत्ते अए लोए बभउत्तेति यावरे' (सूअ १, १, ३)।

उत्त पु [दे] वनस्पति-विशेष (राज)।

°उत्त वि [गुप्त] रक्षित (सूअ १, १, ३, ५)।

उत्त देखो पुत्त (गा ८४, सुर ७, १५८)।

उत्तइय } वि [उत्तेजित] (दश० नि० गा०
उत्तुइय } १११. अग०)।

उत्तंघ देखो उत्थघ = रुध्। उत्तघइ (हे ४, १३३)।

उत्तघ देखो उत्तभ। उत्तघइ (प्राकृ ७०)।

उत्तत देखो वुत्तत (पड्, विक्र ३६)।

उत्तंपिअ वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (दे १, १०२)।

उत्तभ सक [उत् + स्तम्भ्] १ रोकना। २ अवलम्बन देना, सहारा देना। कर्म. उत्तभिज्जइ, उत्तभिज्जेंति (पि ३०८)।

उत्तंभण न [उत्तम्भन] १ अवरोध। २ अवलम्बन (उप पृ २२१)।

उत्तंभय वि [उत्तम्भक] १ रोकनेवाला। २ अवलम्बन देनेवाला, सहायक (उप पृ २२०)।

उत्तस पुं [अवतस] शिरो-भूषण, अवतस (गउड, दे २, ५७)।

उत्तस पु [उत्तस] कर्णपूरक, कनफूल, कर्ण-भूषण (पाअ)।

उत्ताइय वि [दे] उत्तेजित, अधिक दीपित (दसनि ३, ३५)।

उत्तण वि [दे] गर्वित (सट्ठि ५६ टी)। देखो उत्तुण।

[illegible] वि [उत्तुण] [illegible], [illegible] (पाअ १, १)।

[illegible] वि [उत्तुर] अभिमानी, गर्विष्ठ (पाअ)।

[illegible] वि [उत्तर] [illegible], बहुत [illegible] (सुपा ३३)।

[illegible] वि [दे] [illegible] (दे)।

[illegible] वि [उत्तप्त] [illegible], [illegible] (पाअ)।

[illegible] (दे)।

[illegible] वि [दे] १ गर्वित, अभिमानी (दे १, १३१, पाअ)। २ [illegible] (दे १३१)।

[illegible] वि [उत्तप्त] [illegible] (राज)।

[illegible] पु [उत्तम] [illegible] (१८)।

[illegible] वि [उत्तम] १ श्रेष्ठ, प्रधान, [illegible] ([illegible] ६)। २ प्रधान, [illegible] ([illegible])। ३ [illegible] ([illegible])। ४ [illegible] (पाअ)। ५ पु [illegible]। ६ [illegible] ([illegible])। ७ [illegible] ([illegible] ५, २६४)। °ट्ठ पु [°र्थ] १ [illegible]। २ [illegible] ([illegible] २)। ३ [illegible] (पउम ३, ८१)। ४ [illegible] ([illegible] ७)। °ण वि [°र्ण] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [उत्तमाङ्ग] [illegible], [illegible] ([illegible])।

[illegible] [उत्तमाङ्ग] [illegible], [illegible]।

[illegible] [उत्तमा] १ [illegible] ([illegible] ३, १)। २ [illegible]।

[illegible] [उत्तमा] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] ३०३)। [illegible] [illegible]।

उत्तम्मिअ वि [उत्तान्त] खिन्न, दिलगीर (दे १, १०२, पाअ)।

उत्तर अक [उत् + तृ] १ बाहर निकलना। २ पार करना। उत्तरिम्मामो (स १०१)। वकृ उत्तरंत,

'दिन्तलि [illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]' (गा ३८८)

'उत्तरमाग य मए, [illegible]' (महा)। संकृ उत्तरित्तु (वि ४७८)। हेकृ उत्तरित्तए (वि ४७८)।

उत्तर अक [अव + तृ] उतरना नीचे आना। वकृ उत्तरमाण, 'उत्तरमाणस्स तो विमाणाओ' (सुपा ३८०)। उत्तर वि [उत्तर] १ श्रेष्ठ, प्रधान (पउम ११८, ३०)। २ प्रधान, मुख्य (सूअ १, ३)। ३ उत्तर-दिशा में रहा हुआ (ज १)। ४ उपरि वर्ती, उपरितन (उत्त २)। ५ अधिक, अतिरिक्त, 'अट्ठुत्तर—' (औप, सूअ १, २)। ६ अवान्तर, भेद, शाखा, 'उत्तरगई' (कम्म १)। ७ ऊपर का रखा हुआ वस्त्र, कम्बल [illegible] (पाअ)। ८ न. जवाब, प्रत्युत्तर (वव १)। ९ वृद्धि (भग १३, ४)। १० पु. [illegible] [illegible] का नाम ([illegible] १५८)। ११ [illegible] ([illegible])। १२ [illegible] जैन मुनि, आर्य [illegible] के प्रथम [illegible] ([illegible])। °कंचुअ पु [°कञ्चुक] [illegible] (विपा १, २)। °करण न [°करण] [illegible], [illegible], विशेष-गुणाधान,

[illegible],

[illegible]।

[illegible]

[illegible] (आव ५)।

°कुरा स्त्री [°कुरु] [illegible] [illegible] '[illegible]' (औप ३)। °कुरु पु [°कुरु] १ [illegible] [illegible] (वि ३२८ [illegible] ७, [illegible] ४, [illegible] ३५, ५०)। २ [illegible] (ज २)। °कुरुकूड न [°कुरुकूट] १ [illegible] का [illegible] शिखर (ठा ६)। २ [illegible]

(ज ४)। °कोडि स्त्री [°कोटि] संगीतशास्त्र-प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °गंधारा स्त्री [°गान्धारा] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ७)। °गुण पु [°गुण] [illegible] (भग ७, ३)। °चावाला स्त्री [°चावाला] नगरी-विशेष (आवम)। °चूल [°चूड] गुरु वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर बड़े आवाज से 'मत्थएण वंदामि' कहना (धर्म २)। °चूलिया स्त्री [°चूलिका] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (बृह ३, गुभा २५)। °ड्ढ न [°र्ध] पिछला आधा भाग उत्तरार्ध (ज ४)। °दिसा स्त्री [°दिश्] उत्तर दिशा (गुर २, २२८)। °द्ध न [°र्ध] पिछला आधा भाग (पिंग)। °पगइ, °पयडि स्त्री [°प्रकृति] कर्मों के अवान्तर भेद (उत्त ३३ सम ६६)। °पच्चत्थिमिल्ल पु [°पाश्चात्य] वायव्य कोण (वि)। °पट्ट पुं [°पट्ट] बिछोना के ऊपर का वस्त्र (ओघ १५६ भा)। °पारणग न [°पारणक] उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण (राज)। °पुरच्छिम, °पुरत्थिम पु [°पौरस्त्य] ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा (णाया १, १, भग, वि ६०२)। °पोट्ठवया स्त्री [°प्रोष्ठपदा] उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र (सुज्ज ८)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र (सण्, वि ६२)। °बलिस्सह पु [°बलिस्सह] १ एक प्रसिद्ध जैन साधु (राज)। २ उत्तर बलिस्सह नामक स्थविर से निकला हुआ एक गण, भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-संप्रदाय (कप्प, ठा ९)। °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष (ठा ९)। °मंदा स्त्री [°मन्दा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °महुरा स्त्री [°मथुरा] नगरी विशेष (दंस)। °वाय पु [°वाद] उत्तरवाद (आचा)। °वेउव्विय, °वेउव्विय वि [°वैक्रिय] स्वाभाविक भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय (पण्ण १ पण्ण)। °साला स्त्री [°शाला] १ क्रीडा-गृह। २ घोड़े को बनाया हुआ घर। ३ वाहन—गृह, हाथी घोड़ा आदि बाँधने का स्थान, तबेला (निचू ८)। °साहग, °साहय वि [°साधक] विद्या, मंत्र वगैरह का

साधन करनेवाले का सहायक (सुपा १५१, ८ ३६६)। देखो उत्तरा°।

उत्तरओ अ [उत्तरत] उत्तर दिशा की तरफ (ठा ८, भग)।

उत्तरंग न [उत्तरङ्ग] १ दरवाजे का ऊपर का काष्ठ (कुमा)। २ वि चपल, चचल (मुद्रा २६८)।

उत्तरकुरु पु व [उत्तरकुरु] १ देव-भूमि स्वर्ग (स्वप्न ६०)। २ स्त्री भगवान् नमिनाथ की दीक्षाशिबिका (विचार १२९)।

उत्तरण न [उत्तरण] १ उतरना, पार करना (ठा ५, स ३६२)। २ अवतरण, नीचे आना (ठा १०)।

उत्तरणवरडिया स्त्री [दे] उडुप, जहाज, डोंगी (दे १, १२२)।

उत्तरविउव्विय वि [उत्तरवैक्रियिक] उत्तर-वैक्रियनामक लब्धि से सम्पन्न (पच २, २०)।

उत्तरसग देखो उत्तरा-सग (पव ३८)।

उत्तरा स्त्री [उत्तरा] १ उत्तर दिशा (ठा १०)। २ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ४ दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम ख्यात भगिनी (विसे)। ५ अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम (ती)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी (राज)। °पह पुं [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश, उत्तरीय देश (आचू २)। °फग्गुणी देखो उत्तर-फग्गुणी (सम ७, इक)। °भद्दवया देखो उत्तर-भद्दवया (सम ७, इक)। °यण न [°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा मे गमन, माघ से लेकर छ महीना (सम ५३)। °यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °वह देखो °पह (महा, उव १४२ टी)। °सग पु [°सग] उत्तरीय वस्त्र का शरीर मे न्यास-विशेष, उत्तरासण (कप्प, भग, औप)। °समा स्त्री [°समा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६, कस)। °हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ। २ वि. उत्तर दिशा का तरफ मुँह किया हुआ (ओघ ६५०, आव ४)।

उत्तरिज्ज, उत्तरिय न [उत्तरीय] चादर, दुपट्टा (उवा, प्राप्र, हे १, २४८), 'जरजिण्णं उत्तरिय' (सुपा ५४६),

उत्तरिय वि [उत्तीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ (सुर ६, १५९)। २ पार पहुँचा हुआ (महा)।

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो उत्तर (ठा १०, विसे १२४५)।

उत्तरिल्ल वि [औत्तराह] उत्तर दिशा या काल मे उत्पन्न या स्थित, उत्तर-सम्बन्धी, उत्तरीय, 'अह उत्तरिल्लरुयगे' (सुपा ४२, सम १००, भग)।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय = उत्तरीय (कुमा, हे १, २४८, महा)।

उत्तरीकरण न [उत्तरीकरण] उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना, 'तस्स उत्तरीकरणेण' (पडि)।

उत्तरोट्ठ पु [उत्तरौष्ठ] १ ऊपर का ओठ (पि ३६७)। २ श्मश्रू, मूँछ (राज)।

उत्तलहअ पु [दे] विटप, अकुर (दे १, ११६)।

उत्तव वि [उक्तवत्] जिसने कहा हो वह (पि ५६६)।

उत्तस अक [उत् + त्रस्] १ त्रास पाना, पीडित होना। २ डरना, भयभीत होना। वकृ. उत्तसंत (सुर १, २४६, १०, २२०)।

उत्तसिय वि [उत्त्रस्त] १ भयभीत। २ पीडित (सुर १, २४६)।

उत्ताड सक [उत् + ताडय्] १ ताडना, ताडन करना। २ वाद्य बजाना। कवकृ. 'उत्ताडिज्जताण दद्दरियाण कुडवाण' (राय)।

उत्ताडण न [उत्ताडन] १ ताडना करना (कुमा)। २ वाद्य बजाना (राज)।

उत्ताण वि [उत्तान] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख (पचा १८)। २ चित्त (विपा १, ६, ठा ४, ४)। ३ विस्फारित, 'उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा' (औप)। ४ अनिपुण, अकुशल, 'उत्ताणमई न साहए धम्म' (धम्म ८)। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोनेवाला (कस)।

उत्ताणअ, उत्ताणग ऊपर देखो (भग, गा ११०, कस)।

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरण्ड-सम्बन्धी (पत्ती वगैरह), (दे १, १२०)।

उत्ताणिअ वि [उत्तानित] १ चित्त किया हुआ (से ६, ८९, गा ४६०)। २ चित्त सोनेवाला (दसा)।

उत्तार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना। वकृ उत्तारेमाण (ठा ५)।

उत्तार सक [उत् + तारय्] १ पार पहुँचाना। २ बाहर निकालना। ३ दूर करना, 'देहो नईए खित्तो, तओ एए जइ नो उत्तारिता तो ह मरिऊण' (सुपा ३५७, काल)।

उत्तार पु [उत्तार] १ उतरना, पार करना, 'अणुसोओ ससारो पडिसोओ तस्स उत्तारो' (दस २), णइउत्ताराइ' (उवर ३२)। २ परित्याग (विसे १०४२)। ३ उतारनेवाला, पार करानेवाला,

'भवसयसहस्सदुलहे,
जाइजरामरणसागरोत्तारे।
जिणवयणम्मि गुणायर !
खणमवि मा काहिसि पमाय'
(प्रासू १३४)।

उत्तार पु [दे] आवास-स्थान, गुजराती मे 'उतारो' (सिरि ७००)।

उत्तारण न [उत्तारण] १ उतारना २ दूर करना। ३ बाहर निकालना। ४ पार करना 'ता अज्जवि मोहमहाअहिविसवेगा
फुरति तुह बाढ।
ताणुत्तारणहेउ, तम्हा
जत्त कुणसु भद्द!।'
(सुपा ५५७, विसे १०४०)।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारनेवाला (स ६४७)।

उत्तारिअ वि [उत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ, 'तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ' (महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ महान्, बडा, 'उत्ताल-तालयाण वण्णिएहि दिज्जमाणाण' (सुपा ५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी, 'कहवि उत्तालो अप्पडिलेहियसेज्ज गिण्हतो' (सुपा ६२०)। ३ उद्धत (दे १,१०१)। ४ बेताल, ताल विरुद्ध गान का एक दोष, 'गायतो मा

[illegible]

उन्निट्ठ अक [उत् + स्था] १ उठना। २ उदित होना। वकृ 'उन्निट्ठन्ते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-रहित

[illegible]

(गा १००)।

उत्तिणि वि [उत्तृणित] तृण-रहित किया हुआ (गा १०५)।

उत्तिण्ण वि [उत्तीर्ण] १ बाहर निकला हुआ, 'उत्तिण्णा नवाओ' (महा)। 'दिट्ठो य महा-नगर... तम्मि, उत्तिण्णो य ...' (महा)। २ पार पहुँचा हुआ, पार-प्राप्त (स ३०२), 'उत्तिण्णा ...' (महा)। ३ जो रस हुआ हो, ... (गउड)। ४ रहित, 'मोहर ...' (गउड)। ५ निवृत्त हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह, 'उत्तिण्णगइन्द' (गा ५५५)। ६ उल्लंघित, अतिक्रान्त (नाट)।

उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] १ नीचे उतरा हुआ, '...' (महा)।

उत्तिम पुं [उत्तीर्थ] कुपथ, कुमार्ग (भवि)।

उत्तिम देखो उत्तम (पड्, ति १०१, दे १, ...)।

उत्तिमंग देखो उत्तमंग (महा, ति १०१)।

उत्तिरणि देखो उत्तिण्ण (गा ४ १६६, कुमा)।

उत्तिरिविडि } स्त्री [दे] ... उत्तिरवडी } ऊँचा ... (दे १, १२३), '...' (पउम ...)।

उत्तुंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत (महा, कप्पू, ...)।

उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] ...।

उत्तुग वि [दे] ... (दे १, ...)।

उत्तुप्पिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना (विपा १, ७)।

उत्तुय सक [उत् + तुद] पीडा करना, हैरान करना। वकृ उत्तुदंत (विपा १, ७)।

उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] गर्व, अभिमान। २ वि गर्वित, अभिमानी (दे १, ९९)।

उत्तुर्व वि [दे] दृष्ट, देखा हुआ (षड्)।

उत्तुहिअ वि [दे] उत्पाटित, छिन्न, नष्ट (दे १ १०५, १११)।

उत्तूण पुं [दे] ...-रहित ..., ...-शून्य कूप (दे १, ९४)।

उत्तेअ वि [उत्तेजस्] १ तेजस्वी, प्रखर। २ पुं ... का एक भेद (पिंग, नाट)।

उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजना (मुद्रा १९८)।

उत्तेइअ } वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्सा-उत्तेजिअ } हित, प्रेरित (दस ३, पाअ)।

उत्तेड } पुं [दे] बिन्दु (दिएण १६) उत्तेडय } 'मिनो य ...' (न २९८)।

उत्थ न [उक्थ] १ स्तोत्र-विशेष। २ योग-विशेष (निर)।

उत्थ वि [उत्थ] उत्पन्न, उत्थित (कुमा १९६, गउड)।

उत्थ (शौ) देखो उट्ठ = उत् + स्था। उत्थेदि (प्राकृ ९८)।

उत्थइय वि [अवस्तृत] १ व्याप्त (से ४, ३८)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ। ३ आच्छादित, '...' (गउड ..., से ३०६)।

उत्थगिअ देखो उत्थविअ = उत्तम्भित (से ४०४)।

उत्थय सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना, उठाना। उत्थयइ (हे ४, ३६)।

उत्थंघ सक [उत् + स्तम्भ्] १ उठाना। २ अवलम्बन देना। ३ रोकना (गउड, से ४, ६)। उत्थंघइ (हे ४ ३६)।

उत्थर सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उत्थरइ (हे ४, १४४)। वकृ उत्थरिअ (कुमा)।

उत्थंघ सक [रुध्] रोकना। उत्थंघइ (हे ४, १३३)।

उत्थंघ पुं [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलाना (से ६, ३३)।

उत्थंघण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो (गउड)।

उत्थंघि वि [उत्क्षेपिन्] ऊँचा फेंकना (गउड)।

उत्थंघिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उत्थंघिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

उत्थंघिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (से ५, ६०)।

उत्थंभि वि [उत्तम्भिन] १ आघात-प्राप्त, अवलम्बन करनेवाला,

'धारिज्जइ जलनिहीवि
कल्लोलोत्थंभिसत्तकुलसेलो।
न हु अन्नजम्मनिम्मिअ-
सुहासुहो कम्म-परिणामो ॥'
(प्रासू १२७)।

उत्थंभिअ वि [उत्तम्भित] १ अवलम्बित। २ रुका हुआ, स्तम्भित, 'अइपीणत्थणउत्थंभिआणणे मुग्रणु सुणसु मह वअणं' (गा ६२८)। ३ बन्धन-मुक्त किया हुआ (स ५६८)।

उत्थंभिर देखो उत्तंभि (वज्जा १५२)।

उत्थग्घ पु [दे] समर्द, उपमर्द (दे १, ९३)।

उत्थप्पण देखो उट्टवण (कुप्र ११७)।

उत्थय देखो उत्थइय (कप्प), निवडंति तणोत्थयरूपियासु तुरगावि मायगा' (उप ७२८ टी)।

उत्थर सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। संकृ उत्थरिवि (अप) (भवि)।

उत्थर सक [अव + स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना। २ पराभव करना। वकृ. उत्थरत, उत्थरमाण (पण्ह १, ३, राज)।

उत्थर } सक [उत् + स्तृ] आच्छादन
उत्थल्ल } करना (?)। उत्थरइ, उत्थल्लइ (प्राकृ ७५)।

उत्थरिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दवाया हुआ, 'उत्थरिओवग्गिआई अक्कत' (पाअ, भवि)।

उत्थरिय वि [दे] १ निस्सृत, निर्गत (स ४७३)।

'अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाह-
भरनीसहा पडिया' (सुपा २०)।
२ उत्थित, उठा हुआ (दे ७, ९२)।

उत्थल न [उत्स्थल] १ ऊँची धूल राशि, उन्नत रज पुञ्ज (भग ७, ६ टी)। २ उन्मार्ग कुपथ (से ८, ६)।

उत्थलिअ न [दे] १ घर, गृह। २ वि. उन्मुख-गत, ऊंचा गया हुआ (दे १ १०७, स १८०)।

उत्थल्ल अक [उत् + शल्] उछलना, कूदना। उत्थल्लइ (षड्)।

उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [दे] दोनो पार्श्वो से परिवर्त्तन, उथल पुथल (दे १, १२२)।

उत्थल्ला स्त्री [दे] १ परिवर्त्तन (दे १, ९३)। २ उद्वर्त्तन (गउड)।

उत्थल्लिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, 'उत्थल्लिअं उच्छलिअं' (पाअ)।

उत्थाइ वि [उत्थायिन्] उठनेवाला (दे ८ १६)।

उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ, 'पुव्वुत्थाइयनरवरदेसे दडाहिव ठवइ महएा' (सुपा ३५२)।

उत्थाण न [उत्थान] १ वीर्य, वल, पराक्रम (विसे २८-२६)। २ उत्थान, उत्पत्ति,

'वद्धावाही अमज्जो न नियत्तइ ओसहेहिं कएहिं।
तम्हा तीउत्थाणं निरुभियव्वं हिएसीहिं'
(सुपा ४०४)।

उत्थामिय (अप) वि [उत्थापित] उठाया हुआ (भवि)।

उत्थार सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दवाना। उत्थारइ (हे ४, १६०, षड्)।

उत्थार देखो उच्छाह = उत्साह (हे २, ४८, षड्)।

उत्थारिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दवाया हुआ, 'उत्थारिअअतरगरिउवग्गो' (कुमा, सुपा ५४६)।

उत्थिय देखो उट्ठिय (हे ४, १६, पि ३०)।

उत्थिय देखो उत्थइअ (पचा ८)।

°उत्थिय वि [°तीर्थिक] मतानुयायी, दर्शनानुयायी (उवा, जीव ३)।

°उत्थिय वि [°यूथिक] यूथ प्रविष्ट, 'अण्णउत्थिय—' (उवा, जीव ३)।

उत्थुभण न [अवस्तोभन] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू-थू आवाज करना। (बृह १)।

उद न [उद] जल, पानी, 'अवि साहिए दुवे वासे सीओद अभोच्चा निक्खते' (आचा, भग ३, ६)। °उल्ल °ओल्ल वि [°ार्द्र] पानी मे गीला। (ओघ ४८६, पि १६१)। °गत्ताभ न [°गर्त्ताभ] गोत्र-विशेष (ठा ७)।

उदइग देखो ओदइअ (अणु)।

उदइल्ल वि [उदयिन्] उदयवान्, उन्नतिशील, 'सिरिअभयदेवसूरी अपुव्वसूरो सयावि उदइल्लो' (सुपा ६२२)।

उदक पु [उदङ्क] जल का पात्र विशेष, जिससे जल ऊंचा छिड़का जाता है (ज २)।

उदच सक [उद् + अञ्च्] ऊँचा जाना (कुमा)।

उदचण प [उदञ्चन] १ ऊँचा फेंकना। १ वि ऊँचा फेकनेवाला (अणु)।

उदचिर वि [उदञ्चितृ] ऊँचा जानेवाला (कुमा)।

उदत पु [उदन्त] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त, 'णिअमेऊण कइवल वीओदतो व्व राहवस्स उवणिओ' (से ४, ५५, स ३०, भग)।

उदप पु [उदूनृप] कृष्णराज पुत्र उदय (नलदव० राम० ऋपिवर्धन)

उदग पुन [उदक] जल पानी, 'चत्तारि उदगा पण्णत्ता' (ठा ४, जी ५)। २ वनस्पति-विशेष (दस ८, ११)। ३ जलाशय (भग १, ८)। ४ पुं स्वनाम ख्यात एक जैन साधु। ५ सातवे भावी जिनदेव (सूत्र २, ७)। °गब्भ पु [°गर्भ] बादल, अभ्र (भग २, ५)। °दोणि स्त्री [°द्रोणि] १ जल रखने का पात्र-विशेष, ठढा करने के लिए गरम लोहा जिसमे डाला जाता है वह (भग १६, १)। २ जो अरघट्ट मे लगाया जाता हे वह छोटा घडा (दस ७)। °पोग्गल न [°पौद्गल] बादल, मेघ (ठा ३, ३)। °मच्छ पु [°मत्स्य] इन्द्र-धनुप का खण्ड, उत्पात-विशेष (भग ३, ६)। °माल पुस्त्री [°माल] जल का ऊपर चढता तरग, उदक-शिखा, वेला (ठा १०, जीव ३)। °वत्थि स्त्री

[illegible] [illegible] ; [illegible], १८)। °गिरा स्त्री [°गिरा] [illegible] १०)। °भीम पुं [°भीमन्] [illegible] (दे)।

[illegible] वि [उग्र] १ सुन्दर मनोहर 'तत्तो [illegible] (सुर २, १०२)। २ [illegible], प्रकार (ठा ४, २, [illegible] ३०)। ३ प्रधान, मुख्य [illegible] (उप २३)।

[illegible] [illegible] [illegible] (सम्बद्ध २३)।

[illegible] वि [उदात्त] उदार, महत्त्व (मवाण ३८)।

[illegible] वि [उदात्त] स्वर-विशेष, जो उच्च [illegible] (विसे ८५२)।

[illegible] [illegible] दूर, तन्त, विशाला (उप [illegible] टी)।

[illegible] (णाया १, ८ [illegible] १५३ [illegible] ३२, पएण १)।

[illegible] पुं [illegible] लाभ (सूम २, ६, २४)।

[illegible] [उदय] १ अभ्युदय, उन्नति 'जो [illegible] (भग)। २ उत्पत्ति [illegible], [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (उप)।

[illegible]

[illegible]

उदयन देखो उदि।

उदयण पुं [उदयन] १ राजा प्रद्योतन का प्रसिद्ध मंत्री (कुम्र १४३)।

उदयण पुं [उदयन] १ एक राजकुमार, कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा (कप्प)। ३ न उन्नति, उदय। ४ वि उन्नत होनेवाला प्रवर्धमान (ठा ५, ३)।

उदर न [उदर] १ पेट जठर (सूम १ ८)। २ पेट की बीमारी 'नवजरजलोदरबुम्भानाममो-मादरगणि' (लहुम्र १५)।

उदरंभरि वि [उदरम्भरि] स्वार्थी अकेलपेटू (पि ३७६)।

उदरि वि [उदरिन्] पेट की बीमारीवाला (पण्ह २, ५)।

उदरिय वि [उदरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

उदवाह वि [उदवाह] १ पानी वहन करनेवाला जल-वाहक। २ पुं छोटा प्रवाह (भग ३, ६)।

उदसी [दे] [उदश्विन्?] तक्र

उदहि पुं [उदधि] १ समुद्र, सागर (कुमा)। २ भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार (पण्ह २, ४)। °कुमार पुं [°कुमार] देखो की एक जाति (पएण १)। देखो उअहि।

उदाइ पुं [उदायिन्] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बनकर धर्मच्छल से मारा था और जो भविष्य में तीसरा जिनदेव होगा (ठा ६, टी)। २ पुं राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १६, १)।

उदाइण देखो उदायण (कुमा २३)।

उदाम देखो उद्दाम (नदि १५८ टी)।

उदायण पुं [उदायन] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८, भग ३, ६)।

उदार देखो उराल (उप पृ १०८)।

उदासि वि [उदासिन] उदास, उदासीन। °ता स्त्री [°ता] [illegible] (उप ५७६)।

उदासीण वि [उदासीन] १ मध्यस्थ, तटस्थ (उप [illegible])। २ [illegible] (ठा ६)।

उदाहड वि [उदाहृत] कथित, दृष्टान्तित (राज)।

उदाहर सक [उदा + हृ] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरति (पि १४१)। 'भास मुनें नेव उदाहरिज्जा' (सत्त ४३)। भूका उदाहु (म्राचा, उत्त १४, ६), उदाहू (सूम १, १२, ४)। वकृ उदाहरत (सूम १, १२, ३)।

उदाहरण न [उदाहरण] १ कथन, प्रतिपादन। २ दृष्टान्त (सूम १, १२, विसे)।

उदाहिय वि [उदाहृत] १ कथित, प्रतिपादित। २ दृष्टान्तित (म्राचा, णाया १,८)।

उदाहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका गया (षड्)।

उदाहु देखो उदाहर।

उदाहु म्र [उताहो] अथवा, या (उवा)।

उदाहू देखो उदाहर।

उदाहो देखो उदाहु = उताहो (स्वप्न ७०)।

उदि अक [उद् + इ] १ उन्नत होना। २ उपर होना। (विसे १२६६, जीव ३)। वकृ उदयत (भग, पउम ८२, ५६, सुपा १६८)। कवकृ उदिज्जत (विसे ५३०)।

उदिक्खिअ वि [उदीक्षित] अवलोकित (दे ६, १४८)।

उदिण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा में उत्पन्न (म्रावम)।

उदिण्ण } वि [उदीर्ण] १ उदित, उदय प्राप्त
उदिन्न } (ठा ५), 'एवो वि इवो विगमो उदिन्नो' (गउ ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म) (पएण १६, भग)। ३ उत्पन्न, 'जरा उदिएणा नगु मरिउ वाही' (गउ ६, श्रा २७)। ४ उत्कट, प्रबल, 'भगवतेणाउदयाए भंते। देवा कि उदिएण मोहा, उवसतमोहा, खीणमोहा ?' (भग ५, ४)।

उदिय वि [उदित] १ उदित, उद्गत (गा ८६)। २ उन्नत (ठा ४)। ३ उक्त, कथित (विसे २५७६)।

उदीण वि [उदीचीन] १ उत्तर दिशा में स्थित, सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न (म्राचा पि १६५)। °पाईणा स्त्री [°प्राचीना] ईशान-कोण (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [उदीचीना] उत्तर दिशा (ठा १, १)।

उदीर सक [उद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरेंति (भग, पवि ७८)। भूका उदीरिंसु, उदीरेंसु (भग)। भवि. उदीरिस्संति (भग)। वकृ उदीरेंत (ठा ७), 'कुमलवइमुदीरंतो' (उप ६०४)। कवकृ. उदीरिज्जमाण (पएण २३)। हेकृ उदीरेत्तए (कस)।

उदीरग देखो उदीरय (पंच ४, ५)।

उदीरण न [उदीरण] १ कथन, प्रतिपादन। २ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव (कम्म २, १३)।

उदीरणया } स्त्री [उदीरणा] ऊपर देखो
उदीरणा } (कम्म २,१३, १), 'ज करणेणोकड्डिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा' (कम्मप १४३, १६६)।

उदीरय वि [उदीरक] १ कथक, प्रतिपादक। २ प्रेरक,प्रवर्तक, 'एक्कमेक्क विसयविसउदीरएसु' (पएह १,४)। ३ उदीरणा करनेवाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न विशेष से कर्म-फल का अनुभव करनेवाला (कम्मप १५६)।

उदीरिद देखो उदीरिय (राय ७४)।

उदीरिय वि [उदीरित] १ प्रेरित, 'चालियाणं घट्टियाण खोभियाण उदीरियाण केरिसे सद्दो भवति' (राय, जीव ३)। २ कथित, प्रतिपादित, 'अंगे धम्मे उदीरिए' (आचा)। ३ जनित, कृत, 'समद्दफासा फरुसा उदीरिया' (आचा)। ४ समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फल का अनुभव किया जाय वह (कर्म) (पएण २३, भग)।

उदु देखो उउ (प्राप, अभि १८९, पि ५७)।

उदुंबर देखो उंबर (कप्प)।

उदुरूह सक [उद् + रुह्] ऊपर चढना। उदुरुहइ (पि ११८)।

उदूखल देखो उऊखल (पि ६६)।

उदूग पुन [दे] पृथिवी-शिला (पचा ८, १० टी)।

उदूलिय वि [दे] अवनत, नीचा नमा हुआ (षड्)।

उदूहल देखो उऊहल (आचा, पि ६६)।

उद्द न [दे] १ जल-मानुष। २ ककुद, बैल के कंधे का कूबड (दे १, १२३)। ३ मत्स्य-विशेष। ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र (आचा)।

उद्द वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (षड्)।

उद्दअ वि [उद्यत] उद्यम-युक्त (प्राकृ २१)।

उद्दंड } वि [उद्दण्ड] १ प्रचण्ड, उद्धत
उद्दंडग } (कुमा, गउड)। २ पु. हाथ में दण्ड को ऊंचा रखकर चलनेवाले तापसों की एक जाति (औप, निचू १)।

उद्दंतुर वि [उद्दन्तुर] १ जिसका दंत बाहर आया हो वह। २ ऊँचा (गउड)।

उद्दंभ पु [उद्दम्भ] छन्द का एक भेद (पिंग)।

उद्दंस पु [उद्दंश] मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट (कप्प)।

उद्दड्ढ पु [उद्दग्ध] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °मज्झिम पु [°मध्यम] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °वत्त पु [°वर्त्त] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)।

उद्दर न [दे ऊर्ध्वदर] सुभिक्ष, सुकाल (बृह १)।

उद्दम पुन देखो उज्जम = उद्यम (प्राकृ २१)।

उद्दरिअ वि [दे] १ उत्खात, उखाडा हुआ (दे १, १००)। २ स्फुटित, विकसित, 'फुडिअ फलिअ च दलिअ उद्दरिअ' (पाअ)।

उद्दरिअ वि [उद् + दृप्त] गर्वित, उद्धत, अभिमानी (णादि)।

उद्दलण न [उद्दलन] विदारण (गउड)।

उद्दव सक [उद्, उप + द्रु] १ उपद्रव करना, पीडा करना। २ मारना, विनाश करना, हिंसा करना, 'तए णं सा रेवई गाहावईणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसण्ह सवत्तीण अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेण उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेण उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता तासिं दुवालसण्ह सवत्तीण कोलघरियं एगमेगं हिरएणकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जेइ, २ त्ता महासयएण समणोवासएण सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ' (उवा)। भवि उद्दवेहिइ (भग १५)। कवकृ उद्दविज्जमाण (सूअ २, १)। कृ. उद्दवेयव्व (सूअ २, ३)।

उद्दव पुं [उद्द्रव, उपद्रव] १ उपद्रव। २ विनाश, हिंसा, 'आरंभो उद्दवओ' (ओ ७)।

उद्दवइत्तु वि [उद्द्रोतृ, उपद्रोतृ] १ उपद्रव करनेवाला। २ हिंसक, विनाशक, 'से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता उद्दवइत्ता विलुंपित्ता अकडं करिस्सामि त्ति मन्नमाणे' (आचा)।

उद्दवण न [उद्द्रवण, उपद्रवण] १ उपद्रव, हरकत, 'उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं' (पिंड, औप)। २ विनाश, हिंसा (स ८४, आचा)।

उद्दवण न [अपद्रावण] मृत्यु को छोडकर सब प्रकार का दुःख, 'उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं पीडं' (पिंडभा २५, पिंड ६७)।

उद्दवणया } स्त्री [उद्द्रवणा, उपद्रवणा]
उद्दवणा } ऊपर देखो (भग, पएह १,१)।

उद्दवाइअ देखो उड्डुवाइय, 'समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं०—गोदासे गणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ) गणे विस्सवाति-(इअ)-गणे कामड्ढित-(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे' (ठा ६)।

उद्दविअ वि [उद्द्रुत, उपद्रुत] १ पीडित, 'संघाइआ संघट्टिआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया' (पडि)। २ विनाशित, 'नाऊण विभंगेणं नियजिट्ठसुयस्स विलसियं, तो सो सकुटुंबो उद्दविओ' (सुपा ४०६)।

उद्दवेत्तु देखो उद्दवइत्तु (आचा)।

उद्दा सक [उद् + दा] बनाना, निर्माण करना। उद्दाइ (भग)।

उद्दा अक [अव + द्रा] मरना। उद्दाई, उद्दायांति (भग)। संकृ उद्दाइत्ता (जीव ३, ठा १०, भाग)।

उद्दाइआ स्त्री [उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री] उपद्रव करनेवाली स्त्री, 'ताए वा उद्दाइआए कोइ सजओ गहितो होज्जा' (ओघ १८ भा टी)।

उद्दाइत्त देखो उद्दाय = शुभ्।

उद्दाइत्ता देखो उद्दा = अव + द्रा।

[illegible] [दे] [illegible] (. ., ८०)।

[illegible] [उपद्राण] [illegible] (सुर २ ३)।

[illegible] [उद्दाम] १ [illegible] (पण्ह) २ प्रबल [illegible] (सुपा २२८)। ३ [illegible] (हे १, १७७)।

उद्दाल पुं [दे] १ [illegible] । २ [illegible] (दे ... १२६)।

[illegible] [उद्दालित] [illegible] हुआ, [illegible] (विपा १, २)।

[illegible] [मृश्] [illegible] (आचा १, १)। [illegible] (आचा १, १ टी)।

[illegible] (वज्जा १ ...)।

[illegible] [दे] १ [illegible] (दे)।

[illegible] [... + दिश्] [illegible] (दे ४ ३३)।

[illegible] [illegible] (सम, णाया १, १)। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (... १ ...)।

उद्दालग वि [उद्दालक] [illegible] (पण्ह १, ३)।

उद्दिट्ठ वि [उद्दिष्ट] १ कथित, प्रतिपादित (विपा २, १)। २ निर्दिष्ट (दस)। ३ दान के लिए सकल्पित (अन्न पानादि), 'सायन्ना उद्दिट्ठभत्त परिवज्जयंति' (सूअ २, ६)। ४ वर्जित (सूअ २, ६)। ५ न उद्देश (पंचा १०)। °कड वि [°कृत] साधु के उद्देश से बनाया हुआ, साधु के निमित्त किया हुआ (भोजनादि) (दस १०)।

उद्दिट्ठा स्त्री [दे उद्दिष्टा] तिथि-विशेष, अमावस्या (आव)।

उद्दित्त वि [उद्दीप्त] प्रज्वलित (सुर १)।

उद्दिस सक [उद् + दिश्] आज्ञा करना। कर्म. उद्दिसिज्जंति (अणु ३)।

उद्दिस सक [उद् + दिश्] १ नाम निर्देश पूर्वक वस्तु का निरूपण करना। २ [illegible]। ३ [illegible] करना। ४ लक्ष्य करना। ५ अंगीकार करना। ६ अनुमति लेना। ७ समाप्त करना। ८ उपदेश देना। उद्दिसइ (पव २, ७)। कर्म 'दस अज्झयणा एगसरगा एसु चेव दिवसेसु उद्दिस्संति' (उवा)। वकृ उद्दिसिज्जंत (आवम)। संकृ 'अमो [illegible] उद्दिसिऊण, अथ तुज्झे (मत्त, पव ७), 'सदसाणो य [illegible] अधुराउ उद्दिस्स [illegible] पडिग्गहं (मत्त), उद्दिसिय (आचा २ १, दसि १०८)। हेकृ उद्दिसिउ, उद्दिसित्तए (दस १० [illegible] ठा २, १)। प्रयो उद्दिसाविज्जए, उद्दिसावेत्तए (सूअ १, पत्र)।

उद्दिसिअ देखो उद्दिट्ठ (आचा २)।

उद्दिसिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, निरूपित (दे १, १०८)।

उद्दीरणा [illegible] उदीरणा, [illegible] (पउम ५ ६८)।

[illegible] [उद्दीपन] १ [illegible]। २ [illegible] (... ४८ ...)।

[illegible] वि [illegible] [illegible] (... ४...)।

उद्दीविअ वि [उद्दीपित] प्रदीपित, प्रज्वालित (पाअ), 'पीयाए पस्सिविउ तत्तो उद्दीविओ जलणो' (सुर ६ ८८)।

उद्दुय वि [उद्द्रुत] पलायित (पउम ६, ७०)।

उद्दुय वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ (स १३१)।

उद्देस देखो उद्दिस उद्देसइ (भवि)।

उद्देस पुं [उद्देश] १ पठन-विषयक गुर्वाज्ञा (अणु ३)। २ नाम का उच्चारण (निरि १०६०)। ३ वाचन, सूत्र-प्रदान, सूत्रों के मूल पाठ का अध्यापन (पव १)।

उद्देस पुं [उद्देश] १ नाम-निर्देश पूर्वक वस्तु-निरूपण (विसे)। २ शिक्षा, उपदेश, 'उद्देसो पासगस्स णत्थि'। ३ व्यपदेश, व्यवहार (आचा)। ४ लक्ष्य। ५ अभिप्राय, मतलब (विसे)। ६ ग्रन्थ का एक अंश (भग १, १)। ७ प्रदेश, अवयव, 'गुज्झोरुयुगिणमघरा आरापानगहिरा समरडुद्देसा' (पउम १५, १६, १, २०)। ८ गुरुप्रतिज्ञा, गुरु-वचन (विसे)। ९ जगह, स्थान (वव्वू)।

उद्देस वि [औद्देश] देखो उद्देसिय = औद्देशिक (पिंड २३०)।

उद्देसण न [उद्देशन] १ पाठ, वाचना, अध्यापन 'उद्दिसणं वायणत्ति पाठणया चेव एगट्ठा' (पंचा, पण्ह २ ५)। २ अभिलाषित, याचना (ठा ४, ३)।

उद्देसणकाल पुं [उद्देशनकाल] सूत्रपाठ के अध्यापन का समय (ओघ २०६)।

उद्देसणा स्त्री [उद्देशना] ऊपर देखो (पंचा)।

उद्देसिय न [औद्देशिक] १ भिक्षा का एक दोष, साधु के लिए भोजन-निर्माण। २ वि. साधु निमित्त बनाया हुआ (आहार) (पण्ह), 'उद्देसियं तु कम्मं एत्थ उद्दिस्स कीरए जं' (पंचा १७, ठा ६, ३)।

उद्देसिय वि [औद्देशिक] १ उद्देश-सम्बन्धी [illegible]। २ [illegible] [illegible] (पिंड २२६)।

उद्देह पु [उद्देह] भगवान् महावीर का एक गण—साधु समुदाय (ठा ६; कप्प)।

उद्देहलिया स्त्री [उद्देहलिका] वनस्पति-विशेष (राज)।

उद्देहिया } स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक,
उद्देही } त्रीन्द्रिय जन्तु विशेष (जी १६, स ४३५, ओघ ३२३), 'उवदेहीइ उद्देही' (दे १, ९३)।

उद्दोहग वि [उद्द्रोहक] घातक, हिंसक (पण्ह १, ३)।

उद्ध देखो उड्ढ (से ३ ३३, पि ८३, महा हे २, ५९, ठा ३ २)।

उद्धअ वि [उद्धत] १ उन्मत्त (से ४, १३ पाअ)। २ गर्वित अभिमानी (भग ११, १०)। ३ उत्पाटित (णाया १, १)। ४ अतिप्रबल, 'उद्धतनमधरार—' (पण्ह १,३)।

उद्धअ देखो उद्धरिअ = उद्धृत, 'पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयवारणा उ उद्धारो' (वव १०)।

उद्धअ वि [दे] श्रान्त, ठढा (षड्)।

उद्धत देखो उद्धा।

उद्धंस सक [उत् + धृष्] १ मारना। २ आक्रोश करना, गाली देना। उद्धंसेइ (भग १५)। उद्धंसेंति (णाया १, १६)।

उद्धंस सक [उद् + ध्वस्] विनाश करना। सकृ उद्धंसिऊण (स ३६२)।

उद्धंसण न [उद्धर्षण] १ आक्रोश, निर्भर्त्सन। २ वध, हिंसा (राज)।

उद्धंसणा स्त्री [उद्धर्षणा] ऊपर देखो (ओघ ३८ भा), 'उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, (णाया १ १६)।

उद्धंसिय वि [उद्धर्षित] आकृष्ट, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (निचू ४)।

उद्धच्छविअ वि [दे] विसंवादित, अप्रमाणित (दे १, ११४)।

उद्धच्छविअ वि [दे] सज्जित, तैयार (दे १, ११६)।

उद्धच्छिअ वि [दे] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध (दे १, १११)।

उद्धट्टु देखो उद्धर।

उद्धड वि [उद्धृत] उठा कर रखा हुआ (धर्म ३)।

उद्धण वि [दे] उद्धत, अविनीत (षड्)।

उद्धत्थ वि [दे] विप्रलब्ध, वञ्चित (दे १, ९६)।

उद्धदेहिय न [और्ध्वदेहिक] अग्नि-संस्कार आदि अन्त्येष्टि क्रिया (स १०६)।

उद्धम सक [उद् + ध्मा] १ शंख वगैरह फूंकना, वायु भरना। २ ऊंचा फेंकना, उडाना। कवकृ. उद्धम्मताण सव्वाण मिगाण सव्वियाण खरमुहीण' (राय), 'पायालसहस्स-वायवसवेगसलिलउद्धम्ममाणदगरयरयंधकार (रयणागरसागर)' (पण्ह १, ३, औप)।

उद्धर सक [उद् + हृ] १ फँसे हुए को निकालना, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन करना। ३ दूर करना। ४ खींचना। ५ जीर्ण मन्दिर वगैरह का परिष्कार-संस्कार करना। ६ किसी ग्रंथ या लेख के अंश-विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल करना। भवि उद्धरिस्सइ (स ५६६)। वकृ पइनगर पइगाम पाय जिणमंदिराइ पूयंतो, जिन्नाइ उद्धरंतो' (सुपा २२४),

'जयइ धरमुद्धरंतो भरणीसारियमुहग्गचलणेण। णियदेहेण करेण व पचंगुलिणा महाकुम्मो।' (गउड)।

सकृ उद्धरिउ, उद्धरिऊण, उद्धरित्ता, उद्धरित्तु उद्धट्टु (पचा १६, प्रारू), 'त लय सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलयं' (उत्त २३, पचा १६), 'बाहू उद्धट्टु कक्ख-मणुव्वजे' (सूअ १, ८), 'तमे पाणे उद्धट्टु पाद रीइज्जा' (आचा २, ३, १, ४)।

उद्धर (अप) देखो उद्धुर (भवि)।

उद्धरण न [उद्धरण] १ ऊपर उठाना। २ फँसे हुए को निकालना (गउड), 'दीणुद्धरणम्मि धण न पउत्त' (विवे १३५)। ३ उन्मूलन। ४ अपनयन (सूअ १, ४, ६)।

उद्धरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा (दे १, १९६)।

उद्धरिअ वि [उद्धृत] १ उत्पाटित, उत्क्षिप्त, 'हवपुत्त उच्छूढ उक्खित्त-उप्पाडिआइ उद्धरिअ' (पाअ)। २ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख मे अविकल नकल कर देना,

'एसो जीववियारो, सखेवरुईण जाणणा-हेउ। संखित्तो उद्धरिओ, रुदाओ सुय-समुद्दाओ' (जी ५१), 'जेण उद्धरिया विज्जा, आगासगमा महापरिण्णाओ' (आवम)। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ। ४ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ, 'उद्धरियसव्वसल्ल—' (पचा १६)। ५ जीर्ण वस्तु का परिष्कार करना, 'जिणमंदिर न उद्धरिअ' (विवे १३३)।

उद्धरिअ वि [दे] अर्दित, विनाशित (षड्)।

उद्धल पु [दे] दोनो तरफ की अप्रवृत्ति (षड्)।

उद्धव पु [उद्धव] ऊधो, श्रीकृष्ण का चाचा, मित्र और भक्त (रुक्मि ४६)।

उद्धवअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १ १०६)।

उद्धविअ वि [दे] अर्घित पूजित (दे १ १०७)।

उद्धा } सक [उद् + धाव्] १ दौडना,
उद्धाअ } वेग मे जाना। २ ऊँचे जाना। उद्धाइ (पि १६५)। वकृ उद्धत, उद्धाअंत, उद्धायमाण (कप्प, से ६, ६६, १३, ६१, औप)।

उद्धाअ अक [ऊर्ध्वाय्] ऊंचा होना। वकृ उद्धाअमाण (से १३, ६१)।

उद्धाअ वि [ऊद्धाव] उद्धावित, ऊँचा गया हुआ, 'छिण्णकडए वहत उद्धाअणिअत्तगरुड-मग्गिअसिहरे' (से ६, ३६)।

उद्धाअ पु [दे] १ विषमोन्नत प्रदेश। २ समूह। ३ वि थका हुआ, श्रान्त (दे १, १२४)।

उद्धाइअ वि [उद्धावित] १ फैला हुआ, विस्तीर्ण, प्रसृत (से ३, ५२)। २ ऊँचा दौडा हुआ (से २, २२)।

उद्धार पु [उद्धार] १ त्राण, रक्षण (कुमा)। २ ऋण देना, उधार देना (सुपा ५६७, श्रा १४)। ३ अपहरण (अणु)। ४ अपवाद (राज)। ५ धारणा, पढे हुए पाठ को नहीं भूलना, 'पावल्लेण उवेच्च च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो' (वव १०)। °पलिओवम न [°पल्योपम] समय का एक परिमाण (अणु)। °समय पु [°समय] समय-विशेष (अणु)। °सागरोवम न [°सागरोपम] समय का एक दीर्घ परिमाण (अणु)।

उद्धारय वि [उद्धारक] उद्धार-कारक (कुप्र २)।

[illegible] देखो उन्ना।

[illegible] [उद्व्रज] [illegible]।

[illegible] [उत्वासना] १ [illegible]। [illegible] ३)। ३ [illegible]।

°[illegible] [illegible]।

[illegible] [दे] [illegible]।

[illegible] देखो उद्धरिअ = [illegible] (आ ८०, [illegible])।

[illegible] [ऊर्ध्वाङ्कुर] [illegible] ऊँचा किया हुआ ([illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] हुआ ([illegible])।

[illegible]

उद्धुर सक [उद् + धृ] १ ऊँचा, [illegible]। २ [illegible] बीजना [illegible]। [illegible] उद्धुव्वन्त, उद्धुव्वमाण (पउम २, ४० [illegible])।

उद्धुणिय देखो उद्धुय (नाट)।

उद्धूद (शौ) देखो उद्धुय (चारु ३७)।

उद्धूल सक [उद् + धूलय्] १ व्याप्त करना। २ धूलि लगाना। उद्धूलेइ (हे ४, २९)।

उद्धूलण न [उद्धूलन] धूलि से व्याप्त करना,

[illegible]

[illegible] उद्धूलणारम्भो।'

(गा ७०८)।

उद्धूलिय वि [उद्धूलित] १ धूलि से [illegible] हुआ। २ व्याप्त, 'तिमिरोद्धूलियमग्गं' (कुमा)।

उद्धूवणिया स्त्री [उद्धूपनिका] धूप देना, 'तिरि [illegible]।

[illegible]।'

(सुर १८, १७४)।

उद्धूविय वि [उद्धूपित] जिसको धूप दिया गया हो वह ([illegible])।

उद्धोम पुं [उद्धर्ष] उल्लास, ऊँचा होना (नाटि ६४)। [illegible] (गा ६४)।

उन्न न [ऊर्ण] ऊन, भेड़ या बकरी के रोम। °मय वि [°मय] ऊन का बना हुआ

'[illegible]।

[illegible]।'

(कुमा ८०२)।

[illegible] (अप) वि [विपण्ण] विषाद-प्राप्त, खिन्न (भवि)।

[illegible] (भवि, सुपा २९५ [illegible] २८, [illegible] ३४)।

[illegible]

[illegible] वि [उन्नीत] ऊँचा किया हुआ (पउम १०८, ४३)।

[illegible] सक [उद् + नम्] ऊँचा करना। [illegible] उन्निंताणि (कप्प)।

उन्नय देखो उण्णय (सुपा ४७६, सम ७१ कप्प)।

उन्ना देखो उण्णा। °मय वि [°मय] ऊन का बना हुआ (सुपा ६४९)।

उन्नाडिय न [उन्नाटित] हर्ष-द्योतक आवाज (स ३७९)।

उन्नाम पुं [उन्नाम] १ ऊँचाई। २ अभिमान, गर्व (सम ७१)।

उन्नामिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (पाअ, महा, स २७७)।

उन्नालिअ वि [दे] देखो उण्णालिअ 'उना-लिअं उन्नामिअं' (पाअ)।

उन्नाह पुं [उन्नाह] ऊँचाई (पाअ)।

उन्निअ देखो उण्णिअ = औणिक (ओघ ७०४)।

उन्निक्खम सक [उन्नि + क्रम] उतारना, उल्लं-घन करना। भवि उन्निक्खिमिस्सामि (सूअ २, १, ६)। [illegible] उन्निक्खमियव्व (सूअ २, १, ८)।

उन्निक्खमण न [उन्निष्क्रमण] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना, साधुपन छोड़कर फिर गृहस्थ बनना (उत्त १२० टी, २६६)।

उन्नी देखो उण्णी। [illegible] उन्नइज्जमाण (कप्प)।

उन्हाल (अप) पुं [उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु (भवि)।

उपक्खर न [उपस्कर] घर का उपकरण (उत्त ६ ६)।

उपन्न न [उपान्न] १ [illegible] या [illegible]। २ वि समीपस्थ (भा ६६३)।

उपरि } देखो उवरि ([illegible] १०२१, [illegible])।
उप्परि }

उपरिल्ल देखो उवरिल्ल ([illegible])।

उपयन्नमाण देखो उवयाय = उप + आ + [illegible]।

उपसप्प देखो उवसप्प। उपसप्पइ ([illegible])। [illegible] उपसप्पिय (नाट)।

उपानहिय पुंस्त्री [उपानह्] जूता, '[illegible] [illegible] [illegible]' (सुपा ३६२), '[illegible]' (सुपा ३६२)।

उप्प सक आप्प = प्र+आप्। उप्पइ ([illegible] १०८ [illegible] १, ५६)।

उप्पइअ वि [उत्पतित] ऊँचा गया हुआ, उड़ा हुआ, 'सेवि य आगासे उप्पइए' (उवा; सुर ३, ६६)। २ उन्नत, ऊँचा (आचा)। ३ उद्भूत, उत्पन्न (उत्त २)। ४ न उत्पतन, उड़ना (ओप)।

उप्पइअ वि [उत्पाटित] उत्थापित, उठाया हुआ, 'खुडिउप्पइअमुणाल दट्ठूण पिअ व सिढिलवलअ गालिणि' (से १, ३०)।

उप्पइअव्व } देखो उप्पय = उत् + पत्।
उप्पइउ

उप्पक वि [दे] १ बहु, अत्यन्त। २ पु. पङ्क, कीचड, कांदो। ३ उन्नति (दे १, १३०)। ४ समूह, राशि (दे १, १३०, पाअ; गउड, स ४३७)।

उप्पग पु [दे] समूह, राशि,
'णवपल्लव विसएणा, पहिआ
पेच्छति चूअरुक्खस्स।
कामस्स लेहिउप्पंगराअ
हत्थभल्ल व ॥' (गा ५८५)।

उप्पज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना। उप्पजति (कप्प)। वकृ. उप्पज्जत, उप्पज्जमाण (से ८, ५५, सम्म १३४, भग; विसे ३३२२)।

उप्पड सक [उत् + पत्] उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना (प्रामा)।

उप्पड पु [उत्पट] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (राज)।

उप्पडिअ देखो उप्पइअ (नाट)।

उप्पण सक [उत् + पू] धान्य वगैरह को सूप आदि से साफ-सुथरा करना। कर्म 'साली वीही जवा य लुव्वतु मलिज्जतु उप्पणिज्जतु य' (पराह १, २)।

उप्पणण न [उत्पवन] सूप आदि से धान्य वगैरह को साफ सुथरा करना (दे १, १०३)।

उप्पण्ण वि [उत्पन्न] उत्पन्न, सजात, उद्भूत (भग; नाट)।

उप्पत्त वि [दे] १ गलित। २ विरक्त (षड्)।

उप्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (उत्त)।

उप्पत्तिया स्त्री [औत्पत्तिकी] बुद्धि-विशेष, विना शास्त्राभ्यासादि के ही होनेवाली बुद्धि, स्वाभाविक मति (ठा ४, ४, णाया १, १)।

उप्पन्न देखो उप्पण्ण (उवा; सुर २, १६०)।

उप्पय सक [उत् + पत्] उड़ना, कूदना। उप्पयइ (महा)। वकृ उप्पयंत, उप्पयमाण (उप १४२ टी; णाया १, १६)। सकृ. उप्पइत्ता (ओप)। कृ उप्पइअव्व (से ६,७८)। हेकृ. उप्पइउ (सुर ६, २२२)।

उप्पय देखो उप्पव। वकृ उप्पअत (से ५, ५६)।

उप्पय पु [उत्पात] १ उत्पतन, ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। २ उत्पत्ति, 'अवट्ठिए चले मंदपडिवाउप्पयाई य' (विसे ५७७)। °निवय पु [°निपात] १ ऊँचा-नीचा होना, 'खरपवणुद्धुयसायरतरगवेगेहिं हीरए नावा। गुरुकुल्लोलवसुट्टियनगरनियरेण घरियावि ॥ अणवरयतरगेहिं उप्पयनिवय कुणतिया वहइ' (सुर १३, १६७)। २ नाट्य-विधि का एक प्रकार (जीव ३)।

उप्पयण न [उत्पतन] ऊंचा जाना उड्डयन (ठा १०, से ६, २४)।

उप्पयण न [उत्प्लवन] जल को लाँघना, तैरना (से ५, ६०)।

उप्पयणी स्त्री [उत्पतनी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

उप्पर्रि (अप) देखो उवरि (हे ४, ३३४, पिंग)।

उप्परिवाडि, °डी स्त्री [उत्परिपाटि, °टी] उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय, 'उप्परिवाडीवहणे चाउम्मासा भवे लहुगा' (गच्छ १)।

उप्परोप्पर अ [उपर्युपरि] ऊपर-ऊपर (स १४०)।

उप्पल न [उत्पल] १ कमल, पद्म (णाया १, १, भग)। २ विमान-विशेष, (सम ३८)। ३ सख्या-विशेष, 'उप्पलग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)। ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, 'परमुप्पलगधिए' (ज ३)। ५ पु. परिव्राजक-विशेष (आचू १)। ६ द्वीप-विशेष। ७ समुद्र विशेष (पराण १५)। °वेंटग पु [°वृन्तक] आजीविक मत का एक साधु-समाज (ओप)।

उप्पलंग न [उत्पलाङ्ग] सख्या-विशेष, 'हुहुय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

उप्पला स्त्री [उत्पला] १ एक इन्द्राणी, काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन (णाया २, १)। ३ स्वनाम ख्यात एक श्राविका (भग १२, १)। ४ एक पुष्करिणी (जीव ३)।

उप्पलिणी स्त्री [उत्पलिनी] कमलिनी, कमल का गाछ या पौधा (पराण १)।

उप्पल्ल वि [दे] अध्यासित, आरूढ (षड्)।

उप्पव सक [उत् + प्लु] १ लाँघना, पार करना, तैरना। २ ऊँचा जाना, उड़ना। वकृ. उप्पवत, उप्पवमाण (से ५,६१, ८,८६)।

उप्पवइय वि [उत्प्रव्रजित] जिसने दीक्षा छोड दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ बना हुआ (स ४८५)।

उप्पह पु [उत्पथ] उन्मार्ग, कुमार्ग, 'पथाउ उप्पह नेंति' (निचू ३, से ४, २६, हेका २५६)। °जाइ वि [°यायिन्] उलटे रास्ते जानेवाला, विपथ-गामी (ठा ४, ३)।

उप्पा स्त्री देखो उप्पाय = उत्पाद (ठा १—पत्र १६, ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

उप्पाइ वि [उत्पादिन्] उत्पन्न होनेवाला (विसे २८१९)।

उप्पाइत्ता देखो उप्पाय = उत् + पादय्।

उप्पाइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ७)।

उप्पाइय न [औत्पातिक] भूकप आदि उत्पातो का सूचक शास्त्र (सूअ १, १२, ६)।

उप्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ, 'उप्पाइयाविच्छिएणकोउहलत्ते' (राय)।

उप्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वाभाविक, कृत्रिम, 'उप्पाइयपव्वय व चकमत'। २ आकस्मिक, अकस्मात् होनेवाला, 'उप्पाइया वाही' (राज)। ३ न अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव, उत्पात, 'भो भो नावियपुरिसा सकन्नधारा समुजया होह। दीसइ कयतवयणं व भीममुप्पाइयं जेण' (सुर १३, १८६)।

उप्पाएउ
उप्पाएत } देखो उप्पाय = उत् + पादय्।
उप्पाएत्तए

[illegible] [उद् + पाटय्] १ [illegible] [illegible] उप्पा- [illegible] उप्पाडिय ([illegible])।

[illegible] [उद् + पाटय्] [illegible] उप्पाडिज्ज (गि ३२२ टी)।

उप्पाड पुं [उत्पाट] [illegible] (हम्म १४६ टी, ६८६ टी)।

[illegible] [उत्पाटन] १ उत्पादन, [illegible] (न २६६, [illegible])।

उप्पाडिय वि [उत्पाटित] १ [illegible] उठाया [illegible]। २ [illegible] (पाप)।

[illegible] [उत्पादित] [illegible] किया हुआ, [illegible]

[illegible] वि [उत्पादक] [illegible] कर्ता (प्रयो [illegible])।

[illegible] उप्पाय – उद् + पादय्।

[illegible] [उद् + पादय्] उत्पन्न करना [illegible] उप्पाएन, [illegible] (सुर ७ २२ ८, १३)। [illegible] उप्पाइत्ता, उप्पा- [illegible] उप्पाइज्जमाण ([illegible])

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [पूर्व] प्रथमपूर्व, ग्रन्थ-विशेष, बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग (सम २६)।

उप्पायग वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने-वाला। २ पुं त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष (पव ८)।

उप्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन, उपार्जन (ठा ३,४)। २ वि उत्पादक, उपार्जक (पउम ३०, ४०)।

उप्पायणया } स्त्री [उत्पादना] १ उपार्जन
उप्पायणा } उत्पन्न करना। जैन साधु की भिक्षा का एक दोष (ओघ ७४६, ठा ३, ४, पिंड १)।

उप्पायय वि [उत्पादक] उत्पन्न-कर्ता (सुर ७, ७४)।

उप्पाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्पालइ (हे ४ २)। उप्पालु (कुमा)।

उप्पाव सक [उत् + प्लावय्] १ तैराना, तैरना। २ डुबाना, [illegible]। उप्पावेइ (हे २, १०६)। वकृ उप्पियमाण ([illegible])।

उप्पास सक [उत्प्र + अस्] हँसी करना। उप्पासंति (सुर १ १६)।

उप्पाहल न [दे] उत्कंठा, उत्सुकता (पाअ)।

उप्पि सक [अर्पय्] देना। उप्पिड (कप्प)।

उप्पि अ [उपरि] ऊपर, 'कहि णं भंते! जाइ- [illegible] [illegible] ? गोयमा! [illegible] (जीव ३ [illegible] १, ६, ठा ३, ४, [illegible])।

उप्पिंगलिआ स्त्री [दे] [illegible] का [illegible] भाग, [illegible] (दे १, ११८)।

उप्पिंजल न [दे] १ सुरत, मैथुन। २ रज, धूली। ३ मारामारी, [illegible] (दे १, १३४)।

उप्पिंजल वि [उत्पिञ्जल] अति आकुल, [illegible] ([illegible])।

उप्पिंजल अक [उत् + पिञ्जलय्] आकुल [illegible] [illegible] करना। वकृ उप्पिंजलमाण ([illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] [illegible]

८ १७५ १२, ८७), उप्पिच्छमघरगेहिं' (भत्त ११६)।

उप्पिण देखो उप्पग। वकृ उप्पिणित (सुपा ११)।

उप्पित्थ वि [दे] १ त्रस्त, भीत (दे १, १२६ से १०, ६१ न ५७४, पुष्फ ४४३, गउड), 'किं कायरविमूढा सरणविहूणा भउप्पित्था' (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध। ३ विधुर, आकुल (दे १, १२६, पाअ)।

उप्पित्थ वि [दे] त्रास-युक्त (भीत) (राय ७८ टी)।

उप्पिय सक [उत् + पा] १ आस्वादन करना। २ फिर-फिर स्वाद लेना। वकृ उप्पियंत (गउड १, ३—पत्र ५५ [illegible])।

उप्पिय वि [अर्पित] अर्पण किया हुआ (हे १, २६६)।

उप्पियण न [उत्पान] फिर फिर स्वाद लेना ([illegible])।

उप्पियमाण देखो उप्पाव।

उप्पिलण न [उत्प्लावन] [illegible] (पिंड ८२२)।

उप्पिलाव देखो उप्पाव। उप्पिलावेइ। वकृ उप्पिलावंत, 'जे भिक्खू मत्तगं णावं उप्पि-लावेइ उप्पिलावंतं वा साइज्जइ' (निचू १८)।

उप्पीड पुं [दे उत्पीड] समूह, राशि (से ४, ३७, ८, ३)।

उप्पीडण न [उत्पीडन] १ दबा कर बाँधना। २ दबाना (से ८ ६७)।

उप्पील सक [उत् + पीडय्] १ दबा कर बाँधना। २ उठाना 'उप्पीलिज्जा' (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलेज्जा (पि २४०)।

उप्पील पुं [दे] १ संघ। समूह (दे १, १२६, सुपा ६४ सुर ३, २४ [illegible] ६०, पुष्फ ५३ गउड २२ टी) [illegible] २ [illegible], [illegible] (दे १ १२६)।

उप्पीलण न [उत्पीडन] पीड़ा, [illegible] ([illegible])।

उप्पीलिय वि [उत्पीडित] [illegible] [illegible] [illegible] (आचा १, २ [illegible])।

उप्पुअ वि [उत्प्लुत] उच्छलित, कूदा हुआ (से ६ ४८, पण्ह १, ३)।
उप्पुसिअ देखो उप्पुसिअ (से ६, ८५)।
उप्पूणिअ वि [उत्पूत] सूप से साफ-सुथरा किया हुआ (पाअ)।
उप्पुण्ण वि [उत्पूर्ण] पूर्ण, व्याप्त (स २५)।
उप्पुलइअ वि [उत्पुलकित] रोमाञ्चित (स २८१)।
उप्पुसिअ वि [उत्प्रोञ्छित] लुप्त, प्रोञ्छित (से ६, ८५ गउड)।
उप्पूर पु [उत्पूर] १ प्राचुर्य (पण्ह १, ३)। २ प्रकृष्ट-प्रवाह (ओप)।
उप्पेक्ख (अप) देखो उविक्ख। उप्पेक्ख (पिंग)।
उप्पेक्ख सक [उत्प्र + ईक्ष्] संभावना करना, कल्पना करना। उप्पेक्खामि (स १४९)। उप्पेहेमि (स ३४६)।
उप्पेक्खा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ अलंकार-विशेष २ वितर्कणा, संभावना (गा ३३९)।
उप्पेक्खिअ वि [उत्प्रेक्षित] संभावित, वितर्कित (दे १, १०६)।
उप्पेय न [दे] अभ्यंग, तैलादि की मालिश, 'पुव्वं च मगलट्ठा उप्पेय जइ करेइ गिहियाए' (वव ६)।
उप्पेल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उप्पेलइ (हे ४, ३६)।
उप्पेलिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।
उप्पेल्ल पु [उन्नमन] ऊँचा करना (पउम ८, २७२)।
उप्पेस पु [उत्पेष] त्रास, भय, डर (से १०, ६१)।
उप्पेहड वि [दे] उद्भट, आडम्बरवाला (दे १, ११६, पाअ, स ४४६)।
उप्फ देखो पुप्फ (गा ६३६)।
उप्फण सक [उत् + फण्] छाँटना, पवन से धान्य आदि का छिलका दूर करना। उप्फणति, भूका उप्फणिंसु, भवि. उप्फणिस्सति (आचा २, १, ६, ४)।
उप्फंदोल वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।
उप्फाल पु [दे] खल, दुर्जन (दे १, ९०, पाअ)।
उप्फाल सक [उत् + पाटय्] १ उठाना। २ उखाड़ना। उप्फालेइ (हे २, १७४)।
उप्फाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्फालेइ (हे २, १७४)।
उप्फाल वि [कथक] कहनेवाला, सूचक (स ६४४)।
उप्फालिअ वि [कथित] १ कथित। २ सूचित (पाअ, उप ७२८ टी, स ४७८)।
उप्फिड अक [उत् + स्फिट्] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उप्फिडइ, उप्फेडइ, 'एमाइविगप्पणेहिं वाहिज्जमाणो उप्फि-(प्फे)-डइ परमू' (महा)।
उप्फिड अक [उत् + स्फिट्] मण्डूक की तरह कूदना, उड़ना। उप्फिडइ (उत्त २७, ५)। वकृ उप्फिडंत (पव २)।
उप्फिडण न [उत्स्फेटन] कुण्ठित होना (स ६६८)।
उप्फिडिय वि [उत्स्फिटित] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ, 'कत्थइ नक्कुक्कत्तियसिप्पिपुडुप्फिडियमोत्तिया- लो' (सुर १३, २१३)।
उप्फुकिआ स्त्री [दे] धोबिन, कपड़ा धोनेवाली (दे १, ११४)।
उप्फुडिअ वि [दे] आस्तृत, बिछाया हुआ (दे १, ११३)।
उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त (दे १, ९२, सुर १, २३३, ३, २१५)।
उप्फुन्न वि [दे] स्पृष्ट, छुआ हुआ (पव १५८ टी)।
उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित (पाअ, से ६, ६६)।
उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीडा विशेष, पाँव पर बैठ कर बारबार ऊँचा-नीचा होना,

'उप्फुलिआइ खेल्लउ,
मा ण वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई,
पुरिसाअंतो किलिम्मिहिइ'
(गा १९६)।

उप्फुस सक [उत् + स्पृश्] सिंचना, छिड़कना। संकृ उप्फुसिऊण (राज)।
उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रबल वचन से, 'उप्फेणउप्फेणियं सीहराय एवं वयासी' (विपा १, ९—पत्र ९०)।
उप्फेस पु [दे] १ त्रास, भय (दे १, ९४)। २ मुकुट, पगड़ी, शिरोवेष्टन, 'पंच रायककुहा पण्णत्ता, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं उवाहणाओ वालवियणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३, ओप, आचा २, ३, २, २)।
उप्फेसण न [दे] डराना, भयोत्पादन (सुख ३, १)।
उप्फोअ पु [दे] उद्गम, उदय (दे १, ९१)।
उबुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना। उबुसइ (षड्)।
उब्बध सक [उद् + बन्ध्] १ फाँसी लगाना, फँसी लगा कर मरना। २ वेष्टन करना। वकृ 'जलनिहितडम्मि दिट्ठा उब्बधंती इहप्पाणं' (सुपा १६०)। संकृ उब्बंधिअ, उब्बंधिऊण (नाट, पि २७०, स ३४६)।
उब्बधण न [उद्बन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन [illegible]।
उब्बण वि [उल्बण] उत्कट (पि २६६)।
उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह, फाँसी लगा कर मरा हुआ। २ वेष्टित, 'भुअगसघायउब्बद्धो' (सुर ८, ५७)। ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ, शिक्षक के आयत्त (ठा ३),

'सिप्पाई सिक्खंतो,
सिक्खावेंतस्स देइ जा सिक्खा।
गहियम्मिवि सिक्खम्मि,
जं चिरकाल तु उब्बद्धो' (बृह)।

उब्बिब वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न। २ शून्य ३ क्रान्त। ४ प्रकट वेष वाला। ५ भीत, डरा हुआ। ६ उद्भट (दे १, १२७, वज्जा ६२)।
उब्बिबल वि [दे] कलुष जलवाला (दे १११ टी)।
उब्बिबल न [दे] कलुष जल, मैला पानी (दे १, १११)।
उब्बिबिर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (कप्पू)।

उव्वुक्क सक [उद् + बुक्क्] बोलना, कहना। उव्वुक्कइ (हे ८, २)।

उव्वुक्क न [दे] १ प्रजल्पित, प्रलाप। २ मस्तक। ३ बलात्कार (दे १, १२८)।

उव्वुड अक [उद् + ब्रुड्] तैरना।

उव्वुड } पु [उद्ब्रुड] तैरना। °निवुड, उव्वुड्ड } °निव्वुड्डण न [निब्रुड,°ण] उन्मज्जन करना (पण्ह १,३, उप १२८ टी)।

उव्वुड्ड वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण (गा ३७, स ३६०)।

उव्वुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन (कप्पू)।

उव्वुह अक [उन् + क्षुभ्] मक्षुब्ध होना। उव्वुहइ (प्राकृ ७५)।

उव्वूर वि [दे] १ अधिक, ज्यादा। २ पुं समान, समूह। ३ स्पष्ट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उव्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना। उब्भेउ (वज्जा ६४), उब्भेह (महा)।

उब्भ देखो उड्ढ (हे २, ५६, सुर २, ६, पड्)।

उब्भड पु [उद्भाण्ड] १ उत्कट भाँड, बहुरूपा, निर्लज्ज हँसा, उग्र विदूषक,

'खरउत्ति कह जाणसि
देहागारा कहिंति से हंदि।
ठिक्कोवण उब्भडो
णीयामि दारुणसहावो।' (ठा ६ टी)।

२ न गाली, कुत्सित-वचन, 'उब्भडवयण—' (भवि)।

उब्भत वि [दे] ग्लान, बीमार (दे १, ९५, महा)।

उब्भत वि [उद्भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न (दे १, १४३),

'अवलवह मा सवह ण इमा गहनघिआ परिब्भमइ। अत्थक्कगज्जिउब्भतहित्थहिअआ पहिअजाआ' (गा ३८६), 'भवभमणुब्भतमाणसा अम्हे' (सुर १५, १२३)। २ मूर्च्छित (से १, ८)। ३ भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, चकित (हे २, १६४)।

उब्भत पु [उद्भ्रान्त] प्रथम नरक-पृथिवी का चौथा नरकेन्द्रक—एक नरक स्थान (देवेन्द्र ३)।

उब्भग्ग वि [दे] गुण्ठित व्याप्त, 'निमिसेठब्भग्गरिमाण' (दे १, ९७, नाट)।

उब्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह (राज)।

उब्भड वि [उद्भट] १ प्रबल, प्रचण्ड, 'उब्भडपवणपकम्पि विजयपडागाइ अप्पयडं' (सुपा ८६) 'उब्भडलावण्णभीमणागाविं' (णमि ८)। २ भयंकर, विकराल (भग ७, ६)। ३ उद्धत, आडम्बरी (पाअ),

'अइरोसो अइतोसो अइहासो
दुज्जणेहिं संवासो।
अइउब्भडो य वेसो पंचवि
गरुयपि लहुअंति।' (धम्म)।

उब्भम पु [उद्भ्रम] १ उद्वेग २ परिभ्रमण (नाट)।

उब्भव अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भवइ (पि ४७५, नाट)। वकृ उब्भवंत (सुपा ५७१, ६५६)।

उब्भव सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना।

उब्भव पु [उद्भव] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (विसे, णाया १, २)।

उब्भविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ (उप पृ १३०, वज्जा १४)।

उब्भाअ वि [दे] शान्त, ठंढा, (दे १, ९६)।

उब्भाम सक [उद् + भ्रामय्] घुमाना। उब्भामेइ (राय १२६)।

उब्भाम पु [उद्भ्राम] १ परिभ्रमण (ठा ४)। २ वि परिभ्रमण करनेवाला (वव १)।

उब्भामइल्ला स्त्री [उद्भ्रामिणी] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री (वव ४, बृह ६)।

उब्भामय पु [उद्भ्रामक] जार, उपपति (पिंड ४२०)।

उब्भामग पु [उद्भ्रामक] १ पारदारिक, परस्त्री लम्पट (ओघ ६० भा)। २ वायु-विशेष, जो तृण वगैरह को ऊपर ले उड़ता है (जी ७)। ३ वि परिभ्रमण करनेवाला (वव १)।

उब्भामिगा } स्त्री [उद्भ्रामिका] कुलटा उब्भामिया } स्त्री, स्वैरिणी (वव ६, उप पृ २६४)।

उब्भालण न [दे] १ सूप आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन। २ वि. अपूर्व, अद्वितीय (दे, १, १०३)।

उब्भालिअ वि [दे] सूप आदि से साफ किया हुआ, उत्पूत, 'उब्भालिअं उप्पुणिअं' (पाअ)।

उब्भाव अक [रम्] क्रीड़ा करना, खेलना। उब्भावइ (हे ४,१६८, षड्)। वकृ उब्भावंत (सुपा)।

उब्भावणया } स्त्री [उद्भावना] १ प्रभा-उब्भावणा } वना, गौरव, उन्नति, 'पवयण-उब्भावणया' (ठा १०—पत्र ५१४)। २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा, 'असब्भावउब्भावणाहिं' (णाया १, १२—पत्र १७४)। ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण (णंदि)।

उब्भाविअ न [रमण] सुरत, क्रीड़ा, संभोग (दे १, ११७)।

उब्भास सक [उद् + भासय्] प्रकाशित करना। वकृ उब्भासंत, उब्भासेंत (पउम २८, ३६, ३, १५५)।

उब्भासिय वि [उद्भासित] प्रकाशित (हेका २८२),

'भवणाओ नीहरंते जिणम्मि
चाउव्विहेहिं देवेहिं।
एंतेहि य जंतेहि य
बहुमिव उब्भासियं गयणं॥'
(सुपा ७७)।

उब्भासुअ वि [दे] शोभाहीन (दे १, ११०)।

उब्भासेंत देखो उब्भास

उब्भि देखो उब्भिय = उद्भिद् (आचा)।

उब्भिउडि वि [उद्भ्रुकुटि] भौंह चढ़ाया हुआ (गउड)।

उब्भिज्जा स्त्री [उद्भेद्या] भाजी, एक तरह का शाक (पिंड ६२५)।

उब्भिद सक [उद् + भिद्] १ ऊँचा करना, खड़ा करना। २ विकसित करना। ३ अंकुरित करना। ४ खोलना। कर्म उब्भिज्जति। वकृ उब्भिंदमाण (आचा २, ७)। कवकृ 'भत्तिभरनिब्भरुब्भिज्जमाणघणपुलयपूरियसरीरा' (सुपा ६५६ ६७, भग १६, ६)। संकृ उब्भिंदिय, उब्भिंदिउ (पंचा १३, पि ५७४)।

उब्भिग देखो उब्भिय = उद्भिद् (पण्ह १, ४)।

उब्भिडण ४ [उद्भेदन] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना,
जेसुं चिय ठुठिज्जइ,
खुमुब्भिउणमुहलो महिहरेसु।
तेसुं चेय णिमिज्जइ
पडिरोहदोलिरो कुलिसो' ॥
(गउड)।

उब्भिण्ण } वि [उद्भिन्न] १ अंकुरित (श्रोध ११३), 'उब्भिन्ने पाणिय पडिए' (सुर ७, ११४)। २ उद्घाटित खोला हुआ। ३ न. जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरह से लिप्त पात्र को खोलकर उसमें से दी जाती भिक्षा, 'छगणाइ-गोलउत्त उब्भिदिय ज तमुब्भिण्णं' (पचा १३, ठा ३, ४)। ४ वि ऊँचा हुआ, खड़ा हुआ, 'हरिसवसुब्भिन्नरोमंचा' (महा)।
उब्भिन्न

उब्भिय वि [उद्भिद्] पृथ्वी को फाड़कर उगनेवाली वनस्पति (पण्ह १, ४)।

उब्भिय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ, खड़ा किया हुआ (सुपा ८६, महा, वज्जा ८८)।

उब्भिय न [उद्भिद्] १ लवण-विशेष, समुद्र के किनारे पर क्षार जल के संसर्ग से होनेवाला नोन (आचा २, १ ६, ५)। २ पुं न. खजरीट, शलभ आदि प्राणी (नवीन २०, धर्मसं ८२, सूत्र १, ६, ८)।

उब्भीकय वि [ऊर्ध्वीकृत] ऊँचा किया हुआ, 'उब्भीकयबाहुजुओ' (उप ५६७ टी)।

उब्भुअ अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भुअइ (हे ४, ६०)।

उब्भुआण वि [दे] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो दूध वगैरह उछलता है वह (दे १, १०५, ७, ८१)।

उब्भुग्ग वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।

उब्भुत्त सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उब्भुत्तइ (हे ४, १४४)।

उब्भुत्तिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊँचा फेंका हुआ (कुमा)।

उब्भुत्तिअ वि [दे] उद्दीपित, प्रदीपित (पाअ)।

उब्भूअ वि [उद्भूत] १ उत्पन्न (सुर ३, २३६)। २ आगंतुक कारण (विसे १४७६)।

उब्भूइआ स्त्री [औद्भूतिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयोजन के उपस्थित होने पर बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

उब्भेअ पुं [उद्भेद] उद्गम, उत्पत्ति, 'उम्हा-अतगिरियडसीमाणिज्झरियंदलुब्भेय' (गउड), 'अभिणवजोव्वणउब्भेयसुन्दरा नवलमणहरा-रावा' (सुर ११, ११६)।

उब्भेइम वि [उद्भेदिम] स्वयं उत्पन्न होनेवाला, उब्भेइम पुण सयरह जहा सामुद्दलोणं' (निचू ११)।

उभ पु [उभ] उभय, दोनों (पव ६, ७८)।

उभओ अ [उभयतस्] द्विधा, दोनों तरह से, दोनों ओर से (उत्त, औप)।

उभज्जायण देखो ओमज्जायण (सुज्ज १०, १६)।

उभय वि [उभय] युगल, दो दोनों (ठा ४, ४)। °त्थ अ [°त्र] दोनों जगह (सुपा ६८८)। °लोग पु [°लोक] यह और पर जन्म (पचा ११)। °हा अ [°था] दोनों तरफ से, द्विधा (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [वञ्च्] ठगना, धूर्त्तना। उमच्छइ (हे ४, ९३)। वकृ उमच्छत (कुमा)।

उमच्छ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उमच्छइ (षड्)।

उमा स्त्री [उमा] गौरी, पार्वती (पाअ)। २ द्वितीय वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ देव-गणिका-विशेष (धान्नू)। ४ स्त्री-विशेष (कुमा)। °साइ [°स्वाति] स्वनाम धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार (सार्ध ५०)।

उमाण न [दे] प्रवेश (आचा २, १, ६)।

°उमार देखो कुमार (अच्चु २६)।

उमीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, 'पलिलमिर-पलियपीवलकरणघुमणुमीसएहवणजल' (कुमा)।

उमुय सक [उद् + मुच्] छोड़ना। वकृ उमुयत (उत्त ३०, २३)।

उम्मइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे १, १०२)। २ उन्मत्त (गा ४६८, वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [उन्मयूख] प्रभाशाली (गउड)।

उम्मड पुं [दे] १ हठ। वि उद्वृत्त (दे १, १२४)।

उम्माथिय वि [दे] दग्ध, जला हुआ (वज्जा ८२)।

उम्मग्ग वि [उन्मग्न] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना (आचा)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष, जिसमें पत्थर वगैरह भी तैर सकते हैं (ज ३)।

उम्मग्ग पु [उन्मार्ग] १ कुपथ, उलटा रास्ता, विपरीत मार्ग (सुर १, २४३, सुपा ६५)। २ छिद्र, रन्ध्र (आचा) ३ अकार्य करना (आचा)।

उम्मग्गणा स्त्री [उन्मार्गणा] छिद्र, विवर (आचा)।

उम्मच्छ न [दे] १ क्रोध, गुस्सा (दे १, १२५, से ११, १६, २०)। २ वि असबद्ध, ३ प्रकारान्तर से कथित (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [उन्मत्सर] १ ईर्ष्यालु, द्वेषी (से ११, १४)। २ उद्भट (गा १२७, ६७५)।

उम्मच्छविअ वि [दे] उद्भट (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [दे] १ कुपित, रुष्ट, २ आकुल, व्याकुल (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [उन्मज्जन] तरण, तैरना। °णिमज्जिया स्त्री [°निमज्जिका] उमचुभ करना, पानी में ऊँचा-नीचा होना (ठा ३, ४)।

उम्मज्जग वि [उन्मज्जक] १ उन्मज्जन करनेवाला, गोता लगाने वाला। २ उन्मज्जन से ही स्नान करनेवाले तापसों की एक जाति (ओर, भग ११, ६)।

उम्मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६७)। २ निषेध, अस्वीकार (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [उन्मनस्] उत्कण्ठित, उत्सुक (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पु [दे] १ धतूरा, वृक्ष-विशेष। २ एरण्ड, वृक्ष-विशेष (दे १, ८६)।

उम्मत्त वि [उन्मत्त] १ उद्धत, उन्माद-युक्त (बृह १)। २ पागल, भूताविष्ट (पिंड ३८०)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मत्तय न [दे] धतूरे का फल, "उम्मत्तय-

रमरमिओ पिच्छइ नन तिणा कणय" (मोह २२)।

उम्मत्थ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उम्मत्थइ (हे ४, १६५, कुमा)।

उम्मत्थ वि [दे] अधो-मुख, विपरीत (दे १, ९३)।

उम्मर पु [दे] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (दे १, ९५)।

उम्मरिअ वि [दे] उत्खात, उन्मूलित (दे १ १००, षड्)।

उम्मल वि [दे] स्त्यान, कठिन, घट्ट (दे १, ९१)।

उम्मलण न [उन्मर्दन] मसलना (पाअ)।

उम्मल्ल पु [दे] १ राजा, नृप। २ मेघ, बारिश। ३ बलात्कार। ४ वि पीवर पुष्ट (दे १, १३१)।

उम्मल्ला स्त्री [दे] तृष्णा (दे १, ९४)।

उम्महण वि [उन्मथन] नाशक, विनाशकारी (सुर ३, २३१)।

उम्माइअ वि [उन्मादित] उन्मत्त किया हुआ (पउम २८, १०)।

उम्माडिय न [दे] उल्मुक जलता काष्ठ, गुजराती में 'उवाडु' (सिरि ६८०)।

उम्माण न [उन्मान] १ माप, मासा आदि तुला मान (ठा ७, ८)। २ जो तोला जाता है वह (ठा १०)।

उम्माद देखो उम्माय (भग १४, २)।

उम्मादइत्तअ (शौ) वि [उन्मादयितृ] उन्माद करानेवाला (अभि ८२)।

उम्माय अक [उद् + मद्] उन्माद करना, उन्मत्त होना। वकृ उम्मायत (उप ९८६ टी)।

उम्माय पु [उन्माद] १ चित्त-विभ्रम, पागलपन (ठा ६, महा)। २ कामाधीनता, विषय में अत्यन्तासक्ति (उत्त १६)। ३ आलिङ्गन (निचू)।

उम्माल देखो ओमाल (पाअ)।

उम्मालिय व [उन्मालित] सुशोभित (भवि)।

उम्माह पु [उन्माथ] विनाश, 'निमेविजलावि (कामभोगा) करेंति अहियमुम्माहय' (महा)।

उम्माहय वि [उन्माथक] विनाशक, 'अहो उम्माहयत्त विसयाण' (महा, भवि)।

उम्माहि वि [उन्माथिन] विनाशक (महाटि)।

उम्माहिय वि [उन्माथित] विनाशित (भवि)।

उम्मि पुस्त्री [ऊर्मि] १ कल्लोल, तरंग (कुमा, दे ३ ६)। २ भीड, जन-समुदाय (भग २, १)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मिंठ वि [दे] हस्तिपक रहित, महावत-रहित, निरकुंश, 'उम्मिंठकरिणिगो उव उम्मूलइयपायवसमूह सो' (सुपा ३८८, २०३)।

उम्मिण सक [उद् + मा] तोलना, नाप करना। कर्म उम्मिणिज्जइ (अणु १ ३)।

उम्मिय वि [उन्मित] प्रमित, 'काउंसोउं-कुसुम्मियाव विहिणो ताहा विचित्ता गई' (रंभा)।

उम्मिल्लिर वि [उन्मीलितृ] विकासी 'तइय य उम्मिल्लिरपउमपल्लवा(?)णियमयरमाहम्म' (सुपा ८६)।

उम्मिल्ल अक [उद् + मील्] १ विकसित होना। २ खुलना। ३ प्रकाशित होना। उम्मिल्लइ (गउड)। वकृ उम्मिल्लंत (से १०, ३१)।

उम्मिल्ल वि [उन्मील] १ विकसित (पाअ, से १०, ५०, स ७६)। २ प्रकाशमान (से ११, ६८, गउड)।

उम्मिल्लण न [उन्मीलन] विकास, उल्लास (गउड)।

उम्मिल्लिय वि [उन्मीलित] १ विकसित उल्लसित। २ उद्घाटित खुला हुआ, 'तओ उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि' (आवम, स २८०)। ३ प्रकाशित। ४ बहिष्कृत, 'पजरम्मिल्लियमणिकणगथूभियाग' (जीव ४)। ५ न विकास (अणु)।

उम्मिस अक [उद् + मिष्] खुलना, विकसना। वकृ उम्मिसत (विक्र ३८),

उम्मिसिय वि [उन्मिषित] १ विकसित, प्रफुल्ल (भग १८, १)। २ न विकास, उन्मेष (जीव ३)।

उम्मिस्स देखो उम्मीस (पव ६७)।

उम्मीलण देखो उम्मिल्लण (कुमा, गउड)।

उम्मीलणा स्त्री [उन्मीलना] प्रभव, उत्पत्ति (राज)।

उम्मीलिय देखो उम्मिल्लिय (राज)।

उम्मीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, युक्त (सुपा ८८, प्रासू ३२)।

उम्मुअ देखो उम्मुय। वकृ 'जलणम्मि पीढमभिवुम्मुअत चक्खु पमएण गउ निम्मिविज्जा' (उप पृ २०)।

उम्मुअ न [उल्मुक] अलात, लूका (पाअ)।

उम्मुच सक [उद् + मुच्] परित्याग करना। वकृ उम्मुचत (निचू २७७०)।

उम्मुक्क वि [उन्मुक्त] १ विमुक्त, रहित, 'ते वीरा बधणुम्मुक्का नावकखति जीविय' (सूअ १, ९)। २ उत्क्षिप्त (ओघ)। ३ परित्यक्त (आवम)।

उम्मुग्ग वि [उन्मग्न] १ जल के ऊपर तैरा हुआ। २ न तैरना। °निमुग्गिया स्त्री [°निमग्नता] उन्मज्जन करना, 'से भिक्खू वा० उदगसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करेज्जा' (आचा २, ३, २, ३)।

उम्मुग्गा } स्त्री देखो उम्मग्ग = उन्मग्न
उम्मुज्जा } (पण्ह १, ३, पि १०४, २३४ आचा)।

उम्मुट्ठ वि [उन्मृष्ट] स्पृष्ट छुआ हुआ (पाअ)।

उम्मुद्दिअ वि [उन्मुद्रित] १ विकसित, प्रफुल्ल (गउड कप्पू)। २ उद्घाटित खोला हुआ, 'उम्मुद्दिओ समुग्गो, तम्मज्झे लहुसमुग्गय नियइ' (सुपा १४४)।

उम्मुयण न [उन्मोचन] परित्याग, छोड़ देना (सुर २, १६०)।

उम्मुयणा स्त्री [उन्मोचना] त्याग, उज्झन (आव ४)।

उम्मुह वि [दे] दृप्त अभिमानी (दे १, ९९, षड्)।

उम्मुह वि [उन्मुख] १ संमुख (उप पृ १३४)। २ ऊर्ध्व-मुख (से ६, ८२)।

उम्मूढ वि [उन्मूढ] विशेष मूढ, अत्यन्त मुग्ध। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा (सुपा १६)।

उम्मूल वि [उन्मूल] उन्मूलन करनेवाला, विनाशक (गा ३०५)।

उम्मूल सक [उद् + मूलय्] उखाड़ना, मूल से उखाड फेंकना। उम्मूलेइ (महा)।

वकृ उम्मूलंत, उम्मूलयत (से १, ४, स ५६६)। सकृ. उम्मूलिऊण (महा)।

उम्मूलण न [उन्मूलन] उपाटन, उत्खनन (दि २७८)।

उम्मूलणा स्त्री [उन्मूलना] ऊपर देखो (पण्ह १, १)।

उम्मूलिअ वि [उन्मूलित] उपाटित, मूल से उखाड़ा हुआ (गा ८०५ सुर ३, २४५)।

उम्मेंठ [दे] देखो उम्मिंठ (पउम ७१, २६, स ३३२)।

उम्मेस पुं [उन्मेष] उन्मीलन, विकास (सा १३ ४)।

उम्मोयणी स्त्री [उन्मोचनी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।

उम्ह पुंस्त्री [ऊष्मन] १ संताप, गरमी, उष्णता, 'सरीरउम्हाए जीवइ सयावि' (उप ५६७ टी, णाया १, १, कुमा)। २ भाफ, वाष्प (से २, ३२, हे २, ७४)।

उम्हइअ } वि [ऊष्मायित] संतप्त, गरम
उम्हविय } किया हुआ (से ४, १, पउम २ ८६ गउड)।

उम्हाअ अक [ऊष्माय्] १ गरम होना। २ भाफ निकालना। वकृ उम्हाअंत, उम्हाअमाण (से ६, १०, पि ५५८)।

उम्हाल वि [ऊष्मवत] १ गरम, परितप्त। २ वाष्प युक्त (गउड)।

उम्हाविअ न [दे] सुरत, संभोग (दे १, ११७)।

उयचिय वि [दे] देखो उविअ = परिकर्मित, 'उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे' (णाया १, १—पत्र १३)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उयट्टेति, भूका उयट्टिंसु (भग)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद्वृत्त।

उयत्त अक [अप + वृत्] हटना। उयत्तंति (दस ३, १ टी)।

उयर वि [उदार] श्रेष्ठ, उत्तम, 'देवा भवंति विमलोयरकंतिजुत्ता' (पउम १०, ८८)।

उयरिया स्त्री [अपवरिका] छोटा कमरा (सम्मत्त ११६)।

उयविय देखो उविअ = (दे) (राय ६३ टी)।

उयाइय न [उपयाचित] मनौती (सुपा ८, ५७८)।

उयाय वि [उपयात] उपगत (राज)।

उयारण न [अवतारण] निछावर, उतारा, हर्ष-दान, गुजराती में 'उवारणु' (कुप्र ६५)।

उयाहु देखो उदाहु (सुर १२, ५६, काल, विसे १६१०)।

उऊरकिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ (षड्)।

उय्यल वि [दे] अध्यासित, आरूढ (षड्)।

उर पुन [उरस्] वक्ष स्थल, छाती (हे १, ३२)। °अ, °ग पुंस्त्री [°ग] सर्प, साँप (कप्र १४१),

'उरगगिरिजलणसागरनह-
तलतरुगणसमो अ जो होइ।
भमरमियधरणिजलरुहरविपवण-
समसमो अ सो समणो।' (अणु)।

°तव पु [°तपस्] तप-विशेष (ठा ४)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है (पउम ७१, ६६)। °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] पेट से चलनेवाला प्राणी (सर्पादि) (जो २०)। °सुत्तिया स्त्री [°सूत्रिका] मोतियों की हार (राज)।

उर न [दे] आरम्भ, प्रारम्भ (दे १, ८६)।

उरउरेण अ [दे] साक्षात् (विपा १, ३)।

उरत्त वि [दे] खण्डित, विदारित (दे १, ६०)।

उरत्थ वि [उरस्थ] १ छाती में स्थित। २ छाती में पहनने का आभूषण (आचा २, १३, १)।

उरत्थय न [दे] वर्म, बख्तर, कवच (पाअ)।

उरब्भ पुंस्त्री [उरभ्र] मेष, भेड (णाया १, १, पण्ह १, १)।

उरब्भिअ वि [औरभ्रिक] भेड चरानेवाला (सूअ २, २, २८)।

उरब्भिज्ज } वि [उरभ्रीय] १ मेष-सम्बन्धी।
उरब्भिय } २ उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन, 'तत्तो समुट्ठियमेय उरब्भिज्जंति अज्झयणं' (उत्तनि, राज)।

उरय पु [उरज] वनस्पति-विशेष (राज)।

उररि पु [दे] पशु, बकरा (दे १, ८८)।

उरल देखो उराल (कम्म १, भग, द २२)।

उरविय वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित, छिन्न (षड्)।

उरसिज पुं [उरसिज] स्तन, थन (धर्मवि ६६)।

उरस्स वि [उरस्य] १ सन्तान, बच्चा (ठा १०)। २ हार्दिक, आभ्यन्तर, 'उरस्सवल-समण्णागय—' (राय)।

उराल वि [उदार] १ प्रबल (राय)। २ प्रधान, मुख्य (सुज्ज १)। ३ सुन्दर, श्रेष्ठ (सूअ १, ६)। ४ अद्भुत (चन्द २०)। ५ विशाल, विस्तीर्ण (ठा ५)। ६ न शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च् (पशु पक्षी) इन दोनों का शरीर (अणु)।

उराल वि [उदार] स्थूल, मोटा (सूअ १, १, ८, ६)।

उराल वि [दे] भयकर, भीष्म (सुज्ज १)।

उरालिय न [औदारिक] शरीर-विशेष (नव)।

उरिआ स्त्री [उड्डिका] लिपि विशेष (सम ३५)।

उरत्तिय न [दे उरसि-त्रिक] तीन सर-वाला हार (औप)।

°उरिम देखो पुरिम (गा २८२)।

उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण (पाअ)।

उरुघुट्ट पु [दे] १ अपूप, पूआ। २ चिपटी (दे १, १३४)।

उरुमल्ल }
उरुमिल्ल } वि [दे] प्रेरित (षड्, दे १, १०८)।
उरुसोल्ल }

उरोरुह पु [उरोरुह] स्तन, थन (पव ६२)।

उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, थन। २ जैन साध्वियों का उपकरण-विशेष (ओघ ३१७ भा)।

°उल देखो कुल (से १, २६, गा ११६, सुर ३, ४१, महा)।

उलय } पुंन [उलप] तृण-विशेष (सुपा
उलव } २८१, प्राप्र)।

उलवी स्त्री [उलपी] तृण-विशेष, 'उलवी वीरण' (पाअ)।

उलिअ वि [दे] असंकुचित नजरवाला, स्फार दृष्टि (दे १, ८८)।

उलित्त न [दे] ऊंचा कुंआ (दे १, ८६)।

°उलीण देखो कुलीण (गा २५८)।

उलुउंडिअ वि [दे] प्रलुठित, विरेचित (दे १, ११६)।

उलुओसिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (षड्)।

उलुफंसिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे १, ११५)।

उलुखंड पु [दे] उल्मुक, अलात, लूका (दे १, १०७)।

उलुग पु [उलूक] १ उल्लू, पेचक। २ देश-विशेष (पउम ९८, ६६)।

उलुग पु [उलूक] उल्लू पक्षी, पेचक (धर्मसं ६८२, १२६५)।

उलुगी स्त्री [औलूकी] विद्या-विशेष (विसे २४५४)।

उलुग्ग वि [अवरुग्ण] बीमार (महा)।

उलुग्ग वि [दे] देखो ओलुग्ग (महा)।

उलुफुंटिअ वि [दे] १ विनिपातित, विनाशित। २ प्रशान्त (दे १, १३८)।

उलुय देखो उलुअ, 'अह वह दिणमणिणेव, उलुयाण हरइ अयन्ने' (सट्ठि १०८, सुर ९, २६, पउम ६७, २४)।

उलुहंत पु [दे] काक, कौआ (दे १, १०६)।

उलुहलिअ वि [दे] अतृप्त, तृप्तिरहित (दे १, ११७)।

उलुहुलअ वि [दे] अवितृप्त, तृप्तिरहित (षड्)।

उलूअ पु [उलूक] १ उल्लू, पेचक (पाअ)। २ वैशेषिक मत का प्रवर्तक कणाद मुनि (सम्म १४६, विसे २५०८)।

उलूखल देखो उऊखल (कुमा)।

उलूलु पु [उलुलु] मङ्गल ध्वनि (कप्पू)।

उलूहल देखो उऊखल (हे १, १७१, महा)।

उल्ल वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (कुमा; हे १, ८२)। °गच्छ पु [°गच्छ] जैन मुनियों का गण-विशेष (कप्प)।

उल्ल सक [आर्द्रय्] १ गीला करना, आर्द्र करना। २ अक आर्द्र होना। उल्लेइ (हे १, ८२)। वकृ उल्लत, उल्लिंत (गउड)। संकृ उल्लेत्ता (महा)।

उल्ल न [दे] ऋण, करजा, 'तो मं उल्ले धरिज्जए' (सुपा ४८६)।

उल्लअण न [उल्लयन] अर्पण, समर्पण (से ११, ५१)।

उल्लंक पु [उल्लङ्क] काष्ठ-मय वारक (निचू १२)।

उल्लंघ सक [उत् + लङ्घ्] उल्लङ्घन करना, अतिक्रमण करना। उल्लंघज (पि ४५६)। हेकृ उल्लंघित्तए (भग ८, ३३)।

उल्लंघ पु [उल्लङ्घ] उल्लङ्घन, अतिक्रमण (सबोध ६)।

उल्लंघण न [उल्लङ्घन] १ अतिक्रमण, उल्लङ्घन (पण्ण ३६)। २ वि अतिक्रमण करनेवाला, 'उल्लंघणे य चंडे य पावसमणे त्ति वुच्चइ' (उत्त ८)।

उल्लंठ वि [उल्लण्ठ] उद्धत, 'जयति उल्लंठ-वयणाइं' (कप्पू)।

उल्लंडग पु [उल्लण्डक] छोटा मृदङ्ग, वाद्य-विशेष (राज)।

उल्लंडिअ वि [दे] बहिष्कृत, बाहर निकाला हुआ (पाअ)।

उल्लंबण न [उल्लम्बन] उद्बन्धन, फाँसी लगा कर लटकना (सम १२५)।

उल्लक वि [दे] १ भग्न, टूटा हुआ। २ स्तब्ध, 'उल्लक्क मिगजाल' (स २६४)।

उल्लट्ट देखो उव्वट्ट=उद्-वृत्। उल्लट्टइ (प्राकृ ७२)।

उल्लट्ट वि [दे] उल्लुण्ठित, खाली किया हुआ (दे ७, ८१)।

उल्लट्टिय देखो उल्लट्ट—(दे) 'सो पुण नरो पविट्ठो भट्ठो मन्दाउ व महाअडविं। उल्लट्टिय-कूवोदगमिव कठगर्गेहिं पाणेहिं' (धर्मवि १२४)।

उल्लण वि [उल्वण] उत्कट (पचा २)।

उल्लण न [आर्द्रीकरण] गीला करना (उवा ओघ ३६, से २, ८)।

उल्लण न [दे] खाद्य वस्तु-विशेष, ओसामन (पिंड ६२४)।

उल्लणिया स्त्री [आर्द्रयणिका] जल पोंछने का गमछा, टोपिया (उवा)।

उल्लद्दिय वि [दे] भाराक्रान्त, जिसपर बोझा लादा गया हो वह, 'अह तम्मि सत्थलोए उल्लद्दियसयलवसहनियरम्मि' (सुर २, २)।

उल्लरय न [दे] कौड़ियों का आभूषण (दे १, ११०)।

उल्लल अक [उत् + लल्] १ चलित होना, चञ्चल होना। २ ऊँचा चलना। ३ उत्पन्न होना। उल्ललइ (से ११, १३)। वकृ उल्ललंत (राज)।

उल्ललिअ वि [उल्ललित] १ चञ्चल (गा ५६६)। २ उत्पन्न (से ६, ६८)

उल्ललिअ वि [दे] शिथिल, ढीला (दे १, १०४)।

उल्लव सक [उत् + लप्] १ कहना। २ बकना, बकवाद करना, सगर्व शब्द बोलना, 'ज वा त वा उल्लवइ' (महा)। वकृ उल्लवंत, उल्लवेमाण (पउम ६४, ८, सुर १, १६६)।

उल्लव सक [उद् + लू] उन्मूलन करना। संकृ उल्लविऊण। हेकृ उल्लविउं। कृ. उल्लविअव्व (प्राकृ ६६)।

उल्लवण न [उल्लपन] १ बकवाद २ कथन, 'जइवि न जुज्जइ ज्हु तह मणवल्लहनामउल्ल-वणं' (सुपा ४६८)।

उल्लविय वि [उल्लपित] १ कथित, उक्त। २ न उक्ति, वचन, 'अगणन्तगणट्ठाणं चाडुल्लविय-पेहुणं' (उत्त)।

उल्लविर वि [उल्लपितृ] १ वक्ता, भाषक। २ बकवादी, वाचाट (गा १७२ सुपा २२६)।

उल्लस अक [उत् + लस्] १ विकसित होना। २ खुश होना। उल्लसइ (षड्)। वकृ उल्लसंत (गा ५६०, कप्प)।

उल्लस देखो उल्लास (गउड)।

उल्लसिअ वि [उल्लसित] १ विकसित। २ हर्षित (षड्, निचू)।

उल्लसिअ वि [दे उल्लसित] पुलकित, रोमाञ्चित (दे १, ११५)।

उल्लाय वि [दे] लात मारना, पाद-प्रहार (तंदु)।

उल्लाव वि [उल्लाप] १ वक्र वचन। २ कथन (भग)।

उल्लाल सक [उत् + नमय्] १ ऊँचा करना। २ ऊपर फेंकना। उल्लालइ (हे ४, ३६)। वकृ उल्लालेमाण (अंत २१)।

उल्लाल सक [उत् + लालय्] ताडन करना, बजाना। वकृ. उल्लालेमाण (राज)।

उल्लाल पुन [उल्लाल] छन्द-विशेष (पिंग)।

उल्लालिअ वि [उन्नमित] २ ऊँचा किया हुआ, ऊपर फेंका हुआ (कुमा, हे ४, ४२२)।

उल्लालिय वि [उल्लालित] ताडित (राज)।

उल्लाव सक [उन् + लप्, लापय्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। ३ बुलवाना। ४ बकवाद कराना। वकृ उल्लावत, उल्लावेंत (से ११, १०, गा ५३६, ६५१, हे २, १९३)।

उल्लाव पु [उल्लाप] १ शब्द, आवाज (से १, ३०)। २ उत्तर, जवाब (ओघ ५६ भा, गा ५१४)। ३ बकवाद, विकृत वचन। ४ उक्ति, कथन (पउम ७०, ५८)। ५ समापण, 'नयणेहि को न दीसइ, केण समाण न होंति उल्लावा। हिययाणंद ज पुण, जणेइ त माणुस विरलं ॥' (महा)।

उल्लाविअ वि [उल्लपित] १ उक्त, कथित। २ न उक्ति, वचन (गा ५८६)।

उल्लाविर वि [उल्लपितृ] १ बोलनेवाला, भाषक (हे २, १९३, सुपा २२९)।

उल्लासग वि [उल्लासक] १ विकसित होनेवाला। २ आनन्दजनक (श्रा २७)।

उल्लासण न [उल्लासन] विकास (सिरि ५३६)।

उल्लासि } वि [उल्लासिन्] ऊपर देखो
उल्लासिर } (कप्पू, लहुअ १, प्रासू ६६)।

उल्लाह सक [उत् + लाघय्] कम करना, हीन करना। वकृ उल्लाहअत (उत्तर ६१)।

उल्लिअ वि [दे] उपसर्पित, उपागत (षड्)।

उल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ (गउड, हे ३, १६)।

उल्लिअ वि [दे] १ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ (उत्त १९, ६४)। २ उपालब्ध, उलाहना दिया हुआ (सम्मत्त ५२)।

उल्लिच सक [उद् + रिच्] खाली करना। हेकृ 'उल्लिचिऊण य समत्थो हत्थउडेहिं समुद्दं' (पुप्फ ४०)।

उल्लिचिय वि [दे] उद्रिक्त, खाली किया हुआ, 'तह नाहिदहो जुव्वणघणेण लायन्नवारिणा भरिओ। नहु निट्ठइ जह उल्लिचिओवि पियनयणकलसेहिं' (सुपा ३३)।

उल्लिक्क न [दे] दुश्चेष्टित, खराब चेष्टा (षड्)।

उल्लिगण वि [उल्लिङ्गन] उपदर्शक (पव १)।

उल्लिपण न [उपलेपन] उपलेप (पिंड ३५०)।

उल्लिया स्त्री [दे] राधा-वेध का निशाना, 'विवेयग्वा विवरीयभमतद्धचक्कोवरियिउल्लिया' (स १६२)।

उल्लिर वि [आर्द्र] गीला (वज्जा ११२)।

उल्लिह सक [उद् + लिह्] १ चाटना। २ खाना, भक्षण करना, 'उक्खलिउल्लिहअसुररी उग्ग रोरघरम्मि उल्लिहइ' (दे १, ८८)।

उल्लिह सक [उद् + लिख्] १ रेखा करना २ लिखना। ३ घिसना।

उल्लिहण न [उल्लेखन] १ घर्षण (सुपा ४८)। २ विलेखन, 'बहुआइ नहुल्लिहणे' (हे १, ७)।

उल्लिहिय वि [उल्लिखित] १ घृष्ट, घिसा हुआ (णाया १, २)। २ छिला हुआ, तक्षित (पाअ)। ३ रेखा किया हुआ (सुपा १९३, प्रासू ७)।

उल्ली स्त्री [दे] १ चूल्हा (दे १, ८७)। २ दाँत का मैल, 'उल्ली दंतेसु दुग्गधा' (महा)।

उल्लीण वि [उपलीन] प्रच्छन्न, गुप्त (आचा २, २, ३, ११)।

उल्लुअ वि [दे] १ पुरस्कृत, आगे किया हुआ। २ रक्त, रँगा हुआ (षड्)।

उल्लुअ वि [दे. उद्गत] उदय-प्राप्त (प्राकृ ७७)।

उल्लुअ वि [उल्लून] १ उन्मूलित। २ न उन्मूलन (प्राकृ ७०)।

उल्लुचिअ वि [उल्लुञ्चित] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित, 'मुट्ठीहिं कुंतलकलावा उल्लुचिया' (सुपा ८०, प्रबो ६८)।

उल्लुटिअ वि [दे] सचूर्णित, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (दे १, १०९)।

उल्लुंठ वि [उल्लुण्ठ] उल्लठ, उद्धत (सुपा ४९५, सुर ९, २१५)।

उल्लुड अक [वि + रेचय्] झरना, टपकना, बाहर निकलना। उल्लुडइ (हे ४, २६)। प्रयो वकृ उल्लुडावत (कुमा)।

उल्लुक्क वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ (दे १, ९२)।

उल्लुक्क सक [तुड्] तोड़ना। उल्लुक्कइ (हे १, ११६, षड्)।

उल्लुक्किअ वि [तुडित] त्रोटित, तोड़ा हुआ (कुमा)।

उल्लुग° } स्त्री [उल्लुका] १ नदी-विशेष
उल्लुगा } (विसे २४२६)। २ उल्लुका नदी के किनारे का प्रदेश (विसे २४२५)। °तीर न [°तीर] उल्लुका नदी के किनारे बसा हुआ एक नगर (विसे २४२४, भग २६, ३)।

उल्लुज्झण न [दे] पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ पाँव की फिर से उत्पत्ति (उप ३८१)।

उल्लुट्ट अक [उत् + लुट्] नष्ट होना, ध्वंस पाना। वकृ 'तहवि य सा रायसिरी उल्लुट्टती न ताइया ताहि' (उव)।

उल्लुट्ट वि [दे] मिथ्या, असत्य, झूठा (दे १, ८९)।

उल्लुरुह पु [दे] छोटा शङ्ख (दे १, १०५)।

उल्लुलिअ वि [उल्लुलित] चलित (गा ५९७)।

उल्लुव देखो उल्लुअ = उद् + लू। उल्लुवइ, सकृ. उल्लुविऊण (प्राकृ ६९)।

उल्लुह अक [निस् + सृ] निकला। उल्लुहइ (हे ४, २५९)।

उल्लुहुडिअ वि [दे] उन्नत, उच्छ्रित (षड्)।

उल्लूढ वि [दे] १ आरूढ (दे १, १००, षड्)। २ अङ्कुरित (दे १, १००, पाअ)।

उल्लूढ सक [आ + रुह्] चढना। उल्लूढइ (प्राकृ ७३)।

उल्लूर सक [तुड्] १ तोडना। २ नाश करना। उल्लूरइ (हे ४, ११६, कुमा)।

उल्लूरण न [तोडन] छेदन, खण्डन (गा १६६)।

उल्लूरिअ वि [तुडित] विनाशित, 'उल्लूरिअ-पहिअसत्थेसु' (णमि १०, पाअ)।

उल्लूह वि [दे] शुष्क, सूखा, 'उल्लूह च नलवण हरिय जाय' (ओघ ४४९ टी)।

उल्लेत्ता देखो उल्ल = आर्द्रय्।

उल्लेव पु [दे] हास्य, हँसी (दे १, १०२)।

उल्लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे १, १०४, पाअ)।

उल्लोइय न [दे] १ पोतना, भीत को चूना वगैरह से सफेद करना (ओप)। २ वि पोता हुआ (णाया १, १, सम १३७)।

उल्लोक वि [दे] त्रुटित, छिन्न (षड्)।

उल्लोच पु [दे उल्लोच] चन्द्रातप, चंदनी (दे १, ९८, सुर १२, १, उप १०७)।

उल्लोढ सक [उद् + लोठय्] लोध्र आदि से घिसना। उल्लोटिज्ज (आचा २, १३, १)।

उल्लोय पु [उल्लोक] १ अगासी, छत (णाया १, १, कप्प, भग)। २ थोड़ी देर, थोड़ा विलम्ब (राज)।

उल्लोय देखो उल्लोच (सुर ३ ७०, कुमा)।

उल्लोल अक [उत् + लुल्] लुठना लेटना। वकृ उल्लोलन्त (निचू १७)। पु शोकाकुल स्त्री-रुदन शब्द (चउ० सगरचरिय)।

उल्लोल सक [उद् + लोलय्] पोंछना। उल्लोलेइ, सकृ उल्लोलेत्ता (आचा २, १५, ५)।

उल्लोल पु [दे] १ शत्रु, दुश्मन (दे १, ९९)। २ कोलाहल (पउम १६, ३६)।

उल्लोल पुं [उल्लोल] १ प्रबन्ध, 'उद्देसे अमि णाराहिवाण वियडा कट्टुल्लोला' (गउड)। २ वि उद्भट, उद्धत, 'तरुणजणविब्भमुल्लोल-सागरे' (स ६७)। ३ वि उत्सुक, 'बहुसो घडतविहडतमट्टमुहासायसगमुल्लोले। हियए च्चेय समप्पंति चचला वीइवावारा' (गउड)।

उल्लोव (अप) देखो उल्लोच (भवि)।

उल्हव सक [वि + ध्मापय्] ठंढा करना, आग को बुझाना। उल्हवइ (हे ४, ४१६)।

उल्हविय वि [दे. विध्मापित] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ (पउम २, ९६)।

उल्हसिअ वि [दे] उद्भट, उद्धत, (दे १, ११६)।

उल्हा अक [वि + ध्मा] बुझ जाना। उल्लाइ (स २८३)।

उव अ [उप] निम्न लिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ समीपता, 'उवदसिय' (पण्ण १)। २ सदृशता, तुल्यता (उत्त ३)। ३ समस्तपन (राय)। ४ एकबार। ५ भीतर (आव ४)।

उव न [उद] पानी, जल, 'पाउयदाउ च एहाणुवदाइ च' (णाया १,७—पत्र ११७)।

उवअठ वि [उपकण्ठ] समीप का, आसन्न (गउड)।

उवइट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित (आघ १८ भा, पि १७३)।

उवइण्ण वि [उपवीर्ण] सेवित (स ३९)।

उवइय वि [उपचित] १ मांसल, पुष्ट (पण्ह १, ४)। २ उन्नत (ओप)।

उवइय पुस्त्री [दे] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, दसो आवइय (जीव १ टी, पण्ण)।

उवइस सक [उप + दिश्] १ उपदेश देना, सिखाना। २ प्रतिपादन करना। उवइसइ (पि १८४)। उवइसंति (भग)।

उवउज सक [उप + युज्] उपयोग करना। कर्म उवउज्जति (विसे ४८०)। सकृ उवउज्जिऊण, उवउज्ज (पि ५८५, निचू १)।

उवउज्ज पु [दे] १ उपकार (दे १, १०८)। २ वि उपकारक (षड्)।

उवउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय्य, वाजवी। २ सावधान, अप्रमत्त (उव, उप ७७३)।

उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित (पाअ, से १, ३८, गा १३३)।

उवऊह सक [उप + गूह्] आलिङ्गन करना। उवऊहइ (प्राकृ ७८)।

उवऊहण न [उपगूहन] आलिङ्गन (से ५, ४८)।

उवऊहिअ वि [उपगूहित] आलिङ्गित (गा ९२१)।

उवएइआ स्त्री [दे] शराब परोसने का पात्र (दे १, ११८)।

उवएस पुं [उपदेश] १ शिक्षा, बोध (उव)। २ कथन, प्रतिपादन। ३ शास्त्र, सिद्धान्त (आचा, विसे ८९४)। ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह (धर्म १)।

उवएसग वि [उपदेशक] उपदेश देनेवाला, 'हिन्चाणं पुव्वसजोग, सिया किचोवएसगा' (सूअ १, १)।

उवएसण न [उपदेशन] देखो उवएस (उत्त २८, ठा ७, विसे २५८३)।

उवएसणया } स्त्री [उपदेशना] उपदेश
उवएसणा } (राज, विसे २५८३)।

उवएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट, 'सामाइयणिज्जुत्ति वोच्छ उवएसिय गुरुजणेण' (विसे १०८०, सण)।

उवओग पु [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य (पण्ण १२, ठा ४, ४, द ४)। २ ख्याल, ध्यान, सावधानी, 'त पुण सविग्गेण उवओगजुएण तिव्वसद्धाए' (पचा ८)। ३ प्रयोजन, आवश्यकता (सुपा ६४३)।

उवओगि त्रि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय, 'पत्ताइंण निमुद्धि साहेउ गिण्हए जमुवओगि' (सुपा ६४३, स ५)।

उवग पुन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग, 'एवमादी सव्वे उवगा भण्णंति' (निचू १)। २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करने-वाला ग्रन्थ, टीका, 'सगोवगाण सरहस्साण चउण्ह वेयाण' (ओप)। ३ 'ओपपातिक' सूत्र वगैरह बारह जैन ग्रन्थ (कप्प, ज, १, सूक्त ७०)।

उवगण न [उपाञ्जन] मुक्षण, मालिश (पण्ह २, १)।

उवकठ देखो उवअठ (भवि)।

उपकठ न [उपकण्ठ] समीप (सिरि ११२१)।

उवकडुअ (शो) अ [उपकृत्य] उपकार करके (प्राकृ ८८)।

उवकप्प सक [उप + क्लृप्] १ उपस्थित करना। २ करना, 'उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होंति एकट्ठा' (पचभा)। उवकप्पंति (सूअ १, ११)।

उवकप्प पु [उपकल्प] साधु को दी जाने-वाली भिक्षा, अन्नपान वगैरह (पचभा)।

उवकय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत, 'अणुवकयप-राणुग्गहपरायणा' (आव ४)।

उवकय वि [दे] सज्जित, प्रगुण, तैयार (दे १, ११९)।

उवकर देखो उवयर = उप + कृ। उवकरेउ (उवा)।

उवकर सक [अव + कृ] व्याप्त करना। भूका 'अहवा पसुणा उवकरिसु' (आचा १, ९, ३, ११)।

उवकरण देखो उवगरण (औप)।
उवकस सक [उप+कष्] प्राप्त होना, 'नारीण वसमुवकसंति' (सूअ १, ४)।
उवकसिअ वि [दे] १ सनिहित। २ परिसेवित। ३ सजित, उत्पादित (दे १, १३८)।
उवकार देखो उवगार (धर्मसं ६२० टी)।
उवकारिया देखो उवगारिया (राय ८२)।
उवकिइ } स्त्री [उपकृति] उपकार (दे ४,
उवकिदि } ३४, ८, ४५)।
उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह (ज ७)।
उवकुल पुन [उपकुल] कुल नक्षत्र के पास का नक्षत्र (सुज्ज १०, ५)।
उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक गणिका, कोशा वेश्या की छोटी बहिन (कुप्र ४५३)।
उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वेश्या (उव)।
उवक्कंत वि [उपक्रान्त] १ समीप में आनीत। २ प्रारब्ध, प्रस्तावित (विसे ९८७)।
उवक्कम सक [उप+क्रम्] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ समीप में लाना। ५ संस्कार करना। ६ अनुसरण करना, 'सीसो गुरुणो भाव जमुवक्कमए' (विसे ९२९), 'ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एयासि भावमुवक्कमामि त्ति' (महा), 'जेणोवक्कामिज्जइ समीवमाणिज्जए' (विसे २०३९), 'जएण हलकुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति से त खेत्तोवक्कमे' (अणु)। वकृ उवक्कमंत (विसे ३४१८)।
उवक्कम पुं [उपक्रम] १ आरम्भ, प्रारम्भ। २ प्राप्ति का प्रयत्न, 'सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं' (सूअ १, २, ३, १४)। ३ कर्मों के फल का अनुभव (सूअ १, ३, भग १, ४)। ४ कर्मों की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश, 'हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ' (श्राव १५, वृह ४)। ६ दूरस्थित को समीप में लाना, 'सत्थस्सोवक्कमणं उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरणं' (विसे, अणु)। ७ आयुष्य विघातक वस्तु (ठा ४, २, स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार, 'भुम्माहारच्छेए उवक्कमेण च परिणाए' (धर्म २)। ९ उपचार (स २०५)। १० ज्ञान, निश्चय। ११ अनुवर्तन, अनुकूल-प्रवृत्ति (विसे ९२९, ९३०)। १२ संस्कार, परिकर्म, 'खेत्तोवक्कमे' (अणु)।
उवक्कम पु [उपक्रम] अनुदित कर्मों को उदय में लाना (सूअनि ४७)।
उवक्कमण न [उपक्रमण] ऊपर देखो (अणु, उवर ४६, विसे ९११, ९१७, ९२१)।
उवक्कमिय वि [औपक्रमिक] उपक्रम से सम्बन्ध रखनेवाला (ठा २, ४, सम १४५, पण्ण ३५)।
उवक्काम देखो उवक्कम = उप + क्रम्। कर्म उवक्कामिज्जइ (विसे २०३९)।
उवक्काम सक [उप + क्रम्] दीर्घकाल में भोगने योग्य कर्मों को अल्प समय में ही भोगना। कर्म उवक्कामिज्जइ (धर्मसं ९६८)।
उवक्कामण न [उपक्रमण] उपक्रम कराना (श्रावक १९७)।
उवक्कामण देखो उवक्कमण (विसे २०५०)।
उवक्केस पु [उपक्लेश] १ बाधा। २ शोक (राज)।
उवक्खड सक [उप+स्कृ] १ पकाना, रसोई करना। १ पाक को मसाले से संस्कारित करना। उवक्खडेइ, उवक्खडिंति (पि ५५९)। संकृ उवक्खडेत्ता (आचा)। प्रयो उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति (पि ५५९, कप्प)। संकृ उवक्खडावेत्ता (पि ५५९)।
उवक्खड } वि [उपस्कृत] १ पकाया
उवक्खडिय } हुआ। २ मसाला वगैरह से संस्कार-युक्त पकाया हुआ (निचू ८, पि ३०६, ५५९, उत्त १२, ११)। ३ पुं रसोई, पाक, 'मणियामहाणसंसणारा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो' (उप ३५६ टी, ठा ४,२, णाया १, ८, ओघ ५४ भा)। °म वि [°म] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह, मूंग वगैरह अन्न विशेष, 'उवक्खडाम णाम जहा चणयादीणं उवक्खडियाणं जे ण सिज्झंति ते कंकडुयाम उवक्खडियाम भण्णइ' (निचू १५)।
उवक्खर पु [उपस्कर] १ संस्कार। २ जिससे संस्कार किया जाय वह (ठा ४, २)।
उवक्खर पु [उपस्कर] घर का उपकरण, साधन (सूअनि ५)।
उवक्खरण न [उपस्करण] ऊपर देखो। °साला स्त्री [°शाला] रसोई-घर, पाक-गृह (निचू ९)।
उवक्खा सक [उपा + ख्या] कहना। कर्म उवक्खाइज्जति (सूअ २, ४, १०, भग १६, ३—पत्र ७६२)।
उवक्खा स्त्री [उपाख्या] उपनाम (धर्मसं ७२७)।
उवक्खाइत्तु वि [उपख्यापयितृ] प्रसिद्धि करानेवाला, 'अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ' (सूअ २, २, २९)।
उवक्खाइया स्त्री [उपाख्यायिका] उपकथा, अवान्तर कथा (सम ११९)।
उवक्खाण न [उपाख्यान] उपाख्यान, कथा (पउम ३३, १४९)।
उवक्खित्त वि [उपक्षिप्त] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (मुद्रा ९३)।
उवक्खिव सक [उप+क्षिप्] १ स्थापन करना। २ प्रयत्न करना। ३ प्रारम्भ करना। उवक्खिव (पि ३१९)।
उवक्खीण वि [उपक्षीण] क्षय-प्राप्त (धर्मवि ४२)।
उवक्खेअ पु [उपक्षेप] १ प्रयत्न, उद्योग। २ उपाय, 'ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किदो उवक्खेओ' (मा ३९)।
उवक्खेव पु [दे उपक्षेप] बालोत्पाटन, मुण्डन (तंदु १७)।
उवग वि [उपग] १ अनुसरण करनेवाला (उप २४३, औप)। २ समीप में जानेवाला (विसे २५६५)।
उवगच्छ सक [उप + गम्] १ समीप में आना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ स्वीकार करना। उवगच्छइ (उव, स २३७)। उवगच्छंति (पि ५८२)। संकृ उवगच्छिऊण (स ४४)।
उवगणिय वि [उपगणित] गिना हुआ, सख्यात, परिगणित (स ४६१)।
उवगप्पिय वि [उपकल्पित] विरचित (स ७२१)

उवगम देखो **उवगच्छ**। सकृ **उवगम्म** (विसे ३१६६)। हेकृ **उवगतु** (निचू १६)।

उवगय वि [उपगत] १ पास आया हुआ (से १, १६, गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ (सम ८८, उप पृ ५६, सार्ध १४४)। ३ युक्त, सहित (राय)। ४ प्राप्त (भग)। ५ प्रकर्ष-प्राप्त (सम्म १)। ६ स्वीकृत, 'अज्झप्पवद्धमूला, अण्णेहि वि उवगया किरिया' (उवर ५५)। ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत,
'ज च महाकप्पसुय,
जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि।
चरणकरणाणुओगो त्ति
कालियत्थे उवगयाणि'
(विसे १२९५)।

उवगय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (स २०१)।

उवगर सक [उप + कृ] हित करना। उवगरेमि (स २०६)।

उवगरण न [उपकरण] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु (ओघ ६६६)। २ बाह्य इन्द्रिय-विशेष (विसे १६४)।

उवगरिय न [उपकृत] उपकार (कुप्र ४५)।

उवगस सक [उप + कस्] समीप आना, पास आना। सकृ **उवगसित्ता** (सूअ १, ४)। वकृ
'उवगसत भपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई, महामोह पकुव्वइ'
(सम ५०)।

उवगा सक [उप + गै] वर्णन करना, श्लाघा करना, गुणगान करना। कवकृ **उवगाइज्ज-माण, उवगिज्जमाण, उवगीयमाण** (राय, भग ६, ३३, स ६३)।

उवगार देखो **उवयार** = उपकार (सुर २, ४३)।

उवगारग वि [उपकारक] उपकार करने-वाला (स ३२१)।

उवगारि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (सुर ७, १६७)।

उवगारिया स्त्री [उपकारिका] प्रासाद आदि की पीठिका (राय ८१)।

उवगिअ न [उपकृत] १ उपकार। २ वि जिसपर उपकार किया गया हो वह (स ६३६)।

उवगिज्जमाण देखो **उवगा**।

उवगिण्ह सक [उप + ग्रह्] १ उपकार करना। २ पुष्टि करना। ३ ग्रहण करना। उवगिण्हह (पि ५१२)।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित, श्लाघित। २ न सगीत, गीत, गान, 'वाइयमुवगीय नट्टमवि सुय दिट्ठ चिट्ठमुत्तिकर' (सार्ध १०८)।

उवगीयमाण देखो **उवगा**।

उवगूढ वि [उपगूढ] १ आलिङ्गित (गा ३५१, स ४८८)। २ न आलिगन (राज)।

उवगूह सक [उप + गुह्] १ आलिगन करना। २ गुप्त रीति से रक्षण करना। ३ रचना करना, बनाना। कवकृ **उवगूहि-ज्जमाण** (णाया १, १, ओप)।

उवगूहण न [उपगूहन] १ आलिगन। २ प्रच्छन्न रक्षण। ३ रचना, निर्माण, 'आरुह-णणट्टणेहिं बालयउवगूहणेहिं च' (तदु)।

उवगूहिय वि [उपगूढ] आलिगित (आवम)।

उवगूहिय न [उपगूहित] गाढ आलिगन (पव १६६)।

उवग्ग न [उपाग्र] १ अग्र के समीप। २ आषाढ मास, 'एसो चिय कालो पुणरेव गए उवग्गम्मि' (वव १)।

उवग्गह पु [उपग्रह] १ पुष्टि, पोषण (विसे १८५०)। २ उपकार (उप ५९७ टी, स १५४)। ३ ग्रहण, उत्पादन (ओघ २१२ भा)। ४ उपधि, उपकरण, साधन (ओघ ६६६)।

उवग्गह पु [उपग्रह] सामीप्य-सम्बन्ध (धर्मस ३६३)।

उवग्गहग वि [उपग्राहक] उपकार-कारक (कुलक २३)।

उवग्गहिअ न [उपगृहीत] उपकार (तदु ५०)।

उवग्गहिअ वि [उपगृहित] १ उपस्थापित (पण्ण २३)। २ आलिगनादि चेष्टा, 'उवह-सिएहिं उवग्गहिएहिं उवसद्देहिं' (तदु)। ३ उपकृत (स १५६)। ४ उपष्टम्भित (राज)।

उवग्गहिअ देखो **ओवग्गहिअ** (पचव)।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] सम्बन्धी, सम्बन्ध रखनेवाला (स ५२)।

उवग्घाय पु [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका (विसे ९९२)।

उवघायग वि [उपघातक] विनाशक (धर्म-सं ५१२)।

उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करने-वाला (भास ८७, विसे २००८)।

उवघाइय वि [उपघातिक] १ उपघात-कारक (विसे २००९)। २ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाला, 'भूओवघाइए' (ओप)।

उवघाय पु [उपघात] १ विराधना, आघात (ओघ ७८८)। २ अशुद्धता (ठा ५)। ३ विनाश (कम्म १, ५४)। ४ उपद्रव (तदु)। ५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन (भास ५१)। °**नाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपने ही शरीर के पडजीभ, चोरदत, रसोली आदि अवयवों से क्लेश पाता है वह कर्म (सम ६७)।

उवघायण न [उपघातन] ऊपर देखो (विसे २२३)।

उवचय पु [उपचय] १ वृद्धि (भग ६, ३)। २ समूह (पिड ७, ओघ ४०७)। ३ शरीर (आव ५)। ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति (पण्ण १५)।

उवचयण न [उपचयन] १ वृद्धि। २ परिपोषण, पुष्टि (राज)।

उवचर सक [उप + चर्] १ सेवा करना। २ समीप में घूमना-फिरना। ३ आरोप करना। ४ समीप में खाना। ५ उपद्रव करना। उवचरइ, उवचरए, उवचरामो, उवचरति (बृह १, पि ३४६, ४५५, आचा)।

उवचर सक [उप + चर्] व्यवहार करना। उवचरति (पिडभा ६)।

उवचरय वि [उपचरक] १ सेवा के मिष से दूसरे के अहित करने का मोका देखने-वाला (सूअ २, २, २८)। २ पु जासूस, चर (आचा २, ३, १, ५)।

उवचरिय वि [उपचरित] कल्पित (धर्मस २४५)।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उपासित, सेवित, बहुमानित (स ३०)। २ न उपचार, सेवा (पचा ६)।

उवचि सक [उप+चि] १ इकट्ठा करना। २ पुष्ट करना। उवचिणइ, उवचिणाइ, उवचिणंति। भूका उवचिणिंसु। भवि उवचिणिस्सति (ठा २, ४, भग)। कर्म उवचिज्जइ, उवचिज्जंति (भग)।

उवचिट्ठ सक [उप+स्था] उपस्थित होना, समीप आना। उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा (पि ४६२)।

उवचिणिय देखो उवचिय (धर्मवि १०६)।

उवचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन (पण्ह १, ४ कप्प)। २ स्थापित, निवेशित (कप्प, पण्ण २)। ३ उन्नति (ओप)। ४ व्याप्त (अणु)। ५ वृद्ध, बढा हुआ (आचा)।

उवच्चगा स्त्री [उपत्यका] पर्वत के पास की नीची जमीन (ती ११)।

उवच्छंदिद (शौ) वि [उपच्छन्दित] अभ्यर्थित (अभि १७३)।

उवजंगल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १, ११६)।

उवजा अक [उप+जन] उत्पन्न होना। उवजायइ (विसे ३०२९)।

उवजाइ स्त्री [उपजाति] छन्द-विशेष (पिंग)।

उवजाइय देखो उवयाइय (श्राद्ध १६, सुपा ३५४)।

उवजाय वि [उपजात] उत्पन्न (सुपा ६००)।

उवजीव सक [उप+जीव्] आश्रय लेना। उवजीवउ (महा)।

उवजीवग वि [उपजीवक] आश्रित (सुपा ११६)।

उवजीवि वि [उपजीविन्] १ आश्रय लेनेवाला, 'न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिंगमुवजीवी' (उव)। २ उपकारक (विसे २८८६)।

उवजोइय वि [उपज्योतिष्क] १ अग्नि के समीप में रहनेवाला। २ पाक स्थान में स्थित, 'के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं' (उत्त १२, १८)।

उवज्ज अक [उत्+पद्] उत्पन्न होना। उवज्जति (सूअ १, १, ३, १६)।

उवज्जण न [उपार्जन] पैदा करना, कमाना (सुर ८, १४४)।

उवज्जिण सक [उप+अर्ज्] उपार्जन करना। उवज्जिणेमि (स ४४३)।

उवज्झय } पु [उपाध्याय] १ अध्यापक, उवज्झाय } पढानेवाल, (पउम ३९, ९०, पड्)। २ सूत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी (विसे)।

उवज्झिअय वि [दे] आकारित, बुलाया हुआ (राज)।

उवझाय देखो उवज्झाय (सिरि ७७)।

उवट्टण देखो उव्वट्टण (राज)

उवट्टणा देखो उव्वट्टणा (भग, विसे २५१७ टी)।

उवट्ठ वि [उपस्थ] एक स्थान में सतत अवस्थित (वव ४)। °काल पु [°काल] आने की वेला, अभ्यागम समय (वव ४)।

उवट्ठंभ पु [उपष्टम्भ] १ अवस्थान (भग)। २ अनुकम्पा, करुणा (ठा २)।

उवट्ठप्प वि [उपस्थाप्य] १ उपस्थित करने योग्य। २ व्रत—दीक्षा के योग्य, 'वियत्तकिच्चे मेहे य उवट्ठप्पा य आहिया' (बृह ६)।

उवट्ठव सक [उप+स्थापय्] युक्ति से सस्थापित करना। उवट्ठयति (सूअ २, १ २७)।

उवट्ठव सक [उप+स्थापय्] १ उपस्थित करना। २ व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना। उवट्ठवेइ, उवट्ठवेह (महा, उवा)। हेकृ उवट्ठवेत्तए (बृह ४)।

उवट्ठवणा स्त्री [उपस्थापना] १ चारित्रविशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा (धर्म २)। २ शिष्य में व्रत की स्थापना, 'वयट्ठवणमुवट्ठवणा' (पचभा)।

उवट्ठवणीय वि [उपस्थापनीय] देखो उवट्ठप्प (ठा ३)।

उवट्ठा सक [उप+स्था] उपस्थित होना। उवट्ठाएज्जा (भग)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] १ बैठना, उपवेशन (णाया १, १)। २ व्रत-स्थापन (महानि ७)। ३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना (वव ४)। °दोस पु [°दोष] नित्यवास दोष (वव ४)। °साला स्त्री [°शाला] आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान (णाया १, १, निर १, १)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] अनुष्ठान, आचार (सूअ १, १, ३, १४)।

उवट्ठाणा स्त्री [उपस्थाना] जिसमें जैन साधु-लोग एक बार ठहर कर फिर भी शास्त्र-निषिद्ध-अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह स्थान (वव ४)।

उवट्ठाव देखो उवट्ठव। उवट्ठावेहि (पि ४६८)। हेकृ उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए (ठा)।

उवट्ठावणा देखो उवट्ठवणा (बृह ६)।

उवट्ठिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त 'जणवादमुवट्ठिओ' (उत्त १२) २ समीप-स्थित (आव १०)। ३ तैयार, उद्यत (धर्म ३)। ४ आश्रित, निस्सत्तमुवट्ठिओ' (आउ, सूअ १, २)। ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या लेने को तैयार, 'उवट्ठिय पडिरय, सजय सुतवस्सिय। वुक्कम्म धम्माओ भसेइ, महामोह पकुव्वइ' (सम ५१)।

उवठावणा देखो उवट्ठवणा (पचा १७,३०)।

उवडहित्तु वि [उपदहितृ] जलानेवाला, 'अगणिकाएण कायमुवडहित्ता भवइ' (सूअ २, २)।

उवडिअ वि [दे] अवनत, नमा हुआ (षड्)।

उवणगर न [उपनगर] उपपुर, शाखा-नगर (औप)।

उवणच्च सक [उप+नर्त्तय्] नचाना, नाच कराना। कवकृ. उवणच्चिज्जमाण (औप)।

उवणद्ध वि [उपनद्ध] घटित (उत्तर ६१)।

उवणम सक [उप+नम्] १ उपस्थित करना, ला रखना। २ प्राप्त करना। उवणमइ (महा)। वकृ. उवणमंत (उप १३९ टी, सूअ १, २)।

उवणमिय वि [उपनमित] उपस्थापित (सण)।

उवणय वि [उपनत] उपस्थित (से १, ३६)।

उवणय पु [उपनय] १ उपसहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोडना, हेतु का पक्ष में उपसहार (पव ९६, ओघ ४४ भा)। २ स्तुति, श्लाघा (विसे १४०३ टी, पव १४०)। ३ अवान्तर नय (राज)। ४ सस्कार-विशेष, उपनयन (स २७२)।

उवणय पु [उपनय] यज्ञोपवीत संस्कार, उपहार, भेंट (राय १२७)।

उवणयण न [उपनयन] १ उपसंहार (वव १)। २ उपस्थापन (पिंड ८८१)।

उवणयण न [उपनयन] उपनीत-संस्कार, यज्ञ-सूत्र धारण संस्कार (पण्ह १, २)।

उवणिअ देखो उवणीय (से ४, ५५)।

उवणिक्खित्त वि [उपनिक्षिप्त] व्यवस्थापित (आचा २)।

उवणिक्खेव पु [उपनिक्षेप] धरोहर, रक्षा के लिए दूसरे के पास रखा धन (वव ८)।

उवणिग्गम पु [उपनिर्गम] १ द्वार दरवाजा (से १२, ६८)। २ उपवन, बगीचा (गउड)।

उवणिग्गय वि [उपनिर्गत] समीप में निकला हुआ (आप)।

उवणिज्जंत देखो उवणी।

उवणिमंत सक [उपनि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना। भवि उवणिमंतेहिंति (ओप)। संकृ उवणिमंतिऊण (स २०)।

उवणिमंतण न [उपनिमन्त्रण] निमन्त्रण (भग ८, ६)।

उवणिवाय पु [उपनिपात] सम्बन्ध (धर्मसं ४५८)।

उवणिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीप-स्थित (राय)।

उवणिसआ स्त्री [उपनिषद्] वेदान्त शास्त्र, वेदान्त-रहस्य, ब्रह्म-विद्या (अच्चु ८)।

उवणिहा स्त्री [उपनिधा] मार्गण, मार्गणा (पंचभा)।

उवणिहि पुस्त्री [उपनिधि] १ समीप में आनीत, धरोहर (ठा ०)। २ विरचना, निर्माण (अणु)।

उवणिहि पुस्त्री [उपनिधि] उपस्थापन, अमानत (अणु ५०)।

उवणिहिअ वि [औपनिधिक] १ उपनिधि-सम्बन्धी। °आ स्त्री [°की] क्रम-विशेष (अणु ०२)।

उवणिहिय वि [उपनिहित] १ समीप में स्थापित। २ आसन्न-स्थित (सूअ २, २)। °य पु [°क] नियम विशेष को धारण करनेवाला भिक्षु (सूअ २, २)।

उवणी सक [उप + नी] १ समीप में लाना, उपस्थित करना। २ अर्पण करना। ३ इकट्ठा करना। उवणेति (उवा), उवणेमो। भवि उवणेहिइ (पि ५५५, ४७८, ५२१)। कवकृ उवणिज्जंत (से ११, ५३)। संकृ 'से भिक्खुणो उवणेत्ता अणेगे' (सूअ २, ६, १)।

उवणीअ न [उपनीत] उपनयन (अणु २१७)। °वयण न [°वचन] प्रशंसा-वचन (आचा २, ४, १, १)।

उवणीय वि [उपनीत] १ समीप में लाया हुआ (पाअ; महा)। २ अर्पित, उपढौकित (आप)। ३ उपनययुक्त, उपसंहृत (विसे ९९९ टी; अणु)। ४ प्रशस्त, श्लाघित (आचा २)। °चरय पु [°चरक] अभिग्रह विशेष को धारण करनेवाला साधु (ओप)।

उवण्णत्थ वि [उपन्यस्त] उपन्यस्त, उपढौकित, 'गुव्विणीए उवण्णत्थं विविहं पाणभोअणं। भुंजमाणं विवज्जिज्जा' (दस ५ ३९)।

उवण्णास पु [उपन्यास] १ वाक्योपक्रम, प्रस्तावना (ठा ४)। २ दृष्टान्त विशेष (दस १)। ३ रचना (अभि ९८)। ४ छल प्रयोग (प्रयो २२)।

उवतल न [उपतल] हस्त-तल की चारों ओर का पार्श्वभाग (निचू १)।

उवताव पुं [उपताप] सन्ताप, पीडा (सूअ १, ३)।

उवताविय वि [उपतापित] १ पीडित। २ तप्त किया हुआ, गरम किया हुआ (सुर २, २२६, सण)।

उवत्त वि [उपात्त] गृहीत (पउम २६, ४६, सुर १८, १६०)।

उवत्थड वि [उपस्तृत] ऊपर-ऊपर आच्छादित (भग)।

उवत्थाण देखो उवट्ठाण (दसनि ४, ५५)।

उवत्थाणा देखो उवट्ठाणा (पि ३४१)।

उवत्थिय देखो उवट्ठिय (सम १७)।

उवत्थु सक [उप + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना। उवत्थुणति (पि ४९४)। उवत्थुवदि (शौ) (उत्तर २२)।

उवदंस सक [उप + दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। उवदंसइ (कप्प, महा)। उवदंसेमि (विपा १, १)। भवि उवदंसिस्सामि (महा)। वकृ उवदंसेमाण (उवा)। कवकृ उवदंसिज्जमाण (णाया १, १३)। संकृ उवदंसिय (आचा २)।

उवदंस पु [उपदंश] १ रोग विशेष, गर्मी, सुजाक। २ अवलेह, चाटना (चारु ६)।

उवदंसण न [उपदर्शन] दिखलाना (सण)। °कूड पु [°कूट] नीलवंत नामक पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)।

उवदंसिय वि [उपदर्शित] दिखलाया हुआ (सुपा ३११)।

उवदंसिर वि [उपदर्शिन्] दिखलानेवाला (सण)।

उवदंसेत्तु वि [उपदर्शयितृ] दिखलानेवाला (पि ३९०)।

उवदव पु [उपद्रव] ऊधम, बखेड़ा (महा)।

उवदा स्त्री [उपदा] भेंट, उपहार (रंभा)।

उवदाई स्त्री [उदकदायिका] पानी देनेवाली 'पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति' (णाया १, ७)।

उवदाण न [उपदान] भेंट, नजराना (भवि)

उवदिस सक [उप + दिश्] उपदेश देना। उवदिसइ (कप्प)।

उवदीव न [दे] द्वीपान्तर, अन्य द्वीप (दे १, १०६)।

उवदेसग वि [उपदेशक] व्याख्याता (ओप)।

उवदेसणया देखो उवएसणया (विसे २६, १६)।

उवदेसि वि [उपदेशिन्] उपदेशक (चारु ४)।

उवदेही स्त्री [उपदेहिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष दीमक (दे १, ९३)।

उवद्दव सक [उप + द्रु] उपद्रव करना, ऊधम मचाना। भवि उवद्दविस्सइ (महा)।

उवद्दव देखो उवदव (ठा ५)।

उवद्दवण न [उपद्रवण] उपद्रव करना, उपसर्ग करना (धर्म ३)।

उवद्दविय वि [उपद्रुत] पीडित, भय-भीत किया हुआ (आव ४; विवे ७६)।

उवद्दुअ वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ (भत १०५)।

उवधाउ पुं [उपधातु] निकृष्ट धातु (सबोध ५३)।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] अवग्रह-ज्ञान (णदि १७४)।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] धारणा, धारण करना (ठा ८)।

उवधारिय वि [उपधारित] धारण किया हुआ (भग)।

उवनंद पुं [उपनन्द] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)।

उवनंद सक [उप + नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ उवनंदिज्जमाण (कप्प)।

उवनगर देखो उवनयर (गुउ २, १३)।

उवनयर देखो उवणयर (सुपा ३५१)।

उवनिक्खित्त देखो उवणिक्खित्त (कस)।

उवनिक्खेव सक [उपनि + क्षेपय्] १ धरोहर रखना। २ स्थापन करना। कृ उव-निक्खेवियव्व (कस)।

उवनिग्गय देखो उवणिग्गय (णाया १, १)।

उवनिबंधण न [उपनिबन्धन] १ सबन्ध। २ वि. सबन्ध-हेतु (निसे १६३६)।

उवनिमंत देखो उवणिमंत। उवनिमंतेइ, उवनिमंतेमि (कस, उवा)।

उवनिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीपस्थित (राय २७)।

उवनिहिय वि [औपनिधिक] देखो उवणि-हिय (पण्ह २, १)।

उवन्नत्थ वि [उपन्यस्त] स्थापित (स ३१०)।

उवन्नास पु [उपन्यास] निवेदन (दसनि १, ८२)।

उवप्पदाण } न [उपप्रदान] नीति-विशेष, उवप्पयाण } दान-नीति, अभिमत अर्थ का दान (विपा १, ३, णाया १, १)।

उवप्पुय वि [उपप्लुत] उपद्रुत, भय से व्याप्त (राज)।

उवभुंज सक [उप+भुज्] उपभोग करना, काम में लाना। उवभुंजइ (पड्)। वकृ उवभुंजंत (उप पृ १८०)। कवकृ उवभु-ज्जंत, उवभुज्जंत (से ९,१०, सुर ८,१६१)। सकृ- उवभुंजिऊण (महा)।

उवभुंजण न [उपभोजन] उपभोग (सुपा १६)।

उवभुत्त वि [उपभुक्त] १ जिसका उपभोग किया हो वह (वव ३)। २ अधिकृत (उप पृ १२४)।

उवभोअ } पु [उपभोग] १ भोजनातिरिक्त उवभोग } भोग, जिसका फिर फिर भोग किया जाय वे—वस्त्र-गृहादि, 'उवभोगो उ पुणो पुणो उवभुज्जइ भवणवलयाई' (उत्त ३३, अभि ३१)। २ जिसका एक बार भोग किया जाय वह, अशन, पान वगैरह (भग ७, २, पडि)।

उवभोग पु [उपभोग] १ एक बार भोग, आसेवन। २ अन्तरग भोग (श्रावक २८४)। ३ धारण करना (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

उवभोग्ग } वि [उपभोग्य] उपभोग-योग्य उवभोज्ज } (राज, वृह ३)।

उवमा स्त्री [उपमा] १ सादृश्य, दृष्टान्त (अणु, उव, प्रासू १२०)। २ सत्य (ठा १०)। ३ खाद्य-पदार्थ विशेष (जीव ३)। ४ 'प्रश्नव्या करण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन (ठा १०)। ५ अलङ्कार-विशेष (विसे ९९९ टी)। ६ प्रमाण-विशेष, उपमान-प्रमाण (विसे ४७०)।

उवमाण न [उपमान] १ दृष्टान्त, सादृश्य। २ जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह (दसनि १)। प्रमाण-विशेष (सूअ १, १२)।

उवमालिय वि [उपमालित] विभूषित, सुशोभित,

'अमलामयपडिपुन्नं, कुवलयमालोवमालियमुहं च।
कणयमयपुण्णकलसं, विलसंतं पासए पुरओ'
(सुपा ३४)।

उवमिय वि [उपमित] १ जिसको उपमा दी गई हो वह। २ जिसकी उपमा दी गई हो वह (आवम)। ३ न उपमा, सादृश्य (विसे ६८५)।

उवमेअ वि [उपमेय] उपमा के योग्य (मै ७३)।

उवय पु [दे] हाथी को पकडने का गड्ढा (पाअ)।

उवय देखो ओवय। वकृ उवयंत (कप्प)।

उवय (अप) देखो उदय (भवि)।

उवयर सक [उव + कृ] उपकार करना, हित करना। उवयरेइ (सण)। कृ. उवयरियव्व (सुपा ५६४)।

उवयर सक [उप + चर्] १ आरोप करना। २ भक्ति करना। ३ कल्पना करना ४ चिकि-त्सा करना। कवकृ. उवयरिज्जंत (सुपा ५७)।

उवयरण न [उपकरण] साधन, सामग्री, 'माए घरोवअरणं अज्ज हु णत्थि त्ति साहिअं तुमए' (काप्र २६, गउड)। २ उपकार (सत्त ४१ टी)।

उवयरिय वि [उपकृत] १ उपकृत। २ उप-कार (वज्जा १०)।

उवयरिय वि [उपचरित] आरोपित (विसे २८३)।

उवयरिया स्त्री [उपचारिका] दासी (उप पृ ३८७)।

उवया सक [उप + या] समीप में जाना। उवयाइ (सूअ १, ४, १, २७)। उवयंति (विसे १४६)।

उवयाइय वि [उपयाचित] १ प्रार्थित, अभ्य-र्थित। २ न मनौती, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक सकल्प (ठा १०, णाया १,८)।

उवयाण न [उपयान] समीप में गमन (सूअ १, २)।

उवयार पुं [उपकार] भलाई, हित (उव, गउड, वज्जा ५८)।

उवयार पु [उपचार] १ पूजा, सेवा, आदर, भक्ति (स ३२, प्रति ४)। २ चिकित्सा, शुश्रूषा (पंचा ६)। ३ लक्षणा, शब्द-शक्ति-विशेष, अध्यारोप, 'जो तेसु धम्मसद्दो सो उवयारेण, निच्छएण इह' (दसनि १)। ४ व्यवहार, 'णिउणणजुत्तोवयारकुसला' (विपा १, २)। ५ कल्पना, 'उवयारओ खिन्नस्स विणि-गमणं सव्वओ नत्थि' (विसे)। ६ आदेश (आवभ)।

उवयारग वि [उपचारक] सेवा-शुश्रूषा करने-वाला (निचू ११)।

उवयारण न [उपकारण] अन्य-द्वारा उपकार करना, 'उवयारणपारणासु विणओ पउजि-यव्वो' (पण्ह २, ३)।

उवयारय वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (धम्म ८ टी)।
उवयारि वि [उपकारिन्] उपकारक (स २०८, विक २३, विवे ७६)।
उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से संबन्ध रखनेवाला (उवर ३४)।
उवयालि पु [उपजालि] १ एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)। २ राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तरविमान मे देव गति प्राप्त की थी (अनु १)।
उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति (विसे २१७७, २६८०, सम ४४)।
उवरज सक [उप + रञ्ज्] ग्रस्त करना। कर्म उवरज्जदि (शौ) (मुद्रा ५८)।
उवरग देखो ओअरय, 'उवरगपविट्ठाए कणगमंजरीए निरूवणत्थं दारदेसट्ठिएण दिट्ठं त पुव्ववण्णियचेट्ठियं' (महा)।
उवरत्त वि [उपरक्त] १ अनुरक्त, राग युक्त, 'कुमरगुणेसुवरत्ता' (सुपा २५६)। २ राहु से ग्रसित (पाअ)। ३ म्लान (स ४७३)।
उवरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना, विरत होना, 'भो उवरमसु एयाओ असुभज्झवसाणाओ' (महा)।
उवरम पु [उपरम] १ निवृत्ति, विराम, (उप पृ ६३)। २ नाश (विसे ६२)।
उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त (आचा, सुपा ५०८)। २ मृत (स १०४)।
उवरय देखो उवरग, 'उवरयगया दार पिहिऊण किंपि सुणमुणती चिट्ठइ' (महा)।
उवरल (अप) देखो उव्वरिय [दे] (पिंग)।
उवराग } पु [उपराग] सूर्य या चन्द्र का
उवराय } ग्रहण, राहु-ग्रहण (पण्ह, १, २, से ३, ३६, गउड)।
उवराय पु [उपरात्र] दिन, 'राओवराय अपडिन्ने अन्नगिलाय एगया भुजे' (आचा)।
उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व (उव)। °भासा स्त्री [°भाषा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना (पडि)। °म, °मग, °मय, °ल्ल वि [°तन] ऊपर का, ऊर्ध्व-स्थित (सम ४३, सुपा ३५, भग, हे २, १६३, सम २२, ८६)। °हुत्त वि [°अभिमुख] ऊपर की तरफ (सुपा २६६)।
उवरिं ऊपर देखो (कुमा)।
उवरितण देखो उवरि-म (धर्मवि १५१)।
उवरुंध सक [उप + रुध्] १ अटकाव करना। २ अड़चन डालना। ३ प्रतिबन्ध करना, रोकना। कर्म उवरुज्झइ, उवरुंधिज्जइ, (हे ४, २४८)।
उवरुद्द पु [उपरुद्र] नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति, 'रुद्दोवरुद्द काले अ, महाकाले त्ति यावरे' (सम २८), 'भंजंति अंगमंगाणि, ऊरुबाहूसिराणि करचरणा। कप्पेंति कप्पणीहिं, उवरुद्दा पावकम्मरया'

(सूअ १, ५)।
उवरुद्ध वि [उपरुद्ध] १ रक्षित। २ प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, 'पासत्थपमुहचोरोवरुद्धधणभव्वसत्थाण' (सार्ध ६८, उप पृ ३८५)।
उवरोह सक [उप + रोधय्] अड़चन डालना। कृ उवरोहणीय (सुख १, ४०)।
उवरोह पु [उपरोध] १ अड़चन, बाधा (विसे १४१३, स ३१६), 'भूओवरोहरहिए' (आव ४)। २ अटकाव, प्रतिबन्ध (बृह १, स १५)। ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन, 'उवरोहभया कीरइ सप्परिखो पुरवरस्स पागारो' (बृह ३)। ४ निर्बन्ध, आग्रह (स ४५८)।
उवरोहिअ वि [उपरोधित] जिसको उपरोध —निर्बन्ध किया गया हो वह (कुप्र १३५, ४०६)।
उवरोहि वि [उपरोधिन्] उपरोध करनेवाला (आव ४)।
उवल पु [उपल] १ पाषाण, पत्थर (प्रासू १७५)। २ टाँकी वगैरह को संस्कृत करनेवाला पाषाण-विशेष (पण्ण १)।
उवलम्बण पु [उपलम्बन] साँकल (सिकड) वाला एक प्रकार का दीपक (अनु)।
उवलभ सक [उप + लभ्] १ प्राप्त करना। २ जानना। ३ उलाहना देना। कर्म उवलभिज्जइ (पि ५४१)। वकृ उवलभेमाण (णाया १, १८)।
उवलभ पु [उपलम्भ] १ लाभ, प्राप्ति (सुपा ६)। २ ज्ञान (स ६५१)। ३ उलाहना, 'एव वहूवलंभे' (उप ६४८ टी)।
उवलंभ देखो उवालभ = उपालम्भ, 'उवलंभम्मि मिगावई नाहियवाई नि वत्तव्वे' (दमनि १, ७८)।
उवलभण न [उपलम्भन] प्राप्ति (गुदि २१०)।
उवलभणा स्त्री [उपलम्भना] उलाहना, 'धण्णा मन्नयवाए वहूहि खेज्जणाहि य रुटणाहि य उवलभणाहि य तेज्जमाणा य र्टमाणा य उवलभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेंति' (णाया १, १८)।
उवलक्ख सक [उप + लक्षय्] जानना, पहिचानना। उवलक्खेइ (महा)। संकृ. उवलक्खेऊण (महा)। कृ उवलक्खियव्व (उप पृ ७)।
उवलक्ख पु [उपलक्ष] ज्ञान, खबर, मालूम, 'खित्ताइ अणुवलक्ख रयणाइ स्वसगहणम्मि' (कुप्र ३२६)।
उवलक्खण न [उपलक्षण] १ पहिचान (सुपा ६१)। २ अन्यार्थ-बोधक संकेत (श्रा ३०)।
उवलक्खिअ वि [उपलक्षित] १ पहिचाना हुआ, परिचित (श्रा १२)।
उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ, लग्न, 'पउमिणिपत्तोवलग्गजलबिंदुनिचयचित्त' (वप्प, भवि)।
उवलद्ध वि [उपलब्ध] १ प्राप्त। २ विज्ञात, 'जइ सव्व उवलद्ध, जइ अप्पा भाविओ उवसमेण' (उव, णाया १, १३, १४)। ३ उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह (उप ७२८ टी)।
उवलद्धि स्त्री [उपलब्धि] १ प्राप्ति, लाभ। २ ज्ञान (विसे २०६)।
उवलद्धिय देखो उवलद्ध, 'सत्तरत्तछुहियस्स मे भक्खमुवलद्धियं, ता तुमं भक्खिस्स' (कुप्र ५६)।
उवलद्धु वि [उपलब्धृ] ग्रहण करनेवाला, जाननेवाला (विसे ६२)।

उवलभ देखो उवलभ = उप + लभ्। वकृ उवलभंत (पि ४५७)। सकृ उवलब्भ (पि ५९०)।

उवलभत्ता } स्त्री [दे] वलय, कङ्कन
उवलयभग्गा } (दे १, १२०)।

उवलल अक [उप + लल्] क्रीडा करना, विलास करना। कवकृ उवललंत (महा)। प्रयो, वकृ उवलालिज्जमाण (णाया १,१)।

उवललय न [दे] सुरत, मैथुन (दे १, ११७)।

उवललिय न [उपललित] क्रीडा-विशेष (णाया १, ६)।

उवलह देखो उवलभ = उप + लभ्। संकृ. उवलहिय (स ३२), उवलहिऊण (स ६१०)।

उवला सक [उप + ला] १ ग्रहण करना। २ आश्रय करना। हेकृ उवलाउ (वव १)।

उवलि देखो उवल्लि। उवलिइज्जा (आचा २, ३, १, २)।

उवलिप सक [उप + लिप्] लीपना, पोतना। भवि उवलिंपिहिइ (पि ५४६)।

उवलिप सक [उप + लिप्] चुम्बन करना, 'वलाए जो उ मीसाए जीहाए उवलिपए' (गच्छ १,११६)।

उवलित्त वि [उपलिप्त] लीपा हुआ, पोता हुआ (णाया १, १)।

उवलीण देखो उवल्लीण।

उवलुअ वि [दे] सलज्ज, लज्जा-युक्त (दे १, १०७)।

उवलेव पु [उपलेप] १ लेपना। २ कर्म-बन्ध (ओघ)। ३ संश्लेष (आचा)। ४ आश्लेष (सूअ १, १, २)।

उवलेवण न [उपलेपन] ऊपर देखो (भग ११. ६, निचू १, औप)।

उवलेविय वि [उपलेपित] लीपा हुआ, पोता हुआ (कप्प)।

उवलोभ सक [उप + लोभय्] लालच देना, लोभ दिखाना। सकृ उवलोभेऊण (महा)।

उवलोहिय वि [उपलोभित] जिसको लालच दी गई हो वह (उप ७२८ टी)।

उवल्लि सक [उप + ली] १ रहना, स्थिति करना। २ आश्रय करना। उवल्लियइ (पि १९६, ४७४), 'तओ सजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा' (आचा २, ३, १, १, २)।

उवल्लीण वि [उपलीन] १ स्थित। २ प्रच्छन्न-स्थित 'उवल्लीणा मेहुणधम्म विण्णवेंति' (आचा २)।

उववइ पु [उपपति] जार (धर्मवि १२८)।

उववज्ज अक [उप + पद्] १ उत्पन्न होना। २ संगत होना युक्त होना। उवजइ, भवि उववज्जिहिइ (भग, महा)। वकृ उववज्ज-माण (ठा ४)। सकृ। उववज्जित्ता (भग १७, ६)। हेकृ उववज्जिउ (सूअ २,१)।

उववज्जण न [उपवर्जन] त्याग, 'असमंजसो-ववज्जणमिह जायइ सव्वमगवायाओ' (सुपा ४७१)।

उववज्जमाण देखो उववाय = उप+वादय्।

उववज्झ वि [उपवाह्य] राज आदि का वल्लभ —प्रधान, सेनापति आदि (दस ६, २, ५)।

उववज्झ वि [औपवाह्य] प्रधान आदि का, प्रधान आदि को बैठने योग्य (दस ६, २,५)।

उववट्ट अक [उप + वृत्] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना। उववट्टइ (भग)। वकृ. उववट्टमाण (भग)।

उववण न [उपवन] बगीचा (णाया १, १, गउड)।

उववण्ण वि [उपपन्न] १ उत्पन्न, 'उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि' (उत्त ६)। २ संगत, युक्त (पंचा ६, उवर ४७)। ३ प्रेरित, 'उववण्णो पावकम्मुणा' (उत्त १६)। ४ न. उत्पत्ति, जन्म (भग १४,१)।

उववत्ति स्त्री [उपपत्ति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा २)। २ युक्ति, न्याय (पउम २, ११७, उवर ४६)। ३ विषय। ४ संभव, 'विसउ त्ति वा संभउ त्ति वा उवव त्ति त्ति वा एगट्ठा' (आचू १)।

उववत्तु वि [उपपत्तृ] उत्पन्न होनेवाला, 'देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' (औप, ठा ८)।

उववन्न देखो उववण्ण (भग, ठा २, २, स १५८, १६२)।

उववयण न [उपपतन] देखो उववाय = उपपात, 'उववयण उववाओ' (पंचभा)।

उववसण न [उपवसन] उपवास (सुपा ६१६)।

उववाइय वि [औपपादिक, औपपातिक] १ उत्पन्न होनेवाला, 'अत्थि मे आया उव-वाइए, नत्थि मे आया उववाइए' (आचा)। २ देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होनेवाला (पण्ह १, ४)।

उववाय सक [उप + पादय्] संपादन करना, सिद्ध करना। उववायए (उत्त १, ४३, दस ८, ३३)।

उववाय पु [उप + वादय्] वाद्य बजाना। कवकृ उपवज्जमाण, उववज्जमाण (कप्प, राज)।

उववाय पु [उपपात] १ देव या नारक जीव की उत्पत्ति—जन्म (कप्प)। २ सेवा, आदर, 'आणोववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति' (भग ३,३)। ३ विनय। ४ आज्ञा, 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा' (वव ४)। ५ प्रादुर्भाव (पण्ण १६)। ६ उपसंपादन, संप्राप्ति (निचू ५)। °कप्प पु [°कल्प] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रह कर संविग्न विहार की संप्राप्ति (पंचभा)। °य वि [°ज] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव (आचा)।

उववास पुन [उपवास] उपवास, अनाहार, दिन-रात भोजनादि का अभाव (उवा, महा)।

उववासि वि [उपवासिन्] जिसने उपवास किया हो वह (पउम ३३, ५१, सुपा ४७८)।

उववासिय वि [उपवासित] उपवास किया हुआ (भवि)।

उवविअ देखो उववीअ, 'सव्वगं जुव्वणो च (? व) विअो' (धर्मवि ८)।

उवविट्ठ वि [उपविष्ट] बैठा हुआ, निषण्ण (श्रावम)।

उवविणिग्गय वि [उपविनिर्गत] सतत निर्गत (जीव ३)।

उवविस अक [उप + विश्] बैठना। उव-विसइ (महा)। सकृ उवविसिअ (अभि ३८)।

उवविसण न [उपवेशन] बैठना (कुलक ७)।

उववीअ न [उपवीत] १ यज्ञसूत्र, जनेऊ

(णाया १,१६, गउड)। २ वि उहित, युक्त, 'गुणसयओववीओ' (विसे ३४११)।

उववीढ अ [उपपीड] उपमर्दन, 'मिविणो-ववीड आलिंगणेण गाढ पीडिओ' (रंभा)।

उववूह सक [उप + वृह्] १ पुष्ट करना। २ प्रशंसा करना, तारीफ करना। संकृ उववूहिऊण (दमनि ३)। कृ उववूहेयव्व (दसनि ३)।

उववूहण न [उपबृंहण] १ वृद्धि, पोषण (पउड २,१)। २ प्रशंसा, श्लाघा (पचा २)।

उववूहा स्त्री [उपबृंहा] ऊपर देखो 'उववूह-निरीकणो वच्छल्लपभावणे गट्ठ' (पडि)।

उववूहणिज्ज वि [उपबृंहणीय] पुष्टि-कर्त्ता (निचू ८)। स्त्री पट्ट-विशेष, राजा वगैरह के भोजन-समय मे उपभोग मे आनेवाला पट्टा (निचू ६)।

उववूहिय वि [उपबृंहित] १ वृद्धि को प्राप्त, पुष्ट (स १५)। २ प्रशंसित (उप पृ ३८६)।

उववूहिर वि [उपबृंहिन] १ पोषक, पुष्टि-कारक। २ प्रशंसक (सण)।

उववेय वि [उपेत] युक्त, सहित (णाया १, १, ओप वसु, सुर १, ३४, विसे ६६६)।

उवसंकम सक [उपस + क्रम्] समीप आना। वकृ उवसंकमत (दस ५, २, १०)।

उवसंखड सक [उपस + कृ] रांधना, पकाना। कवकृ उवसंखडिज्जमाण (आचा २, १ ८, २)।

उवसंखा स्त्री [उपसंख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान (सूअ १, १२)।

उवसंगह सक [उपस + ग्रह्] उपकार करना। कर्म उवसंगहिज्जइ (स १६१)।

उवसंघर सक [उपस + हृ] उपसंहार करना। उवसंघरमि (भवि)।

उवसंघरिय देखो उवसंहरिय (भवि)।

उवसंचिय वि [उपसंहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित (विसे १०१७)।

उवसंचि सक [उपस + चि] संचय करना। संकृ उवसंचिवि (सण)।

उवसंठिय वि [उपसंस्थित] १ समीप मे स्थित। २ उपस्थित (सण)।

उवसंत वि [उपशान्त] १ क्रोधादि विकार-रहित (सूअ १, ६, धर्म ३)। २ नष्ट, अपगत, 'उवसंतरय करेइ' (राय)। ३ पु ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-ख्यात एक तीर्थङ्कर-देव (पव ७)। °मोह पु [°मोह] ग्यारहवाँ गुण-स्थानक (सम २६)।

उवसंति स्त्री [उपशान्ति] उपशम (आचा)।

उवसंवारिय वि [उपसंवारित] सकम्पित (निचू १)।

उवसंपज्ज [उपस + पद्] १ समीप मे जाना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उवसंपज्जइ (स १६१)। वकृ उवसंपज्जंत (वव १)। संकृ उवसंपज्जित्ता, उवसंपज्जि-त्ताण (कप्प, उवा)। हेकृ उवसंपज्जिउ (वृह १)।

उवसंपण्ण वि [उपसंपन्न] १ प्राप्त। २ समीप-गत (धर्म ३)।

उवसंपया स्त्री [उपसंपद्] १ ज्ञान वगैरह की प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना (धर्म ३)। २ अन्य गुरु आदि की सत्ता का स्वीकार करना (ठा ३, ३)। ३ लाभ, प्राप्ति (उत्त २६)।

उवसंहर सक [उपस + हृ] १ हटाना, दूर करना। २ सकेलना, समेटना 'ता उवसंहर इम कोवं' (कुप्र २८०)। संकृ 'उवसंहरिउ नीसेसदेवमाय गओ जाव' (धर्मवि १८)।

उवसंहरिय वि [उपसंहृत] समेटा हुआ, 'वत्तरेण य उवसंहरिया माया' (महा)।

उवसंहार पुं [उपसंहार] संकोचन, समेट (द्रव्य १०)।

उवसहार पु [उपसंहार] १ समाप्ति। २ उपनय (श्रा ३६)।

उवसग्ग पु [उपसर्ग] १ उपद्रव, बाधा (ठा १०)। २ अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व मे जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है (पण्ह २, २)।

उवसग्ग वि [दे] मन्द, आलसी (दे १, ११३)।

उवसग्गिअ वि [उपसर्गित] हैरान किया हुआ (सिरि ११८७)।

उवसज्ज अक [उप + सृज्] आश्रय करना। उवसज्जिज्जा (आचा २, ८, १)।

उवसज्जण न [उपसर्जन] १ अप्रधान, गौण (विसे २२६२)। २ सम्बन्ध (विसे ३००५)।

उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष आसक्तिवाला (उत्त ३०)।

उवसद्द पु [उपशब्द] सुरत-समय का शब्द (तंदु)।

उवसद्द पुंन [उपशब्द] १ प्रच्छन्न शब्द। २ समीप का शब्द (तंदु ५०)।

उवसप्प सक [उप + सृप्] समीप जाना। संकृ उवसप्पिऊण (महा, स ५२६)।

उवसप्पि वि [उपसर्पिन] समीप मे जाने-वाला (भवि)।

उवसप्पिय वि [उपसर्पित] पास गया हुआ (पाअ)।

उवसम पु [उप + शम्] १ क्रोध-रहित होना। २ शान्त होना, ठंडा होना। ३ नष्ट होना। उवसमइ (कप्प, कम, महा)। कृ उवसमियव्व (कप्प)। प्रयो उवसमेइ (विसे १२८४), उवसमावेइ (पि ५५२)। कृ उव-समावियव्व (कप्प)।

उवसम पु [उपशम] १ क्रोध का अभाव, क्षमा (आचा)। २ इन्द्रिय-निग्रह (धर्म ३)। ३ पन्द्रहवाँ दिवस (चंद १०)। ४ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। °सम्म न [°सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष (भग)।

उवसमणा स्त्री [उपशमना] आत्मिक प्रयत्न-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाए जाय वह (पंच)।

उवसमि वि [उपशमिन्] उपशमवाला (विसे ५३० टी)।

उवसमिअ पु [औपशमिक] कर्मों का उप-शम (अणु ११३)।

उवसमिय वि [उपशमित] उपशम-प्राप्त (भवि)।

उवसमिय वि [औपशमिक] १ उपशम से होनेवाला। २ उपशम से सबन्ध रखनेवाला (सुपा ६४८)।

उवसाम सक [उप + शमय्] १ शान्त करना। २ रहित करना। उवसामेइ (भग)। वकृ उवसामेमाण (राज)। कृ उवसामि-यव्व (कप्प)। संकृ उवसामइत्तु (पंच)।

उवसाम पु [उपशम] उपशान्ति (निरि २३५)।

उवसाम देखो उवसम (विसे १३०६)।

उवसामग वि [उपशमक] १ क्रोधादि को उपशान्त करनेवाला (विसे ५२६, श्रा ४)। २ उपशमसे संबन्ध रखनेवाला, 'उवसामग-सेढिगयस्स होइ उवसामगं तु सम्मत्तं' (विसे २७३५)।

उवसामण न [उपशमन] उपशान्ति, उपशम (स ४६९)।

उवसामणया स्त्री [उपशमना] उपशम (ठा ८)।

उवसामय देखो उवसामग (सम २६, विसे १३०२)।

उवसामिय वि [औपशमिक] १ उपशम-संबन्धी। २ पु भाव-विशेष, मोहोवसमस-हावो, सव्वो उवसामिओ भावो' (विसे ३४-९८)। ३ न सम्यक्त्व-विशेष (विसे ५२९)।

उवसामिय वि [उपशमित] शान्त किया हुआ (वव १)।

उवसाह सक [उप + कथ्] कहना। उव-साहइ (सण)।

उवसाहण वि [उपसाधन] निष्पादक (सण)।

उवसाहिय वि [उपसाधित] तैयार किया हुआ (पउम ३८, ८, सण)।

उवसित्त वि [उपसिक्त] सिक्त, छिड़का हुआ (रंभा)।

उवसिलोअ सक [उपश्लोकय्] वर्णन करना, प्रशंसा करना। कृ उवसिलोअइदव्व (शौ) (मुद्रा १६८)।

उवसुत्त वि [उपसुप्त] सोया हुआ (से १५, ११)।

उवसुद्ध वि [उपशुद्ध] निर्दोष (सूअ १, ६)।

उवसूइय वि [उपसूचित] संसूचित (सण)।

उवसेर वि [दे] रति योग्य (दे १, १०४)।

उवसेवण न [उपसेवन] सेवा, परिचय (पव ६)।

उवसेवय वि [उपसेवक] सेवा करनेवाला, भक्त (भवि)।

उवसोभ अक [उप + शुभ्] शोभना, विरा-जना। वकृ उवसोभमाण, उवसोभेमाण (भग, णाया १, १)।

उवसोभिय वि [उपशोभित] सुशोभित, विराजित (औप)।

उवसोहा स्त्री [उपशोभा] शोभा, विभूषा (सुर ३, १०४)।

उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ (णाया १, १)।

उवसोहिय देखो उवसोभिय (सुपा ५, भवि, सार्ध ६६)।

उवस्सग्ग देखो उवसग्ग (कम्म)।

उवस्सय पु [उपाश्रय] जैन साधुओं के निवास करने का स्थान (सम १८८, ओघ १७ भा, उप ६४८ टी)।

उवस्सा स्त्री [उपाश्रा] द्वेष (वव १)।

उवस्सिय वि [उपाश्रित] १ द्वेषी (वव १)। २ अङ्गीकृत। ३ समीप में स्थित। ४ न द्वेष (राज)।

उवस्सुदि स्त्री [उपश्रुति] प्रश्न-फल को जानने के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम वाक्य (हास्य १३०)।

उवह स [उभय] दोनों, युगल (कुमा, हे २, १३८)।

उवह अ [दे] देखो' अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (षड्)।

उवहट्ट सक [समा + रभ्] शुरू करना, आरम्भ करना। उवहट्टइ (षड्)।

उवहड वि [उपहृत] १ उपढौकित, उपस्था-पित (राज)। २ भोजन स्थान में अर्पित भोजन (ठा ३, ३)।

उवहण सक [उप + हन्] १ विनाश करना। २ आघात पहुँचाना। उवहणइ (उव)। कर्म उवहम्मइ (षड्)। वकृ उवहणंत (राज)।

उवहणण न [उपहनन] १ आघात। २ विनाश (ठा १०)।

उवहत्थ सक [समा + रच्] १ रचना, बनाना। २ उत्तेजित करना। उवहत्थइ (हे ४, ९५)।

उवहत्थिय वि [समारचित] १ बनाया हुआ। २ उत्तेजित (कुमा)।

उवहम्म° देखो उवहण।

उवहय वि [उपहत] १ विनाशित (प्रासू १३५)। २ दूषित (बृह १)।

उवहर सक [उप + हृ] १ पूजा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। उव-हरइ (हे ४, २५९)। भूका उवहरिंसु (ठा ९)।

उवहस सक [उप + हस्] उपहास करना, हँसी करना। कृ उवहसणिज्ज (स ३)।

उवहसिअ वि [उपहसित] १ जिसका उप-हास किया गया हो वह (पि १५५)। २ न उपहास (तद्)।

उवहा स्त्री [उपधा] माया, कपट (धर्म ३)।

उवहाण न [उपधान] १ तकिया, उसीसा (दे १, १४०, सुर १२, २५, सुपा ४)। २ तपश्चर्या (सूअ १, ३, २, २१)। ३ उपाधि, 'सच्छपि फलिहरयणं उवहाणवसा कलिज्जए कालं' (उप ७२८ टी)।

उवहार पु [उपहार] १ भेंट, उपहार (प्रति ७४)। २ विस्तार, फैलाव, 'पहासमुदओव-हारेहिं सव्वओ चेव दीवयंत' (कप्प)।

उवहारणया देखो उवधारणया (राज)।

उवहारिअ वि [उपधारित] अवधारित, निश्चित (सूअ २, ७)।

उवहारिआ, उवहारी } स्त्री [दे] दोहनेवाली स्त्री (गा ७३१, दे १, १०८)।

उवहारुल्ल वि [उपहारवत्] उपहारवाला (सक्षि २०)।

उवहास पु [उपहास] हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी (हे २, २०१)।

उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य, 'सुसमत्थो वि हु जो,

जणयअज्जिय सपय निसेवेइ।

सो अम्मि ! ताव लोए, ममव

उवहासयं लहइ' (सुर १, २३२)।

उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद (पउम १०६, २०)।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर (से ५, ४०, ४२, भवि)।

उवहि पुस्त्री [उपाधि] १ माया, कपट (आचा)। २ कर्म (सूअ १, २)। ३ उप-करण, साधन, 'तिविहा उवही पण्णत्ता' (ठा ३, ओघ २)।

उवहिंड सक [उप + हिण्ड्] पर्यटन करना, घूमना, 'भिक्खट्ठं उवहिंडे' (सबोध ४१)।

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित। २ निहित, स्थापित (आचा, विसे ६३७)। ३ न उपढौकन, अर्पण (निचू २०)।

उवहिय वि [औपधिक] माया से प्रच्छन्न विचरनेवाला (णाया १, २)।

उवहुज सक [उप + भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना। उवहुजइ (पि ५०७)। कवकृ उवहुज्जंत (पि ५४६)।

उवहुत्त देखो उवभुत्त (पाअ से १०, ४५)।

उवाइक्कम सक [उपाति + क्रम] उल्लंघन करना। संकृ उवाइकम्म (आचा २, ८, १)।

उवाइण सक [उपाति + नी] गुजारना। संकृ. उवाइणित्ता (आचा २, २, २, ७)।

उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प करना। हेकृ 'जति णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भागं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेस्सामि त्ति कट्टु ओवाइय' 'उवाइणित्तए' (विपा १, ७)।

उवाइण सक [उपा + दा] १ ग्रहण करना। २ प्रवेश करना। हेकृ उवाइणित्तए (ठा ३)। प्रयो 'तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावित्तए' (णाया १, १२)।

उवाइणाव सक [अति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ गुजारना, पसार करना। उवाइणावेइ। वकृ उवाइणावेंत। हेकृ उवाइणावेत्तए (कस), उवाइणावित्तए (कप्प), 'से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहिया सेणं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूणं पडिनियत्तए, नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावित्तए। जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ, उवाइणावेंतं वा साइज्जइ, से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं' (कस), 'नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणावित्तए' (कप्प)।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लंघित। २ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, बिताया हुआ, 'नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरुसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावित्तए। से य आहच्च उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुंजेज्जा' (कस)।

उवाइय देखो उवयाइय (णाया १, २; सुपा १०; महा)।

उवाई स्त्री [उलावकी] पोतांकी नामक विद्या की प्रतिपक्षभूत एक विद्या (विसे २४५४)।

उवाएज्ज, उवाएय वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य (विसे, स १४८)।

उवागच्छ, उवागम सक [उपा + गम्] समीप में आना। उवागच्छइ (भग, कप्प)। भवि उवागमिस्सति (आचा २, ३, १, २) संकृ उवागच्छित्ता (भग, कप्प)। हेकृ उवागच्छित्तए (कप्प)।

उवागम पु [उपागम] समीप में आगमन (राज)।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में आगमन। २ स्थान, स्थिति (आचानि ३११)।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया हुआ (आचा २, ३, १, २)। २ प्राप्त, 'एगदिवसंपि जीवो पवज्जमुवागओ अणन्नमणो' (उव)।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखाड़ा हुआ (विपा १, ६)।

उवाणया, उवाणहा स्त्री [उपानह्] जूता (पड्), 'पुव्वमुत्तारियाओ उवाणहाओ पएसु ठवियाओ' (सुपा ६१०, सूअ १, ४, २, ६)।

उवादा सक [उपा + दा] ग्रहण करना। कर्म उवादीयति (भग)। संकृ उवादाय, उवादिएत्ता (भग)। कवकृ उवादीयमाण (आचा २)।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार। २ कार्यरूप में परिणत होनेवाला कारण। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य, 'नाणोवादाणे च्चिय मुच्छा लोभोत्ति तो रागो' (विसे २६७०)।

उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त (राज)।

उवाय पु [उपाय] १ हेतु, साधन (उत्त ३२)। २ दृष्टान्त, 'उवाओ सोसाधम्मेण य विधम्मेण य' (आचू १)। ३ प्रतीकार (ठा ४, ३)।

उवाय सक [उप + याच्] मनौती करना। वकृ उवायमाण (णाया १, २, १७)।

उवायण न [उपायन] भेंट, उपहार, नजराना (उप २४५, सुपा २२४, ४१०, गउड)।

उवायणाव देखो उवाइणाव। उवायणावेइ। वकृ उवायणावेंत। हेकृ उवायणावेत्तए (कस), उवायणावित्तए (कप्प)।

उवायाण देखो उवादाण (अच्चु १२; स २, विसे २६७६)।

उवायाय वि [उपायात] समीप में आया हुआ (निर १, १)।

उवारूढ वि [उपारूढ] आरूढ (स ३३१)।

उवालंभ सक [उपा + लभ्] उलाहना देना। उवालम्भइ (कप्प)। वकृ उवालभंत (पउम १६,४१)। संकृ उवालंभित्ता (बृह ४)। कृ उवालभणिज्ज (माल १५५)।

उवालभ पु [उपालम्भ] उलाहना (णाया १, १, मा ८)।

उवालद्ध वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह, 'उवालद्धो य सो मिवो बभणो' (निचू १, माल १६७)।

उवालह सक [उपा + लभ्] उलाहना देना। भवि उवालहिस्सं (प्राप)।

उवावत्त पु [उपावृत्त] वह अश्व जो लेटने से श्रम-मुक्त हुआ हो (चारु ७०)।

उवावत्तिद (शौ) वि [उपावृत्तित] उपर्युक्त अश्व से युक्त (चारु ७०)।

उवास सक [उप + आस्] उपासना करना, सेवा करना, 'सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुपण्णं सुतवस्सियं' (सूअ १, ६)। वकृ. उवासमाण (ठा ६)।

उवास पु [अवकाश] खाली जगह, आकाश (ठा २, ४; ८, भग)।

उवासग वि [उपासक] १ सेवा करनेवाला। २ पुं. जैन या बुद्ध दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (धर्मसं १०१३)।

उवासग वि [उपासक] १ उपासना करनेवाला, सेवक। २ पु श्रावक, जैन गृहस्थ (उत्त २)। °दसा स्त्री [°दशा] सातवाँ जैन अंग ग्रन्थ (सम १)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] श्रावकों को करने योग्य नियम-विशेष (उत्त २)।

उवासण न [उपासन] उपासना, सेवा (स ५४३, मै ८६)।

उवासणा स्त्री [उपासना] १ क्षौर कर्म, हजामत वगैरह सफाई। २ सेवा शुश्रूषा, 'उवासणा ममुकम्ममाइया, गुरुरायाईण वा उवासणा पज्जुवासणया' (श्रावम)।

उवासय देखो उवासग (सम ११६)।

उवासय पुं [उपाश्रय] जैन मुनियों का निवास-स्थान (उप १४२ टी)।

उवासिय वि [उपासित] सेवित (पउम ६८, ४२)।

उवाहण सक [उपा + हन्] विनाश करना, मारना। वकृ उवाहणंत (पराह १, २)।

उवाहणा देखो उवाणहा (अनु, णाया १, १५)।

उवाहि पुस्त्री [उपाधि] १ कर्म-जनित विशेषण (आचा)। २ सामीप्य, संनिधि (भग १, १)। ३ अस्वाभाविक धर्म, 'सुद्धोवि फलिहमणी उपाहिवसओ धरेइ अन्नत्तं' (धम्म ११ टी)।

उवि सक [उप + इ] १ समीप आना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उविंति (भग)। वकृ. उविंत (पि ४९३, प्रामा)।

उविअ देखो अविअ = अपि च (स २०६)।

उविअ वि [उपेत] युक्त, सहित (भवि)।

उविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे १, ८६)। २ वि परिकर्मित, सत्कारित, 'णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्ध-वीरवलए' (णाया १, १)।

उविंद पु [उपेन्द्र] कृष्ण (कुमा)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] ग्यारह अक्षरों के पादवाला एक छन्द (पिंग)।

उविंद पुन [उपेन्द्र] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

उविक्ख सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, अनादर करना। वकृ उविक्खमाण (द्र १६)।

उविक्खा स्त्री [उपेक्षा] उपेक्षा, अनादर (काल)।

उविक्खिय वि [उपेक्षित] तिरस्कृत, अनादृत (सुपा ३६५)।

उविक्खेव पु [उद्विक्षेप] हजामत, मुण्डन (तन्दु)।

उवियग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न उद्वेग-प्राप्त (राज)।

उवीव अक [उद् + विच्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उवीवइ (नाट)।

उवे देखो उवि। उवेइ, उवेंति (ओप)। वकृ उवेंत (महा)। सकृ उवेच्च (सूअ १, १४)।

उवेक्ख देखो उविक्ख। उवेक्खह (सुपा ३५४)। कृ उवेक्खियव्व (स ६०)।

उवेक्खिअ देखो उविक्खिय (गा ४२०)।

उवेच्च देखो उवे।

उवेय वि [उपेत] १ समीप-गत। २ युक्त, सहित (सम्या ६)।

उवेय वि [उपेय] उपाय-साध्य (राज)।

उवेल्ल अक [प्र + सृ] फेलना, प्रसारित होना। उवेल्लइ (हे ४, ७७)।

उवेस अक [उप + विश्] बैठना। वकृ उवेसमाण (पिंड ५८३)।

उवेह सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, तिरस्कार करना, उदासीन रहना। उवेहइ (धम्म १६)। वकृ उवेहंत, उवेहमाण (स ४६, ठा ६)। कृ उवेहियव्व (सण)।

उवेह सक [उत्प्र + ईक्ष्] १ जानना, समझना। २ निश्चय करना। ३ कल्पना करना। उवेहाहि। वकृ उवेहमाण, 'उवेहमाणे अणुवेहमाए बूया, उवेहाहि समियाए' (आचा)। सकृ उवेहाए (आचा)।

उवेहण न [उपेक्षण] उपेक्षा, उदासीनता (संबोध १०, हित २३)।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] तिरस्कार, अनादर, उदासीनता (सम ३२)। °कर वि [°कर] उपेक्षक, उदासीन (श्रा २८)।

उवेहा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ ज्ञान, समझ। २ कल्पना। ३ अवधारण, निश्चय (ओप)।

उवेहिय वि [उपेक्षित] अनादृत, तिरस्कृत (उप १२६, सुपा १३५)।

°उव्व देखो पुव्व (गा ४१४)।

उव्वंत वि [उद्वान्त] १ वमन किया हुआ। २ निष्क्रान्त, निर्गत (अभि २०६)।

उव्वक्क सक [उद् + वम्] १ बाहर निकालना २ वमन करना। हेकृ उव्वक्किउ (सुपा १३६)।

उव्वक्क } वि [उद्वान्त] १ बाहर निकाला उव्वक्किय } हुआ (वव १)। २ वमन किया हुआ,

'मतोमामयपाए, काउ उव्वक्कियं हयासेण। ज गहिऊण विरई, कलंकिया मोहमूढेण'

(सुपा ४३५)।

उव्वग्ग देखो ओवग्ग। संकृ उव्वग्गिवि (भवि)।

उव्वट्ट उभ [उद् + वृत्, वर्त्तय्] १ चलना-फिरना। २ मरना, एक गति में दूसरी गति में जन्म लेना। ३ पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना। ४ कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति को हटाकर लम्बी स्थिति करना। ५ पार्श्व को चलाना-फिराना। ६ उत्पन्न होना, उदित होना। उव्वट्टइ (भग)। वकृ. उव्वट्टंत, उव्वट्टमाण, उअत्तंत (भग, नाट, उत्तर १०७, बृह १)। सकृ उव्वट्टित्ता, उहट्टु, उव्वट्टिय (जीव १, विपा १, १, आचा २, ७, स २०६)। हेकृ. उव्वट्टित्तए (कस)।

उव्वट्ट देखो उव्वट्टिय = उद्वृत्त (भग)।

उव्वट्ट वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ गलित (दे १, १२६)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] १ शरीर पर से मल वगैरह को दूर करना। २ शरीर को निर्मल करनेवाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु (उवा, णाया १, १३)। ३ दूसरे जन्म में जाना, मरण। ४ पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४)। ५ कर्म-परमाणुओं की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना (पंच)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] तुले से उसके बीज को अलग करना (पिंड ६०३)।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो उव्वट्टणा = अपवर्त्तना (विसे २५१४)।

उव्वट्टणा स्त्री [उद्वर्त्तना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना (ठा २, ३)। २ पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४)। ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण विशेष (भग ३१, ३२)।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है (विसे २७१५ टी)।

उव्वट्टिअ वि [उद्वर्तित] साफ किया हुआ, प्रमार्जित, 'करीसेण वावि उव्वट्टिए' (पिंड २७६)।

उव्वट्टिय वि [उद्वृत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत, 'आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा' (पण्ह १, १)।

उव्वट्टिय वि [उद्वर्त्तित] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तैल वगैरह का मैल दूर किया हो वह, 'तओ तत्थट्ठिओ' चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उण्हखलउदगेहिं पमज्जिओ' (महा)। २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ (पिंड)।

उव्वड्ढ वि [उद्वृद्ध] वृद्धि-प्राप्त (आवम)।

उव्वण वि [उल्बण] प्रचण्ड, उद्भट (उप पृ ७०, गउड, धम्म ११ टी)।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उव्वत्तइ (पि २८९)। वकृ उव्वत्तत, उव्वत्तमाण (से ५, ४२, स २५८, ६२७)। कवकृ उव्वत्तिज्जमाण (णाया १,३)। संकृ उव्वत्तिवि (भवि)।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट (दे)।

उव्वत्त सक [उद् + वर्तय्] १ खड़ा करना। २ उलटा करना। उव्वत्तति (पव ७१) संकृ उव्वत्तिया (दस ५, १, ६३)।

उव्वत्त वि [उद्वर्त्त] खड़ा करनेवाला (पव ७१)।

उव्वत्त वि [उद्वृत्त] १ उत्तान, चित्त (से ५, ६२)। २ उल्लसित (हे ४, ४३४)। ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह (आव ३)। ४ ऊर्ध्व-स्थित, 'सो उव्वत्तविमाणो खववसभो जाओ' (महा)। ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ (प्राप)।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित (से १, ६१)।

उव्वत्तण न [उद्वर्त्तन] १ पार्श्व का परिवर्त्तन (गा २८३, निचू ४)। २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्त्तन (ओघ १६ भा)।

उव्वत्तिय वि [उद्वर्त्तित] १ परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ (स ८५), 'भमिय व वणतरूहिं उव्वत्तियय व सयलवसुहाए' (सुर १२,१६६)।

उव्वद्ध देखो उव्वड्ढ (महा)।

उव्वम सक [उद् + वम्] उलटी करना, पीछा निकाल देना। वकृ उव्वमंत (से ५, ६, गा ३४१)।

उव्वमिअ वि [उद्वान्त] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ (पाअ)।

उव्वर अक [उद् + वृ] शेष रहना, बच जाना, 'तुम्हाण 'दंताण जमुव्वरेइ देज्जाह साहूण तमायरेण' (उप २११ टी)। वकृ उव्वरत (नाट)।

उव्वर पु [दे] घर्म, ताप (दे १ ८७)।

उव्वरिअ वि [दे] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट (दे १, १३२, पिंग, गा ४७४, सुपा ११, ५३२, ओघ १६८ भा)। २ अनीप्सित, अनभीष्ट। ३ निश्चित। ४ अगणित। ५ न ताप, गरमी (दे १, १३२)। ६ वि अतिक्रान्त, उल्लङ्घित, 'परदव्वहरणविरया निरयाइदुहाण ते खलुव्वरिया' (सुपा ३६८)।

उव्वरिअ न [अपवरिका] कोठरी, छोटा घर (सुर १४, १७४)।

उव्वल सक [उद् + वल्] १ उपलेपन करना। २ पीछे लौटना। हेकृ उव्वलित्तए (कस)।

उव्वल सक [उद् + वलय्] उन्मूलन करना। उव्वलए। वकृ उव्वलमाण (पच ५,१६६)।

उव्वलण न [उद्वलन] १ शरीर का उपलेपनविशेष (णाया १, १, १३)। २ मालिश, अभ्यञ्जन (बृह ३, ओप)।

उव्वलणा स्त्री [उद्वलना] १ उन्मूलन। २ उद्वलन-योग्य कर्म-प्रकृति (पच ३, ३४)।

उव्वलिय वि [उद्वलित] पीछे लौटा हुआ (महा)।

उव्वस वि [उद्वस] उजाड, वसति-रहित (सुपा १८८, ४०६)।

उव्वसिय वि [उद्वसित] ऊपर देखो (गा १६४ सुर २, ११६, सुपा ५४१)।

उव्वसी स्त्री [उर्वशी] १ एक अप्सरा (सण)। २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी (पउम ७४, ८)।

उव्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना। २ उठाना। उव्वहइ (महा)। वकृ. उव्वहत, उव्वहमाण (पि ३६७, से ६,५)। कवकृ उव्वुज्झमाण (णाया १,६)।

उव्वहण न [उद्वहन] १ धारण। २ उत्थापन। (गउड, नाट)।

उव्वहण न [दे] महान् आवेश (दे १, ११०)।

उव्वा स्त्री [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।

उव्वा } अक [उद् + वा] १ सूखना,
उव्वाअ } शुष्क होना। उव्वाइ, उव्वाअइ (षड्, हे ४, २४०)।

उव्वाअ वि [उद्वात] शुष्क, सूखा (गउड)।

उव्वाअ } वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १,
उव्वाइअ } १०२, बृह १, वव ४, पाअ, गा ७५८, सुपा ४३६)।

उव्वाउल न [दे] १ गीत। २ उपवन, बगीचा (दे १, १३४)।

उव्वाडुल न [दे] १ विपरीत सुरत। २ मर्यादा-रहित मैथुन (दे १, १३३)।

उव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण, विशाल। २ दुःखरहित (दे १, १२६)।

उव्वाण देखो उव्वाअ = उद्वात (कुप्र १६६)।

उव्वाय देखो उवाय = उपाय (सूअ १, ४, १, २)।

उव्वार (अप) सक [उद्+वर्तय्] त्याग करना, छोड देना। कर्म उव्वारिज्जइ (हे ४, ४३८)।

उव्वाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उव्वालइ (षड्)।

उव्वास सक [उद् + वासय्] १ दूर करना। २ देशनिकाला करना। ३ उजाड करना। उव्वासइ (नाट, पिंग)।

उव्वासिय वि [उद्वासित] १ उजाड किया हुआ (पउम २७, ११)। २ देश-बाहर

किया हुआ (सुपा ५४२)। ३ दूर किया हुआ (गा १०६)।

उव्वाह पु [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।

उव्वाह पु [उद्वाह] विवाह (मैं २१)।

उव्वाह सक [उद् + बाधय्] विशेष प्रकार से पीडित करना। कवकृ उव्वाहिज्जमाण (आचा, णाया १, २)।

उव्वाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, १०६)।

उव्वाहुल न [दे] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा (भवि, दे १, १३६)। २ वि द्वेष्य, अप्रीतिकर (दे १, १३६)।

उव्वाहुलिय वि [दे] उत्सुक, उत्कण्ठित (भवि)।

उव्विआइअ वि [उद्वेदित] उत्पीडित (से १३, २६)।

उव्विंप न [दे] प्रलपित, प्रलाप (षड्)।

उव्विग्ग वि [उद्विग्न] १ खिन्न। २ भीत, घबड़ाया हुआ (हे २, ७६)।

उव्विग्गिर वि [उद्वेगशील] उद्वेग करनेवाला (वाका ३८)।

उव्विज्ज देखो उव्विय। उव्विज्जइ (प्राकृ ६८), उव्विजति (वै ८६)। संकृ उव्विजिऊण (धर्मवि ११६)।

उव्विड वि [दे] १ चकित, भीत। २ क्लान्त, क्लेश-युक्त (षड्)।

उव्विडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला। २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज (दे १, १३४, चउ० पत्र २६७-२६६ पत्र)।

उव्विण्ण देखो उव्विग्ग (पि २१६)।

उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] १ ऊँचा गया हुआ, उच्छ्रित (पण्ह १, ४)। २ गम्भीर, गहरा (सम ४४, णाया १, १)। ३ विद्ध, 'कीलयसएहिं धरणियले उव्विद्धो' (सथा ८७)।

उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] जिसकी ऊँचाई का माप किया गया हो वह (पव १५८)।

उव्विन्न देखो उव्विग्ग (हे २, ७६, सुर ४, २४८)।

उव्विय अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, उदासीन होना, खिन्न होना, 'को उव्विएज्ज नरवर! मरणस्स अवस्स गतव्वे' (स १२६)। वकृ उव्वियमाण (स १३६)।

उव्वियणिज्ज वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-प्रद (पउम १६, ३६, सुपा ५६७)।

उव्विरेयण न [उद्विरेचन] खाली करना, 'एव म भरिउव्विरेयणं कुव्वतस्स' (काल)।

उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ चलना, काँपना। २ सक वेष्टन करना। वकृ उव्विल्लत, उव्विल्लमाण (सुपा ८८, उप पृ ७७)।

उव्विल्ल अक [प्र + सृ] फैलना, पसरना। उव्विल्लइ (भवि)।

उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ तड़फड़ाना, इधर-उधर चलना, 'उव्विल्लइ सयणीए देवो आनन्दचवणुव्व' (धर्मवि ११२)।

उव्विल्ल वि [उद्वेल] चञ्चल, चपल (सुपा ३४)।

उव्विल्लिर वि [उद्वेल्लितृ] चलनेवाला, हिलनेवाला (सुपा ८८)।

उव्विव अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उव्विवइ (षड्)।

उव्विव्व } देखो उव्विय। उव्विव्वइ, उव्वेउव्वेअ } अइ (प्राकृ ६८)।

उव्विव्व वि [दे] १ क्रुद्ध, क्रोध-युक्त (षड्)। २ उद्भट वेष वाला (पाअ)।

उव्विह सक [उत् + व्यध्] १ ऊँचा फेंकना। २ ऊँचा जाना, उड़ना, 'से जहाणामए केइ पुरिसे उसुं उव्विहइ' (पि १२६)। वकृ 'मणसावि उव्विहंताइं अणेगाइं आसमयाइं पासति' (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। वकृ. उव्विहमाण (भग १६)। संकृ उव्विहित्ता (पि १२६)।

उव्विह पु [उद्विह] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक (भग ८, ५)।

उव्वी पु [उर्वी] पृथिवी (से २, ३०)। °स पु [°श] राजा (कुमा)।

उव्वीढ देखो उव्वूढ (कुमा, हे १, १२०)।

उव्वीढ वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ (दे १, १००)।

उव्वीढ वि [उद्विद्ध] उत्क्षिप्त, 'तस्स उसुस्स उव्वीढस्स समाणस्स' (पि १२६)।

उव्वील सक [अव + पीडय्] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ उव्वीलेमाण (राज)।

उव्वीलय वि [अपव्रीडक] लज्जा-रहित करनेवाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने मे शरम को दूर करने का उपदेश देनेवाला (गुरु) (भग २५, ७, द्र ४६)।

उव्वुज्झमाण देखो उव्वह।

उव्वुण्ण } वि [दे] १ उद्विग्न। २ उत्सिक्त।
उव्वुन्न } ३ शून्य (दे १, १२३)। ४ उद्भट, उल्बण (दे १, १२३, सुर ३, २०५)।

उव्वूढ वि [उद्व्यूढ] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ (कुमा)। २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ (से ५, ५४, ६, ११)। ३ परिणीत, कृत-विवाह (सुपा ४५६)।

उव्वेअणीअ वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-कारक (नाट)।

उव्वेग पु [उद्वेग] १ शोक, दिलगीरी (ठा ३, ३)। २ व्याकुलता (भग ३, ६)।

उव्वेढ सक [उद् + वेष्ट्] १ बाँधना। २ पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना। उव्वेढइ (षड्), उव्वेढिज्ज (आचा २, ३, २, २)।

उव्वेढण न [उद्वेष्टन] १ बन्धन। २ वि बन्धन-रहित किया हुआ (राज)।

उव्वेढिअ वि [उद्वेष्टित] १ बन्धन रहित किया हुआ। २ परवेष्टित (दे ४, ४६)।

उव्वेत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिल्लाना, निरन्तर रोदन (दे १, १०१)।

उव्वेय देखो उव्वेग (कुमा, महा)।

उव्वेयग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक (रयण ४०)।

उव्वेयणग } वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक
उव्वेयणय } (आउ, पण्ह १, १)।

उव्वेयणय पुन [उद्वेजनक] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

उव्वेल अक [प्र + सृ] फैलना। उव्वेलइ (षड्)।

उव्वेल वि [उद्वेल] उच्छलित (से २, ३०)।

उव्वेलिअ वि [उद्वेलित] फैला हुआ, प्रसृत (माल १४२)।

उव्वेल्ल देखो उव्वेढ। उव्वेल्लइ (हे ४, २२३)। कर्म उव्वेल्लिज्जइ (कुमा)।

उव्वेल्ल सक [उद् + वेल्ल्] १ सत्वर जाना। २ त्याग करना। ऊँचा उड़ना, ऊँचा

जाना। ४ अक फैलना, पसरना। वक्र उव्वेल्लत (पि १०७)।

उव्वेल्ल वि [उद्वेल] १ उच्छलित, उछला हुआ, 'उव्वेल्ला सलिलनिही' (पउम ६, ७२)। २ प्रसृत, फैला हुआ (पाअ)। ३ उद्भिन्न, 'हरिसवसुव्वेल्लपुलयाए' (स ६२५)।

उव्वेल्लिअ वि [उद्वेल्लित] १ कम्पित (गा ६०५)। २ उत्सारित (बृह ३)। ३ प्रसारित (स ३३५)।

उव्वेल्लिर वि [उद्वेल्लितृ] सत्वर जानेवाला (कुमा)।

उव्वेव देखो उव्विव। उव्वेवइ (षड्)।

उव्वेव देखो उव्वेग (कुमा, सुर ४, ३६, ११, १६४)।

उव्वेवग वि [उद्वेजक] उद्वेग कारक, 'थद्धा छिद्दप्पेही, अवन्नवाई सयम्मई चवला। वका कोहणसीला, सीसा उव्वेवगा गुरुणो" (उव)।

उव्वेवणय वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक (पञ्च ४५)।

उव्वेवय देखो उव्वेवग (स २६२)।

उव्वेसर पु [उव्वेश्वर] इस नामका एक राजा (कुमा)।

उव्वेह पु [उद्वेध] १ ऊँचाई (सम १०४)। २ गहराई (ठा १०)। ३ जमीन का अवगाह (ठा १०)।

उव्वेहलिया स्त्री [उद्वेधलिका] वनस्पति-विशेष (पराण १)।

उसट्ट वि [दे] ऊँचा (राय)।

उसढ देखो ऊसढ = दे (पव २)।

उसण पु [उशनस्] ग्रह-विशेष, शुक्र, भार्गव (पाअ)।

उसणसेण पु [दे] बलभद्र (दे १, ११८)।

उसत्त वि [उत्सक्त] ऊपर बँधा हुआ (णाया १, १)।

उसन्न पु [उत्सन्न] भ्रष्ट यति-विशेष की एक जाति (स ६१)।

उसप्पिणी देखो उस्सप्पिणी (जी ४०, विसे २७०६)।

उसभ पुन [वृषभ] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)।

उसभ पुं [ऋषभ, वृषभ] १ स्वनाम-ख्यात प्रथम जिनदेव (सम ४३, कप्प)। २ बैल, साँड (जीव ३)। ३ वेष्टन-पट्ट (पव २१६)। ४ देव-विशेष (ठा ८)। ३ ब्राह्मण-विशेष (उत्त १)। °कंठ पु [°कण्ठ] १ बैल का गला। २ रत्न विशेष (जीव ३)। °कूड पु [°कूट] पर्वत-विशेष (ठा ८)। °णाराय न [°नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-बन्ध-विशेष (पच)। °दत्त पु [°दत्त] ब्राह्मण-कुण्ड ग्राम का रहनेवाला एक ब्राह्मण, जिसके घर भगवान् महावीर अवतरे थे (कप्प)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (विपा २, २)। °पुरी स्त्री [°पुरी] एक राजधानी (ठा ८)। °सेण पु [°सेन] भगवान् ऋषभ-देव के प्रथम गणधर (आचू १)।

उसर (पै) पुस्त्री [उष्ट्र] ऊंट (पि २५६)।

उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (षड्)।

उसह देखो उसभ (हे १, १३१, १३३, १४१, षड्, कुमा, सम १५२, पउम ४, ३५)।

उसहसेण पु [वृषभसेन] तीर्थंकर-विशेष। २ जिनदेव की एक शाश्वती प्रतिमा (पव ५९)।

उसा अ [उषस्] प्रभात-काल (गउड)।

उसिण वि [उष्ण] गरम, तप्त (कप्प ठा ३, १)। २ पुन गरम स्पर्श (उत्त १)। ३ गरमी, ताप (उत्त २)।

उसिय वि [उत्सृत] व्याप्त, फैला हुआ (सम १३७)।

उसिय वि [उषित] रहा हुआ, निवसित (से ८, ६३, भत्त १२८)।

उसिर देखो उसीर = उशीर (सूअ १, ४, २, ८)।

उसीर न [उशीर] सुगन्धि तृण-विशेष, खश (पराह २, ५)।

उसीर न [दे] कमल दराड, बिस (दे १, ६४)।

उसु पु [इषु] १ बाण, शर (सूअ १, ५, १)। २ धनुराकार क्षेत्र का बाण-स्थानीय क्षेत्र परिमाण, 'धणुवग्गाओ नियमा, जीवावग्ग विसोहइत्ताणं। सेसस्स छट्ठभागे, जं मूलं तं उसू होइ' (जो १)। °कार, °गार, °यार पु [°कार] १ पर्वत-विशेष (सम ६६, ठा २, ३, राज)। २ इस नाम का एक राजा। ३ स्वनाम ख्यात एक पुरोहित (उत्त १४)। ४ वि बाण बनानेवाला (राज)। ५ स्वनाम-ख्यात एक नगर (उत्त १४)।

उसुअ पु [दे] दोष, दूषण (दे १, ८६)।

उसुअ न [इषुक] १ बाण के आकार का एक आभूषण। २ तिलक (पिंड ४२४)।

उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (सुपा २२४)।

उसुयाल न [दे] उदूखल (राज)।

उसूलग पु [दे] परिखा, शत्रु-सैन्य का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त-विशेष (उत्त ६)।

उस्स पु [दे] हिम, ओस, 'अप्पहरिएसु अप्पुस्सेसु' (बृह ४)।

उस्सकलिअ वि [उत्सकलित] निवृत्त, परित्यक्त (आचा २)।

उस्सखलअ वि [उच्छृङ्खलक] उच्छृङ्खल, निरकुश (पि २१३)।

उस्सग पु [उत्सङ्ग] क्रोड, कोला या कोरा (नाट)।

उस्सघट्ट वि [उत्संघट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित (उप ५५५)।

उस्सक्क अक [उत् + ष्वष्क्] १ उत्कण्ठित होना। २ पीछे हटना। ३ सक स्थगित करना। सक्क उस्सक्कइत्ता। प्रयो उस्सक्कावइत्ता (ठा ६)।

उस्सक्क सक [उत् + ष्वष्क्] प्रदीप्त करना, उत्तेजित करना। सक्क उस्सक्किय (आचा २, १, ७, २)।

उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] किसी कार्य को कुछ समय के लिये स्थगित करना (धर्म ३)।

उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] उत्सर्पण (पंचा १३, १०)।

उस्सक्किय वि [उत्ष्वष्कित] नियत काल के बाद किया हुआ (पिंड २९०)।

उस्सग्ग पु [उत्सर्ग] १ त्याग (आव ५)। २ सामान्य विधि (उप ७८१)।

उस्सग्गि वि [उत्सर्गिन्] उत्सर्ग—सामान्य नियम—का जानकार (पव ६४)।
उस्सण्ण वि [अवसन्न] निमग्न, 'अवभे उस्सण्णा' (पण्ह १, ४)।
उस्सण्ण अ [दे] प्राय, प्रायेण (राज)।
उस्सण्हसाण्हआ स्त्री [उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्व-रेणु का ६४ वाँ हिस्सा (इक)।
उस्सन्न देखो उस्सण्ण = दे (सूअ २, २, ६५, तदु २७)। °भाव पु [°भाव] बाहुल्यभाव (धर्मसं ७५६)।
उस्सन्न वि [उत्सन्न] निज धर्म मे आलसी साधु (गुभा १२)।
उस्सप्पण न [उत्सर्पण] १ उन्नति, पोषण। २ वि उन्नत करनेवाला, बढानेवाला, 'कदप्प-दप्पउस्सप्पणाइ वयणाइ जपए जा सो' (सुपा ५०६)।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] उन्नति, प्रभावना (उप ३२६)।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] विख्यात करना, प्रसिद्धि करना (सम्मत्त १६६)।
उस्सप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] उन्नत काल विशेष, दश कोटाकोटि-सागरोम-परिमित काल-विशेष, जिसमे सब पदार्थों की क्रमश उन्नति होती है (सम ७२, ठा १, १, पउम २०, ६८)।
उस्सय पु [उच्छ्रय] १ उन्नति, उच्चता (विसे ३४१)। २ अहिंसा (पण्ह २, १)। ३ शरीर (राज)।
उस्सयण न [उच्छ्रयण] अभिमान, गर्व (सूअ १, ६)।
उस्सर अक [उत् + सृ] हटना, दूर जाना। उस्सरह (स्वप्न ६)।
उस्सव सक [उत् + श्रि] १ ऊँचा करना। २ खडा करना। उस्सवेह, सकृ. उस्सवित्ता (कप्प)। प्रयो., सकृ. उस्सविय (आचा २, १)।
उस्सव पुं [उत्सव] उत्सव (अभि १९४)।
उस्सवणया स्त्री [उच्छ्रयणता] ऊँचा ढेर करना, इकठ्ठा करना (भग)।
उस्सस अक [उत् + श्वस्] १ उच्छ्वास लेना, श्वास लेना। २ उल्लसित होना। उस्ससइ (भग)। कवकृ. उस्ससिज्जमाण (ठा १०)।
उस्ससिय वि [उच्छ्वसित] १ उच्छ्वास-प्राप्त। २ उल्लसित (उत्त २०)।
उस्सा स्त्री [उस्रा] गैया, गौ (दे १, ८६)।
उस्सा [दे] देखो आसा (ठा ४, ४)। °चारण पुं [°चारण] ओस के अवलम्बन से गति करने का सामर्थ्यवाला मुनि (पव ६८)।
उस्सार सक [उत् + सारय्] १ दूर करना, हटाना। २ बहुत दिन मे पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन मे पढाना। वकृ. उस्सारित (बृह १)। सकृ उस्सारित्ता (महा)। कृ. उस्सारइदव्व (शो) (स्वप्न २०)।
उस्सार पु [उत्सार] अनेक दिन मे पढाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन मे अध्यापन। °कप्प पु [°कल्प] पाठन-सबन्धी आचार-विशेष (बृह १)।
उस्सारग वि [उत्सारक] दूर करनेवाला। २ उत्सार-कल्प के योग्य (बृह १)।
उस्सारण न [उत्सारण] १ दूरीकरण। २ अनेक दिनो मे पढाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन मे अध्यापन, 'अरिहइ उस्सारणं काउं' (बृह १)।
उस्सारिय वि [उत्सारित] दूरीकृत, हटाया हुआ (सया ५७)।
उस्सास पु [उच्छ्वास] १ उसाँस, ऊँचा श्वास (पण्ह १)। २ प्रबल श्वास (आव २)। °नाम न [°नामन्] उसाँस-हेतुक कर्म-विशेष (सम ६७)।
उस्सासय वि [उच्छ्वासक] उसाँस लेने-वाला (विसे २७१५)।
उस्साह देखो उच्छाह (सूअनि ६२)।
उस्सिखल वि [उच्छृङ्खल] स्वैरी, स्वेच्छा-चारी, निरङ्कुश (उप १४६ टी)।
उस्सिंघिय वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ (स २६०)।
उस्सिच सक [उत् + सिच्] १ सिंचना, सेक करना। २ ऊपर सिंचना। ३ आक्षेप करना। ४ खाली करना, 'पुण्णं वा नाव उस्सिचेज्जा' (आचा २, ३, १, ११)। उस्सि-चति (निचू १८)। वकृ. उस्सिचमाण (आचा २, १, ६)।
उस्सिंचण न [उत्सेचन] १ सिञ्चन। २ कूपादि से जल वगैरह को बाहर को खीचना (आचा)। ३ सिंचन के उपकरण (आचा २)।
उस्सिचणा स्त्री [उत्सेचना] देखो उस्सिचण (उत्त ३०, ५)।
उस्सिक्क देखो उस्सक्क। सकृ उस्सिक्किया (दस ५, १, ६३)।
उस्सिक्क सक [मुच्] छोडना, त्याग करना। उस्सिक्कइ (हे ४, ९१)।
उस्सिक्क सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेकना। उस्सिक्कइ (हे ४, १४४)।
उस्सिक्किअ वि [मुक्त] मुक्त, परित्यक्त (कुमा)।
उस्सिक्किअ वि [उत्क्षिप्त] १ ऊँचा फेका हुआ। २ ऊपर रखा हुआ (स ५०३)।
उस्सिन्न वि [उत्स्विन्न] विकारान्त को प्राप्त, अचित्त किया हुआ (दस ५, २, २१)।
उस्सिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा किया हुआ (कप्प)।
उस्सिय वि [उत्सृत] १ व्याप्त। २ ऊँचा किया हुआ (कप्प)।
उस्सिय वि [उत्सृत] अहंकारी (उत्त २६, ४९)।
उस्सीस न [उच्छीर्ष] तकिया (सुपा ४३७, गाया १, १, ओघ २३२)।
उस्सुआव सक [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना, उत्सुक करना। उस्सुआवेइ (उत्तर ७१)।
उस्सुक्क, उस्सुक्क वि [उच्छुल्क] शुल्क-रहित, कर-रहित (कप्प, णाया १, १)।
उस्सुक्क वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।
उस्सुक्क, उस्सुग न [औत्सुक्य] उत्सुकता (श्रावक ३९८, धर्मसं ९५६, ९५७)।
उस्सुक्काव वि [उत्सुकय्] उत्सुक करना, उत्कण्ठित करना। सकृ उस्सुक्कावइत्ता (राज)।
उस्सुग वि [उत्सुक] उत्कण्ठि। (पउम ७९, २९, पण्ह २, ३)।
उस्सुत्त वि [उत्सूत्र] सूत्र-विरुद्ध, सिद्धान्त-विपरीत (वव १, उप १४६ टी)।
उस्सुय देखो उस्सुग (भग ५, ४, ओप)।
उस्सुय न [औत्सुक्य] उत्कण्ठा, उत्सुकता।

°कर वि [°कर] उत्कण्ठा-जनक (णाया १, १)।

उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ, फूला हुआ (उप ५६४, गउड, स २०३)।

उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम, 'वच्चामो नियनयरे उस्सूर वट्टए जेण' (सुर ७ ६३, उप पृ २२०)।

उस्सेअ पु [उत्सेक] १ सिंचन। २ उन्नति। ३ गर्व (चारु ४५)।

उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-धोया जल (कप्प, ठा ३, ३)।

उस्सेह पु [उत्सेध] १ ऊँचाई (विपा १, १)। २ शिखर, टोंच (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय, 'पडणता उस्सेहा' (स ३६६)।

उस्सेहगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण (विसे ३४० टी)।

उह स [उभ] दोनों, युग्म, युगल (षड्)।

उहट्ट अक [अप + घट्ट्] नष्ट होना। उहट्टइ (सम्मत्त १६२)।

उहट्टु देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।

उहय स [उभय] दोनों, युग्म (कुमा, भवि)।

उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष (पराह १, १)।

उहस सक [उप + हस्] उपहास करना। उहसइ (प्राकृ ३४)।

उहार पु [उद्धार] मत्स्य विशेष (राज)।

उहिजल पु [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु विशेष (सुख ३६, १४६)।

उहिजलिआ स्त्री [दे] ऊपर देखो (उत्त ३६, १४६)।

उहु (अप) देखो अहो = अहो (सण)।

उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख (गउड)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे उआराइसद्दसंकलणो णाम पंचमो तरंगो समत्तो ॥

ऊ

ऊ पु [ऊ] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण (हे १, १, प्रामा)।

ऊ अ [दे] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ गर्हा, निन्दा, 'ऊ णिल्लज्ज'। २ आक्षेप, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना, 'ऊ किं मए भणिअं'। ३ विस्मय, आश्चर्य, 'ऊ कह मुणिआ अहयं'। ४ सूचना, 'ऊ केण ण विण्णायं' (हे २, १९९, षड्)।

ऊअट्ठ वि [अववृष्ट] वृष्टि से नष्ट (पाअ)।

ऊआ स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १३९)।

ऊआस पु [उपवास] भोजनाभाव (हे १, १७३)।

ऊगिय वि [दे] अलंकृत (षड्)।

ऊज्झाअ देखो उवज्झाय (हे १, १७३, प्रामा)।

°ऊड देखो कूड (से १२, ७८, गा ५८३)।

ऊढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ, 'ऊढकल वज्जुणपरिमलेसु सुरमंदिरतेसु' (गउड)।

ऊढ वि [ऊढ] परिणीत, विवाहित (धर्मसं १३६०)।

ऊढा स्त्री [ऊढा] विवाहिता स्त्री (पाअ)।

ऊढिअय वि [दे] १ प्रावृत, आच्छादित। २ न आच्छादन, प्रावरण (पाअ)।

ऊण वि [ऊन] न्यून, हीन (पउम ११८, ११६)। °वीसइम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ (पउम १९, ८०)।

ऊण न [ऋण] ऋण, करजा (नाट)।

ऊणंदिअ वि [दे] आनन्दित, हर्षित (दे १, १४१, षड्)।

ऊणिमा स्त्री [पूर्णिमा] पूर्णिमा', तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स वहणाइ पत्थिओ पारसउलं' (महा)।

ऊणिय वि [ऊनित] कम किया हुआ (ज २)।

ऊणिय पु [ऊणिक] सेवक-विशेष (प्रश्नव्या० पत्र १३)।

ऊणोयरिआ स्त्री [ऊनोदरिता] कम आहार करना, तप-विशेष (भग २५, ७, नव २८)।

ऊतालीस } ऊयाल } स्त्री न [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस, ३९ (सुज्ज २, ३, पत्र ५२, देवेन्द्र २९४)।

ऊमिगण न [दे] प्रोञ्छनक, लुंछना (धर्म २)।

ऊमिणिय वि [दे] प्रोञ्छित, जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह (स ७५)।

ऊमित्तिअ न [दे] दोनों पार्श्वों में आघात करना (दे १, १४२)।

ऊर पु [दे] १ ग्राम, गाँव। २ संघ, समूह (दे १, १४३)।

°ऊर देखो तूर (से ८, ६५)।

°ऊर देखो पूर (से ८ ६५, गा ४५, २३१)।

ऊरण पु [ऊरण] मेष, भेड (राय, विसे)।

ऊरणी स्त्री [दे] मेष, भेड (दे १, १४०)।

ऊरणीअ वि [और्णिक] भेड़ी चरानेवाला (अणु १४४)।

°ऊरय वि [पूरक] पूर्त्ति करनेवाला (भवि)।

ऊरस वि [औरस] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र (ठा १०)।

ऊरिसंकिअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।

ऊरी अ [ऊरी] १ अंगीकार। २ विस्तार। °कय वि [°कृत] अंगीकृत, स्वीकृत (उप ७२८ टी)।

ऊरु पु [ऊरु] जङ्घा, जाँघ (णाया १, १८,

कुमा)। °जाल न [°जाल] जाँघ तक लटकने-वाला एक आभूषण (औप)।

ऊरुदग्घ वि [ऊरुदघ्न] जघा-प्रमाण (गहरा वगैरह) (पड्)।

ऊरुदअस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो (पड्)।

ऊरुमेत्त वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो (षड्)।

ऊल पुं [दे] गति-भग (दे १, १३९)।

°ऊल देखो कूल (गा १८६)।

ऊस पु [उस्र] किरण (हे १, ४३)। °मालि पु [°मालिन्] सूर्य (कुमा)।

ऊस पु [ऊष] क्षार-भूमि की मिट्टी (पएण १, जी ४)।

ऊसअ न [दे] उपधान, उसीसा, तकिया (दे १, १४०, पड्)।

ऊसढ वि [उत्सृष्ट] १ परित्यक्त । २ न उत्सर्जन, मलादि का त्याग, 'नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, त जहा, उचारं वा' (आचा २, २, १, ३)।

ऊसढ वि [दे. उच्छ्रित] १ उच्च, श्रेष्ठ (आचा २, ४, २, ३, जीव ३)। २ ताजा, 'भद्द भद्दएति वा, ऊसढ ऊसढेति वा, रसियं रसिए ति वा' (आचा २, ४, २, २)।

ऊसण न [दे] गति-भङ्ग (दे १, १३९)।

ऊसण्हसण्हिया देखो उस्सण्हसण्हिया (पव २५४)।

ऊसत्त देखो उसत्त (कप्प, आवम)।

ऊसत्थ पु [दे] १ जम्भाई। २ वि आकुल (दे १, १४३)।

ऊसर अक [उत् + सृ] १ खिसकना। २ दूर होना। ३ सक. त्यागना। ऊसरइ (भवि) सङ्क ऊसरिवि (भवि)।

ऊसर न [ऊषर] क्षार-भूमि, जिसमे बीज नही पैदा होता है, 'ऊसरदवदलियदड्ढरुक्खना-एण' (सम्य १७, भक्त ७३)।

ऊसरण न [उत्सरण] आरोहण, 'थाणूसरणं तओ समुप्पयणं' (विसे १२०८)।

ऊसय पु [उच्छ्रय] १ उत्सेध, ऊँचाई। २ उत्सेधाङ्गुल (जीवस १०४)।

ऊसल अक [उत् + लस्] उल्लसित होना। ऊसलइ (हे ४, २०२, पड्, कुमा)।

ऊसल वि [दे] पीन पुष्ट (दे १, १४०)।

ऊसलिअ वि [उल्लसित] उल्लसित, पादुर्भूत

ऊसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, १४१, पाअ)।

ऊसव देखो उस्सव = उत्सव (स्वप्न ६३)।

ऊसव देखो उस्सव = उत् + श्रि। उस्सवेह (पि ६४, ५५१)। संकृ ऊसविय (कप्प, भग)।

ऊसविअ वि [दे] १ उद्भ्रान्त (दे १, १४३)। २ ऊँचा किया हुआ (दे १, १४३, णाया १, ८, पाअ)। ३ उद्वान्त, वमित (पड्)।

ऊसविय वि [उच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित (कप्प)।

ऊसस सक [उत् + श्वस्] १ उसाँस लेना, ऊँचा सास लेना। २ विकसित होना। ३ पुलकित होना। ऊससइ (पि ६४, ३१५)। वकृ ऊससत, ऊससमाण (गा ७४, वण ४, पि ४९६)।

ऊससण न [उच्छ्वसन] उसाँस। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] श्वासोच्छ्वास की शक्ति (कम्म १, ४४)

ऊससिअ न [उच्छ्वसित] १ उसास (पडि)। २ वि उल्लसित। ३ पुलकित (स ८३)।

ऊससिर वि [उच्छ्वसितृ] उसास लेने-वाला (हे २, १४५)।

ऊसाअत वि [दे] खेद होने पर शिथिल (दे १, १४१)।

ऊसाइअ वि [दे] १ विक्षिप्त। २ उत्क्षिप्त (दे १, १४१)।

ऊसार सक [उत् + सारय्] दूर करना, त्यागना। सकृ. ऊसारिवि (अप) (भवि)।

ऊसार पु [दे] गर्त्त-विशेष (दे १, १४०)।

ऊसार पु [उत्सार] परित्याग (भवि)।

ऊसार पु [आसार] वेग वाली वृष्टि (हे १, ७६, पड्)।

ऊसारि वि [आसारिन्] वेग से वरसनेवाला (कुमा)।

ऊसारिअ वि [उत्सारित] दूर किया हुआ (महा, भवि)।

ऊसास पुं [उच्छ्वास] १ उसास, ऊँचा श्वास (आचू ५)। २ मरण (वृह १)। °णाम न [°नामन्] कर्म विशेष (कम्म १ ४४)।

ऊसासय वि [उच्छ्वासक] उसास लेने-वाला (विसे २७१४)।

ऊसासिअ वि [उच्छ्वासित] बाधा-रहित किया हुआ (दे १२, ६२)।

ऊसाह पु [उत्साह] उत्साह, उछाह (मा १०)।

ऊसि सक [उत् + श्रि] ऊँचा करना, उन्नत करना। सकृ ऊसिया (उत्त १०, ३५)।

ऊसिक्क सक [उत् + ष्वष्क्] ऊँचा करना। सकृ ऊसिक्किऊण (भग १, ८ टी)।

ऊसिक्किअ वि [दे] प्रदीप्त, शोभायमान (पाअ)।

ऊसित्त वि [उत्सिक्त] १ गर्वित। २ उद्धत। ३ बढ़ा हुआ। ४ अतिशायित (हे १, ११४)।

ऊसित्त वि [अवसिक्त] उपलिप्त (पाअ)।

ऊसिय देखो उस्सिय = उच्छ्रित (औप, कप्प, सण)।

ऊसीस, ऊसीसग, ऊसीसय } न [उच्छीर्ष, °क] उसीसा, सिरहाना (णाया १, ७, पाअ, सुपा ५३, १२०)।

ऊसुअ वि [उत्सुक] उत्कठित (गा ५४३, कुमा)।

ऊसुअ वि [उच्छुक] जहा से शुक उद्गत हुआ हो वह (हे १, ११४)।

ऊसुइअ वि [उत्सुकित] उत्सुक किया हुआ (गा ३१२)।

ऊसुंभ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना। ऊसुंभइ (हे ४, २०२)।

ऊसुंभिअ वि [उल्लसित] उल्लास-प्राप्त (कुमा)।

ऊसुंभिअ न [दे] १ रोदन-विशेष, गला बैठ जाय ऐसा रुदन (दे १,१४२, पड्)

ऊसुक्किअ वि [दे] विमुक्त, परित्यक्त (दे १, १४२)।

ऊसुग देखो ऊसुअ=उत्सुक (उप ५६७ टी)।

ऊसुग न [दे] मध्य भाग (आचा २, १, ८, ६)।

ऊसुम्भिअ वि [दे] उसीसा या सिरहाना किया हुआ (पड्)।

ऊसुर न [दे] ताम्बूल, पान (हे २, १७४)।

ऊसुरुसुंभिअ [दे] देखो ऊसुंभिअ (दे १, १४२)।

ऊह सक [ऊह्] १ तर्क करना। २ विचारना। ऊहइ (विसे ८३१), ऊहेमि (सुर ११, १८५)। संकृ ऊहिऊण (आउ ५२)।
ऊह न [ऊधस्] स्तन (विपा १, २)।
ऊह पु [ऊह] १ विचार, विवेक-बुद्धि (राज)। २ तर्क, वितर्क (सूअ २, ४)। ३ संख्या-विशेष (राज)। ४ ओघ-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान (विसे ५२२, ५२३)।
ऊहंग न [ऊहाङ्ग] संख्या-विशेष (राज)।
ऊहट्टु वि [दे] उपहसित (दे १, १४०)।
ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (दे १, १४०)।
ऊहा स्त्री [ऊहा] तर्क, विचार-बुद्धि (श्रावम)।
ऊहापोह पु [ऊहापोह] सोच-विचार, मन मे होनेवाला तर्क-वितर्क (कुप्र ६१)।
ऊहिअ वि [ऊहित] अनुमान से ज्ञात (से ६, ४२)।
ए पु [ए] स्वर-वर्ण विशेष (हे १,१; प्रामा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऊआराइसद्दसंकलणो छट्ठो तरंगो समत्तो ॥

ए

ए पु [ए] स्वर वर्ण-विशेष (हे १,१; प्रामा)।
ए अ [ए, ऐ] इन अर्थो का सूचक अव्यय— १ आमन्त्रण, सम्बोधन, 'ए एहि सवडहुत्तो मज्झ' (पउम ८, १७४)। २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा; 'से जहाणाम ए' (अणु)। ३ स्मरण। ४ असूया, ईर्ष्या। ५ अनुकम्पा, करुणा। ६ आह्वान (हे २, २१७; भवि; गा ६०४)।
ए सक [आ + इ] आना आगमन करना। एइ (उवा)। भवि. एहिइ (उवा)। वकृ एंत (पउम ८, ४३; सुर ११, १४८), इंत (सुर ३, १३), एज्जंत (पि ५६१), एज्जमाण (उप ६४८ टी)।
ए° देखो एत्तिअ (उवा)।
ए° देखो एव (उवा)।
एअ वि [एत] आया हुआ, आगत (सम्मत्त ११६)।
एअ स [एतत्] यह (भग; हे १,११; महा)। °रिस वि [°दृश] ऐसा, इसके जैसा (द्र ३२)। °रूव वि [°रूप] ऐसा, इस प्रकार का (णाया १, १; महा)।
एअ देखो एग (गउड; नाट; स्वप्न ६०, १०६)। °आइ वि [°किन्] अकेला (अभि १६०; प्रति ६५)। °रह त्रि व [°दशन्] ग्यारह की संख्या, दश और एक (पि २४५)। °रहम वि [°दश] ग्यारहवाँ (भवि)।
एअ देखो एव = एव (कुमा)।
एअ } देखो एव; 'एअ वि सिरीअ दिट्ठआ'
एअं } (से ३, ४६; गउड; पिंग)।
एअंत देखो एक्कत (वेणी १८)।
एआईस (अप) पु व [एकविंशति] एक्कीस (पिंग)।
एआरिच्छ वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (प्रामा)।
एइज्जमाण देखो एय = एज्।
एइय वि [एजित] कम्पित (राय ७४)।
एइस देखो एईस (सुख २, १७)।
एईस वि [एतादृश] ऐसा (विसे २५४६)।
एउंजि (अप) अ [एवमेव] १ इसी तरह। २ यही (भवि)।
एऊण देखो एगूण (पिंग)।
एंत देखो इ = इ।
एंत देखो ए = आ + इ।
एक देखो एक्क तथा एग (षड्; सम ६६; पउम १०३, १७२; हेका ११६; पण्ह २, ५; पउम ११४, २४; सुपा १६५; कप्प; सम ७१, १५३)। °डआ अ [°दा] एक समय मे, कोई वक्त (हे २, १६२)। °ल (अप) वि [°क] एकाकी (पि ५९५)। °लिय वि [°किन्] एकाकी, अकेला (उप ७२८ टी)। °णउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, एकानवे (सम ६५; पि ४३५)।
एकूण देखो अउण = एकोन (सुज्ज १६)।
एक्क देखो एक तथा एग (हे २, ६६; सुपा १४३; सम ६६, ५५; पउम ३१, १२८; गउड; कप्पू; मा १८; सुपा ४८६; मा ४१; पि ५६५; नाट; णाया १, १; गा ६१८; काल; सुर ५, २४२; भग; सम ३६; पउम २१, ६३; कप्प)। °वए देखो एगपए (गउड; सुर १, ३८)। °सणिय वि [°ाशनिक] एक ही बार भोजन करनेवाला (पण्ह २, १)। °सत्तरि स्त्री [°सप्तति] संख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर (सम ८२)। °सरग, °सरय वि [°सरक, °सर्ग] एक समान, एक सरीखा (उवा; भग १६; पण्ह २, ५)। °सि अ [°शस्] एक वार, 'सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाए' (भग); 'एक्कसि कओ पमाओ जीव पाडेइ भवसमुद्दम्मि' (सुर ८,११२), 'एक्कसि सीलकलंकिअह देज्जहि पच्छित्ताइं' (हे ४, ४२८)। °सि अ [°त्र] एक (किसी एक) मे, 'एक्कसि न खु त्थिरो मित्ति पिओ कीइवि उवालद्धो' (कुमा)। °सिं, °सिअ अ [°दा] कोई एक समय मे (हे २, १६२)। °सिं अ [°शस्] एक वार (पि ४५१)। °इ वि [°किन्] अकेला (प्रयौ २३)। °इ पु [°ादि] स्वनाम-स्यात एक माण्डलिक (सूवा) (विपा १, १)। °णउय वि

[°नवत] ६१ वाँ (पउम ६१, ३०)। °रसम वि [°दश] ग्यारहवाँ (विपा १, १, उवा; सुर ११, २५०)। °रह त्रि व [°दशन्] ग्यारह, दश और एक (पड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] सख्या-विशेष, एकासी (सम ८८)। °सीइविह वि [°शीतिविध] एकासी तरह का (पएए १,१७)। °सीय वि [°शीत] एकासीवाँ, ८१ वाँ (पउम ८१, १६)। °त्तरसय वि [°त्तरशततम] एक सौ एक वाँ, १०१ वाँ (पउम १०१, ७६)। °यर पुं [°दर] सहोदर भाई, सगा भाई (पउम ६, ६० ४६, १८)। °यरा स्त्री [°दरा] सगी बहिन (पउम ८ १०६)।

एक्क वि [एकक] अकेला (हेका ३१)।

एक्क वि [दे] स्नेह-पर, प्रेम-तत्पर (दे १, १४८)।

एक्कई (अप) वि [एकाकिन्] एकाकी, अकेला (भवि)।

एक्कग न [दे] चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष (दे १, १४४)।

एक्कन्त पु [एकान्त] १ सर्वथा। २ तत्त्व, प्रमेय। ३ जरूर, अवश्य। ४ असाधारणता, विशेष (से ८,२३)। ५ निर्जन, निराला (गा १०२)। देखो एगंत।

एक्कक्क वि [एकैक] हर एक, प्रत्येक (नाट)।

एक्कक्कम [दे] देखो एक्केक्कम (से ५, ५६)।

एक्कगसित्थ न [एकसिक्थ] तपो-विशेष (पव २७१)।

एक्कग्ग देखो एग-ग्ग = एक-क (कुप्र ७६)।

एक्कवरिल्ल पुं [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे १, १४६)।

एक्कणड पु [दे] कथक, कथा कहनेवाला (दे १, १४५)।

एक्कसुद्द वि [दे] १ धर्म-रहित, निधर्मी। २ दरिद्र, निर्धन। ३ प्रिय, इष्ट (दे १, १४८)।

एक्कमेक्क वि [एकैक] प्रत्येक, हर एक (हे ३, १, पड्, कुमा)।

एक्कल्ल वि [दे] प्रबल, बलवान् (पड्)।

एक्कल्लपुडिंग न [दे] विरल-बिन्दु-वृष्टि, अल्प बिन्दुवाली बारिश (दे १, १४७)।

एक्कसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुरन्त। २ सप्रति, आजकल (हे २, २१३, षड्)।

एक्कसिरिआ अ [दे] शीघ्र, जलदी (प्राकृ ८१)।

एक्कसाहिल्ल वि [दे] एक स्थान मे रहने-वाला (दे १, १४६)।

एक्कसिवली स्त्री [दे] शाल्मली-पुष्पो मे नूतन फलवाली (दे १, १४६)।

एक्कसेस देखो एग-सेस (अणु १४७)।

एक्कह देखो एग (प्राकृ ३५)।

एक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, १६)।

एक्कार पु [अयस्कार] लोहार (हे १, १६६, कुमा)।

एक्की स्त्री [एका] एक (स्त्री) (निचू १)।

एक्कूण देखो अउण (पि ४४५)।

एक्केक्कम वि [दे] परस्पर, अन्योन्य (दे १, १४५), 'मुहडा एक्केक्कम अपेच्छता' (पउम ६८, १५)।

एक्कोल्ल } देखो एग (प्राकृ, ३५)।
एक्कोल्ल }

एग स [एक] १ एक, प्रथम-सख्या (अणु)। २ एकाकी, अकेला (ठा ४, १)। ३ अद्वितीय (कुमा)। ४ असहाय, नि सहाय (विपा १, २)। ५ अन्य, दूसरा, 'एवमेगे वदति मोसा' (पएह १, २)। ६ समान, सदृश, तुल्य (उवा)। °इय देखो एग, 'अत्थेगइयाए नेरइयाए एग पलिओवम ठिई पन्नत्ता' (सम २, ठा ७, ओप)। °इय वि [°क] अकेला, एकाकी (भग)। °ओ अ [°तस्] एक तरफ (कप्प)। °क्खरिय वि [°क्षरिक] एक अक्षरवाला (नाम) (अणु)। °खंधी स्त्री [°स्कन्ध] एक स्कन्धवाला (वृक्ष वगैरह) (जीव ३)। °खुर वि [°खुर] एक खुरवाला (गौ वगैरह पशु) (पएए १)। °ग वि [°क] एकाकी, अकेला (श्रा १४)। °ग्ग वि [°ग्र] तल्लीन, तत्पर (सुर १, ३०)। °चक्खु वि [°चक्षुष्क] एक आँखवाला, एकाक्ष, काना (पएह २, ५)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] एकतालीसवाँ (पउम ४१, ७६)। °चर वि [°चर] एकाकी विहरने-वाला (आचा)। °चरिया स्त्री [°चर्या] एकाकी विहरना (आचा)। °चारि वि [°चारिन्] अकेले-विहारी (सूअ १, १३)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)। °च्छत्त वि [°च्छत्र] १ पूर्ण प्रभुत्ववाला, अकण्टक, 'एगच्छत्त ससागर भुजिऊण वसुह' (पएह २, ४)। २ अद्वितीय (काप्र १८६)। °जडि वि [°जटिन्] महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °जाय वि [°जात] अकेला, निस्सहाय, 'खग्गविमाएा व एगजाए' (पएह २, ५)। °ट्ठ वि [°स्थ] इकट्ठा, एकत्रित (भग १४, ६, उप पृ ३४१)। °ट्ठ वि [°र्थ] एक अर्थवाला, पर्याय-शब्द (ओघ १ भा)। °ट्ठ, °ट्ठ अ [°त्र] एक स्थान मे, 'मिलिया मन्नेवि एगट्ठ' (पउम ४७, ४४)। °ट्ठिय वि [°र्थिक] एक ही अर्थवाला, समानार्थक, पर्याय-शब्द (ठा १)। °ट्ठिय वि [°स्थिक] जिसके फल मे एक ही बीज होता है ऐसा आम वगैरह का पेड (पएए १)। °णासा स्त्री [°नासा] एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (आव १)। °त्त न [°त्र] एक ही स्थान मे, 'एगत्ते ठिओ' (स ४७०)। °त्थ देखो °ट्ठ (सम्म १०६, निचू १)। °नासा देखो °णासा (ठा ८)। °पए अ [°पदे] एक ही साथ, युगपत् (पि १७१)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ असहाय (राज)। २ ऐकान्तिक, अविरुद्ध (सूअ १, १२)। °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन, पचास और एक। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] एकावनवाँ, ५१ वाँ (पउम ५१, २८)। °पाइअ वि [°पादिक] एक पाँव ऊँचा रखनेवाला (आतापना मे) (कस)। °पासग वि [°पार्श्वक] एक ही पार्श्व की भूमि से सम्बन्ध रखनेवाला (आतापना मे) (पएह २, १)। °पासिय वि [°पार्श्विक] देखो पूर्वोक्त अर्थ (कस)। °भत्त न [°भक्त] व्रत-विशेष, एकासन (पचा १२)। °भूय वि [°भूत] १ एकीभूत, मिला हुआ (ठा १)। २ समान (ठा १०)। °मण वि [°मनस्] एकाग्रचित्त, तल्लीन (सुर २, २२६)। °मेग वि [°एक] प्रत्येक, हर एक (सम ६७)। °य वि [°क] एकाकी, अकेला (दस ५)। °य वि [°ग] अकेला जानेवाला (उत्त ३)। °यर वि [°तर] दो मे से कोई

भी एक (पड्)। °या अ [°दा] एक समय मे (प्राकृ; नव २४)। °राइय वि [°रात्रिक] एक-रात्रि-सम्बन्धी, एक रात मे होनेवाला (सम २१ सुर ६, ६०)। °राय न [°रात्र] एक रात (ठा ५ २)। °ल्ल वि [एक] एकाकी, अकेला (ठा ७, सुर ४, ५४)। °विह वि [°विध] एक प्रकार का (नव ३)। °विहारि वि [°विहारिन्] एकल-विहारी, अकेला विचरनेवाला (बृह १)। °वीसइम वि [°विंशतितम] एकीसवाँ (पउम २१, ८१)। °वीसा स्त्री [°विंशति] एक्कीस (पि ४४५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] एकसठवा, ६१ वा (पउम ६१, ७५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] एकसठ (सम ७५)। °सत्तर वि [°सप्तत] एकहत्तरवा, ७१ वा (पउम ७१, ७०)। °समइय वि [°सामयिक] एक समय मे होनेवाला (भग २४, १)। °सरिया स्त्री [°सरिका] एकावली, हार-विशेष (जं १)। °साडिय वि [°शाटिक] एक वस्त्र-वाला, 'एगसाडियमुत्तरासग करेइ' (कप्प, णाया १, १)। °सिअ अ [°दा] एक समय मे (पड्)। °सेल पु [°शैल] पर्वत-विशेष (ठा २, ८)। °सेलकूड पुन [°शैलकूट] एकशैल पर्वत का शिखर-विशेष (ज ८)। °सेस पुं [°शेष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (अणु)। °हा अ [°धा] एक प्रकार का (ठा १)। °हुत्त अ [°सकृत्] एक बार (प्रामा)। °ागिअ वि [°ाकिन] अकेला (वव, ओघ २८ भा)। °ादस त्रि व [°ादशन्] ग्यारह्। °ादसुत्तरसय वि [°ादशोत्तरशततम] एक सौ ग्यारहवाँ, १११ वाँ (पउम १११, २८)। °ाभोग पुं [°ाभोग] एकत्र-बन्धन (निचू १)। °ामोस वि [°ामर्श] १ प्रत्यु-पेक्षणा का एक दोष, वस्त्र को मध्य मे ग्रहण कर दोनो अचलो को हाथ मे घसीट कर उठाना (ओघ २६७)। °ायय वि [°ायत] एकत्र सबद्ध (कप्प)। °ारस देखो °ादस (पि ४३५)। °ारसी स्त्री [°ादशी] तिथि-विशेष, एकादशी (कप्प, पउम ७३, ३४)। °ावण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन (पि २६५)। °ावलि, °ली स्त्री [°ावलि, °ली] विविध प्रकार की मणियो से ग्रथित हार (औप)। °ावलिपविभत्ति न [°ावलीप्रविभक्ति] नाटक-विशेष (राय)। °ावाइ पु [°वादिन्] एक ही आत्मा वगैरह पदार्थ को माननेवाला दर्शन, वेदान्त-दर्शन (ठा ८)। °ावीस स्त्रीन [°विंशति] सख्या-विशेष, एक्कीस (पउम २०, ८२)। °ासण न [°ाशन, °ासन] व्रत विशेष, एकाशन (धर्म २)। °ाह पुन [°ाह] एक दिन (आचा २, ३, १)। °ाहच्च वि [°ाहत्य] एक ही प्रहार मे नष्ट हो जानेवाला (भग ७, ६)। °ाहिय वि [°ाहिक] १ एक दिन का उत्पन्न। २ पु ज्वर-विशेष, एकान्तर ज्वर (भग ३ ७)। °ाहिय वि [°ाधिक] एक से ज्यादा (पच)। देखो एअ, एक और एक्क।

एगत देखो एकत्त (ठा ५, सूअ १, १२, ओघ ५५, पचा ५, १०)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ जैनेतर दर्शन। २ वि जैनेतर दर्शन को माननेवाला (सूअ २, ६)। ३ स्त्री निश्चित सम्यक्त्व, निश्चल सत्य-श्रद्धा (सूअ १, १३)। °दूसमा स्त्री [°दुष्षमा] अवसर्पिणी-काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी-काल का पहला आरा, काल-विशेष (सूअ १, ३)। °पंडिय पु [°पण्डित] साधु, सयत (भग)। °बाल पुं [°बाल] १ जैनेतर दर्शन को माननेवाला। २ असयत जीव (भग)। °वाइ वि [°वादिन्] जैनेतर दर्शन का अनुयायी (राज)। °वाय पुं [°वाद] जैनेतर दर्शन (सुपा ६५८)। °सुसमा स्त्री [°सुषमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का प्रथम और उत्सर्पिणी काल का छठवाँ आरा (इदि)।

एगतिय वि [ऐकान्तिक] १ अवश्यभावी (विसे)। २ अद्वितीय, 'एगतिय कम्मवाहि-ओमह' (स ५६२)। ३ जैनेतर दर्शन (सम्म १३०)।

एगतिय न [ऐकान्तिक] मिथ्यात्व का एक भेद —वस्तु को सर्वथा क्षणिक आदि एक ही दृष्टि से देखना (सबोध ५२)।

एगट्ठि देखो एग-सट्ठि (देवेन्द्र १३६, सुज्ज १२)।

एगट्ठिया स्त्री [दे] नौका, जहाज (णाया १, १६)।

एगठाण न [एकस्थान] एक प्रकार का तप (पव २७१)।

एगिंदिय वि [एकेन्द्रिय] एक इन्द्रियवाला, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला (जीव) (ठा७)।

एगीभूत वि [एकीभूत] मिला हुआ, एकता-प्राप्त (सुपा ८६)।

एगूण देखो अउण। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] उनचालीसवा (पउम ३६, १०४)। °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] उनचालीस (सम ६६)। °चत्तालीसइम वि [°चत्वारिंशत्तम] उनचालीसवा (सम ८६)। °णउइ स्त्री [°नवति] नवासी (पि ४४४)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २६। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] उनतीसवाँ, २६ वाँ (पउम २६, ४६)। °नउइ देखो °णउइ (सम ६८)। °नउय वि [°नवत] नवासीवाँ (पउम ८६, ६५)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] उनचास (सम ७०, भग)। °पन्नास वि [°पञ्चाश] उनपचासवाँ (पउम ४६, ४०)। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] उनपचासवाँ (सम ६६)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] उन्नीस (सम ३६, पि ४४४, णाया १, १६)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] उन्नीस (सम ७३)। °वीसइम, °वीसईम, °वीसम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ (णाया १, १८, पउम १६, ४५, पि ४४६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] उनसठवाँ ५६ वाँ (पउम ५६, ८६)। °सत्तर वि [°सप्तत] उनसत्तरवा (पउम ६६, ६०)। °ासी, °ासीइ स्त्री [°ाशीति] उनासी (सम ८७, पि ४४८, ४४६)। °ासीय वि [°ाशीत] उनासीवाँ, ७६ वाँ (पउम ७६, ३५)। देखो अउण।

एगूरुय पुं [एकोरुक] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ वि उसका निवासी (ठा ८, २)।

एग्ग (अप) देखो एग (पिंग)।

एज पुं [एज] वायु, पवन (आचा)।

एजणया स्त्री [एजना] कम्प, काँपना (सूअनि १६६)।

एज्ज देखो एय=एज्। वकृ एज्जमाण (राय ३८)।

एज्जत देखो ए=आ+इ।

एज्जण न [आयन] आगमन (वव ३)।

एज्जमाण देखो ए = आ + इ ।

एड सक [एड्] छोड़ना, त्याग करना । एडइ (भग) । कवकृ. एडिज्जमाण (णाया १, १६) । संकृ. एडित्ता (भग) । कृ. एडेयव्व (णाया १, ६) ।

एड सक [एडय्] हटाना, दूर करना । एडेह, संकृ. एडेत्ता (राय १८) ।

एडक्क पु [एडक] मेष, भेड़ (उप पृ २३८) ।

एडया स्त्री [एडका] भेड़ी (षट्) ।

एण पु [एण] कृष्ण मृग, हरिण (कप्पू) । °णाहि स्त्री [°नाभि] कस्तूरी (कप्पू) ।

एणंक पु [एणाङ्क] चन्द्र, चन्द्रमा (कप्पू) ।

एणिज्ज वि [एणेय] हरिण-सम्बन्धी, हरिण का (मांस वगैरह) (राज) ।

एणिज्जय पु [एणेयक] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८) ।

एणिस पु [एणिस] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी) ।

एणी स्त्री [एणी] हरिणी (पाअ, पण्ह १, ४) । °यार पु [°चार] हरिणी को चरानेवाला, उनका पोषण करनेवाला (पण्ह १, १) ।

एणुवासिअ पुं [दे] भेक, मेढक (दे १, १४७) ।

एणेज्ज देखो एणिज्ज (विपा १, ८) ।

एण्ह } अ [इदानीम्] अधुना, सम्प्रति
एण्हि } (महा, हे २, १३४) ।

एताव देखो एत्तिअ = एतावत्, 'एताव नरलोओ' (जीवस १८७) ।

एत्तअ वि [इयत्, एतावत्] इतना (अभि ५६, स्वप्न ४०) ।

एत्तए देखो इ = उ ।

एत्ताहि (अप) अ [इतस्] यहां से (कुमा) ।

एत्तहे देखो इत्तहे (कुमा) ।

एत्ताहे देखो इत्ताहे (हे २, १३४, कुमा) ।

एत्तिअ } वि [इयत्, एतावत्] इतना
एत्तिल } (हे २, १५७) । °मत्त, °मेत्त वि [°मात्र] इतना ही (हे १, ८१) ।

एत्तिक (शौ) देखो एत्तिअ = एतावत् (प्राकृ ६५) ।

एत्तुल (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४०८, कुमा) ।

एत्तूण अ [दे] अधुना, इस समय (प्राकृ ८०) ।

एत्तो देखो इओ (महा) ।

एत्तोअ अ [दे] यहां से लेकर (दे १, १४४) ।

एत्थ अ [अत्र] यहां, यहां पर (उवा गउड चारु १०३) ।

एत्थी देखो इत्थी (उप १०३१ टी) ।

एत्थु (अप) देखो एत्थ (कुमा) ।

एदपज्ज न [ऐदम्पर्य] तात्पर्य, भावार्थ (उप ८५६ टी) ।

एदिहासिअ (शौ) वि [ऐतिहासिक] इतिहास-सम्बन्धी (प्राप) ।

एद्दह देखो एत्तिअ (हे २, १५७, कुमा, काप्र ७७) ।

एम (अप) अ [एव] इस तरह, ऐसा (षट् पिंग) ।

एमइ (अप) अ [एवमेव] इसी तरह, ऐसा ही (षट्, वज्जा ६०) ।

एमाइ } वि [एवमादि] इत्यादि, वगैरह
एमाइय } (सुर ८, २६, उव) ।

एमाण वि [दे] प्रवेश करता हुआ (दे १, १४४) ।

एमिणिआ स्त्री [दे] वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से माप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है (दे १, १४५) ।

एमेअ } अ [एवमेव] इसी तरह, इसी
एमेव } प्रकार, 'ता भण किं करणिज्ज एमेअ ए वासरो ठाइ' (काप्र २६, हे १, २७१) ।

एम्व (अप) अ [एवम्] इस तरह, इस प्रकार (हे ४, ४१८) ।

एम्वइ (अप) अ [एवमेव] इसी तरह, इस प्रकार (हे ४, ४२०) ।

एम्वहिं (अप) अ [इदानीम्] इस समय, अधुना (हे ४, ४२०) ।

एय अक [एज्] १ काँपना हिलना । २ चलना । एयइ (कप्प) । वकृ. एयंत (ठा ७) । प्रयो., कवकृ. एइज्जमाण (राज) ।

एय पु [एज] गति, चलन (भग २५, ४) ।

एयत देखो एक्कत (पउम १५, ५८) ।

एयण न [एजन] कम्प, हिलन, 'निरेयणं झाणं' (आव ४) ।

एयणा स्त्री [एजना] १ कम्प । २ गति, चलन (सूअ २, २, भग १७, ३) ।

एयाणिं देखो इयाणिं (रंभा) ।

एयावंत वि [एतावत्] इतना (आचा) ।

एरंड पु [एरण्ड] १ वृक्ष-विशेष, रेंड, अंडी, एरण्ड का पेड (ठा ४, ४, णाया १, १) । २ तृण-विशेष (पण्ण १) । °मिंजिया स्त्री [°मिञ्जिका] एरण्ड-फल (भग ७, १) ।

एरंड वि [ऐरण्ड] एरण्ड-वृक्ष-सम्बन्धी (पत्रादि) (दे १, १२०) ।

एरंडइअ } पु [दे] पागल कुत्ता 'एरडए
एरंडय } माणे एरंडइयमाणेत्ति हडक्कयित' (बृह १) ।

एरण्णवय न [ऐरण्यवत] १ क्षेत्र-विशेष (सम १२) । २ वि उस क्षेत्र में रहनेवाला (ठा २) ।

एरवई स्त्री [ऐरावती, अजिरवती] नदी-विशेष (राज कस) ।

एरवय न [ऐरवत] १ क्षेत्र-विशेष (सम १२, ठा २, ३) । २ पु पर्वत-विशेष (ठा १०) ।

एरवय वि [ऐरवत] ऐरवत क्षेत्र का (सुज्ज १ ३) ।

एरवय वि [ऐरवत] ऐरवत क्षेत्र का रहनेवाला (अणु) । °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (ठा १०),

एराणी स्त्री [दे] १ इन्द्राणी व्रत का सेवन करनेवाली स्त्री (दे १, १४७) ।

एरावई स्त्री [ऐरावती] नदी-विशेष (ठा ५, २, पि ४६५) ।

एरावण पु [ऐरावण] १ इन्द्र का हाथी, जो कि इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव है (ठा ५, १, प्रयौ ७८) । °वाहण पु [°वाहन] इन्द्रवाहन (उप ५३० टी) ।

एरावय पु [ऐरावत] १ ह्रद-विशेष (राज) । २ ह्रद-विशेष का अधिष्ठाता देव (जीव ३) । ३ छन्द-शास्त्रप्रसिद्ध पञ्चकला प्रस्तार में आदि के ह्रस्व और अन्त के दो गुरु अक्षरों का संकेत (पिंग) । ४ लकुच वृक्ष । ५ सरल और लम्बा इन्द्र धनुष । ६ इरावती नदी का समीपवर्त्ती देश । ७ इन्द्र का हाथी (हे १, २०८) ।

एरिस वि [ईदृश] इस तरह का, ऐसा (आचा, कुमा, प्रासू २१) ।

एरिसिअ (अप) ऊपर देखो (पिंग) ।

एल त्रि [दे] कुशल निपुण (दे १, १४८)।

एल
एलग } पु [एड, एल] १ मृगों की एक जाति (विपा १, ८)। २ मेष भेड (सूअ २, २)। °मूअ, °मूग वि [°मूक] १ मूक, भेड की तरह अव्यक्त बोलनेवाला, जलएलमूअमम्मणअलियवयणजपणे दोसा' (श्रा १२ दस ५, श्राव ४ निचू ११)।

एलगच्छ न [एलकाक्ष] स्वनाम-ख्यात नगर-विशेष (उप २११ टी)।

एलअ देखो एल (उवा, पि २४०)।

एलविल वि [दे] १ धनाढ्य, धनी। २ पु वृषभ, बैल (दे १, १४८ पड्)।

एला स्त्री [एला] १ इलायची का पेड़ (से ७, ६२)। २ इलायची-फल (सुर १३, ३३)। °रस पु [°रस] इलायची का रस (पण्ह २ ५)।

एलालुय पुन [एलालुक] आलू की एक जाति, कन्द-विशेष (अनु ६)।

एलावच्च न [एलापत्य] माण्डव्य गोत्र का एक शाखा-गोत्र (ठा ७)।

एलावच्च वि [ऐलापत्य] एलापत्य-गोत्र का (णंदि ४९)।

एलावच्चा स्त्री [एलापत्या] पक्ष की तीसरी रात (चंद १०, १४)।

एलिक्ख वि [ईदृक्ष] ऐसा (उत्त ७, २२)।

एलिय पु [एलिक] धान्य-विशेष (पण्ह १)।

एलिया स्त्री [एडिका, एलिका] १ एक जात की मृगी। २ भेड़िया (हे ३ ३२)।

एलिस देखो एरिस (सूअ १, ६, १)।

एलु पु [एलु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

एलुग
एलुय } पुन [एलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (जीव ३, आचा २)।

एल्ह वि [दे] दरिद्र, निर्धन (दे १, १७४)।

एव अ [एव] इन अर्थों का सूचक अव्यय —१ अवधारण, निश्चय (ठा ३, १ प्रासू १६)। २ सादृश्य तुल्यता। ३ चार-नियोग। ४ निग्रह। ५ परिभव। ६ अल्प, थोड़ा (हे २, २१७)।

एव देखो एव (हे १, २९, पउम १५, २४)।

एवइ वि [इयत्, एतावत्] इतना। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] इतनी वार (कप्प)।

एवइय वि [इयत्, एतावत्] इतना (कप्प, विसे ४४८)।

एव अ [एवम्] इस तरह, इस रीति से इस प्रकार (सूअ १, १, हे १ २९)। °भूअ पु [°भूत] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया से विशिष्ट अर्थ का ही शब्द का अभिधेय माननेवाला पक्ष (ठा ७)। २ वि इस तरह का एव-प्रकार (उप ८७७)। °विय, °विह वि [°विध] इस प्रकार का (हे ४, ३२३, काल)।

एवहास पु [एवहास] इतिहास (गउड ८०२)।

एवड (अप) वि [इयत्] इतना (हे ४, ४०८, कुमा, भवि)।

एवमाइ देखो एमाइ (पण्ह १, ३)।

एवमेव
एवामेव } देखो एमेव (हे १, २७१, उवा)।

एव्व देखो एव (पड्, अभि ७२, स्वप्न १०)।

एव्व देखो एव=एव (अभि १३ स्वप्न ४०)।

एव्वहि (अप) अ [इदानीम्] इस समय, अधुना (पड्)।

एव्वारु पु [इर्वारु] ककड़ी (कुमा)।

एस सक [इष्] १ इच्छा करना। २ खोजना। ३ प्रकाशित करना। एसइ (पिंड ७५)।

एस सक [आ + इष्] करना, 'तम्हा विणयमेसिज्जा' (उत्त १, ८, सुख १, ७)।

एस सक [आ + इष्] १ खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना। २ निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना। एसति (आचा २, ६, २)। वकृ. एसमाण (आचा २, ५, १)। संकृ एसित्ता, एसिया (उत्त १, आचा)। हेकृ एसित्तए (आचा २, २, १)।

एस वि [एष्य] १ भावी पदार्थ, होनेवाली वस्तु (आव ५)। २ पु भविष्य काल (दसनि १), 'अकयन सपइ गए कह कीरइ, किह व एसम्मि' (विसे ४२२)।

°एस देखो देस, 'भण को ण रुम्मइ जणो पत्थिज्जतो अएसकालम्मि' (गा ४००)।

एसग त्रि [एषक] अन्वेषक, गवेषक (आचा)।

एसज्ज न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुत्व, संपत्ति (ठा ७)।

एसण न [एषण] १ अन्वेषण, खोज। २ ग्रहण (उत्त २)।

एसणा स्त्री [एषणा] १ अन्वेषण, गवेषण, खोज (आचा)। २ प्राप्ति, लाभ, 'तिमएसणं भियायति' (सूअ १, ११)। ३ प्रार्थना (सूअ १, २)। ४ निर्दोष आहार की खोज करना (ठा ६)। ५ निर्दोष भिक्षा (आचा २)। ६ इच्छा, अभिलाष (पिंड १)। ७ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४)। °समिइ स्त्री [°समिति] निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना (ठा ५)। °समिय वि [°समित] निर्दोष भिक्षा को ग्रहण करनेवाला (उत्त १६, भग)।

एसणिज्ज त्रि [एषणीय] ग्रहण-योग्य (णाया १, ५)।

एसि वि [एषिन्] अन्वेषक, खोज करनेवाला (आचा)।

एसिय वि [एषिक] १ खोज करनेवाला, गवेषक। २ पु व्याध। ३ पाखण्ड-विशेष (सूअ १, ९)। ४ मनुष्यों की एक नीच जाति (आचा २, १, २)।

एसिय वि [एषित] गवेषित, अन्वेषित (भग ७, १)। २ निर्दोष भिक्षा (वव ४)।

एसिअ वि [एषित] भिक्षा-चर्या की विधि से प्राप्त (सूअ २, १, ५६)।

एस्सरिय देखो एसज्ज (उत्त)।

एह अक [एध्] बढ़ना, उन्नत होना। एहइ (पड्)। प्रयो, कवकृ 'दीसन्ति दुहम् एहता' (दस ६)।

एह (अप) वि [ईदृक्] ऐसा, इसके जैसा (पड्, भवि)।

एहत्तरि (अप) स्त्री [एकसप्तति] संख्या-विशेष, ७१ (पिंग)।

एहा स्त्री [एधस्] समिध, इन्धन (उत्त १२, ४३, ४४)।

एहिअ वि [ऐहिक] इस जन्म-संबन्धी (ओघ ६०)।

॥ इअ सिरिपाईअसद्दमहण्णवे एआराइसद्दसंकलणो सत्तमो तरंगो समत्तो ॥

ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संभावना। २ आमन्त्रण, संबोधन। ३ प्रश्न। ४ अनुराग, प्रीति। ५ अनुनय, 'ऐ बीहेमि, ऐ उम्मत्तिए' (हे १, १६९)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऐआराइसद्दसंकलणो अट्ठमो तरंगो समत्तो ॥

ओ

ओ पुं [ओ] स्वर वर्ण-विशेष (हे १, १, प्रामा)।

ओ देखो अव = अप (हे १, १७२, प्राप्र, कुमा, षड्)।

ओ देखो अव (हे १, १७२ प्राप्र, कुमा, षड्)।

ओ देखो उव (हे १, १७२, कुमा)।

ओ देखो उव = उत (हे १, १७३, कुमा)।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ वितर्क। २ प्रकोप, विस्मय (प्राकृ ७८)।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ सूचना, 'ओ अविणयतत्तिल्ले'। २ पश्चात्ताप, अनुताप, 'ओ न मए छाया इत्तिआए' (हे २, २०३, षड्, कुमा, प्राप्र)। ३ संबोधन, आमन्त्रण (नाट—चैत ३४)। ४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पंचा १, विसे २०२८)।

ओअ न [दे] वार्ता, कथा कहानी (दे १, १८९)।

ओअअ वि [अपगत] अपसृत, 'ओअआअव—' (पि १६५)।

ओअक्क पु [दे] गर्जित, गर्जना (दे १, १५८)।

ओअद्द सक [आ + छिद्] १ बलात्कार से छीन लेना। २ नाश करना। ओअद्दइ (हे ४, १२५, षड्)।

ओअदणा स्त्री [आच्छेदना] १ नाश। २ जबरदस्ती छीनना (कुमा)।

ओअक्ख सक [दृश्] देखना। ओअक्खइ (हे ४, १८१ षड्)।

ओअग्ग सक [वि + आप्] व्याप्त करना। ओअग्गइ (हे ४, १४१)।

ओअग्गिअ वि [व्याप्त] विस्तृत, फैला हुआ (कुमा)।

ओअग्गिअ वि [दे] १ अभिभूत, परिभूत। २ न केश वगैरह को एकत्रित करना (दे १, १७२)।

ओअग्घिअ } वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ
ओअघिअ } (दे १, १६२, षड्)।

ओअण्ण वि [अवनत] नमा हुआ, नीचे की तरफ मुड़ा हुआ (से ११, ११८)।

ओअत्त वि [अपवृत्त] औंधा किया हुआ, उलटा किया हुआ, 'ओअत्ते कुंभमुहे जलनव-कणिआवि किं ठाइ ?' (गा ६५४)।

ओअत्तअ वि [अपवर्त्तितव्य] १ अपवर्त्तन-योग्य। २ त्यागने योग्य, छोड़ने लायक, 'कुसुमम्मि व पव्वाअए भमरोअत्तअम्मि' (से ३, ४८)।

ओअम्मअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (षड्)।

ओअर सक [अव + तॄ] १ जन्म-ग्रहण करना। २ नीचे उतरना। ओयरइ (हे ४, ८५)। वकृ ओयरंत (ओघ १६१, सुर १४, २१)। हेकृ, ओयरिउं (प्राकृ)। कृ ओयरियव्व (सुर १०, १११)।

ओअरण न [उपकरण] साधन, सामग्री (गा ६८१)।

ओअरण न [अवतरण] उतरना, नीचे आना (गउड)।

ओअरय पुं [अपवरक] कमरा, कोठरी (सुपा ४१५)।

ओअरिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ)।

ओअरिअ वि [औदरिक] पेट-भरा, पेटू, उदर भरने मात्र की चिन्ता करनेवाला (ओघ ११८ भा)।

ओअरिया स्त्री [अपवरिका] कोठरी, छोटा कमरा (सुपा ४१५)।

ओअल्ल देखो ओवट्ट = अप + वृत्। ओअल्लइ (प्राकृ ७०)।

ओअल्ल अक [अव + चल्] चलना। ओअल्लंति (पि १६७, ४८८)। वकृ ओअल्लंत (पि १६७, ४८८)।

ओअल्ल पु [दे] १ अपचार, खराब आचरण, अहित आचरण (षड्, स ५२१)। २ कम्प, काँपना (षड्, दे १, १६५)। ३ गौओं का वाड़ा। ४ वि पर्यस्त, प्रक्षिप्त। ५ लम्बमान, लटकता हुआ (दे १ १६५)। ६ जिसकी आँखें निमीलित होती हों वह, 'मुच्छिज्जंतो-अल्ला असकंता णिअअमहिहरेहि पवंगा' (से १३, ४३)।

ओअल्लअ वि [दे] विप्रलब्ध, प्रतारित (षड्)।

ओअव सक [साधय्] साधना, वश में करना, जीतना, 'गच्छाहि णं भो देवाणु-

प्पिआ । मिघूए महाणईए पच्चत्थिमिल्ला णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि' (ज ३) । सक्ट ओअवेत्ता (ज ३) ।

ओअवण न [सावन] विजय वश करना, स्थापन करना (ज ३—पत्र २४८) ।

ओआअ पु [दे] १ ग्रामाधीश, गाँव का स्वामी । २ आज्ञा, आदेश । ३ हस्ती वगैरह को पकड़ने का गर्त्त । ४ वि अपहृत, छीना हुआ (दे १, १६६) ।

ओआअव पु [दे] अस्त-समय (दे १, १६२) ।

ओआर सक [अप + वारय्] ढाकना, 'कह मुज्ज हत्थेण ओआरेमि' (मे ४९) ।

ओआर पु [अपकार] अनिष्ट, हानि, क्षति (कुमा) ।

ओआर पु [अवतार] १ अवतारण (ठा १, गउड) । २ अवतार, देहान्तर-धारण (पड्) । ३ उत्पत्ति, जन्म, 'अच्चतमणोयारो जत्थ जरारोगवाहीण' (स १३१) । ४ प्रवेश (विसे १०४०) ।

ओआर देखो उवयार (पड्) ।

ओआरण न [अवतारण] उतारना, अवतारित करना (दे ४, ४०) ।

ओआरिअ वि [अवतारित] उतारा हुआ (से ११, १३, उप ५९७ टी) ।

ओआल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१) ।

ओआली स्त्री [दे] १ खड्ग का दोष । २ पंक्ति, श्रेणी (दे १, १६४) ।

ओआवल पु [दे] बालातप, सुबह का सूर्य-ताप (दे १, १६१) ।

ओआस देखो अवगास (हे १, १७२, कुमा, २०), 'अत्थारिमाए सुंदर ! ओआसो कत्थ पावाए' (काप्र ९०३ ।

ओआस देखो उववास (हे १, १७३, प्राकृ) ।

ओआहिअ वि [अवगाहित] जिसका अवगाहन किया गया हो वह (से १, ४, ८, १००) ।

ओइव सक [आ + मुच्] १ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना । २ उतार कर रख देना, 'तो उज्झिऊण लज्ज ओइवइ तत्तुय सरीराओ' (पउम ३४, १६), तहेव य झडत्ति परिवाडीए ओइवइ त्ति' (श्राक ३८) ।

ओइण्ण वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ, गा ६३) ।

ओइत्त } न [दे] परिधान, वस्त्र (दे १,
ओइत्तग } १५५) ।

ओइल्ल वि [दे] आरूढ (दे १, १५८) ।

ओउंठण न [अवगुण्ठन] स्त्री के मुँह पर का वस्त्र, घूँघट (अभि १६८) ।

ओउज्झिय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (पड्) ।

ओऊल न [अवचूल] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल, प्रालम्ब (पाअ), 'मरगयलवतमोत्तिओऊल' (पउम ८, २८३) । देखो ओचूल ।

ओं अ [ओम्] प्रणव मुख्य मन्त्राक्षर (पडि) ।

ओंकार पु [ओङ्कार] 'ओ' अक्षर (उत्त २५ ३१) ।

ओंगण अक [स्वण] अव्यक्त आवाज करना । ओंगणइ (प्राकृ ७३) ।

ओंघ देखो उंघ । ओंघइ (हे ४, १२ टि) ।

ओंडल न [दे] केश-गुम्फ, केश-रचना, धम्मिल्ल (दे १, १५०) ।

ओंदुर देखो उंदुर (पड्) ।

ओंवाल सक [छादय्] ढकना, आच्छादित करना । ओंवालइ (हे ४, २१) ।

ओंवाल सक [प्लावय्] १ डुबाना । २ व्याप्त करना । ओंवालइ (हे ४, ४१) ।

ओंवालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा) ।

ओंवालिअ वि [प्लावित] १ डुबाया हुआ । २ व्याप्त (कुमा) ।

ओकवण देखो उक्कवण (आचा २, २, ३, १ टी) ।

ओकच्छिया देखो उकच्छिआ (पव ६२) ।

ओकड्ढ वि [अपकृष्ट] १ खींचा हुआ । २ न अपकर्षण, खींचाव (उत्त १९) ।

ओकड्ढग देखो उकड्ढग (पण्ह १, ३) ।

ओकरग पुं [अवकरक] विष्ठा (सन ३०) ।

ओकस सक [अव + कृष्] १ निमग्न होना, गड जाना । २ खींचना । ३ वह जाना । वकृ ओकसमाण (कस) ।

ओकन्त वि [अवक्रान्त] निराकृत, पराजित, 'परवाईहिं अणोकन्ता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति' (ओप) ।

ओक्कढी देखो उक्कढी (दे १ १७४) ।

ओकणी स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १५९) ।

ओक्कित्र न [दे] १ वास, वमन, अवस्थान । २ वमन, उल्टी (दे १, १५१) ।

ओक्खच सक [आ + कृष्] खींचना । कर्म 'जह जह ओक्खचिज्जइ, तह तह वेगं पगिण्हमाणेण । भयव ! तुरगमेणं, इहाणिओ आसमे तुम्हं' (सुर ११, ५१) ।

ओक्खंड सक [अव + खण्डय्] तोड़ना, भागना । कृ ओक्खंडेअव्व (से १०, २९) ।

ओक्खंडिअ वि [दे] आक्रान्त (दे १, ११०) ।

ओक्खंद देखो अवक्खंद (सुर १०, २१०, पउम ३७, २९) ।

ओक्खल देखो उऊखल (कुमा प्राप्र) ।

ओक्खली [दे] देखो उक्खली (दे १,१७४) ।

ओक्खमाण (शा) वि [भविष्यत्] भविष्य में होनेवाला, भावी (प्राकृ ९६) ।

ओक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण । २ खण्डित, चूर्णित (कम, दे १, १३०) । २ छन्न, ढका हुआ । ३ पार्श्व में शिक्षित (दे १, १३०) ।

ओक्खित्त वि [अवक्षिप्त] फेंका हुआ (कस) ।

ओखच देखो आक्खच ।

ओगम देखो अवगम । कृ ओगमिदव्व (शौ) (मा ४८) ।

ओगय वि [उपगत] प्राप्त (सूअ १, ५, २, १०) ।

ओगर देखो ओग्गर (पिंग) ।

ओगलिअ वि [अवगलित] गिरा हुआ, खिसका हुआ (गा २०५) ।

ओगसण न [अपकसन] ह्रास (राज) ।

ओगहिअ वि [अवगृहीत] उपात्त, गृहीत (ठा ३) ।

ओगाढ वि [अवगाढ] १ आश्रित, अधिष्ठित (ठा २, २) । २ व्याप्त (णाया १, १६) । ३ निमग्न (ठा ४) । ४ गभीर, गहरा (पउम २०, ६५, से ९, २९) ।

ओगास पुं [अवकाश] जगह, स्थान (विसे १३६ टी) ।

ओगास पु [अवकाश] मार्ग, रास्ता (सुख २, २१) ।

ओगाह सक [अव + गाह्] पाँव से चलना । वकृ ओगाहंत (पिंड ५७५) ।

ओगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। ओगाहइ (षड्)। वकृ **ओगाहंत** (आव २)। संकृ **ओगाहइत्ता, ओगाहित्ता** (दस ५, भग ५, ४)।

ओगाहण न [अवगाहन] अवगाहन (भग)।

ओगाहणा स्त्री [अवगाहना] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र (ठा १)। २ शरीर (भग ६, ८)। ३ शरीर-परिमाण (ठा ८, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति (विसे)। °**णाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष (भग ६, ८)। °**णाम** पु [°नाम] अवगाहनात्मक परिणाम (भग ६, ८)।

ओगाहिम वि [अवगाहिम] पक्वान्न (पचा ५)।

ओगिज्झ } सक [अव + ग्रह्] १ आश्रय **ओगिण्ह** } लेना। २ अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ (भग, कप्प)। संकृ **ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताण** (आचा, णाया १, १ कप्प, उवा)। कृ **ओघेत्तव्व** (कप्प पि ५७०)।

ओगिण्हण न [अवग्रहण] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह (णंदि)।

ओगिण्हणया स्त्री [अवग्रहणता] १ ऊपर देखो (णंदि)। २ मनो विषयीकरण, मन से जानना (ठा ८)।

ओगिन्ह देखो **ओगिण्ह**। संकृ **ओगिन्हित्ता** (निर १, १)।

ओगुंडिय वि [अवगुण्डित] लिप्त (बृह १)।

ओगुट्टि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हलकाई, तुच्छता (पउम ५६, १५)।

ओगूहिय वि [अवगूहित] आलिंगित (णाया १, ६)।

ओग्गर पु [ओगर] धान्य विशेष, व्रीहि-विशेष (पिंग)।

ओग्गह देखो **उग्गह** (सम्म ७५, उव, कम्म, स ३५, ५६८)।

ओग्गह सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना। ओग्गहइ (प्राकृ ७३)।

ओग्गहण देखो **ओगिण्हण**। °**पट्टग** पुन [°पट्टक] जैन साध्वियों के पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जांघिया, लंगोट (कस)।

ओग्गहिय वि [अवगृहीत] १ अवग्रह ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ बद्ध, बँधा हुआ (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ (ओप)।

ओग्गहिअ वि [अवग्रहिक] अनुज्ञा से गृहीत अवग्रहवाला (ओप)।

ओग्गारण न [उद्गारण] उद्गार (चारु ७)।

ओग्गाल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१)।

ओग्गाल सक [रोमन्थाय्] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाना। ओग्गालइ (हे ४, ४३)।

ओग्गालिर वि [रोमन्थायितृ] पगुरानेवाला चबाई हुई वस्तु का पुनः चबानेवाला (कुमा)।

ओग्गाह देखो **उग्गाह** = उद् + ग्राहय्। ओग्गाहइ (प्राकृ ७२)।

ओग्गिअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओग्गीअ पु [दे] हिम, बर्फ (दे १, १४९)।

ओग्घ देखो **उग्घड**। ओग्घइ (प्राकृ ७१)।

ओग्घसिय वि [अवघर्षित] प्रमार्जित, साफ सुथरा किया हुआ (राय)।

ओघ पु [ओघ] १ समूह, सघात (णाया १, ५)। २ संसार 'एते ओघ तरिस्संति समुद्द ववहारिणो' (सूअ १, ३)। ३ अविच्छेद, अविच्छिन्नता (पण्ह १, ५)। ४ सामान्य, साधारण। °**सण्णा** स्त्री [°संज्ञा] सामान्य ज्ञान (पण्ण ७)। °**ादेस** पुं [°ादेश] सामान्य विवक्षा (भग २५, ३)। देखो **ओह** = ओघ।

ओघट्टिद (शौ) वि [अवघट्टित] आहत (प्रयौ २७)।

ओघसर पु [दे] १ घर का जल-प्रवाह। २ अनर्थ, खराबी, नुकसान (दे १, १७०, सुर २, ६६)।

ओघसिय देखो **ओग्घसिय**।

ओघायण न [ओघायतन] १ परम्परा से पूजा जाना स्थान। २ तलाव में पानी जाने का साधारण रास्ता (आचा २, १०, २)।

ओघेत्तव्व देखो **ओगिण्ह**।

ओचार पु [दे अपचार] धान्य रखने की बडी कोठी—मिट्टी का पात्र-विशेष (अणु १५१)।

ओचिदी (शौ) स्त्री [औचिती] उचितता, औचित्य (रंभा)।

ओचुंब सक [अव + चुम्ब्] चुम्बन करना। संकृ **ओचुंबिऊण** (भवि)।

ओचुल्ल न [दे] चुल्हा का एक भाग (दे १, १५३)।

ओचूल } देखो **ओऊल** (विपा १, २, सुर **ओचूलग** } ३, ७०)। २ मुख से हटा हुआ शिथिल—ढीला (वस्त्र), 'ओचूलगनियत्था' (जं ३—पत्र २८५)।

ओच्चय देखो **अवचय** (महा)।

ओच्चिया स्त्री [अवचायिका] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करनेवाली (गा ७६७)।

ओच्छल्लर न [दे] ऊपर-भूमि। २ जघन के रोम (दे १, १३६)।

ओच्छअ } वि [अवस्तृत] १ आच्छादित। **ओच्छइय** } २ निरुद्ध, रोका हुआ (पण्ह १, ४, गउड स १६४)।

ओच्छंदिअ वि [दे] १ अपहृत। २ व्यथित, पीड़ित (षड्)।

ओच्छण्ण वि [अवच्छन्न] आच्छादित, ढका हुआ, 'णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेण' (सम १५२)। देखो **ओच्छन्न**।

ओच्छत्त न [दे] दन्त-धावन, दतवन (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो **ओच्छण्ण** (स ११२, ओप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त (आचा)।

ओच्छर (शौ) सक [अव + स्तृ] १ बिछाना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढाँकना। ओच्छरीअदि (नाट—उत्तम १०५)।

ओच्छविय } वि [अवच्छादित] आच्छा- **ओच्छाइय** } दित ढका हुआ, 'गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइय सुरम्म वेभारगिरिकडगपायमूलं' (णाया १, १—पत्र २५, २८ टी, महा, स १५०)।

ओच्छाइवि नीचे देखो।

ओच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना। संकृ **ओच्छाइवि** (भवि)।

ओच्छायण वि [अवच्छादन] ढाकना, पिधान (स ५५७)।

ओच्छाहिय देखो **उच्छाहिय**।

'ओच्छाइओ पंगुण व रत्ति-
पसंगाहि वा समुनटओ।
अवमाणिओ पंगुण न जो
एस माणसित्ते भी॥'
(पिंड ८६५)।

ओच्छिअ न [दे] केश-विवरण (दे १, १५०)।

ओच्छिण्ण वि [अवच्छिन्न] आच्छादित, 'पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिण्णं च्छिण्णा' (जीव ३)।

ओच्छुद सक [आ + क्रम] १ आक्रमण करना। २ गमन करना। ओच्छुदति (से १३, १६)। कर्म. ओच्छुदइ (से १०, ५५)।

ओच्छुण्ण वि [आक्रान्त] १ दबाया हुआ। २ उल्लंघित, 'ओच्छुण्णदुग्गमपहा' (से १३, ६३; १५, ७३)।

ओच्छाअअ न [दे] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी
'ओच्छेइ पुलअ मरणग
ओच्छोअअं पडिच्छंती।
अन्नूहि पहिअघरिणी ओंति-
ज्जंत ण लक्खेइ' (गा ६२१)

ओजिम्ह अक [आ] तृप्त होना। ओजिम्हइ (प्राकृ ६५)।

ओज्जर वि [दे] भीरु, डरपोक (षड्)।

ओज्जल देखो उज्जल (दे)।

ओज्जल्ल वि [दे] बलवान्, प्रबल (दे १, १५४)।

ओज्जाअ पु [दे] गर्जित, गर्जना (दे १, १५४)।

ओज्झ वि [दे] मैला, अस्वच्छ खाया नहीं जा (दे १, १४८)।

ओज्झमन देखो ओज्झा = अप + ध्या।

ओज्झमण न [दे] पलायन, भाग जाना (दे १, १०३)।

ओज्झर पु [निर्झर] झरना, पर्वत से निकलता जल-प्रवाह (गा ६८०; हे १, ९८; कुमा; महा)।

ओज्झरिअ [दे] देखो उज्झरिअ (दे १, ३३)।

ओज्झरी स्त्री [दे] ओझ, आंत का आवरण (दे १, १५८)।

ओज्झा सक [अप + ध्या] खराब चिन्तन करना। कवकृ. ओज्झमन (नवि)।

ओज्झा देखो अज्झा (उप पृ ३७८)।

ओज्झाय देखो उवज्झाय (कुमा; प्राकृ)।

ओज्झाय वि [दे] दूसरे को प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ (दे १, १५६)।

ओज्झावग देखो उवज्झाय (उप ३५७ टी)।

ओट्ठ पु [ओष्ठ] ओठ, अधर (पउम १, १८; स्वप्न १०८; कुमा)।

ओट्टिय वि [औष्ट्रिक] उष्ट्र-सम्बन्धी, ऊँट के बालों से बना हुआ (कस; स ५८६)।

ओड्डट्ट वि [दे] अनुरक्त, रागी (दे १, १५६)।

ओड्ड पुं [ओड्र] १ उत्कल देश। २ वि. उत्कल देश का निवासी, उड़िया (पिंग)।

ओड्डिअ वि [ओड्रीय] उत्कल-देशीय (पिंग)।

ओड्डण न [दे] ओढ़न, उत्तरीय, चादर (दे १, १५५)।

ओड्डिणा स्त्री [दे] ओढ़नी (स २११)।

ओढण न [दे] अवगुण्ठन (प्राकृ ३८)।

ओण देखो ऊण = ऊन (रंभा)।

ओणंद सक [अव + नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ. ओणंदिज्जमाण (कप्प)।

ओणम अक [अव + नम] नीचे नमना। वकृ. ओणमंत (से १, ४५)। संकृ. ओणमिअ, ओणमिऊण (आचा २, निचू १)।

ओणय वि [अवनत] १ नमा हुआ (सुर २, ८६)। २ न. नमस्कार, प्रणाम (सम २१)।

ओणल्ल अक [अव + लम्ब्] लटकना 'केसहत्थाउ जत्थे ओणल्लइ' (नवि)।

ओणविय वि [अवनमित] नमाया हुआ, अवनत किया हुआ (गा ६३५)।

ओणाम सक [अव + नमय्] नीचे नमाना, अवनत करना। ओणामेहि (सुपा २१०)। संकृ. ओणामित्ता (निचू)।

ओणामणी स्त्री [अवनामनी] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरह स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं (उप पृ १५५, निचू १)।

ओणामिय, **ओणाविय** वि [अवनमित] अवनत किया हुआ (से ५, ३६; ६, ४; गा १०३; नवि)।

ओणिअत्त अक [अपनि + वृत्] पीछे हटना, वापिस आना। वकृ. ओणिअत्तंत (से २, ७)।

ओणिअत्त वि [अपनिवृत्त] पीछे हटा हुआ, वापिस आया हुआ (से ५, ५८)।

ओणिमिल्ल वि [अवनिमीलित] मुद्रित, मूँदा हुआ (से ६, ८७; १३, ८२)।

ओणिवट्ट देखो ओनिवट्ट (पि ३३३)।

ओणियत्थ पुं [दे] वल्मीक, चींटियों का खुदा हुआ मिट्टी का ढेर (दे १, १५१)।

ओणीवी स्त्री [दे] नीवी, कटि-सूत्र (दे १, १५०)।

ओणुणअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओणिद्द न [औन्निद्र्य] निद्रा का अभाव 'ओणिद्दं दोब्बल्लं' (गाप्र ८१, दे १, १५७)।

ओण्णिय वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ, ऊर्ण-निर्मित (कस)।

ओणेज्ज वि [उपनेय] साँचे में ढाल कर बना हुआ फूल आदि, साँचे से बनता मोम का पुतला, 'आउट्टिमउक्किन्न ओणेज्जे (? ज्जे) उज्जपीलिमं च रंग च' (बृनि २, १८)।

ओत्तलइअ पु [दे] विटप (दे १, ११६)।

ओत्ताण देखो उत्ताण (विक्र २८)।

ओत्थ सक [स्थग्] ढकना। ओत्थइ (प्राकृ ६५)।

ओत्थअ वि [अवस्तृत] १ फैला हुआ, प्रसृत (से ७, ३)। २ आच्छादित, निहित 'समतओ अवयं गयगं' (आवम दे १, १५१; स ७७, ३८६)।

ओत्थअ वि [दे] अवसन्न, खिन्न (दे १, १५१)।

ओत्थइअ देखो ओच्छइय (गा ५२६; से ८, ६२; स ५८६)।

ओत्थर देखो ओच्छर। ओत्थरइ (पि ५०५; नाट)।

ओत्थर पु [दे] उत्साह (दे १, १५०)।

ओत्थरण न [अवस्तरण] बिछौना (पउम ८६, ५८)।

ओत्थरिअ वि [अवस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ व्याप्त (से ७, ४७)।

ओत्थरिअ वि [दे] १ आक्रान्त। २ जो आक्रमण करता हो वह (दे १ १६६)।

ओत्थल्ल देखो उत्थल्ल = उत् + स्थृ। ओत्थल्लइ (प्राकृ ७५)।

ओत्थल्लपत्थल्ला देखो उत्थल्लपत्थल्ला (दे १ १२७)।

ओत्थाडिय वि [अवस्तृत] बिछाया हुआ (भवि)।

ओत्थार सक [अव + स्तारय्] आच्छादित करना। कर्म ओत्थारिज्जति (स ६६८)।

ओदइग देखो ओदइय (अणु १३६)।

ओदइय पुन [औदयिक] १ उदय कर्म-विपाक (भग ७ १८ विसे २१७८)। २ वि उदय निष्पन्न (विसे २१८४, सुअ १, १३)। ३ पुं कर्मोदय-जन्य भाव, 'कम्मोदयसहावो सव्वो ओदइगो भावो' (विसे ३४९४)। ४ वि उदय होने पर होनेवाला (विसे २१७८)।

ओदञ्ञ न [औदार्य] उदारता श्रेष्ठता (प्राप्र)।

ओदञ्ज न [औदार्य] उदारता (प्राप्र)।

ओदण न [ओदन] भात, राँधा हुआ चावल (पण्ह २, ५ ओघ ५१८, चारु १)।

ओदरिय वि [औदरिक] पेट-भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह (निचू १)।

ओदहण न [अवदहन] तप्त किए हुए लोहे के कोश वगैरह से दागना (राज)।

ओदारिय न [औदार्य] उदारता (प्राप्र)।

ओद्द वि [आर्द्र] गीला (प्राकृ २०)।

ओद्दपिअ वि [दे] १ आक्रान्त। २ नष्ट (दे १ १५१)।

ओद्धंस सक [अव + ध्वस्] १ गिराना। २ हटाना। ३ हराना। कवकृ 'परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धसिज्जमाणा विहरंति' (ओप)।

ओधाव सक [अव + धाव्] पीछे दौड़ना। ओधावइ (महा)।

ओधुण देखो अवधुण। कर्म ओधुव्वति (पि ५३६)। संकृ ओधुणिअ (पि ५९१)।

ओधूअ वि [अवधूत] कम्पित (नाट)।

ओधूसरिअ वि [अवधूसरित] धूसर रंगवाला, हलका पीला रंगवाला (से १०, २१)।

ओनडिय वि [अवनटित] अवगणित, तिरस्कृत, 'बहुओनडियअण्णाहं' (सम्मत्त २१८)।

ओनियट्ट वि [अवनिवृत्त] देखो ओणिअत्त = अपनिवृत्त (सण्)।

ओपल्ल वि [दे] अपदीर्ण, कुण्ठित, 'तते णं मे तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरंति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला' (णाया १, १४)।

ओप्प वि [दे] घृष्ट, ओप दिया हुआ (षड्)।

ओप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना। ओप्पेइ (हे १, ६३)।

ओप्पा स्त्री [दे] शाण आदि पर मणि वगैरह का घर्षण करना (दे १ १४८)।

ओप्पाइय वि [औत्पातिक] उत्पात-सम्बन्धी (ओप)।

ओप्पिअ वि [अर्पित] समर्पित (हे १, ६३)।

ओप्पिअ वि [दे] शाण पर घिसा हुआ, 'णिवमऊरोप्पिअपयराहं' (दे १, १४८)।

ओप्पील पु [दे] समूह, जत्था (पाअ)।

ओप्पुसिअ } देखो उप्पुसिअ (गउड, पि
ओप्पुसिअ } ४८६)।

ओबद्ध वि [अवबद्ध] १ बंधा हुआ। २ अवनत (वव १)।

ओबुज्झ सक [अव + बुध्] जानना। वकृ ओबुज्झमाण (आचा)।

ओब्भालण देखो उब्भालण (दे १, १०३)।

ओभग्ग वि [अवभग्न] भग्न, नष्ट (से ३, ६३, १०, २०)।

ओभावणा स्त्री [अपभ्राजना] लोक-निन्दा, अपकीर्ति (राज)।

ओभास अक [अव + भास्] प्रकाशना, चमकना। वकृ ओभासमाण (भग ११, ६)। प्रयो ओभासेइ (भग) ओभासति, ओभासेति (सुज १६) कृ. ओभासमाण (सूअ १, १४)।

ओभास सक [अव + भाष्] याचना करना, मागना। कवकृ ओभासिज्जमाण (निचू २)।

ओभास पु [अवभास] १ प्रकाश (ओप)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)।

ओभासण न [अवभासन] १ प्रकाशन, उद्योतन (भग ८, ८)। २ आविर्भाव। ३ प्राप्ति (सूअ १, १२)।

ओभासण न [अवभाषण] याचना, प्रार्थना (वव ८)।

ओभासिय वि [अवभाषित] १ याचित, प्रार्थित (वव ६)। २ न याचना, प्रार्थना (बृह १)।

ओभुग्ग वि [अवभुग्न] वक्र, बाँका (णाया १, ८—पत्र १३३)।

ओमोडिय वि [अवमुक्त] छुड़ाया हुआ, रहित किया हुआ 'तेणवि कडिट्ठऊणलक्खपिव सूई-ओमोडिओ नियकुक्कुडो' (महा)।

ओम वि [अवम] असार, निस्सार (आचा २, ५ २ १)।

ओम वि [अवम] १ कम न्यून हीन (आचा)। २ लघु छोटा (आव २२३ भा)। ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल (ओघ १३ भा)। °कोट्ठ वि [°कोष्ठ] ऊनोदर, जिसने कम खाया हो वह (ठा ४)। °चेलग, °चेलय वि [°चेलक] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करनेवाला (उत्त १२, आचा)। °रत्त पु [°रात्र] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह (ठा ६)। २ अहोरात्र, रात-दिन (ओघ २८५)।

ओमइल्ल वि [अवमलिन] मलिन, मैला (से २, २५)।

ओमय [दे] देखो ओमरय (पाअ)।

ओमथिय वि [दे] अधोमुख किया हुआ नमाया हुआ (णाया १, १)।

ओमथिय वि [अवमस्तिक] शीर्षासन से स्थित, नीचे मस्तक और ऊंचे पैर रखकर स्थित (णंदि १२८ टी)।

ओमस वि [दे] अपहृत, अपगत (षड्)।

ओमज्जण न [अवमज्जन] स्नान-क्रिया (उप ६४८ टी)।

ओमज्जायण पु [अवमज्जायन] ऋषि-विशेष (ज ७, इक)।

ओमज्जिअ वि [अवमार्जित] जिसको स्पर्श कराया गया हो वह स्पर्शित (स ५६७)।

ओमट्ठ वि [अवमृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (से ५, २१)।

ओमत्थ वि [दे] नत, अधोमुख (पाअ)।
ओमत्थिय [दे] देखो ओमथिय (ओघ ३८६)।
ओमल्ल न [निर्माल्य] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (षड्)।
ओमल्ल वि [दे] घनीभूत, कठिन जमा हुआ (षड्)।
ओमाण पु [अपमान] अपमान, तिरस्कार (उत्त २६)।
ओमाण न [अवमान] १ जिससे क्षेत्र वगैरह का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरह मान (ठा २, ४)। २ जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि (अणु)।
ओमाणण न [अवमानन, अप°] अपमान, तिरस्कार (स ६६७)।
ओमाय वि [अवमित] परिमित, मापा हुआ (सुज्ज ६)।
ओमाल देखो ओमल्ल = निर्माल्य (हे १ ३८, कुमा, वज्जा ८८)।
ओमाल अक [उप + माल्] १ शोभना, शोभित होना। २ सक सेवा करना, पूजना। संकृ ओमालिवि (भवि)। कवकृ 'अहवावि भत्तिपरागतियमवहूमीसद्दुमुमदामेहिं। ओमालिज्जतकमो, नियमा तित्थाहिवो होइ' (उप ९८६ टी)।
ओमालिअ देखो ओमल्ल = निर्माल्य (प्राकृ ३८)।
ओमालिअ वि [उपमालित] १ शोभित। २ पूजित, अर्चित (भवि)।
ओमालिआ स्त्री [अवमालिका] चिमटी या मुरझाई हुई माला (गा १६४)।
ओमास पु [अवमर्श] स्पर्श (से ६, ६७)।
ओमिण सक [अव + मा] मापना, मान करना। कर्म ओमिणिज्जइ (अणु)।
ओमिणण न [दे] प्रोंखनक, विवाह की एक रीति वर के लिये सासू की ओर से किया हुआ न्योछावर (पचा ८,२५)।
ओमिय वि [अवमित] परिच्छिन्न, परिमित (सुज्ज ६)।
ओमील अक [अव + मील्] मुद्रित होना, बन्द होना। वकृ ओमीलत (से ३, १)।

ओमीस वि [अवमिश्र] १ मिश्रित। २ समीपस्थ। ३ न सामीप्य, समीपता,

'सुचिरंपि अच्छमाणो,
वेरुलिओ कायमणियओमीसे।
न उवेइ कायभावं,
पाहन्नगुणेण नियएण।'
(ओघ ७७२)।

ओमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (सम्मत्त १७६)।
ओमुग्ग देखो उम्मुग्ग (पि १०४, २३४)।
ओमुच्छिअ वि [अवमूर्च्छित] महा मूर्छा को प्राप्त (पउम ७, १५८)।
ओमुद्धग वि [अवमूर्धक] अधोमुख, 'ओमुद्धगा धरणियले पडति' (सूअ १, ५)।
ओमुय सक [अव + मुच्] पहनना। ओमुयइ (कप्प)। वकृ ओमुयत (कप्प)। संकृ ओमुइत्ता (कप्प)।
ओमोय पु [ओमोक] आभरण, आभूषण (भग ११, ११)।
ओमोयर वि [अवमोदर] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करनेवाला (उत्त ३०)।
ओमोयरिय न [अवमोदरिक] १ न्यून भोजनत्व, तप-विशेष (आचा)। २ दुर्भिक्ष, अकाल (ओघ ७)।
ओमोयरिया स्त्री [अवमोदरिता, °रिका] न्यून भोजन रूप तप (ठा ६)।
ओम्माय पु [उन्माद] उन्मत्तता (सबोध २१)।
ओय न [ओजस्] १ विषम संख्या, जैसे एक, तीन, पाँच आदि (पिंड ६२६)। २ आहार-विशेष, अपनी उत्पत्ति के समय जीव प्रथम जो आहार लेता है वह (सूअनि १७१)।
ओय वि [ओकस्] गृह, घर (वव ५)।
ओय वि [ओज] १ एक, असहाय (सूअ १, ४, २, १)। २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन (बृह १)। ३ पु विषम राशि (भग २५,३)।
ओय न [ओजस्] १ बल (आचा)। २ प्रकाश, तेज (चंद ५)। ३ उत्पत्ति स्थान में आहत पुद्गलों का समूह (पण्ण ८, सग १८०)। ४ आर्तव, ऋतु-धर्म (ठा ३, ३)।
ओयसि वि [ओजस्विन्] १ बलवान्। २ तेजस्वी (सम १५२, औप)।

ओयट्टण न [अपवर्त्तन] पीछे हटना, वापिस लौटना (उप ७६०)।
ओयड्ढ सक [अप + कृष्] खींचना। कवकृ ओयड्ढियत (पउम ७१, २६)।
ओयड्ढिया, ओयड्ढी स्त्री [दे] ओढनी, ओढने का वस्त्र चादर, दुपट्टा (सुख २, ८०)।
ओयग देखो ओदग (पउम ८६, १६)।
ओयत्त वि [अववृत्त] अवनत, अधोमुख (पाअ)।
ओयत्त सक [अप + वर्तय्] उलटाना, खाली करने के लिए नमाना। संकृ. ओयत्तियाण (आचा २, १, ७, ५)।
ओयत्तण न [अपवर्तन] खिसकाना, हटाना (पिंड ५९३)।
ओयविय वि [दे] परिकर्मित (पण्ह १, ४, औप)।
ओया स्त्री [ओजस्] शक्ति, सामर्थ्य (णाया १, १०—पत्र १७०)।
ओया स्त्री [ओजस्] १ प्रकाश (सुज्ज ६)। २ माता का शुक्र-शोणित (तंदु १०)।
ओयाइअ देखो उवयाइय (सुपा ६२५, दे ४, २२)।
ओयाय वि [उपयात] उपागत, समीप पहुँचा हुआ (णाया १, ६, निर १, १)।
ओयार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना। संकृ ओयारिया (दस ५, १, ६३)।
ओयार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ (चेइय ५१८)।
ओयारग वि [अवतारक] १ उतारनेवाला। २ प्रवृत्ति करनेवाला (सम १०६)।
ओयारण देखो उत्तारण (कुप्र ७१)।
ओयावइत्ता अ [ओजयित्वा] १ बल दिखा कर। २ चमत्कार दिखा कर। ३ विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय वह) (ठा ४)।
ओर वि [दे] १ चारु, सुन्दर (दे १,१४९)। २ समीप (दश० अग० चू०, आख्या० कोश पत्र ८७ गा० ६)।
ओरपिअ वि [दे] १ आक्रान्त। २ नष्ट (दे १, १७१)।
ओरपिअ वि [दे] पतला किया हुआ, छिला हुआ (पाअ)।

ओरत्त वि [दे] १ गर्विष्ठ, अभिमानी। २ कुसुम्भ से रक्त। ३ विदारित, काटा हुआ (दे १, १६५; पात्र)।

ओरद्ध देखो अवरद्ध = अपराद्ध (प्राकृ ५०)।

ओरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना। ओरम (सूअ १, २, १, १०)।

ओरल्ली स्त्री [दे] लम्बा और मधुर आवाज (दे १, १८४; पात्र)।

ओरस सक [अव + तॄ] नीचे उतरना। ओरसइ (हे ४, ८५)।

ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त, अनुरागी (ठा १०)।

ओरस त्रि [औरस] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र (ठा १०)। २ औरस्य, हृदयोत्पन्न (जीव ३)।

ओरसिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक (प्रारू)।

ओराल देखो उराल = उदार (ठा ४, १० जीव १)।

ओराल देखो उराल (दे) (चंद १)।

ओराल न [औदार] नीचे देखो (विसे ६३१)।

ओरालिय न [औदारिक] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर (औप)। २ वि शोभायमान, शोभा वाला (पात्र)। ३ औदारिक शरीर वाला (विसे ३७५)। °णाम न [°नामन्] औदारिक शरीर का हेतुभूत कर्म (कम्म)।

ओरालिय वि [दे] १ व्याप्त। २ उपलिप्त, 'दिट्ठोरुहिरोरालियसिरो' (सुख १, १३)।

ओरालिय वि [दे] १ पोंछा हुआ, 'मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउ मुहकमलु' (भवि)। २ फैलाया हुआ, प्रसारित, 'दसदिसि वहक्कयवु ओरालिओ' (भवि)।

ओराली देखो ओरल्ली (सुर ११, ८६)।

ओरिंकिय न [अर्वारिङ्कित] महिष की आवाज, 'कत्थइ महिसोरिंकिय कत्थइ ट्टट्टट्टहुहुहुवनइ-सलिल' (पउम ६४, ४३)।

ओरिल्ल पु [दे] लम्बा काल, दीर्घ काल (दे १, १५५)।

ओरी [दे] समीप (आख्या० कोप. पत्र—८५ गा० १५)।

ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष (दे १, १५६)।

ओरुभिय वि [उपरुद्ध] आवृत्त, आच्छादित (गा ६१४)

ओरुण्ण वि [अवरुदित] रोया हुआ (गा ५३८)।

ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बन्द किया हुआ (गा ८००)।

ओरुभ सक [अव + रुह्] उतरना। वकृ ओरुभमाण (कस)।

ओरुम्मा अक [उद् + वा] सूखना, सूख जाना। ओरुम्माइ (हे ४, ११)।

ओरुह देखो ओरुभ। वकृ ओरुहमाण (सथा ६३, कम)।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतरना (पउम २६, ५५, विसे १२०८)।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतारना, अवतारण (पव १५५)।

ओरोध देखो ओरोह = अवरोध (विपा १, ६)।

ओरोह देखो ओरुभ। वकृ. ओरोहमाण (कस ठा ५)।

ओरोह पु [अवरोध] १ अन्त पुर, जनानखाना (ओप)। २ अन्त पुर की स्त्री (सुर १, १४३)। ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार (णाया १, १, औप)। ४ सघात, समूह (राज)।

ओलअ पु [दे] १ श्येन पक्षी, वाज पक्षी। २ अपलाप, निह्नव (दे १, १६०)।

ओलअणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे १, १६०)।

ओलइअ वि [दे अवलगित] १ शरीर मे सटा हुआ, परिहित (दे १ १६२, पात्र)। २ लगा हुआ (से १, १६२)।

ओलइणी स्त्री [दे] प्रिया, स्त्री (दे १, १६०)।

ओलंड सक [उत् + लङ्घ्] उल्लंघन करना। ओलंडेति (णाया १, १—पत्र ६१)।

ओलंब देखो अवलंब = अव+लम्ब्। सकृ ओलंबिऊण (महा)।

ओलंब पु [अवलम्ब] नीचे लटकना (औप, स्त्रप्न ७३)।

ओलंबण न [अवलम्बन] सहारा, आश्रय। °दीव पु [°दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक (राज)।

ओलंबिय वि [अवलम्बित] आश्रित, जिसका सहारा लिया गया हो वह (निचू १)। २ लटकाया हुआ (औप)।

ओलविय वि [उल्लवित] लटकाया हुआ (सूअ २, २ औप)।

ओलभ पु [उपालम्भ] उलाहना, 'अप्पोलभणिमित्त पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति वेमि' (णाया १, १)।

ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ (पउम १३, ४२, सुपा २५४)।

ओलगि (अप) देखो ओलग्गि (सिरि ५२४)।

ओलग्ग सक [अव + लग्] १ पीछे लगना। २ सेवा करना। ओलग्गति (पि ४८८)। हेकृ ओलग्गिउ (सुपा २३४, महा)। प्रयो, सकृ ओलग्गाविवि (भवि)।

ओलग्ग वि [अवरुग्ण] १ ग्लान, बीमार। २ दुर्वल, निर्बल (णाया १, १—पत्र २८ टी, विपा १, २)।

ओलग्ग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न (महा)।

ओलग्ग [दे] देखो ओलुग्ग (दे १, १६४)।

ओलग्गा स्त्री [दे] सेवा, भक्ति चाकरी, 'करेउ देवो पसाय मम ओलग्गाए' (स ६३६), 'ओलग्गाए वेलत्ति जपिउ निग्गओ खुज्जो' (धम्म ८ टी)।

ओलग्गि वि [अवलागिन्] सेवा करनेवाला। स्त्री- °णी (रभा)।

ओलग्गिअ वि [अवलग्न] सेवित (वज्जा ३२)।

ओलावअ पु [दे] श्येन, वाज पक्षी (दे १, १६०, स २१३)।

ओलि देखो ओली = आली (हे १, ८३)।

ओलिंदअ पु [अलिन्दक] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (गा २५४)।

ओलिप सक [दे] खोलना। कवकृ 'ओलिप [?लिप्प] माणे वि तहा तहेव काया कवाडम्मिविभासियव्वा' (पिंड ३५४)।

ओलिंप सक [अव + लिप्] लीपना, लेप लगाना। वकृ ओलिपमाण (राज)।

ओलिभा स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक (दे १, १५३, गउड)।

ओलिज्जमाण देखो ओलिह।

ओलित्त वि [उपलिप्त, उपलिप्त] लीपा हुआ, कृतलेप (पण्ह १, ३, उव, पाअ, दे १, १५८, पाप)।

ओलित्ती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष (दे १, १५६)।

ओलिप्प न [दे] हास, हँसी (दे १, १५३)।

ओलिप्पती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष (दे १, १६)।

ओलिह सक [अव + लिह्] आस्वादन करना। कवकृ ओलिज्जमाण (कप्प)।

ओली सक [अव + ली] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना 'नीय च काया ओलिंति' (विसे २०६४)।

ओली स्त्री [आली] पङ्क्ति, श्रेणी (कुमा)।

ओली स्त्री [दे] कुल-परिपाटी, कुलाचार (दे १, १४८)।

ओलुंकी स्त्री [दे] बालकों की एक प्रकार की क्रीडा (दे १, १५३)।

ओलुंड सक [वि + रचय्] करना, टपकना, बाहर निकालना। ओलुंडइ (हे ४, २६)।

ओलुंडिर वि [विरचयितृ] करनेवाला (कुमा)।

ओलुप पु [अवलोप] मसलना, मर्दन करना (गउड)।

ओलुपअ पु [दे] तापिका-हस्त, तवा का हाथा (दे १, १६३)।

ओलुग्ग वि [अवरुग्ण] १ रोगी, बीमार (पाअ)। २ भग्न, नष्ट (पण्ह १, १), 'भुक्खा भुक्खा निम्ममा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा' (निर १, १)।

ओलुग्ग वि [दे] १ सेवक, नौकर। २ निस्तेज, निर्बल, बल हीन (दे १, १६४)। ३ निश्छाय, निस्तेज (सुर २, १०२ दे १, १६४ स ४६६ ५०४)।

ओलुग्गाविय वि [दे] १ बीमार। २ विरह, पीडित (वज्जा ८६)।

ओलुट्ट वि [दे] १ असत्यवान, असंगत। २ मिथ्या, असत्य (दे १, १६४)।

ओलेहड वि [दे] १ अन्यासक्त। २ तृष्णा-पर। ३ प्रवृद्ध (दे १, १७२)।

ओलोअ देखो अवलोअ। वकृ ओलोअंत, ओलोएमाण (मा ५ णाया १,१६,१ १)।

ओलोट्ट सक [अप + लुट्] पीछे लोटना। वकृ ओलोट्टमाण (राज)।

ओलोयण न [अवलोकन] १ देखना। २ दृष्टि नजर (उप पृ १२७)।

ओलोयण न [अवलोकन] गवाक्ष 'दिट्ठा अन्नया तेण ओलोयणगएण' (सुपा २, ६)।

ओलोयणा स्त्री [अवलोकना] १ देखना। २ निरीक्षा, गवेषणा (वव १)।

ओल्ल पु [दे] १ पति, स्वामी। २ दण्ड प्रतिनिधि पुरुष, राजपुरुष विशेष (पिंग)।

ओल्ल देखो उल्ल = आर्द्र (हे, १, ८२, कुमा १७२)।

ओल्ल सक उल्ल = आर्द्रय्। ओल्लेइ (पि १११)। वकृ ओल्लंत (से १३, ६६)। कवकृ ओल्लिज्जंत (गा ६२१),

ओल्लट्टण पु [अवलट्टन] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

ओल्लण न [आर्द्रयण] गीला करना, भिजाना (पि १११)।

ओल्लणी स्त्री [दे] मार्जिता, इलायची, दाल-चीनी आदि मसाला से संस्कृत दधि (दे १, १५८)।

ओल्हरण न [दे] स्वाप, सोना (दे १, १६३)।

ओल्हरिअ वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे १६३ सुपा ३१०)।

ओल्हविद (शौ) नीचे देखो (पि १११, मृच्छ १०५)।

ओल्हिअ वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ (गा ३३०, सण)।

ओल्ही स्त्री [दे] पल्लव, वाड़, गुजराती में 'ऊर' (चेइय ३७३)।

ओल्हव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना। ठंडा करना। कवकृ ओल्हविज्जंत (स ३६२)। कृ ओल्हवेयव्व (स ३६२)।

ओल्हविअ वि [दे] देखो उल्हविय (सुर १०, १४६)।

ओव न [दे] हाथी वगैरह को बाँधने के लिए किया हुआ गर्त्त (दे १, १८६)।

ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना, अध-पात (से ६, ७७, १३, २२)।

ओवइणी स्त्री [अवपातिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है (सूअ २, २)।

ओवइय वि [अवपतित] १ अवतीर्ण, नीचे आया हुआ (से ६, २८, ओप)। २ आ पड़ा हुआ, आ उड़ा हुआ (से ६, २९)। ३ न पतन (ओप)।

ओवइय पुंस्त्री [दे] तीन इन्द्रियवाला एक क्षुद्र जन्तु, 'से किं तं तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा —ओवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा' (जीव १)।

ओवइय वि [औपचयिक] उचित, परिपुष्ट (राज)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार करने वाला (भग १३, ६)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार के निमित्त का, उपकारार्थक (देवेन्द्र ३०६)।

ओवग्ग सक [अप + क्रम] १ व्याप्त करना। २ ढकना, आच्छादन करना। ओवग्गइ ओवग्गइ (से ४, २५, ३, ११)।

ओवग्ग सक [उप + वल्ग्, आ + क्रम्] १ आक्रमण करना। २ पराभव करना। ओवग्गइ (भवि)। सकृ ओवग्गिवि (भवि)।

ओवग्गहिय वि [औपग्रहिक] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण, जो कारण-विशेष में थोड़े समय के लिए लिया जाता है (पव ६०)।

ओवग्गिअ वि [दे उपवल्गित] १ अभिभूत १ आक्रान्त (से ६, ३०, पाअ, सुर १३, ८२)।

ओवघाइय वि [औपघातिक] उपघात करने वाला, पीड़ा उत्पन्न करनेवाला, 'सुय वा जइ वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइयं' (दस ८)।

ओवच्च सक [उप + व्रज्] पास जाना, 'सुहाए ओवच्च वासहरं' (भवि)।

ओवट्ट अक [अप + वृत्] १ पीछे हटना। २ कम होना, ह्रास-प्राप्त होना। वकृ ओवट्टंत (उप ७६२)।

ओवट्ट पु [अपवर्त्त] १ ह्रास, हानि। २ भागाकार, (विसे २०६२)।

ओवट्टण न [अपवर्त्तन] ह्रास, कमी (श्रावक २१६)।

ओवट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] भागाकार, भाग-हरण (राज)।

ओवट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद (दे १, १६२)।

ओवट्ठ वि [अववृष्ट] बरसा हुआ, जिसने वृष्टि की हो वह (से ६, ३८)।

ओवट्ठ पु [दे अववर्ष] १ वृष्टि, बारिश (से ६, २५)। २ मेघ-जल का सिञ्चन (दे १, १५२)।

ओवट्ठिइअ वि [औपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर (प्रयौ ११)।

ओवड अक [अव + पत्] गिरना, नीचे पड़ना। वकृ ओवडत (से १३, २८)।

ओवडण न [अवपतन] १ अव पात। २ झम्पा-पात (से २, ३२)।

ओवड्ढ वि [उपार्ध] आधे के करीब। °ोमोयरिया स्त्री [°ावमोदरिका] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष (भग-७, १)।

ओवड्ढि वि [अपवृद्धि] ह्रास (निचू २०)।

ओवड्डूटा स्त्री [दे] ओढनी का एक भाग (दे १, १५१)।

ओवण न [उपवन] बगीचा, आराम (कुमा)।

ओवणिहिय पु [औपनिहित, औपनिधिक] भिक्षाचर विशेष, समीपस्थ भिक्षा को लेनेवाला साधु (ठा ५, ओप)।

ओवणिहिया स्त्री [औपनिधिकी] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष (ओप)।

ओवत्त सक [अप + वर्त्तय्] १ उलटा करना। २ फिराना, घुमाना। ३ फेंकना। सकृ ओवत्तिय (दस ५)। कृ. ओवत्तेअव्व (से १०, ५०)।

ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ (से ६, ६१)।

ओवत्तिय वि [अपवर्त्तित] १ घुमाया हुआ। २ क्षिप्त (णाया १, १—पत्र ८७)।

ओवत्थाणिय वि [औपस्थानिक] सभा का कार्य करनेवाला नौकर। स्त्री °या (भग ११, ११)।

ओवम देखो ओवम्म, 'इदियपच्चक्ख पिय अणुमाणं ओवम च सद्दाणं' (जीवस १४२)।

ओवमिय वि [औपमिक] उपमा-सम्बन्धी (अणु)।

ओवमिय } न [औपम्य] १ उपमा (ठा ८,
ओवम्म } अणु)। २ उपमान, प्रमाण (सूअ १ १०)।

ओवय सक [अव + पत्] १ नीचे उतरना। २ आ पड़ना। वकृ ओअवत, ओवयमाण कप्प स ३७०, पि ३६ , णाया १, १ ६)।

ओवयण न [दे अवपतन] प्रोङ्खणक चुमना (णाया १, १—पत्र ३६)।

ओवयण न [अवपतन] अवतरण, नीचे उतरना (भग ३, २—पत्र १७७)।

ओवयाइयय वि [औपयाचितक] मनौती से प्राप्त किया हुआ, मनोती से मिला हुआ (ठा १०)।

ओवयारिय वि [औपचारिक] उपचार-सम्बन्धी (पचा ६ पुप्फ ४२६)।

ओवर पु [दे] निकर, समूह (दे १, १५७)।

ओववाइय वि [औपपातिक] १ जिसकी उत्पत्ति होती हो वह (पच १)। १ पु ससारी, प्राणी (आचा)। ३ देव या नारक-जीव (दस ४)। ४ न देव या नारक जीव का शरीर (पच १)। ५ जन आगम-ग्रन्थ विशेष, औप-पातिक सूत्र (औप)।

ओववाइय वि [औपपातिक] एक जन्म से दूसरे जन्म मे जानेवाला (सूअ १, १, ११)।

ओवसग्गिय वि [औपसर्गिक] १ उपसर्ग से सबन्ध रखनेवाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि। २ शब्द-विशेष, प्र, परा आदि अव्यय रूप शब्द (अणु)।

ओवसमिअ पुन [औपशमिक] १ उपशम। २ वि उपशम से उत्पन्न। ३ उपशम होने पर होनेवाला (विसे २१७४)।

ओवसेर न [दे] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष। २ वि रति-योग्य (दे १, १७३)।

ओवस्सय देखो उवस्सय, 'घट्टिज्जइ ओवस्सय-तणय तेणाइरक्खट्ठा' (पव ८१)।

ओवह सक [अव + वह्] १ वह जाना, वह चलना। २ डूबना। कवकृ, ओवुब्भमाण (कस)।

ओवहारिअ वि [औपहारिक] उपहार सबन्धी (विक ७५)।

ओवहिय वि [औपधिक] माया से गुप्त विचरनेवाला (णाया १, २)।

ओवाअअ पु [दे] आपातप, जल-समूह की गरमी (षड्)।

ओवाइय देखो ओववाइय (राज)।

ओवाइय देखो उववाइय (सुपा ११३)।

ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवाला (ठा १०)।

ओवाडण न [अवपाटन] विदारण, नाश (ठा २, ४)।

ओवाडिय वि [अवपाटित] विदारित (औप)।

ओवाय सक [उप + याच्] मनौती करना। वकृ ओवायत, ओवाइयमाण (सुर १३, २०६, णाया १, ८—पत्र १३४)।

ओवाय पुं [अवपात] १ सेवा भक्ति (ठा ३,२, औप)। २ गर्त्त, गड्ढा (पण्ह १ १)। ३ नीचे गिरना (पण्ह १, ४)।

ओवाय वि [औपाय] उपाय-जन्य, उपाय-सम्बन्धी (उत्त १, २८)।

ओवार सक [अप + वारय्] आच्छादन करना ढकना। सकृ ओवारिअ (अभि २१३)।

ओवारि न [दे] धान्य भरने का एक प्रकार का लम्बा कोठा, गोदाम (राज)।

ओवारिअ वि [दे] ढेर किया हुआ, राशि-कृत (स ४८७, ४८)।

ओवारिअ वि [अपवारित] आच्छादित ढका हुआ (मै ६१)।

ओवास अक [अव + काश्] शोभना, विराजना। ओवासइ (प्राप)।

ओवास अक [अव + काश्] अवकाश पाना, जगह मिलना। ओवासइ (प्राप्र, कुमा ७, २३, प्राकृ ६६)।

ओवास पु [अवकाश] अवकाश, खाली जगह (पाअ, प्राप्र, से १, ५४)।

ओवास पु [उपवास] उपवास, भोजनाभाव (पउम ४२, ८६)।

ओवासतर पुन [अवकाशान्तर] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

ओवाह सक [अव + गाह्] अवगाहना। ओवाहइ (प्राप्र)।

ओवाहिअ वि [अपवाहित] १ नीचे गिराया हुवा (से ६, १६, १३, ७२)। २ घुमाकर नीचे टाला हुआ (से ७, ५५)।

ओविअ वि [दे] १ आरोपित, अध्यासित। २ मुक्त, परित्यक्त। ३ हत, छीना हुआ। ४ न खुशामद। ५ रुदित, रोदन (दे १, १६७)। ६ त्रि परिकर्मित, सम्कारित (कप्प)। ७ खचित, व्याप्त (आवम)। ८ उज्ज्वालित, प्रकाशित (णाया १, १६)। ९ विभूषित, शृंगारित (प्राप)। देखो उविय।

ओविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित, आहत (से ७,१२)। २ नीचे गिराया हुआ (से १३, २६)।

ओवील सक [अव + पीडय्] पीडा पहुंचाना, मार-पीट करना। वकृ **ओवीलेमाण** (णाया १, १८—पत्र २३६)।

ओवीलय देखो उव्वीलय (पण्ह १, ३)।

ओवुब्भमाण देखो **ओवह**।

ओवेहा स्त्री [उपेक्षा] १ उपदर्शन, देखना। २ अवधीरण, 'सजयगिहिचोयणचोयणे य वावारओवेहा' (ओघ १७१ भा)।

°**ओव्वण** देखो जोव्वण (से ७, ६२)।

ओव्वत्त अक [अप + वृत्] १ पीछे फिरना, लौटना। २ अवनत होना। संकृ **ओवत्तिऊण** (ओघ भा ३० टी)।

ओव्वत्त वि [अपवृत्त] पीछे फिरा हुआ। २ नमा हुआ, अवनत (से ८, ८४)।

ओव्वेव्व देखो उव्वेव (सक्षि ३५)।

ओस देखो उस्स = उप (दस ५, १, ३३)।

ओस पु [दे] देखो ओसा (राज)। °**चारण** पु [°चारण] हिम के अवलम्बन से जानेवाला साधु (गच्छ)।

ओसक्क सक [अव + ष्वष्क्] कम करना, घटाना। संकृ **ओसक्किया** (दस ५,१,६३)।

ओसक्क अक [अव + ष्वष्क्] १ पीछे हटना, अपसरण करना। २ भागना, पलायन करना। ३ उदीरण करना, उत्तेजित करना। ओसक्कइ (पि ३०२,३१५)। वकृ **ओसक्कंत**, **ओसक्कमाण** (से ५, ७३, स ६४)। संकृ **ओसक्कइत्ता**, **ओसक्किय**, **ओसक्किऊण** (ठा ८, दस ४, सुर २, १५)।

ओसक्क वि [दे अवष्वष्कित] अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे १, १४९, पाअ)।

ओसक्कण न [अवष्वष्कण] १ अपसरण (स ६३)। २ नियत काल से पहले करना (धर्म ३)। ३ उत्तेजन (बृह २)।

ओसक्किय वि [अवष्वष्कित] नियत काल से पहले किया हुआ (पिंड २९०)।

ओसट्ट अक [वि + सृप्] फैलना, पसरना। ओसट्टइ (गा ८५६)।

ओसट्ट वि [दे] विकसित, प्रफुल्लित (षड्)।

ओसडिअ वि [दे] आकीर्ण, व्याप्त (षड्)।

ओसढ न [औषध] दवा, इलाज, भैषज (हे १, २२७)।

ओसढिअ वि [औषधिक] वैद्य, चिकित्सक (कुमा)।

ओसण न [दे] उद्वेग, खेद (दे १ १५५)।

ओसण्ण वि [अवसन्न] १ खिन्न (गा ३८२, से १३, ३०)। २ शिथिल, ढीला (वव ३)। देखो **ओसन्न**।

ओसण्ण वि [दे] त्रुटित, खण्डित (दे १, १५६, षड्)।

ओसण्ण अ [दे] प्राय बहुत कर (कप्प)।

ओसत्त वि [अवसक्त] संबद्ध, संयुक्त (णाया १, ३, स ४८९)।

ओसधि देखो ओसहि (ठा २, ३)।

ओसद्ध वि [दे] पातित, गिराया हुआ (पाअ)।

ओसन्न देखो **ओसण्ण** = अवसन्न (सुर ४, ३४, णाया १, ५, स ६, पुप्फ २१)। ३ न एकान्त, 'ओसन्ने देइ गेण्हइ वा' (उव)।

ओसन्न वि [अवसन्न] निमग्न (दसचू १, ८)।

ओसन्न देखो **ओसण्ण** (कम्म १, १३, विसे २२७५)।

ओसप्पिणी स्त्री [अवसर्पिणी] दश कोटाकोटि सागरोपमपरिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमश हानि होती जाती है (सम ७२, ठा १)।

ओसम सक [उप + शमय्] उपशान्त करना। भवि. ओसमेहिंति (पिंड ३२६)।

ओसमिअ वि [उपशमित] शान्ति-प्राप्त (सम ३७)।

ओसर अक [अव + तृ] १ नीचे आना। २ अवतरना, जन्म लेना। ओसरइ (षड्)।

ओसर अक [अप + सृ] अपसरण करना, पीछे हटना। २ सरकना, खिसकना, फिसलना। ओसरइ (महा, काल)। वकृ **ओसरंत** (गा १८, ३६३, से ६, २६, ९, ८२, १२, ६, से ६३)।

ओसर सक [अव + सृ] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना (उप ७२८ टी)।

ओसर पु [अवसर] १ अवसर, समय (सूअ १, २)। २ अन्तर (राज)।

ओसरण न [अवसरण] १ जिन-देव का उपदेश स्थान (उप १३३, रयण १)। २ साधुओं का एकत्रित होना (सूअ १, १२)।

ओसरण न [अपसरण] १ हटना, दूर होना। २ वि दूर करनेवाला, 'बहुपावकम्मओसरण' (कुमा १)।

ओसरिअ वि [दे] १ आकीर्ण, व्याप्त। २ आँख के इशारे से संकेतित या इंगित (षड्)। ३ अधोमुख, अवनत। ४ न आँख का इशारा (दे १, १७१)।

ओसरिअ वि [अवसृत] आगत, पधारा हुआ (उप ७२८ टी)।

ओसरिअ वि [अपसृत] १ पीछे हटा हुआ (पउम १६, २३, पाअ, गा ३५१)। २ न अपसरण (से २, ८)।

ओसरिअ वि [उपसृत] संमुखागत, सामने आया हुआ, (पाअ)।

ओसरिआ स्त्री [दे] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (दे १, १६१)।

ओसव पु [उत्सव] उत्सव, आनन्द-क्षण (प्राप्र)।

ओसविय देखो **ओसमिअ** (पिंड ३२६)।

ओसविय वि [उच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ८, २६६)।

ओसव्विअ वि [दे] १ शोभा-रहित। २ न अवसाद, खेद (दे १, १६८)।

ओसह न [औषध] दवाई, भैषज (ओघ, स्वप्न ५६)।

ओसहि°, ही स्त्री [ओषधि] १ वनस्पति (पराग १)। २ नगरी-विशेष (राज)। °महिहर पु [°महिधर] पर्वत-विशेष (अच्चु ४४)।

ओसहिअ वि [आवसथिक] चन्द्रार्घ-दानादि व्रत को करनेवाला (गा ३४६)।

ओसा स्त्री [दे] १ ओस, निशा जल (जी ५, आचा, विसे २५७६)। २ हिम, बरफ (दे १, १६४)।

ओसाअ पु [दे] प्रहार की पीडा (दे १, १५२)।

ओसाअ पु [अवश्याय] हिम, ओस (से १३, ५२, दे ८, ५३)।

ओसाअंत वि [दे] १ जँभाई खाता हुआ आलसी। २ बैठता। ३ वेदना-युक्त (दे १, १७०)।

ओसाअण वि [दे] १ महीशान, जमीन का मालिक। २ आपोशान (षड्)।

ओसाण न [अवसान] १ अन्त (ठा ४)। २ समीपता, सामीप्य (सूअ १, ४)।

ओसाण न [अवसान] गुरु के समीप स्थान, गुरु के पास निवास (सूअ १, १४, ४)।

ओसाणिहाण त्रि [दे] विधि-पूर्वक अनुष्ठित (दे १, १६३)।

ओसाय पु [अवश्याय] ओस, निशा-जल (जीवस ३१)।

ओसायण न [अवसादन] परिशाटन, नाश (विसे)।

ओसार सक [अप+सारय्] दूर करना। ओसारेहि (स ४०८)। कर्म ओसारिज्जतु (स ४१०)। सक ओसारिवि (भवि)।

ओसार पु [दे] गो-वाट, गो-वाडा (दे १, १४६)।

ओसार पु [अपसार] अपसरण (से १३, १४)।

ओसार देखो **ऊसार** = उत्सार (भवि)।

ओसार पु [अवसार] कवच, बखतर (से १२, ५६)।

ओसारिअ वि [अपसारित] दूर किया हुआ, अपनीत (गा ६६, पउम २३, ८)।

ओसारिअ वि [अवसारित] अवलम्बित, लटकाया हुआ (औप)।

ओसास (अप) देखो **ओवास** = अवकाश (भवि)।

ओसिअ वि [दे] १ अबल, बल-रहित (दे १, १५०)। २ अपूर्व, असाधारण (षड्)।

ओसिअ वि [उषित] १ बसा हुआ, रहा हुआ (सूअ १, १४, ४)। २ व्यवस्थित (सूअ १, ४, १, २०)।

ओसिअंत वक्र [अवसीदत्] पीडा पाता हुआ (हे १, १०१, से ३, ५१)।

ओसिंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे १, १६२, पाअ)।

ओसिंचित्तु वि [अपसेचयितृ] अपसेक करनेवाला (सूअ २, २)।

ओसिक्खिअ न [दे] १ गति-व्याघात। २ अरति-निहित (दे, १, १७३)।

ओसित्त वि [अवसिक्त] भीजाया हुआ, सिक्त (आचा २, १, १, १)।

ओसित्त वि [दे] उपलिप्त (दे १, १५८)।

ओसिय वि [अवसित] १ पर्यवसित। २ उपशान्त (सूअ १, १३)। २ जीत, पराभूत (विसे)।

ओसिरण न [दे] व्युत्सर्जन, परित्याग (षड्)।

ओसीअ वि [दे] अधो-मुख, अवनत (दे १, १५८)।

ओसीर देखो **उसीर** (पराह २, ५)।

ओसीस अक [अप+वृत्] १ पीछे हटना। २ घूमना, फिरना। सक्र ओसीसिऊण (दे १, १५२)।

ओसीस वि [अप+वृत्त] अपवृत्त (दे १, १५२)।

ओसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (प्राप्र)।

ओसुखिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, कल्पित (दे १६१)।

ओसुंभ सक [अव+पातय्] १ गिरा देना। २ नष्ट करना। कर्म ओसुब्भति (स ७, ६१)। वक्र ओसुंभइ (से ४, ५४)। कवक्र ओसुब्भंत (पि ५३५)।

ओसुक्क सक [तिज्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। ओसुक्कइ (हे ४, १०४)।

ओसुक्क वि [अवशुष्क] सूखा हुआ (पउम ५३, ७६, ५, १४)।

ओसुक्ख अक [अव+शुष्] सूखना। वक्र ओसुक्खंत (से ६, ६३)।

ओसुद्ध वि [दे] १ विनिपतित (दे १, १५७)। २ विनाशित (से १३ २२)।

ओसुब्भंत देखो **ओसुंभ**।

ओसुय न [औत्सुक्य] उत्सुकता, उत्कण्ठा (औप, पि ३२७ ए)।

ओसोयणी, ओसोवणिआ, ओसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ निद्राधीन किया जा सकता है (सुपा २२०, णाया १, १६, कप्प)।

ओस्सक्क पु [अवष्वष्क] अपसर्पण, पीछे हटना (पव २)।

ओस्सक्कण देखो **ओसक्कण** (पिंड २८५)।

ओस्सा [दे] देखो **ओसा** (कस)।

ओस्साड पु [अवशाट] नाश, विनाश (सण)।

ओह देखो **ओघ** (पराह १, ४, गा ५१८, निचू १६, ओघ २, धम्म १० टी)। ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य (विसे ६५७)।

ओह सक [अव+तॄ] नीचे उतरना। ओहइ (हे ४, ८५)।

ओह पुन [ओघ] १ उत्सर्ग, सामान्य नियम, (णंदि ५२)। २ सामान्य, साधारण (वव १)। ३ प्रवाह (राय ४७ टी)। ४ सलिल-प्रवेश। ५ आस्रव-द्वार (आचा २, १६, १०)। ६ संसार (सूअ १, ६, ६)। °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (णंदि ५२)।

ओहक पु [दे] हास हसी (दे १, १५३)।

ओहजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

ओहतर वि [ओघतर] संसार पार करनेवाला (मुनि), (आचा)।

ओहंस पुं [दे] १ चन्दन। २ जिसपर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रोटा या होरसा (दे १, १६८)।

ओहट्ट अक [अप+घट्ट्] १ कम होना, ह्रास पाना। २ पीछे हटना। ३ सक. हटाना, निवृत्त करना। ओहट्टइ (हे ४, ४१६)। वकृ ओहट्टंत (से ८ ६०, सुपा २३३)।

ओहट्ट पु [दे] १ अवगुण्ठन। २ नीवी, कटि वस्त्र। ३ वि अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे १, १६६, भवि)।

ओहट्ट } वि [अपवर्तक] निवारक, हटाने-
ओहट्टय } वाला, निषेधक (विपा १, २, णाया १, १६; १८)।

ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबाकर हाथ में गृहीत (दे १, १५६)।

ओहट्ट पु [दे] हास हँसी (दे १, १५३)।

ओहट्ट वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ (पउम ३७ ३)।

ओहड वि [अपहृत] नीचे लाया हुआ (दस ५, १, ८६)।

ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला (दे १, १६०)।

ओहत्त वि [दे] अवनत (दे १, १५६)।

ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (से ३५)।

ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त (णाया १ १)।

ओहय वि [अवहत] विनाशित (औप)।

ओहर सक [अप + हृ] अपहरण करना। वर्त्त ओहरीआमि (पि ६८)।

ओहर अक [अव + हृ] टेढ़ा होना, वक्र होना। २ सक उलटा करना। ३ फिराना। संकृ ओहरिय (आचा २, १ ७)।

ओहर न [उपगृह] छोटा गृह कोठरी (पराह १ १)।

ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार (उत्त ६९६)।

ओहरण न [दे] १ विनाशन, हिंसा। २ असभव अर्थ की सम्भावना (दे १, १७४)। ३ अस्त्र हथियार (स ५३१, ६३७)। ४ वि आघ्रात (पड्)।

ओहरिअ वि [दे अपहृत] १ फेंका हुआ (से १०, ३)। २ नीचे गिराया हुआ (से ३, ३८)। ३ उतारा हुआ, उत्तारित (ओघ ८०६)। ४ अपनीत, 'ओहरिअभरुव्व भारवहो' (गा ८०)।

ओहरिस वि [दे] १ आघ्रात, सूँघा हुआ। २ पु चन्दन घिसने की शिला, चन्दौटा (दे १ १६६)।

ओहल देखो उऊखल (हे १, १७१; कुमा)।

ओहल सक [अव + खल्] घिसना। भवि-ओहलिही (सुपा १३६)।

ओहलिय वि [अवखलित] घिसा हुआ, 'असुजलोहलियगल्यलो' (सुर २, १८६, सण)।

ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह (सुपा ३६४)।

ओहस सक [उप + हस] उपहास करना। ओहसइ (नाट)। वकृ ओहसिज्जत (से १५, १०)। कृ ओहसणिज्ज (स ८)।

ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा। २ वि धृत, कम्पित (दे १, १७३)।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (स ६०, दे १, १७३ स ८८८)।

ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख (१, १५८)।

ओहाइअ वि [अवधावित] चरित्र से भ्रष्ट (दसचू १, १)।

ओहाडण न [अवघाटन] प्रायश्चित्त-विशेष (वव १)।

ओहाडण न [अवघाटन] ढकना, पिधान (वव १)।

ओहाडणी स्त्री [दे अवघाटनी] १ पिधानी (दे १, १६१)। २ एक प्रकार की ओढनी (जीव ३)।

ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ, 'वइरामयकवाडोहाडियाओ' (ज १—पत्र ७१)। २ स्थगित (आव ५)।

ओहाण न [उपधान] स्थगन, ढकना (वव ४)।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल (आचा)।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना (निचू १६)।

ओहाम सक [तुलय्] तोलना, तुलना करना। ओहामइ (हे ४, २५)। वकृ ओहामत (कुमा)।

ओहामिय वि [तुलित] तोला हुआ (पाअ, सुपा २६६)।

ओहामिय वि [दे] १ अभिभूत (पड्)। २ तिरस्कृत (स ३१३, ओघ ६०)। ३ बन्द किया हुआ, स्थगित, 'जह वीणावसरवा खणेण ओहामिया सव्वा' (पउम ८६, ६)।

ओहार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। सकृ ओहारिअ (अभि १६४)।

ओहार पु [दे] १ कच्छप। २ नदी वगैरह के बीच की शुष्क जगह, द्वीप। ३ अंश, विभाग (दे १, १६७)। ४ जलचर-जन्तु-विशेष (पराह १, ३)।

ओहार पु [अवधार] निश्चय। °व वि [°वत्] निश्चयवाला (द्र ४६)।

ओहारइत्तु वि [अवधारयितृ] निश्चय करनेवाला (राज)।

ओहारइत्तु वि [अवहारयितृ] दूसरे पर मिथ्याभियोग लगानेवाला (राज)।

ओहारण न [अवधारण] नियम, निश्चय (द्र २)।

ओहारणी स्त्री [अवधारणी] निश्चयात्मक भाषा, 'ओहारणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो' (दस ८, ३)।

ओहारिणी स्त्री [अवधारिणी] ऊपर देखो (भास १४)।

ओहाव सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। ओहावइ (हे ४, १६०, षड्)।

ओहाव अक [अव + धाव्] पीछे हटना। वकृ ओहावत, ओहावेंत (ओघ १२६, वव ८)।

ओहावण न [अवधावन] १ अपसर्पण, पलायन (वव १)। २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड़ देना (वव ३)।

ओहावण न [अवभावन] अपमान, अपकीर्ति (पिंड ४८६)।

ओहावणा स्त्री [अपहापना] लाघव, लघुता (जय २६)।

ओहावणा स्त्री [अपभावना] तिरस्कार, अनादर (उप १२६ टी, स ४१०)।

ओहावणा स्त्री [आक्रान्ति] आक्रमण (काल)।

ओहाविअ वि [अपभावित] १ तिरस्कृत (सुपा २२४)। २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त (वव ८)।

ओहाविअ वि [अवधावित] पलायित, अपसृत (दसचू १, २)।

ओहास पु [अवहास, उपहास] हँसी, हास्य (प्राप्र, से ४३)।

ओहासण न [अवभाषण] याचना, माग, विशिष्ट भिक्षा (आव ८)।

ओहासिय वि [अवभाषित] याचित (पव्वा १३, १०)।

ओहि पुस्त्री [अवधि] १ मर्यादा सीमा हद (गा १७०,२०६)। २ रूपि-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष (उवा, महा)। °जिण पुं [°जिन] अवधिज्ञानवाला साधु (पण्ह २, १)। °णाण न [°ज्ञान] अवधिज्ञान (वव १)। °णाणावरण न [°ज्ञानावरण] अवधिज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म (कम्म १)। °दंसण न [°दर्शन] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अवधिदर्शन का आवारक कर्म (ठा ६)। °नाण देखो °णाण (प्राप्र)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (भग १३, ८)।

ओहिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओहिअ वि [औधिक] औत्सर्गिक, सामान्य रूप से उक्त (अणु १६६, २००)।

ओहिण्ण वि [अपभिन्न] रोका हुआ अटकाया हुआ (से १३, २८)।

ओहित्थ न [दे] १ विषाद खेद। २ रभस, वेग। ३ वि विचारित (दे १ १६८)।

ओहिर देखो ओहीर। ओहिरइ (षड्)।

ओहिर देखो ओहर = अव + हृ। कर्म ओहिरिआमि (पि ६८)।

ओहीअन्त वि [अवहीयमान] क्रमशः कम होता हुआ (से १२, ४२)।

ओहीण वि [अवहीन] १ पीछे रहा हुआ (अभि ५६)। २ अपगत, गुजरा हुआ (से १२ ६७)।

ओहीर अक [नि + द्रा] सो जाना, निद्रा लेना (हे ४, १२)। वकृ ओहीरमाण (णाया १, १ विपा २, १, कप्प)।

ओहीर अक [खिद्] खिन्न होना। वकृ ओहीरत त्ति सीअत' (पाअ)।

ओहीरिअ वि [अवधीरित] तिरस्कृत, परिभूत (आचा २ १)।

ओहीरिअ वि [दे] १ उद्गीत। २ अवसन्न, खिन्न (दे १, १६३)।

ओहुअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १ १५८)।

ओहुज देखो उवहुज। ओहुजइ (भवि)।

ओहुड वि [दे] विफल, निष्फल (दे १, १५८)।

ओहुप्पन्त वि [आक्रम्यमाण] जिसपर आक्रमण किया जाता हो वह (से ३, १८)।

ओहुर वि [दे] १ अवनत, अवाङ्मुख (गउड)। २ खिन्न, खेद-प्राप्त। ३ स्रस्त, ध्वस्त (दे १ १५७)।

ओहुल्ल वि [दे] १ खिन्न। १ अवनत, नीचे झुका हुआ (भवि)।

ओहूणग न [अवधूनन] १ कम्प। २ उल्लङ्घन। ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना (आचा १ ९ १)।

ओहूय वि [अवधूत] उल्लङ्घित (बृह १)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ओआराइसद्दसंकलणो एवमो तरंगो समत्तो।
तस्समत्तीए अ सरविहाओवि समत्तो ॥

क

क पु [क] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है (प्राप प्रमा)। २ ब्रह्मा (दे ५, २६)। ३ किए हुए पाप का स्वीकार, 'कत्ति कडं मे पावं' (आवम)। ४ न. पानी, जल (से ६११)। ५ सुख (सुर १६,५५)। देखो °अ = क।

क देखो किम् (गउड, महा)।

कअवत देखो कय-व = कृतवत् (प्राकृ ३५)।

कइ त्रि व [कति] कितना, 'त अते। कइदिसं ओभासेइ' (भग)। °अ वि [°क] कतिपय, कईएक, 'सोएमि जाव तुज्झ, पियर कइएसु दियहेसु' (पउम ३४,२७)। °अव वि [°पय] कतिपय, कईएक (हे १, २५०)। °इ अ [°चित्] कईएक (उप पृ ३)। °त्थ वि [°थ] कितनावाँ, कौन संख्या का ? (विसे ६१७)। °वअ °वय, °वाह वि [°पय] कईएक (पउम ६८, १६, उवा षड् कुमा हे १, २५०)। °वि अ [°अपि] कईएक (काल, महा)। °विह वि [°विध] कितने प्रकार का (भग)।

कइ वि [कृतिन्] १ विद्वान् पण्डित। २ पुण्यवान् (सूअ २ १ ६०)।

कइ अ [कचित्] कहीं, किसी जगह में (दसचू २ १४)।

कइ अ [कदा] कब, किस समय ?, 'एआइ उण मज्झो वण्णार कइ णु उव्वहइ ?' (गा ८०३)।

कइ पु [कपि] बन्दर वानर (पाअ)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष, वानर द्वीप (पउम ५५,१६)। °द्धय, °धय पु [°ध्वज] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६, ८३)। २ अर्जुन (हे २ ९०)। °हसिअ न [°हसित] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन। २ वानर के समान विकृत मुँह का हसना (भग ३,६)।

कइ देखो कवि = कवि (गउड, सुर २, २७)। °अर (अव) पु [कवि] श्रेष्ठ कवि (पिंग)। °मा स्त्री [°त्व] कवित्व, कविपन (षड्)। °राय पु [°राज] १ श्रेष्ठ कवि (पिंग)। २ 'गउडवहो' नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-न, 'कइ वि' 'आसि कइरायइन्धो वप्पइराओ त्ति पणइलवो' (गउड ७९८)।

कइअ वि [क्रयिक] खरीदनेवाला, ग्राहक 'विक्कीर्णतो कइओ होइ विक्किणंतो य वाणिओ' (उत्त ३५, १८)।

कइअक } पु [दे] निकर, समूह (दे २,
कइअंकसइ } १३)।

कइअव न [कैतव] कपट, दम्भ (कुमा, प्राप्र)।

कइआ अ [कदा] कब, किस समय ? (गा १३८, कुमा)।

कइउल्ल वि [दे] थोडा, अल्प (दे १, २१)।

कइंद पु [कवीन्द्र] श्रेष्ठ कवि (गउड)।

कइकच्छु स्त्री [कपिकच्छु] वृक्ष-विशेष, केवाँच, कौंछ, कवाछ (गा ५३२)।

कइगई स्त्री [कैकयी] राजा दशरथ की एक रानी (पउम ६५, २१)।

कइत्थ पु [कपित्थ] १ वृक्ष-विशेष, कैथ का पेड़। २ फल-विशेष, कैथ, कैथा (गा ६४१)।

कइम वि [कतम] बहुत मे से कौन सा ? (हे १, ४८, गा ११६)।

कइयव्व देखो कइअव (तदु ५३)।

कइयहा (अप) अ [कदा] कब, किस समय ? (भण)।

कइयाइ अ [कदाचित्] किसी समय मे (कुप्र ४१३)।

कइर देखो कयर = कतर (पिंड ४६६)।

कइर पु [कदर] वृक्ष विशेष, 'ज कइररुक्ख-हिट्ठा जह दगकोटी दविणमत्थि' (श्रा १६)।

कइरव न [करव] कमल कुमुद (हे १, १५२)।

कइरव पुन [करव] कुमुद, 'कइरवो' (सक्षि ५)।

कइरविणी स्त्री [कैरविणी] कुमुदिनी, कमलिनी (कुमा)।

कइलास पु [कैलास, °श] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष (पात्र, पउम ५, ५३, कुमा)। २ मेरु पर्वत (निचू १३)। ३ देव-विशेष, एक नाग-राज (जीव ३)। °सय पु [°शय] महादेव, शिव (कुमा)। देखो केलास।

कइलासा स्त्री [कैलासा, °शा] देव-विशेष की एक राजधानी (जीव ३)।

कइल्लवइल्ल पु [दे] स्वच्छन्द चारी बैल (दे २, २५)।

कइविया स्त्री [दे] बरतन विशेष, पीकदान, पीकदानी (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

कइस (अप) वि [कीदृश] कैसा (कुमा)।

कईया (अप) देखो कइआ (सुपा ११६)।

कईवय देखो कइवय (पउम २८, १९)।

कईस पु [कवीश] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि (पिंग)।

कईसर पु [कवीश्वर] उत्तम कवि (रंभा)।

कउ पु [क्रतु] यज्ञ (कप्पू)।

कउ (अप) अ [कुत] कहाँ से (हे ४, ४१६)।

कउअ वि [दे] १ प्रधान, मुख्य। २ पुन चिन्ह, निशान (दे २, ५६)।

कउच्छेअय पु [कौक्षेयक] पेट पर बँधी हुई तलवार (हे १, १६२, पड्)।

कउड न [दे ककुद] देखो कउह = ककुद (पड्)।

कउरअ } पुं [कौरव] १ कुरु देश का
कउरव } राजा। २ पुस्त्री कुरु वश मे उत्पन्न। ३ वि कुरु (देश या वश) से सवन्ध रखनेवाला। ४ कुरु देश मे उत्पन्न (प्राप्र, नाट, हे १, १६२)।

कउल न [दे] १ करीष, गोइँठा का चूर्ण (दे २, ७)।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्त्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरह। २ वि शक्ति का उपासक। ३ तान्त्रिक मत को जाननेवाला। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी। ५ देवता-विशेष,

'विसमिज्जंतमहापसुद-
सणसभमपरोप्परारूढा।
गयणे च्चिय गवर्डाड
कुणंति तुह कउलणारीओ'
(गउड)।

कउलव देखो कउरव (चड)।

कउसल पुन [कौशल] चतुराई, 'कउसलो' (सक्षि ६, प्राकृ १०)।

कउसल न [कौशल] कुशलता, दक्षता, होशियारी (हे १, १६२, प्राप्र)।

कउह न [दे] नित्य, सदा, हमेशा (दे २, ५)।

कउह पुन [ककुद] १ बैल के कंधे का कुब्बड। २ सफेद छत्र वगैरह राज-चिह्न। ३ पर्वत का अग्रभाग, टोच (हे १, २२५)। ४ वि प्रधान, मुख्य,

'कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंती सोइंदियवसट्टा।'
(णाया १, १७)। देखो ककुह।

कउहा स्त्री [ककुभ्] १ दिशा (कुमा)। २ शोभा, कान्ति। ३ चम्पा के पुष्पो की माला। ४ इस नाम की एक रागिणी। ५ शास्त्र। ६ विकीर्ण केश (हे १, २१)।

कउहि वि [ककुद्मिन्] वृषभ, बैल (अणु १४२)।

कए } अ [कृते] वास्ते, निमित्त, लिए,
कएण } 'तत्तो सो तस्स कए, खणेइ खाणी-
कएणं } उणेगठाणेसु' (कुम्मा १५, कुमा), 'अवरएहमजिरीए कएण कामो वहइ चाव' (गा ४७३),

'लज्जा चत्ता सील च
खडिअ अजसघोसणा दिण्णा।
जस्स कएण पिअसहि !
सो चेअ जणो जणो जाओ'
(गा ५२५)।

कएल्ल वि [कृत] किया हुआ (सुख २, १५)।

कओ अ [कुत] कहाँ से ? (आचा, उव, रयण २६)। °हुत्त क्रिवि [दे] किस तरफ, 'कओहुत्त गतव्व ?' (महा)।

कओ अ [क्व] कहाँ, किस स्थान मे, 'कओ वयामो ?' (णाया १, १४)।

कओण्ह वि [कदुष्ण] थोडा गरम (धर्मवि ११२)।

कओल देखो कवोल (से ३, ४९)।

क अ [कम्] उदक, जल (तदु ५३)।

कइ अ [दे] किससे, 'कइ पइ सिक्खिउ ए गइलालस' (विक १०२)।

कक पु [कङ्क] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १, ४, अनु ४)। २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा (उप ४९४)। ३ वृक्ष-विशेष, 'ककफलसरलनयण—' (उप १०३१ टी)। °पत्त न [°पत्र] बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उडता है (वेणी १०२)। °लोह पुन [°लोह] एक प्रकार का लोहा (उप पृ ३२६, सुपा २०७)। °वत्त देखो °पत्त (नाट)।

कंकइ पु [कङ्कति] वृक्ष-विशेष, नागवला नामक ओषधि (उप १०३१ टी)।

कंकड पु [कङ्कट] वर्म, कवच, 'रामो चावे सक्कडे दिट्ठी देंतो' (पउम ४४, २१, ओप)।

कंकडइय वि [कङ्कटित] कवचवाला, वर्मित (पण्ह १, ३)।

कंकडुअ } पु [काङ्कटुक] दुर्भेद्य माप, उरद की एक जाति, जो कभी
कंकडुग } पकता ही नही, 'ककडुओ विव मासो, सिद्धि न उवेइ जस्स ववहारो' (वव ३)।

कंकण न [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष, कँगन (श्रा २८, गा ६६)।

काण पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

ककणी स्त्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष, 'मयमेव मकणीए धणीए त ककणी वद्धा' (कुप्र १८५)।

ककति पु [कङ्कति] ग्राम- विशेष (राज)।

ककतिज्ज पुस्त्री [काङ्कतीय] माघराज वश मे उत्पन्न (राज)।

ककय पु [कङ्कत] १ नागवला-नामक ओपधि। २ मर्प की एक जाति। ३ पुस्त्री कघा, केश सँवारने का उपकरण (सूत्र १, ४)।

ककलास पु [कृकलास] ककोंट, साप की एक जाति (पाअ)।

ककसी स्त्री [दे] कघी, केश सँवारने का उपकरण (ती १५)।

ककाल न [कङ्काल] चमडी और मास रहित अस्थि-पञ्जर, 'ककालवेसाए' (श्रा १६), 'अह नरकरककाकालसकुले भीसणमसाणे' (वज्जा २०, दे २, ५३)।

ककावंस पु [कङ्कावश] वनस्पति-विशेष, (पराण ३३)।

कक्किल्लि देखो ककेल्लि (सुपा ५५६, कुमा)।

ककुण देखो ककण = दे (सुख ३६, १४७)।

ककेलि पुं [कङ्केलि] अशोक वृक्ष (मै ६० विक्र २८)।

ककेल्लि पु [दे. कङ्केल्लि] अशोक वृक्ष (दे २, १२, गा ४०४, सुपा १४०, ५६२, कुमा)।

ककोड न [दे ककोंट] १ वनस्पति विशेष, ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा मे ही होती है (दे २, ७, पाअ)। २ पु एक नागराज। ३ साप की एक जाति (हे १, २६, षड्)।

ककोल पु [कङ्कोल] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद। २ न उस वृक्ष का फल, 'सकप्पूरेलाककोल तबोल' (उप १०३१ टी)। देखो कक्कोल।

कंख सक [काङ्क्ष्] चाहना, वांछना। कंखइ (हे ४, १९२, षड्)।

कखण न [काङ्क्षण] नीचे देखो (धर्म २)।

कंखा स्त्री [काङ्क्षा] १ चाह, अभिलाप (सूत्र १, १५)। २ आसक्ति, गृद्धि (भग)। ३ अन्य धर्म की चाह अथवा उसमे आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार (पडि)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] कर्म विशेष (भग)।

कखि वि [काङ्क्षिन्] चाहनेवाला (आचा, गउड, सुर १३, २४३)।

कखिअ वि [काङ्क्षित] १ अभिलषित। २ काक्षा युक्त, चाहवाला (उवा, भग)।

कखिर वि [काङ्क्षितृ] चाहनेवाला, अभिलापी (गा ५५, सुपा ५३७)।

कगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कागनी (पराण १)।

कगु स्त्रीन [कङ्गु] १ धान्य-विशेष, काँगन या काँगो (ग ७, दे ७, १)। २ वल्ली-विशेष (पराण १)।

कगुलिया स्त्री [दे कङ्गुलिका] जिन-मन्दिर की एक वडी आशातना, जिन-मन्दिर मे या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना (धर्म २)।

कचण पुन [काञ्चन] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। २ वि सोने का, सुवर्ण का, 'कचण खड' (वज्जा १५८)। °पह न [°प्रभ] १ रत्न-विशेष। २ वि रत्न-विशेष का वना हुआ (देवेन्द्र २६९)। °पायव पु [°पादप] वृक्ष-विशेष (स ६७३)।

कचण पुं [काञ्चन] १ वृक्ष विशेष। २ स्व-नाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ३ न सुवर्ण, सोना (कप्प)। °उर न [°पुर] कलिग देश का एक मुख्य नगर (आक)। °कूड न [°कूट] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (ठा ७)। २ देव-विमान-विशेष (सम १२)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °केअई स्त्री [°केतकी] लता-विशेष (कुमा)। °तिलय न [°तिलक] इस नाम का विद्याधरो का एक नगर (इक)। °त्थल न [°स्थल] स्व-नाम ख्यात एक नगर (दस)। °वलाणग न [°वलानक] चौरासी तीर्थो मे एक तीर्थ का नाम (राज)। °सेल पुं [°शैल] मेरु-पर्वत (कप्पू)।

कंचणग पुं [काञ्चनक] १ पर्वत-विशेष (सम ७०)। २ काञ्चनक पर्वत का निवासी देव (जीव ३)।

कचणा स्त्री [कञ्चना] स्वनाम ख्यात एक स्त्री (पराह १, ४)।

कचणार पु [कञ्चनार] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७९, कुमा)।

कचणिया स्त्री [काञ्चनिका] रुद्राक्ष माला (औप)।

कचा (पे) देखो कण्णा (प्राप्र)।

कंचि } स्त्री [काञ्चि, °ञ्ची] १ स्वनाम-ख्यात एक देश (कुमा)। २ कटी-मेखला,
कची } कमर का आभूपण (पाअ)। ३ स्वनाम-ख्यात एक नगर (सुपा ४०६)।

कची स्त्री [दे] मुशल के मुँह मे रक्खी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज, सामी या साम (दे २, १)।

कचीरय न [दे] पुष्प विशेष (वज्जा १०८)।

कचीरय न [काञ्चीरत] सुरत-विशेष (वज्जा १०८)।

कचु } पु [कञ्चुक] १ स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र, चोली (पउम ६, ११,
कचुअ } पाअ)। २ सर्प-त्वक्, साप की केंचली, केंचुली (विसे २५१७)। ३ वर्म, कवच (भग ९, ३३)। ४ वृक्ष-विशेष (हे १, २५, ३०)। ५ वस्त्र, कपडा, 'तो उज्झिऊण लज्जा (लज्ज), ओडधट कचुय सरीराओ' (पउम ३४, १५)।

कचुइ पु [कञ्चुकिन्] १ अन्त पुर का प्रतीहार, चपरासी (णाया १, १, पउम ८, ३९ सुर २, १०६)। २ माप (विसे २५१७)। ३ यव, जव। ४ चणक, चना। ५ जुआर अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का अन्न जोन्हरी। ६ वि जिसने कवच धारण किया हो वह (हे ४, २६३)।

कचुइअ वि [कञ्चुकित] कञ्चुकवाला (कुमा, विपा १, २)।

कचुइज्ज पु [कञ्चुकीय] अन्त पुर का प्रतीहार (भग ११, ११)।

कचुइज्जत वि [कञ्चुकायमान] कञ्चुक की तरह आचरण करता, 'रोमञ्चकञ्चुइज्जन्त-सव्वगत्तो' (सुपा १८१)।

कंचुग देखो कंचुअ (ओघ ६७६, विसे २५२८)।

कंचुगि देखो °कंचुइ (मण)।

कंचुलिआ स्त्री [कञ्चुलिका] कंचली, चोली (कप्पू)।

कंछुल्ली स्त्री [दे] हार, कण्ठाभरण (भवि)।

कंजिअ न [काञ्जिक] कांजिक (सुर ३,१३३, कप्पू)।

कंट देखो कंटग (पिंड २००)।

कंटअन वि [कण्टकायमान] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता (से ६, २०)। २ पुलकित होता (अच्चु ४८)।

कंटइअ वि [कण्टकित] १ कण्टकवाला (से १,३२)। २ रोमाञ्चित, पुलकित (कुमा, पाअ)।

कंटइज्जंत देखो कंटअंत (गा ६७)।

कंटइल्ल पु [कण्टकिल] १ एक जात का बांस। २ वि कण्टकों से व्याप्त (सूअ १,५)।

कंटइल्ल देखो कंटइअ (पण्ह १, १, कुमा)।

कंटउच्चि वि [दे] कण्ट-प्रोत (दे २, १७)।

कंटकिल्ल देखा कंटइअ (दे २, ७५)।

कंटग } पु [कण्टक] १ कांटा, कण्टक
कंटय } (कस, हे १, ३०)। २ रोमाञ्च, पुलक (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन (णाया १, १)। ४ वृश्चिक की पूँछ (वव ६)। ५ शल्य (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १६)। °बोंदिया स्त्री [°दे] कण्टक-शाखा (आचा २, १, ५)।

कंटाली स्त्री [दे] वनस्पति विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया (दे २, ४)।

कंटिअ वि [कण्टिक] १ कण्टकवाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष-विशेष (उत्त १०३१ टी)।

कंटिआ स्त्री [कण्टिका] वनस्पति-विशेष (बृह १, गाच्चू १)।

कंठी स्त्री [दे] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि,

'एयाओ पल्लवारुणफलभरवंधुरिया भूमिखज्जूरा। कंठीओ निव्ववंति न, अम्ह ण्हरमंरणाभोया'

(गउड)।

कंडुल्ल } [दे] देखो कंकोड = (दे) (पाअ,
कंटोल } दे २, ७)।

कंठ पु [दे] १ सूकर, सूअर। २ मर्यादा, सीमा (दे २, ५१)।

कंठ पु [°कण्ठ] १ गला, घाटी (कुमा)। २ समीप, पास। ३ अञ्चल, 'कंठे वत्थाईण णिबद्धगंठिम्मि' (दे २, १८)। °दरखलिअ वि [°दरस्खलित] गद्गद (पाअ)। °मुरय न [°मुरज] आभरण विशेष (णाया १,१)। °मुरवी स्त्री [°मुरवी] गल का एक आभरण (ओप)। °मुही° स्त्री [°मुखी] गले का एक आभूषण (राज)। °सुत्त न [°सूत्र] १ मुरत-बन्ध-विशेष। २ गले का एक आभूषण (औप)।

कंठ त्रि [कण्ठ्य] १ कण्ठ मे उत्पन्न। २ सरल, सुगम (निचू १५)।

कंठकुंची स्त्री [दे] १ वस्त्र वगैरह के अञ्चल मे बँधी हुई गाँठ। २ गले मे लटकती हुई लम्बी नाडी-ग्रन्थि (दे २, १८)।

कंठदीणार पु [दे] छिद्र, विवर (दे १, २४)।

कंठमल्ल न [दे] १ ठठरी, मृत-शिविका। २ यान-पात्र, वाहन (दे २, २०)।

कंठमाल पुस्त्री [कण्ठमाल] रोग-विशेष (कुप्र ४७१)।

कंठय पु [कण्ठक] स्वनाम-ख्यात एक चोर-नायक (महा)।

कंठाकंठि अ [कण्ठाकण्ठि] गले-गले मे ग्रहण कर (णाया १, २—पत्र ८८)।

कंठाल वि [कण्ठवत्] बडा गलावाला (धर्मवि १०१)।

कंठिअ पु [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कंठिआ स्त्री [कण्ठिका] गले का एक आभूषण (गा ७५)।

कंठीरअ देखो कंठीरव (किरात १७)।

कंठीरव पु [कण्ठीरव] सिंह, शार्दूल (प्रयो २१)।

कंड सक [कण्ड्] १ व्रीहि वगैरह का छिलका अलग करना। २ सींचना। ३ खुजवाना। वकृ कंडन (ओघ ४६८ गा ६६३) कंडित (णाया १, ७)।

कंड न [काण्ड] १ अगुल का असंख्यातवां भाग, 'कंडंति एत्थ भन्नइ अगुलभागो असंखेज्जो' (पव २६० टी)।

कंड पुन [काण्ड] १ दण्ड लाठी। २ निन्दित समुदाय। ३ पानी, जल। ४ पर्व। ५ वृक्ष का स्कन्ध। ६ वृक्ष की शाखा। ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहा से शाखाएँ निकलती हैं। ८ ग्रन्थ का एक भाग। ९ गुच्छ, स्तवक। १० अश्व, घोडा। ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा। १२ रीढ, पृष्ठ भाग की लम्बी हड्डी। १३ खुशामद। १४ श्लाघा, प्रशंसा। १५ गुप्तता, प्रच्छन्नता। १६ एकान्त, निर्जन। १७ तृण विशेष। १८ निर्जल पृथ्वी (हे १, ३०)। १९ अवसर, प्रस्ताव (गा ६३३)। २० समूह (णाया १,८)। २१ बाण, शर (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष (राज)। २३ पर्वत वगैरह का एक भाग (सम ६५)। २४ खण्ड, टुकडा, अवयव (आचू १)। °च्छारिय पु [°क्षारिक] १ इस नाम का एक ग्राम। २ एक ग्राम-नायक (वव ७)। देखो कंडग, कंडय।

कंड पु [दे] १ फेन, फीन। २ वि दुर्बल। ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त (दे २, ५१)।

कंडइअ देखो कंटइअ (गा ५५८)।

कंडइज्जंत देखो कंटइज्जंत (गा ६७ अ)।

कंडग न [कण्डक] १ संख्यातीत संयम-स्थान-समुदाय (पिंड ६६, १००)। २ विभाग, पर्वत आदि का एक भाग (सूअ १,६ १०)।

कंडग पुन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड (आचा आवम)। २५ संयम श्रेणि विशेष (बृह ३)। २६ इस नाम का एक ग्राम (आचू १)। देखो कंडय।

कंडण न [कण्डन] व्रीहि वगैरह को साफ करना, तुष पृथक्करण (श्रा २०)।

कंडपडवा स्त्री [दे] यवनिका, परदा (दे २, २५)।

कंडय पुन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड तथा कंडग। २७ वृक्ष विशेष, राक्षसों का चैत्य वृक्ष 'तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाण च कंडओ' (ठा ८)। २८ तावीज, गण्डा, यन्त्र, 'वज्झंति कंडयाइं, पउणीकीरंति अगयाइं' (सुर १६, ३२)।

कंडरीय पु [कण्डरीक] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई, जिसने

वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त मे उसका त्याग कर दिया था (णाया १, १६, उव)।

कंडरीय वि [कण्डरीक] १ अशोभन, अ-सुन्दर। २ अप्रधान (सूअनि १४७, १५३)।

कडलि } स्त्री [कन्दरिका] गुफा, कन्दरा
कडलिजा } (पि ३३३, हे २, ३८, कुमा)।

कडवा स्त्री [कण्डवा] वाद्य-विशेष (राय)।

कंडार सक [उत्+कृ] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना। सकृ.
'गूण दुवे इह पञ्चावइणो जअम्मि,
जे देहणिम्मवणजोव्वणदाणदक्खा।
एक्कं घडेइ पढम कुमरीणमग,
कडारिऊण पअडेइ पुणो दुईओ' (कप्पू)।

कडावेल्ली स्त्री [काण्डवल्ली] वनस्पति-विशेष (पराण १)।

कंडिअ वि [कण्डित] साफ-सुथरा किया हुआ (दे १, ११५)।

कडियायण न [कण्डिकायन] वैशाली (विहार) का एक चैत्य (भग १५)।

कडिल्ल पुं [काण्डिल्य] १ काण्डिल्य-गोत्र का प्रवर्त्तक ऋषि-विशेष। २ पुस्त्री काण्डिल्य गोत्र उत्पन्न। ३ न गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०)। °ायण पुं [°यन] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष (चद १०)।

कडु देखो कडू (राज)।

कडु देखो कदु (सूअ १, ५)।

कंडुअ सक [कण्डूय्] खुजवाना। कंडुअइ (हे १, १२१, उव), कडुअए (पि ४६२)। वकृ कडुअत (गा ४६०), कडुअमाण (प्रासू २८)।

कडुअ पु [कान्दविक] हलवाई, मिठाई वेचने-वाला, 'राया चिंतेइ कओ कंदुयस्स जल-वतरयणसपत्ती ?' (आवम)।

कडुअ } पुं [कन्दुक] गेंद (दे ३, ५६,
कडग } राज)।

कडुज्जुय वि [काण्डर्जु] वाण की तरह सीधा (स ३१७, गा ३५२)।

कडुयग वि [कण्डूयक] खुजानेवाला (औप)।

कडुयण न [कण्डूयन] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष। २ खुजवाना, 'पामागहि-यस्स जहा, कडुयण दुक्खमेव मूढस्स' (स ५१५, उव २६४ टी, गउड)।

कंडुयय देखो कडुयग, 'अकडुयएहिं' (पराह २, १—पत्र १००)।

कडुरु पु [कण्डुरु] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी (पउम ८५, ५)।

कडू स्त्री [कण्डू] १ खुजलाहट, खुजवाना (णाया १, ५)। २ रोग-विशेष, पामा, खाज (णाया १ १३)।

कडूइ स्त्री [कण्डूति] ऊपर देखो (गा ५३२, सुर २, २३)।

कडूइअ न [कण्डूयित] खुजवाना (सूअ १, ३, ३, गा १८१)।

कडूय देखो कडुअ = कण्डूय्। कडूयइ (महा)। वकृ. कडूयमाण (महा)।

कडूयग वि [कण्डूयक] खुजवानेवाला (ठा ५, १)।

कडूयण देखो कडुयण (उप २५६, सुपा १७६, २२७)।

कडूयय देखो कडूयग (महा)।

कडूर पु [दे] वक, वगुला (दे २, ६)।

कडूल वि [कण्डूल] खाजवाला, कण्डू-युक्त (कुमा)।

कत सक [कृत्] १ काटना, छेदना। २ कातना, चरखे मे सूता वनाना, 'सल्ल कतति अप्पणो' (सूअ १, ८, १०)। कतामि (पिंडभा ३५)।

कत वि [कान्त] १ मनोहर, सुन्दर (कुमा)। २ अभिलषित, वाञ्छित (णाया १, १)। ३ पु पति, स्वामी (पाअ)। ४ देव विशेष (सुज्ज १६)। ५ न कान्ति, प्रभा (आचा २,५,१)।

कत वि [क्रान्त] गत, गुजरा हुआ (प्राप)।

कता स्त्री [कान्ता] १ स्त्री, नारी (सुर ३, १४, सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि (राज)।

कतार न [कान्तार] १ अरण्य, जगल (पाअ)। २ दुष्ट, दूषित। ३ निराश्रय। ४ पागल (कप्पू)।

कंतार पुन [कान्तार] जल-फलादि-रहित अरण्य, 'कतारो' (सम्मत्त १६६)।

कति स्त्री [कान्ति] १ तेज, प्रकाश (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य (पाअ)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा (पराह २,१)। ५ इच्छा। ६ चन्द्र की एक कला (राज, विक १०७)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (ती)। °म, °ल्ल वि [°मत्] कान्ति युक्त (आवम, गउड, सुपा ८, १८८)।

कति स्त्री [क्रान्ति] १ परिवर्त्तन, फेरफार। २ गमन, गति (नाट—विक्र ६०)।

कतु पु [दे] काम, कामदेव (दे २, १)।

कथक } पु [कन्थक] अश्व की एक जाति
कथग } (ठा ४, ३, उत्त २३), 'जहा से
कथय } क्वोयाण आइन्ने कथए सिया' (उत्त ११)।

कथा स्त्री [कन्था] कथडी, गुदडी, पुराने वस्त्र से वना हुआ ओढना (हे १, १८७)।

कथार पुं [कन्थार] वृक्ष विशेष (उप २२० टी)।

कथारिया } स्त्री [कन्थारिका, °री] वृक्ष-
कथारी } विशेष (उप १०३१ टी)। °वण न [°वन] उज्जैन के समीप का एक जगल जहा अवन्तीसुकुमार-नामक जैन मुनि ने अन-शन व्रत किया था (आक)।

कथेर पु [कन्थेर] वृक्ष-विशेष (राज)।

कन्थेरी स्त्री [कन्थेरी] कण्टकमय वृक्ष-विशेष (उर ३, २)।

कद अक [क्रन्द्] कॉदना, रोना। कदइ (पि २३१)। भूका कदिसु (पि ५१६)। वकृ कदत (गा ५८४), कन्दमाण (णाया १, १)।

कद वि [दे] १ दृढ, मजवूत। २ मत्त, उन्मत्त। ३ न रतरण, आच्छादन, (दे २, ५१)।

कद पु [क्रन्द, क्रन्दित] व्यन्तर देवो की एक जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कद पु [कन्द] १ गूदेदार और विना रेशे की जड, जमीकन्द, सूरन शकरकन्द, पिण्डालू, ओल, गाजर, लहसुन वगेरह (जी ६)। २ मूल, जड (गउड)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

कद पुं [स्कन्द] कार्त्तिकेय, षडानन (कुमा हे २, ५, षड्)।

कंदणया स्त्री [क्रन्दनता] मोटे स्वर से चिल्लाना (ठा ४, १)।

कंदप्प पु [कन्दर्प] १ कामदेव, अनंग (पाअ)। २ कामोद्दीपक हास्यादि 'कदप्पे कुक्कुइए' (पडि णाया १, १)। ३ देव विशेष (पव ७३)। ४ काम संबन्धी कषाय। ५ वि काम-युक्त, कामी (बृह १)।

कंदप्प वि [कान्दर्प] कान्दर्प संबन्धी (पव ७३)।

कंदप्पि वि [कन्दर्पिन्] कामोद्दीपक, कन्दर्प का उत्तेजक (वव १)।

कंदप्पिय पु [कान्दर्पिक] १ मजाक करने वाला भाण्ड वगैरह (औप भग)। २ भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति (पण्ह २, २)। ३ हास्य वगैरह भाण्ड कर्म से आजीविका चलानेवाला (पण्ण २०)। ४ वि काम-संबन्धी (बृह १)।

कंदर न [कन्दर] १ रन्ध्र विवर (णाया १, १)। २ गुहा, गुफा (उवा, प्रासू ७३)।

कंदरा } स्त्री [कन्दरा] गुहा, गुफा (से ४,
कंदरी } ६ राज)।

कंदल पु [कन्दल] १ अंकुर, प्ररोह (सुपा ८)। २ लता विशेष (णाया १, ९)।

कंदल न [दे] कपाल (दे २, ४)।

कंदलग पु [कन्दलक] एक खुरवाला जानवर-विशेष (पण्ण १)।

कंदलिअ } वि [कन्दलित] अंकुरित (कुमा,
कंदलिल्ल } पि ५९५)।

कंदली स्त्री [कन्दली] १ लता विशेष (सुपा ६, पउम ५३ ७९)। २ अंकुर, प्ररोह, 'दारिद्दरुमकंदलीनवणदवो' (उप ७२८ टी)।

कंदली स्त्री [कन्दली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८ ९९)

कंदविय पु [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला (उप २११ टी)।

कंदिंद पु [क्रन्देन्द्र, क्रन्दितेन्द्र] क्रन्दित-नामक देव निकाय का इन्द्र (ठा २ ४—पत्र [illegible])।

कंदिय पु [क्रन्दित] १ वाणव्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४ आप)। २ न रोदन, आक्रन्द (उत्त २)।

कंदिर वि [क्रन्दिन्] कांदनेवाला (भवि)।

कंदी स्त्री [दे] मूला, कन्द विशेष (दे २ १)।

कंदु पुस्त्री [कन्दु] एक प्रकार का बरतन, जिसमें माण्ड वगैरह पकाया जाता है, हाँडा (विपा १, ३, सूअ १, ५)।

कंदुअ पु [कन्दुक] १ गेंद (पाअ, स्वप्न ३९, मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

कंदुइअ पु [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला (दे २, ४१, ६ ६३)।

कंदुक देखो कंदुअ (सूअ २ ३, १६)।

कंदुग देखो कंदुअ (राज)।

कंदुट्ट न [दे] देखो कंदोट्ट (पाअ, धर्म ५, सण)।

कंदुच्चय पुन [दे] कन्द-विशेष (सुख ३६, ९८)।

कंदुय देखो कंदुइअ (कुप्र ९८)।

कंदोइय देखो कंदुइअ (सुपा ३८५)।

कंदोट्ट न [दे] नील कमल (दे २, ६, प्राप्र, षड्, गा ६२२, उत्तर ११७, कप्पू, भवि)।

कंध देखो खंध = स्कन्ध (नाट, वज्जा ३६)।

कंधरा स्त्री [कन्धरा] ग्रीवा, गरदन (पाअ, सुर ४, १६६, गउड ९)।

कंधार पु [दे] स्कन्ध ग्रीवा का पीछला भाग (उप पृ ८६)।

कंप अक [कम्प्] कांपना, हिलना। कंपइ (हे १, ३०)। वकृ कंपंत, कंपमाण (महा, कप्प)। कवकृ कंपिज्जंत (से ६, ३८, १३, ५९)। प्रयो, वकृ कंपावित (सुपा ५९३)।

कंप पु [कम्प] अस्थैर्य, चलन, हिलन (कुमा, आउ)।

कंपड पु [दे] पथिक, मुसाफिर (दे २, ७)

कंपण न [कम्पन] १ कम्प, हिलन (भवि)। २ रोग-विशेष। °वाइअ वि [°वातिक] कम्प वायु नामक रोगवाला (अनु ६)।

कंपि वि [कम्पिन्] कांपनेवाला (कप्पू)।

कंपिअ वि [कम्पित] कांपा हुआ (कुमा)।

कंपिर वि [कम्पितृ] कांपनेवाला (गा ६५६, सुपा १५८, श्रा २७)।

कंपिल्ल वि [कम्पवत्] कांपनेवाला, अस्थिर, 'निच्चमकंपिल्ल परभयाहि कंपिल्लनामपुरं' (उप ६ टी)।

कंपिल्ल पु [काम्पिल्य] १ यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अन्त ३)। २ न पंजाब देश का एक नगर (ठा १०, उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ८, १४३, उवा)।

कंब वि [कम्र] १ कामुक, कामी। २ सुन्दर, मनोहर (पि २९५)।

कंब° देखो कंबा।

कंबर पु [दे] विज्ञान (दे २, १३)।

कंबल पुन [कम्बल] १ कामरी, ऊनी कपड़ा (आचा, भग)। २ पु स्वनाम ख्यात एक बलीवर्द (राज)। ३ गौ के गले का चमड़ा, सास्ना, गलकंबल, लहर (विपा १, २)।

कंबा स्त्री [कम्बा] यष्टि, लकड़ी 'दिट्ठो तज्जणएण, निसूडिउ कंबघाएहिं, बद्धो' (सुपा ३९६)।

कंबि } स्त्री [कम्बि, °म्बी] १ दर्वी
कंबी } कड़छी। २ लीला-यष्टि, छड़ी, शौख से हाथ में रखी जाती लकड़ी (उप पृ २३७)।

कंबिया स्त्री [कम्बिका] पुस्तक का पुट्ठा, किताब का आवरण पृष्ठ (राय ९६)।

कंबु पु [कम्बु] १ शङ्ख (पण्ह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप (पउम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष (पउम ४५, ३२)। ४ न एक देव-विमान (सम २२)। °ग्गीव न [°ग्रीव] एक देव-विमान (सम २२)।

कंबोय पु [कम्बोज] देश-विशेष (पउम २७, ७, स ८०)।

कंबोय वि [काम्बोज] कम्बोज देश में उत्पन्न (स ८०)।

कंभार पु ब. [कश्मीर] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८, षड्)। °जम्म न [°जन्मन्] कुंकुम, केसर (कुमा)। देखो कम्हार।

कंभूर (अप) ऊपर देखो (षड्)।

कंस पु [कंस] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल (पण्ह १, ४)। २ महा-ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ कांसा, एक प्रकार की धातु (णाया १, ७—पत्र ११८)। °णाभ पु [°नाभ] ग्रह-विशेष (सुज २० इक)। °वण्ण पु [°वर्ण] ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वण्णाभ पु [°वर्णाभ] ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °सहारण पु [°संहारण] कृष्ण, विष्णु (पिंग)।

कंस न [कांस्य] १ धातु-विशेष, कांसा । २ वाद्य विशेष । ३ परिमाण विशेष । ४ जल पीने का पात्र, प्याला (हे १, २९, ७०) । °ताल न [°ताल] वाद्य-विशेष (जीव ३) । °पत्ती, °पाई स्त्री [°पात्री] कांसा का बना हुआ पात्र-विशेष (कप्प, ठा ६) । °पाय न [°पात्र] कांसा का बना हुआ पात्र (दस ६) ।

कंसार पु [दे] कंसार, एक प्रकार की मिठाई, 'ता करेऊण कंसारं तालपुडसजुयं चेग विसमोयग गोमे उवणेमि एयाण' (स १८७) ।

कंसारी स्त्री [दे] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति (जी १८) ।

कंसाल पु [कांस्याल] वाद्य-विशेष (हे २, ९२; सुपा ५०) ।

कंसालो स्त्री [कंसताला, कांस्यताला] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष, ताल (णंदि) ।

कंसालिया स्त्री [कांस्यतालिका] एक प्रकार का वाद्य (सुपा २४२) ।

कंसिअ पु [कांस्यिक] १ कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार (हे १, ७०) । २ वाद्य विशेष (सुपा २४२) ।

कंसिआ स्त्री [कंसिका] १ ताल (णाया १, १७) । २ वाद्य-विशेष (आचा २) ।

ककाणि पुंस्त्री [दे] मर्म स्थान, 'अग्रुस्स विउभति ककाणओ से' (सूअ १, ५, २, १५) ।

ककुध } देखो कउह = ककुद (पि २०९, ककुभ } हे २, १७४) ।

ककुह देखो कउह = ककुद (ठा ५, १; णाया १, १७; विपा १, २) । ५ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९९) ।

ककुहा देखो कउहा (पड्) ।

कक्क पु [कल्क] १ उद्वर्त्तन-द्रव्य, शरीर पर का मैल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य (सूअ १, ९; निचू १) । २ न पाप (भग १२, ५) । ३ माया, कपट (सम ७१) । °गरुग न [°गुरुक] माया, कपट (पण्ह १, २—पत्र २८) ।

कक्क पुन [कल्क] १ चन्दन आदि उद्वर्तन द्रव्य (दस ६, ६४) । २ प्रसूति रोग आदि मे किया जाता क्षार-पातन । ३ लोध्र आदि से उद्वर्तन (पव २—गाथा ११५) । °कुरुया स्त्री [°करुका] माया, कपट (पव २) ।

कक्क पु [कर्क] १ चक्रवर्ती का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३) । २ राशि-विशेष, कर्क राशि (धर्मवि ६६) ।

कक्कंध पुं [कर्कन्ध] ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३) ।

कक्कंधु स्त्री [कर्कन्धु] वैर का वृक्ष (पाअ) ।

कक्कड पु [कर्कट] कर्कराशि (विचार १०६) ।

कक्कड न [कर्कट] १ जलजन्तु विशेष, कुलीर (पाअ) । २ ककडी, फल-विशेष (पव ४) । ३ हृदय का एक प्रकार का वायु (भग १०, ३) ।

कक्कडच्छ पु [कर्कटाक्ष] ककडी, खीरा (कप्प) ।

कक्कडिया } स्त्री [कर्कटिका, °टी] ककडी कक्कडी } (खीरा) का गाछ (उप ९९१) ।

कक्कणा स्त्री [कल्कना] १ पाप । २ माया (पण्ह १, २) ।

कक्कब पु [दे] गुड बनाते समय की इक्षु-रस की एक अवस्था, इक्षु रस का विकार-विशेष (पिंड २८३) ।

कक्कर पु [कर्कर] १ कंकर, पत्थर (विपा १, २; गउड; सुपा ५१७; प्रासू १६८) । २ वि कठिन, परुष (आचू ४) । ३ कर्कर आवाज वाला (उत्त ७) ।

कक्करणया स्त्री [कर्करणता] १ दोषोद्भावन, दोषोद्भावनगर्भित प्रलाप (ठा ३, ३—पत्र १४७) ।

कक्कराइय न [कर्करायित] १ कर्कर की तरह आचरित । २ दोषोच्चारण, दोष-प्रकटन (आव ४) ।

कक्कस वि [कर्कश] १ कठोर परुष (पाअ; सुपा ५८; आरा ९४; पउम ३१, ६६) । २ प्रखर, चण्ड । ३ तीव्र, प्रगाढ (विपा १, १) । ४ अनिष्ट, हानि कारक (भग ६, ३३) । ५ निष्ठुर, निर्दय (उत्त) । ६ चबा-चबा कर कहा हुआ वचन (आचा २, ४, १) ।

कक्कस } पु [दे] दध्योदन, करम्ब (दे कक्कसार } २ १४) ।

कक्कसेण पुं [कर्कसेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल मे उत्पन्न एक स्वनाम ख्यात कुलकर पुरुष (राज) ।

कक्कालुआ स्त्री [कर्कारुका] १ कूष्माण्ड-वल्ली, कोहडा का गाछ, 'कक्कालुआ गोच्छलित्तवेटा' (मृच्छ ५९) ।

कक्किड पु [दे] कृकलास, गिरगिट, गुजराती मे 'काकेडो' (दे २, ५) ।

कक्कि पु [कल्किन्] भविष्य मे होनेवाला पाटलिपुत्र का एक राजा (ती) ।

कक्किग न [कल्किक] माग (सूअ १, १०) ।

कक्केअण पुन [कर्केतन] रत्न की एक जाति (कप्प; पउम ३ ७५) ।

कक्केरअ पुं [कर्केरक] मणि-विशेष की एक जाति (मृच्छ २०२) ।

कक्कोड न [कर्कोट] शाक विशेष, ककरैल, ककोडा (राज) । देखो कक्कोडय ।

कक्कोडई स्त्री [कर्कोटकी] ककोडे का वृक्ष ककरैल का गाछ (पाण १—पत्र ३३) ।

कक्कोडय न [कर्कोटक] देखो कक्कोड । २ पु अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज । ३ उसका आवास पर्वत (भग ३, ६; इक) ।

कक्कोल पु [कङ्कोल] १ वृक्ष-विशेष, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद (गउड, स ७१) । २ न. फल-विशेष, जो सुगंधी होता है (पण्ह २, ५) । देखो कंकोल ।

कक्कोली स्त्री [कङ्कोली] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४९) ।

कक्ख देखो कच्छ = कक्ष (उव; कप्प; सुर १, ८८; पउम ४४, १; पि ३१८, ४२०) ।

कक्खग वि [कक्षाग] १ कक्षा-प्राप्त । २ पु कक्षा का केश (तंदु ३९) ।

कक्खड देखो कक्कस (सम ४१; ठा १, १; वज्जा ८०; उव) ।

कक्खड वि [दे] पीन, पुष्ट (दे २, ११; कप्प आचा; भवि) ।

कक्खडंगी स्त्री [दे] सखी, सहेली (दे २, १९) ।

कक्खल [दे] देखो कक्कस (पड्) ।

कक्खा देखो कच्छा = कक्षा (पाअ; णाया १, ८; सुर ११, २२१) ।

कग्घाड पु [दे] १ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा । २ किलाट, दूध की मलाई (दे २, ५४) ।

कग्घायल पु [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई (दे २, २२) ।

कच्च न [दे. कृत्य] कार्य, काम (दे २, २, (पट्)।

कच्च (पै) देखो कज्ज (प्राप्र)।

कच्च न [काच] काच, शीशा, 'कच्च माणिक्क च सम आहरणे पउंजीअदि' (कप्पू)।

कच्चत वि [कृत्यमान] पीडित किया जाता (सूअ १, २, १)।

कचरा स्त्री [दे] १ कचरा, कच्चा खरबूजा। २ कचरा को सूखाकर, तरकारी और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य-विशेष, एक प्रकार का आचार, गुजराती मे जिसको 'काचरी' कहते हैं, 'पुणो कच्चरा पप्पटा दिण्णभेया' (भवि)।

कच्चवार पु [दे] कतवार, कूड़ा (सुक्त ४४)।

कच्चाइणी स्त्री [कात्यायनी] देवी-विशेष, चण्डी (स ४३७)।

कच्चायण पु [कात्यायन] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष (सुज्ज १०)। २ न कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र। ३ पुंस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

कच्चायणी स्त्री [कात्यायनी] पार्वती, गोरी (पाअ)।

कच्चि अ [कच्चित्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ मङ्गल। ३ अभिलाष। ४ हर्ष (पि २७१ हे २, २१७, २१८)।

कच्चु (अप) ऊपर देखो (हे ४, ३२९)।

कच्चूर पु [कर्चूर] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी (श्रा २०)।

कच्चोल } पुन [कच्चोलक] पात्र-विशेष, कच्चोलय } प्याला (पउम १०२, १२०; भवि सुपा २०१)।

कच्छ पु [कक्ष] १ काख, कखरी। २ वन जंगल (भग ३, ६)। ३ तृण, घास। ४ शुष्क तृण। ५ वल्ली, लता। ६ शुष्क काष्ठो वाला जंगल। ७ राजा वगैरह का जनानखाना। ८ हाथी को बांधने की डोर। ९ पार्श्व बाजू। १० ग्रह-भ्रमण। ११ कक्षा, श्रेणी। १२ द्वार दरवाजा। १३ वनस्पति-विशेष, गूगल। १४ विभीतक वृक्ष। १५ घर की भीत। १६ स्पर्धा का स्थान। १७ जल-प्राय देश (हे २, १७)।

कच्छ पु न [कच्छ] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो आजकल भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है (पउम ९८, ६७, दे २, ९ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश (णाया १, १—पत्र, ३३, कुमा)। ३ कच्छा, लँगोट (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरह की वाटिका (कुमा, आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष मे स्थित एक विजय-प्रदेश (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा, 'गोलाणईए कच्छे, चक्खतो राइआइ पत्ताइ' (गा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन (भग)। ८ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (आवम)। ९ कच्छ-विजय का एक राजा। १० कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव (ज ४)। ११ पार्श्ववर्ती प्रदेश। १२ राजा वगैरह के उद्यान के समीप का प्रदेश (उप ५८६ टी)। १३ छन्द-विशेष, दोधक छन्द का एक भेद (पिंग)। °कूड न [°कूट] १ माल्यवन्तनामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर। २ कच्छ-विजय के विभाजक वेताढ्य पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्ववर्ती दो शिखर (ठा ९)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर (ज ४)। °हिव पु [°धिप] कच्छ देश का राजा (भवि)। °हिवइ पुं [°धिपति] कच्छ देश का राजा (भवि)।

कच्छ पुंन [कच्छ] १ नदी के पास की नीची जमीन। २ मूला आदि की बाडी (आचा २, ३, ३, १)।

कच्छअर पु [दे] काछिआ, सब्जी बेचने-वाला। (लोक प्र० ४६८, २, ३१—सर्ग)।

कच्छगावई स्त्री [कच्छकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश (ठा २, ३)।

कच्छट्टी स्त्री [दे] कछोटी, लँगोटी, कछनी (रंभा —टि)।

कच्छभ पु [कच्छप] १ कूर्म, कछुआ (पण्ह १,१, णाया १, १) २ राहु, ग्रह-विशेष (भग १२, ६)। °रिंगिय न [°रिङ्गित] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना (बृह ३, गुभा)।

कच्छभाणिया स्त्री [दे] जल मे होनेवाली वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १८)।

कच्छभी स्त्री [कच्छपी] १ कच्छप-स्त्री, कूर्मी। २ वाद्य विशेष (पण्ह २, ५)। ३ नारद की वीणा (णाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

कच्छर पु [दे] पङ्क, कीच, कर्दम (दे २, २)।

कच्छरी स्त्री [कच्छुरी] गुच्छ विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छव (अप) पु [कच्छ] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष (भवि)।

कच्छव देखो कच्छभ (पउम ३४, ३३, दे १, १६७ (गउड)।

कच्छवी देखो कच्छभी (बृह ३)।

कच्छह देखो कच्छभ (पाअ)।

कच्छा स्त्री [कक्षा] १ विभाग, अंश (पउम १६, ७०)। २ उरो बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जू, 'उप्पीलियकच्छे' (विपा १, २—पत्र २३, औप)। ३ काँख, बगल (भग ३, ६, प्रामा)। ४ श्रेणी, पंक्ति, 'चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ' (ठा ७)। ५ कमर पर बांधने का वस्त्र (गा ६८४)। ६ जनानखाना, अन्त पुर (ठा ७)। ७ संशय-कोटि। ८ स्पर्धा-स्थान। ९ घर की भीत। १० प्रकोष्ठ (हे २, १७)।

कच्छा स्त्री [कच्छा] कटि-मेखला, कमर का आभूषण (पाअ)। °वई स्त्री [°वती] देखो कच्छगावई (ज ४)। °वईकूड न [°वती-कूट] महाविदेह वर्ष मे स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर (इक)।

कच्छादब्भ पुं [दे कच्छादर्भ] रोग विशेष (सिरि ११७)।

कच्छु स्त्री [कच्छू] १ खुजली, खाज, रोग-विशेष (प्रासू २८)। २ खाज को उत्पन्न करनेवाली ओषधि, कपिकच्छु (पण्ह २, ५)। °ल, °ल्ल वि [°मत्] खाज रोग-वाला (राज, विपा, १, ७)।

कच्छुट्टिया स्त्री [दे कच्छपटिका] कछोटी, लँगोटी (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [दे] १ ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की जाय वह। २ न ईर्ष्या (दे २, १६)।

कच्छुरिअ वि [कच्छुरित] व्याप्त, खचित (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच (दे २, ११)।

कच्छुल पु [कच्छुल] गुल्म-विशेष (पएण १—पत्र ३२)।

कच्छुल्ल पु [कच्छुल्ल] स्वनाम ख्यात एक नारद मुनि (णाया १, १६)।

कच्छू देखो कच्छु (प्रासू ७२)।

कच्छोटी स्त्री [दे] कछौटी, लगोटी (रभा—टि)।

कज्ज वि [कार्य] १ जो किया जाय वह। २ करने योग्य। ३ जो किया जा सके (हे २, २४)। ४ न प्रयोजन, उद्देश्य 'न य साहेइ सकज्जं' (प्रासू २७, वप्पू)। ५ कारण, हेतु (वव २)। ६ काम, काज,

'अन्नह परिचिंतिज्जइ,
महरिसकज्जएण हियएण।
परिणमइ अन्नह च्चिय,
कज्जारंभो विहिवसेण'
(सुर ४, १६)।

°जाण वि [°ज्ञ] कार्य को जाननेवाला (उप ६४८)। °सेण पुं [°सेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनाम ख्यात एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)।

कज्जआ (शौ) स्त्री [कन्यका] कन्या, कुमारी (प्राकृ ८७)।

कज्जउड पु [दे] अनर्थ (दे २, १७)।

कज्जमाण वि [क्रियमाण] जो किया जाता हो वह, 'कज्ज च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं' (सूअ १, ८)।

कज्जल न [कज्जल] १ काजल, मसी। २ अञ्जन, सुरमा (कुमा)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] सुदर्शना नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (जीव ३)।

कज्जलइअ वि [कज्जलित] १ काजलवाला। २ श्याम, कृष्ण (पात्र)।

कज्जलंगी स्त्री [कज्जलाङ्गी] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी (अत, णाया १, १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [कज्जला] इस नाम की एक पुष्करिणी (इक)।

कज्जलाव अक [ब्रुड्] डूबना, बूडना, 'आउसंतो समणा! एय ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेइ' (आचा २, ३, १, १६)। वकृ कज्जलावेमाण (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ (से २, ३६, गउड)।

कज्जव } पु [दे] १ विष्ठा, मैला। २ तृण
कज्जवय } वगैरह का समूह, कूड़ा, कतवार (दे २, ११, उप १७६, ५६३, स २६४, दे ६, ५६, अणु)।

कज्जिय वि [कार्यिक] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी (वव ३)।

कज्जोवग पु [कार्योपग] अठासी महाग्रहो में एक ग्रह का नाम (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्झाल न [दे] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयो में लगती है (दे २, ८)।

कटरि (अप) अ [कटरे] इन अर्थो का द्योतक अव्यय—१ आश्चर्य, विस्मय, 'कटरि थणतरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चि न माइ' (हे ४, ३५०)। २ प्रशंसा, श्लाघा, 'कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमल पसन्निम' (धम्म ११ टी)।

कटार (अप) न [दे] छुरी, क्षुरिका (हे ४, ४४५)।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना। कट्टइ (भवि)। संकृ कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ (रभा, भवि, पिंग)।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न (उप १८०)।

कट्ट न [कष्ट] १ दुःख। २ वि कष्ट-कारक, कष्टदाई (पिंग)।

कट्टर पुन [दे] कढी में डाला हुआ घी का वडा, खाद्य-विशेष (पिंड ६३७)।

कट्टर न [दे] खण्ड, अंश, टुकडा, 'से जहा चित्तयकट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा' (अनु)।

कट्टराय न [दे] छुरी, शस्त्र-विशेष (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [कर्त्तित] काटा हुआ, छेदित (पिंग)।

कट्टु वि [कर्त्तृ] कर्त्ता, करनेवाला (पड्)।

कट्टु अ [कृत्वा] करके (णाया १, ५, कप्प भग)।

कट्टोरग पुं [दे] कटोरा, प्याला, पात्र-विशेष, 'तओ पासेहिं करोडगा कट्टोरगा मकुआ सिप्पाओ य ठविज्जति' (निचू १)।

कट्ठ न [कष्ट] १ दुःख, पीडा, व्यथा (कुमा)। २ पाप। ३ वि. कष्ट-दायक, पीडा-कारक (हे २, ३४, ६०)। °हर न [°गृह] कठ-घरा, काठ की बनी हुई चारदीवारी (सुर २, १८१)।

कट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकडी (कुमा, सुपा ३५४)। २ पु राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। (आवम)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] लकडी का कारखाना (आचा २, २)। °करण न [°करण] श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम (कप्प)। °कार पु [°कार] काठ-कर्म से जीविका चलानेवाला (अणु)। °कोलंब पु [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग (अनु)। °खाय पु [°खाद] कीट-विशेष, घुण (ठा ४)। °दल न [°दल] रहर की दाल (राज)। °पाउया स्त्री [°पादुका] काठ का जूता, खडाऊँ (अनु ४)। °पुत्तलिया स्त्री [°पुत्तलिका] कठपुतली (अणु)। °पेज्जा स्त्री [°पेया] १ मूँग वगैरह का क्वाथ। २ घृत से तली हुई तण्डुल की राब (उवा)। °महु न [°मधु] पुष्प-मकरन्द (कुमा)। °मूल न [°मूल] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकडा समान होता है ऐसा चना, मूँग आदि अन्न (वृह १)। °हार पु [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (जीव १)। °हारय पु [°हारक] कठहरा, लकडहारा (सुपा ३८५)।

कट्ठ वि [कृष्ट] विलिखित, चासा हुआ, 'खीर-दुमहेट्ठपथकट्ठोल्ला इधणे य मीसो य' (ओघ ३३६)।

कट्ठण न [कर्षण] आकर्षण, खीचाव (गउड)।

कट्ठहार पु [काष्ठहार] कठहरा, लकडहारा, काष्ठवाहक (कुप्र १०४)।

कट्ठा स्त्री [काष्ठा] १ दिशा (सम ८८)। २ हद, सीमा, 'कवडस्स अहो परा कट्ठा' (श्रा १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष (तदु)। ४ प्रकर्ष (सुज ६)।

कढ्ढिअ पु [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कढ्ढिअ वि [काष्ठित] काठ में सम्कृत शीत वगैरह (आचा २, २)।

कढ्ढिण देखो कढिण (नाट—मालती ५६)।

कट्ठेअ वि [काष्ठेय] देखो कट्ठिअ—काष्ठित (आचा २, २, १, ६)।

कट्ठोल देखो कट्ठ = कृष्ट (पिंड १२)।

कड वि [दे] १ क्षीण, दुर्बल। २ मृत, विनष्ट (दे २, ५१)।

कड पु [कट] १ गण्ड-स्थल, गाल (णाया १, १ पत्र ६५)। २ तृण, घास। ३ चटाई, आस्तरण-विशेष (ठा ८, ४ पत्र २७१)। ४ लकडी, यष्टि, 'तेमि च जुद्ध लयालिट्ठु-कडाभग्गदंतनिवाणहिं' (वसु)। ५ वंश, बाँस (विपा १ ६, ठा ४, ८)। ६ तृण-विशेष (ठा ४, ८)। ७ छिला हुआ काष्ठ (आचा २, २, १)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला विशेष (औप, ज २)। °तड न [°तट] १ कटक का एक भाग। २ गण्ड तल (णाया १, १)। °पूयणा स्त्री [°पूतना] व्यन्तरी-विशेष (विसे २५४६)।

कड वि [कृत] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित (भग, पण्ह २, ४, विपा १, १, कप्प, सुपा २६)। २ पुन युग विशेष, सत्ययुग, (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या (सूअ १, २)। °जुग न [°युग] सत्य-युग, उन्नति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है (ठा ४, ३)। °जुम्म पु [°युग्म] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि (ठा ४, ३)। °जुम्मकडजुम्म पु [°युग्मकृतयुग्म] राशि विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मकलिओय [°युग्मकल्योज] राशि विशेष (भग ३८, १)। °जुम्मतेओग पु [°युग्मत्र्योज] राशि विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पु [°युग्मद्वापरयुग्म] राशि-विशेष (भग ३८, १)। °जोगि वि [°योगिन्] १ कृत कृत्य (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी (ओघ ४३४ भा)। ३ तपस्वी (निचू १)। °वाइ पु [°वादिन्] जगत् को ईश्वर आदि किसी की बनाई हुई माननेवाला, जगत्कर्तृत्ववादी (सूअ १, १, १) °इ पु [°दि] देखो °जोगि (भग, णाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय = कृत।

कडअल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला (दे २, १५)।

कडइअ पु [दे] स्थपति, बढई (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकिन] वलय की तरह स्थित (से १२, ४१)।

कडइल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडंगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका, भूसा (सुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द विशेष। २ मुसल (दे २, ५६)।

कडतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण (दे २ १८)।

कडतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विनाशित (दे २, २०)।

कडव पु [कडम्ब] वाद्य विशेष (विसे ७८ टी)।

कडवा पुस्त्री [कडम्बा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कडसुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव नामक पात्र-विशेष। घडे का कण्ठ-भाग (दे २, २०)।

कडक देखो कडग (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण शब्द-विशेष, कड कड आवाज (स २५७, पि ५५८, नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड कड आवाज किया हो वह, जीर्ण (गुर ३,१६३)।

कडकडिर वि [कटकडायितृ] कड-कड आवाज करनेवाला (मण)।

कडक्किअ न [कडाकित] कडकड आवाज (सिरि ६६२)।

कडक्ख पु [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव युक्त दृष्टि, आँख का संकेत (पाअ, सुर १, ८३ सुपा ६)।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडक्खइ (भवि)। संकृ कडक्खेवि (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिसपर कटाक्ष किया गया हो वह (रंभा)। २ न कटाक्ष (भवि)।

कडग पुन [कटक] १ कडा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष (णाया १,१)। २ यवनिका, परदा, 'अन्नस्स संगागमण होही कडतरेण त सव्व। निसुयसुवरुझाएण' (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मूल भाग। ४ पर्वत का मध्य भाग। ५ पर्वत की सम भूमि। ६ पर्वत का एक भाग, 'गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु' (पच्च ८२, पण्ह १, ३, णाया १, ४, १८)। ७ शिविर, सेना रहने का स्थान (बृह २)। ८ पु देश विशेष (णाया १, १—पत्र ३३)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई (दे २, ७)।

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा करना। (कुमा)। २ नाश करना। ३ मर्दन। ४ पाप। ५ युद्ध। ६ विह्वलता, आकुलता (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत। २ घर पर छत डालना (गच्छ १)।

कडण न [कटन] चटाई आदि से घर का संस्कार, चटाई आदि से घर के पार्श्व भागों का किया जाता आच्छादन (आचा २ २, ३, १ टी, पत्र १३३)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव विशेष (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला, 'सुरगिरिकड-णिपरिट्ठिअचंदाइच्चा गरा सिरिसंगहं रति' (सुपा ६१५)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धारवाला और वक्र होता है (दे २, १६)।

कडत्तरिअ वि [दे] देखो कडतरिअ (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ न छिद्रता (षट्)।

कडप्प पु [दे कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप (दे २, १३, षड्, गउड, सुपा ६२, भवि, विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग (दे २, १३)।

कडमड पुन [दे] उद्वेग (सक्षि ४७)।

कडय न [कटक] ऊख आदि की यष्टि (आचा २, १०, २)।

कडय देखो कडग (सुर १, १६३, पाअ, गउड, महा, सुपा १६२, दे ५, ३३)। ९ लश्कर, सैन्य (ठा ६)। १० पु काशी देश का एक राजा (महा)। °वई स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या (महा)।

कडयड पु [कडकड] कड कड आवाज 'कत्थइ खरपवणाहयकडम(? य)डभज्जनदुम गहणं' (पउम ६४, ४४)।

कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ, 'न कुम्महं कडयडिय दिट्ठि न पविहउ गिरिवरु' (सुपा १७६)।

कडसक्करा स्त्री [दे] वंश शलाका, वंस की सलाई (विपा १, ६)।

कडसार न [कटसार] मुनि का एक उपकरण, आसन, 'न वि लेइ जिणा पिछी (? छि)। नवि कुडी (? डि) कम्कल च कडसारं' (विचार १२८)।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान, मसान (दे २, ६)।

कडह पु [कटभ] वृक्ष-विशेष (वृह १)।

कडा स्त्री [दे] कड़ी, सिकड़ी, जजीर की लड़ी, 'वियडकवाडकडाए खडक्खओ निसुणिओ तत्तो' (सुपा ४१४)।

कडार न [दे] नारिकेल, नरियर (दे २,१०)।

कडार पु [कडार] १ वर्ण-विशेष, तामड़ा वर्ण, भूरा रंग। २ वि कपिल वर्णवाला, भूरा रंग का मटमैला रंग का (पाअ, रयण ७७, सुपा ३३, ६२)।

कडाली स्त्री [दे कटालिका] घोड़े के मुँह पर बांधने का एक उपकरण (अनु ६)।

कडाह पु [कटाह] १ कड़ाह, लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी कड़ाही (अनु ६, नाट—मृच्छ ३)। २ वृक्ष विशेष (पउम १३,७६)। ३ पांजर की हड्डी, शरीर का एक अवयव (पएण १)।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनों पार्श्वों का अपवर्त्तन, पार्श्वों को घुमाना-फिराना (दे २, २५)।

कडि स्त्री [कटि] १ कमर, कटी (विपा १, २, अनु ६)। २ वृक्षादि का मध्य भाग (ज १)। °तड न [°तट] १ कटी-तट। २ मध्य भाग (राय)। °पट्टय न [°पट्टक] धोती, वस्त्र-विशेष (वृह ४)। °पत्त न [°पत्र] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती। २ पतली कमर (अनु ५)। °यल न [°तल] कटी-प्रदेश (भवि)। °ल्ल न [°टीय] देखो कडिल्ल (दे) का दूसरा अर्थ। °वट्टी स्त्री [°पट्टी] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा (सुपा ३३१)। °वत्थ न [°वस्त्र] धोती, कमर मे पहनने का कपड़ा (दे २, १७)। °सुत्त न [°सूत्र] कमर का आभूषण, मेखला (सम १८३, कप्पू)। °हत्थ पुं [°हस्त] कमर पर रखा हुआ हाथ (दे २, १७)।

कडि वि [कटिन्] चटाईवाला (अणु १४४)।

कडिअ वि [कटित] १ कट—चटाई से आच्छादित (कप्प)। २ कट से संस्कृत (आचा २, २, १)। ३ एक दूसरे मे मिला हुआ, 'घणकडियकडिच्छाए' (औप)।

कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुशी किया हुआ (षड्)।

कडिखभ पु [दे] १ कमर पर रखा हुआ हाथ (पाअ, दे २, १७)। २ कमर मे किया हुआ आघात (दे, २, १७)।

कडिण पुन [दे] तृण विशेष (सूअ २, २, ७)।

कडित्त देखो कालत्त (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग मे होनेवाला कुष्ठ विशेष। (वृह ३)।

कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित, निश्छिद्र (दे २, ५२, षड्)। २ न कटी-वस्त्र, कमर मे पहनने का वस्त्र, धोती वगैरह (दे २, ५२, पाअ, षड्, सुपा १५२, कप्पू, भवि, विसे २६००)। ३ वन, जगल, अटवी, ससारभवकडिल्ले, सजोगवियोगसोगतरुगहणे। कुपहपणट्ठाए तुम, सत्थाहो नाह ! उप्पन्नो।' (पउम २, ४५ वव २, दे २, ५२)। ४ वि गहन, निविड, सान्द्र, 'भिल्लिभिल्लायइकडिल्ल' (उप १०३१ टी, दे २, ५२, षड्)। ५ आशीर्वाद आसीस। ६ पु दौवारिक, प्रतीहार। ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन (दे २, ५२, षड्)। ८ कटाह, लोहे का बड़ा पात्र (ओघ ६२)। ९ उपकरण-विशेष (दस ६)।

कडी देखो कडि (सुपा २२९)।

कडु ⎫ पु [कटुक] १ कडुआ, तिक्त, रस-
कडुअ ⎭ विशेष (ठा १)। २ वि तीता, तिक्त रस वाला (से १, ६१, कुमा)। ३ अनिष्ट (पएह २, ५)। ४ दारुण, भयकर (पएह १, १)। ५ परुष, निष्ठुर (नाट—रत्ना ६६)। ६ स्त्री वनस्पति विशेष, कुटकी (हे २, १५५)।

कडुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (हे २, २७२)।

कडुआल पुं [दे] घण्टा, घण्ट (दे २, ५७)। २ छोटी मछली (दे २, ५७, पाअ)।

कडुइय वि [कटुकित] १ कडुआ किया हुआ। २ दूषित (गउड)।

कडुइया स्त्री [कटुकी] वल्ली-विशेष, कुटकी (पएण १)।

कडुच्छय ⎫ पुस्त्री [दे] देखो कडच्छु,
कडुच्छु ⎬ 'धूवकडुच्छयहत्था' (सुपा ५१,
कडुच्छुय ⎭ पाअ, निर ३, १, धम्म)।

कडुयाविय वि [दे] १ प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह (उप पृ ६५)। २ व्यथित, पीडित, 'मा य (चोरधाडी) कुमारपहारक-डुयाविया भग्गा परम्मुहा कया' (महा)। ३ हराया हुआ, पराभूत। ४ भारी विपद् मे फसा हुआ (भवि)।

कडूइद (शौ) वि [कटूकृत] कटुक किया हुआ (नाट)।

कडेवर न [कलेवर] शरीर, देह (राय, हे ४, ३६५)।

कड्ढ सक [कृष्] १ खीचना। २ चास करना। ३ रेखा करना। ४ पढ़ना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ (हे ४, १८७)। वकृ कड्ढंत, कड्ढमाण (गा ६८७ महा)। कवकृ कड्ढिज्जंत, कड्ढिज्जमाण (से ५, २६, ६ ३६, पएह १, ३)। सकृ कड्ढिऊण, कड्ढेउ, कड्ढित्तु कड्ढिय (महा), 'कड्ढेत्तु, नमोक्कार' (पचव), कड्ढिउ (पि ५७७)। कृ कड्ढेयव्व (सुपा २३६)।

कड्ढ पु [कर्ष] खीचाव, आकर्षण (उत्त १९)।

कड्ढण न [कर्षण] १ खीचाव, आकर्षण,

(सुपा २६२)। २ वि खींचनेवाला, आकर्षक (उप पृ २७८)।

कड्ढणया स्त्री [कर्षणता] आकर्षण (उप पृ २७८)

कड्ढाविय वि [कर्षित] खींचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ (भवि)।

कड्ढिअ वि [दे] बाहर निकला हुआ, गुजराती में 'काढेलुं'; 'तो दानींहि मुणाउ व्व कड्ढिओ कुड्डिङ्गए नहिं' (सिरि ६८६)।

कड्ढिन वि [कृष्ट] १ आकृष्ट, खींचा हुआ (पण्ह १, ३)। २ पठित, उच्चारित (स १८२)।

कड्ढोकड्ढ न [कर्षापकर्ष] खींचातान (उत्त १६)।

कढ सक [क्वथ्] १ क्वाथ करना। २ उबालना। ३ तपाना, गरम करना। कढइ (हे ४, २२०)। वकृ कढमाण (पि २२१)। कवकृ 'राया जपइ एय मिचह रे रे कढनतिल्लेण' (सुपा १२०), कढीअमाण (पि २२१)।

कढकढकढेंत वि [कडकडायमान] कड-कड आवाज करता (पउम २१, ५०)।

कढण न [क्वथन] क्वाथ करना, 'रागगुणेण पावइ खडणकढणाइ मजिट्ठा' (कुप्र २२३)।

कढिअ न [दे] कढी (पिंड ६२४)।

कढिअ वि [क्वथित] १ उबाला हुआ। २ खूब गरम किया हुआ, 'कढिओ खलु निवरसो अइकडुओ एव जाएइ' (श्रा २७, ओघ १४७, सुपा ८९६)।

कढिआ स्त्री [दे] कढी, भोजन-विशेष (दे २, ६७)।

कढिण } वि [कठिन] १ कठिन, कर्कश,
कढिणग } कठोर, परुष (पण्ह १, ३, पाअ)। २ न तृण-विशेष (आचा २, ३, ३)। ३ पर्ण पत्ता (पण्ह २, ५)।

कढोर वि [कठोर] १ कठिन, परुष, निष्ठुर। २ पु इस नाम का एक राजा (पउम ३२, २३)।

कण सक [क्वण] शब्द करना, आवाज करना। कणइ (हे ४, २३९)। वकृ कणत (सुर १०, २२८, वज्जा ६६)।

कण सक [कण्] आवाज करना। कणइ (हे ४, २३९)।

कण पु [कण] १ कण, लेश, 'गुणकणमवि परिकहिउ न सक्कइ' (मार्च ७६)। २ विकीर्ण दाना (कुमा)। ३ वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)। ४ पु एक म्लेच्छ देश (राज)। ५ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। ६ तण्डुल, ओदन (उत्त १२)। ७ कनिक (आचा २, १)। ८ बिंदु, बिंदुइअ रणत्रअ' (पाअ)। °इअ वि [°वत्] बिन्दुवाला (पाअ)। [°कुंडग] पु [कुण्डक] ओदन की बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु, 'कणकुंडग चइत्ताणं विट्ठ भुंजइ सूयरो' (उत्त १२)। °पूपलिया स्त्री [°पूपलिका] भोजन-विशेष, कणिक (आटा) की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु (आचा २,१)। °भक्ख पु [°भक्ष] वैशेपिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि (राज)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] भिक्षा, भीख (सुपा २३४)। °वियाणग पु [°वितानक] देखो कणग-वियाणग (सुज्ज २०, इक)। °संताणय पु [°संतानक] देखो कणगसंताणय (इक)। °ाद पु [°ाद] वैशेपिक मत का प्रवर्तक ऋषि (विसे २१९४)। °ायण्ण वि [°ाकीर्ण] बिन्दुवाला) (पाअ)।

कण पु [क्वण] शब्द, आवाज (उप पृ १०३)।

कणइकेउ पु [कनकिकेतु] इस नाम का एक राजा (दस)।

कणइपुर न [कनकिपुर] नगर-विशेष, जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी (ती)।

कणइर पु [कर्णिकार] कणेर, वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कणइल्ल पुं [दे] शुक, तोता, सुग्गा, सुआ (दे २,२१, पड्, पाअ)।

कणई स्त्री [दे] लता, वल्ली (दे २, २५ पड्, स ४१६, पाअ)।

कणगर न [कनङ्गर] पाषाण का एक प्रकार का हथियार (विपा १, ६)।

कणकण पु [कणकण] कण-कण आवाज (आवम)।

कणकणकण अक [दे] कण-कण आवाज करना। कणकणकणंति (पउम २६, ५३)। वकृ कणकणकणंत (पउम ५३, ८६)।

कणकणग पु [कनकनक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३)।

कणक्कणिअ वि [क्वणक्वणित] कण-कण आवाजवाला (कप्पू)।

कणखल न [दे] उद्यान-विशेष (मट्टि ६ टी)।

कणग वि [कानक] सुवर्ण रस पाया हुआ (कपडा) (आचा २, ५, १, ५)। °पट्ट वि [°पट्ट] सोने का पट्टावाला (आचा २, ५, १, ५)।

कणग देखो कण (कप्प)।

कणग [दे] देखो कणय = (दे) (पण्ह १, २)।

कणग पु [कनक] १ ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ रेखा-सहित ज्योति-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है (ओघ ३१० भा, जी ६)। ३ बिन्दु। ४ शलाका, सलाई (राज)। ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव (सुज्ज १९)। ६ बिल्व वृक्ष, बेल का पेड (उत्तनि ३)। ७ न सुवर्ण, सोना (स ६४, जी ३)। °कंत वि [°कान्त] १ कनक की तरह चमकता (आचा २, ५, १)। २ पु देव विशेष (दीव)। °कूड न [°कूट] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ज ४)। २ पु स्वर्ण मय शिखरवाला पर्वत (जीव ३)। °केउ पुं [°केतु] इस नाम का एक राजा (णाया १, १४)। °गिरि पु [°गिरि] १ मेरु पर्वत। २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत (औप)। °ज्झय पु [°ध्वज] इस नाम का एक राजा (पचा ५)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (विपा २, ६)। °प्पभ पु [°प्रभ] देव-विशेष (सुज्ज १९)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ देवी विशेष। २ 'ज्ञात धर्मसूत्र' का एक अध्ययन (णाया २, १)। °फुल्लिअ न [°पुष्पित] जिसमें सोने के फूल लगाए गए हों ऐसा वस्त्र (निचू ७)। °माला स्त्री [°माला] १ एक विद्याधर की पुत्री (उत्त ९)। २ एक स्वनाम ख्यात साध्वी (सुर १५, ६७)। °रह पु [°रथ] इस नाम का एक राजा (ठा ७, १०)। °लया स्त्री

[°लता] चमरेन्द्र के सोम नामक लोकपाल-देव की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °वियाणग पु [°वितानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३, पत्र ७७)। °संताणग पुं [°संतानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। °वलि स्त्री [°वलि] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण की मणियों से बना आभूषण (अन २७)। २ तप-विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या (औप)। ३ पु द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वलिपविभत्ति स्त्री [°वलिप्रविभक्ति] नाट्य का एक प्रकार (राय)। °वलिभद्द पु [°वलिभद्र] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वलिमहाभद्द पु [°वलिमहाभद्र] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वलिमहावर पु [°वलिमहावर] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवर पु [°वलिवर] १ इस नाम का एक द्वीप। २ इस नाम का एक समुद्र। कनकावलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष (जीव ३)। °वलिवरभद्द पु [°वलिवरभद्र] कनकावलिवर द्वीप का एक अधिपति देव (जीव ३)। °वलिवरमहाभद्द पु [°वलिवरमहाभद्र] कनकावलिवर नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवरोभास पु [°वलिवरावभास] १ इस नाम का एक द्वीप। २ इस नाम का एक समुद्र (जीव ३)। °वलिवरोभासभद्द पु [°वलिवरावभासभद्र] कनकावलिवराव-भास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवरोभासमहाभद्द पु [°वलिवरा-वभासमहाभद्र] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलि-वरोभासमहावर पु [°वलिवरावभास-महावर] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवरोभास-वर पु [°वलिवरावभासवर] कनकावलि-वरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) °वलि स्त्री [°वली] देखो °वलि का पहला और दूसरा अर्थ (पव २७१)। देखो कणय = कनक।

कणगमत्तरि स्त्री [कनकसप्तति] एक प्राचीन जैनेतर शास्त्र (अणु ३६)।

कणगा स्त्री [कनका] १ भीम-नामक राक्ष-सेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, २—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी (ठा ४, २)। ३ 'णाया-धम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २, ५)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

कणगुत्तम पु [कनकोत्तम] इस नाम का एक देव (दीव)।

कणय पु [दे] १ फूलों को इकट्ठा करना, अवचय। २ बाण, शर 'अभिसेडयकणयतो-मर—' (पउम ८, ८८, पण्ह १, १, दे २, ५६ पाम)।

कणय पुन [कनक] एक देव विमान (देवेन्द्र १४४)।

कणय देखो कणग = कनक (ओघ ३१० भा, प्रासू १५६ हे १, २२८, उव, पाअ, महा, कुमा)। ८ पु राजा जनक के एक भाई का नाम (पउम २८, १३२)। ९ रावण का इस नाम का सुभट (पउम ५६, ३२)। १० धतूरा, वृक्ष-विशेष (से १, ४८)। ११ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। १२ न छन्द-विशेष (पिंग)। °पव्वय पु [°पर्वत] देखो कणग-गिरि (सुपा ४३)। °मय वि [°मय] सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०)। °भ न [°भ] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °ली स्त्री [°ली] घर का एक भाग (णाया १,१—पत्र १२)। °वली स्त्री [°वली] देखो कणगावली। ३ एक राज-पत्नी (पउम ७, ४५)।

कणयंदी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल (दे २, ५८)।

कणवियाणय पु [कणवितानक] देखो कणगवियाणग (सुज्ज २०)।

कणवी स्त्री [दे] कन्या (वज्जा १०८)।

कणवीर पु [करवीर] १ वृक्ष विशेष, कनेर (हे १, २५३, सुपा १५१)। २ न कनेर का फूल (पण्ह १,३)।

कणि पुस्त्री [दे] स्फुरण, स्फूर्ति, 'कणी फुरणं' (पाअ)।

कणिआर देखो कण्णिआर (कुमा, प्राप्र हे २, ६५)।

कणिआरिअ वि [दे] १ कानी आँख से जो देखा गया हो वह। २ न कानी नजर से देखना (दे २, २४)।

कणिक्का स्त्री [कणिका] कनेक, रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा (दे १, ३७)।

कणिक्क वि [कणिक्क] मत्स्य-विशेष (जीव १)।

कणिक्का देखो कणिका (श्रा १४)।

कणिट्ठ वि [कनिष्ठ] १ छोटा लघु (पउम १५, १२ हे २, १७२)। २ निकृष्ट, जघन्य (रंभा)।

कणिय न [कणित] १ आर्त्तस्वर। २ आवाज, ध्वनि (आव ४)।

कणिय° } देखो कणिका (कप्प)। २
कणिया } कणिका, चावल का टुकड़ा (आचा २, १, ८)। °कुंडय देखो कण-कुंडग (स ४८७)।

कणिया स्त्री [कणिता] वीणा-विशेष (जीव ३)।

कणिर वि [क्वणितृ] आवाज करनेवाला (उप पृ १०३, पाअ)।

कणिल्ल न [कनिल्य] नक्षत्र-विशेष का गोत्र (इक)।

कणिल्लिका स्त्री [कनिष्ठिका] छोटी अंगुली (अंगविज्जा, अध्या० ९ श्लो० १७५२)।

कणिस न [कणिश] सस्य-शीर्षक, धान्य का अग्र भाग (दे २,६)।

कणिस न [दे] किशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २, ६, भवि)।

कणीअ } वि [कनीयस्] छोटा, लघु,
कणीअस } 'तस्य भाया कणीससो पहू नाम' (वसु, वेणी १७९, कप्प, अन १४)।

कणीणिगा स्त्री [कनीनिका] १ आँख की तारा। २ छोटी उंगली (राज)।

कणीर देखो कणेर (चंड)।

कणुय न [कणुक] त्वग् वगैरह का अवयव (आचा २, १, ८)।

कणूआ देखो कणिया = कणिका (कस)।

कणेट्ठिआ स्त्री [दे] गुञ्जा, घुंघची (दे २, २१)।

कणेर देखो कणिआर (हे १, १६८; पि २५८)।

कणेरु } स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी
कणेरुया } (हे २, ११६; कुमा; गाया १, १—पत्र ६४)।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेज पानी (दे २, १६)।

कण्ण पु [कन्य] राशि-विशेष, कन्या राशि, 'तुला य कण्णम्मि वट्टए उच्चा' (पउम १८, ८१)।

कण्ण पु [कण्व] इस नामका एक परिव्राजक, ऋषि विशेष (औप; अभि २६१)।

कण्ण पु [कर्ण] १ कोटि भाग, अग्रांश (सुज्ज १, ८)। २ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

कण्ण पुन [कर्ण] १ कान, श्रवण, श्रोत्र, 'कण्णाइं' (पि ३५८; प्रासू ७)। २ पु अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा, युधिष्ठिर का बड़ा भाई (गाया १, १६)। ३ कोना, वस्तु के कोने का एक अंश (अग० सूत्र ५१, ६६)। °उर, °ऊर न [°पूर] कान का आभूषण (प्राप्र; हेका ८५)। °गइ स्त्री [°गति] मन्दमन्दो एक प्रकार की गति (जो १०)। °जयसिंहदेव पु [°जयसिंहदेव] गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा (ती)। °देव पु [°देव] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का मालव-देशीय एक राजा (ती)। °धार पु [°धार] नाविक, निर्यामक (णाया १, ८)। °पाउरण पु [°प्रावरण] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उस अन्तर्द्वीप का निवासी (पएण १)। °पावरण देखो °पाउरण (इक)। °पीढ न [°पीठ] कान का एक प्रकार का आभूषण (ठा ६)। °पूर देखो °ऊर (गाया १, ८)। °रवा स्त्री [°रवा] नदी-विशेष (पउम ८०, १३)। °वालिया स्त्री [°वालिका] कान के ऊपर भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण (आप)। °वेहणग न [°वेधनक] उत्सव-विशेष, कर्णवेधोत्सव (आव)। °सक्कुली स्त्री [°शष्कुली] १ कान का छिद्र। २ कान की पपड़ी (गाया १, ८)। °सोहण न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण (निचू ४)। °हार पु [°धार] देखो °धार (अच्चु २८; स ३२७)। देखो कन्न।

कण्णआर देखो कणिआर (प्राकृ ३०)।

कण्णउज्ज पु [कान्यकुब्ज] १ देश-विशेष, दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का देश। २ न उस देश का प्रधान नगर, जिसको आजकल 'कनौज' कहते हैं (ती; कप्पू)।

कण्णवाल न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णगा देखो कन्नगा (आव ४)।

कण्णच्छुरी स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे २, १६)।

कण्णट्टय (अप) देखो कण्ण (हे ४, ४३२; ४३३)।

कण्णड (अप) वि [कर्णाट] १ देश विशेष, कर्णाटक। २ वि उस देश का निवासी (पिंग)।

कण्णलोयण पुन [कर्णलोचन] देखो कण्णि-लायण (सुज्ज १०, १६)।

कण्णल्ल पुन [कर्णल] ऊपर देखो (सुज्ज १०, १६ टी)।

कण्णस वि [कनस] अधम, जघन्य (उत ५)।

कण्णस्सरिय वि [दे] १ कानी नजर से देखा हुआ। २ न कानी नजर से देखना (दे २, २४)।

कण्णा स्त्री [कन्या] १ ज्योतिष शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि। २ कन्या, लड़की, कुमारी (कप्पू; पि २८२)। °चोलय न [°चोलक] धान्य-विशेष, जवनाल (गदि)। °णय न [°नय] चोल देश का एक प्रधान नगर, चोलदेशाव-यव कण्णाणयनयर' (ती)। °लिय न [°लीक] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ (पण्ह १, ३)।

कण्णाआस न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णाइंधण न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णाड पु [कर्णाट] १ देश-विशेष, जो आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है। २ वि उस देश में उत्पन्न, वहां का निवासी (कप्पू)।

कण्णास पु [दे] पर्यन्त, अन्त-भाग (दे २, १८)।

कण्णि पु [कर्णि] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

कण्णिआ स्त्री [कर्णिका] १ पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष (दे ६, १८०)। २ कोण, अस्र (अणु; ठा ८)। ३ शालि वगैरह के बीज का मुख-मूल तुष मुख (ठा ८)।

कण्णिआर पु [कर्णिकार] १ वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (कुमा; हे २, ६५; प्राप्र)। २ गोशालक का एक भक्त (भग १५, १०)। ३ न कनेर का फूल (गाया १, ६)।

कण्णिलायण न [कर्णिलायन] नक्षत्र विशेष का एक गोत्र (इक)।

कण्णीरह देखो कन्नीरह।

कण्णुप्पल न [कर्णोत्पल] कान का आभूषण-विशेष (कप्पू)।

कण्णेर देखो कणिआर (हे १, १६८)।

कण्णोच्छडिआ स्त्री [दे] दूसरे की बात उपचुप सुननेवाली स्त्री (दे २, २२)।

कण्णोड्डू } स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का
कण्णोट्ठिआ } वस्त्र विशेष, नीरङ्गी (दे २, २० टी)।

कण्णोढत्ती [दे] देखो कण्णोच्छडिआ (दे २, २२)।

कण्णोप्पल देखो कण्णुप्पल (नाट)।

कण्णोल्ली स्त्री [दे] १ चञ्चु, चोंच, पक्षी का ठोर, ठोंठ। २ अवतंस, शेखर, भूषण विशेष (दे २, ५७)।

कण्णोवगणिआ स्त्री [कर्णोपकर्णिका] कर्णाकर्णी, कानाकानी (दे १, ६१)।

कण्णोस्सरिअ [दे] देखो कण्णस्सरिय (दे २, २४)।

कण्ह पु [कृष्ण] वल्ल विशेष (उत्त ३६, ६६)।

कण्ह पु [कृष्ण] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न नववां वासुदेव (गाया १, १६)। २ पाचवां वासुदेव और बलदेव के पूर्व जन्म के गुरु का नाम (सम १५३)। ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित

करनेवाला एक उपासक (सुपा ५९२)। ४ विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्तक शिवभूति मुनि के गुरु (विसे २५५३)। ५ काला वर्ण (आचा)। ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तापस (ओप)। ७ वि श्याम वर्ण, काला रंगवाला (कुमा)। °ओराल पु [°ओराल] वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३४)। °कंद पु [°कन्द] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष (पएण १—पत्र ३६)। °कणिगार पु [°कर्णिकार] काली कनेर का गाछ (जीव ३)। °कुमार पु [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, ४)। °गोमी स्त्री [°गोमिन्] काला शृगाल 'कण्हगोमी जहा चित्ता, कंटगं वा विचित्तयं' (वव ६)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है (राज)। °पक्खिअ वि [°पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करनेवाला (सूअ २, २)। २ बहुत काल तक संसार में भ्रमण करनेवाला (जीव) (ठा १, १)। °बंधुजीव पु [°बन्धुजीव] वृक्ष विशेष, श्याम पुष्पवाला दुपहरिया (जीव ३)। °भूम, °भोम पु [°भूम] काली जमीन (आवम, विसे १४५८)। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] १ काली रेखा (भग ६, ५, ठा ८)। २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८, जीव ४)। ३ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद (णाया २, १)। °रिसि पु [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था (ती)। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य] कृष्ण-लेश्यावाला (भग)। °लेसा, °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति निकृष्ट मन:—परिणाम, जघन्य-वृत्ति (भग, सम ११, ठा १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान (राज, णाया २, १)। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता (पएण १)। °सप्प पु [°सर्प] १ काला साँप (जीव ३)। २ राहु (सुज्ज २०)। देखो कन्ह।

कण्हई अ [कुतश्चिन्] किसी से (सूअ १, २, ३, ६)। देखो कण्हुइ।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक अन्तकृत् स्त्री (अंत २५)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री (राज)। ४ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, ४)। ५ महा देश की एक नदी (आवम)।

कण्हुइ अ [क्वचिन्] क्वचित्, कहीं भी (सूअ १, १)। २ कहाँ से ? (उत्त २)।

कण्हुइं देखो कण्हुइ (सूअ २, २, २१)।

कतवार पु [दे] कतवार, कूड़ा (दे २,११)।

कति देखो कइ = कति (पि ४३३, भग)।

कतु देखो कउ = क्रतु (कप्प)।

कत्त सक [कृत्] काटना, छेदना, कतरना। कत्ताहि (पएह १, १)। वकृ कत्तंत (ओघ ४६८)।

कत्त सक [कृत्] कातना, चरखे से सूत बनाना। वकृ कत्तंत (पिंड ५७४)।

कत्त वि [क्लृप्त] निर्मित (सिक्ख ४०)।

कत्त न [दे] कलत्र, स्त्री (षड्)।

कत्तण न [कर्तन] कातना (पिंड ६०२)।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, काटना (सम १२५, उप पृ २)। २ वि काटनेवाला, कतरनेवाला (सुर १, ७२)।

कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई (सुर १, ७२)।

कत्तर पु [दे] कतवार, कूडा, 'इत्तो य कविलमूमयकत्तरबहुफारिनिड्डुपभिईहिं, केसव-किमी विणट्ठा' (सुपा २०७)।

कत्तरिअ वि [कृत्त, कर्त्तित] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची (कप्प)।

कत्तवीरिअ पु [कार्त्तवीर्य] नृप विशेष (सम १५३, प्रति ३९)।

कत्तव्व वि [कर्त्तव्य] १ करने योग्य (स १७०)। २ न कार्य, काज, काम (श्रा ६)।

कत्ता स्त्री [दे] अन्धिका-द्यूत की कपर्दिका, कोडी (दे २, १)।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमडा (स ४३६, गउड, णाया १, ८)।

कत्ति° वि [कर्तृ] करनेवाला, 'किरिया ण कत्तिरहिया' (धर्मसं १४५)।

कत्तिकेअ पु [कार्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र, षडानन (दे ३, ५)।

कत्तिगी स्त्री [कार्त्तिकी] कार्त्तिक मास की पूर्णिमा (पउम ८९, ३०, इक)।

कत्तिम वि [कृत्रिम] कृत्रिम, बनावटी (सुपा ८३, ज २)।

कत्तिय पु [कार्त्तिक] १ कार्त्तिक मास (सम ६५)। २ इस नाम का एक श्रेष्ठी (निर १, ३)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर के पूर्व भव का नाम (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नक्षत्र-विशेष (सम ११, इक)।

कत्तिया स्त्री [कर्त्तिका] कतरनी, कैंची (सुपा २९०)।

कत्तिया स्त्री [कार्त्तिकी] १ कार्त्तिक मास की पूर्णिमा (सम ६६)। २ कार्त्तिक मास की अमावास्या (चंद १०)।

कत्तिवविय वि [दे] कृत्रिम, दिखाऊ, 'कत्तिववियाहि उवहिप्पहाणाहिं' (सूअनि १, ४)।

कत्तु वि [कर्तृ] करनेवाला, 'कत्ता भुत्ता य पुन्नपावाण' (श्रा ६)।

कत्तो अ [कुतः] कहाँ से, किससे ? (पउम ४७, ८, कुमा)। °च्चय वि [°त्य] कहाँ से उत्पन्न ? (विसे १०१६)।

कत्थ सक [कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसना। कत्थइ (हे १, १८७)।

कत्थ अ [कुतः] कहाँ से ? (षड्)।

कत्थ अ [क, कुत्र] कहाँ ? (षड्, कुमा, प्रासू १२३)। °इ अ [°चित्] कहीं, किसी जगह (आचा, कप्प, हे २, १७४)।

कत्थ वि [कथ्य] १ कहने योग्य, कथनीय। २ न काव्य का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ वनस्पति-विशेष (राज)।

कत्थत देखो कह = कथय्।

कत्थभाणी स्त्री [कस्तभानी] पानी में होनेवाली वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३४)।

कत्थूरिया, कत्थूरी स्त्री [कस्तूरी] मृग-मद, हरिण की नाभि में होनेवाली सुगन्धित वस्तु (सुपा १४७, स २३९, कप्पू)।

कथ वि [दे] १ उपरत, मृत। २ क्षीण, दुर्बल (षड्)।

कद (मा) देखो कड = कृत (प्राकृ १०३)
कदग देखो कयग (हम्मीर ३८)।
कदण देखो कडण = कदन (कुमा)।
कदली देखो कयली (पराण १—पत्र ३२)।
कदु देखो कउ = क्रतु (प्राकृ १२)।
कदुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (प्राकृ ८८)।
कदुइया स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कद्दू, लौकी (पराण १—पत्र ३३)।
कदुराण (मा) वि [कदुष्ण] थोडा गरम (प्राकृ १०२)।
कद्दम पुन [कर्दम] कीचड, काँदो (कुप्र ६६)। °ल वि [°ल] कीचडवाला (सुअनि १६१)।
कद्दम } पु [कर्दम] १ कादो, कीच (पराह
कद्दमग } १ ८)। २ द्रव्य विशेष, एक नाग-राज (भग ६, ३)।
कद्दमिअ वि [कर्दमित] पङ्क-युक्त, कीचड वाला (से ७, २०, गउड)।
कद्दमिअ पु [दे] महिष, भैंसा (दे २, १५)।
कन्न देखो कण्ण = कर्ण (सुर १ २, सुर २, १७१, सुपा ५२८, धम्म १२ टी ठा ४, २, सुपा ६५, पाअ)। °यस पु [°वतंस] कान का आभूषण (पाअ)।
कन्न देखो कण्ण (कुमा)। °देव देखो कण्ण-देव (कुप्र ८)। °वट्टि °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] किनारा, अग्र भाग (कुप्र ३३१, ३३४, विचार ३२८, पव १२५)।
कन्नउज्ज देखो कण्णउज्ज (कुमा)।
कन्नगा स्त्री [कन्यका] कन्या, लड़की, कुमारी (सुर ३, १२२ महा)।
कन्नस वि [कनीयस्] कनिष्ठ, जघन्य 'कन्नसमज्झिमजेट्ठा' (पव १५७)।
कन्ना देखो कण्णा (सुर ३, १५४, पाअ)।
कन्नाड देखो कण्णाड (भवि)।
कन्नारिअ वि [दे] विभूषित अलंकृत, 'आएहे कन्नारिउ पद्दु' (भवि)।
कन्नीरह पु [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिबिका, धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन (णाया १ ३)।
कन्नुड्ड (अप) पु [कर्ण] कान, श्रवणेन्द्रिय (कुमा)।
कन्नरय देखो कण्णिआर (कुमा)।
कन्नोली [दे] देखो कण्णोड्डी (पाअ)।
कन्ह देखो कण्ह (सुपा ५६६, कप्प)। °सह न [°सह] जैन साधुओं के एक कुल का नाम (कप्प)।
कपय देखो कमन्ध (प्राकृ १०)।
कपिजल पु [कपिञ्जल] पक्षि-विशेष—१ चातक। २ गोरा पक्षी (पराह १, १)।
कपूर देखो कप्पूर (श्रा २७)।
कप्प अक [क्लृप्] १ समर्थ होना। २ कल्पना, काम में आना। ३ सक. काटना, छेदना। कप्पइ कप्पए (कप्प, महा, पिंग)। कर्म कप्पिज्जइ (हे ४ ३५७)। कृ कप्प-णिज्ज (आचा ६)। प्रयो कप्पावेज्ज (निचू १८)। वकृ कप्पावन (निचू १८)।
कप्प सक [कल्पय्] १ करना, बनाना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ कप्पेमाण (विपा १, १)। संकृ कप्पेऊण (पचव १)।
कप्प वि [कल्प्य] ग्रहण-योग्य (पचा १२)।
कप्प पु [कल्प] १ प्रक्षालन (पिंड २६६, २७१, ३०५, गच्छ २ ३२)। २ आचार, व्यवहार (वव १ पत्र ६६)। ३ दशाश्रु-तस्कन्ध सूत्र। ४ कल्प-सूत्र। ५ व्यवहार सूत्र (वव १)। ६ वि उचित (पचा १८, ३०)। °काल पु [°काल] प्रभूत काल (सूत्र १, १, ३, १६)। °धर वि [°धर] कल्प तथा व्यवहार सूत्र का जानकार (वव १)।
कप्प पु [कल्प] १ काल-विशेष, देवों के दो हजार युग परिमित समय, 'कम्माण कप्पिआण काहि कप्पसएसु णिव्वेसं' (अच्चु १८, कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि अनुष्ठान (ठा ६)। ३ शास्त्र विशेष (विसे १०७५, सुपा ३२८) ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण (ओघ ४०)। ५ देवों का स्थान, बारह देवलोक (भग ५, ८, ठा २, १०)। ६ बारह देवलोक निवासी देव, वैमानिक देव (सम २)। ७ वृक्ष-विशेष, मनोवाञ्छित फल को देनेवाला वृक्ष, कल्प-वृक्ष (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष, 'असिलेट्ठयकप्पतामरविहत्था' (पउम ६, ७३)। ९ अधिवास, स्थान (बृह १)। १० राजा नन्द का एक मन्त्री (राज)। ११ वि समर्थ, शक्तिमान् (णाया १, १३)। १२ सदृश तुल्य 'केवलकप्प' (आवम, पराह २, २)। °ट्ठ पु [°स्थ] बालक, बच्चा (वव ७)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] साधुओं का शास्त्रोक्त अनुष्ठान (बृह ६)। °ट्ठिया स्त्री [°स्थिका] १ लड़की, बालिका (वव ४)। २ तरुण स्त्री (बृह १)। °ट्ठी स्त्री [°स्था] १ बालिका, लड़की (वव ६)। २ कुलाङ्गना, कुल वधू (वव ३)। °तरु पु [°तरु] कल्प-वृक्ष (प्रासू १६८, हे २, ७६)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री (ठा ३)। °दुम, °द्दुम पु [°द्रुम] कल्प-वृक्ष (धरण ६, महा) °पायव पु [°पादप] कल्प-वृक्ष (पटि, सुपा ३६)। °पाहुड न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ विशेष (ती)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष (पराह १, ४)। °वडिंसय न [°ावतंसक] १ विमान-विशेष। २ विमान-वासी देव-विशेष (निर)। °वडिंसया स्त्री [°ावतंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पा-वतंसक देव-विमानों का वर्णन है (राय, निर १)। °विडवि पु [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष (सुपा १२६)। °साल पु [°शाल] कल्प वृक्ष (उप १८२ टी)। °साहि पु [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष (सुपा ३६१)। °सुत्त न [°सूत्र] श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ (कप्प, कस)। °सुय न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष। २ ग्रन्थ-विशेष (णंदि)। °ाईअ पु [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (पराह १, ५, पराण १)। °ाग पु [°ाक] विधि को जाननेवाला (कस, औप)। °ाय पु [°ाय] कर, बुङ्गी, राज देय भाग (विपा १, ३)।
कप्पंत पु [कल्पान्त] प्रलय-काल, संहार-समय (कप्पू)।
कप्पड पु [कर्पट] १ कपडा, वस्त्र (पउम २५, १८ सुपा ३४४, स १८२)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपडा (पराह १, ३)।
कप्पडिअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, भीखमगा (णाया १, ८, सुपा १३८, बृह १)।
कप्पडिअ वि [कार्पटिक] कपटी, मायावी (णाया १, ८—पत्र १५०)।
कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना (सुपा १३८)।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण। २ प्ररूपण, निरूपण (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प (विसे १६३२)।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची (पण्ह १, १; विपा १, ४; स ३७१)।

कप्पर पुं [कर्पर] खप्पर, कपाल सिर की खोपड़ी (बृह ४, नाट)। देखो कुप्पर = कर्पर।

कप्परिअ त्रि [दे] दारित, चीरा हुआ (दे २, २०; वज्जा ३८ भवि)।

कप्पास पु [कार्पास] १ कपास, रूई। २ ऊन (निचू ३)।

कप्पासत्थि पु [कार्पासास्थि] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु विशेष (जीव १)।

कप्पासिअ त्रि [कार्पासिक] १ कपास बेचनेवाला (अणु १४६)। २ न जैनेतर शास्त्र-विशेष (अणु ३६, णंदि)।

कप्पासिय त्रि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ सूती वगैरह (अणु)।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रुई का गाछ (राज)।

कप्पिआकप्पिअ न [कल्पाकल्प] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

कप्पिअ त्रि [कल्पित] १ रचित, निर्मित (ओप)। २ स्थापित, समीप में रखा हुआ, 'ते अभए कुमार तं अन्न मम हरिह अप्पणियं करेउ' (निर १,१)। ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित (दसनि १)। ४ व्यवस्थित (आचा, सूअ १ २)। ५ छिन्न, काटा हुआ (विपा १, ४)।

कप्पिअ वि [कल्पिक] १ अनुमत, अनिषिद्ध (उवर १३०)। २ योग्य, उचित (गच्छ १, वव ८)। ३ पु गीतार्थ, ज्ञानी साधु, 'किं वा अकप्पिएण' (वव १)।

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ विशेष, एक उपाङ्ग-ग्रन्थ (ज १, निर)।

कप्पूर पु [कर्पूर] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष (पण्ह २, ५, सुर २, ६, सुपा २६३)।

कप्पोवग पु [कल्पोपग] १ कल्प-युक्त। २ देव विशेष, बारह देव लोक-गामी देव (पएण २१)।

कप्पोववण्ण पु [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो (सुपा ८८)।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देव-लोक विशेष में उत्पत्ति (भग)।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल (हे २, ७७)।

कप्फाड देखो कवाड = कपाट (गउड)।

कप्पाड [दे] देखो कफाड (पाअ)।

कफ पु [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु विशेष (राज)।

कफाड पु [दे] गुफा, गुहा (दे २, ७)।

कबंध (शौ) देखो कमंध (प्राकृ ८५)।

कब्बट्टी स्त्री [दे] छोटी लड़की (पिंड २८५)।

कब्बड, कब्बडग पुन [कर्बट] १ खराब नगर, कुत्सित शहर (भग, पण्ह १, २)। २ पु ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ वि कुनगर का निवासी (उत्त ३०)।

कब्बर देखो कब्बुर (प्राकृ ७)।

कब्बाडभयय पु [दे] ठीका पर जमीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर ठा ४ १—पत्र २०३)।

कब्बुर, कब्बुरय वि [कर्बुर] १ कबरा, चितकबरा, चितला (गउड, अच्चु ६)। २ पु ग्रह-विशेष ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३, राज)।

कब्बुरिअ वि [कर्बुरित] अनेक वर्णवाला, चितकबरा किया हुआ, 'देहकंतिकब्बुरिय-जम्मगिहं' (सुपा ७४), 'मणिमयतोरणतोर-णितन्एपहाकिरणकब्बुरिअ' (कुम्मा ६, पउम ८२, ११)।

कभ (अप) देखो कफ (पड्)।

कभल्ल न [दे] कपाल खप्पर (अनु ५, उवा)।

कम सक [क्रम्] १ चलना पाँव उठाना। २ उल्लंघन करना। ३ शक फैलना, पसरना। ४ होना, 'मणसोवि विसयनियमो न कमइ जओ स सव्वत्थ' (विसे २४६), 'न एत्थ उवायंतर कमइ' (स २०६)। वकृ. कमंत (से २, ६)। कृ कमणिज्ज (ओप)।

कम सक [कम्] चाहना, वाञ्छना। कवकृ कम्ममाण (दे २, ८५)। कृ कमणीय (सुपा ३८, २६२) कम्म (गाया १ १४ टी—पत्र १८८)।

कम अक [क्रम्] १ संगत होना, युक्त होना, घटना। २ अधिक रहना। कमइ (पिंड २३१, पत्र ६१)।

कम पु [क्रम्] १ पाद, पग, पाँव (सुर १, ८)। २ परम्परा, 'नियकुलकमागयाओ पिउणा विज्जाओ मज्झ दिन्नाओ' (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा (ठा ४)। ५ न्याय, फैसला, अवि-आरिअ कमं ण करिस्सदि' (स्वप्न २१)। ६ नियम (बृह १)।

कम पु [क्लम] श्रम थकावट, क्लान्ति (हे २, १०६, कुमा)।

कमंडलु पुंन [कमण्डलु] सन्यासियों का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र (निर ३, १, पण्ह १, ४ उप ६४८ टी)।

कमंध पुन [कबन्ध] रुंड मस्तकहीन शरीर (हे १, २३६, प्राप्र, कुमा)।

कमठ पु [दे] १ दही की कलशी। २ पिठर, स्थाली। ३ बलदेव। ४ मुख, मुँह (दे २, ५५)।

कमढ, कमढग, कमढय पु [कमठ, °क] १ तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और जो मरकर दैत्य हुआ था (णमि २२)। २ कूर्म, कच्छप (पाअ)। ३ वंश बाँस। ४ शल्लकी वृक्ष (हे १, १६६)। ५ न मैल, मल (निचू ३)। ६ साध्वियों का एक पात्र (निचू १, ओघ ३६ भा)। ७ साध्वियों को पहनने का एक वस्त्र (ओघ ६७५, बृह ३)।

कमण न [क्रमण] १ गति, चाल। २ प्रवृत्ति (आचू ४)।

कमणिया स्त्री [क्रमणिका] उपानत्, जूता (बृह ३)।

कमणिल्ल वि [क्रमणीवत्] जूतावाला, जूता पहना हुआ (बृह ३)।

कमणी स्त्री [क्रमण] जूता, उपानत् (बृह ३)।

कमणी स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढ़ी (दे २, ८)।

कमणीय वि [कमनीय] सुन्दर, मनोहर (सुपा ३४, २८२)।

कमल पु [दे] १ पिठर, स्थाली। २ पटह, ढोल (दे २, ५४)। ३ मुख, मुँह (दे २, ५४, पड्)। ४ हरिण, मृग, 'तत्थ य एगो कमलो सगब्भहरिणीए संगओ वसइ' (सुर

१५, २०२, दे २, ५४, अणु, कप्प औप)। ५ कलह, झगडा (षड्)।

कमल पुन [कमल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२)। °णअण पु [नयन] विष्णु, नारायण (समु १५२)।

कमल न [कमल] १ कमल, पद्म, अरविन्द, (कप्प, कुमा प्रासू ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन। ३ सख्या विशेष, 'कमलांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ पु कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता (णाया २)। ६ श्रेष्ठि-विशेष (सुपा २७५)। ७ पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमे गुरु हो वह गण (पिंग)। ८ एकजात का चावल, कलम (प्राप्र)। °क्ख पु [°क्ष] इस नाम का एक यक्ष (सण)। °जय न [°जय] विद्याधरो का एक नगर (इक)। °जोणि पु [°योनि] ब्रह्मा, विधाता (पाअ)। °पुर न [°पुर] विद्याधरो का एक नगर (इक)। °प्पभा स्त्री [प्रभा] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)। °बन्धु पु [°बन्धु] १ सूर्य, रवि (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा (पउम २२, ९८)। °माला स्त्री [°माला] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी (पउम ५, ५२)। °रय पु [°रजस्] कमल का पराग (पाअ)। °वडिसअ न [°ावतसक] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम (णाया २)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] इस नाम की एक रानी (उप ७२८ टी)। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री (महा)। °ाअर, °ागर पु [°ाकर] १ कमलो का समूह। २ सरोवर, ह्रद वगैरह जलाशय (न १, २६, कप्प)। °ापीड, °ामेल पु [°ापीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व-रत्न (ज ३, पि ६२)। °ासण पु [°ासन] ब्रह्मा, विधाता (पाअ, दे ७, ६२)।

कमलंग न [कमलाङ्ग] सख्या विशेष, चौरासी लाख महापद्म की सख्या (जो २)।

कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी (पाअ)।

कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी (पाअ, सुपा २७५)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ९)। ३ काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी विशेष (ठा ४, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °अर पु [°कर] धनाढ्य, धनी (से १, २६)।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ (पाअ)।

कमलुब्भव पु [कमलोद्भव] ब्रह्मा (त्रि ८२)।

कमव } अक [स्वप्] सोना सो जाना।
कमवस } कमवइ (षड्)। कमवसइ (हे ४, १४६, कुमा)।

कमसो अ [क्रमशः] क्रम से, एक-एक करके (सुर १, ११९)।

कमिअ वि [दे] उपसर्पित, पास आया हुआ (दे २, ३)।

कमिय वि [क्रान्त] उल्लघित (दस २, ५)।

कमेलग } पुस्त्री [क्रमेलक] उष्ट्र, ऊट (पाअ,
कमेलय } उप १०३१ टी, करु ३३)। स्त्री °गी (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [कृ] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना। कम्मइ (हे ४, ७२, षड्)। वकृ कम्मंत (कुमा)।

कम्म सक [भुज्] भोजन करना। कम्मइ (षड्)। कम्मेइ (हे ४, ११०)।

कम्म देखो कम = कम्।

कम्म पुन [कर्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल (ठा ४, ४, कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार (ठा १, आचा), 'कम्मा णाणफला' (पि १७२)। ३ जो किया जाय वह। ४ व्याकरण प्रसिद्ध कारक-विशेष (विसे २०९९, ३४२०)। ५ वह स्थान, जहाँ पर चूना वगैरह पकाया जाता है (पण्ह २, ५ - पत्र १२३)। ६ पूर्व-कृति, भाग्य, 'कम्मत्ता दुब्भगा चेव' (सूअ १, ३, १, आचा (षड्)। ७ कार्मण शरीर। ८ कार्मण शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष (कम्म २, २१)। °कर वि [°कर] नोकर, चाकर (आचा)। देखो °गार। °करण न [°करण] कर्म-विषयक बन्धन, जीव-पराक्रम-विशेष (भग ६, १)। °कार वि [°कार] नौकर (पउम १७, ७)। °किब्बिस वि [°किल्बिष] कर्म चाण्डाल, खराब काम करनेवाला (उत्त ३)। °क्खंध पु [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलो का पिण्ड (कम्म ५)। °गर देखो °कर (प्राकृ)। °गार पु [°कार] १ कारीगर, शिल्पी (णाया १, ९)। देखो °कर। °जोग पु [°योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान (कम्म)। °ट्ठाण न [°स्थान] कारखाना (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ कर्म-पुद्गलो का अवस्थान-समय (भग ६, ३)। २ वि ससारी जीव (भग १४ ६)। °णिसेग पु [°निषेक] कर्म-पुद्गलो की रचना-विशेष (भग ६ ३)। °धारय पु [°धारय] व्याकरण प्रसिद्ध एक समास (अणु)। °परिसाडणा स्त्री [°परिशाटना] कर्म-पुद्गलो का जीव-प्रदेशो से पृथक्करण (सूअ १, १)। °पुरिस पु [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी (सूअ १, ४, १)। २ महारम्भ करनेवाले वासुदेव वगैरह राजा लोग (ठा ३, १—पत्र ११३)। °प्पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थांश-विशेष, आठवाँ पूर्व (सम २६)। °बंध पु [°बन्ध] कर्म पुद्गलो का आत्मा मे लगना, कर्मा से आत्मा का बन्धन (आव ३)। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि मे उत्पन्न (पण्ण १)। °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरह (जी २३)। °भूमिग देखो °भूमग (पण्ण २३)। °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म-भूमि मे उत्पन्न (ठा ३, १—पत्र ११४)। °मास पु [°मास] श्रावण मास (जो १)। °मासग पु [°माषक] मान-विशेष, पाच गुञ्जा, पाँच रत्ती (अणु)। °य वि [°ज] १ कर्म मे उत्पन्न होनेवाला। १ कर्म-पुद्गलो का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर (ठा २, १, ५, १)। °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि, अनुभव (णंदि)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होनेवाला जीव का परिणाम (भग १४, १)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्म-रूप मे परिणत होनेवाला

पुद्गल-समूह (पव)। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ माननेवाला (राज)। °विवाग पु [°विपाक] १ कर्म परिणाम, कर्म-फल। २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ (कम्म १, १)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] लौकिक वर्ष (सुज्ज १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना। २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान (बृह २)। °सिद्ध पु [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी (आवम)। °जीव [°जीव] १ कारीगर। २ कारीगरी का कोई भी काम बतलाकर भिक्षादि प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १)। °दाण न [°दान] जिससे भारी पाप हो ऐसा व्यापार (भग ८, ५)। °यरिय पु [°र्य] कर्म से आर्य, निर्दोष व्यापार करनेवाला (पएण १)। °वाइ देखो °वाइ (आचा)।

कम्म वि [कार्मण] १ कर्म-सम्बन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय। २ न कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है (ठा १, कम्म ४)। ३ कर्म-विशेष, कार्मण-शरीर का हेतु-भूत कर्म (कम्म २, २१)। ३ कार्मण-शरीर का व्यापार (कम्म ३, १५, कम्म ४)।

कम्मइय न [कर्मचित, कार्मण] ऊपर देखो (पउम १०२, ६८)।

कम्मंत पु [दे. कर्मान्त] १ कर्म-बन्धन का कारण (आचा सूत्र २, २)। २ कर्म-स्थान, कारखाना (दे २, ५२)।

कम्मत वि [कुर्वन्] १ हजामत करता हुआ। २ हजाम, नापित (कुमा)। °साला स्त्री [°शाला] जहाँ पर उस्तरा—बाल बनाने का छुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान (निचू ८)।

कम्मकर देखो कम्म-कर (प्राकृ २६)।

कम्मग न [कर्मक, कार्मक, कार्मण] देखो कम्म = कार्मण (ठा २,२, पएण २१, (भग)।

कम्मण न [कार्मण] १ कर्म मय शरीर (द ३२)। २ ओषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म (उप १३४ टी, स १०८)। °गारि वि [°कारिन्] कामण करनेवाला (सुर १, ६८)। °जोय पु [°योग] कार्मण-प्रयोग (णाया १, १४)।

कम्मण न [भोजन] भोजन (कुमा)।

कम्ममाण देखो कम = कम्।

कम्मय देखो कम्मग (भग, पव)।

कम्मव सक [उप + भुज] उपभोग करना। कम्मवइ (हे ४ १११, षड्)।

कम्मवण न [उपभोग] उपभोग, काम मे लाना (कुमा)।

कम्मस वि [कल्मष] १ मलिन। २ न पाप (पाअ, हे २, ७९, प्रामा)।

कम्मा स्त्री [कर्मन्] क्रिया, व्यापार (ठा ४, २—पत्र २१०)।

कम्मार पु [कर्मार] १ लोहार लोहकार (विसे १५६८)। २ ग्राम-विशेष (आचू १)।

कम्मार | कम्मारग | कम्मारय वि [कर्मकार, °क] १ नौकर, चाकर (स ५३७, ओघ ४, ६८ टी)। २ कारीगर, शिल्पी (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-नोकर, दासी (सुपा ६३०)।

कम्मि | कम्मिअ वि [कर्मिन्] कर्म करनेवाला, अभ्यासी,

'णवकम्मिएण उअ पामरेण दट्ठूण पाउहारीओ।
मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवरासणी मुक्का।।'
(गा ६६८)।

२ पाप कर्म करनेवाला (सूअ १, ७, ६)।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कार्मिका] १ अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (णाया १, १)। २ अक्षीण कर्म-विशेष, अवशिष्ट कर्म (भग)।

कम्हल न [कश्मल] पाप (राज)।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से ? (ओप)।

कम्हार देखो कभार (हे २, ७४)। °ज न [°ज] केसर, कुंकुम (कुमा)।

कम्हिअ पु [दे] माली, मालाकार (दे २, ८)।

कम्हीर देखो कभार (मुद्रा २४२, पि १२०, ३१२)।

कय पु [कच] केश, बाल (हे १, १७७, कुमा)।

कय पु [क्रय] खरीदना (सुपा ३४४)।

कय देखो कड = कृत (आचा, कुमा, प्रासू १५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली (स ६०७, सुपा ६०६)। °क देखो °ग (पएह १, २)। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ (णाया १, ८)। °करण वि [°करण] अभ्यासी, कृताभ्यास (बृह १, पएह १, ३)। °किच्च वि [°कृत्य] कृतार्थ, सफल मनोरथ (सुपा २७)। °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करनेवाला, प्रयत्न-जन्य (विसे १८३७, स ६५३)। पु दास-विशेष गुलाम, 'भयगभत्त वा बलभत्त वा कयगभत्त वा' (निचू ६)। ३ न सुवर्ण सोना (राज)। °ग्घ वि [°घ्न] उपकार न माननेवाला, कृतघ्न (सुर २, ४४, सुपा ५८८)। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार को माननेवाला (पि ११८)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उपकार को माननेवाला, किए हुए उपकार की कदर करनेवाला (धम्म २६)। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना (उप पृ ८६)। °त्थ वि [°ार्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ (प्रासू २३)। °नासि वि [°नाशिन्] कृतघ्न (ओघ १६६)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु, 'ज कित्तिजलहिराया विवेयनय-मदिर कयन्नगुरु' (सुपा ३०१, महा, स ३३, श्रा २८)। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह (आव)। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार (पंचा १६)। २ विनय-विशेष (वव १)। °पडिकइया स्त्री [प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार (णाया १, २)। २ विनय का एक भेद (ठा ७)। °बलिकम्म वि [°बलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह (भग २, ५, णाया १, १६—पत्र २१०, तदु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नाम की एक नगरी (सया)। °माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह। २ पु. वृक्ष-विशेष कनेर का गाछ, 'अकोल्लबिल्लसल्लइ कयमालनमाल-सालड्ढ' (उप १०३१ टी)। ३ तमिस्रा-नामक गुफा का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह (भग ६, ३३, णाया १, १)। °व वि [°वन्] जिसने किया हो वह (विसे १५५५)। °वणमाल-

°प्पिय पु [°वनमालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष (विपा २, ६)। °वम्म पु [°वर्मन] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता (सम १५१)। °वीरिय पु [°वीर्य] कार्तवीर्य के पिता का नाम (सूअ १, ८)।

कय अ [कृतम्] अलम्, बस (उवर १४८)।

कयंगला स्त्री [कृतङ्गला] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी (भग)।

कयंत पु [कृतान्त] १ यम, मृत्यु, मरण (सुपा १६६, सुर २,५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त, 'मरणंति कयंत प कयंतमिद्ध उ मयरहिअ' (सार्ध ११७ सुपा १०६)। ३ रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °मुह पु [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम (पउम ६८ ६२)। °वयण पु [°वदन] राम का एक सेनापति (पउम ६८, २०)।

कयंब देखो कमब (हे १, २३६ षड्)।

कयंद देखो कलंद (पण्ण १, हे १,२२२)।

कयंब पु [कदम्ब] समूह, 'अप्पाण पिव सव्वं जीवकयंब च रक्खइ सयावि' (सबोध २०)।

कयंबिय वि [कदम्बित] अलंकृत, विभूषित (कप्प)।

कयंबुअ देखो कलंबुअ (कप्प)।

कयग वि [कृतक] प्रयत्न-जन्य (धर्मसं २६६, ४१४)।

कयग वि [क्रायक] खरीदनेवाला (वव १ टी)।

कयग पुं [कतक] १ वृक्ष-विशेष, निर्मली। २ न कतक फल, निर्मली फल, पायपसारी, 'जह कयगमंजणाई जलवुट्ठीओ विसोहिंति' (विसे ५३६ टी)।

कयज्ज वि [कदर्य] कंजूस, कृपण (राज)।

कयड्डि पु [कपर्दिन] इस नाम का एक यक्ष देवता (सुपा ५८२)।

कयण न [कदन] हिंसा मार डालना (हे १, २१७)।

कयत्थ सक [कदर्थय्] हैरान करना, पीडा करना। कयत्थेंति (धम्म ८ टी)। कवकृ कयत्थिज्जंत (स ८)।

कयत्थण न [कदर्थन] हैरान करना, पीडन (सुपा १८०, मन)।

कयत्थणा स्त्री [कदर्थना] ऊपर देखो (स ४७२, सुर १५, १)।

कयत्थिय वि [कदर्थित] हैरान किया हुआ, पीडित (सुपा २२७ महा)।

कयन्न वि [कदन्न] खराब अन्न (धर्मवि १३६)।

कयम वि [कतम] बहुत मे मे कौन? (स ४०२)।

कयर वि [कतर] दो मे मे कौन? (हे ३, ५८)।

कयर पु [करीर] १ वृक्ष-विशेष, करीर, करील (स २५६)। २ न करीर का फल (पभा १४)।

कयल पु [कदल] १ कदली-वृक्ष, केला का गाछ। २ न कदली फल, केला (हे १, १६७)।

कयल न [दे] अलिञ्जर, पानी भरने का बडा गगरा, झझर, मटका (दे २, ४)।

कयलि, °ली स्त्री [कदलि, °ली] केला का गाछ (महा, हे १, २२०)। °समागम पु [°समागम] इस नाम का एक गाव (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर (महा, सुर ३, १४, ११६)।

कयल्लअ देखो कय = कृत (सुख २ ३)।

कयवर पु [दे] १ कतवार, कूडा, मैला (णाया १, १, सुपा ३५ ८७, स २६८ भत्त ८६, पाअ सण, पुप्फ ३१, निचू ७)। २ विष्ठा (आव १)।

कयवरुज्झिया स्त्री [दे कचवरोज्झिका] कूडा साफ करनेवाली दासी (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कयवाउ पु [कृकवाकु] कुक्कुट, मुकडा, मुर्गा (गउड)।

कयवाय पु [कृकवाक] कुक्कुट, कुकडा, मुर्गा (पाअ)।

कयसण न [कदशन] खराब भोजन (विवे १३६)।

कयसेहर पु [दे] मुकडा, मुर्गा, 'कयसेहराण सुम्मइ आवासा भत्ति गामम्मि' (वज्जा ७२)।

कया अ [कदा] कब, किस समय? (ठा ३, ४, प्रासू १६६)।

कयाइ अ [कदापि] कभी भी, किसी समय भी (उवा)।

कयाइ } अ [कदाचित्] १ किसी समय,
कयाइ } कभी (उवा, वसु) 'अह अन्नया
कयाई } कयाई' (सुपा ५०६, पि ७०)। २ वितर्क-द्योतक अव्यय 'नट्ठं मि कयाइत्ति' (भग १५)।

कयाण न [क्रयाणक] बेचने योग्य वस्तु, करियाना (उप पृ १२०)।

कयाणग पुन देखो कयाण, 'देव निम्नवाहणाण कयाणगे कि न विक्केह' (सिरि ४७८)।

कयार पु [दे] कतवार, कूडा, मैला (दे २, ११, भवि)।

कयावि देखो कयाइ = कदापि (प्रासू १३१)।

कयोग पु [कयोग] नट विशेष, बहुरूपिया (बृह ४)।

कर सक [कृ] करना, बनाना। करइ (हे ४, २३४)। भूका कासी, काही, काहीअ, करिंसु, करेंसु, अकासि, अकासी (हे ४, १६२, कुमा, भग, कप्प)। भवि काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि (हे १,५, पि ५३३, कुमा)। कर्म कज्जइ, करीइ, करिज्जइ (भग, हे ४, २५०)। वकृ करत, करिंत, करेंत, करेमाण (पि ५०६, रयण ७२, से २, १५, सुर २, २४०, उवा)। कवकृ कज्जमाण, किरंत, कीरमाण (पि ५४७, कुमा, गा २७२, रयण ८६)। संकृ करित्ता, करित्ताण, करिदूण, काउं, काऊण, काऊण, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाण (कप्प, दस ३, षड्, कुमा भग अभि ४१, सूअ १,१, १, औप)। हेकृ काउं, करेत्तए (कुमा, भग ८, २)। कृ करणिज्ज, करणीअ, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व (दस १० षड्, स २१, प्रासू १८८ कुमा)। प्रयो करावेइ, करावेई (पि ५५३, ५५२)।

कर पु [कर] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

कर पु [कर] १ हस्त, हाथ (सुर १, ५४, पासू ५७)। २ महसूल, चुंगी (उप ७६८ टी सुर १, ५४)। ३ किरण, अंशु (उप ७६८ टी कुमा)। हाथी की सूँढ (कुमा)। ५ करका, शिला वृष्टि, ओला, 'करच्छडाभडियपत्तिमंडले' (पउम ६६, १५)। °गह पु [°ग्रह] १ शादी मे हाथ पकडना 'ह[illegible]-

करग्गहलुलिओ धम्मिल्लो' (गा ५४४)। २ पाणि-ग्रहण, शादी (राज)। °य पु [°ज] नख (वाज्ञ १७२)। °रुह पुन [°कररुह] १ नख (हे १, ३४)। २ पु नृप-विशेष (पउम ७७, ८८)। °लाघव न [°लाघव] कला-विशेष, हस्त-लाघव (कप्प)। °वंदण न [°वन्दन] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझकर वन्दन करना (बृह ३)।

करअडी } स्त्री [दे] स्थूल वस्त्र, मोटा कपडा
करअरी } (दे २, १६)।

करआ स्त्री [करका] करका, ओला, शिला-वृष्टि (अच्चु ६४)।

करइल्ली स्त्री [दे] शुष्क-वृक्ष, सूखा पेड (दे २, १७)।

करंक पुं [दे करङ्क] १ भिक्षा-पात्र (दे २, ५५, गउड)। २ अशोक-वृक्ष (दे २, ५५)।

करंक पुंन [करङ्क] १ हड्डी, हाड, 'करकञ-यभीसणे मसाणम्मि' (सुपा १७५)। २ अस्थि-पञ्जर, हाड-पञ्जर (उप ७२८ टी)। ३ पानदान, पान वगैरह रखने की छोटी पेटी, 'तंबोलकरवाहिणीओ' (कप्पू)। ४ हड्डियों का ढेर (सुर ६, २०३)।

करंज सक [भञ्ज्] तोडना, फोडना, टुकड़ा करना। करंजइ (हे ४, १०६)।

करंज पु [करञ्ज] वृक्ष विशेष, करिञ्जा (पराग १, दे १, १३, गा १२१)।

करंज पु [दे] शुष्क-त्वक्, सूखी त्वचा (दे २, ८)।

करंजिअ वि [भग्न] तोडा हुआ (कुमा)।

करंड पुंन [करण्ड] वंशाकार हड्डी (तंदु ३५)।

करंड } पु [करण्ड, °क] १ करण्ड,
करंडग } डिब्बा, पेटिका (पण्ह १, ५,
करंडय } श्रा १४, ठा ४, ४)।

करंडिया स्त्री [करण्डिका] छोटा डिब्बा (णाया १, ७, सुपा ४२८)।

करंडी स्त्री [करण्डी] १ डिब्बा, पेटिका (श्रा १४)। २ कुटी, पात्र विशेष (उप ५६३)।

करंडुय न [दे] पीठ के पास की हड्डी (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

करंत देखो कर = कृ।

करंब पु [करम्ब] दही और भात का बना हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन (पाअ, दे २, १४, सुपा १३६)।

करंबिय वि [करम्बित] व्याप्त, खचित (सुपा ३४ गउड)।

करकंट पु [करकण्ट] इस नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष (औप)।

करकंडु पु [करकण्डु] एक जैन महर्षि (महा, पडि)।

करकचिअ वि [क्रकचित] करवत आदि से फाड़ा हुआ (अणु १५४)।

करकड वि [दे कर्कर कर्कट] १ कठिन, परुष (उवा)।

करकडी स्त्री [दे करकटी] चियडा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था (विपा १, २—पत्र २४)।

करकय पु [क्रकच] करपत्र, करात, आरा (पराग १, १)।

करकर पु [करकर] 'कर-कर' आवाज (णाया १ ६)। °सुंठ पुन [°शुण्ठ] तृण-विशेष (पण्ह १—पत्र ४०)।

करकरिग पु [करकरिक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

करग देखो कारग = कारक (णंदि ५०)।

करग पु [करक] १ करका, ओला (श्रा २०, ओघ ३४३, जी ५)। २ पानी की कलशी, जल पात्र (अनु ५, श्रा १६, सुपा ३३६, ३६४)। देखो करय = करक।

करगय देखो करकय (स ६६६)।

करग्गह देखो कर-गह (सम्मत्त १७३)।

करघायल पु [दे] किलाट, दूध की मलाई (दे २, २२)।

करच्छोडिया स्त्री [दे] ताली, ताल (सुपा २, १५)।

करट्ट पु [दे] अपवित्र अन्न को खानेवाला ब्राह्मण (मृच्छ २०७)।

करड पु [करट] १ काक, कौआ (उर १, १४)। २ हाथी का गण्ड-स्थल (सुपा १३६, पाअ)। ३ वाद्य-विशेष (विक्र ८७)। ४ कुसुम्भ-वृक्ष। ५ करीर-वृक्ष। ६ गिरगिट, सरट। ७ पाखंडी, नास्तिक। ८ श्राद्ध-विशेष (दे २, ५५ टी)।

करड पु [दे] १ व्याघ्र, शेर। २ वि. कबरा, चितकबरा (दे २, ५५)।

करडा स्त्री [दे] लट्वा—१ एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष। २ पक्षि विशेष, चटक। ३ भ्रमर, भौंरा। ४ वाद्य-विशेष (दे २ ५५)।

करडि पु [करटिन्] हाथी, हस्ती (सुर २, ६६ सुपा ५०, १३६)।

करडी स्त्री [दे, करटी] वाद्य विशेष, 'अट्टसय करडीए' (ज २)।

करडुयभत्त न [दे] श्राद्ध-विशेष (पिंड)।

करण न [करण] १ इन्द्रिय (सुर ४, २३६, (कुमा)। २ आसन, पद्मासन वगैरह (कुमा)। ३ अधिकरण, आश्रय (कुमा)। ४ कृति, क्रिया, विधान (ठा ३, ४, सुर ४, २४५)। ५ कारक विशेष, साधकतम (ठा ३, १, विसे १६३६)। ६ उपाधि, उपकरण (ओघ ६६६)। ७ न्यायालय, न्याय-स्थल (उप पृ ११७)। ८ वीर्य-स्फुरण (ठा ३, १—पत्र १०६)। ९ ज्योतिः-शास्त्र प्रसिद्ध बव-बालवादि करण (सुर २, १६५)। १० निमित्त, प्रयोजन (आवृ १)। ११ जेल, कैदखाना (भवि)। १२ वि जो किया जाय वह (ओघ २, भा ३)। १३ करनेवाला (कुमा)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] जेल का अध्यक्ष (भवि)। °साला स्त्री [°शाला] न्यायालय (दस० वृ० हारि० पत्र १०८ २)।

करणया स्त्री [करणता] १ अनुष्ठान, क्रिया। २ सयमानुष्ठान (णाया १, १—पत्र ५०)।

करणसाला स्त्री [करणशाला] न्याय मन्दिर (दस ३, १ टी)।

करणि स्त्री [दे] क्रिया, कर्म (अणु १३७)।

करणि स्त्री [दे] १ रूप, आकार (दे २, ७, सुपा १०५, ४७५, पाअ)। २ सादृश्य समानता (अणु)। ३ अनुकरण, नकल करना (गउड)। ४ स्वीकार, अंगीकार (उप पृ ३८५)।

करणिज्ज देखो कर = कृ।

करणिल्ल वि [दे] समान, सदृश 'मयणजमल-तोणीरकरणिल्लेण पयामयोरेण निरतरेण च ऊरुजुयलेण' (स ३१२), 'वधूयकरणिल्लेण महावाएणेण अहरेण' (स ३१२)।

करणीअ देखो कर = कृ।

करपत्त न [करपत्र] करवत, ककच (विपा १, ६)।

करभ पु [करभ] ऊँट, उष्ट्र (पण्ह १, १; गउड)।

करभी स्त्री [करभी] १ उष्ट्री, स्त्री-ऊँट, ऊँटनी (पिंड)। २ पानी भरने का बड़ा पात्र (बृह २ टी)। देखो करही।

करम वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे २, ६; षड्)।

करमंद पु [करमन्द] फलवाला वृक्ष-विशेष (गउड)।

करमद्द पु [करमर्द] वृक्ष-विशेष, करौंदा (पण्ण १—पत्र ३२)।

करमरी स्त्री [दे] हठ-हृत स्त्री, बाँदी (दे २, १५; षड्; गा ५२७ पाअ)।

करय देखो करग (उप ७२८ टी; पण्ण १; कुमा; उत्त ७)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

करयंदी स्त्री [दे] मल्लिका बेला का गाछ (दे २, १८)।

करयर अक [करकराय्] 'कर-कर' आवाज करना। वकृ करयरंत (पउम ६८, ३५)।

कररुह पु [कररुह] छन्द-विशेष (पिंग)।

करलि, करली स्त्री [कदलि, °ली] १ पताका। २ हरिण की एक जाति। ३ हाथी का एक आभरण (हे १, २२०; कुमा)।

करव पुन [दे करक] जल पात्र, 'पालिकरवाउ नीरं पाएउ पुच्छिओ' (सुपा २१८; ६३१)।

करवंदी स्त्री [करमन्दी] लता-विशेष, एक जात का पेड़ (दे, ८, ३५)।

करवत्तिआ स्त्री [करपात्रिका] जल पात्र-विशेष (आ १२)।

करवाल पु [करवाल] खड्ग, तलवार (पाअ; सुपा ६०)।

करविया स्त्री [दे करविका] पान पात्र-विशेष (सुपा ४८८)।

करवीर पु [करवीर] वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ (गउड)।

करसी [दे] देखो करडसी (दे २, १८)।

करह पु [करभ] १ ऊँट, उष्ट्र (पउम ५६, ४८ पाअ; कुमा; सुर ४२०)। २ सुगन्धी द्रव्य विशेष (गउड ६६८)।

करहंच न [करहञ्च] छन्द विशेष (पिंग)।

करहाड पु [करहाट] वृक्ष विशेष करहाट शिफा कन्द, मैनफल (गउड)।

करहाडय पु [करहाटक] १ ऊपर देखो। २ देश-विशेष, 'करहाडयविसए कन्हडरायनिवेसम्मि' (स २५३)।

करही देखो करभी। ३ इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °रुह वि [°रोह] ऊँट सवार, उष्ट्री पर सवारी करने वाला (महा)।

कराइणी स्त्री [दे] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २, १८)।

करादड्ढ पु [कराडड्ढ] स्वनाम ख्यात एक राजा (ती ३७)।

कराल वि [कराल] १ उन्नत, ऊँचा (अनु ५)। २ दन्तुरित, जिसका दाँत लम्बा और बाहर निकला हो वह (गउड)। ३ भयानक, भयंकर (कप्पू)। ४ फाड़नेवाला। ५ विकसित (से १०, ४१)। ६ व्यवहित (से ११, ६६)। ७ वि इस नाम का विदेह देश का राजा (धर्म १)।

कराल सक [करालय्] १ फाड़ना छिद्र करना। २ विकसित करना। करालेइ (से १०, ४१)।

करालिअ वि [करालित] १ दन्तुरित, लम्बा और बहिर्निर्गत दाँतवाला (से १२, १०)। २ व्यवहित किया हुआ, अन्तरालवाला बनाया हुआ (से ११, ६६)। ३ भयंकर बनाया हुआ (कप्पू)।

करली स्त्री [दे] दतवन, दाँत शुद्ध करने का काष्ठ (दे २, १२)।

करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्मापन (सुपा ३०२, धम्म ८ टी)।

कराविय वि [कारित] कराया हुआ (स ५६८; महा)।

करि पु [करिन्] हाथी, हस्ती (पाअ, प्रासू १६६)। °वरणट्ठाण न [°वरणस्थान] हाथी को बाँधने का डोर—रज्जू, रस्सा (पाअ)। °नाह पु [°नाथ] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी। २ उत्तम हस्ती (सुपा १०६)। °बंधण न [°बन्धन] हाथी पकड़ने का गर्त (पाअ)। °मयर पुं [°मकर] जल हस्ती (पाअ)।

करिअ पु [करिक] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

करिअ, करिअव्व देखो कर = कृ।

करिआ स्त्री [दे] मदिरा परोसने का पात्र (दे २, १८)।

करिएव्वउ, करिएव्वउं (अप) देखो कायव्व (हे ४, ४३८; कुमा; पि २५४)।

करित देखो कर=कृ।

करिणिआ, करिणी स्त्री [करिणी] हस्तिनी, हथिनी (महा; पउम ८०, ५३; सुपा २)।

करिण पु [करिन्] हाथी, हस्ती, 'रे दुट्ठ करिणाहम ! कुजाय ! सभतगुणलज्जाहणेण' (उप ६ टी)।

करित्ता, करित्ताण, करिदूण देखो कर = कृ।

करिमरी [दे] देखो करमरी (गा ५४, ५५)।

करिल्ल न [दे] १ वंशांकुर, बाँस का कोंपल, रेतीली भूमि में उत्पन्न होनेवाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं (दे २, १०)। २ करेला, तरकारी-विशेष, 'थाणुपुरिसाइकुट्ठुप्पलाइसंभियकरिल्लमसाई' (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल (अनु)। ४ पु करील वृक्ष, करील (पड्)। ५ वि वंशांकुर के समान, 'हाहा ते चेय करिल्लणियमावाहुमयरणदुल्ललिय' (गउड)।

करिस देखो कड्ढ=कृष्। करिसइ (हे ४, १८७)। वकृ करिसंत (सुर १, २३०)। संकृ करिसित्ता (पि ५८२)।

करिस पु [कर्ष] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन, रेखा-करण। ३ मान विशेष, पल का चौथा हिस्सा (जो १)।

करिस देखो करीस (हे १, १०१; पाअ)।

करिसग वि [कर्षक] खेती करनेवाला, कृषीवल (उत्त ३, आचम)

करिसण न [कर्षण] १ खींचाव, आकर्षण। २ चासना, खेती करना। ३ कृषि, खेती (पण्ह १, १)।

करिसय देखो करिसग (सुपा २, २६०, सुर २, ८८)।

करिसावण पुन [कार्षापण] सिक्का-विशेष (विसे ७०६ टी)।

करिसिद (शौ) वि [कर्षित] १ आकर्षित। २ चासा हुआ, खेती किया हुआ (हेका ३२४)।

करिसिय वि [कृशित] दुर्बल किया हुआ (सूअ १, ३)।

करीर पु [करीर] वृक्ष-विशेष करीर, करील (उप ७२८ टी, था १६, प्रासू ६२)।

करीस पु [करीष] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा (हे १, १०१)।

करुण देखो कलुण (स्वप्न ५३, सुपा २१६), 'उज्झइ उयारभाव दक्खिण्णं करुणयं च आमुयइ' (गउड)।

करुणा स्त्री [करुणा] दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा (गउड, कुमा)।

करुणाइय वि [करुणायित] जिसपर करुणा की गई हो वह (गउड)।

करुणि वि [करुणिन्] करुणा करनेवाला, दयालु (सण)।

करे सक [कारय्] कराना। करेइ (प्राकृ ६०)।

करेअव्व, **करेत** } देखो कर = कृ।

करेडु पु [दे] कृकलास, गिरगिट, सरट (दे २, ५)।

करेणु पुं [करेणु] १ हस्ती, हाथी। २ कनेर का गाछ, 'एसो करेणू' (हे २, ११६)। ३ स्त्री हस्तिनी हथिनी (हे २, ११६, णाया १, १, सुर ८, १३६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। °सेणा स्त्री [°सेना] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी (पाअ, महा)।

करेमाण, **करेअव्व** } देखो कर = कृ।

करेवाहिय वि [करवाधित] राज-कर से पीडित, महसूल से हैरान (ओप)।

करोड पु [दे] १ नारिकेल, नारियल। २ काक, कौआ। ३ वृषभ, बैल (दे २, ५४)।

करोडग पु [दे] पात्र-विशेष, कटोरा (निचू १)।

करोडि स्त्री [करोटि] सिर की हड्डी (सुख, २, २९)।

करोडिय पु [करोटिक] कापालिक, भिक्षुक-विशेष (णाया १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया, **करोडी** } स्त्री [करोटिका, °टी] १ कुंडा, बड़े मुँह का एक पात्र, कांस्य-पात्र-विशेष (अणु, दे ७, १५, पाअ)। २ स्थगिका, पानदान (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पात्र (ओप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र (णाया १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण (दे, २, २८)।

करोडी स्त्री [दे] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष (दे २, ३)।

करोडी स्त्री [दे] मुर्दा, शव (कुप्र १०२)।

कल सक [कलय्] १ संख्या करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ संबन्ध करना। कलइ (हे ४, २५९, षड्)। कलयति (विसे २०२९)। भवि कलइस्सं (पि ५३३)। कर्म कलिज्जए (विसे २०२९)। वकृ कलयंत (सुपा ८)। कवकृ कलिज्जंत (सुपा ६४)। संकृ कलिऊण, कलिअ (महा, अभि १८२)। कृ कलणिज्ज, कलणीअ (सुपा ६२२, पि ९१)।

कल वि [कल] १ मधुर, मनोहर (पाअ)। २ पुं अव्यक्त मधुर शब्द (णाया १, १६)। ३ कोलाहल, कलकल (चंद १९)। ४ कर्दम, कीचड, कादो (भत्त १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर (ठा ५, ३)। °कंठी स्त्री [°कण्ठी] कोकिला, कोयल (दे २, ३०, कप्पू)। °मंजुल वि [°मञ्जुल] शब्द से मधुर (पाअ)। °यंठ पु [°कण्ठ] कोकिल, कोयल (कुमा)। °यंठी देखो °कंठी (सुर ४, ४८)। °हंस पु [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस (कप्प, गउड)।

कलंक पु [कलङ्क] १ दाग, दोष (प्रासू ६४)। २ लाञ्छन, चिह्न (कुमा, गउड)।

कलंक सक [कलङ्कय्] कलंकित करना। कलंकइ (भवि)। कृ. कलंकियव्व (सुपा ४४८, ५८१)।

कलंक पु [दे] १ वाँस, वंश (दे २, ८)। २ वाँस की बनाई हुई वाड (णाया १, १८)।

कलंकण न [कलङ्कन] कलंकित करना (पव ८)।

कलंकल वि [कलङ्कल] असमंजस, अशुभ (ओप, संथा)।

कलंकलीभागि वि [कलङ्कलीभागिन्] दुःख-व्याकुल (सूअ २, २, ८१, ८२)।

कलंकलीभाव पु [कलङ्कलीभाव] १ दुःख से व्याकुलता। २ संसार-परिभ्रमण (आचा २, १६, १२)।

कलंकवई स्त्री [दे] वृति, वाड, कांटे आदि से परिच्छन्न स्थान-परिधि (दे २, २४)।

कलंकिअ वि [कलङ्कित] कलंकित, दागी (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [कलङ्किन्] कलंकवाला, दागी (काल, पि ५९५)।

कलंतर न [कलान्तर] व्याज, सूद (कुप्र ३७५)।

कलंद पु [कलन्द] १ कुण्ड, कुण्डा, रंग-पात्र (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलंब पु [कदम्ब] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ (हे १, ३०, २२२ गा ३७, कप्पू)। °चीर न [°चीर] शस्त्र विशेष (विपा १, ६—पत्र ६६)। °चीरिया स्त्री [°चीरिका] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है (जीव ३)। °वालुया स्त्री [°वालुका] १ कदम्ब के पुष्प के आकार-वाली धूली। २ नरक की नदी, 'कलंबवालुयाए दड्ढपुव्वो अणंतसो' (उत्त १९)।

कलंबु स्त्री [दे] वल्ली विशेष, नालिका (दे २, ३)।

कलंबुअ न [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प, 'धाराहयकलंबुअं पिव समुस्ससियरोमकूवे' (कप्प)।

कलंबुआ [दे] देखो कलंबु (पण्ण १, सुज्ज ४)।

कलंबुआ स्त्री [कलम्बुका] १ कदम्ब पुष्प के समान मांस-गोलक। २ एक गाँव का नाम, जहाँ पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था (राज)।

कलंबुगा स्त्री [कलम्बुका] जल में होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १८)।

कलंबुय पु [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष (सुज्ज १९)।

कलकल पु [कलकल] १ कोलाहल, कल-कलरव (था १४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट

आवाज (भग ६ ३३ टी)। ३ चूना आदि से मिश्रित जल (विग १, ६)।

कलकल अक [कलकलाय्] 'कल कल' आवाज करना। वकृ कलकलंत, कलकलिंत, कलकलेंत, कलकलमाण (पण्ह १, १, ३, औप)।

कलकलिअ न [कलकलित] कोलाहल करना (दे ६ २६)।

कलकलिअ वि [कलकलित] कलकल शब्द से युक्त (सिरि ६६८)।

कलक्ख देखो कडक्ख = कटाक्ष (गा ७०२)।

कलचुलि पु [कलचुलि] १ क्षत्रिय विशेष। २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश (पिंग)।

कलण देखो करण 'तासुवि कलणेसु हासु पुरुरप्पा' (अच्चु ८२)।

कलण न [कलन] १ शब्द, आवाज। २ सख्यान, गिनती (विसे २०२८)। ३ धारण करना (सुपा ११)। ४ जानना (सुपा १६)। ५ प्राप्ति, ग्रहण 'गुत्त वा सयलकलाकलण न्यणायरमुग्गम्म' (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [कलना] १ कृति, करण, 'जुण्ण कदप दप्प णिद्दुवणकलणाकदणिल्ल कुणता' (कप्पू)। २ धारण करना, लगाना, 'मज्झण्हे सिरिखंडपंककलणा' (कप्पू)।

कलणिज्ज देखो कल = कलय्।

कलत्त न [कलत्र] स्त्री, भार्या (प्रासू ७६)।

कलधोय देखो कलहोय (औप)।

कलभ पुस्त्री [कलभ] १ हाथी का बच्चा (णाया १ १)। २ बच्चा, बालक, 'उवमासु अपज्जत्तेभकलभदंताबहासमूरुजुग' (ह १, ७)।

कलभिआ स्त्री [कलभिका] हाथी का स्त्री बच्चा (णाया १, १—पत्र ६३)।

कलम पु [दे कलम] १ चोर तस्कर (दे २, १०, पाअ आचा)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल (उवा ज २, पाअ)।

कलमल पु [कलमल] १ पेट का मल (ठा ३, ३)। २ वि दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (उप ८३३)।

कलमल पुन [दे] १ मदन-वेदन (मक्ष ४७)। २ पीडन, घबराहट, घृणा, 'अनुइए अट्ठीए सोणियम्मिजातपुण्णमयाए। नामपि चितिय पत्तु कलमलय जणइ हियय्म्मि' (मन ३३)।

कलय देखो कलय (हे १, ६७)।

कलय पु [दे] १ अर्जुन वृक्ष। २ सोनार, सुवर्णकार (दे २ ५८)।

कलय पुं [कलाद] सोनार, सुवर्णकार (षड्)।

कलयंदि वि [दे] १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ स्त्री वृक्ष विशेष, पाडरी, पाटल (दे २, ५८)।

कलयज्जल न [दे] ओष्ठ-लेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष (भवि)।

कलयल देखो कलकल (हे २, २२०, पाअ, गा ५३५)।

कलयलिर वि [कलकलायितृ] कलकल करनेवाला (वज्जा ६६)।

कलरुद्दाणी स्त्री [कलरुद्राणी] इस नाम का छन्द (पिंग)।

कलल न [कलल] १ वीर्य और शोणित का समुदाय, 'पाइज्जति रडता मुत्ततत्तवुनवसनिभ कलल' (पउम ११८, ८), वसकललसेभ-सोणिय—' (पउम ३९ ५६)। २ गर्भ-वेष्टन चर्म। ३ गर्भ के अवयव रूप रेत विकार (गउड)। ४ कादो, कीचड, कर्दम (गउड)।

कललिय वि [कललित] कर्दमित, कीचवाला किया हुआ, 'अण्णोण्णकलहविअलियकेसरकी-लालकललियद्दारा' (गउड)।

कलविंक पु [कलविङ्क] पक्षि विशेष, चटक, गौरिया पक्षी, गोरैया (पाअ' गउड)।

कलवू स्त्री [दे] तुम्बी पात्र (दे २, १२ षड्)।

कलस पु [कलश] १ कलश, घडा, (उवा, णाए १, १)। २ स्कन्धक छन्द का एक भद, छन्द-विशेष (पिंग)।

कलस पुन [कलश] १ एक देव विमान। (देवेन्द्र १४०)। २ वाद्य-विशेष (राय ५० टी)।

कलसिया स्त्री [कलशिका] १ छोटा घडा (अणु)। २ वाद्य विशेष (आचू १)।

कलह पु [कलह] क्लेश, झगडा (उव, औप)।

कलह देखो कलभ (उव, पउम ७८, २८)।

कलह न [दे] तलवार की म्यान (दे २, ५, पाअ)।

कलह अक [कलहाय्] झगडा करना, लडाई करना। वकृ कलहंत, कलहमाण (पउम २८, ४, सुपा ११, २३३, ५४६)।

कलहण न [कलहन] झगडा करना (उव)।

कलहाअ देखो कलह = कलहाय्। कलहाएदि (शौ) (नाट)। वकृ कलहाअंत (गा ६०)।

कलहाइअ वि [कलहायित] कलहवाला, झगडाखोर (पाअ)।

कलहि वि [कलहिन्] झगडाखोर (दे ५, ५४)।

कलहोय न [कलधौत] १ सुवर्ण, सोना (सण)। २ चाँदी, रजत (गउड, पण्ह १, ४ पाअ)।

कला स्त्री [कला] १ अंश, भाग, मात्रा (अनु ४)। २ समय का सूक्ष्म भाग (विसे २०२८)। ३ चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा (प्रासू ६५)। ४ कला, विद्या, विज्ञान (कप्प, राय, प्रासू ११२)। पुरुष योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद है, 'बावत्तरी कला' (अणु), 'बावत्तरिकलापडियावि पुरिसा' (प्रासू १२६), 'चउसट्ठिकलापडिया' (णाया १, ३)। पुरुष कला ये है,—१ लिपि ज्ञान। २ अकगणित। ३ चित्र कला। ४ नाट्यकला। ५ गान, गाना। ६ वाद्य बजाना। ७ स्वर गत (षड्ज, ऋषभ वगैरह स्वरों का ज्ञान)। ८ पुष्कर गत (मृदग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान)। ९ समताल (सगीत के ताल का ज्ञान)। १० द्यूत कला। ११ जनवाद (लोगो के साथ आलाप सलाप करने की विधि)। १२ पासे का खेल। १३ अष्टापद (चौपाट खेलने की रीति)। १४ शीघ्र कवित्व। १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण विद्या)। १६ पाक कला। १७ पान-विधि (जलपान के गुण दोष का ज्ञान)। १८ वस्त्र विधि (वस्त्र की सजावट की रीति)। १९ विलेपन विधि। २० शयन-विधि। २१ आर्या (छन्द विशेष) बनाने की रीति। २२ प्रहलिका (विनोद के लिए पहेलिया—गूढाशय पद्य)। २३ मागधिका (छन्द विशेष)। २४ गाथा (छन्द विशेष)। २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य युक्ति (चादी के आभूषण की यथास्थान योजना)। २८ सुवर्ण-युक्ति। २९ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति)। ३० आभरण विधि (आभूषणो की सजावट)। ३१ तरुणी परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने

की रीति)। ३२ स्त्री-लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिन्हों का परिज्ञान)। ३३ पुरुष लक्षण। ३४ अश्व लक्षण। ३५ गज-लक्षण। ३६ गो-लक्षण। ३७ कुक्कुट-लक्षण। ३८ छत्र लक्षण। ३९ दण्ड लक्षण। ४० असि लक्षण। ४१ मणि-लक्षण (रत्न-परीक्षा)। ४२ काकणि-लक्षण (रत्न विशेष की परीक्षा)। ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति)। ४४ स्कन्धावार मान (सैन्य परिमाण)। ४५ नगर-मान। ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान)। ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरह का ज्ञान अथवा रोगप्रतीकार ज्ञान)। ४८ व्यूह (सैन्य रचना)। ४९ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्वि व्यूह)। ५० चक्र व्यूह। ५१ गरुड-व्यूह। ५२ शकट व्यूह। ५३ युद्ध (मल्ल-युद्ध)। ५४ नियुद्ध। ५५ युद्धातियुद्ध (खड्गादि शस्त्र से युद्ध)। ५६ दृष्टि युद्ध। ५७ मुष्टि-युद्ध। ५८ बाहु युद्ध। ५९ लता युद्ध। ६० इषु-शास्त्र (दिव्यास्त्र सूचक शास्त्र)। ६१ त्सरु-प्रपात (खड्ग शिक्षा शास्त्र)। ६२ धनुर्वेद। ६३ हिरण्य पाक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण पाक। ६५ सूत्रक्रीडा (एक ही सूत को अनेक प्रकार कर दिखाना)। ६६ वस्त्र-क्रीडा। ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष)। ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों मे अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव)। ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर असल बनाना)। ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायण)। ७२ शकुन-रुत (शकुन-शास्त्र), (ज २ टी, सम ८३)। °गुरु पु [°गुरु] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक (सुपा २५)। °यरिय पु [°चार्य] देखो पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १)। °वई स्त्री [°वती] १ कलावाली स्त्री। २ एक पतिव्रता स्त्री (उप ७३६, पडि)। °सवण्ण न [सवर्ण] सख्या-विशेष (ठा १०)।

कलाइआ स्त्री [कलाचिका] प्रकोष्ठ, कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव (पाअ)।

कलाय पु [कलाद] सोनार, सुवर्णकार (पण्ह १, २, णाया) १, ८)।

कलाय पु [कलाय] धान्य विशेष, गोल चना, मटर (ठा ३, ५, अनु ५)।

कलाव पु [कलाप] १ समूह, जत्था (हे १, २३१)। २ मयूर-पिच्छ (सुपा ४८)। ३ शरधि, तूण, जिसमें बाण रक्खे जाते हैं (दे २, १०)। ४ कण्ठ का आभूषण (औप)।

कलावग न [कलापक] १ चार श्लोकों की एक वाक्यता। २ ग्रीवा का एक आभरण (पण्ह २, ५)।

कलावय न [कलापक] चार पद्यों की एक वाक्यता (सम्मत्त १८७)।

कलावि पुस्त्री [कलापिन्] मयूर, मोर (उप ७२८ टी)।

कलि पु [कलि] एक नरकावास (देवेन्द्र २६)।

कलि पु [कलि] १ कलह झगडा (कुमा, प्रासू ६४)। २ युग-विशेष, कलि युग (उप ८३३)। ३ पर्वत विशेष (ती ५४)। ४ प्रथम भेद (निचू १५)। ५ एक अकेला (सूअ १, २, २, भग १८, ४)। ६ दुष्ट पुरुष, दुट्ठो बली' (पाअ)। °ओग, °ओय पु [°ओज] युग्म-राशि विशेष (भग १८, ४, ठा ४, ३)। °ओयकडजुम्म पु [°ओज-कृतयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °ओयकलिओय पु [°ओजकल्योज] युग्म-राशि विशेष (भग ३४, १)। °ओजत-ओय पु [°ओजत्र्योज] युग्म राशि विशेष (भग ३४, १)। °ओयदावरजुम्म पु [°ओजद्वापरयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °कुंड न [°कुण्ड] तीर्थ-विशेष (ती १५)। °जुग न [°युग] कलि-युग (ती २१)।

कलि पु [दे] शत्रु दुश्मन (दे २, २)।

कलिअ वि [कलित] १ युक्त, सहित (पण्ह १, २)। २ प्राप्त, गृहीत। ३ ज्ञात, विदित (दे २ ५६, पाअ)।

कलिअ देखो कल = कलय्।

कलिअ पु [दे] १ नकुल, न्योला, नेवला। २ वि गर्वित, गर्व युक्त (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [दे] सखी, सहेली (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [कलिका] अविकसित पुष्प, कली (पाअ, गा ४४२)।

कलिंग पु [कलिङ्ग] १ देश विशेष, यह देश उडीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है (पउम ९८, ६७, ओघ ३० भा, प्रासू ६०)। २ कलिंग देश का राजा (पिंग)।

कलिंग पु [कलिङ्ग] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

कलिंच देखो किलिंच (गा ७७०)।

कलिंज पु [कलिञ्ज] कट, चटाई (निचू १७)।

कलिंज न [दे] छोटी लकडी (दे २, ११)।

कलिंब पुन [कलिम्ब] १ बाँस का पात्र-विशेष, कलिंबो वंसकप्परी' (गच्छ २)। २ सूखी लकडी (भग ८, ३)।

कलित्त न [कटित्र] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म मय कवच (णाया १, १, औप)।

कलिम न [दे] कमल, पद्म (हे २, ६)।

कलिमल देखो कलमल = कलकल (तदु ४१)।

कलिल वि [कलिल] गहन, घना, दुर्भेद्य (पाअ)।

कलुण वि [करुण] १ दीन, दया जनक, कृपा-पात्र (हे १, २५४, प्रासू १२६, सुर २, २२९)। २ पु साहित्य शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों मे एक रस (अणु)।

कलुणा देखो करुणा (राज)।

कलुस वि [कलुष] १ मलिन, अस्वच्छ, 'कलिकलुस' (विपा १, १, पाअ)। २ न पाप, दोष, मैल (स १३२, पाअ)।

कलुसिअ वि [कलुषित] पाप-ग्रस्त मलिन (से १०, ५, गउड)।

कलुसीकय वि [कलुषीकृत] मलिन किया हुआ (उत्त)।

कलेर पु [दे] १ ककाल, अस्थि-पञ्जर। २ वि कराल, भयानक (दे २, ५३)।

कलेवर न [कलेवर] शरीर, देह (आउ ४८, पिंग)।

कलेसुय न [कलेसुक] तृण-विशेष (सूअ २, २)।

कलोवाइ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (आचा २, १, २, १)।

कल्ल न [कल्य] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन (पाअ, णाया १, १, दे ८, ६७)। २ शब्द, आवाज। ३ सख्या, गिनती (विसे ३४४२)। ४ आरोग्य, निरोगता, 'कल्ल किलासगं' (विसे ३४३९)। ५ प्रभात, सुबह (अणु)। ६ वि निरोग, रोग रहित

(ठा ३, ३ दे ८, ६५)। ७ वि दक्ष, चतुर (दे ८, ६५)।

कल्लवत्त पु [कल्यवर्त्त] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान (स्वप्न २०, नाट)।

कल्लवाल पु [कल्यपाल] कलवार, शराब बेचनेवाला (मोह ६२)।

कल्लविअ वि [दे] १ तीमित आर्द्रित। २ विध्यापित फैलाया हुआ (दे २, १८)।

कल्ला स्त्री [दे] मद्य दारू (दे २, २)।

कल्लाकल्लि } अ [कल्याकल्य] १ प्रतिदिन,
कल्लाकल्लिं } हर रोज (विपा १ ३, गाया १, १८)। २ प्रति प्रभात, रोज सुबह (उवा, प्राप)।

कल्लाण न [कल्याण] सुवर्ण (सिरि ३७३)।

कल्लाण पुन [कल्याण] १ सुख मंगल, क्षेम, 'गुणट्ठाणपरिणामे सते जीवाण मयनकल्लाणा' (उप ६००, महा, प्रासू १८६)। २ निर्वाण, मोक्ष (विसे ३४८०)। ३ विवाह, लग्न (वसु)। ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर, 'पंच महाकल्लाणा सव्वेसि जिणाण होंति णिअमेण' (पंचा ६)। ५ समृद्धि, वभव (कप्प)। ६ वृक्ष-विशेष (पण्ण १)। ७ तप विशेष (पव)। ८ देश-विशेष। ९ नगर विशेष 'कल्लाणदेसे कल्लाणनयरे मसरो णाम राया जिण भत्तो हुत्था' (ती ५१)। १० पुण्य, शुभ कर्म (आचा)। ११ वि हित-कारक सुख-कारक (जीव ३ उत्त ३)। °कडय न [°कटक] नगर-विशेष (ती)। °कारि वि [°कारिन्] सुखावह, मंगल-कारक (णाया १, ९६)।

कल्लाणि वि [कल्याणिन्] कल्याण-प्राप्त (राज)।

कल्लाणी स्त्री [कल्याणी] १ कल्याण करने-वाली स्त्री (गउड)। २ दो वर्ष की वछिया (उत्तर १०३)।

कल्लाल पु [कल्यपाल] कलाल, दारू बेचने-वाला (अणु, आव ६)।

कल्लि अ [कल्ये] कल दिन, कल को (गा ५०२)।

कल्लुग पु [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जीव विशेष, कीट की एक जाति (जीव १)।

कल्लुय पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)।

कल्लुरिया [दे] देखो कुल्लरिया (राज)।

कल्लेडय पुंन [दे] कलेवा, प्रातराश (ओघ ४६४ टी)।

कल्लोडय पुं [दे] दमनीय बैल, साँड (आचा २, ४ २)।

कल्लोडिआ [दे] देखो कल्होडी (नाट)।

कल्लोल पु [कल्लोल] तरग, ऊर्मि (औप, प्रासू १२७)।

कल्लोल वि [दे, कल्लोल] शत्रु दुश्मन (दे २, २)।

कल्लोलिणी स्त्री [कल्लोलिनी] नदी (कप्पू)।

कल्हार न [कह्लार] सफेद कमल (पण्ण १, दे २, ७६)।

कल्हि देखो कल्लि (गा ८०२)।

कल्होड पुं [दे] वत्सतर, वछड़ा (दे २, ९)।

कल्होडी स्त्री [दे] वत्सतरी, वछिया (दे २, ९)।

कव अक [कु] आवाज करना, शब्द करना। कवइ (हे ४, २३३)।

कवइय वि [कवचित] बख्तरवाला, वर्मित (पउम ७०, ७१, औप)।

कवय देखो कमय (पण्ह १, ३, महा गउड)।

कवग्ग पु [कवर्ग] 'क' से 'ङ' तक के पाँच अक्षर (धर्मवि १४)।

कवचिअ देखो कवइय (सिरि १३१६)।

कवचिया स्त्री [कवचिका] कलाचिका, प्रकोष्ठ (राज)।

कवट्टिअ वि [कदर्थित] पीडित, हैरान किया हुआ (हे १, २२४)।

कवड न [कपट] माया, छद्म, शाठ्य (पात्र, सुर ४, १६१)।

कवडि देखो कवड्डि, 'तो भणइ कवडिजक्खो अज्जवि त पुच्छसे एयं' (सुपा ५८१)।

कवड्ड पु [कपर्द] बडी कोडी, वराटिका (दे ११०, जी १५)।

कवड्डि पु [कपर्दिन्] १ यक्ष विशेष (सुपा ५१२)। २ महादेव, शिव (कुमा)।

कवड्डिया स्त्री [कपर्दिका] कोडी, वराटिका (सुपा १४, ५४५)।

कवण वि [किम्] कौन ? (पउम ७१, ८, कुमा)।

कवय पुन [कवच] वर्म, बख्तर (विपा १, २, पउम २८, ३१, पात्र)।

कवय न [दे] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र (दे २, ३)।

कवरी स्त्री [कवरी] केश पाश, धम्मिल्ल (कुमा, वेणी १८३)।

कवल सक [कवलय्] ग्रसना, हडप करना। कवलेइ (गउड)। कर्म कवलिज्जइ (गउड)। कवकृ कवलिज्जत (सुपा ७०)। सकृ कव-लिऊण (गउड)।

कवल पुं [कवल] कवल, ग्रास (पव ४, औप)।

कवलण न [कवलन] ग्रसन, भक्षण (काप्र १७०, सुपा ८७४)।

कवलिअ वि [कवलित] ग्रसित, भक्षित (पात्र, सुर २, १४६, सुपा १२१, ३१६)।

कवलिआ स्त्री [दे] ज्ञान का एक उपकरण (आप ८)।

कवल्ल पु [दे] लोहे का कटाह (सूत्र १, ५, १, १५)।

कवल्लि } स्त्री [दे] पात्र विशेष, गुड वगैरह
कवल्ली } पकाने का भाजन, कडाह, कराह, 'डज्झतेण य गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए' (सथा १२०, विपा १, ३)।

कवाल } पुन [कपाट] किवाड, किवाडी
कवाड } (गउड, औप, गा ६२०)।

कवाल न [कपाल] १ खोपडी, सिर की हड्डी, 'करकलिअकवालो' (सुपा १५२)। २ घट-कर्पर, भिक्षा-पात्र (आचा, हे १, २३१)।

कवास पु [दे] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा (दे २, ५)।

कवि देखो कइ = कपि (सुर १, २०६)।

कवि पुं [कवि] १ कविता करनेवाला (सुर १, १८, सुपा ५६२, प्रासू ६३)। २ शुक्र, ग्रह विशेष (सुपा ५६२)। °त्त न [°त्व] कविता, कवित्त (सुर १,४२)। देखो कइ = कवि।

कविअ न [कविक] लगाम (पाअ, सुपा २१३)।

कविंजल देखो कपिंजल (आचा २)।

कविकच्छु } देखो कइकच्छु (पण्ह २, ५,
कविगच्छु } श्रा १४, दे १,२९, जीव ३)।

कविट्ठ देखो कइत्थ (पण्ण १, दे ३, ४५)।

कविड न [दे] घर का पिछला आँगन (दे २, ६)।

कवित्थ देखो कइत्थ (उप ३०३१ टी)।

कवियच्छु देखो कइकच्छु (स २३६)।

कविल पु [दे] श्वान, कुत्ता (दे २,६, पाअ)।

कविल पु [कपिल] १ वर्ण-विशेष, भूरा रग, तामडा वर्ण (उवा २)। २ पक्षि-विशेष (पण्ह १, ४)। ३ साख्य मत का प्रवर्त्तक मुनि-विशेष (आवम, औप)। ४ एक ब्राह्मण महर्षि (उत्त ८)। ५ इस नामका एक वासुदेव (णाया १, १६)। ६ राहु का पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ७ वि भूरा रग का, मटमैला रग का (पउम ६,७०, से ७,२२)। °ा स्त्री [°ा] एक ब्राह्मणी का नाम (आचू)।

कविलडोला स्त्री [दे कपिलडोला] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती मे 'खडमाकडी' कहते हैं (जी १८)।

कविलास देखो कइलास, 'तेमुवि हवेज कविलाममेरुगिरिसनिभा कूडा' (उव)।

कविलिअ वि [कपिलित] कपिल रगवाला किया हुआ, भूरे रग से रगित (गउड)।

कविल्लुय न [दे] पात्र-विशेष, कडाही (बृह ५)।

कविस पुं [कपिश] १ वर्ण-विशेष, काला-पीला रग, बादामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण। २ वि कपिश वर्णवाला (पाअ, गउड)।

कविस न [दे] दारू, मद्य, मदिरा (दे २,२)।

कविसा स्त्री [दे] अर्धजङ्घा, एक प्रकार का जूता (दे २, ५)।

कविसायण पुन [कपिशायन] मद्य विशेष, गुड का दारू (पण्ण १७—पत्र ५३२)।

कविसीसग } पुन [कपिशीर्षक] प्राकार
कविसीसय } का अग्र-भाग (औप, णाया १, १, राय)।

कविहसिय पुन [कपिहसित] आकाश मे अकस्मात् होनेवाली भयकर आवाज करती ज्वाला (अणु १२०)।

कवेल्लुय देखो कविल्लुअ (ठा ८—पत्र ४१७)।

कवोड देखो कवोय (पिंड २१७)।

कवोय पु [कपोत] १ कबूतर पारावत परेवा (गउड, विपा १, ७)। २ म्लेच्छ देश-विशेष (पउम २७, ७)। ३ न कूष्माण्ड, कोहडा (भग १५)।

कवोल पु [कपोल] गाल, गण्ड (सुर ३, १२०, हे ४, ३९५)।

कवोसण (मा) वि [कदुष्ण] थोडा गरम (प्राकृ १)।

कव्व न [काव्य] १ कविता, कवित्व (ठा ४, ४, प्रासू १)। २ पु ग्रह-विशेष, शुक्र (सुर ३, ५३)। ३ वि वर्णनीय, श्लाघनीय (हे २, ७९)। °इत्त वि [°वत्] काव्यवाला (हे २, १५९)।

कव्व न [क्रव्य] मास (सुर ३, ५३)।

कव्वट्ठ पु [दे] बालक, बच्चा (गच्छ ३,१६)।

कव्वड देखो कव्वड (भवि)।

कव्वा स्त्री [क्रव्या] माया (सूत्र० चू० पत्र १७५ सूत्र गा० ३४५ अध्या० ९ गा० १)।

कव्वाड पु [दे] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ (दे २, १०)।

कव्वाडिअ वि [दे] कॉवर उठानेवाला, बहँगी से माल ढोनेवाला (कुप्र १२१)।

कव्वाय पु [क्रव्याद] १ राक्षस, पिशाच (पउम ७, १०, दे २, १५, स २१३)। २ वि कच्चा मास खानेवाला (पउम २२, ३५)। ३ मास खानेवाला (पाअ)।

कव्वाल न [दे] १ कर्म-स्थान, कार्यालय। २ गृह, घर (दे २, ५२)।

कस सक [कष्] १ ठार मारना। २ कसना, घिसना। ३ मलिन करना। कसति (पण्ण १३)। कवकृ कसिज्जमाण (सुपा ६१५)।

कस पु [कश] चर्म-यष्टि, चाबुक (पण्ह १, ३, णाया १, २, स २८७)।

कस पु [कष] १ कसौटी, कष-क्रिया, 'तावच्छेयकसेहिं सुद्ध पासइ सुवन्नसुप्पन्न' (सुपा ३८६)। २ कसौटी का पत्थर (पाअ)। ३ वि. हिंसक, मार डालनेवाला, ठार मारनेवाला (ठा ४, १)। ४ पुन. ससार, भव, जगत् (उत्त ४)। ५ न कर्म, कर्म-पुद्गल, 'कम्म कस भवो वा कस' (विसे १२२८)। °पट्ट, °वट्ट पुं [°पट्ट] कसौटी का पत्थर (अणु, गा ६२६, सुर २, २४)। °ाहि पुंस्त्री [°ाहि] सर्प की एक जाति (पण्ण १)।

कसई स्त्री [दे] फल विशेष, अरण्यचारी वनस्पति का फल (दे २, ६)।

कसट (पै) देखो कट्ठ = कष्ट (हे ४, ३१०, प्राप्र)।

कसट्ट पुं [दे] कतवार, कूडा (ओघ ५५७)।

कसण पु [कृष्ण] १ वर्ण विशेष। २ वि. कृष्ण वर्णवाला, काला, श्याम (हे २, ७५, ११०, कुमा)। °पक्ख पुं [°पक्ष] कृष्ण-पक्ष, वदी पखवारा (पाअ)। °सार पु [°सार] १ वृक्ष-विशेष। २ हरिण की एक जाति (नाट—मृच्छ ३)।

कसण वि [कृत्स्न] सकल, सब, सम्पूर्ण (हे १, ७५)।

कसणसिअ पु [दे] बलभद्र, वासुदेव का बडा भाई (दे २, २३)।

कसणिअ वि [कृष्णित] काला किया हुआ (पाअ)।

कसमीर देखो कम्हीर (पउम ९८ ६५)।

कसर पु [दे] अधम बैल (दे २, ४, गा ७९५), 'नणु सीलभरुव्वहणे, तेवि हु सीयति का (? क) सरुव्व' (पुप्फ ६३)।

कसर पुन [दे कसर] रोग-विशेष, कण्डू-विशेष, 'कच्छुल्ल (? क) सराभिभूआ खरतिक्खणक्खक्खइअविकयतणू' (ज २—पत्र १६५)।

कसरक्क पुन [दे कसरक्क] १ चर्वण-शब्द, खाते समय जो शब्द होता है वह 'सज्जइ न उ कसरक्केहिं' (हे ४, ४२३, कुमा)। २ कुड्मल, फूल की कली, 'ते गिरिसिहरा ते पीलुपल्लवा ते करीरकसरक्का। लब्भति करह! मरुविलसियाइ कत्तो वणेत्थम्मि' (वज्जा ४६)।

कसव्व न [दे] बाष्प, भाफ। २ वि स्तोक, अल्प। ३ प्रचुर, व्याप्त (दे २, ५३)। ४ आर्द्र, गीला, 'रहिरकसव्वालवियदीहरवणकोलवब्भनिउरव' (स ४३७, दे २, ५३)। ५ कर्कश, परुष, 'बूढोअयक्खरक्खुरणकलुमपालासफलकसव्वाओ' (गउड)।

कसा स्त्री [कशा, कषा] चर्म-यष्टि, चाबुक, कोड़ा (विपा १, ६; सुपा ३४५)।

कसा देखो कासा (पड्)।

कसाइ वि [कषायिन्] १ कषाय रंगवाला। २ क्रोध-मान-माया-लोभवाला (पएण १८; आचा)।

कसाइअ वि [कषायित] ऊपर देखो (गा ८८२; श्रा ३५; आचा)।

कसाय सक [कशाय] ताडन करना, मारना। संकृ. कसाइत्ता (आचा)।

कसाय पुं [कषाय] १ क्रोध, मान, माया और लोभ (विसे १२२६; द ३)। २ रस-विशेष, कषैला (ठा १)। ३ वर्ण-विशेष, लाल पीला रंग (उवा २२)। ४ क्वाथ, काढा। ५ वि कषैला स्वादवाला। ६ कषाय रंगवाला। ७ सुगन्धी, खुशबूदार (हे २, १६०)।

कसार [दे] देखो कसार (भवि)।

कसि वि [कषिन्] मारनेवाला, विनाशक, 'चत्तारि एए कसिणो कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स' (दस ८, ३९)।

कसिअ न [कशिका] प्रतोद, चाबुक, 'अचो मग्ग-सदवदाए कसिअं आदत्तं' (प्रयो १०८)।

कसिआ स्त्री ऊपर देखो (सुर १३, १७०)।

कसिआ स्त्री [दे] फल-विशेष, अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल (दे २, ६)।

कसिट्ट (पै) देखो कट्ठ = कष्ट (पड्)।

कसिण देखो कसण = कृष्ण, कृत्स्न (हे २, ७५; कुमा; पाअ; दे ४, १२)।

कसुमीरा स्त्री [कश्मीर] एक उत्तर भारतीय देश (प्राकृ २८, ३३)।

कसेरु } पुन [कशेरु, °क] जलीय कन्द-विशेष (गउड; पएण १)।
कसेरुग }

कसेरुगपुन [कसेरुक] जलमें होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १८; आचा २, १, ८, ५)।

कसोलि स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, 'महाहिं कसोलि भोया रज्जमवेलिं' (सुज्ज १०, १७)।

कस्स पुं [दे] पङ्क, कर्दम, कादो (दे २, २)।

कस्सय न [दे] प्राभृत, उपहार, भेट (दे २, १२)।

कस्सव पुं [काश्यप] १ वंश-विशेष, 'कस्सव-वंसुत्तमो' (विक्र ६५)। २ ऋषि-विशेष (अभि २६)।

कह सक [कथय्] कहना, बोलना। कहइ (हे ४,२)। कर्म कहीअइ, कहिज्जइ (हे १, १८७; ४, २४९)। वकृ. कहंत, कहित, कहेमाण (रयण ७२; सुर ११, १४८)। कवकृ. कहिज्जंत, कहिज्जंत, कहिज्जमाण (राज; सुर १, ४४; गा १६८; सुर १४, ६४)। संकृ. कहिउं, कहिऊण (महा; काल)। कृ. कहणिज्ज, कहियव्व, कहेयव्व, कहणीय (सूअ १, १, १; सुर ४, १६२; सुपा ३१६; पएह २, ४; सुर १२, १७०)।

कह सक [क्वथ्] क्वाथ करना, उबालना। कहइ (पड्)।

कह पुं [कफ] कफ, शरीरस्थ धातु-विशेष, बलगम (कुमा)।

कह देखो कहं (हे १, २९; कुमा; पड्)। °कहवि देखो कह-कहपि (गउड; उप ७२८ टी)। °वि देखो कह-पि (प्राकृ ११४; १४१)।

कहअ अ [कथंवा] वितर्क और आश्चर्य अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (से ७, ३८)।

कहं अ [कथम्] १ कैसे, किस तरह? (स्वप्न ४५; कुमा)। २ क्यों, किस लिए? (हे १, २९; पड्; महा)। °कहपि अ [°कथमपि] किसी तरह (गा १८९)। °कहा स्त्री [°कथा] राग-द्वेष को उत्पन्न करनेवाली कथा, विकथा (आचा)। °चि, °ची अ [°चिन्] किसी तरह, किसी प्रकार से (श्रा १२; उप ५३० टी)। °पि अ [°अपि] किसी तरह (गउड)।

कहकह पुं [कहकह] प्रमोद-कलकल, खुशी का शोर (ठा ३, १—पत्र ११६; कप्प)।

कहकह अक [कहकहाय्] खुशी का शोर मचाना। वकृ. कहकहिंत (पएह १, २)।

कहकहकह पुं [कहकहकह] खुशी का शोर (भग)।

कहकह पुं [कथकथा] बातचीत (आचा २, १५, ७)।

कहग वि [कथक] १ कहनेवाला, (सट्ठि २८)। २ पुं कथाकार (उप १०३१ टी)।

कहण न [कथन] कथन, उक्ति (धर्म १)।

कहणा स्त्री [कथना] ऊपर देखो (श्रत २, उप ८९७, ६९८)।

कहय देखो कहग (दे १, १४५)।

कहल्ल पुन [दे] कपर, खप्पर (श्रत १२)।

कहा स्त्री [कथा] कथा, वार्त्ता, हकीकत (सुर २, २५०; कुमा; स्वप्न ८३)।

कहाणग } न [कथानक] १ कथा वार्त्ता (श्रा १२; उप पृ ११६)। २ प्रसंग, प्रस्ताव, 'कय मे नाम जालिणीति कहाणयविसेसेण' (स १, ३, ५८८)। ३ प्रयोजन, कार्य, 'कहाणयविसेसेण समागओ पाडलावहं' (स ५८५)।
कहाणय }

कहाव सक [कथय्] कहलाना, बुलवाना। कहावेइ (महा)।

कहावण पुं [कार्षापण] सिक्का-विशेष (हे २, ७१, ९३; कुमा)।

कहाविअ वि [कथित] कहलाया हुआ (सुपा ६५, ४५७)।

कहि } अ [क्व, कुत्र] कहां, किस स्थान में? (उवा; भग; नाट; कुमा; उत्त)।
कहिआ }
कहिं }

कहित्तु वि [कथयितृ] कहनेवाला, भाषक (सम १५)।

कहिय वि [कथित] कथित, उक्त (उव; नाट)।

कहिया स्त्री [कथिका] कथा, कहानी (उप १०३१ टी)।

कहु (अप) अ [कुतः] कहां से? (पड्)।

कहेड वि [दे] तरुण, जवान (दे २, १३)।

कहेत्तु देखो कहित्तु (ठा ४, २)।

काअंची } स्त्री [काकचिञ्ची] गुञ्जा, घुंघची (प्राकृ ३०)।
काअंची }

काइअ वि [कायिक] शारीरिक, शरीर-सबन्धी (श्रा ३८; प्रासा)।

काइआ } स्त्री [कायिकी] १ शरीर-सबन्धी क्रिया, शरीर से निर्वृत्त व्यापार (ठा २,१; नम १०, नव १७) २ शौच-क्रिया (स ६८९)। ३ मूत्र, पेशाब (ओघ २१९ उप पृ २७८)।
काइगा }

काइंदी स्त्री [काकन्दी] इस नाम की एक नगरी, बिहार की एक नगरी (सथा ७८)।

काइणी स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती (दे २, २१)।

काई स्त्री [काकी] कौए की मादा (विपा १, ३)।
काउ स्त्री [कापोती] लेश्या-विशेष आत्मा का एक प्रकार का परिणाम (भग, आचा)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] आत्म-परिणाम विशेष (सम ठा ३, १)। °लेस्स वि [°लेश्य] कापोत लेश्यावाला (पराण १७ भग)। °लेस्सा देखो °लेसा (परण १७)।
काउं देखो कर = कृ।
काउंबर पु [काकोदुम्बर] नीचे देखो (राज)।
काउंबरी स्त्री [काकोदुम्बरी] ओषधि-विशेष, 'निववउंबउंबरकाउंबरिबोरि—' (उप १०३१ टी पराण १)।
काउकाम वि [कर्त्तुकाम] करने को चाहनेवाला (ओघ ५३७)।
काउड्डावण न [कायोड्डावन] उचाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना (णाया १, १४)।
काउदर पु [काकोदर] साँप की एक जाति (पराह १, १)।
काउमण वि [कर्त्तुमनस्] करने की चाहवाला (उव, उप पृ ७०, स ९०)।
काउरिस पु [कापुरुष] १ खराब आदमी, नीच पुरुष। २ कातर, डरपोक पुरुष (गउड, सुर ८, १५०, सुपा १६२)।
काउल्ल पु [दे] बक, बगुला (दे २, ६)।
काउसग्ग } पु [कायोत्सर्ग] १ शरीर पर
काउस्सग्ग } के ममत्व का त्याग (उत्त २६)। २ कायिक-क्रिया का त्याग। ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता (पडि)।
काऊ देखो काउ (ठा १, कम्म ४, १३)।
काऊणं } देखो कर = कृ।
काऊण }
काओदर देखो काउदर (स्वप्न ६८)।
काओली स्त्री [काकोली] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष (परण १)।
काओवग पु [कायोपग] संसारी आत्मा (सूअ २, ६)।
काओसग्ग देखो काउसग्ग (भवि)।
काक पु [काक] १ कौआ, वायस (अनु ३)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °जघा स्त्री [°जङ्घा] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घुघची (अनु ३)। देखो काग, काय = काक।
काकंदग पु [काकन्दक] एक जैन महर्षि (कप्प)।
काकंदिय पु [काकन्दिक] एक जैन महर्षि (कप्प)।
काकंदिया स्त्री [काकन्दिका] जैन मुनिगरण की एक शाखा (कप्प)।
काकंदी देखो कागंदी (णाया १, ६, ठा ५, १)।
काकणि देखो कागणि (विण १, २)।
काकलि देखो कागलि (ठा १०—पत्र ४७१)।
काग देखो काक (दे १, १०६, प्रासू ६०)। °तालसंजीवगनाय पु [°तालसंजीवकन्याय] काकतालीयन्याय (उप १४२ टी)। °तालिज्ज, °तालीअ न [°तालीय] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित सम्भव, अकस्मात् किसी कार्य का होना (आचा, दे ५, १५)। °थल न [°स्थल] देश-विशेष (दे २, २७)। °पाल पु [°पाल] कुष्ठ-विशेष (राज)। °पिंडी स्त्री [°पिण्डी] अग्र-पिराड (आचा २, १, ६)। देखो काय = काक।
कागंदी देखो काकंदी (अनु २)।
कागणि स्त्री [दे] १ राज्य, 'असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागणि' (विसे ८६२)। २ मांस का छोटा टुकड़ा (ओघ)।
कागणी देखो कागिणी (श्रा २७, ठा ७)।
कागणी स्त्री [काकिणी] सवा गुँजा का एक बाट (अणु १५५)।
कागल पु [काकल] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश (अनु)।
कागलि } स्त्री [काकलि, °ली] १ सूक्ष्म
कागली } गीत-ध्वनि, स्वर-विशेष (सुपा ५६, उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी (पव २७)।
कागिणी स्त्री [काकिणी] १ कौडी, कपर्दिका (उर ७, ३, उव, श्रा २८ टी)। २ बीस कौडी के मूल्य का एक सिक्का (उप ५४५)। ३ रत्न विशेष (सम २७, उप ९८६ टी)।
कागी स्त्री [काकी] १ कौए की मादा (वा २ विद्या-विशेष (विसे २४५३)।
काकोणंद पुं [काकोनन्द] इस नाम की एक म्लेच्छ जाति, 'मिच्छा कागोणंदा विक्खाया महियलम्मि ते सूरा' (पउम ३४, ४१)।
काठिण्ण न [काठिन्य] कठिनता (धर्मसं ५१, ५४)।
काढ पुं [क्वाथ] काढा (कुलक ११)।
काण वि [काण] काना, एकाक्ष (सुपा ६४३)।
काण वि [दे] १ सच्छिद्र, काना (आचा २, १, ८)। २ चुराया हुआ। °क्कय पु [°क्रय] चुराई हुई चीज को खरीदना (सुपा ३४३, ३४४)।
काणच्छि } स्त्री [दे] टेढ़ी नजर से देखना,
काणच्छिया } कटाक्ष (दे २, २४, भवि), 'काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ' (आवम)।
काणण न [कानन] १ वन, जंगल (पाअ)। २ बगीचा, उपवन (अनु, ओप)।
काणत्थेव पु [दे] विरल जल-वृष्टि, बूँद-बूँद बरसना (दे २, २६)।
काणद्धी स्त्री [दे] परिहास (दे २, २८)।
काणिका स्त्री [दे] बड़ी ईंट (बृह ३)।
काणिट्ठा स्त्री [काणेष्टा] लोहे की ईंट (वव ४)।
काणिआर देखो कणिआर (सक्षि १७)।
काणिय न [काण्य] आँख का रोग, 'काणियं झिम्मिअं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा' (आचा)।
काणीण पु [कानीन] कुँवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र (भवि)।
कादंब देखो कायंब (पराह १, १)।
कादंबरी देखो कायंबरी (अभि १८८)।
कादूसण वि [कदूषण] आत्मा को दूषित करनेवाला। स्त्री. °णिया (भग ६, ५—पत्र २६८)।
कापुरिस देखो काउरिस (णाया १, १)।
काम पु [काम] रोग, बीमारी (दसनि २, १५)। °एव देखो कामदेव (कुप ४११)। °ग्घ न [°घ्न] आयंबिल तप (संबोध ५८)। °डहण पुं [°दहन] महादेव, शिव (वज्जा ९८)। °रुय देखो कामरूअ (धर्मवि ५६)।
काम सक [कामय्] चाहना, वाञ्छना। कामेइ (पि ४६१)। कामेंति (गउड)। वकृ. कामेंत कामअमाण (गा २५६, अभि ११)।

काम पुं [काम] १ इच्छा, वासना, अभिलाषा (उत्त १४; आचा; प्रासू ६६)। २ सुन्दर शब्द, रूप वगैरह विषय (भग ७, ७; ठा ४, ४)। ३ विषय का अभिलाष (कुमा)। ४ मदन, कन्दर्प (कुमा; प्रासू १)। ५ इन्द्रिय-प्रीति (धर्म १)। ६ मैथुन (पण्ह २)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। °कंत न [°कान्त] देव-विमान विशेष (जीव ३)। °कम न [°काम] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यान-विमान (ठा १०—पत्र ४३८)। °काम वि [°काम] विषय की चाहवाला (पण्ह २)। °कामि वि [°कामिन्] विषयाभिलाषी (आचा)। °कूड न [°कूट] देव विमान-विशेष (जीव ३)। °गम वि [°गम] १ स्वेच्छाचारी, स्वैरी (जीव ३)। २ न देवविमान (जीव ३)। °गामि स्त्री [°गामी] विद्या विशेष (पउम ७, १३५)। °गुण न [°गुण] १ मैथुन (पण्ह १, ४)। २ शब्द-प्रमुख विषय (उत्त १४)। °घड पुं [°घट] इप्सित चीज को देनेवाला दिव्य कलश (श्रा १४)। °जल न [°जल] स्नान-पीठ, जिसपर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट, 'सिणाणपीढं तु कामजलं' (निचू १३)। °जुग पुं [°युग] पक्षि-विशेष (जीव ३)। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (जीव ३)। °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इस नाम की एक वेश्या (विपा १, २)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] विषयाभिलाषी (णाया १,१)। °ड्ढिय पुं [°र्द्धिक] १ जैन साधुओं का एक गण (ठा ९—पत्र ४५१)। २ न जैन मुनियों का एक कुल (राज)। °णयर न [°नगर] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °दाइणी स्त्री [°दायिनी] ईप्सित फल को देनेवाली विद्या विशेष (पउम ७, १३५)। °दुहा स्त्री [°दुघा] कामधेनु (श्रा १६)। °देअ, °देव पुं [°देव] १ अनंग, कन्दर्प (नाट; स्वप्न ५५)। २ एक जैन श्रावक का नाम (उवा)। °धेणु स्त्री [°धेनु] ईप्सित फल देनेवाली गौ (काल)। °पाल पुं [°पाल] १ देव-विशेष (दीव)। २ बलदेव, हलायुध (पाअ)। °पिपासय वि [°पिपासक] विषयाभिलाषी (भग)। °पुर न [°पुर] इस नाम का एक विद्याधर नगर (इक)। °प्पभ न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (जीव ३)। °फास पुं [°स्पर्श] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (सुज २०)। °महावण न [°महावन] बनारस के समीप का एक चैत्य (भग १५)। °रूअ पुं [°रूप] देश-विशेष जो आसाम में है (पिंग)। °लेस्स न [°लेश्य] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (जीव ३)। °सत्थ न [°शास्त्र] रति शास्त्र (धर्म २)। °समणुण्ण वि [°समनोज्ञ] कामासक्त, कामान्ध (आचा)। °सिंगार न [°शृङ्गार] देव-विमान विशेष (जीव ३)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव विमान-विशेष (जीव ३)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °वसाइत्त स्त्री [°वशायिता] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सर्व पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करता है (राज)। °ासंसा स्त्री [°ाशंसा] विषयाभिलाष (ठा ४, ४)।

काम अ [कामम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण (सूअ २, १)। २ अनुमति, सम्मति (निचू १६)। ३ अभ्युपगम, स्वीकार (सूअ २, ६)। ४ अतिशय, अतिशय (हे २, २१७)।

कामंग न [कामाङ्ग] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरह (सूअ २, २)।

कामंदुहा स्त्री [कामदुघा] कामधेनु, ईप्सित वस्तु को देनेवाली दिव्य गौ (पउम ८२, १४)।

कामंध पुं [कामान्ध] विषयातुर, तीव्र कामी (प्रासू १७६)।

कामकिसोर पुं [दे] गर्दभ, गधा (दे २, ३०)।

कामग वि [कामक] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय (पण्ह १, १)। २ चाहनेवाला, इच्छुक (सूअ १, २, २)।

कामण न [कामन] चाह, अभिलाष, 'परद-व्विकामणेणं जीवा नरयम्मि वच्चंति' (महा)।

कामय देखो कामग (उवा)।

कामि वि [कामिन्] विषयाभिलाषी (आचा, गउड)।

कामि वि [कामिन्] अभिलाषी (कुप्र १५४)।

कामिअ वि [कामित] वाञ्छित, अभिलषित (सुपा २५५)।

कामिअ वि [कामिक] १ काम सम्बन्धी, विषय-सम्बन्धी (भत्त १११)। २ न तीर्थ-विशेष (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें ईप्सित जन्म मिलता है (राज)। ४ वि इच्छा पूर्ण करनेवाला (स ३६०) ५ वि इच्छुक, इच्छावाला, साभिलाष (विपा १, १)।

कामिआ स्त्री [कामिका] इच्छा, अभिलाषा, 'अकामिआए चिणंति दुक्खं' (पण्ह १ ३)।

कामिजुल पुं [कामिञ्जुल] पक्षि विशेष (दे ७, २६)।

कामिड्ढि पुं [कामर्द्धि] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्तिसूरि का एक शिष्य (कप्प)।

कामिड्ढिय न [कामर्द्धिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)।

कामिणी स्त्री [कामिनी] कान्ता, स्त्री (सुपा ५)।

कामिय वि [कामित] यथेष्ट, जितना चाहे उतना (पिंड २७२)।

कामुअ } वि [कामुक] कामी, विषयाभिलाषी
कामुग } (से २५, महा)। °सत्थ न [°शास्त्र] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र (उप ५३० टी)।

कामुत्तरवडिंसग न [कामोत्तरावतंसक] देवविमान-विशेष (जीव ३)।

काय पुं [काच] १ वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १६)। २ एक महाग्रह (सुज २०)। ३ पुन जीव-निकाय, जीव-समूह, 'एयाइं कायाइं पवेदिताइं' (सूअ १, ७, २)। °मंत वि [°वत्] बड़ा शरीरवाला (सूअ २, १, १३)। °वह पुं [°वध] जीव-हिंसा, (श्रावक ३४६)।

काय पुं [काय] १ शरीर, देह (ठा ३ १, कुमा)। २ समूह, राशि (विसे ९००)। ३ देश-विशेष (पण्ह १, १)। ४ वि उस देश में रहनेवाला (पराग १)। °गुत्त वि [°गुप्त] शरीर को वश में रखनेवाला (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] शरीर को वश में रखना, जितेंद्रियता (भग)। °जोअ, °जोग पुं [°योग] शरीर व्यापार, शारीरिक क्रिया (भग)। °जोगि वि [°योगिन्] शरीर जन्य

क्रियावाला (भग)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर रहना (ठा २, ३)। °णिरोह पु [°निरोध] शरीर-व्यापार का परित्याग (आव ४)। °तिगिच्छा स्त्री [°चिकित्सा] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (विपा १,८)। °भवत्थ वि [°भवस्थ] माता के उदर में स्थित (भग)। °वंझ पु [°वन्ध्य] ग्रह-विशेष (राज)। °समिअ वि [°समित] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति करनेवाला (भग)। °समिइ स्त्री [°समिति] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति (ठा ८)।

काय पु [काक] १ कौआ वायस (उप पृ २३, हका १६८, वा २६)। २ वनस्पति-विशेष काला उम्बर (पण्ण १—पत्र ३५)। देखो काअ, काग।

काय पु [काच] काँच शीशा (महा, आचा)।

काय पु [दे] १ कावर, वहगी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमा एक वस्तु, इसमें दोनो ओर सिकहर लटकाये जाते है (णाया १, ८ टी—पत्र १५२)। °कोडिय पु [°कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला (णाया १, ८ टी)। देखो काव।

काय पु [दे] १ लक्ष्य, वेध्य, निशाना। २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दी जाय वह (दे २, २६)।

कायंचुल पु [दे] कामिञ्जुल, जल-पक्षी-विशेष (दे २, २९)।

कायंदी स्त्री [दे] परिहास, उपहास (दे २, २८)।

कायंदी देखो काइंदी (स ६)।

कायंबुअ पु [दे] कामिञ्जुल जल-पक्षी विशेष (दे २, २९)।

कायंब । पु [कादम्ब, °क] १ हंस पक्षी
कायंबग । (पात्र, कप्प)। २ गन्धर्व-विशेष। ३ कदम्ब वृक्ष (राज)। ४ वि कदम्ब-वृक्ष-सम्बन्धी 'कायंबपुप्फगोलयमसूरअइमुत्तयस्स पुप्फ व' (पुप्फ २६८)।

कायंबर न [कादम्बर] मद्य-विशेष, गुड का दारू, 'कायंबरपमत्ता' (पउम १०२, १२२)।

कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] एक गुहा का नाम (कुप्र ६३)।

कायंवरी स्त्री [कादम्बरी] १ मदिरा, दारू (पात्र, पउम ११८, १०)। २ अटवी-विशेष (स ५५१)।

कायंक न [दे कायक] हरा रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र (आचा २ ५, १)।

कायत्थ पु [कायस्थ] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करनेवाली मनुष्य-जाति (मुद्रा ७९, मृच्छ ११७)।

कायपिउच्छा } स्त्री [दे] कोकिला, कोयल,
कायपिउला } पिकी (दे २, ३०, षड्)।

कायर वि [कातर] अधीर, डरपोक (णाया १, १ प्रासू ७८)।

कायर वि [दे] प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८)।

कायरिय वि [कातर] १ डरपोक, भयभीत, अधीर, 'धीरणवि मरियव्वं कायरिएणावि अवस्समरियव्वं' (प्रासू १०९)। २ पु गोशालक का एक भक्त (भग ८, ५)।

कायरिया स्त्री [कातरिका] माया, कपट (सूअ १, २, १)।

कायल पु [दे] १ काक, कौआ (दे २, ५८, पात्र)। २ वि प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८)।

कायलि देखो कागलि (नाट—मृच्छ ९२)।

कायवंझ [कायवन्ध्य] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (राज)।

कायव्व देखो कर = कृ।

कायह वि [कायह] देश-विदेश मे बना हुआ (वस्त्र), (आचा २, ५, १, ७)।

काया स्त्री [काया] शरीर, देह (प्रासू ११२)।

कार सक [कारय्] करवाना, बनवाना। कारेइ, कारेह (पि ४७२, सुपा ११३)। भूका कारेत्था (पि ५१७)। वकृ कारयंत (सुर १६, १०), कारेमाण (कप्प)। कवकृ कारिज्जंत (सुपा ५७)। संकृ कारिऊण (पि ५८४)। कृ कारेयव्व (पचा ६)।

कार वि [दे] कटु, कडवा, तीता (दे २ २६)।

कार पुन देखो कारा = कारा (स ६११, णाया १ १)।

कार पु [कार] १ क्रिया कृति, व्यापार (ठा १०)। २ रूप, आकृति। ३ सव का मध्य भाग (वव ३)।

°कार वि [°कार] करनेवाला (पउम १७, ७)।

कारंकड वि [दे] परुष कठिन (दे २, ३०)।

कारंड | पु [कारण्ड, °क] पक्षि-विशेष, 'हंस-
कारंडग | कारंडवचक्कवाओवसोभिय' (भवि
कारंडव | औप, स ६०१ णाया १, १, पण्ह १, १ विक्र ४१)।

कारग त्रि [कारक] १ करनेवाला (पउम ८२, ८९, उप पृ २१५)। २ करानेवाला (श्रा ६, विसे)। ३ न. कर्ता, कर्म वगैरह व्याकरण प्रसिद्ध कारक (विसे ३०८४)। ४ कारण, हेतु, 'कारण ति वा कारग ति वा साहारण ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ५ उदाहरण, दृष्टान्त (ओघ १९ भा)। ६ पुन सम्यक्त्व विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया, 'जं जह भणियं तुमए तं तह करणम्मि कारगो होइ' (सम्य १४)।

कारण न [कारण] १ हेतु निमित्त (विसे २०९८, स्वप्न १७)। २ प्रयोजन (आचा)। ३ अपवाद (कप्प)।

कारणिज्ज वि [कारणीय] प्रयोजनीय (स ३२९)।

कारणिय वि [कारणिक] १ प्रयोजन से किया जाता (उवर १०८)। २ कारण से प्रवृत्त (वव २)। ३ पु न्याय-कर्ता, न्यायाधीश (सुपा ११८)।

कारय देखो कारग (श्रा १६, विसे ३४२०)।

कारव सक [कारय्] करवाना, बनवाना। कारवेइ (उव)। वकृ कारवित (सुपा ६३२, पुप्फ ४७)। संकृ कारवित्ता (कप्प)।

कारवण न [कारण] निर्मापन, बनवाना (राज)।

कारवस पु [कारवश] देश-विशेष (भवि)।

कारवाहिय वि [कारबाधित] देखो करेवाहिय (औप)।

कारविय वि [कारित] कराया हुआ (सुर १, २२९)।

कारह वि [कारभ] करभ सम्बन्धी (गउड)।

कारा स्त्री [कारा] कैदखाना (दे २, ९०, पात्र)। °गार पुन [°गार] कैदखाना, जेल (सुपा १२२, सार्ध ५२)। °घर न [°गृह] कैदखाना (अच्चु ८३)। °मंदिर न [°मन्दिर] कैदखाना, जेलखाना (कप्पू)।

कारा स्त्री [दे] लेखा, रेखा (दे २, २९)।

कारवणी स्त्री [दे] शाल्मलि-वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २, १८)।

कारव देखो कारय। कारवेइ (पि ५५२)। भवि कारविस्स (पि ५२८)।

कारवण देखो कारवण (पण्ह १, ३, उप ४०६)।

कारवय वि [कारक] करानेवाला विधायक (स ५५७)।

कारविय वि [कारित] करवाया हुआ, बनवाया हुआ (विसे १०१६, सुर ३, २४, स १६३)।

कारि वि [कारिन्] कर्ता, करनेवाला, 'एयस्स कारिणो बालिसत्तमारोविया जेण' (उव ५६७ टी), 'एयअणत्थस्स कारिणी अहयं' (सुर ८, ५६)।

कारिआ देखो कारिया (तदु ४०)।

कारिम वि [दे] कृत्रिम, बनावटी, नकली (दे २, २७, गा ४५७, पड्, उप ७२८ टी, स ११६, प्रासू २०)।

कारिय देखो कज्ज = कार्य (सूअ १, २, ३, १०, दस ६, ६५)।

कारिय वि [कारित] कराया हुआ, बनवाया हुआ (पण्ह २, ५)। कार्य (सूत्र गा १५१)।

कारियल्लई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, करेला का गाछ (पण्ण १—पत्र ३३)।

कारिया स्त्री [कारिका] करनेवाली, कर्त्री (उत्त)।

कारिल्ल देखो कारि (सबोध ३८)।

कारिल्ली स्त्री [दे] वल्ली विशेष, करेला का गाछ (सत्त ६१)।

करीस पु [करीष] गोइठा की अग्नि, कंडा की आग (उत्त १२)।

कारु पु [कारु] १ कारीगर, शिल्पी (पाअ, प्रासू ८०)। २ नव प्रकार के कारु चर्मकर आदि।

कारुइज्ज वि [कारुकीय] कारीगर से सम्बन्ध रखनेवाला (पण्ह १, २)।

कारुणिय वि [कारुणिक] दयालु, कृपालु (ठा ४, २, सण)।

कारुण्ण } न [कारुण्य] दया, करुणा, (महा
कारुन्न } उप ७२८ टी)।

कारेमाण } देखो कार = कारय्।
कारेयव्व }

कारेल्लय न [दे] करेला, तरकारी-विशेष (श्रनु ६)।

कारोडिय पु [कारोटिक] १ कापालिक, भिक्षुक विशेष। २ ताम्बूल वाहक, स्थगीधर (ओप)।

काल न [दे] तमिस्र, अन्धकार (दे २, २६ पड्)।

काल पु [काल] १ समय वक्त (जी ४६)। २ मृत्यु, मरण (विसे २०६७, प्रासू ११२)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग, अवसर (विसे २०६७)। ४ विलम्ब देरी (स्वप्न ६१)। ५ उमर, वय (स्वप्न ४२)। ६ ऋतु (स्वप्न ४२)। ७ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ८ ज्योतिः-शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १६)। ९ सातवीं नरक-पृथ्वी का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८)। १० नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। ११ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल कलशों का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १६ इस नाम का एक गृहपति (णाया २, १)। १७ अभाव (बृह ४)। १८ पिशाच देवों की एक जाति (पण्ण १)। १९ निधि-विशेष (ठा ६—पत्र ४४६)। २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण (पण्ण २)। २१ न देव-विमान-विशेष (सम ३५)। २२ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर १, १)। २३ काली देवी का सिंहासन (णाया २)। २४ वि कृष्ण, काला रंग का (सुर २, ५) °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] १ समय की अपेक्षा करनेवाला (आचा)। २ अवसर का ज्ञाता (उत्त ६)। °कप्प पु [°कल्प] १ समय सम्बन्धी शास्त्रीय विधान। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (पंचभा)। °काल पु [°काल] मृत्यु-समय (विसे २०६६)। °कूड न [°कूट] उत्कट विष-विशेष (सुपा २३८)। °क्खेव पुं [°क्षेप] विलम्ब, देरी (से १३, ४२)। °गय वि [°गत] मृत्यु-प्राप्त, मृत (णाया १, १, महा)। °चक्क न [°चक्र] १ बीस सागरोपम परिमित समय (णदि)। २ एक भयंकर शस्त्र, 'जाहे एवमवि न सक्कइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ' (आवम)। °चूला स्त्री [°चूडा] अधिक-मास वगैरह का अधिक समय (निचू १)। °ण्णु वि [°ज्ञ] अवसर का जानकार (उप १७६ टी, आचा)। °दट्ठ वि [°दष्ट] मौत से मरा हुआ (उप ७२८ टी)। °देव पु [°देव] देव-विशेष (दीव)। °धम्म पु [°धर्म] मृत्यु मरण (णाया १, १, विपा १, २)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु (पि २७६, सुपा १०९)। °परियाय पु [°पर्याय] मृत्यु-समय (आचा)। °परिहीण न [°परिहीन] विलम्ब, देरी (राय)। °पाल पु [°पाल] देव विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °पास पु [°पाश] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °पिट्ठ, °पुट्ठ पुन [°पृष्ठ] १ धनुष। २ कर्ण का धनुष। ३ काला हरिण। ४ क्रौञ्च पक्षी (पि ५३)। °पुरिस पु [°पुरुष] जो पुवेद कर्म का अनुभव करता हो वह (सूअ १, ४, १, २ टी)। °प्पभ पु [°प्रभ] इस नाम का एक पर्वत (ठा १०)। °फोडय पुस्त्री [°स्फोटक] प्राणहर फोड़ा। स्त्री °डिया (रंभा)। °मास पु [°मास] मृत्यु समय, 'कालमासे कालं किच्चा' (विपा १, १, २, भग ७, ९)। °मासिणी स्त्री [°मासिनी] गर्भिणी, गुर्विणी (दस ५, १)। °मिग पु [°मृग] कृष्ण मृग की एक जाति (ज २)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] प्रलय रात्रि, प्रलय-काल (गउड)। °वडिंसग न [°ावतंसक] देव-विमान-विशेष, काली देवी का विमान (णाया २)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत को कालकृत माननेवाला, समय को ही सब कुछ माननेवाला (णंदि)। °वासि पु [°वर्षिन्] अवसर पर बरसनेवाला मेघ (ठा ४, ३—पत्र २६०)। °सदीव पु [°सदीप] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर (आक)।

°समय पु [°समय] समय, वक्त (सुज्ज ८)। °समा स्त्री [°समा] समय-विशेष, नारक का समय (जो २)। °सार पुं [°सार] मृग की एक जाति, काला मृग, 'एसा वि वाननारो या देइ गनु पयाणिणव लत्तो' (गा २७)। °सोअरिय पु [°सौकरिक] स्वनाम-ख्यात एक कसाई (श्राक)। °गरु, °गुरु, °यरु न [°गुरु] सुगन्धि द्रव्य-विशेष जो धूप के काम में लाया जाता है (णाया १ १ टप्प, श्राप गउड)। °यस, °स न [°यस] लोहे की एक जाति (हे १, २६९; कुमा, प्राप्र में ८, ४९)। °सवेसियपुत्त पु [°स्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे (भग)।

कालंजर पु [कालञ्जर] १ देश-विशेष (पिंग)। २ पर्वत विशेष (श्रावम)। देखो कालिंजर।

कालक्खर सक [दे] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, 'तो तेण भणिया भज्जा, पिए। पुत्तो कालक्खरिज्जइ एसो, तो सा गेमेण भणइ दयभिमुह, मइ जीवंतीए इम न होइ ता जाउ दव्वपि, किं वज्जइ लच्छीए, पुत्त-निउणाए पिउणा पियमम। जयम्मि' (सुपा ३९९, ४००)।

कालक्खर पुन [कालाक्षर] १ अल्प-ज्ञान, अल्प-शिक्षा, २ वि अल्प-शिक्षित, 'मानक्ख-रद्दसिक्खिम्र पम्मिग्र रे निवीदनमरिच्छ' (गा ८०८)।

कालक्खरिअ वि [दे] १ उपालब्ध, निर्भर्त्सित। २ निर्वासित, 'तहवि न विरमइ दुलहो अणाहकुलडाए सगमे, तत्तो कालक्खरिश्रो पिउणा' (सुपा ३८८), 'तो पिउणा कानेण कालक्खरिश्रो' (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [कालाक्षरिक] देरी से अक्षर जाननेवाला, अशिक्षित, 'भो तुम्हाण मज्झे अट्ट एक्को कालक्खरिश्रो' (कप्पू)।

कालग } पु [कालक] १ प्रसिद्ध जैनाचार्य
कालय } (पुष्फ १०९, २४०)। २ भ्रमर, भारा (राज)। देखो काल (उवा, उप ६८६ टी)।

कालव वि [दे] धूर्त, ठग (दे २, २८)।

कालवट्ठ न [दे कालपृष्ठ] धनुष (दे २, २८)।

कालवेसिय पु [कालवैशिक] एक वेश्या-पुत्र (ती ७)।

काला स्त्री [काला] १ श्याम-वर्णवाली। २ तिरस्कार करनेवाली (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष (ती ७)।

कालाइक्कमय न [कालातिक्रमक] तप-विशेष, दिन के पूर्वार्ध तक आहार-त्याग (संबोध ५८)।

कालाकोण पुन [काललवण] काला नोन या नमक (दस ३, ८)।

कालि पु [कालिन्] विहार का एक पर्वत (ती १३)।

कालिअसूरि पु [कालिकसूरि] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन आचार्य (विचार ५२९)।

कालिआ स्त्री [दे] १ शरीर, देह। २ कालान्तर। ३ मेघ, बारिश (दे २, ५८)। ४ मेघ-समूह, बादल (पाश्र)।

कालिआ स्त्री [कालिका] १ देवी विशेष (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तूफानी पवन (उप ७२८ टी, णाया १ ९)।

कालिंग पु [कालिङ्ग] १ देश विशेष, 'पत्तो कालिंगदेसम्रो' (श्रा १२)। २ वि कलिङ्ग देश में उत्पन्न (पउम ९९, ५५)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ (पएण १)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] विद्या विशेष (सूत्र २, २, २७)।

कालिंजण न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड (दे २, २९)।

कालिंजणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे २, २९)।

कालिंजर पु [कालिञ्जर] १ देश-विशेष (पिंग)। २ पर्वत-विशेष (उत्त १३)। ३ न जंगल-विशेष (पउम ५८, ९)। ४ तीर्थ-स्थान-विशेष (ती ७)।

कालिंदी स्त्री [कालिन्दी] १ यमुना नदी (पाश्र)। २ एक इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (पउम १०२, १५९)।

कालिंब पु [दे] १ शरीर, देह। २ मेघ, बारिश दे २, ५८)।

कालिग देखो कालिय = कालिक (राज)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] संज्ञा-विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह (विसे ५०८)।

कालिज्ज न [कालेय] हृदय का गूढ मांस-विशेष (तंदु)।

कालिम पुस्त्री [कालिमन्] श्यामता, कृष्णता, दागीपन (सुर ३ ४४, श्रा १२)।

कालिय पु [कालिय] इस नाम का एक सर्प (सुपा १८१)।

कालिय वि [कालिक] १ काल में उत्पन्न काल-संबन्धी। २ अनिश्चित, अव्यवस्थित, 'हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया' (उत्त ५, कम्म १९)। ३ वह शास्त्र, जिसको अमुक समय में ही पढने की शास्त्रीय आज्ञा है (ठा २ १—पत्र ४९)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (णाया १, १७—पत्र २२८)। °पुत्त पु [°पुत्र] एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे (भग)। °सण्णि वि [°संज्ञिन्] कालिकी संज्ञावाला (विसे ५०९)। °सुय न [°श्रुत] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढ़ा जा सके (णंदि)। °णुओग पु [°नुयोग] देखो पूर्वोक्त अर्थ (भग)।

काली स्त्री [काली] १ विद्या-देवी-विशेष (संति ५)। २ चमरेन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १; णाया २, १)। ३ वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा (अनु ४)। ४ श्यामवर्ण वाली स्त्री, 'सामा गायइ महुर, काली गायइ खर च रुक्ख च' (ठा ७)। ५ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, १)। ६ चौथी जैन शासन-देवी (संति ९)। ७ पार्वती, गौरी (पाश्र)। ८ इस नाम का एक छंद (पिंग)।

कालुण न [कारुण्य] दया, करुणा। °वडिया स्त्री [°वृत्ति] भीख माँग कर आजीविका करना (विपा १, १)।

कालुणिअ देखो कारुणिय (सूत्र १, १, १)।

कालुणीय देखो कारुणिय (सूत्र १,३,२,६)।

कालुय पु [दे] मत्स्य की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

कालुसिय न [कालुष्य] कलुषता, मलिनता (गाउ)।

कालुस्स न [कालुष्य] कलुषपन (गा २)।

कालेज्ज न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ (दे २, २६)।

कालेय न [कालेय] १ काली देवी का अपत्य। २ सुगन्धि द्रव्य विशेष, कालचन्दन (स ७५)। ३ हृदय का मांस-खण्ड, कलेजा (सूअ १, ५, १, २मा)।

कालोद देखो कालोय (जीव ३)।

कालोदहि पु [कालोदधि] समुद्र-विशेष (पण्ह १, ५)।

कालोदाइ पु [कालोदायिन्] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान् (भग ७, १०)।

कालोय पु [कालोद] समुद्र विशेष जो धातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घिर कर स्थित है (सम ६८)।

काव } कावड } पु [दे] १ कावर, बहँगी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमा एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिक्हर लटकाये जाते हैं (जीव ३, पउम ७५, ५२)। °कोडिय पु [°कौटिक] कावर से भार ढोनेवाला (अणु)। देखो काय = (दे)।

कावडि } कावोडि } स्त्री [दे] कावर (कुप्र १२१, २८४, दस ८, १ टी)।

कावडिअ पु [दे] वैवधिक, कावर से भार ढोनेवाला (पउम ७५, ५२)।

कावय पु [कानञ्ज] एक महाग्रह, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (राज)।

कावलिअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे २, २८)।

कावलिअ वि [कावलिक] कवल प्रक्षेप रूप आहार (भा, सा १८१)।

कावालिअ पु [कापालिक] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य (सुपा १८४, ३६७, दे १, ३१ प्रती १७५)।

कावालिआ } कावालिणी } स्त्री [कापालिकी] कापालिक-व्रतवाली स्त्री (गा ४०८)।

काविट्ठ न [कापिष्ठ] देव-विमान-विशेष (सम २८, पउम २०, २३)।

काविल न [कापिल] १ सांख्य-दर्शन (सम्म १४१)। २ वि सांख्य मत का अनुयायी (औप)।

काविलिज्ज वि [कापिलीय] १ कपिल मुनि-सम्बन्धी। २ न कपिल मुनि के वृत्तान्तवाला एक अध्याय, 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन (सम ६४)।

काविसायण देखो कविसायण (जीव ३)।

कावी स्त्री [दे] नीलवर्णवाली, हरा रंग की चीज (दे २, २६)।

कावुरिस देखो कापुरिस (स ३७५)।

कावेअ न [कापेय] वानरपन, चञ्चलता (अच्चु ६२)।

कावोय वि [दे] कावर वहन करनेवाला (अणु ४६)।

कास देखो कड्ढ = कृष्। कासइ (षड्)।

कास अक [कास्] १ कहरना, रोग विशेष से खराब आवाज करना। २ खाँसना, खाँसी की आवाज करना। ३ खोखार करना। ४ छींक खाना। वकृ कासंत, कासमाण (पण्ह १, ३—पत्र ५४, आचा)। संकृ कासित्ता (जीव ३)।

कास पु [काश, °स] १ रोग विशेष, खाँसी (णाया १,१३)। २ तृण-विशेष, कास, कास-कुसुमव सन्ते सुणिण्फलं जम्म-जीविय नियय' (उप ७२८ टी) 'कासकुसुमव विहलं' (आप ५८)। ३ उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है, 'ता तस्स नियइ धूलिं ससहर-हरहासकासकासं' (सुपा ४२८, कुमा)। ४ ग्रह विशेष, ग्रह-देव-विशेष (ठा २, ३)। ५ रस (ठा ७)। ६ संसार, जगत् (आचा)।

कास देखो कंस = कांस्य (हे १,२९, षड्)।

कासकस वि [कासङ्कष] प्रमादी, संसार में आसक्त (आचा)।

कासग देखो कासय, 'जेण रोहंति बीजाई, जेण जीवंति कासगा' (निचू १)।

कासण न [कासन] खोंखारना, खाट्कार (ओघ २३५)।

कासमद्दग पु [कासमर्दक] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कासय } कासव } पु [कर्षक] हलवाह, किसान (दे १, ८७, पात्र),
'जह वा लुणाइ सस्साई,
कासवो परिणयाई छिन्नम्मि।
तह सूयाइ कयंतो, वत्थुसहावो इमो जम्हा' (सुपा ६५१)।

कासव पु [कश्यप] १ इस नाम का एक ऋषि (प्रामा)। २ हरिण की एक जाति। ३ एक जात की मछली। ४ दक्ष प्रजापति का जामाता। ५ वि दारू पीनेवाला (हे १, ४३, षड्)।

कासव न [काश्यप] १ इस नाम का एक गोत्र (ठा ७, णाया १, १, कप्प)। २ पु भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष। ३ वि काश्यप गोत्र में उत्पन्न, काश्यप-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०, उत्त ७, कप्प, सूअ १,६)। ४ पुं नापित, हजाम (भग ६, १०, आवम)। ५ इस नाम का एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ न इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन (अंत १८)।

कासवनालिया स्त्री [काश्यपनालिका] श्रीपर्णीफल (आचा २, १, ८, ६, दस ५, २, २१)।

कासविज्जिया स्त्री [काश्यपीया] जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)।

कासवी स्त्री [काश्यपी] १ पृथिवी, धरित्री (कुमा)। २ कश्यकप-गोत्रीया स्त्री (कप्प)। °रइ स्त्री [°रति] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

कासा स्त्री [कृशा] दुर्बल स्त्री (हे १, १२७, षड्)।

कासाइया } कासाई } स्त्री [काषायी] कषाय-रंग से रंगी हुई साड़ी, लाल साडी (कप्प, उवा)।

कासाय वि [काषाय] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि (गउड)।

कासार न [कासार] १ तलाव, छोटा सरोवर (सुपा १६६)। २ पक्वान्न-विशेष, कँसार (स १८६)। ३ पु समूह, जत्था (गउड)। ४ प्रदेश, स्थान (गउड)। °भूमि स्त्री [°भूमि] नितम्ब-प्रदेश (गउड)।

कासार न [द] धातु-विशेष, सीसपत्रक (दे २, २७)।

कासि पु [काशी] १ देश-विशेष, काशी जिला, 'कासिमित्ति जणवओ' (सुपा ३१, उत्त १८)। २ काशी देश का राजा (कुमा)।

३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर (कुमा)। °पुर न [°पुर] काशी नगरी, बनारस शहर (पउम ६,१३७)। °राय पुं [°राज] काशी देश का राजा (उत्त १८)। °व पु [°प] काशी देश का राजा (पउम १०४, ११)। °वड्ढण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०)।

कासिअ न [दे] १ सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपडा। २ सफेद वस्त्र (दे २, ५६)।

कासिअ न [कासित] छींक, क्षुत् (राज)।

कासिज्ज न [दे] कास्स्थल-नामक देश (दे २, २७)।

कासिल्ल वि [कासिक] खांसी रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७२)।

कासी स्त्री [काशी] काशी, बनारस (णाया १, ८)। °राय पु [राज] काशी का राजा (पिंग)। °स पुं [°श] काशी का राजा (पिंग)। °सर पु [°श्वर] काशी का राजा (पिंग)।

काह सक [कथय्] कहना। काहयते (सूअ १, १३, ३)।

काहर देखो काहार (दस ४, १ टी)।

काहल वि [दे] १ मृदु, कोमल। २ ठग, धूर्त (दे २, ५८)।

काहल वि [कातर] कातर, डरपोक, अधीर (हे १, २१४, २५४)।

काहल पुन [काहल] १ वाद्य-विशेष (सुर ३, ६६, ओप, णादि)। २ अव्यक्त आवाज (पण्ह २, २)।

काहला स्त्री [काहला] वाद्य-विशेष, महा-ढक्का (विक्र ८७)।

काहलिया स्त्री [काहलिका] आभूषण-विशेष (पव २७१)।

काहली स्त्री [दे] तरुणी, युवती (दे २,२६)।

काहल्ली स्त्री [दे] १ खर्च करने का धान्यादि। २ तवा, जिसपर पूरी या पूटी वगैरह पकायी जाती है (दे २, ५६)।

काहार पु [दे] कहार, एक जाति जो पानी भरने और डोली वगैरह ढोने का काम करती है (दे २, २७, भवि)।

काहार पुन [दे] कांवर, बहँगी (सुज १०,६)।

काहावण पु [कार्षापण] सिक्का-विशेष (हे २, ७१, पण्ह १, २, पड्, (प्राप्र)।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार, वार्ता करने-वाला (बृह १)।

काहिल पु [दे] गोपाल, ग्वाला, स्त्री. °ला (दे २, ३८)।

काहिल्लिआ स्त्री [दे] तवा, जिसपर पूरी आदि पकायी जाती है (पाअ)।

काहीअ देखो काहिय (गच्छ ३, ६)।

काहीइदाण न [कारिष्यतिदान] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान (ठा १०)।

काहे अ [कदा] कब, किस समय? (हे २, ६५, अत २४, प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती (दे २, २१)।

कि देखो किं (हे १, २६, पड्)।

कि सक [कृ] करना, बनाना, 'दुक्किय करणे' (विसे ३३००)। कवकृ किज्जंत (सुर १, ६०, ३, १४, ५६)।

किअ देखो कय = कृत (काप्र ६२५, प्रासू १५, धम्म २४, मै ६५, वज्जा ४)।

किअ देखो किव = कृप (पड्)।

किअत त्रि [कियत्] कितना (मण)।

किअत देखो कयत (अच्चु ५६)।

किआडिआ स्त्री [कृकाटिका] गला का उन्नत भाग (पाअ)।

किइ स्त्री [कृति] कृति, क्रिया, विधान (पड्, प्राप्र, उत्र)। °कम्म न [°कर्मन्] १ वन्दन प्रणमन (सम २१)। २ कार्य-करण (भग १४,३)। ३ निश्रामणा (व्यव० गा० ६२)।

किं स [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलानेवाला शब्द (हे १, २६, ३, ५८, ७०, कुमा, विपा १, १, निचू १३), 'किं बुल्लति मणीओ जाउ सहस्सेहिं घिप्पति' (प्रासू ८)। °उण अ [°पुन] तब फिर, फिर क्या? (प्राप्र)।

किंकत्तव्वया देखो किंकायव्वया (आचा २, २, ३)।

किंकम्म पु [किंकर्मन्] इस नाम का एक गृहस्थ (अंत)।

किंकर पु [किङ्कर] नौकर, चाकर, दास (सुपा ६० २२३)। °सच्च पु [°सत्य] १ पर-मेश्वर, परमात्मा। २ अच्युत, विष्णु (अच्चु २)।

किंकरी स्त्री [किङ्करी] दासी, नौकरानी (कप्पू)।

किंकाइअ देखो केकाइय (अणु २१२)।

किंकायव्वया स्त्री [किंकर्त्तव्यता] क्या करना है यह जानना। °मूढ वि [°मूढ] किंकर्तव्य विमूढ, हक्काबक्का, भौचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पडे कि क्या किया जाय (महा)।

किंकार पुन [केङ्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष (सिरि ५४१)।

किंकिअ वि [दे] सफेद श्वेत (दे २, ३१)।

किंकिच्चजड वि [किंकृत्यजड] हक्काबक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पडे कि क्या किया जाय (श्रा २७)।

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र-घण्टिका, करधनी (सुपा १५६)।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (सुपा १५४, कुमा)।

किंकिल्लि देखो कंकिल्लि (विचार ४६१)।

किंगिरिड पु [किङ्गिरिट] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।

किंच अ [किञ्च] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी (सुर १, ४०, ४१)।

किंचण न [किञ्चन] १ द्रव्य-हरण, चोरी (विसे ३४५१)। २ अ कुछ, किञ्चित् (वव २)।

किंचण न [किञ्चन] द्रव्य, वस्तु (उत्त ३२, ८, सुब ३२, ८)।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ ज्यादा (सुपा ४३०)।

किंचि अ [किञ्चित्] अल्प, ईषत्, थोडा (जी १, स्वप्न ४७)।

किंचिम्मत्त वि [किञ्चिन्मात्र] स्वल्प, बहुत थोडा, यत्किञ्चित् (सुपा १४२)।

किंचूण वि [किञ्चिदून] कुछ कम, पूर्ण-प्राय (औप)।

किंजक्क पु [किञ्जल्क] पुष्प-रेणु, पराग (णाया १, १)।

किंजक्ख पु [दे] शिरीष-वृक्ष, सिरस का पेड़ (दे २, ३१)।
किणेदं (शौ)। अ [किमिदम्, किमेतत्] यह क्या? (षड्; कुमा)।
किंतु अ [किन्तु] परन्तु, लेकिन (सुर ४, ३७)।
किंतुग्घ देखो किंतुग्घ (राज)।
किंदिय न [केन्द्र] १ वर्तुल का मध्य-स्थल। २ ज्योतिष में उग्र लग्न से पहला, चौथा, सातवां और दसवां स्थान 'किंदियठाणट्ठिय-सुग्गम्मि' (सुपा ३६)।
किंदुअ पु [कन्दुक] कन्दुक, गेंद (भवि)।
किंबर पु [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।
किंनर पु [किन्नर] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)। २ भगवान् धर्मनाथ जी के शासनदेव का नाम (संति ८)। ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव (ठा ५, १)। ४ एक इन्द्र (ठा २, ३)। ५ देव-गन्धर्व, देव-गायक (कुमा)। °कंठ पु [°कण्ठ] किंनर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि (जीव ३)।
किंनरी स्त्री [किन्नरी] किंनर देव की स्त्री (कुमा)।
किंनु अ [किंनु] पूर्वपक्ष, आक्षेप, आशंका का सूचक अव्यय (उव १)।
किंपच वि [दे] कृपण, कंजूस (दे २, ३१)।
किंपाग पु [किम्पाक] १ वृक्ष-विशेष, 'हुंति मुहि च्चिय महुरा विसया किंपागभूरुहफल व्व' (सुपा ३६२ आप)। २ न उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर, परन्तु खाने से प्राण का नाश करता है, 'किंपागफलोवमा विसया' (सुर १२, १३८)।
किंपि अ [किमपि] कुछ भी (प्रासू ६०)।
किंपुरिस पु [किंपुरुष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)। २ एक इन्द्र, किंनर निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ वैरोचन बलीन्द्र की रथसेना का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °कंठ पु [°कण्ठ] मणि की एक जाति, जो किंपुरुष के कण्ठ जितना बड़ा होता है (जीव ३)।

किंबोड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ, भूला हुआ (दे २, ३१)।
किंमज्झ वि [किंमध्य] असार, निःसार (पण्ह २, ४)।
किंवयंती स्त्री [किंवदन्ती] जनश्रुति, जनरव (हम्मीर ३६)।
किंसारु पु [किंशारु] सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २ ६)।
किंसुग्घ न [किंस्तुघ्न] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)।
किंसुअ पु [किंशुक] १ पलाश का पेड़, टेसू, ढाक (सुर ३ ४६)। २ न पलाश का पुष्प (हे १, २६, ८६)।
किंकिंडि पुं [दे] सर्प, साप (दे २, ३२)।
किक्किंधा स्त्री [किष्किन्धा] नगरी विशेष (से १४, ५५)।
किक्किंधि पु [किष्किन्धि] १ पर्वत-विशेष (पउम ६, ४५)। २ इस नाम का एक राजा (पउम ६, १५४, १०, २०)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (पउम ६, ४५)।
किच्च वि [कृत्य] १ करने योग्य, कर्तव्य, फरज (सुपा ४६५, कुमा)। २ वन्दनीय, पूजनीय, 'न पिट्ठओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ' (उत्त १)। ३ पु गृहस्थ (सूअ १, १, ४)। ४ न शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया, कृति (आचा २ २, २; सूअ १, १, ४)।
किच्चंत वि [कृत्यमान] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता। २ पीडित किया जाता, सताया जाता (राज)।
किच्चण न [दे] प्रक्षालन, धोना, 'हरिअच्छेअण छप्पइयवच्चण किच्चण च पोत्ताण' (आव १६८—पत्र ७२)।
किच्चा स्त्री [कृत्या] १ काटना, कर्तन (उत्त पृ ३५६)। २ क्रिया, काम, कर्म। ३ देव वगैरह की मूर्ति का एक भेद। ४ जादूगरी, जादू। ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग (हे १ १२८)।
किच्चा देखो कर = कृ।
किच्चि स्त्री [कृत्ति] १ मृग वगैरह का चमड़ा। २ चमड़े का वस्त्र। ३ भूर्जपत्र, भोजपत्र। ४ कृत्तिका नक्षत्र (हे २, १२ ८९; षड्)।

°पाउरण पु [°प्रावरण] महादेव, शिव (कुमा)। °हर पु [°धर] महादेव, शिव (षड्)।
किच्चिर अ [कियच्चिरम्] कितने समय तक, कब तक? (उप १२८ टी)।
किच्छ न [कृच्छ्र] १ दुःख, कष्ट (ठा ५, १)। २ वि कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त (हे १, १२८)। ३ क्रिवि दुःख से, मुश्किल से (सुर ८, १४८)।
किज्ज वि [क्रेय] खरीदने योग्य, 'अक्किज्जं किज्जमेव वा' (दस ७)।
किज्जंत देखो कि = कृ।
किज्जअ वि [कृत] किया गया, निर्मित (पिंग)।
किट्ट सक [कीर्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ किट्टेइ (आचा; भग)। वकृ. किट्टमाण (पि २८९)। संकृ किट्टइत्ता, किट्टित्ता (उत्त २९; कप्प)। हेकृ किट्टित्तए (कस)।
किट्ट स्त्रीन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल (उप ५३२)। २ रस-विशेष (उर ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरह का मैल। स्त्री °ट्टी (पभा ३३)।
किट्टण देखो कित्तण (बृह ३)।
किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष, 'अपुव्वविसोहीए अणुभागोणू-णविभयण किट्टी' (पंच १२, आवम)।
किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित (सूअ २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित (सूअ २, २; ठा ७)।
किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १; भग ७ ३)।
किट्टिस न [किट्टिस] १ खली, सरसों, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता (अणु, आवम)।
किट्टिस न [किट्टिस] १ ऊन आदि का बाकी बचा हुआ अंश। २ उससे बना हुआ सूता। ३ ऊन, ऊंट के बाल आदि की मिलावट का सूता (अणु ३४)।
किट्टी देखो किट्ट = किट्ट।
किट्टीकय वि [किट्टीकृत] अलग से मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट

उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ (उव)।

किट्ट वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त (भग ३, २; जीव ३)।

किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित (सुर ११, ५६ भग ३ २)। २ न. देव-विमान विशेष, 'जे देवा सिरिवच्छं सिरिदाम-कंड मल्लं किट्ठं (? ट्ठं) चावोण्णय अरु-एणवडिसग विमाणं देवत्ताए उववएणा' (सम ३९)।

किट्ठि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण। २ खींचाव, आकर्षण। ३ देवविमान-विशेष (सम ६)। °कूट न [°कूट] देवविमान-विशेष (सम ६)। °घोस न [°घोष] विमान विशेष (सम ६)। °जुत्त न [°युक्त] विमान-विशेष (सम ६)। °ज्झय न [°ध्वज] विमान विशेष (सम ६)। °प्पभ न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (सम ६)। °वण्ण न [°वर्ण] विमान-विशेष (सम ६)। °सिंग न [°शृङ्ग] विमान-विशेष (सम ६)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव-विमान (सम ६)।

किट्ठियावत्त न [कृष्ट्यावर्त्त] देवविमान-विशेष (सम ६)।

किट्ठुत्तरवडिसग न [कृष्ट्युत्तरावतंसक] इस नाम एक देव-विमान, देव भवन (सम ६)।

किडग वि [क्रीडक] क्रीडा करनेवाला (सूत्र १, ४, १, २ टी)।

किडि पुं [किरि] सूकर, सूअर (हे १, २५१; षड्)।

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी की आवाज (णाया १, १—पत्र ७४)।

किडिभ पु [किटिभ] रोग विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र कोढ (लहुअ १५, भग ७, ६)।

किडिया स्त्री [दे] खिडकी, छोटा द्वार (स ५८३)।

किड्ड अक [क्रीड्] खेलना, क्रीडा करना। वकृ किड्डुंत (पि ३९७)।

किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीडा-कारक (औप)।

किड्डा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीडा, खेल (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था (ठा १०—पत्र ५१९)।

किड्डाविआ स्त्री [क्रीडिका] क्रीडन धात्री, बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई (णाया १, १६—पत्र २११)।

किढि वि [दे] १ संभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध (बृह १)।

किढिण न [किठिन] संन्यासियों का एक पात्र, जो बाँस का बना हुआ होता है (भग ७, ९)।

किण सक [क्री] खरीदना। किणइ (हे ४, ५२)। वकृ 'से किणं किणावेमाणे हण घायमाणे' (सूत्र २ १)। किणंत (सुपा ३६६)। सकृ किणित्ता (पि ५८२)। प्रयो किणावेइ (पि ५५१)।

किण पु [किण] १ घर्षण-चिह्न, घर्षण की निशानी (गउड)। २ मांस-ग्रंथि। ३ सूखा घाव (सुपा २७०, वज्जा ३६)।

किणइअ वि [दे] शोभित, विभूषित (पउम ६२, ६)।

किणण न [क्रयण] कीनना, खरीद, क्रय (उप पृ २५८)।

किणा देखो किण्णा (प्राप्र, हे ३, ६९)

किणि वि [क्रयिन्] खरीदनेवाला (सम्बोध १६)।

किणिकिण अक [किणिकिणय्] किण-किण आवाज करना। वकृ. किणिकिणित (औप)।

किणिय वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (सुपा ४३४)।

किणिय पु [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जा बाजा बनाती और बजाती है (वव ३)। २ रस्सी बनाने का काम करने-वाली मनुष्य जाति, 'किणिया उ वरत्ताओ वलिंति' (पचू)।

किणिय न [किणित] वाद्य-विशेष (राय)।

किणिया स्त्री [किणिका] छोटा फोडा, फुनसी,

'अन्नेवि सइ महियलनिसीय-
णुप्पन्नकिणियपोगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा
कहवि हिंडंति' (स १८०)।

किणिस सक [शाणय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिसइ (पिंग)।

किणो अ [किमिति] क्यों, किसलिए ? (दे २, ३१; हे २, २१६; पाअ, गा ६७, महा)।

किण्ण वि [कीर्ण] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ, 'उक्किण्णव्व कट्ठघडियव्व' (सुपा ५७१)। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (ठा ६)।

किण्ण पु [किण्व] १ फलवाला वृक्ष विशेष, जिसमें दारू बनता है (गउड आचा)। २ न सुरा बीज, किण्व-वृक्ष के बीज, जिसका दारू बनता है (उत्त २)। °सुरा स्त्री [°सुरा] किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा (गउड)।

किण्ण वि [दे] शोभमान, राजमान (दे २ ३०)।

किण्ण अ [किनम्] प्रश्नार्थक अव्यय (उवा)।

किण्णर देखो किंनर (ज १, राय, इक)।

किण्णा अ [कथम्] क्यों, क्यों कर, कैसे ? 'किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता' (विपा २, १—पत्र १०६)।

किण्णु अ [किंनु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ सादृश्य। ४ स्थान, स्थल। ५ विकल्प (उवा, स्वप्न ८४)।

किण्ह देखो कण्ह (गा ६५, णाया १, १; उर ६, ५; पण्ण १७)।

किण्ह न [दे] १ बारीक कपडा। २ सफेद कपडा (दे २, ५९)।

किण्हग पु [दे] वर्षाकाल में घडा आदि में होनेवाली एक तरह की काई (जीवस ३६)।

किण्हा देखो कण्हा (ठा ५, ३—पत्र ३५१; कम्म ४, १३)।

कितव पु [कितव] द्यूतकर, जूआरी (दे ४, ८)।

कित्त देखो किच्च (सक्षि ५)।

कित्त देखो किट्ट = कीर्त्तय्। भवि कित्तइस्स (पटि)। सकृ कित्तइत्ताण (पच ११६)।

कित्तण न [कीर्त्तन] १ श्लाघा, स्तुति, 'तव य जिणुत्तम संति कित्तणं' (अजि ४, से ११, १२३)। २ वर्णन, प्रतिपादन। ३ कथन, उक्ति (विसे ६४०, गउड, कुमा)।

कित्तणा स्त्री [कीर्तना] कीर्तन, वर्णन, प्रशंसा (चेइय ७४८)।

किंत्तय वि [कीर्तक] कीर्तन-कर्ता (पव २१६ टी)।

कित्तवीरिअ देखो कत्तवीरिअ (ठा ८)।

कित्ता देखो किच्चा = कृत्या (प्राकृ ८)।

कित्ति स्त्री [कीर्त्ति] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति (औप, प्रासू ४३, ७४, ८०)। २ एक विद्या-देवी (पउम ७, १४१)। ३ केसरि द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर (ज ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर)। ८ पु इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी (पउम २०, २०५)। °कर वि [°कर] १ यशस्कर, ख्याति-कारक (णाया १, १)। २ पु भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (राज)। °चंद पु [°चन्द्र] नृप-विशेष (धम्म)। °धम्म पु [°धर्म] इस नाम का एक राजा (दंस)। °धर पु [°धर] १ नृप-विशेष (तद्दु)। २ एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरु (पउम २०, २०५)। °पुरिस पु [°पुरुष] कीर्त्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरह (ठा ६)। °म वि [°मत्] कीर्त्ति-युक्त। °मई स्त्री [°मती] १ एक जैन साध्वी, (आव)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। °य वि [°द] कीर्त्ति-कर, यशस्कर (ओघ)।

कित्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा, 'कुत्तो अम्हाण वग्घकित्तीय' (काप्र ८६३, गा ६४०, वज्जा ८४)।

कित्तिम वि [कृत्रिम] बनावटी, नकली (सुपा २४, ६१३)।

कित्तिय वि [कीर्त्तित] १ उक्त, कथित, 'कित्तियवंदियमहिया' (पडि)। २ प्रशंसित, श्लाघित (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रति-पादित (राज)।

कित्तिय वि [कियत्] कितना (गउड)।

किन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे ४, ३२६)।

किन्ह देखो कण्ह (कम्म)।

किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ (षड्)।

किब्बिस न [किल्बिष] १ पाप, पातक (पण्ह १, २)। २ मांस, 'निग्गय च मे वीयपामेण किब्बिसं' (स २६३)। ३ पु. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (भग १२, ५)। ४ त्रि मलिन। ५ अधम, नीच (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट (धर्म ३)। ७ कर्बुर, चितकबरा (तद्दु)।

किब्बिसिय पु [किल्बिषिक] १ चाण्डाल-स्थानीय देव जाति (ठा ३ ४—पत्र १६२)। २ केवल वेषधारी साधु (भग)। ३ वि अधम, नीच (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगनेवाला दरिद्र, पशु वगैरह (णाया १, १)। ५ भाण्ड-चेष्टा करनेवाला (ओघ)।

किब्बिसिया स्त्री [कैल्बिषिकी] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरह की निन्दा करने की आदत (धर्म ३)। २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति (भग)।

किम (अप) अ [कथम्] क्यों, कैसे? (हे ४, ४०१)।

किमण देखो किवण (आचा)।

किमस्स पु [किमश्व] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मरकर अजगर हुआ था (निचू १)।

किमि पु [कृमि] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष (पण्ह १, ३)। २ पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होनेवाला जन्तु-विशेष (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट विशेष (पण्ह १, १—पत्र २३)। °ज न [°ज] कृमि-तन्तु में उत्पन्न वस्त्र, 'कोसेज्जपट्टमाई ज, किमिय तु पवुच्चइ' (पचभा)। °राग, °राय पु [°राग] किरमिजी का रंग (कम्म १, २०, दे २, ३२, पण्ह २, ४)। °रासि पु [°राशि] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

किमिपरवसण [दे] देखो किमिहरवसण (षड्)।

किमिन्छय न [किमिच्छक] इच्छानुसार दान (णाया १, ८—पत्र १५०)।

किमिण वि [कृमिमत्] कृमि-युक्त, 'किमिणमहुदुरभिगंधं' (पण्ह २, ५)।

किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त (दे २, ३२)।

किमिहरवसण न [दे] कोशेय-वस्त्र, रेशमी वस्त्र (दे २, ३३)।

किमु अ [किमु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ निन्दा। ४ निषेध (हे २, २१७ पिंग)।

किमुय अ [किमुत] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ विकल्प। ३ वितर्क। ४ अतिशय (हे २, २१८), 'अमरनररायमहिय ति पूज्य तहि, किमुय सेसेहिं' (विसे १०६१)।

किम्मिय न [दे. किम्मित] जड़ता, जाड्य (राज)।

किम्मीर वि [किर्मीर] १ कर्बुर, कबरा (पाअ)। २ पु राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था (वेणी ११७)। ३ वंश विशेष, 'जाया किम्मीरवसे' (रंभा)।

किय देखो कीय (पिंड ३०६)।

कियत वि [कियत्] कितना (सम्मत्त २२८)।

कियत्थ देखो कयत्थ (भवि)।

कियव्व देखो कइअव (उप ७२८ टी)।

किया देखो किरिया, 'हय नाणं कियाहीणं' (हे २, १०४), 'मग्गणुसारी सद्धो पन्न-वणिज्जो कियावरो चेव' (उप १६६, विसे ३५६३ टी, कप्पू)।

कियाडिया स्त्री [दे] कानबूट्टी, कान का ऊपरी भाग (वव १)।

कियाण देखो कर = कृ।

कियाणग न [क्रयाणक] किराना, नमक, मसाला आदि बेचने योग्य चीजें (सुर १,६०)।

किर पु [दे] सूकर, सूअर (दे २, ३०, षड्)।

किर अ [किल] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संभावना। २ निश्चय। ३ हेतु, निश्चित कारण। ४ वार्त्ता-प्रसिद्ध अर्थ। ५ अरुचि। ६ अलीक, असत्य। ७ संशय, संदेह (हे २, १८६, षड्, गा १२६, प्रासू १७, दस १)। ८ पाद पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (कम्म ४, ७६)।

किर सक [कृ] १ फेंकना। २ पसारना, फैलाना। ३ बिखेरना। वकृ किरंत (से ४, ५८, १४, ५७)।

किरण पुन [किरण] किरण, रश्मि, प्रभा (सुपा ३५१, गउड, प्रासू ८२)।

किरणिल्ल वि [किरणवत्] किरणवाला, तेजस्वी (सुर २, २४२)।

किराड } पुं [किरात] १ अनार्य देश विदेश
किराय } (पव १४८)। २ भील, एक जंगली जाति (सुर २, २७, १८०, सुपा ३६१, हे १, १८३)।

किरात (शौ) देखो किराय (प्राकृ ८६)।

किरि देखो किर = किल (सिरि ८३२ ८३४)।

किरि पुं [किरि] भालू की आवाज, 'कत्थइ किरित्ति कत्थइ हिरित्ति कत्थइ छिरित्ति रिच्छाण सद्दो' (पउम ६४, ४५)।

किरि पुं [किरि] सूकर, सूअर (गउड)।

किरिआण देखो कयाण 'जम्मतरगहिअपुन्न-किरिआणो' (कुलक २१)।

किरिइरिया } स्त्री [दे] १ कर्णोपकर्णिका,
किरिकिरिआ } एक कान से दूसरे कान गई हुई बात गप। २ कुतूहल, कौतुक (दे २, ६१)।

किरिकिरिया स्त्री [दे] वाद्य विशेष, बाँस आदि की कम्बा—लकडी से बना हुआ एक प्रकार का बाजा (आचा २, ११, १)।

किरित्तण देखो कित्तण (नाट—माल ६७)।

किरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न (सूअ २, १, ठा ३, ३)। २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान (सूअ २, ४, पव १४६)। ३ सावद्य व्यापार (भग १७, १)। ४ °ट्ठाण न [°स्थान] कर्मबन्ध का कारण (सूअ २, २, आव ४)। °वर वि [°पर] अनुष्ठान कुशल (पड्)। °वाइ वि [°वादिन्] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व माननेवाला (ठा ४, ४)। २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा माननेवाला (सम १०६)। °विसाल न [°विशाल] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६)।

किरीड पुं [किरीट] मुकुट, शिरोभूषण (पाअ)।

किरीडि पु [किरीटिन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी १६२)।

किरीत वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (प्राप्र)।

किरीय पु [किरीय] १ एक म्लेच्छ देश। २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति (राज)।

किरोलय न [किरोलक] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल (उर ६, ५)।

किल देखो किर = किल (हे २, १८६ गउड, कुमा)।

किलंत वि [क्लान्त] खिन्न, श्रान्त (पड्)।

किलज न [किलिञ्ज] बाँस का एक पात्र, जिसमें गैया वगैरह को खाना खिलाया जाता है (उत्रा)।

किलंज न [किलिञ्ज] तृण-विशेष (धर्मवि १३५, १३६)।

किलकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना, हँसना, 'किलकिलइ व्व महरिसमणिकचीकिंकिणिरविएण' (कप्पू)।

किलकिलाइय न [किलकिलायित] 'किल-किल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि (आवम)।

किलणी स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, ३१)।

किलम्म अक [क्लम्] क्लान्त होना, खिन्न होना। किलम्मइ (कप्पू)। किलम्ममि (वज्जा ६२)। वकृ किलम्मत (पि १३६)।

किलाचक्क न [क्रीडाचक्र] इस नाम का एक छन्द—वृत्त (पिंग)।

किलाड पु [किलाट] दूध का विकार-विशेष, मलाई (दे २, २२)।

किलाम सक [क्लमय्] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। किलामेज्ज (पि १३६)। वकृ. किलामेंत (भग ५, ६)। कवकृ किलामीअमाण (मा ४६)।

किलाम पु [क्लम] खेद, परिश्रम, ग्लानि, 'खमणिज्जो भे किलामो' (पडि, विसे २४०४)।

किलामणया स्त्री [क्लमना] खिन्न करना, उत्पन्न करना (भग ३, ३)।

किलामणा स्त्री [क्लमना] क्लम, क्लेश (महानि ४)।

किलामिअ देखो किलंत (अणु १३६)।

किलामिअ वि [क्लमित] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीडित, 'तण्हाकिलामिअगो' (पउम १०३, २२, सुर १०, ४८)।

किलिंच न [दे] छोटी लकडी, लकडी का टुकडा, दततरमोहणय किलिंचमित्तपि अविदिन्न' (भत्त १०२, पाअ, दे २, ११)।

किलिंविअ न [दे] ऊपर देखो (गा ८०)।

किलित देखो किलंत (नाट—मृच्छ २५, पि १३६)।

किलिकिंच अक [रम्] रमण करना, क्रीडा करना। किलिकिंचइ (हे ४, १६८)।

किलिकिंचिअ न [रत] रमण, क्रीडा, सभोग (कुमा)।

किलिकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना। वकृ किलिकिलंत (उप १०३१ टी)।

किलिकिलि न [किलिकिलि] इस नाम का एक विद्याधरनगर (इक)।

किलिकिलिकिल देखो किलकिल। वकृ किलिकिलिकिलिकिलंत (पउम ३३ ८)।

किलिगिलिय न [किलिकिलित] 'किल-किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष (स ३७०, ३८५)।

किलिट्ठ वि [क्लिष्ट] १ क्लेश-युक्त (उत्त ३२)। २ कठिन, विषम। ३ क्लेश जनक (प्राप्र, हे २, १०६, उव)।

किलिण्ण देखो किलिन्न (स्वप्न ८५)।

किलित्त वि [क्लृप्त] कल्पित, रचित (प्राप्र, पड्, हे १, १४५)।

किलित्ति स्त्री [क्लृप्ति] रचना, कल्पना (पि ५६)।

किलिन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे १, १४५, २, १०६)।

किलिम्म देखो किलम्म। किलिम्मइ (पि १७७)। वकृ किलिम्मत (से ९, ८०, ११, ५०)।

किलिम्मिअ वि [दे] कथित, उक्त (दे २, ३२)।

किलिव देखो कीव (वव २ मै ४३)।

किलिस अक [क्लिश्] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना। वकृ किलिसंत (पउम २१, ३८)।

किलिस देखो किलेस, 'मिच्छत्तमच्छभीयाण, किलिससलिलम्मि वुड्डाण' (सुपा ६४)।

किलिसिअ वि [क्लेशित] आयासित, क्लेश प्राप्त (स १४६)।

किलिस्स देखो किलिस = क्लिश्। किलिस्सइ (महा, उव)। वकृ किलिस्संत (नाट—माल ३१)।

किलिस्सिअ वि [क्लिष्ट] क्लेश प्राप्त, क्लेश-युक्त (उप पृ ११६)।

किलीण देखो किलिण्ण (भवि)।

किलीव देखो कीव (स ६०)।

किलेस अक [क्लिश्] क्लेश पाना, हैरान होना। किलेसइ (प्राकृ २८)।

किलेस पु [क्लेश] १ खेद, थकावट (ओघ)। २ दुःख, पीड़ा, बाधा (पउम २२, ७५, सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण। ४ कर्म, शुभाशुभ-कर्म (बृह १)। °यर वि [°कर] क्लेश जनक (पउम २२, ७५)।

किलेसिअ वि [क्लेशित] दुःखी किया हुआ (सुर ८, १६७; १९९)।

किल्ला देखो किड्डा (स ६१)।

किव पु [कृप] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य (हे १, १२८), 'भाइसयसमग्ग गंगेय विदुर दोण जयद्दह सउणी कीव (? सउणि किव) आसत्थाम' (णाया १, १६—पत्र २०८)।

किवँ (अप) देखो कह (कुमा)।

किवण वि [कृपण] १ गरीब, रंक, दीन (सूअ १, १, ३, अनु ६७)। २ दरिद्र, निर्धन (पण्ह १, २)। ३ कंजूस, अदाता (दे २, २१)। ४ क्लीब, कायर (सूअ २,२)।

किवा स्त्री [कृपा] दया, मेहरबानी (हे १, १२८)। °वन्न वि [°पन्न] कृपा-प्राप्त, दयालु (पउम ६५,४७)।

किवाण पुन [कृपाण] खड्ग, तलवार (सुपा १५८, हे १, १२८, गउड)।

किवालु वि [कृपालु] दयालु, दया करनेवाला (पउम ३८, ५०, ६७, २०)।

किविड न [दे] १ खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान। २ वि खलिहान में जो हुआ हो वह (दे २, ६०)।

किविडी स्त्री [दे] १ किवाड़, पार्श्व द्वार। २ घर का पिछला आंगन (दे, २, ६०)।

किविण देखो किवण (हे १, ४६, १२८, गा १३६, सुर ३, ४८, प्रासू ५१, पण्ह १, १)।

किवीडजोणि पु [कृपीटयोनि] अग्नि (सम्मत्त २२६)।

किस सक [कृशाय्] कृमित करना, अपचित करना। किसए (सूअ १, २, १, १४)।

किस वि [कृश] १ दुर्बल, निर्बल (उत्तर ११३)। २ पतला (हे १, १२८, ठा ४, २)।

किसंग वि [कृशाङ्ग] दुर्बल शरीरवाला (गा ६७७)।

किसर पु [कृसर] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज। २ खिचड़ी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन विशेष (हे १, १२८)।

किसर देखो केसर 'महमहिअदमणकिसर' (हे १, १४६)।

किसरा स्त्री [कृसरा] खिचड़ी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८, दे १, ८८)।

किसल देखो किसलय (हे १, २६९, कुमा)।

किसलइय वि [किसलयित] अंकुरित, नये अंकुरवाला (सुर ३, ३९)।

किसलय पुन [किसलय] १ नूतन अंकुर (श्रा २०)। २ कोमल पत्ता (जी ९) 'सव्वोवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ' (पण्ण १)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि १९)।

किसा देखो कासा (हे १, १२७)।

किसाणु पु [कृशानु] १ अग्नि, वह्नि, आग। २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष। ३ तीन की संख्या (हे १, १२८, षड्)।

किसि स्त्री [कृषि] खेती, चास (विसे १६१५, सुर १५, २०० प्राप्र)।

किसिअ वि [कृशित] दुर्बलता प्राप्त, कृशता-युक्त (गा ४०, वज्जा ४०)।

किसिअ वि [कृषित] १ विलिखित, रेखा किया हुआ। २ जोता हुआ, कृष्ट। ३ खींचा हुआ (हे १, १२८)।

किसीवल पु [कृषीवल] कर्षक, किसान, 'पाय परम्मि धन्नं भक्खंति किसीवला पुव्विं' (श्रा १६)।

किसोर पु [किशोर] बाल्यावस्था के बाद की अवस्थावाला बालक, 'सीहकिसोरोव्व गुहाओ निग्गओ' (सुपा ५४१)।

किसोरी स्त्री [किशोरी] कुमारी, अविवाहिता युवती (णाया १, ९)।

किस्स देखो किलिस = क्लिश्। सकृ किस्स-इत्ता (सूअ १, ३, २)।

किह } किहं } देखो कह (आचा, कुमा, भग ३, २, णाया १, १७)।

कीअ देखो कीव (षड् प्राप्र)।

कीइस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का (स १४०)।

कीकस पु [कीकश] १ कृमि-जन्तु-विशेष। २ न हड्डी, हाड। ३ वि कठिन, कठोर (राज)।

कीचअ देखो कीयग (वेणी १७७)।

कीड देखो किड्ड = क्रीड्। भवि कीडिस्स (पि २२६)।

कीड पु [कीट] १ कीड़ा, क्षुद्र जन्तु (उव)। २ कीट विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त २)।

कीडइल्ल वि [कीटवत्] कीड़ावाला, कीटक-युक्त (गउड)।

कीडण न [क्रीडन] खेल, क्रीड़ा (सुर १, ११८)।

कीडय पु [कीटक] देखो कीड = कीट (नाट सुपा ३७०)।

कीडय न [कीटज] कीडे के तन्तु से उत्पन्न होनेवला वस्त्र, वस्त्र-विशेष (अणु)।

कीडा देखो किड्डा (सुर ३, ११६, उवा)।

कीडाविआ देखो किड्डाविआ (राज)।

कीडिया स्त्री [कीटिका] पिपीलिका, चींटी (सुर १०, १७९)।

कीडी स्त्री [कीटी] ऊपर देखो (उप १४७ टी, दे २, ३)।

कीण सक [क्री] खरीदना, मोल लेना। कीणइ, कीणए (षड्)। भवि कीणिस्स (पि ५११, ५३४)।

कीणास पु [कीनाश] यम, जम (पाअ, सुपा १८३)। °गिह [°गृह] मृत्यु, मौत (उप १३६ टी)।

कीदिस (शौ) देखो कीरिस (प्राकृ ८३)।

कीय वि [क्रीत] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ (सम ३९, पण्ह २, १, सुपा ३४५)। २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)। ३ न. क्रय, खरीद (दस ३, सूअ १, ९)। °कड, °गड वि [°कृत] १ मूल्य देकर लिया हुआ (बृह १)। २ साधु के लिए मोल से कीना हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा दोष युक्त वस्तु (पि ३३०)।

कीयग पु [कीचक] विराट देश के राजा का साला, जिसको भीम ने मारा था (उप ६४८ टी)। नवम दूय विराडनयर, तत्थ णं तुम कि (? की) यगं भाउसयसमग्गं' (णाया १, १६—पत्र २०६)।

कीया स्त्री [कीका] नयन तारा, 'मरकतम-मारकलित्तनयणकीयरामिवन्ने' (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कीर पु [दे. कीर] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१, उर १ १४)।

कीर पु [कीर] १ देश-विशेष काश्मीर देश। २ वि काश्मीर देश सम्बन्धी। ३ त्रि काश्मीर देश में उत्पन्न (विसे ४६४ टी)।

कीरत } देखो कर = कृ।
कीरमाण }

कीरल पुं [कीरल] देश-विशेष (पउम ६८, ६४)।

कीरिस देखो केरिस (गा ३७४, मा ४)।

कीरी स्त्री [कीरी] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

कील अक [क्रीड्] क्रीडा करना खेलना। कीलइ (प्राप्र)। वकृ कीलत, कीलमाण (सुर १ १२१, पि २४०)। सकृ कीलेत्ता, कीलिऊण (सुर १, ११७ पि २४०)।

कील वि [दे] स्तोक, अल्प, थोडा (दे २, २१)।

कील देखो खील (पाअ)।

कील पुन [दे कील] कंठ, गला (सूअ १, ५, १, ६)।

कीलण न [कीलन] कील से बन्धन, खीले से नियन्त्रण 'फणिमणिकीलणदुक्ख विम्हरिय पुहविदेवीए' (मोह २०)।

कीलण न [क्रीडन] क्रीडा, खेल (ओप)। °धाई स्त्री [°धात्री] बालक को खेल कूद करानेवाली दाई (णाया १, १)।

कीलणअ न [क्रीडनक] खिलोना (अभि २४२)।

कीलणिआ } स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, ३१)।
कीलणी }

कीला स्त्री [दे] १ नव-वधू दुलहिन (दे २, ३३)।

कीला स्त्री [कीला] सुरत समय में किया जाता हृदय-ताडन विशेष (द २, ६८)।

कीला स्त्री [क्रीडा] खेल, क्रीडन (सुपा ३५८, सुर १, ११७)। °वास पु [°वास] क्रीडा करने का स्थान (इक)।

कीलाल न [कीलाल] रुधिर, खून, रक्त (उप ८६, पाअ)।

कीलालिअ वि [कीलालिन] रुधिर-युक्त, खूनवाला (गउड)।

कीलावण न [क्रीडन] खेल कराना (णाया १, २)।

कीलावणय न [क्रीडनक] खिलोना (निर १, १)।

कीलिअ न [क्रीडित] क्रीडा रमण, क्रीडन (सम १५ स २४१)।

कीलिअ वि [कीलित] खूँटा ठोका हुआ, 'लिहियव्व कीलियव्व' (महा, सुपा २५४)।

कीलिआ स्त्री [कीलिका] १ छोटा खूँटा, खूँटी (कम्म १, ३६)। २ शरीर सहनन-विशेष, शरीर का एक प्रकार का बांधा, जिसमें हड्डियां केवल खूँटी से बँधी हुई हों ऐसा शरीर-बन्धन (सम १४६, कम्म १,३६)।

कीव पु [क्लीव] १ नपुंसक (बृह ४)। २ वि कातर, अधीर (सुर २, १४, णाया १, १)।

कीव पु [दे कीव] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कीस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का (भग, पण्ण ३८)।

कीस वि [किस्व] कोन स्वभाववाला, कैसे स्वभाव का (भग)।

कीस अ [कस्मात्] क्यों, किस से, किस कारण से ? (उत्त, हे ३, ६८)।

कीस देखो किलिस। कीसति (उत्त १६, १५; वे ३३)। वकृ कीसंत (वे ८३)।

कु अ [कु] १ अल्प, थोडा। २ निषिद्ध, निवारित। ३ कुत्सित, निन्दित (हे २ २१७, से १, २६, सम्म १)। ४ विशेष, ज्यादा (णाया १, १४)। °उरिस पु [°पुरुष] खराब आदमी, दुर्जन (से १२, ३३)। °चर वि [°चर] खराब चाल-चलनवाला, सदाचार-रहित (आचा)। °डंड पु [°दण्ड] पाश-विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु पाश (पण्ह १, ३)। °डिम वि [°दण्डिम] दण्ड देकर छीना हुआ द्रव्य (विपा १, ३)। °तित्थ न [°तीर्थ] १ जलाशय में उतरने का खराब मार्ग (प्रासू ६०)। २ दूषित दर्शन (सूअ १, १, १)। ३ °तित्थि वि [°तीर्थिन्] दूषित मत का अनुयायी (कुमा)। °दुडिम देखो डडिम (णाया १, १—पत्र ३७)। °दसण न [°दर्शन] दुष्ट मत, दूषित धर्म (पण्ण २)। °दसणि वि [°दर्शनिन] १ दुष्ट दार्शनिक। २ दूषित मत का अनुयायी (श्रा ६)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ कुत्सित दर्शन (उत्त २८)। २ दूषित मत का अनुयायी (धम्म २)। °दिट्ठिय वि [°दृष्टिक] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी (पउम ३०, ४४)। °प्पवयण न [°प्रवचन] १ दूषित शास्त्र। २ त्रि दूषित सिद्धान्त को माननेवाला (अणु)। °प्पावयणिय वि [°प्रावचनिक] १ दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करनेवाला (सूअ १, २, २)। २ दूषित आगम-सम्बन्धी (अनुष्ठान) (अणु)। °भत्त न [°भक्त] खराब भोजन (पउम २०, १६६)। °मार पु [°मार] १ कुत्सित मार (सूअ २, २)। २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करनेवाला ताडन (णाया १, १४)। °रंडा स्त्री [°रण्डा] राँड, विधवा (श्रा १६)। °रुव, °रूव न [°रूप] १ खराब रूप (उप ३६२ टी, पण्ह १, ४)। २ माया-विशेष (भग १२, ५)। °लिंग न [°लिङ्ग] १ कुत्सित भेष (दस)। २ पुं कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (विसे १७५४)। ३ वि कुतीर्थिक, दूषित धर्म का अनुयायी (आवम)। °लिंगि पु [°लिङ्गिन्] १ कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (ओघ ७४८)। २ वि कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी (पण्ह १ २)। °वय न [°पद] खराब शब्द,

'सो सोहइ दूसंतो, कइयणरइयाइ
विविहकव्वाइं।
जो भजिऊण कुवयं, अन्नपयं सुंदरं देइ'
(वज्जा ६)।

°वियप्प पु [°विकल्प] कुत्सित विचार (सुपा ४४)। °वुरिस देखो °उरिस (पउम ६५, ४५)। °संसग्ग पु [°संसर्ग] खराब सोहबत, दुर्जन-संगति (धर्म ३)। °सत्थ पुन [°शास्त्र] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त, 'ईसरमयाइया सव्वे कुसत्था' (निचू

११)। °समय पु [°समय] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र (सम्म १)। २ वि कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी (सम्म १)। °सल्लिय वि [°शल्यिक] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह (पण्ह २,४)। °सील न [°शील] १ खराब स्वभाव (आचा)। २ अब्रह्मचर्य, व्यभिचार (ठा ४, ४)। ३ वि जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी (ओप ८६३)। ४ अब्रह्मचारी, व्यभिचारी (ठा ४, ३)। °सुमिण पुन [°स्वप्न] खराब स्वप्न (श्रा ६)। °हण वि [°घन] कम घनवाला दाँत (पण्ह २, ४—पत्र १००)।

कु स्त्री [कु] १ पृथिवी, भूमि (कुसमयवि-मोसणए (सम्म १ टी—पत्र ११८, से १ २६)। °त्तिअ न [°त्रिक] १ तीनों जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। २ तीन जगत् में स्थित पदार्थ (ओप)। °त्तिअ वि [°त्रिज] तीनों जगत् में उत्पन्न वस्तु (आवम)। °त्तिआवण पुन [°त्रिकापण] तीनों जगत् के पदार्थ जहां मिल सके ऐसी दूकान (भग, णाया १,१—पत्र ५३)। °वलय न [°वलय] पृथ्वी-मण्डल (श्रा २८)।

कुअरी देखो कुआँरी (पि २५१)।

कुअलअ देखो कुवलय (प्राप्र)।

कुआँरी देखो कुमारी (गा २६८)।

कुइअ वि [कुचित] सकुचा हुआ (पव ६२)।

कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क (दे २, ४०)।

कुइय वि [कुचित] अवस्यन्दित, दलित (ठा ६)।

कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध, रोष-युक्त (नवि)।

कुइवण्ण पु [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ (विसे ६३२)।

कुउअ पुन [कुतुप] स्नेह-पात्र, घी तैल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र-विशेष 'कुतावं वा (? कु) उआइ' (पाअ) देखो कुतुव।

कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा (दे २, १२)।

कुउव देखो कुउअ (पिंड ५८७)।

कुऊर न [दे] १ नीवी नाड़ा, इजारबन्द। २ पहने हुए कपड़े का प्रान्त भाग, अञ्चल (दे २, ३८)।

कुऊहल न [कुतूहल] १ अपूर्व वस्तु देखने की लालसा—उत्सुकता। २ कौतुक, परिहास (हे १, ११७, कुमा)।

कुओ अ [कुत] कहाँ से ? (षड्)। °इ अ [°चित्] कहीं से, किसी से (स १८५)। °वि अ [°अपि] कहीं से भी (कप्प)।

कुंआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घीकुवार, घीगुवार (श्रा २०, जी १०)।

कुंकण न [दे] १ कोकनद, रक्त-कमल (पण्ण १—पत्र ४०)। २ पु क्षुद्र जन्तु विशेष, चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति (उत्त ३६)।

कुंकण पु [कोङ्कण] देश-विशेष (अणु सार्धं ३८)।

कुंकुण देखो कुकण (सिरि २८६)।

कुंकुम न [कुङ्कुम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष (कुमा, श्रा १८)।

कुंग पुं [कुङ्ग] देश-विशेष (नवि)।

कुंच सक [कुञ्च्] १ जाना, चलना। २ अक. संकुचित होना। ३ टेढ़ा चलना (कुमा, गउड)।

कुंच पु [क्रौञ्च] १ पक्षि विशेष (पण्ह १, १, उव पृ २०८, उ १, ९८)। २ इस नाम का एक असुर (पाअ)। ३ उस नाम का एक अनार्य देश। ४ वि उसमें निवासी लोग (पव २७४)। °रवा स्त्री [°रवा] दण्डकारण्य की इस नाम की एक नदी (पउम ४२, १५)। °वीरग न [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (निचू १६)। °रि पु [°रि] कार्त्तिकेय, स्कन्द (पाअ)। देखो कोंच।

कुंचल न [दे] मुकुल कली, बौर (दे २, ३६, पाअ)।

कुंचि वि [कुञ्चित] १ कुटिल, वक्र। २ मायावी, कपटी (वव १)।

कुंचिगा देखो कोंचिगा।

कुंचिय वि [कुञ्चित] १ संकुचित (सुपा ५८)। २ कुण्डल के आकारवाला, गोलाकृति (औप, जं २)। ३ कुटिल, वक्र (वव १)।

कुंचिय पु [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक (मन १३३)।

कुंचिया देखो कोंचिगा। रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा (जीत)।

कुंचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुञ्जी, ताली (पिंड ३५६)।

कुंजर पुं [कुञ्जर] हस्ती, हाथी (हे १, ६६ पाअ)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (पउम ६५, ३८)। °सेणा स्त्री [°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी (उत्त २६)। °वत्त न [°वर्त] नगर-विशेष (सुर ३, ८८)।

कुंट वि [कुण्ट] १ कुब्ज, वामन (आचा)। २ हाथ-रहित हस्त-हीन (पव ११०, निचू ११, आचा)।

कुंटलविंटल न [दे] १ मन्त्र-तंत्रादि का प्रयोग, पाखण्ड विशेष (आवम)। २ वि मन्त्र-तन्त्रादि से आजीविका चलानेवाला (आक)।

कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन (दे २, ४०)।

कुंटि स्त्री [दे] १ गठरी, गाँठ (दे २. ३८)। २ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का ओजार, 'मुसमुंढमलहलदंतालकुटिकुद्दालपमुहसत्थाए' (सुपा ५२६)।

कुंठ वि [कुण्ठ] १ मन्द, आलसी (श्रा १६)। २ मूर्ख, बुद्धि-रहित (आचा)।

कुंठी स्त्री [दे] सँडसी, चीमटा (वज्जा ११८)।

कुंड न [कुण्ड] १ कुंडा, पात्र-विशेष (षड्)। २ जलाशय-विशेष (गादि)। ३ इस नाम का एक सरोवर (ती ३४)। ४ आज्ञा, आदेश, 'विसमसरकुंडवसिणोनिरियजणा देस' (कप्पू)। °कोलिय पु [°कौलिक] एक जैन उपासक (उवा)। °ग्गाम पु [°ग्राम] मगध देश का एक गाँव (कप्प, पउम २, २१)। °धारि वि [°धारिन्] आज्ञाकारी (कप्पू)। °पुर न [°पुर] ग्राम-विशेष (कप्प)।

कुंड न [दे] कुंडा पेरने का जीर्ण काण्ड, जो घास का बना हुआ होता है (दे २, ३३, ८, ४५)।

कुंडग पुन [कुण्डक] १ अन्न का छिलका (उत्त १, ५, आचा २, १, ८, ६)। २ चावल से मिश्रित भूसा (उत्त १, ५)।

कुडभी स्त्री [दे कुटभी] छोटी पताका (आवम)।

कुडमोअ पुन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की आकृतिवाला मिट्टी का एक तरह का पात्र (दस ६, ५१)।

कुडल पुन [कुण्डल] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' या निर्विकृतिक तप (सबोध ५७)।

कुडल पुन [कुण्डल] १ कान का आभूषण (भग, औप)। २ पु विदर्भ देश के एक राजा का नाम (पउम ३०, ७८)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष। ५ देव-विशेष (जीव ३)। ६ पर्वत-विशेष (ठा १०)। ७ गोल आकार (सुपा ६२)। °भद्द पु [°भद्र] कुण्डल द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °मंडिअ वि [°मण्डित] १ कुण्डल से विभूषित। २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा (पउम ३०, ७४)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] देव-विशेष (जीव ३)। °महावर पु [°महावर] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १९)। °वर पु [°वर] १ द्वीप विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ देव-विशेष (जीव ३)। ४ पर्वत-विशेष (ठा ३, ४)। °वरभद्द पु [°वरभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभास पु [°वराव-भास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र विशेष (जीव ३)। °वरोभासभद्द पु [°वराव भासभद्र] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभासमहाभद्द पु [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °वरोभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष (जीव ३)। °वरोभासवर पु [°वरावभासवर] समुद्र-विशेष का अधिपति देव विशेष (जीव ३)।

कुडला स्त्री [कुण्डला] विदेहवर्ष-स्थित नगरी विशेष (ठा २, ३)।

कुडलि वि [कुण्डलिन्] कुण्डलवाला (भास ३३)।

कुडलिअ वि [कुण्डलित] वर्त्तुल, गोल आकारवाला (सुपा ९२, कप्पू)।

कुडलिआ वि [कुण्डलिका] छन्द विशेष (पिंग)।

कुडलोद पु [कुण्डलोद] इस नाम का एक समुद्र (सुज्ज १९)।

कुडाग पु [कुण्डाक] सनिवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (आवम)।

कुडि देखो कुडी (महा)।

कुडिअ पु [दे] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया (दे २, ३७)।

कुडिअपेसण न [दे] ब्राह्मण विष्टि, ब्राह्मण की नोकरी, ब्राह्मण की सेवा (दे २, ४३)।

कुडिगा } स्त्री [कुण्डिका] नीचे देखो
कुडिया } (रंभा, अनु ५, भग, णाया २, ५)।

कुडिण न [कुण्डिन] विदर्भ देश का एक नगर (कुप्र ४८)।

कुडी स्त्री [कुण्डी] १ कुण्डा, पात्र-विशेष, 'तेमिमहोभूमीए ठविया कुडी य तेल्लपडि-पुन्ना' (सुपा २६६)। २ कमण्डल, संन्यासी का जल पात्र (महा)।

कुढ देखो कुठ (सुपा ४२२)।

कुढय न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा। २ छोटा वरतन (दे २, ६३)।

कुन पु [दे] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१)।

कुन पु [कुन्त] १ हथियार-विशेष, भाला (पण्ह १, १, ओप)। २ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८)।

कुनल पु [कुन्तल] १ केश, वाल (सुर १, १, सुपा ६१, २००)। २ देश विशेष (सुपा ६१, उव ४१५)। °हार पु [°हार] धम्मिल्ल, सयत केश, वांधे हुए वाल (पाअ)।

कुनल पु [दे] सातवाहन, नृप-विशेष (दे २, ३८)।

कुतला स्त्री [कुन्तला] इस नाम की एक रानी (दस)।

कुतला स्त्री [दे] करोटिका, परोसने का एक उपकरण (दे २, ३८)।

कुतली स्त्री [कुन्तली] कुन्तल देश की रहने-वाली स्त्री (कप्पू)।

कुनाकुति न [कुन्ताकुन्ति] वर्छे की लडाई (सिरि १०३२)।

कुती स्त्री [दे] मंजरी, बौर (दे २, ३४)।

कुती स्त्री [कुन्ती] पाण्डवो की माता का नाम (उप ६४८)। °विहार पु [°विहार] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जीर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था (ती २८)।

कुतापोट्टलय वि [दे] चतुष्कोण, चार कोनवाला, चौकोर (दे २, ४३)।

कुंथु पु [कुन्थु] १ एक जिन-देव, इस अव-सर्पिणी काल मे उत्पन्न सत्तरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा (सम ४३, पडि)। २ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९८)। ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, जी १७)।

कुद पु [कुन्द] १ पुष्प-वृक्ष विशेष (जं २)। २ न पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल (सुर २, ७६, णाया १, १)। ३ विद्या-धरो का एक नगर (इक)। ४ पुन छन्द-विशेष (पिंग)।

कुदय वि [दे] कृश, दुर्बल (दे २, ३७)।

कुदा स्त्री [कुन्दा] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इद्र की पटरानी (इक)।

कुदीर न [दे] विम्बी-फल, कुन्दरुन का फल (दे २, ३९)।

कुदुक पु [कुन्दुक] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ४१)।

कुदुरुक पु [कुन्दुरुक] सुगन्धि पदार्थ-विशेष (णाया १, १—पत्र ४१, सम १३७)।

कुदुल्लुअ पु [दे] पक्षि-विशेष, उलूक, उल्लू (पाअ)।

कुधर पु [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।

कुपय पुन [कूपक] तेल वगैरह रखने का पात्र-विशेष (रयण ३१)।

कुपल पुन [कुट्मल, कुड्मल] १ इस नाम का एक नरक। २ मुकुल, कली, कलिका (हे १, २६ कुमा, पड्)।

कुबर [दे] देखो कुंधर (पाअ)।

कुभ पु [कुम्भ] १-३ माठ, असी और एक सौ आढक की नाप (अणु १५१, तदु २९)। ४ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)। ५ एक राजा (राय ४६)।

कुंभ पु [कुम्भ] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा भगवान् मल्लिनाथ का पिता (सम १५१, पउम २०, ४१)। २ स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र (से १२, ६४)। ४ एक विद्याधर सुभट का नाम (पउम १०, १३)। ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २९)। ६ कलश, घड़ा (महा; कुमा)। ७ हाथी का गण्ड-स्थल (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण (अणु)। ९ तरने का उपकरण (निचू १)। १० ललाट, भाल-स्थल (पव २)। ११ °अण्ण पु [°कर्ण] रावण के छोटे भाई का नाम (१५, ११)। °आर पु [°कार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनानेवाला (हे १, ८)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (दस)। °गार देखो °आर (महा)। °ग्ग न [°ाग्र] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण (गाया १, ८—पत्र १२५)। °सेण पु [°सेन] अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम (तित्थ)।

कुंभंड न [कूष्माण्ड] फल-विशेष, कोहँडा, कुम्हड़ा (पण्ण)।

कुंभार पु [कुम्भकार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनानेवाला (हे १, ८)। °वाय पु [°पाक] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान (ठा ८)।

कुंभि पु [कुम्भिन्] १ हस्ती, हाथी (सण)। २ कीटक-विशेष, एक प्रकार का पट-पुष्प (पुप्फ १२७)।

कुंभिअ देखो कुंभिय (गाय ३०)।

कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त (दे २, ३८)।

कुंभिय वि [कुम्भिक] कुम्भ-परिमाणवाला (ठा ४, २)।

कुंभिल्ल पु [दे कुम्भिल] १ चोर, स्तेन (दे २, ६२; विक ५६)। २ पिशुन, दुर्जन (दे २, ६२)।

कुंभिट वि [दे] खोदने योग्य (दे २, ३९)।

कुंभी स्त्री [कुम्भी] १ पात्र-विशेष, घड़े से भारी जाता छोटा पात्र (सम १२५)। २ कुंभ, घड़ा (सं ३)। °पाग पु [°पाक] १ कुंभी में पकाना (पण्ह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना (सूअ १, १, १)।

कुंभी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँडा का गाछ, 'वलियो कुंभीफल दतुरानु' (गउड)।

कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-संयम (दे २ ३४)।

कुंभील पु [कुम्भील] जलचर प्राणि-विशेष, नक्र, मगर (चारु ६४)।

कुंभुब्भव पु [कुम्भोद्भव] ऋषि-विशेष, अगस्त्य ऋषि (पण्ण)।

कुकम्मि वि [कुकर्मिन्] खराब कर्म करनेवाला (सूअ १, ७, १८)।

कुकुला स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे २, ३३)।

कुकुस [दे] देखो कुक्कुस (दस ५, १३४)।

कुकुहाइय न [कुकुहायित] चलते समय का शब्द विशेष (तदु)।

कुकूल पु [कुकूल] करीषाग्नि, कंडे की आग (पण्ह १, १)।

कुक्क देखो कोक्क। कुक्कुट (पि १६७, ४५८)।

कुक्क पु [दे] कुत्ता, कुक्कुर, 'कुक्केहि कुक्काहि अ बुक्कअंते (मृच्छ ३६)।

कुक्कयय न [दे] आभरण विशेष, 'अदु अंजणि अलंकारं कुक्कययं मे पयच्छाहि' (सूअ १, ४, २, ७)। देखो कुक्कुडय।

कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (मृच्छ ३६)।

कुक्कुअ वि [कुत्कुच] भांड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करनेवाला (धर्म २, पव ६)।

कुक्कुअ न [कौकुच्य] कुचेष्टा, कामोत्पादक अंग-विकार (पउम ११, ६७; आचा)।

कुक्कुअ वि [कुकूज] आक्रन्दन करनेवाला (उत २१)।

कुक्कुआ स्त्री [कुत्कुचा] अस्पन्दन, चरण, स्पन्दन का कृता, स्पन्दना (बृह ६)।

कुक्कुइअ वि [कौकुचिक] भांड की तरह कुचेष्टा करनेवाला, काम-चेष्टा करनेवाला (भग; औप)।

कुक्कुइअ न [कौकुच्य] काम-कुचेष्टा, 'उदारेण य नयणाइयाण परियारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं' (सुपा ५ ६, पडि)।

कुक्कुड पु [कुर्कुट] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

कुक्कुड पु [कुक्कुट] १ कुक्कुट, मुर्गा (गा ५८२; उवा)। २ वनस्पति-विशेष (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष (वव १)। °मंसय न [°मांसक] १ मुर्गा का मांस। २ बीजपूरक वनस्पति का गूदा (भग १५)।

कुक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [कुक्कुटक] देखो कुक्कयय (सूअ १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिआ } स्त्री [कुक्कुटिका °टी]
कुक्कुडी } कुक्कुटी, मुर्गी (णाया १, ३; विपा १, ३)।

कुक्कुडी स्त्री [कुक्कुटी] माया, कपट (पिंड २९७)।

कुक्कुडेसर न [कुक्कुटेश्वर] तीर्थ-विशेष (ती १९)।

कुक्कुर पु [कुक्कुर] कुत्ता, श्वान (पउम ६४, ८०; सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पु [दे] निकर, समूह (दे २, १३)।

कुक्कुस पु [दे] धान्य आदि का छिलका, भूसा (दे २, ३६; दस ५, १, ३४)।

कुक्कुह पु [कुक्कुभ] पक्षि-विशेष (गउड)।

कुक्कुहाइअ न [दे] चलते समय का अश्व का शब्द विशेष (तदु ५३)।

कुक्खि [दे कुक्षि] देखो कुच्छि (दे २, ३४; औप; स्वप्न ६१; कप्प ३३)।

कुक्खिंभरि देखो कुच्छिंभरि (धर्मवि १४९)।

कुक्खेअअ देखो कुच्छेअय (मक्ख ६)।

कुग्गाह पु [कुग्राह] १ कदाग्रह, हठ (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष, 'कुग्गाह-गाहाउयजन्तुसकुलो' (सुपा ६२६)।

कुच पु [कुच] स्तन, थन (कुमा)।

कुचोज्ज न [कुचोद्य] कुतर्क (धर्मसं ११७४)।

कुच्च पु [कूर्च] कँघी, बाल सँवारने का उपकरण (उत्त २२, ३०)।

कुच्च न [कूर्च] १ दाढ़ी-मूँछ (पात्र, अभि २१२)। २ तृण-विशेष (पण्ह २, ३) देखो कुच्चग।

कुच्चधरा स्त्री [कूर्चधरा] दाढ़ी-मूँछ धारण करनेवाली (औप ८३ भा)।

कुञ्चग वि [कौर्चक] शर नामक गाछ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

कुञ्चग } देखो कुच (आचा २, २, ३,
कुचय } काल)। ३ कूँची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल में चूना लगाया जाता है (उप पृ ३४३; कुमा)।

कुञ्चिय वि [कूर्चिक] दाढी-मूँछवाला (बृह १)।

कुच्छ सक [कुत्स्] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ कुच्छ कुच्छणिज्ज (श्रा २७; पण्ह १, ३)।

कुच्छ पुं [कुत्स] १ ऋषि-विशेष। २ गोत्र-विशेष, 'थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्स' (कप्प)।

कुच्छ देखो कुच्छ = कुत्स्।

कुच्छग पु [कुत्सक] वनस्पति विशेष (सूअ २, २)।

कुच्छणिज्ज देखो कुच्छ = कुत्स्, 'अन्नेसिं कुच्छणिज्ज मारणाणं भक्खणिज्ज हि' (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [कुत्सा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (ओघ ४४४ उप ३२० टी)।

कुच्छि पुस्त्री [कुक्षि] १ उदर, पेट (हे १, ३५ उवा; महा)। २ अडतालीस अंगुल का मान (जं २)। °किमि पु [°कृमि] उदर में उत्पन्न होनेवाला कीडा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पणण १)। °धार पुं [°धार] १ जहाज का काम करनेवाला नोकर, 'कुच्छिधारकन्न-धारगब्भजससंजत्ताणावावाणियगा' (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी (णाया १, १६)। °पूर पु [°पूर] उदर-पूर्त्ति (वव ४)। °वेयणा स्त्री [°वेदना] उदर का रोग-विशेष (जीव ३)। °सूल पुंन [°शूल] रोग-विशेष (णाया १, १३; विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [कुक्षिम्भरि] अकेलपेटू, पेटू, स्वार्थी, 'हा तियचरित्तकुच्छि (? च्छिं) भरिए।' (रभा)।

कुच्छिमई स्त्री [दे. कुक्षिमती] गर्भिणी, आपन्न-सत्त्वा (दे २, ४१; पड्)।

कुच्छिमहिका (मा) देखो कुच्छिमई (प्राकृ १०२)।

कुच्छिय वि [कुत्सित] खराब, निन्दित, गर्हित (पचा ७; भवि)।

कुच्छिल्ल न [दे] १ वृति का विवर, बाड का छिद्र (दे २, २४)। २ छिद्र, विवर (पाअ)।

कुच्छेअय पु [कौक्षेयक] तलवार, खड्ग (दे १, १६१ पड्)।

कुज पु [कुज] वृक्ष, पेड (ज २)।

कुजय पु [कुजय] जूआरी, जूआखोर (सूअ १ २, २)।

कुज्ज वि [कुब्ज] १ कुब्ज, कुबडा, वामन (सुपा २; कप्पू)। २ पुन पुष्प-विशेष (पड्)।

कुज्जय पु [कुब्जक] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका (पउम ४२ ८; कुमा)। २ न उस वृक्ष का पुष्प 'बंधेउं कुज्जयपसूणं' (हे १, १८१)।

कुज्झ मक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ (हे ४, २१७; पड्)।

कुट्ट सक [कुट्ट्] १ कूटना, पीटना, ताडन करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि कुट्टइस्स (पि ५२८)। वकृ कुट्टित (सुर ११, १)। कवकृ कुट्टिज्जत, कुट्टिज्जमाण (सुपा ३४०; प्रासू ६६; राय)। संकृ कुट्टिय (भग १४, ८)।

कुट्ट पु [कुट] घडा, कुम्भ (सूअ २, ७)।

कुट्ट पुन [दे] १ कोट, किला, 'दिज्जति कवाडाइं कुट्टदुवरि भडा ठविज्जति' (सुपा ५०३)। २ नगर, शहर (सुर १५, ८१)। °वाल पु [°पाल] कोतवाल, नगर-रक्षक (सुर १५, ८१)।

कुट्टण न [कुट्टन] १ छेदन, चूर्णन, भेदन (ओघ)। २ कूटना, ताडना (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शारीरिक पीडा (सूअ १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] १ मूसल, एक प्रकार की मोटी लकडी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (बृह १)। २ दूती, कुटनी, कुट्टिनी (रभा)।

कुट्टयरी स्त्री [दे] चंडी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुट्टा स्त्री [दे] गौरी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुट्टाय पु [दे] चर्मकार, मोची (दे २, ३७)।

कुट्टित देखो कुट्ट = कुट्ट्।

कुट्टितिया देखो कोट्टतिया (राज)।

कुट्टिंब [दे] देखो कोट्टिंब (पाअ)।

कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] कूटनी, दूती (कप्पू; रंभा)।

कुट्टिम देखो कोट्टिम = कुट्टिम (भग ८, ९; राय; जीव ३)।

कुट्टिय वि [कुट्टित] १ कूटा हुआ, ताडित (सुपा १५; उत्त १९)। २ छिन्न, छेदित (बृह १)।

कुट्ठ पुन [कुष्ठ] १ पंसारी के यहाँ बेची जाती एक वस्तु, कूठ (विसे २९३; पण्ह २,५)। २ रोग-विशेष, कोढ (वव ६)।

कुट्ठ पु [कोष्ठ] १ उदर, पेट, 'जहा विस कुट्ठगय मतमूलविसारया। वेजा हणंति मंतेहिं' (पडि)। २ कोठा, कुशूल, धान्य भरने का बडा भाजन (पण्ह २, १)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] एक बार जानने पर नहीं भूलनेवाला (पण्ह २, १)। देखो कोट्ठ, कोट्ठग।

कुट्ठ वि [क्रुष्ट] १ शपित, अभिशप्त। २ न. शाप, अभिशाप-शब्द, 'उट्ठ कुट्ठ केहिं पेच्छता आगया इत्थ' (सुपा २५०)।

कुट्ठग पुन [कोष्ठक] शून्य घर (दस ५, १ २०, ८२)।

कुट्ठा स्त्री [कुष्ठा] इमली, चिंचा (बृह १)।

कुट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोगवाला (सुपा २४३, ५७६)।

कुड पु [कुट] १ घडा, कलश (दे २, ३५; गा २२९; विसे १४५९)। २ पर्वत। ३ हाथी वगैरह का बन्धन-स्थान (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ वृक्ष, पेड, 'तडुवियसिहंडमडियकुडग्गो' (सुपा ५९२)। °कठ पु [°कण्ठ] पात्र-विशेष, घडा के जैसा पात्र (दे २, २०)। °दोहिणी स्त्री [°दोहिनी] घडा भर दूध देनेवाली (गा ५३७)।

कुडंग पुन [कुटङ्क] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगैरह से ढका हुआ स्थान (गा ६८०; हेका १०५)। २ वन, जगल (उप २२० टी)। ३ बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत (बृह १)। ४ गह्वर, कोटर (राज)। ५ वंश-गहन (णाया १, ८; कुमा)।

कुडंग पुन [दे कुटङ्क] लता-गृह, लता से ढका हुआ घर (दे २, ३७; महा; पाअ; पड्)।

कुडंगा स्त्री [कुटङ्का] लता-विशेष (पउम ५३, ७९)।

कुडंगी स्त्री [दे. कुटङ्गी] वंश की जाली, 'एत्थपहाए णिवडिया वणकुडंगी' (महा; सुर १२, २००; उप पृ २८१)।

कुडअ देखो कुडुव (महा; गा ६०६)।

कुडग देखो कुड (आवम सूत्र १ १२)।

कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटा पताका (सम ६०)।

कुडय न [दे] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोपड़ी (दे २ ३७)।

कुडय पुन [कुटज] वृक्ष-विशेष, कुरैया (णाया १ ९ पण्ण १७ न १९४), 'कुडय दलउ' (कुमा)।

कुडव पु [कुडव] अनाज या अन्न नापने का एक माप (णाया १, ७; उप पृ ३९०)।

कुडाल देखो कुड्डाल (उवा)।

कुडिअ वि [दे] कुब्ज, वामन, नाटा (पाअ)।

कुडिआ स्त्री [दे] वाड का विवर (दे २, ३८)।

कुडिच्छ न [दे] १ वाड का छिद्र। २ कुटी, झोपड़ी। ३ वि त्रुटित, छिन्न (दे २, ६४)।

कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढ़ा (सुर १, २०; २, ८६)।

कुडिलविडल न [दे कुटिलविटल] हस्ति-शिक्षा (राज)।

कुडिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (पाअ)। २ वि कुब्ज, कुबड़ा (पाअ)।

कुडिल्लय वि [दे कुटिलक] कुटिल, टेढ़ा, वक्र (दे २ ४०; भवि)।

कुडिव्वय देखो कुलिव्वय (राज)।

कुडी स्त्री [कुटी] छोटा गृह, झोपड़ी, कुटीर (सुपा १२०; वज्जा ६४)।

कुडीर न [कुटीर] झोपड़ी, कुटी (हे ४, ३६४; पउम ३३ ८९)।

कुडीर न [दे] वाड का छिद्र (दे २, २४)।

कुडुंग पु [दे] लतागृह, लताओं से ढका हुआ घर (षड्; गा १८५, २३२ अ)।

कुडुंब न [कुटुम्ब] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग (उवा; महा; प्रासू १६७)।

कुडुंबय पु [कुस्तुम्बक] १ वनस्पति-विशेष, धनिया (पण्ण १—पत्र ४०)। २ वाद्य-विशेष 'पवडुकम्मणदे य दद्दरी य कुडुंबए' (उत ३६, ६८ पा)।

कुडुंबि, कुडुंबिअ वि [कुटुम्बिन्, °क] १ कुटुम्ब-युक्त, गृहस्थ। २ कुनबेवाला, कर्षक (गउड)। ३ सम्बन्धी, 'सोभग्गगुणसमुद्दएण आणाणकुडुंबिएण' (जप्प)।

कुडुंबीअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (षड्)।

कुडुभग पु [दे] जल-मण्डूक, पानी का मेढक (निचू १)।

कुडुक्क पु [दे] लता गृह (षड्)।

कुडुच्छिअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया, झोपडी (कुमा)।

कुड्ड पुन [कुड्य] १ भित्ति, भीत (पउम ६८, ६; हे २, ७८),

'अज्ज गओत्ति अज्ज गओत्ति
अज्ज गओत्ति गणिरीए।
पढमच्चिअ दिअहद्धे कुड्डो लेहाहिं
चित्तलिओ (गा २०८)।

कुड्ड न [दे] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल (दे २, ३३; पाअ; षड्; हे २, १७४)।

कुड्डगिलोई [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे २, १६)।

कुड्डलेवणी स्त्री [दे कुड्यलेपनी] सुधा, चूना, खडी, खटिका (दे २, ४२)।

कुड्डाल न [दे] हल के ऊपर का विस्तृत अंश (उवा)।

कुड्ढ पुन [दे] १ चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना (दे २, ६२; सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुड़ानेवाला, वापस लेनेवाला (दे २, ६२)।

कुढार पु [कुठार] कुल्हाड़ा, फरसा (हे १, १९९; षड्)।

कुढावय न [दे] अनुगमन, पीछे जाना (निचू १४३९ टी)।

कुढिय वि [दे] मूढ, मूर्ख, बेसमझ, 'कुयति नेउराइं पुणो पुणो कुढियकुरिमाव्व' (सुर ३, १४२)।

कुढिय वि [दे] जिसके माल की चोरी हो गई हो वह (सुर २, २१)।

कुण सक [कृ] करना, बनाना। कुणइ, कुणए, कुणउ (भग; महा; सुपा ३२०)। वकृ कुणंत, कुणमाण (गा १६५; सुपा ३६, ११३; आचा)।

कुणक पु [कुणक] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुणव न [कुणप] १ मुरदा, मृत-शरीर (पाअ; गउड)। २ वि दुर्गन्धी (हे १, २३१)।

कुणाल पुं व [कुणाल] १ देश-विशेष (णाया १, ८ उप ९८६ टी)। २ प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र (विसे ८६१)। °णयर न [°नगर] एक शहर, उज्जैन, 'आसी कुणालनयरे' (सथा)।

कुणाला स्त्री [कुणाला] उस नाम की एक नगरी (सुपा १०३)।

कुणि, कुणिअ पु [कुणि] १ हस्त-विकल, ठूँठ, हाथ-कटा मनुष्य (पउम २, ७७)। २ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह। ३ जिसका एक पाँव छोटा हो वह, खञ्ज (पण्ह २, ५—पत्र १५०; आचा)।

कुणिआ स्त्री [दे] वृत्ति-विवर, वाड का छिद्र (दे २, २४)।

कुणिम पुन [दे कुणप] १ शव, मृतक, मुरदा (पण्ह २, ३)। २ मांस (ठा ४, ४; औप)। ३ नरकावास-विशेष (सूअ १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरह (भग ७, ६)।

कुणुकुण अक [कुणुकुणाय्] शीत से कम्प होने पर 'कडकड' आवाज करना। वकृ कुणुकुणंत (सुर २, १०३)।

कुण्हरिया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुतत्ती स्त्री [दे] मनोरथ, वाञ्छा (दे २, ३६)।

कुतुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कुतुंबर पु [कुस्तुम्बुर] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कुतुव पुन [कुतुप] १ तेल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र (दे ४, २२)। देखो कुउअ।

कुत्त पु [दे] कुत्ता, कुक्कुर (रंभा)।

कुत्त न [दे कुत्रक] ठेका, इजारा (विपा १, १—पत्र ११)।

कुत्तार वि [कुतार] अयोग्य तारक (गच्छ १, ३०)।

कुत्तिय पुस्त्री [दे] एक तरह का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष, 'दसणिय कुत्तिय विच्छू' (प्राप १७; पमा ४१)।

कुत्ती स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (रंभा)।
कुत्थ अ [कुत्र] कहा, किस स्थान मे? (उत्तर १०८)।
कुत्थ सक [क्वथय्] सडाना, 'नो वाऊ हरेज्जा, नो सलिल कुत्थिज्जा' (पव १५८ टी) कुच्छे (? त्थे) ज्जा (अण १६१)। भवि कुच्छि (? त्थि) हिई (पिंड २३८)। कृ कुत्थ (दसनि १०, २४)।
कुत्थ देखो कढ। कुत्थमि, कुत्थमु (गा ५०१ अ)।
कुत्थण स्त्रीन [क्वथन] सडना, सड जाना (वव ४)।
कुत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १२)। २ कोटर वृक्ष की पोल, गह्वर (सुपा २४६)। ३ सर्प वगैरह का बिल (उप ३५७ टी)।
कुत्थल देखो कोत्थल, 'कुच्छ (? त्थ) लमणाणउयरो' (धर्मवि २७)।
कुत्थुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य विशेष (राय)।
कुत्थुभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष, धनियाँ (पण्ण १—पत्र ३१)।
कुत्थुह पुन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहती है (हेका २५७)।
कुत्थुहवत्थ न [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे २, ३८)।
कुद्दो देखो कुओ (हे १, ३७)।
कुद्द वि [दे] प्रभूत, प्रचुर (दे २, ३४)।
कुद्दण पु [दे] रासक, रासा (दे २, ३८)।
कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदो, कोदव (सम्य १२)।
कुद्दाल पु [कुद्दाल] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदारी (सुपा ५२६)। २ वृक्ष-विशेष (ज २)।
कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित, क्रोध-युक्त (महा)।
कुपचि (पे) अ [क्वचित्] किसी जगह मे (प्राकृ १२३)।
कुप्प सक [कुप्] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ (उव, महा)। वकृ कुप्पत (सुपा १६७)। कृ कुप्पियव्व (स ६१)।
कुप्प सक [भाष्] बोलना, कहना। कुप्पइ (भवि)।
कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चांदी को छोड कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरह के बने हुए गृह-उपकरण, 'लोहाई उवक्खरो कुप्प' (वृह १, पडि)।
कुप्पढ पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज। २ समुदाचार, सदाचार (दे २, ३६)।
कुप्पर न [दे] सुरत के समय किया जाता हृदय ताडन-विशेष। २ समुदाचार, सदाचार। ३ नर्म, हासी, ठट्ठा (दे २, ६४)।
कुप्पर पु [कूर्पर] १ कफोणि, हाथ का मध्य भाग। २ जानु, घुटना। ३ रथ का अवयव-विशेष (ज ३)।
कुप्पर पु [कर्पर] देखो कप्पर। भीत की परत, भीत का जीर्ण-शीर्ण थर, 'एयाओ पाडलावड्ढकुप्परा जुण्णभित्तिओ' (गउड)।
कुप्पल देखो कुपल (पि २७७)।
कुप्पास पु [कूर्पास] कञ्चुक, काचली, जनानी कुरती (हे १, ७२, कप्पू, पाअ)।
कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध। २ न क्रोध, गुस्सा, 'कुप्पिय नाम कुज्झिय' (आचू ४)।
कुप्पिस देखो कुप्पास (हे १, ७२, दे २, ४०)।
कुबर पु [कूबर] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (पव २६)।
कुबेर पु [कुबेर] भगवान् कुन्थुनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।
कुबेर पु [कुबेर] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश (पाअ, गउड)। २ भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष विशेष (सति ८)। ३ काञ्चनपुर के एक राजा का नाम (पउम ७, ४५)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ५ एक जैन मुनि (कप्प)। °दिसा पु [°दिश्] उत्तर दिशा (सुर २, ८५)। °नयरी स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका (पाअ)।
कुबेरा स्त्री [कुबेरा] जैन साधु-गण की एक शाखा (कप्प)।
कुब्बड वि [दे] कुबडा, कुब्ज, वामन (श्रा २७)।
कुब्बर पु [कूबर] वेश्रमण के एक पुत्र का नाम (अत ५)।
कुभड पु [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।
कुभडिद पु [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी (ठा २, ३)।
कुमर देखो कुमार (हे १, ६७, सुपा २४३, ६७६, कुमा)।
कुमरी देखो कुमारी (कप्पू, पाअ)।
कुमार पु [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक, पाच वर्ष तक का लडका (ठा १०, णाया १ २)। २ युवराज, राज्यार्ह पुरुष (पण्ह १, ५)। ३ भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष (सति ७)। ४ लोहकार, लोहार, 'चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अय पिव' (उत्त २३)। ५ कार्त्तिकेय, स्कन्द (पाअ)। ६ शुक पक्षी। ७ घुडसवार। ८ सिन्धु नद। ९ वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष (हे १, ६७)। १० अविवाहित ब्रह्मचारी (सम ५०)। °ग्गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (आचा २, ३)। °णदि पु [°नन्दिन] इस नाम का एक सोनार (आवम)। °धम्म पु [°धर्म] एक जैन साधु (कप्प)। °वाल पु [°पाल] विक्रम की बारहवी शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा (दे १ ११३ टी)।
कुमार पु [दे] कुआर का महीना, आश्विन मास (ठा २, १)।
कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक सनिवेश, 'तओ भगव कुमाराए संनिवेसे गओ' (आवम)।
कुमारिय पु [कुमारिक] कसाई, सौनिक (वृह १)।
कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो कुमारी (पि ३५०)।
कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लडकी २ अविवाहित कन्या (हे ३, ३२)। ३ वनस्पति-विशेष, घीकुआरी (पव ४)। ४ नवमल्लिका। ५ नदी-विशेष। ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग। ७ वनस्पति-विशेष, अपराजिता। ८ सीता। ९ बडी इलाची। १० वन्ध्या ककडी की लता। ११ पक्षि-विशेष (हे ३, ३२)।
कुमारी स्त्री [दे कुमारी] गोरी, पार्वती (दे २, ३५)।
कुमुअ पु [कुमुद] १ इस नाम का एक वानर (से १, ३४)। २ महाविदेह-वर्ष का

२ विजय-गुग्म, भूमि प्रदेश-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न चन्द्र-विकासी कमल (णाया १ ३—पत्र ६६ से १, २६)। ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। ५ शिखर विशेष (ठा ८)। ६ वि पृथ्वी मे आनन्द पानेवाला। ७ खराब प्रीतिवाला (से १, २६)। देखो कुमुद।

कुमुअ पु [कुमुद] देव-विशेष (सिरि ६६७)। °चद पु [°चन्द्र] आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की मुनि अवस्था का नाम (सम्मत्त १४१)।

कुमुअग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महापद्म' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी (र्ठ ४)। २ एक नगरी (दीव)।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र-विकासी कमल का पेड़ (कुमा, रभा)। २ इस नाम की एक रानी (उप १०३१ टी)।

कुमुद देखो कुमुअ (उर)। देव-विमान-विशेष (सम ३०, ३५)। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उप)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल (ती २१)। °गर पु [°कर] कुमुद-षण्ड कुमुदों से भरा हुआ वन (पण्ह १, ४)।

कुमुदग देखो कुमुअग (इक)।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष (सूअ २, २)।

कुमुली स्त्री [दे] चुल्ली, चूल्हा (दे २, ३६)।

कुम्म पु [कूर्म] कच्छप, कछुआ (पाअ)। °ग्गाम पु [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम (सम १५)।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क, कुम्हलाया हुआ (दे २, ४०)।

कुम्मार पु [कूर्मार] मगध देश के एक गाँव का नाम (आचा २, १५, ५)।

कुम्मास पु [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उड़द (ओघ ३५६, पण्ह २, ५)। २ थोड़ा भीजा हुआ मूँग वगैरह धान्य (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ कछुई, कच्छपी। २ नारद की माता का नाम (पउम ११, ५२)। °पुत्त पु [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी (ओप)।

कुम्ह पुव [कुष्मन] देश-विशेष (हे २,७४)।

कुम्हड देखो कोहंड (प्राकृ २२)।

कुम्हडी देखो कोहंडी (प्राकृ २२)।

कुय पु [कुच] १ स्तन, थन। २ वि शिथिल (वव ७)। ३ अस्थिर (निचू १)।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

कुरंग पु [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति (ज २)। २ कोई भी मृग, हरिण (पण्ह १, १, गउड)। स्त्री °गी (पाअ)। °च्छी स्त्री [°क्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्रवाली स्त्री, मृगनयनी स्त्री (वाअ २०)।

कुरंटय पु [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवासा (उप १०३१ टी)।

कुरकुर देखो कुरुकुर। वकृ कुरकुराइत (रभा)।

कुरय पु [कुरक] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुरय न [कुरवक] पुष्प विशेष (वज्जा १०६)।

कुरर पु [कुरर] कुरर-पक्षी, उत्क्रोश (पण्ह १, १, उप १०२६)।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर (स २, ४०)।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा। २ गाथा छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ भेपी, भेड़ी (रभा)।

कुरल पु [कुरल] १ केश, बाल, 'कुरल-कुरलीहिं वनिश्रो तमालदलसामलो भ्रसणिड्ढो' (सुपा २४, पाअ)। २ पक्षि-विशेष (जीव १)।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केशों की वक्र लटा (सुपा १, २४)। २ कुरल-पक्षिणी, 'कुरलिव्व नहगणे भमइ' (पउम १७, ७६)।

कुरवय पु [कुरवक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया (गा ६, मा ४०, मिरि २६, स ४१४, कुमा, दे ५, ६)।

कुरा स्त्री [कुरा] क्षेत्र-विशेष, अकर्म भूमि-विशेष (ठा २, ३, १०)।

कुरिण न [दे] बड़ा जंगल, भयंकर अटवी (ओघ ४४७)।

कुरु पु ब [कुरु] १ आर्य देश-विशेष जो उत्तर भारत में है (णाया १, ८, कुमा)। २ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र (ती १४)। ३ अकर्म-भूमि विशेष (ठा ६)। ४ इस नाम का एक वंश (भवि)। ५ पुत्री कुरु वंश में उत्पन्न, कुरु वंशीय (ठा ६)। °अरा, °अरी देखो नीचे °चरा, °चरी (पड्)। °खेत्त °क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ दिल्ली के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी। २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर (भवि, ती १६)। °चंद पु [°चन्द्र] इस नाम का एक राजा (धम्म, आवम)। °चर वि [°चर] कुरु देश का रहनेवाला। स्त्री °चरा, °चरी (हे ३, ३१)। °जंगल न [°जङ्गल] कुरु-भूमि, देश-विशेष (भवि, ती ७)। °णाह पु [°नाथ] दुर्योधन (गा ४४३ गउड)। °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि (उत २, सथा)। °मई स्त्री [°मती] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी (सम १५२)। °राय पु [°राज] कुरु देश का राजा (ठा ७)। °वइ पु [°पति] कुरु देश का राजा (उप ७२८ टी)।

कुरुकुया स्त्री [कुरुकुचा] पाँव का प्रक्षालन (ओघ ३१८)।

कुरुकुर अक [कुरकुराय्] 'कुर-कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बड़बड़ाना। कुरुकुरायमि (पि ५५८)। वकृ कुरुकुराअंत (रण्णा)।

कुरुकुरिअ न [दे] रणरणक, औत्सुक्य (दे २, ४२)।

कुरुगुर देखो कुरुकुर। कुरुगुरेति (स ५०८)।

कुरुचिल्ल पु [दे] १ कुलीर, जल-जन्तु-विशेष। २ न ग्रहण, उपादान (दे २, ४१)। देखो कुरुविल्ल।

कुरुच्छ वि [दे] अनिष्ट, अप्रिय (दे २, ३६)।

कुरुड वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे २, ६३, भवि)। २ निपुण, चतुर (दे २, ५३, भवि)।

कुरुग न [दे] राजा का या दूसरे का धन (गज)।

कुरुमाल सक [दे] टटोलना, धीरे धीरे हाथ फेरना। गट, कुरुमालत (सुअ ४४)।

कुरुय न [दे कुरुक] माया, कपट (सम ७१)।
कुरुया स्त्री [दे कुरुका] शरीर-प्रक्षालन, स्नान (वव १)।
कुरुर देखो कुरर (कुमा)।
कुरुल पु [दे] १ कुटिल केश, टेढ़ा बाल (दे २, ६३, भवि)। २ वि निर्दय। ३ निपुण, चतुर (दे २, ६३)।
कुरुल अक [कु] आवाज करना, कौए का बोलना। कुरुलहि (भवि)।
कुरुलिअ न [कुत] वायस का शब्द कौए की आवाज (भवि)।
कुरुव देखो कुरु (पउम ११८, ८३, भवि)।
कुरुवग देखो कुरवय (सुपा ७७)।
कुरुविंद पु [कुरुविन्द] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (गउड)। २ तृण विशेष (पराग १, परह १, ४—पत्र ७८)। ३ कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जघा रोग, 'एणीकुरुविंदवत्तवट्टाणुपुव्वजंघे' (औप)। °वत्त पुन [°वर्त्त] भूषण-विशेष (कप्प)।
कुरुविंदा स्त्री [कुरुविन्दा] इस नाम की एक वणिग्भार्या (पउम ५५, ३८)।
कुरुविल्ल [दे] देखो कुरुचिल्ल (पाअ)।
कुल पुन [कुल] १ कुल, वंश जाति (प्रासू १७)। २ पैतृक वंश (उत्त ३)। ३ परिवार, कुटुम्ब (उप ६, ७७)। ४ सजातीय समूह (पराह १,३)। ५ गोत्र (सुपा ८, ठा ४,१)। ६ एक आचार्य की संतति (कप्प)। ७ घर, गृह (कप्प, सूअ १, ४, १)। ८ सान्निध्य, सामीप्य (आचा)। ९ ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध नक्षत्र-संज्ञा (सुज्ज १०, इक), 'कुलो, कुलं' (हे १, ३३)। °उव्व पु [पूर्व] पूर्वज, पूर्व-पुरुष (गउड)। °कम पु [°क्रम] कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज (महि ७४)। °कर देखो नीचे °गर (ठा १०)। °कोडि स्त्री [°कोटि] जाति विशेष (पव १५१, ठा ९, १०)। °क्कम देखो क्रम (महि ६)। °गर पु [°कर] कुल की स्थापना करनेवाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरह की व्यवस्था करनेवाला महापुरुष (सम १२६, धण ५)। °गेह न [°गेह] पितृ गृह (सण)। °घर न [°गृह] पितृ-गृह (ओप)। °ज वि [°ज] कुलीन, खानदानी कुल में उत्पन्न (द ५)। °जाय वि [°जात] कुलीन, खानदानी कुल का (सुपा ५९८, पाअ)। °जुअ वि [°युत] कुलीन (पव ६८)। °णाम न [°नामन्] कुल के अनुसार किया जाता नाम (अरण)। °तंतु पु [°तन्तु] कुल-संतान, कुल-संतति (वव ६)। °तिलग पुन [°तिलक] कुल में श्रेष्ठ (भग ११, ११)। °त्थ वि [°स्थ] कुलीन, खानदानी वंश का (णाया १, ५)। °त्थेर पु [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु (पव)। °दिणयर पु [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। °दीव पु [°दीप] कुल प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। °देव पु [°देव] गोत्र-देवता (काल)। °देवया स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता (सुपा ५९७)। °देवी स्त्री [°देवी] गोत्र देवी (सुपा ६०२)। °धम्म पु [°धर्म] कुलाचार (ठा १०)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (सम ६६, सुपा ४३)। °पुत्त पु [°पुत्र] वंश रक्षक पुत्र (उत्त १)। °बालिया स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या (सुर १, ४३, हका ३०१)। °भूसण न [°भूषण] १ वंश को दिपाने या चमकाने वाला। २ पु एक केवली भगवान् (पउम ३९,१२२)। °मय पु [°मद] कुल का अभिमान (ठा १०)। °मयहरिया, °महत्तरिया स्त्री [°महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया (सुपा ७६, आवम)। °य देखो °ज (सुपा ५९८)। °रोग पु [°रोग] कुल व्यापक रोग (ज २)। °वइ पु [°पति] तापसों का मुखिया, प्रधान संन्यासी (सुपा १६०, उप ३१)। °वंस पु [°वंश] कुल रूप वंश, वंश (भग ११, १०)। °वंस पु [°वंश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में संजात (भग ६, ३३)। °वडिंसय पु [°वतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक (कप्प)। °वहू स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना (आव ५, पि ३८७)। °संपण्ण वि [°संपन्न] कुलीन, खानदानी कुल का (औप)। °समय पु [°समय] कुलाचार (सूअ १, १, १)। °सेल पु [°शैल] कुल-पर्वत (सुपा ६०० स ११९)। °सेलया स्त्री [°शैलजा] कुल पर्वत से निकली हुई नदी, कुलसेलयाहि भरिया तूरणं नीययम्मणुसरइ' (सुपा ६००)। °हर न [°गृह] पितृगृह, पिता का घर (गा १२१, सुपा ३६४ से ९, ५३)। °जीव वि [°जीव] अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करनेवाला (ठा ५ १)। °लय न [°लय] पक्षी का घर, नीड (पाअ)। °यार पु [°चार] कुलाचार वंश-परम्परा से चला आता रिवाज (वव १)। °रिय पु [°र्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य (ठा ३, १)। °लिंग वि [°लिङ्ग] गृहस्थों के घर भीख माँगनेवाला (सूअ २, ६)।
कुलंकर पु [कुलङ्कर] इस नाम का एक राजा (पउम ८२, २९)।
कुलंप पु [कुलम्प] इस नाम का एक अनार्य देश। २ उसमें रहनेवाली जाति (सूअ २,२)।
कुलकुल देखो कुरकुर। कुलकुलइ (भवि)।
कुलक्ख पु [कुलक्ष] १ एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली जाति (पराह १, १, इक)।
कुलग्घ पु [कुलार्घ] एक अनार्य देश (पव २७४)।
कुलडा स्त्री [कुलटा] व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली (सुपा ३८४)।
कुलत्थ पुस्त्री [कुलत्थ] अन्न-विशेष, कुलथी (ठा ५, ३, णाया १,५)। स्त्री. °त्था (श्रा १८)।
कुलफंसण पु [दे] कुल-कलंक, कुल का दाग, कुल की अपकीर्ति (दे २, ४२, भवि)।
कुलय देखो कुडव (तंदु २९, अणु १५१)।
कुलय न [कुलक] तीन या चार से ज्यादा परस्पर सापेक्ष पद्य (समत्त ७६)।
कुलल पु [कुलल] १ पक्षि-विशेष (पराह १, १)। २ गृद्ध पक्षी (उत्त १४)। ३ कुरर पक्षी (सूअ १, ११)। ४ मार्जार, बिडाल, जहा कुक्कुडपोयस्स णिच्चं कुललओ भयं' (दस ४)।
कुललय पुन [दे] कुल्ला, गंडूष (पव ३८)।
कुलव देखो कुडव (जो २)।
कुलसंतइ स्त्री [दे] चूल्ली चूल्हा (दे २, ३९)।
कुलाअल पु [कुलाचल] कुलपर्वत (त्रि ८२)।
कुलाण देखो कुणाल (राज)।
कुलाल पु [कुलाल] कुम्भकार, कुम्हार (पाअ, गउड)।

कुलाल पु [कुलाट] १ मार्जार, बिलाड। २ ब्राह्मण, विप्र (सूअ २, ६)।

कुलिंगाल पुं [कुलाङ्गार] कुल में कलंक लगानेवाला, दुराचारी (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कुलिअ न [कुलिक] खेत में घास काटने का छोटा काष्ठ-विशेष (अणु ४८)।

कुलिक } पु [कुलिक] १ ज्योतिष शास्त्र
कुलिय } में प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। २ न एक प्रकार का हल (पण्ह १, १)।

कुलिय न [कुड्य] १ भीत, भित्ति (सूअ १, २, १)। २ मिट्टी की बनाई हुई भीत (बृह २, कस)।

कुलिया स्त्री [कुलिका] भीत, कुड्य (बृह २)।

कुलिर पु [कुलिर] मेष वगैरह बारह राशि में चतुर्थ राशि (पउम १७, १०८)।

कुलिव्वय पु [कुटिव्रत] परिव्राजक का एक भेद, तापस विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करनेवाला (ओघ)।

कुलिस पुन [कुलिश] वज्र, इन्द्र का मुख्य आयुध (पाअ, उत्त ३२० टी)। °णिणाय पु [°निनाद] रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, २६)। °मज्झ न [°मध्य] एक प्रकार की तपश्चर्या (पउम २२, २४)।

कुलीकोस पु [कुटीकोश] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल में उत्पन्न (प्रासू ७१)।

कुलीर पु [कुलीर] जन्तु-विशेष (पाअ, दे २, ४१)।

कुलुंच सक [दह्, म्लै] १ जलाना। २ म्लान करना। वकृ 'माणकुसुमाइ कुलुंचिऊण मा जाणि णिव्वुओ सिसिरो' (गा ८०६)।

कुलुंचिय वि [दे] जला हुआ, 'विरहदवग्गि-कुलुंचियकायरो' (सिरि)।

कुलोवकुल पु [कुलोपकुल] ये चार नक्षत्र—अभिजित्, शतभिषा आर्द्रा और अनुराधा (सुज्ज १०, ५)।

कुल्ल पु [दे] १ ग्रीवा, गरदन। २ वि असमर्थ, अशक्त। ३ छिन्न-पुच्छ, जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे २, ६१)।

कुल्ल पुंन [दे] चूतड, गुजराती में 'कुलो' (सुख ८, १३)।

कुल्ल अक [कूर्द्] कूदना। वकृ 'माणईरक्ख-साए बल मुक्कबुक्कारपाडक्क कुल्लंतवग्गंतमे-णामुहं' (पउम ५३, ७६)।

कुल्लउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष (सण)।

कुल्लड न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा (दे २ ६३)। २ छोटा पात्र, पुडवा (दे २, ६३, पाअ)।

कुल्लरिअ पु [दे] कान्दविक, हलवाई, मिठाई बनानेवाला (दे २, ४१)।

कुल्लरिया स्त्री [दे] हलवाई की दूकान (आवम)।

कुल्ला स्त्री [कुल्या] १ जल की नाली, सारिणी (कुमा, हे २, ७६)। २ नदी, कृत्रिम नदी (कप्पू)।

कुल्लाग पु [कुल्याक] सन्निवेश-विशेष, मगध देश का एक गाँव (कप्प)।

कुल्ली देखो कुल्ला (धमवि ११२)।

कुल्लुडिया स्त्री [कुल्लुडिका] घटिका, घडी (सूअ १,४,२)।

कुल्लुरी स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, गुजराती—'कुलेर' (पव ४)।

कुल्लूरिअ [दे] देखो कुल्लरिअ (महा)।

कुल्ह पुं [दे] शृगाल, सियार (दे २, ३४)।

कुवणय न [दे] लकुट, यष्टि, लकडी, छडी (राज)।

कुवलय न [कुवलय] १ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल (पाअ)। २ चन्द्र-विकासी कमल (श्रा २७)। ३ कमल, पद्म (गा ५)।

कुवली स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४६)।

कुविंद पु [कुविन्द] तन्तुवाय, कपडा बुनने-वाला (सुपा १८८)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

कुविय वि [कुपित] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह (पण्ह १, ४, सुर २, ५, हेका ७३, प्रासू ६४)।

कुविय देखो कुप्प = कुप्य (पण्ह १, ५, सुपा ४०६)। °साला स्त्री [°शाला] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें गृहोपकरण रक्खे जाते हैं (पण्ह १, ४—पत्र ११३)।

कुवेणी स्त्री [कुवेणी] शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

कुवेर देखो कुबेर (महा)।

कुव्व सक [कृ, कुर्व्] करना, बनाना। कुव्वइ (भग)। भूका. कुव्वित्था (पि ५१७)। वकृ कुव्वंत, कुव्वमाण (ओघ १५ भा, णाया १, ६)।

कुस पुन [कुश] तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश (विपा १, ६, निचू १)। २ पु दाश-रथी राम के एक पुत्र का नाम (पउम १००, २)। °ग्ग [°ाग्र] दर्भ का अग्र-भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है (उत्त ७)। °ग्गनयर न [°ाग्रनगर] नगर-विशेष, बिहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (पउम २, ६८)। °ग्गपुर न [°ाग्रपुर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (सुर १,८१)। °ट्ट पु [°ावर्त्त] आर्य देश विशेष (सत्त ६७ टी)। °ट्ट पु [°ार्य] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी शौर्यपुर थी (इक)। °त्त न [°क्त, °क्त] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना (णाया १, १—पत्र १३)। °त्थल-पुर न [°स्थलपुर] नगर-विशेष (पउम २१, ७६)। °मट्टिया स्त्री [मृत्तिका] डाभ के साथ कुटी जाती मिट्टी (निचू १८)। °वर पु [°वर] द्वीप-विशेष (अणु—टी)।

कुस वि [कौश] दर्भ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

कुसण न [दे] तीमन, आर्द्र करना (दे २, ३५)।

कुसण न [दे] गोरस (पिंड २८२)।

कुसणिय वि [दे] गोरस से बना हुआ करम्बा आदि खाद्य, 'कुसु (? स) णियति' (पिंड २८२ टी)।

कुसल वि [कुशल] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ (आचा, णाया १, २)। २ न सुख, हित (राय)। ३ पुण्य (पंचा ६)।

कुसला स्त्री [कुशला] नगरी-विशेष, विनीता, अयोध्या (आवम)।

कुसार देखो कूसार (स ६८६)।

कुसी स्त्री [कुशी] लोहे का बना हुआ एक हथियार (दे ८, ५)।

कुमीलव पुं [कुशीलव] अभिनयकर्ता नट (कप्पू)।

कुसुभ पुन [कुसुम्भ] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, बरें (ठा ८—पत्र ४०५)। २ न. कुसुम का पुष्प, जिससे रंग बनता है (जं २)। ३ रंग-विशेष (श्रा १२)।

कुसुंभिअ वि [कुसुम्भित] कुसुम्भ रंगवाला (श्रा १२)।

कुसुंभिल पु [दे] पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (दे २ ४०)।

कुसुंभी स्त्री [कुसुम्भी] वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड (पाअ)।

कसुम अक [कुसुमय्] फूल आना। कुसुमति (सबोध ४७)।

कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प, फूल (पाअ, प्रासू ३४)। २ पु इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ७)। °केउ पु [°केतु] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव (दीव)। °चाय, °चाव पु [°चाप] कामदेव, मकरध्वज (सुपा ५६, ५३०, महा)। °ज्झय पु [°ध्वज] वसन्त ऋतु (कुमा)। °णयर न [°नगर] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है (आवम)। °दंत पु [°दन्त] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (पउम १, ३)। °दाम न [°दामन्] फूलों की माला (उवा)। °धणु न [धनुष्] कामदेव (कुमा)। °पुर न [°पुर] देखो ऊपर °णयर (उप ४८६)। °बाण पु [°बाण] कामदेव (सुर ३, १६०, पाअ)। °रअ पुं [°रजस्] मकरन्द (पाअ)। °रद पु [°रद] देखो दंत (पउम २०, ५)। °लया स्त्री [°लता] छन्द-विशेष (अजि १५)। °सभव पु [°सभव] मधुमास, चैतमास (अणु)। °सर पु [°शर] कामदेव (सुर ३, १०६)। °आर पु [°कर] इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °उह पु [°आयुध] काम, कामदेव (स ५३८)। °वई स्त्री [°वती] इस नाम की एक नगरी (पउम ५, २६)। °आसव पुं [°आसव] किंजल्क, पराग, पुष्परेणु (णाया १, १, औप)।

कुसुमसभव पुं [कुसुमसम्भव] वैशाख मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)।

कुसमाल वि [कुसमवत्] फूलवाला (स ६६७)।

कुसुमाल पु [दे] चोर, स्तेन (दे २ १०)।

कुसुमालिअ वि [दे] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [कुसुमित] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ (णाया १, १, पउम ३३, १४८)।

कुसुमिल्ल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो (सुपा २२०)।

कुसुर [दे] देखो मसुर (हे २, १७४ टि)।

कुसूल पु [कुशूल] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बडा पात्र (पाअ)।

कुस्सुमिण पु [कुस्वप्न] दुष्ट स्वप्न (सबोध ४२)।

कुह अक [कुथ] सड जाना, दुर्गन्धी होना। कुहइ (भवि, हे ४, ३६५)।

कुह पु [कुह] वृक्ष पेट, गाछ, 'कुहा महीरुहा वच्छा' (दसनि १)।

कुह देखो कुह (गा ५०७ अ)।

कुहड पु [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (ओप)।

कुहड न [कूष्माण्ड] १ कुम्हडा, पेठा, कोहँडा (कम्म ५, ८५)।

कुहडिया स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँडा का गाछ (राय)।

कुहक्क, कुहग } देखो कुहय (धर्मवि १३५, कुप्र ८)।

कुहग पु [कुहक] कन्द-विशेष, 'लाहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य' (उत्त ३६, ९९ का)।

कुहड वि [दे] कुब्ज, कूबडा (दे २, ३६)।

कुहण पु [कुहन] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति, 'से कि त कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पण्णत्ता' (पण्ण १—पत्र ३५)। २ वनस्पति-विशेष। ३ भूमि-स्फोट (पण्ण १—पत्र ३०, आचा)। ४ देश-विशेष। ५ इसमे रहनेवाली जाति (पण्ह १, १—पत्र १४, इक)।

कुहण वि [क्रोधन] क्रोधी, क्रोध करनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [दे] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग (सुपा ४१२)।

कुहय पुन [कुहक] १ वायु-विशेष दौडते हुए अश्व के उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु, 'धणगज्जिय-हयकुहए (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि कौतुक, 'अलोलुए अक्कुहए अमाई (दस ९, ३)।

कुहर न [कुहर] १ पर्वत का अन्तराल (णाया १, १—पत्र ६३), 'गेहं व वित्तरहिअं णिज्जरकुहरं व सलिलसुण्णविअं' (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर (पण्ह १ ४, पासू २)। ३ पु व देश-विशेष (पउम ९८, ६७)।

कुहाड पु [कुठार] कुल्हाड, फरसा (विपा १, ६, पउम ६६, २४, स २, ४)।

कुहाडी स्त्री [कुठारी] कुल्हाडी, कुठार (उप ९६३)।

कुहावणा स्त्री [कुहना] १ आश्चर्य-जनक, दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या। २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष (जीत)।

कुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे २ ३५)।

कुहिअ वि [कुथित] १ थोडी दुर्गन्धवाला (णाया १, १२—पत्र १७३)। २ सडा हुआ (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट (णाया १, १)। °पूइय वि [पूतिक] अत्यन्त सडा हुआ (पण्ह २, ५)।

कुहिणी स्त्री [दे] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग। २ रथ्या, महल्ला (दे २ ६२)।

कुहिल पुस्त्री [कुहुमन्] कोयल पक्षी (पिंग)।

कुहु स्त्री [कुहु] कोकिल पक्षी की आवाज (पिंग)।

कुहुण देखो कुहण=कुहन (उत्त ३६ ९६ का)।

कुहुव्वय पु [कुहुव्रत] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

कुहेड पु [दे] ओषधी-विशेष, गुण्टक, एक पकार का हरे का गाछ (दे २, ३५)।

कुहेड, कुहेडअ } पुं [कुहेट, °क] १ चमत्कार उपजानेवाला मन्त्र तन्त्रादि ज्ञान,

'कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले' (उत्त २०, ४५)। २ आभाणक वक्रोक्ति विशेष, 'तेलु न विम्हयइ सय आहट्टकुहेडएहिं च' (पव ७३ टी, बृह १)।

कुहेडग पुन [दे] अजमा (पंचा ४, ३०)।

कुहेडगा स्त्री [कुहेटका] कन्द-विशेष, दिग्गज्जु (पव ४)।

कूअ देखो कूव = कूप (चट, हम्मीर ३०)।

कूअण न [कूजन] १ अव्यक्त शब्द। २ वि ऐसी आवाज करनेवाला (ठा ३, ३)।

कूअणया स्त्री [कूजनता] कूजन, अव्यक्त शब्द (ठा ३, ३)।

कूइआ स्त्री [कूपिका] कूई, छोटा कूप (चड)।

कूइय न [कूजित] अव्यक्त आवाज (महा सुर ३, ८८)।

कूइया स्त्री [कूजिका] विवाद आदि का अव्यक्त आवाज (पिंड ३५६ टी)।

कूचिआ स्त्री [कूर्चिका] दाढ़ी-मूँछ का बाल (सम्मो १ ३१)।

कूचिया स्त्री [कूचिका] बुद्बुद, बुलबुला, पानी का बुलबुला (विसे १४६७)।

कूज अक [कूज्] अव्यक्त शब्द करना। कूजाहि (वाग १)। वकृ कूजंत (से २६)।

कूजिअ न [कूजित] अव्यक्त आवाज (कुमा, से २६)।

कूट सक [कूटय्] १ भूठा ठहराना। २ अयथा करना। कूटे (अणु ५० टी)।

कूट पुं [दे कूट] पाश फाँसी, जाल (दे २, ४३ पाय उत्त ५, सूत्र १ ५, २)।

कूड पुन [कूट] १ असत्य, छल युक्त, भूठा, 'कूडतुलकूडमाणे' (पडि)। २ भ्रान्ति जनक वस्तु (भग ८ ६)। ३ माया, कपट, छल, दगा धोखा (कुमा ६२७)। ४ नरक (उत्त ५)। ५ पीड़ा जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह (सूत्र १ ५ २ उत्त ६)। ६ शिखर, टोंच (ठा ४, २, स्वप्न)। ७ पर्वत का मध्य भाग (ठा २)। ८ पाषाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र (भग १५)। ९ समूह, राशि (विपा १, १)। °कारि वि [°कारिन्] धोखेबाज, ठगाखोर (कुमा ६२८)। °ग्गाह पु [°ग्राह] धोखे से जीवों को फँसानेवाला (विपा १, २)। स्त्री °ग्गाहणी (विपा १, २)। °जाल न [°जाल] धोखे का जाल, फाँसी (उत्त १९)। °तुला स्त्री [°तुला] भूठी नाप, बनावटी नाप (उवा १)। °पास न [°पाश] एक प्रकार की मछली पकड़ने का जाल (विपा १, ८)। °प्पओग पु [°प्रयोग] प्रच्छन्न पाप (श्राव ४)। °लेह पु [°लेख] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर तुल्य अक्षर बना कर धोखेबाजी करना। २ दूसरे के नाम से भूठी चिट्ठी वगैरह लिखना (पडि उवा)। °वाहि पु [°वाहिन्] बैल, बलीवर्द (श्राव ५)। °सक्ख न [°साक्ष्य] भूठी गवाही (पचा १)। °सक्खि वि [°साक्षिन्] भूठी साक्षी देनेवाला (श्रा १४)। °सक्खिज्ज न [°साक्ष्य] भूठी गवाही (सुपा ३७५)। °सामलि स्त्री [°शाल्मलि] १ वृक्ष विशेष के आकार का एक स्थान, जहाँ गरुड जातीय देवों का निवास है (सम १३, ठा २, ३)। २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष (उत्त २०)। °गार न [°गार] १ शिखर के आकारवाला घर (ठा ४, २)। २ पर्वत पर बना हुआ घर (आचा २, ३, ३)। ३ पर्वत में खुदा हुआ घर (निचू १२)। ४ हिंसा स्थान (ठा ४, २)। °गारसाला स्त्री [°गारशाला] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर (विपा १, ३)। °हच्च न [°हत्य] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना (भग १५)।

कूड न [कूट] १ पाश, जाल, फन्द, फंदा (सूत्र १, ५, २, १८, राय ११४)। २ लगातार २७ दिन का उपवास (संबोध ५८)।

कूडग देखो कूड (आवम)।

कूण अक [कूणय्] संकुचित होना, सकोच पाना (गउड)।

कूणिअ वि [कूणित] सकोच प्राप्त, सकोचित (गउड)।

कूणिअ वि [दे] ईषद् निमिलित, थोड़ा मिला हुआ (दे २, ८४)।

कूणिअ पु [कूणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र (औप)।

कूणिय वि [कूणित] नत हुआ (कुमा ९६)।

कूय अक [कूज्] अव्यक्त आवाज करना। वकृ कूयत, कूयमाण (ओघ २१ भा, विपा १, ७)।

कूय पु [कूप] १ कूप, कुँआ (गउड)। २ घी, तेल वगैरह रखने का पात्र, कुतुप (णाया १, १—पत्र ५८, ओप)। °दद्दुर पु [°दर्दुर] १ कूप का मेढक। २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ (उप ६४८ टी)। देखो कूव।

कूर वि [क्रूर] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक (पण्ह १, ३)। २ भयकर, रौद्र (णाया १, ८, सुम १ ७)। ३ पु रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, २९)।

कूर पुन [कूर] वनस्पति विशेष (सूत्र २, ३, १६)।

कूर न [कूर] भात, ओदन (दे २, ४३)। °गडुअ, °गड्डुअ पु [गडुक] एक जैन महर्षि (आचा, भाव ८)।

कूर° अ [ईषत्] थोड़ा, अल्प (हे २, १२९, षड्)।

कूरपिंडड न [दे] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष (आवम)।

कूरि वि [क्रूरिन्] १ निर्दयी, क्रूर चित्तवाला। २ निर्दय परिवारवाला (पण्ह १, ३)।

कूल न [दे] सैन्य का पिछला भाग (दे २, ४३, से १२, ६२)।

कूल न [कूल] तट, किनारा (पाअ, णाया १, १६)। °धमग पु [°ध्मायक] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है (औप)। °वालग, °वालय पु [°वालक] एक जैन मुनि (आव, काल)।

कूलंकसा स्त्री [कूलङ्कषा] नदी, तीर को तोड़नेवाली नदी (वेणी १२०)।

कूव पुन [दे] १ चुराई चीज की खोज में जाना (दे २ ६२, पाअ)। २ चुराई चीज को छुड़ानेवाला, छीनी हुई चीज को लड़ाई वगैरह कर वापस लेनेवाला 'तए णं सा दोवई देवी पउमणाभं एवं वयासी — एवं खलु देवा० जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवईए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसति, तं जइ णं से छण्हं

मामाए मम कूव नो हव्वमागच्छइ, तए ण अह देवा० ज तुमं वदमि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि' (णाया १, १६—पत्र २१५), 'दोवईए कूवग्गाहा' (उप ६४८ टी, दे ६, ६२)।

कूव / कूवग / कूवय पु [कूप,°क] १ कूप, कुँआ, गर्त्त (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र, कुतुप, कुप्पा (वज्जा ७२, उप पृ ४१२)। ३ जहाजका मध्य स्तम्भ, जहा पर पाल बधा जाता है (औप, णाया १,८)। °तुला स्त्री [°तुला] कूपतुला, ढेंकुवा (दे १, ६३, ८७)। °मडुक पु [°मण्डूक] १ कूप का मेढक। २ अल्पज्ञ मनुष्य जो अपना घर छोड बाहर न जाता हो (निचू १)।

कूवअ पु [कूपक] देखो कूव=कूप (रयण ३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (अंत ३)।

कूवर पुन [कूवर] १ जहाज का एक अवयव, जहाज का मुख-भाग, 'सचुण्णियकट्ठकूवरा' (णाया १, ९—पत्र १५७)। २ रथ या गाडी वगैरह का एक अवयव, युगन्धर (से १२, ८४)।

कूवल न [दे] जघन-वस्त्र (दे २, ४३)।

कूविय न [कूजित] अव्यक्त शब्द, 'तह कहवि कुणए सो सुरयकूविय तप्पुरो जेण' (सुपा ५८८)।

कूविय पु [कूपिक] इस नाम का एक सनिवेश—गांव (आवम)।

कूविय वि [दे] मोष-व्यावर्त्तक, चुराई हुई चीज को खोज कर उसे लानेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज करनेवाला (णाया १, १)।

कूविया स्त्री [कूपिका] १ छोटा कूप (उप ७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र, कुप्पी (राज)।

कूवी स्त्री [कूपी] ऊपर देखो, 'एयाओ अमयकूवीओ' (उप ७२८ टी)।

कूसार पु [दे] गर्त्ताकार, गर्त्त जैसा स्थान, खड्डा, 'कूसारखलतपओ' (दे २, ४४, पाअ)।

कूहंड पु [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (पराह १, ४)।

के सक [क्री] कीनना, खरीदना। केइ, केअइ (पड्)।

के° वि [कियत्] कितना? °चिरेण अ [°चिरेण] कितने समय मे? (अंत २४)। °च्चिर अ [°च्चिर] कितने समय तक? (पि १४९)। °च्चिरेण देखो °चिरेण (पि १४९)। °दूर न [°दूर] कितना दूर? 'केदूरे सा पुरी लका ?' (पउम ४८, ४७)। °महालय वि [°महालय] कितना बडा? (णाया १, ८)। °महालिय वि [°महत्] कितना बडा? (पएण २१)। °महिड्ढिय वि [°महर्द्धिक] कितनी बडी ऋद्धिवाला (पि १४९)।

केअइ पु [केकय] देश-विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्धु देश की सीमा पर का देश (इक), 'केयइअद्धं च आरियं भणियं' (पएण १, सत्त ६७ टी)।

केअई स्त्री [केतकी] वृक्ष-विशेष, केवडा का वृक्ष (कुमा दे ८, २५)।

केअग / केअय पु [केतक] १ वृक्ष-विशेष, केवडा का गाछ, केतकी (गउड)। २ न केतकी पुष्प, केवडा का फूल (गउड)। ३ चिन्ह, निशान (ठा १०)।

केअगी स्त्री [केतकी] १ केवडा का गाछ या पौधा। २ केवडा का फूल (राय ३४)।

केअल देखो केवल (अभि २६)।

केअव देखो कइअव=कैतव, 'ज केअवेण पिम्म' (गा ७४४)।

केआ स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (दे २, ४१, भग १३, ९)।

केआर पु [केदार] १ क्षेत्र, खेत (सुर २, ७८)। २ आलवाल, क्यारी (पाअ, गा ६६०)।

केआरवाण पु [दे] वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड (दे २, ४५)।

केआरिआ स्त्री [केदारिका] घासवाली जमीन, गोचर भूमि (कप्पू)।

केउ पु [केतु] १ ध्वज, पताका (सुपा २२९)। २ ग्रह-विशेष (सुज २०, गउड)। ३ चिन्ह, निशान (औप)। ४ तूल-सूत्र, रूई का सूता (गउड)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मेघ-वृष्टि से ही जिसमे अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा क्षेत्र-विशेष (आव ६)। °मई स्त्री [°मती] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (भग १०, ५, णाया २)। °माल न [°माल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

केउ पु [दे] कन्द, काँदा (दे २ ४४)।

केउ पुन [केतु] एक देवविमान (देवेन्द्र १३४)।

केउग / केउय पु [केतुक] पाताल-कलश-विशेष (सम ७१, ठा ४,२—पत्र २२६)।

केऊर पुन [केयूर] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द (पाअ, भग ९,३३)। २ पु. दक्षिण समुद्र का पाताल कलश (पव २७२)।

केऊरपुत्त पु [दे] गाय तथा भेंस का बच्चा (संक्षि ४७)।

केऊव पु [केयूप] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश (इक)।

केकाय अक [केङ्काय्] 'के-कें' आवाज करना। वकृ 'पेच्छइ तओ जडागिं केकायत महीपडियं' (पउम ४४, ५४)।

केसुअ देखो किसुअ (कुमा)।

केकई स्त्री [केकयी] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या (पउम २२, १०८, उप पृ ३७)। २ आठवे वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ अपर-विदेह के विभीषण-वासुदेव की माता (आवम)।

केकय पु [केकय] १ देश विशेष, यह देश प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है। २ इस देश का रहनेवाला (पराह १, १)। ३ केकय देश का राजा (पउम २२, १०८)।

केकसिया स्त्री [कैकसिका] रावण की माता का नाम (पउम ७, ५४)।

केका स्त्री [केका] मयूर वाणी। °रव पु [°रव] मयूर की आवाज, मयूर शब्द (णाया १, १—पत्र २५)।

केकाइय न [केकायित] मयूर का शब्द (सुपा ७९)।

केक्कई देखो केकई (पउम ७९ २९)।

केक्कय देखो केकय (पव २७४)।

केक्कसी स्त्री [कैकसी] रावण की माता (पउम १०३, ११४)।

केक्काइय देखो केकाइय (गाया १, ३—पत्र ६५)।

केकई देखो केकई (पउम १, ६४, २०, १८४)।

केगाइय देखो केकाइय (राज)।

केज्ज वि [क्रेय] बेचने की चीज (ठा ६)।

केढ } पु [कैटभ] १ इस नाम का एक केढव } प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ दैत्य-विशेष (हे १, २४०, कुमा)। °रिउ पु [°रिपु] श्रीकृष्ण, नारायण (कुमा)।

केत्त देखो केत्तिअ (हास्य १३६)।

केत्तिअ } वि [कियत्] कितना? (हे २, केत्तिल } १५७, कुमा, षड्, महा)।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा षड् हे ४, ४०८)।

केत्थु (अप) अ [कुत्र] कहाँ, किस जगह? (हे ४ ४०५)।

केद्दह देखो केत्तिअ (हे २, १५७ प्राप्र)।

केम } (अप) देखो कह (षड् हे ४, ४०१ केम्व } ४१८)।

केय न [केत] १ गृह, घर। २ चिह्न, निशानी (पव ४)।

केयण न [केतन] १ वक्र वस्तु टेढ़ी चीज। २ नगेरी का हाथा (ठा ४ २—पत्र २१८)। ३ [illegible] (राय ४)। ४ धनुष की मूठ (उत्त ६)। ५ मछली पकड़ने का जाल (सूत्र १, ३, १)। ६ स्थान, जगह (आचा)। ७ 'पउवल्लसाठिन' (सूत्र० चूर्णी पत्र ८२ गा० १७६)।

केयार देखो केआर (सुपा २०२)।

केयव्व वि [क्रेतव्य] खरीदने योग्य वस्तु (उत्त ३५ १५)।

[illegible] } वि [[illegible]] [illegible] (चंद ५१ हे ४, [illegible] ३७३, प्राप्र [illegible])।

केरव न [कैरव] १ कुमुद, सफेद कमल (पाअ, कुमा ६)। २ [illegible] (हे १, १५२)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible] (हे २, १५७ प्राप्र [illegible])।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible] (कुमा)।

केरी स्त्री [क्रकटी] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ, 'निबवबोरिकेरि—' (उप १०३१ टी)।

केल देखो कयल = कदल (हे १, १६७)।

केलाइय वि [समारचित] साफ-सुथरा किया हुआ (कुमा)।

केलाय सक [समा + रचय] समारचन करना, साफ कर ठीक करना। केलायइ (हे ४, ९५)।

केलास पु [कैलास] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

केलास पुं [कैलास] १ स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत-विशेष (ने ६ ७३ गउड, कुमा)। २ इस नाम का एक नाग राज (इक)। ३ इस नाग-राज का आवास-पर्वत (ठा ४, २)। ४ मिट्टी का एक तरह का पात्र (निर १, ३)। देखो कइलास।

केलि देखो कयलि (कुमा)।

केलि स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८ सुख ३६, ९८)।

केलि } स्त्री [केलि, °ली] १ क्रीडा, खेल, केली } मजाक (कुमा, पाअ, कप्पू)। २ परिहास, हाँसी, ठट्ठा (पाअ, ओप)। ३ काम-क्रीडा (कप्पू, औप)। °आर वि [°कार] क्रीडा करनेवाला, विनोदी (कप्पू)। °काणग न [°कानन] क्रीडोद्यान (कप्पू)। °किल, °गिल वि [°किल] १ विनोदी, क्रीडा-प्रिय (सुपा ३१४)। २ पु व्यन्तर-जातीय देव-विशेष (सुपा ३२०)। ३ पुन स्थान-विशेष (पउम ५५, १७)। °भवण न [°भवन] क्रीडा-गृह, विलास-घर (कप्पू)। °विमाण न [°विमान] विलास-महल (कप्पू)। °सअण न [°शयन] काम शय्या (कप्पू)। °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काम शय्या (कप्पू)।

केली देखो कयली (हे १, १२०)।

केली स्त्री [दे] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [कलीकिल] केलीकिल स्थान में उत्पन्न (पउम ५५ १७)।

केव° देखो क° (भग [illegible] १७—पत्र ५८५ विसे २८९१)।

केवँ (अप) देखो कह (कुमा)।

केवइय वि [कियत्] कितना? (सम १३४, विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पु [कैवर्त्त] धीवर मछलीमार, मछुआ (पाअ, स २५८, हे २, ३०)।

केवड (अप) देखो केत्तिअ (हे ४, ४०८, कुमा)।

केवल वि [केवल] १ अकेला असहाय (ठा २, १, ओप)। २ अनुपम, अद्वितीय (भग ९, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अमिश्रित (दस ४)। ४ सपूर्ण, परिपूर्ण (निर १ १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित (विसे ८४)। ६ न ज्ञान विशेष सर्वश्रेष्ठ ज्ञान भूत भावी वगैरह सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता (विसे ८२७)। °कप्प वि [°कल्प] परिपूर्ण, सपूर्ण (ठा ३, ४)। °णाण न [°ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सपूर्ण ज्ञान (ठा २, १)। °णाणि, °नाणि वि [°ज्ञानिन्] १ केवल-ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (कप्प, ओप)। २ पु इस नाम के एक अर्हन् देव अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थंकर (पव ६)। °ण्णाण, °नाण, °न्नाण देखो °णाण (विसे ८२६ ८२९ ८३३)। °दसण न [°दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध (कम्म ४, १२)।

केवल अ [केवलम्] केवल, सिर्फ, मात्र (स्वप्न ६२ ६३, महा)।

केवलाअ सक [समा + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना। केवलाअइ (षड्)।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (भग)। °पक्खिय वि [पाक्षिक] १ स्वयबुद्ध। २ पु जिनदेव, तीर्थंकर (भग ९, ३१)।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञानवाला (भग)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण, 'सामाइय केवलिय पासय' (विसे २६८१)।

केवलिअ वि [कैवलिक] १ केवल-ज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाला (द १७)। २ केवलि-प्रोक्त (सूत्र १ १४)। ३ [illegible] (ठा ४, २)। ४ न केवल ज्ञान, सपूर्ण ज्ञान (ठा ४)।

केवलिअ न [कैवल्य] केवल ज्ञान [illegible] (पव ६७ टी [illegible] १८०)।

केवली स्त्री [केवली] ज्योतिष विद्या-विशेष (हास्य १२६, १२६)।

केस पु [केश] केश, बाल (उप ७६८ टी, प्रयौ २६)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °लोअ पु [°लोच] केशों का उन्मूलन (भग, पण्ह २, ४)। °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] केश-वाले जीवों का व्यापार (भग ८,५)। °हत्थ, °हत्थय पु [°हस्त, °क] केशपाश, समा-रचित केश, संयत बाल (कप्प, पात्र)।

केस देखो केरिस। स्त्री °सी (अणु १३२)।

केस देखो किलेस (उप ७६८ टी, धम्म २२)।

केसर पु [कवीश्वर] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि (उप ७२८ टी)।

केसर पुन [केसर] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

केसर पुन [केसर] १ पुष्प-रेणु, पराग, किंजल्क (से १, ५०, दे ६, १३)। २ सिंह वगैरह के कंधे का बाल, केसरा (से १, ५०, सुपा २१५)। ३ पु बकुल वृक्ष (कप्पू, गउड, पात्र)। ४ न इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन (उत्त १८)। ५ फल विशेष (राज)। ६ सुवर्ण, सोना। ७ छन्द विशेष (हे १, १८६)। ८ पुष्प-विशेष (गउड ११२२)।

केसरा स्त्री [केसरा] १ सिंह वगैरह के स्कन्ध पर के बालों की सटा, 'केसरा य सीहाए' (प्रासू ५१, गउड, प्रामा)।

केसरि पु [केसरिन्] १ सिंह, वनराज, कण्ठीरव (उप ७२८ टी, से ८, ९४, पण्ह १, ४)। २ ह्रद-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रति वासुदेव (सम १५४)। °दह पु [°द्रह] द्रह-विशेष (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [केसरिका] साफ करने का कपड़े का टुकड़ा (भग, विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [केसरवत्] केसरवाला (गउड)।

केसरी स्त्री [केसरी] देखो केसरिआ, 'तिद-डकुंडियछत्तछन्नुयकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए' (णाया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पु [केशव] १ अर्ध चक्रवर्ती राजा (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण (गउड)।

केसि वि [क्लेशिन्] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट (विसे ३१०४)।

केसि पु [केशि] १ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य (राय, भग)। २ असुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करनेवाला एक दैत्य जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (मुद्रा २६२)।

केसि पु [केशिन्] देखो केसव (पउम ७५, २०)।

केसिअ वि [केशिक] केशवाला, बाल-युक्त। स्त्री. °आ (सूअ १, ४, २)।

केसी स्त्री [केशी] सातवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)।

°केसी स्त्री [°केशी] केशवाली स्त्री, 'विइण्ण-केसी' (उवा)।

केसुअ देखो किसुअ (हे १, २६, ८६)।

केह (अप) वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का ? (सवि, पड्, कुमा)।

केहिं (अप) अ लिए, वास्ते (हे ४, ४२५)।

कैअव न [कैतव] कपट, दम्भ (हे १, १, गा १२४)।

कोअ देखो कोक (दे २, ४५ टी)।

कोअ देखो कोव (गउड)।

कोअंड देखो कोदंड (पात्र)।

कोआस अक [वि + कस्] विकसना, खिलना। कोआसइ (हे ४, १९५)।

कोआसिय वि [विकसित] विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (कुमा, ज २)।

कोइल पु [कोकिल] १ कोयल, पिक (पण्ह १, ४, उप २३, स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छय पु [°च्छद] वनस्पति विशेष, तलकण्टक (पण्ण १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [कोकिला] स्त्री कोयल, पिकी, 'कोइला पचम सरं' (अणु, पात्र)।

कोइला स्त्री [दे] कोयला, काष्ठ के अंगार (दे २, ४९)।

कोउआ स्त्री [दे] गोइठा की अग्नि, करीषाग्नि (दे २, ४८, पात्र)।

कोउग } न [कौतुक] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु कोउय } देखने का अभिलाष (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य विस्मय (वव १)। ३ उत्सव (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा (पचव १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता काजल का तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग (राय, ओप, विपा १, १, पण्ह १, २ धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन विस्मापन, धूप, होम वगैरह कर्म (वव १, णाया १ १४)।

कोउण्ह वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम (धर्मवि ११३)।

कोउहल } देखो कुऊहल (हे १, ११७, कोउहल्ल } १७१ २, ९९, कुमा, प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय (कुमा)।

कोऊहल } देखो कुऊहल (कुमा, पि ६१)। कोऊहल्ल }

कोंकण पु [कोङ्कण] देश-विशेष (स ४१२)।

कोंकणग पु [कोङ्कणक] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ वि उस देश मे रहनेवाला (पण्ह १, १, विसे १४१२)।

कोंच पु [क्रौञ्च] १ इस नाम का एक अनार्य देश (पण्ह १, १)। २ पक्षि-विशेष (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष (तो ४५)। ४ इस नाम का एक असुर (कुमा)। ५ वि क्रौञ्च देश का निवासी (पण्ह १, १)। °रिवु पु [°रिपु] कार्त्तिकेय, स्कन्द (कुमा)। °वर पु [°वर] इस नाम का एक द्वीप (अणु-टी) °वीरग पुन [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (बृह १)। देखो कुच।

कोंचिगा स्त्री [कुञ्चिका] ताली, कुंजी (उप १७७)।

कोंचिय वि [कुञ्चित] आकुञ्चित, सकुचित पण्ह १, ४)।

कोंटलय न [दे] १ ज्योतिष-सम्बन्धी सूचना। २ शकुनादि निमित्त-सम्बन्धी सूचना, 'पउजणे कोंटलयम्स' (ओघ २२१ भा)।

कोंठ देखो कुंठ (हे १, ११६ पि)।

कोंड देखो कुंड (हे १, २०२)।

कोंड पुं [कोण्ड गौड] देश-विशेष (पउम)।

कोंडल देखो कुंडल (राज)। °मेत्तग पुं [°मित्रक] [illegible] देव का नाम (बृह ३)।

कोंडलग पुं [कुण्डलक] पक्षि-विशेष (ओघ)।

कोंडिआ स्त्री [दे] १ [illegible]-विशेष [illegible]। २ [illegible] (दे २, ५०)।

कोंडिय पुं [दे] [illegible] गाँव में [illegible] [illegible] (दे २, ४८)।

कोंडिणपुर न [कौण्डिनपुर] नगर-विशेष [illegible]।

कोंडिया स्त्री कुंडिया (उवा २, ५)।

कोंडिल्ल देखो कोंडिअ (राज)।

कोंढ देखो कुंढ (दे २, ११३)।

कोत्थु पुं [दे] [illegible], [illegible], पक्षि-विशेष (दे २, ४६)।

कोंत देखो कुंत (पउम ३, ९; सुर २, २८)।

कोंतल देखो कुंतल = कुन्तल (प्राकृ ६ [illegible])।

कोंती देखो कुंती (णाया १, १६—पत्र २०३)।

कोंभी, देखो कुंभी (प्राकृ ६)।

कोक पुं [कोक] १ चक्रवाक पक्षी (दे ८, ८३)। २ [illegible] (कुमा)।

कोकंतिअ पुं [दे] जन्तु-विशेष, लोमड़ी, [illegible] (पण्ह १, १)। स्त्री °या (णाया १, १—पत्र ६५)।

कोकणद देखो कोकणय (पडि [illegible])।

कोकणय न [कोकनद] १ रक्त कुमुद। २ [illegible] (णाया १ [illegible])।

कोकासिय [दे] देखो कोक्कासिय (पउम [illegible])।

कोकुइय देखो कुक्कुइय (ठा ६—पत्र ३७१)।

कोकु [illegible] [व्या-हृ] [illegible], आह्वान [illegible] (हे ४, ७६; षड्)। [illegible] (गउड)। [illegible] (कुमा)।

[illegible] [illegible] [°काम] [illegible] नाम का एक [illegible] (कप्प ३)।

[illegible] [दे] [illegible] कोकासिय (दे २, ५०)।

कोक्किय वि [व्याहृत] आहूत, बुलाया हुआ (कवि)।

कोक्कुइय देखो कक्कुइअ (कप्प औप)।

कोखुब्भ देखो खोखुब्भ वह कोखुब्भमाण (पि ३१६)।

कोखुण्ण न [दे] अनीप्सित [illegible] झूठी भलाई दिखानेवाली हित (दे २, ४६)।

कोचिय पुंस्त्री [दे] शेखर, नया शिष्य (वव ६)।

कोच्छ न [कौत्स] १ गोत्र विशेष। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

कोच्छ वि [कौक्ष] १ कुक्षि-सम्बन्धी, उदर में उत्पन्न होनेवाला। २ न उदरप्रदेश 'पडिजागरमाणीओ (? कोच्छ) हुणे' (णाया १, १—पत्र ६४)।

कोच्छभास पुं [दे कुत्सभाष] काक, कौआ, वायस 'न मग्गी भयमाहप्पो आवि-कन्दइ कोच्छभासस्स' (उव)।

कोच्छेअय देखो कुच्छेअय (हे १, १६१, कुमा, षड्)।

कोज्ज देखो कुज्ज (कप्प)।

कोज्जय न [दे] स्त्री-रहस्य (दे २, ४६)।

कोज्जय देखो कुज्जय (णाया १, ८—पत्र १२५)।

कोज्जरिअ वि [दे] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ (षड्)।

कोज्झरिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे २, ५०)।

कोटर देखो कोट्टर (वेणी १७१)।

कोटिंब पुं [दे] गौ (निचू ३५६५ गा०)।

कोटुभ पुन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोटुभो जलभारो' (पाअ)। देखो कोट्टुभ।

कोटीवर्ष न [कोटीवर्ष] लाट देश की प्राचीन राजधानी (विचार ४९)।

कोट्ट देखो कुट्ट = कुट्ट्। वकृ कोट्टिज्जमाण (भास)। संकृ कोट्टिय (जीव ३)।

कोट्ट न [दे] १ नगर, शहर (दे २, ४५)। २ गढ़, किला, दुर्ग (णाया १, ८—पत्र १३४; उप ३०; सुर १, सुपा १२८)। °वाल पुं [°पाल] कोटवाल, नगर-रक्षक (सुपा ४१३)।

कोट्टंतिया स्त्री [कुट्टयन्तिका] तिल वगैरह को कूटने का उपकरण (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कोट्टकिरिया स्त्री [कोट्टक्रिया] देवी-विशेष, दुर्गा आदि रुद्र रूपवाली देवी (अणु २५)।

कोट्टग देखो कुट्टग (उप १७६, पण्ह १, १)।

कोट्टर देखो कोडर (महा, हे ८, ८२०, गा ५६३ अ)।

कोट्टवीर पुं [कोट्टवीर] इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य (विसे २५५२)।

कोट्टा स्त्री [दे] १ गोरी, पार्वती (दे २, ३५—१, १०४)। २ गला, गर्दन (उप ६६२)।

कोट्टाग पुं [कोट्टाक] १ वर्धकि बढ़ई (आचा २, १, २)। २ न हरे फलों को सुखाने का स्थान-विशेष (बृह १)।

कोट्टिंब पुं [दे] द्रोणी, नौका, जहाज (दे २, ४८)।

कोट्टिम पुन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि (णाया १, २)। २ फरस-बंध जमीन, बँधी हुई जमीन (ज १)। ३ भूमि-तल (सुर ३, १००)। ४ एक या अनेक तलवाला घर (वव ४)। ५ झोंपड़ी, मढ़ी। ६ रत्न की खान। ७ अनार का पेड़ (हे १, ११६, प्राप्र)।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावटी बनाया हुआ, अकुदरती (पउम ६६, ३६)।

कोट्टिल } पु [कोट्टिक] मुद्गर मुगरी, मुगरा,
कोट्टिल्ल } जोगी (राज, विपा १,६—पत्र ६६, ६६)।

कोट्टी स्त्री [दे] १ दोह, दोहन। २ विषम स्खलना (दे २, ६४)।

कोट्टुभ पुन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोट्टुभ न करस्स तोए' (दे २, ४७)।

कोट्टुम अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना। कोट्टुमइ (हे ४, १६८)।

कोट्टुवाणी स्त्री [कोट्टुवाणी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोट्ठ देखो कुट्ठ = कुष्ठ (भग १६, ६, णाया १, १७)।

कोट्ठ पु [कोष्ठ] १ धारणा, अवधारित अर्थ का कालान्तर में स्मरण-योग्य अवस्थान (णंदि १७६)। २ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (राय ३८)।

कोट्ठ | देखो कुट्ठ = कोष्ठ (णाया १, १, ठा
कोट्ठग | ३ १ पाअ)। ३ आश्रय-विशेष,
कोट्ठय | आवास-विशेष (ओघ २००, वव १)। ४ अपवरक, कोठरी (दस ५, १, उत्त ७८६)। ५ चैत्य-विशेष (णाया २, १)। °गार न [°गार] धान्य भरने का घर (ओघ, कप्प)। २ भाण्डागार, भंडार (णाया १, १)।

कोट्ठार पुन [कोष्ठागार] भाण्डागार, भंडार, (पउम २, ३)।

कोट्ठि वि [कुष्ठिन] कुष्ठ रोगी (आचा)।

कोट्ठिया स्त्री [कोष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल (उवा)।

कोट्ठु पुं [क्रोष्टृ] शृगाल, सियार (पड्)।

कोडड देखो कोढड (स २५६)।

कोडडिय देखो कोढडिय (कप्प)।

कोडअ न [दे] कार्य, काम काज (दे २, २)।

कोडय [दे] देखो कोडिअ (पाअ)।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोल भाग, विवर (गा ५६२)।

कोडल पु [कोटर] पक्षि-विशेष (राज)।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] संख्या-विशेष, करोड को करोड से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (सम १०५, कप्प, उत्त)।

कोडाल पु [कोडाल] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक पुरुष। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ धनुष का अग्र भाग (राय ११३)। २ भेद, प्रकार (पिंड ३६५)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड, १०००००००० (णाया १, ८, सुर १, ६७, ४ ६०)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक (से १२, २८, पाअ)। ३ अंश, विभाग, भाग, 'नत्थित्थमो पाएसो लोए वालग्गकोटिमित्तोवि' (पव ३६, ठा ६)। °कोडि देखो कोडाकोटि (सुपा २६६)। °वद्ध वि [°वद्ध] करोड संख्यावाला (नव ३)। °भूम स्त्री [°भूमि] एक जैन तीर्थ (ती ४३)। °सिला स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ (पउम ४८, ६६)। °सो अ [°शस्] करोडों, अनेक करोड (सुपा ४२०)। देखो कोडी।

कोडअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु सराव, सकोरा (दे २,४७)। १ पुं पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (षड्)।

कोडिअ पु [कोटिक] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ एक जैन मुनि-गण (कप्प, ठा ६)।

कोडिअ वि [कोटित] सकोचित (धर्मसं ३८८)।

कोडिण्ण } न [कौडिन्य] १ इस नाम का
कोडिन्न } एक नगर (उप ६४८ टी)। २ वाशिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र (कप्प)। ३ पु कौडिन्य गोत्र का प्रवर्तक पुरुष। ४ वि कौडिन्य-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०, कप्प)। ५ पु. एक मुनि, जो शिवभूति का शिष्य था (विसे २५५२)। ६ महागिरि-सूरि का शिष्य. एक जैन मुनि (कप्प)। ७ गोतम स्वामी के पास दीक्षा लेनेवाले पाँच सौ तापसों का गुरू (उप १४२ टी)।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौडिन्य-गोत्रीय स्त्री (कप्प)।

कोडिल्ल पु [दे] पिशुन दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०, षड्)।

कोडिल्ल देखो कोट्टिल्ल (राज)।

कोडिल्ल पु [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि (वव १, अणु)।

कोडिल्लय न [कौटिल्यक] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र (अणु)।

कोडिसहिय न [कोटिसहित] प्रत्याख्यान विशेष, पहले दिन उपवास करके दूसरे दिन भी उपवास की ली जाती प्रतिज्ञा (पव ४)।

कोडी देखो कोडि (उव, ठा ३, १, जी ३७)। °करण न [°करण] विभाग, विभजन (पिंड ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष (इक, पव १०४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। °सर पु [°श्वर] क... पति, कोटीश (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का ... गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रू... २ वि. इस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—... ३६०)।

कोडुंब न [दे] कार्य, काज (दे २, २)

कोडुंबि देखो कुडुंबि (ठा २, १—... १२५)।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब ... स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार ... मुखिया (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव ... आदमी (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। ३ ... कुटुम्ब मे उत्पन्न, कुटुम्ब से सम्बन्ध रख... वाला, कुटुम्ब-सम्बन्धी (महा, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोदूषक] अन्न-विशेष, को... की एक जाति (राज)।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड (दे २, ३३, स ६४... ६४२, हे ४, ४२२, णाया १, १६—... २२४, उप ८६२, भवि)।

कोड्डुम देखो कोट्टुम (कुमा)।

कोड्डुमिअ न [रत] रति-क्रीडा-विशेष (कुम...

कोड्डिय वि [दे] कुतूहली, कौतुकी, विनो... शील, उत्कण्ठित (उप ७६८ टी)।

कोढ } पु [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ-रो...
कोढ } पि ६६, णाया १, १३, श्रा २०)

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त, कु... रोगी (आचा)।

कोढिक } वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कु...
कोढिय } ग्रस्त (पण्ह २ ५ विपा १, ७)

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्णवा... (दे २, ४५)। २ पु लकुट, लकडी, य... (दे २, ४५, निचू १, पाअ)। ३ वीण... वगैरह बजाने की लकडी, वीणा-वादन-दण्ड... (जीव ३)।

कोण } पुन [कोण] कोन, अस्र, घर क...
कोणग } एक भाग (गउड, दे २, ४५, रंभा)

कोणव पु [कौणप] राक्षस, पिशाच (पाअ)

कोणायल पु [कोणाचल] भगवान् शान्ति... नाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार... ३७८)।

कोणालग पु [कोनालक] जलचर पक्षि विशेष (पण्ह १, १)।

कोणाली स्त्री [दे] गोष्ठी, गोठ (बृह १)।

कोणिअ } पु [कोणिक] राजा श्रेणिक का
कोणिग } पुत्र, नृप-विशेष (अंत; णाया १, १; [illegible])।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, [illegible] (दे २,२६)।

कोणोट्टिआ स्त्री [दे] गुंजा, गु० 'चणोठी' (अनु० बृ० नरि० पत्र० ७६) देखो, चणोट्टिया।

कोणय पु [दे. कोण] गृह-कोण, घर का एक भाग, कोना (दे २, ४५)।

कोतव न [कौतव] मूषक के रोम से निष्पन्न सूता (राज)।

कोतुहल देखो कुऊहल (नाट)।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दारू परोसने का भाण्ड, पात्र-विशेष (दे २, १८)।

कोत्तिअ वि [कौतुकिन्] कौतुकी, कुतूहली (गा ६७२)।

कोत्तिअ पु [कौत्रिक] १ भूमि-शयन करनेवाला वानप्रस्थ (औप)। २ न एक प्रकार का मधु (ठा ६)।

कोत्थ देखो कोच्छ = कक्ष।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३)। २ कोटर, गह्वर (सुपा २८८; निचू १५)।

कोत्थल पु [दे] १ कुशूल, कोष्ठ (दे २, ४८)। २ कोथली, थैला (स १६२)। °कारी स्त्री [°कारी] भौंरी, कीट-विशेष (बृह १)।

कोत्थुभ } पु [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्ष-
कोत्थुह } स्थल का मणि (तीं १० प्राप्र;
कोथुभ } [illegible] ५५१; पण्ह १, ४)।

कोदंड पु [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप (धर्म १६)।

कोद्दिम } [illegible] कुट्टिम ([illegible])।
कोद्दाल }

कोद्दूसग [illegible] कोदूसग ([illegible] ६, ७)।

कोप्प [illegible] कुप्प ([illegible])।

कोमंडिका स्त्री [दे] [illegible], क्षुद्र कीट-विशेष (सुपा ६८, ३५)।

कोद्दाल [illegible] कुद्दाल (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कोमलिया स्त्री [कुमालिका] [illegible] (ठा १, ३)।

कोध पुं [क्रोध] इस नाम का एक राजा, जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी (पउम ८५, ४)।

कोप्प देखो कुप्प = कुप्। कोप्पइ (नाट)।

कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह (दे २, ४५)।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर, 'अकोप्पजघजुगला' (पएह १, ३)।

कोप्पर पु [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग (ओघ २९६ भा; कुमा; हे १, १२४)। २ नदी का किनारा, तट, तीर (ओघ ३०)।

कोबेरी स्त्री [कौबेरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

कोभग } पु [कोभक] पक्षि-विशेष (अंत;
कोभगक } ओप)।

कोमल त्रि [कोमल] मृदु सुकुमार (जी १०; पाअ; कप्पू)।

कोमार वि [कौमार] १ कुमार से सबन्ध रखनेवाला कुमार-सबन्धी (विपा १, ७१)। २ कुमारी सबन्धी (पाअ)। ३ कुमारी से उत्पन्न (दे १, ८१)। स्त्री °रिया, °री (भग १५)। °भिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र विशेष, जिसमें बालकों के स्तन पान-संबन्धी वर्णन है (विपा १, ७—पत्र ७५)।

कोमारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

कोमुइआ स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा (दे २, ४८)।

कोमुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा (दे २, ४८)। २ चन्द्रिका, चांदनी (श्रा धम्म ११ टी)। ३ इस नाम की एक नगरी (पउम ३९, १००)। ४ कार्तिक की पूर्णिमा (राय)। °नाह पु [°नाथ] चन्द्रमा, चांद (धम्म ११ टी)। °महूसव पु [°महोत्सव] उत्सव विशेष (सि ३६६)।

कोमुदिया देखो कोमुइआ (णाया १, ५—पत्र १००)।

कोमुदी देखो कोमुई = कौमुदी (णाया १, १७)।

कोयव त्रि [कौतव] चूहे के रोमों से बना हुआ (वस्त्र) (अणु ३४)।

कोयव वि [कौयव] कोयव' देश में निष्पन्न (आचा २, ५, १, ५)। देखो कोयवग।

कोयवग } पु [दे] रूई से भरे हुए कपडे
कोयवय } का बना हुआ प्रावरण विशेष, रजाई (णाया १, १७—पत्र २२९)।

कोयवी स्त्री [दे] रूई से भरा हुआ कपडा (बृह ३)।

कोरग पु [कोरङ्ग] पक्षि-विशेष (पएह १, १—पत्र ८)।

कोरट } पु [कोरण्ट, °क] १ वृक्ष-विशेष
कोरटग } (पाअ)। २ न इस नाम का भृगुकच्छ (भडौंच) शहर का एक उपवन (वव १)। ३ कोरण्टक वृक्ष का पुष्प (पएह १, ४, ज १)।

कोरअ (शौ) देखो कउरव (प्राकृ ८४)।

कोरय } पुन [कोरक] फलोत्पादक मुकुल,
कोरव } फल की कली (पाअ), 'चत्तारि कोरवा पन्नत्ता' (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कोरव देखो कउरव (सम्मत्त १७६)।

कोरविआ स्त्री [कोरव्या] देखो कोरव्वीया (अणु १३०)।

कोरव्व पुस्त्री [कौरव्य] १ कुरु-वश में उत्पन्न (सम १५२ ठा ६)। २ कोरव्य-गोत्रीय। ३ पु आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त (जीव ३)।

कोरव्वीया स्त्री [कौरवीया] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

कोरिंट } देखो कोरंट (णाया १, १—
कोरिंटय } पत्र १६, कप्प, पउम ४२, ८,
कोरेंट } ओप उवा)।

कोल पु [दे] ग्रीवा, नोक, गला (दे २, ४५)।

कोल पु [क्रोड] १ सूअर, वराह (पएह १, १—पत्र ७, न १११)। २ उत्सङ्ग, गोद, 'तालीवय—' (गउड)।

कोल पु [कोल] १ देश विशेष (पउम ९८, ६९)। २ घुण, काष्ठ कीट (नम ३६)। ३ शूकर, वराह, सूअर (उप ३२० टी; णाया १, १; कुमा; पाअ)। ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु (पएह १, १—पत्र ७)। ५ अस्त्र-विशेष (सम्म ५)। ६ मनुष्य की एक नीच जाति (सुपा ८)। ७ बदरी वृक्ष, बेर का गाछ। ८ न बदरी फल, बेर (दस ५, १; भग ६, १०)। °पाग न [°पाक] नगर-

विशेष, जहा श्रीऋषभदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण मे है (ती ४५)। °पाल पु [°पाल] देव विशेष, वरणेन्द्र का लोकपाल (ठा ३, १—पत्र १०७)। °सुणय, °सुणह पुस्त्री [°शुनक] १ बडा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह (आचा २, १, ५)। २ शिकारी कुत्ता (पण्ण ११)। स्त्री °णिया (पण्ण ११)। °वास पु न [°वास] काष्ठ, लकडी (सम ३६)।

कोल त्रि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी। २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखनेवाला, 'कोलो धम्मो कस्स णो भाइ रम्मो' (कप्पू)। ३ न वदर-फल-सबन्धी (भग ६, १०)। °चुण्ण न [°चूर्ण] वेर का चूर्ण, वेर का सत्तू (दस ५, १)। °ट्ठिय न [°ास्थिक] वेर की गुठिया या गुठली (भग ६, १०)।

कोलव पु [दे] पिठर, स्थाली (दे २ ४७ पाअ)। २ गृह, घर (दे २, ४७)।

कोलंब पु [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का नामा हुआ अग्र भाग (अनु ५)।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] कोल-जातीय स्त्री (आचू ४)।

कोलघरिय वि [कौलगृहिक] कुलगृह-सबन्धी, पितृगृह-सबन्धी, पितृगृह से सबन्ध रखनेवाला (उवा)।

कोलज्जा स्त्री [दे] धान्य रखने का एक तरह का गर्त्त (आचा २, १, ७)।

कोलर देखो कोटर (गा ५६३ अ)।

कोलव न [कौलव] ज्योतिष-शास्त्र मे प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [कौलाल] १ कुम्भकार सबन्धी। २ न मिट्टी का पात्र (उवा)।

कोलालिय पुं [कौलालिक] मिट्टी का पात्र वेचनेवाला (बृह २)।

कोलाह पु [कोलाभ] साप की एक जाति (पण्ह १)।

कोलाहल पु [दे] पक्षी की आवाज, पक्षी का शब्द (दे २, ५०)।

कोलाहल पु [कोलाहल] तुमुल, शोरगुल, रौला, हल्ला, बहुत दूर जानेवाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द (दे २, ५०, हेका १०५, उत्त ६)।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल-वाला, शोरगुलवाला (पउम ११७, १६)।

कोलिअ पु [दे] एक अधम मनुष्य जाति (सुख २, १५)।

कोलिअ पु [दे] कोली, तन्तुवाय, जुलाहा, कपडा बुननेवाला (दे २, ६५, णदि, पव २, उप पृ २१०)। २ जाल का कीडा, मकडा (दे २,२५, पाअ, श्रा २० आव ४, बृह १)।

कोलित्त न [दे] उल्मुक, लूका (दे २, ४६)।

कोलिन्न न [कौलीन्य] कुलीनता, खानदानी (धर्मवि १४६)।

कोलीकय वि [क्रोडीकृत] स्वीकृत, अंगीकृत (गउड)।

कोलीण न [कौलीन] १ किंवदती, लोक वार्ता, जन-श्रुति (मा ३७)। २ वि वश-परपरागत, कुलक्रम से आयात। ३ उत्तम कुल मे उत्पन्न। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी (नाट—महावी १३३)।

कोलीर न [दे] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरुविन्द, 'कोलीररत्तणयणेअ' (दे २, ४६)।

कोलुण्ण न [कारुण्य] दया, अनुकम्पा, करुणा (निचू ११)। °पडिया, °वडिया स्त्री [°प्रतिज्ञा] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा (निचू ११)।

कोलेज्ज पु [दे] नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य आदि भरने का कोठा (आचा २, १, ७, १)।

कोलेय पुं [कौलेयक] श्वान, कुत्ता (सम्मत्त १६०, धर्मवि ५२)।

कोल्ल पु न [दे] कोयला, जली हुई लकडी का टुकडा (निचू १)।

कोल्लइर न [कोल्लकिर] नगर-विशेष (पिंड ४२७)।

कोल्लपाग न [कोल्लपाक] दक्षिण देश का एक नगर, जहाँ श्री ऋषभदेव का मन्दिर है (ती ४५)।

कोल्लर पु [दे] पिठर, स्थाली, थाली, थरिया (दे २, ४७)।

कोल्ला देखो कुल्ला (कुमा)।

कोल्लाग देखो कुल्लाग (अंत)।

कोल्लापुर न [कोल्लापुर] दक्षिण देश का एक नगर, महालक्ष्मी का स्थान (ती ३४)।

कोल्लासुर पु [कोल्लासुर] इस नाम का एक दैत्य (ती ३४)।

कोल्लुग [दे] देखो कोल्हुअ (वव १, बृह १)।

कोल्हाहल न [दे] फल-विशेष, विम्बी-फल (दे २, ३६)।

कोल्हुअ पु [दे] १ शृगाल, सियार (दे २, ६५ पाअ, पउम ७, १७, १०५, ४२)। २ कोल्हू, चरखी, ऊख से रस निकालने का कल (दे २, ६५, महा)।

कोव सक [कोपय्] १ दूषित करना। २ कुपित करना। कोवेइ (सूअनि १२५), कोवइज्ज (कुप्र ६४)।

कोव पुं [कोप] क्रोध, गुस्सा (दिरा १, ६, प्रासू १७५)।

कोवण वि [कोपन] क्रोधी, क्रोध-युक्त (पाअ, सुपा ३८५, सम ३४७, स्वप्न ८२)।

कोवाय पु [कोपक] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

कोवासिअ देखो कोआसिय (पाअ)।

कोवि वि [कोपिन्] क्रोधी, क्रोध-युक्त (सुपा २८१, श्रा २०)।

कोविअ वि [कोविद] निपुण, विद्वान् अभिज्ञ (आचा, सुपा १३०, ३६२)।

कोविअ वि [कोपित] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ, 'वइरो किर दाहो वायणति नवि कोविय वयणं' (उव)।

कोविआ स्त्री [दे] शृगाली, सियारिन (दे २, ४६)।

कोविआर पु [कोविदार] वृक्ष-विशेष (विक्र ३३)।

कोविणी स्त्री [कोपिनी] कोप युक्त स्त्री (श्रा १२)।

कोशण (मा) वि [कदुष्ण] थोडा गरम (प्राकृ १०२)।

कोस पु [दे] १ कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ रक्त वस्त्र। २ समुद्र, जलधि, सागर (दे २, ६५)।

कोस पुं [क्रोश] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील (कप्प, जी ३२)।

कोस पुं [कोश, °ष] १ खजाना, भण्डार (गाया [illegible], १३२; पउम ५ [illegible])। २ तलवार की म्यान (सूअ १, ६)। ३ कुड्मल [illegible] (कुमा)। ४ मुकुल, कली (गउड)। ५ [illegible] 'ता मुह-[illegible]' (सुपा २८ [illegible])। ६ दिव्य-भेद [illegible] [illegible] 'तय अम्हे कोसविसाणि पच्चाएमो' (स ३२८)। ७ अभिधान शास्त्र, शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ, जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ८ [illegible] (पाअ)। ९ [illegible] नगर-विशेष 'कोस नाम [illegible]' (स १३३)। °पाण न [°पान] [illegible], शपथ (गा ४४८)। °हिव पुं [°धिप] खजानची, भंडारी (सुपा ७३)।

कोसंब पुं [कोशाम्र] फल-वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] खड्ग-विशेष, एक प्रकार की तलवार (राज)।

कोसंबिया स्त्री [कोशाम्बिका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [कौशाम्बी] वत्स देश की मुख्य-नगरी (ठा १०; विपा १, ५)।

कोसग पुं [कोशक] पाँवों का एक चर्म-मय आवरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली (धर्म ३)।

कोसट्टइरिआ स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती, गौरी, [illegible] (दे २, ३५)।

कोसय न [दे कोशक] लघु शराव, छोटा [illegible] (दे [illegible] ४७ [illegible])।

कोसल न [कौशल] कुशलता, निपुणता, चातुरी (कुमा)।

कोसल न [दे] [illegible] [illegible] उपहार (दे [illegible])।

कोसल पुं [कोसल °र] १ देश-विशेष [illegible] (सुपा [illegible])। २ [illegible] (पउम २२, ४४)। ३ [illegible] [illegible]। °पुर न [°पुर] [illegible] [illegible]।

कोसला स्त्री [कोसला] १ नगरी-विशेष, अयोध्या नगरी (पउम २०, २८)। २ अयोध्या प्रान्त, कोसल देश (ना ७, ६)।

कोसलिअ वि [कौशलिक] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल देश सम्बन्धी (भग २०, ८)। २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या सम्बन्धी (ज २)।

कोसलिअ न [दे कौशलिक] प्राभृत भेट, उपहार (दे २, १२; महा; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ स्त्री [दे कौशलिका] ऊपर देखो (दे २, १२; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल्ल न [कौशल्य] निपुणता, चतुराई (कुमा; सुपा २६; सुर १०, ८०)।

कोसल्ल न [दे] प्राभृत, भेट, उपहार, 'त पुरजणकोसल्लं नरवइणा अप्पियं कुमारस्स' (महा)।

कोसल्लया स्त्री [कौशल्य] निपुणता, चतुराई, 'तह सउणलीइकोसल्लया य लीणच्चिय इयाणि' (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [कौशल्या] दाशरथि राम की माता (उप पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [दे कौशलिक] भेट, उपहार (दे २, १२; महा; सुपा ४१३, ५२७; गण)।

कोसा स्त्री [कोशा] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहाँ जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातुर्मास (चौमासा) किया था (विवे ३३)।

कोसिण वि [कोष्ण] थोड़ा गरम (नाट—वेणी)।

कोसिय न [कौशिक] १ मनुष्य का गोत्र विशेष (अभि ४२; ठा ७६०)। २ कौशिक [illegible] का नाम (वद [illegible])। ३ घूक, उल्लूक, उल्लू (पाअ; पार्श्व ७६)। ४ साँप-विशेष, चण्डकौशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष। ६ इन्द्र। ७ नकुल। ८ तानशास्त्र, नकारी। ९ श्रीति [illegible] गृगुल। १० इस नाम का एक राजा। ११ इस नाम का एक असुर। १२ जब में परीनेन्द्र, नगर, गान्धि। १३ शृंगार, मज्जा। १४ कुशा [illegible] (दे १, १५६)। १५ इस नाम का एक तापस (भवि)। १६ पुंस्त्री कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०)। १७ स्त्री कोसिर्ति (मा १६)।

कोसिया स्त्री [कौशिका] १ भारतवर्ष की एक नदी (कप्प)। २ इस नाम की एक विद्या-धर-राज कन्या (पउम ७ ५४)। ३ चमडे का जूता, 'कोसियमालाभूमियगिरोहरो विगय-वसणो य' (स २२३)। देखो कोसी।

कोसिआर पुं [कोशिकार] १ कीट-विशेष, रेशम का कीड़ा (पण्ह १, ३)। २ न रेशमी वस्त्र (ठा ५, ३)।

कोसी स्त्री [कोशी] १ शिम्बी, छीमी, फली (पाअ)। २ तलवार की म्यान (सूअ २, १, १६)।

कोसी स्त्री [कोशी] देखो कोसिया (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु, कचणकोसीपविट्ठदताए' (ओप)।

कोसुंभ वि [कौसुम्भ] कुसुभ-सम्बन्धी (रँग) (सिरि १०५७)।

कोसुम वि [कौसुम] फूल सम्बन्धी, फूल का बना हुआ, 'कोसुमा बाणा' (गउड)।

कोसुम्ह देखो कुसुभ (संक्षि ४)।

कोसेअ, कोसेज्ज न [कौशेय] १ रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़ा (दे २, ३३; सम १५३; पण्ह १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र (जीव ३)।

कोह पुं [°क्रोध] गुस्सा, कोप (ओप २ भा; ठा ४, १)। °मुंड वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित (ठा ५, ३)।

कोह पुं [कोथ] सड़ना, शीर्णता (भग ३, ३)।

कोह पुं [दे कोथ] वाचली, लता (सिरि २८८८)।

कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध युक्त, क्रोध-सहित 'कोहाए माणाए मायाए लोभाए [illegible] आगाय-णाए' (पडि)।

कोहंगय पुं [कोभङ्गक] पक्षि-विशेष (आचा)।

कोहटाण न [क्रोधस्थान] क्रोध-कुल [illegible] (भाउ ११)।

कोहंड न [कूष्माण्ड] १ कुम्हड़े का फल, कोहडा (पि ७६; ८६; १२७)। २ न

देव-विमान-विशेष (ती ५६)। ३ पु. व्यन्तर-श्रेणीय देव-जाति-विशेष (पत्र १६४)।

कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँडे का गाछ (हे १, १२४, दे २, ५० टी)।

कोहण वि [क्रोधन] १ कोपी, गुस्साखोर (सम ३७, पउम ३५, ७)। २ पु इस नाम का रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३२)।

कोहल देखो कुऊहल (हे १, १७१)।

कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कुतूहल-प्रेमी। स्त्री °आ (गा ७६८)।

कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहँडा का गाछ,

'जह लघेसि परवइ निययवइ
भरमहपि मोत्तूण।
तह मएणे कोहलिए, अज्ज
कल्लपि फुट्टिहिसि' (गा ७६८)।

कोहली देखो कोहंडी (हे २, ७३, दे २, ५० टी)।

कोहल्ल देखो कोहल (षड्)।

कोहल्ली स्त्री [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र-विशेष (दे २, ४६)।

कोहल्ली देखो कोहंडी (षड्)।

कोहि, कोहिल्ल वि [क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोधी-स्वभाव का गुस्साखोर (कम्म ४, १४०, बृह २)।

कोरव, कौलव देखो कउरव (हे १, १, चड)।

°क्किसिअ देखो किसिअ = कृपित (उप ७२८ टी)।

°क्कूर देखो कूर = क्रूर। (वा २६)।

°क्केर देखो °केर (हे २, ६६)।

°क्खड देखो खड (गउड)।

°क्खभ देखो खंभ (से ३, ५६)।

°क्खम देखो खम (गपू २७)।

°क्खलण देखो खलण (गउड)।

°क्खिसा देखो खिसा (सुपा ५१०)।

°क्खु देखो खु (कप्पू, अभि ३७, चारु १४)।

°क्खुत्त देखो खुत्त (गउड)।

°क्खेड्ड देखो खेड्ड (सुपा ५५२)।

°क्खेव देखो खेव, 'खारक्खेव व खए' (उप ७२८ टी)।

°क्खोडी देखो खोडी (पणह १, ३)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे कयाराइसद्दसकलणो
दसमो तरगो समत्तो ॥

ख

ख पु [ख] १ व्यजन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ हे (प्रामा, प्राप)। २ न आकाश, गगन, 'गज्जते खे मेहा' (हे १, १८७, कुमा, दे ६, १२१)। ३ इन्द्रिय (विसे ३४४३)। °ग पु [°ग] १ पक्षी, खग (पाअ, दे २, ५०)। २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या के बल से आकाश मे गमन करती हे, विद्याधर-लोक (आरा ५६)। देखो खय = खग। °गइ स्त्री [°गति] १ आकाश-गति। २ कर्म-विशेष, जो आकाश-गति का कारण है (कम्म २,३, नव ११)। °गामिणी स्त्री [°गामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश मे गमन किया जा सकता है (पउम ७, १४५)। °पुप्फ न [°पुष्प] आकाश-कुसुम, असभावित वस्तु (कुमा)।

खअ, खउर सक [खच्] सपत्ति युक्त करना। खअइ, खउरइ (प्राकृ ७३)।

खइ वि [क्षयिन्] १ क्षयवाला, नाशवाला। २ क्षय रोगवाला, क्षय-रोगी (सुपा २३३, ५७६)।

खइअ वि [क्षपित] नाशित, उन्मूलित (औप, भवि)।

खइअ वि [खचित] १ व्याप्त, जटित। २ मण्डित, विभूषित (हे १, १६३, औप, स ११४)।

खइअ वि [खादित] १ खाया हुआ, भुक्त, ग्रस्त (पाअ, स २५०, उप पृ ४६)। २ आक्रान्त, 'तह य होति उ कसाया। खइओ जेहि मणुस्सो कज्जाकज्जाइं न मुणेइ' (स ११४)। ३ न भोजन, भक्षण, 'खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा' (पञ्च ६२, ठा ४, ४—पत्र २७६)।

खइअ वि [क्षयित] क्षय-प्राप्त, क्षीण, 'किमि-कायखइयदेहो' (सुर १६, १६१)।

खइअ पु [दे] हेवाक, स्वभाव (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

खइअ, खइग पु [क्षायिक] १ क्षय, विनाश, उन्मूलन, 'से किं त खइए ? खइए अट्ठण्ह कम्मपयडीण खइएण' (अणु)। २ वि क्षय से उत्पन्न, क्षय-सबन्धी, क्षय से सबन्ध रखनेवाला। ३ कर्म-नाश से उत्पन्न 'कम्मक्खयमहावो खइओ' (विसे ३४६५ कम्म १,१५, ३,१६, ४,२२, सम्य २३, औप)।

खइत्त न [क्षैत्र] खेतो का समूह, अनेक खेत (पि ६१)।

खइया स्त्री [खदिका] खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि—धान, लावा, 'दहिघयपायसखइया-निओए' (भवि)।

खइर पु [खदिर] वृक्ष विशेष, खैर का गाछ (आचा, कुमा)।

खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-सवन्धी (हे १, ६७, सुपा १५१)।

खइव [दे] देखो खइअ (ठा ४, ४—पत्र १७६ टी)।

खउड पुं [खपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य (आवम, श्राद्ध)।

खउर अक [क्षुभ्] १ क्षुब्ध होना, डर से विह्वल होना। २ सक कलुषित करना। खउरइ (हे ४, १५४ कुमा), 'खउरेति विगयरागं' (से ५, ३)।

खउर वि [दे] कलुषित, 'दरवहुनिवडणविद्दुमखउरियतडा' (से [illegible], स ५८८)।

खउर न [क्षौर] क्षौर-कर्म, हजामत (हेका १८६)।

खउर पुं [खपुर] पेड़ आदि का चिकना रस, गोंद (बृह ३, निचू १६)। °कठिणय न [°कठिनक] तापसों का एक प्रकार का पात्र (निचू १८६५)।

खउरिअ वि [क्षुब्ध] क्षुभित (पाअ, बृह ३)।

खउरिअ वि [क्षौरित] मुण्डित, लुञ्चित, केश-रहित किया हुआ (से १०, ८३)।

खउरिअ वि [खपुरित] खरण्टित, चिकनाया हुआ (निचू ५)।

खउरीकय वि [खपुरीकृत] गोंद वगैरह की तरह चिकना किया हुआ,

'कलुसीकओ य किट्टीकओ य
खउरीकओ य मइलिओ य।
कम्मेहिं एस जीवो, नाऊण वि
मुज्झई जेण' (उव)।

खओवसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का विनाश और कुछ का दमन (भग)।

खओवसमिअ वि [क्षायोपशमिक] १ क्षयो-पशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी (सम [illegible])। २ पुं क्षयोपशम [illegible]।

खंखर पुं [दे] [illegible] (दे [illegible])।

खंगार न [खङ्गार] [illegible]

[illegible]

खंज [illegible] [खञ्ज्] [illegible] तुरिय तुरयं मा खंच मुंच मुक्खय' (सुपा १६८)।

खंचिय वि [कृष्ट] १ खींचा हुआ (स ५७४)। २ वश में किया हुआ (भवि)।

खंज अक [खञ्ज्] लंगड़ा होना (वज्जा)।

खंज वि [खञ्ज] लंगड़ा, पङ्गु, लूला (सुपा २७६)।

खंज न [खञ्ज] गाड़ी में लोहे के डंडे के पास बांधा जाता मल आदि का गीला कपड़ा—जो तेल आदि से भीजाया हुआ रहता है, विउआ, 'खंजजणनयणनिभा' (उत्त ३४, ४)।

खंजण पुं [खञ्जन] राहु का कृष्ण पुद्गल विशेष (सुज्ज २०)।

खंजण पुं [खञ्जन] १ पक्षि विशेष, खञ्जरीट (दे २, ७०)। २ वृक्ष विशेष, 'ताउवडुखंजख-जणगुल्लवयरगहीरदुक्खमचारि' (स २५६)।

खंजण पुं [दे] १ कर्दम, कीचड़ (दे २ ६६, पाअ)। २ कज्जल, काजल, मषी (ठा ४ २)। ३ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच (पएण १७—पत्र ५२५)।

खंजर पुं [दे] सूखा हुआ पेड़ (दे २, ६८)।

खंजा स्त्री [खञ्जा] छन्द-विशेष (पिंग)।

खंजिअ वि [खञ्जित] जो लंगड़ा हुआ हो, पङ्गुभूत (वज्जा)।

खंड सक [खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना। खंडइ (हे ४, ३६७)। कवकृ खंडिज्जंत (से १३, ३२, सुपा १३४)। हेकृ खंडित्तए (उत्त)। कृ खंडियव्व (उप ६७८ टी)।

खंड पुं [खण्ड] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। °रव न [°रव] नरक-स्थान (देवेन्द्र ८८)।

खंड (अप) देखो खग्ग, 'मुंडिहिं खंडु वसंतु नन्हीं' (भवि)।

खंड पुंन [खण्ड] १ टुकड़ा, अंश, हिस्सा (हे २, ६७ कुमा)। २ चीनी, मिश्री (उर ६, ८)। ३ पृथ्वी का एक हिस्सा [illegible]—' (भग)। °घडग पुं [°घटक] [illegible] (णाया १, १६)। °प्पवाया स्त्री [°प्रपाता] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (ठा २, ३)। °भेय पुं [°भेद] [illegible], पत्थर का [illegible] पृथक्करण, फटके हुए घडे की तरह पृथग्भाव (भग ५, ४)। °मल्लग पुन [°मल्लक] भिक्षा-पात्र (णाया १, १६)। °सो अ [°शस्] टुकड़ा-टुकड़ा, खण्ड-खण्ड (पि ५१६)। °भिय देखो °भेय (ठा १०)।

खंड न [दे] १ मुण्ड, शिर, मस्तक। २ दारू का बरतन, मद्य-पात्र (दे २, ६८)।

खंडई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे २ ६७)।

खंडग पुन [खण्डक] चोथा हिस्सा (पव १४३)।

खंडग न [खण्टक] शिखर-विशेष (ठा ६, इक)।

खंडण न [खण्डन] १ विच्छेद, भञ्जन नाश (णाया १, ८)। २ कण्डन, धान्य वगैरह का छिलका अलग करना, 'खंडणदलणाइ गिह-कम्मे' (सुपा १४)। ३ वि नाश करनेवाला, नाशक (सुपा ४०२)।

खंडणा स्त्री [खण्डना] विच्छेद, विनाश (वज्जा, निचू १)।

खंडपट्ट पुं [खण्डपट्ट] १ द्यूतकार, जुआरी (विपा १, ३)। २ धूर्त, ठग। ३ अन्याय से व्यवहार करनेवाला (विपा १,३)।

खंडरक्ख पुं [खण्डरक्ष] १ दाण्डपाशिक, कोतवाल (णाया १, १, पण्ह १, ३, औप)। २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करनेवाला (णाया १, १ निमे २०६०, औप)।

खंडव न [खाण्डव] इन्द्र का वन विशेष, जिसको अर्जुन ने जलाया था (नाट—वेणी ११८)।

खंडा स्त्री [खण्ड] मिस्री, चीनी, शक्कर खांड (औप ३०३)।

खंडा स्त्री [खण्डा] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या (महा)।

खंडाखंडि अ [खण्डशस्] टुकड़ा-टुकड़ा, खण्ड-खण्ड (उत्त, णाया १,६)। °कीकय वि [°कृत] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (सुर १६, ५६)।

खंडामणिकंचण न [खण्डामणिकाञ्चन] इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

खंडावत्त न [खण्डावर्त्त] इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

खंडाहड वि [खण्डखण्ड] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (सुपा ३८५)।

खंडिअ पु [खण्डिक] छात्र, विद्यार्थी (औप)।

खंडिअ वि [खण्डित] छिन्न, विच्छिन्न (हे १, ५३, महा)।

खंडिअ पु [दे] १ मागध, भाट, बिरुद-पाठक। २ वि अनिवार्य, निवारण करने को अशक्य (दे २, ७८)।

खंडिआ स्त्री [खण्डिका] खण्ड, टुकड़ा (अभि ६२)।

खंडिआ स्त्री [दे] नाप-विशेष बीस मन की नाप (स २४)।

खंडी स्त्री [दे] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ किले का छिद्र (णाया १, २—पत्र ७६)।

खंडु (अप) देखो खग्ग। गुजराती में 'खांडु' कहते हैं (प्राकृ १२१)।

खंडुअ न [दे] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष, बाजूबंद (मृच्छ १८१)।

खंडुय देखो खडग (पव १४३)।

खंत पु [दे] पिता, बाप (पिंड ४३२, सुख २, ३ ५, ८)

खंत देखो खा।

खंत वि [क्षान्त] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त (उप ३२० टी, कप्पू, भवि)।

खंतव्व वि [क्षन्तव्य] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक (विक्र ३८, भवि)।

खंति स्त्री [क्षान्ति] क्षमा, क्रोध का अभाव (कप्प महा, प्रासू ४८)।

खंति देखो खा।

खंतिया } स्त्री [दे] माता, जननी (पिंड खंती } ४३०, ४३१)।

खंद पु [स्कन्द] १ कार्त्तिकेय, महादेव का एक पुत्र (हे २, ५, प्राप्र, णाया १, १—पत्र ३६)। २ राम का स्कन्द नाम का एक सुभट (पउम ६७, ११)। °कुमार पु [°कुमार] एक जैन मुनि (उव)। °ग्गह पु [°ग्रह] १ स्कन्दकृत उपद्रव, स्कन्दावेश (ज २)। २ ज्वर-विशेष (भाग ३, ६)। °मह पु [°मह] स्कन्द का उत्सव (णाया १, १)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम (विपा १, ३)।

खंदग } पु [स्कन्दक] १-२ ऊपर देखो। ३ खंदय } एक जैन मुनि (उव, भग, अंत सुपा ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी (पुप्फ ८४)।

खंदरुद्द न [स्कन्दरुद्र] शास्त्र-विशेष (धर्मसं ६३५)।

खंदिल पु [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया (गच्छ १)।

खंध पु [स्कन्ध] भित्ति, भीत, दीवार (आचा २, १, ७, १)।

खंध पु [स्कन्ध] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गलों का पिण्ड (कम्म ४, ६६)। २ समूह, निकर (विसे ६००)। ३ कन्धा, काँध (कुमा)। ४ पेड़ का धड़, जहाँ से शाखा निकलती है (कुमा)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °करणी स्त्री [°करणी] साध्वियों को पहनने का उपकरण-विशेष (ओघ ६७७)। °मंत वि [°मत्] स्कन्धवाला (णाया १, १)। °बीय पु [°बीज] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरह का गाछ (ठा ५, २)। °सालि पु [°शालिन्] व्यन्तर देवों की एक जाति (राज)।

खंधग्गि पु [दे स्कन्धाग्नि] स्थूल काष्ठों की आग (दे २, ७०, पाअ)।

खंधमंस पु [दे] हाथ, भुजा, बाहु (दे २, ७१)।

खंधमंसी स्त्री [दे] स्कन्ध-यष्टि, हाथ (षड्)।

खंधय देखो खंध (पिंग)।

खंधयट्ठि स्त्री [दे स्कन्धयष्टि] हाथ, भुजा, (दे २, ७१)।

खंधर पुस्त्री [कन्धर] ग्रीवा, गला, गरदन (मण)। स्त्री °रा (महा)।

खंधलट्ठि स्त्री [दे स्कन्धयष्टि] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा (षड्)।

खंधवार देखो खंधावार (महा)।

खंधाआर देखो खंधावार (प्राकृ ३०)।

खंधार पु ब [स्कन्धार] देश-विशेष (पउम ६८,६६)।

खंधार देखो खंधावार (पउम ६६, २८, महा, विसे २४८१)।

खंधाल वि [स्कन्धवत्] स्कन्धवाला (सुपा १२६)।

खंधावार पु [स्कन्धावार] छावनी, सैन्य का पड़ाव, शिविर (णाया १, ८, स ६०३, महा)।

खंधि वि [स्कन्धिन्] स्कन्धवाला (औप)।

खंधिल्ल देखो खंधि (स ६६७)।

खंधी स्त्री. देखो खंध (औप)।

खंधीवार पु [दे] बहुत गरम पानी की धारा (दे २, ७२)।

खंप सक [सिच्] सिञ्चना, छिड़कना। खंपइ (भवि)।

खंपणय न [दे] वस्त्र, कपड़ा, 'बहुसेयसित्त-मलमइलखंपणयचिक्कणसरीरो' (सुपा ११)।

खंभ पु [स्तम्भ] खंभा थंभा (हे १, १८७, २ ४, ६, भग, महा)।

खंभ सक [स्कभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना। खंभेज्जा, खंभाएज्जा (ठा ५, १—पत्र २६२)।

खंभतित्थ न [स्तम्भतीर्थ] एक जैन तीर्थ, गुजरात का प्राचीन 'खंभणा' गाँव (कुप्र २१)।

खंभल्लिअ वि [स्तम्भित] खंभे से बाँधा हुआ (से ६, ८५)।

खंभाइत्त न [स्तम्भादित्य] गूर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती २३)।

खंभालण न [स्तम्भालगन] खम्भे में बाँधना (पण्ह १, ३)।

खक्खरग पुन [दे] सूखी रोटी (धर्म २)।

खग्ग पु [खड्ग] १ पशु विशेष, गेंडा (उप १४८, पण्ह १ १)। २ पुंन तलवार, असि (हे १, ३४, स ५३१)। °धेणुआ स्त्री [°धेनु] छूरी, चाकू (दस)। °पुरा स्त्री [°पुरा] विदेह र्ग की स्वनाम प्रसिद्ध नगरी (ठा २, ३)। °पुरी स्त्री [°पुरी] पूर्वोक्त ही अर्थ (इक)।

खग्गाखग्गि न [खड्गाखड्गि] तलवार की लड़ाई (सिरि १०३२)।

खग्गि पु [खड्गिन्] जन्तु-विशेष, गेंडा (कुमा)।

खग्गूड पु [दे] ग्रामेश, गाँव का मुखिया (दे २, ६६)।

खग्गी स्त्री [खड्गी] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष (ठा २, ३)।

खग्गूड वि [दे] १ शठ प्राय, धूर्त सदृश (ओघ ३६ भा)। २ धर्म-रहित, नास्तिक-प्राय (ओघ ३७ भा)। ३ निद्रालु। ४ [illegible] (वव [illegible])।

खच सक [खच] १ [illegible] पवित्र करना। २ [illegible] बनाना। खचइ (हे ४, ८६)।

खचिअ [illegible] खइअ = खचित (कुमा)। २ निर्मित ([illegible])।

खच्चर पु [दे] [illegible], नातू (दे २, ६९)।

खड्डे [illegible] [illegible] व्याघ्र, शेर (दे २ ६६)।

खज्ज पु [खर्ज] वृक्ष-विशेष (स २५६)।

खज्ज वि [खाद्य] १ खाने योग्य वस्तु (पण्ह १, ३)। २ [illegible] खाद्य विशेष (भवि)।

[illegible] वि [क्षय्य] [illegible] क्षय किया जा सके वह (षड्)।

खज्जत [illegible]।

खज्जग [illegible] खज्ज = खाद्य (भग ७५)।

खज्जमाण [illegible]।

खज्जय [illegible] खज्ज = खाद्य (पउम ६६ १६)।

[illegible] [दे] १ [illegible], [illegible]। २ [illegible], [illegible] दिया गया हो वह [illegible]।

खाज्जर (?) वि [खाद्यमान] जो खाया [illegible] (स्रा)।

[illegible] [खज्ज] खुजली, पामा (राज)।

[illegible] पु [खर्जूर] [illegible] (कुमा, [illegible])। २ [illegible] (पउम ४४, [illegible])।

[illegible] [खर्जूरी] [illegible] (पाम, [illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] २, ६६)।

[illegible] [खर्जित] [illegible], [illegible] (गा १,८)।

खट्ट न [दे] १ तीमन, कढ़ी आर (दे २,६७)। २ वि. खट्टा, अम्ल (पएण १—पत्र २७ टी १)। °मेह पु [°मेघ] खट्टे जल की वर्षा (भग ७ ६)।

खट्टग न [दे] छाया, आतप का अभाव (दे २ ६८)।

खट्टंग न [खट्वाङ्ग] १ शिव का एक आयुध (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी। ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा मांगने का एक पात्र। ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष,

हृदयट्ठिअ कवाले, न मुयइ खणं खणपि खट्टंग।
सा तुह विरहे बालय बाला कावालिणी जाया' (वज्जा ८८)।

खट्टक्खड पु [खट्वाखाचक] रत्नप्रभा नामक पृथिवी का एक नरकावास, 'दाल काउण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टक्खडाभिहाणे नरए पलिओवमाऊ चेव नारगो उववनोत्ति' (म ८६)।

खट्टा स्त्री [खट्वा] खाट, पलग, चारपाई (सुपा ३३७ हे १, १६५)। °मल्ल पु [°मल्ल] बीमारी की प्रबलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह (वृह १)।

खट्टिअ } [दे खट्टिक] खटीक, सौनिक,
खट्टिक } कसाई (गा ६८२, सूअ २, २, दे २, ७०)।

खड पु [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खड न [दे] तृण घास (दे २,६७ कुमा)।

खडइअ वि [दे] संकुचित, संकोच प्राप्त (दे २, ७१)।

खडंग न [षडङ्ग] छ अंग, वेद के ये छ अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द निरुक्त। °वि वि [°विन्] छहों अंगो का जानकार (पि २६५)।

खडक्कन पु न [खटत्कृत] खटाट शब्द, ध्वनि से द्वार सूचना, किवाँड वगैरह की आवाज, 'नियदुवाडखडक्का खडक्को निसुणिओ तत्तो' (सुपा ८१४)।

खडक्कार पु [खटत्कार] ऊपर देखो (सुर ११ २८ सिरि ६०)।

खडक्किआ } स्त्री [दे] खिड़की, छोटा द्वार
खडक्की } (पाअ गउड दे २, ७१)।

खडक्खिय [illegible] खडक्कन (धर्मवि ५६)।

खडक्खड पु [खटत्खट] खट खट आवाज (मोह ८६)।

खडक्खर देखो छडक्खर (सम्मत्त १४३)।

खडखड पु [खडखड] देखो खडक्खड (इक)।

खडखडग वि [दे] छोटा और लम्बा (राज)।

खडट्ठोविल पु [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

खडणा स्त्री [दे] गैया, गो (गा ६३६ अ)।

खडहड पु [खटखट] साकल वगैरह की आवाज, खटत्कार (सुपा ५०२)।

खडहडी स्त्री [दे] जन्तु-विशेष गिलहरी, गिल्ली (दे २, ७२)।

खडिअ देखो खट्टिअ (गा ६८२ अ)।

खडिअ देखो खलिअ (गा १६२ अ)।

खडिअ पु [दे] दवात, स्याही का पात्र (धर्मवि ५७)।

खडिआ स्त्री [खटिका] खड़ी, लड़को को लिखने की खड़ी या खड़िया (कप्पू)।

खडी स्त्री [खटी] ऊपर देखो (प्राप)।

खडुआ स्त्री [दे] मौक्तिक, मोती (दे २, ६८)।

खडुक्क अक [आविस् + भू] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुक्कंति (वज्जा ४६)।

खडुक } पुस्त्री [दे] मुट मिर पर उँगली
खडुग } का आघात (वव १)।

खड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। खड्डइ (हे ४, १२६)।

खड्ड } न [दे] १ श्मश्रु, दाढ़ी मूँछ (दे २,
खड्डग } ६६, पाअ)। २ बड़ा, महान् (सिरि २५७६ टी)। ३ गर्त के आकारवाला (उत्त)।

खड्डा स्त्री [दे] १ खानि, आकर (दे २,६६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त (दे २,६६)। ३ गर्त, गड्ढा, खड्डा (सुर २,१०३ स १५२, सुपा १५, श्रा २६, महा, उत्त २, पव ७)।

खड्डिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

खड्डुया स्त्री [दे] ठोकर, आघात, 'खड्डुया मे चवेडा मे' (उत्त १, ३८)।

खड्डोलय पु [दे] गत, गर्त, गड्ढा (स २६३)।

खण सक [खन्] खोदना। खणइ (महा)। कर्म खम्मइ, खणिज्जइ (हे ४, २४४)। वकृ. खणमाण (सुर २ १०३)। संकृ.

खणेत्तु (आचा)। कवकृ खन्नमाण (पि ५४०)।

खण पु [क्षण] काल-विशेष, बहुत थोडा समय (ठा २, ४; हे २, २०; गउड; प्रासू १३४)। °जोइ वि [°योगिन्] क्षणमात्र रहनेवाला (सूअ १, १, १)। °भंगुर वि [°भङ्गुर] क्षण-विनश्वर, क्षणिक (पउम ८, १०५; गा ४२२; विसे ११८)। °या स्त्री [°दा] रात्रि, रात (उप ७६८ टी)।

खणक्खण } अक [खणखणाय्] 'खण-खणखणखण } खण' आवाज करना। खण-खणति (पउम ३६, ५३)। वकृ खण-क्खणत (स ३८८)।

खणग वि [खनक] खोदनेवाला (णाया १, १८)।

खणण न [खनन] खोदना (पउम ८६, ६०; उप पृ २२१)।

खणय देखो खण = क्षण (आचा; उवा)।

खणय वि [खनक] खोदनेवाला (दे १, ८५)।

खणाविय वि [खानित] खुदाया हुआ (सुपा ५५८; महा)।

खणि स्त्री [खनि] खान, आकर (सुपा ३५०)।

खणिक्क } देखो खणिय = क्षणिक, 'नट्ठाइया खणिग } कामगुणा खणिस्सा' (श्रु १५२; धर्मसं २२८)।

खणित्त न [खनित्र] खोदने का अस्त्र, खन्ती (दे ४, ४)।

खणिय वि [क्षणिक] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भंगुर (विसे १६७२)। २ वि फुरसत-वाला, काम धंधा से रहित 'नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ' (धम्म ८ टी)। °वाइ वि [°वादिन्] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर माननेवाला, बौद्धमत का अनुयायी (राज)।

खणिय वि [खनित] खुदा हुआ (सुपा २५६)।

खणी देखो खणि (पाअ)।

खणुसा स्त्री [दे] मन का दुःख, मानसिक पीडा (दे २, ६८)।

खण्ण न [दे] खात, खोदा हुआ (दे २, ६६; बृह ३; वव १)।

खण्ण वि [खन्य] खोदने योग्य (दे २, ३६)।

खण्णु देखो खाणु (दे २, ६६ टी)।

खण्णुअ पु [दे. स्थाणुक] कीलक, खोंटी खूँटा (दे २, ६८; गा ६४, ८२२ अ)।

खत्त न [दे] १ खात, खोदा हुआ (दे २, ६६; पाअ)। २ शस्त्र से तोडा हुआ (ओघ ३८०)। ३ सेंध, चोरी करने के लिए दीवाल मे किया हुआ छेद (उप पृ ११६; णाया १, १८)। ४ खाद, गोबर (उप ५६७ टी)। °खणग पु [°खनक] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला (णाया १, १८)। °खणण न [°खनन] सेंध लगाना (णाया १, १८)। °मेह पुं [°मेघ] करीष के समान रसवाला मेघ (भग ७, ६)।

खत्त पु [क्षत्र] क्षत्रिय मनुष्य जाति-विशेष (सुपा १६७; उत्त १२)।

खत्त वि [क्षात्र] १ क्षत्रिय-सम्बन्धी, क्षत्रिय का। २ न क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन, 'अहह अखत्तं करेउ कोइ इमो' (धम्म ८ टी नाट)।

खत्तय पु [दे] १ खेत खोदनेवाला। २ सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। ३ ग्रह-विशेष राहु (भग १२, ६)।

खत्ति पु [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खत्ति पुंस्त्री [क्षत्रिन्] नीचे देखो, 'खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के' (सूअ १, ६, २२)।

खत्तिअ पुंस्त्री [क्षत्रिय] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य (पिंग; कुमा; हे २, १८५; प्रासू ८०)। °कुंडग्गाम पु [°कुण्डग्राम] नगर विशेष, जहां श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था (भग ६, ३३)। °कुंडपुर न [°कुण्डपुर] पूर्वोक्त ही अर्थ (आचा २, १५, ४)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] धनु-र्विद्या (सूअ २, २)।

खत्तिणी } स्त्री [क्षत्रियाणी] क्षत्रिय जाति खत्तियाणी } की स्त्री (पिंग; कप्प)।

खद्ध न [दे] प्रभूत लाभ (पचा १७, २१)।

खद्ध वि [दे] १ भुक्त, भक्षित (दे २, ६७; सुपा ६१०; उप पृ २५२; सण; भवि)। २ प्रचुर, बहुत, 'खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेय सुगुरुतरिं' (सार्ध ११८; दे २, ६७; पव २; बृह ४)। ३ विशाल, बडा (ओघ ३०७; ठा ३, ४)। ४ अ शीघ्र, जल्दी (आचा २, १, ६)। °दाणिअ वि [°दानिक] समृद्ध, ऋद्धि-सपन्न (ओघ ८६)।

खन्न [दे] देखो खण्ण (पाअ)।

खन्नमाण देखो खण = खन्।

खन्नुअ [दे] देखो खण्णुअ (पाअ)।

खपुसा स्त्री [दे] एक प्रकार का जूता (बृह ३)।

खप्पर पु [कर्पर] १ मनुष्य-जाति-विशेष, 'पत्ते तम्मि दसण्णगेसु पवलं जं खप्पराण बलं' (रंभा)। २ भिक्षा-पात्र, कपाल (सुपा ४६५)। ३ खोपडी, कपाल (हे १, १८१)। ४ घट वगैरह का टुकडा (पउम २०, १६६)।

खप्पर } वि [दे] रूक्ष, रूखा, निष्ठुर खप्पुर } (दे २, ६६; पाअ)।

खम सक [क्षम्] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ (उवर ८३; महा)। कर्म खमिज्जइ (भवि)। कृ खम्मियव्व (सुपा ३०७; उप ७२८ टी; सुर ४, १६७)। प्रयो खमावइ (भवि)। सकृ खमावइत्ता, खमावित्ता (पडि; काल)। कृ. खमावियव्व (कप्प)।

खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य, 'सच्चित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं' (पच ५४; पाअ)। २ समर्थ, शक्तिमान् (दे १, १७; उप ६५०; सुपा ३)।

खमग पु [क्षमक, क्षपक] तपस्वी जैन साधु (उप पृ ३६२; ओघ १४०; भत्त ४४)।

खमण न [क्षपण] तपश्चर्या, बेला, तेला आदि तप (पिंड ३१२)।

खमण न [क्षपण, क्षमण] १ उपवास (बृह १; निचू २०)। २ पु तपस्वी जैन साधु (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो खमग (ओघ ५५४; उप ४८६; भत्त ४०)।

खमा स्त्री [क्षमा] १ पृथिवी, भूमि, 'उव्वूढ-खमाभारो' (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, क्षान्ति (हे २, १८)। °वइ पु [°पति] राजा, नृप, भूपति (धर्म १६)। °समण पु [°श्रमण] साधु, ऋषि, मुनि (पडि)। °हर पु [°धर] १ पर्वत, पहाड। २ साधु मुनि (सुपा ३२६)।

खमावणया } स्त्री [क्षमणा] खमाना, माफी
खमावणा } माँगना (भग १७, ३ टी; राज)।

खमाविअ वि [क्षमित] माफ किया हुआ (स ३ ५५२, सुपा ३६८)।

खमिअ वि [क्षमित] माफ किया हुआ (कुप्र १६)।

खम्म देखो खण = खन्। खम्मइ (प्राकृ ६८)।

खम्मक्खम पुं [दे] १ संग्राम, लड़ाई। २ मन का दुःख। ३ पश्चात्ताप का निश्वास (दे २, ७६)।

खय देखो खच। खयइ (षड्)।

खय अक [क्षि] नाश पाना, नष्ट होना। खयइ (षड्)।

खय देखो खग (पाअ)। ३ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ (से ६, ४२)। °राय पुं [°राज] पक्षियों का राजा, गरुड-पक्षी (पाअ)। °वइ पुं [°पति] गरुड-पक्षी (से १५, ५०)।

खय न [क्षत] १ व्रण, घाव, 'गायंमि न खयं' (वव ७२८ टी)। २ वि क्षणित, घवाया हुआ, 'गुणग्राम नीउअग्रा' (श्रा १४, सुपा ३८९; कुप्र १२, ६१)। °यार स्त्री पुं [°चार] शिथिलाचारी साधु या साध्वी (वव ३)।

खय वि [खात] खोदा हुआ (पउम ६१, ४२)।

खय पुं [क्षय] १ क्षय, प्रलय, विनाश (भग ...)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा (लहुअ ११)। °कारि वि [°कारिन्] नाश-कारक (सुपा ६१५)। °काल, °काल पुं [°काल] प्रलय काल, (भवि; ... ४, ३००)। °ग्गि पुं [°ग्नि] प्रलय-काल की आग (से १२, ८१)। °नाणि पुं [°ज्ञानिन्] जिन-देव, परिपूर्ण ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (विसे ...१०)। °समय पुं [°समय] प्रलय-काल (... ३)।

खयंकर वि [क्षयंकर] नाश-कारक (पउम ७, ... ६६, ३ ...; ... ८२)।

खयागर वि [क्षयाकर] नाश-कारक (... , ...)।

खयर पुं [खचर] १ आकाश में चलने-वाला (... ३०)। २ विद्याधर, विद्या के बल से आकाश में चलनेवाला मनुष्य (सुर ३, ८८; सुपा २४०)। °राय पुं [°राज] विद्याधरों का राजा (सुपा १३४)।

खयर देखो खइर = खदिर (अन्त १२; सुपा ५६३)।

खयरक्क वि [खादिरक] खदिर-सम्बन्धी। स्त्री °क्का (सुख २, ३)।

खयाल पुन [दे] वंश-जाल, बाँस का वन (भवि)।

खर अक [क्षर्] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। खरइ (विसे ४५५)।

खर वि [खर] १ निष्ठुर, रूखा, परुष, कठोर (सुर २, ६; दे २, ७८; पाअ)। २ पुंस्त्री गर्दभ, गधा (पण्ह १, १; पउम ५६, ४४)। ३ पुं छन्द-विशेष (पिंग)। ४ न तिल का तेल (ओघ ४०६)। °कंट न [°कण्ट] बबूल वगैरह की शाखा (ठा ३, ४)। °कंड न [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—अंश-विशेष (जीव ३)। °कम्म न [°कर्मन्] जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा काम, निष्ठुर धन्धा (सुपा ५०५)। °कम्मिअ वि [°कर्मिन्] १ निष्ठुर कर्म करनेवाला। २ पुं कोतवाल, दाण्डपाशिक (ओघ २१८)। °किरण पुं [°किरण] सूर्य, सूरज (पिंग; सण)। °दूसण पुं [°दूषण] इस नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बहनोई था (पउम १०, १७)। °नहर पुं [°नखर] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी (सुपा १३६, ४०४)। °निस्सण पुं [°निस्वन] इस नाम का रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। °मुह पुं [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष। २ अनार्य देश-विशेष का निवासी (पण्ह १, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ वाद्य-विशेष (पउम ५७, २३; सुपा ५०; औप)। २ नपुंसक दासी (वव ६)। °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर (सुपा ६०६)। २ पुं इस नाम का एक जैन साधु (राज)। °सज्झय न [°सज्झक] तिल का तेल (ओघ ४०६)। °साविआ स्त्री [°शाविका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °स्सर पुं [°स्वर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी (विसे ४५७)।

खरंट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भर्त्सना करना। २ लेप करना। खरंटए (सूक्त ४६)।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूत्कारनेवाला, तिरस्कारक। २ उपलिप्त करनेवाला। ३ अशुचि पदार्थ (ठा ४, १; सूक्त ४६)।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष-भाषण (वव १)। २ प्रेरणा (ओघ ४० भा)।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो (ओघ ७५)।

खरंटिअ वि [खरण्टित] निर्भर्त्सित (कुप्र ३१८)।

खरमुया स्त्री [दे] वनस्पति विशेष (संबोध ४४)।

खरड पुं [दे] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता आस्तरण (पव ८४)।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना। संकृ. खरडिवि (सुपा ४१५)।

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य जाति, 'अह केणइ खरडेण किलिउ हट्टम्मि वड्ढण-णियम्म' (सुपा ३६२)।

खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रूखा। २ भग्न, नष्ट (दे २, ७६)।

खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ (ओघ ३७३ टी)।

खरण न [दे] बबूल वगैरह की कण्टक मय डाली (ठा ४, ३)।

खरफरुस पुं [खरपरुष] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २७)।

खरय पुं [खरक] भगवान् महावीर के कान में से खीला (शल्य कील) निकालनेवाला एक वैद्य (चेइय ६६)।

खरय पुं [दे] १ कर्मकर, नौकर (श्राव ४३८)। २ राहु (भग १२, ६)।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना। वकृ. खरहरंत (गउड)।

खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र (दे २, ७७)।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, भुजा की तरह भुज से चलनेवाला जन्तु-विशेष (जीव २)।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे २, ६७ टी)।

खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी (ओघ ४३८)।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष (श्रा २०)।

खरुट्टी स्त्री [खरोष्ट्री] एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी; गांधार लिपि। देखो, खरोट्टिआ (पण्ण १)।

खरड वि [दे] १ कठिन, कठोर। २ स्फुट, विषम और ऊँचा (दे २, ७८)।

खरोट्टिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

खल अक [स्खल्] १ पड़ना, गिरना। २ भूलना। ३ रुकना। खलइ (प्राप्र)। वकृ खलंत, खलमाण (से २, २७; गा ५४६; सुपा ६४१)।

खल सक [खल] अपसरण करना, हटना। खलाहि (उत्त १२, ७)।

खल अ [खलु] पाद पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय (प्राकृ ८१)।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य (सुर १, १९)। २ न. धान साफ करने का स्थान (विपा १, ८; श्रा १८)। °पू वि [°पू] खलिहान या खलियान को साफ करनेवाला (कुमा; षड्; प्रामा)।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली (दे २, ७१)।

खलखल अक [खलखलाय्] 'खल खल' आवाज करना। खलखलेइ (पि ५५८)।

खलगंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ६७)।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो (आचा; से ८, ५५; गा ४६६; वज्जा २६)।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन (दे २, ६४)। २ विराधना, भंजन (ओघ ७८८)। ३ अटकायत, रुकावट, 'होज्जा गुणो, ण खलणा कम्मि जइ अम्ह वयणम्मि' (उप ३३६ टी)।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (भवि)।

खलहर } पुं [खलखल] नदी के प्रवाह की
खलहल } आवाज, 'वहमाणवाहिणीण दिसिदिसिमुव्वतखलहरासद्दो' (सुर ३, ११, २, ७५)।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना, 'ताणवि खलो खलाइ य' (पउम ३७, ६३)।

खलिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ। २ गिरा हुआ, पतित (हे २, ७७; पाअ)। ३ न. अपराध, गुनाह। ४ भूल (से १, ६)।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-मिश्रित (दे ४, १०)।

खलिण पुंन [खलिन] १ लगाम (पाअ)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।

खलिया स्त्री [खलिका] तिल वगैरह का तैल-रहित चूर्ण, खली, खरी (सुपा ४१४)।

खलियार सक [खली + कृ] १ तिरस्कार करना, धुतकारना। २ ठगना। ३ उपद्रव करना। खलियारंति, खलियारेंति (सुपा २३७; स ४६८)।

खलियार पु [खलिकार] तिरस्कार, निर्भर्त्सना (पउम ३६, ११६)।

खलियारण न [खलीकरण] तिरस्कार (पउम ३६, ८४)।

खलियारणा स्त्री [खलीकरणा] वञ्चना, ठगाई (स २८)।

खलियारिअ वि [खलीकृत] १ तिरस्कृत (पउम ६६, २)। २ वञ्चित, ठगा हुआ (स २८)।

खलिर वि [स्खलितृ] स्खलन करनेवाला (वज्जा ५८; सण)।

खली स्त्री [दे खली] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरह का स्नेहरहित चूर्ण, खली (दे २, ६६; सुपा ४१५, ४१६)।

खलीकय देखो खलियारिअ (चउ ४४)।

खलीकर देखो खलियार = खली + कृ। खलीकरेइ (स २७)। कर्म खलीकरीयइ, खलीकिज्जइ (स २८; सण)।

खलीण न [खलीन] देखो खलिण (सुपा ७७; स ५७८)। २ नदी का किनारा, 'खलीणमट्टिय खणमाणे' (विपा १, १—पत्र—१६)।

खलु अ [खलु] विशेष-सूचक अव्यय (दसनि ४, १६)।

खलु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (जी ७)। २ पुन, फिर (आचा)। ३ पादपूर्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (आचा; निचू १०)। °खित्त न [°क्षेत्र] जहां पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र (वव ८)।

खलुंक पु [दे] १ गली बैल, अविनीत बैल, (ठा ४, ३—पत्र २४८)। २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य (उत्त २७)।

खलुंकिज्ज पु [दे] १ गली बैल सबन्धी। २ न उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन (उत्त २७)।

खलुग देखो खलुय (पव ६२)।

खलुय न [खलुक] गुल्फ, पाँव का मणि-बन्ध (विपा १, ६)।

खल्ल न [दे] १ वाड का छिद्र। २ विलास (दे २, ७७)। ३ वि. खाली, रिक्त, 'जाया खल्लकवोला परिसोसियमससोणिया धणियं' (उप ७२८ टी; दे १, ३८)।

खल्ल वि [दे] निम्न-मध्य, जिसका मध्य भाग नीचा हो वह (दे १, ३८)।

खल्लइअ वि [दे] १ सकुचित, सकोच-युक्त। २ प्रहृष्ट, हर्षयुक्त (दे २, ७९; गउड)।

खल्लग } पुन [दे] १ पत्र, पत्ता। २ पत्र-
खल्लय } पुट, पत्तों का बना हुआ पुडवा या दोना (सूअ १, २, २, १९ टी; पिंड २१०; बृह १)।

खल्लग } पु न [दे] १ पाँव का रक्षण
खल्लय } करनेवाला चमडा, एक प्रकार का जूता (धर्म ३)। २ थेला (उप १०३१ टी)।

खल्ला स्त्री [दे] चर्म, चमडा, खाल (दे २, ६६; पाअ)।

खल्लाड देखो खल्लीड (निचू २०)।

खल्लिरा स्त्री [दे] सकेत (दे २, ७०)।

खल्लिहड (अप) देखो खल्लीड (हे ४, ३८९)।

खल्ली स्त्री [दे] सिर का वह चमडा, जिसमें केश पैदा न होता हो (आवम)।

खल्लीड पु [खल्वाट] जिसके सिर पर बाल न हो, गजा, चदला (हे १, ७४; कुमा)।

खल्लूड पु [खल्लूट] कन्द-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

खव सक [क्षपय्] १ नाश करना। २ डालना, प्रक्षेप करना। ३ उल्लघन करना। खवेइ (उव), खवयति (भग १८, ७)। कर्म खविज्जंति (भग)। वकृ खवेमाण (णाया

१, १८०। सह खवइत्ता, खवित्तु, खवेत्ता (सा १५, सम्म १६ आव)।

खवर पु [दे] १ कान हुआ, घाव। हाथ। २ गर्दभ, रासभ (दे २, ८०)।

खवग वि [क्षपक] १ नाश करनेवाला, क्षय करनेवाला। २ पु तपस्वी जैन-मुनि (उव भाव ८)। ३ वि क्षपक श्रेणि में आरूढ़ (कम्म ५)। °सेढि स्त्री [°श्रेणि] क्षपण क्रम कर्मों के नाश की परिपाटी (भग ६ ११ उवर ११४)।

खवडिअ वि [दे] स्खलित, स्खलन-प्राप्त (दे २, ८१)।

खवण } न [क्षपण] १ क्षय, नाश (जीव)।
खवणय } २ डालना, प्रक्षेप (कम्म ८, ७५)। ३ पु जैन-मुनि (विसे २५८५ मुद्रा ७८)।

खवण देखो खमण 'विहिय पक्खखवणो सो' (सुर २३)।

खवणा स्त्री [क्षपणा] अध्ययन, शास्त्र प्रकरण (अणु २१०)।

खवय पु [दे] स्कन्ध कंधा (दे २, ६७)।

खवय देखो खवग (सम २६, आग १३ आचा)।

खवलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (दे २, ७०)।

खवल्ल पु [खवल्ल] मत्स्य-विशेष (विपा १ ८—पत्र ८३ टी)।

खवा स्त्री [क्षपा] रात्रि, रात। °जर न [°चर] प्राग्भ्याय हिम (ठा ८ ८)।

खविअ वि [क्षपित] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ (सुर ४ ७०, प्रासू)। २ उद्वेजित (गा १३०)।

खवअ पु [दे] १ वाम हाथ, बांया हाथ। २ कंधा (दे २, ७७)।

खव्व वि [खर्व] वामन, कुब्ज, नाटा (पाअ)।

खव्व वि [दे] बहु, प्रचुर, ज्यादा, बहुत (दे २, ६७)।

खसहर देखो खहुर (पिंड २८)।

खसुल न [दे] चूर्ण, कुश (दे २, ६८)।

खस अक [दे] खिसकना, गिरना, पड़ना। सकृ खसमाण।

खस पुं. न [खस] १ अनार्य देश-विशेष, हिन्दुस्तान की उत्तर सीमा पर का एक देश (पणह १—पत्र १४)। २ पुंस्त्री खस देश में रहनेवाला मनुष्य (पणह १—पत्र १४ टी)।

खसखस पु [खसखस] पोस्ता का दाना उशीर खस (स ६६)।

खसफस अक [दे] खसना, खिसकना, गिर पड़ना। वकृ खसफसेमाण (सुर २,१५)।

खसफसि वि [दे] व्याकुल, अधीर। °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (हे ४, ४२२)।

खसर देखो कसर=दे कसर (ज २, स ८८०)।

खसिअ देखो खइअ=खचित (हे १ १६३)।

खसिअ न [कसित] रोग-विशेष, खाँसी (हे १, १८१)।

खसिअ वि [दे] खिसका हुआ (सुपा २८१)।

खसु पु [दे] रोग-विशेष, पामा गुजराती में 'खस' (सण)।

खह पुन [खह] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।

खह देखो ख (ठा ३, १)।

खहचर देखो खयर (ओप विपा १, १)।

खहयरी स्त्री [खचरी] १ पक्षिणी, मादा पक्षी। २ विद्याधरी, विद्याधर की स्त्री (ठा ३, १)।

खा } सक [खाद्] खाना, भोजन करना,
खाअ } भक्षण करना। खाइ खाअइ, खाउ (हे ४ २२८)। खंति (सुपा ३७० महा)। भवि खाहिइ (हे ४, २२८)। कर्म खज्जइ (उव)। वकृ खंत, खायंत, खायमाण (उप १४, पउम २२, ७५, विपा १, १) 'खंता पिअंता उड्डे ते मरंति पुणोवि ते खंति पिअंति य' (तर १८)। कवकृ खज्जंत, खज्जमाण (पउम २२, ८३ गा २८८ पउम १७ ८१ ८२ ४०)। हेकृ खाइउ (पि ५७३)।

खाअ वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (उप ३२६, ६२३ सुर २०, हे २, ६०)। °कित्तीअ वि [°कीर्तिक] यशस्वी, कीर्तिमान् (पउम ७, ८०)। °जस वि [°यशस्] वही अर्थ (पउम ५ ८)।

खाअ वि [खादित] भुक्त, भक्षित, 'खाइगिरा—' (गा ६६८, अवि)।

खाअ वि [खात] १ खुदा हुआ। २ न खुदा हुआ जलाशय, 'खाओदगाइ' (कप्प)। ३ ऊपर में विस्तारवाली और नीचे में संकुचित ऐसी परिखा। ४ ऊपर और नीचे समान रूप से खुदी हुई परिखा (औप)। ५ खाई, परिखा पाअ)।

खाइ स्त्री [खाति] खाई, परिखा (सुपा २६४)।

खाइ स्त्री [ख्याति] प्रसिद्धि, कीर्त्ति (सुपा ५२६ ठा ३, ४)।

खाइ [दे] देखो खाइ (औप)।

खाइअ देखो खइअ=क्षायिक (विसे ४६, २१७५ सत्त ६७ टी)।

खाइअ वि [खादित] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित (प्राप, निर १, १)।

खाइआ स्त्री [दे खातिका] खाई, परिखा (दे २, ७३, पाअ, सुपा ५२६, भग ५ ७, पणह २, ५)।

खाइ अ [दे] १—२ वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय (भग ५, ८, ओप)।

खाइग देखो खाइअ=क्षायिक (सुपा ५५१)।

खाइम न [खादिम] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरह खाद्य चीज (सम ३६, ठा ४२, औप)।

खाइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-सम्बन्धी, खैर का, कत्थई (हे १, ६७)।

खाइय न [खाद्यक] खाद्यपदार्थ (मूलशुद्धि गा० १०१, देवदिन्न कथा गा ६ पढी)।

खाओवसम } देखो खओवसमिय (सुपा
खाओवसमिअ } ५५१ ६४८, सम्म २३)।

खाओवसमिग देखो खाओवसमिअ (अणु ६८, सम्मत्त गो ५)।

खाडइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित (दे २ ७३)।

खाडखड पु [खाडखड] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)।

खाडहिला स्त्री [दे] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी, गिल्ली (पणह १, १, उप पृ २०५ सम ३०८ टी)।

खाण पु [दे] एक म्लेच्छ जाति (पुप्फ ४५२)।

खाण न [खादन] भोजन, भक्षण, खाद्य

अ पालेण अ तह गहिअो मउलो अडअणाए' (गा ६६२, पउम १४, १३६)।
खाण न [ख्यान] वचन उक्ति (राज)।
खाणि स्त्री [खानि] खान आकर (दे २, ६६ कुमा, सुपा ३४८)।
खाणिअ वि [खानित] खुदवाया हुआ (हे ३ ५७)।
खाणी देखो खाणि (पात्र)।
खाणु } पु [स्थाणु] स्थाणु, ठूठा वृक्ष, अचल
खाणुय } (पण्ह ७, ५, हे २, ७ कम्म)।
खाद देखो खाइ = ख्याति (नक्षि ६)।
खाम सक [क्षमय्] खमाना, माफी माँगना। खामेइ (भग)। कर्म खामिज्जइ खामीअइ (हे ३, १५३)। सकृ खामेत्ता (भग)।
खाम वि [क्षाम] १ कृश, दुर्बल, 'खामपं टुकवोल' (उप ६८६ टी पाअ)। २ क्षीण, अशक्त (दे ६, ४६)।
खामण न [क्षमण] खमाना (श्रावक ३६५)।
खामणा स्त्री [क्षमणा] क्षमापना, माफी मांगना, क्षमा-याचना (सुपा ५६४, विवे ७६)।
खामिय वि [क्षमित] १ जिसके पास क्षमा मांगी गई हो वह, खमाया हुआ (विसे २३८८, हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ। ३ विलम्बित, विलम्ब किया हुआ, 'तिएिए अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयतेण' (पउम ४३, ३१, हे ३, १५०)।
खाय पु [खाद] पाँचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।
खायर देखो खाइर (कर्म ६)।
खार पु [क्षार] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ३०) २ भुजपरिसर्प की एक जाति (सूत्र २ ३, २५)। ५ वैर, दुश्मनी (सुख १, ३)। °डाह पुन [°दाह] क्षार पकाने की भट्ठी (आचा २, १०, २)। °तन पुन [°तन्त्र] आयुर्वेद का एक भेद, वाजीकरण (ठा ८—पत्र ४२८)।
खार पु [क्षार] १ क्षरण, झरना, सचलन (ठा ८)। २ भस्म, खाक (णाया १, १२)। ३ खार, क्षार, लवण-विशेष (सूत्र १, ७)। ४ लवण, नोन (बृह ४)। ५ जानवर-विशेष (पण्ण १)। ६ सर्जिका, सज्जी (सूत्र १,४,२)। ७ वि कटु या चरपरा स्वादवाला, कटु चीज (पएण १७—पत्र ५३०)। ८ खारो चीज, नमकीन स्वादवाली वस्तु (भग ७, ६, सूत्र १, ७)। °तउसी [°त्रपुषी] कटु त्रपुषी, वनस्पति-विशेष (पएण १७)। °तिल्ल न [°तैल] खारे से संस्कृत तैल (पण्ह २, ५)। °मेह पु [°मेघ] क्षार रसवाले पानी की वर्षा (भग ७, ६)। °वत्तिय वि [°पात्रिक] क्षार-पात्र में जिमाया हुआ। २ क्षार-पात्र का आधार भूत (ओप)। °वत्तिय वि [°वृत्तिक] खार में फेंका हुआ, खार से सींचा हुआ (ओप, दसा ६)। °वावी स्त्री [°वापी] क्षार से भरी हुई वापी, कूँआ (पण्ह १, १)।
खारकिड्डी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु विशेष (दे २, ८३)।
खारदूसण त्रि [खारदूषण] खरदूषण का, खरदूषण-सम्बन्धी (पउम ४५, १५)।
खारय न [दे] मुकुल, कली (दे २, ७३)।
खारायण पु [क्षारायण] १ ऋषि-विशेष। २ माण्डव्यगोत्र के शाखाभूत एक गोत्र (ठा ७)।
खारि स्त्री [खारी] एक प्रकार की नाप, ३४ सेर की तोल (गा ८१२)।
खारिंभरी स्त्री [खारिम्भरी] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर दूध देनेवाली (गा ८१२)।
खारिक न [दे] फल-विशेष, छुहारा (सिरि ११६६)।
खारिय वि [क्षारित] १ खारित, झराया हुआ (वव ६)। २ पानी में घिसा हुआ (भवि)।
खारी देखो खारि (गा ८१२, जो १)।
खारुगणिय पु [क्षारुगणिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (भग १२, २)।
खारोदा स्त्री [क्षारोदा] नदी-विशेष (राज)।
खाल सक [क्षालय्] धोना, पखारना, पानी से साफ करना। कृ खालणिज्ज (उप ३२६)।
खाल स्त्रीन [दे] नाला, मोरी, गदगी निकलने का मार्ग (ठा २, ३) स्त्री खाला (कुमा)।
खालण न [क्षालन] प्रक्षालन, पखारना (सुपा ३२८)।
खालिअ वि [क्षालित] धौत, धोया हुआ (ती १३)।
खावण न [ख्यापन] प्रतिपादन (पंचा १०, ७)।
खावणा स्त्री [ख्यापना] प्रसिद्धि प्रकथन, 'अकताए खावणाविहाए वा' (विसे)।
खाविय त वि [खाद्यमान] जिसको खिलाया जाता हो वह, 'कागणिमसाइं खावियंत' (विपा १, २—पत्र २४)।
खाविय ग वि [खादितक] जिसको खिलाया गया हो वह, 'कागणिमसखावियगा' (ओप)।
खावेत वि [ख्यापयत्] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि करता हुआ (उप ८३३ टी)।
खास अक [कास्] खाँसना, खाँसी खाना। खासई (तदु १६)।
खास पुं [कास] रोग विशेष, खाँसी की बीमारी, खाँसी (विपा १, १, सुपा ४०४, सण)।
खासि वि [कासिन्] खाँसी का रोगवाला (सुपा ५७६)।
खासिअ न [कासित] खाँसी, खाँसना (हे १, १८१)।
खासिअ पु [खासिक] १ म्लेच्छ देश विशेष। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १—पत्र १४, इक, सूत्र १, ५, १)।
खि अक [क्षि] क्षीण होना। कर्म 'खिज्जइ भवसतती' (स ६८४)। खीयति, खीयते (कम्म ६, ६६, टी)।
खिइ स्त्री [क्षिति] पृथिवी, धरा (पउम २०, १५६, स ४१६)। °गोयर पु [°गोचर] मनुष्य, मानुष, आदमी (पउम ५३, ४३)। °पइट्ठ न [°प्रतिष्ठ] नगर-विशेष (स ६)। °पइट्ठिय न [°प्रतिष्ठित] १ इस नाम का एक नगर (उप ३२० टी, स ७)। २ राजगृह नाम का नगर, जो आजकल विहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (ती १०)। °सार पु [°सार] इस नाम का एक दुर्ग (पउम ८०, ३)।
खिख अक [सिङ्ख्य्] खिखि आवाज करना। खिखेइ। वकृ खिखियत (सुख २, ३३)।
खिखिणिया स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका (उवा)।

खिंखिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (ठा १०, णाया १, १, अजि २८)।

खिंखिरी स्त्री [दे] शृगाली, स्त्री सियार (दे २, ७४)।

खिंग पुं [खिङ्ग] रतीबाज, व्यभिचारी '[illegible]' (रंभा)।

खिंस सक [खिंस्] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छकारना। खिंसए (आचा)। कर्म खिंसिज्जइ (बृह १)। कवकृ खिंसिज्जंत (वव ४८८)। कृ खिंसणिज्ज (णाया १ ३)।

खिंसण न [खिंसन] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा (पंचा)।

खिंसणा स्त्री [खिंसना] निन्दा, गर्हा (ओघ भा १३८ टी)।

खिंसा स्त्री [खिंसा] ऊपर देखो (ओघ ६०, [illegible])।

खिंसिअ वि [खिंसित] निन्दित गर्हित (ठा ६)।

खिक्खिरड पुं [दे] [illegible], गिरगिट, सरट (दे २ ७४)।

खिक्खिज्जंत वि [खिक्खीयमान] 'खि-खि' आवाज करता (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

खिक्खिरी स्त्री [दे] डोम वगैरह का स्पर्श टालने की लकड़ी (दे २, ७३)।

खिच्च पुं [दे] [illegible] (दे १, १३८)।

खिज्ज अक [खिद्] १ खेद करना, अफसोस करना। २ उद्विग्न होना, थक जाना। खिज्जइ, खिज्जए ([illegible] ३०, गउड [illegible] ८७३)। कृ खिज्जियव्व (महा; गा ५१३)।

खिज्जणिआ स्त्री [खेदनिका] खेद-क्रिया [illegible] (णाया १, १६—पत्र २०७)।

[illegible] न [दे] [illegible] (दे [illegible])।

[illegible] वि [खिन्न] १ [illegible]। २ न [illegible] (णाया १, ८—पत्र १६४)।

[illegible] न [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] ([illegible])।

खिड्ड न [खेल] खेल, क्रीडा, मजाक, 'खिड्डेण मए भणिश्रं एयं' (सुपा ३०२), 'बालत्तणए खिड्डपरो गमेइ' (सत्त ६८)। °कर वि [°कर] खेल करनेवाला, मजाक करनेवाला (सुपा ७८)।

खिण्ण वि [खिन्न] १ खिन्न, खेद प्राप्त। २ श्रान्त थका हुआ (दे १, १२४, गा २२६)।

खिण्ण देखो खाण (प्राप)।

खित्त वि [क्षिप्त] १ फेंका हुआ (सुर ३, १०२, सुपा २५७)। २ प्रेरित (दे १, ६३)। °डत्त, °चित्त वि [°चित्त] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल (ठा ५, २, ओघ ४६७, ठा ५, १)। °मण वि [मनस्] चित्त भ्रमवाला (महा)।

खित्त देखो खेत्त (श्रणु, प्रासू, पडि)। °देवया स्त्री [°देवता] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव (श्रा ४७)। °वाल पु [पाल] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव (सुपा १५२)।

खित्तज पु [क्षेत्रज] गोद लिया हुआ लडका, 'खित्तज सुएणावि कुल नट्ठउ (कुप्र २०८)।

खित्तय न [क्षिप्तक] छन्द विशेष (अजि २४, २५)।

खित्तय न [दे] १ अनर्थ, नुकसान। २ वि. दीप्त, प्रज्वलित (दे २, ७६)।

खित्तअ वि [क्षैत्रिक] १ क्षेत्र-सम्बन्धी। २ पु व्याधि-विशेष, 'तानुपुड गरनाए जह बहुवाहीए खित्तिश्रो वाही' (श्रा १२)।

खिन्न देखो खिण्ण = खिन्न (पाश्र, महा)।

खिप्प अक [क्लृप्] १ समर्थ होना। २ दुर्बल होना। खिप्पइ (षड्भि ३५)।

खिप्प वि [क्षिप्र] शीघ्र, त्वरा युक्त। °गइ वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पु अमितगति इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ८, १)।

खिप्पं अ [क्षिप्रम्] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी (प्रासू ३०, पडि)।

खिप्पंत देखो खिव।

खिप्पामेव अ [क्षिप्रमेव] शीघ्र ही, तुरन्त ही (जं ३, महा)।

खिमा स्त्री [क्ष्मा] पृथिवी (षड्)।

खिर अक [क्षर] १ गिरना, गिर पड़ना। २ टपकना, चूना। खिरइ (हे ४, १७३)। [illegible] (पउम १० [illegible])।

खिरिय वि [क्षरित] १ टपका हुआ। २ गिरा हुआ (पाश्र)।

खिल न [खिल] अकृष्ट-भूमि, ऊसर जमीन (पण्ह १, २—पत्र २६)।

खिलीकरण न [खिलीकरण] खाली करना, शून्य करना, 'भुवजणघोरखिलीकरणकवाडश्रो वेमवाडश्रो' (मै ८)।

खिल्ल सक [कीलय्] रोकना, रुकावट डालना, 'भणइ इमाए बन्धव। गमणे खिल्लेमि कड्डिउ रेहं' (सुपा १३७)।

खिल्ल अक [खेल्] क्रीडा करना, खेल करना, तमाशा करना। वकृ खिल्लंत (सुपा ३६६)।

खिल्ल पुं [दे] फोडा, फुनसी, गुजराती मे 'खील' (तदु ३८)।

खिल्लण न [खेलन] खिलौना, खेलनक (सुर १५, २०८)।

खिल्लहड } पु [दे खिल्लहड] कन्द विशेष
खिल्लहल } (श्रा २०, धर्म २)।

खिल्लुहडा स्त्री [दे] कन्द विशेष (सबोध ४४)।

खिव सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ (महा)। वकृ खिवेमाण (णाया १, २)। कवकृ खिप्पंत (काल)। सकृ. खिविउ (कम्म ४, ७४)। कृ खिवियव्व (सुपा १५०)।

खिवण न [क्षेपण] १ फेंकना, क्षेपण (से १२, ३६)। २ प्रेरण, इधर-उधर चलाना (से ५, ३)।

खिविय वि [क्षिप्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (सुपा २)।

खिव्व देखो खिव। संकृ 'श्रह खिव्विऊण मज्झ, पोए ते पत्थिया रयणभूमिं' (धम्म १० टी)।

खिस अक [दे] सरकना, खिसकना। गह 'सह नियगामे गच्छन्तस्स खिसिऊण वाहणा-हिन्तो पडिय (सुपा ५२७, ५२८)।

खीण देखो खिण्ण = खिन्न, 'तहेव सुरय-खीणो' (पउम ३२, ३)।

खीण वि [क्षीण] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विच्छिन्न (सम्म ६० [illegible] २, ३)। २ दुर्बल, कृश (अग २ ५)। °दुह वि [°दुःख] दुःख-रहित ([illegible] ४५)। °मोह वि [°मोह] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो [illegible] (ठा ३

४) । २ न बारहवाँ गुण-स्थानक (सम २६) । °राग वि [°राग] १ वीतराग, राग-रहित । २ पुं जिनदेव, तीर्थंकर देव (गच्छ १) ।

खीयमाण वि [क्षीयमाण] जिसका क्षय होता जाता हो वह (गा ६८६ टी) ।

खीर न [क्षीर] बेला, दो दिन का उपवास (संबोध ५८) । °डिंडिर पु [°डिण्डीर] देव-विशेष (कुप्र ७६) । °डिंडिरा स्त्री [°डिण्डीरा] देवी-विशेष (कुप्र ७६) । °वर पु [°वर] १ समुद्र-विशेष । २ द्वीप विशेष (सुज्ज १६) ।

खीर न [क्षीर] १ दुग्ध, दूध (हे २, १७, प्रासू १३ १६८) । २ पानी, जल (हे २, १७) । ३ पु क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव (जीव ३) । ४ समुद्र विशेष, क्षीर-समुद्र (पउम ६६, १८) । °कयंब पुं [°कदम्ब] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय (पउम २१, ६) । °काओली स्त्री [°काकोली] वनस्पति-विशेष, खीरविदारी, (पण्ण १) । °जल पु [°जल] क्षीर समुद्र, समुद्र-विशेष (दीव) । °जलनिहि पुं [°जलनिधि] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा २६५) । °दुम, °द्दुम पु [°द्रुम] दूधवाला पेड, जिसमे दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति (ओघ ३४६, निचू १) । °धाई स्त्री [°धात्री] दूध पिलानेवाली दाई (णाया १, १) । °पूर पु [°पूर] उबलता हुआ दूध (पण्ण १७) । °प्पभ पु [°प्रभ] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °मेह पु [°मेघ] दूध-समान स्वादवाले पानी की वर्षा (तित्थ) । °वई स्त्री [°वती] प्रभूत दूध देनेवाली (बृह ३) । °वर पु [°वर] द्वीप-विशेष (जीव ३) । °वारि न [°वारि] क्षीर समुद्र का जल (पउम ६६, १८) । °हर पु [°गृह, °वर] क्षीर-सागर (वज्जा २४) । °सव पु [°श्रव] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो । २ ऐसी लब्धिवाला जीव (पण्ह २, १, औप) ।

खीरइय वि [क्षीरकित] सजात क्षीर, जिसमे दूध उत्पन्न हुआ हो वह, 'तए ण माली पत्तिया वत्तिआ गब्भिया पसूया आगयगन्धा खीरा (? र) इया बद्धफला' (णाया १, ७) ।

खीरि वि [क्षीरिन्] १ दूधवाला । २ पुं जिसमे दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति (उप १०३१ टी) ।

खीरिज्जमाण वि [क्षीर्यमाण] जिसका दोहन किया जाता हो वह (आचा २, १, ४) ।

खीरिणी स्त्री [क्षीरिणी] १ दूधवाली (आचा २, १, ४) । २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १ — पत्र ३१) ।

खीरी स्त्री [क्षैरेयी] खीर, पक्वान्न-विशेष (सुपा ६३६, पाअ) ।

खीरोअ पुं [क्षीरोद] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर (हे २, १८२, गा ११७, गउड, उप ५३० टी, स ३४४) ।

खीरोआ स्त्री [क्षीरोदा] इस नाम की एक नदी (इक ठा २, ३) ।

खीरोद देखो खीरोअ (ठा ७) ।

खीरोदक, खीरोदय पु [क्षीरोदक] क्षीर-सागर (णाया १, ८, औप) ।

खीरोदा देखो खीरोआ (ठा ३, ४—पत्र १६१) ।

खील, खीलग, खीलय पु [कील, °क] खीला, खूँट, खूँटी (स १०६, सूअ १, ११, हे १, १८१, कुमा) । °मग्ग पु [°मार्ग] मार्ग-विशेष, जहाँ धूली ज्यादा रहने से खूँटे के निशान बनाये गये हो (सूअ १, ११) ।

खीलावण न [क्रीडन] खेल कराना, क्रीडा कराना । °धाई स्त्री [°धात्री] खेल कूद करानेवाली दाई (णाया १, १—पत्र ३७) ।

खीलिया देखो कीलिआ (जीवस ४८) ।

खीलिया स्त्री [कीलिका] छोटी खूँटी (आवम) ।

खीव पु [क्षीव] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त, मस्त (दे, ८, ६३) ।

खु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय, अवधारण । २ वितर्क, विचार । ३ सशय, सदेह । ४ सभावना । ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १९८, षड्, गा ६, १४२, ४०१, स्वप्न ६, कुमा) ।

खु° देखो खुहा (पण्ह २ ४, सुपा १६८, णाया १, १३) ।

खुइ स्त्री [क्षुति] १ छींक । २ छींक का निशान (णाया १, १६, भग ३, १) ।

खुइअ वि [दे] १ विच्छिन्न । २ विख्यात, शान्त, 'खुइया चिया' (कुप्र १४०) ।

खुखुणय पु [दे] नाक का छिद्र (दे २, ७६, पाअ) ।

खुखुणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २ ७६) ।

खुगाह पु [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६) ।

खुंट पुं [दे] खूँट खूँटी । °मोडय वि [°मोटक] १ खूँटे को मोडनेवाला, उससे छूटकर भाग जानेवाला । २ पु. इस नाम का एक हाथी (नाट—मृच्छ ८४) ।

खुडअ वि [दे] स्खलित, स्खलना-प्राप्त (दे २, ७१) ।

खुद (शौ) सक [क्षुद्] १ जाना । २ पीसना, कूटना । खुददि (प्राकृ ६३) ।

खुद अक [क्षुध्] भूख लगना । खुदइ (प्राकृ ६६) ।

खुपा स्त्री [दे] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण (दे २, ७५) ।

खुभण वि [क्षोभण] क्षोभ उपजानेवाला (पण्ह १, १—पत्र २३) ।

खुज्ज अक [परि + अस्] १ फेंकना । २ निराम करना । खुज्जइ (प्राकृ ७२) ।

खुज्ज, खुज्जय वि [कुब्ज] १ कूबडा । २ वामन (हे १, १८१, गा ५३४) । ३ वक्र, टेढा (ओघ) । ४ एक पार्श्व से हीन (पव ११०) । ५ न सस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार (ठा ६, सम १४६, औप) । स्त्री. खुज्जा (णाया १, १) ।

खुज्जिय वि [कुब्जिन्] कूबडा (आचा) ।

खुट्ट सक [तुड्] १ तोडना, खण्डित करना, टुकडा करना । २ अक खूटना, क्षीण होना । ३ टूटना, त्रुटित होना । खुट्टइ (नाट—साहित्य २२६, हे ४, ११६), खुट्टति (उव) ।

खुट्ट वि [दे] त्रुटित, खण्डित, छिन्न (हे २, ७४, भवि) ।

खुड देखो खुट्ट = तुड् । खुडइ (हे ४, ११६) । खुडंति (से ८, ४८) । वकृ 'पवगभिन्नमरथया

खुट्टंतदिणसेसियं (पउम ५३, ११२ स ४४८)। संकृ खुट्टिऊण (स ११३)।

खुट्टय देखो खुट्टुय = (दे)। खुट्टए (धर्मवि ८१)।

खुट्टिअ [दे] देखो खुट्टुक्किअ (गा २२६)।

खुट्टिअ वि [खण्डित] त्रुटित खण्डित, विच्छिन्न (हे १, ५३; षड्)।

खुट्टुअ सक [अप + क्रमय्] हटाना, दूर करना। खुट्टुइ (प्राकृ ७०)।

खुट्टुअ अक [दे] १ नीचे उतरना। २ स्खलित होना। ३ शल्य की तरह चुभना। ४ गुस्सा से मौन रहना। खुट्टुइ (हे ४, ३९५)। वकृ खुट्टुअंत (कुमा)।

खुट्टुक्किअ वि [दे] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, गड़ा हुआ (गा ३५५)। २ रोष-युक्त गुस्सा से मौन धारण करनेवाला। स्त्री °आ (गा २२६ अ)।

खुड्ड } वि [दे क्षुद्र क्षुद्रक] १ लघु, छोटा (दे २, ७४; स्वप्न; दस ३; आचा २, २, ३; उत १)। २ नीच, अधम दुष्ट (पुप्फ ४४१)। ३ पु छोटा साधु, लघु शिष्य (सूत्र १, ३, २)। ४ पुन अङ्गुलीय-विशेष, एक प्रकार की अंगूठी (औप, उप २०४)।
खुड्डग }

खुड्डमड्डा स्त्री [दे] १ बहु अन्तर। २ फिर-फिर (तिर २०)।

खुड्डय देखो खुड्डग (हे २, १७४; षड्; कप्प; [illegible] ८, ३४; णाया १, १)।

खुड्डाग } देखो खुड्डग (आचा; पण्ण ३६; णाया १, ७; कप्प)। °णियंठ न [°निर्ग्रन्थ] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन (उत ६)।
खुड्डाय }

खुड्डिअ न [दे] सुरत, मैथुन, संभोग (दे २, ७५)।

खुड्डिआ स्त्री [दे क्षुद्रिका] १ छोटी, लघ्वी (ठा २, ३; आचा २ २, ३)। २ तालाब, खोदा हुआ छोटा तलाव (ठा १; पण्ह २ ४)।

खुड्डुक्कडिआ स्त्री [दे] मल, नाक का मैल [illegible] (दे २, ७१)।

खुण्ण वि [क्षुण्ण] १ चूर्णित (स ४४४, [illegible])। २ चूर्णित (दे २, ७४)। ३ [illegible]
नीत, 'अजरामरपहखुण्णा णाह सरणं मुकय-पुण्णा' (चउ ३८, सया)।

खुण्ण वि [दे] परिवेष्टित (दे २, ७५)।

खुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (दे २, ७८; णाया १, १; गा २७६, ३२४; सया, गउड)।

°खुत्तो अ [°कृत्वस्] वार, दफा (उव; सुर १४, ६१)।

खुद्द वि [क्षुद्र] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम (पण्ह १, १; ठा ६)।

खुद्द न [क्षौद्र्य] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता (उप ६१५)।

खुद्दिमा स्त्री [क्षुद्रिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

खुद्ध वि [क्षुब्ध] क्षोभ प्राप्त, घबड़ाया हुआ (सुपा ३२५)।

खुधा स्त्री [क्षुध्] भूख (धर्मसं १०६२)।

खुधिय वि [क्षुधित] क्षुधातुर, भूखा (सूत्र १, ३, १)।

खुन्न देखो खुण्ण = क्षुण्ण (पि ५६८)।

खुन्न देखो खुण्ण = (दे) (पात्र)।

खुप्प सक [प्लुप्] जलाना। खुप्पइ (प्राकृ ६५)।

खुप्प अक [मस्ज्] डूबना, निमग्न होना। खुप्पइ (हे ४, १०१)। वकृ खुप्पंत (गउड, कुमा, ओघ २३, से १३, ६७)। हेकृ खुप्पिउ (तदु)।

खुप्पिवासा स्त्री [क्षुत्पिपासा] भूख और प्यास (पि ३१८)।

खुब्भ अक [क्षुभ्] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना। २ नीचे डूबना। वकृ खुब्भंत (ठा ७—पत्र ३८३)।

खुब्भण न [क्षोभण] क्षोभ, घबराहट (राज)।

खुभ अक [क्षुभ्] डरना, घबड़ाना। खुभइ (स्वप्न १८)। कृ खुभियव्व (पण्ह २,३)।

खुभिय वि [क्षुभित] १ क्षोभ-युक्त, घबड़ाया हुआ (पण्ह २, ३)। २ न क्षोभ, घबराहट (आव)। ३ मन्थन, भ्रमण (कुम्मा ३)।

खुम्म अक [क्षुभ्] भूख लगना। खुम्मइ (प्राकृ ६)।

खुम्मिय वि [दे] गठित, रचाया हुआ (णाया १, १—पत्र ५३)।

खुय न [क्षुत] छींक (चेइय ४३३)।

खुर पु [खुर] जानवर के पाँव का नख (सुर १, २४८; गउड, प्रासू १७१)।

खुर पु [क्षुर] छूरा, उस्तरा (णाया १, ८; कुमा प्रयो १०७)। °पत्त न [°पत्र] अस्तुरा या उस्तरा, छूरा (विपा १, ६)।

खुरप्प पुन [क्षुरप्र] एक तरह का जहाज (सिरि ३८३)।

खुरप्प पुं [क्षुरप्र] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा (सम १३८)। २ शर विशेष, एक प्रकार का बाण (वेणी ११७)।

खुरसाण पु [खुरशान] १ देश-विशेष (पिंग)। २ खुरशान देश का राजा (पिंग)।

खुरहखुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप (षड्)।

खुरासाण देखो खुरसाण (पिंग)।

खुरि वि [खुरिन्] खुरवाला जानवर (श्राव ३)।

खुरु पु [खुरु] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष (सुर १३, १९३)।

खुरुडुक्खुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप (दे २, ७६)।

खुरुप्प देखो खुरप्प (पउम ५६, १६, स १८४)।

खुल्ल क [दे] वह गाँव जहाँ साधुओं को भिक्षा कम मिलती हो या भिक्षा में घृत आदि न मिलता हो (वव १)।

खुल्ल देखो खुम्म। खुल्लइ (प्राकृ ६६)।

खुल्लिअ देखो खुडिअ (पिंग)।

खुलुह पु [दे] गुल्फ, पैर की गाँठ, फीली (दे २, ७५; पाअ)।

खुल्ल न [दे] कुटी, कुटीर (दे २, ७४)।

खुल्ल } वि [क्षुद्र, °क] १ छोटा, लघु
खुल्लग } क्षुद्र (पण्ण १)। २ पुं. द्वीन्द्रिय जीव विशेष (जीव १)।

खुल्लग देखो खुड्डग (सुज्ज २७९)।

खुल्लण (अप) देखो खुड्ड (पिंग)।

खुल्लय वि [क्षुल्लक] १ लघु क्षुद्र, छोटा (भवि)। २ कपर्द-विशेष, एक प्रकार की कौड़ी (णाया १, १८—पत्र २३५)।

खुल्लासय पु [दे] खलासी, जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ३८५)।

खुल्लिरी स्त्री [दे] संध्या (दे २, ७०)।

खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा वृक्ष (णाया १ १—पत्र ६५)।
खुवय पुं [दे] तृण-विशेष, कण्टकि-तृण, कँटीला घास (दे २, ७५)।
खुव्व देखो खुभ। खुव्वइ (पड्)।
खुरअ न [दे] पत्ते का पुड़वा दोना (वव २)।
खुह देखो खुभ। कृ खुहियव्व (सुपा ६१६)।
खुहा स्त्री [क्षुध्] भूख, बुभुक्षा (महा प्रासू १७३)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना (उत्त २, पचा १)।
खुहिअ वि [क्षुभित] १ क्षोभ-प्राप्त (से ९, ४६, सुपा २४१)। २ क्षोभ, सम्भ्रम (ओघ ७)।
खूण न [क्षूण] नुकसान, हानि (सुर ४, ११३, महा)। २ अपराध, गुनाह (महा)। ३ न्यूनता, कमी (सुपा ७, ४३०)।
खेअ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना। खेएइ (विसे १४७२, महा)।
खेअ पुं [खेद] १ खेद, उद्वेग, शोक (उत्त ७२८ टी)। २ तकलीफ, परिश्रम (स ३१५)। ३ संयम विरति (उत्त १५)। ४ थकावट, श्रान्ति (आचा)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार (उप ६०८, ओघ ६४७)।
खेअ देखो खेत्त (सूअ १, ६ आचा)।
खेअ पु [क्षेप] त्याग, मोचन (से १२, ४८)।
खेअण न [खेदन] १ खेद, उद्वेग। २ वि खेद उपजानेवाला (कुमा)।
खेअर देखो खयर (कुमा, सुर ३,६)। °ाहिव पु [°ाधिप] विद्याधरों का राजा (पउम २८, ५७)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] विद्याधरों का राजा (पउम २८, ८८)।
खेअरिंद पुं [खेचरेन्द्र] खेचरों का राजा (पउम ६, ५२)।
खेअरी देखो खहयरी (कुमा)।
खेआलु वि [दे] १ निःसह, मन्द, आलसी। २ असहिष्णु ईर्ष्यालु (दे २, ७७)।
खेइय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ (स ६३४)।
खेचर देखो खेअर (ठा ३, १)।
खेज्जणा स्त्री [खिदना] खेद-सूचक वाणी, खेद (णाया १ १८)।
खेड सक [कृष्] खेती करना, चास करना। खेडइ (सुपा २७६), 'अह अन्नया य दुन्निवि हलाइ खेडंति अप्पणच्चेव' (सुपा २३७)।
खेड सक [खेटय्] हाँकना। खेडए (चेइय ३३७, कुप्र ७१)।
खेड न [खेट] १ धूली का प्राकारवाला नगर (औप, पण्ह १, २)। २ नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर (सूअ २, २)। ३ पु मृगया, शिकार (भवि)।
खेडग न [खेटक] फलक, ढाल (पण्ह १, ३)।
खेडण न [कर्षण] खेती करना (सुपा २३७)।
खेडण न [खेटन] खदेड़ना, पीछे हटाना (उप २२६)।
खेडणअ न [खेलनक] खिलौना (नाट—रत्ना ६२)।
खेडय पुं [क्ष्वेटक] १ विष, जहर (हे २, ६)। २ ज्वर-विशेष (कुमा)।
खेडय वि [स्फेटक] नाशक, नाश करनेवाला (हे २ ६, कुमा)।
खेडय न [खेटक] छोटा गाँव (पाअ, सुर २, १६२)।
खेडायग वि [खेलक] खेल करनेवाला, तमासगिर (उप पृ १८८)।
खेडिअ वि [कृष्ट] हल से विदारित (दे १, १३६)।
खेडिअ पु [स्फेटिक] १ नाशवाला, नश्वर। २ अनादरवाला (हे २, ६)।
खेड्ड अक [रम्] क्रीडा करना, खेल करना। खेड्डइ (हे ४, १६८)। खेड्डंति (कुमा)।
खेड्ड, खेड्डय } न [खेल] १ क्रीडा, खेल, तमाशा, मजाक (हे २, १७४, महा, सुपा २७ न ५०६)। २ बहाना, छल, 'मय-खेड्डय विहेऊण' (सुपा ५२३)।
खेड्डा स्त्री [क्रीडा] क्रीडा, खेल, तमाशा (ओघ, पउम ८, ३७, गच्छ २)।
खेड्डिया स्त्री [दे] वारी दफा, 'भद्द! पच्छिमा खेड्डिया' (स ८८५)।
खेत्त पुन [क्षेत्र] १ आकाश (विसे २०८८)। २ कृषि भूमि, खेत (बृह १)। ३ जमीन, भूमि। ४ देश, गाँव, नगर वगैरह स्थान (कप्प, पंच विसे)। ५ भार्या, स्त्री (ठा १०)। °कप्प पु [°कल्प] १ देश का रिवाज (बृह ६)। २ क्षेत्र-सबन्धी अनुष्ठान। ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो (पच्च)। °पलिओवम न [°पल्योपम] काल का नाप-विशेष (अणु)। °ारिय पु [°ार्य] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य (पण्ण १)। देखो खित्त = क्षेत्र।
खेत्तय पु [क्षेत्रक] राहु (सुज्ज २०)।
खेत्ति वि [क्षेत्रिन्] क्षेत्रवाला, क्षेत्र का स्वामी (विसे १८९२)।
खेम न [क्षेम] १ कुशल, कल्याण, हित (पउम ६५, १७, गा ४६६, भत्त ३६, रयण ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिपालन (णाया १, ५)। ३ वि कुशलता-युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित (णाया १, १, दस ७)। ४ पु. पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य (आचू १)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।
खेमंकर पु [क्षेमङ्कर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३, ५२)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर पुरुष (सम १५३)। ३ ग्रह-विशेष ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २१, ८०)। ५ वि कल्याण-कारक, हित-जनक (ठा २११ टी)।
खेमंधर पु [क्षेमन्धर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३,५२) ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १५३)। ३ वि. क्षेम-धारक उपद्रव-रहित (राज)।
खेमग पु [क्षेमक] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्त-कृद् जैनमुनि (अंत)।
खेमराय पु [क्षेमराज] राजा कुमारपाल का एक पूर्व पुरुष (कुप्र ५)।
खेमलिज्जिया स्त्री [क्षेमलिया] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।
खेमा स्त्री [क्षमा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष (पउम २०, १०)।

खेर पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

खेरि स्त्री [दे] १ परिशाटन, नाश "घणखेरिं गयं (सुर २)। २ खेद, उद्वेग। ३ उत्कंठा, उत्सुकता (भवि)।

खेल अक [खेल्] खेलना, क्रीडा करना, तमाशा करना। खेलइ (कुमा), खेलए (गा १०६)। वकृ. खेलंत (वि २०६)।

खेल पुं [दे] [illegible] (सिरि ८८४)।

खेल वि [खेल] [illegible], नाटक का पात्र (कप्पु ६)। स्त्री °लिया (कप्पु ६)।

खेल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ, निष्ठीवन, थूक (सम १०, औप, कप्प पडि)।

खेलण) न [खेलन, °क] १ क्रीडा,
खेलणय) खेल। २ खिलौना (श्राव, स १२७)।

खेलोसहि स्त्री [श्लेष्मौषधि] १ लब्धि-विशेष जिससे श्लेष्म औषधि का काम देने लगे (पव २, १ सति ३)। २ वि, ऐसी शक्तिवाला (श्रावम पत्र २७०)।

खेव सक देखो खेव = क्षिप्। खेवइ (वि २०६)। कृ. खेवणीय (स ८८)। प्रयो. खेवावेऊण (वि २०६)।

खेव देखो खेड = [illegible] (राज)।

खेवग देखो खेवग (स २६५)।

खेवणग) न [क्षेपणक] १ फेंकना,
खेवणय) [illegible]। २ न [illegible] (उप १८२ टी)। °धाई स्त्री [°धात्री] [illegible] (राज)।

खेविय न [दे] रुदित, हँसी, ठट्ठा (दे २, ७६)।

खेसुड देखो खसुड (राज)।

खेह पुं [खेद] १ [illegible] (उप ७२८ टी)। २ [illegible] (सिरि ६९२)। ३ [illegible] (पउम ८ ८१ ८४)।

खेह पुं [खेद] [illegible] (स ७३४)।

खेह पुं [खेट] [illegible] '[illegible]' (पउम ६७, २२)।

खेहण न [खेलन] [illegible] (सुपा १ २)।

खेहिय वि [खेदित] [illegible] (स २१२)।

खेविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ (भवि)।

खेह पुन [दे] धूली, रज, 'वग्गिरतुरगखर-खुरक्खयखेहुल्लरिक्खपह' (सुर ११, १७१)।

खोअ पुं [क्षोद] १ इक्षु, ऊख। २ द्वीप-विशेष, क्षुद्रवर द्वीप। ३ समुद्र-विशेष, क्षुद्रवर समुद्र (अणु ९०)।

खोइय वि [दे] विच्छेदित, 'सव्वे सयो खोइया' (सुर २ १५)।

खोडदय पुं [क्षोदोदक] समुद्र-विशेष (सूअ १, ६, २०)।

खोओद देखो खोदोद (सुज १९)।

खोटग) पुं [दे] खूँटी, खूँटा (उप २७८
खोटय) स २६३)।

खोक्कअ अक [खोक्क्] वानर का बोलना, बन्दर का आवाज करना। खोक्कइ (गा १८१ अ)।

खोक्खा) स्त्री [खोक्खा] वानर की आवाज
खोखा) (गा ५३२)।

खोखुब्भ अक [चोक्षुभ्य्] अत्यन्त भयभीत होना, विशेष व्याकुल होना। वकृ. खोखु-ब्भमाण (औप पण्ह १,३)।

खोज्ज पुन [दे] मार्ग-चिह्न (सति ८७)।

खोट्ट सक [दे] खटखटाना, ठकठकाना, ठोकना। कवकृ. खोट्टिज्जंत (ओघ ५९७ टी)। संकृ. खोट्टेउ (ओघ ५९७ टी)।

खोट्टिय [दे] बनावटी लाठी (निसीचूर्णि पत्र १८६)।

खोट्टी स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे २, ७७)।

खोट पुं [स्फोट] फोटा (प्राप १८)।

खोड पुं [दे] १ सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा। २ वि धार्मिक, धर्मिष्ठ (दे २, ८०)। ३ खल, मत्सर (दे २, ८०, पिंग)। ४ भाण्डागार, निधार (मृच्छ १८३)। ५ प्रदेश, जगह, 'जिणचेऊरि स्खोडे' (ओघ ७६ भा)। ६ प्रस्फोटन प्रमार्जन (श्राव २६५)। ७ न. राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरह द्रव्य (वव १)।

खोडपक्खोडि पुं [दे] मधुर काष्ठ की धनि (दे २, ७०)।

खोडय पुं [स्फोटक] स्फोटक से पानी लिखी रेखा (दे २, ६)।

खोडय पुं [स्फोटक] फोड़ा, फुंसी (हे २, ६)।

खोडिय पुं [खोटिक] गिरनार पर्वत का क्षेत्रपाल देवता (ती २)।

खोडी स्त्री [दे] १ बड़ा काष्ठ (पण्ह १, ३—पत्र ५८)। २ काष्ठ की एक प्रकार की पेटी (महा)। ३ लकड़ी लाठी (३ श्रावक हारि पत्र ४२१)।

खोणि स्त्री [क्षोणि] पृथिवी, धरणी (गउ)। °वइ पुं [°पति] राजा, भूपति (उप ७६८ टी)।

खोणिद पुं [क्षोणीन्द्र] राजा, भूमिपति (गउ)।

खोणी देखो खोणि (सुर १२, ६१, सुपा २३८, रंभा)।

खोद पुं [क्षोद] १ चूर्णन, विदारण (भग १७, ८)। २ इक्षु-रस, ऊख का रस (सूअ १,६)। °रस पुं [°रस] समुद्र-विशेष (दीव)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (जीव ३)।

खोद पुं [क्षोद] चूर्ण, बुकनी (हम्मीर ३४)।

खोदोअ) पुं [क्षोदोद] १ समुद्र-विशेष,
खोदोद) जिसका पानी इक्षु-रस के तुल्य मधुर है (जीव ३, इक)। २ मधुर पानीवाली वापी (जीव ३)। ३ न मधुर पानी, इक्षु-रस के समान मिठा जल (पण्ण १)।

खोद्द न [क्षौद्र] मधु, शहद (भग ७, ६)।

खोभ सक [क्षोभय्] १ विचलित करना, धैर्य से च्युत करना। २ आश्चर्य उपजाना। ३ रज पैदा करना। खोभेइ (महा)। वकृ. खोभंत (पउम ३, ६६, सुपा ८९३)। हेकृ. खोभित्तए, खोभइउ (उवा। पि ३१९)।

खोभ पुं [क्षोभ] १ विचलता, संभ्रम (भाव ५)। २ इस नाम का एक रावण का सुभट (पउम ५६, ३२)।

खोभण न [क्षोभण] क्षोभ उपजाना, विचलित करना, 'तेलोक्कखोभणकरं' (पउम २, ८२, महा)।

खोभिय वि [क्षोभित] विचलित किया हुआ (पउम ११७, ३१)।

खोम) न [क्षौम] १ कार्पासिक वस्त्र,
खोमग) कपास का बना हुआ वस्त्र (णाया

१, १—पत्र ४३ टी, उवा १)। २ सन का बना हुआ वस्त्र (सम १२३, भग ११, ११, पराह २, ४)। ३ रेशमी वस्त्र (उप १४६, स २००)। ४ वि. अतसी संबधी, सन-सबन्धी, (ठा १०, भग १, १ ११)। °पसिण न [°प्रश्न] विद्या विशेष, जिससे वस्त्र मे देवता का आह्वान किया जाता है (ठा १०)।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपास का बना हुआ वस्त्र (ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र (कप्प)।

खोमिय वि [क्षौमिक] १ रेशम सम्बन्धी। २ सन-सम्बन्धी (पव १२७)।

खोय देखो खोट (सम १५१, इक)।

खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक, कटोरा
खोरय } (उप पृ १३५, गादि)।

खोल पु [दे] १ छोटा गधा (दे २, ८०)। २ वस्त्र का एक देश (दे २, ८०, ५, ३०, वृह १)। ३ मद्य का नीचला कीट कर्दम (आचा २, १, ८, वृह १)।

खोल पु [दे] गुप्तचर, जासूस (पिंड १२७)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर 'खोल्ल कोत्थर' (निचू १५)।

खोसलय वि [दे] दन्तुल, लम्बे और बाहर निकले हुए दांतवाला (दे २, ७७)।

खोसिय वि [दे] जीर्ण-प्राय किया हुआ (पिंड ३२१)।

खोह देखो खोभ = क्षोभय्। खोहइ (भवि)। वकृ खोहेंत (से १५ ३३)। कवकृ. खोहिज्जंत (से २, ३)।

खोह देखो खोभ = क्षोभ (पराह १, ४, कुमा सुपा ३६७)।

खोहण देखो खोभण (श्रा १२, सुपा ५०२)।

खोहिय देखो खोभिय (सण)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे खआराइसद्दसंकलणो एआरहमो तरंगो समत्तो ॥

ग

ग पुं [ग] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है (प्रामा, प्राप)।

°ग वि [°ग] १ जानेवाला। २ प्राप्त होनेवाला, जैसे—पारग, वसग (आचा, महा)।

गअवत वि [गतवत्] गया हुआ (प्राकृ ३५)।

गइ स्त्री [गति] १ ज्ञान, अवबोध (विसे २५०२)। २ प्रकार, भेद (से १, ११)। ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति, (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ठा (१,१, टी)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि (ठा ५, ३)। °तस पु [°त्रस] अग्नि और वायु के जीव (कम्म ३, १३, ४, १६)। °नाम न [°नामन्] देवादि गति का कारणभूत कर्म (सम ६७)। °प्पवाय पु [°प्रपात] १ गति की नियतता (पराण १६)। २ ग्रयाश-विशेष (भग ८, ७)।

गइंद पु [गजेन्द्र] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती। २ श्रेष्ठ हाथी (गउड, कुमा)। °पय न [°पद] गिरनार पर्वत का एक जल-तीर्थ (ती ३)।

गइल्लय देखो गय = गत (सुज २, २२)।

गउ } पु [गो] बैल, वृषभ, सांड (हे १,
गउअ } १५८)। °पुच्छ पु न [°पुच्छ] १ बैल की पूँछ। २ बाण विशेष (कुमा)।

गउअ पु [गवय] गो तुल्य आकृतिवाला जंगली पशु-विशेष, नील गाय (कुमा)।

गउआ स्त्री [गो] गैया, गौ (हे १, १५८)।

गउड पुं [गौड] १ स्वनाम ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग (हे १, २०२, सुपा ३८६)। २ गौड देश का निवासी (हे १, २०२)। ३ गौड देश का राजा (गउड, कुमा)। °वह पु [°वध] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रंथ (गउड)।

गउण वि [गौण] अप्रधान, अमुख्य (दे १, ३)।

गउणी स्त्री [गौणी] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति (दे १, ३)।

गउरव देखो गारव (कुमा, हे १, १६३)।

गउरविय वि [गौरवित] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह, 'तज्जणयाइ तत्थागयाइ थेवेहिं चेव दियहेहिं, गउरवियाइ रयणायरेण' (सुपा ३५६, ३६०)।

गउरी स्त्री [गौरी] १ पार्वती, शिव-पत्नी (सुपा १०६)। २ गौर वर्णवाली स्त्री। ३ स्त्री-विशेष (कुमा)। °पुत्त पुं [°पुत्र] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्त्तिकेय (सुपा ४०१)।

गअ देखो गय = गत, 'भीया जहागयगइं पडिवज्ज गए' (रंभा)।

गंग पु [गङ्ग] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य (ठा ७, विसे २४२५)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक जैन मुनि, जो पष्ठ वासुदेव के पूर्वजन्म के गुरू थे (स १५३)। २ नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम (पउम २०, ७१)। ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी (भग १६, ५)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक सार्थवाह की स्त्री का नाम (विपा १, ७)।

गंग° देखो गंगा। °प्पवाय पु [°प्रपात]

हिमालय पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहाँ से गङ्गा निकलती है (ठा २, ३)। °सोअ पुं [°स्रोतस्] गङ्गा नदी का प्रवाह (पि ८४)।

गंगली स्त्री [दे] मौन, चुप्पी (सुपा २०८ ४८०)।

गंगा स्त्री [गङ्गा] १ स्वनाम-प्रसिद्ध नदी (सम, [illegible])। २ स्त्री-विशेष (कुमा)। ३ [illegible] से परिमाण-विशेष ([illegible])। ४ गङ्गा नदी की अधिष्ठायिका देवी (आचा)। ५ भीष्म पितामह की माता का नाम (णाया १,१६)। °कुंड न [°कुण्ड] हिमालय पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहाँ से गङ्गा निकलती है (ठा ८)। °कूड न [°कूट] हिमालय पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष, जहाँ गङ्गा-देवी का भवन है (ठा २, ३)। °देवी स्त्री [°देवी] गङ्गा की अधिष्ठायिका देवी-विशेष ([illegible])। °वत्त पुं [°वर्त्त] आवर्त-विशेष ([illegible])। °मय न [°गत] [illegible] एक प्रकार का काल-परिमाण ([illegible])। °सागर पुं [°सागर] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहाँ गङ्गा समुद्र में मिलती है ([illegible] १८)।

गंगेअ पुं [गाङ्गेय] १ गङ्गा का पुत्र, भीष्म-पितामह (णाया १, १६, वेणी १०४)। २ [illegible] आचार्य ([illegible] १)। ३ एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्व-नाथ [illegible] थे (भग ९, ३२)।

[illegible] पुं [दे] [illegible] (दे २, ८४)।

[illegible]

[illegible]

गंजण न [गञ्जन] १ अपमान, तिरस्कार (सुपा ४८०)

वेरिएवि सरणागया,

[illegible]भंति गया न चेव केसरिणो।

समासिज्जइ मरणं,

न गंजणं धीरपुरिसाण' (वज्जा ४२)।

२ कलङ्क, दाग 'गंजणरहिओ जम्मो' (वज्जा १८)।

गंजण वि [गञ्जन] मर्दनकर्ता (सिरि ५४६)।

गंजा स्त्री [गञ्जा] सुरा-गृह, मद्य की दूकान (दे २, ८५ टी)।

गंजिअ पुं [गाञ्जिक] कल्य-पाल, दारू बेचने-वाला कलाल (दे २, ८५ टी)।

गंजिअ वि [गञ्जित] १ पराजित, अभिभूत, 'तणगंमिगज्जिआ [illegible]' (उप ६८६ टी)। २ हत, मारा हुआ, विनाशित (पिंग)। ३ पीड़ित (हे ४, ४०६)।

गंजिल्ल वि [दे] १ वियोग-प्राप्त, वियुक्त। २ भ्रान्त-चित्त, पागल (दे २, ८३)।

गंजुल्लिय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (जय १२)।

गंजोल्ल वि [दे] आकुल, व्याकुल (षड्)।

गंजोल्लिअ वि [दे] १ रोमाञ्चित, जिसके रोम खड़े हुए हों वह (दे २, १००, भवि)। २ न हँसाने के लिए किया जाता अंग-स्पर्श, गुदगुदी, गुदगुदाहट (दे २, १००)।

गंठ सक [ग्रन्थ्] १ गठना, गूँथना। २ रचना, बनाना। गंठइ (हे ४, १२०, षड्)।

गंठ [illegible] (राय, गुप्र २, ५, धर्म २)।

गंठि स्त्री [गुंठि] [illegible] हुई [illegible] (प्राह ३२)।

गंठि पुंस्त्री [ग्रन्थि] १ गाँठ, जोड़। २ [illegible] (दे २, ३५, ४, १२०)। ३ गट्ठा, गाँठ (णाया १, १ श्रौप)। ४ [illegible] (सुअ [illegible])। ५ राग-द्वेष का [illegible] परिणाम-विशेष (उप २५३)

'[illegible] गंठि [illegible]।

[illegible]'

(सिरि ११२४)।

°छेअ पुं [°च्छेद] गाँठ काटनेवाला, चोर-विशेष, पाकेटमार ([illegible] २, ८६)। °भेअ पुं [°भेद] [illegible]। °भेयग वि [°भेदक] १ ग्रन्थि को भेदनेवाला। २ पुं चोर-विशेष (णाया १, १८ पण्ह १, ३)। °वण्ण पुं [°पर्ण] सुगन्धि गाछ विशेष (पण्ण)। °सहिय वि [°सहित] १ गाँठ-युक्त। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (धर्म २, पडि)।

गंठिम न [ग्रन्थिम] १ ग्रन्थन से बनी हुई माला वगैरह (पण्ह २, ५, भग ९, ३३)। २ गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

गंठिय वि [ग्रथित] गूँथा हुआ, गठा हुआ, पिरोया हुआ (कुमा)।

गंठिय वि [ग्रन्थिक] गाँठवाला (सूअ २, ५)।

गंठिल्ल वि [ग्रन्थिमत्] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ-वाला (राज)।

गंड पुं [दे] १ वन, जंगल। २ दाण्डपाशिक, कोतवाल। ३ छोटा मृग (दे २, ९९)। ४ नापित नाई (दे २, ९९, आचा २, १, २)। ५ न गुच्छ, समूह, 'कुसुमदामगंडमुव-ट्ठविय' (महा)।

गंड पुंन [गण्ड] १ गाल, कपोल (भग, सुपा ८)। २ रोग-विशेष, गण्डमाला, 'ता मा कुणेह वीय गंडोवरिफोडियातुल्लं' (उप ७६८ टी आचा)। ३ हाथी का कुम्भस्थल (पव २६)। ४ कुच, स्तन (उत्त ८)। ५ ऊख का जत्था, इक्षु-समूह (उप पृ ३५६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ फोड़ा, स्फोटक (उत्त १०)। ८ गाँठ, ग्रन्थि (श्रवि १७ श्रभि १८४)। °भेअ, °भेअअ पुं [°भेदक] चोर-विशेष पाकेटमार (श्रवि १७ श्रभि १८४)। °माणिआ स्त्री [°माणिका] माप का एक प्रकार की माप (राय)। °माला स्त्री [°माला] रोग-विशेष, जिसमें गला फूल जाता है (मृच्छ)। °यल न [°तल] कपोल-तल (सुर ४, २२०)। °लेहा स्त्री [°लेखा] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरह का छटा (गिर १,१ गउड)। °वच्छा स्त्री [°वक्षस्] पीन स्तनों से युक्त छाती-वाली स्त्री (उत्त ८)। °वाणिआ स्त्री [°पाणिका] [illegible] से छोटा होता है (भग ७, ८)। °पास पुं [°पार्श्व] गाल का पार्श्व-भाग (गउड)।

गंड न [गण्ड] दोष, दाग (सूत्र १, ६ १६)। °माणिया स्त्री [°मानिका] पात्र-विशेष (राय १४०) °विइवाय पु [°व्यतिपात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (संबोध ५४)।

गंडइया स्त्री [गण्डकिका] नदी-विशेष (आवम)।

गंडय पु [गण्डक] १ गेंडा, जानवर-विशेष (पाअ, दे ७, ५७)। २ उद्घोषणा करनेवाला पुरुष, टेर लगानेवाला पुरुष (ओघ ६८४)।

गंडली स्त्री [दे] गंडेरी, ऊख का टुकडा (उप पृ १०६)।

गंडा देखो गंठि = ग्रन्थि (प्राकृ १८)।

गंडाग पु [गण्डक] नाई, हजाम (आचा २, १, ७, २)।

गंडि पु [गण्डि] जन्तु-विशेष (उत्त १)।

गंडि वि [गण्डिन्] १ गण्डमाला का रोगवाला (आचा)। २ गण्ड रोगवाला (पण्ह २, ५)।

गंडिया स्त्री [गण्डिका] १ गंडेरी, ऊख का टुकडा (महा)। २ सोनार का एक उपकरण (ठा ४ ४)। ३ एक अर्थ के अधिकारवाली ग्रन्थ-पद्धति (सम १२६)।

गंडिल देखो गंधिल (इक)।

गंडिलावई देखो गंधिलावई (इक)।

गंडी स्त्री [गण्डी] १ सोनार का एक उपकरण (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका (उत्त ३६)। °तिदुग न [°तिन्दुक] यक्ष-विशेष (ती ३८)। °पय पु [°पद] हाथी वगैरह चतुष्पद जानवर (ठा ४, ४)। °पोत्थय पुन [°पुस्तक] पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

गंडीरी स्त्री [दे] गण्डेरी, ऊख का टुकडा (दे २, ८२)।

गंडीव न [गाण्डीव] १ अर्जुन का धनुष (वेणी ११२)।

गंडीव न [दे गाण्डीव] धनुष, कार्मुक (दे २, ८४, महा, पाअ)।

गंडीवि पु [गाण्डीविन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी ५८)।

गंडुअ न [गण्डु] ओसीसा, सिरहाना (महा)।

गंडुअ न [गण्डुत्] तृण-विशेष (दे २, ७५)।

गंडुल पु [गण्डोल] कृमि-विशेष, जो पेट मे पैदा होता है (जी १५)।

गंडुवहाण न [गण्डोपधान] गाल का तकिया (पव ८४)।

गंडूपय पुं [गण्डूपद] जन्तु-विशेष (राज)।

गंडूल देखो गंडुल (पण्ह १, १—पत्र २३)।

गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला (गा २७०, सुपा ४४६), 'बहुमइरागंडूसपाए' (उप ६८६ टी)।

गंडूस पु [गण्डूष] पानी का कुल्ला (सूअनि ५४)।

गंत देखो गा।

गंतव्व } देखो गम = गम्।
गंता }

गंतिय न [गन्तृक] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

गंती स्त्री [गन्त्री] गाडी, शकट (धम्म १२ टी, सुपा २७७)।

गंतु देखो गम = गम्।

गंतुंपच्चागया स्त्री [गत्वाप्रत्यागता] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनियों की भिक्षा का एक प्रकार (ठा ६)।

गंतुकाम वि [गन्तुकाम] जाने की इच्छा वाला (श्रा १४)।

गंतुमण वि [गन्तुमनस्] ऊपर देखो (वसु)।

गंतूण } देखो गम = गम्।
गंतूणं }

गंथ देखो गठ—ग्रन्थ्। गथइ (पि ३३३)। कर्म गथीअति (पि ५४८)।

गंथ पु [ग्रन्थ] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक (विसे ८६४, १३८३)। २ धन-धान्य वगैरह बाह्य मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह (ठा २, १, बृह १, विसे २५७३)। ३ धन, पैसा (स २३६)। ४ स्वजन, सबन्धी लोग (पण्ह २, ४)। °ाईअ पुं [°तीत] जैन साधु (सूअ १, ६)।

गंथि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता (सम्मत्त १३६)।

गंथि देखो गठि (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

गंथिम देखो गंठिम (णाया १, १३)।

गंदिला स्त्री [गन्दिला] देखो गंधिल (इक)।

गंदोणी स्त्री [दे] क्रीडा-विशेष, जिसमे आँख बद की जाती है, आँख-मिचौनी (दे २, ८३)।

गंद्धुअ देखो गेंदुअ (पड्)।

गंध पुं [गन्ध] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की वास, महक (औप, भग, हे १, १७७)। २ लव, लेश (से ६, ३)। ३ चूर्ण विशेष (पण्ह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवो की एक जाति (इक)। ५ न देव-विमान विशेष (निर १, ४)। ६ त्रि. गन्धयुक्त पदार्थ (सूअ १, ६)। °उडी स्त्री [°कुटी] गन्ध-द्रव्य का घर (गउड, हे १, ८)। °कासाइया स्त्री [°काषायिका] सुगन्धि कषाय रग की साडी (उवा, भग ९, ३३)। °गुण पु [°गुण] गन्धरूप गुण (भग)। °ट्टय न [°ाट्टक] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण (ठा ३, १—पत्र ११७) °ड्ढ वि [°ाढ्य] गन्धपूर्ण, सुगन्धपूर्ण (पंचा २)। °णाम न [°नामन्] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष (अणु)। °तेल्ल न [°तैल] सुगन्धित तेल (कप्पू)। °दव्व न [°द्रव्य] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य (उत्त १)। °देवी स्त्री [°देवी] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ४)। °द्धाणि स्त्री [°घ्राणि] गन्ध तृप्ति (णाया १, १—पत्र २५, औप)। °नाम देखो °णाम (सम ६७)। °मय पु [°मृग] कस्तूरी मृग, कस्तुरिया हरिन (सुपा २)। °मत वि [°वत्] १ सुगन्धित, सुगन्ध युक्त। २ अतिशय गन्धवाला, विशेष गन्ध से युक्त (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °मादण, °मायण पु [°मादन] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड (सम १०३, पण्ह २, २, ठा २, ३—पत्र ६६)। २ पुन पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न. नगर-विशेष (इक)। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान (दीव)। °वट्टय न [°वर्त्तक]

सुगन्धित गन्ध-द्रव्य (निसा १ ६)। °वट्टि स्त्री [°वर्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली (णाया १, १; औप)। °वह पुं [°वह] पवन, वायु (कुमा; पा ४८२)। °वास पुं [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का चूर्ण। २ सुगन्धि [illegible] (कुमा ६०)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध-पूर्ण। २ न नगर-विशेष (पउम; इक)। °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित चावल, धान (पउम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भाग जाते हैं (सम १; पडि)। °हरिण पुं [°हरिण] कस्तूरिया मृग (कप्पू)। °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ गन्धहारक देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

गंधण पुं [गन्धन] एक सर्प-जाति (दस २, ८)।

गंधपिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी (दे २, ८[illegible])।

गंधय देखो गंध (गउ)।

गंधवडा स्त्री [दे] नासिका, नाक (दे २, ८५)।

गंधवाह पुं [गन्धवाह] पवन (गउ १९०)।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव-गायक, स्वर्ग-गायक (उप ७ मा)। २ एक प्रकार की देव-जाति, [illegible] की एक जाति (पण्ह १, ४; औप)। ३ [illegible], भगवान् कुंथुनाथ का [illegible] (संति ८)। ४ न [illegible] (सम ५१)। ५ नृत्य-युक्त गीत, [illegible] (ठा ४, ४)। °कंठ न [°कण्ठ] [illegible]। °घर न [°गृह] १ [illegible], [illegible] (ठा ४)। °णगर, °नगर न [°नगर] [illegible] (ठा ३, ४—पत्र १६८)। °पुर न [°पुर] [illegible]। °लिवि स्त्री [°लिपि] [illegible]। °विवाह पुं [°विवाह] [illegible]। °साला स्त्री [°शाला] [illegible]।

गंधव्व वि [गन्धर्व] १ गन्धर्व-संबन्धी गन्धर्व से सम्बन्ध रखनेवाला (ज १; श्रभि ११५)। २ पुं. उत्सव-हीन विवाह, विवाह विशेष, 'गन्धव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिया' (आवम)। ३ न गीत, गान (पात्र)।

गंधव्वि वि [गन्धर्विन्] गानेवाला (ती ३)।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] १ गन्धर्व-विद्या में कुशल (कुप्र १६६)।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष (इक)।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष (पिंग)।

गंधार पुं [गन्धार] देश विशेष, कन्धार (स ३८)। २ पर्वत-विशेष (स ३६)। ३ न नगर-विशेष (स ३८)।

गंधार पुं [गान्धार] स्वर विशेष, रागिनी-विशेष (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री (पडि; अंत १५)। २ विद्यादेवी-विशेष (संति ६)। ३ भगवान् नमिनाथ की शासनदेवी (संति १०)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

गंधावाइ } पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध
गंधावाइ } एक वृत्त, वैताढ्य पर्वत (इक, ठा २, ३—पत्र ६६, ८०, ठा ४, २—पत्र २२३)।

गंधि वि [गन्धिन] गन्ध-युक्त, गन्धवाला (कप्प गउड)।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्धवाला (दे २, ८३)।

गंधिअ पुं [गान्धिक] गन्ध द्रव्य बेचनेवाला, पसारी (दे २, ८६)।

गंधिअ वि [गन्धिक] गन्ध-युक्त 'गुलवसर-[illegible]' (औप)। °साला स्त्री [°शाला] [illegible] (स्व ६)।

गंधिअ वि [गन्धिन] गन्ध-युक्त, गन्धवाला (स ३३२; गा ५८८, ८०२)।

गंधिल्ल पुं [गन्धिल] पर्वत-विशेष, विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३; इक)।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ [illegible] [illegible] (ठा २, ३; इक)। २ [illegible] (इ ६१)। °कूड न [°कूट]

१ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर (ज ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष (ठा ६)।

गंधिही स्त्री [दे] छाया, छाह (उप १०३१ टी)।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा (दे २, ८६)।

गंधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छाह। २ मधु-मक्षिका (दे २ १००)।

गंधोदग } न [गन्धोदक] सुगन्धित जल,
गंधोदय } सुगन्ध वासित पानी (औप, विप, १, ६)।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ रजनी, रात (दे २, ६६)।

गप्पि }
गप्पिणु } देखो गम = गम्।

गभीर न [गाम्भीर्य] १ गम्भीरता। २ अनौद्धत्य (सूअनि ६६)।

गभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताघ, अनुच्च, गहरा (प्राप; से ६, ४४; कप्प)। २ पुं न गहन-स्थान, गहन प्रदेश, जहां प्रति-शब्द उत्थित हो (विसे ३४०४; बृह १)। ३ पुं रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३)। ४ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ५ न समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर (सुर १३, ३०)। °पोय न [°पोत] नगर-विशेष (णाया १, १७)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] महा-विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २ ३)।

गभीरा स्त्री [गम्भीरा] १ गभीर-हृदया स्त्री (वव ४)। २ मात्रा-छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव विशेष (पण्ण १)।

गभीरिअ न [गाम्भीर्य] गम्भीरता, गम्भीरपन (बृह २, ४००)।

गभीरिम पुंस्त्री [गाम्भीर्य] ऊपर देखो (राज)।

गगण न [गगन] आकाश, अम्बर (कप्प; स ३८८)। °णंदण न [°नन्दन] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर (इक)। °वल्लभ, °वल्लह न [°वल्लभ] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर (राज; इक)।

गगणग पुं [गगनग] छन्द-विशेष (पिंग)।

गग्ग पु [गर्ग] १ ऋषि-विशेष। २ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

गग्ग पु [गर्ग] १ एक जैन महर्षि (उत्त २७, १)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठी (कुप्र १४३)।

गग्ग पु [गार्ग्य] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष (उत्त २७)।

गग्गर वि [गद्‌गद] १ गद्गद आवाजवाला, अति अस्पष्ट वक्ता (प्राप्र)। २ आनंद या दुःख से अव्यक्त कथन (हे १, २१९, कुमा)।

गग्गरी स्त्री [गर्गरी] गगरी, छोटा घडा (दे २, ८६, सुपा ३३६)।

गग्गिर देखो **गग्गर**, 'रुअगग्गिर गेअ' (गा ८४३, मण)।

गच्छ सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। गच्छइ (प्राप्र, पड्)। भवि. गच्छं (हे ३, १७१, प्राप्र)। वकृ. **गच्छंत, गच्छमाण** (सुर ३, ६६, भग १२, ६)। संकृ. **गच्छिअ** (कुमा)। हेकृ. **गच्छित्तए** (पि ५६८)।

गच्छ पुंन [गच्छ] १ समूह, सार्थ, सघात (स १८८)। २ एक आचार्य का परिवार (ओघ, स ८७)। ३ गुरु-परिवार, 'गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थ वसताण णिज्जरा विउला' (पंचव, धर्म ३)। °**वास** पु [°वास] गुरु-कुल में रहना, गच्छ-परिवार के साथ निवास (धर्म ३)। °**विहार** पु [°विहार] गच्छ की सामाचारी, गच्छ का आचार (वव १)। °**सारणा** स्त्री [°सारणा] गच्छ का रक्षण (राज)।

गच्छागच्छि अ. गच्छ-गच्छ में होकर (औप)।

गच्छिल्ल वि [गच्छवत्] गच्छवाला, गच्छ में रहनेवाला (बृह १)।

गज देखो **गय** = गज (गड्, प्रास १७१, इक)। °**सार** पुं [°सार] एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता (द ४७)।

गज्ज पु [दे] जव, यव, अन्न-विशेष (दे २, ८१, पाअ)।

गज्ज न [गद्य] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

गज्ज अक [गर्ज्] गरजना, गडगडाना, घडघडाना। गज्जइ (हे ४, ९८)। वकृ. **गज्जंत, गज्जयंत** (सुर २, ७५, रयण ५८)।

गज्जण न [गर्जन] १ गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद। २ नगर-विशेष (उप ७६५)।

गज्जणसद्द पु [दे गर्जनशब्द] पशु और हाथी की आवाज (दे २, ८८)।

गज्जफल } वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न
गज्जल } (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ५, ७)।

गज्जभ पु [गर्जभ] पश्चिमोत्तर दिशा का पर्वत (आवम)।

गज्जर पुं [दे] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसका खाना धर्म-शास्त्र में निषिद्ध है। (श्रा १६, जी ९)।

गज्जल वि [गर्जल] गर्जन करनेवाला (निचू ७)।

गज्जह देखो **गज्जभ** (आवम)।

गज्जि स्त्री [गर्जि] गर्जन, हाथी वगैरह की आवाज (कुमा सुपा ८६, उप पृ ११७)।

गज्जिअ वि [गर्जित] १ जिसने गर्जन किया हो वह, स्तनित (पाअ)। २ न गर्जन, मेघ वगैरह की आवाज (पण्ह १, ३)।

गज्जित्तु } वि [गर्जितृ] गर्जन करनेवाला,
गज्जिर } गरजनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६९, गा ५५)।

गज्जिज्जिअ न [दे] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट। २ अंग-स्पर्श से होनेवाला रोमाच, पुलक (पड्)।

गज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य (स १४०, विसे १७०७)।

गट्टण पु [गट्टन] धरणेन्द्र की नाट्य सेना का अधिपति (राज)।

गट्ठिआ स्त्री [दे] गठिया, गुठली, 'अवगट्ठिया' (निचू १५)।

गड न [गड] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर (दे २,११०)। २ गर्त्त, खाई (सुर १३,४१)।

गड (मा) देखो **गय** = गत (प्राप्र)।

गडयड पुन [दे] गर्जन, भयानक ध्वनि, हाथी वगैरह की आवाज, 'ता गडयड कुणतो, समागओ गयवरो, तत्थ' 'इत्थंतरे सय चिय सो जक्खो गडयड पकुव्वंतो' (सुपा २८१, ५४२)।

गडयड अक [दे] गर्जन करना, भयानक आवाज करना। वकृ **गडयडत** (सुपा १९४)।

गडयडी स्त्री [दे] वज्र-निर्घोष, गडगड आवाज, मेघ ध्वनि (दे २, ८५, मण)।

गडवड न [दे] गडबड, गोलमाल (सुपा ५४१)।

गडिअ } देखो **गम** = गम्।
गडुअ }

गडुल न [दे] चावल वगैरह का धोया-जल, चावल आदि का धोवन (धर्म २)।

गड्ड पुस्त्री [गर्त्त] गडहा, गड्ढा (हे २, ३२, प्राप्र, सुपा ११४)। स्त्री. **गड्डा** (हे १, ३५)।

गड्डु न [दे] शकट, गाडी (ती १५)।

गड्डरिगा } स्त्री [दे] भेडी, मेषी, ऊर्णायु,
गड्डरिया } 'गड्डरिगपवाहेण गयाणुगइय जण वियाणतो' (धम्म, सूअ १, ३, ४)।

गड्डरी स्त्री [दे] १ छागी, अजा, बकरी (दे २, ८४)। २ भेडी, मेषी (सट्ठि ३८)।

गड्डह पुस्त्री [गर्दभ] गदहा, गधा, खर (हे २, ३७)। °**वाहण** पु [°वाहन] रावण, दशानन (कुमा)।

गड्डिआ } स्त्री [दे] गाडी, शकट (ओघ ३८६
गड्डी } टी, दे २, ८१, सुपा २५२)।

गड्ढ न [दे] शय्या, बिछौना (दे २, ८१)।

गढ देखो **घड** = घट्। गढइ (हे ४, ११२)।

गढ पुस्त्री [दे] गढ, दुर्ग, किला, कोट (दे २, ८१, सुपा २५, १०५)। स्त्री **गढा** (कुमा)।

गढिअ वि [घटित] गढा हुआ, जटित (कुमा)।

गढिअ वि [ग्रथित] १ गूँथा हुआ, निबद्ध, 'नेहनिगडगढियाण' (उप ९८६ टी, पण्ह १, ४)। २ रचित, गुम्फित, निर्मित (ठा २, १)। ३ गृद्ध, आसक्त, (आचा २, २, २, पण्ह १, २)।

गण सक [गणय्] १ गिनना, गिनती करना। २ आदर करना। ३ अभ्यास करना, आवृत्ति करना। ४ पर्यालोचन करना। गणइ, गणेइ (कुमा, महा)। वकृ **गणत, गणेत** (पचा ४, से ४ १५)। कृ **गणेयव्व** (उप ५५५)।

गण पुं [गण] १ समूह, समुदाय, यूथ, थोक (ठा ३, ४; कुमा; प्रासू ४, ३४, १४१)। २ गच्छ, समान आचार व्यवहारवाले साधुओं का समूह (कप्प)। ३ छन्द-शास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह (पिंग)। ४ शिव का अनुचर (पाअ; कुमा)। ५ मल्लों का समुदाय (भग)। °ओ अ [°तस्] अनेकशः, बहुश (सूअ २, ६)। °नायग पुं [°नायक] गण का मुखिया (णाया १, १)। °नाह पुं [°नाथ] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया (सुपा २, ७०)। २ गणधर, जिनदेव का प्रधान शिष्य (पउम ११ ६)। ३ आचार्य, सूरि (सार्ध २३)। °भाव पुं [°भाव] [illegible] (राज)। °राय पुं [°राज] १ सामन्त राजा (भग ७, ९)। २ सेनापति (आव ३ [illegible])। °वइ पुं [°पति] १ गण का स्वामी। २ गणेश, गजानन, शिवपुत्र ([illegible])। ३ जिनदेव का मुख्य शिष्य, गणधर (विचार ७)। °सामि पुं [°स्वामिन्] गण का मुखिया, गणधर (उप २८० टी)। °हर पुं [°धर] १ जिनदेव का प्रधान शिष्य (सम ११३)। २ अनुपम ज्ञानादि-गुण-समूह को धारण करनेवाला जैन साधु, आचार्य [illegible] (आवम, पत्र २३६)। °हरिंद पुं [°धरेन्द्र] गणधरों में [illegible], प्रधान गणधर (पउम ३, ८३, ५८, [illegible])। °हारि पुं [°धारिन्] देखो °हर ([illegible])। °ाजीव पुं [°ाजीव] [illegible] (ठा ५, १)। °ावच्छेइय, °ावच्छेयग, °ावच्छेयय पुं [°ावच्छेदक] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करनेवाला साधु (आचा २, १, १० ठा ३, ३ [illegible])। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] १ गिरि-[illegible], गणेश (पि ४०३ पात्र)। २ जिनदेव का प्रधान शिष्य (पउम २६, ४)।

गणग पुं [गणक] १ ज्योतिषी, ज्ञानी, [illegible] का जानकार, दैवज्ञ (णाया १, १)। २ लेखक, [illegible] (णाया १, १—पत्र १९)।

गणण न [गणन] गिनती, संख्या ([illegible] १)।

गणणा स्त्री [गणना] गिनती, संख्या, [illegible] ([illegible] २, १३२ [illegible] १०० सूअ २, २)।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती, चण्डी, शिवपत्नी (दे २, ८७)।

गणत्र देखो गगग (औप, सुपा २०३)।

गणमम वि [दे] गोष्ठी-रत, गोठ में लीन (दे २, ८७)।

गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक (दे २, ८६)।

गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ (स ६२६)।

गणि वि [गणिन्] १ गण का स्वामी गण का मुखिया। स्त्री. गणिणी (सुपा ६०२)। २ पुं. आचार्य गच्छनायक, साधु-समुदाय का नायक (ठा ८)। ३ जिनदेव का प्रधान साधु-शिष्य (पउम ६१ १०)। ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त (णंदि)। °पिडग न [°पिटक] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी (सम १, १०६)। २ निर्युक्ति वगैरह से युक्त जैन आगम (औप)। ३ पुं यक्ष-विशेष, जिन शासन का अधिष्ठायक देव (संति ८)। ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह (णंदि)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] १ शास्त्र विशेष। २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान (णंदि)।

गणि पुस्त्री [गणि] अध्ययन, परिच्छेद, प्रकरण (णंदि १४३)।

गणिम न [गणिम] गिनती से बेची जाती वस्तु, संख्या पर जिसका भाव हो वह (श्रा १८; णाया १, ८)।

गणिम न [गणिम] १ गणना, गिनती, संख्या। २ वि संख्येय, जिसकी गिनती की जा सके वह, (अणु १५४)।

गणिय वि [गणित] १ गिना हुआ। २ न गिनती, संख्या (ठा ६, ७ २)। ३ जैन साधुओं का एक कुल (कप्प)। ४ अङ्क गणित, गणित-शास्त्र (णंदि, अणु)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष, अङ्क-लिपि (सम ३५)।

गणिय पुं [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता, 'गणिय जायइ गणियाउं' (अणु)।

गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या, गणिका (गा १२ विपा १, २)।

गणिर वि [गणयितृ] गिनती करनेवाला (गा २०८)।

गणेत्तिआ } स्त्री [दे] १ रुद्राक्ष का बना
गणेत्ती } हुआ हाथ का आभूषण-विशेष (णाया १, १६—पत्र २१३; औप, भग, महा)। २ अक्ष-माला (दे २, ८१)।

गणेसर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

गण्ण वि [गण्य] गणनीय, संख्येय (संबोध १०)।

गण्णा (मा) स्त्री [गणना] गिनती (प्राकृ १०२)।

गत्त न [गात्र] देह, शरीर (औप, पाअ, सुर २, १०१)।

गत्त देखो गड्ड (भग १५)। स्त्री. गत्ता (सुपा २१४)।

गत्त न [दे] १ ईषा, चोपाई या खाटपाई की लकड़ी-विशेष। २ पंक, कर्दम (दे २, ९९)। ३ वि गत, गया हुआ (षड्)।

°गत्तण वि [कर्तन] काटनेवाला, छेदक (सूअ १, १५, २४)।

गत्तडि } स्त्री [दे] १ गवादनी, गोचर-भूमि
गत्ताडी } (दे २, ८२)। २ गायिका, गाने-वाली स्त्री (षड् दे २, ८२)।

गत्थ वि [ग्रस्त] कवलित, ग्रास किया हुआ, 'अप्पमहुव्वलोभगन्दा (? त्था)' (पण्ह १, ३—पत्र ४८, नाट—चैत १२६)।

गद सक [गद्] बोलना, कहना। गदइ गदन्त (नाट—चैत ४०)।

गद्दि देखो गइ = गति (देवेन्द्र ३५१)।

गदुअ (शौ) अ [गत्वा] जाकर (प्राकृ ८८)।

गद्द देखो गज्ज = गज (प्राकृ २१)।

गद्दतोय पुं [गर्दतोय] लोकान्तिक देवों की एक जाति (सम ८५, णाया १, ८)।

गद्दब्भ पुं [दे] रुद्र-ध्वनि, कर्ण-रुद्र आवाज (दे २, ८२ पाअ, स २२१, ४२०)।

गद्दभ देखो गद्दह = गर्दभ (धात)।

गद्दभय देखो गद्दहय (आचा २, ३, १ आवम)।

गद्दभाल पुं [गर्दभाल] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक (भग)।

गद्दभालि पुं [गर्दभालि] एक जैन मुनि (ठी २५)।

गद्दभिल्ल पुं [गर्दभिल्ल] उज्जयिनी का एक राजा (विचा २०, वि २६१, ४००)।

गद्दभी स्त्री [गर्दभी] १ गधी, गदही (पि २६१)। २ विद्या-विशेष (काल)।

गद्दह पु [गर्दभ] १ गदहा, गधा, खर (नम ५० दे २ ८० पाअ, हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मन्त्रि-पुत्र (बृह १)।

गद्दह न [दे] कुमुद चन्द्र-विकासी कमल (दे २, ८३)।

गद्दहय पु [गर्दभक] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गोशाला वगैरह में उत्पन्न होता है (जी १७)। २ देखो गद्दह (नाट)।

गद्दही देखो गद्दभी (नाट—मृच्छ ५८, निचू १०)।

गद्दिअ वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त (दे २, ८३)।

गद्ध पुं [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध (औप)।

गन्न वि [गण्य] १ माननीय, आदरास्पद, हियमप्पणो करेंतो, कस्स न होइ गरुओ गुरुगन्नो', 'सव्वो गुणेहि गन्नो' (उत्र)। २ न गणना गिनती 'मुल्लस्स कुणइ गन्नं' (सुपा २५३)।

गब्भ पुं [गर्भ] १ कुक्षि, पेट, उदर (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान जन्म-स्थान (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर भीतर का (णाया १ ८)। °गरा स्त्री [°करी] गर्भाधान करनेवाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °घर न [°गृह] भीतर का घर घर का भीतरी भाग (णाया १ ८)। °ज वि [°ज] गर्भ में उत्पन्न होनेवाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरह (पउम १०२, ६७)। °त्थ वि [°स्थ] १ गर्भ में रहनेवाला। २ गर्भ से उत्पन्न होनेवाला मनुष्य वगैरह (ठा २, २)। °मास पु [°मास] कार्तिक से लेकर माघ तक का महीना (वव ७)। °य देखो °ज (जी २३)। °वई स्त्री [°वती] गर्भिणी स्त्री (सुपा २७६)। °वक्कंति स्त्री [°व्युत्क्रान्ति] १ गर्भाशय में उत्पत्ति (ठा २, ३)। °वक्कंतिअ वि [°व्युत्क्रान्तिक] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति होती है वह (सम २, २५)। °हर देखो घर (सुर ६, २१, सुपा १८२)।

गब्भर न [गह्वर] १ कोटर, गुहा। २ गहन, विषम स्थान (आव ४, पि ३३२)।

गब्भर देखो गहर, 'गब्भरो' (प्राकृ २", सक्षि १६)।

गब्भाहाण न [गर्भाधान] सम्कार-विशेष (राय १४६)।

गब्भिज्ज पु [दे गर्भज] जहाज का निम्न श्रेणी का नौकर 'कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज (? ज्ज) सजत्ताणावावाणियगा' (णाया १, ८—पत्र १३३, राज)।

गब्भिण } वि [गर्भित] १ जिसको गर्भ
गब्भिय } पैदा हुआ हो वह गर्भ-युक्त (हे १, १०८, प्राप्र, णाया १ ७)। २ युक्त, सहित, 'वेडिमदलनीलभित्तिगब्भिणय' (कुमा, पड्)।

गब्भिल्ल देखो गब्भिज्ज (णाया १, १७—पत्र २२८)।

गम मक [गम्] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका गमिही (कुमा)। कर्म गम्मइ, गमिज्जइ (हे ४, २४९)। कवकृ गम्ममाण (स ३४०)। संकृ गतु, गमिअ, गता, गतूण, गतूण (कुमा, पड्, प्राप्र, औप, कस), गडुअ, गडिअ, गदुअ (शौ), (हे ४, २७२, पि ४८?, नाट—मालती ४०), गमेप्पि, गमेप्पिणु, गप्पि, गप्पिणु (अप), (कुमा)। हेकृ गतु (कस, श्रा १४)। कृ गन्तव्व, गमणिज्ज, गमणीअ (णाया १, १, गा २४६, उत्र, भग, नाट)।

गम सक [गमय्] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेति (गउड), 'बुहा! मुहा मा दियहे गमेह' (सत्त ४)। कर्म गमेज्जति (गउड)। वकृ. गमन (सुपा २०२)। सकृ गमिऊण (पि) हेकृ गमित्तए (पि ५७८)।

गम पु [गम] १ गमन, गति, चाल (उप २२० टी)। २ प्रकार (पउम १, २६)। ३ शास्त्र का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो (दे १, १, विसे ५४६, भग)। ४ व्याख्या, टीका 'विसे ६१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ (अणु, णदि)। ६ मार्ग, रास्ता (ठा ७)।

गम पु [गम] १ प्रकार (वव १)। २ विजगम (महानि ४)।

गमग वि [गमक] बोधक, निश्चायक (विसे ३१५)।

गमण न [गमन] गमन, गति (भग, प्रासू १३२)। २ वेदन, बोध (णदि)। ३ व्याख्यान, टीका। ४ पुष्य वगैरह नव नक्षत्र (राज)।

गमणया } स्त्री [गमन] गमन, गति 'लोगत-
गमणा } गमणयाए' (ठा ४, ३), 'पायवदए पहारेत्थ गमणाए' (णाया १,१—पत्र २६।

गमणिज्ज देखो गम = गम्।

गमणिआ स्त्री [गमनिका] १ सक्षिप्त, व्याख्यान, दिग्-दर्शन (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण, कालगमणिया एत्थ उवाओ' (उप ७२८ टी)।

गमणी स्त्री [गमनी] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है (णाया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता, 'सव्वोवि जणो जलं विगाहि तो उत्तारइ गमणीओ चरणाहिंतो' (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो गम = गम्।

गमय देखो गमग (विसे २६७३)।

गमार वि [दे ग्राम्य] अविदग्ध, मूर्ख (सक्षि ४७)।

गमाव देखो गम = गमय्। गमावइ (सण)।

गमिअ वि [गमिक] प्रकारवाला (वव १)।

गमिद वि [दे] १ अपूर्ण। २ मूढ। ३ स्खलित (पड्)।

गमिय वि [गमित] १ गुजारा हुआ, अतिक्रान्त (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित (विसे ५५६)।

गमिय न [गमिक] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठवाला शास्त्र, भग गणियाइ गमियं सरिसगम च कारणवसेण' (विसे ५४६, ५५४)।

गमिर वि [गन्तृ] जानेवाला (हे २, १४५)।

गमेप्पि }
गमेप्पिणु } देखो गम = गम्।

गमेर देखो गमार (सक्षि ४७)।

गमेस देखो गवेस। गमेसइ (हे ४, १८९)। गमेसनि (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य। २ जो जाना जा सके (उत्तर १७०, सुपा ४२६)। ३ हराने योग्य, आक्रमणीय (सुर १२६,

१२ १८४)। ४ जाने योग्य। ५ भोगने योग्य—कामनी वगैरह (कुप्र १२ ४२)।

गम्म न [गम्य] गमन, 'ग्रामाग्राम मुविरुयेषु गमं' (सुम्र ८, १३)।

गम्ममाग देखो गम = गम्।

गय वि [दे] १ घूर्णित, भ्रमित, घुमाया गया (दे २, ८८ पड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव (दे २ ८८)।

गय वि [गत] १ गया हुआ (कुमा ३३४)। २ अतिक्रान्त गुजरा हुआ (दे २, ५६)। ३ गिरा, लगा हुआ (गउड)। ४ नष्ट, हत (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त 'भावईायगि [illegible]' (प्राप्र ८३, १०८)। ६ स्थित, रहा हुआ '[illegible]' (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो (ठा ४, १)। ८ प्रसून (सूम १, १, १)। ९ व्याख्यात (ओघ)। १० न गति, गमन, '[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]' (रंभा; कुमा ५८८, प्राचा)। °पाण वि [°प्राण] मृत, मरा हुआ (श्रा २७)। °राग वि [°राग] राग-रहित, वीत-राग, निर्मोह (उप ७२८ टी)। °वइया °वई स्त्री [°पतिका] १ विधवा, रांड, (ओघ, पउम ६, ८२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री, प्रोषित भर्तृका (गा ३३२, पउम २६ [illegible])। °वय वि [°वयस्] गत उम्र (पाग्र)। °णुगइअ वि [°ानुग-तिक] गत का अनुसरण करनेवाला, अनुयायी, अंध-अनुकरण (उप [illegible])।

गय [गज] १ हाथी, हस्ती, कुञ्जर (पणह [illegible] प्राप्र १५४ कुमा ३३४)। २ एक [illegible] मुनि, गजसुकुमाल मुनि (अंत ३)। ३ इस नाम का एक सेठ (उप ७६८ टी)। ४ रावण का एक सुभट (पउम ५६, [illegible])। °उर न [°पुर] नगर-विशेष, [illegible] [illegible] (उप १०१४, [illegible])। [illegible], ८६)। °पुर

देखो °उर (सुम्र १, ४, १)। °बंधय पु [°बन्धक] हाथी को पकड़नेवाली जाति (सुपा ६८२)। °मारिणी स्त्री [°मारिणी] वनस्पति-विशेष, गुच्छ विशेष (पराग १—पत्र ३२)। °मुह पुं [°मुख] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र (पाग्र)। २ यक्ष-विशेष (राग ११)। °राय पुं [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती (सुपा ३८६)। °वइ पु [°पति] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हस्ती (गाया १, १६, सुपा २८६)। °वर पु [°वर] प्रधान हाथी। °वरारि पु [°वरारि] सिंह, शार्दूल, वनराज (पउम १८, ७६)। °वहू स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी (पाग्र)। °वीही स्त्री [°वीथी] शुक्र वगैरह महाग्रहों का चार-क्षेत्र-विशेष (ठा ६)। °समण पु [°श्वसन] हाथी की सूँढ (ओघ)। °सुकुमाल पु [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव में मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष (अंत, पडि)। °ारि पु [°ारि] सिंह, पञ्चानन (भवि)। °ारोह पु [°ारोह] हस्तिपक, महावत (पाग्र)।

गय पु [गद] रोग, बिमारी (ओघ, सुपा ५७८)।

गयंक पु [गजाङ्क] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव (प्रीप)।

गयंद पु [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी (गउड)।

गयकंठ पुं [गजकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

गयकन्न पु [गजकर्ण] अनार्य देश विशेष (पव २७४)।

गयग्गपय न [गजाग्रपद] दशार्णकूट का एक तीर्थ (आचानि ३३२)।

गयण न [गगन] 'ह' अक्षर (सिरि १६६)। °मणि पु [°मणि] सूर्य (कुप्र ५१)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर (हे २, १६४ गउड)। °गइ पु [°गति] एक राजकुमार (दंस)। °चर वि [°चर] आकाश में चलनेवाला, पक्षी, विद्याधर वगैरह (सुपा २५०)। °मंडल पु [°मण्डल] एक राजा (दंस)।

गयणयर पु [दे] मेघ, मेह, बादल (दे २, ८८)।

गयणिंद पु [गगनेन्द्र] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४)।

गयनिमीलिआ स्त्री [गजनिमीलिका] उपेक्षा, उदासीनता (स ५१)।

गयमुह पु [गजमुख] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

गयसाउल } वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे
गयसाउल्ल } ८७, पड्)।

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का अस्त्र-विशेष, लोहे का मुगदर या लाठी (राय)। °हर पु [°धर] वासुदेव, (उत्त ११)।

गया स्त्री [गदा] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।

गया स्त्री [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष (उप २५१)।

°गर वि [°कर] करनेवाला, कर्त्ता (मरण)।

गर पुं [गर] १ विष विशेष, एक प्रकार का जहर (निचू १)। २ ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध बवादि करणों में से एक (विसे ३३४८)।

°गरण देखो करण (रयण ६३)।

गरल न [गरल] १ विष, जहर (पाग्र प्राप्र ३६)। २ रहस्य। ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट, 'अ-गरलाए अ-मम्मणाए' (ओघ)।

गरलिगाबद्ध वि [गरलिकाबद्ध] निक्षिप्त, उपन्यस्त (निचू १)।

गरह सक [गर्ह्] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ, गरहए (भग)। वकृ. गरहंत (द्र ५७)। कवकृ गरहिज्जमाण (गाया १, ८)। संकृ गरहित्ता (आचा २, १५)। हेकृ गरहित्तए (कस, ठा २, १)। कृ गरहणिज्ज, गरहणीय, गरहियव्व (सुपा १८४, ३८६, पराह २, १)।

गरहण न [गर्हण] निन्दा, घृणा (वि १३२)।

गरहणया } स्त्री [गर्हणा] निन्दा, घृणा (भग
गरहणा } १७, ३ ओघ, पराह २, १)।

गरहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा (भग)।

गरहिअ वि [गर्हित] निन्दित, दूषित (सं ६३, द्र ४४, सण)।

°गरिअ वि [°कृत] किया हुआ, निर्मित (से ७, ११)।

गरिट्ठ वि [गरिष्ठ] अति गुरु, बड़ा भारी (सुपा २०, १२८ प्राप्र १७८)।

गरिम पुंस्त्री [गरिमन्] गुरुता, गुरुत्व, गौरव (से २, ३५ सुपा २०, १०६)।

गरिह देखो गरह । गरिहइ, गरिहामि (महा, पडि) ।

गरिह पुं [गर्ह] निन्दा, गर्हा (प्राप्र) ।

गरिहणया देखो गरहणया (उत्त २६, १) ।

गरिहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (ओघ ७६१, स १६०) ।

गरु देखो गुरु, 'गरुयरगत्ताए सिविऊण' (सुपा २१४) ।

गरुअ वि [गुरुक] गुरु, बडा, महान् (हे १, १०६, प्राप्र, प्रासू ३६) ।

गरुअ सक [गुरुकारय्] गुरु करना वडा बनाना । गरुएइ (पि १२३),

'हाणाए नरेहिं सिरी, मारिज्जइ
अह सराए हसेहिं ।
अएणाएण चिअ एए,
अप्पाण रणवर गरुअति'
(हेका २५५) ।

गरुआ } गरुआअ } अक [गुरुकारय्] १ वडा बनना । वडे की तरह आचरण करना । गरुआइ, गरुआअइ (हे ३, १३८) ।

गरुइअ वि [गुरुकृत] वडा किया हुआ (से ६, २०, गउड) ।

गरुई } गरुवी } स्त्री [गुर्वी] वडी, ज्येष्ठा, महती (हे १, १०७, प्राप्र, निचू १) ।

गरुक्क देखो गरुअ, 'णवजोव्वणरूअपसाहिएण सिंगारगुणगरुक्केण' (प्राप) ।

गरुड देखो गरुल (सति १, स २६५, पिंग) । छन्द-विशेष (पिंग) । °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, उरगास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र (पउम १२, १३०, ७१, ६६) । °द्धय पुं [°ध्वज] विष्णु, वासुदेव (पउम ६१, ५७) । °वूह पु [°व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना (महा, पि २४०) ।

गरुडक पु [गरुडाङ्क] १ विष्णु, वासुदेव । २ इक्ष्वाकु वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७) ।

गरुल पु [गरुड] एक देव विमान (देवेन्द्र १३४) ।

गरुल पु [गरुड] १ पक्षि राज, पक्षि-विशेष (पएह १, १) । २ यक्ष-विशेष, भगवान् शान्तिनाथ का शासन-यक्ष (सति ८) । ३ भवनपति देवो की एक जाति, सुपर्णकुमार देव (पएह १, ४) । ४ सुपर्णकुमार देवो का इन्द्र (सूअ १, ६) । °केउ पु [°केतु] देखो °ज्झय (राज) । °ज्झय, °द्धय पु [°ध्वज] १ गरुड पक्षी के चिन्हवाली ध्वजा (राय) । २ वासुदेव, कृष्ण । ३ देव-जाति-विशेष, सुपर्णकुमार देव (आवम, सम, पि) । °व्वूह देखो गरुड-वूह (जं २), °सत्थ न [°शस्त्र] गरुडास्त्र, अस्त्र-विशेष (महा) । °ासण न [°ासन] आसन-विशेष (राय) । °ोववाय न [°ोपपात] शास्त्र-विशेष, जिसको याद करने से गरुडदेव प्रत्यक्ष होते हैं (ठा १०) । देखो गरुड ।

गरुवी देखो गरुई (कुमा) ।

गल अक [गल्] १ गल जाना, सडना । २ खतम होना, समाप्त होना । ३ झरना, टपकना, गिरना । ४ पिघलना, नरम होना । ५ सक. गिराना, टपकाना, 'जाव रत्ती गलइ' (महा) । वकृ 'नवेण रस सोएहिं गलतम् असुइरस' (महा, सुर ४, ६८, सुपा २०४) । गलित (पएह १, ३, प्रासू ७२) । प्रयो , वकृ गलावेमाण (णाया १, १२) ।

गल } गलअ } पु [गल] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ (सुपा ३३, पाअ)। २ वडिश, वंसी, मछली पकडने का कांटा (उप १८८, विपा १, ८, सुर ८, १४०) । °गज्जि स्त्री [°गर्जि] गले की गर्जना (महा) । °गज्जिय न [°गर्जित] गल-गर्जन (महा) । °लाय वि [°लात] गले में लगाया हुआ, कण्ठ-न्यस्त (औप) ।

गलई स्त्री [गलकी] वनस्पति-विशेष (राज) ।

गलग देखो गलअ (पएह १, १) ।

गलत्थ देखो खिव । गलत्थइ (हे ४, १४३, भवि) ।

गलत्थण न [क्षेपण] १ क्षेपण करना, फेंकना । २ प्रेरण (से ५, ५३, सुपा २८) ।

गलत्थलिअ वि [दे] १ क्षिप्त, फेंका हुआ । २ प्रेरित (दे २, ८७) ।

गलत्थल्ल पुं [दे] गलहस्त, हाथ से गला पकडना (णाया १,६, पएह १,३—पत्र ५३) ।

गलत्थल्लिअ [दे] देखो गलत्थलिअ (से ५, ४२, ८, ६१) ।

गलत्था स्त्री [दे] प्रेरणा,

'गरुयाण चिय भुवणम्मि आवया
न उण हुति लहुयाण ।
गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराणं'
(उप ७२८ टी) ।

गलत्थिअ वि [क्षिप्त] १ प्रेरित (सुपा ६३५) । २ फेका हुआ (दे २, ८७, कुमा) । ३ बाहर निकाला हुआ (पाअ) ।

गलद्धअ पुं [दे] प्रेरित, क्षिप्त (षड्) ।

गलहत्थिअ वि [गलहस्तित] गला पकडकर बाहर निकाला हुआ (वज्जा १३८) ।

गलाण देखो गिलाण (नाट—चैत ३४) ।

गलि देखो गल = गल, 'मच्छुव्व गलि गिलित्ता' (दसचू १, ६) ।

गलि } गलिअ } वि [गलि, °क] दुर्विनीत, दुर्दम (श्रा १२, सुपा २७६) । °गद्दह पु [°गर्दभ] अविनीत गदहा (उत्त २७) । °वइल्ल पुं [°बलीवर्द] दुर्विनीत बैल (कप्पू) । °स्स पु [°श्व] दुर्दम घोडा (उत्त १) ।

गलिअ वि [गलित] १ गला हुआ, पिघला हुआ (कप्प) । २ क्षालित, प्रक्षालित (कुमा) । ३ स्खलित, पतित (से १, २) । ४ नष्ट, नाश-प्राप्त (सुपा २४३, सण) ।

गलिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे २, ८१) ।

गलित देखो गल = गल ।

गलिज्ज वि [गलीय, गल्य] गले का (पिंड ४२४) ।

गलिर वि [गलितृ] निरन्तर पिघलता, टपकता, 'बहुसोगगलिरनयणेण' (श्रा १४) ।

गलुल देखो गरुल (अच्चु १, षड्) ।

गलोई } गलोया } स्त्री [गुडूची] वल्ली विशेष, गिलोय, गुरुच (हे १, १२४, जी १०) ।

गल्ल पु [गल्ल] १ गाल, कपोल (दे २, ८१, उवा) । २ हाथी का गण्ड-स्थल, कुम्भ स्थल (षड्) । °मसूरिया स्त्री [°मसूरिका] गाल का उपधान (जीत) ।

गल्लक्क पुंन [दे] १ स्फटिक मणि (प्राप, पि २९६) ।

गल्लत्थ देखो गलत्थ । गल्लत्थइ (षड्) ।

[illegible] [दे] [illegible], [illegible] (दे २, ८६)।

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] पुं [गवाक्ष] [illegible] (औप)।

[illegible] पुं [दे] [illegible] (गउड)।

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] [दे] [illegible] (दे २, ८४)।

[illegible]

[illegible] [गवय] [illegible] (पण्ह १, १)।

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गवेस सक [गवेषय्] गवेषणा करना, खोजना, तलाश करना। गवेसइ (महा पड्)। भूका गवेसित्था (आचा)। वकृ गवेसंत, गवेसयंत, गवेसमाण (श्र १२, सुपा ४१०, सुर १, २०२ णाया १, ४)। हेकृ गवे-सित्तए (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [गवेषयितृ] खोज करनेवाला गवेषक (ठा ६, २)।

गवेसग वि [गवेषक] ऊपर देखो (उप पृ ३३)।

गवेसण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण (ओघ, सुर ४, १८३)।

गवेसणया स्त्री [गवेषणा] ईहा-ज्ञान, सम्भावना ज्ञान (णंदि १७४)।

गवेसणया } स्त्री [गवेषणा] १ खोज, अन्वे-
गवेसणा } षण (ओघ, सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो गवेसग (नति)।

गवेसाविय वि [गवेषित] १ दूसरे से खोज-वाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया (स २०७, श्राघ ६२२ टी)। २ गवेषित, अन्वेषित खोजा हुआ (स ६८)।

गवेसि वि [गवेषिन्] खोज करनेवाला, गवेषक (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, खोजा हुआ (सुर १४, १२६)।

गव्व पुं [गर्व] गर्व, अहंकार, अभिमान (भग [illegible])।

गव्वर न [गह्वर] [illegible] (स ३६०)।

गव्विअ वि [गर्वित] अभिमानी, गर्व-युक्त (भा [illegible])।

गव्विट्ठ वि [गर्विष्ठ] [illegible] अभिमानी [illegible]

गव्विर वि [गर्वित] [illegible]

[illegible] वि [गर्वि[illegible]] [illegible], अभिमानी [illegible]

[illegible]

गसण न [ग्रसन] भक्षण, निगलना (स ३५७)।

गसिअ वि [ग्रस्त] भक्षित, निगलित (कुमा, सुर ६, ६०, सुपा ४८६)।

गह सक [ग्रथ्] गूँथना, गठना। गहेति (सूअनि १४०)।

गह सक [ग्रह्] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ (सण)। वकृ गहंत (धा २७)। संकृ गहाय, गहिअ, गहिऊण, गहिया, गहेउ (पि ५९१ नाट, पि ५८६, सूअ १, ४, १, १, ५, २)। कृ गहीअव्व, गहेअव्व (रयण ७०, भग)।

गह पुं [ग्रह] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार (विसे ३७१ सुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरह ज्योतिष्क-देव (गउड पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध (दस ८)। ४ भूत वगैरह का आक्रमण, आवेश (कुमा, सुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष (दस २)। °क्खोभ पुं [°क्षोभ] [illegible] वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश (पउम ५, २६०)। °गज्जिय न [°गर्जित] ग्रहों के संचार में होनेवाली आवाज (जीव ३)। °गहिय वि [°गृहीत] भूतादि से आक्रान्त, पागल (कुमा, सुर २, १४४)। °चरिय न [°चरित] १ ज्योतिष-शास्त्र ([illegible])। २ ज्योतिष शास्त्र का परिज्ञान (सम ८३)। °दंड पुं [°दण्ड] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति (भग ३, ७)। °नाह पुं [°नाथ] १ सूर्य, सूरज (सा २८)। २ [illegible] (उप ७२८ टी)। °मुसल न [°मुसल] मुसलाकार ग्रह-पंक्ति (जीव ३)। °सिंघाडग न [°शृङ्गाटक] १ [illegible] (भग ३, ७)। २ [illegible] (जीव ३)। °[illegible] पुं [°[illegible]] [illegible] (सा २८)।

गह पुं [[illegible]] १ [illegible] २ [illegible] (गच्छ १, ३ [illegible], ११, [illegible] ७२)। [illegible] (पउम [illegible])। °[illegible] न [°[illegible]] [illegible] (२३)। °[illegible] न [°[illegible]] [illegible] २३)।

गह° न [गृह] घर मकान। °वइ पु [°पति] गृहस्थ, गृही, संसारी (पउम २०, ११६, प्राप्र)। °वइणी स्त्री [°पत्नी] गृहिणी, स्त्री (सुपा २२६)।

गहक्कल्लोल पु [दे. ग्रहकल्लोल] राहु, ग्रह-विशेष (दे २, ८६, पाअ)।

गहगह अक [दे] हर्ष से भर जाना, आनन्द-पूर्ण होना। गहगहइ (भवि)।

गहण न [ग्रहण] १ आदान, स्वीकार (से ८, ३३, प्रासू १४)। २ आदर, सम्मान। ३ ज्ञान, अवबोध (से ४, ३०)। ४ शब्द, आवाज (आचा २, ३, ३, आचम)। ५ वि ग्रहण करनेवाला। ६ न इन्द्रिय (विसे १८०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग—ग्रहण (भग १२, ६)। ८ त्रि. ग्राह्य, जिसका ग्रहण किया जाय वह (उत्त ३२)। ९ न शिक्षा-विशेष (आव)।

गहण न [ग्राहण] ग्रहण कराना, अंगीकार कराना, 'जो आसि वणचेरगहणुत्ति' (कुमा)।

गहण न [ग्रहण] १ आदान का कारण। २ आक्षेपक, 'चक्खुस्स रूव गहणं वयंति' (उत्त ३२, २२)।

गहण न [गहन] अरण्य क्षेत्र (आचा २, ३, ३, १)। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] पर्वत के एक प्रदेश में स्थित वृक्ष वल्ली-समुदाय (सूअ २, २, ८)।

गहण वि [गहन] १ निबिड, दुर्भेद्य, दुर्गम, 'काले अणाइणिहणे जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ' (जी ४६), 'फलसारणनिणिगहणा' (गउड)। २ वन, झाडी, घना कानन (पाअ, भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर (तिपा १, ३—पत्र ४६)।

गहण न [दे] १ निर्जल-स्थान, जल-रहित प्रदेश (दे २, ८२, आचा २, ३, ३)। २ बन्धक, धरोहर, गिरवी (सुपा ५४८)।

गहणय न [दे] गहना, आभूषण (सुपा १५४)।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान (औप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय, गाड (पएह १, ४, आप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] कुक्षि, पेट (पव १०६)।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बादी या बन्दी (दे २, ८४, से ६, ४७)।

गहत्थि पु [गभस्ति] किरण, रश्मि (पाअ)।

गहर पु [दे] गृध्र, गीध-पक्षी (दे २, ८४, पाअ)।

गह्वर पुन [गह्वर] १ निकुंज। २ वन, जंगल। ३ दंभ, कपट। विषम-स्थान। ५ रोदन। ६ गुफा। ७ अनेक अनर्थों का संकट, 'गहरो' (प्राकृ २८)।

गहवइ पु [गृहपति] कृषक, खेती करनेवाला (पाअ)।

गहवइ वि [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहने-वाला (दे २, १००)। २ पु चन्द्रमा, चाँद (दे २, १००, पाअ, वाअ १५)।

गहिअ वि [दे] वक्रित, मोडा हुआ, टेढा, किया हुआ (दे २, ८५)।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात्त, स्वीकृत (औप, ठा ४, ४)। २ पकडा हुआ (पएह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित (उत्त २, पड्)।

गहिअ वि [गृद्ध] आसक्त, तल्लीन (आचा)।

गहिआ स्त्री [दे] १ काम भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री (दे २, ८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री (पड्)।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अस्ताघ (दे १ १०१, काप्र ९२५, कप्प, गउड, औप, प्राप्र)।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से आविष्ट, पागल (श्रा १४)।

गहिलिय } वि [दे ग्रहिल] आवेश युक्त,
गहिल्ल } पागल भ्रान्त-चित्त (पउम ११३, ४३, पड्, श्रा १२, उप ५६७ टी, भवि)।

गहीअ देखो गहिअ = गृहीत (श्रा १२, रयण ६८)।

गहीर देखो गभीर (प्रासू ६)।

गहीरिअ न [गाभीर्य] गहराई, गम्भीरपन (हे २, १०७)।

गहीरिम पुस्त्री [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीरता (हे ४, ४१६)।

गहेअव्व } देखो गह = ग्रह।
गहेउ }

गह्ण (अप) देखो गह = गह्। गह्णइ (पड्)।

गा } सक [गै] १ गाना, आलापना। २
गाअ } वर्णन करना। ३ श्लाघा करना। गाइ, गाअइ (हे ४, ६)। वकृ गंत, गाअत, गायमाण (गा ५४६, पि ४७९, पउम ६४, २४)। कवकृ गिज्जत (गउड, गा ६४२, सुपा २१, सुर ३, ७६)। सकृ, गाइउं (महा)।

गाअ पु [गो] बैल, वृषभ, साँड (हे १, १५८)।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह (सम ६०)। २ शरीर का अवयव (औप)।

गाअ वि [गायक] गानेवाला (कुमा)।

गाअक पु [गवाङ्क] महादेव, शिव (कुमा)।

गाअग वि [गायन] गानेवाला, गवया (सुपा ५५, सण)।

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुआ, 'किन्नरेण तो गाइय गीय' (सुपा १६)। २ न गीत, गान, गाना (आव ४)।

गाइआ स्त्री [गायिका] गानेवाली स्त्री (गा ६४४)।

गाइर वि [गायक] गानेवाला, गवया (सुपा ५८)।

गाई स्त्री [गो] गैया, गो (हे १, १५८, दे ४, १८, गा २७१, सुर ७, ६५)।

गाउ } न [गव्यूत] १ कोस, क्रोश, दो
गाउअ } हजार धनुष-प्रमाण जमीन (पि
गाऊअ } २५४ औप, इक जी १८, विसे ८२ टी)। २ दो कोस, क्रोश-युग्म (ओघ १२)।

गागर पु [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा, घँघरा या घाघरा, गुजराती में 'घाघरो' (पएह १, ४)। २ मत्स्य-विशेष (पएण १)।

गागरी [दे] देखो गायरी (पि ६२)।

गागलि पु [गागलि] एक जैनमुनि (उत्त १०)।

गागेज्ज त्रि [दे] मथित, मथा हुआ, आलोडित (दे २, ८८)।

गागेज्जा स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे २, ८८)।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त (दे २,८३)।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ, निबिड, सान्द्र (पाम, सुर १ [illegible] ८८)। २ मजबूत, दृढ (सुर ८, २२३)। ३ क्रि वि अत्यन्त, अतिशय (कप्प)।

गाण न [गान] गीत, गाना (ठ ४, ६)।

गाणय वि [गायन] गवैया, गीत-प्रवीण (दे २, १०८)।

गाणंगणिअ पु [गाणङ्गणिक] छः ही मास के भीतर एक गच्छ से दूसरे गच्छ में जानेवाला साधु (बृह १)।

गादी स्त्री [दे] गावली, गौ-पंक्ति (दे २, ८२)।

गाधा देखो गाहा (गा, रिग)।

गाम वि [ग्राम] सम्प्रदाय-रहित, सम गहरा (दे ४, २८)।

गाम पु [ग्राम] १ समूह, निकर 'चवलो इंदियग्गामो' (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकाय (विसे २८९६)। ३ गाँव, बस्ति, [illegible] (सम, णाया १, १८, श्रौप)। ४ इन्द्रिय-समूह (सम, श्रौप)। °कंटग, °कंडय पु [°कण्टक] १ इन्द्रिय-समूह का काँटा (सम, श्रौप)। २ दुर्गों का समूह [illegible] (श्राचा)। °घायग वि [°घातक] गाँव का नाश करनेवाला (पण्ह १, ३)। °णिद्धमण न [°निर्धमन] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला (राय)। °धम्म पुं [°धर्म] १ विषयाभिलाष, विषय की वाञ्छा (ठा १०)। २ इन्द्रियों का स्वभाव। [illegible] (श्राचा)। ४ मैथुन (सूत्र १, २, २)। ५ गाँव का धर्म, गाँव का [illegible] (ठा १, ४)। ६ गाँव का धर्म, गाँव [illegible] (ठा १०)। °णड पु [°नट] [illegible] [illegible] (ठा १२)। °मारी स्त्री [°मारी] गाँव भर [illegible] (ठा ३)। °रोग [illegible] [°रोग] [illegible] (ठा ३)। °वइ पु [°पति] गाँव का मुखिया (पाम)। [illegible] [illegible] [illegible]। °गार पु [°गार] [illegible] [illegible]।

[illegible] पु [दे] [illegible] मुखिया (दे २, [illegible])।

गाम[illegible] [ग्राम-[illegible]] [illegible]

(श्राचा)। २ वि गाँव की सीमा में रहनेवाला (दसा १)। ३ पु जैनेतर दार्शनिक-विशेष (सूत्र २, २)।

गामगोह पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८९)।

गामड पु [ग्रामक] गाम, छोटा गाँव (श्रा १६)।

गामण न [दे गमन] भूमि में गमन, भू-सर्पण (जा ११, ११)।

गामणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश (षड्)।

गामणि देखो गामणी (दे २, ८९ षड्)।

गामणिसुअ पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८९)।

गामणी पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८९; श्राचा)।

गामणी वि [ग्रामणी] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक (से ७, ६०, धण १, गा ४४६, षड्)। २ पु वृक्ष-विशेष (दे २, ११२)।

गामपिंडोल्ग पु [दे] भीख से पेट भरने के लिये गाँव का आश्रय लेनेवाला भीखारी (श्राचा)।

गामरोड पु [दे] छल से गाँव का मुखिया बन बैठनेवाला, गाँव के लोगों में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होनेवाला (दे २, ९०)।

गामहण न [दे] ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश (दे २, ९०)। २ छोटा गाँव (पाम)।

गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश (श्रावम)।

गामार वि [दे ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहनेवाला (वज्जा ८)।

गामि वि [गामिन्] जानेवाला (गा १६७, श्राचा)। स्त्री °णी (कप्प)।

गामिअ वि [ग्रामिक] १ देखो गामिल्ल (दे २, १००)। २ गाँव का मुखिया (निचू २)। ३ विषयाभिलाषी (श्राचा)।

गामिणिआ स्त्री [गामिनिका] गमन करनेवाली स्त्री, 'करिमहुरमहुरगामिणिआहिं' (पडि २६)।

गामिल्ल } वि [ग्रामीण] गाँव का
गामिल्लुअ } निवासी, गँवार (पउम ३३,
गामीण } १०८ [illegible], ४८, ४३)। स्त्री °णा (सुपा)।

गामुअ वि [गामुक] जानेवाला (स १७५)।

गामेडआ स्त्री [ग्रामेयिका] गाँव की रहनेवाली स्त्री, गँवार स्त्री (गउड)।

गामेणी स्त्री [दे] छागी, अजा, बकरी (दे २, ८४)।

गामेय देखो गामेयग (धर्मवि १३७)।

गामेयग वि [ग्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार (बृह १)।

गामेरड [दे] देखो गामरोड (षड्)।

गामेलुअ } देखो गामिल्ल (मृच्छ २७५,
गामेल्ल } विपा १, १, भवि १४११)।

गामेस पु [ग्रामेश] गाँव का अधिपति (दे २, ३७)।

गायण वि [गायन] गवैया, गायक (सिरि ७०१)।

गायरी स्त्री [दे] गर्गरी, गगरी, कलशी, छोटा घड़ा (दे २, ८६)।

°गार वि [°कार] कारक, कर्ता (भवि)।

गार पुं [दे ग्रावन्] पत्थर, पाषाण, कङ्कड़ (वव ४)।

गार न [अगार] गृह, घर, मकान (ठा ६)। °त्थ पुस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही (निचू १)। °त्थिय पुस्त्री [°स्थित] गृहस्थ, गृही, संसारी, 'गारत्थियजणउचियं भासासमिओ न भासिज्जा' (पुप्फ १८१, ठा ६)।

°गारय वि [°कारक] कर्ता, करनेवाला (स १५१)।

गारव पु [गौरव] १ अभिमान, अहंकार। २ अभिलाष, लालसा, 'तओ गारवा पण्णत्ता' (ठा ३, ४, श्रा ३५, सम ८)। ३ महत्त्व, गुरुत्व, प्रभाव (कुमा)। ४ आदर, सम्मान (षड्, प्राप्र)।

गारविल्ल वि [गौरववित्] १ गौरवशाली, महत्त्वशाली। २ गर्वित, अभिमानी। ३ लालसावाला, अभिलाषी (सूत्र १, १, १)।

गारविय वि [गौरवयत] ऊपर देखो (पउम १, ५६)।

गारहत्थ वि [गार्हस्थ्य] गृहस्थ सम्बन्धी, गृहस्थ का (पव ३४)।

गारि पुस्त्री [अगारिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (उत्त ५, १९)।

गारिहत्थिय स्रीन [गार्हस्थ्य] गृहस्थ-सबन्धी, संसारि-सबन्धी । स्त्री. °या (पव २३५) ।

गारुड } वि [गारुड] १ गरुड-सबन्धी ।
गारुल्ल } २ सर्प के विष को उतारनेवाला, सर्प-विष को दूर करनेवाला । ३ पु. सर्प विष को दूर करनेवाला मन्त्र (उप ६८६ टी, से १४, ५७) । ४ न शास्त्र विशेष, मन्त्र शास्त्र-विशेष, सर्पविष नाशक मन्त्र का जिसमे वर्णन हो वह शास्त्र (ठा ६) । °मंत पुं [°मन्त्र] सर्प-विष का नाशक मन्त्र (सुपा २१६) । °विउ वि [°वित्] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार (उप ६८६ टी) ।

गाल सक [गालय्] १ गालना, छानना । २ नाश करना । ३ उल्लघन करना, अतिक्रमण करना । गालयइ (विसे ६४) । वकृ. गालेमाण (भग ६, ३३) । कवकृ गालिज्जत (सुपा १७३) प्रयो. गालावेइ (णाया १, १२) ।

गालण न [गालन] छालना, गालना (पण्ह १, १, उप पृ ३७६) ।

गालणा स्त्री [गालना] १ गालना, छानना । २ गिरवाना । ३ पिघलवाना (विपा १, १) ।

गालवाहिया स्त्री [दे] छोटी नौका, डोगी, 'एत्थतरम्मि समागया गालवाहियाए निज्जामया' (स ३५१) ।

गालि स्त्री [गालि] गाली, गारी, अपशब्द, असभ्य वचन (सुपा ३७०) ।

गालिय वि [गालित] १ छाना हुआ । २ अतिक्रान्त । ३ विनाशित । ४ क्षिप्त, 'गालियमिठो निरंकुसो वियरिओ रायहत्थी' (महा) ।

गाली स्त्री [गाली] देखो गालि (पव ३८) ।

गाव (अप) देखो गा । गावइ (पिंग) । वकृ. गावत (पि २५८) ।

गाव (अप) देखो गव्व (भवि) ।

गाव वि [दे] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ (पड्) ।

गाव } पु [ग्रावन्] १ पत्थर, पाषाण
गावाण } (पाअ) । २ पहाड, गिरि (हे ३, ५६) ।

गावि (अप) देखो गव्विय (भवि) ।

गावी स्त्री [गो] गौ, गैया (हे २, १७४, विपा १, २, महा) ।

गास पुं [ग्रास] ग्रास, कवल (सुपा ४८८) ।

गास पु [ग्रास] भोजन (पव ६५) ।

गाह देखो गह = ग्रह् । कर्म. गाहिज्जइ (प्राप्र) ।

गाह सक [ग्राहय्] ग्रहण कराना । गाहेइ (औप) ।

गाह सक [गाह्] १ गाहना, ढूँढना । २ पढना, अभ्यास करना । ३ अनुभव करना । ४ टोह लगाना । गाहदि (शौ), (मृच्छ ७२) । कवकृ. गाहिज्जत (वज्जा ४) ।

गाह पुं [गाध] अस्ताव-रहित, थाह (ठा ४, ४) ।

गाह पु [ग्राह] १ गाह, कुंभीर, नक्र, जल-जन्तु-विशेष, मगर (दे २,८६, णाया १, ४, जी २०) । २ आग्रह, हठ (विसे २६८६, पउम १६, १२) । ३ ग्रहण, आदान (निचू १) । ४ गारुडिक, सर्प को पकडनेवाली मनुष्य-जाति (बृह १) । °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

गाहग वि [ग्राहक] १ ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला (सुपा ११) । २ समझनेवाला, जाननेवाला (सुपा ३४३) । ३ समझानेवाला, शिक्षक, आचार्य, गुरु (औप) । ४ ज्ञापक, बोधक । स्त्री गाहिगा (औप) ।

गाहक वि [ग्राहक] प्राप्ति करनेवाला, 'गाहग सयलगुणाण' (स ६८२) ।

गाहण न [ग्राहण] १ ग्रहण कराना । २ ग्रहण, आदान, 'गाहण तवचरियस्सा गहण चिय गाहणा होति' (पचभा) । ३ शास्त्र, सिद्धान्त (वव ४) । ४ बोधक-वचन, शिक्षा, उपदेश (पण्ह २, २) ।

गाहणया } स्त्री [ग्राहणा] ऊपर देखो (उप
गाहणा } पृ ३१४, आचा, गच्छ १) ।

गाहय देखो गाहग (विसे ८३१, स ४६८) ।

गाहा स्त्री [गाथा] अध्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण (उत्त ३१, १३) ।

गाहा स्त्री [गाथा] १ छन्द-विशेष, आर्या, गीति (ठा ५, ३, अजि ३७, ३८) । २ प्रतिष्ठा । ३ निश्चय, 'सेसपयाण य गाहा' (आव ४) । ४ 'सूत्रकृताग' सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन (सूअ १, १, १) ।

गाहा स्त्री [दे] गृह, घर, मकान, 'गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा' (वव ८) । °वइ पुंस्त्री [°पति] १ गृहस्थ, गृही, ससारी (ठा ४, ४, सुपा २२६) । २ धनी धनाढ्य (उत्त १) । ३ भडारी, भाण्डागारिक (सम २७) । स्त्री. °णी (णाया १, ५, उवा) ।

गाहाल पुं [ग्राहाल] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु विशेष (जीव १) ।

गाहावई स्त्री [ग्राहावती] १ नदी विशेष । २ द्वीप-विशेष । ३ ह्रद-विशेष, जहाँ से ग्राहावती नदी निकलती है (जं ४) ।

गाहावय वि [ग्राहित] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह (सुर ११, १८३) ।

गाहिणी स्त्री [गाहिनी] १ गाहने वाली स्त्री । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

गाहिपुर न [गाधिपुर] नगर-विशेष (गउड) ।

गाहिय वि [ग्राहित] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह । २ भ्रामित, उकसाया हुआ (सूअ १, २, १) ।

गाहीकय वि [गाथीकृत] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सूअनि १, १६) ।

गाहु स्त्री [गाहु] छन्द-विशेष (पिंग) ।

गाहुलि पुस्त्री [दे] ग्राह, नक्र, मगर, क्रूर जल-जन्तु विशेष (दे २, ८६) ।

गाहुल्लिया देखो गाहा = गाथा (सुपा २६४) ।

गिंठि [गृष्टि] १ एक वार व्यायी हुई । २ एक वार व्यायी हुई गाय (हे १, २६) ।

गिंधुअ [दे] देखो गेठुअ (पाअ) ।

गिंधुल्ल [दे] देखो गेठुल्ल (पाअ) ।

गिंभ (अप) देखो गिम्ह (हे ४, ४४२) ।

गिंह देखो गिम्ह (पड्) ।

गिज्जंत देखो गा ।

गिज्झ अक [गृध्] आसक्त होना, लम्पट होना । गिज्झइ (हे ४, २१७) । गिज्झह (णाया १, ८) । वकृ गिज्झत (औप) । कृ. गिज्झियव्व (पण्ह २, ५) ।

गिज्झ वि [गृह्य, ग्राह्य] १ ग्रहण करने योग्य । २ अपनी तरफ से किया जा सके ऐसा (ठा ३, २) ।

गिट्ठि देखो गिंठि, 'वारंतस्सवि वला दिट्ठी गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी, पाअ, गा ६४०) ।

गिड्डिया स्त्री [दे] गेडी, गेंद खेलने की लकडी (पव ३८) ।

गिर [illegible] ... [illegible] (२०) ।

[illegible]

गिरि [illegible] ... प्रकार का उत्सव (पत्र १) । °णई स्त्री [°नदी] पर्वतीय नदी (ति २८५) । °णार पुं [°नार] प्रसिद्ध पर्वत-विशेष जो काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास 'गिरनार' के नाम से विख्यात है (धर्म ३) । °णारिणी स्त्री [°नारिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १२६) । °णई देखो °णई (कुमा ६३५) । °पक्खंदण न [°प्रस्कन्दन] पहाड़ पर से गिरना (निर ११) । °पडल न [°पटल] पर्वत का मध्य भाग (गउड) । °पब्भार पुं [°प्राग्भार] पर्वत विवर (नाया) । °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (ठा) । °वर पुं [°वर] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड़ (कुमा १८२) । °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत (भग २०) । °सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती, गौरी (पिंग) ।

गिरि पुं [गिरि] [illegible] (ठा ६, ४७८) ।

गिरिंद पुं [गिरीन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत । २ मेरु पर्वत । ३ हिमालय (पाअ) ।

गिरिकण्णी [illegible] (पत्र ४) ।

गिरिडी स्त्री [दे] [illegible] (कुमा २३७) ।

गिरिणगर न [गिरिनगर] गिरनार पर्वत के नीचे का नगर, जो आजकल 'जूनागढ़' के नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र २०८) ।

गिरिपुप्फिय न [गिरिपुष्पिक] नगर-विशेष (विसे ८८२) ।

गिरिस पुं [गिरिश] [illegible] (पिंग ...) । °राम पुं [°राम] [illegible]

[illegible]

गिला स्त्री [ग्लानि] १ बीमारी, रोग । २ खेद, थकावट (ठा ८) ।

गिलाअ देखो गिलाअ, 'गिलाएइ गामे' (स ८१७) ।

गिलाण वि [ग्लान] १ बीमार, रोगी (सुप २, ३, ३) । २ अशक्त, असमर्थ, [illegible] (ठा ३ ४) । ३ उदासीन, हर्ष-रहित (रामा १, ३३ हे २ १०६) ।

गिलाणि स्त्री [ग्लानि] ग्लानि, खेद, थकावट (ठा ५ १) ।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, [illegible] (गाद) ।

गिलासि पुंस्त्री [ग्रासिन्] व्याधि-विशेष [illegible] (आचा) । स्त्री °णी (आचा) ।

गिलिअ वि [गिलित] निगला हुआ, भक्षित (सुपा ३, २०६ सुपा ६८०) ।

गिलिअवन वि [गिलितवन] [illegible] (पि ५६६) ।

गिलोइया } स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली
गिलोई } (सुपा ६८०, पुप्फ २६०) ।

गिल्लि स्त्री [दे] १ हाथी की पीठ पर रखा जाता हौदा [illegible] (णाया १, १— [illegible]) । २ [illegible] दो आदमी [illegible] एक प्रकार की डोली (सुअ २, २, १६) ।

गिव्वाण पुं [गीर्वाण] देव, सुर, [illegible] (उप ५२८ टी) ।

गिह न [गृह] घर, मकान [illegible] ... [illegible]

गिहिकोइला स्त्री [गृहकोकिला] गृहगोधा, छिपकली (स ७५८)।

गिहमेहि पुं [गृहमेधिन्] गृहस्थ (धर्मवि २६)।

गिहवइ पु [गृहपति] देश का अधिपति, सूबेदार, 'तह गिहवईवि देसम नायगो' (पत्र ८५)।

गिहि पु [गृहिन्] गृही, ससारी, गृहस्थ (ओघ १७ भा, नव ४३)। °धम्म पुं [°धर्म] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म (राज)। °लिंग न [°लिङ्ग] गृहस्थ का वेश (बृह १)।

गिहिणी स्त्री [गृहिणी] गृहिणी, भार्या, स्त्री (सुण ८३, श्रा १६)।

गिहीअ वि [गृहीत] प्राप्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ (न ४२८)।

गिहेलुग देखो गिहेलुय (आचा २, ५, १, ८)।

गिहेलुय पु [गृहेलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकडी (निचू १३)।

गी स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा, वाक्, 'थिरमुज्जल च छायाघण च गीविलसियं जस्स' (गउड)।

गीआ स्त्री [गीता] श्रीमद्भगवद्गीता, ज्ञानमय उपदेश, छन्द-विशेष (पिंग)।

गीइ स्त्री [गीति] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद। २ गान, गीत (ठा ७, उप १३० टी)।

गीइया स्त्री [गीतिका] ऊपर देखो (ओप, णाया १, १)।

गीय वि [गीत] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह (पण्ह २, ५, अणु)। २ कथित, प्रतिपादित (णाया १, १)। ३ प्रसिद्ध, विख्यात (नया)। ४ न गान, ताल और बाजे के अनुसार गाना (ज २, उत्त १)। ५ सगीत-कला, गान-कला, सगीत-शास्त्र का परिज्ञान (णाया १,१)। ६ पु गीतार्थ, उत्सर्ग और अपवाद वगैरह का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि (उप ७७३)। °जस पु [°यशस्] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवो का एक इन्द्र (ठा २, ३, इक)। °त्थ पु [°र्थ] १ विद्वान् जैन मुनि (उप ८३३ टी, वव ४, सुपा १२७)। २ सगीत रहस्य (मै १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °रइ स्त्री [°रति] १ सगीत-क्रीडा (ओप)। २ पु गन्धर्व देवो का एक इन्द्र (इक, भग, ३, ८)। ३ गन्धर्व सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)। ४ वि. सगीत-प्रिय, गान-प्रिय (विपा १, २)।

गीवा स्त्री [ग्रीवा] कण्ठ, गरदन (पाअ)

गुंछ देखो गुच्छ (हे १, २६)।

गुंछा स्त्री [दे] १ बिन्दु। २ दाढी-मूंछ। ३ अधम, नीच (दे २, १०१)।

गुंज अक [हस्] हँसना, हास्य करना। गुंजइ (हे ४, १९६)।

गुंज अक [गुञ्ज्] १ गुन गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना। २ गर्जना, सिंह वगैरह का आवाज करना, 'गुंजति सीहा' (महा)। वकृ गुंजत (णाया १, १—पत्र ५ रंभा)।

गुंज पु [गुञ्ज] १ गुञ्जारव करता वायु (पउम १३, ४३)। २ पर्वत-विशेष, 'गुंजवरपव्वयतें' (पउम ८, ९०, ९४)।

गुंजा स्त्री [गुञ्जा] १ लता विशेष (सुर २, ६)। २ फल विशेष, घुंघची (णाया १, १, गा ३१०)। ३ भम्भा, वाद्य-विशेष (आचा)। ४ परिणाम-विशेष (ठा ४, १)। ५ गुञ्जारव, गुंजन, गुन-गुन आवाज, "गुंजावक्ककुहरोवगूढ' (गाय)। ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करनेवाला वायु (जीव १, जी ७) °फल, °हल न [°फल] फल-विशेष, घुघची (सुर २, ६, सुपा २६१)।

गुंजालिआ स्त्री [गुञ्जालिका] गभीर तथा टेढी वापी—बावली या बावडी (आचा २, ३, ३, १)।

गुंजालिया स्त्री [गुञ्जालिका] वक्र सारिणी, टेढी कियारी (णाया १, १)। २ गोल पुष्करिणी (निचू १२)। ३ वक्र नदी (पण्ण ११)।

गुंजाविअ वि [हासित] हँसाया हुआ (कुमा ७, ४१)।

गुंजिअ न [गुञ्जित] गुन-गुन आवाज, भ्रमर वगैरह का शब्द (कुमा)।

गुंजिर वि [गुञ्जितृ] गुन-गुन आवाज करनेवाला (उप १०३१ टी।

गुंजुल्ल देखो गुंजोल्ल गुंजुल्लइ (हे ४, २०२)।

गुंजेल्लिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ९२)।

गुंजोल्ल सक [वि + लुल्] बिखेरना। गुंजोल्लइ (प्राकृ ७३)।

गुंजोल्ल अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। गुंजोल्लइ (हे ४, २०२)।

गुंजोल्लिअ वि [उल्लसित] विकसित, विकसित (कुमा)।

गुंठ सक [उद् + धूलय्, गुण्ठ्] धूल वाला करना, धूली के रंग का करना, धूसरित करना। गुंठइ (हे ४, २९)। वकृ गुंठत (कुमा)।

गुंठ पु [दे] अधम अश्व, दुष्ट घोडा (दे २, ९१, स ४५४)। २ वि मायावी, कपटी (वव ३)।

गुंठा स्त्री [दे] माया, दम्भ, छल (वव ३)।

गुंठिअ वि [गुण्ठित] १ धूसरित। २ व्याप्त ३ आच्छादित (दे १, ८५)।

गुंठी स्त्री [दे] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष (दे २, ९०)।

गुंड न [दे] मुस्ता से उत्पन्न होनेवाला तृण-विशेष (दे २, ९१)।

गुंडण न [गुण्डन] धूलि का लेप, धूल का शरीर मे लगाना, 'रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्म महसि' (णाया १, १—पत्र ७१)।

गुंडिअ वि [गुण्डित] १ धूलि-लिप्त, धूलि-युक्त (पाअ)। २ लिप्त, पता हुआ, 'चुण्णगुंडियगात' (विपा १, २—पत्र २४)। ३ घिरा हुआ, 'सउणी जह पसुगुंडिया' (सूअ १, २, १)। ४ आच्छादित, प्रावृत (आवा)। ५ प्रेरित (पण्ह १, ३)।

गुंथण न [ग्रन्थन] गूँथना, गठना (रयण १८)।

गुंद पु [गुन्द्र] वृक्ष-विशेष (पाअ)।

गुंदल न [दे. गुन्द्ल] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी की आवाज, हर्ष की तुमुलध्वनि, 'मत्तवरकामिणीसघकयगुंदल' (सुर ३, ११५)। 'करिणीहि कलहेहि य खणमेक्क हरिसगुंदल काउं' (सुपा १३७)। २ हर्ष-भर, आनन्द-सदोह, खुशी की वृद्धि, 'अमदआणदगुंदलपुव्व', 'आणदगुंदलेण ललइ लीलावईहिं परिकलिओ' (सुपा २२, १३६)। वि आनन्द

[illegible] में मीत [illegible] दट्ठुं [illegible] (सुपा १३४)।

गुंदवडय न [दे] एक प्रकार की मिठाई, गुजराती में जिसको 'गुंदवडां' कहते हैं (सुपा ४८०)।

गुंपा } स्त्री [दे] १ निकुञ्ज। २ गहन, गीत (दे २, १०१)।
गुंफा }

गुंफ सक [ग्रन्थ्] गूँथना। गुंफइ (प्राक ६३)।

गुंफ सक [गुम्फ्] गूँथना, रचना। गुंफइ (षड्)। वकृ गुंफंत (सुपा)।

गुंफ पुं [गुम्फ] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन (उत्त १०२९ टी; दे २, ११०; ६, १४७)।

गुंफ पुं [दे] गुप्ति, कारागार, जेल (दे २, ९०)।

गुंफणा न [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष 'गुंफणगोफणियाहिं' (सुर २, ८)।

गुंफी स्त्री [दे] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, कानखजूरा (दे २, ९१)।

गुग्गुल पुं [गुग्गुल] सुगन्धित द्रव्य-विशेष, धूप का गुग्गुल (सुपा १५१)।

गुग्गुलि स्त्री [गुग्गुलु] वृक्ष का पेड़ (जी १०)।

गुग्गुलु देखो गुग्गुल (पउम ४३६)।

गुच्छ } पुं [गुच्छ] १ गुच्छा, गुच्छअ, स्तबक (णा ३, पण्ण ३७)। २
गुच्छय } [illegible] (पण्ह १)। ३ पत्ता [illegible]।

गुच्छ [illegible] (पउम ६६८)।

गुच्छिय वि [गुच्छित] गुच्छा वाला, गुच्छ-[illegible], गुच्छित [illegible]।

गुच्छ [illegible] (सुपा २८१)।

गुज्झ [illegible] [गुह्य] १ [illegible], [illegible] (निर)। २ [illegible] [illegible]।

गुज्झगा स्त्री [गुह्यका] [illegible] (पाअ १८०)।

गुज्झरि [illegible] [दे] [illegible] (षड्)।

गुज्झ [illegible] [गुह्य] [illegible] (पण्ण ७, १०)।

गुज्झ } वि [गुह्य] १ [illegible], [illegible]
गुज्झय } [illegible] (आचा १, ५, २, ३, १३४)।
२ [illegible], [illegible] '[illegible] तुज्झ निव्वत्तणिज्जं गुज्झं' (उप ७२८ टी)। ३ लिंग, पुरुष-चिह्न। ४ योनि, स्त्री-चिह्न (धर्म २)। ५ मैथुन, सम्भोग (पण्ह १, ४)। °हर वि [°धर] गुप्त बात को प्रकट नहीं करने-वाला (दे २ ४३)। °हर वि [°हर] रहस्य-भेदी, गुप्त बात को प्रसिद्ध करनेवाला (दे २, ६३)।

गुज्झग } पुं [गुह्यक] देवों की एक जाति
गुज्झय } (ठा ४, २)।

गुट्ठ न [दे] स्तम्ब, तृण-काण्ड, 'अज्जुण-गुट्ठ व तम्म जायइ' (वज्जा)।

गुट्ठ देखो गोट्ठ (पाअ, भत्त १६२)।

गुट्ठी देखो गोट्ठी (मुद्रा ५८)।

गुड सक [गुड्] १ हाथी को कवच वगैरह से सजाना। २ लड़ाई के लिए तय्यार करना, सजाना, 'गुडह गयंदे पवणीवेह रहचक्करपा-इक्कं' (सुपा २८८)। वकृ 'गुडिअगुडिज्जं-तमत्त' (से १२, ८७)।

गुड सक [गुड्] नियन्त्रण करना। गुडेइ (संक्षिप्त ५४)।

गुड पुं [गुड] १ गुड़, ईख का विकार, लाल शक्कर (हे १, २०२; प्रासू १५१)। २ एक प्रकार का कवच (राज)। °मत्थ न [°मार्थ] नगर-विशेष (भाव)।

गुडदालिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ९७)।

गुडा स्त्री [गुडा] १ हाथी का कवच। २ अश्व का कवच (विपा १, २)।

गुडिअ वि [गुडित] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह (से १२, ७३, ८७; विपा १, २)।

गुडिआ स्त्री [गुटिका] गोली (गा ७७७)।

गुडोलहिआ स्त्री [दे] गुम्फा (दे २, ९१)।

गुड्डर पुं [दे] पीठा का गोला, वृड़, ढेरा, तम्बू (निरि ४८२, ६४४)।

गुण सक [गुणय्] १ गिनना। २ आवृत्ति करना, पाठ करना। गुणइ (कुमा ४१; हे ४, ४२२)। गुणेइ (उव)। वकृ गुणमाण (उप पृ २६६)।

गुण पुं [गुण] ज्यामणि (गुणपि २०)। २ सामर्थ्य, शक्ति (आचा २, २, १, ७)।

गुण पुंन [गुण] १ गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरह एक ही साथ रहनेवाला धर्म (सम्म १०७, १०६)। ३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरह दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ (कुमा; उत्त १६, अणु; ठा ४, ३, ने १, ४)। ४ लाभ, फायदा, 'विहवेहिं गुणाइ मग्गंति' (हे १, ३४; सुपा १०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा (णाया १, १)। ६ रज्जु, डोरा, धागा (से १, ४)। ७ व्याकरण प्रसिद्ध ए, ओ और अर् रूप स्वर-विकार (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ को पालने का व्रत विशेष, गुण-व्रत (पंचव ३)। ९ रूप, रस, गन्ध वगैरह द्रव्याश्रित धर्म, 'गुण-पयरणतणओ गुणोवि जाओ पडाव्व पयक्खो' (ठा १, १, उत्त २८)। १० प्रत्यञ्चा, धनुष का रोदा (कुमा)। ११ कार्य, प्रयोजन (भग २, १०)। १२ अप्रधान, अमुख्य, गौण (हे १, ३४)। १३ अंश, विभाग (अणु)। १४ उपकार, हित (पचा ४)। °कर वि [°कर] १ लाभ-कारक। २ उपकार-कारक (पचा ४)। °कार पु [°कार] गुणा करना, अभ्यास-राशि (सम ६०)। °चंद पु [°चन्द्र] १ एक राजकुमार (श्रावम)। २ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार। ३ श्रेष्ठि-विशेष (राज)। °ट्ठाण न [°स्थान] गुणों का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरह चउदह गुण स्थानक (कम्म ४, पव ९०)। °ट्ठिअ पु [°र्थिक] गुण को प्रधान माननेवाला मत, नय-विशेष (सम्म १०७)। °ड्ढ वि [°ढ्य] गुणी, गुणवान् (सुर ३, २०, १३०)। °ण्ण, °ण्णु, °न्न, °न्नु वि [°ज्ञ] गुण का जानकार (गउड; उवर ८६; उप ५३० टी; सुपा १२२)। °पुरिस पुं [°पुरुष] गुणी पुरुष (सूअ १, ४)। °मंत वि [°वत्] गुणी, गुण-युक्त (धात्रा २, १, ६)। °रयणसंवच्छर न [°रत्नसंवत्सर] तपश्चर्या-विशेष (भग)। °व, °वंत वि [°वत्] गुणी, गुण-युक्त (भग २६, उप ८७४)। °व्वय न [°व्रत] जैन गृहस्थ को पालने योग्य-व्रत विशेष (पडि)। °सिलय न [°शिलक] राजगृह नगर का एक चैत्य (णाया १, १)। °सेढि स्त्री [°श्रेणि] कर्म-पुद्गलों की रचना-

विशेष (पच)। °सेण पुं [°सेन] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (न ६)। °हर वि [°धर] १ गुणों को धारण करनेवाला, गुणी। २ तन्तु-धारक। स्त्री °रा (सुपा ३२७)। °यर पु [°कर] गुणों की खान, अनेक गुण-वाला, गुणी (पउम १५, ६८, प्रासू १३४)।

गुण देखो एगूण, 'गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउबंध तु जइ इहागच्छे' (कम्म २, ८, ४, ५४, ५६, आ ४४)।

°गुण वि [°गुण] गुना, आवृत्त, 'वीसगुणो तीसगुणो' (कुमा, प्रासू २६)।

गुणण न [गुणन] १ गुणकार (पव २३६)। २ ग्रन्थ-परावर्तन, आवृत्ति, 'गुणणु (? गुण-णाए) प्पेहासु अ असत्तो' (पिंड ६६४)।

गुणणा स्त्री [गुणना] ऊपर देखो (सम्यक्त्वो १५)।

गुणयालीस स्त्रीन [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस, ३६ (राय ५६)।

गुणवुड्ढि स्त्री [गुणवृद्धि] लगातार आठ दिनों का उपवास (सवोध ५८)।

गुणसेण पु [गुणसेन] एक जैन आचार्य जो सुप्रसिद्ध हेमाचार्य के प्रगुरु थे (कुप्र १६)।

गुणा स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष (भवि)।

गुणाविय वि [गुणित] पढाया हुआ, पाठित, 'तत्थ सो अजणेण मयलाओ धणुव्वेयाइयाओ महत्थविज्जाओ गुणाविओ' (महा)।

गुणि वि [गुणिन्] गुण-युक्त, गुणवाला (उप ५६७ टी, गउड, प्रासू २६)।

गुणिअ वि [गुणित] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह (श्रा ६)। २ चिंतित, याद किया हुआ (से ११, ३१)। ३ पठित अधीत (ओघ ६२)। ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्त्तित (वव ३)।

गुणिल्ल वि [गुणवत्] गुणी, गुण-युक्त (पि ५६५)।

गुण्ण देखो गोण्ण (अणु १४०)।

गुण्ह (अप) देखो गिण्ह। गुण्हइ (प्राकृ ११६)।

गुत्त न [गोत्र] साधुत्व, साधुपन (सूअ २, ७, १०)।

गुत्त वि [गुप्त] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (णाया १,४, सुर ७,२३४)। २ रक्षित (उत्त १५)। ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला (उप ६०४)। ४ एक स्वनाम प्रसिद्ध जैनाचार्य (श्राक)।

गुत्त देखो गोत्त (पाअ, भग, आवम)।

गुत्तण्हाण न [दे] पितृ-तर्पण (दे २, ६३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] १ कैदखाना, जेल (सुर १, ७३, सुपा ६३)। २ कठघरा (सुपा ६३)। ३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना। ४ मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्ति ठा २, १, सम ८)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला, सयत (पण्ह २, ४)। °पाल पुं [°पाल] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष (सुपा ४६७)। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र मे उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] गोपन, रक्षण (गु १२)।

गुत्ति स्त्री [दे] १ बन्धन (दे २,१०१, भवि)। २ इच्छा, अभिलाषा। ३ वचन, आवाज। ४ लता, वल्ली। ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला (दे २, १०१)।

गुत्तिंदिय वि [गुप्तेन्द्रिय] इद्रिय-निग्रह करने वाला, सयतेंद्रिय (भग, णाया १, ४)।

गुत्तिय वि [गौप्तिक] रक्षक, रक्षण करने-वाला, 'नगरगुत्तिए सद्दावेइ' (कप्प)।

गुत्तिय वि [गौत्रिक] गोती, समान गोत्र-वाला, गोतिया (कुप्र ३४४)।

गुत्तिवाल देखो गुत्ति-पाल (धर्मवि २६)।

गुत्थ वि [ग्रथित] गुम्फित, गूँथा हुआ (स ३०३, प्राप, गा ६३, कप्पू)।

गुत्थंड पु [दे] भास पक्षी, पक्षि-विशेष (दे २, ६२)।

गुद पुस्त्री [गुद] गाँड, गुदा (दे ६, ४६)।

गुद्दह न [गोद्रह] नगर-विशेष (मोह ८८)।

गुप्प अक [गुप्] व्याकुल होना। गुप्पइ (हे ४, १५०, षड्)। वक्र. गुप्पंत, गुप्पमाण (कुमा ६, १०२, कप्प, औप)।

गुप्प वि [गोप्य] १ छिपाने योग्य। २ न एकान्त, विजन (ठा ४, १)।

गुप्पई स्त्री [गोष्पदी] गौ का पैर डूबे उतना गहरा, 'को उत्तरिउं जलहिं, निब्बुडुए गुप्पई-नीरे' (धम्म १२ टी)।

गुप्पंत न [दे] १ शयनीय, शय्या। २ वि. गोपित, रक्षित (दे २, १०२)। ३ संमूढ, मुग्ध, घबडाया हुआ, व्याकुल (दे २, १०२, से १, २, २, ४)।

गुप्पय देखो गो-पय (सूक्त ११)।

गुप्फ पु [गुल्फ] फीली, पैर की गाँठ (स ३३, हे २, ६०)।

गुफगुमिअ वि [दे] सुगन्धी, सुगन्ध युक्त (दे २, ६३)।

गुब्भ देखो गुप्फ (षड्)।

गुभ सक [गुफ्] गूँथना, गठना। गुभइ (हे १, २३६)।

गुम सक [भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना। गुमइ (हे ४, १६१)।

गुमगुम } अक [गुमगुमाय्] १ 'गुम-
गुमगुमाअ } गुम' आवाज करना। २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना। वक्र गुमगुमंत, गुमगुमिंत, गुमगुमायत (औप, णाया १, १, कप्प, पउम ३३, ६)।

गुमगुमाइय वि [गुमगुमायित] जिसने 'गुम-गुम' आवाज किया हो वह (औप)।

गुमिअ वि [भ्रमित] भ्रमित, घुमाया हुआ (कुमा)।

गुमिल वि [दे] १ मूढ, मुग्ध। २ गहन, गहरा। ३ प्रस्खलित। ४ आपूर्ण, भरपूर (दे २, १०२)।

गुमुगुमुगुम देखो गुमगुम। वक्र गुमुगुमुगुमत, गुमुगुमुगुमेंत (पउम २, ४०, ६२, ६)।

गुम्म अक [मुह्] मुग्ध होना, घबडाना, व्याकुल होना। गुम्मइ (हे ४, २०७))

गुम्म पु [गुल्म] परिवार, परिकर, 'इत्थी-गुम्मसपरिवुडे' (सूअ २, २, ५५)।

गुम्म पुन [गुल्म] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। २ झाडी, वृक्ष-घटा (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोडा और १३५ प्यादा हो ऐसी सेना (पउम ५६, ५)। ४ वृन्द, समूह (औप, सूअ २,२)। ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैनमुनि-समाज का एक अश (औप)। ६ स्थान, जगह (ओघ १६३)।

[illegible]

गुंमइअ वि [दे] ... [illegible]

गुम्मिअ वि [गुल्मित] [illegible]

[illegible]

... विशेष, भक्ति से ऊँचा-नीचा गमन (ठा ८)। °लावय न [°लावक] गायनार, ... और ... (उत्त ८)। °महिम्मल्ला पु [°महाध्यायिक] ... (सूत्र ४)।

गुल्ई देखो गर्डई (गाया १, १)।

गुल्गी स्त्री [गुग्गी] १ ... स्त्री (सुर ११, ...)। २ ... नारी (उप ७२८ टी)।

गुलेंड न [गुलेण्ड] ... -विशेष (दे १, ५४)।

गुल देखो गुड = गुड (ठा ३, १, ६; णाया १ ... ७५४, गउड)।

गुल न [दे] ... (दे २ ६१)।

गुलगुंछ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। गुलगुंछइ (हे ४, १४४)। वकृ गुलगुंछिज्जंत (कुमा)।

गुलगुं... देखो गुलुगुंछ = उद् + नमय्। ... (हे ४ ३६)।

गुलगुल अक [गुलगुलाय्] 'गुलगुल' आवाज करना, हाथी का गर्जना या गाजना। वकृ गुलगुलंत, गुलगुलेंत (उप १०३१ टी, णाया, पउम ८, १०२, ७०)।

गुलगुलाइअ } न [गुलगुलायित] हाथी की
गुलगुलिय } गर्जना (उप ४, सुपा १३७)।

गुलल सक [चाटू + कृ] खुशामद करना। गुलल... (हे ४, ७३)। वकृ गुललंत (कुमा)।

गुलवंचिया स्त्री [गुडवञ्चिका] ... [illegible]। २ ... (... २८, सुपा २०८)।

गुलहाणिया स्त्री [गुडहाणिका] ... विशेष (...)।

[illegible]

गुलुंछ पु [गुलुञ्छ] गुच्छ, गुच्छा (दे २, ६२)।

गुलुगुंछ देखो गुलगुंछ = उत् - क्षिप्। गुलुगुंछइ (हे ४ १४४)।

गुलुगुंछ सक [उत् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। गुलुगुंछइ (हे ४, ३६)।

गुलुगुंछिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नमित (दे २, ६३, कुमा)।

गुलुगुंछिअ वि [दे] वाग् से अन्तरित (दे २ ६३)।

गुलुगुल देखो गुलगुल। गुलुगुलति (भवि)। वकृ गुलुगुलेंत (सि ७५८)।

गुलुगुलाइअ } देखो गुलगुलाइअ (औप,
गुलुगुलिय } पण्ह १, ३, ... ३६६)।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित, घुमाया हुआ (दे २ ६२)।

गुलुच्छ पु [गुलुच्छ] गुच्छा, नवार (पाम)।

गुल्मइय वि [गुल्मवत्] लता-समूहवाला, गुल्म-युक्त (णाया १, १—पत्र ४)।

गुव देखो गुम = गुप्। गुवति (भग १४)।

°गुवउय देखो कुवलय, 'मुद्दियगुवलयविलासं' (सादि)।

गुवालिया [दे] देखो गोआलिआ (जी १८)।

गुविअ वि [गुप्त] व्याकुल, क्षुब्ध (ठा ३ ... —पत्र १६१)।

गुविल वि [गुपिल] १ गहन, गहरा, गाढ, निबिड (सुर ६ ६६ ... पृ ३०, ... १, ३)। २ न ... गहन (उप ८३३ टी)

... ...,
... ... ।
... ...
... ...' (... ८८

गुविल वि [दे] ... हुआ, ... (... ४ ७०)।

गुव्विणी स्त्री [गुर्विणी] गर्भिणी ... ७०७)।

गुह ... गुर ... (हे ४, ३२६)।

गुह ... [गुह] कार्तिकेय, ... (पाअ)।

गुहा स्त्री [गुहा] गुफा, कन्दरा (पाअ ... २, ३, प्रासू ७५)।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा (पाअ ...)

गूढ वि [गूढ] गुप्त, प्रच्छन्न छिपा हुआ (पण्ह १, ४; जो १०)। °दंत पु [°दन्त] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। २ द्वीप-विशेष का निवासी (ठा ४, २)। ३ एक जैन मुनि। ४ अनुत्तरोपपातिक दशा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। ५ भरत क्षेत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

गूह सक [गुह्] छिपाना, गुप्त रखना। वक्र गूहंत (स ६१०)।

गूह न [गूथ] गू, विष्ठा (तंदु)।

गूहण न [गूहन] छिपाना (सम ७१)।

गूहिय वि [गूहित] छिपाया हुआ (स १८६)।

गृण्ह } (अप) देखो गिण्ह। गृन्हइ (कुमा)।
गृन्ह } सकृ. गृण्हेप्पिणु (हे ४, ३६४)।

गेअ वि [गेय] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत (ठा ४, ४—पत्र २८७, वज्जा ४४)। २ न गीत, गान, 'मणहरगेयमुणीए' (सुर ३, ६६, गा ३३४)।

गेठुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र ग्रन्थि (दे २, ६३)।

गेठुल्ल न [दे] कञ्चुक, चोली (दे २, ६४)।

गेड न [दे] देखो गेठुअ (दे २, ६३)।

गेड्डी स्त्री [दे] क्रीडा, खेल, गम्मत, विनोद (दे २,६४)।

गेंदुअ पु [कन्दुक] गेंद, गेंदा खेलने की एक वस्तु (हे १, ५७, १८२, सुर १, १०१)।

गेज्ज वि [दे] मथित, विलोडित (दे २,८८)।

गेज्जल न [दे] ग्रीवा का आभरण (दे २, ६४)।

गेज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य (हे १,७८)।

गेडण न [दे] १ फेंकना, क्षेपण। २ दे देना, 'तत्त बगेडणाकए ससभमा आलमाउ लहु' (उप ६८८ टी)।

गेड्ड न [दे] १ पङ्क, कीच, कादो। २ यव, अन्न-विशेष (दे २, १०४)।

गेड्डी स्त्री [दे] गेडी, गेंद खेलने की लकड़ी (कुमा)।

गेण्ह देखो गिण्ह। गेण्हइ (हे ४, २०६, उव, महा)। भूका गेण्हीअ (कुमा)। भवि गेण्हिस्सइ (महा)। वकृ गेण्हंत, गेण्हमाण (सुर ३,७४, विपा १,१)। सकृ गेण्हित्ता, गेण्हिऊण, गेण्हिअ (भग, पि ५८६, कुमा)। कृ गेण्हियव्व (उत्त १)।

गेण्हण न [ग्रहण] आदान, उपादान, लेना (उप ३३६, स ३७५)।

गेण्हणया स्त्री [ग्रहणा] ग्रहण, आदान (उप ५२६)।

गेण्हाविय वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ (स ५२६, महा)।

गेण्हिअ न [दे] उर -सूत्र, स्तनाच्छादक-वस्त्र (दे २, ६४)।

गेद्ध देखो गिद्ध (औप)।

गेरिअ } पुन [गैरिक] १ गेरु, लाल रङ्ग
गेरुअ } की मिट्टी (स २२३, पि ६०, ११८)। २ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पण्ण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का (कप्पू)। ४ पु. त्रिदण्डी साधु, सांख्य मत का अनुयायी परिव्राजक (पव ६४)।

गेलण्ण } न [ग्लान्य] रोग, बीमारी, ग्लानि
गेलन्न } (विसे ५४०, उप ४६६, ओघ ७७, २२१)।

गेविज्ज }
गेवेज्ज } न [ग्रैवेयक] १ ग्रीवा का आभूषण, गले का गहना (औप, णाया १, २)। २ ग्रैवेयक देवों का विमान (ठा ६)। ३ पुं उत्तम श्रेणी के देवों की एक जाति (कप्प, औप, भग, जी ३३, इक)।
गेवेज्जय }

गेवेय देखो गेवेज्ज (आचा २, १३, १)।

गेह पुन [गेह] घर, 'न नई न वणं न उज्जडो गेहो' (वज्जा ६८)।

गेह न [गेह] गृह, घर, मकान (स्वप्न १६, गउड)। °जामाउय पु [°जामातृक] घर-जमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहनेवाला जामाता (उप पृ ३६६)। °गार वि [°कार] १ घर के आकारवाला। २ पु कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १७)। °लु वि [°वत्] घरवाला, गृही, संसारी (षड्)। °सम पु [°श्रम] गृहस्थाश्रम (पउम ३१, ८३)।

गेहि वि [गृद्ध] लोलुप, अत्यासक्त (ओघ ८७)।

गेहि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति, गार्घ्य, लालच (स ११३, पण्ह १, ३)।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो (णाया १; १४))।

गेहिअ वि [गेहिक] १ घरवाला, गृही। २ पु भर्त्ता, धनी, पति (उत्त २)।

गेहिअ [गृद्धिक] अत्यासक्त, लोलुप, लालची (पण्ह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [गेहिनी] गृहिणी, स्त्री (सुपा ३४१, कुमा, कप्पू)।

गो पु [गो] भूप, राजा, 'तइओ गो भूपपमुर-स्सिणो त्ति' (वव १)। °माहिसक्क न [°माहिषक] गो और भैंस का झुंड या समूह 'निव्वुय गोमाहिसक्क' (स ६८६)।

गो पुं [गो] १ रश्मि, किरण (गउड)। २ स्वर्ग, देव-भूमि (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द। ४ पशु, जानवर। ५ स्त्री गया, 'अपरप्पेरियतिरियानियमियदिग्गमणओणिलो गोव्व' (विसे १७५८, पउम १०३, ५०, सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् (सूअ १, १३)। ७ भूमि, 'जं महइ विभ्भवणगोयराण लोओ पुलिंदाण' (गउड, सुपा १४२)। °आल देखो °वाल (पुप्फ २१६)। °इल्ल वि [°मत्] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गो हों वह (दे २, ६८)। °उल न [°कुल] १ गोओं का समूह (आव ३)। २ गोष्ठ, गो-वाडा, 'सामी गोउलगओ' (आवम)। °उलिय वि [°कुलिक] गो कुलवाला, गो कुल का मालिक, गोवाला (महा)। °किलंजय न [°किलञ्जक] पात्र-विशेष, जिसमें गो को खाना दिया जाता है (भग ७, ८)। °कीड पु [°कीट] पशुओं की मक्खी, बघी (जी १६)। °क्खीर, °खीर न [°क्षीर] गैया का दूध (सम ६०, णाया १, १)। °ग्गह पु [°ग्रह] गाय की चोरी, गो को छीनना (पण्ह १, ३)। °ग्गहण न [°ग्रहण] गो-ग्रहण (णाया १, १८)। °णिसज्जा स्त्री [°निषद्या] आसन विशेष, गौ की तरह बैठना (ठा १, १)। °तित्थ न [°तीर्थ] १ गोओं का तालाब आदि में उतरने का रास्ता, क्रम से नीची जमीन (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरह की एक जगह (ठा १०)। °त्तास वि [°त्रास] १ गोओं को त्रास देनेवाला। २ पु एक कूटग्राह का पुत्र (विपा

१, ८)। °गाम पुं [°ग्राम] १ [illegible] २ [illegible] (ठा ६)। °दोहिया स्त्री [°दोहिका] १ [illegible] का दोहन। २ [illegible] बैठ [illegible] का आसन (ठा ५, १)। °दुह त्रि [°दुह्] गौ को दोहने-वाला [illegible]। °धूलिया स्त्री [°धूलिका] [illegible] 'गोधूलिया' (वज्जा [illegible])। °पय °पयय न [°पद] १ गौ का खुर [illegible] (गउड ६६)। २ [illegible] भूमि [illegible]। ३ गौ का [illegible] ([illegible] १, ८)। °भद्द पुं [°भद्र] [illegible] (ठा १०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] गायों को चरने की [illegible]। °म त्रि [°मत्] गोवाला ([illegible] १८०८)। °मड न [°मृत] गौ का [illegible] १, ११—पत्र १०३)। °मय न [°मय] [illegible], गौ का मल, गो-विष्ठा ([illegible])। °मुत्तिया स्त्री [°मूत्रिका] [illegible] ([illegible] ६४ [illegible])। २ [illegible] ([illegible] ३)। °मुत्ति [illegible] [°मूत्रि] गौ के [illegible] ([illegible] १, १८)। °मेह न [°मेध] [illegible] ([illegible])। °रोयण स्त्री [°रोचन] [illegible] ([illegible] १०३)। स्त्री °णा ([illegible]) [illegible] [°लिका] [illegible] [illegible] [°लोम] [illegible] [illegible] ([illegible] ६३)। २ [illegible] [illegible] १२५)। [illegible] [°वाड] [illegible] ([illegible] १, १४)। °वइ पुं [°वाट] [illegible] [illegible] [°वाल] [illegible] [°साला स्त्री [°साला] [illegible]

गौओं का बाड़ा (निचू ८)। °हण न [°धन] गौओं का समूह (गा ६०६, सुर १, ८६)।

गोअ देखो गोव = गोपय्। कृ गोअणिज्ज (नाट—मालती १२१)।

गोअंट पुं [दे] १ गौ का चरण। २ स्वप्न-शृङ्गाट, स्वप्न में होनेवाला शृङ्गाट या सिघाड़ा का पेड़ (दे २, ६८)।

गोअग्गा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ९६)।

गोअग्गा स्त्री [दे] दूध बेचनेवाली स्त्री (दे २, ६८)।

गोअर पुं [गोचर] छायालय (दस ५ २ २)।

गोअलिणी स्त्री [गोपालिनी] ग्वालिन, 'जो गयणभूमिगोयरम्मि जुण्हादहीय महणेण। पुलिमगोपनिणीए मक्खणपिंडुव्व निम्मविओ।' (धर्मवि ५५)।

गोआ स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी नदी, 'गोआणाअनकुडंगवासिणा दरिसमी-हेला' (गा १७५)।

गोआ स्त्री [दे] गगरी, गगरी, छोटा घड़ा (दे २, ८९)।

गोआअरी स्त्री [गोदावरी] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ३५५)।

गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे २, ६८)।

गोआवरी देखो गोआअरी (हे २, १७४)।

गोउर न [गोपुर] नगर या किले का दरवाजा (मम १३७, सुर १, ५६)।

गोउलिय त्रि [गोकुलिक] गो धन पर नियुक्त पुरुष, गोकुल-रक्षक (सुर ३१)।

गोंजी }
गोंठी } स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर (दे २ ६५)।

गोंड देखो गोड = गौड (उप)।

गोंड न [दे] कानन, उप वनान्त (दे २, ६४)।

गोंडी स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर (दे २, ६५)।

गोंदल देखो गुन्दल (गउड)।

गोंदीणा न [दे] मयूर-शिखा, मोर का शिखा (दे २, ६७)।

गोंफ न [गुल्फ] पादग्रन्थि, पैर की गाँठ (पण्ह १, ४)।

गोकण्ण } पुं [गोकर्ण] १ गौ का कान। २ दो खुरवाला चतुष्पद विशेष
गोकन्न }

(पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष। ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)।

गोकिलिज देखो गो-कलिंजय (राय १४०)।

गोक्खुरय पुं [गोक्षुरक] एक ओषधि का नाम, गोखरू (स २५६)।

गोच्चय पुं [दे] प्राजन-दण्ड, कोड़ा, चाबुक (दे २, ६७)।

गोच्छ देखो गुच्छ (से ६, ४७, गा ५३२)।

गोच्छअ } पुन [गोच्छक] पात्र वगैरह
गोच्छग } साफ करने का वस्त्र-खण्ड (कस; पण्ह २, ५)।

गोच्छड न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (मृच्छ ३४)।

गोच्छा स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर (दे २, ६५)।

गोच्छिय देखो गुच्छिय (औप; णाया १, १)।

गोच्छड देखो गोच्छड (नाट—मृच्छ ४१)।

गोजलोया स्त्री [गोजलौका] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १५)।

गोज्ज पुं [दे] १ शारीरिक दोषवाला बैल (सुपा २८१)। २ गानेवाला, गवैया, गायक, 'वीणावमगाणाह, गोय नहनट्टछत्तगोज्जेहिं। वंदिजणेण महरिस, जयसद्दालायणं च कयं' (पउम ८५, १६)।

गोट्ठ पुं [गोष्ठ] गोवाड़ा, गौओं के रहने का स्थान (महा; पउम १०३, ८०, गा ८८७)।

गोट्ठामाहिल पुं [गोष्ठामाहिल] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश में अबद्ध माननेवाला एक जैनाभास आचार्य (ठा ७)।

गोट्ठि देखो गोट्ठी (आवम)।

गोट्ठिअ } पुं [गोष्ठिक] एक मण्डली में
गोट्ठिग } सदस्य, मित्र, समान-वयस्क दोस्त
गोट्ठिल्लय } (णाया १, १६—पत्र २०५, विपा १, २—पत्र ३७)।

गोट्ठी स्त्री [गोष्ठी] १ मण्डली, समान वय-वालों की सभा (श्रा. दसनि १, णाया १, १६)। २ वार्तालाप, परामर्श (सुपा)।

गोड पुं [गौड] १ देश-विशेष (स २८६)। २ त्रि गौड देश का निवासी (पण्ह १, १)।

गोड पुं [दे] पाद, पाँव, पैर (नाट—मृच्छ १२८)।

गोढा स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ५८, १०३)।

गोडी स्त्री [गौडी] गुड़ की बनी हुई मदिरा, गुड का दारू (बृह २)।

गोडु वि [गौड] १ गुड का बना हुआ। २ मधुर, मीठा (भग १८, ६)।

गोडु [दे] देखो गोड (मृच्छ १२०)।

गोण पु [दे] १ साक्षी (दे २, १०४)। २ बैल, वृषभ, बलीवर्द (दे २, १०४, कुमा, हे २, १७४, सुपा ५४७, औप, दस ५, १, आचा २, ३, ३, उत्त ६०४, विपा १, १)। °वन्त वि [°वत्] गाय वाला, गौओं का मालिक (सुपा ५४७)। °वइ पुस्त्री [°पति] गौओं का मालिक, गौ वाला (सुपा ५४७)।

गोण (शौ) पुन [गो] बैल, 'गोणो, गोणं' (प्राकृ ८८)।

गोण त्रि [गौण] १ गुण निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ (विपा १, २, औप)। २ अप्रधान, अमुख्य (औप)।

गोणगणा स्त्री [गवाङ्गना] गैया, गाय (सुपा ४६५)।

गोणत्त } पुंन [दे] वैद्य का औजार रखने
गोणत्तय } का थैला (उत्त ३१७, स ४८४)।

गोणस पु [गोनस] सर्प की एक जाति, फण-रहित साप की एक जाति (पण्ह १, १, उप पृ ४०३)।

गोणा स्त्री [दे] गाय, गैया, गऊ (षड्)।

गोणिक्क पु [दे] गो-समूह, गौओं का समूह (दे २, ६७, पाअ)।

गोणिय त्रि [दे] गौओं का व्यापारी (वव ६)।

गोणी स्त्री [दे] गाय, गैया (ओघ २३ भा)।

गोण्ण देखो गोण = गोण (कप्प, णाया १, १—पत्र ३७)।

गोतिहाणी स्त्री [दे गोत्रिहायणी] गोवत्सा, गौ की बछड़ी (तदु ३२)।

गोत्त पु [गोत्र] १ पर्वत, पहाड, (श्रा १८)। २ न नाम, अभिधान, आख्या (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है (ठा २, ४)। ४ पुन गोत, वंश, कुल, जाति, 'सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता' (ठा ७)। °क्खलिय न [°स्खलित] नाम-विपर्यास, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण (से ११, १७)। °देवया स्त्री [°देवता] कुल-देवी (श्रा १४)। °फुस्सिया स्त्री [°स्पर्शिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

गोत्त पुन [गोत्र] १ पूर्वज पुरुष के नाम से प्रसिद्ध अपत्य—संतति (णंदि ४६, सुज्ज १०, १६)। २ वि वाणी का रक्षक (सूअ १, १३, ६)।

गोत्ति वि [गोत्रिन्] समान गोत्रवाला, कुटुम्बी, स्वजन (सुपा १०६)।

गोत्ति देखो गुत्ति (स २४२)।

गोत्तिअ त्रि [गोत्रिक] समान गोत्रवाला, स्वजन, भाई-बंद (श्रा २७)।

गोत्थुभ देखो गोथुभ (इक)।

गोत्थूभा देखो गोथूभा (इक)।

गोथुभ } पु [गोस्तूप] १ ग्यारहवें जिन-
गोथूभ } देव का प्रथम-शिष्य (सम १५२, पि २०८)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास पर्वत (सम ६६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर (दीव)। ४ कौस्तुभ-रत्न (सम, १५८)।

गोथूभा स्त्री [गोस्तूपा] १ वापी-विशेष, अंजन पर्वत पर की एक वापी (ठा ३, ३)। २ शक्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)।

गोदा स्त्री [दे गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी (षड्, गा ६५५)।

गोध पुं [गोध] १ म्लेच्छ देश। २ गोध देश का निवासी मनुष्य (राज)।

गोधा स्त्री [गोधा] गोह, हाथ से चलनेवाली एक साँप की जाति (पण्ह १, १, णाया १, ८)।

गोन्न देखो गोण्ण (णाया १, १६—पत्र २००)।

गोपुर देखो गोउर (उत्त ६, अभि १८५)।

गोप्पहेलिया स्त्री [गोप्रहेलिका] गौओं को चरने की जगह (आचा २, १०, २)।

गोफणा स्त्री [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष (राज)।

गोमद्दा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २ ६६)।

गोमाउ } पु [गोमायु] शृगाल, सियार, गीदड
गोमाउ } (नाट—मृच्छ ३२०, पि १६५, णाया १, ४, स २२६, पाअ)।

गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिका] शय्याकार स्थान-विशेष (जीव ३)।

गोमाणसी स्त्री [गोमानसी] ऊपर देखो (जीव ३)।

गोमि } वि [गोमिन्] जिसके पास अनेक
गोमिअ } गो हों वह, (अणु, निचू २)।

गोमिअ देखो गोम्मिअ (राज)।

गोमिआ [दे] देखो गोमा (अणु २१२)।

गोमिक (मा) [गौरवित] सम्मानित (प्राकृ १०१)।

गोमी स्त्री [दे] कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जी १६)।

गोमुह पु [गोमुख] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष (संति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। ३ गोमुख-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। ४ न उपलेपन (दे २, ६८)।

गोमुही स्त्री [गोमुखी] वाद्य-विशेष, (अणु, राय)।

गोमुही [गोमुखी] वाद्य-विशेष (राय ४६, अणु १२८)।

गोमेअ } पु [गोमेद] रत्न की एक जाति,
गोमेज्ज } राहुरत्न (कुमा ७०, उत्त २)।

गोमेह पु [गोमेध] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव (स ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है (पउम ११, ४१)।

गोम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल, नगर-रक्षक (पण्ह १, २)।

गोम्ही देखो गोमी (राज)।

गोय देखो गोत्त (सम ३३, कम्म १)। °वाइ पि [°वादिन्] अपने कुल को उत्तम माननेवाला, वंशाभिमानी (आचा)।

गोय न [दे] उदुम्बर—गूलर वगैरह का फल (आव ६)।

गोय न [गोत्र] मौन, वाक्-संयम (सूअ १, १४, २०)। °वाय पुं [°वाद] गोत्र-सूचक वचन (सूअ १, ६, २७)।

गोयम पु [गोतम] ऋषि-विशेष (ठा ७)। २ छोटा बैल (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष (कप्प, ठा ७)।

[गिर] नदीन नी ... जाति (दस ३)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष, ... °मिग पु [°मृग] १ ... की ... जाति। २ ... (णाया २ ..., १)।

गोरअ देखो गोरव (गा ८८)।

गोरंग वि [गौराङ्ग] गोरा शरीरवाला, गुभ्र शरीरवाला (राज)।

गोरकिर्ड़ी स्त्री [दे] गोआ, गोर जन्तु-विशेष (दे २, ६८)।

गोरडित वि [दे] ... (पड्)।

गोरव न [गौरव] १ महत्त्व, गुरुत्व (प्रासू ३०)। २ आदर, सम्मान, बहुमान (विसे ३४७३, स्वप्न ४३)। ३ गमन, गति (ठा ६)।

गोरविअ वि [गौरवित] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह (पि ८, ४)।

गोरव्व वि [गोरव्य] ... (... ६४ सुर ३७०)।

गोरस पुं [गोरस] दाल, दूध, दही, मट्ठा या ... (णाया १ ८ ठा ४, १)।

गोरस पु [गोरस] ... (गिरि ३४०)।

गोरह पु [दे] ... (आचा २, ४२, ...)।

गोरा स्त्री [दे] ... । २ ... । ३ ग्रीवा, ... (दे २ १०४)।

गोरि देखो गोरी (हे १, ...)।

गोरिय न [गौरिक] [illegible] (उत)।

गोरी स्त्री [गौरी] १ ... (... ३, ६८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी (कुमा सुपा ...)। ३ [illegible] °पुत्त न [°पुत्र] [illegible]

[illegible]

पुरुष का निन्दा गर्भ आमन्त्रण (णाया १, ६)। ३ निपुणता, कठोरता (दस ७)।

गोल पुं [गोल] १ वृत्त-विशेष 'पडमगोल-पिइलटप्रतणिम्मं' (अनु ४८)। २ गोलाकार, वृत्ताकार मण्डलाकार वस्तु (ठा ४ ४ अनु ५)। ३ गोला ... (सुपा ७००)। ४ गेंद, कन्दुक (सुम १ ४)।

गोल पुंस्त्री [दे] गोना, जार से उत्पन्न, कुंड (दस ७, १८)। स्त्री °ली (दस ७, १६)।

गोलग } पु [गोलक] ऊपर देखो (सुम २, गोलय } २, उत पृ ३६२ गल)।

गोलव्वायण न [गोलव्वायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १० १६)।

गोला स्त्री [दे] गा ... (द २ १०४ पात्र)। २ नदी, कोई भी नदी। ३ सखी, सहेली भगिनी (दे २, १०८)। गोदावरी नदी (दे २ १०४, गा ५८, १०५, हेता २६८ ति ८५, १६४ पात्र, षड्)।

गोलिय पु [गोलिक] गुड़ बनानेवाला (बव ६)।

गोलिया स्त्री [दे] १ गोली, गुटिका (गाव, गण)। गेंद, ... 'गोल ... गोलियाए भिन्ना' (... ८)। ३ बड़ा ... पानी (ठा ८)। °लिंड, °लिन्द न [°लिन्द, °लिन्द] १ चुल्ली, चूल्हा। २ अग्नि-विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

गोल्लायण न [गोल्लायन] १ गोत्र-विशेष, ... गोत्र की एक शाखा। २ वि गोल्लायन-गोत्रीय (ठा ७)।

गोली स्त्री [दे] ... या ..., ... (दे २, ६४)।

गोव न [दे] विनीत-गात्र, ... (पाअ २, ८, ...)।

गोव पुं [गोप] १ ... विशेष (पाअम)। २ ... (ठा ...)।

गोव ... [दे] ... (... २, ६५ ...)।

गोव ... [गोपय] १ ... । २ ... (सुपा ३४८, ...)।

कवकृ गोविज्जत (सुपा ३३७, सुर ११, १६२, प्रासू ६५)।

गोव } पु [गोप] गौओं का रक्षक, ग्वाला,
गोवअ } गोपाल (उवा ७, दे २, ५८, कप्पू)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत विशेष, 'गोवगिरिसिहरसठियचरमजिणाययणदारमवग्ढे' (मुणि १०८६७)।

गोवड्ढण देखो गोवद्धण (पि २९१)।

गोवण न [गोपन] १ रक्षण। २ छिपाना (श्रा २८ उप ५९७ टी)।

गोवद्धण पुं [गोवर्धन] १ पर्वत-विशेष (पि २९१)। २ ग्राम विशेष (पउम २०, ११५)।

गोवय वि [गोपक] छिपानेवाला, ढाकनेवाला (सबोध ३४)।

गोवर पुन [दे] गोवर, गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ९६, उप ५९७ टी)।

गोवर पु [गोवर] १ मगध देश का एक गाव, गौतम-स्वामी की जन्मभूमि (श्राक)। २ वणिग्-विशेष (उप ५९७ टी)।

गोवल न [गोवल] १ गोधन, गोकुल, गौओ का समूह, 'रिति गोवलाइ' (सुपा ४३३)। २ गोत्र-विशेष (सुज्ज १०)।

गोवलायण देखो गोवल्लायण (सुज्ज १०)।

गोवलिय पु [गोवलिक] ग्वाला, अहीर (सुपा ४३३)।

गोवल्ल पुन [गोवल्ल] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

गोवल्लायण वि [गोवलायन] १ गोवल्ल गोत्र मे उत्पन्न। २ न गोत्र विशेष (इक)।

गोवा पु [गोपा] गाओं का पालन करनेवाला, ग्वाला (प्रामा)।

गोवाय सक [गोपाय्] १ छिपाना। २ रक्षण करना। वकृ गोवायत (उप ३५७)।

गोवाल पु [गोपाल] गो पालनेवाला, ग्वाला, अहीर (दे २, २८)। °गुज्जरी स्त्री [°गुर्जरी] भैरव रागवाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरो का गीत (कुमा)।

गोवालय पु [गोपालक] ऊपर देखो (पउम ५, ९६)।

गोवालि पु [गोपालिन्] ग्वाला गोप, अहीर (सुपा ४३२, ४३३)।

गोवालिणी स्त्री [गोपालिनी] गोप-स्त्री, अहीरिन, ग्वालि (सुपा ४३२)।

गोवालिय पु [गोपालिक] गोप, अहीर, ग्वाला (सुपा ४३३)।

गोवालिया स्त्री [गोपालिका] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन (णाया १, १६)।

गोवाली स्त्री [गोपाली] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

गोविन्न वि [दे] अजल्पाक, नही बोलनेवाला (दे २, ९७)।

गोविअ वि [गोपित] १ छिपाया हुआ। २ रक्षित (सुर १, ८८, निर १, ३)।

गोविआ स्त्री [गोपिका] गोपागना, अहीरिन (कुमा, गा ११४)।

गोविंद पु [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थकार। २ एक जैनमुनि (पचव, णदि)।

गोविंद पु [गोविन्द] १ विष्णु, कृष्ण। २ एक जैन मुनि (ठा १०)। °णिज्जुत्ति स्त्री [°निर्युक्ति] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ (निचू ११)।

गोविह्न न [दे] कञ्चुक, चोली (दे २, ९४)।

गोवी स्त्री [दे] बाला, कन्या, कुमारी, लडकी (दे २, ९६)।

गोवी स्त्री [गोपी] गोपागना, अहीरिन (सुपा ४३५)।

गोव्वर [दे] देखो गोवर (उप ५६३, ५९७ टी)।

गोस पुन [दे] प्रभात, सुबह, प्रात काल (दे २, ९६, सण, गउड, वव ६, पचव २, पाअ पड्, पव ४)।

गोसविय पु [गोसधित] गोपाल, अहीर (राज)।

गोसग्ग पुन [दे गोसर्ग] प्रात काल, प्रभात (दे २, ९६, पाअ)।

गोसण्ण वि [दे] मूर्ख, वेवकूफ (दे २, ९७, पड्)।

गोसाल } पु व [गोशाल] १ देश-विशेष
गोसालग } (पउम ९८, ६५)। २ पुं भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था (भग १५)।

गोसाविआ स्त्री [दे] १ वेश्या, वारागना (मृच्छ ५५)। २ मूर्ख-जननी (नाट—मृच्छ ७०)।

गोसिय वि [दे] प्राभातिक, प्रात काल-सबन्धी (सण)।

गोसीस न [गोशीर्ष] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष (पण्ह २, ४, ५, कप्प, सुर ४, १४, सण)।

गोह पु [दे] १ गाँव का मुखिया (दे २,८९)। २ भट, सुभट, योद्धा (दे २, ८९, महा)। ३ जार, उपपति (उप पृ २१५)। ४ सिपाही, पुलिस (उप पृ ३३५)। ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य (मृच्छ ५७)।

गोह पु [दे] कोतवाल आदि क्रूर मनुष्य (सुख ३, ९)। २ वि ग्रामीण, ग्राम्य, गँवार या गँवारू, देहाती (सुख २, १३)।

गोहा देखो गोधा (दे २, ७३, भग ८,३)।

गोहिया स्त्री [गोधिका] १ गोधा, गोह, जल-जन्तु-विशेष (सुर १०, १८६)। २ साँप की एक जाति (जीव २)। ३ वाद्य-विशेष (अणु)।

गोहुर न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ९६)।

गोहूम पु [गोधूम] अन्न-विशेष, गेहूँ (कस)।

गोहेर } पु [गोधेर] जन्तु-विशेष, साँप
गोहेरय } की तरह का जानवर (पउम ४८, ९२, ९१)।

°ग्गह देखो गह = ग्रह (गउड)।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण (अभि ५६)।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण (कुमा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे गआराइसद्दसकलणो वारहमो तरगो समत्तो ॥

घ

घ पुं [घ] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राकृ प्रामा)।

घअंद न [दे] मुकुर, दर्पण (षड्)।

घइ (अप) अ पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय (हे ४, ४२४; कुमा)।

घओअ } पुं [घृतोद] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी घी के तुल्य स्वादिष्ट है (सुज ठा ७)। २ मेघ विशेष (तित्थ)। ३ वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय। स्त्री °आ, °दा (जीव ३, राय)।
घओद }

घंघ पुं [दे] गृह, मकान, घर (दे २, १०५)। °साला स्त्री [°शाला] अनाथ मण्डप, भिक्षुका का आश्रय-स्थान (ओघ ६३६, वव ७, पात्र)।

घंघल (अप) न [झकट] १ झगड़ा, कलह (हे ४, ४२२)। २ मोह, घबराहट (कुमा)।

घंघलिअ वि [दे] घबराया हुआ (सिरि ६, धर्मवि १३४)।

घंघोर वि [दे] भ्रमण-शील, भटकनेवाला (दे २, १०६)।

घंचिअ पुं [दे] तेली, तेल निकालनेवाला, [illegible] (सुर १६, १९०)।

घंट पुंस्त्री [घण्ट] घण्टा, कांस्य निर्मित वाद्य-विशेष (विपा १, ८६ अ)। स्त्री °टा (हे १, १९५; राय)।

घंटिअ पुं [घाण्टिक] [illegible] (कप्प १)।

घंटिअ पुं [घाण्टिक] घण्टा बजानेवाला [illegible]।

घंटिआ स्त्री [घण्टिका] १ छोटी घण्टी [illegible]। २ किंकिणी, घुंघरू (सुर १, २४८, [illegible])। ३ [illegible] (णाया १, ८)।

घंस पुं [घर्ष] घर्षण, घिसना (णाया १, १ पत्र ५३)।

घंसण न [घर्षण] [illegible] (पि ४७)।

घंसिअ वि [घर्षित] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ [illegible]।

घग्घुण देखो घे।

घग्घर न [दे] घँघरा, घघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र (दे २ १०७)।

घग्घर पुं [घर्घर] १ शब्द विशेष (गा८००)। २ खोखला गला, 'घग्घरगलम्मि' (दे ६,१७)। ३ खोखला आवाज, 'ग्घमाणी घग्घरेण-सद्देण' (सुर २, ११२)। ४ न श्याढल, शैवाल या सेवार वगैरह का समूह (गउड)।

घट्ट सक [घट्ट्] १ स्पर्श करना, छूना। २ हिलना, चलना। ३ संघर्ष करना। ४ आहत करना। घट्टइ (सुपा ११६)। वकृ घट्टंत (ठा ७)। कवकृ घट्टिज्जंत (से २, ७)।

घट्ट सक [घट्टय्] हिलाना। संकृ घट्टियाण (दस ५, १, ३०)।

घट्ट अक [भ्रंश्] नष्ट होना। घट्टइ (षड्)।

घट्ट पुं [दे] १ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र। २ नदी का घाट। ३ वेणु, वंश, बाँस (दे २, १११)।

घट्ट पुं [घट्ट] १ शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास (देवे)। २ पुन जमाव (श्रा २८)। ३ समूह, जत्था, 'हयघट्टाइं' (सुपा २५६)। ४ वि गाढा, निबिड, 'भूत घट्टतमगहणो' (सुपा ११)।

घट्टसुअ न [दे घटयशुक] वस्त्र विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र (कुमा)।

घट्टण वि [घट्टन] चलाना, हिला देनेवाला (सिरि ६३३)।

घट्टण न [घट्टन] १ छूना, स्पर्श करना। २ चलाना, हिलाना (दस ४)।

घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्र वगैरह को घिसना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर (बृह ३)।

घट्टणया } स्त्री [घट्टना] १ आघात, आहनन (भग ठा ४,४)। २ चलन, हिलन (ओघ ६)। ३ विचार। ४ पृच्छा (बृह ४)। ५ कदर्थना, पीड़ा (आचा)। ६ स्पर्श, छूना (दसनि ११)।
घट्टणा }

घट्टिय देखो घट्ट (गउड)।

घट्टिय वि [घट्टित] १ आहत [illegible] (ज १)। २ प्रेरित, चालित (पण्ह १, ३)। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ (ज १, राय)।

घट्ठ वि [घृष्ट] १ घिसा हुआ (हे २ १७[illegible]) [illegible] ओघ, सम १३७)।

घड सक [घट्] १ चेष्टा करना। [illegible] करना, बनाना। अक परिश्रम करना। [illegible] संगत होना, मिलना। घडइ (हे १, १९५)। वकृ घडंत, घडमाण (से १, ५, निचू १)। कृ घडियव्व (णाया १, १—पत्र ६०)।

घड सक [घटय्] १ मिलाना, जोड़[illegible] संयुक्त करना। २ बनाना, निर्माण करना। ३ संचालन करना। घडेइ (हे ४, ५०)। भवि घडिस्सामि (स ३६४)। वकृ घड[illegible] (सुपा २५५)। संकृ घडिअ (दस ५, १)

घड पुं [घट] घड़ा, कुम्भ, कलश (हे [illegible] १९५)। °कार पुं [°कार] कुम्भकार, मि[illegible] का बरतन बनानेवाला (उप पृ ४१५)। °चेडिया स्त्री [°चेटिका] पानी भरनेवाली दासी, पनहारिन (सुपा ४९०)। °दास [illegible] [°दास] पानी भरनेवाला नौकर, पनि[illegible] आचा)। °दासी स्त्री [°दासी] पानी भर[illegible] वाली, पनिहारी (सुम १, १५)।

घड वि [दे] सुघटित, बनाया हुआ (षड्)।

घडउअ वि [दे] संकुचित (षड्)।

घडग पुं [घटक] छोटा घड़ा (जं २, पाणा)।

घडगार देखो घड-कार (वव १)।

घडचडग पुं [घटचटक] एक हिंसा-प्रधा[illegible] संप्रदाय (मोह १००)।

घडण स्त्री [घटन] १ घटना, प्रसंग ([illegible] १३)। २ मिलाप, संयोग (भिदरा ४६०)।

घडण न [घटन] १ घड़ना या गढ़ना, [illegible] निर्माण (से ७, ७१)। २ यत्न, चेष्टा, [illegible] (भग ५, पाया २, १)।

घडणा स्त्री [घटना] मिलान, मेल, [illegible] (उप १, १, १)।

घडय देखो घडग (जं २)।

घडा स्त्री [घटा] समूह, जत्था (गउड)।

घडाघडी स्त्री [दे] गोष्ठी, सभा, मण्डली (षड्)।
घडाव सक [घटय्] १ बनाना। २ बनवाना। ३ संयुक्त करना मिलाना। घडावइ (हे ४, ३४०)। वकृ घडावित्ता (आवम)।
घडि वि [घटिन्] घटवाला (अणु १४४)।
घडि° स्त्री [घटी] देखो घडिआ = घटिका (आवू ५५)। °मत्त, °मत्तय न [°मात्रक] छोटे घडे के आकार का पात्र-विशेष (राज, कस)। °जंत न [°यन्त्र] रेंट रेहट, पानी निकालने का कल (पाअ)।
घडिअ वि [घटित] १ कृत निर्मित (पाअ)। २ संसक्त संबद्ध, श्लिष्ट मिला हुआ (पाअ, स १६४ ओप, महा)।
घडिअवडा स्त्री [दे] गोष्ठी मण्डली (दे २ १०५)।
घडिआ स्त्री [घटिका] १ छोटा घडा, कलशी (गा ४६०, आ २७)। २ घडी, मुहूर्त (सुपा १०८)। ३ समय बतानेवाला यन्त्र, घटी-यन्त्र, घडी (पाअ)। °लय न [°लय] घण्टागृह, घण्टा बजाने का स्थान (सुर ७, १७)।
घडिआ } स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली (षड्
घडी } दे २, १०५)।
घडिगा देखो घडिआ (सूअ १, ४, २, १४)।
घडी स्त्री [घटी] देखो घडिआ (स २३८, प्रारू)।
घडुक्कय पु [घटोत्कच] भीम का पुत्र (हे ४, २९९)।
घडुब्भव वि [घटोद्भव] १ घट से उत्पन्न। २ पु ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि (प्राप्र)।
घढ न [दे] थूहा, टीला, स्तूप (पाअ)।
घण पु [घन] १ मेघ, बादल (सुर १३, ४५, प्रासू ७२)। २ हथौडा (दे ६, ११)। ३ गणित-विशेष, तीन अंकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है (ठा १०—पत्र ४९६, विसे ३५४०)। ४ वाद्य का शब्द-विशेष, कांस्यताल वगैरह (ठा २, ३)। ५ वि दृढ, ठोस (ओप)। ६ अविरल, निविड, निश्छिद्र, सान्द्र (कुमा, औप)। ७ गाढ, प्रगाढ, 'जाया पीई घणा तेसिं' (उप ५९७ टी)। ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त (राय)। ९ कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान (जी ७, ठा ३, ४)। १० न देवविमान-विशेष (सम ३७)। ११ पिण्ड (सूअ १, १, १)। १२ वाद्य-विशेष (सुज्ज १२)। °उदहि देखो घणोदहि (भग)। °णिचिय वि [°निचित] अत्यन्त निबिड (भग ७, ८, औप)। °तव न [तपस्] तपश्चर्या-विशेष (उत्त ३)। °दंत पु [°दन्त] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। °माल न [°माल] वेताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °मुइंग पु [°मृदङ्ग] मेघ की तरह गम्भीर आवाजवाला वाद्य विशेष (ओप)। °रह पु [°रथ] एक जैन मुनि (पउम २०, १९)। °वाउ पु [°वायु] स्त्यान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है (उत्त ३६)। °वाय पु [°वात] देखो °वाउ (भग, जी ७)। °वाहण पु [°वाहन] विद्याधरों के राजा का नाम (पउम ५, ७७)। °विज्जुआ स्त्री [°विद्युता] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम (इक)। °समय पु [°समय] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु (कुमा पाअ)।
घणंगुल पुन [घनाङ्गुल] परिमाण-विशेष, सूची से गुना हुआ प्रतरांगुल (अणु १५८)।
घणसमद्द पु [घनसमर्द] ज्योतिष-प्रसिद्ध योग विशेष, जिसमें चन्द्र या सूर्य ग्रह अथवा नक्षत्र के बीच में होकर जाता है वह योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।
घणघणाइय न [घनघनायित] रथ की घनघनाहट या गडगडाहट, अव्यक्त शब्द-विशेष (पण्ह १, ३)।
घणवाहि पु [दे] इन्द्र, स्वर्गपति (दे २ १०७)।
घणसार पु [घनसार] कपूर (पाअ, भवि)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (कप्पू)।
घणा स्त्री [घना] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (णाया २, १—पत्र २५१)।
घणा स्त्री [घृणा] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा (प्राप्र)।
घणिय न [घनित] गर्जना, गर्जन (सुज २०)।
घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह (सम ३७)। °वलय न [°वलय] वलयाकार कठिन जल-समूह (पण्ण २)।
घण्ण पु [दे] १ उर, वक्षस् छाती। २ वि रक्त, रगा हुआ (दे २, १०५)। ३ घात्य, मार डालने योग्य (सूत्र कृ० २—७, पत्र ४१०)।
घत्त सक [क्षिप्] १ फेंकना, डालना। २ प्रेरणा। घत्तइ (हे ४, १४)। सकृ अकाओ घत्तिऊण वरवीणं' (पउम ७८, २०, स ३५१)।
घत्त सक [ग्रह्] ग्रहण करना। भवि घत्तिस्सं (प्रयौ ३३)।
घत्त सक [गवेषय्] खोजना, ढूंढना अनु-संधान करना। घत्तइ (हे ४, १८९)। सकृ घत्तिअ (कुमा)।
घत्त सक [यत्] यत्न करना, उद्योग करना। घत्तह (तदु ५६)।
घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य। २ जो मारा जा सके (पि २८१ सूअ २, ७ ९, ८)।
घत्तण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)।
घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द विशेष (पिंग)।
घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द विशेष (पिंग)।
घत्ति अ [दे] शीघ्र जल्दी (प्राकृ ८१)।
घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित (स २०७)।
घत्तु वि [घातुक] मारनेवाला घातक जल्लाद (उत्त १८ ७)।
घत्थ वि [ग्रस्त] गृहीत पकडा हुआ (पिंड ११९)।
घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित (पउम ७२, ५१, पण्ह १, ५)। २ आक्रान्त, अभिभूत (सुपा ३५२ महा)।
घम्म पु [घर्म] घाम, गरमी संताप धूप (दे १, ८७, गा ४१४)। २ पसीना, स्वेद (हे ४, ३२७)।
घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक पृथिवी (ठा ७)।
घम्मोई स्त्री [दे] तृण विशेष (दे २ १०६)।
घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल। २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष। ३ ग्रामणी नामक-तृण (दे २, ११२)।

[illegible]

°सउणि पुं [°शकुनि] पालतू जानवर (वव २)। °समुदाणिय पुं [°समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु (औप)। °सामि [°स्वामिन्] घर का मालिक (हे २, १४४)। °सामिणी स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री (ति ६९)। °सूर [°शूर] अलीक शूर, झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दिखानेवाला (दे)।

घरंगण न [गृहाङ्गण] घर का आँगन, चौक (गा ४४०)।

घरकुडा स्त्री [गृहकुटा] स्त्री शरीर (तदु ८०)।

घरग देखो घर (जीव ३)।

घरघट पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे २, १०७, पाअ)।

घरघरग पुं [दे] गले का आभूषण-विशेष (जं १)।

घरट्ट पुं [घरट्ट] जाता चक्की अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र (गा ८०२, सण)।

घरट्ट पुं [दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा (सिरि १)।

घरट्टी स्त्री [घरट्टी] चक्की, जाता (दे ३, १०)।

घरणी देखो घरिणी। 'स घरवरीए वरीए र' (७२८ टी प्रासू ८५)।

घरयंद पुं [दे] आदर्श, दर्पण, शीशा (दे २, १०७)।

घरम पुं [दे गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम (सूअ ३)।

घरमग देखो घरसग (सण)।

घरिल वि [गृहवत्] घरवाला, गृहस्थ (प्राप ३४)।

घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी (उर ७२८ टी प्रा २ ३८ सुर २ १०० कुमा)।

घरिल्ल पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (गा ७३६)।

घरिल्ली स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, पत्नी (कुमा)।

घरिल्लो स्त्री [दे गृहिणी] गृहिणी, पत्नी (दे २, १०६)।

घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ (उत्त १, १६)।

घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड़ (सण)।

घरोइला स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली, बिस्तुइया (पि १६८)।

घरोल न [दे] गृह-भोजन विशेष (दे २, १०६)।

घरोलिया } स्त्री [दे] गृहगोधिका छिपकली,
घरोली } गुजराती में 'घरोली' (पण्ह १, १, दे २, १०५)।

घलघल पुं [घलघल] 'घल-घल' आवाज, ध्वनि-विशेष (विपा १, ६)।

घल्ल सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, पटकना। घल्लइ, घल्लंति (भवि, हे ४, ३३४, ४२२)।

घल्ल वि [दे] अनुरक्त, प्रेमी (दे २, १०५)।

घल्लय } पुं [दे] त्रीन्द्रिय जीव की एक
घल्लोय } जाति (सुत्त ३६, १३०, उत्त ३६, १३०)।

घल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ (भवि)।

घल्लिअ वि [दे] घटित, निर्मित, किया हुआ, 'अरहट्टेण नेणवि घल्लिओ तिरउसरगणुकयाओ' (सुपा २४६)।

घस सक [घृष्] १ घिसना, रगड़ना। २ मार्जन करना, सफा करना। घसइ (भग, पउ) सक 'घसिऊण अरणिकट्ठ अग्गी पज्जालिओ सए पच्छा' (सुर ७, १८६)।

घस पुंन [दे] १ फटी हुई जमीन, फाटवाली भूमि (आचा २, १०, २)। २ शुषिर भूमि, पोली जमीन। ३ क्षार भूमि (दस ६, ३२)।

घसण देखो घसण (सुपा १०, दे १, १६६)।

घसणिअ वि [दे] अन्विष्ट, गवेषित (षड्)।

घसणी स्त्री [घर्षणी] मर्दन-सेवा देवी सखी (स ३७०)।

घसा स्त्री [दे] १ पोली जमीन। २ भूमि-राजी, लकीर (राज)।

घसिय वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (दस ४)।

घसिर वि [घस्मर] बहु-भक्षक, बहुत खानेवाला (षोप १३ ५ मा)।

घसी स्त्री [दे] १ भूमि-राजि, लकीर। २ नीचे उतरना, अवतरण (राज)।

घसी स्त्री [दे] जमीन का उतार, ढाल (आचा २, १, ४, ३)।

घसुमर वि [घस्मर] खाने की आदतवाला, खाधुक (प्राकृ २८)।

घाइ वि [घातिन्] घातक, नाशक, हिंसक (गा ४३७, विसे १२३८, भग)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म (अत)। °चउक्क न [चतुष्क] पूर्वोक्त चार कर्म (प्रारू)।

घाइअ वि [घातित] १ मारित, विनाशित (णाया १, ८, उव)। २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्यरहित, 'करणाइ घाइयाई जाया अह वेयणा मदा' (सुर ४, २३६)।

घाइआ स्त्री [घातिका] १ विनाश करनेवाली स्त्री, मारनेवाली स्त्री (ज २)। २ घात, हत्या। ३ घाव करना (सुर १६, १५०)।

घाइज्जमाण } देखो घाय = हन्।
घाइयव्व }

घाइयव्व देखो घाय = घातय्।

घाइर वि [घ्रायिन्] सूँघनेवाला (गा ८८६)।

घाउकाम वि [हन्तुकाम] मारने की इच्छावाला (णाया १, १८)।

घाएत देखो घाय = हन्।

घाड अक [भ्रंश्] भ्रष्ट होना, च्युत होना। घाडइ (षड्)।

घाड पु [घाट] १ मित्रता, सौहार्द (बृह णाया १, २)। २ मस्तक के नीचे का भाग (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घाडिय वि [घाटिक] वयस्य, मित्र (णाया १, २ बृह १)।

घाडेरुय पु [दे] खरगोश की एक जाति (?) 'जे तुह संगसुहासारज्जुनिवद्धा दुह मए रुद्धा। घाडेरुयससया इव अववणा ते पलायंति' (उप ७२८ टी)।

घाण पु [दे] १ घानी, कोल्हू, तिल-पीडन-यन्त्र (पिंड)। २ घान, चक्की आदि में एक वार डालने का परिमाण (सुपा १४)।

घाण पुन [घ्राण] नाक, नासिका, 'दो घाणा' (पुएण १५, उप ६४८ टी, दे २, ७६)। °रिस पुन [°र्शस्] नासिका में होनेवाला रोग-विशेष, पीनस (ओघ १८४ भा)।

घाणिंदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका, नाक (उत्त २९)।

घाय सक [हन्] मारना, मार डालना, विनाश करना। वकृ घाएह (उव)। वकृ. 'घाएत रिउभडहवे' (पउम ६०, १७)। घायंत (पउम २४, २६, विसे १७६३)। कवकृ 'से घणे चिलाएण चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाणं पासइ' (णाया १,१८)। वकृ घाइयव्व (पउम ६६, ३४)।

घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना। वकृ घायमाण (सूअ २,१)। कृ घाइयव्व (पउम ६६, ३४)।

घाय पु [घ्रात] गमन, गति (सुज्ज १, १)।

घाय पु [घात] १ प्रहार, चोट, वार (पउम ५६, २५)। २ नरक (सूअ १, ५, १)। ३ हत्या, विनाश, हिंसा (सूअ १, १, २)। ४ ससार (सूअ १, ७)

घायग वि [घातक] मार डालनेवाला, विनाशक (स २६४, सुपा २०७)।

घायण न [हनन] १ हत्या, नाश, हिंसा (सुपा ३४६, द्र २६)। २ वि हिंसक, मार डालनेवाला (स १०८)।

घायण पु [दे] गायक, गवैया (दे २, १०८, हे २, १७४, षड्)।

घायणा स्त्री [हनन] मारना, हिंसा, वध (पण्ह १, १)।

घायय देखो घायग (विसे १७६३, स २६७)।

घायय पु [घातक] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६, ३०)।

घायावणा स्त्री [घातना] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना। २ लूटपाट मचवाना, 'बहुग्गामवायावणाहिं ताविया' (विपा १, ३)।

घार अक [घारय्] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक. विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म. 'घारिज्जंतो य तओ विसेण' (स १८९)। हेकृ घारिज्जिउ (स १८९)।

घार पु [दे] प्राकार, किला, दुर्ग (दे २, १०८)।

घारंत पु [दे] घृतपूर, घेवर, एक प्रकार की मीठाई (दे २, १०८)।

घारण न [घारण] विष की असर से होनेवाली बेचैनी (सुपा १२४)।

घारिय वि [घारित] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो, 'तत्तओ भोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति' (उप ४४२), 'विसवा (? घा) रियम्स जह वा घणचन्दणकामिणीसगो' (उवर ६७), 'विसघारिओ सि धत्तूरिओ सि मोहेण किंव ठगिओ सि' (सुपा १२४, ४४७)।

घारिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं (भवि)।

घारी स्त्री [दे] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष (दे २, १०७, पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

घास सक [घृष्] १ घिसना। २ पीडा करना। कर्म घासइ (सूअ १, १३, १५)।

घास पुं [घास] तृण, पशुओं को खाने का तृण (दे २, ८५, औप)।

घास पु [ग्रास] १ कवल, कौर (औप, उत्त २)। २ आहार, भोजन (आचा, ओघ ३३०)।

घास पु [घर्ष] घर्षण, रगड, 'जो मे उवजिओ इह करुरुहघमणेण चरणघासेण' (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [ग्रासैषणा] आहार विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन (ओघ ३३८)।

घि देखो घे। भवि घिच्छिइ (विसे १०२३)। कर्म. घिप्पंति (प्रासू ४)। सकृ घित्तूण (कुमा ७,४६)। हेकृ. घित्तु (सुपा २०६)। कृ. घित्तव्व (सुर १४, ७७)।

घिअ न [घृत] घी, घीव, आज्य (गा २२)।

घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत, अवधीरित (दे २, १०८)।

घिं° } पु [ग्रीष्म] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म
घिंसु } काल, 'घिंसिसिरवासे' (ओघ ३१० भा, उत्त २, ८, पि ६, १०१)। २ गरमी, अभिताप (सूअ १, ४, २)।

घिट्ट वि [दे] कुब्ज, कूबडा (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगडा हुआ (सुपा २७८, गा ६२६ अ)।

घिणा स्त्री [घृणा] १ जुगुप्सा, अरुचि। २ दया, अनुकम्पा (हे १, १२८)।

घिणिल्ल वि [घृणावत्] घृणावाला, नफरत करनेवाला (पिंड१७६)।

[illegible]

घुगघुगिआ } स्त्री [दे] ग्रीवागर्जित, घुगाहुणी } कानाफूसी (दे २, ११०, नाट)।

घुणिअ वि [घुणित] घुणों से विद्ध, घुना हुआ (सूत्र १)।

घुग्ग देखो घुम्म। वकृ. घुग्गंत (नाट)।

घुण्णिअ वि [घूर्णित] १ घुमा हुआ। २ भ्रान्त भटका हुआ (दे ८, ४६)।

घुत्तिअ वि [दे] गवेषित, अन्वेषित खोजा हुआ (दे २ १०६)।

घुत्त } देखो घुम्म। घुमइ (पिंग)। वकृ. घुम } घुमंत (पउम १ ३)।

घुमघुमिय वि [घुमघुमित] १ जिसने 'घुम-घुम' आवाज किया हो वह। २ न. 'घुम-घुम' ध्वनि 'नट्टवग्गविमुक्कघुमघुमियरवमहंत' (सुपा ५०)।

घुम्म अक [घूर्ण्] घूमना, चक्राकार फिरना। घुम्मइ (हे ४, ११७ षड्)। वकृ. घुम्मंत, घुम्ममाण (हेका ३३. गउड १, ६)। संकृ. घुम्मिऊण (महा)।

घुम्मण न [घूर्णन] चक्राकार भ्रमण (कुमा)।

घुम्मायिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (गउड १२२)।

घुम्मिर वि [घूर्णित] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ (सुपा ६९)।

घुम्मिर वि [घूर्णितृ] घूमनेवाला, फिरनेवाला, चक्राकार घूमनेवाला (सुर १ ६२, गा १८० गउड)।

घुयन पुं [दे] एक जाति का पत्थर, जो पात्र पालिश वा चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है, पत्थर का पानी (विसे)।

घुरघुर देखो घुरघुर। वकृ. घुरघुरंत (भवि १२)।

घुरुक सक [दे] घुरकना, धमकना, गरजना। 'घुरुक्किउ सप्पो' (भवि)।

घुरुक्कार पुं [घुरुक्कार] घुरघुर आदि की आवाज (सिरि १)।

घुरुघुर सक [घुरघुराय्] घुरघुराना, 'घुर-घुर' आवाज करना, श्वान वगैरह का बोलना। घुरघुरंति (सि ४४८)। वकृ. घुरघुरंत (सुपा १०५)।

घुरघुरि पुं [दे] मच्छड़, मेंडक, मेघ, वेग (दे २, १०९)।

घुरुघुरु } देखो घुरघुर। घुरुहुरइ (महा)। घुरुहुर } वकृ. घुरुघुरमाण (महा)।

घुल देखो घुम्म। घुलइ (हे ४, ११७)।

घुलिकि स्त्री [दे] हाथी की आवाज, करि-शब्द (पिंग)।

घुलघुल अक [घुलघुलाय्] 'घुल घुल' आवाज करना। वकृ. घुलघुलायमाण (वि ४४८)।

घुलिअ वि [घूर्णित] चक्राकार घुमा हुआ (कुमा)।

घुल्ला स्त्री [दे] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १)।

घुसण देखो घुसिण (कुमा)।

घुसल सक [मथ्] मथना, विलोडना। घुसलइ (हे ४, १२१)।

घुसलिअ वि [मथित] मथित, विलोडित (कुमा)।

घुसिण न [घुसृण] कुङ्कुम, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, केसर (हे १, १२८)।

घुसिणइ वि [घुसृणवत्] कुङ्कुमवाला, कुङ्कुम-युक्त (कुमा)।

घुसिमिअ वि [दे] गवेषित अन्विष्ट (दे २, १०६)।

घुसिम न [दे] घुसृण, कुङ्कुम (षड्)।

घुसिरसार न [दे] स्नानजल, विवाह के पहले वर के स्नान के पानी मिलाया जाता मधूकादि का मिश्रण, उबटन (दे २, ११०)।

घुसुल देखो घुसल। वकृ. घुसुलंत घुसुलिंत (सिरि ४८७, ४७३)।

घूअ पुंस्त्री [घूक] उल्लू, उल्लू पक्षि-विशेष (गाया १, ८ पउम १०५, ५६)। स्त्री. घूई (विपा १, ३)। °रि पुं [°रि] काक, कौआ, वायस (षड्)।

घूणाग पुं [घूणक] ग्रस्तान्यस्नात प्राणि-विशेष, सर्प विशेष (धातु १)।

घूरा स्त्री [दे] १ जंघा, जांघ। २ खाल्ला, शरीर का अवयव विशेष 'मल्लपाल्या या घुराओ कप्पेंति' (सूअ २, २, ६४)।

घे देखो गह = ग्रह्। घइ (षड्)। संकृ.

घेच्छ (विसे ११२७)। कर्म° घेप्पइ (हे ४, २५६)। कवकृ घेप्पंत, घेप्पमाण (गा ५८१, भग, स १५२)। संकृ. घेऊण घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूण (नाट—मालती ७१, पि ५८४, हे ४, २१०, पि, उव, प्राप्र)। हेकृ घेत्तुं, घेत्तण (हे ४, २१०, पउम, ११८, २४)। कृ. घेत्तव्व (हे ४, २१०, प्राप्र)।

घेउर पुन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष, 'सा भणइ नियगेहेवि हु घयघेउरभोयणं ममा-कुणइ' (सुपा १३)।

घेक्कूण देखो घे।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहणकरने की इच्छावाला (पउम १११, १६)।

घेप्प°, घेप्पंत, घेप्पमाण — देखो घे।

घेवर [दे] देखो घेउर (दे २, १०८)।

घोट्ट, घोट्टय सक [पा] पीना, पान करना। घोट्टइ (हे ४, १०)। वकृ घोट्टयत (स २५७)। हेकृ घोट्टिउ (कुमा)।

घोड देखो घुम्म। घोडइ (से ५, १०)।

घोड, घोडग, घोडय पुस्त्री [घोट, °क] घोडा, अश्व, हय (दे २, १११, ०च ५२, उवा, उप २०८)। २ पु. कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)। °रक्खग पुं [°रक्षक] अश्वपाल, माईस (उप ५९७ टी)। °ग्गीव [°ग्रीव] अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, नृपविशेष (आवम)। °मुह न [°मुख] जैनेतर शास्त्र विशेष (अणु)।

घोडिय पु [दे] मित्र, वयस्य (बृह ५)।

घोडी स्त्री [घोटी] १ घोडी। २ वृक्ष-विशेष, 'सीयल्लिघोडिवच्चूलकयरखइराइसकिएणे' (स २५६)।

घोण न [घोण] घोडे की नाक (सण)।

घोणस पु [घोनस] एक प्रकार का सांप (पउम ३९, १७)।

घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका (पाअ)। २ घोडे की नाक। ३ सूअर का मुख-प्रदेश (से २, ६४, गउड)।

घोर अक [घुर्] निद्रा मे 'घुर-घुर' आवाज करना। घोरंति (गा ८००)। वकृ घोरत (स ४२४, उप १०३१ टी)।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित। २ पु. गीध, पक्षि विशेष (दे २, ११२)।

घोर वि [घोर] भयकर, भयानक, विकट (सूअ १, ५, १, सुपा ३४५, सुर २, २४३, प्रासू १३६)। २ निर्दय, निष्ठुर (पाअ)।

घोरि पु [दे] शलभ पशु की एक जाति (दे २, १११)।

घोल देखो घुम्म। घोलइ (हे ४, ११७)। वकृ. घोलन (कप्प, गा २७१, कुमा)।

घोल सक [घोलय्] १ घिसना, रगडना। २ मिलाना (विसे २०४४, से ४, ५२)।

घोल न [दे] कपडे मे छाना हुआ दही (पभा ३३)।

घोलण न [घोलन] घर्षण, रगड (विसे २०४४)।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरह का पानी की रगड से गोलाकार होना (स ४७)।

घोलवड, घोलवडय न [दे] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य, दहीवडा (पभा ३३, श्रा २०, सुपा ४६५)।

घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ (से ४, ५२)।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल। २ हठ-कृत, बलात्कार (दे २, ११२)।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (पाअ)।

घोलिअ वि [घूर्णित] अत्यन्त लीन, 'अज-रक्खिओ जविएसु अईव घोलिओ' (सुख २, १७)।

घोलिअ वि [घोलित] आम की तरह घोला हुआ (सूअ २, २, ६३)।

घोलिअ वि [घालित] रगडा हुआ, मर्दित (औप)।

घोलिर वि [घूर्णितृ] घूमनेवाला, चक्राकार फिरनेवाला (गा ३३८, स ५७८, गउड)।

घोस सक [घोषय्] १ घोषणा करना, ऊँची आवाज से जाहिर करना। २ घोखना ऊँची आवाज से अध्ययन करना, जोर-जोर से बोल कर पढना या रटना। घोसइ (हे १, २६०, प्रामा)। प्रयो घोसावेइ (भग)।

घोस पुं [घोष] १ ऊँची आवाज (स १०७, कुमा, गा ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरो का महल्ला, अहीर टोली (हे १,२६०)। ३ गोष्ठ, गौओ का वाडा (ठा २,४—पत्र ८६, पाअ)। ४ स्तनितकुमार देवो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष (वव १०)। ६ अनुनाद (भग ६, १)। ७ न देव-विमान विशेष (सम १२, १७)। °सेण पु [°सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म गुरू, एक जैन मुनि (पउम २०, १७६)।

घोस न [घोष] लगातार ग्यारह दिनो का उपवास (सबोध ५८)।

घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज (निचू १)। २ घोषणा, ढिंढोरा पिटवाकर जाहिर करना (राय)।

घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो (णाया १, १३, गा ५२४)।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने का उपकरण-विशेष (अत)।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष (पएण १७—पत्र ५३०)।

घोसाडिया देखो घोसाडई (राय ३१)।

घोसालई, घोसाली स्त्री [दे] शरद् ऋतु मे होने-वाली लता-विशेष (दे २, १११, पएण १—पत्र ३३)।

घोसावग न [घोषण] घोषणा, डोंडी या डुग्गी पिटवा कर जाहिर करना (उप २११ टी)।

घोसिअ वि [घोषित] जाहिर किया हुआ (उव)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि घआराइसद्दसंकलणो तेरहमो तरंगो समत्तो ॥

च

च म [च] [illegible] [illegible] 'गामे [illegible]' ([illegible])।

च [च] [illegible] व्यञ्जन-वर्ण विशेष ([illegible])।

च म [च] [illegible] प्रयुक्त किया जाता [illegible] ([illegible])। [illegible] ([illegible])। [illegible], निश्चय ([illegible])। [illegible]। [illegible], [illegible] ([illegible])। [illegible] ([illegible])।

[illegible] [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [[illegible]] [illegible] हुआ हो, [illegible] ([illegible])।

[illegible] देखो [illegible] ([illegible] १०[illegible] १२६)।

[illegible] [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible]

[illegible]

चौखटा द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढाँचा (निचू १)। °कोण वि [°कोण] चार कोणवाला, चतुरस्र (णाया १, १३)। °ग न देखो चउक्क = चतुष्क (द ३०)। °गइ स्त्री [°गति] नरक, तिर्यंच्, मनुष्य और देव की योनि (पन्न ४, ६६)। °गइअ वि [°गतिक] चारों गति में भ्रमण करनेवाला (श्रा ६)। °गमग न [°गमन] चारों दिशाएँ ([illegible])। °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] चौगुना (हे १, १७१, षड्)। °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] संख्या विशेष, चौआलीस (ना)। °चरण पुं [°चरण] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु (उप ७६८ टी, सुपा ८०६)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)। °ट्ठ देखो °त्थ (हे २, ३३)। °ट्ठाणवडिअ वि [°स्थानपतित] चार प्रकार का (भग)। °णउइ स्त्री [°नवति] संख्या विशेष, चौरानवे, ९४ (वि ४४६)। °णउय वि [°नवत] चौरानवेवाँ, ९४ वाँ (पउम ९४, १०६)। °णवइ देखो °णउइ (सम ९७, श्रा ४४)। °ण्ण ([illegible])। देखो °पन्न ([illegible])। °तिस, °तीस न [°त्रिंशत्] चौंतीस, ३४ (सम, पीव)। °तीसइम देखो °चोत्तीसइम (पउम ३४, ६१)। °तीसा स्त्री देखो °तीस (प्राप्र)। °त्तालीस वि [°चत्वारिंश] चौवालीसवाँ, ४४ वाँ (पउम ४४, ६८)। °त्तीसइम वि [°त्रिंश] १ चौंतीसवाँ ३४ वाँ ([illegible])। २ न लगातार [illegible] दिनों का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °त्थ वि [°र्थ] १ चौथा (हे १, १७१)। २ पुं उपवास (भग)। °त्थभत्त पुं [°चतुर्थभक्त] एक दिन का उपवास ([illegible])। °त्थभत्त न [°भक्त] [illegible] [illegible] ([illegible])। °त्थभत्तिय वि [°भक्तिक] [illegible] उपवास किया हो [illegible] ([illegible])। °त्थमंगल न [°मंगल] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])। °त्थी स्त्री [°र्थी]

१ चौथी। २ सम्प्रदान-विभक्ति चतुर्थी विभक्ति (ठा ८)। ३ तिथि-विशेष (सम ६)। °दंत देखो °द्दंत (राज)। °दस त्रि व [°दशन्] संख्या-विशेष चौदह (नव २, जी ४७)। °दसपुव्वि पुं [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व ग्रन्थों का जानकार मुनि (ओघ २)। °दसम वि देखो °द्दसम (णाया १, १४)। °दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकार से (नव ५)। °दसी स्त्री [°दशी] तिथि विशेष, चतुर्दशी (रयण ७१)। °द्दंत पुं [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी (गप्प)। °द्दस देखो °दस (भग)। °द्दसपुव्वि देखो °दसपुव्वि (भग ५, ४)। °द्दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वाँ (पउम १४,१५८)। २ पुं लगातार छः दिनों का उपवास (भग)। °द्दसी देखो °दसी (कप्प)। °द्दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ ११४ वाँ (पउम ११४, ३५)। °द्दह देखो °द्दस (पि ४४३)। °द्दही देखो °द्दसी (प्राप्र)। °द्दिस, °द्दिसि अ [°दिशम्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में (भग, महा, ठा ४, २)। °द्धा अ [°धा] चार प्रकार का (उत्त)। °नाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत अवधि और मनःपर्यव ज्ञान ([illegible])। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति आदि चार ज्ञानवाला (सुपा ८३, २२०) °पण्ण देखो °पन्न। °पण्णइम वि [°पञ्चाश] १ चौवनवाँ, ५४ वाँ। २ न [illegible] [illegible] [illegible] का उपवास (णाया २—पत्र २५१)। °पन्न, °पन्नास स्त्री [°पञ्चाशत्] चौवन ५४ (पउम २०, ७७ सम ७२, [illegible])। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ (पउम ५४, ४८)। °पय देखो °प्पय (णाया १, ८, जी २१)। °पाड न [°पाट] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])। °पाडा, °प्पाडा स्त्री [°पाटा] १ [illegible] ([illegible])। २ [illegible] [illegible] एक जाति ([illegible])। °प्पई स्त्री [°पदी] देखो °पइया ([illegible] १६०)। °प्पन्न देखो °पन्न ([illegible])। °प्पय त्रि [°पद] १

चौपाया प्राणी, पशु (जी ३१)। २ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। °प्पह पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चोरास्ता (प्रयौ १००)। °प्पुड वि [°पुट] चार पुटवाला, चौसर, चौपड (विपा १, १)। °प्फाल वि [°फाल] देखो °प्पुड (णाया १, १—पत्र ५३)। °ब्बाहु वि [°बाहु] १ चार हाथवाला। २ पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण (नाट)। °ब्भुअ [°भुज] देखो °बाहु (नाट, सूअ १ ३ १)। °भंग पुन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग (ठा ४, १)। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग (भग)। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप (अणु)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपडे के साथ कूटी हुई मिट्टी (निचू १८)। °मंडला न [°मण्डलक] लग्न मण्डप, विवाह-मण्डप (सुपा ६३)। °मासिअ देखो चाउम्मासिअ (श्रा ४७)। °मुह, °म्मुह पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता (पउम ११, ७२, २८, ४८)। २ वि. चार मुँहवाला, चार द्वारवाला (औप, सण)। °वग्ग पुन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय (निचू १५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४ (पि २६५, २७३, सम ७२)। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजेवाला (गृह) (कुमा)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का (वं ३२, नव ८)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौबीस, बीस और चार, २४ (सम ४३, द १, पि ३४)। °वीसइ (अप)। स्त्री [°विंशति] बीस और चार, चौबीस (पि ४४५)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौबीसवाँ (पउम २४, ४०)। २ न ग्यारह दिनों का लगातार उपवास (भग)। °व्वग्ग देखो °वग्ग (आचा २, २)। °व्वार पुंन [°वार] चार वार, चार दफा (हे १, १७१, कुमा)। °व्विह देखो °विह (ठा ४, २)। °व्वीस देखो °वीस (सम ४३)। °व्वीसइम देखो °वीसइम (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार (सम ७१, कप्प)। °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ (पउम ६४, ४७)। °स्सट्ठि देखो °सट्ठि (कप्पू)। °स्साल न [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर (स्वप्न ५१)। °हट्ट, °हट्टय पुन [°हट्ट, °क] चौहट्टा, बाजार (महा, श्रा २७, सुपा ४५५ °हत्तर वि [°सप्तत] चोहत्तरवा, ७४ वा (पउम ७४, ४३)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार (पि २४५, २६४)। °हा अ [°धा] चार प्रकार से (ठा ३, १, जी १६)। देखो चो°।

चउक्क न [चतुष्क] चोकडी, चार वस्तुओं का समूह (सम ४०, सुर १४, ७८, सुपा १४), 'वणणचउक्केण' (श्रा २३)।

चउक्क [दे. चतुष्क] चौक, चौराहा, जहा चार रास्ता मिलता हो वह स्थान, चौमुहानी (दे ३,२, षड्, णाया १, १, औप, कप्प, अणु, बृह १, जीव १, सुर १, ६३, भग)। २ आंगन, प्रागण (सुर ३, ७२)।

चउक्कर पु [दे] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र (दे ३, ५)।

चउक्कर वि [चतुष्कर] चार हाथवाला, चतुर्भुज (उत्त ८)।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किका] आंगन, छोटा चौक (सुर ३, ७२)।

चउज्झाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष (भग ७, ८)।

चउड पु [चोड] देश-विशेष (सम्मत्त ६०)।

चउद देखो चउ-दस (सबोध २३)।

चउद्दह वि [चतुर्दश] चौदहवाँ (प्राकृ ५)। स्त्री °ही (प्राकृ ५)।

चउप्पचम वि [चतुष्पञ्च] चार या पाच (सूअ २, २, २१)।

चउपाडिवय न [चतुष्प्रतिपत्] चार पडवा या परिवा तिथियाँ (पव १०४)।

चउप्पाय पं [चतुष्पाद] एक दिन का उपवास (सबोध ५८)।

चउप्फल वि [चतुष्फल] चौगुना, 'मद्दल-वाय चउप्फललोयं' (सिरि १५७)।

चउबोल स्त्रीन [चौबोल] छन्द-विशेष (पिंग)। स्त्री. °ला (पिंग)।

चउम्मुह पुं [चतुर्मुख] दो दिन का उपवास, वेला (सबोध ५८)।

चउर वि [चतुर] १ निपुण, दक्ष, होशियार (पाअ, वेणी ६६)। २ क्रिवि. निपुणता से होशियारी से, 'केसी गायइ चउर' (ठा ७)।

चउरंग वि [चतुरङ्ग] १ चार अगवाला, चार विभागवाला (सैन्य वगैरह) (सण)। २ न चार अग, चार प्रकार (उत्त ३)।

चउरंगय न [चतुरङ्गक] एक तरह का जुआ (मोह ८६)।

चउरंगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)। स्त्री. °णी (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्तवाला, चार सीमाएँवाला। २ पुं ससार (औप)। स्त्री °ता [°ता] पृथिवी, धरणी (ठा ४, १)।

चउरंत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (चेइय ३४३)।

चउरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोणवाला (भग, आचा, द १२)।

चउरसा स्त्री [चतुरसा] छन्द विशेष (पिंग)।

चउरय पु [दे] चौरा, चबूतरा, गाँव का सभा स्थान (सम १३८ टी)।

चउरस्स देखो चउरंस (विसे २७६७)।

चउरचिंध पु [दे] सातवाहन, राजा शालिवाहन (दे ३, ७)।

चउराणण वि [चतुरानन] १ चार मुँहवाला। २ पु ब्रह्मा, विधाता (गउड)।

चउरासी, चउरासीइ स्त्री [चतुरशीति] सख्या-विशेष, चौरासी, ८४ (जी ४५, सण, उवा, पउम २०, १०३, सम ६०, कप्प)।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ, ८४ वाँ (पउम ८४, १२, कप्प)।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी, 'चउरासीय तु गणहरा तस्स उप्पन्ना' (पउम ४, ३५)।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रियवाला (जन्तु) (भग ठा १, १, जी १८)।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चतुराई, चातुर्य, निपुणता (सट्टि १६)।

चउरिया, चउरी स्त्री [दे] लग्न-मण्डप, मडवा, विवाह-मण्डप, गुजराती मे 'चोरी' (रंभा, सुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसौ चारवाँ, १०४ वाँ (पउम १०४, ३५)।

चउवीस वि [चतुर्विंश] [illegible] ([illegible])।

चउवीसिया स्त्री [चतुर्विंशिका] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [चतुर्वेद] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [चतुर्विंशत्] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [दे] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [चतुर्दश] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [चतुराकार] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] ([illegible])।

[illegible]

चक्कम सक [चङ्क्रम्] देखो चंकम। वह चक्कमंत, चक्कममाण (गा ५६१, ६२३ [illegible] २, ४ [illegible])।

चक्कमण देखो चंकमण (णाया १, १—पत्र ३८)।

चक्कमिअ देखो चंकमिअ (स ११, ६६)।

चगार पुं [चकार] 'च' वर्ण, 'च' अक्षर (ठा १०)।

चंग वि [दे चङ्ग] सुन्दर मनोहर, रम्य (दे ३, १; उप पृ १२६; सुपा १०६, ११ [illegible] प्रासू [illegible])।

चंगिम [दे] अच्छा, ठीक (पव)।

चंगदेव पुं [चङ्गदेव] [illegible] नाम (कुप्र २०)।

चंगेर पुंन [दे] काठ का [illegible] (पणा २, ४, २ ३)।

चंगेरी पुं [दे] [illegible] काठ का बना [illegible] पात्र-विशेष, '[illegible] चंगेरी य' (सम ७)।

चंगिम पुंस्त्री [दे चङ्गिमन्] सुन्दरता सौन्दर्य, श्रेष्ठता, [illegible] (नाट)। स्त्री. °मा ([illegible] १०० [illegible] १८१ सुपा ४ १२३, २६३)।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, चंगेरी, [illegible] [illegible] आदि का [illegible] पात्र-विशेष ([illegible] ७१०, [illegible] १, १)।

[illegible] देखो चड्ड। [illegible] (प्राप ६४)।

चंच पुं [चञ्च] १ [illegible] [illegible] का एक [illegible] ([illegible])। २ [illegible] ([illegible])।

चंचपुड पुं [दे] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] ([illegible] ३, ४)।

[illegible] [चञ्चरीक] [illegible] ([illegible] ६)।

[illegible] वि [चञ्चल] १ [illegible] ([illegible] १)। २ [illegible] ([illegible] ४, ३१)।

[illegible] [चञ्चला] १ [illegible]। २ [illegible]।

चचड्डिअ वि [चञ्चलित] [illegible] किया हुआ 'मणपाणिग्गहंचे (? च) ल्लिमरेसागट' (विक्र २६)।

चंचा स्त्री [चञ्चा] १ तृणपुरुष की चटाई। २ चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी विशेष। ३ घास का पुतला (दीव)।

चंचाल (अप) देखो चंचल (भवि)।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोंच, पक्षी का ठोर (दे ३, २३)।

चंचुच्चिय न [दे चञ्चुरित चञ्चूचित] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल (प्रोप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित ([illegible])।

चंचुय पुं [चञ्चुर] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १)।

चंचुर वि [चञ्चुर] चपल, चञ्चल (सण्)।

चड्ड सक [तक्ष्] छिलना। चड्डइ (पड्)।

चड्ड सक [पिष्] पीसना। चड्डइ (पड्)।

चट्ट देखो चड्ड (दस)।

चंड वि [चण्ड] १ प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र ([illegible])। २ भयानक [illegible] (उत्त २६; [illegible])। ३ अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी (ठा ४, १०; विपा; णाया १, १८)। ४ तेजस्वी, [illegible] ([illegible] पृ ३०१)। ५ पुं [illegible] [illegible] नाम ([illegible] ४ [illegible]; [illegible] [illegible])। °किरण पुं [°किरण] सूर्य, रवि (उप पृ ३३१)। °कोसिय पुं [°कौशिक] [illegible] [illegible] (राज)। °दीव पुं [°द्वीप] [illegible] ([illegible])। °पज्जोअ पुं [°प्रद्योत] [illegible] [illegible] ([illegible])। °भाणु पुं [°भानु] सूर्य, [illegible] ([illegible] १३)। °रुद्द पुं [°रुद्र] [illegible] ([illegible])। °वडिंसय पुं [°वतंसक] [illegible] ([illegible])। °वाय पुं [°वात] [illegible] ([illegible])। °सेण पुं [°सेन] [illegible] ([illegible])। [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])।

चंडण देखो चंदण, 'चडण, चडणो' (प्राकृ १६)।

चडमा पु [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (पिंग)।

चडा स्त्री [चण्डा] १ चमरादि इन्द्रो की मध्यम परिषद् (ठा ३, २, भग ४, १)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (संति १०)।

चडातक न [चण्डातक] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चोला, लहँगा (दे ३, १३)।

चडार पु न [दे] भण्डार, भाण्डागार (कुमा)।

चडाल पुं [चण्डाल] १ वर्णसकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी मे उत्पन्न (आचा सूअ १, ८)। २ डोम (उत १, अणु)।

चडालिअ वि [चाण्डालिक] चण्डाल-सबन्धी, चण्डाल जाति मे उत्पन्न (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

चडिअ वि [दे] कृत, छिन्न, काटा हुआ (दे ३, ३)।

चडिक पु न [दे चाण्डिक्य] रोष, गुस्सा, क्रोध, रौद्रता (दे ३, २, पड्, सम ७१)।

चंडिक्किअ वि [दे चाण्डिक्यित] १ रोष-युक्त रौद्राकारवाला, भयकर (णाया १, १, पण्ह २, २, भग ७, ८, उवा)।

चडिज पु [दे] कोप, क्रोध, गुस्सा। २ वि पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, २०)।

चडिम पुस्त्री [चण्डिमन्] चण्डता, प्रचण्डता (सुपा ६६)।

चडिया स्त्री [चण्डिका] देखो चडी (स २६२, नाट)।

चडिल वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ३, ३)।

चडिल पु [चण्डिल] हजाम, नापित (दे ३, २, पाअ, गा २६१ अ)।

चडी स्त्री [चण्डी] १ क्रोध-युक्त स्त्री, कर्कशा और उग्र स्त्री (गा ६०८)। २ पार्वती, गोरी, शिव-पत्नी (पाअ)। ३ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °देवग वि [°देवक] चण्डी का भक्त (सूअनि ६०)।

चद पु [चन्द्र] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चाद (ठा २, ३, प्रासू १३, ५५, पाअ)। २ नृप-विशेष (उप ७२८ टी)। ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम (से १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। ६ राशि-विशेष (भवि)। ७ आह्लादक वस्तु। ८ कपूर। ६ स्वर्ण, सोना। १० पानी, जल (हे २, १६४)। ११ एक जैन आचार्य (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष (जीव ३)। १३ राधावेध की पुतली का वाय। नयन, आख का गोला (णदि)। १४ न देवविमान-विशेष (सम ८)। १५ रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °अंत देखो °कंत (विक्र १३६)। °उत्त देखो °गुत्त (मुद्रा १६८)। °कंत पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष (स ३६०)। २ न देवविमान-विशेष (सम ८)। ३ त्रि चन्द्र की तरह आह्लादक (आवम)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ नगरी विशेष (उप ६७३)। २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °कूड न [°कूट] १ देवविमान विशेष (सम ८)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °गुत्त पु [°गुप्त] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा (विसे ८६२)। °चार पु [°चार] चन्द्र की गति (चद १०)। °चूड, °चूल पुं [°चूड] विद्याधर वश का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४५, दस)। °च्छाय पु [°च्छाय] अग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (णाया १,८)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम ८)। °णक्खा स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम (पउम १०, १८)। °णह पुं [°नख] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °णही देखो °णक्खा (पउम ७,६८)। °णागरी स्त्री [°नागरी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। °दरिसणिया स्त्री [°दर्शनिका] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य मे किया जाता उत्सव (राज)। °दिण न [°दिन] प्रति-पदादि तिथि (पच ५)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °द्ध न [°ार्ध] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र (जीव ३)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] तप-विशेष (ठा २, ३)। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ (ठा ३, १—पत्र १२६)। °पव्वय पु [°पर्वत] वक्षस्कार पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। °पुर न [°पुर] वेताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्म-भूमि (पउम २०, ३४)। °प्पभ वि [°प्रभ] १ चन्द्र के तुल्य कान्तिवाला। २ पु आठवे जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (पण्ण १)। ४ एक जैन मुनि (दस)। ५ न देवविमान-विशेष (सम ८)। ६ चन्द्र का सिंहासन (णाया २, १)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ मदिरा-विशेष, एक जात का दारू (जीव ३)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)। ४ इस नाम की एक शिविका, जिसमे बैठकर भगवान् शीतलनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे (आवम)। °प्पह देखो °प्पभ (कप्प, सम ४३)। °भागा स्त्री [°भागा] एक नदी (ठा ५, ३)। °मंडल पु न [°मण्डल] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान (ज ७, भग)। २ चन्द्र का बिम्ब (पण्ह १,४)। °मग्ग पु [°मार्ग] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण। २ चन्द्र का मण्डल (सुज ११)। °मणि पु [°मणि] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (विक्र १२६)। °माला स्त्री [°माला] १ चन्द्राकार हार, चन्द्र-हार। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °मालिया स्त्री [°मालिका] वही पूर्वोक्त अर्थ (औप)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुखवाली स्त्री। २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी (पउम १०६, १२)। °रह पु [°रथ] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, १५, ४४)। °रिसि पु [°ऋषि] एक जैन ग्रन्थकार मुनि (पच ५)। °लस न [°लेश्य] देवविमान-विशेष (सम ८)। °लेहा स्त्री [°लेखा] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्रकला। २ एक राज-पत्नी (ती १०)। °वडिसग न [°ावतसक] १ चन्द्र के विमान का नाम (चद १८)। २ देखो चडवडिसग (उत्त १३)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देवविमान (सम ८)। °वयण वि [°वदन] १ चन्द्र के तुल्य आह्लादजनक मुँहवाला। २ पु.

[illegible] °विमाण न [°विमान] [illegible] °सिरि [illegible] °सेण पुं [°सेन] [illegible] °सुंदर पुं [illegible] °लेहा स्त्री [°लेखा] [illegible] °सिंग न [°शृङ्ग] [illegible] °सिट्ठ न [°सिद्ध] [illegible] °सूरदंसणिआ स्त्री [°सूर्यदर्शनिका] [illegible] °सूरि पुं [illegible] °हर पुं [°हार] [illegible] [illegible]

चंदंक पुं [चन्द्राङ्क] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४३)।

चंदग [चन्द्रक] देखो चंद। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध 'चंदगविज्झं लद्धं, केवलसरिसं समाउपरिहीणं' (सुपा १२२, निर ११)।

चंदट्ठिआ स्त्री [दे] १ भुज, शिखर, रथ्या। २ [illegible] (दे ३, ६)।

चंदण पुं [चन्दन] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४३)। २ [illegible] जाति (ठा ३६, ७०)। ३ पुं [illegible] इन्द्रिय जीव-विशेष, [illegible] (उत्त ३६, १३०)।

चंदण पुंन [चन्दन] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़ (प्रासू ६)। २ न सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी (णा ११, ११, है २, १८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन (कुमा)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ [illegible] पर्वत का एक शिखर (ठा)। °कलस पुं [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, मांगलिक घट (धीर)। °घड पुं [°घट] [illegible] (धीर ३)। °बाला स्त्री [°बाला] एक [illegible] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या (पडि)। °वइ पुं [°पति] [illegible] राजा (उप ६८८ टी)।

चंदणग पुंन [चन्दनक] १ [illegible]। २ पुं [illegible] [illegible] (पण्ण १, १, [illegible] १५)।

चंदणा स्त्री [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, [illegible] (पव [illegible])।

[illegible] [दे] [illegible]। °[illegible] न [°[illegible]] [illegible] (आचा २, १, ६, २)।

[illegible] [दे] [illegible] (कुमा)।

चंदमस पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (प्राप्र)।

[illegible] (पणण ११, ३५)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ३, ३)।

[illegible] [°चन्द्रा] [illegible] (अनु ५)।

चंदाअव पुं [चन्द्रातप] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा, चाँदनी (से १, २७)। देखो चंदायव।

चंदाणण पुं [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिनदेव (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [चन्द्रानना] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करनेवाली, चन्द्रमुखी। २ शाश्वती जिन-प्रतिमा विशेष (ठा १, १)।

चंदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। २ पुं आठवाँ जिनदेव, चन्द्रप्रभ स्वामी (आव २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार (पउम ३, ५५)। ४ न एक देवविमान (सम १४)।

चंदायण न [चान्द्रायण] व्रत-विशेष, जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन में और घटाने-बढ़ाते पड़ते हैं (पंचा १६)।

चंदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छह छह मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन (जो ११)।

चंदायव देखो चंदाअव। १ [illegible] विशेष, वितान, चंदवा (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [दे] ताम्र का भाजन विशेष (सूय १, ४, २)।

चंदावत्त न [चन्द्रावर्त्त] एक देवविमान (सम ८)।

चंदाविज्झय देखो चंदग-विज्झ (णंदि)।

चंदिज वि [चान्द्रिक] चन्द्र का, चन्द्र-संबन्धी (पव १५१)।

चंदिआ स्त्री [चन्द्रिका] चाँदनी, चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना (है १, २, गा ७७)।

चंदिओज्जलिय वि [दे. चन्द्रिकोज्ज्वलित] चन्द्र-कान्ति से उज्ज्वल बना हुआ (पंचा)।

चंदिण न [दे] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] (वा १०)।

चंदिम देखो चंदम (ठा [illegible])। २ [illegible] (पव २)।

चंदिमा स्त्री [चन्द्रिमा] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना, चाँदनी (से १ १८५)।

चंदिमाइअ न [दे] [illegible]

चंदिल पुं [चन्दिल] नापित, हजाम (गा २६१, दे ३, २)।

चंदुत्तरवडिंसग न [चन्द्रोत्तरावतंसक] एक देवविमान (सम ८)।

चंदेरी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (ती ४५)।

चंदोज्ज } न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी
चंदोज्जय } कमल (दे ३, ४)।

चंदोत्तरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ५—पत्र ६०)।

चंदोयर पुं [चन्द्रोदर] एक राज-कुमार (धम्म)।

चंदोवग न [चन्द्रोपक] सन्यासी का एक उपकरण (ठा ४, २)।

चंदोवराग पु [चन्द्रोपराग] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण, राहु-ग्रास (ठा १०, भग ३, ६)।

चंद्र देखो चंद (हे २, ८०, कुमा)।

चंप सक [दे] चांपना, दावना दवाना। चंपइ (आरा २५)। कर्म चंपिज्जइ (हे ४, ३९५)।

चंप सक [चर्च्] चर्चा करना। चंपइ (प्राप्र)। संकृ. चंपिऊण (वज्जा ६४)।

चंप सक [आ + रुह्] चढ़ना। चंपइ (प्राकृ ७३)।

चंप देखो चंपय (राय ३०)।

चंपग पुंन [चम्पक] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

चंपग देखो चंपय, 'असुइट्ठाणे पडिया, चंपगमाला न कीरइ सीसे' (आव ३)।

चंपडण न [दे] प्रहार, आघात, 'सरभसचलतविग्गडगुडिअगयघसिधुरणिवहचलणचंपडणमुप्पइआ .धूलीजालोली' (विक्र ८४)।

चंपण न [दे] चांपना, दवाना (उप १३७ टी)।

चंपय पु [चंपक] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड (स १५२, भग)। २ देव-विशेष (जीव ३)। ३ न चम्पा का फूल (कुमा)। °माला स्त्री [°माला] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ चम्पा के फूलों का हार (आव ३)। °लया स्त्री [°लता] १ लताकार चम्पक वृक्ष। २ चम्पक वृक्ष की शाखा (ज १, औप)। °वण न [°वन] चम्पक वृक्षों की प्रधानतावाला वन (भग)।

चंपयवडिंसअ पु [चम्पकावतंसक] सौधर्म देवलोक में स्थित एक विमान (राय ५९)।

चंपा स्त्री [चम्पा] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष, जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं (विपा १, १, कप्प) °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पउम ८, १५६)।

चंपा स्त्री देखो चंपय। °कुसुम न [°कुसुम] चम्पा का फूल (राय)। °वण्ण वि [°वर्ण] चम्पा के फूल के तुल्य रंगवाला, सुवर्ण-वर्ण। स्त्री °ण्णी (अप) (हे ४, ३३०)।

चंपारण (अप) पु [चम्पारण्य] १ देश-विशेष, चंपारन, तिरहुत कमिश्नरी (विहार) का एक जिला। २ चंपारन का निवासी (पिंग)।

चंपिअ वि [दे] चांपा हुआ, दवाया हुआ, मर्दित (सुपा १३७, १३८)।

चंपिअ न [दे] आक्रमण, दवाव (तंदु ४४)।

चंपिज्जिया स्त्री [चम्पीया] जैन मुनिगण की एक शाखा (कप्प)।

चंभ पुं [दे] हल से विदारित भूमि-रेखा (दे ३, १)।

चकप्पा स्त्री [दे] त्वक्, त्वचा, चमडी (दे ३, ३)।

चकिंद देखो चइंद (कुमा)।

चकोर पुस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी (सुपा ४५७)। स्त्री. °री (रयण ४६)।

चक्क पुं [चक्र] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षि (पात्र, कुमा, सण), 'तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो' (उप ७२८ टी)। २ न गाडी का पहिया (पण्ह १, १)। ३ समूह (सुपा १५०, कुमा)। ४ अस्त्र-विशेष (पउम ७२, ३१, कुमा)। ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष (औप)। ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष (णाया १, १, औप)। °कंत पु [°कान्त] देव-विशेष, स्वयम्भूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव (दीव)। °जोहि पु [°योधिन्] १ चक्र से लडनेवाला योद्धा (ठा ९)। २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा (आव १)। °ज्झय पु [°ध्वज] चक्र के निशानवाली ध्वजा (जं १)। °पहु पु [°प्रभु] चक्रवर्त्ती राजा (सण)। °पाणि पु [°पाणि] १ चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा (पउम ७३, ३)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २,३, इक)। °प्पहु देखो °पहु (सण)। °यर पु [°चर] भिक्षुक, भीखमंगा (उप ६१७)। °रयण न [°रत्न] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्त्ती राजा का मुख्य आयुध (पण्ह १,४)। °वइ पुं [°पति] सम्राट् (पिंग)। °वइ, °वट्टि पु [°वर्तिन्] छ खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् (पिंग, सण, ठा ३, १, पडि, प्रासू १७५)। °वट्टित्त न [°वर्तित्व] सम्राट्पन, साम्राज्य (सुर ४, ९१)। °वत्ति देखो °वट्टि (पि २८९)। °विजय पुं [°विजय] चक्रवर्त्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष (ठा ८)। °साला स्त्री [शाला] वह मकान, जहां तिल पेरा जाता हो, तैलिक गृह (वव १०)। °सुह पु [°शुभ, °सुख] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव (दीव)। °सेण पु [°सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (दंस)। °हर पु [°धर] १ चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट् (सम १२६, पउम २, ८५, ४, ३६, कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा (राज)।

चक्क न [चक्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)।

चक्कआअ देखो चक्कवाय (पि ८२)।

चक्कंग पु [चक्राङ्ग] पक्षि-विशेष (सुपा ३४)।

चक्कणभय न [दे] नारंगी का फल (दे ३, ७)।

चक्कणाहय न [दे] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल (दे ३, ६)।

चक्कम } अक [भ्रम्] घूमना, भटकना,
चक्कम्म } भ्रमण करना। चक्कमइ (दे २, ६)। चक्कम्मइ (हे ४, १६१)। वकृ. चक्कमंत (स ६१०)।

चक्कम्मविअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (कुमा)।

चक्कय देखो चक्क (पण्ण १)।

चक्कल न [दे] कुण्डल, कर्ण का आभूषण। २ दोलाफलक, हिंडोला का पटिया (दे ३, २०)। ३ वि वर्त्तुल, गोलाकार पदार्थ (दे

[illegible]

चक्खि } वि [चक्षित चक्खित] १ चख-
चक्खिय } [illegible] । २ पुं
चक्रवर्ती राजा, सम्राट् [illegible] । ३ [illegible]
[illegible] (गाथा ११) ।
°साला स्त्री [°शाला] तेल बनाने की दुकान
[illegible] ।

चखिय वि [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] ।

[illegible] [चाक्रिक] [illegible]
[illegible] जाति [illegible]
[illegible] ।

चक्खिगा [illegible] [illegible]
[illegible] ।

चक्की स्त्री [चक्र] [illegible] ।

चक्कुज्जा स्त्री [दे] [illegible] एक जाति [illegible] ।

चक्केसर पुं [चक्रेश्वर] १ चक्रवर्ती राजा
[illegible]

[illegible]

चक्खु पुंन [चक्षुष्] १ आँख, नेत्र, चक्षु
(हे १, ३३; कुमा; सम १) । २
पुं. इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम
३, ५३) । ३ न देखा जाने [illegible] (कम्म
३, [illegible], ४, [illegible]) । ४ ज्ञान, बोध (ठा ३,
४) । ५ दर्शन, अवलोकन (आचा) । °कंत
पुं [°कान्त] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का
अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °कंता स्त्री
[°कान्ता] एक कुलकर पुरुष की पत्नी
(सम १५०) । °दंसण न [°दर्शन] चक्षु
से [illegible] सामान्य ज्ञान (सम १५) ।
°दंसणपडिमा स्त्री [°दर्शनप्रतिमा] [illegible]
[illegible] नयनेन्द्रिय [illegible]
(निर ८, आचा २, २) । °दय वि [°दय]
ज्ञान-दाता (सम १, पडि) । °पडिलेहा स्त्री
[°प्रतिलेखा] आँख से देखना (निर १) ।
°परिन्नाण न [°परिज्ञान] [illegible]
ज्ञान, आँख से होनेवाला ज्ञान (आचा) । °पह
पुं [°पथ] नेत्र मार्ग, नयन-गोचर (पण्ह
१, ३) । °फास पुं [°स्पर्श] दर्शन, अव-
लोकन (औप) । °भीय वि [°भीत]
अवलोकन मात्र से [illegible] (आचा) ।
°म, °मंत वि [°मत्] १ [illegible],
[illegible] । २ पुं. एक कुलकर पुरुष
का नाम (सम १५०) । °लोल वि [°लोल]
[illegible], जिसकी चक्षुरिन्द्रिय संवृत
न हो [illegible] । °लोलुय वि [°लोलुप]
[illegible] । °लोयणलेस्स वि
[°लोचनलेश्य] सुन्दर, सुन्दर [illegible]
[illegible] । °विसय [illegible]
[illegible] [illegible]

चक्खुरक्खणी [illegible] [illegible]

[illegible]

चञ्च सक [चर्च्] चन्दन आदि का विलेपन करना। चच्चेई (वर्मवि १५)।

चञ्च पु [चर्च] हेमाचार्य के पिता का नाम (कुप्र २०)।

चञ्च पुं [चर्च] समालम्भन, चन्दन वगैरह का शरीर मे उपलेप (दे ६, ७६)।

चञ्चर न [चत्वर] चौहट्टा, चौरास्ता, चौराहा, चौक (णाया ११, पण्ह १,३, सुर १,६२, (हे २, १२ कुमा)।

चञ्चरिअ पु [दे चञ्चरीक] भ्रमर, भौरा (पड्)।

चञ्चरिया स्त्री [चर्चरिका] १ नृत्य-विशेष (रंभा)। २ देखो चच्चरी (स ३०७)।

चञ्चरी स्त्री [चर्चरी] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान, 'वित्थरियचच्चरीरवमुहरियउज्जाणभूभागे' (सुर ३,५४), 'पारमियचच्चरीगीया' (सुपा ५५)। २ गानेवाली टोली, गानेवालों का यूथ, 'पवत्ते मयणमहूसवे निग्गयासु विचित्तवेसासु नयरचच्चरीसु' 'कह नीयचच्चरी अम्हाण चच्चरीए समाणन्न परिव्वयउ' (स ४२)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ हाथ की ताली की आवाज (आव १)।

चञ्चसा स्त्री [दे] वाद्य-विशेष 'अट्ठुसय चच्चसाण, अट्ठसय चच्चसावायगाण' (राय)।

चञ्चा स्त्री [दे] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन (दे ३, १६, पाअ, जं १, णाया १, १, राय)। २ तल प्रहार, हाथ की ताली (दे ३, १६, पड्)।

चञ्चार सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना। चच्चारइ (पड्)।

चञ्चिक्क वि [दे] १ मण्डित, विभूषित, 'चदुज्जयचच्चिक्का दिसाउ' (दे ३, ४), 'तणुप्पहापटलचच्चिक्को' (धम्म ६ टी), 'साहू गुणरयणचच्चिक्का' (चउ ३६)। २ पुन, विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना (हे २, ७४), 'चच्चिक्को' (पड्), 'कुंकुमचच्चिक्कछुरियंगो' (पउम २८, २८ टी), 'पेच्छइ सुवन्नकलस सुरचदणपंकचच्चिक्क' (उप ७६८ टी), 'घणलेहिदपंकचच्चिक्को' (मृच्छ ११०)।

चञ्चिय वि [चर्चित] विलिप्त (चेइय ८४५)।

चञ्चुप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, देना। चच्चुप्पइ (हे ४, ३६)।

चच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। चच्छइ (हे ४, १९४)।

चच्छिअ वि [तष्ट] छिला हुआ (कुमा)।

चज्ज सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। चज्जइ (दे ३, ४, पड्)।

चज्जा स्त्री [चर्या] १ आचरण, वर्तन। २ चलन, गमन। ३ परिभाषा, सकेत (विसे २०४४)।

चज्जिय वि [दृष्ट] अवलोकित, देखा हुआ (महा)।

चट्टुअ देखो चट्टुअ (गा १६२)।

चट्ट सक [दे] चाटना, अवलेह करना, 'न य अलोणियं सिल कोइ चट्टेइ' (महा)।

चट्ट पु न [दे] १ भूख, बुभुक्षा, 'जीवंति उदहिपडिआ, चट्टुच्छिन्ना न जीवंति' (सूक्त ७०)। २ पु चट्टा, विद्यार्थी। °साला स्त्री [°शाला] चटशाला, चटसार, छोटे बालको की पाठशाला (बृह १)।

चट्टि वि [चट्टिन्] चाटनेवाला (कप्पू)।

चट्टु, चट्टुअ, चट्टुल पु [दे] दारु-हस्त, काठ की कलछी, परोसने का पात्र-विशेष (दे ३, १, गा १६२ अ)।

चड सक [आ + रुह्] चढना, ऊपर बैठना, आरूढ होना। चडइ (हे ४, २०६)। सकृ चडिउ, चडिऊण (सुपा ११४, कुमा)।

चड पु [दे] शिखा, चोटी (दे ३, १)।

चडक्क पुं न [दे] १ चटत्कार, चटका (हे ४, ४०६, भवि)। २ शस्त्र-विशेष (पउम ७, २६)।

चडकारि वि [चटत्कारिन्] 'चटत्' शब्द करनेवाला (पवन आदि) (गउड)।

चडग देखो चडय (पणण १)।

चडगर पु [दे] १ समूह, यूथ, जत्था (पउम ६०, १५, णाया १, १—पत्र ४६)। २ आडम्बर, आटोप, 'महया चडगरत्तणेण अत्थकहा हणइ' (दसनि ३)।

चडचड पु [चडचड] 'चड-चड' आवाज (विपा १, ६)।

चडचडचड अक [चडचडाय्] 'चड-चड' आवाज करना। चडचडचडति (विपा १, ६)।

चडड पु [चटट] ध्वनि-विशेष, बिजली के गिरने की आवाज (सुर २, ११०)।

चडण न [आरोहण] चढना, ऊपर बैठना (आ १४, प्रासू १०१, उप ७२८ टी, ओघ ३०, सट्ठि १४२, वज्जा ७४)।

चडपड अक [दे] चटपटाना, छटपटाना, क्लेश पाना। वकृ. चडपडंत (मुद्रा ७२)।

चडय पु स्त्री [चटक] पक्षि-विशेष, गोरैया पक्षी (दे २, १०७)। स्त्री °या (दे ८, ३६)।

चडवेला स्त्री देखो चवेडा (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

चडावण न [आरोहण] चढ़ना (उप १५२)।

चडाविय वि [आरोहित] चढाया हुआ, ऊपर स्थापित, 'रणखभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०६०१, सुर १३, ३६ महा)।

चडाविय वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'चाउद्दिसिंपि तेणं चडाविय साहणं तओ सोवि' (सुपा ३६५)।

चडिअ वि [आरूढ] चढा हुआ, आरूढ (सुपा १३७, १५३, १५६, हे ४, ४४५)।

चडिआर पु [दे] आटोप, आडम्बर (दे ३, ५)।

चडु पु [चटु] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य। २ व्रती का एक आसन। ३ उदर, पेट। ४ पु न प्रिय सभाषण, खुशामद (हे १, ६७, प्राप्र)। °आर वि [°कार] खुशामद करनेवाला, खुशामदी (पण्ह १, ३)। °आरअ वि [°कारक] खुशामदी (गा ६०५)।

चडुकारि वि [चटुकारिन्] खुशामदी (पिंड ४१४)।

चडुत्तरिया स्त्री [दे] १ उत्तरचढ। २ वाद-विवाद (मोह ७)।

चडुयारि देखो चडुकारि (पिंड ४८६)।

चडुल वि [चटुल] १ चचल, चपल (से २, ४५, पउम ४२, १६)। २ कपवाला, हिलता हुआ (से १, ५२)।

चडुलग वि [दे चटुलक] खण्ड-खण्ड किया हुआ, 'विदुलगचडुलगछिन्ने' (सूअनि ७१)।

[illegible]

चत्तूर [दे] गड्डू, गडुआ, शूर बनाने का पात्र, हथौड़ा (दे ३, १ धर्म २)।

चत्त वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त (पउम २, १ सुपा १, १६)। २ सूत की पाँडी (उत्तरज्झा० ८०, १)।

चत्तर देखो चच्चर (वि २६६, नाट)।

चत्ता देखो चत्तालीसा (उवा)।

चत्ता स्त्री [चर्चा] १ शरीर पर सुगन्धी वस्तु का विलेपन। २ विचार, चर्चा (प्राप्र ३८)।

चत्ताल वि [चत्वारिंश] चालीसवाँ (पउम ४०, १८)।

चत्तालीस न [चत्वारिंशत्] १ चालीस, ४०, 'चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्तां' (सम ६६ कप्प)। २ वि चालीस वर्ष की उम्रवाला, 'चत्तालीसस्स बिलाइ' (तंदु)।

चत्तालीसा स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस ४०, 'तीसा चत्तालीसा' (पणु २)।

चत्थरि पुंस्त्री [दे चत्थरि] हास, हास्य (दे ३, २)।

चपेटा स्त्री [दे चपेटा] तमाचा, थप्पड़, तमाचा (पड्)।

चप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दबाना। कृ चप्पियव्व (भवि)।

चप्पल सक [चर्व्] १ चबाना, चर्चना। २ कहना। ३ आरोप करना। ४ उबटा आदि से विलेपन करना। संकृ (प्राकृ ७४ कुमा ३४)।

[illegible] न [दे] चाटुकार मिथ्या (पउम १ ३—पत्र ५३)।

[illegible] न [दे] विस्तार, विस्तृत (दे ६)।

[illegible] वि [दे] १ व्याप्त, भूत (सुपा ८, ३६)। २ बहु-चित्त वाली कूड, कूड़ नहीं (पड्)।

[illegible] वि [आक्रान्त] आक्रान्त दबाया हुआ (भवि)।

चप्पुडिया स्त्री [चप्पुटिका] चुटकी, चप्पुडी [illegible] (पउम १, ३—पत्र ४८, ८४)।

[illegible]

चमक्क पुं [चमत्कार] विस्मय, आश्चर्य, 'बलरिगलन्तचमक्को' (धम्म ६ टी, उप ७६८ टी)। °यर वि [°कर] विस्मय-जनक (सुपा)।

चमक्क } सक [चमत् + कृ] विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना। चमक्केइ, चमक्कंति (सिरि ४३, ४८) वकृ चमक्करंत (सिरि ६६)।
चमक्कर }

चमक्कार पुं [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय (सुर १०, ८, वज्जा २४)।

चमक्किअ वि [चमत्कृत] विस्मित, आश्चर्यान्वित (सुपा १२२)।

चमट } सक [भुज्] भोजन करना, खाना। चमढइ (षड्) चमढइ (हे ४, ११०)।
चमढ }

चमढ सक [दे] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थना करना, पीड़ना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ उद्विग्न करना, खिन्न करना। कवकृ चमढिज्जंत (ओघ १२८ भा वृह १)।

चमढण न [भोजन] खाना, भोजन (कुमा)।

चमढण न [दे] १ मर्दन, मसलन (ओघ १८७ भा स २२)। २ आक्रमण (स ४७६)। ३ कदर्थन, पीडन। ४ प्रहार (पिंड १६०)। ५ निन्दा, गर्हा (धर्म ७६)। ६ वि [illegible] (धर्म २२७)।

चमढणा स्त्री [दे] ऊपर देखो (वृह १)।

चमढिअ वि [दे] मर्दित, विनाशित (उप २)।

चमर पुं [चमर] दक्षिण दिशा के असुरकुमार देवों का इन्द्र, [illegible] (पउम ६, १०७, सम १, १)। [illegible] विशेष (पउम १२२)। ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमार का [illegible] (ठा ३, १)। °पुर न [°पुर] [illegible]

चमर पुंन [चामर] चँवर, चामर, [illegible] (से १, ६२)। °धारी, °हारी स्त्री

[°धारिणी] चामर वीजने या डोलानेवाली स्त्री (सुपा ३३६, सुर १०, १५७)।

चमरी स्त्री [चमरी] चमर-पशु की मादा, सुरही गाय (से ७, ४८; स ४४१; ओप, महा)।

चमस पुन [चमस] चमचा, कलछी, दर्वी (औप, महा)।

चमुक्कार पु [चमत्कार] १ आश्चर्य विस्मय, 'पेच्छागयमुरकिन्नरचित्तचमुक्कारकारय' (सुर १३ ६७)। २ बिजली का प्रकाश 'ताव य विज्जुचमुक्कारएगनर चडचडडमसद्दो' (सुर २, ११०)।

चमू स्त्री [चमू] १ सेना, सैन्य, लश्कर (आवम)। २ सेना-विशेष, जिसमे ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हो ऐसा लश्कर (पउम ५६, ६)।

चम्म न [चर्मन्] छाल, त्वक्, चमडा, खाल (हे १ ३२, स्वप्न ७०, प्रासू १८१)। °किड वि [°किट] चमडे से सीआ हुआ (भग १३, ६)। °कोम, °कोसय पु [°कोश, °क] १ चमडे का बना हुआ थैला २ एक तरह का चमडे का जूता (ओघ ७२८, आचा २, २, ३, वव ८)। °कोसिया स्त्री [°कोशिका] चमडे की बनी हुई थैली (सूअ २, २)। °खंडिय वि [°खण्डिक] १ चमडे का परिधानवाला। २ सब उपकरण चमडे का ही रखनेवाला (णाया १, १५)। °ग वि [°क] चमडे का बना हुआ चर्ममय (सूअ २, २)। °पक्खि पु [°पक्षिन्] चमडे की पाखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °पट्ट पु [°पट्ट] चमडे का पट्टा, वध्र' (विपा १, ६)। °पाय न [°पात्र] चमडे का पात्र (आचा २, ६, १)। °यर पु [°कर] मोची, चमार (स २ ६, दे २, ३७)। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिसमे सुबह मे बोये हुए शालि वगैरह उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते है (पव २१२)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (भग ८, ३)।

चम्मट्ठि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड, चमडा लगी हुई छडी (कप्पू)।

चम्मट्ठिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वकृ. चम्मट्ठिअत (कप्पू)।

चम्मट्ठिल पु [चर्मास्थिल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चम्मार पु [चर्मकार] चमार, मोची (विसे २६८८)।

चम्मारय पुं [चर्मकारक] ऊपर देखो (प्राप)।

चम्मिय वि [चर्मित] चर्म मे बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित (औप)।

चम्मेट्ठ पुं [चर्मेष्ट] प्रहरण-विशेष, चमडे से वेष्टित पाषाणवाला आयुध (पण्ह १, १)।

चम्मेट्ठग पुस्त्री [चर्मेष्टक] शस्त्र-विशेष (राय २१)। स्त्री. °गा (अणु १७५)।

चय सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। चयइ (पाअ, हे ४, ८६)। कर्म चइज्जइ (उव)। वकृ चयत (सुपा ३८८)। संकृ. चइअ, चइउ, चिच्चा, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताण, चइत्तु (कुमा, उत्त १८, महा, उवा, उत्त १)। कृ चइयव्व (सुपा ११६, ४०५, ५२१)।

चय सक [शक्] सकना, समर्थ होना। चयइ (हे ४, ८६)। वकृ चयत (सूअ १, ३, ३, से ६, ५०)।

चय अक [च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म मे जाना। चयइ (भवि), चयति (भग)। वकृ चयमाण (कप्प)।

चय पु [चय] १ शरीर, देह (विपा १, १, उवा)। २ समूह, राशि, ढेर (विसे २२१६, सुपा ५७१, कुमा)। ३ इकट्ठा होना (अणु)। ४ वृद्धि (आचा)।

चय पु [चय] ईंटो की रचना-विशेष (पिंड २)।

चय पु [च्यव] च्यव जन्मान्तर-गमन (ठा ८, कप्प)।

चयण न [चयन] १ इकट्ठा करना (पव २)। २ ग्रहण, उपादान (ठा २, ४)।

चयण न [त्यजन] त्याग, परित्याग (सट्ठि ३६)।

चयण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-गमन (ठा १—पत्र १६)। २ पतन, गिर जाना। °कप्प पु [°कल्प] १ पतन-प्रकार, चारित्र वगैरह से गिरने का प्रकार। २ शिथिल साधुओ का विहार (गच्छ १, पचभा)।

चयण न [च्यवन] च्युति, भ्रंश, क्षय (तदु ४१)।

चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ (उव, महा)। भूका चरिंसु (गउड)। भवि चरिस्स(पि १७३)। वकृ चरंत, चरमाण (उत्त २, भग, विपा १, १)। संकृ चरिअ, चरिऊण (नाट—मृच्छ १०, आवम)। हेकृ चरिउ, चारए (ओघ ६५, कस)। कृ चरियव्व (भग ६, ३३)। प्रयो, चारियव्व (पण्ण १७—पत्र ४६७)।

चर पु [चर] १ गमन, गति। २ वर्तन (दस, आवम ३ दूत, जासूस (पाअ, भवि)।

चर पु [चर] जगम प्राणी (कुप्र २४)।

°चर वि [°चर] चलनेवाला (आचा)।

चरंती स्त्री [चरन्ती] जिस दिशा मे भगवान् जिनदेव वगैरह ज्ञानी पुरुष विचरते हो वह (वव १)।

चरग पु [चरक] १ देखो चर = चर। २ सन्यासियो का झुण्ड विशेष, यूथवध घूमने वाले त्रिदण्डियो की एक जाति (भग, गच्छ २)। ३ भिक्षुको की एक जाति (पण्ण २०)। ४ दंश-मशकादि जन्तु (राज)।

चरचरा स्त्री [चरचरा] 'चर-चर' आवाज (स २५७)।

चरड पु [चरट] लुटेरे की एक जाति (धम्म १२ टी, सुपा २३२, ३३३)।

चरण पुन [चरण] १ सयम, चारित्र, 'सम्मत्तनाणचरणा पत्तेय अट्ठअट्ठभेइल्ला' (संबोध २२)। २ आचरण (सूअनि १२४)।

चरण न [चरण] १ सयम, चारित्र, व्रत, नियम (ठा ३, १, ओघ २, विसे १)। २ चरना, पशुओ का तृणादि-भक्षण (सुर २, ३)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा (पिंग)। ४ गमन, विहार (णदि, सूअ १, १०, २)। ५ सेवन, आदर (जीव २)। ६ पाद, पाँव

[illegible]

चरम पुं [चरम] १ अन्तिम [illegible]

[illegible]

चरित्ति पुं [चारित्रिन्] चारित्र वाला साधु, मुनि (उप ६६६ टी)।

चरिम देखो चरम (सुर ? १० [illegible])।

चरिय पुं [चरक] चर-पुरुष, जासूस, दूत (सुपा ४२८)।

चरिय न [चरित] १ चेष्टित, आचरण (औप, प्रासू ८६)। २ जीवनी, जीवन-चरित (सुपा २)। ३ चरित्र-ग्रन्थ (सुपा ६७८)। ४ सेवित, आश्रित [illegible]।

चरिया स्त्री [चरिका] १ परिव्राजिका संन्या-सिनी (औप ४६८)। २ किला और नगर के बीच का मार्ग [illegible]।

चरिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, अनुष्ठान, 'दुक्करचरिया मुणिवराणं' (पउम ९८, १४२)। २ गमन, गति, विहार [illegible]। ३ [illegible]।

[illegible]

चलण न [चलन] चलना, गति, गमन, क्रिया, [illegible]।

चलणा स्त्री [चलना] १ चलना, गति। २ कम्प, हिलन [illegible]।

चलणाउह पुं [चरणायुध] कुक्कुट, मुर्गा (दे ३ ७)।

चलणाओह पुं [दे चरणायुध] ऊपर देखो (पाअ)।

चलणिआ स्त्री [चलनिका] नीचे देखो [illegible]।

चलणिया, चलणी स्त्री [चलनिका, °नी] जैन साध्वीओं को पहनने का कटि-वस्त्र [illegible]।

चलणी स्त्री [चलनी] १ [illegible]। २ [illegible]।

चलवलण न [दे] [illegible] (पउम १०२, ६)।

चलाचल वि [चलाचल] [illegible] (पउम १२२, ६)।

चलिंदिय वि [चलेन्द्रिय] इन्द्रिय जिसकी चंचल हो [illegible]।

चलिअ न [चलित] [illegible]

[illegible]

चव अक [च्यु] मरना, जन्मान्तर में जाना। चवइ (हे ४, २३३)। सकृ चविऊण (प्राकृ)। कृ चवियव्व (ठा ३, ३)।

चव पुं [च्यव] मरण, मौत, 'मन्नता अपुणच्चवं, (उत्त ३, १४)।

चवचव पुं [चवचव] 'चव-चव' आवाज, ध्वनि-विशेष (ओघ २८९ भा)।

चवण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति (सुर २, १३६, ७, ८, द ४)। २ पतन, गिर जाना (बृह १)।

चवल वि [चपल] १ चचल, अस्थिर (सुर १२, १२८, प्रासू १०३)। २ आकुल, व्याकुल (औप)। ३ पुं रावण का एक सुभट (पउम ५६, २९)।

चवल पु [दे] अन्न-विशेष, बोडा (श्रा १८)।

चवलय पु [दे] धान्य विशेष, गुजराती में 'चोळा' (पव १५४)।

चवला स्त्री [चपला] विद्युत्, बिजली (जीव ३)।

चविअ वि [च्युत] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त (कुमा २, २६)।

चविअ वि [कथित] उक्त, कहा हुआ (भवि)।

चविआ स्त्री [चविका] वनस्पति विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३१)।

चविडा } चविला } चवेला } स्त्री [चपेटा] तमाचा, थप्पड (हे १, १४६, कुमा)।

चवेडी स्त्री [दे] १ श्लिष्ट कर-सपुट। २ संपुट, समुद्ग, डिब्बा (दे ३, ३)।

चवेण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ३, ३)।

चवेला देखो चविडा (प्राकृ)।

चव्व सक [चर्व्] चवाना (सक्षि ३४)।

चव्व (शौ) देखो चव्व = चर्व्। चव्वदि (प्राकृ ९३)।

चव्वक्किअ वि [दे] धवलित, चूने से पोता हुआ, 'चव्वक्किया य चुन्नेण नासिया (सुपा ४५५)।

चव्वण न [चर्वण] चबाना (दे ७, ८२)।

चव्वाइ देखो चव्वागि (राज)।

चव्वाक } चव्वाग } पु [चार्वाक] नास्तिक, बृहस्पति का शिष्य, लोकायतिक (प्रवो ७८, राज)।

चव्वागि वि [चार्वाकिन्] १ चबानेवाला। २ दुर्व्यवहारी (वव ३)।

चव्विय वि [चर्वित] चवाया हुआ (सुर १३, १२३)।

चस सक [चष्] चखना, आस्वाद लेना। वकृ. चसंत (शौ) (रंभा)। हेकृ. चसिदु (शौ) (रंभा)।

चसग } चसय } पु [चषक] १ दारू पीने का प्याला (जं ५, पाअ)। २ पान-पात्र, प्याला (सुर २, ११, पउम ११३, १०)। ३ पक्षि-विशेष (दे ६, १४५)।

चहुतिया स्त्री [दे] चुटकी, चुटकीभर, 'जोगचुण्णचहुतियामेत्तपक्खेवेण' (काल)।

चहुट्ट अक [दे] चिपकना, चिपटना, लगना, गुजराती में 'चोटवु', 'रे मूढ तुह अकज्जे लीलाइ चहुट्टए जहा चित्त' (संवेग १९)। चहुट्टइ (कुप्र २४९)।

चहुट्ट वि [दे] १ निमग्न, लीन (दे ३, २, वज्जा ३८), 'मण-भमरो-पुण तीए मुहारविंदेच्चिय चहुट्टो' (उप ७२८ टी)।

चहुट्ट } चहुट्टय } वि [दे] चिपका हुआ, लगा हुआ (धर्मवि १४१, उप ७२८ टी, कुप्र २७)।

चहोड पु [दे] एक मनुष्य जाति (भवि)।

चाइ वि [त्यागिन्] १ त्याग करनेवाला, छोडनेवाला। २ दानी, दान देनेवाला, उदार (सुर १, २१७, ४, ११८)। ३ निःसग, निरीह, सयमी (आचा)।

चाइय वि [त्याजित] छोडवाया हुआ (धर्मवि ८)।

चाइय वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो (पउम ७, १२१, सूअ १, १४), 'सव्वोवाएहि जया घेत्तूण न चाइया सुरिंदेण। ताहे ते नेरइया' (पउम ११८, २४)।

चाउअंगी स्त्री [चार्वङ्गी] सुन्दर अगवाली स्त्री (प्राकृ २९)।

चाउंड पु [चामुण्ड] राक्षस-वश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६३)।

चाउकाल न [चतुष्काल] चार वक्त, चार समय (विसे २५७६)।

चाउक्कोण वि [चतुष्कोण] चार कोनावाला, चतुरस्र (जीव ३)।

चाउग्घंट } चाउघंट } वि [चतुर्घण्ट] चार घंटावाला, चार घण्टाओं से युक्त (णाया १, १, भग ९, ३३, निर १)।

चाउज्जाम न [चातुर्याम] चार महाव्रत, साधु-धर्म—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह ये चार साधु-व्रत (णाया १, ७, ठा ४, १)।

चाउज्जाय न [चातुर्जात] दालचीनी, तमालपत्र, इलायची और नागकेसर (उप पृ १०९, महा)।

चाउत्थिग देखो चाउत्थिय (उत्तनि ३)।

चाउत्थिय पु [चातुर्थिक] रोग विशेष, चोथे-चौथे दिन पर होनेवाला ज्वर, चौथिया बुखार (जीव ३)।

चाउद्दसिया स्त्री [चतुर्दशिका] तिथि-विशेष, चतुर्दशी, चौदस, 'हीणपुण्णचाउद्दसिया' (उवा)।

चाउद्दसी स्त्री [चतुर्दशी] ऊपर देखो (भग, जो ३)।

चाउद्दह (अप) त्रि. व [चतुर्दशन्] चोदह, १४ (पिंग)।

चाउद्दिसि देखो चउ-द्दिसि (महा, सुपा ३६५)

चाउप्पाय न [चतुष्पाद] चतुर्विध, चार प्रकार का (उत्त २०, २३, सुख २०, २३)।

चाउमास } चाउम्मास } पुंन [चातुर्मास] १ चौमासा, जैसे आषाढ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने (उप पृ ३९०, पचा १७)। २ आषाढ, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी, 'पक्खिए चाउमासे' (लहुअ १६)।

चाउम्मासिअ वि [चातुर्मासिक] १ चार मास सम्बन्धी, जैसे आषाढ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवाला (णाया १, ५, सुर १४, २२८)। २ न आषाढ, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष (श्रा ४७, अजि ३८)।

चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] चार मास, चौमासा, आषाढ से कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ तक के चार महीने (पउम ११८, ५८)।

चाउम्मासी, °सी [चातुर्मासी] देखो चाउ-म्मासि [illegible]।

[illegible] ३ ३८)।

चाउरंगि [illegible] चउरंगि [illegible], उवा १, [illegible])।

चाउरंत [illegible] [चतुरन्त] [illegible] 'चाउरन्तचक्क' [illegible]।

[illegible] [चातुरन्त] [illegible]।

[illegible] [चातुर्य] [illegible], चातुर्य [illegible]।

[illegible] [चातुर्य] [illegible]।

[illegible] [चातुष्क] [illegible]।

°[illegible] [°कोटि] [illegible] [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [चाउद्दसी] [illegible]।

[illegible]

मल्ल—उसको मारनेवाला 'चउरसालबल्लेसणोदए' (पउ)।

चाउस्साला स्त्री [चतुःशाला] चारों तरफ के कमरावाला घर (पव १३३ टी)।

चाएव देखो चाय = त्यज।

चाउंडा स्त्री [चामुण्डा] स्वनाम-ख्यात देवी (हे १, १७४)। °चाउअ पु [°चामुक] महादेव, शिव (कुमा)।

चाग देखो चाय = त्याग (पण्ह १)।

चागि देखो चाइ (उप पृ १०५)।

चाड वि [दे] मायावी, कपटी (दे ३, ८)।

चाडु पुन [चाटु] १ प्रियवाक्य। २ खुशामद (हे १, ६७, प्राप्र)। °यार वि [°कार] खुशामदी (पउम १, २)।

चाडुअ न [चाटुक] ऊपर देखो (कुमा)।

चाणक पु [चाणक्य] १ राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (मुद्रा १४०)। २ एक मनुष्य-जाति (मति)।

चाणक्की स्त्री [चाणक्यी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

चाणिक देखो चाणक (मार)।

चाणूर पु [चाणूर] मल्ल-विशेष, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (पउम १, ४, विवि)।

चामर पुन [चामर] चँवर, बाल-व्यजन (हे १, ६७)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °गाहि वि [°ग्राहिन्] चामर वीजनेवाला नौकर। °णी (मनि)। °च्छायग न [°च्छायन] चामर-छत्र का काम (हुर)। °च्छत्र पु [°छत्र] चामर-युक्त छत्ता (औप)। °धार वि [°धार] चामर वीजनेवाला (पउम ८०, २८)।

चामरच्छा न [चामरच्छत्र] छत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

चामरा स्त्री [illegible] (पंच [illegible] ६, २९)।

चामीयर न [चामीकर] सुवर्ण, सोना (कप्प [illegible] ३, ५)।

चामुंडराय [चामुण्डराय] [illegible] (कुप्र ५)।

[illegible] (पि [illegible])।

चाय देखो चाउ [illegible], पायसा, [illegible] (पउम १, २ १, उप ३)।

चाय देखो चाव (सुपा ४३०, से १४, १५, सिरि)।

चाय पु [त्याग] १ छोड़ना, परित्याग (प्रासू ८, पणह १)। २ दान (सुर १, ६५)।

चायग } पु [चातक] पक्षि-विशेष, चातक

चायय } पक्षी (गउड, पाअ, दे ६ ६०)।

चार सक [चारय्] चराना, गिनना। चारेइ (धर्मवि १४३)।

चार पुं [चार] १ गति, गमन, 'पायचारेण' (महा, उप पृ १२३, रयण १४)। २ भ्रमण, परिभ्रमण (स १६)। ३ चर-पुरुष, जासूस (सिरि १, ३, महा, भवि)। ४ कारागार, कैदखाना (भवि)। ५ आचार, संचरण (औप)। ६ अनुष्ठान, आचरण (आचा ४४, मगा)। ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश (ठा २, २)।

चार पु [दे] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष चिरौंजी का पेड़ (दे ३, २१, भवि, पउम १६)। २ बन्दीखाना (दे ३ २१)। ३ इच्छा, अभिलाष (दे ३, २१, भवि, सुपा ५११)। ४ न फल-विशेष, मेवा-विशेष (पउम १६)। °क्कय पु [°क्रय] बेचनेवाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना (सुपा ५११)।

चारग देखो चर = चर्।

चारग पु [चारक] देखो चार (औप, णाया १, १, पउम १, ३ उत्त ३५७ टी)। °पाल पु [°पाल] कैदखाना का अध्यक्ष (सिरि १, ६—पत ६५)। °पालग पुं [°पालक] कैदखाना का रक्षक, जेलर (उप पृ २२७)। °भंड न [°भाण्ड] कैदी का शिक्षा करने का उपकरण (सिरि १, ६)। °हिव पुं [°अधिप] कैदखाना का रक्षक, जेलर (उप पृ ३७)।

चारग पुं [दे] [illegible], परिव्राजक, [illegible] (सि १, [illegible] ६)।

चारण पुं [चारण] १ आकाश में [illegible] [illegible] (औप, [illegible] १५, [illegible])। २ [illegible] [illegible] [illegible]। ३ [illegible] (स ६)।

चारणिआ स्त्री [चारणिका] गणित-विशेष (ओघ २१ टी)।

चारभड पु [चारभट] शूर पुरुष, लड़वैया, सैनिक (पण्ह १, २, १, ३, बृह १)।

चारभड पु [चारभट] लुटेरा (पिंड ५७६)।

चारय देखो चारग (सुपा २०७, ल १५)।

चारवाय पु [दे] ग्रीष्म ऋतु का पवन (दे ३, ६)।

चारहड देखो चारभड (धम्म १२ टी, भवि)।

चारहडी स्त्री [चारभटी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति (सुपा ४४१, ४४२, हे ४, ३९६)।

चारागार न [चारागार] कैदखाना, जेलखाना (सुर १६, १७)।

चारि स्त्री [चारि] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि (ओघ २३८)।

चारि वि [चारिन्] १ प्रवृत्ति करनेवाला। (विसे २४३ टी, उव, आचा)। २ चलने वाला, गमन-शील (औप, कप्पू)।

चारिअ वि [चारित] १ जिसको खिलाया गया हो वह (से २, २७)। २ विज्ञापित, जताया हुआ (पउम १८—पत्र ४६७)।

चारिअ पु [चारिक] १ चर पुरुष, जासूस (पण्ह १, २, पउम २६, ६५), 'चोरुत्ति चोरिउत्ति य होइ जओ परदारगामित्ति' (विसे २३७३)। २ पचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ (स ४०६)।

चारित्त देखो चरित्त = चारित्र (ओघ ६ भा, उप ६७७ टी)।

चारित्ति देखो चरित्ति (पुप्फ १५५)।

चारियव्व देखो चर = चर्।

चारिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, इधर-उधर गमन, जीविका। २ चेष्टा (उत्त १६, ८१, ८२, ८४, ८५)।

चारी स्त्री [चारी] देखो चारि = चारि (स ४८७, ओघ २३८ टी)।

चारु वि [चारु] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर (उवा, औप)। २ पु. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ न प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (जीव १, राय)।

चारुइणय पुं [चारुन्निक] १ देश-विशेष। २ वि उस देश का निवासी (औप, अत)। स्त्री °णिया (औप)।

चारुणय पुं [चारुनक] ऊपर देखो (औप)। स्त्री °णिया (औप णाया १, १)।

चारुवच्छि पु व [चारुवत्सि] देश-विशेष (पउम ९८, ६४)।

चारुसेणी स्त्री [चारुसेनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

चाल सक [चालय्] १ चलाना, हिलाना, कँपाना। २ विनाश करना। चालेइ (उव, स ४७४, महा)। कर्म चालिज्जइ (उव)। वकृ. चालत, चालेमाण (सुपा २२४, जीव ३)। कवकृ चालिज्जमाण (णाया १, १)। हेकृ चालित्तए (उवा)।

चालण न [चालन] १ चलाना, हिलाना (रभा)। २ विचार (विसे १००७)।

चालण न [चालन] शका, प्रश्न, पूर्वपक्ष (चेइय २७१)।

चालणा स्त्री [चालना] शका, पूर्वपक्ष, आक्षेप (अणु, बृह १)।

चालणिया स्त्री [चालनिका] नीचे देखो (उप १३४ टी)।

चालणी स्त्री [चालनी] आखा, छानने का पात्र चलनी या छलनी (आवम)।

चालवास पु [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ३, ८)।

चालिय वि [चालित] चलाया हुआ, हिलाया हुआ, 'पुप्फवईए चालियाए सियसकेयपडागाए' (महा)।

चालिर वि [चालयितृ] १ चलानेवाला। २ चलनेवाला, 'खरपवणचाडुचालिरदवग्गिस-रिसेण पेम्मेण' (वज्जा ७०)।

चाली स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (उवा)।

चालीस स्त्रीन [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (महा, पिंग) स्त्री. °सा (ति ५)।

चालुक पुस्त्री [चौलुक्य] १ चालुक्य वश मे उत्पन्न। २ पु गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल (कुमा)।

चाव सक [चर्व्] चबाना। कृ. चावयव्व (उत्त १६, ३८)।

चाव पु [चाप] धनुष, कार्मुक (स्वप्न ५५)।

चावल न [चापल] चपलता, चचलता (अभि २४१)।

चावल्ल न [चापल्य] ऊपर देखो (स ५२६)।

चावाली स्त्री [चावाली] ग्राम विशेष, इस नाम का एक गाँव (आवम)।

चाविय वि [चर्वित] चबाया हुआ (धर्मवि ४६, १४६)।

चाविय वि [च्यावित] मरवाया हुआ (पण्ह २, १)।

चावेडी स्त्री [चापेटी] विद्या-विशेष, जिससे दूसरे को तमाचा मारने पर बीमार आदमी का रोग चला जाता है (वव ५)।

चावेयव्व देखो चाव = चर्व्।

चावोण्णय न [चापोन्नत] विमान-विशेष, एक देव-विमान (सम ३९)।

चास पु [चाष] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, पपीहा, लहटोरवा (पण्ह १, १, पण्ण १७, णाया १, १, ओघ ८४ भा, उर १, १४)।

चास पु [दे] चास, हल-विदारित भूमि रेखा, खेती (दे ३, १)।

चाह सक [वाञ्छ्] १ चाहना, वाँछना। २ अपेक्षा करना। ३ याचना। चाहइ, चाहसि (भवि, पिंग)।

चाहिणी स्त्री [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम (कुप्र २०)।

चाहिय वि [वाञ्छित] १ वाञ्छित, अभि-लषित। २ अपेक्षित। ३ याचित (भवि)।

चाहुआण पु [चाहुयान] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वश, चौहान वश। २ पुस्त्री चौहान वश मे उत्पन्न (सुपा ५५९)।

चि देखो चिण। कर्म चिव्वइ, चिम्मइ, चिज्जति (हे ४, २४३, भग)।

चिअ अ [एव] निश्चय को बतलानेवाला अव्यय, 'अणुबद्ध त चिअ कामिणीण' (हे २, १८४, कुमा, गा १६, ४६, दं १)।

चिअ अ [इव] १—२ उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय (प्राप्र)।

चिअ वि [चित] १ इकट्ठा किया हुआ (भग)। २ व्याप्त (सुपा २४१)। ३ पुष्ट, मासल (उप ८७५ टी)।

चिअ न [चित] ईंट आदि का ढेर (अणु १५४)।

चिअ देखो चित्त = चित्त प्राकृ २६)।

[illegible]

चिंचा स्त्री [दे चिञ्चा] इमली का पेड़ (दे ३, १०; पाअ; विपा १, ६; सुपा १२४, ५८३, ५८३)।

चिंचइअ वि [मण्डित] भूषित, अलंकृत (कुमा)।

चिंचिणिआ / चिंचिणिचिंचा / चिंचिणी — स्त्री [दे] इमली का पेड़ (षोप २६; दे ३, १०; सुपा ५८४; पाअ)।

चिंचिल्ल सक [मण्डय्] विभूषित करना, अलंकृत करना। चिंचिल्लइ (हे ४, ११५; षड्)।

चिंचिल्लिअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत, सँवारा हुआ (पाअ; कुमा)।

चिंत सक [चिन्तय्] १ चिंता करना, विचार करना। २ याद करना। ३ ध्यान करना। ४ फिक्र करना, अफसोस करना। चिंतइ, चिंतेमि (हा, कुमा)। वकृ. चिंतंत, चिंतेंत, चिंतित, चिंतयंत, चिंतयमाण, चिंतेमाण (सुपा, उत्त, पउम १०, ४, अभि ५७, ६ ४, ३१२, ३१०, सुर ४, २३)। कवकृ चिंतिज्जंत (गा ६५४)। संकृ. चिंतिउ, चिंतिऊण (महा, गा ३५८)। कृ. चिंतणीअ, चिंतियव्व, चिंतव्व (गा ७३२, [illegible] ३१, ७७ सुपा ४४४)।

चिंत वि [चिन्त्य] चिंतनीय, विचारणीय, विचार योग्य (उव ६८४)।

चिंतग वि [चिन्तक] चिंता करनेवाला, विचारक (उप पृ ३३३, ३१६ टी)।

चिंतण न [चिन्तन] १ विचार, पर्यालोचन [illegible]। २ स्मरण, स्मृति (गा ३३, [illegible])।

चिंतणा स्त्री [चिन्तना] ऊपर देखो (उप ९८६ टी)।

[illegible]

चिंता स्त्री [चिन्ता] १ विचार, पर्यालोचन (पाअ, कुमा)। २ अफसोस, शोक, दिलगीरी (सुर २, १६१; सुपा २ [illegible] १; प्रासू ६१)। ३ ध्यान (आव ४)। ४ स्मृति, स्मरण (णदि)। ५ इष्ट प्राप्ति का उपाय (कुमा)। °उर वि [°तुर] शोक से व्याकुल (सुर ६, ११६)। °दिट्ठ वि [°दृष्ट] विचार-पूर्वक देखा हुआ (पाअ)। °मइअ वि [°मय] चिन्ता-युक्त, 'सअले चिंतामइए काअरिसे' (गा १३३)। °मणि पुं [°मणि] १ मनो-वाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न विशेष, दिव्य मणि (महा)। २ वीतशोक नगरी का एक राजा (पउम २०, १४२)। °पर वि [°पर] चिन्ता-मग्न (पउम [illegible], १३)।

चिंतायग / चिंतावग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला (आचा)। स्त्री. °गा (सुपा २१)।

चिंतिय वि [चिन्तित] १ विचारित, पर्यालोचित (महा)। २ याद किया हुआ, स्मृत (णाया १, १; षड्)। ३ जिसको चिंता उत्पन्न हुई हो वह (जीव ३ टीका)। ४ न स्मरण, स्मृति (भग ६, ३३; औप)।

चिंतिर वि [चिन्तयितृ] चिंताशील, चिंता करनेवाला (गा २०, [illegible])।

चिंध न [चिह्न] १ चिह्न, लाञ्छन, निशानी (पउम २, ७०; प्राप्र; णाया १, १६)। २ ध्वजा, पताका (पाअ)। °पट्ट पुं [°पट्ट] निशानी रूप पट्ट (णाया १, १)। °पुरिस पुं [°पुरुष] १ [illegible] पुरुष [illegible] (ठा ३, १)।

[illegible]

चिक्क वि [दे] १ स्तोक, थोडा, अल्प। २ न. क्षुत्, छींक (षड्)।

चिक्कण वि [चिक्कण] चिकना, स्निग्ध (पण्ह १,१, सुपा ११)। २ निबिड, घना, 'जं पाव चिक्कणं तए बद्धं' (सुर १४, २०६)। ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य (पण्ह १, १)।

चिक्का स्त्री [दे] १ थोडी चीज। २ हलकी मेघ-वृष्टि, सूक्ष्म छींटा (दे ३, २१)।

चिक्कार पु [चीत्कार] चिल्लाहट, चिंघाड (भग)।

चिक्किण देखो **चिक्कण** (कुमा)।

चिक्खअग वि [दे] सहिष्णु, सहन करनेवाला (षड्)।

चिक्खल्ल पु [दे] कर्दम, पंक, कीच (दे ३, ११, हे ३, १४२, पण्ह १, १)।

चिक्खल्लय न [चिक्खल्लक] काठियावाड का एक नगर (ती २)।

चिक्खिल्ल }
चिखल्ल } [दे] देखो **चिक्खल्ल** (गा ६७, ३२४, ४४५; ६८४, औप)।
चिखिल्ल }

चिगिचिगाय अक [चिकचिकाय्] चकचकाट करना, चमकना। वकृ. **चिगिचिगायंत** (सुर २, ८६)।

चिगिंच्छग देखो **चिइच्छअ** (विवे ३०)।

चिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा, इलाज (उप १३५ टी)।

चिगिच्छय देखो **चिइच्छअ** (स २७८, णाया १, १—पत्र १११)।

चिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] दवा, प्रतीकार, इलाज (स १७)। °**संहिया** स्त्री [°संहिता] चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र (स १७)।

चिच्च वि [दे] १ चिपटी नासिकावाला, बैठी हुई नाकवाला (दे ३, ६)। २ न रमण, संभोग, रति (दे ३, १०)।

चिच्च वि [त्याज्य] छोडने योग्य, परिहरणीय, 'खरकम्माइं पि चिच्चाइं' (सुपा ४६८)।

चिच्चर वि [दे] चिपटी नासिकावाला (दे ३, ६)।

चिच्चा देखो **चय** = त्यज्।

चिंचि पु [चिञ्चि] चीत्कार, चिल्लाहट, भयंकर आवाज, 'चिच्चीसर—' (विपा १,२—पत्र २६)।

चिच्चि पुं [दे] हुताशन, अग्नि (दे ३, १०)।

चिट्ठं अ [दे] अत्यन्त, अतिशय (आचा १, ४, २, २)।

चिट्ठ अक [स्था] बैठना, स्थिति करना। चिट्ठइ (हे १, १६)। भूका **चिट्ठिंसु** (आचा)। वकृ. **चिट्ठंत, चिट्ठमाण** (कुमा, भग)। संकृ **चिट्ठिउ, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठित्ता, चिट्ठित्ताण** (कप्प, हे ४, १६, राज, पि)। हेकृ **चिट्ठित्तए** (कप्प)। कृ **चिट्ठणिज्ज, चिट्ठिअव्व** (उप २६४ टी, भग)।

चिट्ठ देखो **चेट्ठ**। वकृ **चिट्ठमाण** (पंचा २)।

चिट्ठइत्तु वि [स्थातृ] बैठनेवाला, ठहरनेवाला (भग ११,११, दसा ३)।

चिट्ठण न [स्थान] खड़ा रहना (पव २)।

चिट्ठण न [चेष्टन] चेष्टा, प्रयत्न (हि २२)।

चिट्ठणा स्त्री [स्थान] स्थिति, बैठना, अवस्थान (बृह ६)।

चिट्ठा देखो **चेट्ठा** (सुर ४, २४५, प्रासू १२५)।

चिट्ठिय वि [चेष्टित] १ जिसने चेष्टा की हो वह (पण्ह १, ३, णाया १, १)। २ न चेष्टा, प्रयत्न, (पण्ह २, ४)।

चिट्ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित, रहा हुआ। २ न अवस्थान, स्थिति (चंद २०)।

चिडिग पु [चिटिक] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चिण सक [चि] १ इकट्ठा करना। २ फूल वगैरह तोडकर इकट्ठा करना। चिणइ (हे ४, २३८)। भूका. **चिणिंसु** (भग)। भवि **चिणिहिइ** (हे ४, २४३)। कर्म. **चिणिज्जइ** (हे ४, २४२)। संकृ. **चिणिऊण, चिणेऊण** (षड्)।

चिण देखो **चण** (श्रा १८)।

चिण देखो **चित्त** (प्राकृ २६)।

चिणिअ वि [चित] इकट्ठा किया हुआ (सुपा ३२३, कुमा)।

चिणोट्ठी स्त्री [दे] गुंजा, घुँघची, लाल रत्ती, गुजराती में 'चणोठी' (दे ३, १२)।

चिण्ण वि [चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित (उत्त १३)। २ अंगीकृत, आदृत (उत्त ३१)। ३ विहित, कृत (उत्त १३)।

चिण्ह न [चिह्न] निशानी, लाञ्छन (हे २, ५०, गउड)।

चित्त सक [चित्रय्] चित्र बनाना, तसवीर खींचना। चित्तेइ (महा)। कवकृ **चित्तिज्जंत** (उप पृ ३४१)।

चित्त न [चित्त] १ मन, अन्तःकरण, हृदय (ठा ४, १, प्रासू ६१, १५५)। २ ज्ञान, चेतना (आचा)। ३ बुद्धि, मति (अव ४)। ४ अभिप्राय, आशय (आचा)। ५ उपयोग, ख्याल (अणु)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] दिल का जानकार (उप पृ १७६)। °**निवाइ** वि [°निपातिन्] अभिप्राय के अनुसार बरतनेवाला (आचा)। °**मंत** वि [°वत्] सजीव वस्तु (सम ३६, आचा)।

चित्त देखो **चइत्त** = चैत्र (रंभा, जं २, कप्प)।

चित्त न [चित्र] १ छवि, आलेख्य, तसवीर (सुर १, ८६, स्वप्न १३१)। २ आश्चर्य, विस्मय (उत्त १३)। ३ काष्ठ-विशेष (अनु ५)। ४ वि. विलक्षण, विचित्र (गा ६१२, प्रासू ४२)। ५ अनेक प्रकार का, विविध, नानाविध (ठा १०)। ६ अद्भुत, आश्चर्यजनक (विपा १, ६, कप्प)। ७ कबरा, चितकबरा (णाया १, ८)। ८ पु एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। ९ पर्वत-विशेष (पण्ह १, ५—पत्र ९४)। १० चित्रक, चीता, श्वापद विशेष (णाया १, १—पत्र ६५)। ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र, 'हत्थो चित्तो य तहा, दस बुड्ढिकराइं णाणस्स' (सम १७)। °**उत्त** पु [°गुप्त] भरत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। °**कणगा** स्त्री [°कनका] देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। °**कम्म** न [°कर्मन्] आलेख्य, छवि, तसवीर (गा ६१२)। °**कर** देखो °**गर** (अणु)। °**कह** वि [°कथ] नाना प्रकार की कथाएँ कहनेवाला (उत्त ३)। °**कूड** पु [°कूट] १ सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत (जं ४)। २ पर्वत-विशेष (पउम ३३, ६)। ३ न नगर-विशेष, जो आजकल मेवाड में 'चित्तौड' नाम से प्रसिद्ध है (रयण ६)। ४ शिखर-विशेष (ठा २, ३)। °**क्खरा** स्त्री [°क्षरा] छन्द-विशेष

[illegible] (छार २७)। °गार पुं [°कार] चित्रकार [illegible] ॥ °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] [illegible] [illegible] ॥ °पक्ख न [°पक्ष] [illegible] ॥ °फलय न [°फलक] [illegible] ॥ °भित्ति स्त्री [°भित्ति] [illegible] ॥ °रस पुं [°रस] [illegible] ॥ °लेहा स्त्री [°लेखा] [illegible] ॥ °सभा स्त्री [°सभा] [illegible] ॥ °साला स्त्री [°शाला] [illegible]।

[illegible]

चित्तक्खर (पाप)। २ पुं जंगली पशु विशेष, हरिण के आकारवाला [illegible] पशु-विशेष (जीव १, [illegible])।

चित्तलि पुंस्त्री [चित्रलिन्] साप की एक जाति (पण्ण १)।

चित्तलिअ वि [चित्रलित, चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ 'रयणनियरसिंधे कुट्टे [illegible]' (स २०८)।

चित्तविअअ वि [दे] परितोषित (दे)।

चित्तवीणा स्त्री [चित्रवीणा] वाद्य विशेष (राय ८६)।

चित्ता स्त्री [चित्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ देवी विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। ३ सक्केन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी विशेष (ठा ४ १—पत्र २०४)। ४ औषधि विशेष (सुर १०, २२३ पउम १७)।

चित्ताचिल्लडय } पुं [दे] जंगली पशु विशेष
चित्ताचिल्लडग } (आचा २, १ ५, ३, ४)।

चित्तापट्टी स्त्री [चित्रपट्टी] वस्त्र विशेष, छींट (छींटदार) धारि [illegible], [illegible] [illegible] (स ७३८)।

चिति पुं [चित्रिन] चितारा, चितेरा (कम्म १, २३)।

चित्तिअ वि [चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ (औप, [illegible] टी, [illegible] १, ७४)।

चित्तिया स्त्री [चित्रिका] [illegible] विशेष की माला (कप्प १९)।

चित्ती देखो चेत्ती (सुज्ज १०, ७)।

चित्ती स्त्री [चित्री] [illegible] (अ)।

चित्तोविअ } वि [दे] [illegible]
चित्तोविअ } (दे ३, १२ [illegible])।

[illegible]

चिप्पिअ पुं [दे] नपुंसक विशेष, जन्म के समय में अंगूठे से मर्दन कर जिसका अण्डकोश दबा दिया गया हो वह (पव १०९ टी)।

चिप्पिडय पुं [दे] भक्ष्य-विशेष (दस ६)।

चिबुअ न [चिबुक] होठ के नीचे का भाग, ठोडी (कुमा)।

चिब्भड न [चिर्भिट] खीरा, ककड़ी, फल-विशेष, गुजराती में 'चीभडुं' (दे ६, १४८)।

चिब्भडिया स्त्री [चिर्भिटिका] १ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ। २ मत्स्य की एक जाति (जीव १)।

चिब्भिड देखो चिब्भड (सुपा ६३०, पाप)।

चिमिट्ठ } वि [चिपिट] चिपटा, बैठा हुआ,
चिमिड } दबा हुआ (नाक) (णाया १ ८, वि २०७, २४८)।

चिमिण वि [दे] रोमश, रोमाञ्चित, पुलकित, गद्गद (दे ३, ११ [illegible])।

चिय देखो चेइअ = चैत्य. 'जो भवया भवाइ चियपरिवाडि कुणइ तमो नियमे' (सम्मत्त १५९)।

चियगा } स्त्री [चिता] मुर्दे को फूंकने के
चियगा } लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर (पउम [illegible], ३—पत्र [illegible] सुपा ६५७, स ४१६)।

चियत्त देखो चत्त (भग २, ५, १०, २, [illegible] १)।

चियत्त वि [दे] १ सम्मत, [illegible] (ठा ३, ३)। २ प्रीतिकर [illegible] (औप)। ३ प्रीति, [illegible]। ४ [illegible] (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

चियगा देखो चिअगा (पउम ६७, २३)।

चियाग } [illegible] (ठा ६, [illegible]
चियाग } [illegible] १६)।

चिर न [चिर] १ दीर्घ काल, बहुत समय (पाअ ८३, गा १४७)। २ [illegible] (स ३८)। ३ [illegible] [illegible] (पण्ण ७२)। °काल वि [°काल] [illegible] (स ३४)। °ट्ठिइ वि [°स्थिति] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

लम्बा आयुष्यवाला, दीर्घ काल तक रहनेवाला (भग, सूत्र १, ५, १), 'एयाइँ फासाइँ फुसंति बाल, निरतर तत्य चिरट्ठिईय' (सूत्र १, ५, २)। °राअ पु [°रात्र] बहु काल, दीर्घ काल (आचा)।

चिर अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। चिरअदि (शौ) (पि ४९०)।

चिर अ [चिरम्] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक (स्वप्न २६, जी ४९)। °तण वि [°तन] पुराना, बहुत काल का (महा)।

चिरंचिअ वि [चिरचित] चिरकाल मे उपचित—इकट्ठा किया हुआ या बढा हुआ (पंच ५, १६७)।

चिरडी स्त्री [दे] वर्ण-माला, अक्षरावली, 'चिरटिपि अयाणता लोआ लोएहि गोरवब्भहिआ' (दे १, ९१)।

चिरड्डिहिल्ल [दे] देखो चिरिड्डिहिल्ल (पाअ)।

चिरमाल सक [प्रति + पालय्] परिपालन करना। चिरमालइ (प्राकृ ७५)।

चिरया स्त्री [दे] कुटी-झोपडी (दे ३, ११)।

चिरस्स अ [चिरस्य] बहुत काल तक (उत्तर १७६, कुमा)।

चिराअ देखो चिर = चिरय्। चिरायइ (स १२९)। चिराअसि (मै६२)। भवि चिराइस्सं (गा २०)। वकृ चिराअमाण (नाट—मालती २७)।

चिराइअ वि [चिरादिक] पुराना, प्राचीन (णाया १, १, औप)।

चिराईय वि [चिरातीत] पुराना, प्राचीन (विपा १,१)।

चिराउ अ [चिरात्] चिर काल से, लम्बे समय से (कुप्र ३६७)।

चिराणअ (अप) वि [चिरन्तन] पुरातन, पुराना, प्राचीन (भवि)।

चिराद्‌ण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो (बृह ३)।

चिराव अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। ३ सक विलम्ब कराना, रोक रखना चिरावइ (भवि)। चिरावेह (काल), 'मा णे चिरावेहिं' (पउम ३,१२९)।

चिराविय वि [चिरायित] १ जिसने विलम्ब किया हो वह। २ विलम्बित, रोका गया। ३ न विलम्ब, देरी, 'भणिओ चदाभाए किं अज्ज चिराविय सामि!' (पउम १०५, १०१)।

चिरिंचिरा स्त्री [दे] जलधारा, वृष्टि (दे ३, १३)।

चिरिका स्त्री [दे] १ पानी भरने का चर्म-भाजन, मशक। २ अल्प वृष्टि। ३ प्रात काल, सुबह (दे ३, २१)।

चिरिच्चिरा [दे] देखो चिरिंचिरा (दे ३, १३)।

चिरिडी देखो चिरडी (गा १६१ अ)।

चिरिड्डिहिल्ल न [दे] दधि, दही (दे ३,१४)।

चिरिहिट्टी स्त्री [दे] गुञ्जा, घुंगची, लाल रत्ती (दे ३, १२)।

चिलाअ पु [किरात] १ अनार्य देश-विशेष। २ किरात देश मे रहनेवाली म्लेच्छ-जाति, भिल्ल, पुलिंद (हे १,१८३,२५४, पण्ह १,१, औप, कुमा)। ३ धन सार्थवाह (व्यापारी) का एक दास—नौकर (णाया १, १८)।

चिलाइया स्त्री [किरातिका] किरात देश की रहनेवाली स्त्री, किरातिन (णाया १, १)।

चिलाई स्त्री [किराती] ऊपर देखो (इक)। °पुत्त पु [°पुत्र] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि (पडि, णाया १, १८)।

चिलाद देखो चिलाअ (प्राकृ १२)।

चिलिचिलिआ स्त्री [दे] धारा, वृष्टि (पड्)।

चिलिचिलिय वि [दे] भीजा या भीगा हुआ, आर्द्रित, गीला (तदु ३८)।

चिलिचिल्ल, चिलिच्चिल, चिलिच्चील वि [दे] आर्द्र, गीला (पण्ह १, ३—पत्र ४५, दे ३, १२)।

चिलिण [दे] देखो चिलीण, 'छक्कायसजमम्मि अ चिलिणे सेहन्नहाभावो' (ओघ १६५)।

चिलिमिणी, चिलिमिलिगा, चिलिमिलिया, चिलिमिली स्त्री [दे] यवनिका, परदा, आच्छादन-पट (ओघ भा, सूत्र २, २, ४८, कस, ओघ ७८, ८०)।

चिलीण न [दे] अशुचि, मैला, मल-मूत्र, 'सजति चिलीणे मच्छियाओ घणचदणं मोत्तु' (उप १०३१ टी)।

चिल्ल पु [दे] १ बाल, बच्चा, लडका (दे ३, १०)। २ चेला, शिष्य (आवम)।

चिल्ल पु [चिल्ल] १ वृक्ष-विशेष (राज)। २ न पुष्प-विशेष।

'पूय कुणति देवा, कचणकुसुमेसु जिणवरिंदाणं। इह पुण चिल्लदलेसु, नरेण पूया विरइयव्वा ॥' (पउम ६६, १६)।

चिल्ल न [दे] सूर्प, सूप, छाज (प्राकृ २८)।

चिल्लअ न [दे] देदीप्यमान, चमकता, 'मडणोहुणप्पगारएहिं केहिं केहिंवि अवगतिलय-पत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं' (अजि २८, औप)।

चिल्लग [दे] देखो चिल्लिय (पण्ह १, ४—पत्र ७१ टी)।

चिल्लड [दे] देखो चिल्लल (दे) (आचा २, ३, ३)।

चिल्लणा स्त्री [चिल्लणा] एक सती स्त्री, राजा श्रेणिक की पत्नी (पडि)।

चिल्लय न [दे] अपचक्षु, खराब आँख (पण्ह १, १ टी—पत्र २५)।

चिल्लल पु [चिल्वल] १ अनार्य देश विशेष। २ उस देश का निवासी (इक)।

चिल्लल पुस्त्री [दे] १ श्वापद पशु-विशेष, चीता (पण्ह १, १—पत्र ७, णाया १,१—पत्र ६५)। स्त्री °लिया (पण्ण ११)। न. कादोवाला जलाशय, छोटा तलाव आदि (णाया १, १—पत्र ६३)। ३ देदीप्यमान, चमकता (णाया १, १६—पत्र २११)।

चिल्ला स्त्री [दे] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका (दे ३, ९, ८, ८, पाअ)।

चिल्लिय वि [दे] १ लीन, आसक्त (णाया १, १)। २ देदीप्यमान (णाया १, १, औप, कप्प)।

चिल्लिरि पु [दे] मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ११)।

चिल्लूर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकडी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ३, ११)।

चिल्हय पु [दे] चक्र-मार्ग, पहिये की लकीर, गुजराती मे 'चीलो' (सुपा २८०)।

चिविट्ट, चिविड वि [चिपिट] चिपटा, बैठा या धँसा हुआ (नाक), 'चिविडनासा' (पि २४८, पउम २७, ३२, गउड)।

चिविडा स्त्री [चिपिटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष (दे ३, ७१)।

चिविढ देखो चिविड (सुर १३, १८१)।

[illegible] [चिहुर] केश, बाल (पाम सुपा [illegible])।

[illegible] देखो चेइअ [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] (गा १०८)।

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [दे] [illegible] (निर [illegible])।

[illegible] [चीन] १ [illegible] 'चीणंसुय' [illegible] १३३)। २ [illegible] चीन देश (पण्ह १, [illegible])। [illegible] देश का निवासी, [illegible] ४ धान्य-विशेष, [illegible]। °पट्ट पुं [°पट्ट] [illegible] वस्त्र-विशेष (पण्ह १, [illegible])। °पिट्ठ न [°पिष्ट] सिन्दूर विशेष (गाम, [illegible])।

[illegible] [चीनांशुक] १ कीट-विशेष, [illegible] वस्त्र-विशेष। [illegible] (सुपा ३८ [illegible])।

[illegible] 'चीवर' [illegible] (सुर ६, [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] (पुर ३६१)। °धुरा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] (पाम [illegible] १ १३ —पत्र १६३)।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] पक्षि' (सुपा ५८४)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, चींटा (सुपा, दे ३, २६)।

चीवट्टी स्त्री [दे] भल्ली, भाला शस्त्र-विशेष (दे ३ १४)।

चीवर न [चीवर] वस्त्र, संन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा (सुर ८, १८८, ठा ५, २)।

चीहाडी स्त्री [दे] चीत्कार चिल्लाहट, पुकार, हाथी की गर्जना या चिंघाड़ना (सुर १०, १८२)।

चीही स्त्री [दे] मुस्ता या तृण-विशेष (दे ३, १४, १०)।

चु अक [च्यु] १ मरना, जन्मान्तर में जाना। २ गिरना। भवि. चइस्सामि (कप्प)। संकृ. चइऊण, चइत्ता, चइअ (उत ६, ठा ८, भग)। कृ. चइयव्व (ठा ३, ३)।

चुअ सक [त्यज्] त्याग करना, परिहार करना 'चयाहि मित्ते पुए' (सूअ १, १, २, १७)।

चुअ वि [च्युत] १ च्युत, मृत, एक जन्म से दूसरे जन्म में अवतीर्ण (भग, गाम, ठा ३, १)। २ गिरा हुआ 'धम्माभिचुअं' (धर्मि १८)। ३ भ्रष्ट, गलित (आचा १, ३)।

चुइ स्त्री [च्युति] च्यवन, मरण (गाम)।

चुआरपुर न [चुआरपुर] एक नगर (कम्माण १८७)।

चुचुअ पु [दे] शेखर, सवाल, गलाका कूटक (दे ३, २६)।

चुचुअ पुं [चुञ्चुक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (इक)।

चुचुण न [चुञ्चुण] छन्द (पद्य) का विशेष, एक तिथि-करण (ठा ६—पत्र ३४८)।

चुंचुलिअ वि [दे] १ चंचल, चपल। २ आतुर, लम्पट (दे ३, २३)।

चुंचुंमाल स्त्री [दे] रत्नों की उत्पत्ति। २ [illegible], [illegible]। ३ [illegible] का भेद। ४ [illegible], [illegible]। ५ मुख, [illegible], (दे ३, २३)।

चुंचुमालि वि [दे] १ तरुण, [illegible], [illegible] (दे ३, १८)।

चुंचुलि पु [दे] १ चुल्लू भर पानी। २ चुल्लुक, पसर, एक हाथ का अंजलिआकार (दे ३, २३)।

चुचुलिअ वि [दे] १ अवधारित, निश्चित। २ न तृष्णा, लालच, लम्पटता (दे ३,२३)।

चुंचुलिपूर पु [दे] चुलुक चुल्लू, पसर (दे ३, १८)।

चुच्छ वि [दे] परिशोषित, सुखाया हुआ (दे ३, १५)।

चुच्छिअ वि [दे] सूखा हुआ, परिशोषित 'चुंच्छिकल्ले एव, मा भत्तारं हणा मुण्णु' (सुपा ३४६)।

चुट सक [चिं] फूल वगैरह को तोड़ कर इकट्ठा करना। वकृ. चुटत (सुपा ३३२)।

चुटिर वि [दे] पुनःविचारा (दे ६, ११६ टी)।

चुड्डी स्त्री [दे] थोड़ा पानीवाला अगाध जलाशय (णाया १, १—पत्र ३३)।

चुंपालय [दे] देखो चुप्पालय

'तात्र य सज्जाणु ठिया,
पवरगवक्खो निमाणगए।
चुपालएण पेच्छइ,
नियहीं रययरज्जमिय'
(पउम २६, ८०)।

चुंब सक [चुम्ब्] चुम्बन करना। चुंबइ (हे ४, २३६)। वकृ. चुंबंत (गा १०६, ४१६)। कवकृ. चुंबिज्जंत (से १, ३२)। संकृ. चुंबिऊ (षा) (हे ४, ४३९)। कृ. चुंबिअव्व (गा ४६५)।

चुंबण न [चुम्बन] चुम्बा, चुम्बा चूम। (गा ३१९, षड्)।

चुंबिअ वि [चुम्बित] १ चुम्बा लिया हुआ, मुख-चुम्बित। २ न चुम्बा, चुम्बन (दे ६, ६८)।

चुंबिर वि [चुम्बितृ] चुम्बन करनेवाला (कुमा)।

चुंभल पु [दे] शेखर, आपीड, सिर-भूषण (दे ३, १६)।

चुक्क अक [भ्रंश्] १ चूकना, भूल करना। २ भ्रष्ट होना, [illegible], [illegible] होना। ३ [illegible], भ्रष्ट करना, [illegible] करना। चुक्कइ (हे ४, १७७, षड्)। [illegible], [illegible] (सिरि ३९८०)।

चुक्क वि [भ्रष्ट] १ चूका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत, 'चुक्कसंकेआ', 'चुक्कविणअम्मि' (गा ३१८, १६५)। भ्रष्ट, वञ्चित, रहित, 'दमणमेत्तपसण्णे चुक्का सि सुहाण बहुआण' (गा ४६५, चउ ३६, सुपा ८७)। ३ अनवहित, बे-ख्याल (से १, ६)।

चुक्क पुं [दे] मुष्टि, मुट्ठी (दे ३, १४)।

चुक्कार पुं [दे] आवाज, शब्द (से १३, २५)।

चुक्कुड पुं [दे] छाग, बकरा, अज (दे ३, १६)।

चुक्ख [दे] देखो चोक्ख (सूक्त ४६)।

चुचुय } न [चूचुक] स्तन का अग्र भाग चुच्चुय } थन का वृन्त, चूची (पण्ह १, ४, राय)।

चुचूय पुन [चुचूक] स्तन का अग्र भाग, स्तनों की गोलाई, चूची (राय ६४)।

चुच्छ वि [तुच्छ] १ अल्प, थोड़ा, हलका। २ हीन, जघन्य, नगण्य (हे १, २०४, षड्)।

चुज्ज न [दे] आश्चर्य (दे ३, १४, सट्ठि ८३)।

चुडण न [दे] जीर्णता सड जाना (ओघ ३४६)।

चुडलिअ न [दे] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह खडा रखकर वन्दन करना (गुभा २५)।

चुडली [दे] देखो चुडुली (पव २)।

चुडिली देखो चुडुली (तदु ४६)।

चुडुप्प न [दे] १ खाल उतारना (दे ३, ३)। २ घाव, क्षत (गउड)। ३ चमडी, त्वचा (पाअ)।

चुडुप्पा स्त्री [दे] त्वचा, चमडी, खाल (दे ३, ३)।

चुडुली स्त्री [दे] उल्का, अलात, जलती हुई लकडी, उल्मुक (दे ३, १५, पाअ, सुर १३, १५६, स २४२)।

चुण सक [चि] चुनन, चुगना, पक्षियों का खाना। चुणइ (हे ४, २३८), 'काओ लिंबोहलिं चुणइ' (सूक्त ८६)।

चुणअ पुं [दे] १ चाण्डाल। २ बाल, बच्चा। ३ छन्द, इच्छा। ४ अरुचि, भोजन की अप्रीति। ५ व्यतिकर, सम्बन्ध। ६ वि. अल्प, थोड़ा। ७ मुक्त, त्यक्त। ८ आघ्रात, सूँघा हुआ (दे ३, २२)।

चुणिअ वि [दे] विधारित, धारण किया हुआ (दे ३ १५)।

चुण्ण सक [चूर्णय्] चूरना, टुकडा-टुकडा करना। सक्र. चुण्णिय (राज)।

चुण्ण पुन [चूर्ण] १ चूर्ण, चूर, बुकनी, बारीक खण्ड (बृह १, हे १, ८४, आचा)। २ आटा, पिसान (आचा २,२,१)। ३ धूली, रज, रेणु (दे ३, १७)। ४ गन्ध द्रव्य का रज, बुकनी (भग ३, ७)। ५ चूना (हे १, ८४, विपा १, २)। ६ वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान (णाया १, १४)। °कोसय न [°कोशक] भक्ष्य विशेष (पण्ह २, ५)।

चुण्ण न [चौर्ण] पद विशेष, गम्भीरार्थक पद, महार्थक शब्द (दसनि २)।

चुण्णइअ वि [दे] चूर्णाहत, चूरन से आहत, जिस प्रकार चूर्ण फेंका गया हो वह (दे ३, १७, पाअ)।

चुण्णग पु [चूर्णक] वृक्ष-विशेष (आचा २, १०, २३)।

चुण्णा स्त्री [चूर्णा] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष (पिंग)।

चुण्णाआ स्त्री [दे] कला विज्ञान (दे ३, १६)।

चुण्णासी स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ३, १६)।

चुण्णि स्त्री [चूर्णि] ग्रन्थ की टीका-विशेष (निचू)।

चुण्णिअ वि [चूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पाअ)। २ धूली से व्याप्त (दे ३, १७)।

चुण्णिआ स्त्री [चूर्णिका] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग-अलग होता है (पण्ण ११)।

चुण्णिय वि [चूर्णिक] गणित-प्रसिद्ध सर्वावशिष्ट अंश (सुज्ज १०, २२—पत्र १८५, १२—पत्र २१६)।

चुद्दस देखो चउ-द्दस (सुर ८, ११८)।

चुन्न देखो चुण्ण (कुमा, ठा ३, ४, प्रासू १८, भाव २, पभा ३१)।

चुन्नण न [चूर्णन] चूर-चूर करना (रवा ३)।

चुन्नि देखो चुण्णि (विचार ३५२, चंड)।

चुन्निअ देखो चुण्णिअ (पण्ह २, ४)।

चुन्निआ देखो चुण्णिआ (भास ७)।

चुप्प वि [दे] सस्नेह, स्निग्ध (दे ३, १५)।

चुप्पल पु [दे] शेखर, अवतंस (दे ३, १६)।

चुप्पलिअ न [दे] नया रँगा हुआ कपडा (दे ३, १७)।

चुप्पालय पुं [दे] झरोखा, गवाक्ष, वातायन, जंगला (दे ३, १७)।

चुरिम न [दे] खाद्य-विशेष (पव ४)।

चुलचुल अक [चुलचुलाय्] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना। वकृ. चुलचुलंत (गा ४८१)।

चुलणी स्त्री [चुलनी] १ द्रुपद राजा की स्त्री (णाया १, १६, उप ६४८ टी)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती की माता (महा)। °पिय पु [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक (उवा)।

चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौरासी, अस्सी और चार, ८४ (महा, जी ४७), 'चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु' (भग)।

चुलसीइ देखो चुलसी (पउम २०, १०२, जं २)।

चुलिआला स्त्री [चुलियाला] छन्द विशेष (पिंग)।

चुलुअ पुन [चुलुक] चुल्लू, पसर, एक हाथ का संपुटाकार (दे ३, १८, सुपा २१६, प्रासू ५७)।

चुलुक देखो चालुक्क (दे १, ८४ टी)।

चुलुचुल अक [स्पन्द्] फडकना, फरकना, थोड़ा हिलना। चुलुचुलइ (हे ४, १२७)।

चुलुचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ। २ न स्फुरण, स्पन्दन (पाअ)।

चुलुप्प पु [दे] छाग, अज, बकरा (दे ३, १६)।

चुल्ल पु [दे] १ शिशु, बालक। २ दास, नौकर (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा, लघु (ठा २, ३)। °ताय पु [°तात] पिता का छोटा भाई, चाचा (पि ३२५)। °पिउ पुं

[illegible]

चूला देखो चूला (सुर २, २४७; उप; णाया १, १; सुपा १०४)।

चूडुल्लअ (अप) देखो चूड (हे ४, ३९५)।

चूर सक [चूरय् , चूर्णय्] चूरा करना, तोड़ना, टुकड़ा-टुकड़ा करना। चूरेमि (धम्म ८ टी)। कर्म. चूरिज्जन्त (नि ४७८)। वकृ. चूरंत (सुपा २६१, ५६०)।

चूर (अप) पुन [चूर्ण] चूरा, चुकचुर 'जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ' (हे ४, ३३७)।

चूरग देखो चुन्नग (सुपा २०३)।

चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] चूर-चूर किया हुआ, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (गउड)।

चूरिम पुन [दे] मिठाई विशेष, चूरमा लड्डू (पव ४ टी)।

चूल° देखो चूला। °मणि न [°मणि] शिखामणि का एक प्रकार (उत्त)।

चूलअ [दे] देखो चूड (गउड)।

चूला स्त्री [चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा (पाअ)। २ शिखर, टोंच, 'पवि ...' (उप ७२८ टी)। ३ मुकुट-शिखा। ४ ... शिखा। ५ शेर की केसरा। ६ ... परिमाण वा धर्म भाग। ७ ... परिशिष्ट

[illegible]

(णिचू ?)।

[illegible]

प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४; जीव ३)।

चूलिआ देखो चूला (सम ६६; सुर ३, १२; णदि; निचू १, ठा ४, ४)।

चूअ (अप) देखो चूअ (भवि)।

चूह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, प्रेरणा। चूहइ (षड्)।

चे अ [चेत्] यदि, जो, अगर (उत्त १६), 'एव च पमो तियं, न चेदनोऽसि गो गाहो ?' (विसे २५८६)।

चे देखो चय = त्यज्। चेइ, (प्राप्र)। सकृ. चेच्चा (कप्प; पौप)।

चे } देखो चि। चेइ चेणइ, चेए, चेयए
चेअ } (षड्)।

चेअ सक [चित्] १ चेतना, सावधान होना, ख्याल करना। २ सुध आना, स्मरण करना, याद आना। चेयइ (स ४३८)। ३ जान, जानना। ४ अनुभव करना। चेयए (आचा)।

चेअ सक [चेतय्] १ ऊपर देखो। २ देना, अर्पण करना, वितरण करना। ३ करना, बनाना, 'जो पोसाये चेयइ' (सा ७१)। चेयइ, चेएमि, चेएमि (प्राप्र)। वकृ. चेतेमाण (ठा ५, २—पत्र ३१४; सम ३६)।

चेअ अ [एव] अवधारण सूचक अव्यय, निश्चय बतलाने वाला अव्यय (हे २, १८४)।

चेअ न [चेतस्] १ चेत, ज्ञान ..., ... (विसे १६१२; भग १६)। २ मन, चित्त, अन्तःकरण (दस ४, १; ठा ६, ३)।

चेअ पुं [चैत्र] ... (दस भाग ६; टी)। °पुर पुं [°पुर] ... नाम (...)।

चेइअ } न [चैत्य] १ चिता पर बनाया
चेईअ } हुआ स्मारक, स्तूप ...

[illegible]

अभीष्ट देवता की प्रतिमा, 'कल्लाणं मंगलं चेइयं पज्जुवासामो' (औप, भग)। ५ अर्हत्-प्रतिमा, जिन-देव की मूर्त्ति (ठा ३, १, उवा, पण्ह २, ३, आव २, पडि), 'विइएण उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, तहिं चेइयाइं वंदइ' (भग २०, ६), 'जिण-बिंबे मंगलचेइयंति समयन्नुणो विंति' (पव ७६)। ६ उद्यान, बगीचा 'मिहिलाए चेइए वच्छे सीअच्छाए मणोरमे' (उत्त ६ ६)। ७ सभा वृक्ष, सभा-गृह के पास का वृक्ष। ८ चबूतरा-वाला वृक्ष। ६ देवों का चिह्न-भूत वृक्ष। १० वह वृक्ष जहाँ जिनदेव को केवल ज्ञान उत्पन्न होता है (ठा ८ सम १३,१५६)। ११ वृक्ष, पेड़, 'वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे' (उत्त ६, १०)। १२ यज्ञ स्थान। १३ मनुष्यों का विश्राम-स्थान (षड्, हे २, १०७)। °खंभ पुं [°स्तम्भ] स्तूप, थूभ, (सम ६३, राय, सुज्ज १८)। °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर, अर्हन्मन्दिर (पउम २, १२, ६४, २६)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव-विशेष (धर्म ३)। °थूभ पुं [°स्तूप] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप (ठा ४, २, ज १)। °दव्व न [°द्रव्य] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबधी स्थावर या जंगम मिल्कत (वव ६, पंचभा, उर ४०७, द्र ४)। °परिवाडी स्त्री [°परि-पाटी] क्रम से जिन मन्दिरों की यात्रा (धर्म २)। °मह पु [°मह] चैत्य-सम्बन्धी उत्सव (आचा २, १, २)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] १ चबूतरावाला वृक्ष, जिसके नीचे चोतरा बांधा हो ऐसा वृक्ष। २ जिन-देव को जिसके नीचे केवल ज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष। ३ देवताओं का चिह्न भूत वृक्ष। ४ देव-सभा के पास का वृक्ष (सम १३, १५६, ठा ८)। °वन्दण न [°वन्दन] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति (पव १, संघ १, ३)। °वंदणा स्त्री [°वन्दना] वही पूर्वोक्त अर्थ (संघ १)। °वास पु [°वास] जिन मन्दिर में यतियों का निवास (दम)। °हर देखो °घर (जीव १, पउम ६५, ६२, सुपा १३, द्र ६५, उवर १६०)।

चेइअ वि [चेतित] कृत, विहित, 'तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं भवंति' (आचा २, १, २, २), 'चेइअ कइमेगट्ठ' (बृह २, कस)।

चेंध देखो चिंध (प्राप्र)।

चेआ देखो चे = त्यज्।

चेट्ठ अक [चेष्ट्] प्रयत्न करना, आचरण करना। वकृ चेट्ठमाण (काल)।

चेट्ठ देखो चिट्ठ = स्था (दे १, १७४)।

चेट्ठण न [स्थान] स्थिति, अवस्थान (वव ४)।

चेट्ठण देखो चिट्ठण = चेष्टन (उपप ११)।

चेट्ठा स्त्री [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण (ठा ३, १, सुर २, १०६)।

चेट्ठिय देखो दिट्ठिय = चेष्टित (औप, महा)।

चेड पुं [दे] बाल, कुमार, शिशु (दे ३, १०, णाया १, २, बृह १)।

चेड, चेडग, चेडय पुं [चेट, °क] १ दास, नौकर (औप, कप्प)। २ नृप-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (आचू १, भग ७, ६, महा)। ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति (सुपा २१७)।

चेडिआ स्त्री [चेटिका] दासी, नौकरानी (भग ६, ३३, कप्पू)।

चेडी स्त्री [चेटी] ऊपर देखो (आवम)।

चेडी स्त्री [दे] कुमारी, बाला, लड़की (पाअ)।

चेत्त न [चैत्य] चैत्य-विशेष (षड्)।

चेत्त पु [चैत्र] १ मास-विशेष, चैत मास (सम २६, हे १, १५२)। २ जैन मुनियों का एक गच्छ (बृह ६)।

चेत्ती स्त्री [चैत्री] १ चैत मास की पूर्णिमा। २ चैत मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

चेदि देखो चेइ (सण)।

चेदीस पु [चेदीश] चेदि देश का राजा (सण)।

चेयग वि [चेतक] दाता, देनेवाला (उप ६५७)।

चेयण पु [चेतन] १ आत्मा, जीव, प्राणी (ठा ४, ४)। २ वि. चेतनावाला, ज्ञानवाला, 'भुवि चेयण न किमरूवं' (विसे १८४५)।

चेयणा स्त्री [चेतना] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल (श्राव ६, सुर ४, २४५)।

चेयण्ण, चेयन्न न [चैतन्य] ऊपर देखो (विसे ४७५, सुपा २०, सुर १४, ८)।

चेयस देखो चेअ = चेतस्,

'ईसादोसेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे। जे अंतराय चेएइ, महामोह पकुव्वइ' (सम ५१)।

चेया देखो चेयणा, 'पत्तेयमभावाओ, न रेणु-तेल्ल व समुदए चेया' (विसे १६५२)।

चेल, चेलय न [चेल] वस्त्र, कपड़ा (आचा, औप)। °कण्ण न [°कर्ण] व्यजन-विशेष, एक तरह का पंखा (स ५४६)। °गोल न [°गोल] वस्त्र का गेंद कन्दुक (सूअ १, ४, २)। °हर न [°गृह] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी (स ५३७)।

चेलय न [दे] तुला-पात्र, 'दिट्ठीतूलाए भुवणं, तुलंति जे चित्तचेलए निहिय' (वज्जा ५६)।

चेलिय देखो चेल, 'रयणकचणचेलियबहुवन्न-भरभरिया' (पउम ६६, २५, आचा)।

चेलुंप न [दे] मुसल, मूपल (दे ३, ११)।

चेल्ल, चेल्लअ [दे] देखो चिल्ल (दे) (पउम ६७, १३, १६, स ४६६, दसनि १, उप २६८)।

चेल्हग, चेल्लय [दे] देखो चिल्लग (पण्ह १, ४—पत्र ६८, ती ३३)।

चेव अ [एव, चैव] १ अवधारण सूचक अव्यय, निश्चयदर्शक शब्द, 'जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अणंत-गुणं' (प्रासू २६, महा), 'अवहारणे चेवसद्दो य' (विसे ३५६५)। २ पाद-पूरक अव्यय (पउम ८, ८८)।

चेव अ [इव] सादृश्य-द्योतक अव्यय, 'पेच्छइ गणहरवसहं सरयरविं चेव तेएणं' (पउम ३, ४, उत्त १६, ३)।

चो देखो चउ (हे १, १७१, कुमा, सम ६०, औप, भग, णाया १, १, १४, विपा १, १, सुर १४, ६७)। °आल स्त्री [°चत्वारि-शत्] चालीस और चार, ४४ (वसे २३०४)। °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] चोसठ, ६४ (कप्प)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] सत्तर और चार, ७४ (सम ८४)।

चोअ सक [चोदय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ (उव, स १५)। कवकृ. चोइज्जंत, चोइज्जमाण (सुर २, १०, णाया १, १६)। सकृ चोइऊण (महा)।

चोअअ वि [चोदक] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी (अणु)।

[illegible]

चोप्पड न [म्रक्षण] घी, तैल वगैरह स्निग्ध वस्तु 'तेल्लघयन्ना चोप्प [illegible]' (सुपा ४३०)।

चोप्पडिअ वि [दे] चुपड़ा हुआ (पव ४)।

चोप्पाल पु [चतुष्पाल] [illegible] (राय ६३)।

चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा (ज २)।

चोप्फुस वि [दे] स्निग्ध, [illegible], प्रेम-युक्त प्रेमी (दे ३, १४)।

चोय } न [दे] त्वचा, छाल (पण्ह २, चोयग } ५—पत्र १४७ टी)। २ आम [illegible] (विसे १५ आचा २, १, १०)। ३ [illegible] द्रव्य-विशेष (अणु जीव १, राय)।

चोयग देखो चोअअ (नाट)।

चोयणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा (स १५, उव ६८८ टी)।

चोयय पु [दे] [illegible] विशेष (अणु १५८)।

चोयाल स [चतुश्चत्वारिंशत्] चौवालीस, ४४ (विसे ३६२)।

चोर पु [चोर] [illegible] दूसरे का धन चुराने-वाला (दे ३ १३४, [illegible] १, ३)। °रीढ पु [°रीढ] [illegible] पीट (जी १७)।

चोरक्कार [illegible] [चौरिकार] चोर, [illegible] (सुपा [illegible])।

[illegible]

चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करनेवाला (पव ८१)। २ पु चर, जासूस (पण्ह १,१)।

चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ (विसे ८५७)।

चोरिआ स्त्री [चौर्य, चोरिका] चोरी, अपहरण (गा २०६, गउड, हे १, ३५, कुमा ६, १७८)।

चोरिक्क न [चौरिक्य] ऊपर देखो (पण्ह १ ३)।

चोरी स्त्री [चौरी] चोरी, अपहरण (श्रा २७)।

चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज (दे ३, १८)। २ पु पुरुष चिह्न, लिङ्ग (पव ६१)। ३ न [illegible] विशेष, मजीठ (उप [illegible], ४)। °पट्ट पु [°पट्ट] जैन मुनि का कटि-वस्त्र (ओघ ३४)। °य पु [°ज] मजीठ का रंग (उप ६, ४)।

चोल पु [चोल] देश विशेष, द्रविड़ और कलिङ्ग के बीच का देश (पिंग, सण)।

चोलअ न [दे] कवच, वर्म (नाट)।

चोलअ } न [चोल, °क] संस्कार-विशेष, चोलग } मुण्डन, '[illegible]' (णाया, पण्ह १, २)।

चोलुक्क देखो चालुक्क (सं ५)।

चोलायणग } न [चूलायनक] १ संस्कार चोलोयणय } विशेष, [illegible] विशेष, [illegible] चोलोयणयण } (णाया १, १—पत्र [illegible])। २ शिखा धारण, चूडा धारण (भग ११, ११—पत्र ५४४ टीका)।

[illegible]

[illegible]

च्च अ [एव] अवधारण-सूचक अव्यय (हे २ १८४; कुमा, षड्)।

च्चिअ देखो चिअ = एव (हे २, १८४; कुमा)।

च्चेअ } च्चेव } देखो चेव = एव (पि ९२, जी ३२)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि चयाराइसद्दसंकलणो चउद्दसमो तरंगो समत्तो।

छ

छ पु [छ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)। २ आच्छादन, ढकना, 'छ त्ति य दोसाण छायणे होइ' (आवम)।

छ त्रि व [षष्] संख्या-विशेष, छ, 'छ छडिआओ जिणसासणम्मि' (श्रा ६, जी ३२, भग १, ८)। °उत्तरसय वि [°उत्तर-शततम] एक सौ और छठवाँ (पउम १०६, ४६)। °कम्म न [°कर्मन्] छ प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह (निचू १३)। °काय न [°काय] छ प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव (श्रा ७, पन्ना १५)। °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] छगुना (ठा ६, पि २७०)। °चरण पु [°चरण] भ्रमर, भौंरा (कुमा)। °जीव-निकाय पु [°जीवनिकाय] देखो °काय (आचा)। °णउइ, °ण्णवइ [°णवति] संख्या-विशेष, छानवे, ९६ (सम ९८, अजि १०)। °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] संख्या विशेष, छतीस, ३६ (कप्प)। °त्तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] छत्तीसवाँ (पउम ३६, ४३ पण्ण ३६)। °द्दस त्रि. व [षोडशन्] षोडश, सोलह। °द्दसहा अ [षोडशधा] सोलह प्रकार का (वव ४)। °द्दिसि न [°दिश्] छ दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा (भग)। °द्धा अ [°धा] छ प्रकार का (कम्म १, ३८)। °नवइ, °नुवइ °नउइ देखो °ण्णउइ (कम्म ३, ४, १२, सम ७०)। °न्नउय वि [°णवत] छानवेवाँ, ९६ वाँ (पउम ९६, ५०)। °प्पण्ण, °प्पन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] छप्पन, ५६ (राज, सम ७३)। °प्पन्न वि [°पञ्चाश] छप्पनवाँ (पउम ५६, ४८)। °ब्भाय पु [°भाग] छठवाँ हिस्सा (पि २७०)। °ब्भासा स्त्री [°भाषा] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छ भाषाएँ (रभा)। °मासिय, °म्मासिय वि [षाण्मासिक] छ मास मे होनेवाला, छ मास सम्बन्धी (सम २१, औप)। °वरिस वि [°वार्षिक] छ वर्ष की उम्रवाला (सार्ध २६)। °वीस देखो °व्वीस (पिंग)। °व्विह वि [°विध] छ प्रकार का (कस, नव ३)। °व्वीस स्त्रीन [°विंशति] छव्वीस, बीस और छ (सम ४५)। °व्वीसइम वि [°विंशतितम] १ छव्वीसवाँ २६ वाँ (पउम २६, १०३)। २ लगातार बारह दिनों का उपवास (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] संख्या विशेष, साठ और छ (कम्म २, १८)। °स्सयरि स्त्री [°सप्तति] छिहत्तर (कम्म २, १७)। °हा देखो °द्धा (कम्म १ ५, ८)।

छइ देखो छवि = छवि (वा १२)।

छइअ वि [स्थगित] आवृत्त, आच्छादित, तिरोहित (हे २, १७, षड्)।

छइल } छइल्ल } वि [दे] विदग्ध, चतुर, होशियार (पिंग दे ३, २४; गा ७२०, वज्जा पाअ, कुमा)।

छउअ वि [दे] तनु, कृश, पतला (दे ३, २५)।

छउम पुन [छद्मन्] १ कपट, शठता, माया (सम १, षड्)। २ छल, बहाना (हे २, ११२, षड्)। ३ आवरण, आच्छादन (सम १, ठा २, १)।

छउम न [छद्मन्] ज्ञानावरणीय आदि चार घाती कर्म (चेइय ३४६)।

छउमत्थ वि [छद्मस्थ] १ असर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित। २ राग-सहित, सराग (ठा ४, १, ६, ७)।

छउलूअ देखो छलूअ (राज, विसे २५०८)।

छकुई स्त्री [दे] कपिकच्छू, वृक्ष-विशेष, केवाँच, कवाछ (दे ३, २४)।

छट पु [दे] छींटा, जल का छींटा, जल-च्छटा। २ वि शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ३, ३३)।

छट सक [सिच्] सींचना। छटसु (सुपा २६८)।

छटण न [सेचन] सिंचन, सिंचना (सुपा १३६, कुमा)।

छंटा स्त्री [दे] देखो छट (पाअ)।

छटिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुपा १३८)।

छड देखो छड्ड = मुच्। छडइ (आरा ३२, भवि)।

छंडिअ वि [दे] छन्न, गुप्त (षड्)।

छडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (आरा, भाव)।

छंद सक [छन्द्] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ,

[illegible]

छगण न [स्थगन] ढकना, ढकना (दव ८)।

छगल न [दे] [illegible] (उत ५६० टी, पंचा १३ [illegible])।

छगलिया स्त्री [दे] [illegible] (अनु ५)।

छगल पुंस्त्री [छगल] छाग, अज, बकरा (पण्ह १,१ पौण)। स्त्री °ली (दे ७,८४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (ठा १०)।

छग्ग देखो छग (द ११)।

छग्गुण पु [षड्गुण] १ [illegible] २ तीन दिनों का उपवास (ठा ७ १)।

छच्छुंदर पु [दे] छछुंदर, चूहे या चूहे की एक जाति (स १६)।

छज्ज सक [राज्] शोभना, चमकना। छज्जइ (हे ४ १००)।

छज्जिअ वि [राजित] शोभित, चमकता (कुमा)।

छज्जिआ स्त्री [दे] पुष्पभाजन, चंगेरी (स ३३८)।

छड्डा [दे] देखो छटा (पड्)।

छट्ठ वि [षष्ठ] १ छठा (सम १०४, हे १, २६५)। २ न लगातार दो दिनों का उपवास (सुर ४, ५७)। °क्खमण न [°क्षमण, °क्षपण] लगातार दो दिनों का उपवास (भग ६, उप पृ ३४२)। °खमग पु [°क्षमक, °क्षपक] दो दो दिन का बराबर उपवास करनेवाला तपस्वी (उप ६२०)। °भत्त न [°भक्त] लगातार दो दिनों का उपवास (पंच ३)। °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार दो दिनों का उपवास करनेवाला (पण्ह १, १)।

छट्ठी स्त्री [षष्ठी] १ तिथि-विशेष (सम २६)। २ [illegible] ३ [illegible]

[illegible]

छड्डा स्त्री [दे] विद्युत, बिजली (दे ३, २४)।

छटा स्त्री [छटा] १ समूह, परम्परा (सुर ४, २४३, था १२)। २ छींटा, पानी की बूँद (पाअ)।

छडाल वि [छटावत्] छटावाला (पउम ३५, १८)।

छड्डिय वि [त्रुटित] शूर्प आदि से छाँटा या पछाड़ा हुआ (सुपा २६ राय ६७)।

छड्ड सक [छर्दय्, मुच्] १ वमन करना। २ छोड़ना, त्याग करना। ३ डालना, गिराना। छड्डइ (हे ४, ९१ महा उव)। वकृ. छड्डिज्जंत (वि ५६१)। कृ. छड्डेयव्व (भाग)। संकृ. छड्डेउं, भूमीए पीडं जा [illegible] (निचू १४७१)। छड्डित्तु (पव ७)।

छड्डण न [छर्दन, मोचन] १ परित्याग, विमोचन (ठा १०६ पोष ८६)। २ वमन, वान्ति (विपा १, ८)।

छड्डय वि [छर्दक] त्यागनेवाला (पुप्र ३१७)। २ पु एक सेठ का नाम (पुप्र ३६६)।

छड्डावण न [छर्दन, मोचन] १ छुड़ाना, मुक्त कराना। २ वमन कराना। ३ वि. वमन करानेवाला। ४ छुड़ानेवाला (कुमा)।

छड्डावय वि [छर्दक, मोचक] त्याग करानेवाला, त्याजक (द २, ६२)।

छड्डावण देखो छड्डावण (सुपा ४१७)।

छड्डाविय वि [छर्दित, मोचित] १ वमन कराया हुआ। २ छुड़ाया हुआ (धर्म ५, २)।

छड्डि स्त्री [छर्दि] वमन का रोग (पड्, ६ २, ३६)।

छड्डि स्त्री [छर्दिस्] छिद्र [illegible] (पण्ह)।

छड्डिय, छड्डियल्लिय वि [छर्दित, मुक्त] १ त्यक्त, [illegible] हुआ। २ वमन [illegible] (वि २६०६, [illegible] पौण)।

छण सक [क्षण्] हिंसा करना। [illegible] ([illegible] २१०)।

छण सक [क्षण्] हिंसा करना। [illegible] (सूय १, १)।

छण पुं [क्षण] १ उत्सव, मह (दे ३, [illegible])। [illegible] (उत्त)। °चंद पुं [°चन्द्र] पूर्ण

ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा (म ३७१)। °ससि पु [°शशिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा ३०६)।

छणण न [क्षणन] हिंसन, हिंसा (आचा)।

छणिंदु पु [क्षणेन्दु] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र (सुपा ३३, ४०४)।

छण्ण वि [छन्न] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ (बृह १, प्राप)। २ आच्छादित, ढका हुआ (गा ५८०)। ३ न माया, कपट (सूअ १, २, २)। ४ निर्जन, विजन, रहस्। ५ क्रिवि गुप्त रीति से प्रच्छन्न रूप से,

'ज छण्णं आयरिय,
तइया जणणीए जोव्वणमएण।
त पडिव (? यडि) ज्जइ
इण्हि सुण्हि सील चयंतेहिं'
(उप ७२८ टी)।

छण्णालय न [दे पण्णालक] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, सन्यासियो का एक उपकरण (भग, औप, णाया १, ५)।

छत्त न [छत्र] छाता, आतपात्र (णाया १, ५, प्रासू ५२)। °धार पुं [°धार] छाता धारण करनेवाला नौकर (जीव ३)। °पडागा स्त्री °[पताका] १ छत्र-युक्त ध्वज। २ छत्र के ऊपर की पताका (औप)। °पलासय न [°पलाशक] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य (भग)। °भंग पु [°भङ्ग] राज-नाश, नृप-मरण (राज)। °हार देखो °धार (आवम)। °इच्छत्त न [°तिच्छत्र] १ छत्र के ऊपर का छाता (सम १३७)। २ पु ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष (सुज्ज १२)।

छत्त न [छत्र] लगातार तैतीस दिनो का उपवास (संबोध ५८)। पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। ३ पुं. ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग जिसमे चन्द्र आदि ग्रह छत्र के आकार से रहते है (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इल्ल वि [°वत्] छातावाला (सुख २, १३)। °कार वि [कार] छाता बनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)। °ग पुन [°क] वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १६)।

छत्त पुं [छात्र] विद्यार्थी, अभ्यासी (उप पृ ३३१, १६९ टी)।

छत्तंतिया स्त्री [छत्रान्तिका] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष (बृह १)।

छत्तच्छय (अप) पु [सप्तच्छद] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन (मण)।

छत्तधन्न न [दे] घास, तृण (पाअ)।

छत्तवण्ण देखो छत्तिवण्ण (प्राप्र)।

छत्ता स्त्री [छत्रा] नगरी-विशेष (आवम)।

छत्तार पुं [छत्रकार] छाता बनानेवाला कारीगर (पण्ण १)।

छत्ताह पु [छत्राभ] वृक्ष-विशेष, 'णग्गोहस-त्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछत्ताहे' (सम १५२)।

छत्ति वि [छत्रिन्] छत्र-युक्त, छातावाला (भास ३३)।

छत्तिवण्ण पु [सप्तपर्ण] वृक्ष-विशेष, सतोना, छतिवन, (हे १, २६५, कुमा)।

छत्तोय पु [छत्रौक] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

छत्तोव पुं [छत्रोप] वृक्ष-विशेष (औप, अत)।

छत्तोह पु [छत्रौघ] वृक्ष-विशेष (औप, पण्ण १—पत्र ३१, भग)।

छदमत्थ देखो छउमत्थ (द्रव्य ४४)।

छद्दवण देखो छड्डुवण (राज)।

छद्दसम वि [षड्दश] छ या दश (सूअ २, २, २१)।

छद्दी स्त्री [दे] शय्या, बिछौना (दे ३, २४)।

छन्न वि [क्षण] हिंसा-प्रधान, हिंसा-जनक (सूअ १, ६, २६)।

छन्न देखो छण्ण (कप्प, उप ६४८ टी, प्रासू ८२)।

छप्पइगिल्ल वि [षट्पदिकावत्] यूका-युक्त यूकावाला (बृह ३),

छप्पइया स्त्री [षट्पदिका] यूका, जूँ (ओघ ७२४)।

छप्पती स्त्री [दे] नियम-विशेष, जिसमे पद्य लिखा जाता है (दे ३, २५)।

छप्पण्ण } वि [दे षट्प्रज्ञक] विदग्ध,
छप्पण्णय } चतुर, चालाक (दे ३, २४, पाअ, वज्जा ५८)।

छप्पत्तिआ स्त्री [दे] १ चपत, थप्पड, तमाचा। २ चपाती, रोटी, फुलका,

'छप्पत्तिआवि खज्जइ,
निप्पत्ते पुत्ति! एत्थ को देसो?।
निअपुरिसेवि रमिज्जइ,
परपुरिसविवज्जिए गामे'
(गा ८८७)।

छप्पन्न [दे] देखो छप्पण्ण (जय ६)।

छप्पय पु [षट्पद] १ भ्रमर, भौंरा (हे १, २६५ जीव ३)। २ वि छ स्थानवाला। ३ छ प्रकार का (विसे २८६१)। ४ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

छव्व } पुन [दे] पात्र-विशेष (आचा २,
छव्वग } १, ८, १, पिंड ५६१, २७८)।

छव्वय न [दे] वंश-पिटक, घी वगैरह को छानने का उपकरण-विशेष, 'मुईगाईमक्कोड-एहिं ससत्तग च नाऊण। गालेज्ज छव्वएण' (ओघ ५५८)।

छब्भामरी स्त्री [षट्भ्रामरी] एक प्रकार की वीणा (णाया १, १७—पत्र २२९)।

छमच्छम अक [छमच्छमाय्] 'छम-छम' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी की आवाज। छमच्छमइ (वज्जा ८८)।

छम° देखो छमा। °रुह पु [°रुह] वृक्ष, पेड, दरख्त (कुमा)।

छमलय पु [दे] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष, सतोना, छतिवन (दे ३, २५)।

छमा स्त्री [क्षमा, क्ष्मा] पृथिवी, धरिणी, भूमि (हे २, १८)। °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड (षड्)। देखो छम°।

छमी स्त्री [शमी] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष (हे १, २६५)।

छम्म देखो छउम (हे २, ११२, षड्, पउम ४०, ५, सण)।

छम्मुह पुं [षण्मुख] १ स्कन्द, कार्तिकेय (हे १, २६५)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव (संति ८)।

छय न [छद] १ पर्ण, पत्ती, पत्र, पत्ता (औप)। २ आवरण, आच्छादन (से ६, ४७)।

छय न [क्षत] १ व्रण, घाव (हे २, १७)। २ पीडित, व्रणित (सूअ १, २, २)।

छयल्ल [दे] देखो छइल्ल (रंभा)।

छरु पु [त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा (पण्ह १, ४)। °प्पवाय न [°प्रवाद] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र (ज २)।

[illegible]

[illegible] देखो [illegible] (दे १४८)।

[illegible] (कुमा ४८३)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ३, ३४)।

छवि स्त्री [छवि] १ कान्ति, तेज (कुमा, [illegible])। २ त्वक्, चमड़ी (दस्र १, १)। [illegible] (पाअ, जीव ३)। ४ शोभा (सांदे)। ५ [illegible] (ठा ८, [illegible]) ६ [illegible] (पण्ह)। °च्छेअ पुं [°च्छेद] [illegible] [illegible]। °च्छेयण न [°च्छेदन] [illegible] (पण्ह १, १)। °त्ताण न [°त्राण] [illegible] (उत्त २)।

छ, वअ वि [षड्] [illegible] (श्रा २७)।

छविपव्व न [छविपर्वन्] औदारिक शरीर (उत्त ४ २४)।

छव्वीस वि [षड्विंशति] [illegible] ३ (पंचा २, [illegible] २ ३)।

[illegible] [दे] [illegible] (पाअ)।

[illegible] वि [दे] [illegible] (गउड)।

[illegible] (घात) [illegible] (हे ४४१)।

[illegible] वि [षट्सप्तत] [illegible], ७६ वाँ (पउम ७६, ३७)।

[illegible] स्त्री [षट्सप्तति] [illegible], ७६ (सम ७६)।

छाअ देखो छाय (प्राप्र ४४)।

छाइअ वि [छादित] [illegible], ढका हुआ (पण्ह ११४, [illegible])।

[illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] ([illegible] ७, २ [illegible] ३, [illegible]) [illegible] ([illegible])। [illegible]

[illegible] देखो [illegible]

[illegible] [दे] [illegible] (दे ३, २६)।

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] की पूर्वावस्था से संवन्ध रखनेवाला ([illegible] २१, पउम २६)।

छाओवग वि [छायोपग] १ छायान्वित, छायावाला (कुमारि) २ पुं. [illegible] पुरुष, [illegible] पुरुष (ठा ४, ३)।

छागल वि [छागल] १ छाग-संबन्धी (ठा ५, ३)। २ पुं अज, बकरा। स्त्री. °ली (वि २३१)।

छागलिय पुं [छागलिक] छाग से आजीविका रखनेवाला, अज-पालक (विपा १, ४)।

छाण न [दे] १ गाय आदि पशुओं का मल (दे ३, ३४)। २ गोबर, गोवर (दे ३, ३४; [illegible] १२, १७; [illegible] १, ७; जीव १)। ३ वस्त्र (दे ३, ३४; जीव ३)।

छाणण न [दे] [illegible], [illegible]। "[illegible]" (पि ४५ टी)।

छाणवइ (अप) देखो छण्णवइ (पिंग)।

छाणी स्त्री [दे] १ गाय आदि पशुओं का मल। २ [illegible], [illegible] (दे ३, ३४)। ३ गोबर, गोबर (दे ३, ३४; [illegible] २)।

[illegible] स्त्री [दे] [illegible] (पउम २८)।

छाय वि [छात] बुभुक्षित, भूखवाला (दस ६, २, ७)।

छाय सक [छादय्] [illegible] [illegible] (हे ४, २१)। [illegible] (पउम ७, १४)।

छाय वि [छाय] १ [illegible] (दे ३, २३; [illegible]; [illegible] २२०)। २ [illegible] (दे ३, २३ [illegible])।

[illegible] वि [illegible] [illegible] (सम १५२)।

छायण न [छादन] [illegible] ([illegible], [illegible] ११)।

[illegible] न [illegible] [illegible] (हे २०१)। २ [illegible]। ३ [illegible] ([illegible] १५)।

[illegible] स्त्री [दे] [illegible] [illegible] (पउम १२ [illegible])।

छाया स्त्री [छाया] १ आतप का अभाव, छाह (पाअ)। २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति (हे १, २४६, ओघ, पाअ)। ३ शोभा (ओघ)। ४ प्रतिबिम्ब, परछाईं (प्रासू ११४, उत्त २)। ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश (ठा २, ४)। °गइ स्त्री [°गति] १ छाया के अनुसार गमन। २ छाया के अवलम्बन में गति (पएण १६)। °पास पु [°पार्श्व] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्त्ति (ती ४५)।

छाया स्त्री [दे] १ कीर्त्ति यश, ख्याति। २ भ्रमरी, भमरी, भौंरी (दे ३, ३८)।

छायाइत्त वि [छायावत्] छायावाला, छाया-युक्त। स्त्री °इत्तिआ (हे २, २०३)।

छायाला स्त्री [षट्चत्वारिंशत्] छियालीस, चालीस और छ, ४६ (भग)।

छायालीस स्त्रीन. ऊपर देखो (सम ६६, कप्प)।

छायालीस वि [षट्चत्वारिंश] छियालीसवाँ, ४६ वाँ (पउम ४६, ६६)।

छार वि [क्षार] १ पिघलनेवाला, झरनेवाला। २ खारा, लवण-रसवाला। ३ पु लवण, नोन, नमक। ४ सज्जी, सज्जीखार। ५ गुड (हे २, १७, प्राप्र)। ६ भस्म, भूति (विसे १२५६, न ४४, प्रासू १४५, णाया १, २)। ७ मात्सर्य, असहिष्णुता (जीव ३)।

छार पु [दे] अच्छभल्ल, भालूक (दे ३, २६)।

छारय देखो छार (श्रा २७)।

छारय न [दे] १ इक्षु-शल्क, ऊख की छाल (दे ३, ३४)। २ मुकुल, कली (दे ३, ३४, पाअ)।

छारिय वि [क्षारिक] क्षार-सम्बन्धी (दस ५, १, ७)।

छाल पु [छाग] अज, बकरा (हे १, १९१)।

छालिया स्त्री [छागिका] अजा, छागी (सुर ७, ३०, सण)।

छाली स्त्री [छागी] ऊपर देखो (प्रामा)।

छाव पुं [शाव] बालक, बच्चा, शिशु (हे १, २६५, प्राप्र, वव १)।

छावण देखो छायण (बृह १)।

छावट्ठि स्त्री [षट्षष्टि] छाछठ, छियासठ, ६६ (सम ७८, विसे २७६१)।

छावत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर, सत्तर और छ ७६ (पउम १०२, ८६, सम ८५)। °म वि [°तम] छिहत्तरवाँ (भग)।

छावलिय वि [षडावलिक] छ आवलिका-परिमित समयवाला (विसे ५३१)।

छासट्ठ वि [षट्षष्ट] छियासठवाँ (पउम ६६, ३७)।

छासी स्त्री [दे] छाछ, तक्र, मट्ठा (दे ३, २६)।

छासीइ स्त्री [षडशीति] छियासी, अस्सी और छ। °म वि [°तम] छियासीवाँ, ८६ वाँ (पउम ८६, ७४)।

छाहत्तरि (अप) देखो छावत्तरि (पि २४५)।

छाहत्तरि देखो छावत्तरि (पव २३६)।

छाहा, छाहिया, छाही स्त्री [छाया] १ छाह, आतप का अभाव। २ प्रतिबिम्ब, परछाईं (षड्; प्राप, सुर २, २४७, ६, ६५, हे १, २४९, गा ३४)।

छाही स्त्री [दे] गगन, आकाश। °मणि पु [°मणि] सूर्य, सूरज (दे ३, २६)।

छिअ देखो छीअ (दे ८, ७२, प्रामा)।

छिइई स्त्री [दे] असती, कुलटा (हे २, १७४, गा, ३०१, ३५०, पाअ, धर्मरत्न-लघुवृत्तिपत्र ३१, १)।

छिंछटरमण न [दे] क्रीडा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीडा (दे ३, ३०)।

छिछय पु [दे] १ देह, शरीर। २ जार, उपपति। ३ न फल-विशेष, शलाटु-फल (दे ३, ३६)।

छिंछोली स्त्री [दे] छोटा जल-प्रवाह (दे ३, २७, पाअ)।

छिंड न [दे] १ चूडा, चोटी (दे ३, ३५, पाअ)। २ छत्र, छाता। ३ धूप-यन्त्र (दे ३, ३५)।

छिंडिआ स्त्री [दे] १ वाड का छिद्र। २ अपवाद, 'छ छिंडिआओ जिणसासणम्मि' (पव १४८, श्रा ६)।

छिंडी स्त्री [दे] वाड का छिद्र (णाया १, २—पत्र ७९)।

छिंद सक [छिद्] छेदना, विच्छेद करना। छिंदइ (प्राप्र, महा)। भवि छेच्छं (हे ३, १७१)। कर्म. छिज्जइ (महा)। वकृ. छिंदमाण (णाया १, १)। कवकृ छिज्जंत, छिज्जमाण (श्रा ६, विपा १, २)। संकृ. छिंदिऊण, छिंदित्ता, छिंदित्तु, छिंदिय, छेत्तूण (पि ५८५, भग १४, ८, पि ५०६, ठा ३, २, महा)। कृ छिंदियव्व (पएह २, १)। हेकृ छेत्तु (आचा)।

छिंदण न [छेदन] छेद, खण्डन, कर्तन (ओघ १५४ भा)।

छिंदावण न [छेदन] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना (महानि ७)।

छिंदाविय वि [छेदित] विच्छिन्न कराया गया (स २२९)।

छिंपय पुं [छिम्पक] कपडा छापने का काम करनेवाला (दे १, ९८, प्राप्र)।

छिक्क न [दे] क्षुत, छीक (दे ३, ३८ कुमा)।

छिक्क वि [दे छुप्त] स्पृष्ट, छूआ हुआ (दे ३, ३६, हे २, १३८, से ३, ४६, स ४४४)। °परोइया स्त्री [°प्ररोदिका] वनस्पति-विशेष (विसे १७५४)।

छिक्क वि [छीत्कृत] छी-छी आवाज से आहूत, 'पुव्विपि वीरसुणिआ छिक्काछिक्का पहावए तुरियं' (ओघ १२४ भा)।

छिक्कत वि [दे] छीक करता हुआ (सुपा ११९)।

छिक्का स्त्री [दे] छिक्का, छीक (स ३२२)।

छिक्कारिअ वि [छीत्कारित] छी-छी आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ (ओघ १२४ भा टी)।

छिक्किय न [दे] छीकना, छीक करना (स ३२४)।

छिक्कोअण वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ३, २९)।

छिक्कोट्टली स्त्री [दे] १ पैर की आवाज। २ पाँव से धान्य का मलना। ३ गोइठा का टुकडा, गोबर-खण्ड (दे ३, ३७)।

छिक्कोलिअ वि [दे] तनु, पतला, कृश (दे ३, २५)।

छिक्कोवण [दे] देखो छिक्कोअण (ठा ६—पत्र ३७२)।

छिग्ग (शौ) सक [छुप्] छूना। छिग्गदि (प्राकृ ९३)।

छिचोलय पु [दे] देखो छिव्वोल्ल (पाअ)।

छिच्छई देखो छिइई (षड्)।

छिच्छय देखो छिंछय (षड्)।

[illegible]

[illegible] [दे] [illegible] (दे ३, २८)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ३, २८)।

डिप्पाड पु [दे] [illegible] (दे ३, २८)।

डिप्पाउअ न [दे] [illegible] (दे ३, २६)।

डिप्पिंडी स्त्री [दे] १ [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible] (दे ३, ३१)।

डिप्पिअ वि [दे] [illegible] (पाअ)।

डिप्पीर न [दे] पलाल, पुआल, घास (दे ३, २८)।

डिप्पोली स्त्री [दे] [illegible] (पिंड १)।

डिंभ सक [क्षिप्] फेंकना। [illegible] (सूअ १ ५, २, १२)।

डिमिडिमिडिम अक [डिमिडिमाय्] 'डिम डिम' आवाज करना। वकृ डिमि-डिमिडिमंत (पउम २६, ४८)।

डिरा स्त्री [गिरा] [illegible] (दे ३, १, हे १, २५६)।

डिरि पुं [दे] [illegible] (दे ३, ३४)।

डिल न [दे] १ [illegible] (दे ३, ३४)। २ [illegible]। ३ [illegible] (दे ३, ३४)। ४ [illegible] (औ १)।

डिसर न [दे] [illegible] (दे ३, २८ पुत्र ४, २२१)।

[illegible] वि [दे] [illegible]।

[illegible] स्त्री [दे] [illegible] (दे ३, ३१)।

[illegible]

जिसके पन्ने विशेष लम्बे और कम चौड़े हो ऐसी पुस्तक (ठा ४, २, पत्र ८०)।
छिविअ वि [स्पृष्ट] १ छूआ हुआ (दे ३, २७) २ न. स्पर्श, छूना (से २, ८)।
छिविअ न [दे] ईख का टुकड़ा (दे ३, २७)।
छिवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल (गा ६०५ अ)।
छिव्व वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ३, २७)।
छिव्वोल्ल न [दे] १ निन्दार्थक मुख-विकूरणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष। २ विकूणित मुख (दे ३, २८)।
छिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिहइ (हे ४, १८२)।
छिहंड न [शिखण्ड] मयूर की शिखा (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।
छिहंडअ पु [दे] दही का बना हुआ मिष्टान्न, दधिसर, गुजराती मे जिसे 'मिखंड' कहते हैं (दे ३, २९)।
छिहंडि पु [शिखण्डिन्] १ मयूर, मोर। २ वि. मयूरपिच्छ को धारण करनेवाला (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।
छिहली स्त्री [दे] शिखा, चोटी (बृह ४)।
छिहा स्त्री [स्पृहा] स्पृहा, अभिलाप (कुमा, हे १, १२८, षड्)।
छिहिडिभिल्ल न [दे] दधि, दही (दे ३, ३०)।
छिहिअ वि [स्पृष्ट] छूआ हुआ (कुमा)।
छीअ स्त्रीन [क्षुत] छिक्का, छीक (हे १, ११२, २, १७, ओघ ६४३, पडि)। स्त्री. °आ (श्रा २७)।
छीअमाण वि [क्षुवत्] छीक करता (आचा २, २, ३)।
छीण वि [क्षीण] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल (हे २, ३, गा ८४)।
छीयत वि [क्षुवत्] छीक करता (ती ८)।
छीर न [क्षीर] जल, पानी। २ दुग्ध, दूध (हे २, १७, गा ५६७)। °बिराली स्त्री [°बिडाली] वनस्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड (पणण १—पत्र ३५)।
छीरल पु [क्षीरल] हाथ से चलनेवाला एक तरह का जन्तु, साँप की एक जाति (पण्ह १, १)।
छीवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल (गा ६०३)।
छु सक [क्षुद्] १ पीसना। २ पीलना। कर्म छुज्जइ (उव)। कवकृ. छुज्जमाण (सथा ६०)।
छुअ देखो छीअ (प्राप्र)।
छुअ देखो छुव। छुअइ (प्राकृ ७६)।
छुई स्त्री [दे] बलाका, बकपंक्ति (दे ३, ३०)।
छुछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़ (दे ३, ३४)।
छुछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा (दे ३, ३१)।
छुद वि [आ + क्रम्] आक्रमण करना। छुदइ (हे ४, १६०, षड्)।
छुद्द सक [दे] बहु, प्रभूत (दे ३, ३०)।
छुक्कारण न [धिक्कारण] धिक्कारना, निंदा (बृह २)।
छुच्छ वि [तुच्छ] तुच्छ, क्षुद्र, हलका (हे १, २०४)।
छुच्छुक्कर सक [छुच्छु + कृ] 'छु-छु' आवाज करना, श्वानादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्करेति (आचा)।
खुज्जमाण देखो छु।
छुट्ट अक [छुट्] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छुट्टइ (भवि)। छुट्टिह (धम्म ६ टी)।
छुट्ट वि [छुटित] छूटा हुआ, बन्धन-मुक्त (सुपा ४०७, सूक्त ८६)।
छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु (पाअ)।
छुट्टण न [छोटन] छुटकारा, मुक्ति (श्रा २७)।
छुड्ड वि [दे] १ लिप्त। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (भवि)।
छुडु अ [दे] १ यदि, जो (हे ४, ३८५, ४२२)। २ शीघ्र, तुरन्त (हे ४, ४०१)।
छुड्डु वि [क्षुद्र] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु (औप)।
छुड्डिया स्त्री [क्षुद्रिका] आभरण-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४९ टी)।
छुण्ण वि [क्षुण्ण] १ चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ। २ विहत, विनाशित। ३ अभ्यस्त (हे २, १७, प्राप्र)।
छुत्त वि [छुप्त] स्पृष्ट, छूआ हुआ (हे २, १३८, कुमा)।
छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच (सूक्त ८९)।
छुद्दहीर पु [दे] १ शिशु, बच्चा, बालक। २ शशी, चन्द्रमा (दे ३, ३८)।
छुद्दिया देखो छुड्डिया (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।
छुद्र देखो खुद्द (प्राप्र)।
छुद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (सण)।
छुध वि [क्षुध] भूखा (प्राकृ २२)।
छुन्न पुन [क्षुण्ण] क्लीव, नपुसक (पिंड ४२५)।
छुन्न देखो छुण्ण, 'जतम्मि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण' (सथा ५६)।
छुप्पत देखो छुव।
छुब्भ अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना। छुब्भति (पि ६६)।
छुब्भत्थ [दे] देखो छोब्भत्थ (दे ३, ३३)।
छुभ देखो छुह। छुभइ, छुभेइ (महा, रयण २०)। सकृ छुभित्ता (पि ६६)।
छुमा देखो छमा (दसचू १)।
छुर सक [छुर्] १ लेप करना, लीपना। २ छेदन करना, छेदना। ३ व्याप्त करना (वा १२, पउम २८, २८)।
छुर पुं [क्षुर] १ छुरा, नपित का अस्त्र। २ पशु का नख, खुर। ३ वृक्ष-विशेष, गोखरू। ४ वाण, शर, तीर (हे २, १७, प्राप्र)। ५ न तृण-विशेष (पणण १)। °घरय न [°गृहक] नापित के छुरा वगैरह रखने की थैली (निचू १)।
छुरण न [क्षुरण] अवलेपन (कप्पू)।
छुरमड्डि पु [दे] नापित, हजाम (दे ३, ३१)।
छुरहत्थ पुं [दे. क्षुरहस्त] नापित, हजाम (दे ३, ३१)।
छुरिआ स्त्री [दे] मृत्तिका, मिट्टी (दे ३, ३१)।
छुरिआ, छुरिगा } स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू (महा, सुपा ३८१, स १४७)।
छुरिय वि [छुरित] १ व्याप्त। २ लिप्त (पउम २८, २८)।

[illegible]

छेलार न [दे] [illegible] (दे ३, ३२)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ३, ३२)।

छेत्तू [illegible] [छेत्तृ] [illegible] (भाषा)।

छेअ देखो छेअ = छेद् । [illegible] (पि ४४३)। [illegible] (पि ५८६, [illegible])।

छेअ देखो छेअ = छेद (उत्त १४, १७, [illegible] १)।

छेअअ वि [छेदक] [illegible] (पि २९३)।

छेअण वि [छेदन] [illegible] (स ७६)।

छेओवट्ठावणिय देखो छेओवट्ठावणिय ([illegible] ४)।

छेअ न [दे] १ [illegible] २ [illegible] (दे ३, ३८)।

छेअ न [illegible] ([illegible] १, ३ [illegible])।

छेआ पुं [दे] [illegible] (दे ३, ३२)।

छेअ / छेया / छेअय [दे] [illegible] (दे ३, ३२ [illegible] १४०)। [illegible] (पि २३१ [illegible] १, १ [illegible] १४)।

[illegible]

शरीर-रचना (सम ४४, १४६, भग, कम्म १, ३६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त सहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म (कम्म १, ३९)।

छेवाडी [दे] देखो छिवाडी (पव ८०, निचू १२, जीव ३)।

छेह पुं [दे क्षेप] प्रेरण, क्षेपण, 'तो वम्र-परिणामोणअभुमम्रावलिरुब्भमाणदिट्ठिच्छेहो' (सि ४, १७)।

छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि (पिंग)।

छोअ पु [दे] छिलका (सूअ २, १, १६)।

छोइअ पुं [दे] दास, नौकर (दे ३३)।

छोइआ स्त्री [दे] छिलका, ईख वगैरह की छाल (उप ७६८ टी), 'उच्छुखडे पत्थिए छोइयं पणामेइ' (महा)।

छोकरी स्त्री [दे] छोकरी, लडकी (कुप्र ५३)।

छोट्टि स्त्री [दे] उच्छिष्टता, जूठाई (पिंड ५८७)।

छोड सक [छोटय्] छोडना, बन्धन से मुक्त करना। छोडइ, छोडेइ (भवि, महा)। संकृ. छोडिवि (सुपा २४६)।

छोडय वि [दे] छोटा, लघु (वज्जा १६४)।

छोडाविअ वि [छोटित] छुडवाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ (स ६२)।

छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघ्वी, क्षुद्र (पिंग)।

छोडिअ वि [छोटित] १ छोडा हुआ, बन्धन मुक्त किया हुआ, 'वत्थाओ छोडिओ गठी' (सुपा ५०४, स ४३१)। २ घट्टित, आहत (पराह १, ४—पत्र ७८)।

छोडिअ देखो फोडिअ (औप)।

छोढूण वि [दे] छोडकर (कुप्र ३१)।

छोढूण } देखो छुह।
छोढूण }

छोप्प वि [स्पृश्य] स्पर्श-योग्य, छूने लायक (आचा २, १५, ५)।

छोब्भ पु [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, ३३)। देखो छोभ।

छोब्भ वि [क्षोभ्य] क्षोभ योग्य, क्षोभणीय, 'होंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा (? ब्भा) सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' (पराह १, ३—पत्र ५५)।

छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट (दे ३, ३३)।

छोब्भाइत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने के अयोग्या। २ द्वेष्या, अप्रीतिकर स्त्री (दे ३, ३६)।

छोभ [दे] देखो छोब्भ (दे ३, ३३ टि)। २ निस्सहाय, दीन (पराह १, ३—पत्र ५५)।

३ न अभ्याख्यान, कलक-आरोपण, दोषारोप (बृह १, वव २)। ४ न वन्दन-विशेष, दो खमासमण रूप वन्दन (गुभा १)। ५ आघात, 'कोत्रेण धमधमतो दतच्छोभे ये देइ सो तम्मि' (महा)।

छोम देखो छउम (णाया १, ९—पत्र १५७)।

छोयर पु [दे] छोरा, लडका, छोकरा (उप पृ २१५)।

छोलिअ देखो छोडिअ = छोटित (पिंग)।

छोल्ल सक [तक्ष्] छीलना, छाल उतारना। छोल्लइ (षड्)। कर्म छोल्लिज्जतु (हे ४, ३९५)।

छोल्लण न [तक्षण] छीलना, निम्तुषीकरण, छिलका उतारना (णाया १, ७)।

छोल्लिअ वि [तष्ट] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ (उप १७५)।

छोह पुं [दे] १ समूह, यूथ, जत्था। २ विक्षेप (दे ३, ३९)। ३ आघात, 'ताव य सो मायगो छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि' (महा)।

छोह पुं [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना, 'नियदिट्ठिच्छोहअमयधाराहिं' (सुपा २९८)।

छोहर [दे] देखो छोयर (सुपा ५५२)।

छोहिय वि [क्षोभित] क्षोभ-प्राप्त, घबडाया हुआ, व्याकुल किया गया (उप १३७ टी)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि छआराइसद्दसकलणो
पंचदसमो तरंगो समत्तो ॥

ज

ज पु [ज] तालु-स्थानीय व्यजन वर्ण विशेष (प्रामा, प्राप)।

ज स [यत्] जो, जो कोई (ठा ३, १, जी ८, कुमा, गा १०६)।

°ज वि [°ज] उत्पन्न, 'आसाइयरससेओ होइ विसेसेण णेहजो दहणो' (गा ७६६), 'आरभज' (आचा)।

जअक्कार पुं [जयकार] जीत, अभ्युदय (प्राकृ ३०)।

जअड अक [त्वर्] त्वरा करना, शीघ्रता करना। जअडइ (हे ४,१७०, षड्)। वकृ. जअडत (हे ४, १७०)। प्रयो. जअडावति (कुमा)।

जअल वि [दे] छन्न, आच्छादित, ढका हुआ (षड्)।

जइ पुं [यति] १ साधु, जितेन्द्रिय, सन्यासी (औप, सुपा ४४४)। २ छन्द-शास्त्र मे प्रसिद्ध विश्राम स्थान, कविता का विश्राम-स्थान (धम्म १ टी)।

जइ वि [यति] जितना (वव १)।

जइ अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (प्राप्र)।

जइ अ [यदि] यदि, जो, अगर (सम १५५,

[illegible]

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन, कहना (श्रा १२, गउड)।

जंपण न [दे] १ अकीर्त्ति, अपयश। २ मुख मुँह (दे ३, ५१, भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलनेवाला, भाषक (पण्ह १ ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिविका विशेष (ठा ४, ३, औप, सुपा ३६३, उप ६५६)। २ मृतक-यान, शव-यान (सुपा २१६)।

जंपिच्छ्य वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहनेवाला (दे ३, ४४, पाअ)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त (प्रासू १३०)।

जंपिय देखो जंप।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट (दे २, ६७)। २ बोलनेवाला, भाषक (हे २, १४५, श्रा २७, गा १६२, सुपा ४०२)।

जंपेक्खिरमग्गिर } वि [दे] जिसको देखे
जंपेच्छिरमग्गिर } उसी की याचना करनेवाला (षड्, ३, ४४)।

जंबवई स्त्री [जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १४, श्राव १)।

जंबवत पु [जाम्बवत्] एक विद्याधर राजा (कुप्र २५६)।

जंबाल न [दे] १ जवाल, सैवाल, जलमल, सिवार या सेवार (दे ३, ४२, पाअ)।

जंबाल पुंन [जम्बाल] १ कर्दम, कांदो, पक (पाअ, ठा ३, ३)। २ जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म (सूअ १, ७)।

जंबीरिय (अप) न [जम्बीर] नीबू या नीबू, फल-विशेष (सण)।

जंबु पु [जम्बु] १ जम्बुक, सियार, 'उद्धमुहुन्नइयजंबुगणं' (पउम १०५, ५७)। २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली (कप्प, वसु, विपा १, १)। ३ न जम्बू वृक्ष का फल, जामुन (श्रा ३६)।

जंबु पुन [जम्बु] जम्बू वृक्ष का फल, जामुन, 'ते विंति जंबू भक्खेमो' (सबोध ४७)।

जंबु° देखो जंबू (कप्प, कुमा, इक, पउम ५६, २२, से १३, ८६)।

जंबुअ पुं [दे] १ वेतस वृक्ष, वेंत। २ पश्चिम दिक्पाल (दे ३, ५२)।

जंबुअ } पु [जम्बुक] १ सियार, गीदड
जंबुग } (प्रासू १७१ उप ७६८ टी, पउम १०५, ६४)। २ न. जम्बूवृक्ष का फल, जामुन (सुपा २२६)।

जंबुल पुं [दे] १ वानीर वृक्ष, वेंत। २ न. मद्यभाजन, सुरापात्र (दे ३, ४१)।

जंबुल्ल वि [दे] जल्पाक, वाचाट, बकवादी (पाअ)।

जंबुवई देखो जंबवई (अंत, पडि)।

जंबू स्त्री [जम्बू] १ वृक्ष विशेष, जामुन का पेड (णाया १, १, औप)। २ जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है (जं १)। ३ पु एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य (जं १)। °दीव पु [°द्वीप] भूखण्ड विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमे वह भारत आदि क्षेत्र वर्त्तमान है (जं १, इक)। °दीवग वि [°द्वीपक] जम्बूद्वीप-सबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न (ठा ४, २, ६)। °दीवपण्णत्ति स्त्री [°द्वीपप्रज्ञप्ति] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमे जंबूद्वीप का वर्णन है (जं १)। °पीढ, °पेढ न [°पीठ] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान प्रदेश (जं ४, इक)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °मालि पु [°मालिन्] रावण का एक पुत्र, रावण का एक सुभट (पउम ५६, २२, से १३, ८६)। °मेघपुर न [°मेघपुर] विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °संड पु [°षण्ड] ग्राम-विशेष (आवम)। °सामि पु [°स्वामिन्] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष (आवम)।

जंबूअ पुं [जम्बूक] सियार, गीदड (ओघ ८४ भा)।

जंबूणय न [जाम्बूनद] १ सुवर्ण, सोना (सम ६५, पउम ५, १२६)। २ पु. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (पउम ४८, ६८)।

जंबूलय पुंन [जम्बूलक] उदक-भाजन-विशेष (उवा)।

जंभ पु [दे] तुष, भूसा, धान्य वगैरह का छिलका (दे ३, ४०)।

जंभंत देखो जंभा = जृम्भ्।

जंभग वि [जृम्भक] १ जँभाई लेनेवाला। २ पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति (कप्प, सुपा ४०)।

जंभणभण } वि [दे] स्वच्छन्द-भाषी, जो
जंभणभण } मरजी मे आवे वह बोलने-
जंभणय } वाला (षड्, दे ३, ४४)।

जंभणी स्त्री [जृम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष (सूअ २, २, पउम ७, १४४)।

जंभय देखो जंभग (णाया १, १, अंत, भग १४, ८)।

जंभल पुं [दे] जड, सुस्त, मन्द (दे ३, ४१)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] जँभाई, जृम्भण (विपा १,)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] एक देवी का नाम (सिरि २०३)।

जंभा } अक [जृम्भ्] जँभाई लेना।
जंभाअ } जंभाइ, जंभाअइ (हे ४, १५७, २४०, प्राप्र, षड्)। वकृ जंभंत, जंभाअंत (गा ५४६; से ७, ६५, कप्प)।

जंभाइअ न [जृम्भित] जँभाई, जृम्भा (पडि)।

जंभिय न [जृम्भित] १ जँभाई जृम्भा। २ पुं. ग्राम-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था, यह गाँव पारसनाथ पहाड के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था (कप्प)।

जक्ख पु [यक्ष] १ व्यन्तर देवो की एक जाति (पण्ह १, ४, औप)। २ धनेश, कुवेर, यक्षाधिपति (प्राप्र)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था (पउम ८, १०२)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-विशेष (चंद १६)। ६ श्वान, कुत्ता, 'अह आयविराहणया उक्खुल्लिहणे पवयणम्मि' (ओघ १६३ भा)। °कद्दम पु [°कर्दम] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण (भवि)। २ द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष (चंद २०)। °ग्गह पु [°ग्रह] यक्षावेश, यक्षकृत उपद्रव (जीव ३, जं २)। °णायग पु [°नायक] यक्षो का अधिपति, कुवेर (अणु)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °दित्तय (पव २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की वहिन, एक जैन साध्वी

[illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible] (पु [illegible] १, ३, २० [illegible])।

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [दे] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible]

जच्च पु [दे] पुरुष, मरद, आदमी (दे ३, ४०)।

जच्च वि [जात्य] १ उत्तम जातवाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर (गाया १, १, धा १२, सुपा ७७, कप्प)। २ स्वाभाविक, अकृत्रिम (तदु)। ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध (जीव ३)।

जच्चंजण न [जात्याञ्जन] १ श्रेष्ठ अञ्जन सुन्दर आँजन (णाया १, १)। २ मर्दित अञ्जन, तैल वगैरह से मर्दित अञ्जन (कप्प)।

जच्चंदण न [दे] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है। २ कुंकुम, केसर (दे ३, ५२)।

जच्चंध वि [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा, जन्मांध (सुपा ३६५)।

जच्चण्णिय } वि [जात्यन्वित] सुकुल मे
जच्चन्निय } उत्पन्न, श्रेष्ठ जाति का (सूत्र १, १०, बृह ३)।

जच्चास पु [जात्यश्व, जात्याश्व] उत्तम जाति का घोडा (पउम ५४, २६)।

जच्चिय (अप) वि [जातीय] समान जाति का (सण)।

जच्चिर न [यच्चिर] जहाँ तक, जितने समय तक (वव ७)।

जच्छ सक [यम्] १ उपरम करना, विराम करना। २ देना, दान करना। जच्छइ (हे ४, २१५, कुमा)।

जच्छ पुं [यक्ष्मन्] रोग-विशेष, यक्ष्मा, क्षय-रोग (प्राकृ २२)।

जच्छंद वि [दे] स्वच्छन्द, स्वैर (दे ३, ४३, षड्)।

जज देखो जअ = यज्। वकृ. जजमाण (नाट—शकु ७२)।

जजु देखो जउ = यजुष् (णाया १, ५, भग)

जज्ज वि [जय्य] जो जीता जा सके वह जीतने को शक्य (हे २, २४)।

जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जांजर, झाँझरा या झाँझर (गा १०१, सुर ३, १३६)।

जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना। कवकृ जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण (नाट—चैत ३३; सुपा ६४)।

जज्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, खोखला किया हुआ, पुराना (ठा ४, ४, सुर ३, १६५, कप्प)।

जज्जिग पु [जज्जियक] एक जैन आचार्य का नाम (ती १५)।

जज्जिय } न [यावज्जीव] जीवन-पर्यन्त,
जज्जीव } जिन्दगी भर, 'जज्जीव अहिगरणं (पिंड ५०६, ५१२)।

जट्ट पु [जर्त] १ देश विशेष (भव)। २ उस देश का निवासी (हे २, ३०)।

जट्ठ वि [इष्ट] यजन किया हुआ, याग किया हुआ (स ५५)।

जट्ठ न [इष्ट] यजन, याग, यज्ञ (उत्त १२, ४०, २५, ३०)।

जट्ठि स्त्री [यष्टि] लकडी, 'जट्ठिमुट्ठिलउडपहारेहिं' (महा, प्राप्र)।

जड वि [जड] १ अचेतन, जीव रहित पदार्थ। २ मूर्ख, आलसी, विवेक-शून्य (पाअ, प्रासू ७१)। ३ शिशिर, जाड़े से ठंढा होकर चलने को असमर्थ (पाअ)।

जड देखो जढ (षड्)।

जड° } स्त्री [जटा] सटे हुए बाल, मिले हुए
जडा } बाल (हेका २५७, सुपा २५१)। °वर वि [°वर] १ जटा को धारण करने-वाला। २ पु जटाधारी तापस, सन्यासी (पउम ३६, ७५)। °धारि पु [°धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ३३, १)।

जडहारि देखो जड-धारि (कुप्र २६३)।

जडाउ } पुं [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध गृध्र
जडाउण } पक्षि-विशेष (पउम ४४, ५५, ४०)।

जडागि पु [जटाकिन्] ऊपर देखो (पउम ४१, ६५)।

जडाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटाधारी (हे २, १४६)।

जडासुर पु [जटासुर] असुर-विशेष (वेणी १७७)।

जडि वि [जटिन्] १ जटावाला, जटायुक्त। २ पु जटाधारी तापस (औप, भत्त १००)।

जडिअ वि [जटिक] देखो जडि (कुप्र २६३)।

जडिअ वि [जटित] पिहित, ढका हुआ (सिरि ५१६)।

जडिअ वि [दे. जटित] जडित जडा हुआ, खचित, सलग्न (दे ३, ४१, महा, पाअ)।

जडिम पुस्त्री [जडिमन्] जडता, जडपन, जाड्य (सुपा ६)।

जडियाइलग } पु [दे जटिकादिलक] ग्रह-
जडियाइलय } विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३, चन्द २०)।

जडिल वि [जटिल] १ जटावाला, जटा-युक्त (उवा, कुमा २, ३५)। २ व्याप्त, खचित, 'उल्लसियबहलजालोलिजडिले जलणे पवेसो वा' (सुपा ४६५)। ३ पु. सिंह, केसरी। ४ जटाधारी तापस (हे १, १९४, भग १५, पव ६४)।

जडिलय पु [दे. जटिलक] राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज २०)।

जडिलिय } वि [जटिलित] जटिल किया
जडिलिल्ल } हुआ, जटा-युक्त किया हुआ (सुपा १२५, २६६)।

जडिल्ल वि [जटिन्] जटावाला, जटाधारी (चड)।

जगुल देखो जडिल (भग १५—पत्र ६७०)।

जड्ड वि [दे] अशक्त, असमर्थ (पव १०७)।

जड्ड न [जाड्य] जडता, जडपन (उप ३२० टी, सार्ध १३०)।

जड्ड देखो जड (पव १०७, पचभा)।

जड्ड पु [दे] हाथी, हस्ती (ओघ २३८, बृह १)।

जड्डा स्त्री [दे] जाडा, शीत (सुर १३, २१५, पिंग)।

जढ वि [त्यक्त] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित (हे ४, २५८, ओघ ६०), 'जइवि न सम्मत्तजढो' सत्त ७१ टी)।

जढर } न [जठर] पेट, उदर (हे १, २५४,
जढल } प्राप्र, षड्)।

जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना। जणेइ, जणाति (प्रासू १५, १०८, महा)। जणयति (आचा)। वकृ जणत, जणेमाण (सुर १३, २१, द्र ३६, उव)।

जण पु [जन] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति (ओप, आचा, कुमा, प्रासू ६,

[illegible]

जणी [illegible] [जनी] [illegible] (पाअ [illegible] २४३, [illegible] १२ ७३)।

[illegible]

[जनोमि] [illegible]

[illegible] (पव) [illegible] [जनक] १ [illegible] २ पुं पिता, बाप (प्रति)।

जणेरि (पव) स्त्री [जननी] माता, मां (प्रति)।

जण्ण पुं [यज्ञ] १ [illegible] (पव २७७)। २ देव-पूजा। ३ [illegible] (पिंड ३)। [illegible]

[illegible] (पउम ९५)। [illegible] [illegible] (पउम २३७)। [illegible] (पउम १२)।

[illegible] (पउमा १००)।

[illegible]

जण्हली स्त्री [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे ३, ४०)।

जण्हवी स्त्री [जाह्नवी] १ सगर चक्रवर्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी (पउम ५, २०१)। २ गङ्गा-नदी, भागीरथी (पउम ४१, ५१, कुमा)।

जण्हु पु [जह्नु] भरत-वंशीय एक राजा (प्राप्र, हे २, ७५)। °सुआ स्त्री [°सुता] गङ्गा-नदी, भागीरथी (पाग्र)।

जण्हुआ स्त्री [दे] जानु, घुटना (पाग्र)।

जण्हुकन्ना स्त्री [जह्नुकन्या] गगा-नदी (कुप्र ६६)।

जत्त देखो जय=यत्। भवि जत्तिहामि (निर १, १)।

जत्त पुं [यत्न] उद्योग, उद्यम, चेष्टा (उप पृ ५८)।

जत्ता स्त्री [यात्रा] १ देशान्तर-गमन, देशाटन (ठा ४, १, औप)। २ गमन, गति, 'जत्तत्ति होइ गमणं' (पंचभा, औप)। ३ देव-पूजा के निमित्ति किया जाता उत्सव-विशेष, अष्टाह्निका, रथ-यात्रा आदि, 'हुं नाय पारद्धा सिद्धाययणेसु जत्ताओ' (सुर ३, ३८)। ४ तीर्थ-गमन तीर्थ-भ्रमण (धर्म २)। ५ शुभ-प्रवृत्ति (भग १८, १०)।

जत्ता स्त्री [यात्रा] संयम-निर्वाह (उत्त १३, ८)।

जत्ति स्त्री [दे] १ चिन्ता। २ सेवा, सुश्रूषा, 'अजाणणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि' (श्रा २८)।

जत्तिअ देखो °यत्तिअ (उवा २० टि)।

जत्तिय वि [यावत्] जितना (प्रासू १५६, श्रावम)।

जत्तो देखो जओ (हे २, १६०)।

जत्थ अ [यत्र] जहाँ, जिसमें (हे २, १६१, प्रासू ७६)।

जदि देखो जइ=यदि (निचू २)।

जदिच्छा देखो जइच्छा (बृह ३, मा १२)।

जदु देखो जउ=यदु (कुमा, ठा ८)।

जद्दर पुन [दे] वस्त्र-विशेष (सम्मत्त २१८, २१६)।

जधा देखो जहा (ठा २, ३, ३, १)।

जन्न देखो जण्ण (पएह १, २, ४, पउम ११, ४६)।

जन्न वि [जन्य] १ जन-हित, लोक-हितकर (सूत्र २, ६, २)। २ उत्पन्न होने योग्य (धर्मसं २८०)।

जन्नत्ता } स्त्री [दे] बरात, गुजराती में 'जान'
जन्ना } (सुपा ३६६, उप ७६८ टी)।

जन्नसेणी देखो जण्णसेणी (पार्थ ४)।

जन्नु देखो जाणु (पउम ६८, १०)।

जन्नोवइय देखो जण्णोवईय (सुख २, १३)।

जन्नोवईय देखो जण्णोवईय (णाया १, १६—पत्र २१३)।

जन्हवी देखो जण्हवी (ठा ६, ६)।

जप देखो जव=जप् (षड्)।

जपिर वि [जपितृ] जाप करनेवाला (षड्)

जप्प देखो जप। जप्पइ (षड्)। जप्पति (पि २६६)।

जप्प पु [जल्प] १ उक्ति, कथन। २ छल का उपालम्भ रूप भाषण (राज)।

जप्प वि [याप्य] गमन कराने योग्य। °जाण न [°यान] वाहन-विशेष, शिविका (दे ६, १२२)।

जप्पभिइ } अ [यत्प्रभृति] जब से, जहाँ से
जप्पभिइं } लेकर (णाया १, १, कप्प)।

जप्पिअ वि [जल्पित] १ उक्त, कथित (प्राप)। २ न उक्ति, वचन (अच्चु २)।

जम सक [यमय्] १ काबू में रखना, नियन्त्रण करना। २ जमाना, स्थिर करना। जमेइ (मे १०, ७०)। संकृ जमइत्ता (औप)।

जम पु [यम] १ अहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत (णाया १, ५, ठा २, ३)। २ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जम देवता, जमराज (पएह १, १, पाग्र, हे १, २४५)। ३ भरणी नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १०)। ४ किष्किन्धा नगरी का एक राजा (पउम ७, ४६)। ५ तापस-विशेष (आवम)। ६ मृत्यु, मौत (आव ४, महा)। ७ सयमन, नियन्त्रण (आवम)। °काइय पु [°कायिक] असुर-विशेष, परमाधार्मिक देव, जो नारकी के जीवो को दुःख देते हैं (पएह १, १)। °घोस पु [°घोष] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ७)। °पुरी स्त्री [°पुरी] जम की नगरी, मौत का स्थान, 'को जमपुरीसमाणे सममाणे एव-मुल्लवइ?' (सुपा ४६२)। °प्पभ पु [°प्रभ] यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा १०)। °भड पुं [°भट] यमराज का सुभट (महा)। °मंदिर न [°मन्दिर] यमराज का घर, मृत्यु स्थान (महा)। °लय न [°लय] पूर्वोक्त ही अर्थ (पउम ४५, १०)।

जमग पु [यमक] १ पक्षि-विशेष। देव-विशेष (जीव ३)। ३ पर्वत-विशेष (जीव ३, सम ११४, इक)। ४ द्रह-विशेष, दह, झील (जीव ३, इक)। देखो जमय।

जमग } अ [दे] एक साथ, एक ही
जमगसमग } समय में, युगपत् (धम्म ११ टी, णाया १, ४, औप, विपा १, १)।

जमणिया स्त्री [जमनिका] जैन साधु का उपकरण-विशेष (राज)।

जमदग्गि पु [जमदग्नि] तापस-विशेष इस नाम का एक सन्यासी, परशुराम का पिता (पि २०७)।

जमदग्गिजडा स्त्री [यमदग्निजटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष, सुगन्धवाला (उत्तनि ३)।

जमय देखो जमग ५ न अलंकार-शास्त्र में प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

जमल न [यमल] १ जोड़ा, युग्म, युगल (णाया १, १, हे २, १७३, से ५, ५६)। २ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पंक्तिवाला (राय)। ३ सहवर्त्ती, सहचारी (भग १५)। ४ समान, तुल्य (राय, औप)। °ज्जुणभंजग पुं [°र्जुनभञ्जक] श्रीकृष्ण वासुदेव (पएह १, ४)। °पद, °पय न [°पद] १ प्राय-श्चित्त-विशेष (निचू १)। २ आठ अंको की संख्या (पएण १२)। °पाणि पुं [°पाणि] मुष्टि, मुट्ठी (भग १६, ३)।

जमलिय वि [यमलित] १ युग्म रूप से स्थित (राय)। २ सम-श्रेणि रूप से अवस्थित (णाया १, १, औप)।

जमलोइय वि [यमलौकिक] १ यमलोक-सम्बन्धी, यमलोक से सम्बन्ध रखनेवाला। २ परमाधार्मिक देव, असुरो की एक जाति (सूत्र १, १२)।

[illegible]

[illegible] [जाद] [illegible] [illegible] °जय न [°ग्रय] [illegible] [°नाथ] [illegible] [प्रभु] [illegible] [illegible] [illegible] (उत्त [illegible])।

जय [illegible] [illegible] [illegible]

जय [illegible] [जय] [illegible] (ठाण)।

जग न [जग] [illegible] [illegible] °पुर न [°पुर] [illegible] [°धर्मा] [illegible] [illegible]

[illegible] (कुलि १०६००)। [illegible] (कुला ६५८), [illegible] (कुलि १०८७२)। °सिरि स्त्री [°श्री] [illegible] (भवा)। °सेन पुं [°सेन] [illegible] °सिंह पुं [°सिंह] १ [illegible] (पउम ७०, ७ कुमा २३४)। २ [illegible] °सिंहपुर न [°सिंहपुर] [illegible] °धाम न [°धाम] [illegible] (इक)।

जय पुं [जय] [illegible] (इक ४ १, ०६)।

जया स्त्री [जया] तिथि-विशेष—[illegible] (जं १)।

जय° देखा [illegible] °प्पभिइ अ [°प्रभृति] जब से, [illegible] (म [illegible])।

जयंत पुं [जयन्त] १ [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

पर्वत की एक वापी (ती २४)। ९ नवमी तिथि (ज ७)। १० जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा। २ अभय-दान (पण्ह २, १)।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम, 'जयणघडण-जोग-चरित्तं' (अनु)। २ यतना, प्राणी की रक्षा (पण्ह २, १)।

जयण वि [जवन] वेगवाला, वेग-युक्त (कप्प)।

जयण न [जयन] १ जीत, विजय (मुद्रा २६८, कप्पू)। २ वि जीतनेवाला (कप्प)।

जयण न [दे] घोडे का बख्तर, हय-सनाह (दे ३, ४०)।

जयणा स्त्री [यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (दस ४)। ३ उपयोग, किसी जीव को दु ख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल (निचू १, स ६७, औप)।

जयद्दह पु [जयद्रथ] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था (णाया १, १६)।

जया अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (कप्प, काल)।

जया स्त्री [जया] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। २ चतुर्थ चक्रवर्त्ती राजा की अग्र-महिषी (सम १५२)। ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम ख्यात माता (सम १५१)। ४ तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (सुज्ज १०)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासनदेवी (ती ६)। ६ ओषधि-विशेष (राज)।

जयार पु [जकार] १ 'ज' अक्षर। २ जका-रादि अश्लील शब्द, 'जत्थ जयारमयारं समणी जपइ गिहत्थपचक्ख (गच्छ ३, ४)।

जयिण देखो जइण = जयिन् (पण्ह १, ४)।

जर अक [जॄ] जीर्ण होना, पुराना होना, वूढा होना। जरइ (हे ४, २३४)। कर्म जीरइ, जरिज्जइ (हे ४, २५०)। वक्त जरत (अच्चु ७९)।

जर पु [ज्वर] रोग-विशेष, बुखार (कुमा)।

जर पुं [जर] १ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३)। २ वि. जीर्ण, पुराना (दे ३, ५९)।

जर वि [जरत्] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, वूढा (कुमा, सुर २, ६६, १०४)। स्त्री. °ई (कुमा, गा ४७२ अ)। °ग्गव पु [°गव] वूढा वैल (बृह १, अनु ४)। °ग्गवी स्त्री [°गवी] वूढी गाय (गा ४६२) °ग्गु पु [°गु] १ वूढा वैल। २ स्त्री वूढी गाय, 'जिएणा य जरग्गवो पडिया' (पउम ३३, १६)।

जर° देखो जरा (कुमा, अत १६, वव ७)।

जरंड वि [दे] वृद्ध, वूढा (दे ३, ४०)।

जरग्ग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना (अनु ५)।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, परुष। २ जीर्ण, पुराना (णाया १, १—पत्र ५)। देखो जरढ।

जरड वि [दे] वृद्ध, वूढा (दे ३, ४०)।

जरढ देखो जरठ (पि १९८, से १०, ३८)। ३ प्रौढ, मजवूत (से १, ४३)।

जरण न [जरण] जीर्णता, आहार का हजम होना, हाजमा (धर्मसं ११३५)।

जरय पु [जरक] रत्नप्रभा नामक नरक पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। °मज्झ पु [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °ावत्त पु [°ावर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °ावसिट्ठ पु [°ावशिष्ट] नरकावास-विशेष (ठा ६)।

जरलद्धिअ, जरलविअ वि [दे] ग्रामीण, ग्राम्य (दे ३, ४४)।

जरा स्त्री [जरा] बुढापा, वृद्धत्व (आचा, कस, प्रासू १३४)। °कुमार पु [°कुमार] श्रीकृष्ण का एक भाई (अत)। °संध पु [°सन्ध] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वासुदेव ने मारा था (सम १५३)। °सिंध पु [°सिन्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ (पण्ह १,४—पत्र ७२)। °सिंधु पु [°सिन्धु] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १६ पत्र २०९, पउम ५, १५६)।

जरा स्त्री [जरा] वसुदेव की एक पत्नी (कुप्र ९९)।

जराहिरण (अप) देखो जल हरण (पिंग)।

जरि वि [ज्वरिन्] बुखारवाला, ज्वर से पीडित (सुपा २४३)।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, वृद्ध, वूढा (दे ३, ५७, उर ३, १)।

जरिअ वि [ज्वरित] ज्वर-युक्त, बुखारवाला (गा २१९, सुपा २८९)।

जल अक [ज्वल्] १ जलना, दग्ध होना। २ चमकना। जलइ (महा)। वक्त जलंत (उवा, गा २६४)। हेक्त जलित्तु (महा)। प्रयो, वक्त जलित (महानि ७)।

जल देखो जड (श्रा १२, श्राव ४)।

जल न [जाड्य] जडता, मन्दता, 'जलधोय-जललेवा' (सार्ध ७३, से १, २४)।

जल पुं [ज्वल] देदीप्यमान, चमकीला (सूअ १, ५, १)।

जल न [जल] वीर्य (वज्जा १०२)। °कंत पुन [°कान्त] एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)। °कारि पुस्त्री [°कारिन्] चतुरि-न्द्रिय जन्तु-विशेष (उत्त ३६, १४९)। °य वि [°ज] पानी मे उत्पन्न (श्रु ६८)। °वारिअ पु [°वारिक] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (सुख ३६, १४९)।

जल न [जल] १ पानी, उदक (सूअ १, ५, २, जी २)। २ पुं जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °कंत पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पण्ण १, कुम्मा १५)। २ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °करप्फाल पुं [°करास्फाल] हाथ से आहत पानी (पाअ)। °करि पुस्त्री [°करिन्] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष (महा)। °कलंब पु [°कदम्ब] कदम्ब वृक्ष की एक जाति (गउड)। °कीडा, °कीला स्त्री [°क्रीडा] पानी मे की जाती क्रीडा, जल-केलि (णाया १, २)। °केलि स्त्री [°केलि] जल-क्रीडा (कुमा)। °चर देखो °यर (कप्प, हे १, १७७)। °चार पु [°चार] पानी मे चलना (आचा २, ५, १)। °चारण पुं [°चारण] जिसके प्रभाव से पानी मे भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखने-वाला मुनि (गच्छ २)। °चारि पुं [°चारिन्] पानी मे रहनेवाला जतु (जी २०)।

(सुपा २०२)। वकृ. जवत (नाट)। कवकृ. जविज्जंत (सुर १३, १८६)।

जव पुं [जप] जाप, पुन पुन मन्त्रोच्चारण, बार-बार मन ही मन देवता का नाम-स्मरण (पण्ह २, २, सुपा १२०)।

जव पुं [यव] १ अन्न-विशेष, जव या जौ (णाया १, १, पण्ह १ ४)। २ परिमाण-विशेष, आठ यूका की नाप (ठा ८)। °णाली स्त्री [°नाली] वह नाली जिसमें जौ बोए जाते हों (आचू १)। °मज्झ न [°मध्य] १ तप-विशेष (पउम २२, २४)। २ आठ यूका का एक नाप (पव २५)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] व्रत विशेष, प्रतिमा-विशेष (ठा ४, १) °राय पुं [°राज] नृप-विशेष (बृह १)। °वंसा स्त्री [°वंशा] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

जव पुं [जव] वेग, दौड, शीघ्र गति (कुमा)।

जव पुंन [यव] एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। °नालय पुं [°नालक] कन्या का कंचुक (णंदि ८८ टी)। °न्न न [°ान्न] यव-निष्पन्न परमान्न, भोज्य विशेष, जव की खीर, जाउर (पव २५९)।

जवजव पुं [यवयव] अन्न-विशेष, एक तरह का यव-धान्य (ठा २, १)।

जवण न [दे] हल की शिखा, हल की चोटी (दे ३, ४१)।

जवण न [जपन] जाप, पुन पुन मन्त्र का उच्चारण, 'अहिणा दट्ठुस्स जए को कालो मंत-जवणम्मि' (पउम ८६, ६०, स ६)।

जवण वि [जवन] १ वेग से जानेवाला (उप ७६८ टी)। २ पुं. वेग, शीघ्र गति (आवम)।

जवण पुं [यवन] १ म्लेच्छ देश-विशेष (पउम ९८, ६४)। २ उस देश मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १)। ३ यवन देश का राजा (कुमा)।

जवण न [यापन] निर्वाह, गुजारा, (उत्त ८)।

जवणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (पव २)।

जवणाणिया स्त्री [यवनानिका] लिपि-विशेष (राज)।

जवणालिया स्त्री [यवनालिका] कन्या का कञ्चुक (आवम)।

जवणिआ स्त्री [यवनिका] परदा (दे ४, १, सण, कप्पू)।

जवणिज्ज देखो जव = यापय्।

जवणी स्त्री [यवनी] परदा, आच्छादक पट (दे २, २५)। २ सचारिका, दूती (अभि ५७)।

जवणी स्त्री [यावनी] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लिपि (सम ३५, विसे ४६४ टी)।

जवणीअ देखो जव = यापय्।

जवपचमाण पुं [दे] जात्यश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु (गउड)।

जवय } पु [दे] जव का अकुर (दे ३, जवरय } ४२)।

जवली स्त्री [दे] जव, वेग, 'गच्छति गरुय-नेहेण पवरतुरयाहिरूढा जवलीए' (सुपा २७६)।

जववारय [दे] देखो जवरय (पचा ८)।

जवस न [यवस] १ तृण, घास, 'गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी, उप पृ ८४)। २ गेहूँ वगैरह धान्य (आचा २, ३, २)।

जवा स्त्री [जपा] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृक्ष। २ गुड्हल का फूल, अडहुल का पुष्प (कुमा)।

जवास पुं [यवास] वृक्ष विशेष, रक्त पुष्प-वाला वृक्ष-विशेष, 'पाउसि जवासो' (श्रा २३, पण्ण १), 'जवासाकुसुमे इ वा' (पण्ण १७)।

जवि } वि [जविन्] १ वेगवाला, वेग-युक्त जविण } सुपा ११२)। २ पु. अश्व, घोडा (राज)।

जविअ वि [जपित] १ जिसका जाप किया गया हो वह (मन्त्र आदि) (सिरि ३६६)। २ न. अध्ययन, प्रकरण आदि ग्रथांश (सुख २, १३)।

जविय वि [यापित] १ गमित, गुजरा हुआ। २ नाशित (कुमा)।

जस पुं [यशस्] १ कीर्त्ति, इज्जत, सु-ख्याति (औप, कुमा)। २ सयम, त्याग, विरति (वव १, दस ५, २)। ३ विनय (उत्त ३)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य (कप्प)। °कित्ति स्त्री [°कीर्त्ति] सुख्याति, सुप्रसिद्धि (सूअ १, ६, आचू १)। °भद्द पु [°भद्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प, सार्ध १३)। °म, मत वि [°वत्] १ यशस्वी, इज्जतदार, कीर्त्तिवाला (पण्ह १, ४)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °वई स्त्री [°वती] १ द्वितीय चक्रवर्त्ती सगर-राज की माता (सम १५२) २ तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि (चद १०)। °वम्म पु [°वर्मन्] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष (गउड)। °वाय पुं [°वाद] साधुवाद, यशो-गान, प्रशसा (उप ९८६ टी)। °विजय पुं [°विजय] विक्रम की अठारहवी शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय (राज)। °हर पुं [°धर] १ भारतवर्ष का भूत कालिक अठारहवाँ जिन-देव (पव ८)। २ भारतवर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ४६)। ३ एक राज-कुमार (धम्म)। ४ पक्ष का पाँचवाँ दिन (ज ७)। ५ वि. यश को धारण करनेवाला, यशस्वी (जीव ३)। देखो जसो°।

जससि पु [यशस्विन्] भगवान् महावीर के पिता का एक नाम (आचा २, १५, ३, कप्प)।

जसद पु [जसद] धातु-विशेष, जस्ता (राज)।

जसदेव पु [यशोदेव] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पव २७६)।

जसभद्द पुं [यशोभद्र] १ पक्ष का चतुर्थ दिवस (सुज्ज १०, १४)। २ एक राजर्षि, जो वागड देश के रत्नपुर नगर का राजा था और जिसने जैनी दीक्षा ली थी, जो आचार्य हेमचन्द्र के गुरु थे (कुप्र ७, १८)। ३ न. उडुवाटिक गण का एक कुल (कप्प)।

जसवई स्त्री [यशोमती] भगवान् महावीर की दौहित्री का नाम (आचा २ १५, ३)।

जसस्सि वि [यशस्विन्] यशस्वी, कीर्तिमान् (सूअ १, ६, ३, श्रु १४३)।

जसहर पुन [यशोधर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

जसा स्त्री [यशा] कपिलमुनि की माता (उत्त ८)।

[illegible]

जहिट्ठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु राजा का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव [illegible]।

जहिला [illegible] (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो जहिट्ठिल (हे १, ९६; १०७)।

जहुत्त न [यथोक्त] [illegible]।

जहेट्ठ [illegible] (से ६, ११)।

जहिच्छ देखो जहिच्छ (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोचित] [illegible] (स ३)।

जहोइय } न [यथोचित] [illegible]
जहोचिय } [illegible]

[illegible]

७ मद्य-विशेष (विपा १, २)। °आजीव पु [°आजीव] जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १)। °थेर पु [स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि (ठा ३, २)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। °प्पसण्णा स्त्री [°प्रसन्ना] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा (जीव ३)। °फल न [°फल] १ वृक्ष-विशेष। २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला (सुर १३ ३३, सण)। °मत वि [°मत्] उच्च जाति का (आचा २, ४, २)। °मय पु [°मद] जाति का अभिमान (ठा १०)। °वत्तिया स्त्री [°पत्रिका] १ सुगन्धित फलवाला वृक्ष-विशेष। २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला (सण)। °सर पु [°स्मर] १ पूर्व जन्म की स्मृति। २ वि पूर्व जन्म का स्मरण करनेवाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान-वाला, 'जाइसराइ मन्ने इमाइ नयणाइ सयलनोयस्स' (सुर ४, २०८)। °सरण न [°स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति (उत्त १६)। °स्सर देखो °सर (कप्प, विसे १६७१, उप २२० टी)।

जाइ स्त्री [जाति] १ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध दूषणाभास—असत्य दूषण (धर्मसं २६०, स ७११)। २ माता का वंश (पिंड ४३८)।

जाइ देखो जाया (पड्)।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, सुरा, दारू (दे ३, ४५)। २ मदिरा-विशेष (विपा १, २)।

जाइ वि [याजिन्] यज्ञ-कर्ता (दसनि १, १४६))।

जाइ वि [यायिन्] जानेवाला (ठा ४, ३)।

जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, माँगा हुआ (विसे २५०४, गा १६५)।

जाइअ देखो जाय = जात (वज्जा १४४)।

जाइच्छि° } वि [याद्दच्छिक] १ इच्छा-
जाइच्छिय } नुसार, यथेच्छ (धर्मसं १२)। २ इच्छानुसारी (धर्मसं ६०२)।

जाइच्छिय वि [याद्दच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित (विसे २५)।

जाइज्जत देखो जाय = यातय्।

जाइज्जंत } देखो जाय = याच्।
जाइज्जमाण }

जाइणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी, जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्र-सूरि अपनी धर्म-माता समझते थे (उप १०३९)।

जाइयव्वय न [यातव्य] गमन, गति (सुख २, १७)।

जाईअ वि [जातीय] जाति-सम्बन्धी (श्रावक ४०)।

जाउ न [जायु] क्षीरपेया, यवागू, माड की काजी, लपसी खाद्य-विशेष (पिंड ६२५)।

जाउ अ [जातु] कदाचित्, कभी (उवकु ११)।

जाउ अ [जातु] किसी तरह (उप ५४७)। °कण्ण पु [कर्ण] पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र (इक)।

जाउ स्त्री [यातृ] १ देवर-पत्नी, देवरानी। २ वि जानेवाला (सक्षि ४)।

जाउया स्त्री [यातृका] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री, देवरानी (गाया १,१६)।

जाउर पु [दे] कपित्थवृक्ष, कैथ का फल (दे ३, ४५)।

जाउल पुं [जातुल] वल्ली-विशेष (पराग १—पत्र ३२)।

जाउहाण पु [यातुधान] राक्षस (उप १०३१ टी, पाअ)।

जाग पुं [याग] १ यज्ञ, अध्वर, होम, हवन (पउम १४, ४७, स १७१)। २ देव-पूजा (गाया १, १)।

जागर अक [जागृ] जागना, निद्रा-त्याग करना। जागरइ (पड्)। वक्र जागरमाण (विसे २७१६)। हेक्र जागरित्तए, जाग-रेत्तए (कप्प, कस)।

जागर वि [जागर] १ जागनेवाला, जागता (आचा, कप्प अा २५)। २ पु. जागरण, निद्रा-त्याग (मुद्रा १८७, भग १२, २, सुर १३, ६७)।

जागरइत्तु वि [जागरितृ] जागनेवाला (श्रा २३)।

जागरिअ वि [जागृत] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध (गाया १, १६, श्रा २५)।

जागरिअ वि [जागरिक] निद्रा-रहित (भग १२, २)।

जागरिया स्त्री [जागरिका, जागर्या] जागरण, निद्रा त्याग (गाया १, १, ओप)।

जागरुअ वि [जागरुक] जागता, जागा हुआ, जागने के स्वभाववाला (धर्मवि १३९)।

जाजावर वि [यायावर] गमनशील, विनश्वर (सम्मत्त १७४)।

जाडी स्त्री [दे] गुल्म, लता-प्रतान (दे ३, ४५)।

जाण सक [ज्ञा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना। जाणइ (हे ४, ७)। वक्र जाणंत, जाणमाण (कप्प, विपा १, १)। संक्र जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु (पि ५८६, महा, भग)। हेक्र जाणिउ (पि ५७८)। क्र जाणियव्व (भग, श्रत १२)।

जाण पुन [यान] १ रथादि वाहन, सवारी (ओप, पराह २, ५, ठा ४, ३)। २ यान-पात्र, नौका, जहाज, 'नाण संसारसमुद्दतारणे वधुर जाण' (पुष्फ ३७)। ३ गमन, गति (राज)। °पत्त, °वत्त न [°पात्र] जहाज, नौका (नमि ५, सुर १३,३१)। °साला स्त्री [°शाला] १ तबेला, अस्तबल। २ वाहन बनाने का कारखाना (ओप, आचा २,२,२)।

जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, समझ (भग, कुमा)।

जाण° वि [जानत्] जानता हुआ, 'जाण काएण णाउट्टी' (सूअ १, ५, १), 'आसु-पण्णेण जाणया' (आचा)।

जाणई स्त्री [जानकी] सीता, राम-पत्नी (पउम १०६, १८, से ६, ६)।

जाणग वि [ज्ञायक] जानकार ज्ञानी, जाननेवाला (सूअ १, १, १, महा, सुर १०, ६५)।

जाणगी देखो जाणई (पउम ११७, १८)।

जाणण न [दे] वरात, गुजराती में 'जान', 'जो तदवत्थाए समुचिओत्ति जाणणणाइओ' (उप ५६७ टी)।

जाणण न [ज्ञान] जानना, जानकारी, समझ, बोध (हे ४, ७, उप पृ २३, सुपा ४१६, सुर १०, ७१, रयण १४, महा)।

जाणणया } स्त्री ऊपर देखो (उप ५१६,
जाणणा } विसे २१४८, अणु, आचू ७)।

जाणय देखो जाणग (भग, महा)।

[illegible]

जाल न [जाल] १ समूह, संघात (सुर ४, १३५, स ४४३)। २ माला का समूह, दाम-निकर (राय)। ३ कारीगरीवाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष, झरोखा (औप, णाया १, १)। ४ मछली वगैरह पकड़ने का जाल, पाश-विशेष (पण्ह १,१)। ४ मछली वगैरह पकड़ने की जाल, पाश-विशेष (पण्ह १,१,४)। ५ पैर का आभूषण-विशेष, कडा (औप)। °कडग पुं [°कटक] १ सच्छिद्र गवाक्षों का समूह। २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश (जीव ३)। °घरग न [°गृहक] सच्छिद्र गवाक्षवाला मकान (राय, णाया १, २)। °पंजर न [°पञ्जर] गवाक्ष (जीव ३)। °हरग देखो °घरग (औप)।

जाल पु [ज्वाल] ज्वाला, अग्नि-शिखा, आग की लपट (सुर ३, १८८, जी ६)।

जालंतर न [जालान्तर] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग (सम १३७)।

जालंधर पुं [जालन्धर] १ पंजाब का एक स्वनाम-ख्यात शहर (भवि)। २ न गोत्र-विशेष (कप्प)।

जालंधरायण न [जालन्धरायण] गोत्र-विशेष (आचा २, १५)।

जालग देखो जाल = जाल (पण्ह १, १, ५, औप, णाया १, १)।

जालग पु [जालक] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति, मकड़ी (उत्त ३६, १३०)।

जालघडिआ स्त्री [दे] चन्द्रशाला, अट्टालिका, अटारी (दे ३, ४६)।

जालय देखो जाल = जाल (गउड)।

जालवणी स्त्री [दे] संवाद, सम्हाल, खबर, गुजराती में 'जाळवण' (सिरि ३८५)।

जाला स्त्री [ज्वाला] १ अग्नि की शिखा (आचा, सुर २, २४६)। २ नवम चक्रवर्त्ती की माता (सम १५२)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासनदेवी (संति ६)।

जाला अ [यदा] जिस समय, जिस काल में, 'ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घेप्पंति' (हे ३, ६५)।

जालाउ पु [जालायुष्] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, मकड़ी (राज)।

जालाव सक [ज्वालय्] जलाना, दाह देना। वकृ जालावंत (महानि ७)।

जालाविअ वि [ज्वालित] जलाया हुआ (सुपा १८६)।

जालि पु [जालि] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १)। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)।

जालिय पु [जालिक] जाल-जीवि, वागुरिक, बहेलिया, चिड़ीमार (गउड)।

जालिय वि [ज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (उव, उप ५६७ टी)।

जालिया स्त्री [जालिका] १ कञ्चुक (पण्ह १, ३—पत्र ४४, गउड)। २ वृन्त (राज)।

जालुग्गाल पु [जालोद्गाल] मछली पकड़ने का साधन-विशेष (अभि १८३)।

जाव देखो जावइअ (आचा २, २, ३, ३)।

जाव सक [यापय्] १ गमन करना, गुजारना। २ वरतना। ३ शरीर का प्रतिपालन करना। जावइ (आचा)। जावेइ (हे ४, ४०) जावए (सूअ १, १, ३)।

जाव अ [यावत्] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ परिमाण। २ मर्यादा। ३ अवधारण निश्चय, 'जावदय परिमाणे मज्जाया-एवधारणे चेइ' (विसे ३५१६, णाया १, ७)। °ज्जीव स्त्री न [°ज्जीव] जीवन पर्यन्त (आचा)। स्त्री °वा (विसे ३५१८, औप)। °ज्जीविय वि [°ज्जीविक] यावज्जीव-सबन्धी (स ४४१)। देखो जाव।

जाव पु [जाप] मन ही मन बार बार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण (सुर ६, १७४, सुपा १७१)।

जावइ पु [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४।

जावइअ वि [यावत्] जितना, 'जावइया वयणपहा' (सम्म १४४, भत्त ६४)।

जावई स्त्री [जातिपत्री] १ कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८, सुख ३६, ६८)। २ गुच्छ वनस्पति की एक जाति (पण्ण १—पत्र ३४)।

जावईय पुं [जातिपत्रीक] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

जाव देखो जाव (पउम ६८, ५०)। °ताव अ [°तावत्] १ गणित-विशेष। २ गुणाकार (ठा १०)।

जावत देखो जावइअ (भग १, १)।

जावग देखो जावय = यापक (दसनि १)।

जावण न [यापन] १ बिताना, गुजारना। २ दूर करना, हटाना (उप ३२० टी)।

जावणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (उप ७२८ टी)।

जावणिज्ज वि [यापनीय] १ जो बीताया जाय, गुजारने योग्य। २ शक्ति-युक्त, 'जावणिज्जाए णिसीहिआए' (पडि)। °तंत न [°तन्त्र] ग्रन्थ-विशेष (धर्म २)।

जावय वि [यापक] १ बीतानेवाला। २ पु. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु (ठा, ४, ३)।

जावय वि [जापक] जीतनेवाला, 'जिणाणं जावयाणं' (पडि)।

जावय पु [यावक] अलक्तक, अलता, लाख का रंग (गउड, सुपा ६६)।

जावसिय वि [यावसिक] १ धान्य से गुजारा करनेवाला (बृह १)। २ घास वाहक (ओघ २३८)।

जाविय वि [यापित] बीताया हुआ (णाया १, १७)।

जास पु [जाप] पिशाच-विशेष (राज)।

जासुमण, जासुमिण, जासुयण पुं [जपासुमनस्] १ जपा का वृक्ष, पुष्पप्रधान (पण्ण १, णाया १, १)। २ न जपा का फूल (णाया १, १ कप्प)।

जाहग पु [जाहक] जन्तु-विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं, साही या साहिल (पण्ह १, १, विसे १४५४)।

जाहत्थ न [याथार्थ्य] सत्यपन, वास्तविकता (विसे १२७६)।

जाहासख देखो जहा-सख, 'जाहासखमिमीए नियकज्ज साहुवाओ य' (उप १७६)।

जाहे अ [यदा] जिस समय, जब, (हे ३, ६५, महा, गा ६८)।

जि (अप) देखो एव=एव (हे ४, ४२०, कुमा, वज्जा १४)।

[illegible]

जिण [illegible] (पा ४ ठा ३, ४ [illegible]) [illegible] °इन्द्र [illegible] [°इन्द्र] [illegible] °कप्प पुं [°कल्प] एक प्रकार के [illegible] आचार [illegible] (ठा ३, ४; बृह १)। °कप्पिय पुं [°कल्पिक] एक प्रकार का [illegible] मुनि [illegible]। °जिणिंद [illegible] [illegible]

[illegible]

५)। °पहु पु [°प्रभु] जिन-देव, अर्हन् देव (उप ३२० टी)। °पाडिहेर न [°प्रातिहार्य] जिन-देव की अर्हत्ता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विभूतियां, वे ये है—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छत्र (दस १)। °पालिय पु [°पालित] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र (णाया १, ६)। °बिंब न [°बिम्ब] जिन-मूर्त्ति, जिन देव की प्रतिमा (पडि; पंचा ७)। °भड पु [°भट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरु थे (सार्ध ५८)। °भद्द पु [°भद्र] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (आव ४)। °भवण न [°भवन] अर्हन् मन्दिर (पचव ४)। °मय न [°मत] जैन दर्शन (पंचा ४)। °माया स्त्री [°मातृ] जिन-देव की जननी (नम १५१)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] जिनदेव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष (पचा ३)। °यद देखो °चद (सुर १, १०; सुपा ७६)। °रक्खिअ पु [°रक्षित] स्वनाम-ख्यात एक सार्थवाह-पुत्र (णाया १, ६)। °वइ पु [°पति] जिन-देव, अर्हन् देव (सुपा ८६)। °वई स्त्री [°वाच्] जिन-देव की वाणी (बृह १)। °वयण न [°वचन] जिन-देव की वाणी (ठा ६)। °वयण न [°वदन] जिनदेव का मुख (औप)। °वर पु [°वर] अर्हन् देव (पउम ११, ४, अजि १)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] अर्हन् देव (उप ७७६)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] स्वनाम ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार (लहुअ १७)। °वसह पु [°वृषभ] अर्हन् देव (राज)। °सकहा स्त्री [°सक्थि] जिन देव की अस्थि (भग १०, ५)। °सासण न [°शासन] जैन दर्शन (उत्त १८, सूअ १, ३, ४)। °हंस पुं [°हंस] एक जैन आचार्य (द ४७)। °हर देखो °घर (पउम ११, ३, सुपा ३६१, महा)। °हरिस पु [°हर्ष] एक जैन मुनि (रयण ६४)। °ययण न [°यतन] जिन-देव का मन्दिर (पचव ४)।

जिणद देखो जिणिद, 'सव्वे जिणदा सुरविंद-वंदा' (पडि, जी ४८)।

जिणकप्पि पु [जिनकल्पिन्] जैन मुनि का एक भेद (पचा १८, ६)।

जिणग न [जयन] जय, जीत (मण)।

जिणपह पु [जिनप्रभ] एक जैन आचार्य (ती ५)।

जिणिद पुं [जिनेन्द्र] जिन भगवान्, अर्हन् देव (प्रासू ५२)। °गिह न [°गृह] जिन-मन्दिर (सुर ३, ७२)। °चद पु [°चन्द्र] जिन-देव (पउम ६५, ३६)।

जिणिअ वि [जित] पराभूत, वशीकृत (सुपा ५२२, रयण २७)।

जिणिसर देखो जिणेसर (सम्मत्त ७६ ७७)।

जिणिस्सर देखो जिणेसर (पचा १६)।

जिणुत्तम पु [जिनोत्तम] जिन-देव (अजि ४)।

जिणेद देखो जिणिद (चेइय ६०)।

जिणेस पुं [जिनेश] जिन भगवान्, अर्हन् देव (सुपा २६०)।

जिणेसर पु [जिनेश्वर] १ जिन देव, अर्हन् देव (पउम २, २३)। २ विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २३६, सार्ध ७६, गु ११)।

जिण्ण वि [जीर्ण] १ पुराना, जर्जर (हे १, १०२, चारु ४६ प्रासू ७६)। २ पचा हुआ, 'जिण्णे भोअणमत्ते' (हे १, १०२)। ३ वृद्ध, बूढा (बृह १)। °सेट्ठि पु [°श्रेष्ठिन्] १ पुराना सेठ। २ श्रेष्ठि पद से च्युत (आव ४)।

जिण्ण (अप) देखो जिअ = जित (पिंग)।

जिण्णासा स्त्री [जिज्ञासा] जानने की इच्छा (पचा ३)।

जिण्णिअ }
जिण्णीअ } (अप) देखो जिणिअ (पिंग)।

जिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (घास) (दे ३, ४६)।

जिण्हु वि [जिष्णु] १ जित्वर, जीतनेवाला, विजयी (प्रामा)। २ पु. अर्जुन, मध्यम पाडव (गउड)। ३ विष्णु, श्रीकृष्ण। ४ सूर्य, रवि। ५ इन्द्र, देव-नायक (हे २, ७५)।

जित्त देखो जिअ = जित (महा, सुपा ३६५, ६४३)।

जित्तिअ }
जित्तिल } वि [यावत्] जितना (हे २, १५६, षड्)।

जित्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा)।

जिध (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (हे ४, ४०१)।

जिन्न देखो जिण्ण (सुपा ६)।

जिन्नासिय वि [जिज्ञासित] जानने के लिए इष्ट जानने के लिए चाहा हुआ (भास ७१)।

जिन्नुद्धार पु [जीर्णोद्धार] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना (सुपा ३०६)।

जिब्भ पु [जिह्व] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६, २६)।

जिब्भा स्त्री [जिह्वा] जीभ, रसना (पण्ह २, ५, उप ६८६ टी)।

जिब्भिदिय न [जिह्वेन्द्रिय] रसनेन्द्रिय, जीभ (ठा ४, २)।

जिब्भिया स्त्री [जिह्विका] १ जीभ। २ जीभ के आकारवाली चीज (ज ४)।

जिम सक [जिम्, भुज्] जीमना, भोजन करना, खाना। जिमइ (हे ४, ११०, षड्)।

जिम (अप) देखो जिध (षड्, भवि)।

जिमण न [जेमन, भोजन] जीमन, भोजन (श्रा १६, चैत्य ५६)।

जिमण न [जेमन] जिमाना, भोज (धर्मवि ७०)।

जिमिअ वि [जिमित, भुक्त] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह (पउम २०, १२७, पुप्फ ३५, महा)। २ जो खाया गया हो वह, भक्षित (दे ३, ४६)।

जिम्म देखो जिम = जिम्। जिम्मइ (हे ४, २३०)।

जिम्ह पु [जिह्म] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्राय एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहती है (ठा ४, ४—पत्र २७०)। २ वि कुटिल, कपटी, मायावी (सम ७१)। ३ मन्द, अलस (ज २)। ४ न. माया, कपट (वव ३)।

जिम्ह न [जैम्ह्] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट (सम ७१)।

[illegible]

जीविओसासिय वि [जीवितोच्छ्वासिक] जीवन को बढानेवाला (भग ६, ३३)।

जीविगा देखो जीविआ (स २१८)।

जीह अक [लस्ज्] लज्जा करना, शरमाना। जीहइ (हे ४, १०३, पड्)।

जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ, रसना (आचा, स्वप्न ७८)। °ल वि [°वत्] लम्बी जीभवाला (पउम ७, १२०, नमि ८, सुर २, ६२)।

जीहाविअ वि [लज्जित] लज्जा-युक्त किया गया, लजाया गया (कुमा)।

जु देखो जुज (कुमा)। कवकृ जुज्जत (सम्म १०७, से १२, ८७)।

जु° स्त्री [युध्] लडाई, युद्ध, 'जुधि वातिभए घेप्पइ' (विसे ३०१६)।

जु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (सा ४)।

जुअ देखो जुग (से १२, ६०, इक, पण्ह १, १)। ६ युग्म, जोडा, उभय (पिंग, सुर २, १०२, सुपा १६०)।

जुअ वि [युत] युक्त, सलग्न, सहित (दे १, ८१, सुर ४, ६४)।

जुअ देखो जुव (गा २२८, कुमा, सुर २, १७७)।

जुअइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (गउड, कुमा)।

जुअजुअ (अप) अ [युतयुत] जुदा-जुदा, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न (हे ४, ४२२)।

जुअण [दे] देखो जुअल=(दे) (पड्)।

जुअणद्ध पु [युगनद्ध] ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग, जिसमें बैल के कधे पर रखे हुए युग—जुआ या जुआठ की तरह चन्द्र और सूर्य तथा नक्षत्र अवस्थित होते हैं वह योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

जुअय न [युतक] जुदा, पृथक् (दे ७, ७३)।

जुअरज्ज न [यौवराज्य] युवराज का भाव या पद, युवरापन (स २६८)।

जुअल न [युगल] १ युग्म, जोडा, उभय (पाअ)। २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे में सापेक्ष हो (श्रा १४)।

जुअल पु [दे] युवा, तरुण, जवान (दे ३, ४७)।

जुअलिअ वि [दे] द्विगुणित (दे ३, ४७)।

जुअलिय देखो जुगलिय (णाया १, १)।

जुअली स्त्री [युगली] युग्म, जोडा (प्राकृ ३८)।

जुआण देखो जुवाण (गा ५७, २४६)।

जुआरि स्त्री [दे] जुआरि, अन्न विशेष (सुपा ५४६ सुर १, ७१)।

जुइ स्त्री [द्युति] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक (ओप, जीव ३)। °म, °मत वि [°मत्] तेजस्वी, प्रकाशशाली (स ६४१, पउम १०२, १५६)।

जुइ स्त्री [युति] सयोग, युक्तता (ठा ३, ३)।

जुइ पु [युगिन्] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (पउम ३२, ५७)।

जुईम वि [द्युतिमत्] तेजस्वी (सुअ १, ६, ८)।

जुउच्छ सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। जुउच्छइ (हे ४, ४, षड्, मे ५, ५)।

जुउच्छिय वि [जुगुप्सित] निन्दित (निचू ४)।

जुगिय वि [दे] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको सन्यास देने का जैन शास्त्रो मे निषेध है (पुप्फ १२५)।

जुगिय वि [दे] १ काटा हुआ (पिंड ४४६)। २ दूषित (सिरि २२३)।

जुज सक [युज्] जोडना, युक्त करना। जुजइ (हे ४, १०६)। वकृ जुजत (ओघ ३२६)।

जुजण न [योजन] जोडना, युक्त करना, किसी कार्य मे लगाना (सम १०६)।

जुजणया } स्त्री [योजना] १ ऊपर देखो
जुजणा } (ओप, ठा ७)। २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार, 'मणवयणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुजणाकरण' (विसे ३३६०)।

जुजम [दे] देखो जुजुमय (उप ३१८)।

जुजिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा (णाया १, १—पत्र ६६, ६८ टी)।

जुजुमय न [दे] हरा तृण-विशेष, एक प्रकार की हरी घास, जिसको पशु चाव से खाते हैं (स ४८७)।

जुंजुरुड वि [दे] परिग्रह-रहित (दे ३, ४७)।

जुग पु [युग] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग (कुमा)। २ पांच वर्ष का काल (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ७५)। ३ न. चार हाथ का यूप (ओप, पण्ह १, ४)। ४ शकट का एक अग, धुर, गाडी या हल खींचने के समय जो बैलो के कन्धे पर रक्खे जाते हैं (उप पृ १३६, उत्त २)। ५ चार हाथ का परिमाण (अणु)। ६ देखो जुअ = युग। °प्पवर वि [°प्रवर] युग श्रेष्ठ (भग)। °प्पहाण वि [°प्रधान] १ युग-श्रेष्ठ (रभा)। २ पु. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य की एक उपाधि (पव २६४, गुरु १)। °बाहु पु [°बाहु] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिनदेव (विपा २, १)। २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा (आचू ४)। ३ मिथिला का एक राजा (तित्थ)। ४ वि यूप या खभा की तरह लम्बा हाथवाला, दीर्घ बाहु (ठा ६)। °मच्छ पु [°मत्स्य] की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८४ टी) °सवच्छर पुं [°सवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३)।

जुगतर न [युगान्तर] यूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन (पण्ह २, १)। °पलोयणा स्त्री [°प्रलोकना] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना (भग)।

जुगधर न [युगन्धर] १ गाडी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव (ज १)। २ पु विदेह वर्ष मे उत्पन्न एक जिन-देव (आचू १)। ३ एक जैन मुनि (पउम २०, १८)। ४ एक जैन आचार्य (आवम)।

जुगल न [युगल] युग्म, जोडा, उभय (अणु, राय)।

जुगलि वि [युगलिन्] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होनेवाला (रयण २२)।

जुगलिय वि [युगलित] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित (जीव ३)। २ युग्म रूप से स्थित (राज)।

जुगव वि [युगवत्] समय के उपद्रव से वर्जित (अणु, राय)।

जुगव } अ [युगपत्] एक ही साथ,
जुगव } एक ही समय मे, 'कारणकज्ज-

विभागो दीवपगामाए जुगनजम्मेवि' (विसे ५३६ टी, ग्रोप)।

जुगुच्छ देखो जुउच्छ। जुगुच्छइ (हे ४, ४)।

जुगुच्छणया } स्त्री [जुगुप्सा] घृणा,
जुगुच्छा } तिरस्कार (न १६७, प्राप्र)।

जुगुच्छिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (कुमा)।

जुग्ग न [युग्य] १ वाहन, गाडी वगैरह यान (ग्राचा)। २ शिबिका, पुरुष-यान (सूत्र २, २, ६२)। ३ गोल्ल देश मे प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा चौडा यान-विशेष, शिविका विशेष (गाया १, १, ग्रोप)। ४ वि यान वाहक अश्व आदि। ५ भार-वाहक (ठा ४, ३)। °ायरिया, °ारिया स्त्री [°चर्या] वाहन की गति (ठा ४ ३—पत्र २३६)।

जुग्ग वि [योग्य] लायक उचित (विसे २६६२, स २१, प्रासू ५६, कुमा)।

जुग्ग न [युग्म] युगल, द्वन्द्व, उभय (कुमा, प्राप्र, प्राप)।

जुज्ज देखो जुज। जुज्जइ (हे ४, १०६, षड्)। जुज्जन देखो जु।

जुज्झ अक [युध्] लडाई करना, लडना। जुज्झइ (हे ४, २१७, षड्)। वकृ जुज्झत, जुज्झमाण (सुर ६, २२०, २, ५१)। संकृ जुज्झित्ता (ठा ३, २)। प्रयो जुज्झावेइ (महा)। वकृ जुज्झावेन्त (महा)। हेकृ जुज्झावेयव्व (स पृ २२५)।

जुज्झ न [युद्ध] लडाई, सग्राम, समर (गाया १, ८ [illegible], प्रासू, गा ६८४)। °ाइजुद्ध न [°ातियु[illegible]] महायुद्ध, पुरुषा की बहत्तर [illegible] (ग्रोप)।

जुज्झण न [योधन] युद्ध लडाई (सुपा ५२७)।

जुज्झिअ वि [युद्ध] १ लडा हुआ, जिसने [illegible] (से १५, ३७)। २ न [illegible], सग्राम (स १०६)।

[illegible] वि [जुष्ट] सेवित (प्राप्र)।

[illegible] न [दे] झूठ, असत्य, 'मा [illegible] तुम [illegible]' (धर्मवि १३३)।

जुडिअ वि [दे] श्रापस मे जुटा हुआ, लडने के लिए एक दूसरे से भीडा हुआ, 'मुहडेहिं मम मुहडा जुडिया तह नाइणावि माईहि' (उप ७२८ टी)।

जुण्ण वि [दे] विदग्ध, निपुण, दक्ष (दे ३, ४७)।

जुण्ण वि [जीर्ण] जूना, पुराना (हे १, १०२, गा ५३४)।

जुण्णदुग्ग न [जीर्णदुर्ग] नगर-विशेष, जो आजकल भी 'जूनागढ' नाम से प्रसिद्ध है (ती २)।

जुण्ह देखो जोण्ह = ज्यौत्स्न (सुज्ज १६)।

जुण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चादनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश (सुपा १२१, मण)।

जुत्त सक [युक्तय्] जोतना। सकृ जुत्तित्ता (ती १५)।

जुत्त वि [युक्त] १ सगत, उचित, योग्य (गाया १, १६, चद २०)। २ सयुक्त, जोडा हुआ, मिला हुआ, सबद्ध (सूत्र १, १, १, ग्राचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य मे लगा हुआ (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित (सूत्र १, १, ३, ग्राचा)। °ासखिज्ज न [°ासख्येय] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७८)।

जुत्ताणतय पुन [युक्तानन्तक] गणना-विशेष (अणु २३४)।

जुत्तासखेज्जय देखो जुत्तासखिज्ज (अणु २३४)।

जुत्ति स्त्री [युक्ति] १ योग, योजन, जोड, सयोग (ग्राप, णाया १, १०)। २ न्याय, उपपत्ति (उप ६५०, प्रासू ६३)। ३ साधन, हेतु (सूत्र १, ३, ३)। °ण्ण वि [°ज्ञ] युक्ति का जानकार (ग्रोप)। °सार वि [°सार] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-सगत, प्रमाण युक्त (उप ७२८ टी)। °सुवण्ण न [°सुवर्ण] बनावटी सोना (दस १०, ३६)। °सेण पु [°षेण] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन देव (सम १५३)।

जुत्तिय वि [यौक्तिक] गाडी वगैरह मे जो जोता जाय, 'जुत्तियतुरगमाए' (सुपा ८७)।

जुद्ध देखो जुज्झ = युद्ध (कुमा)।

जुन्न देखो जुण्ण (सुर १, २४४)

जुन्हा देखो जुण्हा (सुपा १५७)।

जुप्प देखो जुज जुप्पइ (हे ४ १०६)। जुप्पसि (कुमा)।

जुम्म न [युग्म] १ युगल, दोनो, उभय (हे २, ६२, कुमा)। २ पुं सम राशि (ग्रोघ ४०७, ठा ४, ३—पत्र २३७)। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] सम सख्य प्रदेशो से निष्पन्न (भग २५, ४)।

जुम्म न [युग्म] परस्पर सापेक्ष दो पद्य (सिरि ३६१)।

जुम्ह° स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम, 'जुम्हदम्हपयरणं' (हे १, २४६)।

जुरुमिल्ल वि [दे] गहन, निविड, सान्द्र, 'दुहजुरुमिल्लावत्थ' (दे ३, ४७)।

जुव पु [युवन्] जवान, तरुण (कुमा)। °राअ पु [°राज] गद्दी का वारिस (उत्तराधिकारी) राजकुमार, भावी राजा (सुर २, १७५, अभि ८२)।

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (हे १, ४, ग्रोप, गउड, प्रासू ६३, कुमा)।

जुवगव पुं [युवगव] तरुण बैल (ग्राचा २, ४, २)।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] १ युवराजपन (उप २११ टी, सुर १६, १२७)। २ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य (ग्राचा २, ३, १)। ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य (बृह १)।

जुवल देखो जुगल (स ४७८, पउम ६५, २३)।

जुवलिय देखो जुगलिय (भग, ग्रोप)।

जुवाण देखो जुव (पउम ३, १४६, णाया १, १, कुमा)।

जुवाणी देखो जुवइ (पउम ८, १८४)।

जुव्वण } देखो जोव्वण (प्रासू ४६,
जुव्वणत्त } ११६), 'पढम चिय बालत्त, 'तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताइं' (सुपा २४३)।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित, 'पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिए व जुसिए वा' (ठा ४, ४)।

जुहिट्ठिर } देखो जहिट्ठिल (पिंग, उप
जुहिट्ठिल } ६४८ टी, णाया १, १६—
जुहिट्ठिल्ल } पत्र २०८, २२६)।

जुहु सक [हु] १ देना, अर्पण करना। २ हवन करना, होम करना। जुहुणामि (ठा ७—पत्र ३८१, टि ५०१)।

जूअ न [द्यूत] जुआ, द्यूत (पाअ)। °कर वि [°कर] जुआरी, जुए का खिलाड़ी (सुपा ५२२)। °कार वि [°कार] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १८)। °कारि वि [°कारिन्] जुआरी (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] द्यूत-क्रीडा (रयण ४८)। °खलय न [°खलक] जुआ खेलने का स्थान (राज)। °किलि देखो °केलि (रयण ४७)।

जूअ पु [यूप] १ जुआ, धुर, गाड़ी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धे पर डाला जाता है, जुअट (उत्त पृ १३६)। २ स्तम्भ विशेष, 'जूअसहस्सं मुसल सहस्सं च उस्सवेह' (कप्प)। ३ यज्ञ-स्तम्भ (ज ३)। ४ एक महापाताल-कलश (पव २७२)।

जूअअ पुं [दे] चातक पक्षी (दे ३, ४७)।

जूअग पु [यूपक] देखो जूअ = यूप (सम ७१)।

जूअग पुं [यूपक] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण (ठा १०)।

जूआ स्त्री [यूका] १ जूँ, चीलड, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (जी १६)। २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक नाप (ठा ६, इक)। °सेज्जायर वि [°शय्यातर] यूकाओं को स्थान देनेवाला (भग १५)।

जूआर वि [द्यूतकार] जुआरी, जुए का खेलाड़ी (रंभा, भवि, सुपा ४००)।

जूआरि } वि [द्यूतकारिन्] जुआ खेलने-
जूआरिअ } वाला, जुए का खेलाड़ी (द्र ४३, सुपा ४००, ४८८, स १५०)।

जूझ देखो जुज्झ = युध्। कृ जूझियव्व (सिरि १०२५)।

जूड पु [जूट] कुन्तल, केश-कलाप (दे ४, २४, भवि)।

जूय न [यूप] लगातार छह दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

जूयय } पु [यूपक] शुक्ल पक्ष की द्वितीया
जूवय } आदि तीन दिनों में होनी चन्द्र की कला और सन्ध्या के प्रकाश का मिश्रण (अणु १२०, पव २६८)।

जूर सक [गर्ह्] निंदा करना। जूरति (सूअ २, २, ५५)।

जूर अक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। जूरइ (हे ४, १३२, षड्)।

जूर अक [खिद्] खेद करना, अफसोस करना। जूरइ (हे ४, १३२, षड्)। जूर (कुमा)। भवि जूरिहिइ (हे २, १९३)। वकृ जूरंत (हे २, १९३)।

जूर अक [जूर्] १ झुरना, सूखना। २ सक वध करना, हिंसा करना (राज)।

जूरण न [जूरण] १ सूखना, झुरना। २ निन्दा, गर्हण (राज)।

जूरव सक [वञ्च्] ठगना, वंचना। जूरवइ (हे ४, ९३)।

जूरवण वि [वञ्चन] ठगनेवाला (कुमा)।

जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण (भग ३, २)।

जूराविअ वि [क्रोधित] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित (कुमा)।

जूरिअ वि [खिन्न] खेद प्राप्त (पाअ)।

जूरुम्मिलय वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र (दे ३, ४७)।

जूल देखो जूर = क्रुध्। जूल (गा ३५४)।

जूव देखो जूअ = द्यूत (णाया १, २—पत्र ७९)।

जूव } देखो जूअ = यूप (इक, ठा ४,
जूवय } २)।

जूस देखो झूस (ठा २, १, कप्प)।

जूस पुन [यूष] जूस, मूँग वगैरह का क्वाथ, कढ़ी (ओघ १४७, ठा ३, १)।

जूसअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

जूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा (कप्प)।

जूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित (ठा २, १)। २ क्षपित, क्षीण (कप्प)।

जूह न [यूथ] समूह, जत्था (ठा १०, गा ५४८)। °वइ पुं [°पति] समूह का अधिपति, यूथ का नायक (से ६, ६८, णाया १, १, सुपा १३७)। °हिव पु [°धिप] पूर्वोक्त ही अर्थ (गा ५४८)। °हिवइ पु [°धिपति] यूथ-नायक (उत्त ११)।

जूह न [यूथ] युग्म, युगल, जोड़ा (आचा २, ११, २)। °काम न [°काम] लगातार चार दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

जूहिय वि [यूथिक] यूथ में उत्पन्न (आचा २, २)।

जूहियठाण न [यूथिकस्थान] विवाह-मण्डप वाली जगह (आचा २, ११, २)।

जूहिया स्त्री [यूथिका] लता-विशेष, जूही का पेड़ (पण्ण १, पउम ५३, ७९)।

जूही स्त्री [यूथी] लता-विशेष, माधवी लता (कुमा)।

जे अ. १ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाना अव्यय (हे २, २१७)। २ अवधारण-सूचक अव्यय (उत्त)।

जेअ वि [जेय] जीतने योग्य (रुक्मि ५०)।

जेअ वि [जेतृ] जीतनेवाला (सूअ १, ३, १, १, १, ३, १, २)।

जेउ वि [जेतृ] जीतनेवाला, विजेता (भग २०, २)।

जेउआण
जेउ } देखो जिण = जि।
जेऊण

जेक्कार पुं [जयकार] 'जय-जय' आवाज स्तुति, 'हुंति देवाण जेक्कारो' (गा ३३२)।

जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्येष्ठ (हे २, १७२, महा उवा)।

जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्यैष्ठ (महा)।

जेट्ठा देखो जिट्ठा (सम ८, आचू ४)। °मूल पु [°मूल] जेठ मास (ओघ, णाया १, १३)। °मूली स्त्री [°मूली] जेठ मास की पूर्णिमा (सुज्ज १०)।

जेट्ठामूली स्त्री [ज्येष्ठामूली] १ जेठ मास की पूर्णिमा। २ जेठ मास की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

जेण देखो जइण = जैन (सम्मत्त ११७)।

जेण अ [येन] लक्षण-सूचक अव्यय, 'भमररुअं जेण कमलवणं' (हे २, १८३, कुमा)।

जेत्त वि [यावत्] जितना। स्त्री °त्ती (हास्य १३०)।

जेत्त देखो जइत्त (पि ६१)।

जेत्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २,
जेत्तिल } १५७, गा ७१, गउड)।

जेत्तिक (शौ) ऊपर देखो (प्राकृ ६५)।

जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४३५)।
जेत्तुड }

जेद्दह देखो जेत्तिअ (हे २ १५७ प्राप्र)।

जेम सक [जिम्, भुज्] भोजन करना। जेमइ (हे ४, ११०, षड्)। वकृ जेमत (पउम १०३, ८५)।

जेम (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (कुमा ३८८, भवि)।

जेमग } न [जेमन] जीमन, भोजन (ओघ
जेमणग } ८८ भाष)।

जेमणय न [दे] दक्षिण अंग, गुजराती में 'जमणु' (दे ३, ४८)।

जेमणी स्त्री [जेमनी] जीमन (सबोध १७)।

जेमावण न [जेमन] भोजन कराना, खिलाना (भग ११, ११)।

जेमाविय वि [जेमित] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह (उप १२६ टी)।

जेमिय वि [जेमित] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह (णाया १, १—पत्र ४१ टी)।

जेयव्व देखो जिण = जि।

जेव (शौ) देखो एव = एव (स्वप्न, मृच्छ)।

जेवँ (अप) देखो जिवँ (हे ४, ३६७)।

जेवड (अप) देखो जेत्तिअ (हे ४, ४०७)।

जेव्व (शौ) देखो एव = एव (पि, नाट)।

जेह (अप) वि [यादृश्] जैसा (हे ४, ४०२, षड्)।

जेहिल पु [जेहिल] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)।

जो } सक [दृश्] देखना। जोइ (सण),
जोअ } 'लग्गा हु [illegible], जोयइ तुह मुह [illegible]' (सुर ३, १२६)। जोयंति (स ३६१)। भवि. जोइस्सइ (रयण ३२)। वकृ जोअंत (सुपा ११ टी महा, सुर १०, २८४)। कवकृ जोइज्जंत (सुपा ५७)।

जोअ सक [द्युत्] प्रकाशित होना, चम-कना। जोइ (कुमा)। भूका जोइत्थु (भग)। वकृ °जोअंत (कुमा, महा)।

जोअ सक [द्योतय्] प्रकाशित करना। जोयइ (सूत्र १, ६, १३), 'तम्मवि य गिह पुण बालपडिया जोयए दुहिया' (सुपा ६११)। जोएज्जा (विसे ६१२)।

जोअ सक [योजय्] १ समाप्त करना, खतम करना। २ करना। जोएइ (सुज्ज १०, १२—पत्र १८० १८१, सुज्ज १२—पत्र २३३)।

जोअ सक [योजय्] जोडना, युक्त करना। जोएइ (महा)। वकृ जोइयव्व, जोएअव्व जोयणिय, जोयणिज्ज (उप ५६६, स ५६८, श्राप, निचू १)।

जोअ पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

जोअ देखो जोग (अवि २५, स ३६१, कुमा)। °वडय न [°वटक] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा (स २५२)।

जोअगण [दे] देखो जोइगण (भवि)।

जोअग वि [द्योतक] १ प्रकाशनेवाला २ न. व्याकरण प्रसिद्ध निपात वगैरह पद (विसे १००३)।

जोअड पु [दे] खद्योत, कीट-विशेष, जुगनू (षड्)।

जोअण न [दे] लोचन, नेत्र, चक्षु, आँख (दे ३, ५०)।

जोअण न [योजन] १ परिमाण विशेष, चार कोश (भग, इक)। २ सबन्ध, सयोग, जोडना (पण्ह १, १)।

जोअण न [यौवन] युवावस्था, तरुणता, जवानी (उप १८२ टी, गा १६७)।

जोअणा स्त्री [योजना] जोडना, सयोग करना (उप पृ २२१)।

जोआ स्त्री [द्यो] १ स्वर्ग। २ आकाश (षड्)।

जोआवइत्तु वि [योजयितृ] जोडनेवाला, सयुक्त करनेवाला (ठा ४, ३)।

जोइ वि [योगिन्] १ युक्त, सयोगवाला। २ चित्त-निरोध करनेवाला, समाधि लगानेवाला। ३ पु मुनि, यति, साधु (सुपा २१६, २१७)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम ख्यात एक सुभट (पउम ६७, १०)।

जोइ पु [ज्योतिस्] १ प्रकाश, तेज (भग, ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि, 'सप्पि जहा जहा पडिय जोइमज्झे' (सूत्र १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु, 'जहा हि अंधे सह जोइणावि' (सूत्र १, १२)। ४ अग्नि का काम करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ (चद १)। ६ ज्ञान। ७ ज्ञान युक्त। ८ प्रसिद्धि-युक्त। ९ सत्कर्म-कारक (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग। ११ ग्रह वगैरह का विमान (राज)। १२ ज्योतिष-शास्त्र (निर ३, ३)। °अंग पु [°अङ्ग] अग्नि का काम करनेवाला कल्प-वृक्ष-विशेष (ठा १०)। °रस न [°रस] रत्न की एक जाति (णाया १, १)। देखो जोइस = ज्योतिस्।

जोइअ पुं [दे] कीट-विशेष, खद्योत, जुगनू, पटबीजना (दे ३, ५०)।

जोइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (सुर ३, १७३, महा भवि)।

जोइअ वि [योजित] जोडा हुआ (स २६४)।

जोइअ देखो जोगिय (राज)।

जोइगण पु [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप (दे ३, ५०)।

जोइक्क पुन [ज्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ, 'किं सूरस्स दसणाहिगमे जाइस्सतर गवेसीयदि' (रभा)।

जोइक्ख पु [दे ज्योतिष्क] १ प्रदीप, दीपक (दे ३, ४९, पव ४, वव ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश (ओघ ६५३)।

जोइणी स्त्री [योगिनी] १ योगिनी, सन्या-सिनी। २ एक प्रकार की देवी, ये चौसठ हैं (रति ११)।

जोइर वि [दे] स्खलित (दे ३, ४९)।

जोइस न [दे] नक्षत्र (दे ३, ४९)।

जोइस देखो जोइ = ज्योतिस् (चद १, पण्ण, विसे १८७०, जो १, ठा ६)। °राय पुं [°राज] १ सूर्य। २ चन्द्र (सुज्ज २०, १८)। °लय पु [°लय] सूर्य आदि देव (उत्त ३६)।

जोइस पुं [ज्योतिष] १ देवों की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि (कप्प, औप, दंड २७)। २ न सूर्य आदि का विमान (ति १२, जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र। ५ सूर्य आदि का मार्ग आकाश, 'जे गहा जाइमम्मि चार चरंति' (पएण ३)।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति (कप्प, पत्रा २)। २ वि ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी (सुपा १५६)।

जोइसिअ वि [ज्यौतिषिक] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी (स २२, सुर ४, १००, सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव (औप, जी २४ पएण २)। °राय पु [°राज] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा (पएण २)।

जोइसिंद पुं [ज्योतिरिन्द्र] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्र, चन्द्रमा (ठा ६)।

जोइसिण पु [ज्यौत्स्न] शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोइसिणा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका, चादनी (ठा २,४)। पक्ख पु [पक्ष] शुक्ल पक्ष (चद १५)। भा स्त्री [भा] चन्द्र की एक अग्र-महिषी (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [ज्यौतिषी] देवी-विशेष (पएण १७—पत्र ४९९)।

जोई स्त्री [दे] विद्युत्, विजली (दे ३, ४९, पड्)।

जोईरस देखो जोइ-रस (कप्प, जीव ३)।

जोईस पु [योगीश] योगीन्द्र, योगि-राज (स १)।

जोईसर पु [योगीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ८३, रयण ६)।

जोउकण्ण न [यौगकर्ण] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

जोउकण्णिय न [यौगकर्णिक] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

जोक्कार देखो जेक्कार (गा ३३२ अ)।

जोक्ख वि [दे] मलिन, अपवित्र (दे ३, ४८)।

जोग देखो जुग्ग=युग्म, 'सपाउयाजोग समाजुत्त' (राय ४०)।

जोग पु [योग] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ संबन्ध (सुज्ज १०, १)।

जोग पु [योग] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा (ठा ४, १, सम १० स ४७०)। २ चित्तनिरोध, मन-प्रणिधान, समाधि (पउम ६८, २३, उत्त १)। ३ वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष, 'जोगो मदमोह-करो सीसे खित्तो इमाण सुत्ताण' (सुर ८, २०१)। ४ सम्बन्ध, सयोग, मेलन (ठा १०)। ५ ईप्सित वस्तु का लाभ (णाया १, ५)। ६ शब्द का अवयवार्थ-सम्बन्ध (भास २४)। ७ बल, वीर्य, पराक्रम (कम्म ५)। °क्खेम न [°क्षेम] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका सरक्षण (णाया १, ५)। °त्थ वि [°स्थ] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन (पउम ६८, २३)। °त्थ पु [°ार्थ] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ (भास २४)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] चित्त-निरोध से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (राज)। °धर वि [°धर] समाधि मे कुशल, योगी (पउम ११६, १७)। °परिव्वाइया स्त्री [°परिव्राजिका] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष (णाया १, ६)। पिंड पु [°पिण्ड] वशीकरण आदि के प्रयोग से प्राप्त की हुई भिक्षा (पचा १३, निचू १३)। °मुद्दा स्त्री [मुद्रा] हाथ का विन्यास-विशेष (पचा ३)। °व वि [°वत्] १ शुभ प्रवृत्तिवाला (सूअ १, २, १)। २ योगी, समाधि करनेवाला (उत्त ११)। °वाहि वि [°वाहिन्] १ शास्त्र ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करनेवाला। २ समाधि मे रहनेवाला (ठा ३, १—पत्र १२०)। °विहि पुस्त्री [विधि] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष, 'इय वुत्तो जोगविही', 'एसा जोगविही' (अग)। °सत्थ न [शास्त्र] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र (उवर १९०)।

जोग देखो जोग्ग, 'इय सो न एत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्कूरो' (धम्म १२, सुर २, २०५, महा, सुपा २०८)।

जोगि देखो जोइ=योगिन् (कुमा)।

जोगिंद पु [योगीन्द्र] महान् योगी, योगीश्वर (रयण २९)।

जोगिणी देखो जोइणी (सुर ३, १८९)।

जोगिय वि [यौगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-षेणयति (पराह २, २—पत्र ११४)। २ यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ (उप पृ ९४)।

जोगीसर देखो जोईसर (स २०१)।

जोगेसरी स्त्री [योगेश्वरी] देव विशेष (सण)।

जोगेसी स्त्री [योगेशी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

जोग्ग वि [योग्य] योग्य, उचित, लायक (ठा ३, १, सुपा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् (निचू २०)।

जोग्गा स्त्री [दे] चाटु, खुशामद, (दे ३,४८)।

जोग्गा स्त्री [योग्या] १ शास्त्र का अभ्यास (भग ११, ११, ज ३)। २ गर्भ-धारण मे समर्थ योनि (तदु)।

जोज देखो जोअ=योजय्। भवि. जोज-इस्सामि (कुप्र १३०)। कृ. जोज्ज (उत्त २७, ८)।

जोड सक [योजय्] जोड़ना, सयुक्त करना। वकृ जोडेंत (सुर ४, १९)। सकृ जोडिऊण (महा)।

जोड पुन [दे] १ नक्षत्र (दे ३, ४९, पि ६)। २ रोग-विशेष (सण)।

जोड (अप) स्त्री [दे] जोड़ी, युगल, 'एरिस जोड न जुत्त' (कुप्र ४५३)।

जोडिअ पु [दे] व्याध, बहेलिया, चिड़ीमार (दे ३, ४९)।

जोडिअ वि [योजित] जोड़ा हुआ, सयुक्त किया हुआ (सुपा १४९, ३५१)।

जोण पु [योन, यवन] म्लेच्छ दश-विशेष (णाया १, १)।

जोणि स्त्री [योनि] १ उत्पत्ति-स्थान (भग, स ८२, प्रासू ११५)। २ कारण, हेतु, उपाय (ठा ३, ३, पचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान (ठा ७)। ४ स्त्री-चिन्ह, भग (अणु)। °विहाण न [°विधान] उत्पत्ति-

शास्त्र (विसे १७७५)। °सूल न [°शूल] योनि का एक रोग (णाया १, १६)।

जोणिय वि [योनिक, यवनिक] अनार्य देश विशेष से उत्पन्न। स्त्री °या (इक, औप, णाया १, १—पत्र ३७)।

जोणलिआ स्त्री [दे] अन्न विशेष जुआरि, जोन्हरी (दे ३, ५०)।

जोण्ह वि [ज्यौत्स्न] १ शुक्ल, श्वेत, 'कालो वा जोण्हो वा केणणुभावेण चदस्स' (सुज्ज १६)। २ पुं शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र-प्रकाश (पड्, कप्प १६७)।

जोण्हाल वि [ज्योत्स्नावत] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिकायुक्त (हे २, १५६)।

जोत्त देखो जुत्त = युक्त (सुप्र ३८१)।

जोत्त } न [योक्त्र, °क] जोत, रस्सी या
जोत्तय } चमडे का तस्मा, जिससे बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है (पण्ह २, ५ गा १६२)।

जोय देखो जोअ = दृश्। जोवइ (महा, भवि)।

जोय पुं [दे] १ बिन्दु। २ वि स्तोक, थोड़ा (दे ३, ५२)।

जोयग न [दे] १ यन्त्र चक्र 'गाउज्जोयण' (ओघ ६० भा)। २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन (ओघ ६० भा)।

जोवारि स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि (दे ३, ५०)।

जोविअ वि [दृष्ट] विलोकित (स १४७)।

जोव्वण न [यौवन] १ तारुण्य, जवानी (प्राप्र कप्प)। २ मध्य भाग (से २, १)।

जोव्वणणीर } न [दे] वय-परिणाम, वृद्धत्व,
जोव्वणवेअ } बुढ़ापा, 'जोव्वणणीर तरुणत्तणे वि विजिए दियाए पुरिसाए' (दे ३, ५१)।

जोव्वणिआ स्त्री [यौवनिका] यौवन, जवानी (राय)।

जोव्वणोवय न [दे] बुढ़ापा, वृद्धत्व, जरा (दे ३, ५१)।

जोस देखो जुस = जुष्। वकृ जोसन (राज)। प्रयो, संकृ जोसियाण (वव ७)।

जोस पुं [जोष] अवमान, अन्त (सूअ १, २ ३, २ टि)।

जोसिअ वि [जुष्ट] सेवित (सूअ १, २, ३)।

जोसिआ स्त्री [योषित्] स्त्री, महिला, नारी (पड्, धर्म २)।

जोसिणी देखो जोण्हा (अभि ३१)।

जोह अक [युध्] लड़ना। जोहइ (भवि)।

जोह पुं [योध] सुभट, योद्धा (औप, कुमा)। °ट्ठाण न [°स्थान] सुभटों का युद्ध कालीन शरीर विन्यास, अंग-रचना-विशेष (ठा १, निचू २०)।

जोहणा देखो जोण्हा (मै ७१)।

जोहा स्त्री [योधा] भुज-परिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

जोहार सक [दे] जुहारना, जोहार करना, प्रणाम करना। कर्म जोहारिज्जइ (श्राक २५, १३)।

जोहार पुं [दे] जोहार, प्रणाम (पव ३८)।

जोहि वि [योधिन्] लड़नेवाला, सुभट (पव ७१)।

जोहि वि [योधिन्] लड़नेवाला, लड़वैया (औप)।

जोहिया स्त्री [योधिका] जन्तु-विशेष, हाथ से चलनेवाली एक प्रकार की सर्प-जाति (जीव २)।

ज्जिअ } (शौ) अ [दे] अवधारण—निश्चय
ज्जेअ } का सूचक अव्यय (प्राकृ ६८)।

°ज्जेव } (शौ)। देखो एव = एव (पि २३,
°ज्जेव्व } ८५)।

ज्झड देखो झड। ज्झडइ (हे ४, १३० टि)।

ज्झहराविअ वि [दे] निवासित, निवास-प्राप्त (पड्)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि जआराइसद्दसकलणो सोलहमो तरंगो समत्तो ॥

झ

झ पुं [झ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप)। २ ध्यान (विसे ३१६८)।

झंकार पुं [झङ्कार] झणझण आवाज (सुर ३, १८ पडि, हस)।

झंकारिअ न [दे] ... (दे ३, ५६)।

झंख सक [दे] स्वीकार करना। झंखइ (प्राप्र) (सिरि ८६८)।

झंख अक [सं + तप्] संतप्त होना, संताप करना। झंखइ (हे ४, १४०)।

झंख सक [वि + लप्] विलाप करना, बकवाद करना। झंखइ (हे ४, १४८)। वकृ झंखंत (कुमा), 'वणगमणसमयहरिसीभूओ झंखइ नरेस। एम धुत्र। सोमोत्ति भगइ झंखसि तुमेव बहुलोहगहगहिआ' (श्रा १४)।

झंख सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना। झंखइ (हे ४, १५६)।

झंख अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना। झंखइ (हे ४, २०१)।

झंख वि [दे] तुष्ट, संतुष्ट, खुश (दे ३, ५३)।
झंखण न [उपालम्भ] उपालम्भ, उलाहना (कुमा)।
झंखर पुं [दे] शुष्क तरु, सूखा पेड (दे ३, ५४)।
झंखरिअ [दे] देखो झकारिअ (दे ३, ५६)।
झंखावण वि [सतापक] सताप करनेवाला (कुमा)।
झंखिर वि [नि श्वसितृ] नि श्वास लेनेवाला (कुमा ७, ४४)।
झंझ पु [झञ्झ] कलह, झगडा (सम ५०)। °कर वि [°कर] कलहकारी, फूट करनेवाला (सम ३७)। °पत्त वि [°प्राप्त] क्लेश-प्राप्त (सूअ १, १३)।
झंझण } अक [झञ्झणाय्] 'झन-झन'
झंझणक्क } शब्द करना। झंझणइ (गा ५७५ अ)। झंझणक्कइ (पिंग)।
झंझणा स्त्री [झञ्झना] 'झन-झन' शब्द (गउड)।
झंझा स्त्री [झञ्झा] वाद्य-विशेष, झाँझ, झाल (राय ५० टी)।
झंझा स्त्री [झञ्झा] १ प्रचण्ड वायु-विशेष (गा १७०, सण)। २ कलह, क्लेश, झगडा (उव, बृह ३)। ३ माया, कपट। ४ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, १३)। ५ तृष्णा, लोभ (सूअ २, २)। ६ व्याकुलता, व्यग्रता (आचा)।
झंझिय वि [झञ्झित] बुभुक्षित, भूखा (णाया १, १)।
झंट सक [भ्रम्] घूमना, फिरना। झंटइ (हे ४, १६१)।
झंट अक [गुञ्ज्] गुञ्जारव करना। वकृ 'झटंतभमिरभमरउलमालियं मालियं गहिउं' (सुपा ५२६)।
झंटण न [भ्रमण] पर्यटन, परिभ्रमण (कुमा)।
झंटलिआ स्त्री [दे] चंक्रमण, कुटिल गमन (दे ३, ५५)।
झंटिअ वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत (दे ३, ५५)।
झंटी स्त्री [दे] छोटा किन्तु ऊँचा केश कलाप (दे ३, ५३)।
झंडली स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३,५४)।
झंडुअ पु [दे] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड (दे ३, ५३)।
झंडुली स्त्री [दे] असती, कुलटा। २ क्रीडा, खेल (दे ३, ६१)।
झंदिय वि [दे] प्रद्रुत, पलायित, भगाया हुआ (पड्)।
झंप मक [भ्रम्] घूमना, फिरना। झंपइ (हे ४, १६१)।
झंप सक [आ + च्छादय्] झाँपना, आच्छादन करना, ढकना। झंपइ (पिंग)। सकृ झंपिऊण, झंपिवि (कुमा, भवि)।
झंप सक [आ = क्रामय्] आक्रमण करवाना। झंपइ (प्राकृ ७०)।
झंपण वि [भ्रमण] भ्रमण-कर्ता (कुप्र ४)।
झंपण न [भ्रमण] परिभ्रमण, पर्यटन (कुमा)।
झंपणी स्त्री [दे] पक्ष्म, आँख की बरोनी, आँख के बाल (दे ३, ५४, पाअ)।
झंपा स्त्री [झम्पा] एकदम कूदना, झम्पा पात (सुपा १६८)।
झंपिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ। २ घट्टित, आहत (दे ३, ६१)।
झंपिअ वि [आच्छादित] झंपा हुआ, बद किया हुआ (पिंग), 'पईवओ झंपिओ झत्ति' (महा), 'तओ एव भणमाणस्स सहत्थेण झंपिअं मुहकुहरं सुमइस्स णाइलेण' (महानि ४)।
झंक्खिअ न [दे] वचनीय, लोक-निन्दा (दे ३, ५, भवि)।
झंख देखो झंख = वि + लप्। वकृ झंखत (जय २३)।
झगड पु [दे] झगडा, कलह (सुपा ५४६, ५४७)।
झग्गुली स्त्री [दे] अभिसारिका, प्रिय से मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री या न्यायिका (विक्र १०१)।
झज्झर पुं [झर्झर] १ वाद्य-विशेष, झाँझ। २ पटह, ढोल। ३ कलि-युग। ४ नद-विशेष (पि २१४)।
झज्झरिय वि [झर्झरित] वाद्य विशेष के शब्द से युक्त (ठा १०)।
झज्झरी स्त्री [दे] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चाडाल लोग जो लकडी अपने पास रखते हैं वह (दे ३, ५४)।
झड अक [शद्] १ झडना, पके फल आदि का गिरना, टपकना। २ हीन होना। ३ सक. झपट मारना, गिराना। झडइ (हे ४,१३०)। वकृ. झडत (कुमा)। कवकृ. 'वासासु सीयवाएहिं झडिज्जतो' (आव १)। सकृ. 'झडिऊण पल्लविल्ला, पुणोवि जायति तरुवरा तुरियं। धीराणवि धणरिद्धी, गयावि न हु दुल्लहा एवं'। (उप ७२८)।
झडत्ति अ [झटिति] शीघ्र, जल्दी, तुरत, (उप ७२८ टी, महा)।
झडप्प अ [दे] शीघ्रता, जल्दी (उप पृ ११०, रभा)।
झडप्प सक [आ + छिद्] झपटना, झपट मारना, छीनना। झडप्पमि (भवि)। सकृ. झडप्पिवि (भवि)।
झडप्पड न [दे] झटपट, झटिति, शीघ्र (हे ४, ३८८)।
झडप्पिअ वि [आच्छिन्न] छीना हुआ (भवि)।
झडि अ [झटिति] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, 'झडि आपल्लवइ पुणो' (गा ९१३)।
झडिअ वि [दे] १ शिथिल, ढीला, सुस्त (गा २३०)। २ श्रान्त, खिन्न, (पड्)। ३ झडा हुआ, गिरा हुआ, 'करच्छडाझडियपक्खिउले' (पउम ९६, १५)।
झडित्ति देखो झडत्ति (सुर २, ४)।
झडिल देखो जडिल (हे १, १९४)।
झडी स्त्री [दे] निरन्तर वृष्टि, झडी, गुजराती में 'झडी' (दे ३, ५३)।
झण सक [जुगुप्स्] घृणा करना। झणइ (पड्)।
झणज्झण अक [झणझणाय्] 'झन-झन' आवाज करना। वकृ. झणज्झणत (प्राप)।
झणज्झणिअ वि [झणझणित] 'झन-झन' आवाजवाला (पिंग)।
झणझण देखो झणज्झण। झणझणइ (वज्जा ६६)।
झणझणारव पुं [झणझणारव] 'झन-झन' आवाज (महा)।

झगझगिर देखो झगज्झगिअ (सुपा ५०)।

झग्गि देखो झुग्गि (रंभा)।

झत्ति देखो झडत्ति (हे १, ४२; षड्; महा; सुर २, ६)।

झत्थ वि [दे] गत, गया हुआ। २ नष्ट (दे ३, ६१)।

झपिअ वि [दे] पर्यस्त, क्षिप्त (षड्)।

झप देखो झंप। झपइ (षड्)।

झमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल (दे ३, ५३)।

झय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वज, पताका (हे २, २७; कुमा)। स्त्री °या (औप)।

झर अक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना, गिरना। झरइ (हे ४, १७३)। वकृ झरंत (कुमा; सुर ३, १०)।

झर सक [स्मृ] याद करना। झरइ (हे ४, ७४; षड्)। कृ झरेयव्व (बृह ५)।

झरक } पुं [दे] तृण का बनाया हुआ
झरग } पुरुष, चञ्चा (दे ३, ५५)।

झरग वि [स्मारक] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला, 'भरगा करगा झरगा पभावगा णाणदंसणगुणाणं' (संदि)।

झरझर पुं [झरझर] निर्झर या झरना आदि का 'झर-झर' आवाज (सुर ३, १०)।

झरण न [क्षरण] झरना, टपकना, पतन (पव १)।

झरणा स्त्री [क्षरणा] ऊपर देखो (आवम)।

झरय पुं [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ३, ५४)।

झरिय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित (उप; श्राव ७६०)।

झरुअ पुं [दे] मशक, मच्छड़ (दे ३, ५४)।

झलझलिअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत, 'भयकुलकलियं ... झलझलियं' (सुपा ६५०; ... ३६५)।

झलझल अक [ज्वल्] जलना, चमकना, दीपना। वकृ झलझलंत (भवि)।

झलझलिआ स्त्री [दे] झोली, तोबरी, थैली (दे ३, ५६)।

झलझल देखो झलहल। झलझलइ (सुपा १८६)। वकृ. झलझलंत (सण २८)।

झलहलिय वि [दे] क्षुब्ध, विचलित, 'घर-हरियपरझलहलियमायरवलियमयरकुलमेल' (कुलक ३३)।

झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, धूप में जल ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा (दे ३, ५३; पात्र)।

झलुकिअ } वि [दे] दग्ध, जला हुआ (दे
झलुसिअ } ३, ५६)।

झल्लरी स्त्री [झल्लरी] वलयाकार वाद्य-विशेष, हुडुग बाजा, झाल, झालर (ठा १०; औप; सुर ३, ६६; सुपा ५०; कप्प)।

झल्लरी स्त्री [दे] अजा, बकरी (चउ)।

झल्लोझलिअ वि [दे] संपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर (भवि)।

झवणा स्त्री [क्षपणा] १ नाश, विनाश (विसे ६६१)। २ अध्ययन, पठन (विसे ६५८)।

झस पुं [झष] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। २ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

झस पुं [झष] १ मत्स्य, मछली (पण्ह १, १)। २ °चिंधय पुं [°चिह्नक] कामदेव, स्मर (कुमा)।

झस पुं [दे] १ अयश, अपकीर्ति। २ तट, किनारा। ३ वि तटस्थ, मध्यस्थ। ४ दीर्घ-गभीर, लम्बा और गभीर, बहुत गहरा (दे ३, ६०)। ५ टङ्क से छिन्न (दे ३, ६० पात्र)।

झसय पुं [झषक] छोटा मत्स्य (दे २, ५७)।

झसर पुन [दे] शस्त्र-विशेष, आयुध-विशेष, 'सरसत्तसरसंतिसव्वल—' (पउम ८, ६५)।

झसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त। २ आक्रुष्ट, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३, ६२)।

झसिंध पुं [झषचिह्न] काम, स्मर (कुमा)।

झसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान (दे ३, ६१, गउड)। २ अर्थ (दे ३, ६१)।

झा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना। झाइ झाअइ (हे ४, ६)। वकृ झायंत, झायमाण (प्राप्र; महा)। संकृ झाऊण (प्रासू ११२)। हेकृ झाइत्तए (कस)। कृ झायव्व, झेय, झाएयव्व, झाणयव्व (कुमा; आरा ८८; श्राव ४; नि १०; सुर १४, ८४)।

झाइ वि [ध्यायिन्] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला (आचा)।

झाइअ वि [ध्यात] चिन्तित (सिरि १२५५)।

झाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करनेवाला, चिन्तक (श्राव ४)।

झाड न [दे झाट] १ लता-गहन, निकुञ्ज, झाड़ी (दे ३, ५७, ७, ८४; पात्र; सुर ७, २४३)। २ वृक्ष, पेड़, 'आयल्ली झाडमेत्रम्मि' (द १, ६१), 'दिट्ठो य तए पोमाउज्झाडयम्म इम्मि पएसे विणिग्गओ पायवो' (स १४४)।

झाडण न [झाटन] १ क्षेप, क्षय क्षीणता। २ प्रस्फोटन, झाडना (राज)।

झाडल न [दे] कर्पास-फल, डोडो, कपास (दे ३, ५७)।

झाडावण स्त्रीन [झाटन] झड़वाना, सफा कराना, मार्जन कराना। स्त्री °णी (सुपा ३७३)।

झाण वि [ध्यान] ध्यानकर्ता (श्रु १२८)।

झाण पुन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण, सोच (श्राव ४; ठा ४, १; हे २, २६)। २ एक ही वस्तु में मन की स्थिरता, लौ लगाना (ठा ८, १)। ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध। ४ दृढ प्रयत्न से मन वगैरह का व्यापार (सिम ३०७२; ठा ८, १)।

झाणंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] १ दो ध्यानों का मध्य भाग, वह समय जिसमें प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का आरम्भ जबतक न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हों (ठा ६; भग ५, ४)। २ एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारम्भ करने का विमर्श (बृह १)।

झाणि वि [ध्यानिन्] ध्यान करनेवाला (आरा ८६)।

झाम सक [दह्] जलाना, दाह देना, दग्ध करना। झामेइ (सूअ २, २, ४४)। वकृ झामंत (सूअ २, २, ८४)।

झाम वि [दे] दग्ध, जला हुआ (आचा २, १, १)। °थंडिल न [°स्थण्डिल] दग्ध भूमि (आचा २, १, १)।

झाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल (पण्ह १, ३—पत्र ४०)।

झामण न [दे] जलाना, आग लगाना प्रदीपनक (वव २)।

झामर वि [दे] वृद्ध, बूढा (दे ३, ५७)।

झामल न [दे] १ आँख का एक प्रकार का रोग, गुजराती में 'झामरो'। २ वि झामर रोगवाला (उप ७६८ टी, श्रा १२)।

झामल वि [ध्यामल] श्याम, काला (धर्मसं ८०७)।

झामलिय वि [ध्यामलित] काला किया हुआ (कुप्र ५८)।

झामिअ वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित (दे ३, ५६, वव ७, आवम)। २ ध्यामलित, काला किया हुआ। ३ कलंकित, 'घणदड्ढपयगाएवि जीए जा झामिओ नेय' (सार्ध १६)।

झाय वि [ध्मात] भस्मीकृत, दग्ध, जला हुआ (गादि)।

झायव्व देखो झा।

झारुआ स्त्री [दे] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ५७)।

झावण न [ध्मापन] देखो झामण (राज)।

झावणा न [ध्मापना] दाह, जलाना, अग्नि-संस्कार (आवम)।

झावणा देखो अज्झावणा (सबोध २४)।

झिंखण न [दे] गुस्सा करना (उप १४३ टी)।

झिंखिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३, ५५)।

झिंगिर } पु [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय
झिंगिरड } जीव की एक जाति, झींगूर या झिल्ली (जीव १)।

झिंझिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा (बृह ६)।

झिंझिणी } स्त्री [दे] एक प्रकार का पेड़,
झिंझिरी } लता-विशेष (उप १०३१ टी, आचा २, १, ८, बृह १)।

झिज्जंत } वि [क्षीयमाण] जो क्षय को
झिज्जमाण } प्राप्त होता हो, कृश होता हुआ (से ५, ५८, ७२८ टी, कुमा)।

झिज्झ अक [क्षि] क्षीण होना। झिज्झइ (प्राकृ ६३)।

झिझिरी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।

झिण्ण देखो झीण (से १, ३५, कुमा)।

झिमिय } न [दे] शरीर के अवयवों की
झिम्मिय } जडता (आचा)।

झिया देखो झा। झियाइ, झियायइ (उवा, भग, कस, पि ४७६)। वकृ झियायमाण (णाया १, १—पत्र २८, ६०)।

झिरिड न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा (दे ३, ५७)।

झिलिअ वि [दे] झीला हुआ, पकडी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो (सुपा १७८)।

झिल्ल अक [स्ना] झीलना, स्नान करना। झिल्लइ (कुमा)।

झिल्लिआ स्त्री [झिल्लिका] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति, झिल्ली (पाअ, पण्ण १)।

झिल्लिरिआ स्त्री [दे] १ चीही-नामक तृण। २ मशक, मच्छड (दे ३, ६२)।

झिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकडने की एक तरह की जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।

झिल्ली स्त्री [दे] लहरी, तरंग (गउड)।

झिल्ली स्त्री [झिल्ली] १ वनस्पति-विशेष (पण्ण १, उप १०३१ टी)। २ कीट विशेष, झींगूर (गा ४६४)।

झीण वि [क्षीण] दुर्बल, कृश (हे २, ३, पाअ)।

झीण न [दे] १ अंग, शरीर। २ कीट, कीडा (दे ३, ६२)।

झीरा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ३, ५७)।

झुंख पु [दे] तुणय नामक वाद्य (दे ३, ५८)।

झुंझिय वि [दे] १ बुभुक्षित, भूखा (पण्ह १, ३—पत्र ४६)। २ झुरा हुआ, मुरझा हुआ (भग १६, ४)।

झुंझुमुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३, ५८)।

झुटण न [दे] १ प्रवाह (दे ३, ५८)। २ पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमी से जीता है और जिसका रोम कपडे के लिये बहुमूल्य है (उप ५५१)।

झुपडा स्त्री [दे] झोपडी, तृण कुटीर, तृण-निर्मित घर (हे ४, ४१६, ४१८)।

झुंबणग न [दे] प्रालम्ब (णाया १, १)।

झुज्झ देखो जुज्झ=युध्। झुज्झइ (पि २१४)। वकृ झुज्झंत (हे ४, ३७६)।

झुट्ठ वि [दे] झूठ, अलीक, असत्य (दे ३, ५८)।

झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। झुणइ (हे ४, ४, सुपा ३१८)।

झुणि पु [ध्वनि] शब्द, आवाज (हे १, ५२, षड्, कुमा)।

झुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित (कुमा)।

झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विच्छेद (दे ३, ५८)।

झुमुझुमुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३, ५८)।

झुलुक्क पु [दे] अकस्मात् प्रकाश (आत्मानु ६)।

झुल्ल अक [अन्दोल्] झूलना, डोलना, लटकना। वकृ झुल्लंत (सुपा ३१७)।

झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द-विशेष। स्त्री. °णा (पिंग)।

झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ (दे ६, ५८)।

झुस देखो झूस। सकृ. झूसित्ता (पि २०६)।

झुसणा देखो झूसणा (राज)।

झुसिय देखो झूसिय (बृह २)।

झुसिर न [शुषिर] १ रन्ध्र, विवर, पोल, खाली जगह (णाया १, ८ सुपा ६२०)। २ वि पोला, छूँछा (ठा २, ३, णाया १, २, पण्ह १, २)।

झूझ देखो जूझ। झूझति (सबोध १८)।

झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। झूरइ (हे ४, ७४)। वकृ झूरत (कुमा)।

झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना,

'निरुवमसोहग्गमइ, दिट्ठूण तस्स रूवगुणरिद्धिं।
इंदो वि देवराया, झूरइ नियमेण नियरूवं'
(रयण ४)।

झूर अक [क्षि] झुरना, क्षीण होना, सूखना। वकृ झूरत, झूरमाण (सण, उप पृ २७)।

झूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढा (दे ३, ५६)।

झूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ (भवि)।

झूस सक [जुष्] १ सेवा करना। २ प्रीति करना। ३ क्षीण करना, खपाना। वकृ.

भूसमाण (आचा)। सकृ भूसित्ता, भूसित्ताणं, भूसेत्ता (ओप, पि ५८३, अत २७)।

भूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना (उवा, अंत, औप, णाया १, १)।

भूसरिअ वि [दे] १ अत्यर्थ, अत्यन्त। २ स्वच्छ, निर्मल (दे ३, ६२)।

भूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित, आराधित (णाया १, १, औप)। २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त (उवा, ठा २, २)।

भेंदुअ पुं [दे] कन्दुक, गेंद (दे ३, ५६)।

भेय देखो भा।

भेर पुं [दे] पुराना घण्टा (दे ३, ५६)।

भोटिग पु [दे] देश-विशेष (सुप्र ४७२)।

भोट्टी स्त्री [दे] अर्ध महिषी, भैंस की एक जाति (दे ३, ५६)।

भोंडलिआ स्त्री [दे] रास के समान एक प्रकार की क्रीडा (दे ३, ६०)।

भोड सक [शाटय्] पेड आदि से पत्र वगैरह को गिराना। भोडइ (पि ३२६)।

भोड न [दे] १ पेड आदि से पत्र आदि का गिराना। २ जीर्ण वृक्ष (णाया १, ११—पत्र १७१)।

भोडण न [शाटन] पातन, गिराना (पराह १, १—पत्र २३)।

भोडप्प पुं [दे] १ चना, अन्न विशेष। २ सूखे चने का शाक (दे ३, ५६)।

भोडिअ पु [दे] व्याध, शिकारी, बहेलिया (दे ३, ६०)।

भोलिआ } स्त्री [दे भोलिका] भोली, भोल्लिआ } थैली, कोथली (दे ३, ५८, सूअ २, ४)।

भोस देखो भूस। भोसेइ (आचा)। वकृ भोसमाण, भोसेमाण (सुपा २६, आचा)। सकृ 'सलेहणाए सम्मं भोसित्ता निययदेहं तु' (सुर ६, २४६)।

भोस सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना। भोसेहि (बृह ३)।

भोस सक [भोषय्] डालना, प्रक्षेप करना। कृ भोसेयव्व (वव १)।

भोस पु [भोष] राशि-विशेष, जिसके डालने से समान भागाकार हो वह राशि (वव १)।

भोस पुं [दे] भाड़ना, दूर करना (ठा ५,२)।

भोसग न [दे] गवेषण, मार्गण, 'आभोगण ति वा मग्गण ति वा भोसण ति वा एगट्ठ' (वव ७)।

भोसणा देखो भूसणा (सम ११६, भग)।

भोसणा स्त्री [जोषणा] अन्त समय की आराधना, सलेखना (श्रावक ३७८)।

भोसिअ देखो भूसिय (आचा, हे ४, २५८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि भआराइसद्दसकलणो सत्तरहमो तरंगो समत्तो ॥

ट

ट पुं [ट] मूर्द्धस्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (प्रामा, प्राप)।

टउया स्त्री [दे] आह्वान-शब्द, पुकारने की आवाज, गुजराती में 'टाको' (सुप्र ३०६)।

टंक पुं [टङ्क] चिह्न-विशेष, सिक्का पर का चिह्न (पंचा ., ३५)।

टंक पुं [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग (पराह १, १—पत्र १८)। २ एक प्रकार का सिक्का (श्रा १२, सुपा ५१३)। ३ एक दिशा में छिन्न पर्वत (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी (से ५, ३५, उप पृ ३१५)। ५ परिमाण विशेष, चार मासे की तौल (पिंग)। ६ खनि विशेष (जीव ३)।

टंक पुं [दे] १ तलवार, खड्ग। २ खात, खुदा हुआ जलाशय। ३ जङ्घा, जांघ। ४ भित्ति, भीत। ५ तट, किनारा (दे ४, ४)। ६ खनित्र, कुदाल (दे ४, ४, से ५, ३५)। ७ वि छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ (दे ४, ४)।

टंकण पुं [टङ्कन] म्लेच्छ की एक जाति, (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पुं [दे] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी (श्रा २०)।

टंका स्त्री [दे] १ जंघा, जांघ (पाअ)। २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ (ती ४३)।

टंकार पु [टङ्कार] धनुष का शब्द (भवि)।

टंकार पु [दे] ओजस्, तेज (गउड)।

टंकिअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ (दे ४, १)।

टंकिअ वि [टङ्कित] टांकी से काटा हुआ (दे ४, ५०)।

टंकिया स्त्री [टङ्किका] पत्थर काटने का अस्त्र, टांकी (सम्मत्त २२७)।

टक्करअ वि [दे] भारवाला, गुरु, भारी (दे ४, ३)।

टक्क पु [टक्क] देश विशेष (हे १, १९५)।

टक्क वि [टक्क] १ टक्क देशीय। २ पु भाट की एक जाति (सुप्र १२)।

टक्कर पु [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात (सुर १२, ६७, वव १)।

टक्करा स्त्री [दे] टकोर, मुण्ड-सिर में उंगली का आघात (वव १ टी)।

टक्कारा स्त्री [दे] अरणि वृक्ष का फूल (दे ४, २)।

टगर पु [तगर] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष। २ सुगन्धित काष्ठ विशेष (ह १, २०५, कुमा)।

टक्क पुं [दे] लकडी आदि के आघात की आवाज (कुप्र ३०६)।

टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ४, १)।

टप्पर वि [दे] विकराल कर्णवाला, भयंकर कानवाला (दे ४, २, सुपा ५२०, कप्पू)।

टमर पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह (दे ४, १)।

टयर देखो **टगर** (कुमा)।

टलटल अक [टलटलाय्] 'टल-टल' आवाज करना। वकृ **टलटलत** (प्रासू १६३)।

टलटलिय वि [टलटलित] 'टल-टल' आवाज वाला (उप ६४८ टी)।

टलवल अक [दे] १ तडफडाना, तडपना। २ घबराना, हैरान होना। टलवलति (धर्मवि ३८)। वकृ. **टलवलत** (सरि ६०८)।

टलिअ वि [दे] टला हुआ, हटा हुआ (सिरि ६८३)।

टसर न [दे] विमोटन, मोडना (दे ४, १)।

टसर पुं [त्रसर] टसर, एक प्रकार का सूता (हे १, २०५, कुमा)।

टसरोट्ट न [दे] शेखर, अवतंस (दे ४, १)।

टहरिय वि [दे] ऊँचा किया हुआ, 'टहरिय-कन्नो जाओ मिगुव्व गीइ कहं सोउ (धर्मवि १४७, सम्मत्त १५८)।

टार पु [दे] अधम, अश्व, हठी घोडा (दे ४, २), 'अइसिक्खिओवि न मुअइ, अणय टारत्त टारत्त' (श्रा २७)। २ टट्टू, छोटा घोडा (उप १५५)।

टाल न [दे] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल (दस ७)।

टिंट° } [दे] देखो **टेंटा** (भवि)। °**साला**
टिंटा } स्त्री [°शाला] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (सुपा ४६५)।

टिंबरु } पुन [दे] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड
टिंबरुअ } (दे ४, ३, उप १०३१ टी, पाअ)।

टिंबरुणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (पि २१८)।

टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक। २ सिर का स्तवक, मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा (दे ४, ३)।

टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक विभूषित (कप्पू)।

टिग्घर वि [दे] स्थविर, वृद्ध, बूढ़ा (दे ४, ३)।

टिट्टिभ पु [टिट्टिभ] १ पक्षि-विशेष, टिटिहरी, टिटिहा। २ जल-जन्तु विशेष (सुर १०, १८५)। स्त्री °**भी** (विपा १, ३)।

टिट्टियाव सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना, 'टि-टि' आवाज करने को सिखलाना। टिट्टियावेइ (णाया १, ३)। कवकृ **टिट्टिया-वेज्जमाण** (णाया १, ३—पत्र ९४)।

टिप्पणय न [टिप्पनक] विवरण, छोटी टीका (सुपा ३२४)।

टिप्पी स्त्री [दे] तिलक, टीका (दे ४, ३)।

टिरिटिल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। टिरिटिल्लइ (हे ४, १६१)। वकृ **टिरिटिल्लत** (कुमा)।

टिल्लिक्किय वि [दे] विभूषित (धर्मवि ५१)।

टिविडिक्क सक [मण्डय्] मण्डित करना, विभूषित करना। टिविडिक्कइ (हे ४, ११५, कुमा)। वकृ. **टिविडिक्कत** (सुपा २८)।

टिविडिक्किअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत (पाअ)।

टुंट वि [दे] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह (दे ४, ३, प्रासू १४२, १४३)।

टुटुण्ण अक [टुण्टुणाय्] 'टुन टुन' आवाज करना। वकृ **टुटुण्णत** (गा ६८५, काप्र ६६५)।

टुवय पु [दे] आघात-विशेष, गुजराती मे 'ठुवो' (सुर १२, ६७)।

टुट्ट अक [त्रुट्] टूटना, कट जाना। टुट्टइ (पिंग)। वकृ **टुट्टत** (से ६, ६३)।

टुप्परग न [दे] जैन साधु का एक छोटा पात्र (कुलक ११)।

टूवर पु [तूवर] १ जिसको दाढ़ी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी। २ जिसने दाढ़ी-मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार (हे १, २०५, कुमा)।

टेट पुं [दे] १ मध्य-स्थित मणि-विशेष। वि. भीषण (कप्पू)।

टेंटा स्त्री [दे] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (दे ४, ३)।

टेंटा स्त्री [दे] १ अक्षि-गोलक। २ छाती का शुष्क व्रण (कप्पू)।

टेंबरुय न [दे] फल-विशेष (आचा २, १, ८, ६)।

टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश (दे ४, ३)।

टोक्कण } न [दे] दारू नापने का बरतन
टोक्कणखंड } (दे ४, ४)।

टोपिआ स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिला हुआ एक प्रकार का वस्त्र (सुपा २६३)।

टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष (स ४५१)।

टोप्पर पुन [दे] शिरस्त्राण विशेष, टोपी (पिंग)।

टोल पु [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष। २ पिशाच (दे ४, ४, प्रासू १६२)। °**गइ** स्त्री [°गति] गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २)। °**गइ** स्त्री [°कृति] प्रशस्त आकारवाला (राज)।

टोल पु [दे] १ टिड्डी, टिडी (पव २)। २ यूथ (कुप्र ५८)।

टोलंब पु [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड (दे ४, ४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि टयाराइसद्दसकलणो

अट्ठारहमो तरंगो समत्तो ॥

———

ठ

ठ पु [ठ] मूर्धन्स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा प्राप)।

ठइअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त ऊपर फेंका हुआ। २ पु. अवकाश (दे ४, ५)।

ठइअ वि [स्थगित] १ आच्छादित, ढका हुआ। २ बंद किया हुआ, रुका हुआ (ग १८३)।

ठइअ देखो ठविअ (पिंग)।

ठंडिल्ल देखो थंडिल्ल (उत्त)।

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ्। कर्म ठंभिज्जइ (हे २, ९)।

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ (हे २, ९; षड्)।

ठकुर, ठक्कुर पु [ठक्कुर] १ ठाकुर, क्षत्रिय, राजपूत (स ५४८; सुपा ४१२; सट्टि ९८)। २ ग्राम वगैरह का स्वामी, नायक, मुखिया (श्रावम)।

ठक्कार पु [ठकार] 'ठ' अक्षर; 'तम्मि चलंते कम्मियसित्ताए महीइ तुरगखुरसेणी। लिहिया रिऊण विजए मन्नो ठक्कारपंति व्व' (धर्मवि २०)।

ठग, ठय सक [स्थग्] बन्द करना, ढकना। ठगेइ, ठएइ (सट्टि २३ टी; सुर २, ४७)।

ठग पु [ठक] ठग, धूर्त, वञ्चक (दे २, ४८; सुपा)।

ठगिय वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ, विप्रतारित (सुपा १२४)।

ठगिय देखो ठइय = स्थगित (उप पृ ३८८)।

ठट्टार पु [दे] ताम्र, पित्तल आदि धातु के बर्तन बनाने की शिल्प चलानेवाला, ठठेरा (धर्म २)।

ठड्ढ वि [स्तब्ध] हक्काबक्का, कुण्ठित, जड़ (हे २, ३९; वज्जा ६०)।

ठप्प वि [स्थाप्य] स्थापनीय, स्थापन करने लायक (प्र.प ६)।

ठय सक [स्थग्] बन्द करना, रोकना। ठएइ (स १४९)।

ठयण [स्थगन] १ ढकना, आच्छादन। २ वि ढकनेवाला। स्त्री °णी (उप ९६६)।

ठयण न [स्थगन] बन्द करना 'अहि ठयणं' (धा २, २५)।

ठरिअ वि [दे] १ गौरवित। २ ऊर्ध्व-स्थित (दे ४, ६)।

ठलिय वि [दे] खाली, शून्य, रिक्त किया गया (सुपा २३७)।

ठल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र (दे ४, ५)।

ठव सक [स्थापय्] स्थापन करना। ठवइ, ठवेइ (पिंग, कप्प, महा)। ठवे (भग)। वकृ. ठवंत (रयण ९३)। सकृ. ठविउ, ठविऊण, ठवित्ता, ठवित्तु, ठवेत्ता (पि ५७६, ५८६, ५८२, प्रामू २७, पि ५८२)।

ठवण न [स्थापन] स्थापन, सस्थापन (सुर २, १७७)।

ठवणा स्त्री [स्थापना] १ प्रतिकृति, चित्र, मूर्ति, आकार (ठा २, ४, १०; अणु)। २ स्थापन, न्यास (ठा ४, ३)। ३ सांकेतिक वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव या अनुपस्थिति मे जिस किसी चीज मे उसका संकेत किया जाय वह वस्तु (विसे २६२७)। ४ जैन साधुओ की भिक्षा का एक दोष, साधु को भिक्षा मे देने के लिए रखी हुई वस्तु (ठा ३, ४—पत्र १५६)। ५ अनुज्ञा, संमति (णंदि)। ६ पर्युषणा, आठ दिनो का जैन पर्व-विशेष (निचू १०)। °कुल पुन [°कुल] भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल (निचू ४)। °णय पु [°नय] स्थापन को ही प्रधान माननेवाला मत (राज)। °पुरिस पु [°पुरुष] पुरुष की मूर्ति या चित्र (ठा ३, १; सूअ १, ४, १)। °यरिय पु [°चार्य] जिस वस्तु मे आचार्य का संकेत किया जाय वह वस्तु (धर्म २)। °सच्च न [°सत्य] स्थापना-विषयक सत्य, जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह स्थापना-सत्य है (ठा १०; पण्ण ११)।

ठवणा स्त्री [स्थापना] वासना (णंदि १७६)।

ठवणी स्त्री [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ द्रव्य (श्रा १४)। °मोस पु [°मोष] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप, 'सोउं मित्तदोसो, ठवणीमोसो अलोयमोसे' (श्रा १४)।

ठविअ वि [स्थापित] रखा हुआ, संस्थापित (षड्; पि ५६४; ठा ५, २)।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति (दे ४, ५)।

ठविर देखो थविर (पि १६६)।

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना। ठाइ, ठाअइ (हे ४, १६; षड्)। वकृ. ठायमाण (उप १३० टी)। सकृ. ठाइऊण, ठाऊण (पि ३०६; पचा १८)। हेकृ. ठाइत्तए, ठाउ (कस; श्राव ५)। कृ. ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व (णाया १, १४; सुपा ३०२; सुर ६, ३३)।

ठाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला, स्थिर होनेवाला (औप; कप्प)।

ठाएयव्व देखो ठा।

ठाएयव्व देखो ठाव।

ठाण पु [दे] मान, गर्व, अभिमान (दे ४, ५)।

ठाण पुन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति (सूअ १, ५, १; बृह १)। २ स्वरूप-प्राप्ति (सम्म १)। ३ निवास, रहना (सूअ १, ११; निचू १)। ४ कारण, निमित्त, हेतु (सूअ १, १, २; ठा २, ४)। ५ पर्यंक आदि आसन (राज)। ६ प्रकार, भेद (ठा १०; आचू ४)। ७ पद, जगह (ठा १०)। ८ गुण, पर्याय, धर्म (ठा ५, ३; श्राव ४)। ९ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर (ठा ४, ३)। १० तृतीय जैन अंग-ग्रन्थ, 'ठाणांग' सूत्र (ठा १)। ११ 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद (ठा १, २, ३, ४, ५)। १२ कायोत्सर्ग (औप)। °भट्ठ वि [°भ्रष्ट] १ अपनी जगह से च्युत (णाया १, ९)। २ चारित्र से पतित (तंदु)। °ाइय वि [°ातिग] कायोत्सर्ग करनेवाला (औप)। °ायय न [°ायत] ऊँचा स्थान (बृह ५)।

ठाण न [स्थान] १ कुकण (कोंकण) देश का एक नगर (गिरि ६३६)। २ तेरह दिन का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

ठाणग न [स्थानक] शरीर की चेष्टा-विशेष (पचा १८, १५)।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थानवाला, स्थान-युक्त (सूअ १, २, उव)।

ठाणिज्ज देखो ठा।

ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)। २ न गौरव (षड्)।

ठाणुक्कडिय } वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्क-
ठाणुक्कुडय } टुक आसनवाला (पएह २, १, भग)। २ न. आसन-विशेष (इक)।

ठाणु देखो खाणु। °खड न [°खण्ड] १ स्थाणु का अवयव। २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर-वाला (णाया १, १—पत्र ६६)।

ठाम } (अप)। देखो ठाण (पिंग, सण)।
ठाय }

ठाय पु [स्थाय] स्थान, आश्रय (सुख २, १७)।

ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना। ठावइ, ठावेइ (पि ५५३, कप्प, महा)। वकृ. ठावत, ठावित (चउ २०, सुपा ८८)। संकृ ठावइत्ता, ठावेत्ता (कस, महा) कृ. ठाएयव्व (सुपा ५४५)।

ठावण न [स्थापन] स्थापन, धारण (पचा १३)।

ठावणया } देखो ठवणा (उप ६८६ टी, ठा
ठावणा } १, बृह ५)।

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला (णाया १, १८, सुपा २३४)।

ठावर वि [स्थावर] रहनेवाला, स्थायी (अच्चु १३)।

ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ (ठा ३, १, आ १२, महा)।

ठावित्तु वि [स्थापयितृ] ऊपर देखो (ठा ३, १)।

ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा (दे ४, ६)।

ठिइ स्त्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम, 'जयट्ठिई एसा' (ठा ४, १, उप ७२८ टी)। २ स्थान, अवस्थान (सम २)। ३ अवस्था, दशा (जी ४८)। ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा (भग १४, ५, नव ३१, पएण ४, औप)। °क्खय पु [°क्षय] आयु का क्षय, मरण (विपा २, १)। °पडिया देखो °वडिया (कप्प)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा (कम्म ४, ८२)। °वडिया स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-सम्बन्धी उत्सव-विशेष (णाया १, १)।

ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न (दे ४, ५)।

ठिक्करिआ स्त्री [दे] ठिकरी, घडा का टुकडा (श्रा १४)।

ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित (ठा २, ४)। २ व्यवस्थित, नियमित (सूअ १, ६)। ३ खडा (भग ६, ३३)। ४ निषण्ण, बैठा हुआ (निचू १, प्राप्र, कुमा)।

ठिर देखो थिर (अच्चु १, गा १३१ अ)।

ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा। २ निकट, समीप। ३ हिक्का, हिचकी (दे ४, ६)।

ठिव्व सक [वि + घुट्] मोडना। संकृ. ठिव्विऊण (सुपा १६)।

ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (घृत आदि) (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने-वाला। ३ न जमाव। ४ आलस्य। ५ प्रति-ध्वनि (हे १, ७४, २, ३३)।

ठुंठ पुन [दे] ठूँठा, ठूँठ, स्थाणु (ज १)।

ठुक्क सक [त्यज्] त्याग करना। ठुक्कइ (प्राकृ ६३)।

ठेर पुस्त्री [स्थविर] वृद्ध, बूढा (गा ८८३ अ, पि १६६),

'पउरजुवाणो गामो, महुमासो
जोअणं पई ठेरो।
जुराणसुरा साहीणा, असई
मा होउ किं मरउ ?'

(गा १९७)। स्त्री. °री (गा ६५४ अ)।

ठोड पुं [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ। २ पुरोहित (सुपा ५५२)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ठयाराइसद्दसकलणो
एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो॥

ड

ड पु [ड] मूर्द्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप)।

डओयर न [दकोदर] पेट का रोग-विशेष, जलोदर (निचू १)।

डंक पु [दे] १ डक, वृश्चिक (बिच्छू) आदि का काँटा (पएह १, १)। २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो, 'जह सव्वसरीरगयं विसं निरुंभित्तु डकमाणिंति' (सुपा ६०६)।

डंकिय देखो डक्क = दष्ट (वै ८६)।

डगा स्त्री [दे] डांग, लाठी, यष्टि (सुपा २३८, ३८८, ५४६)।

डड देखो दड (हे १, १२७, प्राप्र)।

डड न [दे] वस्त्र के सीए हुए टुकडे (दे ४, ७)।

डडगा स्त्री [दण्डका] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध अरण्य—जगल (सुख)।

डंडय पुं [दे] रथ्या, महल्ला (दे ४, ८)।

डडारण्ण न [दण्डारण्य] दक्षिण का एक

प्रसिद्ध जंगल, दण्डकारण्य (पउम ६८, ४२)।

डंडि } स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४,
डंडी } ७, पण्ह १, ३)।

डंबर पु [दे] घर्म, गरमी, प्रस्वेद (दे ४, ८)।

डंबर पु [डम्बर] आडम्बर, आटोप (उप १४२ टी, सिरि)।

डंभ देखो दंभ (हे १, २१७)।

डंभण न [दम्भन] दागने का शस्त्र-विशेष (विपा १, ६)।

डंभण न [दम्भन] वंचना, ठगाई (पव २)।

डंभणया } स्त्री [दम्भना] १ दागना। २
डंभणा } माया, कपट, दम्भ, वञ्चना (उप पृ ३१५, पण्ह २, १)।

डंभिअ पु [दे] जुआरी, जुए का खेलाड़ी (दे ४, ८)।

डंभिअ वि [दाम्भिक] वञ्चक, मायावी, कपटी (कुमा, षड्)।

डंस सक [दंश्] डसना, काटना। डंसउ, डंसए (षड्)।

डंस पु [दंश] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस, मच्छर (जी १८)।

डंस पु [दंश] १ दन्त-क्षत। २ सर्प आदि का काटा हुआ घाव। ३ दोष। ४ खंडन। ५ दाँत ६ वर्म, कवच। ७ मर्म-स्थान (प्राकृ १५)।

डंसण पुन [दंशन] वर्म, कवच; 'डंसणो' (प्राकृ १५)।

डक्क वि [दष्ट] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ (हे २, २, गा ५३१)।

डक्क वि [दे] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात्त (दे ४, ६)।

डक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष (सुपा १९५)।

डक्कुरिज्जंत वकृ [दे] पीडित होता हुआ (सूत्र० चू० गा० ३१५)।

डगण न [दे] यान-विशेष (राज)।

डगमग अक [दे] चलित होना, हिलना, काँपना। डगमगेति (सिरि)।

डगल न [दे] १ पत्थर का टुकड़ा (निचू १५)। २ ईंट पाषाण वगैरह का टुकड़ा (ओघ ३५६, ७८ भा)।

डग्गल पुं [दे] घर के ऊपर का भूमि-तल, छत (दे ४, ८)।

डज्झ }
डज्झंत } देखो डह।
डज्झमाण }

डट्ठ देखो डक्क = दष्ट (हे १, २१७)।

डड्ढ वि [दग्ध] प्रज्वलित, जला हुआ (हे १, २१७, गा १४६)।

डड्ढाडी स्त्री [दे] दव-मार्ग, आग का रास्ता (दे ४, ८)।

डप्फ न [दे] सेल, कुन्त, भाला, बरछी, आयुध-विशेष (दे ४, ७)।

डब्भ पु [दर्भ] डाभ, कुश, तृण-विशेष (हे १, २१७)।

डमडम अक [डमडमाय्] 'डम-डम' आवाज करना, डमरू आदि का आवाज होना। वकृ, डमडमंत (सुपा १६३)।

डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम-डम' आवाज किया हो वह (सुपा १५१, ३३८)।

डमर पुन [डमर] १ राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव (णाया १, १, ज २, पव ४, औप)। २ कलह, लड़ाई, विग्रह (पण्ह १, २, दे ८, ३२)।

डमरुअ } पुन [डमरुक] वाद्य-विशेष,
डमरुग } कापालिक योगियों के बजाने का बाजा, डमरू (दे २,८६, पउम ५७,२३, सुपा ३०६, षड्)।

डर अक [त्रस्] डरना, भय-भीत होना। डरइ (हे ४, १९८)।

डर पु [दर] डर, भय, भीति (हे १, २१७, सण)।

डरिअ वि [त्रस्त] भय-भीत, डरा हुआ (कुमा, सुपा ६५५, सण)।

डल पु [दे] लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ४,७)।

डल्ल सक [पा] पीना। डल्लइ (हे ४, १०)।

डल्ल } न [दे] पिटिका, डाला, डाली, बाँस
डल्लग } का बना हुआ फल-फूल रखने का पात्र (दे ४, ७, आवम)।

डल्ला स्त्री [दे] डाला, डाली (कुप्र २०६)।

डल्लिर वि [पातृ] पीनेवाला (कुमा)।

डव सक [आ + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना। डवइ (षड्)।

डवडव अ [दे] ऊँचा मुँह कर के वेग से इधर-उधर गमन (चंड)।

डव्व पु [दे] वाम हस्त, बायाँ हाथ, गुजराती में 'डावो' (दे ४, ६)।

डस देखो डंस। डसइ (हे १, २१८, पि २२२)। हेकृ डसिउ (सुर २, २४३)।

डसण न [दशन] १ दंश, दाँत से काटना (हे १, २१७)। २ दाँत (कुमा)।

डसण वि [दशन] काटनेवाला (सिरि ६२०)।

डसिअ वि [दष्ट] डसा हुआ, काटा हुआ (सुपा ४४६, सुर ६, १८५)।

डह सक [दह्] जलाना, दग्ध करना। डहइ, डहए (हे १, २१८, षड्, महा, उव)। भवि डहिहिइ (हे ४, २४६)। कवकृ डज्झंत, डज्झमाण (सम १३७, उप पृ ३३, सुपा ८५)। हेकृ डहिउं (पउम ३१, १७)। कृ डज्झ (ठा ३, २, दस १०)।

डहण न [दहन] १ जलाना, भस्म करना (बृह १)। २ पु अग्नि, वह्नि, आग (कुमा)। ३ वि जलानेवाला, 'तस्स सुहासुहडहणो अप्पा जलणो पयासेइ' (आरा ८४)।

डहर पु [दे] १ शिशु, बालक, बच्चा (दे ४, ८, पाअ, वव ३, दस ६, १, सूअ १, २, १, २, ३, २१, २२, २३)। २ वि लघु, छोटा, क्षुद्र (ओघ १७८,२६० भा)। °ग्गाम पु [°ग्राम] छोटा गाँव (वव ७)।

डहरक पु [दे] वृक्ष-विशेष। २ पुष्प-विशेष, 'डहरकफुल्लणुरत्ता भुजंती तप्फलं मुणसि' (धर्मवि ६७)।

डहरिया स्त्री [दे] जन्म से अठारह वर्ष तक की लड़की (वव ४)।

डहरी स्त्री [दे] अलिंजर, मिट्टी का घड़ा (दे ४, ७)।

डाअल न [दे] लोचन, आँख, नेत्र (दे ४,६)।

डाइणी स्त्री [डाकिनी] १ डाकिनी, डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी। २ जंतर मंतर जाननेवाली स्त्री (पण्ह १, ३, सुपा ५०५, स ३०७, महा)।

डाउ पु [दे] १ फलिहसक वृक्ष, एक जाति का पेड़। २ गणपति की एक तरह की प्रतिमा (दे ४, १२)।

डाग पुन [दे] भाजी, पत्राकार तरकारी (भग ७, १०२, दसा १, पव २)।
डाग न [दे] डाल, शाखा (आचा २,१०,२)।
डागिणी देखो डाइणी (१, ३, ४)।
डामर वि [डामर] भयंकर, 'डमडमियडमरुया-डोव्वडामरो' (सुपा १५१)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, २१)।
डामरिय वि [डामरिक] लड़ाई करनेवाला, विग्रह-कारक (पण्ह १, २)।
डाय न [दे] देखो डाग (राज)।
डायाल न [दे] हर्म्य-तल, प्रासाद भूमि, छत (आचा २, २, १)।
डाल स्त्रीन [दे] १ डाल, शाखा, टहनी (सुपा १४०, पचा १६, हे ४, ४४५)। २ शाखा का एक देश (आचा २, १, १०)। स्त्री. °ला (महा, पाअ, वज्जा २६), °ली (दे ४, ६, पच १०, सण, निचू ४)।
डाव पु [दे] वाम हस्त, बाँया हाथ, गुजराती मे 'डावो' (दे ४, ६)।
डाह देखो दाह (हे १, २१७, गा २२६, ५३५, कुमा)।
डाहर पुं [दे] देश-विशेष (पिंग)।
डाहाल पु [दे] देश-विशेष (सुपा २६३)।
डाहिण देखो दाहिण (गा ७७७, पिंग)।
डिअली स्त्री [दे] स्थूण, खभा, खूँटी (दे ४, ६)।
डिंडव वि [दे] जल मे पतित (षड्)।
डिंडि पुं [दण्डिन्] राजकर्मचारी-विशिष्ट अधिकार-सपन्न (भव० बृ० कथा पत्र-४७०, श्लोक ४)।
डिंडिम न [डिण्डिम] डुगडुगी, डुग्गी, वाद्य-विशेष (सुर ६, १८१)।
डिंडिम न [डिण्डिम] कांसे का पात्र (आचा २, १, ११, ३)।
डिंडिलिअ न [दे] १ खलि-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपडा। २ स्खलित हस्त (दे ४, १०)।
डिंडि स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र खण्ड (दे ४, ७)। °बंध पु [°बन्ध] गर्भ-सँभव (निचू ११)।
डिंडीर पुन [डिण्डीर] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ (उप ७२८ टी, सुपा २२२)।
डिंडुयाण न [डिण्डुयाण] नगर-विशेष (कुप्र १८)।
डिंफिअ वि [दे] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ (दे ४, ६)।
डिंब पुन [डिम्ब] १ भय, डर (से २, १६)। २ विघ्न, अन्तराय (णाया १, १—पत्र ६, ओघ)। ३ विप्लव, डमर (ज २)।
डिंब पु [डिम्ब] शत्रु-सैन्य का भय, पर-चक्र का भय (सूअ २, १, १३)।
डिंभ अक [स्रस्] १ नीचे गिरना। २ ध्वस्त होना, नष्ट होना। डिंभइ (हे ४,१६७, षड्)। वकृ डिंभंत (कुमा ७, ४२)।
डिंभ पुंन [डिम्भ] बालक, बच्चा, शिशु (पाअ, हे १, २०२, महा, सुपा १६), 'अह दुक्खियाइं तह भुक्खियाइं जह चिंतियाइं डिंभाइं' (विवे १११)।
डिंभिया स्त्री [डिम्भिका] छोटी लडकी (णाया १, १८)।
डिक अक [गर्ज्] साँढ का गरजना। डिक्कइ (षड्)।
डिड्डुर पु [दे] भेक, मण्डूक, मेढक, बेंग (दे ४, ६)।
डित्थ पुं [डित्थ] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी। २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष (भास ७७)।
डिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए (षड्)।
डिप्प अक [वि + गल्] १ गल जाना, सड जाना। २ गिर पडना। डिप्पइ, डिप्पए (षड्)।
डिमिल न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।
डिल्ली स्त्री [दे] जल-जन्तु-विशेष (जीव १)।
डिव सक [डिप्] उल्लंघन करना। डिव (वव १)।
डीण वि [दे] अवतीर्ण (दे ४, १०)।
डीणोवय न [दे] उपरि, ऊपर (दे ४, १०)।
डीर न [दे] कन्दल, नवीन अंकुर (दे ४,१०)।
डुंगर पुं [दे] शैल, पर्वत, गुजराती मे 'डुंगर' (दे ४, ११, हे ४, ४४५, ज २)।
डुंघ पु [दे] नारियल का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम मे आता है (दे ४, ११)।
डुडुअ पुं [दे] १ पुराना घण्टा (दे ४, ११)। २ बडा घण्टा (गा १७२)।
डुडुक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।
डुडुल्ल अक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डुडुल्लइ (षड्)।
डुंब पुं [दे] डोम, चाण्डाल, श्वपच (दे ४, ११, २, ७३, ७; ७६)। देखो डोंब (पव ६)।
डुज्जय न [दे] कपडे का छोटा गट्ठा, वस्त्र-खण्ड, 'खिविउ वयणम्मि डुजय अहयं, बद्धा रुक्खस्स थुडे' (सुपा ३६६)।
डुल अक [दोलय्] डोलना, कांपना, हिलना। डुलइ (पिंग)।
डुलि पुं [दे] कच्छप, कछुआ (उप पृ १३६)।
डुहुडुहडुह अक [डुहडुहाय्] 'डुह-डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वकृ 'डुहुडुहुडुहतनइसलिल' (पउम ६४, ४३)।
डेकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (षड्)।
डेड्डुर पु [दे] दर्दुर, भेक, मण्डूक, मेढक, बेंग (षड्)।
डेर वि [दे] केकराक्ष, नीची-ऊँची आंखवाला (पिंग)।
डेव सक [डिप्] उल्लघन करना, कूद जाना, अतिक्रमण करना। वकृ डेवमाण (राज)।
डेवण न [डेपन] उल्लंघन, अतिक्रमण (ओघ ३६)।
डोअ पु [दे] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ पात्र-विशेष, गुजराती मे 'डोयो' (दे ४, ११, महा)।
डोअण न [दे] लोचन, आंख (दे ४, ६)।
डोंगर देखो डुंगर (ओघभा २० टी)।
डोंगिली स्त्री [दे] १ ताम्बूल रखने का भाजन विशेष। २ ताम्बूलिनी, पान बेचनेवाले की स्त्री, तमोलिन (दे ४, १२)।
डोंगी स्त्री [दे] १ हस्तबिम्ब, स्थासक। २ पान रखने का भाजन विशेष (दे ४, १३)।
डोंब पुं [दे] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ एक

म्लेच्छ-जाति, डोम (पण्ह १, १, इक, पव ६)। ३ देखो डुंब (पाअ)।

डोंबिलग } पु [दे] १ म्लेच्छ देश विशेष। २ एक अनार्य जाति (पण्ह १, १,
डोंबिलय } इक)। ३ डोम, चाण्डाल (स २८६)।

डोक्करी स्त्री [दे] बूढ़ी स्त्री (कुप्र ३५३)।

डोड पु [दे] ब्राह्मण, विप्र (सुख ३, १)।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अनु० ६६ सूत्र)।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अणु ४६)।

डोड्ड पुं [दे] एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण, 'दिट्ठो तरुणजिमियो निग्गच्छतो वहिं डोड्डो, तो तम्मुदरं फालिअं' (उप १३६ टी)।

डोर पु [दे] डोर, गुण, रस्सी (गा २११, वज्जा ६६)।

डोल अक [दोलय्] १ डोलना, हिलना, झूलना। २ संशयित होना, सन्देह करना। वकृ डोलंत (अच्चु ६०)।

डोल पु [दे] १ लोचन, आँख, नयन, गुजराती में 'डोळो', (दे ४, ६)। २ जन्तु-विशेष (बृह १)। ३ फल-विशेष (पचव २)।

डोल पु [दे] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८, सुख ३६, १४८)।

डोला स्त्री [दोला] हिंडोला, झूलना या झूला (हे १, २१७, पाअ)।

डोला स्त्री [दे] डाली, शिविका, पालकी (दे ४, ११)।

डोलाअंत वि [दोलायमान] संशय करनेवाला, डँवाडोल (अच्चु ७)।

डोलाइअ वि [दोलायित] संशयित, डँवाडोल, 'भडस्स डोलाइअं हिअअं' (गा ६६६)।

डोलायमाण देखो डोलाअंत (निचू १०)।

डोलाविय वि [दोलित] कम्पित, हिलाया हुआ (पउम ३१, १२४)।

डोलिअ पु [दे] कृष्णसार, काला हिरन (दे ४, १२)।

डोलिर वि [दोलावत्] डोलनेवाला, काँपनेवाला, 'दरडोलिरसीस' (कुमा)।

डोल्लणग पु [दे] पानी में होनेवाला जन्तु-विशेष (सूअ २, ३)।

डोव [दे] देखो डोअ (राँदि, उप पृ २१०)। स्त्री °वा (पभा २७)।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश, चाँदनी (षड्)।

डोहल पु [दोहद] १ गर्भिणी स्त्री का अभिलाष। मनोरथ, लालसा (हे १, २१७, कुमा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि डयाराइसद्दसकलणो वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ढ

ढ पु [ढ] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्धन्य है क्योंकि इसका उच्चारण मूर्धा से होता है (प्रामा, प्राप)।

ढंक पु [दे] काक, वायस, कौआ (दे ४, १३, ज २, प्राप, गउड, भवि, पाअ)। °वत्थुल न [°वास्तुल] शाक विशेष, एक तरह की भाजी या तरकारी (धर्म २)।

ढंक पु [ढङ्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक (विसे २३०७)।

ढंक देखो ढंख। भवि. ढंकिस्सं (पि २२१)।

ढंकण न [दे छादन] १ ढकना, पिधान (आचू १०, भग)।

ढंकण देखो ढिंकुण (राज)।

ढंकणी स्त्री [दे छादनी] ढकनी, पिधानिका, ढकने का पात्र-विशेष (दे ४, १४)।

ढंकिअ देखो ढंकिअ (सिरि ८२६)।

ढंकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४)।

ढंकुण पु [ढङ्कुण] वाद्य-विशेष (आचा २, ११, १)।

ढंख देखो ढंक = (दे) (पि २१३, २२३)।

ढंखर पु न [दे] फल पत्र से रहित डाल, 'ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्को ण मालईविडवो' (गा ७५५, वज्जा ५२)।

ढंखरअ [दे] ढेला। गु० ढेसारा (भाख्यानकम० दो० नागश्री भ्राख्यानक पत्र—४ पद्य ६१)।

ढंखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा (दे ४, १४)।

ढंढ पु [दे] १ पङ्क, कीच, कर्दम, काँदो (दे ४, १६)। २ वि. निरर्थक, निकम्मा (दे ४, १६, भवि)।

ढंढण पु [ढण्ढण] एक जैन महर्षि, ढण्ढण ऋषि (सुख २, ३१)।

ढंढ वि [दे] दाम्भिक, कपटी (सम्मत्त ३१)।

ढंढण पु [ढण्ढन] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (सिरि ३२, पडि)।

ढंढणी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-विशेष (दे ४, १३)।

ढंढर पु [दे] १ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४, १६)।

ढंढरिअ पु [दे] कर्दम, पङ्क, कादा, काँदो (दे ४, १५)।

ढंढल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, भ्रमण करना। ढंढल्लइ (हे ४, १६१)।

ढंढल्लिअ वि [भ्रान्त] भ्रान्त, घूमा हुआ (कुमा)।

ढंढसिअ पुं [दे] १ ग्राम का यक्ष। २ गाँव का वृक्ष (दे ४, १५)।

ढंढुल्ल देखो ढंढल्ल। ढढुल्लइ (सण)।

ढंढोल सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना। ढंढोलइ (हे ४, १८९)। सकृ. ढंढोलिअ (कुमा)।

ढंढोल्ल देखो ढुंढुल्ल। सकृ ढंढोल्लिवि (सण)।

ढंस अक [वि+वृत्] धसना, धसकर रहना, गिर पडना। ढंसइ (हे ४, ११८)। वकृ. ढंसमाण (कुमा)।

ढंसय न [दे] अयश, अपकीर्ति (दे ४, १४)।

ढक्क सक [छादय्] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना। ढक्कइ (हे ४, २१)। भवि ढक्किस्स (गा ३१४)। कर्म. 'डक्किज्जउ कूवाइँ' (सुर १२, १०२)। सकृ 'तत्थ ढक्किउं दारं', ढक्किऊण, ढक्केऊण (सुपा ६४०, महा, पि २२१)। कृ. ढक्केयव्व (दस २)।

ढक्क पुं [ढक्क] १ देश-विशेष। २ देश-विशेष में रहनेवाली एक जाति (भवि)। ३ भाट की एक जाति (उप पृ ११२)।

ढक्कय न [दे] तिलक (दे ४, १४)।

ढक्करि वि [दे] अद्भुत, आश्चर्य-जनक (हे ४, ४२२)।

ढक्कवत्थुल देखो ढंक-वत्थुल (पव ४)।

ढक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष, डंका, नगाडा, डमरू (गा ५२६, कुमा, सुपा २४२)।

ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित (स ४६६, कुमा)।

ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना (अणु २१२, सुज्ज ६, १)।

ढगढग्गा स्त्री [दे] 'ढग-ढग' आवाज, पानी वगैरह पीने की आवाज, 'सोणिय ढग्गढग्गाए घोट्टयंतो' (स २५७)।

ढज्जंत देखो डज्झंत (पि २१२, २१६)।

ढड्ढ पु [दे] भेरी, वाद्य-विशेष (दे ४, १३)।

ढड्ढर पुं [दे] राहु (सुज्ज २०)।

ढड्ढर पु [दे] १ बडी आवाज, महान् ध्वनि (ओघ १५६)। २ न गुरु-वन्दन का एक दोष, बडे स्वर से प्रणाम करना (गुभा २५)। ३ वि. वृद्ध, बूढा, 'ढड्डर-सड्ढाए मग्गेण' (सार्ध ३८)।

ढणिय वि [ध्वनित] शब्दित, ध्वनित (सुर १३, ८४)।

ढमर न [दे] १ पिठर, स्थाली या थाली (दे ४, १७, पाअ)। २ गरम पानी, उष्ण जल (दे ४, १७)।

ढयर पु [दे] १ पिशाच (दे ४, १६, पाअ)। २ ईर्ष्या, द्वेष (दे ४, १६)।

ढल अक [दे] टपकना, नीचे पडना, गिरना। २ झुकना। वकृ ढलन (कुमा), 'ढलतसेयचामरुप्पीलो' (उप ९८६ टी)।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ (उप पृ ११८)।

ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना। २ झुकाना, चामर वगैरह का वीजना। ढालए (सुपा ४७)।

ढलहल्लय वि [दे] मृदु, कोमल, मुलायम (वज्जा ११४)।

ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, स्खलित (वज्जा १००)।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ, 'सीसाओ ढालिओ सूरो' (सुर ३, २२८)।

ढाव पु [दे] आग्रह, निर्बन्ध (कुमा)।

ढिंक पुं [ढिङ्क] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

ढिंकण } ढिंकुण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ आदि को लगनेवाला कीट-विशेष (राज, जी १८)।

ढिंकलीआ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (सिरि ४२६)।

ढिंग देखो ढिंक (राज)।

ढिढय वि [दे] जल में पतित (दे ४, १५)।

ढिक्क अक [गर्ज्] साँड का गरजना। ढिक्कइ (हे ४, ९९)। वकृ ढिक्कमाण (कुमा)।

ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा (दे ४, १५)।

ढिक्किय न [गर्जन] साँड की गर्जना (महा)।

ढिड्ढिस न [ढिड्ढिस] देव-विमान-विशेष (इक)।

ढिल्ल वि [दे] ढीला, शिथिल (पि १५०)।

ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर (पिंग)। °नाह पु [°नाथ] दिल्ली का राजा (कुमा)।

ढुंढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। ढुंढुल्लइ (हे ४, १६१)। ढुंढुल्लन्ति (कुमा)।

ढुंढुल्ल सक [गवेषय्] ढूँढना, खोजना, अन्वेषण करना। ढुंढुल्लइ (हे ४, १८९)।

ढुंढुल्लग न [गवेषग] खोज, अन्वेषण (कुमा)।

ढुंढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूँढा हुआ (पाअ)।

ढुक्क सक [ढौक्] १ भेंट करना, अर्पण करना। २ उपस्थित करना। ३ अक लगना, प्रवृत्ति करना। ४ मिलना। वकृ. ढुक्कंत (पिंग)। कवकृ ढुक्कत (उप ९८६ टी, पिंग)।

ढुक्क सक [प्र+विश्] ढुकना, घुसना, प्रवेश करना। ढुक्कइ (प्राकृ ७४)।

ढुक्क वि [दे ढौकित] १ उपस्थित, हाजिर (स २५१)। २ मिलित (पिंग)। ३ प्रवृत्त, 'चिंतिउं ढुक्को' (श्रा २७, सण, भवि)।

ढुक्कलुक्क न [दे] चमडे से मढ़ा हुआ वाद्य विशेष (सिरि ४२६)।

ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो (पिंग)।

ढुम } ढुस } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। ढुमइ, ढुसइ (हे ४, १६१, कुमा)।

ढुरुढुल्ल देखो ढुंढुल्ल = भ्रम्। वकृ ढुरुढुल्लंत (वज्जा १२८)।

ढेंक पु [ढेङ्क] एक जल पक्षी, पक्षि विशेष (वज्जा ३४)।

ढेंका स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी। २ ढेकुवा, ढेंकली, कूप-तुला (दे ४, १७)।

ढेंकिय देखो ढिक्किय (राज)।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति (दे ४, १५)।

ढेंकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४)।

ढेंढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ (दे ४, १६)।

ढेणियालग } ढेणियालय } पु स्त्री [ढेणिकालक] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। स्त्री °लिया (अनु ४)।

ढेल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र (दे ४, १६)।

ढोअ देखो ढुक्क = ढौक। ढोएज्जह (महा)।

ढोइय वि [ढौकित] १ भेंट किया हुआ। २ उपस्थित किया हुआ (महा, सुपा १६८, सवि)।
ढोंघर वि [दे] भ्रमण-शील, घुमक्कड़, घूमनेवाला (दे ४, १५)।
ढोयग देखो ढोवण (चेइय ५२, सुप्र १६८)।
ढोयणिया स्त्री [ढौकनिका] उपहार, भेंट (धर्मवि ७१)।
ढोल्ल पु [दे] प्रिय, पति (सक्षि ४७, हे ४, ३३०)।
ढोल्ल पु [दे] १ ढोल, पटह। २ देश विशेष, जिसकी राजधानी धोलपुर है (पिंग)।
ढोवण } न [ढौकन, °क] १ भेंट करना, ढोवणय } अर्पण करना (कुमा)। २ उपहार, भेंट (सुपा २८०)।
ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ (स ५०८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ढयाराइसद्दसंकलणो एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ण तथा न

ण पु [ण, न] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है, इससे यह मूर्धन्य कहाता है (प्राप, प्रामा)।
ण अ [न] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत (कुमा, गा २, प्रासू १५६)। °उण, °उणा, °उणाइ, °उणो अ [°पुन] न तु, नहीं कि (हे १, ६५, षड्)। °संतिपरलोगवाइ वि [शान्तिपरलोकवादिन्] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा माननेवाला (ठा ८)।
ण अ [ननु] वह (हे ३, ७०, कुमा)।
ण स [इदम्] यह, इस (हे ३, ७७, उप ६६०, गा १३१, १६६)।
ण वि [ज्ञ] जानकार, पण्डित, विचक्षण (कुमा ७, ८८)।
णअ देखो णय = नग (गा १०००, नाट—चैत ८२)। °द्दीअ पु [°द्वीप] बंगाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं (नाट—चैत १२६)।
णअचर देखो णगचर (षड्)।
णइ स्त्री [नति] १ नमन, नम्रता। २ अव-नाम, झुकाव (राय ४६)।
णइ अ. १ निश्चय सूचक अव्यय, 'णइँ एइ' (हे २, १८४, षड्)। २ निषेधार्थक अव्यय, 'णइ माया णेय पिया' (सुर ३, २०१)।
णइ° देखो णई (गउड, हे २, ९७, गा १६७, सुर १३, ३५)।
णइअ वि [नयिक] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष-वाला (सम ४०)।
णइअ देखो णी = नी।
णइमासय न [दे] पानी में होनेवाला फल-विशेष (दे ४, २३)।
णइराय न [नैरात्म्य] आत्मा का अभाव। °वाद पु [°वाद] आत्मा के अस्तित्व को नहीं माननेवाला दर्शन, बौद्ध तथा चार्वाक मत (धर्मसं ११८५)।
णई स्त्री [नदी] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले (हे १, २२९, प्राप्र)। °कच्छ पु [°कच्छ] नदी के किनारे पर की झाड़ी (णाया १, १)। °गाम पु [°ग्राम] नदी के किनारे पर स्थित गाँव (प्राप्र)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °वइ पु [°पति] समुद्र, सागर (पण्ह १, ३)। °संतार पु [°संतार] नदी उतरना, जहाज आदि से नदी पार जाना (राज)। °सोत्त पुं [°स्रोतस्] नदी का प्रवाह (प्राप्र, हे १, ४)।
णउ (अप) देखो इव (कुमा)।
णउअ न [नयुत] 'नयुताग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।
णउअंग न [नयुताङ्ग] 'प्रयुत' को चौरासी से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।
णउइ स्त्री [नवति] संख्या-विशेष, नब्बे, ९० (सम ९४)।
णउइय वि [नवत] ९० वाँ (पउम ९०, ३१)।
णउल पुं० [नकुल] १ न्योला, नेवला (पण्ह १, १, जी २२)। २ पाँचवाँ पाण्डव (णाया १, १६)।
णउल पु [नकुल] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
णउली स्त्री [नकुली] एक महौषधि (ती ५)।
णउली स्त्री [नकुली] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या (राज)।
ण अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ उपमा (प्राकृ ७९)।
णं अ १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे ४, २८३, उवा, पडि)। २ प्रश्न-सूचक अव्यय, ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय (राज)।
णं (शौ) देखो णणु (हे ४, २८३)।
णं (अप) देखो इव (हे ४, ४४४, भवि, गण, पडि)।

णंगअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।

णगर पुं [दे] लंगर, जहाज को जल-स्थान मे थामने के लिए पानी मे जो रस्सी आदि डाली जाती है वह (उप ७२८ टी, सुर १३,१९३, स २०२)।

णगर } न [लाङ्गल] हल, जिससे खेत जोता णंगल } और बोया जाता है (पउम ७२, ७३, पराह १, ४, पाअ)।

णगल पुन [दे] चञ्चु, चांच, चोंच, 'जडाउरणो रुट्ठो। नहरणगलेसु पहरइ, दमाणाए विउल-वच्छयलें' (पउम ४४, ४०)।

णगल पुन [लाङ्गल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।

णगलि पु [लाङ्गलिन्] बलभद्र, हली (कुमा)।

णगलिय पु [लाङ्गलिक] हल के आकारवाले शस्त्र विशेष को धारण करने वाला सुभट (कप्प, औप)।

णगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (ठा ४, २, हे १, २५६)।

णगूलि वि [लाङ्गूलिन्] १ लम्बी पूँछवाला २ पु वानर, बन्दर (कुमा)।

णगूलि देखो णगोलि (पव २६२)।

णगोल देखो णगूल (णाया १, ३, पि १२७)।

णगोलि } पु [लाङ्गूलिन, °क] १ अन्त-णगोलिय } द्वीप-विशेष। २ उसका निवासी मनुष्य (पि १२७, ठा ४, २)।

णंतग न [दे] वस्त्र, कपडा (कम, श्राव ५)।

णंद अक [नन्द्] १ खुश होना, आनन्दित होना। २ समृद्ध होना। णदइ, णदए (षड्)। कवकृ णदिज्जमाण (औप)। कृ. णदि-अव्व, णदेअव्व (षड्)।

णद पु [नन्द] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा (मुद्रा १६८, णदि)। २ भरत क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव (सम १५४)। ३ भरत-क्षेत्र मे होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जेन मुनि (पउम २०, २०)। ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (सुपा ६३८)। ६ न. देव-विमान विशेष (सम २६)। ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन (णाया १, १—पत्र ४३ टी)। ८ वि समृद्ध होने वाला (औप)। °कत न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २६)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम २६)। °प्पभ न [°प्रभ] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °मई स्त्री [°मती] एक अन्तकृत् साध्वी (अन्त २५, राज)। °मित्त पुं [°मित्र] भरतक्षेत्र मे होने वाला द्वितीय वासुदेव (सम १५४)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २६)। °वई स्त्री [°वती] १ सातवे वासुदेव की माता (पउम २०, १८६)। २ रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव नगरी (दीव)। °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °सिग न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम २६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °सिरी स्त्री [°श्री] स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-कन्या (ती ३७)। °सेणिया स्त्री [°सेनिका] एक जैन साध्वी (अत २५)।

णद पु [नन्द] गोप-विशेष, श्रीकृष्ण का पालक गोपाल (वज्जा १२२)।

णद पुस्त्री [नन्दा] पक्ष की पहली (प्रतिपदा), छट्ठी और एकादशी तिथि (सुज्ज १०, १५)।

णद न [दे] १ ऊख पीलने या पेरने का काण्ड। २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ४,४५)।

णदग पु [नन्दक] वासुदेव का खड्ग (पराह १, ४)।

णदण पुं [नन्दन] १ पुत्र, लडका (गा ६०२)। २ राम का एक स्वनाम-ख्यात सुभट (पउम ६७, १०)। ३ स्वनाम-ख्यात एक बलदेव (सम ६३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव (सम १५४)। ५ स्वनाम-प्रसिद्ध एक श्रेष्ठी (उप ५५०)। ६ श्रेणिक राजा का एक पुत्र (निर १,२)। ७ मेरु पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन (ठा २, ३, इक)। ८ एक चैत्य (भग ३, १)। ९ वृद्धि (पराह १, ४)। १० नगर विशेष (उप ७२८ टी)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कारक। °कूड न [कूट] नन्दन वन का शिखर (राज)। °भद्द पु [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °वण न [°वन] १ स्वनाम-ख्यात एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है (सम ६२)। २ उद्यान-विशेष (निर १, ५)।

णदण पुं [दे] भृत्य, नौकर, दास (दे ४, १९)।

णदण पुन [नन्दन] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ न सतोष (णदि ४५)।

णदणा स्त्री [नन्दना] लडकी, पुत्री (पाअ)।

णदणी स्त्री [नन्दनी] पुत्री, लडकी (सिरि १४०)।

णदतणय पुं [नन्दतनय] श्रीकृष्ण (प्राकृ २७)।

णदमाणग पु [नन्दमानक] पक्षी की एक जाति (पराह १, १)।

णदयावत्त } पुन [नन्दावर्त्त] १ एक देव-णदावत्त } विमान (देवेन्द्र १३२)। २ पु. चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८)। ३ न लगातार एक्कीस दिनो का उपवास (सबोध ५८)।

णदा स्त्री [नन्दा] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पत्नी (पउम ३,११९)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी और अभयकुमार की माता (णाया १,१)। ३ भगवान् श्री शीतलनाथ की माता (सम १५१)। ४ भगवान् महावीर के अचलभ्रातृ नामक गणधर की माता (आवम)। ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ६ पश्चिम रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ७ ईशानेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)। ८ स्वनाम-ख्यात एक पुष्करिणी (ठा ४, ३)। ९ ज्योतिष शास्त्र मे प्रसिद्ध तिथि विशेष—प्रतिपदा, छट्ठी और एकादशी तिथि (चद १०)।

णदा स्त्री [दे] गो, गैया (दे ४, १८)।

णदावत्त पु [नन्दावर्त्त] १ एक प्रकार का स्वस्तिक (सुपा ५२)। २ क्षुद्र जन्तु की एक जाति (जीव १)। ३ न देव-विमान-विशेष (सम २६)।

णदि पुस्त्री [नन्दि] १ बारह प्रकार के वाद्यो का एक ही साथ आवाज (पराह २, ५, णदि)। २ प्रमोद, हर्ष (ठा ५, २)। ३ मतिज्ञान आदि पाँचो ज्ञान (णदि)। ४ वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति। ५ मगल (वृह १, अजि ३८)। ६ समृद्धि (अणु)। ७ जैन

आगम ग्रंथ-विशेष (णंदि)। ८ वाञ्छा, अभिलाष, चाह (सम ८१)। ९ गान्धार ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७)। १० पु स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार (विपा २, १)। ११ एक जैन मुनि, जो अपने आगामी भव में द्वितीय बलदेव होगा (पउम २०, १९०)। १२ वृक्ष-विशेष (पउम २०, ४२)। °आवत्त देखो °यावत्त (राज)। °उट्ट पु [°रुद्र] एक प्राचीन कवि का नाम (कप्पू)। °कर, °गर वि [°कर] मंगल-कारक (कप्प; णाया १, १)। °गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (आव ६१७ आवृ १)। °घोस पु [°घोष] १ बारह प्रकार के बाजों की आवाज (णंदि)। २ न देवविमान-विशेष (सम १८)। °चुण्णग न [°चूर्णक] होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण (सूअ १, ४, २)। °तूर न [°तूर्य] एक साथ बजाया जाता बारह तरह का वाद्य (बृह १)। °पुर न [°पुर] शाण्डिल्य देश का एक नगर (इक १०३१ टी)। °फल पु [°फल] वृक्ष-विशेष (णाया १, ८, १५)। °भाण न [°भाजन] उपकरण-विशेष (बृह १)। °मित्त पुं [°मित्र] १ देखो णंद-मित्त (राज)। २ एक राजकुमार, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (णाया १, ८)। °मुइंग पु [°मृदङ्ग] एक प्रकार का मृदङ्ग, वाद्य-विशेष (राय)। °मुह न [°मुख] पक्षि-विशेष (राज)। °यर देखो °कर (पउम ११८, ११७)। °यावत्त पु [°आवर्त्त] १ स्वस्तिक-विशेष (औप; पण्ह १, ४)। २ [illegible] (ठा ४, ४)। ३ क्षुद्र जन्तु-विशेष (पण्ण १)। ४ न देव-विमान-विशेष (सम)। °राय पु [°राज] [illegible] (णाया १, १६—पत्र २०८)। °राग पु [°राग] [illegible] (भग २, ५)। °वण्ण पु [°वर्ण] [illegible] (पउम ८)। °वद्धणा देखो °वद्धणा (इक)। °वद्धण पु [°वर्धन] १ [illegible] (कप्प)। २ [illegible] (कप्प)। ३ [illegible] (विपा १, ६)। ४ [illegible] (सुज्ज १०)। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] १ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी (ठा ४, २)। °सेण पु [°षेण] १ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव (सम १५३)। २ एक जैन कवि (अजि ३८)। ३ एक राजकुमार (ठा १०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (उव)। ५ देव-विशेष (राज)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ पुष्करिणी-विशेष (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी (दीव)। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)। °स्सर पु [°स्वर] १ देखो णंदीसर (राज)। २ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज (जीव ३)।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट दहाड़ (दे ४, १९)।

णंदिअ वि [नन्दित] १ समृद्ध (ओप) २ जैनमुनि-विशेष (कप्प)।

णंदिक्क पु [दे] सिंह, मृगेन्द्र (दे ४, १९)।

णंदिघोस पु [नन्दिघोष] वाद्य विशेष (राय ४६)।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लड़की (पउम ४६, २)। °पिउ पु [°पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपासक (उवा)।

णंदिणी स्त्री [दे] गऊ, गैया, गाय (दे ४, १८, पाअ)।

णंदिल पु [नन्दिल] आर्यमंगु के शिष्य एक जैनमुनि (णंदि ५०)।

णंदिस्सर } पु [नन्दीश्वर] १ एक द्वीप। २ णंदीसर } एक समुद्र (सुज्ज १९)। ३ एक देव विमान (देवेन्द्र १४४)।

णंदी देखो णंदि (महा औप ३२१ भा, पण्ह १, १, औप सम १५२, णंदि)।

णंदी स्त्री [दे] गऊ, गाय, गैया (दे ४, १८, पाअ)।

णंदीसर पु [नन्दीश्वर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप (णाया १, ८, महा)। °वर पु [°वर] नंदीश्वर द्वीप (ठा ४, ३)। °वरोद पु [°वरोद] समुद्र-विशेष (जीव ३)।

णंदुत्तर पु [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नागकुमार के भूतानन्द नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। °वडिंसग न [°वतंसक] एक देव-विमान (सम २६)।

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। २ कृष्णनामक इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत ७)।

णकार पु [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर (विसे २८६७)।

णक्क पु [नक्र] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका (पण्ह १, १, कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम-ख्यात सुभट (पउम ५६, २८)।

णक्क पु [दे] १ नाक, नासिका (दे ४, ४६, विपा १, १, औप)। २ वि मूक, वाचा-वाचा-शक्ति से रहित, गूँगा (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र (पाअ)।

णक्कंचर पु [नक्तञ्चर] १ राक्षस। २ चोर। ३ बिडाल। ४ वि रात्रि में चलने फिरनेवाला (हे १, १७७)।

णक्ख पु [नख] नख, नाखून (हे २ ९९, प्राप्र)। °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न (गा ६७१)। °आउह पु [°आयुध] सिंह, मृगारि (कुमा)।

णक्खत्त पुन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष (पाअ, कप्प, इक, सुज्ज १०)। °दमण पु [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६६)। °मास पु [°मास] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान विशेष (वव १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चाँद (राज)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध वर्ष-विशेष (ठा ६)।

णक्खत्त वि [नक्षत्र] १ क्षत्रिय-जाति के अयोग्य कार्य करनेवाला (धर्मवि ४)। २ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-सम्बन्धी, नक्षत्र का (ज ७)।

णक्खत्तणेमि पु [दे नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण (दे ४, २२)।

णक्खत्तण न [दे] नख और चमड़ा निकालने का शस्त्र विशेष (बृह १)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नखवाला (बृह १)।

णख देखो णक्ख (कुप्र ५८)।

णग देखो णय = नग (पण्ह १, ४, उप ३५६ टी, सुर ३, ३४)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (ठा ६)। [°वर] पु [°वर] श्रेष्ठ पर्वत (णाया १, १)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] मेरु-पर्वत (पउम ३, ७६)।

णगर न [नकर, नगर] शहर, पुर (बृह १, कप्प, सुर ३, २०) °गुत्तिय, °गोत्तिय पु [°गुप्तिक] नगर रक्षक, कोटपाल, कोतवाल, दरोगा (णाया १, १८, औप, पण्ह १, २, णाया १, २)। °घाय पु [°घात] शहर मे लूट-पाट (णाया १, १८)। °णिद्धमण न [°निर्धमन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल (णाया १, २)। °रक्खिय पु [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय (निचू ४)। °वास पु [°वास] राजधानी, पाटनगर (ज १—पत्र ७४)।

णगरी देखो णयरी (राज)।

णगाणिआ स्त्री [नगाणिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

णगिंद पु [नगेन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत (सूअ १, ६)।

णगिण वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (आचा, उप पृ ३६३)।

णग्ग देखो णग (तंदु ४५)।

णग्ग वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (प्राप्र, दे ४, २८)। °इ पु [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (औप, महा)।

णग्गठ वि [दे] निर्गत, बाहर निकला हुआ (षड्—पृष्ठ १८१)।

णग्गोह पु [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, वड का पेड (पात्र, सुर १, २०५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] सस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष (ठा ६)।

णघुस पु [नघुष] स्वनाम-ख्यात एक राजा (पउम २२, ५५)।

णचिरा देखो अइरा = अचिरात् (पि ३६९)।

णच्च अक [नृत्] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ (षड्) वकृ णच्चत, णच्चमाण (सुर २, ७५, ३, ७७)। हेकृ. णच्चिउ (गा ३६१) कृ णच्चियव्व (पउम ८०, ३२)। प्रयो कवकृ. णच्चाविज्जंत (स २६)।

णच्च न [ज्ञात्व] जानकारी, पण्डिताई (कुमा)।

णच्च न [नृत्य] नाच, नृत्य (दे ५, ८)।

णच्चग वि [नर्तक] १ नाचनेवाला। पु नट, नचवेया (वव ६)।

णच्चण न [नर्तन] नाच, नृत्य (कप्पू)।

णच्चणी स्त्री [नर्तनी] नाचनेवाली स्त्री (कुमा, कप्पू, सुपा १९६)।

णच्चा } देखो णा = ज्ञा।
णच्चाण }

णच्चाविअ वि [नर्तित] नचाया हुआ (ओघ २६५, ठा ६)।

णच्चासन्न न [नात्यासन्न] अति समीप मे नही (णाया १, १)।

णच्चिर वि [नर्तितृ] नचवेया, नाचनेवाला, नर्तन-शील (गा ४२०, सुपा ५४, कुमा)।

णच्चिर वि [दे] रमण-शील (दे ४, १८)।

णच्चुण्ह वि [नात्युष्ण] जो अति गरम न हो (ठा ५, ३)।

णज्ज सक [ज्ञा] जानना। णज्जइ (प्राप्र)।

णज्ज वि [न्याय्य] न्याय-सगत (प्राकृ १९)।

णज्जत } देखो णा = ज्ञा।
णज्जमाग }

णज्जर वि [दे] मलिन, मैला (दे ४, १९)।

णज्झर वि [दे] विमल, निर्मल (दे ४, १९)।

णट्ट अक [नट्] १ नाचना। २ सक हिंसा करना। णट्टइ (हे ४, २३०)।

णट्ट पु [नट] नर्तको की एक जाति, 'णच्चति णट्टा पभणति विप्पा' (रंभा, सण, कप्प)। णट्ट न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य, नट-कर्म (णाया १, ३, सम ८३)। °पाल पु [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्रधार (आचू १)। °मालय पु [°मालक] देव विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। °आरिअ पु [°चार्य] सूत्रधार (मा ४)।

णट्ट [नृत्य] नाच, नृत्य (से १, ८, कप्पू)।

णट्टअ न [नाट्यक] देखो णट्ट = नाट्य (मा ४)।

णट्टअ } वि [नर्तक] नाचनेवाला, नचवैया
णट्टग } (प्राप्र, णाया १, १, औप)। स्त्री. °ई (प्राप्र, हे २, ३०, कुमा)।

णट्टार पु [नाट्यकार] नाट्य करनेवाला (सण)।

णट्टावअ वि [नर्त्तक] नचानेवाला (कप्पू)।

णट्टिया स्त्री [नर्त्तिका] नटी, नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री (महा)।

णट्टुम्मत्त पु [नर्त्तुमत्त] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर (महा)।

णट्ठ पु [नष्ट] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २८)। २ न पलायन (कुप्र ३७)।

णट्ठ वि [नष्ट] १ नष्ट, अपगत, नाश-प्राप्त (सूअ १, ३, ३, प्रासू ८६)। २ पुन अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त्त (राज)। °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो बधिर—बहरा हुआ हो (णाया १, १—पत्र ६३)। २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित (राज)।

णट्ठव वि [नष्टवत्] १ नाश प्राप्त। २ न. अहोरात्र का एक मुहूर्त्त (राज)।

णड अक [गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक खिन्न करना। णडइ, णडति (हे ४, १५०, कुमा)। कर्म णडिज्जइ (गा ७७)। कवकृ णडिज्जत (सुपा ३३८)।

णड देखो णट्ट = नट्। णडइ (प्राकृ ६९)।

णड देखो णल = नड (हे २, १०२)।

णड पु [नट] १ नर्तको की एक जाति, नट (हे १, १९५, प्राप्र)। °खाइया स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम साधुपन (ठा ४, ४)।

णडाल न [ललाट] भाल, कपाल (हे १, ४७, २५७, गउड)।

णडालिआ स्त्री [ललाटिका] ललाट-शोभा, कपाल मे चन्दन आदि का विलेपन (कुमा)।

णडाविअ वि [गोपित] १ व्याकुल किया हुआ। खिन्न किया हुआ (सुपा ३२५)।

णडिअ वि [गुपित] व्याकुल (से १०, ७०, सण)।

णडिअ वि [दे] १ वञ्चित, विप्रतारित (दे ४, १६)। २ खेदित, खिन्न किया हुआ (दे ४, १६, पाअ, णाया १, ६)।

णडी स्त्री [नटी] १ नट की स्त्री (गा ६, ठा ६)। २ लिपि विशेष (विसे ४६४ टी)। ३ नाचनेवाली स्त्री (बृह ३)।

णडुली स्त्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ४,२०)।

णडुल्ल न [नटतुल्य] १ नगर विशेष (मोह ८८)। २ पुं देश-विशेष (ती १५)।

णड्डरी स्त्री [दे] भेक, मेंढक बेंग (दे ४,२०)।

णड्डुल न [दे] १ रत, मैथुन। २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे ४, ४७)।

णड्डुली देखो णडुली (दे ४, २०)।

णणंदा स्त्री [ननान्दृ] पति की बहिन, ननद (पड्, हे ३, ३५)।

णणु अ [ननु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (आचू १६१, निचू १)। २ आशंका। ३ वितर्क। ४ प्रश्न (उत्त, नाट, प्रति ५५)।

णण्ण पुं [दे] १ कूप, कुआँ। २ दुर्जन, खल। ३ बड़ा भाई (दे ४, ४६)।

णत्त न [नक्त] रात्रि, रात (सद १०)।

णत्त देखो णत्तु, 'अवनितेजियनियनियपुत्त-परिवुडनत्तुकलीय' (सुपा ६)।

णत्तचर देखो णयचर (कुमा, पि १७०)।

णत्तण न [नर्तन] नाच, नृत्य (नाट—शकु ८०)।

णत्ति स्त्री [ज्ञप्ति] ज्ञान (धम्म ८२८, णंदि ६७ टी)।

णत्तिअ पुं [नप्तृक] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र पोता। २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र, नाती (हे १, १३७, कुमा)।

णत्तिआ } स्त्री [नप्त्री] १ पुत्र की पुत्री,
णत्ती } पोती (कुमा)। २ पुत्री की पुत्री, नातिन, नातिनी (राज)।

णत्तु } पुं [नप्तृ, °क] देखो णत्तिअ
णत्तुअ } (पिंड २, १, ४ १, १३७, सुपा १६२ विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो णत्तिआ (सुज १, विपा १,३)।

णत्तुइणी स्त्री [नप्तृकिनी] १ पौत्र की स्त्री। २ [illegible] की स्त्री (विपा १, ३)।

णत्तुई [illegible] णत्ती (विपा १, ३ [illegible])।

णत्तुणिअ पुं [नप्तृ] १ पौत्र, पोता। २ दौहित्र, नाती (ठा ३, १८)।

णत्तुणिआ देखो णत्तिआ (दस ७, १५)।

णत्थ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (णाया १, १, ३, विसे ९१६)।

णत्थण न [दे] नाक मे छिद्र करना (सुर १८, ४१)।

णत्था स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाथा या नाथ (दे ४, १७, उवा)।

णत्थि अ [नास्ति] अभाव-सूचक अव्यय (उप्प, उवा, सम्म ३६)।

णत्थिअ वि [नास्तिक] १ परलोक आदि नहीं माननेवाला (प्रासू)। २ पुं नास्तिक-मत का प्रवर्त्तक, चार्वाक। °वाय पुं. [°वाद] नास्तिक-दर्शन (उप १३२ टी)।

णत्थियवाइ वि [नास्तिकवादिन्] आत्मा आदि के अस्तित्व को नहीं माननेवाला (धर्मवि ४)।

णद सक [नद्] नाद करना, आवाज करना। वकृ णदंत (सम ५०, नाट—मृच्छ १५५)।

णद पुं [नद] नाद, आवाज, शब्द, 'गद्दहेव्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं' (सम ५०)।

णदी देखो णई (से ६, ६५, पण्ण ११)।

णद्दिअ वि [दे] दुःखित (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [नर्दित] घोष, आवाज, शब्द (राज)।

णद्ध वि [नद्ध] १ परिहित, आच्छादित (गा ५२०, पउम ७,६२, सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित, बँधा हुआ (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [नद्ध] कवचित, वर्मित (धर्मवि ४)।

णद्ध वि [दे] आरूढ (दे ४, १८)।

णद्धंधय न [दे] १ अघृणा, घृणा या चिन का अभाव। २ निन्दा (दे ४, ४७)।

णपहुत्त वि [अप्रभूत] अपर्याप्त, अपरिपूर्ण, समेपूरहित (गउड)।

णपहुप्पंत वि [अप्रभवत्] अपर्याप्त होना (गउड)।

णपुम } पुंन [नपुंसक] नपुंसक, क्लीब,
णपुंसग } नामर्द, षंढ (औप २१, श्रा १६,
णपुंसय } ठा ३ १, सम ३७, महा)। °वेय पुं [°वेद] कर्म विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है (ठा ६)।

णप्प सक [ज्ञा] जानना। णप्पइ (प्राप्र)।

णभ देखो णह = नभस् (हे १, १८७, कुमा, वसु)।

णभसूरय पु [नभःशूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु (सुज २०)।

णम सक [नम्] नमन करना, प्रणाम करना। णमामि (भग)। वकृ णमंत, णममाण (पि ३९७, आचा)। कवकृ णमिज्जंत (से ६, ३५)। संकृ णमिऊण, णमिऊण, णमेऊण (जी १, पि ५८५, महा)। कृ णमणिज्ज, णमियव्व (रयण ४६, उप २११ टी, पउम ६६, २१)। संकृ णमिअ (कम्म ४, १)।

णमंस सक [नमस्य्] नमन करना, नमस्कार करना। णमंसइ (भग)। वकृ. णमंसमाण (णाया १, १, भग)। संकृ णमंसित्ता (ठा ३, १, भग)। हेकृ. णमंसित्तए (उवा)। कृ णमंसणिज्ज, णमंसियव्व (औप, सुपा ६३८, पउम ३५, ४६)।

णमंसण न [नमस्यन] नमन, नमस्कार (अजि ५, भग)।

णमंसणया } स्त्री [नमस्यना] प्रणाम,
णमंसणा } नमस्कार (भग, सुपा ६०)।

णमंसिय वि [नमस्यित] जिसको नमन किया गया हो वह (पण्ह २, ४)।

णमक्कार देखो णमोक्कार (गउड, पि ३०६)।

णमण न [नमन] प्रणति, प्रणाम, नमना (दे ७, १६, रयण ४६)।

णमसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २२)।

णमि पु [नमि] १ स्वनाम-ख्यात एकोसवाँ जिन देव (सम ४३)। २ स्वनाम प्रसिद्ध राजर्षि (उत्त ३६)। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (धम्म ११)।

णमिअ वि [नत] प्रणत, जिसने नमन किया हो वह, 'पडिवासुदेवपमुहो सम्म रावणा नमिया' (महा)।

णमिअ वि [नमित] नमाया हुआ (गा ६६०)।

णमिअ देखो णम।

णमिआ स्त्री [नमिता] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री। २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन (णाया २)।

णमिर वि [नम्र] नमन करनेवाला (कुमा, सुपा २७, सण)।

णमुइ पु [नमुचि] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री (महा)।

णमुदय पु [नमुदय] आजीविक मत का एक उपासक (भग ७, १०)।

णमेरु पुं [नमेरु] वृक्ष विशेष (सुर ७, १६, स ६३३)।

णमो अ [नमस्] नमस्कार, नमन (भग, कुमा)।

णमोकार पु [नमस्कार] १ नमन, प्रणाम (हे १, ६२, २, ४)। २ जैन-शास्त्र मे प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष (विसे २८०५)। °सहिय न [°सहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (पडि)।

णमोयार देखो णमोकार (चंड)।

णम्म पुं न [नर्मन्] १ हाँसी, उपहास। २ क्रीडा, केलि (हे १, ३२, श्रा १४, दे २, ६४, पाअ)।

णम्मया स्त्री [नर्मदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (सुपा ३८०)। २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी (स ५)।

णय देखो णद = नद, 'विस्सर नयई नद' (सम ५०)।

णय पु [नग] १ पहाड, पर्वत (उप पृ २५६, सुपा ३४८)। २ वृक्ष, पेड (हे १, १७७)। देखो णग।

णय अ [नच] नहीं (उप ७६८ टी)।

णय [नत] १ नमा हुआ, झुका हुआ, प्रणत, नम्र (णाया१,१)। २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह, 'नीसेसवियडपडिवक्खनयक्कमो विक्कमो राया' (सुपा ५६६)। ३ न देवविमान-विशेष (सम ३७)। °सच्च पु [सत्य] श्रीकृष्ण, नारायण (अच्चु ७)।

णय पु [नय] १ न्याय, नीति (विसे ३३६५, सुपा ३४८, स ५०१)। २ युक्ति (उप ७६८)। ३ प्रकार, रीति, 'जलणा वि घेप्पई पवणा भुयगो य केणाइ नएण' (स ४५४)। ४ वस्तु के अनेक धर्मो मे किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मो की उपेक्षा करनेवाला मत, एकांश-ग्राहक बोध (सम्म २१, विसे ६१४, ठा ३, ३)। ५ विधि (विसे ३३६५)। °चंद पुं [°चन्द्र] स्वनाम ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (रंभा)। °त्थि वि [°र्थिन्] न्याय चाहनेवाला (श्रा १४)। °व, °वंत त्रि [°वत्] नीतिवाला, न्याय-परायण (सम ५०, सुपा ५४२)। °विजय पु [°विजय] विक्रम की सतरहवी शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरू थे (उवर २०२)।

णयचक्क न [नयचक्र] एक प्राचीन जैन प्रमाण-ग्रन्थ (सम्मत्त ११७)।

णयण न [नयन] १ ले जाना, प्रापण (उप १३४)। २ जानना, ज्ञान। ३ निश्चय (विसे ६१४)। ४ वि ले जानेवाला, 'वयणाइ सुपहनयणाइं' (सुपा ३७७)। ५ पुन. आँख, नेत्र, लोचन (हे १, ३३, पाअ)। °जल न [°जल] अश्रु, आँसू (पाअ)।

णयय पु [दे नवत] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३)।

णयर देखो णगर (हे १, १७७, सुर ३, २० औप, भग)।

णयरंगणा स्त्री [नगराङ्गना] वेश्या, गणिका (श्रा २७)।

णयरी स्त्री [नगरी] शहर, पुरी (उपा पउम ३६, १००)।

णर पु [नर] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष (हे १, २२६, सूअ १, १ ३)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (कुमा)। °उसभ पु [°वृषभ] श्रेष्ठ मनुष्य, अंगीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष (औप)। °कंतप्पवाय पु [°कान्तप्रपात] ह्रद-विशेष (ठा २,३)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष (ठा २, ३, सम २७)। °कंता-कूड न [°कान्ताकूट] रुक्मि पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ मुनि-सुव्रत भगवान् की शासनदेवी (राज) २ विद्यादेवी-विशेष (संति ५)। °देव पु [°देव] चक्रवर्त्ती राजा (ठा ५, १) °नायग पु [°नायक] राजा, नरपति (उप २११ टी)। °नाह पु [°नाथ] राजा, भूपाल (सुपा ६, सुर १, ६१)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा, नरेश (उप ७२८ टी, सुर २, ८४)। °पौरुसि पुं [°पौरुषिन्] राज-विशेष (उप ७२८ टी)। °लोअ पु [°लोक] मनुष्य लोक (जी २२, सुपा ४१३)। °वइ पुं [°पति] नरेश, राजा (सुर १, १०४)। °वर पुं [°वर] १ राजा, नरेश (सुर १, १३१, १५, १४)। २ उत्तम पुरुष (उप ७२८ टी)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] राजा भूमि-पति (सुपा ५६, सुर २, १७६)। °वरीसर पुं [°वरेश्वर] श्रेष्ठ राजा (उत्त १८)। °वसभ, °वसह पु [°वृषभ] १ देखो °उसभ (पण्ह १, ४, सम १५३)। २ राजा, नृपति (पउम ३, १४)। ३ पु. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम २२, ६७)। °वाल पु [°पाल] राजा, भूपाल (सुपा २७३)। °वाहण पु [°वाहन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (श्राक १, सण)। °वेय पु [°वेद] पुरुष वेद, पुरुष को स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा (कम्म ४)। °सिंघ, °सिंह, °सीह पु [°सिंह] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (सम १५३, पउम १००, १६)। २ अर्ध भाग मे पुरुष का और अर्ध भाग मे सिंह का आकारवाला, श्रीकृष्ण, नारायण (णाया १, १६) °सुंदर पु [°सुन्दर] स्वनाम-ख्यात एक राजा (धम्म)। °हिव पुं [°धिप] राजा, नरेश (गा ३६४, सुपा २५)।

णरइंदय पु [नरकेन्द्रक] नरक-स्थान-विशेष (देवेन्द्र १)।

णरकंठ पुं [नरकण्ठ] रत्न की एक जाति (राय ६७)।

णरसिंह पु [नरसिंह] १ बलदेव, 'तत्तो लोयम्मि बलदेवो नरसिंहो त्ति पसिद्धो' (कुप्र १०३)। २ एक राजकुमार (कुप्र १०६)।

णरग, **णरय** पु [नरक] नारक जीवो का स्थान (विपा १, १, पउम १४, १६, श्रा ३, प्रासू २८, उव)। °वाल, °वालय पु [°पाल, °क] परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवो को यातना (पीडा) देते हैं (पउम २६, ५१, ८, २३७)।

णराच } पुन [नाराच] १ लोहमय बाण। णराय } २ संहनन-विशेष, शरीर की रचना का एक प्रकार (हे १, ६८)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

णरायण पु [नारायण] श्रीकृष्ण, विष्णु (पिंग)।

णरिंद पुं [नरेन्द्र] १ राजा, नरेश (सम १५३, प्रासू १०७, कप्प)। २ गारुडिक, सर्प के विष को उतारनेवाला (स २१६)। °कंत न [°कान्त] देव-विमान विशेष (सम २२) °पह पु [°पथ] राज मार्ग, महापथ (पउम ३६, ८)। °वसह पु [°वृषभ] श्रेष्ठ राजा (उत्त ६)।

णरिंदुत्तरवडिंसग न [नरेन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान विशेष (सम २२)।

णरीस पु [नरेश] राजा, नरपति, 'सो मरुस्थलनरीसो तेही पुत्तीए न सदेसं' (सुर १२, ८०)।

णरीसर पु [नरेश्वर] राजा, नरपति (अजि ११)।

णरुत्तम पु [नरोत्तम] श्रीकृष्ण (सिरि ८२)।

णरुत्तम पु [नरोत्तम] उत्तम पुरुष (पउम ९८, ७५)।

णरेंद [illegible] णरिंद (वि १५६, पिंग)।

णरेसर देखो णरीसर (उप ७२८ टी, सुपा ५५, ५६१)।

णल न [नड] तृण-विशेष, भीतर से पोला घास-विशेष (हे २, २०२, ठा ८)।

णल न [नल] १ [illegible] (पण्ण १, उप १०३१ टी, प्रासू ३२)। २ पुं राजा रामचन्द्र का एक सुभट (से ८, १८)। ३ [illegible] का [illegible] पुत्र (प्रा ५)। °कुब्बर, °कूबर पु [°कूबर] १ दुर्लंघपुर का एक स्वनाम-ख्यात राजा (पउम १२, ७१)। २ [illegible] का एक पुत्र (पाअम)। °गिरि पु [°गिरि] [illegible] राजा का [illegible] हाथी (महा)।

णलअ न [दे] [illegible] (दे ४, १८, पाअ)।

णलाड देखो णडाल (हे २, १२३, कुमा)।

णलाडतव वि [ललाटन्तप] ललाट को तपानेवाला (कुमा)।

णलिअ न [दे] गृह, घर, मकान (दे ४, २०, षड्)।

णलिण न [नलिन] १ लगातार तेईस दिन का उपवास (संबोध ५८)। २ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

णलिण न [नलिन] १ रक्त कमल (राय, चंद १०, पाअ)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय प्रदेश-विशेष (ठा २, ३)। ३ 'नलिनाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)। ४ देव-विमान विशेष (सम ३३, ३५)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °कूड पु [°कूट] वक्षस्कार-पर्वत विशेष (ठा २, ३)। °गुम्म न [°गुल्म] १ देव-विमान-विशेष (सम ३५)। २ नृप-विशेष (ठा ८)। ३ अध्ययन-विशेष (श्राव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज)। °वई स्त्री [°वती] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष (ठा २, ३)।

णलिणंग न [नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।

णलिणि° } स्त्री [नलिनी] कमलिनी, पद्मिनी णलिणी } (पाअ, णाया १, १)। °गुम्म देखो णलिण-गुम्म (निर २, १, विपा)। °वण न [°वन] उद्यान विशेष (णाया २)।

णलिणोदग पु [नलिनोदक] समुद्र-विशेष (दीव)।

णल्ल्य न [दे] १ वृति विवर, बाड़ का छिद्र। २ प्रावरण। ३ निमित्त, कारण। ४ वि परवश, पीवरवाला (दे ४, ४६)

णव देखो णम। णवइ (षड्, हे ४, १५८, २२६)।

णव वि [नव] नया, नूतन, नवीन (गउड, प्रासू ८१)। °वहुया, °वहू स्त्री [°वधू] नवोढा, दुलहिन (सुपा ४१, सुर ३, ५२)।

णव त्रि व [नवन्] संख्या-विशेष, नव, ९ (ठा ९)। °इ स्त्री [°ति] संख्या-विशेष नब्बे, ९० (सम)। °ग न [°क] नव का समुदाय (दे ३०)। °जोयणिय वि [°योजनिक] नव योजन का परिमाणवाला (ठा ९)। °णउइ, °नउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, निन्यानवे, ९९ (सम ९९, १००)। °नउय वि [°नवत] ९९ वाँ (पउम ९९, ७५)। °नवइ देखो °णउइ (कम्म २, ३०)। °नवमिया स्त्री [°नवमिका] जैन साधु का व्रत-विशेष (सम ८८)। °म वि [°म] नववाँ (उवा)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष, पक्ष का नववाँ दिवस (सम २९)। °मीपक्ख पु [°मीपक्ष] आठवाँ दिन, अष्टमी (ज ३)।

णवकार देखो णमोक्कार (सट्टि १, चेइय ३०, महा)।

णवकारसी स्त्री [नमस्कारसहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (संबोध ५७)।

णवग्ग (अप) वि [नव] अनोखा, नूतन, नया (हे ४, ४२२)। स्त्री °ग्घी (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुंन [नवनीत] नवनू, मक्खन, मसका (कप्प, औप, प्रामा), 'अणलहसोव्व नवणीओ' (पउम ११८, २३)।

णवणीइया स्त्री [नवनीतिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

णवपय न [नवपद] नमस्कार-मन्त्र (सिरि ५७६)।

णवमालिया स्त्री [नवमालिका] पुष्प प्रधान वनस्पति-विशेष, बसंती नेवारी, नेवार (कप्प)।

णवमिया स्त्री [नवमिका] १ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। २ मनुष्य-नामक इन्द्र की एक अग्र महिषी (ठा ८, १)। ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८)।

णवय देखो णव-ग (पंचा १७, ३०)।

णवर देखो णवग्ग (णाया १, १८)।

णवयार देखो णवकार (पंचा १, पि ३०६)।

णवर सक [कथ्] कहना। कर्म णवरिज्जइ (प्राकृ ७७)।

णवर } अ १ केवल, सिर्फ फक्त (हे २, १८७ णवरं } कुमा, षड्, उवा, सुपा ८, जी २७, गा १५)। २ अनन्तर, बाद में (हे २, १८८, प्राअ)।

णवरंग } पुं [नवरङ्ग, °क] १ नूतन रंग, णवरंगय } नया वर्ण (सुर ३, ५२)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ कौसुम्भ रंग का वस्त्र (गउड, गा २८१, सुर ३, ५२, पाअ)।

णवरत्ति स्त्री [नवरात्रि] नव दिनों का आश्विन मास का एक पर्व (सट्ठि ७८)।

णवरि अ [दे] शीघ्र, जल्दी, (प्राकृ ८१)।

णवरि } देखो णवर (हे २, १८८, से १,
णवरिअ } ३६, प्रामा, सुर, २६, षड्, गा १७२)।

णवरिअ न [दे] सहसा, जल्दी तुरन्त (दे ४, २२, पाअ)।

णवरु देखो णवर (चड)।

णवलया स्त्री [दे] वह व्रत, जिसमे पति का नाम पूछने पर उसे नही बतानेवाली स्त्री पलाश की लता से ताडित की जाती है (हे ४, २१)।

णवल्ल देखो णव = नव (हे २, १६५, कुमा, उप ७२८ टी)।

णवसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २०, पाअ, वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [नवा] १ नवोढा, दुलहिन। २ युवति स्त्री (सूअ १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हो ऐसी साध्वी (वव ४)। ४ अ प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं ? (रयण ६७)।

णवि अ १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, 'णवि हा वणे' (हे २, १७८, कुमा)। २ निषेधार्थक अव्यय (गउड)।

णविअ देखो णमिअ = नत (हे ३, १५६, भवि)।

णविअ वि [नव्य] नूतन, नया (आचा २, २, ३)।

णवीण वि [नवीन] नूतन, नया (मोह ८३, धर्मवि १३२)।

णवुत्तरसय वि [नवोत्तरशततम] एक सौ नववाँ (पउम १०६, २७)।

णवुल्लडय (अप) देखो णव = नव (कुमा)।

णवोढा स्त्री [नवोढा] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन (काप्र १९७)।

णवोद्धरण न [दे] उच्छिष्ट, जूठा (दे ४, २३)।

णव्व पुं [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ४, १७)।

णव्व वि [नव्य] नूतन, नया, नवीन (श्रा २७)।

णव्व° देखो णा = ज्ञा।

णव्वाणत्र पुं [दे] १ ईश्वर, धनाढ्य, भोगी। २ नियोगी का पुत्र, सूबेदार का लडका (दे ४, २२)।

णस सक [नि + अस्] स्थापन करना। नसेज्ज (विसे ६४३)। कर्म नस्सए (विसे ६७०)। सकृ नसिऊण (स ६०८)।

णस्स अक [नश्] भागना, पलायन करना। णस्सइ (पिंग)।

णसण न [न्यसन] न्यास, स्थापन (जीव १)।

णसा स्त्री [दे] नस, नाडी 'असुईरसनिज्झरणे हड्डुक्करडम्मि चम्मनसनद्धे' (सुपा ३५५)।

णसिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा)।

णस्स देखो नश = नश्। णस्सइ, णस्सए, (षड् कुमा)। वकृ. नस्संत, नस्समाण (श्रा १६, सुपा २१५)।

णस्सर वि [नश्वर] विनश्वर, भंगुर, नाश पानेवाला, 'खणनस्सराइ रूवाइ' (सुपा २४३)।

णस्सा स्त्री [नासा] नासिका, घ्राणेन्द्रिय (नाट-मृच्छ ६२)।

णह देखो णक्ख (सम ६०, कुमा)।

णह न [नभस्] १ आकाश, गगन (प्राप्र, हे १, ३२)। २ पु श्रावण मास (दे ४,१६)। °अर वि [°चर] १ आकाश मे विचरनेवाला (से १४, ३८)। २ पु विद्याधर, आकाश-विहारी मनुष्य (सुर ६, १८६)। °केउमंडिय न [°केतुमण्डित] विद्याधरो का एक नगर (इक)। °गमा स्त्री [°गमा] आकाश-गामिनी विद्या (सुर १३, १८६)। °गामिणी स्त्री [°गामिनी] आकाश गामिनी विद्या (सुर ३, २८)। °चर देखो °अर (उप ५६७ टी)। °च्छेदणय न [°च्छेदनक] नख उतारने का शस्त्र (आचा २, १, ७, १)। °तिलग न [°तिलक] १ नगर-विशेष। २ सुभट-विशेष (पउम ५५, १०)। °वाहण पुं [°वाहन] नृप-विशेष (सुर ६, २६)। °सिर न [°शिरस्] नख का अग्र भाग (भग ५, ४)। °सिहा स्त्री [°शिखा] नख का अग्र भाग (कप्प)। °सेण पु [°सेन] राजा उग्रसेन का एक पुत्र (राज)। °हरणी स्त्री [°हरणी] नख उतारने का शस्त्र (बृह ३)।

णहसि वि [नखवत्] नखवाला (दस ६, ६५)।

णहमुह पुं [दे] घूक, उल्लू (दे ४, २०)।

णहर पुं [नखर] नख, नाखून (सुपा ११, ६०६)।

णहरण पु [दे] नखी, नखवाला जन्तु, श्वापद (वज्जा १२)।

णहरणी स्त्री [नखहरणी] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र (पंचव ३)।

णहराल पु [नखरिन्] नखवाला श्वापद जंतु (उप ५३० टी)।

णहरी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे ४, २०)।

णहवल्ली स्त्री [दे] विद्युत्, बिजली (दे ४, २२)।

णहारु न [स्नायु] स्नायु रग, नस, नाडी।

णहि पु [नखिन] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु (अणु)।

णहि वि [नखिन्] ऊपर देखो (अणु १४२)।

णहि अ [नहि] निषेधार्थक अव्यय, नही (स्वप्न ४१, पिंग, सण)।

णहु अ [नखलु] ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २६१, णाया १, ६)।

णा सक [ज्ञा] जानना, समझना। भवि णाहिइ (विसे १०१३)। णाहिमि (पि ५३४)। कर्म णव्वइ, णज्जइ (हे ४, २५२)। कवकृ णज्जंत, णज्जमाण (से १३, ११, उप १००१ टी)। सकृ णाउं, णाऊण, णाऊणं, णच्चा, णच्चाण (महा, पि ५८६, औप, सूअ १, २, ३, पि ५८७)। कृ णायव्व, णेअ (भग, जी ६, सुर ४, ७०, द २, हे २, १९३, नव ३१)।

णा अ [न] निषेध-सूचक अव्यय (गउड)।

णाअअ } देखो णायग (प्राकृ २६)।
णाअक }

णाअग्ग (अप) देखो णायग (पिंग)।

णाइ पु [ज्ञाति] इक्ष्वाकु वंश मे उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °सुय पु [°सुत] भगवान् श्री महावीर (आचा)।

णाइ स्त्री [ज्ञाति] १ नात, समान जाति (पउम १००, ११, औप, उवा)। २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा (णाया १, १)। ३ ज्ञान, बोध (आचा, ठा ५, ३)।

णाइ (अप) देखो णय (कुमा)।

णाइ (अप) नीचे देखो (भवि)।

णाइ देखो ण = न (हे २, १९०; कुमा)।

णाइणी (अप) स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (भवि)।

णाइत्त } पुं [दे] जहाज द्वारा व्यापार
णाइत्तग } करनेवाला सौदागर (उप ६ १०१; उप ५९७)।

णाइय वि [नादित] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ (णाया १, १ टी)। २ न आवाज, शब्द (णाया १, १)। ३ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (राय)।

णाइल पु [नागिल] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। २ जैन मुनियों का एक वंश (पउम ११८, ११७)। ३ एक श्रेष्ठी (महानि ४)।

णाइला } स्त्री [नागिला] जैन मुनियों की
णाइली } एक शाखा (कप्प)।

णाइड देखो णाउड (विचार ५३४)।

णाइव वि [ज्ञातिमत्] स्वजन-युक्त, नातेदार (उत्त ४)।

णाउ वि [ज्ञातृ] जानकार, जाननेवाला (द्र ६)।

णाउड्ड पु [दे] १ सद्भाव, सन्निष्ठा। २ अभिप्राय। ३ मनोरथ, वाञ्छा (दे ४, ४७)।

णाउट्ट वि [दे] [illegible], जिसके पास अधिक सोना हो (दे ४, २३)।

णाउ }
णाऊण } देखो णा = ज्ञा।
णाउण }

णाग पुं [नाक] स्वर्ग, [illegible] (उप ७१२)।

णाग पु [नाग] १ सर्प, साँप (पउम ८, १३०)। २ भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, नागकुमार देव (ठादि)। ३ हस्ती, हाथी (औप)। ४ वृक्ष-विशेष (कप्प)। ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ (अंत ४)। ६ एक [illegible]। ७ नाग-केसर का गाछ (राज)। ८ एक जैन आचार्य (कप्प)। ९ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप। १० एक समुद्र (सुज्ज १९)। ११ [illegible] विशेष (ठा २, ३)। १२ [illegible] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (सम ६६)। °केसर पु [°केसर] पुष्प-प्रधान वनस्पति विशेष (राज)। °ग्गह पुं [°ग्रह] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि (जीव ३)। °जण्ण, °जन्न पु [°यज्ञ] नाग पूजा, नाग देवता का उत्सव (णाया १, ८)। °ज्जुण पु [°ार्जुन] एक स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य (णदि)। °दंत पु [°दन्त] खूँटी (जीव ३)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक स्वनाम ख्यात राज पुत्र (ठा ३, ४; सुपा ५३५)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (आक)। °पइ पु [°पति] नाग कुमार देवों का राजा, नागेन्द्र (औप)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम २०, १०)। °बाण पु [°बाण] दिव्य अस्त्र विशेष (जीव ३)। °भद्द पु [°भद्र] नाग द्वीप का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १९)। °भूय न [°भूत] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव (सुज्ज १९)। °महावर पु [°महावर] नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज्ज १९, इक)। °मित्त पु [°मित्र] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि, जो आर्य महागिरि के शिष्य थे (कप्प)। °राय पु [°राज] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र विशेष (पउम ३, १४७)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (ठा ८)। °लआ स्त्री [°लता] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता (पएण १)। °वर पु [°वर] १ श्रेष्ठ सर्प। २ उत्तम हाथी (औप)। ३ नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज्ज १९)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (सण)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम (उप ६४८ टी)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] एक जैनेतर शास्त्र (अणु)। °सेण पु [°सेन] एक स्वनाम ख्यात गृहस्थ (आवम)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] एक प्राचीन जैन ऋषि (णदि)।

णागणिग न [नाग्न्य] नगनता, नगापन (सूअ १, ७)।

णागदत्ता स्त्री [नागदत्ता] चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

णागपरियावणिया स्त्री [नागपरियापनिका] एक जैन शास्त्र (णदि २०२)।

णागर वि [नागर] १ नगर-सम्बन्धी। २ नगर का निवासी, नागरिक (सुर ३, ६६; महा)।

णागरिअ पु [नागरिक] नगर का रहनेवाला (रभा)।

णागरिआ स्त्री [नागरिका] नगर में रहनेवाली स्त्री (महा)।

णागरी स्त्री [नागरी] १ नगर में रहनेवाली स्त्री। २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि (विसे ४६४ टी)।

णागिंद पु [नागेन्द्र] १ नाग देवों का इन्द्र। २ शेषनाग (सुपा ७७, ६३६)।

णागिणी स्त्री [नागी] १ नागिन। २ एक वणिक्-पुत्री (कुप्र ४०८)।

णागिल देखो णाइल (राज)।

णागी स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (श्राव ४)।

णागेद देखो णागिंद (णाया १, ८)।

णागोद पु [नागोद] एक समुद्र (सुज्ज १९)।

णाड देखो णट्ट = नाट्य (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

णाडइज्ज वि [नाटकीय] नाटक-सम्बन्धी, नाटक में भाग लेनेवाला पात्र (णाया १, १; कप्प)।

णाडइणी स्त्री [नाटकिनी] १ नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री (बृह ३)।

णाडग } न [नाटक] १ नाटक, अभिनय,
णाडय } नाट्य-क्रिया (बृह १; सुपा १, ३५६; सार्ध ६५)। २ रंग शाला में खेलने में उपयुक्त काव्य (हे ४, २७०)।

णाडाल देखो णडाल (गउड)।

णाडि स्त्री [नाडि] १ रज्जु, रस्सी। २ नाडी, नस, सिरा (कुमा)।

णाडी स्त्री [नाडी] ऊपर देखो (हे १, २०२)।

णाडीअ पु [नाडीक] वनस्पति विशेष (भग १०, ७)।

णाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि (भग ८, २; हे २, ८२; कुमा; प्रासू २८)। °धर वि [°धर] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् (सुपा ४०८)। °प्पवाय न [°प्रवाद]

जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व (सम २६)। °मायार देखो °यार (पडि)। °व, वत वि [°वत्] ज्ञानी, विद्वान् (पि ३४८, आचा, अच्चु ४६)। °वि वि [°वित्] ज्ञान-वेत्ता (आचा)। °यार पु [°चार] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि (राज)। °वरण न [°वरण] ज्ञान का आच्छादक कर्म (धण ४४)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] अनन्तर उक्त अर्थ (सम ६६, औप)।

णाणक } न [दे] सिक्का, मुद्रा (मृच्छ १७,
णाणग } राज)।

णाणत न [नानात्व] भेद, विशेष, अन्तर (ओघ ६१८)।

णाणता स्त्री [नानाता] ऊपर देखो (विसे २१६१)।

णाणा अ [नाना] अनेक, जुदा-जुदा (उवा, भग, सुर १, ८६)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, विविध (जीव ३, सुर ४, २४५, द १३)।

णाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् (आचा, उव)।

णादिय देखो णाइय (कप्प)।

णाभि पु [नाभि] १ स्वनाम ख्यात एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता (सम १५०)। २ पेट का मध्य भाग। ३ गाडी का एक अवयव (दस ७)। °नंदण पु [°नन्दन] भगवान् ऋषभदेव (पउम ४,६८)।

णाम सक [नमय्] १ नमाना, नीचा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। णामेइ (हेका ४६)। वकृ णामयत (विसे २६६०)। संकृ णामित्ता (निचू १)।

णाम पुं [नाम] १ परिणाम, भाव (भग २५, ५)। २ नमन (विसे २१७६)।

णाम अ [नाम] संभावना सूचक अव्यय (सूअ १, १२, ३)।

णाम अ [नाम] इन अर्थों का सूचक अव्यय— संभावना (से ५, ४)। २ आमन्त्रण, संबोधन (बृह ३, ज १)। ३ प्रसिद्धि, ख्याति (कप्प)। ४ अनुज्ञा, अनुमति (विसे)। ५—६ वाक्यालंकार पाद-पूर्ति मे भी इसका प्रयोग होता है (ठा ४, १, राज)।

णाम न [नामन्] नाम, आख्या, अभिधान (विपा १, १, विसे २५)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म (स ६७)। °धिज्ज, °धेज्ज °धेय न [°धेय] नाम, आख्या (कप्प, सम ७१, पउम ४, ८०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] नाम से अंकित मुद्रा (पउम ५, ३२)। °सच्च वि [°सत्य] नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी (ठा १०)। °हेअ देखो °धेय (पउम २०, १७६, स्वप्न ४३)।

णामण न [नमन] नमाना, नीचा करना (विसे ३००८)।

णाममतक्ख पु [दे] अपराध, गुनाह (गउड)।

णामगोत्त न [नामगोत्र] १ यथार्थ नाम। २ नाम तथा गोत्र (सुज्ज १६)।

णामिय वि [नमित] नमाया हुआ (सार्ध ८०)।

णामिय न [नामिक] वाचक शब्द, पद (विसे १००३)।

णामुक्कसिअ } न [दे] कार्य, काम, काज
णामोक्कसिअ } (हे २, १७४, दे ४, २५)।

णाय वि [दे] गर्विष्ठ, अभिमानी (दे ४, २३)।

णाय देखो णाग (काप्र ७७७, कप्पू, औप, गउड, वज्जा १४, सुपा ६३६, पउम २१, ४६)।

णाय पु [नाद] शब्द, आवाज, ध्वनि (औप, पउम २२, ३८, स २१३)।

णाय पु [न्याय] १ अक्षपाद—प्रणीत न्यायशास्त्र (सुख ३,१, धर्मवि ३८)। २ सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

णाय पुं [नाद] अनुनासिक वर्ण, अर्धचन्द्राकार अक्षर-विशेष (सिरि १६६)।

णाय वि [न्याय्य] न्याय-युक्त (सूअ १, १३, ६)।

णाय पुं [न्याय] १ न्याय, नीति (औप, स १५६, आचा)। २ उपपत्ति, प्रमाण (पंचा ४, विसे)। °कारि वि [°कारिन्] न्याय-कर्ता (श्राद्ध १) °गर वि [°कर] १ न्याय-कर्ता। पु न्यायाधीश (श्रा १४)। °ण्ण वि [°ज्ञ] न्याय का जानकार (उप ३४६)।

णाअ पुं [नाक] स्वर्ग, देव-लोक (पाअ)।

णाय पुं [ज्ञात] १ भगवान् महावीर (सूअ १, २,२,३१)। २ वि. प्रसिद्ध (सूअ १,६,२१)।

णाय वि [ज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (उव, सुर २, ३६)। २ ज्ञाति संबन्धी, सगा, एक बिरादरी का (कप्प, आउ ६)। ३ वंश-विशेष मे उत्पन्न (औप)। ४ पुं वंश-विशेष (ठा ६)। ५ क्षत्रिय-विशेष (सूअ १, ६, कप्प)। ६ न. उदाहरण, दृष्टान्त (उव, सुपा १२८)। °कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-वंशीय राज-पुत्र (णाया १, ८)। °कुल न [°कुल] वंश-विशेष (पण्ह १, ३)। °कुलचंद पु [°कुलचन्द्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। कुलनंदण पुं [कुलनन्दन] भगवान् श्री महावीर (पण्ह १,१)। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °मुणि पु [°मुनि] भगवान् श्री महावीर (पण्ह २,१)। °विहि पुस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धिपन (वव ६)। °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी (आचा २, ३, १)। °सुय पु [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर। °सुय न [°श्रुत] 'ज्ञाताधर्मकथा' नामक जैन आगम-ग्रन्थ (णाया २, १)। °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रंथ-विशेष (सम १))

णायग पुं [नायक] हार के बीच की मणि, सुमेरु (स ६८६)।

णायग पु [नायक] नेता, मुखिया, अगुआ (उप ६४८ टी, कप्प, सम १, सुपा २२)।

णायत्त पु [दे] समुद्र मार्ग से व्यापार करने-वाला वणिक्, 'पवहणवाणिज्जपरा सुहकरा आसि नाम नायत्ता' (उप ५६७ टी)।

णायर देखो णागर (महा, सुपा १८८)।

णायरिय देखो णागरिय (सुर १४, १३३)। स्त्री. °या (भवि)।

णायरी देखो णागरी (भवि)।

णायव्व देखो णा = ज्ञा।

णार पु [नार] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तर (इक)।

णारइअ वि [नारकिक] १ नरक पृथिवी मे उत्पन्न, नारकी। २ पुं नरक का जीव (हे १, ७६)।

णारंग पुं [नारङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, नतरे का वृक्ष। २ न फल-विशेष, कमला नीबू, नतरा (पउम ४१, ९, सुपा २३०, ५६३, गउड, कुमा)।

णारग देखो णारय = नारक (विसे १९००)।

णारद देखो णारय (प्रयौ ५१)।

णारदीअ वि [नारदीय] नारद-सम्बन्धी, नारद का (प्रयौ ५१)।

णारय पुं [नारद] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि (सम १५४ उप ६४८ टी)। २ गंधर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)।

णारय वि [नारक] १ नरक में उत्पन्न, नरक-सम्बन्धी, नरक का 'जायए नारय दुक्ख' (सुपा १८२)। २ पुं नरक में उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव (भग)।

णारसिंह वि [नारसिंह] नरसिंह-सम्बन्धी (उप ६४८ टी)।

णाराय पुं [नाराच] तोलने की छोटी तराजू, काटा, 'नाराय निरक्खर लोहवत दोमुह य तुज्झ कि भणिमो। गुंजाए सम कणय तोलतो कह न लज्जसि त्ति?' (वज्जा १५८, १५६)।

णाराय देखो णराअ (हे १, ६७, उवा, सम १४९ पणि १४)। तुला, गुo ताखूठी (पुप्फमाला ४५, ८६)। °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष (पउम ३, १०९)।

णारायण पुं [नारायण] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा, स ६०२)। २ अर्ध चक्रवर्ती राजा (पउम ५ १०२, ७०, २०)।

णारायण पुं [नारायण] एक ऋषि (सूम्र १, ३, ४ २)।

णारायणी स्त्री [नारायणी] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा (गउड)।

णारि° देखो णारी (गच्छ, राज)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष (सम २७, ठा २, ३)।

णारिएर } पुं [नारिकेल] १ नारियल का णारिकेर } पेड़। २ न नारियल या नरियर का फल (पणि १२७, णि १२८)। देखो णालिएर।

णारिंग न [नारिङ्ग] नारंगी का फल, मीठा नींबू, नारंगी (कप्पू)।

णारी स्त्री [नारी] १ स्त्री, औरत, [illegible] (पउम २२८, कप्पू ६२, १५६)। २ नदी-विशेष (इक)। °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३)। देखो णारि°।

णारुट्ट पु [दे] कूमार, गर्त्ताकार स्थान (पाम्र)।

णारोट्ट पुं [दे] १ बिल, साप आदि का रहने का स्थान, विवर। २ कूसार, गर्त्ताकार स्थान (दे ४, २३)।

णाल न [नाल] १ कमल-दण्ड (से १, २८)। २ गर्भ का आवरण (उप ९७४)।

णालंदइज्ज वि [नालन्दीय] १ नालन्दा-संबन्धी। २ न नालंदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (सूम्र २, ७)।

णालंदा स्त्री [नालन्दा] राजगृह नगर का एक मुहल्ला (कप्प, सूम्र २, ७)।

णालपिअ न [दे] आक्रन्दित, आक्रन्द ध्वनि (दे ४, २४)।

णालवि पु [दे] कुन्तल, केश-कलाप (दे ४, २७)।

णालय न [नालक] द्यूत-विशेष (मोह ८६)।

णाला } स्त्री [नाडि] नाड़ी, नस, सिरा (से १,
णालि } २८, कुमा)।

णालि स्त्री [नालि] परिमाण-विशेष, अजली (श्रावक ३५)।

णालि वि [दे] भ्रस्त, गिरा हुआ (षड्)।

णालिअ वि [दे] मूढ, मूर्ख, अज्ञान (से ४, ४२२)।

णालिअर देखो णारिएर (दे २, १०, पउम १, २०)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (सम्म १, १६)।

णालिआ } स्त्री [नालिका] १ नाल, डंडी,
णालिया } कमल की डंडी (दस ५, २, १८)। २ परिमाण-विशेष, धउ, धनुष (अणु १५७)। ३ अर्ध मुहूर्त का समय, 'दो नालिया मुहुत्तो' (तदु ३२)। ४ नली, 'जह उ किर नालिगाए धरिय मिदुम्मयोम्हनरियाए' (धर्मस ९८०)। °खेड्ड न [°खेल] द्यूत-विशेष (ज २ टी—पत्र १३६)।

णालिआ स्त्री [नालिका] १ घटी-विशेष (दे २, ३)। २ घटिका, घड़ी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र (पाम्र, णिसे ९२७)। ३ अपने शरीर से चार अङ्गुल लम्बी लाठी (धाग ३६)। ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (औप, भग ६, ७)। °खेड्डा स्त्री [°क्रीडा] एक तरह की द्यूत-क्रीडा (औप)।

णालिएर देखो णारिएर (णाया १, ९)।

णालिएरी स्त्री [नारिकेली] नरियर का गाछ (गउड, पि १२६)।

णाली स्त्री [नाली] १ वनस्पति-विशेष, एक लता (पराण १)। २ घटिका, घड़ी (जीव ३)।

णाली स्त्री [नाली] १ द्यूत-विशेष (दस ३, ४)। २ तीन हाथ और सोलह अगुल लंबी लट्ठी या लग्गी (बांस) (पव ८१)।

णाली स्त्री [नाडी] नाडी नस, सिरा (विपा १, १)।

णालीय वि [नालीय] नाल-सबन्धी (प्राचा)।

णालीया देखो णालिआ (सूम्र १, ९, १८)।

णावइ (अप) देखो इव (हे ४, ४४४, भवि)।

णावण न [दे] दान, वितरण (पएह १, ३—पत्र ५३)।

णावा स्त्री [दे] प्रसृति, अजली, परिमाण-विशेष (पव १०६ टी)।

णावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज, नाव (ग, उवा)। °वाणिय पुं [°वाणिज] समुद्र मार्ग से व्यापार करनेवाला वणिक् (णाया १,८)।

णावापूरय पु [दे] चुलुक, चुल्लू, 'तिहि णावापूरएहिं आयामइ' (बृह १)।

णाविअ पु [नापित] नाई, हजाम (हे १, २३०, कुमा, षड्)। °साला स्त्री [°शाला] नाइयो का अड्डा (श्रा १२)।

णाविअ पु [नाविक] जहाज चलानेवाला, नौका या नाव हांकनेवाला, मल्लाह, केवट, माँझी (णाया १, ९, सुर १३, ३१)।

णास देखो णस्स। णासइ (षड्, महा)। वकृ णासंत (सुर १, २०२, २, २५)। कृ णासिअव्व (सुर ७, १२९)।

णास सक [नाशय्] नाश करना। णासइ (हे ४, ३१)। णासइ (महा, उव)।

णास पु [नाश] नाश, ध्वंस (प्रासू १४३, पाम्र)। °यर वि [°कर] नाश-कारक (सुर १२, १९४)।

णास पु [न्यास] १ स्थापन (गा ६६, उप ३०२)। २ धरोहर या अमानत, रखने योग्य धन आदि (उप ७६८ टी, धर्म २)।

णासग वि [नाशक] नाश करनेवाला (सुर २, ५८)।

णासण न [नाशन] १ पलायन, अपक्रमण भागना (धर्म २)। २ वि नाश करनेवाला (से ३,२७, गण २२)। स्त्री णी (से ३, २७)।

णासण न [न्यासन] स्थापन, रखना, व्यवस्थापन (अणु)।

णासणा स्त्री [नाशना] विनाश (विसे ६३६)।

णासव सक [नाशय्] नाश करना। णासवइ (हे ४, ३१)।

णासविय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ (उप ३५७ टी, कुमा)।

णासा स्त्री [नासा] नाक, घ्राणेन्द्रिय (गा २२, आचा, कुपा)।

णासि वि [नाशिन्] विनश्वर, नष्ट होनेवाला (विसे १६८१)।

णासिक्क देखो णासिक्क (णंदि १६५)।

णासिक्क न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वनाम प्रसिद्ध नगर, जो आजकल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है, जहा शूर्पणखा की नाक कटी थी, पचवटी (उप पृ २१३, १४१ टी)।

णासिगा स्त्री [नासिका] नाक, घ्राणेन्द्रिय (महा)।

णासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ (महा)।

णासियव्व देखो णास = नश्।

णासिर वि [नशितृ] नष्ट होनेवाला, विनश्वर (कुमा)।

णासीकय वि [न्यासीकृत] धरोहर या अमानत रूप से रखा हुआ (श्रा १४)।

णासेक्क देखो णासिक्क (उप १४१)।

णाह पुं [नाथ] स्वामी, मालिक (कुमा, प्रासू १२, ६६)।

णाहड पु [नाहट] एक राजा का नाम (ती १५)।

णाहल पु [लाहल] म्लेच्छ की एक जाति (हे १, २५६, कुमा)।

णाहि देखो णाभि (कुमा, कप्पू)। °रुह पु [°रुह] ब्रह्मा, चतुर्मुख (अच्चु ३६)।

णाहि (अप) अ [नहि] नही, नाही (हे ४, ४१६, कुमा, भवि)।

णाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्सी (दे ४, २४)।

णाहिय वि [नास्तिक] १ परलोक आदि को नही माननेवाला। २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्त्तक। °वाइ, °वादि वि [°वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी (सुर ६, २०, स १६४)। °वाय पु [°वाद] नास्तिक दर्शन (गच्छ २)।

णाहिविच्छेअ, णाहीए-विच्छेअ } पुं [दे] जघन, कटी के नीच का भाग (दे ४, २४)।

णि अ [नि] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त १)। २ नियतपन, नियम (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय (उत्त १, विपा १, ६)। ४ अधोभाग, नीचे (सण)। ५ नित्यपन। ६ सशय। ७ आदर। ८ उपरम, विराम। ९ अन्तर्भाव, समावेश। १० समीपता, निकटता। ११ क्षेप, निन्दा। १२ बन्धन। १३ निषेध। १४ दान। १५ राशि, समूह। १६ मुक्ति, मोक्ष (हे २, २१७, २१८)। १७ अभिमुखता, समुखता (सूअ १, ६)। १८ अल्पता, लघुता (पण्ह १, ४)।

णि अ [निर्] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय। (उत्त १)। ३ प्रतिषेध, निषेध (सम १३७, सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव। ५ निर्गमन, निष्क्रमण (ठा ३, १, सुपा १३)।

णिअ सक [दृश्] देखना। णिअइ (षड्, हे ४, १८१)। वकृ णिअंत (कुमा, महा, सुपा २६६)। सकृ निएउ (भवि)।

णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय (गा १५०, कुमा, सुपा ११)।

णिअ वि [नीत] ले जाया गया (से ५, ६, सण)।

णिअ वि [नीच] नीच, जघन्य, निकृष्ट (कम्म ३, ३)।

णिअ देखो णिव (सूअ २, ६, ४५)।

णिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट, छल, धोखा (पण्ह १, २)।

णिअइ स्त्री [नियति] १ नियतपन, भवितव्यता, होनी, भाग्य, नियमितता (सूअ १,१, ३)। २ अवश्य-भाविता (ठा ४,४, सूअ १,१, २)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (जीव ३)। °वाइ वि [°वादिन्] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरह अकिञ्चित्कर है' ऐसा माननेवाला, भाग्यवादी या दैववादी (राज)।

णिअंटिअ वि [नियन्त्रित] १ नियमित। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, हृष्ट से या रोगी से अमुक दिन मे अमुक तप करने का किया हुआ नियम (पव ४)।

णिअंटिय वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकडा हुआ। २ न अवश्य-कर्त्तव्य नियमविशेष (ठा १०)।

णिअंठ वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पु जैनमुनि, सयत, यति (भग, ठा ३, १, ५, ३)। ३ जिन भगवान् (सूअ १, ६)।

णिअंठ पु [निर्ग्रन्थ] भगवान् बुद्ध (कुप्र ४४२)।

णिअंठि देखो °णिग्गथी। °पुत्त पुं [°पुत्र] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था (ठा १०)। २ एक जैनमुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था (भग ५, ८)।

णिअंठिय वि [नैर्ग्रन्थिक] १ निर्ग्रन्थ-सबन्धी। २ जिन देव-सबन्धी। स्त्री. °या, 'एसा आणा णियंठिया' (सूअ १, ६)।

णिअंठी देखो णिग्गथी (ठा ६)।

णिअत वि [नियत] स्थिर (सूअ १, ८, १२)।

णिअत वि [निर्यत्] बाहर निकलता (सम्मत्त १५६)।

णिअतिय वि [नियन्त्रित] सयमित, जकडा हुआ, बँधा हुआ (महा, सण)।

णिअंवण न [दे] वस्त्र, कपडा (दे ४, २८)।

णिअंब पु [नितम्ब] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वर्षात-स्थान (ओघ ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग, चूतड (कुमा, गउड)। ३ मूल भाग (से ८,१०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर (ज ४)।

णिअंबिणी स्त्री [नितम्बिनी] १ सुन्दर नितम्बवाली स्त्री। २ स्त्री, महिला (कप्पू, पाअ, सुपा ५३८)।

णिअंस सक [नि + वस्] पहनना। णिअंसइ [illegible]। संकृ. णिअंसिऊण (सिरि ३, [illegible] ३४)। [illegible] (सिरि ८४)।

णिअंसण न [दे निवसन] वस्त्र, कपड़ा (दे ४, ३८ [illegible] ३४, [illegible] पण्ह १, ३, [illegible] ११४ [illegible] ३२)।

णिअंसणि स्त्री [निवसनि] [illegible] (सिरि ६२)।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। णिअच्छइ (प्राप्र)।

णिअच्छर वि [दे] [illegible] (दे ४, ३६, पाअ)।

णिअच्छ वि [निकट] समीप, पास (उप)।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। णिअच्छइ ([illegible] ८१)। वकृ. णिअच्छंत णिअच्छमाण (ग [illegible] ३३८, [illegible] ४००)। [illegible] णिअच्छिऊण णिअच्छिअ (सुर २, [illegible])। २ णिअच्छिअव्व ([illegible])।

णिअच्छ सक [नि + यम्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ अवश्य प्राप्त करना। ३ [illegible]। वकृ. णिअच्छमाण (सूअ १, १, २, २)।

णिअच्छ सक [नि + गम्] १ बाहर होना, [illegible]। २ [illegible] अवश्य प्राप्त करना। णिअच्छइ (सूअ १, १, १, १०; १, १, २, १, ३, १, ३, १८)।

णिअच्छिअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (पाअ)।

णिअट्ट सक [नि + वृत्] निवृत्त होना, [illegible] करना। णिअट्टइ (भग)। वकृ. णिअट्टमाण (पउम)।

णिअट्ट सक [निर् + वृत्] [illegible], [illegible] (औप)।

णिअट्ट सक [नि + वर्ध्] [illegible] (दे [illegible])।

णिअट्ट न [निवर्त] [illegible], [illegible] [illegible]।

णिअट्ट वि [निवृत्त] [illegible], [illegible] हुआ [illegible]।

णिअट्टि वि [निवर्तिन्] [illegible] [illegible]।

णिअट्टि स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्तन, पीछे हटना (धर्म १)। २ अध्यवसाय-विशेष (सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था (सूअ १, ११)। °बायर न [°बादर] १ गुण-स्थानक-विशेष (सम २६)। २ पु. गुण-स्थानक-विशेष में वर्तमान जीव (श्राव ४)।

णिअट्टिय वि [निवर्त्तित] व्यावर्तित, पीछे हटाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [निर्वर्तित] रचित, निर्मित, बनाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [न्यर्दित] अनुगत, अनुवृत्त (औप)।

णिअड न [निकट] १ निकट, समीप नज-दीक पास (गा ४०२, पाअ, सुपा ३५२)। २ वि पास का, समीप का (पाअ)।

णिअडि वि [निकृतिन्] मायावी, कपटी (दस ६, २३)।

णिअडि स्त्री [निकृति] की हुई ठगाई का ढकना,—छिपाना (राय ११४)।

णिअडि स्त्री [दे निकृति] माया, कपट (दे ४, २६, पण्ह १, २, सम ५१, भग १२, ५, सूअ २, २, णाया १, १८, श्राव ४)।

णिअडिअ वि [निगडित] नियन्त्रित जकड़ा हुआ (गा ५५६, उप पृ ५२, सुपा ६३)।

णिअडिज वि [निकटिक] समीप-वर्ती, पार्श्व में स्थित (कप्पू)।

णिअडिल्ल वि [निकृतिमत्] कपटी, मायावी (ठा ४, ४ टी; मा ८. ६)।

णिअड्ढ सक [नि + कृष्] खींचना। कृ. णिअड्ढिऊण (सम्मत्त २२०)।

णिअण वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित (पव २७१)।

णिअत्त वि [निकृत्त] काटा हुआ, छिन्न (सम ६, ३३)।

णिअत्त वि [नित्य] शाश्वत, अविनश्वर, 'दुरत अर्णत्यिदत्त' (पउ ३३, सूअ १, १, १, १६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = नि + वृत्। णिअत्तइ (भवि २८६)। वकृ. णिअत्तंत णिअत्त-माण (गा ७६, १३०, स ५, ६७, नाट)। संकृ. णिअत्तिऊण (सिरि २८६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = निवृत्त (पउम २२, ६२, गा ६५८, सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [निवर्त्तन] १ भूमि का एक नाप (उप)। २ निवृत्ति, व्यावर्तन (धात ४)।

णिअत्तणिय वि [निवर्त्तनिक] निवर्तन परिमाणवाला (भग २, १)।

णिअत्ति देखो णिअट्टि (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [दे] १ परिहित, पहना हुआ (दे ४, ३३, भवभा भवि)। २ परिधापित, जिसको वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह, 'णियत्था तो गणिआए' (विसे २६०८)।

णिअद सक [नि + गद्] कहना, बोलना। णिअददि (शौ) (नाट—चैत ४५)। वकृ णिअदंत (नाट)।

णिअदिय देखो णिअट्टिय = न्यर्दित (राज)।

णिअद्धण न [दे] परिधान, पहनने का वस्त्र (षड्)।

णिअम सक [नि + यमय्] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। संकृ णिअमेऊण (पि ५८६)।

णिअम सक [नि + यमय्] १ रोकना। २ बचन से कराना। ३ शरीर से कराना। निअमे (आचा २, १३, १)।

णिअम पुं [नियम] १ निश्चय (जी १४)। २ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत, 'परिवाविवद णिअमा णिअमसमत्ती तुमं मज्झ' (उव ७२८ टी)। ३ प्रायोपवेशन, स्वल्प-पूर्वक अनशन मरण के लिए उद्यम (दे ५, २)। °मा य [°मान] नियम से (औप)। °सो य [°शस्] निश्चय से (श्रा १४)।

णिअमण न [नियमन] नियन्त्रण, संयमन (विसे १२४८)।

णिअमिय वि [नियमित] नियम से बँधा हुआ, नियन्त्रित (दे ४, ३७)।

णिअय न [दे] १ रत, मैथुन। २ शयनीय, शय्या। ३ पद, पग, कदम (दे ४, ४९)। ४ वि शाश्वत, नित्य (दे ४, ४८ पाअ, सूअ १, ८ गद)।

णिअय वि [निजक] निजका, स्वकीय, आत्मीय, अपना (पाअ)।

णिअय वि [नियत] नियम-बद्ध, नियन्त्रित (ठा)।

णिअया स्त्री [नियता] जम्बू-वृक्ष विशेष, जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (इक)।
णिअर पु [निकर] राशि, समूह, जत्था, ढेर (गा ५६६, पाअ, गउड)।
णिअरण न [दे] दण्ड, शिक्षा (स ४१६)।
णिअरिअ वि [दे] राशि रूप मे स्थित (दे ४, ३८)।
णिअल न [दे] नूपुर, पैंजनी या पावजेब, स्त्री का पादाभरण-विशेष (दे ४, २८)।
णिअल पुं [निगड] बेडी, साकल (से ३, ८, विपा १, ६)। देखो णिगल।
णिअलाइअ, णिअलाविअ, णिअलिअ वि [निगडित] साकल मे नियन्त्रित, जकडा हुआ (गा ४५४, ५००, पाअ, गउड, से ५, ४८)।
णिअल्ल पु [दे नियल्ल] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।
णिअल्ल वि [निज] स्वकीय, आत्मीय (महा)।
णिअस देखो णिअस। नियसइ (सुपा ६२)।
णिअसण देखो णिअसण (हेका ५६, काप्र २०१)।
णिअसिय वि [निवसित] परिहित, पहना हुआ (सुपा १५३)।
णिअह देखो णिवह (नाट—मालती १३८)।
णिआ स्त्री [निदा] प्राणि-हिंसा (पिंड १०३)।
णिआ° देखो णिअय=(दे)। °वाइ वि [°वादिन्] नित्यवादी, पदार्थ को नित्य माननेवाला (ठा ८)।
णिआइय देखो णिकाइय (सूअ १, ६)।
णिआग पु [नियाग] १ नियत योग। २ निश्चित पूजा। ३ मोक्ष, मुक्ति (आचा, सूअ १, १, २)। ४ न आमन्त्रण देकर जो भिक्षा दी जाय वह (दस ३)।
णिआग देखो णाय=न्याय (आचा)।
णिआण न [निदान] १ आरम्भ, सावद्य व्यापार (सूअ १, १०, १)। २ रोग-कारण, रोग की पहचान (पिंड ४५९)।
णिआण न [निदान] १ कारण, हेतु, 'अहो अप्प नियाण महतो विवाओ' (स ३६०, पाअ, णाया १, १३)। २ किसी व्रतानुष्ठान की फल-प्राप्ति का अभिलाष सकल्प-विशेष (आ ३३, ठा १०)। ३ मूल कारण (आचा)। °कड वि [°कृत] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह (सम १५३)। °कारि वि [°कारिन्] वही अनन्तर उक्त अर्थ (ठा ६)।
णिआण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओ के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी, चरही, 'पइभवण पइहट्टं पइमग्ग पइमह पइनियाण' (उप ७२८ टी)।
णिआणिआ स्त्री [दे] खराब तृणो का उन्मूलन (दे ४, ३५)।
णिआम देखो णिअम=नियमय्। सक्र उवसग्गा णिआमित्ता आमोक्खाए परिव्वए' (सूअ १, ३, ३)।
णिआम देखो णिकाम (सूअ १, १०, ८)।
णिआमग, णिआमय वि [नियामक] नियम-कर्त्ता, नियन्ता (सुपा ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक (विसे ३४७०, स १७०)।
णिआमिअ वि [नियमित] नियम मे रखा हुआ, नियन्त्रित (स २६३)।
णिआय पुं [नियाग] प्रशस्त धर्म (सूअ १, १, २, २०)।
णिआर सक [काणेक्षित कृ] कानी नजर से देखना। णिआरइ (हे ४, ६६)।
णिआरिअ वि [काणेक्षितीकृत] १ कानी नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा हुआ। २ न आधी नजर से निरीक्षण (कुमा)।
णिआह पु [निदाघ] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु। २ उष्ण, धर्म, गरमी (गउड)।
णिइअ वि [नैत्यिक] नित्य का, 'निइए पिंडे दिज्जइ' (आचा २, १, १, ६)।
णिइग, णिइय वि [दे नित्य, नैत्यिक] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर (पण्ह २, ४—पत्र १४१, सूअ १, १, ४, २, ४, णदि, आचा, सम १३२)।
णिइव वि [निष्कृप] निर्दय, कठोर (प्राकृ २६)।
णिउअ वि [निवृत] परिवेष्टित, परीक्षित (हे १, १३१)।
णिउअ वि [नियुत] सुसंगत, सुश्लिष्ट (णाया १, १८)।
णिउंचिअ वि [निकुञ्चित] सकुचित, सकुचा हुआ, थोडा मुडा हुआ (गा ५६३, से ६, १६, पाअ, स ३३५)।
णिउंज सक [नि+युज्] जोडना, सयुक्त करना, किसी कार्य मे लगाना। कर्म णिउ-जीअमि (पि ५४६)। वकृ णिउजमाण (सूअ १,१०)। सकृ निउंजिऊण, निउजिय (स १०४, महा)। कृ णिउजियव्व, णिउत्तव्व (उप पृ १०, कुमा)।
णिउंज पुं [निकुञ्ज] १ गहन, लता आदि से निविड स्थान (कुमा, गा २१७)। २ गह्वर (दे ६, १२३)।
णिउंभ पु [निकुम्भ] कुम्भकर्ण का एक पुत्र (से १२, ६२)।
णिउंभिला स्त्री [निकुम्भिला] यज्ञ-स्थान (से १५, ३६)।
णिउक्क वि [दे] तूष्णीक, मौन रहनेवाला (दे ४, २७, पाअ)।
णिउक्कण पु [दे] १ वायस, काक, कौआ। २ वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन (दे ४,५१)।
णिउज्ज न [न्युब्ज] आसन-विशेष (णंदि १२८ टी)।
णिउज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित, आलसी (सूअ २, २)।
णिउड्ड अक [मस्ज्, नि+ब्रुड्] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ (हे १, १०१)। वकृ णिउड्डमाण (कुमा)।
णिउड्ड वि [मग्न, निब्रुडित] डूबा हुआ, निमग्न (से १०, १५, १५, ७४)।
णिउण वि [निपुण] १ दक्ष, चतुर, कुशल (पाअ, स्वप्न ५३, प्रासू ११, जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके (जो २, राय)। ३ क्रिवि दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से (जीव ३)।
णिउण वि [निपुण] १ नियत गुणवाला। २ निश्चित गुण से युक्त (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत (पचा ४)।
णिउणिय वि [नैपुणिक] निपुण, दक्ष, चतुर (ठा ६)।
णिउत्त वि [नियुक्त] १ व्यापारित, कार्य मे लगाया हुआ (पंचा ८)। २ निबद्ध (विसे ३८८)।

णिउत्त वि [निवृत्त] विरत, उपरत, निवृत्त, विरक्त (प्राह ८)।

णिउत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, सिद्ध (उत्तर १०८)।

णिउत्तव्व देखो णिउंज = नि + युज्।

णिउत्ति स्त्री [निवृत्ति] विराम (प्राह ८)।

णिउद्ध न [नियुद्ध] बाहु-युद्ध, कुश्ती (उप २६७)।

णिउर पुं [निपुर] वृक्ष-विशेष (णाया १, ९ पत्र १६०)।

णिउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभरण, पैंजनी, पायल (हे १, १२३, कुमा)।

णिउर वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ जीर्ण, पुराना (दे)।

णिउरंब न [निकुरम्ब] समूह, जत्था (पाअ, सुर ३, ६१, गा ४८०, सुपा ११८)।

णिउरुंब न [निकुरम्ब] समूह, जत्था (से ८३०, गा ८६५ अ, वि १८७)।

णिउल पुं [दे] गाँठ, गठरी, 'एअं बहु मणि-रयण सणाहिओ दरिद्दो णिउलोत्ति' (महा)।

णिउड वि [निगूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (पउम ८१)।

णिउत्त वि [नियत] नियम-युक्त, 'अणिए-यचारी' (सूअ १, ६, ६)।

णिओग देखो णिअड = निज (आचम)।

णिओज सक [नि + योजय्] किसी कार्य में लगाना। णिओजेदि (शौ) (नाट—विक्र ११)।

णिओअ देखो णिओग (स ८, २६, अभि ३०, पउम ४ ६८)। १० आज्ञा, आदेश (स २१८)।

णिओइअ वि [नियोजित] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ (स ४८२, महा, ६६)।

णिओगि वि [नियोगिन्] नियोग-सम्बन्धी (आव ६)।

णिओग पुं [निगोद] [illegible] (सूअ १, १, ११, ९)।

णिओग पुं [नियोग] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य (विसे ३०३६ टी)। २ व्यापार, [illegible] (... १)। ३ [illegible], सूत्र की व्याख्या (विसे) ४ व्यापार, कार्य (पव २)। ५ अधिकार-प्रेरण (महा)। ६ राजा, नृप, आज्ञा विधाता (जीत)। ७ गाँव, ग्राम। ८ क्षेत्र, भूमि (बृह १)। ९ नयम, त्याग (सूअ १, १६)। देखो णिओअ। °पुर न [°पुर] १ राजधानी। २ देश, राष्ट्र। ३ राज्य (जीव)।

णिओगि वि [नियोगिन्] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त अधिकारी, अधिकारी (सुपा ३७१)।

णिओजिय देखो णिओइअ (आचम)।

णित
णितूण } देखो णी = गम्।

णिंद सक [निन्द्] निन्दा करना, बुराई करना, जुगुप्सा करना। णिंदामि (पडि)। वकृ णिंदंत (श्रा ३६)। कवकृ णिंदिज्जंत (सुपा ३६३)। संकृ णिंदित्ता णिंदिअ (आचा २, ३, १, १, श्रा ४०)। हेकृ णिंदिउं, णिंदित्तए (महा, ठा २, १)। कृ णिंदियव्व, णिंद-णिज्ज (पण्ह २, १, उव १०३१ टी, णाया १, ३)।

णिंद वि [निन्द्य] निन्दा योग्य, निन्दनीय (प्राप्र १)।

णिंद (अप) स्त्री [निद्रा] नींद, निद्रा (भवि)।

णिंदण न [निन्दन] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (उप ७४६, ७२८ टी)।

णिंदणया देखो णिंदणा (उत्त २६, १)।

णिंदणा स्त्री [निन्दना] निन्दा, जुगुप्सा (श्रौप, श्राव ८६१, पण्ह २, १)।

णिंदय वि [निन्दक] निन्दा करनेवाला (पउम ६०, २१)।

णिंदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा (श्राव ८)।

णिंदिअ वि [निन्दित] जिसकी निन्दा की गई हो वह, बुरा (गा २६७, प्रासू १५८)।

णिंदिणी स्त्री [दे] कुत्सित तृण का उखाड़ना (दे ४, ३४)।

णिंदु स्त्री [निन्दु] मृत बच्चा स्त्री, जिसका बच्चा जीवित न रहता हो ऐसी स्त्री (स १८, गा ३६)।

णिंब पुं [निम्ब] नीम का पेड़ (दे १, २३०, प्रासू ३६)।

णिंबोलिया स्त्री [निम्बगुलिका] नीम का फल (णाया १, १६)।

णिकर पुं [निकर] समूह, जत्था, राशि, ढेर, (कप्पू)।

णिकरण न [निकरण] १ निश्चय, निर्णय। २ निकार, दुःख-उत्पादन (आचा)।

णिकरिअ वि [निकरित] सारीकृत, सर्वथा संशोधित (ओप)।

णिकस देखो णिहस (अणु २१२)।

णिकाइय वि [निकाचित] १ व्यवस्थापित, नियमित (णादि)। २ अत्यन्त निबिड रूप से बँधा हुआ (कर्म) (उव, सुपा ५७६)। न कर्मों का निबिड रूप से बन्धन (ठा ४, २)।

णिकाम सक [नि + कामय्] अभिलाष करना। णिकामएज्जा (सूअ १, १०, ११)। वकृ णिकामयंत (सूअ १, १०, ११)।

णिकाम न [निकाम] हमेशा परिमाण से ज्यादा खाया जाता भोजन (पिंड ६४५)।

णिकाम न [निकाम] १ निश्चय, निर्णय। २ अत्यन्त, अतिशय (सूअ १, १०)।

णिकाममीण वि [निकाममीण] अत्यन्त प्रार्थी (सूअ १, १०, ८)।

णिकाय सक [नि + काचय्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ निबिड रूप से बाँधना। ३ निमन्त्रण देना। णिकाएति (भग)। भूका णिकाइंसु (भग, सूअ २, १)। भवि. णिकाइस्संति (भग)। संकृ णिकाय (आचा)।

णिकाय पुं [निकाय] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि (ओघ ४०७, विसे ६००, द २८)। २ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °काय पुं [°काय] जीव राशि छह प्रकार के जीवों का समूह (दस ८)।

णिकाय पुं [निकाच] निमन्त्रण, न्योता (उप २१)।

णिकाय देखो णिकाइय, 'जेण समासेविया पावगा कम्माणवि निकायाण' (सिरि १२६२)।

णिकायण न [निकाचन] निमन्त्रण (वि ४५५)।

णिकायणा स्त्री [निकाचना] १ कर्म-निबिड, जिससे कर्म का निविड बन्ध होता है (विसे २५१५ टी, भग)। २ निबिड बन्धन। ३ दान, निमन्त्रण (राज)।

णिर्कित सक [नि + कृत्] काटना, छेदना। णिर्कितइ (पुष्फ ३३७, उव)। णिकिंतए, (उव, काल)।

णिकिंतय वि [निकर्तक] काट डालनेवाला (काल)।

णिकुट्ट सक [नि + कुट्ट] १ कूटना। २ काटना। णिकुट्टेइ, णिकुट्टेमि (उवा)।

णिकूणिय वि [निकूणित] टेढा किया हुआ, वक्र किया हुआ (दे १, ८८)।

णिकेअ पुं [निकेत] गृह, आश्रय, निवास-स्थान (णाया १, १६, उत्त २, आचा)।

णिकेयण न [निकेतन] ऊपर देखो (सुर १३, २१, महा)।

णिकोय पुं [निकोच] सकोच, सिमट (दे ७, १५)।

णिक्क वि [दे] सुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित (णाया १, १)।

णिक्क देखो णिक्ख = निष्क (प्राकृ २१)।

णिक्कइअव वि [निष्कैतव] १ कपट-रहित, निर्माय (कुमा)। २ कपट का अभाव, निष्कपटपन (गा ८५)।

णिक्कंकड वि [निष्कङ्कट] १ आवरण-रहित (औप)। २ उपघात-रहित (सम १३७)।

णिक्कंखि वि [निष्काङ्क्षिन्] अभिलापा-रहित (उत्त १६, ३४)।

णिक्कंखिय न [निष्काङ्क्षित] १ आकांक्षा का अभाव। २ दर्शनान्तर की अनिच्छा (उत्त २, पडि)।

णिक्कंखिय वि [निष्काङ्क्षित, °क] १ आकांक्षा-रहित। २ दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित (सूअ २, ७, औप, राय)।

णिक्कंचण वि [निष्काञ्चन] सुवर्ण-रहित, धन-रहित, नि स्व, निर्धन (सुपा १६८)।

णिक्कंटय वि [निष्कण्टक] कण्टक-रहित, वाधारहित, शत्रु-रहित (सुपा २०८)।

णिक्कंड वि [निष्काण्ड] १ काण्ड रहित, स्कन्ध-वर्जित, २ अवसर-रहित (गा ४६८)।

णिक्कंत वि [निष्क्रान्त] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (से १, ५६)। २ जिसने दीक्षा ली हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत (आचा)।

णिक्कंतार वि [निष्कान्तार] अरण्य से निर्गत, (ठा ३, १)।

णिक्कंति स्त्री [निष्क्रान्ति] निष्क्रमण, बाहर निकलना (प्राकृ २१)।

णिक्कंतु वि [निष्क्रमितृ] बाहर निकलने-वाला (ठा ३, १)।

णिक्कंद सक [नि + कन्द] उन्मूलन करना। निक्कंदइ (सम्मत्त १७४)।

णिक्कंप वि [निष्कम्प] कम्प-रहित, स्थिर (हे २, ४, अभि २०१)।

णिक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चचल (दे ४, ३३, पाअ)।

णिक्कट्ठ वि [निष्कृष्ट] कृश, दुर्बल, क्षीण (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

णिक्कड वि [दे] १ कठिन (दे ४, २६)। २ पु. निश्चय, निर्णय (षड्)।

णिक्कड्ढिअ वि [निष्कृष्ट, निष्कर्षित] बाहर खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ (स ६०, २१५)।

णिक्कण वि [निष्कण] धान्य-कण-रहित, अत्यन्त गरीब (विपा १, ३)।

णिक्कम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, सन्यास लेना। णिक्कमामि (पि ४८१)। वकृ णिक्कमंत (हेका ३३२, मुद्रा, ८२)।

णिक्कम पु [निष्क्रम] नीचे देखो (नाट—मुद्रा २२४)।

णिक्कमण न [निष्क्रमण] १ निर्गमन, बाहर निकलना (मुद्रा २२४)। २ दीक्षा, सन्यास (आचा)।

णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] कर्मरहित, मुक्ति-प्राप्त, मुक्त (द्रव्य १४)।

णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] १ कार्य-रहित, निकम्मा (गा १६६)। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ संवर, कर्मों का निरोध, (आचा)।

णिक्कय पु [निष्क्रय] १ वदला, उत्क्रयापन (सुपा ३४१, पउम ७, १२६)। २ भृति, वेतन, मजूरी (हे २, ४)।

णिक्करण न [निकरण] १ तिरस्कार। २ परिभव। ३ विनाश (सवोध १६)।

णिक्करुण वि [निष्करुण] करुणा-रहित, दया वर्जित (नाट—मालती ३२)।

णिक्कल वि [निष्कल] कला-रहित (सुपा १)।

णिक्कल वि [दे] पोलापन से रहित (सुपा १, भग १५)।

णिक्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलक-रहित, वेदाग (स ४१८, महा, सुपा २५३)।

णिक्कलुण देखो णिक्करुण (पण्ह १, १)।

णिक्कलुस वि [निष्कलुप] १ निर्दोष, निर्मल। २ निरुपद्रव, उपद्रव-रहित (से १२, ३४)।

णिक्कवड वि [निष्कपट] कपट-रहित (उप पृ १६०)।

णिक्कवय वि [निष्कवच] कवच-रहित, वर्म-वर्जित (ठा ४, २)।

णिक्कस अक [निर् + कस्] बाहर निकलना। णिक्कसे (सूअ १, १४, ४)।

णिक्कस सक [निर + कस्] निकासना, वाहर निकालना। कर्म णिक्कसिज्जइ (उत्त १)।

णिक्कसण न [निष्कसन] निर्गमन (राज)।

णिक्कसाय वि [निष्कपाय] १ कपाय-रहित, क्रोधादि वर्जित (आउ)। २ पु भरत-क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर-देव (सम १५३)।

णिक्का स्त्री [नीका] वाम-नासिका (कुमा)।

णिक्काम वि [निष्काम] अभिलापा-रहित

णिक्कारण वि [निष्कारण] १ कारण-रहित, अहेतुक (सुर २, ३६)। २ क्रिवि. विना कारण (आव ६)।

णिक्कारण वि [निष्कारण] निरुपद्रव, 'नेस निक्कारणो दहो' (पिंड ५१६)।

णिक्कारणिय वि [निष्कारणिक] कारण-रहित, हेतु-शून्य (ओघ ५)।

णिक्कारिम वि [निष्कारण] विना कारण (आख्यानक० २३ अधिकार, भावदेयाकथा, पद्य ५२५)।

णिक्काल सक [निर् + कासय्] बाहर निकालना। सकृ निक्कालेउ (सुपा १३)।

णिक्कालिअ देखो णिक्कासिय (ती १५)।

णिक्कास पु [निष्कास] नीकास, वाहर निका-लना (धर्मवि १४६)।

णिक्कासिय वि [निष्कासित] वाहर निकाला हुआ (राज)।

णिक्किंचण वि [निष्किञ्चन] निर्धन, घर-रहित, नि स्व, गरीब (आवम)।

णिकिट्ठ वि [निकृष्ट] अधम, नीच, हीन, जघन्य 'उक्किट्ठमज्झिमनिकिट्ठयाणि महा' (श्रा १८, २३, सुपा ५०१, गच्छ १५८)।

णिकिण सक [निर्+क्री] निष्क्रय करना, खरीदना। णिकिणाति (सूअ ६१)।

णिक्किमिम वि [निष्क्रमिम] अकृत्रिम, स्वाभाविक (उर ६८६ टी)।

णिक्किरिय वि [निष्क्रिय] क्रिया-रहित, अक्रिय (पण्ह १, २)।

णिक्किव वि [निष्कृप] कृपा-रहित, निर्दय (पाअ, सा ३०, सुपा ८०६)।

णिक्कीलिय वि [निष्क्रीडित] गमन, गति (पव २०१)।

णिक्कुट्ट पु [निष्कुट्ट] ताडन, तपाना (राज)।

णिक्कूडल स्त्री [दे] जीता हुआ, विनिर्जित (दे १, ४)।

णिक्कोडण न [निष्कोटन] बन्धन-विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

णिक्कोर सक [निर्+कोरय्] १ दूर करना। २ पात्र आदि के मुँह का बंद करना। ३ पात्र आदि का लेपन करना। णिक्कोरेइ (बृह १)।

णिक्कोरण न [निष्कोरण] १ पात्र आदि के मुँह का बंद करना। २ पात्र आदि का लेपन (बृह १)।

णिक्ख पु [दे] १ चोर। २ सुवर्ण, काञ्चन (दे ४, ५०)।

णिक्ख पुन [निष्क] दीनार, मोहर, मुद्रा, [illegible] (हे २, ४)।

णिक्खंत देखो णिक्खंत (सूअ १, ८ [illegible])।

णिक्ख[illegible] वि [[illegible]] [illegible] (स ६६८ टी)।

णिक्खणण न [निखनन] गाड़ना (सूअ १११)।

णिक्खत्त वि [निःक्षत्र] क्षत्रिय-रहित, [illegible] (ति ३११)।

णिक्खम सक [निर्+क्रम्] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। णिक्खमइ (महा)। णिक्खमंति (कप्प)। भूका णिक्खमिंसु (कप्प)। वकृ णिक्खा-मित्तवित (कप्प)। वकृ णिक्खममाण (णाया १, ५, पउम २२, १७)। संकृ णिक्खम्म (कप्प)। हेकृ णिक्खमित्तए (कप्प, कस)।

णिक्खम पुन [निष्क्रम] १ निर्गमन। २ दीक्षा-ग्रहण (ठा १०, दस १०)।

णिक्खमण न [निष्क्रमण] ऊपर देखो (सुत्र १३, णाया १, १६, पउम २३, ४)।

णिक्खय वि [निखात] गाडा हुआ (कुप्र २५)।

णिक्खय वि [दे. निक्षत] निहत, मारा हुआ (दे ४, ३२, पाअ)।

णिक्खविअ वि [निक्षपित] नष्ट किया हुआ, विनाशित (अच्चु ३१)।

णिक्खसरिअ वि [दे] मुषित, जो लूट लिया गया हो, अपहृत सार (दे ४, ४१)।

णिक्खाविअ वि [दे] शान्त, उपशम-प्राप्त (षड्)।

णिक्खित्त वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित (पाअ, पण्ह १, ३)। २ मुक्त, परित्यक्त (णाया १, १, वव २)। ३ पाक-भाजन में स्थित (पण्ह २, १)। °चर वि [°चर] पाक-भाजन में स्थित वस्तु की भिक्षा के लिए खोज करनेवाला (पण्ह २, १, औप)।

णिक्खिप्पमाण नीचे देखो।

णिक्खिव सक [नि+क्षिप्] १ स्थापन करना, न्यस्त करना, रखना। २ परित्याग करना। णिक्खिवइ (महा)। णिक्खिवंत (निचू १६)। कवकृ णिक्खिप्पमाण (आचा)। संकृ णिक्खिवित्ता, णिक्खिविअ, णिक्खिविउ (कप्प, पि ३१६, नाट—विक्र १०३ पण १)। कृ णिक्खिवियव्व, णिक्खेवव्व (पण्ह १, १, विसे ६१८)।

णिक्खिव सक [नि+क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरूपण करना। निक्खिवे (अणु १०)। भवि णिक्खिविस्सामि (अणु १०)।

णिक्खिव पु [निक्षेप] १ स्थापन। २ न्यास-स्थापन, धरोहर, धन आदि जमा रखना (भग १८)।

णिक्खिवण न [निक्षेपण] १ स्थापन। २ डालना (सुपा ६२६, पडि)।

णिक्खुड वि [दे] अकम्प, स्थिर (दे ४, २८)।

णिक्खुड पुन [निष्कुट] १ कोटर, खोखला, विवर (तंदु २६)। २ पृथिवी-खण्ड (विसे १५३८, पच २, ३२)। ३ गृहाराम, उपवन, घर के पास का बगीचा (राय २५)।

णिक्खुड पु [निष्कुट] भूमि-खण्ड (विसे १५३८)।

णिक्खुत्त न [दे] निश्चित नक्की, चोक्खस, अवश्य, 'पत्ते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्तं' (पउम ५३, १३८), 'वत्ता दाहामि निक्खुत्तं' (पउम १०, ८५)।

णिक्खुरिअ वि [दे] अदृढ, अस्थिर (दे ४, ४०)।

णिक्खेड पु [निष्खेट] अधमता, नीचता, दुष्टता (सुपा २७६)।

णिक्खेत्तव्व देखो णिक्खिव = नि + क्षिप्।

णिक्खेव पुं [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन (अणु)। २ परित्याग, मोचन (आचा २, १, १, १)। ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना (पउम ६२, ६)।

णिक्खेवण न [निक्षेपण] १ निक्षेप, स्थापन (पव ६)। २ व्यपस्थापन, नियमन (विसे ६१२)।

णिक्खेवणया } स्त्री [निक्षेपणा] स्थापना, विन्यास (उवा, कप्प)।
णिक्खेवणा }

णिक्खेवय पु [निक्षेपक] निगमन, उपसंहार (बृह १)।

णिक्खेविय वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित। २ मुक्त, परित्यक्त (भग)।

णिक्खेविय वि [निक्षेपित] ऊपर देखो (भवि)।

णिक्खोभ } पु [नि क्षोभ] क्षोभ-रहित, निष्कम्प (सम १०६, पउ ८७)।
णिक्खोह }

णिखय देखो णिक्खय (कुप्र २२३)।

णिखव्व न [निखर्व] संख्या-विशेष, सौ खर्व की संख्या (राज)।

णिखिल वि [निखिल] सर्व, सकल, सब (अणु, नाट—महावीर ६७)।

णिगंठ देखो णिग्गंठ (सिरि १३३२)।

णिगड सक [निगडय्] नियन्त्रित करना, बाँधना। संकृ निगडिऊण (कुप्र १८७)।

णिगडिय वि [निगडित] नियन्त्रित (हम्मीर ३०)।

णिगढ पुं [दे] घर्म, घाम, गरमी (दे ४, २७)।

णिगण वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (सूअ १, २, १, ६)।

णिगद सक [नि + गद्] १ कहना। २ पढना, अभ्यास करना। वकृ णिगदमाण (विसे ८५०)।

णिगम पुं [निगम] १ प्रकृष्ट बोध (विसे १२८७)। २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहा व्यापारी, विशेष संख्या मे रहते हो ऐसा शहर आदि (पराह १, ३, औप, आचा)। ३ व्यापारि-समूह (नम ५१)।

णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसहार (दसनि १)।

णिगमिअ वि [दे] निवासित (षड्)।

णिगर पुं [निकर] समूह, राशि, जत्था (विपा १, ६, उवा)।

णिगरण न [निकरण] कारण, हेतु (भग ७, ७)।

णिगरिय वि [निकरित] सर्वथा शोधित (पराह १, ४)।

णिगल देखो णिअल। २ बेडी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष (ओप)।

णिगलिय देखो णिगरिय (जं २)।

णिगाम देखो णिकाम = निकाम (पिंड ६४५)।

णिगाम न [निकाम] अत्यन्त, अतिशय (ठा ५, २, श्रा १६)।

णिगास पु [निकर्ष] परस्पर सयोजन, मिलाना, जोड (भग २५, ७)।

णिगिज्झिय देखो णिगिण्ह।

णिगिट्ठ देखो णिकिट्ठ (सुपा १८३)।

णिगिण वि [नग्न] नग्न, नंगा (आचा २, २, ३, २, ७, १, पि १३३)।

णिगिणिण न [नाग्न्य] नंगापन, नग्नता (उत्त ५, २१, सुख ५, २१)।

णिगिण्ह सक [नि + ग्रह्] १ निग्रह करना, दराड करना, शिक्षा करना। २ रोकना। ३ अक बैठना, स्थिति करना। सकृ. णिगिज्झिय, णिग्घेडं (ठा ७, कप्प, राज)। कृ णिगिण्हियव्व (उप पृ २३)।

णिगुंज अक [नि + गुञ्ज्] १ गूँजना, अव्यक्त शब्द करना। २ नीचे नमना। वकृ. णिगुंजमाण (णाया १, ६—पत्र १५७)।

णिगुंज देखो णिउञ्ज = निकुञ्ज (आवम)।

णिगुण वि [निगुण] गुण-रहित (पराह १, २)।

णिगुरंब देखो णिउरंब (पराह १, ४)।

णिगूढ वि [निगूढ] १ गुप्त, प्रच्छन्न (कप्प)। २ मोनी, मौन रहनेवाला (राज)।

णिगूह सक [नि + गुह्] छिपाना, गोपन करना। णिगूहइ (उव, महा)। णिगूहति (सट्ठि ३२)। सकृ णिगूहिऊण (स ३३५)।

णिगूहण न [निगूहन] गोपन, छिपाना (पचा १५)।

णिगूहिअ वि [निगूहित] छिपाया हुआ, गोपित (सुपा ५१८)।

णिगोअ पु [निगोद] अनन्त जीवो का एक साधारण शरीर-विशेष (भग, पराण १)। °जीव पुं [°जीव] निगोद का जीव (भग २५, ६, कम्म ४, ८५)।

णिग्ग देखो णिग्गम = निर् + गम्। वकृ णिग्गंत (भवि)।

णिग्गठिद (शौ) वि [निग्रथित] गुम्फित, ग्रथित (पि ५१२)।

णिग्गतुं } देखो णिग्गम = निर् + गम्।
णिग्गतूण }

णिग्गंथ देखो णिअंठ (औप, ओघ ३२८, प्रासू १३६, ठा ५, ३)।

णिग्गंथ वि [नैर्ग्रन्थ] निर्ग्रन्थ-सम्बन्धी (णाया १, १३, उवा)।

णिग्गंथी स्त्री [निर्ग्रन्थी] जैन साध्वी (णाया १, १, १४, उवा, कप्प, औप)।

णिग्गच्छ } अक [निर् + गम्] बाहर
णिग्गम } निकलना। णिग्गच्छइ (उवा, कप्पू)। वकृ. णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण (सुपा ३३०, णाया १, १, सुपा ३५६)। सकृ. णिग्गच्छित्ता, णिग्गंतूण (कप्प, स १७)। हेकृ. णिग्गतुं (उप ७२८ टी)।

णिग्गम पुं [निर्गम] १ उत्पत्ति, जन्म (विसे १५३६)। २ बाहर निकलना (से ६, ३६, उप पृ ३३२)। ३ द्वार, दरवाजा (से २, २)। ४ बाहर जाने का रास्ता (से ८, ३३)। ५ प्रस्थान, प्रयाण (बृह १)।

णिग्गमण न [निर्गमन] १ नि सरण, बाहर निकलना (णाया १, २, सुपा ३३२, भग)। २ पलायन, भाग जाना। ३ अपक्रमण (वव १)।

णिग्गमिअ वि [निर्गमित] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित (श्रा १६)।

णिग्गमिय वि [निर्गमित] गमाया हुआ, पसार किया हुआ (सम्मत्त १२३)।

णिग्गय वि [निर्गत] नि सृत, बाहर निकला हुआ (विसे १५४०, उवा)। °जस वि [°यशस्] जिसका यश बाहर मे फैला हो (णाया १, १८)। °मोअ वि [°मोद] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो (पाअ)।

णिग्गय वि [निर्गज] हाथी-रहित (भवि)।

णिग्गह देखो णिगिण्ह। कृ. णिग्गहियव्व (सुपा ५८०)।

णिग्गह पु [निग्रह] १ दराड, शिक्षा (प्रासू १७०, श्राव ६)। २ निरोध, अवरोध, रुकावट (भग ७, ६)। ३ वश करना, काबू मे रखना, नियमन (प्रासू ४८)। °ट्ठाण न [°स्थान] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान (ठा १, सूअ १, १२)।

णिग्गहण न [निग्रहण] १ निग्रह, शिक्षा, दराड (सुर १६, ७)। २ दमन, नियमन, नियन्त्रण (प्रासू १३२)।

णिग्गहिय वि [निगृहीत] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह (सं ११५)। २ पराजित पराभूत (आवम)।

णिग्गहीय देखो णिग्गहिय (सुख १, १)।

णिग्गा स्त्री [दे] हरिद्रा, हलदी (दे ४, २५)।

णिग्गाल पुन [निर्गाल] निचोड, रस, 'सीस-घडीनिग्गाल' (तदु ४१)।

णिग्गालिय वि [निर्गालित] गलाया हुआ (उप पृ ८४)।

णिग्गाहि वि [निग्राहिन्] निग्रह करनेवाला (उत्त २५, २)।

णिग्गिण्ण वि [दे. निर्गीर्ण] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (दे ४, ३६, पाअ)। २ वान्त, वमन किया हुआ (से ५, २६)।

णग्गिण्ह देखो णिगिण्ह। णिग्गिण्हामि (पि ३८२)।

णिग्गिलिअ वि [निर्गलित] वान्त, वमन किया हुआ (स ३४८)।

णिग्गुंडी स्त्री [निर्गुण्डी] औषधि विशेष, वनस्पति संभालू (पण्ण १)।

णिग्गुण वि [निर्गुण] गुण-रहित गुण-हीन (गा २०३, उव, पण्ह १, २, उप ७२८ टी)।

णिग्गुण्ण } न [नैर्गुण्य] गुण-रहितपन,
णिग्गुन्न } गुण-हीनता, निर्गुणता (वसु, भत्त १८)।

णिग्गूढ वि [निर्गूढ] स्थिर रूप से स्थापित (सम २ ७)।

णिग्गोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, बरगद, बड़ का पेड़ (पउम २०, ३६, पण्ह)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] शरीर-संस्थान विशेष, बड़ाकार शरीर का आकार (सम १४९, ठा ६)।

णिग्घंट }
णिग्घंटु } देखो णिघंटु (कप्प)।

णिग्घट्ट वि [दे] कुशल, निपुण, चतुर (दे ४, ३८)।

णिग्घण देखो णिग्घिण (विक्र १०२)।

णिग्घत्तिअ वि [दे] क्षिप्त, फेंका हुआ (पाअ)।

णिग्घाइअ वि [निर्घातित] १ आघात प्राप्त, [illegible]। २ [illegible], विनाशित (णाया १, १३)।

णिग्घाय पुं [निघात] [illegible] (पउम ६, २२४)।

णिग्घाय पुं [निर्घात] १ आघात '[illegible]' (सुपा [illegible])। २ [illegible] (स ३०४, जीव ३)। ३ [illegible] (ठा १०)। ४ [illegible] (सूअ १, १४)।

णिग्घायण न [निर्घातन] नाश, विनाश, [illegible] (सुपा ४०३)।

णिग्घिण वि [निर्घृण] निर्दय, करुणा-रहित (गा ४७२, पण्ह १, १, सुर २, ६१)।

[illegible] देखो णिगिण्ह।

णिग्घोर वि [दे] निर्दय, दया-हीन (दे ४, ३०)।

णिग्घोस पुं [निर्घोष] महान् अव्यक्त शब्द (पण्ह १, सम १५३)।

णिघंटु पुं [निघण्टु] शब्द-कोश, नाम संग्रह (औप, भग)।

णिघस पुं [निकष] १ कसौटी का पत्थर (अणु)। २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा (सुपा ३६१)।

णिचय पुं [निचय] संग्रह, संचय (सूअ १, १०, ६)।

णिचय पुं [निचय] १ समूह, राशि। २ उपचय, पुष्टि (ओघ ४०७, स ३६६, आचा, महा)।

णिचिअ वि [निचित] १ व्याप्त, भरपूर (अजि ५)। २ निबिड, पुष्ट (भग)।

णिचुल पुं [निचुल] वृक्ष-विशेष, वंजुल वृक्ष (स १११, कुमा)।

णिच्च वि [नित्य] १ अविनश्वर, शाश्वत (आचा, औप)। २ न. निरन्तर, सर्वदा, हमेशा (महा, प्रासू १५, १०१)। °च्छणिय वि [°क्षणिक] निरन्तर उत्सववाला (णाया १, ४)। °मंडिया स्त्री [°मण्डिता] जम्बू वृक्ष विशेष (इक)। °वाय पुं [°वाद] पदार्थों को नित्य माननेवाला मत, 'सुहदुक्खसपओगो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि' (सम १८)। °सो अ [°शस्] सदा, सर्वदा, निरन्तर (महा)। °लोअ, °लाग, °लोव पुं [°लोक] १ एक विद्याधर-राजा (पउम ६, ५२)। २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ न नगर-विशेष (पउम ६, ५२, टा)। ४ वि सदा प्रकाशवाला (कप्प)।

णिच्च देखो णीय = नीच (सम ५५)।

णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुस्] चक्षु रहित, नेत्र हीन, अन्धा (पउम ८२, ५१)।

णिच्चट्ट (अप) वि [गाढ] गाढ, निबिड (हे ४, ४२२)।

णिच्चय देखो णिच्छय (प्रयौ २१, पि ३०१)।

णिच्चर देखो णिच्चर। णिच्चरइ (हे ४, ३ टि)।

णिच्चल सक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना। णिच्चलइ (हे ४, १७३)। प्रयो णिच्चलावेइ (कुमा)।

णिच्चल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना। णिच्चलइ (हे ४, ९२ टि)। भूका णिच्चलीअ (कुमा)।

णिच्चल वि [निश्चल] स्थिर, दृढ, अचल (हे २, २१, ७७)। °पय न [°पद] मुक्ति, मोक्ष (पचव ४)।

णिच्चिंत वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित, बेफिक्र (विक्र ४३, प्रासू २७, सुपा २२५)।

णिच्चिट्ठ वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित (सुपा १४)।

णिच्चिद (शौ) देखो णिच्छिअ (पि ३०१)।

णिच्चुज्जोअ पुं [नित्योद्द्योत] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य की दक्षिण दिशा में स्थित एक अंजनगिरि (पव २६९)।

णिच्चुज्जोअ } वि [नित्योद्द्योत] १ सदा
णिच्चुज्जोव } प्रकाशयुक्त। २ पुं ग्रह विशेष ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३)। ३ न एक विद्याधर-नगर (इक)।

णिच्चुड्ड वि [दे] १ उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ (षड्)। २ निर्दय, दया-हीन (पाअ)।

णिच्चुव्विग्ग वि [नित्योद्विग्न] सदा खिन्न (दस ५, २)।

णिच्चेट्ठ देखो णिच्चिट्ठ (णाया १, २, सुर ३, १७२)।

णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित (महा)।

णिच्चोउया स्त्री [नित्यर्तुका] हमेशा रजस्वला रहनेवाली स्त्री (ठा ५, २)।

णिच्चोय सक [दे] निचोड़ना। णिच्चोयइ (कुप्र २१५)।

णिच्चोरिक्क न [निश्चौर्य] १ चोरी का अभाव। २ वि चोरी-रहित (उप १३९ टी)।

णिच्छइय वि [नैश्चयिक] १ निश्चय-सम्बन्धी। २ पुं निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम वाद (विसे)।

णिच्छउम वि [निश्छद्मन्] १ कपट-रहित, माया-वर्जित (गउड ८०, सुपा २५०)। २ क्रिवि बिना कपट (गउड ५१)।

णिच्छक्क वि [दे] १ निर्लज्ज, बेशरम, धृष्ट, ढीठ (कुप्र १, पव ५)। २ अवसर को नहीं जाननेवाला, अप्रसंगज्ञ (राज)।

णिच्छम्म देखो णिच्छउम (उत्र, सार्ध १४५)।

णिच्छय सक [निर् + चि] निश्चय करना, निर्णय करना। वकृ णिच्छयमाण (उप ७२८ टी)।

णिच्छय पुं [निश्चय] १ निश्चय, निर्णय (भग, प्रासू १७७)। २ नियम, अविनाभाव (राज)। ३ नय-विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही माननेवाला मत, परिणाम-वाद (बृह ४, पचा १३)। °कहा स्त्री [°कथा] अपवाद (निचू ५)।

णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना। णिच्छल्लइ (हे ४, १२४)।

णिच्छल्लिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा, स २५८, गउड)।

णिच्छाय वि [निश्छाय] कान्ति-रहित, शोभा-हीन (पण्ह १, २)।

णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-रहित, 'निच्छारयछारयधूलीए' (श्रा २७)।

णिच्छिड्ड वि [निश्छिद्र] छिद्र-रहित (णाया १, ६, उप २११ टी)।

णिच्छिण्ण वि [निच्छिन्न] पृथक्-कृत, अलग किया हुआ, काटा हुआ (विसे २७३)।

णिच्छिद्द देखो णिच्छिड्ड (स ३५०)।

णिच्छिन्न देखो णिच्छिण्ण (पुप्फ ४६३, महा)।

णिच्छिय वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत, असंदिग्ध (णाया १, १, महा)।

णिच्छीर वि [नि क्षीर] क्षीर रहित, दुग्ध-वर्जित (पण्ण १)।

णिच्छुड वि [दे] निर्दय, करुणा-रहित (दे ४, ३२)।

णिच्छुट्ट वि [निश्छुटित] निर्मुक्त, छूटा हुआ (सुर ६, ७२)।

णिच्छुभ सक [नि + क्षिप्] १ बाहर निकालना। फेंकरना। णिच्छुभइ (भग)। कर्म णिच्छुब्भइ (पि ६६)। कवकृ. णिच्छुब्भमाण (विपा १,२)। संकृ णिच्छुभित्ता, णिच्छुभिउं (भग, निर १, १)। प्रयो. णिच्छुभावेइ (णाया १, ८)।

णिच्छुभ पुं [निक्षेप] निष्कासन (पिंड ३७५)।

णिच्छुभण न [निक्षेपण] नि सारण, निष्कासन (निचू १)।

णिच्छुभाविय वि [निक्षेपित] निस्सारित, बाहर निकाला हुआ (णाया १, ८)।

णिच्छुह सक [नि + क्षिप्] डालना। निच्छुहइ (सुख ७, ११)।

णिच्छुहणा स्त्री [निक्षेपणा] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना (णाया १, १६ टी—पत्र २००)।

णिच्छूढ वि [निक्षिप्त] १ उद्‌वृत्त, निर्गत (हे ४, २५८)। २ फेंका हुआ, निक्षिप्त (प्रामा)। ३ निस्सारित, निष्कासित (णाया १, ८—पत्र १४६, १, १६—पत्र १६६)।

णिच्छूढ न [निष्ठ्यूत] थूक, खखार (विसे ५०१)।

णिच्छोड सक [निर् + छोटय्] १ बाहर निकलने के लिए धमकाना। २ निर्भर्त्सन करना। ३ छुड़वाना। णिच्छोडेइ, णिच्छोडेंति (णाया १, १६, १८)। णिच्छोटेज्जा (उवा)। संकृ. णिश्छोडइत्ता (भग १५)।

णिच्छोडग न [निश्छोटन] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी (उव)।

णिच्छोडणा स्त्री [निश्छोटना] ऊपर देखो (णाया १, १६—पत्र १६६)।

णिच्छोडिअ वि [निश्छोटित] सफा किया हुआ (पिंड २७६)।

णिच्छोल सक [निर् + तक्ष्] छीलना, छाल उतारना। निच्छोलेइ (निचू १)। वकृ. णिच्छोलत (निचू १)। संकृ. निच्छोलिऊण (महा)।

णिजंतिय वि [नियन्त्रित] नियमित, अकुंशित (सुर ३, ४)।

णिजिण्ण देखो णिज्जिण्ण (ठा ४, १)।

णिजुंज देखो णिउज = नि + युज्। निजुजइ (कुप्र ३४८)।

णिजुद्ध देखो णिउद्ध (निचू १२)।

णिजोजण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य मे लगाना, भारअर्पण (उप १७६ टी)।

णिजोजिय देखो णिओइय (उप १७६ टी)।

णिज्ज वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४, २५, पड्)।

णिज्जत देखो णी = नी।

णिज्जण वि [निर्जन] १ विजन, मनुष्य-रहित, सुनसान। २ न. एकान्त स्थान (गउड)।

णिज्जप्प वि [निर्याप्य] १ निर्वाह-कारक। २ निर्बल, बल को नही बढानेवाला, 'अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइ' (पण्ह २, ५)।

णिज्जर सक [निर् + जॄ] १ क्षय करना, नाश करना। २ कर्म-पुद्गलो को आत्मा से अलग करना। णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिजरेंति (भग, ठा ४, १)। भूका. णिज्जरिंसु, णिज्जरेसु (पि ५७६, भग)। भवि. णिज्जरिस्सति (ठा ४, १)। वकृ. णिज्जरमाण (भग १८, ३)। कवकृ णिज्जरिज्जमाण (ठा १०, भग)।

णिज्जरण न [निर्जरण] नीचे देखो (औप)।

णिज्जरणा स्त्री [निर्जरणा] १ नाश, क्षय। २ कर्म-क्षय, कर्म-नाश। ३ जिससे कर्मो का विनाश हो ऐसा तप (नव १, सुर १४, ६५)।

णिज्जरा स्त्री [निर्जरा] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश (आचा, नव २४)।

णिज्जरिय वि [निर्जीर्ण] क्षीण, विनाश-प्राप्त (तद्)।

णिज्जव वि [निर्याप] निर्वाह करानेवाला (पचा १५, १४)।

णिज्जवग वि [निर्यापक] १ निर्वाह करनेवाला। २ आराधक, आराधन करनेवाला (ओघ २८ भा)। ३ पु. जैनमुनि-विशेष, जो शिष्य के भारी प्रायश्चित्त का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निवाह सके (ठा ८, भग २५, ७)।

णिज्जवणा स्त्री [निर्यापना] १ निगमन, दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण (विसे २६३२)। २ हिंसा (पण्ह १, १)।

णिज्जवय देखो णिज्जवग (ओघ २८ भा टी, द्र ४६)।

णिज्जविउ वि [निर्यापयितृ] ऊपर देखो (पव ६४)।

णिज्जा अक [निर् + या] बाहर निकालना। णिज्जायति (भग)। भवि. णिज्जाइस्सामि (औप)। वकृ. णिज्जायमाण (ठा ५, ३)।

णिज्जाण न [निर्याण] १ बाहर निकलना, [illegible] (ठा ५, ३)। २ आवृत्ति-रहित गमन (औप)। ३ मोक्ष, मुक्ति (आव ४)।

णिज्जाणिय वि [नैर्याणिक] निर्याण-सम्बन्धी, [illegible] (भग १३, ६ निर ८)।

णिज्जामग) पुं [निर्यामक] कर्णधार,
णिज्जामय) जहाज का निदवा (विसे २९९६ गाया १, १८, मान, पर १३, ८८)।

णिज्जामण न [निर्यापन] बदना चुकाना, [illegible] (वर १)।

णिज्जामय पु [निर्यामक] १ अनशन की [illegible] मुनि (पव ७१)। २ वि [illegible] (पव-गाथा १७)।

णिज्जामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया हुआ [illegible] (भग)।

णिज्जार पुं [दे] [illegible] (दे ४, ३४)।

णिज्जाय वि [निर्यात] निर्गत, निःसृत ([illegible] २८९)।

णिज्जायण न [निर्यातन] [illegible]-शुद्धि, बदला (भग)।

णिज्जायणा स्त्री [निर्यातना] ऊपर देखो (उप [illegible])।

णिज्जावय देखो णिज्जामय (भवि)।

णिज्जास पुं [निर्यास] [illegible] रस, गोंद, ([illegible] २, १)।

णिज्जिय वि [निर्जित] जीता हुआ, पराजित ([illegible] १८ [illegible] ६, ४६, भवि)।

णिज्जिण सक [निर् + जि] जीतना, पराभव करना। [illegible] संकृ. णिज्जिणिऊण, ([illegible])।

[illegible] णिज्जिय ([illegible] २१)।

णिज्जीव) वि [निर्जीव] [illegible] प्राण,
[illegible]) [illegible] ([illegible], ठा ५, १)।

[illegible] [निर्[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [निर् + जुष्] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [निर्[illegible]] १ [illegible] ([illegible])। २ [illegible] ([illegible])। ३ [illegible] ([illegible])।

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण, टीका (विसे ६६५, श्रोप २, सम १०७)।

णिज्जुद्ध देखो णिउद्ध (स ४७०)।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] १ निस्सारित, निष्कासित (णाया १, १—पत्र ६४) २ अमनोज्ञ, असुन्दर (ओघ ४४८)। ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित (दसनि १)।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] रहित, 'निट्ठाण रस-निज्जूढं' (दस ८, २२)।

णिज्जूह सक [निर् + यूह्] १ परित्याग करना। २ रचना निर्माण करना। कर्म णिज्जूहिज्जइ (पि २२१)। हेकृ णिज्जूहित्तए (वव २)। कृ णिज्जूहियव्व (कप्प)।

णिज्जूह पु [दे निर्यूह] १ नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, पटल (दे ४, २८, स १०६)। २ गवाक्ष, गोख, 'इय जाव चितए मती णिज्जूहट्ठिओ' (धम्म ६ टी, वव १)। ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष (णाया १, १—पत्र १२, पण्ह १, १)। ४ द्वार, दरवाजा (सुर २, ८३)।

णिज्जूहग वि [निर्यूहक] ग्रन्थान्तर से उद्धृत करनेवाला (दसनि १, १४)।

णिज्जूहण न [निर्यूहण] देखो णिज्जूहणा (उत्त ३६, २५१, वव २)।

णिज्जूहणया) स्त्री [निर्यूहणा] १ निस्सा-
णिज्जूहणा) रण, बाहर निकालना (वव १)। परित्याग (ठा ८, २)। ३ विरचना, निर्माण (विसे ५५२)।

णिज्जूहिअ देखो णिज्जूढ (दसनि १, १४)।

णिज्जूहिअ वि [निर्यूहित] रहित (पव १३८)।

णिज्जोअ पु [दे] १ प्रकार, राशि। २ पुष्पों का प्रकर (दे ४, ३३)।

णिज्जोअ) पुं [नियोग] १ उपकरण,
णिज्जोग) साधन (राय ८४, ८६, पिंड २६)। २ व्यापार (पिंड २६)।

णिज्जोअ) पुं [दे. निर्योग] परिकर,
णिज्जोग) समवाय 'रयणिज्जोगा' (ओघ ६६८, णाया १, १—पत्र ५८)।

णिज्जोमि पुं [दे] रज्जु रस्सी (दे ४, ३१)।

णिज्झर सक [निर् + झृ] [illegible] करना। णिज्झरइ (प्राक २८)।

णिज्झर अक [क्षि] क्षीण होना। णिज्झरइ (है ४, २०, पड्)। वकृ णिज्झरत (कुमा ६, १३)।

णिज्झर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६)।

णिज्झर पुं [निर्झर] झरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह (हे १, ९८, २, ९०)।

णिज्झरण न [निर्झरण] ऊपर देखो (पउम ६४, ५२, सुर ६, ६४, सुपा ३५५)।

णिज्झरणी स्त्री [निर्झरणी] नदी, तरंगिणी (कुमा)।

णिज्झा सक [नि+ध्यै] देखना, निरीक्षण करना। णिज्झाइ, णिज्झाअइ (हे ४, ६)। वकृ णिज्झाअत, णिज्झाएमाण (मा ४, आचा २, ३, १)। संकृ. णिज्झाइऊण, णिज्झाइत्ता (महा, आचा)।

णिज्झा सक [निर् + ध्यै] विशेष चिन्तन करना। संकृ णिज्झाइत्ता (आचा)।

णिज्झाइ वि [निध्यायिन्] देखनेवाला (आचा)।

णिज्झाइत्तु वि [निध्यातृ] देखनेवाला, निरीक्षक (उत्त १६, सम १५)।

णिज्झाइत्तु वि [निर्ध्यातृ] अतिशय चिन्तन करनेवाला (ठा ६)।

णिज्झाइय वि [निध्यात] १ दृष्ट, विलोकित (स ३५२, धण ४५)। २ न. दर्शन, निरीक्षण (महा—पृष्ठ ५८)।

णिज्झाडिय वि [निर्घाटित] विनाशित (उप ६४८ टी)।

णिज्झाय वि [दे] निर्दय, दया-रहित (दे ४, ३७)।

णिज्झाय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित (सुर ६, १८८, सुपा ४४८)।

णिज्झूर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६)।

णिज्झोड सक [छिद्] छेदना, काटना। णिज्झोडइ (हे ४, १२४)।

णिज्झोडण न [छेदन] छेदन, कर्तन (कुमा)।

णिज्झोसइत्तु वि [निर्झोषयितृ] क्षय करनेवाला, कर्मों का नाश करनेवाला (आचा)।

णिट्टक वि [दे] १ टङ्क-च्छिन्न। २ विषम, असमान ([illegible] ४, ५०)।

णिट्टंकिय वि [निष्टङ्कित] निश्चित, अव-धारित (सुपा २९०)।

णिट्टुअ अक [क्षर्] टपकना, चूना। णिट्टुअइ (हे ४, १७३)।

णिट्टुइअ वि [क्षरित] टपका हुआ (पात्र)।

णिट्टुह अक [वि + गल्] गल जाना, नष्ट होना। णिट्टुहइ (हे ४, १७५)।

णिट्ठ देखो णिट्ठा = नि + स्था। निट्ठइ (भवि)।

णिट्ठय } सक [नि + स्थापय्] १ समाप्त
णिट्ठव } करना, पूर्ण करना। २ अन्त करना, खतम करना। ३ विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना। भूका. णिट्ठवंसु (भग २६. १)। सक्र णिट्ठविअ (पिंग)। कृ णिट्ठयणिज्ज (उप ५६७ टी)।

णिट्ठवण न [निष्ठापन] १ अन्त करना, समाप्ति। २ वि नाश-कारक, खतम करनेवाला (सुपा १६१, गउड)। ३ समाप्त करनेवाला (जी ५)।

णिट्ठवय वि [निष्ठापक] समाप्त करनेवाला (आव ६)।

णिट्ठविअ वि [निष्ठापित] १ समाप्त किया हुआ (पच्च २)। २ विनाशित (से ६, १)।

णिट्ठा अक [नि + स्था] खतम होना, समाप्त होना। णिट्ठाइ (विसे ६२७)।

णिट्ठा स्त्री [निष्ठा] १ अन्त, अवसान, समाप्ति (विसे २८३३, सुपा १३)। २ सद्भाव (आचू १)। °भासि वि [°भाषिन्] निष्ठा-पूर्वक बोलनेवाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करनेवाला (आचा)।

णिट्ठाण न [निष्ठान] सर्व-गुण-युक्त भोजन (दस ८, २२)।

णिट्ठाण न [निष्ठान] १ दही वगैरह व्यञ्जन (ठा ४, २, पण्ह २, ५)। २ समाप्ति (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] भक्त-कथा-विशेष, दही वगैरह व्यञ्जन की बात-चीत (ठा ४, २)।

णिट्ठावण देखो णिट्ठवण (सुपा ३५७)।

णिट्ठिय वि [निष्ठित] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ (उप १०३१ टी, कम्म ४, ७४)। २ नष्ट किया हुआ, विनाशित (सुपा ४४६)। ३ स्थिर (से ५, ७)। ४ निष्पन्न, सिद्ध (आचा २, १, ६)। ५ पु मोक्ष, मुक्ति (आचा)। °ट्ठ वि [°ार्थ] कृतकृत्य (पण्ण ३६)। °ट्ठि वि [°ार्थिन्] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक (आचा)।

णिट्ठिय वि [नैष्ठिक] निष्ठा-युक्त, निष्ठावाला (पण्ह २, ३)।

णिट्ठीव पुं [निष्ठीव] थूक, मुँह का पानी (रंभा)।

णिट्ठीवण स्त्रीन [निष्ठीवन] थूक, खखार। २ थूकना (मट्ठि ७८ टी)। स्त्री °णा (वव १)।

णिट्ठुअ न [निष्ठ्यूत] थूक (कुलक ३०)।

णिट्ठुभय वि [निष्ठीवक] थूकनेवाला (पण्ह २, १, औप)।

णिट्ठुयण देखो निट्ठीवण (चेइय ६३)।

णिट्ठुर } वि [निष्ठुर] निष्ठुर, परुष, कठिन
णिट्ठुल } (प्राप्र, हे १, २५४, पात्र, गउड)।

णिट्ठुवण न [निष्ठीवन] १ थूक, खखार (वव १)। २ वि. थूकनेवाला (ठा ५, १)।

णिट्ठुह अक [नि + स्तम्भ्] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना, स्तब्ध होना। णिट्ठुहइ (हे ४, ६७, षड्)।

निट्ठुह अक [नि + ष्ठीव्] थूकना निट्ठुहसी (तदु ४१)।

णिट्ठुह वि [दे] स्तब्ध, निश्चेष्ट (दे ४, ३३)।

णिट्ठुहण न [दे निष्ठीवन] थूक, मुँह का पानी, खखार (महा)।

णिट्ठुहावण वि [निष्टम्भक] निश्चेष्ट करनेवाला, स्तब्ध करनेवाला (कुमा)।

णिट्ठुहिअ न [दे] थूक, निष्ठीवन, खखार (दे ४, ४१)।

णिड पु [दे] पिशाच, राक्षस (दे ४, २५)।

णिडल } न [ललाट] भाल, ललाट (पि
णिडाल } २६०, पउम १००, ५७, सुपा २८)।

णिड्ड न [नीड] पक्षि-गृह (पात्र)।

णिड्डहण न [निर्दहन] जला देना (उप ५६३ टी)।

णिड्डुह देखो णिट्टुअ। णिड्डुहइ (कुमा, षड्)।

णिणाय पुं [निनाद] शब्द, आवाज, ध्वनि (णाया १,१, पउम २, १०३, से ६, ३०)।

णिण्ण वि [निम्न] १ नीचा, अधस्तन (उत्त १२, उव १०३१ टी)। २ क्रिवि नीचे, अध. (हे २, ४२)।

णिण्णक्खु क्रि [निस्सारयति] बाहर निकालता है, 'ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु' (आचा २, २, १)।

णिण्णगा स्त्री [निम्नगा] नदी, स्रोतस्विनी (पण्ण १, पण्ह २, ४)।

णिण्णट्ठ वि [निर्नष्ट] नाश-प्राप्त (सुर ६, ६२)।

णिण्णय पु [निर्णय] १ निश्चय, अवधारण (हे १, ६३)। २ फैसला (सुपा ६६)।

णिण्णया देखो णिण्णगा (पात्र)।

णिण्णार वि [निर्नगर] नगर से निर्गत (भग १५)।

णिण्णाला स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच (दे ४, ३६)।

णिण्णास सक [निर + नाशय] विनाश करना। वकृ. निन्नासित (सुपा ६५४)।

णिण्णास पु [निर्नाश] विनाश (भवि)।

णिण्णासिय वि [निर्नाशित] विनाशित (सुर ३, २३१, भवि)।

णिण्णिद्द वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित (गा ६५६)।

णिण्णिमेस वि [निर्निमेष] १ निमेष-रहित, बिना पलक झपकाये, एक-टक। २ चेष्टा-रहित। ३ अनुपयोगी (ठा ५, २)।

णिण्णी सक [निर् + णी] निश्चय करना। सकृ णिण्णइउ (धर्मवि १३६)।

णिण्णीअ वि [निर्णीत] निश्चित, नक्की किया हुआ (श्रा १२)।

णिण्णुण्णअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा, विषम (अभि २०६)।

णिण्णेह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (हे ४, ३६७, सुर ३, २२२, महा)।

णिण्हइया स्त्री [निह्नविका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

णिण्हग } पुं [निह्नव] १ सत्य का अपलाप
णिण्हय } करनेवाला, मिथ्यावादी (ओघ
णिण्हव } ८० भा, ठा ७, औप) २ अपलाप (सार्ध ४१)।

णिण्हव सक [नि + ह्नु] अपलाप करना। णिण्हवइ (विसे २२६६, हे ४, २३६)।

[illegible] णिण्हवेसि (टी) (नाट—रत्ना ३६)। कृ. णिण्हवणिज्ज, णिण्हवेमाण (उप ३११ टी; सुर ३ २३१)।

णिण्हवग वि [निह्नवक] अपलाप करनेवाला (श्रोघ ४८ भा)।

णिण्हवण न [निह्नवन] अपलाप (विपा १, २, उव)।

णिण्हवणा वि [निह्नवन] अपलाप-कर्ता (श्रोघ ४)।

णिण्हविद देखो णिण्हुविद (नाट—शकु १२६)।

णिण्हुत वि [निह्नुत] अपलपित (सुपा २६८)।

णिण्हुव देखो णिण्हव = नि + ह्नु। कर्म. णिण्हुविज्जन्ति (पि ३३०)।

णिण्हुविद (शौ) वि [नि + ह्नुत] अपलपित (पि ३३०)।

णि[illegible] देखो णिञ्च (श्राचा, ठा १०)।

णितुट्टिअ वि [नित्रुटित] टूटा हुआ, छिन्न (सण्डु ५४)।

णित्त देखो णेत्त (पाश्र; सुपा २६१, सडुम १४)।

णित्तम वि [निस्तमस्] १ अन्धकार-रहित। २ [illegible] (श्रणि ८)।

णित्ता[illegible] वि [दे] [illegible] (भग ११)।

णि[illegible] (अप) देखो णाद (पिं)।

णित्तिंस वि [निस्त्रिंश] निर्दय, लज्जा-हीन (सुपा ४१४)।

णित्तिरडि वि [दे] निरन्तर, अन्तर-रहित (दे ४, ४०)।

णित्तिरडिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ (दे ४, ४१)।

णित्तु[illegible] वि [दे] [illegible], [illegible] (दे ४, [illegible])।

णित्तु[illegible] वि [निस्तु[illegible]] १ [illegible] (सुर २, ४३)। २ [illegible] 'ण[illegible]' (सुपा ३४५)।

णित्तुस वि [निस्तुष] तुष-रहित, [illegible] [illegible] (पण्ह २, ४; उप १३६ [illegible])।

णित्ते[illegible] वि [निस्तेजस्] तेज-रहित (णाया १, १)।

णित्थणग न [निस्तनन] विस्य-सूचक ध्वनि (सुर २, २३३)।

णित्थर सक [निर् + तॄ] पार करना, पार उतरना। णित्थरेइ (सुपा ४४६), 'णित्थरति मनु नावराति पायनिज्जामयउणेहा महण्णवं' (स १६३)। वकृ णित्थरिज्जन्त (राय)। कृ णित्थरियव्व (णाया १, ३; सुपा १२६)।

णित्थरण न [निस्तरण] पार-गमन, पार-प्राप्ति (ठा ४, ४; उप १३४ टी)।

णित्थरिअ देखो णित्थिण्ण (उप १३४ टी)।

णित्थाण वि [निःस्थान] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट (णाया १, १८)।

णित्थाम वि [निःस्थामन्] निर्बल, कमजोर, मन्द (पाश्र; गउड; सुपा ४८६)।

णित्थार सक [निर् + तारय्] १ पार उतारना, तारना। २ बचाना, छुटकारा देना। णित्थारु (काल)।

णित्थार पु [निस्तार] १ छुटकारा, मुक्ति। २ बचाव, रक्षा। ३ उद्धार (णाया १, ६ टी—पत्र १६६; सुर २, ५१; ७, २०१; सुपा २६६)।

णित्थारग वि [निस्तारक] पार जानेवाला, पार लगानेवाला (स १८३)।

णित्थारणा स्त्री [निस्तारण] पार-प्रापण, पार पहुँचाना (ज ३)।

णित्थारिय वि [निस्तारित] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धृत (भग; सुपा ४४६)।

णित्थिण्ण } वि [निस्तीर्ण] १ उत्तीर्ण, पार-
णित्थिन्न } प्राप्त। 'णित्थिण्णो समुद्दं' (स २६७)। २ जिसको पार किया हो वह, 'णित्थिण्णा श्रावया सव्वे' (सुर ८, ८६), 'णित्थिण्णमहासमुद्दा' (स १३६)।

णिदंस सक [नि + दर्शय्] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना। २ दिखाना। णिदं[illegible] (पिंग)। वकृ णिदंसन्त (सुपा ८६)।

णिदंसण न [निदर्शन] १ उदाहरण, दृष्टान्त (श्रणि २०२)। २ दिखाना (ठा १०)।

णिदंसिअ वि [निदर्शित] प्रदर्शित, दिखाया हुआ। '[illegible] णिदंसिओ [illegible]' मए तीए' (सुर ६, ८२; उप ६६७ माघ ४०)।

णिदरिसण देखो णिदंसण (उत्त; उप ३८४)।

णिदरिसिअ वि [निदर्शित] उपदर्शित, बतलाया हुआ (धर्मसं १०००)।

णिदा स्त्री [दे] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना (भग १६, ५)। २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा (पिंड)।

णिदाण देखो णिआण (विपा १, १; श्रंत १५; नाट—वेणी ३३)।

णिदाणा देखो णिदा (पण्ण ३५)।

णिदाह पु [निदाघ] १ धर्म, घाम, उष्ण। २ ग्रीष्म-काल, गरमी का मौसिम। ३ जेठ मास (श्राव ५)।

णिदाह पु [निदाघ] तीसरा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

णिदाह पु [निदाह] असाधारण दाह (श्राव ५)।

णिदेस पु [निदेश] आज्ञा, हुकुम (सुप्र ४२६)।

णिदेसिअ वि [निदेशित] १ प्रदर्शित। २ उक्त, कथित (पउम ५, १४५)।

णिद्दोघ न [दे] १ भय का अभाव। २ स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती (षड् २६८)।

णिद्दज्भाण न [निद्राध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष (श्राउ)।

णिद्दंद वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित (सुपा ४५५)।

णिद्दंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ रहित, कपट-रहित (सुपा १४७)।

णिद्दडी (अप) देखो णिद्दा = निद्रा (पि ५६६)।

णिद्दड्ढ वि [निर्दग्ध] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ (सुर १४, २६; श्रंत १५)। २ पु नृप-विशेष (पउम ३२, २२)। ३ रत्न-प्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °मज्भ पु [°मध्य] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश (ठा ६)। °वत्त पु [°वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °विसिट्ठ पु [°विशिष्ट] नरक-प्रदेश-विशेष (ठा ६)।

णिद्दय वि [निर्दय] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर (पण्ह १, १; गउड)।

णिद्दलण न [निर्दलन] १ मर्दन, विदारण (आचा)। २ वि. मर्दन करनेवाला (वज्जा ४२)।

णिद्दलिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विदारित (पाअ, सुर ५, २२२, माधं ७६)।

णिद्दह सक [निर् + दह्] जला देना, भस्म करना। निद्दहइ (महा, उप)। णिद्दहेज्जा (पि २२२)।

णिद्दा अक [नि + द्रा] निद्रा लेना, नीद करना। णिद्दाइ (षड्)। वकृ. णिद्दाअंत (से १, ५६)।

णिद्दा स्त्री [निद्रा] १ निद्रा, नीद (स्वप्न ५६, वण्णू)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमे एकाव आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे (कम्म १,११)। °अत वि [°वत्] निद्रा-युक्त, निद्रित्त (से १, ५६)। °करी स्त्री [°करी] लता-विशेष (दे ७, ३४)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बडी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके (कम्म १, ११, सम १५)। °ल, °लु वि [°वत्] निद्रावाला (संक्षि २०, पि ५६५, प्राप्र)। °वअ वि [°प्रद] निद्रा देनेवाला (से ६, ४३)।

णिद्दाअ वि [निद्रात] जो नीद मे हो (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाव] अग्नि-रहित (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाय] दाय-रहित, पैतृक धन मे वर्जित (से १, ५६)।

णिद्दाइअ वि [निद्रित] निद्रा-युक्त (महा)।

णिद्दाणी स्त्री [निद्राणी] विद्यादेवी-विशेष (पउम ७, १४४)।

णिद्दाया देखो णिद्दा (पएण ३५)।

णिद्दारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित (से ५, ८३, १३, ६५)।

णिद्दाव वि [निर्दाव] १ दावनल-रहित। २ जगल-रहित (से ६, ४३)।

णिद्दिट्ठ वि [निर्दिष्ट] १ कथित, उक्त (भग)। २ प्रतिपादित, निरूपित (पचा ३, दंस)।

णिद्दिट्ठु वि [निर्देष्टृ] निर्देश करनेवाला (विसे १५०४, विक्र ६४)।

णिद्दिस सक [निर् + दिश्] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निद्दिसइ (विसे १५२६)। कर्म णिद्दिसइ (नाट—मालवि ५३)। हेकृ. निद्देट्ठु (पि ५७६)। कृ णिद्दिस्स, णिद्देस (विसे १५२३)।

णिद्दुक्ख वि [निर्दुःख] दुःख-रहित, सुखी (सुपा ५३७)।

णिद्दुर पुं [दे नेत्तर] देश-विशेष (इक)।

णिद्दूसण वि [निर्दूषण] निर्दोष (धर्मवि २०)।

णिद्देस पु [निर्देश] १ लिग या अर्थ-मात्र का कथन (ठा ८—पत्र ४२७)। २ विशेष का अभिधान, 'अविसेसियमुद्देसो विसेसिओ होइ निद्देसो' (विसे, १४९७, १५०३)। ३ निश्चय पूर्वक कथन (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण (उत्त १, एादि)। ५ आज्ञा, हुकुम (पाअ, दस ६, २)। ६ वि जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह (पउम ४, ८२)।

णिद्देसग } वि [निर्देशक] निर्देश करने-
णिद्देसय } वाला (विसे १५०८, १५००)।

णिद्दोस्थ न [निर्दौःस्थ्य] १ दुःस्थता का अभाव (वव ४)। २ वि. स्वस्थ, दुःस्थता-रहित (वव ७)।

णिद्दोस वि [निर्दोष] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध (गउड, सुर १, ७३)।

णिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस-विशेष (ठा १, अणु)। २ वि. स्नेह-युक्त, चिकना (हे २, १०९, उव, षड्)। ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी (बृह ३)।

णिद्धंत वि [निर्ध्मात] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित (पराह १, ४, औप)।

णिद्धंधस वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे ४, ३७, ओघ ४४५, पाअ, पुप्फ ४५४, सट्ठि २६, सुपा २४५, श्रा ३६)। २ निर्लज्ज, वेशरम (विवे १२८)।

णिद्धण वि [निर्धन] धन-रहित, अकिंचन (हे २, ९०, णाया १, १८, दे ४, ५, उप ७६ टी, महा)।

णिद्धण्ण वि [निर्धान्य] धान्य-रहित (तदु)।

णिद्धम वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर मे रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [दे] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता (दे ४, ३६, उर २, १०, ठा ५, १, श्रावम, तदु, उव, णाया १, २)।

णिद्धमण न [निर्ध्मान] १ तिरस्कार, अवहेलना (उप पृ ३४६)। २ पुं यक्ष-विशेष (आव ४)।

णिद्धमाय वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर मे रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [दे] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जानेवाला (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [निर्धर्मन्] धर्म-रहित, अधर्मी (श्रा २७)।

णिद्धय वि [दे] देखो णिद्धम (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो णिद्धाव।

णिद्धाड सक [निर् + धाटय्] बाहर निकाल देना। कर्म निद्धाडिज्जई (सबोध १६)।

णिद्धाडण न [निर्धाटन] निस्सारण, निष्कासन, बाहर निकालना (पएह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [निर्धाटित] अन्य द्वारा बाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित (महा)।

णिद्धाडिय वि [निर्धाटित] निस्सारित, निष्कासित (पाअ, भवि)।

णिद्धारण न [निर्धारण] १ गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय से एक भाग का पृथक्करण। २ निश्चय, अवधारण (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [निर् + धाव्] दौडना। सकृ णिद्धाइऊण (महा)।

णिद्धाविय वि [निर्धावित] दौडा हुआ, धावित (महा)।

णिद्धुण सक [निर् + धू] १ विनाश करना। २ दूर करना। सकृ. निद्धुणे, णिधूय (दस ७, ५७, सूअ १, ७)।

णिद्धुणिय } वि [निर्धूत] १ विनाशित,
णिद्धुय } नष्ट किया हुआ। २ अपनीत (सुपा ५६६ औप)।

णिद्धूम वि [निर्धूम] १ धूम-रहित (कप्प, पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलक्षण (वव २)।

णिद्धूय देखो णिद्धूअ (जीव ३)।

णिद्धोअ वि [निर्धौत] १ धोया हुआ (गा ६८६; से १४, ९६; गउड १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ, 'णिद्धोअसद्द गिर—' (वज्जा १५८)।

णिद्धोभास वि [स्निग्धावभास] चमकीला, स्निग्धता से चमकता (णाया १, १—पत्र ४)।

णिधण न [निधन] विनाश, मृत्यु, मौत (नाट—मृच्छ २५२)।

णिधत्त वि [निधत्त] निकाचित, निबिड (ठा ८—पत्र ४३४)।

णिधत्त न [निधत्त] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान, जो कुछ कर्मों का तप्त सूची-कलाप की तरह अवस्थान। २ वि निबिड रूप से प्राप्त कर्म-पुद्गल (ठा ४, २)।

णिधत्ति स्त्री [निधत्ति] करण विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल निबिड रूप से व्यवस्थापित होता है (पंच ५)।

णिधम्म देखो णिद्धम्म = निर्धर्मन् (ओघ ३७ भा)।

णिधाण देखो णिहाण (नाट—महावीर १२०)।

णिधुण देखो णिद्धुण।

णिन्नाम सक [निर् + नमय्] नमाना, झुकाना। णिन्नामए (सूअ १, १३, १५)।

णिन्नीअ देखो णिण्णीअ (धर्मवि ५)।

णिपट्ट न [दे] गाढ (प्राह ३८)।

णिपडिअ वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ ([illegible])।

णिपा सक [नि + पा] पीना। संकृ. निपीय ([illegible] २३०)।

णिपाइ वि [निपातिन्] १ नीचे गिरनेवाला। २ मारनेवाला (सूअ १, ५)।

णिपूर पुं [निपूर] नन्दीवृक्ष (आचा २, १, ८, ३)।

णिप्पअंप देखो णिप्पकंप (से ६, ७८)।

णिप्पएस वि [निष्प्रदेश] १ प्रदेश-रहित। २ पुं परमाणु (विसे)।

णिप्पंक वि [निष्पङ्क] [illegible]-रहित, [illegible] ([illegible] ११३ भा)।

णिप्पंकिय वि [निष्पङ्कित] पंक-रहित ([illegible])।

णिप्प[illegible] सक [निर् + प[illegible]] [illegible] करना, फल तोड़ना। णिप्पंडेंति (विपा १, ८)।

णिप्पंद वि [निष्पन्द] चलन-रहित, स्थिर (से २, ४२)।

णिप्पकंप वि [निष्प्रकम्प] कम्प-रहित, स्थिर (सम १०६; पण्ह २, ४)।

णिप्पक्ख वि [निष्पक्ष] पक्ष-रहित (गउड)।

णिप्पगल वि [निष्प्रगल] टपकनेवाला, झरनेवाला, चूनेवाला (ओघ ३५; ओघ ३४ भा)।

णिप्पच्चवाय वि [निष्प्रत्यवाय] १ प्रत्यवाय-रहित, निर्विघ्न (ओघ २४ टी)। २ निर्दोष, विशुद्ध, पवित्र, 'णिप्पच्चवायचरणा कज्ज माहनि' (सार्ध ११७)।

णिप्पच्छिम वि [निष्पश्चिम] १ अन्तिम, अन्त का (से १२, २१)। २ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का, 'णिप्पच्छिमाइ असई दुक्खालोआइ महुअपुप्फाइ' (गा १०४)।

णिप्पट्ठ वि [दे] अधिक (दे ४, ३१)।

णिप्पट्ठ वि [निःस्पष्ट] अस्पष्ट, अव्यक्त। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५; णाया १, ५; उवा)।

णिप्पट्ठ वि [निःस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५)।

णिप्पडिकम्म वि [निष्प्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन (सम ५७; सुपा ४८५)।

णिप्पडियार वि [निष्प्रतिकार] निरुपाय, प्रतिकार-वर्जित (पण्ह २, ४)।

णिप्पणिअ वि [दे] जल धौत, पानी से धोया हुआ (षड्)।

णिप्पण्ण देखो णिप्फण्ण (गा ६८६)।

णिप्पण्ण वि [निष्प्रज्ञ] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य (उत्त १७६ टी)।

णिप्पत्त वि [निष्पत्र] पत्र-रहित (गा ८८७; पउम १)।

णिप्पत्ति } देखो णिप्फत्ति (पंचा १८; संबोध ६)।
णिप्पत्ति }

णिप्पन्न देखो णिप्पण्ण (कुप्र २०८)।

णिप्पभ वि [निष्प्रभ] निस्तेज, फीका (गउड)।

णिप्परिग्गह वि [निष्परिग्रह] परिग्रह रहित (उत्त १४)।

णिप्पलिवयण वि [निष्प्रतिवचन] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ (सम ६०)।

णिप्पसर वि [निष्प्रसर] प्रसर-रहित, जिसका फैलाव न हो (पि ३०५)।

णिप्पह देखो णिप्पभ (से १०, १२; हे २, ५३)।

णिप्पाइय देखो णिप्फाइय (कुप्र १६६)।

णिप्पाण वि [निष्प्राण] प्राण-रहित, निर्जीव (णाया १, २)।

णिप्पाल देखो णेपाल (धर्मवि ६६)।

णिप्पाव पुं [निष्पाप] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

णिप्पाव देखो णिप्फाव (पि ३०५)।

णिप्पिच्छ वि [दे] १ ऋजु, सरल। २ दृढ, मजबूत (दे ४, ४६)।

णिप्पिट्ठ वि [निष्पिष्ट] पीसा हुआ (दे ८, २०; सण)।

णिप्पिट्ठ न [निष्पिष्ट] पेषण की समाप्ति (पिंड ६०२)।

णिप्पिवास वि [निष्पिपास] पिपासा रहित, तृष्णा-वर्जित, निःस्पृह (पण्ह १, १; णाया १, १; सुर १, १३)।

णिप्पिवासा स्त्री [निष्पिपासा] स्पृहा का अभाव (वि १८)।

णिप्पिह वि [निःस्पृह] स्पृहा-रहित, निरीह (हे २, २३; उप ३२० टी)।

णिप्पीडिअ वि [निष्पीडित] दबाया हुआ (से ५, २५)।

णिप्पीलण न [निष्पीडन] दबाव, दबाना (आचा)।

णिप्पीलिय देखो णिप्पीडिअ। २ निचोड़ा हुआ, 'निप्पीलियाइं पोत्ताइं' (स ३३२)।

णिप्पुंसण न [निष्पुंसन] १ पोंछना, मार्जन। २ अभिमर्दन (हे २, ५३)।

णिप्पुण्ण वि [निष्पुण्य] पुण्य रहित (कुप्र ३१८)।

णिप्पुन्नग वि [निष्पुण्यक] १ पुण्य-रहित। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५४५)।

णिप्पुलाय पुं [निष्पुलाक] आगामी चौबीसी में होनेवाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव (सम १५३)।

णिप्पुलाय वि [निष्पुलाक] चारित्र-दोष से रहित (दस १० १६)।
णिप्फट्ट देखो णिप्पट्ट (हे २, ७२, णाया १, २, सुर ३, १७२)।
णिप्फंस वि [दे] निस्त्रिंश, निर्दय (षड्)।
णिप्फज्ज अक [निर्+पद्] नीपजना, उपजना, सिद्ध होना। णिप्फज्जइ (स ६१६)। वकृ णिप्फज्जमाण (पण्ह १, ४)।
णिप्फडिअ वि [निस्फटित] १ विशीर्ण। २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो। ३ अंकुश रहित (उप १२८ टी)।
णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध (से २, १२ महा)।
णिप्फत्ति वि [निष्पत्ति] निष्पादन सिद्धि (उव, उप २८० टी मार्ध १०६)।
णिप्फन्न देखो णिप्फण्ण (कप्प णाया १, १६)।
णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया हीन (दे ४, ३७)।
णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित निरर्थक (से १४, २६, गा १३६)।
णिप्फाअ देखो णिप्फाव (प्राप्र)।
णिप्फाइऊण देखो णिप्फाय।
णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ (विसे ७ टी उप २११ टी, महा)।
णिप्फाय सक [निर्+पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना। सकृ णिप्फाइऊण (पचा ७)।
णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजानेवाला, बनानेवाला, सिद्ध करनेवाला (विसे ४८३, ठा ६, उप ८२८)।
णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति (श्राव ४)।
णिप्फाव पु [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल (हे २, ५३, पराण १, ठा ५, ३, श्रा १८)।
णिप्फाव पुं [निष्पाव] एक माप, बाट-विशेष (अणु १५५)।
णिप्फिड अक [नि+स्फिट] बाहर निकलना। वकृ णिप्फिडंत (स ५७४)।
णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पउम ६, २२७, ८०, ६०)।

णिप्फुर पु [निस्फुर] प्रभा, तेज (गउड)।
णिप्फेड पु [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना (उप पृ २५२)।
णिप्फेडय वि [निस्फेटक] बाहर निकालनेवाला (सूत्र २, २ ८५)।
णिप्फेडय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निष्कासित (सूत्र २, २)। २ भगाया हुआ नमाया हुआ (पुप्फ १२५)। ३ अपहृत, छीना हुआ (ठा ३, ४)।
णिप्फेडिया स्त्री [निस्फेटिका] अपहरण, चोरी एमा पढमा सीमनिप्फेडिया' (सुख २ १३, पव १०७)।
णिप्फेस पु [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना (दे ४, २६)।
णिप्फेस पु [निष्पेष] १ पेषण, पीसना। २ सघर्ष (हे २, ५३)।
णिबध सक [नि+बन्ध्] १ बाँधना। २ २ करना। निबंधइ (भग)।
णिबध सक [नि+बन्ध्] उपार्जन करना। णिबधंति (पचा ७, २२)।
णिबध पुन [निबन्ध] १ सबन्ध, सयोग (विसे ६६८)। २ आग्रह, हठ (महा), 'णिबन्धाणि' (पि ३५८)।
णिबधण न [निबन्धन] कारण, प्रयोजन, निमित्त (पाअ, प्रासू ६६)।
णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बँधा हुआ (महा)। २ सयुक्त, सबद्ध (से ६, ४४)।
णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ (गउड कुमा)।
णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड किया हुआ (गउड)।
णिबुक [दे] देखो णिब्बुक (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।
णिबुड्ड अक [नि+मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना। वकृ णिबुड्डिज्जत, निबुड्डमाण (अच्चु ६३, उवा)।
णिबुड्ड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न (गा ३७, सुर ३, ५१, ४, ८०)।
णिबुड्डुण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन (पउम १०, ४३)।
णिबोल देखो णिबुड्ड=नि+मस्ज। वकृ णिबोलिज्जमाण (राज)।

णिबोह पु [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान। २ अनेक प्रकार का बोध (विसे ११८७)।
णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना (पउम १०२, ६०)।
णिब्बंध पु [निर्बन्ध] आग्रह (गा ६८५ मा, सुर ३, ८)।
णिब्बंधण न [निबन्धन] निबन्धन हेतु, कारण 'मारीत्थिविणासनिबंधण मणं' (वाज)।
णिब्बल [illegible] देखो णिब्बल [illegible] + पद्। [illegible] (प्राकृ ६४)।
णिब्बल वि [निर्बल] बल रहित [illegible] (आचा)।
णिब्बहि अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर (ठा ६—पत्र ३५२)।
णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ, 'सजमनिब्बाहिरा जाया' (उवा)।
णिब्बुक वि [दे] १ निर्मूल, मूल रहित। २ क्रिवि मूल से, 'णिब्बुकछिण्णवय—' (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
णिब्बुड्ड देखो णिबुड्ड=निमग्न (स २६०, गउड)।
णिब्भच्छण देखो णिब्भन्छण (उव ३०३)।
णिब्भजण न [दे] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह (पभा ३३)।
णिब्भत वि [निर्भ्रान्त] नि सदेह, सशय-रहित (ति १४)।
णिब्भग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा (दे ४, ३४)।
णिब्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य रहित कमनसीब, अभागा (उप ७२८ टी, सुपा ३८५)।
णिब्भच्छ सक [निर्+भर्त्स्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना। णिब्भच्छेइ, णिब्भच्छेज्जा (णाया १, १८, उवा)। सकृ णिब्भच्छिअ (नाट—मालती १७१)।
णिब्भच्छण न [निर्भर्त्सन] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन से अवहेलना (पण्ह १ ३ गउड)।
णिब्भच्छणा स्त्री [निर्भर्त्सना] ऊपर देखो (भग १५, णाया १ १६)।

णिब्भच्छिअ वि [निर्भर्त्सित] [illegible], [illegible] ८६८; सुपा [illegible])।

णिब्भंत वि [निर्भ्रान्त] [illegible], [illegible] [illegible] महा)।

णिब्भर अक [निर् + भृ] भरना, पूर्ण [illegible]। [illegible] णिब्भरेन्त (से [illegible])।

णिब्भर वि [निर्भर] १ पूर्ण, [illegible] (से १० ७०)। २ व्याप्त, [illegible] (सुपा)। ३ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (कप्पू)।

णिब्भिंद सक [निर् + भिद्] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] णिब्भिज्जंत णिब्भिज्जमाण (से [illegible] २६; भग [illegible], औप [illegible])।

णिब्भीअ वि [निर्भीत] भय-रहित, निडर (सुपा [illegible], [illegible], २३१)।

णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण } देखो णिब्भिंद।

णिब्भिट्ट वि [दे] आगत (भवि)।

णिब्भिण्ण वि [निर्भिन्न] १ [illegible], [illegible] [illegible] २ [illegible] (से ५ [illegible])।

णिब्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (स १ [illegible])।

णिब्भुग्ग वि [दे] [illegible], [illegible] (दे ४, ३५)।

[illegible] [illegible] ५८६)।

णिब्भेय पुं [निर्भेद] [illegible], [illegible] (सुपा [illegible])।

णिब्भेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो (सुर [illegible])।

णिब्भ[illegible] वि [निर्भ[illegible]] [illegible], [illegible] [illegible] १२, [illegible])।

[illegible]

णिभिअ } देखो णिहुअ (गउड २, [illegible] गा
णिभुअ } ८००)।

णिभेल सक [निर् + भेलय्] बाहर करना। वकृ णिभेलन्त (णाए १, ३—पत्र ८५)।

णिभेल्लण न [दे] गृह, घर स्थान (कप्प)।

णिम सक [नि + अम्] स्थापन करना। णिमइ (हे ४ १९९ षड्)। णिमेइ (पि ११८)। वकृ णिमेन (स १, ४१)।

णिमंत सक [नि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्योता देना। णिमन्तेइ (महा)। वकृ णिमंतेमाण (आचा २ [illegible] ३)। संकृ णिमंतिऊण (महा)।

णिमंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्योता, बुलावा (उप पृ ११०)।

णिमंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो (पंचा १२)।

णिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्योता दिया गया हो वह (महा)।

णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ (पउम १०६, ४, धात)। °जला स्त्री [°जला] नदी विशेष (ज ३)।

णिमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना। णिमज्जइ (वि ११८)। वकृ णिमज्जन्त (गा ५०६, सुपा ९८)।

णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमज्जन करनेवाला। २ पुं वानप्रस्थाश्रमी तापस विशेष, जो स्नान के लिए थोड़ी समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं (औप)।

णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल प्रवेश (सुपा ३५८)।

णिमज्जि[illegible] [illegible] णिमज्जि[illegible] = निमज्जित ([illegible])।

[illegible] [illegible] [नि + [illegible]] [illegible]। [illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] १, [illegible])।

[illegible]

(सुअ २, २)। ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र (ओघ १६ भा ८)। ४ अतीन्द्रिय ज्ञान के कारण-भूत पदार्थ (ठा ८)। ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)। °पिंड पुं [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा (आचा २, १ ६)।

णिमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (सुअ ३७८)।

णिमित्तिअ देखो णेमित्तिअ (सुपा ४०२)।

णिमिल्ल अक [नि + मील्] आँख मूँदना, आँख मींचना। णिमिल्लइ (हे ४ २३२)।

णिमिल्ल वि [निमालित] जिसने नेत्र बंद किया हो मुद्रित नेत्र (से ६, ६१, ११, ५०)।

णिमिल्लण देखो णिमीलण (राज)।

णिमिस अक [नि + मिष्] आँख मूँदना। निमिसति (तंदु ५३)।

णिमिस पुं [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन पलक मारने भर का समय (गा ३८५ सुपा २१६, गउड)।

णिमीलण न [निमीलन] अक्षि मराच (गा ३६७, सूअ १, ५, १, १२ टी)।

णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित (नेत्र) (गा १३३, से ६, ८६, महा)।

णिमीस न [निमिश्र] एक विद्याधर-नगर (इक)।

णिमे सक [नि + मा] स्थापन करना। णिमेमि (गउड)।

णिमेण न [दे] स्थान, जगह (दे ४, ३०)।

णिमेल्ल स्त्री [दे] दन्त-मांस (दे ४ ३०)। स्त्री °ला (दे ४, ३०)।

णिमेस पुं [निमेष] निमीलन, [illegible], पलक का गिरना पलक (भा १६, [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible]।

णिमोति[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (सुपा ८[illegible])।

णिम्म सक [निर् + मा] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ (षड्)। णिम्मइ ([illegible] ७५ [illegible])। [illegible] णिम्माअअ ([illegible] मालती ५[illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित कृत (गा ५००, ६०० अ)।

णिम्मथण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि. विनाशक, 'तह य पयट्टनु निग्घं गुणवनिम्मयणं तित्थं' (सुपा ७१)।

णिम्मम वि [निर्माम] मान-रहित मुक्त (णाया १, १, भग)।

णिम्ममा स्त्री [दे] देवी-विशेष चामुण्डा (दे ४, ३५)।

णिम्मंसु वि [दे. निःश्मश्रु] तरुण जवान, युवा (दे ४, ३२)।

णिम्मक्खिअ देखो णिम्मच्छिअ = निर्मक्षिक (नाट)।

णिम्मच्छ सक [नि + म्रक्ष्] विलेपन करना। णिम्मच्छइ (भवि)।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन (भवि)।

णिम्मच्छर वि [निर्मत्सर] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य (उप पृ ८८)।

णिम्मच्छिय वि [निम्रक्षित] विलिप्त (भवि)।

णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] १ मक्खियों का अभाव। २ विजन, निर्जनता (अभि ६८)।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, बेहया (दे १, १३३)।

णिम्मज्जिय वि [निर्मार्जित] उपलिप्त (स ८५)।

णिम्मण वि [निर्मनस्] मन-रहित (द्रव्य १२)।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित (सण)।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निरन्तर मर्दन करनेवाला। २ पु चोरों की एक जाति (पण्ह १, ३)।

णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो (पण्ह १, ३)।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निस्पृह (अच्चु ६६, सुपा १४०)। २ पु भारत-वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ (दे ४, ३४)।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध (स्वप्न ७०, प्रासू १३१)। २ पु ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तर (ठा ६)।

णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य, देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु का बचा-खुचा (हे १, ३८, षड्)।

णिम्मव सक [निर् + मा] बनाना, रचना, करना। णिम्मवइ (हे ४, १९, षड्)। कर्म निम्मविज्जति (वज्जा १२२)।

णिम्मव सक [निर् + मापय्] बनवाना, कराना (ठा ४, ४, कुमा)।

णिम्मवइत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवानेवाला (ठा ४, ४)।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति (उप ६४८ टी, सुपा ४२, ६५, ३०५)।

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना कराना (सण)।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित (कुमा, गा १०१, सुर १६, ११)।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ (कुमा)।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ अक फैलना। णिम्महइ (हे ४, १६२)। वकृ णिम्महंत, णिम्महमाण (से ७, ६२, १५, ५३, स १२६)।

णिम्मह पु [निर्मथ] १ विनाश। २ वि विनाशक (भवि)।

णिम्महण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि विनाशकारक (सुपा ७५)। स्त्री °णी (सुर १६, १८४)।

णिम्महिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

णिम्महिअ वि [निर्मथित] विनाशित (हेका ५०)।

णिम्मा देखो णिम्म। णिम्माइ (प्राकृ ६४)।

णिम्माअत देखो णिम्म।

णिम्माइअ देखो णिम्माय (पि ५९१)।

णिम्माण सक [निर् + मा] बनाना, करना, रचना। णिम्माणइ (हे ४, १९, षड्, प्राप्र)।

णिम्माण न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति। २ कर्म-विशेष, शरीर के अंगोपांग के निर्माण में नियामक कर्म-विशेष (सम ६७)।

णिम्माण वि [निर्मान] मान-रहित (से ३, ४५)।

णिम्माणअ वि [निर्मायक] निर्माण-कर्त्ता, बनानेवाला (से ३, ४५)।

णिम्माणिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (कुमा)।

णिम्माणिअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत (भवि)।

णिम्माणुस वि [निर्मानुष] मनुष्य-रहित (सुपा ४४४)। स्त्री °सी (महा)।

णिम्माय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत (उव, पाअ, वज्जा ३४)। २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल (ओप, कप्प), 'नाहियसत्थेनु निम्माया परिवायगा' (सुर १२, ४२)।

णिम्माय न [निर्माय] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)।

णिम्मारअ देखो णिम्मइअ (प्राकृ १६)।

णिम्माव सक [निर् + मापय्] बनवाना, करवाना। णिम्मावइ (सण)। कृ. णिम्मावित्त (सूअ २, १, २२)।

णिम्माविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित, कराया हुआ (सुपा २६७)।

णिम्मिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (ठा ८, प्रासू १२७)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को ईश्वरादि-कृत माननेवाला (ठा ८)।

णिम्मिस्स वि [निर्मिश्र] १ मिला हुआ, मिश्रित। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] अत्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री (वव १०)।

णिम्मीस वि [निर्मिश्र] मिश्रण-रहित (देवेन्द्र २९०)।

णिम्मीसुअ वि [दे] श्मश्रु-रहित, दाढी-मूँछ वर्जित (षड्)।

णिम्मुक्क वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया (सुपा १७३)।

णिम्मुक्ख पु [निर्मोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (विसे २४६८)।

णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह (सुपा ५३५)।

णिम्मेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज (ठा ३, १, ओप, सुपा ६)।

णिम्मोअ पु [निर्मोक] कञ्चुक, केंचुल, सर्प की त्वचा (हे २, १८२, भत्त ११०, से १, ६०)।

णिम्मोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक (उत्त १४, ३५)।

णिम्मोडण न [निर्मोटन] विनाश (से ६[illegible])।

णिम्मो[illegible] वि [निर्मृन्थ] मूल-रहित ([illegible])।

णिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित (कुमा [illegible])।

णिरइ स्त्री [निर्ऋति] [illegible] का अधि-[illegible] (ठा २, ३)।

णिरइयार वि [निरतिचार] अतिचार-रहित [illegible] (सुपा १००)।

णिरइसय वि [निरतिशय] [illegible] (कप्प)।

णिरइयार देखो णिरइयार (सुपा १००, [illegible] १८)।

णिरंकुस वि [निरङ्कुश] अङ्कुश-रहित, स्व-[illegible]।

णिरंगण वि [निरङ्गण] [illegible] (पंच, [illegible] गाथा १ [illegible])।

णिरंगी स्त्री [दे] [illegible] (दे ४, ३१ [illegible])।

णिरंजण वि [निरञ्जन] निर्लेप, लेप-रहित ([illegible])।

णिरंतर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित (उप १०३१ टी)।

णिरंबर वि [निरम्बर] [illegible]-रहित, वस्त्र-[illegible] (पउम [illegible] १, ७६)।

णिरक्खर वि [निरक्षर] १ [illegible] २ [illegible]-रहित, [illegible] 'पत्ता [illegible] निरक्खरा' (पउम [illegible])।

णिरग्गल वि [निरर्गल] [illegible] रहित, [illegible] ([illegible] ३)।

[illegible] वि [illegible] [illegible] (तंदु ६७)।

णिरट्ठ वि [निरर्थ] [illegible] ([illegible])।

[illegible] स्त्री [निरर्था] [illegible] ([illegible] १ [illegible])।

[illegible] वि [illegible] [illegible] रहित [illegible]।

[illegible] वि [निरक्ष] [illegible] रहित, 'अहवं [illegible]' ([illegible])।

णिरक्क पु [दे] १ चोर, स्तेन। २ पृष्ठ, पीठ। ३ वि स्थित (दे ४, ४६)।

णिराकिय वि [निराकृत] अपाहृत, निरस्त (उत्त ६, ५६)।

णिरक्ख सक [निर्+ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना। णिरक्खइ (हे ४, ४१८) 'जोवि ताव दिट्ठीए णिरक्खिआ' (महा)।

णिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित (कप्पू वज्जा १५८)।

णिरगार वि [निराकार] आकार-रहित, 'निरागारत्तणओवि अरहंताईणमुज्झिहा' (सबोध ३८)।

णिरग्गल वि [निरर्गल] १ रुकावट से रहित (सुपा १६२ ४७१)। २ स्वच्छन्दी स्वैरी, निरंकुश (पाप)।

णिरच्चण वि [निरर्चन] अर्चन-रहित (उर)।

णिरट्ठ } वि [निरर्थ, °क] १ निरर्थक
णिरट्ठग } निष्प्रयोजन, निकम्मा (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव 'णिरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसवुडो' (उत्त २ ४२)।

णिरण वि [निरृण] ऋण-रहित करज से मुक्त (सुपा ५६३, ५६६)।

णिरणास देखो णिरिणास = नश्। णिर-णासइ (हे ४, १७८)।

णिरणुकंप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित, निर्दय (णाया १, २, बृह १)।

णिरणुक्कोस वि [निरनुक्रोश] निर्दय, दया-शून्य (णाया १ २, प्रासू ६८)।

णिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप-रहित (णाया १, २)।

णिरणुतावि वि [निरनुतापिन] पश्चात्ताप-रहित (पउम ७[illegible])।

णिरत्त वि [निरक्त] [illegible] विरक्त। (र [illegible])।

णिरत्थ } वि [निरर्थ, °क] अप्रार्थक, निकम्मा
णिरत्थग } निष्प्रयोजन (दे ८, १६ पउम
णिरत्थय } ६४ ८ [illegible] २, ० [illegible] ४१)।

णिरप्प पुं [निरम्बर] [illegible] (पउम ४६६)।

णिरप्प अक [स्था] बैठना। णिरप्पइ (हे ४, १६)। भूका णिरप्पिय (कुमा)।

णिरप्प पु [दे] १ पृष्ठ, पीठ। २ वि उद्वे-ष्टित (दे ४ ४६)।

णिरप्पण वि [निरात्मीय] अस्वकीय, पर-कीय (सुपा ८६)।

णिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह रहित (आव ६)।

णिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर, अचारु (पएह १, ३)।

णिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वच-नीय, वाणी से बतलाने को अशक्य (विसे ४८८)।

णिरभिस्संग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-रहित, नि स्पृह (पंचा २ ६)।

णिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-स्थान (ठा ४, १ आचा सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक (ठा १०) °पाल पु [°पाल] देव-विशेष (ठा ८, १)। °वलिया स्त्री [°वलिका] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष (निर १, १)। २ नरक-विशेष (पएण २)।

णिरय वि [निरत] आसक्त, तत्पर, तल्लीन (उप ६७६ उव, सुपा २६)।

णिरय वि [नीरजस्] रजा-रहित, निर्मल (भग गा ८७८)।

णिरव सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। णिरवइ (षड्)।

णिरव सक [आ+क्षिप्] आक्षेप करना। णिरवइ (षड्)।

णिरवक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित निरीह, नि स्पृह (विसे ७ टी)।

णिरवकंख वि [निरवकाङ्क्ष] स्पृहा-रहित नि स्पृह (औप)।

णिरवकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन] नि स्पृह (णाया १ ६)।

णिरवगाह वि [निरवगाह] अवगाह-रहित (षड्)।

णिरवग्गह वि [निरवग्रह] निरंकुश स्वच्छन्द, स्वैरी (पाप)।

णिरवच्च वि [निरपत्य] अपत्य-रहित, नि सन्तान (भा, मम १४०)।

णिरवज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध (पण्ह १, १, सुर ८, १८३)।

णिरवणाम देखो णिरोणाम (उव)।

णिरवयक्ख देखो णिरवइक्ख (णाया १, ६, पउम २ ६३)।

णिरवयव वि [निरवयव] अवयव-रहित, निरंश (विमे)।

णिरवयास वि [निरवकाश] अवकाश-रहित (गउड)।

णिरवराह वि [निरपराध] अपराध रहित, बेगुनाह (महा)।

णिरवराहि वि [निरपराधिन्] ऊपर देखो (श्राव ६)।

णिरवलंब वि [निरवलम्ब] सहारा रहित, असहाय (पण्ह १, ३)।

णिरवलाव वि [निरपलाप] १ अपलाप-रहित। गुप्त बात को प्रकट नहीं करनेवाला, दूसरे को नहीं कहनेवाला (सम ५७)।

णिरवसंक वि [निरपशङ्क] दुःशंका-वर्जित (भवि)।

णिरवसर वि [निरवसर] अवसर-रहित (गउड)।

णिरवसाण वि [निरवसान] अन्त-रहित (गउड)।

णिरवसेस वि [निरवशेष] सब, सकल (हे १, १४, पड्, से १, ३७)।

णिरवह सक [निर् + वह्] निर्वाह करना, निबाहना। निरवहेज्जा (सबोध ३६)।

णिरवाय वि [निरपाय] १ उपद्रव रहित, विघ्न वर्जित। २ निर्दोष, विशुद्ध (श्रा १६, सुपा २७५)।

णिरविक्ख, णिरवेक्ख, णिरवेच्छ देखो णिरवइक्ख (श्रा ६, उव, पि ३४१, से ६, ७५, सूअ १, ६, पंचा ४, निचू २०, नाट—चैत २५७)।

णिरस सक [निर् + अस्] अपास्त करना। णिरसइ (सण)।

णिरसण वि [निरशन] आहार-रहित, उपोषित (उप, सुपा १८१)।

णिरसण न [निरसन] निराकरण, हटा देना, दूर करना, खंडन (चेइय ७२४)।

णिरसि वि [निरसि] खड्ग-रहित (गउड)।

णिरसिअ वि [निरस्त] परास्त, अपास्त (दे ५, ५६)।

णिरस्साय वि [निरास्वाद] स्वाद-रहित (उत्त १६, ३७)।

णिरस्साविं वि [निरास्राविन्] नहीं टपकनेवाला, छिद्र रहित। स्त्री °णी (उत्त २३, ७१ सुख २३, ७१)।

णिरहंकार वि [निरहंकार] गर्व-रहित (उव)।

णिरहारि वि [निराहारिन्] आहार-रहित, उपोषित, 'हवउ व वक्कलधारी, निरहारी बम्भचेरवयधारी' (सुपा २५२)।

णिरहिगरण वि [निरधिकरण] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष (पंचा १६)।

णिरहिगरणि वि [निरधिकरणिन्] ऊपर देखो (भग १६, १)।

णिरहिलास वि [निरभिलाष] इच्छा-रहित, निरीह (गउड)।

णिरहेउ, णिरहेउग, णिरहेतुग वि [निर्हेतु, °क] निष्कारण, कारणरहित (धर्मसं ४४३, ४१७, ४००)।

णिराइअ वि [निरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित (से ४, ५२, ७, ३६)।

णिराउस वि [निरायुष्] आयु-रहित (प्राकृ ३१)।

णिराउह वि [निरायुध] आयुध-वर्जित, निःशस्त्र (महा)।

णिराकर, णिरागर सक [निरा + कृ] १ निषेध करना। २ दूर करना, हटाना। ३ विवाद का फैसला करना। निराकरिमो (कुप्र २१५)। सङ्क णिराकिच्च (सूअ १, १, १, १, ३, ३, १, ११)।

णिराकरिअ वि [निराकृत] निषिद्ध (धर्मवि १४६)।

णिरागरण न [निराकरण] निरास, निवारण, निषेध, रोक (पंचा १७, १६)।

णिरागरण न [निराकरण] १ निषेध, प्रतिषेध (पंचा १७)। २ फैसला, निपटारा (स ४०६)।

णिरागरिय वि [निराकृत] हटाया हुआ, दूर किया हुआ (पउम ४६, ५१, ६१, ५८)।

णिरागस वि [निराकर्ष] निर्धन, रंक (निचू २)।

णिरागार वि [निराकार] १ आकृति-रहित २ अपवाद-रहित (धर्म २)।

णिराणंद वि [निरानन्द] आनन्द-रहित, शोकातुर (महा)।

णिराणिउ (अप) अ निश्चित, नक्की (कुमा)।

णिराणुकंप देखो णिरणुकंप, 'णिक्किवणिराणुकंपो आसुरियं भावणं कुणइ' (ठा, ४, ४), 'अह सो णिराणु कंपो (सथा ८४, पउम २६, २५)।

णिराणुवत्ति वि [निरनुवर्तिन्] १ अनुसरण नहीं करनेवाला। २ सेवा नहीं करनेवाला (उव)।

णिराद वि [दे] नष्ट, विनाश-प्राप्त (दे ४, ३०)।

णिराबाध, णिराबाह वि [निराबाध] आबाधा-रहित, हरकत-रहित (अभि १११, सुपा २५३, ठा १० श्राव ४)।

णिरामगंध वि [निरामगन्ध] दूषण रहित, निर्दोष चारित्रवाला (आचा, सूअ १, ६)।

णिरामय वि [निरामय] रोग-रहित, नीरोग (सुपा ५७५)।

णिरामिस वि [निरामिष] आसक्तिहीन, निरीह, निरभिष्वङ्ग, 'आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो णिरामिसा' (उत्त १४, ४६)।

णिराय वि [दे] १ ऋजु, सरल। (दे ४, ५०, पाअ)। २ प्रकट, खुला। ३ पु. रिपु, शत्रु (दे ४, ५०)। ४ वि. लम्बा किया हुआ (से २, ५०)।

णिराय वि [दे] अत्यन्त, प्रचुर, अधिक (सुख २, ७)।

णिरायंक वि [निरातङ्क] आतङ्क रहित, नीरोग (औप)।

णिरायरिय देखो णिरागरिय (पउम ६१, ४६)।

णिरायव वि [निरातप] आतप-रहित (गउड)।

णिरायार देखो णिरागार (पउम ६, ११८)।

णिरायास वि [निरायास] परिश्रम-रहित (पण्ह २, ४)।

णिरारंभ वि [निरारम्भ] आरम्भ-वर्जित (सुपा १४०, गउड)।

णिरालंब वि [निरालम्ब] आलम्ब-रहित (गा ६५, आरा ८)।

णिरालंबण वि [निरालम्बन] [illegible] (... ६)।

णिरा[illegible] वि [निरालम्बन] [illegible], [illegible] (... २, ११, १२)।

[illegible] वि [निरागस] [illegible] (...)।

[illegible] वि [निरातङ्क] [illegible] (...)।

[illegible] वि [निरवशेष] [illegible] (...)।

[illegible] वि [निर्वेद] [illegible] (... १, ६ ... १८८)।

णिरावरण वि [निरावरण] १ [illegible] (... १८, १३८)।

[illegible] [निरवसाद] [illegible] (...)।

[illegible] णिरावरणम्म [illegible] (... १, १००, ११)।

णिरास वि [निराश] १ [illegible] (... १६)।

[illegible]

णिरिक्खण न [निरीक्षण] अवलोकन (गा ४५०)।

णिरिक्खणा स्त्री [निरीक्षणा] अवलोकन, प्रतिलेखना (ओघ ३)।

णिरिक्खिअ वि [निरीक्षित] आलोकित, दृष्ट (... पउम ४८ ४८)।

णिरिग्घ सक [नि + ली] १ आश्लेष करना, आलिङ्गन करना। २ अक छिपना। णिरिग्घइ (... ४, ५५)।

णिरिग्घिअ वि [निलीन] आलिङ्गित, आलिंगित (कुमा)।

णिरिण वि [निर्ऋण] ऋण-मुक्त, उऋण (ठा ३, १ टी—पत्र १२०)।

णिरिणास सक [गम्] गमन करना। णिरिणासइ (... १६२)।

णिरिणास सक [पिष्] पीसना। णिरिणासइ (हे ४, १८५)।

णिरिणास अक [नश्] पलायन करना। भागना। णिरिणासइ (... १७८ कुमा)।

णिरिणासिअ वि [गत] गया हुआ, यात (कुमा)।

णिरिणासिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

णिरिणिज्ज सक [पिष्] पीसना। णिरिणिज्जइ (हे ४ १८५)।

णिरिणिज्जिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

णिरिंति स्त्री [निरिति] [illegible] (...)।

णिरीह वि [निरीह] निःस्पृह, [illegible] (कुमा ...)।

णिरु (अप) [illegible], [illegible] (... कुमा ...)।

[illegible] णिरुत्त (... ११८४, कुमा ...)।

[illegible] [निरुद्ध] [illegible] (...)।

[illegible] [नि + रुध्] निरोध करना। णिरुंभइ (...)। [illegible] णिरुंभमाण (...)। [illegible]

भइत्ता (सूअ १, ४ २)। कृ णिरुभियव्व णिरुद्धव्व (सुपा ४०४, विसे ३०८१)।

णिरुंभण न [निरोधन] रुकावट, अटकाव (सूअ १, ५, भवि)।

णिरुकंठ वि [निरुत्कण्ठ] उत्कण्ठा रहित, निरुत्साह (नाट)।

णिरुक्ख देखो णिरिक्ख। णिरुक्खइ (षड्)।

णिरुच्चार वि [निरुच्चार] १ उच्चार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन से वर्जित (... १ ८—पत्र १४६)। २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो (पण्ह १, ३)।

णिरुच्छव वि [निरुत्सव] उत्सव रहित (अभि १८६)।

णिरुच्छाह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (से १४, ३५)।

णिरुज वि [निरुज] १ रोग-रहित। २ न. रोग का अभाव। °सिख न [°शिख] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)।

णिरुज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम रहित, आलसी (उप, स ३१०, सुपा ३८८)।

णिरुट्ठाइ वि [निरुत्थायिन्] नहीं उठनेवाला (उत्त १, ३०)।

णिरुत्त वि [निरुक्त] १ उक्त, कथित (सम ७१)। २ न. निश्चित उक्ति (अणु)। ३ व्युत्पत्ति। (विसे २, ६६३)। ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष जिसमें वैदिक शब्दों का व्याख्यान (औप)।

णिरुत्त वि [निरुक्त] १ अनुगत, आश्रित, [illegible] 'तिउ णिरुत्तो नामो परम्म [illegible]' (विसे ८७६)। २ व्युत्पत्ति-युक्त (विसे ३१)।

णिरुत्त क्रिवि [दे] १ निश्चित, खास, जोरदार (दे ४, ३० पउम ३५, ८२, कुमा (... भवि), ता [illegible] णिरुत्तु [illegible]' (पउम ११, ६६)। २ वि. [illegible] (कुमा)।

णिरुत्ताव वि [निरुत्ताप] विशेष ताप-युक्त, संतप्त (उप)।

णिरुत्तास वि [निरुत्साह] [illegible] (...)।

णिरुत्तार वि [निरुत्तार] उत्तार रहित बिना [illegible], [illegible] (... ११, ६६)।

णिरुत्ति स्त्री [निरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे ६६६)।

णिरुत्तिअ वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द (अणु)।
णिरुत्तिय न [नैरुक्तिक] निरुक्ति, व्युत्पत्ति, 'नो कत्थवि नाणित्ति निरुत्तियं चेइसद्दस्स' (संबोध—१२)।
णिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेटवाला, अनुदर। स्त्री °रा (पण्ह १, ४)।
णिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुआ (णाया १, १)। २ आवृत, आच्छादित (सूअ १, २, ३)। ३ पुं मत्स्य की एक जाति (कप्प)।
णिरुद्ध वि [निरुद्ध] थोड़ा, संक्षिप्त (सूअ १, १४, २३)।
णिरुद्धव्व } णिरुब्भंत } देखो णिरुंभ।
णिरुलि पुस्त्री [दे] कुम्भीर—नक्र की आकृति-वाला एक जन्तु (दे ४, २७)।
णिरुवक्किट्ठ देखो णिरुवक्किट्ठ (भग)।
णिरुवक्कम वि [निरुपक्रम] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य) (सुर २, १३२, सुपा २०४)। २ विघ्नरहित, अबाध 'निरु-निरुवक्कमविग्घमग्गं तममग्गरिउचक्को' (सुपा ३६)।
णिरुवक्कय वि [दे] अकृत, नहीं किया हुआ (दे ४, ४१)।
णिरुवकिट्ठ वि [निरुपक्लिष्ट] क्लेश-वर्जित, दुःखरहित (भग २५, ७)।
णिरुवक्केस वि [निरुपक्लेश] शोक आदि क्लेशों से रहित (ठा ७)।
णिरुवक्खय वि [निरुपाख्य] शब्द से न कहा जा सके वह, अनिर्वचनीय (धर्मसं २८१, १३००)।
णिरुवग वि [निरूपक] प्रतिपादक (सम्मत्त १६०)
णिरुवगारि वि [निरुपकारिन्] उपकार को नहीं माननेवाला, प्रत्युपकार नहीं करनेवाला (आचम)।
णिरुवग्गह वि [निरुपग्रह] उपकार नहीं करनेवाला (ठा ४, ३)।
णिरुवट्ठाणि वि [निरुपस्थानिन्] निरुद्यमी, आलसी (आचा)।
णिरुवद्दव वि [निरुपद्रव] उपद्रव-रहित, आबाधा वर्जित (औप)।
णिरुवम वि [निरुपम] असमान, असाधारण (औप, महा)।
णिरुवयरिय वि [निरुपचरित] वास्तविक, तथ्य (णाया १, ५)।
णिरुवयार वि [निरुपकार] उपकार-रहित (उव)।
णिरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप वर्जित, अ-लिप्त (कप्प), 'रयणमिव णिरुवलेवा' (पउम १४, ६४)।
णिरुवसग्ग वि [निरुपसर्ग] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित (सुपा २८७)। २ पु मोक्ष, मुक्ति (पडि, धर्म २)। ३ न. उपसर्ग का अभाव (वव ३)।
णिरुवहय वि [निरुपहत] १ उपघात-रहित, अक्षत (भग ७, १)। २ रुकावट से शून्य, अप्रतिहत (सुपा २९८)।
णिरुवहि वि [निरुपधि] माया-रहित, निष्कपट (दसनि १)।
णिरुवार सक [ग्रह्] ग्रहण करना। णिरु-वारइ (हे ४, २०९)।
णिरुवारिअ वि [गृहीत] उपात्त, गृहीत (कुमा)।
णिरुवालंभ वि [निरुपालम्भ] उपालम्भ-शून्य (गउड)।
णिरुव्विग्ग वि [निरुद्विग्न] उद्वेग-रहित (णाया १, १—पत्र ६)।
णिरुस्साह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (सूअ १, ४, १)।
णिरूव सक [नि + रूपय्] १ विचार कर कहना। २ विवेचन करना। ३ देखना। ४ दिखलाना। ५ तलाश करना। निरूवेइ (महा)। वकृ णिरूवित, निरूवमाण (सुर १५, २०५, कुप्र २७५)। संकृ णिरूविऊण (पंचा ८)। कृ. णिरूवियव्व (पंचा ११)। हेकृ निरूविउं (कुप्र २०८)।
णिरूवण न [निरूपण] १ विलोकन, निरी-क्षण (उप ३३७)। २ वि. दिखलानेवाला स्त्री. °णी (पउम ११, २२)।
णिरूवणया स्त्री [निरूपणा] निरूपण (उप ६३०)।
णिरूवाविअ वि [निरूपित] गवेषित, जिस की खोज कराई गई हो वह (स ५३६,७४२)।
णिरूविअ वि [निरूपित] १ देखा हुआ (से १३ १३, सुपा ५२३)। २ आलोचना कर कहा हुआ। ३ विवेचित, प्रतिपादित (हे २, ४०)। ४ दिखलाया हुआ। ५ गवेषित (प्राकृ)।
णिरूसुअ वि [निरुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित (गउड)।
णिरूह पु [निरूह] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन (णाया १, १३)।
णिरेअ वि [निरेजस्] निष्कम्प, स्थिर (भग २५ ४)।
णिरेयण वि [निरेजन] निश्चल, स्थिर (कप्प औप)।
णिरोणाम पु [निरवनाम] नम्रता-रहित, गर्वित उद्धत (उव)।
णिरोय वि [नीरोग] रोग-रहित (औप, णाया १, १)।
णिरोव पु [दे] आदेश, आज्ञा, रुक्का (सुपा २२४)।
णिरोवयार वि [निरुपकार] उपकार को नहीं माननेवाला (ओघ ११३ भा)।
णिरोवयारि वि [निरुपकारिन्] ऊपर देखो (उव)।
णिरोविअ देखो णिरूविअ (सुपा ४५६, महा)।
णिरोह पु [निरोध] रुकावट, रोकना (ठा ४, १, औप पाअ)।
णिरोहग वि [निरोधक] रोकनेवाला (रंभा)।
णिरोहण न [निरोधन] रुकावट (पण्ह १, १)।
णिलक्क पु [दे] पतद्ग्रह, पीकदान, ष्ठीवन-पात्र, थूकने का पात्र (दे ४, ३१)।
णिलय पु [निलय] घर, स्थान, आश्रय (से २, २, गा ८२१, पाअ)।
णिलयण न [निलयन] वसति, स्थान (विसे)।
णिलाड न [ललाट] भाल, कपाल (कुमा)।
णिलिअ देखो णिलीअ। णिलिअइ (षड्)।
णिलिन नीचे देखो।
णिलिज्ज } णिलीअ } सक [नी + ली] १ आश्लेष करना, भेटना, गले से लगाना। २ दूर करना। ३ अक. छिप जाना। णिलिज्जइ णिली-अइ (हे ४,५५)। णिलिज्जिज्जा (कप्प)। वकृ.

[illegible]

णिल्लूर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिल्लूरइ (हे ४, १२४)। णिल्लूरह (भारा ६८)।

णिल्लूरण न [छेदन] छेद, विच्छेद (कुमा)।

णिल्लूरिय वि [छिन्न] काटा हुआ, विच्छिन्न; 'पावतरिदुमा चणिल्लूरियदविय-मगडण' (पउम ८ २५८)।

णिलेव वि [निर्लेप] लेप रहित (विसे ३०८३)।

णिल्लेवग पु [निर्लेपक] रजक, धोबी (आचू ४)।

णिल्लेवण न [निर्लेपन] १ मल का दूर करना (पव २)। २ वि निर्लेप, लेप रहित (आव १६ आ)। °काल पुं [°काल] वह काल, जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो (भग)।

णिल्लेविअ वि [निर्लेपित] १ लेप-रहित किया हुआ। २ बिलकुल छूट गया हुआ (भग)।

णिल्लेढण न [निर्लेढन] उद्वर्तन, पोंछना (आचा २, ३, ३)।

णिल्लोभ } वि [निर्लोभ] लोभ रहित, अ-
णिल्लोह } लुब्ध (सुपा ३६१ श्रा १२, संबो)।

णिव पु [नृप] राजा, नरेश (कुमा रयण ८३)। °णगर वि [°संबन्धिन्] राज संबंधी, राजकीय (सुपा ४३६)।

णिवइ पु [नृपति] ऊपर देखो (ठा ३, १, पउम ३०, ६)। °मग्ग पु [°मार्ग] राज मार्ग, राज रास्ता (पउम ७९, १६)।

णिवइअ वि [निपतित] १ नीचे गिरा हुआ (आचा १, ५)। २ एक प्रकार का लिंग (ठा ४, ४)।

णिवइत्त वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला (ठा ४, ४)।

णिवक्खइत न [नि] पराक्रम, ताकना (ठ ४, ४)।

णिवाड सक [नि + पत्] नीचे डालना, फेंकना। णिवाडइ (हे)।

णिवज्ज अक [नि + सद्] बैठना। णिवज्जइ (हे ४, १२३)। णिवज्जमाण (१२३)। [illegible] (पि १, १)।

णिवज्ज अक [नि + सद्] सोना। णिवज्जइ (उत्त २०, ५)।

णिवट्ट सक [नि + वर्तय्] निवृत्त करना। निवट्टएज्जा (सूअ १ १०, २१)।

णिवट्ट अक [नि + वृत्] १ निवृत्त होना, लौटना, हटना। २ रुकना। वकृ णिवट्टंत (सुपा १६०)।

णिवट्ट वि [निवृत्त] १ निवृत्त, हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख। २ न निवृत्ति (हे ४, ३३२)।

निवट्टण न [निवर्तन] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध। २ जहां रास्ता बन्द होता हो वह स्थान (णाया १, २ —पत्र ७९)।

णिवट्टिम वि [निर्वर्तित] पका हुआ, फलित, सिद्ध (आचा २ ४, २, ३)।

णिवड अक [नि + पत्] नीचे पड़ना, नीचे गिरना। णिवडइ (उव, षड्, महा)। वकृ णिवडंत, णिवडमाण (गा ३४, सुर ३, १२७)। संकृ णिवडिऊण, णिवडिअ (दस ३, महा)।

णिवडण न [निपतन] अधः पतन (गउड)।

णिवडिअ वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ (से १४, ३४, गा २३४, उव पृ २६)।

णिवडिर वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला (सुपा ८९ गउड)।

णिवण्ण वि [निषण्ण] १ बैठा हुआ (महा, सुपा ६४ ७३)। २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (आव ५)। °णिवण्ण पु [°निषण्ण] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग (आव ५)।

णिवण्णुस्सिय पु [निषण्णोत्सृत] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (आव ५)।

णिवत्त सक णिवट्ट = नि + वृत्। वकृ णिवत्तमाण (सं १)। कृ णिवत्तणीअ (नाट—शकु १००)। प्रयो णिवत्तावि (वि ४४५)।

णिवत्त वि णिवट्ट = निवृत्त (षड्, नाट)।

णिवत्तग वि णिवट्टग (पणह १ २, १४, कप्प)।

णिवत्तय वि [निवर्त्तक] १ वापस आनेवाला लौटनेवाला। २ लौटानेवाला, वापस करनेवाला (हे २, ३०, प्राप्र)।
णिवत्ति स्त्री [निवृत्ति] निवर्त्तन (उव)।
णिवत्तिअ वि [निवर्त्तित] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध (स ३६४)।
णिवत्तिअ वि [निर्वर्त्तित] निष्पादित, 'निवत्तिया सवपूया' (स ७६३)।
णिवद्दि देखो णिवत्ति (संक्षि ६)।
णिवन्न देखो णिवण्ण (स ७६०)।
णिवय अक [नि + पत्] समाना, अन्तर्भूत होना। निवयत्ति (पव ८४ टी)।
णिवय देखो णिवड। णिवइज्जा, णिवएज्जा (कप्प, ठा ३,४)। वकृ णिवयत, णिवयमाण (उप १४२ टी, सुर ४, ६५, कप्प)।
णिवय पु [निपात] नीचे गिरना, अध-पतन (सुर १३, १६७)।
णिवरुण पु [निवरुण] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।
णिवस अक [नि + वस्] निवास करना, रहना। णिवसइ (महा)। वकृ णिवसत (सुपा २२५)। हेकृ णिवसिउ (सुपा ४६३)।
णिवसण न [निवसन] वस्त्र, कपडा (अभि १३६, महा, सुपा २००)।
णिवसिय वि [निवसित] जिसने निवास किया हो वह (महा)।
णिवसिर वि [निवसितृ] निवास करनेवाला (गउड)।
णिवह सक [गम्] जाना, गमन करना। णिवहइ (हे ४, १६२)।
णिवह अक [नश्] भागना, पलायन करना। णिवहइ (हे ४, १७८)।
णिवह सक [पिष्] पीसना। णिवहइ (हे ४, १८५, षड्)।
णिवह पुन [निवह] समूह, राशि, जत्था (से २, ४२, सुर ३, ३५, प्रासू १४४), 'अच्छउ ता फलनिवहं' (वज्जा १५२)।
णिवह पुन [दे] समृद्धि, वैभव (दे ४,२६)।
णिवहिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा)।
णिवहिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।
णिवाइ वि [निपातिन्] गिरनेवाला (आचा)।
णिवाड सक [नि + पातय्] नीचे गिराना। निवाडेइ (स ६६०)। वकृ. निवाडयंत (स ६८६)। सकृ. णिवाडेइत्ता (जीव ३)।
णिवाडिय वि [निपातित] नीचे गिराया हुआ (महा)।
णिवाडिर वि [निपातयितृ] नीचे गिरानेवाला (सण)।
णिवाण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, चरही (स ३१२)। °साला स्त्री [°शाला] पशुओं का पानी पिलाने का स्थान (महा)।
णिवाय देखो णिवाड। णिवायइ (कुमा)। णिवाएज्जा (पि १३१)।
णिवाय पु [दे] स्वेद, पसीना (दे ४, ३४, सुर १२, ८)।
णिवाय पु [निपात] १ पतन, अध-पतन, गिरना (गा २२२, सुपा १०३)। २ संयोग, सबन्ध, 'दिट्ठिणिवाआ समिमुहीए' (गा १४८, उत्त २, गउड)। ३ च, प्र आदि व्याकरण-प्रसिद्ध अव्यय (पण्ह २, २, सुपा २०३)। ४ विनाश (पिंड)।
णिवाय वि [निवात] पवन-रहित, स्थिर (पण्ह २, ३, स ४०३, ७४३)।
णिवायण न [निपातन] १ गिराना, निपातन, ढाहना (पण्ह १, २)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि, प्रकृति आदि के विना विभाग किये ही अखण्ड शब्द की निष्पत्ति (विसे २३)।
णिवार सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना, रोकना। णिवारेइ (उव, महा)। वकृ णिवारेत (महा)। कवकृ णिवारीअत, णिवारिज्जमाण (नाट—मृच्छ १५४, १३५)। कृ णिवारियव्व, णिवारेयव्व (सुपा ४८२, महा)।
णिवारग वि [निवारक] निषेध करनेवाला, रोकनेवाला (सुर १, १२६, सुपा ६३६)।
णिवारण न [निवारण] १ निषेध, रुकावट (भग ६,३३)। २ शीत आदि को रोकनेवाला, गृह, वस्त्र आदि, 'न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ' (उत्त २, ७)। ३ वि निवारण करनेवाला, रोकनेवाला, 'उवसग्गनिवारणो एसो' (अजि ३८)।
णिवारय देखो णिवारग (उप ५३० टी)।
णिवारि वि [निवारिन्] निवारक, प्रतिषेधक। स्त्री °रिणी (महा)।
णिवारिय वि [निवारित] रोका हुआ, निषिद्ध (भग प्रासू १६६)।
णिवास पु [निवास] १ निवसन रहना। २ वास-स्थान, घर (कुमा महा)।
णिवासि वि [निवासिन्] निवास करनेवाला रहनेवाला (महा)।
णिविअ देखो णिमिअ = न्यस्त (से १२ ३०)।
णिविट्ट देखो णिवट्ट = निवृत्त (सण)।
णिविट्ठ वि [निविष्ट] १ स्थित, बैठा हुआ (महा)। २ आसक्त, लीन (राज)।
णिविट्ठि वि [निविष्ट] लब्ध, उपात्त गृहीत (ठा ५,२)। °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] जैन साधुओं का एक तरह का आचार (ठा ५, २)।
णिविड देखो णिबिड (षड्, हे १, २४०)।
णिविडिअ देखो णिबिडिय (गउड, पि २४०)।
णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्त्तन उपरम प्रवृत्ति का अभाव (विसे २७९८, स १५४)। २ वापस लौटना, प्रत्यावर्त्तन (सुपा ३३२)।
णिविद्द वि [दे] १ सोकर उठा हुआ। २ निराश, हताश। ३ उद्भट। ४ नृशंस, निर्दय (दे ४, ४८)।
णिविन्न वि [निर्विज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित (तदु ५५)।
णिविस अक [नि + विश्] बैठना। वकृ णिविसत (धा १२)।
णिविस (अप) देखो णिमिस (भवि)।
णिविसिर वि [निवेष्टृ] बैठनेवाला (सण)।
णिवुज्झमाण वि [न्युह्यमान] नीयमान, जो ले जाया जाता हो वह (आचा २, ११, ३)।
णिवुट्ठ वि [निवृष्ट] बरसा हुआ (आचा २, ४, १, ४)।
णिवुड्ढ सक [नि + वर्धय्] १ त्याग करना, छोडना। २ हानि करना। वकृ णिवुड्ढेमाण (सुज्ज १, १)। सकृ णिवुड्ढित्ता (सुज्ज १)।

[illegible]

णिवेसण न [निवेशन] गृह, घर (उत्त १३, १८)।

णिवेसाविय वि [निवेशित] बैठाया हुआ (महा)।

णिव्व न [नीव्र] छदि, पटल-प्रान्त (दे ४, ४८ पाथ)।

णिव्व न [नीव्र] छपर के ऊपर का मगरैल (नाट १५६)।

णिव्व न [दे] १ बहुत, बिट। २ व्याज, बहाना (दे ४, ४८)।

णिव्वडर वि [दे] परिहास-रहित, भय (सुर १६७)।

णिव्वक्कल वि [निष्कल] वल्कल-रहित, (दे ६२)।

णिव्वट्ट [illegible] देखो णिव्वत्त = निर् + वृतय्। वक्र णिव्वट्टित्ता (ठा २, ४)।

णिव्वट्ट (अप) देखो णिवट्ट (हे ४, ४२२ टि)।

णिव्वट्टग वि [निर्वर्तक] बनानेवाला, कर्ता (भग ८)।

णिव्वट्टिम देखो णिवट्टिम (सम ७ ३३)।

णिव्वट्टिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ (आचा २ ८, २)।

णिव्वड सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वडइ (षड्)।

णिव्वड अक [भू] १ पृथक् होना, जुदा होना। २ स्पष्ट होना। णिव्वडइ (हे ४, ६२)।

णिव्वड देखो णिव्वल = निर् + पद् (सुपा ५३२)।

णिव्वडिअ वि [भूत] १ पृथग्भूत, जो अलग हुआ हो (दे ८८)। २ स्पष्टीभूत, [illegible] (सुर ४, २०४)।

णिव्वडिअ वि [निष्पन्न] सिद्ध हुआ, निर्मित [illegible] (सुर ३०३)।

णिव्वड वि [दे] [illegible] (४, २८)।

णिव्वण वि [निर्व्रण] [illegible] व्रण-रहित [illegible] (णाया १ ३ टीका)।

णिव्वण्ण सक [निर् + वर्णय्] १ देखना [illegible]। २ [illegible]। वक्र [illegible] (सुपा ४४ उप १०३१ टी)।

णिव्वत्त सक [निर् + वर्तय्] बनाना, पैदा सिद्ध करना। णिव्वत्तेइ (महा)। संकृ णिव्वत्तिऊण, णिव्वत्तेऊण (महा)।

णिव्वत्त सक [निर् + वृत्तय्] गोल बनाना, वर्तुल करना। कवकृ णिव्वत्तिज्जमाण (भग)।

णिव्वत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, रचित, निर्मित (महा ओघ)।

णिव्वत्त वि [निर्वर्त्य] बनाने योग्य, साध्य (प्राकृ २०)।

णिव्वत्तण न [निर्वर्तन] निष्पत्ति, रचना, बनावट (उप पृ १८)। °धिकरणिया, °हिगरणिया स्त्री [°धिकरणिकी] शस्त्र बनाने की क्रिया (ठा २, १; भग ३, ३)।

णिव्वत्तणया } स्त्री [निर्वर्तना] ऊपर देखो
णिव्वत्तणा } (पण्ण ३४; उत्त ३)।

णिव्वत्तय वि [निर्वर्तक] निष्पन्न करनेवाला, बनानेवाला (विसे ११६२; स ५६३; हे २, ३०)।

णिव्वत्ति स्त्री [निर्वृत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण (विसे ३००२)। देखो णिव्वित्ति।

णिव्वत्तिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ (स ३३६ सुर १४, २०१; सति १०)।

णिव्वत्तिय वि [निर्वृत्तित] गोलाकार किया हुआ (भग)।

णिव्वमिअ वि [दे] परिभुक्त (दे ४, ३६)।

णिव्वय सक [निर् + वृ] शान्त होना, उपशान्त होना। कृ णिव्वयणिज्ज (स ३०१)।

णिव्वय वि [निर्वृत] १ [illegible] (सुपा १, [illegible])। २ परिवृत, [illegible] (सार्ध १)।

णिव्वय वि [निर्व्रत] [illegible] (पउम २ ८८, उप [illegible])।

णिव्वयण न [निर्वचन] १ निरुक्ति [illegible] (महा)। २ उत्तर, जवाब (ठा [illegible])। ३ वि [illegible] [illegible] (पउम ८१)।

णिव्वयणिज्ज देखो णिव्वय = निर् + वृ।

णिव्वर सक [कथय्] दुःख कहना।

णिव्वरइ (हे ४, ३)। भूका णिव्वरही (कुमा)। कर्म
'कह तम्मि निव्वरिज्जउ,
दुक्ख कट्टुज्जुएण हिअएण।
अद्दाए पडिबिंबं व, जम्मि
दुक्खं न संकमइ (स ३०६)।

णिव्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ (हे ४, १२४)।

णिव्वरण न [कथन] दुःख-निवेदन (गा २५५)।

णिव्वरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

णिव्वल सक [मुच्] दुःख को छोडना। णिव्वलेइ (हे ४, ९२)।

णिव्वल अक [निर् + पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ (हे ४, १२८)।

णिव्वल देखो णिच्चल=क्षर्। णिव्वलइ (हे ४, १७३ टि)।

णिव्वल देखो णिव्वड=भू। वकृ णिव्वलन्त, णिव्वलमाण (से १, ३६, ७, ४३)।

णिव्वलिअ वि [दे] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ। २ प्रविगणित। ३ विघटित, वियुक्त (दे ४, ५१)।

णिव्वव सक [निर् + वापय्] ठंढा करना, बुझाना। णिव्ववेहि (स ४५५)। णिव्ववमु (काल)। वकृ णिव्ववंत (सुपा २२५)। कृ णिव्ववियव्व (सुपा २९०)।

णिव्ववण न [निर्वापण] १ बुझाना, शान्त करना। २ वि शान्त करनेवाला, ताप को बुझानेवाला (सुर ३, २३७)।

णिव्ववित्र वि [निर्वापित] बुझाया हुआ, ठंढा किया हुआ (गा ३१७, सुर २, ७४)।

णिव्वह अक [निर् + वह्] १ निभना, निर्वाह करना, पार पडना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ (स १०५, वज्जा ६)। कर्म. णिव्वुब्भइ (पि ५४१)। वकृ णिव्वहंत (श्रा १२, कुप्र ३३)। कृ निव्वहियव्व (कुप्र ३७५)।

णिव्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। णिव्वहइ (षड्)।

णिव्वहण न [निर्वहण] निर्वाह, अन्त, नाटक की एक संधि (सुपा १७५, कुप्र ३७५)।

णिव्वहण न [दे] विवाह, शादी (दे ४, ३९)।

णिव्वा अक [वि + श्रम्] विश्राम करना। णिव्वाइ (हे ४, १५९)। वकृ णिव्वाअंत (से ८, ८)।

णिव्वाघाइम वि [निर्व्याघातिम] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित (औप)।

णिव्वाघाय वि [निर्व्याघात] १ व्याघात-वर्जित (णाया १, १, भग, कप्प)। २ न व्याघात का अभाव (पण्ण २)।

णिव्वाघाया स्त्री [निर्व्याघाता] एक विद्या-देवी (पउम ७ १४५)।

णिव्वाण न [निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति (विसे १९७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख-निवृत्ति, 'निउणमणो निव्वाणं सुंदरि निस्संसयं कुणइ' (उप ७२८ टी, पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन (आव ४)। ४ वि बुझा हुआ, 'जह दीवो णिव्वाणो' (विसे १९९१, कुप्र ५१)। ५ पु ऐरवत वर्ष में होनेवाले एक जिन-देव का नाम (सम १५४)।

णिव्वाण न [निर्वाण] तृप्ति (दस ५, २, ३८)।

णिव्वाण न [दे] दुःख-कथन (दे ४, ३३)।

णिव्वाणि पु [निर्वाणिन्] भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिन-देव (पव ७)।

णिव्वाणी स्त्री [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन देवी (संति १, १०)।

णिव्वाय वि [निर्वाण] बीता हुआ, व्यतीत (से १४, १४)।

णिव्वाय वि [विश्रान्त] १ जिसने विश्राम किया हो वह (कुमा)। २ सुखित, निर्वृत (से १३, २३)।

णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित (णाया १, १, औप)।

णिव्वालिय वि [भावित] पृथक् किया हुआ (से १४, ५४)।

णिव्वाव देखो णिव्वव। णिव्वावेमि (स ३५२)। संकृ णिव्वाविऊण (निचू १)।

णिव्वाव पु [निर्वाप] घी, शाक आदि का परिमाण (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] एक तरह की भोजन कथा (ठा ४, २)।

णिव्वावइत्तअ (शौ) वि [निर्वापयितृक] ठंढा करनेवाला (पि ६००)।

णिव्वावण न [निर्वापण] बुझाना, विध्यापन (दस ४)।

णिव्वावणा न [निर्वापणा] बुझाना, ठंढा करना, उपशान्ति (गउड)।

णिव्वावग वि [निर्वापक] आग बुझानेवाला (सूअ १, ७, ५)।

णिव्वाविय वि [निर्वापित] ठंढा किया हुआ (णाया १, १, दस ५ १)।

णिव्वासण न [निर्वासन] देश निकाला (स ५३४, कुप्र ३४३)।

णिव्वासणा स्त्री [निर्वासना] ऊपर देखो (पउम ९९, ४१)।

णिव्वाह पु [निर्वाह] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ आजीविका, जीवन-सामग्री, 'निव्वाहं किंपि दाउं च' (सुपा ४८८)।

णिव्वाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करनेवाला (रंभा)।

णिव्वाहण न [निर्वाहण] १ निर्वाह, निभाना (सुपा ३९४)। २ निस्सार करना (राज)।

णिव्वाहिअ वि [निर्वाहित] अतिवाहित, विताया हुआ, गुजारा हुआ (से ९, ४२)।

णिव्वाहिअ वि [निर्व्याधिक] व्याधि-रहित, नीरोग (से ९, ४२)।

णिव्विअप्प देखो णिव्विगप्प (सम्म ३३)।

णिव्विआर वि [निर्विकार] विकार-रहित (गा ५०६)।

णिव्विइअ वि [निर्विकृतिक] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित (औप)। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतियों का त्याग किया जाता है (पव ४, पचा ५)।

णिव्विइगिच्छ वि [निर्विचिकित्स] फल-प्राप्ति में शंका-रहित (कस, धर्म २)।

णिव्विइगिच्छ न [निर्विचिकित्स्य] फल-प्राप्ति में सन्देह का अभाव (उत्त २८)।

[illegible] [निर्विचिकित्सा] [illegible] (औप, [illegible]) ।

[illegible] [निर् + विद्] [illegible] (उत्त [illegible] १६ १०) ।

[illegible] [निर् + विद्] [illegible] (सुपा [illegible]) ।

[illegible] [निर्विण्ण] [illegible] (सुपा [illegible]) । २ [illegible] (पउम ३३) ।

[illegible] (पउम ४८) ।

[illegible] [निर्वि[illegible]] [illegible] (पउम २१३) ।

[illegible] (पउम २ [illegible]) ।

[illegible] [निर्विघ्न] [illegible]-रहित, बाधा-वर्जित ([illegible] १८० [illegible]) ।

[illegible] [निर्विचिन्त] चिन्ता-रहित ([illegible] ७ १२४) ।

[illegible] [निर् + विद्] [illegible] ([illegible]) ।

[illegible] [निर्वि[illegible]] [illegible] (उत्त १२ २) ।

[illegible] [निर्विष्ट] [illegible], [illegible] ([illegible] ३० [illegible]) ।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ४ ३४) ।

[illegible] [निर्विष्ट] [illegible], [illegible] ([illegible]) । °[illegible] न [°[illegible]] [illegible] प्रतिपादित एक [illegible] ([illegible]) ।

[illegible] [निर्वि[illegible]] [illegible] ([illegible]) ।

[illegible] हुआ ([illegible]) ।

[illegible] । २ [illegible] (पउम ९६ ४) ।

[illegible] (सुपा [illegible]) ।

[illegible] [निर्विनुकम्प] [illegible] ([illegible]) ।

[illegible] ([illegible]) ।

[illegible] [निर्वि[illegible]] [illegible] ([illegible]) ।

[illegible] देखो [illegible] ([illegible] १३) ।

णिव्विजण वि [निर्विजन] १ मनुष्य-रहित । २ न. एकान्त स्थान (सुर ६, ४२) ।

णिव्विट्ठ वि [दे] विष्ट, बैठा हुआ, 'भईण-णिव्विट्ठा' (गा ७२८ टि) ।

णिव्विराम वि [निर्विराम] विराम-रहित (उप पृ १८३) ।

णिव्विलंब क्रिवि [निर्विलम्ब] विलम्ब-रहित, शीघ्र (सुपा २५५ सुर ५२) ।

णिव्विवेअ वि [निर्विवेक] विवेक-शून्य (सुपा ३२३, ५००, गउड सुर ८, १८१) ।

णिव्विस सक [निर् + विश्] त्याग करना । निव्विसेज्जा (कस) । वकृ. णिव्विसमाण (राज)।

णिव्विस सक [निर् + विश्] उपभोग करना (पिंड ११६ टी) ।

णिव्विस वि [निर्विष] विष रहित (औप) ।

णिव्विसंक वि [निर्विशङ्क] शङ्का-रहित, निर्भय (सुर १२, १६) ।

णिव्विसमाण न [निर्विशमान] १ चारित्र-विशेष (ठा ३, ४) । २ वि उक्त चारित्र का पालन करनेवाला (ठा ६) । °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] चारित्र विशेष की मर्यादा (कस) ।

णिव्विसय वि [निर्वेशक] उपभोग-कर्ता (पिंड ११६) ।

णिव्विसय वि [निर्विषय] १ विषयों की अभिलाषा से रहित (उत्त १४) । २ [illegible], निरर्थक (पंचा १२, उप ६२५) । ३ देश से बाहर किया हुआ, जिसको देशनिकाले की सजा हुई हो वह (सुर ६, ३६ सुपा ४६६)।

णिव्विसिट्ठ वि [निर्विशिष्ट] विशेष-रहित, समान, तुल्य (उप ५३० टी) ।

णिव्विसी स्त्री [निर्विषी] एक महौषधि (ती ५) ।

णिव्विसेस वि [निर्विशेष] १ विशेष रहित, समान, साधारण ([illegible] गउड ६६, प्रासू ६८) । २ अभिन्न, [illegible] (से १५, ६५) ।

णिव्वीइ स्त्री [निर्विकृति] तप-विशेष (संबोध ५७) ।

णिव्वीइय देखो णिव्विइअ (संबोध ५७) ।

णिव्वीरा स्त्री [निर्वीरा] पुत्र-रहित विधवा स्त्री (दे [illegible]) ।

णिव्वुअ वि [निर्वृत] निर्वृति-प्राप्त (स ५६३, कप्प) ।

णिव्वुइ स्त्री [निर्वृति] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति (कुमा, प्रासू १६४) । २ मन की स्वस्थता निश्चिन्तता (सुर ४, ८६) । ३ सुख, दुःख-निवृत्ति (आव ४)। ४ जैन साधुओं की एक शाखा (कप्प) । ५ एक राजकन्या (उप ६३६) । °कर वि [°कर] निर्वृतिजनक (पण्ण १) । °जणय वि [°जनक] निर्वृति का उत्पादक (गा ४२१) ।

णिव्वुइकरा स्त्री [निर्वृतिकरा] भगवान् सुमतिनाथ की दीक्षा शिबिका (विचार १२६) ।

णिव्वुड देखो णिव्वुअ (कुमा, आचा) ।

णिव्वुड वि [निर्वृत्त] अचित्त किया हुआ (दस ३, ६, ७) ।

णिव्वुड्ड देखो णिवुड्ड = नि+मस्ज् । वकृ. णिव्वुड्डमाण (राज) ।

णिव्वुड्ढ देखो णिवुड्ढ । वकृ. णिव्वुड्ढे-माण (सुज्ज ६—पत्र ८०) । संकृ. णिव्वु-ड्ढेत्ता (सुज्ज ६) ।

णिव्वुड्ढ वि [निर्व्यूढ] निर्वाहित, निभाया हुआ (गा ३२) ।

णिव्वुत्त देखो णिवुत्त (गा १५५) ।

णिव्वुत्त देखो णिव्वत्त = निर्वृत्त (पिंग) ।

णिव्वुत्ति देखो णिव्वत्ति (गा ८२८) ।

णिव्वुद देखो णिव्वुअ (संक्षि ६) ।

णिव्वुदि देखो णिव्वुइ (प्राकृ ८) ।

णिव्वुब्भ° देखो णिव्वह = निर् + वह् ।

णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह । २ सूत्र, [illegible] (गा २५५, से १, ८६) । ३ जिसने निर्वाह किया हो वह, पार प्राप्त (से [illegible] ४४) । ४ स्यक्त, परित्यक्त (स ५, ६२) । ५ बाहर निकाला हुआ, निष्कासित, 'निव्वूढा य पायस्स तत्तो गाहापासगसालाओ' (उप १११ टी) ।

णिव्वूढ वि [दे] १ स्तब्ध (दे ४, ३१) । २ घर का पश्चिम भाग (दे ४, २६) ।

णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] किसी ग्रंथ से उद्धृत कर बनाया हुआ ग्रंथ (दसनि १, १२) ।

णिव्वेअ पु [निर्वेद] मुक्तिकी इच्छा (सम्मत्त १६६)।

णिव्वेअ पु [निर्वेद] १ खेद, विरक्ति (कुमा, द्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण—निश्चय (ज्ञान) करना (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [निर्वेदन] १ खेद, वैराग्य। २ वि. वैराग्यजनक। स्त्री. °णी (ठा ४ २)।

णिव्वेट्ठ सक [निर् + वेष्टय्] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बांधना। वकृ णिव्वेट्टंत (विसे २७४५, आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] त्याग करना। णिव्वेढेइ (सुज्ज २, १)।

णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] मजबूती से वेष्टन करना। णिव्वेढिज्ज, णिव्वेढेज्ज (आचा २, ३, २, पि ३०४)।

णिव्वेढ वि [दे] नग्न, नंगा (दे ४, २८)।

णिव्वेद देखो णिव्वेअ (उत्त २६ २)।

णिव्वेर वि [निर्वैर] वैर-रहित (अच्चु ५६)।

णिव्वेरिस वि [दे] १ निर्दय, निष्करुण। २ अत्यन्त, अधिक (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [निर् + वेल्ल्] फुरना, सत्य ठहरना, साबित होना। णिव्वेल्लइ (पि १०७)।

णिव्वेल्लिअ वि [निर्वेल्लित] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [निर्द्वेष] द्वेष-रहित (से १५, ६५)।

णिव्वेस पु [निर्वेश] १ लाभ, प्राप्ति (ठा ५, २)। २ व्यवस्था, 'कम्माण कप्पिआण काही कम्मतरेसु को णिव्वेसं' (अच्चु १८)।

णिव्वेहणिया स्त्री [निर्वेधनिका] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

णिव्वोढव्व वि [निर्वोढव्य] निर्वाह-योग्य, वहन करने योग्य, निभाने लायक (श्राव ४)।

णिव्वोल सक [कृ] क्रोध से होठ को मलिन करना। णिव्वोलइ (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [करण] क्रोध से होठ को मलिन करना (कुमा)।

णिस° देखो णिसा (कुमा, पउम १२, ६५)।

णिस सक [नि + अस्] स्थापन करना। णिसेइ (औप)।

णिसंत वि [निशान्त] १ श्रुत, सुना हुआ (णाया १, १, ४ उवा)। २ अत्यन्त ठढा (आवम)। ३ रात्रि का अवसान, प्रभात, 'जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवलभारह तु' (दस ६ १, १४)।

णिसस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पुं [निसर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति (ठा २, १, कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग (विसे)।

णिसग्ग वि [नैसर्ग] स्वभाव से होनेवाला, स्वाभाविक (सुपा ६४८)।

णिसग्ग न [नैसर्ग] जात्यन्ध की तरह स्वभाव से अज्ञता (सूअ २, ३, १६)।

णिसग्गिय वि [नैसर्गिक] स्वाभाविक (सण)।

णिसज्ज पु. देखो णिसज्जा 'निसज्जे वियडणाए' (वव १)।

णिसज्जा स्त्री [निषद्या] १ आसन (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना (वव ४)। देखो णिसिज्जा।

णिसट्ठ वि [निसृष्ट] १ निकाला हुआ, त्यक्त १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [दे] प्रचुर, बहुत (ओघ ८७)।

णिसट्ठ (अप) वि [निषण्ण] बैठा हुआ (सण)।

णिसढ पु [निषध] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत (ठा २, ३)। २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम सैनिक (से ४, १०)। ३ बैल, साँढ (सुज ४)। ४ बलदेव का एक पुत्र (निर १,५, कुप्र ३७२)। ५ देश-विशेष। ६ निषध देश का राजा (कुमा)। ७ स्वर-विशेष (हे १, २२६, प्राप्र)। °कूड न [°कूट] निषध पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)। °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष (ज ४)।

णिसण्ण वि [निषण्ण] १ उपविष्ट, स्थित (गा १०८, ११६, उत्त २०)। २ कायोत्सर्ग का एक भेद (श्राव ५)।

णिसण्ण वि [नि संज्ञ] संज्ञा रहित (से ६, ३८)।

णिसत्त वि [दे] सतृप्त मनोपयुक्त (दे ४, ३०)।

णिसन्न देखो णिसण्ण (उव, णाया १, १)।

णिसम सक [नि + शमय्] सुनना। वकृ णिसमेंत (आवम)। कवकृ णिसम्मंत (गउड) सकृ णिसमिअ, णिसम्म (नाट, वेणी ६८, उवा, आचा)।

णिसमण न [निशमन] श्रवण, आकर्णन (हे १, २६६, गउड)।

णिसम्म अक [नि+सद्] १ बैठना। २ सोना, शयन करना। णिसम्मउ (से ६, १७)। हेकृ णिसम्मिउ (से ५, ४२)।

णिसर देखो णिसिर कवकृ निसरिज्जमाण (भग)।

णिसल्ल देखो णिस्सल्ल (श्रा ४०)।

णिसह देखो णिसढ (इक)।

णिसह देखो णिस्सह (षड्)।

णिसह सक [नि + सह्] सहन करना। णिसहइ (प्राकृ ७२)।

णिसा स्त्री [निशा] अन्धकारवाली नरक-भूमि (सूअ १, ५, १, ५)।

णिसा [निशा] १ रात्रि, रात (कुमा, प्रासू ५५)। २ पीसने का पत्थर, शिलौट, सिलवट (उवा)। °अर पु [°कर] चन्द्र, चाँद (हे १, ८, षड्)। °अर पु [°चर] राक्षस (कप्पू, से १२, ६६)। °अरेंद पु [°चरेन्द्र] राक्षसो का नायक, राक्षस-पति (से ७, ५६)। °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (सुपा ४१६)। °लोढ न [°लोष्ट] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढा (उवा)। °वइ पु [°पति] चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा (गउड)। देखो णिसि°।

णिसाण सक [नि + शाणय्] शान पर चढाना, पैनाना, तीक्ष्ण करना। सकृ निसाणिऊण (स १४३)।

णिसाण न [निशाण] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है (गउड, सुपा २८)।

णिसाणिअ वि [निशाणित] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ, पैना, धारदार, नुकीला (सुपा ५६)।

णिसाम देखो णिसम। णिसामेइ (महा)। वकृ णिसामेंत (सुर ३ ७८)। सकृ. णिसामिऊण, णिसामित्ता (महा, उत्त २)।

[illegible]

णिसिद्ध वि [निषिद्ध] प्रतिषिद्ध, निवारित (दसा १०)।

णिसिन्न वि [निषण्ण] स्थापित (सर्व ६३)।

णिसियण न [निषदन] उपवेशन (पव)।

णिसिर सक [नि + सृज्] १ बाहर निकालना। २ दान करना। ३ [illegible]। णिसिरइ [illegible] 'णिसिरामि [illegible] निसिरति [illegible], तेसि दु पाणिणि [illegible]' (सुज [illegible])। कर्म. णिसिरिज्जइ, [illegible] (णि [illegible])। [illegible] निसिरंत (णि २३४)। [illegible] निसिरिज्जमाण (णि २३४)। [illegible] णिसिरित्ता (णि २३४)। [illegible] णिसिरिज्जा (णि २०३)।

णिसिरण न [निसर्जन] १ निस्सारण (आव ७)। २ दान (णाया १, १६)।

णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग, णिसिरणा } दान (आचा २, १, १०)। २ [illegible] [illegible] (भग)।

णिसीअ सक [नि + षद्] बैठना। णिसीयइ (कप्प)। वकृ णिसीअंत, णिसीअमाण (भग १३, ६, कप्प [illegible])। संकृ णिसिअत्ता (कप्प [illegible]) णिसीइत्तए (कस)। कृ णिसीअव्व (णाया १, १, [illegible])।

णिसीअण न [निषदन] [illegible], बैठना (उप [illegible])।

णिसीआवण न [निषादन] बैठाना (कप्प [illegible])।

णिसीढ [illegible] णिसीह = निशीथ [illegible]।

णिसीढ [illegible] णिसीअण (धीर)।

[illegible] [निशीथ] १ [illegible] (निचू)। २ [illegible]।

[illegible] [निशीथिका] [illegible]

णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन-स्थान (आचा २, २, २)। २ थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान (सम १४, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन (आचा २, २, २)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग (पडि, कुमा)। ३ व्यापारान्तर के निषेध का आचार (ठा १०)। देखो णिसेहिया।

णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात (उप पृ १२७)। °नाह पु [°नाथ] चन्द्रमा (कुमा)।

णिसुअ वि [दे. निश्रुत] श्रुत, आकर्णित (दे ४, २८, सुर १, १६६, २, २२६, महा, पात्र)।

णिसुंद पु [निसुन्द] रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६)।

णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादन करना। वकृ णिसुंभत णिसुंभमन (से ५, ६६, [illegible], [illegible])।

णिसुंभ पु [निशुम्भ] १ [illegible] एक राजा, एक प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६, पव २११)। २ [illegible] (पिंग)।

णिसुंभण न [निशुम्भन] १ मर्दन, व्यापादन, [illegible]। २ वि मार डालनेवाला (सुपा १, ५, [illegible])।

णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] [illegible] (णाया २ [illegible])।

णिसुंभिय वि [निशुम्भित] निपातित, व्यापादित (सुपा १६०)।

णिसुट्ट } [illegible] [illegible] (दे ४, णिसुट्टिअ } २५८, [illegible] १०, ३६)।

णिसुढ [illegible] णिसुट्ट = [illegible]।

णिसुद्द [illegible] णिसुद्ध (दे ४, २५८ [illegible])।

णिसुढ सक [नम्] [illegible] णिसुढइ (दे ४, २५८)।

णिसुढ सक [नि + [illegible]] [illegible]

णिसुढिअ वि [नत] [illegible]

णिसुढिअ वि [निशुम्भित] [illegible]

णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ (कुमा)।

णिसुण सक [नि+श्रु] सुनना, श्रवण करना। निसुणइ, णिसुणेइ, णिसुणेमि (सण, महा, नट्टि १२८)। वकृ. निसुणंत, निसुणमाण सुपा १०६, सुर १२, १७४)। कवकृ निसुणिज्जंत (सुपा ४५, रयण ६४)। संकृ निसुणिउ, निसुणिऊण, णिसुणिऊण (सुपा १४, महा, पि ५८५)।

णिसुद्ध वि [दे] १ पातित, गिराया हुआ (दे ८, ३६, पाग्र से ५, ६८)।

णिसुम्भन देखो णिसुभ = नि + शुम्भ्।

णिस्सुग देखो णिस्सुग (सुपा ३७०)।

णिसुढ देखो णिसुढ = नि + शुम्भ्। हेकृ निसुढिउ (सुपा ३६६)।

णिसुढ देखो णिसह = नि + सह्। निसूढइ (प्राकृ ७२)।

णिसेग देखो णिसेय (पच ५, ४६)।

णिसेज्जा स्त्री [निषद्या] वस्त्र, कपड़ा (पव १२७ टी)।

णिसेज्जा देखो णिसज्जा (उत्त, पव ६७)।

णिसेज्झ वि [निषेध्य] निषेध-योग्य (धर्मस ६६३)।

णिसेणि देखो णिस्सेणि (सुर १३, १६०)।

णिसेय पु [निषेक] १ कर्म पुद्गलों की रचना-विशेष (ठा ६)। २ सेचन, सींचना, 'ता सपइ जिणवरविवदनणामयनिएण पीणिज्जउ नियदिट्ठि' (सुपा २६६) 'काग्रावि कुणंति निरिक्खउग्गनिसेय' (सुपा २०)।

णिसेव सक [नि + सेव्] १ सेवा करना, आदर करना। २ आश्रय करना। निसेवइ, निसेवए (महा उत्त)। वकृ णिसेवमाण (महा)। कवकृ णिसेविज्जंत (ओघ ५६)। कृ निसेवणिज्ज (सुपा ३७)।

णिसेव सक [नि + सेव्] आचरना। णिसेवए (ग्रज्झ १७६)।

णिसेवग देखो णिसेवय (सूत्र २, ६, ५)।

णिसेवणा स्त्री [निषेवणा] सेवा, भजना (उत्त ३२, ३)।

णिसेवय वि [निषेवक] १ सेवा करनेवाला, सेवक। २ आश्रय करनेवाला (पुष्फ २५१)।

णिसेवा स्त्री [निषेवा] ऊपर देखो (सम्मत्त १५५ सबोध ३४)।

णिसेवि वि [निषेविन्] ऊपर देखो (स १०)।

णिसेविय वि [निषेवित] १ सेवित, आदृत (आचम)। २ आश्रित (उत्त २०)।

णिसेह सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना। निसेहइ (हे ४, १३४)। कवकृ निसिज्झमाण (सुपा ५७२)। हेकृ निसेहिउ (स १६८)। कृ 'निसेहियव्वा सययपि माया' (सत ३५)।

णिसेह पु [निषेध] १ प्रतिषेध, निवारण (उव, प्रासू १८१)। २ अपवाद (ओघ ५५)।

णिसेहण न [निषेधन] निवारण (आवम)।

णिसेहणा स्त्री [निषेधना] निवारण (आव १)।

णिसेहिया देखो णिसीहिआ = नैषेधिकी। १ मुक्ति, मोक्ष। २ श्मशान-भूमि। ३ बैठने का स्थान। ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग (राज)।

णिस्स वि [निःस्व] निर्धन, धन-रहित (पाग्र)। °यर वि [°कर] १ निर्धन-कारक। २ कर्म को दूर करनेवाला (आचा २, १६, ६)।

णिस्सक पु [दे] निर्भर (दे ४, ३२)।

णिस्संक वि [निःशङ्क] १ शङ्का-रहित (सूत्र २, ७, महा)। २ न शङ्का का अभाव (पचा ६)।

णिस्संकिअ वि [निःशङ्कित] १ शङ्का-रहित (ओप ५६ भा, णाया १, ३)। २ न शङ्का का अभाव (उत्त २८)।

णिस्संग वि [निःसङ्ग] सङ्ग-रहित (सुपा १४०)।

णिस्संचार वि [निःसंचार] संचार रहित, गमनागमन-वर्जित (णाया १, ८)।

णिस्संजम वि [निःसंयम] संयम-रहित (पउम २७, ५)।

णिस्संत वि [निःशान्त] प्रशान्त, अतिशय शान्त (राय)।

णिस्संद देखो णीसंद (पण्ह १, १, नाट—मालती ५१)।

णिस्संदेह वि [निस्संदेह] संदेह-रहित, निश्चय, निःसंशय (काल)।

णिस्संधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, साधा से रहित (पण्ह १, १)।

णिस्संस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय (महा)।

णिस्संस वि [निःशंस] श्लाघा-रहित (पण्ह १, १)।

णिस्संसय वि [निःसंशय] १ संशय-रहित। २ क्रिवि निःसंदेह, निश्चय (अभि १८४, आवम)।

णिस्सक्क सक [नि + ष्वष्क्] कम करना, घटाना। संकृ निस्सक्किय (आचा २, १, ७, २)।

णिस्सण पु [निःस्वन] शब्द, आवाज (कुप्र २७)।

णिस्सण्ण वि [निःसंज्ञ] संज्ञा-रहित (सूत्र १, ५, १)।

णिस्सत्त वि [निःसत्त्व] धैर्य-रहित सत्त्वहीन (सुपा ३५६)।

णिस्सन्न देखो णिसण्ण (रयण ५)।

णिस्सम्म अक [निर् + श्रम्] बैठना। वकृ णिस्सम्मंत (से ६, ३८)।

णिस्सय पु [निश्रय] देखो णिस्सा (सबोध १६)।

णिस्सर अक [निर + सृ] बाहर निकलना। णिस्सरइ (कप्प)। वकृ णिस्सरंत (नाट—चैत ३८)।

णिस्सरण वि [निःसरण] निर्गमन, बाहर निकलना (ठा ४, २)।

णिस्सरण वि [निःशरण] शरण-रहित, त्राण-वर्जित (पउम ७३, ३२)।

णिस्सरिअ वि [दे] त्रस्त, खिसका हुआ (दे ४ ४०)।

णिस्सल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित (उप ३२० टी, द्र ५७)।

णिस्सस अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना। निस्ससइ, णिस्ससंति (भग)। वकृ णिस्ससिज्जमाण (ठा १०)।

णिस्सह वि [निःसह] मन्द, अशक्त (हे १, १३, ९३, कुमा)।

णिस्सा स्त्री [निश्रा] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा (ठा ५, ३)। २ अधीनता (उप १३० टी)। ३ पक्षपात (वव ३)।

णिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन (पण्ह १, ३)। °पय न [°पद] अपवाद (बृह १)।

णिस्साण पुन [दे] वाद्य-विशेष, निशान, 'वज्जिरनिस्साणतूररवगज्जो' (धर्मवि ५६)।

णिम्मार सक [निर् + मारय्] [illegible] (पिंड ५१८)।

णिम्मार) वि [निर्मार] १ [illegible],
णिम्मारग) [illegible] १, ७, [illegible])। २ [illegible] (पाया)।

णिम्मारग वि [निर्मारक] [illegible] [illegible]।

णिम्मारिय वि [निर्मारित] १ [illegible] हुआ। २ [illegible], [illegible] हुआ (सुपा १, १८)।

णिम्मास पुं [निर्मास] [illegible], [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible] (प्राप्र)।

णिम्माहार वि [निराहार] [illegible], [illegible] (णाया)।

णिम्मिय वि [निर्मित] [illegible] (सुपा २५४)।

णिम्मिदिय न [निमिन्दिय] [illegible] (विसे ५०१)।

णिम्मिन सक [निर् + मिन] [illegible], [illegible]। वह णिम्मिनमाण [illegible] णिम्मिनिय (पण्ह ४, १)।

णिम्मिरोह वि [निर्मोह] [illegible] (वि १४०)।

णिम्मिय वि [निर्मित] १ [illegible] (सू १०, [illegible] ८)। २ [illegible], [illegible] (सूअ १, १, ३ ठा ४, २)। ३ [illegible] (पउम ४, ३)।

णिम्मिय वि [निर्मित] १ [illegible] (पउम ३, ६, ३३)। २ [illegible], [illegible] (पउम ३)।

णिम्मुय वि [निर्मुक्त] [illegible], [illegible] (सुपा ३८)।

णिम्मुहीय वि [निर्मुहीत] [illegible], [illegible] (पउम ९, ८८ ठा ४, ३)।

णिम्मुक्क वि [निर्मुक्त] [illegible], [illegible]।

[illegible] (पउम १२७)।

[illegible] [illegible] (पउम १, [illegible])।

[illegible] [illegible] १ [illegible], [illegible] १ [illegible]।

२ दुर्ग, माला, विशेष (चौर आदि)। ३ मनुष्य जाति (उत्त ८)।

णिम्मेसमिर वि [नैमेषमिक] मुमुक्षु मोक्षार्थी (भग १५)।

णिम्सेस वि [निःशेष] सर्व, सब, सकल (उप २००)।

णिह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश (से १, ४८ गा ११४ दे १, ५१)। २ न. बहाना, व्याज, छल (पाप)।

णिह वि [निह] १ मायावी, कपटी (सूअ १, ६)। २ पीड़ित (सूअ १, २ १)। ३ न आघात-स्थान (सूअ १ ५, २)।

णिह वि [स्निह] रागी, राग-युक्त (प्राचा)।

णिहनव्व देखो णिहण = नि + हन्।

णिहम पुं [निहर्ष] घर्षण (गउड)।

णिहमण न [निहर्षण] घर्षण, रगड़ (से ५, ४६ गउड)।

णिहट्टु अ १ दूर कर, दूर हटाकर (आचा)। २ स्थापन कर (गाया १, १६)।

णिहट्ठ वि [निघृष्ट] घिसा हुआ (हे २, १७४)।

णिहण सक [नि + हन्] १ निहत करना, मारना। २ फेंकना। णिहणामि (सुप्र २६२)। णिहणाहि (गण)। भूका— णिहणिंसु (पाया)। वह णिहणत (गण)। संकृ णिहणित्ता (वि ५८२)। कृ णिहनव्व (पउम ६, १७)।

णिहुण सक [नि + स्तन्] [illegible]। णिहुणंति [illegible] (पउम ११८)। हृद 'आरा [illegible] निहणि उस पासदो' (गण)।

णिहण न [निधन] [illegible], [illegible], विनाश (दे ४, २३)।

णिहण न [निधन] १ मरण, विनाश (पाप, [illegible] ४६)। २ पुं [illegible] का एक सुभट (पउम ५६ २३)।

णिहणण न [निहनन] [illegible], मारना (उप म १६३)।

णिहणिअ वि [निहत] मारा हुआ (सुपा १५८ सण)।

णिहणा सक [निधनय्] [illegible] [illegible]। [illegible] (सण)। [illegible] (सण)।

णिहत्त देखो णिहत्त (भग)।

णिहत्तण न [निघत्तन] कर्म का निविड़ बन्धन (भग)।

णिहत्ति देखो णिधत्ति (राज)।

णिहम्म सक [नि + हम्म्] जाना, गमन करना। णिहम्मइ (हे ४, १६२)।

णिहय वि [निहत] मारा हुआ (गा ११८, सुर ३, ४६)।

णिहय वि [निखात] गाड़ा हुआ (स ७५६)।

णिहर सक [नि + हृ] पानाना जाना (प्रामा)।

णिहर सक [आ + क्रन्द्] चिल्लाना। णिहरइ (षड्)।

णिहर सक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णिहरइ (षड्)।

णिहरण देखो णीहरण (णाया १, २—पत्र ८६)।

णिहव देखो णिहुव। णिहवइ (गउड, वि ४१३)।

णिहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

णिहव पुं [निवह] समूह (षड्)।

णिहस सक [नि + घृष्] घिसना। संकृ. णिहसिऊण (उत्त)।

णिहस पुं [निकष] १ कसपट्टा, कसौटी का पत्थर (पाप)। २ कसौटी पर की जाती रेखा (हे १, १८६, २६०, प्राप्र)।

णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड़ (से ६, ३३)।

णिहस पुं [दे] वल्मीक, सर्प आदि का बिल (दे ४, २५)।

णिहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड़ (से ६ १०, गा १५१, गउड पउम ११८)।

णिहसिय वि [निघर्षित] घिसा हुआ (पउम १५०)।

णिहा स्त्री [निहा] माया, कपट (सूअ १, ८)।

णिहा सक [नि + धा] स्थापन करना। णिहेइ (स ७३८)। भवि णिहिस्सं (स ८, १०)। संकृ णिहाय (सूअ १, ७)।

णिहा सक [नि + हा] त्याग करना। संकृ णिहाय (सूअ १, १५)।

णिहा) सक [दृश्] देखना। णिहइ,
णिहाअ) णिहाअइ (षड्)।

णिहाण न [निधान] वह स्थान जहां पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना, भण्डार (उवा, गा ३१८, गउड)।
णिहाय पु [दे] १ स्वेद, पसीना (दे ४, ४६)। २ समूह, जत्था (दे ४, ४६, से ४, ३८, म ४४६, भवि, पाअ, गउड, सुर ३, २३१)।
णिहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन (से १५, ७०, महा)।
णिहाय देखो णिहा = नि + धा, नि + हा।
णिहाय पु [निह्राद] अव्यक्त शब्द (सुख ४, ६)।
णिहार पुं [निहार] निर्गम (पराह १, ५, ठा ८)।
णिहारिम न [निर्हारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकालकर संस्कार किया जाय उसका मरण (भग)। २ वि. दूर जानेवाला, दूर तक फैलनेवाला (पराह २, ५)।
णिहाल देखो णिभाल। णिहालेहि (स १००)। वकृ णिहालन्त, णिहालयत (उप ६८८ टी, ६८६ टी)। संकृ. णिहालेउं (गच्छ १)। कृ. णिहालेयव्व (उप १००७)।
णिहालण न [निभालन] निरीक्षण, अवलोकन (उप पृ ७२, सुर ११, १२, सुपा २३)।
णिहालिअ वि [निभालित] निरीक्षित (पाअ, स १००)।
णिहि वि [निधि] १ खजाना, भडार (णाया १, १३)। २ धन आदि से भरा हुआ पात्र। (हे १, ३५, ३, १६, ठा ५, ३), 'अच्छेरंव णिहिं विअ सग्गे रज्ज व अमअपाणं व' (गा १२५)। ३ चक्रवर्ती राजा की संपत्ति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि (ठा ६)। °नाह पु [°नाथ] कुबेर, धनेश (पाअ)।
णिहि पुस्त्री [निधि] लगातार नव दिन का उपवास (संबोध ५८)।
णिहिअ वि [निहित] स्थापित (हे २, ६६, प्राप्र)।
णिहिण्ण वि [निभिन्न] विदारित (अच्चु १६)।
णिहित्त देखो णिहिअ (गा ५६५, काप्र ६०६, प्राप्र)।
णिहिप्पत देखो णिहा = नि + धा।

णिहिल वि [निखिल] सब, सकल (अच्चु ६, आरा ५५)।
णिहिल्ल देखो णिहिअ (सुख २, ४३)।
णिही स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राज)।
णिहीण वि [निहीन] न्यून (कुप्र ४५४)।
णिहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र, 'अत्थि निहीणे देहे किं रागनिबंधणं तुज्झ ?' (उप ७२८ टी)।
णिहु स्त्री [रिनहु] औषधि-विशेष (जीव १)।
णिहुअ वि [निभृत] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (से १३,१५, महा)। २ विनीत, अनुद्धत (से ४, ५६)। ३ मन्द, धीमा (पाअ, महा)। ४ निश्चल, स्थिर (उत्त १६)। ५ असम्भ्रान्त, सम्भ्रमरहित (दस ६)। ६ धृत, धारण किया हुआ। ७ निर्जन, एकान्त। ८ अस्त होने के लिए उपस्थित (हे १, १३१)। ६ उपशान्त (पराह २, ५)।
णिहुअ वि [दे] १ व्यापार रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट (दे ४, ५०, से ४, १, सूअ १, ८, बृह ३)। २ तूष्णीक, मौन (दे ४, ५०, सुर ११, ८४)। ३ न सुरत, मैथुन (दे ४, ५०, षड्)।
णिहुअण देखो णिहुवण (गा ४८३)।
णिहुआ स्त्री [दे] कामिता, सभोग के लिए प्रार्थित स्त्री (दे ४, २६)।
णिहुण न [दे] व्यापार, धन्धा (दे ४ २६)।
णिहुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (पउम १०२, १६७)।
णिहुत्थिभगा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३५)।
णिहुव सक [कामय्] संभोग का अभिलाष करना। णिहुवइ (हे ४, ४४)।
णिहुवण न [निधुवन] सुरत, संभोग (कप्पू, काप्र १६४), 'णिहुवणणुविअणाहिकूविआ' (मै ४२)।
णिहूअ न [दे] १ सुरत, मैथुन (दे ४,२६)। २ वि अकिञ्चित्कर (विसे २६१७)। देखो णीहूय।
णिहेलण न [दे] १ गृह, घर, मकान (दे ४, ५१, हे २, १७४, कुमा, उप ७२८ टी, स १८०, पाअ, भवि)। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ४, ५१)।

णिहो अ [न्यग्] नीचे (सूअ १, ५,१, ५)।
णिहोड सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना।
णिहोडइ (हे ४, २२)। वकृ. णिहोडत (कुमा)।
णिहोड सक [पातय्] १ गिराना। २ नाश करना। णिहोडइ (हे ४, २२)।
णिहोडिय वि [पातित] १ गिराया हुआ (दस ३)। २ विनाशित (उव ५६७ टी)।
णी सक [गम्] जाना, गमन करना। णीइ (हे ४, १६२, गा ४६ अ) भवि णीहमि (गा ७४६)। वकृ. णित, णेत (से ३, २, गउड, गा ३३४, उप २६४ टी, गा ४२०)। संकृ णितूण, नीउ (गउड, विसे २२२)।
णी सक [नी] १ ले जाना। २ जानना। ३ ज्ञान कराना, बतलाना। णेइ, णयइ (हे ४, ३३७, विसे ६१४)। वकृ, णेंत (गा ५०, कुमा)। कवकृ णिज्जत, णीअमाण (गा ६८२ अ, से ६, ८१, सुपा ४७६)। संकृ णइअ, णेउ, णेउआण, णेऊण (नाट—मृच्छ २६४, कुमा, षड्, गा १७२)। हेकृ णेउ (गा ४६७, कुमा)। कृ. णेअ, णेअव्व (पउम ११६, १७, गा ३३६)। प्रयो णेयावइ (सण)।
णीअअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर (पिंग)।
णीआरण न [दे] वलि-घटी, वली रखने का छोटा कलश (दे ४, ४३)।
णीइ स्त्री [नीति] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार (उप १८६, महा)। २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्यतया माननेवाला मत (ठा ७)। °सत्थ न [°शास्त्र] नीति-प्रतिपादक शास्त्र (सुर ६, ६५, सुपा ३४०, महा)।
णीका स्त्री [नीका] कुल्या, नहर, सारणि (कुमा)।
णीक्खय वि [नि क्षत] निखिल, संपूर्ण, 'नय नीखयवक्खाणं तीरइ काऊण सुत्तस्स' (विचार ८)।
णीचअ न [नीचैस्] १ नीचे, अध (हे १, १५४)। २ वि. नीचा, अध -स्थित (कुमा)।
णीछूढ देखो णिच्छूढ (णादि)।

णीजूह देखो णिज्जूह = दे. [illegible] (राज)।

[illegible] देखो [illegible] (पउम १०३, ७१; १०६)।

णीण सक [गमय्] जाना, गमन करना। णीणइ (हे ४, १६२)। णीणेइ (कुमा)।

[illegible] सक [नी] १ ले जाना। २ बाहर ले जाना [illegible], '[illegible]' (उप [illegible])। [illegible] णीणिआस। [illegible] णीणिज्जमाण (वि ६२, [illegible])। [illegible] णीणेऊण णीणेत्ता ([illegible])।

णीणाविअ वि [नायित] दूसरे द्वारा ले जाया गया, बाहर कराया हुआ (उप १३६ [illegible])।

णीणिअ वि [नीत] ले जाया हुआ (पाअ)।

णीणिअ वि [नीत] १ ले जाया गया (उप ७६७ टी; सुपा २६१)। २ बाहर निकाला हुआ (णाया १, ८)। '[illegible]णीणिओ [illegible]' (सुपा ३८१)।

णीणिआ स्त्री [नीलिका] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।

णीम पु [नीव] १ वृक्ष-विशेष, कदंब का पेड़। २ न. [illegible] (दस ५, २, २१)।

णीव पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ ([illegible] १ [illegible] १, २३४)।

णीमम वि [निर्मम] ममता-रहित ([illegible])।

णीमी देखो णीवी ([illegible])।

णीय वि [नीच] १ नीच, अधम, [illegible] ([illegible] १८७)। २ वि. [illegible] (सुपा [illegible])। °[illegible] [°[illegible]] १ [illegible]। [illegible] (सुर २, ४ [illegible])। ३ वि. [illegible] (सुर २, १)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible]।

[illegible]।

[illegible] [[illegible]] [illegible]।

[illegible] [[illegible]] [illegible]।

णीर न [नीर] जल, पानी (कुमा; प्रासू ६७)। °निहि पु [°निधि] समुद्र, सागर (सुपा २०१)। °रुह न [°रुह] कमल (सौ ३)। °वाह पु [°वाह] मेघ, अभ्र (उप पृ ६२)। °हर पु [°गृह] समुद्र, सागर (उप पृ ११६)। °हि पु [°धि] समुद्र (उप ६८६ टी)। °[illegible] पु [°[illegible]] समुद्र (उप ५३० टी)।

णीरंगा स्त्री [दे. नीरङ्गी] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवस्त्र, घूँघट (दे ४, ३१; पाअ)।

णीरज सक [भञ्ज्] तोड़ना, भांगना। णीरजइ (हे ४, १०६)।

णीरजिअ वि [भग्न] तोड़ा हुआ, छिन्न (कुमा)।

णीरंध्र वि [नीरन्ध्र] निश्छिद्र (पण्ह)।

णीरण न [दे] घास, चारा, 'विमलो पज्जलमग्ग णीरिपणणीरणाइसंजुत्त' (सुपा ५०१)।

णीरय वि [नीरजस्] १ रजो रहित, निर्मल, शुद्ध, 'सिद्धि गच्छइ णीरओ' (सुर १६; पण्ण ३६; सम १३७; पउम १०३, १३४; गार्य ११२)। २ पु. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट (ठा ६)।

णीरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णीरवइ (हे ४, १४५)।

णीरव सक [बुभुक्ष्] खाने को चाहना। णीरवइ (हे ४, ५)। भूका णीरवीम (कुमा)।

णीरवि वि [आक्षेपक] आक्षेप करनेवाला (कुमा)।

णीरस वि [नीरस] रस-रहित, शुष्क (गउड; [illegible])।

णीरसजल न [नीरसजल] [illegible] (संबोध ५८)।

णीराग } वि [नीराग] राग-रहित, वीतराग णीराय } ([illegible]; कुप्र २२५; [illegible])।

णीरेणु वि [नीरेणु] [illegible] रहित, धूल रहित ([illegible])।

णीरोग वि [नीरोग] रोग-रहित, तंदुरुस्त ([illegible])।

[illegible] सक [निर् + सृ] बाहर निकलना। [illegible] ([illegible] ४, ७९)।

णीलंछ पुं [नील] [illegible] (ठा १; [illegible] ठा २,

३)। ३ रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष (से ४, ५)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम (णाया १, १)। ७ वि. हरा वर्णवाला (पण्ण १; राय)। °कंठ पु [°कण्ठ] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति देव विशेष (ठा ५, १; इक)। २ मयूर, मोर (पाअ; कुप्र २४७)। ३ महादेव, शिव (कुप्र २४७)। °कणवीर पुं [°करवीर] हरे रंग के फूलोंवाला कनेर का पेड़ (राय)। °गुफा स्त्री [°गुफा] उद्यान विशेष (आवम)। °मणि पुस्त्री [°मणि] रत्न विशेष, नीलम, मरकत (कुमा)। °लेस वि [°लेश्य] नील लेश्यावाला (पण्ण १७)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] अशुभ अध्यवसाय विशेष (सम ११; ठा १)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा (राज)। °वंत पु [°वत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३; सम १२)। २ ह्रद-विशेष (ठा ५, २)। ३ न. शिखर विशेष (ठा २, ३)।

णील वि [नील] कच्चा, आर्द्र (आचा २, ४, २, ३)। °केसी स्त्री [°केशी] तरुणी, युवति (वव ८)।

णीलकंठी स्त्री [दे] तृण-विशेष, बाण-तृण (दे ४, ४२)।

णीला स्त्री [नीला] १ लेश्या विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम (कम्म ४, १३; भग)। २ नीलवर्णवाली स्त्री (गउड)।

णीलिअ वि [निसृत] निर्गत, निर्गत (कुमा)।

णीलिअ वि [नीलित] नील वर्ण का (उप पृ ३२)।

णीलिआ देखो णीली (भग)।

णीलिम पुंस्त्री [नीलिमन्] नीलापन, [illegible] (सुपा १३०)।

णीली स्त्री [नीली] १ वनस्पति विशेष [illegible] (पण्ण १; उप ६, ५)। २ नील वर्णवाली स्त्री (गउड)। ३ [illegible] का गीत (कुप्र २११)।

णीलुंछ सक [उत् + [illegible]] १ [illegible]। २ [illegible]। णीलुंछइ (हे ४, ७१ [illegible])। [illegible] णीलुंछिअ (कुमा)।

णीलुक्क सक [गम्] जाना, गमन करना। णीलुक्कइ (हे ४, १६२)।

णीलुप्पल न [नीलोत्पल] नील रंग का कमल (हे १, ८४, कुमा)।

णीलुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

णीलोभास पुं [नीलावभास] १ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। २ वि नील-च्छाय, जो नीला मालूम देता हो (णाया १, १)।

णीव पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ (हे १, २३४, कप्प णाया १, ६)।

णीवार पु [नीवार] वृक्ष-विशेष, तिन्नी का पेड़ (गउड)।

णीवार पुं [नीवार] व्रीहि-विशेष (सूत्र १, ३, २, १६)।

णीवी स्त्री [नीवी] मूल-धन, पूँजी। २ नारा, इजारबन्द (षड्, कुमा)।

णीसंक देखो णिस्संक = नि शंक (गा ३४५, कुमा)।

णीसक्क पु [दे] वृषभ, बैल (षड्)।

णीसक्किअ देखो णिस्सक्किअ (विसे ५६२, सुर ७, १५५)।

णीसख वि [नि सख्य] सख्य-रहित, असख्य (सुपा ३५५)।

णीसंचार देखो णिस्संचार (पउम ३२, १)।

णीसंद पुं [नि ष्यन्द] रस-स्नुति, रस का झरन (गउड)।

णीसंदिअ वि [नि ष्यन्दित] झरा हुआ, टपका हुआ (पाअ)।

णीसंदिर वि [नि ष्यन्दितृ] झरनेवाला, टपकनेवाला (सुपा ५६)।

णीसंपाय वि [दे] जहाँ जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह (दे ४, ४२)।

णीसट्ठ वि [नि सृष्ट] १ विमुक्त (पण्ह १, १ – पत्र १८)। २ प्रदत्त(बृह २)। ३ क्रिवि अतिशय, अत्यन्त, 'णीसट्ठमचेयणो ण वा मरइ' (उव)।

णीसण पु [नि स्वन] आवाज, शब्द, ध्वनि (सुर १३, १८२; कुप्र ५६)।

णीसणिआ } स्त्री [दे] नि श्रेणि, सीढी (दे
णीसणी } ४, ४३)।

णीसत्त वि [नि सत्त्व] सत्त्व-हीन, बल-रहित (पउम २१, ७५, कुमा)।

णीसद्द वि [नि शब्द] शब्द-रहित (दे ७, २८, भवि)।

णीसर अक [रम्] क्रीडा करना, रमण करना। णीसरइ (हे ४, १६८) कृ णीसरणिज्ज (कुमा)।

णीसर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णीसरइ (हे ४, ७६)। वकृ नीसरत (ओघ ४५८ टी)।

णीसरण न [नि सरण] फिसलन, स्पटन (वव ४)।

णीसरण न [नि सरण] निर्गमन (से ६, १८)।

णीसरिअ वि [नि सृत] निर्गत, निर्यात (सुपा २४७)।

णीसल वि [नि शल] १ निश्चल, स्थिर। २ वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट, 'नीसलतड्डियचंदायएहिं मडियचउक्कियादेस' (सुर ३,७२)।

णीसल्ल वि [नि शल्य] शल्य-रहित (भवि)।

णीसव सक [नि + श्रावय्] निर्जरा करना, क्षय करना। वकृ नीसवमाण (विसे २७४६)।

णीसवग देखो णीसवय (श्रावम)।

णीसवत्त वि [नि सपत्न] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित (मृच्छ ८, पि २७६)।

णीसवय वि [नि.श्रावक] निर्जरा करनेवाला (विसे २७४६)।

णीसस अक [निर् + श्वस्] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना। णीससइ (षड्)। वकृ णीससत, णीससमाण (गा ३३, कुप्र ४३, आचा २, २, ३)। संकृ. णीससिअ, णीससिऊण (नाट, महा)।

णीससण न [नि श्वसन] नि श्वास (कुमा)।

णीससिअ न [नि.श्वसित] नि श्वास (से १, ३८)।

णीसह वि [नि.सह] मन्द, अशक्त (हे १, १३, कुमा)।

णीसाह वि [नि शाख] शाखा-रहित (गा २३०)।

णीसा स्त्री [दे] पीसने का पत्थर (दस ५, १)।

णीसा देखो णिस्सा (कप्प)।

णीसाइ वि [नि स्वादिन्] स्वाद-रहित (प्रवि १०)।

णीसाण देखो णिस्साण = (दे) धर्मवि ८०)।

णीसामण्ण } वि [नि सामान्य] १ असा-
णीसामन्न } धारण (गउड, सुपा ६१, हे २, २१२)। २ गुरु (पाअ)।

णीसार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। णीसारइ (भवि)। कर्म नीसारिज्जइ (कुप्र १४०)।

णीसार पु [दे] मण्डप (दे ४, ४०)।

णीसार वि [नि सार] सार-रहित, फल्गु (से ३, ४८)।

णीसारण न [नि सारण] निष्कासन, बाहर निकालना (सुर १५, २०३)।

णीसारय वि [नि सारक] बाहर निकालने वाला (से ३, ४८)।

णीसारिअ वि [नि सारित] निष्कासित (सुर ५, १८८)।

णीसास देखो णिस्सास (हे १, ९३, कुमा, प्राप्र)।

णीसास } वि [नि श्वास, °क] नि श्वास
णीसासय } लेनेवाला (विसे २७१५,२७१४)।

णीसाहार देखो णिस्साहार, "नीसाहारा य पडइ भूमीए" (सुर ७, २३)।

णीसित्त वि [निष्पिक्त] अत्यन्त सिक्त (षड्)।

णीसीमिअ वि [दे] निर्वासित, देश बाहर किया हुआ (दे ४, ४२)।

णीसेयस देखो णिस्सेयस (जीव ३)।

णीसेणि स्त्री [नि श्रेणि] सीढी (सुर १३ १५०)।

णीसेस देखो णिस्सेस (गउड, उव)।

णीहट्टु अ निकाल कर (आचा २, ६, २)।

णीहट्टु अ [नि + सृत्य] बाहर निकल कर (आचा २, १, १०, ४)।

णीहड वि [निर्हृत] १ निर्गत, निर्यात (आचा २, १, १)। २ बाहर निकाला हुआ (बृह १, कस)।

णीहडिया स्त्री [निर्हृतिका] अन्य स्थान मे ले जाया जाता द्रव्य (बृह २, सू० १८)। गु० भाणु।

[illegible]

णीहाम वि [निर्हाम] लज्जा-रहित (उत्त २२, २८)।

णीहूय वि [दे] अनिच्छित, कुछ भी नहीं कर सकनेवाला, 'ववच्चणोहूयाणु' (मानति ७८७)। देखो णिहुअ।

णु अ [नु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वक्रोक्ति (स ३०६)। ३ वितर्क (गउ)। ४ प्रश्न। ५ विकल्प। ६ अनुनय। ७ हेतु, प्रयोजन। ८ अपमान। ९ अनुताप, अनुनय। १० अपदेश, बहाना (गउड, हे २, २१७, २१८)।

णु अ [नु] । १ निश्चयार्थक अव्यय (दस २, १)। २ विशेष (निचू ६५१)।

°णुअ वि [ज्ञक] जानकार (गा २०५)।

णुणार पु [नुकार] 'नुत्' ऐसी आवाज (राज)।

णुज्जिर वि [दे] बन्द किया हुआ, मुद्रित, 'रहिया तीए णुज्जिया, णुज्जियं से वयणं, छिन्ना य पूया' (स ४८६)।

णुत्त वि [नुत्त] १ प्रेरित। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (से ३, ६४)।

णुम सक [नि+अस्] स्थापन करना। णुमइ (हे ४, १९९)।

णुम सक [छादय्] ढकना, आच्छादन करना। णुमइ (हे ४, २१)।

णुमज्ज अक [नि+सद्] बैठना। णुमज्जइ (प्राकृ)।

णुमज्ज अक [नि+मस्ज्] डूबना। णुमज्जइ (हे १, ९४)।

णुमाय सक [मी] फेंकना, डालना। णुमायइ (प्राकृ ७४)।

णुमज्जण न [निमज्जन] डूबना (राज)।

णुमण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट (कुमा, हे १, १७४)।

णुमन्न } वि [निमग्न] डूबा हुआ, लीन
णुमण्ण } (हे १, ९४ १७४)।

णुमिअ वि [न्यस्त] स्थापित (कुमा)।

णुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

णुम्म स्त्री [नीप्र] [illegible] (हे १, २४४)।

णुम्मण्ण वि [दे] [illegible] हुआ (दे ४, २४)।

णुवण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट (गउड, गाया १, ५, स २४२), 'पासम्मि नुवण्णा' (उप ६४८ टी)।

णुव्व सक [प्र=काशय्] प्रकाशित करना। णुव्वइ (हे ४, ४५)। वकृ णुव्वंत (कुमा)।

णुण्हा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या (प्रयौ १०४)।

णूउर देखो णिउर=नूपुर (षड्, हे १ १२३)।

णूण वि [न्यून] कम, ऊना (उप पृ ११६)।

णूण } अ [नूनम्] इन अर्थों का सूचक
णूणं } अव्यय—१ निश्चय, अवधारण। २ तर्क, विचार। ३ हेतु, प्रयोजन। ४ उपमान। ५ प्रश्न (हे १, २९ प्राप्र, कुमा, भग, पाअ १२, वृह १, श्रा १२)।

णूतण वि [नूतन] नया, नवीन (गउ ३०)।

णूपुर देखो णउर (णाट ११)।

णूम सक [छादय्] १ ढकना, छिपाना। णूमइ (हे ४, २१)। णूमंति (गाया १, १६)। वकृ णूमंत (गा ८५६)।

णूम न [दे] १ अन्धकार, छिपाना। २ असत्य, झूठ (पण्ह १, २)। ३ माया, कपट (सम ७१)। ४ प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरह (सूअ १, ३, ३, भग १२, ५)। ५ कपट, गाढ़ अन्धकार (राज)।

णूम न [दे] कर्म (सूअ १, ३, ३, ३)। °गिह न [°गृह] भूमि-गृह (गाया १, ३, ३, १)।

णूमिअ वि [छादित] ढका हुआ, छिपाया हुआ, (से ९, ७७, पाअ, कुमा)।

णूमिअ वि [दे] फेंका दिया हुआ (पाअ २६३)।

णूला स्त्री [दे] शाखा, डाल (दे ४, ४१)।

णे अ [illegible] में प्रयुक्त होता अव्यय (राज)।

णेअ [illegible]।

णेअ देखो णी=नी।

णेअ वि [नैक] अनेक, बहुत (पउम ६६, ४१)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का (पउम ११३, ४२)।

णेअ स [तेन] उसको, उनकी, अपनी (पउ, भग ५, १०, गा ११६, णाट, गुर ३ १८६, कुमा)।

णेअव्व देखो णी = नी।

णेआइअ } वि [नैयायिक, न्याय्य] न्याय
णेआउअ } से अवाधित, न्यायानुगत, न्यायोचित, 'णेआइअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहु' (सम ५१, औप, पण्ह २, १)।

णेआउय } वि [नेतृ] १ ले जानेवाला
णेउ } (सूअ १, ८, ११)। २ प्रणेता, रचयिता (सूअ १, ६, ७)।

णेआवण न [नायन] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना (उप ७४९)।

णेआविअ वि [नायित] अन्य द्वारा ले जाया गया पहुँचाया हुआ (स ४२, कुप्र २०७)।

णेउ वि [नेतृ] नेता, नायक (पउम १४, ६२, सूअ १, ३, १)।

णेउआण } देखो णी = नी।
णेउ }

णेउड्ढ पु [दे] सद्भाव, शिष्टता (दे ४, ४४)।

णेउण न [नैपुण] निपुणता, चतुराई (अभि १३२)।

णेउणिअ वि [नैपुणिक] १ निपुण, चतुर (ठा ९)। २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व ग्रन्थ की एक वस्तु (विसे २३९०)।

णेउणिअ देखो णेउण्ण (दस ६, २, १३)।

णेउण्ण } न [नैपुण्य] निपुणता, चतुराई
णेउन्न } (दस ६, २, सुपा २९३)।

णेउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभूषण, पायल (हे १, १२३, गा १८८)।

णेउरिल्ल वि [नूपुरवत्] नूपुरवाला (पि १२६, गउड)।

णेऊण } देखो णी = नी।
णेंत }

णेंत देखो णी = गम्।

णेक्कंत देखो णिक्कंत (गा ११)।

णेग देखो णेअ = नैक (कुमा, पण्ह १, ३)।

णेगम पु [नैगम] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारनेवाला पक्ष-विशेष, नय विशेष (ठा ७)। २ वणिक्, व्यापारी, 'जिणधम्मभाविएण, न केवल धम्मओ धणओवि। नेगमअडहियसहस्सो, जेण कओ अप्पणो सरिसो' (श्रा २७)। ३ न व्यापार का स्थान (आचा २, १, २)।

णेगुण्ण न [नैर्गुण्य] निर्गुणता, निःसारता (भत्त १६३)।

णेचइय पु [नैचयिक] धान्य आदि का थोकबन्द व्यापारी (वव ४)।

णेच्छइअ वि [नैश्चयिक] निश्चयनय-सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध (निसे २८०)।

णेच्छन्त वि [नेच्छत्] नहीं चाहता हुआ (हेका ३०६)।

णेच्छिअ वि [नेच्छित] इच्छा का अविषय, अनभिलषित (जीव ३)।

णेट्ठिअ वि [नैष्ठिक] पर्यन्त-वर्ती (पण्ह ७, ३)।

णेड देखो णिड्ड (कुमा, हे १, १०६)।

णेडाली स्त्री [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ४, ४३)।

णेड्डु देखो णिड्डु (हे २, ९९, प्राप्र, षड्)।

णेड्डरिआ स्त्री [दे] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव (दे ४, ४५)।

णेत्त पुन [नेत्र] नयन, आँख, चक्षु (हे १, ३३, आचा)।

णेत्त पु [नेत्र] वृक्ष-विशेष (सूअ २,२,१८)।

णेद्दा देखो णिद्दा (पि १६२, नाट)।

णेपाल देखो णेवाल (उप पृ ३९७)।

णेम स [नेम] १ अर्ध, आधा (प्रामा)। २ न मूल, जड (पण्ह १, ३, भग)।

णेम न [दे] कार्य, काज (राज)।

णेम पुन [दे] कार्य, काम, काज (पिंड ७०)।

णेम देखो णेम्म = दे (पण्ह २, ४ टी—पत्र १३३)।

णेमाल पु. व [नेपाल] एक भारतीय देश, नेपाल (पउम ९८, ६४)।

णेमि पु [नेमि] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-देव, बाइसवें तीर्थंकर (सम ४३, कप्प)। २ चक्र की धारा (ठा ३, ३, सम ४३)। ३ चक्र परिधि, चक्के का घेरा (जीव ३)। ४ आचार्य हेमचन्द्र के मातुल—मामा का नाम (कुप्र २०)। °चंद पु [°चन्द्र] एक जैनाचार्य (सार्ध ६२)।

णेमित्त देखो णिमित्त (आवम)।

णेमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (सुर १, १४४, सुपा १५४)।

णेमित्तिअ } वि [नैमित्तिक] १ निमित्त-
णेमित्तिग } शास्त्र से सबन्ध रखनेवाला (सुर ९, १७७)। २ कारणिक, निमित्त से होनेवाला, कारण से किया जाता, कदाचित्क, 'उववासो णेमित्तिगमो जओ भणिओ' (उप ६८३ उवर १०७)। ३ निमित्त शास्त्र का जानकार (सुर १, २३८)। ४ न निमित्त शास्त्र (ठा ९)।

णेमी स्त्री [नेमी] चक्र धारा (दे १, १०९)।

णेम्म वि [दे निभ] तुल्य, सदृश, समान (पण्ह ७, ४—पत्र १३०)।

णेम्म देखो णेम = नेम (पण्ह १, ५—पत्र ९४)।

णेरइअ वि [नैरयिक] १ नरक-संबन्धी, नरक में उत्पन्न (हे १, ७९)। २ पु नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी (सम २, विपा १, १०)।

णेरइअ वि [नैर्ऋतिक] नैऋत कोण, दक्षिण-पश्चिम विदिशा (अणु २१५)।

णेरई स्त्री [नैर्ऋती] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा (सुपा ९८, ठा १०)।

णेरुत्त न [नैरुक्त] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द (अणु)। २ वि निरुक्त शास्त्र का जानकार (विसे २४)।

णेरुत्तिय वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति-निष्पन्न (विसे ३०३७)।

णेरुत्ती स्त्री [नैरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे २१८२)।

णेल वि [नैल] नील का विकार (भग, औप)।

णेलच्छ देखो णिल्लच्छ (स ६९६)।

णेलच्छ पु [दे] नपुसक, षंड (दे ४, ४४, पाअ, हे २, १७४)। २ वृषभ, बैल (दे ४, ४४)।

णेलय पु [दे नेलक] रुपया (पव १११)।

णेलिच्छी स्त्री [दे] कूपतुला, टेकवा (दे ४, ४४)।

णेल्लच्छ देखो णेलच्छ (पि ६६)।

णेव देखो णेअ = नैव (उव, पि १७०)।

णेवच्छ देखो णेवत्थ (से १२, ६७, प्रति ६, औप, कुमा, पि २८०)।

णेवच्छण न [दे] अवतारण, नीचे उतारना (दे ४, ४०)।

णेवच्छिय देखो णेवत्थिय (पि २८०)।

णेवत्थ न [नेपथ्य] १ वस्त्रादि की रचना [illegible] ... (पुर ... १२२ ...) । [illegible]

णेहर देखो णेहुर (पराह १, १) ।

णेहल पु [स्नेहल] छन्द-विशेष (पिंग) ।

णेहल वि [स्नेहल] स्नेही, स्नेह-युक्त, 'पियाए णेहलाए धणुरत्ताओ गिहिणीओ' (पउमि १२१) ।

णेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेह-युक्त, स्निग्ध (हे २, १५९) ।

णेहुर पुं [नेहुर] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश। २ उसमें रहनेवाली अनार्य जाति (पराह १, १—पत्र १४) ।

णो अ [नो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव (ठा ६, कप्प गउड)। २ मिश्रण, मिश्रता 'नोजीवो मिस्सभावम्मि' (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अंश (हिमा (विसे ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय (राज)। °आगम पु [°आगम] १ आगम का अभाव। २ आगम के साथ मिश्रण। ३ आगम का एक देश (आवम, विसे ४६ ... ५०)। ४ पदार्थ का अपरिज्ञान (णंदि)। °इंदिय न [°इन्द्रिय] मन, अन्तःकरण, चित्त (ठा ६ पत्र ११, उप ५६७ टी)। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय के उत्तेजक हास्य आदि नव पदार्थ, वे ये हैं—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद (कम्म १, १७, ठा ६)। °करणगाम न [°करणग्राम] [illegible] (ठा २, १)। °गार पु [°अगार] [illegible] (गाथ)। °गुण वि [°गुण] [illegible] (पण्णु)। °जाव पुं [°जीव] १ [illegible] अजीव, जड़ पदार्थ। २ [illegible] ... (विसे)। °सह वि [°सह] [illegible] (ठा ४, २)।

णो अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ [illegible]। २ [illegible]। ३ निश्चय। ४ [illegible] (प्राकृ ८०)।

[illegible]

[illegible] (पउम ...)।

[illegible] वि [illegible] [illegible] (पाअ) (पउम १४४)।

णोजुग न [नोयुग] न्यून युग (जुज्ज ११)।

णोढिअ देखो णाहिअ (राज)।

णोमल्लिआ स्त्री [नवमल्लिका] सुगन्धि फूल-वाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासंती (नाट वि १५४)।

णोमालिआ स्त्री [नवमालिका] ऊपर देखो (हे १, १७०, गा २८१, षड्, कुमा, मनि २९)।

णोमि पु [दे] रस्सी, रज्जु (दे ४, ३१)।

णोलइआ } स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच, चांच (दे ४, ३६)।
णोलच्छा }

णोल्ल सक [क्षिप्, नुद्] १ फेंकना। प्रेरणा करना। णोल्लइ (हे ४, १४३ षड्)। णोल्लेइ (गा ८७४)। वकृ. णोल्लिज्जंत (सुर १३, १९९)।

णोल्लिअ वि [नोदित] प्रेरित (से ६, ३२, णाया १, ६, पराह १, ३, स ३४०)।

णोव्व पु [दे] आयुक्त, सूबा या सूबेदार राज-प्रतिनिधि (दे ४, १७)।

णोहल पु [नोहल] अव्यक्त शब्द-विशेष (षड् पि २६०, मनि ११)।

णोहलिआ स्त्री [नवफलिका] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली (हे १, १७०)। २ नया फलवाली (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्गम 'णोहलिमप्पणो कि ण मग्गसे, मग्गसे, कुरवअस्स' (गा ६)।

णोहा स्त्री [स्नुषा] पुत्र की भार्या, पुत्रवधू, पतोहू, बहू (पि १४८ मनि ९५)।

°ण्णअ वि [ज्ञक] जानकार (गा २०३)।

°ण्णाम देखो णाम = नाम (गउड १५४)।

°ण्णुअ देखो °ण्णअ (गा ४०४)।

ण्ह, अ १-२ वाक्यालंकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कप्प, कस)।

ण्हव सक [स्नपय्] नहलाना, स्नान कराना। ण्हवेइ (कुप्र ११०)। कवकृ. ण्हविज्जंत (सुपा ३३)। संकृ. ण्हविऊण (पि ३१३)।

ण्हवण न [स्नपन] स्नान कराना, नहलाना (कुमा)।

ण्हविअ वि [स्नपित] जिसको स्नान कराया गया हो वह (पउम ७ ५८, औप)।

ण्हा } सक [स्ना] स्नान करना, नहाना।
ण्हाअ } ण्हाइ (हे ४, १४)। ण्हाएइ, ण्हाएउ (पि ३१३)। वकृ. ण्हायंत

(पि ३१३)। वकृ. ण्हायमाण (णाया १, १३)। संकृ ण्हाइत्ता, ण्हाणित्ता (पि ३१३)।

ण्हाण न [स्नान] नहाना, नहान (कप्प, प्राप्र)। °पीढ पुन [°पीठ] स्नान करने का पट्टा (णाया १ १)।

ण्हाणमल्लिया स्त्री [स्नानमल्लिका] स्नान-योग्य पुष्प-विशेष, मालती-पुष्प (राय ३४)।

ण्हाणिआ स्त्री [स्नानिका] स्नान-क्रिया (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

ण्हाणिय वि [स्नानित] जिसने स्नान किया हो वह (पव ३८)।

ण्हाय वि [स्नात] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ (कप्प, ओप)।

ण्हायमाण देखो ण्हा

ण्हारु न [स्नायु] १ अस्थि-बन्धनी सिरा, नस, धमनी (सम १४९, पण्ह १, १, ठा २,१, आचा)। २ अगुदश श्रेणी मे की एक श्रेणी, कुम्हार पटेल आदि (लोकप्रकाश ४६४ पत्र, सर्ग ३१)।

ण्हाव देखो ण्हव। ण्हावइ, ण्हावेइ (भवि, पि ३१३)। वकृ ण्हावअत (पि ३१३)। संकृ. ण्हाविऊण (महा)।

ण्हाविअ वि [स्नपित] नहलाया हुआ, जिसको स्नान कराया गया हो वह (महा भवि)।

ण्हाविअ पुं [नापित] हजाम, नाई (हे १, २३०, कुमा), 'घेतूण ण्हाविय आगएण मुंडाविओ कुमरो' (उप ६ टी)। °पसेवय पु [°प्रसेवक] नाई की अपने उपकरण रखने की थैली (उत्त २)।

ण्हु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (जीवस १८०)।

ण्हुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र वधू, पुत्र की भार्या, पतोहू (आवम, पि ३१३)।

ण्हुहा देखो ण्हुसा (सिरि २५१)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे णआराइसद्दसकलणो, अइएसेण नआराइसद्दसंकलणो वाईसइमो तरगो समत्तो ॥

त

त पुं [त] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र, प्रामा)।

त स [तत्] वह (ठा ३, १, हे १, ७, कप्प, कुमा)।

त° स [त्वत्°] तू। °क्कय वि [°कृत] तेरा किया हुआ (स ६८०)।

त° देखो तया = त्वच्। °द्दोसि वि [°दोपिन्] १ चर्म-रोगी। २ कुष्ठी (पिंड ४७५)।

तअ देखो तव = तपस् (हास्य १३५)। तइ वि [तति] उतना (वव १)।

तइ (अप) अ [तत्र] वहाँ, उसमें (पड्)।

तइ अ [तदा] उस समय (प्राप्र)।

तइअ वि [तृतीय] तीसरा (हे १, १०१, कुमा)।

तइअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (भवि)।

तइअ अ [तदा] उस समय,
'भणिओ रन्ना मती,
मइसागर तइय पव्वयंतेण।
ताएण अहं भणिओ,
भणिणी ठाणम्मि दायव्वा'
(सुर १, १२३)।

तइअहा (अप) अ [तदा] उस समय (भवि, सण)।

तइआ अ [तदा] उस समय (हे ३, ६५, गा ९२)।

तइआ स्त्री [तृतीया] तिथि-विशेष, तीज (सम २९)।

तइया स्त्री [तृतीया] तीसरी विभक्ति (चेइय ६८३)।

तइल देखो तेल्ल (उप ९२९)।

तइलोई स्त्री [त्रिलोकी] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल (सुपा ६८)।

तइलोक } न [त्रैलोक्य] ऊपर देखो
तइलोय } (पउम ३, १०५, ८, २०२, स ५७१, सुर ३, २०, सुपा २८२, ३५, ४४८)।

तइस (अप) वि [तादृश] वैसा, उस तरह का (हे ४, ४०३, षड्)।

तई स्त्री [त्रयी] तीन का समुदाय (सुपा ५८)।

तईअ देखो तइअ = तृतीय (गा ४११, भग)।

तउ } न [त्रपु] धातु-विशेष, सीसा,
तउअ } रांगा (सम १२५, ओप, उप ९८६ टी, महा)। °वट्टिआ स्त्री [°पट्टिका] कान का आभूपण विशेष (दे ५, २३)।

तउस न [त्रपुष] देखो तउसी (राज)। °मिजिया स्त्री [°मिञ्जिका] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।

तउस न [त्रपुष] खीरा, ककडी (दे ८,३५)।

तउसी स्त्री [त्रपुषी] कर्कटी-वृक्ष, खीरा का गाछ (गा ५३४)।

तए अ [ततस्] उससे, उस कारण से। २ बाद मे (उत्त १, विपा १, १)।

तएयारिस वि [त्वादृश] तुम जैसा, तुम्हारी तरह का (स ५२)।

तओ देखो तए (ठा ३, १, प्रासू ७८)।

[illegible]

तंतिसम न [तन्त्रीसम] तन्त्री-स्वर के तुल्य [illegible] गेय काव्य का एक भेद (दसनि ३, २३)।

तंती स्त्री [तन्त्री] १ वीणा, वाद्य विशेष (ण्ण, औप सुर १६, ४८)। २ वीणा-विशेष (सुज्ज २ ५)। ३ तांत, चमड़े की रस्सी (विपा १, ६ सुर ३, १३७)।

तंती स्त्री [दे] चिन्ता, 'कामस्स तत्ततंति' (गा ७)।

तंतु पु [तन्तु] सूत, [illegible] धागा (पउम १, १३)। °अ, °य पु [°क] जलजन्तु-विशेष (पउम १४, १७, सुर २०६)। °ज, °य न [°ज] सूती कपड़ा (ठा ३, ३५)। °वाय पु [°वाय] कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा (श्रा २३)। °साला स्त्री [°शाला] कपड़ा बुनने का घर, तांत घर (णा १७)।

तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तंतुवाय का एक उपकरण (दे ५, ७)।

तंदुल [illegible] (पउम १२, १३८)। २ मत्स्य विशेष (जीव १)। °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ विशेष (णंदि)।

तंदुलेज्जग पुं [तन्दुलीयक] वनस्पति विशेष (पण्ण १)।

तंदुलय देखो तिंदुलय (सुर १३, १६७)।

तंब पुं [स्तम्ब] धान्यादि का गुच्छा (हे २, ४५, कुमा)।

तंब न [ताम्र] १ धातु विशेष, ताँबा (विपा १, ६, हे २ ४५)। २ पुं वर्ण विशेष। ३ वि लाल वर्णवाला, लाल (पण्ण १७, [illegible])। °चूड पुं [°चूड] कुक्कुट, मुर्गा, मुरगा (सुर ३, ११)। °वण्णी स्त्री [°वर्णी] एक नदी का नाम ([illegible])। °सिह पुं [°शिख] कुक्कुट, मुर्गा (पाअ)।

[illegible] पुं [दे] [illegible] वर्णवाला कृमि-विशेष (पण्ण १७)।

[illegible] [दे] [illegible] इन्द्रगोप (दे ५ [illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] कुक्कुट, [illegible] (दे ५, [illegible])।

[illegible] [दे] [illegible] '[illegible]' [illegible] (दे १२)।

तंबच्छिवाडिआ स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य विशेष (पण्ण १७)।

तंबटक्कारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प प्रधान लता विशेष (दे ५, ४)।

तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कुंकुम की छाया (दे ५, ४)।

तंबा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया (दे ५, १, गा ४६०, पाअ, उप्प ३४)।

तंबाय पु [ताम्राक] भारतीय ग्राम-विशेष (राज)।

तंबिम पुंस्त्री [ताम्रत्व] ललाई, ईषद् रक्तता (गउड)।

तंबिय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण (औप)।

तंबिर वि [दे] ताम्र वर्णवाला (हे २, ५६, गउड, भवि)।

तंबिरा [दे] देखो तंबरत्ती (दे ५, ५)।

तंबुय न [दे] वाद्य विशेष, '[illegible]' (सुपा ५०)।

तंबेरम पु [स्तम्बेरम] हस्ती, हाथी (उप पृ ११७)।

तंबेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष विशेष, शेफालिका (दे ५, ४)।

तंबोल न [ताम्बूल] पान (हे १, १२४, कुमा)।

तंबोलिअ पु [ताम्बूलिक] १ तमोली, पान बेचनेवाला (श्रा १२)। २ पान में होनेवाला [illegible] जीव।

तंबोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ (पद्, जीव ३)।

तंभ देखो थंभ (षड्)।

तंस पुं [त्र्यंश] तिसरा हिस्सा (पव ५, ३७, २६, कम्म ५, ३४)।

तंस [illegible] [त्र्यस्र] त्रिकोण, तीन कोणवाला (हे १, २६, [illegible], ठा १, [illegible], [illegible])।

तक्क [illegible] [तर्क] [illegible] [illegible] करना, [illegible] करना। [illegible] (हे [illegible], गांवणाण [illegible])।

तक्क न [तक्र] [illegible] (दे [illegible], सुपा २८३ उप पृ ११६)।

तक्क पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अटकल-ज्ञान (श्रा १२ ठा ६)। २ न्याय-शास्त्र (सुपा २८७)।

तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष (दे ५, ४)।

तक्कय वि [तर्कक] तर्क करनेवाला (पण्ह १, ३)।

तक्कर पुं [तस्कर] चोर (हे २, ४, ओप)।

तक्कलि स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केले का गाछ (आचा २, १, ८, ६)।

तक्कलि } स्त्री [दे] वलयाकार वृन्त-विशेष
तक्कली } (पण्ण १)।

तक्का स्त्री [तर्क] देखो त = तर्क (ठा १ सूत्र १, १३, आचा)।

तक्काल क्रिवि [तत्काल] उसी समय (कुमा)।

तक्किअ वि [तार्किक] तर्कशास्त्र का जानकार (अच्चु १०१)।

तक्कियाण देखो तक्क = तर्क।

तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला, चरखा (दे ३, १)।

तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग, 'सम्माणिया मामता, अहिणंदिया नायरया, परिओसिआ तक्कुयजणा त्ति' (स ५२०)।

तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तक्खइ (षड्, हे ४, १९४)। कर्म तक्खि-ज्जइ (कुप्र १७)। वकृ. तक्खमाण (अणु)।

तक्ख पुं [तार्क्ष्य] गरुड पक्षी (पाअ)।

तक्ख पु [तक्षन्] १ लकडी काटनेवाला, बढई। २ विश्वकर्मा, शिल्पी-विशेष (हे ३, ५६, षड्)। °सिला स्त्री [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुबलि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है (पउम ४, ३८, कुप्र ५३)।

तक्खग पु [तक्षक] १-२ ऊपर देखो। ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज (उप ९२५)।

तक्खण न [तत्क्षण] १ तत्काल, उसी समय (ठा ४, ४)। २ क्रिवि शीघ्र, तुरन्त (पाअ)।

तक्खय देखो तक्खग (स २०६, कुप्र १३६))।

तक्खाण देखो तक्ख = तक्षन् (हे ३, ५६, षड्)।

तगर देखो टगर (पण्ह २, ५)।

तगरा स्त्री [तगरा] सन्निवेश-विशेष (स ४६८)

तगरा स्त्री [तगरा] एक नगरी का नाम (सुख २, ८)।

तग्ग न [दे] सूत्र-कंकण, धागे का कंकण (दे ५ १, गउड)।

तग्गंधिय वि [तद्गन्धिक] उसके समान गंधवाला (प्रामू ३४)।

तच्च वि [तृतीय] तीसरा (सम ८, उवा)।

तच्च न [तत्त्व] सार, परमार्थ (आचा, आरा ११५)। °वाय पु [°वाद] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा। २ दृष्टिवाद, जैन अंग-ग्रन्थ-विशेष (ठा १०)।

तच्च न [तथ्य] १ सत्य, सचाई (हे २, २१, उत्त २८)। २ वि वास्तविक, सत्य (उत्त ३)। °त्थ पु [°र्थ] सत्य, हकीकत (पउम ३, १३) °वाय पुं [°वाद] देखो ऊपर °वाय (ठा १०)।

तच्च अ [त्रि] तीन बार (भग, सुर २, २६)।

तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन (विपा १, २)।

तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तच्छइ (हे ४, १९४, षड्)। संकृ तच्छिय (सूअ १, ४, १)। कवकृ. तच्छिज्जंत (सुर १, २८)।

तच्छ } वि [तष्ट] छिला हुआ, तनूकृत,
तच्छिअ } 'ते भिन्नदेहा फलगं तच्छा' (सूअ १, ५, २, १४, १, ४, १, २१, उत्त १९, ६६)।

तच्छण स्त्रीन [तक्षण] छिलना, कर्तन (पण्ह १, १) स्त्री णा (णाया १, १३)।

तच्छिड वि [दे] कराल, भयंकर (दे ५, ३)।

तच्छिज्जंत देखो तच्छ।

तच्छिल वि [दे] तत्पर (षड्)।

तजा देखो तया = त्वच् (दे १, १११)।

तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ (भवि)। तज्जेइ (णाया १, १८) वकृ तज्जंत, तज्जित तज्जयत, तज्जमाण, तज्जेमाण (भवि, सुर १२, २३३, णाया १, ८, राज, विपा १, १— पत्र ११)। कवकृ तजिज्जंत (उप पृ १३४, उप १४६ टी)।

तज्जण न [तर्जन] भर्त्सन, तिरस्कार (औप, उव, पउम ६५, ५३)।

तज्जणा स्त्री [तर्जना] ऊपर देखो (पण्ह २, १, सुपा १)।

तज्जणी स्त्री [तर्जनी] दूसरी अंगुली, अँगूठे के पासवाली अंगुली, प्रदेशिनी (सुपा १, कुमा)।

तज्जाय वि [तज्जात] समान जातिवाला, तुल्य-जातीय (आव ४)।

तज्जाविअ } वि [तर्जित] तर्जित, भर्त्सित
तज्जिअ } (स १२२, सुपा २९२, भवि)।

तज्जित }
तज्जिज्जंत } देखो तज्ज।
तज्जेमाण }

तट्टवट्ट न [दे] आभरण, आभूषण,

'सणियं सणियं वालत्तणाओ
तणुयाइं तट्टवट्टाइं।
अवहरिवि नियघराओ
हारेइ रहम्मि खिल्लंतो'
(सुपा ३९९)।

तट्टिगा स्त्री [दे तट्टिका] दिगंबर जैन साधु का एक उपकरण (धर्मसं १०४६, १०४८)।

तट्टी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ५, १)।

तट्ठ वि [त्रस्त] १ डरा हुआ, भीत (हे २, १३६, कुमा)। २ न मुहूर्त-विशेष (सम ५१)।

तट्ठ वि [तष्ट] छिला हुआ (सूअ १, ७)।

तट्ठव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष (सम ५१)।

तट्ठि वि [तष्टिन्] तनूकृत, कृशतावाला (सूअ १, ७, ३०)।

तट्ठि } पु [त्वष्टृ] १ तक्षक, विश्वकर्मा
तट्ठु } (गउड)। २ नक्षत्र-विशेष का अधि-ष्ठायक देव (ठा २, ३)।

तट्ठु पु [त्वष्टृ] अहोरात्र का बारहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

तड सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तडइ (हे ४, १३७)।

तड पुन [तट] किनारा, तीर (वाअ, कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन। २ समीप स्थित (कुमा, दे ३, ६०)।

तडउडा [दे] देखो तडवडा (जीव ३, ज १)।

[illegible]

२)। ३ द्वार के ऊपर का भाग (नि १२, ६०)।

तडी स्त्री [तटी] तट, किनारा (जिवा १, १, मनु ६)।

तड्ड) सक [तन] १ विस्तार करना। २
तड्डुव) करना। तड्डइ तड्डवइ (हे ४, १३७)।
भूका—तड्डवीअ (कुमा)।

तड्डविअ) वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ
तड्डिअ) (पाअ, भवि, कुमा, सुर ३, ७२)।

तड्डु स्त्री [तर्दू] काठ की करछी (प्राकृ ७०)।

तण सक [तन] १ विस्तार करना। २ करना। तणइ, तणए (षड्)। कर्म. तणिज्जइ (विसे १३८३)।

तण न [दे] उत्सव, क्षणन (दे ५, १)।

तण न [तृण] तृण, घास (प्रासू, उत्त)। °इल्ल वि [°वत्] तृणवाला (गउड)। °जीवि वि [°जीविन्] घास खाकर जीनेवाला (सुपा ३७०) °राय पुं [°राज] ताड़-वृक्ष, ताड़ का पेड़ (गउड)। °विंटय, °वेंटय पुं [°वृन्तक] एक क्षुद्र जंतु जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु विशेष (पण्ण)।

तणग वि [तृणक] तृण का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

तणय पुं [तनय] पुत्र, लड़का (सुपा २४७, ४२८)।

तणय वि [दे] संबन्धी, 'का तणय' (सुर २, ८७ ६, २६१)।

तणयनुंदिआ स्त्री [दे] मधुरीकर, [illegible] (दे ४ ६)।

तणया स्त्री [तनया] लड़की, पुत्री (सुपा)।

तणरासि) वि [दे] प्रसारित, फैलाया
तणरासिअ) हुआ (दे ४ ६)।

तणसोल्ली स्त्री [दे] [illegible] (दे ४ ५)।

तणसोल्लि) स्त्री [दे] १ मल्लिका, पुष्प-
तणसोल्लिआ) प्रधान वृक्ष विशेष (दे ४, ६, [illegible] १, २६)। २ वि [illegible] (षड्)।

तणहार) पुं [तृणहार] १ त्रीन्द्रिय जन्तु
तणहारय) [illegible] (पण्ण १, [illegible])। २ वि घास [illegible] वाला, [illegible] (सुपा [illegible])।

तणिअ वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ (कुमा)।

तणु वि [तनु] १ पतला (जी ७)। २ कृश, दुर्बल (पव्व १६)। ३ अल्प, थोड़ा (दे ३, ५१)। ४ लघु, छोटा (जीव ३)। ५ सूक्ष्म (पण्ण)। ६ स्त्री शरीर काय (दे २, ४६, जी ८)। °तणुई, तणू स्त्री [°तन्वी] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी (ठा ८, इक)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय जीव द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गलों को शरीर रूप से परिणत करने की शक्ति (कम्म ३, १२)। °ब्भव वि [°उद्भव] १ शरीर से उत्पन्न। २ पुं लड़का (भवि)। °ब्भवा स्त्री [°उद्भवा] लड़की (भवि)। °भू पुंस्त्री [°भू] १ लड़का। २ लड़की (प्राक)। °य वि [°ज] देखो °ब्भव (उत्त १४)। °रुह पुंन [°रुह] १ केश, बाल (रंभा)। २ पुं. पुत्र, लड़का (भवि)। °वाय पुं [°वात] सूक्ष्म वायु विशेष (ठा ३, ४)।

तणुअ वि [तनुक] ऊपर देखो (पउम १६, ७, पाअ ५, भग १५, पाअ)।

तणुअ सक [तनय्] १ पतला करना। २ कृश करना, दुर्बल करना। तणुएइ (गा ६१, पाअ १७४)।

तणुआ) अक [तनुकाय्] दुर्बल होना,
तणुआअ) कृश होना। तणुआइ, तणुआ-अइ, तणुआयए (गा ३०, २६२, ७६) वकृ. तणुआअंत (गा २६८)।

तणुआअरअ वि [तनुत्वकारक] [illegible] [illegible] (गा ३४८)।

तणुइअ वि [तनूकृत] दुर्बल किया हुआ, कृश किया हुआ (गा १२२, पउम १६, ८)।

तणुई स्त्री [तन्वी] १ पृथ्वी विशेष [illegible] (सम २२)। २ [illegible] स्त्री, [illegible] (षड्)।

तणुईकय वि [तनूकृत] पतला किया हुआ (कप्प)।

तणुग देखो तणुअ (ओघ ३)।

तणुय देखो तणुअ (पिंड १२८)।

तणुयाण पुं [तनुजात] पुत्र, लड़का (भवि १८०)।

तणुभव देखो तणु-ब्भव (भवि १४०)।

तणुवी } देखो तणुई (हे २, ११३;
तणुवीआ } (कुमा)।

तणू स्त्री [तनू] शरीर, काया (गा ७८, पाअ, द ५)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी (ठा ८)। °अ वि [°ज] १ शरीर से उत्पन्न। २ पुं. लडका, पुत्र (उप ९८६)। °अतरा स्त्री [°कतरा] ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी, जिसपर मुक्त जीव रहते है, सिद्ध-शिला (सम २२)। °रुह पुन [°रुह] केश, रोम, वाल (उप ५९७ टी)।

तणूइय देखो तणुइअ (गउड)।

तणेण (अप) अ लिए, वास्ते (हे ४, ४२५, कुमा)।

तणेसि पुं [दे] तृण-राशि (दे ५,३, षड्)।

तण्णय पु [तर्णक] वत्स, वछडा (पाअ, गा १९, गउड)।

तण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (दे ५, २, पाअ, गउड, से १, ३१, ११, १२६)।

तण्हा स्त्री [तृष्णा] १ प्यास, पिपासा (पाअ)। २ स्पृहा, वाञ्छा, इच्छा (ठा २, ३, औप)। °लु, °लुअ वि [°वत्] तृष्णा-वाला, प्यासा, 'समरतण्हालू' (पउम ८, ८७, ८, ४७)।

तण्हाइअ वि [तृष्णित] तृषातुर, अति प्यासा (धर्मवि १४१)।

तत देखो तय = तत (ठा ४, ४)।

तत्त न [तत्त्व] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ (उप ७२८ टी, पुप्फ ३२०)। °ओ अ [°तस्] वस्तुत (उप ६८६)। °ण्णु वि [°ज्ञ] तत्व का जानकार (पचा १)।

तत्त पु [तप्त] १ तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)। २ प्रथम नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४)।

तत्त वि [तप्त] गरम किया हुआ (सम १२५, विपा १, ६, दे १, १०५)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

तत्त अ [तत्र] वहाँ। °भव, °होत वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २९३, अभि ५६)।

तत्तट्ठसुत्त न [तत्त्वार्थसूत्र] एक प्रसिद्ध जैन दर्शन-ग्रन्थ (अज्झ ७७)।

तत्तडिअ न [दे] रँगा हुआ कपडा (गच्छ २, ४९)।

तत्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, सतोष (कुमा, कप्प २६)। °ल्ल वि [°मत्] तृप्ति-युक्त, तृप्त, सतुष्ट (राज)।

तत्ति स्त्री [दे] १ आदेश, हुकुम (दे ५, २०, सण)। २ तत्परता (दे २०)। ३ चिन्ता, विचार (गा २, ५१, २७३ अ, सुपा २३७, २८०)। ४ वार्ता, वात (गा २, वज्जा २)। ५ कार्य, प्रयोजन (पण्ह १, २, वव १)।

तत्तिय वि [तावत्] उतना (प्रासू १५६)।

तत्तिल } वि [दे] तत्पर (षड्, दे ५, ३,
तत्तिल्ल } गा ५५७, प्रासू ५९)।

तत्तु (अप) देखो तत्थ = तत्र (हे ४, ४०४, कुमा)।

तत्तुडिल्ल न [दे] सुरत, सभोग (दे ५, ६)।

तत्तुरिअ वि [दे] रञ्जित (षड्)।

तत्तो देखो तओ (कुमा, जी २९)। °मुह वि [°मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो वह (सुर २, २३४)।

तत्तोहुत्त न [दे] तदभिमुख, उसके सामने (गउड)।

तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमे (हे २, १६१)। °भव वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २९३)। °य वि [°स्थ] वहाँ का रहनेवाला (उप ५९७ टी)।

तत्थ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (हे २,१६१, कुमा)।

तत्थ देखो तच्च = तथ्य (धर्मस ३०४, णदि ५३)।

तत्थरि पुं [त्रस्तरि] नय-विशेष, 'तत्थरिनएण ठविआ सोहउ मज्झ थुई' (अच्चु ४)।

तदा देखो तया = तदा (गा ९९६)।

तदीय वि [त्वदीय] तुम्हारा (महा)।

तदो देखो तओ (हे २, १६०)।

तद्दीअचय न [दे] नृत्य, नाच (दे ५, ८)।

तद्दिअस } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन,
तद्दिअसिअ } हररोज (दे ५, ८, गउड,
तद्दिअह } पाअ)।

तद्दोसि देखो त-द्दोसि = त्वग्दोषिन्।

तद्धिय पु [तद्धित] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (पण्ह २, २, विसे १००३)। २ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ (अणु)।

तधा देखो तहा (ठा ३, १, ७)।

तन्नय देखो तण्णय (सुर १४, १७४)।

तन्हा देखो तण्हा (सुर १, २०३, कुमा)।

तप देखो तव = तपस् (चंड)।

तप्प सक [तप्] १ तप करना। २ अक. गरम होना। तप्पइ, तप्पति (पिंग, प्रासू ५८)।

तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना। वकृ तप्पमाण (सुर १६, १९)। हेकृ 'न इमो जीवो सक्को तप्पेउ कामभोगेहिं' (आउ ५०)। कृ तप्पेयव्व (सुपा २३२)।

तप्प न [तल्प] शय्या, बिछौना (पाअ)। °अ वि [°ग] शय्या पर जानेवाला, सोनेवाला (पण्ह १, २)।

तप्प पुन [तप्र] डोंगी, छोटी नौका (पण्ह १, १, विसे ७०६)।

तप्प पुन [तप्र] नदी मे दूर से बहकर आता हुआ काष्ठ समूह (णदि ८८ टी)।

तप्पक्खिअ वि [तत्पाक्षिक] उस पक्ष का (श्रा १२)।

तप्पज्ज न [तात्पर्य] तात्पर्य, मतलब (राज)।

तप्पण न [तर्पण] १ सक्तु, सतुआ, सत्तू (पण्ह २, ५)। २ स्त्रीन. तृप्ति-करण, प्रीणन (सुपा ११३)। ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश (णाया १, १३)।

तप्पणग न [दे] जैन साधु का पात्र-विशेष, तरपणी (कुलक १०)।

तप्पणाडुआलिआ स्त्री [दे] सक्तुमिश्रित भोजन (दस वे० चू०, वसुदेवहिंडी, धम्मिलहिंडी)।

तप्पभिइ अ [तत्प्रभृति] तबसे, तबसे लेकर (कप्प, णाया १, १)।

तप्पमाण देखो तप्प = तर्पय्।

तप्पर वि [तत्पर] आसक्त (दे ५, २०)।

तप्पुरिस पु [तत्पुरुष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (अणु)।

तप्पेयव्व देखो तप्प = तर्पय्।

तब्भत्तिय वि [तद्भाक्तिक] उसका सेवक (भग ५, ७)।

[illegible]

तमस [illegible] = तमस्, [illegible] (पव २)।

तमस्सई [illegible] [तमस्वती] घोर [illegible] (बृ १)।

तमा [illegible] [तमा] १ [illegible] (ठा १०)।

तमा [illegible] [तमस्] [illegible]। [illegible] (४, ३०)। [illegible] तमाडत [illegible]।

तमाल पुं [तमाल] १ [illegible] (४२)। २ [illegible] तमाल वृक्ष [illegible] (१, ३)।

तमिस [illegible] [तमिस्र] [illegible] (११)।

तमिस्र न [तमिस्र] १ [illegible] (सूअ १, ५, १)। °गुहा स्त्री [°गुहा] [illegible]।

तमिस्सयार पुं [तमिस्रान्धकार] प्रबल [illegible], घोर [illegible] (सूअ १, ५, १)।

तमिस्स देखो तमिस्र (२६)।

तमी स्त्री [तमी] रात्रि [illegible]।

तमुक्काय [illegible] (भग ६, ५—पत्र [illegible])।

तमुक्काय [तमस्काय] [illegible] (ठा ४, २)।

[illegible]

तय न [त्रय] तीन का समूह, त्रिक। 'पाल-तए वि न मम' (पउ ४५, गा २८)।

तय° देखो तया = तदा। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] तब से (स ३१०)।

तय° देखो तया = त्वच्। °क्खाय वि [°खाद] त्वचा को खानेवाला (ठा ४, १)।

तया अ [तदा] उस समय (कुमा)।

तया स्त्री [त्वच्] १ त्वचा, छाल, चमड़ी (सम ३६)। २ दालचीनी (सम [illegible])। °मंत वि [°मत्] त्वचा वाला (णाया १, १)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति (जीव १)।

तयाणंतर न [तदनन्तर] उसके बाद (धर्म)।

तयाणि } अ [तदानीम्] उस समय (पि
तयाणिं } ३५८; २१, १०१)।

तयाणुग वि [तदनुग] उसका अनुसरण करनेवाला (सूअ १, १, ४)।

तर सक [तॄ] तैरना, पार करना। तरइ (पिंड ५१७)।

तर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना, तेज होना। तर (पिंग २६०१)।

तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना। तरइ (हे ४, ८६)। वकृ तरंत (आप ३२५)।

तर सक [तॄ] तैरना, तरना (हे ४, ८६)। कर्म तरिज्जइ [illegible] (हे ४, २५०)। वकृ तरंत, तरमाण [illegible]। हेकृ तरिउं तरीउं (णाया १, [illegible])। कृ तरिअव्व ([illegible])।

तर न [तरस्] १ [illegible]। २ बल, पराक्रम। °मल्लि वि [°मल्लि] [illegible]। °मल्लिहायण वि [°मल्लिहायन] [illegible]।

[illegible]

तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरंग-युक्त (गउड, कप्पू)।

तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरंग युक्त (गउड, से ८, ११ सुपा १५७)।

तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी, सरिता (प्रासू ६६, गउड, सुपा ५३८)।

तरंगिणीनाह पु [तरङ्गिणीनाथ] समुद्र, सागर (वज्जा १५६)।

तरंड } पुन [तरण्ड, °क] डोंगी, नौका
तरंडय } (सुपा २७२, ५००, सुर ८, १०६, पुप्फ १०५)।

तरग वि [तर, °क] तैरनेवाला, तैराक (ठा ४, ४)।

तरच्छ पुस्त्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति (पण्ह १, १, णाया १, १, स २५७)। स्त्री °च्छी (पि १२३)। °भल्ल पुस्त्री [°भल्ल] श्वापद जन्तु-विशेष (पउम ४२, १२)।

तरट्ट वि [दे] प्रगल्भ, धृष्ट, समर्थ, चतुर, 'हासिरजत्राव तरट्टो' (प्राकृ ३८)।

तरट्टा } स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री, प्रौढा नायिका,
तरट्टी } होशियार स्त्री, 'भणिएण ट्टुट्टुदि चिरं तरुणी तरट्टी' (कप्पू, काप्र ५६६), 'अट्ठेव आगयाओ तरुणतरट्टाओ एयाओ' (सुपा ४२)।

तरण न [तरण] १ तैरना (श्रा १४ स ३५६, सुपा २६२)। २ जहाज, नौका (विसे १०२७)।

तरणि पु [तरणि] १ सूर्य, रवि (कुमा)। २ जहाज, नौका। ३ घृतकुमारी का पेड, घीकुँआर का पेड। ४ अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष (हे १, ३१)।

तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, 'तरतम-जोगजुत्तेहिं' (कप्प)।

तरमाण देखो तर = तॄ।

तरल वि [तरल] चंचल, चपल (गउड, पाअ, कप्पू, प्रासू ६६, सुपा २०४, सुर २, ८६)।

तरल सक [तरलय्] चंचल करना, चलित करना। तरलेइ (गउड)। वकृ. तरलंत (सुपा ४७०)।

तरलण न [तरलन] तरल करना, हिलाना, 'कण्णाडीएं कुणता कुरलतरलण' (कप्पू)।

तरलाविअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ, चलायमान किया हुआ (गउड, भवि)।

तरलि वि [तरलिन्] हिलानेवाला (कप्पू)।

तरलिअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ (गा ७८, उप पृ ३३, सार्ध ११५)।

तरवट्ट पु [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड, पमाड, पवार (दे ५, ५, पाअ)।

तरस न [दे] मांस (दे ५, ४)।

तरसा अ [तरसा] शीघ्र, जल्दी (सुपा ५८२)।

तरा स्त्री [त्वरा] जल्दी, शीघ्रता (पाअ)।

तरिअव्व देखो तर = तॄ।

तरिअव्व न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका (दे ५, ७)।

तरिउ वि [तरीतृ] तैरनेवाला (विसे १०२७)।

तरिउ देखो तर = तॄ।

तरिया स्त्री [दे] दूध आदि का सार, मलाई (प्रभा ३३)।

तरिहि अ [तर्हि] तो, तब (सुर १, १३२, ११, ७१)।

तरी स्त्री [तरी] नौका, डोंगी (सुपा १११, दे ६, ११०, प्रासू १४६)।

तरु पु [तरु] वृक्ष, पेड, गाछ (जी १४, प्रासू २६)।

तरुण वि [तरुण] जवान, मध्य वयवाला (पउम ५, १६८)।

तरुणग } वि [तरुणक] बालक, किशोर
तरुणय } (सूअ १, ३, ४)। २ नवीन, नया (भग १५)। स्त्री °णिगा, °णिया (आचा २, १)।

तरुणरहस पुन [दे] रोग, बीमारी (ओघ १३६)।

तरुणिम पुस्त्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानी (कप्प)।

तरुणी स्त्री [तरुणी] युवति स्त्री, जवान स्त्री (गउड, स्वप्न ८२, महा)।

तल सक [तल्] तलना, भूजना, तेल आदि में भूनना। तलेज्जा (पि ४६०)। वकृ तलेंत (विपा १, ३)। हेकृ तलिज्जिउ (स २५८)।

तल न [दे] १ शय्या, बिछौना (दे ५, १६, पड्)। २ पु ग्रामेश, गाँव का मुखिया (दे ५, १६)।

तल पु [तल] १ वृक्ष-विशेष, ताड का पेड (णाया १, १ टी—पत्र ४३, पउम ५३, ७६)। २ न स्वरूप, 'धरणितलंसि' (कप्प), 'कासवितलम्मि' (कुमा)। ३ हथेली (ज १)। ४ तला, भूमिका, 'सत्ततले पासाए' (सुर २, ८१)। ५ अधोभाग, नीचे (णाया १, १)। ६ हाथ, हस्त (कप्प, पण्ह २, ५)। ७ मध्य खण्ड (ठा ८)। ८ तलवा, पानी के नीचे का भाग या सतह (पण्ह १, ३)। °ताल पुन [°ताल] १ हस्त-ताल, ताली। २ वाद्य-विशेष (कप्प)। °प्पहार पु [°प्रहार] तमाचा, चपेटा (दे)। °भंगय न [°भङ्गक] हाथ का आभूपण-विशेष (औप)। °पट्ट न [°पट्ट] बिछौने की चद्दर (वज्जा १०४)। °वट्ट न [°पत्र] ताड वृक्ष का पत्ता (वज्जा १०४)।

तल पुंन [तल] १ वाद्य-विशेष (राय ४६)। २ हथेली, 'अयमाउसो करतले' (सूअ २, १, १६)। ताल वृक्ष की पत्ती (सूअ १, ५, १२)। °वर पुं [°वर] राजा ने प्रसन्न होकर जिसको रत्न जटित सोने का पट्टा दिया हो वह (अणु २२)।

तलअट सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना, फिरना। तलअट्टइ (हे ४, १६१)।

तलआगत्ति पु [दे] कूप, इनारा (दे ५, ८)।

तलओडा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

तलण न [तलन] तलना, भर्जन (पण्ह १, १)।

तलप्प अक [तप्] तपना, गरम होना। तलप्पइ (पिंग)।

तलप्फल पु [दे] शालि, व्रीहि, धान (दे ५,७)।

तलवत्त पु [दे] १ कान का आभूपण-विशेष (दे ५, २१, पाअ)। २ वरांग, उत्तमांग (दे ५, २१)।

तलवर पु [दे तलवर] नगर-रक्षक, कोतवाल (णाया १, १, सुपा ३, ७३, ओप, महा, ठा ६, कप्प, राय, अणु, उवा)।

तलविंट }
तलवेंट } न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा (हे १, ६७, प्राप्र)।
तलवोंट }

तलसारिअ वि [दे] १ गालित। २ मुग्ध, मूर्ख (दे ५, ६)।

[illegible]

तल्लेस) वि [तल्लेश्य] उसी में जिसका
तल्लेस्स } [illegible] हो, तल्लीन, तदासक्त (विपा १, २ [illegible])।

तल्लोविल्लि स्त्री [दे] तड़फना, तड़पना, [illegible] 'दोइइ [illegible] जिन [illegible] [illegible]' (कुप्र ८६)।

तव सक [तप्] १ तपना, गरम होना। २ [illegible], तपश्चर्या करना। तवइ (हे ४, १३१; [illegible])। [illegible] तविउ (भग)। वकृ तवमाण ([illegible])।

तव सक [तापय्] गरम करना। तवेइ (भग)।

तव पुन [तपस्] तपस्या, तपश्चर्या (सम ११, [illegible] २६, प्रासू २८)। °गच्छ पु [°गच्छ] जैन मुनियों की एक शाखा, गण-विशेष ([illegible] १४)। °गण पुं [°गण] पूर्वोक्त ही अर्थ ([illegible] ७०)। °चरण, °चरण न [°चरण] १ तपश्चर्या, तप-[illegible] (सुपा १, ४, १, [illegible] ३६०, पंचि १४७)। २ तप का फल, स्वर्ग का भोग ([illegible] १, ६)। °सि वि [°स्विन्] तपस्या करनेवाला (ठा ४, ३)। देखो तवो°।

तव देखो थव (हे २, ४६, षड्)।

तव देखो थुण। तवइ (प्राकृ ६७)।

तवग्ग पुं [तवर्ग] त से लेकर 'न' तक पांच अक्षर। °पविभत्ति न [°प्रविभक्ति] नाट्य-विशेष (राय)।

तवण पुं [तपन] १ सूर्य, सूरज ([illegible] १-३१ टी, [illegible] ३१४)। २ रावण का एक प्रधान सुभट ([illegible] १२, ८४)। ३ न [illegible] विशेष ([illegible])।

तवण पुं [तपन] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान ([illegible] ८)। °तणया स्त्री [°तनया] [illegible] नदी ([illegible] १४)।

तवणा स्त्री [तपना] [illegible] (सुपा ४११)।

तवणिज्ज न [तपनीय] सुवर्ण, सोना ([illegible] १ [illegible], [illegible] ३६)।

तवणिज्ज [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] १४२)।

तवणी स्त्री [दे] १ [illegible] ([illegible] १ [illegible] सुपा ५४८, [illegible] ४२)। २ घास को खेत से काटकर भक्षण योग्य बनाने की क्रिया (सुपा ५४६)। ३ तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र (दे २, ५६)।

तवणीय देखो तवणिज्ज (सुपा ४८)।

तवमाण देखो तव = तप।

तवय वि [दे] व्यापृत, किसी कार्य में लगा हुआ (दे ५, २)।

तवय पु [तपक] तवा, भूनने का भाजन (विपा १ ३ सुपा ११८ पाअ)।

तवसि देखो तवस्सि, 'रयमित्तं पि न कप्पइ दत्तो तवसीण य गंतु' (धर्मवि ५३, १६)।

तवस्सि वि [तपस्विन्] १ तपस्या करनेवाला (सम ५१, उप ८३३ टी)। २ पुं. साधु मुनि, ऋषि (स्वप्न १८)।

तविअ वि [तप्त] तपा हुआ, गरम (हे २, १०५, पाअ)।

तविअ वि [तापित] १ गरम किया हुआ। २ संतापित, 'एयाए सो न तविओ, ज्यम्मि सच्चीए गव्वंदं' (सुपा २०४, महा, विग)।

तविअ वि [तपित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

तविआ स्त्री [तापिका] तवा, [illegible] (दे १, १६३)।

तवु देखो तउ (पउम ११८, ८)।

तवो देखो तओ (रंभा)।

तवो° देखो तव = तपस्। °कम्म न [°कर्मन्] तप-[illegible] (सम ११)। °धण पुं [°धन] ऋषि, मुनि (प्राकृ)। °धर पुं [°धर] [illegible], मुनि (पउम २०, १६४, १०३, १०८)। °वण न [°वन] ऋषि का आश्रम ([illegible] ७४४, [illegible] १६)।

तव्वणिय वि [दे] [illegible], बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का अनुयायी, '[illegible] [illegible]-[illegible]' (विसे १०४१)।

तव्वाणिग वि [दे तृतीयवर्गिक] तृतीय [illegible] में स्थित ([illegible] ३६८)।

तव्विह वि [तद्विध] उस प्रकार का ([illegible])।

तस अक [त्रस्] डरना, त्रास पाना। [illegible] ([illegible], १६८)। [illegible] ([illegible] ११६ टी)।

तस पुं [त्रस] १ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (ठा

१, जी २)। २ एक स्थान से दूसरे स्थान मे जाने-आने की शक्तिवाला प्राणी (निचू १२)। °काइय पु [°कायिक] जगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव (पण्ह १, १)। °काय पुं [°काय] १ त्रस-समूह (ठा २, १)। २ जगम प्राणी (आचा)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रसकाय मे उत्पन्न होता है (कम्म १; सम ६७)। °रेणु पु [°रेणु] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सो अडसठ परमाणुओ का एक परिमाण (अणु, पव २५४)। °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव)।

तसण न [त्रसन] १ स्पन्दन, चलन, हिलन (राज)। २ पलायन (सूअ १ ७)।

तसनाडी स्त्री [त्रसनाडी] त्रस जीवो के रहने का प्रदेश, जो ऊपर-नीचे मिलाकर चौदह रज्जू परिमित है (पव १४३)।

तसर देखो टसर (कप्पू)।

तसिअ वि [दे] शुष्क, सूखा (दे ५, २)।

तसिअ वि [तृषित] तृषातुर, पिपासित, प्यासा हुआ (रयण ८४)।

तसिअ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (जीव ३, महा)।

तसियव्व देखो तस = त्रस्।

तसेयर वि [त्रसेतर] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी (सुपा १६८)।

तह अ [तथा] १ उसी तरह (कुमा, प्रासू १६, स्वप्न १०)। २ और, तथा (हे १, ६७)। ३ पाद-पूर्ति मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (निचू १)। °कार पु [°कार] 'तथा' शब्द उच्चारण (उत्त २६)। °णाण वि [°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जाननेवाला (ठा ६)। २ न सत्य ज्ञान (ठा १०)। °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय—वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) (णाया १, १)। °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय। २ समुच्चय-सूचक अव्यय (पचा २)। °वि अ [°पि] तो भी (गउड)। °विह वि [°विध] उस प्रकार का (सुपा ४५६)। देखो तहा।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य, सच्चा (सूअ १, १३)।

तह पु [तथ] आज्ञाकारक, दास, नौकर (ठा ४, २—पत्र २१३)।

तह, तहीय न [तथ्य] १ स्वभाव, स्वरूप (सूअनि १२२)। २ सत्य वचन (सूअ १, १४, २१)।

तह देखो तह = तथा (औप)।

तहरी स्त्री [दे] पङ्कवाली सुरा (दे ५, २)।

तहल्लिआ स्त्री [दे] गो-वाट, गौओ का वाडा, गोशाला (दे ५, ८)।

तहा देखो तह = तथा (कुमा, गउड, आचा, सुर ३, २७)। °गय पु [°गत] १ मुक्त आत्मा। २ सर्वज्ञ (आचा)। °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का (पउम २२, ६५)। °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का (भग १५)। °वि वि [°विन्] १ निपुण, चतुर २ पु सर्वज्ञ (सूअ १, ४, १)। °हि अ [°हि] वह इस प्रकार (उप ६८६ टी)।

तहि देखो तह = तथा (गा ८७८, उत्त ६)।

तहिं, तहि अ [तत्र] वहाँ, उसमे (गा २०६, प्राप्र, गा २३४, ऊरु १०५)।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक (णाया १, १२)।

तहियं अ [तत्र] वहाँ, उसमे (विसे २७८)।

तहेय, तहेव अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार (कुमा, षड्)।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से (हे ४, २७८, गा ४६, ६७, उव)।

ता देखो ताव = तावत् (हे १, २७१, गा १४१, २०१)।

ता अ [तदा] तब, उस समय (रभा, कुमा, सण)।

ता अ [तर्हि] तो, तब (रभा, कुमा)।

ता स्त्री [ता] लक्ष्मी (सुर १६, ४८)।

ता° स [तद्] वह। °गंध पु [°गन्ध] १ उसका गन्ध। २ उसके गन्ध के समान गन्ध (पण्ण १७)। °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पण्ण १७)। °रस पुं [°रस] १ वह स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पण्ण १७)। °रूव न [रूप] १ वह रूप। २ वैसा रूप (पण्ण १७—पत्र ५२२)।

ताअ देखो ताव = ताप (गा ७६७, ८१४, हका ५०)।

ताअ पुं [तात] १ तात, पिता, बाप (सुर १, १२३, उत्त १४)। २ पुत्र, वत्स (सूअ १, ३, २)।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना। कृ तायव्व (श्रा १२)।

ताअप्प न [तादात्म्य] तद्रूपता, अभेद, अभिन्नता (प्राकृ २४)।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करनेवाला (गा २३०)।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक (उत्त ८)।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त (सूअ १, १५)।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक, रक्षण करनेवाला (उत्त २१, २२)।

ताइ वि [तायिन्] उपकारी (सूअ १, २, २, १७)।

ताइ पुं [त्रायिन्] मुनि, साधु (दसनि २, ६)।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित (उव)।

ताउ (अप) देखो ताव = तावत् (कुमा)।

ताठा (चूपै) देखो दाढा (हे ४, ३२५)।

ताड सक [ताडय्] १ ताडन करना, पीटना। २ प्रेरणा करना, आघात करना। ३ गुणाकार करना। ताडइ (हे ४, २७)। भवि ताडइस्स (पि २४०)। वकृ. ताडित (काल)। कवकृ. ताडिज्जमाण, ताडीअंत, ताडीअमाण (सुपा २६, पि २४०, अभि १५१) हेकृ ताडिउ (कप्पू)। कृ ताडिअ (उत्त १६)।

ताड पु [ताल] ताड का पेड (स २५६)।

ताडंक पु [ताडङ्क] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल (दे ६, ६३, कप्पू, कुमा)।

ताडण न [ताडन] १ ताडन, पीटना (उप ६८६ टी, गा ५४६)। २ प्रेरणा, आघात (से १२, ८३)।

ताडाविय वि [ताडित] पिटवाया गया (सुपा २८८)।

ताडिअ देखो ताड = ताडय्।

ताडिअ वि [ताडित] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ (पाअ)। २

[illegible]

तारिस [illegible] (पव्, [illegible] तार—तारय (वड् [illegible])।

तारय न [त्राण] [illegible] (भवि [illegible])।

तारविमाण पुं [त्राणविमान] [illegible] (इ ३, १ [illegible])।

तारवीसा स्त्री [त्रयस्त्रिंशत्] १ [illegible]। २ [illegible] संख्यावाला, तेतीस 'तारवीस [illegible]' (ठा [illegible], कप्प)।

तारत्र देखो तार = [illegible]।

तार न [तार] १ [illegible] (ठा [illegible])। २ [illegible] चाँदी। ३ प्रणव ओंकार। ४ [illegible] 'ॐ' अक्षर। ५ [illegible] (हे ३, १३३)।

तार वि [तार] १ [illegible] (हे ६, [illegible])। २ [illegible] (पाअ)। ३ अति ऊँचा ([illegible])। ४ अति ऊँचा [illegible] (पाअ, [illegible])। ५ न चाँदी ([illegible])। ६ [illegible] (हे ४, ३८)। °वई स्त्री [°वती] एक [illegible] (पाअ ४)।

तारक न [तारक] [illegible] (हे ६, ४२)।

तारक वि [तारक] [illegible] पार उतारने-वाला ([illegible] ३२)। २ पुं [illegible], [illegible] (पउम ५ १५६)। ३ [illegible] (ठा ६) देखो तारय।

तारका स्त्री [तारका] [illegible] (सुर २, ६)। २ [illegible] (ठा ८, ९)। देखो तारगा।

तारण न [तारण] १ पार उतारना (सुपा [illegible])। २ वि [illegible] (सुपा ४१७)।

तारणर पुं [°] [illegible] ([illegible] ४, १०)।

तारा [illegible] तारका ([illegible] १ [illegible] १०१)। ४ [illegible]।

तारगा [illegible] तारगा। १ [illegible]

[illegible]

[°नगर] नगर-विशेष [illegible] (म १३, ६७)। °पह पुं [°पथ] आकाश, [illegible] (पाअ)। °पहु पुं [°प्रभु] चन्द्रमा (उप ३२० टी)। °मेत्ती स्त्री [°मैत्री] [illegible] मित्रता (पव्ह)। °यण न [°यन] [illegible] का चलना, आँख की पुतली का [illegible] '[illegible] निवह' (सुपा १८७)। °वइ पुं [°पति] चन्द्रमा (गउड)।

तारि वि [तारिन्] तारनेवाला, [illegible] ([illegible] २३०)।

तारिम वि [तारिम] तरणीय, तैरने योग्य (आचा ६३)।

तारिय वि [तारित] पार उतारा हुआ (भवि)।

तारिया स्त्री [तारिका] तारा के आकार की एक प्रकार की [illegible], टिकली, [illegible] '[illegible]' (सुर ३, ७१)।

तारिस वि [तादृश] वैसा, उस तरह का ([illegible], प्राप्र, सुपा)। स्त्री °सी (प्रासू १२५)।

तारी स्त्री [तारी] [illegible] देवी ([illegible] १६, ४)।

तारुअ वि [तारक] [illegible] ([illegible] ५२१)।

तारुण्ण } न [तारुण्य] तरुणता, यौवन
तारुन्न } ([illegible] सुपा ११६)।

ताल देखो ताड = ताडय्। [illegible] (हे ४ २७)। [illegible] (सिरि १, [illegible]) [illegible] ([illegible] ११८ [illegible] २४०)।

ताल [illegible] [illegible] [illegible]

ताल पुं [ताल] १ [illegible]

[illegible]

ताल की तरह लम्बी जाँघवाला (णाया १, ८)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ बलदेव (श्रावम)। २ नृप-विशेष (दंस १)। ३ शत्रुञ्जय पहाड (ती १)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक (भग ८, ५)। °पिसाय पु [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस (पण्ण १)। °पुड देखो °उड (श्रा १२)। °यर पु [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण (श्रोघ ७६६)। °विंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त] व्यजन, पखा (पि ५३, नाट—वेणी १०४, हे १, ६७, प्राप्र)। °संपुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रो का सपुट, ताल-पत्र-सचय (सूत्र १, ४, १)। °सम वि [°सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष (ठा ७)।

तालंक पु [ताडङ्क] १ कुण्डल, कान का आभूषण-विशेष। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

तालंकि पुस्त्री [तालङ्किन्] छन्द-विशेष। स्त्री °णी (पिंग)।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र (उप ३३६ टी)।

तालण देखो ताडण (श्रौप)।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा श्रादि का प्रहार (पण्ह २, १, श्रौप)।

तालप्फली स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ५, १)।

तालय देखो तालग (सुपा ४१४, कुप्र २५२)।

तालसम न [तालसम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

तालहल पु [दे] शालि, व्रीहि (दे ५, ७)।

ताला श्र [तदा] उस समय, 'ताला जाश्रंति गुणा, जाला ते सहिश्रएहिं घिप्पंति' (हे ३, ६५, काप्र ५२१)।

ताला स्त्री [दे] लाजा, खोई, धान का लावा (दे ५, १०)।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने-वाला (निचू १५)।

तालाचर } पु [तालाचर] १ प्रेक्षक-विशेष,
तालायर } ताल देनेवाला प्रेक्षक (णाया १, १)। १ नट, नर्त्तक श्रादि मनुष्य-जाति (बृह ३)।

तालिअ वि [ताडित] आहत, पीटा हुश्रा (णाया १, ५)।

तालिअंट सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तालिअंटइ (हे ४, ३०)।

तालिअंट न [तालवृन्त] व्यजन, पखा (स ३०८)।

तालिअंटिर वि [भ्रमयितृ] घुमानेवाला (कुमा)।

तालिज्जंत देखो ताल = ताडय्।

तालिस देखो तारिस (उत्त ५, ३१)।

ताली स्त्री [ताली] १ वृक्ष-विशेष (चारु ६३)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुश्रा पखा (चारु ६३)।

तालु } न [तालु, °क] तालु, मुँह के अन्दर
तालुअ } का ऊपरी भाग, तलुश्रा (सत्त ४६, णाया १, १६)।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्घाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या (वसु)।

तालुर पुं [दे] १ फेन, फीण। २ कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड (दे ५, २१)। ३ पानी का आवर्त्त (दे ५, २१, गा ३७, पाश्र)। ४ पु पुष्प का सत्व (विक्र ३२)।

तालेंवि देखो ताल = तालय्।

ताव सक [तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ सताप करना, दु ख उपजाना। तावेंति (गा ८५०)। कर्म. ताविज्जति (गा ७)। कृ. तावणिज्ज (भग १५)।

ताव पु [ताप] १ गरमी, ताप (सुपा ३८६, कप्पू)। २ सताप, दु ख (श्राव ४)। ३ सूर्य, रवि। °दिसा स्त्री [°दिश्] सूर्य-तापित दिशा (राज)।

ताव श्र [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय। १ तवतक (पउम ६८, ५०)। २ प्रस्तुत अर्थ (श्रावम)। ३ अवधारण, निश्चय। ४ अवधि, हद। ५ पक्षान्तर। ६ प्रशसा। ७ वाक्य-भूषा। ८ मान। ९ साकल्य, सपूर्णता। १० तब, उस समय (हे १, ११)।

तावअ वि [तावक] त्वदीय, तुम्हारा (अच्चु ५३)।

तावइअ वि [तावत्] उतना (सम १४४, भग)।

ताव देखो ताव = तावत् (भग)।

तावँ } (अप) देखो ताव = तावत्
तावँहि } (कुमा)।

तावण पुं [तापन] चौथी नरकभूमि का एक नरकस्थान (देवेन्द्र ८)। २ वि तपानेवाला (त्रि ९७)।

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना (निचू १)। २ पु. इक्ष्वाकु वश का एक राजा (पउम ५, ५)।

तावणिज्ज देखो ताव = तापय्।

तायत्तीस }
तावत्तीसग } देखो तायत्तीसय (श्रौप,
तावत्तीसय } पि ४४५, ४३८, काल)।

तावत्तीसा देखो तायत्तीसा (पि ४३८)।

तावस पु [तापस] १ तपस्वी, योगी, सन्यासि-विशेष (श्रौप)। २ एक जैनमुनि (कप्प)। °गेह न [°गेह] तापसो का मठ (पाश्र)।

तावसा स्त्री [तापसा] जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)।

तावसी स्त्री [तापसी] तपस्विनी, योगिनी (गउड)।

ताविअ वि [तापित] तपाया हुश्रा, गरम किया हुश्रा (गा ५३, विपा १, ३, सुर ३, २२०)।

ताविआ स्त्री [तापिका] तवा, पूत्रा श्रादि पकाने का पात्र (दे २, ५९)। २ कडाही, छोटा कडाह (श्रावम)।

ताविच्छ पुन [तापिच्छ] वृक्ष-विशेष, तमाल का पेड (कुमा, दे १, ३७, सुपा ५८)।

तावी स्त्री [तापी] नदी-विशेष (पउम ३५, १, गा २३९)।

तास पु [त्रास] १ भय, डर (उप पृ ३५)। २ उद्वेग, सताप (पण्ह १, १)।

तासण वि [त्रासन] त्रास उपजानेवाला (पण्ह १, १)।

तासि वि [त्रासिन्] १ त्रास-युक्त, त्रस्त। २ त्रास-जनक (ठा ४, २, कप्पू)।

तासिअ वि [त्रासित] जिसको त्रास उप-जाया गया हो वह (भवि)।

ताहे श्र [तदा] उस समय, तब (हे ३, ६५)।

ति श्र [त्रि] तीन वार (श्रोघ ५४२)।

[illegible]

[illegible]] १ [illegible] । २ [illegible] (सम [illegible] ३६ [illegible] १२, १३६ [illegible] २७) । °दंड न [°दण्ड] १ [illegible] (मन) । २ [illegible] । °दंडि पु [°दण्डिन्] [illegible] (उत्त १३६ टी [illegible] १३६ [illegible]) । °नवइ स्त्री [°नवति] [illegible] (सम्म ९, ३१) । °पन्न त्रि न. [°पञ्चन्] [illegible] (धात १४) । °पन्नासइम त्रि [°पञ्चाश] [illegible] (पउम ५३, १५०) । °पह न [°पथ] [illegible] (राज) । °पाउग न [°पातन] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण [illegible] । २ [illegible] और [illegible] (विसे) । °पुंड न [°पुण्ड्र] [illegible] (पव ६) । °पुर पु [°पुर] १ [illegible] । २ न [illegible] नगर (राज) । °पुरा स्त्री [°पुरा] [illegible] (सुपा १६७) । °भंगी स्त्री [°भङ्गी] [illegible] (विसे) । °मधुर न [°मधुर] घी, शक्कर और मधु (पव) । °मासिआ स्त्री [त्रैमासिकी] [illegible] (सम २१) । °मुह त्रि [°मुख] १ [illegible] (राज) । २ [illegible] ७) । [illegible] न [°यव] [illegible] (म [illegible]) [illegible] (सुपा १६८) । °रासि न [°राशि] [illegible] (राज) । [illegible] न [illegible] (सम्म ८६, ती १) । [illegible] (सम्म ६५, २१) । [illegible] ९, °वई स्त्री [°पदी] [illegible]

पुरुषार्थ (ठा ४, ४—पत्र २८३ [illegible] ७८३ उत्त ६ २०७) । २ लोक, वेद और [illegible] तीन का वर्ग । ३ मूत्र, अर्थ और [illegible] दोनों का समूह (भार १ [illegible]) । °वण्ण पु [°वर्ण] [illegible] (सुपा) । °वरिस त्रि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्थावाला (पव ३) । °वलि स्त्री [°वलि] [illegible] रेखाएँ (पण्ह) । °वलिय त्रि [°वलिक] तीन रेखावाला (राय) । °वली देखो °वलि (गा २७८ दीप) । °वट्ठ पु [°पृष्ठ] [illegible] के भावी नवम वासुदेव (सम १५४) । °वाय न [°पद] तीन पादवाला ([illegible] ८, [illegible]) । °वहआ स्त्री [°पथगा] गंगा नदी ([illegible] ८ [illegible] ३) । °वायणा स्त्री [°पातना] [illegible] °पायग (पव ९, १) । °विट्ठु, °विट्ठु पु [°पृष्ठ, °विष्णु] [illegible] में उत्पन्न प्रथम अर्धचक्रवर्ती राजा का नाम (सम ८८ पउम ५, १५५) । °विह त्रि [°विध] तीन प्रकार का (उवा [illegible] ३) । °विहार पु [°विहार] [illegible] का बनाया हुआ [illegible] जैन मन्दिर (कुप्र १४४) । °संकु पु [°शङ्कु] सूर्यवंशीय [illegible] राजा (अभि ८२) । °संझ न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय (गउ ११, १०६) । °सट्ठ त्रि [°षष्ट] [illegible], ६३ वाँ (पउम ६३, ७०) । °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] [illegible], ६३ (अजि) । °सत्त [illegible] [°सप्त] [illegible] (पव ६) । °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] इक्कीस बार (णाया १, ८ सुपा ४८६) । °समइय त्रि [°सामयिक] [illegible] समय में [illegible] (ठा ३, ४) । °समय न [°समय] [illegible] (णाया १ [illegible]) । [illegible] (पउम ९६, ४८) । °सरा स्त्री [°सरा] [illegible] (विपा १, ८) । °सरिय न [°सरिक] १ [illegible] (पउम १११, [illegible]) । २ [illegible] । °सिंग पु [°शृङ्ग] [illegible] । °सुरभ न [°सुरभि] [illegible]

१२,३४; स ६६६)। °सूलपाणि पु [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल को हाथ में रखनेवाला सुभट (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल (सूअ १, ५, १)। °हत्तर वि [°सप्तत] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ (पउम ७३, ३६)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से (पि ४५१; अणु)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १ तीन जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (कुमा; सुर १, ८; प्रासू ४६; अच्चु १६)। २ पु. राजा कुमारपाल के पिता का नाम (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पु [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार पु [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम (पउम ८१, १२२)। °हुणविहार पु [°भुवनविहार] पाटण (गुजरात) में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४)। देखो ते°।

°ति देखो इअ = इति (कुमा; कम्म २, १२, २३)।

तिअ (अप) अक [तिम्, स्तिम्] १ आर्द्र होना। २ सक आर्द्र करना। तिअइ (प्राकृ १२०)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय (श्रा १, उप ७२८ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों (सुर १, ६३)। °संजअ पु [°सयत] एक राजर्षि (पउम ५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होनेवाला (राज)।

तिअंकर पु [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैनमुनि (राज)।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय (विसे २६४३)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी (से ११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह (विसे १४३२)।

तिअलुक्क, तिअलोय न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (धर्म ६०; लहुअ ६)।

तिअस पु [त्रिदश] देव, देवता (कुमा; सुर १, ६)। °गअ पु [°गज] ऐरावत या ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी (से ६, ६१)। °नाह पु [°नाथ] इन्द्र (उप ९८६ टी; सुपा ४४)। °पहु पु [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक (सुपा ४७, १७६)। °रिसि पु [°ऋषि] नारद मुनि (कुप्र २७२)। °लोग पु [°लोक] स्वर्ग (उप १०१६)। °विलया स्त्री [°वनिता] देवी, स्त्री देवता (सुपा २६७)। °सरि स्त्री [°सरित्] गंगा नदी (कुप्र)। °सेल पुं [°शैल] मेरु पर्वत (सुपा ४८)। °लय पुन [°लय] स्वर्ग (कुप्र १६; उप ७२८ टी; सुर १, १७२)। °हिव पु [°धिप] इन्द्र (सुपा ३४)। °हिवइ पु [°धिपति] इन्द्र (सुपा ७६)।

तिअससूरि पु [त्रिदशसूरि] बृहस्पति (सम्मत्त १२०)।

तिअसिंद पु [त्रिदशेन्द्र] इन्द्र, देव-पति (वज्जा १५४)।

तिअसेंद देखो तिअसिंद (चेइय ६१०)।

तिअसीस पु [त्रिदशेश] इन्द्र, देव-नायक (हे १, १०)।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात (अच्चु ४६)।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना। तिइक्खए (आचा)। वकृ तिइक्खमाण (आचा)।

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता (आचा)।

तिइज्ज, तिइय वि [तृतीय] तीसरा (पि ४४९; सक्षि २०)।

तिउक्खर न [त्रिपुष्कर] वाद्य-विशेष (अजि ३१)।

तिउट्ट सक [त्रोटय्] १ तोडना। २ परित्याग करना। तिउट्टिज्जा (सूअ १, १, १, १)।

तिउट्ट अक [त्रुट्] १ टूटना। २ मुक्त होना, 'सव्वदुक्खा तिउट्टइ' (सूअ १, १५, ५)।

तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित] १ टूटा हुआ। २ अपसृत (आचा)।

तिउड पु [दे] कलाप, मोर-पिच्छ (पाअ)।

तिउडग पुन [त्रिपुटक] धान्य विशेष (दसनि ६, ८; पव १५६)।

तिउडय न [दे] १ मालव देश में प्रसिद्ध धान्य-विशेष (श्रा १८)। २ लौंग, लवंग (श्रा पत्र ६६)।

तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

तिउर पु [त्रिपुर] असुर-विशेष (त्रि ९४)। °णाह पु [°नाथ] वही (त्रि ८७)।

तिउरा स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष, चेदि देश की राजधानी (कुमा)।

तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को पीडा पहुँचानेवाला, दुःख का हेतु (उत्त २)।

तिऊड देखो तिकूड (से ८, ८३; ११, ६८)।

तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज (दे ५, १२)।

तिगिंच्छ देखो तिगिच्छ (इक)।

तिगिन्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-गोत्र-विशेष (इक)।

तिगिच्छि स्त्री [दे] कमल-रज, पद्म का रज, पराग (दे ५,१२; गउड; हे २,१७४; ज ४)।

तिंत वि [तीमित] भीजा हुआ (स ३३२, हे ४, ४३१)।

तिंतिण, तिंतिणिअ वि [दे] बडबड करनेवाला, बडबडानेवाला, वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन में जो आवे सो बोलनेवाला (वव १; ठा ६—पत्र ३७१; कस)।

तिंतिणी स्त्री [तिन्त्रिणी] १ चिंचा, इमली का पेड (अभि ७१)।

तिंतिणी स्त्री [दे] बडबडाना (वव ३)।

तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष-विशेष (कुप्र १०२)।

तिंदुग, तिंदुय पु [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड (पाअ; पउम २०, ३७; सम १५२; पण्ण १७)। २ न फल-विशेष (पण्ण १७)। ३ श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान (विसे २३०७)।

तिंदुग, तिंदुय पुं [तिन्दुक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६; सुख ३६, १३९)।

[illegible]

तिगिच्छि पुं [तिगिञ्छि] द्रह-विशेष (इक)।

तिगिच्छायण न [तिगिञ्छायन] गोत्र विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

तिगिच्छि पुं [तिगिञ्छि] १ पर्वत विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०; इक; सम ३३)। २ द्रह-विशेष [illegible] पर स्थित एक द्रह (ठा २, ३—पत्र ७२)।

तिगिच्छ सक [चिकित्स्] प्रतीकार करना, इलाज करना, दवा करना। तिगिच्छइ (उत्त १९, ७६; पि २१५, ५५५)।

तिगिच्छग पुं [चिकित्सक] वैद्य, हकीम (उत्त ७)।

तिगिच्छकूड पुं [तिगिञ्छिकूट] १ कूट विशेष, [illegible] पर्वत [illegible] (इक)। २ [illegible] (सम २८)।

तिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा-शास्त्र (निर ५६)।

तिगिच्छय वि [चिकित्सक] प्रतीकार करने वाला। २ पुं. वैद्य, हकीम (ठा ४, ४; पि २१५, ३२७)।

तिगिच्छायण न [चिकित्सायन] चिकित्सा (विसे १८८)।

तिगिच्छिय न [चिकित्सित] चिकित्सा-कर्म (ठा ६—पत्र ४४१)।

तिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा (ठा ९; ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] वैद्यक, वैद्यकशास्त्र (सार)।

तिगिच्छायण न [तिगिञ्छायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

तिगिंछि स्त्री तिगिंछि (ठा २, ३—पत्र ८०; सम ८८, पि १०८, पि ५५५)।

तिगिंछिय [illegible] (सम ८ १२८)।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तिण्ण वि [तीर्ण] नैरो पोग्य (भग ६३)।

तिछु पुंस्त्री [दे] मत्तमारा मरस्वेषण (दे २, १८)। स्त्री °छी (सुपा ४८६)।

तिडुव सक [ताडय्] ताडन करना। तिडुवइ (प्राकृ ७६)।

तिण न [तृण] तृण, घास (सुपा २११; सनि १०४ न १०६)। °मूय न [°शर] तृण का बना मार (भग १५)। °हत्थय पुं [°हस्तक] घास का पूला (भग ३, १)।

तिणिस पुं [तिनिश] वृक्ष विशेष (ठा ८, २; उत्त १, १६ टी)।

तिणिस न [दे] मधु पात्र मधपुड़ा (दे ५, ११, २, १२)।

तिणिस वि [तैनिश] तिनिश-वृक्ष-संबंधी, [illegible] (गाय ७४)।

तिणीकय वि [तृणीकृत] तृण-तुल्य माना हुआ (कुप्र ४)।

तिण्ण) सक [तिम्] १ आर्द्र होना। तिण्णाअड) २ सक आर्द्र करना। तिम्मइ (प्राकृ ७०)।

तिण्ण वि [तीर्ण] १ पार पहुँचा हुआ (भौप)। २ [illegible] (से ११, २१)।

तिण्ण न [स्तैन्य] चोरी, [illegible] (दस ५६७ टी)।

तिण्ण° देखो ति = त्रि। °भंग वि [°भङ्ग] [illegible] (सनि २२४)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का (भग— पत्र ८२)।

तिण्णिअ पुं [तिन्निश] [illegible] (इक)।

तिण्ह देखो तिण्ण (ठा ३, ४४, ८३ पि ३१२)।

तिण्हा देखो तण्हा (भग, पउम १०)।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तितिक्खा देखो तिइक्खा (सम ५७)।

तित्त वि [तृप्त] तृप्त, संतुष्ट, खुश (विसे २४०६, औप, दे १, १६, सुपा १६३)।

तित्त वि [तिक्त] १ तीता, कडुआ (णाया १६)। २ पुं तीता रस (ठा १)।

तित्ति देखो तत्ति = दे (सिरि २७, सबोध ६)।

तित्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, संतोष (उत्त ५६७ टी, दे १, ११७, सुपा ३७५, प्रासू १४०)।

तित्ति [दे] तात्पर्य, सार (दे ५, ११, षड्)।

तित्तिअ वि [तावत्] उतना (हे २, १५६)।

तित्तिअ पु [तित्तिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)। देखो तिणिगअ।

तित्तिर } पु [तित्तिरि] पक्षि-विशेष, तीतर
तित्तिर } या तित्तिर (हे १,९०, कुप्र ४२७)।

तित्तिरिअ वि [दे] स्नान से आर्द्र (दे ५, १२)।

तित्तिल वि [तावत्] उतना (षड्)।

तित्तिल्ल पु [दे] द्वारपाल, प्रतीहार (गा ५५६)।

तित्तुअ वि [दे] गुरु, भारी (दे ५, १२)।

तित्तुल (अप) देखो तित्तिल (हे ४, ४३५)।

तित्थ पु [त्रिस्थ] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैनसंघ (विसे १०३५)।

तित्थ पु [त्र्यर्थ] ऊपर देखो (विसे १३०८)।

तित्थ न [तीर्थ] प्रथम गणधर (णंदि १३० टी)।

तित्थ न [तीर्थ] १ ऊपर देखो (विसे १०३३, ठा १)। २ दर्शन, मत (सम्म ८, विसे १०४८)। ३ यात्रा स्थान, पवित्र जगह (धर्म २, राय, अभि १२७)। ४ प्रवचन, शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी (धर्म ३)। ५ पुन अवतार, घाट, नदी वगेरह में उतरने का रास्ता (विसे १०२६, विक्र ३२, प्रति ८२, प्रासू ९०)। °कर, °गर देखो °यर (सम ६७, कप्प, पउम २०, ८, हे १, १७७)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] तीर्थ-गमन (धर्म २)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] जिन-देव (स ७६१, उप पृ ३५०, सुपा ६५६, साधं ४३, स ३५)। °यर वि [°कर] १ तीर्थ का प्रवर्तक। २ पुं जिन-देव, जिन भगवान् (णाया १,८, हे १,१७७, स १०१) स्त्री. °री (णंदि)। °यरणाम न [°करनामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थंकर होता है (ठा ६)। °राय पु [°राज] जिन-देव (उप पृ ४००)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव (ठा १,१)। °हिनायग पुं [°धिनायक] जिनदेव (उप ९८६ टी)। °हिव पु [°धिप] संघनायक, जिन-देव (उप १४२ टी)। °हिवइ पु [°धिपति] जिनदेव, जिन भगवान् (पात्र)।

तित्थकर पुं [तीर्थङ्कर] देखो तित्थ-यर (चेइय ६५१)।

तित्थि वि [तीर्थिन्] १ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्। २ किसी दर्शन का अनु-यायी (गु ३)।

तित्थिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो (प्रवो ७४)।

तित्थीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो (विसे ३१९६)।

तित्थेसर पु [तीर्थेश्वर] जिन-देव, जिन भगवान् (सुपा ५१, ८६, २६०)।

तिदस देखो तिअस (नाट—विक्र २८)।

तिदिव न [त्रिदिव] स्वर्ग, देवलोक (सुपा १४२, कुप्र ३२०)।

तिध (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१, कुमा)।

तिन्न देखो तिण्ण (सम १)।

तिन्न वि [दे] स्तीमित, आर्द्र, गीला (णाया १, ६)।

तिपन्न देखो ते-वण्ण (पव ५, १८)।

तिप्प सक [तिप्] देना। तिप्पइ (पिंड २६७)।

तिप्प अक [तृप्] तृप्त होना। वकृ तिप्पंत (पिंड ६४७)।

तिप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना, हेकृ 'न इमा जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं' (पच्च ५५)। कृ. तिप्पियव्व (पउम ११, ७३)।

तिप्प अक [तिप्] १ झरना, चूना। २ अफसोस करना। ३ रोना। ४ सक, सुख-च्युत करना। तिप्पामि, तिप्पति (सूअ २, १, २, २, ५५)। वकृ. तिप्पमाण (णाया १, १—पत्र ४७)। प्रयो. वकृ तिप्पयंत (सम ५१)।

तिप्प पुंन [त्रेप] अपान आदि धोने की क्रिया, शौच (गच्छ २, ३२)।

तिप्प वि [तृप्त] संतुष्ट, खुश (हे १, १२८)।

तिप्पण न [तेपन] पीडन, हैरानी (सूअ २, २, ५५)।

तिप्पणया स्त्री [तेपनता] अश्रु-विमोचन, रोदन (ठा ४, १, औप)।

तिप्पाय न [त्रिपाद] तप-विशेष, नीवी (संबोध ५८)।

तिम (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१, भवि, कम्म १)।

तिमि पु [तिमि] मत्स्य की एक जाति (पण्ह १, १)।

तिमिंगिल पु [दे] मत्स्य, मछली, तिमि (मत्स्य) को निगलनेवाला मत्स्य (दे ५,१३)।

तिमिंगिल पु [तिमिङ्गिल] मत्स्य की एक जाति (दे ५, १३, से ७, ८, पण्ह १, १)। °गिल पु [°गिल] एक प्रकार का महान् मत्स्य, बडी भारी मछली (सूअ २, ६)।

तिमिगिलि पु [तिमिङ्गिलि] मत्स्य की एक जाति (पउम २२, ८३)।

तिमिगिल देखो तिमिंगिल = तिमिङ्गिल (उप ५१७)।

तिमिच्छय } पुं [दे] पथिक, मुसाफिर (दे
तिमिच्छाह } ५, १३)।

तिमिण न [दे] गीला काष्ठ (दे ५, ११)।

तिमिर न [तिमिर] १ अन्धकार, अँधेरा (पडि, कप्प)। २ निकाचित कर्म (धर्म २)। ३ अल्प ज्ञान। ४ अज्ञान (आचू ५)। ५ पुं. वृक्ष-विशेष (स २०६)।

तिमिरिच्छ पु [दे] वृक्ष विशेष, करंज का पेड (दे ५, १३)।

तिमिरिस पु [दे] वृक्ष विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

तिमिल स्त्रीन [तिमिल] वाद्य-विशेष (पउम ५७, २२)। स्त्री. °ला (राज)।

तिमिस पु [तिमिष] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हडा (कप्पू)।

तिमिसा } स्त्री [तिमिस्रा] वताढ्य पर्वत
तिमिस्सा } की एक गुफा (ठा २, ३, पण्ह १, १—पत्र १४)।

[illegible]

मिस [illegible] [मिस्र] [illegible] मिस्र, [illegible] (मा॰ ६)।

[illegible]

मिश्रकर्णी [illegible] [मिश्रकर्णी] [illegible] (बृह १, ८, ३, १०)।

[illegible]

तिलोत्तमा स्त्री [तिलोत्तमा] एक स्वर्गीय अप्सरा (उप ७६८ टी, महा)।

तिलोदग } न [तिलोदक] तिल का धोवन —
तिलोदय } जल (आचा, कप्प)।

तिल्ल न [तैल] तेल, तेल (सूक्त ३५, कुप्र २४०)।

तिल्ल न [तिल्ल] छन्द-विशेष (पिंग)।

तिल्लग वि [तैलक] तेल बेचनेवाला, तेली (बृह १)।

तिल्लहडी स्त्री [दे] गिलहरी, गु० खीसकोली (नदी टि पत्र १३३ मुद्रित) मारवाडी मे तालोटी, ताली।

तिल्लोदा स्त्री [तैलोदा] नदी-विशेष (निच १)।

तिवँ (अप) देखो तहा (हे ४, ३९७)।

तिवण्णी स्त्री [त्रिवर्णी] एक महौषधि (ती ५)।

तिवाय सक [त्रि+पातय्] मन, वचन और काय से नष्ट करना, जान से मार डालना। तिवायए (सूअ १, १, १, ३)।

तिविक्कम पु [त्रिविक्रम] जैनमुनि, 'गहिया नियएहि (? तिपएहि) मही, तिविक्कमो तेण विक्खाओ' (धर्मवि ८६)।

तिविडा स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ५, १२)।

तिविडी स्त्री [दे] पुटिका, छोटा पुड़वा (दे ५, १२)।

तिव्व वि [तीव्र] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट (भग १५, आचा)। २ रौद्र, भयानक, डरावना (सूअ १, ५, १)। ३ गाढ, निबिड (पण्ह १, १)। ४ तिक्त, कडुआ (भग ६, ३४)। ५ प्रकृष्ट, उत्तम, प्रकर्ष-युक्त (णाया १, १—पत्र ४)।

तिव्व वि [दे तीव्र] १ दु सह, जो कठिनता से सहन हो सके (दे ५, ११, सूअ १, ३, ३, १, ५, १, २, ६, आचा)। २ अत्यन्त अधिक, अत्यर्थ (दे ५, ११, धर्म २, ओप, पण्ह १, ३, पचा १५, आव ६, उवा)।

तिसथ वि [त्रिसरथ] तीन वार सुनने से अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धर्मस १२०७)।

तिसला स्त्री [त्रिशला] भगवान् महावीर की माता का नाम (सम १५१)। °सुअ पु [°सुत] भगवान् महावीर (पउम १, ३३)।

तिसा स्त्री [तृषा] प्यास, पिपासा (सुर ६, २०६, पात्र)।

तिसाइय } वि [तृषित] तृषातुर, प्यासा
तिसिय } (महा, उत्र, पण्ह १, ४, सुर १, १९६)।

तिसिर पु व [त्रिशिरस्] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५) २ पु नृप-विशेष (पउम ६६ ४९)। ३ रावण का एक पुत्र (से १२, ५६)।

तिस्सगुत्त देखो तीसगुत्त (राज)।

तिहु (अप) देखो तहा (कुमा)।

तिहि पुस्त्री [तिथि] पचदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख (चद १०, पि १८०)।

तीअ वि [तृतीय] तीसरा (सम १५०, सक्षि २०)।

तीअ वि [अतीत] १ गुजरा हुआ, बीता हुआ (सुपा ४४९, भग) २ पु भूतकाल (ठा ३, ४)।

तीडल पु [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष (विसे ३३४८)।

तीमण न [तीमन] कढी, खाद्य-विशेष, झोर (दे २, ३५, सण)।

तीमिअ वि [तीमित] आर्द्र, गीला (कुप्र ३७३)।

तीय वि [तैन] तीन (सूअ, १, २, २, २३)।

तीर अक [शक्] समर्थ होना। तीरइ (हे ४, ८६)।

तीर सक [तीरय्] समाप्त करना, परिपूर्ण करना। तीरइ, तीरेइ (हे ४, ८६, भग)। संकृ तीरित्ता (कप्प)।

तीर पुंन [तीर] किनारा, तट, पार (स्वप्न ११६, प्रासू ६०, ठा ४, १, कप्प)।

तीरगम वि [तीरगम] पार-गामी, पार जानेवाला (आचा)।

तीरट्ठ पुं [तीरस्थ, तीरार्थ] साधु, मुनि, श्रमण (दसनि २, ६)।

तीरिय वि [तारित] समापित, परिपूर्ण किया हुआ (पव ५)।

तीरिया स्त्री [दे] शर या तीर रखने का थैला, तरकश, तूणीर, बाणधि (?), 'गहियमणेण पासत्थं धणुवर, सधिओ तीरियासरो' (स २६७)।

तीस न [त्रिंशत्] १ सख्या-विशेष, तीस, ३०। २ तीस-सख्यावाला (महा, भवि)।

तीसआ } स्त्री [त्रिंशत्] ऊपर देखो (सक्षि
तीसइ } २१)। °वरिस वि [°वर्ष] तीस वर्ष की उम्र का (पउम २, २८)।

तीसइम वि [त्रिंश] १ तीसवा (पउम ३०, ९८)। २ न लगातार चौदह दिनो का उपवास (णाया १, १)।

तीसग वि [त्रिशक] तीन वर्ष की उम्रवाला (तदु १७)।

तीसगुत्त पु [तिष्यगुप्त] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश मे जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था (ठा ७)।

तीसभद्द पु [तिष्यभद्र] एक जैनमुनि (कप्प)।

तीसम वि [त्रिंश] तीसवाँ (भवि)।

तीसा स्त्री देखो तीस (हे १, ९२)।

तीसिया स्त्री [त्रिंशिका] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री (वव ७)।

तु अ [तु] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ भिन्नता, भेद, विशेषण (श्रा २७, विसे ३०३५)। २ अवधारण, निश्चय (सूअ १, २, २)। ३ समुच्चय (सूअ १, १, १)। ४ कारण, हेतु (निचू १)। ५ पाद-पूरक अव्यय (विसे ३०३५, पंचा ४)।

तुअ सक [तुद्] व्यथा करना, पीडा करना। तुअइ (षड्)। प्रयो. संकृ तुयावइत्ता (ठा ३, २)।

तुअर पु [तुवर] धान्य-विशेष, रहर (जं १)।

तुअर अक [त्वर्] त्वरा होना, शीघ्र होना, जल्दी होना। तुअर (गा ६०६)।

तुंग वि [तुङ्ग] १ ऊँचा, उच्च (गा २५६, औप)। २ पु छन्द-विशेष (पिंग)।

तुंगार पु [तुङ्गार] अग्नि कोण का पवन (आवम)।

तुंगिम पुस्त्री [तुङ्गिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व (सुपा १२४, वज्जा १५०, कप्पू, सण)।

तुंगिय पु [तुङ्गिक] १ ग्राम-विशेष (आवम)। २ पर्वत-विशेष, 'तुगे तुंगियसिहरे गतु तिव्व तव तवइ' (कुप्र १०२)। ३ पुस्त्री गान-विशेष मे उत्पन्न, 'जसभद्द तुंगिय वेत्र' (णदि)।

तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुआ, साँधा हुआ (बृह १)।

तुण्हि अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी, चुपकी, चुपचाप, चुपकेसे, मौन होकर (भवि)।

तुण्हि पु [दे] सूकर, सूअर (दे ५, १४)।

तुण्हिं देखो तुण्हि = तूष्णीम् (प्राक ३२)।

तुण्हिअ, तुण्हिक्क वि [तूष्णीक] मौन रहा हुआ, मौन रहनेवाला, चुप रहनेवाला (प्राप्र, गा २५८, सुर ४, १४८)।

तुण्हिक्क वि [दे] मृदु-निश्चल (दे ५, १५)।

तुण्हीअ देखो तुण्हिअ (स्वप्न ४२)।

तुत्त देखो तोत्त (सुपा २३७)।

तुद देखो तुअ। तुदए (पड्)। वकृ तुद (विसे १४७०)।

तुद पु [तोद] प्रतोद, अरदार डंडा, चाबुक (सूअ १, ५, २, ३)।

तुन्नण न [तुन्नन] रफू करना (गच्छ ३, ७)।

तुन्नाय देखो तुण्णाय (णंदि १६४)।

तुन्नार पु [तुन्नकार] रफू करनेवाला शिल्पी (धर्मवि ७३)।

तुप्प पुं [दे] १ कौतुक। २ विवाह, शादी। ३ सर्षप, सरसों, धान्य-विशेष। ४ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र (दे ५, २२)। ५ वि म्रक्षित, चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त (दे ५, २२, कप्प, गा २२, २८६, हे १, २००)। ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त (दे ५, २२, ओघ ३०७ भा)। ७ न घृत, घी (से १५, ३८, सुपा ६३४, कुमा)।

तुप्प वि [दे] वेष्टित (अणु २६)।

तुप्पइअ, तुप्पलिअ, तुप्पविअ वि [दे] घी से लिप्त (गा ५२० अ)।

तुमतुम पुं [दे] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष (ठा ८—पत्र ४४१)।

तुमतुम पुं [दे] १ तूकारवाला वचन, तिरस्कार वचन, तू तू (सूअ १, ६, २७)। २ वाक्-कलह, 'अप्पतुमतुमे' (उत्त २६, ३६)। ३ वि. तूकारे से बात कहनेवाला (संबोध १७)।

तुमुल पु [तुमुल] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम (गउड)। २ न. शोरगुल (पात्र)।

तुम्ह स [युष्मत्] तुम, आप (हे १, २४६)।

तुम्हकेर वि [त्वदीय] तुम्हारा (कुमा)।

तुम्हकेर वि [युष्मदीय] आपका, तुम्हारा (हे १, २४६, २, १४७)।

तुम्हार (अप) ऊपर देखो (भवि)।

तुम्हारिस वि [युष्मादृश] आपके जैसा, तुम्हारे जैसा (हे १, १४२, गउड, महा)।

तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा (हे २, १४६, कुमा, पड्)।

तुयट्ट अक [त्वग् + वृत्] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना। तुयट्टइ, (कप्प, भग)। तुयट्टेज, तुयट्टेजा (भग, औप)। हेकृ. तुयट्टित्तए (आचा)। कृ. तुयट्टियव्व (णाया १, १, भग, औप)।

तुयट्टण न [त्वग्वर्तन] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना (ओघ १५२ भा, औप)।

तुयट्टावण न [त्वग्वर्तन] करवट बदलवाना। (आचा)।

तुयावइत्ता देखो तुअ।

तुर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना, शीघ्र होना। वकृ तुरत, तुरेत, तुरमाण, तुरेमाण (हे ४, १७२, प्रासू ५८, पड्)।

तुर°, तुरा स्त्री [त्वरा] शीघ्रता, जल्दी (दे ५, १६)। °वंत वि [°वत्] त्वरा-युक्त,

तुरग पु [तुरङ्ग] अश्व, घोड़ा (कुमा, प्रासू ११७)। २ रामचन्द्र का एक सुभट (पउम ५६, ३८)।

तुरगम पु [तुरङ्गम] अश्व, घोड़ा (पात्र, पिंग)।

तुरंगिआ स्त्री [तुरङ्गिका] घोड़ी (पात्र)।

तुरत देखो तुर।

तुरक्क पु [दे तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क (ती १४)।

तुरग देखो तुरय (भग ११, ११, राय)। °मुह पु [°मुख] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५ टी)। °मेढ़ग पुं [°मेढ्क] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५, १ टी)।

तुरमणी देखो तुरुमणी (सट्टि ५७ टी)।

तुरमाण देखो तुर।

तुरय पु [तुरग] १ अश्व, घोड़ा (पण्ह १, ४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °देहपिंजरण न [°देहापञ्जरण] अश्व को सिंगारना, सँवारना, शृंगार करना (पात्र)। देखो तुरग।

तुरयमुह देखो तुरग-मुह (पव २७४)।

त्वरावाला, जल्दबाज (से ४, ३०)।

तुरिअ वि [त्वरित] १ त्वरा-युक्त, उतावला (पात्र, हे ४, १७२, औप, प्राप्र)। २ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी (सुपा ४६४ भवि)। °गइ वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पु अमितगति नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)।

तुरिअ वि [तुर्य] चौथा चतुर्थ (सुर ४, २५०, कम्म ४, ६६, सुपा ४६४)। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मरणदशा (उप पृ १४१)।

तुरिअ न [तूर्य] वाद्य, वादित्र, बाजा 'तुरियाण सनिनाएणं, दिव्वेण गगणं फुसे' (उत्त २२, १२)।

तुरिमिणी देखो तुरुमणी (राज)।

तुरी स्त्री [दे] १ पीन, पुष्ट। २ शय्या का उपकरण (दे ५, २२)।

तुरु न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

तुरुक्क न [तुरुष्क] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप करने मे काम आता है, लोबान, सिल्हक (सम १३७, णाया १, १, पउम २, ११, औप)।

तुरुक्क पु [तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ वि. तुर्किस्तान का (स १३)।

तुरुक्की स्त्री [तुरुष्की] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (भत्त ६२)।

तुरेत, तुरेमाण देखो तुर।

तुल सक [तोलय्] १ तौलना। २ उठाना। ३ ठीक-ठीक निश्चय करना। तुलइ, तुलेइ (हे ४, २५, उव, वज्जा १५८)। वकृ तुलंत (पिंग)। संकृ. तुलेऊण (बृह १)। कृ. तुलेअव्व (से ६, २६)।

तुल° देखो तुला (सुपा ३६)।

तुलगा देखो तुलग्गा (अच्चु ८०)।

तुलग्ग न [दे] काकतालीय न्याय (दे ५, १५, से ४, २७)।

तूहण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५, १७)।

ते° देखो ति = त्रि। °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] १ सख्या-विशेष, चालीस और तीन की सख्या। २ तेआलीस की सख्यावाला (सम ६८)। °आलीसइम वि [°चत्वारिंश] तेआलीसवाँ, ४३वाँ(पउम ४३, ४६)। °आसी स्त्री [°अशीति] १ सख्या-विशेष, अस्सी और तीन। २ तिरासी की सख्यावाला (पि ४४६)। °आसीइम वि [°अशीतितम] तिरासीवाँ (सम ८६, पउम ८३, १४)। °इंदिय पुं [°इन्द्रिय] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रियवाला प्राणी (ठा २, ४, जी १७)। °ओय पु [°ओजस्] विषम राशि-विशेष (ठा ४, ३)। °णउइ स्त्री [°नवति] तिरानवे, नव्वे और तीन, ६३ (सम ९७)। °णउय वि [°नवत] तिरानवेवा, ६३ वाँ (कप्प, पउम ६३, ४०)। °णवइ देखो °णउइ (सुपा ६५४)। °तीस, °त्तीस स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] तेतीस, तीस और तीन (भग, सम ५८)। स्त्री. °सा (हे १, १६५, पि ४४७)। °त्तीसइम वि [त्रयस्त्रिंश] तेतीसवाँ (पउम ३३, १४८)। °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] तिरसठ, साठ और तीन, ६३(पि २६५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] त्रेपन, पचास और तीन, ५३ (हे २, १७४, षड्, सम ७२)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] तिहत्तर (पि २६५)। °वीस स्त्रीन [त्रयोविंशति] तेइस, वीस और तीन, २३ (सम ४२, हे १, १६५)। °वीस, °वीसइम वि [त्रयोविंश] तेईसवाँ (पउम २०, ८२, २३, २६, ठा ६)। °सझ न [°सन्ध्य] प्रात, मध्याह्न और सायकाल का समय (पउम ६६, ११)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] देखो °वट्ठि (सम ७७)। °सीइ स्त्री [°अशीति] तिरासी, अस्सी और तीन (सम ८६, कप्प)। °सीइम वि [°अशीत] तिरासीवाँ (कप्प)।

तेअ सक [तेजय्] तेज करना, पैनाना, धार तेज करना, तीक्ष्ण करना। तेइय (षड्)।

तेअ देखो तइअ = तृतीय (रभा)।

तेअ पुं [तेजस्] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा (उवा, भग, कुमा, ठा ८)। २ ताप, अभिताप (कुमा, सूअ १, ५, १)। ३ प्रताप। ४ माहात्म्य, प्रभाव। ५ बल, पराक्रम (कुमा)। °मत वि [°विन्] तेजवाला, प्रभा-युक्त (पण्ह २, ४)। °वीरिय पुं [°वीर्य] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र, जिसको आदर्श भवन मे केवलज्ञान हुआ था (ठा ८)।

तेअ न [स्तेय] चोरी (भग २, ७)।

तेअ देखो तेअय (भग)।

तेअ पु [?] टेक, स्तम्भ।

तेअसि वि [तेजस्विन्] तेजवाला, तेज-युक्त (औप, रयण ४, भग, महा, सम १५२, पउम १०२, १४१)।

तेअग देखो तेअय (जीव)।

तेअण न [तेजन] १ तेज करना, पैनाना। २ उत्तेजन (हे ४, १०४)। ३ वि. उत्तेजित करनेवाला (कुमा)।

तेअय न [तैजस] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष (ठा २, १, ५, १, भग)।

तेअलि पु [तेतलिन्] १ मनुष्य जाति-विशेष (ज १, इक)। २ एक मन्त्री के पिता का नाम (णाया १, १४)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कनकरथ का एक मन्त्री (णाया १, १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (णाया १, १४)। °सुय पु [°सुत] देखो °पुत्त (राज)। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र + दीप्] १ दीपना, चमकना। २ जलना। तेअवइ (हे ४, १५२, षड्)।

तेअवाल देखो तेजपाल (हम्मीर २७)।

तेअविय वि [प्रदीप्त] जला हुआ (कुमा)। २ चमका हुआ, उद्दीप्त (पाअ)।

तेअविय वि [तेजित] तेज किया हुआ (दे ८, १३)।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)।

तेआ स्त्री [तेजा] पक्ष की तेरहवी रात (सुज्ज १०, १४)।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि (जो ४, जं ७)।

तेआ स्त्री [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग, 'तेआजुगे य दासरही रामो सीयालक्खण-सजुओवि' (ती २६)।

तेआ° देखो तेअय (सम १४२, पि ६४)।

तेआलि पु [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १, १—पत्र ३४)।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार (दस ३)।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा (आचा, णाया १, १३)।

तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय (विपा १, १)।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज (कप्प)।

तेइज्जग वि [तार्तीयीक] १ तीसरा। २ ज्वर-विशेष, जाडा देकर तीसरे-तीसरे दिन पर आनेवाला ज्वर, तिजारा (उत्तनि ३)।

तेइल्ल देखो तेअसि (सुर ७, २१७, सुपा ३३)।

तेउ पु [तेजस्] १ आग, अग्नि (भग, दं १३)। २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या (भग; कम्म ४, ५०)। ३ अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। ४ ताप, अभिताप (सूअ १, १, १)। ५ प्रकाश, उद्योद (सूअ २, १)। °आय देखो °काय (भग)। °कत पु [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष (ठा ४, १)। °काइय पु [°कायिक] अग्नि का जीव (ठा ३, १)। °काय पुं [°काय] अग्नि का जीव (पि ३५५)। °क्काइय देखो °काइय (पण्ण १, जीव १)। °प्पभ पु [°प्रभ] अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श (आचा)। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्यावाला (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप विशेष के प्रभाव से होनेवाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती तेज की ज्वाला (ठा ३, १, सम ११)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा (ठा ३, ३)। °सिह पु [°शिख] एक लोकपाल (ठा ४, १)। °सोय न [शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच (ठा ५, २)।

[illegible]

सेरिम [illegible] [सैरिभ] [illegible]

[illegible]

सेर } [illegible] [स्वैरतन] [illegible]
सेरम } [illegible] २८, ३३)।

सेरन्ध्र [illegible] = सिंदि [illegible]।

सेरम [illegible]।

सेरम [illegible] [स्वैरम] [illegible] १, १—[illegible]।

सेरमया [illegible] [illegible] की एक [illegible]।

सेरसी [illegible] [स्वैरसी] १ [illegible]। २ [illegible], [illegible] (पाअ २८, [illegible] १०४)।

सेरा [illegible] [स्वैरसिन्धारव्य] [illegible]।

सेर [illegible] (पा १, [illegible])।

सेराहि [illegible] [illegible] (हि [illegible])।

सेराविअ [illegible] [illegible] १ [illegible], [illegible] और [illegible] (पि, [illegible]) २ [illegible] (पा [illegible])।

सेरिन्ध [illegible] = [illegible] (पा १८)।

सेरिन्ध [illegible] (सैरिन्ध = [illegible] [illegible] (पा २१)।

सेरि [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]

(श्रोघ ५६६)। °णाह पु [°नाथ] तीनो जगत् का स्वामी, परमेश्वर (पड्)। °मडण न [°मण्डन] १ तीनो जगत् का भूषण। २ पु. रावण का पट्ट-हस्ती (पउम ८०, ६०)।

तेल्ल न [तैल] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य विशेष (हे २, ६८, श्रणु पव ४)। °केला स्त्री [°केला] मिट्टी का भाजन विशेष (राज)। °पल्ल न [°पल्य] तेल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष (दसा १०)। °पाइया स्त्री [°पायिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष (श्रावम)।

तेल्लग न [तैलक] सुरा-विशेष (जीव ३)।

तेल्लिअ पु [तैलिक] तेल वेचनेवाला (वव ६)।

तेल्लोअ, तेल्लोक्क देखो तेलुक्क (पि १६६, प्राप्र)।

तेवँ, तेवँइ (श्रप) देखो तह = तथा (हे ४, ३६७, कुमा)।

तेवट्ठ वि [त्रैषष्ट] तिरसठ की सख्यावाला, जिसमे तिरसठ अधिक हो ऐसी संख्या, 'तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइ' (पि २६५)।

तेवड (श्रप) वि [तावत्] उतना (हे ४, ४०७, कुमा)।

तेवण्णासा स्त्री [त्रिपञ्चाशत्] त्रेपन, ५३ (प्राकृ ३१)।

तेवीसइ स्त्री [त्रतोविंशति] तेईस (प्राकृ ३१)।

तेवुत्तरि देखो ते-वत्तरि (कम्म ५, ४)।

तेह (श्रप) वि [तादृश्] उसके जैसा, वैसा (हे ४, ४०२, पड्)।

तेहिं (श्रप) श्र वास्ते, लिए (हे ४, ४२५, कुमा)।

तेहिय वि [त्र्याहिक] तीन दिन का (जीवस ११६)।

तेहुत्तरि देखो ते-वत्तरि (श्रणु १७६)।

तो देखो तओ (श्राचा, कुमा)।

तो श्र [तदा] तव, उस समय (कुमा)।

तोअय पु [दे] चातक पक्षी (दे ५, १८)।

तोंड देखो तुड (हे १, ११६, प्राप्र)।

तोंतडि स्त्री [दे] करम्ब, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु (दे ५, ४)।

तोक्कय वि [दे] विना ही कारण तत्पर होनेवाला (दे ५, १८)।

तोक्खार देखो तुक्खार, 'खुरखुरखयखोणीयलग्रसंखतोक्खारलक्खजुश्रो' (सुर १२, ६१)।

तोटअ न [त्रोटक] छन्द-विशेष (पिंग)।

तोड सक [तुड्] १ तोडना, भेदन करना। २ श्रक. टूटना। तोडइ (हे ४, ११६)। वकृ तोडत (भवि)। सकृ. तोडिउ (भवि), तोडित्ता (ती ७)।

तोड पु [त्रोड] त्रुटि (उप पृ १८)।

तोडण वि [दे] श्रसहन, श्रसहिष्णु (दे ५, १८)।

तोडण न [तोदन] व्यथा, पीडा-करण (राज)।

तोडर न [दे] टोडर, माल्य-विशेष (सिरी १०२३)।

तोडहिआ स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (श्राचा २, ११)।

तोडिअ वि [त्रोटित] तोडा हुश्रा (महा, सण)।

तोड्ड पु [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।

तोण पुन [तूण] शरधि, भाथा, तरकस, तूणीर (पाश्र, श्रोप, हे १, १२५, विपा १, ३)।

तोणीर पु न [तूणीर] शरधि, भाथा (पाश्र, हे १, १२४, भवि)।

तोत्त न [तोत्र] प्रतोद, वैल को मारने या हाकने का वांस का श्रायुध-विशेष, पेना, सोटा, चावुक (पाश्र, दे ३, १६, सुपा २३७, सुर १४, ५१)।

तोत्तडि [दे] देखो तोंतडि (पाश्र)।

तोदग वि [तोदक] व्यथा उपजानेवाला, पीडा-कारक (उत्त २०)।

तोमर पुंन [दे तोमर] मधपुडा, मधुमक्खी का घर या छत्ता, 'श्रह उड्डियाउ तोमर मुहाउ महुमक्खियाउ सव्वत्तो' (धर्मवि १२४)।

तोमर पुं [तोमर] १ वाण-विशेष, एक प्रकार का वाण (पगह १, १, सुर २, २८; श्रौप)। २ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

तोमरिअ पु [दे] १ शस्त्र का प्रमार्जन करनेवाला (दे ५, १८)। २ शस्त्र-मार्जन (पड्)।

तोमरिगुंडी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पाश्र)।

तोमरी स्त्री [दे] वल्ली, लता (दे ५, १७)।

तोम्हार (श्रप) देखो तुम्हार (पि ४३४)।

तोय न [तोय] पानी, जल (पगह १, ३, वज्जा १४, दे २, ४७)। °धरा, धारा, स्त्री [°धारा] एक दिक्कुमारी देवी (इक, ठा ८)। °पट्ठ, °पिट्ठ न [°पृष्ठ] पानी का उपरि-भाग (पगह १, ३, श्रौप)।

तोय पु [तोद] व्यथा, पीडा (ठा ४, ४)।

तोरण न [तोरण] १ द्वार का श्रवयव-विशेष, वहिर्द्वार (गा २६२)। २ वन्दनवार, फूल या पत्तो की माला (झालर) जो उत्सव मे लटकाई जाती है (श्रौप)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)।

तोरविअ वि [दे] उत्तेजित (पाश्र, कुप्र १६२)।

तोरामदा स्त्री [दे] नेत्र का रोग-विशेष (महानि ३)।

तोल देखो तुल = तोलय्। तोलइ, तोलेइ (पिंग, महा)। वकृ तोलंत (वज्जा १५८)। कवकृ तोलिज्जमाण (सुर १५, ६४)। कृ. तोलियव्व (स १६२)।

तोल पुंन [दे] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष (तदु)।

तोलण पु [दे] पुरुष, श्रादमी (दे ५, १७)।

तोलण न [तोलन] तौल करना, तौलना, नाप करना (राज)।

तोलिय वि [तोलित] तौला हुश्रा (महा)।

तोल्ल न [तौल्य, तोल] तौल, वजन (कुप्र १४६)।

तोवट्ट पु [दे] १ कान का श्राभूषण-विशेष। कमल की कर्णिका (दे ५, २३)।

तोस सक [तोपय्] खुशी करना, सन्तुष्ट करना। तोसइ (उव)। कर्म तोसिज्जइ (गा ५०८)।

तोस पुं [तोष] खुशी, श्रानन्द, सतोष (पाश्र, सुपा २७५)। °यर वि [°कर] सतोष-कारक (काल)।

तोस न [दे] धन, दौलत (दे ५, १७)।

तोसलि पु [तोसलिन्] १ ग्राम-विशेष। २ देश-विशेष। ३ एक जैन श्राचार्य (राज)।

[illegible]

थ

[illegible]

गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती ५१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, खभात (सिग्घ १)।

थभणया स्त्री [स्तम्भना] स्तब्ध-करण (ठा ४, ४)।

थभणिआ स्त्री [स्तम्भनिका] विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।

थंभणी स्त्री [स्तम्भनी] स्तम्भन करनेवाली विद्या-विशेष (णाया १, १६)।

थंभय देखो थभ = स्तम्भ (कुमा)।

थभिय वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ (कुप्र १४१, कुमा, कप्प, औप)। २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवष्टब्ध (स ४६४)।

थक्क अक [स्था] रहना, बैठना, स्थिर होना। थक्कइ (हे ४, १६, पिंग)। भवि थक्किस्सइ (पि ३०६)।

थक्क अक [फक्क्] नीचे जाना। थक्कइ (हे ४, ८७)।

थक्क अक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना। थक्कति (पिंग)।

थक्क वि [स्थित] रहा हुआ (कुमा, वज्जा ३८, सुपा २३७, आरा ७७, सट्ठि ६)।

थक्क पुं [दे] १ अवसर, प्रस्ताव, समय (दे ५, २४, वव ६, महा, विसे २०६३)। २ वि थका हुआ, श्रान्त, 'थक्क सव्वशरीर हियए सूलं सुट्ठुमहं एइ' (सुर ७, १८५, ४ १६५)।

थक्किअ वि [श्रान्त] थका हुआ (पिंग)।

थक्कव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना। थक्कवइ (प्राकृ १२०)।

थग देखो थय = स्थगय्। भवि. थगइस्स (पि २२१)।

थगण न [स्थगन] पिधान, ढकना, सवरण, आवरण, आच्छादन, पर्दा (दे २, ८३, ठा ४, ४)।

थगथग अक [थगथगाय्] धडकना, कांपना। वकृ थगथगित (महा)।

थगिय वि [स्थगित] पिहित, आच्छादित, आवृत (दस ५, १, आवम)।

थगिय° देखो थइअ°। °ग्गाहि पु [°ग्राहिन्] ताम्बूल-वाहक नौकर (सुपा ३३६)।

थग्गया स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच (दे ५, २६)।

थग्घ सक [स्ताघ्] जल की गहराई को नापना। कर्म. थग्घिज्जए (पव ८१)।

थग्घ पु [दे] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, सीमा (दे ५,२४)।

थग्घा स्त्री [दे] ऊपर देखो (पाअ)।

थट्ट पुन [दे] १ ठठ, भीड, झुण्ड, समूह, यूथ, जत्था, 'दुद्धरतुरगथट्टा' (सुपा २८८), 'विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोघट्टथट्ट' (लहुअ ४)। २ ठाठ, ठाट, तडक-भडक, मजधज, आडम्बर (भवि)।

थट्टि स्त्री [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)।

थड पुंन [दे] ठठ, यूथ, समूह (भवि)।

थड्ढ वि [स्तब्ध] १ निश्चल। २ अभिमानी गर्विष्ठ (सुपा ४३७, ५८२)।

थड्ढिअ वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ। २ स्तब्ध, निश्चल। ३ न गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड कर गुरु को किया जाता प्रणाम (गुभा २३)।

थण अक [स्तन्] १ गरजना। २ आक्रन्द करना, चिल्लाना। ३ आक्रोश करना। ४ जोर से नीसास लेना। वकृ. थणत (गा २६०)।

थण पुं [स्तन] थन, कुच, पयोधर, चूची (आचा, कुमा, काप्र १६१)। °जीवि वि [°जीविन्] स्तन-पान पर निभनेवाला बालक (श्रा १४)। °वई स्त्री [°वती] बडे स्तनवाली (गउड)। °विसारि वि [°विसारिन्]। स्तन पर फैलनेवाला (गउड)। °सुत्त न [°सूत्र] उर-सूत्र (दे)। °हर पु [°भर] स्तन का भार या बोझ (हे १, १८६)।

थणधय पुं [स्तनन्धय] स्तन-पान करनेवाला बालक, छोटा बच्चा, 'नियय थण धयत थणधयं हृदि पिच्छति' (सुर १०, ३७, अच्चु ६३)।

थणण न [स्तनन] १ गर्जन, गरजना (सूअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सूअ १, ५, १)। ३ आक्रोश, अभिशाप (राज)। ४ आवाजवाला नीसास (सूअ १, २, ३)।

थणय पुं [स्तनक] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

थणलोलुअ पु [स्तनलोलुप] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ७)।

थणिअ पु [स्तनिन] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६, २६)।

थणिय न [स्तनित] १ मेघ का गर्जन (वजा १२, दे ५, २७)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सम १५३)। ३ पुं भवनपति देवों की एक जाति (औप, पण्ह १, ४)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (ठा १, १)।

थणिल्ल सक [चोरय्] चुराना, चोरी करना। थणिल्लइ (प्राकृ ७२)।

थणिल्ल वि [स्तनवत्] स्तनवाला (कप्पू)।

थणुल्लअ पुं [स्तनक] छोटा स्तन (गउड)।

थण्णु देखो थाणु (गा ४२२)।

थत्तिअ न [दे] विश्राम (दे ५, २६)।

थद्ध देखो थड्ढ (सम ५१, गा ३०४, वज्जा १०)।

थन्न न [स्तन्य] स्तन का दूध। °जीवि वि [°जीविन्] छोटा बच्चा (सुपा ६१६)।

थप्प सक [स्थापय्] रखना, थप्पी करना। थप्पइ (सिरि ८६७)।

थप्पण न [स्थापन] न्यास, न्यसन (कुप्र ११७)।

थप्पिअ वि [स्थापित] रक्खा हुआ, न्यस्त (पिंग)।

थब्भ अक [स्तभ्] अहंकार करना। थब्भइ (सूअ १, १३, १०)।

थब्भर पु [दे] अयोध्या नागरी के समीप का एक ह्रद-दह या झील (ती ११)।

थमिअ वि [दे] विस्मृत (दे ५, २५)।

थय सक [स्थगय्] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना। थएइ, थएसु (पि ३०६, गा ६०५)। भवि. थइस्स (गा ३१४)। हेकृ थइउ (गा ३६४)।

थय वि [स्तृत] व्याप्त, भरपूर (से १, १)।

थय पु [स्तव] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन (अजि ३६, स ४४)।

थयण न [स्तवन] ऊपर देखो, 'थुइथयण-वंदणनमसणाणि एगट्ठिआणि एयाइं' (आव २)।

थाली स्त्री [स्थाली] पाक पात्र, हाँडी, बटलोही (ठा ३, १, सुपा ४८७)। °पाग वि [°पाक] हाँडी मे पकाया हुआ (ठा ३, १)।

थाव सक [स्थापय्] १ स्थिर करना। २ रखना। थावए (उत्त २, ३२)।

थावच्चा स्त्री [स्थापत्या] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री (णाया १,५)। °पुत्त पु [°पुत्र] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि (णाया १, ५, अंत)।

थावण न [स्थापन] न्यास, आधान (स २१३)।

थावय पु. [स्थापक] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

थावर वि [स्थावर] १ स्थिर रहनेवाला। २ पु. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला—पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव (ठा ३, २, जी २)। ३ एक विशेष नाम, एक नौकर का नाम (उप २६७ टी)। °काय पुं [°काय] एकेन्द्रिय जीव (ठा २, १)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (पंच ३, सम ६७)।

थासग [दे] कुदाल (आव० टिप्पण—पत्र ५६, १)।

थासग } पु [स्थासक] १ दर्पण, आदर्श,
थासय } शीशा (विपा १, २—पत्र २४)। २ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष (औप, अनु, णाया १, १ टी)। ३ अश्व का आभरण-विशेष (राज)।

थाह पुं [दे] १ स्थान, जगह। २ वि. अस्ताघ, गभीर जल-वाला। ३ विस्तीर्ण। ४ दीर्घ, लम्बा (दे ५, ३०)।

थाह पुं [स्थाघ] थाह, तला, गहराई का अन्त, सीमा (पाअ, विसे १३३२, णाया १, ६, १४, से ८, ४०)।

थाहिअ पु [दे] आलाप, स्वर विशेष (सुपा १६)।

थिअ वि [स्थित] रहा हुआ (स २७०, विसे १०३५, भवि)।

थिइ देखो ठिइ (से २, १८, गउड)।

थिंदिणी स्त्री [दे] छन्द-विशेष, थिंदिरिणच्छंद-रासेण' (सम्मत्त १४१)।

थिप अक [तृप्] तृप्त होना, संतुष्ट होना। थिप्पइ (प्राप्र)। भवि थिप्पिहिति (प्राप्र ८, २२ टी)। सकृ. थिप्पिअ (प्राप्र ८, २२ टी)।

थिग्गल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भीत मे किया हुआ दरवाजा (दस ५, १, १५)। २ फटे-फुटे वस्त्र मे किया जाता संधान, वस्त्र आदि के खंडित भाग मे लगाई जाती जोड (पण्ण १७, विसे १४३९ टी)।

थिग्गल पुन [दे] १ छिद्र। २ गिरने के बाद दुरुस्त (ठीक) किया हुआ गृह-भाग (आचा २, १, ६, २)।

थिज्ज देखो थेज्ज = स्थैर्य (सबोध ४६)।

थिण्ण वि [स्त्यान] कठिन जमा हुआ (हे १, ७४, २, ६६, से २, ३०)। देखो थीण।

थिण्ण वि [दे] १ स्नेह-रहित दयावाला। २ अभिमानी, गर्व-युक्त (दे ४, ३०)।

थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी (पाअ)।

थिप्प देखो थिप। थिप्पइ (हे ४, १३८)।

थिप्प अक [वि+गल्] गल जाना। थिप्पइ (हे ४, १७५)।

थिबुक पुं [स्तिबुक] कन्द विशेष (सुख ३६, ६६)।

थिम सक [स्तिम्] आर्द्र करना, गीला करना। हेकृ थिमिउं (राज)।

थिमिअ वि [दे स्तिमित] स्थिर, निश्चल (दे ५, २७, से २, ४३, ८, ६१, णाया १, १, विपा १, १, पण्ह १, ४, २, ५, औप, सुज १, सूअ १, ३, ४)। २ मन्थर, धीमा (पाअ)।

थिमिअ पु [स्तिमित] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अंत ३)।

थिम्म सक [स्तिम्] १ आर्द्र करना। अक आर्द्र होना। थिम्मइ (प्राकृ १२०)।

थिर वि [स्थिर] १ निश्चल, निष्कम्प (विपा १, १, सम ११६, णाया १, ८)। २ निष्पन्न, संपन्न (दस ७, ३५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है (कम्म १, ४९, सम ६७)। °वलिया स्त्री [°वलिका] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति (जीव २)।

थिरणाम वि [दे] चल-चित्त, चंचल-मनस्क (दे ५, २७)।

थिरण्णेस वि [दे] अस्थिर, चंचल (षड्)।

थिरसीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर। २ निर्भर। ३ जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह (दे ५, ३१)।

थिरिम पुंस्त्री [स्थैर्य] स्थिरता (मण)।

थिरीकरण न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, दृढ करना, जमाना (श्रा ६, रयण ६६)।

थिल्ल वि [दे] गुप्त (चउपन्न० विबुधानंद)।

थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष—१ दो घोडे की बग्घी। २ दो खच्चर आदि से वाह्य यान (सूअ २, २, ६२, णाया १, १ टी—पत्र ४३, औप)।

थिविथिव अक [थिवथिवाय्] 'थिव-थिव' आवाज करना। वकृ थिविथिवंत (विपा १, ७)।

थिबुग } पुं [स्तिबुक] जल-बिन्दु (विसे
थिबुय } ७०४, ७०५, सम १४९)। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-प्रकृतियो का आपस मे संक्रमण-विशेष (पचा ५)।

थीहु पुस्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६६)।

थिहु पु [स्तिभु] वनस्पति-विशेष (राज)।

थी स्त्री [स्त्री] स्त्री, महिला, नारी, औरत (हे २, १३०, कुमा, प्रासू ६५)।

थीण देखो थिण्ण (हे १, ७४, दे १, ६१, कुमा, पाअ)। °गिद्धि स्त्री [°गृद्धि] निकृष्ट निद्रा-विशेष (ठा ६, विसे २३४, उत्त ३३, ५)। °द्धि स्त्री [°र्द्धि] अधम निद्रा-विशेष (सम १५)। °द्धिय वि [°र्द्धिक] स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला (विसे २३५)।

थु अ तिरस्कार-सूचक अव्यय (प्रति ८१)।

थुअ वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशंसित (दे ८, २७, धण ५०, अजि १८)।

थुअ देखो थुण। थुअइ (प्राकृ ६७)।

थुइ स्त्री [स्तुति] स्तव, गुण-कीर्तन (कुमा, चैत्य १, सुर १०, १०३)।

थुइवाय पु [स्तुतिवाद] प्रशंसा-वचन (चेइय ७४४)।

[illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible], [illegible] हुआ (दे ५, [illegible])।
[illegible] [[illegible]] [illegible] (दे २ [illegible])।
[illegible] [[illegible]] [illegible], [illegible]।
[illegible] (सुपा ४७)।
[illegible] [[illegible]] [illegible] (दे [illegible])।
[illegible] [[illegible]] [illegible], [illegible] (सुपा २८१)।
[illegible]

घोल पुं [[illegible]] घोर, [illegible] (हे १,१४७)।
घोलि[illegible] वि [[illegible]] [illegible] हुआ [illegible] हुआ। [illegible], [illegible] हुआ (दे ५ [illegible])।
घोल्ल देखो [illegible]। [illegible] (वि २०७ [illegible] ३५)।
घोर वि [[illegible]] १ [illegible], [illegible] (हे १,[illegible] २, [illegible]; [illegible])। २ [illegible] (पोस [illegible])। °[illegible] पुं [[illegible]] १ [illegible] तप [illegible]। [illegible] (पउम [illegible])। °[illegible] पुं [[illegible]] [illegible] (पउम [illegible])। °मुणि पुं [°मुनि] [illegible] मुनि (पउम [illegible])।
घोर पुं [[illegible]] [illegible] (पउम [illegible], २६ [illegible])।
घोरमय न [[illegible]] [illegible] (स ५, ३१)।
[illegible] [[illegible]] [illegible] (पाअ)।
[illegible] [[illegible]] [illegible]।
[illegible]

[illegible]

थोडेरुय देखो घाडेरुय (उप ७२८ टी)।

थोणा देखो थूणा (हे १, १२५)।

थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव (हे २, ४५, सुपा २६६)।

थोत्तु देखो थुण।

थोभ } पु [स्तोभ, °क] 'च', 'वै' आदि
थोभय } निरर्थक अव्यय का प्रयोग, 'उयवइकारा हुंति य अकारणा थोभया हुंति' (बृह १, विसे ६६६ टी)।

थोर देखो थुल्ल (हे १, २५५, २, ६६, पउम २, १६, से १०, ४२)।

थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण और च गोल (दे ५, ३०, वज्जा ३६)।

थोल पुं [दे] वस्त्र का एक देश (दे ५,३०)।

थोव } वि [स्तोक] १ अल्प, थोडा (हे
थोवाग } २, १२५, उव, श्रा २७, ओघ २५६, विसे ३०३०)। २ पुं. समय का एक परिमाण (ठा २, ३, भग)।

थोह न [दे] बल, पराक्रम (दे ५, ३०)।

थोहर पुस्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड, सेहुंड (सुपा २०३)। स्त्री. °री (उप १०३१ टी, जी १०, धर्म ३)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दसकलणो
चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

द

द पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष (प्राप, प्रामा)।

दअच्छर पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का अधिपति (दे ५, ३६)।

दअरी स्त्री [दे] सुरा, मदिरा, दारू (दे ५, ३४)।

दइ स्त्री [दृति] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र (ओघ ३८)।

दइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५)।

दइअ पुंस्त्री [दृतिका] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र, चमडे का बना हुआ वह थैला जिसमे पानी भरकर लाते हैं, 'दइएण वत्थिणा वा' (पिंड ४२)। स्त्री. °आ (अणु १५२, पिंडभा १४)।

दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पात्र, 'जाओ वरकामिणीदइओ' (सुर १, १८३)। २ अभीष्ट, वाञ्छित, 'अम्हाण मणोदइयं दसणमवि दुल्लहं मन्ने' (सुर ३, २३८)। ३ पु पति, स्वामी, भर्ता (पाअ, कुमा)। °यम वि [°तम] १ अत्यन्त प्रिय। २ पु. पति, भर्ता (पउम ७७, ६२)।

दइआ स्त्री [दयिता] स्त्री, प्रिया, पत्नी (कुमा, महा, सुर ४, १२६)।

दइच्च पु [दैत्य] दानव, असुर (हे १, १५१, कुमा, पाअ)। °गुरु पुं [°गुरु] शुक्र, शुक्राचार्य (पाअ)।

दइन्न न [दैन्य] दीनता, गरीवपन, गरीबी (हे १, १५१)।

दइव पु न [दैव] दैव, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्व-कृतकर्म (हे १, १५३, कुमा, महा, पउम २८, ६०), 'अहवा कुविओ दइवो पुरिस किं हणइ लउडेण' (सुर ८, ३४)। °ज्ञ, °ण्णु पु [°ज्ञ] ज्योतिषी, ज्योतिःशास्त्र का विद्वान् (हे २, ८३, षड्)। देखो देव = दैव।

दइवय न [दैवत] देव, देवता (पण्ह २, १, हे १, १५१, कुमा)।

दइविग वि [दैविक] देव-सवन्धी, दिव्य, उत्तम (स ५०६)।

दइव्व देखो दइव (हे १, १५३, २, ६६, कुमा, पउम ६३, ४)।

दउत्ति (शौ) अ [द्राग्] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ६५)।

दउदर } न [दकोदर] रोग-विशेष,
दओदर } जलोदर, पानी से पेट का फूलना (णाया १, १३, विपा १, १)।

दओभास पुं [दकावभास] लवण-समुद्र मे स्थित वेलधर-नागराज का एक आवास-पर्वत (इक)।

दठा देखो दाढा (नाट—मालती ५६)।

दठि वि [दंष्ट्रिन्] बडे दाँतवाला, हिंसक जन्तु (नाट—वेणी २४)।

दड सक [दण्डय्] सजा करना, निग्रह करना। कवकृ दडिज्जत (प्रासू ६६)।

दड पु [दण्ड] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश (सम १, णाया १, १, ठा १)। २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन (ठा ३, ३, प्रासू ६३, हे १, १२७)। ३ लाठी, यष्टि (उप ५३० टी, प्रासू ७४)। ४ दुःख-जनक, परिताप-जनक (आचा)। ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार (उत्त १६, द ४६)। ६ छन्द विशेष (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम (सथा ६१)। ८ पु न परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप (इक)। ६ आज्ञा (ठा ५, ३)। १० पु न, सैन्य, लश्कर, फौज (पण्ह १,४, ठा ५,३)। °अल पु [°कल] छन्द-विशेष (पिंग)। °जुज्झ न [°युद्ध] यष्टि-युद्ध (आचा)। °णायग पुं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दंतिक न [दे] चावल का आटा (बृह १)।
दंतिक्क न [दे] मास (धर्मसं ६६१)।
दंतिया स्त्री [दन्तिका] एक वृक्ष विशेष, बडी मतावर (पराण १—पत्र ३२)।
दंती स्त्री [दन्ती] स्वनाम ख्यात वृक्ष (पराण १—पत्र ३६)।
दंतुक्खलिय पु [दन्तोलूखलिक] तापस-विशेष, जो दाँतो से ही व्रीहि या धान वगैरह को निस्तुप कर खाते है (निर १, ३)।
दंतुर वि [दन्तुर] उन्नत दातवाला, जिसके दांत उभट-खाबड हो। २ ऊँचा-नीचा स्थान, विषम स्थान (दे २, ७७)। ३ आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ (कप्पू)।
दंतुरिय वि [दन्तुरित] ऊपर देखो, 'विचित्त-पासायपंतिदंतुरिय' (उप १०३१ टी, सुपा २००)।
दंद पु [द्वन्द्व] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभयपद-प्रधान समास (अणु)। २ न परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म। ३ कलह, क्लेश। ४ युद्ध, संग्राम (सुपा १८७, कुमा)।
दंपइ पु व [दम्पति] स्त्री पुरुष युगल—जोडा, पति-पत्नी, 'ते दंपईउ तह तह धम्मम्मि समुज्जमा निच्चं' (सिरि २४८)।
दंभ पु [दम्भ] १ माया, कपट (हे १, १२७)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ ठगाई, वञ्चना (पव २)।
दंभग वि [दम्भक] दम्भी, पाखंडी, ठग, धूर्त्त, 'दंभगो त्ति निब्भच्छिओ' (सुख २, १७)।
दंभोलि पु [दम्भोलि] वज्र (कुप्र २७०)।
दंस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दंसइ (हे ४,३२, महा)। वकृ दंसंत, दंसित, दंसअंत (भग, सुपा ९२, अभि १८४)। कवकृ दंसिज्जंत (सुर २, १६६)। संकृ. दंसिअ (नाट)। कृ. दंसियव्व (सुपा ४५४)।
दंस सक [दंश्] काटना, दांत से काटना। दंसइ (नाट—साहित्य ७३)। दंसतु (आचा)। वकृ दंसमाण (आचा)।
दंस पु [दंश] १ डांस, बडा मच्छड (भग, आचा)। २ दन्त क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीडे से काटा हुआ घाव (हे १, २६० टि)।

दंस पु [दर्श] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (आवम)।
दंसग वि [दर्शक] दिखलानेवाला (स ४८१)।
दंसण पुन [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण (पुप्फ १२४, स्वप्न २६)। २ चक्षु, नेत्र, आख (से १, १७)। ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (ठा १, ५ ३)। ४ सामान्य ज्ञान, 'जं सामन्नग्गहणं दंसणमेअं' (सम्म ५५)। ५ मत, धर्म। ६ शास्त्र-विशेष (ठा ७, ८, पचा १२)। °मोह न [°मोह] तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष (कम्म १, १४)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] कर्म-विशेष (ठा २, ४ भग)। °वरण न [°वरण] कर्म-विशेष, सामान्य-ज्ञान का आवरक कर्म (ठा ६)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ (सम १५)। देखो दरिसण।
दंसण न [दंशन] दांत से काटना (से १, १७)।
दंसणि वि [दर्शनिन्] १ किसी धर्म का अनुयायी (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार (कुप्र २६, कुम्मा २१)। ३ तत्त्व-श्रद्धालु (अणु)।
दंसणिआ स्त्री [दर्शनिका] दर्शन, अवलोकन, 'चंदसूरदंसणिया' (ओप, णाया १, १)।
दंसणिज्ज, दंसणीअ वि [दर्शनीय] देखने योग्य, दर्शन-योग्य (सूअ २, ७, अभि ९८, महा)।
दंसाव सक [दर्शय्] दिखलाना। दंसावेइ (प्राकृ ७१)।
दंसावण न [दर्शन] दिखाना (उप २११ टी)।
दंसाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (सुपा ३८६)।
दंसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (आचा, कुप्र ४१, द २३)।
दंसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पाअ)।
दंसिअ, दंसित, दंसिज्जंत, दंसियव्व — देखो दंस = दर्शय्।
दक्क वि [दष्ट] जो दांत से काटा गया हो वह (षड्)।
दक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। दक्खामि, दक्खिमो (अभि ११६, विक्र

२७)। प्रयो दक्खावइ (पि ५५४)। कर्म दीसइ (उव)। कवकृ दिस्समाण, दीसंत, दीसमाण (आव ५, गा ७३, नाट—चैत ७१)। संकृ दक्खु, दट्ठु, दट्ठुआण, दट्ठुं, दट्ठूण, दट्ठूण, दिस्स, दिरस, दिस्सा (कप्प, पड्, कुमा, महा, पि ५८५ सुअ १, ३, २, १, पि ३३४)। हेकृ दट्ठुं (कुमा)। कृ दट्ठव्व, दिट्ठव्व (महा, उत्तर १०७)।
दक्ख सक [दर्शय्] दिखलाना, 'सोवि हु दक्खइ बहुकोउयमततताइ (सुपा २३२)।
दक्ख वि [दक्ष] १ निपुण, चतुर, होशियार (कप्प, सुपा २८९, श्रा २८)। २ पु भूता-नन्द नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। ३ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का एक पौत्र (पउम २१, २७)।
दक्ख° देखो दक्खा (पउम ५३, ७९, कुमा)।
दक्खज्ज पुं [दे] गृध्र, गीध, पक्षि-विशेष (दे ५, ३४)।
दक्खण न [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण। २ वि देखनेवाला, निरीक्षक (कुमा)।
दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दक्खवइ (हे ४, ३२)।
दक्खविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पाअ, कुमा)।
दक्खा स्त्री [द्राक्षा] १ वल्ली-विशेष, दाख या अंगूर का पेड। २ फल-विशेष, दाख, अंगूर (कप्पू, सुपा २६७, ५३६)।
दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] गोरी, शिव-पत्नी (पाअ)।
दक्खिण वि [दक्षिण] १ दक्षिण दिशा मे स्थिति (सुर ३, १८, गउड)। २ निपुण, चतुर (प्रामा)। ३ हितकर, अनुकूल। ४ अपसव्य, वामेतर, दाहिना (कुमा, णोप)। °पच्छिमा स्त्री [°पश्चिमा] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण (आवम)। °पुव्वा स्त्री [°पूर्वा] अग्नि-कोण (चंद १)। देखो दाहिण।
दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा मे उत्पन्न (राज)।
दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] १ दक्षिण दिशा (जो १)। २ दक्षिण देश (कप्पू)। ३ धर्म-

[illegible]

[illegible] [दे] १ [illegible], [illegible] (दे ४, ३४; दे ४, २३, भवि)। २ [illegible] (षड्)।

[illegible] स्त्री [दे] [illegible] विशेष (भवि)।

[illegible] वि [illegible] [illegible] हुआ (दे १, ३१७ [illegible])।

[illegible] स्त्री [दे] [illegible] (षड्)।

[illegible] वि [illegible] १ [illegible] (औप [illegible], ६०)। २ [illegible], [illegible], [illegible] (सूअ १, ४, १, [illegible])। ३ [illegible] (सूअ १, ३, १)। ४ [illegible] (षड्)। ५ [illegible] (पंचा ४)। ६ [illegible] (पंचा १, ७)। [illegible]

मे तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने वाला एक मनुष्य (ठा ६—पत्र ४५५)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम (सम १५४)।

दढगालि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, धोया हुआ सदश वस्त्र (पव ८४, दसनि १, ४६ टी) देखो दाढगालि।

दढिअ वि [दृढित] दृढ किया हुआ (कुमा)।

दणु } दणुअ } पु [दनुज] दैत्य, दानव (हे १, २६७, कुमा, षड्)। °इंद, °एंद पु [°इन्द्र] १ दानवों का अधिपति (गउड, से १, २)। २ रावण, लंकापति (पउम ६६, १०)। °वइ पु [°पति] देखो °इंद (पउम १, १, ७२, ६० सुपा ४५)।

दत्त वि [दत्त] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण (हे १, ४६)। २ न्यस्त, स्थापित (ज १)। ३ पुं स्व नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र (उप ५६२, ७६८ टी)। ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ५ चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा, एक वासुदेव (सम ६३)। ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७)। ८ एक जैनमुनि (श्राक)। ९ नृप-विशेष (विपा १, ७)। १० एक जैन आचार्य (कुप्र ६)। ११ न दान, उत्सर्ग (उत्त १)।

दत्त न [दात्र] दाँती, घास काटने का हँसिया (दे १, १४)।

दत्ति स्त्री [दत्ति] एक बार में जितना दान दिया जाय वह, अविच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह (ठा ५, १, पचा १८)।

दत्तिय पुस्त्री [दत्तिका] ऊपर देखो, 'सखो दत्तियस्स' (वव ६)।

दत्तिय पुं [दत्रिक] वायु पूर्ण चर्म (राज)।

दत्तिया स्त्री [दात्रिका] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष (राज)। २ देनेवाली स्त्री, दान करनेवाली स्त्री (चारु २)।

दत्थर पुं [दे] हस्त-शाटक, कर-शाटक (दे ५, ३४)।

ददत देखो दा।

दद्दर पुं [दे. दर्दर] कुतुप आदि के मुँह पर बाँधा जाता कपडा (पिंड ३४७, ३५६, राय ६८, १००)।

दद्दर वि [दे दर्दर] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त, 'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिएणपंचंगुलितला' (सम १३७)। २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात (सम १३७, औप, णाया १, ८)। ३ आघात, प्रहार, 'पायदद्दरएण कंपयंतेव मेइणितलं' (णाया १, १)। ४ वचनाटोप (पएह १, ३—पत्र ४४)। ५ सोपान-वीथी, सीढी (सम १३७)। ६ वाद्य-विशेष (ज २)।

दद्दरिगा देखो दद्दरिया (राय ४६)।

दद्दरिया स्त्री [दे दर्दरिका] १ प्रहार, आघात (णाया १, १६)। २ वाद्य-विशेष (राय)।

दद्दु पु [दद्रू] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग (भग ७, ६)।

दद्दुर पु [दर्दुर] प्रहार, आघात (धर्मवि ८५)।

दद्दुर पुं [दर्दुर] १ भेक, मेढक, बेंग (सुर १०, १८७, प्रासू ४५)। २ चमडे से अवनद्ध मुँहवाला कलश (पएह २, ५)। ३ देव-विशेष (णाया १, १३)। ४ राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज १६)। ५ पर्वत-विशेष (णाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष (दे ७, ६१, गउड)। ७ न दर्दुर देव का सिंहासन (णाया १, १३)। °वडिंसय न [°वतंसक] देव-विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान (णाया १, १३)।

दद्दुरी स्त्री [दर्दुरी] स्त्री-मेढक, भेकी (णाया १, १३)।

दद्दुल वि [दद्रुमत्] दाद-रोगवाला (सिरि ११६)।

दधि देखो दहि (सम ७७, पि ३७६)।

दद्ध देखो दड्ढ (सुर २, ११२, पि २२२)।

दप्प पु [दर्प] १ अहंकार, अभिमान, गर्व (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर (से ४, ३)। ३ धृष्टता, ढिठाई (भग १२, ५)। ४ अरुचि से काम का आसेवन (निचू १)।

दप्पण पु [दर्पण] १ काच, शीशा, आदर्श (णाया १, १, प्रासू १६१)। २ वि. दर्प-जनक (पएह २, ४)।

दप्पणिज्ज वि [दर्पणीय] बल-जनक, पुष्टि-कारक (णाया १, १, पएण १७, औप, कप्प)।

दप्पि वि [दर्पिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (कप्पू)।

दप्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित (उत्तर १३१)।

दप्पिअ वि [दर्पित] अभिमानी, गर्वित (सुर ७, २००, पएह १, ४)।

दप्पिट्ठ वि [दर्पिष्ठ] अत्यन्त अहंकारी (सुपा २२)।

दप्पुल्ल वि [दर्पवत्] अहंकारवाला (हे २, १५६, षड्)।

दब्भ पु [दर्भ] तृण विशेष, डाभ, काश, कुशा (हे १, २१७)। °पुप्फ पुं [°पुष्प] साँप की एक जाति (पएह १, १—पत्र ८)।

दब्भायण } दब्भियायण } न [दार्भायन, दार्भ्यायन] चित्रा-नक्षत्र का गोत्र (इक, सुज्ज १०)।

दब्भिय न [दार्भिक] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

दम सक [दमय्] निग्रह करना, दमन करना, रोकना। दमेइ (स २८६)। कर्म दम्मइ (उव)। कवकृ दम्मंत (उव)। संकृ दमिऊण (कुप्र ३६३)। कृ दमियव्व, दम्म, दमेयव्व (काल, आचा २, ४, २, उव)।

दम पु [दम] १ दमन, निग्रह। २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध (पएह २, ४, णादि)। °घोस पु [°घोष] चेदि देश के एक राजा का नाम (णाया १, १६)। °दंत पु [°दन्त] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। २ एक जैन मुनि (विसे २७६६)। °धर पुं [°धर] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १६३)।

दमग देखो दमय (णाया १, १६, सुपा ३८५, वव ३, निचू १५, बृह १, उव)।

दमग वि [दमक] दमन करनेवाला (निचू ६)।

दमण देखो दमणक (राय ३४, १२१)।

दमण न [दमन] १ निग्रह, दान्ति। २ वश में करना, काबू में करना, 'पंचिंदियदमणपरा' (आप ४०)। ३ उपताप, पीडा (पएह १,

[illegible]

दल अक [दल्] १ विकसना। २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना, 'अहिमअरकिरणणिउरंबचुंबिअं दलइ कमलवणं' (गा ४६५), 'कुड्डय दलइ' (कुमा)। वकृ. दलत (से १, ५८)।

दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकडे-टुकडे करना, विदारना। वकृ. 'निम्मूल दलमाणो सयलतरसत्तुसिन्नवलं' (सुपा ८५)। कवकृ दलिज्जन (से ६, ६२)। सकृ. दलिऊण (कुमा)।

दल न [दल] १ सैन्य लश्कर, फौज (कुमा)। २ पत्र पत्ता, पखडी या पँखुडी, 'तूहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाणकमलदलो' (हेका ५१, गा ९, १८०; २५७, ३६६, ५६२, ५६१, सुपा ६३१)। ३ धन, सम्पत्ति। ४ समूह, समुदाय, गरोह (सुपा ६३८)। ५ खण्ड, भाग, अश (से ६, ६२)।

दलण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन (सुपा १४, ६११)। २ वि चूर्ण करनेवाला (सुपा २३४, ४६७, कुप्र १३२, ३८३)।

दलमाण देखो दल = दा।

दलमाण देखो दल = दलय्।

दलमल देखो दरमल। वकृ दलमलत (भवि)।

दलय देखो दल = दा। दलयइ (औप)। भवि दलइस्सति (औप)। वकृ दलयमाण (णाया १, १—पत्र ३७, ठा ३, १—पत्र ११७)। सकृ दलइत्ता (औप)।

दलय सक [दापय्] दिलाना दलयइ (कप्प)।

दलवट्ट देखो दरमल। दलवट्टइ (भवि)।

दलवट्टिय देखो दलमलिय (भवि)।

दलाव सक [दापय्] दिलाना। दलावेइ (पि ५५२)। वकृ. दलावेमाण (ठा ४, २)।

दलिअ वि [दलित] १ विकसित, खिला हुआ (से १२, १)। २ पीसा हुआ (पाअ), 'दलिअनपसालितट्ठुलधवलमि अकासु राईसु' (गा ६६१)। ३ विदारित, खण्डित (दे १, १५६, सुर ४, १५२)।

दलिअ न [दलिक] १ चीज, वस्तु, द्रव्य (ओघ ५५), 'जह जोग्गम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कीरए पडिमा' (विसे १६३४)। २ पण्डित (बृह० क० भा० उ० ४)।

दलिअ वि [दे] १ निकूणिताक्ष, जिसने टेढी नजर की हो वह। २ न उँगली (दे ५, ५२)। काष्ठ, लकडी (दे ५, ५२, पाअ)।

दलिज्जत देखो दल = दलय्।

दलिद्द देखो दरिद्द (हे १,२५४, गा २३०)।

दलिद्दा अक [दरिद्रा] दुर्गत होना, दरिद्र होना। दलिद्दाइ (हे १, २५४)। भूका. दलिद्दाईअ (सक्षि ३२)।

दलिल्ल वि [दलवत्] दल-युक्त, दलवाला (सण)।

दलेमाण देखो दल = दा।

दव सक [द्रु] १ गति करना। २ छोडना। दवए (विसे २८)।

दव पुं [दव] १ जगल का अग्नि, वन की आग (दे ५, ३३)। २ वन, जगल। °ग्गि पु [°ाग्नि] जगल का अग्नि (हे १, १७७, प्राप्र)।

दव पु [द्रव] १ परिहास (दे ५, ३३)। २ पानी, जल (पचव २)। ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज (विसे १७०७)। ४ वेग, 'दवदवचारी' (सम ३७)। ५ सयम, विरति (आचा)। °कर वि [°कर] परिहासकारक (भग ६, ३३)। °कारी, °गारी स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है (भग ११, ११, णाया १, १ टी पत्र ४३)।

दवण न [द्रवन] यान, वाहन (सूअनि १०८)।

दवणय देखो दमणय (भवि)।

दवदव } अ [द्रवद्रवम्] शीघ्र, जल्दी,
दवदवस्स } 'दवदवचरा पमत्तजणा' (संबोध १४, उत्त १७,८), 'दवदवस्स न गच्छेज्जा' (दस ५, १, १४), 'जह वणदवो वण दवदवस्स जलिओ खणेण निद्दहइ' (धर्मवि ८६)।

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेगवाली गति, 'नाऊण गय खुहिय नयरजणो धाविओ दवदवाए' (पउम ८, १७३)।

दवर पु [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा (दे ५, ३५, श्रावम)। २ रज्जु, रस्सी (णाया १, ८)।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी (विसे)।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ (दे ५, ३६)।

दवाव सक [दापय्] दिलाना। दवावेइ (महा)। वकृ दवावेमाण (णाया १,१४)। सकृ दवावेऊण (महा)। हेकृ. दवावेत्तए (कप्प)।

दवावण न [दापन] दिलाना (निचू २)।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा १३०, स १६३, महा, उप पृ ३८५, ७२८ टी)।

दविअ पुन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु (सम्म ६, विसे २०३१)। २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ (ओघ ५, आचा, कप्प)। ३ वि भव्य, मुक्ति के योग्य (सूअ १, २, १)। ४ भव्य, सुन्दर शुद्ध (सूअ १, १६)। ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग (सूअ १, ८)। °णुओग पु [°ानुयोग] पदार्थ विचार, वस्तु की मीमासा (ठा १०)। देखो दव्व।

दविअ वि [द्रविक] सयम वाला, सयम युक्त, सयमी (आचा)।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु (ओघ)।

दविड देखो दविल (सुपा ५८०)।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष, तामिल भाषा (विसे ४६४ टी)।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, सपत्ति (पाअ, कप्प)।

दविय न [द्रव्य] १ घास का जगल, वन मे घास के लिए सरकार से अवरुद्ध भूमि (आचा २, ३, ३, १)। २ तृण आदि द्रव्य-समुदाय (सूअ २, २, ८)।

दविल पु [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष, मद्रास प्रात। पुस्त्री द्रविड देश का निवासी मनुष्य, द्राविड (पण्ह १, १—पत्र १४)।

दव्व देखो दविअ = द्रव्य (सम्म १२, भग, विसे २८, अणु, उत्त २८)। ६ धन, पैसा, सपत्ति (पाअ, प्रासू १३१)। ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण (विसे २८, पंचा ६)। ८ गौण, अप्रधान। ९ बाह्य, अतथ्य (पचा ४, ६)। °ट्ठिय पु [°ार्थिक, °स्थित, °ास्तिक] द्रव्य को ही प्रधान माननेवाला

[illegible] [*पुट] [illegible]

[illegible] [*पुर] [illegible]

[illegible]

[illegible] [*पथि] [illegible]

[illegible]

कवकृ. दज्झंत, दज्झमाण (नाट—मालती ३०, पि २२२)।

दह पु [द्रह] ह्रद, बडा जलाशय, झील, सरोवर (भग, उवा, णाया १, ४—पत्र ९६, सुपा १३७)। °फुल्लिया स्त्री [°फुल्लिका] वल्ली-विशेष (पएण १)। °वई, °ावई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, जं ४)।

दह देखो दस (हे १, २६२, द १२, पि २६२, पउम ७८, २५, मे १३, ६४, प्राप्र, से १४, १६, ३, ११, १०, ४, पउम ८, ४४, प्राप्र)।

दहण न [दहन] १ दाह, भस्मीकरण। २ पु अग्नि, वह्नि (पएह १, १, उप पृ २२, सुपा ४७४, श्रा २८)।

दहणी स्त्री [दहनी] विद्या-विशेष (पउम ७ १३८)।

दहत्थोल्ली स्त्री [दे] स्थाली, थलिया, थरिया (दे ५, ३६)।

दहावण वि [दाहक] जलानेवाला (मण)।

दहि न [दधि] दही, दूध का विकार (ठा ३ १, णाया १, १, प्राप्र)। °घण पु [°घन] दधि-पिण्ड, अतिशय जमा हुआ दही (पएण १७—पत्र ५२६)। °मुह पु [°मुख] १ द्वीप-विशेष (पउम ५१, १)। २ एक नगर (पउम ५१, ७)। ३ पर्वत-विशेष (राज)। °वण्ण, °वन्न पु [°पर्ण] १ एक राजा, नृप-विशेष (कुप्र ६६)। २ वृक्ष-विशेष (औप, सम १५२, पएण १—पत्र ३१)। °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष (जीव ३)। °वाहण पु [°वाहन] नृप-विशेष (महा)। ° सर पु [°सर] खाद्य-द्रव्य-विशेष, मलाई, (दे ३, २६, ५, ३६)।

दहि त्रि [दधि] १ दही, 'जुन्हादहीय महणेण' (धर्मवि ५५), 'अय तु दही' (सूत्र ४,१,१६)। २ तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (सबोध ५८)।

दहिउप्फ न [दे] नवनीत, नैनूँ, मक्खन (दे ५, ३५)।

दहिट्ठ पु [दे] वृक्ष विशेष, कपित्थ, कैंथ या कैथ का पेड (दे ५, ३५)।

दहिण देखो दाहिण (नाट—वेणी ६७)।

दहित्थर } पु [दे] दधिसर, दही पर की
दहित्थार } मलाई, खाद्य-विशेष (दे ५, ३६)।

दहिमुह पु [दे] कपि, वानर (दे ५, ४४)।

दहिय पु [दे] पक्षि-विशेष, 'ज लावयतित्ति-रिदहियमोर मारति अहोस वि के वि घोर' (कुप्र ४२७)।

दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ (भवि, हे २, २०६, आचा, महा, कस)। भवि दाह, दाहामि, दाहिमि (हे ३, १७०, आचा)। कर्म दिज्जइ (हे ४, ४३८)। वकृ. दित, देत, ददंत, देयमाण (सुर १, २१२, गा २३, ४६४, हे ४, ३७९, बृह १, णाया १, १४—पत्र १८६)। कवकृ दिज्जत, दिज्जमाण, दीअमाण (गा १०१, सुर ३, ७९, १०, ५, सम ३९, सुपा ५०२, मा ३३)। सकृ दचा, दाउ, दाऊण (विपा १, १, पि ५८७, कुमा, उव)। हेकृ दाउ (उवा)। कृ. दायव्व, देय (सुर १, ११०, सुपा २३३, ४४४, ५३२)। हेकृ देव (अप) (हे ४, ४४१)।

दा° देखो दग। °थालग न [°स्थालक] जल से गीला थाल (भग १५—पत्र ६८०)। °कलस पु [°कलश] पानी का छोटा घडा। °कुभ [°कुम्भ] जल का घडा। °वरग पु [°वारक] जल का पात्र-विशेष (भग १५—पत्र ६८०)।

दा देखो ता = तावत् (से ३, १०)।

दाअ देखो दाव = दर्शय्। दाएइ (विसे ८४४)। कर्म. दाइज्जइ (विसे ४६०)। कवकृ दाइ-ज्जमाण (कप्प)।

दाअ पु [दे] प्रतिभू, जामिनदार, जमानत करनेवाला (दे ५, ३८)।

दाअ पु [दाय] दान, उत्सर्ग (णाया १, १—पत्र ३७)।

दाइ वि [दायिन्] दाता, देनेवाला (उप पृ १६२)।

दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (विसे १०१२)।

दाइअ पु [दायिक] १ पैतृक सपत्ति का हिस्सेदार (उप पृ ४७, महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय (कप्प)।

दाइज्जमाण देखो दाअ = दर्शय्।

दाइज्जग न [देयक] पाणिग्रहण के समय वर-वधू को दिया जाता द्रव्य (सिरि ४६९)।

दाउ वि [दातृ] दाता, देनेवाला (महा स १ सुपा १६१)।

दाउ देखो दा = दा।

दाओअरिअ वि [दाकोदरिक] जलोदर रोग-वाला (विपा १, ७)।

दाक्खव (अप) देखो दक्खव। दाक्खवइ (प्राकृ ११९)।

दाघ देखो दाह (हे १, २६४)।

दाडिम न [दाडिम] फल-विशेष, अनार (महा)।

दाडिमी स्त्री [दाडिमी] अनार का पड (पि २४०)।

दाढगालि देखो दढगालि (दसनि १,४६ टी)।

दाढा स्त्री [दंष्ट्रा] बडा दाँत, दन्त विशेष, चौभड, चहू, दाढ (हे २, १३०, गउड)।

दाढि वि [दंष्ट्रिन्] १ दाढावाला। २ पु, हिंसक पशु (वेणी ४६)। सूअर, वराह, 'किं दाढीभयभीओ नियर्यं गुहं केसरी रियइ' (पउम ७, १८)।

दाढिआ स्त्री [दे] दाढी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्ढी के नीचे या ठुड्डी पर के बाल (दे २, १०१)।

दाढिआलि } स्त्री [दंष्ट्रिकावलि] १ दाढा
दाढिगालि } की पक्ति। २ वस्त्र-विशेष (बृह ३, जीत)।

दाण पुंन [दान] १ दान, उत्सर्ग त्याग, 'एए हवंति दाणा' (पउम १४, ५४, कप्प, प्रासू ४८, ९७, १७२)। २ हाथी का मद (पाअ, षड्, गउड)। ३ जो दिया जाय वह (गउड)। °विरय पु [°विरत] एक राजा (सुपा १००)। °साला स्त्री [°शाला] सत्रागार (ती ८)।

दाणतराअ न [दानान्तराय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहो होती है (राय)।

दाणपारमिआ स्त्री [दानपारमिता] दान, उत्सर्ग, समर्पण, 'देतस्स हिरन्नादी अब्भासा देहमादिय चेव। अग्गहविणिवित्ती जा सेट्ठा सा दाणपारमिया' (धर्मसं ७३७)।

[illegible]

दालिद्द देखो दारिद्द (हे १, २५४ प्रासू ७०)।

दालिद्दिय देखो दारिद्दिय (सुर १३, ११६, वज्जा १३८)।

दालिम देखो दाडिम (प्राप्र)।

°दालियंब न [दालिकाम्ल] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष (पगह २, ५)।

दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि (उत्ता)।

दाली देखो दालि (ओघ ३२३)।

दाव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ (हे ४, ३२, गा ३१५)। वकृ दावंत (गा ६२०)।

दाव सक [दापय्] दिलाना, दान करवाना। दावेइ (कम)। वकृ. दावेंत (पउम ११७, २६ सुपा ६१८)। हेकृ. दावेत्तए (कप्प)।

दाव देखो ताव = तावत् (से ३, २६, स्वप्न १२, अभि ३६)।

दाव पु [दाव] १ वन, जंगल। २ देव, देवता (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि (पाअ)। °ग्गि पु [°ाग्नि] जंगल की आग (हे १, ६७)। °णल, °ानल पु [°ानल] जंगल की आग (गउड, सुपा १६७, पडि)।

दावण न [दामन] छान, पशुओं को पैर में बांधने की रस्सी (कुप्र ४३६)।

दावण न [दापन] दिलाना (सुपा ४६६)।

दावणया स्त्री [दापना] दिलाना (स ५१, पडि)।

दावद्दव पु [दावद्रव] वृक्ष-विशेष (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दावर पु [द्वापर] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न द्विक, दो, 'नो तिय नो चेव दावर' (सूअ १, २, २, २३)। °जुम्म पु [°युग्म] राशि-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २३७)।

दावाव सक [दापय्] दिलाना। सकृ दावावेउ (महा)।

दाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित (पाअ, से १, ५३, ५, ८०)।

दाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा २४१)।

दाविअ वि [द्रावित] १ झराया हुआ, टपकाया हुआ। २ नरम किया हुआ (अच्चु ८८)।

दावेंत देखो दाव = दापय्।

दास पु [दर्श] दर्शन, अवलोकन (षड्)।

दास पु [दास] १ नौकर कर्मकर (हे २, २०६, सुपा १२२, प्रासू १७५, स १८, कप्पू)। २ धीवर, मल्लाह, 'केवट्टो धीवरो दासो' (पाअ)। °चेड, °चेडग पु [°चेट] १ छोटी उम्र का नौकर। २ नौकर का लड़का (महा, णाया १, २)। °मच्च पु [°मत्य] श्रीकृष्ण (अच्चु १७)।

दासरहि पु [दाशरथि] राजा दशरथ का पुत्र रामचन्द्र (से १, १८)।

दासी स्त्री [दासी] नौकरानी (ओप, महा)।

दासीखब्बडिया स्त्री [दासीकर्वटिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

दाह पु [दाह] १ ताप, जलन, गरमी। २ दहन, भस्मीकरण (हे १, २६४, प्रासू १८)। ३ रोग-विशेष (विपा १, १)। °ज्जर पुं [°ज्वर] ज्वर-विशेष (सुपा ३११)। °वक्कंतिय वि [°व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह (णाया १, १—पत्र ६४)।

दाह देखो दा = दा।

दाहग वि [दाहक] जलानेवाला (उवर ८१)।

दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना (पउम १०२, १६१)।

दाहविअ वि [दाहित] जलवाया हुआ आग लगवाया हुआ (हम्मीर २७)।

दाहिण देखो दक्खिण (भग, कस, हे १, ४५ २, ७२, गा ८३३, ८१६)। °दारिय वि [°द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न. अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र (ठा ७)। °पच्चत्थिम वि [°पश्चिमीय] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण (भग)। °पह पु [°पथ] १ दक्षिण देश की ओर का रास्ता। २ दक्षिण देश, 'गच्छामि दाहिणपहं' (पउम ३२, १३)। °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण (भग)। °वत्त वि [°वर्त] दक्षिण में आवर्तवाला (शंख आदि) (ठा ४, २—पत्र २१६)।

दाहिणा देखो दक्खिणा (ठा ६, सुज्ज १०)।

दाहिणिल्ल देखो दक्खिणिल्ल (पउम ७, १७, विपा १, ७)।

दाहिणी स्त्री [दक्षिणा] दक्षिण दिशा (कुमा)।

दि वि व. [द्वि] दो, दो की संख्यावाला (हे १, ६४, से ६, ५३)।

दि° देखो दिसा (गा ८६६)। °करि पुं [°करिन्] दिग्-हस्ती (कुमा)। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (गउड)। °गय पु [°गज] दिग् हस्ती (स ११३)। °चक्कसार न [°चक्रसार] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °म्मोह पु [°मोह] दिशा-भ्रम (गा ८८६)। देखो दिसा।

दिअ पुन [दे] दिवस, दिन (दे ५, ३६), 'राउदिआइ' (कप्प)।

दिअ पु [द्विज] १ ब्राह्मण, विप्र (कुमा, पाअ, उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत। ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होनेवाला प्राणी। ५ पक्षी। ६ वृक्ष-विशेष, टिंवरू का पेड़ (हे १, ६४)। °राय पुं [°राज] १ उत्तम द्विज। २ चन्द्रमा (सुपा ४१२, कुप्र १६)।

दिअ पु [द्विक] काक, कौआ (उप ७६८टी)।

दिअ पु [द्विप] हस्ती, हाथी (हे २, ७६)।

दिअ न [दिव] स्वर्ग, देवलोक (पिंग)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] स्वर्ग, देवलोक (पउम २२, ४५, सुर ७, १)।

दिअ वि [दित] छिन्न, काटा हुआ (धम्मो १)।

दिअ वि [द्रुत] हत, मार डाला हुआ, 'चंदेण व दियराएण जेण आणंदिय भुवणं' (कुप्र १६)।

दिअंत पु [दिगन्त] दिशा का प्रान्त भाग (महा)।

दिअंबर वि [दिगम्बर] १ नग्न, नंगा, वस्त्र-रहित। २ पु एक जैन सम्प्रदाय (भवि, उवर १२२, कुप्र ४४३)।

दिअज्झ पु [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ५, ३६)।

दिअधुत्त पुं [दे] काक, कौआ (दे ५, ४१)।

दिअर पु [देवर] पति का छोटा भाई (गा ३५, प्राप्र, पाअ, हे १, १४६, सुपा ४८७)।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सूर्य, दिवाकर (पाअ, से १, १८, सुपा २३)। °मुह न [°मुख] प्रभात, प्रातःकाल (पाअ)। °यर देखो °कर (गउड, भवि)। °रयणिकरि स्त्री [°रजनिकरी] विद्या-विशेष (पउम १३८)। °वइ पु [°पति] सूर्य, रवि (पि ३७६)।

दिणिंद पु [दिनेन्द्र] सूर्य, रवि (सुपा २४०)।

दिणेस पुं [दिनेश] १ सूर्य, सूरज (कप्पू)। २ बारह की संख्या (विवे १४४)।

दिण्ण वि [दत्त] १ दिया हुआ, वितीर्ण (हे १, ४६, प्राप्र, स्वप्न, प्रासू १६८)। २ निवेशित, स्थापित (पण्ह १, १)। ३ पु. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गण-धर (सम १५२)। ४ भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ५ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाला एक गृहस्थ (सम १५१)। देखो दिन्न।

दिण्ण देखो दइन्न (राज)।

दिण्णेल्लय वि [दत्त] दिया हुआ (ओघ २२ भा टी)।

दित्त वि [दीप्त] १ ज्वलित, प्रकाशित (सम १५३, अजि १४, लहुअ ११)। २ कान्ति-युक्त, भास्वर, तेजस्वी (पउम ६८, ३५, सम १२२)। ३ तीक्ष्णभूत, निशित (सम १५३, लहुअ ११)। ४ उज्ज्वल, चमकीला (णंदि)। ५ पुष्ट, परिवृद्ध (उत्त ३४)। ६ प्रसिद्ध (भग २६, ३)। ७ मारनेवाला (ओघ ३०२)। °चित्त वि [°चित्त] हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह (बृह ३)।

दित्त वि [दृप्त] १ गर्वित, गर्व-युक्त (औप)। २ मारनेवाला। ३ हानि-कारक (ओघ ३०२)। °चित्त वि [°चित्त] १ जिसके मन मे गर्व हो। २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो गया हो वह (ठा ५, ३—पत्र ३२७)।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] कान्ति, तेज, प्रकाश (पाअ, सुर ३, ३२, १०, ४६, सुपा ३७८)। °म वि [°मत्] कान्ति-युक्त (गच्छ १)।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] उद्दीपन (उत्त ३२, १०)। °ल्ल वि [°मत्] प्रकाशवाला (सम्मत्त १५६)।

दिदिक्खा } स्त्री [दिदृक्षा] देखने की इच्छा
दिदिच्छा } (राज, सुपा २६४)।

दिद्ध वि [दिग्ध] लिप्त (निचू १)।

दिन्न देखो दिण्ण (महा, प्रासू ५७)। ७ श्री गौतम स्वामी के पास पांच सौ तापसों के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक तापस (उप १४२ टी, कुप्र २६३)। ८ एक जैन आचार्य (कप्प)।

दिन्नअ पुं [दत्तक] गोद लिया हुआ पुत्र (ठा १०—पत्र ५१६)।

दिप्प अक [दीप्] १ चमकना। २ तेज होना। ३ जलना। दिप्पइ (हे १, २२३)। वकृ. दिप्पंत, दिप्पमाण (से ४, ८, सुर १४, ५६, महा, पण्ह १, ४, सुपा २४०), 'दिप्पमाणे तवतेएणं' (स ६७५)।

दिप्प अक [तृप्] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। दिप्पइ (षड्)।

दिप्प वि [दीप्र] चमकनेवाला, तेजस्वी (से १, ६१

दिप्प (अप) पु [दीप] १ दीपक। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

दिप्पंत पुं [दे] अनर्थ (दे ५, ३६)।

दिप्पंत }
दिप्पमाण } देखो दिप्प = दीप्।

दिप्पिर देखो दिप्प = दीप्र (कुमा)।

दियाव सक [दा] देना। दियावेइ (पंचा १३, १२)।

दिरय पु [द्विरद] हस्ती, हाथी (हे १, ९४)।

दिलंदिलिअ [दे] देखो दिल्लिदिलिअ (गा ७४१)।

दिलिदिल अक [दिलदिलाय्] 'दिल् दिल्' आवाज करना। वकृ. दिलिदिलंत (पउम १०२, २१)।

दिलिवेढय पु [दिलिवेष्टक] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति (पण्ह १, १)।

दिल्लिदिलिअ पु [दे] बालक, शिशु, लड़का (दे ५, ४०)। स्त्री. °आ, बाला, लड़की (गा ७४१)।

दिव उभ [दिव्] १ क्रीडा करना। २ जीतने की इच्छा करना। ३ लेन-देन करना। ४ चाहना, वाञ्छना। ५ आज्ञा करना। दिवइ, दिवए (षड्)।

दिव न [दिव्] स्वर्ग, देवलोक (कुप्र ४३६, भवि)।

दिवड्ढ वि [द्व्यपार्ध] डेढ़, एक और आधा (विसे ६९३, स ५५, सुर १०, २०८, सुपा ५८०, भवि, सम ६६, सुज्ज १, १०, ठा ६)।

दिवस } देखो दिअस (हे १, २६३, उव,
दिवह } प्रासू १२, सुपा ३०७, वेणी ४७)। °पुहुत्त न [°पृथक्त्व] दो से लेकर नव दिन तक का समय (भग)।

दिवा देखो दिआ (णाया १, ४, प्रासू ९०)। °इत्ति पु [°कीर्त्ति] चाण्डाल, भंगी (दे ५, ४१)। °कर पुं [°कर] सूर्य, सूरज (उत्त ११)। °कित्ति पु [°कीर्त्ति] नापित, हजाम (कुप्र २८८)। °गर देखो °कर (णाया १, १, कुप्र ४१५)। °मुह न [°मुख] प्रभात (गउड)। °यर देखो °कर (सुपा ३९, ३१४)। °यरत्थ न [°करास्त्र] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष (पउम ६१, ४४)।

दिवायर पु [दिवाकर] १ सिद्धसेन नामक विख्यात जैन कवि और तार्किक। २ पूर्वधर मुनि (सम्मत्त १४१)।

दिवि देखो देव, 'दिविणावि काणपुरिमेणव्व एसा दासी ग्रह च विप्पवरो एगया दिट्ठीए दिस्सामो' (रंभा)।

दिविअ पु [द्विविद] वानर-विशेष (से ४, ८, १३, ८२)।

दिविज वि [दिविज] १ स्वर्ग मे उत्पन्न। २ पुं देव, देवता (अजि ७)।

दिविट्ठ देखो दुविट्ठ (राज)।

दिवे (अप) देखो दिवा (हे ४, ४१९, कुमा)।

दिव्व वि [दिव्य] १ स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्गीय (स २, ठा ३, ३)। २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर (पउम ८, २६१, सुर २, २४२, प्रासू १२८)। ३ प्रधान, मुख्य (औप)। ४ देव-सम्बन्धी (ठा ४, ४, सूअ १, २, २)। ५ न. शपथ-विशेष, आरोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि (उप ८०४)। ६ प्राचीन काल मे अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौकिक प्रमाण (उप १०३१ टी)। °माणुस

[illegible]

[illegible]

[illegible]

°कुमार पु [°कुमार] एक देव-जाति (भग १६, १३)। °ण्णु त्रि [°ज्ञ] द्वीप के मार्ग का जानकार (उप ५६५)। °सागरपन्नत्ति स्त्री [°सागरप्रज्ञप्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमे द्वीपो और समुद्रो का वर्णन है (ठा ३, २—पत्र १२६)।

दीव पुं [द्वीप] सौराष्ट्र का एक नगर दीव (पव ११०)।

दीवअ पु [दे] कृकलास, गिरगिट (दे ५, ४१)।

दीवअ पु [दीपक] १ प्रदीप दिया, चिराग, आलोक (गा ३२२ महा)। २ वि. दीपक, प्रकाशक, शोभा-कारक (कुमा)। ३ न छन्द-विशेष (अजि २६)।

दीवंग पु [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देनेवाले कल्पवृक्ष की एक जाति (ठा १०)।

दीवग देखो दीवअ = दीपक (श्रा ६, आवम)।

दीवड पुं [दे] जलजन्तु-विशेष, 'फुरंतसिप्पि-संपुडं भमतमीनदीवडं' (सुर १०, १८८)।

दीवण न [दीपन] प्रकाशन (श्रोघ ७४)।

दीवणा स्त्री [दीपना] प्रकाश, 'श्रश्रो सतगुण-दीवणाहिं' (स ६७५)।

दीवणिज्ज वि [दीपनीय] १ जठराग्नि को बढानेवाला (णाया १, १—पत्र १६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान (पएण १७)।

दीवय देखो दीव = दिव्।

दीवयंत देखो दीव = दीपय्।

दीवायण पुं [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पिणी काल मे भरत-क्षेत्र मे एक तीर्थंकर होगा (अत १५, सम १५४, कुप्र ६३)।

दीवि, दीविअ पु [द्वीपिन्] व्याघ्र की एक जाति, चीता (गा ७६१, णाया १, १—पत्र ६५, पएह १, १)।

दीविअ वि [दीपित] १ जलाया हुआ (पउम २२, १७)। २ प्रकाशित (श्रोघ)।

दीविअग पु [दीपिकाङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है (पउम १०२, १२५)।

दीविआ स्त्री [दे] १ उपदेहिका, क्षुद्र कीट-विशेष। २ व्याध की हरिणी, जो दूसरे हरिणो के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है (दे ५, ५३)। ३ व्याध-सबन्धी पिंजडे मे रखा हुआ तितिर पक्षी (णाया १, १७—पत्र २३२)।

दीविआ स्त्री [दीपिका] छोटा दिया, लघु प्रदीप (जीव ३)।

दीविच्चग वि [द्वैप्य] द्वीप मे उत्पन्न, द्वीप मे पैदा हुआ (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दीवी (अप) देखो देवी (रंभा)।

दीवी स्त्री [दीपिका] लघु प्रदीप, छोटा दिया, 'दीवि व्व तीइ बुद्धी' (श्रा १६)।

दीवूसव पु [दीपोत्सव] कार्तिक वदी अमावस, दीवाली, दीपावली (ती १६)।

दीसंत, दीसमाण देखो दक्ख = दृश्।

दीह वि [दीर्घ] १ आयत, लम्बा (ठा ४, २, प्राप्र, कुमा)। २ पु दो मात्रावाला स्वर-(पिग)। ३ कोशल देश का एक राजा (उप पृ ५८)। °काय [°काय] अग्निकाय (आचा०अध्य० १—१—४)। °कालिगी स्त्री [°कालिकी] संज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष, जिसमे सुदीर्घ भूतकाल की बातो का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है (द ३२, विसे ५०८)। °कालिय वि [°कालिक] १ दीर्घ काल से उत्पन्न चिरतन, 'दीहकालिएण रोगातकेण' (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-सम्बन्धी (आवम)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लम्बी सफर। २ मरण, मौत (स ७२६)। °डक्क वि [°दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह (निचू १)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत (राज)। °दंत पु [°दन्त] १ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। २ एक जैनमुनि (अत)। °दंसि वि [°दर्शिन] दूरदर्शी, दूरन्देशी (सुर ३, ३, सं ३२)। °दसा स्त्री. ब. [°दशा] जैन ग्रथ-विशेष (ठा १०)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी। २ स्त्री दीर्घ दर्शिता (धर्म १)। °पट्ठ पु [°पृष्ठ] १ सर्प, साँप (उप पृ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री (बृह १)। °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव (पव ७)। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूरदर्शी (पउम २६, २२, ३१, १०६)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र मे होनेवाला तीसरा वासुदेव (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व जन्मीय नाम (सम १५१)। °भद्द पु [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °मद्ध वि [°ाध्व] लम्बा रास्तावाला (णाया १, १८, ठा २, ?, ५, २—पत्र २४०)। °मद्ध वि [°ाद्ध] दीर्घकाल से गम्य (ठा ५, २—पत्र २४०)। °माउ न [°ायुष्] लम्बा आयुष्य (ठा १०)। °रत्त, °राय पुन [°रात्र] १ लम्बी रात। २ बहु रात्रिवाला, चिर-काल (सहि १७ राज)। °राय पु [°राज] एक राजा (महा)। °लोग पु [°लोक] वनस्पति का जीव (आचा)। °लोगसत्थ न [°लोक-शस्त्र] अग्नि, वह्नि (आचा)। °वेयड्ढ पु [°वैताढ्य] स्वनाम ख्यात पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६)। °सुत्त न [सूत्र] १ बडा सूता (निचू ५)। २ आलस्य, 'मा कुणसु दीहसुत्त परकज्ज सीयल परिगणतो' (पउम ३०, ६)। °सेण पु [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष (अनु २)। २ इस अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव (पव ७)। °ाउ, °ाउय वि [°ायुष्, °ायुष्क] लम्बी उम्रवाला, बडी आयुवाला, चिरजीवी (हे १, २०, ठा ३, १, पउम १४, ३०) °ासण न [°ासन] शय्या (ज १)।

दीह देखो दिअह (कुमा)।

दीहंध वि [दिवसान्ध] दिन को देखने मे असमर्थ, 'रत्तिधा दीहधा' (प्रासू १७६)।

दीहजीह पुं [दे] शख (दे ५, ४१)।

दीहपिट्ठ देखो दीह-पट्ठ (सिरि ६०५)।

दीहर देखो दीह = दीर्घ (हे २, १७१, सुर २, २१८, प्रासू ११३)। °च्छ वि [°ाक्ष] लम्बी आखवाला, बडे नेत्रवाला (सुपा १४७)।

दीहरिय वि [दीर्घित] लम्बा किया हुआ (गउड)।

दीहिया स्त्री [दीर्घिका] वापी, जलाशय-विशेष (सुर १, ६३, कप्पू)।

दीहीकर सक [दीर्घी + कृ] लम्बा करना। दीहीकरेंति (भग)।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

११२)। °विह वि [°विह] दुःख-प्रद (पउम १५, १००)। °ासिया स्त्री [°ासिका] वेदना, पीडा (ठा ३, ४)। देखो दुह = दुःख।

दुक्ख न [दे] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग चूतड (दे ५, ४२)।

दुक्ख अक [दुःखाय्] १ दुखना, दर्द होना। २ सक. दुःखी करना, 'सिर मे दुक्खेइ' (म ३०४)। दुक्खामि (मे ११, १२७)। दुक्खति (सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खड देखो दुक्कर (चार २३)।

दुक्खण न [दुःखन] दुखना, दर्द होना (उत्त ७५१, सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खम वि [दुःक्षम] १ असमर्थ। २ अशक्य (उत्त २०, ३१)।

दुक्खर देखो दुक्कर (स्वप्न ६६)।

दुक्खरिय पुं [दुष्करिक] दास, नौकर (निचू १६)।

दुक्खरिया स्त्री [दुष्करिका] १ दासी, नौकरानी (निचू १६)। २ वेश्या, वाराङ्गना (निचू १)।

दुक्खल्लिय (अप) वि [दुःखित] दुःख-युक्त (भवि)।

दुक्खविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ (उप ६३४, भवि)।

दुक्खाव सक [दुःखय्] दुःख उपजाना, दुःखी करना। दुक्खावेइ (पि ५५६)। वकृ दुक्खावेंत (पउम ५८, १८)। कवकृ. दुक्खाविज्जंत (श्रावम)।

दुक्खावणया स्त्री [दुःखना] दुःखी करना, दर्द उपजाना (भग ३, ३)।

दुक्खिअ वि [दुःखिन] दुःखी, दुःख युक्त (आचा)।

दुक्खिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त, दुखिया (हे २, ७२, प्राप्र, प्रासू ६३, महा, सुर ३, १६१)।

दुक्खुत्तर वि [दुःखोत्तार] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने मे कठिनाई हो (पण्ह १, १)।

दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो बार, दो दफा (ठा ५, २—पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो दुखुर (पि ४३६)।

दुक्खुल देखो दुकुल (अवि २१)।

दुक्खोह पुं [दुःखौघ] दुःख-राशि (पउम १०३, १५५, सुपा १६१)।

दुक्खोह वि [दुःक्षोभ] कष्ट-क्षोभ्य, सुस्थिर (सुपा १६१, ६२६)।

दुखंड वि [द्विखण्ड] दो टुकडेवाला (उप ६८६ टी, भवि)।

दुखुत्तो देखो दुक्खुत्तो (कस)।

दुखुर पु [द्विखुर] दो खुरवाला प्राणी, गो, भैंस आदि (पण्ण १)।

दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल, जोडा (नव १०, सुर ३, १७, जी ३३)।

दुगंछ देखो दुगुंछ। वकृ. दुगंछमाण (उत्त ४, १३)। कृ. दुगछणिज्ज (उत्त १३, १६, पि ७४)।

दुगछणा स्त्री [जुगुप्सना] घृणा, निन्दा (पउम ६५, ६५)।

दुगछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा (पाअ, कुप्र ४०७)। देखो दुगुछा।

दुगध देखो दुग्गध (पउम ४१, १७)।

दुगच्छ } सक [जुगुप्स्] घृणा करना, दुगुंछ } निन्दा करना। दुगच्छइ, दुगुछइ (षड्, हे ४, ४)। वकृ. दुगुछत, दुगुछमाण (कुमा, पि ७४, २१५)। सकृ. दुगुछिउ (धर्म २)। कृ. दुगुंछणीय (पउम ४६, ६२)।

दुगसपुण्ण न [द्विगसपूर्ण] लगातार बीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

दुगुछग वि [जुगुप्सक] घृणा करनेवाला (श्राव ३)।

दुगुंछण न [जुगुप्सन] घृणा, निन्दा (पि ७४)।

दुगुछणा देखो दुगंछणा (आचा)।

दुगुछा देखो दुगंछा (भग)। °कम्म न [°कर्मन्] देखो पीछे का अर्थ (ठा १०)। °मोहणीअ न [°मोहनीय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है (कम्म १)।

दुगुछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला, नफरत करनेवाला (उत्त २, ४, ६, ८)।

दुगुछिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (ओघ ३०२)।

दुगुंदुग पुं [दौगुन्दुक] एक समृद्धि शाली देव (सुपा ३२८)।

दुगुच्छ देखो दुगुंछ। दुगुच्छइ (हे ४, ४, षड्)। वकृ दुगुच्छत (पउम १०५, ७५)। कृ दुगुच्छणीय (पउम ८०, २०)।

दुगुण देखो दुउण (ठा २, ४, णाया १, १, दं ६, सुर ३, २१६)।

दुगुण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। दुगुणेइ (कुप्र २८५)।

दुगुणिअ देखो दुउणिअ (कुमा)।

दुगुल्ल } देखो दुअल्ल (हे १, ११६, कुमा, दुगूल } सुर २, ८०, जं २)।

दुगोत्ता स्त्री [द्विगोत्रा] वल्ली विशेष (पण्ण १)।

दुग्ग न [दे] १ दुःख, कष्ट (दे ५, ५३, षड्, पण्ह १, ३)। २ कटी, कमर (दे ५, ५३)। ३ रण, सग्राम, युद्ध, 'आढत्त च णेणिम दुग्ग' (स ६३६)।

दुग्ग वि [दुर्ग] १ जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान (भग ७, ६ विपा १, ३)। २ जो दुःख से जाना जा सके (सूत्र १, ५, १)। ३ पुन. किला, गढ, कोट (सुपा १४८)। °नायग पु [°नायक] किले का मालिक (सुपा ४६०)।

दुग्गइ स्त्री [दुर्गति] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि (ठा ३, ३, ५, १, उत्त ७, १८, आचा)। २ विपत्ति, दुःख। ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था। ४ कगालियत, दरिद्रता (पण्ह १, १, महा, ठा ३, ४, गच्छ २)।

दुग्गठि स्त्री [दुर्ग्रन्थि] दुष्टग्रन्थि, गिरह, कठिन गाठ (पि ३३३)।

दुग्गध पु [दुर्गन्ध] १ खराब गन्ध। २ वि. खराब गन्धवाला, दुर्गंधि (ठा ८—पत्र ४१८, सुपा २१, महा)।

दुग्गधि वि [दुर्गन्धिन्] दुर्गंधवाला (सुपा ४८७)।

दुग्गम वि [दुर्गम] जो कठिनाई से जाना जा सके वह (धर्मवि ४)।

दुग्गम } वि [दुर्गम] १ जहाँ दुःख से दुग्गम्म } प्रवेश किया जा सके वह (पउम ४०, १३, ओघ ७५ भा), 'पडिवक्खनरिंद-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दुज्झोसिअ वि [दुःक्षपित] कष्ट से नाशित (आचा)।

दुट्ठ वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित (ओघ १६२, पात्र, कुमा)। °प्प पु [°त्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी (पउम ६, १३६, ७५, १२)।

दुट्ठ वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त (ओघ ७५७, कम), 'अरत्तदुट्ठस्स' (कुप्र ३७१)।

दुट्ठाण न [दुःस्थान] दुष्ट जगह (भग १६, २)।

दुट्ठु अ [दुष्ठु] खराब, असुन्दर (उप ८२० टी, निर १, १ सुपा २१८, हे ४, ४०१)।

दुण्णय देखो दुन्नय (विक्र ३७, आवम)।

दुण्णाम न [दुर्नामन्] १ अपकीर्त्ति, अपयश। २ दुष्ट नाम, खराब आख्या। ३ एक प्रकार का गर्व (भग १२, ५)।

दुण्णिअ वि [दून] पीडित, दुःखित (गा ११)।

दुण्णिअ देखो दुन्निय (राज)।

दुण्णिअत्थ न [दे] १ जघन पर स्थित वस्त्र। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ५, ५३)।

दुण्णिक्क वि [दे] दुश्चरित, दुराचारी (दे ५, ४५)।

दुण्णिक्कम वि [दुर्निष्क्रम] जहाँ से निकलना कष्ट-साध्य हो वह (राज ७, ६)।

दुण्णिक्खित्त वि [दे] १ दुराचारी। २ कष्ट से जो देखा जा सके (दे ५, ४५)।

दुण्णिक्खेव वि [दुर्निक्षेप] दुःख से स्थापन करने योग्य (गा १५४)।

दुण्णिओह देखो दुन्निवोह (राज)।

दुण्णिमिअ वि [दुर्नियोजित] दुःख से जोडा हुआ (से १२, १६)।

दुण्णिमित्त न [दुर्निमित्त] खराब शकुन, अपशकुन (पउम ७०, ५)।

दुण्णिविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही, हठी, जिद्दी (निचू ११)।

दुण्णिसीहिया स्त्री [दुर्निषद्या] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान (पण्ह २, ५)।

दुण्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह (उवर १२८, उप ३२८)।

दुतितिक्ख वि [दुस्तितिक्ष] दुस्सह, जो दुःख से सहन किया जा सके वह (ठा ५,१)।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय, दुर्लंघ्य (सुपा ४७, ११५, सार्ध ६१)।

दुत्तडी स्त्री [दुस्तटी] १ नदी। २ खराब किनारा वाली नदी (धम्म १२ टी)।

दुत्तव वि [दुस्तप] कष्ट से तपने योग्य, दुःख से करने योग्य (तप) (धर्मा १७)।

दुत्तार वि [दुस्तार] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर (से ३, २५, ६, १०)।

दुत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ५, ४१, पात्र)।

दुत्तिइक्ख } देखो दुतितिक्ख (आचा,
दुत्तितिक्ख } राज)।

दुत्तुंड पु [दुस्तुण्ड] दुर्मुख, दुर्जन, (सुपा २७८)।

दुत्तोस वि [दुस्तोप] जिसको सतुष्ट करना कठिन हो वह (दस ५)।

दुत्थ न [दे] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग (दे ५, ४२)।

दुत्थ वि [दुःस्थ] दुर्गत, दुःस्थित (ठा ३, ३, भवि)।

दुत्थ न [दौःस्थ्य] दुर्गति, दुःस्थता (सुपा २४४), 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा' (कुप्रा ५४)।

दुत्थिअ वि [दुःस्थित] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त (रयण ७५, भवि, सण)। २ निर्धन, गरीब (कुप्र १४६)।

दुत्थुरुहंड पुस्त्री [दे] झगडाखोर, कलह-शील (दे ५, ४७)। स्त्री °डा (दे ५, ४७)।

दुत्थोअ पु [दे] दुर्भग, अभागा (दे ५, ४३)।

दुद्दंत वि [दुर्दान्त] उद्धत, दमन करने को अशक्य, दुर्दम, 'विसयपसत्ता दुद्दतइंदिया देहिणो बहवे' (सुर ८, १३८, णाया १, ५, सुपा ३८०, महा)।

दुद्दंस वि [दुर्दर्श] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके (उत्तर १४१)।

दुद्दंसण वि [दुर्दर्शन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह (गा ३०)।

दुद्दम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार (सुपा २४), 'दुद्दमकद्दमे' (श्रा १२)। २ पु राजा अश्वग्रीव का एक दूत (आक)।

दुद्दम पु [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे ५, ४४)।

दुद्दिट्ठ वि [दुर्दृष्ट] १ बुरी तरह से देखा हुआ। २ वि दुष्ट दर्शनवाला (पण्ह १, २—पत्र २६)।

दुद्दिण न [दुर्दिन] बादलों से व्याप्त दिवस (ओघ ३६०)।

दुद्देय वि [दुर्देय] दुःख से देने योग्य (उप ६२४)।

दुद्दोलना स्त्री [दे] गौ, गैया (षड्)।

दुद्दोली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति, पेडों की कतार (दे ५, ४३, पात्र)।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर (विपा १, ७)। °जाइ स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है (जीव ३)। °समुद्द पु [°समुद्र] क्षीर-समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है (गा ३८८)।

दुद्धंस वि [दुर्ध्वंस] जिसका नाश मुश्किल से हो (सुर १, १२)।

दुद्धगधिअमुह पु [दे] बाल, शिशु, छोटा लडका (दे ५, ४०)।

दुद्धगधिअमुही स्त्री [दे] छोटी लडकी (पात्र)।

दुद्धट्टी } स्त्री [दे] १ प्रसूति के बाद तीन
दुद्धट्ठी } दिन तक का गो-दुग्ध (पभा ३२)। २ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध (पव ४—गा २२८)।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किल से हो सके वह (पण्ण १—पत्र ४, सुर १२, ५१)। २ गहन, विषम (ठा ६, भवि)। ३ दुर्जय (कुमा)। ४ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)।

दुद्धरिस वि [दुर्धर्ष] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य (पण्ह २, ५, कप्प)।

दुद्धवलेही स्त्री [दे] चावल का आटा डालकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा मिलाकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धिअ न [दे] कद्दू, लौकी, गुजराती में 'दूधी', (पात्र)।

दुद्धिणिआ } स्त्री [दे] १ तैल आदि रखने
दुद्धिणी } का भाजन। २ तुम्बी (दे ५, ५४)।

[illegible]

दुप्पधस वि [दुष्प्रधर्ष] दुर्धर्ष, दुर्जय (उत्त ६, पि ३०५)।

दुप्पमज्जण न [दुष्प्रमार्जन] ठीक-ठीक सफा नहीं करना (धर्म ३)।

दुप्पमज्जिय वि [दुष्प्रमार्जित] अच्छी तरह से सफा नहीं किया हुआ (सुपा ६१७)।

दुप्पय देखो दुपय = द्विपद (सम ६०)।

दुप्पयार वि [दुष्प्रचार] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त (कप्प)।

दुप्परक्कन वि [दुष्पराक्रान्त] बुरी तरह से आक्रान्त (गाया)।

दुप्परिअल्ल वि [दे] १ अशक्य (दे ५, ५५, पाअ, से ८, २६, ६, १८, गा १२२)। २ द्विगुण, दुगुना। ३ अनभ्यस्त, अभ्यास-रहित (दे ५, ५५)।

दुप्परिइअ वि [दुष्परिचित] अपरिचित (से १३, १३)।

दुप्परिच्चिय देखो दुपरिच्चय (उत्त ८)।

दुप्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक (भवि)।

दुप्परिमास वि [दुष्परिमर्ष] कष्ट-साध्य स्पर्शवाला (से ६, २४)।

दुप्परियत्तण देखो दुप्परिवत्तण (तदु)।

दुप्परिल्ल वि [दे] दुराकर्ष, 'आलिहिअ दुप्परिल्लपि रोइ रएण घणु वाहो' (गा १२२)।

दुप्परिवत्तण वि [दुष्परिवर्त्तन] १ जिसका परिवर्तन दुःख से हो सके वह। २ न दुःख से पीछे लौटना (तदु)।

दुप्पवच पु [दुष्प्रपञ्च] दुष्ट प्रपच (भवि)।

दुप्पवण पु [दुष्पवन] दुष्ट वायु (भवि)।

दुप्पवेस वि [दुष्प्रवेश] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह (णाया १, १, पउम ४३, १२, स २५०, सुपा ४५५)। °तर वि [°तर] प्रवेश करने को अशक्य (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

दुप्पसह पु [दुष्प्रसह] पञ्चम आरे के अन्त में होनेवाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि (उप ८०६)।

दुप्पस्स वि [दुर्दर्श] जो मुश्किल से दिखलाया जा सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रध्वस्य] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह (णाया १, १८—पत्र २३६)।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रधृष्य] अजेय, दुर्जय (णाया १, १८)।

दुप्पह वि [दुष्प्रभ] जो दुःख से सूझ सके वह, दुर्गम (मोह ७२)।

दुप्पाय न [दुष्प्राप] तप-विशेष, आयंबिल तप (सबोध ५८)।

दुप्पिउ पु [दुष्पितृ] दुष्ट पिता (सुपा ३८७, भवि)।

दुप्पिच्छ देखो दुपेच्छ (सुर २, ५, सुपा ६२)।

दुप्पिय वि [दुष्प्रिय] अप्रिय। °भासि वि [°भाषिन्] अप्रिय-वक्ता (सुपा ३१४)।

दुप्पुत्त देखो दुपुत्त (पउम १०५, ७२, भवि, कुप्र ४०५)।

दुप्पूर वि [दुष्पूर] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके (स १२३)।

दुप्पेक्ख देखो दुपेच्छ (सण)।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [दुष्प्रेक्षणीय] कष्ट से दर्शनीय (नाट—वेणी २५)।

दुप्पेच्छ देखो दुपेच्छ (महा)।

दुप्पोलिय देखो दुप्पउलिअ (श्रा २१)।

दुप्फड वि [दुष्फट्] मुश्किल से फटने योग्य (त्रि ८३)।

दुप्फरिस, दुप्फास, दुफास वि [दुःस्पर्श] जिसका स्पर्श खराब हो वह (पउम २६, ४६, १०१, ७१, ठा ८, भग)।

दुफास वि [द्विस्पर्श] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त (भग)।

दुब्बद्ध वि [दुर्बद्ध] खराब रीति से बँधा हुआ (आचा २, ६, ३)।

दुब्बल वि [दुर्बल] निर्बल, बल-हीन (विपा १, ७, सुपा ६०३, प्रासू २३)। °पच्चयमित्त पुन [°प्रत्ययमित्र] दुर्बल को मदद करनेवाला (ठा ६)।

दुब्बलिय वि [दुर्बलिक] दुर्बल, निर्बल (भग १२, २)। °पूसमित्त पु [°पुष्यमित्र] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य (ठा ७, ती ७)।

दुब्बलिय न [दौर्बल्य] श्रम, थाक, थकावट (आचा २, ३, २, ३)।

दुब्बुद्धि वि [दुर्बुद्धि] १ दुष्ट बुद्धिवाला, खराब नियतवाला (उप ७२८, सुपा ४४, ३७६)। २ स्त्री खराब बुद्धि, दुष्ट नियत (श्रा १४)।

दुब्बोल्ल पु [दे] उपालम्भ उलहना या उलाहना (दे ५, ४२)।

दुब्भ वि [दुग्ध] दोहा हुआ। २ न दोहन (प्राकृ ७७)।

दुब्भ° देखो दुह = दुह्।

दुब्भग वि [दुर्भग] १ कमनसीब, अभागा। २ अप्रिय, अनिष्ट (पण्ह १, २, प्रासू १४३)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से उपकार करनेवाला भी लोगों को अप्रिय होता है (कम्म १, सम ६७)। °करा स्त्री [°करा] दुर्भग बनानेवाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

दुब्भग्ग न [दौर्भाग्य] दुर्भगता, लोक में अप्रियता (पिंड ५०२)।

दुब्भरणि स्त्री [दुर्भरणि] दुःख से निर्वाह, 'होउ अजणणी तेसिं दुब्भरणी पडउ तद्दुदरम्मावि' (सुपा ३७०)।

दुब्भाव पु [दुर्भाव] १ हेय पदार्थ (पउम ८६, ६६)। २ असद्-भाव, खराब-असर, 'पिसुणेण व जेण कओ दुब्भावो' (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पु [द्विभाव] विभाग, जुदाई (सुर २, १६)।

दुब्भाव पु [द्विर्भाव] द्वित्व, दुगुनापन (चेइय ६६०)।

दुब्भासिय न [दुर्भाषित] खराब वचन (पउम ११८, ६७, पडि)।

दुब्भि पुन [दुरभि] १ खराब गन्ध (सम ४१)। २ वि अशुभ, खराब असुन्दर (ठा १)। ३ वि खराब गन्धवाला, दुर्गन्धि (आचा)। °गंध [°गन्ध] पूर्वोक्त ही अर्थ (ठा १, आचा, णाया १, १२)। °सद्द पुन. [°शब्द] खराब शब्द (णाया १, १२)।

दुब्भिक्ख पुन [दुर्भिक्ष] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव (सम ६०, सुपा ३५८), 'आसन्ने रणरंगे, मूढे खेते तहेव दुब्भिक्खे।

[illegible]

दुरणुचर वि [दुरनुचर] जिसका अनुष्ठान कठिनता मे हो सके वह, दुष्कर 'एसो जईण धम्मो दुरणुचरो मदसत्ताण' (सुर १४, ७५, ठा ५, १—पत्र २६६, णाया १, १)।

दुरणुपाल वि [दुरनुपाल] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो (उत्त २३)।

दुरप्प पुं [दुरात्मन्] दुष्ट आत्मा, दुर्जन (उव, महा)।

दुरब्भास पुं [दुरभ्यास] खराब आदत (सुपा १६७)।

दुरभि देखो दुब्भि (अणु पउम २६, ५०, १०२, ४४, पण्ह २, ५, आचा)।

दुरभिगम वि [दुरभिगम] १ जहां दु ख से गमन हो सके वह, कष्ट-गम्य (ठा ३, ४)। २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके (राज)।

दुरमच्च पु [दुरमात्य] दुष्ट मन्त्री (कुप्र २६१)।

दुरवगम वि [दुरवगम] दुर्बोध (कुप्र ४८)।

दुरवगम्म देखो दुरवगम (चेइय २५६)।

दुरवगाह वि [दुरवगाह] दुष्प्रवेश, जहाँ प्रवेश करना कठिन हो वह (हे १, २६, सम १४५)।

दुरस वि [दूरस] खराब स्वादवाला (भग, णाया १, १२, ठा ८)।

दुरसण पु [द्विरसन] १ सर्प, साप। २ दुर्जन, दुष्ट मनुष्य (सुपा ५६७)।

दुरहि देखो दुरभि (उप ७२८ टी, तदु)।

दुरहिगम देखो दुरभिगम (सम १४५, विसे ६०६)।

दुरहिगम्म वि [दुरभिगम्य] दु ख से जानने योग्य, दुर्बोध, 'अत्थगई वि अ नयवायगहणलीणा दुरहिगम्मा' (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरधिसह] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके (णाया १, १, आचा, उप १०३१ टी, स ६५७)।

दुराणण पुं [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [दुरनुवर्त] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह (वव ३)।

दुराय न [द्विरात्र] दो रात (ठा ५, २, कस)।

दुरायार वि [दुराचार] १ दुराचारी, दुष्ट आचरणवाला (सुर २, १६३, १२, २२६, वेणी १७१)। २ पु दुष्ट आचरण (भवि)।

दुरायारि वि [दुराचारिन्] ऊपर देखो (भवि)।

दुराराह वि [दुराराध] जिसका आराधन दु ख मे हो सके वह (कप्प)।

दुरारोह वि [दुरारोह] जिस पर दु ख से चढा जा सके वह, दुरध्यास (उत्त २३, गा ४६८)।

दुरालोअ पु [दे] तिमिर, अन्धकार (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दु ख मे देखा जा सके, देखने को अशक्य (से ४, ८, कुमा)।

दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो, 'दुरालोयणो दुम्मुहो रत्तनेत्तो' (भवि)।

दुरावह वि [दुरावह] दुर्धर, दुर्वह (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [दुराश] १ दुष्ट आशावाला। २ खराब इच्छावाला (भवि, सक्षि १६)।

दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशयवाला (सुपा १३१)।

दुरासय वि [दुराश्रय] दु ख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य (पण्ह १, ३, उत्त १)।

दुरासय वि [दुरासद] १ दुष्प्राप्य, दुर्लभ। २ दुर्जय। ३ दु सह (दस २, ६, राज)

दुरिअ न [दुरित] पाप (पाअ, सुपा २४३)।

दुरिअ न [दे] द्रुत, शीघ्र, जल्दी (षड्)।

दुरिआरि स्त्री [दुरितारि] भगवान् सभवनाथ की शासनदेवी (सति ६)।

दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य (कुमा)।

दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब नक्षत्र (दसनि १, १०५)।

दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब यजन—याग (दसनि १, १०५)।

दुरुक्क वि [दे] थोडा पीसा हुआ, ठीक ठीक नही पीसा हुआ (आचा २, १, ८)।

दुरुदुल्ल सक [भ्रम्] १ भ्रमण करना, घूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ. दुरुदुल्लंत (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [दुरुक्त] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [द्विरुक्त] १ दो वार कहा हुआ, पुनरुक्त। २ दो वार कहने योग्य (रभा)।

दुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य (सूअ १, ३, २)। २ न दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। °सय वि [°शततम] एक सौ दो वा, १०२ वाँ (पउम १०२, २०४)।

दुरुत्तार वि [दुरुत्तार] दु ख से पार करने योग्य (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह (सूअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण) (दसनि १)।

दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह (तदु)।

दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण विशेष, दूब (स १२४, उप ३१८)।

दुरुह सक [आ+रुह्] आरूढ होना, चढना। दुरुहइ (पि ११८, १३६)। वकृ दुरुहमाण (आचा २, ३, १)। सकृ दुरुहित्ता, दुरुहित्ताण, दुरुहेत्ता (भग, महा, पि ५८३ ४८२)।

दुरूढ वि [आरूढ] अधिरूढ, ऊपर चढा हुआ (णाया १, १, २, १, औप)।

दुरूव वि [दूरूप] १ खराब रूपवाला, कुरूप, कुडोल (ठा ८, श्रा १६)। २ मलमूत्र का कर्दम (सूनकृ० चूर्णी गा० ३१७)।

दुरूव वि [दूरूप] अशुचि आदि खराब वस्तु (सूअ १, ५, १, २०)।

दुरूह देखो दुरुह। सकृ दुरूहित्तु, दुरूहिया (सूअ १, ५, २, १५), 'जहा आसाविणि नाव जाइअंधो दुरूहिया' (सूअ १, ११, ३०)।

दुरूहण न [आरोहण] अधिरोहण, ऊपर चढ बैठना (स ५१)।

दुरेह पुं [द्विरेफ] भ्रमर, भौंरा (पाअ, हे १, ६४)।

दुरोअर न [दुरोदर] जुआ, द्यूत (पाअ)।

दुरोदर देखो दुरोअर (कर्पूर २५)।

[illegible]

दुव्वसु वि [दुर्वसु] अभव्य, खराब द्रव्य (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु (आचा)।

दुव्वह वि [दुर्वह] दुर्वर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह (स १६१, सुर १, १४)।

दुव्वा देखो दुरुव्वा (कुमा, सुर १, १३८)।

दुव्वाइ वि [दुर्वादिन्] अप्रियवक्ता (दस ६, २)।

दुव्वाय पु [दुर्वाक्] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति, 'वयणेणवि दुव्वाओ न य कायव्वो परस्स पीडयरो' (पउम १०३, १४३)।

दुव्वाय पुं [दुर्वात] दुष्ट पवन (णमि ४)।

दुव्वार वि [दुर्वार] दुःख से रोकने योग्य, अवार्य (से १२, ६३, उप ९८६ टी, सुपा १६७, ४७१, अभि ११६)।

दुव्वारिअ देखो दुवारिअ = दौवारिक (प्राप्र)।

दुव्वाली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति (पात्र)।

दुव्वास पुं [दुर्वासस्] एक ऋषि (अभि ११८)।

दुव्विअड वि [दुर्विवृत] परिधान-वर्जित, नग्न, नगा (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुव्विअड्ढ, दुव्विअद्ध } वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का झूठा अभिमान करनेवाला, दुश्शिक्षित (पात्र, गा ६५)।

दुव्विजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने योग्य, जानने को अशक्य, 'अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए' (पण्ह १, १)।

दुव्विढप्प वि [दुरर्ज] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य (कुप्र २३८)।

दुव्विणीअ वि [दुर्विनीत] अविनीत, उद्धत (पउम ६६, ३५, काल)।

दुव्विण्णाय वि [दुर्विज्ञात] असत्य रीति से जाना हुआ (आचा)।

दुव्विभज देखो दुविभज्ज (राज)।

दुव्विभव्व वि [दुर्विभाव्य] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २९६)।

दुव्विभाव वि [दुर्विभाव] ऊपर देखो (विसे)।

दुव्विलसिअ न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विलास। २ निकृष्ट कार्य्य, जघन्य काम, नीच काम (उप १३६ टी)।

दुव्विसह वि [दुर्विषह] अत्यन्त दुःसह, असह्य (गा १४८, सुर ३, १४४, १४, २१०)।

दुव्विसोज्झ वि [दुर्विशोध्य] शुद्ध करने को अशक्य (पंचा १७)।

दुव्विहिअ न [दुर्विहित] दुष्ट अनुष्ठान (दसचू १, १२)।

दुव्विहिय वि [दुर्विहित] १ खराब रीति से किया हुआ, 'दुव्विहियविलासिय विहिणो' (सुर ४, १५, ११, १४३)। २ अमुविहित, अयशस्वी (आव ३)।

दुव्वोज्झ वि [दुर्वाह्य] दुर्वह, दुःख से ढोने योग्य (से ३, ५, ४, ४४, १३, ६३, वज्जा ३८)।

दुव्वोज्झ वि [दे] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य (से ३, ५)।

दुसंकड न [दुःसंकट] विषम विपत्ति (भवि)।

दुसचर देखो दुस्सचर (भवि)।

दुसथ वि [द्विसंस्थ] दो बार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धर्मसं १२०७)।

दुसन्नप्प वि [दुस्संज्ञाप्य] दुर्बोध्य (ठा ३, ४—पत्र १६५)।

दुसमदुसमा देखो दुस्समदुस्समा (भग ६, ७)।

दुसमसुसमा देखो दुस्समसुसमा (ठा १)।

दुसमा देखो दुस्समा (भग ६, ७, भवि)।

दुसह देखो दुस्सह (हे १, ११५, सुर १२, १३७, १३६)।

दुसाह वि [दुस्साध] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य (पउम ८६, २२)।

दुसिक्खिअ वि [दुश्शिक्षित] दुर्विदग्ध (पउम २५, २१)।

दुसुमिण देखो दुस्सुमिण (पडि)।

दुसुरुल्लय न [दे] गले का आभूषण-विशेष (स ७६)।

दुस्स सक [द्विष्] द्वेष करना। वकृ. दुस्समाण (सूअ १, १२, २२)।

दुस्सउण न [दुश्शकुन] अपशकुन (णमि २०)।

दुस्संचर वि [दुस्संचर] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम (स २३१, सक्षि १७)।

दुस्संचार वि [दुस्संचार] ऊपर देखो (सुर १, ६६)।

दुस्संत पु [दुष्यन्त] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति (पि ३२६)।

दुस्सबोह वि [दुस्सबोध] दुर्बोध्य (आचा)।

दुस्सज्झ वि [दुस्साध्य] दुष्कर (सुपा ८, ५९६)।

दुस्सण्णप्प देखो दुसन्नप्प (बृह ४)।

दुस्सत्त वि [दुस्सत्त्व] दुरात्मा, दुष्ट जीव (पउम ८७, ९)।

दुस्सन्नप्प देखो दुसन्नप्प (कस)।

दुस्समदुस्समा स्त्री [दुष्षमदुष्षमा] काल-विशेष, सर्वाधम काल, अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमे सब पदार्थो के गुणो की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षो का है (ठा १, ६, इक)।

दुस्समदुसुसमा स्त्री [दुष्षमसुषमा] बेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा (कप्प, इक)।

दुस्समा स्त्री [दुष्षमा] १ दुष्ट काल। २ एक्कीस हजार वर्षो के परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवा और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा (उप ९४८, इक)।

दुस्समाण देखो दुस्स।

दुस्सर पु [दुःस्वर] १ खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है (कम्म १, २७, नव १५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म (पच, सम ६७)।

दुस्सल वि [दुश्शल] दुर्विनीत, अविनीत (बृह १)।

दुस्सह वि [दुस्सह] जो दुःख से सहन हो सके, असह्य (स्वप्न ७३, हे १, १३, ११५, षड्)।

[illegible]

दूआ देखो धूआ (षड्) ।

दूइ° देखो दूई । °पलासय न [°पलाशक] एक चैत्य (उवा) ।

दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना । दूइज्जइ (आचा) । वकृ दूइज्जत, दूइज्जमाण (औप, णाया १, १, भग, आचा, महा) । हेकृ दूइज्जित्तए (कस) ।

दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन (पउम ५३, ४५) ।

दूई स्त्री [दूती] १ दूत के काम मे नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी (हे ४, ३६७) । २ जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४—पत्र १६६) । °पिंड पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा (आचा २, १, ६) । देखो दूइ° ।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ, 'हा पियवयस दूढो (? णो) मए तुम' (स ७६३) ।

दूण पुं [दे] हस्ती, हाथी (दे ५, ४४, षड्) ।

दूण (अप) देखो दुउण (पिंग) ।

दूणावेढ वि [दे] १ अशक्य । २ तडाग, तलाव, तालाव (दे ५, ५६) ।

दूभ अक [दु खय्] दूभना, दु खित होना, 'तम्हा पुत्तोवि दूभिज्जा पहमिज्ज व दुज्जणो' (श्रा १२) ।

दूभग देखो दुब्भग (णाया १, १६—पत्र १६६) ।

दूभग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, खराब नसीब (उप पृ ३१) ।

दूम सक [दू, दावय्] परिताप करना, सताप करना । दूमइ, दूमेइ (सुपा ८, प्राप्र, हे ४, २३) । कर्म दूमिज्जइ (भवि) । वकृ दूमेंत (से १०, ६३) । कवकृ. दूमिज्जत (सुपा २६६) ।

दूम देखो दुम = धवलय् (हे ४, २४) ।

दूमक } वि [दावक] उपताप-जनक, पीडा-
दूमग } जनक (पएह १, ३, राज) ।

दूमण वि [दावक] उपताप करनेवाला (सूअ १, २, २, २७) ।

दूमण न [दवन, दावन] परिताप, पीडन (पएह १, १) ।

दूमण न [धवलन] सफेद करना (वव ४) ।

दूमण देखो दुम्मण = दुर्मनस् (सूअ १, २, २) ।

दूमणाइअ वि [दुर्मनायित] जो उदास हुआ हो, उद्विग्न-मनस्क (नाट—मालती ६६) ।

दूमिअ [दून, दावित] सतापित, पीडित (सुपा १०, १३३, २३०) ।

दूमिअ वि [धवलित] सफेद किया हुआ (हे ४, २४, कप्प) ।

दूयाकार न [दे] कला-विशेष (स ६०३) ।

दूर न [दूर] १ अनिकट, असमीप, 'हसेव जस्स कित्ती गया दूर' (कुमा) । २ अतिशय, अत्यन्त, 'दूरमहर डसते' (कुमा) । ३ वि दूरस्थित, असमीपवर्ती (सूअ १, २, २) । ४ व्यवहित, अन्तरित (गउड) । °ग वि [°ग] दूरवर्ती, असमीपस्थ (उप ६४८ टी, कुमा) । °गइ, °गइअ वि [°गतिक] १ दूर जानेवाला । सौधर्म आदि देवलोक मे उत्पन्न होनेवाला (ठा ८) । °तराग वि [°तर] अत्यन्त दूर (पएण १७) । °त्थ वि [°स्थ] दूरस्थित, दूरवर्ती (कुमा) । °भविय पुं [°भव्य] दीर्घ काल मे मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यतावाला जीव (उप ७२८ टी) । °य देखो °ग (सूअ १, ५, २) । °वत्ति वि [°वर्तिन्] दूर मे रहनेवाला (पि ६४) । °ालइय वि [°ालयिक] मुक्तिगामी (आचा) । °ालय पु [°ालय] १ दूरस्थित आश्रय । २ मोक्ष । ३ मुक्ति का मार्ग (आचा) ।

दूरगइअ देखो दूर-गइअ (ओप) ।

दूरतरिअ वि [दूरान्तरित] अत्यन्त व्यवहित (गा ६५८) ।

दूरचर वि [दूरचर] दूर रहनेवाला (धम्मो १०) ।

दूराय सक [दूराय्] दूरस्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पडना । वकृ. दूरायमाण (गउड) ।

दूरीकय वि [दूरीकृत] दूर किया हुआ (श्रा २८) ।

दूरीहूअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो (सुपा १५८) ।

दूरुल्ल वि [दूरवत्] दूरस्थित, दूरवर्ती (श्राव ४) ।

दूलह देखो दुल्लह (सक्षि १७) ।

दूस अक [दुष्] दूषित होना, विकृत होना । दूसइ (हे ४, २३५, सक्षि ३६) ।

दूस सक [दूषय्] दोषित करना, दूषण—दोष लगाना । दूसइ (भवि), दूसेइ (बृह ४) ।

दूस न [दूष्य] १ वस्त्र, कपडा (सम १५१, कप्प) । २ तबू, पट-कुटी (दे ५, २८) । °गणि पु [°गणिन्] एक जैन आचार्य (णदि) । °मित्त पु [°मित्र] मौर्यवश के नाश होने पर पाटलिपुत्र मे अभिषिक्त एक राजा (राज) । °हर न [°गृह] तबू, पट-कुटी (स २६७) ।

दूसअ वि [दूषक] दोष प्रकट करनेवाला (वज्जा ६८) ।

दूसग वि [दूषक] दूषित करनेवाला (सुपा २७५, स १२४) ।

दूसग वि [दूषक] दूषण निकालनेवाला, दोष देखनेवाला (धर्मवि ८५) ।

दूसण न [दूषण] दूषित करना (अज्झ ७३) ।

दूसण न [दूषण] १ दोष, अपराध । २ कलक, दाग (तदु) । ३ पुं. रावण की मौसी का लडका (पउम १६, २५) । ४ वि. दूषित करनेवाला (स ५२८) ।

दूसम वि [दुष्षम] १ खराब, दुष्ट । २ पु. काल विशेष, पाँचवाँ आरा, 'दूसमे काले' (सट्ठि १५६) । °दूसमा देखो दुस्सम-दुस्समा (सम ३६, ठा १, ६) । °सुसमा देखो दुस्समसुसमा (ठा २, ३, सम ६४) ।

दूसमा देखो दुस्समा (सम ३६, उप ८३३ टी, सं ३४) ।

दूसर देखो दुस्सर (राज) ।

दूसल वि [दे] दुर्भग, अभागा (दे ५, ४३, षड्) ।

दूसह देखो दुस्सह (हे १, १३, ११५) ।

दूसहणीअ वि [दुस्सहनीय] दुस्सह, असह्य (पि ५७१) ।

दूसासण देखो दुस्सासण (हे १, ४३) ।

दूसाहिअ वि [दौस्साधिक] दुसाध जाति मे उत्पन्न, अस्पृश्य जाति का (प्राकृ १०) ।

दूसि पु [दूषिन्] नपुसक का एक भेद, 'दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी' (बृह ४) ।

(पण्ण १७—पत्र ५३०)। °दिण्ण, °दिन्न पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र (राज, णाया १, २—पत्र ८३)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °दूस न [°दूष्य] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र (जीव ३)। °देव पुं [°देव] १ परमेश्वर, परमात्मा, (सुपा ५००)। २ इन्द्र, देवों का स्वामी (श्राचू ५)। °नट्टिया स्त्री [°नर्तिका] नाचनेवाली देवी, देव-नटी (अजि ३१)। °नयरी स्त्री [°नगरी] अमरावती, स्वर्ग-पुरी (पउम ३२, ३५)। °पडिक्खोभ पुं [°प्रतिक्षोभ] तमस्काय अन्धकार (भग ६, ५)। °पलिक्खोभ पु [°परिक्षोभ] कृष्ण-राजि (भग ६, ५)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °प्पसाय पुं [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम (कुप्र ५)। °फलिह पुं [°परिघ] तमस्काय, अन्धकार (भग ६, ५)। °भद्द पुं [°भद्र] १ देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ८३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वर्ग, देवलोक। २ मरण, मृत्यु, 'अह अन्नया य सिट्ठी थिरदेवो देवभूमिमणुपत्तो' (सुपा ५८२)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °महावर पु [°महावर] देव नामक समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष (जीव ३, इक)। °रइ पु [°रति] एक राजा (भत्त १२२)। °रक्ख पु [°रक्ष] राक्षस-वंशीय एक राज-कुमार (पउम ५, १६६)। °रण्ण न [°रण्य] तम काय, अन्धकार (ठा ४, २)। °रमण न [°रमण] १ सोभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ४)। २ रावण का एक उद्यान (पउम ४६, १५)। °राय पुं [°राज] इन्द्र (पउम २, ३८, ४६, ३६)। °रिसि पुं [°र्षि] नारद मुनि (पउम ११, ६८, ७८, १०)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] १ स्वर्ग (भग, णाया १, ४, सुपा ६१५, श्रा १६)। २ देव-जाति, 'कइविहा णं भंते देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया' (भग ५, ६)। °लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति, 'पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं कुमुलपच्चायाया पुणो वोहिलाभो' (सम १४२)। °वर पु [°वर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक एक देव (जीव ३)। °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी (अजि ३०)। °सणत्ती स्त्री [°संज्ञप्ति] १ देव-कृत प्रतिबोध। २ देवता के प्रतिबोध से ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)। °सणिवाय पुं [°सन्निपात] १ देव-समागम (ठा ३, १)। २ देव-समूह। ३ देवों की भीड़ (राय)। °सम्म पुं [°शर्मन्] १ इस नाम का एक ब्राह्मण (महा)। २ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। °साल न [°शाल] एक नगर का नाम (उप ७६८ टी)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] देवाङ्गना, देवी (अजि २८)। °सुय देखो °स्सुय (पव ७)। °सेण पु [°सेन] १ शतद्वार नगर का एक राजा, जिसका दूसरा नाम महापद्म था (ठा ६—पत्र ४५६)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (पव ७)। ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम (ती १६)। ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक अन्तकृद् मुनि (अंत)। °स्स न [°स्व] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धन (पंचा ५)। °स्सुय पु [°श्रुत] भरत-क्षेत्र के छठवें भावी जिन-देव (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर (उप ४११)। °ाइदेव पु [°ातिदेव] अर्हन् देव, जिन भगवान् (भग १२, ६)। °ाणंद पु [°ानन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होनेवाले चौवीसवें जिनदेव (सम १५४)। °ाणंदा स्त्री [°ानन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता (आचा २, १५, १)। २ पक्ष की पनरहवीं रात्रि का नाम (कप्प)। °ाणुप्पिय पु [°ानुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति (औप, विपा १, १, महा)। °ायरिअ पु [°ाचार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य (गु ७)। °ारन्न देखो °रण्ण (भग ६, ५)। २ देवों का क्रीडा-स्थान (जो ६)। °ालय पुन [°ालय] स्वर्ग (उप २६४ टी)। °ाहिदेव पु [°ाधिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव (सम ४३, स ५)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] इन्द्र, देव-नायक (सूअ १, ६)।

देव पुन [देव] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। °कुरु स्त्री [°कुरु] भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी की दीक्षा-शिविका का नाम (विचार १२६)। °च्छंदय पुन [°च्छन्दक] कमानदार घूमटवाला दिव्य आसन-स्थान (आचा २, १५, ५)। °तमिस्स पुन [°तमिस्र] अन्धकार-राशि, तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८)। दिन्ना स्त्री [दत्ता] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्णराजि, कृष्णवर्ण पुद्गलों की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७०)। °रमण पुं [°रमण] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पूर्व-दिशा स्थित एक अञ्जनगिरि (पव २६६ टी)। °वूह पु [°व्यूह] तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८)।

देव देखो दइव (उप ३५६ टी, महा, हे १, १५३ टी)। °न्नु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखनेवाला (षड्)।

देवइ स्त्री [देवकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव (पउम २०, १८५, सम १५२, १५४)। देखो देवकी।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फल (दे ५, ४६)।

देव देखो दा = दा।

देवंग न [दे दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र (उप ७३८)।

देवंगण न [देवाङ्गण] स्वर्ग, 'दिक्ख गहिउं च देवंगणे रमइ' (सम्मत्त १६०)।

देवंधकार देखो देवंधगार (भग ६, ५—पत्र २६८)।

देवंधगार पु [देवान्धकार] तिमिर-निचय, अन्धकार का समूह (ठा ४, २)।

देवकिव्विस पु [देवकिल्विष] एक अधम देव जाति (ठा ४, ४—पत्र २७४)।

देवकिव्विसिया स्त्री [देवकिल्विषकी] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है (ठा ४, ४)।

मे गया हुआ (सुर १० १९२)। °सहा स्त्री [°सभा] धर्मशाला (उप पृ ११५)।

देसिअ देखो देसिअ, 'पडिक्कमे देसिअं सव्वं' (पडि, श्रा ६)।

देसिअव वि [देशितवत्] जिसने उपदेश दिया हो वह (सूत्र १, ६, २४)।

देसिल्लग देखो देसिअ = देश्य (बृह ३)।

देसी स्त्री [देशी] भाषाविशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद (दे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ (णाया १, १, औप)।

देसूण वि [देशोन] कुछ कम, अंश की कमीवाला (सम २, १०३, द २८)।

देस्स वि [द्दश्य] १ देखने योग्य। २ देखने को शक्य (स १६६)।

देह देखो देक्ख। देहई, देहए (उत्त १६, ६, पि ६६)। वकृ देहमाण (भग ६, ३३)।

देह पुंन [देह] १ शरीर, काय (जी २८, कुप्र १५३ प्रासू ६५)। २ पुं पिशाच-विशेष (इक, पण्ण १)। °रय न [°रत] मैथुन (वज्जा १०८)।

देहवलिया स्त्री [देहवलिका] भिक्षा-वृत्ति, भीख की आजीविका (णाया १, १६—पत्र १९९)।

देहणी स्त्री [दे] पंक, कर्दम, कादा, कादो (दे ५, ४८)।

देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की लकडी (गा ५२५, दे १, ९५, कुप्र १८३)।

देहि पु [देहिन्] आत्मा, जीव (स १६५)।

देहुर (अप) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर (भवि)।

दो अ [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह (सुपा २३३, ३१२)।

दो त्रि. ब. [द्वि] दो, उभय, युग्म (हे १, ९४)।

दो पु [दोस्] हाथ, बाहु (विक्र ११३, रंभा, कप्पू)।

दोअई स्त्री [द्विपदी] छन्द-विशेष (पिंग)।

दोआल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ५, ४६)।

दोइ देखो दो = द्विधा (बृह ३)।

दोंबुर [दे] देखो दोबुर (षड्)।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को माननेवाला (ठा ७)।

दोक्कर देखो दुक्कर (भवि)।

दोक्खर पु [द्वि-अक्षर] षण्ड, नपुंसक (बृह ४)।

दोखंड देखो दुखंड (भवि)।

दोखंडिअ वि [द्विखण्डित] जिसके दो टुकडे किए गए हो वह (भवि)।

दोगंछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला (पि ७४)।

दोगच्च न [दौर्गत्य] १ दुर्गति, दुर्दशा (पंचव ४)। २ दारिद्र्य, निर्धनता (सुपा २३०)।

दोगुंछि देखो दोगंछि (पि २१५)।

दोगुंदय पुन [दोगुन्दक] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५)।

दोगुंदुय पु [दोगुन्दक] उत्तम-जातीय देव-विशेष (सुपा ३३)।

दोग्ग न [दे] युग्म, युगल (दे ५, ४९, षड्)।

दोग्गइ देखो दुग्गइ (सुर ८, १११)। °कर वि [°कर] दुर्गति जनक (पउम ७३, १०)।

दोग्गच्च देखो दोगच्च (गा ७६)।

दोग्घट्ट, दोग्घोट्ट, दोघट्ट पु [दे] हाथी, हस्ती (पि ४३६, षड्, पाअ, महा, लहुअ ४, स ४६१)।

दोचूड पुं [द्विचूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)।

दोच्च वि [द्वितीय] दूसरा (सम २, ८, विपा १, २)।

दोच्च न [दौत्य] दूतपन, दूत-कर्म (णाया १, ८, गा ८४)।

दोच्च अ [द्विस्] दो बार, दो वक्त, 'एवं च निसामित्ता दोच्चं तच्चं समुल्लवंतस्स' (सुर २, २६)।

दोच्चंग न [द्वितीयाङ्ग] १ दूसरा अंग। २ पकाया हुआ शाक (बृह १)। ३ तीमन, कढी (ओघ २९७ भा)।

दोजीह पु [द्विजिह्व] १ दुर्जन। २ साँप (सुर १, २०)।

दोज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य (आचा २, ४, २)।

दोण पुं [द्रोण] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरू थे (णाया १ १६, वेणी १०४)। २ एक प्रकार का परिमाण (जं २)। °मुह न [°मुख] नगर, जल और स्थल के मार्गवाला शहर (पण्ह १, ३, कप्प, औप)। °मेह पु [°मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बडी कलशी भर जाय वह वर्षा (विसे १४५८)। °सुया स्त्री [°सुता] लक्ष्मण की स्त्री का नाम, विशल्या (पउम ६४, ४४)।

दोणअ पु [दे] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया। २ हालिक हलवाह, हल जोतनेवाला, हरवाहा (दे ५, ५१)।

दोणक्का स्त्री [दे] सरघा, मधुमक्खी (दे ५, ५१)।

दोणी स्त्री [द्रोणी] १ नौका, छोटा जहाज (पण्ह १, १, दे २, ४७, धम्म १२ टी)। २ पानी का बड़ा कुँडा (अणु, कुप्र ४४१)।

दोत्तडी स्त्री [दुस्तटी] दुष्ट नदी, 'एकत्तो सद्दूलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा' (उप ५३० टी, सुपा ४६३)।

दोत्थ न [दौःस्थ्य] दुस्स्थता, दुर्दशा, दुर्गति (वव ४, ७)।

दोदाण वि [दुर्दान] दुःख से देने योग्य (सक्षि ४)।

दोदिअ पुं [दे] चर्म-कूप, चमडे का बना हुआ भाजन-विशेष (दे ५, ४९)।

दोद्धु वि [दोग्धृ] दोहन-कर्ता (दस १, १ टी)।

दोधअ, दोधक न [दोधक] छन्द-विशेष (पिंग)।

दोधार पु [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग करना (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

दोनिक्कम वि [दुर्निक्रम] अत्यन्त कष्ट से चलने योग्य (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

दोबुर पु [दे] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक (षड्)।

दोब्बलिय देखो दुब्बलिय (आचा २, ३, २, ३)।

दोब्बल्ल न [दौर्बल्य] दुर्बलता (पि २८७, काप्र ८५)।

दोभाय वि [द्विभाग] दो भागवाला, दो खण्डवाला (उप १४७ टी)।

[illegible]

दोहि वि [द्रोहिन्] द्रोह करनेवाला (भवि)।

दोहिण्ण वि [द्विभिन्न] द्विखण्ड, जिसका दो टुकड़ा किया गया हो वह (प्राकृ ५१)।

दोहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, नाती (दे ६, १०६, सुपा ३६४)।

दोहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की, नतिनी (महा)।

दोहूअ पु [दे] शव, मृतक मुरदा (दे ५, ४६)।

°द्दोस देखो दोस = (दे), 'वज्जियरागद्दोसो (कुप्र ३०)।

द्रवक्क (अप) न [दे. भय] भय, डर, भीति (हे ४, ४२२)।

द्रह पु [ह्रद] बड़ा जलाशय, सरोवर, झील (हे २, ८०, कुमा)।

द्रेहि (अप) स्त्री [दृष्टि] नजर (हे ४, ४२२)।

द्रोह देखो दोह = द्रोह (पि २६८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि दआराइसद्दसकलणो पचवीसइमो तरगो समत्तो ॥

ध

ध पुं [ध] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)।

धअ देखो धव (गा २०)।

धख पु [ध्वाङ्क्ष] काक, कौआ (उप ८२३, पचा ११)।

धंग पु [दे] भौंरा, भ्रमर, भमरा (दे ५,५७)।

धत न [ध्वान्त] अन्धकार, अँधेरा (सुर १, १२, कप्पू ११)।

धंत न [ध्वान्त] अज्ञान (देवेन्द्र १)।

धत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त, 'धत-पि सुग्रसमिद्धा' (पच्च २६, विसे ३०१६, बृह १)।

धत वि [ध्मात] १ अग्नि मे तपाया हुआ (णाया १, १, ओप, पण्ण १, १७, विसे २०२६, अजि १४)। २ शब्द-युक्त, शब्दित (पिंड)।

धधा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ५, ५७)।

धधुक्कय न [धन्धुक्कय] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धधूका' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५८, कुप्र २०)।

धधोलिय (अप) वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (सण)।

धस अक [ध्वंस्] नष्ट होना। धसइ, धंसए (षड्)।

धस सक [ध्वसय्] १ नाश करना। २ दूर करना। धसइ (सूअ १, २, १)। धसेइ (सम ५०)।

धसाड सक [मुच्] त्याग करना, छोडना। धसाडइ (हे ४, ९१)।

धसाडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कुमा)।

धंसाडिअ वि [दे] व्यपगत, नष्ट (दे ५, ५९)।

धगधग अक [धगधगाय्] १ 'धग्-धग्' आवाज करना। २ जलना, अतिशय जलना। वकृ धगधगत (णाया १, १, पउम १२, ५१, भवि)।

धगधगाइअ वि [धगधगायित] 'धग्-धग्' आवाजवाला (कप्प)।

धगधग्ग देखो धगधग। वकृ धगधग्गअ-माण (पि ५५८)।

धग्गीकय वि [दे] जलाया हुआ, अत्यन्त प्रदीपित, 'अग्गी धग्गीकओ व्व पवणेण' (श्रा १४)।

धज देखो धय = ध्वज (कुमा)।

धट्ठ देखो धिट्ठ (हे १, १३०, पउम ४९, २६, कुमा १, ८२)।

धट्ठज्जुण / धट्ठज्जुण्ण पुं [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का एक पुत्र (हे २, ९४, णाया १, १६, कुमा, षड्, पि २७८)।

धड न [दे] धड, गले से नीचे का शरीर (सुपा २४१)।

धडहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव (सुपा १७६)।

धण न [धन] १ वित्त, विभव, स्थावर-जगम सम्पत्ति (उत्त ६, सूअ २, १, प्रासू ५१, ७६, कुमा)। २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य—गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय योग्य पदार्थ (कप्प)। ३ पु. कुवेर, धन-पति, 'सुव णो सिट्ठी धणो व्व धणकलिओ' (सुपा ३१०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ५५२)। ५ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] धनी, धनवाला (कुप्र २४५, पि ५९५, संक्षि ३०)। °गिरि पु [°गिरि] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता थे (कप्प, उप १४२ टी)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक जैन मुनि (आवम)। °गोव पुं [°गोप] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °ड्ढ पु [°आढ्य] एक जैनमुनि (कप्प)। °णदि पुस्त्री [°नन्दि] दुगुना देव-द्रव्य, 'देव-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धत्ती स्त्री [धात्री] १ धाई, उपमाता, दाई (स्वप्न १२२)। २ पृथिवी, भूमि। ३ आमलकी वृक्ष, आवले का पेड़ (हे २,८१)। देखो धाई।

धत्तूर पुं [धत्तूर] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा। २ न. धतूरा का पुष्प (सुपा १२८)।

धत्तूरिअ वि [धात्तूरिक] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह (सुपा १२४, १७६)।

धत्थ वि [ध्वस्त] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट, नाश हुआ (हे २, ७६, मण)।

धन्न देखो धण्ण = धन्य (कुमा, प्रासू ७२, ८४ १५५, उवा)।

धन्न न [धान्य] १ धान अनाज, अन्न (उवा, सुर १, ४६)। २ धान्य विशेष, 'कुलत्थ तह धन्नय कलाया' (पव १५६)। ३ धनिया (दसनि ६)। °कीड पुं [°कीट] नाज मे होनेवाला कीट, कीट-विशेष (जी १७)। °णिहि पुस्त्री [°निधि] धान रखने का घर, कोष्ठागार भंडार (ठा ५,३)। °पत्थय पुं [°प्रस्थक] धान का एक नाप (वव १)। °पिडग न [°पिटक] नाज का एक नाप (वव १)। °पुंजिय न [पुञ्जितधान्य] इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४ ४)। °विक्खित्त न [विक्षिप्तधान्य] विकीर्ण अनाज (ठा ४, ४)। °विरल्लिय न [विरल्लितधान्य] वायु से इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४ ४)। °संकड्ढिय न [संकर्षितधान्य] खेत मे काटकर खले—खलिहान मे लाया गया धान्य (ठा ४, ४)। °गार न [°गार] कोष्ठागार, धान रखने का गृह (निचू ८)।

धन्ना स्त्री [धान्य] अन्न, अनाज, 'सालिजवाईयाओ धन्नाओ सव्वजाईओ (उप ६८६ टी)।

धन्ना स्त्री [धन्या] एक स्त्री का नाम (उवा)।

धम सक [ध्मा] १ धमना, धौंकना, आग मे तपाना। २ शब्द करना। ३ वायु पूरना। धमइ (महा)। धमेइ (कुप्र १४६)। वकृ. धमन (निचू १)। कवकृ. धम्ममाण (उवा, णाया १, ६)।

धमग वि [ध्मायक] धमनेवाला (औप)।

धमण न [धमन] १ आग मे तपाना (आचानि १, १, ७)। २ वायु-पूरण (पण्ह १, १)। ३ वि भस्त्रा, धमनी, भाथी (राज)।

धमणि } स्त्री [धमनि, °नी] १ भस्त्रा, धमणी } धमनी, धौंकनी। २ नाडी, सिरा (विपा १, १, उवा, अंत २७)।

धमधम अक [धमधमाय्] 'धम्-धम्' आवाज करना, 'धमधमइ सिरं धणियं जायइ सूलपि भज्जए दिट्ठी' (सुपा ६०३)। वकृ धमधमत, धमधमाअन, धमधमेन (सुपा ११४ नाट—मालती ११६, णाया १, ८)।

धमास पु [धमास] वृक्ष-विशेष (पण्ण १७)।

धमिअ वि [ध्मात] जिसमे वायु भर दिया गया हो वह, 'धमिओ सखो' (कुप्र १४६)।

धमिय वि [ध्मात] आग मे तपाया हुआ, 'धमियकणय फुकाए हारविंदं हुज्ज' (मोह ४७)।

धम्म पु [धर्म] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ एक दिन का उपवास (सवोध ५८)।

धम्म पुन [धर्म] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार (ठा १, सम १, २, आचा, सूअ १, ६, प्रासू ५२, ११४, स ५७)। २ पुण्य सुकृत (सुर १, ५४, श्राव ४)। ३ स्वभाव, प्रकृति (निचू २०)। ४ गुण, पर्याय (ठा २, १)। ५ एक अरूपी पदार्थ, जो जीव को गति क्रिया मे सहायता पहुँचाता है (नव ५)। ६ वर्तमान अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न पनहरवें जिन-देव (सम ४३, पडि)। ७ एक वणिक् (उप ७२८ टी)। ८ स्थिति, मर्यादा (आचू २)। ९ धनुष, कार्मुक (सुर १, ५४, पात्र)। १० एक जैन मुनि (कप्प)। ११ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सम ४२)। १२ आचार, रीति, व्यवहार (कप्प)। °उत्त पु [°पुत्र] शिष्य (आक)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (दस १)। °कखिअ वि [°काङ्क्षित] धर्म की चाहवाला (भग)। °कहा स्त्री [°कथा] धर्म-सम्बन्धी बात (भग, सम १२०, णाया २)। °कहि वि [°कथिन्] धर्मकथा कहनेवाला, धर्म का उपदेशक (ओघ ११५ भा, श्रा ६)। °कामय वि [°कामक] धर्म की चाहवाला (भग)। °काय पुं [°काय] धर्म का साधन-भूत शरीर (पचा १८)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (औप)। °क्खाइ वि [°ख्याति] धर्म से ख्यातिवाला, धर्मात्मा (औप)। °गुरु पु [°गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य (द्र १)। °गुव वि [°गुप्] धर्म-रक्षक (षड्)। °घोस पु [°घोष] कईएक जैन मुनि और आचार्यों का नाम (आचू १, ती ७, आव ४, भग ११, ११)। °चक्क न [°चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र (पव ४० सुपा ९२)। °चक्कवट्टि पु [°चक्रवर्त्तिन्] जिन-देव (आचू १)। °चक्कि पु [°चक्रिन्] जिन भगवान् (कुम्मा ३०)। °जणणी स्त्री [°जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली स्त्री, धर्म-देशिका (पंचा १६)। °जस पु [°यशस्] जैनमुनि-विशेष का नाम (आव ४)। °जागरिया स्त्री [°जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन मे किया जाता एक उत्सव (कप्प)। °ज्झय पु [°ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें भावी जिन-देव (सम १५४)। °ज्झाण न [°ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष (सम ९)। °ज्झाणि वि [°ध्यानिन्] धर्म ध्यान मे युक्त (आव ४)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] धर्म का अभिलाषी (सूअ १, २, २)। °णायग वि [°नायक] १ धर्म का नेता (सम १, पडि)। °ण्णु वि [°ज्ञ] धर्म का ज्ञाता (दस ४)। °तित्थयर पुं [°तीर्थंकर] जिनभगवान् (उत्त २३, पडि)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पउम ७१, ६३)। °त्थि देखो °ट्ठि (पंचव ४)। °त्थिकाय पु [°ास्तिकाय] गति-क्रिया मे सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ (भग)। °दय वि [°द] धर्म की प्राप्ति करानेवाला, धर्म देशक (भग)। °दार न [°द्वार] धर्म का उपाय (ठा ४, ४)। °दार पुं [°दार] धर्म-पत्नी (कप्पू)। °दास पु [°दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य और उपदेशमाला का कर्ता (उव)। °देव पु [°देव] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य (सार्ध ७८)। °देसग, °देसय वि [°देशक] धर्म का उपदेश करनेवाला (राज, भग, पडि)। °धुरा स्त्री [°धुरा] धर्मरूप

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धरग्ग पुं [दे] कपास (दे ५, ५८)।

धरण पु [धरण] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, औप)। २ यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ३ श्रेष्ठि-विशेष (उप ७२८ टी, सुपा ५५६)। ४ न. धारण करना (से ३, ३, सार्ध ६, वज्जा ४८)। ५ सोलह तोले का एक परिमाण (जो २)। ६ धरना देना, लंघन-पूर्वक उपवेशन (पव ३८)। ७ तौलने का साधन (जो २)। ८ वि. धारण करनेवाला (कुमा)। °प्पभ पु [°प्रभ] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत (ठा १०)।

धरणा स्त्री [धरणा] देखो धारणा (णादि)।

धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी (औप, कुमा)। २ भगवान् अरनाथ की शासन-देवी (संति १०)। ३ भगवान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६)। °खील पु [°कील] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °चर पुं [°चर] मनुष्य (पउम १०१, ४७)। °धर पु [°धर] १ पर्वत, पहाड (अजि १७)। २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा (पउम ५, ५०)। °धरप्पवर पु [°धरप्रवर] मेरु पर्वत (अजि १५)। °धरवइ पुं [°धर-पति] मेरु पर्वत (अजि १७)। °धरा स्त्री [°धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। °यल न [°तल] भूमि-तल, भू-तल (णाया १, २)। °वइ पु [°पति] भू-पति, राजा (सुपा ३३४)। °वट्ठ न [°पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल (महा)। °हर देखो धर (से ६, ३६)।

धरणिंद पु [धरणेन्द्र] नाग-कुमारों की दक्षिण दिशा का इन्द्र (पउम ५, ३८)।

धरणिसिंग पु [धरणिशृङ्ग] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)।

धरणी देखो धरणि (प्रासू २३, पि ५३, से २, २४, कुप्र २२)।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि (गउड, सुपा २०१)। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड (से ६, ७६, ३८; स २९९, ७०३, उप ७६८ टी)।

धराधीस पु [धराधीश] राजा (मोह ४३)।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ (स २०६, सुपा ३२५, सक्ति ३४)। २ स्थापित, 'धराविय मंडय' (कुप्र १४०)।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ (गा १०१, सुपा १२२)। २ रोका हुआ (स २०६)।

धरिज्जंत, धरिज्जमाण } देखो धर = धृ।

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि (पाअ)।

धरित्ती स्त्री [धरित्री] पृथिवी, भूमि (श्रु १२७, सम्मत्त २२६)।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह (श्रा १८, णाया १, ८)। २ ऋण, करजा (णाया १, १)। ३ एक तरह की नाप, तौल (जो २)।

धरियव्व देखो धर = धृ।

धरिस अक [धृष्] १ संहत होना, एकत्रित होना। २ प्रगल्भता करना, ढीठाई करना। ३ मिलना, संबद्ध होना। ४ सक हिंसा करना, मारना। ५ अमर्ष करना, सहन नहीं करना। धरिसइ (राज)।

धरिस सक [धर्षय्] क्षुब्ध करना, विचलित करना। धरिसेइ (उत्त ३२, १२)।

धरिसण न [धर्षण] १ परिभव, अभिभव। २ संहति, समूह। ३ अमर्ष, असहिष्णुता। ४ हिंसा, ५ बन्धन, योजन (निचू १, राज)। ६ प्रगल्भता, धृष्टता, ढीठाई (औप)।

धरेंत देखो धर = धृ।

धव पुं [धव] १ पति, स्वामी (णाया १, १, वव ७)। २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १, उप १०३१ टी, औप)।

धवक्क अक [दे] धड़कना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना। धवक्कइ (सण)।

धवक्किय वि [दे] धड़का हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ (सण)।

धवण न [धावन] धोन, चावल आदि का धावन-जल (सूक्त ८८)।

धवल पु [दे] स्व-जाति में उत्तम (दे ५, ५७)।

धवल न [धवल] लगातार सोलह दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत (पाअ, सुपा २८५)। २ पु. उत्तम बैल (गा ६३८)। ३ पुन. छन्द-विशेष (पिंग)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत (ती ४६)। °गेह न [°गेह] प्रासाद, महल (कुमा)। °चंद पु [°चन्द्र] एक जैन मुनि (दं ४७)। °रव पु [°रव] मंगलगीत (सुपा २९५)। °हर न [°गृह] प्रासाद, महल (श्रा १२, महा)।

धवल सक [धवलय्] सफेद करना। धवलइ (पि ५५७)। कवकृ. धवलिज्जंत (गउड)।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष, जो आजकल 'धोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है (ती ३)।

धवलण न [धवलन] सफेद करना, श्वेती-करण (कुमा)।

धवलसउण पु [दे] हंस (दे ५, ५९, पाअ)।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया (गा ६३८)।

धवलाअ अक [धवलाय्] सफेद होना। धवलाअंत (गा ९)।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बैल की तरह जिसने कार्य किया हो वह। २ न उत्तम वृषभ की तरह आचरण (सार्ध ६)।

धवलिम पुस्त्री [धवलिमन्] सफेदपन, शुक्लता, सफेदी (सुपा ७४)।

धवलिय वि [धवलित] सफेद किया हुआ (भवि)।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया (गउड)।

धव्व पुं [दे] वेग (दे ५, ५७)।

धस अक [धस्] १ धसना। २ नीचे जाना। ३ प्रवेश करना। धसइ, धसउ (पिंग)।

धस पु [धस्] 'धस्' ऐसा आवाज, गिरने की आवाज, 'धसत्ति महिमंडले पडिओ' (महा, णाया १, १—पत्र ४७)।

धसक्क पु [दे] हृदय की घबराहट की आवाज, गुजराती में 'धासको', 'तो जायहिअधसक्का' (श्रा १४, कुप्र ४३५)।

धसक्किअ वि [दे] खूब घबड़ाया हुआ (श्रा १४)।

धसल वि [दे] विस्तीर्ण, फैला हुआ (दे ५, ५८)।

[illegible]

धारा स्त्री [दे] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग (दे ५, ५९)।

धारा स्त्री [धारा] १ अस्त्र के आगे का भाग, धार (गउड प्रासू ६२)। २ प्रवाह, णाली (महा)। ३ अश्व की गति-विशेष (कुमा महा)। ४ जल धारा पानी की धारा। ५ वर्षा, वृष्टि। ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन (गउड)। ७ एक राज-पत्नी (आवम)। °कदंब पु [°कदम्ब] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा से फलती-फूलती है (कुमा)। °धर पु [°धर] मेघ (सुपा २०१)। °वारि न [°वारि] धारा से गिरता जल (भग १३ ६)। °वारिय वि [°वारिक] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह (भग १३, ६)। °हय वि [°हत] वर्षा से सिक्त (कप्प)। °हर देखो °धर (सुर १३, १९५)।

धारा स्त्री [धारा] मालव देश की एक नगरी (मोह ८८)।

धारावास पु [दे] १ भेक, मेढक, बेंग (दे ५, ६३, षड्)। २ मेघ (दे ५, ६३)।

धारि वि [धारिन्] धारण करनेवाला (ओप, कप्प)।

धारित देखो धार = धारय्।

धारिट्ठ न [धाष्टर्य] धृष्टता, उद्दण्डता, गर्व, साहस (आख्या० म० कोश० अ० २३ भावटीका कथा पत्र ५२९)।

धारिणी देखो धारणी (औप)।

धारित्तए देखो धार = धारय्।

धारिय वि [धारित] धारण किया हुआ (भवि, आचा)।

धारी देखो धत्ती (हे २, ८१)।

धारी देखो धारा (कुमा)।

धारेत्तए } **धारेयव्व** } देखो धार = धारय्।

धाव सक [धाव] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धावइ (हे ४, २२८, २३८)। वकृ. धावत, धावमाण (प्रासू ८४, महा, कप्प)। संकृ. धाविऊण (महा)।

धावण न [धावन] १ वेग से गमन, दौड़ना। (सूअ १, ७)। २ प्रक्षालन, धोना, (कुप्र १६४)।

धावणय पुं [धावनक] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाला, हरकारा, सदेसिया (सुपा १०५, २९५)।

धावणया स्त्री [धान] स्तन-पान करना (उप, ८३३)।

धावमाण देखो धाव।

धाविअ वि [धावित] दौड़ा हुआ (भवि)।

धाविर वि [धावितृ] दौड़नेवाला (सण, सुपा ५४)।

धावी देखो धाई = धात्री (उप १३९ टी, स ६६, सुर ७, ११२, १६, ६८)।

धाहा स्त्री [दे] धाह, पुकार, चिल्लाहट (पउम ५३, ८८ सुपा ३१७, ३४०)।

धाहाविय न [दे] धाह, पुकार, चिल्लाहट (स ३७०, सुपा ३८०, ४६६, महा)।

धाहिय वि [दे] पलायित, भागा हुआ (धम्म ११ टी)।

धि अ [धिक्] धिक्कार, छी (रंभा)।

धिइ स्त्री [धृति] १ धैर्य, धीरज (सूअ १, ८, षड्)। २ धारण (आवम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे)। ४ धरण, अवस्थान (सूअ १, ११)। ५ अहिंसा (पण्ह २, १)। ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी। ७ देवी की प्रतिमा-विशेष (राज, णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ८ तिगिच्छि-द्रह की अधिष्ठायिका देवी (इक, ठा २३)। °कूड न [°कूट] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष (ज ४)। °धर पु [°धर] १ एक अन्तकृद् महर्षि। २ 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन (अंत १८)। °म, °मत वि [°मत्] धीरजवाला (ठा ८, पण्ह २, ४)।

धिइ स्त्री [धृति] तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धिक्कय वि [धिक्कृत] १ धिक्कारा हुआ (वव १)। २ न धिक्कार, तिरस्कार (बृह ६)।

धिकरण न [धिक्करण] तिरस्कार, धिक्कार (णाया १, १६)।

धिक्करिअ वि [धिक्कृत] धिक्कारा हुआ (कुप्र १५७)।

धिक्कार पु [धिक्कार] १ धिक्कार, तिरस्कार (पण्ह १, ३, द्र २९)। २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति (ठा ७—पत्र ३९८)।

धिक्कार सक [धिक् + कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवकृ धिक्कारिज्जमाण (पि ५६३)।

धिज्ज न [धैर्य] धीरज, धृति (हे २ ६४)।

धिज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य (णाया १, १)।

धिज्ज वि [ध्येय] ध्यान योग्य, चिन्तनीय (णाया १, १)।

धिज्जाइ पुस्त्री [द्विजाति, धिग्जाति] ब्राह्मण, विप्र। स्त्री 'तत्थ भद्दा नाम धिज्जाइणी' (आवम)।

धिज्जाइअ } पु स्त्री [द्विजातिक, धिग्जा- **धिज्जाईय** } तीय] ब्राह्मण, विप्र (महा, उप १२९, आव ३)।

धिज्जीविय न [धिग्जीवित] निन्दनीय जीवन (सूअ २, २)।

धिट्ठ वि [धृष्ट] ढीठ, प्रगल्भ। २ निर्लज्ज, बेशरम (हे १, १३०, सुर २, ६, गा ६२७, श्रा १४)।

धिट्ठज्जुण्ण देखो धट्ठज्जुण्ण (पि २७८)।

धिट्ठिम पुस्त्री [धृष्टत्व] धृष्टता, ढीठाई (सुपा १२०)।

धिद्धी } अ [धिक् धिक्] छी छी (उव, **धिधी** } व ९१, रंभा)।

धिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। धिप्पइ (हे १, २२३)।

धिप्पिर वि [दीप्र] देदीप्यमान, चमकीला (कुमा)।

धिय अ [धिक्] धिक्कार, छी, 'वेइ गिरं धिय मुडिय' (उप ६३४)।

धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो (णाया १, १६, महा, प्रारू)।

धिसण पुं [धिषण] बृहस्पति, सुर-गुरु (पाअ)।

धिसि अ [धिक्] धिक्कार, छी (सुपा ३९५, सण)।

धी देखो धीआ, 'जं मगलं कुंभनिवस्स धीए मल्लीइ राईसरवंदि आए' (मगल १२, २०)।

[illegible]

धुत्तीरय न [वत्तूरक] धतूरे का पुष्प (वज्जा १०६)।

धुद्धुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना। धुद्धुअइ (हे ४, ३९५)।

धुप्प देखो धिप्प। धुप्पइ (प्राक्र ७०)।

धुम्म पु [धूम्र] १ धूम, धुआँ। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण। ३ वि. कपोत वर्ण-वाला। °क्ख पु [°क्ष] एक राक्षस (से १२, ६०)।

धुर न. देखो धुरा (उप पृ ६३)।

धुर पु [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी, 'जम्मि कल-सम्मि वहियासडाइ तम्मि धुरवण लब्भे, पुणरवि देइ धुराणं' (सुपा ४२६)।

धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने मे समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ (सण उत्तर २०)। ३ पु गाडी, हल आदि खीचनेवाला बैल (दे ८, ४४)।

धुरा स्त्री [धुर्] १ गाडी वगैरह का अग्र भाग, धुरी (उव)। २ भार, बोझा। ३ चिंता (हे १, १६)। °वार वि [°वार] धुरा को वहन करनेवाला, धुरन्धर (पउम ७, १७१)।

धुरी स्त्री [धुरी] अक्ष, धुरा, गाडी का जूआ (अणु)।

धुरीण वि [धुरीण] धुरन्धर, मुखिया, अगुआ (धर्मवि १३६, सम्मत्त ११८)।

धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवंति (हे ४, २३८, गा ४३३, पिंड २८)। वकृ. धुवत (से ८, १०२)। कवकृ धुव्वंत, धुव्वमाण (गा ५६३, से ६, ४५, वजा २४, पि ५३८)।

धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना। धुवइ (हे ४, ५६, षड्)। कर्म. धुव्वइ (कुमा)। कवकृ धुव्वत (कुमा)।

धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर (जीव ३)। २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी (ठा ५, ३, सूत्र २, ४)। ३ अवश्यभावी (सूत्र २, १)। ४ निश्चित, नियत (आचा)। ५ पु अश्व के शरीर का आवर्त्त (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति। ७ सयम, इन्द्रियादि-निग्रह (सूत्र १, २, १)। ८ ससार (अणु)। ९ न मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग (आचा)। १० कर्म (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय, 'धुवमो-गिण्हइ' (ठा ६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी (वव १)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी (आचा)। °णिग्गह पु [°निग्रह] आव-श्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग (सूत्र १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष (सम २९)। °वण्ण पु [°वर्ण] १ सयम। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ शाश्वत यश (आचा)। देखो धुअ = ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन (ओघ ७२, ३४७, स २७२)। २ वि कँपानेवाला, हिलानेवाला। स्त्री °णी (कुमा)।

धुवण पुन [धूपन] १ धूप देना। धूम-पान (दस ३, ९)।

धुविया स्त्री [ध्रुविता] कर्म-विशेष, ध्रुव-बन्धिनी कर्म-प्रकृति (पच ५, ६६)।

धुव्व देखो धुव = धाव्। धुव्वइ (सक्षि ३६)।

धुव्वत देखो धव = धू।

धुव्वत } देखो धुव = धाव्।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ = धुत (आचा, दस ३, १३, पि ३१२, ३९२, सूत्र १, ४, २)।

धूअ देखो धूव = धूप (सुपा ६५७)।

धूअ न [धूत] पहले बँधा हुआ कर्म, पूर्व-कर्म (सूत्र २, २, ६५)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लडकी, पुत्री (हे २, १२६, प्रासू ६४)।

धूण पु [दे] गज, हाथी (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित (कुप्र ६८)।

धूम पु [धूम] १ हीग आदि बघार (पिंड २५०)। २ क्रोध, गुस्सा। ३ वि क्रोधी (सबोध १६)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धुआँ, अग्नि-चिह्न (गउड)। २ द्वेष, अप्रीति (पण्ह २, १)। °इंगाल पु ब. [°ङ्गार] द्वेष और राग (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३, पण्ह १, ५, औप)। २ वह्नि, अग्नि, आग (उत्त २२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन मे आकाश मे गमन करने की शक्तिवाला मुनि-विशेष (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि (पाअ, उव १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवी नरक-पृथिवी (ठा ७, प्रारु)। °ल वि [°ल] धुआँ वाला (उप २६४ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्णवाला (णाया १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धुएँ का अग्रभाग (ठा ४, २)।

धूमग पु [दे] भ्रमर, भौंरा, भमरा (दे ५,५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान (सूत्र २, १)।

धूमद्दार न [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा (दे ५)।

धूमद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव, तालाव २ महिष, भैंसा (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री ब [दे] कृत्तिका नक्षत्र (दे ५ ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त्त मे डालकर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह (निचू १५)।

धूममहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा (दे ५ ६१, पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम (षड)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा (दे ५,
धूमा } ६१, ठा १०)।

धूमा देखो धूमाअ। धूमाइ (प्राक्र ७१)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धुआँ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना।

न देखो ण

१ प्राकृत भाषा मे नकरादि सब शब्द णकारादि होते है, अर्थात् आदि के नकार के स्थान मे नित्य या विकल्प मे 'ण' होनेका व्याकरणो का सामान्य नियम है (प्राप्र २, ४२, दे ५, ६३ टी, हे १, २२९, षड् १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थो मे दोनो तरह के प्रयोग पाए जाते हैं। इससे ऐसे सब मब शब्द णकार के प्रकरण मे आ जाने से यहा पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ मे पुस्तक का कलेवर बढाना उचित नही समझा गया है। पाठकगण णकार के प्रकरण मे आदि के 'ण' के स्थान मे सर्वत्र 'न' समझ लें। यही कारण है कि नकारादि शब्दो के भी प्रमाण णकारादि शब्दो मे ही दिए गए है।

प

प पु [प] १ ओष्ठ स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)। २ पाप-त्याग, 'पत्ति य पाववज्जणे' (आवम)।

प अ [प्र] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष, 'पओम' (से २, ११)। २ प्रारम्भ, 'पणमिअ', 'पकरेइ' (ज १, भग १, १)। ३ उत्पत्ति। ४ ख्याति, प्रसिद्धि। ५ व्यवहार। ६ चारो ओर से (निचू १, हे २, २१७)। ७ प्रस्रवण, मूत्र (विसे ७८१)। ८ फिर-फिर (निचू ३, १७)। ९ गुजरा हुआ, विनष्ट, 'पासुअ' (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

प° वि [प्राच्] पूर्व तरफ स्थित (भवि)।

पअंगम पु [प्लवङ्गम] छन्द-विशेष (पिंग)।

पअंच पुं [प्रजङ्घ] राक्षस-विशेष (से १२, ८३)।

पअब्भ देखो पगब्भ = प्रगल्भ (प्राकृ ७८)।

पइ अ [प्रति] १ अपेक्षा-सूचक (दमनि ३, १)। २ लक्ष्य, तरफ, ओर, 'भरयच्छं पइ चलियं (सम्मत्त १४१, धर्मवि ५९)।

पइ पु [पति] १ धव, भर्ता, परवरिश करने-वाला (पाअ, गा १५९, वज्जा)। २ मालिक। ३ रक्षक, 'भूवई', 'तिअसगणवई', 'नरवइ' (सुपा ३६, अजि १७, १९)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम, धरणिधरवई (अजि १७)। °घर न [°गृह] ससुराल (षड्)। °वया, °व्वया स्त्री [°व्रता] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री, सती (गा ४१७, सुर ६, ६७)। °हर देखो °घर (हे १, ४)।

पइ देखो पडि (ठा २, १, काल, उवर २१)।

पइअ वि [दे] १ भर्त्सित, तिरस्कृत। २ न पहिया, रथ चक्र (दे ६, ६४)।

पइइ देखो पगइ = प्रकृति (से २, ८५)।

पइउ देखो पय = पच्।

पइउवचरण न [प्रत्युपचरण] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा (रभा)।

पइऊल देखो पडिकूल (नाट—विक्र ४५)।

पइवया देखो पइ-व्वया (णाया १, १६—पत्र २०४)।

पइक (अप) देखो पाइक्क (पिंग)।

पइकिदि देखो पडिकिदि (नाट—शकु ११९)।

पइक्क देखो पाइक्क (पिंग, पि १९४)।

पइगिइ देखो पडिकिदि (स ६२५)।

पइच्छन्न पु [प्रतिच्छन्न] भूत-विशेष (राज)।

पइज्ज (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [प्राप्त] मिला हुआ, लब्ध (पिंग)।

पइज्जा देखो पइण्णा (भवि, सण)।

पइट्ठ वि [दे] १ जिसने रस को जाना हो वह। २ विरल। ३ पु. मार्ग, रास्ता (दे ६, ६६)।

पइट्ठ देखो पगिट्ठ (सट्ठि ५ टी)।

पइट्ठ वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'जह अद्द-कुमर मिच्छो अभयपइट्ठ जिणस्स पडिबिंब' (सबोध ३)।

पइट्ठ पु [प्रतिष्ठ] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सम १५०)।

पइट्ठ वि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो वह (स ४२९)।

पइट्ठव सक [प्रति-स्थापय्] मूर्ति आदि की विधि-पूर्वक स्थापना करना। पइट्ठवेज्जा (पचा ७, ४३)।

पइट्ठवण देखो पइट्ठावण (राज)।

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] १ आदर, सम्मान। २ कीर्ति, यश। ३ व्यवस्था (हे १, २०६)। ४ स्थापना, संस्थापन (णंदि)। ५ अवस्थान, स्थिति (पंचा ८)। ६ मूर्ति में ईश्वर के गुणों का आरोपण, 'जिणबिंबाण पइट्ठं कइया वि हु आइसतम्म' (सुर १६, १३)। ७ आश्रय, आधार (ओघ)।

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] १ धारणा, वासना (णंदि १८६)। २ समाधान, शङ्का निरासपूर्वक स्वपक्ष-स्थापन (चेइय ५३५)।

पइट्ठाण पु [प्रतिष्ठान] मूल प्रदेश (राय २७)।

पइट्ठाण न [प्रतिष्ठान] १ स्थिति, अवस्थान, 'काऊण पइट्ठाणं रमणिज्जे एत्थ अच्छामो' (पउम ४२, २७, ठा ६)। २ आधार, आश्रय (भग)। ३ महल आदि की नींव (पव १८८)। ४ नगर-विशेष (आक २१)।

पइट्ठाण न [दे] नगर, शहर (दे ६, २९)।

पइट्ठावग } **पइट्ठायग** } देखो पइट्ठावय (णाया १, १६; राज)।

पइट्ठावण न [प्रतिष्ठापन] १ संस्थापन (पंचा ७)। २ व्यवस्थापन (पचा ७)।

पइट्ठावय वि [प्रतिष्ठापक] प्रतिष्ठा करनेवाला (औप, पि २२०)।

पइट्ठाविय वि [प्रतिष्ठापित] संस्थापित (स ६२, ७०५)।

पइट्ठिअ वि [प्रतिष्ठित] प्रतिबद्ध, रुका हुआ (आचा २, १६, १२)।

पइट्ठिय वि [प्रतिष्ठित] १ स्थित, अवस्थित (उवा)। २ आश्रित, 'रयणायरतीरपइट्ठियाण पुरिसाण जं च दालिद्दं' (प्रासू ७०)। ३ व्यवस्थित (आचा २, १, ७)। ४ गौरवान्वित (हे १, ३८)।

पइणियय वि [प्रतिनियत] नियम-संगत, नियन्त्रित (धर्मसं २६६)।

पइण्ण वि [दे] विपुल, विस्तृत (दे ६, ८)।

पइण्ण वि [प्रतीर्ण] प्रकर्ष से तीर्ण (आचा)।

पइण्ण } **पइण्णग** } वि [प्रकीर्ण, °क] १ विक्षिप्त फेंका हुआ, 'रत्तापइण्णणयणप्पसु-पत्तणुआ परिन्दइ पत्तं' (गा १४०)। २ अनेक प्रकार से मिश्रित (पंचू)। ३ बिखरा हुआ (ठा ६)। ४ विस्तारित (कप्प १)। ५ न ग्रन्थ-विशेष, तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य द्वारा बनाया हुआ ग्रंथ (णंदि)। °कहा स्त्री [°कथा] उत्सर्ग, सामान्य नियम, 'उस्सग्गो पइण्णकहा भण्णइ अववादो निच्छयकहा भण्णइ' (निचू ५)। °तव पु [°तपस्] तपश्चर्या-विशेष (पचा १९)।

पइण्णा स्त्री [प्रतिज्ञा] १ प्रण, शपथ (नाट—मालती १०६)। २ नियम (औप, पचा १८)। ३ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश (दसनि १)।

पइण्णाद (शौ) वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह (मा १५)।

पइण्णि वि [प्रतिज्ञावत्] प्रतिज्ञावाला, 'बंधमोक्खपइण्णिणो' (उत्त ६, १०, सुख, १०)।

पइत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (भवि)।

पइत्त वि [प्रदीप्त] जला हुआ, प्रज्वलित (से १५, ७३)।

पइत्त देखो पवित्त = पवित्र (सुपा ७४)।

पइदि (शौ) देखो पगइ (नाट—शकु ६१)।

पइदिण न [प्रतिदिन] हर रोज (काल)।

पइद्धिय वि [प्रदिग्ध] विलिप्त (सूअ १, ५, १)।

पइदियह न [प्रतिदिवस] प्रतिदिन, हर रोज (सुर १, ५०)।

पइनियय वि [प्रतिनियत] मुकर्रर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ (श्रावम)।

पइन्न देखो पइण्ण = प्रतीर्ण (पण्ह २, १ टी—पत्र १०५)।

पइन्न } **पइन्नग** } देखो पइण्ण (उव, भवि, श्रा ६)।

पइन्नय देखो पइन्नग (चेइय १६)।

पइन्ना देखो पइण्णा (सुर १, १)।

पइप्प देखो पलिप्प। वकृ पइप्पमाण (गा ८१६)।

पइप्पईय न [प्रतिप्रतीक] प्रत्यंग, हर अंग (रंभा)।

पइभय वि [प्रतिभय] प्रत्येक प्राणी को भय उपजानेवाला (णाया १, २, पण्ह १, १, औप)।

पइभा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि विशेष, प्रत्युत्पन्नमति (पुप्फ ३३१)।

पइभाणाण न [प्रतिभाज्ञान] प्रतिभा से उत्पन्न होता ज्ञान, प्रातिभ प्रत्यक्ष (धर्मसं १२०६)।

पइमुह वि [प्रतिमुख] संमुख (उप ७४४)।

पइर सक [वप्] बोना, वपन करना। पइरिंति (आचा २, १०, २)। भूका पइरिंसु (आचा २, १०, २)। भवि पइरिस्संति (आचा २, १०, २)। कर्म पइरिज्जंति (स ७१३)।

पइरिक्क वि [दे प्रतिरिक्त] १ शून्य, रहित (दे ६, ७१, से २, १५)। २ विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, ७१)। ३ तुच्छ, हलका (से १, ५८)। ४ प्रचुर, विपुल (ओघ २४६—पत्र १०३)। ५ नितान्त, अत्यन्त 'पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए' (कप्प)। ६ न एकान्त स्थान, निर्जन स्थान, निर्जन जगह (दे ६, ७१, स २३५, ७५५, गा ८८, उप २६३)।

पइल (अप) देखो पढम (पि ४४९)।

पइलाइआ स्त्री [प्रतिलादिका] हाथ के बल चलनेवाली सर्प की एक जाति (राज)।

पइल्ल पु [दे पदिक] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। २ रोग-विशेष, श्लीपद (पण्ह २, ५)।

पइव पु [प्रतिव] एक यादव का नाम (राज)।

पइवरिस न [प्रतिवर्ष] हरएक वर्ष (पि २२०)।

पइवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवादी, प्रतिपक्षी (विसे २४८८)।

पइविसिट्ठ वि [प्रतिविशिष्ट] विशेष युक्त, विशिष्ट (उवा)।

पइविसेस पु [प्रतिविशेष] विशेष, भेद भिन्नता (विसे ५२)।

पइस देखो पविस। पइसइ (भवि)। पइसंति (दे १, ९४ टि)। कर्म. पइसिज्जइ (भवि)। वकृ पइसंत (भवि)। कृ पइसियव्व (स २०४)।

पइसमय न [प्रतिसमय] हर समय, प्रतिक्षण (पि २२०)।

पइसर देखो पविस। पइसरइ (भवि)।

पइसार सक [प्र + वेशय्] प्रवेश कराना। पइसारइ (भवि)।

पइसारिय वि [प्रवेशित] जिसका प्रवेश कराया गया हो वह, 'पइसारिओ य नयरिं' (महा, भवि)।

पइहत्त पुं [दे] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र (दे ६, १६)।

पइहा सक [प्रति + हा] त्याग करना। संकृ पइहिऊण (उव)।

पई° देखो पइ = पति (षड्, हे १, ४, सुर १, १७६)।

पईअ वि [प्रतीत] १ विज्ञात। २ विश्वस्त। ३ प्रसिद्ध, विख्यात (विसे ७०६)।

पईअ न [प्रतीक] अंग, अवयव (रंभा)।

पईइ स्त्री [प्रतीति] १ विश्वास। २ प्रसिद्धि (राज)।

पईव देखो पलीव। पईवेइ (कस)।

पईव पु [प्रदीप] दीपक, दिया (पाअ, जी १)।

पईव वि [प्रतीप] १ प्रतिकूल (हे १ २०६)। २ पु शत्रु, दुश्मन (उप ६४८ टी, हे १, २३१)।

पईस (अप) देखो पइस। पईसइ (भवि)।

पउ (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिंग)।

पउअ देखो पागय = प्राकृत (प्राकृ ५)।

पाउअ पुं [दे] दिन, दिवस (दे ६, ५)।

पउअ न [प्रयुत] संख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४)।

पउअग न [प्रयुताङ्ग] संख्या-विशेष, 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

पउंज सक [प्र + युज्] १ जोडना, युक्त करना। २ उच्चारण करना। ३ प्रवृत्त करना। ४ प्रेरणा करना। ५ व्यवहार करना। ६ करना। पउजइ (महा, भवि, पि ५०७)। पउजंति (कप्प)। वकृ पउजंत, पउंजमाण (औप, पउम ३५, ३६)। कवकृ. पउज्जमाण (प्रयो २३)। कृ पउजिअव्व, पउज्ज (पण्ह २, ३, उप ७२८ टी, विसे ३३८४), पउद्दव्व (अप) (कुमा)।

पउजग वि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करनेवाला (पव्व १)।

पउंजग वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला (पउम १४, १०)। देखो पओअण।

पउजणया } स्त्री [प्रयोजना] प्रयोग (ओघ
पउजणा } ११४), 'दुक्ख कीरइ कव्वं' कव्वम्मि कए पउजणा दुक्खं' (वज्जा २)।

पउजिअ वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (सुपा १४०, ४४७)।

पउजित्तु वि [प्रयोक्तृ] प्रवृत्ति करनेवाला (ठा ५, १)।

पउजित्तु वि [प्रयोजयितृ] प्रवृत्ति करनेवाला (ठा ५, १)।

पउज्ज }
पउज्जमाण } देखो पउज।

पउट्ट अ [परिवृत्य] मार कर। °परिहार पु [°परिहार] मर कर फिर उसी शरीर मे उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना, 'एवं खलु गोसाला। वणस्सइ-काइयाओ पउट्ट-परिहारं परिहरंति' (भग १५—पत्र ६६७)।

पउट्ट वि [परिवर्त] १ परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर मे उत्पन्न होना। २ परिवर्त-वाद, 'एस णं गोयमा। गोसालस्स मखलि-पुत्तस्स पउट्टे' (भग १५—पत्र ६६७)।

पउट्ठ वि [प्रवृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३१)।

पउट्ठ पु [प्रकोष्ठ] हाथ का पहुँचा, कलाई और केहुनी के बीच का भाग (पण्ह १, ४—पत्र ७८, कप्प, कुमा)।

पउट्ठ वि [प्रजुष्ट] १ विशेष सेवित। २ न अति उच्छिष्ट (चड)।

पउट्ठ वि [प्रद्विष्ट] द्वेष-युक्त, 'तो सो पउट्ठ-चित्तो' (सुपा ४७५)।

पउढ न [दे] १ गृह, घर। २ पु घर का पश्चिम प्रदेश (दे ६, ४)।

पउण अक [प्रगुणय्] तन्दुरुस्त होना, नीरोग होना, 'अलस्स चिगिच्छाए पउणइ अन्नो न लोगम्मि' (धर्मसं ११८४)।

पउण पुं [दे] १ व्रण-प्ररोह। २ नियम-विशेष (दे ६, ६५)।

पउण वि [प्रगुण] १ पटु, निर्दोष, 'कह सञ्चरणविहाणं जायइ पउणिदियाणपि' (सुपा ४७२, महा)। २ तैयार, तय्यार (दस ३)।

पउणाड पु [प्रपुनाट] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड, चकवड (दे ५, ५ टि)।

पउत्त अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। कृ. पउत्तिदव्व (शौ) (नाट—शकु ८७)।

पउत्त वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (महा, भवि)। २ न प्रयोग (णाया १ १)।

पउत्त पु [पौत्र] लडके का लडका, पोता (प्राकृ १०, श्रु ११७)।

पउत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, प्राजन, चाबुक, पैना (दसा १०)।

पउत्त वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (उवा)।

पउत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] १ प्रवर्तन (भग १५)। २ समाचार, वृत्तान्त (पाअ, सुर २, ४८, ३, ८४)। ३ कार्य, काज, काम। °वाउय वि [°व्यापृत] कार्य मे लगा हुआ (ओप)।

पउत्ति स्त्री [प्रयुक्ति] वात, हकीकत (उप पृ २२८, राज)।

पउत्तिदव्व देखो पउत्त = प्र + वृत्।

पउत्तु [प्रयोक्तृ] १ प्रयोग-कर्ता। २ प्रेरणा कर्ता। ३ कर्ता, निर्माता। स्त्री °त्ती (तदु ४५)।

पउत्थ न [दे] १ गृह, घर (दे ६, ६६)। २ वि प्रोषित, प्रवास मे गया हुआ, 'एहिइ सोवि पउत्थो अहं अ कुप्पेज्ज सोवि अणुणेज्ज' (गा १७, ६६७, हेका ३०, पउम १७, ३, वज्जा ७६, विवे १३२, उव, दे ६, ६६, भवि)। °वइया स्त्री [पतिका] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री (ओघ ४१३, सुपा ५०८)।

पउद्दव्व देखो पउज।

पउप्पय देखो पओप्पय (भग ११, ११ टी)।

पउप्पय देखो पओप्पय = प्रपौत्रिक (भग ११, ११ टी)।

पउम न [पद्म] १ सूर्य-विकासी कमल (हे २, ११२, पण्ह १, ३, कप्प, औप, प्रासू ११३)। २ देव-विमान-विशेष (सम ३३, ३५)। ३ संख्या-विशेष, 'पद्माग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह

(ठा २, ४, इम)। ४ गन्ध द्रव्य-विशेष (श्राव, जीव ३)। ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन (णाया २)। ६ दिन का नववाँ मुहूर्त्त (जो २)। ७ दक्षिण रुचक-पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ८ पु राजा रामचन्द्र, सीता-पति (पउम १, ५, २५, ८)। ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई। १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा राजा पद्मोत्तर का पुत्र (पउम ५, १५३, १५४)। ११ एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। १२ माल्यवत् नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३)। १३ भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। १४ भरत क्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव (सम १५४)। १५ चक्रवर्ती राजा का निधि, जो रोग नाशक सुन्दर वस्त्रों की पूर्ति करता है (उप ९८६ टी)। १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। १७ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। १८ एक ह्रद (कप्प)। १९ पद्म वृक्ष का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३)। २० महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा, एक भावी राजर्षि (ठा ८)। °गुम्म न [°गुल्म] १ आठवें देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (सम ३५)। २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (महा)। ३ पु राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८)। °चरिय न [°चरित] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी—चरित्र। २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रंथ, जैन रामायण (पउम ११८, १२१)। °णाभ पु [°नाभ] १ वासुदेव, विष्णु (पउम ८०, १) २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरत क्षेत्र में होनेवाला प्रथम जिन-देव का नाम (पव ४६)। ३ धातकि-षण्डस्थ भरत के एक भावी राजा का नाम (णाया १, १६—पत्र २१३)। °दल न [°दल] कमल का पत्र (प्राप)। °दह पु [°द्रह] विविध प्रकार के कमलों से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम (सम १०४, कप्प, पउम १०२, ३०)। °द्धय पु [°ध्वज] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेगा (ठा ८)। °नाह देखो °णाभ (उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] एक दक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °प्पभ पु [°प्रभ] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ जिन-देव का नाम (कप्प)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] एक पुष्करिणी का नाम (इक)। °प्पह देखो °प्पभ (ठा ५, १, सम ४३, पडि)। °भद्द पु [°भद्र] राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। °मालि पु [°मालिन्] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२)। °मुह देखो पउमाणण (पड्)। °रह पु [°रथ] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र (महा)। °राय पु [°राग] रक्त-वर्ण मणि विशेष (१३६, १६६)। °राय पु [°राज] धातकीखण्ड की अपरकंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था (ठा १०)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] १ उत्तर-कुरुक्षेत्र में स्थित एक वृक्ष (ठा २, ३)। २ वृक्ष सदृश बड़ा कमल (जीव ३)। °लया स्त्री [°लता] १ कमलिनी, पद्मिनी (जीव ३, भग, कप्प)। २ कमल के आकारवाली वल्ली (णाया १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] पद्मावती देवी का सौधर्म नामक देवलोक में स्थित एक विमान (राज, णाया २—पत्र २५३)। °वरवेइया स्त्री [°वरवेदिका] १ कमलों की श्रेष्ठ वेदिका (जग) २ जम्बू द्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवों की एक भोग-भूमि (जीव ३)। °वूह पु [°व्यूह] सैन्य की पद्माकार रचना (पण्ह १, ३)। °सर पु [°सरस्] कमलों से युक्त सरोवर (णाया १, १, कप्प, महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] १ अष्टम चक्रवर्ती सुभूमराज की पटरानी (सम १५२)। २ एक स्त्री का नाम (कुमा)। °सेण पु [°सेन] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (निर १, २)। २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम (दीव)। °सेहर पु [°शेखर] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम (धम्म ७)। °गर पु [°कर] १ कमलों का समूह। २ सरोवर (उप १३३ टी)। °सण न [°सन] पद्माकार आसन (ज १)।

पउमग पुन [पद्मक] केसर (दस ६, ६४)।

पउमप्पह पु [पद्मप्रभ] विक्रम की तेरहवी शताब्दी का एक जैन आचार्य (विपा ३)।

पउमा स्त्री [पद्मा] १ लक्ष्मी। २ देवी-विशेष। ३ लौंग, लवंग। ४ पुष्प-विशेष, कुसुम्भ-पुष्प (प्राकृ २८)।

पउमा स्त्री [पद्मा] १ बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम (ठा ८—पत्र ४२९, पउम १०२, १५९)। ३ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ एक विद्याधर कन्या का नाम (पउम ६, २४)। ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ६ लक्ष्मी (राज)। ७ वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (पव ९)। ९ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (इक)। १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम। ११ लेश्या-विशेष (राज)।

पउमाड पु [दे] वृक्ष विशेष, पमाड का पेड़ चकवड (दे ५, ५)।

पउमाणण पु [पद्मानन] एक राजा का नाम (उप १०३१ टी)।

पउमाभ पुं [पद्माभ] षष्ठ तीर्थंकर का नाम (पउम १, २)।

पउमार [दे] देखो पउमाड (दे ५, ५ टि)।

पउमावई स्त्री [पद्मावती] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी-देवी (ठा ८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नाग-राज धरणेन्द्र की पटरानी है (सति १०)। ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम (अंत १५)। ४ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (भग १०, ५)। ५ शक्रेन्द्र की एक

पटरानी (णाया २—पत्र २५३)। ६ चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम (ग्राव ४)। ७ राजा कूणिक की एक पत्नी (भग ७, ६)। ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी (धम्म ८)। ६ तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी (दस १)। १० कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी (विपा १, ५)। ११ शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी (णाया १, ५)। १२ राजा कूणिक के पुत्र कालकुमार की भार्या का नाम। १३ राजा महाबल की भार्या का नाम (निर १, १, ५, पि १३६)। १४ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम (पव ११)। १५ पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी (ग्राचू १)। १६ रम्यनामक विजय की राजधानी (ज ४)।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग)।

पउमिणी स्त्री [पद्मिनी] १ कमलिनी, कमल-लता (कप्प, सुपा १५५)। २ एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम (उप ७१८ टी)।

पउमुत्तर पु [पद्मोत्तर] १ नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्मराज के पिता का नाम (सम १५२)। २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत (इक)।

पउमुत्तरा स्त्री [पद्मोत्तरा] एक प्रकार की शक्कर, खाँड, चीनी (णाया १, १७—पत्र पएण २२६; १७)।

पउर वि [प्रचुर] प्रभूत, बहुत (हे १, १८०, कुमा, सुर ४, ७४)।

पउर वि [पौर] १ पुर-संबन्धी, नगर से सबन्ध रखनेवाला। २ नगर में रहनेवाला (हे १, १६२)।

पउरव पुं [पौरव] पुरुनामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र (संक्षि ६)।

पउराण (अप) देखो पुराण (भवि)।

पउरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-कृत, पुरुष का बनाया हुआ, 'वेदस्स तह यापउरिसभावा' (धर्मसं ८६२)।

पउरिस } पुंन [पौरुष] पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पउरुस } वीरता, मरदानी (हे १, १११, १६२), 'पउरुसा' (प्राप्र), 'पउरुस' (संक्षि ६)।

पउल सक [पच्] पकाना। पउलइ (हे ४, ९०, दे ६, २६)।

पउलण न [पचन] पकाना, पाक (पएह १, १)।

पउलिअ वि [पक्व] पका हुआ (पाग्र)।

पउलिअ वि [प्रज्वलित] दग्ध, जला हुआ (उवा)।

पउल्ल देखो पउल। पउल्लइ (पड्, हे ४, ९० टि)।

पउल्ल वि [पक्व] पका हुआ (पंचा १)।

पउल्लग न [पचनक] रसोई का पात्र (दसवै० बृ० हारि० पत्र ६७, २)।

पउविय वि [प्रकुपित] विशेष कुपित, क्रुद्ध (महा)।

पउस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना। पउसेजा (ओघ २५ भा)।

पउसय वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री. °सिया (ओप)।

पउस्स देखो पउस। पउस्ससि (कुप्र ३७७)। वकृ पउस्सत, पउस्समाण (राज, अंत २२)। संकृ पउस्सिऊण (स ५१३)।

पउहण (अप) देखो पवहण (भवि)।

पऊढ न [दे] गृह, घर (दे ६, ४)।

पए अ [प्रगे] पहले, पूर्व; 'तित्थगरवयणकरणे आयरिआणं कयं पए होइ' (ओघ ४७ भा), 'जइ पुण वियालपत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे' (ओघ १६८)।

पएणियार पुं [प्रैणीचार] व्याध की एक जाति, जो हरिणों को पकड़ने के लिए हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं (पएह १, १—पत्र १४)।

पएर पु [दे] १ वृति-विवर, बाड का छिद्र। २ मार्ग, रास्ता। ३ कण्ठदीनार नामक भूषण-विशेष। ४ गले का छिद्र। ५ दीननाद, आर्त्त-स्वर। ६ वि. दुश्शील, दुराचारी (दे ६, ६७)।

पएस पुं [दे] प्रातिवेश्मिक, पडोसी (दे ६, ३)।

पएस पुं [प्रदेश] १ जिसका विभाग न हो सके ऐसा सूक्ष्म अवयव (ठा १, १)। २ कर्म-दल का संचय (नव ३१)। ३ स्थान, जगह (कुमा ६, ५६)। ४ देश का एक भाग, प्रान्त (कुमा ६)। ५ परिमाण-विशेष, निरंश-अवयव-परिमित माप। ६ छोटा भाग। ७ परमाणु। ८ द्व्यणुक। ९ त्र्यणुक, तीन परमाणुओं का समूह (राज)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म (भग)। °ग्ग न [°ाग्र] कर्मों के दलिकों का परिमाण (भग)। °घण वि [°घन] निबिड प्रदेश (ओप)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (ठा ६)। °णाम पुं [°नाम] कर्म-द्रव्यों का परिणाम (ठा ६)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ सबन्धन (सम ६)। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव वाले कर्मों के रूप में परिणत करना (ठा ४, २)।

पएसण न [प्रदेशन] उपदेश, 'पएसणय णाम उवएसो' (ग्राचू १)।

पएसय वि [प्रदेशक] उपदेशक, प्रदर्शक, 'सिद्धिपहपएसए वंदे' (विसे १०२५)।

पएसि पु [प्रदेशिन्] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था (राय, कुप्र १५५, श्रा ६)।

पएसिणी स्त्री [दे] पडोस में रहनेवाली स्त्री, पड़ोसिनी (दे ६, ३ टी)।

पएसिणी स्त्री [प्रदेशिनी] अंगुष्ठ के पास की उंगली, तर्जनी (ओघ ३६०)।

पएसिय देखो पदेसिय (राज)।

पओअ पु [पयोद] मेघ (दस ७, ५२)।

पओअ देखो पओग (हे १, २४५, अभि ६; सण, पि ८५)।

पओअण न [प्रयोजन] १ हेतु, निमित्त, कारण (सूअ १, १२)। २ कार्य, काम। ३ मतलब (महा, उत्त २३, स्वप्न ४८)।

पओइद (शौ) वि [प्रयोजित] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह (नाट—विक्र १०३)।

पओग पुं [प्रयोग] प्रयोजन (सूअ २,७,२)।

पओग पु [प्रयोग] १ शब्द-योजना (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न 'उप्पाओ दुविगप्पो पओगजणिओ य वीससो चेव' (सम्म २५, ठा ३, १, सम्म १२६, स ५२४)। ३ प्रेरणा (श्रा १४)। ४ उपाय (आव ?)। ५ जीव के प्रयत्न से धारण-कृत मन आदि (ठा ३, ३)। ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ (दसा ४)। °कम्म न [°कर्मन्] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशों के साथ बँधनेवाला कर्म (राज)। °करण न [°करण] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी वस्तु का निर्माण, 'होइ उ एसो जीववावारो तेण जं विणिम्माण पओगकरणं तय बहुहो' (विसे)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मन आदि की चेष्टा (ठा ३, ३)। °फड्डग न [°स्पर्धक] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि द्वारा कर्म-परमाणुओं में बढ़नेवाला रस (कम्मप २३)। °बंध पु [°बन्ध] जीव-प्रयत्न द्वारा होनेवाला बन्धन (भग १८, ३)। °मइ स्त्री [°मति] वाद-विषयक-परिज्ञान (दसा ४)। °संपया स्त्री [°संपत्] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य (ठा ८)। °सा अ [प्रयोगेण] जीव-प्रयत्न से (पि ३६८)।

पओज देखो पउंज = प्र + युज्। पओजए (उव ६४)।

पओजग वि [प्रयोजक] विनियोजक, निर्यामक, गुरु (धर्मसं १२०३)।

पओट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ (प्राप्र, औप; पि ८४)।

पओत्त न [प्रतोत्र] प्राजन, प्राजन-दंड, पैना। °धर पु [°धर] बैलगाड़ी हाँकनेवाला, बैल [illegible] (णाया १, १)।

पओद पु [प्रतोद] ऊपर देखो (औप)।

पओप्पय पु [प्रपौत्रक] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र। २ प्रशिष्य का शिष्य, '[illegible] (उप ११, ११—पत्र ५४८)।

पओप्पिय पु [दे प्रपौत्रिक] १ प्रशिष्य। २ शिष्य-शिष्य, शिष्य का शिष्य ([illegible] ११—पत्र ५४८ टी)।

पओरासि पु [पयोराशि] समुद्र (सम्मत्त १८४)।

पओल पु [पटोल] पटोल, परवर, परोरा (पएण १)।

पओली स्त्री [प्रतोली] १ नगर के भीतर का रास्ता (अणु)। २ नगर का दरवाजा, 'गोउर पओली य' (पाअ, सुपा २६१, श्रा १२ उप पृ ८५, भवि)।

पओवट्टाव देखो पज्जवत्थाव। पओवट्टावेहि (पि २८४)।

पओवाह पु [पयोवाह] मेघ, बादल (पउम ८, ४६, से १, २८, सुर २, ८५)।

पओस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना, वैर करना। पओसइ (सुज्ज १, १४)।

पओस पु [दे प्रद्वेष] प्रद्वेष, प्रकृष्ट द्वेष (ठा १०, भग, राय, आव ८, सुर १५, ५८, पुप्फ ४६५, कम्म १, महानि ४, कुप्र १०, स ६६६)।

पओस पुन [प्रदोष] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल (से १, ३८, कुमा)। २ वि प्रभूत दोषों से युक्त (स २, ११)।

पओहण (अप) देखो पवहण (भवि)।

पओहर पु [पयोधर] १ स्तन, थन (पाअ, से १, २८, गउड, सुर २ ८५)। २ मेघ, बादल (वज्जा १००)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

पंक पुन [पङ्क] १ कर्दम, कीचड़, कादा, कादो, कीच, 'धम्ममिगावि ना लग्ग पंक गवगणगो' (श्रा २८, हे १, ३०, ८, ३५७, प्रासू २५), 'पुण्ड व पंक' (वज्जा १३४)। २ पाप (सूत्र २, २)। ३ असंयम, इन्द्रिय वगैरह का अनिग्रह (निचू १)। °आवलिआ स्त्री [°आवलिका] छन्द-विशेष (पिंग)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-भूमि (ठा ७, इक)। °बहुल वि [°बहुल] १ कर्दम प्रचुर (सम ६०)। २ पाप प्रचुर (सूत्र २, २)। ३ पुन रत्नप्रभा नामक नरक भूमि का प्रथम काण्ड (जीव ३)। °य न [°ज] कमल, पद्म (हे ३, ३८, गउड, कुमा)। °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पंकज देखो पंक-य (सम्मत्त १९८)।

पंका स्त्री [पङ्का] चोथी नरक-भूमि (इक, कम्म ३, ५)।

पंकाभा स्त्री [पङ्काभा] चोथी नरक-पृथिवी (उत्त ३६, १५८)।

पंकावई स्त्री [पङ्कावती] पुष्कल नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी (इक, ज ४)।

पंकिय वि [पङ्कित] पंक-युक्त, कीचवाला (भग ६, ३, भवि)।

पंकिल वि [पङ्किल] कर्दमवाला (श्रा २८, गा ७६६, कप्पू, कुप्र १८७)।

पंकेरुह न [पङ्केरुह] कमल, पद्म (कप्पू, कुप्र १४१)।

पक्ख पुंस्त्री [पक्ष] १ पंख, पाँखि, पाख, पर (पि ७४, राय, पउम ११, ११८, श्रा १४)। २ पनरह दिन, पखवाड़ा (राज)। °ासण न [°ासन] आसन विशेष (राय)।

पक्खि पुंस्त्री [पक्षिन्] पक्षी, चिड़िया, पखी (श्रा १४)। स्त्री °णी (पि ७४)।

पखुडिआ } स्त्री [दे] पंख, पत्र (कुप्र २६, पखुडी } दे ६, ८)।

पग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पगइ (हे ४, ४०६)।

पगण न [प्राङ्गण] आँगन (कुप्र २५०)।

पगु वि [पङ्गु] पाद विकल, खञ्ज, लगड़ा, लूला, ल्याड़ा (पाअ, पि ३८०, पिंग)।

पगुर सक [प्रा + वृ] ढकना, आच्छादन करना। पगुरइ (भवि)। संकृ पगुरिवि (भवि)।

पगुरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपड़ा (हे १, १७५, कुमा, गा ७८२)।

पगुल वि [पङ्गुल] देखो पगु (विपा १, १, स ७५, पाअ)।

पच त्रि व [पञ्चन्] पाँच, ५ (हे ?, १२३, कप्प, कुमा)। °उल न [°कुल] पंचायत (स २२२)। °उलिय पुं [°कुलिक] पंचायत में बैठ कर विचार करनेवाला (स २२२)। °कत्तिय पुं [°कृत्तिक] भगवान् कुन्थुनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १)। °कप्प पुं [°कल्प] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत प्राचीन ग्रन्थ का नाम (पंचभा)। °कल्लाणय न [°कल्याणक] १ तीर्थंकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा,

केवलज्ञान और निर्वाण। २ काम्पिल्यपुर, जहां तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचो कल्याणक हुए थे (ती २४)। ३ तप-विशेष (जीत)। °कोट्ठग वि [°कोष्ठक] १ पाँच कोष्ठो से युक्त। २ पु पुरुष (तदु)। °गव्व न [°गव्य] गाय के ये पाच पदार्थ—दूध, दही, घृत, गोमय और मूत्र, पचगव्य (कप्पू)। °गाह न [°गाथ] गाथाछन्द वाले पाँच पद्य (कस)। °गुण वि [°गुण] पाँचगुना (ठा ५,३)। °चित्त पुं [°चित्र] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचो कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए थे (ठा ५, १ कप्प)। °जाम न [°याम] १ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत। २ वि. जिसमे इन पाँच महाव्रतो का निरूपण हो वह (ठा ६)। °णउइ स्त्री [°नवति] पंचानवे, ९५ (काल)। °णउय वि [°नवत] ९५ वा (काल)। °तालीस (अप) स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] पैतालीस, ४५ (पिंग, पि ४४५)। °तित्थी स्त्री [°तीर्थी] पाँच तीर्थो का समुदाय (धर्म २)। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] पैतीसवाँ, ३५ वाँ (पण्ण ३५)। °दस त्रि ब. [दशन्] पनरह, १५ (कप्पू)। °दसम वि [दशम] पनरहवाँ, १५ वाँ (णाया १, १)। °दसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवी, १५ वी (विसे ५७६)। २ पूर्णिमा। ३ अमावास्या (सुज्ज १०)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वाँ (पउम ११५, २४)। °नउइ देखो °णउइ (पि ४४७), नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव और केवल इन पाँचो ज्ञानो से युक्त, सर्वज्ञ (सम्म ६६)। °पव्वी स्त्री [°पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पचमी ये पाँच तिथियाँ (रयण २६)। °पुव्वासाढ पुं [°पूर्वाषाढ] दसवें जिनदेव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचो कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र मे हुए थे (ठा ५, १)। °पूस पु [°पुष्य] पनरहवें जिनदेव श्रीधर्मनाथ (ठा ५, १)। °बाण पुं [°बाण] कामदेव (सुर ४, २४६, कुमा)। °भूय न न [°भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (सूअ १, १, १)। °भूयवाइ वि [°भूतवादिन्] आत्मा आदि पदार्थो को न मान कर केवल पाँच भूतो को ही माननेवाला, नास्तिक (सूअ १, १, १)। °महव्वइय वि [°महाव्रतिक] पाँच महाव्रतोवाला (सूअ २, ७)। °महव्वय न [°महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग (पण्ह २, ५)। °महाभूय न [°महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (विसे)। °मुट्ठिय वि [°मुष्टिक] पाँच मुष्टियो का पाँच मुष्टियो से पूर्ण किया जाता (लोच) (णाया १, १, कप्प, महा)। °मुह पुं [°मुख] सिंह, पचानन (उप १०३१ टी)। °यसी देखो °दसी (पउम ६६, १४)। °रत्त, °राय पुं [°रात्र] पाँच रात (मा ४३, पण्ह २, ५—पत्र १४६)। °रासिय न [°राशिक] गणित-विशेष (ठा ४, ३)। °रूविय वि [°रूपिक] पाँच प्रकार के वर्णवाला (ठा ४, ४)। °वत्थुग न [°वस्तुक] आचार्य हरिभद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष (पचव १, १)। °वरिस वि [°वर्ष] पाच वर्ष की अवस्थावाला (सुर २, ७३)। °विह वि [°विध] पाँच प्रकार का (अणु)। °वीसइम वि [°विंशतितम] पचीसवाँ (पउम २५, २६)। °संगह पु [°संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिकृत एक जैन ग्रन्थ (पंच १)। °संवच्छरिय वि [°सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाणवाला, पाँच वर्ष की आयुवाला (सम ७५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] पैंसठवाँ, ६५ वाँ (पउम ६५, ५१)। °सट्ठि स्त्री [षष्टि] पैंसठ, ६५ (कप्प)। °समिय वि [°समित] पाँच समितियो का पालन करनेवाला (स ८)। °सर पु [°शर] कामदेव (पाअ, सुर २, ६३, सुपा ६०, रभा)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष (दीव)। °सुण्ण न [°शून्य] पाँच प्राणिवध-स्थान (सूअ १, १, ४)। °सुत्तग न [°सूत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि-निर्मित एक जैन ग्रन्थ (पसू १)। °सेल, °सेलग, °सेलय पुं [°शैल, °क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतो से विभूषित एक छोटा द्वीप (महा, बृह ४)। °सोगंधिअ वि [°सौगन्धिक] इलायची, लवग, कपूर, कक्कोल और जातीफल—जायफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओ से सस्कृत, 'नन्नत्थ पञ्चसोगंधिएण तंबोलेणं, अवसेसमुह वासविहिं पच्चक्खामि' (उवा)। °हत्तर वि [°सप्तत] पचहत्तरवा, ७५ वाँ (पउम ७५, ८६)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ सख्या विशेष ७५। २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे (पि २६४, कप्प)। °हत्थुत्तर पुं [°हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पाँचो कल्याणक उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र मे हुए थे (कप्प)। °ाउह पुं [°ायुध] कामदेव (सण)। °ाणउइ स्त्री [°नवति] १ सख्या-विशेष, पचानवे, ९५। २ जिनकी सख्या पचानवे हो वे (सम ९७, पउम २०, १०३, पि ४४०)। °ाणउय वि [°नवत] पचानवाँ, ९५ वाँ (पउम ९५, ६६)। °ाणण पु [°ानन] सिंह, गजेन्द्र (सुपा १७६, भवि)। °ाणुव्वइय वि [°ाणुव्रतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्यागवाला (उवा, औप, णाया १, १२)। °ायाम देखो °जाम (बृह ६)। °ास स्त्रीन [°ाशत्] १ संख्या-विशेष, पचास, ५०। २ जिनकी सख्या पचीस हो वे, 'पचासं अज्जियासाहस्सीओ' (सम ७०)। °ासग न [°ाशक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिकृत एक जैन ग्रन्थ (पचा)। °ासीइ स्त्री [°ाशीति] १ सख्या विशेष, अस्सी और पाँच, ८५। २ जिनकी सख्या पचासी हो वे (सम ९२, पि ४४६)। °ासीइम वि [°ाशीतितम] पचासीवा, ८५ वा (पउम ८५, ३१, कप्प, पि ४४६)।

पचंअण्ण देखो पचजण्ण (गउड)।

पचग न [पञ्चाङ्ग] १ दो हाथ, दो जानु और मस्तक ये पाँच शरीरावयव। २ वि पूर्वोक्त पाँच अगवाला (प्रणाम आदि), 'पचगं करिय ताहे पणिवायं' (सुर ४, ६८)।

पचगुलि पुं [दे] एरण्ड-वृक्ष, रेडी का गाछ (दे ६, १७)।

पंचगुलि पु [पञ्चाङ्गुलि] हस्त, हाथ (णाया १, १, कप्प)।

पंचगुलिआ स्त्री [पञ्चाङ्गुलिका] वल्ली-विशेष (पराग १—पत्र ३३)।

पंचग वि [पञ्चक] पाँच (रुपया आदि) की कीमत का (दसनि ३, १३)।

पंचग न [पञ्चक] पाँच का समूह (आचा)।

पंचजण्ण पु [पाञ्चजन्य] श्रीकृष्ण का शंख (काप्र ८६२, गा ६७४)।

पंचत्त } न [पञ्चत्व] १ पाँचपन, पञ्च-
पंचत्तण } रूपता (सुर १, ५)। २ मरण, मौत (सुर १, ५, मण, उप पृ १२४)।

पंचपुंड वि [पञ्चपुण्ड्र] पाँच स्थानो में पुण्ड्र-चिह्न (सफेदी) वाला (पिंड भा ४३)।

पंचपुल पुन [दे] मत्स्य-बन्धन विशेष, मछली पकड़ने का जाल विशेष (विपा १, ८—पत्र ८४ टी)।

पंचम वि [पञ्चम] १ पाँचवाँ (उवा)। २ पु. स्वर-विशेष (ठा ७)। °धारा स्त्री [°धारा] अश्व की एक तरह की गति (महा)।

पंचमहब्भूइअ वि [पाञ्चमहाभूतिक] पंच महाभूतों को माननेवाला, सांख्यमत का अनुयायी (सूअ २, १, २०)।

पंचमासिअ वि [पाञ्चमासिक] १ पाँच मास की उम्र का। २ पाँच मास में पूर्ण होनेवाला (अभिग्रह आदि)। स्त्री. °आ (सम २१)।

पंचमिय वि [पाञ्चमिक] पाँचवाँ, पञ्चम (ओघ ६१)।

पंचमी स्त्री [पञ्चमी] १ पाँचवीं (आचा)। २ तिथि-विशेष, पंचमी तिथि (सम २९, श्रा २८)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति (पव)।

पंचयन्न देखो पंचजण्ण (गाथा १, १६, सुपा २६८)।

पंचलोइया स्त्री [पञ्चलौकिका] चतुरिन्द्रिय-विशेष जाति के चार-इन्द्रियवाले क्षुद्र-जातीय प्राणी की एक जाति (जीव २)।

पंचवटी स्त्री [पञ्चवटी] पाँच वट-वृक्षवाला [illegible] जहाँ [illegible] किया था, इस स्थान का अस्तित्व कई लोग 'नासिक' नगर के पास गोदावरी नदी के किनारे मानते हैं, जब कि आधुनिक गवेषक लोग वस्तर रजवाडे के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते हैं (उत्तर ८१)।

पंचवयण पु [पञ्चवदन] सिंह, मृगराज (सम्मत्त १३८)।

पंचामय न [पञ्चामृत] ये पाँच वस्तु—दही, दूध, घी, मधु तथा शक्कर (सिरि २१८)।

पंचाल पुं [पाञ्चाल] कामशास्त्र-प्रणेता एक ऋषि (सम्मत्त १३७)।

पञ्चाल पु व [पञ्चाल, पाञ्चाल] १ देश-विशेष, पञ्जाब देश (णाया १, ८, महा, पएण १)। २ पु पञ्जाब देश का राजा (भवि)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

पंचालिआ स्त्री [पञ्चालिका] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा (कप्पू)।

पंचालिआ स्त्री [पाञ्चालिका] १ द्रुपद राज की कन्या, द्रौपदी (वेणी १५८)। २ गान का एक भेद (कप्पू)।

पंचावण्ण } स्त्रीन [दे पञ्चपञ्चाशत्] १
पंचावन्न } संख्या-विशेष, पचपन, ५५। २ जिनकी संख्या पचपन हो वे (हे २, १७४, दे २, २७, दे २, २७ टि)।

पंचावन्न वि [दे पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ (पउम ५५, ६१)।

पंचिंदिय } वि [पञ्चेन्द्रिय] १ वह जीव
पंचिंद्रिय } जिसको त्वचा, जीभ, नाक, आँख और कान ये पाँचो इन्द्रियाँ हों (पएण १, मण, जीव १, भवि)। २ न त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ (धर्म ३)।

पंचिया स्त्री [पञ्चिका] १ पाँच की संख्या-वाला। २ पाँच दिन का (वव १)।

पंचुंबर स्त्रीन [पञ्चोदुम्बर] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल (भवि)। स्त्री. °री (श्रा २०)।

पंचुत्तरसय वि [पञ्चोत्तरशततम] एक सौ पाँचवाँ, १०५ वाँ (पउम १०५, ११५)।

पंचेडिय वि [दे] विनाशित, 'जेण तोयम्स सोहत्तण फेडियं दुट्ठदंदप्पदप्प च पंचेडियं' (भवि)।

पंचेसु पु [पञ्चेषु] कामदेव, कंदर्प (कप्पू, रंभा)।

पंछि पु [पक्षिन्] पक्षी, पखी, पखेरू, चिड़िया (उप १०३१ टी)।

पंजर पुन [पञ्जर] १ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक आदि मुनि-गण। २ उन्मार्ग-गमन-निषेध, सन्मार्ग-प्रवर्तन। ३ स्वच्छन्दता-प्रति-षेध (वव १)।

पंजर न [पञ्जर] पिंजरा, पिंजडा (गउड, कप्पू, अच्चु २)।

पंजरिअ पु [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ४२७)।

पंजरिय वि [पञ्जरित] पिंजरे में बंद किया हुआ (गउड)।

पंजल वि [प्राञ्जल] सरल, सीधा, ऋजु (सुपा ३९४, वज्जा ३०)।

पंजलि पुंस्त्री [प्राञ्जलि] प्रणाम करने के लिए जोडा हुआ कर-संपुट, हस्त न्यास-विशेष, संयुक्त कर-द्वय (उवा)। °उड पु [°पुट] अञ्जलि-पुट, संयुक्त कर-द्वय (सम १५१, औप)। °उड, °कड वि [कृतप्राञ्जलि] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोडा हो वह (भग, औप)।

पंजिअ न [दे] यथेच्छ दान, मुँह-माँगा दान, 'रायकुलेसु भमतो पंजिमदाएा पगिएहेइ' (सिरि ११८)।

पंड वि [पाण्ड्य] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री °डी, 'पंडीए गंडवालीपुलमणचवला' (कप्पू)।

पंड } पु [पण्ड, °क] १ नपुंसक, क्लीब
पंडग } (ओघ ४६७, सम १५, पात्र)। २
पंडय } न मेरु पर्वत का एक वन (ठा २, ३, इक)।

पंडय देखो पंडव (हे १, ७०)।

पंडर पु [पाण्डर] १ क्षीरवर नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव (राज)। २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग। ३ वि. श्वेतवर्णवाला, सफेद (कप्प)। °भिक्खु पु [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का मुनि (स ५५२)।

पंडर देखो पंडुर (स्वप्न ७१)।

पंडरंग पु [दे] रुद्र, महादेव, शिव (दे ६, २३)।

पंडरज्जु पु [दे] ग्रामेश, गाँव का अधिपति (षट्)।

पंडरिय देखो पंडुरिअ (भवि)।

पंडव पुं [पाण्डव] राजा पाण्डु का पुत्र—१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल (णाया १, १६, उप ६४८ टी)।

पडव पुं [दे] अश्व-रक्षक (?), 'सिट्ठि सुहडेहिं तासियपडववयणेहिं नरवरो रुट्ठो' (सम्मत्त २१६)।

पडविअ वि [दे] जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ (दे ६, २०)।

पडिअ वि [पण्डित] १ विद्वान्, शास्त्रों के मर्म को जाननेवाला, बुद्धिमान्, तत्वज्ञ, 'कामज्झया गाम गणिया होत्था बावत्तरी-कलापंडिया' (विपा १, २, प्रासू ७४, १२६)। २ संयत, साधु (सूअ १, ८, ६)। °मरण न [°मरण] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष (भग, पच्च ४६)। °माण वि [°म्मन्य] विद्याभिमानी, निज को पण्डित माननेवाला, दुर्विदग्ध, अधपका, मूर्ख, अनाडी (ओघ २७ भा)। °माणि वि [°मानिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०५, २१, उप १३४ टी)। °वीरिअ न [°वीर्य] संयत का आत्म-बल (भग)।

पंडिअमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] पंडिताई का अभिमान रखनेवाला, विद्वत्ता का घमंड रखनेवाला (चेइय १६)।

पंडिच्च } न [पाण्डित्य] पण्डिताई,
पंडित्त } विद्वत्ता, वैदुष्य (उव, सुर १२, ६८, सुपा २६, रंभा, सं ५७)।

पंडी देखो पड = पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो पंडिअ (पिंग)।

पंडु पुं [पाण्डु] १ नृप-विशेष, पाण्डवो का पिता (उप ६४८ टी, सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग (ज १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण। ४ श्वेत वर्ण। ५ वि. शुक्ल और पीतवर्णवाला (कप्पू, गउड)। ६ सफेद, श्वेत, 'सेअं सिअं वलक्खं अवदाय पंडु धवलं च' (पाअ, गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डुकम्बला नामक शिला (ज ४, इक)। °कम्बलसिला स्त्री [°कम्बलशिला] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवों का जन्माभिषेक किया जाता है (ज ४)। °कंबला स्त्री [°कम्बला] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ३)। °तणय पुं [°तनय] पाण्डु-राज का पुत्र, पाण्डव (गउड ४८५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि, जो आर्य संभूति-विजय के शिष्य थे (कप्प)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी (जीव १, पण्ण १—पत्र २५)। °महुरा स्त्री [°मथुरा] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों द्वारा बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम (णाया १, १६—पत्र २२५, अंत)। °राय पुं [°राज] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता (णाया १, १६)। °सुय पु [°सुत] पाण्डव (उप ६४८ टी)। °सेण पु [°सेन] पाण्डवों का द्रोपदी से उत्पन्न एक पुत्र (णाया १, १६, उप ६४८ टी)।

पंडुइय वि [पाण्डुकित] १ श्वेत रंग का किया हुआ (णाया १, १—पत्र २८)।

पंडुग } पु [पाण्डक] १ चक्रवर्ती का धान्यों
पंडुय } की पूर्त्ति करनेवाला एक निधि (राज, ठा २, १—पत्र ४४, उप ९८६ टी)। २ सर्प की एक जाति (आचू १)। ३ न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन (सम ६६)।

पंडुर पु [पाण्डुर] १ श्वेत वर्ण, सफेद रंग। २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण। ३ वि. सफेद वर्ण-वाला। ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्णवाला (कप्प, उव, से ८, ४६)। °ज्जा स्त्री [°ार्या] एक जैन साध्वी का नाम (आवम)। °त्थिय [°ास्थिक] एक गाँव का नाम (आचू १)।

पंडुरंग पुं [पाण्डुराङ्ग] संन्यासी की एक जाति, भस्म लगानेवाला संन्यासी (अणु २४)।

पंडुरग } पु [पाण्डुरक] १ शिव-भक्त
पंडुरय } संन्यासियों की एक जाति (णाया १, १५—पत्र १९३)। २ देखो पंडुर, 'केसा पंडुरया हवंति ते' (उत्त ३)।

पंडुरिअ } वि [पाण्डुरित] पाण्डुर वर्ण-
पंडुरइय } वाला बना हुआ (गा ३८८, विपा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [प्रान्त] १ अन्तवर्ती, अन्तिम (भग ६, ३३)। २ अशोभन, असुन्दर (आचा, ओघ १७ भा)। ३ इन्द्रियों के अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल (पण्ह २, ५)। ४ अभद्र, असभ्य, अशिष्ट (ओघ ३६ टी)। ५ अपसद, नीच, दुष्ट (णाया १, ८)। ६ दरिद्र, निर्धन (ओघ ६१)। ७ जीर्ण, फटा-टूटा, 'पंत-वत्थ—' (बृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट, 'णिप्फावचणगमाई अंत, पंत च होइ वावन्नं' (बृह १, आचा)। ९ नीरस, सूखा (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ। ११ पर्युषित, बासी (णाया १, ५—पत्र १११)। °कुल न [°कुल] नीच कुल, जघन्य जाति। (ठा ८)। °चर वि [°चर] नीरस आहार की खोज करनेवाला तपस्वी (पण्ह २, १)। °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १)। °ाहार वि [°ाहार] रूखा-सूखा आहार करनेवाला (ठा ५, १)।

पंताव सक [दे] ताडन करना, मारना। पंतावे (पिंड ३२५)।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] १ पंक्ति, श्रेणी, कतार (हे १, २५, कुमा, कप्प)। २ सेना-विशेष, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोडे और पाँच पदाती हो ऐसी सेना (पउम ५६, ४)।

पंति स्त्री [दे] वेणी, केश-रचना (दे ६, २)।

पंतिय स्त्रीन [पङ्क्ति] पंक्ति, श्रेणी, 'सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)। स्त्री. 'पंतियाओ' (अणु)।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता, 'पंथ किर देसित्ता' (हे १, ८८), 'पंथम्मि पह-परिब्भट्ठ' (सुपा ५५०, हेका ५४, प्रासू १७३)।

पंथ पुं [पान्थ] पथिक, मुसाफिर (हे १, ३०, अच्चु ७४)। °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीटकर मुसाफिरों को लूटना (णाया १, १८)। °कोट्ट पु [°कुट्ट] वही अर्थ (विपा १, १—पत्र ११)। °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ, 'से चोरसेणावई गामघाय वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति' (णाया १, १८)।

पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि (णाया १, ५, धम्म ६ टी)।

पयाण देखो पथ = पथ, पथिन् 'पयम्मि पयाणम्मि' (प्राकृ ११)।

पथिअ पु [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर, पान्थ, 'पहिअ ण एत्थ सत्थर' (काप्र १५८, महा, सुपा, गा ? ८, वज्जा ६०, १५८)।

पथुच्छुहणी स्त्री [दे] श्वशुर-गृह से पहली बार आनीत स्त्री (दे ६, ३५)।

पथुज वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ६, १२)।

पफुट्ट वि [प्रफुट] विकसित (सिरि)।

पफुडिअ वि [दे] चोरित, जिसकी चोरी की गई हो वह (दे ६, १७)।

पंस सक [पांसय्] मलिन करना। पंसेइ (सिरि १०५७)।

पंसण वि [पांसन] कलङ्कित करनेवाला, दूषण लगानेवाला (हे १, ७०, सुपा ३८५)।

पंसु पु [पांसु, पांशु] धूली, रज, रेणु (हे २६, पाअ, आचा)। °कीलिय, °खेलिय वि [°क्रीडित] जिसके साथ बचपन में पांशु क्रीडा की गई हो वह, बचपन का दोस्त (महा, णाया)। °पिसाय पुंस्त्री [°पिशाच] जो धूलि-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह (उत्त १२)। °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य विशेष (राज)।

पंसु पु [पर्शु] कुठार, फरसा (हे १, २६)।

पंसु देखो पंसु (षड्)।

पंसुवार पु [पांशुवार] एक देश का नाम, उत्तर भारत (दस ३, ८)।

पंसुल पुं [दे] १ कोकिल, कोयल। २ जार, उपपति (दे ६, ६६)। ३ वि रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।

पंसुल पु [पांसुल] १ पुंश्चल, परस्त्री-लम्पट (गा ५१०, ५६६)। २ वि धूलि-युक्त (गउड)।

पंसुला स्त्री [पांसुला] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (कुमा)।

पंसुलिअ वि [पांसुलित] धूलि-युक्त किया हुआ, 'कर्णं पंसुलिअं' (गउड)।

पंसुलिआ स्त्री [दे पांसुलिका] पार्श्व की हड्डी (तंदु २४१)।

पंसुली स्त्री [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (पात्र, सुर १५, २, हे २, १७९)।

पकंथ देखो पगंथ (आचा १, ६, २)।

पकंथग पु [प्रकन्थक] अश्व विशेष, एक प्रकार का घोड़ा (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

पकंप पु [प्रकम्प] कम्प, कांपना (आव ४)।

पकंपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो (सुपा ६५१)।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ (आव २)।

पकंपिर वि [प्रकम्पितृ] कांपनेवाला (उप पृ १३२)। स्त्री °री (रंभा)।

पकड वि [प्रकृत] १ प्रस्तुत, प्रक्रान्त, उपस्थित, असली, सच्चा (भग ७, १०—पत्र ३२४, १८, ७—पत्र ३५०)। २ कृत, निर्मित (भग १८, ७)।

पकड देखो पगड = प्रकट (भग ७, १०)।

पकड्ढ देखो पगड्ढ। वकृ पकड्ढिज्जमाण (औप)।

पकड्ढ वि [प्रकृष्ट] १ प्रकर्ष-युक्त। २ खींचा हुआ (औप)।

पकड्ढण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव (निचू २०)।

पकत्थ सक [प्र + कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा करना। पकत्थइ (सूत्र १, ४, १, १६, पि ५४३)।

पकप्प अक [प्र + क्लृप्] १ काम में आना, उपयोग में आना। २ काटना, छेदना। कृ पकप्प (ठा ५, १—पत्र ३००)। देखो पगप्प = प्र + कल्प्।

पकप्प सक [प्र + कल्पय्] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना, 'वासं वय वित्ति पकप्पयामो' (सूत्र २, ६, ५२)।

पकप्प पु [प्रकल्प] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण (ठा ८, ३)। २ अपवाद, बाधक नियम (उप ६७७ टी, निचू १)। ३ अध्ययन-विशेष 'आचाराङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन। ४ व्याख्यान, 'अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे' (सम २८)। ५ कल्पना। ६ प्ररूपणा। ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन (निचू १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-कल्प (पचभा)। ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष (सुज २०)। °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र (जीव १)। °जइ पु [°यति] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु, 'धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो' (धर्म १)। °धर वि [°धर] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार (निचू २०)। देखो पगप्प = प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] प्ररूपणा, व्याख्या, 'परूवणा त्ति वा पकप्पणा त्ति वा एगट्ठा' (निचू १)।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] कल्पना (चेइय १८१, श्रज्झ १४२)।

पकप्पधारि वि [प्रकल्पधारिन्] 'निशीथ' सूत्र का जानकार (वव १)।

पकप्पि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो (वव १)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] काटा हुआ, 'एसा परजुत्तिलया एएण पकपि (? कप्पि)। आ णेआ' (अज्झ १०२)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] १ सकल्पित (द्र २)। २ निर्मित (महा)। ३ न. पूर्वोपार्जित द्रव्य, 'ण णो अत्थि पकप्पियं' (सूत्र १, ३, ३, ४)। देखो पगप्पिअ।

पकय वि [प्रकृत] प्रवृत्त, कार्य में लगा हुआ (उप ६२०)।

पकर सक [प्र + कृ] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकरेइ, पकरंति, पकरेंति (भग, पि ५०६)। वकृ पकरमाण (भग)। सकृ. पकरित्ता (भग)।

पकर देखो पयर = प्रकर (नाट—वेणी ७२)।

पकरणया स्त्री [प्रकरणता] करण, कृति (भग)।

पकहिअ वि [प्रकथित] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह (उप १०३१ टी, वसु)।

पकाम न [प्रकाम] १ अत्यर्थ, अत्यन्त (णाया १, १, महा, नाट—शकु २७)। २ पुं प्रकृष्ट अभिलाष (भग ७, ७)।

पकाव (अप) सक [पच्] पकाना। पकावउ (सिरि, पि ५५४)।

पकास देखो **पयास** = प्रकाश (पिंग)।

पकिट्ठ देखो **पगिट्ठ** (राज)।

पकिण्ण वि [प्रकीर्ण] १ उप्त, बोया हुआ। २ दत्त, दिया हुआ, 'जहिं पकिण्णा (? भा) विरुहंति पुण्णा' (उत्त १२, १३)। देखो **पइण्ण** = प्रकीर्ण।

पकित्तिअ वि [प्रकीर्त्तित] वर्णित, कथित (श्रु १०८)।

पकिदि देखो **पगइ** = प्रकृति (प्राकृ १२)।

पकिदि (शौ) देखो **पइइ** = प्रकृति (स्वप्न ६०, अभि ६५)।

पकिन्न देखो **पकिण्ण** (उत्त १२, १३)।

पकिरण न [प्रकिरण] देने के लिए फेंकना (वव १)।

पकुण देखो **पकर** = प्र + कृ। पकुणइ (कम्म १, ६०)।

पकुप्प अक [प्र + कुप्] क्रोध करना, गुस्सा करना। पकुप्पति (महानि ४)।

पकुप्पित (चूपै) वि [प्रकुपित] क्रुद्ध, कुपित, गुस्साया हुआ (हे ४, ३२६)।

पकुविअ ऊपर देखो (महानि ४)।

पकुव्व सक [प्र + कृ, प्र + कुर्व्] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकुव्वइ (पि ५०८)। वकृ. **पकुव्वमाण** (सुर १६, २४, पि ५०८)।

पकुव्वि वि [प्रकारिन्, प्रकुर्विन्] १ करनेवाला, कर्ता। २ पु प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुरु (द्र ४६, ठा ८, पुष्फ ३५६)।

पकूविअ वि [प्रकूजित] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ (उप पृ ३३२)।

पकोट्ठ देखो **पओट्ठ** (राज)।

पकोव पु [प्रकोप] गुस्सा, क्रोध (श्रा १४)।

पक्क वि [पक्व] पका हुआ (हे १, ४७, २, ७९, पाअ)।

पक्क वि [दे] १ दृप्त, गर्वित। २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ (दे ६, ६४, पाअ)।

पक्कंत वि [प्रक्रान्त] प्रस्तुत, प्रकृत (कुमा २७)।

पक्कग्गाह पु [दे] १ मकर, मगरमच्छ (दे ६, २३)। २ पानी में बसनेवाला सिंहाकार जल-जन्तु (से ५, ५७)।

पक्कण वि [दे] १ असहन, असहिष्णु। २ समर्थ, शक्त (दे ६, ६९)। ३ पुं चाण्डाल (स ६३)। ४ एक अनार्य देश। ५ पुस्त्री अनार्य देश-विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (औप, राज)। स्त्री °णी (णाया १,१, औप, इक)। ६ पु एक नीच जाति का घर, शबर-गृह (परा ५२)। °उल न [°कुल] १ चाण्डाल का घर (बृह ३)। २ एक गर्हित कुल, 'पक्कणउले वसंतो सउणी इयरोवि गरहिओ होइ' (आव ३)।

पक्कणि वि [दे] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ। २ भग्न, भाँगा हुआ। ३ प्रियवद, प्रियभाषी (दे ६, ६५)।

पक्कणिय पुस्त्री [दे] एक अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (पण्ह १, १—पत्र १४, इक)।

पक्कन्न न [पक्वान्न] केवल घी में बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि (सुपा ३८७)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] प्रकर्ष से समर्थ होना। पक्कमइ (भग १५—पत्र ६७८)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] १ प्रकर्ष से जाना, चला जाना गमन करना। २ अक प्रयत्न होना। प्रवृत्ति होना। पक्कमई (उत्त ३, १३)। पक्कमति (उत्त २७, १४, दस ३, १३), 'अणुसासणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११)।

पक्कम पु [प्रक्रम] प्रस्ताव, प्रसंग (सुपा ३७४)।

पक्कमणी स्त्री [प्रक्रमणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

पक्कल वि [दे] १ समर्थ, शक्त (हे २, १७४, पाअ, सुर ११, १०४, वज्जा ३४)। १ दर्प-युक्त, गर्वित (सुर ११, १०४, गा ११८)। ३ प्रौढ, 'चत्तारि पक्कलवइल्ला' (गा ८१२, पि ४३९)।

पक्कस देखो **वक्कस** (आचा)।

पक्कसावअ पु [दे] १ शरभ। २ व्याघ्र (दे ६, ७५)।

पक्काइय वि [पक्वीकृत] पकाया हुआ, 'पक्काइयमाउलिंगसारिच्छा' (वज्जा ६२)।

पक्किर सक [प्र + कृ] फेंकना। वकृ 'छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं **पक्किरमाणा**' (णाया १ २)।

पक्कीलिय वि [प्रक्रीडित] जिसने क्रीडा का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १, कप्प)।

पक्केल्लय वि [पक्व] पका हुआ (उवा)।

पक्ख पुं [पक्ष] वेदिका का एक भाग (राय ८२)।

पक्ख पुं [पक्ष] १ पाख, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन-रात (ठा २, ४—पत्र ८६ कुमा)। २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजेला और अँधेरा पाख (जीव ३, हे २ १०६)। ३ पार्श्व, पंजर, कन्धा के नीचे का भाग। ४ पक्षियों का अवयव-विशेष, पंख, पर, पतत्र (कुमा)। ५ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्यवाली वस्तु (विसे २८२४)। ६ तरफ, ओर। ७ जत्था, दल, टोली। ८ मित्र, सखा। ९ शरीर का आधा भाग। १० तरफदार। ११ तीर का पंख (हे २, १४७)। १२ तरफदारी (वव १)। °ग वि [°ग] पक्ष-गामी, पक्ष पर्यन्त स्थायी (कम्म १, १८)। °पिंड पुन [°पिण्ड] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर वस्त्र बाँध कर बैठना। २ दोनों हाथों से शरीर का बन्धन कर बैठना (उत्त १, १९)। °य पु [°क] पंखा, ताल-वृन्त (कप्प)। °वंत वि [°वत्] तरफ-दारीवाला (वव १)। °वाइह वि [°पातिन्] पक्षपात करनेवाला, तरफदारी करनेवाला (उप ७२८ टी, धम्म १ टी)। °वाद पुं [°पात] तरफदारी (उप ६७०, स्वप्न ४५)। °वादि (शौ) देखो °वाइह (नाट—विक्र २, मालती ६५)। °वाय देखो °वाद (सुपा २०६, २६३)। °वाय पु [°वाद] पक्ष-सम्बन्धी विवाद (उप पृ ३१२)। °वाह पुं [°वाह] वेदिका का एक देश विशेष (ज १)। °विडिअ वि [°पतित] पक्ष-पाती (हे ४, ४०१)। °वाइया स्त्री [°वापिका] होम-विशेष (स ७५७)।

पक्खंत न [पक्षान्त] अन्यतर इन्द्रिय-जात, 'अन्नयरं इंदियजायं पक्खंतं भएणइ' (निचू ६)।

पक्खंतर न [पक्षान्तर] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष (नाट—महावी २५)।

पक्खंद सक [प्र + स्कन्द्] १ आक्रमण करना। २ दौड़कर गिरना। ३ अध्यवसाय करना 'पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं' (राज), 'अग्गिं व पक्खंद पयंगसेणा' (उत्त १२, २७)।

पक्खंदण न [प्रस्कन्दन] १ आक्रमण। २ अध्यवसाय। ३ दौड़कर गिरना (निचू ११)।

पक्खंदोलग पु [पक्ष्यन्दोलक] पक्षी का हिंडोला, झूला (राय ७५)।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह (सूअ १, ५, २)।

पक्खडिअ वि [दे] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न, 'पागरिए सिहिपडिरवे विरहे' (दे ६, २०)।

पक्खर सक [सं + नाहय्] संनद्ध करना, अश्व को कवच से सज्जित करना। पक्खरेह (सुपा २८८)। संकृ पक्खरिअ (पिंग)।

पक्खर पुं [प्रक्षर] क्षरण, टपकना (कर्पूर २६)।

पक्खर पुं [दे] जहाज की रक्षा का एक उपकरण, सामग्री (सिरि ३८७)।

पक्खर न [दे] पाखर, अश्व-संनाह, घोड़े का बख्तर (कुप्र ४४६, पिंग)।

पक्खरा स्त्री [दे] पाखर, अश्व-संनाह (दे ६, १०). 'ओसारियपक्खरं' (विपा १, २)।

पक्खरिअ वि [संनद्ध] कवचित, संनद्ध, कवच से सज्जित (अश्व) (सुपा ५०२, कुप्र १२०, सवि)।

पक्खल अक [प्र + स्खल्] गिरना, पड़ना, स्खलित होना। पक्खलइ (भग)। वकृ. पक्खलंत, पक्खलमाण (दस ५, १, पि ३०६ नाट—मृच्छ १७, वृह ६)।

पक्खाउज्ज न [पक्षातोद्य] पखाउज, पखावज, एक प्रकार का बाजा, मृदंग (कप्पू)।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (प्राप)।

पक्खारिण पुं [प्रक्षारिण] १ अनार्य-देश विशेष। २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य। स्त्री °णी (राय)।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय्] पखारना, शुद्ध करना, धोना। कवकृ पक्खालिज्जमाण (णाया १, ५)। संकृ पक्खालिअ, पक्खालिऊण (नाट—चैत ४०, महा)।

पक्खालण न [प्रक्षालन] पखारना, धोना (स ५२, औप)।

पक्खालिअ वि [प्रक्षालित] पखारा हुआ, धोया हुआ (औप, भवि)।

पक्खासण न [पक्ष्यासन] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षियों का चित्र हो ऐसा आसन (जीव ३)।

पक्खि पुंस्त्री [पक्षिन्] पाखी, पक्षी (ठा ४, ४, आचा, सुपा ५६२)। स्त्री. °णी (श्रा १४)। °विराल पुंस्त्री [°विराल] पक्षि-विशेष (भग १३, ६)। स्त्री. °ली (जीव १)। °राय पु [°राज] गरुड़ (सुपा २१०)। नीचे देखो।

पक्खिअ पुंस्त्री [पक्षिक] १ ऊपर देखो (श्रा २८)। २ वि पक्षपाती, तरफदारी करनेवाला, 'तप्पक्खिओ पुणो अण्णो' (श्रा १२)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] स्वजन, ज्ञाति का (पव २६८)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] १ पक्ष में होनेवाला। २ पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला, अर्ध-मास सम्बन्धी (कप्प, धर्म २)। ३ न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी (लहुअ १६, द्र ४५)। °पक्खिअ पु [°पक्षिक] नपुंसक-विशेष, जिसको एक पक्ष में तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नपुंसक (पुप्फ १२७)।

पक्खिआयण न [पाक्षिकायन] गोत्र विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

पक्खिण देखो पक्खि, 'जह पक्खिणाण गरुडो' (पउम १४, १०४)।

पक्खिणी देखो पक्खि।

पक्खित्त वि [प्रक्षिप्त] फेंका हुआ (महा, पि १८२)।

पक्खिनाह पुं [पक्षिनाथ] गरुड पक्षी (धर्मवि ८४)।

पक्खिप्प
पक्खिप्पमाण } देखो पक्खिव।

पक्खिव सक [प्र + क्षिप्] १ फेंकना, फेंक देना। २ छोड़ना, त्यागना। ३ डालना। पक्खिवइ (महा, कप्प)। पक्खिवइ (महा, कप्प)। पक्खिवह, पक्खिवेज्जा (आचा २, ३, २, ३)। कवकृ. पक्खिप्पमाण (णाया १, ८—पत्र १२६, १४७)। संकृ. पक्खिवऊण, पक्खिप्प (महा, सूअ १, ५, १, पि ३१६)। कृ. पक्खिवेयव्व (उप ६४८ टी)। प्रयो. वकृ. पक्खिवावेमाण (णाया १, १२)।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण, 'अहं पक्खीणविभवो' (महा)।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, असंपूर्ण (सुपा ११६)।

पक्खुब्भ अक [प्र + क्षुभ्] १ क्षोभ पाना। २ वृद्ध होना, बढ़ना। वकृ. पक्खुब्भत (से २, २४)।

पक्खुब्भत देखो पक्खोभ।

पक्खुभिय वि [प्रक्षुभित] क्षोभ प्राप्त, प्रक्षुब्ध (औप)।

पक्खेव पु [प्रक्षेप] शास्त्र में पीछे से किसी के द्वारा डाला या मिलाया हुआ वाक्य (धर्मसं १०११)। °हार पु [°हार] कवलाहार (सूअनि १७१)।

पक्खेव
पक्खेवग } पु [प्रक्षेप, °क] १ क्षेपण, फेंकना, 'वहिया पोग्गलपक्खेवे' (उवा)। २ पूर्ति करनेवाला द्रव्य, पूर्ति के लिए पीछे से डाली जाती वस्तु, 'अपक्खेव-गस्स पक्खेवं दलयइ' (णाया १, १५—पत्र १९३)।

पक्खेवण न [प्रक्षेपण] क्षेपण, प्रक्षेप (औप)।

पक्खेवय देखो पक्खेवग (वृह १)।

पक्खोड सक [वि + कोशय्] १ खोलना। २ फैलाना। पक्खोडइ (हे ४, ४२)। संकृ. पक्खोडिऊण (सुपा ३३८)।

पक्खोड सक [शद्] १ कँपाना। २ झाड़कर गिराना। पक्खोडइ (हे ४, १३०)। संकृ. पक्खोडिय (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र + छादय्] ढकना, आच्छादन करना । सक्र पक्खोडिय (उप ५८४) ।

पक्खोड सक [प्र + स्फोटय] १ खूब झाडना । २ वारम्वार झाडना । पक्खोडिज्जा, वक्र पक्खोडन (दस ४,१)। प्रयो. पक्खोडाविज्जा (दस ४, १) ।

पक्खोड पु [प्रस्फोट] प्रमार्जन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २) ।

पक्खोडण न [शदन] धूनन, कँपाना (कुमा) ।

पक्खोडिअ वि [शदित] निर्झाटित झाड कर गिराया हुआ (दे ६, ८७, पाअ) ।

पक्खोडिय देखो पक्खोड = शद्, प्र + छादय् ।

पक्खोभ सक [प्र + क्षोभय्] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना । कवकृ पक्खुब्भत (से २, २४) ।

पक्खोलण न [शदन] १ स्खलित होनेवाला। २ वि. रुष्ट होनेवाला (राज) ।

पखम (पै) देखो = पक्ष्मन्, 'पखमलणअण' (प्राकृ. १२४) ।

पखोड देखो पक्खोड = प्रस्फोट (पव २) ।

पखल वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र, तेज (प्राप्र) ।

पगइ स्त्री [प्रकृति] १ प्रकृति, स्वभाव (भग, कम्म १, २, सुर १४, ६६, सुपा ११०) । २ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ, 'पडिसेहदुगं पगइं गमेइ' (विसे २५०२)। ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह, 'दिन्नमुद्धारे बहुदव्वं पगईण' (सुपा ५६७) । ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य जातियाँ, अट्ठारसपगइब्भंतराण को सो न जो एइ' (श्राक १२)। ५ कर्मों का भेद (सम ६) । ६ सत्व, रज और तम की साम्यावस्था। ७ वलदेव के एक पुत्र का नाम (राज)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म पुद्गलो मे भिन्न-शक्तियो का पैदा होना (कम्म १, २) । देखो पगडि ।

पगठ पु [प्रकण्ठ] १ पीठ-विशेष । २ अन्त का अवनत प्रदेश (जीव ३) ।

पगथ सक [प्र + कथय्] निन्दा करना, 'अलिय पग(क)थे अदुवा पग(क)थे' (आचा)।

पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, (पि २१६)।

पगड वि [प्रकृत] प्रविहित, विनिर्मित (उत्त १३) ।

पगड पुं [प्रगर्त्त] बडा गड्ढा या गडहा (आचा २, १०, २) ।

पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना (णंदि) ।

पगडि स्त्री [प्रकृति] १ भेद, प्रकार (भग) । २—देखो पगइ (सम ५६, सुर १४, ६८) ।

पगडीकय वि [प्रकटीकृत] व्यक्त किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ (सुपा १८१) ।

पगड्ढ सक [प्र + कृष्] खीचना । कवकृ पगड्ढिज्जमाण (विपा १, १) ।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + कल्पय् । सक्र. पगप्पएत्ता (सूअ २, ६, ३७) ।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + क्लृप् (सूअ १, ८, ५) ।

पगप्प वि. [प्रकल्प] १ उत्पन्न होनेवाला, प्रादुर्भूत होनेवाला, 'बहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए' (सूअ १, ३, ३, १६) । देखो पकप्प = प्रकल्प (आचा) ।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पित] प्ररूपित, कथित, 'ए उ एयाहिं दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं' (सूअ १, ३, ३, १६) । देखो पकप्पिअ ।

पगप्पित्तु वि [प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ] काटनेवाला, कतरनेवाला, 'हंता छेत्ता पगब्भि-(?प्पि)त्ता आयसायाणुगामिणो' (सूअ १, ८, ५) ।

पगब्भ अक [प्र + गल्भ्] १ धृष्टता करना, धृष्ट होना । २ समर्थ होना । पगब्भइ, पगब्भई (आचा, सूअ १, २, २, २१, १, २, ३, १०, उत्त ५, ७) ।

पगब्भ वि [प्रगल्भ] धृष्ट, ढीठ (पउम ३३, ६६) । २ समर्थ (उप २६४ टी) ।

पगब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढीठाई, 'पगब्भि पाणे बहूणतिवाती' (सूअ १, ७, ८) ।

पगब्भणा स्त्री [प्रगल्भना] प्रगल्भता, धृष्टता (सूअ १, १०, १७) ।

पगब्भा स्त्री [प्रगल्भा] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या (आवम) ।

पगब्भिअ वि [प्रगल्भित] धृष्टता-युक्त (सूअ १, १, १, १३, १, २, ३, ४) ।

पगब्भित्तु वि [प्रगल्भितृ] काटनेवाला, 'हंता छेत्ता पगभित्ता' (सूअ १, ८, ५) ।

पगय न [प्रकृत] १ प्रस्ताव, प्रसंग (सूअनि ४७) । २ पुं. गाँव का अधिकारी (पव २६८) ।

पगय वि [प्रगत] सगत (श्रावक १८६) ।

पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिकृत (विसे ८३०, उप ४७६) ।

पगय वि [प्रगत] १ प्राप्त (राज) । २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह, 'मुणिणोवि जहाभिमय पगया पगएण कज्जेण (सुपा २३५) । ३ न प्रस्ताव, अधिकार (सूअ १, ११, १५) ।

पगय न [दे] पग, पाँव, पैर, 'एत्थंतरम्मि लग्गो चडमारुओ । तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो' (महा) ।

पगर पु [प्रकर] समूह, राशि (सुपा ६५५) ।

पगरण न [प्रकरण] १ अधिकार, प्रस्ताव । २ ग्रथ खण्ड-विशेष, ग्रथांश-विशेष (विसे १११५) । ३ किसी एक विषय को लेकर वनाया हुआ छोटा ग्रन्थ (उव) ।

पगरिअ वि [प्रगलित] गलित्कुष्ठ, कुष्ठ-विशेष की वीमारीवाला (पिंड ५७२) ।

पगरिस पु [प्रकर्ष] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता (सुपा १०६) । २ आधिक्य, अतिशय (सुर ४, १६६) ।

पगरिसण न [प्रकर्षण] ऊपर देखो (यति १६) ।

पगल अक [प्र + गल्] झरना, टपकना । वकृ. पगलत (विपा १, ७, महा) ।

पगहिय वि [प्रगृहीत] ग्रहण किया हुआ, उपात्त (सुर ३, १६७) ।

पगाइय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारंभ किया हो वह, 'पगाइयाइ मगलमत्तेउराइ' (स ७३६) ।

पगाढ वि [प्रगाढ] अत्यन्त गाढ (विपा १, १, सुपा ५३०) ।

पगाम देखो पकाम (आचा, श्रा १४, सुर ३, ८७, कुप्र ३१५) ।

पगामसो अ [प्रकामम्] अत्यन्त, अतिशय 'पगामसो भुच्चा' (उत्त १७, ३)।

पगार पुं [प्रकार] १ भेद (प्रासू १)। २ रीति 'एएण पगारेण मज्झ, दव्व दवाविओ' (महा)। ३ आदि, वगैरह, प्रभृति (सूअ १, १३)।

पगास देखो पयास=प्र+काशय्। वकृ पगासेंत (महा)।

पगास पुं [प्रकाश] १ प्रभा, दीप्ति, चमक (णाया १, १), 'एस मह नीलुप्पलगवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासे असि खुरधार गहाय' (उवा)। २ प्रसिद्धि, ख्याति (सूअ १, ६)। ३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव। ४ उद्योत, आतप (राज)। ५ क्रोध, गुस्सा, 'छन्न च पसस णो करे न य उक्कोस पगास माहणे' (सूअ १, २, २९)। ६ वि प्रकट, व्यक्त (निचू १)।

पगासग देखो पगासय (राज)।

पगासण देखो पयासण (औप)।

पगासणया स्त्री [प्रकाशनता] प्रकाश, आभास (ओघ ४५०)।

पगासणा स्त्री [प्रकाशना] प्रकटीकरण (उत्त ३२, २)।

पगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (विसे १२५५)।

पगासिय वि [प्रकाशित] उद्योतित, दीप्त, '[illegible] अणुगमणं [illegible] विवाणाइ पगासियाणि' (सूअ १, १४, १२)।

पगिइ देखो पगइ (सम्मत्त ३६)।

पगिज्झ सक [प्र+गृह्] आसक्ति का प्रारम्भ करना। पगिज्झिज्जा (उत्त ८, १९, सुर ८, १९)।

पगिज्झिय देखो पगिण्ह (उप, औप टि ४६१)।

पगिट्ठ वि [प्रकृष्ट] १ प्रधान, मुख्य (सुपा ७७)। २ उत्तम, श्रेष्ठ (कुम्मा २०, सुपा २२६)।

पगिण्ह सक [प्र+ग्रह्] १ ग्रहण करना। २ उठाना। ३ धारण करना। ४ करना। वकृ पगिण्हमाण, पगिण्हमाण, पगि-ण्हिय (विसे ८८३ [illegible], [illegible] २, १, ४ [illegible])।

पगीअ वि [प्रगीत] १ गाया हुआ (पउम ३७, ४८)। २ जिसकी गीत गाई गई हो वह (उप ७११ टी)।

पगीय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह (राय ४६)।

पगुण देखो पउण (सूअ १, १, २)।

पगुणीकर सक [प्रगुणी+कृ] प्रगुण करना, तय्यार करना, सज्ज करना। कवकृ. पगुणीकीरंत (सुर १३, ३१)।

पगे अ [प्रगे] सुबह, प्रभात काल (सुर ७, ७८, कुप्र १५५)।

पग्ग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पग्गइ (षड्)।

पग्गल वि [दे] पागल, उन्मत्त (प्राकृ १०)।

पग्गह पु [प्रग्रह] खाने के लिए उठाया हुआ भोजन-पान (सूअ २, २, ७३)।

पग्गह पु [प्रग्रह] १ उपधि, उपकरण (ओघ ६६८)। २ लगाम (से ६, २७, १२, ६९)। ३ पशुओं को नाक में लगाई जाती डोरी, नाक की रस्सी, नाथ। ४ पशुओं को बांधने की डोरी, रस्सी, पगहा (णाया १ ३, उवा)। ५ नायक, मुखिया (ठा १)। ६ ग्रहण, उपादान। ७ योजन, जोटना, 'अंजलिपग्गहेण' (भग)।

पग्गहिअ वि [प्रगृहीत] १ अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत (अनु ३)। २ प्रकर्ष से गृहीत (भग, औप)। ३ उठाया हुआ (धर्म ३, ठा ६)।

पग्गहिय वि [प्राग्रहिक] ऊपर देखो (ठा)।

पग्गिम } (अप) अ [प्रायस्] प्राय
पग्गिम्व } बहुधा (षड्, हे ४, ४१४, कुमा)।

पग्गेज्झ पु [दे] निकर, समूह (दे ६, १५)।

पघंस सक [प्र+घृष्] फिर-फिर घिसना। पघंसेज्ज (निचू १७)। प्रयो. वकृ पघंसावंत (निचू १७)।

पघंसण न [प्रघर्षण] पुन पुन घर्षण, 'दस रत्ति आयमणं, दिणे दिणे पघंसणं' (निचू ३)।

पघोल अक [प्र+घूर्णय्] हिलना, [illegible] लाना। वकृ 'ठिअपघोलंतपयगुणगारो' (कुप्र २२६)।

पघोस पु [प्रघोष] उच्चै शब्द-प्रकाश, उद्घोषणा (भवि)।

पघोसिय वि [प्रघोषित] घोषित किया हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ (भवि)।

पच सक [पच्] पकाना। पचइ, पचए, पचति, पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ, पचामि, पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु (सक्षि ३०, पि ४३६, ४५५)। कवकृ पच्चमाण, 'नरए नेरइयाए अहोनिसि पच-माणाए' (सुर १४, ४६, सुपा ३२८)।

पच (अप) देखो पंच। °आलीस, °तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] १ सख्या-विशेष, पैंतालीस, ४५। २ पैंतालीस सख्या जिनकी हो वे (पि २७३, ४४५, पिंग)।

पचक्कमणग न [प्रचङ्क्रमण, °क] पांव से चलना (ओघ)।

पचक्कमावण न [प्रचङ्क्रमण] पांव से संचारण, पांव से चलाना (औप १०५ टि)।

पचड देखो पयड (वव ८)।

पचलिय देखो पयलिय=प्रचलित (औप)।

पचार सक [प्र+चारय्] चलाना। पचा-रेइ (सिरि ४३५)।

पचार पु [प्रचार] विस्तार, फैलाव (मोह २०)। देखो पयार=प्रचार।

पचाल सक [प्र+चालय्] अतिशय चलाना, खूब चलाना। वकृ पचालेमाण (भग १८, १)।

पचिय वि [प्रचित] समृद्ध (स्वप्न ६६)।

पचीस (अप) स्त्रीन [पञ्चविंशति] १ पचीस, सख्या-विशेष, बीस और पांच, २५। २ जिनकी सख्या पचीस हो वे (पिंग, पि २७३)।

पचुण्णिअ वि [प्रचूर्णित] चूर-चूर किया हुआ (सुर २, ८७)।

पचेलिम वि [पचेलिम] पक्व, पका हुआ 'सद्दमहुरपचेलिमफलेहिं' (सुपा ८३)।

पचोइअ वि [प्रचोदित] प्रेरित (सूअ १, २, ३)।

पचइग देखो पचइय=प्रव्रजित (सुपा २, १७)।

पच्चइय वि [प्रत्ययिक] १ विश्वासी, विश्वास-वाला (णाया १, १२) । २ ज्ञानवाला, प्रत्ययवाला । ३ न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान (विसे २१३६) ।

पच्चइय वि [प्रत्ययित] विश्वासवाला, विश्वस्त (महा सुर १६, १६६) ।

पच्चइय वि [प्रात्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से सजात (ठा ३, ३—पत्र १५१) ।

पच्चंग न [प्रत्यङ्ग] हर एक अवयव (गुण १५, कप्पू) ।

पच्चंगिरा स्त्री [प्रत्यङ्गिरा] विद्यादेवी-विशेष, ईसिवियसतवयणा पभणइ पच्चंगिरा अह विज्जा' (सुपा ३०६) ।

पच्चंत पु [प्रत्यन्त] १ अनार्यदेश (प्रयौ १६) । २ वि. समीपस्थ देश, सनिकृष्ट प्रान्त भाग (सुर २, २००) ।

पच्चंतिग देखो पच्चंतिय = प्रत्यन्तिक (आचा २, ३, १, ५) ।

पच्चंतिय वि [प्रत्यन्तिक] समीप-देश मे स्थित (उप २११ टी) ।

पच्चंतिय वि [प्रात्यन्तिक] प्रत्यन्त देश से आया हुआ (धम्म ६ टी) ।

पच्चक्ख न [प्रत्यक्ष] १ इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (विसे ८६) । २ इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (ठा ४, ३) । ३ वि प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय, 'पचक्खाओ अणगो एगो तरुणो महाभागो' (सुर ३, १७१) ।

पच्चक्ख } सक [प्रत्या + ख्या] त्याग
पच्चक्खा } करना, त्याग करने का नियम करना । पच्चक्खाइ (भग) । वक्र पच्चक्खमाण, पच्चक्खाएमाण (पि ५६१, उवा । सक्र पच्चक्खाइत्ता (पि ५८२) । कृ. पच्चक्खेय (आव ६) ।

पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] १ परित्याग करने की प्रतिज्ञा (भग, उवा) । २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६) । ३ सर्व सावद्य—निन्द्य कर्मों से निवृत्ति (कम्म १, १७) । °वरण पुं [°वरण] कषाय-विशेष, सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक क्रोध-आदि (कम्म १, १७) ।

पच्चक्खाणि वि [प्रत्याख्यानिन्] त्याग की प्रतिज्ञा करनेवाला (भग ६, ४) ।

पच्चक्खाणी स्त्री [प्रत्याख्यानी] भाषा-विशेष, प्रतिषेधवचन (भग १०, ३) ।

पच्चक्खाय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, छोड दिया हुआ (णाया १, १, भग, कप्प) ।

पच्चक्खायय वि [प्रत्याख्यायक] त्याग करनेवाला, 'भत्तपच्चक्खायए' (भग १४, ७)।

पच्चक्खाव सक [प्रत्या + ख्यापय्] त्याग कराना किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना । वक्र पच्चक्खावित (आव ६) ।

पच्चक्खि वि [प्रत्यक्षिन्] प्रत्यक्ष ज्ञानवाला (वव १) ।

पच्चक्खिय देखो पच्चक्खाय (सुपा ६२४) ।

पच्चक्खीकर सक [प्रत्यक्षी + कृ] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना । भवि. पच्चक्खीकरिस्स (अभि १८८) ।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [प्रत्यक्षीकृत] प्रत्यक्ष किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ (पि ४६) ।

पच्चक्खीभू अक [प्रत्यक्षी + भू] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना । सक्र. पच्चक्खीभूय (आवम) ।

पच्चक्खेय देखो पच्चक्खा ।

पच्चग्ग वि [प्रत्यग्र] १ प्रधान, मुख्य (स २४) । २ श्रेष्ठ, सुन्दर (उप ६८६ टी, सुर १०, १५२) । ३ नवीन, नया (पाअ) ।

पच्चच्छिम देखो पच्चत्थिम (राज, ठा २, ३—पत्र ७६) ।

पच्चच्छिमा देखो पच्चत्थिमा (राज) ।

पच्चच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा मे उत्पन्न, पश्चिम दिशा-सम्बन्धी (सम ६६, पि ३६५) ।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो पच्चत्थिमुत्तरा (राज) ।

पच्चड अक [क्षर्] भरना, टपकना । पच्चडइ (हे ४, १७३) । वक्र. पच्चडमाण (कुमा) ।

पच्चड्ड सक [गम्] जाना, गमन करना । पच्चड्डइ (हे ४, १६२) ।

पच्चड्डिअ वि [क्षरित] झरा हुआ, टपका हुआ (हे २, १७४) ।

पच्चड्डिया स्त्री [दे. प्रत्यड्डिका] मल्लों का एक प्रकार का करण (विसे ३३५७) ।

पच्चणीय वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, दुश्मन (उप १४६ टी, सुपा ३०७) ।

पच्चणुभव सक [प्रत्यनु + भू] अनुभव करना । वक्र पच्चणुभवमाण (णाया १, २) ।

पच्चणुहो देखो पच्चणुभव । पच्चणुहोइ (उत्त १३, २३) ।

पच्चत्त वि [प्रत्यक्त] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह (उप ८२८) ।

पच्चत्तर न [दे] चाटु, खुशामद (दे ६, २१) ।

पच्चत्थरण न [प्रत्यास्तरण] बिछौना (पि २८५) । देखो पल्हत्थरण ।

पच्चत्थि वि [प्रत्यर्थिन्] प्रतिपक्षी, विरोधी, दुश्मन (उप १०३१ टी, पाअ, कुप्र १४१) ।

पच्चत्थिम वि [पाश्चात्य, पश्चिम] १ पश्चिम दिशा तरफ का, पश्चिम का । २ न. पश्चिम दिशा, 'पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सिय खेत्तं जाणइ, पासइ, एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं' (उवा, भग, आचा, ठा २,३) ।

पच्चत्थिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, आचा) ।

पच्चत्थिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा का (विपा १, ७, पि ५६५, ६०२) ।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [पश्चिमोत्तरा] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८) ।

पच्चत्थुय वि [प्रत्यास्तृत] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ६४, ६६, जीव ३) । २ बिछाया हुआ (उप ६४८ टी) ।

पच्चद्ध न [पश्चार्ध] पिछला आधा, उत्तरार्ध (गउड) ।

पच्चद्धचक्कवट्टि पु [प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव (ती ३) ।

पच्चप्पण न [प्रत्यर्पण] वापस देना, लौटा देना (विसे ३०५७) ।

पच्चप्पिण सक [प्रति + अर्पय्] १ वापस देना, लौटाना । २ सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना । पच्चप्पिणइ (कप्प) । कर्म पच्चप्पिणिज्जइ (पि ५५७) । वक्र पच्चप्पिणमाण (ठा ५, २—पत्र ३११) । संक्र पच्चप्पिणित्ता (पि ५५७) ।

पच्चवत्थेअ वि [दे] प्रसन्न-चित्त, तल्लीन-मनस्क (दे ६, ३८)।

पच्चवभास पु [प्रत्यवभास] निगमन, प्रत्युच्चारण (विसे २६३२)।

पच्चभिजाण देखो पच्चभिजाण। पच्चभि-जाणादि (शौ) (पि १७०, ५१०)।

पच्चभिआणिद (शौ) देखो पच्चभिजाणिअ (पि ५८५)।

पच्चभिजाण सक [प्रत्यभि + ज्ञा] पहिचानना, पहिचान लेना। पच्चभिजाणइ (महा)। वकृ पच्चभिजाणमाण (णाया १, १६)। संकृ पच्चभिजाणिऊण (महा)।

पच्चभिजाणिअ वि [प्रत्यभिज्ञात] पहिचाना हुआ (स ३६०)।

पच्चभिण्णाण न [प्रत्यभिज्ञान] पहिचान (स २१२, नाट—शकु ८४)।

पच्चभिन्नाय देखो पच्चभिजाणिअ (स १००, सुर ६, ७६, महा)।

पच्चमाण देखो पच = पच्।

पच्चय पु [प्रत्यय] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध (उत्त, ठा १, विसे २१८०)। २ निर्णय, निश्चय (विसे २१३२)। ३ हेतु, कारण (ठा ३, ४)। ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त माष आदि का ग्रहण वगैरह (विसे २१३१)। ५ ज्ञान का कारण। ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ (राज)। ७ प्रत्यय-ज्ञान, प्रतीति का उत्पादक (विसे २१३१, पाअम)। ८ विश्वास, श्रद्धा। ९ शपथ, आचार। १० छिद्र, विवर। ११ आधार, आश्रय। १२ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द के अन्त में लगता शब्द-विशेष (हे २, १३)।

पच्चल वि [दे] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ (दे ६, ६९, सुपा ३४८, सुर १, १४, कुप्र ९६, पाअ)। २ असह्य, असहिष्णु (दे ६, ६९)।

पच्चलिउ } (अप) अ [प्रत्युत] वैपरीत्य,
पच्चलिअउ } उलटा, बल्कि (हे ४, ४२०)।

पच्चवणद (शौ) वि [प्रत्यवनत] नमा हुआ, [illegible] (अभि २२८)।

पच्चवत्थय वि [प्रत्यवस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ आच्छादित (आवम)।

पच्चवत्थाण न [प्रत्यवस्थान] १ शङ्का-परिहार, समाधान (विसे १००७)। २ प्रतिवचन, खण्डन (बृह १)।

पच्चवर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ६, १५)।

पच्चवाय पु [प्रत्यपाय] १ बाधा, विघ्न, व्याघात (णाया १, ६, महा, स २०६)। २ दोष, दूषण (पउम ६५, १२, अच्चु ७०, ओघ २४)। ३ पाप, 'बहुपच्चवायभरिओ गिहवासो' (सुपा १६२)। ४ दुःख, पीड़ा (कुप्र ५५२)।

पच्चवाय पु [प्रत्यवाय] १ उपघात-हेतु, नाश का कारण (उत्त १०, ३)। २ अनर्थ (पचा ७, ३६),

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [प्रत्यवेक्षित] निरीक्षित (नाट—शकु १३०)।

पच्चह न [प्रत्यह] हररोज, प्रतिदिन (अभि ६०)।

पच्चहिजाण } देखो पच्चभिजाण। पच्च-
पच्चहियाण } हिजाणेदि (पि ५१०)। पच्च-हियाणइ (स ४२)। संकृ पच्चहियाणिऊण (स ४४०)।

पच्चा स्त्री [दे] तृण विशेष, बल्वज (ठा ५, ३)। °पिच्चियय न [दे] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पच्चा देखो पच्छा (प्रयौ २६, नाट—रत्ना ७)।

पच्चाअच्छ सक [प्रत्या + गम्] पीछे लौटना, वापस आना। पच्चाअच्छइ (षट्)।

पच्चाअद (शौ) देखो पच्चागय (प्रयौ २५)।

पच्चाइक्ख देखो पच्चक्ख = प्रत्या + ख्या। पच्चाइक्खामि (आचा २, १५, ५, १)। भवि पच्चाइक्खिस्सामि (पि ५२९)। वकृ पच्चाइक्खमाण (पि ४६२)।

पच्चाउट्टणया स्त्री [प्रत्यावर्त्तनता] अवाय—संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, निश्चयात्मक मति-ज्ञान (णंदि १७६)।

पच्चाएस पुं [प्रत्यादेश] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण, 'पच्चाएसोव्व धम्मरहियाणं' (स ३५, उव, कुप्र ५०), 'पच्चाएसं दिट्ठं' (पाअ)। देखो पच्चादेस।

पच्चागय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ (गा ६३३, दे १, ३१, महा)। २ न. प्रत्यागमन (ठा ६—पत्र ३६५)।

पच्चाचक्ख सक [प्रत्या + चक्ष्] परित्याग करना। हेकृ पच्चाचक्खिदुं (शौ) (पि ४९९, ५७४)।

पच्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापस ले आना (मुद्रा २७०)।

पच्चाणि° } सक [प्रत्या + णी] वापस ले
पच्चाणी° } आना। मवक्र पच्चाणिज्जंत (से ११, १०५)।

पच्चाणीद (शौ) वि [प्रत्यानीत] वापस लाया हुआ (पि ८१, नाट—विक्र १०)।

पच्चात्थरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर लड़ना (राज)।

पच्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत (पि १४५, मृच्छ ६)।

पच्चादेस पु [प्रत्यादेश] निराकरण (अभि ७२, १७८, नाट—विक्र ३)। देखो पच्चाएस।

पच्चापड अक [प्रत्या + पत्] वापस आना, लौटकर आ पड़ना। वकृ. 'अग्गपडि-हयपुणरविपच्चापडंतचचलमिरिइकवय (औप)।

पच्चामित्त पुन [प्रत्यमित्र] अमित्र, दुश्मन (णाया १, २—पत्र ८७, औप)।

पच्चाय सक [प्रति + आयय्] १ प्रतीति कराना। २ विश्वास कराना। पच्चाअइ (गा ७१२)। पच्चाएमो (स ३२४)।

पच्चाय° देखो पच्चाया।

पच्चायण न [प्रत्यायन] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन (विसे २१३६)।

पच्चायग वि [प्रत्यायक] १ निर्णय-जनक। २ विश्वास-जनक (विक्र ११३)।

पच्चाया अक [प्रत्या + जन्] उत्पन्न होना, जन्म लेना। पच्चायंति (औप)। भवि. पच्चायाहिइ (औप, पि ५२७)।

पच्चाया अक [प्रत्या + या] ऊपर देखो। पच्चायंति (पि ५२७)।

पच्चायाइ स्त्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण (ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पच्चायाय वि [प्रत्यायात] उत्पन्न (भग)।

पच्चार सक [उपा + लम्भ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना। पच्चारइ, पच्चारंति (हे ४, १५६; कुमा)।

पच्चारण न [उपालम्भन] प्रतिभेद (पाअ)।

पच्चारिअ वि [प्रचारित] चलाया हुआ (सिरि ४३६)।

पच्चारिय वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह (भवि)।

पच्चालिय वि [दे प्रत्यार्दित] आर्द्र किया हुआ, गीला किया हुआ, 'पच्चालिया य से अहिययर बाहसलिलेण दिट्ठी' (स ३०८)।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रखकर खडे रहनेवाले धानुष्क की स्थिति धनुष्पधारियों का पैंतरा (वव १)।

पच्चावड पुं [प्रत्यावर्त्त] आवर्त्त के सामने का आवर्त्त, पानी का भँवर (राय ३०)।

पच्चावरण्ह पु [प्रत्यापराह्न] मध्याह्न के बाद समय, तीसरा पहर (विपा १, ३ टि, पि ३३०)।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप मे स्थित, सन्निकट, बहुत पास (विसे २६३१)।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य (मुद्रा १६१)।

पच्चासन्न देखो **पच्चासण्ण**, 'निच्च पच्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू' (उप ६ टी)।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकाक्षा, वाञ्छा, अभिलाषा। २ निराशा के बाद की आशा (स ३६८)। ३ लोभ, लालच (उप पृ ७६)।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त या क्षय किया हुआ वस्तु का भक्षण करनेवाला (आचा)।

पच्चाह सक [प्रति + ब्रू] उत्तर देना। पच्चाह (पिंड ३७८)।

पच्चाहर सक [प्रत्या + हृ] उपदेश देना। वकृ. 'पच्चाहरओ वि ण हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो' (सम ६०)।

पच्चाहुत्त क्रिवि [पश्चान्मुख] पीछे, पीछे की तरफ, 'जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्त नियत्तो सि' (धर्मवि ५४)।

पच्चिम देखो **पच्छिम** (पिंग, पि ३०१)।

पच्चुअ (दे) देखो **पच्चुहिअ** (दे ६, २५)।

पच्चुअआर देखो **पच्चुवयार** (चारु ३६, नाट—मृच्छ ५७)।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन, (भग १४, ३)।

पच्चुच्चार पु [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण (स १८४)।

पच्चुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दारू (दे २, ३५)।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित (गा ६३१; कुप्र ३१)।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खडा हुआ हो वह (सुर १, १३४)।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोडा ऊँचा होना। पच्चुण्णमइ (कप्प)। सकृ. पच्चुण्णमित्ता (कप्प, औप)।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७, गा ६१८)।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तॄ] नीचे आना। पच्चुत्तरइ (पि ४४७)। सकृ पच्चुत्तरित्ता (राज)।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (श्रा १२, सुपा २१, १०४)।

पच्चुत्थ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ (दे ६, १३)।

पच्चुत्थय } **पच्चुत्थुय** } वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित (णाया १, १—पत्र १३, २०, कप्प)।

पच्चुद्धरिअ वि [दे] समुखागत, सामने आया हुआ (दे ६, २४)।

पच्चुद्धार पुं [दे] समुख आगमन (दे ६, २४)।

पच्चुप्पण्ण } **पच्चुप्पन्न** } वि [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल-संबन्धी (पि ५१६, भग, णाया १, ८, सम्म १०३)। °नय पु [°नय] वर्त्तमान वस्तु को ही सत्य माननेवाला पक्ष, निश्चय नय (विसे ३१६१)।

पच्चुप्पन्न पु [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल (सूअ १, २, ३, १०)।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापस आया हुआ (से १४, ८१)।

पच्चुब्भड वि [प्रत्युद्भट] अतिशय प्रबल (सबोध ५३)।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने (राज)।

पच्चुल्लं अ [दे प्रत्युत] प्रत्युत, उलटा, 'न तुम रुट्ठो, पच्चुल्ल मम पूएसि' (वव १)।

पच्चुवक्कार देखो **पच्चुवयार** (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना। पच्चुवगच्छइ (भग)।

पच्चुवगार } **पच्चुवयार** } पुं [प्रत्युपकार] उपकार के बदले उपकार (ठा ४, ४, पउम ४६, ३६, स ४४०, प्रासू)।

पच्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करनेवाला (सुपा ५६५)।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना। पच्चुवेक्खेइ (औप)। सकृ. पच्चुवेक्खित्ता (औप)।

पच्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित (स ४४१)।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्तुत, प्रक्षरित, अच्छी तरह चूने या टपकनेवाला (दे ६, २५)।

पच्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बडी थाली (दे ६, १२)।

पच्चूस [दे] देखो **पच्चूह** = (दे), 'किंडएहिं पयत्तेणवि छाइज्जइ कह णु पच्चूसो?' (सुर ३, १३४)।

पच्चूस } **पच्चूह** } पु [प्रत्यूष] प्रभात काल (हे २ १४, णाया १, १, गा ६०४)।

पच्चूह पुंन [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय (पाअ, कुप्र ५२)।

पच्चूह पु [दे] सूर्य, रवि (दे ६, ५, गा ६०४, पाअ)।

पच्चेअ न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक (षड्)।

पच्चेड न [दे] मुसल (दे ६, १५)।

पच्चेल्लिउ (अप) देखो **पच्चल्लिउ** (भवि)।

पच्चोगिल सक [प्रत्यव + गिल्] आस्वादन करना, रस या स्वाद लेना। वकृ पच्चोगिलमाण (कस ५, १०)।

पच्चोणामिणी स्त्री [प्रत्यवनामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वय नीचे नमते हे (उप पृ १५५)।

पच्चोणियत्त वि [प्रत्यवनिवृत्त] ऊँचा [illegible] नीचे गिरा हुआ (पएह १, ३—पत्र ४४)।
पच्चोणिवय अक [प्रत्यवनि+पत्] ऊपर से नीचे गिरना। वकृ. पच्चोणिवयंत (औप)।
पच्चोणी [दे] देखो पच्चोवणी (स २३५, ३०२, सुपा ६१, २२८, २७६)।
पच्चोयड न [दे] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश (औप ३)। २ वि आच्छादित (राय)।
पच्चोयर अक [प्रत्यव+तृ] नीचे उतरना। पच्चोयरइ (आचा २, १५, २८)। संकृ. पच्चोयरित्ता (आचा २, १५, २८)।
पच्चोरुभ } अक [प्रत्यव+रुह्] नीचे
पच्चोरुह } उतरना। पच्चोरुभइ (णाया १, १)। पच्चोरुहइ (कप्प)। संकृ. पच्चोरुहित्ता (कप्प)।
पच्चोवणिअ वि [दे] सम्मुख आया हुआ (दे ६, २४)।
पच्चोवणी स्त्री [दे] सम्मुख आगमन (दे ६, २४)।
पच्चोसक्क अक [प्रत्यव+ष्वष्क्] १ नीचे जाना। २ पीछे हटना। पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्केति (उवा, वि ३०२, भग)। संकृ. पच्चोसक्कित्ता (उवा, भग)।
पच्छ सक [प्र+अर्थय्] प्रार्थना करना। वकृ. पच्छिज्जमाण (कप्प, औप)।
पच्छ वि [पथ्य] १ रोगी का हितकारी आहार (हे २, २१, प्राप्र, कुमा, स ७२४, सुपा ५०६)। २ हितावह, हितकारी, 'पच्छं [illegible]' (णाया १, ११—पत्र १७१)।
पच्छ न [पश्चात्] १ चरम, शेष (भद [illegible])। २ पीछे, पृष्ठ भाग। ३ पश्चिम दिशा, '[illegible]' (उत्त २६)। °ओ म [°नम्] [illegible] (पउम [illegible])। '[illegible]' (पि १०, ३०), '[illegible]' (सुपा २२१)। °कम्म न [°कर्मन्] १ दान [illegible] बाद की क्रिया। २ यतियों की भिक्षा का एक दोष दातृ-कर्तृक दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया (ओघ ५१६)। °त्ताअ पु [°ताप] अनुताप (वज्जा १४२)। °द्ध न [°अर्ध] पीछला आधा, उत्तरार्ध (गउड, महा)। °वत्थुक न [°वास्तुक] पिछला घर, घर का पिछला हिस्सा (पएह २, ४—पत्र १३१)। °याव पु [°ताप] पश्चात्ताप, अनुताप (आवम)। देखो पच्छा = पश्चात्।
पच्छइ } (अप) अ [पश्चात्] ऊपर देखो
पच्छए } (हे ८, ४२०, षड्, भवि)। °ताव पु [°ताप] अनुताप, अनुशय (कुमा)।
पच्छड सक [गम्] जाना, गमन करना। पच्छडइ (हे ४, १६२)।
पच्छडि वि [गन्तृ] गमन करनेवाला (कुमा)।
पच्छभाग पु [पश्चाद्भाग] १ दिवस का पिछला भाग (राज)। २ पुं नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र (ठा ६)।
पच्छण स्त्रीन [प्रतक्षण] त्वक् का बारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना, 'तच्छणेहि य पच्छणेहि य' (विपा १, १), 'तच्छणाहि य पच्छणाहि य' (णाया १, १३)।
पच्छण्ण वि [प्रच्छन्न] गुप्त, अप्रकट, (गा १८३)। °पइ पु [°पति] जार, उपपति, यार (सूअ १, ४, १)।
पच्छद देखो पच्छय (औप)।
पच्छदण न [प्रच्छदन] आस्तरण, चादर—शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र, 'पुप्फच्छदणाए सय्याए णिद्द ण लभामि' (स्वप्न ६०)।
पच्छन्न देखो पच्छण्ण (उत, सुर २, १८४)।
पच्छय पु [प्रच्छद] वस्त्र विशेष, दुपट्टा, पिछौरी (णाया १, १६)।
पच्छयण देखो पत्थयण (···)।
पच्छयण देखो पत्थयण (मोह ८०)।
पच्छलिड (अप) देखो पच्चलिउ (षड्)।
पच्छा अ [पश्चात्] १ अनन्तर, बाद, पीछे (कुमा २, २१४, षाम, प्रासू ४७), 'पच्छा गमन [illegible] मुणिद्दत्ता' (प्रासू १२६)। २ परसोक, परजन्म, 'पच्छा कडुअविवागा' (राज)। ३ पिछला भाग, पृष्ठ। ४ चरम शेष (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा (णाया १, ११)। °उत्त वि [°आयुक्त] जिसका आयोजन पीछे से किया गया हो वह (कप्प)। °कड पु [°कृत] साधुपन को छोड़कर फिर गृहस्थ बना हुआ (द ५०, बृह १)। °कम्म देखो °पच्छकम्म (पि ११२)। °णिवाइ देखो °निवाइ (राज)। °णुताव पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप, अनुताप, 'पच्छाणुतावेण सुभज्झवसाणेण' (आवम)। °णुपुव्वी स्त्री [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम (अणु, कम्म ४, ४३)। °ताव पु [°ताप] अनुताप (भाव ४)। °ताविय वि [°तापिक] पश्चात्तापवाला (पएह २, ३)। °निवाइ वि [°निपातिन्] १ पीछे से गिर जानेवाला। २ चारित्र ग्रहण कर बाद मे उससे च्युत होनेवाला (आचा)। °भाग पु [°भाग] पिछला हिस्सा (णाया १, १)। °मुह वि [°मुख] परामुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह (आ १२)। °यव, °याव देखो °ताव (पउम ६५, ६६, सुर १५, १४५, सुपा १२१, महा)। °यावि वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करनेवाला (उप ७२८ टी)। °वाय पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन। २ पीछे का पवन (णाया १, ११)। °संखडि स्त्री [दे संस्कृति] १ पिछला संस्कार। २ मरण के उपलक्ष्य मे ज्ञाति—कुटुंबी वगैरह प्रभूत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई (आचा २, १, ३, २)। °संथव पु [°संस्तव] १ पिछला सबन्ध, स्त्री, पुत्र वगैरह का सबन्ध। २ जैन मुनियों के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष मे अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना (ठा ३, ४)। °संथुय वि [°संस्तुत] पिछले सबन्ध से परिचित (आचा २, १, ४, ५)। °हुत्त वि [°दे] पीछे की तरफ का, 'चलमत्थयम्मि पच्छाहुत्ताइ पयाइं तीए दट्ठूण' (सुपा २८१)।
पच्छा स्त्री [पथ्या] हर्रे, हरीतकी (हे २, २१)।
पच्छाअ सक [प्र+छादय्] १ ढकना। २ छिपाना। वकृ. पच्छाअंत (से ६, ४८ ११, ६)। कृ. पच्छाइअव्व (गउड)।

पच्छाअ वि [प्रच्छाय] प्रचुर छायावाला (अभि ३९)।

पच्छाइअ वि [प्रच्छादित] १ ढका हुआ, आच्छादित। २ छिपाया हुआ (पाअ, भवि)।

पच्छाइज्ज देखो पच्छाअ = प्र + छादय्।

पच्छाग पुं [प्रच्छादक] पात्र बाँधने का कपडा (ओघ २६५ भा)।

पच्छाडिद (शौ) वि [प्रक्षालित] धोया हुआ (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्छाणिअ [दे] देखो पच्चोवणिअ (षड्)।

पच्छाणुताविअ वि [पश्चादनुतापिक] पश्चात्ताप-युक्त पछतावा करनेवाला (राय १४१)।

पच्छादो (शौ) देखो पच्छा = पश्चात् (पि ६९)।

पच्छायण न [पथ्यदन] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन, 'वहण करिय पच्छायणस्स भारियं' (महा)।

पच्छायण न [प्रच्छादन] १ आच्छादन, ढकना। २ वि आच्छादन करनेवाला। °या स्त्री [°ता] आच्छादन, 'परगुणपच्छायणया' (उव)।

पच्छाल देखो पक्खाल। पच्छालेइ (काल)।

पच्छि स्त्री [दे] पिटिका, पिटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष (दे ६, १)। °पिडय न [°पिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३)।

पच्छिद्द (अप) देखो पच्छड (हे ४, ३८८)।

पच्छिज्जमाण देखो पच्छ = प्र + अर्थय्।

पच्छित्त न [प्रायश्चित्त] १ पाप की शुद्धि करनेवाला कर्म, पाप का क्षय करनेवाला कर्म (उव सुपा ३६६, द्र ५२)। २ मन को शुद्ध करनेवाला कर्म (पचा १६, ३)।

पच्छित्ति वि [प्रायश्चित्तिन्] प्रायश्चित्त का भागी, दोषी (उप ३७९)।

पच्छिम न [पश्चिम] १ पश्चिम दिशा (उपा ७४ टि)। २ वि पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य (महा, हे २, २१, प्राप्र)। ३ पिछला, बाद का, 'दियसस्स पच्छिमे भाए' (कप्प)। ४ अन्तिम, चरम, 'पुरिमपच्छिमगाण तित्थ-गराण' (सम ४४)। °द्ध न [°ार्ध] उत्तरार्ध, उत्तरी आधा हिस्सा (महा, ठा २, ३—पत्र ८१)। °सेल पु [°शैल] अस्ताचल पर्वत (गउड)।

पच्छिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (कुमा, महा)।

पच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पीछे से उत्पन्न, पीछे का (विसे १७९५)।

पच्छियापिडय देखो पच्छि-पिडय (राय १४०)।

पच्छिल (अप) देखो पच्छिम (भवि)।

पच्छिल्ल } वि [पश्चिम, पाश्चात्य] १
पच्छिल्लय } पश्चिम दिशा का। २ पिछला, पूर्ववर्ती (पि ५९५, ५९५ टि ४)।

पच्छुत्ताव पु [पश्चादुत्ताप] पछतावा, पश्चात्ताप (सम्मत्त १६०, धर्मवि ३५, १२२, १३०)।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [पश्चात्तापित] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह (भवि)।

पच्छेकम्म देखो पच्छ-कम्म (हे १, ७९)।

पच्छेणय न [दे] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन सामग्री, कलेवा (दे ६,२४)।

पच्छोववण्णग } वि [पश्चादुपपन्न] पीछे
पच्छोववन्नक } से उत्पन्न (भग)।

पजप सक [प्र + जल्प्] बोलना, कहना। पजपइ (पि २९६)।

पजंपावण न [प्रजल्पन] बोलाना, कथन कराना (औप, पि २९६)।

पजंपिअ वि [प्रजल्पित] कथित, उक्त, कहा हुआ (गा ६४९)।

पजणण वि [प्रजनन] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (राय ११४)।

पजणण न [प्रजनन] लिंग, पुरुष-चिह्न (विसे २५७९ टी, ओघ ७२२)।

पजल अक [प्र + ज्वल्] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना। २ चमकना। वकृ. पजलंत (भवि)।

पजलिर वि [प्रज्वलितृ] अत्यन्त जलनेवाला, 'नियज्झाणानलपजलिरकम्मकतारवूमलइउव्व' (सुपा १)।

पजह सक [प्र + हा] त्याग करना। पजहामि (पि ५००)। कृ. पजहियव्व (आचा)।

पजाला स्त्री [प्रज्वाला] अग्नि-शिखा, आग की लौ या लपट (कुप्र ११७)।

पजीवण न [प्रजीवन] आजीविका, जीवनोपाय, रोजी (पिंड ४७८)।

पजुत्त देखो पउत्त = प्रयुक्त (चड)।

पजूहिअ वि [प्रयूथिक] यूथ या समूह को दिया हुआ, याचक गण को अर्पित (आचा २, १, ४, २)।

पजेमण न [प्रजेमन] भोजन-ग्रहण, भोजन लेना (राय १४६)।

पज्ज सक [पायय्] पिलाना, पान कराना। पज्जेइ (विपा १, ६)। कवकृ. 'तण्हाइया ते तउ तंब तत्त पज्जिज्जमाणाट्टतर रसंति' (सूअ १, ५, १, २५)। कृ. पज्जेयव्व (भत्त ४०)।

पज्ज न [पद्य] छन्दो-बद्ध वाक्य (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

पज्ज न [पाद्य] पाद प्रक्षालन जल, 'अग्घं च पज्जं च गहाय' (णाया १, १६—पत्र २०९)।

पज्ज देखो पज्जत्त (द ३३, कम्म ३, ७)।

पज्जंत पु [पर्यन्त] अन्त, सीमा, प्रान्त भाग (हे १, ५८, २, ६५, सुर ४, ३१६)।

पज्जग न [दे] पान, पीना (दे ६, ११)।

पज्जण न [पायन] पिलाना, पान कराना (भग १४, ७)।

पज्जण्ण देखो पजणण (सूअनि ५७)।

पज्जणुओग } पुं [पर्यनुयोग] प्रश्न (धर्मसं
पज्जणुजोग } १७९, २९२)।

पज्जण्ण पुं [पर्जन्य] मेघ, बादल (भग १४, २, नाट. पृच्छ १७५)। देखो पज्जन्न।

पज्जतर वि [दे] दलित, विदारित (षड्)।

पज्जत्त वि [पर्याप्त] १ 'पर्याप्ति' से युक्त, 'पर्याप्ति' वाला (ठा २, १, पण्ह १, १, कम्म १, ४९)। २ समर्थ, शक्तिमान्। ३ लब्ध, प्राप्त। ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय। ५ न तृप्ति। ६ सामर्थ्य। ७ निवारण। ८ योग्यता (हे २, २४, प्राप्र)। ९ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी अपनी 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म (कम्म १, २६)। °णाम, °नाम न

[°नामन] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष (राज, कम्म ६३)।

पज्जत्त न [पर्याप्त] लगातार चौतीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

पज्जत्तर [दे] देखो पज्जतर (षड्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ शक्ति, सामर्थ्य (सूत्र १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है जीव की पुद्गलों को ग्रहण करने तथा परिणमाने या पचाने की शक्ति (नव, कम्म १, ४६ नव ८, द ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति (दे ४, ६२)। ४ तृप्ति, 'किं-गराधराजीविकाए तो नहह पज्जत्ति ?' (उप ७६८ टी)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ पूर्ति, पूर्णता (धर्मवि ३८)। २ अन्त, अवसान (सुज्ज २, ८)।

पज्जन्न पु [पर्जन्य] मेघ-विशेष, जिसके एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिकनाहट रहती है, 'पज्जु- (?ज्ज) न्ने णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससयाइं भावेति' (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पु [दे प्रार्यक] प्रपितामह, पितामह का पिता, परदादा (भग ६,३, दस ७, सुर १, १३४, २२०)।

पज्जय पु [पर्यव] १ श्रुत ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म निगोद के लब्धि-अपर्याप्त जीव का जो श्रुत-ज्ञान का अंश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अंश बढ़ता है वह श्रुत-ज्ञान (कम्म १, ७)। २—देखो पज्जाय (सम्म १०३, नदि, विसे ४८८, ४८८, ४६०, ४६१)। °समास पु [°समास] श्रुत-ज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त श्रुत-ज्ञान का समुदाय (कम्म १, ७)।

पज्जयण न [पर्ययन] निश्चय, अवधारण (विसे ८३)।

पज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। पज्जरइ (हे ४, २, दे ६, २६, कुमा)।

पज्जरय पु [प्रजरक] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। °मज्झ पुं [°मध्य] एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६७टी)। °वट्ट पु [°वर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °विसिट्ठ पु [°विशिष्ट] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष (ठा ६)।

पज्जल देखो पजल। पज्जलेइ (महा)। वकृ. पज्जलंत (कप्प)।

पज्जलण वि [प्रज्वलन] जलानेवाला (ठा ४, १)।

पज्जलिअ पु [प्रज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

पज्जलिय वि [प्रज्वलित] १ जलाया हुआ, दग्ध (महा)। २ खूब चमकनेवाला, देदीप्यमान (गच्छ २)।

पज्जलिर वि [प्रज्वलितृ] १ जलनेवाला। २ खूब चमकनेवाला (सुपा ६३८, सण)।

पज्जलीढ वि [पर्यवलीढ] भक्षित (विचार ३२६)।

पज्जव पु [पर्यव] १ परिच्छेद, निर्णय (विसे ८३, आवम)। २ देखो पज्जाय (आचा, भग, विसे २७४२, सम्म ३२)। °कसिण न [°कृत्स्न] चतुर्दश पूर्व-ग्रन्थ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष (पचभा)। °जाय वि [°जात] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त (पण्ह २, ५)। २ ज्ञान आदि गुणोंवाला (ठा १)। ३ न विषयोपभोग का अनुष्ठान (आचा)। °जाय वि [°यात] ज्ञान-प्राप्त (ठा १)। °ट्ठिय पु [°स्थित, °र्थिक, °स्तिक] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़कर केवल पर्यायों को ही मुख्य माननेवाला पक्ष (सम्म ६)। °णय, °नय पु [°नय] पूर्वो अनन्तर उक्त अर्थ (राज, विसे ७५), 'पज्जवणयवयणिज्जा' (सम्म ११)।

पज्जवण न [पर्यवन] परिच्छेद, निश्चय (विसे ८३)।

पज्जवत्थाव सक [पर्यव + स्थापय्] १ अच्छी तरह स्थापना करना। २ विरोध करना। ३ प्रतिवादी के साथ वाद करना। पज्जवत्थावेंदु

(शौ) (मा ३६)। पज्जवत्थावेहि (वि ५५१)।

पज्जवसाण न [पर्यवसान] अन्त, अवसान (भग)।

पज्जवसिअ न [पर्यवसित] अवसान, अन्त, 'अपज्जवसिए लोए' (आचा)।

पज्जा देखो पण्णा (हे २, ८३)।

पज्जा स्त्री [पद्या] मार्ग, रास्ता 'भेअ न पहुच नमो भावाए पन्नवणपज्जा' (सम्म १५७, दे ६, १, कुप्र १०६)।

पज्जा स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढी (दे ६, १)।

पज्जा स्त्री [पर्याय] अधिकार, प्रबन्ध भेद (दे ६, १, पाअ)।

पज्जा देखो पया, 'अगणिज्जंति नागे विज्जा दडिज्जती नासे पज्जा' (प्रासू ६६)।

पज्जाअर पु [प्रजागर] जागरण, निद्रा का अभाव (अभि ६६)।

पज्जाउल वि [पर्याकुल] विशेष आकुल, व्याकुल (स ७२, ६७३, हे ४, २६६)।

पज्जाभाय सक [पर्या + भाजय्] भाग करना। सकृ. पज्जाभाइत्ता (राज)।

पज्जाय पु [पर्याय] १ समान अर्थ का वाचक शब्द (विसे २५)। २ पूर्ण प्राप्ति (विसे ८३)। ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण। ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर (विसे ३२१, ४७६, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ठा १, १०)। ५ क्रम, परिपाटी (णाया १, १)। ६ प्रकार, भेद (आवम)। ७ अवसर। ८ निर्माण (हे २, २४)। देखो पज्जय तथा पज्जव।

पज्जाय पु [पर्याय] तात्पर्य, भावार्थ, रहस्य (सूअनि १३६)।

पज्जाल सक [प्र + ज्वालय्] जलाना, सुलगाना। पज्जालइ (भवि)। संकृ. पज्जालिअ, पज्जालिऊण (दस ४, १, महा)।

पज्जालण न [प्रज्वालन] सुलगाना (उप ५६७ टी)।

पज्जालिअ वि [प्रज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा १७१, प्रासू १८)।

पज्जिआ स्त्री [दे. आर्यिका] १ माता की माता, नानी, परनानी। २ पिता की माता, दादी, परदादी (दस ७, बृ ३, ४१)।

पज्जिज्जमाण देखो पज्ज = पायय्।

पज्जुट्ट वि [पर्युष्ट] फडफडाया हुआ (?), 'भिउडी ण कआ, कडुअं णालविअं अहरअं ण पज्जुट्टं' (गा ६२१)।

पज्जुच्छुअ वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक (नाट)।

पज्जुणसर न [दे] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण (दे ६, ३२)।

पज्जुण्ण पु [प्रद्युम्न] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम (अंत)। २ कामदेव (कुमा)। ३ वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश (हे २, ४२)। ४ एक जैनमुनि (निचू १)। देखो पज्जुन्न।

पज्जुत्त वि [प्रयुक्त] जटित, खचित, 'माणिक्कपज्जुत्तकणयकडयसणाहेहिं' (स ३१२), 'दिव्वखग्गचामरपज्जुत्तकुंतलालाइ' (स ५६, भवि)। देखो पज्झुत्त।

पज्जुदास पु [पर्युदास] निषेध, प्रतिषेध (विसे १८३)।

पज्जुन्न देखो पज्जुण्ण (णाया १, ५, अंत १४, कुप्र १८, सुपा ३२)। ५ वि धनी, श्रीमन्त, प्रभूत धनवाला, 'पज्जुन्नओवि पडिपुन्नसयलगो' (सुपा ३२)।

पज्जुवट्ठा सक [पर्युप + स्था] उपस्थित होना। हेकृ. पज्जुवट्ठादु (शौ) (नाट—वेणी २५)।

पज्जुवट्ठिय वि [पर्युपस्थित] उपस्थित, मौजूद, हाजिर, तत्पर (उत्त १८, ४५)।

पज्जुवास सक [पर्युप + आस्] सेवा करना, भक्ति करना। पज्जुवासइ, पज्जुवासंति (उव, भग)। वकृ पज्जुवासमाण (णाया १, १, २)। कवकृ पज्जुवासिज्जमाण (सुपा ३७८)। सकृ. पज्जुवासित्ता (भग)। कृ. पज्जुवासणिज्ज (णाया १, १, औप)।

पज्जुवासण न [पर्युपासन] सेवा, भक्ति, उपासना (भग, स ११६, उप ३५७ टी, अभि ८८)।

पज्जुवासणया, पज्जुवासणा स्त्री [पर्युपासना] ऊपर देखो (ठा ३, ३, भग, णाया १, १३, औप)।

पज्जुवासय वि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला (काल)।

पज्जुसण, पज्जुसवण, पज्जुस्सवण, पज्जूसण न. देखो पज्जुसणा (धर्मवि २१, विचार ५३१)।

पज्जुसणा स्त्री [पर्युषणा] देखो पज्जोसवणा 'परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य' (निचू १०)।

पज्जुस्सुअ, पज्जूसुअ वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक, विशेष उत्कण्ठित (अभि १०६, पि ३२७ ए)।

पज्जोअ पु [प्रद्योत] १ प्रकाश, उद्द्योत। २ उज्जयिनी नगरी का एक राजा (उव)। °गर वि [°कर] प्रकाश-कर्ता (सम १, कप्प, औप)।

पज्जोइय वि [प्रद्योतित] प्रकाशित (उप ७२८ टी)।

पज्जोय सक [प्र + द्योतय्] प्रकाशित करना। वकृ पज्जोयंत (चेइय ३२४)।

पज्जोयण पु [प्रद्योतन] एक जैन आचार्य (राज)।

पज्जोसव अक [परि + वस्] १ वास करना, रहना। २ जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना। पज्जोसवेइ, पज्जोसविंति, पज्जोसवेंति (कप्प)। वकृ पज्जोसवंत, पज्जोसवेमाण (निचू १०, कप्प)। हेकृ पज्जोसवित्तए, पज्जोसवेत्तए (कप्प, कस)।

पज्जोसवण न देखो पज्जोसवणा (पचा १७, ६)।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्युषणा] १ एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना (ठा १०, कप्प)। २ वर्षा-काल (निचू १०)। ३ पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व, 'काराविओ अमारिं पज्जोसवणाईसु तिहीसुं' (मुणि १०६००, सुर १६, १६१)। °कप्प पु [°कल्प] पर्युषणा में करने योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प (ठा ५, २)।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्योसवना पर्युपशमना] ऊपर देखो (ठा १०—पत्र ५०६)।

पज्जोसविय वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ (कप्प)।

पज्झंझ अक [प्र + झञ्झ्] शब्द करना, आवाज करना। वकृ पज्झंझमाण (राज)।

पज्झट्टिआ स्त्री [पज्झट्टिका] छंद-विशेष (पिंग)।

पज्झर अक [क्षर्, प्र + क्षर्] झरना, टपकना। पज्झरइ (हे ४, १७३)।

पज्झर पु [प्रक्षर] प्रवाह-विशेष (पउम २)।

पज्झरण न [प्रक्षरण] टपकना (वज्जा १०८)।

पज्झरिअ वि [प्रक्षरित] टपका हुआ (पाअ, कुमा, महा, सण्णि १५)।

पज्झल देखो पज्झर = क्षर्। पज्झलइ (पिंग)।

पज्झलिआ देखो पज्झट्टिआ (पिंग)।

पज्झाय न [प्रध्यात] अतिशय चिन्तन (अणु १३६)।

पज्झाय वि [प्रध्यात] चिन्तित, सोचा हुआ (अणु)।

पज्झुत्त वि [दे] खचित, जडित, जडा हुआ (पाअ)। देखो पज्जुत्त

पझुंझ देखो पज्झंझ। वकृ पझुंझमाण (राय ८३)।

पटउडी स्त्री [पटकुटी] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड-कोट (सुर १३, ६)।

पटल देखो पडल = पटल (कुमा)।

पटह देखो पडह (प्रति १०)।

पटिमा (प चूपै) देखो पडिमा (पड्, पि १६१)।

पटोला स्त्री [पटोला] वल्ली-विशेष, कोशातकी, क्षारवल्ली (सिरि ६६६)।

पट्ट सक [पा] पीना, पान करना। पट्टइ (हे ४, १०)। भूका पट्टीअ (कुमा)।

पट्ट पु [पट्ट] १ पहनने का कपडा, 'पट्टो वि होइ इक्को देहपमाणेण सो य भइयव्वो' (बृह ३, ओघ ३४)। २ रथ्या, मुहल्ला, 'तेणवि मालियपट्टे गतूण करे कया माला' (सुपा ३७३)। ३ पाषाण आदि का तख्ता, फलक, 'मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमडवो' (अभि २००), 'विअगुसिलापट्टए उवविट्ठा' (स्वप्न ७२), 'पट्टसठियपसत्थावत्थियणपिहुलसोणीआ' (जीव ३)। ४ ललाट पर से बँधी जाता एक प्रकार की पगडी, 'तप्पभिइ पट्टबद्धा नायाणो जाया पुव्वं मउडबद्धा आसी' (महा)। ५

पट्टा [illegible], किसी प्रकार का [illegible] (सुग्र [illegible])। ६ [illegible]। ७ पाट, [illegible] (गा ५२०, वज्जा)। ८ [illegible]। ९ [illegible] (जय, ग्रौप)। १० [illegible], पट्टी, पाट (सुग्र २८, सुपा २८५)। १२ [illegible]। १३ पट्टी, [illegible] [illegible] (भग, विपा १ १)। १३ [illegible] (सुग्र २०)। °इल पु [°इल] [illegible], गाँव का मुखिया (स ३)। [illegible] [illegible] (सुर १३, [illegible])। [illegible] पु [°इरिन] [illegible] (सुर २६३)। °आर पु [°कार] तन्तुवाय, [illegible]। °वासिआ स्री [°वासिका] [illegible] (दे ४, [illegible])। °साला स्री [°शाला] [illegible] (सुपा २८५)। °सुत्त न [°सूत्र] [illegible] सूता (ग्रागम)। °हत्थि [illegible] [°हस्तिन्] [illegible] हाथी (सुपा ३८२)।

पट्टइल } [illegible] गाँव का मुखिया
पट्टउल } (सुपा २०३, ३६८)।

पट्टकु[illegible] न [पट्टांशुक] १ [illegible]। २ [illegible] (गा १२०, [illegible])।

पट्टण [illegible] (पव)।

पट्टण [पत्तन] [illegible], शहर (गा, श्रा, [illegible])।

पट्टदेवी [पट्टदेवी] पटरानी (सिरि [illegible])।

[illegible] (गउड, गाथा १, १६)।

[illegible] [पट्टकुल] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (सम, [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illेgible] [illegible] [illegible] [illegible]।

पट्टिस पु [दे पट्टिश] प्रहरण-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पण्ह १, १, पउम ८ ४५)।

पट्टी स्री [पट्टी] १ धनुर्यष्टि। २ हस्तपट्टिका, हाथ पर की पट्टी, 'उप्पीडियसरासणपट्टिए' (विपा १, १—पत्र २४)।

पट्टुअ पुन देखो पट्टुया, 'पट्टुएहिं' (सुर ६ १)।

पट्टुया स्री [दे] पाद-प्रहार लात, गुजराती में 'पाटु' तिरिक्खो गोरोरण तहाहयो पट्टुयाए हियकम्मि' (सुपा २३८)। देखो पट्टुआ।

पट्टुहिय न [दे] कलुषित जल, गदा जल "पट्टुहियं जाण कलुसजलं" (पाम्र)।

पट्ठ वि [प्रष्ठ] १ अग्रगामी, अग्रसर, अगुआ (गाया १, १—पत्र १६)। २ कुशल, निपुण। ३ प्रधान, मुखिया (ग्रोप, राज)।

पट्ठ वि [स्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह (ग्रोप)।

पट्ठ न [पृष्ठ] १ पीठ, शरीर के पीछे का भाग (गाया १, ६, कुमा)। २ तल, ऊपर का भाग 'तलिम पट्ठ च तलं' (पाम्र)। °चर वि [°चर] अनुयायी, अनुगामी (कुमा)।

पट्ठ वि [पृष्ट] १ जिसको पूछा गया हो वह। २ न प्रश्न, सवाल, 'उच्चिहे पट्ठे पण्णत्ते' (ठा ८—पत्र ३७५)।

पट्ठव सक [प्र + स्थापय्] १ प्रस्थान कराना, भेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्रारम्भ करना। ४ प्रकर्ष से स्थापना करना। ५ प्रायश्चित्त देना। पट्ठवइ (हे ४, ३७)। [illegible] पट्ठव[illegible] (कप्प)। [illegible] पट्ठवियव्व ([illegible] सुपा ६२८)।

पट्ठवग देखो पट्ठवय (भग ६, ६६ टी)।

पट्ठवण न [प्रस्थापन] १ प्रस्थान कराना। २ प्रारम्भ [illegible] पट्ठवणा पट्ठव' (भग)।

पट्ठवणा स्री [प्रस्थापना] १ प्रकृष्ट स्थापना। २ प्रायश्चित्त-रचना 'दुविहा पट्ठवणा खलु' ([illegible] १)।

पट्ठवय वि [प्रस्थापक] १ प्रवर्त्तक, [illegible] प्रारंभ करनेवाला (गाया १, १—पत्र ६०)। २ प्रायश्चित्त करनेवाला (सिरि ६२३)।

पट्ठविअ वि [प्रस्थापित] भेजा हुआ (पाम, कुमा)। २ प्रवर्त्तित (निचू २०)। ३ स्थिर किया हुआ (भग १२, ४)। ४ प्रकर्ष से स्थापित, व्यवस्थापित (पण्ण २१)।

पट्ठविइया } स्री [प्रस्थापिता] प्रायश्चित्त-
पट्ठविया } विशेष, अनेक प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह (ठा ५, २, निचू २०)।

पट्ठाअ देखो पट्ठाव। वकृ पट्ठाएंत (गा ४४०)।

पट्ठाण न [प्रस्थान] प्रयाण (सुपा ११२)।

पट्ठाव देखो पट्ठव। पट्ठावइ (हे ४, ३७)। पट्ठावेइ (पि ५५३)।

पट्ठाविअ देखो पट्ठविअ (हे ४, १६, कुमा, पि २०६)।

पट्ठि स्री देखो पट्ठ = पृष्ठ (गउड, सण)। °मस न [°मांस] पीठ का मांस (पण्ह १, २)।

पट्ठिअ वि [प्रस्थित] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात (हे ४, १६, ग्रोप ८१ भा, सुपा ७८)।

पट्ठिअ वि [दे] अलंकृत, विभूषित (षड्)।

पट्ठिउकाम वि [प्रस्थातुकाम] प्रयाण का इच्छुक (श्रा १४)।

पट्ठिसग न [दे] ककुद, बैल के कंधे पर का ऊबड़ हिल्ला (दे ६, २३)।

पट्ठी देखो पट्ठि (महा, काप्र)।

पट्ठीवस पु [पृष्ठवंश] घर के ऊपर दो पक्षों पर तिरछा रखा जाता बड़ा खम्भा (पव १३३)।

पठ देखो पढ। पठदि (शौ) (नाट—मृच्छ १४०)। पठति (पिंग)। कर्म पठायिजइ (पि ३०६, ५४१)।

पठग देखो पाढग (कप्प)।

पड अक [पत्] पड़ना, गिरना। पडइ (उव, पि २१८, २४४)। वकृ पडंत, पडमाण (गा २६४, महा, भवि, सुर ६)। संकृ पडिअ (नाट—शकु ६७)। हेकृ पडणीअ (काप्र)।

पड पु [पट] वस्त्र, कपड़ा (ग्रोप, उप, स्वप्न ८५, स ३२६ गा १८)। °आर देखो °गार (गाप)। °उडी स्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह (दे ६, ६, गा ०)। °गार पु [°कार]

तन्तुवाय, कपडा बुननेवाला (पराह १, २—पत्र २८)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] प्रभूत सूत्रार्थो को ग्रहण करने मे समर्थ बुद्धिवाला (ग्रोप)। °मडव पुं [°मण्डप] तम्बू, वस्त्र-मराडप (ग्राक)। °मा वि [°वन्] पटवाला, वस्त्रवाला (पड्)। °वास पु [°वास] वस्त्र मे डाला जाता कुकुम-चूर्ण ग्रादि सुगन्धित पदार्थ (गउड, स ७३)। °साडय पुं [°शाटक] १ वस्त्र, कपडा। २ धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र (भग ६, ३३)। ३ धोती ग्रौर दुपट्टा (णाया १, १—पत्र ५३)।

पडंचा स्त्री [दे प्रत्यञ्चा] ज्या, धनुष का चिल्ला या डोरी (दे ६, १४ पाग्र)।

पडंसुअ देखो पडिंसुद (पि ११५)।

पडसुआ स्त्री [प्रतिश्रुत्] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा (कुमा)।

पडसुआ स्त्री [दे] ज्या, धनुष का चिल्ला (दे ६, १४)।

पडंसुत्त देखो पडिंसुद (प्राकृ ३२)।

पडच्चर पु [दे] साला जैसा विदूषक ग्रादि (दे ६, २५)।

पडच्चर पु [पटच्चर] चोर, तस्कर (नाट—मृच्छ १३८)।

पडज्झमाण देखो पडह = प्र + दह्।

पडण न [पतन] पात, गिरना (णाया १, १, प्रासू १०१)।

पडणीअ वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, वैरी (स ४६६)।

पडणीअ देखो पड = पत्।

पडपुत्तिया स्त्री [पटपुत्रिका] छोटा वस्त्र, रुमाल (सबोध ५)।

पडम देखो पढम (पि १०४, नाट—शकु ६८)।

पडल न [पटल] १ समूह, सघात, वृन्द (कुमा)। २ जैन साधुग्रो का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खण्ड (पराह २, ५—पत्र १४८)।

पडल न [दे] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुग्रा एक प्रकार का खपडा जिससे मकान छाए जाते हैं (दे ६, ५, पाग्र)।

पडलग } स्त्रीन [दे. पटलक] गठरी, गाँठ,
पडलय } गुजराती में 'पोटलुं,' 'पोटली', 'पुप्फपडलगहत्थाग्रो' (णाया १, ८)। स्त्री. °लिगा, °लिया (स २१३, सुपा ६)।

पडवा स्त्री [दे] पट कुटी, पट-मराडप, वस्त्र-गृह, तम्बू (दे ६, ६)।

पडह सक [प्र + दह्] जलाना, दग्ध करना। कवकृ पडज्झमाण (पराह १, २)।

पडह पु [पटह] वाद्य-विशेष, नगाडा, ढोल (ग्रौप, णादि, महा)।

पडहत्थ वि [दे] पूर्ण भरा हुग्रा (स १८०)।

पडहिय पुं [पाटहिक] ढोल बजानेवाला, ढोली, ढोलकिया (पउम ४८, ८६)।

पडहिया स्त्री [पटहिका] छोटा ढोल (सुर ३, ११५)।

पडाअ देखो पलाय = परा + श्रय्। कृ पडाइअव्व (से १४, १२)।

पडाइअ वि [पलायित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुग्रा (से १५, १५)।

पडाइअव्व देखो पडाअ।

पडाइया स्त्री [पताकिका] छोटी पताका, ग्रन्तर-पताका (कुप्र १४५)।

पडाग पु [पटाक, पताक] पताका, ध्वजा (कप्प, ग्रौप)।

पडागा } स्त्री [पताका] ध्वजा, ध्वज (महा,
पडाया } पाग्र, हे १, २०६, प्राप्र, गउड)। °इपडाग पुं [°तिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका (ग्रौप)। °हरण न [°हरण] विजय-प्राप्ति (सथा)।

पडागार न [ ] नौका मे लगने-वाला वस्त्र (दशवै० चू० १ प्रारम्भ ग्रौर ग्रग० १११)।

पडायाण देखो पल्लाण (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [पर्याणित] जिस पर पर्याण बांधा गया हो वह (कुमा २, ६३)।

पडाली स्त्री [दे] १ पक्ति, श्रेणी (दे ६, ६)। २ घर के ऊपर की चटाई ग्रादि की कच्ची छत (वव ७)।

पडास देखो पलास (नाट—मृच्छ २४३)।

पडि वि [पटिन्] वस्त्रवाला (ग्रणु १४४)।

पडि ग्र [प्रति] इन ग्रर्थो का सूचक ग्रव्यय—१ प्रकर्ष (वव १)। २ सम्पूर्णता (चेइय ७८२)।

पडि ग्र [प्रति] इन ग्रर्थो का सूचक ग्रव्यय—१ विरोध, 'पडिवक्ख', 'पडिवासुदेव' (गउड, पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता, 'पडिमजग्गिविडिसय' (ग्रौप)। ३ वीप्सा, व्याप्ति, 'पडिदुवार', 'पडिपेल्लण' (पराह १,३, से ६, ३२)। ४ वापस, पीछे, 'पडिगय' (विपा १, १, भग, सुर १, १४६)। ५ ग्राभिमुख्य, संमुखता, 'पडिविरइ,' 'पडिबद्ध' (पराह २, २, गउड)। ६ प्रतिदान, बदला, 'पडिदेइ' (विसे ३२४१)। ७ फिर से, 'पडिपडिय', 'पडिवविय' (सार्ध ६४, दे ६, १३)। ८ प्रतिनिविष्ट, पडिच्छंद (उप ८०८ टी)। ९ प्रतिषेध, निषेध, 'पडियाइक्खिय' (भग, सम ५९)। १० प्रतिकूलता, विपरीतता, 'पडिनय' (से २, ४६)। ११ स्वभाव, 'पडिवाइ' (ठा २,१)। १२ सामीप्य, निकटता, 'पडिवेसिग्र' (सुपा ५५२)। १३ ग्राधिक्य, ग्रतिशय, 'पडियाणद' (ग्रौप)। १४, सादृश्य, तुल्यता, 'पडिइद' (पउम १०५, १११)। १५ लघुता, छोटाई, 'पडिदुवार' (कप्प, पराग २)। १६ प्रशस्तता, श्लाघा, 'पडिरूव' (जीव ३)। १७ साप्रतिकता, वर्त्तमानता (ठा ३, ४—पत्र १५८)। १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'पडिइंद' (पउम १०५, ६), 'पडिउच्चारेयव्व' (भग)।

पडि देखो परि (से ४, ५०, ५, १६, ६६, ग्रत ७)।

पडिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त (दे ६ १२)।

पडिअ वि [पतित] १ गिरा हुग्रा (गा ११, प्रासू ५, १०१)। २ जिसने चलने को प्रारम्भ किया हो वह, 'ग्रागयमग्गग्ग य पडिग्रो' (वसु)।

पडिअ देखो पड = पत्।

पडिअकिअ वि [प्रत्यङ्कित] १ विभूषित। २ उपलिप्त, 'वहुघणघुसिणपकि पडियकिग्रो' (भवि)।

पडिअतअ पुं [दे] कर्मकर, नौकर (दे ६, ३२)।

पडिअग्ग सक [अनु + व्रज्] ग्रनुसरण करना, पीछे जाना। पडिग्रग्गइ (हे ४, १०७, षड्)।

पडिअग्ग सक [प्रति + जागृ] १ सम्भालना। २ [illegible]। ३ शुश्रूषा करना, [illegible]। [illegible] (स ७८८) पडिय[illegible] (स ५४८)।

पडि[illegible] वि [दे] १ [illegible], [illegible] [illegible] किया गया हो वह। २ [illegible] [illegible]। ३ [illegible] (दे ६, ७८)।

पडि[illegible] वि [अनुव्रजित] अनुगत (दे ६, ७८)।

पडि[illegible] वि [प्रतिजागृत] भक्ति से [illegible] (स [illegible])।

प[illegible] वि [अनुव्रजित] अनुगत [illegible] (सुपा)।

पडि[illegible] पु [दे] [illegible] [illegible] (दे ६ ३४)।

प[illegible] वि [दे] [illegible], [illegible] हुआ (दे ६, ३१)।

पडि[illegible] [illegible] परि + वञ्च = परि – वृत्। [illegible] पडिअंचिअ (नाट)।

पडि[illegible] न [परिवर्त्तन] [illegible], [illegible] (१५, ६२)।

पडि[illegible] पु [प्रत्यमित्र] [illegible], [illegible] [illegible] (नाट)।

प[illegible] वि [प्रतिवर्जित] [illegible], [illegible] (दे ६ ३४)।

प[illegible] [परि + चर्] १ [illegible] [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible]। ४ [illegible]। [illegible] (१ [illegible])।

[illegible] [illegible] १ [illegible]। [illegible]। ३ [illegible]। [illegible] ([illegible] ५२०)। [illegible] [illegible] [illegible] (सुपा ४०)।

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] (दे [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [illegible] [illegible]।

पडिअरग न [प्रतिचरण] सेवा, शुश्रूषा (श्रोघ ३६ भा, श्रा १, सुपा २६)।

पडिअरणा स्त्री [प्रतिचरणा] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा (श्रोघ ८३)। २ भक्ति, आदर, सत्कार (उप १३६ टी)। ३ आलोचना, निरीक्षण (श्रोघ ८३)। ४ प्रतिक्रमण, पाप-कर्म से निवृत्ति। ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति (आव ४)।

पडिअलि वि [दे] त्वरित, वेग-युक्त (दे ६, २८)।

पडिआइय सक [प्रत्या + पा] फिर से पान करना। पडिआइयइ (दस १० १)।

पडिआइय सक [प्रत्या + दा] फिर से ग्रहण करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ, लौटा हुआ (पउम १६, २६)। २ न प्रत्यागमन, वापस आना (आचू १)।

पडिआयण न [प्रत्यापन] फिर से पान, 'वमन्न य पडिआयण' (दसू १, १)।

पडिआयण न [प्रत्यादान] फिर से ग्रहण (दसू १, १)।

पडिआर पु [प्रतिकार] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज (श्राव ४, सुपा)। २ बदला, शोध (प्राप्र)। ३ पूर्वाचरित कर्म का अनुभव (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिआर पु [प्रत्याकार] तलवार की म्यान (से २, ४, स २१५), 'न तम्मि पडियारे सेति [illegible] [illegible] (गउ)।

पडिआर पु [प्रतिचार] सेवा शुश्रूषा (णाया १, १३—पत्र १७६)।

पडिआरय वि [प्रतिचारक] सेवा शुश्रूषा करनेवाला (णाया १, १३ टी—पत्र १८१)। स्त्री °रिया (णाया १, १—पत्र २८)।

पडिआरि वि [प्रतिचारिन्] ऊपर देखो (पव १)।

पडिइ स[illegible] [प्रति + इ] पीछे लौटना, वापस आना। [illegible] पडिइंत (उप ५६७ टी)। [illegible] पडिएत्ताए ([illegible])।

पडिइ स्त्री [प्रतीति] [illegible], [illegible] ([illegible])।

पडिइंद पुं [प्रतीन्द्र] १ [illegible] [illegible] (पउम १०५, ६)। २ [illegible] का [illegible]- [illegible] के [illegible] [illegible], [illegible] (पउम १०५, १११)। ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ६, १५२)।

पडिइंधण न [प्रतीन्धन] अस्त्र विशेष, इन्धनास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र (पउम ७१, ६४)।

पडिइक्क देखो पडिक्क (आचा)।

पडिउंचण न [दे] अपकार का बदला (पउम ११, ३८, ४४, १६)।

पडिउंबण न [परिचुम्बन] संगम, संयोग (से २ २७)।

पडिउच्चार सक [प्रत्युत् + चारय्] उच्चारण करना बोलना (भग, उवा)।

पडिउज्जम अक [प्रत्युद् + यम्] सम्पूर्ण प्रयत्न करना। पडिउज्जमंति (चेइय ७८२)।

पडिउट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह (से १५, ८०, पउम ६१, ४०)।

पडिउण्ण देखो परिपुण्ण (से ५, १६)।

पडिउत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (सुर २, १५८, भवि)।

पडिउत्तरण न [प्रत्युत्तरण] पार जाना, पार उतरना (निचू १)।

पडिउत्ति स्त्री [दे] खबर, समाचार, 'अम्मापिअरस्स कुसलपडिउत्ती सगिणेहं पम्हुट्ठा' (महा)।

पडिउत्थ वि [पर्युषित] सपूर्ण रूप से अवस्थित (से ४, ५०)।

पडिउद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ जागृत, जगा हुआ (से १२, २२)। २ प्रकाश-युक्त, 'जलणिहिजलपडिउद्ध आअवणाअल्लिअ णिअम्ब-व णु' (से ५ ७७)।

पडिउवयार पु [प्रत्युपकार] उपकार का बदला, प्रतिफल (पउम ४८, ७२, सुपा ११५)।

पडिउस्सस अक [प्रत्युत् + श्वस्] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना। वकृ पडिउस्ससंत (से ६, १२)।

पडिऊल देखो पडिकूल (अच्चु ८०, स ३, ३५)।

पडिएत्ताए देखो पडिइ।

पडिएहिअ वि [दे] दुग्ध, पूत-पूत (दे ६, ३२)।

पडिओसह न [प्रत्यौषध] एक औषध का प्रतिपक्षी औषध (सम्मत्त १४२)।

पडिसुआ देखो पडंसुआ = प्रतिश्रुत् (ओप)।

पडिसुद वि [प्रतिश्रुत] अंगीकृत, स्वीकृत (प्राप्र, पि ११५)।

पडिकटय वि [प्रतिकण्टक] प्रतिस्पर्धी (राय)।

पडिकत्त देखो पडिकत (उप २२० टी)।

पडिकत्तु वि [प्रतिकर्तृ] इलाज करनेवाला (ठा ४, ४)।

पडिकप्प सक [प्रति + कृप्] १ सजाना, सजावट करना, 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया। कूणियस्स रण्णो भिभिसारपुत्तस्स आभिसेक हत्थिरयणं पडिकप्पेहि' (औप), पडिकप्पेइ (औप)।

पडिकप्पिअ वि [प्रतिक्लृप्त] सजाया हुआ (विपा १, २—पत्र २३, महा, औप)।

पडिकम देखो पडिक्कम। कृ 'पडिकमणं पडिकमओ पडिकमिअव्व च आणुपुव्वीए' (आनि ४)।

पडिकमय न देखो पडिक्कमय (आनि ४)।

पडिकम्म न [प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्] देखो परिकम्म (औप, सण)।

पडिकय वि [प्रतिकृत] १ जिसका बदला चुकाया गया हो वह। २ न. प्रतिकार, बदला (ठा ४, ४)

पडिकाउ } देखो पडिअर = प्रति + कृ।
पडिकाऊण }

पडिकामणा देखो पडिक्कामणा (ओघभा ३६ टी)।

पडिकाय पु [प्रतिकाय] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा (चेइय ७५)।

पडिकिदि स्त्री [प्रतिकृति] १ प्रतिकार, इलाज। २ बदला (दे ६, १६)। ३ प्रतिबिम्ब, मूर्ति (अभि १६६)।

पडिकिय न [प्रतिकृत] ऊपर देखो (चेइय ७५)।

पडिकिरिया स्त्री [प्रतिक्रिया] प्रतीकार, बदला, 'कयपडिकिरिया' (औप)।

पडिकुट्ठ } वि [प्रतिकुष्ट] १ निषिद्ध,
पडिकुट्ठिल्लग } प्रतिषिद्ध (ओघ ४०३, पच ८, सुपा २०७), 'पडिकुट्ठिल्लगदिवसे वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च' (वव १)। २ प्रतिकूल (स २७०), 'अन्नोन्न पडिकुट्ठा दोन्निवि एए असव्वाया' (सम्म १५३)।

पडिकुट्ठेल्लग देखो पडिकुट्ठिल्लग (वव १)।

पडिकूड देखो पडिकूल = प्रतिकूल (सुर ११, २०१)।

पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना। वकृ 'पडिकूलतस्स मज्झ जिणवयणं' (सुपा २०७, २०६)। कृ पडिकूलेयव्व (कुप्र २४२)।

पडिकूल वि [प्रतिकूल] १ विपरीत, उलटा (उत्त १२)। २ अनिष्ट, अनभिमत (आचा)। ३ विरोधी, विपक्ष (हे २, ६७)।

पडिकूलणा स्त्री [प्रतिकूलना] १ प्रतिकूल आचरण। २ प्रतिकूलता, विरोध (धर्मवि ५८)।

पडिकूलिय वि [प्रतिकूलित] प्रतिकूल किया हुआ (राज)।

पडिकूवग पु [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप (स १००)।

पडिकेसव पु [प्रतिकेशव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव (पउम २०, २०४)।

पडिकोस सक [प्रति + क्रुश्] आक्रोश करना, कोसना, शाप या गाली देना। पडिकोसह (सूअ २, ७, ६)।

पडिकोह पु [प्रतिक्रोध] गुस्सा (दस ६, ५८)।

पडिक्क न [प्रत्येक] प्रत्येक, हरएक (आचा)।

पडिक्कत वि [प्रतिक्रान्त] पीछे हटा हुआ, निवृत्त (उवा, पण्ह २, १, श्रा ४३, स १०६)।

पडिक्कम अक [प्रति+क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना। पडिक्कमइ (उव, महा)। पडिक्कमे (श्रा ३, ५, पच १०)। हेकृ पडिक्कमिउ, पडिक्कमित्तए (धर्म २, कस, ठा २, १)। सकृ पडिक्कमित्ता (आचा २, १५)। कृ पडिक्कमव्व, पडिक्कमियव्व (आवम, ओघ ८००)।

पडिक्कम पु [प्रतिक्रम] देखो पडिक्कमण, 'गिहिपडिक्कमाइयाराणं' (पव—गाथा २)।

पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] १ निवृत्ति, व्यावर्तन। २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिरकर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग का प्राप्त करना। ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग मे वर्तन (पण्ह २,१, औप, चउ ५, पडि)। ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप (ठा १०)। ५ जैन साधु और गृहस्थो का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान (श्रा ४८)।

पडिक्कमय वि [प्रतिक्रामक] प्रतिक्रमण करनेवाला, 'जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं' (आनि ४)।

पडिक्कमिउं देखो पडिक्कम। °काम वि [°काम] प्रतिक्रमण करने की इच्छावाला (णाया १, ५)।

पडिक्कय पु [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार (दे ६, १६)।

पडिक्कामणा स्त्री [प्रतिक्रमणा] देखो पडिक्कमण (ओघ ३६ भा)।

पडिक्कूल देखो पडिकूल (हे २,६७, षड्)।

पडिक्ख सक [प्रति + ईक्ष्] १ प्रतीक्षा करना, बाट देखना, बाट जोहना। २ अक स्थिति करना। पडिक्खइ (षड्, महा)। वकृ. पडिक्खत (पउम ५, ७२)।

पडिक्खअ वि [प्रतीक्षक] प्रतीक्षा करनेवाला, बाट जोहनेवाला (गा ५५७ अ)।

पडिक्खभ पु [प्रतिस्तम्भ] अर्गला, अरगला, आगल, अगरी, व्योडा (से ६, ३३)।

पडिक्खण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट, राह (दे १, ३४, कुमा)।

पडिक्खर वि [दे] १ क्रूर, निर्दय (दे ६, २५)। २ प्रतिकूल (षड्)।

पडिक्खल अक [प्रति + स्खल्] १ हटना। २ गिरना। ३ रुकना। ४ सक रोकना। वकृ पडिक्खलत (भवि)।

पडिक्खलण न [प्रतिस्खलन] १ पतन। २ अवरोध (आवम)।

पडिक्खलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ परावृत्त, पीछे हटा हुआ (से १, ७)। २ रुका हुआ (से १, ७, भवि)। देखो पडिखलिअ।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] १ स्थापित। २ [illegible] 'निक्खित्ति [illegible] तेण पडिक्खाविअ, [illegible]' (कुमा)।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (दे ८, १३)।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित (पंच ३)।

पडिक्खिर न [दे] १ [illegible] २ [illegible] (दे , २८)।

पडिखंभी स्त्री [दे] [illegible] देखो (दे ६ २८)।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुआ (?), '[illegible] पडिखद्धेण' (महा)।

पडिखल देखो पडिक्खल (गवि)। वकृ. पडिखलिज्जंत (सुर २०५)।

पडिखलण देखो पडिक्खलण (धर्मवि ५६)।

पडिखलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ रुका हुआ (गवि)। २ [illegible] हुआ, '[illegible]' (कुप्र ४२७)। देखो पडिक्खलिअ।

पडिखिज्ज अक [परि+खिद्] खिन्न होना, [illegible]। पडिखिज्जदि (शौ) (नाट—मालवि २८)।

पडिगमण न [प्रतिगमन] [illegible], पीछे [illegible] (पव १०)।

पडिगय पुं [प्रतिगज] प्रतिपक्षी हाथी (गउड)।

पडिगय वि [प्रतिगत] पीछे लौटा हुआ, वापस गया हुआ (विपा १, २, [illegible])।

पडिगह देखो पडिग्गह (दे ८, ३१)।

पडिगाह सक [प्रति+ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ (भग)। [illegible] (कप्प)। संकृ पडिगाहित्ता, पडिगाहित्ता, पडिग्गाहित्ता (कप्प, [illegible] २, १, ३ ३)। हेकृ पडिगाहित्तए (कस)।

पडिगाहग वि [प्रतिग्राहक] ग्रहण करने वाला ([illegible] १ १—पत्र ४१, उप पृ ३९१)।

पडिगाहिअ वि [प्रतिगृहीत] लिया हुआ, [illegible] १४९)।

पडिग्गह पुं [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] १ पात्र, भाजन (पउम २ ४ ओघ, ओघ ३६, २५१, दे ५ ४८ कप्प)। २ कर्म प्रकृति विशेष, वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म दल परिणत होता है (कम्मप)। °धारि वि [°धारिन्] पात्र रखनेवाला (कप्प)।

पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्] पात्रवाला, 'समणे भगवं महावीरे संवच्छरं साहियं मासं जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए पाणिपडिग्गहिए' (कप्प)।

पडिग्गहिर (शौ) वि [प्रतिगृहिन्, परिगृहीत] स्वीकृत (नाट—मृच्छ ११०, रत्ना १०)।

पडिग्गाह देखो पडिगाह। पडिग्गाहेइ (उवा)। संकृ पडिग्गाहेत्ता (उवा)। हेकृ पडिग्गाहेत्तए (कस, औप)।

पडिग्गाह सक [प्रति+ग्राहय्] ग्रहण कराना। कृ पडिग्गाहिदव्व (शौ) (नाट)।

पडिग्गाहय वि [प्रतिग्राहक] प्रत्यादाता, वापस लेनेवाला (दे ७, ७६)।

पडिग्घाय पुं [प्रतिघात] १ निरोध, अटकाव (दस ६, ५८)। २ विनाश (धर्मसं ५४)।

पडिघाय पुं [प्रतिघात] १ नाश, विनाश। २ निराकरण निरसन 'दुरावडियाघएइ' (आचा, गुर ७ २३४)।

पडिघायग वि [प्रतिघातक] प्रतिघात करनेवाला (उप २६८ टी)।

पडिघोलिर वि [प्रतिघूर्णितृ] डोलनेवाला, हिलनेवाला (से ६, ५१)।

पडिचंद पुं [प्रतिचन्द्र] द्वितीय चन्द्र, जो उत्पात आदि का सूचक है (अणु)।

पडिचक्क न [प्रतिचक्र] अनुरूप चक्र—समुदाय (राज)। देखो पडियक्क = प्रतिचक्र।

पडिचर देखो पडिअर = प्रति + चर्। वकृ पडिचरिय (दस ६, ३)। कृ 'गुरुणो पडिचरियव्वो' (धर्म ८)।

पडिचर सक [प्रति + चर्] परिभ्रमण करना। पडिचरइ (सुज्ज १, ३)।

पडिचरग पुं [प्रतिचरक] जासूस, चर पुरुष (सुर ३)।

पडिचरणा देखो पडिअरणा (राज)।

पडिचार पुं [प्रतिचार] कला विशेष—१ ग्रह आदि की गति का परिज्ञान। २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान (ज २, औप, स ६०३)।

पडिचारय पुंस्त्री [प्रतिचारक] नौकर कर्मकर। स्त्री. °रिया (सुपा ३०८)।

पडिचोइज्जमाण देखो पडिचोय।

पडिचोइय वि [प्रतिचोदित] १ प्रेरित (उप पृ ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह (पउम ४४, ४६)।

पडिचोएत्तु वि [प्रतिचोदयितृ] प्रेरक (ठा ३, ३)।

पडिचोय सक [प्रति + चोदय्] प्रेरणा करना। पडिचोएति (भग १५)। कवकृ पडिचोइज्जमाण (भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] प्रेरणा (ठा ३, ३, भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] निर्भर्त्सना, निष्ठुरता से प्रेरणा (विचार २३८)।

पडिच्चारग देखो पडिचारय (उप ९८६ टी)।

पडिच्छ देखो पडिक्ख। वकृ पडिच्छंत, 'अहिलियदिग्ण पडिच्छमाणो चिट्ठइ' (उव, स १२५, महा)। कृ. पडिच्छियव्व (महा)।

पडिच्छ सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना। पडिच्छइ, पडिच्छति (कप्प, सुपा ३६)। वकृ पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण (औप, कप्प, णाया १, १)। संकृ पडिच्छइत्ता, पडिच्छिअ, पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण (कप्प, धर्मवि १८४, सुपा ८७, तिरु २०)। हेकृ पडिच्छिउं (सुपा ७२)। कृ पडिच्छियव्व (सुपा १२५, गुर ४, १८६)। प्रयो कर्म. पडिच्छावीअदि (शौ) (पि ५५२, नाट)। वकृ पडिच्छावेमाण (कप्प)।

पडिच्छंद पुं [प्रतिच्छन्द] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब (उत्त ७२८ टी, स १६१, ६०६)। २ तुल्य, समान (से ८, ८६)। °रिय वि [°रित] समान किया हुआ (कुमा)।

पडिच्छद पु [दे] मुख, मुँह (दे ६, २४)।
पडिच्छग वि [प्रत्येषक] ग्रहण करनेवाला (निचू ११)।
पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट, राह (उप ३७८)।
पडिच्छण न [प्रत्येषण] १ ग्रहण, आदान, लेना। २ उत्मारण, विनिवारण, 'कुलिसपडिच्छणजोग्गा पच्छा कडया महिहराण' (गउड)।
पडिच्छणा [प्रत्येषणा] ग्रहण, आदान (निचू १६)।
पडिच्छण्ण } वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित,
पडिच्छन्न } ढका हुआ (णाया १, १—पत्र १३, कप्प)।
पडिच्छय पुं [दे] समय, काल (दे ६, १६)।
पडिच्छय देखो पडिच्छग (औप)।
पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडिच्छायण (राज)।
पडिच्छा स्त्री [प्रतीच्छा] ग्रहण, अगीकार (द्र ३३, मण)।
पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन-वस्त्र, प्रच्छादन-पट, 'हिरिपडिच्छायण च नो सचाएमि अहियासित्तए' (आचा, णाया १, १—पत्र १५ टी)।
पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन, आवरण (नुज २०)।
पडिच्छाया स्त्री [प्रतिच्छाया] प्रतिविम्ब, परछाई (उप ५६३ टी)।
पडिच्छावेमाण देखो पडिच्छ = प्रति + इष्।
पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] १ गृहीत, स्वीकृत (स ७, ५४, उवा, औप, सुपा ८४)। २ विशेष रूप से वाञ्छित (भग)।
पडिच्छिअ देखो पडिच्छ = प्रति + इष्।
पडिच्छिआ स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ चिर-काल से व्यायी हुई भैंस (दे ६, २१)।
पडिच्छिउं
पडिच्छिऊण } देखो पडिच्छ = प्रति + इष्।
पडिच्छियव्व
पडिच्छिर वि [प्रतीक्षितृ] प्रतीक्षा करने-वाला, बाट देखनेवाला (वज्जा ३६)।
पडिच्छिय वि [प्रातीच्छिक] अपने दीक्षा-गुरु की आज्ञा लेकर दूसरे गच्छ के आचार्य के पास उनकी अनुमति से शास्त्र पढनेवाला मुनि (णदि ५४)।

पडिच्छिर वि [दे] सदृश, समान (हे २, १७४)।
पडिछद देखो पडिच्छद, 'घडिय निपयडिछद' (उप ७२८ टी)।
पडिछा स्त्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, बाट (ओघ १७५)।
पडिछाया देखो पडिच्छाया (चेइय ७५)।
पडिजंप सक [प्रति + जल्प्] उत्तर देना। पडिजपइ (भवि)।
पडिजग्ग देखो पडिजागर = प्रति + जागृ। पडिजग्गइ (वृह ३)।
पडिजग्गय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (उप ७६८ टी)।
पडिजग्गिय वि [प्रतिजागृत] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह (सुर ११, २४)।
पडिजागर सक [प्रति + जागृ] १ सेवा-शुश्रूषा करना, निर्वाह करना, निभाना। २ गवेषणा करना। पडिजागरंति (कप्प)। वकृ. पडिजागरमाण (विपा १ १ उवा, महा)।
पडिजागर पु [प्रतिजागर] १ सेवा-शुश्रूषा। २ चिकित्सा, 'भणिओ सिट्ठी आणसु विज पडिजागरट्ठाए' (सुपा ५७६)।
पडिजागरण न [प्रतिजागरण] ऊपर देखो (वव ६)।
पडिजागरिय देखो पडिजग्गिय (दे १, ४१)।
पडिजायणा स्त्री [प्रतियातना] प्रतिविम्व, प्रतिमा, परछाई (चेइय ७५)।
पडिजुवइ स्त्री [प्रतियुवति] १ स्व-समान अन्य युवति। २ सपत्नी (कुप्र ४)।
पडिजोग पु [प्रतियोग] कार्मण आदि योग का प्रतिघातक योग, चूर्ण-विशेष (सुर ८, २०४)।
पडिट्ठ वि [पटिष्ठ] अत्यन्त निपुण, वहुत चतुर (सुर १, १३५, १३, ६६)।
पडिट्ठविअ वि [परिस्थापित] सस्थापित (से ५, ५२)।
पडिट्ठविअ वि [प्रतिष्ठापित] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह (अच्चु ६४)।
पडिट्ठा देखो पइट्ठा (नाट—मालती ७०)।
पडिट्ठाव सक [प्रति + स्थापय्] प्रतिष्ठित करना। पडिट्ठावेहि (पि २२०, ५५१)।

पडिट्ठावअ देखो पइट्ठावय (नाट—वेणी ११२)।
पडिट्ठाविद (शौ) देखो पइट्ठाविय (अभि १८७)।
पडिट्ठिअ देखो पइट्ठिय (षड्, पि २२०)।
पडिठाण न [प्रतिस्थान] हर जगह (धर्मवि ४)।
पडिण देखो पडीण (पि ८२, ६६)।
पडिणव वि [प्रतिनव] नया, नूतन, 'तुरअ-पडिणवखुरखाद णिरतरखडिद' (विक्र २६)।
पडिणिअसण न [दे] रात मे पहनने का वस्त्र (दे ६, ३६)।
पडिणिअत्त अक [प्रतिनि + वृत्] पीछे लौटना, पीछे वापस जाना। पडिणियत्तई (औप)। वकृ पडिणिअत्तंत, पडिणिअत्त-माण (से १३, ७५, नाट—मालती २६)। सकृ. पडिणियत्तित्ता (औप)।
पडिणिअत्त } वि [प्रतिनिवृत्त] पीछे लोटा
पडिणिउत्त } हुआ (गा ६८ अ, विपा १,५, उवा, मे १, २६, अभि १२४)।
पडिणिकास वि [प्रतिनिकाश] समान, तुल्य (राय ६७)।
पडिणिक्खम अक [प्रतिनिर् + क्रम्] वाहर निकलना। पडिणिक्खमइ (उवा)। संकृ पडिणिक्खमित्ता (उवा)।
पडिणिग्गच्छ अक [प्रतिनिर् + गम्] वाहर निकलना। पडिणिग्गच्छइ (उवा)। सकृ पडिणिग्गच्छित्ता (उवा)।
पडिणिज्जाय सक [प्रतिनिर् + यापय्] अर्पण करना। पडिणिज्जाएमि (णाया १, ७—पत्र ११८)।
पडिणिभ वि [प्रतिनिभ] १ सदृश, तुल्य, वरावर। २ हेतु-विशेष, वादी की प्रतिज्ञा का खडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति (ठा ४, ३)।
पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत्। वकृ पडिणिवत्तमाण (नाट, रत्ना ५४)।
पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (काल)।
पडिणिविट्ठ वि [प्रतिनिविष्ट] द्विष्ट, द्वेष-युक्त (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि- वृत्। वकृ. पडिणिवुत्तमाण ([illegible] ९३)।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त ([illegible])।

पडिणिवेस देखो पडिनिवेस (नाट)।

पडिणि[illegible] देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि- वृत्। वकृ. पडिणि[illegible] (सेत ३२०)।

पडिणिसन्त वि [प्रतिनिश्रान्त] १ विश्रान्त। २ निलीन (णाया १, ८—पत्र १४०)।

पडिणीअ न [प्रत्यनीक] १ प्रतिपक्ष प्रति [illegible]। २ वि प्रतिकूल, [illegible] (भग ८, ८ [illegible], सम्म १६, श्राव [illegible])।

पडिण्णत्त वि [प्रतिज्ञप्त] उक्त, कथित, [illegible] (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिण्णा स्त्री. पइण्णा (स्वप्न २०७ सूअ १, ३, ३, २०)।

पडिण्णा[illegible] देखो पइण्णा[illegible] (पि २७६, ५६५, नाट—मालवि १२)।

पडितन्त वि [प्रतितन्त्र] [illegible] (सुर १)।

पडि[illegible] [प्रतिमान] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब ([illegible])।

पडि[illegible] [illegible] (णाया १३४)।

पडि[illegible] [illegible] ([illegible])।

पडि[illegible] [illegible] ([illegible])।

पडि[illegible] (नाट—[illegible] ८१)।

पडि[illegible] [illegible] ([illegible])।

पडि[illegible] = [illegible]।

पडि[illegible] पडि[illegible] (नाट—शकु १४)।

पडित्थिर वि [दे] समान, सदृश (दे ६, २०)।

पडित्थिर वि [परिस्थिर] स्थिर, 'गुप्पत-पडित्थिरे' (से २, ४)।

पडित्थद्ध वि [प्रतिस्तब्ध] गर्वित (उत्त १२, ५)।

पडिदण्ड पुं [प्रतिदण्ड] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड, 'सपडिदण्डेण धरिज्जमाणेण आयवत्तेणं विरायते (औप)।

पडिदंस सक [प्रति + दर्शय्] दिखलाना। पडिदंसेइ (भग, उवा)। संकृ पडिदंसेत्ता (उवा)।

पडिदा सक [प्रति + दा] पीछे देना, दान का बदला देना। पडिदेइ (निचू ३२४१)। कृ पडिदायव्व (पव)।

पडिदाण न [प्रतिदान] दान के बदले में दान 'दाणपडिदाणउचिय' (उप ५९७ टी)।

पडिदामिया स्त्री [प्रतिदामिका] दासी (दस ३, १ टी)।

पडिदिसा } स्त्री [प्रतिदिश्] विदिशा,
पडिदिसि } विदिश् (गा, पि ४१३)।

पडिदुगञ्छि वि [प्रतिजुगुप्सिन्] १ निन्दा करनेवाला। २ परिहार करनेवाला, 'सीओ-दगपडिदुगंछिणो' (सूअ १, २, २ २०)।

पडिदुवार न [प्रतिद्वार] १ हर एक द्वार (पएह १ ३)। २ छोटा द्वार (कप्प पएण २)।

पडिधि देखो परिहि, 'तुम्बिपडिधीतो बहिता' (सुज्ज ६)।

पडिनमुक्कार पुं [प्रतिनमस्कार] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम (उप)।

पडिनिक्खन्त वि [प्रतिनिष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ (णाया १, १३)।

पडिनिक्खम देखो पडिणिक्खम। पडिनि-क्खमइ (कप्प)। संकृ पडिनिक्खमित्ता, (कप्प, भग)।

पडिनिग्गच्छ देखो पडिणिग्गच्छ। पडिनि-ग्गच्छइ (उवा)। पडिनिग्गच्छन्ति (भग)। वकृ. पडिनिग्गच्छमाण (उवा, पि ५८०)।

पडिनिभ देखो पडिणिभ (सम्मत्त १)।

पडिनियत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि+वृत्। पडिनियत्तइ (महा)। हेकृ. पडिनियत्तए (कप्प)।

पडिनियत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (णाया १, १४, महा)।

पडिनियत्ति स्त्री [प्रतिनिवृत्ति] वापस लौटना प्रत्यावर्तन (मोह ६३)।

पडिनिवेस पुं [प्रतिनिवेश] १ आग्रह, कदाग्रह, दुराग्रह, अनुचित हठ (पच ६)। २ गाढ अनुशय, पश्चात्ताप (विसे २२९६)।

पडिनिसिद्ध वि [प्रतिनिषिद्ध] निवारित, हटाया हुआ (उप पृ ३३३)।

पडिन्नत्त देखो पडिण्णत्त (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञपय्] कहना। संकृ पडिन्नवित्ता (कप्प)।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञापय्] १ प्रतिज्ञा कराना। २ नियम दिलाना। पडिन्नविज्जा, पडिन्नवेज्जा (दसचू २, ८)।

पडिन्ना देखो पडिण्णा (आचा)।

पडिपथ पुं [प्रतिपथ] १ उलटा मार्ग विपरीत मार्ग। २ प्रतिकूलता (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिपथि वि [प्रतिपन्थिन्] प्रतिकूल, विरोधी, 'अप्पेगे पडिभासन्ति पडिपथियमागता' (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिपक्ख देखो पडिवक्ख (सुपा १३)।

पडिपडिय वि [प्रतिपतित] फिर से गिरा हुआ, 'ताओ मिरयत्तिणो नानियावि पडिपडिया भवारएणे' (गाथ ६४)।

पडिपत्ति } देखो पडिवत्ति (नाट—चैत
पडिपत्ति } ३८, गमि ६)।

पडिपह पुं [प्रतिपथ] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता (स १८७, पि ९६६ ण)। २ स. अभिमुख संमुख (सूअ २, २, ३१ टी)।

पडिपहिअ वि [प्रतिपथिक] संमुख आने-वाला (सूअ २, २, २८)।

पडिपाअ सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, कथन करना। कृ पडिपाअणीअ (नाट—शकु ६७)।

पडिपाय पुं [प्रतिपाद] मुख्य पाद की पुष्टि करनेवाला पाद (राय)।

पडिपाहुड न [प्रतिप्राभृत] बदले की भेंट (सुपा १४५)।

पडिपिंडिअ वि [दे] प्रवृद्ध, बढा हुआ (दे ६, ३४)।

पडिपिल्ल सक [प्रति + क्षिप, प्रतिप्र + ईरय्] प्रेरणा करना। पडिपिल्लइ (भवि)।

पडिपिल्लण न [प्रतिप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर १५, १४१)। २ ढक्कन, पिधान। ३ वि. प्रेरणा करनेवाला, 'दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लति नीमासे' (कुप्र १३१)।

पडिपिहा देखो पडिपेहा। सक्र पडिपिहित्ता (पि ५८२)।

पडिपीलण न [प्रतिपीडन] विशेष पीडन, अधिक दवाव (गउड)।

पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ्] १ पृच्छा करना, पूछना। २ फिर से पूछना। ३ प्रश्न का जवाब देना। पडिपुच्छइ (उव)। वकृ. पडिपुच्छमाण (कप्प)। कृ पडिपुच्छणिज्ज, पडिपुच्छणीय (उवा, णाया १, १, राय)।

पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छन] नीचे देखो (भग, उवा)।

पडिपुच्छणया } स्त्री [प्रतिप्रच्छना] १
पडिपुच्छणा } पूछना, पृच्छा। २ फिर से पृच्छा (उत्त २६, २०, औप)। ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब (बृह ४, उप पृ ३६८)।

पडिपुच्छणिज्ज }
पडिपुच्छणीय } देखो पडिपुच्छ।

पडिपुच्छा स्त्री [प्रतिपृच्छा] देखो पडिपुच्छणा (पचा २, वव २, बृह १)।

पडिपुच्छिअ वि [प्रतिपृष्ट] जिससे प्रश्न किया गया हो वह (गा २८६)।

पडिपुज्जिय वि [प्रतिपूजित] पूजित, अर्चित, 'वदणवरकणगकलमसुविरिणम्मियपडिपुजि (? पुज्जि, पूइ) यमरसपउममोहतदारभाए' (णाया १, १—पत्र १२)।

पडिपुण्ण देखो पडिपुन्न (उवा, पि २१८)।

पडिपुत्त पु. [प्रतिपुत्र] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र, पोता, 'अकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्तपुत्तीय' (सुपा ६)। देखो पडिपोत्तय।

पडिपुन्न वि [प्रतिपूर्ण] परिपूर्ण, सपूर्ण (णाया १, १, सुर ३, १८, ११४)।

पडिपूइय देखो पडिपुज्जिय (राज)।

पडिपूयग } वि [प्रतिपूजक] पूजा करने-
पडिपूयय } वाला (राज, सम ५१)।

पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] प्रत्युपकार-कर्ता (उत्त १७, ५)।

पडिपूरिय वि [प्रतिपूरित] पूर्ण किया हुआ (पउम १००, ५०, ११५, ७)।

पडिपेल्लण देखो पडिपिल्लण (गउड, से ६, ३२)।

पडिपेल्लण न [परिप्रेरण] देखो पडिपिल्लण (से २, २४)।

पडिपेल्लिय वि [प्रतिप्रेरित] प्रेरित, जिसको, प्रेरणा की गई हो वह (सुर १५, १८०, महा)।

पडिपेहा सक [प्रतिपि + धा] ढकना, आच्छादन करना। सक्र. पडिपेहित्ता (सूअ २, २, ५१)।

पडिपोत्तय पु [प्रतिपुत्रक] नप्ता, कन्या का पुत्र, लडकी का लडका, नाती (सुपा १६२)। देखो पडिपुत्तय।

पडिप्पह देखो पडिपह (उप ७२८ टी)।

पडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (हे १, ४४, २, ५३, प्राप्र, सक्षि १६)।

पडिप्फलणा स्त्री [प्रतिफलना] १ स्खलना। २ सक्रमण, 'पडिमदृपडिप्फलणावजिरनीसेससुरघट' (सुपा ८७)।

पडिप्फलिअ } वि [प्रतिफलित] १ प्रति-
पडिफलिअ } बिम्बित, सक्रान्त (से १५, ३१, दे १, २७)। २ स्खलित (पाअ)।

पडिबध सक [प्रति + बन्ध्] रोकना, अटकाना। पडिबधइ (पि ५१३)। कृ पडिबधेयव्व (वसु)।

पडिबध सक [प्रति + बन्ध्] १ वेष्टन करना। २ सेकना। पडिबंधइ, पडिबंधति (सूअ १, ३, २, १०)।

पडिबध पु [प्रतिबन्ध] व्याप्ति, नियम (धर्मस १११)।

पडिबंध पुं [प्रतिबन्ध] १ रुकावट (उवा, कप्प)। २ विघ्न, अन्तराय (उप ८८७)। ३ अत्यादर, बहुमान (उप ७७६, उवर १४६)। ४ स्नेह, प्रीति, राग (ठा ६, पचा १७)। ५ आसक्ति, अभिष्वग (णाया १, ५, कप्प)। ६ वेष्टन (सूअ १, ३, २)।

पडिबधअ } वि [प्रतिबन्धक] प्रतिबन्ध
पडिबधग } करनेवाला, रोकनेवाला (अभि २५३, उप ६४५)।

पडिबधण न [प्रतिबन्धन] प्रतिबन्ध रुकावट (पि २१८)।

पडिबधेयव्व देखो पडिबध = प्रति + बन्ध्।

पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] १ रोका हुआ, सरुद्ध, 'वायुरिव अप्पडिबद्धे' (कप्प, पराह १, ३)। २ उपजनित, उत्पादित (गउड १८२)। ३ ससक्त, सबद्ध, सलग्न, 'तरिआए तरगियपकवडलपडिबद्धवालुयामसिण पुलिणवित्थारा' (गउड, कुप्र ११५, उवा)। ४ सामने बँधा हुआ, 'पडिबद्ध नअर तुमे नरिंदचक्क पयाववियडपि' (गउड)। ५ व्यवस्थित (पचा १३)। ६ वेष्टित (गउड)। ७ समीप मे स्थित, 'तं चेव य सागरिय जस्स अदूरे स पडिबद्धो' (बृह १)।

पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] नियत, व्याप्त (पचा ७, २)।

पडिबाह सक [प्रति + बाध्] रोकना। हेकृ पडिबाहिदु (शौ) (नाट—महावी ६६)।

पडिबाहिर वि [प्रतिबाह्य] अनधिकारी, अयोग्य (सम ५०)।

पडिबिंब न [प्रतिबिम्ब] १ परछाँही, प्रतिच्छाया (सुपा २६६)। २ प्रतिमा, प्रतिमूर्त्ति (पाअ, प्रामा)।

पडिबिंबिअ वि [प्रतिबिम्बित] जिसका प्रतिबिम्ब पडा हो वह (कुमा)।

पडिबुज्झ अक [प्रति + बुध्] १ बोध पाना। २ जागृत होना। पडिबुज्झइ (उवा)। वकृ पडिबुज्झत, पडिबुज्झमाण (कप्प)।

पडिबुज्झणया } स्त्री [प्रतिबोधना] १ बोध,
पडिबुज्झणा } समझ। २ जागृति (स १५६, औप)।

पडिबुद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ बोध-प्राप्त (प्रासू १३५, उव)। २ जागृत (णाया १, १)। ३ न प्रतिबोध (आचा)। ४ पु एक राजा का नाम (णाया १, ८)।

पडिबूहणया स्त्री [प्रतिबृंहणा] उपचय, पुष्टि (सूअ २, २, ८)।

पडिबोध देखो पडिबोह = प्रतिबोध (नाट—मालती ५६)।

पडिबोहि [illegible] देखो पडिबोहिय (सनि ४६)।

पडिबोह सक [प्रति + बोधय्] १ जगाना। २ बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना। पडिबोहेइ ([illegible])। वकृ पडि- बोहिंत (सनि ४६)। [illegible] पडिबोहिअ (नाट—मालती १२६)। [illegible] पडिबोहिउ ([illegible])। [illegible] पडिबोहिअव्व (पि ५७७)।

पडिबोहग पुं [प्रतिबोधक] १ बोध, ज्ञान। २ [illegible] (उद्द वि २८१)।

पडिबोहि [illegible] वि [प्रतिबोधक] १ बोध देने- वाला। २ जगानेवाला (वि २८० टी)।

पडिबोहण न [प्रतिबोधन] देखो पडि- बोह = प्रतिबोध ([illegible] ७०८)।

पडिबोहिय वि [प्रतिबोधित] प्रतिबोध प्राप्त [illegible] (णाया १, ३ १, ८)।

पडिबोहि [illegible] वि [प्रति[illegible]] [illegible] प्रति- दान किया गया हो वह (णाया १, १, [illegible])।

पडिभग पुं [प्रतिभग] भंग विनाश (से ५ १६)।

पडिभ[illegible] अक [प्रति + भञ्ज्] भागना, टूटना। [illegible] पडिभज्जइ (वव ४)।

पडि[illegible] न [प्रति[illegible]] [illegible] वस्तु जो [illegible] करने [illegible] (स २०४, सुर ६, १४८)।

पडि[illegible] सक [प्रति + [illegible]] [illegible] (स ३६३)।

पडि[illegible] वि [प्रतिभग्न] भागा हुआ, [illegible] (स, ५७३)।

पडि[illegible] [illegible] [[illegible]] [illegible] (से १३, [illegible])।

पडि[illegible] सक [प्रति + भाष्] [illegible] (स [illegible] ४)।

पडि[illegible] वि [प्रति[illegible]] [illegible] (महा [illegible])।

पडि[illegible] वि [प्रति[illegible]] १ [illegible] २ [illegible] (पि [illegible])।

पडिभम सक [प्रति, परि + भ्रम्] घूमना, [illegible] 'अवरद ममुद्दलि [illegible]

पति पडिभमिय गुरुत्तोमर्इ दर्लाति' (भवि)।

पडिभमिय वि [प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त] घूमा हुआ (भवि)।

पडिभय न [प्रतिभय] भय, डर (पउम ७३, १२)।

पडिभा अक [प्रतिभा] मालूम होना। पडि- भादि (शौ) (नाट—रत्ना ३)।

पडिभाग पु [प्रतिभाग] १ अंश, भाग (आचा २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब (राज)।

पडिभास अक [प्रति + भास्] मालूम होना। पडिभासदि (शौ) (नाट—मृच्छ १४१)।

पडिभास सक [प्रति + भाष्] १ उत्तर देना। २ जानना, कहना, 'अण्णो पडिभा- सति' (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिभिण्ण वि [प्रतिभिन्न] संबद्ध संलग्न (से ४, ५)।

पडिभिन्न वि [प्रतिभिन्न] भेद-प्राप्त (पव—गाथा १६, चेइय ६४२)।

पडिभुअंग पु [प्रतिभुजङ्ग] प्रतिपक्षी भुजंग—वेश्या लंपट (कप्पूर २७)।

पडिभू पु [प्रतिभू] जामिनदार, जमानत करनेवाला मनौतिया (नाट—चैत ७५)।

पडिभेअ पु [दे प्रतिभेद] उपालम्भ, निंदा, 'पडिभेओ पच्चारणं' (पाअ)।

पडिभोइ वि [प्रतिभोगिन्] परिभोग करने- वाला, 'पत्तासपडिभोगिणि' (आचा २ ३, १, ८ टि ४०५)।

पडिम वि [प्रतिम] समान, तुल्य (सोम ३५)।

पडिम° देखो पडिमा।°ट्ठाइ वि [°स्थायिन्] १ कायोत्सर्ग में रहनेवाला। २ नियम विशेष में स्थित (पएह २, १—पत्र १००, ठा ५, १—पत्र २६६)।

पडिमंत सक [प्रति + मन्त्रय्] उत्तर देना। पडिमंतेइ (उप १८, ६)।

पडिमल्ल पु [प्रतिमल्ल] प्रतिपक्षी मल्ल (भवि)।

पडिमा स्त्री [प्रतिमा] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब, 'जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं' (दसनि १, नाट गा १, ११४)। २ कायोत्सर्ग। ३ जैन शास्त्रोक्त नियम-विशेष (पएह २, १,

मम १६, ठा २, ३, ५, १)। °गिह न [°गृह] मन्दिर (निचू १२)। देखो पडिम°।

पडिमाण न [प्रतिमान] जिनसे सुवर्ण आदि का तोल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण (अणु)।

पडिमाण न [प्रतिमान] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब (चेइय ७५)।

पडिमि } सक [प्रति + मा] १ तौल करना माप करना। २ गिनती करना। कर्म पडिमिणिज्जइ (अणु)। कवकृ पडिमिज्जमाण (राज)।
पडिमिण }

पडिमुच सक [प्रति + मुच्] छोड़ना। हेकृ. पडिमुचिउ (स १४, २)।

पडिमुडणा स्त्री [प्रतिमुण्डना] निषेध, निवारण (वृह १)।

पडिमुक्क वि [प्रतिमुक्त] छोड़ा हुआ (से ३, १२)।

पडिमोअणा स्त्री [प्रतिमोचना] छुटकारा (से १, ४६)।

पडिमोक्खण न [प्रतिमोचन] छुटकारा (स ४१)।

पडिमोयग वि [प्रतिमोचक] छुटकारा करने- वाला (राज)।

पडिमोयण देखो पडिमोक्खण (श्रौप)।

पडियक्क देखो पडिक्क (भाना)।

पडियक्क न [प्रतिचक्र] युद्धकला-विशेष, 'तेण पुणो विय सिप्पाइसो इसत्ते पडियक्के जनुमुक्के य भ्रसाउवि पत्ताओ' (महा)।

पडियग्गण न [प्रतिजागरण] सम्भाल खबर (धर्मसं १०१३)।

पडियच्च देखो पडिअ = प्रति + इ।

पडियरण न [प्रतिकरण] प्रतीकार, इलाज (दिव ३६६)।

पडियरिअ वि [प्रतिचरित] सेवित, सेवा किया हुआ (सोप १०५)।

पडिया स्त्री [प्रतिज्ञा] १ उद्देश, '[illegible] पडियाए' (कस, भाचा)। २ अभिप्राय (पि २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [पटिका] वस्त्र-विशेष, 'सुरसाणा य सुपुत्ता, [illegible] य कोमला मिलिर।

कत्तो पुण्णेहि विणा,
वेसा पडियव्व सपडइ,
(वज्जा ११६)।

पडियाइक्ख सक [प्रत्या+ख्या] त्याग करना। पडियाइक्खे (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, परित्यक्त, छोड़ा हुआ, (ठा २, १, भग, उवा कम, विपा १, १, औप)।

पडियाणय न [दे. पर्याणक] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [प्रत्यानन्द] विशेष आनन्द, प्रभूत आह्लाद, बहुत आनद (औप)।

पडियाणय न [दे पटतानक, पर्याणक] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुड़सवारी का उपकरण (णाया १, १७—पत्र २३२ टी)।

पडियारणा स्त्री [प्रतिवारणा] निषेध (पचा १७, ३४)।

पडियासूर अक [दे] चिड़ना, गुस्सा होना। कृ 'पडियासूरेयव्वं न कयाइवि पाण-वाएवि' (आक २५, १४)।

पडिर वि [पतितृ] गिरनेवाला (कुमा)।

पडिरअ देखो पडिरव (गा ५५ अ, से ७, १६)।

पडिरजिअ वि [दे] भग्न, टूटा हुआ (दे ६, ३२)।

पडिरक्खिय वि [प्रतिरक्षित] जिसकी रक्षा की गई हो वह (सवि)।

पडिरव पु [प्रतिरव] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (गउड, गा ५५, सुर १, २४४)।

पडिराय पुं [प्रतिराग] लाली, रक्तपन, 'उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठझिज्जतरोसपडिराय। पाणोसरतमइर व फलिहचमय इमा वयण' (गउड)।

पडिरिग्गअ [दे] देखो पडिरजिअ (षड्)।

पडिरु अक [प्रति+रु] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ. पडिरुअ त (से १२ ६, पि ४७३)।

पडिरुंध } सक [प्रति+रुध्] १ रोकना,
पडिरुंभ } अटकाना। २ व्याप्त करना। पडि-रुभइ (से ८, ३६)। वकृ. पडिरुधंत (से ११, ५)।

पडिरुद्ध वि [प्रतिरुद्ध] रोका हुआ, अटकाया हुआ (सुपा ८५, वज्जा ५०)।

पडिरूअ } वि [प्रतिरूप] १ रम्य, सुन्दर,
पडिरूव } चारु, मनोहर, (सम १३७, उवा, औप)। २ रूपवान्, प्रशस्त रूपवाला, श्रेष्ठ आकृतिवाला (औप)। ३ असाधारण रूपवाला। ४ नूतन रूपवाला (जीव ३)। ५ योग्य, उचित (स ८७, भग १५, दस ६, १)। ६ सदृश, समान (णाया १, १—पत्र ६१)। ७ समान रूपवाला, सदृश आकारवाला (उत्त २६, ४२)। ८ न प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्त्ति, 'कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरूव लिहिऊण' (सुर ११, २३८, राय)। ९ समान रूप, समान आकृति, 'तुम्हपडिरूव-धारि पासइ विज्जाहरसुदाढ' (सुपा २६८)। १० पुं इन्द्र-विशेष, भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ११ विनय का एक भेद (वव १)।

पडिरूवसि वि [प्रतिरूपिन्] रमणीय, सुन्दर (आचा २, ४, २, १)।

पडिरूवग पुन [प्रतिरूपक] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, 'तिदिसिं पडिरूवगा य देवकया' (आव, बृह)।

पडिरूवणया स्त्री [प्रतिरूपणता] १ समा-नता, सदृशता या सादृश्य। २ समान वेष-धारण (उत्त २६, १)।

पडिरूवा स्त्री [प्रतिरूपा] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम (सम १५०)।

पडिरोव पु [प्रतिरोप] पुनरारोपण (कुप्र ५५)।

पडिरोह पु [प्रतिरोध] रुकावट (गउड, गा ७२४)।

पडिरोहि वि [प्रतिरोधिन्] रोकनेवाला (गउड)।

पडिलभ सक [प्रति+लभ्] प्राप्त करना। संकृ पडिलंभिय (सूअ १, १३)।

पडिलभ पु [प्रतिलम्भ] प्राप्ति, लाभ (सूम २, ५)।

पडिलग्ग वि [प्रतिलग्न] लगा हुआ, सम्बद्ध (से ६, ८६)।

पडिलग्गल न [दे] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप (दे ६, ३३)।

पडिलभ सक [प्रति+लभ्] प्राप्त करना। पडिलभेज्ज (उत्त १, ७)। संकृ पडिलब्भ (सूअ १, १३, २)।

पडिलाभ } सक [प्रति+लाभय्, लम्भय्]
पडिलाह } साधु आदि को दान देना। पडि-लाहेज्जह (काल)। वकृ पडिलाभेमाण (णाया १, ५, भग, उवा)। संकृ पडिला-भित्ता (भग ८, ५)।

पडिलाहग न [प्रतिलाभन] दान देना (रभा)।

पडिलिहिअ वि [प्रतिलिखित] लिखा हुआ, 'सम्म मत दुवारि पडिलिहिअ' (ति १४)।

पडिलीण वि [प्रतिलीन] अत्यन्त लीन (धर्मवि ५३)।

पडिलेह सक [प्रति+लेखय्] १ निरीक्षण करना, देखना। २ विचार करना। पडिलेहेइ उव, कस, भग), 'एतेसु जाणे पडिलेह सायं, एतेण काएण य आयदडे' (सूअ १, ७, २)। संकृ भूएहिं जाण पडिलेह साय' (सूअ १, ७, १६), पडिलेहित्ता (भग)। हेकृ पडि-लेहित्तए, पडिलेहेत्तए (कप्प)। कृ पडि-लेहियव्व (ओघ ४, कप्प)।

पडिलेह पु [प्रतिलेख] देखो पडिलेहा (चेइय, २६६)।

पडिलेहग देखो पडिलेहय (राज)।

पडिलेहण न [प्रतिलेखन] निरीक्षण (ओघ ३ भा, अत)।

पडिलेहणया देखो पडिलेहणा (उत्त २६, १)।

पडिलेहणा स्त्री [प्रतिलेखना] निरीक्षण, निरूपण (भग)।

पडिलेहणी स्त्री [प्रतिलेखनी] साधु का एक उपकरण, 'पुंजणी' (पव ६१)।

पडिलेहय वि [प्रतिलेखक] निरीक्षक, देखनेवाला (ओघ ४)।

पडिलेहा स्त्री [प्रतिलेखा] निरीक्षण, अव-लोकन (ओघ ३, ठा ५, ३, कप्प)।

पडिलेहि वि [प्रतिलेखिन्] निरीक्षक (सूअ १, ३, ३, ५)।

पडिलेहिय वि [प्रतिलेखित] [illegible] (उप [illegible])।

पडिलेह [illegible] देखो पडिलेह।

पडिलोम वि [प्रतिलोम] प्रतिकूल [illegible]। २ विपरीत, [illegible] (आचा २, ७, २)। ३ [illegible] 'उप [illegible] पडिलोमो [illegible]' (सुर [illegible])। ४ [illegible]।

पडिलोमआ स्त्री [प्रतिलोमता] [illegible] (सू [illegible])।

पडिली स्त्री [दे] १ [illegible]। २ [illegible] (दे ६, ६४)।

पडिव [illegible] = प्रति+[illegible]। पडिवेइ (दे ४, ६७)।

पडिवइर न [प्रतिवैर] [illegible] (भवि)।

पडिवं [illegible] देखो पडिवया (उप [illegible])।

पडिवंदण न [प्रतिवन्दन] [illegible] (पउम २६, ७३)।

पडिवंध [illegible] देखो पडिबंध (से ३, ४८)।

पडिवंधु [illegible] देखो पडिबंधु (भवि)।

पडिव [illegible] न [प्रति [illegible]] [illegible] (स्वप्न)।

पडिवक्ख सक [प्रति+वच्] प्रत्युत्तर देना, [illegible] (भवि)।

पडिवक्ख पुं [प्रतिपक्ष] १ [illegible], [illegible] (गा ४४२, सुर १, ४६ २, [illegible])। २ [illegible] (भवि)। ३ [illegible]।

पडिवक्खिय वि [प्रतिपक्षिक] [illegible] (स्वप्न)।

पडिवच्च [illegible] [प्रति+व्रज] [illegible]। [illegible]।

पडिवच्छ [illegible] देखो पडिवक्ख, [illegible] (गा [illegible])।

पडिवज्ज सक [प्रति+पद्] स्वीकार करना, [illegible]। पडिवज्जइ, पडि[illegible] (महा [illegible])। [illegible] (वि ४८[illegible])। [illegible] पडिवज्जमाण (वि ४६[illegible])। [illegible] पडिवज्जिऊण, पडिवज्जिमाण

पडिवज्जिय (वि ५८६; ५८. महा रुमा)। कृ. पडिवज्जिउ पडिवज्जित्तए, पडिवत्तु (पंचा १८, ३०, २, १, रमा, रमा)। कृ पडिवज्जियव्व पडिवत्तेयव्व (उत ३२, उप ६८८, १००१)।

पडिवज्जण न [प्रतिपदन] स्वीकार, अंगीकार (सुपा ४२०)।

पडिवज्जण न [प्रतिपादन] अंगीकारण, स्वीकार करवाना (सुपा १४३, ३८६)।

पडिवज्जणया स्त्री [प्रतिपदना] स्वीकार (आदि २३२)।

पडिवज्जणया स्त्री [प्रतिपादना] प्रतिपादन (आदि २३२)।

पडिवज्जय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करने-वाला 'एए नाय गणुयवयपडिवज्जओ त्ति' (स ४०४)।

पडिवज्जावण न [प्रतिपादन] स्वीकारण, स्वीकार कराना (सुपा ६६)।

पडिवज्जाविय वि [प्रतिपादित] स्वीकार कराया हुआ (महा)।

पडिवज्जिय वि [प्रतिपन्न] स्वीकृत (भवि)।

पडिवट्टअ न [प्रतिपट्टक] एक प्रकार का [illegible] कपड़ा (स्वप्न)।

पडिवड्ढावय वि [प्रतिवर्धापक] १ बधाई [illegible] स्वीकार कर बधाई देनेवाला। २ बधाई के बदले में बधाई देनेवाला। स्त्री. °विआ (स्वप्न)।

पडिवण्ण वि [प्रतिपन्न] १ प्राप्त (भग)। २ स्वीकृत, अंगीकृत (षड्)। ३ आश्रित (पंचा. ठा ७)। ४ जिसने स्वीकार किया हो वह (ठा ४, १)।

पडिवण्ण पुं [परिवर्ण] परिवर्ण (गउ. सुपा ३१८)।

पडिवण्णा देखो पडिवन्नग (गउ)।

पडिवत्ति स्त्री [प्रतिपत्ति] १ परिच्छिति। २ भक्ति प्रकार (विसे ४३८)। ३ प्रवृत्ति, खबर (पउम ८० ३०, ३१)। ४ ज्ञान (सुर ३४, ४८)। ५ आदर, गौरव (महा)। ६ स्वीकार, अंगीकार (आदि)। ७ नाम प्राप्ति, '[illegible]' (स्वप्न)। ८ [illegible]। ९ पंक्ति विशेष (स्वप्न १०६)।

१० गति, वेग (कुमा, महा)। ११ परिपाटी, क्रम (श्राव ४)। १२ श्रुत विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारा में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना (कम्म १, ७)। °समास पुं [°समास] श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पडिवत्तु देखो पडिवज्ज।

पडिवत्ति देखो पडिवत्ति (प्राप्र)।

पडिवद्धावअ देखो पडिवड्ढावय। स्त्री. °विआ (रंभा)।

पडिवन्न देखो पडिवण्ण। 'पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण ज होइ न होइ' (प्रासू ३ गाथा १, ४, उवा, सुर ८, ४०, स ६४६, [illegible] २०६, पात्र)।

पडिवन्निय (अप) देखो पडिवण्ण (भवि)।

पडिवय अक [प्रति+पत्] ऊँचे जाकर गिरना। वकृ पडिवयमाण (आचा)।

पडिवय सक [प्रति+वच्] उत्तर देना। भवि. पडिवक्खामि (सूअ १, ११, ६)।

पडिवयण न [प्रतिवचन] १ प्रत्युत्तर जवाब (गा ४०६, सुर २, १२३ भवि)। २ आदेश, आज्ञा, 'देहि मे पडिवयणं' (श्रावक)। ३ पुं हरिवंश के एक राजा का नाम (पउम २२ ९८)।

पडिवया स्त्री [प्रतिपत्] पक्ष की पहली तिथि (ठ १, ८८, २०६, षड्)।

पडिवलिय वि [प्रसुप्त] फिर से सोया हुआ (दे ६, २३)।

पडिवस अक [प्रति+वस्] निवास करना। वकृ पडिवसंत (वि ३६७ [illegible]—सुपा ३२१)।

पडिवसभ पुं [प्रतिवृषभ] [illegible] दो [illegible] की दूरी पर [illegible] (पंचा [illegible])।

पडिवह सक [प्रति+वह्] वहन करना, [illegible]। कवकृ. पडिवुज्झमाण ([illegible])।

पडिवह देखो पडिपह (से ३, २४, ८, ३३, पउम ७३, २८)।

पडिवह पुं [प्रतिवध, परिवध] वध, हत्या (पउम ७३, २४)।

पडिवा देखो पडिवया (सुज्ज १०, १४)।

पडिवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवाद करनेवाला, वादी का विपक्षी (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिपादन करनेवाला (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपातिन्] १ विनश्वर, नष्ट होने के स्वभाववाला (ठा २, १, ओघ ५३२ उप पृ ३५८)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, फूंक मे दीपक के प्रकाश के समान एकाएक नष्ट होनेवाला अवधिज्ञान (ठा ६, कम्म १, ८)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपातित] १ फिर से गिराया हुआ। २ नष्ट किया हुआ (भवि)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपादित] जिसका प्रतिपादन किया हो वह, निरूपित (अच्चु ५, स ४६, ५४३)।

पडिवाइअ वि [प्रतिवाचित] १ लिखने के बाद पढा हुआ। २ फिर से बांचा हुआ (कुप्र १६७)।

पडिवाइऊण } देखो पडिवाय=प्रति+
पडिवाइयव्व } वाचय्।

पडिवाइय देखो पडिवाइ=प्रतिपातिन् (णंदि ८१)।

पडिवाडि देखो परिवाडि (गा ५३०)।

पडिवाद (शौ) सक [प्रति+पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवादेदि (नाट—रत्ना ५७)। कृ पडिवादणिज्ज (अभि ११८)।

पडिवादय वि [प्रतिपादक] प्रतिपादन करनेवाला। स्त्री. °दिआ (नाट—चैत ३४)।

पडिवाय सक [प्रति+वाचय्] १ लिखने के बाद उसे पढ लेना। २ फिर से पढ लेना। सकृ पडिवाइऊण (कुप्र १६७)। कृ पडिवाइयव्व (कुप्र १६७)।

पडिवाय सक [प्रति+पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवाययति (सूअ १, १४, २६)।

पडिवाय पु [प्रतिपात] १ पुनः-पतन, फिर से गिरना (नव ३६)। २ नाश, ध्वंस (विसे ५७७)।

पडिवाय पु [प्रतिवाद] विरोध (भवि)।

पडिवाय पुं [प्रतिवात] प्रतिकूल पवन (आवम)।

पडिवायण न [प्रतिपादन] निरूपण (कुप्र ११६)।

पडिवारग देखो परिवार, 'पडिवारयपरियरिओ' (महा)।

पडिवाल सक [प्रति+पालय्] १ प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। २ रक्षण करना। पडिवालेइ (हे ४, २५६)। पडिवालेदु (शौ), (स्वप्न १००)। पडिवालह (अभि १८५)। वकृ पडिवालअत, पडिवालेमाण (नाट—रत्ना ४८, णाया १, ३)।

पडिवालण न [प्रतिपालन] १ रक्षण। २ प्रतीक्षा, बाट (नाट—महा ११८, उप ६६६)।

पडिवालिअ वि [प्रतिपालित] १ रक्षित। २ प्रतीक्षित, जिसकी बाट देखी गई हो वह (महा)।

पडिवास पु [प्रतिवास] औषध आदि को विशेष उत्कट बनानेवाला चूर्ण आदि (उर ८, ५, सुपा ६७)।

पडिवासर न [प्रतिवासर] प्रतिदिन, हर रोज (गउड)।

पडिवासुदेव पु [प्रतिवासुदेव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा (पउम २०, २०२)।

पडिविक्किण सक [प्रतिवि+क्री] बेचना। पडिविक्किणइ (श्राक ३३, पि ५११)।

पडिविज्जा स्त्री [प्रतिविद्या] प्रतिपक्षी विद्या, विरोधी विद्या (पिंड ४६७)।

पडिवित्थर पु [प्रतिविस्तर] परिकर, विस्तार (सूअ २, २, ६२ टी, राज)।

पडिविद्धंसण न [प्रतिविध्वंसन] विनाश, ध्वंस (राज)।

पडिविप्पिय न [प्रतिविप्रिय] अपकार का बदला, बदले के रूप मे किया जाता अनिष्ट (महा)।

पडिविरइ स्त्री [प्रतिविरति] निवृत्ति (पण्ह २, ३)।

पडिविरय वि [प्रतिविरत] निवृत्त (सम ५१, सूअ २, २, ७५, औप, उव)।

पडिविसज्ज सक [प्रतिवि+सर्जय्] विसर्जन करना, विदा करना। पडिविसज्जेइ (कप्प, औप)। भवि. पडिविसज्जेहिति (औप)।

पडिविसज्जिय वि [प्रतिविसर्जित] विदा किया हुआ, विसर्जित (णाया १, १—पत्र ३०)।

पडिविहाण न [प्रतिविधान] प्रतीकार (स ५६७)।

पडिवुज्झमाण देखो पडिवह=प्रति+वह्।

पडिवुत्त वि [प्रत्युक्त] १ जिसका उत्तर दिया गया हो वह (अनु ३, उप ७२८ टी)। २ न प्रत्युत्तर (उप ७२८ टी)।

पडिवुद (शौ) वि [परिवृत्त] परिकरित (अभि ५७, नाट—मृच्छ २०५)।

पडिवूह पुं [प्रतिव्यूह] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष (औप)।

पडिवूहण वि [प्रतिबृंहण] १ बढनेवाला (आचा १, २, ५, ५)। २ न. वृद्धि, पुष्टि (आचा १, २, ५, ४)।

पडिवेस पु [दे] विक्षेप, फेंकना (दे ६, २१)।

पडिवेसिअ वि [प्रातिवेश्मिक] पडोसी, पडोस मे रहनेवाला (दे ६, ३, सुपा ५५२)।

पडिवोह देखो पडिबोह (सण)।

पडिसंका स्त्री [प्रतिशङ्का] भय, शंका (पउम ६७, १५)।

पडिसंखा सक [प्रतिसं+ख्या] व्यवहार करना, व्यपदेश करना। पडिसंखाए (आचा)।

पडिसंखिव सक [प्रतिसं+क्षिप्] संक्षेप करना। संकृ पडिसंखिविय (भग १४, ७)।

पडिसंखेव सक [प्रतिसं+क्षेपय्] सकेलना, समेटना। वकृ. पडिसंखेवेमाण (राय ४२)।

पडिसंचिक्ख सक [प्रतिसम्+ईक्ष्] चिन्तन करना। पडिसंचिक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंजल सक [प्रतिसं+ज्वालय्] उद्दीपित करना। पडिसंजलेज्जासि (आचा)।

पडिसंत वि [परिशान्त] शान्त, उपशान्त (से ६, ६१)।

पडिसंत वि [प्रतिश्रान्त] विश्रान्त (बृह १)।

पडिसंत वि [दे] १ प्रतिकूल। २ अस्तमित, अस्त-प्राप्त (दे ६, १६)।

पडिसंध } सक [प्रतिसं+धा] १ फिर
पडिसंधया } से सांधना। २ उत्तर देना।

२ [illegible] करना। पडिसि[illegible] ([illegible] २०, ९)। [illegible] (पव २ ६ ३)। वकृ पडि[illegible] (पव २, २, २६)।

पडिसंधा [illegible] सक [प्रतिसं + धा] १ [illegible] करना। २ [illegible] करना। पडि[illegible] ([illegible] ३)। वकृ पडिसंधाय (सूत्र २, २, ३१, [illegible] ३३, ३४ ३५)।

पडिसंपुड न [प्रतिसंपुट] [illegible], [illegible] ([illegible])।

पडिसंथार पु [प्रतिसंस्तार] [illegible] ([illegible] ११, [illegible])।

पडिसंलीण वि [प्रतिसंलीन] १ [illegible] २ [illegible] (ठा ४, २, [illegible])। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] [illegible] आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा ([illegible])।

पडिसंविक्ख सक [प्रतिसंवि + ईक्ष्] [illegible] करना। पडिसंविक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंवेअ } सक [प्रतिसं + वेदय्] पडिसंवेय } अनुभव करना। पडिसंवेदेइ, [illegible] ([illegible], पि ४९०)।

पडिसंसाहणया स्त्री [प्रतिसंसाधना] [illegible] (भग, [illegible] १४, ३, [illegible] ८)।

पडिसंहर सक [प्रतिसं + हृ] १ [illegible] करना। २ [illegible] करना। पडिसंहरेज्जा ([illegible] ३, ३०)।

पडिसंहार [illegible] परिवार। पडिसाहर [illegible])।

पडि[illegible] [प्रतिसंहरण, परिसाहरण] १ [illegible] २ [illegible] ([illegible])।

पडि[illegible] वि [प्रतिसंहृत] [illegible] हुआ [illegible] ([illegible])।

पडि[illegible] [प्रति[illegible]] [illegible] ([illegible] ११, [illegible] ४, १०६)।

पडि[illegible] पु [प्रति[illegible]] [illegible] ([illegible] ११)।

पडिसक्क [प्रतिसक्त] १ [illegible] ([illegible] ११, [illegible])। २ [illegible] ([illegible] ५, ५१)।

पडिसद्दिअ वि [प्रतिशब्दित] प्रतिध्वनि-युक्त (सम्मत्त २१८)।

पडिसम अक [प्रति + शम्] विरत होना। पडिसमइ (से ६, ४०)।

पडिसमाहर सक [प्रतिसमा + हृ] पीछे खींच लेना 'दिट्ठिं पडिसमाहरे' (दस ८, ५५)।

पडिसय पु [प्रतिश्रय] उपाश्रय, साधु का निवास-स्थान (दस २, १, टी)।

पडिसर पु [प्रतिसर] १ सैन्य का पश्चाद्भाग (प्राप्र)। २ हस्त-सूत्र, वह धागा जो विवाह के पहले वर-वधू के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं, कङ्कण (धर्म २)।

पडिसरण न [प्रतिसरण] कङ्कण (पव ८, १५)।

पडिसरीर न [प्रतिशरीर] प्रतिमूर्त्ति, 'पड्ढ-विद्या पडिसरीरं व' (धर्मवि ३)।

पडिसलागा स्त्री [प्रतिशलाका] पल्य-विशेष (कम्म ४, ७३)।

पडिसव सक [प्रति + शप्] शाप के बदले में शाप देना 'अक्कोसो वि न य पडि-क्कोसति सवति न य पडिसवति' (उव)।

पडिसव सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। ३ आदर करना। कृ पडिसवणीय (ग्ण)।

पडिसवत्त वि [प्रतिसपत्न] विरोधी शत्रु (उत्ति ६, १८)।

पडिसा अक [शम्] शान्त होना। पडिसाइ (पि ४, १६८)।

पडिसा सक [नश्] भागना, पलायन होना। पडिसाइ, पडिसअति (हे ४, १७८, कुमा)।

पडिसाड वि [दे] गिरा हुआ, बैठ गया हो, पड़ा हुआ, [illegible] (दे ६, १७)।

पडिसाड सक [प्रति + शाटय्, परि-शाटय्] १ [illegible]। २ [illegible]। ३ नाश करना। पडिसाडेइ (आचा २, १५, १८)। कृ पडिसाडित्ता (आचा २, १५, १८)।

पडिसाडणा स्त्री [परिशाटना] [illegible] करना, [illegible] ([illegible] १)।

पडिसाम सक [शम्] शान्त होना। पडिसा-मइ (पि ४, १६३, [illegible])।

पडिसामिअ वि [शान्त] शान्त, [illegible] ([illegible])।

पडिसाय पु [दे] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (दे ६, १७)।

पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना। पडिसारेउ (भग १५)।

पडिसार सक [प्रति + सारय्] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म पडिसारीअदि (शौ) (कप्पू)।

पडिसार सक [प्रति + सारय्] खिसकाना, हटाना, अन्य स्थान में ले जाना। पडिसारेइ (से १०, ७०)।

पडिसार पु [दे] १ पटुता। २ वि निपुण, पटु, चतुर (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] १ सजावट। २ अपसरण। ३ विनाश। ४ पराङ्मुखता (हे १, २०६, दे ६, ७६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] अपसारण (हे १, २०६)।

पडिसारण न [प्रतिस्मारण] याद दिलाना (वव १)।

पडिसारणा स्त्री [प्रतिस्मारणा] सम्मारण (भग १५)।

पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया हुआ, अपसारित (से ११, १)। २ विनाशित (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख (से १३, ३२)।

पडिसारी स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६, २०)।

पडिसाह सक [प्रति + कथय्] उत्तर देना। पडिसाहिज्जा (सूत्र १, ११, ४)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं + हृ] निवृत्त करना। पडिसाहरेज्जा (सूत्र २, २, ८५)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं + हृ] १ समेटना, संकेलना। २ नाश में लेना। ३ दौड़ते जाना। पडिसाहरइ (औप, णाया १, १—पत्र ३३)। संकृ पडिसाहरित्ता, पडिसा-हरिय (णाया १, १, भग १४, ७)।

पडिसाहरण न [प्रतिसंहरण] १ सं-कोच। २ विनाश, 'सीयतेयलेस्सापडिसा-हरणट्ठयाए' (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिसिद्ध वि [दे] १ भीत, डरा हुआ। २ भग्न, त्रुटित (दे ६, ७१)।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित (पाअ, उव, ओघ १ टी, सण)।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (षड्)।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] १ अनुरूप सिद्धि। २ प्रतिकूल सिद्धि (हे १, ४४, षड्)।

पडिसिद्धि देखो पडिप्फद्धि (सक्षि १६)।

पडिसिलोग पु [प्रतिश्लोक] श्लोक के उत्तर मे कहा गया श्लोक (सम्मत्त १४६)।

पडिसिविणअ पु [प्रतिस्वप्नक] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न (कप्प)।

पडिसीसअ } न [प्रतिशीर्षक] १ शिरो-
पडिसीसक } वेष्टन, पगडी (कप्पू)। २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिसान (आटा) आदि का बनाया हुआ सिर (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

पडिसुइ पुं [प्रतिश्रुति] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर (सम १५३)। २ भरतक्षेत्र मे उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५०)।

पडिसुण सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। पडिसुणइ, पडिसुणेइ (औप, कप्प, उवा)। वकृ पडिसुणमाण (व्व १, पि ५०३)। संकृ पडिसुणित्ता, पडिसुणेत्ता (आव ४, कप्प)। हेकृ पडिसुणेत्तए (पि ५७८)।

पडिसुणण न [प्रतिश्रवण] अगीकार (उप ४६३)।

पडिसुणण स्त्री न [प्रतिश्रवण] १ सुनाना, सुनकर उसका जवाब देना, प्रत्युत्तर (पव २)। स्त्री °णा (पव २)। २ श्रवण (पचा १२, १५)।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] १ अगीकार, स्वीकार। २ मुनि-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोषवाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन (धर्म ३)।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली, रिक्त, शून्य, 'नय निलया निच्चपडिसुण्णा' (ठा १ टी—पत्र २६)।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १८)।

पडिसुद्ध वि [परिशुद्ध] अत्यन्त शुद्ध (चेइय ८०७)।

पडिसुय वि [प्रतिश्रुत] १ स्वीकृत, अगीकृत (उप पृ १८४)। २ न अगीकार, स्वीकार (उत्त २६)। देखो पडिस्सुय।

पडिसुया देखो पडंसुआ = प्रतिश्रुत् (पण्ह १, १—पत्र १८)।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रव्रज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा (ठा १० टी—पत्र ४७४)।

पडिसुहड पुं [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा (काल)।

पडिसूयग पु [प्रतिसूचक] गुप्तचरो की एक श्रेणी, नगर-द्वार पर रहनेवाला जासूस (वव १)।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १६, भवि)।

पडिसूर पु [प्रतिसूर्य] सूर्य के सामने देखा जाता उत्पातादि-सूचक द्वितीय सूर्य (अणु १२०)।

पडिसूर पु [प्रतिसूर्य] इन्द्र-धनुष (राज)।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रतिशय्या] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या (भग ११, ११, पि १०१)।

पडिसेग पु [प्रतिषेक] नख के नीचे का भाग (राय ६४)।

पडिसेव सक [प्रति + सेव्] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना। २ सहन करना। ३ सेवा करना। पडिसेवइ, पडिसेवए, पडिसेवति (कस, वव ३, उव)। वकृ पडिसेवंत, पडिसेवमाण (पचू ५, सम ३६, पि १७), 'पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगव रीइत्था' (आचा)। कृ पडिसेवियव्व (वव १)।

पडिसेवग देखो पडिसेवय (निचू १)।

पडिसेवण न [प्रतिषेवण] निषिद्ध वस्तु का सेवन (कस)।

पडिसेवणा स्त्री [प्रतिषेवणा] ऊपर देखो (भग २५, ७, उव, ओघ २)।

पडिसेवय वि [प्रतिषेवक] प्रतिकूल सेवा करनेवाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (भग २५, ७)।

पडिसेवा स्त्री [प्रतिषेवा] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन (उप ८०१)। २ सेवा (कुप्र ५२)।

पडिसेवि वि [प्रतिषेविन्] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (उव, पउम ५, २८)।

पडिसेविअ वि [प्रतिषेवित] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह (कप्प, औप)।

पडिसेवेत्तु वि [प्रतिषेवितृ] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करनेवाला (ठा ७)।

पडिसेह सक [प्रति + सिध्] निषेध करना, निवारण करना। कृ पडिसेहेअव्व (भग)।

पडिसेह पु [प्रतिषेध] निषेध, निवारण, रोक (ओघ ६ भा, पचा ६)।

पडिसेहग वि [प्रतिषेधक] निषेध-कर्ता (धर्मसं ४०, ६१२)।

पडिसेहण न [प्रतिषेधन] ऊपर देखो (विसे २७५१, श्रा २७)।

पडिसेहिय वि [प्रतिषेधित] जिसका प्रतिषेध किया गया हो वह, निवारित (विपा १, ३)।

पडिसेहेअव्व देखो पडिसेह = प्रति + सिध्।

पडिसोअ } पुं [प्रतिस्रोतस्] प्रतिकूल
पडिसोत्त } प्रवाह, उलटा प्रवाह (ठा ४, ४, हे, २, ६८, उप २५२, पि ६१)।

पडिसोत्त वि [दे] प्रतिकूल (षड्)।

पडिस्संत देखो परिस्संत (नाट—मृच्छ १८८)।

पडिस्संति स्त्री [परिश्रान्ति] परिश्रम (नाट—मृच्छ ३२१)।

पडिस्सय पु [प्रतिश्रय] जैन साधुओ को रहने का स्थान, उपाश्रय (ओघ ८७ भा, उप ५७१, स ६८७)।

पडिस्सर देखो पडिसर (पचा ८, ४६)।

पडिस्साव सक [प्रति + श्रावय्] १ प्रतिज्ञा कराना। २ स्वीकार कराना। वकृ. पडिस्सावअन्त (नाट—वेणी १८)।

पडिस्साबि वि [प्रतिस्राविन्] झरनेवाला, टपकनेवाला (राज)।

पडिस्सुण सक [प्रति + श्रु] १ सुनना। २ अंगीकार करना। पडिस्सुणाति (सूअ २, ६, ३०)। पडिस्सुणेज्जा (सूअ १, १४, ६)। पडिस्सुणे (उत्त १, २१)।

पडिस्सुय वि [प्रतिश्रुत] १ प्रतिज्ञात। २ स्वीकृत (महा, ठा १०)। देखो पडिसुय।

पडिस्सुया देखो पडंसुआ [illegible])।

पडिस्सुया देखो पडिंसुआ = प्रतिश्रुता (ठा १०—पत्र [illegible])।

पडिहत्थ वि [दे] पूर्ण (पाअ)। देखो पडिहत्थ।

पडिहड्ड ग [प्रति[illegible]] [illegible] (पण्ह [illegible] ३)।

पडिहड्ड पु [प्रति[illegible]] प्रतिपक्षी योद्धा ([illegible])।

पडिहण सक [प्रति + हन्] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना। पडिहण वि (सुर)।

पडिहणण न [प्रतिहनन] १ प्रतिघात। २ [illegible] (सुर [illegible])।

पडिहणणा स्त्री [प्रतिहनन] [illegible] (ओघ [illegible])।

पडिहणिय [illegible] (सुपा २३)।

पडिहणिय [illegible] (सम्मत्त ७०८)।

पडिहत्थ वि [दे] १ पूर्ण, भरा हुआ (दे ६, २८; पाअ; सुर ३, [illegible], १२६, वा पु १८१; सुर ४, २३६; सुपा ४८८), 'पडिह-[illegible]' (पाअ [illegible])। २ प्रतिक्रिया, [illegible] बदला। ३ [illegible] (दे ६, ६६)। ४ [illegible] (ओघ [illegible])।

पडिहत्थ सक [दे] [illegible] (दे ६, ९६)।

[illegible] [illegible] (दे ६, ७३)।

[illegible] (वि [illegible])।

[illegible] वि [प्रति[illegible]] [illegible] (ओघ, [illegible])।

पडिहर सक [प्रति + [illegible]] [illegible] (दे ४, २४१)।

[illegible] सक [प्रति + भा] मालूम होना, [illegible] ११२, [illegible] ४८७)।

[illegible] स्त्री [प्रति[illegible]] [illegible] (हम्मी)।

[illegible], '[illegible]' (दे ५, १ [illegible] ३)।

पडिहाण देखो पडिहार, 'महाडुपडिहारें' (उवा)।

पडिहाण न [प्रतिभान] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °व वि [°वत्] प्रतिभावाला (सूअ १, १३, १४)।

पडिहाय देखो पडिहा = प्रति + भा। पडिहा-यइ (ह ४४१; स ७५६)।

पडिहाय पु [प्रतिघात] १ प्रतिहनन, घात का बदला। २ निरोध, अटकाव, रोक (पडम ६, ५३)।

पडिहार पु [प्रतिहार] इन्द्र-नियुक्त देव (पव ३६)।

पडिहार पुंस्त्री [प्रतिहार] द्वारपाल, दरवान (दे ४, २०६; णाया १, ५; स्वप्न २२८; महा ३३)। स्त्री °री (हे १)।

पडिहारिय देखो पाडिहारिय (कप्प, आचा २, २, ३, १७, १८)।

पडिहारिय वि [प्रतिहारित] अवरुद्ध, रोका हुआ (स ५४६)।

पडिहास अक [प्रति + भास्] मालूम होना, लगना। पडिहासेदि (शौ) (नाट)।

पडिहास पु [प्रतिभास] प्रतिभास, प्रतिभान (वि १ २०८ टी)।

पडिहासिय वि [प्रतिभासित] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह (उप ६८८ टी)।

पडिहुअ } पु [प्रतिभू] जामीन, जामीन-
पडिहू } दार, मनौतिया (पाअ; दे ५, ३८)।

पडिहू अक [परि + भू] पराभव करना, हराना। वकृ पडिहूअमाण (भवि ३६)।

पडी स्त्री [पटी] वस्त्र, कपड़ा (गउड; सुर ३, ८६)।

पडीआर पु [प्रतीहार] देखो पडिआर = प्रतिहार (गौड़ी १७७; सुर ११)।

पडीकर सक [प्रति + कृ] प्रतिकार करना। पडीकरेति (पि ६६)।

पडीयार देखो पडिआर (कम्म १, १)।

पडीच्छ देखो पडिच्छ = प्रति + इष्। पडी-च्छइ (पि २७४)।

पडीण वि [प्रतीचीन] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखनेवाला (आचा भोग ठा ४, २)। °वाय पु [°वात] पश्चिम का वायु (ठा ७)।

पडीणा स्त्री [प्रतीची] पश्चिम दिशा (ठा ६—पत्र ३५६; सूअ २, २, ५८)।

पडीर पु [दे] चौर-समूह, चोरों का यूथ (दे ६, ८)।

पडीव वि [प्रतीप] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरोधी (भवि)।

पडु वि [पटु] निपुण, चतुर, कुशल (औप; कुमा; सुर २, १४५)।

पडु (अप) देखो पडिअ = पतित (सिरि)।

पडुआलिअ वि [दे] १ निपुण बनाया हुआ। २ ताड़ित, पिटा हुआ। ३ धारित (दे ६, ७३)।

पडुक्खेव पु [प्रत्युत्क्षेप] १ वाद्य-ध्वनि। २ उत्थापन, उठान (अणु १३१)।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप] १ वाद्य-ध्वनि। क्षेपण, फेंकना, 'समतालपडुक्खेवं' (ठा ७—पत्र ३९४)।

पडुच्च अ [प्रतीत्य] १ आश्रय करके (आचा; सूअ १, ७; सम ३६; नव ३६)। २ अपेक्षा करके (भग)। ३ अधिकार करके, 'पडुच्च ति वा पप्प ति वा अहिकिच्च ति वा एगट्ठा' (आचू १, अणु)। °करण न [°करण] किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति (द्र १)। °भाव पु [°भाव] सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु (भग २८)। °वयण न [°वचन] आपेक्षिक वचन (सम्म १००)। °सच्चा स्त्री [°सत्या] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन (पण्ण ११)।

पडुच्चा अवर देखो, 'जे तिविहं भासती पडुच्चा' (सूअ १, ५, १, ८)।

पडुजुवइ स्त्री [दे] युवति, तरुणी (दे ६, ३१)।

पडुत्तिया स्त्री [प्रत्युक्ति] प्रत्युत्तर, जवाब (भवि)।

पडुप्पण्ण } पुं [प्रत्युत्पन्न] १ वर्तमान
पडुप्पन्न } काल (ठा ३, ४)। २ वि वर्तमानकालिक, वर्तमान काल में विद्यमान (स १०; भग ८, ५; सम १५२; [illegible])। ३ प्राप्त, लब्ध (ठा ४, २)। [illegible] पडुप्पणे मंग जड्डाविया आसाणं (स २६१)। ४ उत्पन्न,

जात (ठा ४, २), 'होंति य पडुप्पन्नविणास-णम्मि गवन्तिया उदाहरणं' (दसनि १)।

पडुल्ल न [दे] १ लघु पिठर, छोटी थाली। २ वि. चिरप्रसूत (दे ६, ६८)।

पडुवइअ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४)।

पडुवत्ती स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६, २२)।

पडुह देखो पड्डुह। पडुहइ (हे ४, १५४ टि)।

पडोअ वि [दे] बाल, लघु छोटा (दे ६,६)।

पडोच्छन्न वि [प्रत्यवच्छन्न] आच्छादित, आवृत,'अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने'(उवा)।

पडोयार सक [प्रत्युप + चारय्] प्रतिकूल उपचार करना। पडोयारेंति, पडोयारेह (भग १५—पत्र ६७६)। पडोयारेउ (भग १५—पत्र ६७१)। पडोयारे (पि १५५)। कवकृ पडोय (? या) रिज्जमाण, पडोयारेज्ज-माण (पि १६३, भग १५—पत्र ६७६)।

पडोयार पुं [दे] उपकरण (पिंड २८)।

पडोयार पु [प्रत्युपचार] प्रतिकूल उपचार (भग १५—पत्र ६७१, ६७६)।

पडोयार पुं [प्रत्यवतार] १ अवतरण। २ आविर्भाव, 'भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-भावपडोयारे होत्था' (भग ६,७—पत्र २७६, ७, ६—पत्र ३०५, ओप)।

पडोयार पुं [पदावतार] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण (ठा ४, १—पत्र १८८)।

पडोयार पु [प्रत्युपकार] उपकार का उपकार (राज)।

पडोयार पुं [दे] १ सामग्री। २ परिकर, 'पायस्स पडोयार' (ओघ ३५२)।

पडोल पुंस्त्री [पटोल] लता विशेष, परवल का गाछ (पण्ण १—पत्र ३२)।

पडोहर न [दे] घर का पीछला आँगन (दे ६, ३२, गा ३१३, काप्र २२४)।

पड्ड वि [दे] धवल, सफेद (दे ६, १)।

पड्डस पुं [दे] गिरि गुहा, पहाड की गुफा (दे ६, २)।

पड्डच्छी स्त्री [दे] भैंस, 'पड्डच्छिखीर' (ओघ ८७)।

पड्डत्थी स्त्री [दे] १ बहुत दूधवाली। २ दोहनेवाली (दे ६, ७०)।

पड्डय पुं [दे] भैंसा, पाडा, गुजराती में 'पाडो', 'सो चेव इमो वसभो पड्डयपरिहट्टण सहइ' (महा)।

पड्डला स्त्री [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६, ८)।

पड्डस वि [दे] सुसयमित, अच्छी तरह से सयमित (दे ६, ६)।

पड्डाविअ वि [दे] समापित, समाप्त कराया हुआ (पड्)।

पड्डिया स्त्री [दे] १ छोटी भैंस, पाडी। २ छोटी गौ, वछिया (विपा १,२—पत्र २६)। ३ प्रथमप्रसूता गौ। ४ नव-प्रसूता महिषी (वव ३)। पड्डी स्त्री [दे] प्रथम-प्रसूता (दे ६, १)।

पड्डुआ स्त्री [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६, ८)।

पड्डुह अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना। पड्डु-हइ (हे ४, १५४, कुमा)।

पढ सक [पठ्] १ पढना, अभ्यास करना। २ बोलना, कहना। पढइ (हे १, १९९, २३१)। कर्म. पढीअइ, पढिज्जइ (हे ३, १६०)। वकृ. पढत (सुर १०, १०३)। कवकृ पढिज्जत, पढिज्जमाण (सुपा २६७, उप ५३० टी)। संकृ. पढित्ता (हे ४, २७१, पड्), पढिअ, पढिऊण (शौ) (हे ४, २७१), पढि (अप) (पिंग)। हेकृ पढिउ (गा २, कुमा)। कृ पढियव्व, पढेयव्व (पसू १, वज्जा ६)। प्रयो पढावइ (कुप्र १८२)।

पढ पु [पढ] भारतीय देश-विशेष (इक)।

पढग वि [पाठक] पढनेवाला (कप्प)।

पढण न [पठन] पाठ, अभ्यास (विसे १३८४, कप्पू)।

पढम वि [प्रथम] १ पहला, आद्य (हे १, ५५, कप्प, उवा, भग, कुमा, प्रासू ४८, ६८)। २ नूतन, नया (दे)। ३ प्रधान, मुख्य (कप्प)। °करण न [°करण] आत्मा का परिणाम-विशेष (पचा ३)। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी कषाय (कम्मप)। °ट्ठाणि, °ठाणि वि [°स्थानिन्] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात (पचा १६)। °पाउस पु [°प्रावृष्] आषाढ मास (निचू १०)। °समोसरण न [°समवसरण] वर्षा-काल, 'बिइयसमोसरण उडुबद्ध त पडुच्च वासावासोग्गहो पढमसमो-सरण भण्णइ' (निचू १)। °सरय पु [°शरत्] मार्गशीर्ष मास (भग १५)। °सुरा स्त्री [°सुरा] नया दारू, शराब (दे)।

पढमा स्त्री [प्रथमा] १ प्रतिपदा तिथि, पडवा (सम २६)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति, 'णिद्देसे पढमा होइ' (अणु)।

पढमालिआ स्त्री [दे प्रथमालिका] प्रथम भोजन (ओघ ४७ भा धर्म ३)।

पढमिल्ल, पढमिल्लुअ, पढमिल्लुग, पढमुल्लअ, पढमेल्लुय } वि [प्रथम] पहला आद्य (भग, श्रा २८, सुपा ५७, पि ४४६, ५९५, विसे १२२६, (णाया १, ६—पत्र १४४, बृह १, पउम ६२, ११, धण १६, सण)।

पढाइद [शौ] नीचे देखो (नाट—चैत ८६)।

पढाव सक [पाठय्] पढाना। पढावेइ (प्राकृ ६०)। संकृ पढाविऊण, पढावेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ पढाविउ, पढावेउ (प्राकृ ६१)। कृ पढावणिज्ज, पढाविअव्व (प्राकृ ६१)।

पढावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राकृ ६०)।

पढावण न [पाठन] पढाना (कुप्र ६०)।

पढाविअ वि [पाठित] पढाया हुआ (सुपा ४५३, कुप्र ६१)।

पढाविअवत वि [पाठितवत्] जिसने पढाया हो वह (प्राकृ ६१)।

पढाविउ, पढाविर } वि [पाठयितृ] अध्यापक (प्राकृ ६०)।

पढि, पढिअ } देखो पढ = पठ्।

पढिअ वि [पठित] पढा हुआ (कुमा, प्रासू १०८)।

पढिज्जत, पढिज्जमाण } देखो पढ = पठ्।

पढिर वि [पठितृ] पढनेवाला (सण)।

पढुक्क वि [प्रढौकित] भेंट के लिए उपस्था-पित (भवि)।

पढुम देखो पढम (हे १, ५५, नाट—विक्र २६)।

पढेयव्व देखो पढ = पठ्।

पढे देखो पढाव। पढेइ (प्राकृ ६०)।

...(सुपा ..., ...१०, कम्म २,६,२६, ३१)। °[illegible] [°निवृत्ति] ... [illegible] (... ४४६)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] ... और पांच (पीव, कम्म ४ ४३ टि ... ४४४)। °नउइ ... °नवइ (सुपा ६७)। °रस ... [°दश] ... (...)। °वन्निय वि [°वर्णित] ... (सुपा ४०२)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस, बीस और पांच (कम्म ४४, ... १३, कम्म २)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही अर्थ (... ४४४)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, साठ ... (... १८, ... २०३)। °सय न [°शत] ... (... ६)। °सीइ स्त्री [°अशीति] पचासी, अस्सी और पांच (कम्म २)। °सुन्न न [°शून्य] ... [illegible]

पण पुं [पण] १ शर्त, होड़, 'नरनायगेण ... ' (...)। २ प्रतिज्ञा (...)। ३ ... ४ ... [illegible] (... ३)

पण ... [illegible] (... १२४)।

पण... न [पञ्चक] १ ... का समूह (... २, १६)। २ ... विशेष, ... (... ४३)।

पण... वि [...] प्रकटित, ... किया हुआ (... ४१०)।

... देखो पणवन्न (... २, १७४ टि, ...)।

... [°नति] प्रणाम, नमस्कार (पउम ६, ६६, ... १०, ... सुपा)।

... वि [...] १ ... २ ... (... २०५)। ... [illegible]

... [...] ... [illegible] (... २१६)।

... [...] ... [illegible]

पणंगणा स्त्री [पणाङ्गना] वेश्या, वारांगना (उप १०३१ टी, सुपा ४६०, कुप्र ३)।

पणग न [पञ्चक] पांच का समूह (सुर ६, १३२, सुपा ६३६, जी ६, द ३१, कम्म २, ११)।

पणग पुं [दे पनक] १ सेवाल, सेवार या सिवार, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है (कप्प, दस ८, पण्ण १ आदि)। २ काई, वर्षा-काल में भूमि काष्ठ आदि में उत्पन्न होने-वाला एक प्रकार का जल-मैल (आचा, पडि, ठा ८—पत्र ४२६, कप्प)। ३ कदम-विशेष, सूक्ष्म पंक (वृह ६ भग ७ ६)। देखो पणय (द)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के शान्त होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी (जीव १, पण्ण १—पत्र २५)।

पणच्च अक [प्र + नृत्] नाचना, नृत्य करना। वकृ पणच्चमाण (णाया १, ८—पत्र १३३, सुपा ४७२)। स्त्री °णी (सुपा २४२)।

पणच्चण न [प्रनर्तन] नृत्य, नाच (सुपा १५४)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्तित] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह (णाया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्त] नाचा हुआ, 'अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता' (महा, कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [प्रनर्तित] नचाया हुआ (नाट)।

पणट्ठ वि [प्रनष्ट] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त (कुप्र १, १, २, से ७, ८, सुर २, २४७ ३, ६६, नाट, उप)।

पणद्ध वि [प्रणद्ध] परिगत (औप)।

पणपण्ण देखो पणपन्न (पव १४७ टि)।

पणपण्णइम देखो पणपन्नइम (पत्र १७४ टि, पि २७३)।

पणपन्न स्त्रीन [दे पञ्चपञ्चाशत्] पचपन, पचास और पांच (सुर २ १०८, कप्प, सम ७२ भग ४, ५४, ५५, पि ५)।

पणपन्नइम वि [दे पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ, ५५ वाँ (कप्प)।

पणपन्निय देखो पणवन्निय (कुप्र)।

पणपन्निय पुं [पञ्चप्रज्ञप्तिक] व्यन्तर देवों की एक जाति (पव १९४)।

पणम सक [प्र + नम्] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए (ग ३४४, भा)। वकृ पणमंत (सण)। कवकृ पणमिज्जत (सुपा ८८)। संकृ पणमिअ, पणमिऊण, पणमिऊण, पणमित्ता, पणमित्तु (भवि ११८, प्राकृ पि ५६०, भग, नाट)।

पणमण न [प्रणमन] प्रणाम, नमस्कार (उत्त, सुपा २७, ४६१)।

पणमिअ देखो पणम।

पणमिअ वि [प्रणत] १ नमा हुआ (भग औप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह, 'पणमिया असेसा राया' (स ७३०)।

पणमिअ वि [प्रणमित] नमाया हुआ (भवि)।

पणमिर वि [प्रणम्र] प्रणाम करनेवाला, नमनेवाला (कुमा, कुप्र ३५०, सण)।

पणय सक [प्र + णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना। २ प्रार्थना करना। वकृ पणअंत (से २, ६)।

पणय वि [प्रणत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह, 'नरनाहपणयपयकमल' (सुपा २४०)। २ जिसने नमस्कार किया हो वह, 'पणयपत्थिवाण' (सुर १, ११२, सुपा ३६१)। ३ प्राप्त (सूअ १, ४, १)। ४ निम्न, नीचा (जीव ३, राय)।

पणय पुं [प्रणय] १ स्नेह, प्रेम (गाया १, ६, महा, गा २७)। २ प्रार्थना (गउड)। °वंत वि [°वत्] स्नेहवाला, प्रेमी (उप १३१)।

पणय पुं [दे] पंक, कर्दम (दे ६, ७)।

पणय पुं [दे पनक] १ सेवाल, ... तृण विशेष। २ काई, जल मैल (आचा ३६९)। ३ सूक्ष्म कर्दम (वृह १, ४)।

पणयाल वि [दे पञ्चचत्वारिंश] पैंतालीसवाँ, ४५ वाँ (पउम ४५, ४)।

पणयाल } स्त्रीन [दे. पञ्चचत्वारिंशत्]
पणयालीस } पैंतालीस, चालीस और पांच, ४५ (सम ६९, कम्म २, ३०, पि ३, भग, सम ६८, औप पि ४४५)।

पणव देखो पणम। पणवइ (भवि)। पणवह (हे २, १९५)। वकृ पणवत (भवि)।

पणव पुं [प्रणव] ओकार, 'ओ' अक्षर (सिरि १९६)।

पणव पु [पणव] पटह, ढोल, वाद्य-विशेष (औप, कप्प, अत)।

पणवणिय देखो पणवन्निय (औप)।

पणवण्ण, पणवन्न देखो पणपन्न (पि २६५, २७३, भग, हे २, १७४ टि)।

पणवन्निय पु [पणपन्निक] व्यन्तर देवो की एक जाति (पण्ह १, ४)।

पणविय देखो पणमिय = प्रणत (भवि)।

पणवीसी स्त्री [पञ्चविंशतिका] पचीस का समूह (सबोध २५)।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल या कटहर (पि २०८, नाट—मृच्छ २१८)।

पणसुन्दरी स्त्री [पणसुन्दरी] वेश्या (धर्मवि १२७)।

पणाम सक [अर्पय्] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना। पणामइ (हे ४, ३९), 'वंदिओ य पणयाण कल्लाणाइं पणामइ' (सुपा ३६३)।

पणाम सक [प्र+नमय्] नमाना। पणामेइ (महा)।

पणाम सक [उप+नी] उपस्थित करना। पणामेइ (प्राकृ ७१)।

पणाम पु [प्रणाम] नमस्कार, नमन (दे ७, ६, भवि)।

पणामणिआ स्त्री [दे] स्त्रीविषयक प्रणय (दे ६, ३०)।

पणामय वि [अर्पक] देनेवाला (सूअ १, २, २)।

पणामय वि [प्रणामक] १ नमानेवाला। २ शब्द आदि विषय (सूअ १, २, २, २७)।

पणामिअ वि [अर्पित] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ (पाअ, कुमा), 'अपणामियपि गहिअं कुसुमसरेण महुमासलच्छीए मुहं' (हेका ५०)।

पणामिअ वि [प्रणामित] नमाया हुआ (से ४, ३१, गा २२)।

पणामिअ वि [प्रणमित] नत, नमा हुआ, 'पणामिया सायर' (स ३१६)।

पणायक, पणायग वि [प्रणायक] ले जानेवाला, 'निव्वाणगमणसग्गप्पणायकाइं' (पण्ह २, १, पण्ह २, १ टी, वव १)।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता (से १३, ५४, उर १, ५, ६)।

पणालिआ स्त्री [प्रणालिका] १ परम्परा (सूअ १, १३)। २ पानी जाने का रास्ता (कुमा)।

पणाली स्त्री [प्रणाली] मोरी, पानी जाने का रास्ता (गउड)।

पणाली स्त्री [प्रनाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणास सक [प्र+नाशय्] विनाश करना। पणासेइ, पणासए (महा)।

पणास पु [प्रणाश] विनाश, उच्छेदन (आवम)।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाश करनेवाला, 'सव्वपावप्पणासणो' (पडि, कप्प)। स्त्री °णी (श्रा ४६)।

पणासिय वि [प्रणाशित] जिसका विनाश किया गया हो वह (कप्प, भवि)।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे ६, ७)।

पणिअ वि [प्रणीत] रचित (सूअनि ११२)।

पणिअ न [पणित] १ बेचने योग्य वस्तु (दे १, ७४, ६, ७, णाया १, १)। २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय (भग १५, णाया १, ३—पत्र ९५)। ३ शर्त, होड, एक तरह का जुआ (भास ९२)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, °भूमी] १ अनार्य देश-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर ने एक चौमासा विताया था (राज, कप्प)। २ विक्रेय वस्तु रखने का स्थान (भग १५)। °साला स्त्री [°शाला] हाट, दूकान (बृह २, निचू १६)।

पणिअ न [पण्य] विक्रेय वस्तु (सुपा २७५, औप, आचा)। °गिह, °घर न [°गृह] दूकान, हाट (निचू १२, आचा २, २, २)। °साला स्त्री [°शाला] °हाट, दूकान (आचा)। °विण पु [°पण] दूकान, हाट (आचा)।

पणिअ वि [प्रणीत] सुन्दर, मनोहर। °भूमि स्त्री [°भूमि] मनोज्ञ भूमि (भग १५)।

पणिअट्ठ वि [पणितार्थ] चोर (दस ७, ३७)।

पणिअसाला स्त्री [पण्यशाला] वखार, अन्न या माल रखने का घिरा हुआ स्थान, गोदाम (आचा २, २, २, १०)।

पणिआ स्त्री [दे] करोटिका, सिरकी हड्डी, खोपडी (दे ६, ३)।

पणिंदि, पणिंदिय वि [पञ्चेन्द्रिय] त्वक्, जीभ, नाक, आँख और कान इन पाँचो इन्द्रियोवाला प्राणी (कम्म २, ४, १०, १८, १९)।

पणिद्ध वि [प्रस्निग्ध] विशेष स्निग्ध (अणु २१५)।

पणिधाण देखो पडिहाण (अभि १८९, नाट.—विक्र ७२)।

पणिधि पुस्त्री [प्रणिधि] माया, छल, 'पुणो पुणो पणिधि(? धी)ए हरित्ता उवहसे जणं' (सम ५०)। देखो पणिहि।

पणियत्थ वि [प्रणिवसित] पहना हुआ (औप)।

पणिलिअ वि [दे] हत, मारा हुआ (षड्)।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] नत, नमा हुआ, 'पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया। उत्तमपुरिसा' (णाया १, १६—पत्र २१९, स ११, उप ७६८ टी)।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] जिसको नमस्कार किया गया हो वह, 'नरपहूहिं पणिवइओ वीरो' (धर्मवि ३७)।

पणिवय सक [प्रणि+पत्] नमन करना, वन्दन करना। पणिवयामि (कप्प, सार्ध ६१)।

पणिवाय पु [प्रणिपात] वन्दन, नमस्कार (सुर ४, ६८, सुपा २८, २२२, महा)।

पणिहा सक [प्रणि+धा] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना। २ अपेक्षा करना। ३ अभिलाषा करना। ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना। संकृ. पणिहाय (णाया १, १०, भग १५)।

पणिहाण न [प्रणिधान] १ एकाग्र ध्यान, मनो-नियोग, अवधान (उत्त १९, १४, स ८७, प्रामा)। २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा, 'तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे' (ठा ३, १, ४, १, भग १८, उवा)। ३ अभिलाष, कामना,

'[illegible]' ([illegible] १६, [illegible])।

पणि[illegible] देखो [illegible]।

पणि[illegible] पुं [प्रणि[illegible]] १ [illegible], [illegible] ([illegible] २, ८)। २ [illegible], अभिप्राय ([illegible] ८७)। ३ [illegible] ([illegible] १, ३, [illegible] ३, ४ [illegible])। ४ [illegible] ([illegible] १)। ५ माया, कपट (भाव ४)। ६ [illegible] ([illegible])।

पणि[illegible] पुं [प्रणिधि] [illegible] ([illegible] ८, [illegible])।

पणि[illegible] वि [प्रणिहित] १ [illegible], व्यापृत ([illegible] ८)। २ [illegible] (भाव ४)।

पणी[illegible] वि [प्रणीत] १ निर्मित, कृत, रचित, '[illegible]' (विसे २५०७, [illegible] १२, [illegible] २८ १६७)। २ [illegible], [illegible] 'विभूसा [illegible]' (दस ८, ५७, उत्त १६, [illegible] १४० आ, औप [illegible] ५)। ३ [illegible], प्ररूपित, [illegible] ([illegible]) ([illegible] ५, ८)। ५ [illegible] (सूप १, ११)।

पणी[illegible] देखो पणि[illegible] ([illegible] ८, [illegible] १, ११)।

पणु[illegible] देखो पणोल्ल। वकृ. पणुल्लेमाण (वि [illegible])।

पणु[illegible] ([illegible] २४, [illegible] १६६)।

पणो[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १०६ [illegible] १०४ [illegible])।

पण[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] ११२०)।

पणो[illegible] [प्र + [illegible]] १ प्रेरणा करना। २ [illegible]। ३ [illegible] [illegible] ([illegible] १२, २०)। [illegible] ([illegible] १, १ [illegible] १ [illegible]) [illegible] ([illegible] १, [illegible])।

पणो[illegible] [प्रणोदन] प्रेरणा ([illegible] ८ [illegible])।

पणो[illegible] [illegible] [illegible] प्रेरक ([illegible])।

पणोल्लि वि [प्रणोदिन्] १ प्रेरणा करनेवाला। २ पुं प्राजन-दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणोल्लिअ वि [प्रणोदित] प्रेरित (औप, पि २४४)।

पण्ण वि [प्रज्ञ] जानकार, दक्ष, निपुण (उत्त १, ८, सुप १, ६)।

पण्ण वि [प्राज्ञ] १ प्रज्ञावाला, बुद्धिमान् दक्ष (हे १ ५६, उप ६२३)। २ वि. प्रज्ञ-सम्बन्धी (सुप २, १)।

पण्ण न [पर्ण] पत्र पत्ता, पत्ती (कुमा)।

पण्ण देखो पणिअ = पण्य (नाट)।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास, ५०। स्त्री. °ण्णा (षड्)।

पण्ण देखो पन्न, पण (पि २७३, ४४०, ४४५)। °रस त्रि ब [°दशन्] पनरह, १५ (सम २६, उवा)। °रसम वि [°दश] पनरहवाँ (उवा)। °रसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवीं। २ तिथि विशेष (पि २७३, [illegible])। °रह देखो °रस (प्राप्र)। °रह वि [°दश] पनरहवाँ, १५ वाँ (प्राप्र)। देखो पन्न = पत्र।

पण्ण वि [पार्ण] पर्ण-सम्बन्धी, पत्ते का, पत्ती से बना [illegible] (राज)।

पण्ण° देखो पण्णा°। °व वि [°वत्] प्रज्ञा-वाला (उप ६१२ टी)।

पण्णई [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथ की शासन-देवी (सं ३७)।

पण्णग पुं [पन्नग] सर्प, साँप (उप ७२८ टी)। °असण पुं [°अशन] गरुड पक्षी (दिग)। देखो पन्नय।

पण्णग वि [दे पन्नग] दुर्गन्धी। °तिल्ल पुं [°तैल] दुर्गन्धी तेल (गाप)।

पण्णट्ठि स्त्री. [पञ्चषष्टि] पैंसठ, साठ और पाँच, ६५ (कप्प)।

पण्णत्त वि [प्रज्ञप्त] निरूपित, उपदिष्ट, कथित (औप, [illegible] ठा ३, १, ८, २, ३, विपा १, १ [illegible] १२१)। २ प्ररूपित [illegible] ([illegible] २०, [illegible] ११, ११, औप)।

पण्णत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] १ [illegible] ([illegible] ३)। २ [illegible] [illegible] ([illegible])।

३ विद्या-विशेष (भाव १)। ४ प्ररूपण, प्रतिपादन (उवा, वव ३)। °खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २)। °पक्खेवणी स्त्री [°प्रक्षेपणी] कथा का एक भेद (राज)।

पण्णपण्णिअ पुं [पण्णपर्णि] व्यन्तर देवों की एक जाति (इक)।

पण्णय देखो पण्णग (से ४, ४)।

पण्णव सक [प्र + ज्ञापय्] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना। पण्णवेइ, पण्णवेंति (उवा, भग)। वकृ. पण्णवयंत पण्णवेमाण (भग, वि ५५१)। कृ. पण्ण-वणिज्ज (ट ७)।

पण्णवग वि [प्रज्ञापक] प्ररूपक, प्रतिपादक (विसे ५४६)।

पण्णवण न [प्रज्ञापन] १ प्ररूपण, प्रति-पादन। २ शास्त्र, सिद्धान्त (विसे ८६४)।

पण्णवण वि [प्रज्ञापन] ज्ञापक, [illegible] (सबोध ७)।

पण्णवणा स्त्री [प्रज्ञापना] १ प्ररूपणा, प्रति-पादन (णाया १, ६, उवा)। २ एक जैन आगम ग्रंथ, 'प्रज्ञापना' सूत्र (भग)।

पण्णवणिज्ज देखो पण्णव।

पण्णवणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा विशेष, [illegible] भाषा (भग १०, ३)।

पण्णवण्ण स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पच-पन, पचास और पाँच (दे ६, २७, षड्)।

पण्णवय देखो पण्णवग (विसे ५४७)।

पण्णवयंत देखो पण्णव।

पण्णविय वि [प्रज्ञापित] प्रतिपादित, प्र[illegible]-पित (सुपा, उत्त २६)।

पण्णवेत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] प्रतिपादक, प्र[illegible] करनेवाला (ठा ७)।

पण्णवेमाण देखो पण्णव।

पण्णा सक [प्र + ज्ञा] १ अच्छी तरह जानना। २ [illegible] जानना। संकृ. पण्णाय (भग)।

पण्णा देखो पण्ण (दे)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] मनुष्य की दस [illegible] [illegible] अवस्था ([illegible] १६)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] १ बुद्धि, मति (उप १४४ ७२८ टी, [illegible] १)। २ [illegible] (सुप १,

१२)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] १ बुद्धि का गर्व न करना। २ बुद्धि के अभाव मे खेद न करना (भग ८, ८, पव ८६)। °मय पुं [°मद] बुद्धि का अभिमान (सूम १, १३)। °वत वि [°वत्] ज्ञानवान् (राज)।

पण्णाग वि [प्रज्ञ] विद्वान् (पचा १७, २७)।

पण्णाड देखो पन्नाड पण्णाडइ (दे ६, २६)।

पण्णाण न [प्रज्ञान] १ प्रकृष्ट ज्ञान। २ सम्यग् ज्ञान (सम ५१)। ३ आगम, शास्त्र (आचा)। °व वि [°वत्] १ ज्ञानवान्। २ शास्त्रज्ञ (आचा)।

पण्णारह (अप) त्रि व [पञ्चदशन्] पनरह (पिंग)।

पण्णावीसा स्त्री [पञ्चविंशति] पचीस, वीस और पांच, २५ (षड्)।

पण्णास स्त्रीन [दे पञ्चाशत्] पचास, ५० (दे ६, २७, षड्, पि २७३, ४४५, कुमा)। देखो पन्नास।

पण्णासग वि [पञ्चाशक] पचास वर्ष की उम्र का (तंदु १७)।

पण्णुवीस देखो पणुवीस (स १४६)।

पण्ह पुंस्त्री [प्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (हे १, ३५, कुमा)। स्त्री °ण्हा (हे १, ३५)। (हे १, ३५)। °वाहण न [°वाहन] जैन मुनि-गण का एक कुल (ती ३८)। °वागरण न [°व्याकरण] ग्यारहवा जैन अग-ग्रन्थ (पण्ह २, ५, ठा १०, विपा १, १, सम १)। देखो पसिण।

पण्हअ अक [प्र+स्नु] झरना, टपकना, 'एक्को पण्हअइ थणो' (गा ४०६, ४६२ अ)।

पण्हअ } पु [दे प्रस्नव] १ स्तन-धारा, पण्हव } स्तन से दूध का झरना (दे ६, ३, पि २३१, राज, अत ७, षड्)। २ झरन, टपकना, 'दिट्ठिपण्हवं' (पिंड ४८७)।

पण्हव पु [पह्लव] १ अनार्य देश-विशेष। २ वि उस देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पण्हवण न [प्रस्नवन] क्षरण, झरना (विपा १, २)।

पण्हविअ देखो पण्हुअ (दे ६, २५)।

पण्हा देखो पण्ह।

पण्हि पुस्त्री [पार्ष्णि] फीली का अधोभाग, गुल्फ की नीचला हिस्सा, एडी (पण्ह १, ३, दे ७, ६२)।

पण्हिया स्त्री [प्रश्निका] एडी, गुल्फ का अधोभाग, 'मेलित्तु पण्हियाओ चरणे वित्था-रिऊण वाहिरओ' (चेइय ४८६)।

पण्हुअ वि [प्रस्नुत] १ क्षरित, झरा हुआ। २ जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह, 'पण्हुयपयोहराओ' (पउम ७६, २०, हे २, ७५)।

पण्हुइर वि [प्रस्नोतृ] झरनेवाला, 'हत्थप्फसेण जरग्गवीवि पण्हअइ दोहअगुणेण। अवलोअणपण्हुइरि पुत्तम पुण्णेहि पाविहिसि' (गा ४६२)।

पण्होत्तर न [प्रश्नोत्तर] सवाल-जवाब (सुर १६, ४१, कप्पू)।

पतणु देखो पयणु (राज)।

पतार सक [प्र+तारय्] ठगना। सकृ पतारिअ (अभि १७१)।

पतारग वि [प्रतारक] वञ्चक, ठग (धर्मसं १४७)।

पतिण्ण } वि [प्रतीर्ण] पार पहुँचा हुआ, पतिन्न } निस्तीर्ण (राज, पण्ह २, १—पत्र ९६)।

पतुण्ण } न [प्रतुन्न] वल्कल का बना हुआ पतुन्न } वस्त्र (आचा २, ५, १, ७)।

पतेरस } वि [प्रत्रयोदश] प्रकृष्ट तेरहवाँ। पतेलस } °वास न [°वर्ष] १ प्रकृष्ट तेरहवाँ वर्ष। २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष। ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष (आचा)।

पत्त वि [प्राप्त] मिला हुआ, पाया हुआ (कप्प, सुर ८, ७०, सुपा ३५७, जी ४४, द ४६, प्रासू ३१, १६२, १८२, गा २४१)। °काल, °याल न [°काल] १ चैत्य-विशेष (राज)। २ वि अवसरोचित (स ४६०)।

पत्त न [पत्र] १ पत्ती, पत्ता, दल, पर्ण (कप्प, सुर १, ७२, जी १०, प्रासू ६२)। २ पक्ष पत्र, पांख (णाया १, १—पत्र २४)। ३ जिसपर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना (स ६२, सुर १, ७२, से २, १७३)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष (औप, स ६५)। °मत वि [°वत्] पत्रवाला (णाया १, १)। °रह पुं [°रथ] पक्षी (पाअ)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्दनादि से पत्र के आकृतिवाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार (अजि २८)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] १ पत्रवाली लता। २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना (कुप्र ३६५)। °विंट न [°वृन्त] पत्र का बन्धन (पि ५३)। °विंटिय वि [°वृन्तक, °वृन्तीय] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, पत्र वृन्त मे उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु (पण्ण १—पत्र ४५)। °विच्छुय पु [°वृश्चिक] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति (जीव १)। °वेंट देखो °विंट (पि ५३)। °सगडिआ स्त्री [°शकटिका] पत्तो से भरी हुई गाडी (भग)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] प्रभूत पत्तेवाला (पाअ)। °हार पुं [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४५, उत्त ३६, १३८)। °हार पु [°हार] पत्ती पर निर्वाह करनेवाला वानप्रस्थ (औप)।

पत्त न [पात्र] १ भाजन (कुमा, प्रासू ३६)। २ आधार, आश्रय, स्थान (कुमा)। ३ दान देने योग्य गुणी लोक (उप ६४८ टी, महा)। ४ लगातार बत्तीस उपवास (सबोध ५८)। °बंध पु [°बन्ध] पात्रों को बाँधने का कपडा (ओघ ६६८)। देखो पाय = पात्र।

पत्त वि [प्रात्त] प्रसारित (कप्प)।

पत्तइअ वि [प्रत्ययित] विश्वस्त (भग)।

पत्तइअ वि [पत्रकित] १ अल्प पत्रवाला। २ कुत्सित पत्रवाला (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पत्तउर पुं [दे] वनस्पति-विशेष, एक प्रकार का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

पत्तच्छेज्ज न [पत्रच्छेद्य] बाण से पत्ती वेधने की कला (ज २ टी पत्र १३७)। २ नक्काशी का काम, खोदने का काम (आचा २, १२, १)।

पत्तट्ठ वि [दे प्राप्तार्थ] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल (दे ६, ६८, सुर १,

८१, सुज्ज १२६, [illegible] १८, १, पाअ) । २ [illegible] २८४) ।

पत्तट्ठ वि [दे] [illegible] (दे ६, ६८) ।

पत्तण देखो पट्टण (राज) ।

पत्तण न [दे पत्रण] १ [illegible], बाण [illegible] । २ पुंख, बाण का [illegible] (दे ६, ६८ [illegible] १२००) ।

पत्तणा स्त्री [दे पत्रणा] १—२ [illegible] (पउम [illegible], ७३) । ३ पुंख में की [illegible] (से ७, ४२) ।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति (पंचू ४) ।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तियों की एक [illegible], जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६, २) ।

पत्तपिसालस न [दे] [illegible] (दे ६, २) ।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गव (ठा [illegible]) ।

पत्तय देखो पत्त (राज) ।

पत्तरक न [दे प्रारक] [illegible]-विशेष ([illegible] २, ४—पत्र १४६) ।

पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४),
'[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible]'
([illegible] ६०) । २ [illegible], कृश (दे ६, १४, [illegible]) ।

पत्तल वि [पत्रल] १ [illegible] बहुत पत्तों-वाला ([illegible] १, १२, गा ५३२, ६३५, [illegible]) । २ [illegible] (औप, [illegible]) ।

पत्तलि स्त्री [पत्री] पत्ती, पर्ण (पि २, १७३, [illegible] ६४, ३८०) ।

पत्तलण न [पत्रलन] [illegible] ([illegible] १२६) ।

पत्तली स्त्री [दे] [illegible], एक प्रकार का [illegible] (सुपा ४६३) ।

पत्तहार वि [पत्रहार] [illegible] (सुपा १४६) ।

पत्ताग सक [दे] पचाना, मिटाना 'पुण्णेहि अन्नु कोवि जो जाएइ सो तुम्हह विवाउ पत्ताएइ' (भवि), पत्ताएहि (भवि) ।

पत्तामोड पुन [आमोटपत्र] तोड़ा हुआ पत्र, 'दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हइ' (भग ११) ।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ (दे १, ४२, उप २२६, चेइय ८६४) ।

पत्ति पु [पत्ति] १ सेना विशेष, जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों । २ पैदल चलनेवाली सेना (उप ७२८ टी) ।

पत्ति } सक [प्रति + इ] १ जानना । २ पत्तिअ } विश्वास करना । ३ आश्रय करना । पत्तिअइ, पत्तियति, पत्तिअसि, पत्तिआमि (से १३, ४८, पि ४८७, से ११, ६०, भग) । पत्तिज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु (राय, गा २१६, ६६६, पि ४८७) । वकृ पत्तिअंत, पत्तिअमाण (गा २१६, ६७८, आचा २, २, ७, १०) । संकृ पत्तियश, पत्तिआइत्ता (सूअ १, ६, २७, उत्त २६, १) ।

पत्तिअ वि [पत्रित] संजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हों वह (णाया १, ७, ११—पत्र १७१) ।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीति-वाला, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५, भग, भग) ।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह (ठा ४, ३, ठा ६—पत्र ३५५) ।

पत्तिअ पुं [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास (ठा ४, ३—पत्र २३५, धर्म २) ।

पत्तिअ न [पत्रित] [illegible] पत्र (राय) ।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पत्र, पर्ण, पत्ती (कुमा) ।

पत्तिआअ देखो पत्तिअ = प्रति + इ । पत्तिआअइ (प्राकृ ७५), पत्तिआअसि (पि ४८७) ।

पत्तिआअ सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना । पत्तिआअइ (भाग ३१) ।

पत्तिग देखो पत्तिअ = प्रीतिक (पंचा ७, १०) ।

पत्तिज्ज देखो पत्तिअ = प्रति + इ । पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि (पि ४८७) ।

पत्तिज्जाव देखो पत्तिआअ । पत्तिज्जावइ (सुपा ३०२) । पत्तिज्जावेमि (धर्मवि १३४) ।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण (दे ६, १४) ।

पत्ती स्त्री [दे] पत्तों की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं (दे ६, २) ।

पत्ती स्त्री [पत्नी] स्त्री, भार्या (उप पृ १६३, श्राप ६६, महा पाअ) ।

पत्ती स्त्री [पात्री] भाजन, पात्र (उप ६२२, महा, धर्मवि १२६) ।

पत्तु देखो पाव = प्र + आप् ।

पत्तुवगद (शौ) वि [प्रत्युपगत] १ सामने गया हुआ । २ वापस गया हुआ (नाट —विक्र २३) ।

पत्तेअ } न [प्रत्येक] १ हरएक, एक एक पत्तेग } (हे २, १०, कुमा, निचू १, पि ३४६) । २ एक की तरफ, एक के सामने, 'पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ' (जीव ३) । ३ न कर्म विशेष, जिसके उदय से हर जीव का एक अलग शरीर होता है 'पत्तेयतणू' 'पत्तेउदएणं' (कम्म १, ५०) । ४ पृथक्, जुदा, अलग अलग (कम्म १, ५०) । ५ पु [illegible] जीव जिसका शरीर अलग हो, [illegible] शरीरवाला जीव 'साहारणपत्तेया वणस्सइ-जीवा दुहा सुए भणिया' (जी ८) । °णाम न [°नामन्] ऊपर कहा हुआ तीसरा अर्थ (राज) । °निगोयग पुं [°निगोदक] जीव विशेष (कम्म ४, ८२) । °बुद्ध पुं [°बुद्ध] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि (महा, गा ८१) । °बुद्धसिद्ध पु [°बुद्धसिद्ध] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति पाया हुआ जीव (पर्ण १) । °रस वि [°रस] भिन्न रसवाला (ठा ४, ४) । °सरीर वि [°शरीर] १ भिन्न शरीरवाला, 'पत्तेयसरीरा ते [illegible]' ([illegible]) । २ न [illegible] [illegible] [illegible] भिन्न [illegible]

होता है (पण्ह १, १)। °सरीरनाम न [°शरीरनामन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम ६७)।

पत्तेय वि [प्रत्येक] बाह्य कारण (णंदि १३०, १३१ टी)।

पत्थ सक [प्र + अर्थय्] १ प्रार्थना करना। २ अभिलाषा करना। ३ अटकाना, रोकना। पत्थेइ, पत्थेंति (उव, औप)। कर्म. पत्थिज्जसि (महा)। वकृ पत्थंत, पत्थिंत, पत्थेअमाण (नाट—मालवि २५, सुपा २१३, प्रासू १२०), 'कामे पत्थेमाणा अकामा जंति दुग्गइं' (उप ३५७ टी)। कवकृ पत्थिज्जंत, पत्थिज्जमाण (गा ४००, सुर १, २०, से ३, ३३, कप्प)। कृ. पत्थ, पत्थणिज्ज, पत्थेयव्व (सुपा ३७०, सुर १, ११६, सुपा १४८, पण्ह २, ४)।

पत्थ पुं [पार्थ] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (स ६१२, वेणी १२६, कुमा)। २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम (पउम ३७, ८)। ३ भद्दिलपुर नगर का एक राजा (सुपा ६२६)।

पत्थ पुं [प्रार्थ] १ प्रार्थन, प्रार्थना (राय)। २ दो दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पत्थ देखो पच्छ = पथ्य (गा ८१४, पउम १७, ६४, राज)।

पत्थ देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थ पु [प्रस्थ] १ कुडव का एक परिमाण (बृह ३, जीवस ८८, तंदु २६)। २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण (उप पृ ६६), 'पत्थगा उ जे पुरा आसी हीणमाणा उ तेधुणा' (वव १)।

पत्थंत देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थंत देखो पत्था।

पत्थग देखो पत्थय (राज)।

पत्थड पु [प्रस्तर] १ रचना-विशेषवाला समूह (ठा ३, ४—पत्र १७६)। २ भवनों के बीच का अन्तराल भाग (पण्ण २, सम २५)।

पत्थड वि [प्रस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ फेला हुआ (भग ६, ८)।

पत्थण न [प्रार्थन] प्रार्थना (महा, भवि)।

पत्थणया } स्त्री [प्रार्थना] १ अभिलाषा, पत्थणा } वाञ्छा (आव ४)। २ याचना, माँग। ३ विज्ञप्ति, निवेदन (भग १२, ५, सुर १, २, सुपा २६६, प्रासू २१)।

पत्थय देखो पत्थ = पथ्य (णाया १, १)।

पत्थय वि [प्रार्थक] अभिलाषा करनेवाला (सूअ १, २, २, १६, स २५३)।

पत्थय देखो पत्थ = प्रस्थ (उप १७६ टी, औप)।

पत्थयण न [पथ्यदन] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक, कलेवा (णाया १, १५, स १३०, उर ८, ७, सुपा ६२४)।

पत्थर सक [प्र + स्तृ] १ बिछाना। २ फैलाना। सकृ पत्थरेत्ता (कस, ठा ६)।

पत्थर पुं [प्रस्तर] पत्थर, पाषाण (औप, उव, पउम १७, ३६, सिरि ३३२),
'पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई।
मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्तिं विमग्गई'
(सुर ६, २०७)।

पत्थर न [दे] पाद-ताडन, लात (षड्)।

पत्थर देखो पत्थार (प्राप्र, सक्षि २)।

पत्थरण न [प्रस्तरण] बिछौना, 'खट्टापत्थरणाय तहा एगं' (धर्मवि १४७)।

पत्थरभल्लिअ न [दे] कोलाहल करना (दे ६, ३६)।

पत्थरा स्त्री [दे] चरण-घात, लात (दे ६, ८)।

पत्थरिअ पु [दे] पल्लव, कोपल (दे ६,२०)।

पत्थरिअ वि [प्रस्तृत] बिछाया हुआ, 'पत्थरिअ अत्थुअ' (पाअ)।

पत्थव देखो पत्थाव (हे १, ६८, कुमा, पउम ५, २१६)।

पत्था अक [प्र + स्था] प्रस्थान करना, प्रवास करना। वकृ पत्थंत (से ३, ५७)।

पत्थाण न [प्रस्थान] प्रयाण, गमन (अभि ८१, अजि ६)।

पत्थार पु [प्रस्तार] १ विस्तार (उवर ६६)। २ तृणवन। ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या। ४ पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष (प्राप्र)। ५ प्रायश्चित्त की रचना विशेष (ठा ६—पत्र ३७१, कस)। ६ विनाश (पिंड ५०१, ५११)।

पत्थारी स्त्री [दे] १ निकर, समूह (दे ६, ६६)। २ शय्या, बिछौना, गुजराती में 'पथारी' (दे ६, ६६, पाअ, सुपा ३२०)।

पत्थाव सक [प्र + स्तावय्] प्रारभ करना। वकृ. पत्थावअन्त (हास्य १२२)।

पत्थाव पु [प्रस्ताव] १ अवसर। २ प्रसग प्रकरण (हे १, ६८, कुमा)।

पत्थिअ वि [प्रस्थित] १ जिसने प्रयाण किया हो वह (से २, १६, सुर ४, १६८)। २ न प्रस्थान, गति, चाल (अजि ६)।

पत्थिअ वि [प्रार्थित] १ जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह। २ जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह (भग, सुर ६, १८, १६, ६, उव)।

पत्थिअ वि [दे] शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ६, १०)।

पत्थिअ वि [प्रार्थिक] प्रार्थी, प्रार्थना करनेवाला (उव)।

पत्थिअ वि [प्रास्थित] विशेष आस्थावाला, प्रकृष्ट श्रद्धावाला (उव)।

पत्थिअ° } स्त्री [दे] बाँस का बना हुआ पत्थिआ } भाजन-विशेष (ओघ ४७६)। °पिडग, °पिडय न [°पिटक] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष (विपा १, ३)।

पत्थिद देखो पत्थिअ = प्रस्थित, प्रार्थित (प्राकृ २५)।

पत्थिव पु [पार्थिव] १ राजा, नरेश (णाया १, १६, पाअ)। २ वि. पृथिवी का विकार (राजा)।

पत्थी स्त्री [दे पात्री] पात्र, भाजन, 'अघकरवोरपत्थि व माउआ मह पइ विलुपंति' (गा २४० अ)।

पत्थोण न [दे] १ स्थूल वस्त्र, मोटा कपडा। २ वि स्थूल, मोटा (दे ६, ११)।

पत्थुय वि [प्रस्तुत] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक (सुर ३, १६६, महा)। २ प्राप्त, लब्ध (सूअ १, ४, १, १७)।

पत्थुर देखो पत्थर = प्र + स्तृ। संकृ. पत्थुरेत्ता (कस)।

पत्थेअमाण, पत्थेंत, पत्थेमाण, पत्थेयव्व } देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थोत [illegible] वि [प्रस्तोत] १ [illegible]। २ [illegible]। [illegible] (पउम १, ३— [illegible])।

पत्थल [illegible] (पि १६०)।

पद [illegible] = पद (स्म, मल १८, है ४, [illegible], [illegible] ३, १ [illegible]—[illegible] ३१)।

पद्दण सक [नम्] [illegible] करना। [illegible] (, ४, १६२)। [illegible] (कुमा)।

प[illegible]अ वि [प्र[illegible]] [illegible] हुआ [illegible] (पा ३०)।

प[illegible] वि [प्र[illegible]] १ [illegible] [illegible] 'पदक्खि-[illegible]' ([illegible] ४)। देखो प[illegible]।

प[illegible] सक [प्र[illegible]] प्रदक्षिणा [illegible] ४८ ११३)।

पदक्खिणा स्त्री [प्रदक्षिणा] दक्षिण की [illegible] (नाट—चैत ३८)।

पद[illegible] न [प्र[illegible]] [illegible] (पि ८८३)।

पद[illegible] न [प्र[illegible]] [illegible] (नाट— [illegible] ९३)।

पद [illegible] (नाट—मृच्छ ४३६)।

[illegible]

प[illegible] न [प्र[illegible]] [illegible] (कुमा)।

प[illegible] वि [प्र[illegible]] [illegible] (नाट— [illegible] ७)।

प[illegible] न [[illegible]] [illegible] (चैत्य [illegible] ११)।

प[illegible] [[illegible]] [illegible] (पि [illegible] ११, [illegible] ६९)।

प[illegible] वि [प्र[illegible]] [illegible] (चैत्य [illegible])।

प[illegible] [illegible] (पि १२१)।

पदाहिण वि [प्रदक्षिण] प्रदक्षिण, प्रदर्श मे दक्षिण दिशा मे स्थित (जीव ३)। देखो पदक्खिण।

पदिदिदि (शौ) देखो पदिदिदि (मा १०, नाट—विक्र ३१)।

पदित्त देखो पलित्त (राज)।

पदिस° स्त्री [प्रदिश्] विदिशा, ईशान आदि कोण, 'तमति पाणा पदिसो दिसासु य' (आचा)।

पदीक्खा देखो पडिक्खा।

पदीव सक [प्र + दीपय्] १ जलाना। २ प्रकाश करना। पदीवेदि (पि २८०)। वकृ. पदीवेन (पउम १०२, १०)।

पदीव देखो पईव = प्रदीप (नाट—मृच्छ २०)।

पदीविआ स्त्री [प्रदीपिका] छोटा दिया (नाट—मृच्छ ७१)।

पदुग्ग पुं [प्रदुर्ग] कोट, किला (आचा, २, १०, २)।

पदुट्ठ वि [प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट] विशेष द्वेष को प्राप्त (उत्त ३२, सूअ ३)।

पदुब्भेदय न [परोद्भेदक] पर विभाग और [illegible] (नाट)।

पदूमिय वि [प्रदावित, प्रदून] अत्यन्त पीड़ित (सूअ ३)।

पदूस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना। पदूसिज्ज (आचा २, ३४)।

पदूसणया स्त्री [प्रद्वेषणा, प्रदूषणा] द्वेष, [illegible] (उत्त ८८६)।

[illegible] सक [प्र + [illegible]] प्रदर्श मे देखना। [illegible] (भवि)। [illegible] 'पदिस्सा य दिस्सा [illegible]' (आचा १८, ८, पि ३३४)।

पदेस देखो पएस = प्रदेश (नाट)।

पदेस पुं [प्रद्वेष] द्वेष (स्थानां ८०)।

पदेसिअ वि [प्रदेशित] प्रदर्शित, प्ररूपित (आचा)।

पदोस देखो पओस = दे, प्रदोष (सं १३, [illegible] ११)।

पदोस [illegible] पओस = प्रद्वेष (राज)।

पद्द न [दे] १ [illegible] (दे ६, १)। २ [illegible] (राज)।

पद्द न [पद्य] श्लोक, वृत्त, काव्य (प्राकृ २१)।

पद्देस देखो पद्देस = प्रद्वेष (सूअ १, १६, ३)।

पद्धइ स्त्री [पद्धति] १ मार्ग, रास्ता (सुपा १८६)। २ पंक्ति, श्रेणी (ठा २, ४)। ३ परिपाटी, क्रम (प्रासम)। ४ प्रक्रिया प्रकरण (वज्जा २)।

पद्धंस पुं [प्रध्वंस] ध्वंस, नाश। °भाव पुं [°भाव] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह (विसे १८३७)।

पद्धर वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे ६, १०)। २ शीघ्र, गुजराती में 'पाधर', 'पद्धर-पएहिं मुक्के पयारेहि' (सिरि ४३५)।

पद्धल वि [दे] दोनों पाश्वा मे अप्रवृत्त (षड्)।

पद्धार वि [दे] जिसका पूँछ कट गया हो वह, पूँछ कटा (दे ६, १३)।

पधाइय देखो पधाविय (भवि)।

पधाण देखो पहाण (नाट—मृच्छ २०५)।

पधार देखो पहार = प्र + धारय्। भूका पधारिंय (पीप, णाया १, २—पत्र ८८)।

पधाव सक [प्र + धाव्] दौड़ना, अधिक वेग से जाना। संकृ. पधाविअ (नाट)।

पधावण न [प्रधावन] १ दौड़, वेग से गमन। २ कार्य की शीघ्र सिद्धि (पा १)। ३ प्रक्षालन (धर्मसं १०७८)।

पधाविअ वि [प्रधावित] १ दौड़ा हुआ (महा, पउम १०४)। २ गति-रहित (राज)।

पधाविर वि [प्रधावितृ] दौड़नेवाला (पा २८)।

पधूवण न [प्रधूपन] १ धूप देना। २ एक प्रकार का धार्मिक कृत्य (राज)।

पधूविय वि [प्र धूपित] जिसको धूप दिया गया हो वह (राज)।

पधोअ सक [प्र + धाव्] धोना। संकृ पधोइत्ता (आचा २, १, ६, २)।

पधोअ वि [प्रधौत] धोया हुआ (कप्पू)।

पधोव सक [प्र + धाव्] धोना। पधोवेदि (पि ४८२)।

पन देखो पंच। °र, °रस त्रि. व [°दशन्] पनरह, दस और पाँच, १५ (कम्म १, ४, ५२, ६८, जी २५)।

पनय (पै चूपै) देखो पणअ=प्रणय (हे ४, ३२६)।

पन्न देखो पण्ण=पर्ण (सुपा ३३६, कुप्र ४०८)।

पन्न देखो पण्ण=दे (भग, कम्म ४, ५४)।

पन्न देखो पण्ण=प्रज्ञ (आचा, कुप्र ४०८)।

पन्न वि [प्राज्ञ] १ पंडित, जानकार, विद्वान् (ठा ७, उप १५१, धर्मसं ४५२)। २ वि प्रज्ञ-सम्बन्धी (सूअ २, १ ५६)।

पन्न देखो पंच। °र, °रस त्रि व. [°दशन्] पनरह, १५ (द २२, सम २६, भग, णण)। °रस, °रसम वि [°दश] पनरहवाँ, १५ वाँ (सुर १५, २५०, पउम १५, १००)। °रसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवीं। २ पनरहवीं तिथि (कप्प)।

पन्न देखो पणिअ=पण्य (उप १०३१ टी)।

पन्नगणा स्त्री [पण्याङ्गना] वेश्या, वाराङ्गना (उप १०३१ टी)।

पन्नग देखो पण्णग=पन्नग (विपा १, ७, सुर २, २३८)।

पन्नट्ठि देखो पण्णट्ठि (कप्प)।

पन्नत्त देखो पण्णत्त (णाया १ १, भग; सम १)।

पन्नत्तरि स्त्री [पञ्चसप्तति] पचहत्तर, ७५ (सम ८५, ति ३)।

पन्नत्ति देखो पण्णत्ति (सुपा १५३, सति ५, महा)। ५ प्रकृष्ट ज्ञान। जिससे प्ररूपण किया जाय वह (तदु ५४)। ७ पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवतीसूत्र (श्रावक ३३३)।

पन्नत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] आख्याता, प्रतिपादक (पि ३९०)।

पन्नपत्तिया स्त्री [प्रज्ञप्रत्यया] देखो पुन्नपत्तिया (कप्प)।

पन्नपन्नइम देखो पणपन्नइम (पि ४४९)।

पन्नय देखो पण्णग (पाअ)। °रिउ पु [°रिपु] गरुड पक्षी (पाअ)।

पन्नया स्त्री [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी (सति १०)।

पन्नव देखो पण्णव। पन्नवेइ (उव)। कर्म पन्नविज्जइ (उव)। वकृ पन्नवयंत (सम्म १३४)। सकृ. पन्नवेऊण (पि ५८५)।

पन्नवग वि [प्रज्ञापक] प्रतिपादक, प्ररूपक (कम्म ५, ८५ टी)।

पन्नवण देखो पण्णवण (सुपा २९९)।

पन्नवणा देखो पण्णवणा (भग, पएण १, ठा ३, ८)।

पन्नवय देखो पण्णवग (सम्म १६)।

पन्नवयंत देखो पन्नव।

पन्ना देखो पण्णा=प्रज्ञा (आचा, ठा ४, १, १०)।

पन्ना देखो पण्णा=दे (पव ५०)।

पन्नाड सक [मृद्] मर्दन करना। पन्नाडइ (हे ४, १२६)।

पन्नाडिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (पाअ, कुमा)।

पन्नाण देखो पण्णाण (आचा, पि ६०१)।

पन्नारस (अप) त्रि व [पञ्चदशन्] पनरह, १५ (भवि)।

पन्नास देखो पण्णास (सम ७०, कुमा)। स्त्री. °सा (कप्प)। °इम वि [°तम] पचासवाँ, ५० वाँ, (पउम ५०, २३)।

पन्ह देखो पण्ह (कप्प)।

पन्हु (अप) देखो पण्हुअ=दे प्रस्नव (भवि)।

पपच देखो पवंच (सुपा २४५)।

पपलीण त्रि [प्रपलायित] भागा हुआ (पि ३४६, ३६७, नाट—मृच्छ ५८)।

पपिआमह पु [प्रपितामह] १ ब्रह्मा, विधाता (राज)। २ पितामह का पिता, परदादा (धर्मसं १४९)।

पपुत्त पु [प्रपुत्र] पौत्र, पुत्र का पुत्र, पोता (सुपा ४०७)।

पपुत्त } पु [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र, पोते
पपोत्त } का पुत्र, परपोता (विसे ८६२, राज)।

पप्प सक [प्र+आप्] प्राप्त करना। पप्पोइ, पप्पोति (पि ५०४, उत्त १४, १४)। पप्पोदि (शौ) (पि ५०४)। संकृ पप्प (पएण १७, ओघ ५५, विसे ५५१)। कृ पप्प (विसे २६८७)।

पप्पग न [दे पर्पक] वनस्पति-विशेष (सूअ २, २, ६)।

पप्पड } पुस्त्री [पर्पट] १ पापड, मूँग या
पप्पडग } उर्द की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी (पव ३७, भवि)। २ पापड के आकारवाला शुष्क मृत्खण्ड (निचू १)। °पायय पु [°पाचक] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३०)। °मोदय पुं [°मोदक] एक प्रकार की मिट्टी वस्तु (पएण १७—पत्र ५३३)।

पप्पडिया स्त्री [पर्पटिका] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पएण १, पिंड ५५)।

पप्पल देखो पप्पड (नाट—विक्र २१)।

पप्पीअ पु [दे] चातक पक्षी, पपीहा या पपीहरा (दे ६, १२)।

पप्पुअ वि [प्रप्लुत] १ जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ (पएह १, १, णाया १, ८)। २ व्याप्त, 'धम्मपप्पुयवजणाइं च' (पव ४ टी)। ३ न. कूदना, लाघना (गउड १२८)।

पप्पोइ } देखो पप्प।
पप्पोति }

पप्फंदण न [प्रस्पन्दन] प्रचलन, फरकना (राज)।

पप्फाड पु [दे] अग्नि-विशेष (दे ६, ९)।

पप्फिडिअ वि [दे] प्रतिफलित (दे ६, २२)।

पप्फुअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा। २ उड्डीयमान, उडता (दे ६, ६४)।

पप्फुट्ट अक [प्र+स्फुट्] १ खिलना। २ फूटना। पप्फुट्टइ (प्राकृ ७४)।

पप्फुडिअ पु [प्रस्फुटित] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २९)।

पप्फुय देखो पप्पुअ, 'वाहपप्फुयच्छो' (सुख २, २९)।

पप्फुर अक [प्र+स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ काँपना। पप्फुरइ (से १५, ७७, गा ६४७)।

पप्फुरिअ वि [प्रस्फुरित] फरका हुआ (दे ६, १९)।

पप्फुल्ल अक [प्र+फुल्ल्] विकसना। वकृ पप्फुल्लंत (रंभा)।

पप्फुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित, खिला हुआ (णाया १, १३, उप पृ ११४, पउम ३, ६६, सुर २, ७६, षड्; गा ६३६, ९७०),

'[illegible] दप्फुल्लिअलि [illegible]' ([illegible] ३६१)।

पप्फुल्लिअ वि [प्रफुल्लित] ऊपर देखो ([illegible] १८६ [illegible])।

पप्फुल्लिआ स्त्री [प्रफुल्लिका] देखो [illegible] ([illegible] १६८ [illegible])।

पप्फुल्लिय न [प्रफुल्ल] [illegible] ([illegible] १८)।

पप्फोड देखो पप्फुट्ट, [illegible] ([illegible] १८३)।

पप्फोड सक [प्र + स्फोटय्] १ [illegible] [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible] ([illegible] ८३३)। [illegible] पप्फोडेत, पप्फोडेमाण ([illegible]); [illegible] 'पप्फोडिऊण [illegible]' ([illegible] ६३)।

पप्फोडण न [प्रस्फोटन] १ [illegible], [illegible] ([illegible] १६३)। २ [illegible] ([illegible] २, ५—पत्र १६८ [illegible])।

पप्फोडणा स्त्री [प्रस्फोटना] ऊपर देखो ([illegible])।

पप्फोडिअ वि [प्रस्फोटित] [illegible], [illegible] हुआ ([illegible]), [illegible]। २ [illegible] हुआ, [illegible] ([illegible])।

[illegible]

पबल वि [प्रबल] बलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर (कुमा)।

पबाहा स्त्री [प्रबाधा] प्रकृष्ट बाधा, विशेष पीड़ा (णाया १, ४)।

पबुद्ध वि [प्रबुद्ध] १ प्रवीण, निपुण (से १२, ३८)। २ जागा हुआ (सुर ५ २२६)। ३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह (आचा)।

पबोह सक [प्र + बोधय्] १ जागृत करना। २ ज्ञान कराना। वर्क पबोधीयामि (पि ४८३)।

पबोधण न [प्रबोधन] प्रकृष्ट बोधन (राज)।

पबोह देखो पबोध। कृ पबोहणीय (पउम ७०, २८)।

पबोह पुं [प्रबोध] १ जागरण। २ ज्ञान, समझ (णाया ४८, वि १६०)।

पबोहण देखो पबोधण (राज)।

पबोहय वि [प्रबोधक] प्रबोध-कर्ता (विसे १०.)।

पबोहिअ वि [प्रबोधित] १ जगाया हुआ। २ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह (कुमा ३१३)।

पब्बल देखो पबल (से ४, २५, ६, ३३)।

पब्बाड देखो पब्बाड = प्लावय्। पब्बाडइ (हे ४, ४१)।

पब्बाल देखो पब्बाल = प्लावय्। पब्बालइ (हे ४, ४१)।

पब्बुद्ध देखो पबुद्ध (वि १६६)।

पब्भ वि [प्रह्व] नम्र (धीत, प्रासू २४)।

पब्भट्ठ } वि [प्रभ्रष्ट] १ परिभ्रष्ट
पब्भसिअ } प्रच्युत, गिरा हुआ (पण्ह १, [illegible] ११६, गा ३१८, सुर ३, [illegible])। २ [illegible] (से ९४, [illegible])। ३ [illegible] (प्राप्र २८)।

पब्भार पुं [प्राग्भार] १ [illegible], [illegible] ([illegible] १, ६६, [illegible], ७०, सुर १, [illegible] कुमा २१)।

पब्भार [illegible] [illegible], [illegible] ([illegible] ६६ '[illegible]' ([illegible])।

पब्भार पुं [प्राग्भार] १ [illegible], '[illegible]' [illegible]। २ [illegible] का भाग (से ४, २०)। ३ थोड़ा नमा हुआ पर्वत का भाग (णाया १, १—पत्र ६३, भग ५,७)। ४ एक देश, एक भाग (से १,५८)। ५ उत्कर्ष, परभाग (गउड)। ६ पुन पर्वत के ऊपर का भाग (णादि)। ७ वि थोड़ा नमा हुआ, ईषदवनत (भत ११, ठा १०)।

पब्भारा स्त्री [प्राग्भारा] दशा विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१६, तंदु १६)।

पब्भूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न, 'मडुगहीए गब्भे पब्भूआ दद्दुरत्तेणं' (धर्मवि २५)।

पब्भोअ पु [दे प्रभोग] भोग, विलास (दे ६, १०)।

पभ पु [प्रभ] १ हरिकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १, इक)। २ द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव (राज)।

°पभ वि [प्रभ] सदृश, तुल्य (कप्प उवा)।

°पभउ देखो °पभिइ, 'पयाण पभइवणदीहि' (भग ४१)।

पभकर पु [प्रभङ्कर] १ ग्रह विशेष, ज्योतिष्क-देव-विशेष (ठा २, ३)। २ पुं. देव विमान (सम ८, १४, पत्र २६७)।

पभंकर वि [प्रभास्कर] प्रकाशक, 'सव्वलोग-पभंकरो' (उत्त २३, ७६)।

पभंकरा स्त्री [प्रभङ्करा] १ [illegible] की एक नगरी का नाम (ठा २, ३)। २ चन्द्र की एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १)। ३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम (भग १०, ५)।

पभंकरावई स्त्री [प्रभङ्करावती] [illegible] की एक नगरी (ठा २)।

पभंगुर वि [प्रभङ्गुर] अति [illegible] (आचा)।

पभंजण पुं [प्रभञ्जन] १ वायुकुमार [illegible] के [illegible] इन्द्र (ठा २, ३, ४, १, भग ६६)। २ [illegible] का [illegible] (ठा ४, २)। ३ वायु, पवन (दे १४, ६६)। ४ [illegible] के [illegible] का अधिपति देव ([illegible])।

°पभ [illegible] पुं [प्रभव] [illegible] (से १४,४१)।

पभंसण न [प्रभ्रंशन] स्खलना (धर्मसं १०७६)।

पभकंत पु [प्रभकान्त] १—२ विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)।

पभण सक [प्र + भण्] कहना, बोलना। पभणइ (महा, सण)।

पभणिय वि [प्रभणित] उक्त, कथित (सण)।

पभम सक [प्र + भ्रम्] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि (श्रु १५३)।

पभव अक [प्र + भू] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ (पि ४७५)। वकृ पभवंत (सुपा ८६, नाट—विक्र ४५)।

पभव पु [प्रभव] १ उत्पत्ति, जन्म, प्रसूति, प्रसव (ठा ६, वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति का कारण (णंदि)। ३ एक जैनमुनि, जम्बु-स्वामी का शिष्य (कप्प, वसु, णंदि)।

पभवा स्त्री [प्रभवा] तृतीय वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

पभविय त्रि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'सा विज्जा सिट्ठुसुए उदरगपुन्नम्मि पभविया नेव' (धर्मवि १२३)।

पभा स्त्री [प्रभा] १ कान्ति, तेज (महा, धर्मसं १३३३)। २ प्रभाव, 'निच्चुज्जोया रम्मा, सयपभा ते विरायंति' (देवेन्द्र ३२०)।

पभाइअ } पुन [प्रभात] १ प्रातःकाल, सुबह
पभाय } (पउम ७०, ५६, सुर ३, ६६, महा, स २४४)। २ वि प्रकाशित, रयणीए पभायाए' (उप ६४८ टी)। °तणय वि [°सत्नित] प्राभातिक, प्रभात-सम्बन्धी, सुबह का (सुर ३, २४८)।

पभार पुं [प्रभार] प्रकृष्ट भार (सम १५३)।

पभाव देखो पहाव = प्र + भावय्। पभावेइ, पभावंति (उत्र, पव १४८)। वकृ पभाविंत (सुपा ३७६)।

पभाव देखो पहाव-प्रभाव (स्वप्न ६८)।

पभावई स्त्री [प्रभावती] १ उन्नीसवें जिन-देव की माता का नाम (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ उदायन राजर्षि की पटरानी और चेडा नरेश की पुत्री का नाम (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र निषध की भार्या (आचू १)। ५ राजा बल की पत्नी (भग ११, ११)।

पभावग वि [प्रभावक] प्रभाव बढ़ानेवाला, शोभा की वृद्धि करनेवाला (श्रा ६, द्र २३)। २ उन्नति-कारक। ३ गौरव जनक (कुप्र १६८)।

पभावण न [प्रभावन] नीचे देखो (श्रु ०)।

पभावणा स्त्री [प्रभावना] १ महात्म्य, गौरव। २ प्रसिद्धि, प्रख्याति (णाया १, १६—पत्र १२२, श्रा ६, महा)।

पभावय वि [प्रभावक] गौरव बढ़ानेवाला (सबोध ३१)।

पभाल पुं [प्रभाल] वृक्ष-विशेष (राज)।

पभावित देखो पभाव = प्र + भावय्।

पभास सक [प्र + भाष्] बोलना, भाषण करना। पभासति (विसे ४६६ टी)। वकृ पभासंत, पभासयंत, पभासमाण (उप पृ २३, पउम ५५, १८, ८६, १०)।

पभास अक [प्र + भास्] प्रकाशित होना। पभासिंति (सुज्ज १६)। भूका—पभासिसु (भग, सुज्ज १६)। भवि. पभासिस्संति (सुज्ज १६)। वकृ. पभासमाण (कप्प)।

पभास सक [प्र + भासय्] प्रकाशित करना। प्रभासेइ (भग)। पभासति (सुज्ज ३—पत्र ६४)। वकृ पभासयंत, पभासेमाण (पउम १०८, ३३, रयण ७५, कप्प, उवा, औप, भग)।

पभास पु [प्रभास] १ भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम (सम १६, कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष (जं ३, महा)। ६ देव-विमान-विशेष (सम १३, ४१)। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ (इक)।

पभासा स्त्री [प्रभासा] अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

पभासिय वि [प्रभाषित] उक्त, कथित (सुअ १, १, १, १६)।

पभासेमाण देखो पभास = प्र + भासय्।

पभिइ देखो पभिइ (द्र ५५)।

°पभिइ वि व. [°प्रभृति] इत्यादि, वगैरह (भग, उवा, महा)।

पभिइं } अ [प्रभृति] प्रारम्भ कर, (वहाँ
पभिई } से) शुरू कर, लेकर, 'बालभावाओ
पभीइ } पभिइ' (सुर ४, १६७, कप्प,
पभीइ } महा, स ७३६, २७५ टि)।

पभीय वि [प्रभीत] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ (उत ५, ११)।

पभु पुं [प्रभु] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक (पउम ६३, २६, बृह २)। ३ राजा, नृप, 'पभू राया अणुप्पभू जुवराया' (निचू २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् (श्रा २७, भग १५, उवा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक, 'पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एगट्ठा' (निचू २०)।

पभुज सक [प्र + भुज्] भोग करना। पभुजेदि (शौ) (द्रव्य ६)।

पभुति (पै) देखो पभिइ (कुमा)।

पभुत्त वि [प्रभुक्त] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह (स १०४)।

पभूइ } देखो पभिइ (पउम ६, ७६, स
पभूई } २७५)।

पभूय वि [प्रभूत] प्रचुर, बहुत (भग, पउम ५, ५, णाया १, १, सुर ३, ८१, महा)।

पभोय (अप) देखो उवभोग, 'भोय-पभोयमाणु ज किज्जइ' (भवि)।

पमइल वि [प्रमलिन] अति मलिन (णाया १, १)।

पमक्खण न [प्रम्रक्षण] १ अभ्यञ्जन, विलेपन। २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उवटन (स ७४)।

पमक्खिअ वि [प्रम्रक्षित] १ विलिप्त। २ विवाह के समय जिसको उवटन किया गया हो वह (वसु, सम ७५)।

पमज्ज सक [प्र + मृज्, मार्ज्] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाड़ू आदि से धूलि वगैरह को दूर करना। पमज्जइ (उव,

[illegible]

न [°वन] राजा का अन्त:पुर स्थित वन जहाँ राजा रानियों के साथ क्रीडा करे (ति ११, २७ जाया १, ८, १३)।

पमया स्त्री [प्रमदा] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला (उत्त, सुर ४)।

पमह पु [प्रमथ] शिव का अनुचर (पाअ)। °णाह पु [°नाथ] महादेव (सुर १५०)। °हिव पु [°धिप] शिव, महादेव (गा ८४८)।

पमा सक [प्र + मा] सत्य-सत्य ज्ञान करना। कर्म पमीयइ (विसे ६८०)।

पमा स्त्री [प्रमा] १ प्रमाण, परिमाण 'दीघ-...' (सुपा)। २ यथार्थ ज्ञान (विसे ६८२)।

पमा° देखो पमाय = प्रमाद (पव १)।

पमाइ वि [प्रमादिन्] प्रमादी, बेदरकार (सुपा ४८३, उत्त, भाचा)।

पमाइअव्व देखो पमाय = प्र + मद्।

पमाउ देखो पमाय 'सम्मत्तपमादचे' (उत्त ७७८ टी)।

पमाण सक [प्र + मानय] विशेष रीति से मानना, आदर करना। कृ पमाणणिज्ज (धर्म २७)।

पमाण न [प्रमाण] १ यथार्थ ज्ञान, सत्य ज्ञान। २ ... (पत्रु)। ३ ... 'प्रमाणानि' (... ६७ ... अणु)। ४ मान, माप, परिमाण (विपा ५४८ ठा ४, ३, ... ६८, ... १, २)। ५ ... (अणु, जी २६)। ६ ... [illegible] ... ७ ... ८ ... [illegible] (सुपा ११, धर्म १४) ... [illegible]

[illegible]

(सम्मत्त ११७)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (सुज्ज १०, २०)।

पमाण सक [प्रमाणय्] प्रमाण रूप से स्वीकार करना। पमाणइ, पमाणेइ (पिंग)। वकृ पमाणंत (उत्त १८६)। कृ पमाणियव्व (सिरि ६१)।

पमाणिअ वि [प्रमाणित] प्रमाण रूप से स्वीकृत (सुपा ११०, श्रा १२)।

पमाणिआ } स्त्री [प्रमाणिका, प्रमाणी] छन्द-विशेष (पिंग)।
पमाणी }

पमाणीकर सक [प्रमाणी + कृ] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना। कर्म पमाणीकीरइ (ज्ञा) (ति २२८)। संकृ पमाणीकिअ (नाट—मालती ४०)।

पमाद देखो पमाय = प्र + मद्। कृ पमादेयव्व (आचा १, १—पत्र ६०)।

पमाद देखो पमाय = प्रमाद (नव, ओघ ...)।

पमाय अक [प्र + मद्] प्रमाद करना, बेदरकारी करना। पमायइ, पमायए (उत्त, पि ४६०)। वकृ पमायंत (सुपा १०)। कृ पमाइअव्व (नव)।

पमाय पु [प्रमाद] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य कार्य में प्रवृत्ति, असावधानता, बेदरकारी (आचा, ठा ४, ३२, भग, आवू ३८, १३४)। २ ... 'नमयगासाणा ... मिलानलगा ... ' (सत २५)।

पमार पु [प्रमार] १ मरण का प्रारम्भ (... १५)। २ ... मारना (ठा ४, ?)।

पमारणा स्त्री [प्रमारणा] बुरी तरह मारना (... ?)।

पमिय वि [प्रमित] परिमित ... 'अणुप्पुव्वसंमप्पमाणवमिया ...' (पंच २, २०)।

पमिलाण वि [प्रम्लान] ... हुआ (... ?, ... ५४)।

पमिलाय अक [प्र + म्लै] ... ... (... ४)।

पमिल्ल अक [प्र + मील्] विशेष संकोच करना, संकुचना। पमिल्लइ (हे ४, २३२, प्राप्र)।

पमीय° देखो पमा = प्र + मा।

पमील देखो पमिल्ल। पमीलइ (हे ४, २३२)।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त, हर्षित (औप, जीव ३)।

पमुच सक [प्र + मुच्] छोड़ना, परित्याग करना। पमुचंति (उव)। कर्म. पमुच्चइ (पि ५४२)। भवि. पमोक्खसि (आचा)। वकृ. पमुचमाण (राज)।

पमुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (हे २, ९७, पड्)।

°पमुक्ख देखो °पमुह (सुपा १०, सु ११, जी १०)।

पमुच्छिय पु [प्रमूर्च्छित] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)।

पमुत्त देखो पमुक्क (पि ५६६)।

पमुदिय देखो पमुइअ (सुर ३, २०)।

पमुद्ध वि [प्रमुग्ध] अत्यन्त मुग्ध (नाट—मालती ४४)।

पमुह वि [प्रमुख] १ तल्लीन दृष्टिवाला, 'एगप्पमुहे' (आचा)। २ पुं ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ न प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात, 'किंपागफल-सरिच्छो भोगा पमुहे हवंति उ गमहुरा' (पउम १०८, ३१, पाअ)।

°पमुह नि. व [°प्रमुख] १ वगैरह, आदि। २ प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य (औप, प्रासू १६९)।

पमुहर वि [प्रमुखर] वाचाल, बकवादी (उत्त १७, ११)।

पमेइल वि [प्रमेदस्विन] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह,'थूले पमेइले वज्झे पाइमेत्ति य नो वए' (दस ७, २२)।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-पदार्थ (धर्मसं ११९०)।

पमेह पुं [प्रमेह] रोग-विशेष, मेह रोग, मूत्र-दोष, बहुमूत्रता (निचू १)।

पमोअ पु [प्रमोद] १ आनन्द, खुशी, हर्ष (सुर १, ७८, महा, गदि)। २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

पमोक्ख° देखो पमुच।

पमोक्ख पुन [प्रमोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सूअ १, १०, १२)। २ प्रत्युत्तर, जवाब, 'नो सचाएइ किंचिवि पमोक्खमक्खाइउं' (भग)।

पमोक्खण न [प्रमोचन] परित्याग, 'कंठा-कंठिय अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेइ' (णाया १, २—पत्र ८८)।

पमोयणा स्त्री [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद आनंद (चेइय ४११)।

पम्मलाअ अक [प्र + म्लै] अधिक म्लान होना। पम्मलाअदि (शौ), (पि १३६, नाट—मालती ५३)।

पम्माअ } वि [प्रम्लान] १ विशेष म्लान,
पम्माइअ } अत्यन्त मुरझाया हुआ, 'पम्माअ-गिरीमाइ व। जह से जायाइ अगाइ' (गा ५६, गा ५६ टि)। २ शुष्क, 'वसहा य जायथामा, गामा पम्मायचिक्खल्ला' (धर्मवि ५३)।

पम्माण वि [प्रम्लान] १ निस्तेज, मुरझाया हुआ। २ न फीकापन, मुरझाना, 'पम्हा (? म्मा) णलग्गलिंगो' (अणु १३९)।

पम्मि पुं [दे] पाणि, हाथ, कर (पड)।

पम्मुक्क देखो पमुक्क (हे २, ९७, पड्, (कुमा)।

पम्मुह वि [प्राङ्मुख] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह (भवि, वज्जा १६४)।

पम्ह पुन [पक्ष्मन्] १ अक्षि-लोम, बरवनी, आँख के बाल (पाअ)। २ पद्म आदि का केसर, किंजल्क (उवा, भग, विपा १, १)। ३ सूत्र आदि का अत्यल्प भाग। ४ पक्ष, पाँख (हे २, ७४, प्राप्र)। ५ केश का अग्र-भाग (से ६, २०)। ६ अग्र-भाग, 'णअणहु-आसणाइत्तपत्तणपम्ह' (से १५, ७३)। ७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश (ठा २, ३, इक)। ८ न. एक देव-विमान (सम १५)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। °कूड पु [°कूट] १ पर्वत-विशेष (राज)। २ न ब्रह्मलोक नामक देवलोक का एक देव-विमान (सम १५)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३, ६)। °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक देवविमान (सम १५)। °लेस, °लेस्स न [°लेश्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (सम १५, राज)। °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। °वित्त न [°वर्त] वही अर्थ (सम १५)।

पम्ह देखो पउम (पण्ह १, ४—पत्र ६७, ७८, जीव ३)। °गंध वि [°गन्ध] १ कमल की गन्ध। २ त्रि कमल के समान गन्धवाला (भग ६, ७)। °लेस वि [°लेश्य] पद्मा नामक लेश्यावाला (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] लेश्या-विशेष, पाँचवी लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (ठा ३, १, सम ११)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७—पत्र ५११)।

पम्हअ सक [प्र + स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ (प्राकृ ६१)।

पम्हगावई स्त्री [पक्ष्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३, इक)।

पम्हट्ठ वि [प्रस्मृत] १ विस्मृत (से ४ ४२)। २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह, 'किं पम्हट्ठ म्हि अहं तुह चलणुप्पणणतिवह-आपडिउत्तणं (से ६, १२)।

पम्हट्ठ वि [दे] १ प्रभ्रष्ट, विलुप्त (से ४, ४०)। २ फेंका हुआ, प्रक्षिप्त, 'पम्हट्ठ वा परिट्ठवियं दिं वा एगट्ठ' (बव १)।

पम्हय वि [पक्ष्मज] १ पक्ष्म से उत्पन्न २ न एक प्रकार का सूता (पंचभा)।

पम्हर पु [दे] अपमृत्यु, अकाल-मरण (दे ६, ३)।

पम्हल वि [पक्ष्मल] पक्ष्म युक्त, सुंदर अक्षि-लोमवाला (हे २, ७४, कुमा, पड्, औप, गउड, सुर ३, १३६, पाअ)।

पम्हल पु [दे] किंजल्क, पद्म आदि का केसर (दे ६, १३, पड्)।

पम्हलिय वि [दे. पक्ष्मलित] धवलित, सफेद किया हुआ, 'लायण्णजोण्हापवाहपम्ह-लियचउद्दिसाभोओ' (स ३६)।

पम्हुस सक [प्र + स्मृ] विस्मरण करना [illegible] पम्हुसइ [illegible]
(— १८०)।

पम्हुसिअ वि [विस्मारित] भुलाया हुआ, [illegible] हुआ (— २, ५)।

पम्हा स्त्री [पक्ष्मा] १ लेश्या विशेष, [illegible] परिणाम विशेष (— २, २२, — ३६)। २ [illegible]

पम्हाइ [illegible] (— १ ५, ३)।

पम्हावई स्त्री [पक्ष्मावती] १ विजय विशेष [illegible] नगरी (ठा २, ३ —)। २ [illegible] (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पम्हु [illegible] १ [illegible] (— १, ३१८)। २ [illegible] (आचा १, ८—१, १४८, [illegible])।

[illegible] [पक्ष्मोत्तरावतंसक] [illegible]

[illegible] [प्र + स्मृ] [illegible]

[illegible] [प्र + मृद्] [illegible]

[illegible] [प्र + मृद्] [illegible] (हे १, [illegible] २६)।

[illegible]

पय पुन [पयस्] १ क्षीर, दूध, 'पयो' (हे १, ३२ [illegible] १२, पाम)। २ पानी, जल (सुपा १३६, पाम)। °हर देखो पओहर (विग)।

पय पु [प्रज] प्राणी, जन्तु (भाग)।

पय पुन [पद] १ विभक्ति के साथ का शब्द, 'पयमपयावयवं जोयणं न त नासियाइ पयवि' (विसे १००३, प्रासू १३८, भग २३)। २ स्थान, जगह, स्थान, 'जयएणपया [illegible]' (ठा १०३८, भा २३)। ३ पैर, पाँव, चरण, 'जाल व तज्जणातज्जणीइ [illegible] होंति मयणए [illegible] पयहे बारो वव', 'जाव न [illegible] पए पयाहुत्त नियत्तो सि' (सुपा १, धर्मवि ५८, सुर ३, १०७, भा २३)। ४ पाद [illegible] पदाधि (सुर २, २३२ सुपा ३५८, भा २३, प्रासू ५०)। ५ पद का चौथा हिस्सा (भग)। ६ निमित्त, कारण (भाग)। ७ स्थान 'श्रामाणाय [illegible]' (सुर २, १६७, भा २३)। ८ पदवी, अधिकार, 'कुवरायपए [illegible] वर्मे पुत्तो ?' (सुर २, १७५, महा)। ९ त्राण, शरण। १० प्रदेश। ११ व्यवसाय (भग २३)। १२ गुड, जाति विशेष (सुख १, १ २, ८)। °खेम न [°क्षेम] [illegible], 'कुसव य मो [illegible]' (— ६, ६)। [illegible] पु [°ग्र] पदाति, [illegible] (— ६, १८२)। °पास पु [°पाश] [illegible] (सुख १, १, २, ८, ६)। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] (— ६, ४१८)। °विग्गह पु [°विग्रह] [illegible] (विसे १००६)। °विभाग पु [°विभाग] [illegible]। °वीढ देखो पाद-पीढ (पव ४०, सुपा ५५६)। °समास पु [°समास] [illegible]। °[illegible] [illegible]

पय (प्रप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पय° देखो पया = प्रजा। °पाल वि [°पाल] १ प्रजा का पालक। २ पु नृप विशेष (सिरि ४५)।

°पय वि [°प्रद] देनेवाला, 'पीइप्पय' (रमा)।

पयइ स्त्री [प्रकृति] संधि का अभाव (प्रणु ११२)।

पयइ देखो पगइ (गा ३१७, गउड, महा नव ३१, भत ११४, गच्छ, सुप्र ३,६)।

पयइंद पु [पतगेन्द्र, पदकेन्द्र] वानव्यतर-जातीय देवों का इन्द्र (ठा २, ३)।

पयई देखो पयवी (गउड)।

पयग पु [पतङ्ग] १ सूर्य, रवि (पाम), 'सो हरिसमुलइयंगो नयरि पव दिट्ठुग्गमपयगो' (उप ७२८ टी)। २ रस विशेष, रस-द्रव्य विशेष (उर ६, ४, गिरि १०४७)। ३ शलभ, फतिगा, उड़नेवाला छोटा कीट (णाया १, १७, पाम)। ४—५ देखो पयय = पतग, पदक, पदग (पएर् १, ४—पत्र ६८, राज)। °वीहिया स्त्री [°वीथिका] १ शलभ का उड़ना। २ भिक्षा में [illegible] पतंग की तरह चलना, बीच में दो चार घर को छोड़ते हुए भिक्षा लेना (उत्त ३०, १६)। °वीही स्त्री [°वीथी] [illegible] (उत्त ३०, १६)।

पयंगुल पुन [प्रपञ्चुल] [illegible] मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पयंड वि [प्रचण्ड] १ प्रचुर, तीव्र प्रकार। २ भयंकर, भयंकर (पएर् १, १ ३, ४ [illegible])।

पयंड वि [प्रकाण्ड] [illegible] (— १, ८)।

पयंत देखो पय = पद्।

पयंप सक [प्र + जल्प्] [illegible] पयंपमाण (— ४६६)।

पयंप — [प्र + जल्प्] १ [illegible] बोलना। २ बकवाद करना। [illegible] पर्यपिऊण पर्यपिरो [illegible] (— १, ४८४)। [illegible] (— ४२४, — ५८२)।

पयंपण न [प्रजल्पन] कथन, उक्ति (उप पृ २१७)।

पयंपिय वि [प्रकम्पित] अति काँपा हुआ (स ३७७)।

पयंपिय वि [प्रजल्पित] १ कथित, उक्त। २ न कथन, उक्ति। ३ बकवाद, व्यर्थ जल्पन (विपा १ ७)।

पयंपिर वि [प्रजल्पितृ] १ बोलनेवाला। २ वाचाट, बकवादी (सुर १६, ५८, सुपा ४१५, श्रा २७)।

पयंस सक [प्र+दर्शय्] दिखलाना। पयसेंति (विसे ६३२)।

पयंसण न [प्रदर्शन] दिखलाना (स ६१३)।

पयंसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ (सुर १, १०१, १२, ३२)।

पयक्क देखो पाटक्क ( )।

पयक्ख सक [प्रत्या+ख्या] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना। पयक्खेइ (विचार ७५५)।

पयक्खिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिण (णाया १, १६)।

पयक्खिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिणय्। संकृ पयक्खिणिऊण (सुर ८, १०५)।

पयक्खिणा देखो पदक्खिणा (उप १४२ टी; सुर १४ ३०)।

पयग देखो पयय = पतग, पदक, पदग (राज, पव १९४)।

पयच्छ सक [प्र+यम्] देना, अर्पण करना। पयच्छइ (महा)। संकृ पयच्छिऊण (राज)।

पयच्छण न [प्रदान] १ दान, अर्पण (सुर २, १५१)। २ वि देनेवाला (सण)।

पयट्ट अक [प्र+वृत्] प्रवृत्ति करना। पयट्टइ (हे २, ३०, ४, ३४७, महा)। कृ. पयट्टिअव्व (सुपा १२६)। प्रयो पयट्टावेह (स २२) संकृ. पयट्टाविउ (स ७१५)।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो वह (हे २, २९, महा)। २ चलित, 'पयट्टय चलिय' (पाअ)।

पयट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करनेवाला (पण्ह १, १)।

पयट्टावअ वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (कप्पू)।

पयट्टाविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ (महा)।

पयट्टिअ वि [दे. प्रवर्त्तित] ऊपर देखो (दे ६, २६)।

पयट्टिअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति-युक्त (उत्त ४, २, सुख ४, २)।

पयट्ठाण देखो पइट्ठाण (काल, पि २२०)।

पयड सक [प्र+कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना। पयडइ, पयडेइ (मण, महा)। वकृ पयडंत (सुपा १, गा ४०६, भवि)। हेकृ पयडित्तु (पि ५७७)। प्रयो. पयडावइ (भवि)।

पयड वि [प्रकट] १ व्यक्त, खुला (कुमा, महा)। २ विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, 'विक्खाओ विस्सुओ पयडो' (पाअ)।

पयडण न [प्रकटन] १ व्यक्त करना, खुला करना (सण)। २ वि. प्रकट करनेवाला, 'जे तुज्झ गुणा बहुनेहपयडणा' (धर्मवि ६६)।

पयडावण न [प्रकटन] प्रकट कराना (भवि)।

पयडाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हुआ (काल, भवि)।

पयडि देखो पगइ (पण्ण २३, पि २१९)।

पयडि स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता, 'जे पुण सम्मद्दिट्ठी तेसिं मणो चडणपयडीए' (सट्ठि १४२)।

पयडिय वि [प्रकटित] प्रकट किया हुआ (सुर ३, ४८, श्रा २)।

पयडिय वि [प्रपतित] गिरा हुआ (णाया १, ८—पत्र १३३)।

पयडीकय वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया हुआ (महा)।

पयडीकर सक [प्रकटी+कृ] प्रकट करना। प्रयो. पयडीकरावेमि (महा)।

पयडीभूअ } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट
पयडीहूअ } हुआ हो (सुर ६, १८४, श्रा १६, महा, सण)।

पयड्ढणी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ महिषी (दे ६, ७२)।

पयण देखो पवण (गा ७७७)।

पयण देखो पडण (विसे १८५६)।

पयण } न [पचन, °क] १ पाक, पकाना
पयणग } (औप, कुमा)। २ पात्र-विशेष, पकाने का पात्र (सूअनि ८०, जीव ३)। °साला स्त्री [°शाला] एक-स्थान (बृह २)।

पयणु } वि [प्रतनु] १ कृश, पतला। २
पयणुअ } सूक्ष्म, बारीक। अल्प, थोडा (स २४६, सुर ८, १६५, भग ३, ४, जं २, पउम ३०, ९६, से ११, ५६, गा ६८२, गउड)।

पयण्णय देखो पइण्णग (तंदु १)।

पयत्त अक [प्र+यत्] प्रयत्न करना। पअत्तध (शौ) (पि ४७१)।

पयत्त देखो पयट्ट = प्र+वृत (काल)।

पयत्त पु [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग (सुपा, उव, सुर १, ६, २, १८२, ४, ८१)।

पयत्त वि [प्रदत्त, प्रत्त] १ दिया हुआ (भग)। २ अनुज्ञात, समत (अनु ३)।

पयत्त देखो पयट्ट = प्रवृत्त (सुर २, १५९, ३, २४८, से ३, २४, ८, ३, गा ४३६)।

पयत्ताविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (काल)।

पयत्थ पु [पदार्थ] १ शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ (विसे १००३, चेइय २७१)। २ तत्व (सम १०६, सुपा २०५)। ३ वस्तु, चीज (पाअ)।

पयन्न देखो पइण्ण = प्रकीर्ण (भवि)।

पयन्ना देखो पइण्णा (उप १४२ टी)।

पयप्पण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार (धर्मस ३०७)।

पयय देखो पायय = प्राकृत (हे १, ६७, गउड)।

पयय वि [प्रयत] प्रयत्न शील, सतत प्रयत्न करनेवाला (औप, पउम ३, ९५, सुर १, ४, उव), 'इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पयओ निमतए साहू' (पुप्फ ४२६, पडि)।

पयय पु [पतग, पदक, पदग] १ वानव्यन्तर देवों की एक जाति (ठा २, ३, पण्ण १, इक)। २ पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २,३)। °वइ पु [°पति] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

पयय न [दे] अनिश, निरन्तर (दे ६, ६)।

[illegible]

…२, ३)। वकृ पयरेमाण (आचा २, २ ३, ३)।

पयल देखो पयड=प्र + कट्। पयल (भवि)। वकृ पयडि (...) (भवि)।

पयल देखो पयड=प्रकट (भवि)।

पयल (अप) सक [प्र + चालय्] १ चलाना। २ हिलाना। पयल (भवि)।

पयलि वि [...] [illegible] (... १००, ६)।

पयल पु [...] [illegible] (दे ६, ८)।

पयला स्त्री [दे प्रचला] १ निद्रा, नींद (दे ६, ६)। २ निद्रा विशेष, बैठे-बैठे ... जो नींद आती है वह। ३ जिसके उदय से बैठे-बैठे और खड़े-खड़े नींद आती है वह कर्म (... १, ११)। °पयला स्त्री [दे प्रचला] १ कर्म विशेष जिसके उदय से चलते-चलते निद्रा आती है वह कर्म। २ चलते चलते आने वाली नींद (... ६ ... २१)।

पयला सक [प्रचलाय्] निद्रा लेना, नींद करना। पयलाइ (...)। ... पयलायंत (...)।

पयलाइअ वि [प्रचलायित] १ नींद, निद्रा। २ ... नीचे गिर जाना (... १२ ...)।

पयलाइया स्त्री [दे] ... (... २, ३ २७)।

पयलाय ... पयला=प्रचलाय्। पयलायइ (...)। वकृ पयलायंत (...)।

[illegible]

पयाण [illegible]

[illegible]

पयर सक [प्र + सृ] फैलना, पसरना। पयरइ (हे ४, ७७ प्राकृ ७६)।

पयर सक [कृ] १ शिथिलता करना, ढीला होना। २ लटकना। पयरइ (हे ४, ७०)।

पयह वि [प्रसृत] फैला हुआ (पाअ)।

पयह पु [प्र...] महाग्रह विशेष (... २०)।

पयहिर वि [प्रसमर] फैलनेवाला (कुमा)।

पयहिर वि [शैथिल्यकृत] शिथिल होनेवाला, ढीला होनेवाला (कुमा ६, ४३)।

पयहिर वि [लम्बनकृत] लटकनेवाला (कुमा ६, ४३)।

पयव सक [प्र + तप्, तापय्] तपाना, गरम करना। पयविज्ज (से ४, २८)। वकृ पयविज्जंत (से २, २४)।

पयव सक [पा] पीना, पान करना। ... 'पीरुअ ... पयपयविज्जंत' (से २, २८)।

पयवई स्त्री [दे] सेना, लश्कर (दे ६, १६)।

पयवि स्त्री [पदवि] देखो पयवी (पिंग ८७२)।

पयविअ वि [प्रतप्त, प्रतापित] गरम किया हुआ, तपाया हुआ (गा १८४, से २, २४)।

पयवी स्त्री [पदवी] १ मार्ग, रास्ता (पाअ, गा १०७, सुपा २७८)। २ ... (उप पृ ३८६)।

पयह सक [प्र + हा] त्याग करना, छोड़ना। पयह, पयहिज्ज, पयहेज्ज (सूअ १, १०, १४, १, २, २ ११, १, २, ३, ६, उत्त ४ १२, स १२६)। संकृ पयहिय (... १२, १६, ... १, २४)। ... पयहित्तए (... ८१४)।

पयहिण ... [illegible]

पया सक [प्र + जनय्] ... पयाहि (... १, ७)। ... (... १, ७)। ...

पया सक [प्र + या] ... पयाइ (... १२, ...)।

पया स्त्री [दे] ... (...)।

पया स्त्री, न. [प्रजा] १ ... [illegible]

१, १)। २ लोक, जन-समूह, (सिरि ४२, पचा ७, ३७)। ३ जतु-समूह, 'निव्विरण-चारी अरए पयासु' (आचा, सूत्र १, ५, २, ६)। ४ सतान वाली स्त्री, 'निव्विद नदि अरए पयासु अमोहदंसी' (आचा, सूत्र १, १०, १५)। ५ सतान, सतति (सिरि ४२)। °णद पु [°नन्द] एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५३)। °नाह पुं [°नाथ] राजा नरेश (सुपा ५७५)। °पाल पु [°पाल] एक जैन मुनि जो पाँचवे बलदेव के पूर्वजन्म मे गुरु थे (पउम २०, १९०)। °वइ पु [°पति] १ ब्रह्मा, विधाता (पाअ, सुपा ३०५)। २ प्रथम वासुदेव के पिता का नाम (पउम २०, १८२, सम १५२)। ३ नक्षत्र-देव विशेष, रोहिणी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२)। ४ दक्ष, कश्यप आदि ऋषि। ५ राजा, नरेश। ६ सूर्य, रवि। ७ वह्नि, अग्नि। ८ त्वष्टा। ९ पिता, जनक। १० कीट-विशेष। ११ जामाता (हे १, १७७, १८०)। १२ अहो-रात्र का उन्नीसवाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)।

पयाइ पु [पदाति] प्यादा, पाँव से (पैदल) चलनेवाला सैनिक (हे २, १३८, षड्, कुमा, महा)।

पयाग पुन [प्रयाग] तीर्थ-विशेष, जहाँ गगा और यमुना का सगम है (पउम ८२, ८१, हे १, १७७)।

पयाण न [प्रदान] दान, वितरण (उवा, उप ५९७ टी, सुर ४, २१०, सुपा ४६२)।

पयाण न [प्रतान] विस्तार (भग १६, ६)।

पयाण न [प्रयाण] प्रस्थान, गमन (णाया १, ३, पण्ह २, १, पउम ७४, २८, महा)।

पयाम देखो पकाम (स ६५६)।

पयाम न [दे] अनुपूर्व, क्रमानुसार (दे ६, ९, पाअ)।

पयाय देखो पयाग (कुमा)।

पयाय वि [प्रयात] जिसने प्रयाण किया हो वह (उप २११ टी, महा, औप)।

पयाय वि [प्रजात] उत्पन्न, सजात, 'पयाय-साला विडिमा' (दस ७, ३१)।

पयाय वि [प्रजात, प्रजनित] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, 'दारग पयाया' (विपा १, १, २, कप्प, णाया १, १—पत्र ३३), 'पयाया पुत्त' (वसु)।

पयाय देखो पयाव = प्रताप (गा ३२६, से ४, ३०)।

पयार सक [प्र + चारय्] प्रचार करना। पयारइ (सण)। सकृ पयारिवि (अप) (सण)।

पयार सक [प्र + तारय्] प्रतारण करना, ठगना। पयारइ, पयारसि (सण)।

पयार पु [प्रकार] १ भेद, किस्म। २ ढग, रीति, तरह (हे १, ६८, कुमा)।

पयार पु [प्राकार] किला, दुर्ग (पउम ३०, ४९)।

पयार पुं [प्रचार] १ सचार, सचरण (सुपा २४)। २ प्रसार फैलाव (हे १, ६८)।

पयार पु [प्रचार] १ प्रकर्ष-प्राप्ति (दसनि १, ४१)। २ आचरण, आचार (दसनि १, १३५)।

पयारण न [प्रतारण] वञ्चना, ठगाई (सुर १२, ६१)।

पयारिअ वि [प्रतारित] ठगा हुआ, वञ्चित (पाअ, सुर ४, १५५)।

पयाल पु [पाताल] भगवान् अनन्तनाथजी का शासन यक्ष, 'छम्मुह पयाल किन्नर' (सति ८)।

पयाव सक [प्र + तापय्] तपाना, गरम करना। वकृ पयावेमाण (पि ५५२)। हेकृ पयावित्तए (कप्प)।

पयाव पु [प्रताप] १ तेज, प्रखरता (कुमा, सण)। २ प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा (पव ४)।

पयावण न [पाचन] पकवाना, पाक कराना (पण्ह १, १, श्रा ८)।

पयावण न [प्रतापन] १ गरम करना, तपाना (ओघ १८० भा, पिंड ३४, आचा)। २ अग्नि (कुप्र ३८९)।

पयावि वि [प्रतापिन्] १ प्रताप शाली। २ पुं इक्ष्वाकु वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)।

पयास सक [प्र + काशय्] १ व्यक्त करना। २ चमकाना। ३ प्रसिद्ध करना। पयासेइ (हे ४, ४५)। वकृ पयासत, पयासेत, पयासअत (सण, गा ४०३, उप ८३३ टी, पि ३९७)। कृ पयासणिज्ज, पयासियव्व (उप ५९७ टी, उप पृ ५५)।

पयास देखो पगास = प्रकाश (पाअ, कुमा)।

पयास पु [प्रयास] प्रयत्न, उद्यम (चेइय २६०)।

पयास (अप) नीचे देखो (भवि)।

पयासग वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (स ७८)।

पयासण न [प्रकाशन] १ प्रकाश-करण (आचा, सुपा ४१६)। २ वि प्रकाशक, प्रकाश करनेवाला, 'परमत्थपयासण वीर' (पुप्फ १)।

पयासय देखो पयासग (विसे ११३०, सं १, पव ८९)।

पयासि वि [प्रकाशिन्] प्रकाश करनेवाला (सण, हम्मीर १४)।

पयासिय देखो पगासिय (भवि)।

पयासिर वि [प्रकाशितृ] प्रकाश करनेवाला (भवि)।

पयासेत देखो पयास = प्र + काशय्।

पयाहिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिण (उवा, औप, भवि, पि ६५)।

पयाहिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिणय्। पयाहिणइ (भवि)। पयाहिणंति (कुप्र २९३)।

पयाहिणा देखो पदक्खिणा (सुपा ४७)।

पय्यवत्थाण (शौ) न [पर्यवस्थान] प्रकृति मे अवस्थान (स्वप्न ४८)।

पर सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। परइ (हे ४, १६१, कुमा)।

पर देखो प = प्र (तदु ४६)।

पर वि [पर] १ अन्य, भिन्न, इतर (गा ३८४, महा, प्रासू ८, १५७)। २ तत्पर, तल्लीन, 'कोऊहलपरा' (महा, कुमा)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान (आचा, रयण १५)। ४ प्रकर्ष प्राप्त, प्रकृष्ट (आचा, श्रा २३)। ५ उत्तरवर्ती, बाद का, 'परलोग—' (महा)। ६ दूरवर्ती (सूत्र १, ८, निचू १)। ७ अनात्मीय, अस्वीय (उत्त १, निचू २)। ८ पुं शत्रु, दुश्मन, रिपु (सुर १२, ९२, कुमा, प्रासू ६)। ९ न केवल, फक्त (कुमा, भवि)। °उट्ठ वि [°पुष्ट] अन्य से पालित। २ पुं. कोकिल पक्षी (हे १, १७९)। °उत्थिय वि

[illegible]

धरार' (सुपा २६६), 'दन्तेण धनपालं [illegible] देमाणि हो[illegible] [illegible]' (सुपा ३८०)। °दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट 'ता [illegible] परदारियाए आलाओ' (सुर ६, १७६)। °पक्ख वि [°पक्ष] [illegible], [illegible] (द्र १७)। °परिवाइय वि [°परिवादिक] दूसर के दोषों को बोलनेवाला, पर-निन्दक (औप)। °परिवाय पुं [°परिवाद] १ पर के गुण-दोषों का विप्रकीर्ण वचन (औप, कप्प)। २ पर-निन्दा, दूसरे के दोषों का परिकीर्तन (ठा ४, ४, ४)। ३ [illegible] के सद्गुणों का [illegible] (पव)। °परिवाय पु [°परिपात] [illegible], [illegible] दूसरे को [illegible] (सा १९, ५)। °पुट्ठ देखो °उट्ठ (पउम १७ म ५१६)। °भव पु [°भव] आगामी जन्म (औप, पउम १, १)। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म में [illegible] (भग, ठा ६)। °भाग पु [°भाग] १ श्रेष्ठ [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible] (उत्त पु ६७)। °महेला स्त्री [°महेला] १ [illegible] स्त्री। २ परकीय [illegible] (सुपा ८७०)। °यत्त देखो °यत्त, 'परवसो [illegible]' (पाप्र)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] १ [illegible], [illegible] से भिन्न (उप ६८६ टी)। २ [illegible] (पउम १, २, टि १६५, [illegible] ७५, सत्त)। °वस वि [°वश] पराधीन, परतन्त्र (सुपा, सुपा ३२१)। °वाइ पुं [°वादिन्] [illegible] वादी [illegible]। °वाय पु [°वाद] १ [illegible], [illegible] (पोग)। २ श्रेष्ठ [illegible] (श्रा २३)। °वाय पु [°वाद] १ [illegible], [illegible]। २ वि श्रेष्ठ [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाद] १ श्रेष्ठ [illegible]। २ [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाद] [illegible], [illegible] (श्रा २३)। °वाय [°वाद] १ [illegible] (श्रा २३)। °वाय [°वाद] १ [illegible]। [illegible] (श्रा २३)। °वाय पु [°वाद] [illegible]। [illegible] °वाय [°वाद] [illegible]

(श्रा २३)। °वाय वि [°व्रात] १ श्रेष्ठ समूहवाला। २ न. सुविहित साधु का [illegible] (श्रा २३)। °वाय पुं [°वात] [illegible] का जलविन्दु (श्रा २३)। °वाय पु [°व्याच] धूर्त, ठग (श्रा २३)। °वाय वि [°पाप] प्रीतिवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] वेदज्ञ, वेदवित् (श्रा २३)। °वाय वि [°पातृ] १ अच्छा [illegible]। २ खूब पान करनेवाला। ३ खूब [illegible] वाला। ४ पु [illegible] का [illegible]। ५ मद्य व्यापारी (श्रा २३)। °वाय वि [°वाद] सुन्दर (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यातृ] १ श्रेष्ठ आच्छादक। २ पु वस्त्र, कपड़ा (श्रा २३)। °वाय वि [°वातृ] १ श्रेष्ठ पवन करनेवाला। २ पु. श्रेष्ठ [illegible] वाय, उत्तम [illegible]। ३ [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, दुस्तर अपराधी (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] श्रेष्ठ विस्तारवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वात] १ [illegible] श्रेष्ठ [illegible] समूह हो वह स्थान। २ न [illegible] परिपूर्ण सरोवर (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ श्रेष्ठ [illegible]। २ [illegible] पक्षियों का विशेष आगमन [illegible]। ३ पु [illegible] पक्षी [illegible]। ४ सुन्दर पर। ५ [illegible], [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ [illegible] का [illegible] आगमन [illegible]। ३ [illegible] सुख, समुद्र [illegible]। ४ पु [illegible], [illegible] सागर (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] १ [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] १ [illegible]। [illegible] करनेवाला (श्रा २३)। °वाय पुं [°वाय] १ [illegible]। २ [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] [illegible] (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] [illegible] (श्रा २३)। °वाय न [°वाय] [illegible]

वडा पेड (श्रा २३)। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पेरवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाच] फलित शालि (श्रा २३)। °वाय वि [°ापाप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करनेवाला। २ पुं मन्त्री, श्रमात्य। ३ सुभट, योद्धा (श्रा २३)। °वाय वि [°ापात] श्रापात-सुन्दर, जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह (श्रा २३)। °वाय वि [°व्राय] श्रेष्ठ विवाहवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षावाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह। २ अत्यन्त प्यासा। ३ पुं राजा, नरेश (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष वमन करनेवाला। २ पु. भिक्षुक, याचक (श्रा २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिए हथियार रखनेवाला। २ पु. सुभट, योद्धा (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारांगना (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] असती, कुलटा (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समुद्र की स्थिति (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°ापाता] धूर्त्त-मैत्री (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्राया] नृप-कन्या (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°ापागा] मरु-भूमि (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष (श्रा २३)। °विएस पु [°विदेश] परदेश, विदेश (पउम ३२, ३६)। °व्वस देखो °वस (पड्, गा २६५, भवि)। °सतिग वि [°सत्क] पर-सबन्धी, परकीय (पएह १ ३)। °समय पु [°समय] इतर दर्शन का सिद्धान्त, 'जावइया नयवाया तावइया चेव परसमया' (सम्म १४४)। °हुअ वि [°भृत] १ दूसरे से पुष्ट, अन्य से पालित (प्राप्र)। २ पुस्त्री कोयल, पिक पक्षी (कप्प)। स्त्री °आ (सुर ३, ५४, पाग्र)। °ाघाय देखो °घाय (प्रासू १०४, सम ६७)। °ावीण देखो °ाहीण (धर्मवि १३६)। °ायत्त वि [°ायत्त] पराधीन, परतन्त्र (पउम ६४, ३४, उप पृ १८२, महा)। °ाहीण वि [°ाधीन] परतन्त्र, परायत्त (नाट—मालवि २०)।

पर° देखो परा = श्र (श्रा २३, पउम ६१, ८)।

पर श्र [परम्] १ परन्तु किन्तु, 'जं तुमं श्राणवेसित्ति, पर तुह दूरे नयरं' (महा)। २ उपरान्त, 'नो से कप्पइ एत्तो वाहिं, तेण परं, जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति त्ति वेमि' (कस १,५१,२,४—७,४,१,२—२६)। ३ केवल, फक्त, 'एस मह सत्तावो, परं माणससरमज्जणेण जइ श्रवगच्छइत्ति' (महा)।

परं श्र [परुत्] श्रागामी वर्ष, 'श्रज्ज कल्लं परं परारिं' (वै २), 'श्रज्ज परं परारिं पुरिमा चिंतंति श्रत्थसंपत्तिं' (प्रासू ११०)।

परंग सक [परि + अङ्ग्] चलना, गति करना। कवकृ परंगिज्जमाण (श्रौप)।

परंगमण न [पर्यङ्गन] पांव से चलना, चंक्रमण (श्रौप)।

परंगामण न [पर्यङ्गन] चलाना, चंक्रमण कराना (भग ११, ११—पत्र ५४४)।

परंतम वि [परतम] अन्य को हैरान करनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतम वि [परतमस्] १ अन्य पर क्रोध करनेवाला। २ अन्य-विषयक अज्ञान रखनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतु श्र [परन्तु] किन्तु (सुपा ४६६)।

परंदम वि [परन्दम] १ अन्य को पीडा पहुँचाने वाला (उत्त ७, ६)। २ अन्य को शान्त करनेवाला। ३ अश्व आदि को सिखानेवाला (ठा ४, २—पत्र २१३)।

परंपर, परंपरग, परंपरय वि [परम्पर] १ भिन्न-भिन्न (णादि)। २ व्यवहित, 'परंपरसिद्ध—' (पएण १, ठा २, १, १०)। ३ पुन परम्परा, अविच्छिन्न धारा (उप ७३३), 'पुरिसपरंपरएण तेहिं इट्टगा आणिया', 'एस दव्वपरंपरगो' (श्राव १), 'परंपरेण' (कप्प, धर्मसं ५३१, १३०६)।

परंपरा स्त्री [परम्परा] १ अनुक्रम, परिपाटी (भग, श्रौप, पाग्र)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (णाया १, १)। ३ निरन्तरता, अ-व्यवधान (भग ६, १)। ४ व्यवधान, अन्तर, 'अणंतरोववण्णगा चेव परंपरोववण्णगा चेव' (ठा २, २, भग १३, १)।

परंभरि वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४७)।

परंमुह वि [पराङ्मुख] मुँह-फिरा, विमुख (पि २६७)।

परकीअ, परकेर, परक्क वि [परकीय] अन्य-सम्बन्धी, इतर से सम्बन्ध रखनेवाला (विसे ४१, सुपा ३४६, अभि १७१, पड्, स्वप्न ४०, स २०७, पड्), 'न सेवियव्वा पमया परक्का' (गोय १३)।

परक्क न [दे] छोटा प्रवाह (दे ६, ८)।

परक्कंत वि [पराक्रान्त] १ जिसने पराक्रम किया हो वह। २ अन्य से आक्रान्त, 'गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जाय दुप्परक्कंतं भवइ' (आचा)। ३ न. पराक्रम, बल। ४ उद्यम, प्रयत्न। ५ अनुष्ठान, 'जे अबुद्धा महाभागा वीरा असम्मत्तदंसिणो, असुद्धं तेसिं परक्कंतं' (सूत्र १, ८, २२)।

परक्कम अक [परा + क्रम्] पराक्रम करना। परक्कमे परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि (आचा)। वकृ परक्कमंत, परक्कममाण (आचा)। कृ परक्कमियव्व, परक्कम्म (णाया १, १, सूत्र १, १, १)।

परक्कम सक [परा + क्रम्] १ जाना। २ आसेवन करना। ३ अक प्रवृत्ति करना। परक्कमे (दस ५, १, ६)। परक्कमिज्जा (दस ८, ४१)। संकृ परक्कम्म (दस ८, ३२)।

परक्कम पु [पराक्रम] गर्त आदि से भिन्न मार्ग (दस ५, १, ४)।

परक्कम पुन [पराक्रम] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य (विसे १०४६, ठा ३, १, कुमा), 'तस्स परक्कमं गीयमाणं न तए सुयं' (सम्मत्त १७६)। २ उत्साह। ३ चेष्टा, प्रयत्न (आचू १, प्रासू ६३, आचा)। ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति (ज ३)। ५ पर-आक्रमण, पर-पराजय (ठा ४, १, श्रावम)। ६ गमन, गति (सूत्र २, १, ६)। ७ मार्ग (दश० श्र० चू० सू० ८६)।

परक्कमि वि [पराक्रमिन्] पराक्रम-सपन्न (धर्मवि १६, १२०)।

[illegible]

[illegible], [illegible]। ६ स्थान, [illegible] (आचा; सूअ १, ६)। ७ न सुख (ठा ४)। ८ [illegible] और [illegible] का उपचार (संबोध ४८)। °ट्ठ पुं [°र्थ] १ सत्य पदार्थ, [illegible]: 'धर्म परमट्ठे सेसे अणट्ठे' ([illegible] १)। २ मोक्ष मुक्ति (ठा १८; [illegible] १, ३)। ३ संयम, चारित्र (सूअ १, ६)। ४ [illegible] देखो [illegible] °ट्ठ = [illegible] 'पर-मट्ठोट्ठिपट्ठ' ([illegible] २)। °ण्ण देखो °न्न ([illegible] १५१)। °त्थ पुन [°र्थ] १ [illegible] 'परमत्थ' (पाअ) 'परम-[illegible]' ([illegible] ६१)। २—४ देखो °ट्ठ (सुपा २४; १४०; [illegible] १६४ [illegible])। °न्न न [°ान्न] [illegible] [illegible] ([illegible] १)। °दंसि वि [°दर्शिन्] १ [illegible]। २ [illegible] ([illegible])। °प्प न [°त्र] १ [illegible] ([illegible] २६०)। २ [illegible] ([illegible] ४८)। °पय न [°पद] [illegible] ([illegible] ४०; [illegible] १४)। °प्प पु [°त्मन्] [illegible], परमेश्वर ([illegible] ८२ [illegible] ४३)। °प्पय [illegible] °पय ([illegible] १२३)। °प्पय [illegible] °पय ([illegible])। °हंसा स्त्री [°हंसा] [illegible] [illegible] ([illegible] १२७)। °बोहिसत्त [°बोधिसत्त्व] [illegible] ([illegible] २)। [illegible] ([illegible] ४ ७१)। [illegible] [°समानाधिकार] [illegible]

[illegible]

परमाहम्मिअ वि [परमधार्मिक] [illegible] ([illegible] ४, १)।

परमिट्ठि पु [परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, [illegible] (पाअ; सम्मत्त ७८)। २ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि (सुपा ६५ [illegible] ६८, [illegible] ६; सिरि २०)।

परमुक्क वि [परामुक्त] परित्यक्त (पउम ७१, २६)।

परमुवगारि } वि [परमोपकारिन्] बड़ा
परमुवयारि } उपकार करनेवाला (सुर २, ४२; २, ३७)।

परमुह देखो परम्मुह (से ७, १६)।

परमेट्ठि देखो परमिट्ठि (कुमा; भवि; चेइय ४६६)।

परमेसर पु [परमेश्वर] [illegible] परमात्मा ([illegible] १४४; भवि)।

परम्मुह वि [पराङ्मुख] विमुख, [illegible] ([illegible] १, ७; [illegible] ७२३; [illegible] ६८८)।

परय न [परक] [illegible], [illegible] ([illegible] ३४, १४)।

परलोइअ वि [पारलौकिक] [illegible] ([illegible] ११६; [illegible] १, ४)।

परवाय वि [प्रव्राज] १ [illegible]। २ पुं. [illegible] ([illegible] २३)।

परवाय वि [प्रारवाय] १ [illegible]। २ [illegible] ([illegible] २३)।

परवाय पुं [प्रवात] [illegible] [illegible] ([illegible] २३)।

परवाया स्त्री [प्रवाता] [illegible] ([illegible] २३)।

परस (अप) देखो फास = स्पर्श ([illegible])। °मणि पुं [°मणि] [illegible] ([illegible])।

परसराम (अप) [illegible] ([illegible])।

परसु पुं [परशु] [illegible] ([illegible] ३३ [illegible])। °राम पुं [°राम] [illegible] ([illegible] ८)।

परसुहत्त पु [दे] वृक्ष, पेड, दरख्त (दे ६, २९)।

परस्सर पुंस्त्री [दे पराशर] गेंडा, पशु विशेष (पराग १, राज)। स्त्री. °री (पराग ११)।

परहुत्त वि [पराभूत] पराजित, हराया गया (पउम ६१, ८)।

परा अ [परा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ आभिमुख्य, संमुखता। २ त्याग। ३ घर्षण। ४ प्राधान्य, मुख्यता। ५ विक्रम। ६ गति, गमन। ७ भङ्ग। ८ अनादर। ९ तिरस्कार। १० प्रत्यावर्तन (हे २, २१७)। ११ भृश, अत्यन्त (ठा ३, २, श्रा २३)।

परा स्त्री [दे परा] तृण विशेष (पराह २, ३—पत्र १२३)।

पराइ सक [परा+जि] हराना, पराजय करना। सक्व. पराइइत्ता (सूअनि १६६)।

पराइअ वि [पराजित] पराभव-प्राप्त (पउम २, ८६, ओप, स ६३४, सुर ६, २५, १३, १७१, उत्त ३२, १२)।

पराइअ (अप) वि [परागत] गया हुआ (भवि)।

पराइण देखो **पराजिण**। पराइणइ (पि ४७३, भग)।

पराई स्त्री [परकीया] इतर से संबन्ध रखनेवाली, वह नायिका जो परपुरुष से प्रेम करे (हे ४, ३५०, ३६७)। देखो **पराय**=परकीय।

पराकम देखो **परक्कम** (सूअ २, १, ६)।

पराकय वि [पराकृत] निराकृत, निरस्त (अज्झ ३०)।

पराकर सक [परा+कृ] निराकरण करना। पराकरोदि (शौ) (नाट—चैत ३५)।

पराजय पुं [पराजय] परिभव, अभिभव, हार (राज)।

पराजय } सक [परा+जि] पराजय
पराजिण } करना, हराना। भूका पराजयित्था (पि ५१७)। भवि पराजिणिस्सइ (पि ५२१)। सक्व. पराजिणित्ता (ठा ४, २)। हेक्व पराजिणित्तए (भग ७, ९)।

पराजिणिअ } देखो **पराइअ**=पराजित
पराजिय } (उप पृ ५२, महा)।

पराण देखो **पाण**=प्राण (नाट—चैत ५४, पि १३२)।

पराणग वि [परकीय] अन्य का, दूसरे का, 'जत्थ हिरण्णसुवण्णं हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे' (गच्छ २, ५०)।

पराणिअ वि [पराणीत] पहुँचा हुआ (भवि)।

पराणी सक [परा+णी] पहुँचाना। पराणए (भवि)। पराणेमि (स २३४), 'जइ भणसि ता निमेममित्तेण तुम तायमंदिर पराणेमि' (कुप्र ६०)।

परानयण न [पराणयन] पहुँचाना, 'नियभगिणीपरानयणे का लज्जा, अवि य ऊसवो एस' (उर ७२८ टी)।

पराभव सक [परा+भू] हराना। कवकृ. **पराभविज्जंत परब्भवमाण** (उप ३२० टी, गाया १, २, १८)।

पराभव पु [पराभव] पराजय, हार (विपा १, १)।

पराभविअ वि [पराभूत] अभिभूत, हराया हुआ (धर्मवि ६८)।

परामट्ठ देखो **परामुट्ठ** (पउम ६८, ७३)।

परामरिस सक [परा+मृश्] १ विचार करना, विवेचन करना। २ स्पर्श करना। परामरिसइ (भवि)। वकृ **परामरिसंत** (भवि)। सकृ **परामरिसिअ** (नाट—मृच्छ ८७)।

परामरिस पु [परामर्श] १ विवेचन, विचार (प्रामा)। २ युक्ति, उपपत्ति। ३ स्पर्श। ४ न्याय-शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पक्ष का ज्ञान (हे २, १०५)।

परामिट्ठ } वि [परामृष्ट] १ विचारित,
परामुट्ठ } विवेचित। २ स्पृष्ट, छुआ हुआ (नाट—मृच्छ ३३, हे १ १३१, स १००, कुप्र ५१)।

परामुस सक [परा+मृश्] १ स्पर्श करना, छूना। २ विचार करना, विवेचन करना। ३ आच्छादित करना। ४ पोंछना। ५ लोप करना। परामुसइ (कम)। कर्म 'सूरो परामुसिज्जइ णाभिमुहुक्खित्तधूलिहिं' (उवर १२३)। वकृ 'नियउत्तरिज्जेण नयणाइं परामुसंतेण भणियं' (कुप्र ६६)। कवकृ **परामुसिज्जमाण** (स ३४९)।

परामुसिय देखो **परामुट्ठ** (महा, पाअ)।

पराय अक [प्र+राज्] विशेष शोभना। वकृ **परायंत** (कप्प)।

पराय पु [पराग] १ धूली, रज, 'रेणू पसू रओ पराओ य' (पाअ)। २ पुष्प-रज (कुमा, गउड)।

पराय } वि [परकीय] पर-सबन्धी, इतर
परायग } से सबन्ध रखनेवाला, 'नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि हुंति सुद्धाणं' (सट्ठि १०५ हे ४, ३७६, भग ८, ५)।

परायण वि [परायण] तत्पर (कम्म १, ६१)।

परारि अ [परारि] आगामी तीसरा वर्ष (प्रासू ११०, वै २)।

परा।ल देखो **पलाल** (प्रासू १२८)।

पराव (अप) सक [प्र+आप्] प्राप्त करना। परावहि (हे ४, ४४२)।

परावत्त अक [परा+वृत्] १ बदलना, पलटना। २ पीछे लौटना। परावत्तइ (उवर ८८)। वकृ **परावत्तमाण** (राज)।

परावत्त सक [परा+वर्तय्] १ फिराना। २ आवृत्ति करना। परावत्तंति (पव ७१), परावत्तेसि (मोह ४७)। सकृ 'तो सागरेण भणियं अरे परावत्तिऊण नियघरहं' (कुप्र ३७८)।

परावत्त पु [परावर्त] परिवर्तन, हेरफेर, हेराफेरी (स ६२, उप पृ. २७, महा)।

परावत्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन करनेवाला, 'वेसपरावत्तिणी गुलिया' (महा)।

परावत्ति स्त्री [परावृत्ति] परिवर्तन, हेराफेरी (उप १०३१ टी)।

परावत्तिय वि [परावर्तित] परिवर्तित, बदला हुआ (महा)।

परासर पु [पराशर] १ पशु-विशेष (राज)। २ ऋषि-विशेष (ओप, गा ८९२)।

परासु वि [परासु] प्राण-रहित, मृत (श्रा १४, धर्मस ६७)।

पराहव देखो **पराभव**=पराभव (गुण ६)।

पराहुत्त वि [दे पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा (ग २४५, से १०, ६४, उप पृ ३८८, ओघ ५१४, वज्जा २६), 'महविणयपराहुत्तो' (पउम ३३, ७४, सुख २, १७)।

[illegible]) वि [पराभूत] पराजित, [illegible] हुआ, [illegible] ।

[illegible]

मार [illegible] । ३ [illegible] । परियट्टइ, परियट्टेइ (कुमा ७३)। हेट्ठ 'परियट्टिउ-माउं, [illegible] त्ति [illegible]' (कुम्म १७३)।

परिअट्ट सक [परि + अट] परिभ्रमण करना, घूमना। परिअट्टइ (हे ४, २३०)। वकृ परियट्टंत (पउम) (सादि)।

परिअट्ट पु [दे] रजक, धोबी (दे ६, १४)।

परिअट्ट पु [परिवर्त] १ परावर्त, बदला। २ समय का परिमाण विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल (विसे १,१ सुर १६, १४ पव १६२)।

परिअट्टग वि [परिवर्तक] परिवर्तन करने-वाला (विसे १०)।

परिअट्टण न [परिवर्तन] १ परावर्त, बदला [illegible] (पव ६७)। २ द्विगुण, त्रिगुण आदि करना (आचा १, २, ३, १)।

परिअट्टणा स्त्री [परिवर्तना] १ फिर फिर [illegible] (कप्प १, १)। २ आवृत्ति, पठित पाठ का अभ्यास (आचा २, १, ४, २, उत्त २६, १, ३०, ३४, औप, ठा ५, ३)। ३ द्विगुण आदि करना (वि २८६)। ४ बदला [illegible] (वि ३६४)।

परिअट्टय वि [परिवर्तक] परिवर्तन करने-वाला '[illegible]' (कप्प ३६)।

परिअट्टाल [illegible] [दे] [illegible] (दे ६, २६)।

[illegible]

परिअड्डिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (षड्)।

परिअड्ढ सक [परि + कृष्] खींचना, 'परियड्ढइ लायण्णं' (हे ८, २२०)।

परिअड्ढ सक [परि + वर्धय्] बढ़ाना (हे ४, २२०)।

परिअड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] विशेष वृद्धि (श्राद्ध २१)।

परिअड्ढिअ वि [परिवर्धित, °क] बढ़ाने-वाला, 'समणगण[illegible]परियड्ढिए' (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिकर्षित] परिकृष्ट (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिकर्षिन्, °क] खींचने वाला, आकर्षक (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिदृष्ट] [illegible] हुआ, [illegible], '[illegible] परियड्ढिएण [illegible]' (सुपा ३१)।

परिअण पु [परिजन] १ परिवार, कुटुम्ब, दास-दासी आदि पालनीय वर्ग। २ अनुचर, अनुगामी (गा २८३, गउड कि २५०)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत्। परिअत्तइ (हे ४, १६० टी)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत्। परि-अत्तइ (भवि), '[illegible] परिअत्तए [illegible]' (गा ६०)। परिअत्तइ (उवा)। वकृ. परिअ-त्तमाण (भवि)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + [illegible]। वकृ परिअत्तंत (सुर ३)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि [illegible] (भवि)।

परिअत्त वि [दे] [illegible]

[illegible] (दे ६, २६५)।

परिअत्त [illegible] [परिवृत्त] [illegible] हुआ [illegible]

[illegible] (पउम ९३)।

परिअत्तमाणी [illegible] [परिवर्तमाना] [illegible]

के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या उदय को प्राप्त होती है (पंच ३, १४; ३, ४३; कम्म ५, १ टी)।

परिअत्ता स्त्री [परिवर्ता] ऊपर देखो (कम्म ५, १)।

परिअत्तिअ वि [परिवर्तित] १ मोड़ा हुआ, 'वालिअयं परिअत्तिअं' (पाअ)। २ देखो परिअट्टिय (भवि)।

परिअर सक [परि + चर्] सेवा करना। वकृ परिअरंत (नाट—शकु १५८)।

परिअर वि [दे] लीन, निमग्न (दे ६, २४)।

परिअर पुं [परिकर] १ कटि-बन्धन, 'सन्नद्ध-बद्धपरियरभडेहिं' (भवि)। २ परिवार, 'किरण-किलामियपरियरभुयंगविसजलणधूमतिमिरेहिं' (गउड, चेइय ६४)।

परिअर पुं [परिचर] सेवक, भृत्य, 'अणुणिज्जंतं रक्खापरिअरधुअधवलचामरणिहेण' (गउड)।

परिअरण न [परिचरण] सेवा (संबोध ३६)।

परिअरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा (सम्मत्त २१५)।

परिअरिय वि [परिकरित, परिवृत] १ परिवार-युक्त, 'हयगयरहजोहसुहडपरियरिओ' (महा, भवि, सण)। २ परिवेष्टित, 'तओ त समायण्णिऊण सुइसुह ताण गेय समतओ परियरिया सव्वलोगेण' (महा, सिरि १२८२)।

परिअल सक [गम्] जाना, गमन करना। परिअलइ (हे ४, १६२)।

परिअल } पुस्त्री [दे] थाल, थलिया, भोजन-
परिअलि } पात्र (भवि, दे ६, १२)।

परिअलिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

परिअल्ल देखो परिअल। परिअल्लइ (हे ४, १६२)। संकृ परिअल्लिऊण (कुमा)।

परिआरअ वि [परिचारक] सेवक, भृत्य (चारु ५३)। स्त्री °रिआ (अभि १६६)।

परिआल सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना। परिआलेइ (हे ४, ५१)।

परिआल वि [दे] परिवृत, परिवेष्टित, 'सो जयइ जामइल्लायमाण-
मुहलालिवलयपरिआल।
लच्छिनिवेसतेउरवइं व
जो वहइ वणमाल' (गउड)।

परिआल देखो परिवार (णाया १, ८; ठा ४, २; औप)।

परिआलिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ, वेढा हुआ (कुमा; पाअ)।

परिआव देखो परिताव (दस ६, २, १४)।

परिआविअ सक [पर्या + पा] पीना। परिआविएज्जा (सूअ २, १, ४६)।

परिआसमंत (अप) अ [पर्यासमन्तात्] चारों ओर से (भवि)।

परिइ सक [परि + इ] पर्यटन करना। परियंति (उत्त २७, १३)।

परिइण्ण वि [परिकीर्ण] व्याप्त (सम्मत्त १५६)।

परिइद (शौ) वि [परिचित] परिचय विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ (अभि २४५)।

परिउंब सक [परि + चुम्ब्] चुम्बन करना। परिउंबइ (भवि)।

परिउंबण न [परिचुम्बन] सर्वतः चुम्बन (गा २२; हास्य १३४)।

परिउंबणा स्त्री [परिचुम्बना] ऊपर देखो, 'गंडपरिउंबणापुलइअंग ण पुणो चिराइस्सं' (गा २०)।

परिउज्झिय वि [पर्युज्झित] सर्वथा त्यक्त (सण)।

परिउट्ठ वि [परितुष्ट] विशेष तुष्ट (स ७३४)।

परिउत्थ वि [दे] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ (दे ६, १३)।

परिउसिअ वि [पर्युषित] बासी, ठण्ढा, भाफ निकला हुआ (भोजन) (दे १, ३७)।

परिऊढ वि [दे परिगूढ] क्षाम, कृश, पतला, 'उप्फुल्लिआइ खेल्लउ मा
ण वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई पुरिसाअंती
किलिम्मिहिइ' (गा १९६)।

परिऊरण न [परिपूरण] परिपूर्त्ति (नाट—शकु ८)।

परिएस देखो परिवेस = परि + विष्। कवकृ परिएसिज्जमाण (आचा २, १, २, १)।

परिएस देखो परिवेस = परिवेश (स ३१२)।

परिओस सक [परि + तोषय्] संतुष्ट करना, खुशी करना। परिओसइ (भवि, सण)।

परिओस पु [परितोष] आनन्द, संतोष, खुशी (से ११, ३; गा ६८, २०६; स ६; सुपा ३७०)।

परिओस पु [दे परिद्वेष] विशेष द्वेष (भवि)।

परिओसिय वि [परितोषित] संतुष्ट किया हुआ (से १३, २५; भवि)।

परित देखो परी = परि + इ।

परिकंख सक [परि + काङ्क्ष्] १ विशेष अभिलाषा करना। २ प्रतीक्षा करना। परिकंखए (उत्त ७, २)।

परिकंद पु [परिक्रन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट (हम्मीर ३०)।

परिकंपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय कँपानेवाला (गउड)।

परिकंपिर वि [परिकम्पितृ] विशेष कंपनेवाला (सण)।

परिकक्खिय वि [परिकक्षित] परिगृहीत (राय)।

परिकट्टलिअ वि [दे] एकत्र पिण्डीकृत (पिंड २३६)।

परिकड्ढ सक [परि + कृष्] १ पार्श्व भाग में खींचना। २ प्रारम्भ करना। वकृ परिकड्ढेमाण (राज)। संकृ परिकड्ढिऊण (पचव २)।

परिकढिण वि [परिकठिन] अत्यन्त कठिन (गउड)।

परिकप्प सक [परि + कल्पय्] १ निष्पादन करना। २ कल्पना करना। परिकप्पयति (सूअ १, ७, १३)। संकृ परिकप्पिऊण (चेइय १४)।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ (पण्ह १, ३)। देखो परिगप्पिय।

परिकब्बुर वि [परिकर्बुर] विशेष कबरा—चितकबरा (गउड)।

परिकम्म } न [परिकर्मन्] १ गुण-विशेष
परिकम्मण } का आधान, संस्कार-करण, 'परिकम्म किरियाए वत्थूण गुणविसेस-

पट्टिआ [illegible] [पॅरिक्षि[illegible]] [illegible]

[illegible]

परिक्खड (ति. गा. पउम १४८ म [illegible]) । वक्र परिक्खंत, परिक्खमाण (गा [illegible] ८० [illegible] १८) । सह. परिक्खिय (उर) । इ परिक्खिअव्व (सार) ।

परिक्खअ वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला ([illegible] ६२७, [illegible] १४) ।

परिक्खअ वि [परिक्षत] [illegible] (पउम ८ ७३) ।

परिक्खअ पु [परिक्षय] १ [illegible] (गा ८) । २ ध्वस, नाश (गउड) ।

परिक्खण न [परीक्षण] परीक्षा (स ८५६; सुपा ४८६; [illegible] १, ७ आदि) ।

परिक्खणा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा ([illegible] ६२, २३) ।

परिक्खमाण देखो परिक्ख ।

परिक्खयण न [परि + क्षयण] [illegible] । वह परिक्खयंत (स ४ १७) ।

परिक्खल्लिअ वि [परिस्खलित] [illegible] (पा [illegible] ०६) ।

परिक्खा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच (गाह—[illegible] ३२) ।

परिक्खा[illegible] वि [ ] परिक्षिप्त (दे[illegible]) ।

परिक्खाम वि [परिक्षाम] [illegible] (उ[illegible] ३२ [illegible] ३) ।

परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] [illegible] [illegible] ४८) ।

परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] १ [illegible]

[illegible]

परिक्खिव वि [परिक्षिप] [illegible]

परिक्खिव [illegible] [परि + क्षिप] १ [illegible]

[illegible]

परिक्खेवि वि [परिक्षेपिन्] तिरस्कार करनेवाला (उत्त ११, ८)।

परिखअ पुं [दे] काहार, कहार, जलादि-वाहक, नोकर (दे २, २७)।

परिखज्ज सक [परि + खर्ज्] खुजाना, खुजलाना। कवकृ 'परिखज्जमाणमत्थयदेसो' (उप ६८६ टि)।

परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण, परीक्षा लेने, परखने या जाँच करने का काम (पव ३८)।

परिखविअ वि [परिक्षपित] परिक्षीण, 'गुरुअट्टज्झाणपरिखवियसरीरो' (महा)।

परिखाम वि [परिक्षाम] अति दुर्बल, विशेष कृश (गा १९६)।

परिखिक्त देखो परिक्खित्त (मण)।

परिखिअ देखो परिक्खिव। परिखिवइ (भवि)। 'राया त परिखिवई दोहग्गवईण मज्झम्मि' (सम्मत्त २१७, चेइय ६५५)।

परिखिविअ देखो परिखित्त (मण)।

परिखुहिय वि [परिक्षुब्ध] अतिशय क्षोभ को प्राप्त (भवि)।

परिखेइअ वि [परिखेदित] विशेष खिन्न किया हुआ (मण)।

परिखेद (शौ) पु [परिखेद] विशेष खेद (स्वप्न १०, ८०)।

परिखेय सक [परि + खेदय्] अतिशय खिन्न करना। परिखेवइ (सण)। सकृ. परिखेइत्ति (अप) (मण)।

परिखेविअ (अप) देखो परिखिविअ (मण)।

परिगतु देखो परिगम।

परिगण सक [परि + गणय्] १ गणना करना। २ चिन्तन करना, विचार करना। वकृ—'एम थक्का मम गमणस्स त्ति परिगणतण विरणविओ राया' (महा)।

परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं ६८१)।

परिगप्पणा स्त्री [परिकल्पना] ऊपर देखो (धर्मसं ३०५)।

परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह (स ११३, धर्मसं ६९९)। देखो परिकप्पिय।

परिगम सक [परि + गम्] १ जाना, गमन करना। २ चारों ओर से वेष्टन करना। ३ व्याप्त करना। सकृ. परिगतु (सण)।

परिगमण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय, 'परिगमण पज्जाओ अणेगकरणगुणेत्ति एगट्ठा' (सम्म १०६)। २ समन्ताद् गमन (निचू ३)।

परिगमिर वि [परिगन्तृ] जानेवाला (सण)।

परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित, 'मणुस्सवग्गुरापरिगए' (उवा, गा ६६), 'बहुपरियणपरिगया' (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त, 'निसपरिगयाहि दाढाहि' (उवा)।

परिगर पु [परिकर] परिवार, 'सेसाण तु हरियव्वं परिगरनिहवकालमादीणि णाउ' (धर्मसं ६२९)।

परिगरिय वि [परिकरित] देखो परिअरिय (सुपा १२७)।

परिगल अक [परि + गल] १ गल जाना, क्षीण होना। २ झरना, टपकना। परिगलइ (काल)। वकृ परिगलंत (पउम ११२, १५, तदु ४४)।

परिगलिय वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण (कुप्र ७, महा, सुपा ८७, ३९२)।

परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जानेवाला, क्षीण होनेवाला (मण)।

परिगह देखो परिगेण्ह। सकृ परिगहिअ (मा ४८)।

परिगह देखो परिग्गह (कुमा)।

परिगहिय देखो परिग्गहिय (बृह १)।

परिगा सक [परि + गै] गान करना। कवकृ. परिगिज्जमाण (णाया १, १)।

परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन (पण्ह १, १)।

परिगिज्जमाण देखो परिगा।

परिगिज्झ
परिगिज्झिय } देखो परिगेण्ह।

परिगिण्ह देखो परिगेण्ह। परिगिण्हइ (आचू १)। वकृ परिगिण्हत, परिगिण्हमाण (सूअ २, १, ४४, ठा ७—पत्र ३८३)।

परिगिला अक [परि + ग्लै] ग्लान होना। वकृ परिगिलायमाण (आचा)।

परिगुण सक [परि + गुणय्] परिगणन करना, गिनती करना। परिगुणहु (अप) (पिंग)।

परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय (ओघ ६२)।

परिगुव अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक सतत भ्रमण करना। वकृ. परिगुवत (राज)।

परिगुव सक [परि + गु] शब्द करना। वकृ परिगुवंत (राज)।

परिगुव्व अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक सतत भ्रमण करना। वकृ. परिगुव्वत (ठा १०—पत्र ५००)।

परिगू सक [परि + गू] शब्द करना। कवकृ परिगुव्वत (ठा १०—पत्र ५००)।

परिगेण्ह }
परिग्गह } सक [परि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना (प्रामा)। वकृ परिगेण्हमाण (आचा १, ८, ३, १)। सकृ. परिगिज्झिय, परिघेत्तूण (राज, पि ५८६)। हेकृ परिघेत्तु (पि ५७६)। कृ. परिगिज्झ, परिघेतव्व, परिघेत्तव्व (उत्त १, ४३, सुपा ३३, सूअ २, १, ४८, पि ५७०)।

परिग्गय देखो परिगय (दस ६, २, ८)।

परिग्गह पु [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार। २ धन आदि का संग्रह (पण्ह १, ५, औप)। ३ ममत्व, मूर्च्छा (ठा १)। ४ ममत्व पूर्वक जिसका संग्रह किया जाय वह (आचा, ठा ३, १, धर्म २)। °वेरमण न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति (ठा १, पण्ह २, ५)। °वत वि [°वन्] परिग्रह-युक्त (आचा, पि ३९६)।

परिग्गहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह-युक्त (सूअ १, ६)।

परिग्गहिय वि [परिगृहीत] स्वीकृत (उवा, ओप)।

परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-सम्बन्धी क्रिया (ठा २, १, नव १७)।

परिघग्घर वि [परिघर्घर] बैठी हुई (आवाज), 'हरिणो जयइ चिर विहयसद्दपरिघग्घरा वाणी' (गउड)।

[illegible]

परिग्गन [illegible] [परि + नन्] [illegible]

[illegible] [परिनर्त्तित] [illegible]

[illegible] [परिनाटक] [illegible]

[illegible] [परिनारम्भा] [illegible]

परिनिर [illegible] [परि + निन्नद्] [illegible]

[illegible] [परिनिवरि] [illegible]

[illegible] [परिनिनाविद] [illegible]

[illegible] [परि + हृत] [illegible]

[illegible] [परितीत] [illegible] हुआ, [illegible]

[illegible] परिनिविन्तमाग [illegible]

[illegible]

[illegible] [परिनिवृत्त] [illegible]

[illegible] [परि + [illegible]] [illegible]

[illegible]

परिघाण } पुं [परित्राण] त्राण, रक्षा (पणह १, १४ [illegible] ७६२; सौप [illegible])।
परित्राय }

परित्राइ वि [परित्रातृ] त्राण करने वाला, '[illegible] परित्राता' (कुमार ५४)।

परिघिद वि [दे] [illegible] हुआ (पद्)।

परिघिज देखो परिघिय (दस १०[illegible])।

परिन्दु देखो परिरम्भ '[illegible] परि[illegible]' (पउम ६८ [illegible] ३०), [illegible] (निच [illegible] १)।

परिन्द्र वि [परीन्द्र] [illegible] (पि [illegible] १६)।

परिन्द्रम } वि [परिन्द्रत] [illegible],
परिन्द्रत्र } [illegible] हुआ ([illegible])। [illegible] परिसारम्भमि (सत्त ४)।

परिन्द्रार वि [परीक्षक] परीक्षा [illegible] (सम्म १५[illegible])।

परिन्द्रा स्त्री [परीक्षा] [illegible] जाँच, पाउना [illegible] (सौप ३१ [illegible], [illegible] ८४८, [illegible] १०८)।

परिन्द्रित्र देखो परिरक्षित (उप १६[illegible])।

परिन्दिद्द सक [परि + [illegible]] [illegible] करना [illegible] करना। [illegible] परिन्दिन्द (पउम ३७)। [illegible] 'परिन्दिर्[illegible]' ([illegible] ४०५, ४६१)।

परिन्दिन [illegible] [परिन्दित] [illegible] हुआ, '[illegible]' (पउ ६४) [illegible] (प्र [illegible] ४)।

परिन्दिर्द्ध [illegible] [परिन्दिर्दित] [illegible]

परिन्दि [illegible] देखो परिन्दि [illegible] (उप [illegible])।

[illegible] वि [परि [illegible]] [illegible]

[illegible] [परि [illegible] द] [illegible]

[illegible]

परिच्छेअग वि [परिच्छेदक] निश्चय करनेवाला (उप ८५३ टी)।

परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न वस्त्र आदि द्रव्य (श्रा १८)।

परिच्छेद देखो परिच्छेअ = परिच्छेद (धर्मसं १२३१)।

परिच्छेदग देखो परिच्छेअग (धर्मसं ५०)।

परिच्छोय वि [परिस्तोक] थोड़ा, अल्प (श्राप)।

परिछेज्ज देखो परिच्छेज्ज (श्रा १८)।

परिजंपिय वि [परिजल्पित] उक्त, कथित (सुपा ३६४)।

परिजज्जर वि [परिजर्जर] अतिजीर्ण (उप २६४ टी, ६८६ टी)।

परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल (गउड)।

परिजण देखो परिअण (उवा)।

परिजव सक [परि + विच्] पृथक् करना, अलग करना। संकृ. परिजविय (सूअ २, २, ४०)।

परिजव सक [परि + जप्] १ जाप करना। २ बहुत बोलना, बकवाद करना। संकृ. 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं परिजविया २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा' (आचा २, ३, २, ८)।

परिजवण न [परिजपन] जाप, जपन, मन्त्र आदिका पुन पुन उच्चारण (विसे ११४०, सुर १२, २०१)।

परिजाइय वि [परियाचित] माँगा हुआ (धर्मसं १०४५)।

परिजाण सक [परि + ज्ञा] अच्छी तरह जानना। परिजाणइ (उवा)। वकृ परिजाणमाण (कुमा)। कवकृ परिजाणिज्जमाण (णाया १, १, कुमा)। संकृ परिजाणिया (सूअ १, १, १, १, १, ८, ६, १, ६, १०)। कृ. परिजाणियव्व (आचा, पि ५७०)।

परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जीत, जिस-पर पूरा काबू किया गया हो वह (विसे ८५१)।

परिजुण्ण वि [परिजीर्ण] १ फटा-टूटा, अत्यन्त जीर्ण (आचा)। २ दुर्बल (उत्त २, १२)। ३ दरिद्र, निर्धन, 'परिजुण्णो उ दरिद्दो' (वव ४)।

परिजुण्णा देखो परिजुन्ना (ठा १०—पत्र ४७४ टी)।

परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित (सबोध १)।

परिजुन्न देखो परिजुण्ण (उप २६४ टी)।

परिजुन्ना स्त्री [परिजीर्णा, परिद्यूना] प्रव्रज्या विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)।

परिजुसिय देखो परिझुसिय (ठा ४, १—पत्र १८७, ओप)।

परिजुसिय न [पर्युषित] रात्रि-परिवसन, रात का बासी रहना, बासी (ठा ४, २—पत्र २१६)। देखो परिउसिअ।

परिजूर अक [परि + जॄ] सर्वथा जीर्ण होना 'परिजूरइ ते सरीरयं' (उत्त १०, २६)।

परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण (अणु)।

परिजाय पु [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

परिज्जुन्न देखो परिजूरिय (दस ६ २, ८)।

परिज्झामिय वि [परिध्यामित] श्याम (काला) किया हुआ (निचू १)।

परिज्झुसिय
परिझुसिय
परिझूसिय } वि [परिजुष्ट] १ सेवित। २ प्रीत, 'परिज्झुसियकामभोगसपओगसपउत्ते' (भग २५, ७—पत्र ६२३, ६२५ टी। ३ परीक्षण, ठा ४, १—पत्र १८८ टी, पि २०६)।

परिट्ठव सक [परि + स्थापय्] १ परित्याग करना। २ संस्थापन करना। परिट्ठवेइ, परिट्ठवेज्जा (आचा २, १, ८, ५, उवा)। संकृ परिट्ठवेऊण, परिट्ठवेत्ता (बृह ४, कस)। हेकृ. परिट्ठवेत्तए (कस)। वकृ परिट्ठवंत (निचू २)। कृ परिट्ठप्प, परिट्ठवेयव्व (उत्त १४, ६, कस)।

परिट्ठवण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना (चेइय ७७६)।

परिट्ठवण न [परिष्ठापन] परित्याग (उव, पव १५२)।

परिट्ठवणा स्त्री [परिष्ठापना] ऊपर देखो, 'अविहिपरिट्ठवणाए काउस्सग्गो य गुरुसमीवम्मि' (बृह ४)।

परिट्ठवणा स्त्री [प्रतिष्ठापना] प्रतिष्ठा कराना, 'वेयावच्च जिणगिहरक्खणपरिट्ठवणाइजिणकिच्चं' (चेइय ७७६)।

परिट्ठविय स्त्री [प्रतिष्ठापित] संस्थापित (भवि)।

परिट्ठा देखो पइट्ठा (हे १, ३८)।

परिट्ठाइ वि [परिष्ठापिन्] परित्यागी (नाट—साहि १६२)।

परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग (नाट)।

परिट्ठाव देखो परिट्ठव हेकृ परिट्ठावित्तए (कप्प, पि ५७८)।

परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग करनेवाला (नाट)।

परिट्ठिअ वि [परिस्थित] संपूर्ण रूप से स्थित (पव ६६)।

परिट्ठिअ देखो पइट्ठिय (हे १, ३८, २, २११, पड्, महा, सुर ३, १३)।

परिठव देखो परिट्ठव। परिठवहु (अप) (पिंग)।

परिठवण देखो परिट्ठवण = परिष्ठापन (पव—गाथा २४)।

परिण देखो परिणी, 'परिणइ वहुयाउ खयरकन्नाओ' (धर्मवि ८२)। वकृ. परिणंत (भवि)। संकृ परिणिऊण (महा, कुप्र ७६, १२७)।

परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम, (गा ५६८, धर्मसं ६२३)।

परिणत देखो परिण।

परिणतु वि [परिणन्तृ] परिणाम को प्राप्त होनेवाला, परिणत होनेवाला (विसे ३५३४)।

परिणद सक [परि + नन्द्] वर्णन करना, श्लाघा करना, 'ताए परिणदंता (? ति)' (तंदु ८०)।

परिणद्ध वि [परिणद्ध] १ परिगत, वेष्टित, 'उदुंबरमालापरिणद्धसुकयचिंधे' (उवा, णाया १, ८—पत्र १३३)। २ न वेष्टन (णाया १, ८)।

परिणम सक [परि + णम्] १ प्राप्त करना। २ अक रूपान्तर को प्राप्त होना। ३ पूर्ण होना, पूरा होना, 'किण्हलेस तु परिणमे' (उत्त ३४, २२), 'परिणमइ अप्पमाओ' (स ६८४ भग १२, ५)। वकृ परिणमंत,

[illegible]

[illegible] परिणामिओ [illegible] ([illegible])।

परिणामिअ वि [परिणामित] परिणत किया [illegible] ([illegible])।

परिणामिआ स्त्री [पारिणामिकी] बुद्धि-विशेष [illegible] अनुभव से उत्पन्न होने-वाली बुद्धि ([illegible])।

परिणाय वि [परिज्ञात] जाना हुआ, परिचित ([illegible])।

परिणाव सक [परि + णायय्] विवाह कराना। परिणावइ ([illegible])। [illegible] परिणाविऊण, परिणावित्ता ([illegible])।

परिणावण न [परिणायन] विवाह कराना ([illegible])।

परिणाविअ वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह ([illegible])।

परिणाह पुं [परिणाह] १ लम्बाई, विस्तार ([illegible])। २ परिधि ([illegible])।

परिणि [illegible] देखो परिणी।

परिणिअ [illegible] देखो परिणी = परि + नय्।

परिणि [illegible] देखो परिणी = परि + णी।

परिणिज्जरा स्त्री [परिनिर्जरा] [illegible] ([illegible])।

परिणिच्छिअ वि [परिनिश्चित] [illegible] ([illegible])।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] [illegible] ([illegible])।

परिणि [illegible] [परिनि [illegible]] [illegible]

[illegible]

परिणिअ वि [परिणीत] जिसका विवाह हुआ हो वह ([illegible])।

परिणिव्वव सक [परिनिर् + वापय्] सर्व प्रकार से शांत परिणत करना। कृ परिणिव्ववियव्व ([illegible])।

परिणिव्वा सक [परिनिर् + वा] १ शान्त होना। २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त करना। परिणिव्वायंति ([illegible])। [illegible] परिणिव्वाइत्तु (पि २१६)। [illegible] परिणिव्वाणिंति ([illegible])।

परिणिव्वाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष ([illegible])।

परिणिव्वुइ स्त्री [परिनिर्वृति] [illegible] ([illegible])।

परिणिव्वुअ देखो परिनिव्वुअ ([illegible])।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना। २ ले जाना। [illegible] परिणिज्जंत, परिणीय-माण (सुपा १२७, [illegible])।

परिणी सक [परि + नम्] बाहर निकालना। [illegible] परिणित ([illegible])।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह किया गया हो वह ([illegible])।

परिणीअ वि [परिनीत] [illegible] ([illegible])।

परिणे देखो परिणी। परिणेइ ([illegible])। [illegible] परिणेउं (सुपा [illegible])। [illegible] परिणेमाण ([illegible], सुपा १३८)।

परिणेयव्व (अप) वि [परिणायित] [illegible] ([illegible])।

[illegible]

परिण्ण वि [परिज्ञ] [illegible] ([illegible])।

परिण्ण° देखो परिण्णा° ([illegible])।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] [illegible] परिण्णा ([illegible])।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] [illegible]

१, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान (ठा ५, २)।

परिण्णाण न [परिज्ञान] ज्ञान, जानकारी (धर्मसं १२५३; उप पृ २७४)।

परिण्णाय देखो परिण्णा = परि + ज्ञा।

परिण्णाय वि [परिज्ञात] विदित, जाना हुआ (सम १६, आचा)।

परिण्णि वि [परिज्ञिन्] परिज्ञा युक्त; 'गीय-जुओ उ परिण्णी तह जियइ परीसहाणीय' (वव १)।

परितंत वि [परितान्त] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण (णाया १, ४—पत्र ६८; विपा १, १; उव)।

परितंबिर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण वर्णवाला (गउड)।

परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना। वकृ. परितज्जयन्त (पउम ४८, १०)।

परितड्डविय वि [परिनत] खूब फैलाया हुआ (सण)।

परितणु वि [परितनु] अत्यन्त पतला (सुपा ५८)।

परितप्प अक [परि + तप्] १ संतप्त होना, गरम होना। २ पश्चात्ताप करना। ३ दुःखी होना। परितप्पइ (महा, उव), परितप्पति (सूअ २, २, ५५), 'ता लोहभारवाहगनरव्व परितप्पसे पच्छा' (धर्मवि ६)। संकृ. परितप्पिऊण (महा)।

परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उपजाना। परितप्पति (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [परितपन] परितप्त होना (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [परितापन] परिताप उपजाना (सूअ २, २, ५५)।

परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ (ओघ ८८)।

परितविय वि [परितप्त] परिताप युक्त (सण)।

परिताण न [परित्राण] १ रक्षण। २ वागुरादि बन्धन (सूअ १, १, २, ६)।

परिताव देखो परितप्प = परि + तापय्। कृ. परितावेयव्व (पि ५७०)।

परिताव पुं [परिताप] १ संताप, दाह। २ पश्चात्ताप। ३ दुःख, पीडा (महा; ओप)। °यर वि [°कर] दुःखोत्पादक (पउम ११०, ६)।

परितावण देखो परितप्पण = परितापन (ओप)।

परिताविअ वि [परितापित] १ संतापित (ओप)। २ तला हुआ (ओघ १४७)।

परितास पुं [परित्रास] अकस्मात् होनेवाला भय (णाया १, १—पत्र ३३)।

परितुट्टिर वि [परित्रुटितृ] टूटनेवाला (सण)।

परितुट्ठ वि [परितुष्ट] तोष-प्राप्त, संतुष्ट (उव; चेइय ७०१)।

परितुलिय वि [परितुलित] तोला हुआ (सण)।

परितेज्जि देखो परित्तज।

परितोल सक [परि + तोलय्] उठाना। वकृ. 'जुगवं परितोलंता खग्गं समरंगणम्मि तो दोवि' (सुपा ५७२)।

परितोस सक [परि + तोषय्] संतुष्ट करना। भवि. परितोसइस्सं (कर्पूर ३२)।

परितोस पुं [परितोष] आनन्द, खुशी (नाट—मालवि २३)।

परितोसिय वि [परितोषित] संतुष्ट किया हुआ (सण)।

परित्त वि [परीत] १ व्याप्त (सिरि १८३)। २ प्रभ्रष्ट (सूअ २, ६, १८)। ३ संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा (सम १०६)। ४ परिमित, नियत परिमाणवाला (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा। ६ तुच्छ हलका (उप २७०, ६६४)। ७ एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीववाला (ओघ ४१)। ८ एक जीववाला (पएण १)। °करण न [°करण] लघूकरण (उप २७०)। °जीव पुं [°जीव] एक शरीर में एकाकी रहनेवाला जीव (पएण १)। °णंत न [°नन्त] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१, ८३)। °संसारिअ वि [°संसारिक] परिमित संसारवाला (उप ४१७)। °संख न [°संख्यात] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१, ७८)।

परित्तज देखो परिच्चय। संकृ. परित्तजिअ (स्वप्न ५१), परितेज्जि (अप)। (पिंग)।

परित्ता } सक [परि + त्रै] रक्षण करना।
परित्ताअ } परित्ताइ, परित्तायसु, परित्ताहि, परित्तायह (प्राकृ ७०, पि ४७६; हे ४, २६८)।

परित्ताइ वि [परित्रायिन्] रक्षण-कर्ता (सुपा ४०५)।

परित्ताण न [परित्राण] रक्षण (से १४, ३५, सुपा ७१, आत्मानु ८, सण)।

परित्ताणतय पुन [परीतानन्तक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।

परित्तास देखो परितास (कप्प)।

परित्तासंखेज्जय पुन [परीतासंख्येयक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।

परित्तीकय वि [परीतीकृत] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत (णाया १, १—पत्र ६६)।

परित्तीकर सक [परीती + कृ] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरेति (भग)।

परित्थोम न [परिस्तोम] १ मस्तक। २ वि. वक्र; 'चित्तपरित्थोमपच्छद' (ओप)।

परिथंभिअ वि [परिस्तम्भित] स्तब्ध किया हुआ (सुपा ४७५)।

परिथु सक [परि + स्तु] स्तुति करना। कवकृ. परिथुव्वंत (सुपा ६०७)।

परिथूर } वि [परिस्थूर] विशेष स्थूल,
परिथूल } खूब मोटा (धर्मसं ८३८, चेइय ८५४, श्रा ११)।

परिदा सक [परि + दा] देना। कर्म. परि-दिज्जसु (अप), (पिंग)।

परिदाह पुं [परिदाह] संताप (उत्त २, ८, भग)।

परिदिण्ण वि [परिदत्त] दिया हुआ (अभि १२५)।

परिदिद्ध वि [परिदिग्ध] उपलिप्त (सुख २, ३७)।

परिदिन्न देखो परिदिण्ण (सुपा २२)।

परिदेव अक [परि + देव्] विलाप करना। परिदेवए (उत्त २, १३)। वकृ. परिदेवंत (पउम २६, ६२, ४५, ३६)।

परिदेवण न [परिदेवन] विलाप, 'तस्स कलुणसोयणपरिदेवणताडणाइं लिंगाइं' (संबोध ४६, सत्ते ८)।

[illegible]

परिपिंडिय वि [परिपिण्डित] १ एकत्र [illegible], [illegible] किया हुआ ([illegible] १६०)। २ [illegible] (गा २)।

परिपिक्क [illegible] परिपक्क ([illegible] १०१)।

परिपिज्जत देखो परिपिअ।

परिपिट्टण न [परिपिट्टन] पीटना [illegible] ([illegible] १)।

परिपिरिपा [illegible] [illegible] [illegible] (भग ५, ४—[illegible])।

परिपिल्ल [illegible] [परि + प्रेर्] प्रेरणा। [illegible] (पुप्फ ६[illegible])।

परिपिहा [illegible] [परि + पि + धा] [illegible], [illegible]। [illegible], परिपिहित्ता, परिपिहेत्ता ([illegible] ५८२)।

परिपीडिय वि [परिपीडित] [illegible] (नि)।

परिपील [illegible] [परि + पीडय्] १ पीलना। २ [illegible], [illegible]। परिपीलिज्ज ([illegible])। [illegible] परिपालइत्ता, परिपीलिय, [illegible] ([illegible], [illegible], [illegible] १, [illegible])।

परिपीलिय देखो परिपीडिअ ([illegible])।

[illegible]

परिपूत्र वि [परिपूत] छाना हुआ (कप्प, तंदु ३२)।

परिपूर सक [परि + पूरय] पूर्ण करना, भरपूर करना। वकृ परिपूरत (पि ५३७)। संकृ परिपूरिअ (नाट—मालवि १५)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक [परिप्र + ईक्ष] देखना। वकृ. परिपेच्छत (अच्चु ६३)।

परिपेरत पुं [परिपर्यन्त] प्रान्त भाग (णाया १, ४, १३, सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [परिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा १८६)।

परिपेलव वि [परिपेलव] १ सुकर, सहज, सहल, आसान (से ३, १३)। २ अदृढ। ३ निःसार। ४ वराक, दीन (राज)।

परिपेल्लिअ देखो परिपेरिय (गा ५७७)।

परिपेस सक [परिप्र + इष्] भेजना। परिपेसउ (भवि)।

परिपेसण न [परिप्रेषण] भेजना (भवि)।

परिपेसल वि [परिपेशल] सुन्दर, मनोहर (सुपा १०६)।

परिपेसिय वि [परिप्रेषित] भेजा हुआ (भवि)।

परिपोस सक [परि + पोषय्] पुष्ट करना। कवकृ. परिपोसिज्जत (राज)।

परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण (भवि)।

परिप्पव सक [परि + प्लु] तैरना, गोता लगाना। वकृ परिप्पवत (से २, २८, १०, १३, पाअ)।

परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्लुत, व्याप्त (राज)।

परिप्पुया स्त्री [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष (राज)।

परिप्फंद पु [परिस्पन्द] १ रचना-विशेष, 'जयइ वायापरिप्फंदो' (गउड)। २ समन्तात् चलन (चारु ४५)। ३ चेष्टा, प्रयत्न, 'थोया रमेति विहिम्मि आयमग्गे व्व खडणमुवेंति। स-परिप्फंदेण चिय णीआ भमिदारुसयल व्व' (गउड)।

परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट (से ११, ६०, सुर ४, २१४, भवि)।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] १ प्रस्फोटन, भेदन। २ त्रि. फोडनेवाला, विभेदक, 'तमपडल-परिप्फुडं चेव तेअसा पज्जलतरूवं' (कप्प)।

परिप्फुर अक [परि + स्फुर्] चलना। परिप्फुरदि (शौ) (नाट—उत्तर २८)।

परिप्फुरण न [परिस्फुरण] हिलन, चलन (सण)।

परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त, 'वयणु परिप्फुरिउ' (भवि)।

परिफस पुं [परिस्पर्श] स्पर्श, छूना (पि ७४, ३११)।

परिफसण न [परिस्पर्शन] ऊपर देखो (उप ६८६ टी)।

परिफग्गु वि [परिफल्गु] निस्सार, असार (धर्मसं ६७३)।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त (दस ५, १, ७२)।

परिफुड देखो परिप्फुड = परिस्फुट (पउम ३, ८, प्रासू ११६)।

परिफुडिय वि [परिस्फुटित] फूटा हुआ, भग्न (पउम ६८, १०)।

परिफुर देखो परिप्फुर। परिप्फुरइ (सण)। वकृ परिफुरत (सण)।

परिफुरिअ देखो परिप्फुरिय (सण)।

परिफुल्लिअ वि [परिफुल्लित] फूला हुआ, कुसुमित (पिंग)।

परिफुस सक [परि + स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ परिफुसंत (धर्मवि १२६, १३६)।

परिफुसिअ वि [परिप्रोञ्छित] पोछा हुआ (उप पृ ६४)।

परिफोसिअ वि [परिस्पृष्ट] छूआ हुआ, 'उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति' (णाया १, १६, उप ६४८ टी)।

परिबूहण न [परिबृंहण] वृद्धि, उपचय (सूअ २, २, ६)।

परिब्भत वि [दे] १ निषिद्ध निवारित। २ भीरु, डरपोक (दे ६, ७२)।

परिब्भसिद (शौ) नीचे देखो (मा ५०)।

परिब्भट्ठ वि [परिभ्रष्ट] पतित, स्खलित (णाया १, १३, सुपा ५०६, अभि १४४)।

परिब्भम सक [परि + भ्रम्] पर्यटन करना, भटकना। परिब्भमइ (प्राकृ ७६, भवि, उव)। वकृ परिब्भमत (सुर २, ८७, ३, ४, ४, ७१, भवि)।

परिब्भमण न [परिभ्रमण] पर्यटन (महा)।

परिब्भमिअ वि [परिभ्रान्त] भटका हुआ (वे ६३, सण, भवि)।

परिब्भीअ वि [परिभीत] भय-प्राप्त (पउम ५३, ३६)।

परिब्भूअ वि [परिभूत] पराभव प्राप्त (सुपा २५८)।

परिभग्ग वि [परिभग्न] भागा हुआ (आत्मानु १४)।

परिभट्ठ देखो परिब्भट्ठ (महा, पि ८५)।

परिभणिर वि [परि + भणितृ] कहनेवाला (सण)।

परिभम देखो परिब्भम। परिभमइ (महा)। वकृ परिभमत, परिभममाण (महा, सण, भवि, सवेग १४)। सकृ परिभमिऊणं (पि ५८५)। हेकृ परिभमिउ (महा)।

परिभमिअ देखो परिब्भमिअ (भवि)।

परिभमिर वि [परिभ्रमितृ] पर्यटन करनेवाला (सुपा २६६)।

परिभव सक [परि + भू] पराजय करना, तिरस्कारना। परिभवइ (उव)। कर्म परिभविज्जामि (मोह १०८)। कृ परिभवणिज्ज (णाया १, ३)।

परिभव पु [परिभव] पराभव, तिरस्कार (ओप, स्वप्न १०, प्रासू १७३)।

परिभवंत पु [परिभवत्] पार्श्वस्थ साधु, शिथिलाचारी मुनि (वव १)।

परिभवण न [परिभवन] ऊपर देखो (राज)।

परिभवणा स्त्री [परिभवन] ऊपर देखो (ओप)।

परिभविअ वि [परिभूत] अभिभूत (धर्मवि ३६)।

परिभाअ सक [परि + भाजय्] बाँटना, विभाग करना। परिभाएइ (कप्प)। वकृ परिभाइत, परिभायत, परिभाएमाण (आचा २, ११, १८, णाया १, ७—पत्र ११७, १, १, कप्प)। कवकृ परिभाइज्ज-

[illegible]

परिभोजन [परिभोजन] [illegible]

परिभोजना [परिभोजना] [illegible]

परिभुत्त वि [परिभुक्त] [illegible]

[illegible] [परिभूत] [illegible]

[illegible] परिभोग [illegible]

[illegible] [परिभोजित] [illegible]

[illegible] [परिभोग] [illegible]

[illegible] [परि + भ्रम] [illegible]

परिमलिअ वि [परिमलित] [illegible]

परिमंड वि [परिमण्ड] [illegible]

परिमग्ग सक [परि + मार्गय्] १ [illegible] २ [illegible] परिमग्गमाण [illegible] परिमग्गेउं [illegible]

परिमग्गिअ वि [परिमार्गित] [illegible] (दे २२१)।

परिमज्जिअ वि [परिमार्जित] [illegible]

परिमट्ठ वि [परिमृष्ट] १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible]

परिमद्द सक [परि + मर्दय्] [illegible] परिमद्दमाण [illegible]

परिमद्दण न [परिमर्दन] [illegible]

परिमद्दा स्त्री [परिमर्दा] [illegible]

परिमल सक [परि + मल] [illegible]

परिमल पुं [परि + मल, मृद्] १ [illegible]

[illegible] [परिमाण] [illegible]

[illegible] [परिमाण] [illegible]

[illegible]

परिमंडिअ वि [परिमण्डित] [illegible]

परिमा (अप) देखो पडिमा (भवि)।

परिमाइ स्त्री [परिमाति] परिमाण, 'जिण-सासणि छज्जीवदयाउ व पडियमरणि सुगइ-परिमाउ व' (भवि)।

परिमाण न [परिमाण] मान, माप, नाप (औप, स्वप्न ४२, प्रासू ८८)।

परिमास पुं [परिमर्श] स्पर्श (णाया १, ६, गउड, से ६, ४८ ६, ७६)।

परिमास पु [दे] नौका का काष्ठ-विशेष (णाया १, ६—पत्र १५७)।

परिमासि वि [परिमर्शिन्] स्पर्श करनेवाला (पि ६२)।

परिमिज्ज नीचे देखो।

परिमिण सक [परि + मा] नापना, तोलना। वकृ परिमिणत (सुपा ७७)। कृ परिमिज्ज, परिमेय (पच ५६, पउम ४६, २२)।

परिमिअ वि [परिमित] परिमाण-युक्त (कप्प, ठा ५, १, औप, पराह २, १)।

परिमिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (पउम १०१, भवि)।

परिमिला अक [परि + म्लै] म्लान होना। परिमिलादि (शौ) (पि १३६, ४७६)।

परिमिलाण वि [परिम्लान] म्लान, विच्छाय, निस्तेज (महा)।

परिमिल्लिर वि [परिमोक्तृ] परित्याग करनेवाला (मण)।

परिमुअ सक [परि + मुच्] परित्याग करना। परिमुअइ (मण)।

परिमुक्क वि [परिमुक्त] परित्यक्त (सुपा २५२, महा, सण)।

परिमुट्ठ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (मा ४४)।

परिमुण सक [परि + ज्ञा] जानना। परिमुणसि (वज्जा १०४)।

परिमुणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ (पउम १६, ६१, सण)।

परिमुस सक [परि + मुष्] चोरी करना। वकृ परिमुसत (श्रा २७)। संकृ परिमुसिऊण (कर्पूर २६)।

परिमुस सक [परि + मृश्] स्पर्श करना, छूना। परिमुसइ (भवि)।

परिमुसण न [परिमोषण] १ चोरी। २ वञ्चना, ठगाई (गा २६)।

परिमुसिअ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (महानि ४, भवि)।

परिमूसण देखो परिमुसण (गा २६)।

परिमेय देखो परिमिण।

परिमोक्कल वि [दे परिमुक्त] स्वैर, स्वच्छन्दी (भवि)।

परिमोक्ख पु [परिमोक्ष] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। २ परित्याग (सूअ १, १२ १०)।

परिमोय सक [परि + मोचय्] छोडाना, छुटकारा कराना। परिमोयह (सूअ २, १, ३६)।

परिमोयण न [परिमोचन] मोक्ष, छुटकारा (सुर ४, २५० औप)।

परिमोस पु [परिमोष] चोरी (महा)।

परियंच सक [परि + अञ्च्] १ पास मे जाना। २ स्पर्श करना। ३ विभूषित करना। संकृ परिअचिवि (अप) (भवि)।

परियंच सक [परि + अर्च्] पूजना। संकृ परिअचिवि (अप) (भवि)।

परियंचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना (सुख ३, १)। देखो पलियंचण।

परियंचिअ वि [पर्यञ्चित] विभूषित, 'पव-रारामगामपरियंचिउ' (भवि)।

परियंचिअ वि [पर्यर्चित] पूजित (भवि)।

परियंद सक [परि + वन्द्] वन्दन करना, स्तुति करना। कवकृ परियंदिज्जमाण (औप)।

परियंदण न [परिवन्दन] वन्दन, स्तुति (आचा)।

परियच्छ सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। परियच्छइ (भवि, उव), परियच्छति (उव)।

परियच्छिय देखो परिकच्छिय (राज)।

परियच्छी स्त्री [परिकक्षी] परदा (धर्मरत्न वृ० गा० ३१ पत्र २५, २)।

परियत्थि स्त्री [पर्यस्ति] देखो पल्हत्थिया, 'जत्तो वायइ पवणो परियत्थी दिज्जए तत्तो' (चेइय १३०)।

परियप्प सक [परि + कल्पय्] कल्पना करना, चिन्तन करना। वकृ. परियप्पमाण (आचा १, २, १, २)।

परियप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं १२०८)।

परियय पु [परिचय] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान (गउड, से १५, ६६, अभि १३१)।

परियय वि [परिगत] अन्वित, युक्त (म २२)।

परियाइ सक [पर्या + दा] १ समन्ताद् ग्रहण करना। २ विभाग से ग्रहण करना। परियाइयह (सूअ २ १, ३७)। संकृ परियाइत्ता (ठा ७)।

परियाइअ वि [पर्यात्त] संपूर्ण रूप से गृहीत (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइअ देखो परियाइय (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइणया स्त्री [पर्यादान] समन्ताद् ग्रहण (पराण ३४—पत्र ७७४)।

परियाइत्त वि [पर्याप्त] काफी (राज)।

परियाईय वि [पर्यायातीत] पर्याय को अतिक्रान्त (राज)।

परियाग देखो पज्जाय (औप, उवा, महा, कप्प)।

परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से आगत (उत्त ५, २१, सुख ५, २१, णाया १, ३)। २ सर्वथा निष्पन्न (णाया १, ७—पत्र ११६)।

परियाण सक [परि + ज्ञा] जानना। परियाणइ, परियाणाइ (पि १७० उवा)।

परियाण न [परित्राण] रक्षण (सूअ १, १, २, ६, ७)।

परियाण न [परिदान] १ विनिमय, बदला, लेनदेन। २ समन्ताद् दान (भवि)।

परियाण न [परियान] १ गमन (ठा १०)। २ वाहन, यान (ठा ८)। ३ अवतरण (ठा ३, ३)।

परियाणण न [परिज्ञान] जानकारी (स १३)।

परियाणिअ वि [परित्राणित] परित्राण-युक्त (सूअ १, १, २, ७)।

परियाणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ, विदित (पउम ८८, ३३, रत्न १८, भवि)।

[illegible]

[illegible] । [illegible] (पउम [illegible])।

[illegible] न [पर्यवसान] [illegible] [illegible] ।

[illegible] स्त्री [पर्यवसान] [illegible] (पउम [illegible] ।

[illegible] देखो परि[illegible] ([illegible])।

[illegible] [परि[illegible]] [illegible]।

परि[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] (पउम [illegible])।

[illegible] वि [पर्यवसित] [illegible], [illegible]।

परि[illegible] वि [पर्यवसित] [illegible], [illegible] ([illegible])।

[illegible] [पर्यु + पास्] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [परि[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible]।

[illegible]

परि[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] २१८)।

परिरय पुं [परिरय] [illegible] ३६,४६ [illegible] २ [illegible], [illegible] ([illegible] १)। ३ [illegible] ([illegible] २० [illegible])।

परि[illegible] सक [परि + [illegible]] [illegible], [illegible]। [illegible] परि[illegible] ([illegible])।

परि[illegible] सक [परि + [illegible]] [illegible], [illegible]। [illegible] परि[illegible] ([illegible])।

परि[illegible] सक [परि + [illegible]] [illegible]। [illegible] परि[illegible] ([illegible]), [illegible] परि[illegible] ([illegible] १)।

परि[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] ([illegible])।

परि[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] ([illegible])।

परि[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] ([illegible] १)।

परि[illegible] वि [परि[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible]

परिल्ल देखो पर = पर (से ६, १७)।
परिल्लवास वि [दे] अज्ञात-गति (दे ६, ३३)।
परिल्ली देखो परिली = दे (राय ४६)।
परिल्ली देखो परिली। वकृ. परिल्हित, परिल्हेंत (ऋप)।
परिल्हस अक [परि + स्रंस्] गिर पडना, सरक जाना। परिल्हसइ (हे ४, १९७)।
परिवइत्तु वि [परिव्रजितृ] गमन करने मे समर्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१)।
परिवक्कड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढा (भवि)।
परिवच सक [परिवञ्चय्] ठगना। संकृ. परिवंचिऊण (सम्मत्त ११८)।
परिवंचिअ वि [परिवञ्चित] जो ठगा गया हो (दे ४, १८)।
परिवंथि वि [परिपन्थिन्] विरोधी, दुश्मन (पि ४०५, नाट—विक्र ७)।
परिवंदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा (आचा)।
परिवंदिय वि [परिवन्दित] स्तुत, पूजित (पउम १, ६)।
परिवक्खिय देखो परिवच्छिय (औप)।
परिवग्ग पु [परिवर्ग] परिजन-वर्ग (पउम २३, २४)।
परिवच्छ न [दे] अवधारण, निश्चय, 'सामण्णत्थ परिवच्छे' (कप्पगा० २१४२)।
परिवच्छिय देखो परिकच्छिय, 'उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छिय' (णाया १, १६ टी—पत्र २२१, औप)। देखो परिवत्थिय।
परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना। परिवज्जइ (भवि)।
परिवज्ज सक [परि + वर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना। परिवज्जइ (भवि)। संकृ. परिवज्जिय, परिवज्जियाण (आचा, पि ५९२)।
परिवज्जण न [परिवर्जन] परित्याग (धर्मसं ११२०)।
परिवज्जणा स्त्री [परिवर्जना] ऊपर देखो (उव)।
परिवज्जिय वि [परिवर्जित] परित्यक्त (उवा, भग, भवि)।

परिवट्ट देखो परिवत्त = परि + वर्तय्। परिवट्टइ (भवि)। संकृ. परिवट्टिवि (अप) (भवि)।
परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति, 'आगमपरिवट्टण' (संबोध ३९)।
परिवट्टि देखो परिवत्ति (मा ५२)।
परिवट्टिय देखो परिवत्तिय (भवि)।
परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार (स ६८)।
परिवड अक [परि + पत्] पडना। वकृ. परिवडत, परिवडमाण (पच ५, ६२, ६७, उप पृ ३)।
परिवडिअ वि [परिपतित] गिरा हुआ (सुपा ३६०, वसु, यति २३, हम्मीर ३०, पचा ३, २४)।
परिवड्ढ अक [परि + वृध्] बढना। परिवड्ढइ (महा, भवि)। भवि. परिवड्ढिस्सइ (औप)। कृ परिवड्ढंत, परिवड्ढमाण, परिवड्ढेमाण (गा ३४६, णाया १, १३, महा, णाया १, १०)।
परिवड्ढण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, बढाव (गउड, धर्मसं ८७५)।
परिवड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो (से ५, २)।
परिवड्ढिअ देखो परिअड्ढिअ = परिवर्धिन् (औप १६ टि)।
परिवड्ढिअ वि [परिवर्धित] बढाया हुआ (गा १४२, ४३१)।
परिवड्ढेमाण देखो परिवड्ढ।
परिवण्ण सक [परि + वर्णय्] वर्णन करना। कृ. परिवण्णेअव्व (भग)।
परिवण्णिअ वि [परिवर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह (आत्म ७)।
परिवत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत्। परित्तई (उत्त ३३, १)। परिवत्तसु (गा ८०७)। वकृ. परिवत्तत (गा २८३)।
परिवत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्तय्। वकृ परिवत्तेत, परिवत्तयत (स ६, सुअ १, ५, १, १५)। संकृ परिवत्तिऊण (काल)।
परिवत्त देखो परिअट्ट = परिवर्त, 'विहियरूवपरिवत्तो' (कुप्र १३४)। २ सचरण, भ्रमण (राज)।

परिवत्त देखो परिअत्त = परिवृत्त (काल)।
परिवत्तण देखो पडिअत्तण (पि २८९; नाट—विक्र ८३)।
परिवत्तर (अप) वि [परिपक्त्रिम] पकाया गया, गरम किया गया, 'अंगु मलेवि मुअवामोएं निमज्जिउ परिवत्तरतोए' (भवि)।
परिवत्ति वि [परिवर्तिन्] बदलनेवाला, 'रूवपरिवत्तिणी विज्जा' (कुप्र १२६, महा)।
परिवत्तिय देखो परिअट्टिय (सुपा २९२)।
परिवत्थ न [परिवस्त्र] वस्त्र, कपडा (भवि)।
परिवत्थिय वि [परिवस्त्रित] आच्छादित, 'उज्जलनेवच्छहत्थ (?व्व) परिवत्थिय' (औप)। देखो परिवच्छिय।
परिवद्ध देखो परिवड्ढ। वकृ. परिवद्धमाण (राज)।
परिवन्न देखो पडिवन्न (उप १३९ टी)।
परिवय अक [परि + वत्] तिर्यक् गिरना। परिवयति (राय १०१)।
परिवय सक [परि + वद्] निन्दा करना। परिवएज्जा, परिवयति (आचा)। वकृ. परिवयत (पण्ह १, ३)।
परिवरिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (सुपा १२५)।
परिवलइअ वि [परिवलयित] वेष्टित (सुख १०, १)।
परिवस अक [परि + वस्] बसना, रहना। परिवसइ, परिवसति (भग, महा, पि ४१७)।
परिवसण न [परिवसन] आवास (राज)।
परिवसणा स्त्री [परिवसना] पर्युषणा-पर्व (निचू १०)।
परिवसिअ वि [पर्युषित] रहा हुआ, वास किया हुआ (सण)।
परिवह सक [परि + वह्] वहन करना, ढोना। २ अक चालू रहना। परिवहइ (कप्प)। परिवहति (गउड)। वकृ. परिवहत (पिंड ३५६)।
परिवहण न [परिवहन] ढोना (राज)।
परिवा अक [परि + वा] सूखना। परिवायइ (गउड)।
परिवाइ वि [परिवादिन्] निन्दा करनेवाला (उव)।

[illegible]

परिविट्ठ सक [परिवि + क्रम] १ [illegible] होना। २ [illegible]। परिविट्ठइ (पाअ १ [illegible] २ २ टि ४८३)।

परिविन्द्धर वि [परिविद्धर] [illegible] (सूअ १ ३ १ २)।

परिविट्ठ वि [परिविष्ट] परोसा हुआ (स १८६ सुर [illegible])।

परिविन्नस सक [परिवि + नस] [illegible]। परिविन्नसेइ परिविन्नसिय (पाअ १ [illegible] ४ ५)।

परिविन्नि स्त्री [परिवन्ति] [illegible] (पाअ ४८७)।

परिविद्ध वि [परिविद्ध] जो बिंधा गया हो [illegible] (सुर २७०)।

परिविहस सक [परिवि + भ्रमस्] १ [illegible] करना। २ [illegible]। [illegible] परिविहसणा (सण)।

परिविब्भस्थ वि [परिविभ्रस्त] १ [illegible]। २ परिगलित (सूअ २, ३, १)।

परिविम्हुरिय वि [परिविस्मृरित] [illegible] (सण)।

परिवियम्भिय वि [परिविजृम्भित] [illegible] हुआ, [illegible] हुआ (सण)।

परिविसल्लिर वि [परिविसल्लिर] [illegible] (सण)।

परिविलित्त वि [परिविलिप्त] [illegible] (सण [illegible])।

परिविसज्जिर वि [परिविसर्जित] [illegible] (सण)।

परिविस [illegible] [परि + विश] [illegible] परिविसइ (महा [illegible])।

[illegible]

[illegible]

परिवीढ न [परिपीठ] आसन-विशेष (भवि)।

परिवील सक [परि-पीडय्] दबाना। संकृ. परिवीलियाण (आचा २, १, ८, १)।

परिवुड वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (णाया १, १४, धर्मवि २४, ओप, महा)।

परिवुत्थ वि [पर्युषित] १ रहा हुआ। २ न वास, निवास (गउड ५४०)। देखो परिवुसिअ।

परिवुद देखो परिवुड (प्राकृ १२)।

परिवुदि स्त्री [परिवृति] वेष्टन (प्राकृ १२)।

परिवुसिअ वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ, 'जे भिक्खू अचेले परिवुसिए' (आचा १, ८, ७ १, १, ६, २, २)। देखो परिवुत्थ।

परिवुसिअ वि [पर्युषित] गत, गुजरा हुआ (आचा २, ३, १, ३)।

परिवुढ वि [परिवृढ] समर्थ (उत्त ७, २)।

परिवूढ वि [परिवृद्ध] स्थूल (भाग ८६, उत्त ७, ६)।

परिवूढ वि [परिवृद्ध] १ बलवान्, बलिष्ठ (दस ७, २३)। २ मांसल, पुष्ट (आचा २, ४, २, ३)।

परिवूढ वि [परिव्यूढ] वहन किया हुआ, ढोया हुआ, 'न चइस्सामि अह पुण निरपरिवूढ इम लोहं' (धर्मवि ७)।

परिवूहण देखो परिवूहण (राज)।

परिवेढ सक [परि + वेष्ट] वेढना, लपेटना। परिवेढइ (भवि)। संकृ परिवेढिय (निचू १)।

परिवेढ पु [परिवेष्ट] वेष्टन, घेरा, 'जा जग्गइ तो पिच्छइ सेवापरसुहडपरिवेढं' (सिरि ६३८)।

परिवेढाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित कराया हुआ (पि ३०४)।

परिवेढिय वि [परिवेष्टित] वेढा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ (उप ७३८ टी, धण २०, पि ३०४)।

परिवेय अक [परि + वेप्] काँपना, 'कायरघरिणि परिवेयइ' (भवि)।

परिवेल्लिर वि [परिवेल्लितृ] कम्पन-शील (गउड)।

परिवेव अक [परि + वेप्] काँपना। वकृ परिवेवमाण (आचा)।

परिवेस सक [परि + विष्] परोसना। परिवेसइ (सुपा ३८६)। कर्म परिवेसिज्जइ (णाया १, ८)। वकृ. परिवेसत, परिवेसयंत (पिंड १२०, सुपा ११, णाया १, ७)।

परिवेस पु [परिवेश, °ष] १ वेष्टन, (गउड)। २ मडल, मेघादि मे सूर्य-चन्द्र का वेष्टनाकार मडल, 'परिवेसो अवरे फरुसवयणो' (पउम ६६ ४७, न ३१२ टी, गउड)।

परिवेसण न [परिवेषण] परोसना (स १८७, पिंड ११६)।

परिवेसणा स्त्री [परिवेषणा] ऊपर देखो (पिंड ४४५)।

परिवेसि [परिवेशिन्] समीप मे रहनेवाला (गउड)।

परिव्वअ सक [परि + व्रज्] १ समताद् गमन करना। २ दीक्षा लेना। परिव्वए, परिव्वएज्जासि (सूअ १, १, ४, ३, पि ४६०)।

परिव्वअ वि [परिवृत] परिवेष्टित, 'तारापरिव्वओ विव सरयपुण्णिमाचदो' (वसु)।

परिव्वअ त्रि [परिव्यय] विशेष व्यय (नाट—मृच्छ ७)।

परिव्वय पु [परिव्यय] खर्चा, खर्च करने का धन (दस ३, १ टी)।

परिव्वह सक [परि + वह्] वहन करना, धारण करना। परिव्वहइ (सबोध २२)।

परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] सन्यासिनी (णाया १, ८, महा)।

परिव्वाज (शौ) पुं [परि + व्राज्] सन्यासी (चारु ४८)।

परिव्वाजअ (शौ) पु [परिव्राजक] सन्यासी (पि २८७, नाट—मृच्छ ८५)।

परिव्वाजिआ (शौ) देखो परिव्वाइया (मा २०)।

परिव्वाय देखो परिव्वाज (सूअनि ११२, ओप)।

परिव्वायग } पु [परिव्राजक] सन्यासी,
परिव्वायय } साधु (भग)।

परिव्वायय वि [परिव्राजक] परिव्राजक-सम्बन्धी (कप्प)।

परिस देखो फरिस = स्पर्श (गउड, चारु ४२)।

परिसक अक [परि + शङ्क्] भय करना, डरना। वकृ परिसकमाण (सूअ १, १०, २०)।

परिसंकिय वि [परिशङ्कित] भीत (पण्ह १, ३)।

परिसंखा सक [परिसं + ख्या] १ अच्छी तरह जानना। २ गिनती करना। संकृ परिसखाय (दस ७ १)।

परिसखा स्त्री [परिसख्या] सख्या गिनती (पउम २, ४६, जीवस ४०, पव—गाथा १३ तद् ४, मण)।

परिसग पु [परिषङ्ग] सग, सोहबत (हम्मीर १६)।

परिसग पु [परिष्वङ्ग] आलिङ्गन (पउम २१, ५२)।

परिसगय वि [परिसगत] युक्त, सहित (धर्मवि १३)।

परिसठव सक [परिसं + स्थापय्] सस्थापन करना। परिसठवहु (अप) (पिग)। वकृ परिसठवित (उपपं ४३)।

परिसठविग वि [परिसस्थापित] सस्थापित (तदु ३८)।

परिसठिय वि [परिसस्थित] स्थित, रहा हुआ (महा)।

परिसत वि [परिश्रान्त] थका हुआ (महा)।

परिसथविय वि [परिसस्थापित] आश्वासित (स ५६६)।

परिसक्क सक [परि + ष्वष्क्] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना। परिसक्कइ (उप ६ टी, कुप्र १७५)। वकृ परिसक्कत, परिसक्कमाण (काप्र ६१७, स ४१, १३६)। संकृ परिसक्किऊण (सुपा ३१३)। कृ परिसक्कियव्व (स १६२)।

परिसक्कण न [परिष्वष्कण] परिभ्रमण (से ५, ५५, १३, ५६, सुपा २०१)।

परिसक्किअ वि [परिष्वष्कित] १ गत (भवि)। २ न परिक्रमण, परिभ्रमण (गा ६०६)।

परिसक्किर वि [परिष्वष्किन्] गमन करनेवाला (णाया १, १, वि ५९६)।

परिसज्जिअ (अप) वि [परिष्वक्त] आलिंगित (सण)।

परिसड अक [परि + शद्] उपयुक्त होना। परिसडइ (आचा २, १, ६, ६)।

परिसडिय वि [परिशटित] सड़ा हुआ, विनष्ट (णाया १, २; औप)।

परिसण्ह वि [परिश्लक्ष्ण] सूक्ष्म, छोटा (से १, १,)।

परिसन्न वि [परिषण्ण] जो हैरान हुआ हो, पीडित (पउम १७, ३०)।

परिसप्प सक [परि + सृप्] चलना। परिसप्पेइ (नाट—विक्र ६१)।

परिसप्पि वि [परिसर्पिन्] १ चलनेवाला (कप्पू)। २ पुंस्त्री हाथ और पैर से चलनेवाला जन्तु—नकुल, सर्प आदि प्राणि-गण। स्त्री °णी (जीव २)।

परिसम देखो परिस्सम (महा)।

परिसमत्त वि [परिसमाप्त] सम्पूर्ण, जो पूरा हुआ हो वह (से १५, ६५, सुर १५, २५०)।

परिसमत्ति स्त्री [परिसमाप्ति] समाप्ति, पूर्णता (उप ३५७, स ५२)।

परिसमापिय वि [परिसमापित] जो समाप्त किया गया हो, पूरा किया हुआ (विसे ३६०२)।

परिसमाव सक [परिसम् + आप्] पूर्ण करना। संकृ परिसमाविअ (अभि ११६)।

परिसर पु [परिसर] नगर आदि के समीप का स्थान (औप, सुपा १३० मोह ७६)।

परिसल्लिय वि [परिशल्यित] शल्य-युक्त (सण)।

परिसव सक [परि + स्रु] झरना, टपकना। वकृ परिसवंत (तदु ३६, ४१)।

परिसह पु [परिषह] देखो परीसह (भग)।

परिसा स्त्री [परिषद्] १ सभा, पर्षद् (पाअ, औप, उवा, विपा १, १)। २ परिवार (ठा ३, २—पत्र १२७)।

परिसाइ देखो परिस्साइ (राज)।

परिसाइयाण देखो परिसाव।

परिसाड सक [परि + शाटय्] १ त्याग करना। २ अलग करना। परिसाडेइ (कप्प, भग)। संकृ. परिसाडइत्ता (भग)।

परिसाड सक [परि + शाटय्] १ इधर-उधर फेंकना। २ भरना। ३ रसना, 'परिसाडिज्ज भोअणं' (दस ५, १, २८)। परिसाडिंति, भूका परिसाडिंसु, भवि परिसाडिस्संति (आचा २, १०, २)।

परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] वपन, बोना (वव १)।

परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] पृथक्करण (सूअनि ७, २०)।

परिसाडि वि [परिशाटिन्] परिशाटन-युक्त (ओघ ३१)।

परिसाडि वि [परिशाटि] परिशाटन, पृथक्करण (पिंड ५७२)।

परिसाडिय स्त्री [परिशातित] गिराया हुआ (दस ५, १, ६६)।

परिसाम अक [शम्] शान्त होना। परिसामइ (हे ४, १६७)।

परिसाम वि [परिश्याम] नीचे देखो (गउड)।

परिसामल वि [परिश्यामल] कृष्ण, काला (गउड)।

परिसामिअ वि [शान्त] शान्त, शम युक्त (कुमा)।

परिसामिअ वि [परिश्यामित] कृष्ण किया हुआ (णाया १, १)।

परिसाव सक [परि + स्रावय्] १ निचोड़ना। २ गालना। संकृ. परिसावियाण (आचा २, १, ८, १)।

परिसावि देखो परिस्सावि (बृह १)।

परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित, उक्त (सण)।

परिसिंच सक [परि + सिच्] सींचना। परिसिंचिज्जा (उत्त २, ६)। वकृ. परिसिंचमाण (णाया १, १)। कवकृ परिसिच्चमाण (कप्प, पि ५४२)।

परिसिट्ठ वि [परिशिष्ट] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ (आचा १, २, ३, ५)।

परिसिढिल वि [परिशिथिल] विशेष शिथिल, ढीला (गउड)।

परिसित्त वि [परिषिक्त] १ सींचा हुआ (गा १८५, सण)। २ न परिषेक, सेचन (पण्ह १, १)।

परिसिल्ल वि [पर्षद्वत्] परिषद् वाला (बृह ३)।

परिसील सक [परि + शीलय्] अभ्यास करना, आदत डालना। संकृ. परिसीलिवि (अप) (सण)।

परिसीलण न [परिशीलन] अभ्यास, आदत (रंभा, सण)।

परिसीलिय वि [परिशीलित] अभ्यस्त (सण)।

परिसीसग देखो पडिसीसअ (राज)।

परिसुक्क वि [परिशुष्क] खूब सूखा हुआ (विपा १, २; गउड)।

परिसुण्ण वि [परिशून्य] खाली, रिक्त, सुन्न (से ११, ८७)।

परिसुत्त वि [परिसुप्त] सर्वथा सोया हुआ (नाट—उत्तर २३)।

परिसुद्ध वि [परिशुद्ध] निर्मल, निर्दोष (उव, गउड)।

परिसुद्धि स्त्री [परिशुद्धि] विशुद्धि, निर्मलता (गउड, द्र ६५)।

परिसुन्न देखो परिसुण्ण (विसे २८५०, सण)।

परिसुस (अप) सक [परि + शोषय्] सुखाना। संकृ परिसुसिवि (अप) (सण)।

परिसूअणा स्त्री [परिसूचना] सूचना (सुपा ३०)।

परिसेय पु [परिषेक] सेचन (ओघ ३४७)।

परिसेस पु [परिशेष] १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट (से १०, २३, पउम ३५, ४०, गा ८८, कम्म ६, ६०)। २ अनुमान प्रमाण का एक भेद, पारिशेषानुमान (धर्मसं ६८, ६६)।

परिसेसिअ वि [परिशेषित] १ बाकी बचा हुआ (भग)। २ परिच्छिन्न, निर्णीत,

'डज्झसि डज्झसु कड्ढसि
कड्ढसु अह फुडसि हिअअ ता फुडसु।
तहवि परिसेसिओ च्चिअ
सो हु मए गलिअसब्भावो' (गा ४०१)।

परिसेह पु [परिषेध] प्रतिषेध, निवारण, 'पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, झाणज्झयणाईण जो य विही, एस धम्मकसो' (काल)।

परिसोण वि [परिशोण] लाल रँग का (गउड)।

परिसोसग न [परिशोषण] सुखाना (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [परिशोषित] सुखाया हुआ (सण)।

परिसोह सक [परि + शोधय्] शुद्ध करना। कवकृ परिसोहिज्जंत (सण)।

परिस्सअ सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन करना। परिस्सअदि (शौ) (पि ३१५)। संकृ परिस्सइअ (पि ३१५, नाट—शकु ७२)।

परिस्संत देखो परिसंत (णाया १, १, स्वप्न ४०, अभि २१०)।

परिस्सज (शौ) देखो परिस्सअ। परिस्सजह (उत्तर १७६)। वकृ परिस्सजंत (अभि १३३)। संकृ. परिस्सजिअ (अभि १२५)।

परिस्सम पु [परिश्रम] महनत (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०, अभि ३६)।

परिस्सम्म अक [परि + श्रम्] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ (विसे ११६७, धर्मसं ७८६)।

परिस्सव सक [परि + स्रु] चूना, भरना, टपकना। वकृ परिस्सवमाण (विपा १, १)।

परिस्सव पुं [परिस्रव] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण (आचा)।

परिस्सह देखो परीसह (आचा)।

परिस्साइ देखो परिस्सावि = परिस्राविन् (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

परिस्साव देखो परिसाव। संकृ. परिस्साविग्राण (पि ५६२)।

परिस्सावि वि [परिस्राविन्] १ कर्म-बन्ध करनेवाला (भग २५, ६)। २ चूनेवाला, टपकनेवाला। ३ गुह्य बात को प्रकट कर देनेवाला (गच्छ १, २२, पचा १५, १४)।

परिस्सावि वि [परिश्राविन्] सुनानेवाला (द्रव्य ४६)।

परिह सक [परि + धा] पहिरना, पहनना। परिहइ (धर्मवि १५०, भवि), 'सव्वंगीणेवि परिहए जवू रयणमयालकारे' (धर्मवि १४६)।

परिह पु [दे] रोष, गुस्सा (दे ६ ७)।

परिह पु [परिघ] अर्गला, आगल (अणु)।

परिहच्छ वि [दे] १ पटु, दक्ष, निपुण (दे ६, ७६, भवि)। २ पुं मन्यु, रोष, गुस्सा (दे ६, ७१)। देखो परिहत्थ।

परिहच्छ देखो पडिहच्छ (औप)।

परिहट्ट सक [मृद्, परि + घट्टय्] मर्दन करना, चूर करना, कचरना, कुचलना। परिहट्टइ (हे ४, १२६, नाट—साहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [वि + लुल्] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक जमीन पर लोटना। परिहट्टइ (प्राकृ ७३)।

परिहट्टण न [परिघट्टन] १ अभिघात, आघात (से १०, ४१)। २ घर्षण, घिसना (से ८ ४३)।

परिहट्टि स्त्री [दे] आकृष्टि, आकर्षण, खीचाव (दे ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, 'परिहट्टिओ माणो' (कुमा, पाअ)।

परिहण न [दे परिधान] वस्त्र, कपड़ा (दे ६, २१, पाअ, हे ४, ३४१, सुर १, २५, भवि)।

परिहत्थ पुं [दे] १ जलजन्तु-विशेष, 'परिहत्थमच्छपुच्छच्छडग्रच्छोडणोच्छलंतसलिलोह' (सुर १३, ४१) 'पोक्खरिणी परिहत्थभमतमच्छछप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया' (णाया १, १३—पत्र १७६)। २ वि. दक्ष, निपुण, 'अन्ने रणपरिहत्था सूरा' (पउम ६१, १, पराह १, ३—पत्र ५५, पाअ, आव ४)। ३ परिपूर्ण (ओप, कप्प)। देखो परिहच्छ, पडिहत्थ।

परिहर सक [परि + धृ] धारण करना। संकृ परिहरिअ (उत्त १२, ६)।

परिहर सक [परि + हृ] १ त्याग करना, छोड़ना। २ करना। ३ परिभोग करना, आसेवन करना। परिहरइ (हे ४, २५६, उव, महा)। परिहरंति (भग १५—पत्र ६६७)। वकृ. परिहरंत, परिहरमाण (गा १६६, राज)। संकृ. परिहरिअ (पिंग)। हेकृ परिहरित्तए, परिहरिउ (ठा ५ ३, काप्र ४०८)। कृ. परिहरणीअ, परिहरिअव्व (पि ५७१, गा २२७, ओघ ५६, सुर १४, ८३, सुपा ३६६, ५८८, पराह २, ५)।

परिहरण न [परिधरण] धारण करना (वव १)।

परिहरण न [परिहरण] १ परित्याग, वर्जन (महा)। २ आसेवन, परिभोग (ठा १०)।

परिहरणा स्त्री [परिहरणा] ऊपर देखो (पिंड १६७), 'परिहरणा होइ परिभोगो' (ठा ५, २ टी—पत्र ३३८)।

परिहरिअ वि [परिहृत] परित्यक्त, वर्जित (महा, सण, भवि)।

परिहरिअ देखो परिहर = परि + धृ, हृ।

परिहरिअ वि [परिधृत] धारण किया हुआ, 'परिहरिअकणअकुडलगडत्थलमणहरेसु सवणेसु। अणुअ। समअवसेण परिहिज्जइ तालवेंटजुअं ॥' (गा ३६८ अ)।

परिहलाविअ पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी, पनाला (दे ६, २६)।

परिहव सक [परि + भू] पराभव करना। वकृ परिहवंत (वव १)। कृ. परिहवियव्व (उप १०३६)।

परिहव पु [परिभव] पराभव, तिरस्कार (से १३, ४६, गा ३६६, हे ३, १८०)।

परिहवण न [परिभवन] ऊपर देखो (स ५७२)।

परिहविय वि [परिभूत] पराजित, तिरस्कृत (उप पृ १८०)।

परिहस सक [परि + हस्] उपहास करना, हँसी करना। परिहसइ (नाट)। कर्म. परिहसीअदि (शौ) (नाट—शकु २)।

परिहस्स वि [परिह्रस्व] अत्यन्त लघु (स ८)।

परिहा अक [परि + हा] हीन होना, कम होना। परिहाइ, परिहायइ (उव, सुख २, ३०)। भवि परिहाइस्सदि (शौ) (अभि ६)। कवकृ. परिहायंत, परिहायमाण (सुर १०, ६, १२, १४, णाया १, १३, ओप, ठा ३, ३), परिहीअमाण (पि ५४५)।

परिहा सक [परि + धा] पहिरना। भवि. परिहिस्सामि (आचा १, ६, ३, १)। संकृ.

परिहिऊण, परिहित्ता (कुप्र ७२, सूत्र १, ४, १, २५)। कृ परिहियव्व (स ३१५)।

परिहा स्त्री [परिखा] खाई (उर ४, २, पाअ)।

परिहाइअ वि [दे] परिक्षीण (षड्)।

परिहाडवि देखो परिहाव = परि + धापय्।

परिहाण न [परिधान] १ वस्त्र, कपड़ा, (कुप्र ५६, सुपा ५५)। २ वि पहिरनेवाला, पहननेवाला, 'महिविलया मलिलवत्थपरिहाणी' (पउम ११ ११६)।

परिहाणि स्त्री [परिहाणि] ह्रास, नुकसान, क्षति (सम ६७, उव ३२६, जी ३३, प्रासू ३६)।

परिहाय वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे ६, २५, पाअ)।

परिहायंत, परिहायमाण } देखो परिहा = परि + हा।

परिहार पु [परिहार] करण, कृति (वव १)।

परिहार पु [परिहार] १ परित्याग, वर्जन (गउड)। २ परिभोग, आसेवन, 'एव खलु गोमाला। वणस्सइकाइयाओ पउट्टपरिहार परिहरति' (भग १५)। ३ परिहार विशुद्धि नामक सयम-विशेष (कम्म ४, १२, २१)। ४ विषय (वव १)। ५ तप विशेष (ठा ५, २, वव १)। °विसुद्धिअ, °विसुद्धीअ न [°विशुद्धिक] चारित्र विशेष, सयम-विशेष (ठा ५ २, नव २६)।

परिहारि वि [परिहारिन्] परिहार करनेवाला (बृह ४)।

परिहारिअ वि [पारिहारिक] आचारवान् मुनि, उद्युक्त विहारी जैन साधु (आचा २, १, १, ४)।

परिहारिणी स्त्री [दे] देर से व्याई हुई भैंस (दे ६, ३१)।

परिहारिय वि [पारिहारिक] १ परित्याग के योग्य (बृह २)। २ परिहार नामक तप का पालक (पव ६६)।

परिहाल पु [दे] जल-निर्गम, मोरी (दे ६, २६)।

परिहाव सक [परि+धापय्] पहिराना। सकृ. परिहाइवि (अप) (भवि)।

परिहाव सक [परि+हापय्] ह्रास करना, कम करना, हीन करना। वकृ परिहावेमाण (णाया १, १—पत्र २८)।

परिहाविअ वि [परिहापित] हीन किया हुआ (वव ४)।

परिहाविअ वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, सुर १०, १७, स ५२६, कुप्र ६)।

परिहास पु [परिहास] उपहास, हँसी (गा ७७१, पाअ)।

परिहासणा स्त्री [परिभाषणा] उपालम्भ (आव १)।

परिहि पुस्त्री [परिधि] १ परिवेष, 'ससिबिंब व परिहिणा रुद्ध मिन्नेण तस्स रायगिह' (पव २५५)। २ परिणाह, विस्तार (राज)।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुआ (उवा, भग, कप्प, ओप, पाअ, सुर २, ८८)।

परिहिऊण देखो परिहा = परि + धा।

परिहिंड सक [परि + हिण्ड्] परिभ्रमण करना। परिहिंडए (ठा ४, १ टी—पत्र १९२)। वकृ परिहिडत, परिहिडमाण (पउम ८, १६८, ६०, ८, १५५, ओप)।

परिहिंडिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त, भटका हुआ (पउम ६, १३१)।

परिहित्ता, परिहियव्व } देखो परिहा = + धा।

परिहीअमाण देखो परिहा = परि + हा।

परिहीण वि [परिहीन] १ कम, न्यून (ओप)। २ क्षीण, विनष्ट (सुज्ज १)। ३ रहित, वर्जित (उव)। ४ न ह्रास, अपचय (राय)।

परिहुत्त वि [परिभुक्त] जिसका भोग किया गया हो वह (से १, ६४, दे ४, ३६)।

परिहूअ वि [परिभूत] पराजित, अभिभूत (गा १३४, पउम ३, ६, से २८)।

परिहेरग न [दे परिहार्यक] आभूषण-विशेष (ओप)।

परिहो सक [परि+भू] पराभव करना। परिहोइ (भवि)।

परिहोअ देखो परिभोग (गउड)।

परिहल्लस (अप) अक [परि+ह्रस्] कम होना। परिह्लसइ (पिंग)।

परी सक [परि + इ] जाना, गमन करना। परिंति (पि ४६३)। वकृ परिंत (पि ४६३)।

परी सक [क्षिप्] फेंकना। परीइ (हे ४, १४३)। परीमि (कुमा)।

परी सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। परीइ (हे ४, १६१)। परेंति (पणह १, ३—पत्र ४६)।

परीघाय पु [परिघात] निर्घात, विनाश (पव ६४)।

परीणम देखो परिणम = परि + णम, 'ससग्गओ पण्णवणागुणाओ लोगुत्तरत्तेण परीणमति' (उपपं ३५)।

परीभोग देखो परिभोग (सुपा ४६७, श्रावक २८८, पचा ८, ६)।

परीमाण देखो परिमाण (जीवस १२३, १३२, नव १५६)।

परीय देखो परित्त (राज)।

परीयल्ल पु [दे परिवर्त] वेष्टन, 'तिपरीयल्लमणिस्मट्ठं रयहरण धारए एग' (ओघ ७०६)।

परीरंभ पु [परीरम्भ] आलिंगन (कुमा)।

परीवज्ज वि [परिवर्ज्य] वर्जनीय (कम्म ६, ६ टी)।

परीवाय देखो परिवाय = परिवाद (पउम १०१, ३, पव २३७)।

परीवार देखो परिवार = परिवार (कुमा, चेइय ४८)।

परीसण न [परिवेषण] परोसना (दे २, १४)।

परीसम देखो परिस्सम (भवि)।

परीसह पु [परीषह] भूख आदि से होनेवाली पीडा (आचा, ओप, उत्त)।

परुइय वि [प्ररुदित] जो रोने लगा हो वह (स ७५५)।

परुक्ख देखो परोक्ख (विसे १८०३ टी, सुपा १३३, श्रा १, कुप्र २५)।

परुण्ण, परुन्न } देखो परुइय (से १, ३५, १०, ६८, गा ३५४, ८३८, महा, स २०४)।

परुप्पर देखो परोप्पर (कुप्र ५)।

परुब्भासिद (शौ) वि [प्रोद्भासित] प्रकाशित (प्रयौ २०)।

परुस वि [परुष] कठोर (गा ३४४)।

परुढ वि [प्ररूढ] १ उत्पन्न (धर्मवि १२१)। २ बढ़ा हुआ (ओप, पि ४०२)।

परुव सक [प्र + रूपय्] प्रतिपादन करना। परूवेइ, परूवेंति (औप, कप्प, भग)। संकृ. परुवइत्ता (ठा ३, १)।

परुवग वि [प्ररूपक] प्रतिपादक (उव, कुप्र १८१)।

परुवण न [प्ररूपण] प्रतिपादन (अणु)।

परुवणा स्त्री [प्ररूपणा] ऊपर देखो (आचू १)।

परुविअ वि [प्ररूपित] १ प्रतिपादित, निरूपित (पराह २, १)। २ प्रकाशित, 'उत्तमकचरणरयणपरुविअभासुरभूसणभासुरि-अंगा' (अजि २३)।

परेअ पु [दे] पिशाच (दे ६, १२, पाअ, षड्)।

परेण अ [परेण] बाद, अनन्तर (महा)।

परेयम्मण देखो परिकम्मण (कप्प)।

परेवय न [दे] पाद-पतन (दे ६, १६)।

परेव्व वि [परेद्युस्तन] परसों का, परसों होनेवाला (पिंड २४१)।

परो° अ [पर] उत्कृष्ट, 'परोसतेहिं सवेहिं' (उवा)।

परोइय देखो परुइय (उप ७६८ टी)।

परोक्ख न [परोक्ष] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण, 'पच्चक्खपरोक्खाइं दुन्नेव जओ पमाणाइं' (सुर १२, ६०, णंदि)। २ वि परोक्ष-प्रमाण का विषय, अप्रत्यक्ष (सुपा ६४७, हे ४, ४१८)। ३ न. पीछे, आँखों की ओट में, 'मम परोक्खे कि तए अणुभूय ?' (महा)।

परोट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त (षड्)।

परोप्पर } वि [परस्पर] आपस में (हे १, परोप्फर } ६२, कुमा, कप्पू, षड्)।

परोवआर पु [परोपकार] दूसरे की भलाई (नाट—मृच्छ १६८)।

परोवयारि वि [परोपकारिन्] दूसरे की भलाई करनेवाला (पउम ५०, १)।

परोवर देखो परोप्पर (प्राकृ २६, ३०)।

परोविय देखो परुइय (उप ७२८ टी, स ४८०)।

परोह अक [प्र + रुह्] १ उत्पन्न होना। २ बढ़ना। परोहदि (शौ) (नाट)।

परोह पु [प्ररोह] १ उत्पत्ति (कुमा)। २ वृद्धि। ३ अंकुर, बीजोद्भेद (हे १, ४४), 'पुन्नलयाए परोहे रेहइ आवालपत्तिव्व' (धर्मवि १६८)।

परोहड न [दे] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग (ओघ ४१७, पाअ, गा ६८५ अ, वज्जा १०६, १०८)।

पल अक [पल्] १ जीना। २ खाना। पलइ (षड्)। देखो वल = वल्।

पल (अप) अक [पत्] पड़ना, गिरना। पलइ (पिंग)। वकृ. पलत (पिंग)।

पल (अप) सक [प्र + कटय्] प्रकट करना। पल (पिंग)।

पल अक [परा + अय] भागना,
'चोराण कामुयाण य
पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ।
रे पलह रमह वाहयह,
वहह तणुइज्जए रयणी' (वज्जा १३४)।

पल न [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १)।

पल न [पल] १ एक बहुत छोटी तौल, चार तोला (ठा ३, १, सुपा ४३७, वज्जा ६८, कुप्र ४१६)। २ मांस (कुप्र १८६)।

पलघ सक [प्र + लङ्घ्] अतिक्रमण करना। पलंघेज्जा (ओप)।

पलंघण न [प्रलङ्घन] उल्लंघन (ओप)।

पलंड पु [पलगण्ड] राज, चूना पोतने का काम करनेवाला कारीगर, 'पलगडे पलंडो' (प्राकृ ३०)।

पलंडु पु [पलाण्डु] प्याज (उत्त ३६, ६८)।

पलंब अक [प्र + लम्ब्] लटकना। पलंबए (पि ४५७)। वकृ. पलंबमाण (ओप, महा)।

पलंब वि [प्रलम्ब] १ लटकनेवाला, लटकता (पराह १, ४, राय)। २ लम्बा, दीर्घ (से १२, ५६, कुमा)। ३ पु ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३)। ४ मुहूर्त्त-विशेष, अहो-रात्र का आठवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)। ५ पुन. आभरण-विशेष (ओप)। ६ एक तरह का धान का कोठा (बृह २)। ७ मूल (कस, बृह १)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ९ पुन. फल (बृह १, ठा ४, १—पत्र १८५) १० देव-विमान-विशेष (सम ३८)।

पलंबिअ वि [प्रलम्बित] लटका हुआ (भवि, स्वप्न १०)।

पलंबिर वि [प्रलम्बितृ] लटकनेवाला, [लट]कता (सुपा ११, सुर १, २४८)।

पलक्क वि [दे] लम्पट, 'इय विसयपल[क्क] (कुप्र ४२७, नाट)।

पलक्ख पु [प्लक्ष] बड का पेड़ (कुमा १३२)।

पलग न [पलक] फल-विशेष (आचा २, ८, ६)।

पलज्जण वि [प्ररञ्जन] रागी, अनुराग [वाला], 'अवम्मपलज्जण —' (णाया १, १८, ओ[प])।

पलट्ट अक [परि + अस्] १ पल[टना], बदलना। २ सक पलटाना, बदलाना। प[लट्टइ] (पिंग), 'कोहाइकारणेवि हु नो वयणं पलट्ट ति' (सबोध १८)। संकृ. पलट्टि (पिंग)। देखो पल्लट्ट।

पलत्त वि [प्रलपित] १ कथित, उक्त, प्र[लाप]युक्त (सुपा ११४, से ११, ७६)। २ प्रलाप, कथन (औप)।

पलय पु [प्रलय] १ युगान्त, कल्पान्त-का[ल] २ जगत् का अपने कारण में लय (से २, पउम ७२, ३१)। ३ विनाश, 'जायवज[ण] पलए' (ती ३)। ४ चेष्टा-क्षय। ५ छि[पना] (हे १, १८७)। °क्क पु [°र्क] प्रलय-[काल] का सूर्य (पउम ७२, ३१)। °घण पु [°घ[न]] प्रलय का मेघ (सण)। °ाणल पु [°ान[ल]] प्रलय काल की आग (सण)।

पलल न [पलल] १ तिल-चूर्ण, तिल-[...] (पराह २, ५, पिंड १६५)। २ मांस (हे १, १८७)।

पललिअ न [प्रललित] १ प्रक्रीडित (णा[या] १, १—पत्र ६२)। २ अंग-विन्यास (प[राह] २, ४)।

पलव सक [प्र + लप्] प्रलाप करना, ब[क]वाद करना। पलवदि (शौ) (नाट—वेणी १७)। वकृ. पलवंत, पलवमाण (का[ल], सुर २, १२५, सुपा २५०, ६४१)।

पलवण न [प्लवन] उछलना, उच्छल[न], 'सपाइमवाउवहो पलवण आउवघाओ [...]' (ओघ ३४८)।

पलविअ } वि [प्रलपित] १ अनर्थक कहा
पलवित } हुआ। २ न अनर्थक भाषण (चड, पराह १, २)।

पलविर वि [प्रलपितृ] बकवादी (दे ७, ५६)।

पलस न [दे] १ कार्पास फल। २ स्वेद, पसीना (दे ६, ७०)।

पलस (अप) न [पलाश] पत्र, पत्ती (भवि)।

पलसु स्त्री [दे] सेवा, पूजा, भक्ति (दे ६, ३)।

पलहि पुंस्त्री [दे] कपास (दे ६, ४ पाअ वज्जा १८६, हे २ १७४)।

पलहिअ वि [दे] १ विषम, असम। २ पुन आवृत जमीन का वास्तु (दे ६, १५)।

पलहिअअ वि [दे उपलहृदय] मूर्ख, पाषाण-हृदय (षड)।

पलहुअ वि [प्रलघुक] १ स्वल्प, थोडा। २ छोटा (से १, ३३, गउड)।

पला देखो **पलाय** = परा + अय्, 'ज ज भणामि अहय सयलपि वहिं पलाइ त तुज्झ' (आत्मानु २३), पलासि, पलामि (पि ५६७)।

पलाअत } देखो **पलाय** = परा + अय्।
पलाइअ }

पलाइअ } वि [पलायित] १ भागा हुआ,
पलाण } नष्ट, 'पलाइए हलिए' (गा ३६०), 'रिउणो मिन्न जह पलाए' (धर्मवि ५६, ५१, पउम ५३, ८४, ओघ ४६७, उप १३६ टी, सुपा २२, ५०३, ती १५, सण, महा)। २ न पलायन (दम ४, ३)।

पलाण न [पलायन] भागना (सुपा ४६८)।

पलाणिअ वि [पलायनित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ, 'तेणवि आगच्छतो विन्नाओ तो पलाणिओ दूर' (सुपा ४६४)।

पलात वि [प्रलान] गृहीत (षड)।

पलाय अक [परा + अय्] भाग जाना, नासना। पलायइ, पलाअसि (महा, पि ५६७)। भवि पलाइस्स (पि ५६७)। वकृ **पलाअत, पलायमाण** (गा २९१, णाया १८, आक १८, उप पृ २६)। सकृ **पलाइअ** (नाट, पि ५६८)। हेकृ **पलाइउ** (आक १६, सुपा ४६४)। कृ **पलाइअव्व** (पि ५६७)।

पलाय पु [दे] चोर, तस्कर (दे ६, ८)।

पलाय देखो **पलाइअ** = पलायित (णाया १, ३, स १३१, उप पृ २५७, धण ४८)।

पलायण न [पलायन] भागना (ओघ २६, सुर २, १४)।

पलायणया स्त्री ऊपर देखो (चेइय ४४६)।

पलायमाण देखो **पलाय** = परा + अय्।

पलाल वि [प्रलाल] प्रकृष्ट लालावाला (अणु १४१)।

पलाल न [पलाल] तृण-विशेष, पुआल (पराह २, ३, पाअ, आचा)। °**पीढय** न [°पीठक] पलाल का आसन (निचू १२)।

पलालग वि [पलालक] पलाल—पुआल का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

पलाव सक [नाशय्] भगाना, नष्ट करना। पलावइ (हे ४, ३१)।

पलाव पु [प्लाव] पानी की बाढ (तदु ५० टी)।

पलाव पु [प्रलाप] अनर्थक भाषण, बकवाद (महा)।

पलावण न [नाशन] नष्ट करना, भगाना (कुमा)।

पलावि वि [प्रलापिन्] बकवादी, 'असबद्ध-पलाविणी एसा' (कुप्र २२२, सबोध ४७, अभि ४६)।

पलाविअ वि [प्लावित] डुबाया हुआ, भिगाया हुआ (सुर १३, २०४, कुप्र ६०, ६७, सण)।

पलाविअ वि [प्रलापित] अनर्थक घोषित करवाया हुआ, 'मज्झुट्ठ फि दुच्चरिउ पलाविउ सज्जणजणहो नाउ लज्जाविउ' (भवि)।

पलाविर वि [प्रलपितृ] बकवाद करनेवाला, 'अहह असबद्धपलाविरस्स वडुयस्स पेच्छ मह पुरओ' (सुपा २०१), 'दिव्वनाणीव जपेइ, एसो एव पलाविरो' (सुपा २७७)।

पलास पु [पलाश] १ वृक्ष-विशेष, किंशुक का वृक्ष, ढाक (वज्जा १५२, गा ३११)। २ राक्षस (वज्जा १३०, गा ३११)। ३ पुन पत्र, पत्ता (पाअ, वज्जा १५२)। ४ भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट (ठा ८—पत्र ४३६, इक)।

पलासि स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-विशेष (दे ६ १४)।

पलासिया स्त्री [दे पलाशिका] त्वक्काष्ठिका, छाल की बनी हुई लकडी (सूअ १, ४, २, ७)।

पलाहु देखो **पलास** (सक्षि १६, पि २६२)।

पलि देखो **परि** (सूअ १, ६, ११, २, ७, ३६, उत्त २६, ३४, पि २५७)।

पलिअ न [पलित] १ वृद्ध अवस्था के कारण बालो का पकना, केशो की श्वेतता। २ वदन की झुरिया (हे १, २१२)। ३ कर्म कम-पुद्गल, जे केइ सत्ता पलिय चयति' (आचा १, ४, ३, १)। ४ घृणित अनुष्ठान, 'से आकुट्टे वा हए वा लु चिए वा पलिय पकथे' (आचा १, ६, २, २)। ५ कर्म, काम (आचा १, ६, २, २)। ६ ताप। ७ पक, कादा। ८ वि. शिथिल। ९ वृद्ध, बूढा (हे १, २१२)। १० पका हुआ, पक्व (धर्म २, निचू १५)। ११ जरा-ग्रस्त, 'न हि दिज्जइ आहरण पलियत्तयकण्णहत्थस्स' (राज)। °**ट्ठाण**, °**ठाण** न [°स्थान] कर्म-स्थान, कारखाना (आचा १, ६, २, २)।

पलिअ न [पल] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा की नाप (तदु २६)।

पलिअ देखो **पल्ल** = पल्य (पव १५८, भग, जी २६, नव ६, द २७)।

पलिअ (अप) देखो **पडिअ** (पिंग)।

पलिअक पु [पर्यङ्क] पलंग, खाट (हे २, ६८, सम ३५, ओप)। °**आसण** न [°आसन] आसन-विशेष (सुपा ६५५)।

पलिअका स्त्री [पर्यङ्का] पद्मासन, आसन-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३००)।

पलिउच सक [परि + कुञ्च्] १ अपलाप करना। २ ठगना। ३ छिपाना, गोपन करना। पलिउचति, पलिउचयति (उत्त २७, १३, सूअ १, १३, ४)। सकृ **पलिउचिय** (आचा २, १, ११, १)। वकृ **पलिउचमाण** (आचा १, ७, ४, १, २, ५, २, १)।

पलिउचण न [परिकुञ्चन] माया, कपट (सूअ १, ६, ११)।

पलिउचणा स्त्री [परिकुञ्चना] १ सच्ची बात को छिपाना। २ माया (ठा ४, १

टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १)।

पलिउंचि वि [परिकुञ्चिन्] मायावी, कपटी (वव १)।

पलिउंचिय वि [परिकुञ्चित] १ वञ्चित। २ न माया, कुटिलता (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना (पव २)।

पलिउंजिय देखो परिउञ्जिय (भग)।

पलिउच्छन्न देखो पलिओच्छन्न (आचा १, ५, १, ३)।

पलिउच्छूढ देखो पलिओच्छूढ (ओप—पृ ८० टि)।

पलिउञ्जिय वि [परियोगिक] परिज्ञानी, जानकार (भग २, ५)।

पलिऊल देखो पडिऊल (नाट—विक्र १८)।

पलिओच्छन्न वि [पलितावच्छन्न] कर्मा-वृत्त्व, कुकर्मी (आचा, १, ५, १, ३)।

पलिओच्छिन्न वि [पर्यवच्छिन्न] ऊपर देखो (आचा, पि २५७)।

पलिओच्छूढ वि [पर्यवक्षिप्त] प्रसारित (ओप)।

पलिओवम पुंन [पल्योपम] समय-मान-विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण (ठा २, ४, भग, महा)।

पलिंचा (शो) देखो पडिण्णा (पि २७६)।

पलिकुंचणया देखो पलिउंचणा (सम ७१)।

पलिक्खीण वि [परिक्षीण] क्षय-प्राप्त (सूत्र २, ७, ११, ओप)।

पलिगोव पु [परिगोप] १ पङ्क, कादा, कादो। २ आसक्ति (सूअ १, २, २, ११)।

पलिच्छण्ण } वि [परिच्छन्न] १ समन्तात्
पलिच्छन्न } व्याप्त (णाया १, २—पत्र ७८, १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ, 'एतेहिं पलिच्छन्नेहिं' (आचा १, ४, ४, २)।

पलिच्छाअ सक [परि + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ (आचा २, १, १०, ६)।

पलिच्छिंद सक [परि + छिद्] छेदन करना, काटना। संकृ पलिच्छिंदिय, पलि-च्छिंदियाण (आचा १, ४, ४, ३, १, ३, २, १)।

पलिच्छिन्न वि [परिच्छिन्न] विच्छिन्न, काटा हुआ (सूअ १, १६, ५, उप ५८५, सुर ६, २०६)।

पलित्त वि [प्रदीप्त] ज्वलित (कुप्र ११६; सं ७७, भग)।

पलिपाग देखो परिपाग (सूअ २, ३, २१, आचा)।

पलिप्प अक [प्र + दीप्] जलना। पलिप्पइ (पड्, प्राकृ १२)। वकृ. पलिप्पमाण (पि २४४)।

पलिबाहर } वि [परिबाह्य] हमेशा बाहर
पलिबाहिर } होनेवाला (आचा)।

पलिभाग पुं [परिभाग, प्रतिभाग] १ निर्विभागी अंश (कम्म ४, ८२)। २ प्रति-नियत अंश (जीवस १५४)। ३ सादृश्य, समानता (राज)।

पलिभिंद सक [परि + भिद्] १ जानना। २ बोलना। ३ भेदन करना, तोड़ना। संकृ

पलिभिंदियाण (सूअ १, ४, २, २)।

पलिभेय पु [परिभेद] चूरना (निचू ५)।

पलिमंथ सक [परि + मन्थ्] बांधना। पलिमंथए (उत्त ६, २२)।

पलिमंथ पु [परिमन्थ] १ विनाश (सूअ २, ७, २६, विसे १४५७)। २ स्वाध्याय व्याघात (उत्त २६, ३४, धर्मसं १०१७)। ३ विघ्न, बाधा (सूअ १, २, २, ११ टी)। ४ मुधा व्यापार, व्यर्थ क्रिया (श्रावक १०६, ११२)।

पलिमंथग पु [परिमन्थक] १ धान्य-विशेष, काला चना (सूअ २, २, ६३)। २ गोल चना। ३ विलव (राज)।

पलिमंथु वि [परिमन्थु] सर्वथा घातक (ठा ६—पत्र ३७१, कस)।

पलिमद्द देखो परिमद्द। परिमद्देज्जा (पि २५७)।

पलिमद्द वि [परिमर्द] मालिश करनेवाला (निचू ६)।

पलिमोक्ख देखो परिमोक्ख (आचा)।

पलियंचण न [पर्यञ्चन] परिभ्रमण (सुर ७, २४३)। देखो परियंचण।

पलियंत पु [पर्यन्त] १ अन्त भाग (सूअ १, ३, १, १५)। २ वि. अवसानवाला, अन्त-वाला, 'पलियंत मणुयाण जीवियं' (सूअ १, २, १, १०)।

पलियंत न [पल्यान्तर्] पल्योपम के भीतर (सूअ १, २, १, १०)।

पलियस्स न [परिपार्श्व] समीप, पास, निकट (भग ६, ५—पत्र २६८)।

पलिल देखो पलिअ = पलित (हे १, २१२)।

पलिव देखो पलीव। पलिवेइ (पि २४४)।

पलिवग देखो पलीवग (राज)।

पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (पड्, हे १, १०१)।

पलिविद्धंस अक [परिवि + ध्वस्] नष्ट होना। पलिविद्धंसिज्जा (अणु १८०)।

पलिस्सय } सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन
पलिस्सय } करना, स्पर्श करना, छूना। पलिस्सएज्जा (बृह ४)। वकृ पलिसयमाणे गुरुगा दो लहुगा आणमाईणि' (बृह ४)। हेकृ पलिस्सइउ (बृह ४)।

पलिह देखो परिह = परिघ (राज)।

पलिहअ वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (दे ६, २०)।

पलिहई स्त्री [दे] क्षेत्र, खेत, 'नियपलिहईइ दोहिवि किसिकम्मं काउमाढत्त' (सुर १५, २०१)।

पलिहस्स न [दे] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष (दे ६, १६)।

पलिहाय पुं [दे] ऊपर देखो (दे ६, १६)।

पली सक [परि + इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। पलेइ (सूअ १, १३, ६), पलिंति (सूअ १, १, ४, ६)।

पली अक [प्र + ली] लीन होना, आसक्ति करना। पलिंति (सूअ १, २, २, २२)। वकृ पलेमाण (आचा १, ४, १, ३)।

पलीण वि [प्रलीन] १ अति लीन (भग २५, ७)। २ संबद्ध (सूअ १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट (सुर ८, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन (सुर ६, २८)।

पलीमंथ देखो पलिमंथ (सूअ १, ६ १२)।

पलीव अक [प्र + दीप्] जलना। पलीवइ (हे ४, १५२, पड्)।

पलीव सक [प्र + दीपय्] जलाना, सुलगाना। पलीवइ, पलीवेइ (महा, हे १, २२१)। संकृ. पलीविऊण, पलीविअ (कुप्र १६०, गा ३३)।

पलीव पु [प्रदीप] दीपक, दीआ (प्राकृ १२, पड)।

पलीवग वि [प्रदीपक] आग लगानेवाला (पराह १, १)।

पलीवण न [प्रदीपन] आग लगाना (आ २८ कुप्र २६)।

पलीवणआ स्त्री ऊपर देखो (निचू १६)।

पलीविअ देखो पलीव = प्र + दीपय्।

पलीत्ति वि [प्रदीप्त] प्रज्वलित (पाअ)।

पलीविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (उत्त)।

पलुपण न [प्रलोपन] प्रलोप (ओप)।

पलुट्ट वि [प्रलुठित] लेटा हुआ (दे १, ११६)।

पलुट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त (हे ४, ४२२)।

पलुट्टिअ देखो पलोट्टिअ = पर्यस्त (कुमा ४, ७५)।

पलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध, जला हुआ (सुर ६, २०६, सुपा ४)।

पलेमाण देखो पली = प्र + ली।

पलेव पु [प्रलेप] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष (जी ३)।

पलोअ सक [प्र + लोक्, लोकय्] देखना, निरीक्षण करना। पलोयइ, पलोअए, पलोएइ (सण, महा)। कर्म पलोइज्जइ (कप्प)। वकृ पलोअन, पलोअअत पलोएत, पलोएमाण, पलोयमाण (रयण १४, नाट—मालती ३२, महा, पि २६३, सुपा ८४, ३५१)।

पलोअण न [प्रलोकन] अवलोकन (से १४, ३५, गा ३२२)।

पलोअणा स्त्री [प्रलोकना] निरीक्षण (ओघ ३)।

पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक (औप)।

पलोइअ वि [प्रलोकित] देखा हुआ (गा ११८, महा)।

पलोइर वि [प्रलोकितृ] प्रेक्षक (गा १८०, भवि)।

पलोएत, पलोएमाण } देखो पलोअ।

पलोघर [दे] देखो परोहड (गा ३१३ अ)।

पलोट्ट सक [प्रत्या + गम्] लौटना, वापस आना। पलोट्टइ (हे ४, १६६)।

पलोट्ट सक [परि + अस्] १ फेंकना। २ मार गिराना। ३ अक पलटना, विपरीत होना। ४ प्रवृत्ति करना। ५ गिरना। पलोट्टइ, पलोट्टेइ (हे ४, २००, भग, कुमा)। वकृ. पलोट्टत (वज्जा ६६, गा २२२)।

पलोट्ट अक [प्र + लुठ्] जमीन पर लोटना। वकृ पलोट्टत (से ५, १८)।

पलोट्ट वि [पर्यस्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ हत। ३ विक्षिप्त (हे ४, २५८)। ४ पतित, गिरा हुआ (गा १७०)। ५ प्रवृत्त, 'रेल्लंता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जलोणोघा' (कुमा)।

पलोट्टजीह वि [दे] रहस्य-भेदी, बात को प्रकट करनेवाला (दे ५, ३५)।

पलोट्टण न [प्रलोठन] ढुलकाना, लुढकाना, गिराना (उप पृ ११०)।

पलोट्टिअ देखो पलोट्ट = पर्यस्त (कुमा)।

पलोभ सक [प्र + लोभय] लुभाना, लालच देना। पलोभेदि (शौ) (नाट—मृच्छ ३१३)।

पलोभविअ वि [प्रलोभित] लुभाया हुआ (धर्मवि ११२)।

पलोभि वि [प्रलोभिन्] विशेष लोभी (धर्मवि ७)।

पलोभिअ देखो पलोभविअ (सुपा ३४३)।

पलोव (अप) देखो पलोअ। पलोवइ (भवि)।

पलोहर [दे] देखो परोहड (गा ६८५ अ)।

पलोहिद (शौ) देखो पलोभिअ (नाट)।

पल्ल पुन [पल्य] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र (पव १५८, ठा ३, १)। २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम (पउम २०, ६७, द २७)। ३ संस्थान-विशेष, पल्यक संस्थान, 'पल्लासंठाणसंठिया' (सम ७७)।

पल्ल पु [पल्ल] धान्य भरने का बडा कोठा, 'बहवे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठंति' (णाया १, ७—पत्र ११५)।

पल्लंक देखो पलिअंक (हे २, ६८, षड्)।

पल्लंक पु [पल्यङ्क] शाक-विशेष, कन्द विशेष (श्रा २०, जी ६, पव ४, संबोध ४४)।

पल्लंघण न [प्रलङ्घन] १ अतिक्रमण (ठा ७)। २ गमन, गति (उत्त २४, ४)।

पल्लग देखो पल्ल = पल्ल (विसे ७०६)।

पल्लट्ट देखो पलट्ट = परि + अस्। पल्लट्टइ (हे ४, २००, भवि)। सकृ पल्लट्टिउ (पचा १३, १२)।

पल्लट्ट पु [दे] पर्वत-विशेष (पराह १, ४)।

पल्लट्ट पु [दे परिवर्त] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रों का समय (धण ४७)।

पल्लट्ट, पल्लत्थ } देखो पलोट्ट = पर्यस्त (हे २, ४७, ६८)।

पल्लत्थि स्त्री [पर्यस्ति] आसन-विशेष, पलथी, 'पायपसारण पल्लत्थिबंधण बिंबपट्ठिदाणं च। उच्चासणसेवणया जिणपुरओ भवइ अवन्ना ॥' (चेइय ६०)। देखो पल्हत्थिया।

पल्लल न [पल्वल] छोटा तलाव (प्राकृ १७, णाया १, १, सुपा ६४६, स ४२०)।

पल्लव पु [पल्लव] १ किसलय, अंकुर (पाअ, औप)। २ पत्र, पत्ता (से २६)। ३ देश-विशेष (भवि)। ४ विस्तार (कप्पू)।

पल्लव देखो पज्जव (सम ११३)।

पल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६)।

पल्लविअ वि [दे] लाक्षा-रक्त (दे ६, १६, पाअ)।

पल्लविअ वि [पल्लवित] १ पल्लवाकार (दे ६, १६)। २ अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न (दे १, १)। ३ पल्लव-युक्त (रंभा)।

पल्लविल्ल वि [पल्लववत्] पल्लव-युक्त (सुपा ५, धण २४)।

पल्लविल्ल देखो पल्लव (हे २, १६४)।

पल्लस्स देखो पलोट्ट = परि + अस्। पल्लस्सइ (प्राकृ ७२)।

पल्लाण न [पर्याण] अश्व आदि का साज, 'किं करिणो पल्लाणं उव्वोढुं रासभो तरइ' (प्रवि १७, प्राप्र)।

पल्लाण सक [पर्याणय्] अश्व आदि को सजाना। पल्लाणेह (स २२)।

पल्लाणिअ वि [पर्याणित] पर्याण-युक्त (कुमा)।

पल्लि स्त्री [पल्लि] १ छोटा गाँव। २ चोरों के निवास का गहन स्थान (उप ७२८ टी)।

°नाह पु [°नाथ] पल्ली का स्वामी (सुपा ३५१, सुर २, ३३)। °वइ पु [°पति] वही अर्थ (सुर १, १६१, सुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [दे] १ आक्रान्त (निचू २)। २ ग्रस्त (निचू १)। ३ प्रेरित, 'पल्लट्टा पल्लिआरहट्टव्व' (वज्जा ४७)।

पल्लित्त वि [दे] पर्यस्त (षड्)।

पल्ली देखो पल्लि (गउड, पचा १०, ३६, सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [प्रलीन] विशेष लीन, 'गुत्तिंदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ' (भग २५, ७, कप्प)।

पल्लोट्टजीह [दे] देखो पल्लोट्टजीह (षड्)।

पल्लट्ठ देखो पलोट्ट + परि + अस्। पल्लत्थइ (हे ४, २००)। वकृ पल्लत्थंत (से १०, १०, २, ५)। कवकृ पल्लत्थत (से ८, ८३, ११ ६६)।

पल्लत्थ सक [वि + रेचय्] बाहर निकालना। पल्लत्थइ (हे ४, २)।

पल्लत्थ देखो पलोट्ट = पर्यस्त, 'करतलपल्लत्थमुहे' (सूअ २, २, १६, हे ४, २५८)।

पल्लत्थण न [पर्यसन] फेंक देना प्रक्षेपण, 'अन्नदा भुवणपल्लत्थणपवणो समुट्ठिदो दुट्ठपवणो (मोह ६२)।

पल्लत्थरण देखो पच्चत्थरण (से ११, १०८)।

पल्लत्थाविअ वि [विरेचित] बाहर निकलवाया हुआ (कुमा)।

पल्लत्थिअ देखो पलोट्ट = पर्यस्त (से ७, २०, गाया १, ४६—पत्र २१६, सुपा ७६)।

पल्लत्थिया स्त्री [पर्यस्तिका] आसन-विशेष—१ दोनो जानु खडा कर पीठ के साथ चादर लपेटकर बैठना (पव ३८)। २ जघा पर वस्त्र लपेटकर बैठना। ३ जघा पर पाँव रखकर बैठना (उत्त १, १९)। °पट्ट पु [°पट्ट] योग-पट्ट (राज)।

पल्हय } पु [पह्लव] १ अनार्य देश-
पल्हव } विशेष (कम्म, कुप्र ९७)। २ पुस्त्री पह्लव देश का निवासी (भग ३, २—पत्र १७० अत)। स्त्री °वी, °विया (पि ३३०, औप, गाया १, १—पत्र ३७, इक)।

पल्हवि पुंस्त्री [दे पह्लवि] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपडा, 'पल्हवि हत्थत्थरणं' (पव ८४)।

पल्हविया } देखो पल्हव।
पल्हवी }

पल्हाय सक [प्र = ह्लाद्] आनन्दित करना, खुशी करना। पल्हायइ (सबोध १२)। वकृ पल्हायत (उव, सुर ३, १२१)। कृ. देखो पल्हायणिज्ज।

पल्हाय पुं [प्रह्लाद] १ आनन्द, खुशी (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु नामक दैत्य का पुत्र (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्याधर नरेश (पउम १५, ५)।

पल्हायण न [प्रह्लादन] १ चित्त-प्रसन्नता, खुशी (उत्त २९, १७)। २ वि. आनन्द-दायक (सुपा ५०७)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३९)।

पल्हायणिज्ज वि [पह्लादनीय] आनन्द-जनक (गाया १, १—पत्र १३)।

पल्हीय पुं. ब [प्रह्लीक] देश-विशेष (पउम ९८, ६६)।

पव सक [पा] पीना। कृ 'अरममेहा 'अप्पवणिज्जो दगा वास वासिहिति' (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

पव अक [प्लु] १ फरकना। २ सक. उल्लघन कर जाना। ३ तैरना। पवेज्ज (सूअ १, १, २, ८)। वकृ पवत, पवमाण (से ५, ३७, आचा २, ३, २, ४)। हेकृ पविउ (सूअ १, १, ४, २)।

पव पु [प्लव] १ पूर (कुमा)। २ उच्छलन, कूदना। ३ तरण, तैरना। ४ भेक, मेढक। ५ वानर, बन्दर। ६ चाण्डाल, डोम। ७ जल-काक। ८ पाकुड का पेड। ९ कारण्डव पक्षी। १० शब्द, आवाज। ११ रिपु, दुश्मन। १२ मेष, मेढा। १३ जल-कुक्कुट। १४ जल, पानी। १५ जलचर पक्षी। १६ नौका, नाव (हे २, १०६)।

पव स्त्रीन [प्रपा] पानीयशाला, प्याऊ, 'सहाणि वा पवाणि वा' (आचा २, २, २, १०)।

पवग पु [प्लवङ्ग] १ वानर (से २, ४६, ४, ४७)। २ वानर-वंशीय मनुष्य। °नाह पुं [°नाथ] वानर-वंशीय राजा, वाली (पउम ६, २९)। °वइ पु [°पति] वानरराज (पि ३७९)।

पवगम पु [प्लवंगम] १ वानर (पाअ, से ६, १९)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

पवच पु [प्रपञ्च] १ विस्तार (उप ५३० टी, औप)। २ ससार (सूअ १, ७, उव)। ३ प्रतारण, ठगाई (उव)।

पवचण न [प्रपञ्चन] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पवचा स्त्री [प्रपञ्चा] मनुष्य की दश दशाओ मे सातवी दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था (ठा १०, तदु १६)।

पवंचिअ वि [प्रपञ्चित] विस्तारित (श्रा १४, कुप्र ११८)।

पवछ सक [प्र + वाञ्छ्] वाञ्छना, अभिलाषा करना। वकृ पवछमाण (उप पृ १८०)।

पवत देखो पव = प्लु।

पवंपुल पुंन [दे] मच्छी पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पवक वि [प्लवक] १ उछल-कूद करनेवाला। २ तैरनेवाला (पण्ह १, १ टी—पत्र २)। ३ पु पक्षी। ४ देवजाति-विशेष, सुपर्णकुमार नामक देव-जाति (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

पवक्खमाण देखो पवय = प्र + वच्।

पवग देखो पवक (पण्ह २, ४, कप्प, औप)।

पवज्ज सक [प्र + पद्] स्वीकार करना। पवज्जइ, पवज्जिज्जा (भवि, हित २०)। भवि पवज्जिहिसि (गा ६६१)। वकृ. पवज्जत (श्रा २७)। सकृ. पवज्जिय (मोह १०)। कृ. पवज्जियव्व (पंचा १६)।

पवज्जण न [प्रपदन] स्वीकार, अगीकार (स २७१, पचा १४, ८, श्रावक १११)।

पवज्जा देखो पव्वज्जा (महानि ४)।

पवज्जिय वि [प्रपन्न] स्वीकृत, अगीकृत (धर्मवि ५३, कुप्र २६५, सुपा ४०७)।

पवज्जिय वि [प्रवादित] जो बजने लगा हो (स ७५६)।

पवज्जिर देखो पवज्ज।

पवट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ (महा)।

पवट्ट वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (षड्, हे २, २६ टि)।

पवट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (राज)।

पवट्टि स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन (हम्मीर १५)।

पवट्टिअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि, दे)।

पवट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ (हे १, १५६)।

पवड अक [प्र + पत्] पड़ना, गिरना। पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज (भग, कप्प, आचा २, २, ३, ३)। वकृ. पवडत, पवडेमाण (णाया १, १, मिरि ६८६, आचा २, २, ३, ३)।

पवडण न [प्रपतन] अध पात (वृह ६)।

पवडणया } स्त्री [प्रपतना] ऊपर देखो (ठा
पवडणा } ८, ४—पत्र ४८०, राज)।

पवडेमाण देखो पवड।

पवड्ड अक [दे] पोढना, सोना, 'जाव राया पवड्डइ ताव कहेहि किंचि अक्खाणय' (सुपा ६, १)।

पवड्ढ अक [प्र + वृध्] बढना। पवड्ढइ (उव)। वकृ पवड्ढमाण (कप्प, सुर १, १८१, अ १२४)।

पवड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढा हुआ (अज्झ ७०)।

पवड्ढण न [प्रवर्धन] १ बढाव, प्रवृद्धि (मनोध ११)। २ वि बढानेवाला, 'ममारस्स पवड्ढणं' (सूअ १, १, २, २८)।

पवड्ढिय वि [प्रवर्धित] बढाया हुआ (भवि)।

पवण वि [प्रवण] १ तत्पर (कुप्र १३४)। २ तदुरुस्त, स्वस्थ, सुस्थ, 'पडियरिओ तह, पवणो पुच्च व जहा स मजाओ' (उप ५६७ टी, कुप्र ४१८)।

पवण न [प्लवन] १ उछल कर गमन (जीव ३)। २ तरण, 'तरिउकामस्स पवहण (? वण) किच्चं' (णाया १, १४—पत्र १६१)। °किच्च पु [°कृत्य] नौका, नाव, डोंगी (णाया १, १४)।

पवण पु [पवन] १ पवन, वायु (पाअ, प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार (औप, पण्ह १, ४)। ३ हनुमान् का पिता (से १, ४८)। °गइ पुं [°गति] हनुमान का पिता (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र (पउम ६, ६८)। °चड पु [°चण्ड] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °तणअ पु [°तनय] हनूमान् (से १, ४८)। °नदण पु [°नन्दन] हनूमान (पउम १६, २७, सम्मत्त १२३)। °पुत्त पु [°पुत्र] हनूमान् (पउम ५२, २८)। °वेग पु [°वेग] १ हनूमान का पिता (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १६०)। °सुअ पुं [°सुत] हनूमान् (पउम ४६, १३, से ४, १३, ७, ४६)। °णद पु [°नन्द] हनूमान् (पउम ५२, १)।

पवणजअ पु [पवनञ्जय] १ हनूमान् का पिता (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (कुप्र ३५७)।

पवणिय वि [प्रवणित] सुस्थ किया हुआ, तदुरुस्त किया हुआ (उप ७६८ टी)।

पवण्ण देखो पवन्न (मण)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्र + वृत्। पवत्तइ, पवत्तए (पव २४७, उव)।

पवत्त सक [प्र + वर्त्तय्] प्रवृत्त करना। पवत्तेइ, पवत्तेहि (वव १, कप्प)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (पउम ३२, ७०, स ३७६, रभा)।

पवत्तग वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (उप ३३६ टी, धर्मवि १३२)।

पवत्तण न [प्रवर्त्तन] १ प्रवृत्ति (हे २, ३०, उत्त ३१, २)। २ वि प्रवृत्ति करानेवाला (उत्त ३१, ३, पण्ह १, ५)।

पवत्तय वि [प्रवर्त्तक] १ प्रवृत्ति करनेवाला (हे २, ३०)। वि प्रवृत्त करानेवाला, 'तित्थवरप्पवत्तय' (अजि १८, गच्छ १, १०)।

पवत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन। °वाउय वि [°व्यापृत] प्रवृत्ति में लगा हुआ (औप)।

पवत्ति वि [प्रवर्त्तिन्] प्रवृत्ति करानेवाला (ठा ३, ३, कस, कप्प)।

पवत्तिणी स्त्री [प्रवर्त्तिनी] साध्वियों की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी (सुर १, ४१, महा)।

पवत्तिय देखो पवट्टिअ (काल)।

पवत्तिया स्त्री [दे] संन्यासी का एक उपकरण (कुप्र ३७२)।

पवद देखो पवय = प्र + वद्। वकृ पवदमाण (आचा)।

पवदि स्त्री [प्रवृति] ढकना, आच्छादन (सक्षि ६)।

पवद्ध देखो पवड्ढ = प्र + वृध्। वकृ पवद्धमाण (चेइय ६१६)।

पवद्ध पुं [दे] घन, हथोडा (दे ६, ११)।

पवद्धिय देखो पवड्ढिय (महा)।

पवन्न वि [प्रपन्न] १ स्वीकृत, अंगीकृत (चेइय ११२, प्रासू २१)। २ प्राप्त, 'गुरुयणगुरुविणयपवन्नमाणसो' (महा)।

पवमाण देखो पव = प्लु।

पवमाण पु [पवमान] पवन, वायु (कुप्र ४४४, सुपा ८६)।

पवय सक [प्र + वद्] १ बकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वकृ पवयमाण (आचा १, ५, १, ३)।

पवय सक [प्र + वच्] बोलना, कहना। भवि. कवकृ पवक्खमाण (धर्मसं ६१)। कर्म पवुच्चइ, पवुच्चई, पवुच्चति (कप्प, पि ५४४, भग)।

पवय देखो पवक = प्लवक (उप पृ २१०)।

पवय पु [प्लवग] वानर, कपि (पउम ६५, ५०, हे ४, २२०, पाअ, से २, ३७, १५, १७)। °वइ पु [°पति] वानरों का राजा सुग्रीव (से २, ३६)। °हिव पु [°धिप] वही पूर्वोक्त अर्थ (से २, ४०, १२, ७०)।

पवयण पु [प्राजन] कोडा, चाबुक (दे २, ६७)।

पवयण न [प्रवचन] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र (भग २०, ८, प्रासू १८१)। २ जैन सघ, 'गुणसमुदाओ सघो पवयण तित्थ ति होइ एगट्ठा' (पचा ८, ३६, विसे ११२२, उप ४२३ टी, औप)। ३ आगम-ज्ञान (विसे ११९२)। °माया स्त्री [°माता] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म (सम १३)।

पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम (उवा; सुपा ३१६, ३४१, प्रासू १२६, १५४)।

पवरग न [दे प्रवराङ्ग] सिर, मस्तक (दे ६, २८)।

पवरपुंडरीय पुन [प्रवरपुण्डरीक] एक देव-विमान (आचा २, १५, २)।

पवरा स्त्री [प्रवरा] भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (पव २७)।

पवरिस नक [प्र + वृष्] बरसना, वृष्टि करना। पवरिसिद् (भवि)।

पवल देखो पवल (कप्पू कुप्र २४७)।

पवस अक [प्र + वस्] प्रयाण करना, विदेश जाना। वकृ पवसंत (से १, २४, गा ६४)।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास, विदेश यात्रा, मुसाफिरी (स १६६, उप १०३१ टी)।

पवसिअ वि [प्रोषित] प्रवास में गया हुआ (गा ४५, ८४०, सुर ५,२११, सुपा ८७३)।

पवह अक [प्र + वह्] १ बहना। २ सक टपकना, झरना। पवहइ (भवि पिंग)। वकृ पवहंत (सुर २, ७५)। संकृ. पवहित्ता (सम ८४)।

पवह सक [प्र + हन] मार डालना। वकृ. 'पिच्छउ पवहंत मज्झ करयल कलिय-करवाल' (सुपा ५७२)।

पवह वि [प्रवह] १ बहनेवाला। २ टपकनेवाला, चूनेवाला, 'अट्ठ णालीओ अब्भतरप्प-वहाओ' (विपा १, १—पत्र १६)।

पवह पु [प्रवाह] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा (गा ३६६, ५४१, कुमा)। २ प्रवृत्ति। ३ व्यवहार। ४ उत्तम अश्व (हे १, ६८)। ५ प्रभाव (राज)।

पवहण पुन [प्रवहण] १ नौका, जहाज (णाया १, ८, पि ३५७)। २ गाड़ी आदि वाहन, 'जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया' (ओप, वसु, चारु ७०)।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त (दे ६, ३४)।

पवहाविय वि [प्रवाहित] बहाया हुआ (भवि)।

पवा स्त्री [प्रपा] जलदान स्थान, पानी-शाला, प्याऊ (ओप, पण्ह १, ३, महा)।

पवाइ वि [प्रवादिन्] १ वाद करनेवाला, वादी। २ दार्शनिक (सूअ १, १, १; चउ ४७)।

पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ (वायु), 'पवाइया कलवाया' (स ६८६, पउम ५७, २७, णाया १, ८, स ३६)।

पवाइअ वि [प्रवादित] बजाया हुआ (कप्प, ओप)।

पवाण (अप) देखो पमाण = प्रमाण (कुमा, पि २५१, भवि)।

पवाड सक [प्र + पातय्] गिराना। वकृ पवाडेमाण (भग १७, १—पत्र ७२०)।

पवाडि देखो पवाड (धर्मसं १३३)।

पवाय अक [प्र + वा] १ सुख पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक गमन करना। ४ हिंसा करना। पवाअइ (प्राकृ ७६)। वकृ पवायंत (आचा)।

पवाय पुं [प्रवाद] १ किंवदन्ती, जनश्रुति (सुपा ३००, उप पृ २६)। २ परंपरा-प्राप्त उपदेश। ३ मत, दर्शन, 'पवाएण पवायं जाणेज्जा' (आचा)।

पवाय पु [प्रपात] १ गर्त्त, गड्ढा (णाया १, १४—पत्र १६१, दे १, २२)। २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह (सम ८४)। ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान। ४ रात में पढ़नेवाली धाड़, धारा (राज)। ५ पतन (ठा २, ३)। °द्दह पु [°द्रह] वह कुण्ड, जहां पर्वत पर से नदी गिरती हो (ठा २, ३—पत्र ७३)।

पवाय पु [प्रवात] १ प्रकृष्ट पवन (पण्ह २, ३)। २ वि, बहा हुआ (पवन) (सक्खि ७)। ३ पवन-रहित (बृह १)।

पवायग वि [प्रवाचक] पाठक, अध्यापक (विसे १०६२)।

पवायण न [प्रवाचन] प्रपठन, अध्ययन (सम्मत्त ११७)।

पवायणा स्त्री [प्रवाचना] ऊपर देखो (विसे २८३५)।

पवायय देखो पवायग (विसे १०६२)।

पवाल पुंन [प्रवाल] १ नवांकुर, किसलय (पाअ ३४१, णाया १, १, सुपा १२६)। २ मूँगा, विद्रुम (पाअ, कप्प)। °मंत, °वंत वि [°वत्] प्रवालवाला (णाया १, १, ओप)।

पवालिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो वह (उप ७२८ टी)।

पवास पुं [प्रवास] विदेश गमन, परदेश-यात्रा (सुपा ६५७, हेका ३७, सिरि ३५६)।

पवासि } वि [प्रवासिन्] मुसाफिर (गा
पवासु } ६८, पड्, पि ११८, हे ४, ३९५)।

पवाह सक [प्र + वाहय्] बहाना, चलाना। पवाहइ (भवि)। भवि पवाहहिति (विसे २४६ टी)।

पवाह देखो पवह = प्रवाह (हे १ ६८, ८२, कुमा, णाया १, १४)।

पवाह पुं [प्रबाध] प्रकृष्ट पीड़ा (विपा १, ६—पत्र ६०)।

पवाहण न [प्रवाहन] १ जल, पानी (प्रावम)। २ बहाना, वहन कराना (चेइय ५२३)।

पवि पु [पवि] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष (उप २११ टी, सुपा ४६७, कुमा, धर्मवि ८०)।

पविअंभिअ वि [प्रविजृम्भित] प्रोल्लसित, समुत्पन्न (गा ५३६ अ)।

पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र (दे ६, ४, ८, ३२, पाअ)।

पविइण्ण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ (ओप)।

पविइण्ण } वि [प्रविकीर्ण] १ व्याप्त
पविइन्न } (ओप, णाया १, १ टी—पत्र ३)। २ विक्षिप्त, निरस्त (णाया १, १)।

पविकत्थ सक [प्रवि + कत्थ्] आत्म-श्लाघा करना। पविकत्थई (सम ५१)।

पविकसिय वि [प्रविकसित] प्रकर्ष से विकसित (राज)।

पविकिर सक [प्रवि + कृ] फेंकना। वकृ. पविकिरमाण (ठा ८)।

पविक्खिअ वि [प्रवीक्षित] निरीक्षित, अवलोकित (स ७४६)।

पविक्खिर देखो पविकिर, 'नाविअजणे य भड पविक्खिरते समुद्दम्मि' (सुर १३, २०६)।

पविग्घ वि [दे] विस्मृत (पड्)।

पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त (राय)।

पविज्जल वि [प्रविज्वल] १ प्रज्वलित (सूअ १, ५, २, ५)। २ रुधिरादि से पिच्छिल—व्याप्त (सूअ १, ५, १, १६, २१)।

पविट्ठ वि [प्रविष्ट] घुसा हुआ (उवा; सुर ३, १३६)।

पविणी सक [प्रवि + णी] दूर करना। पविणेति (भग)।

पवित्त पुं [पवित्र] १ दर्भ, कुश, तृण-विशेष (दे ६, १८)। २ त्रि निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ (कुमा; सण; उत्तर ४५)।

पवित्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (नि ६, ५७)।

पवित्त सक [पवित्रय्] पवित्र करना। वकृ. पवित्तयंत (सुपा ८१)। कृ. पवित्तियव्व (सुपा ५८८)।

पवित्तय न [पवित्रक] अंगूठी, अंगुलीयक (णाया १, ५; ओघ)।

पवित्ताविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि)।

पवित्ति देखो पवत्ति = प्रवृत्ति (सुपा २, ओघ ६३; ओघ)।

पवित्तिणी देखो पवत्तिणी (कप्प)।

पवित्थर अक [प्रवि + स्तृ] फैलाना। वकृ. पवित्थरमाण (पव २५५)।

पवित्थर पुं [प्रविस्तर] विस्तार (उवा; सूअ २, २, ६२)।

पवित्थरिअ वि [प्रविस्तृत] विस्तीर्ण (स ७५२)।

पवित्थरिल्ल वि [प्रविस्तरिन] विस्तारवाला (राज—पण्ह १, ५)। देखो पविरल्लिय।

पवित्थारि वि [प्रविस्तारिन्] फैलनेवाला (गउड)।

पविद्ध देखो पव्विद्ध (पव २)।

पविद्धंस अक [प्रवि + ध्वंस्] १ विनाशाभिमुख होना। २ विनष्ट होना, 'तेण पर जोणी पविद्धंसइ, तेण पर जोणी विद्धंसइ' (ठा ३, १—पत्र १२३)।

पविद्धत्थ वि [प्रविध्वस्त] विनष्ट (जीव ३)।

पविभत्ति स्त्री [प्रविभक्ति] पृथक्-पृथक् विभाग (उत्त १, १)।

पविभाग पुं [प्रविभाग] ऊपर देखो (विसे १६८२)।

पविमुक्क वि [प्रविमुक्त] परित्यक्त (सुर ३, १३६)।

पविमोयण न [प्रविमोचन] परित्याग (ओघ)।

पविय वि [प्राप्त] प्राप्त, 'भुवि ववहार पविया दुम्माणा हुंति ते णिवया' (आरा ४४)।

पवियंभिर वि [प्रविजृम्भितृ] १ उल्लसित होनेवाला। २ उत्पन्न होनेवाला (सण)।

पवियक्किय न [प्रवितर्कित] विकल्प, वितर्क (उत्त २३, १४)।

पवियक्खण वि [प्रविचक्षण] विशेष प्रवीण (उत्त ६, ६३)।

पवियार पुं [प्रवीचार] १ काया और वचन की चेष्टा-विशेष (उप ६०२)। २ काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३८७, पव २६६)।

पवियारण न [प्रविचारण] संचार, 'वाउपवियारणट्ठा छब्भायं ऊणयं कुज्जा' (पिंड ६५०)।

पवियारणा स्त्री [प्रविचारणा] काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३८७)।

पवियास सक [प्रवि + काशय्] फाडना, खोलना, 'पवियासए नियवयणं' (धर्मवि १२८)।

पवियासिय वि [प्रविकासित] विकसित किया हुआ, 'पवियासियकमलवणं सयणं निहालेइ दिणनाहं' (सुपा ३८)।

पविरइअ वि [दे] त्वरित, शीघ्रता-युक्त (दे ६, २८)।

पविरंज सक [भञ्ज्] भांगना, तोडना। पविरंजइ (हे ८, १०६)।

पविरंजय वि [दे] स्निग्ध, स्नेह-युक्त (षड्)।

पविरंजिअ वि [भग्न] भांगा हुआ (कुमा; दे ६, ७८)।

पविरंजिअ वि [दे] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त। २ कृत-निषेध, निवारित (दे ६, ७४)।

पविरल वि [प्रविरल] १ अनिबिड। २ विच्छिन्न (गउड)। ३ अत्यन्त थोडा, बहुत ही कम, 'परउवयारणरसिया दीसंति महीए पविरलनरिंदा' (सुपा २८०)।

पविरल्लिय वि [दे] विस्तारवाला (पण्ह १, ५—पत्र ९१)। देखो पवित्थरिल्ल।

पविरिक्क वि [प्रविरिक्त] एकदम शून्य, बिलकुल खाली (गउड ६८५)।

पविरेल्लिय [दे] देखो पविरल्लिय (पण्ह १, ५ टी—पत्र ९२)।

पविलुप सक [प्रवि + लुप्] बिलकुल नष्ट करना। कवकृ. पविलुप्पमाण (महा)।

पविलुत्त वि [प्रविलुप्त] बिलकुल नष्ट (उप ५९७ टी)।

पविलुप्पमाण देखो पविलुप।

पविस सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, घुसना। पविसइ (उव; महा)। भवि. पविसिस्सामि, पविसिस्सिइ (पि ५२६)। वकृ. पविसंत, पविसमाण (पउम ७६, १६; सुपा ४८८; विपा १, ५; कप्प)। संकृ. पविसित्ता, पविसित्तु, पविसिअ, पविसिऊण (कप्प; महा; अभि ११६; काल)। हेकृ. पविसित्तए, पवेट्ठु (कप्प; कप्प; पि ३०३)। कृ. पविसिअव्व (ओघ ६१; सुपा ३८१)।

पविसण न [प्रवेशन] प्रवेश, पैठ (पिंड ३१७)।

पविसु सक [प्रवि + सृ] उत्पन्न करना। संकृ. पविसुइत्ता (सूअ २, २, ६५)।

पविस्स देखो पविस। पविस्सइ (महा)। वकृ. पविस्समाण (भवि)।

पविहर सक [प्रवि + हृ] विहार करना, विचरना। पविहरंति (उव)।

पविहस अक [प्रवि + हस्] हसना, हास्य करना। वकृ. पविहसंत (पउम ५६, १७)।

पवीइअ वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया हुआ (औप)।

पवीण वि [प्रवीण] निपुण, दक्ष (उप ६८६ टी)।

पवीणी देखो पविणी। पवीणेइ (ओघ)।

पवील सक [प्र + पीडय्] पीडना, दमन करना। पवीलए (आचा १, ८, ८, १)।

पवुच्च° देखो पवय = प्र + वच्।

पवुट्ठ वि [प्रवृष्ट] १ खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह (आचा २, ४, १, १३)। २ न प्रभूत वृष्टि, वर्षण, 'काले पवुट्ठं' विअ अहिणंदिदं देवस्स सासणं' (अभि २२०)।

पवुड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढा हुआ, विशेष वृद्ध (दे १, ६)।

पवुड्ढि स्त्री [प्रवृद्धि] बढ़ाव (पंच ५, ३३)।

पवुत्त वि [प्रोक्त] १ जो कहने लगा हो, जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह (पउम २७, १६; ६४, २१)। २ उक्त, कथित (धर्मवि ८२)।

पवुत्थ [दे] देखो पउत्थ, 'खुड्डयं पुत्त घेत्तु गामे पवुत्था' (आक २०, २५)।

पवुद वि [प्रवृत] प्रकर्ष से आच्छादित (प्राकृ १२)।

पवूढ वि [प्रव्यूढ] १ धारण किया हुआ (स ५११)। २ निर्गत (राज)।

पवेइय वि [प्रवेदित] १ निवेदित, प्रतिपादित, 'तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं' (उप ३७४ टी, भग)। २ विज्ञात, विदित (राज)। ३ भेंट किया हुआ (उत्त १३, १३, सुख १३, १३)।

पवेइय वि [प्रवेपित] कम्पित (पउम ५, ७८)।

पवेज्ज सक [प्र + वेदय्] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना। पवेजए (सूअ १, ८, २४)।

पवेढिय वि [प्रवेष्टित] घिरा हुआ, वेढ़ा हुआ (सुर १२, १०४)।

पवेय देखो पवेज्ज। पवेयति (आचा १, ६, २, १२)। हेक्ृ पवेइत्तए (कस)।

पवेयण न [प्रवेदन] १ प्ररूपण, प्रतिपादन। २ ज्ञान, निर्णय। ३ अनुभावन (राज)।

पवेविय वि [प्रवेपित] प्रकम्पित (णाया १, १—पत्र ४७, उत्त २२, ३६)।

पवेविर वि [प्रवेपितृ] कांपनेवाला (पउम ८०, ६४)।

पवेस सक [प्र + वेशय्] घुसाना। पवेसेइ (महा)। पवेसआमि (पि ४९०)।

पवेस पु [प्रवेश] भीत की स्थूलता (ठा ४, २—पत्र २२५)।

पवेस पुं [प्रवेश] १ पैठ, घुसना (कुमा, गउड, प्रासू २२)। २ नाटक का एक हिस्सा (कप्पू)।

पवेस पुं [प्रद्वेष] अधिक द्वेष (भवि)।

पवेसण, **पवेसणग**, **पवेसणय** पुंन [प्रवेशन, °क] १ प्रवेश, पैठ (पण्ह १, १, प्रासू ३८, द्रव्य ३२)। २ विजातीय जन्मान्तर मे उत्पत्ति, विजातीय योनि मे प्रवेश (भग ६, ३२)।

पवेसि वि [प्रवेशिन्] प्रवेश करनेवाला (औप)।

पवेसिय वि [प्रवेशित] घुसाया हुआ (सण)।

पवोत्त पुं [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र (आक ८)।

पव्व पुंन [पर्वन्] १ ग्रन्थि, गांठ (ओघ ४८६, जी १२, सुपा ५०७)। २ उत्सव, त्यौहार (सुपा ५०७, श्रा २८)। ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि। ४ पूर्णिमा और अमावास्यावाला पक्ष (ठा ६—पत्र ३७०, सुज्ज १०)। ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन,

'अट्ठमी चउद्दसी पुण्णिमा य
तहमावसा हवइ पव्वं।
मासम्मि पव्वछक्कं तिन्नि य
पव्वाइं पक्खम्मि' (धर्म २)।

६ मेखला, गिरिमेखला। ७ दंष्ट्रा-पर्वत (सूअ १, ६, १२)। ८ संख्या-विशेष (इक)। °बीय पु [°बीज] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है (राज)। °राहु पु [°राहु] राहु विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या मे क्रमश चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है (सुज्ज १९)।

पव्वइ न [पर्वतिन्] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा। २ पुस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (राज)। देखो पव्वपेच्छइ।

पव्वइ° देखो पव्वई (गा ०५५)।

पव्वइअ वि [प्रव्रजित] १ दीक्षित, संन्यस्त (औप, दसनि २—गाथा १६४)। २ गत, प्राप्त, 'अगाराओ अणगारियं पव्वइया' (औप, सम; कप्प)। ३ न दीक्षा, संन्यास (वव १)।

पव्वइंद पुं [पर्वतेन्द्र] मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी)।

पव्वइग देखो पव्वइअ (उप पृ ३३५)। स्त्री. °गा (उप पृ ५४)।

पव्वइसेल्ल न [दे] बाल-मय कंडक—तावीज (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [पार्वती] गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)।

पव्वंग पुंन [पर्वाङ्ग] संख्या-विशेष (इक)।

पव्वक, **पव्वग** पुन [पर्वक] १ वाद्य विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४९)। २ ईख जैसी ग्रन्थिवाली वनस्पति (पण्ण १)। ३ तृण-विशेष (निचू १)।

पव्वग वि [पार्वक] पर्व—ग्रन्थि—गाठ का बना हुआ (आचा २, २, ३, २०)।

पव्वज्ज पु [दे] १ नख। २ शर, बाण। ३ बाल मृग (दे ६, ६६)।

पव्वज्जा स्त्री [प्रव्रज्या] १ गमन, गति। २ दीक्षा, सन्यास (ठा ३, २, ४, ८, प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [पर्वणी] कार्तिकी आदि पर्वतिथि (णाया १, १—पत्र ५३)।

पव्वपेच्छइ न [पर्वप्रेक्षकिन्] देखो पव्वइ (ठा ७—पत्र ३९०)।

पव्वय सक [प्र + व्रज्] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, सन्यास लेना। पव्वयइ (महा)। भवि. पव्वइस्सामो, पव्वइहिति (औप)। वकृ. पव्वयंत, पव्वयमाण (सुर १, १२३, ठा ३, १)। हेकृ पव्वइत्तए, पव्वइउ (औप, भग, सुपा २०९)।

पव्वय देखो पव्वग (पण्ण १—पत्र ३३)।

पव्वय देखो पव्वइअ, 'अगारमावसतावि अरण्णा वावि पव्वया' (सूअ १ १, १, १९)।

पव्वय, **पव्वयय** पुन [पर्वत, °क] १ गिरि, पहाड (ठा ३, ४, प्रासू १५४, उवा), 'पव्वयाणि वणाणि य' (दस ७, २६ ३०)। २ पु द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम (पउम ११, ६)। ४ एक राजा (भवि)। ५ एक राज-कुमार (उप ६३७)। °राय पु [°राज] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °विदुग्ग पुन [°विदुर्ग] पर्वतीय देश, पहाडवाला प्रदेश (भग)।

पव्वयगिह न [पर्वतगृह] पर्वत की गुफा (आचा २, ३, ३, १)।

पव्वह सक [प्र + व्यथ्] पीडना, दु ख देना। पव्वहेज्जा (सूअ १, १, ४, ६)।

कवकृ पव्वहिज्जमाण (णाया १, १६—पत्र १६६)।

पव्वहणा स्त्री [प्रव्यथना] व्यथा, पीडा (आव)।

पव्वहिय वि [प्रव्यथित] अति दुःखित (आचा १, २, ६, १)।

पव्वा स्त्री [पर्वा] लोकपालों की एक बाह्य परिषद् (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पव्वाअ देखो पव्वाय = म्लै।

पव्वाइअ वि [प्रव्राजित] १ जिसको दीक्षा दी गई हो वह (सुपा ५६५)। २ न दीक्षा देना (राज)।

पव्वाइअ वि [म्लान] विच्छाय, शुष्क (कुमा ६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [प्रव्राजिका] परिव्राजिका, संन्यासिनी (महा)।

पव्वाडिअ देखो पव्वालिअ = प्लावित (से ५, ४१)।

पव्वाण वि [म्लान] शुष्क, सूखा (ओघ ४८८)।

पव्वाय देखो पवाय = प्र + वा। पव्वाअइ (प्राकृ ७६)।

पव्वाव सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना (सुपा ५६६)।

पव्वाय अक [म्लै] सूखना। पव्वायइ (हे ४, १८)। वकृ. पव्वाअंत (से ७, ६७)।

पव्वाय वि [म्लान, प्रवाण] शुष्क, सूखा हुआ (पाअ; ओघ ३६३; स २०३; से ४८, ६ ६३; पिंड ४४)।

पव्वाय पुं [प्रवात] प्रकृष्ट पवन (गा ६२३)।

पव्वाल सक [छादय्] ढकना, आच्छादन करना। पव्वालइ (हे ४, २१)।

पव्वाल सक [प्लावय्] खूब भिजाना, तरबोर करना। पव्वालइ (हे ४, ४१)।

पव्वालण न [प्लावन] तरबोर करना (से ६, ७५)।

पव्वालिअ वि [प्लावित] जल-व्याप्त, सराबोर किया हुआ (पाअ; कुमा; से ६, १०)।

पव्वालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

पव्वाव सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना, संन्यास देना। पव्वावेइ (भग)। संकृ पव्वावेऊण (पंचव २)। हेकृ पव्वावित्तए, पव्वावेत्तए, पव्वावेउं (ठा २, १; कस; पचभा)।

पव्वावण न [प्रव्राजन] दीक्षा देना (उव; ओघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [दे] प्रयोजन (पिंड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [प्रव्राजना] दीक्षा देना (ओघ ४४३, पव २५, सूअनि १२७)।

पव्वाविय वि [प्रव्राजित] दीक्षित, साधु बनाया हुआ (णाया १, १—पत्र ६०)।

पव्वाह सक [प्र + वाहय्] बहाना, प्रवाह मे डालना। वकृ पव्वाहमाण (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [दे] प्रेरित (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [प्रवृद्ध] महान्, बडा (से १४, ५१)।

पव्विद्ध न [प्रविद्ध] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को समाप्त किये बिना ही भागना (पव २)।

पव्वीसग न [दे पव्वीसग] वाद्य विशेष (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

पसइ स्त्री [प्रसृति] १ नाप-विशेष, दो प्रसृति—पसर का एक परिमाण (तंदु २६)। २ पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल—अँजुरी मिला कर भरी हुई चीज (कुप्र ३७४)।

पसग पुन [प्रसङ्ग] १ परिचय, उपलक्ष (स २०५)। २ सगति, सबन्ध, 'लोए पलीवणं पिव पलालपूलप्पसगणं' (ठा ४, ४; कुप्र २६),

'वर दिट्ठिविमो सप्पो वर हालाहल विस। हीणायारागीयत्थवयणपसग खु णो भद्द' (सबोध ३६)। ३ आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति (स १७४)। ४ मैथुन, काम-क्रीडा (पण्ह १, ४)। ५ आसक्ति। ६ प्रस्ताव, अधिकार (गउड, भवि, पचा ६, २६)।

पसगि वि [प्रसङ्गिन्] प्रसग करनेवाला, आसक्त, 'जूयप्पसगी' (महा, णाया १, २)।

पसज अक [प्र + सञ्ज्] १ आसक्ति करना। २ आपत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसजइ (उव), 'अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसजसि' (उत्त १८, ११, १२)। पसज्जेज्जा (विसे २६६)।

पसडि न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ६, १०)।

पसत वि [प्रशान्त] १ प्रकृष्ट शान्त, शम-प्राप्त (कप्प, स ४०३, कुप्र)। २ साहित्य-शास्त्र प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस (अणु)।

पसति स्त्री [प्रशान्ति] नाश, विनाश, 'सव्व-दुक्खप्पसतीए' (अजि ३)।

पसंधण न [प्रसन्धान] सतत प्रवर्त्तन (पिंड ४६०)।

पसस सक [प्रशस्] श्लाघा करना। पस-सइ (महा, भवि)। वकृ पससत, पसस-माण (पउम २८, १५, २२, ६८)। कवकृ पससिज्जमाण (वसु)। सकृ पससिऊण (महा)। कृ पससणिज्ज, पसस्स, पस-सियव्व (सुपा ४७, ६४५, सुर १, २१६, पउम ७५, ८), देखो पसस।

पसस वि [प्रशस्य] १ प्रशसा-योग्य। २ पु लोभ (सूअ १, २, २, २६)।

पसंसण न [प्रशसन] प्रशसा, श्लाघा (उप १४२ टी, सुपा २०६, उप प १७)।

पससय वि [प्रशसक] प्रशसा करनेवाला (श्रा ६, भवि)।

पससा स्त्री [प्रशसा] श्लाघा, स्तुति, वर्णन (प्रासू १६७, कुमा)।

पससिअ वि [प्रशसित] श्लाघित (उत्त १४, ३८)।

पसज्ज° देखो पसज।

पसज्झ } अ [प्रसह्य] १ खुले तौर से, प्रकट
पसज्झं } रीति से (सूअ १, २, २, १६)। २ हठात्, बलात्कार से (स ३१)।

पसज्झचेय न [प्रसह्यचेतस्] धर्म-निरपेक्ष चित्त, कदाग्रही मन (दसचू १, १४)।

पसढ वि [प्रसह्य] अनेक दिन रखकर खुला किया हुआ (दस ५, १, ७२)।

पसढ वि [प्रशठ] अत्यन्त शठ (सूअ २, ४, ३)।

पसढ देखो पसज्झ (दस ५, १, ७२)।

पसढिल वि [प्रशिथिल] विशेष ढीला (हे १, ८६)।

पसण्ण वि [प्रसन्न] १ खुश, स्वस्थ (से ५, ४१, गा ८६५)। २ स्वच्छ, निर्मल (औप, ओघ ३४५)। °चद पु [°चन्द्र] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि (उव, पडि)।

पसण्णा स्त्री [प्रसन्ना] मदिरा, दारू (णाया १, १६, विपा १, २)।

पसत्त वि [प्रसक्त] १ चिपका हुआ (गउड ५१)। २ आसक्त (गउड ५३१, उव)। ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त (विसे १८५६)।

पसत्ति स्त्री [प्रसक्ति] १ आसक्ति, अभिष्वङ्ग (उप १३१)। २ आपत्ति-दोष (अज्झ ११६)।

पसत्थ वि [प्रशस्त] १ प्रशंसनीय, श्लाघनीय। २ श्रेष्ठ, अच्छा (हे २, ४५, कुमा)।

पसत्थि स्त्री [प्रशस्ति] वंशोत्कीर्तन, वश-वर्णन (गउड, सम्मत्त ८३)।

पसत्थु पु [प्रशास्तृ] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक (ठा ३, १)। २ धर्म-शास्त्र का पाठक (ठा ३, १, औप)। ३ मन्त्री, अमात्य (सूअ २, १, १३)।

पसन्न देखो पसण्ण (महा, भवि, सुपा ६१४)।

पसन्ना देखो पसण्णा (पाअ, पउम १०२, १२२, सुर २, २६)।

पसप्प पुं [प्रसर्प] विस्तार, फैलाव (द्रव्य १०)।

पसप्पग वि [प्रसर्पक] १ प्रकर्ष से जाने-वाला, मुसाफिरी करनेवाला। २ विस्तार को प्राप्त करनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६४)।

पसम अक [प्र + शम्] अच्छी तरह शान्त होना। पसमति (आक १६)।

पसम पु [प्रशम] १ प्रशान्ति, शान्ति (कुमा)। २ लगातार दो उपवास (संबोध ५८)।

पसम पु [प्रश्रम] विशेष मेहनत—खेद (आव ४)।

पसमण न [प्रशमन] १ प्रकृष्ट शमन (पिंड ६६३, सुर १, २४६)। २ वि. प्रशान्त करने वाला (स ६६५)। स्त्री. °णी (कुमा)।

पसमाविअ वि [प्रशमित] प्रशान्त किया हुआ (स ६२)।

पसमिक्ख सक [प्रसम् + ईक्ष्] प्रकर्ष से देखना। सकृ. पसमिक्ख (उत्त १४, ११)।

पसमिण वि [प्रशमिन्] प्रशान्त करनेवाला, नाश करनेवाला, 'पावति, पावपसमिण पास-जिण तुह प्पभावेण' (णमि १७)।

पसम्म देखो पसम = प्र + शम्। पसम्मइ (गउड)। वकृ. पसम्मंत (से १०, २२, गउड)।

पसय पु [दे] १ मृग-विशेष (दे ६, ४, पण्ह १, १, भवि, मण, महा)। २ मृग शिशु (विपा १, ४)।

पसय वि [प्रसृत] फैला हुआ, 'पसयच्छि।' (वज्जा ११२, १४४)। देखो पसिअ = प्रसृत।

पसर अक [प्र + सृ] फैलना। पसरइ (पि ४७७, भवि)। वकृ पसरंत (सुर १, ८६; भवि)।

पसर पु [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हे ४, १५७, कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर देखो (कप्पू)।

पसरिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तृत (औप, गा ४, भवि, णाया १, १)।

पसरेह पु [दे] किंजल्क (दे ६, १३)।

पसल्हिअ वि [दे] प्रेरित (षड्)।

पसव सक [प्र + सू] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवइ (हे ४, २३३)। पसवति (उत्त)। वकृ. पसवमाण (सुपा ४३४)।

पसव (अप) सक [प्र + विश्] प्रवेश करना। पसवइ (प्राकृ ११६)।

पसव पुं [प्रसव] १ जन्म, उत्पत्ति (कुमा)। २ न. पुष्प, फूल, 'कुसुम पसव पसूअ च' (पाअ), 'पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि' (दसनि १, ३६)।

पसव [दे] देखो पसय। 'पसवा हवति एए' (पउम ११, ७७)। °नाह पु [°नाथ] मृग-राज, सिंह (स ६५७)। °राय पु [°राज] सिंह (स ६५७)।

पसवडक्क न [दे] विलोकन (दे ६, ३०)।

पसवण न [प्रसवन] प्रसूति, जन्म दान (भग, उप ७४४, सुर ६, २४८)।

पसवि वि [प्रसविन्] जन्म देनेवाला (नाट—शकु ७४)।

पसविय वि [प्रसूत] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह, 'सयमेव पसविया ह महाकिलेसेण नरनाह' (सुर १०, २३०; सुपा ३६)। देखो पसूअ = प्रसूत।

पसवित्र वि [प्रसवितृ] जन्म देनेवाला (नाट)।

पसस्स देखो पसस।

पसस्स वि [प्रशस्य] प्रभूत शस्यवाला (सुपा ६४५)।

पसाइअ वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ (स ३८६, ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ, 'अगविलग्गमसि पसाइयं कडयवत्थाइ' (सुर १, १६३)।

पसाइआ स्त्री [दे] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगड़ी (दे ६, २)।

पसाइयव्व देखो पसाय = प्र + सादय्।

पसाम वि [प्रशाम] शान्त होनेवाला (षड्)।

पसाय सक [प्र + सादय्] प्रसन्न करना, खुश करना। पसाअति, पसाएमि (गा ६१, सिक्खा ६१)। वकृ. पसाअमाण (गा ७४५)। हेकृ पसाइउ, पसाएउं (महा, गा ५२४)। कृ. पसाइयव्व (सुपा ३६५)।

पसाय पु [प्रसाद] १ प्रसत्ति, प्रसन्नता, खुशी, 'जणमणपसायजणणो' (वसु)। २ कृपा, मेहरबानी (कुमा)। ३ प्रणय (गा ७१)।

पसायण न [प्रसादन] प्रसन्न करना, देव-पसायणपहाणमणो' (कुप्र ५ सुपा ७, महा)।

पसार सक [प्र + सारय्] पसारना, फैलाना। पसारेइ (महा)। वकृ पसारेमाण (णाया १, १, आचा)। सकृ पसारिअ (नाट—मृच्छ २५५)।

पसार पुं [प्रसार] विस्तार, फैलाव (कप्पू)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर देखो (सुपा ५८३)।

पसारिअ वि [प्रसारिन्] १ फैलाया हुआ (सण, नाट—वेणी २३)। २ न प्रसारण (सम्मत्त १३३, दस ४, ३)।

पसास सक [प्र + शासय्] १ शासन करना, हुकूमत करना। २ शिक्षा देना। ३ पालन करना। वकृ 'रज्जं पसासेमाणे विहरइ' (णाया १, १ टी—पत्र ६, १ १४—पत्र १८६, औप, महा)।

पसाह सक [प्र + साधय्] १ वश में करना। २ सिद्ध करना। पसाहेइ (नाट, भवि)। वकृ. पसाहेमाण (ओप)।

पसाहग वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करनेवाला (धर्मसं २६)। °तम वि [°तम] १ उत्कृष्ट साधक। २ न व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष, करण-कारक (विसे २११२)। देखो पसाहय।

पसाहण न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, साधना, 'विज्जापसाहणुज्जयविज्जाहर-मनिन्द्वारन्ता' (सुर ३, १२)। २ उत्कृष्ट साधन 'सव्वुत्तम माणुसत्त दुल्लहं भवसमुद्दे पसाहणं निव्वाणस्स न निउजेंति धम्मे' (स ७४४)। ३ अलंकार, भूषण (णाया १, ३, से ३, ४८)। ४ भूषण आदि की सजावट, 'भूसणपसाहणाडम्बरेहिं' (वज्जा ११८, सुपा ६६)।

पसाहय देखो पसाहग (काव)। २ सजानेवाला (भग ११, ११)।

पसाहा स्त्री [प्रशाखा] शाखा की शाखा, छोटी शाखा (णाया १, १, औप महा)।

पसाहाविअ वि [प्रसाधित] विभूषित कराया गया, सजवाया हुआ (भवि)।

पसाहि वि [प्रसाधिन्] सिद्ध करनेवाला, 'अभ्युदयपसाहिणी' (संबोध ८, ५८)।

पसाहिअ वि [प्रसाधित] अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ (से ४, ६१, पाअ)।

पसाहिल्ल वि [प्रशाखिन्] प्रशाखा-युक्त (सुर ८, १०८)।

पसिअ अक [प्र + सद्] प्रसन्न होना। पसिअ (गा ३८०, ४६६, हे १, १०१)। पसिअउ (नाट)। सकृ. पसिऊण, पसिऊण (महा, सुपा ७)।

पसिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तीर्ण, 'पसिअच्छि!' (गा ६२०, ६२३)।

पसिअ न [दे] पूग-फल, सुपारी (दे ६, ६)।

पसिंच सक [प्र + सिच्] सेचन करना। वकृ. पसिंचमाण (सुर १२, १७२)।

पसिट्ठि (दे) देखो पसढि (पाअ)।

पसिक्खअ वि [प्रशिक्षक] सीखनेवाला (गा ६२९ अ)।

पसिज्जण न [प्रसदन] प्रसन्न होना, 'अत्य-रूल्मण खणपसिज्जण अलिअवअणणिव्वंधो' (गा ६७५)।

पसिढिल देखो पसढिल (हे १, ८९, गा १३३, गउड)।

पसिण पुन [प्रश्न] १ पृच्छा, प्रश्न (सुपा ११, ४५३)। २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष (सम १२३, बृह १)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] मन्त्रविद्या-विशेष (ठा १०)। °पसिण न [°प्रश्न] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन (पव २ बृह १)।

पसिणिय वि [प्रश्नित] पूछा हुआ (सुपा १६, ६२५)।

पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] १ विख्यात, विश्रुत (महा)। २ प्रकर्ष से मुक्ति को प्राप्त, मुक्त (सिरि ५६५)।

पसिद्धि स्त्री [प्रसिद्धि] १ ख्याति (हे १, ४४)। २ शंका का समाधान आक्षेप का परिहार (अणु, चेइय ४९)।

पसिस्स देखो पसीस (विसे १४)।

पसीअ देखो पसिअ = प्र + सद्। पसीयइ, पसीयउ (कुप्र १)। सकृ पसीऊण (सण)।

पसीस पु [प्रशिष्य] शिष्य का शिष्य (पउम ४, ८६)।

पसु पुं [पशु] १ जन्तु-विशेष, सींग पूँछवाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र (कुमा, ओप)। २ अज, बकरा (अणु)। °भूय वि [°भूत] पशु-तुल्य (सूअ १, ४, २)। °मेह पु [°मेध] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ (पउम ११, १२)। °वइ पुं [°पति] महादेव, शिव (गा १, सुपा ३१)।

पसुत्त वि [प्रसुप्त] सोया हुआ (हे १, ४४, प्राप्र, णाया १, १६)।

पसुत्ति स्त्री [प्रसुप्ति] कुष्ठ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता (राज)। देखो पसूइ।

पसुत्र (अप) देखो पसु (भवि)।

पसुहत्त पु [दे] वृक्ष, पेड़ (दे ६, २९)।

पसू सक [प्र + सू] जन्म देना, प्रसव करना। वकृ. पसूअमाण (गा १२३)। सकृ. पसूइत्ता (राज)।

पसू वि [प्रसू] प्रसव-कर्ता, जन्म-दाता (मोह २६)।

पसूअ न [दे] पुष्प, फूल (दे ६, ९, पाअ, भवि)।

पसूअ वि [प्रसूत] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो (णाया १, ७, उव, प्रासू १५९)। २ देखो पसविय (महा)।

पसूअण न [प्रसवन] जन्म-दान (सुपा ४०३)।

पसूइ स्त्री [प्रसूति] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति (पउम २१, ३४, प्रासू १२८)। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का असंवेदन, चमड़ी का मर जाना (पिंड ६००)। °रोग पु [°रोग] रोग-विशेष (सम्मत्त ५८)।

पसूइय पु [प्रसूतिक] वातरोग-विशेष (सिरि ११७)।

पसूण न [प्रसून] फूल, पुष्प (कुमा, सण)।

पसेअ पु [प्रस्वेद] पसीना (दे ६, १)।

पसेढि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर श्रेणि—पंक्ति (पि ६६, राय)।

पसेण पु [प्रसेन] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

पसेणइ पु [प्रसेनजित्] १ कुलकर-पुरुष-विशेष (पउम ३, ५५, सम १५०)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)।

पसेणि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर जाति, 'अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ' (णाया १, १—पत्र ३७)।

पसेयग देखो पसेवय (राज)।

पसेव सक [प्र + सेव्] विशेष सेवा करना। वकृ पसेवमाण (श्रु ५५)।

पसेवय पु [प्रसेवक] कोथला, थैला, 'ण्हाविय-पसेवओव्व उरंसि लंबति दोवि तस्स थणया' (उवा)।

पसेविआ स्त्री [प्रसेविका] थैली, कोथली (दे ५, २५)।

पस्स सक [दृश्] देखना। पस्सइ (षड्, प्राकृ ७१)। वकृ. **पस्समाण** (आचा, औप, वसु, विपा १, १)। कृ. **पस्स** (ठा ४, ३)।

पस्स (शौ) देखो **पास** = पार्श्व (अभि १८६, अवि २६, स्वप्न ३६)।

पस्स देखो **पस्स** = दृश्।

पस्सओहर वि [पश्यतोहर] देखते हुए चोरी करनेवाला, सुनार, उचक्का, 'नणु एसो पस्सओहरो तेणो' (उप ७२८ टी)।

पस्सि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (पण्ण ३०)।

पस्सेय देखो **पसेअ** (सुख २, ८)।

पह वि [प्रह्व] १ नम्र। २ विनीत। ३ आसक्त (प्राकृ २४)।

पह पु [पथिन्] मार्ग, रास्ता (हे १, ८८, पाअ, कुमा, श्रा २८, त्रिमे १०५२, कप्प, औप)। °**देसय** वि [°देशक] मार्ग-दर्शक (पउम ६८, १७)।

पहएल्ल पु [दे] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६, १८)।

पहकर देखो **पभकर** (उत्त २३, ७६, सुख २३, ७८, इक)।

पहंकरा देखो **पभंकरा** (इक)।

पहंजण पु [प्रभञ्जन] १ वायु, पवन (पाअ)। २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (सुपा ४०)। ३ एक राजा (भवि)।

पहकर [दे] देखो **पहयर** (णाया १, १, कप्प, औप, उप पृ ४७, विपा १, १, राय, भग ६, ३३)।

पहट्ठ वि [दे] १ दृप्त, उद्धत (दे ६, ६, षड्)। २ अचिरतर दृष्ट, थोडे ही समय के पूर्व देखा हुआ (षड्)।

पहट्ठ वि [प्रहृष्ट] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त (औप, भग)।

पहण सक [प्र + हन्] मार डालना। पहणइ, पहणे (महा, उत्त १८, ४६)। कर्म पहणिज्जइ (महा)। वकृ. **पहणत** (पउम १०५, ६५)। कवकृ. **पहम्मत, पहम्ममाण** (पि ५४०, सुर २, १४)। हेकृ पहणिउ, पहणेउ (कुप्र २५, महा)।

पहण न [दे] कुल, वंश (दे ६, ५)।

पहणि स्त्री [दे] संमुखागत का निरोध, सामने आए हुए का अटकाव (दे ६, ५)।

पहणिय देखो **पहय** = प्रहत (सुपा ४)।

पहत्थ पुं [प्रहस्त] रावण का मामा (से १२, ५५)।

पहद वि [दे] सदा दृष्ट (दे ६, १०)।

पहम्म सक [प्र + हम्म्] प्रकर्ष से गति करना। पहम्मइ (हे ४, १६२)।

पहम्म न [दे] १ सुर-खात, देव-कुण्ड (दे ६, ११)। २ खात-जल, कुण्ड। ३ विवर, छिद्र (से ६, ४३)।

पहम्मत, **पहम्ममाण** } देखो **पहण** = प्र + हन्।

पहय वि [प्रहत] १ घृष्ट, घिसा हुआ (से १, ५८, बृह १)। २ मार डाला गया, निहत (महा)।

पहय वि [प्रहृत] जिन पर प्रहार किया गया हो वह, 'पहया अहिमनियजलेण' (महा)।

पहयर पु [दे] निकर समूह, यूथ (दे ६, १५, जय १३, पाअ)।

पहर सक [प्र + हृ] प्रहार करना। पहरइ (उव)। वकृ. **पहरत** (महा)। संकृ **पहरिऊण** (महा)। हेकृ **पहरिउ** (महा)।

पहर पुं [प्रहार] १ मार, प्रहार (हे १, ६८, षड्, प्राप्र, सक्षि २)। २ जहां पर प्रहार किया हो वह स्थान (से २, ४)।

पहर पु [प्रहर] तीन घटे का समय (गा २८, ३१, पाअ)।

पहरण न [प्रहरण] १ अस्त्र, आयुध (आचा, औप, विपा १, १, गउड)। २ प्रहार-क्रिया (से ३, ३८)।

पहराइया देखो **पहाराइया** (पण्ण १—पत्र ६४)।

पहराय पु [प्रभराज] भरतक्षेत्र का छठवां प्रतिवासुदेव (सम १५४)।

पहरिअ वि [प्रहृत] १ प्रहार करने के लिए उद्यत (सुर ६, १२६)। २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह (भवि)।

पहरिस पु [प्रहर्ष] आनन्द, खुशी, 'आमोओ पहरिसो तोसो' (पाअ, सुर ३, ४०)।

पहलादिद (शौ) वि [प्रह्लादित] आनन्दित (स्वप्न १०६)।

पहल्ल अक [घूर्ण्] घूमना, काँपना, डोलना, हिलना। पहल्लइ (हे ४, ११७, षड्)। वकृ **पहल्लत** (सुर १, ६६)।

पहल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] घूमनेवाला, डोलता (कुमा, सुपा २०४)।

पहव अक [प्र + भू] १ उत्पन्न होना। २ समर्थ होना। पहवइ (पचा १०, १०, स ७०, सक्षि ३६)। भवि पहविस्स (पि ५२१)। वकृ **पहवत** (नाट—[illegible])।

पहव पु [प्रभव] उत्पत्ति-स्थान (अभि ४१)।

पहव देखो **पहाव** = प्रभाव (स ६३७)।

पहव देखो **पह** = प्रह्व (विसे ३००८)।

पहव पु [प्रभव] एक जैन महर्षि (कुमा)।

पहविअ वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'मणिकुट्टलाणुभावा सत्थ नो पहविय नरिंदस्स' (सुपा ६१५)।

पहस अक [प्र + हस्] १ हसना। २ उपहास करना। पहसइ (भवि, सण)। वकृ **पहसत** (सण)।

पहसण न [प्रहसन] १ उपहास, परिहास। २ नाटक का एक भेद, हास्य-रस प्रधान नाटक रूपक-विशेष, पहसणप्पाय कामसत्थ-वयणं' (स ७१३, १७७, हास्य ११६)।

पहसिय वि [प्रहसित] १ जो हसने लगा हो (भग)। २ जिसका उपहास किया हो वह (भवि)। ३ न हास्य (बृह १)। ४ पु पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र (पउम १५, ५६)।

पहा सक [प्र + हा] १ त्याग करना। २ अक कम होना, क्षीण होना, 'पहेज्ज लोहं' (उत्त ४, १२, पि ५६६)। वकृ **पहिज्जमाण, पहेज्जमाण** (भग, राज)। संकृ **पहाय, पहिऊण** (आचा १, ६, १, १, बव ३)।

पहा स्त्री [प्रथा] १ रीति, व्यवहार। २ ख्याति, प्रसिद्धि (षड्)।

पहा स्त्री [प्रभा] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति (औप, पाअ, सुर २, २३५, कुमा, चेइय ५१४)। °**मंडल** देखो **भामंडल** (पउम ३०, ३२)। °**यर** पु [°कर] १ सूर्य, रवि। २ रामचन्द्र के भाई भरत से साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजर्षि (पउम ८५, ५)। °**वई** स्त्री

[°वती] आठवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [प्र + आटय्] इधर उधर भमाना, घुमाना। पहाडति (सूअनि ७० टी)।

पहाण वि [प्रधान] १ नायक, मुखिया, मुख्य, 'अवगन्नइ सव्वेवि हु पुरप्पहाणेवि' (सुपा ३०८) 'तत्थत्थि वणिप्पहाणो सेट्ठी वेसमणनामओ' (सुपा ६१९)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन (सुर १, ४८, महा, कुमा, पचा ६, १२)। ३ स्त्रीन प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था, 'ईसरए वडे लोए पहाणाइ तहावरे' (सूअ १, १, ३, ६)। ४ पु सचिव, मन्त्री (भवि)।

पहाण पु [पाषाण] पत्थर (चउप्पन्न०)।

पहाण न [प्रहाण] अपगम, विनाश (धर्मसं ८७५)।

पहाणि स्त्री [प्रहाणि] ऊपर देखो (उत्त ३, ७, उप ९८६ टी)।

पहाम सक [प्र + भ्रमय्] फिराना घुमाना। कवकृ पहामिज्जंत (से ७, ६६)।

पहाय देखो पहा = प्र + हा।

पहाय न [प्रभात] १ प्रातःकाल, सवेरा (गउड, सुपा ३६, ६०२)। २ वि प्रभा-युक्त (से ६, ४४)।

पहाव देखो पहाव = प्रभाव (हे ४, ३४१, हास्य १३२, भवि)।

पहाया देखो वाहाया (अनु)।

पहार सक [प्र + धारय्] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका पहारिंसु, पहारत्था, पहारिंसु (सूअ २, ७, ३६ आप, पि ५१७, सूअ २, १, २०)। वकृ पहारेमाण (सूअ २, ४, ४)।

पहार देखो पहर = प्रहार (पाअ हे १, ६८)।

पहाराइआ स्त्री [प्रहारातिगा] लिपि-विशेष (सम ३५)।

पहारि वि [प्रहारिन्] प्रहार करनेवाला (सुपा २१५, प्रासू ९८)।

पहारिय वि [प्रहारित] जिस पर प्रहार किया गया हो वह (स ५६८)।

पहारिय वि [प्रधारित] विकल्पित, चिन्तित (राज)।

पहारेत्तु वि [प्रधारयितृ] चिन्तन करनेवाला, 'अहाकम्मे अणवज्जेत्ति मणं पहारेत्ता भवति' (भग ५, ६)।

पहाव सक [प्र + भावय्] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहावइ (सण)। सकृ. पहाविऊण (सण)।

पहाव (अप) अक [प्र + भू] समर्थ होना। पहावइ (भवि)।

पहाव पु [प्रभाव] १ शक्ति, सामर्थ्य, 'तुम च तेतलिपुत्तस्स पहावेण' (णाया १, १४, अभि ३८)। २ कोप और दण्ड का तेज। ३ माहात्म्य, 'तायपहावओ चेव मे अविग्घं भविस्सइ त्ति' (स २६०, गउड)।

पहावणा देखो पभावणा (कुप्र २८४)।

पहाविअ वि [प्रधावित] दौड़ा हुआ (स ५८४, गा ५३५, गउड)।

पहाविर वि [प्रधावितृ] दौड़नेवाला (वज्जा ६२, गा २०२)।

पहास सक [प्र + भाष्] बोलना। पहासई (सुख ४, ६), 'नाऊण चुन्निय त पहिट्ठहियया पहासई पावा' (महा)।

पहास अक [प्र + भास्] चमकना, प्रकाशना। वकृ पहासत (सार्ध ५६)।

पहास पु [प्रहास] अट्टहास आदि विशेष हास्य (दस १०, ११)।

पहासा स्त्री [प्रहासा] देवी-विशेष (महा)।

पहिअ वि [पान्थ, पथिक] मुसाफिर (हे २, १५२, कुमा, पड्, उत्त, गउड)। °साला स्त्री [°शाला] मुसाफिरखाना, धर्मशाला (धर्मवि ७०, महा)।

पहिअ वि [प्रथित] १ विस्तृत। २ प्रसिद्ध, विख्यात (औप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा एक लंका-पति (पउम ५, २६२)।

पहिअ वि [प्रहित] भेजा हुआ, प्रेषित (उप पृ ४५, ७६८ टी, धम्म ६ टी)।

पहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो पहा = प्र + हा।

पहिसय वि [प्रहिंसक] हिंसा करनेवाला (ओघ ७५३)।

पहिज्जमाण देखो पहा = प्र + हा।

पहिट्ठ देखो पहट्ठ = प्रहृष्ट (औप, सुर ३, २४८, सुपा ६३, ४३७)।

पहिर सक [परि + धा] पहिरना, पहनना। पहिरइ, पहिरति (भवि, धर्मवि ७)। कर्म. पहिरिज्जइ (सबोध १४)। वकृ पहिरंत (सिरि ६८)। सकृ. पहिरिउ (धर्मवि १५)। प्रयो सकृ पहिरावेऊण, पहिराविऊण (सिरि ४५६, ७७०)।

पहिरावण न [परिधापन] १ पहिराना। २ पहिरावन, भेंट मे—इनाम मे दिया जाता वस्त्रादि, गुजराती मे—'पहिरामणी' (श्रा २८)।

पहिराविय वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, भवि)।

पहिरिय वि [परिहित] पहिरा हुआ, पहना हुआ (सम्मत्त २१८)।

पहिल वि [दे] पहला, प्रथम (सजि ४७, भवि, पि ४४९)। स्त्री °ली (पि ४४९)।

पहिल्ल अक [दे] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ (पिंग)। सकृ पहिल्लिअ (पिंग)।

पहिल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] खूब हिलनेवाला, अत्यन्त हिलता (सम्मत्त १८७)।

पहिवी देखो पुहवी = पृथिवी (नाट)।

पहीण वि [प्रहीण] १ परिक्षीण (पिंड ६३१, भग)। २ भ्रष्ट, स्खलित (सूअ २, १, ६)।

पहु पु [प्रभु] १ परमेश्वर, परमात्मा (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र (वसु)। ३ स्वामी, मालिक (सुर ४, १५६)। ४ वि समर्थ, शक्तिमान, 'दाण दरिद्दस्स पहुस्स खती' (प्रासू ४८)। ५ अधि-पति, मुखिया, नायक (हे ३, ३८)।

°पहुइ देखो °पभिइ (कप्पू)।

पहुई देखो पुहवी (पड्)।

पहुक पु [पृथुक] खाद्य पदार्थ विशेष, चिउडा (दे ६, ४४)।

पहुच्च अक [प्र + भू] पहुँचना। पहुच्चइ (हे ४, ३९०)। वकृ पहुच्चमाण (ओघ ४०५)।

पहुट्ट देखो पप्फुट्ट। पहुट्टइ (कप्पू)।

पहुडि देखो पाभइ (हे १, १३१, ती १०, पड्)।

पहुण पु [प्राघुण] अतिथि मेहमान (उप ९०२)।

पहुणाइय न [प्राघुण्य] आतिथ्य, अतिथि-सत्कार, 'ण्हाणभोयणवत्थाहरणदाणाइण्पहु-णाडि (? इ)य सपाडेइ' (रंभा)।

पहुत्त वि [प्रभूत] १ पर्याप्त, काफी, 'पजत्त च पहुत्तं' (पाअ, गउड, गा २७७)। २ समर्थ (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ (ती १५)।

पहुदि देखो पभिइ (संक्षि ४, प्राकृ १२)।

पहुप्प } अक [प्र+भू] १ समर्थ होना, पहुव } सकना। २ पहुँचना। पहुप्पइ (हे ४,६३, प्राकृ ६२), 'एयाओ वालियाओ निय-नियगेहेसु जह पहुप्पंति तह कुणह' (सुपा २५०)। पहुप्पामो (काल), पहुप्पिरे (हे ३, १४२)। वकृ 'किं महइ कोवि कम्सवि पाअ-पहारं पहुप्पंतो', पहुप्पमाण (गा ७, ओघ ५०५, किरात १६)। कवकृ. पहुव्वंत (से १४, २५, वव १०)। हेकृ. पहुविउ (महा)।

पहुवी स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती (नाट—मालती ७२)। °पहु पु [°प्रभु] राजा (हम्मीर १७)। °वइ पुं [°पति] वही अर्थ (हम्मीर १३)।

पहुव्वंत देखो पहुप्प।

पहूअ वि [प्रभूत] १ बहुत, प्रचुर (स ४५६)। २ उद्‍गत। ३ भूत। ४ उन्नत (प्राकृ ६२)।

पहेज्जमाण देखो पहा = प्र + हा।

पहेण न [दे] वधू को ले जाने पर पिता के घर दी जाती जमीन (आचा २, १, ४, १)।

पहेण | न [दे] १ भोजनोपायन, खाद्य पहेणग | वस्तु की भेंट (आचा, सूअ २, १, पहेणय | ५६, गा ३२८,६०३, पिंड ३३५, पाअ, दे ६, ७३)। २ उत्सव (दे ६, ७३)।

पहेरक न [प्रहेरक] आभरण-विशेष (पणह २, ५—पत्र १४६)।

पहेलिया स्त्री [प्रहेलिका] गूढ आशयवाली कविता (सुपा १५५, औप)।

पहोअ सक [प्र + धाव्] प्रक्षालन करना, धोना। पहोएज्ज (आचा २, २, १, ११)।

पहोइ वि [प्रधाविन्] धोनेवाला (दस ४, २६)।

पहोइअ वि [दे] १ प्रवर्त्तित। २ प्रभुत्व (दे ६, २६)।

पहोड सक [वि + लुल्] हिलोरना, अन्दो-लना। पहोडइ (धात्वा १४४)।

पहोयण स्त्रीन [प्रधावन] प्रक्षालन, 'दंतपहो-यण य' (दस ३, ३)।

पहोलिर वि [प्रघूर्णितृ] हिलनेवाला, डोलता (गा ७८, ६६६, से ३, ४६, पाअ)।

पहोव देखो पधोव। पहोवाहि (आचा २, १, ६, ३)।

पा सक [पा] पीना, पान करना। भवि पाहिसि, पाहामि, पाहामो (कप्प, पि ३१५, कम)। कर्म. पिज्जइ (उव), पीअति (पि ५३९)। कवकृ पिज्जंत (गउड, कुप्र १२०)। पीयमाण (स ३८२), पेत (अप) (सण)। सकृ पाऊण, पाऊण (नाट—मुद्रा ८६, गउड, कुप्र ६२)। हेकृ पाउ, पायए (आचा)। कृ पायव्व, पिज्ज (सुपा ४३८, पण्ह १, २, कुमा २, ६), पेअ, पेयव्व (कुमा, रयण ६०), पेज्ज (णाया १, १, १७, उवा)।

पा सक [पा] रक्षण करना। पाइ, पाअइ (विसे ३०२५, हे ४, २४०), पाउ (पिंग)।

पा सक [घ्रा] सूँघना, गन्ध लेना। पाइ, पाअइ (प्राप्र ८, २०)।

पाइ वि [पातिन्] गिरनेवाला (पचा ५, २०)।

पाइ वि [पायिन्] पीनेवाला (गा ५६७, हि ६)।

पाइअ न [दे] वदन विस्तार, मुँह का फेलाव (दे ६, ३६)।

पाइअ देखो पागय = प्रकृत (दे १, ४, प्राकृ ८, प्रासू १, वज्जा ८, पाअ, पि ५३), 'अह पाइआओ भासाओ' (कुमा १, १)।

पाइअ वि [पायित] पिलाया हुआ, पान कराया हुआ (कुप्र ७६, सुपा १३०, स ४५४)।

पाइत देखो पाय = पायय्।

पाइक्क पु [पदाति] प्यादा, पैर से चलनेवाला सैनिक (हे २, १३८, कुमा)।

पाइडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र (गा २३८)।

पाइण देखो पाईण (पि २१५ टि)।

पाइत्ता (अप) स्त्री [पवित्रा] छन्द-विशेष (पिंग)।

पाइद [शौ] वि [पाचित] पकवाया हुआ (नाट—चैत १२६)।

पाइन्न देखो पाईण (णंदि ४६)।

पइभ न [प्रातिभ] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष (कुप्र १५५)।

पाइम वि [पाक्य] १ पकाने योग्य। २ काल-प्राप्त, मृत (दस ७, २२)।

पाइम वि [पात्य] गिराने योग्य (आचा २, ४, २, ७)।

पाई स्त्री [पात्री] १ भाजन विशेष (णाया १, १ टी)। २ छोटा पात्र (सूअ २, २, ५८)।

पाईण वि [प्राचीन] १ पूर्वदिशा-सम्बन्धी, 'ववहार-पाइणाई (? ईणाइ)' (पिंड ३६, कप्प मम १०४)। २ न गोत्र विशेष। ३ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न, 'थेरे अज्जभद्द-बाहू पाईणसगोत्ते (कप्प)।

पाईणा स्त्री [प्राचीना] पूर्व दिशा (सूअ २, २, ५८, ठा ६—पत्र ३५६)।

पाउ देखो पाउ = प्रादुस् (सूअ २, ६, ११ उवा)।

पाउ पु [पायु] गुदा, गांड (ठा ६—पत्र ४५० सण)।

पाउ पुस्त्री [दे] १ भक्त, भात, भोजन। २ इक्षु, ऊख (दे ६, ७५)।

पाउअ न [दे] १ हिम, अवश्याय (दे ६, ३८)। २ भक्त। ३ इक्षु (दे ६, ७५)।

पाउअ देखो पाउड = प्रावृत (गा ५२०, स ३५०, ओप, सुर ६, ८, पाअ, हे १ १३१)।

पाउअ देखो पागय (गा २, ६६८, प्राप्र कप्पू, पिंग)।

पाउआ स्त्री [पादुका] १ खड़ाऊँ, काष्ठ का जूता (भग, सुम २ २६, पिंड ५७२)। २ जूता, पगरखी (सुपा २५८, औप)।

पाउ देखो पा = पा।

पाउं अ [प्रादुस्] प्रकट व्यक्त 'नंनि असंति करिस्सामि पाउं' (सूअ १, १, २, १)।

पाउछण } न [प्रादप्रोञ्छन, °क] जेन
पाउछणग } मुनि का एक उपकरण, रजोहरण (पव ११२ टी, ओघ ६३०, पचा १७, १२)।

पाउक्कर सक [प्रादुस् + कृ] प्रकट करना। भवि पाउकरिस्सामि (उत्त ११, १)।

पाउक्कर वि [प्रादुष्कर] प्रादुर्भावक (सूअ १, १५, २५)।

पाउक्करण न [प्रादुष्करण] १ प्रादुर्भाव। २ वि जो प्रकाशित किया जाय वह। ३ जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा, 'पक्खिणपाउकरणपामिच्चं' (पराह २, ५—पत्र १४८)।

पाउकाम वि [प्रादुष्काम] पीने की इच्छा वाला, 'त जो ण णवियाए माउयाए दुद्ध पाउकामे से ण निग्गच्छउ' (णाया १, १८)।

पाउग्ग वि [दे] मार्गीकृत, मार्गित (दे ६ ४१)।

पाउकरण देखो पाउक्करण (राज)।

पाउक्खालय न [दे पायुक्षालक] १ पाखाना टट्टी मलोत्सर्ग-स्थान, 'ठाइ चेव एसा पाउक्खालयम्मि रयणीए' (स २०५, भत ११२)। २ मलोत्सर्ग क्रिया, 'रयणीए पाउक्खालयनिमित्तमुट्ठिओ' (स २०५)।

पाउग्ग वि [दे] सभ्य सभासद (दे ६, ४१, णाए)।

पाउग्ग वि [प्रायोग्य] उचित, लायक (सुर १५, २३३)।

पाउग्गह पु [पतद्ग्रह] पात्र (आचानि २८८)।

पाउग्गिअ वि [दे] १ जुआ खेलनेवाला। २ नाट, सहन किया हुआ (दे ६, ४१, पाग)।

पाउड देखो पागय (प्राकृ १२, मुद्रा १२०)।

पाउड वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (सूअ १, ४, २, २२)। २ वस्त्र, कपड़ा (ठा ५ १)।

पाउण सक [प्र + वृ] आच्छादित करना, पहिनना। पाउणइ (पिंड ३०)। सकृ 'पड पाउणिऊण ति णिग्गओ' (महा)।

पाउण सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पाउण- (भग)। पाउणति (औप सूअ १, ११, २१)। पाउणेज्जा (आचा २,३,१,११) भवि पाउणिस्सामि, पाउणिहिइ (पि ५३१, उवा)। सकृ पाउणित्ता (औप, णाया १, १, विपा २,१, कप्प, उवा)। हेकृ पाउणित्तए (आचा २, ३, २, ११)।

पाउण (अप) देखो पावण = पावन (पिंग)।

पाउत्त देखो पउत्त = प्रयुक्त (औप)।

पाउप्पभाय वि [प्रादुष्प्रभात] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त 'कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए' (णाया १ १, भग)।

पाउब्भव अक [प्रादुस् + भू] प्रकट होना। पाउब्भवइ (पव ४०)। भूका पाउब्भवित्था (उवा)। वकृ पाउब्भवत, पाउब्भवमाण (सुपा ६, कुप्र २६, णाया १, ५)। सकृ पाउब्भवित्ताण (उवा, औप)। हेकृ पाउब्भवित्तए (पि ५७८)।

पाउब्भव वि [पापोद्भव] पाप से उत्पन्न (उप ७६८ टी)।

पाउब्भवणा स्त्री [प्रादुर्भवन] प्रादुर्भाव (भग ३, १)।

पाउब्भुय (अप) नीचे देखो (नण)।

पाउब्भूय वि [प्रादुर्भूत] १ उत्पन्न, सजात। २ प्रकटित (ओप भग, उवा, विपा १, १)।

पाउरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (सूअनि ८६, हे १ १७५, पचा ५, १०, पव ४, षड्)।

पाउरण न [दे] कवच, वर्म (षड्)।

पाउरणी स्त्री [दे] कवच, वर्म (दे ६, ४३)।

पाउरिअ देखो पाउड = प्रावृत (कुप्र ४५२)।

पाउल वि [पापकुल] हलके कुल का, जघन्य कुल मे उत्पन्न, 'दवाविय पाउलाण दविण-जाय' (स ६२६), 'कलमद्दपउरपाउलमगल-सगीयपवरपक्खणय' (सुर १०, ५)।

पाउल्ल न देखो पाउआ, 'पाउल्लाइ सकमट्ठाए' (सूअ १, ४, २, १५)।

पाउव न [पादोद] पाद-प्रक्षालन-जल, 'पाउवदाइ च ण्हाणुवदाइ च' (णाया १, ७—पत्र ११७)।

पाउस पु [प्रावृष] वर्षा ऋतु (हे १, १६, प्राप्र, महा)। °कीड पु [°कीट] वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे)। °गम पु [°गम] वर्षा-प्रारम्भ (पाअ)।

पाउसिअ वि [प्रावृषिक] वर्षा-सम्बन्धी (राज)।

पाउसिअ वि [प्रोषित, प्रवासिन्] प्रवास मे गया हुआ,
'तह मेहागमससियआगमणाए पईए मुद्धाओ।
मग्गमवलोयमाणीउ नियइ पाउसियदइयाओ।' (सुपा ७०)।

पाउसिआ स्त्री [प्राद्वेषिकी] द्वेष—मत्सर से होनेवाला कर्म बन्ध (सम १०, ठा २, १, भग, नव १७)।

पाउहारी स्त्री [दे पाकहारी] भक्त को लानेवाली, भात-पानी ले आनेवाली (गा ६६४ अ)।

पाए अ [दे] प्रभृति, (वहा से) शुरु करके (ओघ १६६, बृह १)।

पाए सक [पायय्] पिलाना। पाएइ (हे ३, १४६)। पाएज्जाह (महा)। वकृ पाइत, पायग्त (सुर १३, १३४, १२, १७१)। सकृ. पाएत्ता (श्राक ३०)।

पाए सक [पादय्] गति कराना। पाएइ (हे ३, १४६)।

पाए सक [पाचय्] पकवाना। पाएइ (हे ३, १४९)। कर्म. पाइज्जइ (श्रावक २००)।

पाएण } अ [प्रायेण] बहुत करके, प्राय
पाएण } (विसे ११६६, काल, कप्प, प्रासू ४३)।

पाओ अ [प्रायस्] ऊपर देखो (श्रा २७)।

पाओ अ [प्रातम्] प्रात काल, प्रभात (मुज्ज १, ६, कप्प)।

पाओकरण देखो पाउक्करण (पिंड २९८)।

पाओग देखो पाउग्ग (सूअनि ६५)।

पाओगिअ वि [प्रायोगिक] प्रयत्न-जनित, अस्वाभाविक (चेइय ३५३)।

पाओग्ग देखो पाउग्ग (भास १०, धर्मसं ११८०)।

पाओपगम न [पादपोपगम] देखो पाओ-वगमण (वव १०)।

पाओयर पु [प्रादुष्कार] देखो पाउकरण (ठा ३, ४, पचा १३, ५)।

पाअ वगमण न [पादपोपगमन] अनशन-विशेष, मरण विशेष (सम ३३, औप, कप्प, भग)।

पाओवगग वि [पादपोपगत] अनशन-विशेष से मृत (औप, कप्प, अत)।

पाओस पुं [दे. प्रद्वेष] मत्सर, द्वेष (ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पाओसिय देखो पाओसिय (ओघ ६६२)।

पाओसिया देखो पाउसिआ (धर्म ३)।

पाउविअ वि [दे] जलार्द्र, पानी से गीला (दे ६, २०)।

पाडु देखो पडु (पत्र २४७)। °सुअ पुं [°सुत] अभिनय का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

पाक देखो पाग (कप्प)।

पाकम्म न [प्राकाम्य] योग की आठ सिद्धियो में एक सिद्धि, 'पाकम्मगुणेण मुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरइ' (कुप्र २७७)।

पाकार पु [प्राकार] किला, दुर्ग (उप पृ ८४)।

पाकिद (शौ) देखो पागय (प्रयौ २४, नाट—वेणी ३८, पि ५३, ८२)।

पाखड देखो पासड (पि २६५)।

पाग पुं [पाक] १ पचन-क्रिया (औप, उवा, सुपा ३७४)। २ दैत्य-विशेष (गउड)। ३ विपाक, परिणाम (धर्मसं ६६५)। ४ बलवान् दुश्मन (आवम)। °सासण पु [°शासन] इन्द्र, देव-पति (हे ४, २६५, गउड, पि २०२)। °सासणी स्त्री [°शासनी] इन्द्रजाल-विद्या (सूअ २, २, २७)।

पागइअ वि [प्राकृतिक] १ स्वाभाविक। २ पु. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक (पव ६१)।

पागड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना। वकृ. पागडेमाण (ठा ३, ४—पत्र १७१)।

पागड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला (उत्त ३६, ४२, औप, उव)।

पागडण न [प्रकटन] १ प्रकट करना। २ वि प्रकट करनेवाला (धर्मसं ८२६)।

पागडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (उव, औप)।

पागड्ढि } वि [प्राकर्षिन्, °क] १ अग्र-
पागड्ढिक } गामी, 'पागड्ढी (? ड्ढी) पट्ठवए जूहवई' (णाया १, १)। २ प्रवर्त्तक, प्रवृत्ति करानेवाला (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

पागब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढिठाई (सूअ १, ५, १, ५)।

पागब्भि } वि [प्रागल्भिन्, °क] धृष्टता-
पागब्भिय } वाला, धृष्ट, ढीठ (सूअ १,५,१, ५, २, १, १८)।

पागय वि [प्राकृत] १ स्वाभाविक, स्वभाव-सिद्ध। २ आर्यावर्त्त की प्राचीन लोक-भाषा, 'सक्कया पागया चेव' (ठा ७—पत्र ३९३, विसे १४६६ टी, रयण ६४, सुपा १)। ३ पु साधारण बुद्धिवाला मनुष्य, सामान्य लोग, 'जेसिं णामागोत्तं न पागता पण्णवेहिंति' (सुज्ज १९), 'किंतु महामइगम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स' (चेइय २५६, सुर २, १३०)। °भासा स्त्री [°भाषा] प्राकृत भाषा (श्रा २३)। °वागरण न [°व्याकरण] प्राकृत भाषा का व्याकरण (विसे ३४५५)।

पागार पु [प्राकार] किला, दुर्ग (उव, सुर ३, ११४)।

पाजावच्च पु [प्राजापत्य] १ वनस्पति का अधिष्ठाता देव। २ वनस्पति (ठा ५, १—पत्र २९२)।

पाटप (चूपै) देखो वाडव (षड्)।

पाठीण देखो पाढीण (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पाड देखो फाड = पाट्य, 'असिपत्तधणूहि पाडति' (सूअनि ७९)।

पाड सक [पातय्] गिराना। पाडेइ (उव)। सक पाडिअ, पाडिऊण (काप्र १९६, कुप्र ४६)। कवकृ. पाडिज्जंत (उप ३२० टी)।

पाड देखो पाडय = पाटक, 'तो सो दिट्ठट्ठाणे सय गओ वेसपाडम्मि' (सुपा ५३०)।

पाडच्चर वि [दे] आसक्त चित्तवाला (दे ६, ३४)।

पाडच्चर पुं [पाटच्चर] चोर, तस्कर (पाअ, दे ६, ३४)।

पाडण न [पाटन] विदारण (आव ६)।

पाडण न [पातन] १ गिराना, पाडना (सूअनि ७२)। २ परिभ्रमण, इधर-उधर घूमना, 'लहुजढरपिढरपडियारपाडणत्ताए कयकीलो' (कुमा २, ३७)।

पाडणा स्त्री [पातना] ऊपर देखो (विपा १, १—पत्र १६)।

पाडय पुं [पाटक] मुहल्ला, रथ्या, 'चडाल-पाडए गतु' (धर्मवि १३८, विपा १, ८, महा)।

पाडय वि [पातक] गिरानेवाला। स्त्री °डिआ (मृच्छ २४५)।

पाडल पुं [पाटल] १ वर्ण-विशेष श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग। २ वि श्वेत-रक्त वर्णवाला (पाअ)। ३ न. पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल (गा ४६६, सुर ३, ५२, कुमा)। ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाढल का फूल (गा ३०)।

पाडल पु [दे] १ हस, पक्षि-विशेष। २ वृषभ बैल। कमल (दे ६, ७६)।

पाडलसउण पु [दे] हस, पक्षि-विशेष (दे ६, ४६)।

पाडला स्त्री [पाटला] वृक्ष-विशेष, पाढल का पेड, पाडरि (गा ४५९, सुर ३, ५२, सम १५२), 'चंपा य पाडलरुक्खो जया य वसु-पुज्जपत्थिवो होइ' (पउम २०, ३८)।

पाडलि स्त्री [पाटलि] ऊपर देखो (गा ४६८)। °उत्त, °पुत्त न [°पुत्र] नगर-विशेष, पटना, जो आजकल बिहार प्रदेश का प्रधान नगर है (हे २, १५०, महा, पि २९२, चारु ३९)। °पुत्त वि [°पुत्र] पाटलिपुत्र-सबन्धी, पटना का (पव १११)। °सड न [°षण्ड] नगर-विशेष (विपा १, ७, सुपा ८३)। देखो पाडला।

पाडलिय वि [पाटलित] श्वेत-रक्त वर्णवाला किया हुआ (गउड)।

पाडली देखो पाडलि (उप पृ ३९०)। °पुर न [°पुर] पटना नगर (धर्मवि ८०)। °बुत्त न [°पुत्र] पटना नगर (षड्)।

पाडव न [पाटव] पटुता, निपुणता (धम्म १० टी)।

पाडवण न [दे] पाद-पतन, पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (दे ६, १८)।

पाडहिग } वि [पाटहिक] ढोल बजानेवाला,
पाडहिय } ढोलिया, ढोलकिया (स २१६)।

पाडहुक वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार (षड्)।

पाडिअ वि [पाटित] फाड़ा हुआ, विदारित (स ६६६)।

पाडिअ वि [पातित] गिराया हुआ (पाअ, प्रासू २, भवि)।

पाडिअग्ग पु [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।

पाडिअन्तम पु [दे] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जानेवाला (दे ६, ४३)।

पाडिआ देखो पाडय = पातक।

पाडिएक्क } न [प्रत्येक] हर एक (हे २,
पाडिक्क } २१०, कप्प, पाअ, णाया १, १६, २, १, सूअनि १२१ टी, कुमा), 'एगे जीवे पाडिक्कएण सरीरएण' (ठा १—पत्र १६)।

पाडिंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष (राय ५४)।

पाडिचरण न [प्रतिचरण] सेवा, उपासना (उप पृ ३४६)।

पाडिच्छय वि [प्रतीच्छक] ग्रहण करनेवाला (सुख २, १३)।

पाडिज्जंत देखो पाड = पातय्।

पाडिपह न [प्रतिपथ] अभिमुख, सामने (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपहिअ देखो पडिपहिअ (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (षड्)।

पाडिप्पवग पुं [पारिप्लवक] पक्षि-विशेष (पउम १४, १८)।

पाडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (हे १, ४८, २०६)।

पाडिय्रंतिअ न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष (राज)।

पाडियक्क देखो पाडिएक्क (औप)।

पाडिवय वि [प्रातिपद] १ प्रतिपत्-सबन्धी, पड़वा तिथि का, 'जह चंदो पाडिवओ पडिपुन्नो सुक्कपक्खम्मि' (उवर ६०)। २ पु एक भावी जैन आचार्य (विचार ५०६)।

पाडिवया स्त्री [प्रतिपद्] तिथि-विशेष, पक्ष की पहली तिथि पड़वा (सम २६, णाया १, १०, हे १, १५, ४४)।

पाडिवेसिय वि [प्रातिवेश्मिक] पड़ोसी स्त्री °या (सुपा ३६४)।

पाडिसार पुं [दे] १ पटुता, निपुणता। २ वि पटु, निपुण (दे ६, १६)।

पाडिसिद्धि देखो पडिसिद्धि = प्रतिसिद्धि (हे १, ४४, प्राप्र)।

पाडिसिद्धि स्त्री [दे] १ स्पर्धा (दे ६, ७७, कप्पू, कुप्र ४६)। २ समुदाचार। ३ वि. सदृश, तुल्य (दे ६, ७७)।

पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता (दे ६,४२)।

पाडिस्सुइय न [प्रातिश्रुतिक] अभिनय का एक भेद (राज)।

पाडिहत्थी } स्त्री [दे] शिरो-माल्य, मस्तक-
पाडिहत्थी } स्थित पुष्पमाला (दे ६, ४२, राज)।

पाडिहारिय वि [प्रातिहारिक] वापस देने योग्य वस्तु (विसे ३०५७, औप, उवा)।

पाडिहेर न [प्रातिहार्य] १ देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देवकृत पूजा विशेष (औप, पव ३६), 'इय सामइए भावा इहइपि नागदत्तनरनाहो। जाओ सपाडिहेरो' (सुपा ५४४)। २ देव-सान्निध्य (भत्त ६६), 'बहूण सुरेहिं कय पाडिहेर' (श्रु ६४, महा)।

पाडी स्त्री [दे] भैंस की बछिया, पाडी या पड़िया गुजराती मे 'पाडी' (गा ६५)।

पाडुकी स्त्री [दे] व्रणी—जखमवाले की पालकी (दे ६, ३६)।

पाडुगोरि वि [दे] १ विगुण, गुण-रहित। २ मद्य मे आसक्त। ३ स्त्री मजबूत वेष्टनवाली बाड़, 'पाडुगोरी च वृतिर्दीर्घं यस्या त्रिवेष्टन परित' (दे ६, ७८)।

पाडुक्क पु [दे] समालम्भन, चन्दन आदि का शरीर मे उपलेप। २ वि. पटु, निपुण (दे ६, ७६)।

पाडुच्चिय वि [प्रातीतिक] किसी के आश्रय से होनेवाला, आपेक्षिक। स्त्री °या (ठा २, १, नव १८)।

पाडुच्ची स्त्री [दे] तुरग-मण्डन, घोड़े का सिंगार (दे ६, ३६, पाअ)।

पाडुहुअ वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार (दे ६, ८२)।

पाडेक्क देखो पाडिक्क (सम्म ५५)।

पाडोस पु [दे] पड़ोस, प्रातिवेश्मिकता (श्रा २७)।

पाडोसिअ वि [दे] पड़ोसी, पड़ोसिया (सिरि ३१२, श्रा २७, सुपा ५७२)।

पाढ सक [पाठय्] पढ़ाना, अध्ययन कराना। पाढइ, पाढेइ (प्राकृ ६०, प्राप्र)। कर्म पाढिज्जइ (प्राप्र)। सकृ पाढिऊण, पाढेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ पाढिउ, पाढेउ (प्राकृ ६१)। कृ पाढणिज्ज, पाढिअव्व, पाढेअव्व (प्राकृ ६१)।

पाढ पु [पाठ] १ अध्ययन, पठन (ओघभा ७१, विसे १३८४, सम्मत्त १४०)। २ शास्त्र, आगम। ३ शास्त्र का उल्लेख, 'पाढो त्ति वा सत्थ ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ४ अध्यापन, शिक्षा (उप पृ ३०८, विसे १३८४)।

पाढ देखो पाडय = पाटक (श्रा ६३ टी)।

पाढतर न [पाठान्तर] भिन्न पाठ (श्रावक ३११)।

पाढग वि [पाठक] १ उच्चारण करनेवाला, 'पढिय मगलपाढगेहिं' (कुप्र ३२)। २ अभ्यासी, अध्ययन करनेवाला। ३ अध्यापन करनेवाला, अध्यापक, 'वत्थुपाढगा', 'सुमिणपाढगाण', 'लक्खणसुमिणपाढगाण' (धर्मवि ३३, णाया १, १, कप्प)।

पाढण न [पाठन] अध्यापन (उप पृ १२८, प्राकृ ६१, सम्मत्त १४२)।

पाढणया स्त्री [पाठना] ऊपर देखो (पचभा ४)।

पाढय देखो पाढग (कप्प, स ७, णाया १, १—पत्र २०, महा)।

पाढव वि [पार्थिव] पृथिवी का विकार, पृथिवी का, 'पाढव सरीरं हिच्चा' (उत्त ३, १३)।

पाढा स्त्री [पाठा] वनस्पति विशेष, पाढ, पाठ का गाछ (पण्ण १७)।

पाढाव सक [पाठय्] पढ़ाना, अध्यापन करना। पाढावेइ (प्राप्र)। सकृ पाढाविऊण, पाढावेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ पाढाविउ, पाढावेउ (प्राकृ ६१)। कृ पाढावणिज्ज, पाढाविअव्व (प्राकृ ६१)।

पाढावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राकृ ६०)।

पाढावण न [पाठन] अध्यापन (प्राकृ ६१)।

पाढाविअ वि [पाठित] अध्यापित (प्राकृ ६१)।

पाढाविअवत वि [पाठितवत्] जिसने पढाया हो वह (प्राकृ ६१)।

पाढाविउ } वि [पाठयितृ] पढानेवाला पाढाविर } (प्राकृ ६१, ६०)।

पाढिअ वि [पाठित] पढाया हुआ, अध्यापित (प्राप्र)।

पाढिअवंत देखो पाढाविअवत (प्राकृ ६१)।

पाढिआ स्त्री [पाठिका] पढनेवाली स्त्री (कप्पू)।

पाढिउ } वि [पाठयितृ] अध्यापक, पढाने- पाढिर } वाला (प्राकृ ६१)।

पाढीण पु [पाठीन] मत्स्य-विशेष, 'पोठिया' मछली, मत्स्य की एक जाति (गा ४१४, विक्र ३२)।

पाढोआमास पु [पृथगामर्श] बारहवें अंग-ग्रंथ का एक भाग (णंदि २३५)।

पाण सक [प्र + आनय्] जिलाना। वकृ पाणअंत (नाट—मालती ५)।

पाण पुस्त्री [दे] श्वपच, चण्डाल (दे ६, ३८, उप पृ १५४, महा, पाअ, ठा ४, ४, वव १)। स्त्री. °णी (सुख ६, १, महा)। °उडी स्त्री [°कुटी] चाण्डाल की झोपडी (गा २२७)। °विलया स्त्री [°वनिता] चाण्डाली (उप ७६८ टी)। °डंबर पुं [°डम्बर] यक्ष-विशेष (वव ७)। °हिवइ पु [°धिपति] चाण्डाल-नायक (महा)।

पाण न [पान] १ पीना, पीने की क्रिया (सुर ३, १०)। २ पीने की चीज, पानी आदि (सुज २० टी, पडि, महा, आचा)। ३ पुं गुच्छ-विशेष, 'सणपाणकासमद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य' (पण्ण १)। °पत्त न [°पात्र] पीने का भोजन, प्याला (दे) °गार न [°गार] मद्य-गृह (णाया १, २, महा)। °हार पुं [°हार] एकाशन तप (सबोध ५८)।

पाण पुंन [प्राण] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा नि श्वास (जी २६, पण्ण १, महा, ठा १, ६)। २ समय-परिमाण विशेष, उच्छ्वास-नि श्वास-परिमित काल (इक, अणु)। ३ जन्तु, प्राणी, जीव, 'पाणाणि चेव विणिहंति मंदा' (सूअ १, ७, १६, ठा ६, आचा, कप्प)। ४ जीवित, जीवन (सुपा २६२, ५८३, कप्पू)। °इत्त वि [°वत्] प्राणवाला, प्राणी (पि ६००)। °क्खय पु [°क्षय] प्राण-नाश (सुपा २६८, ६१६) °च्चाय पु [°त्याग] मरण, मौत (सुर ४, १७०)। °जाइय वि [°जातिक] प्राणी, जीव, जन्तु (आचा १, ६, १, १)। °नाह पुं [°नाथ] प्राणनाथ, पति, स्वामी (रभा)। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] स्त्री, पत्नी (सुर १, १०८)। °वह पु [°वध] हिंसा (पण्ह १, १)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] जीवन-निर्वाह (महा)। °सम पु [°सम] पति, स्वामी (पाअ)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] सूक्ष्म जन्तु (कप्प)। °हिय वि [°हृत्] प्राण-नाशक (रभा)। °इत वि [°वत्] प्राणवाला, प्राणी (प्राप्र)। °इवाइया स्त्री [°तिपातिकी] क्रिया-विशेष, हिंसा से होनेवाला कर्म-बन्ध (नव १७)। °इवाय पुं [°तिपात] हिंसा (उवा)। °उ पुन [°युस्] ग्रन्थांश विशेष, बारहवाँ पूर्व (सम २५, २६)। °पाण, °पाणु पुंन [°पान] उच्छ्वास और नि श्वास (धर्मसं १०८, ६८)। °याम पु [°याम] योगाङ्ग-विशेष—रेचक, कुम्भक और पूरक नामक प्राणों को दमने का उपाय (गउड)।

पाणंतकर वि [प्राणान्तकर] प्राण-नाशक (सुपा ६१४)।

पाणंतिय वि [प्राणान्तिक] प्राण-नाशवाला, 'पाणंतियावई पत्तु !' (सुपा ४५२)।

पाणग पुन [पानक] १ पेय-द्रव्य-विशेष (पचभा १, सुज २० टी, कप्प)। २ वि. पान करनेवाला (?), 'ण पाणगो ज ततो अण्णो' (धर्मसं ८२, ७८)।

पाणद्धि स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ६, ३६)।

पाणम अक [प्र + अण्] नि श्वास लेना नीचे सासना। पाणमति (सम २, भग)।

पाणय न [पानक] देखो पाण = पान (विसे २५७८)।

पाणय पु [प्राणत] स्वर्ग-विशेष, दसवाँ देवलोक (सम ३७, भग, कप्प)। २ विमानेन्द्रक, देवविमान विशेष (देवेन्द्र १३५)। ३ प्राणत स्वर्ग का इन्द्र (ठा ४, ४)। ४ प्राणत देवलोक मे रहनेवाला देव (अणु)।

पाणहा स्त्री [उपानह्] जूता, 'पाणहाओ य छत्त च णालीय बालवीयणं' (सूअ १, ६, १८)।

पाणाअअ पु [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, ३८)।

पाणाम पु [प्राण] नि श्वास (भग)।

पाणामा स्त्री [प्राणामी] दीक्षा-विशेष (भग ३, १)।

पाणाली स्त्री [दे] दो हाथो का प्रहार (दे ६, ४०)।

पाणि पुं [प्राणिन्] जीव, आत्मा, चेतन (आचा, प्रासू १३६, १४४)।

पाणि पुं [पाणि] हस्त, हाथ (कुमा, स्वप्न ५३, ६०)। °गहण देखो °ग्गहण (भवि)। °ग्गह पु [°ग्रह] विवाह (सुपा ३७३, धर्मवि १२३)। °ग्गहण न [°ग्रहण] विवाह, शादी (विपा १, ६, स्वप्न ६३, भवि)।

पाणिअ न [पानीय] पानी, जल (हे १, १०१, प्राप्र, पण्ह १, ३, कुमा)। °धारिया स्त्री [°धरिका] पनिहारी, 'जियसत्तुस्स रण्णो पाणियघ(? ध)रिय सद्दावेइ' (णाया १, १२—पत्र १७५)। °हारी स्त्री [°हारी] पनिहारी (दे ६, ५६, भवि)। देखो पाणीअ।

पाणिणि पुं [पाणिनि] एक प्रसिद्ध व्याकरणकार ऋषि (हे २, १४७)।

पाणिणीअ वि [पाणिनीय] पाणिनि सबन्धी, पाणिनि का (हे २, १४७)।

पाणी देखो पाण = (दे)।

पाणी स्त्री [पानी] वल्ली-विशेष, 'पाणी सामावल्ली गुंजावल्ली य वत्थाणी' (पण्ण १—पत्र ३३)।

पाणीअ देखो पाणिअ (हे १, १०१, प्रासू १०५)। °धरी स्त्री [°धरी] पनिहारी (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

पाणु पुन [प्राण] १ प्राण वायु। २ श्वासोच्छ्वास (कम्म ५, ४०, औप, कप्प)। ३ समय-परिमाण-विशेष, 'एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ। सत्त पाणूणि से थोवे' (तदु ३२)।

पात } देखो पाय = पात्र (सूत्र १, ४, २,
पात्त } पराह २, ५—पत्र १४८)। °बंधण न [°बन्धन] पात्र बांधने का वस्त्र-खराड, जैन-मुनि का एक उपकरण (पराह २, ५)।

पाद देखो पाय = पाद (विपा १, ३)। °सम वि [°सम] गेय-विशेष (ठा ७—पत्र ३९४)। °ोट्ठपय न [°ौष्टपद] दृष्टिवाद नामक बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८)।

पादु° देखो पाउ = प्रादुस्। पादुरेसए (पि ३४१)। पादुरकासि (सूत्र १, २, २, ७)।

पादो देखो पाओ = प्रातस् (सुज्ज १, ६)।

पादोसिय वि [प्रादोषिक] प्रदोष-काल का, प्रदोष-सम्बन्धी (ओघ ६५८)।

पादव देखो पायव (गा ५३७ अ)।

पाधन्न देखो पाहन्न (धर्मसं ७८६)।

पाधार सक [प्र + आ + गम् , पाद + धारय्] पधारना 'पाधारह निग्रगेहे' (श्रा १६)।

पाबद्ध वि [प्राबद्ध] विशेष बँधा हुआ, पाशित (निचू १६)।

पाभाइय } वि [प्राभातिक] प्रभात-
पाभातिय } सम्बन्धी (ओघभा ३११, अनु ६, धर्मवि ५८)।

पाम सक [प्र + आप्] प्राप्त करना, गुजराती में 'पामवु'।
'कारावेइ पडिमं जिणाण जिअरोगदोसमोहाणं। सो अन्नभवे पामइ भवमलणं धम्मवररयणं॥' (रयण १२)। कर्म पामिज्जइ (सम्मत्त १४२)।

पामण्ण न [प्रामाण्य] प्रमाणता, प्रमाणपन (धर्मसं ७५)।

पामद्दा स्त्री [दे] दोनों पैर से धान्य-मर्दन (दे ६, ४०)।

पामन्न देखो पामण्ण (निसि १४६६, चेइय १२४)।

पामर पुं [पामर] कृषीवल, कर्षक, खेती का काम करनेवाला गृहस्थ 'पामरगहवइसेआणकासया दोणया हलिआ' (पाअ, वज्जा १३४, नाट्ट, दे ६, ४१, सुर १६, ५३)। २ हलकी जाति का मनुष्य (कप्पू, गा २३८)। ३ मूर्ख बेवकूफ, अज्ञानी (गा १६४), 'को नाम पामरं मुत्तुं वयइ दुद्दमकद्दमे' (श्रा १२)।

पामा स्त्री [पामा] रोग विशेष, खुजली, खाज (सुपा २२७)।

पामाड पुं [पद्माट] पमाड, पमार, पवाड, चकवड, वृक्ष-विशेष (पाअ)।

पामिच्च सक [दे] उधार लेना। पामिच्चेज्ज (आचा २, २, २, ३)।

पामिच्च न [दे. अपमित्य] १ धार लेना, वापस देने का वादा कर ग्रहण करना। २ वि जो उधार लिया जाय वह (पिंड ९२, ३१६, आचा, ठा ३, ४, ६, ओघ, पराह २, ५, पव १२५, पचा १३, ५, सुपा ६४३)।

पामिच्चिय वि [दे] उधार लिया हुआ (आचा १, १०, १)।

पामुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (पाअ, स ६५७)।

पामूल न [पादमूल] पैर का मूल भाग, पाँव का अग्र भाग (पउम ३, ६, सुर ८, १६६, पिंड ३२८)। देखो पायमूल = पादमूल।

पामोक्ख देखो पमुह = प्रमुख (णाया १, ५, ८ महा)।

पामोक्ख पुं [प्रमोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (उप ६४८ टी)।

पाय पुं [दे] १ रथ-चक्र, रथ का पहिया (दे ६, ३७)। २ फणी, साँप (षड्)।

पाय पुं [पाक] १ पाचन-क्रिया। २ रसोई (श्राद्ध १६, उप ७२८ टी)।

पाय वि [पाक्य] पाक-योग्य (दस ७, २२)।

पाय देखो पाव (चंड)।

पाय पुं [पात] १ पतन (पचा २, २५, से १, १६)। २ सम्बन्ध, 'पुणो पुणो तरलदिट्ठि-पाएहिं' (सुर ३, १३८)।

पाय पुं [पाय] पान, पीने की क्रिया (श्रा २३)।

पाय पुं [पाद] १ गमन, गति (श्रा २३)। २ पैर, चरण, पाँव, 'चलणा कमा य पाया' (पाअ, णाया १, १)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा (हे ३, १३४, पिंग)। ४ किरण, 'अंसू रस्सी पाया' (पाअ, अजि २८)। ५ सानु, पर्वत का कटक (पाअ)। ६ एकाशन तप (संबोध ५८)। ७ छ अंगुलों का एक नाप (इक)। °कंचणिया स्त्री [°काञ्चनिका] पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र (राज)। °कंबल पुंन [°कम्बल] पैर पोंछने का वस्त्र-खराड (उत्त १७, ७)। °कुक्कुड पुं [°कुक्कुट] कुक्कुट-विशेष (णाया १, १७ टी—पत्र २३०)। °घाय पुं [°घात] चरण-प्रहार (पिंग)। °चार पुं [°चार] पैर से गमन (णाया १, १)। °चारि वि [°चारिन्] पैर से यातायात करनेवाला, पाद-विहारी (पउम ६१, १६)। °जाल, °जालग न [°जाल, °क] पैर का आभूषण-विशेष (औप, अजि ३१, पराह २, ५)। °त्ताण न [°त्राण] जूता, पगरखी (दे १, ३३)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] पैर तक लटकनेवाला एक आभूषण (णाया १, १—पत्र ५३)। °पीढ देखो °वीढ (णाया १, १, महा)। °पुंछण न [°प्रोञ्छन] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण (आचा, ओघ ५११, ७०६, भग, उवा)। °प्पडण न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (पउम ६३, १८)। °मूल न [°मूल] १ देखो पामूल (कस)। २ मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति, 'समागयाइं पायमूलाइं', 'पुलइज्जमाणो पायमूलेहिं पत्तो रहसमीवे', 'पणच्चियाइं पायमूलाइं', 'सद्दावियाइं पायमूलाइं', 'पण-च्चंतेहिं पायमूलेहिं' (स ७२१, ७२२, ७३४)। °लेहणिआ स्त्री [°लेखनिका] पैर पोंछने का जैन साधु का एक काष्ठमय उपकरण (ओघ ३६)। °वंदय वि [°वन्दक] पैर पर गिरकर प्रणाम करनेवाला (णाया १, १३)। °वडण न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (हे १, २७०, कुमा, सुर २, १०६)। °वडिया स्त्री [°वृत्ति] पाद पतन, पैर छूना, प्रणाम-विशेष, 'पायवडियाए खेमकुसल पुच्छति' (णाया १, २, सुपा २५)। °विहार पुं [°विहार] पैर से गति (भग)। °वीढ न [°पाठ] पैर रखने का आसन (हे १, २७०, कुमा, सुपा ६८)। °सीसग न [°शीर्षक] पैर के ऊपर का भाग (राय)। °ाउलअ न [°ाकुलक] छन्द-विशेष (पिंग)।

पाय देखो पत्त = पात्र (आचा, औप, ओघभा ३६, १७४)। °केसरिआ स्त्री [°केसरिका] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन का कपड़ा (ओघ ६६८, विसे २५५२ टी)।

°ट्ठवण, °ठवण न [°स्थापन] जैन मुनियो का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड (विसे २५५२ टी, ओघ ६६८)। °णिज्जोग, °निज्जोग पुं [°निर्योग] जैन साधु का यह उपकरण-समूह—पात्र, पात्रबन्ध, पात्रस्थापन, पात्रकेशरिका, पटल, रजस्त्राण और गुच्छक (पिंड २६, बृह ३, विसे २५५२ टी)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] पात्र-सबन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष (ठा ४, ३)। देखो पाद = पात्र।

पाय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पाय° अ [प्रायस्] प्राय, बहुत करके, 'पायप्पाएं वर्णेइ त्ति' (पिंड ४४३)।

°पाय पु व. [°पाद] पूज्य, 'सथुआ अजिअ-सतिपायया' (अजि ३४)।

पायए देखो पा = पा।

पाप देखो पाय° (स ७६१, सुपा २८, ५६६, श्रावक ७३)।

पाय अ [प्रातस्] प्रभात (सूअ १, ७, १४)।

पायगुट्ठ पु [पादाङ्गुष्ट] पेर का अगूठा (णाया १, ८)।

पायंजलि पुं [पातञ्जल] पतञ्जलिकृत शास्त्र, पातञ्जल योग-सूत्र (णदि १९४)।

पायत न [पादान्त] गीत का एक भेद, पाद-वृद्धगीत (राय ५४)।

पायदुय पु [पादान्दुक] पैर बाधने का काष्ठमय उपकरण (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक देखो पायय = पातक (वव १)।

पायक्क देखो पाइक्क (सम्मत्त १७६)।

पायक्खिण्ण न [प्रादक्षिण्य] प्रदक्षिणा (पउम ३२, ९२)।

पायग न [पातक] पाप (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [प्रायश्चित्त] पाप-नाशन कर्म, पाप-क्षय करनेवाला कर्म, 'पारचिओ नाम पायच्छित्तो सवुत्तो' (सम्मत्त १४४, उवा, औप, नव २९)।

पायड देखो पागड = प्र + कटय्। पायडइ (भवि)। वकृ. पायडत (सुपा २५९)। कवकृ. पायडिज्जंत (गा ६८५)। हेकृ. पायडिउं (कुप्र १)।

पायड न [दे] अगण, आँगन (दे ६, ४०)।

पायड देखो पागड = प्रकट (हे १, ४४, प्राप्र, ओघ ७३, जी २२, प्रासू ६४)।

पायड देखो पागड = प्राकृत, 'अहपि दाव दिअमे णअर परिब्भमिअ अलद्धभोआ पाअ-डगणिआ विअ रत्ति पस्सदो सइदु आअच्छामि' (अवि २९)।

पायड वि [प्रावृत] आच्छादित (विसे २५७६ टी)।

पायडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (कुप्र ४, से १, ५३, गा १९९, २६०, गउड, स ४९८)।

पायडिल्ल वि [प्रकट] खुला (वज्जा १०८)।

पायण न [पायन] पिलाना, पान कराना (णाया १, ७)।

पायत्त न [पादात] पदाति-समूह, प्यादो का लश्कर (उत्त १८, २, औप, कप्प)। °णिय न [°नीक] पदाति सैन्य (पि ८०)।

पायपुञ्छण न [पादपुञ्छन] पात्र-विशेष, शराव, सकोरा।

पायप्पहण पु [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ६, ४५)।

पायय न [पातक] पाप (अच्चु ४३)।

पायय देखो पाव = पाप (पाअ)।

पायय देखो पागय (हे १, ६७)।

पायय देखो पायव (से ६, ७)।

पायय देखो पावय = पावक (अभि १२५)।

पावय देखो पाय = पाद (कप्प)।

पायरास पु [प्रातराश] प्रात काल का भोजन, जलपान, जलखवा (आचा, णाया १ ८)।

पायल न [दे] चक्षु, आँख (दे ६, ३८)।

पायव पु [पादप] वृक्ष, पेड (पाअ)।

पायव्व देखो पा = पा।

पायस पुन [पायस] दूध का मिष्टान्न, खीर, 'पायसो खीरी' (पाअ, सुपा ४३८)।

पायसो अ [प्रायशस्] प्राय, बहुत कर (उप ४४६, पंचा ३, २७)।

पायार पु [प्राकार] किला, कोट, दुर्ग (पाअ, हे १, २६८, कुमा)।

पायाल न [पाताल] रसा-तल, अधो भुवन (हे १, १८०, पाअ)। °कलश पुं [°कलश] समुद्र के मध्य मे स्थित कलशाकार वस्तु (अणु)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ४५, ३९)। °मदिर न [°मन्दिर] पाताल-स्थित गृह (महा)। °हर न [°गृह] वही अर्थ (महा)।

पायाल न [पाददल] पादात्य सेन्य, पैदल सैनिक (चउप्पन्न० पत्र० १८५)।

पायालकारपुर न [पाताललङ्कापुर] पाताल-लका, रावण की राजधानी, 'पायालंकारपुरं सिग्घ पत्ता मउव्विग्गा' (पउम ६, २०१)।

पायावच्च न [प्राजापत्य] अहोरात्र का चौद-हवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)।

पायाविय वि [पायित] पिलाया हुआ (पउम ११, ४१)।

पायाहिण न [प्रादक्षिण्य] १ वेष्टन (पव ६१)। २ दक्षिण की ओर, 'पायाहिणेण तिहि पतिआहि झाएह लद्धिपए' (सिरि १९९)।

पायाहिणा देखो पयाहिणा, 'पायाहिणं करितो' (उत्त ९, ५९, सुख ९, ५९)।

पार अक [शक्] सकना, करने मे समर्थ होना। पारइ, पारेइ (हे ४, ८६, पाअ)। वकृ. पारत (कुमा)।

पार सक [पारय्] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ (हे ४, ८६, पाअ) हेकृ पारित्तए (भग १२, १)।

पार पुन [पार] १ तट, किनारा (आचा)। २ पर्ला, किनारा, 'परतीर पार' (पाअ), 'किह म्ह होही भवजलहिपार' (निसा ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म। ४ मनुष्य-लोक-भिन्न नरक आदि (सूअ १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, 'पार पुणणुत्तरं बुहा विंति' (बृह ४)। °ग वि [°ग] पार जाने-वाला (औप, सुपा २५४)। °गय वि [°गत] १ पार-प्राप्त (भग, औप)। २ पु. जिन-देव, भगवान् अर्हन् (उप १३२ टी)। °गामि वि [°गामिन्] पर पहुँचनेवाला (आचा, कप्प, औप)। °पाणग न [°पानक] पेय द्रव्य-विशेष (णाया १, १७)। °विउ वि [°विद्] पार को जाननेवाला (सूअ २, १, ६०)। °भोय वि [°भोग] पार-प्रापक (कप्प)।

पार देखो पायार (हे १, २६८, कुमा)।
पारक न [दे] मदिरा नापने का पात्र (दे ६, ४१)।
पारगम वि [पारगम] १ पार जानेवाला। २ पार-गमन (आचा)।
पारगय वि [पारगत] पार-प्राप्त (कुप्र २१)।
पारंचि त्रि [पाराञ्चि] सर्वोत्कृष्ट—दशम प्रायश्चित्त करनेवाला, 'पारचीणं दोण्हवि' (बृह ४)।
पारंचिय न [पाराञ्चिक] १ सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पार-प्राप्ति (ठा ३, ४—पत्र १६२, औप)। २ वि सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करनेवाला (ठा ३, ४)।
पारंचिय [पाराञ्चित] ऊपर देखो (कस, बृह ४)।
पारपज्ज न [पारम्पर्य] परम्परा (रंभा १५)।
पारपर पु [दे] राक्षस (दे ६, ४४)।
पारंपर } न [पारम्पर्य] परम्परा (पउम पारंपरिय } २१, ८०, आरा १६, धर्मसं १११८, १३१७), 'आयरियपारपर्ये (? रिए) ण आगयं' (सूअनि १२७—पृष्ठ ४८७)।
पारंपरिय वि [पारम्परिक] परंपरा से चला आता (उप ७२८ टी)।
पारंभ सक [प्र + रभ्] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीडा करना। पारंभेमि (कुप्र ७०)। कवकृ. 'तण्हाए पारज्झमाणा' (औप)।
पारंभ पु [प्रारम्भ] शुरू, उपक्रम (विसे १०२०, पव १६३)।
पारंभिय वि [प्रारब्ध] आरब्ध, उपक्रान्त (धर्मवि १४४, सुर २, ७७, १२, १५६, सुपा ५५)।
पारक्केर } वि [परकीय] पर का, अन्यदीय पारक्क } (हे १, ४४, २ १४८, कुमा)।
पारक्किअ देखो पारक्क (माल १६२)।
पारज्झमाण देखो पारंभ=प्र + रम्।
पारण } न [पारण, °क] व्रत के दूसरे दिन पारणग } का भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर पारणय } का भोजन (सण, उवा, महा)।
पारणा स्त्री [पारणा] ऊपर देखो। °इत्त वि [°वत्] पारणवाला (पंचा १२, ३५)।

पारतंत न [पारतन्त्र्य] परतन्त्रता, पराधीनता (उप २५२, पचा ६, ४१, ११, ७)।
पारत्त अ [परत्र] परलोक मे, आगामी जन्म मे, 'पारत्त विइज्जओ धम्मो' (पउम ५, १६३)।
पारत्त वि [पारत्र, पारत्रिक] पारलौकिक, आगामी जन्म से सबन्ध रखनेवाला, 'इत्तो पारत्तहियं ता कीरउ देव! वक्कचूलिस्स' (धर्मवि ६०, ओघ ६२, स २४६)।
पारत्ति स्त्री [दे] कुसुम-विशेष (गउड, कुमा)।
पारत्तिय वि [पारत्रिक] देखो पारत्त= पारत्र (स ७०७)।
पारदारिय वि [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट (णाया १, १८—पत्र २३६)।
पारद्ध वि [प्रारब्ध] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह, 'पारद्धा य विवाहनिमित्तं मयला सामग्गी' (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह, 'तओ अवरण्हसमए पारद्धो नच्चिउं' (महा)।
पारद्ध न [दे] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध। २ वि आखेटक, शिकारी। ३ पीडित (दे ६, ७७)।
पारद्धि स्त्री [पापर्द्धि] शिकार, मृगया (हे १, २३५, कुमा, उप पृ २५७, सुपा २१६)।
पारद्धिअ वि [पापर्द्धिक] शिकारी, शिकार करनेवाला, गुजराती मे 'पारधी', 'मयणमहापारद्धियनिसायवाणावलीविद्धा' (सुपा ७१, मोह ७६)।
पारमिया स्त्री [पारमिता] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा व्रत, अहिंसा आदि व्रत (धर्मसं ६८८)।
पारम्म न [पारम्य] परमता, उत्कृष्टता (अज्झ ११४)।
पारय वि [पारग] समर्थ (आचा २, ३, २, ३)।
पारय पु [पारद] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। °मद्दण न [°मर्दन] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायन विशेष, 'अंगं कढिणयाहेउं च सेवति पारयमद्दणं' (स २८६)। २ वि पार-प्रापक (श्रु १०६)।

पारय न [दे] सुरा-भाण्ड, दारू रखने का पात्र (दे ६, ३८)।
पारय देखो पार-ग (कप्प, भग, अत)।
पारय पु [प्रावारक] १ पट, वस्त्र। २ वि. आच्छादक (हे १, २७१, कुमा)।
पारलोइअ वि [पारलौकिक] परलोक-सबन्धी, आगामी जन्म से सबन्ध रखनेवाला (पण्ह १, ३, ४, सूअ २, ७, २३, कुप्र ३८१, सुपा ४६१)।
पारवस्स न [पारवश्य] परवशता, पराधीनता (रयण ८१)।
पारस पु [पारस] १ अनार्य देश-विशेष, फारस देश, ईरान (इक)। २ मणि-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है (सबोध ५३)। ३ पारस देश मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १,१)। °उल न [°कुल] १ ईरान देश, 'भरिऊण भडस्स वहणाइ पत्तो पारसउलं', 'इओ य सो अयलो पारसउले विढविय बहुय दव्वं' (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी, 'मागहयपारसउला कालिगा सीहला य तहा' (पउम ६६, ५५)। °कूल न [°कूल] ईरान का किनारा, ईरान देश की सीमा (आवम)।
पारसिय वि [पारसिक] फारस देश का, 'सहसा पारसियसुओ समागओ रायपयमूले', 'पारसियकीरमिहुणं' (सुपा २६७, ३६०)।
पारसी स्त्री [पारसी] १ पारस देश की स्त्री (औप, णाया १, १—पत्र ३७, इक)। २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि (विसे ४६४ टी)।
पारसीअ वि [पारसीक] फारस देश का निवासी (गउड)।
पाराई स्त्री [दे] लोह-कुशी विशेष, लोहे की दडाकार छोटी वस्तु, 'चडवेलावज्झपट्टपाराइ (? ई)छिवकमलयवरत्तनेत्तप्पहारसयतालियंगमगा' (पण्ह २, ३)।
पाराय देखो पारावय (प्राप्र)।
पारायण न [पारायण] १ पार-प्राप्ति (विसे ५६५)। २ पुराण-पाठ-विशेष, 'अधीट (? य)समत्तपरायणो साखापारओ जाओ' (सुख २, १३)।
पारावय देखो पारेवय (पाअ, प्राप्र, गा ६४, कप्प ५६ टि)।

पारावर पुं [दे] गवाक्ष, वातायन (दे ६, ४३)।

पारावार पुं [पारावार] समुद्र सागर (पाअ, कुप्र ३७८)।

पाराविअ वि [पारित] जिसको पारण कराया गया हो वह (कुप्र २१२)।

पारासर पु [पाराशर] १ ऋषि-विशेष (सूअ १, ३, ४, ३)। २ न गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है। ३ वि. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। ४ पु भिक्षुक। ५ कर्म-त्यागी सन्यासी, 'अतेवि पारासरा अत्थि' (सुअ २, ३१)।

पारिओसिय वि [पारितोषिक] तुष्टि जनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार (सम्मत्त १२२, स १६३, सुर १६, १८२, विचार १७१)।

पारिच्छा देखो परिच्छा, 'वयपरिणामे चिता गिह समप्पेमि तामि पारिच्छा' (उप १७३, उप पृ २७५)।

पारिच्छेज्ज देखो परिच्छेज्ज (णाया १, ८—पत्र १३२)।

पारिजाय देखो पारिय = पारिजात (कुमा)।

पारिट्ठावणिया स्त्री [पारिष्ठापनिकी] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग मे सम्यक् प्रवृत्ति (सम १०, औप, कप्प)।

पारिडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र, कपडा, 'निक्खिणइ माहमासम्मि पामरो पारिडिं वइ-ल्लेण' (गा २३८)।

पारिणामिअ देखो परिणामिअ = पारिणामिक (अणु, कम्म ४, ६६)।

पारिणामिआ } देखो परिणामिआ (आव पारिणामिगी } १, णाया १, १—पत्र ११)।

पारितावणिया स्त्री [पारितापनिकी] दूसरे को परिताप—दुःख उपजाने से होनेवाला कर्म-बन्ध (सम १०)।

पारितावणी स्त्री [पारितापनी] ऊपर देखो (नव १७)।

पारितोसिअ देखो पारिओसिय (नाट, सुपा २७, प्रामा)।

पारित्त देखो पारत्त = परत्र, 'पारित्त विइज्जओ धम्मो' (तदु ५६)।

पारिप्पव पु [पारिप्लव] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पारिभद्द पु [पारिभद्र] वृक्ष-विशेष, फरहद का पेड (कप्पू)।

पारिय वि [पारित] पूर्ण किया हुआ (रयण १६)।

पारिय पु [पारिजात] १ देव-वृक्ष-विशेष, कल्प तरु विशेष। २ फरहद का पेड, 'कप्पूर-पारियाए य अहियवरो मालईगंधो' (कुमा ५, १३)। ३ न. पुष्प-विशेष, फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभाय-मान होता है, 'मुहिए ण विढप्पइ पारियच्छि नुडीरह खडइ वसइ लच्छि' (भवि)।

पारियत्त पु [पारियात्र] देश-विशेष, 'परि-ब्भमतो पत्तो पारियत्तविसय' (कुप्र ३६६)।

पारियट्ट न [दे परिवर्त] पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि (णादि ४३)।

पारियाय देखो पारिय = पारिजात (सुपा ७६, से ६, ५८, महा, स ७५६)।

पारियावणिया देखो पारितावणिया (ठा २, १—पत्र ३९)।

पारियावणिया देखो पारियावणिया (स ५५१)।

पारियासिय वि [पारिवासित] वासी रखा हुआ (कस)।

पारिव्वज्ज न [पारिव्राज्य] सन्यासिपन, सन्यास (पउम ८२, २४)।

पारिव्वाई स्त्री [पारिव्राजी, परिव्राजिका] सन्यासिनी (उप पृ २७९)।

पारिव्वाय वि [पारिव्राज] सन्यासि-सबन्धी (राज)।

पारिसज्ज वि [पारिषद्य] सभ्य, सभासद (धर्मवि ६)।

पारिसाडणिया स्त्री [पारिशाटनिकी] परि-शाटन—परित्याग से होनेवाला कर्म बन्ध (श्राव ४)।

पारिहच्छी स्त्री [दे] माला (दे ६, ४२)।

पारिहट्टी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर से व्यायी हुई भैंस (दे ६, ७२)।

पारिहत्थिय वि [पारिहस्तिक] स्वभाव से निपुण (ठा ६—पत्र ४५१)।

पारिहारिय वि [पारिहारिक] तपस्वी-विशेष, परिहार नामक व्रत करनेवाला (कस)।

पारिहासय न [पारिहासक] कुल-विशेष, जैन मुनियो के एक कुल का नाम (कप्प)।

पारी स्त्री [दे] दोहन-भाण्ड, जिसमे दोहन किया जाता है वह पात्र-विशेष (दे ६, ३७, गउड ५७७)।

पारीण वि [पारीण] पार-प्राप्त, 'धीवर-सत्थाण पारीणो' (धर्मवि १३, सिरि ४८६, सम्मत्त ७५)।

पारुअग्ग पु [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।

पारुअल्ल पु [दे] पृथुक, चिउडा (दे ६, ४४)।

पारुसिय देखो फारुसिय (आचा १, ६, ४, १ टि)।

पारुहल्ल वि [दे] मालीकृत, श्रेणी रूप मे स्थापित, 'वालीवध च पारुहल्लोम्मि' (दे ६ ४५)।

पारेवई स्त्री [पारापती] कबूतरी, कबूतर की मादा (विपा १, ३)।

पारेवय पु [पारापत] १ पक्षि-विशेष, कबूतर (हे १, ८०, कुमा, सुपा ३२८)। २ वृक्ष-विशेष। ३ न फल-विशेष (पण्ण १७)।

पारोक्ख वि [पारोक्ष] परोक्ष-विषयक, परोक्ष-सबन्धी (धर्मस ५०२)।

पारोह देखो परोह (हे १, ४४, गा ५७५, गउड)।

पारोहि वि [प्ररोहिन्] प्ररोहवाला, अकुर-वाला (गउड)।

पाल सक [पालय्] पालन करना, रक्षण करना। पालेइ (भग, महा)। वकृ पालयत, पालत, पालित, पालेमाण (सुर २, ७१, स ४६, महा, ओप, कप्प)। सकृ. पालइत्ता, पालित्ता, पालेऊण (कप्प, महा), पालेवि (अप) (हे ४, ४४१)। कृ पालियव्व, पालेयव्व (सुपा ४३५, ३७६, महा)।

पाल देखो पार = पारय्। सकृ. पालइत्ता (कप्प)।

पाल पु [दे] १ कलवार, शराव वेचनेवाला। २ वि. जीर्ण, फटा-टूटा (दे ६, ७५)।

पाल पुंन [पाल] आभूषण-विशेष, 'मुरविं वा पाल वा तिसरय वा कडिसुत्तग वा' (औप)। २ वि. पालक, पालन-कर्ता, 'जो सयलसिंधु-सायरहो पालु' (भवि)। स्त्री. °ला (वव ४)।

पालक न [पालङ्क्य] तरकारी-विशेष, पालक का शाक (बृह १)।
पालंगा स्त्री [पालङ्क्या] ऊपर देखो (उवा)।
पालंन देखो पाल = पालय्।
पालव पुं [प्रालम्ब] १ अवलम्बन, सहारा, 'पावइ तडविडविपालव' (सुपा ६३५)। २ गले का आभूषण-विशेष (औप, कप्प)। ३ दीर्घ, लम्बा (औप राय)। ४ पुन ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल, 'ओऊलं पालव' (पाअ)।
पालक्का स्त्री [पालक्या] देखो पालगा, 'वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का' (पण्ण १—पत्र ३८)।
पालग देखो पालय (कप्प, औप, विसे २८७६, मति १, सुर ११, १०८)।
पालण न [पालन] १ रक्षण (महा, प्रासू ३)। २ वि. रक्षण-कर्ता, 'धम्मस्स पालणी चेव' (सबोध १६ स ६७)।
पालद्दुद्द पु [दे] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।
पालप्प पु [दे] १ प्रतिसार। २ वि विप्लुत (दे ६, ७६)।
पालय वि [पालक] रक्षक, रक्षण कर्ता (सुपा ७७६, मार्घ १०)। २ पु सौधर्मेन्द्र का एक आभियोगिक देव (ठा ८)। ३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र (पव २)। ४ भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवती (उज्जैन) का एक राजा (विचार ४९२)। ५ देव-विमान-विशेष (सम २)।
पालास पु [पालाश] पलाश-सम्बन्धी। २ न. पलाश वृक्ष का फल, किंशुक-फल (गउड)।
पालि स्त्री [पालि] १ तालाव आदि का बन्ध (सुर १३, ३२, अत १२, महा)। २ प्रान्त भाग (गा ९४६)। देखो पाली = पाली।
पालि स्त्री [दे] १ धान्य मापने की नाप। २ पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष (उत्त १८, २८, सुख १८, २८)।
पालिआ स्त्री [दे] खड्ग मुष्टि, तलवार की मूठ (पाअ)।
पालिआ देखो पाली = पाली, 'उजाणपालि-याहि सविब्भत्तीहिं व बहुरसड्ढाहिं' (धर्मवि १३)।
पालित्त पुं [पादलिप्त] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पिंड ४९८, कुप्र १७८)।
पालित्ताण न [पादलिप्तीय] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी 'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७९)।
पालित्तिआ स्त्री [दे] १ राजधानी। २ मूल-नीवी। ३ भण्डार, निधि। ४ भगी, प्रकार (कप्पू)।
पालिय वि [पालिन] रक्षित (ठा १०, महा)।
पालियाय देखो पारिय = पारिजात (राय ३०)।
पाली स्त्री [पाळी] पंक्ति, श्रेणि (गउड)। देखो पालि।
पाली स्त्री [दे] दिशा (दे ६, ३७)।
पालीवय पु [दे] तालाव, सरोवर (दे ६, ४५)।
पालीहम्म न [दे] वृति, वाड (दे ६, ४५)।
पालेव पुं [पादलेप] पैर मे किया हुआ लेप (पिंड ५०३)।
पाव सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पावइ (हे ४, २३९)। भवि. पाविहिसि (पि ५३१)। कर्म पाविज्जइ (उव)। वकृ पावत, पावेत (पिंग, पउम १४, ३७)। कवकृ पावियंत, पावेज्जमाण (पण्ह १. १, अत २०)। संकृ. पाविऊण (पि ५८६)। हेकृ पत्तु, पावेउ (हास्य ११९, महा)। कृ पावणिज्ज, पाविअव्व (सुर ६, १४२, स ६८६)।
पाव देखो पव्वाल = प्लावय्। पावेइ (हे ४, ४१)।
पाव पुन [पाप] १ अशुभ कर्म-पुद्गल, कुकर्म (आचा, कुमा, ठा १, प्रासू २५), 'जम्मतरकए पावे पाणी मुहुत्तेण निद्दहे' (गच्छ १, ६)। २ पापी, अधर्मी, कुकर्मी (पण्ह १, १, कुमा ७, ६)। °कम्म न [°कर्मन्] अशुभ कर्म (आचा)। °कम्मि वि [°कर्मिन्] कुकर्म करनेवाला (ठा ५)। °दंड पु [°दण्ड] नरकावास विशेष (देवेन्द्र २६)। °पगइ स्त्री [°प्रकृति] अशुभ कर्म-प्रकृति (राज)। °यारि वि [°कारिन्] दुराचारी (पउम ६३, ४३, महा)। °समण पुं [°श्रमण] दुष्ट साधु (उत्त १७, ३, ४)। °सुमिण पुन [°स्वप्न] दुष्ट स्वप्न (कप्प)। °सुय न [°श्रुत] दुष्ट शास्त्र (ठा ६)।
पाव पुं [दे] सर्प, साँप (दे ६, ३८)।
पाव (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।
पावस वि [पापीयस्] पापी, कुकर्मी (ठा ४, ४—पत्र २६५)।
पावक्खालय न [दे पापक्षालक] देखो पाउक्खालय (स ७४१)।
पावग वि [पावक] १ पवित्र करनेवाला (राज)। पु. अग्नि, वह्नि (सुपा १४२)।
पावग वि [प्रापक] पहुँचानेवाला (सुपा ५००)।
पावग देखो पाव = पाप (आचा, धर्मसं ५४३)।
पावज्जा (अप) देखो पव्वज्जा (भवि)।
पावडण देखो पाय-वडण = पाद-पतन (प्राप्र, कुमा)।
पावड्ढि देखो पारद्धि (सिरि ११०८, १११०)।
पावण वि [पावन] पवित्र करनेवाला (अच्चु ४७, सम्मु १५०)।
पावण न [प्लावन] १ पानी का प्रवाह। २ सराबोर करना (पिंड २४)।
पावण न [प्रापण] १ प्राप्ति, लाभ (सुर ४, १११, उप५ ७)। २ योग की एक सिद्धि, 'पावणमत्तीए छिवइ मेरुसिरमंगुलीए मुणी' (कुप्र २७७)।
पावद्धि देखो पारद्धि (धर्मवि १४८)।
पावय देखो पाव = पाप (प्रासू ७५)।
पावय वि [प्रावृत] आच्छादित, ढका हुआ (सूअ २, ७, ३)।
पावय पुन [दे] वाद्य-विशेष, गुजराती में 'पावो' (पउम ५७, २३)।
पावय देखो पावग = पावक (उप ७२८ टी, कुप्र २८३, सुपा ४, पाअ)।
पावयण देखो पवयण (हे १, ४४, उवा, णाया १, १३)।
पावयणि वि [प्रवचनिन्] सिद्धान्त का जानकार, सैद्धान्तिक (चेइय १२८)।
पावयणिय वि [प्रावचनिक] ऊपर देखो (सम ६०)।
पावरअ देखो पारय (स्वप्न १०४)।

पावरण पु [प्रावरण] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

पावरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (हे १, १७५)।

पावरिय वि [प्रावृत] आच्छादित (कुप्र ३८)।

पावस देखो पाउस (कुप्र ११७)।

पावा स्त्री [पापा] नगरी विशेष, जो आजकल भी विहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्प, ती ३, पंचा १६, १७, पव ३४, विचार ४६)।

पावाइ त्रि [प्रवादिन्] वाचाट, दार्शनिक (सूअ २, ६, ११)।

पावाइअ वि [प्राव्राजिक] सन्यासी (रयण २२)।

पावाइअ वि [प्रावादिक] देखो पावाइ (आचा)।

पावाइअ } वि [प्रावादुक] वाचाट, दार्शनिक (सूअ १, १, ३, १३, २, २, ८०, पि २६५)।
पावादुय }

पावार पु [प्रावार] १ रुँछावाला कपडा। २ मोटा कम्बल (पव ८४)।

पावारय देखो पारय = प्रावारक (हे १ २७१, कुमा)।

पावालिआ स्त्री [प्रपापालिका] प्रपा या प्याऊ पर नियुक्त स्त्री (गा १६१)।

पावासु } वि [प्रवासिन्, °क] प्रवास करनेवाला (पि १०५, हे १, ९५, कुमा)।
पावासुअ }

पाविअ वि [प्राप्त] लब्ध, मिला हुआ (सुर ३, १६, स ६८६)।

पाविअ वि [प्रापित] प्राप्त करवाया हुआ (सण, नाट—मृच्छ २७)।

पाविअ वि [प्लावित] सराबोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ (कुमा)।

पाविट्ठ वि [पापिष्ठ] अत्यन्त पापी (उव ७२८ टी, सुर १, २१३, २, २०५, सुपा १६६, श्रा १४)।

पावीढ देखो पाय-वीढ (पउम ३, १, हे १, २७०, कुमा)।

पावीयस देखो पावस (पि ४०६, ४१४)।

पावुअ वि [प्रावृत] आच्छादित (सक्षि ४)।

पावेज्जमाण देखो पाव = प्र + आप।

पावेस वि [प्रावेश्य] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक (औप)।

पावेस पुं [प्रावेश] वस्त्र के दोनो तरफ लटकता रुँछा (णाया १, १)।

पास सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। पासइ, पासेइ (कप्प)। पासिम = 'पश्य' (आचा १, ३, ३, ५)। कर्म. पासिज्जइ (पि ७०)। वकृ. पासत, पासमाण (स ७५, कप्प)। सकृ पासिउ, पासित्ता, पासित्ताण, पासिया (पि ४६५, कप्प, पि ५८३, महा)। हेकृ. पासित्तए, पासिउ (पि ५७८, ५७७)। कृ. पासियव्व (कप्प)।

पास पुं [पार्श्व] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव (सम १३, ४३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष (सति ८)। ३ न. कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर (णाया १, १६)। ४ समीप, निकट (सुर ४, १७६)। °वच्चिज्ज वि [°पत्यीय] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा मे सजात (भग)।

पास पुं [पाश] फासा, वन्धन-रज्जू (सुर ४, ३३७, औप, कुमा)।

पास न [दे] १ आख। २ दांत। ३ कुन्त, प्रास। ४ वि विशोभ, कुडौल, शोभा हीन (दे ६, ७५)। ५ पुन. अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण, 'निच्चुण्णो तंबोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो' (भाव २)।

°पास वि [°पाश] अपसद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित, 'एस पासडियपासो किं करिस्सइ' (सम्मत्त १०२)।

पासंगिअ वि [प्रासङ्गिक] प्रसंग सवन्धी, आनुषगिक (कुम्मा २७)।

पासंड न [पाखण्ड] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग (ठा १०, णाया १, ८, उवा, आव ६)। २ व्रत (अणु)।

पासंडि } वि [पाखण्डिन्, °क] १ पाखंडी, लोक मे पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचनेवाला (महानि ४, कुप्र २७६, सुपा ६६, १०६, १६२)। २ पुं. व्रती, साधु, मुनि, 'पव्वइए अणगारे पासडे (? डी) चरग तावसे भिक्खू। परिवाइए य समणे' (दसनि २—गाथा १६४)।
पासंडिय }

पासंदण न [प्रस्यन्दन] झरन, टपकना (वृह १)।

पासग वि [दर्शक] देखनेवाला (आचा)।

पासग पुं [पाशक] १ फांसा, वन्धन-रज्जु (उप पृ १३, सुर ४, २५०)। २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष (ज ३)।

पासग न [प्राशक] कला-विशेष (औप)।

पासण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (पिंड ४७५, उप ९७७, ओघ ५४, सुपा ३७)।

पासणया स्त्री. ऊपर देखो (ओघ ६३, उप १४८, णाया १, १)।

पासणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१)।

पासणिअ वि [प्राश्निक] प्रश्न-कर्ता (सूअ १, २, २, २८, आचा)।

पासत्थ वि [पार्श्वस्थ] १ पार्श्व मे स्थित, निकट-स्थित (पउम ९८, १८, स २६७, सूअ १, १, २, ५)। २ शिथिलाचारी साधु (उप ८३३ टी, णाहा १, ५, ६,—पत्र २०६, सार्ध ८८)।

पासत्थ वि [पाशस्थ] पाश मे फँसा हुआ, पाशित (सूअ १, १, २, ५)।

पासल्ल न [दे] १ द्वार (दे ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र (दे ६, ७६, से ६, ६२, गउड)।

पासल्ल देखो पास = पार्श्व (से ६, ३८, गउड)।

पासल्ल अक [तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्] १ वक्र होना। २ पार्श्व घुमाना, 'पासल्लति महिहरा' (से ६, ४५)। वकृ पासल्लत (से ६, ४१)।

पासल्लइअ देखो पासल्लिअ (से ६, ७७)।

पासल्लि वि [पार्श्विन्] पार्श्व-शयित, 'उत्ताण-गपासल्ली नेसज्जी वावि ठाण ठाइत्ता' (पव ६७, पचा १८, १५)।

पासल्लिअ वि [पार्श्वित, तिर्यक्त] १ पार्श्व मे किया हुआ। २ टेढा किया हुआ (गउड, पि ५९५)।

पासवण न [प्रस्रवण] मूत्र, पेशाव (सम १०, कस, कप्प, उवा, सुपा ६२०)।

पासाईय देखो पासादाय (सम १३७, उवा)।

पासाकुसुम न [पाशाकुसुम] पुष्प-विशेष, 'छप्पअ गम्मसु सिसिरं पासाकुसुमेहिं ताव, मा मरसु' (गा ८१६)।

पासाण पुं [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२; कुमा)।

पासाणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१)।

पासाद देखो पासाय (औप, स्वप्न ५६)।

पासादिय वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न. प्रसन्न करना (णाया १, ६—पत्र १६४)।

पासादीय वि [प्रासादीय] प्रसन्नता-जनक (उवा, औप)।

पासादीय वि [प्रासादित] महलवाला, प्रासाद-युक्त (सूअ २, ७, १ टी)।

पासाय पुन [प्रासाद] महल, हर्म्य (पात्र, पउम ८०, ४)। °वडिंसय पुं [°वतंसक] श्रेष्ठ महल (अग, औप)।

पासायवडेंसग पु [प्रासादावतंसक] श्रेष्ठतम महल, प्रासाद-विशेष (राय ६६)।

पासासा स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला (दे ६, १४)।

पासाव } पु [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा
पासावय } (षड्, दे ६, ४३)।

पासि वि [पार्श्विन्] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु, 'पासिसारिच्छो' (संबोध ३५)।

पासिद्धि देखो पसिद्धि (हे १, ४४)।

पासिम वि [दृश्य] दर्शनीय, ज्ञेय (आचा)।

पासिम देखो पास = दृश्।

पासिय वि [पाशिक] फाँसे में फँसानेवाला (पण्ह १, २)।

पासिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (आचा—पासिम)।

पासिय वि [पाशित] पाश-युक्त (राज)।

पासिया स्त्री [पाशिका] छोटा पाश (महा)।

पासिया देखो पास = दृश्।

पासिल्ल वि [पार्श्विक] १ पास में रहनेवाला। २ पार्श्वशायी (पव ५४, तंदु १३, भग)।

पासी स्त्री [दे] चूड़ा, चोटी (दे ६, ३७)।

पासु देखो पंसु (हे १, २६, ७०)।

पासुत्त देखो पसुत्त (गा ३२४, सुर २, ८२, ६, १६८, हे १, ४४, कुप्र २५०)।

पासेइय वि [प्रस्वेदित] प्रस्वेद-युक्त, पसीनावाला (भवि)।

पासेल्लिय वि [पार्श्वेशयन्] पार्श्व-शायी, बगल में सोनेवाला (राज)।

पासोअल्ल देखो पासल्ल = तिर्यञ्च्। वकृ. पासोअल्लंत (से ६, ४७)।

पाह (अप) सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। पाहसि (पि ३५६)।

पाहंड देखो पासंड (पि २६५)।

पाहण देखो पाहाण, 'महंतं पाहणं तयं' (श्रा १२), 'चउकोणा समतीरा पाहणवद्धा य निम्मविया' (धर्मवि ३३, महा, भवि)।

पाहणा देखो पाणहा, 'तेगिच्छं पाहणा पाए' (दस ३, ४)।

पाहण्ण } न [प्राधान्य] प्रधानता, प्रधानपन
पाहन्न } (प्रासू ३२, ओघ ७७२)।

पाहर सक [प्रा + हृ] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि (सूअ, ४, २, ६)।

पाहरिय वि [प्राहरिक] पहरेदार (स ५२५, सुपा ३१२, ४५५)।

पाहाडय देखो पाभाइय (सुपा ३५, ५५६)।

पाहाण पु [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२, महा)।

पाहिज्ज देखो पाहेज्ज (पात्र)।

पाहुड न [प्राभृत] १ उपहार, पाहुर, भेंट (हे १,१३१, २०६, विपा १, ३, कर्पूर २७, कप्पू, महा, कुमा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन (सुज्ज १, २, ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)। °पाहुड न [°प्राभृत] १ ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश (सुज्ज १, १, २)। २ प्राभृत-प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)। °पाहुडसमास पुन [°प्राभृतसमास] अनेक प्राभृत-प्राभृतों का ज्ञान (कम्म १, ८)। °समास पुन [°समास] अनेक प्राभृतों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वो का अध्याय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावद्य कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)। °छेय पुं [°च्छेद] बारहवें अंग-ग्रन्थ के पूर्वो का प्रकरण-विशेष (वव १)। °पाहुडिआ स्त्री [°प्राभृतिका] दृष्टिवाद का प्रकरण-विशेष (अणु २३४)।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ दृष्टिवाद का छोटा अध्याय (अणु २३४)। २ अर्चनिका, विलेपन आदि (वव ४)।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ भेंट, उपहार (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा (पचा १३, ५, पव ६७, ठा ३, ४—पत्र १५६)।

पाहुण वि [दे] विक्रेय, बेचने की वस्तु (दे ६, ४०)।

पाहुण } पुं [प्राघुण, °क] अतिथि, पाहुना,
पाहुणग } मेहमान (ओघभा ५३, सुर ३,८५,
पाहुणय } महा, सुपा १३, कुप्र ४२, औप, काल)।

पाहुणिअ पुं [प्राघुणिक] अतिथि, पहुना, मेहमान (काप्र २२४)।

पाहुणिअ पुं [प्राघुनिक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।

पाहुणिज्ज वि [प्राह्वनीय] प्रकृष्ट सम्प्रदान, जिसको दान दिया जाय वह (णाया १, १ टी—पत्र ४)।

पाहुण्ण } न [प्राघुण्य, °क] आतिथ्य,
पाहुण्णग } अतिथि का सत्कार, पहुनाई,
पाहुण्णय } 'कयं मंजरीए पाहुण(? ण्ण)गं' (कुप्र ४२, उप १०३१ टी)।

पाहेअ न [पाथेय] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन (उत्त १६, १८, महा, अभि ७६, स ६८, सुपा ४२४)।

पाहेज्ज न [दे पाथेय] ऊपर देखो (दे ६, २४)।

पाहेणग (दे) देखो पहेणग (पिंड २८८)।

पि देखो अवि (हे २, २१८, स्वप्न ३७, कुमा, भवि)।

पिअ सक [पा] पीना। पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका. अपिइत्थ (आचा)। वकृ. पिअत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५, विपा १, १)। संकृ. पिच्चा, पेच्चा, पिएऊण (कप्प, उत्त १७, ३, धर्मवि २५), पिएविणु (अप) (सण)। प्रयो पियाए (दस १०, २)।

पिअ पु [प्रिय] १ पति, कान्त, स्वामी (कुमा)। २ वि इष्ट, प्रीति-जनक (कुमा)। °अम पुं [°तम] पति, कान्त (गा १६,

कुमा)। °अमा स्त्री [°तमा] पत्नी, भार्या (कुमा)। °अर वि [°कर] प्रीति-जनक (नाट—पिंग)। °कारिणी स्त्री [°कारिणी] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी (कप्प)। °गंथ पु [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य (कप्प)। °जाअ वि [°जाय] जिसको पत्नी प्रिय हो वह (गा ५१८)। °जाआ स्त्री [°जाया] प्रेम-पात्र पत्नी (गा १६६)। °दंसण वि [°दर्शन] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर हो वह (णाया १, १—पत्र १६, ओप)। २ पु. देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७६)। °दंसणा स्त्री [°दर्शना] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आवम)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ धर्म की श्रद्धावाला (णाया १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ५)। °भाउग पुं [°भ्रातृ] पति का भाई (उप ६४८ टी)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-वक्ता (महा ५८)। °मित्त पुं [°मित्र] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वासुदेव हुआ था (पउम २०, १७१)। °मेलय वि [°मेलक] १ प्रिय का मेल—सयोग करानेवाला। २ न. एक तीर्थ (स ५५१)। °उय वि [°युष्क] जीवित-प्रिय (आचा)। °यग वि [°यत, °त्मक] आत्म-प्रिय (आचा)।

पिअ देखो पीअ, 'पीआपीअ पिआपिअं' (प्राप्र, सण, भवि)।

पिअ° देखो पिउ (प्रासू ७६, १०८)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर, नैहर, मेंका (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो पिआ (श्रा १६)।

पिअइउ (अप) वि [प्रीणयितृ] प्रीति उप-जानेवाला, खुश करनेवाला (भवि)।

पिअउल्लिय (अप) देखो पिआ (भवि)।

पिअंकर वि [प्रियंकर] १ अभीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक (उत्त ११, १४)। २ पु एक चक्रवर्त्ती राजा (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [प्रियङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, प्रियगु, ककूंदनी का पेड (पाअ, ओप, सम १५२)। २ कगु, मालकांगनी का पेड, 'पियंगुणो कगू' (पाअ)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम (विवा १, १०)। °लइया स्त्री [°लतिका] एक स्त्री का नाम (महा)।

पिअंवय वि [प्रियंवद] मधुर-भाषी (सुर १, ६५, ४, ११८, महा)।

पिअंवाइ वि [प्रियवादिन्] ऊपर देखो (उत्त ११, १४, सुख ११, १४)।

पिअण न [दे] दुग्ध, दूध (दे ६, ४८)।

पिअण न [पान] पीना, 'तुहयन्नपियणनिरय' (धर्मवि १२५, सुख ३, १, उप १३६ टी, स २६३, सुपा २४५, चेइय ५७०)।

पिअणा स्त्री [पृतना] सेना विशेष, जिसमे २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े और १२१५ प्यादें हों वह लश्कर (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [दे] प्रियंगु वृक्ष (दे ६, ४६, पाअ)।

पिअमाहवी स्त्री [दे] कोकिला, पिकी (दे ६, ५१, पाअ)।

पिअय पु [प्रियक] वृक्ष-विशेष, विजयसार का पेड (ओप)।

पिअर पुन [पितृ] १ माता-पिता, मा-बाप, 'सुणतु निएणयमिम पियरा', 'पियराइ रुय-ताइ' (धर्मवि १२२)। २ पु पिता, बाप (प्राप्र)।

पिअरंज सक [भञ्ज्] भांगना, तोडना। पिअरंजइ (प्राकृ. ७४)।

पिअल (अप) देखो पिअ = प्रिय (पिंग)।

पिआ स्त्री [प्रिया] पत्नी, कान्ता, भार्या (कुमा, हेका ६६)।

पिआमह पु [पितामह] १ ब्रह्मा, चतुरानन (से १,१७, पाअ, उप ५६७ टी, स २३१)। २ पिता का पिता, दादा (उव)। °तणअ पु [°तनय] जाम्बवान्, वानर-विशेष (से ४, ३७)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, ब्रह्मास्त्र (से १५, ३७)।

पिआमही स्त्री [पितामही] पिता की माता, दादी (सुपा ४७२)।

पिआर (अप)। वि [प्रियतर] प्यारा (कुप्र ३२, भवि)।

पिआरी (अप) स्त्री [प्रियतरा] प्यारी, प्रिया, पत्नी (पिंग)।

पिआल पुं [प्रियाल] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरौंजी का पेड (कुमा, पाअ, दे ३, २१, पराग १)।

पिआलु पुं [प्रियालु] वृक्ष-विशेष, खिन्नी, खिरनी का गाछ (उर २, १३)।

पियासा देखो पिवासा (गा ८१४)।

पिइ देखो पीइ, 'तेण पिइए सिट्ठ' (पउम ११, १४)।

पिइ पुं [पितृ] १ पिता, बाप (उप ७२८ टी)। २ मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (सुज्ज १०, १२, वि ३६१)। °मेह पु [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमे बाप का होम किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। °वण न [°वन] श्मशान (सुपा ३५६)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (पउम १८, ७, सुर ६, २३६)। देखो पिउ।

पिइज्ज पु [पितृव्य] चाचा, बाप का भाई, 'सुपासो वीरजिणपिइज्जो (? ज्ज)' (विचार ४७८)।

पिइय वि [पैतृक] पिता का, पितृ-संबन्धी (भग)।

पिउ, पिउअ पु [पितृ] १ बाप, पिता (सुर १, १७६, ओप, उव, हे १, १३१)। २ पुन माँ बाप, माता-पिता, 'अन्नया मह पिऊणि गामं पत्ताइं' (धर्मवि १४७ सुपा ३२६)। °कम्म पुं [°क्रम] पितृ-वश, पितृ-कुल (कुमा)। °कुल न [°कुल] पिता का वंश (षड्)। °घर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (सुपा ६०१)। °च्छा, °च्छी स्त्री [°ष्वसृ] पिता की बहिन, फूआ, बूआ, फुफु (गा ११०, हे २, १४२, पाअ, णाया १, १६), 'कोतिं पिउत्थि (? च्छि) सक्कारेइ' (णाया १, १६—पत्र २१६)। °पिंड पुं [°पिण्ड] मृतक-भोजन, श्राद्ध मे दिया जाता भोजन (आचा २, १, २)। °भगिणी स्त्री [°भगिनी] फूफी, पिता की बहिन (सुर ३, ८२)। °वइ पु [°पति] यम, यमराज (हे १, १३४)। °वण न [°वन] श्मशान (पउम १०५, ५१, पाअ, हे १, १३४)। °सिआ स्त्री [°ष्वसृ] फूफी (हे

२, १४२, कुमा) °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °स्सरया देखो °सिआ (विपा १, ३—पत्र ४२)। °हर देखो °घर (सुर १०, १६, भवि)।

पिउअ देखो पिउय (राज)।

पिउआ स्त्री [दे पितृष्वसृ] फूफी, पिता की बहिन (षड्)।

पिउआ } स्त्री [दे] सखी, वयस्या (षड् १७५, पिउच्छा } २१०)।

पिउली स्त्री [दे] १ कर्पास, कपास। २ तूल-लतिका, रूई की पूनी (दे ६, ७८)।

पिउल देखो पिउ (हे २, १६४)।

पिकार पु [अपिकार] १ 'अपि' शब्द। २ अपि शब्द की व्याख्या (ठा १०—पत्र ४९५)।

पिंखा स्त्री [प्रेङ्खा] हिंडोला, डोला (पाअ)।

पिंखोल सक [प्रेङ्खोलय्] झूलना। वकृ पिंखोलमाण (राज)।

पिंग देखो पग = ग्रह् (कुमा ७, ८६)।

पिंग पु [पिङ्ग] १ कपिश वर्ण, पीत वर्ण। २ त्रि पीला, पीत रंग का (पाअ, कुमा, सम्मि १४)। ३ पुंस्त्री कपिंजल पक्षी। स्त्री °गा (सूअ १, ३, ४, १२)।

पिंगंग पु [दे] मर्कट, बन्दर (दे ६, ४८)।

पिंगल पु [पिङ्गल] १ नील-पीत वर्ण। २ वि नील-मिश्रित पीत-वर्णवाला (कुमा, ठा ४, २, श्रोप)। ३ पु ग्रह विशेष (ठा २, ३)। ४ एक यक्ष (सिरि ६६६)। ५ चक्रवर्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करनेवाला एक निधान (ठा ९, उप ९८६ टी)। ६ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ७ प्राकृत-पिंगल का कर्ता एक कवि (पिंग)। ८ एक जैन उपासक (भग)। ९ न प्राकृत का एक छन्द ग्रन्थ (पिंग)। °कुमार पु [°कुमार] एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ के समीप दीक्षा ली थी (सुपा ९६)। °क्ख वि [°क्ष] १ नीली-पीली आँखवाला (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ पु. पक्षि-विशेष (पण्ह १, १, औप)।

पिंगलायण न [पिङ्गलायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [पिङ्गलित] नीला-पीला किया हुआ (से ४, १८, गउड, सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [पैङ्गलिक] पिंगल-सबन्धी (पिंग)।

पिंगा देखो पिंग।

पिंगायण न [पिङ्गायन] मघा-नक्षत्र का गोत्र (इक)।

पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (कुमा)।

पिंगिम पुंस्त्री [पिङ्गिमन्] पिंगता, पीलापन (गउड)।

पिंगीकय वि [पिङ्गीकृत] पीला किया हुआ, 'घणायणवुसिरिणिसुप्पकपिंगीकय व्व' (लहुअ ७)।

पिंगुल पु [पिङ्गुल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पिचु पुंस्त्री [दे] पक्व करीर, पक्का करील (दे ६, ४६)।

पिंछ } देखो पिच्छ (आचा, गउड, सुपा पिंछड } ६४१)।

पिंछी स्त्री [पिच्छी] साधु का एक उपकरण, 'नवि लेइ जिणा पिंछी (°च्छि)' (विचार १२८)।

पिंछोली स्त्री [दे] मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष (दे ६, ४७)।

पिंज सक [पिञ्ज्] पीजना, रूई का धुनना। वकृ. पिंजत (पिंड ५७४, श्रोघ ४६८)।

पिंजण न [पिञ्जन] पीजना (पिंड ६०३, दे ७, ६३)।

पिंजर पु [पिञ्जर] १ पीत-रक्त वर्ण, रक्त-पीत मिश्रित रंग। २ त्रि रक्त-पीत वर्णवाला (गउड, कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [पिञ्जरय्] रक्त-मिश्रित पीत-वर्ण-युक्त करना। वकृ. पिंजरयत (पउम ६२, ६)।

पिंजरण न [पिञ्जरण] रक्त-मिश्रित पीत-वर्णवाला करना (सण)।

पिंजरिअ वि [पिञ्जरित] पिञ्जर वर्णवाला किया हुआ (हम्मीर १२, गउड, सुपा ५२४)।

पिंजरुड पुं [दे] पक्षि-विशेष, भारुण्ड पक्षी, जिसके दो मुँह होते हैं (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [पिञ्जित] पीजा हुआ (दे ७, ६४)।

पिंजिअ वि [दे] विधुत (दे ६, ४९)।

पिंड सक [पिण्डय्] १ एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। २ अक एकत्रित होना, मिलना। पिंडेइ, पिंडयए (उव, पिंड ६६)। संकृ पिण्डिऊण (कुमा)।

पिंड पु [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यो का संश्लेष (पिण्डभा २)। २ समूह, संघात (श्रोघ ४०७ विसे ९००)। ३ गुड वगैरह की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ (पण्ह २, ५)। ४ भिक्षा मे मिलता आहार, भिक्षा (उव, ठा ७)। ५ देह का एक देश। ६ देह, शरीर। ७ घर का एक देश। ८ अन्न का गोला जो पितरो के उद्देश से दिया जाता है। ९ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिह्लक। १० जपा-पुष्प। ११ कवल, ग्रास। १२ गज-कुम्भ। १३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड। १४ न आजीविका। १५ लोहा। १६ श्राद्ध, पितरो को दिया जाता दान। १७ वि. सहत। १८ घन, निबिड (हे १, ८५)। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेनेवाला (वव ३)। °गुला स्त्री [°गुला] गुड-विशेष, इक्षुरस का विकार-विशेष, शक्कर बनने के पहले की अवस्था-विशेष (पिंड २८३)। °घर न [°गृह] कर्दम से बना हुआ घर (वव ४)। °त्थ पु [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष, 'न पिंडत्थपयत्थावत्थंतरभावणा सम्म' (संबोध २)। °त्थ पु [°र्थ] समुदायार्थ (राज)। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध (धर्मवि २६)। °पयडि स्त्री [°प्रकृति] अवान्तर भेदवाली प्रकृति (कम्म १, २५)। °वद्धण न [°वर्धन] आहार-वृद्धि, कवल-वृद्धि, अन्न प्राशन (अंत)। °वद्धावण न [°वर्धन] आहार बढाना (औप) °वाय पु [°पात] भिक्षा-लाभ, आहार-प्राप्ति (ठा ५, १, कस)। °वास पु [°वास] मुहूजन (भवि)। °विसुद्धि, °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] भिक्षा की निर्दोषता (अंत, श्रोघभा ३)।

पिंडग पु [पिण्डक] ऊपर देखो (कप्प)।

पिंडण न [पिण्डन] १ द्रव्यों का एकत्र संश्लेष (पिंडभा २)। २ ज्ञानावरणीयादि कर्म (पिंड ६६)।

पिंडणा स्त्री [पिण्डना] १ समूह (ओघ ४०७)। २ द्रव्यों का परस्पर संयोजन (पिंड २)।

पिंडय देखो पिंड (ओघभा ३३)।

पिंडरय न [दे] दाडिम, अनार (दे ६, ४८)।

पिंडलइय वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४, पाअ)।

पिंडलग न [दे] पटलक, पुष्प का भाजन (ठा ७)।

पिंडवाइअ वि [पिण्डपातिक, पैण्डपातिक] भक्त-लाभवाला, जिसको भिक्षा मे आहार की प्राप्ति हो वह (ठा ५, १, कस, ओप, प्राकृ ६)।

पिंडार पु [पिण्डार] गोप, ग्वाला (गा ७३१)।

पिंडालु पु [पिण्डालु] कन्द-विशेष (श्रा २०)।

पिंडि° देखो पिंडी (भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

पिंडिम वि [पिण्डिम] १ पिण्ड से बना हुआ, बहल (पराह २, ५—पत्र १५०)। २ पुद्गल-समूहरूप, संघाताकार (णाया १, १ टी—पत्र ५, औप)।

पिंडिय वि [पिण्डित] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सूअनि १४०, पचा १४, ७, महा)। २ गुणित (ओप)।

पिंडिया स्त्री [पिण्डिका] १ पिण्डी, पिंडली, जानू के नीचे का मासल अवयव (महा)। २ वर्तुलाकार वस्तु (ओप)। देखो पिंडी।

पिंडी स्त्री [पिण्डी] १ लुम्बी, गुच्छा (औप, भग, णाया १, १, उप पृ ३६)। २ घर का आधार-भूत काष्ठ विशेष, पीढा, 'विघडिर्यपिंडीवचसविपरिलविवालणिम्मोआ' (गउड)। ३ वर्तुलाकार वस्तु, गोला, 'विन्नागपिंडी' (सूअ २, ६, २६)। ४ खर्जूर-विशेष (नाट—शकु ३५)। देखो पिंडिया।

पिंडी स्त्री [दे] मञ्जरी (दे ६, ४७)।

पिंडीर न [दे पिण्डीर] दाडिम, अनार (दे ६, ४८)।

पिंडेसणा स्त्री [पिण्डैषणा] भिक्षा ग्रहण करने की रीति (ठा ७)।

पिंडेसिय वि [पिण्डैषिक] भिक्षा की खोज करनेवाला (भग ६, ३३)।

पिंडोलग, पिंडोलगय, पिंडोलय वि [पिण्डावलगक] भिक्षा से निर्वाह करनेवाला, भिक्षा का प्रार्थी, भिक्षु (आचा, उत्त ५, २२, सुख ५, २२, सूअ १, ३, १, १०)।

पिंध (अप) सक [पि + धा] ढकना। पिंधउ (पिंग)। सकृ पिधउ (पिंग)।

पिंधण (अप) न [पिधान] ढकना (पिंग)।

पिंसुली स्त्री [दे] मुँह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६ ४७)।

पिक पुस्त्री [पिक] कोकिल पक्षी (पिंग)। स्त्री. °की (दे ६, ५१)।

पिक देखो पक्क = पक्व (हे १, ४७, पाअ, गा ५६५)।

पिक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना। पिक्खइ (भवि)। वकृ. पिक्खत (भवि)। कृ. पिक्खेयव्व (सुर ११, १३३)।

पिक्खग वि [प्रेक्षक] निरीक्षक, द्रष्टा (ती १०, धर्मवि १५)।

पिक्खण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (राज)।

पिक्खिय वि [प्रेक्षित] दृष्ट (पि ३६०)।

पिग देखो पिक (कुमा)।

पिचु पुं [पिचु] कार्पास, रुई (दे ६, ७८)। °लया स्त्री [°लता] पूनी रूई की पूनी (दे ६, ५६)।

पिचुमद पु [पिचुमन्द] निम्ब वृक्ष, नीम का पेड (मोह १०३)।

पिच्च, पिच्चा अ [प्रेत्य] पर-लोक, आगामी जन्म (श्रा १४, सुपा ५०६, सूअ १, १, १, ११)। देखो पेच्च।

पिच्चा देखो पिअ = पा।

पिच्चिय वि [दे पिच्चित] कूटी हुई छाल (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पिच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पिच्छइ, पिच्छति, पिच्छ (कप्प, प्रासू १६०, ३३)। वकृ. पिच्छत, पिच्छमाण (सुपा ३४६, भवि)। कवकृ पिच्छिज्जमाण (सुपा ६२)। सकृ पिच्छिउ, पिच्छिऊग (प्रासू ६१, भवि)। कृ. पिच्छणिज्ज (कप्प, सुर १३, २२३, रयण ११)।

पिच्छ न [पिच्छ] १ पक्ष का अवयव, पख का हिस्सा (उवा, पाअ)। २ मयूर-पिच्छ, शिखण्ड (णाया १, ३)। ३ पक्ष, पाख (उप ७६८ टी, गउड)। ४ पूँछ, लाङ्गूल (गउड)।

पिच्छण न [प्रेक्षण] १ दर्शन, अवलोकन (श्रा १४, सुपा ५५)।

पिच्छण, पिच्छणय न [प्रेक्षण, °क] तमाशा, खेल, नाटक, 'पारद्ध पिच्छणं तहि ताव' (सुपा ४८५), 'तो जवणियछिड्डेहिं पिच्छइ अतेउरपि पिच्छणय' (सुपा २००)।

पिच्छल वि [पिच्छल] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त। २ मसृण (सण)।

पिच्छा स्त्री [प्रेक्षा] निरीक्षण। °भूमि स्त्री [°भूमि] रग-मण्डप, रंगमच (पाअ)।

पिच्छि वि [पिच्छिन्] पिच्छवाला (ओप)।

पिच्छिर वि [प्रेक्षितृ] प्रेक्षक, द्रष्टा, देखनेवाला (सुपा ७८, कुमा)।

पिच्छिल वि [पिच्छिल] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध। २ मसृण, चिकना (गउड, हास्य १४०, दे ६, ४६)।

पिच्छिली स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६ ४७)।

पिच्छी स्त्री [दे] चूडा, चोटी (दे ६, ३७)।

पिच्छी स्त्री [पिच्छिका] पीछी (गा ५७२)।

पिच्छी स्त्री [पृथ्वी] १ पृथ्वी, धरित्री, धरनी (कुमा)। २ वडी इलायची। ३ पुनर्नवा। ४ कृष्ण जीरक। ५ हिंगुपत्री (हे १, १२८)।

पिच्छोला स्त्री [दे] वीन वजाने की कंबिका (सूत्र कृ० चू० पत्र १४६)।

पिज्ज सक [पा] पीना। पिज्जइ (हे ४, १०)। कृ पिज्जणिज्ज (कुमा)।

पिज्ज पुंन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग (सूअ १, १६, २, कप्प)।

पिज्ज, पिज्जत देखो पा = पा।

पिज्जा स्त्री [पेया] यवागू (पिंड ६२४)।

पिज्जाविअ वि [पायित] जिसको पान कराया गया हो वह (सुख २, १७)।

पिट्ट सक [पीडय्] पीडा करना। पिट्टंति (सूअ २, २, ५५)।

पिट्ट अक [भ्रश्] नीचे गिरना। पिट्टइ (षड्)।

पिट्ट सक [पिट्टय्] पीटना, ताडन करना। पिट्टइ, पिट्टेइ (प्राचा, पिंग, गा १७१, सिरि ६५५)। वकृ पिट्टंत (पिंग)।

पिट्ट न [दे] पेट, उदर (पचा ३, १६, धर्मवि ६६, चेइय २३८, कप्पू २६, सुपा ५६३, सं २१)।

पिट्टण न [पिट्टन] ताडन, आघात (सूत्र २, २, ६२, पिंड ३४, पण्ह १, १, ओघ ५१६, उप ५०६)।

पिट्टण न [पीडन] पीडा, क्लेश (सूत्र २, २, ५५)।

पिट्टणा स्त्री [पिट्टना] ताडन (ओघ ३५७)।

पिट्टावणया स्त्री [पिट्टना] ताडन कराना (भग ३, ३—पत्र १८२)।

पिट्टिय वि [पिट्टित] पीटा हुआ, ताडित (सुपा २, १५)।

पिट्ठ न [पिष्ट] तण्डुल आदि का आटा, चूर्ण (णाया १, १, ३, दे १, ७८, गा ३८८)।

पिट्ठ न [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा (औप, उव)। °ओ अ [°तस्] पीछे से, पृष्ठ भाग से (उवा, विपा १, १, औप)। °करंडग न [°करण्डक] पृष्ठ-वंश, पीठ की बड़ी हड्डी (तंदु ३५)। °चर वि [°चर] पृष्ठ-गामी, अनुयायी (कुमा)। देखो पिट्ठि।

पिट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ। २ न स्पर्श (पव १५७)।

पिट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुआ। २ न प्रश्न, पृच्छा, 'जंपमि विणअ ण जपसे पिट्ठ' (गा ९४३)।

पिट्ठंत न [दे पृष्टान्त] गुदा, गांड (दे ६, ४६)।

पिट्ठखउरा स्त्री [दे] पङ्क सुरा, कलुष मदिरा (दे ६, ५०)।

पिट्ठखउरिआ स्त्री [दे] मदिरा, दारू (पाप्र)।

पिट्ठव्व वि [प्रष्टव्य] पूछने योग्य, 'नियकरहोदोनि किं पुरी कि पिट्ठि (?ट्ठ) व्वा' (रंभा)।

पिट्ठायय पुन [पिष्टातक] केसर आदि गन्ध-द्रव्य (गउड, स ७३४)।

पिट्ठि स्त्री [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का भाग (हे १, १२६, णाया १, ६, रंभा, कुमा, षड्)। °ग वि [°ग] पीछे चलनेवाला (श्रा १२)। °चम्पा स्त्री [°चम्पा] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी (कप्प)। °मंस न [°मांस] परोक्ष मे अन्य के दोष का कीर्तन, 'पिट्ठिमंस न खाइज्जा' (दस ८, ४७)। °मंसिय वि [°मांसिक] परोक्ष मे दोष बोलनेवाला, पीछे निन्दा करनेवाला (सम ३७)। °माउया स्त्री [°मातृका] एक अनुत्तर-गामिनी स्त्री, 'चंदिमा पिट्ठिमाउया' (अनु २)। देखो पिट्ठ = पृष्ठ।

पिट्ठी स्त्री [पैष्टी] आटा की बनी हुई मदिरा (बृह २)।

पिड पु [पिट] १ वंश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष। २ कब्जा, अधीनता, 'जा ताव तेणं भणियं रे रे रे वाल मह पिडे पडिओ' (सुपा १७६)।

पिडग देखो पिडय = पिटक (औप, उवा, सुज्ज १६)।

पिडच्छा स्त्री [दे] सखी (दे ६, ४६)।

पिडय न [पिटक] १ वंशमय पात्र-विशेष, 'भोयणपि (? पि) डय करेति' (णाया १, १—पत्र ८६)। २ दो चन्द्र और दो सूर्यो का समूह (सुज्ज १६)।

पिडय वि [दे] आविग्न (षड्)।

पिडव सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना। पिडवइ (षड्)।

पिडिआ स्त्री [पिटिका] १ वंश-मय भाजन-विशेष (दे ४, ७, ६, १)। २ छोटी मंजूषा पेटी, पिटारी (उप ५८७, ५६७ टी)।

पिड्डु सक [पीडय्] पीडना। पिड्डुइ (प्राचा, (पि २७६)।

पिड्डु अक [भ्रंश्] नीचे गिरना। पिड्डुइ (षड्)।

पिड्डुइअ वि [दे] प्रशान्त (षड्)।

पिढ अ [पृथक्] अलग, जुदा (षड्)।

पिढर पुन [पिठर] १ भाजन-विशेष, स्थाली (पाप्र, प्राचा, कुमा)। २ गृह-विशेष। ३ मुस्ता, मोथा। ४ मन्थान दण्ड, मथनिया (हे १, २०१, षड्)।

पिणद्ध सक [पि + नह्, पिनि + धा] १ ढकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४ बाँधना। पिणद्धइ, पिणद्धेइ (पि ५५६)। हेकृ. पिणद्धुं, पिणद्धित्तए (अभि १८५, राज)।

पिणद्ध वि [पिनद्ध] १ पहना हुआ (पाप्र, औप, गा ३२८)। २ बद्ध, यन्त्रित (राय)। ३ पहनाया हुआ, 'निगमउडोवि पिणद्धो तस्स सिरे रयणचिंचइओ' (सुपा १२५)।

पिणद्धाविद (शौ) वि [पिनिधापित] पहनाया हुआ (नाट—शकु ६८)।

पिणाइ पु [पिनाकिन्] महादेव, शिव (पाप्र, गउड)।

पिणाई स्त्री [दे] आज्ञा, आदेश (दे ६, ४८)।

पिणाग पुन [पिनाक] १ शिव-धनुष। २ महादेव का शूलास्त्र (धर्मवि ३१)।

पिणागि देखो पिणाइ (धर्मवि ३१)।

पिणाय देखो पिणाग (गउड)।

पिणाय पु [दे] बलात्कार (दे ६, ४६)।

पिणिद्ध वि [पिनद्ध, पिनिहित] देखो पिणद्ध = पिनद्ध, (पण्ह २, ४—पत्र १३०, कप्प, औप)।

पिणिधा सक [पिनि + धा] देखो पिणद्ध = पि + नह्। हेकृ पिणिधत्तए (औप, पि ५७८)।

पिण्णाग देखो पिन्नाग (राज)।

पिण्णिया स्त्री [दे पिण्यिका] गन्ध द्रव्य-विशेष, ध्यामक, गन्ध-तृण (उत्तनि ३)।

पिण्ही स्त्री [दे] क्षामा, कृश स्त्री (दे ६, ४६)।

पित्त पुन [पित्त] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु (भग, उव)। °ज्जर पु [°ज्वर] पित्त से होता बुखार (णाया १, १)। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] पित्त की प्रबलता से होनेवाली बेहोशी (पडि)।

पित्तल न [पित्तल] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र १४४)।

पित्तिज्ज, पित्तिय पु [पितृव्य] चाचा, पिता का भाई (कप्प, सम्मत्त १७२, सिरि २६३, धर्मवि १२७, स ४६५, सुपा ३३४)।

पित्तिय वि [पैत्तिक] पित्त का, पित्त-संबन्धी (तंदु १६, णाया १, १, औप)।

पिधं अ [पृथक्] अलग, जुदा (हे १, १८८, कुमा)।

पिधाण देखो पिहाण (नाट—विक्र १०३)।

पिन्नाग, पिन्नाय पु [पिण्याक] खली, तिल आदि का तेल निकाल लेने पर जो उसका

भाग वचता है वह (सूअ २, ६, २६, २, १, १६, २, ६, २८)।

पिपीलिअ पुं [पिपीलक] कीट-विशेष, चोऊँटा (कप्प)।

पिपीलिआ } स्त्री [पिपीलिका] चीटी, पिपीलिका } चीऊँटी (पण्ह १, ६, जी १६, णाया १, १६)।

पिप्पड सक [दे] बडबडाना, जो मन मे आवे सो बकना। पिप्पडइ (दे ६, ५० टी)।

पिप्पडा स्त्री [दे] ऊर्णा-पिपीलिका (दे ६, ४८)।

पिप्पडिअ वि [दे] १ जो बडबडाया हो। २ न बडबडाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद (दे ६, ५०)।

पिप्पय पु [दे] १ मशक (दे ६, ७८)। २ पिशाच, भूत (पाअ)। ३ वि उन्मत्त (दे ६, ७८)।

पिप्पर पु [दे] १ हंस। २ वृषभ (दे ६, ७६)।

पिप्परी स्त्री [पिप्पली] पीपर का गाछ (पण्ण १)।

पिप्पल पुन [पिप्पल] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ (उप १०३१ टी, पाअ, हि १०)। २ छुरा, क्षुरक (विपा १, ६—पत्र ६६, ओघ ३५६)।

पिप्पलग वि [पैप्पलक] पीपल के पान का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

पिप्पलि } स्त्री [पिप्पलि, °ली] ओषधि-पिप्पली } विशेष, पीपर, 'महुपिप्पलिसुठाई अणेगहा साइम होइ' (पचा ५, ३०, पण्ण १७)।

पिप्पिडिअ देखो पिप्पडिअ (षड्)।

पिप्पिया स्त्री [दे] दांत का मैल (णदि)।

पिब देखो पिअ = पा। पिवामो (पि ४८३)। सक्. पिबित्ता (आचा)।

पिब्ब न [दे] जल, पानी (दे ६, ४६)।

पिम्म पुं [प्रेमन्] प्रेम, प्रीति, अनुराग (पाअ, सुर २, १७२, रंभा)।

पियाल पु [प्रियाल] १ वृक्ष-विशेष, खिरनी का पेड। २ न फल-विशेष, खिरनी, खिन्नी (दस ५, २, २४)।

पियास (अप) स्त्री [पिपासा] प्यास (भवि)।

पिरिडी स्त्री [दे] शकुनिका, चिडिया (दे ६, ४७)।

परिपिरिया देखो परिपिरिया (राज)।

पिरिली स्त्री [पिरिली] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। २ वाद्य-विशेष (राज)।

पिल देखो पील। कर्म. पिलिज्जइ (नाट)।

पिलखु } पुं [प्लक्ष] १ वृक्ष-विशेष, पिलक्खु } पिलखन पाकड का पेड (सम १५२, ओघ २६, पि ७४)। २ एक तरह का पीपल वृक्ष, 'पिलक्खू पिप्पलभेदो' (निचू ३)।

पिलण न [दे] पिच्छिल देश, चिकनी जगह (दे ६, ४६)।

पिला देखो पीला (पि २२६)।

पिलाग न [पिटक] फोडा, फुनसी (सूअ १, ३, ४, १०)।

पिलिंखु देखो पिलखु (विचार १४८)।

पिलिहा स्त्री [प्लीहा] अग-विशेष, पिलही, तिल्ली (तदु ३६)।

पिलुअ न [दे] क्षुत, छीक (षड्)।

पिलुक } देखो पिलखु (पि ७४, पण्ण पिलुक्ख } १—पत्र ३१)।

पिलुंखु देखो पिलखु (आचा २, १, ८, ३)।

पिलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध (हे २, १०६)।

पिलोस पु [प्लोष] दाह, दहन (हे २,१०६)।

पिल्ल देखो पेल्ल = क्षिप्। पिल्लइ (भवि)।

पिल्ल सक [प्र + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ प्रवृत्त करना। पिल्लेइ (वव १)।

पिल्लग न [दे] पक्षी का बच्चा।

पिल्लण न [प्रेरण] प्रेरणा (ज ३)।

पिल्लणा स्त्री [प्रेरणा] प्रेरणा (कप्प)।

पिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष (दसा ६)।

पिल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ (पाअ, भवि; कुमा)।

पिल्लिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा ३८१)।

पिल्लिरी स्त्री [दे] १ तृण-विशेष, गण्डूत तृण। २ चीरी, कीट-विशेष। ३ घर्म, पसीना (दे ६, ७६)।

पिल्लुग (दे) देखो पिलुअ (वव २)।

पिल्हु न [दे] छोटे पक्षी के तुल्य (दे ६, ४६)।

पिव देखो इव (हे २, १८२, कुमा, महा)।

पिव सक [पा] पीना। पिवइ (पिग)। भूका. अपिवित्था (आचा)। कर्म. पिवीअंति (पि ५३६)। सक्. पिविअ, पिविइत्ता, पिवित्ता (नाट, ठा ३, २, महा)। हेकृ. पिविउं, पिवित्तए (माक ४२, औप)।

पिवण देखो पिअण = (दे) (भवि)।

पिवासय वि [पिपासक] पीने की इच्छा-वाला (भग—अत्थ°)।

पिवासा स्त्री [पिपासा] प्यास, पीने की इच्छा (भग, पाअ)।

पिवासिय वि [पिपासित] तृषित (उवा, वे. .)।

पिवीलिआ देखो पिपीलिआ (उव, स ४२०, भा ४६)।

पिव्व देखो पिव्अ (षड्)।

पिस सक [पिष्] पीसना। पिसइ (षड्)।

पिसग पुं [पिशङ्ग] १ पिंगल वर्ण, मटियारा रँग। २ वि पिंगल वर्णवाला (पाअ, कुप्र १०५, ३०६)।

पिसडि [दे] देखो पसढि (सुपा ६०७, कुप्र ६२, १४५)।

पिसल्ल पुं [पिशाच] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवो की एक जाति (हे १, १६३, कुमा, पाअ, उप २६४ टी, ७६८ टी)।

पिसाजि वि [पिशाचिन्] भूताविष्ट (हे १, १७७, कुमा, षड्, चड)।

पिसाय देखो पिसल्ल (हे १, १६३, पण्ह १, ४, महा, इक)।

पिसिअ न [पिशित] मांस (पाअ, महा)।

पिसुअ पुंस्त्री [पिशुक] क्षुद्र कीट-विशेष। स्त्री °या (राज)।

पिसुण सक [कथय्] कहना। पिसुणइ, पिसुणेइ, पिसुणंति, पिसुणेंति, पिसुणसु (हे ४, २, गा ६८१, सुर ६, ११३, गा ५५६, कुमा)।

पिसुण पु [पिशुन] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलखोर (सुर ३, १६, प्रासू १८, गा ३७७, पाअ)।

पिसुणिअ वि [कथित] १ कहा हुआ । २ सूचित (सुपा २३; पाअ, कुप्र २७८) ।
पिसुमअ (पै) पु [विस्मय] आश्चर्य (प्राकृ १२४) ।
पिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना । पिहाइ (भग ३, २—पत्र १७३) । संकृ. पिहाइत्ता (भग ३, २) ।
पिह वि [पृथक्] भिन्न, जुदा, 'पिहप्पिहाए' (विसे ८४८) ।
पिहं अ [पृथक्] अलग (हे १, १३७, षड्) ।
पिहड पु [दे] १ वाद्य-विशेष । २ वि विवर्ण (दे ६, ७९) ।
पिहड देखो पिढर (हे १, २०१; कुमा, उवा) ।
पिहण न [पिधान] १ ढक्कन, पिधान (सुर १६, १६५) । २ ढकना, आच्छादन (पंचा १, ३२; सबोध ४६, सुपा १२१) ।
पिहणया स्त्री [पिधान] आच्छादन, ढकना (स ५१) ।
पिहअ देखो पिह = पृथक् (कुमा) ।
पिहा सक [पि + धा] १ ढकना । २ बंद करना । पिहाइ (भग ३,२) । सकृ पिहाइत्ता, पिहिऊण (भग ३, २, महा) ।
पिहाण देखो पिहण (ठा ४, ४; रत्न २५, कप्प) ।
पिहाणिआ स्त्री [पिधानिका] ढकनी (पाअ) ।
पिहाणी स्त्री [पिधानी] ऊपर देखो (दे) ।
पिहिअ वि [पिहित] १ ढका हुआ । २ बंद किया हुआ (पाअ; कम, ठा २, ४—पत्र ६६; सुपा ६३०) । °सव वि [°स्रव] १ जिसने आस्रव को रोका हो (दम ४) । २ पु एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १८) ।
पिहिण देखो पिहण, 'आणवणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव' (श्रा ३०, पडि) ।
पिहिमि° (अप) स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती । °पाल पुं [°पाल] राजा (भवि) ।
पिहीकय वि [पृथक्कृत] अलग किया हुआ (पिंड ३६१) ।
पिहु वि [पृथु] १ विस्तीर्ण (कुमा) । २ पु. एक राजा का नाम (पउम ९८, ३४) । °रोम पु [°रोम] मीन, मत्स्य (दे ६, ५० टी) ।
पिहु देखो पिह = पृथक् (सुर १३, ३९, सण) ।
पिहु° देखो पिहुय, 'पिहुखज्ज त्ति नो वए' (दस ७, ३४) ।
पिहुंड न [पिहुण्ड] नगर-विशेष (उत्त २१, २) ।
पिहुण [दे] देखो पेहुण (आचा २, १, ७, ६) । °हत्थ पुं [°हस्त] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पँखा (आचा २, १, ७, ६) ।
पिहुत्त देखो पुहुत्त (तंदु ४) ।
पिहुय पुन [पृथुक] खाद्य-विशेष, चिउडा (आचा २, १, १, ३, ४) ।
पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण (पण्ह १, ४, ओप, दे ६, १४३, कुमा) ।
पिहुल न [दे] मुँह के वायु से बजाया जाता तृण-वाद्य (दे ६, ४७) ।
पिहे देखो पिहा । पिहेइ, पिहे (उत्त २९, ११; सूअ १, २, २, १३) । सकृ पिहेऊण (पि ५८६) ।
पिहो अ [पृथक्] अलग, भिन्न (विसे १०) ।
पिहोअर वि [दे] तनु, कृश, दुर्बल (दे ६, ५०) ।
पी सक [पी] पान करना । वकृ 'तम्मुहम-सककंतिपीऊसपूर पीयमाणी' (रयण ५१) ।
पीअ पु [पीत] १ पीत वर्ण, पीला रँग । २ वि. पीत वर्णवाला, पीला (हे २, १७३, कुमा; प्राप्र) । ३ जिसका पान किया गया हो वह (से १, ४०, दे ६, १४४) । ४ जिसने पान किया हो वह (प्राप्र) ।
पीअ वि [प्रीत] प्रीति युक्त, संतुष्ट (औप) ।
पीअर (अप) नीचे देखो (पिंग) ।
पीअल देखो पीअ = पीत (हे २, १७३, प्राप्र) ।
पीअसी स्त्री [प्रेयसी] प्रेम-पात्र स्त्री (कुमा) ।
पीइ पु [दे] अश्व, घोडा (दे ६, ५१) ।
पीइ } स्त्री [प्रीति] १ प्रेम, अनुराग (कप्प, पीई° } महा) । २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११) । °कर पुन [°कर] एक विमानावास, आठवाँ ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७, पव १९४) । °गम न [°गम] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान (इक, औप) । °दाण न [°दान] हर्ष होने के कारण दिया जाता दान, पारितोषिक (औप, सुर ४, ६१) । °धम्मिय न [°धार्मिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प) । °मण वि [°मनस्] १ प्रीति युक्त चित्तवाला (भग) । २ पु महाशुक्र देवलोक का एक यान विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । °वद्धण पु [°वर्धन] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९, कप्प) ।
पीईय पु [दे] वृक्ष-विशेष, गुल्म का एक भेद, 'पीईयपाणकणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य' (पण्ण १) ।
पीऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (पाअ) ।
पीड सक [पीडय्] १ हेरान करना । २ दबाना । पीडइ, पीडतु (पिंग, हे ४, ३८५) । कर्म पीडिज्जइ (पिंग) । कवकृ पीडिज्जंत, पीडिज्जमाण (से ११, १०२, गा ५४१, सण) ।
पीड° देखो पीडा । °यर वि [°कर] पीडा-कारक (पउम १०३, १४३) ।
पीडरइ स्त्री [दे] चोर की स्त्री (दे ६, ५१) ।
पीडा स्त्री [पीडा] पीडन, हेरानी, वेदना (पाअ) । °कर वि [°कर] पीडा-कारक, 'अलिअं न भासियव्वं अत्थि हु सच्चपि जं न वत्तव्वं । सच्चपि तं न सच्चं जं परपीडाकरं वयणं' (श्रा ११; प्रासू १५०) ।
पीडिअ वि [पीडित] १ पीडा से जो दुःखी हो वह, अभिभूत, पराजित, व्याकुल, दुःखित । २ दबाया गया (हे १, २०३, महा, पाअ) ।
पीढ पुन [पीठ] १ आसन, पीढा, 'पीढ विट्ठर आसणं' (पाअ, रयण ६३) । २ आसन विशेष, व्रती का आसन (चउ, हे १, १०६, उवा, औप) । ३ तल, 'चत्तूण नेडपीढं' (कुमा) । ४ पु एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी) । °बध पु [°बन्ध] ग्रंथ की अवतरणिका, भूमिका, 'नय पीढबन्ध-रहियं कहिज्जमाणंपि देइ भावत्थं' (पउम ३, १६) । °मद्द, °मद्दअ पुस्त्री [°मर्दक] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक का समीपवर्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य विशेष (णाया १, १—पत्र १९, कप्प) । स्त्री °मद्दिआ (मा १६) । °सप्पि वि [°सर्पिन्] पंगु-विशेष (आचा) ।

पीढ न [दे] १ ईख पेरने का यन्त्र (दे ६, ५१)। २ समूह, यूथ, 'उट्ठियं वणगइंदपीढ, पणट्ठा दिसो दिसो (?सि) कप्पडिया' (स २३३)। ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग, 'हत्थिपीढसमारूढो' (त्रि ६६)।

पीढग } न [पीठक] देखो पीढ = पीठ
पीढय } (कस, गच्छ १, १०, दस ७, २८)।

पीढरखड न [पीठरखण्ड] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ (पउम ७७, ६४)।

पीढाणिय न [पीठानीक] अश्व-सेना (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीढिआ स्त्री [पीठिका] आसन-विशेष, मञ्च, 'आसदी पीढिआ' (पाअ)। देखो पेढिया।

पीढी स्त्री [दे पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ, गुजराती में 'पीढिउं', 'तत्तो नियत्तिऊण सत्तट्ठ पयाइं जाव पहरेइ। ता उवरिपीढिपलग्गे खग्गेण खडक्किय तत्थ' (धर्मवि ५६)।

पीण सक [पीनय्] पुष्ट करना। पीणंति (राय १०१)।

पीण सक [प्रीणय्] खुश करना। कृ देखो पीणणिज्ज।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण (दे ६, ५१)।

पीण वि [पीन] पुष्ट, मांसल, उपचित (हे २, १५४, पाअ, कुमा)।

पीणण न [प्रीणन] खुश करना (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [प्रीणनीय] प्रीति जनक (औप, कप्प, पराण १७)।

पीणाइय वि [दे पैनायिक] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ, 'पीणाइयविरसरडियसद्दण फोडयते व अंबरतलं' (णाया १, १—पत्र ६३)।

पीणाया स्त्री [दे पीनाया] गर्व, अहंकार (णाया १, १)।

पीणिअ वि [प्रीणित] १ तोषित (सण)। २ उपचित, परिवृद्ध (दस ७, २३)। ३ पुं ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंस्त्री [पीनता] पुष्टता, मांसलता (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो पा = पा।

पीयमाण देखो पी = पी।

पीरिपीरिया स्त्री [दे] वाद्य विशेष (राय ४५)।

पील सक [पीडय्] १ पीलना, पेरना, दबाना। २ पीडा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ (धात्वा १४५, पि २४०)। कवकृ. पीलिज्जंत (श्रा ६)।

पीलण न [पीलन] दबाव, पीलन, पेरना, 'माणसिणीए माणो पीलणभीअ व्व हिअआहि' (काप्र १६६), 'जंतपीलणकम्मं' (उवा)।

पीला देखो पीडा (उप ४३६, सुपा ३५८)।

पीलावय वि [पीडक] १ पेरनेवाला। २ पुं. तेली, यंत्र से तेल निकालनेवाला (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [पीडित] पीला या पेरा हुआ (औप, ठा ५, ३, उव)।

पीलिम वि [पीडावत्] दाबवाला, दाबने से बना हुआ (वस्त्र आदि की आकृति) (दसनि २, १७)।

पीलु पु [पीलु] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ (पराण १, वज्जा ४६)। २ हाथी (पाअ, स ७३५)। ३ न. दूध, 'एगट्ठं बहुनाम दुद्धं पओ पीलु खीरं च' (पिंड १३१)।

पीलुअ पुं [दे. पीलुक] शावक, बच्चा, 'तडसठिअणीडेक्कतपीलुआरक्खणेक्कदिएणम-णा' (गा १०२)।

पीलुट्ठ वि [दे प्लुष्ट] देखो पिलुट्ठ (दे ६, ५१)।

पीवर वि [पीवर] उपचित, पुष्ट (णाया १, १, पाअ, सुपा २६१)। °गब्भा स्त्री [°गर्भा] जो निकृष्ट भविष्य में ही प्रसव करनेवाली हो वह स्त्री (ओघभा ८३)।

पीवल देखो पीअ = पीत (हे १, २१३, २, १७३, कुमा)।

पीस सक [पिष्] पीसना। पीसइ (पि ७६)। वकृ पीसंत (पिंड ५७४, णाया १, ७)। सकृ पीसिऊण (कुप्र ४५)।

पीसण न [पेषण] १ पीसना, दलना (पराह १, १, उप पृ १४०, रयण १८)। २ वि पीसनेवाला (सूअ १, २, १, १२)।

पीसय वि [पेषक] पीसनेवाला (सुपा ६३)।

पीह सक [स्पृह्, प्र + ईह्] अभिलाषा करना, चाहना। पीहति, पीहेज्जा (औप, ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु (उप ३११)।

°पु स्त्री [पुर्] शरीर (विसे २०६५)।

पुअ न [प्लुत] १ तिर्यग् गति। २ झंपना, झम्प-गति, 'जुज्झामो पू (? पु) यघाएहिं' (विसे १४३६ टी)। °जुद्ध न [°युद्ध] अधम युद्ध का एक प्रकार (विसे १४७७)।

पुअड पुं [दे] तरुण, युवा (दे ६, ५३, पाअ)।

पुआइ वि. [दे] १ तरुण, युवा (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त (दे ६, ८०, षड्)। ३ पुं पिशाच (दे ६, ८०, पाअ, षड्)।

पुआइणी स्त्री [दे] १ पिशाच-गृहीत स्त्री, भूताविष्ट महिला। २ उन्मत्त स्त्री। ३ कुलटा, व्यभिचारिणी (दे ६, ५४)।

पुआव सक [प्लावय्] ले जाना। सकृ पुयावइत्ता (ठा ३, २)।

पुं° पु [पुंस्] पुरुष, मर्द (पि ४१२, धम्म १२ टी)। देखो पुंगव, पुनाग, पुवउ आदि।

पुंख पु [पुङ्ख] १ बाण का अग्र भाग, 'तस्स य सरस्स पुंख विद्धइ अन्नेण तिक्खबाणेण' (धर्मवि ६७, उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान-विशेष (सम २२)।

पुंखणग न [दे प्रोङ्खणक] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोंखणुं' (सुपा ६५)।

पुंखिअ वि [पुङ्खित] पुंख-युक्त किया हुआ, 'धणुहे तिक्खो सरो पुंखिओ' (कप्पू)।

पुंगल पुं [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (भवि)।

पुंगव वि [पुङ्गव] श्रेष्ठ, उत्तम (सुपा ५, ८०, श्रु ४१, गउड)।

पुंछ सक [प्र + उञ्छ्] पोंछना, सफा करना। पुंछइ (प्राकृ ६७, हे ४, १०५)। कृ. पुंछणीअ (पि १८२)।

पुंछ पुन [पुच्छ] पूँछ, लाङ्गूल (प्राकृ १२, हे १, २६)।

पुंछण न [प्रोञ्छन] १ मार्जन (कप्प, उवा, सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण (बृह १)।

पुंछणी स्त्री [प्रोञ्छनी] पोछने का एक छोटा तृणमय उपकरण (राय)।

पुंछिअ वि [प्रोञ्छित] पोछा हुआ, मृष्ट (पाअ, कुमा, भवि)।

पुंज सक [पुञ्ज्, पुञ्जय्] १ इकट्ठा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुंजइ (हे ४, १०२, भवि)। कर्म पुंजिज्जइ (कप्पू)। कवकृ पुंजइज्जमाण (से १२, ८६)।

पुंज पुन [पुञ्ज] ढेर, राशि (कप्प, कस, कुमा), 'खारिक्कपुंजयाइ ठावइ' (सिरि ११६६)।

पुंजइअ वि [पुञ्जित] १ एकत्रित (से ६, ६३, पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर (पउम ८, २६१)।

पुंजइज्जमाण देखो पुंज = पुञ्ज्।

पुंजक } वि [पुञ्जक] १ राशि रूप से
पुंजय } स्थित, 'न उण पुंजकपुंजका' (पिंड ८२)। २ देखो पुंज = पुञ्ज।

पुंजय पुंन [दे] कतवार, गुजराती में 'पूंजो', 'कामोत्ति तहि पुंजयपुंछण-
छउमेण नियपावरय।
अवणितीओ इव
सारंविति जिणमंदिरंगणय'
(सुपा २६०)।

पुंजाय वि [दे] पिण्डाकार किया हुआ, 'पुंजाय पिंडलइय' (पाअ)।

पुंजाविय वि [पुञ्जित] एकत्रित कराया हुआ (माल)।

पुंजिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित (से ५, ७२, कुमा, कप्पू)।

पुंड पु [पुण्ड्र] १ देश विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग (स २२५, भग १५)। २ इक्षु-विशेष (पउम ४२, ११, गा ७४०)। ३ वि. पुण्ड्र-देशीय (पउम ६६, ५५)। ४ धवल, श्वेत, सफेद (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। ५ पुन तिलक (स ६, पिंडभा ४३, कुप्र २६४)। ६ देव-विमान विशेष (सम २२)। °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष (स २२५)। देखो पोंड।

पुंडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पुंडरिक देखो पुंडरीअ (सूअ २, १, १)।

पुंडरिकि वि [पुण्डरीकिन्] पुण्डरीकवाला (सूअ २, १, १)।

पुंडरिगिणी स्त्री [पुण्डरीकिणी] पुष्कलावती विजय की एक नगरी (णाया १, १६, इक, कुप्र २६५)।

पुंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक, पौण्डरीक (उव, काल, पि ३५४)।

पुंडरीअ पु [पुण्डरीक] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र (कुप्र २६५, णाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्दूल (पाअ)। ४ पुन तप-विशेष (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल (सूअनि १४५)। ६ कमल, पद्म, 'अनुरुह सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंद' (पाअ, सम १, कप्प)। ६ देव-विमान विशेष (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद (सम १३२)। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। °दह, °द्दह पु [°द्रह] शिखरी पर्वत पर का एक महा-ह्रद (ठा २, ३, सम १०४)।

पुंडरीअ वि [पौण्डरीक] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-सवन्धी (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य। ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम (सूअनि १४७, १४८)। ४ न सूत्रकृताङ्ग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन (सूअनि १५७)। देखो पोंडरीग।

पुंडरीया स्त्री [पुण्डरीका] देखो पोंडरी (राज)।

पुंडे अ [दे] जाओ (दे ६, ५२)।

पुंढ देखो पुंड (उप ७६५)।

पुंढ पु [दे] गर्त, गड्ढा, गढा (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [पुन्नाग] १ वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुल-तान चम्पक, पाटल का गाछ (उप पृ १८, ७६८ टी, सम्मत्त १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम मर्द (धम्म १२ टी, सम्मत्त १७५)। देखो पुन्नाम।

पुंपुअ पु [दे] सगम (दे ६, ५२)।

पुंभ पुन [दे] नीरस, दाडिम का छिलका (?), 'मग्गइ अलत्तयं जा निपीलिय पुंभ-मप्पए ताव' (धर्मवि ६७), ['अलत्तए मग्गिए नीरस पणामेइ' (महा ५६)]।

पुंवउ पुन [पुंवचस्] व्याकरणोक्त सस्कार-युक्त शब्द-विशेष, पुंलिंग शब्द (पण्ण ११—पत्र ३६३)।

पुंवेय पु [पुंवेद] १ पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष। २ उसका कारण भूत कर्म (पि ४१२)।

पुंस सक [पुंस्, मृज्] मार्जन करना, पोछना। पुंसइ (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो पुं°। °कोइल, °कोइलग पु [°कोकिल] मरदाना कोयल, पिक (ठा १०—पत्र ५६६, पि ४१२)।

पुंसण न [पुंसन] मार्जन (कुमा)।

पुंसद्द पु [पुंशब्द] 'पुरुष' ऐसा नाम (कुमा)।

पुंसली स्त्री [पुंश्चली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (वज्जा ६८, धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [पुंसित] पोछा हुआ (दे १, ६६)।

पुक्क } सक [पूत् + कृ] पुकारना, डाँकना,
पुक्कर } आह्वान करना। पुक्करेइ (धम्म ११ टी)। वकृ पुक्कत, पुक्करत (पण्ह १, ३—पत्र ४५, श्रा १२)। देखो पोक्क।

पुक्करिय वि [पूत्कृत] पुकारा हुआ (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो पुक्खल (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का स्त्री देखो पुक्कार = पूत्कार (पाअ, सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो पुक्कर। पुक्कारेंति (राय)। वकृ. पुक्कारत, पुक्कारित, पुक्कारेमाण (सुपा ४१५, ३८१, २४८, णाया १, १८)।

पुक्कार पुं [पूत्कार] पुकार, डाँक, आह्वान (सुपा ५१७, महा, सण)।

पुक्खर देखो पोक्खर = पुष्कर (कप्प, महा, पि १२५)। °कण्णिया स्त्री [°कर्णिका]

पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग (ग्रौप)। °क्ख पुं [°क्ष] १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ कश्मीर के एक राजा का नाम (मुद्रा २४२)। °गय न [°गत] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष (ग्रौप)। °द्ध न [°र्ध] पुष्करवर नामक द्वीप का ग्राधा हिस्सा (सुज्ज १६)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (ठा २, ३, पडि)। °सवट्टग देखो पुक्खल-सवट्टय (राज)। °वित्त देखो पुक्खलावट्टय (राज)।

पुक्खरिणी देखो पोक्खरिणी (सूग्र २, १, २, ३, ग्रौप, पाग्न)।

पुक्खरोअ } पुं [पुष्करोद] समुद्र-विशेष
पुक्खरोद } (इक, ठा ३,१,७, सुज्ज १६)।

पुक्सल पु [पुष्कर] एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम ग्रोपधि है (इक)। २ पद्म, कमल, 'भिसभिसमुणाल-पुक्खलत्ताए' (सूग्र २, ३, १८)। ३ पद्म-केसर (ग्राचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °विभग न [°विभङ्ग] पद्म-कन्द (ग्राचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °संवट्ट, °संवट्टय पुं [°सवर्त, °क] मेघ-विशेष, जिसके वरसने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है (उर २, ६, ठा ४, ४—पत्र २७०)। देखो पुक्खर।

पुक्खल पुं [पुष्कल] १ एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ग्रनार्य देश-विशेष। ३ पुत्री उस देश मे उत्पन्न, उसमें रहनेवाला, 'सिघलीहिं पुलिदिहिं पुक्खलीहिं (?)' (भग ६, ३३—पत्र ४५७), ['सिहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (?)' (भग ६, ३३ टी—पत्र ४६०)]। ४ वि. ग्रत्यन्त, प्रभूत (कुप्र ४१०)। ५ सपूर्ण, परिपूर्ण (सूग्र २, १, १)।

पुक्खलच्छिभग } पुन [दे] जलरुह-विशेष,
पुच्छलच्छिभय } जल मे होनेवाली वनस्पति-विशेष (सूग्र २, ३, १८, १६)। देखो पोक्खलच्छिलय।

पुक्खलावई स्त्री [पुष्करावती, पुष्कलावती] महाविदेह वर्ष का विजय—प्रान्त-विशेष (ठा २, ३, इक, महा)। °कूड पुन [°कूट] एक-शैल पर्वत का एक शिखर (इक)।

पुक्खलावट्टय पुं [पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक] मेघ-विशेष, 'पुक्खल (?ला) वट्टए ए महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति' (ठा ४, ४)।

पुक्खलावत्त पुं [पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त (ज ४)। °कूड पुं [°कूट] एकशैल पर्वत का एक शिखर (इक)।

पुगारिया स्त्री [दे] वस्त्रादि खादक जतु-विशेष (सूग्र० चू० गा० २८२)।

पुग्ग पुन [दे] वाद्य-विशेष, 'सो पूरम्मि पुग्गाइं वाएइ' (कुप्र ४०३)।

पुग्गल पुं [पुद्गल] १ वृक्ष-विशेष। २ न. फल-विशेष। ३ मांस (दस ५, १, ७३)।

पुग्गल देखो पोग्गल (सिक्खा १५, नव ४२, पि १२५)। °परट्ट, °परावत्त पु [°परावर्त] देखो पोग्गल परिअट्ट (कम्म ५, ८६, वै ५०, सिक्खा ८)।

पुच्चड देखो पोच्चड, 'सेयमतपुच्च (? च) डम्मी' (तदु ४०)।

पुच्छ सक [प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। पुच्छइ (हे ४, ६७)। भूका. पुच्छिसु, पुच्छीग्र, पुच्छे (पि ५१६, कुमा, भग)। कर्म. पुच्छिज्जइ (भवि)। वक्र पुच्छत (गा ४७, ३५७, कुमा)। कवक्र. पुच्छिज्जत (गा ३४७, सुर ३. १५१)। सक्र. पुच्छित्ता (भग)। हेक्र. पुच्छिउ, पुच्छित्तए (पि ५७३, भग)। कृ. पुच्छणिज्ज, पुच्छणीअ, पुच्छियव्व, पुच्छेयव्व (श्रा १४, पि ५७१, उप ८६४, कप्प)।

पुच्छ देखो पुंछ = प्र + उञ्छ्। पुच्छइ (पड्)।

पुच्छ देखो पुंछ = पुच्छ (कप्प)।

पुच्छअ } वि [प्रच्छक] पूछनेवाला,
पुच्छग } प्रश्न-कर्ता (ग्रोघभा २८, सुर १०, ६५)। स्त्री. °च्छिआ (ग्रभि १२५)।

पुच्छण न [प्रच्छन, प्रश्न] पृच्छा (सुग्रनि १६३, धर्मवि ८, श्रावक ६३ टी)।

पुच्छणया } स्त्री [प्रच्छना] ऊपर देखो
पुच्छणा } (उप ४६६, ग्रौप)।

पुच्छणी स्त्री [प्रच्छनी] प्रश्न की भाषा (ठा ४, १—पत्र १८२)।

पुच्छल (ग्रप) देखो पुट्ठ = पृष्ट (पिंग)।

पुच्छा स्त्री [पृच्छा] प्रश्न (उवा, सुर ३, ३५)।

पुच्छिअ वि [पृष्ट] पूछा हुग्रा (ग्रौप; कुमा, भग, कप्प, सुर २, १६८)।

पुच्छिर वि [प्रष्टृ] प्रश्न-कर्ता (गा ५६८)।

पुछल देखो पुच्छल (पिंग)।

पुज्ज सक [पूजय्] पूजना, ग्रादर करना। पुज्जइ (कुप्र ४२३, भवि)। कर्म. पुज्जिज्जइ (भवि)। वक्र. पुज्जत (कुप्र १२१)। कवक्र. पुज्जिज्जत (भवि)। संक्र. पुज्जिउ, पुज्जिऊण (कुप्र १०२, भवि)। कृ. पुज्जिअव्व (ती ७)। प्रयो. पुज्जावइ (भवि)।

पुज्ज देखो पूज = पूजय्।

पुज्जत देखो पुज्ज=पूजय्।

पुज्जत देखो पूर = पूरय्।

पुज्जण न [पूजन] पूजा, ग्रर्चा (कुप्र १२१)।

पुज्जमाण देखो पूर = पूरय्।

पुज्जा स्त्री [पूजा] पूजा, ग्रर्चा (उप पृ २४२)।

पुज्जिय वि [पूजित] सेवित, ग्रर्चित (भवि)।

पुट्ट सक [प्र + उञ्छ्] पोछना। पुट्टइ (प्राकृ ६७)।

पुट्ट न [दे] पेट, उदर (श्रा २८, मोह ४१, पव १३५, सम्मत्त २२६, सिरि २४२, सण)।

पुट्टल } पुन [दे] गट्ठर, गांठ, गुजराती
पुट्टलय } मे 'पोटलु', 'सवलपुट्टलय च गहिय' (सम्मत्त ६१)।

पुट्टलिया स्त्री [दे] छोटी गठरी, पोटली, मोटरी (सुपा ४३, ३४४)।

पुट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो भविष्य मे तीर्थंकर होनेवाला है (विचार ४७८)। २ एक ग्रनुत्तर-देवलोक-गामी जैन महर्षि (ग्रनु २)।

पुट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुग्रा हुग्रा (भग, ग्रौप, हे १, १३१)। २ न. स्पर्श (ठा २, १, नव १८)।

पुट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुग्रा (ग्रौप, सण, हे २, ३४)। २ न. प्रश्न (ठा २, १)। °लाभिय वि [°लाभिक] ग्रभिग्रह-विशेष-वाला (मुनि) (ग्रौप, पण्ह २, १)। °सेणियापरिकम्म पुंन [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८)।

पुट्ठ वि [पुष्ट] उपचित (णाया १, ३, म ४१६)।

पुट्ठ देखो पिट्ठ = पृष्ठ (प्राप्र, सक्षि १६)।

पुट्ठव वि [स्पृष्टवत्] जिसने स्पर्श किया हो वह (आचा १, ७, ८, ८)।

पुट्ठवई देखो पोट्ठवई (सुज्ज १०, ६)।

पुट्ठवया स्त्री [प्रोष्टपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज्ज १०, ५)।

पुट्ठि स्त्री [पुष्टि] पोषण, उपचय (विसे २२१, चेइय ८)। २ अहिंसा, दया (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °म वि [°मत्] १ पुष्टिवाला। २ पु भगवान् महावीर का एक शिष्य (अनु)।

पुट्ठि देखो पिट्ठि = पृष्ठ, 'पासपडिअस्स पइणो पुट्ठि पुत्ते समारुहन्तम्मि' (गा ११, ३३, ८७, प्राप्र, सक्षि १६)।

पुट्ठि स्त्री [पृष्टि] पृच्छा, प्रश्न। °य वि [°ज] प्रश्न जनित (ठा २, १—पत्र ४०)।

पुट्ठि स्त्री [स्पृष्टि] स्पर्श। °य वि [°ज] स्पर्श-जनित (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [पृष्टिका] प्रश्न से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [स्पृष्टिका] स्पर्श से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (ठा २, १)।

पुट्ठिल देखो पोट्ठिल (अनु २)।

पुट्ठीया स्त्री [स्पृष्टीया] देखो पुट्ठिया = स्पृष्टिका (नव १८)।

पुट्ठीया स्त्री [पृष्टीया] पृच्छा से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (नव १८)।

पुट पु [पुट] १ परिमाण-विशेष। २ पुट-परिमित वस्तु (राय ३४)।

पुड पुन [पुट] १ मिथ सम्बन्ध, परस्पर जोड़ान, मिलाप, मिलान, 'अंजलिपुड—', 'ताहे वरारविंदपुडेण नीओ सो' (औप, महा)। २ पात्र, ढांक आदि का समुदाय, 'दुरूबपुड-संठाणसंठिया' (उवा ६४ टी, गउड ११६७, कुमा)। ३ सवद्ध दलद्वय, मिला हुआ दो दल 'निम्बपुडसंठिया' (उवा, गउड ५७६)। ४ औषधि पकाने का पात्र विशेष (णाया १, १३)। ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना (रंभा)। ६ आच्छादन, ढक्कन (उवा, गउड)। ७ कमल, पद्म, 'पुडइणी' (विक्र २३)। °भेयण न [°भेदन] नगर, शहर (कस)। °वाय पु [°पाक] १ पुट-पात्रो से औषधि का पाक-विशेष। २ पाक-निष्पन्न औषध-विशेष, 'पुढ (? ड) वाएहिं' (णाया १, १३—पत्र १८१)।

पुड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (पि २९२, प्राप्र)।

पुडअ वि [दे] पिण्डीकृत, एकत्रित (दे ६, ५४)।

पुडइणी स्त्री [दे पुटकिनी] नलिनी, कमलिनी (दे ६, ५५, विक्र २३)।

पुडग पुन [पुटक] देखो पुट = पुट (उवा)।

पुडपुडी स्त्री [दे] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज (पव ३८)।

पुडम देखो पुढम (प्रति ७१, पि १०४)।

पुडय देखो पुडग (उवा, सुपा ६५६)।

पुडिंग न [दे] मुँह, वदन। २ विन्दु (दे ६, ८०)।

पुडिया स्त्री [पुटिका] पुड़ी, पुड़िया (दे ५, १२)।

पुड्ढ (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (प्राप्र)।

पुढ देखो पिहु (पड्)।

पुढम वि [प्रथम] पहला (हे १, ५५, कुमा, स्वप्न २३१)।

पुढवि° देखो पुढवी (आचानि १, १, २, भग १६, ३, पि ६७)। °काइय, °क्काइय वि [°कायिक] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (पण्ण १, भग १६, ३, ठा १, आचानि १, १, २)। °क्काय देखो पुढवी-काय (आचानि १, १, २)।

पुढवी स्त्री [पृथिवी] १ पृथिवी, धरती, भूमि (हे १, ८८, १३१, ठा ३, ४)। २ काठिन्यादि गुणवाला पदार्थ, द्रव्य विशेष—मृत्तिका पाषाण, धातु आदि (पण्ण १)। ३ पृथिवीकाय का जीव (जी २)। ४ ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ भगवान सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (राज)। °काइय देखो पुढवि-काइय (राज)। °काय वि [°काय] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (आचानि १, १, २)। °वइ पु [°पति] राजा (ठा ७)। °सत्थ न [°शस्त्र] १ पृथिवी रूप शस्त्र। २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि (आचा)। देखो पुहई, पुहवी।

पुढोभूय वि [पृथग्भूत] जो अलग हुआ हो (सुपा २८६)।

पुढुम वि [प्रथम] पहला, आद्य (हे १, ५५, कुमा)।

पुढो अ [पृथग्] अलग, भिन्न (सुपा ३६२, रयण ३०, श्रावक ४०, आचा)। °छंद वि [°छन्द] विभिन्न अभिप्रायवाला (आचा, पि ७८)। °जण पु [°जन] प्राकृत मनुष्य, साधारण लोक (सूअ १, ३, १, ६)। °जिय पुं [°जीव] विभिन्न प्राणी (सूअ १, १, २, ३)। °विमाय, °वेमाय वि [°विमात्र] अनेक प्रकार का, बहुविध (राज, ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पुढोजग वि [दे पृथग्जक] पृथग्भूत, भिन्न व्यस्थित, 'जमिणं जगती पुढोजगा' (सूअ १, २, १, ४)।

पुढोवम वि [पृथिव्युपम] पृथिवी की तरह सब सहन करनेवाला (सूअ १, ६, २६)।

पुढोसिय वि [पृथिवीश्रित] पृथिवी के आश्रय में रहा हुआ (सूअ १, १२,१३, आचा)।

पुण सक [पू] १ पवित्र करना। २ धान्य आदि को तुषरहित करना, साफ करना। पुणइ (हे ४, २४१)। पुणाति (णाया १, ७)। कर्म. पुणिज्जइ, पुव्वइ (हे ४, २४२)।

पुण अ [पुनर्] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ भेद विशेष (विसे ८११)। २ अवधारण, निश्चय। ३ अधिकार, प्रस्ताव। ४ द्वितीय वार, वारान्तर। ५ पक्षान्तर। ६ समुच्चय (पण्ह २, ३, गउड, कुमा, औप, जी ३७, प्रासू ६, ५२, १६८, स्वप्न ७२, पिंग)। ७ पादपूर्ति में भी इनका प्रयोग होता है (निचू १)। °करण न [°करण] फिर से बनाना। २ वि. जिसकी फिर से बनावट की जाय वह, 'भिन्न सम न होइ पुणकरणं' (उव)। °णव वि [°नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा (उप ७६८ टी, कप्पू)। °पुण अ [°पुनर्] फिर-फिर, वारंवार। °पुणकरण न [°पुन करण] फिर फिर बनाना, वारंवार निर्माण (दे १,

३२)। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण (चेइय ३५७; ग्रौप)। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लग्न हुआ हो वह महिला, 'अत्थि पुणब्भूकप्पो त्ति विवाहिया पच्छन्न' (कुप्र २०८; २०६)। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी (उवा, उत्त १०, १६, १६)। °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुन आवर्त्तन (पडि)। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ। २ न पुनरुक्ति (चेइय ५८८)। °वि अ [°अपि] फिर भी (सक्षि १६, प्राकृ ८७)। °व्वसु पु [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०, ६६)। २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३, पउम २०, १७२)।

पुण (अप) देखो पुण्ण = पुण्य। °मत वि [°मत्] पुण्यशाली (पिंग)।

पुणअ सक [दृश्] देखना। पुणग्रइ (धात्वा १४५)।

पुणड पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, ३८)।

पुणण वि [पवन] पवित्र करनेवाला। स्त्री °णी (कुमा)।

पुणरुत्त } अ कृत करण, वारंवार, फिर-फिर,
पुणरुत्त } 'अइ सुप्पइ पसुलि णीसहेहिं अगेहिं पुणरुत्त' (हे १, १७६, कुमा), 'ण वि तह छेग्ररआईंति हरति पुणरुत्तराग्ररसिग्राइ' (गा २७४)।

पुणा } अ देखो पुण = पुनर् (पि ३४३,
पुणाइ } हे १, ६५, कुमा, पउम ६, ६७,
पुणाइ } उवा)।

पुणु (अप) देखो पुण = पुनर् (कुमा, पि ३४२)।

पुणो देखो पुण = पुनर् (ग्रौप, कुमा; प्राकृ ८७)।

पुणोत्त देखो पुण-रुत्त, पुणरुत्त (प्राकृ ३०)।

पुणोल्ल सक [प्र + नोदय्] १ प्रेरणा करना। २ अत्यन्त दूर करना। पुणोल्लयामो (उत्त १२, ४०)।

पुण्ण पुन [पुण्य] १ शुभ कर्म, सुकृत (ग्रौप, महा; प्रासू ७५, पाग्र)। २ दो उपवास, बेला, 'भद्द पुण्ण (? ण्ण) गुही (? हि)य छट्ठभत्तस्स एगट्ठा' (संबोध ५८)। ३ वि पवित्र, 'थाणुपियाजलपुण्ण' (कुमा)। कलसा स्त्री [°कलशा] लाट देश के एक गाँव का नाम (राज)। °घण पुं [°घन] विद्याधरो का एक स्वनाम ख्यात राजा (पउम ५, ६५)। °मत, °मत्त वि [°वत्] पुण्यवाला, भाग्यवान् (हे २, १५६, चड)। देखो पुन्न = पुण्य।

पुण्ण वि [पूर्ण] १ सपूर्ण भरपूर, पूरा (ग्रोप, भग, उवा)। २ पु द्वीपकुमार देवो का दाक्षिणात्य इन्द्र (इक)। ३ इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव (राज)। ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवी, दसवी और पनरहवी तिथि (सुज्ज १०, १५)। ५ पुन. शिखर विशेष (इक)। °कलस पु [°कलश] सपूर्ण घट (ज १)। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव (सम १५४)। °चद पु [°चन्द्र] १ सपूर्ण चन्द्रमा। २ विद्याधर वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इक्षुवर द्वीप का अधिपति देव (राज)। °भद्द पु [°भद्र] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र (४, १)। ३ पुन. अनेक कूट-शिखरो का नाम (इक)। ४ यक्ष का चैत्य-विशेष (ग्रौप, विपा १, १, उवा)। °मासी स्त्री [°मासी] पूर्णिमा तिथि (दे)। °सेण पु [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु)। देखो पुन्न = पूर्ण।

पुण्णमासिणी स्त्री [पौर्णमासी] तिथि-विशेष, पूर्णिमा (ग्रौप, भग)।

पुण्णवत्त न [दे] आनन्द से हृत वस्त्र (दे ६, ५३, पाग्र)।

पुण्णा स्त्री [पूर्णा] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वी तिथि (सबोध ५४, सुज्ज १०, १५)। २ पूर्णभद्र और मणिभद्र इन्द्र की एक महादेवी—अग्र-महिषी (इक, णाया २), 'पुण्णभद्दस्स ण जक्खिदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—पुत्ता (? ण्णा) बहुपुत्तिआ उत्तमा तारगा, एव माणिभद्दस्सवि' (ठा ४, १—पत्र २०४)।

पुण्णाग } देखो पुन्नाग (पउम ४२, ३६, से
पुण्णाम } ६, ५६, हे १, १९०, पि २३१)।

पुण्णाली स्त्री [दे] असती, कुलटा, पुश्चली (दे ६, ५३, षड्)।

पुण्णाह पुन [पुण्याह] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस (गा १६५, गउड)। २ वाद्य-विशेष, 'पुण्णाहतूरेण' (स ४०१, ७३४)।

पुण्णिमसी स्त्री [पूर्णमासी] पूर्णिमा (सबोध ३६)।

पुण्णिमा स्त्री [पूर्णिमा] तिथि-विशेष, पूर्णमासी (काप्र १६४)। °यद पुं [°चन्द्र] पूर्णिमा का चन्द्र (महा, हेका ४८)।

पुण्णिमासिणी देखो पुण्णमासिणी (सम ६६, श्रा २६, सुज्ज १०, ६)।

पुत्त पु [पुत्र] लडका (ठा १०, कुमा, सुपा ६६, ३३४, प्रासू २७, ७७, णाया १, २)। °वई स्त्री [°वती] लडकावाली स्त्री (सुपा २८१)।

पुत्तजीवय पु [पुत्रजीवक] वृक्ष-विशेष, पुतजीया, जियापोता का पेड, 'पुत्तजीवअरिट्ठे' (पण्ण १—पत्र ३१)। २ न जियापोता का बीज, 'पुत्तजीवयमालालकिएण' (स ३३७)।

पुत्तय पुं [पुत्रक] देखो पुत्त (महा)।

पुत्तरे पुस्त्री [दे] योनि, उत्पत्ति-स्थान, 'पुत्तरे योनी' (सक्षि ४७)।

पुत्तलय पु [पुत्रक] पूतला (सिरि ८६१, ६२, ६४)।

पुत्तलिया } स्त्री [पुत्रिका] शालभजिका, पूतली
पुत्तली } (पाग्र, कुम्मा ६, प्रवि १३, सुपा २६६, सिरि ८१५)।

पुत्तह देखो पुत्त (प्राकृ ३५)।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [पौत्रानुपुत्रिक] पुत्र-पौत्रादि के योग्य, 'पुत्ताणुपुत्तिय वित्ति कप्पेति' (णाया १, १—पत्र ३७)।

पुत्तिआ स्त्री [पुत्रिका] १ पुत्री, लडकी (अभि १७८)। २ पूतली (दे ६, ६२, कुमा)।

पुत्तिल्ल देखो पुत्त (प्राकृ ३५)।

पुत्ती स्त्री [पुत्री] लडकी (कप्पू)।

पुत्ती स्त्री [पोती] १ वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका (पव ६०, सबोध ५४)। २ साड़ी, कटी-वस्त्र (धर्मवि १७)। देखो पोत्ती।

पुत्तुल्ल पु [पुत्र] पुत्र, लड़का (प्राकृ ३५)।

पुत्थ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, ५२)।

पुत्थ } पुंन [पुस्त, °क] १ लेप्यादि कर्म
पुत्थय } (श्रा १)। २ पुस्तक, पोथी, किताब, 'पुत्थए लिहावेइ' (कुप्र ३४८), 'अग्गहरिओ पुत्थओ सहसा' (सम्मत्त ११८)। देखो पोत्थ।

पुथवी देखो पुढवी (चंड)।

पुथुणी } (प) देखो पुढवी (प्राकृ १२४,
पुथुवी } पि १६०)। °नाथ (पै) पु [°नाथ] राजा (प्राकृ १२४)।

पुध देखो पिह = पृथक् (ठा १०)।

पुध देखो पिध (हे १, १८८)।

पुधम } (पै) देखो पुढम, पुढुम (पि
पुधुम } १०८, हे ४, ३१६)।

पुन्न देखो पुण्ण = पुण्य, 'कह मह इत्तियापुन्ना जं सो दीसिज्ज पच्चक्ख' (सुर १२, ११८; उप ७६८टी, कुमा)। °कंखिअ वि [°काङ्क्षित, °काङ्क्षिन्] पुण्य की चाहवाला (भग)। °कलस पुं [°कलश] एक राजा का नाम (उप ७६८ टी)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक स्त्री का नाम (उप ७२८ टी) °पत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °पिवासिअ वि [°पिपासक] पुण्य का प्यासा, पुण्य की चाहवाला (भग)। °भागि वि [°भागिन्] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली (सुपा ६४२)। °सम्म पु [°शर्मन्] एक ब्राह्मण का नाम (उप ७२८ टी)। °सार पुं [°सार] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)।

पुन्न देखो पुण्ण = पूर्ण (सुर २, ६७, उप ७६८ टी, ठा २, ३, अनु २)। °तल्ल पु [°तल्ल] एक जैन मुनि-गच्छ (कुप्र ६)। °पाय वि [°प्राय] करीब-करीब संपूर्ण, कुछ कम पूर्ण (उप ७२८ टी)। °भद्द पुं [°भद्र] १ यक्ष विशेष (सिरि ६६६)। २ यक्ष-निकाय का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि, आर्य श्री संभूतविजय का एक शिष्य (कप्प)।

पुन्नयण पु [पुण्यजन] यक्ष, एक देव-जाति (पाअ)।

पुन्नाग } देखो पुनाग (कप्प, कुमा, पउम
पुन्नाम } २१, ४६, पाअ)। ३ न. पुन्नाग का
पुन्नाय } फूल (कुमा, हे १, १९०)।

पुन्नालिया } [दे] देखो पुण्णाली (सुपा
पुन्नाली } ५९६, ५९७)।

पुन्निमा देखो पुण्णिमा (रंभा)।

पुप्पुअ वि [दे] पीन, पुष्ट, उपचित (दे ६, ५२)।

पुप्फ न [पुष्प] १ फूल, कुसुम (णाया १,१, कप्प, सुर ३,६५, कुमा)। एक विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५, सम ३८)। ३ स्त्री का रज। ४ विकास। ५ आँख का एक रोग। ६ कुबेर का विमान (हे १, २३६, २, ५३, ९०, १५४)। °इरि पु [गिरि] एक पर्वत का नाम (पउम ७६, १०)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान, 'पुप्फकंत' (सम ३८)। °करंडय पु [°करण्डक] हस्तिशीर्ष नगर का एक उद्यान, 'पुप्फकरंडए उज्जाणे' (विपा २ १)। °केउ पु [°केतु] १ ऐरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर—जिनदेव (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। °ग न [°क] १ मूल भाग, 'भाणस्स पुप्फगतो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे' (ओघ २८९)। २ पुष्प, फूल (कप्प)। ३ देखो नीचे °य (औप)। °चूला स्त्री [°चूला] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (सम १५२, कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की सुयोग्य शिष्या (पडि)। ३ सुवाहुकुमार की मुख्य पत्नी का नाम (विपा २, १)। °चूलिया स्त्री [°चूलिका] एक जैन ग्रन्थ (निर १, ४)। °च्चणिया स्त्री [°ार्चनिका] पुष्पों से पूजा (णाया १, २)। °चिणिया स्त्री [°चायिनी] फूल चिननेवाली स्त्री (पाअ)। °छज्जिया स्त्री [°छादिका] पुष्प-पात्र-विशेष (राज)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम ३८)। °णंदि पु [°नन्दिन्] एक राजा का नाम (ठा १०)। °णालिया देखो °नालिया (तदु)। °दंत पु [°दन्त] १ नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (सम ९२, ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ देव-विशेष (सिरि ६६७)। °दंती स्त्री [°दन्ती] दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी (कुप्र ४८)। °नालिया स्त्री [°नालिका] पुष्प का बँट—डंठल (तदु ४)। °निज्जास पुं [°निर्यास] पुष्प-रस (जीव ३)। °पुर न [°पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज)। °पूरय पु [°पूरक] पुष्प की रचना-विशेष (णाया १, १६)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम ३८)। °बलि पुं [°बलि] उपचार, पुष्प-पूजा (पाअ)। °बाण पु [°बाण] कामदेव (रंभा)। °भद्द स्त्रीन [°भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर (राज)। °मंत वि [°वत्] पुष्पवाला (णाया १, १)। °माल न [°माल] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक नगर (इक)। °माला स्त्री [°माल] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °य पुं [°क] १ फेन, डिण्डीर (पाअ)। २ न ईशानेन्द्र का एक पारियानिक विमान, देव-विमान-विशेष (ठा ८; इक, पउम ७६, २८, औप)। ३ पुष्प, फूल (कप्प)। ४ ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण (ज २)। देखो ऊपर °ग। °लाई, °लावी स्त्री [°लावी] फूल चिननेवाली स्त्री (पाअ दे १, ९)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम ३८)। °वई स्त्री [°वती] १ ऋतुमती स्त्री (दे ६, ६४, गा ४८०)। २ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, णाया २)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—प्रमुख साध्वी का नाम (सम १५२, पव ९)। ४ चैत्य-विशेष (भग)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम ३८)। °सिद्ध न [°सिद्ध] देव विमान विशेष (सम ३८)। °सुय पु [°शुक] व्यक्ति-वाचक नाम (उव)। °वत्त न [°ावर्त्त] एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफसा, शरीर का एक भीतरी अंग (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन (दे ६, ५२)।

पुप्फिअ वि [पुष्पित] कुसुमित, संजात-पुष्प (धर्मवि १४८; कुमा, णाया १, ११; सुपा ५८)।

पुप्फिआ स्त्री [दे] देखो पुप्फा (पाअ)।

पुप्फिआ स्त्री [पुष्पिता] एक जैन आगम-ग्रंथ (निर १, ३)।

पुप्फिम पुंस्त्री [पुष्पत्व] पुष्पपन (हे २, १५४)।

पुप्फी [दे] देखो पुप्फा (पड्)।

पुप्फुआ स्त्री [दे] करीष (गोयठा) का अग्नि, 'सूइज्जइ हेमतम्मि दुग्गओ पुप्फुआसुअवेण' (गा ३२६)।

पुप्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान (कप्प)। °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फुत्तरा } स्त्री [पुष्पोत्तरा] शक्कर की
पुप्फोत्तरा } एक जाति (णाया १, १७—पत्र २२६, पएण १७—पत्र ५३३)।

पुप्फोदय न [पुष्पोदक] पुष्प-रस से मिश्रित जल (णाया १, १—पत्र १६)।

पुप्फोवय } वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त
पुप्फोवा° } करनेवाला, फूलनेवाला (वृक्ष) (ठा ३, १—पत्र ११३)।

पुम पुं [पुस्] १ पुरुष, नर, 'थीअपुमाणं विसुज्झत्ता' (पच ५, ७२), 'पुमत्तमागम्म कुमार दोवि' (उत्त १४, ३, ठा ८, औप)। २ पुरुष-वेद (कम्म ५, ६०)। °आणमणी स्त्री [°आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देनेवाली भाषा, भाषा-विशेष (पएण ११)। °पन्नावणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा-विशेष, पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करनेवाली भाषा (पएण ११—पत्र ३६४)। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द का उच्चारण (पएण ११—पत्र ३७०)।

पुम्म (अप) सक [दृश्] देखना। पुम्मइ (प्राकृ ११६)।

पुयली स्त्री [दे] पुत-प्रदेश, कमर के नीचे का भाग, 'पुयलि पप्फोडेमाणे' (भग १५—पत्र ६७६)।

पुयावइत्ता देखो पुआव।

पुर (अप) देखो पूर = पूरय्। पुरह (पिंग)।

पुर न [पुर] १ नगर, शहर (कुमा, कुप्र ४३८)। २ शरीर, देह (कुप्र ४३८)। °चंद पुं [°चन्द्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)। °भेयण वि [°भेदन] नगर का भेदन करनेवाला। स्त्री—°णी (उत्त २०, १८)। °वइ पु [°पति] नगर का अधिपति (भवि)। °वर न [°वर] श्रेष्ठ नगर, (उवा, पएह १, ४)। °वरी स्त्री [°वरा] श्रेष्ठ नगरी (णाया १, ६, उवा, सुर २, १५२)। °वाल पु [°पाल] नगर-रक्षक, राजा (भवि)।

पुर देखो पुर, 'पुरकम्मम्मि य पुच्छा' (बृह १)।

पुरएअ } देखो पुरदेव (भवि)।
पुरएव }

पुरओ अ [पुरतस्] १ अग्रत, आगे (सम १५१, ठा ४, २, गा ३५०, कुमा, औप)। २ पहले, पूर्व मे, 'पुरओ कयं ज तु तं पुरेकम्म' (ओघ ४८६)।

पुरं अ [पुरस्] १ पहले, पूर्व मे। २ समक्ष, 'तए ण से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुर च ण विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरिज्जा' (ठा २, १—पत्र ११७)। ३ अग्रे, आगे। °गम वि [°गम] अग्र-गामी, पुरोवर्त्ती (सूअ १, ३, ३, ६)। देखो पुरे, पुरो।

पुरंजय पुं [पुरञ्जय] एक विद्याधर राजा। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

पुरंदर पुं [पुरन्दर] १ इन्द्र, देवराज। २ गन्ध द्रव्य-विशेष (हे १, १७७)। ३ वृक्ष-विशेष, चव्य जा पेड, 'पुरंदरकुसुमदाम-सुविणेण सूइया जाया' (उप ९८६ टी)। ४ एक राजर्षि (पउम २१, ८०)। ५ मन्दर-कुञ्ज नगर का एक विद्याधर राजा (पउम ६, १७०)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक राज-कन्या का नाम (उप ९७३)। °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व दिशा (उप १४२ टी)।

पुरंधि } स्त्री [पुरन्ध्री] १ बहु कुटुम्बवाली
पुरंधी } स्त्री। २ पति और पुत्रवाली स्त्री (कुमा, कुप्र १०७, सुपा २६, पाअ)। ३ अनेक काल पहले व्याही हुई स्त्री (कप्पू)।

पुरक्कड देखो पुरक्खड (सूअ २, २, १८)।

पुरक्कार पुं [पुरस्कार] १ आगे करना, अग्रत-स्थापन (आचा)। २ सम्मान, आदर (सम ४०)।

पुरक्खड वि [पुरस्कृत] १ आगे किया हुआ (श्रा ६)। २ पुरोवर्त्ती, आगामी, 'गहण-समयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति' (भग १, १)।

पुरच्छा देखो पुरत्था (राज)।

पुरच्छिम देखो पुरत्थिम (ठा २, ३—पत्र ६७, सुज्ज २०—पत्र २८७, पि ५९५)। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमा देखो पुरत्थिमा (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमिल्ल देखो पुरत्थिमिल्ल (सम ६६)।

पुरत्थ वि [पुर.स्थ] आगे रहा हुआ, अग्र-वर्त्ती, पुरस्सर, 'पुरत्थ होइ सहायं रणे सम तेण' (उप १०३१ टी), 'जेण गहिएणणत्था इत्थ परत्थावि हु पुरत्था' (श्रा १४)।

पुरत्थ } अ [पुरस्तात्] १ पहले, काल
पुरत्थओ } या देश की अपेक्षा से आगे, 'तप्पुर-
पुरत्था } पुरत्थभाए' (सुपा ३९०), 'मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य' (उत्त ३२, ३१), 'आदीणिय दुक्कडियं पुरत्था' (सूअ १, ५, १, २)। २ पूर्वदिशा, 'पुरत्थाभिमुहे' (कप्प, औप, भग, णाया १, १—पत्र १९)।

पुरत्थिम वि [पौरस्त्य, पूर्व] १ पूर्व की तरफ का, 'उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए' (कप्प, औप)। २ न. पूर्व दिशा, 'पुरतो पुरत्थिमेणं' (णाया १, १—पत्र ५४, उवा)।

पुरत्थिमा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा, 'पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ' (आचा, मूच्छ १५८ टि)।

पुरत्थिमिल्ल वि [पौरस्त्य] पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा मे स्थित (विपा १, ७, पि ५९५)।

पुरदेव पु [पुरादेव] भगवान् आदिनाथ, 'पुरदेवजिणस्स निव्वाणं' (पउम ४, ८७)।

पुरव देखो पुव्व (गउड, हे ४, २७०, ३२३)।

पुरस्सर वि [पुरस्सर] अग्रगामी (कप्पू)।

पुरा स्त्री [पुर्] नगरी, शहर (हे १, १६)।

पुरा देखो पुरिल्ला = पुरा (सूअ १, १, २, २४, विपा १, १)। °इय, °कय वि [°कृत] पूर्व काल मे किया हुआ (भवि, कुप्र ३१६)। °भव पुं [°भव] पूर्व जन्म (कुप्र ४०६)।

पुराअण वि [पुरातन] पुराना, प्राचीन। स्त्री. °णी (नाट—चैत १३१)।
पुराकर सक [पुरा + कृ] आगे करना। पुराकरति (सूत्र १, ५, २, ५)।
पुराण वि [पुराण] १ पुराना, पुरातन (गउड, उत्त ८, १२)। २ न व्यासादि-मुनि प्रणीत ग्रन्थ विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमे धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र (धर्मवि ३८, भवि)। °पुरिस पुं [°पुरुष] श्रीकृष्ण (वज्जा १२२)।
पुरिकोवेर पु. व [पुरीकौवेर] देश-विशेष (पउम ९८, ६७)।
पुरित्थिमा देखो पुरत्थिमा (सूत्र २, १, ६)।
पुरिम देखो पुव्व = पूर्व (हे २, १३५, प्राकृ २८, भग, कुमा), 'पचवग्रो खलु धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स' (पव ७४, पचा १७, १)। °ड्ढ पुन [°ार्ध] १ पूर्वार्ध। २ प्रत्याख्यान-विशेष (पचा ५, पडि)। ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (सबोध ५७)। °ड्ढिय वि [°ाधिक] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करनेवाला (पण्ह २, १, ठा ५, १)।
पुरिम वि [पौरस्त्य] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे का, 'इय पुव्वुत्तचउक्के कालेसु पढमदुगि पुमिच्छत्तं। पुरिमदुगे सम्मत्त' (सबोध ५२)।
पुरिम पु [दे] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष, 'छ प्पुरिमा नव खोडा' (श्रोघ २६५)।
पुरिमताल न [पुरिमताल] नगर-विशेष (विपा १, ३, श्राव)।
पुरिमिल्ल वि [पूर्वीय] पहले का, पुरातन, प्राचीन, 'आसि नरा पुरिमिल्ला, ता किं अम्हेहिं तह होमो' (चेइय ११५)।
पुरिल्ल पु [दे] दैत्य, दानव (षड्)।
पुरिल्ल वि [पुरातन] पुरा-भव, पहले का, पूर्ववर्ती (विसे १३२६, हे २, १६३)।
पुरिल्ल वि [पौरस्त्य] पुरो-भव, पुरो-वर्त्ती, अग्र गामी (से १३, २, हे २, १६३, प्राप्र, षड्)।
पुरिल्ल वि [पौर] पुर भव, नागरिक (प्राकृ ३५, हे २, १६३)।
पुरिल्ल वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ६, ५३)।
पुरिल्ल देखो पुरिल्ला = पुरा, पुरस्, 'पुरिल्लो' (हे २, १६४ टि, षड्)।
पुरिल्लदेव पु [दे] असुर, दानव (दे ६, ५५)।
पुरिल्लपहाणा स्त्री [दे] सांप की दाढ (दे ६, ५६)।
पुरिल्ला अ [पुरा] १ निरन्तर क्रिया-करण, विच्छेद-रहित क्रिया करना। २ प्राचीन, पुराना। ३ पुराने समय मे। ४ भावी। ५ निकट, सन्निहित। ६ इतिहास, पुरावृत्त (हे २, १६४)।
पुरिल्ला अ [पुरस] आगे, अग्रत (हे २, १६४)।
पुरिस पुन [पुरुष] १ पुमान्, नर, मर्द (हे १, १२४, भग, कुमा, प्रासू १२९), 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, १८)। २ जीव, जीवात्मा (विसे २०६०, सूत्र २, १, २६)। ३ ईश्वर (सूत्र २, १, २६)। ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक। ५ पुरुष-शरीर (णदि)। °कार, °क्कार, °गार पु [°कार] १ पौरुष, पुरुषपन, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न (प्रासू ४३, उवा, सुर २, ३५, उवर ४७)। २ पुरुषत्व का अभिमान (औप)। °जाय पु [°जात] १ पुरुष। २ पुरुष-जातीय (सूत्र २, १, ६, ७, ठा ३, १, २, ४, १)। °जुग न [°युग] क्रम स्थित पुरुष (सम ६८)। °जेट्ठ पु [°ज्येष्ठ] प्रशस्त पुरुष (पचा १७, १०)। °त्त, °त्तण न [°त्व] पौरुष, पुरुषपन, 'नहि नियजुवइसलहिया पुरिमा पुरिसत्तणमुविंति' (सुर २, २४, महा, सुपा ८४)। °त्थ पु [°ार्थ] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-प्रयोजन, 'सयलपुरिसत्यकारणमइदुलहो माणुसो भवो एमो' (धर्मवि ८२, कुमा, सुपा १२६)। °पुंडरीअ पु [°पुण्डरीक] इस अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न षष्ठ वासुदेव (पव २१०)। °प्पणीय वि [°प्रणीत] १ ईश्वर-निर्मित। २ जीव-रचित (सूत्र २, १, २६)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ विशेष, जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ (राज)। °यार देखो °कार (गउड, सुर २, १६, सुपा २७१)। °लक्खण न [°लक्षण] कला-विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला (ज २)। °लिंग, न [°लिङ्ग] पुरुष-चिह्न। °लिंगसिद्ध पुं [°लिङ्गसिद्ध] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो वह (णदि)। °वयण न [°वचन] पुलिंग शब्द (आचा २, ४, १, ३)। °वर पु [°वर] श्रेष्ठ पुरुष (औप)। °वरगंधहत्थि पुं [°वरगन्धहस्तिन्] १ पुरुषो मे श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य। २ जिन-देव (भग, पडि)। °वरपुंडरीय पुं [°वरपुण्डरीक] १ पुरुषो मे श्रेष्ठ पद्म के समान। २ जिन-देव, अर्हन् (भग, पडि)। °विजय पु [°विचय, °विजय] ज्ञान-विशेष (सूत्र २, २, २७)। °वेय पु [°वेद] १ कर्म विशेष, जिसके उदय से पुरुष को स्त्री-सभोग की इच्छा होती है वह कर्म। २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभि-लाषा (पण्ण २३, सम १५०)। °सिंह, °सीह पु [°सिंह] १ पुरुषो मे सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष। २ पु जिनदेव, जिन भगवान् (भग, पडि)। ३ भगवान् धर्मनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)। ४ इस अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव (सम १०५, पउम ५, १५५, पव २१०)। °सेण पु [°सेन] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मोक्ष जानेवाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वासुदेव के अन्यतम पुत्र थे (अत १४)। २ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान मे उत्पन्न होनेवाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। °ादाणिअ, °ादाणीय पु [°ादानीय] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष (सम १३, कप्प)।
पुरिसक्कारिआ स्त्री [पुरुषकारिका, °ता] पुरुषार्थ, प्रयत्न (दस, ५, २, ६)।
पुरिसाअ अक [पुरुषाय्] विपरीत मैथुन करना। वकृ. पुरिसाअत (गा १९६, ३९१)।
पुरिसाइअ न [पुरुषायित] विपरीत मैथुन (दे १, ४२)।
पुरिसाइर वि [पुरुषायितृ] विपरीत रत करनेवाला, 'दरपुरिसाइरि विसमिरि मुजाए पुरिमाए जं दुअ' (गा ५२, ४४६)।
पुरिसुत्तम, पुरिसोत्तम } पुं [पुरुषोत्तम] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ पुमान्। २ जिन

देव, अर्हन् (सम १, भग, पडि)। ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव (सम ७०, पउम ५, १५५)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। ५ श्रीकृष्ण (सम्मत्त २२६)।

पुरी स्त्री [पुरी] नगरी, शहर (कुमा)। °नाह पु [°नाथ] नगरी का अधिपति, राजा (उप ७२८ टी)।

पुरीस पुन [पुरीष] विष्ठा (णाया १, ८, उप १३६ टी, ३२० टी, पाग्र), 'मुत्तपुरीसे य पिक्खति' (धर्मवि १६)।

पुरु पु [पुरु] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा (अभि १७६)। २ वि. प्रचुर, प्रभूत। स्त्री. °ई (प्राकृ २८)।

पुरुपुरिआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा, उत्सुकता (दे ६, ५)।

पुरुमिल्ल देखो पुरिमिल्ल (गउड)।

पुरुव } देखो पुव्व=पूर्व; 'ण ईरिसो
पुरुव्व } दिट्ठपुरुवो' (स्वप्न ५५), 'अमद-आणदगु दलपुरुव्व' (सुवा २२, नाट—मृच्छ १२१, पि १२५)।

पुरुस (शौ) देखो पुरिस (प्राकृ ८३, स्वप्न २६, अवि ८५, प्रयौ ६६)।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो पुरिसोत्तम (पि १२४)।

पुरुहूअ पु [दे] घूक, उल्लू (दे ६, ५५)।

पुरुहूअ पु [पुरुहूत] इन्द्र, देव-राज (गउड)।

पुरूरव पु [पुरूरवस्] एक चन्द्र-वंशीय राजा (पि ४०८, ४०९)।

पुरे देखो पुरं, 'जस्स नत्थि पुरे पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया' (आचा)। °कड वि [°कृत] आगे किया हुआ, पूर्व मे किया हुआ (औप, सूअ १, ५, २, १, उत्त १०, ३)। °कम्म न [°कर्मन्] पहले करने का काम, पूर्व मे की जाती क्रिया, 'पुरओ कय ज तु त पुरेकम्म' (ओघ ४८६, हे १, ५७)। °कार पु [°कार] सम्मान, आदर (उत्त २९, ७, सुख २९, ७)। °क्खड देखो °कड (पण्ण ३६—पत्र ७६६, पण्ह १, १)। °वाय पु [°वात] १ सस्नेह वायु। २ पूर्व दिशा का पवन (णाया १, ११—पत्र १७१)। °सखडि स्त्री [दे. संस्कृति] पहले ही किया जाता जिमनवार—भोजनोत्सव, (आचा २, १, २, ६, २, १ ४, १)। °सथुय वि [°संस्तुत] १ पूर्व-परिचित। २ स्व-पक्ष का सगा (आचा २, १, ४, ५)।

पुरेस पु [पुरेश] नगर-स्वामी (भवि)।

पुरो देखो पुर (मोह ४६, कुमा)। °अ, °ग वि [°ग] अग्रगामी, अग्रेसर (प्रति ४०, विसे २५४८)। °गम वि [°गम] वही अर्थ (उप पृ ३५१)। °भाइ वि [°भागिन्] दोष को छोड कर गुण-मात्र को ग्रहण करने वाला (नाट—विक्र ६७)।

पुरोकर सक [पुरस् + कृ] १ आगे करना। २ स्वीकार करना। ३ सम्मान करना। सकृ पुरोकरिअ, पुरोकाउ (मा १६, सूअ १, १, ३, १५)।

पुरोत्तमपुर न [पुरोत्तमपुर] एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)।

पुरोवग पु [पुरोपक] वृक्ष-विशेष (औप)।

पुरोह पुं [पुरोधस्] पुरोहित (उप ७२८ टी, धर्मवि १४६)।

पुरोहड वि [दे] १ विषम, असम। २ पच्छोकड (?) (दे ६, १५)। ३ पुंन. आवृत भूमि का वास्तु (दे ६, १५)। ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग (ओघ ६२२)। ५ वाडा, वाटक, 'सक्कासमए पत्तें मज्झ वलद्दा पुरोहडस्सतो। मह दिट्ठीए दंसिवि ठाएयव्वा' (सुपा ५४५, वृह २)।

पुरोहिअ पु [पुरोहित] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करनेवाला ब्राह्मण (कुमा, काल)।

पुल पु [दे. पुल] छोटा फोडा, फुनसी, 'ते पुला भिज्जति' (ठा १०—पत्र ५२१)।

पुल वि [पुल] समुच्छ्रित, उन्नत, 'पुलनिप्पुलाए' (दस १०, १६)।

पुल अक [पुल्] उन्नत होना (दस १०, १६)।

पुल } सक [दृश्] देखना। पुलइ, पुलअइ
पुलअ } (प्राकृ ७१, हे ४, १८१, प्राप्र ८, ६९)। पुलएइ (गउड १०६३), पुलएमि (गा ५३१)। वकृ पुलन, पुलअत, पुलएंत (कप्पू, नाट—मालवि ६, पउम ३, ७७, ८, १६०, सुर ११, १२०, १२, २०४, ७, २१२)। सकृ पुलइअ (स ६८९)।

पुलअ पु [पुलक] १ रोमाञ्च (कुमा)। २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति (पण्ण १, उत्त ३६, ७७, कप्प)। ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद, 'सीमागारपुलु(? ल)-यसुमुमार—' (पण्ह १, १—पत्र ७)। °कड पुन [°काण्ड] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड (ठा १०)।

पुलअण वि [दर्शन] देखनेवाला, प्रेक्षक (कुमा)।

पुलअण न [पुलकन] पुलकित होना (कप्पू)।

पुलआअ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना, उल्लास पाना। पुलआअइ (हे ४, २०२)। वकृ पुलआअमाण (कुमा)।

पुलइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (गा ११८, सुर १४, ११, पाअ)।

पुलइअ वि [पुलकित] रोमाञ्चित (पाअ, कुमा ४, १६, कप्प, महा, गा २०)।

पुलइज्ज अक [पुलकाय्] रोमाञ्चित होना। वकृ पुलइज्जत (सण)।

पुलइल्ल वि [पुलकिन्] रोमाञ्च युक्त, रोमाञ्चित (वज्जा १६४)।

पुलएत देखो पुलअ = दृश्।

पुलघअ पु [दे] भ्रमर, भौंरा (षड्)।

पुलपुल न [दे] अनवरत, निरन्तर (पण्ह १, ३—पत्र ४५, ओप)।

पुलक } देखो पुलअ = पुलक (पि २०३ टि,
पुलग } णाया १, १, सम १०४, कप्प)।

पुलय पुंन [पुलक] कीट-विशेष (आचा २, १३, १)।

पुलाग } पुंन [पुलाक] १ असार अन्न, 'धन्न-
पुलाय } ममार भन्नइ पुलायसद्देण' (सबोध २८, पव ९३), 'निस्सारए होइ जहा पुलाए' (सूअ १, ७, २६)। २ चना आदि शुष्क अन्न (उत्त ८, १२, सुख ८, १२)। ३ लह-सुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य। ४ दुष्ट रसवाला द्रव्य, 'तिविह होइ पुलाग धण्णे गधे यरस-पुलाए य' (वृह ५)। ५ पु अपने सयम को निस्सार बनानेवाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओ का एक भेद (ठा ३, २, ५, ३, सबोध २८, पव ९३)।

पुलासिअ पु [दे] अग्नि-कण (दे ६, ५५)।

पुलिंद पु [पुलिन्द] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ पुं स्त्री उस देश में रहनेवाला मनुष्य (पएह १, १ औ, व उत)। स्त्री °दी (णाया १, १ ओ,

पुलिण न [पुलिन] तट किनारा, 'पोइएणी नइपुलिणाओ' (पउम १०, ५४)। २ लगातार बाईस दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पुलिय न [पुलित] गति-विशेष (ओप)।

पुलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध (पाअ)।

पुलोअ सक [दृश्, प्र + लोक्] देखना। पुलोएइ (हे ४ १८१, सुर १, ८६)। वकृ पुलोअंत पुलोएंत (पि १०४ सुर ३, ११८)।

पुलोअण न [दर्शन, प्रलोकन] विलोकन (दे ६ ३० गा ३२२)।

पुलोइअ वि [दृष्ट, प्रलोकित] १ देखा हुआ (सुर ३, १९४)। २ न अवलोकन (से ७, ५९)।

पुलोएंत देखो पुलोअ।

पुलोम पु [पुलोमन्] दैत्य विशेष। °तणया स्त्री [°तनया] शची, इन्द्राणी (पाअ)।

पुलोमी स्त्री [पौलोमी] इन्द्राणी (प्राकृ १०, हे १, १६०)।

पुलोव देखो पुलोअ। पुलोवेदि (शौ) (पि १०४)।

पुलोस पु [प्लोष] दाह, दहन (गउड)।

पुस [दे] देखो पोस (सुज १, १)।

पुल्लि पुंस्त्री [दे] १ व्याघ्र, शेर (दे ६, ७९, पाअ)। २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र (दे ६, ७९)। स्त्री 'सो पियइ पय न पुल्लीए' (सुपा ५४२)।

पुव } सक [प्लु] गति करना चलना। पुवइ } पुवति (पि ४७३), पुवति (भग १५—पत्र ६७०, टी—पत्र ६७३)।

पुव्व° देखो पुण = पू।

पुव्व वि [पूर्व] १ दिशा, देश और काल की अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम (ठा ४, ४ जी १ प्रासू १२२)। २ सामन्त, सादृ। ३ उद्देत भाषा (हे २, १३५, दार)। ४ पुंन काल-मान विशेष, चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो उतने वर्ष (ठा २, ४, सम ७४, जी ३७, इक)। ५ जैन ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें अंग ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, अध्ययन, परिच्छेद, 'चोद्दसपुव्वी' (विपा १, १)। ६ द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म, 'पुव्वट्ठाणाणि' (आचा २, ११, १३)। ७ पूर्व ग्रन्थ का ज्ञान (कम्म १, ७)। ८ कारण, हेतु (णंदि)। °कालिय वि [°कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से सबन्ध रखनेवाला (पएह १, २—पत्र २ ,)। °गय न [°गत] जैन शास्त्रांश-विशेष, बारहवें अंग का विभाग-विशेष (ठा १०—पत्र ४९१)। °ण्ह पु [°ह्ण] १ दिन का पूर्व भाग, सुबह से दो पहर तक का समय (हे १, ६७)। २ तप विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप (संबोध ५८)। °तव पुन [°तपस्] वीतराग अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का तप (भग)। °दारिअ वि [°द्वारिक] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण कारी (नक्षत्र) (सम १२)। °द्ध पुन [°ार्ध] पहला आधा (नाट)। °धर वि [°धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान-वाला (पएह २, १)। °पय न [°पद] उत्सर्ग-स्थान (निचू १)। °पुट्ठवया स्त्री [°प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज्ज १०, ५)। °पुरिस पु [°पुरुष] पूर्वज, पुरखा (सुर २, १९४)। °प्पओग पु [°प्रयोग] पहले की क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न (भग ८, ९)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] नक्षत्र-विशेष (राज)। °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष (राज)। °भव पु [°भव] गत जन्म, अतीत जन्म (णाया १, १)। °भविअ वि [°भविक] पूर्वजन्म संबंधी (भवि)। °य पु [°ज] पूर्व पुरुष, पुरखा (सुपा २३२)। °रत्त पु [°रात्र] रात्रि का पूर्व भाग (भग, महा)। °व न [°वत्] अनुमान प्रमाण का एक भेद (अणु)। °विदेह पु [°विदेह] महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा (ठा २, ३, इक)। °समास पु [°समास] एक से ज्यादा पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान (कम्म १, ७)। °सुय न [°श्रुत] पूर्व का ज्ञान (राज)। °सूरि पु [°सूरि] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य (जीव १)। °हर देखो °धर (पउम ११८, १२१)। °णुपुव्वी स्त्री [°ानुपूर्वी] क्रम, परिपाटी (भग, विपा १, १, ओप महा)। °ाह्ण देखो °ण्ह (हे १, ६७, षड्)। °ाफग्गुणी देखो °फग्गुणी (सम ७, इक)। °ाभद्दवया देखो °भद्दवया (सम ७)। °ासाढा स्त्री [°ाषाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६)।

पुव्वंग पुन [पूर्वाङ्ग] १ समय-परिमाण-विशेष, चोरासी लाख वर्ष (ठा २, ४, इक)। २ पक्ष के पहले दिन का नाम, प्रतिपत् (सुज्ज १०, १४)।

पुव्वग वि [दे] मुण्डित (षड्)।

पुव्वा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा (कुमा)।

पुव्वाड वि [दे] पीन, मांसल, पुष्ट (दे ६, ५२)।

पुव्वामेव अ [पूर्वमेव] पहले ही (कस)।

पुव्वावकिणग न [पूर्वावकीर्णक] नगर-विशेष (इक)।

पुव्वि वि [पूर्विन्] पूर्व शास्त्र का जानकार (विपा १, १, राज)।

पुव्विं } क्रिवि [पूर्वम्] पहिले, पूर्व में
पुव्विं } (सण, उवा, सुर १, १९४, ४, ११९, ओप)। °संथव पु [°संस्तव] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना (ठा ३, ४)।

पुव्वित्तण पुंस्त्री [पूर्वत्व] पहिलापन, प्रथमता (षड्)।

पुव्विल्ल वि [पूर्व, पूर्वीय] पहले का, पूर्व का, 'पुव्विल्लसम करण' (चेइय ८८९), 'पुव्विल्लए किंचिवि दुट्ठकम्मे' (निसा ४, सुपा ३४६, सण)।

पुव्वुत्त वि [पूर्वोक्त] पहले कहा हुआ, पूर्व में उक्त (सुर २, २४८)।

पुव्वुत्तरा स्त्री [पूर्वोत्तरा] ईशान कोण (राज)।

पुस सक [प्र + उञ्छ्, मृज्] साफ करना, शुद्ध करना, पोंछना। पुसइ (प्राकृ ६६, हे ४, १०५, गा ४३३)। कवकृ. पुसिज्जंत (गा २०६)।

पुस देखो पुस्स (प्राकृ २६, प्राप्र)।

पुस पुं [पौष] मास-विशेष, पौष मास, 'पुसो' (प्राकृ १०)।

पुसिअ वि [प्रोञ्छित, मृष्ट] पोछा हुआ (गउड, से १०, ४२, गा ५४)।

पुसिअ पु [पृषत] मृग-विशेष (गा ६२६)।

पुस्स पु [पुष्य] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र (प्राकृ २६, प्राप्र, सम ८, १७, ठा २ ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १० १२)। ३ ऋषि-विशेष (राज)। °माणअ, °माणव पु [°मानव] मागध, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि (णाया १, ८—पत्र १३३ टी—पत्र १३६)। देखो पूस = पुष्य।

पुस्सदेवय न [पुष्यदैवत] जेनेतर शास्त्र-विशेष (णदि १९४)।

पुस्सायण न [पुष्यायण] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

पुह } देखो पिह = पृथक् (हे १, १८८)।
पुहं } °ब्भूअ वि [°भूत] अलग, जो जुदा हुआ हो (अज्झ ६०)।

पुहइ° } स्त्री [पृथिवी] १ तृतीय वासुदेव की
पुहई } माता का नाम (पउम २०, १८४)। २ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८८)। ३ भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (सुपा ३६)। ४—देखो पुढवी, पुहवी (कुमा, हे १, ८८, १३१)। °धर पुं [°धर] राजा (पउम, ८५, ४)। °नाह पु [°नाथ] राजा (सुपा १२२)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °पाल पु [°पाल] राजा (सुर १, २८३)। °राय पु [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का एक राजा, 'पुहईराएण सयभरीनरिंदेण' (मुणि १०९०१)। °वइ पु [°पति] राजा (सुपा २०१, २४८, ५१६)। °वाल देखो °पाल (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पु [पृथिवीश्वर] राजा (सुपा १०७, २४१)।

पुहत्त न [पृथक्त्व] १ भेद, पार्थक्य (श्रणु)। २ विस्तार (राज)। ३ बहुत्व (भग १, २, ठा १०)। ४ वि भिन्न, अलग, 'अत्थपुहत्तस्स' (विसे १०६६)। °वियक्क न [°वितर्क] शुक्ल ध्यान का एक भेद (सबोध ५१)। देखो पुहुत्त, पोहत्त।

पुहत्तिअ देखो पोहत्तिय (भग)।

पुहय देखो पिह = पृथक्, 'पुहय देवीए' (कुमा)।

पुहवि° } देखो पुढवी, पुहई (पि ३८६, श्रा
पुहवी } १४, प्राप्र, प्रासू ५ ११३, सम १५१, स १५२)। ९ भगवान् श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। १० एक छन्द का नाम (पिंग)। °चंद पु [°चन्द्र] एक राजा (यति ५०)। °पाल पु [°पाल] १ एक राजकुमार (उप ९८६ टी)। २ देखो पुहई-पाल (सिरि ४५)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (उप ८४४)।

पुहवीस पु [पृथिवीश] राजा (हे १, ६)।

पुहु वि [पृथु] विशाल, विस्तीर्ण। स्त्री °ई (प्राकृ २८)।

पुहुत्त न [पृथक्त्व] १ दो से नव तक की संख्या (सम ४४, जी ३०, भग)। २—देखो पुहत्त (ठा १०—पत्र ४७१, ४९५)।

पुहुवी देखो पुहु-ई (हे २, ११३)।

पू° देखो पुं°। °सुअ पु [°शुक] तोता, मर्द पिक-पक्षि (गा ५६३ अ)।

पूअ सक [पूजय्] पूजा करना। पूएइ (महा)। कर्म पूइज्जमि (गउड)। वकृ. पूयंत (सुपा २२४)। कवकृ पूइज्जंत (पउम ३२, ६)। कृ. पूअणीअ, पूएअव्व, पूअणिज्ज (नाट—मृच्छ १९५, उवर १९६, श्रोप, णाया १, १ टी, पंचा २, ८, उप ३२० टी)। संकृ पूइऊण (महा)।

पूअ न [दे] दधि, दही (दे ६, ५६)।

पूअ पु [पूग] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ (गउड)। २ न फल-विशेष, सुपारी (स ३४५)। देखो पूग। °प्फली °फली स्त्री [°फली] सुपारी का पेड (पउम ५३, ७९, पण्ण १)।

पूअ न [पूर्त] तालाव, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य, 'गरहियाणि इट्टपूयाणि' (स ७१३)।

पूअ वि [पूत] १ पवित्र, शुद्ध (णाया १, ५, श्रौप)। २ न लगातार छ दिनों का उपवास (सबोध ५८)। ३ वि सूप आदि से साफ—तुष-रहित किया हुआ (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पूअ न [पूय] पीब, दुर्गन्ध रक्त, व्रण से निकला हुआ गन्दा सफेद विगडा हुआ खून (पण्ह १, १, णाया ३, ८)।

पूअण न [पूजन] पूजा, सेवा (कुमा श्रौप, सुपा ५८४, महा)।

पूअणा स्त्री [पूजना] १ ऊपर देखो (पण्ह २, १, से ७६३, सबोध ६)। २ काम-विभूषा (सूअ १, ३, ४, १७)।

पूअणा } स्त्री [पूतना] १ दुष्ट व्यन्तरी डाइन,
पूअणी } डाकिनी (सूअ १, ३, ४, १३, पिंडभा ४१, सुपा २६, पण्ह १, ४)। २ गाडर, भेडी, मेषी (सूअ १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [पूजक] पूजा करनेवाला (सुर १३, १४३)।

पूअर देखो पोर = पूतर (श्रा १४, जी १५)।

पूअल पु [पूप] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६, १८)।

पूअलिया स्त्री [पूपिका] ऊपर देखो (पव ४)।

पूआ स्त्री [दे] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री (दे ६, ५४)।

पूआ स्त्री [पूजा] पूजन, अर्चा, सेवा (कुमा)। °भत्त न [°भक्त] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन (बृह २)। °मह पु [°मह] पूजोत्सव (कुप्र ८५)। °रह पु [°रथ] राक्षस-वंश मे उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २५९)। °रिह, °रुह वि [°र्ह] पूजा-योग्य (सुपा ४६१, अभि ११८)।

पूआहिज्ज वि [पूजाहार्य] पूजित-पूजक (ठा ५, ३ टी—पत्र ३४२)।

पूइ वि [पूति] १ दुर्गंधी, दुर्गन्धवाला (पउम ४४, ५५' उप ७२८ टी, तदु ४१) २। अप-वित्र (पंचा १३, ५)। ३ स्त्री दुर्गन्ध। ४ अपवित्रता (तदु ३८)। ५ भिक्षा का एक दोष, पूति-कर्म (पिंड २६८)। ६ रोग-विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोथ (विसे २०८)। ७ पूय, पीब, 'गलतपूइनिवह' (महा), 'पूइ-वसरुहिरपुन्न' (सुर १४, ४६), 'जहा सुणी

कुसुमाणी' (उत्त ?, ४)। ८ वृक्ष-विशेष, एरण्डिका वृक्ष की एक जाति, 'पूई य निंबकरए' (पण्ण १—पत्र ३१)। °कम्म पुन [°कर्मन्] मुनि भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु को मिलाकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४ टी, ओघ, पचा १३, ?)। °म वि [°मत्] १ दुर्गन्धी। २ अपवित्र (तंदु ३८)।

पूइ वि [पूति] कुथित, सड़ा हुआ (आचा २, १, ८, ८)। °पिन्नाग पुन [°पिण्याक] सरसों-खल, सरसों की खली (दस ५, २, २२)।

पूइअ वि [पूतित] ऊपर देखो (राय १८)।

पूइआलुग न [दे पूत्यालुक] जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष (आचा २, १, ८—सूत्र ८७)।

पूइज्जंत देखो पूअ = पूजय्।

पूइम वि [पूज्य] पूजा योग्य, सम्माननीय, 'जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो' (दसचू १, ४)।

पूइय वि [पूजित] अर्चित, सेवित (ओप, उव)।

पूइय वि [पूतिक] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित (पण्ह २, ५, उप पृ २२०)। २ दुर्गन्धी, खराब गन्धवाला (णाया १, ८, तंदु ४१)। ३ पूति नामक भिक्षा-दोष से युक्त (पिंड २६८)।

पूइय देखो पोइअ = (दे), 'बलो गओ पूइया-वणं (सुर २, २६, उव)।

पूइयव्व देखो पूअ = पूजय्।

पूइरिअ न [दे] कार्य, काम, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७)।

पूग पु [पूग] १ समूह, संघात (मोह २८)। २ देखो पूअ = पूग (स ७०, ७१)।

पूगी स्त्री [पूगी] सुपारी का पेड़। °फल न [°फल] सुपारी, छाली (स्वप्न ५५)।

पूज देखो पूअ = पूजय्। वकृ पूजंत (उव)। संकृ पूजइत्ता (विसे २८८८)। कृ पूज्ज, पूज (सम ११, ६०, उप १८०, सुर ?, १७, उर १६६, उप, उव ५६८)।

पूजग देखो पूअय (पंचा ४, ४४)।

पूजण देखो पूअण (पंचा ६, २८)।

पूजा देखो पूआ = पूजा (उप १०१६)।

पूजिअ देखो पूइय = पूजित (औप)।

पूण पु [दे] हस्ती, हाथी (दे ६, ५६)।

पूणिआ, पूणी स्त्री [दे] पूणी, पूनी, रुई की पहल (दे ६, ७८, ६, ५६)।

पूप देखो पूअल (पिंड ५५७)।

पूयइ पु [पूपकिन्] हलवाई (णदि १६४)।

पूयत देखो पूअ = पजय्।

पूयली स्त्री [दे] रोटी (आचा २, १ ८, ६)।

पूयावणा स्त्री [पूजना] पूजा कराना (सबोध १५)।

पूर सक [पूरय्] पूर्ति करना, भरना। पूरइ, पूरए (हे ४, १६६, औप, भग, महा, पि ४६२)। वकृ पूरंत, पूरयंत (कुमा, कप्प, औप)। कवकृ पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जंत, पूरंत, पूरमाण (उप पृ १५४, सुपा ६८, उप १३६ टी, भवि, गा ११६, से ११, ६३, ६, ६७)। संकृ पूरित्ता (भग), पूरि (अप) (पिंग)। हेकृ पूरिइत्तए (पि ५७८)। कृ पूरिअव्व (से ११, ४४)।

पूर पुं [पूर] १ जल समूह, जल-प्रवाह, जलधारा (कुमा)। २ खाद्य-विशेष, 'कप्पूरपूरमहिए तवोले' (सुर २, ६०)। ३ वि पूरा, पूर्ण, 'पूराणि य से समं पणइमणोरहेहिं अज्जेव सत्त राइंदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणी विजासिद्धी' (स ३६३)।

पूरइत्तअ (शौ) वि [पूरयितृ] पूर्ण करनेवाला (मा ४३)।

पूरंतिया स्त्री [पूरयन्तिका] राजा को एक परिषत्—परिवार (राज)।

पूरग वि [पूरक] पूर्त्ति करनेवाला (कप्प, औप, रयण ७७)।

पूरण न [पूरण] शूर्प, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (दे ६, ५६)।

पूरण न [पूरण] १ पूर्ति, 'समस्सापूरण' (सिरि ८६८)। २ पालन (आचू ५)। ३ पु यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक गृहपति का नाम (उवा)। ५ वि पूर्ति करनेवाला (राज)।

पूरमाण देखो पूर = पूरय।

पूरय देखो पूरग, 'बत्तीस किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ' (पिंड ६४२)।

पूरयत, पूरिअव्व देखो पूर = पूरय्।

पूरिगा स्त्री [पूरिका] मोटा कपडा (राज)।

पूरिम वि [पूरिम] पूरने से—भरने से होनेवाला (णाया १, १३, पण्ह २, ५, औप)।

पूरिमा स्त्री [पूरिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

पूरिय वि [पूरित] भरा हुआ (गउड, सण, भवि)।

पूरी स्त्री [पूरी] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ६ ५६)।

पूरेंत देखो पूर = पूरय्।

पूरोट्टी स्त्री [दे] अवकर, कतवार, कूडा (दे ६, ५७)।

पूल पुन [पूल] पूला, घास की अँटिया (उप ३२० टी, कुप्र २१५)।

पूव, पूवल देखो पूअल (कस, दे ६, ११७, निचू १)।

पूवलिआ, पूविगा देखो पूअलिया (बृह १, निचू १६)।

पूस अक [पुष्] पुष्ट होना। पूसइ (हे ४, २३६, प्राकृ ६८)।

पूस देखो पुस्स = पुष्य (णाया १, ८, हे १, ४३)। °गिरि पु [°गिरि] एक जैन मुनि (कप्प)। °फली स्त्री [°फली] वल्ली विशेष (पण्ण १)। °माण, °माणग पुं [°माण, °मानव] मागध, मङ्गल पाठक, '—वद्धमाणपूसमाणघंटियगणेहिं' (कप्प, औप)। °माणग पु [°मानक] ज्योतिर्देवता विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। °माणव देखो °माण (औप)। °मित्त पु [°मित्र] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ घृतपुष्यमित्र, २ वस्त्रपुष्यमित्र, ३ दुर्बलिकापुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे (विसे २५१०, २२८६)। २ एक राजा (विचार ४९३)। °मित्तिय न [°मित्रीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

पूस पुं [दे] १ राजा सातवाहन (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता (दे ६, ८०, गा २६३, वज्जा १३४, पाअ)।

पूस पु [पूषन्] १ सूर्य, रवि (हे ३, ५६)। २ मणि विशेष (पउम ६, ३६)।

पूसा स्त्री [पुष्या] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्ड-कोलिक श्रावक की पत्नी (उवा)।

पूसाण देखो पूस = पूषन् (हे ३, ५६)।

°पूह पुं [अपोह] विचार, मीमासा, 'ईहापूह-मग्गणगवेसण करेमाणस्स' (ओप, पि १४२, २८६)। देखो अपोह = अपोह।

पृथुम (पे) देखो पढम, 'पृथुमसिनेहो' (प्राकृ १२४)।

पेअ पु [प्रेत] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति (सुपा ४६१, ४६२, जय २६)। २ मृतक (पउम ५, ६०)। °कम्म न [°कर्मन्] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य (पउम २३, २४)। °करणिज्ज न [°करणीय] अन्त्येष्टि क्रिया (पउम ७५, १)। °काइय वि [°कायिक] प्रेत योनि मे उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष (भग ३, ७)। °देवयकाइय वि [°देवताकायिक] प्रेत-देवता का, प्रेत-सम्बन्धी (भग ३, ७)। °नाह पु [°नाथ] यमराज, जम (स ३१६)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, °मी] श्मशान (सुपा २६५)। °लोय पुं [°लोक] श्मशान (पउम ८६, ४३)। °वइ पु [°पति] यम (उप ७२८ टी)। °वण न [°वन] श्मशान (पाअ, सुर १६, २०४, वज्जा २, सुपा ५१२)। °हिव पु [°धिप] यम, जमराज (पाअ)।

पेअ वि [प्रेयस] अतिशय प्रिय। स्त्री °सी (सम्मत्त १७५)।

पेअ } देखो पा = पा।
पेअव्व }

पेआ स्त्री [पेया] यवागू, पीने की वस्तु-विशेष (हे १, २४८)।

पेआल न [दे] १ प्रमाण (दे ६, ५७, विसे १६६ टी, णंदि, उव)। २ विचार (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, उप पृ २०७। ४ प्रधान, मुख्य (उवा)।

पेआलणा स्त्री [दे] प्रमाण-करण, 'पज्जव-पेयालणा पिंडो' (पिंड ६५)।

पेआलुय वि [दे] विचारित (विसे १४८२)।

पेइअ वि [पैतृक] १ पिता से आया हुआ, पितृ-क्रम-प्राप्त, 'पेइओ धम्मो' (पउम ८२, ३३, सिरि ३४८, स ५६६)। २ न स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका, 'ता जा कुन्ने कलक नो पयडइ ताव पेइए एयं पेमेमि', 'विमलेण तओ भणिय गच्छ पिए पेइयमियाणि' (सुपा ६००)।

पेईहर न [पितृगृह, पैतृकगृह] पीहर, स्त्री के पिता का घर, 'इय चिंतिऊण सिग्घ वणसिरिपेईहरम्मि सचलिओ' (सुपा ६०३)।

पेऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (हे १, १०५, गा ६५, कप्पू)। °ासण पुं [°ाशन] देव, सुर (कुमा)।

पेखिअ वि [प्रेङ्खित] कम्पित (कप्पू)।

पेखोल अक [प्रेङ्खोलय्] झूलना, हिलना। वकृ पेखोलमाण (णाया १, १—पत्र ३१)।

पेड देखो पिड = पिण्ड (हे १, ८५, प्राकृ ५, प्राप्र, कुमा)।

पेड न [दे] १ खण्ड, टुकडा। २ वलय (दे ६, ८)।

पेंडधव पु [दे] खड्ग, तलवार (दे ६, ५६)।

पेडआल वि [दे] देखो पेडलिअ (दे ६, ५४)।

पेडय पु [दे] १ तरुण, युवा। २ पण्ढ, नपुसक (दे ६, ५३)।

पेडल पु [दे] रस (दे ६, ५८)।

पेडलिअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पेंडव सक [प्र + स्थापय्] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान कराना। पेडवइ (हे ४, ३७)।

पेंडविर वि [प्रस्थापयितृ] प्रस्थापन करने-वाला (कुमा)।

पेडार पु [दे] १ गोप, गो-पाल, ग्वाला। २ महिषी-पाल (दे ६, ५८)।

पेडोली स्त्री [दे] क्रीडा (दे ६, ५६)।

पेढा स्त्री [दे] कलुष सुरा, पकवाली मदिरा (दे ६, ५०)।

पेंत देखो पा = पा।

पेक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए (सण, पिंग)। वकृ. पेक्खत (पि ३६७)। कवकृ पेक्खिज्जत (से १५, ६३)। सकृ. पेक्खिअ, पेक्खिऊण (अभि ४२, काप्र १५८)। कृ पेक्खणिज्ज (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खअ } वि [प्रेक्षक] देखनेवाला, निरीक्षक,
पेक्खग } द्रष्टा (सुर ७, ८०, स ३७६, महा)।

पेक्खग न [प्रेक्षण] निरीक्षण, अवलोकन (सुपा १६६, अभि ५३)।

पेक्खणग } न [प्रेक्षणक] खेल, तमाशा,
पेक्खणय } नाटक (सुर ७, १८२, कुप्र ३०)।

पेक्खणा स्त्री [प्रेक्षणा] निरीक्षण, अवलोकन (ओघ ३)।

पेक्खा स्त्री [प्रेक्षा] ऊपर देखो (पउम ७२, २६)। देखो पेच्छा।

पेक्खिअय देखो पेच्छिअ (राज)।

पेखिल (अप) वि [प्रेक्षित] दृष्ट (रभा)।

पेच्च } अ [प्रेत्य] परलोक, आगामी जन्म
पेच्चा } (भग, ओप), 'सव्वोही खलु पेच्च दुल्लहा' (वे ७३)। °भव पु [°भव] आगामी जन्म, परलोक (ओप)। °भाविअ वि [°भाविक] जन्मातर-सबन्धी (पण्ह २, २)।

पेच्चा देखो पिअ = पा।

पेच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पेच्छइ, पेच्छए (हे ४, १८१, उव, महा, पि ४५७)। भवि पेच्छिहिसि (पि ५२५)। वकृ पेच्छत (गा ३७३, महा)। सकृ. पेच्छिऊण (पि ५८५)। हेकृ पेच्छिउं, पेच्छित्तए (उप ७२८ टी, ओप)। कृ पेच्छणिज्ज, पेच्छिअव्व (गा ६६, ओप, पण्ह १, ४, से ३, ३३)।

पेच्छ वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शक, 'अपरमत्थपेच्छो' (स ७१५)।

पेच्छग देखो पेक्खग (भास ४७, धर्मसं ७४३)।

पेच्छण देखो पेक्खग (सुपा ३७)।

पेच्छणग } देखो पेक्खणग (पचा ६, ११,
पेच्छणय } महा)।

पेच्छय वि [प्रेक्षक] द्रष्टा, निरीक्षक (पउम ८६, ७१, स ३६१, गा ४६८)।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसी को चाहनेवाला, दृष्ट-मात्र का अभिलाषी (दे ६, ५८)।

पेच्छा स्त्री [प्रेक्षा] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक 'पेच्छाइराणो निरणविलोअणाण जहा गुणोत्तणोवि न किंचिदेव' (उप्प ३७, सुर १३, ३७, ओप)। देखो पेक्खा। °घर न [°गृह] देखो °हर (ठा ४, २)। °मंडव पु [°मण्डप] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों के बैठने का स्थान (पव २६६)। °हर न [°गृह] नाट्य-गृह, खेल-तमाशा का स्थान (पउम ८०, ५)।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रेक्षक, द्रष्टा (चेइय १०६ गा २१८)।

पेच्छिअ वि [प्रेक्षित] १ निरीक्षित, अवलोकित (कुमा)। २ न निरीक्षण, अवलोकन (सुर १२, १८३, गा २२५)।

पेच्छिर वि [प्रेक्षितृ] निरीक्षक, द्रष्टा (गा १७४, ३७१)।

पेज्ज देखो पा = पा।

पेज्ज पुन [प्रेमन्] प्रेम अनुराग (सूअ २, ५, २२, आचा, भग, ठा १, चेइय ६३४)। °दंसि वि [°दर्शिन्] अनुरागी (आचा)।

पेज्ज वि [प्रेयस्] अत्यन्त प्रिय (ओप)।

पेज्ज वि [पेय] पूज्य, पूजनीय (राज)।

पेज्ज देखो पेर = प्र + ईरय्।

पेज्जल न [दे] प्रमाण (दे ६, ५७)।

पेज्जालिअ वि [दे] संघटित (षड्)।

पेज्जा देखो पेआ (ओघ १४६, टी; उ १, २८८)।

पेज्जाल वि [दे] विपुल, विशाल (दे ६, ७)।

पेट } न [दे] पेट, उदर (पिंग पव १)।
पेट्ट }

पेट्ठ देखो पिट्ठ = पिष्ट (भवि ३ प्राकृ ५, प्राप्र)।

पेड देखो पेडय 'नडपेडगिहं' (मनोज १८)।

पेडइअ पु [दे] धान्य आदि बेचनेवाला वणिक् (दे ६, ५६)।

पेडग } न [पेटक] समूह, यूथ, 'नडपेडग-
पेडय } सरिसा जाग' (मनोज १५, सुपा ५४६ निचू १६३, महा)।

पेडा स्त्री [पेटा] १ मञ्जूषा, पेटी (दे ५, ३८ महा)। २ पेटाकार चतुष्कोण गृहपंक्ति से भिक्षार्थ भ्रमण (उत ३०, १६)।

पेडाल पु [दे पेटाल] बडी मञ्जूषा, बडी पेटी (मुद्रा ११०)।

पेडावइ पुं [पेटकपति] यूथ का नायक (सुपा ५४६)।

पेडिआ स्त्री [पेटिका] मञ्जूषा (मुद्रा २४०)।

पेडु स्त्री पु [दे] महिष, भैंसा (दे ६, ८०)।

पेड्डा स्त्री [दे] १ भित्ति, भीत। २ द्वार, दरवाजा। ३ महिषी, भैंस (दे ६, ८०)।

पेढ देखो पीढ = पीठ (हे १, १०६, कुमा), 'वाऊण पेढ ठविया तत्थ एसा पडिमा' (कुप्र ११७)।

पेढाल वि [दे] १ विपुल (दे ६, ७, गउड)। २ वर्तुल, गोलाकार (दे ६, ७, गउड, पाअ)।

पेढाल वि [पीठवत्] पीठ युक्त (गउड)।

पेढाल पु [पेढाल] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिनदेव, 'पेढाल अट्ठमयं आणदजिय नमसामि' (पव ४६)। २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ (विचार ४७३)। ३ एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था, 'पेढालग्गाममागओ भयवं' (आवम)। ४ न एक उद्यान, 'तओ सामी दढभूमि गओ, तीसे बाहिं पेढाल नाम उज्जाणं' (आव १)। °पुत्त पु [°पुत्र] १ भारतवर्ष का आठवा भावी जिन देव, 'उदए पेढालपुत्ते य' (सम १५३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ के संतान में उत्पन्न एक जैन मुनि, 'अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं' (सूअ २, ७, ५, ८, ६)। ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु २)।

पेढिया देखो पीढिआ, 'चत्तारि मणिपीढियाओ' (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना (वसु)।

पेढी देखो पीढी (जीव ३)।

पेणी स्त्री [प्रेणी] हरिणी का एक भेद (पण्ह १, ८—पत्र ६८)।

पेदड वि [दे] द्यूत-दण्डक, जुए में जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह (मृच्छ ४६)।

पेम पुन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह (स्वप्न, गौड नं ५, सुपा २०४, रयण ८२)।

पेमालुअ वि [प्रेमिन्] प्रेमी, अनुरागी (उप ६८६ टी)।

पेम्म देखो पेम (हे २, ६८, ३, २५, कुमा, गा १२६, प्रासू ११६)।

पेम्मा स्त्री [प्रेमा] छन्द-विशेष (पिंग)।

पेया स्त्री [पेया] वाद्य-विशेष, बडी काहला (राय ४५)।

पेर सक [प्र + ईरय्] १ पठाना, भेजना, प्रेषण करना। २ धक्का लगाना, आघात करना। ३ आदेश करना। ४ किसी कार्य में जोडना—लगाना। ५ पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६ गिराना। पेरइ (धर्मसं ५६०, भवि)। वकृ पेरत (कुप्र ७०, पिंग)। कवकृ पेरिज्जत (सुपा २५१, महा)। कृ. पेज्ज (राज)।

पेरंत देखो पज्जत (हे १, ५८, ६३, प्राप्र, ओप, गउड)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] बाह्य परिधि, बाहर का घेराव (पण्ह १, ३)। °वच्च न [°वर्चस्] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह (राज)।

पेरग वि [प्रेरक] प्रेरणा करनेवाला, पूर्वपक्षी (धर्मसं ५८७)।

पेरण न [दे] १ ऊर्ध्व स्थान (दे ६, ५६)। २ खेल, तमाशा (स ७२३, ७२५)।

पेरण न [प्रेरण] प्रेरणा (कुप्र ७०)।

पेरणा स्त्री [प्रेरणा] ऊपर देखो (सम्मत्त १५७)।

पेरिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (दे ८, १२, भवि)।

पेरिज्ज न [दे] साहाय्य, सहायता, मदद (दे ६, ५८)।

पेरिज्जत देखो पेर = प्र + ईरय्।

पेरुल्लि वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया (दे ६, ५४)।

पेलव वि [पेलव] १ कोमल, सुकुमार, मृदु (पाअ, से २, २७, अभि २६, औप)। २ पतला, कृश। ३ सूक्ष्म, लघु (णाया १, १—पत्र २५, हे १, २३८)।

पेलु स्त्री [पेलु] पूणी, रुई की पहल, 'कंतामि ताव पेलुं' (पिंडमा ३५)। °करण न [°करण] पूणी—पूनी बनाने का उपकरण, शलाका आदि (निचू ३३०५)।

पेल्ल सक [क्षिप्] फेंकना। पेल्लइ (हे ४, १४३)। कर्म. पेल्लिज्जइ (उव)। वकृ पेल्लत (कुमा)। सकृ पेल्लिऊण (महा)।

पेल्ल देखो पेर = प्र + ईरय्। पेल्लेइ (प्राकृ ६०)। कवकृ. पेल्लिज्जत (से ६, २५)। सकृ पेल्लि (अप), पेल्लिअ (पिंग)। कृ पेल्लेयव्व (ओघभा १८ टी)।

पेल्ल सक [पीडय्] पीलना, दबाना, पीडना। पेल्लेमि, पेल्लिसि (म ५७४ टि)।

पेल्ल सक [पूरय्] पूरना, भरना। कवकृ पेल्लिज्जत (से ६, २५)।

पेल्ल } पुन [दे] बचा, शिशु, बालक (उप
पेल्लग } २१६), 'वीयम्मि पेल्लगाइ' (उप २२० टी)।

पेल्लग देखो पेरग (निचू १६)।

पेल्लण देखो पेरण (पराह १, ३, गउड)।

पेल्लण न [क्षेपण] फेंकना (धर्म २)।

पेल्लय पु [दे] देखो पेल्ल = (दे) (विपा १,२—पत्र ३६), 'सपेल्लिय सियालि' (सुख २, ३३)।

पेल्लय देखो पेरग (बृह १)।

पेल्लय पुं [पेल्लक] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान मे उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु २)।

पेल्लव } देखो पेर। पेल्लवइ, पेल्लावइ (प्राकृ
पेल्लाव } ६०)।

पेल्लिअ वि [दे पीडित] पीडित (दे ६, ५७), 'वलियदाइयपेल्लिओ' (महा)।

पेल्लिअ देखो पेरिअ (गा २२१, विपा १, १)।

पेल्लेयव्व देखो पेल्ल = प्र + ईरय्।

पेव्वे अ आमन्त्रण-सूचक अव्यय (षड्)।

पेस सक [प्र + एषय्] भेजना पठाना। पेसइ, पेसेइ (भवि, महा)। वकृ पेसअत (पि ४६०, रभा)। सकृ पेसिअ, पेसिउ (मा ४०, महा)। कृ. पेसइयव्व, पेसिअव्व, पेसेयव्व (सुपा ३००, २७८, ६३०, उप १३६ टी)।

पेस देखो पीस। वकृ पेसयत (राज)।

पेस पुस्त्री [प्रेष्य] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर (सम १६, सूअ १, २, २, ३, उवा)। २ वि भेजने योग्य (हे २, ९२)।

पेस पु [दे पेश] १ सिन्ध देश मे होनेवाली एक पशु-जाति (आचा २, ५, १, ८)।

पेस वि [दे पेश] पेश नामक जानवर के चमडे का बना हुआ (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ८)।

पेसण न [दे] कार्य, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७, भवि, णाया १, ७—पत्र ११७, पउम १०३, २६)।

पेसण न [प्रेषण] १ पठाना, भेजना। २ नियोजन, व्यापारण (कुमा गउड)। ३ आज्ञा, आदेश (से ३, ५४)।

पेसणआरी } स्त्री [दे] दूती, दूत-कर्म करने-
पेसणआली } वाली स्त्री (दे ६, ५९, षड्)।

पेसणा स्त्री [पेषण] पीसना, पेषण, 'सिलाए जवगोहूमपेसणाए हेऊए' (उप ५६७ टी)।

पेसल वि [पेशल] १ सुन्दर, मनोज्ञ (आचा, गउड)। २ मधुर, मञ्जु (पाअ)। ३ कोमल (गउड)।

पेसल } न [दे] सिन्ध देश के पेश नामक
पेसलेस } पशु के चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र, 'पेसाणि वा पेसलाणि वा' (२ आचा २, ५, १—सूत्र १४५), 'पेसाणि वा पेसलेसाणि वा' (३ आचा २, ५, १, ८, (राज)।

पेसव सक [प्र + एषय्] भेजवाना। कृ पेसवेयव्व (उप १३६ टी)।

पेसवण न [प्रेषण] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण (उवा, पडि)।

पेसविअ वि [प्रेषित] भेजवाया हुआ, प्रस्थापित (पाअ, उप पृ ५८)।

पेसाय वि [पैशाच] पिशाच-सबन्धी (बृह २)।

पेसि स्त्री [पेशि] देखो पेसी (सुपा ४८७)।

पेसिअ वि [प्रेषित] १ भेजा हुआ प्रहित (गा ११२, भवि, काल)। २ प्रेषण (पउम ६, ३५)।

पेसिआ स्त्री [पेशिका] खण्ड, टुकडा, 'अव-पेसिया ति वा अवाडगपेसिया ति वा' (अनु ६, आचा २, ७, २, ७, ८, ९)।

पेसिआर पु [प्रेषितकार] नौकर, भृत्य, कर्मकर (पउम ६, ३५)।

पेसिदवत (शौ) वि [प्रेषितवत्] जिसने भेजा हो वह (पि ५६९)।

पेसी स्त्री [पेशी] मास-खण्ड, मास-पिण्ड (तदु ७)। देखो पेसिआ।

पेसुण्ण } न [पैशुन्य] परोक्ष मे दोष-
पेसुन्न } कीर्तन, चुगली (औप, सूअ १, १६, २, णाया १, १, भग, सुपा ४२१)।

पेसेयव्व देखो पेस = प्र + एषय्।

पेस्सिदवत देखो पेसिदवत (पि ५६९)।

पेह सक [प्र + ईक्ष्] १ देखना, निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना। २ चिन्तन करना। पेहइ, पेहए (पि ८७, उव), पेहति (कुप्र १६२)। भवि पेहिस्सामि (पि ५३०)। वकृ पेहत, पेहमाण (उपपृ १५४, चेइय २५०, पि ३२३)। सकृ पेहाए, पेहिया (कस, पि ३२३)।

पेह सक [प्र + ईह्] १ इच्छा करना, चाहना। २ प्रार्थना करना। पेहेइ (दस ६, ४, ७)।

पेहण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (पचा ४, ११)।

पेहा स्त्री [प्रेक्षण] १ निरीक्षण (उव, सम ३२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग मे बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना (पव ५)। ३ पर्यालोचन, चिन्तन (श्राव ४)। ४ बुद्धि, मति (उत्त १, २७)।

पेहाविग वि [प्रेक्षित] दर्शित, दिखलाया हुआ (उप पृ ३८८)।

पेहि वि [प्रेक्षिन्] निरीक्षक (आचा, उव)। स्त्री °णी (पि ३२३)।

पेहिय वि [प्रेक्षित] निरीक्षित (महा)।

पेहुण न [दे] १ पिच्छ, पंख (दे ६, ५८, पाअ, गा १७३, ७६५, वजा ४४, भत्त १४१, गउड)। २ मयूर पिच्छ, मयूर-पख, शिखण्ड (पराह १, १, २, ५, ज १, णाया १, ३) देखो पिहुण।

पोअ सक [प्र + वे] पिरोना, गूँथना। पोअति (गच्छ ३, १८, सूअनि ७४)। वकृ पोयमाण (स ५१२)। सकृ पोइऊण (धमवि ६७)।

पोअ वि [प्रोत] पिराया हुआ (दे १, ७६)।

पोअ पु [पोत] १ जहाज, प्रवहण, नौका (पाअ, सुपा ८८, ३६९)। २ बालक, शिशु, बच्चा (दे ६, ८१, पाअ, सुपा ३६९)। ३ न वस्त्र, कपडा (ठा ३, १—पत्र ११४)

पोअ पुं [दे] १ यव वृक्ष, वाय, धौं का पेड़। २ छोटा साँप (दे ६, ८१)।

पोअइआ स्त्री [दे] निद्राकारी लता, लता-विशेष (दे ६, ६३, पाअ)।

पोअड वि [दे] १ भय-रहित, निडर। २ षण्ड, नामर्द (दे ६, ६१)।

पोअन पु [दे] शपथ, सौगन (दे ६, ६२)।

पोअण न [प्रवयन, प्रोतन] पिरोना, गुम्फन, गूँथना (मानम)।

पोअणपुर न [पोतनपुर] नगर-विशेष (सुपा ५०६, भवि)।

पोअणा स्त्री [प्रवयना, प्रोतना] पिरोना (उप ३५६)।

पोअय वि [पोतज] पोत से उत्पन्न होनेवाला प्राणी—हस्ती आदि (ठा ३, १)।

पोअय पु [पोतक] देखो पोअ = पोत (उवा, औप)।

पोअलय पु [दे] १ आश्विन मास का एक उत्सव, जिसमें पत्नी के हाथ से लेकर पति अपूप को खाता है। २ एक प्रकार का अपूप—खाद्य विशेष, पूआ। ३ बाल वसन्त (दे ६, ८१)।

पोआई स्त्री [पोताकी] १ शकुनि को उत्पन्न करनेवाली विद्या-विशेष। २ शकुनिका, पक्षि-विशेष (विसे २४५३)।

पोआउय वि [पोतायुज, पोतज] देखो पोअय (पउम १०२, ९७)।

पोआय पु [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया (दे ६, ६०)।

पोआल पुं [दे] वृषभ, बलीवर्द (दे ६, ६२)।

पोआल [दे पोतक] बच्चा, शिशु, बालक (पाअ ८८७)।

पोइअ पु [दे] १ हलवाई, मिठाई बेचनेवाला। २ गवाँरा (दे ६, ६३)। ३ निरस्त, हटा हुआ (षोप १८६)। ४ म्लानित (बृह १)।

पोइअ वि [प्रोत] पिरोया हुआ (द ७, ४४, उप पृ १०६, पाअ)।

पोइअव्व देखो पोइअ = प्रोत (ओप ५३६ टी)।

पोइआ } स्त्री [दे] निद्राकारी लता, वल्ली-
पोई } विशेष (दे ६, ६३, पण्ण १—पत्र ३४)।

पोडआ स्त्री [दे] करीष—सूखा गोबर (गोइँठा) का अग्नि (दे ६, ६१)।

पोंग पु [दे] पाक, पकना (स १८०)।

पोंगिल्ल वि [दे] पका हुआ, परिपक्व, परिपाक युक्त, कच्छी भाषा में 'पोंगेल',

'अन्नेवि मडमहियलनिमीय-
णुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइय-
निग्गट्टा कहवि हिंडति ॥'
(स १८०)।

पोंड न [दे] फूल, पुष्प, 'एगं सालियपोंड बद्धो आमलगो होइ' (उत्तनि ३)।

पोंड देखो पुड। °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष (महा)। °वद्धणिया स्त्री [°वर्धनिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

पोंड } पु [दे] यूथ का अधिपति (दे ६,
पोंडय } ६०)। २ फल (पण्ह १, ४—पत्र ७८)। ३ अविकसित अवस्थावाला कमल (विसे १४२५)। ४ कपास का सूता, 'दव्व तु पोंडयादी भावे सुत्तमिह सूयग नाणं' (सूअनि ३)।

पोंडरिगिणी देखो पुंडरिगिणी (ठा २, ३)।

पोंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (स ४३६)।

पोंडरी स्त्री [पौण्ड्री, पुण्डरीका] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

पोंडरीअ देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (औप, णाया १, ५, १६, सम ३३, देवेन्द्र ३१८, सूअनि १४६)।

पोंडरीअ } न [पौण्डरीक] १ गणित-
पोंडरीग } विशेष, रज्जु-गणित (सूअनि १५८)। २ देखो पुंडरीअ = पौण्डरीक (सूअ २, १, १, सूअनि १४६, १५१)।

पोक्क सक [व्या + हृ, पूत् + कृ] पुकारना, आह्वान करना। पोक्कइ (हे ४, ७६)।

पोक्क वि [दे] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका), 'पोक्कनासे' (उत्त १२, ६)।

पोक्कण पुं [पोक्कण] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में बसनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)।

पोक्कण न [व्याहरण, पूत्करण] १ पुकार, आह्वान। २ वि. पुकारनेवाला (कुमा)।

पोक्कर देखो पुक्कर। पोक्करंति (महा)। वकृ. पोक्करंत (सुपा ३८०)।

पोक्करिय वि [पूत्कृत] १ पुकारा हुआ (सुर ६, १६४)। २ न पुकार (दस ३)।

पोक्कार देखो पुक्कार = पूत्कार (उप पृ १८५)।

पोक्किअ देखो पोक्करिय (उप १०३१ टी)।

पोक्खर न [पुष्कर] १ जल, पानी। २ पद्म, कमल। ३ पद्म-कोष। ४ एक तीर्थ, अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—तीर्थ। ५ हाथी की सूँढ का अग्र भाग। ६ वाद्य-भाण्ड। ७ आपण, दूकान। ८ असि-कोष, तलवार की म्यान। ९ मुख, मुँह। १० कुष्ठ रोग की ओषधि। ११ द्वीप-विशेष। १२ युद्ध, लड़ाई। १३ शर, बाण। १४ आकाश, 'पोक्खर' (हे १, ११६, २, ४, मक्षि ८)। १५ पु. नाग-विशेष। १६ रोग-विशेष। १७ सारस पक्षी। १८ एक राजा का नाम। १९ पर्वत विशेष। २० वरुण पुत्र, 'पोक्खरो' (प्राप्र)। देखो पुक्खर।

पोक्खर वि [पौष्कर] १ पुष्कर सम्बन्धी। २ पद्माकार रचनावाला, 'पोक्खर पवट्टणं' (चार ७०)।

पोक्खरिणी स्त्री [पुष्करिणी] १ जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पद्मिनी, कमलिनी, पद्म-लता, 'जलेण वा पोक्खरिणीपलास' (उत्त ३२, ६०)। ३ वापी (कुमा)। ४ पद्म-समूह। ५ पुष्कर मूल (हे २, ४)। ६ चौकोना जलाशय, पोखरी, वापी (पण्ह १, १, हे २,४)।

पोक्खल देखो पुक्खल (पण्ण १—पत्र ३५, आचा २, १, ८, ११)।

पोक्खलच्छिद्दलय } देखो पुक्खलच्छि-
पोक्खलच्छिद्दलय } भय (पण्ण १—पत्र ३५, राज)।

पोक्खलि पुंन [पुष्कलिन] एक जैन उपासक, जिसका दूसरा नाम शतक था (राज)।

पोग्गर } पुन [पुद्गल] १ रूपादि विशिष्ट
पोग्गल } द्रव्य, मूर्त द्रव्य, रूपवाला पदार्थ, 'पोग्गला' (भग ८, १, ठा २, ४, ४, ४,

५, ३, ८), 'पोग्गलाइं' (सुज्ज ६, पंच ३, ४६)। २ न. मास (पव २६८, हे १, ११६)। °त्थिआय पु [°ास्तिकाय] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि (गग, ठा ५, ३)। °परट्ट, °परियट्ट पुं [°परिवर्त] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यो के साथ एक-एक परमाणु का संयोग-वियोग। २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय (कम्म ५, ८६, भग १२, ४, ठा ३, ४)।

पोग्गलि वि [पुद्गलिन्] पुद्गलवाला, पुद्गल-युक्त (भग ८, १०—पत्र ४२३)।

पोग्गलिय वि [पौद्गलिक] पुद्गल-मय, पुद्गल-सबन्धी, पुद्गल का (पिंडभा ३२४)।

पोच्च वि [दे] सुकुमार, कोमल, गुजराती मे 'पोचुं' (दे ६, ६०)।

पोच्चड वि [दे] १ असार, निस्सार (णाया १, ३—पत्र ६४)। २ अतिनिबिड (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मलिन (निचू ११)।

पोच्छल अक [प्रोत् + शल्] उछलना, ऊँचा जाना। वकृ. पोच्छलंत (सुर १३, ४१)।

पोच्छाहण न [प्रोत्साहन] उत्तेजन (वेणी १०५)।

पोच्छाहिअ वि [प्रोत्साहित] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित (सुर १३, २६)।

पोट्ट पुं [पुत्र] लडका, 'एक्केकेण चारभड-पोट्टेण' (वव १, टी)।

पोट्ट न [दे] पेट, उदर, मराठी मे 'पोट' (दे ६, ६०, णाया १, १—पत्र ६१, ओघभा ७६, गा ८३, १७१, २८५, स ११६, ७३८, उवा, सुख २, १५, सुपा ५४३, प्राकृ ३७, पव १३५, ज २)। °साल पुं [°शाल] एक परिव्राजक का नाम (विसे २४५२, ५५)। °सारणी स्त्री [°सारणी] अतीसार रोग (श्राव ४)।

पोट्ट } न [दे] पोटला, गट्ठर, गठरी, पोट्टल } 'कामिणिणियंबबिंब कदप्पविलासरायहाणित्ति। न मुणइ अमेज्झपोट्ट' (सुपा ३५५, दे २, २४, स १००)।

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी (सुख २, १७)।

पोट्टलिय वि [दे] पोटली उठानेवाला, गठरी-वाहक (निचू १६)।

पोट्टलिया [दे] देखो पोट्टलिगा (उप पृ ३८७, सुर १२, ११, सुपा २, १७)।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर पेशी (गच्छ २००)।

पोट्टिल पु [पोट्टिल] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थंकर—जिन देव (सम १५३)। २ भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम (सम १५४)। ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम (सम १०५)। ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय मे तीर्थंकर-नाम-कर्म बँधा था (ठा ६)। ५ एक जैन मुनि (पउम २०, २१)। ६ देव-विशेष (णाया १, १४)। ७ देखो पोट्ठिल (राज)।

पोट्टिला स्त्री [पोट्टिला] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (णाया १, १४)।

पोट्टिस पु [पोट्टिस] एक कवि का नाम (कप्पू)।

पोट्ठवई स्त्री [प्रोष्ठपदी] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा। २ भादो की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

पोट्ठिल पु [पुष्टिल] भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु)।

पोडइल न [दे] तृण विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोढ वि [प्रौढ] १ समर्थ (पाअ)। २ निपुण, चतुर। ३ प्रगल्भ। ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्थावाला (उप पृ ८६, सुपा २२४, रभा, नाट—मालती १३६)। °वाय पु [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान (गा ५२२)।

पोढा स्त्री [प्रौढा] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री (कुप्र १८५)। २ नायिका का एक भेद, शृङ्गार रस मे काम-कला आदि अच्छी तरह जाननेवाली (प्राकृ १०)।

पोढिम पुस्त्री [प्रौढमन्] प्रौढता, प्रौढपन (मोह २)।

पोढी स्त्री [प्रौढी] ऊपर देखो (कुप्र ४०७)।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण (दे ६, २८)।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुवा (दे ६, ६१)।

पोत देखो पोअ = पोत (औप, बृह १, णाया १, ८)।

पोतणया देखो पोअणा (उप पृ ८१२)।

पोत्त पुं [पौत्र] पुत्र का पुत्र, पोता (दे २, ७२, श्रा १४)।

पोत्त न [पोत्र] प्रवहण, नौका, 'वेलाउलम्मि ओयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि' (उप ५९७ टी)।

पोत्त } न [पोत] १ वस्त्र, कपडा (श्रा पोत्तग } १२, गोघ १६८ कप्पू, स ३३०)। २ धोती, कटी-वस्त्र (गच्छ ३, १८, कस, वव ८४, श्रावक ६३ टी, महा)। ३ वस्त्र-खण्ड (पिंड ३०८)।

पोत्तय पु [दे] फोता, वृषण, अण्डकोश (दे ६, ६२)।

पोत्तिअ न [पौतिक] वस्त्र, सूती कपडा (ठा ५, ३—पत्र ३३८, कस २, २६ टि)।

पोत्तिअ वि [पोतिक] १ वस्त्र-धारी। २ पुं. वानप्रस्थो का एक भेद (औप)।

पोत्तिआ स्त्री [पौत्रिका] पुत्र की लडकी (रंभा)।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

पोत्तिआ } स्त्री [पोतिका, पोती] १ धोती, पोत्ती } पहनने का वस्त्र, साडी (विसे २६०१)। २ छोटा वस्त्र, वस्त्र खण्ड, 'चउप्फालयाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता' (णाया १, १—पत्र ५३, पिंडभा ६), 'मुहपोत्तियाए' (विपा १, १)।

पोत्ती स्त्री [दे] काच, शीशा (दे ६, ६०)।

पोत्तुल्लया देखो पोत्तिआ (णाया १, १८—पत्र २३५)।

पोत्थ } पुंन [पुस्त, °क] १ वस्त्र, कपडा पोत्थग } (णाया १, १३—पत्र १७९)। २-पोत्थय } ३ देखो पुत्थ, 'पोत्थकम्मजक्खा विव निच्चिट्ठा' (वसु, श्रा १२, सुपा २८६, विसे १४२५, बृह ३, प्राप्र, औप)।

पोत्था स्त्री [प्रोत्था] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति (उत्त २०, १६)।

पोत्थार पु [पुस्तककार] पोथी लिखनेवाला, पोथी बनाने का काम करनेवाला शिल्पी, दफ्तरी, जिल्दसाज (जीव ३)।

पोत्थिया स्त्री [पुस्तिका] पोथी, पुस्तक, 'रयणमउ व्व पोत्थियावन्नगहत्था' (वाज)।

पोप्पय पुं [दे] हस्त-परिमर्श, हाथ फिराना (दस पृ ३४३)।

पोप्फल न [पूगफल] सुपारी (हे १, १७०; कुमा)।

पोप्फली स्त्री [पूगफली] सुपारी का पेड़ (हे १, १८०; कुमा)।

पोम देखो पउम, 'जहा पोमं जले जायं' (उत्त २५, २७; सुर २५, २७; पउम ५३, ७९)।

पोमर न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र (दे ६, ६३)।

पोमाढ पुं [दे पद्माट] पमाड, पमार, पमाड़ का पेड़ (स १०८)। देखो पउमाड।

पोमावई स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग)।

पोमिणी देखो पउमिणी (सुपा ६४६; सम्मत्त १०१)।

पोम्म देखो पउम (हे १, ६१; २, ११२; गा ७५; कुमा; प्राकृ २८; षड्; पि १६६)।

पोम्मा देखो पउमा (प्राकृ २८; गा ४७१; पि १६६)।

पोम्ह देखो पम्ह = पक्ष्मन्, 'जह उ फिर गुणिणाए पोम्हयं मिदुण्णयाम्हमरियाए' (धर्मवि १८०)।

पोर पुं [पूतर] जल में होनेवाला क्षुद्र जन्तु (हे १, १७०; कुमा)।

पोर वि [पौर] पुर में—नगर में उत्पन्न, नागरिक (प्राकृ ३५)।

पोर देखो पुर = पुरस्। °कव्व न [°काव्य] शीघ्रकवित्व (राज)।

पोर पुंन [दे पर्वन्] ग्रन्थि, गाँठ (ठा ४, १; पणु)। °बीय वि [°बीज] पर्व-बीज से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति, इक्षु आदि (ठा ४, १)।

पोरग पुंन [पर्वक] वनस्पति का एक भेद, पर्व-वाली वनस्पति (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोरच्छ पुं [दे] दुर्जन, खल (दे ६, ६२; पाअ)।

पोरत्थिम देखो पुरत्थिम (कुमा ८१)।

पोरत्थ वि [दे] मत्सरी, ईर्ष्यालु, द्वेषी (षड्)।

पोरव न [दे] [illegible] (दे ६, ३६)।

पोरव पुं [पौरव] राजा पुरु की संतान (अभि ९५)।

पोरवाड पुं [पौरवाट] एक जैन श्रावक-कुल (ती २)।

पोराण देखो पुराण (पण्ण २८; औप; भग; हे ४, २८७; उत्र; गा ७४०)।

पोराण वि [पौराण] १ पुराण-सम्बन्धी (राय)। २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता (राज)।

पोराणिय वि [पौराणिक] पुराण-शास्त्र-सम्बन्धी (स ३४४)।

पोरिस न [पौरुष] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ (प्रासू १७)। २ पराक्रम (कुमा)।

पोरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत (धर्मसं ८९२ टी)।

पोरिसिमंडल न [पौरुषीमण्डल] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

पोरिसिय देखो पोरिसीय, 'अत्थाहमतारम-पोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयंति' (णाया १, १८—पत्र २३०)।

पोरिसी स्त्री [पौरुषी] १ पुरुष शरीर-प्रमाण छाया। २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर (उवा; विपा २, १; आचा; कप्प; पव ४)। ३ प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष, तप विशेष (पव ४; संबोध ५७)।

पोरिसीय वि [पौरुषिक] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित, 'कुंभी महंताहियपोरिसीया' (सूअ १, ५, १, २४)।

पोरुस पुं [पुरुष] अपरज वृद्ध पुरुष (सूअ १, ७, १०)।

पोरुस देखो पोरिस (स २०४; उव ७२८ टी; महा)।

पोरेकच्च } न [पौरस्कृत्य] पुरस्कार, कला-
पोरेगच्च } विशेष (औप; राय; औप १०७ टि)।

पोरेवच्च न [पौरोवृत्त्य] पुरोवर्तित्व, अग्रेसरता (औप; सम ८६; विपा १, १; कप्प)।

पोलट्ट सक [प्र + लुट्] विशेष उल्लंघन करना। पोलट्टइ (णाया १, १—पत्र ६१)।

पोलच्चा स्त्री [दे] लोहित भूमि, कृष्ट जमीन (दे ६, ६३)।

पोलास न [पोलास] १ नगर विशेष, पोलासपुर (उवा)। २ उद्यान-विशेष (राज)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उवा अंत)।

पोलासाढ न [पोलाषाढ] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य (विसे २३५७)।

पोलिअ पुं [दे] सौनिक, कसाई (दे ६, ६२)।

पोलिआ स्त्री [दे. पौलिका] खाद्य-विशेष, पूरी (?), 'सुणओ इव पोलियासत्तो' (उप ७२८ टी; राज)।

पोली देखो पओली, 'वद्धेसु पोलिदारेसु, गवेसंतो अ धुत्तयं' (श्रा १२; उप पृ ८४; धर्मवि ७७)।

पोल्ल वि [दे] पोला, शुषिर, खाली, रिक्त, 'पोल्लो व्व मुट्ठी जह से असारे' (उत्त २०, ४२; णाया १, १—पत्र ६३; पव ८१), 'वका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लया य दड्ढा य' (महा)।

पोल्लड वि [दे] ऊपर देखो, 'वका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य' (ओघ ७३५; विचार ३३६)।

पोल्लर न [दे] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)।

पोस अक [पुष्] पुष्ट होना। पोसइ (धात्वा १४५; भवि)।

पोस सक [पोषय्] १ पुष्ट करना। २ पालन करना। पोसेइ (पंचा १०, १४), 'मायरं पियरं पोस' (सूअ १, ३, २, ४), पोसाहि (सूअ १, २, १, १९)। कवकृ. पोसिज्जंत (गा १३५)।

पोस वि [पोष] १ पोषक, पुष्टि-कारक, 'अभिजुंजिया पोसवत्थं परिहिंति' (सूअ १, ४, १, ३)। २ पुं पोषण, पुष्टि (संथार ३६)।

पोस पुं [पोस] १ अपान-देश, गुदा (पण्ह १, ४—पत्र ७८; ओघ ५५६; औप)। २ योनि (निचू ६)। ३ लिंग, चाह्न, 'णवगो-तपरिस्सावा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा, दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोस, पाऊ' (ठा ९—पत्र ४५०)।

पोस पुं [पौष] पौष मास (सम ३५)।

पोसग वि [पोषक] १ पुष्टि-कारक। २ पालन-कर्ता (पण्ह १, २)।

पोसण न [पोषण] १ पुष्टि (पण्ह १, २)। २ पालन। ३ वि पोषण-कर्ता, 'लोग परं पि जहासिपोसणो' (सूत्र १, २, १, १६)।
पोसण न [पोसन] अपान, गुदा (ज ३)।
पोसणया स्त्री [पोषणा] १ पोषण, पुष्टि। २ भरण, पालन (उवा)।
पोसय देखो पोस = पोम, 'पोमए त्ति' (ठा ६ टी—पत्र ४५०, वृह ४)।
पोसग देखो पोसग (राज)।
पोसह पुं [पोषध, पौषध] १ अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि मे करने योग्य जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार आदि के त्याग-पूर्वक किया जाता अनुष्ठान विशेष (सम १६, उवा, औप, महा, सुपा ६१६, ६२०)। २ पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि, 'पोसहमद्दो रुढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ' (सुपा ६१६)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] जैन श्रावक को करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष (पंचा १०, ३)। °वय न [°व्रत] वही पूर्वोक्त अर्थ (पडि)। °साला स्त्री [°शाला] पौषध-व्रत करने का स्थान (णाया १, १—पत्र ३१, अत, महा)। °ोववास पुं [°ोपवास] पर्वदिन मे उपवास-पूर्वक किया जाता जैन श्रावक का अनुष्ठान-विशेष, जैन श्रावक का ग्यारहवा व्रत (औप, सुपा ६१६)।
पोसहिय वि [पौषधिक] जिसने पोषध-व्रत किया हो वह, पौषध करनेवाला (णाया १, १—पत्र ३०, सुपा ६१६, धर्मवि २७)।
पोसिअ वि [दे] दु स्थ, दरिद्र, दु खी (दे ६, ६१)।
पोसिअ वि [पुष्ट] पोषण-युक्त (भवि)।
पोसिअ त्रि [पोषित] १ पुष्ट किया हुआ। २ पालित (उत्त २७, १४)।
पोसिद (शौ) वि [प्रोषित] प्रवास—विदेश मे गया हुआ। °भत्तुआ स्त्री [°भर्तृका] जिसका पति प्रवास—परदेश मे गया हो वह स्त्री (स्वप्न १३८)।
पोसी स्त्री [पौषी] १ पोष मास की पूर्णिमा। २ पौष मास की अमावस (सुज १०, ६, इक)।
पोह पुं [दे] बैल आदि की विष्ठा का ढेर, कच्छी भाषा मे 'पोह' (पिंड २४५)।
पोह पु [प्रोथ] अश्व के मुख का प्रान्त भाग (गउड)।
पोहण पु [दे] छोटी मछली (दे ६, ६२)।
पोहत्त न [पृथुत्व] चौडाई (भग)।
पोहत्त देखो पुहत्त (पि ७८)।
पोहत्तिय वि [पार्थक्त्विक] पृथक्त्व-सबन्धी (पण्ण २२—पत्र ६३६, ६४०, २३—पत्र ६६४)।
पोहल देखो पोप्फल (पड)।
°प्प देखो प = प्र, 'विप्पोसहिपत्ताण' (सति २, गउड)।
°प्पआस देखो पयास = प्रयास (अभि ११७)।
°प्पउत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (मा ३)।
°प्पअअ देखो पअअ (अभि १७६)।
°प्पडव (मा) अक [प्र + तप्] गरम होना। प्पडवदि (पि २१६)।
°प्पडिआर देखो पडिआर = प्रतिकार (मा ४३)।
°प्पडिहा देखो पडिहा = प्रतिभा (कुमा)।
°प्पणइ देखो पणइ = प्रणयिन् (कुमा)।
°प्पणाम देखो पणाम = प्रणाम (हे ३, १०५)।
°प्पणास देखो पणास = प्रणाश (सुपा ६५७)।
°प्पण्णा देखो पण्णा = प्रज्ञा (कुमा)।
°प्पत्थाण देखो पत्थाण (अभि ८१)।
°प्पदेस देखो पदेस (नाट—विक्र ४)।
°प्पफुरिद (शौ) देखो पप्फुरिअ (नाट—मालती ५४)।
°प्पबव देखो पबंध (रभा)।
°प्पभिदि देखो °पभिइ (रभा)।
°प्पभूद (शौ) देखो पभूय (नाट—वेणी ३६)।
°प्पमत्त देखो पमत्त (अभि १८५)।
°प्पमाण देखो पमाण (पि ३६६ ए)।
°प्पमुक्क देखो पमुक्क (नाट—उत्तर ५६)।
°प्पमुह देखो पमुह (गउड)।
°प्पयर देखो पयर (कुमा)।
°प्पयाव देखो पयाव (कुमा)।
°प्पयास देखो पयास = प्रकाश (सुपा ६५७)।
°प्पलावि देखो पलावि (अभि ४६)।
°प्पवत्तण देखो पवत्तण, 'अजिअजिए सुहप्पवत्तण' (अजि ४)।
°प्पवह देखो पवह (कुमा)।
°प्पवेस देखो पवेस (रंभा)।
°प्पवेसि देखो पवेसि (अभि १७५)।
°प्पसर देखो पसर = प्र + सृ। वकृ. °प्पसरंत (रंभा)।
°प्पसर देखो पसर = प्रसर।
°प्पसव देखो पसव = (नाट—मालवि ३७)।
°प्पसाय देखो पसाय = प्रसाद (रंभा)।
°प्पसुत्त देखो पसुत्त (रभा)।
°प्पसूद (शौ) देखो पसूअ = प्रसूत (अभि १४०)।
°प्पहर देखो पहर = प्रहार (से २, ४, पि २६७ ए)।
°प्पहा देखो पहा (कुमा)।
°प्पहाण देखो पहाण (रभा)।
°प्पहाव देखो पहाव = प्रभाव, 'प्पहाउ' (रभा)।
°प्पहार देखो पहार (रंभा)।
°प्पहाव देखो पहाव (अभि ११६)।
°प्पहु देखो पहु (रंभा)।
°प्पारभ देखो पारभ (रभा)।
°प्पिअ देखो पिअ = प्रिय (अभि ११८, मा १८)।
°प्पिआ देखो पिआ (कुमा)।
°प्पिव देखो इव (प्राकृ २६)।
°प्पेम देखो पेम (पि ४०४)।
°प्पेम्म देखो पेम्म (कुमा)।
°प्पोढ देखो पोढ (रभा)।
°प्फस देखो फस = स्पर्श (काप्र ७४३, गा ४६२, ५५६)।
°प्फणा देखो फणा (सुपा ५३५)।
°प्फद्दा देखो फद्दा (कुमा)।
°प्फल देखो फल (पि२००)।
°प्फाल सक [स्फालय्] १ आघात करना। २ पछाडना। प्फालउ (पिंग)।

°प्फालण न [स्फालन] आघात (गउड; गा ५४६)।

°प्फुड देखो फुड (कुमा; रंभा)।

°प्फोडग देखो फोडग (गा ३८१)।

प्रस (अप) देखो परस = दृश्। प्रस्सदि (हे ४, ३९३)।

प्राइम्व, प्राइव, प्राउ (अप) देखो पाय = प्रायस् (हे ४, ४१४; कुमा)।

प्रिय (अप) देखो पिअ = प्रिय (हे ४, ३९८; कुमा)।

प्रेक्खिअ न [दे] वृष रटित, बैल की चिल्लाहट (षड्)।

प्रेयड वि [दे] धूर्त, ठग (दे १, ४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि पआराइसद्दसंकलणो
सत्तावीसइमो तरंगो परिसमत्तो ॥

फ

फ पुं [फ] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)।

फंद अक [स्पन्द्] थोड़ा हिलना, फरकना। फंदइ, फंदति (हे ४, १२७; उत्त १४, ४५)। वकृ. फंदंत, फंदमाण (सूअ १, ४, १, ६; ठा ७—पत्र ३८३; गउड)।

फंद पुं [स्पन्द] किञ्चित् चलन (षड्; गउड)।

फंदण न [स्पन्दन] ऊपर देखो (विसे १८४७; हे २, ५३; प्राप)।

फंदणा स्त्री [स्पन्दना] ऊपर देखो (सूअनि ८ टी)।

फंदिअ वि [स्पन्दित] १ कुछ हिला हुआ, फरका हुआ (पाअ)। २ हिलाया हुआ, ईषत् चालित (जीव ३)।

फंफ (अप) सक [उद् + गम्] उछलना। फंफाइ (पिंग १८४, ५)।

फंफसय पुं [दे] लता ?, वल्ली-विशेष (दे ६, ८३)।

फंसाइ (अप) वि [स्पर्शायित, स्पर्शित] फँसाया हुआ, स्पर्श प्राप्त (पिंग)।

फंस सक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित होना, अप्रमाण सिद्ध होना, अप्रमाण साबित होना। फंसइ (हे ४, १२९)। प्रयो., भूका फंसाविओ (कुमा)।

फंस सक [स्पृश्] छूना। फंसइ, फंसेइ (हे ४, १८२; प्राकृ २७)। कर्म. फंसिज्जइ (कुमा)।

फंस पुं [स्पर्श] स्पर्श, छूना (पाअ; प्राप; प्राकृ २७; गा २६६)।

फंसण न [स्पर्शन] छूना, स्पर्श करना (उप ३३० टी; धर्मवि ४३; मोह २६)।

फंसण वि [पांसन] अपसद, अधम, 'कुल-फंसणो' (सुपा २, ६; स १६८; भवि)।

फंसण वि [दे] १ युक्त, संयत। २ मलिन, मैला (दे ६, ८७)।

फंसुल वि [दे] मुक्त, त्यक्त (दे ६, ८२)।

फंसुली स्त्री [दे] नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ६, ८२)।

फक्किया स्त्री [फक्किका] ग्रन्थ का विषम स्थान, कठिन स्थान (गुरु १६, २४७)।

फग्गु वि [फल्गु] १ असार, निरर्थक, तुच्छ (सुर ८, ३; सबोध १६; गा ३६६ अ)। २ स्त्री. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] एक जैन मुनि (आव १)। °सिरी स्त्री [°श्री] इस अवसर्पिणी काल के पंचम आरे में होनेवाली अन्तिम जैन साध्वी (विचार ५३४)।

फग्गु पुं [दे फल्गु] वसन्त का उत्सव, फगुआ (दे ६, ८२)।

फग्गुण पुं [फाल्गुन] १ मास विशेष, फागुन का महिना (पाअ; कप्प)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डुपुत्र (वज्जा १३०)।

फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी] १ फागुन मास की पूर्णिमा (इक; सुज्ज १०, ६)। २ फागुन मास की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)। ३ एक गृहपति की स्त्री (उवा)।

फग्गुणी स्त्री [फल्गुनी] नक्षत्र विशेष (ठा २, ३)।

फट्ट अक [स्फट्] फटना, टूटना। फट्टइ (भवि)।

फड सक [स्फट्] १ खोदना। २ शोधना। वकृ. 'गत्त फडमाणीओ' (सुपा ६१३)। हेकृ. फडिउ (सुपा ६१३)।

फड न [दे] साँप का सर्व शरीर (दे ६, ८६)।

फड पुन [दे. फट] साँप की फणा (दे ६, ८६; कुप्र ७२)।

फडही [दे] देखो फलही (गा ५५० अ)।

फडा स्त्री [फटा] साँप की फन, सर्प-फणा (णाया १, ६; पउम ५२, ५; पाअ; औप)। °ल वि [°वत्] फनवाला (हे २, १५६; षड्)।

फडिअ वि [स्फटित] खोदा हुआ, 'तो थीवे-सघरेहिं नरेहिं फडिया झडत्ति सा गत्ता' (सुपा ६१३)।

फडिअ } देखो फलिह = स्फटिक (नाट—
फडिग } रत्ना ८३), 'फडिगपाहाणन्भिा' (निचू ७)।

फडिल्ल देखो फडा-ल (चड)।

फडिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल (से १३, ३८)। २ कुठार (से ५, ५४)।

फडिहा देखो फलिहा = परिखा (से १२, ७५)।

फड्ड } पुंन [दे स्पर्ध, °क] १ अंश,
फड्डग } भाग, निस्सा, गुजराती में 'फाडिउ',
फड्ड } 'कम्मियकद्दमिस्सा चुल्ली उक्खा य
फड्डुग } फड्डगजुया उ' (पिंड २५३)। २ सपूर्ण गण के अधिष्ठाता के वशवर्ती गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग जो सपूर्ण समुदाय के अध्यक्ष के अधीन हो, 'गच्छागच्छि गुम्मागुम्मि फड्डाफड्डि' (औप, बृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर। ४ अवधिज्ञान का निर्गम स्थान, 'फड्डा य असखेज्जा', 'फड्डा य आणुगामी' (विसे ७३८, ७३९)। ५ समुदाय, 'तत्थ पव्वइयगा फड्डगेहिं एति' (आवम, आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय, 'नेहप्पच्चय-फड्डगमेग अविभागवग्गणा णंता' (कम्मप २८, ४४, पच ३, २८, ५, १८३, १८४, जीवस ७६), 'त इगिफड्डु सते', 'तासि खलु फड्डुगाइं तु' (पच ५, १७६, १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक (बृह १)।

फण पु [फण] फन, साँप की फणा (से ६, ५५, पाअ, गा २४०, सुपा १, प्रासू ५१)।

फणग पुं [दे· फनक] कघा, केश सवारने का उपकरण (उत २२, ३०)।

फणज्जुय पु [दे] वनस्पति-विशेष, 'तुलसी कण्ह ओराले फणज्जुए अज्जए य भूयणए' (पण्ण १—पत्र ३४)।

फणस पु [पनस] कटहर का पेड (पण्ण १, हे १, २३२, प्राप्र)।

फणा स्त्री [फणा] फन (सुर २, २८६)।

फणि पु [फणिन्] १ सांप, सर्प, नाग (उप ३५७ टी, पाअ, सुपा ५५६, महा, कुमा)। २ दो कला या एक गुरु अक्षर की सज्ञा (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगलाचार्य (पिंग)। °चिंध पु [°चिह्न] भगवान् पार्श्वनाथ (कुमा)। °पहु पु [°प्रभु] १ नागकुमार देवों का एक स्वामी, धरणेन्द्र (ती ३)। २ शेष नाग (धर्मवि ५७)। °राय पुं [°राज] १ शेष नाग (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता (पिंग)। °लआ स्त्री [°लता] नागलता, वल्ली-विशेष, (कप्पू)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र (सुपा ३१)। २ नाग-राज (मोह २६)। ३ पिंगलकार (पिंग)। °सेहर पु [°शेखर] प्राकृत-पिंगल का कर्ता (पिंग)।

फणिंद पु [फणीन्द्र] १ नाग-राज, शेष नाग (प्रासू ११३)। २ पिंगलकार (पिंग)।

फणिल्ल सक [चोरय्] चोरी करना। फणिल्लइ (धात्वा १४६)।

फणिह पु [दे· फणिह] कंघा, केश सवारने का उपकरण (सूअ १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [फणीश्वर] देखो फणि-वइ (पिंग)।

फणुज्जय देखो फणज्जुय (राज)।

फद्ध पु [स्पर्ध] स्पर्धा, हिंस (कुमा)।

फद्धा स्त्री [स्पर्धा] ऊपर देखो (दे ८, १३, कुमा ३, १८)।

फद्धि त्रि [स्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (प्राकृ २३)।

फर } पु [दे फल, °क] १ काष्ठ आदि
फरअ } का तख्ता। २ ढाल। (दे १,७६,६, ८२, कप्पू, सुर २, ३१)। देखो फल, फलग।

फरअ पुंन [दे स्फरक] अस्त्र-विशेष, 'फरएहिं छाइऊण तेवि हु गिण्हति जीवत' (धर्मवि ८०)।

फरक्किद वि [दे] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित (कप्पू)।

फरस देखो फरिस = स्पर्श (रभा, नाट)।

फरसु पु [परशु] कुठार, कुल्हाडा, फरसा (भवि, पि २०४)। °राम पु [°राम] ब्राह्मण-विशेष, जमदग्नि ऋषि का पुत्र (भत्त १५३)।

फरहर अक [फरफराय्] फरफर आवाज करना। वकृ फरहरत (भवि)।

फरिह देखो फलिह = स्फटिक (इक)।

फरिस सक [स्पृश्] छूना। फरिसइ (षड्), फरिसइ (प्राकृ २७)। कर्म. फरिसिज्जइ (कुमा)। कवकृ फरिसिज्जत (धर्मवि १३६)।

फरिस } पुंन [स्पर्श, °क] स्पर्श, छूना
फरिसग } (आचा, पण्ह १, १, गा १३२, प्राप्र, पाअ, कप्प), 'न य कीरइ तणुफरिसं' (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [स्पर्शन] इन्द्रिय-विशेष, त्वगिन्द्रिय (कुप्र २२४)।

फरिसिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (कुप्र १६, ४२)।

फरिहा देखो फलिहा = परिखा (णाया १, १२)।

फरुस वि [परुष] १ कर्कश, कठिन (उवा, पाअ, हे १, २३२, प्राप्र)। २ न कुवचन, निष्ठुर वाक्य, 'ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा' (सूअ १, १४, ७, २१)।

फरुस } पुं [दे परुष, °क] कुम्भकार,
फरुसग } कुम्हार, कोहार, कुभार, 'पोग्गलमोयगफरुसगदते' (बृह ४)। °साला स्त्री [°शाला] कुभकार-गृह (बृह ३)।

फरुसिया स्त्री [परुषता, पारुष्य] कर्कशता, निष्ठुरता (आचा)।

फल अक [फल्] फलना, फलान्वित होना। फलइ (गा १७, ८९४), फलति (सिरि १२८२)। वकृ. फलत (से ७, ५६)।

फल पुन [फल] १ वृक्षादि का शस्य (आचा, कप्प, कुमा, ठा ६, जी १०)। २ लाभ, 'पुच्छइ ते सुमिणाण एएसिं किमिह मह फलो होइ' (उप ९८६ टी)। ३ कार्य, 'हेउफलभावओ होति' (पंचव १, धर्म १)। ४ इष्टानिष्ट-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम (सम ७२, हे ४, ३३५)। ५ उद्देश्य। ६ प्रयोजन। ७ त्रिफला। ८ जायफल। ९ बाण का अग्र भाग। १० फाल। ११ दान। १२ मुष्क, अण्डकोष। १३ ढाल। १४ कक्कोल, गन्ध द्रव्य-विशेष (हे १, २३)। १५ अग्र भाग, 'अदु वा मुट्ठिणा अदु

कुतारुत्तेज' (ग्राचा १, ६, ३ १०)। °मन, °व वि [°वन] फलवाला (णाया १, ८, पत्ता ४)। °वट्टिय, वट्टिय न [°वर्द्धिक] १ नगर-विशेष, फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर। २ वहाँ का एक जैन मन्दिर (ती ५२)।

फलअ } पुंन [फलक] १ काठ आदि का फलग } तख्ता (ग्राचा, गा ६५६, तदु २६, सुर १०, १६१, ग्राप)। २ जुए का एक उपकरण (ग्रौप, पण्ह ३२)। ३ ढाल, 'नगिरिहि फलएहि' (विपा १, ३, कुमा, महा १०१)। ४ देखो फल (ग्राचा)। °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काठ का तख्ता जिसपर सोया जाय (भग)।

फलण न [फलन] फलना (सुपा ६)।

फलह } पुन [फलक °क] तख्ता, काठ फलहग } आदि का तख्ता, 'अन्नजए भिक्खु-पडिमाए पीढं वा फलहगं वा णिस्सेणिं वा उदूखलं वा आहट्टु उस्सविय दुरूहेज्जा' (आचा २, १, ६ १), 'भूमिसेज्जा फलह-सेज्जा' (ग्रौप), 'पफलहे' (दे १, ८, पि २०६), 'पासाए मंदिराइं फलहदुग्घाडिय-जालगवक्खाइं', 'अह फलहंतरेण दरिसिय-कुंभत्थलाइं' (सनि),

'विहुणाविय... निबद्धफलहसंघाय। सलिलमि... वाहित्थ मुणिवरसरिच्छं' (सुर १३, ३६)।

फलहिआ } स्त्री [फलहिका, फलही] काठ फलही } आदि का तख्ता, 'भूमि अन्वमिए ... ', 'इय पहाणफलही ...' (... ११), ... (सुर १, ५५१)।

फलही स्त्री [दे] १ कर्पास, कपास (दे ६, ८२ गा १६४, ३७६)। २ कपास की ... 'फलुम्मिवेढावणमुद्धा ... हलिअ व ...' (गा ३६०)।

फलाय सक [फलाय्] फलवान् बनाना, ... (सुर २६)।

फलाहार वि [फलाहार] फलभक्ष, फल को खाने वाला (पउम १८, ४०)।

फलासव पु [फलासव] मद्य-विशेष (पण्ण १७)।

फलि पु [दे] १ लिंग, चिह्न। २ वृषभ, बैल (दे ६, ८६)।

फलिअ वि [फलित] १ विकसित, 'फुडिअं फलिअं च दलिअमुद्दलिअं (पाअ)। २ फल-युक्त, जिसको फल हुआ हो वह (णाया १, ११)।

फलिअ न [दे] वायन, बायन, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

फलिआरी स्त्री [दे] दूर्वा, कुश तृण (दे ६, ८३)।

फलिणी स्त्री [फलिनी] प्रियंगु-वृक्ष (दे १, ३२, ६, ४६, पाअ, कुमा, गा ६६३)।

फलिह पु [परिघ] १ अर्गला, आगल, 'अग्गला फलिहो' (पाअ, ग्रोप), 'ऊसिय-फलिहा' (भग २, ५—पत्र १३४)। २ अस्त्र विशेष, लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र। ३ गृह, घर। ४ काच-घट। ५ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (हे १, २३२, प्राप्र)।

फलिह पु [स्फटिक] १ मणि-विशेष, स्फटिक मणि (जी ३, हे १, १६७, कप्पू)। २ एक विमानावास, देव विमान-विशेष (देवेन्द्र १३२, दक)। ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिक-मय काण्ड (ठा १०)। ४ गन्धमादन पर्वत का एक कूट (इक)। ५ कुण्डल पर्वत का एक कूट। ६ रुचक पर्वत का एक शिखर (राज)। °गिरि पु [°गिरि] कैलास पर्वत (पाअ)।

फलिह पु [फलिह] पनस, काठ आदि का तख्ता, 'अंबेम्मिणो फलिहा' (पाअ), 'नाणो-वगरणभूयाए कवलियाफलिहपुत्थियवाईए' (श्राव ८)।

फलिह पुन [स्फटिक] आकाश (भग २०, २)।

फलिह न [दे] श्याम का टेंटा, टेंट या टेंटी (अणु ३५ टी)।

फलिहंस पु [फलिहंसक] वृक्ष-विशेष (दे ८, ११)।

फलिहा स्त्री [परिखा] खाई, किले या नगर के चारों ओर की नहर (औप, हे १, २३२, कुमा)।

फलिहि देखो परिहि (प्राकृ १५)।

फलिही देखो फलही=दे (अणु ३५ टी)।

फली स्त्री [फली] काठ आदि की छोटी तख्ती, 'तत्तो चदणफलीउ वणियहट्टम्मि विक्किउं कहवि (सुपा ३८५)।

फलोवय } वि [फलोपग] फल-प्राप्त, फल-फलोवा° } सहित (ठा ३, १ पत्र—११३)।

फल्ल वि [फल्य] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा (बृह १)।

फव्वीह सक [लभ्] यथेष्ट लाभ प्राप्त करना, गुजराती में 'फाववु'। फव्वीहामो (बृह १)। फव्व (दश० अगस्त्य० सू० ३०३)।

फसल वि [दे] १ सार, चितकबरा, 'फसल सबल सार किम्मीर चित्तल च वोमिल्ल' (पाअ, दे ६, ८७। २ स्यासक (दे ६, ८७)।

फसलाणिअ } वि [दे] कृत-विभूष, जिसने फसलिअ } विभूषा की हो वह, शृङ्गारित (दे ६, ८३), 'फसलियाणि कुंकुमराएण' (स ३६०)।

फसुल वि [दे] मुक्त (दे ६, ८२)।

फाइ स्त्री [स्फाति] वृद्धि (ग्रोघ ४७)।

फाइकय वि [स्फीतीकृत] १ फैलाया हुआ। २ प्रसिद्ध किया हुआ, 'वत्तेसिय पणीयं फाईकयमएणमएणेहिं' (विसे २५०७)।

फागुण देखो फग्गुण (पि ६२)।

फाड सक [पाटय्, स्फाटय्] फाड़ना। फाडेइ (हे १, १९८, २३२)। वह. फाटन (कुमा)।

फाडिय वि [फाटित, स्फाटित] विदारित (भवि)।

फाणिअ पुन [फाणित] १ गुड, 'फाणियं गुडो भएणति' (निचू ८)। २ गुड का विकार-विशेष, आर्द्र गुड, पानी से द्रवित गुड (ग्रोघ, कस, विह २३६, ६७५, पव ४)। ३ क्वाथ (पएण १७—पत्र ५३०)।

फाय वि [स्फीत] १ वृद्ध। २ विस्तीर्ण। ३ व्याप्त (विसे २५०७)।

फार वि [स्फार] १ प्रचुर, बहुत, 'फारफार नारसिंजियगयासयगंडत्थो कणयारो' (धर्मवि ५५)। २ विशाल, विपुल। ३ निबिड,

फेला हुआ (सुर २, २३६, काप्र १७०, सुपा १६४, कुप्र ५१)।

फारक्क वि [दे. स्फारक] स्फरकास्त्र को धारण करनेवाला, 'त नासंत दटठुं फारक्का नमुइव्वयणओ डुक्का' (धर्मवि ८०)।

फारुसिय न [पारुष्य] परुषता, कठोरता, कर्कशता, 'फारुसिय समाइयवि' (आचा)।

फाल देखो °प्फाल।

फाल देखो फाड। फालेइ (हे १, १६८, २३२)। कवकृ फालिज्जत, फालिज्जमाण (गा १५३, सम्मत्त १७४)। संकृ. फालेऊण (गा ४८६)।

फाल पुन [फाल] १ लोहमय कुश, एक प्रकार की लोहे की लम्बी कील (उवा)। २ फाल से की जाती एक प्रकार की दिव्य-परीक्षा, शपथ विशेष (सुपा १८६)। ३ फलाग, लाँफ, 'दीवि व्व विहलफालो' (कुप्र १२)।

फालण न [पाटन, स्फाटन] विदारण, "खोणी किं न सहेदि सीरमुहओ त तारिस फालणं" (रभा, सम १२५)।

फालण देखो °प्फालण।

फाला स्त्री [फाला] फलाङ्ग, लाफ (कुप्र २७८, कुलक ३२)।

फालि स्त्री [दे फालि] १ फली, छीमी, फलिया २ शाखा "सिवन्निफालिव्व अग्गिणा दड्ढो" (सया ८५)। ३ फाँक, टुकडा "—नागवल्लीदलपूगीफलफालिपमुह—" (रयण ५५)।

फालिअ वि [पाटित, स्फाटित] विदारित (कुमा, पण्ह १, १—पत्र, पउम ८२, ३१, औप)।

फालिअ न [दे फालिक] देश विशेष में होता वस्त्र-विशेष, "अमिलाणि वा गजलाणि वा फालियाणि वा कायहाणि वा (आचा २, ५, १, ७)।

फालिअ } फालिग } फालिह } पु [स्फाटिक] १ रत्न-विशेष (कप्प)। २ वि. स्फटिक-रत्न का (पि २२६, उप ९८६, सुपा ८८)।

फालिहद्द पु [पारिभद्र] १ फरहद का पेड। २ देवदार का पेड। ३ निम्ब का पेड (१, २३२)।

फास सक [स्पृश्, स्पर्शय्] १ स्पर्श करना, छूना। २ पालन करना। फासइ, फासेइ (हे ४, १८२, भग)। कर्म. फासिज्जइ (कुमा)। वकृ. फासंत, फासयंत (पंचा १०, ३५ पण्ह २, ३—पत्र १२३)। कवकृ. फासा-इज्जमाण (भग—अ°)। सकृ फासइत्ता, फासित्ता (उत्त २६, १, सुख २६, १, कप्प, भग)।

फास पुन [स्पर्श] १ स्पर्श, छूना (भग, प्रासू १०४)। २ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ दुःख-विशेष, "एयाइ फासाइ फुसति बाल" (सूअ १, ५, २, २२)। ४ शब्द आदि विषय (उत्त ४, ११)। ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा (भग)। ६ रोग। ७ ग्रहण। ८ युद्ध, लडाई। ९ गुप्त चर, जासूस। १० वायु, पवन। ११ दान। १२ 'क' से लेकर 'म' तक के अक्षर। १३ वि स्पर्श करनेवाला (हे २, ९२)। °कीव पु [°क्लीव] क्लीव का एक भेद (निचू ४)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारणभूत कर्म (राज, सम ६७)। °मत वि [°मत्] स्पर्शवाला (ठा ५, ३, भग)। °मय वि [°मय] स्पर्श-मय, स्पर्श से निर्वृत्त, 'फासा-मयाओ सोक्खाओ' (ठा १०)।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करनेवाला (अज्झ १०४)।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया (श्रा १६)। २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा (पव ६७)।

फासणया } फासणा } स्त्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया (ठा ६, स १५६, जीवस १८१)। २ प्राप्ति (राज)।

फासिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ (नव ४१, विसे २७८३)। २ प्राप्त, 'उचिए काले विहिणा पत्त ज फासिय तय भणिय' (पव ४)।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करनेवाला (विसे १००१)।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट। २ प्राप्त (पव ४—गाथा २१२)।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय (भग, णाया १, १७)।

फासु } फासुअ } फासुग } वि [प्रासु, °क] अचेतन, जीव-रहित, निर्जीव, अचित्त वस्तु (भग, पचा १०, ६, औप, उवा, णाया १, ५, पउम ८२, ५)।

फिक्कर अक [फित् + कृ] प्रेत—पिशाच का चिल्लाना, 'तह फिक्करति पेया' (सुपा ४६२)।

फिक्कि पुस्त्री [दे] हर्ष, खुशी (दे ६, ८३)।

फिज न [दे स्फिच्] नितम्ब, चूतर, जघा का उपरि-भाग (सुख ८, १३)।

फिट्ट अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ टूटना, भागना। ३ ध्वस्त होना। ४ पलायन करना, भागना। फिट्टइ (हे ४, १७७, प्राकृ ७६, गा १८३, चेइय ५८७), फिट्टई (उत्त २०, ३०), फिट्टति (सिरि १२९३)। भवि फिट्टिहिइ, फिट्टिहिसि (कुप्र १६५, गा ७६८)।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट, 'पाणिएण तण्ह व्विअ न फिट्टा' (गा ९३, भवि)।

फिट्टा स्त्री [दे] १ मार्ग, रास्ता, 'ता फिट्टाए मिलियं कुट्टियनरपेडियं एगं' (सिरि २९६)। २ प्रणाम-विशेष, मार्ग मे किया जाता प्रणाम (गुभा १)। °मित्त पुंन [°मित्र] मार्ग मे मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधिवाली मित्रतावाला (सुपा १८९)।

फिड देखो फिट्ट। फिडइ (हे ४, १७७)।

फिडिअ वि [भ्रष्ट, स्फिटित] १ भ्रंश-प्राप्त, नष्ट, च्युत (ओघ ७, १११, ११२ से ४, ५४, ६४)। २ अतिक्रान्त, उल्लंघित (ओघभा १७४, औप)।

फिड्ड वि [दे] वामन (दे ६, ८४)।

फिप्प वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ६, ८३)।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र—आँत स्थित मास-विशेष, फेफडा (सूअनि ७२, पण्ह १, १)।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना। वकृ फिरंत (धर्मवि ८१)।

फिरक्क पुंन [दे] गाड़ी गाड़ी, भार ढोने-वाली गाड़ी गाड़ी, 'समचिन्ना दुन्नि वसहा सगडं फिरकं जलभरियंपि। अट्ठवि विणि-क्खित्ता निरंतरं नृजानि तम्मिं' (सुपा ४२४)।

फिरिअ वि [गत] गया हुआ,
'गोयरगामाहिंतो पुरिसा इह
केवि आगओ फिरिया।
ता गुरुयर आसन्नो
तुल्लेवि हु एस नगरत्तो'
(धर्मवि १३६)।

फिल्लिअ देखो फिडिअ (से ८, ६८)।

फिल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, गिरना। वकृ. 'सेवालियभूमितले फिल्लुस-माणा य यामयामम्मि' (सुर २, १०५)। देखो फेल्लुस।

फीज देखो फाय (सूअ २, ७, १)।

फीणिआ स्त्री [दे] एक जात की मीठाई, गुजराती में 'फेणी' (सम्मत्त ५७)।

फुंका स्त्री [दे] फूँक, मुँह से हवा निकालना (ओह ६७)।

फुंकार पुं [फुत्कार] फुफकार, कुपित सर्प आदि की आवाज (सुर २, २३७)।

फुंटा स्त्री [दे] केश-बन्ध (दे ६, ८४)।

फुंद देखो फंद = स्पन्द। फुंदइ (से १५, ७७)।

फुंफमा, फुंफुआ, फुंफुमा } स्त्री [दे] करीषाग्नि, वनकण्डे की आग (पाअ, दे ६, ८४, तंदु ४१, जीव २, बृह १, कम्म १, २२)।

फुंफुमा स्त्री [दे] १ करीषाग्नि, 'अहवा उज्जलउ निच्चय नियमो फुंफुम व्व विरहेसो' (उप ७२८ टी)। २ [illegible] (सुर १, ८)।

फुंफुल, फुंफुल्ल } सक [दे] १ उत्पाटन करना। २ कहना। फुंफुल्लइ (हे २, १७४)।

फुस सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] पोंछना, साफ करना। फुसदि (प्राकृ ६३)।

फुसण देखो फासण (कप्पू ३८)।

फुम सक [फूत् + कृ] १ फूत्कारना, फूँक मारना। २ मुँह से हवा निकालना, फूँकना। फुमइ (पिंग)। वकृ. फुमंत (गा १७६), फुमिज्जंत (म) (हे ४, ४२२)।

फुका स्त्री [दे] १ मिथ्या (दे ६, ८३)। २ फूँक (कुप्र १५०)।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार, फूँ फूँ की आवाज (कुप्र ५८, मरा)।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुफकारा हुआ (आव ४)।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, धोबिन (दे ६, ८४)।

फुग्ग स्त्रीन [दे स्फिच्] शरीर का अवयव-विशेष, कटि-प्रोथ (सूअनि ७६)।

फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोमवाला, परस्पर असंबद्ध—बिखरे हुए केशवाला, 'तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ' (उवा)।

फुट, फुट्ट } अक [स्फुट्, भ्रंश] १ विकसना, खीलना। २ प्रकट होना। ३ फूटना, फटना, टूटना। ४ नष्ट होना। फुटइ, फुट्टई, फुट्टेइ, फुट्टउ (सक्षि ३६, प्राकृ ६६, हे ४, १७७, २३१, उव, भवि, पिंग, गा २२८)। भवि. 'फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमंत वा'(धर्मवि १३), फुट्टिहिइ (पि ५२६)। वकृ. फुट्टंत, फुट्टमाण (पएह १, ३, गा २०४, सुर ४, १५१, णाया १, १—पत्र ३६)।

फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा हुआ, विदीर्ण (उप ७२८ टी, सम्मत्त १४५, सुर २, ६०, ३, २४३, १३, २१०)। २ भ्रष्ट, पतित (कुमा)। ३ विनष्ट, 'फुट्टहटा-हडसीसं' (णाया १, १६, विपा १, १)।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना (कुप्र ४१७)। २ वि फूटनेवाला, विदीर्ण होनेवाला (हे ४, ४२२)।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित, 'फुट्टिअमोहो' (कुमा ७, ६४)।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटनेवाला (मरा)।

फुट्ठ देखो पुट्ठ = स्पृष्ट (पि ३११)।

फुड देखो फुट्ट = स्फुट्, भ्रंश्। फुडइ (हे ४, १७७, २३१, प्राकृ ६६), 'फुडंति सव्वग-मघीओ' (उप ७२८ टी)। वकृ. फुडमाण (सुर ३, २४३)।

फुड देखो पुट्ठ = स्पृष्ट (पएण ३६, ठा ७—पत्र ३८३, जीवस २००, भग)।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, साफ, विशद (पाअ, हे ४, २५८, उवा)।

फुडग न [स्फुटन] टूटना, खण्डित होना (पएह १, १—पत्र २३)।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष (ठा ४, १, इक)।

फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन, 'उक्कडफु-डकुडिलजडिलकक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं' (उवा)।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला हुआ (पाअ, गा ३६०)। २ फूटा हुआ, विदीर्ण (स ३८१)। ३ विकृत (पएह १, २—पत्र ४०)।

फुडिअ (अप) देखो फुरिअ (भवि)।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा, फुनसी (सुपा १३८)।

फुड्ड देखो फुट्ट। फुड्डइ (षड्)।

फुन्न वि [दे स्पृष्ट] छूआ हुआ (पव १५८ टी, कम्म ५, ८५ टी)।

फुप्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्त्र-विशेष, फेफड़ा (सूअनि ७३, पउम २६, ५४)।

फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुमइ (हे ४, १६१)। प्रयो. फुमावइ (कुमा)।

फुम सक [दे. फूत + कृ] फूँक मारना, मुँह से हवा करना। फुमेज्जा (दस ४, १०)। वकृ. फुमंत (दस ४, १०)। प्रयो. फुमावेज्जा (दस ४, १०)।

फुर अक [स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ तड़फड़ना। ३ विकसना, खीलना। ४ प्रकाशित होना, प्रकट होना, 'फुरइ अ सीताइ तासएण वामच्छं' (से १५, ७६, पिंग)। वकृ. फुरंत, फुरमाण (गा १६३, सुर २, २२१, महा, पिंग, से ६, २५, १२, २६)। संकृ. फुरित्ता (ठा ७)।

फुर सक [अप + हृ] अपहरण करना, छीनना। प्रयो. फुराविंति (पव २)।

फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष, 'फुरफलगावरण-गहिय—' (पएह १, ३—पत्र ४६)।

फुर (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग)।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना, ईषत् कम्पन, 'जं पुण अच्छिप्फुरणं मह होही भारिया तेण' (सुर १३, १२७)। २ स्फूर्ति (सुपा ६, वज्जा ३८, सम्मत्त १६१)।

फुरफुर अक [पोरफुराय्] खूब कांपना, थरथराना, तड़फड़ाना। फुरफुरेज्जा (महानि १)। वकृ. फुरफुरत, फुरफुरेंत (सुर १४, २३३, म ६६६, २५६)।

फुरिअ वि [स्फुरित] १ कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित (दे ६, ८४, सुर ५, २२६, गा १३७)। २ दीप्त (दे ६, ८४)।

फुरिअ वि [दे] निन्दित (दे ६, ८४)।

फुरुफुर देखो फुरफुर। वकृ. फुरुफुरंत, फुरुफुरेंत (पण्ह १, ३, पिंड ५६०, सुर ७, २३१, णाया १, ८—पत्र १३३)।

फुल देखो फुड = स्फुट्। फुलइ (नाट)। फुले (अप) (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुर = स्फुर्। फुला (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुल्ल = फुल्ल (पिंग)।

फुलिअ देखो फुडिअ = स्फुटित (से ५, ३०)।

फुलिअ (अप) देखो फुल्लिअ (पिंग)।

फुलिंग पुं [स्फुलिङ्ग] अग्नि कण (णाया १, १, दे ६, १३५, महा)।

फुल्ल अक [फुल्ल्] फूलना, पुष्प-युक्त होना, विकसना। फुल्लइ फुल्लए, फुल्लेइ (रंभा, सम्मत्त १४०), फुल्लंति (हे २, २६)। भवि. फुल्लिहिमि (गा ८०२)।

फुल्ल देखो कम = क्रम्। फुल्लइ (धात्वा १४६)।

फुल्ल न [फुल्ल] १ फूल, पुष्प (कुमा, धर्मवि २०, सम्मत्त १४३, दसनि १)। २ फूला हुआ, पुष्पित (भग, णाया १, १—पत्र १८, कुमा)। °मालिया स्त्री [°मालिका] फूल बेचनेवाली, मालाकार की स्त्री, मालिन (सुर ३, ७४)। °वल्लि स्त्री [°वल्लि] पुष्प-प्रधान लता (णाया १, १)।

फुल्लंधय पु [फुल्लन्धय, पुष्पन्धय] भ्रमर, भँवरा (उप ६८६ टी)।

फुल्लंधुअ पु [दे] भ्रमर, भौंरा (दे, ६, ८५, पाअ, कुमा)।

फुल्लग न [फुल्लक] पुष्प की आकृतिवाला ललाट का आभूषण (औप)।

फुल्लण न [फुल्लन] विकास (वज्जा १५२)।

फुल्लया स्त्री [फुल्ला, पुष्पा] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्ना, शतपुष्पा, सोया का गाछ, 'दहफुल्लय-कोगलिमा (? मो)गली य तह अक्कबोंदीया' (पण्ह १—पत्र ३३)।

फुल्लवड न [दे] पुष्प-विशेष, मदिरा-वासक फूल (कुप्र ४५३)।

फुल्लविय } वि [फुल्लित] फुलाया हुआ
फुल्लाविय } (सम्मत्त १४०, विक्र २३)।

फुल्लिअ वि [फुल्लित] पुष्पित, विकसित (अत १२, म ३०३ सम्मत्त १४०, २२७)।

फुल्लिम पुस्त्री [फुल्लता] विकास, फूलन,
'अच्छउ ता फलकाले फुल्लिमसमए
वि कालिमा वयणे।
इय कलिउ व पलासो चत्तो
पत्तेहिं किविणो व्व'
(सुर ३, ४४)।

फुल्लिर त्रि [फुल्लितृ] फूलनेवाला, प्रफुल्ल, 'हिययए दरणचदरणफुल्लिरफुल्लेहिं' (सम्मत्त २१४)।

फुस सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुसइ (हे ४, १६१)।

फुस सक [मृज्] मार्जन करना, पोछना, साफ करना। फुसइ (हे ४, १०५, भाव)। कर्म फुसिज्जइ, फुसिज्जउ (कुमा, सुपा १२४)। वकृ. फुसत, फुसमाण (भवि, कुप्र २८५)। संकृ. फुसिऊण (महा)।

फुस सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। फुसइ (भग, औप, उत्त २, ६), फुसति (विसे २०२३), फुसतु (भग)। वकृ फुसत, फुसमाण (ओघ ३८६, भग)। संकृ फुसिअ, फुसित्ता, फुसित्ताण (पंच २, ३८, भग, औप, पि ५८३)। कृ. फुस्स (ठा ३, २)।

फुसण न [स्पर्शन] स्पर्श-क्रिया (भग, सुपा ५)।

फुसणा स्त्री [स्पर्शना] ऊपर देखो (विसे ४३२, नव ३२)।

फुसिअ देखो फुस = स्पृश्।

फुसिअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (जीवस १९६)।

फुसिअ वि [मृष्ट] पोछा हुआ (उप पृ ३४५ सुपा २११, कुप्र २३१)।

फुसिअ पुन [पृषत] १ बिन्दु, बुन्द, बूँद (आचा, कप्प)। २ बिन्दु-पात (सम ६०)।

फुसिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (कुमा ७, ४)।

फुंगिआ स्त्री [दे] वल्ली विशेष, 'सेमविदुगोत्तफुसिया' (पण्ण १—पत्र ३३)।

फुरस देखो फुस = स्पृश्।

फूअ पुं [दे] लोहकार, लोहार (दे ६, ८५)।

फूम देखो फुम। वकृ. फूमत (राज)।

फूमिय वि [फूत्कृत] फूँका हुआ (उप पृ १४१)।

फूल देखो फुल्ल = फुल्ल, 'फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणि बीयाणि' (जी १३)।

फेक्कार पु [फेत्कार] १ शृगाल की आवाज (सुर ६, २०४)। २ आवाज, चिल्लाहट (कप्पू)।

फेकारिय न [फेत्कारित] ऊपर देखो (स ३७०)।

फेड सक [स्फेटय्] १ विनाश करना। २ दूर हटाना। ३ परित्याग करना। ४ उद्घाटन करना। फेडइ, फेडेइ, फेडति (उव, हे ४, ३५८, सबोध ५४, स ४१४)। कर्म. फेडिज्जइ (भवि)।

फेडण न [स्फेटन] १ विनाश। २ अपनयन (पव १३५)।

फेडणया स्त्री [स्फेटना] ऊपर देखो (पिंड ३८७)।

फेडावणिय न [दे] विवाह समय की एक रीति, वधू को प्रथम बार लज्जा-परिहार के वक्त दिया जाता उपहार (स ७८)।

फेडिअ वि [स्फेटित] १ नष्ट किया हुआ, विनाशित (पउम ३६, २२)। २ त्याजित (सिरि ६५५)। ३ अपनीत (आवभा ४२)। ४ उद्घाटित (स ७८)।

फेण पुं [फेण, फेन] फेण, झाग, जल-मल, पानी आदि के ऊपर का बुद्बुदाकार पदार्थ (पाअ, णाया १, १—पत्र ६२, कप्प)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष (ठा २, ३, इक)।

फेगवध } पु [दे] वरुण (दे ६, ८५)।
फेगवड }

फेणाय अक [फेणाय्, फेनाय्] फेण—फेन का वमन करना, झाग निकालना। वकृ फेणायमाण (प्रयौ ७४)।

फेप्फस) न [दे] देखो फिप्फिस, फेफस । फुप्फुस (राज; तंदु ३६)।

फेरण न [दे] फेरना, घुमाना 'तुरगफेरण-गुराणाणि' (सुर २, ८)।

फेल सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ दूर करना। फेलदि (शौ) (नाट)। संकृ. फेलिअ (नाट)।

फेल्ला स्त्री [दे] जूठन-जूठन, जूठन, भोजन से बचा-हुआ, उच्छिष्ट;

'तम्मि य अणु पाए देवी
दासी य तम्मि रूवम्मि ।
निच्चं सियंति फेल्लं तीए
सो जियइ सुगुत्तन्न ।'

'दुग्गयदूरयाणो गमो,
जणणीइ चाचियरेहिं ।
तं फेल्लोगमणं पुण तं फेल्लाहारनदास ।'
(धर्मवि १४६)।

फेलाया स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ८४)।

फेस पु [दे] दरिद्र, निर्धन (दे ६, ८४)।

फेल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, खिसककर गिरना। फेल्लुसइ (दे ६, ८६)। संकृ. फेल्लुसिऊण (दे ६, ८६; स ३७५)।

फेल्लुसण न [दे] १ फिसलन, पतन। २ पिच्छिल जमीन, वह जगह जहाँ पाँव फिसल पड़े (दे ६, ८६)।

फेल्लुसग देखो फेल्लुसण (वव ४ टी)।

फेस पुं [दे] १ त्रास, डर। २ सद्भाव (दे ६, ८७)।

फोअ पु [दे] उद्गम (दे ६, ८६)।

फोक्कारिअ वि [दे] १ मुक्त। २ विस्तारित (दे ६, ८७)।

फोफा स्त्री [दे] डराने की आवाज, भयोत्पादक शब्द (दे ६, ८६)।

फोड सक [स्फोटय्] १ फोडना, विदारण करना। २ राई आदि से शाक आदि को बघारना। फोडेइ (कुप्र ६७)। वकृ. फोडंत, फोडेमाण (सुपा २०१, ५६३ ओप)।

फोड पु [स्फोट] १ फोडा, व्रण-विशेष (ठा १०—पत्र ५२०)। २ वर्ण-विशेष, शब्द-भेद (राज)। ३ वि. भक्षक, 'बहुफोडो' (ओघभा १६१)।

फोडअ (शो) पु [स्फोटक] ऊपर देखो (प्राकृ ८६)।

फोडण न [स्फोटन] १ विदारण (पव ६ टी, गउड)। २ राई आदि से शाक आदि को बघारना (पिंड २५०)। ३ राई आदि संस्कारक पदार्थ (पिंड २५५)। ४ वि. फोडनेवाला, विदारण करनेवाला, 'कायर-जणहिययफोडण' (णाया १, ८), 'अम्हे मगहाणराहत्थिघडवच्छफोडणा गीअ' (गा ३८१)।

फोडय देखो फोडअ (पउम ६३, २६)।

फोडाव सक [स्फोटय्] १ फोडवाना। तोडवाना। २ घुलवाना। संकृ. फोडाविऊण (स ४६०)।

फोडाविय वि [स्फोटित] १ तोडवाया हुआ। २ घुलवाया हुआ, 'फोडाविया सपुडा' (स ४६०)।

फोडि स्त्री [स्फोटि] विदारण, भेदन, 'भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं' (पडि)। °कम्म न [°कर्मन्] १ जमीन आदि का विदारण करने का काम, हल आदि से भूमि-दारण, कूप, तडाग आदि खोदने का काम। २ उक्त काम पर आजीविका चलाना (पडि)।

फोडिअ वि [स्फोटित] १ फोडा हुआ, विदारित (णाया १, ७; स ४७२)। २ राई आदि से बघारा हुआ (वव १)।

फोडिअय वि [दे स्फोटित, °क] राई से बघारा हुआ शाकादि (दे ६, ८८)।

फोडिज्जय न [दे] रात के समय जंगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार (दे ६, ८८)।

फोडिया स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोडा (उप ७६८ टी)।

फोडी स्त्री [स्फोटी, स्फौटी] देखो फोडि (उवा, पव ६, पडि)।

फोप्फस न [दे] शरीर का अवयव विशेष, 'कालिज्जयअंतपित्तजरहिययफोप्फसफेफसपि-लिहोदर—' (तंदु ३६)।

फोफल न [दे] गन्ध द्रव्य विशेष, एक प्रकार की ओषधि, 'महुरविरेयणमेसो कायव्वो फोफलाइदव्वेहिं' (भत्त ४२)।

फोफस देखो फोप्फस (पण्ह १, १—पत्र ८)।

फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्तन, 'विणयम्मि अपत्तेवि हु णियसत्तिप्फोरणेण फलसिद्धी' (उवर ७८)।

फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त किया हुआ, 'तेहिंवि नियनियसत्ती फोरवीया' (सम्मत्त २२७, हम्मीर १४)।

फोस देखो फुस = मृश्, 'सव्व पाणी जगं' (जीवस १६६)।

फोस पु [दे] उद्गम (दे ६, ८६)।

फोस पु [दे पोस] अपान-देश, गुदा (तंदु २०)।

फोसणा स्त्री [स्पर्शना] स्पर्श क्रिया (जीवस १६६)।

॥ इस सिरिपाइअसद्दमहण्णवे फआराइसद्दसंकलणो
अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो ॥

व

व पुं [व] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)।
वअर (शौ) न [बदर] १ फल-विशेष, वेर। २ कपास का वीज (प्राकृ ८३)।
वइट्ठ (अप) वि [उपविष्ट] बैठा हुआ (हे ४, ४४४, भवि)।
वइल्ल पुं [दे] बैल, बरध, वृषभ (दे ६, ९१, गा २३८, प्राकृ ३८, हे २, १७४, धर्मवि ३, श्रावक २५८ टी, श्रु १५३, प्रासू ५५, कुप्र २७९, ती १५, वे ६, कप्पू)।
वइस (अप) अक [उप + विश्] बैठना, गुजराती में 'वेसवु'। वइसइ (भवि)।
वइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन (ती ७)।
वइसार (अप) सक [उप + वेशय्] बैठाना। वइसारइ (भवि)।
वइस्स देखो वइस्स (पि ३००)।
वईस (अप) देखो वइस। वईसइ (भवि)।
वईस (अप) न [उपवेश] बैठ, बैठन, बैठना, 'तोवि गोट्ठडा कराविआ मुद्धए उट्ठ-वईस' (हे ४, ४२३)।
वउणी स्त्री [दे] कार्पासी, कर्पास-वल्ली (दे ३, ५७)।
वउल पुं [वकुल] १ वृक्ष-विशेष, मौलसरी का पेड़ (सम १५२, पाअ, णाया १, ९)। २ वकुल का पुष्प (से १, ५६)। °सिरी स्त्री [°श्री] १ वकुल का पेड़। २ वकुल का पुष्प (श्रा १२)।
वउस पु [वकुश] १ अनार्य देश विशेष। २ पुंस्त्री उस देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री °सी (णाया १, १—पत्र ३७)। ३ वि. शवल, चितकवरा। ४ मलिन चरित्रवाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से सयम को मलिन करनेवाला (ठा ३, २, ५, ३, सुख ६, १), स्त्री. 'तए ण सा सूमालिया अज्जा सरीरवउसा जाया यावि होत्था' (णाया १, १६)। ४ पुन मलिन सयम, शिथिल चारित्र-विशेष (सुख ६, १)।

वउहारी स्त्री [दे] बुहारी, समार्जनी, झाडू (दे ६, ९७)।
वंग पु [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४)। २ देश-विशेष, बगाल देश (उप ७९५, ती १४)। ३ वग देश का राजा (पिग)।
वगल (अप) पु [वङ्ग] वग देश का राजा (पिग)।
वगाल पु [वङ्गाल] वंगाल देश 'वगालदेस-वइणो तेण तुह ससुरयस्स दिन्ना ह' (सुपा ३७७)।
वझ देखो वझ (पि २६९)।
वडि पु [दे] देखो वदि = वन्दिन् (षड्)।
वद न [दे] कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य, 'बदपि किपि' (स ४२१), 'बदाइ गिन्हइ कयावि', छलेण गिन्हति वदाइ', 'वदाण मोयावणकए' (धर्मवि ३२), 'एगत्यबदपग्गहियपहियकीरत-करुणरुन्नसरा' (धर्मवि ५२)। °ग्गह पु [°ग्रह] केदी रूप से पकडना, 'परदोहवट्ट-वाडणवदग्गहखत्तखणणपमुहाइ' (कुप्र ११३)।
वदण न [दे] कैदी (नदीटिप्प० वेनयि की बुद्धि मे १३ वा कथानक)।
वदि स्त्री [वन्दि] देखो वदी (हे १, १४२, २, १७६)।
वदि } पु [वन्दिन्] स्तुति-पाठक, मगल-वदिण } पाठक, मागध, 'मगलपाढयमागह-चारणवेआलिआ वदी' (पाअ, उप ७२८ टी, धर्मवि ३०), 'उद्दामसद्दवदिणवद्रसमुग्घुट्ठ-नामाइ' (स ५७६)।
वदिर न [दे] समुद्र-वाणिज्य प्रधान नगर, वदर (सिरि ४३३)।
वदी स्त्री [वन्दी] १ हठ-हृत स्त्री, वाँदी (दे २, ८४, गउड १०५, ८४३)। २ कैद किया हुआ मनुष्य (गउड ४२९, गा ११८)।
वदीकय वि [वन्दीकृत] कैद किया हुआ, वाध कर आनीत (गउड)।
वदुरा स्त्री [वन्दुरा] अश्व-शाला, 'गच्छ निरुवेहि वदुराओ, भूसेहि तुरए' (स ७२५)।

वध सक [बन्ध्] १ वाधना, नियन्त्रण करना। २ कर्मो का जीव-प्रदेशो के साथ संयोग करना। बंधइ (भग, महा, उव, हे १, १८७)। भूका. वधिसु (पि ५१६)। कर्म वधिज्जइ, वज्झइ (हे ४, २४७), भवि. वधिहिइ, वज्झिहिइ (हे ४, २४७)। वकृ वंधंत वधमाण (कम्म २, ८, पण्ण २२)। सकृ. वधइत्ता, वाधउ, बांधिऊण, वधिऊण, वधित्ता वधित्तु (भग, पि ५१३, ५८५, ५८२)। हेकृ वधेउ (हे १, १८१)। कृ वंधियव्व (पच १, ३)। कवकृ वज्झत, वज्झमाण (सुपा १९८, कम्म १, ३५, औप)।
वध पु [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, ८८)।
वध पु [बन्ध] १ कर्म-पुद्गलो का जीव-प्रदेशो के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-सयोग (आचा, कम्म १, १५, ३२)। २ बन्धन, नियन्त्रण, सयमन (श्रा १०, प्रासू १५३)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °सामि वि [°स्वामिन्] कर्म बन्ध करने-वाला (कम्म ३, १, २४)।
वधई स्त्री [बन्धकी] पुंश्चली, असती स्त्री (नाट—मालती १०६)।
वधग वि [बन्धक] १ बाँधनेवाला। २ कर्म-बन्ध करनेवाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलो का सयोग करनेवाला (पच ५, ८४, श्रावक ३०६, ३०७, पचा १६, ४०, कम्म ६, ९)।
वधण न [बन्धन] १ बाँधने का—सश्लेष का साधन, जिसने बाँधा जाय वह स्निग्ध-तादि गुण (भग ८, ९—पत्र ३९४)। २ जो बाँधा जाय वह। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल। ४ कर्म-बन्ध का कारण (सूअ १, १, १, १)। ५ सयमन, नियन्त्रण (प्रासू ३)। ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि (उव)। ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलो के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलो का आपस मे सम्बन्ध हो वह कर्म (कम्म १, २४, ३१, ३५, ३६, ३७)।

बंधण [illegible] [बन्धन] बन्धन (भग)।

बंधणी स्त्री [बन्धनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)।

बंधव देखो बंधण (राष्ट्र ४२)।

बंधव पुं [बान्धव] १ भाई, भ्राता। २ मित्र, दोस्त। ३ नातेदार संबन्धी स्वजन। ४ माता। ५ पिता। ६ माता पिता का सम्बन्धी मामा, चाचा आदि (हे १, ३०, प्रासू ७६, वज्जा १८, १४)।

बंधाव (अप) सक [बन्धय्] बँधाना, बँधवाना। बंधावयति (पि ८)।

बंधाविअ वि [बन्धित] बँधाया हुआ (सुपा ३२४)।

बंधिअ देखो बद्ध (सूअ १, २, १, १८, धर्मवि २३)।

बंधु पुं [बन्धु] १ भाई भ्राता। २ माता। ३ पिता। ४ मित्र, दोस्त। ५ स्वजन, नातेदार (कुमा, महा प्रासू १०८, सुपा १८८ २४१)। ६ छन्द विशेष (पिंग)। °जीव पुं [°जीव] वृक्ष विशेष, दुपहरिया का पेड़ (स्वप्न ६६, कुमा)। °जीवग पुं [°जीवक] वही अर्थ (णाया १, १, कप्प, भग)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक श्रेष्ठी का नाम (महा)। २ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। °मई, °वई स्त्री [°मती] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम (णाया १, ८, पव ९, सम १५२)। २ [illegible] स्त्री-विशेष (महा, राज)। °[illegible] [illegible] श्रीदाम राजा की पत्नी (विपा १, ६)।

बंधुर [illegible] [बन्धुर] १ सुन्दर रम्य (पाअ)। २ नम्र, नमा (गउड २०५)।

बंधुरिअ वि [बन्धुरित] १ विनीत (गउड ३८[illegible])। २ नमित, नमा हुआ (गउड ४४[illegible])। ३ मुकुटित, मुकुटयुक्त। ४ [illegible] (गउड [illegible])।

बंधू[illegible] [बन्धू[illegible]] पेड़-[illegible], [illegible] (कुमा २००)।

बंध[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पउम [illegible])।

बंधोल्ल पु [दे] मेलक, मेल, संगति (दे ६, ८६, पड्)।

बंभ पु [ब्रह्मन्] १ ब्रह्मा विधाता (उप १०३१ टी, दे ६, २२ कुप्र २०३)। २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ८)। ३ अप्काय का अधिष्ठायक देव (ठा ५ १—पत्र२६२)। ४ पाचवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ५ बारहवें चक्रवर्त्ती का पिता (सम १५२)। ६ द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता (सम १५२, ठा ९—पत्र ४४७)। ७ ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध एक योग (पउम १७, १०)। ८ ब्राह्मण, विप्र (कुलक ३१)। ९ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)। १० दिन का नवम मुहूर्त (सम ५१)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२)। १३ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। १४ पुन एक विमानावास, देव-विमान विशेष (देवेन्द्र १३१, १३४, सम १९)। १५ मोक्ष, अपवर्ग (सूअ २, ६, २०)। १६ ब्रह्मचर्य (सम १८, श्रोघभा २)। १७ सत्य अनुष्ठान (सूअ २, ५, १)। १८ निर्विकल्प सुख (आचा १, ३, १, २)। १९ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार (कुमा)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १९)। °कूड पु [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत (ज ४)। २ न एक देव-विमान (सम १९)। °चरण न [°चरण] ब्रह्मचर्य (सुपा १९१)। °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करनेवाला (णाया १, १ उवा। २ पु भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर प्रमुख मुनि (ठा ८—पत्र ४२९)। °चेर, °चर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति (आचा, पण्ह २, ४, हे २, ७४, कुमा, भग, स ११, उप पृ ३४३)। २ जिनेन्द्र-शासन, जिनप्रवचन (सूअ २, ५, १)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १९)। °दत्त पु [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवाँ चक्रवर्ती राजा (ठा २, ४, सम १५२, उव)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप विशेष (राज)। °दीविया स्त्री [°द्वीपिका] [illegible] एक शाखा (कप्प)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १९)। °भूइ पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वासुदेव का पिता (पउम २०, १८२)। °यारि देखो °चारि (णाया १, १, सम १३, कप्प, सुपा २७१, महा, राज)। स्त्री. °णी (णाया १, १४)। °रुइ पु [°रुचि] स्वनाम प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता (पउम ११ ५२)। °लेस न [°लेश्य] एक देव विमान (सम १९)। °लोअ, लोग पु [°लोक] एक स्वर्ग पाँचवाँ देवलोक (भग, अनु सम १३)। °लोगवडिंसय न [°लोकावतंसक] एक देव-विमान (सम १७)। °व °वत वि [°वत्] ब्रह्मचर्यवाला (आचा)। °वडिंसय पु [°वतंसक] सिद्ध-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १९)। °वय न [°व्रत] ब्रह्मचर्य (णाया १, १)। °वि वि [°विद्] ब्रह्म का जानकार (आचा)। °व्वय देखो °वय (स ५६, प्रासू १५६)। °संति पु [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष (गण ११, ती १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १९)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव विमान (सम १९)। °सुत्त न [°सूत्र] जनोई, यज्ञोपवीत (मोह ३०, सुपा २, १३)। °हिअ पु [°हित] एक विमानावास, देव विमान विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वत्त न [°वर्त] एक देव-विमान (सम १९)। देखो बंभाण, बम्ह।

बंभंड न [ब्रह्माण्ड] जगत, संसार (गउड, कुप्र ४, सुपा ३६८, ५९३)।

बंभण पु [ब्राह्मण] ब्राह्मण, विप्र (स २६०, कुप्र २, १३०, सुपा १६८, हे ४, २८, महा)।

बंभणिआ स्त्री [ब्राह्मणिका] [illegible] जन्तु विशेष (पुष्फ २६७)।

बंभणिआ } स्त्री [दे. ब्राह्मणिका] [illegible]
बंभणी } विशेष (दे ६ ९०, पाअ, [illegible], ६३, ७५)।

बंभण्ण } [illegible] [ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य] [illegible]
बंभण्णय } ब्राह्मण का हित। २ ब्राह्मण सम्बन्धी। ३ न ब्राह्मण-समूह। ४ ब्राह्मण

धर्म, 'वभएणकज्जेसु सज्जो' (सम्मत्त १४०, कप्प, ग्रौप, पि २५०)।
वंभद्दीविग वि [ब्रह्मद्वीपिक] ब्रह्मदीपिका-शाखा मे उत्पन्न (णदि ५१)।
वभद्दीविगा स्त्री [ब्रह्मद्वीपिका] एक जैन-मुनि-शाखा (णदि ५१)।
वभलिज्ज न [ब्रह्मलीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।
वभहर न [दे] कमल, पद्म (दे ६, ९१)।
वंभाण देखो वभ (पउम ५, १२२)। °गच्छ पुं [°गच्छ] एक जैन-मुनि गच्छ (ती २८)।
वभि° } स्त्री [ब्राह्मी] १ भगवान् ऋषभदेव वंभी } की एक पुत्री (कप्प, पउम ५, १२०, ठा ५, २, सम ६०)। २ लिपि-विशेष (सम ३५, भग)। ३ कल्प-विशेष (सुपा ३२४)। ४ सरस्वती देवी (सिरि ७६४)।
वभुत्तर पु [ब्रह्मोत्तर] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वडिसक न [°ावतसक] एक देव-विमान (सम १६)।
वहि पुं [वर्हिन्] मयूर, मोर (उत्तर २६)।
वंहिण (ग्रप) ऊपर देखो (पि ४०६)।
वक देखो वय (पगह १, १—पत्र ८)।
वक्कर न [दे. वर्कर] परिहास (दे ६, ८६, कुप्र १६७, कप्पू)।
वक्कस न [दे] ग्रन्न-विशेष, 'वक्कस' मुद्गमापादिनपिकानिष्पन्नमन्न' (सुख ८, १२, उत्त ८, १२)।
वग देखो वय (दे २, ६, कुप्र ६६)।
वगदादि पु [वगदादि] देश-विशेष, वगदाद देश, 'वगदादिविसयवसुहाहिवस्स खलीपनामवेयस्स' (हम्मीर ३४)।
वगी स्त्री [वकी] वगुली, वगुले की मादा (विपा १, ३, मोह ३७)।
वग्गड पु [दे] देश-विशेष (ती १५)।
वज्झ वि [वाह्य] वाहर का, वहिरङ्ग (पगह १, ३, प्रासू १७२)। °ओ ग्र [°तस्] वाह्य से, वहिरग से, 'किं ते जुज्झेण वज्झग्रो' (ग्राचा)।
वज्झ न [वन्ध] वन्धन, वाधने का वागुरा ग्रादि साधन, 'ग्रह तं पवेज वज्झ, ग्रहे वज्झस्स वा वए' (सूग्र १, १, २, ८)।
वज्झ वि [वद्ध] १ वन्धनाकार व्यवस्थित, 'ग्रह त पवेज्ज वज्झं' (सूग्र १, १, २, ८)। २ वँधा हुग्रा (प्रात १५)।
वज्झंत } देखो वन्ध = वन्ध्।
वज्झमाण }
वठर पु [वठर] मूर्ख छात्र (धुप्र १६)।
वड (ग्रप) वि [दे] वडा, महान् (पिंग)। देखो वड्डु।
वडवड ग्रक [वि + लप्] विलाप करना, वडवडाना। वडवडइ (षड्)।
वडहिला स्त्री [दे] धुरा के मूल मे दी जाती कील, कीलक-विशेष (सट्टि ११६)।
वडिस देखो वलिस (हे १, २०२)।
वडु } पु [वटु, °क] लडका, छोकडा (उप वडुअ } ७१३, सुपा २००)।
वडुवास [दे] देखो वडुग्रास (दे ७, ४७)।
वतीस } (ग्रप) देखो वत्तीस (पिंग)।
वत्तिस }
वत्तीस स्त्रीन [द्वात्रिंशत्] १ सख्या-विशेष, वत्तीस, ३२। २ जिनकी सख्या वत्तीस हो वे, 'वत्तीस जोगसंगहा पन्नत्ता' (सम ५७, ग्रौप, उव, पिंग)। स्त्री °सा (सम ५७)।
वत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो (सम ५७)। वद्धय न [°वद्धक] १ वत्तीस प्रकार रचनाग्रो से युक्त। २ वत्तीस पात्रो से निवद्ध (नाटक), 'वत्तीसइवद्धएहिं नाडएहिं' (णाया १, १—पत्र ३६, विपा २, १ टी—पत्र १०४)। °विह वि [°विध] वत्तीस प्रकार का (सम ५७)।
वत्तीसइम वि [द्वात्रिंशत्तम] १ वत्तीसवा, ३२ वॉ (पउम ३२, ६७, पगण ३२)। २ न पनरह दिनो का लगातार उपवास (णाया १, १)।
वत्तीसा देखो वत्तीस।
वत्तीसिया स्त्री [द्वात्रिंशिका] १ वत्तीस पद्यो का निवन्ध—ग्रन्थ (सम्मत्त १४४)। २ एक प्रकार का नाप (ग्रणु)।
वद्ध वि [वद्ध] १ वँधा हुग्रा, नियन्त्रित, 'वद्धं सदाणिग्र निग्रलिग्र च' (पाग्र)। २ सश्लिष्ट, सयुक्त (भग, पाग्र)। ३ निवद्ध, रचित (ग्रावम)। °प्फल, °फल पु [°फल] १ करञ्ज का पेड (हे २, ९७)। २ वि. फल-युक्त फल-सपन्न (णाया १, ७—पत्र ११६)।
वद्धग पु [वद्धक] तूण-वाद्य विशेष (राय ४६)।
वद्धय पु [दे] कान का एक ग्राभूषण (दे ६, ८६)।
वद्धेल्लग } देखो वद्ध (ग्रणु, महा)।
वद्धेल्लय }
वप्प पुं [दे] १ सुभट, योद्धा (दे ६, ८८)। २ वाप, पिता (दे ६, ८८ दस ७, १८, स ५८१, उप ३२० टी, सुर १, २२१, कुप्र ४३, जय, भवि, पिंग)।
वप्पहट्टि पु [वप्पभट्टि] एक सुविख्यात जैन ग्राचार्य (विचार ५३३, ती ७)।
वप्पीह पुं [दे] पपीहा, चातक पक्षी (दे ६, ९०, स ६८६, पाग्र, हे ४, ३८३)।
वप्पुड वि [दे] वेचारा, दीन, ग्रनुकम्पनीय गुजराती मे 'वापडु' (हे ४, ३८७, पिंग)।
वप्फ पुन [वाष्प] १ भाफ, ऊष्मा, 'वप्फो' (हे २, ७०, षड्), 'वप्फ' (प्राकृ २३, विसे १५३५)। २ नेत्र जल, ग्रश्रु, 'वप्फ वाहो य नयणजल' (पाग्र), 'वप्फपज्जाउलिलोग्रणाहिं' (स ५६१, स्वप्न ८५)।
वाप्फाउल वि [दे वाष्पाकुल] ग्रतिशय उष्ण (दे ६, ९२)।
वव्वर पुं [वर्वर] १ ग्रनार्य देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। २ वि. वर्वर देश का निवासी (पगह १, १, पउम, ९९, ५५)। °कूल न [°कूल] वर्वर देश का किनारा (सिरि ४३०)।
वव्वरी स्त्री [दे] केश-रचना (दे ६, ९०)।
वव्वरी स्त्री [ववेंरी] वर्वर देश की स्त्री (णाया १, १, ग्रौप, इक)।
वव्वूल पु [वव्वूल] वृक्ष-विशेष, ववूल का पेड (उप ८३३ टी, महा)।
वव्भ पुं [दे] वध्र, चर्म, चमडे की रज्जु, 'वब्भो वद्धे' (दे ६, ८८), 'वज्झो वद्धो = (? वब्भो वद्धो)' (पाग्र)।
वव्भागम वि [वह्वागम] वहु-श्रुत, शास्त्रो का ग्रच्छा जानकार (कस)।

बब्भासा स्त्री [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से सिंचित पानी से धान्य आदि बोया जाता हो (गा)।

बब्भिआयण न [बाभ्रव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज)।

बमाल पु [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ९०)।

बम्ह पु [ब्रह्मन्] १ ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ देखो बंभ (हे २, ७४; कुमा; गा ८१६; अच्चु १३; वज्जा २६; सम्मत्त ७७; दे १, ५६; २, ६३; ३, ५६)। °चरिअ देखो बंभ-चेर (हे २, ६३; १०७)। °दंड पु [°दण्ड] पलाश का पेड़ (कुमा)। °धमणी स्त्री [°धमनी] ब्रह्मनाडी (अच्चु ८८)।

बम्हण्ण (शौ) देखो बंभण्ण (प्राकृ ८७)।

बम्हण देखो बंभण (अच्चु ७०; प्रयौ ३७)।

बम्हणगाम देखो बंभणगाम (राज)।

बम्हहर [दे] देखो बंभहर (षड्)।

बम्हाउ पु [दे] अपस्मार, वायु रोग विशेष, मृगी रोग (षड्)।

बय पु [बक] १ पक्षि विशेष, बगुला। २ कुबेर। ३ महादेव। ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, अगस्तिया का गाछ (स २३)। ५ नक्षत्र-विशेष (श्रा २३)। ६ असुर-विशेष, बकासुर (वेणी १७७)।

बयाला देखो बा-याला (पव १६)।

बरड पु [दे] धान्य विशेष (पव १५४ टी)।

बरह न [बर्ह] १ मयूर-पिच्छ (स ५००)। २ पत्र। ३ परिवार (प्राकृ २८)। देखो बरिह।

बरहि } पु [बर्हिन्] मयूर, मोर (पाअ; प्राकृ २८; पउम २८, १२०;
बरहिण } णाया १, १; कप्प १, १; औप)।

बरिह देखो बरह (हे २, १०४)। °हर पु [°धर] मयूर (षड्; प्राकृ २८)।

बरिहि } देखो बरहि (कप्पू; हे ४, ४२२)।
बरिहिण }

बरुअ न [दे] तृण विशेष, इक्षु-सदृश तृण (दे ६, ९६; ६, ९१; पाअ)।

बरुड पु [दे] शिल्पी विशेष, चटाई बनाने वाला शिल्पी (अणु १४६)।

बल अक [ज्वल्] जलना, गुजराती में 'बळवु'। बलदि (हे ४, ४१६)।

बल अक [बल्] १ जीना। २ सक. खाना। बलइ (हे ४, २५९)।

बल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। बलइ (षड्)। देखो बल = ग्रह्।

बल पु [बल] १ बलदेव, हलधर, वासुदेव का बड़ा भाई (पउम २०, ८४; पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक (औप)। ४ न सामर्थ्य, पराक्रम (जी ४२; स्वप्न ८२; प्रासू ६२)। ५ शारीरिक पराक्रम, 'बलवीरियाए जओ भेओ' (अज्झ ६५)। ६ सैन्य, सेना (उत्त ६, ८; कुमा)। ७ खाद्य-विशेष, 'आसाढाहिं बलेहिं भोच्चा कज्जं साधेति' (सुज्ज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगातार तीन दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ९ पर्वत विशेष का एक कूट—शिखर (ठा ९)। °च्छि वि [°च्छिद्] १ बल का नाशक। २ न जहर, विष (से २, ११)। °ण्णु देखो °न्न (राज)। °देव पु [°देव] हली, वासुदेव का बड़ा भाई, राम (सम ७१; औप)। °न्न वि [°ज्ञ] बल को जाननेवाला (आचा)। °भद्द पु [°भद्र] १ भरतक्षेत्र का भावी नावाँ वासुदेव (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३३)। देखो °हद्द। °भाणु पुं [°भानु] राजा बलमित्र का भागिनेय (विचार)। °महणा स्त्री [°मथनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)। °मित्त पु [°मित्र] इस नाम का एक राजा (विचार ४९४; काल)। °व वि [°वत्] १ बलवान्, बलिष्ठ (विसे ७६८)। २ प्रभूत सैन्यवाला (औप)। ३ पु अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °वइ पु [°पति] सेनापति, सेनाध्यक्ष (महा)। °वन, °वग देखो °व (णाया १, १; औप; णाया १, ५)। °वत्त न [°वत्त्व] बलिष्ठता (ओघभा ६)। °वाउय वि [°व्यापृत] सैन्य में लगा हुआ (औप)। °हद्द पु [°भद्र] १ बलदेव। २ छन्द विशेष (पिंग)। देखो °भद्द।

बलक्कार } पु [बलात्कार] जबरदस्ती (पउम
बलकार } ४६, २९; दे ६, ४९; अभि २१७; स्वप्न ७९)।

बलक्कारिद (शौ) वि [बलात्कारित] जिस पर बलात्कार किया गया हो वह (नाट—मालती १२३)।

बलद्द पु [दे] बलध, बैल (सुपा ५४५; नाट—मृच्छ ९०)।

बलमड्डा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ६, ९२)।

बलमोडि देखो बलामोडि, 'मग्गिअलद्धे बल मोडिचुंबिए अप्पणेण उवणीदे' (गा ८२७)।

बलमोडिअ देखो बलामोडिअ, 'केसेसु बल-मोडिअ तेण समरम्मि जअस्सिरी गहिआ' (गा ९७७)।

बलय पु [दे] बलद, बैल (पउम ८०, १३)।

बलया देखो बलाया (हे १, ६७)।

बलवट्टि स्त्री [दे] १ सखी। २ व्यायाम को सहन करनेवाली स्त्री (दे ६, ९१)।

बलहट्टटुया स्त्री [दे] चने की रोटी (पव्वा ११४)।

बला अ स्त्री [बलात्] जबरदस्ती, बलात्कार (से १०, ७८; ओघभा २०), 'बलाए' (उव १०३१ टी)।

बला स्त्री [बला] १ मनुष्य की दश दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था (तंदु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि। ३ भगवान् कुंथुनाथ की शासन-देवी, अच्युता (राज)।

बलाका देखो बलाया (पण्ह १, १—पत्र ८)।

बलाणय न [दे] १ उद्यान आदि में मनुष्य को बैठने के लिए बनाया जाता स्थान—चौंतरा आदि (धर्मवि ३३; सिरि ५८९)। २ द्वार, दरवाजा, 'परिहरिय मेव सम्मणयम्मि फुल्लिहा निसीहिया तिन्नि' (चेइय १८८)।

बलामोडि स्त्री [दे. बलामोटि] बलात्कार (दे ६, ९२)।

बलामोडिअ अ [दे बलामोटित] बलात्कार से, जबरदस्ती से, 'केसेसु बलामोडिअ तेण अ समरम्मि जअसिरी गहिआ' (हे ४, १६७; कुमार १०३; हि २३८)।

वलामोलि देखो वलामोडि (से १०, ६४)।

वलाया स्त्री [वलाका] वक-विशेष, विस-कण्ठिका, वगुले की एक जाति (हे १, ६७, उप १०३१ टी)।

वलाहग पु [वलाहक] मेघ, जीमूत, 'गलिय-जलवलाहगपडुर' (वसु)।

वलाहगा देखो वलाहया (ठा ८)।

वलाहय देखो वलाहग (णाया १, ५, कप्प, पाअ)।

वलाहया स्त्री [वलाहका] १ वक-विशेष, वलाका (उप २६४)। २ देवी-विशेष, अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम (इक—पत्र २३१, २३४)।

वलि पु [वलि] १ असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, १०, इक)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (गा ४०६)। ३ सातवाँ प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। ४ एक दानव, दैत्य-विशेष (कुमा)। ५ पुंस्त्री उपहार, भेंट (पिंड १६५, दे १, ६६)। ६ पूजोपहार, देवता को धरा जाता नैवेद्य, 'सुरहिविलेवणवरकुसुमदामवलिदीवएहिं च' (पव १ टी), 'वदणपूयणवलिढोयणेसु' (चेइय ५२, पव १३३, सुर ३, ७८, कुप्र १७४)। ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, वलिदान, 'भूअवलिव्व' (वे ४६)। ८ पूजा, अर्चा, सपर्या। ९ राज-ग्राह्य भाग। १० चामर का दण्ड। ११ उपप्लव (हे १, ३५)। १२ छन्द-विशेष (पिंग)। °उट्ठ पु [°पुष्ट] काक, कौआ (पाअ)। °कम्म न [°कर्मन्] १ पूजन, पूजा की क्रिया। २ देवता को उप-हार—नैवेद्य धरने की क्रिया (भग, सूअ २, २, ५५, णाया १, १, ८, कप्प, ओप)। °चंचा स्त्री [°चञ्चा] वलीन्द्र की राजधानी (णाया २, इक)। °मुह पु [°मुख] वन्दर, कपि (पाअ)। °यम्म देखो °कम्म (पउम ३७, ४६)।

वलि वि [वलिन्] १ वलवान्, वलिष्ठ (सुपा ४५१, कुप्र २७७)। २ पु रामचन्द्र का एक सुभट (पउम ५६, ३८)।

वलिअ वि [दे] १ पीन, मासल, स्थूल, मोटा (दे ६, ८८, उप १४२ टी, बृह ३)। २ क्रिवि. गाढ, वाढ, अतिशय, अत्यर्थं, 'गाढ वाट वलिअ धणिअं दढमच्चत्थं अचत्थं' (पाअ, णाया १, १—पत्र ६४, भग ६, ३३)।

वलिअ वि [वलिन, वलिक] १ वलवान्, सवल, पराक्रमी 'कत्थवि जीवो वलिओ कत्थवि कम्माइ हुति वलियाइ' (प्रासू १२३), 'एम अम्ह ताओ वलियदाइयपेल्लिओ इम विसम पल्लि समस्सिओ' (महा, पउम ४८, ११७, सुपा २७५, ओप)। २ प्राणवाला (ठा ४, ३—पत्र २४६)।

वलिअ वि [वलित] जिसको वल उत्पन्न हुआ हो, सवल (कुप्र २७७)। २ पु छन्द-विशेष (पिंग)।

वलिअंक पु [वलिनाङ्क] छन्द-विशेष (पिंग)।

वलिआ स्त्री [दे वलिका] सूर्प, सूप, अन्न को तुषादि-रहित करने का एक उपकरण (आवम)।

वलिट्ठ वि [वलिष्ठ] वलवान्, सवल (प्रासू १५४)।

वलिद्द पु [दे. वलीवर्द] वलघ, वृषभ, 'दो सारवलिद्दावि हु' (सुपा २३८)।

वलिमड्डा स्त्री [दे] वलात्कार, 'अन्नह वलि-मड्डाए गहिउमणो सोम ! एकलिय' (उप ७२८ टी)।

वलिवद्द देखो वलीवद्द (पउम ३३, ११६)।

वलिस न [वडिश] मछली पकडने का काँटा (हे १, २०२)।

वलिस्सह पु [वलिस्सह] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य (कप्प)।

वलीअ वि [वलीयस्] अधिक वलवाला, वलिष्ठ (अभि १०१)।

वलीवद्द पु [वलीवर्द] वैल, वृषभ (विपा १, २)।

वलुल्लड (अप) देखो वल=वल (हे ४, ४३०)।

वले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय, निर्णय। २ निर्धारण (हे २, १८५ कुमा)।

वल्ल न [वाल्य] वालत्व, वालकपन, शिशुता (कुमा ३, ३५)। देखो वाल=वाल्य।

वव सक [ब्रू] वोलना, कहना। ववइ, ववए (षड्)। देखो वुव, वू।

वव न [वव] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८, सुअनि ११, सुपा १०८)।

वव्वाड पु [दे] दक्षिण हस्त (दे ६, ८६)।

वहड वि [बृहत्] वडा, महान्। °इच्च न [°आदित्य] नगर-विशेष (ती ३५)।

वहत्तरी देखो वाहत्तरि (पव २०)।

वहप्पइ } देखो वहस्सइ (हे १, १३८, २,
वहप्फइ } ६६, १३७, षड्, कुमा, सम्मत्त १३७)।

वहरिय देखो वहिरिय, 'तालरववहरियदियतर' (महा)।

वहल न [दे] पक, कर्दम कादा (दे ६, ८६)। °सुरा स्त्री [°सुरा] पकवाली मदिरा (दे ५, २)।

वहल वि [वहल] १ निविड, सान्द्र, निरतर, गाढ (गउड हे २, १७७)। २ स्थूल, मोटा (ठा ४, २, गउड)। ३ पुष्कल, अत्यन्त (कप्पू)।

वहलिम पुस्त्री [वहलता] १ स्थूलता, मोटाई। २ सातत्य, निरतरता (वज्जा ५२, गा ७५५)।

वहली स्त्री [वहली] १ देश-विशेष, भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश, 'तक्खसिलाइ पुरीए वहलीविसयावयसभूयाए' (कुप्र २१२)। २ वहली देश की स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७, ओप, इक)।

वहलीय वि [वहलीक] देश-विशेष मे—वहली देश मे रहनेवाला (पण्ह १, १—पत्र १४)।

वहव देखो वहु, 'काले समइक्कते अइवहवे' (पउम ४१, ३६), 'सोहग्गकप्पतरुवरपमुहतवे सा कुणइ वहवे' (सम्मत्त २१७), 'जायेति वहववेरग्गपल्लवुल्लासिणो भत्ति' (हि ५)।

वहस्सइ पु [बृहस्पति] १ ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज २०—पत्र २६४)। २ सुराचार्य, देव-गुरु (कुमा)। ३ पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२)। ४ राजनीति प्रणेता एक ऋषि। ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक विद्वान् (हे २, १३७)। ६ एक ब्राह्मण, पुरोहित-पुत्र। ७ विपाकसूत्र का एक अध्ययन

(विपा १, ७)। °दत्त पुं [°दत्त] देखो अन के दा अर्थ (विपा १, ४)।

बहिं अ [बहिस्] बाहर 'अबहिल्लेसे परिव्वए' (आचा), 'गामबहिम्मि य त ठाविऊण गामतर पविट्ठो सो' (उप ६ टी)। °हुत्त वि [दे] बहिर्मुख (गउड)।

बहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (षड्)।

बहि देखो बहिं (आचा, उव)।

बहिणिआ } स्त्री [भगिनी] बहिन (अभि
बहिणी } १२८; स्वप्न; पाअ; पउम ६, ६; हे २, १२६; कुमा)। २ सखी, वयस्या (गा ४७)। °तणअ पुं [°तनय] भगिनी-पुत्र (दे)। °वइ पुं [°पति] बहनोई (दे)। देखो भइणी।

बहित्ता अ [बहिस्तात्] बाहर (सुज्ज ९)।

बहिद्धा अ [दे] १ बाहर। २ मैथुन, स्त्री-संभोग (हे २, १७४; ठा ४, १—पत्र २०१)।

बहिद्धा अ [बहिर्धा] बाहर की तरफ (सम २, ८)।

बहिया अ [बहिस्, बहिस्तात्] बाहर (विपा १, १; आचा; उवा; औप)।

बहिर वि [बाह्य] बहिर्भूत, बाहर का (प्राह ३८)।

बहिर वि [बधिर] बहरा, जो सुन न सकता हो वह (विपा १, १; हे १, १८७; प्रासू १८३)।

बहिरिय वि [बधिरित] बधिर किया हुआ (गउड २, ७४)।

बहु वि [बहु] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प (ठा ३, १; भग; प्रासू ८१; कुमा; श्रा २७)। स्त्री. °ई (षड्; प्रासू २८)। २ क्रि-वि. बहुत अधिकतर (कुमा ७, ६६; गउड)। °उत्तर पुं [°उत्तर] [illegible] का एक भेद (पंच)। °कूड पुं [°कूट] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °जंपिर वि [°जल्पितृ] वाचाल, बकवादी (पाअ)। °जण पुं [°जन] अनेक मनुष्य (उप)। २ न. [illegible] का एक प्रकार (ठा १०)। °जाण देखो °नाण (राज)। °णाद न [°नाद] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °देसिअ वि [°देश्य] कुछ ज्यादा, थोड़ा बहुत (आचा २, ५, १, २२)। °नड पुं [°नट] नट की तरह अनेक भेष का धारण करनेवाला (आचा)। °पडिपुण्ण, °पडिपुन्न वि [°परिपूर्ण] पूरा पूरा (ठा ६; भग)। °पडिय वि [°पठित] अति शिक्षित, अतिशय शिक्षित (णाया १, १८)। °पलावि वि [°प्रलापिन्] बकवादी (उप पृ ३३६)। °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहुपुत्रिका देवी का सिंहासन (निर १, ३)। °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र नामक यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १; णाया २)। २ सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ३)। °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल वाला (भग)। °फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक (ओघभा १६१)। °भंगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष (सम १२८)। °मय वि [°मत] १ अत्यन्त अभीष्ट (जीव १)। २ अनुमोदित, सम्मत, अनुमत (कप्प १७६; सुर ४, १८८)। °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी (आचा)। °माण पुं [°मान] अतिशय आदर (आचम; पि ६००; नाट—विक्र ५)। °माय वि [°माय] अति कपटी (आचा)। °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्, कीमती (राज; षड्)। °रय वि [°रत] १ अवान्तर आचार (आचा)। २ जमालि का अनुयायी। ३ न. जमालि का चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयों में ही माननेवाला मत (ठा १०; औप)। °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष, चिउड़ा की तरह का एक प्रकार का खाद्य (आचा २, १, १, ३)। °रव वि [°रव] १ प्रचुर शब्दवाला, बकवादी (सम ५१)। २ न. एक विद्याधर-नगर (इक)। °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १; णाया २)। °लेव पुं [°लेप] चावल आदि के चिकने माँड का लेप (पंचा)। °वयण न [°वचन] बहुत्व-बोधक प्रत्यय (आचा २, ४, १, ३)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध (कुमा; उप)। °विहिय वि [°विध, °विधिक] विविध, अनेक तरह का (सुपानि ६८)। °संपत्त वि [°सम्प्राप्त] कुछ कम सम्प्राप्त (भग)। °सच्च पुं [°सत्य] अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °सो अ [°शस्] अनेक बार (उव; श्रा २७; प्रासू ४२, १५६; स्वप्न ५६)। °स्सुअ वि [°श्रुत] शास्त्रज्ञ, शास्त्रों का अच्छा जानकार, पण्डित (भग; सम ५१; ठा ६—पत्र ३५२; सुपा ५६४)। °हा अ [°धा] अनेकधा (उव; भवि)।

बहुअ } वि [बहु, °क] ऊपर देखो (हे
बहुअय } २, १६४; कुमा; श्रा २७)।

बहुआरिआ } स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू (दे
बहुआरी } ८, १७ टी)।

बहुई देखो बहु = ई।

बहुखज्ज वि [बहुखाद्य] १ बहु-भक्ष्य, खूब खाने योग्य। २ पृथुक—चिउड़ा बनाने योग्य (आचा २, ४, २, ३)।

बहुग देखो बहुअ (आचा ७)।

बहुजाण पुं [दे] १ चोर, तस्कर। २ धूर्त, ठग। ३ जार, उपपति (षड्)।

बहुग पुं [दे] १ चोर, तस्कर। २ धूर्त (दे ६, ६७)।

बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का (पउम ५५, ५३)।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (हे १, २३३)।

बहुमुह पुं [दे बहुमुख] दुर्जन, खल (दे ६, ६२)।

बहुराणा स्त्री [दे] खड्ग-धारा, तलवार की धार (दे ६, ६१)।

बहुरावा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, ६१)।

बहुरिया स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू (बृह १)।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक (कुमा; श्रा २८)। २ बहुविध, अनेक प्रकार का (आचम)। ३ व्याप्त (सुपा ६२०)। ४ पुं कृष्ण पक्ष (पाअ)। ५ दासाम्य नगर का ब्राह्मण (भग १५)।

बहुल पुं [बकुल] आचार्य महागिरि के शिष्य एक प्राचीन जैन मुनि (नंदि ४९)।

बहुला स्त्री [बहुला] १ गौ, गैया (पाअ)। २ इस नाम की एक स्त्री (उवा)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी का एक प्राचीन वन (ती ८)।

बहुलि पु [बहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-पुत्र (उप ६३७)।

बहुल्ली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ (सुपा ६३०)।

बहुडिआ स्त्री [दे] बड़े भाई की स्त्री (षड्)।

बहुल्ली स्त्री [दे] कोष्ठोचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली (षड्)।

बहुव्वी देखो बहुटी (हे २ ११०)।

बहुव्वीहि पु [बहुव्रीहि] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु १४७)।

बहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (गउड)।

बहेडग पुं [बिभीतक] १ बहेड़ा का पेड़ (हे १, ८८, १०५, २०६)। २ न बहेड़ा का फल (कुमा)।

बा° त्रि व. [द्वा°, द्वि] दो, दो की संख्या-वाला। °ईस (अप) देखो °वीस (पिंग)। °ईस देखो °वीस (पिंग)। °णउइ स्त्री [°नवति] बानवे, ९२ (सम ९६; कम्म ६, २६)। °णउय वि [°नवत] ९२ वाँ (पउम ९२, २६)। °णुवइ देखो °णउइ (स्वप्न ६२)। °याल, °यालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] बयालीस, चालीस और दो, ४२ (उव, नव २, भग, सम ६६, कप्प, औप), स्त्री. °याला, °यालीसा (कम्म ६, ६, कप्प)। °यालीसइम वि [°चत्वा-रिंशत्तम] बयालीसवाँ, ४२ वाँ (पउम ४२, ३७)। °र, °रस त्रि व. [°दशन्] बारह, १२, 'बारसभिक्खुपडिमधरो' (संबोध २२, कम्म ४, ५, १५, नव २०, दं ७, कप्प, जी २८, उवा)। °रस वि [°दश] बारहवाँ, १२ वाँ (सुख २, १७)। °रसंग स्त्रीन [°दशाङ्ग] बारह जैन अंग-ग्रन्थ (पि ४११), स्त्री °गी (राज)। °रसम वि [°दश] बारहवाँ (सूअ २, २, २१, पव ४६, महा)। °रसमासिय वि [°दशमासिक] बारह मास का, बारह मास-सम्बन्धी (कुप्र १४१)। °रसय न [°दशक] बारह का समूह (ओघभा १५)। °रसवरिसिय वि [°दशवार्षिक] बारह वर्ष का (मोह १०२, कुप्र ६०)। °रसविह वि [°दशविध] बारह प्रकार का (नव ३०)। °रसाह न [°दशाह, °दशास्य] १ बारहवाँ दिन। २ जन्म के बार-हवें दिन किया जाता उत्सव, बरही (णाया १ १, कप्प, औप, सुर ३, २५)। °रसी स्त्री [°दशी] बारहवीं तिथि, द्वादशी (सम २६, पउम ११७, ३२, ती ७)। °रसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत] एक सौ बारहवाँ (पउम ११२, ७३)। °रह देखो °रस = दशन् (हे १, २१९)। °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सम ७५, नव ५, १८, सुर १३, २३८, देवेन्द्र १३७)। °वण (अप)। देखो °वन्न (पिंग)। °वण्ण देखो °वन्न (कुमा)। °वत्तर वि [°सप्तत] बहत्तरवाँ, ७२ वाँ (पउम ७२, ३८)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] बहत्तर, ७२ (सम ८३, भग, औप, प्रासू १२६)। °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] बावन, पचास और दो, ५२ (सम ७१, महा), 'बावन्न होंति जिणभवणा' (सुपा ६, १)। °वन्न वि [°पञ्चाश] बावनवाँ (पउम ५२, ३०)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] बाईस, २२ (भग, जी ३४), स्त्री. °सा (पि ४४७)। °वीस वि [°विंश] बाईसवाँ, २२ वाँ (पउम २०, ८२, पत्र ४६) °वीसइ देखो वीस = विंशति (भग, पव १८६)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ बाईसवाँ, २२ वाँ (पउम २२, ११०, अंत २६)। २ लगातार दस दिन का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °वीसविह वि [°विंशतिविध] बाईस प्रकार का (सम ४०)। °सट्ठ वि [°षष्ट] बासठवाँ, ६२ वाँ (पउम ६२, ३७)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सम ७५, पिंग)। °सी, °सीइ स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२ (नव २, सम ८९, कप्प, कम्म ५, १७)। °सीइम वि [°अशीतितम] बयासीवाँ, ८२ वाँ (पउम ८२, १२२)। °हत्तर (अप) देखो °हत्तरि (सण)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] बहत्तर, ७२ (कप्प, कुमा, सुपा ३१९)।

बाअ पु [दे] बाल, शिशु (षड्)।

बाइया स्त्री [दे] माँ, माता, गुजराती में 'बाई' (कुप्र ८७)।

बाउल्लया, बाउल्लिआ, बाउल्ली स्त्री [दे] पञ्चालिका, पुतली, 'आलिहियभित्तिबाउल्लय व न हु मुंजिउ तरइ' (वज्जा ११८, कप्पू, दे ६, ९२)।

बाउस देखो बउस (पिंड २४, ओघ ३४८)।

बाउसिअ वि [बाकुशिक] 'बकुश' चारित्र-वाला (सुख ६, १)।

बाउसिया स्त्री [बकुशिका] 'बकुश' चारित्र-वाली (णाया १, १६—पत्र २०६)।

बाढ क्रिवि [बाढ] १ अतिशय, अत्यन्त, घना (उप ३२०, पाअ, महा)। °क्कार पु [°कार] स्वीकार-सूचक उक्ति (सिरि ७६५)।

बाण पु [दे] १ पनस वृक्ष, कटहर का पेड़। २ वि सुभग (दे ६, ९७)।

बाण पुस्त्री [बाण] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया का गाछ (पण्ण १७—पत्र ५२६, कुमा)। २ पुं शर, बाण (कुमा, गउड)। ३ पाँच की संख्या (सुर १६, २४९)। °वत्त न [°पात्र] तूणीर, शरधि (से १, १८)।

बाध देखो बाह = बाध्। कवकृ. बाधीअमाण (पि ५६३)।

बाधा स्त्री [बाधा] विरोध (धर्मसं ११७)।

बाधिय वि [बाधित] विरोधवाला, प्रमाण-विरुद्ध (धर्मसं २५९)।

बाम्हण देखो बम्हण (हे १, ६७, षड्)।

बाय न [बाक] बक-समूह (श्रा २३)।

बायर वि [बादर] १ स्थूल, मोटा, असूक्ष्म (पण्ह १, १, पव १६२, दे ४४)। २ नववाँ गुण-स्थानक (कम्म २, ३ ५, ७)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म (सम ६७)।

बार न [द्वार] दरवाजा (हे १, ७९)।

बारगा स्त्री [द्वारका] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी, जो आजकल भी काठियावाड में 'द्वारका' के ही नाम से प्रसिद्ध है (उत्त २२, २२, २७)।

बारवई स्त्री [द्वारवती] १ ऊपर देखो (सम १५१, णाया १, ५, उप ६४८ टी)। २ भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा शिविका (विचार १२९)।

बाल पुं [बाल] १ बाल, केश (उप ८३४)। २ बच्चा, शिशु (कुमा प्रासू १७६)। ३ वि मूर्ख, अज्ञानी (पाअ)। ४ नया, नूतन (दस)। ५ पुं स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०)। ६ वि. असंयत मिथ्यात्वी (ठा ४, ३)। °कइ पु [°कवि] नया कवि (दस)। °ग पुं [°ग] बालक ... मूर्ख (कुमा)। °ग्गाह पुं [°ग्राह] बालक को ... करनेवाला नौकर (सु १ १६२)। °ग्गाहि पुं [°ग्राहिन्] ... धर्म (णाया १, २—पत्र ८४)। °घाय वि [°घात] बाल-हत्या करनेवाला (णाया १, २, १८)। °तव न [°तपस्] १ अज्ञानी की तपश्चर्या (भग, औप)। २ वि अज्ञानपूर्वक तप करनेवाला (उव ?, ५६)। °तवस्सि वि [°तपस्विन्] अज्ञान-पूर्वक तप करनेवाला, तापस ... (वि ?०५)। °पंडिअ वि [°पण्डित] आंशिक त्याग करनेवाला, कुछ अंश में त्यागी और कुछ में अत्यागी (भग)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] अज्ञानी (पण्ह ५०)। °मरण न [°मरण] अविरत दशा का मरण, अज्ञानी की मौत (भग, सुपा ३५७)। °वियण, °वीअण पुंन [°व्यजन] चामर, चँवर (णाया १, ३), स्त्री 'उवणेमो बालवी-यणीं' (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °हार पु [°धार] बालक का भरण-पोषण करनेवाला नौकर (सुपा ४७८)।

बाल ... °ज्ज, °ज्ज वि [°ज] बल ... (आचा १, २, ५, ५, कप्प)।

बालग न [बालक] बालक, बच्चा, ... (उत्त ७, ३०)। देखो बाल।

बालअ देखो बाल ... (गा १२६)।

बालअ पुं [?] वालि-सुत (दे ६, ९२)।

बालग्गपोइआ स्त्री [दे] १ ... तालाब के ऊपर का प्रासाद। २ ... (दे ६, ९३)।

बाला स्त्री [बाला] १ कुमारी, लड़की (कुमा)। २ मनुष्य की दस अवस्थाओं में पहली अवस्था, दस वर्ष तक की अवस्था (तंदु १६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

बालालुंबी स्त्री [दे] तिरस्कार, अवहेलना (सुपा १४)।

बालि वि [बालिन्] बाल प्रधान, सुन्दर केश-वाला (अणु बृह १)।

बालिआ स्त्री [बालिका] बाला, कुमारी, लड़की (प्रासू ५१, महा)।

बालिआ स्त्री [बालता] १ बालकपन, शिशुता (भग)। २ मूर्खता, बेवकूफी, 'बिइया मंदस्स बालिया' (आचा)।

बालिस वि [बालिश] मूर्ख, बेवकूफ (पाअ, पण्ह २३)।

बाह सक [बाध्] १ विरोध करना। २ रोकना। ३ पीड़ा करना। ४ विनाश करना। बाहइ, बाहए (पचा ५, १५, हे १, १८७, उव), बाहति (कुप्र ९८)। कवकृ बाहिज्जत, बाहीअमाण (पउम १८, १६, सुपा ६४५, अभि २४४)। कृ बाहणिज्ज (कप्पू)।

बाह पुं [बाष्प] अश्रु, आंसू (हे २, ७०, पाअ, कुमा)।

बाह पु [बाध] विरोध (भास ३४)।

बाह देखो बाढ (प्रयौ ३७)।

बाह पु [बाहु] हाथ, भुजा (सक्षि २)।

बाहग वि [बाधक] १ रोकनेवाला (पचा १, ४९)। २ विरोधी, 'पच्चुप्पन्नबाहगा नियमा' (श्रावक १६२)।

बाहड पु [बाहड, वाग्भट] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मंत्री (कुप्र ६)।

बाहण न [बाधन] १ बाधा, विरोध (धर्मसं १२७६)। २ विराधना (पचा १६, ५)।

बाहणा स्त्री [बाधना] ऊपर देखो (धर्मसं १११)।

बाहर देखो बाहिर (आचा)।

बाहल पु [बाहल] देश-विशेष (भवि)।

बाहल्ल न [बाहल्य] स्थूलता, मोटाई (सम ३५ ठा ८—पत्र ४४०, औप)।

बाहा स्त्री [बाधा] १ हरकत, हरज। २ विरोध (सुपा १७६)। ३ पीड़ा, परस्पर संश्लेष से होनेवाली पीड़ा (ठा १, भग १४, ८)।

बाहा स्त्री [बाहु] हाथ, भुजा (हे १, ३६, कुमा, भग, उवा, औप)।

बाहा स्त्री [दे. बाहा] नरकावास-श्रेणी (देवेन्द्र ७७)।

बाहि } अ [बहिस्] बाहर (सुज्ज १६—
बाहिं } पत्र २७१, महा, आचा, कुमा, हे २, १४० पि ४८१)।

बाहिज्ज न [बाधिर्य] बधिरता, बहरापन (विसे २०८)।

बाहिर अ [बहिस्] बाहर (हे २, १४०, पाअ, आचा, उव)। °ओ अ [°तस्] बाहर से (कप्प)।

बाहिर वि [बाह्य] बाहर का (आचा, ठा २, १—पत्र ५५, भग २ ८ टी)। °उद्धि पु [°ऊर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनो पार्ष्णि मिलाकर और पैर को फैलाकर किया जाता कायोत्सर्ग (चेइय ४८६)।

बाहिरग वि [बहिरङ्ग] बाहर का, बाह्य (सूअ २, १, ४२)।

बाहिरिय वि [बाहिरिक, बाह्य] बाहर का, बाहर से संबन्ध रखनेवाला (सम ८३, णाया १, १, पिंड ६३६, औप, कप्प)।

बाहिरिया स्त्री [बाहिरिका] किले के बाहर की गृह-पंक्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला (सूअ २, ७, १, स ६६)।

बाहिरिल्ल वि [बाह्य] बाहर का (भग, पि ५९५)।

बाहु पुस्त्री [बाहु] १ हाथ, भुजा (हे १, ३६, आचा, कुमा)। २ पु भगवान् ऋषभदेव का पुत्र, बाहुबलि (कुप्र ३१०)। °बलि पु [°बलि] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र, तक्षशिला का एक राजा (भग ६०, पउम ४, ५२, उव)। २ बाहुबलि के प्रपौत्र का पुत्र (पउम ५, ११)। °मूल न [°मूल] कक्षा, बगल (कप्पू)।

बाहुअ पुं [बाहुक] स्वनाम-ख्यात एक ऋषि (सूअ १, ३, ४, २)।

बाहुडिअ वि [दे] लज्जित, शरमिंदा (सुपा ८७४)।

बाहुया स्त्री [बाहुका] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज)।

बाहुल्ल देखो बाहु (पउ ३६)।

बाहुलेय पु [बाहुलेय] गो-वत्स, बैल, बछड़ा (पाअ)।

बाहुलेर पुं [बाहुलेय] काली गाय का बछडा (अणु २१७)।

बाहुल्ल न [बाहुल्य] बहुलता, प्रचुरता (पिंड ५६, भग, सुपा २७, उप ६०७)।

बाहुल्ल वि [बाष्पवत्] अश्रुवाला (कुमा, सुपा ४६०)।

बि वि. ब [द्वि] दो, २, 'बिन्नि' (हे ४, ४१८, नव ४, टा २, २, कम्म ४, २, १०, सुख १, १४)। °जडि पुं [°जटिन्] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)। °दल न [°दल] चना आदि वह धान्य जिसके दो टुकडे बराबर के होते हैं, 'जह विदल सूलीए' (वि ३)। °याल देखो बा-याल (कम्म ६, २८)। °यालसय पुन [°चत्वारिंशच्छत] एक सो बेयालीस, १४२ (कम्म २, २६)। °विह वि [°विध] दो प्रकार का (पिंग)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सुज्ज १०, ६ टी)। °सत्तरि, °सयरि स्त्री [सप्तति] बहत्तर, ७२ (पव १६, जीवस २०६, कम्म ३, ५)।

बि° } वि [द्वितीय] दूसरा (कम्म ३, १६, बिअ } पिंग)। °कसाय पु [°कषाय] अप्रत्याख्यानावरण नामक कषाय (कम्म ४, ५६)।

बिअ न [द्विक] दो का समुदाय, युग्म, युगल (भग, कम्म १, ३३, प्रासू १६)।

बिआया स्त्री [दे] कीट-विशेष, सलग्न रहनेवाला कीट-द्वय (दे ६, ६३)।

बिइअ देखो बिइज्ज (हे १, ५, पव १६४)।

बिइआ देखो बीआ (राज)।

बिइज्ज वि [द्वितीय] १ दूसरा (हे १, २४८, प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करनेवाला (पाअ, सुर ३, १४),

'जे दुहियम्मि न दुहिया,
आवइपत्ते बिइज्जया नेव।
पहुंणो न ते उ भिच्चा,
धुत्ता परमत्थओ ऐया'
(सुर ७, १४५)।

बिउण वि [द्विगुण] दुगुना (हे १, ६४, २, ७६, गा २८६)। °यर वि [°कारक] दुगुना करनेवाला (भवि)।

बिउण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। बिउणेइ (पि ५५६)।

बिंट न [वृन्त] फलादि का बन्धन, 'बवण बिंट' (पाअ)। °सुरा स्त्री [°सुरा] मदिरा, दारू, 'बिंटसुरा पिट्ठसउरिया मइरा' (पाअ)।

बिउ देखो बू = ब्रू।

बिंदिय वि [द्वीन्द्रिय] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हो वह (औप)।

बिंदु पुन [बिन्दु] १ अल्प अंश। २ बिन्दी, शून्य, अनुस्वार। ३ दोनो भ्रू का मध्य भाग। ४ रेखागणित का एक चिन्ह, 'बिंदुणो, बिंदूइं' (हे १ ३४, कप्प, उप १०२२, स्वप्न ३६, कस, कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, बिन्दी (सिरि १६६)। °सार न [°सार] १ चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष (सम २६, विसे ११२६)। २ पु. मौर्य वंश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र (विसे ८६२)।

बिंदुइअ वि [बिन्दुकित] बिन्दु-युक्त, बिन्दु-विलिप्त (पाअ, गउड)।

बिंदुइज्जंत वि [बिन्दूयमान] बिन्दुओ से व्याप्त होता (से ११, १२५)।

बिंद्रावण न [वृन्दावन] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ (प्राकृ १७)।

बिंब सक [बिम्ब्] प्रतिबिम्बित करना। कर्म. बिंबिज्जइ (सूअ ४६)।

बिंब न [बिम्ब] १ प्रतिमा, मूर्त्ति (कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न बिम्बीफल, कुन्दरुन का फल (णाया १, ८—पत्र १२६ पाअ, कुमा, दे २, ३६)। ४ प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया। ५ अर्थ-शून्य आकार, 'अणण जणा पस्सति बिंबभूय' (सूअ १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल (गउड, कप्पू)।

बिंबवय न [दे] फल-विशेष, भिलावाँ, 'बिंबवय भल्लाय' (पाअ)।

बिंबिसार देखो भिंभिसार (अंत)।

बिंबी स्त्री [बिम्बी] लता-विशेष, कुन्दरुन का गाछ (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरुन का फल (सुपा २६३)।

बिंबोवणय न [दे] १ क्षोभ। २ विकार। ३ ओसीसा, उच्छीर्षक (दे ६, ६८)।

बिंह सक [बृंह्] पोषण करना। कृ. देखो बिंहणिज्ज।

बिंहणिज्ज वि [बृंहणीय] पुष्टि जनक (ठा ६—पत्र ३७५, णाया १, १—पत्र १६)।

बिंहिअ वि [बृंहित] पुष्ट, उपचित (हे १, १२८)।

बिग्गाइआ } स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न बिग्गाई } रहता कीट-युग्म, गुजराती मे 'बगाई' (दे ६, ६३)।

बिज्ज देखो बीज, 'बिज्जं पिव वड्डिया बहवे' (पउम ११, ६६)।

बिज्जउर न [बीजपूर] फल-विशेष, एक तरह का नीबू, 'बिज्जउरचिब्भिडेहिं कुणइ पिहाणाइं सव्वत्थ' (सुपा ६३०)।

बिज्जय (अप) देखो बिइज्ज (भवि)।

बिट्ट पु [दे] बेटा, लडका, पुत्र (चड)।

बिट्टी स्त्री [दे] बेटी, पुत्री, लडकी (चंड, हे ४, ३३०)।

बिट्ठ वि [दे. विष्ट] बैठा हुआ, उपविष्ट (ओघ ४७१)।

बिडाल पु [बिडाल] मार्जार, बिलाव, बिलार, बिल्ला (पि २४१)।

बिडालिआ } स्त्री [बिडालिका, °ली] बिडाली } बिल्ली, मार्जारी, बिलारी, बिलैया (सम्मत्त १२२, पि २४१)। देखो बिरालिआ।

बिडिस देखो बडिस (उप १४२ टी)।

बिदिय देखो बिइअ (उप २७६)।

बिन्ना स्त्री [बेन्ना] भारत की एक नदी (पिंड ५०३)।

बिब्बोअ पु [बिब्बोक] १ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया (पण्ह २, ४—पत्र १३१, णाया १, ८—पत्र १४२, भत्त १०६)। २ न. उपधान, तकिया, ओसीसा, 'सयणीअ तूलिअ सबिब्बोअ' (गच्छ ३, ८)।

बिब्बोअ पु [बिब्बोक] काम-विकार (अणु १३६)।

बिब्बोइअ न [बिब्बोकित] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

बिब्बोयण न [दे] उपधान, तकिया, ओसीसा (णाया १, १—पत्र १३)।

बिभेलय देखो बहेडय (पराण १—पत्र ३१)।

बिराल पुं [बिडाल] १ बिल्ली-प्रसिद्ध चतुष्पद [illegible] मार्जार। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

बिराड देखो बिडाल (सुर १, १८)।

बिरालिआ } देखो बिडालिआ (सम्मत्त
बिराली } १२३, पाअ)। २ भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलनेवाला एक प्रकार का प्राणी (सूअ २, ३, २५)।

बिरालिया स्त्री [बिरालिका] स्थल-कन्द-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।

बिरुद न [बिरुद] इल्काब, पदवी (सम्मत्त १४१)।

बिल न [बिल] १ रन्ध्र, विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान (विपा १, ७, महा)। २ कूप, कुआँ (राय)। °कोलीकारक वि [दे °कोलीकारक] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलनेवाला (पराह १, ३—पत्र ४८)। °पंतिआ स्त्री [°पङ्क्तिका] खान की पद्धति (पराह २, ५—पत्र १५०)।

बिलाड } देखो बिडाल (गा, पि २४१)।
बिलाल }

बिलालिआ देखो बिरालिआ (पि २४१)।

बिल्ल पुं [बिल्व] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड (पराण १—पत्र १०३१ टी)। २ न. बेल का फल (पाअ)।

बिल्लल पुं [बिल्वल] १ अनार्य देश विशेष। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पराह १, १—पत्र १४)। देखो चिलड = [illegible]।

बिस न [बिस] कमल आदि के नाल का तन्तु (णाया १, १३; कुमा, पाअ)। °कंठी स्त्री [°कण्ठी] बगला, बक पक्षी की एक जाति (दे ६, ९३)। देखो भिस = बिस।

बिसि [illegible] (दे ४, ८३)।

बिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी, कमल का गाछ (पि २०९)।

बिसी स्त्री [वृसी] ऋषि का आसन (दे १, ९३, [illegible])।

बिह अक [भी] डरना। बिहइ (प्राकृ ६४, [illegible] २०१)।

बिह वि [बृहत्] बड़ा, महान्। °णल पुं [°नल] छन्द विशेष (पिंग)।

बिहप्पइ } देखो बहस्सइ (हे २, १३७,
बिहप्फइ } १, १३८, २, ६९, षड्, कुमा)।
बिहस्सइ }

बिहिअ देखो बिहिअ (प्राकृ ८)।

बिहेलअ देखो बिभेलअ (दस ५, २, २४)।

बीअ देखो बिइअ (हे १, ५, २, ७९; सुर १, ३८, सुपा ४८५)।

बीअ न [बीज] १ बीज, बीया, 'नाउमबीअं एवं नामऊ भारं गुडस्स जह महगं' (प्रासू १५१, आचा, जी १३, औप)। २ मूल कारण, 'सारीरमाणसाणेयदुक्खबीयभूयकम्म-वणदहणमहं' (महा)। ३ वीर्य, शरीरान्तर्गत सात धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र (सुपा ३६०, वव ६)। ४ 'ह्रीं' अक्षर (सिरि १९६)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों का निज बुद्धि से स्वयं जाननेवाला (औप)। °मंत वि [°मत्] बीजवाला (णाया १, १)। °रुइ स्त्री [°रुचि] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों का अनुसंधान द्वारा फैलनेवाली रुचि। २ वि उक्त रुचिवाला (पराण १)। °रुह वि [°रुह] बीज से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति (पराण १)। °वाय पुं [°वाप] क्षुद्र जन्तु-विशेष (राज)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] छिलके का अग्र भाग (कप्प)।

बीअऊरय न [बीजपूरक] फल-विशेष, एक तरह का नींबू (गा ३६)।

बीअजमण न [दे] बीज मलने का खल—खलिहान (दे ६, ९०)।

बीअण पुं [दे] बीजक वृक्ष (दे ६, ९३ टी)।

बीअय पुं [दे बीजक] वृक्ष विशेष, असन वृक्ष, विजयसार का गाछ (दे ६, ९३, पाअ)।

बीआवय पुं [बीजवापक] विकलेन्द्रिय जन्तु की एक जाति (अणु १४१)।

बीआ स्त्री [द्वितीया] १ तिथि-विशेष, दूज (सम २९, श्रा २८, रयण २, णाया १, १०, सुपा २७१)। २ द्वितीय विभक्ति (चेइय ४०६)।

बीज देखो बीअ = बीज (कुमा, पराह २, १—पत्र ९९)।

बीडग न [बीटक] बीड़ा, पान का बीड़ा, सजित ताम्बूल (सुपा ३३६)।

बीडि } स्त्री [बीटि, °टी] ऊपर देखो,
बीडी } 'विल्लदलबीडीओ कोसेवि मुहम्मि पक्खिवइ' (धमवि १४०)।

बीभच्छ पुं [बीभत्स] साहित्य प्रसिद्ध एक रस (अणु १३५)।

बीभच्छ } वि [बीभत्स] १ घृणोत्पादक,
बीभत्थ } घृणा-जनक। २ भयकर, भय-जनक (उवा, तंदु ३८, णाया १, २, सबोध ४८)। ३ पुं रावण का एक सुभट (पउम ५९, २)।

बीयत्तिय वि [दे बीजयितृ] बीज बोनेवाला, वपन करनेवाला। २ पुं पिता, 'बीय बीयत्ति-यस्सेव' (सुपा ३९०, ३९१)।

बीलय पुं [दे] ताडक, कर्णभूषण विशेष, कान का एक गहना (दे ६, ९३)।

बीह अक [भी] डरना। बीहइ, बीहेइ (हे ४, ५३, महा, पि २१३)। वकृ बीहंत (ओघभा १९, उप ७६८ टी, कुमा)। कृ. बीहियव्व (स ६८२)।

बीहच्छ देखो बीभच्छ (पि ३२७)।

बीहण } वि [भीषण, °क] भय-जनक,
बीहणग } भयंकर (पि २१३, पराह १, १,
बीहणय } पउम ३५, ७४)।

बीहविय वि [भीषित] डराया हुआ (सम्मत्त ११८)।

बीहिअ वि [भीत] १ डरा हुआ (हे ४, ५३)। २ न भय, डर, 'न य बीहिय समाचि हु' (श्रा १४)।

बीहिर वि [भीरु] डरनेवाला (सुपा ६, ३७)।

बुआव सक [वाचय्] बुलवाना। संकृ. बुआवइत्ता (ठा ३, २—पत्र १२८)।

बुइअ वि [उक्त] कथित (सूअ १, २, २, २८, १, १४, २७, पराह २, २)।

बुंद पुंस्त्री [दे] १ सुन्दर। २ मूकर, सूअर (दे ६, ९८)।

बुंदि स्त्री [दे] शरीर, देह, 'दव्वं बुंदि भरत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झइ' (ठा १ टी—पत्र २४, गुज २०, तंदु १३, सुपा ६५६, भग ६ टी, पाअ)। देखो बोंदि।

बुंदिणी स्त्री [दे] कुमारी-समूह (दे ६, ९४)।

बुंदीर पु [दे] १ महिष, भैंसा। २ वि. महान्, बड़ा (दे ६, ९८)।

बुंध न [बुध्न] १ वृक्ष का मूल। २ कोई भी मूल, मूलमात्र (हे १, २६; षड्)।

बुंबा स्त्री [दे] चिल्लाहट, पुकार (सुपा ५६५)।

बुंबु पु [दे] ऊपर देखो (कप्पू ३१)।

बुंबुअ न [दे] वृन्द, यूथ, समूह (दे ६, ९४)।

बुक्क वि [दे] विस्मृत (वव १)।

बुक्क अक [गर्ज्, बुक्क्] गर्जन करना, गरजना। बुक्कइ (हे ४, ९८)।

बुक्क अक [भष्, बुक्क्] श्वान—कुत्ता का भूँकना। बुक्कइ (षड्)।

बुक्क पुन [दे] १ तुष, छिलका (सुख १८, ३७)। २ वाद्य विशेष, 'बुक्कतबुक्कसबुक्कसद्दुद्धड' (सुपा ५०)।

बुक्कण पुं [दे] काक, कौआ (दे ६, ९४; पाअ)।

बुक्कस देखो बोक्कस (राज)।

बुक्का स्त्री [दे] १ मुष्टि (दे ६, ९४; पाअ)। २ व्रीहिमुष्टि (दे ६, ९४)। ३ वाद्य-विशेष, 'ढक्काडमरुहुडुक्काबुक्कासबुक्करडिपभिईणं आउज्जाण' (सुपा १६५)।

बुक्का स्त्री [गर्जना] गर्जन, गर्जारव (पउम ६, १०८; गउड)।

बुक्कार पु [दे वृक्कार] गर्जन, गर्जना (पउम ७, १०५; गउड)।

बुक्कास पु [दे] तन्तुवाय, जुलाहा (आचा २, १, २, २)।

बुक्कासार वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६, ९५)।

बुक्किअ वि [गर्जित] जिसने गर्जना की हो वह, 'अह बुक्किआ तुह भडा' (कुमा)।

बुज्झ सक [बुध्] १ जानना, ज्ञान करना, समझना। २ जागना। बुज्झइ (उव)। भूका बुज्झिसु (भग)। भवि बुज्झिहिइ (औप)। वकृ. बुज्झत, बुज्झमाण (पिंग, आचा)। सकृ बुज्झा (हे २, १५)। कृ. बुद्ध, बोद्धव्व, बोधव्व (पिंग, कुमा, नव २३; भग, जी २१)।

बुज्झविय } वि [बोधित] १ जिसको ज्ञान
बुज्झाविअ } कराया गया हो वह। २ जगाया गया (कुप्र ६४; सुपा ४२५; प्राकृ ६८)।

बुज्झिअ वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित (पाअ)।

बुज्झिर वि [बोद्धृ] १ जाननेवाला। २ जागनेवाला (प्राकृ ६८)।

बुडबुड अक [बुडबुडय्] बुडबुड आवाज करना, 'सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्त' (चेइय ४९३)।

बुड्ड अक [ब्रुड्, मस्ज्] डूबना। बुड्डइ (हे ४, १०१; उव; कुमा; भवि)। भवि. बुड्डीसु (अप) (हे ४, ४२३)। वकृ बुड्डुत, बुड्डमाण (कुमा; उप १०३१ टी)। प्रयो, वकृ. बुड्डावत (सबोध १५)।

बुड्ड वि [ब्रुडित, मग्न] डूबा हुआ, निमग्न (धम्म १२ टी; गा ३७; रभा २३; सुर १०, १८६; भवि), 'धयबुड्डुमडगाई' (पव ४ टी)।

बुड्डण न [ब्रुडन] डूबना (सवे २; कप्पू)।

बुड्डिर पु [दे] महिष, भैंसा (षड्)

बुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा (पिंग)। स्त्री °ड्ढा, °ड्ढी (काप्र १९७; सिरि १७३)

बुण्ण वि [दे] १ भीत, डरा हुआ। २ उद्विग्न (दे ७, ९४ टी)।

बुत्ती स्त्री [दे] ऋतुमती स्त्री (दे ६, ९४)।

बुद्ध वि [बुद्ध] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञाततत्व (सम १; उप ६१२ टी; श्रा १२; कुप्र ४०; श्रु १)। २ जागा हुआ, जागृत (सुर ९, २४३)। ३ भूत, भविष्य और वर्त्तमान का जानकार (चेइय ७१३)। ४ विज्ञात, विदित (ठा ३, ४)। ५ पुं जिन-देव, अर्हन्, तीर्थंकर (सम ६०)। ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध (पाअ; दे ७, ५१; उर ३, ७; कुप्र ४४०; धर्मसं ६७२)। ७ आचार्य, सूरि (उत्त १, १७)। °पुत्त पु [°पुत्र] आचार्य शिष्य (उत्त १, ७)। °बोहिय वि [°बोधित] आचार्य बोधित (नव ४३)। °माणि वि [°मानिन्] निज को पण्डित माननेवाला (सूअ १, ११, २५)। °लय पुन [°लय] बुद्ध-मन्दिर (कुप्र ४४२)।

बुद्ध वि [बौद्ध] १ बुद्ध-भक्त। २ बुद्ध-सबन्धी, बुद्ध का (ती ७; सम्मत्त ११६)।

बुद्ध देखो बुज्झ।

बुद्ध देखो बुध (सुज्ज २०)।

बुद्धत पुन [बुध्नान्त] अधो-भाग, नीचे का हिस्सा, 'ता राहू ण देवे चद वा सूर वा गेण्हमाणे बुद्धतेण गिण्हित्ता बुद्धतेण मुयइ' (सुज्ज २०)।

बुद्धि स्त्री [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा (ठा ४, ४; जी ६; कुमा; कप्प; प्रासू ४७)। २ देव प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ महापुण्डरीक ह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२; इक)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ तीर्थंकरी। ६ साध्वी (राज)। ७ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)। ८ पुं इस नाम का एक मन्त्री (उप ८४४)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर (राज)। °बोहिय वि [°बोधित] १ तीर्थंकरी—स्त्री-तीर्थंकर से प्रतिबोधित। २ सामान्य साध्वी से बोधित (राज)। °मंत वि [°मत्] बुद्धिवाला (उप ३३६; सुपा ३७२; महा)। °ल पु [°ल] १ एक स्वनामप्रसिद्ध श्रेष्ठी (महा)। २ देखो °ल्ल (राज)। °ल्ल वि [°ल] बुद्ध, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीनेवाला, 'तस्स पडियमाण(? णि)स्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो' (ओघभा २६ टी, २७)। °वत देखो °मत (भवि)। °सागर, °सायर पु [°सागर] विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २४५; सार्ध ६९; सम्मत्त ७६)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] बुद्धि मे सिद्धहस्त, सपूर्ण बुद्धिवाला (आवम)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्री-कन्या (उप ७२८ टी)।

बुध देखो बुह (पण्ह १, ५; सुज्ज २०)।

बुब्बुअ अक [बुबूय्] 'बु' 'बु' आवाज करना, छाग—बकरा का बोलना। बुब्बयइ (कुप्र २४)। वकृ बुब्बुयत (कुप्र २४)।

बुब्बुअ पुं [बुद्बुद] बुलबुला, पानी का बुलका (दे ६, ९५; औप; पिंड १९; णाया १, १; वै ४५; प्रासू ६६; २ १३)।

बुभुक्खा स्त्री [बुभुक्षा] भूख, खाने की इच्छा (अभि २०७)।

बुय वि [ब्रुव] बोलनेवाला (सूअ १ ७, १०)।

बुयाण देखो बुव।

बुल वि [दे] चोर, [illegible], धर्मिष्ठ (षिग १६८)।

बुलबुल स्त्री [दे] बुलबुल, [illegible] (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [दे] [illegible] (षड्)।

बुल्ल देखो बोल्ल। बुल्लइ (कुप्र २६, श्रा १८), बुल्लंति (कप्पू ४)। प्रयो बुल्लावेइ, बुल्लावेंति, बुल्लावय (कुप्र १२७, सिरि ४८०)।

बुव सक [ब्रू] बोलना। बुवइ (षड्, कुमा)। वकृ बुवंत, बुवाण, बुवाण (उव २३, [illegible] सूअ १, ७, १०, उत्त २३, ३१)। देखो बू।

बुस न [बुस] १ भूसा, धान आदि का कडंगर, नाज का छिलका (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, [illegible] धान्य (गउड)।

बुसि [illegible] [ब्राये, °सि] मुनि का आसन। °म °मत वि [°मत] संयमी, व्रती, मुनि (सूअ २, ६, १४ आचा)।

बुसिआ स्त्री [बुसिका] धान्य आदि का कडंगर, भूसा (दे २, १०३)।

बुह पुं [बुध] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव (सुर ३, ५३ पउमवि २८)। २ वि. पण्डित, विद्वान् (ठा ४, ८, सुर ३, ५३, पउमवि २८, कुमा पाप)।

बुहप्फइ
बुहफइ
बुहस्सइ } देखो बहस्सइ (हे २, ५३, १३७, षड्, कुमा)।

[illegible] [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। [illegible] (षड्)।

बुहुक्खा [illegible] बुभुक्षा (राज)।

बुहुक्खिअ वि [बुभुक्षित] भूखा (कुमा)।

बू सक [ब्रू] बोलना, कहना। बूम, बूमो, बूहि [illegible] सूअ १, ३, ६, [illegible]। [illegible] बेमि, [illegible] (कम्म [illegible]) बूया भवति (उत्त [illegible] ठा ३, २)। [illegible] (उव ७२८ टी, [illegible] १६०, [illegible])। [illegible] देखो [illegible]।

बूर न [दे] [illegible] (आचा २, १—[illegible])।

°णालिया °नालिआ स्त्री [°नालिका] बूर से भरी हुई नली (राज, भा)।

बूल वि [दे] मूक, वाचा शक्ति से रहित (षिग १६८ टी)।

बूह सक [बृंह्] पुष्ट करना। बूहए (सूअ २, ५, ३२)।

बे देखो वि (वज्जा १०, हे ३, ११६, १२०, षिग)। °आसी (अप) स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२ (षिग)। °इंदिय वि [°इन्द्रिय] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियवाला प्राणी (ठा १, भग स ८३, जी १५)। °हिय [द्व्याह्निक] दो दिन का (जीवा ११६)।

बेंट देखो विंट (महा)।

बेंत देखो बू।

बेंदि देखो बे-इंदिय (पव ५, ५६)।

बेट्ठ देखो विट्ठ (ओघभा १७४)।

बेड
बेडय } पुं [दे] नौका, जहाज (दे ६, ९५, सुर १३, ५०)।

बेडा
बेडिया
बेडी } स्त्री [दे] नौका, जहाज (उव ७२८ टी, सिरि ३८२; ४०७, श्रा १२, धम्म १२ टी), 'पाणीहि [illegible] धारए अरित्तदएहि बेडिव्व' (धर्मवि १३२)।

बेड्डा स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ के बाल (दे ६, ९५)।

बेदोणिय वि [द्विद्रौणिक] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित, 'कण्टए से बेदोणियाए [illegible] हिरण्णगरियाए [illegible]' (उवा)।

बेभेल पुं [बिभेल] विन्ध्याचल के नीचे का एक सन्निवेश (भग ३, २—पत्र १७१)।

बेमासिय वि [द्विमासिक] दो मास का, दो महीने का अवधि रखनेवाला (पउम २२, २८)।

बेल्लि स्त्री [दे] [illegible], [illegible] (दे ६, ९५, पाअ)।

बेल्ल देखो विल्ल (प्राप्र ५)।

बेल्लग पुं [दे] बैल, [illegible] (प्रारू)।

बेस सक [विश, आ] बैठना, [illegible] [illegible] (धोप ५७१)।

बेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई (दे ७, ७६ टी)।

बेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोकनिन्दा (दे ७, ७५ टी)।

बेहिम वि [दे द्वैधिक] दो टुकड़े करने योग्य, खण्डनीय (दस ७, ३२)।

बोगिल्ल वि [दे] १ भूषित, अलंकृत। २ पुं आटोप, आडम्बर (दे ६, ६६)।

बोंटण न [दे] चूचुक, स्तन का अग्र भाग (दे ६, ६६)।

बोंड न [दे] १ चूचुक, स्तनवृन्त (दे ६, ६६)। २ फल-विशेष, कपास का फल (औप, तंदु २०)। °य न [°ज] सूती वस्त्र, सूती कपड़ा (सूअ २, २, ७३, औप)।

बोड न [दे] मुख, मुँह (दे ६, ६६)।

बोंदि स्त्री [दे] १ रूप। २ मुख, मुँह (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह (दे ६, ६६, पण्ह १, १, णाय, औप, उत्त ३५, २०, स ७१२, विसे ३१६१, पव ५५, पचा १०, ४)।

बोंदिया स्त्री [दे] शाखा (सूअ २, २, ४६)।

बोकड
बोक्कड } पुं [दे] छाग, बकरा, गुजराती में 'बोकडो' (ती २, दे ६, ९६)। स्त्री. °डी (दे ६, ९६ टी)।

बोक्कस पुं [बोक्कस] १ अनार्य देश विशेष (पव २७४)। २ वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से अम्बष्ठी की कुक्षि में उत्पन्न (सुत्र ३, ४)।

बोक्कसालिय पुं [दे] तन्तुवाय, 'बोक्कसालियकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा वासानियकुलाणि वा' (आचा २, १, २, ३)।

बोक्कार देखो बुक्कार (सुर १०, २२१)।

बोक्किय न [बृंहित] गर्जन, गर्जना (पउम ५६, ५८)।

बोगिल्ल वि [दे] [illegible], '[illegible] मारं [illegible] [illegible]' (पाप)।

बोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, जूठा करना। गुजराती में 'बोटवुं', '[illegible] [illegible] बोट्ट ति [illegible]' (सुपा ८६१)।

बोड वि [दे] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ। २ तरुण, युवा (दे ६, ९६)। ३ मुण्डित मस्तक '[illegible]', गुजराती में 'बोडो' (सिरि २१७)।

वोडचेर न [दे] गुल्म-विशेष (पाम्र)।
वोडिय पु [वोटि] १ दिगम्बर जैन मप्र-दाय। २ वि दिगम्बर जैन संप्रदाय का अनुयायी, 'वोडियसिवभूईओ वोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती' (विसे १०४१, २५५२)।
वोडिय वि [दे] मुण्डित-मस्तक (?), 'वोडिअमसिए धुव मरणं' (ओघभा ८३ टी)।
वोड्डर न [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे ६, ६५)।
वोड्डिआ स्त्री [दे] कपर्दिका, कौडी, 'केसरि न लहइ वोड्डिअवि गय लक्खेंति घेप्पति' (हे ४, ३३५)।
वोदर वि [दे] पृथु, विशाल (दे ६, ६८)।
वोदि देखो बोंदि (ओप)।
वोद्दह [दे] देखो वोद्रह (पाम्र)।
वोद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त (संबोध ३४)।
वोद्दव्व देखो बुज्झ।
वोद्रह वि [दे] तरुण, जवान (दे ७, ८०)।
वोधण न [वोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश (सम ११६)।
वोधव्व देखो बुज्झ।
वोधि देखो वोहि (ठा २, १—पत्र ४६)। °सत्त पु [°सत्त्व] सम्यग् दर्शन को प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव (मोह ३)।
वोधिअ वि [वोधित] ज्ञापित, अवगमित (धमंस ७०६)।
वोव्वड वि [दे] मूक (दश० अगस्त्य चू० पत्र० २४३)।
वोर न [वदर] फल-विशेष, बेर (गा २००, हे १७०, षड्, कुमा)।
वोरी स्त्री [वदरी] बेर का गाछ (प्राकृ ४, हे १, १७०, कुमा, हेका २५६)।
वोल सक [वोडय्] डुबाना, 'तवोलो तं वोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धो' (सार्धं ११४), 'दुद्धत वोलए अन्न' (सूक्त ६६), वोलेइ, वोलए (सबोध १३), 'कैसि च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि वोलति महालयंसि' (सूत्र १, ५, १०), वोलेमि (सिरि १३८)। 'गुरुनामेण लोए वोलेइ वहुं' (उवर १५२)।
वोल अक [व्यति + क्रम्] १ पसार होना, गुजरना। २ सक उल्लंघन करना, 'दूई ण एइ, चदोवि उग्गओ, जामिणीवि वोलेइ' (गा ८५४), 'पुणो तं ववेण न वोलइ कयाइ' (श्रावक ३३)। वोलए (चउ)। देखो वोल = गम्।
वोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल (दे ६, ६०, भग, भवि, कप्पू, उप उप ५०६), 'हासबोलवहुल।' (औप)। २ समूह, 'कमढा-सुरेण रइयम्मि भीसणे पलयतुल्लजलवोले' (भाव १; कुलक ३४)।
वोलग पुन [दे ब्रोड] १ मज्जन, डूबना। २ कर्षण, खींचाव, 'उच्चूल वोलग पज्जेति' (विपा १, ६—पत्र ६८)।
वोलिअ वि [ब्रोडित] डुबाया हुआ (वज्जा ६८)।
वोलिदी स्त्री [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि का एक भेद, 'माहेसरीलिवी दामिलिवी वोलि-दिलीवो' (सम ३५)।
वोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना। वोल्लइ (हे ४, २ प्राकृ ११६, सुर ८, १६७, भवि)। कर्म वोल्लिअइ (अप) (कुमा)। कृ. वोल्लेव्वय (अप) (कुमा)। प्रयो. वोल्ला-वइ (कुमा)।
वोल्लअ पु [कथन] बोल, वचन (गा ६०३)।
वोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाव-वाला (हे ४, ४४३)।
वोल्ला स्त्री [कथा] वार्त्ता, बात, 'नीयवोल्लाए' (उप १०१५)।
वोल्लाविय वि [कथित] बुलवाया हुआ (स ४६१, ६६६)।
वोल्लिअ वि [कथित] १ उक्त। २ न. उक्ति (भवि, हे ४, ३८३)।
वोव्व न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६६)।
वोह सक [वोधय्] १ समझाना, ज्ञान कराना। २ जगाना। वोहेइ (उव)। कर्म वोहिज्जइ (उव)। वकृ वोहित, वोहेत (सुर १५, २४६, महा)। कवकृ वोहिज्जंत (सुर २, १४५, ८, १६५)। हेकृ. वोहेउ (अज्झ १७६)।
वोह पुं [वोध] १ ज्ञान, समझ (जी १)। २ जागरण (कुमा)।
वोहग देखो वोहय (द १)।
वोहण देखो वोधण (उप २०६, सुर १, ३७, उवर १)।
वोहय वि [वोधक] बोध देनेवाला, ज्ञान-दाता (सम १, णाया १, १, भग, कप्प)।
वोहहर पु [दे] मागध, स्तुति-पाठक (दे ६, ६७)।
वोहारी स्त्री [दे] बुहारी, समार्जनी, झाडू (दे ६, ६७)।
वोहि स्त्री [वोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ, सद्धर्म की प्राप्ति, 'दुल्लहा वोही' (उत्त ३६, २५८), 'वोहो जिणेहिं भणिया भवतरे सुद्ध-धम्मसपत्ती' (चेइय ३३२, सबोध १४, सम ११६, उप ४८१ टी)। २ अहिंसा, अनुकम्पा, दया (पण्ह २, १)। देखो वोधि।
वोहिअ वि [वोधित] १ ज्ञापित, समझाया हुआ (भग)। २ विकासित, विवोधित, 'रवि-किरणतरुणवोहियसहस्सपत—' (कप्प)।
वोहिअ पु [वोधिक] मनुष्य चुरानेवाला चोर (निचू १, चेइय ४४६)।
वोहित देखो वोह = वोधय्।
वोहिग देखो वोहिअ = वोधिक (राज)।
वोहित्थ पुन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र, नौका (दे ६, ६६, स २०६, चेइय २६४, कुप्र २२२, सिरि ३८३, सम्मत्त १५७, सुपा ६४, भवि)।
वोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित (वज्जा १५८)।
°व्भस देखो भस (सुपा ५०६)।
°व्भमर देखो भमर (नाट—मुद्रा ३६)।
°व्भास देखो अब्भास, 'किंतु अइदूहवा सा दिट्ठिब्भासेंवि कुणइ न हु कोइ' (सुपा ५६७)।
°व्भि वि [भित्] भेदन करनेवाला, नाश-कर्ता, 'सगडब्भि' (आचा १, ३, ४, १)।
व्रो (अप) देखो वू। व्रोहि (प्राकृ १२१)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि बआराइसद्दसकलणो
एगूणतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

भ

भ पुं [भ] १ प्रोष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रास; प्राप्र)। २ जिन-प्रसिद्ध [illegible] की [illegible], नक्षत्र (विंग)। ३ न. नक्षत्र (सुर १६, ४३)। °आर पुं [°कार] १ 'भ' अक्षर। २ [illegible] (विंग)। °गण पुं [°गण] भगण (विंग)।

भइ देखो भव = भू।

भइ स्त्री [भृति] वेतन, तनखा (गाथा १, ८—पत्र १५० [illegible] १, ४ [illegible])। देखो भुइ।

भइअ वि [भक्त] १ विभक्त (आचा १८५, [illegible] ८६)। २ [illegible] [illegible] पत्र' (पत्र २, १२, औप)। ३ विकल्पित ([illegible] ६)।

भइअ न [भक्त] [illegible] (पत्र १)।

भइअ
भइअव्व } देखो भय = भज्।

भइअ } वि [भृतिक] [illegible] नौकर,
भइग } [illegible] (पि २१)।

भइणि°
भइणिआ
भइणी } स्त्री [भगिनी] बहिन, [illegible] ([illegible] [illegible] १७, [illegible] १, ८, प्राप्र ७८, [illegible] [illegible])। °वइ पुं [°पति] [illegible] ([illegible] ७३२)। °सुअ पुं [°सुत] [illegible] [illegible] ([illegible])। देखो [illegible]।

भइर° वि [भैरव] १ भयंकर, भीषण, भय-[illegible] ([illegible], सुपा १८८)। २ [illegible] [illegible] [illegible]। ३ [illegible], [illegible]। ४ [illegible] [illegible]। ५ [illegible]। ६ [illegible] (हे १, १५१ प्राप्र)। [illegible] भैरव।

भइरवी स्त्री [भैरवी] [illegible], [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] ([illegible] ४१)।

[illegible] देखो [illegible] [illegible]।

भएन्त देखो भय = भज्।

भकार पुं [भङ्कार] भाकार, अव्यक्त आवाज विशेष (उप पृ ८६)।

भकारि वि [भङ्कारिन्] भकार करनेवाला (नत्र)।

भग पुं [भङ्ग] १ भंगना, खण्ड, खण्डन (श्रोघ ५८८, प्रासू १७०, जी १२, कुमा)। २ प्रकार, भेद, विकल्प (भग, कम्म ३, ५)। ३ विनाश (कुमा, प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष, [illegible]—' (रंभा)। ५ परा-जय। ६ पलायन (विग)। °रय न [°रत] मथुन-विशेष (वज्जा १०८)।

भग पुं [भृङ्ग] आर्य देश विशेष जिसकी राजधानी प्राचीन काल में पावापुरी थी (उत)।

भग (अप) देखो भग्ग = भग्न (पिंग)।

भगरय पुं [भृङ्गरज, भृङ्गारक] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भँगरा, भगरैया। २ न भँगरा का फूल (वज्जा १०८, सुपा ३२४)।

भगा स्त्री [भङ्गा] १ वनस्पति विशेष, पाट, जूट। '[illegible] वा [illegible] वा [illegible] धारित्तए वा परिहित्तए वा, त जहा—[illegible] पोत्तिए तिरीड-पट्टए णाम पंचमए' (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ [illegible], —[illegible]' (विक्र ८०)।

भगि स्त्री [भङ्गि] १ प्रकार, भेद (हे ४, ३३६, ४११)। २ व्याज, छल, बहाना। '[illegible]' (गा ६१३)। ३ विच्छित्ति, विन्यास (गउड)। ४ [illegible] विशेष, [illegible] भगी य' (पत्र २७७, विचार ८६)।

भगिअ न [भङ्गिक, भाङ्गिक] १ भंगा का, पाट का बना हुआ कपड़ा (ठा ३, ३, ५, ३—पत्र ३३८, कस)। २ [illegible] [illegible] भंगियगुणे [illegible] आलवा' (विच २८५)।

भगिल्ल वि [भङ्गवत्] प्रकारवाला, भेद-वाला, '[illegible]' (कम्म ३२)।

भंगी स्त्री [भङ्गी] देखो भगि (हे ४, ३३६, गा ६१३, विचार ४६)।

भगी स्त्री [भृङ्गी] वनस्पति-विशेष—१ भांग, विजया। २ अतिविषा, अतिस का गाछ (पएण १—पत्र ३६, पएण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [भङ्गुर] १ स्वयं भांगनेवाला, विनश्वर, विनाश-शील, 'तडिदडाडंबरभंगुराई ही विसयसोक्खाई' (उत ६ टी, पउम १, ४, सुर १०, १८ न ११४, धर्मसं ११७१, विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र, 'कुडिल वंकं भंगुरं' (पाअ)।

भङ्गा देखो भरया (राज)।

भंज सक [भञ्ज्] १ भांगना, तोड़ना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। भंजइ, भंजए (हे ४, १०६, पड्, पि ५०६)। भवि भंजिस्सइ (पि ५३२)। कर्म भज्जइ (भग, महा)। वकृ. भंजत (गा १६७, सुपा ५६०)। कवकृ. भज्जत, भज्जमाण (पि ६, ४८, सुर १०, २१७, त ६३)। संकृ भंजिअ, भंजिउ, भजिऊण, भंजिऊण, भंजिऊण (नाट, पि ५७६, महा, पि ५८५ महा), भंजिउ (अप) ([illegible])। हेकृ भंजित्तए (गाया १, ८), भंजणहिं (अप) (हे ४ ४४१ टि)।

भंजअ } वि [भञ्जक] भांगनेवाला, [illegible]
भंजग } करनेवाला (गा ५५२, [illegible] १, ४)। २ पुं वृक्ष, पेड़, 'भंजगा [illegible] नो चयति' (आचा)।

भंजण न [भञ्जन] १ भंग, खण्डन (पउम ३८, सुर १०, ६१)। २ विनाश (गा ३८६, [illegible] १, १)। ३ वि [illegible] वाला, [illegible], विनाशक, '[illegible]' (सिरि ५४६), '[illegible]' ([illegible])। स्त्री °णी (गा ७८५)।

भंजणा स्त्री [भञ्जना] ऊपर देखो, '[illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]' (सिरि १४६६, सिग्धु १)।

भंजाविअ } वि [भञ्जित] १ भँगाया हुआ, भंजिअ } तुड़वाया हुआ, (स ५४०)। २ भगाया हुआ (पिंग)। ३ आक्रान्त (तंदु ३८)।

भंजिअ देखो भग्ग = भग्न (कुमा ६, ७०, पिंग, भवि)।

भंड सक [भाण्डय्] भँडारा करना, संग्रह करना, इकट्ठा करना। भंडेइ (सुख २, ४५)।

भंड सक [भण्ड्] भांडना, भर्त्सना करना, गाली देना। भंडइ (मण)। वकृ. भंडत (गा ३७६)। सकृ भंडिउं (वव १)।

भंड पु [भण्ड] १ विट, भडुआ (पव ३८)। २ भाँड, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से हँसाने का काम करनेवाला, निर्लज्ज (आव ६)।

भंड न [दे] १ वृन्ताक बैंगन, भंटा (दे ६, १००)। २ पु. मागध, स्तुति-पाठक। ३ सखा, मित्र। ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र (दे ६, १०६)। ५ पुंन. मण्डन, आभूषण, गहना (दे ६, १०६, भग, औप)। ६ वि छिन्न, मूर्धा, सिर-कटा (दे ६, १०६)। ७ न. क्षुर, छुरा। ८ छुरे से मुण्डन (राज)।

भंड } पुन [भाण्ड] १ बरतन वासन, पात्र, भंडग } 'दुग्गइदुहभंडे घडउ अक्खडे' (सवेग १४, दे ३, २१, श्रा २७, सुपा १६६)। २ क्रयाणक, पण्य, वेचने की वस्तु (णाया १, १—पत्र ६०, औप, पण्ह १, १, उवा, कुमा)। ३ गृह, स्थान (जीव ३)। ४ वस्त्र-पात्र आदि घर का उपकरण (ठा ३, १, कप्प, ओघ ६६६, णाया १, ५)।

भंडण न [दे भण्डन] १ कलह, वाक्-कलह, गाली-प्रदान (दे ६, १०१, उव, महा, णाया १, १६—पत्र २१३, ओघ २१४, गा ६६६; उप ३३६, तदु ५०)। २ क्रोध, गुस्सा (सम ७१)।

भंडणा स्त्री [भण्डना] भांडना, गाली-प्रदान (उप ३३६)।

भंडय देखो भंड = मण्ड (हे ४, ४२२)।

भंडय देखो भंडग, 'पायसघयदहियाण भरिऊण भडए गरुए' (महा ८०, २४, उत्त २६, ८)।

भंडवेआलिअ वि [भाण्डवैचारिक] करियाना वेचनेवाला (अणु १४६)।

भंडा स्त्री [दे] सम्बोधन-सूचक शब्द (संक्षि ४७)।

भंडाआर } पुं [भाण्डागार] भंडार, कोठा भंडागार } या कोठार, वखार (मुद्रा १४१, स १७२, सुपा २२१, २६)।

भंडागारि } पुंस्त्री [भाण्डागारिन्, °क] भंडागारिअ } भंडारी, भंडार का अध्यक्ष (णाया १, ८, कुप्र १०८)। स्त्री. °रिणी (णाया १, ८)।

भंडार देखो भंडागार (महा)।

भंडार पु [भाण्डकार] वर्तन वनानेवाला शिल्पी (राज)।

भंडारि } देखो भंडागारि (स २०७, सुर भंडारिअ } ४, ६०)।

भंडिअ पु [भाण्डिक] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष (सुख २, ४५)।

भंडिआ स्त्री [भाण्डिका] स्थाली, थलिया (ठा ८—पत्र ४१७)।

भंडिआ } स्त्री [दे] १ गंत्री, गाडी (बृह ३, भंडी } दे ६, १०६, आवम, निचू ३, वव ६)। २ शिरीष वृक्ष। ३ अटवी, जंगल। ४ असती, कुलटा (दे ६, १०६)।

भंडीर पुं [भण्डीर] वृक्ष-विशेष, शिरीष वृक्ष (कुमा)। °वडिसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] मथुरा नगरी का एक उद्यान, 'महुराए णयरीए भंडि (? डीर)वडेंसए उज्जाणे' (राज, णाया २—पत्र २५३)। °वण न [°वन] १ मथुरा का एक वन (ती ७)। २ मथुरा का एक चैत्य (आवम)।

भंडु न [दे] मुण्डन (दे ६, १००)।

भंडुल्ल देखो भंड = भाण्ड (भवि)।

भंत वि [भ्रान्त] १ घुमा हुआ, 'भंतो जसो मेईणी (ए)' (पउम ३०, ९८)। २ भ्रान्ति-युक्त, भ्रमवाला, भूला हुआ (दे १, २१)। ३ अपेत, अनवस्थित (विसे ३४४८)। ४ पुं प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३)।

भंत वि [भगवत्] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली (ठा ३, १, भग, विसे ३४४८—३४५६)।

भंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक। २ सुख-कारक। ३ पूज्य (विसे ३४३६, कप्प, विपा १, १, कस, विसे ३४७४)।

भंत वि [भजत्] सेवा करता (विसे ३४४६)।

भंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकता, प्रकाशता (विसे ३४४७)।

भंत वि [भवान्त] भव का—संसार का अन्त करनेवाला, मुक्ति का कारण (विसे ३४४६)।

भंत वि [भयान्त] भय-नाशक (विसे ३४४६)।

भंति स्त्री [भ्रान्ति] भ्रम मिथ्या ज्ञान (धर्मसं ७२१, ७२३, सुपा ३१२, भवि)।

भंति (अप) स्त्री [भक्ति] भक्ति, प्रकार (पिंग)।

भंभल वि [दे] १ अप्रिय, अनिष्ट (दे ६, ११०)। २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, बेवकूफ (दे ६, ११०, सुर ८, १६३)।

भंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर के समकालीन और उनके परम भक्त एक मगधाधिपति, ये श्रेणिक और बिम्बसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे (णाया १, १३, औप)। देखो भिंभसार, भिंभिसार।

भंभा स्त्री [दे. भम्भा] १ वाद्य-विशेष, भेरी (दे ६ १००, णाया १, १७, विसे ७८ टी, सुर ३, ६६, सम्मत्त १०६, राय, भग ७, ६)। २ 'भॉं' 'भां' की आवाज (भग ७,६—पत्र ३०५)।

भंभी स्त्री [दे] १ असती, कुलटा (दे ६, ६६)। २ नीति-विशेष (राज)।

भंस अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ नष्ट होना। ३ स्खलित होना। भंसइ (हे ४, १७७)।

भंस पु [भ्रंश] १ स्खलना। २ विनाश (सुपा ११३, सुर ४, २३०), 'सपाडइ सपयाभंस' (कुप्र ४१)।

भंसग वि [भ्रंशक] विनाशक (वव १)।

भंसण न [भ्रंशन] ऊपर देखो, 'को णु उवाओ जिणधम्म-भंसणे होज्ज एईए' (सुपा ११३, सुर ४, १५)।

भंसणा स्त्री [भ्रंशना] ऊपर देखो (पण्ह २, ४ श्रावक ६५)।

भक्ख सक [भक्षय्] भक्षण करना, खाना। भक्खेइ (महा)। कर्म. भक्खिज्जइ (कुमा)। वकृ भक्खंत (स १०२)। हेकृ. भक्खिउं (महा)। कृ. भक्ख, भक्खेय, भक्खणिज्ज

([illegible] ८४ [illegible], सुपा २७०, [illegible] १, १०, [illegible] १८, ३४ [illegible] २३)।

भक्ख पुं [भक्ष] [illegible], भोग, '[illegible]' (सुपा २६१)।

भक्ख देखो भक्ख = भक्ष्।

भक्ख पुं [भक्ष्य] [illegible] मिठाई (सुपा २०८ टी)।

भक्खग वि [भक्षक] [illegible] (सुर २६)।

भक्खण न [भक्षण] १ [illegible] (पउम २८)। [illegible] (श्रा २८)।

भक्खणा स्त्री [भक्षणा] भक्षण, [illegible]।

भक्खर पुं [भास्कर] १ सूर्य, रवि ([illegible] ७८ [illegible] १०)। २ अग्नि, वह्नि। [illegible] (पंड)।

भक्खराभ न [भास्कराभ] १ गोत्र-विशेष, [illegible]। २ [illegible] (ठा ७—पत्र ३९०)।

भक्खाण न [भक्षण] [illegible] (उप [illegible])।

भक्खि वि [भक्षिन्] [illegible] (धर्म)।

भक्खिर वि [भक्षितृ] [illegible] (धर्म)।

[illegible] भक्ख = भक्ष्।

भग न [भग] १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] [illegible]

भगवई-सुत्त, पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (पव ४, १२४)। वन वि [°वत्] ऐश्वर्यादि-गुण-सम्पन्न। २ पुं परमेश्वर, परमात्मा (वसु विसे १०४८, प्रासा)।

भगंदर पुं [भगन्दर] रोग-विशेष—गुदा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा (णाया १, १३, विपा १, १)।

भगंदरि वि [भगन्दरिन्] भगन्दर रोगवाला (पण १६ सबोध ४३)।

भगंदरिअ वि [भगन्दरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

भगन्दल देखो भगंदर (राज)।

भगिणी देखो बहिणी (णाया १, ८, उप, सुपा २३६, महा)।

भगिरहि / भगीरहि पुं [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती का पुत्र पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७६, २१४)।

भग्ग वि [भग्न] १ खण्डित, भाँगा हुआ (सुर २, १०२, ५ ८६, उप)। २ पराजित। ३ पलायित, भागा हुआ, '[illegible] भग्गा पारसरं' (हे ८, ३७६, ३५८, महा, वव २)। °इ पुं [°जित्] गविय परिव्राजक-विशेष (धीत)।

भग्ग वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ६, ९९)।

भग्ग न [भाग्य] नसीब, दैव (सुर १३, १०४)।

भग्गव पुं [भार्गव] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह (पण्ण १७, १०८)। २ मुनि-विशेष (सुपा १८१)।

भग्गवेस न [भार्गवेश] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी, [illegible])।

[illegible] देखो भग्ग = भग्न (राज)।

भग्गु [illegible] [दे] [illegible] (दे)।

भग्गिअ वि [भग्गित] [illegible] (दे १, ८०, [illegible] ३, ८६)।

[illegible] भज्ज, भज्जेइ, [illegible]।

[illegible]

भज्ज देखो भज (आचा २, १, १, २)।

भज्ज देखो भग = भञ्ज्।

भज्जत देखो भंज।

भज्जण / भज्जणय न [भ्रज्जन] १ भुनन, भुनना (पएह १, १, अणु ५)। २ भुनने का पात्र (सूअनि ८१, विपा १, ३)।

भज्जमाण देखो भज।

भज्जा स्त्री [भार्या] पत्नी, स्त्री (कुमा, प्रासू ११६)।

भज्जि स्त्री [भर्जिका] देखो भज्जिआ।

भज्जिअ देखो भग्ग = भग्न, 'तरुलिवं वा दिपाडि घनिसातभज्जिय पेहाए' (आचा २, १, १ २)।

भज्जिअ वि [भृष्ट, भर्जित] भुना हुआ, पकाया हुआ (गा ५५७, आचा २, १, १, ३, विपा १, २, उप)।

भज्जिआ स्त्री [भर्जिता] १ भाजी, शाक [illegible] तरकारी (पव २५९)। २ पक्वान्न, मार्ग-भोजन ([illegible] गा० ३६१८)।

भज्जिम वि [भ्रजिम] भुनने योग्य (आचा २, ४, २, १५)।

भज्जिर वि [भञ्जितृ] भाँगनेवाला, '[illegible] भारभज्जिरमारायसंजुत्तो महागाहो' (सम्मत्त ५५, गउड)।

भज्जेंत देखो भञ्ज = भञ्ज्।

भट्ट पुं [भट्ट] १ मनुष्य-जाति विशेष, स्तुति पाठक की एक जाति, भाट, '[illegible] रसतुभट्ट' (सिरि १५५, सुपा ३६१, उप पृ १२०)। २ स्वामि-पतिगण, [illegible], विप्र (उप १०३१ टी)। ३ [illegible] मालिकपन, मालकियत (प्राकृ ७)।

भट्टारग / भट्टारय पुं [भट्टारक] १ पूज्य, पूजनीय (कप्प ३ गणि)। २ [illegible] भाषा में गया (प्राकृ १५)।

भट्टि [illegible] भट्ट = भृष्ट (ठा ३, १ [illegible] [illegible] २२८, [illegible] २, [illegible] १५)।

भट्टिअ पुं [°] [illegible] (५ [illegible] १३८ [illegible] १००)।

भट्टिया स्त्री [भर्त्री] स्वामिनी, [illegible] (स १२८)।

भट्टिणी स्त्री [भट्टिनी] [illegible] (प्राकृ ७)।

भट्टु (शौ) देखो भट्टारअ (प्राकृ ९५)।

भट्ठ वि [भ्रष्ट] १ नीचे गिरा हुआ। २ च्युत, स्खलित (महा, द्र ४३)। ३ नष्ट (सुर ४, २१५, गाया १, ९)।

भट्ठ पुन [भ्राष्ट्र] भर्जन-पात्र, भुनने का वर्तन (दे ५, २०), 'भट्ठट्ठियचणगो विव सयणीए कीस तडफडसि' (सुर ३, १४८)।

भट्ठि } स्त्री [दे] धूलि-रहित मार्ग (ओघ २३, २४ टी, भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।
भट्ठी }

भड पु [भट] १ योद्धा, लडाका (कुमा)। शूर, वीर (से ३, ९, गाया १, १)। ३ म्लेच्छों की एक जाति। ४ वर्ण-संकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति। ५ राक्षस (हे १, १९५)। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष (ठा ४, ४)।

भडक्क पुंस्त्री [दे] आडम्बर, तडक-भटक, टीम-टाम, ठाठमाठ (नट्टि ४४ टी)। स्त्री. °क्का (उव)।

भडग पु [भटक] १ अनार्य देश विशेष। २ उस देश में रहनेवाली एक म्लेच्छ-जाति (पगह १, १—पत्र १४, इक)। देखो भड।

भडारय (अप) देखो भट्टारअ (भवि)।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि, कबाब (स २६२, कुप्र ४३२)।

भडिल वि [दे] संबोधन-सूचक शब्द (संक्षि ४७)।

भण सक [भण] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना। भणइ, भणेइ (हे ४, २३९, कुमा)। कर्म. भण्णइ, भण्णए, भणिज्जइ (पि ५४८, षड्, पिंग)। भूका. भणीअ (कुमा)। भवि. भणिहिं, भणिस्सं (कुमा)। वकृ. भणंत, भणमाण, भणेमाण (कुमा, महा, सुर १०, ११४)। कवकृ. भण्णंत, भणिज्जंत, भणिज्जमाण, भणीअंत, भण्णमाण (कुमा, पि ५४८, गा १४५)। संकृ. भणिअ, भणिउ, भणिऊण (कुमा, पि ३४९)। हेकृ भणिउं°, भणिउं (पउम ९४, १३, पि ५७६)। कृ. भणिअव्व, भणेयव्व (अजि ३८, सुपा ६०८)। कवकृ. भन्नंत, भन्नमाण (सुर २, १९१, उप पृ २३, उप १०३१ टी)।

भणग वि [भण, °क] प्रतिपादन करनेवाला (गदि)।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति (उप ५५३, सुपा २८३, सबोध ३)।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ (सुपा ३५८)।

भणिअ वि [भणित] कथित (भग)।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन (सुर ६, १४५, सुपा २०४, धर्मवि ५८)।

भणिर वि [भणितृ] कहनेवाला, वक्ता (गा २६७, कुमा, सुर ११, २४४, श्रा १६)। स्त्री. °री (कुमा)।

भणेमाण देखो भण।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। भण्णइ (धात्वा १४७)।

भण्णमाण देखो भण = भण्।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन। २ अन्न, नाज (विपा १, १, ठा २, ४, महा)। ३ ओदन, भात (प्रामा)। ४ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्, 'सा सुलसा बालप्पभिति चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था' (अंत ७, उप पृ ६६, महा, पिंग)। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्त्ता (ठा ४, ४)। °च्छंद, °छंद पु [°च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अरुचि, 'कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छंदो अक्खिदुक्खं' (महा, महा—टि)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] आहार-त्याग रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार (ठा २, ४—पत्र ९४, औप ३०, २)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ (भत्त १६६, १०, पव १५७)। २ ग्रंथ-विशेष (भत्त १)। °पाणय न [°पानक] आहार-पानी, खान पान (विपा १, १)। °वेला स्त्री [°वेला] भोजन-समय (विपा १, १)।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात (हे ४, ६०)।

भत्ति देखो भत्तु (पिंग)।

भत्ति स्त्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर (गाया १, ८—पत्र १२२, उव, औप, प्रासू २९)। २ रचना (विसे १६३१, औप; सुपा ५२)। ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष (श्राव २)। ४ कल्पना, उपचार (धर्मसं ७४२)। ५ प्रकार, भेद (ठा ९)। ६ विच्छित्ति-विशेष (औप)। ७ अनुराग (धर्म ३)। ८ विभाग। ९ अवयव। १० श्रद्धा (हे २, १५९)। °मंत, °वंत वि [°मत्] भक्तिवाला, भक्त (पउम ६२, २८, उव, सुपा १६०, हे २, १५९, भवि)।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र (सिरि ७१६, धर्मवि १२७)।

भत्ती नीचे देखो।

भत्तु पु [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार (गाया १, १६—पत्र २०७), 'णववहू उवरतभत्तुया' (गाया १, ९, पाअ, स्वप्न ५६)। २ अधिपति, अध्यक्ष। ३ राजा, नरेश। ४ वि. पोषक, पोषण करनेवाला। ५ धारण करनेवाला (हे ३, ४४, ४५)। स्त्री—भत्ती (पिंग)।

भत्तोस न [भक्तोष] १ भुना हुआ अन्न (पचा ५, २९, प्रभा १५)। २ सुखादिका, खाद्य-विशेष (पव ३८)।

भत्थ पुस्त्री [दे] भाथा, तूणीर, तरकस, 'अह आरोवियचावो पिट्ठे दढबन्धभत्थओ अभओ' (धर्मवि १४६)।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमडे की धौंकनी, भाथी (उप ३२० टी, धर्मवि १३०)।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत (सम्मत्त १८९)।

भत्थी स्त्री [भस्त्री] भाथी, चमडे की धौंकनी, 'भत्थि व्व अनिलपुन्ना वियसियमुदर' (कुप्र २९६)।

भद सक [भद्] १ सुख करना। २ कल्याण करना (विसे ३४३९)। वकृ. भदंत, नीचे देखो।

भदंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक। २ सुख कारक। ३ पूज्य, पूजनीय (विसे ३४३९, ३४७४)।

भद्द न [दे] आमलक, आँवला-फल-विशेष (दे ६, १००)।

भद्द } न [भद्र] १ मंगल, कल्याण, 'भद्दं मिच्छादंसणसमूहमइअस्स अमयसारस्स जिणवयणस्स भगवओ' (सम्मत्त
भद्दअ }

[illegible]

मग्गर [illegible] [illegible] ... (... ८२ ... ३, १२८)।

भद्दमिगी स्त्री [दे] [illegible], चन्दा (दे ६, १०२)।

[illegible] [illegible] १ [illegible] की एक पत्नी (... ३८, ६)। २ प्रथम बलदेव की माता (... १५२)। ३ [illegible] की पत्नी (... १५२)। ४ [illegible] (... १५२)। ५ [illegible] पर्वत पर [illegible] (ठा ८)। ६ [illegible] (ठा २, ३—पत्र ६०)। ७ [illegible] की एक पत्नी (... ८)। ८ [illegible]—[illegible], स्वामी और [illegible] (... ४८)। ९ [illegible] (...)। १० [illegible] की [illegible]। ११ [illegible] का नाम (...)। १२ [illegible] का नाम (... १, ८)। १३ [illegible] का नाम (... १४)। १४ [illegible] (... २, ...)। १५ [illegible] (पाउ १)। १६ [illegible] का नाम (... १, ८, १६ ...)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ६, १०२)।

[illegible]

भमय देखो भरम = भ्रमर (हे २,४१ कुमा)।

भम सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। भमइ (हे ४, १६१ प्राप्र ६६)। वकृ. भमन्त, भममाण (गा २०२, ३८७, [illegible])। संकृ. भमिआ, भमिऊण (... गा ७४६)। हेकृ भमिअव्व (सुपा ४३८)।

भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण (कुप्र ४)। २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान (... ३, ४८, कुमा)।

भमग न [भ्रमक] लगातार [illegible] का उपवास (संबोध ४८)।

भमड देखो भम = [illegible] '[illegible] भमडइ [illegible]' (सिरि १०८, हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त (कुमा)। देखो भमिअ।

भमण न [भ्रमण] घूमना, पर्यटन। (दे ४६ [illegible])।

भमणुह पुं [दे] [illegible] (दे, १०१)।

भमया स्त्री [भ्रू] भौंह, नेत्र के ऊपर की केश-पंक्ति (हे २, १६७, कुमा)।

भमर पुं [भ्रमर] १ मधुकर, भौंरा (हे १, २४४, कुमा, औ १८, प्रासू ११३)। २ पुं. [illegible] (सिरि)। ३ [illegible] (...)। °रुअ पुं [°रुत] [illegible] (पव २०४)। °[illegible] स्त्री [°[illegible]] १ [illegible] (सिरि)। २ [illegible] (सण)।

भमरटेंटा स्त्री [दे] १ [illegible] की तरह [illegible]। २ [illegible] की तरह [illegible] (...)।

भमरिआ स्त्री [भ्रमरिका] [illegible] (... १०)। देखो भमरिया।

भमरी स्त्री [भ्रमरी] १ [illegible]।

[illegible]

भमलिया, °ली स्त्री [भ्रमलिका, °ली] १ [illegible] ... २ [illegible] (...)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ६, १०२)।

भमाइअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (से ३, ६१)।

भमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। भमाडेइ (हे ४, ३०), भमाडेसु (सुपा ११४)। वक्र भमाडेत (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो भम = भ्रम्। भमाडइ (हे ४, १६१, भवि)।

भमाड पु [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर (ओघभा २६ टी, ८३ टी)।

भमाडण न [भ्रमण] घुमाना (उप पृ २७८)।

भमाडिअ देखो भमडिअ (कुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (पउम १६, २५)।

भमाव देखो भमाड = भ्रमय्। भमावइ, भमावेइ (पि ५५३, हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस (दे ६, १०१, पाअ)।

भमि स्त्री [भ्रमि] १ आवर्त्त, पानी का चक्राकार भ्रमण (अच्चु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्कर, 'भमिपरिभमियसरीरो' (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ (जी ४८, भवि)। ३ न. भ्रमण, 'भमिअभमणिवंतदेहलीदेस' (गा ५२५)।

भमिअ देखो भमाइअ (पाअ)।

भमिअव्व } भमिआ } देखो भम = भ्रम्।

भमिर वि [भ्रमितृ] भ्रमण करनेवाला (हे २, १४५, सुर १, ५५, ३, १८)।

भमुह न [भ्रू] नीचे देखो, 'दीहाइं भमुहाइ' (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी (पउम ३७, ५०, औप, आचा, पाअ)।

भम्म } भम्मड } देखो भम = भ्रम। भम्मइ (प्राकृ ६६), भम्मसु (गा ४१५, ४४७)। भम्मडइ (हे ४, १६१)। भम्मडेइ (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो भमर (पिंग)।

भय देखो भद। वक्र देखो भयंत = भदंत।

भय अक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भअइ (सम्म १२४, कुमा), भए, भएज्जा (बृह १), भयति (विसे १६६०), 'तम्हा भय जीव वेरग्ग' (श्रु ६१)। वक्र. भयत, भयमाग (विसे ३४४६, सूअ १, २, २, १७)। कवकृ. 'सव्वत्तुभदमाणसुहेहिं' (कप्प)। संकृ. भइत्ता (ठा ६)। कृ भइअ, भइअव्व, भएयव्व, भज्ज, भयणिज्ज (विसे ६१८, २०४६, उत्त ३६, २३, २४, २५, कम्म ५, ११, विसे ६१५, उप ६०४, विसे ३२०२, ७४८, १८१, जीवस १४५, पंच ५, ८, विसे ६१६, जीवस १४७)।

भय न [भय] डर, त्रास, भीति (आचा, णाया १, १, गा १०२, कुमा, प्रासू १६, १७३)। °अर वि [°कर] भय-जनक (से ५, ४४, ११, ७५)। °जणणी स्त्री [°जननी] १ त्रास उत्पन्न करनेवाली (बृह १)। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। °वाह पुं [°वाह] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

भय देखो भव (उव, कुमा, सण, सुपा ४२०, गउड)।

भय देखो भग (औप, पिंग)।

भयंकर वि [भयङ्कर] १ भय-जनक, भीषण (हे ४, ३३१, सण, भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा (पण्ह १, १)।

भयत देखो भय = भज्।

भयत देखो भत = भगवत् (सूअ १, १६, ६)।

भयंत देखो भदंत (ओघ ४८, उत्त २०, ११, औप)।

भयत देखो भत = भयान्त (विसे ३४४६, ३४५३, ३३५४)।

भयंत देखो भत = भवान्त (विसे ३४५४, औप)।

भयंत वि [भयत्र] भय से रक्षा करनेवाला (औप, सूअ १, १६, ६)।

भयतु वि [भयत्रातृ] भय से रक्षा करनेवाला 'धम्ममाइक्खणे भयंतारो' (सूअ १, ४, १, २५)।

भयतु वि [भक्तृ] सेवक, सेवा करनेवाला (औप)।

भयक } भयग } पु [भृतक] १ नौकर, कर्मकर (ठा ४, १, २)। २ वि पोषित (पण्ह १, २, णाया १, २)।

भयण न [भजन] १ सेवा (राज)। २ विभाग (सम्म ११३)। ३ पुं लोभ (सूअ १, ६, ११)।

भयण देखो भवण (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [भजना] १ सेवा (निचू १)। २ विकल्प (भग, सम्म १२४, द ३१, उव)।

भयप्पइ } भयप्फइ } देखो बहस्सइ (हे २, १३७, पड्)।

भयवग्गाम पु [दे] मोढेरक, गुजरात का एक गाँव (दे ६, १०२)।

भयाणअ वि [भयानक] भयकर, भय-जनक (स १२१)।

भयालि पु [भयालि] भारतवर्ष के भावी अठारहवे जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। देखो सयालि।

भयालु वि [भीरु] भीरु, डरपोक (दे ६, १०७, नाट)।

भयावण (अप) देखो भयाणय (भवि)।

भयावह वि [भयावह] भय-जनक, भय-कारक (सूअ १, १३, २१)।

भर सक [भृ] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ (भवि, पिंग), भरसु (कम्म ४, ७६)। वक्र. भरंत (भवि)। कवकृ भरत, भरेत, भरिज्जत (से १, ५८, ४, ८, १, ३७)। संकृ भरेऊण (आक ६)। कृ भरणिज्ज, भरणीअ, भत्तव्व, भरेअव्व (प्राप्र, नाट राज, से ६, ३)।

भर सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। भरइ (हे ४, ७४, प्राप्र)। वक्र भरत (गा ३८१, भवि)। संकृ भरिअ, भरिऊणं (कुमा)। प्रयो, वक्र. भरावंत (कुमा)।

भर पुंन [भर] १ समूह प्रकर, निकर, जइअव्व तह एगागिणावि भीमारिदुट्ठभर'

[illegible]

चक्रवर्ती। ३ भरत चक्रवर्ती (भट)। °हिवइ पु [°धिपति] वही अर्थ (भट)।

भरहेसर पु [भरतेश्वर] १ ऋषभदेव भगवान् का पुत्र, चक्रवर्ती। २ चक्रवर्ती भरत (कुमा २, ७७, पडि)।

भरिअ वि [भृत, भरित] भरा हुआ, पूर्ण, व्याप्त (विपा १ २ ; गउड ; पाअ १४४ ; सण १३४, भिम ७३२ ; प्रासू १०)।

भरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ 'भरियं नत्थि गण्णियं' (पाअ ; कुमा ; भवि)।

भरिउल्लुट्ट वि [दे. भृतोल्लुठित] भर भर खाली किया हुआ (दे ७, ८१, पाअ)।

भरिम वि [भरिम] भर भर बनाया हुआ (ठाणा)।

भरिया (अप) देखो भरिआ (कुमा)।

भरिली स्त्री [भरिली] चतुरिन्द्रिय जन्तु विशेष (राज)।

भरु पुं [भरु] १ एक अनार्य देश। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (इक)।

भरुअच्छ न [भृगुकच्छ] गुजरात का एक प्रसिद्ध नगर जो आजकल 'भरौंच' के नाम से प्रसिद्ध है (गाया ; पुत्र १०८९८, पडि)।

भरोच्छेच्च न [दे] [illegible] का पत्र (दे ६, १०७)।

भल वि [भर — भृ]। भाट (दे ६, ९४)। [illegible] भल [illegible] (कुमा)।

[illegible]

भल्ल [illegible] [दे] [illegible] (दे ६, १०७)।

[illegible]

भल्ल } वि [भद्र] अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ,
भल्लय } सज्जन (कुमा, हे ४, ३५१, भवि)। °त्तण, °प्पण न [°त्व] भलमनसी, भलाई (कुमा)।

भल्लर [भद्रक] देखो भल्ल = भद्र (उप पृ ३० ; उप्पा पाअ)।

भल्लाअय } पु [भल्लात, °क] १ वृक्ष-
भल्लातक } विशेष, भिलावा का पेड़ (पण्ण
भल्लाय } १, दे १, २३)। २ न भिलावा का फल (दे १, २३, ४, २८, पाअ)।

भल्लि स्त्री [भल्लि] देखो भल्ली (कुमा)।

भल्लिम पुंस्त्री [भद्रत्व] भलाई, भद्रता (सुपा १२३, सुर १०८)।

भल्ली स्त्री [भल्ली] भाला, बरछी, शस्त्र-विशेष (सुर २, २८, कुप्र २७४, सुपा ५३०)।

भल्लु पुंस्त्री [दे] भालू, रीछ (दे ६, ९९)।

भल्लुंकी स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १०१, षड्), 'भल्लुंकी रुंटिया सिट्टू सिं' (सुपा ६६)।

भल्लेहुडुंग [दे] बाण का पुंख, शर का पश्च भाग, गुजराती में 'भाथाडु', 'भल्लादण्डि-सरपुच्छेंटुग्गमाओग' (सर २, ७)।

भव सक [भू] १ होना। २ सत्ता प्राप्त करना। भवइ, भवए (कप्प, प्रासू), भए (ठा ३, १)। भूत भविंसु (ठा)। भवि, भविस्सइ, भविस्सइ (कप्प, पाअ, पि ५२१)। [illegible] (पउम ५०८), 'भवसा [illegible] (पि ५२१)'। [illegible] भविअ, भाविआ, भविआण, (पि। ५७ [illegible] पि ५८३), भइ (भ), [illegible] भविस्सण (गुपा १, १ [illegible] ४, २०७ [illegible] १६४)। देखो भव।

[illegible]

वि [°जिन] रागादि को जीतनेवाला, 'सासए जिणाए भवजिणाए' (सम्म १)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि मे उत्पत्ति की काल-मर्यादा (ठा २, ३)। २ संसार मे अवस्थान (पचा १)। °त्थ वि [°स्थ] संसार मे स्थित (ठा २, १)। °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] जीवन्मुक्त (सम्म ८६)। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त संसार मे धारण करने योग्य शरीर (भग, इक)। °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] १ नरकादि योनि-हेतुक। २ न. अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, १, सम १४५)। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि (गउड)। °सिद्धिय, °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म मे या बाद के किसी जन्म मे मुक्त होनेवाला, मुक्ति-गामी (सम २; पएण १८, भग, विसे १२३०, जीवस ७५, श्रावक ७३, ठा १, विसे १२२६)। °ाभिणंदि, °ाभिनंदि, °ाहिनंदि वि [°ाभिनन्दिन्] संसार को पसंद करनेवाला, संसार को अच्छा माननेवाला (राज, सबोध ८, ५३)। °ोवग्गाहि न [°ोपग्राहिन्] कर्म विशेष (धर्मस १२६१)।

भव देखो भव्व (कम्म ४, ६)।

भव } पुं [भवत्] तुम, आप (कुमा,
भवंत } हे २, १७४)।

भवंत देखो भव = भू।

भवँ (अप) भम = भ्रम्। भवँइ (सण)। वकृ. भवँत (भवि)। सकृ. भवँत्तु (सण)।

भवँण (अप) देखो भमण (भवि)।

भवण न [भवन] १ उत्पत्ति, जन्म (धर्मसं १७२)। २ गृह, मकान, वसति (पाअ, कुमा)। ३ असुरकुमार आदि देवो का विमान (पएण २)। ४ सत्ता (विसे ६६)। °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति (भग)। °वासि पु [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा १०, औप)। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी विशेष (पएण १७, महा ६८, १२)। °ाहिव पु [°ाधिप] एक देव-जाति (सुपा ६२०)।

भवमाण देखो भव = भू।

भवर देखो भमर (चड)।

भवाणी स्त्री [भवानी] शिव-पत्नी, पार्वती (पाअ, समु १५७)। °कंत पु [°कान्त] महादेव (पिंग)।

भवारिस वि [भवादृश] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य (हे १, १४२, चंड, सुपा २७८)।

भवि पुं [भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी (भवि)।

भविअ देखो भव = भू।

भविअ वि [भव्य] १ सुन्दर (कुमा)। २ श्रेष्ठ, उत्तम (सबोध १)। ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (पएण १, उव)। ४ भावी, होनेवाला (हे २, १०७, षड्)। देखो भव्व = भव्य।

भविअ वि [भविक] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी। २ संसारी, संसार मे रहनेवाला (सुर ४, ८०)।

°भविअ वि [°भविक] भव-सम्बन्धी (सण)।

भवित्ती स्त्री [भवित्री] होनेवाली (पिंग)।

भवियव्व देखो भव = भू।

भवियव्वया स्त्री [भवितव्यता] नियति, अवश्यभावी, होनी (महा)।

भविल वि [भविल] निष्ठुर (दश० अगस्त्य चू० पत्र० १६८, सून० ३२६)।

भविस (अप) देखो भवीस। °त्त, °यत्त पु [°दत्त] एक कथा-नायक (भवि)।

भविस्स पुं [भविष्य] १ भविष्य काल, आगामी समय (पउम ३५, ५६, पि ५६०)। २ वि. भविष्य काल मे होनेवाला, भावी (णाया १, १६—पत्र २१४, पउम ३५, ५६, सुर १, १३५, कप्पू)।

भवीस (अप) ऊपर देखो (भवि)।

भव्व वि [भव्य] १ सुन्दर, 'सव्व भव्व करिस्सामि' (सुपा ३३६)। २ उचित, योग्य (विसे २८, ४४)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम (वज्जा १८)। ४ होता, वर्तमान, 'एय भूय वा भव्व वा भविस्स वा' (णाया १, १६—पत्र २१४, कप्प, विसे १३४२)। ५ भावी, होनेवाला (विसे ५८, पंच २, ८)। ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (विसे १८२२, ३, ४, ५, द १)। °सिद्धीय देखो भव सिद्धीय, 'पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमा किचहिया भव्व-सिद्धीया' (पंच २, ७८)।

भव्व पु [दे] भागिनेय, भानजा (दे ६, १००)।

भस सक [भष्] भूँकना, श्वान का बोलना। भसइ (हे ४, १८६, षड्—पत्र २२२), भसंति (सिरि ६२२)।

भसग पु [भसक] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र (उव)।

भसण देखो भिसण। भसणेमि (पि ५५६)।

भसण न [भषण] १ कुत्ते का शब्द (श्रा २७)। २ पु श्वान, कुत्ता (पाअ, सिरि ६२२)।

भसणउ (अप) वि [भषितृ] भूँकनेवाला, 'सुणउ भसणउ' (हे ४, ४४३)।

भसम पु [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, 'भस-मग्गहपीडिय इमं तित्थं' (सट्ठि ४२ टी)। २ राख, भभूत, 'भसमुद्धूलियगत्तो' (महा, सम्मत ७६)। देखो भास = भस्मन्।

भसल देखो भमर (हे, १, २४४, २५४, कुमा, सुपा ४, (पिंग)।

भसुआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१, पाअ)।

भसुम देखो भसम (प्राकृ ३७)।

भसेल्ल पुन [दे] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग, 'सालिभसेल्लसरिसा से केसा' (उवा)।

भसोल न [दे भसोल] एक नाट्य-विधि (राज)।

भस्थ (मा) देखो भट्ट (षड्)।

भस्थालय (मा) देखो भट्टारय (षड्)।

भस्स देखो भंस = भ्रंश्। भस्सइ (प्राकृ ७६)। वकृ. भस्सत (काल)।

भस्स पु [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष। २ राख (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [भस्मित] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ (कुमा)।

भा अक [भा] चमकना, दीपना, प्रकाशना, 'भा भाजो वा दित्तीए' (विसे ३४४७)। भाइ (कप्पू), भासि (गउड)। वकृ देखो भंत = भात्।

भा स्त्री [भा] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा)। °मंडल पुं [°मण्डल] राजा जनक

[illegible]

आइअ वि [भीत] १ डरा हुआ। [illegible]

[illegible] [भागिनेय] [illegible]

[illegible]

आइरही [भागीरथी] [illegible]

[illegible]

(राज)। ६ भगवान (कुप्र १०, ३—पत्र १०४)। °धेज, °गेज्ज °हुअ देखो भाअ-हेज (पउम ६ ५७, २८ ८६ न १२, सुर १४, ६१ पाम)। देखो भाअ = भाग।

भागवय वि [भागवत] १ भगवान् से संबंध रखनेवाला। २ भगवान् का भक्त (धर्मसं ३१२)। ३ न [illegible] (सुरि)।

भागि वि [भागिन्] १ भजनेवाला, सेवा करनेवाला, भारत भागी (उत्त) 'जि तुम [illegible]' (उप ५४७)। २ भागीदार, साझीदार [illegible] (प्रासा)।

भागिणेज्ज } देखो भाइणेज्ज (महा० सुप्र भागिणेय } ३०१)।

भागीरही देखो भाईरही (पाम)।

भाज सक [भाज्] [illegible]। वकृ. भाजंत, भज (पिंग ३४८७)।

भाडपुर [दे] [illegible]

भाडय न [भाटक] [illegible], किराया (सुर ६, १५७)।

भाडिय वि [भाटित] [illegible]

भाडिया स्त्री [भाटिका, °टी] [illegible]

[illegible]

६८)। २ कहलाया हुआ, 'मयणसिरिनामाए रन्नो भज्जाए भाणिओ मत्ती' (सुपा ५८७)।

भाणु पुं [भानु] १ सूर्य, रवि (पउम ४६, ३६, पुप्फ १६४, सिरि ३२)। २ किरण (प्रामा)। ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा (सम १५१)। ४ स्त्री एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी (पउम १०२, १५६)। °कण्ण पुं [°कर्ण] रावण का एक अनुज (पउम ७, ६७)। °मई स्त्री [°मती] रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। °मालिणी [°मालिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °मित्त न [°मित्र] उज्जयिनी के राजा बलमित्र का छोटा भाई (काल, विचार ४६४)। °वेग पु [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा, सण)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा बलमित्र की बहिन (काल)।

भाम देखो भमाड = भ्रमय्। भामेइ (हे ४, ३०)। कवकृ. भामिज्जंत (गा ४५७)। कृ. भामेयव्व (ती ७)।

भामण न [भ्रामण] घुमाना, फिराना (सम्मत्त १७४)।

भामर न [भ्रामर] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का बनाया हुआ मधु (पव ४)। २ पुं. दोधक छन्द का एक भेद (पिंग)।

भामरी स्त्री [भ्रामरी] १ वीणा-विशेष (णाया १, १७—पत्र २२६)। २ प्रदक्षिणा (कप्पू, भवि)।

भामिअ वि [भ्रमित] १ घुमाया हुआ (से २, ३२)। २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ, 'धत्तूरभामिओ इव' (मन २७, धर्मवि २३)।

भामिणी स्त्री [भागिनी] भाग्यवाली (हे १, १९०, कुमा)।

भामिणी स्त्री [भामिनी] १ कोप-शीला स्त्री। २ स्त्री, महिला (श्रा १२, सुर १, ७६, सुपा ४७५, सम्मत्त १६३)।

भाय देखो भाउ (कुमा)।

भायंत देखो भा = भी।

भायण पुन [भाजन] १ पात्र। २ आधार। ३ योग्य, 'भायणा, भायणाइं' (हे १, ३३, २६७), 'ति चिय धन्ना ते पुन्नभायणा, ताण जीविय सहलं' (सुपा ५६७, कुमा)।

भायण न [भाजन] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

भायणग पु [भाजनाङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देनेवाला कल्पवृक्ष (पउम १०२, १२०)।

भायणिज्ज देखो भाइणिज्ज (धर्मवि १२, काल)।

भायमाण देखो भाअ = भायय्।

भायर देखो भाउ (कुमा)।

भायल पु [दे] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोड़ा (दे ६, १०४, पाअ)।

भार पु [भार] १ बोझा, गुरुत्व (कुमा)। २ भारवाली वस्तु, बोझवाली चीज (श्रा ४०)। ३ काम सपादन करने का अधिकार, 'भारक्खमेवि पुत्ते जो नियभार ठवित्तु नियपुत्ते, न य साहेइ सकज्जं' (प्रासू २७)। ४ परि-माण-विशेष, 'लाउअवीअं इक्कं नासइ भार गुडस्स जह सहसा' (प्रासू १५१)। ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का सग्रह (पण्ह १, ५)। °ग्गसो अ [°अशस्] भार भार के परिमाण से, 'दसद्धवन्नमल्लं कुम्भग्गसो य भारग्गसो य' (णाया १, ८—पत्र १२५)। °वह वि [°वह] बोझा ढोनेवाला (श्रा ४०)। °व्वह वि [°वह] वही अर्थ (पउम ६७, २६)।

भारई स्त्री [भारती] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन (पाअ)। देखो भारही।

भारदाय } न [भारद्वाज] १ गोत्र-विशेष,
भारद्दाय } जो गोतम गोत्र की एक शाखा है (कप्प, सुज्ज १०, १६)। २ पुं. भारद्वाज गोत्र मे उत्पन्न, 'जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा (? द्दाया), ते अंगिरसा' (ठा ७—पत्र ३६०)। पक्षि-विशेष (ओघभा ८४)। ४ मुनि-विशेष (पि २३६, २९८, ३६३)।

भारय देखो भार (सुपा १४, ३८५)।

भारह न [भारत] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र (उवा), 'जहा निसते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु' (दस ६, १, १४)। २ पाण्डव कौरवो का युद्ध, महाभारत (पउम १०५, १६)। ३ ग्रथ-विशेष, जिसमे पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि प्रणीत महाभारत (कुमा, उर ३, ८)। ४ भरत मुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र (अणु)। ५ वि. भारतवर्ष-सम्बन्धी, भारतवर्ष का (ठा २, ३—पत्र ६६), 'तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, त जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए' (सुज्ज १, ३)। °खेत्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष (ठा २, ३ टी—पत्र ७१)।

भारहिय वि [भारतीय] भारत-सम्बन्धी, 'जा भारहियकहा इव भीमज्जुणनउलसउणि-सोहिल्ला' (सुपा २६०)।

भारही स्त्री [भारती] १ सरस्वती देवी (पि २०७)। २ देखो भारई (स ३१९)।

भारिअ वि [भारिक] भारी, भारवाला, गुरु (दे ४, २, णाया १, ६ पत्र—११४)।

भारिअ वि [भारित] १ भारवाला, भारी (उप पृ १३४)। २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया (सुख २, २५)।

भारिआ देखो भज्जा (हे २, १०७, उवा, णाया २)।

भारिल्ल वि [भारवत्] भारी, बोझवाला (धर्मवि १३७)।

भारुड पुं [भारुण्ड] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष (कप्प, औप, महा, दे ६, १०८)।

भाल न [भाल] ललाट (पाअ, कुमा)।

भलुंकी [दे] देखो भल्लुकी (भत्त १६०)।

भाल्ल पुन [दे] मदन वेदना, काम-पीडा (सक्षि ४७)।

भाव सक [भावय्] १ वासित करना, गुणा-धान करना। २ चिन्तन करना। भावेइ (विवि ९८), भाविंति (पिंड १२६), 'भावेज्ज भावणं' (हि १९), भावेसु (महा)। कर्म. भाविज्जइ (प्रासू ३७)। वकृ. भावेंत, भावमाण, भावेमाण (सुर ८, १८५, सुपा २६५, उवा)। सकृ. भावेत्ता, भाविऊण (उवा, महा)। कृ भावणिज्ज, भावियव्व, भावेयव्व (कप्पू, काल, सुर १४, ८४)।

भाव अक [भास्] १ दिखाना, लगना, मालूम होना। २ पसन्द होना, उचित मालूम होना,

[illegible]

[°...] [illegible] (... ७२२)। °माहु [illegible] [illegible] (...)। °मित्त पुं [°मित्र] [illegible] 'पम्मदि [illegible]' (... २६)।

आव [आव] [illegible] (... १, १ ...)।

आवर वि [आवर] [illegible] (... ७०)। देखो आवर।

आवलणी [illegible] (... १ ...)।

आवस वि [आवस] [illegible] (... ३)। देखो आविअ।

आवल्ल पुं [आवल्ल] [illegible] (... २)।

आवस पुं [आवस] १ [illegible] (... ८)। २ [illegible] देखो (... २, ... ६)।

आवस्स [आवस्स] १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] (... ३७)।

आविद वि [आविद्ध] [illegible] (...)।

आविर वि [°] [illegible] (... १८२)।

आवि... [आवि...] [illegible] (... ११)।

आवि... वि [आवि...] [illegible] (... २, ... ७, ... २, ...)।

[illegible]

पाडुरिव मिनाइइ' (सुपा ६), 'एरवइ-रमि मविरमिचिरसिरुगिरिफुग्गिमिरपुरो' (सुपा ७५)।

आविद्ध वि [आविद्ध] [illegible], 'वीस मरणाइं मारिणो [illegible]' (हरीभ २४)।

आविस्स देखो आविस्स 'आविस्स[illegible] नावयालोपवरोह रिवन' (सुपा ८६)।

आवुर वि [°] [illegible], मिन (सदि ४७)।

आवुस } वि [आवुस] [illegible] के संमर्द की
आवुस } [illegible] हो [illegible] (पाअ ७७३, संवा ५४)।

आस सक [आस्] [illegible]। आसइ, आसति (सा ७१)। [illegible] (भग)। वकृ आसंत, आसमाण (पंचा, भग [illegible] १, १)। संकृ आसित्ता... (... ६०)। हेकृ आसित्ता (भग)। कृ आसिअव्व (भग, ...)।

आस सक [आस्] १ [illegible]। २ [illegible], मालूम होना। ३ [illegible]। आसइ (हे ४, २०३) [illegible], आसति, आसति (... २६, ... ११०, सुर ७, १६२)। कृ, आस... (... ५४)।

आस सक [आ+श्री] [illegible]। आसइ (... १४७)।

आस पुं [आस] १ [illegible] (... १, १, १२, १२)। २ [illegible], प्रकाश [illegible] (... ४६८, ...)।

आस पुं [अश्व] १ [illegible] (... ३ ... ४ ...)। °आस पुं [°आश] [illegible] (... ३, ...)।

आस [illegible] [illegible] (... १४५, ... १४, ... ११)।

आस° [illegible] (...)। °कुंड वि [°] [illegible] (... १२४)। °व वि [°क] [illegible] (... १ ११, १४)।

भासग वि [भाषक] बोलनेवाला, वक्ता, प्रतिपादक (विसे ४१०, पचा १८, ६, ठा २, २—पत्र ४९)।

भासण न [भासन] चमक, दीप्ति, प्रकाश, 'वरमल्लिभासणाए' (औप)।

भासण न [भाषण] कथन, प्रतिपादन (महा)।

भासणया } स्त्री [भाषणा] ऊपर देखो (उप भासणा } ५१९, विसे १४७, उव)।

भासय देखो भासग (विसे ३७४, पण्ण १८)।

भासय वि [भासक] प्रकाशक (विसे ११०४)।

भासल वि [दे] दीप्त, प्रज्वलित (दे ६, १०३)।

भासा स्त्री [भाषा] १ बोली, 'अट्ठारसदेसी-भासाविसारए' (औप १०६, कुमा)। २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन (पाअ)। °जड्ड वि [°जड] बोलने की शक्ति से रहित, मूक (श्राव ४)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलो को भाषा के रूप मे परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४)। °विजय पु [°विचय] १ भाषा का निर्णय। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४९१)। °विजय पुं [°विजय] दृष्टिवाद (ठा १०)। °समिअ वि [°समित] वाणी का सयम-वाला (भग)। °समिइ स्त्री [°समिति] वाणी का सयम (सम १०)। देखो भास°।

भासा स्त्री [भास] प्रकाश, आलोक, दीप्ति (पाअ)।

भासि वि [भाषिन्] भाषक, वक्ता (धर्मवि ५२, भवि)।

भासिअ वि [भाषित] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित (भग, आचा, सण, भवि)। २ न. भाषण, उक्ति (आवम)।

भासिअ वि [भाषिन्, °क] वक्ता, बोलने-वाला (भवि)।

भासिअ वि [दे] दत्त, अर्पित (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [भासित] प्रकाशवाला, प्रकाश-युक्त (निचू १३)।

भासिर वि [भाषितृ] वक्ता (सुपा ५३८, सण)।

भासिर वि [भास्वर] दीप्त, देदीप्यमान (कुमा)।

भासिल्ल वि [भाषावत्] भाषा-युक्त, वाणी-युक्त (उत्त २७, ११)।

भासीकय वि [भस्मीकृत] जलाकर राख किया हुआ (उप ९८६ टी)।

भासुंड अक [दे] बाहर निकलना। भासुडइ (दे ६, १०३ टी)।

भासुडि स्त्री [दे] नि सरण, निर्गमन (दे ६, १०३)।

भासुर वि [भासुर] १ भास्वर, दीप्तिमान्, चमकता (सुर ६, १८४, सुपा ३३, २७२, कुप्र ६०, धर्मसं १३२६ टी)। २ घोर, भीषण, भयकर, 'घोरा दारुणभासुरभइरव-लक्खणभीमभीसणया' (पाअ)। ३ एक देव-विमान (सम १२)। ४ छन्द-विशेष (अजि ३०)।

भासुरिअ वि [भासुरित] देदीप्यमान किया हुआ, 'भासुरभूसणभासुरिअगा' (अजि २३)।

भि देखो °िभ (आचा)।

भिअप्पइ
भिअप्फइ } देखो बहस्सइ (पि २१२, षड्)।
भिअस्सइ

भिइ देखो भइ = भृति (राज)।

भिउ पु [भृगु] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष। २ पर्वत-सानु। ३ शुक्र-ग्रह। ४ महादेव, शिव। ५ जमदग्नि। ६ ऊँचा प्रदेश। ७ भृगु का वंशज। ८ रेखा, राजि (हे १, १२८, षड्)। °कच्छ न [°कच्छ] नगर-विशेष, भडोच (राज)।

भिउड न [दे] अंग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?), 'मुत्तूण तुरगभिउडे खग्ग पिट्ठम्मि उत्तरीय च', 'तो तस्सेव य खग्ग भिउडाओ गिन्हिऊण चाणक्को' (धर्मवि ४१)।

भिउडि स्त्री [भृकुटि] १ भौं-भग, भौं का विकार (विपा १, ३, ४)। २ पु. भगवान् नमिनाथ का शासन-देव (सति ८)।

भिउडिय वि [भृकुटित] जिसने भौं चढाई हो वह (णाया १, ८)।

भिउडी देखो भिउडि (कुमा)।

भिउर वि [भिदुर] विनश्वर (आचा)।

भिउव्व पुं [भार्गव] भृगु मुनि का वशज, परिव्राजक-विशेष (औप)।

भिग वि [दे] कृष्ण, काला (दे ६, १०४)। २ नील, हरा। ३ स्वीकृत (षड्)।

भिग पुं [भृङ्ग] १ भ्रमर मधुकर (पउम ३३, १४८, पाअ)। २ पक्षि-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५२६)। ३ कीट-विशेष। ४ विदलित अगार, कोयला (णाया १, १—पत्र २०, औप)। कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ जार, उपपति। ८ भाँगरा का पेड। ९ पात्र-विशेष, झारी (हे १, १२८)। °णिभा स्त्री [°निभा] एक पुष्करिणी (इक)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] पुष्करिणी-विशेष (ज ४)।

भिगा स्त्री [भृङ्गा] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष (इक)।

भिगार
भिगारक } पुं [भृङ्गार, °क] १ भाजन-विशेष, झारी (पण्ह १, ४, औप)। २ पक्षि-विशेष, 'भिगा-
भिगारग

ररवंतभेरवरवे' (णाया १, १—पत्र ६५), 'भिंगारकदीणकंदियरवेसु' (णाया १, १—पत्र ६३, पण्ह १ १, औप)। ३ स्वर्ण-मय जल-पात्र (हे १, १२८, ज २)।

भिगारी स्त्री [दे. भृङ्गारी] १ कीट-विशेष, चिरी, झिल्ली (दे ६, १०५, पाअ, उत्त ३६, १४८)। २ मशक, डाँस (दे ६, १०५)।

भिजा स्त्री [दे] अभ्यग, मालिश (सूअ १, ४, २, ८)।

भिटिया स्त्री [दे वृन्ताकी] भटा का गाछ (उप १०३१ टी)।

भिडिमाल } पु [भिन्दिपाल] शस्त्र-विशेष भिडिवाल } (पण्ह १, १, औप, पउम ८, १२०, स ३८४, कुमा, हे २, ३८, प्राप्र)।

भिद सक [भिद्] १ भेदना, तोडना। २ विभाग करना। भिदइ, भिंदए (महा, षड्)। भवि भेच्छ, भिंदिस्सति (हे ३, १७१, कुमा, पि ५३२)। कर्म भिज्जइ (आचा, पि ५४६)। वकृ भिंदत, भिंदमाण (ग १३६, पि ५०६)। कवकृ भिज्जत, भिज्जमाण (से ५, ६५, ठा २, ३, श्रा ६, भग, उवा, णाया १, ९, विसे ३११)। सकृ. भित्तूण,

[illegible]

[illegible] [illegible] पुं [°भिर] [illegible]

[illegible]) वि [भिन्नार] [illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible] पुं [भिद्] [illegible]

[illegible] (धर्मसं १०८०)। [illegible] (उत्तनि ३१)। [illegible]

[illegible] [°प्रभा] [illegible] [°प्रतिमा] [illegible]

[illegible]

[illegible] [°भिद्] [illegible]

[illegible] (पिंग)।

[illegible]

[illegible]

भिडिअ देखो भिडिय (भग)।

भिउडी स्त्री [अभिभ्रुकुटि] भृकुटि, भौंह (वज्जा)।

भिडिय वि [अभिडित] लोहे का जिरह, सुन्दर (उत्त ६, ३—पत्र २४३)।

भिट्ट सक [दे] भेटना। कर्म 'बहुविहभिट्टणएहिं भिट्टिज्जइ मयणमाणीहिं' (सिरि ६०१)।

भिट्टण न [दे] भेंट, उपहार; गुजराती में 'भेटुं' (सिरि ७४६; ६०१)।

भिट्टा स्त्री [दे] ऊपर देखो (सिरि ६६२)।

भिड सक [दे] भिड़ना—१ मिलना, सटना, सट जाना। २ लड़ना, मुठभेड़ करना। भिडइ (भवि), भिडंति (सिरि ४५०)। वकृ भिडंत (उप १३० टी; भवि)।

भिडण न [दे] लड़ाई, मुठभेड़, 'भीमरिवुभडभिडणद्धवनरं' (सुपा ४६६)।

भिडिय वि [दे] भिड़ा, मुठभेड़ की हो वह, सटा हुआ (सुपा; भवि)।

भिणामि पुं [दे] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

भिण्ण देखो भिन्न (गउड; नाट—वेणी ३४)। °मरट्ठ (प्रा) पुं [°महाराष्ट्र] छन्द का एक भेद (पिंग)।

भित्त न्सी. भित्ति (नंदि ४)।

भित्तग) न [दे. भित्तक] १ टुकड़ा, खण्ड। २ आधा हिस्सा (आचा २, ७, २, ८; ६, ७)।
भित्तय }

भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा (दे ६, १०४)। २ भीतर, अन्दर (हे)।

भित्ति स्त्री [भित्ति] भींत (गउड; कुमा)। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

६)। भवि. भिंदिस्सति (आचा २, १, ६ ६, पि ५३२)।

भिन्न वि [भिन्न] १ विदारित, खण्डित (णाया १, ८, उव, भग, पाअ, महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित (ठा ४, ४, पण्ह २, १)। ३ अन्य विसदृश, विलक्षण (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित, 'जीवजढ भावओ भिन्नं' (बृह १, आव ४)। ५ ऊन, कम न्यून (भग)। °कहा स्त्री [°कथा] मैथुन-सबद्ध बात, रहस्यालाप (ओघ ६६)। °पडवाइय वि [°पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञावाला (पण्ह २, १—पत्र १००)। °मास पुं [°मास] पचीस दिन का महीना (जीत)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त्त] अन्तर्मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त (भग)।

भिप्फ पु [भीष्म] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवशीय क्षत्रिय, गागेय, भीष्म पितामह। २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस। ३ वि भय-जनक, भयंकर (हे २, ५४, प्राकृ ६५, कुमा)।

भिब्भल वि [विह्वल] व्याकुल (हे २, ५८, ६०, प्राकृ २४, कुमा, वज्जा १५६)।

भिब्भलण न [विह्वलन] व्याकुल बनाना (कुमा)।

भिब्भिस अक [भास् + यङ् = बाभास्य] अत्यन्त दीपना। वकृ भिब्भसमाण, भिब्भिसमीण (णाया १, १—पत्र ३८, राय पि ५५६)।

भिमोर पु [दे. हिमोर] हिम का मध्य भाग (?) (हे २, १७४)।

भियग देखो भयग (सण)।

भिलग पु [दे] अक्षण। देखो भिलिंज (सूत्र कृताग सूत्र २८५ चूर्णी)।

भिलुगा देखो भिलुगा (दस ६, ६२)।

भिलिंग सक [दे] अभ्यग करना, मालिश करना। भिलिंगेज्ज (आचा २, १३, २, ४, ५, निचू १७)। वकृ. भिलिंगंत (निचू १७)। प्रयो भिलिंगावेज्ज (निचू १७) वकृ भिलिंगावत (निचू १७)।

भिलिंग } पुं [दे] धान्य-विशेष, मसूर
भिलिंगु } (कप्प, पचा १०, ७३)।

भिलिंज पुं [दे] अभ्यग, आपाद-मस्तक-तैल-मर्दन (सूअ १, ४, २, ८ टी)।

भिलुग पु [दे. भिलुङ्ग] हिंसक पक्षी (राय १२४)।

भिलुगा स्त्री [दे] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट (आचा २, १, ५, ५)।

भिल्ल पुं [भिल्ल] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ एक अनार्य जाति (सुर २, ४, ६, ३४, महा)।

भिल्लमाल पुं [भिल्लमाल] स्वनाम ख्यात एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (विवे ११४)।

भिल्लायई स्त्री [भल्लातकी] भिलावाँ का पेड (उप १०३१ टी)।

भिल्लिअ वि [भिलित] खण्डित, तोडा हुआ, 'पचमहव्वयतुगो पायारो भिल्लिओ जेण' (उव)।

भिस देखो भास = भास्। भिसइ (हे ४, २०३, षड्)। वकृ. भिसंत, भिसमाण, भिसमीण (पउम ३, १२७, ७५, ३७, णाया १, १, औप, कुमा, णाया १, १, पि ५६२)।

भिस सक [प्लुष्] जलाना (प्राकृ ६५, धात्वा १४७)।

भिस सक [भायय्] डराना। भिसइ, भिसेइ (प्राकृ ६४)।

भिस न [भृश] १ अत्यन्त, अतिशय, अतिशयित, 'गलतभिमभिन्नदेहे य' (पिंड ५८३, उप ३२० टी, सत्त ६१, भवि)।

भिस देखो बिस (प्राकृ १५, पणण १, सूअ २, ३, १८)। °कंदय पु [°कन्दक] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु (पणण १७—पत्र ५३३)। °मुणाली स्त्री [मृणाली] कमलिनी (पणण १)।

भिसअ पु [भिषज्] १ वैद्य, चिकित्सक (हे १, १८, कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर (पव ८)।

भिसत देखो भिस = भास्।

भिसत न [दे] अनर्थ (दे ६, १०५)।

भिसग देखो भिसअ (णाया १, १—पत्र १५४)।

भिसण सक [दे] फेंकना, डालना। भिसणेमि (गा ३१२)।

भिसमाण देखो भिस = भास्।

भिसरा स्त्री [दे] मत्स्य पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

भिसाव सक [भायय्] डराना। भिसावेइ (प्राकृ ६४)।

भिसिआ } स्त्री [दे. बृषिका] आसन-विशेष,
भिसिगा } ऋषि का आसन (दे ६, १०५, भग, कुप्र ३७२, णाया १, ८, उप ६४८ टी, औप, सूअ २, २, ४८)।

भिसिण देखो भिसण भिसिणेमि (गा ३१२ अ)।

भिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी, पद्मिनी (हे १, २३८, कुमा, गा ३०८, काप्र ३१, महा, पाअ)।

भिसी स्त्री [बृषी] देखो भिसिआ (पाअ)।

भिसोल न [दे] नृत्य-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

भिह } अक [भी] डरना। भिहइ (षड्)।
भी } कृ भेअव्व (सुपा ५८४)।

भी स्त्री [भी] १ भय, 'नो दंडभी डंडं समारभेज्जासि' (आचा)। २ वि डरनेवाला, भीरु (आचा)।

भीअ वि [भीत] डरा हुआ (हे २, १९३, ४, ५३, पाअ, कुमा, उवा)। °भीय वि [°भीत] अत्यन्त डरा हुआ (सुर ३, १६५)।

भीइ स्त्री [भीति] डर, भय (सुर २, २३७, सिरि ८३६, प्रासू २४)।

भीइअ वि [भीत] डरा हुआ (उप ६४०)।

भीइर वि [भेतृ] डरनेवाला, 'ता मरणभीइरं विसज्जेह म, पव्वईस्सं' (वसु)।

भीड [दे] देखो भिड। संकृ भीडिवि (अप) (भवि)।

भीडिअ [दे] देखो भिडिय (सुपा २९२)।

भीतर [दे] देखो भित्तर (कुमा)।

भीम वि [भीम] १ भयकर, भीषण (पाअ, उव, पण्ह १, १, जी ४४, प्रासू १४४)। २ पु एक पाण्डव, भीमसेन (गा ४४३)। ३ राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव, 'अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे' (सम १५४)। ५ राक्षस-वश का एक राजा, एक लकापति

[illegible]

२ [illegible] [°परिसदं] [illegible]

[illegible] [°सुन] [illegible] [°सोभग] [illegible] [°रूवं] देखो [illegible] [°पर] [illegible]

[illegible] [सुगंध] [illegible] [°पुंडरी] [illegible]

[illegible] [सुगंधनर] [illegible] [°नागनाथ] [illegible]

[illegible]

[illegible] ३१)। २ एक देवजाति [illegible] देव [illegible]। ३ [illegible] देवों की एक जाति [illegible]। ४ [illegible] 'इम [illegible]' (सुज्ज [illegible])। ५ [illegible] (णाया १, १ टी—पत्र ४, [illegible])। °परिरिगिअ न [परिरिङ्गन] [illegible] (पवि १६)। °वद स्त्री [°वता] एक [illegible], [illegible] नामक [illegible] की एक पट्टरानी (ठा ४, १, णाया २)। °वर पु [°वर] [illegible] (णाया)।

सुअग वि [भोजक] [illegible] (णाया १, १ टी—पत्र [illegible])।

सुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, [illegible] नामक इन्द्र की एक पट्टरानी (ठा ४ १, णाया २ [illegible])।

सुअगीसर देखो सुअगेसर (पउ २०)।

सुअग देखो सुयग ([illegible] १२२, [illegible])।

सुअप्पइ
सुअप्पइ } देखा सुअप्पइ (हे २१२, [illegible])।
सुअप्पइ

सुआ देखो सुअ [illegible]।

[illegible] [भूमि] १ [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible]। ४ [illegible]।

सुअंड देखो [illegible] (हे २२८)।

[illegible]

उत्त ६, ३, पि ५०७, हे २, १५, कुमा, प्राकृ ३४)। हेकृ. भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तए (पि ५७८, हे ४, २१२, आचा), भुजण (अप) (कुमा)। कृ भुज्ज, भुजियव्व, भुजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज्ज, भोग्ग (तदु ३३, धर्मवि ४१, उप १३६ टी, श्रा १६, सुपा ४६५, पिंडभा ४५, सम्मत्त २१६, णाया १, १, पउम ६४, ६४, हे ४, २१२, सुपा ४६५, पउम ६८, २२, दे ७, २१, ओघ २१४, उप पृ ७५, सुपा १६३, भवि)।

भुंजग वि [भोजक] भोजन करनेवाला (पिंड १२३)।

भुजण देखो भुंज = भुज्।

भुजण न [भोजन] भोजन (पिंड ४२१)।

भुजणा स्त्री ऊपर देखो (पव १०१)।

भुजय देखो भु जग (नाण)।

भुंजाव नक [भोजय] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुजावेइ (महा)। कवकृ भुंजाविज्जंत (पउम २, ५)। संकृ. भुंजाविऊण, भुंजावित्ता (पि ५८२)। हेकृ. भुंजावेउं (पंचा १०, ४८ टी)।

भुंजावय वि [भोजक] भोजन करानेवाला (न २५१)।

भुंजाविअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (धर्मवि ३८, कुप्र १६८)।

भुंजिअ देखो भुंज = भुज्।

भुंजिअ देखो भुत्त (भवि)।

भुंजिर वि [भोक्तृ] भोजन करनेवाला (सुपा ११)।

भुंड पुस्त्री [दे] सूकर, वराह, गुजराती मे 'भूंड' (दे ६, १०६)। स्त्री °डी, °डिणी (दे ६, १०६ टी, भवि)।

भुंडीर [दे] ऊपर देखो (दे ६, १०६)।

भुंभल न [दे] मद्य-पात्र (कम्म १, ५२)।

भुंहडि (अप) देखो भूमि (हे ४, ३९५)।

भुक्क अक [बुक्क्] भूँकना, श्वान का बोलना। भुक्कइ (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पु [दे] १ श्वान, कुत्ता। २ मद्य आदि का मान (दे ६, ११०)।

भुक्किअ न [बुक्कित] श्वान का शब्द (पाअ, पि २०६)।

भुक्किर वि [बुक्कितृ] भूँकनेवाला (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [दे. बुभुक्षा] भूख, क्षुधा (दे ६, १०६, णाया १, १—पत्र २८, महा, उप ३७६, आरा ६६, सम्मत्त १५७)। °लु वि [°वत्] भूखा (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [दे बुभुक्षित] भूखा, क्षुधातुर (पाअ, कुप्र १२६, सुपा ५०१, उप ७२८ टी, स ५८३, वै २६)।

भुगुभुग अक [भुगभुगाय्] 'भुग' 'भुग' आवाज करना। वकृ भुगुभुगेंत (पउम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [भुग्न] १ मोड़ा हुआ, वक्र, कुटिल (णाया १, ८—पत्र १३३, उवा)। वि. भग्न, टूटा हुआ (णाया १, ८)। ३ दग्ध, जला हुआ, 'किं मज्झ जीविएणं एवविहपराभवग्गिभुग्गाए' (उप ७६८ टी)। ४ भूना हुआ, 'चणउव्व भुग्गु' (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो भुंज। भुजइ (सण)।

भुजग देखो भुअग (भवि)।

भुजग देखो भुअग = भुजग (धर्मवि १२४)।

भुज्ज देखो भुंज भुज्जइ (षड्)।

भुज्ज पु [भूर्ज] १ वृक्ष-विशेष। २ न. वृक्ष-विशेष की छाल (कप्पू, उप पृ १२७, सुपा २७०)। °पत्त, °वत्त न [°पत्र] वही अर्थ (आवम, नाट विक्र ३३)।

भुज्ज देखो भुंज।

भुज्ज वि [भूयस्] प्रभूत, अनल्प (औप, पि ४१४)।

भुज्जिय वि [दे भुग्न] १ भूना हुआ धान्य। २ पु धाना, भूना हुआ यव (पण्ह २ ५—पत्र १४८)।

भुज्जो अक [भूयस्] फिर, पुन (उवा, सुपा २७२)।

भुण्ण पु [भ्रूण] १ स्त्री का गर्भ। २ बालक, शिशु (सक्षि १७)।

भुत्त वि [भुक्त] १ भक्षित (णाया १, १, उवा, प्रासू ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह, 'ते भायरो न भुत्ता' (सुख १, १५, कुप्र १२)। ३ सेवित। ४ अनुभूत, 'अम्म ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा' (उत्त १६, ११, णाया १, १)। ५ न भक्षण, भोजन, 'हासभुत्तासियाणि य' (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष (ठा ६)। °भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगो का सेवन किया हो वह (णाया १, १)।

भुत्तवत वि [भुक्तवत्] जिसने भोजन किया हो वह (पि ३९७)।

भुत्तव्व देखो भुंज।

भुत्ति स्त्री [भुक्ति] १ भोजन (अच्चु १७, अज्झ ८२)। २ भोग (सुपा १०८)। ३ आजीविका के लिए दिया जाता गाँव, क्षेत्र आदि गिरास, 'उज्जेणी नाम पुरी दिन्ना तस्स य कुमारभुत्तीए' (उप २११ टी, कुप्र १६६)। °वाल पु [°पाल] गिरासदार (धर्मवि १५४)।

भुत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला (श्रा ६, सबोध ३५)।

भुत्तूण पु [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, १०६)।

भुरथल्ल पुं [दे] बिल्ली को फेंका जाता भोजन (कप्पू)।

भुम देखो भम = भ्रम्। भुमइ (हे ४, १६१, सण)। संकृ. भुमिवि (अप) (सण)।

भुम°, भुमगा, भुमया, भुमा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम राजि (भग, उवा, हे २, १६७, औप, कुमा, पाअ, पव ७३)।

भुमिअ देखो भमिअ = भ्रान्त, 'भुमिअघणू' (कुमा)।

भुम्मि (अप) देखो भूमि (पिंग)।

भुरडिआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१)।

भुरुडिय, भुरुकुडिअ, भुरुहुडिअ वि [दे] उद्धूलित, धूलि-लिप्त, 'धूलिभुरुडियपुत्तेहिं परिगया चिंतए तत्तो' (सुपा २२६, दे ६, १०६), 'भूइभुर (? रु) कुडियंगो' (कुप्र २६३, सूत्र कृ० चूर्णी गा० २८२)।

भुल्ल अक [भ्रंश्] १ च्युत होना। २ गिरना। ३ भूलना, 'भुल्लंति ते मणा मग्गा हा पमाओ दुरतओ' (आत्म १६, हे ४, १७७)।

[illegible]

(इक; ठा २, ३—पत्र ८४)। २ राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १७, १)। °णंदप्पह पुं [°नन्दप्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत (राज)। °वाय देखो °वाय (विसे ५५१, पव ९२ टी)।

भूअण्ण पु [दे] जोती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ (दे ६, १०७)।

भूआ स्त्री [भूता] १ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प, पडि)। २ इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)।

भूइ स्त्री [भूति] १ संपत्ति, धन, दौलत, 'ता परदेस गतु विढवित्ता भूरिभूइपब्भारं' (सुर १, २२३; सुपा १४८)। २ भस्म, राख, 'जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जि-रगीए' (गा ४०८; स ६; गउड)। ३ महादेव के अंग की भस्म, 'भूइभूसियं हरसरीरं व' (सुपा १४८; ३६६)। ४ वृद्धि (सूअ १, ६, ६)। ५ जीव-रक्षा (उत्त १२, ३३)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपनसूत्रबंधनादि (पव ७३ टी; बृह १)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] १ जीव-रक्षा की बुद्धिवाला (उत्त १२, ३३)। २ ज्ञान की वृद्धिवाला, अनन्त-ज्ञानी (सूअ १, ६, ६)। देखो भूई।

भूइंद पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र (विच १६०)।

भूइट्ठ वि [भूयिष्ठ] अति प्रभूत, अत्यन्त (विसे २०३९; विक्र १४१)।

भूइट्ठा स्त्री [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि (प्राप्र)।

भूई° देखो भूइ (पव २—११२)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करनेवाला (औप)।

भूओ अ [भूयस्] १ फिर से, पुनः (पउम ६५, ३८; पंच २, १८)। २ वारंवार, फिर फिर, 'भूओ य अहिलसंत' (उप ६५१)। °गार पु [°कार] कर्म-बन्ध का एक प्रकार, थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होनेवाला अधिक-प्रकृति-बन्ध (पंच ५, १२)।

भूओद पुं [भूतोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)।

भूओवघाइय वि [भूतोपघातिन् °क] जीवों की हिंसा करनेवाला (सम ३७; औप)।

भूंहडी (अप) देखो भूमि (हे ४, ३९५ टि)।

भूण देखो भुण्ण (सक्ति १७; सम्मत्त ८६)।

भूज देखो भुज्ज = भूर्ज (प्राकृ २६)।

भूप देखो भू-व (वव १)।

भूमआ देखो भुमया (प्राप्र)।

भूमणया स्त्री [दे] स्थगन, आच्छादन (वव १)।

भूमि स्त्री [भूमि] १ पृथिवी, धरती (पउम ६६, ४८; गउड)। २ क्षेत्र (कुमा)। ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान (पाअ; उवा; कुमा)। ४ काल, समय (कप्प)। ५ माल, मंजिला, तल्ला, 'सत्तभूमिए पासायवरम्मि' (महा)। °कंप पुं [°कम्प] भू-कम्प (पउम ६६, ४८)। °गिह, °घर न [°गृह] नीचे का घर, भुंइघरा, तहखाना (श्रा १६; महा)। °गोयरिय वि [°गोचरिक] स्थलचर, मनुष्य आदि (पउम ५६, ५२)। °च्छत्त न [°छत्र] वनस्पति-विशेष (दे)। °तल न [°तल] धरा-पृष्ठ, भूतल (सुर २, १०५)। °देव पु [°देव] ब्राह्मण (मोह १०७)। °फोड पु [°स्फोट] वनस्पति-विशेष (जी ९)। °फोडी स्त्री [°स्फोटी] एक प्रकार का जहरीला जन्तु, 'पासवण कुणमाणो दट्ठो गुज्झम्मि भूमि-फोडीए' (सुपा ६२०)। °भाग पु [°भाग] भूमि प्रदेश (महा)। °रुह पुंन [°रुह] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष (श्रा २०; पव ४)। °वइ पु [°पति] राजा (उप प्र १८८)। °वाल पुं [°पाल] राजा (गउड)। °सुअ पु [°सुत] मंगल-ग्रह (मृच्छ १४६)। °हर देखो °घर (महा)। देखो भूमी।

भूमिआ स्त्री [भूमिका] १ तला, मंजिल, माल (महा)। २ नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण (कप्पू)।

भूमिंद पु [भूमीन्द्र] राजा, नरपति (सम्मत्त २१७)।

भूमिपिसाय पु [दे. भूमिपिशाच] ताल वृक्ष, ताड का पेड (दे ६, १०७)।

भूमी देखो भूमि (से १२, ८८; कप्पू; पिंड ४४८; पउम ६४, १०)। °तुडयकूड न [°तुडगकूट] एक विद्याधर-नगर (इक)। °भुयग पुं [°भुजङ्ग] राजा (मोह ८८)।

भूमीस पु [भूमीश] राजा (श्रा १२)।

भूमीसर पु [भूमीश्वर] राजा (सुपा ५३७)।

भूयिट्ठ देखो भूइट्ठ (हास्य १२३)।

भूरि वि [भूरि] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत (गउड; कुमा; सुर १, २४८; २, ११४)। २ न. स्वर्ण, सोना। ३ धन, दौलत (सार्ध ८४)। °रसव पु [°श्रवस्] एक चन्द्र-वशीय राजा, भूरिश्रवा (नाट—वेणी ३७)।

भूस सक [भूषय्] १ सजावट करना। २ शोभाना, अलंकृत करना। भूसेमि (कुमा)। वकृ. भूसयंत (रंभा)। कृ. भूस (रंभा)।

भूसण न [भूषण] १ अलंकार, गहना (पाअ; कुमा)। २ सजावट। ३ शोभा-करण (पण्ह २, ४; सण)।

भूसा स्त्री [भूषा] ऊपर देखो (दे ३, ८; कुमा)।

भूसिअ वि [भूषित] मण्डित, अलंकृत (गा ५२०; कुमा; काल)।

भूहरी स्त्री [दे] तिलक-विशेष (सिरि १०२२)।

भे अ [भोस्] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (औप)।

भेअ पुन [भेद] १ प्रकार, 'पुढविमाइं इच्चाई' (जी ४, ५)। २ विशेष, पार्थक्य (ठा २, १; गउड; कप्पू)। ३ एक राज-नीति, फूट, 'दाणमाणोवयारेहि सामभेआइएहि य' (प्रासू ९७), 'सामदंडभेयउवप्पयाणणीइ-सुप्पउत्तणयविहिन्नू' (णाया १, १—पत्र ११)। ४ घींव, आघात, 'वेड्ढ त्ति वम्महे विइण्णसरप्पसारो ताण पम्हसइ लहु त्तिअ चित्तभेओ' (कप्पू)। ५ मण्डल का अन्तराल, बीच का भाग;

'पडिवत्तीओ उदए तह अत्थमणेसु य।
भेयघाए(? धा)ओ कण्णकला
मुहुत्ताण गतीति य ॥'
(सुज्ज ९, १)।

६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण (औप; अणु)। °कर त्रि [°कर] विच्छेद-कर्ता (औप)। °घाय पु [°घात] मडल के बीच में गमन (सुज्ज १, १)। °समावन्न वि [°समापन्न] भेद-प्राप्त (भग)।

[illegible]

ओसग्गा स्त्री [ओसग्गा] [illegible] देखो (पउम ३, १—पत्र १००)।

ओसरा देखो ओस।

ओसार देखो ओस। [illegible] (पाया १४८)।

ओसाविय } वि [ओसाविय] [illegible]
ओसिय } (पउम ८६ ४०, [illegible] ४५ [illegible] ११०, [illegible])।

ओ देखो [illegible]। [illegible] ओअप्प [illegible] (पाया १४८ [illegible] ३७)। [illegible] ओह (पाया १४८, [illegible] ३७)। [illegible] ओणाव (पवि ३७), ओह [illegible] (पाया १४८)।

ओम [ओम्] [illegible] (प्राकृ ७८, [illegible], [illegible] ५०)।

ओंम [ओग] [illegible], [illegible] (उप १४, [illegible], [illegible] ११८)।

ओअ [illegible] [ओजस्] [illegible], [illegible] १२४ [illegible] ३, ६ २८)। [illegible] ओडुणा (उप ८, ३८)।

ओअ पु [ओज] [illegible], [illegible] (६, १०८)।

ओअ देखो ओस (पउम ६४८, [illegible] ४०४, [illegible] ३३)।

ओअ पु [ओज] [illegible] [illegible] (पउम [illegible]। [illegible] पु [illegible] [illegible] (पउम ७८)।

ओअ वि [ओज] [illegible] (पंचा ४१)।

ओअव वि [ओजस्] [illegible] (पिंड ११७)। [illegible] (सू० १)।

ओअण [illegible] [illegible] [illegible]

ओअण न [ओदन] [illegible] (पाया [illegible] १ [illegible]) [illegible] (सुप ३, १, १७)। [illegible] (पउम १०२, ११६)।

ओअ [illegible] पु [ओ] [illegible]।

भोइ वि [भोजिन्] भोजन करनेवाला (आचा, पिंड १२०, उव)।

भोइ देखो भोगि (सुपा ४०४, संबोध ५०, पिंग, रंभा)।

भोइ } पु [दे भोगिन्, °क] १ ग्रामाध्यक्ष, ग्राम का मुखिया, गाँव का नायक (वव ७, दे ६, १०८, उत्त १५, ६, वृह १, ओघभा ४३, पिंड ४३६, मुख १, ३, पव २६८, भवि, सुपा १६५, गा ५५६)। २ महेश (षड्)।
भोइअ }

भोइअ वि [भोगिक] १ भोग युक्त, भोगासक्त, विलासी (उत्त १५, ६, गा ५५६)। २ भोग-वश मे उत्पन्न (उत्त १५, ६)।

भोइअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (सुर १, २१४)।

भोइणी स्त्री [दे. भोगिनी] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी (पिंड ४३६, गा ६०३, ७३७, ७७६, निचू १०)।

भोइया } स्त्री [भोग्या] १ भार्या, पत्नी, स्त्री (वृह १, पिंड ३६८)। २ वेश्या (वव ७)।
भोई }

भोई देखो भो° = भवत्।

भोंड देखो मुंड (गा ४०२)।

भोक्ख° देखो भुंज।

भोग पुन [भोग] १ स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ, 'रूवी भंते भोगा अरूवी' (भग ७, ७—पत्र ३१०), 'भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ' (विपा १, २)। २ विषय-सेवा (भग ६, ३३, ओप), 'भुंजता वहुविहाइ भोगाइ' (सया २७)। ३ मदन-व्यापार, काम-चेष्टा, 'कामभोगे य खलु मए अप्पाहट्टु' (सूअ २, १, १२)। ४ विषयेच्छा, विषयाभिलाष (आचा)। ५ विषय-सुख, 'चइत्तु भोगाइ असासयाइ' (उत्त १३, २०), 'तुच्छा य कामभोगा' (प्रासू ६६), 'अहिभोगे विव भोगे निहणव घणए मलव कमलपि मन्नता' (सुपा ८३)। ६ भोजन, आहार (पचा ५, ४, उप २०७)। ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष, एक क्षत्रिय-कुल (कप्प, सम १५१, ठा ३, १—पत्र ११३, ११४)। ८ अमात्य आदि गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न (ओप)। ६ शरीर, देह (तदु २०)। १० सर्प की फणा (सुपा)। ११ सर्प का शरीर (दे ६, ८६)। °करा देखो भोगंकरा (इक)। °कुल न [°कुल] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष (पि ८६७)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (आवम)। °पुरिस पुं [°पुरुष] भोग-तत्पर पुरुष (ठा ३, १—पत्र ११३, ११४)। °भागि वि [°भागिन्] भोग-शाली (पउम ५६, ८८)। °भूम वि [°भूम] भोग-भूमि में उत्पन्न (पउम १०२, १६६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] देवकुरु आदि अकर्म-भूमि (इक)। °भोग पुन [°भोग] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि (भग ७, ७, विपा १, ६)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] अधोलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। °राय पुं [°राज] भोग-कुल का राजा (दस २, ८)। °वइया स्त्री [°वतिका] लिपि-विशेष (पराण १—पत्र ६२), 'भोगवयता (?इया)' (सम ३५)। °वई स्त्री [°वती] १ अधोलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। २ पक्ष की दूसरी, सातवी और बारहवी रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति (पराण १—पत्र ५०)।

भोगंकरा स्त्री [भोगंकरा] अधोलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

भोगा स्त्री [भोगा] देवी-विशेष (इक)।

भोगि पुं [भोगिन्] १ सर्प, साँप (सुपा ३६६, कुप्र २६८)। २ पुन शरीर, देह (भग २, ५, ७, ७)। ३ वि. भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी (सुपा ३६६, कुप्र २६८)।

भोग्ग }
भोच्चा }
भोच्छं° } देखो भुंज।
भोज्ज }

भोट्टंत पुं [भोटान्त] १ देश-विशेष, नेपाल के समीप का एक भारतीय देश, भोटान। २ भोटान का रहनेवाला (पिंग)।

भोण देखो भोअण (षड्)

भोत्त देखो भुत्त (षड्, सुख २, ६, सुपा ४६५)।

भोत्तए } देखो भुंज।
भोत्तव्व }

भोत्ता देखो भू = भुव = भू।

भोत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला (विसे १५६६, दे २, ४८)।

भोत्तुं } देखो भुंज।
भोत्तूण }

भोत्तूण देखो भुत्तूण (दे ६, १०६)।

भोदूण देखो भू = भुव = भू।

भोम वि [भौम] १ भूमि-सम्बन्धी (सूअ १, ६, १२)। २ भूमि मे उत्पन्न (ओघ २८, जी ५)। ३ भूमि का विकार (ठा ८)। ४ पु. मगल-ग्रह (पाअ)। ५ पु. नगराकार विशिष्ट स्थान। ६ नगर (सम्म १५, ७८)। ७ निमित्त शास्त्र-विशेष, भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल वतलानेवाल। शास्त्र (सम ४६)। ८ अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त्त, 'अणव च भोग (? म)रिसहे' (सुज्ज १०, १३)। °ालिय न [°ालीक] भूमि सम्बन्धी मृषावाद (पराह १, २)।

भोमिज्ज देखो भोमेज्ज (सम २, उत्त २३६, २०३)।

भोमिर देखो भमिर, 'लब्भइ णाइअणते समारे सुभोमिरो जीवो' (सवोध ३२)।

भोमेज्ज } वि [भौमेय] १ भूमि का विकार, पार्थिव (सम १००, सुपा ४८)। २ पु एक देव-जाति, भवनपति नामक देव-जाति (सम २)।
भोमेयग }

भोरुड पु [दे] भारुड पक्षी (दे ६, १०८)।

भोल सक [दे] ठगना (सुपा ५२२)।

भोल वि [दे] भद्र, सरल चित्तवाला, गुजराती मे 'भोळु'। स्त्री °ला, °लिया (महानि ६, सुपा ५१४)।

भोलग पुं [भोलक] यक्ष-विशेष, 'भोलगनामा जक्खो अभिवञ्छियसिद्धिदा अत्थि' (धर्मसं १४१)।

भोलव सक [दे] ठगना, गुजराती मे 'भोळववु'। सक्र. भोलविउ (सुपा २६४)।

भोलवण न [दे] वञ्चन, प्रतापण (सम्मत्त २२६)।

भोलविय } वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ (कुप्र ४३५, सुपा ५२२)।
भोलिअ }

[illegible]

म

[illegible]

मई स्त्री [दे] मदिरा, दारू (दे ६, ११३)।

मई स्त्री [मृगी] हरिणी, हरिण की मादा, हिरनी (गा २८७, से ६, ८०, दे ३, ४६, कुप्र १०)।

मई° देखो मइ = मति। °म, °व वि [°मत्] बुद्धिवाला (पि ७३, ३९६, उप १४२ टी)।

मईअ वि [मदीय] मेरा, अपना (षड्, कुमा, म ४७७, महा)।

मउ पु [दे] पर्वत, पहाड (दे ६, ११३)।

मउ, मउअ वि [°मृदु, °क] कोमल, सुकुमार (हे १, १२७, षड्, मम ४१; सुर ३, ३७, कुमा)। स्त्री °उई (प्राकृ २८, गउड)।

मउअ वि [दे] दीन, गरीब (दे ६, ११४)।

मउइअ वि [मृदुकित] जो कोमल बना हो (गउड)।

मउई देखो मउ = मृदु।

मउंद पु [मुकुन्द] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (राय)। २ वाद्य-विशेष, 'दुदुहिमउंदमद्दल-तिलिमापमुहेण तूरसद्देण' (सुर ३, ६८), 'महामउंदसंठाणसठिए' (भग)।

मउक्क देखो माउक्क = मृदुत्व (षड्)।

मउड पुन [मुकुट] शिरो-भूषण, किरीट, सिरपेंच (पव ३८, हे १, १०७, प्राप्र, कुमा, पाअ, औप)।

मउड, मउडि पुं [दे] धम्मिल्ल, कवरी, जूट, जूड़ा (पाअ, दे ६, ११७)।

मउण देखो मोण (हे १, १६२, चंड)।

मउर पुन [मुकुर] १ बाल-पुष्प, फूल की कली, बौर (कुमा)। २ दर्पण, आईना, शीशा। ३ कुलाल-दण्ड। ४ बकुल का पेड़। ५ मल्लिका-वृक्ष। ६ कोली वृक्ष। ७ ग्रथि-पर्ण-वृक्ष, चोरक (हे १, १०७, प्राकृ ७)।

मउर, मउरंद पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, ओंगा, लटजीरा, चिरचिरा (दे ६, ११८)।

मउल देखो मउड = मुकुट (से ४, ५१)।

मउल पुन [मुकुल] थोडी विकसित कली, कलिका, बौर (रंभा २९)। २ देह, शरीर। ३ आत्मा, 'मउल, मउलो' (हे १, १०७, प्राप्र)।

मउल अक [मुकुलय्] सकुचना, सकुचित होना, 'मउलेंति णअणाइं' (गा ५)। वकृ. मउलत, मउलित (से ११, ६२, पि ४६१)।

मउलण न [मुकुलन] सकोच, 'ज चेअ मउलण लोअणाण' (हे २, १८४, विसे ११०६, गउड)।

मउलाअ अक [मुकुलय्] १ सकुचना। २ सक संकुचित करना। वकृ. मउलाअत (नाट—मालती ५४, पि १२३)।

मउलाइय वि [मुकुलित] सकुचाया हुआ, सकोचित (वज्जा १२६)।

मउलाव देखो मउलाअ। कर्म. मउलाविज्जति (पि १२३)। वकृ. मउलावेत (पउम १५, ८३)।

मउलावअ वि [मुकुलायक] सकुचित करने-वाला, 'हरिसविसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण' (गउड)।

मउलाविय देखो मउलाइय (उप पृ ३२१, सुपा २००, भवि)।

मउलि पुस्त्री [दे] हृदय रस का उच्छलन (दे ६, ११५)।

मउलि पु [मुकुलिन्] सर्प-विशेष (पराह १, १—पत्र ८, पराण १—पत्र ५०)।

मउलि पुस्त्री [मौलि] १ किरीट, मुकुट, शिरो-भूषण (पाअ)। २ मस्तक, सिर (कुप्र ३८६, कुमा, अजि २२, अच्चु ३४)। ३ शिरो-वेष्टन विशेष, एक तरह की पगडी (पव ३८)। ४ चूडा, चोटी। ५ सयत केश। ६ पु अशोक वृक्ष। ७ स्त्री भूमि, पृथिवी (हे १, १६२, प्राकृ १०)।

मउलिअ वि [मुकुलित] १ सकुचित (सुर ३, ४५, गा ३२३, से १, ६५)। २ मुकुला-कार किया हुआ (औप)। ३ एकत्र स्थित (कुमा)। ४ मुकुल-युक्त, कलिका-सहित (राय)।

मउवी देखो मउई (हे २, ११३, कुमा)।

मऊर पुस्त्री [मयूर] पक्षि-विशेष, मोर (प्राप्र, हे १, १७१, णाया १, ३)। स्त्री. °री (विपा १, ३)। °माल न [°माल] एक नगर (पउम २७, ६)।

मऊरा स्त्री [मयूरा] एक रानी, महापद्म चक्रवर्ती की माता (पउम २०, १४३)।

मऊह पु [मयूख] १ किरण, रश्मि (पाअ)। २ कान्ति, तेज। ३ शिखा। ४ शोभा (हे १, १७१; प्राप्र)। ५ राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)।

मए सक [मदय्] मद-युक्त करना, उन्मत्त बनाना। वकृ. मएत (से २, १७)।

मएजारिस वि [मादृश] मेरे जैसा, मेरे तुल्य, 'मएजारिसाण पुरिसाहमाण इमं चेवोचियं' (म ३३)।

म (अप) देखो म = मा (षड्, हे ४, ४१८, कुमा)। °कार पु [°कार] 'मा' अव्यय (ठा १०—पत्र ४९५)।

मंकड देखो मक्कड (आचा)।

मंकुण पु [मत्कुण] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष, गुजराती में 'माकण' (जी १६)।

मंकुण पुस्त्री [दे मर्कट] बन्दर, वानर। स्त्री °णी, 'सयमेव मकणीए वणाए त ककणी वद्धा' (कुप्र १८५)।

मकाइ पु [मङ्काति] एक अन्तकृद् महर्षि (अंत १८)।

मकार पु [मकार] 'म' अक्षर (ठा १०—पत्र ४९५)।

मंकिअ न [मङ्कित] कूद कर जाना (दे ८, १५)।

मंकुण देखो मंकण = मत्कुण (दे, भवि)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] गराडीपद प्राणि-विशेष (पराण १—पत्र ४९)।

मंकुस [दे] देखो मगुन्न (गा ७८१)।

मंख देखो मक्ख = म्रक्ष्। वकृ मखत (राज)।

मंख पु [दे] अराड, वृषण (दे ६, ११२)।

मंख पु [मङ्ख] एक भिक्षुक जाति जो चित्र-पट दिखाकर जीवन-निवाह करता है (णाया १, १ टी, औप, पराह २, ४, पिंड ३०९, कप्प)। °फलय न [°फलक] १ मख का तख्ता। २ निर्वाह-हेतुक चैत्य (पंचा ६, ४५ टी)।

मंखण न [म्रक्षण] १ मक्खन, 'मखणं व सुकुमालकरचरणा' (उप ६४८ टी)। २ अभ्यग, मालिश (सुर १२, ८)।

[illegible]

... ै (सुज १०—पत्र २३३)। °मिया °[°गिमित्र] १ मकान के ऊपर का भाग ... ऊपर रखा हुआ मंच (बीज)। २ ... खम्भों पर ... आदि ... के ऊपर रखी हुई ... (सुज १०)।

मंजी स्त्री [मञ्जा] ... (सुज १०, १६८ १६६)।

मञ्जु (पा) पु [मञ्जु] ... ।

मञ्जर पुं [मार्जार] ... (... २, १३२ ...)। देखो मज्जार, मज्जार।

मञ्जरि स्त्री [मञ्जरि] देखो मञ्जरी (पंच)।

मञ्जरिअ वि [मञ्जरित] ... (स ७१६)।

मञ्जरिआ, मञ्जरी } स्त्री [मञ्जरिका, °री] ... (...)। °सुणि स्त्री [°सुणी] ... (...)।

मञ्जार देखो मंजार (... १, ७६)।

[illegible]

मठ वि [दे] १ शठ, लुच्चा, बदमाश। २ पुं बन्ध (दे ६, १११)।

मड सक [मण्ड] भूषित करना, सजाना। मडइ (षड्), मडति (पि ५५७)।

मड सक [दे] १ आगे धरना। २ प्रारम्भ करना, गुजराती में 'माडवु', 'जो मडइ रण-भरधुरहो खधु' (भवि)।

मंड पुन [मण्ड] रस, 'तयाणतरं च ण घयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सारइएणं गोवयमंडेणं' (उवा)।

मडअ देखो मडव = मण्डप (नाट—शकु ६८)।

मडअ } पु [मण्डक] खाद्य-विशेष, मांडा, मडग } एक प्रकार की रोटी (उप पृ ११५, पव ४ टी, कुप्र ४३, धर्मवि ११६)।

मडग वि [मण्डक] विभूषक, शोभा बढानेवाला, 'ससि च '' जोइसमुहमडग'। (कप्प)।

मडग न [मण्डन] १ भूषण, भूषा (गउड, प्रासू १३२)। २ वि विभूषक, शोभा बढानेवाला (गउड, कुमा)। स्त्री °णी (प्रासू ६४)। °धाइ स्त्री [°धात्री] आभूषण पहनानेवाली दासी (णाया १, १—पत्र ३७)।

मडल पु [दे मण्डल] श्वान, कुत्ता (दे ६, ११४, पाअ, म ३६८, कुप्र २८०, सम्मत्त १६०)।

मडल न [मण्डल] १ समूह, यूथ (कुमा, गउड, सम्मत्त १६०)। २ देश (उप १४२ टी, कुप्र ४६, २८०)। ३ गोल, वृत्ताकार पदार्थ (कुमा, गउड)। ४ गोल आकार से वेष्टन (ठा ३, ४—पत्र १६६, गउड)। ५ चन्द्र-सूर्य आदि का चार-क्षेत्र (सम ६६, गउड)। ६ ससार, जगत् (उत्त ३१, ३, ४, ५, ६)। ७ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ८ एक प्रकार की वृत्ताकार दाद—दद्रु (पिंड ६००)। ९ विम्ब, 'उज्जभइ ससिमडलकलस-दिण्णकंठग्गह मयणो' (गउड)। १० सुभटों का स्थान-विशेष (राज)। ११ मण्डलाकार परिभ्रमण (सुज्ज १, ७, स ३४६)। १२ इंगित क्षेत्र (ठा ७—पत्र ३९८)। १३ पुं नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २६)। °व वि [°वत्] मण्डल में परिभ्रमण करनेवाला (सुज्ज १, ७)। °ाहिव पुं [°ाधिप] मण्डलाधीश (भवि)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] वही अर्थ (भवि)।

मडल पुंन [मण्डल] योद्धा का युद्ध समय का आसन (वव १)। °पवेस पुं [°प्रवेश] एक प्राचीन जैन शास्त्र (णदि २०२)।

मडलग्ग पुन [मण्डलाग्र] तलवार, खड्ग (हे ३, ३४, भवि)।

मडलय पुं [मण्डलक] एक माप, बारह कर्म-मापकों का एक बाट (अणु १५५)।

मडलि पु [मण्डलिन्] १ मण्डलाकार चलता वायु, चक्र-वात, बवडर (जी ७)। २ माण्डलिक राजा, 'तेवीस तित्थकरा पुव्वभवे मडलिरायाणो हात्था' (सम ४२)। ३ सर्प की एक जाति (पण्ह १—पत्र ५१)। ४ न. गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। ५ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगर-विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल भी 'माडल' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५६)।

मडलिअ वि [मण्डलिन्] मण्डलाकार बना हुआ, 'मडलियचडकोदडमुक्कडोलिखडिय-सिरेहिं' (सुपा ४, वज्जा ६२, गउड)।

मडलिअ वि [मण्डलिक, माण्डलिक] १ मण्डलाकारवाला। २ पु मडल रूप से स्थित पर्वत विशेष (ठा ३, ४—पत्र १६६, पण्ह २, ४)। ३ मण्डलाधीश, सामान्य राजा (णाया १, १, पण्ह १, ४, कुमा, कुप्र १२०, महा)।

मडली स्त्री [मण्डली] १ पंक्ति, श्रेणी, समूह (से ५, ७६, गच्छ २, ५६)। २ अश्व की एक प्रकार की गति (से १३, ६६, महा)। ३ वृत्ताकार मंडल—समूह (मवोध १७, उव)।

मडलीअ देखो मडलिअ = मण्डलिक, 'तह तलवरसेणाहिवकोसाहिवमडलीयसामंते' (सुपा ७३, ठा ३, १—पत्र १२६)।

मडव पु [मण्डप] १ विश्राम-स्थान। २ वल्ली आदि से वेष्टित स्थान (जीव ३, स्वप्न ३६, महा, कुमा)। ३ स्नान आदि करने का गृह, 'न्हाणमडवसि', 'भोयणमडवसि' (कप्प, औप)।

मडव न [माण्डव्य] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मडविआ स्त्री [मण्डपिका] छोटा मण्डप (कुमा)।

मडव्वायण न [माण्डव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६, इक)।

मडावण न [मण्डन] सजाना, विभूषित कराना। °धाई स्त्री [°धात्री] सजानेवाली दासी (आचा २, १५, ११)।

मडावय वि [मण्डक] सजानेवाला (निचू ६)।

मडि° } वि [मण्डित] १ भूषित (कप्प, मडिअ } कुमा)। २ पुं. भगवान् महावीर के षष्ठ गणधर का नाम (सम १६, विसे १८०२)। ३ एक चोर का नाम (धर्मवि ७२, ७३)। °कुच्छि पुंन [°कुक्षि] चैत्य-विशेष (उत २०, २)। °पुत्त पु [°पुत्र] भगवान् महावीर का छठवाँ गणधर (कप्प)।

मडिअ वि [दे] रचित, बनाया हुआ। २ बिछाया हुआ,

'ससारे हयविहिणा महिलारूवेण मडिए पासे। वज्झति जाणमाणा अयाणमाणावि बज्झति ॥' (रयण ८)।

३ आगे धरा हुआ, 'मइ मडिउ रणभरधुरहो खधु' (भवि)। ४ आरब्ध, 'रणु मडिउ कच्छाहिवेण ताम' (भवि, सण)।

मडिल्ल पु [दे] अपूप, पूआ, पक्वान्न-विशेष (दे ६, ११७)।

मडी स्त्री [दे] १ पिधानिका, ढकनी (दे ६, १११, पाअ)। २ अन्न का अग्र रस, मांड। ३ मांडी, कलप, लेई (आव ४)। °पाहुडिया स्त्री [°प्राभृतिका] एक भिक्षा-दोष, अन्न के मांड अथवा मांडी को दूसरे पात्र में रखकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (आव ४)।

मंडुक } देखो मडूअ (श्रा २८, पण्ह १, १, मडुक } हे २, ६८, षड्; पाअ)।

मंडुकलिया } स्त्री [मण्डूकिका, °की] १ स्त्री मडुक्किया } मेढक, भेकी, दादुरी (उप १४७ मडुकी } टी, १३७ टी)। २ शाक-विशेष, वनस्पति-विशेष (उवा, पण्ण १—पत्र ३४)।

सुसिलिट्ठ वि [सुश्लिष्ट] सुसंगत, अति संबद्ध (सुर १०, ८२; पचा १८, २३)।

सुसिस्स पुं [सुशिष्य] उत्तम चेला (उप पृ ४०१)।

सुसीअ वि [सुशीत] अति शीतल (कुमा)।

सुसीम न [सुसीम] नगर-विशेष (उप ७२८ टी)।

सुसीमा स्त्री [सुसीमा] १ भगवान् पद्मप्रभ की माता (सम १५१)। २ कृष्ण वासुदेव की एक पत्नी (अंत १५)। ३ वत्स नामक विजय-क्षेत्र की एक राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुसील न [सुशील] १ उत्तम स्वभाव (पउम १४, ८४)। २ वि उत्तम स्वभाववाला, सदाचारी (प्रासू ८)। °वंत वि [°वत्] सदाचारी (पउम १४, ४४; प्रासू ३६)।

सुसु पुं [शिशु] बच्चा, बालक। °मार पुं [°मार] जलचर प्राणी की एक जाति, महिषाकार मत्स्य-विशेष (पि ११७)। °मारिया स्त्री [°मारिका] वाद्य विशेष (राय ४६)। देखो सुसुमार।

सुसुज्ज पुंन [सुसूर्य] एक देव-विमान (सम १५)।

सुसुमार पुं [सुसुमार] जलचर जन्तु की एक जाति (जी २०)। देखो सुसु-मार।

सुसुगंध वि [सुसुगन्ध] १ अत्यन्त सुगन्धी (पउम ६, ८१; गउड)। २ पुं. अत्यन्त खुशबू (गउड)।

सुसुर देखो ससुर (धर्मवि ११४; सिरि ३३८, ३८५, ३८७, ६८८)।

सुसुहंकर पुं [सुशुभङ्कर] छन्द का एक भेद (पिंग)।

सुसूर पुंन [सुसूर] एक देव-विमान (सम १०)।

सुसेण पुं [सुषेण] १ सुग्रीव का श्वशुर (से ४, ११, १३, ८४)। २ एक मन्त्री (विपा १, ४—पत्र ५४)। ३ भरत चक्रवर्ती का मन्त्री (राज)।

सुसेणा स्त्री [सुषेणा] एक बड़ी नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

सुसोह वि [सुशोभ] अच्छी शोभावाला (सुपा २७५)।

सुसोहिय वि [सुशोभित] शोभा संपन्न, समलंकृत (उप ७२८ टी)।

सुस्स अक [शुष्] सूखना। सुस्से (सूअ १, २, १, १६)। वकृ सुस्संत (स १६६)।

सुस्समण पुं [सुश्रमण] उत्तम साधु (उव)।

सुस्सर वि [सुस्वर] सुन्दर आवाजवाला (सुपा २८६)। देखो सुसर।

सुस्सरा स्त्री [सुस्वरा] गीतरति तथा गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की एक एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुस्सार वि [सुसार] सार युक्त (भवि)।

सुस्सावग, सुस्सावय देखो सुसावग (उव; श्रा १२)।

सुस्सील देखो सुसील (सुपा ११०, ५०८)।

सुस्सुअ देखो सुसुअ (राज)।

सुस्सुयाय अक [सुसुकाय्, सूत्कारय्] सु सु आवाज करना, सूत्कार करना। संकृ सुस्सुयाइत्ता (उत्त २७, ७)।

सुस्सू स्त्री [श्वश्रू] सासू (बृह २)।

सुस्सूस सक [शुश्रूष्] सेवा करना। सुस्सूसइ (उव; महा)। वकृ सुस्सूसंत, सुस्सूसमाण (कुलक ३८; भग; औप)। हेकृ सुस्सूसिउं (शौ) (मा ३६)।

सुस्सूसअ वि [शुश्रूषक] सेवा करनेवाला (कप्पू)।

सुस्सूसण न [शुश्रूषण] सेवा, शुश्रूषा (कुप्र २४७; रत्न २१)।

सुस्सूसणया, सुस्सूसणा स्त्री [शुश्रूषणा] ऊपर देखो (उत्त २६, १; औप; णाया १, १३—पत्र १८८)।

सुस्सूसा स्त्री [शुश्रूषा] ऊपर देखो (सुपा १२७)।

सुह देखो सोह=शुभ्। सुहइ (वज्जा १४; पिंग)।

सुह सक [सुखय्] सुखी करना। सुहइ (पिंग), सुहेदि (शौ) (अभि ८६)।

सुह देखो सुभ (हे ३, २६, ३०; कुमा; सुपा ३६०; कम्म ४, ५०)। °अ वि [°द] मंगलकारी (कुमा)। °कम्मि वि [°कर्मिक] पुण्यशाली (भवि)। °काम वि [°काम] मङ्गल की चाहवाला (सुपा ३२६)। °गर वि [°कर] मङ्गल-जनक (कुमा)। °णामा स्त्री [°नामा] पक्ष की पाँचवीं, दसवीं तथा पनरहवीं रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५)। °त्थि वि [°र्थिन्] १ शुभेच्छुक (भग)। २ शुभ अर्थवाला (णाया १, १—पत्र ७४)। °द देखो °अ (कुमा)।

सुह न [सुख] १ आनन्द, चैन, मजा। २ आराम, शान्ति (ठा २, १—पत्र ४७; ३, १—पत्र ११४; भग; स्वप्न २३; प्रासू १३३; हे १, १७७; कुमा)। ३ निर्वाण मुक्ति। ४ त्रि जितेन्द्रिय (विसे ३४४३, ३४४४)। ५ सुख प्रद, सुख-जनक (णाया १, १०—पत्र १७४; आचा; कम्म १ ५१)। ६ अनुकूल (णाया १, १२)। ७ सुखी (हे ३, १६)। °अ वि [°द] सुख-दायक (सुर २, ६५; सुपा ११२; कुमा)। °इत्तअ वि [°वत्] सुखी (पि ६००)। °कर वि [°कर] सुख-जनक (हे १, १७७)। °कामि वि [°कामिन्] सुखाभिलाषी (ओघ ११६)। °त्थि वि [°र्थिन्] वही अर्थ (आचा)। °द वि [°द] सुख-दाता (वै १०३; कुमा)। °दाय वि [°दाय] वही (पउम १०३, १६२)। °फस वि [°स्पर्श] कोमल (पात्र)। °यर देखो °कर (हे १, १७७; कुमा; सुपा ३)। °संझा स्त्री [°सन्ध्या] सुख-जनक सायंकाल (कप्पू)। °वह वि [°वह] १ सुख-जनक (श्रा २८; उव; स ६७)। २ पुंन एक पर्वत-शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। °सण न [°ासन] आसन-विशेष, पालकी (सुर २, ६०; सुपा २७८; कप्प)। °सिया स्त्री [°ासिका] सुख से बैठना, सुखी स्थिति (प्रासू ८५)।

सुहउच्छिआ स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।

सुहंकर वि [सुखङ्कर] सुख-कारक (सिरि ३६; कुमा)।

सुहंकर वि [शुभङ्कर] १ शुभ कारक (कुमा)। २ पुं एक वणिक् का नाम (उप ५०७ टी)।

सुहंभर वि [सुखम्भर] सुखी (गउड)।

सुहग देखो सुभग (स्वप्न ६०; गा ६, १३—पत्र [illegible])।

सुहड पुं [सुभट] योद्धा (सुर २, २६; कुमा; प्रासू ७४, महा)।

सुहड वि [सुहृत] अच्छी तरह हरण किया हुआ (दस ५, [illegible])।

सुहत्थ वि [सुहस्त] १ अच्छा हाथवाला, हाथ की चालाकी वाला, हाथ से शीघ्र शीघ्र काम करने में समर्थ (? १२, ५५)। २ दाता, दानी ([illegible])।

सुहत्थि पुं [सुहस्तिन्] १ गन्धहस्ती (णाया १, १—पत्र ७४, उवा)। २ एक जैन महर्षि (कप्प; पडि)।

सुहद्द न [सौहार्द] १ स्नेह। २ मित्रता ([illegible])।

सुहम न [सूक्ष्म] १ कम, थोड़ा (दसनि १, ३६)। २ देखो सण्ह = सुहम = सूक्ष्म (हे २, १०१; ११३)।

सुहम्म पुं [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (विपा १, १—पत्र १)। २ भगवान् [illegible] का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ [illegible] (विपा १, १—पत्र [illegible], २—पत्र २[illegible])। °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (राज)। देखो सुहम्मा।

सुहम्म° देखो सुहम्मा। °वइ पुं [°पति] [illegible]।

सुहम्माण [illegible] [सुहम्मान] जो अच्छी तरह [illegible] (पि ५५०)।

सुहम्मा स्त्री [सुधर्मा] [illegible] (सम १५, राज)।

सुहय देखो सुह-अ = सुभ[illegible], सुख[illegible]।

सुहय [illegible] सुहग [illegible] हेका ३०२; कुमा)।

सुहर वि [सुभर] अच्छी तरह जो भरा [illegible] (? २५)।

सुहल [illegible] [सुहल] [illegible] (? [illegible], ३५)।

सुहव [illegible] सुहय ([illegible])।

सुहवा [illegible] [सुभगा] [illegible], सुहागी ([illegible], ३५)।

सुहराव पुं [दे] १ वेश्या का घर। २ चटक, गौरैया पक्षी (दे ८, ५६)।

सुहल्ली स्त्री [दे] सुख, आनन्द (दे ८, ३६)।

सुहव देखो सुभग (वज्जा ६६; सनि २)। स्त्री °वी (प्राकृ ३७)।

सुहा सक [सु + भा] अच्छा लगना, न सुहाइ गोमड़ंद सालं (कुप्र २५२)।

सुहा देखो सुधा = सुधा (स २८२; कुमा; महा)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] चूने का कारखाना (आचा २, २, २, ६)। °हार पुं [°हार] देव, देवता (उ ७५५)।

सुहा, सुहाअ, सुहाव — सक [सुखाय्] १ सुख पाना। २ सक सुखी करना। सुहाइ, सुहाअइ, सुहावइ, सुहावेइ (नाट; गा ६१७; पि ५५८; से १२ ८५, वज्जा १६८; नाट उत्त)। वकृ सुहाअंत (से १, २८; नाट—रत्ना ११)।

सुहाव देखो सहाव = स्वभाव (गा ५०८; वज्जा १०)।

सुहावण वि [सुखायन] सुख-जनक (मण; नाट)।

सुहावह वि [सुखावह] ऊपर देखो (वज्जा ४६४; नाट)।

सुहासिय वि [सुभाषित] १ सम्यग् उक्त (पण्ह १, १—पत्र १)। २ न सुन्दर वचन, सूक्त (स ७६१; सुपा ५१४)।

सुहि वि [सुखिन्] सुखी। (सुपा ३१२, ४३१)।

सुहि, सुहिअ — पुं [सुहृद्] मित्र, दोस्त (ठा ४, ३—पत्र २४३, णाया १, २—पत्र ६०, उत्त २०, ६; सुर ४, ७६; सुपा १०७, ४१६, प्रासू ३६; सुर ३, १५४; नाट)।

सुहिअ वि [सुखित] सुखी, सुख युक्त (से २, ८ गा ४१८ कुप्र ४०६; उत्त; कुमा)।

सुहिअ वि [सुहित] १ तृप्त (से २, ८)। २ सुन्दर हितकारी (धम्म २)।

सुहिट्ठ वि [सुस्पृष्ट] खूब स्पर्श किया हुआ (उप ७२८ टी)।

सुहिर देखो सुसिर। "बरनालंता पुहई बला सुहिरं [illegible] पसज्जालाएण" (गउड ११४६)।

सुहिरण्णा स्त्री [सुहिरण्या, °ण्यका]

सुहिरण्णिआ, सुहिरन्निया — वनस्पति विशेष, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (राय ३१; राज; पण्ह १७—पत्र ५२६)।

सुहिरीमण वि [सुह्रीमनस्] अत्यन्त लज्जालु, अतिशय शर्मिन्दा (सूअ १, ४, २, १७; राज)।

सुहिल्लिया देखो सुहेल्लि 'सुहिल्लिय अट्टिय रस मुणत्रो' (भत्त १३२)।

सुही वि [सुधी] पंडित, विद्वान् (सिरि ४०)।

सुहुम वि [सूक्ष्म] १ बारीक, अत्यन्त छोटा। २ तीक्ष्ण (हे १, ११८; २, ११३; कुमा; जी २४)। ३ पुं भारत वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ एकेन्द्रिय जीव-विशेष (ठा ८; कम्म ४, २, ५)। ५ न. कर्म विशेष (सम ६)। °संपराग, °संपराय पुंन [°सम्पराय] १ चारित्र विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२२)। २ दसवां गुण-स्थानक (सम २६)। देखो सण्ह, सुहम = सूक्ष्म।

सुहुय वि [सुहुत] अच्छी तरह होम किया हुआ (उत्त २८० टी; कप्प; औप)।

सुहेल्लि स्त्री [दे. सुखकेलि] सुख, आनन्द, मजा (दे ८, ३६; पात्र; गा १०८, २११, २६१, २८८, ३६८, ५५६, ८६४; स ७२)।

सुहेसि वि [सुखैषिन्] सुखाभिलाषी (सुपा २२७)।

सू अ निन्दा-सूचक अव्यय (नाट)।

सूअ सक [सूचय्] १ सूचना करना। २ जानना। ३ लक्ष्य करना। सूएइ, सूअति, सूएमा (विसे १३२८; स २४८; गउड; पिंड ४१७)। कर्म सूइज्जइ (गा ३२१)। वकृ सूयंत, सूयअंत (गउड; स ३६६)। कवकृ सूइज्जंत (चेइय ६०५)। कृ सूयणिज्ज (स १०, २८)।

सूअ पुं [सूद] रसोइया (महा)।

सूअ पुं [सूत] १ सारथि, रथ हाँकनेवाला (पाअ)। २ वि प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह 'सु(? सू)यमाण्ड पसूएइ' (सूअ १, ३, २, १?)। °गड पुंन [°कृत] दूसरा जैन अङ्ग-ग्रन्थ (अणु २)।

सूअ पु [शूक] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग (गउड गा ५६८)।

सूअ वि [शून] फुला हुआ, सूजनवाला 'सूय-मुह सूयहत्थं सूयपायं' (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सूअ पु [सूप] दाल (पव ६१, टी, उवा, पण्ह २, ३—१२३, सुपा ५७)। °आर, °यार, °र पु [°कार] रसोइया (स १७, कुप्र ६६, २७, श्रावक ६३ टी)। °ारिणी स्त्री [°कारिणी] रसोई बनानेवाली स्त्री (पउम ७७, ७६)।

सूअ देखो सुत्त = सूत्र। °गड पुन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ, 'आयारो सूयगडो' (सूअ २, १, २७ सम)।

सूअअ, सूअक, सूअग वि [सूचक] १ सूचना करनेवाला (वेणी ४५, श्रा ११, सुर २, २२६)। २ पु पिशुन, खल, दुर्जन (पण्ह १, २—पत्र २८)। ३ गुप्त दूत, जासूस (प्राप्र)।

सूअग, सूअय न [सूतक] सूतक, जनन और मरण की अशुद्धि (पचा १३, २८, वव १)।

सूअण न [सूचन] सूचना (उव, सुर २, २३३)।

सूअर पु [शूकर] सूअर, वराह (उवा, विपा १, ३—पत्र ५३, प्रयो ७०)। °वल्ल पु [°वल्ल] अनन्तकाय वनस्पति विशेष (पव ४, श्रा २०)।

सूअरिअ वि [दे] यन्त्र-पीडित (दे ८ ४१ टी)।

सूअरिया, सूअरी स्त्री [दे] यन्त्र-पीडना (सुर १६, १५७, दे ८, ४१)।

सूअल न [दे] किशारु, धान्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सूआ स्त्री [सूचा] सूचन, सूचना (पिंड ४३७, उप्प ५०, सुअनि २)। °कर वि [°कर] सूचक (उप ७६८ टी)।

सूआ, सूइ स्त्री [सूति] प्रसव, प्रसूति, जन्म (पउम २६, ८५, १, ६१, सुपा २३)। °कम्म न [°कर्मन्] प्रसव-क्रिया (सुर १०, ९, सुपा ४०)। °हर न [°गृह] प्रसूति-गृह (पउम २६, ८५)।

सूइ स्त्री [सूचि] देखो सूई (आचा, सम १४६, राय २७)।

सूइअ वि [सूचित] जिसकी सूचना की गई हो वह (महा)। २ उक्त, कथित (पाअ)। ३ व्यञ्जनादि-युक्त (खाद्य) (दस ५, १, ९८)।

सूइअ वि [सूत] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, व्यायी 'साणं सूइअं गाविं' (दस ५, १ १२)।

सूइअ पु [सूचिक] दरजी (कुप्र ४०१)।

सूइअ पु [दे] चण्डाल (दे ८ ३६)।

सूइअ न [सुप्त] निद्रा 'सेज्ज अत्थरिऊण अलियसूइय काऊण अच्छति' (महा)।

सूइग वि [दे सूप्य, सूपिक] भीजा हुआ (खाद्य) 'अवि सूइय वा सुक्क वा' (आचा)।

सूइगा स्त्री [सूतिका] प्रसूति-कर्म करनेवाली स्त्री (सम्मत्त १४५)।

सूई स्त्री [सूची] कपडा सीने की सलाई, सूई (पण्ह १, ३—पत्र ४४, गा ३६४, ५०२)। २ परिमाण-विशेष, एक अंगुल लम्बी एक प्रदेशवाली श्रेणी (अणु १५८)। ३ दो तख्तों के जोडने के काम मे आती एक तरह की पतली कील (राय २७, ८२)। °फलय न [°फलक] तख्ते का वह हिस्सा, जहां सूची-कीलक लगाया गया हो (राय ८२)। °मुह पु [°मुख] १ पक्षि विशेष (पण्ह १ १—पत्र ८)। २ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। ३ न जहां सूची-कीलक तख्ते का छेद कर भीतर घुसता है उसके समीप की जगह (राय ८२)।

सूई स्त्री [दे] मजरी (दे ८, ४१)।

सूई° देखो सूइ = सूति (सुपा २६५)।

सूड सक [भञ्ज्, सूद्] भांगना, तोडना, विनाश करना। सूडइ (हे ४, १०६)। कर्म सूडिज्जइ (पण्ह १, २—पत्र २६)।

सूडण न [सूदन] १ भञ्जन विनाश (गउड)। २ वि. विनाशक (पव २७१)।

सूण वि [शून] सूजा हुआ, सूजन से फुला हुआ (पउम १०३, १८८, गा ६३६, स ३७१, ४८०)।

सूण°, सूणा स्त्री [सूना] वध-स्थान (निर १, १, मा ३४, कुप्र २७६)। °वइ पु [°पति] कसाई (दे २, ७०)।

सूणिग वि [शूनिक] १ सूजन का रोगवाला जिसका शरीर सूज गया हो वह। २ न सूजन (आचा)।

सूणु पु [सूनु] पुत्र, लडका (कुप्र ३१६)।

सूत न देखो सूअय = सूतक (वव १)।

सूप देखो सूअ = सूप (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

सूभग देखो सुभग 'सुभग दूभगनाम सूसर तह दूसर चेव' (धर्मसं ६२०, श्रावक २३)।

सूभग देखो सोभग्ग (पिंड ५०२)।

सूमाल देखो सुउमाल (पण्ह १, ४—पत्र ७८, णाया १ १—पत्र ४७, १, १६—पत्र २००, कप्प, सुर १३, ११८ कुप्र ५५)।

सूर सक [भञ्ज्] तोडना, भांगना। सूरइ (हे ४, १०६)।

सूर वि [शूर] १ पराक्रमी, वीर (ठा ४, ३—पत्र २३७, कप्प, सुपा २२२, ४१२, प्रासू ७१)। २ पु. एक राजा (सुपा ६२२)। ३ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। °सेण पु [°सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजधानी मथुरा थी (विचार ४६, पउम ९८, ६६, ती १४, विक्र ६, सत्त ६७ टी)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। ३ एक जैनाचार्य (उप ७२८ टी। ४ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

सूर पु [सूर, सूर्य] १ सूर्य, रवि (हे २, ६४, ठा २, ३—पत्र ८५, उव, सुपा २२२, ६२२ कप्प, कुमा)। २ सतरहवें जिन-देव का पिता (सम १५१)। ३ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। ४ एक लंका-पति (पउम ५, २६३)। ५ एक द्वीप का नाम (सुज्ज १६)। ६ एक राजा (सुपा ५५६)। ७ छन्द का एक भेद (पिंग) ८ पुन एक देव-विमान (सम १०)। °अंत, °कंत पु [°कान्त] १ मणि-विशेष (स ६, ५०, पउम ३, ७५, पण्ण १—पत्र २६, उत्त ७७)। २ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४, सम १०)। °कूड पुन [°कूट] एक देव-विमान—देव-भवन (सम १०)। °ज्झय पुन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १०)।

°[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] सूर्य के [illegible] (सम १५३)। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन आगम-ग्रन्थ (ठा ३, २—पत्र १२६)। °परिवेस पु [°परिवेष] मेघ आदि से होता सूर्य का मण्डलाकार [illegible] (अणु १२०)। °पव्वय पु [°पर्वत] [illegible] (ठा २, ३—पत्र ८०)। °पाग स्त्री [°पाक] सूर्य के किरण से [illegible] रसोई (सुपा ५६)। °प्पभ पुं [°प्रभ] [illegible] (सम १०)। °प्पभा °पहा स्त्री [°प्रभा] १ सूर्य की [illegible] (णाया २—पत्र २५२)। २ [illegible] की [illegible] (सम १५२)। ३ आठवें जिनदेव की [illegible] (विचार १२६)। °मंडिया स्त्री [°मण्डिका] [illegible] (राय ७६)। °[illegible] [illegible] (अणु)। °लेस पुं [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १७)। °[illegible] न [°[illegible]] [illegible] (पंच)। °वर पु [°वर] [illegible] (सुज्ज १९)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)। °[illegible] स्त्री [°[illegible]] [illegible] (पण्ण १—पत्र ३३)। °सिंग पु [°शृङ्ग] एक [illegible] (सम १०४५ टी)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] [illegible] (सम १०)। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] (सम २०)। °[illegible] स्त्री [°[illegible]] [illegible] (सम १५२)। °सुय पु [°सुत] [illegible] (सुपा १६२)। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible]। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible]।

[illegible] पु [दे] [illegible] (दे ८, ४२ [illegible])।

[illegible] पु [[illegible]] [illegible] (उप [illegible])।

[illegible] [illegible]

सूरल्लय पु [दे] दिन, दिवस (दे ८, ४२, पड्)।

सूरल्लि पुंस्त्री [दे] १ मध्याह्न दुपहर का समय (दे ८, ५७, पड्)। २ कीट-विशेष, मशक के समान आकृतिवाला कीट (दे ८, ५७)। ३ तृण-विशेष, गामणी नामक तृण (दे ८, ५७; जीव ३, ४, राय)।

सूरि पु [सूरि] आचार्य (जी १, सण)।

सूरिअ वि [? भ्रग्न] भागा हुआ (कुमा)।

सूरिअ देखो सुज्ज (हे २, १०७; सम ३६; उव ७२८ टी)। °कंत पु [°कान्त] प्रदेशि-नामक राजा का पुत्र (राय ११, ६—पत्र ५१४; सुपा १४)। °कंता स्त्री [°कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी (सुपा १४६)। °पाग स्त्री [°पाक] सूर्य के ताप से होनेवाली रसोई (सुपा ७०)। स्त्री °गा (सुपा ६८)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] सूर्य की प्रभा (सुज्ज ५—पत्र ७६)। °[illegible] पु [°भ] १ प्रथम देवलोक का एक [illegible] (राय ९४, समवि ६)। २ पुं एक [illegible] विमान। ३ न. सूर्याभ देव का [illegible] (राय १४)। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] (सुज्ज [illegible] टका)। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] (सुज्ज [illegible], टका)।

सूरिल्ल पु [दे] [illegible] (?), 'महुत्त मे मज्झयए ति ताडिऊण सुरिलम्मि समागओ [illegible]' (स ४५०)।

सूरिस देखो सुउरिस (हे १, ८)।

सूरुत्तरवडिंसग पुन [सूर्योत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)।

सूरुल्लि देखो सूरल्लि (राय ८० टी)।

सूरोद पु [सूरोद] एक समुद्र (सुज्ज १६)।

सूरोद्दाम न [सूरोद्दाम] नगर-विशेष (पउम ८, १८५)।

सूरोवराग पु [सूरोपराग] सूर्य-ग्रहण (भग)।

सूल पुंन [शूल] १ [illegible] (हे [illegible], २—पत्र ५३; भग)। [illegible] [illegible] (कुमा [illegible] २—पत्र २८; [illegible])। [illegible]

[illegible]

(सुपा ३७)। पु न देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। °पाणि पु [°पाणि] यक्ष-विशेष (कर्म ५)। °वर पु [°वर] शिव, महादेव (पिंग)।

सूलच्छ न [दे] परवल, छोटा तालाव (दे ८, ४२)।

सूलत्थारी स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती (दे ८, ४२)।

सूला स्त्री [शूला] शूली, सुतीक्ष्ण लोह-कण्टक (गा ६४; उप ३३९ टी; धर्मवि १२०)। °इय वि [°चित, °तिग] शूली पर चढ़ाया हुआ (णाया १, ६—पत्र १५७, १६३; राय १३४)।

सूला स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना (दे ८, ४१)।

सूलि वि [शूलिन्] १ शूल रोगवाला, 'जइ विदल सूलीए' (वि ३)। २ पु शिव, महादेव (पात्र)।

सूलिआ स्त्री [शूलिका] शूली, जिसपर वध्य को चढ़ाया जाता है (पएह १, १—पत्र ८)।

सूव पु [सूप] दाल (उवा; ओघ ७१४; पाव ६ टिड १२४; पंचा १०, ३७)। °यार, °र पु [°कार] रसोइया, रसोई बनानेवाला नौकर (पउम ११३, ७; सुर १६, ३८; उप ३०२)।

सूस अक [शुष्] सूखना। सूसइ, सूसंति, सूसइरे (हे ४, २३६; प्राकृ ६८; कुमा ३७४; हे ३, १४२)।

सूसर वि [सुस्वर] १ सुन्दर आवाजवाला (सुर १६, ४६)। २ न नामकर्म का एक भेद जिसके उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति होती है वह कर्म (धर्मसं ६२०; नाट २१; कम्म २, २२)। °परिवादिणी स्त्री [°परिवादिनी] एक तरह की वीणा (पएह २, ५—पत्र १४९)।

सूसास वि [सोच्छ्‌वास] ऊँचे श्वासवाला (पव ९, ४४०; कुमा)।

सूसिअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (सुर १४, २४८)।

सूसुअ वि [सुश्रुत] १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ अच्छी तरह ज्ञात (वज्जा १०६)। ३ पु वैद्यक ग्रन्थ-विशेष (वज्जा १०६)।

सूहअ } देखो सुभग (सक्षि २०, हे १,
सूहय } ११३, १९२)।

से° देखो सेअ = श्वेत। °वड पु [°पट] श्वेताम्बर जैन (सम्मत्त १३७)।

से अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ वाक्य का उपन्यास। २ प्रश्न (भग १, १, उवा)। ३ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श (उत्त २, ४०, ज)। ४ अनन्तरता (ठा १०—पत्र ४९५)।

से } अक [शी] सोना। सेइ, सेअइ
सेअ } (षड्)।

सेअ सक [सिच्] सींचना। सेअइ (हे ४, ९६)।

सेअ पुं [दे] गणपति, गणेश (दे ८, ४२)।

सेअ पु [सेय] १ कर्दम, कादो, पंक (सूअ २, १, २, णाया १, १—पत्र ६३)। २ एक अधम मनुष्य-जाति, चंडाला मुट्ठिया सेया जे अन्ने पावकम्मिणो' (ठा ७—पत्र ३९३)।

सेअ पु [स्वेद] पसीना (गा ४७८, दे ४, ४६, कुमा)।

सेअ पु [सेक] सेचन, सींचना (मै ६५, गा ७६६, हेका ६६, अभि ३३)।

सेअ न [श्रेयस्] १ शुभ, कल्याण (भग)। २ धर्म। ३ मुक्ति, मोक्ष (हे १, ३२)। ४ वि अति प्रशस्त, अतिशय शुभ, 'इय सजमोवि सेओ' (पचा ७,१४, कुमा, पच ९६)। ५ पु अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

सेअ वि [सैज] सकम्प, कम्प युक्त (भग ५, ७—पत्र २३४)।

सेअ वि [श्वेत] १ शुक्ल, सफेद (णाया १, १—पत्र ५३, अभि ३२, उव)। २ पु एक इन्द्र, कुभंड-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ शक्र की नट सेना का अधिपति (इक)। ४ आमलकप्पा नगरी का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३० राय ६)। °कंठ पु [°कण्ठ] भूतानन्द नामक इन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। °वड, °वडण [°पट] श्वेताम्बर जैन, जैन का एक सम्प्रदाय (सुपा ६४१, वि। २५८५, धर्मस ११०६)।

सेअ वि [एष्यत्] आगामी, भविष्य, पभू णं भंते केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव ओगाहित्ताणं चिट्ठित्तए' (भग ५, —पत्र २२३, ठा १०—पत्र ४९५ अणु २१)। °काल पु [°काल] भविष्य काल (भग, उत्त २९, ७१)।

सेअंकर पु [श्रेयस्कर] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सेअंकार पु [श्रेयस्कार] श्रेय करण, 'श्रेयस्' का उच्चारण (ठा १०—पत्र ४९५)।

सेअंबर पु [श्वेताम्बर] १ एक जैन सम्प्रदाय (स २, सम्मत्त १२३, सुपा ५६६)। २ न सफेद वस्त्र (पउम ६६, ३०)।

सेअंस पु [श्रेयांस] १ एक राज-कुमार (धण १५)। २ चतुर्थ वासुदेव तथा बलदेव के पूर्व जन्म के धर्म गुरु—एक जैन मुनि (सम १५३, पउम २०, १७६)। देखो सेज्जंस।

सेअंस देखो सेअ = श्रेयस् (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

सेअण न [सेचन] सेक, सींचना (कुमा, अभि ४७, णाया १, १३—पत्र १८१ सुपा ३०६)। °वह पु [°पथ] नीक (आचा २, १०, २)।

सेअणग } पु [सेचनक] १ राजा श्रेणिक
सेअणय } का एक हाथी (उप २६४ टी, णाया १, १—पत्र २५)। २ वि सींचनेवाला (कुमा)। देखो सेचणय।

सेअविअ वि [सेवनीय] सेवा योग्य, 'ण सिक्खतो सेयवियस्स किंचि' (सूअ १, ५, १, ४)।

सेअविया स्त्री [श्वेतविका] केकयार्ध देश की प्राचीन राजधानी (विचार ५०, पव २७५, इक)।

सेआ स्त्री [श्वेतता] सफेदपन (सुज्ज १, १)।

सेआ देखो सेवा (नाट—चैत ९२)।

सेआल देखो सेवाल = शैवाल (से २, ३१)।

सेआल देखो सेआ काल = एष्यत्-काल।

सेआल पु [दे] १ गाँव का मुखिया। २ सानिध्य करनेवाला यक्ष आदि (दे ८, ५८)। ३ कृषक, खेती करनेवाला गृहस्थ (पाअ)।

सेआली स्त्री [दे] दूर्वा, दूब, दूभ (दे ८, ५७)।

सेआलुअ पु [दे] मनौती की सिद्धि के लिए उत्सृष्ट बैल (दे ८, ४४)।

सेइअ त [स्वेदित] पसीना (भवि)।

सेइआ } स्त्री [सेतिका] परिमाण-विशेष,
सेइगा } दो प्रसृति की एक नाप (तंदु २९, उप पृ ३३७, अणु १५१)।

सेउ पु न [सेतु] १ बाँध, पुल (से ६, ७, कुप्र २२०, कुमा)। २ आलवाल क्यारी, थावला। ३ कियारी के पानी से सींचने योग्य खेत (ओप, णाया १, १ टी—पत्र १)। ४ मार्ग (ओप, णाया १, १ टी—पत्र १, कप्प ८९)। °बंध पु [°बन्ध] पुल बाँधना (से ६, १७)। °वह पु [°पथ] पुलवाला मार्ग (से ८, ८)।

सेउ वि [सेक्तृ] सेचक, सिंचन करनेवाला (कप्प ८९)।

सेउय वि [सेवक] सेवा-कर्ता (कप्प ९)।

सेंदूर देखो सिंदूर (प्राप्र सक्षि ३)।

सेंधव देखो सिंधव (विक्र ८९)।

सेंभ देखो सिंभ (उव, पि २६७)।

सेंभिय देखो सिंभिय (भग, पि २६७)।

सेवाडय पु [दे] चुटकी की आवाज (दे ८, ४३)।

सेचणय न [सेचनक] सिंचन, छिडकाव (मोह २७)। देखो सेअणय।

सेचाण (अप) पु [श्येन] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो सेण = श्येन।

सेज्ज न [शैत्य] शीतपन, ठढापन (प्राप्र)।

सेज्ज° देखो सेज्जा। °वइ पु [°पति] वसति-स्वामी गृहस्थ (पव ८४)।

सेज्जंभव देखो सिज्जंभव (कप्प, दसनि १, १२)।

सेज्जंस पु [श्रेयांस] १ ग्यारहवें जिनदेव का नाम (सम ८८, कप्प)। २ एक राज-पुत्र,

[illegible] (ठा [illegible], सुज्ज २०२)। [illegible] जम्बू [illegible] महावीर का पिता [illegible] (सम [illegible])। [illegible]

सेणा [illegible] = सैन्य [illegible]।

सेणा स्त्री [सेना] १ [illegible], [illegible] २ [illegible] पत्ति, [illegible] (सुर [illegible])। °वइ पु [°पति] सेनापति, [illegible] का मालिक, [illegible] (औप [illegible])। °वाल पु [°पाल] [illegible] सिद्धा।

सेणावइ पु [दे] [illegible] (दे ८, [illegible])।

सेणाहिव पुं [सेनाधिप] [illegible] का मुखिया, [illegible] (दे ८, [illegible], णाया १, १—पत्र [illegible])।

सेणिय पु [दे] [illegible] (पराण १—पत्र [illegible])।

सेणिआ स्त्री [दे सेणिका] [illegible] मिट्टी, [illegible] (आचा २, १, ६, ३)।

सेढि स्त्री [श्रेणि] देखो सेढी = श्रेणी (सुर ३, १० ; [illegible])।

सेढिआ [illegible] (ठा ४, १, ३४, [illegible])।

सेणा स्त्री [सेना] १ [illegible] (ठा १४२, [illegible])। २ [illegible] (भग)। ३ [illegible] (भग [illegible])। [illegible]

[illegible] [illegible] (२, [illegible])। [illegible]

[illegible]

[illegible]

लश्कर जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ घोड़े और ८५ प्यादे हों (पउम ५६, ५)। °णिय, °णी °णाय पु [°णी] सेना-पति, लश्कर का मुखिया 'सेणाणिप्रोवि ताहे घेत्तूण जिणेसरं सुरवरम्म' (पउम ३ ७७, सुपा ३००, धर्मवि ८४ पउम ६४, २०)। °मुह न [°मुख] सेना जिसमें ६ हाथी, ६ रथ, २७ घोड़े और ४५ प्यादे हों (पउम ५६, ४)। °वइ पु [°पति] सेना का मुखिया, सेना-नायक (कप्प पउम ३७, २, सम ७७, सुपा ७५५)। °हिवइ पु [°धिपति] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा ७३)।

सेणावच्च न [सैनापत्य] सेनापतिपन, सेना का नेतृत्व (कप्प, प्राप)।

सेणि स्त्री [श्रेणि] १ पङ्क्ति। २ समूह (महा)। ३ कुम्भकार आदि मनुष्य-जाति (णाया १, १—पत्र ३७)।

सेणिअ पु [श्रेणिक] १ मगध देश का एक प्रख्यात राजा (णाया १, १—पत्र ११, ३७, ठा ६—पत्र ४५८ सम १५४, उवा, अंत, पउम २, १५, कुमा)। २ एक जैन मुनि (कप्प)।

सेणिआ स्त्री [सेणिका] एक जैन मुनि शाखा (कप्प)।

सेणिआ } स्त्री [सेनिका] छन्द का एक
सेणिका } भेद (पिंग)।

सेणिग देखो सेणिअ (सवाव ३५)।

सेणिय पु [सैनिक] लश्करी सिपाही (स ३८१)।

सेणी स्त्री [श्रेणी] देखो सेणि (महा, णाया १, १)।

सेण्ण [illegible] सिन्न = [illegible] (णाया १, ८—पत्र १४६, महा)।

सेन [illegible] सिन्न = [illegible] (कुप्र १६)।

सेत्त (अप) [illegible] सेअ = [illegible] (पिंग)।

सेत्तुंज पु [शत्रुञ्जय] एक प्रसिद्ध पर्वत (णाया १, १६—पत्र २२२, अंत)।

सेद [illegible] सेअ = [illegible] (१४, १४, स्वप्न [illegible])।

से[illegible] सेद्ध = [illegible] (जीव [illegible])।

सेन्न [illegible] सिन्न = [illegible] (हे १, १४ कुमा, [illegible] १२, [illegible])।

सेप्फ } देखो सेम्ह (हे २, ५५, षड्, कुमा,
सेफ } प्राकृ २२)।

सेफ पुन [शेफ] पुरुष-चिह्न, लिंग (प्राकृ १४)।

सेभालिआ स्त्री [शेफालिका] लता विशेष (हे १, २३६, प्राकृ १४)।

सेमुसी } स्त्री [शेमुषी] मेधा, बुद्धि (राज,
सेमुही } उप पृ ३३३, हम्मीर १४, २२)।

सेम्ह पुन [श्लेष्मन्] कफ, 'सेम्हा गई' (प्राकृ २२ पि २६७)।

सेर वि [स्वैर] स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र, हाच्छ (स्वप्न ७७, विक्र ३७)।

सेर वि [स्मेर] विकस्वर (हे २, ७८, कुमा)।

सेर पु [दे] सेर, परिमाण-विशेष (पिंग)।

सेरंध्री स्त्री [सैरन्ध्री] स्त्री विशेष, अन्य के घर में रहकर शिल्प-कार्य करनेवाली स्वतन्त्र स्त्री (कप्पू)।

सेराह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

सेरिभ पु [दे] धुर्य वृषभ, गाड़ी का बैल (दे ८, ४४)।

सेरिभ देखो सेरिह (सुपा ८, १३, दे ८, ४४ टी)।

सेरिय पु स्त्री [दे] वाद्य विशेष, 'करडिभभ-सेरियहुडुक्कहिं' (सण)।

सेरियय पु [दे] गुल्म विशेष (पराण १—पत्र ३२)।

सेरिह पु स्त्री [सैरिभ] भैंसा, महिष (गा १७२, ७४२, नाट—मृच्छ १३५)। स्त्री. °ही (पाअ)।

सेरी स्त्री [दे] १ लम्बी आकृति। २ नई आकृति (दे ८, ५७)। ३ रथ्या, मुहल्ला (सिरि ३१८)। ४ अन्य निमित [illegible] (राज)।

सेरीस पु न [सेरीश] एक गाँव का नाम (ती १०)।

सेल पु [शैल] १ पर्वत, पहाड़ (से २, ११, प्राप्र, सुर ३, २२६)। २ पाषाण, पत्थर (उप १०३१)। ३ न पत्थरों का समूह (स ६, ३१)। °गार पु [°कार] पत्थर घड़नेवाला शिल्पी, सिलावट (भग १६)। °गिह न [°गृह] पर्वत में बना हुआ घर (रम)। °गाया स्त्री [°गाथा] गाथा

(रभा)। °त्थंभ पुं [°स्तम्भ] पाषाण का खंभा (कम्म १, १८)। °पाल, °वाल पुं [°पाल] १ धरण तथा भूतानन्द नामक इन्द्रों का एक एक लोकपाल (ठा ४ १—पत्र १९७, इक)। २ एक जैनेतर धर्मावलम्बी पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३)। °स न [°स] वज्र (से ३, २७)। °सिहर न [°शिखर] पर्वत का शिखर (कप्प)। °सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती (पाअ)।

सेलग } पुं [शैलक] १ एक राजर्षि (णाया सेलय } १, ५—पत्र १०८, ११)। २ एक यक्ष (पि १५६, णाया १ ९—पत्र १६४)। °पुर न [°पुर] एक नगर (णाया १, ५)।

सेलज्झय न [शैलरज] एक गोत्र (ठा ७—पत्र ३९०, राज)।

सेला स्त्री [शैला] तीसरी नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८, इक)।

सेलाइच्च पुं [शैलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सेलु पुं [शैलु] श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)।

सेलूस पुं [दे] कितव, जुआडी (दे ८, २१)।

सेलेय वि [शैलेय] पर्वत में उत्पन्न, पर्वतीय (धमवि १४०)।

सेलेस पुं [शैलेश] मेरु पर्वत (विसे ३०६५)।

सेलेसी स्त्री [शैलेशी] मेरु की तरह निश्चल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था (विसे ३०६५, ३०६७, सुपा ६५१)।

सेलोदाइ पुं [शैलोदायिन्] एक जैनेतर धर्मावलम्बी गृहस्थ (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेल्ल देखो सेल = शैल, 'न हु भिज्जइ ताण मणं सेल्ल मिव सलिलपूरेण' (वज्जा ११२)।

सेल्ल पुं [दे] १ मृग-शिशु। २ शर वाण (दे ८, ५७)। ३ कुन्त, बर्छी (कुमा, हे ४, ३८७)।

सेल्ल पुं [शैल्य] एक राजा (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सेल्लग पुं [शैलयक] भुजपरिसर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

सेल्लि स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (उत्त २७, ७)।

सेव सक [सेव्] १ आराधन करना। २ आश्रय करना। ३ उपभोग करना। सेवइ, सेवए (आचा, उव, महा)। भूका सेवित्था, सेविंसु (आचा)। वकृ सेवमाण (सम ३९, भग)। कवकृ सेविज्जंत, सेविज्जमाण (सुर १२, १३९, कप्प)। संकृ सेविअ, सेवित्ता (नाट—मृच्छ २४५, आचा)। कृ सेवेयव्व (सुपा ५५७, कुमा), सेवणिज्ज (सुपा १९७)।

सेवग देखो सेवय (पचा ११, ४१)।

सेवड देखो से° = श्वेत।

सेवण न [सेवन] १ सीना, सिलाई करना (उप पृ १२३)। २ सेवा (उत्त ३५, ३)।

सेवणया } स्त्री [सेवना] सेवा (उत्त २९, सेवणा } १, उप ८०२)।

सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता (कुप्र ४०२)। २ पुं नोकर, भृत्य (पाअ, कुप्र ४०२, सुपा ५३२)।

सेवल न [शैवल] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की घास जो नदियों में लगती है (पाअ)।

सेवा स्त्री [सेवा] १ भजन, पर्युपासना, भक्ति। २ उपभोग। ३ आश्रय। ४ आराधन (हे २, ९९, कुमा)।

सेवाड } न [शैवाल] १ सेवार, सेवाल, सेवाल } घास विशेष (उप पृ १३६, पाअ, जी ९)। २ पुं एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (कुप्र २९३)। °दाइ पुं [°दायिन्] भगवान् महावीर के समय का एक अजैन पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेवाल पुं [दे] पङ्क, कादा, काँदो (दे ८, ४३, पड्)।

सेवालि पुं [शैवालिन्] एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (उप १४२ टी)।

सेवालिय वि [शैवालिक, °त] सेवालवाला, शैवाल-युक्त, 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामयामम्मि' (सुर २, १०५)।

सेवि वि [सेविन्] सेवा-कर्ता (उवा)।

सेवित्त वि [सेवितृ] ऊपर देखो (सम १५)।

सेविय वि [सेवित] जिसकी सेवा की गई हो वह (काल)।

सेव्वा देखो सेवा (हे २, ९९, प्राप्र)।

सेस पुं [शेष] १ शेष-नाग, सर्प राज (से २, २८)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ वि अवशिष्ट बाकी का (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, दमनि १, १३४, हे १, १८२, गउड)। °मई, °वई स्त्री [°वती] १ सातवें वसुदेव की माता (सम १५२)। २ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। ३ वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। ४ भगवान् महावीर की दौहित्री—पुत्री की पुत्री (आचा २, १५, १६)। °व न [°वत्] अनुमान का एक भेद (अणु २१२)। °राअ पुं [°राज] छन्द-विशेष (पिंग)।

सेसव न [शैशव] बाल्यावस्था (दे ७, ८६)।

सेसा स्त्री [शेषा] निर्माल्य (उप ७२८ टी, सिरि ५५५)।

सेसिअ वि [शेषित] १ बाकी बचाया हुआ (गा ९६१)। २ अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ (विसे ३०२९)।

सेसिअ वि [श्लेषित] संबद्ध किया हुआ, चिपकाया हुआ (विसे ३०३६)।

सेह अक [नश्] पलायन करना, भागना। सेहइ (हे ४, १७८, कुमा)।

सेह सक [शिक्षय्] १ सिखाना, सीख देना। २ सजा करना। सेहति (सूअ १, २, १, १९)। कवकृ सेहिज्जंत (सुपा ३४५)।

सेह पुं [दे सेह] भुजपरिसर्प की एक जाति, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं (पण्ह १, १—पत्र ८, पण्ण १—पत्र ५३)।

सेह पुं [शैक्ष] १ नव-दीक्षित साधु (सूअ १, ३, १, ३, सम ५८, ओघ १९५, ३७८, उव, कस)। २ जिसको दीक्षा दी जानेवाली हो वह (पव १०७)। ३ शिष्य, चेला (सुख १, १३)।

सेह पुं [सेध] सिद्धि (उवा)।

सेहव वि [सेधाम्ल] खाद्य-विशेष, वह खाद्य जिसमें पकने पर खटाई का संस्कार किया जाय (उवा, पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

सेहुणा [illegible] [illegible] (...)।

सेहर [illegible] [illegible]।

सेहर [illegible] (... ८, ८०)।

सेहा [illegible] (... ७३, [illegible] १३, [illegible])।

से[illegible] [illegible] [illegible] (... ४)।

सेहार [illegible] सेह=शिखर [illegible] (... [illegible])। [illegible] सेहरिस [illegible] ([illegible] ७६)।

सेहावअ [illegible] [illegible] हुआ ([illegible] ३२३)।

सेहि [illegible]।

सेहिअ [illegible] १ [illegible]। २ [illegible] (... २)।

सेहिज [illegible] हुआ (... ८, १)।

सो [illegible] १ [illegible]। [illegible] ४ [illegible] (...)।

सो [illegible] [illegible] सूखना। [illegible] (... १८७ प्राप ६६)।

सोअ [illegible] [illegible] १ [illegible] २ शुद्धि [illegible] (... १, ३८ [illegible] १३४, [illegible] २८ ३४)। [illegible] (... २२, [illegible])। [illegible]

[illegible] [illegible] १ [illegible] (... १०, ६२, [illegible] ३८ [illegible] २३, [illegible] ३१)।

सो[illegible] [illegible] (सुर [illegible])।

सोअ न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा; [illegible] सुर [illegible])। °मय वि [°मय] श्रोत्रेन्द्रिय-जन्य (ठा [illegible]—पत्र ४०६)।

सोअ पुं [स्रोतस्] १ प्रवाह (आचा; [illegible] ६२)। २ [illegible]। ३ वेग (णाया १, ८)।

सोअण न [स्वपन] शयन (उप)।

सोअण न [शोचन] १ शोक, दिलगीरी (सूअ २, २, ५५; [illegible] ८६)। २ शुद्धि, प्रक्षालन (स ३४८)।

सोअणा स्त्री [शोचना] १ ऊपर देखो (प्राप; प्रत्क [illegible])। २ [illegible] (ठा ४ [illegible]—पत्र १८८)।

सोअमल्ल न [सौकुमार्य] सुकुमारता, प्रतिकोमलता (हे १, १०७; प्राप्र; कुमा)।

सोअर पुं [सोदर] सगा भाई (प्रवा २६; सुपा ६६२; रंभा)।

सोअरा स्त्री [सोदरा] सगी बहन (कुमा)।

सोअरिअ वि [शौकरिक] १ सूअरों का शिकार करनेवाला (विपा १, ३—पत्र ५४)। २ शिकारी, मृगया करनेवाला। ३ कसाई (पिंड ३१४; उप; सुपा २१४)।

सोअरिअ वि [सोदर्य] सहोदर, एक उदर से उत्पन्न (सूअ १, १, १, ५)।

सोअल्ल देखो सोअमल्ल (संक्षि २)।

सोअविअ स्त्रीन [शौच] शुद्धि, पवित्रता (सूअ २, १, ७७)। [illegible] (आचा)।

सोअव्व देखो सुण=श्रु।

सोआमणी स्त्री [सौदामनी, °मिनी] १ विद्युत्, बिजली (उत्त २२, ७ [illegible] १२ [illegible])। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८)।
सोआमिणी

सोइअ [illegible] [illegible] (सुर ८, १४; सुपा २६८)। [illegible]

सोइंदिअ [illegible] [illegible] (अणु)।

सोइंदि [illegible] सोआमणी ([illegible])।

सोइ [illegible] [illegible] (प ३; प्राकृ ३)।

सो[illegible] देखो सो[illegible] (सुपा २, २, २८; [illegible] १४२)।

सोउमल्ल देखो सोअमल्ल (अभि २१३; सुर ८, १२५)।

सोंड देखो सुंड (पात्र)। °मगर पुं [°मकर] मगर की एक जाति (पराण १—पत्र ४८)।

सोंडा स्त्री [शुण्डा] १ सुरा, दारू (प्राचा २, १, ३, २)। २ हाथी की नाक, सूँढ (उत्रा)।

सोंडिअ पुं [शौण्डिक] दारू बेचनेवाला, कलवार (अभि १८८)।

सोंडिया स्त्री [शुण्डिका] दारू का पात्र-विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

सोंडीर वि [शौण्डीर] १ शूर, वीर, पराक्रमी (पण्ण; सुर २, १३४; सुपा [illegible]०)। २ गर्व-युक्त, गर्वित (गउड)।

सोंडीर न [शौण्डीर्य] १ पराक्रम, शूरता। २ गर्व (हे २, ६३; षड्)।

सोंडीरिम पुंस्त्री [शौण्डीरिमन्] ऊपर देखो (सुपा २६२)।

सोदज्ज (शौ) देखो सुंदेर (पि ८४)।

सोक्क देखो सुक्क=शुल्क (षड्)।

सोक्ख देखो सुक्ख=सौख्य (प्राकृ १०; गा १५८; सुपा ७०; कुमा)।

सोक्ख देखो सुक्ख=शुष्क (षड्)।

सोग देखो सोअ=शोक (पउम २०, ४५; सुर २, १४०; स २५५; प्रासू ८३; उव)।

सोगंध } न [सौगन्ध्य] १ लगातार चौबीस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। २ सुगन्धिता, सुगन्ध, 'सागंधिय-परिसोमिय सभाल' (सम्मत्त २२०)।
सोगंधिअ

सोगंधिअ न [सौगन्धिक] १ रत्न विशेष, रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१; पराण १—पत्र २६; उत्त ३६, ७७ [illegible]; कुम्मा १५)। २ रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी [illegible] (सम ८६)। ३ [illegible] (सूअ २, ३, १८; राय ८२)। ४ [illegible] (पा १-६; पुण्फ १२८)। ५ [illegible] (उत्र १४२)। ६ [illegible] (सम्मत्त २२०)।

सोगंधिया स्त्री [सौगन्धिका] नगरी-विशेष (णाया १, ५ पत्र १०५)।

सोगमल्ल देखो सोगमल्ल (दस २, ५)।

सोग्गइ देखो सुग्गइ (उत्त २८, ३, पउम २६, ६०, स २५०)।

सोग्गाह (?) अक [प्र+सृ] पसरना, फैलना। सोग्गाहइ (वाव्वा १५६)।

सोच देखो सोअ=शुच्। वकृ सोचत, सोचमाण (नाट—मृच्छ २८१, णाया १, १—पत्र ८७)। सकृ 'सोचिऊण हत्थपाए आरोग्गमणिरयणेण ओमज्जिओ राया' (स ५६७)। कृ सोच (उव)।

सोच्चित्र वि [शोच्चित] शुद्ध किया हुआ, प्रक्षालित (स ३४८)।

सोच्च देखो सोच।

सोच्च
सोच्चा } देखो सुण=श्रु।
सोच्चं°

सोच्छिअ देखो सोत्थिअ (इक)।

सोजण्ण } न [सौजन्य] सुजनता, सज्जनता, सोजन्न } भलमनसी (उप ७२८ टी, सुर २, ६१)।

सोज्ज देखो सोरिअ=शौर्य (प्राकृ १६)।

सोज्झ वि [शोध्य] शुद्धि-योग्य, शोधनीय (मुज १०, ६ टी)।

सोज्झय पु [दे] रजक, धोबी (पाअ)। देखो सुज्झय।

सोडिअ देखो सोंडिअ (कर्पूर ३४)।

सोडीर वि [शौटीर] देखो सोंडीर=शौण्डीर (कप्प, ओप, मोह १०४, कप्पू, चारु ६२)।

सोडीर न [शौटीर्य] देखो सोंडीर=शौण्डीर्य (कुमा, से ३, ४, ५, ३, १३, ७६, ८७, प्राकृ १६)।

सोढ वि [सोढ] सहन किया हुआ (उप २६४ टी, वाव्वा १५७)।

सोढव्व } देखो सह=सह्।
सोढु }

सोण वि [शोण] लाल, रक्त वर्णवाला (पाअ)।

सोणंद न [दे सौनन्द] त्रिकाष्ठिका, तिपाई (पएह १, ४—पत्र ७८, ओप, तदु २०)।

सोणहिअ वि [शौनकिक] १ श्वान-पालक। २ कुत्तो से शिकार करनेवाला (स २५३)।

सोणार देखो सुण्णार (गा १९१, पि ६६, १५२)।

सोणि स्त्री [श्रोणि] कटी, कमर (कप्प, उप १५६)। °सुत्तग न [सूत्रक] कटी-सूत्र, करधनी (ओप)।

सोणिअ पु [शौनिक] कसाई (दे ६, ६२)।

सोणिअ न [शोणित] रुधिर, खून (उवा, भवि)।

सोणिम पुस्त्री [शोणिमन्] रक्तता, लाली (विक्र २८)।

सोणी स्त्री [श्रोणी] देखो सोणि (पएह १, ४—पत्र ६८, ७६)।

सोणीअ देखो सोणिअ=शोणित, 'भुजते मससोणीअ ण छणे ण पमजए' (आचा १, ८, ८, ६, पि ७३)।

सोण्ण न [स्वर्ण] सोना, सुवर्ण (प्राकृ ३०, संक्षि २१)।

सोण्ह देखो सुण्ह=सूक्ष्म (षड्, गा ७२३)।

सोण्हा देखो सुण्हा=स्नुषा (संक्षि १५, प्राकृ ३७, गा १०७, काप्र ८६३)।

सोत्त न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा, रंभा, विक्र ६८)।

सोत्त देखो सोअ=स्रोतस (हे २, ९८, गा ५५१, से १, ५८, कुमा)।

सोत्ति देखो सुत्ति=शुक्ति (षड्, उप ६४८ टी)।

सोत्तिअ पु [श्रोत्रिय] वेदाभ्यासी ब्राह्मण (पिंड ४३९, नाट—मृच्छ १३४, प्राप)।

सोत्तिअ वि [सौत्रिक] १ सूत्र-निर्मित, सूते का बना हुआ (ओघभा ८६, ओघ ७०५)। २ सूते का व्यापारी (अणु १४९)।

सोत्तिअ पुं [शौक्तिक] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पएण १—पत्र ४८)।

सोत्तिअमई } स्त्री [शुक्तिमती] केकय सोत्तिअवई } देश की प्राचीन राजधानी (राज, इक)।

सोत्ती स्त्री [दे] नदी (दे ८, ४४, षड्)।

सोत्थि पुन [स्वस्ति] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। २—देखो सत्थि (संक्षि २१, गा २८८; अभि १२८, नाट—रत्ना १०)।

सोत्थिअ पु [स्वस्तिक] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ न शाक-विशेष, एक प्रकार की हरित वनस्पति (पएण १—पत्र ३४)। ३—देखो सत्थिअ, सोवत्थिअ=स्वस्तिक (पएह १, ४—पत्र ६८, णाया १, १—पत्र ५४)।

सोदाम पु [सौदाम] देखो सोदामि (इक)।

सोदामणी देखो सोआमणी (पउम २६, ८१)।

सोदामि पु [सौदामिन्] चमरेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

सोदामिणी देखो सोआमिणी (नाट—मालती ८)।

सोदास पु [सौदास] एक राजा (पउम २२, ८१)।

सोध (शौ) देखो सउह=सौध (पि ६१ ए)।

सोपार } पु ब. [सोपार, °क] देश-सोपारय } विशेष (पउम ९८, ६४, सुपा २७५)। २ न नगर-विशेष (सार्ध ३६, ती ११)।

सोवधव वि [सौवन्धव] सुबन्धु नामक कवि का बनाया हुआ ग्रंथ (गउड)।

सोभ अक [शुभ्] शोभना, चमकना। सोभति (सुज्ज १९) भूका. सोभिंसु, सोभेंसु (सुज्ज १९)। भवि सोभिस्सति (सुज्ज १९)। वकृ सोभत (णाया १, १—पत्र २५, कप्प, औप)।

सोभ सक [शोभय्] शोभाना, शोभा-युक्त करना। सोभेइ (भग)। वकृ सोभयत (पि ४९०)। सकृ सोभित्ता (कप्प)।

सोभग वि [शोभक] १ शोभनेवाला। २ शोभानेवाला (कप्प)।

सोभग्ग देखो सोहग्ग (स्वप्न ४५)।

सोभण देखो सोहण=शोभन (पउम ७८, ५६, स्वप्न ४९)।

सोभा देखो सोहा=शोभा (प्राकृ १७, उत्त २१, ८, कप्प, सुज्ज १९)।

सोमिअ [illegible] (णाया १, [illegible])।

सोम पु [सोम] १ चन्द्र, चाँद, एक ज्योतिष्क देव (ठा २ —पत्र ७७, विसे १८८३, [illegible])। २ [illegible] (उत्त २, ठा ८—पत्र ४०६)। [illegible] (पउम ४, [illegible])। [illegible] (ठा ६—पत्र ४४७, [illegible])। [illegible] (पउम ७, ४३)। [illegible] (सुपा ४६७)। [illegible] (णाया १, १६—पत्र १२५)। [illegible] (ठा ४, १—पत्र [illegible])। [illegible] (सम्म [illegible])। [illegible] सौम्य, [illegible]। [illegible] मुनि ([illegible])। [illegible] (सिन्द्र [illegible], १४३ १४४)। [illegible]। °काइय पु [°कायिक] [illegible] (भग ३, [illegible] १६४)। °ग्गहण न [°ग्रहण] [illegible]। °चंद पु [°चन्द्र] [illegible]। °जस पु [°यशस्] [illegible]। °देव पु [°देव] [illegible]

१ [illegible] सुप्त आदि पुरुष [illegible] का एक पुत्र (पउम ५ १०, कुम्र ७०२)। २ तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (कुम्र ११४)। ३ चमरेन्द्र के सोम लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °भूइ पु [°भूति] एक ब्राह्मण का नाम (णाया १ १६—पत्र १९६)। °भूइअ न [°भूतिक] एक कुल का नाम (कप्प)। °य न [°क] एक गोत्र [illegible] शाखा है (ठा —पत्र ३६०)। °व °वा, वि [°प, °पा] सोम-रस पीनेवाला (षड्)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मणी (अन्त)। °सुंदर पु [°सुन्दर] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य तथा ग्रन्थकार (गति १४ [illegible] ४४)। °सूरि पु [°सूरि] एक जैनाचार्य आराधना प्रकरण का कर्ता एक जैनाचार्य (आरा ७०)।

सोम वि [सौम्य] १ [illegible], अनुग्र (ठा ६, भग १२, ६—पत्र ५७८)। २ नीराग, रोग-रहित (भग १२ ६)। ३ प्रशस्त, श्लाघ्य (कप्प)। ४ प्रियदर्शन, जिसका दर्शन प्रिय मालूम हो वह। ५ मनोहर, सुन्दर। ६ शान्त आकृतिवाला (औपपा २२, उत्त, सुपा १८०, ६२२)। ७ शोभा-युक्त, शोभमान (ज २)। देखो सोम्म।

सोमउअ वि [दे] माने की आदतवाला (दे ८, ३६)।

सोमगल पु [सौमङ्गल] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

सोमणस्सि वि [सौमनसिक, स्वात्मनसिक] [illegible] प्रति-[illegible]। २ [illegible] (ठा ६—पत्र ३६१)।

सोमणस पु [सौमनस] १ [illegible] (ठा २, —पत्र ६२ ७२, [illegible])। २ [illegible] (ठा ४)। ३ [illegible] (सुज्ज १०, १४) ४ [illegible] (ठा ८—पत्र ४३७, औप)।

५ एक देव-विमान, छठवाँ ग्रैवेयक विमान (देवेन्द्र १३७, १०३ पत्र १६४)। ६ सौमनस पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ७ न मेरु-पर्वत का एक वन (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सोमणस न [सौमनस्य] १ सुन्दर मन, सन्तुष्ट मन (राय, कप्प)।

सोमणसा स्त्री [सौमनसा] १ जम्बू-वृक्ष विशेष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (इक)। २ एक राजधानी (इक)। ३ सौमनस वन की एक वापी (ज ४)। ४ पक्ष की पाँचवीं रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

सोमणस्सिय वि [सौमनस्यित] १ सन्तुष्ट मनवाला। २ प्रशस्त मनवाला (कप्प)।

सोमणस्स देखो सोमणस = सौमनस्य (कप्प, औप)।

सोमणस्सिय देखो सोमणस्सिय (कप्प औप, णाया १, १—पत्र १३)।

सोमल्ल देखो साउमल्ल (प्राकृ २०, ३०)।

सोमहिद न [दे] उदर पेट (दे ८, ४५)।

सोमहिंद पु [दे] पक, कादा (दे ८, ४३)।

सोमा स्त्री [सोमा] १ शक्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६)। ३ सोम लोकपाल की राजधानी (भग ३, ७—पत्र १९५)।

सोमा स्त्री [सौम्या] उत्तर दिशा (ठा १०—पत्र ४७८ भग १०, १—४९३)।

सोमाण न [श्मशान] मसान, मरघट (दे ८, ४५)।

सोमाणस पु [सौमानस] [illegible] ग्रैवेयक विमान (पव १९४)।

सोमार [illegible] सुकुमार ([illegible] १८९, [illegible] ८५, [illegible], पड्, नाथ, [illegible] १०२ [illegible] ३८ [illegible])।

सोमाल [illegible] (दे ८, ४४)।

सोमित्ति पुं [सौमित्रि] राम का [illegible] (पउम [illegible])।

सोमित्तिा स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता। °पुत्त पु [°पुत्र] लक्ष्मण 'सोमित्तिपुत्तो' (पउम ३८, ४३) °सुय पु [°सुत] [illegible] (पउम ७२, ४)।

सोमिल पु [सोमिल] एक ब्राह्मण (अंत ६)।

सोमित्ति देखो सोमित्ति=सौमित्रि (से १२ ८८)।

सोमेसर पु [सोमेश्वर] सौराष्ट्र का सोमनाथ महादेव (सम्मत्त ७५)।

सोम्म वि [सौम्य] १ रमणीय, सुन्दर (से १, २७)। २ ठढा शीतल (से ४, ८)। ३ शीतल प्रकृतिवाला शान्त स्वभाववाला (ते ५, ८६, विसे १७३१)। ४ प्रिय-दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय लगे वह। ५ जिसका अधिष्ठाता सोम-देवता हो वह। ६ भास्वर, कान्तिवाला। ७ पु बुध ग्रह। ८ शुभ ग्रह। ९ वृष आदि सम राशि। १० उदुम्बर वृक्ष। ११ द्वीप-विशेष। १२ सोम रस पीनेवाला ब्राह्मण (प्राप्र)। देखो सोम=सोम्य।

सोज्जि (अप) अ [स एव] वही (प्राकृ १२१)।

सोरट्ठ पुं [सौराष्ट्र] १ एक भारतीय देश, सोरठ, काठियावाड (इक, ती १५)। २ वि सोरठ देश का निवासी (श्रावक ९३)। ३ न छन्द-विशेष (पिंग)।

सोरट्ठिया स्त्री [सौराष्ट्रिका] १ एक प्रकार की मिट्टी, फिटकिरी (आचा २, १, ६, ३, दस ५, १, ३४)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सोरब्भ } न [सौरभ] सुगन्ध, खुशबू (विक्र
सोरंभ } १८३, कुप्र २२३, भवि, उप
सोरभ } ९८६ टी)।

सोरसेणी स्त्री [शौरसेनी] शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद (विक्र ६७)।

सोरह देखो सोरभ (गउड)।

सोरिअ न [शौर्य] शूरता, पराक्रम (प्राप्र, प्राकृ १९)।

सोरिअ न [शौरिक] १ कुशावर्त देश की प्राचीन राजधानी (इक)। २ एक यक्ष (विपा १, ८—पत्र ८२)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक मच्छीमार का पुत्र (विपा १, १—पत्र ४, विपा १, ८)। २ एक राजा (विपा १, ८—पत्र ८२)। °पुर न [°पुर] एक नगर (विपा १, ८)। °वडिंसग न [°वतंसक] एक उद्यान (विपा १, ८—पत्र ८२)।

सोलम त्रि ब. [षोडशन्] १ संख्या-विशेष, सोलह, १६। २ सोलह संख्यावाला (भग ३५, १—पत्र ९६४, ९६७, उवा, सुर १, ३५, प्रासू ७७, पि ४४३)। ३ वि. सोलहवा, १६ वा (राज)। °म वि [°श] १ सोलहवाँ १६ वा (णाया १, १६—पत्र १९६ सुर १६, २५१, पव ४६)। २ लगातार सात दिनो के उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °य न [°क] सोलह का समूह (उत्त ३१, १३)। °विह वि [°विध] सोलह प्रकार का (पि ४५१)।

सोलसिआ स्त्री [षोडशिका] रस-मान-विशेष, सोलह पलो की एक नाप (अणु १५२)।

सोलह देखो सोलस (नाट, भवि)।

सोलहावत्तय पुं [दे] शंख (दे ८, ४६)।

सोल्ल सक [पच्] पकाना। सोल्लइ (हे ४, ९०, धात्वा १५६)। वकृ. सोल्लत (विपा १, ३—पत्र ४३)।

सोल्ल सक [क्षिप्] फेंकना। सोल्लइ (हे ४, १४३, षड्)। कर्म सोल्लिज्जइ (कुमा)।

सोल्ल सक [ईर्, सम्+ईर्] प्रेरणा करना। सोल्लइ (धात्वा १५६, प्राकृ ६६)।

सोल्ल न [दे] मास (दे ८, ४४)। देखो सुल्ल=शूल्य।

सोल्ल वि [पक्व] पकाया हुआ (उवा, विपा १, २—पत्र २७, १, ८-पत्र ८५, ८६, ओप)।

सोल्लिय वि [पक्व] १ पकाया हुआ, 'इगालसोल्लिय' (ओप)। २ न. पुष्प-विशेष (ओप)।

सोव देखो सुव=स्वप्। सोवइ, सोवति (हे १, ६४; उव, भवि, पि १५२)।

सोवक्कम } वि [सोपक्रम] निमित्त-कारण
सोवक्रम } से जो नष्ट या कम हो सके वह कर्म, आयु, आपदा आदि (सुपा ४५२, ४५६)।

सोवचिय वि [सोपचित] उपचय-युक्त, स्फीत, पुष्ट (कप्प)।

सोवच्चल पुन [सौवर्चल] एक तरह का नोन, काला नमक (दस ३, ८, चड)।

सोवण न [स्वपन] शयन, सोना (उप पृ २३७)।

सोवण न [दे] १ वास-गृह, शय्या गृह, रति-मन्दिर (दे ८, ५८, स ५०३ पाअ)। २ स्वप्न। ३ पु. मल्ल (दे ८, ५८)।

सोवण (अप) देखो सोवण्ण (भवि)।

सोवणिअ वि [शौवनिक] १ श्वान-पालक, कुत्तो को पालनेवाला। २ कुत्तो से शिकार करनेवाला (सूअ २, २, ४२)।

सोवणी स्त्री [स्वापनी] विद्या-विशेष (पि ७८)।

सोवण्ण वि [सौवर्ण] स्वर्ण-निर्मित, सोने का (महा, सम्मत्त १७३)।

सोवण्णमक्खिआ स्त्री [दे] मधुमक्षिका की एक जाति, एक तरह की शहद की मक्खी (दे ८, ४६)।

सोवण्णिअ } वि [सौवर्णिक] सोने का,
सोवण्णिग } सुवर्ण-घटित (प्रति ७, स ४१८)। °पव्वय पु [°पर्वत] मेरु पर्वत (पउम २, १८)।

सोवण्णेअ पुस्त्री [सौपर्णेय] गरुडपक्षी। स्त्री °आ, °ई (षड्)।

सोवत्थ न [दे] १ उपकार। २ वि. उपभोग्य, उपभोगयोग्य (दे ८, ४५)।

सोवत्थि } वि [सौवस्तिक] १ माङ्गलिक
सोवत्थिअ } वचन बोलनेवाला, मागध आदि स्वस्ति-वाचक (ठा ४, २—पत्र २१३, ओप)। २ पु ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २ ३—पत्र ७८)। ३ त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४५)।

सोवत्थिअ पु [स्वस्तिक] १ साथिया, एक मङ्गलचिह्न (ओप)। २ पुन विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। ३ पूर्व रुचक पर्वत का एक शिखर (राज)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। देखो सत्थिअ, सोत्थिअ=स्वस्तिक।

सोवन्न देखो सोवण्ण (अंत १७, श्रा २८, सिरि ८११, भवि)।

सोवन्निअ देखो सोवण्णिअ (णाया १, १—पत्र ५२)।

सोवरिअ देखो सोअरिअ=शौकरिक (सूअ २, २, २८)।

सोवरी [illegible] [शाम्बरी] विद्या-विशेष (सूअ [illegible])।

सोवच्चिअ वि [सौवर्चलित] [illegible] (उ [illegible] ३२८ टी)।

सोवाग वि [सौपाक] [illegible] (णाया)।

सोवाण पु [सोपान] [illegible] (णाया, [illegible] १३ [illegible])।

सोवाणिआ [illegible] [illegible] ([illegible])।

सोवारा [illegible] [illegible] (णाया [illegible] ६२)।

सोवासिणी [illegible]।

सोविअ वि [illegible] [illegible] ([illegible] ३१ टी)।

सोविअ [illegible] [सौविदल्ल] [illegible] (सुपा ३)।

सोवीर [illegible] [सौवीर] [illegible] ([illegible])। २ [illegible]।

सोवीरा [illegible] [सौवीरा] [illegible] ([illegible] २६)।

सोवीर [illegible] [illegible] ([illegible])।

सोस सक [शोषय्] [illegible] (आव)। [illegible] सोसंत ([illegible])।

सोस [illegible] [illegible] ([illegible] ६, २६५)।

सोस [illegible] [illegible] ([illegible])।

सोस [illegible] [illegible] ([illegible] ८४)।

[illegible]

सोसणी स्त्री [°णी] नदी, दरार (दे ८, ४५)।

सोसविअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (हे ३ १५०, उप)।

सोसावसोसेंत = शोषय्। वकृ सोसावेंत (सो) (नाट)।

सोसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वास युक्त (पड्)।

सोसिअ देखो सोसविअ (हे ३, १५०, सुर ३, १ ६, महा)।

सोसिअ वि [सोत्सूत्र] ऊँचा किया हुआ (उप)।

सोसिट्ठ वि [शोभनर] शोभा-युक्त, सुन्दर रागवाला (विपा १, ७—पत्र ७२)।

सोह अक [शुभ्] शोभना, चमकना। सोहइ, सोहए सोहति (हे ४, १८७ पात्र चुमा)। वकृ सोहंत, सोहमाण (उप, सुर ३, २१२, नाट—उत्तर ८)।

सोह सक [शोभय्] शोभा-युक्त करना। सोहइ (उत्त)।

सोह सक [शोधय्] १ शुद्धि करना। २ साफ करना, सफाई करना। ३ संशोधन करना। सोहइ (उत्त)। कृ 'सुविसुद्धमग्गिइ दट्ठु सोहियं ससुमं तिसं' (श्रा १२)। सोहमाण (उत्त, विपा १, १—पत्र ७)। कवकृ सोहिज्जंत (उप ७२८ टी)। कृ सोहणिज्ज, सोहेयव्व (णाया १, १६—पत्र २०२, नाट—शकु ८६, सुपा ६७७)। संकृ सोहइत्ता (उत्त २६, १)।

सोह देखो सद्द = शोभ (गमि ६१, प्रति ८१, नाट—शाकी १३८)।

सोहंजण पु [शोभाञ्जन] वृक्ष-विशेष, सहिंजने का गाछ (दे ८, ३०, उप)।

सोहग्ग देखो सोहग्ग (उप ३८ टी)।

सोहग पु [शोधक] धोबी, रजक (उप पृ ३६३)। [illegible]।

सोहग्ग न [सौभाग्य] १ सुन्दरता, सौन्दर्य ([illegible] ६४)। २ सौभाग्यता (सुपा [illegible], ३ सुन्दर [illegible] १०८)। °कप्परुक्ख पु [°कल्पवृक्ष] [illegible]। °गुलिआ स्त्री [°गुटिका] [illegible] (सुपा ४६७)।

सोहग्गजण न [सौभाग्यजनन] सौभाग्यजनक प्रयोग (सुपा २६७)।

सोहग्गिअ वि [सौभागिक] भाग्य शाली, सुन्दर भाग्यवाला (उप पृ ८७, १०८)।

सोहण पु [शोभन] १ एक प्रसिद्ध जैन मुनि (सम्मत ७५)। २ वि शोभा-युक्त, सुन्दर (सुर १, २४७, ३ १८४, प्रासू १३२)। स्त्री °णा, °णी (प्राकृ ४२)। °नगर न [°नगर] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर नगर (इक)।

सोहण न [शोधन] १ शुद्धि सफाई (उप ५६७ टी, कुप्र १० ६ टी, उप)। २ वि शुद्धि-जनक (श्रा ६)।

सोहणी स्त्री [दे] सम्मार्जनी, झाडू (दे ८, १७)।

सोहद्द न [सौहृद] १ मित्रता। २ बन्धुता (प्रभि २१८, अच्चु ५)।

सोहम्म देखो सुहम्म, सुहम्म = सुधर्मन् (पव १६)।

सोहम्म पु [सौधर्म] प्रथम देवलोक (सम २, राय श्रणु)। °कप्प पुं [°कल्प] पहला देवलोक, स्वर्ग-विशेष (महा)। °वइ पु [°पति] प्रथम देवलोक का स्वामी, शक्रेन्द्र (सुपा ५१)। °वडिंसय पुन [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम ८, २५, राय ५६)। °सामि पु [°स्वामिन्] प्रथम देवलोक का इन्द्र (सुपा ५१)।

सोहम्म° देखो सुहम्मा (महा)।

सोहम्मग देखो सोहण = शोभन 'रयणपि गुणुक्करिसं उवइ सोहम्मगुणेण' (सम्म ६, १ टी)।

सोहम्मिंद पु [सौधर्मेन्द्र] शक्र, प्रथम देवलोक का स्वामी (महा)।

सोहम्मिय वि [सौधर्मिक] सधर्म-लोक का (मण)।

सोहय वि [शोधक] शुद्ध कर्ता, सफाई करनेवाला ([illegible] ११६६)। देखो सोहग = शोधक।

सोहल देखो सोहण = शोभन (उप पृ २९६)।

सोहल्ल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (भवि)।

सोहा स्त्री [शोभा] १ दीप्ति, चमक (से १, ४८, कुमा, सुपा ३१, रंभा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सोहाव सक [शोधय्] सफा कराना। सोहावेह (स ५१६)।

सोहाविय वि [शोधित] साफ कराया हुआ (स ६२)।

सोहि स्त्री [शुद्धि, शोधि] १ निर्मलता (णाया १, ५—पत्र १०५, सबोध १२)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त (ओघ ७९१, ७९७, आचा)।

सोहि वि [शोधिन्] शुद्धि-कर्ता (ओप)।

सोहि वि [शोभिन्] शोभनेवाला (सबोध ४८, कप्पू, भवि)। स्त्री °णी (नाट—रत्ना १३)।

सोहि पुस्त्री [दे] १ भूत काल। २ भविष्य काल (दे ८, ५८)।

सोहिअ न [दे] पिष्ट, आटा, चावल आदि का चूर्ण (पड्)।

सोहिअ वि [शोभित] शोभा-युक्त (सुर ३, ७२, महा, औप, भग)।

सोहिअ वि [शोधित] शुद्ध किया हुआ (पण्ह २, १, भग)।

सोहिद देखो सोहद (नाट—शकु १०९)।

सोहिर वि [शोभितृ] शोभनेवाला (गा ५११)।

सोहिल्ल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (गा ५४७, सुर ३, ११, ८, १०८, हे २, १५९, चउ, भवि, सण)।

सौअरिअ देखो सोअरिअ = सौदर्य (चउ)।

सौअरिअ न [सौन्दर्य] सुन्दरता (हे १, १)।

सौह देखो सउह = सौध (रुक्मि ५९, नाट—मालती १३६)।

°स्स देखो स = स्व (गा २२९)।

°स्सास देखो सास = श्वास (गा ८५९)।

°स्सिरी देखो सिरी = श्री (गा ६७७)।

°स्सेअ देखो सेअ = स्वेद (अभि २१०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि सयाराइसद्दसंकलणो
सत्ततीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ह

ह पुं [ह] १ कठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)। २ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संबोधन, 'से-भिक्खू गिलाइ, से हंद ह ण तस्साहरह' (आचा २, १, ११, १, २, पि २७५)। ३ नियोग। ४ क्षेप, निन्दा। ५ निग्रह। ६ प्रसिद्धि। ७ पादपूर्ति (हे २, २१७)।

ह देखो हा = अ. (हे १, ६७)।

हइ स्त्री [हति] हनन, वध, मारण (श्रा २७)।

हं अ [हम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्रोध (उवा)। २ असम्मति (स्वप्न २१)।

हंजय पु [दे] शरीर-स्पर्श-पूर्वक किया जाता शपथ—सोगंध (दे ८, ६१)।

हंजे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ दासी का आह्वान (हे ४, २८१, कुमा, पिंग)। २ सखी का आमन्त्रण (स ६२२, सम्मत्त १७२)।

°हंड देखो खंड (हम्मीर १७)।

°हंडण देखो भंडण (गा ९१२, पि ५८८)।

हंत देखो हंता (धर्मसं २०२, राय २६, सण, कप्पू, पि २७५)।

हंतव्व } देखो हण।
हंता }

हंता अ [हन्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अभ्युपगम, स्वीकार (उवा, औप, भग, तंदु १४, अणु १६०, णाया १, १—पत्र ७४)। २ कोमल आमन्त्रण (भग, अणु १६०, तंदु १४, औप)। ३ वाक्य का आरम्भ। ४ प्रत्यवधारण। ५ संप्रेषण। ६ खेद। ७ निर्देश (राज)। ८ हर्ष। ९ अनुकम्पा (राय)। १० सत्य (उवा)।

हंतु वि [हन्तृ] मारनेवाला (आचा, भग, पउम ५१, १९, ७३, १९, विसे २९१७)।

हंतूण देखो हण।

हंदि अ. 'ग्रहण करो' इस अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, १८१, कुमा, आचा २, १, ११, १, २, पि २७५)।

हंदि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद। २ विकल्प। ३ पश्चाताप। ४ निश्चय। ५ सत्य। ६ 'लो', 'ग्रहण करो' (पाअ, हे २, १८०, पड्, कुमा)। ७ आमन्त्रण, संबोधन (पिंड २१०, धर्मसं ४८)। ८ उपदर्शन (पचा ३, १२, दमनि ३, ३७)।

हंभो देखो हंहो (सुर ११, २३४, आचा सूअ २, २, ८१)।

हंस देखो हस्स = ह्रस्व (प्राप्र)।

हंस पुं [हंस] १ पक्षि-विशेष (णाया १, १—पत्र ५३, पण्ह १, १—पत्र ८, कुमा, प्रासू १३, १९९)। २ रजक, धोबी, 'वत्थ-धोवा हवंति हंसा वा' (सूअ १, ४, २, १७)। ३ सन्यासि विशेष (से १, २६, ओप)। ४ सूर्य, रवि (सिरि ५४७)। ५ मणि-विशेष, हंसगर्भ नामक रत्न की एक-जाति (पण्ण १—पत्र २६)। ६ छन्द का एक भेद (पिंग)। ७ निर्लोभी राजा। ८

[illegible] । ६ [illegible] । १० [illegible] । ११ [illegible] । १२ [illegible] । १४ [illegible] । १५ [illegible] । १६ [illegible] । १६ [illegible] (२, १८३) । २० [illegible] ३४) । °[illegible] पुं [°[illegible]] [illegible] (णाया १, १—[illegible] २२६, [illegible] १६, ७७) । °तुंगी स्त्री [°तुङ्गी] [illegible] (सुर ३, १८८; ६, १२८) । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष ([illegible] १४, ४४) । °[illegible] [°[illegible]] [illegible] । २ [illegible] ([illegible]) ।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible] (पाप; सुपा ४२७) ।

[illegible] पुं [दे] [illegible] (पव्) । [illegible] ।

[illegible] स्त्री [[illegible]] १ [illegible] (पाप) । २ [illegible] (सि) ।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible] (कप्प ३२६) ।

[illegible] अ [[illegible]] [illegible] अव्यय— १ [illegible] (सुर ३, १, [illegible] ४४, [illegible]) । ३ [illegible] । ४ [illegible] । ५ [illegible] (हे ३, २१७) ।

[illegible] [[illegible]] [illegible] (पड् ४) ।

[illegible] सक [[illegible] + क्षिप] [illegible] ([illegible] ४, १३४, [illegible]) ।

[illegible] [दे] [illegible]—१ [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible] ([illegible] १८१) [illegible] (सुर १४ [illegible]) [illegible] ।

मट्ट उच्चारिय हत्ता' (वज्जा ३८; पिंग; सुपा ४४१; सिरि ८१०; उप पृ ७८) ।

हक्कार सक [आ + कारय्] पुकारना, आह्वान करना, बुलाना । हक्कारइ (महा; भवि) । हक्कारह (सुपा १८८) । कर्म. हक्कारिज्जइ (सुर १, १२६, सुपा २६२) । वकृ. हक्कारेंत, हक्कारिमाण (सुर ३, ६८; णाया १, १८—पत्र २४) । संकृ. हक्कारिऊण, हक्कारेऊण (सुर ४, सुपा २२०) । प्रयो. हक्कारावइ (सुपा ११८) ।

हक्कार सक [दे] ऊँचे फैलाना । कर्म. हक्कारिज्जति (सिरि ४२४) ।

हक्कार पुं [हाकार] १ युगलिकों के समय की एक दण्डनीति (ठा ७—पत्र ३६८) । २ हाकार की आवाज (सुर १, २४६) ।

हक्कारण न [आकारण] आह्वान (स २६४, कुप्र ११६) ।

हक्कारिअ वि [आकारित] आहूत (सुपा २६६, भाव ६७२ टी, महा) ।

हक्किअ वि [दे] हाँका हुआ—१ खदेड़ा हुआ, 'हक्किआ करी' (महा), 'जेण तम्मो पारावारतेण रणारि हक्किया मम्म' (सार्ध १०३) । २ आहूत (कुप्र १४१) । ३ प्रेरित (सुपा २६१) । ४ उन्नत (षड्) ।

हक्खित्र वि [निषिद्ध] निवारित (कुमा) ।

हक्खोड वि [दे] अभिलषित (दे ८, ६०) ।

हक्खुत्त वि [दे] उत्पाटित, उठाया हुआ, उत्क्षिप्त (दे ८, ६०; पउम ११३, ५, पाअ; स ५०४) ।

हक्खुव सक [उत् + क्षिप्] १ ऊँचा करना, उठाना । २ फेंकना । हक्खुवइ (हे ४, १४४), 'हक्खुवइ हेला हक्खुवइ ति महाराज' (सिरि ६६१) ।

हक्खुविअ वि [उत्क्षिप्त] उत्पाटित (कुमा) ।

हगा स्त्री [दे] ११, वध (कुप्र ४४७; भवि १७) ।

हट्ट पुं [हट्ट] १ बाजार, बाजार (गा ७२४,

हट्ठ वि [हृष्ट] १ हर्ष-युक्त, आनन्दित । २ विस्मित (उवा ; विपा १, १; ओघ राय) । ३ नीरोग, रोग-रहित, 'हट्ठेण गिलाणेण व अमुगतवो अमुगदिणम्मि नियमेण कायव्वो' (पव ४—गाथा १६२) । ४ शक्तिशाली जवान, समर्थ तरुण (कप्प) । ५ दृढ़, मज-बूत (ओघ ७५) ।

°हट्ठ देखो भट्ठ (गा ६२४ अ) ।

हट्ठमहट्ठ वि [दे] १ नीरोग । २ दक्ष, चतुर (दे ८, ६५) । ३ स्वस्थ युवा (षड्) ।

हड वि [दे हृत] जिसका हरण किया गया हो वह (दे ८, ५६; कप्प) ।

हडक्क } (मा) देखो हिअअ = हृदय (प्राकृ
हडक्क } १०५, १०२; प्राप, नाट—मृच्छ ६१; पि ५०, १५०) ।

हडप्प } पुं [दे] १ पात्र-विशेष, द्रम्म
हडप्फ } आदि का पात्र । २ ताम्बूल आदि का पात्र (प्राप) । ३ आभरण का करण्डक (णाया १, १ टी—पत्र ५७, ५८) ।

हडहड पुं [दे] १ अनुराग, प्रेम (दे ८, ७४, (षड्) । २ ताप (दे ८, ७४) ।

हडहड पुं [हडहड] 'हड हड' आवाज (सिरि ७७६) ।

हडाहड वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त (विपा १, १—पत्र ५ णाया १, १६—पत्र १६६) ।

हडि पुं [हडि] काष्ठ का बन्धन विशेष, काठ की बेड़ी (णाया १, २—पत्र ८६, विपा १, ६—पत्र ६६, ओघ, उप्प १, २३) ।

हड्ड न [दे] हाड, अस्थि (दे ८, ५६; षड् ३८; सुपा २५५, गु १००) ।

हढ पुं [हठ] १ बलात्कार (पाप, पउम १, ३—पत्र ४४; द १, १६) । २ जल में होने वाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी, 'जहा से वायाइद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि' (उत्त २२, ४४, सूअ २, ३, ८, पण्ण १—[illegible]) ।

हढ सक [हठ्] १ [illegible] करना । २ [illegible]

भवि. हम्मिहिइ, हणिहिइ (हे ४, २४४)। वकृ. हणत (आचा, कुमा)। कवकृ हण्णु, हणिज्जमाण, हम्मत, हम्ममाण (सूअ १, २, २, ५, आ १४, सुर १, ६६, विपा १, २—पत्र २८, पि ५४०)। सकृ हता, हंतूण, हंतूण, हत्तूण, हणिऊण, हणिअ (आचा, प्रासू १४७, प्राकृ ३४, नाट)। हेकृ हतु, हणिउ° (महा, उप पृ ४८)। कृ. हतव्व (से ३, ३, हे ४, २४४, आचा)।

हण सक [श्रु] सुनना। हणइ (हे ४, ५८)।

हण वि [दे] दूर, अनिकट (दे ८, ५९)।

हण देखो हणण, 'हणदहणपयणमारण—' (पउम ८, २३२)।

°हण देखो घण = घन (गा ७१५, ८०१)।

हणण न [हनन] १ मारण, वध, घात (सुपा २४५, सण)। २ विनाश (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। ३ वि वध कर्ता। स्त्री °णी (कुप्र २२)।

हणिअ वि [हत] जिसका वध किया गया हो वह (श्रा २७, कुमा, प्रासू १६, पिग)।

हणिअ देखो हण = हन्।

हणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा)।

हणिद देखो हिणिद (गा ६६३)।

हणिर वि [हन्तृ] वध करनेवाला (सुपा ६०७)।

हणिहणि } अ [अहन्यहनि] १ प्रतिदिन, हमेशा (पण्ह २, ३—पत्र १२२)। २ सर्वथा, सब तरह से (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

हणु वि [दे] सावशेष, बाकी बचा हुआ (दे ८, ५९, सण)।

हणु पुस्त्री [हनु] चिबुक, होठ के नीचे का भाग, ठुड्डी, ठोढी, दाढी (आचा, पण्ह १, ४—पत्र ७८)। °अ, °म, °मत, °यत पुं [°मत्] हनुमान्, रामचन्द्रजी का एक प्रख्यात अनुचर, पवन तथा अञ्जनासुन्दरी का पुत्र (पउम १, ५६, १७, १२१, ४७, २६, हे २, १४६, कुमा, प्राप्र, पउम १६, १५, ५६, २१)। °रुह, °रूह न [°रुह] नगर-विशेष (पउम १, ६१, १७, ११८)। °व, °वंत देखो °म (पउम ४७, २५, ५०, ६, उप पृ ३७६)।

हणुया स्त्री [हनुका] १ ठुड्डी, ठोढी, दाढी (अनु ५)। २ दंष्ट्रा-विशेष दाढा-विशेष (उवा)।

हणू स्त्री [हनू] देखो हणु (पि ३९८, ३९९)।

हण्णु देखो हण = हन्।

हत्त देखो हय = हत (पि १९४, ५६५)।

°हत्तरि देखो सत्तरि (पि २६४)।

हत्तु वि [हर्तृ] हरण-कर्ता (प्राकृ २०)।

हत्तूण देखो हण = हन्।

हत्थ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ८, ५९)। २ क्रिवि जल्दी (ओप)।

हत्थ पुन [हस्त] १ हाथ, 'अत्थियत्तणेण हत्थं पसारिय जस्स कएहेण' (वज्जा १०६, आचा, कप्प, कुमा, दं ६)। २ पु नक्षत्र-विशेष (सम १०, १७)। ३ चौवीस अगुल का एक परिमाण। ४ हाथी की सूँढ (हे २, ४५, प्राप्र)। ५ एक जैन मुनि (कप्प)। °कप्प न [°कल्प] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २२६, पिंड ४६१)। °कम्म न [°कर्मन्] हस्त क्रिया, दुश्चेष्टा-विशेष (सूअ १, ६, १७, ठा ३, ४—पत्र १६२, सम ३९, कस)। °ताड, °ताल पु [°ताड] हाथ से ताडन (राज, कस ४, ३ टि)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] संख्या-विशेष, शीर्षप्रकम्पित को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)। °प्पाहुड न [°प्राभृत] हाथ से दिया हुआ उपहार (दे ८, ७३)। °मालय न [°मालक] आभरण-विशेष (ओप)। °लहुत्तण न [°लघुत्व] १ हस्त-लाघव। २ चोरी (पण्ह १, ३—पत्र ४३)। °सीस न [°शीर्ष] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २०८)। °भरण न [°भरण] हाथ का गहना (भग)। °याल पुं [°ताड] देखो °ताड (कस)। °लंब पु [°लम्ब] हाथ का सहारा, मदद (से १, १६, सुर ४, ७१, कस)।

हत्थंकर पु [हस्तङ्कर] वनस्पति-विशेष (आचा २, १०, २)।

हत्थदु } पुंन [हस्तान्दुक] हाथ बाँधने
हत्थदुय } का काठ आदि का बन्धन-विशेष (पिंड ५७३, विपा १, ६—पत्र ६६)।

हत्थच्छुहणी स्त्री [दे] नव-वधू, नवोढा (दे ८, ६५)।

हत्थड (अप) देखो हत्थ (हे ४, ४४५, पि ५९९)।

हत्थय न [हस्तक] कलाप-समूह (दस० अगस्त्य० सूत्र ५१ पत्र ८१)।

हत्थल पु [दे] १ क्रीडा के लिए हाथ मे ली हुई चीज। २ वि हस्त-लोल, चञ्चल हाथ-वाला (दे ८, ७३)।

हत्थल वि [हस्तल] १ खराब हाथवाला। २ पु. चोर, तस्कर (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

हत्थलिज्ज देखो हत्थिलिज्ज (राज)।

हत्थल्ल वि [दे] क्रीडा से हाथ मे लिया हुआ (दे ८, ६०)।

हत्थल्लिअ वि [दे] हस्तापसारित, हाथ से हटाया हुआ (दे ८, ६४)।

हत्थल्ली स्त्री [दे] हस्त बृसी, हाथ मे स्थित आसन-विशेष (दे ८, ६१)।

हत्थार न [दे] सहायता, मदद (दे ८, ६०)।

हत्थारोह पुं [हस्त्यारोह] हस्तिपक, हाथी का महावत (विपा १, २—पत्र २३)।

हत्थावार न [दे] सहायता, मदद (भवि)।

हत्थाहत्थि स्त्री [हस्ताहस्तिका] हाथोहाथ, एक हाथ से दूसरे हाथ (गा १७९)।

हत्थाहत्थि अ. ऊपर देखो (गा २२९, ५८१, पुप्फ ४६३)।

हत्थि पुस्त्री [हस्तिन्] १ हाथी (गा १६, कुमा, अभि १८७)। स्त्री °णी (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पु नृप-विशेष (ती १४)। °आरोह पुं [आरोह] हाथी का महावत (धर्मवि १९)। °कण्ण, °कन्न पु [°कर्ण] २ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (इक ठा ४, २—पत्र २२६)। °कप्प न [°कल्प] देखो हत्थ-कप्प (राज)। °गुलगुलाइय न [°गुलगुलायित] हाथी का शब्द-विशेष (राय)। °णागपुर न [°नागपुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (उप ६४८ टी, सण)। °तावस पु [°तापस]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (२३७)। °नागपुर [illegible] °नागपुर [illegible])। °पाल पु [°पाल] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible])। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (उत्त ३६, [illegible])। °मुह पु [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ [illegible] [illegible] मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६ [illegible])। °रयण न [°रत्न] उत्तम हाथी ([illegible])। °राय पु [°राज] उत्तम [illegible] ([illegible] २६६)। °वाउय पु [°व्यापृत] [illegible] °वाल देखो °पाल (राय)। °[illegible] [°[illegible]] [illegible] [illegible] उत्तर [illegible] (ठा)। °सीस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] ६४८ टी)। °सुंडिया [illegible] °सोंडिआ ([illegible])। °सोंड पु [°शौण्ड] [illegible] [illegible] जन्तु-विशेष (पण्ण १—[illegible] ४४)। °सुंडिआ स्त्री [°शुण्डिका] [illegible] (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)।

[illegible] पु [दे] [illegible] [illegible] (दे ८, ६४)।

हत्थिम वि [हस्तिमत्, हस्तवत्] [illegible] [illegible] ([illegible] ४२४)।

हत्थिणापुर [illegible] [हस्तिनापुर] नगर-विशेष [illegible] (ठा १०—पत्र ४७७, सुर [illegible], १०, ११४, [illegible], [illegible] [illegible] ६४ [illegible] ७४, [illegible])।

[illegible]

[illegible] पु [दे] [illegible], [illegible]

हत्थुत्तरा स्त्री [हस्तोत्तरा] उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र (कप्प)।

हत्थुल्ल देखो हत्थ (हे २, १६४, षड्)।

हत्थोडी स्त्री [दे] १ हस्ताभरण, हाथ का आभूषण। २ हस्त-प्राभृत, हाथ से दिया जाता उपहार (दे ८, ७३)।

हत्थल्लेव पु [दे] हस्त-ग्रहण, पाणि-ग्रहण (सिरि ५४८)।

हद्द देखो हय = हत (प्राप्र, प्राकृ १२)।

हद्द } पु [दे] बालक का मल-मूत्रादि (पिंड हड्ड } ४७१)।

हडुव पु [दे] हास, स्मित (दे ८, ६२)।

हद्धि } अ [हा धिक्] १ खेद। २ अनुताप हद्धी } (प्राकृ ७६, षड्, स्वप्न ६१, नाट—शकु ६६, हे २, १९२)।

हमार (अप) वि [अस्मदीय] हमारा, हमसे सम्बन्ध रखनेवाला (पिंग)।

हमिर देखो भमिर (पि १८८)।

हम्म सक [हन्] वध करना। हम्मइ (हे ४, २४४, कुमा, सुपा ३४, प्राकृ ६८)।

हम्म सक [हम्म्] जाना। हम्मइ (हे ४, १६२)।

हम्म न [हर्म्य] क्रीडा-गृह (से ६, ४३)।

हम्म° देखो हण = हन्।

हम्मार देखो हमार (पिंग)।

हम्मिअ वि [हम्मित] गत, गया हुआ (स ५४३)।

हम्मिअ न [दे. हर्म्य] गृह, प्रासाद, महल (दे ८, ६२, पाअ, सुर ६, १५०, आचा २, २, १, ४०)।

हम्मीर पु [हम्मीर] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का [illegible] [illegible] राजा (ती ५, हम्मीर २७ [illegible])।

हय वि [हत] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (औप, [illegible] २, [illegible], [illegible])। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] [illegible] (१०, २०)। °[illegible] वि [°[illegible]] [illegible] [illegible] ६१, ७४, गा [illegible], [illegible], [illegible], २, १६४, [illegible])।

हय पु [हय] [illegible] [illegible] (औप, [illegible] २, ११, [illegible])। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])। °[illegible] पु [°[illegible]] १ [illegible] [illegible]। २ वि. उसका [illegible] मनुष्य (इक, ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक अनार्य देश (पव २७४)। °मुह पु [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप (इक)। २ एक अनार्य देश (पव २७४)।

हय देखो हिअ = हृत (महा, भवि, राय ४४)।

हय देखो हर = ह्रद। °पोंडरीय पु [°पुण्डरीक] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

°हय देखो भय (गा ३८०)।

हयमार पु [दे हतमार] कणेर का गाछ (पाअ)।

हर सक [हृ] १ हरण करना, छीनना। २ प्रसन्न करना, खुश करना। हरइ (हे ४, २३४, उव, महा)। कर्म. हरिज्जइ, हीरइ, हरीअइ, हीरिज्जइ (हे ४, २५०, धात्वा १५७)। वकृ हरंत (पि ३६७)। कवकृ. हीरंत, हीरमाण (गा १०५, सुर १२, १११, सुपा ६३५)। संकृ. हरिऊण (महा)। हेकृ हरिउं (महा)। कृ. हिज्ज, हेज्ज (पिड ४४६, ४५३)।

हर सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना। हरइ (हे ४, २०९)।

हर सक [ह्लद्] आवाज करना। °हरइ (से ५, ७१)।

हर पुं [हर] १ महादेव, शंकर (सुपा ३६३, कुमा, षड्, हे १, ५१, गा ६८७, ७६४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °मेहल न [°मेखल] कला-विशेष (सिरि ५६)। °वल्लहा स्त्री [°वल्लभा] गौरी, पार्वती (सुपा २५७)।

हर पुं [ह्रद] द्रह, बड़ा जलाशय (से ६, ६५)।

हर देखो घर = गृह, 'ता वच्च पहिअ ना मम्म तामयं एत्थ मज्ज हरे' (वज्जा १००, कुमा, सुपा ३६३, ८ २, १४४)।

°हर देखो धर = धृ। कृ. °हरेअव्व (से २, ३)।

°हर देखो भर = भर (वज्जा १००, ४४, सुपा ४३२)।

°हर वि [°हर] हरण-कर्ता (गउ)।

°हर वि [°धर] धारण करनेवाला (गा ३१४, ३६४)।

हरअई } स्त्री [हरीतकी] १ हर्रे का गाछ। हरडई } २ फल विशेष, हर्रे (पड्, हे १, ६६, कुमा)।

हरण न [हरण] १ छीनना (सुपा १८, ४३६, कुमा)। २ वि छीननेवाला (कुप्र ११४, धर्मवि ३)।

हरण न [ग्रहण] स्वीकार (कुमा)।

हरण न [स्मरण] स्मृति, याद,

'अलिअकुविअंपि कअमतुअं

म जेसु मुहअ अणुणेंतो।

ताण दिअहाण हरणे रुआमि,

ण उणो अह कुविआ'

(गा ६४१)।

°हरण देखो भरण (गा ५२७ अ)।

हरतणु पु [हरतनु] खेत में बोये हुए गेहूँ, जो आदि के बालों पर होता जल-बिन्दु (कप्प, चेइय ३७३, जी ५)।

हरद देखो हरय (भग)।

हरपच्चुअ वि [दे] १ स्मृत, याद किया हुआ। २ नाम के उद्देश से दिया हुआ (दे ८, ७४)।

हरय पु [ह्रद] बडा जलाशय, द्रह (आचा, भग, पण्ह २, ५—पत्र १४६, उत्त १२, ४५, ४६, हे २, १२०)।

हरहरा स्त्री [दे] युक्त प्रसग, योग्य अवसर, उचित प्रस्ताव,

'निद्धूमग च गाम महिला-

थूभ च सुण्णय दट्ठु।

नीय च काया ओलिति

जाया भिक्खस्स हरहरा'

(विसे २०६४)।

हरहराइअ न [हरहरायित] 'हर हर' आवाज (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

हराविअ वि [हारित] हराया हुआ, जिसका पराभव किया गया हो वह (हे ४, ४०६)।

हरि पु [दे हरि] शुक, तोता (दे ८, ५६)।

हरि पु [हरि] १ विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ इन्द्र, देव-राज (कुमा, कुप्र २३, सम्मत्त २२६, श्रु ८६)। विष्णु, श्रीकृष्ण (गा ४०६, ४११, सुपा १४३)। ५ रामचन्द्र (से ६, ३१)। ६ सिंह, मृगेन्द्र (से ६, ३१, कुमा, कुप्र ३४६)। ७ वानर, वन्दर (से ४, २५, ६, २२, धर्मवि ५१, सम्मत्त २२२)। ८ अश्व, घोडा (उप १०३१ टी, ती ८ कुप्र २३, सुख ४, ६)। ९ भारत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ४)। १० ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक योग, 'गुरुहरिविट्ठे गडविड्वाए' (सबोध ५४)। ११ छन्द का एक भेद (पिंग)। १२ सर्प, साँप। १३ भेक, मण्डूक। १४ चन्द्र। १५ सूर्य। १६ वायु, पवन। १७ यम, जमराज। १८ हर, महादेव। १९ ब्रह्मा। २० किरण। २१ वर्ण-विशेष। २२ मयूर, मोर। २३ कोकिल, कोयल। २४ भर्तृहरि नामक एक विद्वान्। २५ पीला रँग। २६ पिंगल वर्ण। २७ हरा रँग। २८ वि. पीत वर्णवाला। २९ पिंगल वर्णवाला (हे ३, ३८)। ३० हरा वर्णवाला, 'हरिमणिसरिच्छणिअरूढ' (अच्चु ३२)। ३१ पुन. महाहिमवत पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ३२ विद्युत्प्रभ पर्वत का एक शिखर (ठा ९, इक)। ३३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ९—पत्र ४५४, इक)। ३४ हरिवर्ष-क्षेत्र का मनुष्य विशेष (कप्प)। °अद पु [°श्चन्द्र] स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा (हे २, ८७, पड्, गउड, कुमा)। °अदण न [°चन्दन] १ चन्दन की एक जाति (से ७, ३७, गउड, सुर १६, १४)। २ पु. एक तरह का कल्प-वृक्ष (सुपा ८७, गउड)। देखो °चदण। °अण्ण देखो °अद (सक्षि १७)। °आल पुन [°ताल] १ पीत वर्णवाली उपधातु-विशेष, हरताल (णाया १, १—पत्र २४, जी ३, पव १५५, कुमा, उत्त ३४, ८, ३६, ७५)। २ पु पक्षि-विशेष (हे २, १२१)। देखो °ताल। °एस पुं [°केश] १ चडाल (ओघ ७६६, सुख ६, १, महा)। २ एक चण्डाल मुनि (उत्त १२)। °एसबल पुं [°केशबल] चण्डालकुलोत्पन्न एक मुनि (उव, उत्त १२, १)। °एसिज्ज वि [°केशीय] १ चण्डाल-सबन्धी। २ हरिकेशबल नामक मुनि का (उत्त १२)। °कंखि न [°काङ्क्षिन्] नगर-विशेष (ती २७)। °कत पु [°कान्त] विद्युत्कुमार देवो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (इक)। °कतपवाय, °कतप्पवाय पु [°कान्ताप्रपात] एक द्रह (ठा २, ३—पत्र ७२, टी—पत्र ७५)। °कता स्त्री [°कान्ता] १ एक महा-नदी (ठा २, ३—पत्र ७२, सम २७, इक)। २ महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (इक, ठा ८—पत्र ४३६)। °केलि पुं [°केलि] भारतीय देश विशेष (कप्पू)। °केसबल देखो °एसबल (कुलक ३१)। °केसि पु [°केशिन्] एक जैन मुनि (श्रु १४०)। °गीअ न [°गीत] छन्द का एक भेद (पिंग)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] राक्षस-वश का एक राजा (पउम ५, २६०)। °चद पु [°चन्द्र] १ विद्याधर-वश का एक राजा (पउम ५, ४४)। २ एक विद्याधर-कुमार (महा)। °चदण पु [°चन्दन] १ एक अन्तकृद् जैन मुनि (अत १८)। २ देखो °अदण (प्रासू १४५, स ३४६)। °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण श्रेणि मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °ताल पु [°ताल] द्वीप-विशेष (इक)। देखो °आल। °दास पु [°दास] एक वणिक् का नाम (पउम ५, ८३)। °धणु न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (उप ५९७ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] इन्द्र-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (सुपा ६३५)। °भद्द पु [°भद्र] एक सुविख्यात जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (चेइय ३४, उप १०३९, सुपा १)। °मथ पुं [°मन्थ] धान्य विशेष, काला चना (श्रा १८, पव १५६, सबोध ४३)। °मेला स्त्री [°मेला] वृक्ष-विशेष (औप)। °वइ पु [°पति] वानर-पति, सुग्रीव (से १, १६)। °वस पु [°वश] एक सुप्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल (कप्प, पउम ५, २)। °वस्स, °वास पु [°वर्ष] १ क्षेत्र-विशेष (अणु १६१, ठा २, ३—पत्र ६७, सम १२, पउम १०२, १०६, इक)। २ पुन महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ९—पत्र ४५४, इक)। °वाहण पु [°वाहन] १ मथुरा का एक

[illegible] २, [illegible] के [illegible] ३, [illegible]। °सेण पुं [°षेण] [illegible] (पउम २०, १४२)। [illegible] श्रावक [illegible] ३७८)। °सह पुं [°सह] [illegible] (ठा [illegible] ३—पत्र [illegible])। [illegible] (ठा २—पत्र [illegible])।

हरि पुं [हरित्] १ [illegible] वर्ण-विशेष। [illegible] (ठा [illegible] २६, पत्र [illegible] २०, [illegible] ठा २, ३—पत्र ७२)। [illegible] (ठा ७—पत्र ३६३)। °वास पुं [°वर्ष] [illegible] (ठा २, ३—पत्र ७२, ८—१७७४)।

[illegible] (पउम ६८, उत्त ३२, [illegible])।

हरि [illegible] [°हरित] १ [illegible] रंग। [illegible] १ [illegible] १८, [illegible])। [illegible] (पत्र [illegible])। [illegible] (पउम [illegible], [illegible] २, १०, [illegible])।

[illegible] = [illegible])।

[illegible] = [illegible] ([illegible] २)।

[illegible] [illegible]

हरिडग पुं [हरितक] कोंकण देश प्रसिद्ध गुल्म-विशेष (पएण १—पत्र ३१)।

हरिण पुं [हरिण] १ हिरन, मृग (कुमा)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छी स्त्री [°क्षी] सुन्दर नयनवाली स्त्री (कप्पू)। °रि पुं [°रि] सिंह (उप पृ २६)। °हिव पुं [°धिप] वही (हे ३, १८०)।

हरिणंक पुं [हरिणाङ्क] चन्द्र, चांद (हे ३, १८०, कप्पू, सण)।

हरिणंकुस पुं [हरिणाङ्कुश] चौथे बलदेव के पुत्र एक जैन मुनि (पउम २० २०५)।

हरिणगमेसि देखो हरिणेगमेसि (पउम ३, १०४)।

हरिणी स्त्री [हरिणी] १ मादा हिरन, हिरनी (पाय)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

हरिणेगमेसि पुं [हरिनैगमेषिन्] शक्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२, अंत ७, कप्प)।

हरिद्दा देखो हालिद्दा (पि ३७५)।

हरिमंथ पुं [दे] काला चना, अन्न-विशेष (श्रा १८, पव १५६, संबोध ४३, दे ८, ७० टि)। देखो हिरिमंथ।

हरिमिग्ग पुं [दे] लगुड, लट्ठी, लाठी, डंडा (दे ८, ६३)।

हरियंदपुर न [हरिचन्द्रपुर] नगर-विशेष (पउमच० श्रवण चरित्र)।

हरिली देखो हिरिली (उत्त ३६, ९८)।

°हरिव वि [°भरित] भारवाला, बोझवाला (गा ५५५)।

हरिस अक [हृष्] खुशी होना। हरिसइ (हे ४, २३५, प्राप्र, षड्), हरसिज्जइ [illegible] (सुपा [illegible])।

हरिस सक [हर्षय्] हर्ष से रोम खड़ा करना, [illegible] (सुअ १, २, २, १६)।

हरिस पुं [हर्ष] १ सुख। २ आनन्द, प्रमोद, [illegible] (हे २, १०५, प्राप्र, कुमा, प्रा)। ३ [illegible] (धर्म)। °उर पुं [°पुर] [illegible] नगर (सुपा ६४८)। °ल वि [°ल] [illegible] (कप्पू ३५)।

हरिसण पुं [हर्षण] [illegible] (सुपा [illegible])।

हरिसाइय वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त (पउम ६१, ७२)।

हरिसाल देखो सरिसाल = हर्ष-वत्।

हरिसिअ वि [हर्षित] हर्ष प्राप्त, आनन्दित (औप, भवि, महा, सण)।

हरी देखो हिरी (सुअ १, १३, ६, भग)।

हरीडई देखो हरडई (प्राकृ १२)।

हरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ आक्षेप, निन्दा। २ संभाषण। ३ रति-कलह (हे २, २०२, कुमा, स ४३०, पि ३३८)।

हरेडगी देखो हरीडई (पचा १०, २५)।

हरेणुया स्त्री [हरेणुका] प्रियंगु, मालकांगनी (उत्तनि ३)।

हरेस सक [हेष्] गति करना (नाट—वेणी ६७)।

हल न [हल] हर, जिससे खेत जोतते हैं (उवा, औप)। °उत्तय पुन [°युक्तक] हल जोतना, 'असुभे समयम्मि तओ तेण हलउत्तओ मिल्ले' (सुपा २२७, २३६, गुर २, ७७)। °कुद्दाल, °कुद्दाल पुं [°कुद्दाल] हल के ऊपर का भाग (उवा)। °धर पुं [°धर] बलदेव, राम (पएण १७—पत्र ५२६, दे २, ५५)। °धारण पुं [°धारण] बलभद्र, राम (पउम ११७, ६)। °वाहग वि [°वाहक] हालिक, हल जोतनेवाला (श्रा २३)। °हर देखो °धर (सम ११३, पव—गाथा ४८, औप, कुप्र २५७)। °उह पुं [°युध] बलभद्र, राम (पउम ३८, २३, ७६, २६)।

°हल देखो फल = फल (सुपा ३९६, भवि, सि १०३)।

हलअ (मा) देखो हिअय = हृदय (नाट—मृच्छ ११, नाट—मृच्छ २१)।

हलउत्त देखो हल-उत्तय।

हलद्दा } देखो हलिद्दा (हे १, ८८, कुमा,
हलद्दी } षड्)।

हलप्प वि [दे] बहु भाषी, वाचाल (दे ८, ६१)।

हलबोल पुं [दे] कलकल, कोलाहल, शोरगुल (दे ८, ६४, पाअ, कुमा, सुपा ८७, ११२, [illegible] १४०, कुप्र ४२२, सिरि ४३३, धम्मवि १२०)।

हलहर देखो हल हर = हल-धर।

हलहल देखो हडहड = (दे)। (गा २१)।

हलहल } पुन [दे] १ तुमुल, कोलाहल,
हलहलअ } शोरगुल (दे ८, ७४, से १२, ८६)। २ कौतुक, कुतूहल (दे ८, ७४, स ७०८)। ३ त्वरा, हडबडी, हलफल, शीघ्रता, हलहलओ तरा' (पाअ, स ७०४)। ४ औत्सुक्य उत्कंठा (गा २१, ७८०)।

हलहलिअ वि [दे] कम्पित, कांपा हुआ (सिरि)।

हला अ [हला] सखी का आमन्त्रण, हे सखि (हे २, १९५, स्वप्न ४०, अभि २६, कुमा, गा ८३०, सुपा ४८६)।

हलाहल न [हलाहल] एक प्रकार का उग्र जहर, विष विशेष (प्रासू ३८)।

हलाहला स्त्री [दे] बभणिका, बाम्हनी, जन्तु-विशेष (दे ८, ६३)।

हलि पु [हलिन्] बलराम, बलभद्र (पउम ७०, ३५, कुप्र १०१)।

हलिअ वि [हालिक] हल जोतनेवाला, कृषक (हे १, ६७, पाअ, प्राप्र, गा १०७, ३१७, ३६०)।

°हलिअ देखो फलिअ (गा ६)।

हलिआ स्त्री [हलिका] १ छिपकली। २ बाम्हनी, जन्तु-विशेष (कप्प)।

हलिआर देखो हरि-आल = हरि-ताल (हे २, १२१, षड्)।

हलिद्द पु [हरिद्र, हारिद्र] १ वृक्ष-विशेष (हे १, २५४, गा ८६३)। २ वर्णं विशेष, पीला रंग। ३ न नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का शरीर हल्दी के समान पीला होता है वह कर्म (कम्म १, ४०)। °पत्त पु [°पत्र] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४६)। °मच्छ पु [°मत्स्य] मछली की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

हलिद्दा } स्त्री [हरिद्रा] ओषधि विशेष, हल्दी
हलिद्दी } (हे १, ८८, २५४, गा ५८, ८०, २८६)।

हलीमागर पु [हलिमागर] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

हलुअ वि [लघुक] हलका (हे २, १२२, स ७४५)।

हलूर वि [दे] सतृष्ण, सस्पृह (दे ८, ६२)।

हले अ [हले] हे सखि, सखी का संबोधन (हे २, १९५, कुमा)।

हल्ल अक [दे] हिलना, चलना। हल्लंति (सट्ठि ६८)। वकृ. हल्लंत (उत्तकु २१, सुपा ३४, २२३, वज्जा ४०, से ८, ४५)।

हल्ल पु [हल्ल] एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि (अनु २ पडि)।

हल्लअ न [हल्लक] पद्म विशेष, रक्त कह्वार (विक्र २३)।

हल्लपविअ वि [दे] त्वरित, शीघ्र (षड्)।

हल्लप्फल न [दे] १ हलफल, हडबडी, औत्सुक्य, त्वरा, शीघ्रता (हे २, १७४, स ६०२, कुमा)। २ आकुलता, 'अह उवसते करिणो हल्लप्फलए' (सुपा ६३९)। ३ वि. कम्पनशील, कांपता, चञ्चल, 'पास-ट्ठिओवि दीवो सहसा हल्लप्फलो जाओ' (वज्जा ६६)।

हल्लप्फलिअ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी। २ न. आकुलता, व्याकुलपन (दे ८, ५९)। ३ वि. व्याकुल (धर्मवि ५६)।

हल्लफल देखो हल्लप्फल (गा ७९)।

हल्लप्फलिअ देखो हल्लप्फलिअ, 'विमलो आह लोहेण, तो हल्लफलिओ इम' (श्रा १२)।

हल्लाविय वि [दे] हिलाया हुआ (सुर ३, १०९)।

हल्लिअ वि [दे] हिला हुआ, चलित (दे ८, ६२, भवि)।

हल्लिर वि [दे] चलन शील, हिलनेवाला (स ५७८, कुप्र ३५१)।

हल्लीस पु [दे] रासक, मण्डलाकार होकर स्त्रियो का नाच (दे ८, ६१, भवि)।

हल्लुत्ताल } न [दे] शीघ्रता, जल्दी, त्वरा,
हल्लुत्तावल } गुजराती मे 'उतावळ' (भवि, सुर १५, ८८)।

हल्लुप्फलिय देखो हल्लप्फलिअ (जय १२)।

हल्लोहल देखो हल्लप्फल (उप पृ ७७, श्रा १६, हे ४, ३९६, उप ७२८ टी, सुख १८, ३७, महा, भवि)।

हल्लोहलिअ देखो हल्लप्फलिअ (सिरि ६६४, ९३४ भवि)।

हल्लोट्टलिय पुस्त्री [दे] सरट, गिरगिट। स्त्री. °या (कप्प)।

हव अक [भू] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। हवइ, हवेइ, हवति (हे ४, ६०, कप्प, उव, महा, ठा ३, १—पत्र १०६), 'किं इक्खुवाडमज्झट्ठिओ नलो हवइ महुरत्त' (धर्मवि १७), हवेज्ज, हवेज्जा (पि ४७५)। वकृ हवत, हवेमाण (षड्)।

°हव देखो भव = भव (उप ४९४)।

हवण न [हवन] होम (विसे १५९२)।

हवि पुन [हविस्] १ घृत, घी। २ हवनीय वस्तु (म ६, ७१४, दसनि १, १०४)।

हविअ वि [दे] म्रक्षित, चुपडा हुआ (दे ५, २२, ८, ६२)।

हव्व वि [हव्य] हवनीय पदार्थ, होम-योग्य वस्तु (सुपा १०३)। °वह पु [°वह] अग्नि, आग (उप ५९७ टी, सुपा ४१६, गउड)। °वाह पु [°वाह] वही (आचा, पाअ, सम्मत्त २२८, वेणी १९२, दस ६, ३५)।

हव्व वि [अर्वाच्] १ अवर, पर से अन्य, 'नो हव्वाए नो पाराए' (आचा, सूअ २, १, १, ८, १०, १९, २४, २८, ३३)। २ न. शीघ्र, जल्दी (णाया १, १—पत्र ३१, उवा, सम ५६, विपा १, १—पत्र ८, ती १०, औप, कप्प, कस)। ३ न गृहवास (सूत्र-कृ० २-१ ९ चूर्णि)।

°हव्व देखो भव्व = भव्य (गा ३९०, ४२०, ४७६)।

हस अक [हस्] १ हँसना, हास्य करना। २ सक उपहास करना, मजाक करना। हसइ, हसेइ, हसए, हसति, हससि, हससे, हसित्था, हसह, हसामि, हसमि, हसामो, हसामु, हसाम, हसेम, हसेमु (हे ३, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १५४, १५८, कुमा)। हसेउ हसतु, हससु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हसेज्ज, हसेज्जा (हे ३, १५८, १७३, १७५, १७६)। भवि. हसिहिइ हसिस्सामो, हसिहिमो, हसिहिस्सा, हसिहित्था,

[illegible] (... ९, ११०, ११८; ... हसिअव्व, ...) । ... हसंत, हसंत, हसमाण, ... हसिउं, हसिऊण, हसेऊण, ... हसिअव्व, हसियव्व, हसणिज्ज ... [illegible] ... नाट—मृच्छ ११८) ।

हस सक [हस्] [illegible]

हस पुं [हास] हास्य (... १०२१ टी) ।

[illegible] [हंस] ... (अरु, उत्त ...) । स्त्री °णी (उप ...) ।

[illegible] [हसहसाय्] ... [illegible] ... (... ८) । [illegible] ... (... ३, ३०) । संकृ. [illegible]

हस्स देखो हस्स = ह्रस्व । हस्सइ (धात्वा १५७) । कर्म हुस्सइ (धात्वा १५७; हे ४, २४९) ।

हस्स न [हास्य] १ हँसी (प्रासा १, २, १, २; पव ७२; नाट—मृच्छ ६२) । २ पुं महाहिमवान् नामक देव का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । °गय न [°गत] नाट्य-विशेष (पव ६०३) । °रइ पुं [°रति] इन्द्र-विशेष, महाहिमवान् निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) ।

हस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (सम २, १, ११; पव ८४) । २ वामन, खर्व (पाअ) । ३ अल्प, थोड़ा (ना; पव ५, १०३; कम्म ४, ८४) । ४ पुं एक मात्रावाला स्वर (पिण्ड ३६—पत्र ८४६; विसे ३०६८) ।

हरसण वि [हर्षण] हर्ष-कारक 'रोमहरसणो जुद्धसमद्दो' (विक्र ८०) ।

हसिर देखो हसिर, 'मन्दहसिरे नदा दत्ते' (उत्त ११, ८; गुरु १०, ४) ।

हहह } म [हहह, °हा] १ इन अर्थों का
हहहा } सूचक अव्यय—१ आश्चर्य (प्रयौ ७४) । २ खेद, विषाद (सिरि ६१२) ।

हहा पुं [हहा] १ गन्धर्व देवों की एक जाति (सुपा ३, १२६) । २ अ खेद-सूचक अव्यय (सिरि २२८, ७६७) ।

हा अ [हा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विषाद, खेद (सुर १, ६९; महा २७; गा २१८, ७५४, ९६० श्रावू २०) । २ शोक, [illegible] । ३ पीड़ा । ४ कुत्सा, निन्दा (हे १, ६७; २, २१७) । °हा पुं [°हा] [illegible] (पिंग) । °रव पुं [°रव] [illegible] (सुर ८, १११) ।

हा [illegible] [हा] १ त्याग करना । २ गति करना । ३ [illegible] ... हाअइ (षड्) । ... हायंति ... [illegible] ... (प्रासू १७) । [illegible] (आचा १, ... टी—पत्र १३१), [illegible] । [illegible] (... १२, ११), हिच्चा, हिच्चाण (... १, ४, ४, ... २८०), हेच्च, हेच्चा (सूअ १, २, ३, १, ... १८, ३०),

हेच्चाण, हेच्चाण (पि ५८७) । कृ. हेअ (स ५६५; पचा ६, २७; सम्मत्त ८; गउड) ।

°हा देखो भा—स्त्री (गउड) ।

हाअ देखो हा—सक । हाअइ, हाअए (षड्) ।

हाअ सक [ह्लादय्] अतिसार रोग को उत्पन्न करना । हाएज्ज (पिंड ६४६) ।

°हाअ देखो भाअ = भाग (से ८, ८२; षड्) ।

°हाअ देखो घाय = घात (से ७, ५६) ।

°हाअ देखो भाव = भाव (से ३, १५) ।

हाउ देखो भाउ, 'मह वअणए मदरागधिपति हाआ तुहं भणइ' (गा ८७२) ।

हासल देखो हसल (राज) ।

हाकंद देखो हा-कंद ।

हाकलि स्त्री [हाकलि] छन्द का एक भेद (पिंग) ।

हाडहड न [दे] तत्काल, तत्क्षण (वव १) ।

हाडहडा स्त्री [दे] आरोपणा का एक भेद, प्रायश्चित विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२५, निचू २०) ।

हाणि स्त्री [हानि] क्षति, अपचय (भवि) ।

हाम अ [दे] इस तरह, इस प्रकार, एवं, 'हाम भणए' (प्राकृ ८१) ।

हायण पुं [हायन] वर्ष, संवत्सर (औप; णाया १, १ टी—पत्र ४७) ।

हायणी स्त्री [हायनी] मनुष्य की दस दशाओं में छठवीं अवस्था (ठा १०—पत्र ५१९; तंदु १०) ।

हार सक [हारय्] १ नाश करना । २ हारना, पराजित होना । हारइ, हारसु (उव; महा) । कृ. हारेअव्व (सुपा ५५४) ।

हार पुं [हार] १ माला, अठारह सर की मोती आदि की माला (कप्प; राय १०२; उवा; कुमा; भवि) । २ हरण, अपहरण (से १) । ३ द्वीप-विशेष । ४ समुद्र-विशेष (जीव ३, ४—पत्र ३६७) । ५ हरण-कर्ता, 'धणहारा' (आचा १, २, ३, ४) । °पुड पुं [°पुट] धातु-विशेष, सोहा (आचा २, ६, १, १) । °भद्द पुं [°भद्र] हार-द्वीप का अधिष्ठाता एक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७) । °महाभद्द पुं [°महाभद्र] हार-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४) । °महावर पुं [°महावर] हार-समुद्र का एक

अधिष्ठायक देव, 'हारसमुद्दे हारवर-हारवर-(?हार)महावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया' (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °वर पु [°वर] १ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। २ द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरभद्द पु [°वरभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरमहाभद्द पु [°वरमहाभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरमहावर पुं [°वरमहावर] हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरावभास पु [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (जीव ३, ४)। °वरावभास-भद्द पु [°वरावभासभद्र] हारवराभास-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहाभद्द पु [°वरावभासमहा-भद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहावर पु [°वरावभासमहावर] हारवराभास समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] हार-वरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७)।

°हार देखो भार (सुपा ३६१, भवि)।

हारअ वि [हारक] नाश-कर्ता (अभि १११)।

हारण वि [हारण] ऊपर देखो, 'धम्मत्थ-कामभोगाण हारणं कारणं दुहसयाण' (पुप्फ २९२, धम्म १० टी)।

हारव देखो हार=हारय्। हारवइ (हे ४, ३१)। भवि. हारविस्सइ (स ५६६)।

हारविअ वि [हारित] नाशित (कुमा, सुपा ५१२)।

हारा स्त्री [दे] लिक्षा, जन्तु-विशेष (दे ८, ६६)।

°हारा देखो धारा (कप्प, गा ७८५)।

हारि स्त्री [हारि] १ हार, पराजय (उप पृ ५२)। २ पङ्क्ति, श्रेणि (कुप्र ३४४)। ३ छन्द विशेष (पिंग)।

हारि वि [हारिन्] १ हरण-कर्ता (विसे ३२४५, कुमा)। २ मनोहर, चित्ताकर्षक (गउड)।

हारिअ न [हारीत] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०, णदि ४९, कप्प)। °मालागारी स्त्री [°मालाकारी] एक जैन मुनि शाखा (कप्प)।

हारिअ वि [हारित] १ हारा हुआ, द्यूत आदि मे पराजित (सुपा ३९९, महा, भावि)। २ खोया हुआ, गुमाया हुआ (वव १, सुपा १९९)।

हारियंद वि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का, हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुआ (गउड)।

हारिया स्त्री [हारीता] एक जैन मुनि-शाखा (राज)। देखो हारिअ-मालागारी।

हारियायण न [हारितायन] एक गोत्र (कप्प)।

हारी स्त्री [हारी] देखो हारि=हारि (उप पृ ५२, कुप्र २४४, पिग)।

हारीय पु [हारीत] १ मुनि-विशेष। २ न. गोत्र-विशेष (राज)। °वय पु [°वन्य] छन्द-विशेष (पिग)।

हारोस पु [हारोष] १ अनार्य देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (पण्ण १—पत्र ५८)।

हाल पु [दे हाल] राजा सातवाहन, गाथा-सप्तशती का कर्ता (दे ८, ६६, २, ३६, गा ३, वज्जा ६८)।

हाला स्त्री [हाला] मदिरा, दारू (पाअ, कुप्र ४०७, रंभा)।

हालाहल पुं [दे] मालाकार, माली (दे ८, ७५)।

हालाहल पुस्त्री [हालाहल] १ जन्तु-विशेष, ब्रह्मसर्प, बाम्हनी (दे ६, ९०, पाअ; गा ६२)। स्त्री °ला (दे ८, ७५)। २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४५)। ३ पुन स्थावर विष विशेष (दस ९, १, ७, गच्छ २, ४)। ४ पु रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३)।

हालाहला स्त्री [हालाहला] एक आजीविक-मतानुयायिनी कुम्हारिन (भग १५—पत्र ६५९)।

हालिअ देखो हलिअ=हालिक (हे १, ६७, प्राप्र)।

हालिज्ज न [हालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

हालिद्द पु [हारिद्र] १ हल्दी के तुल्य रंग, पीला वर्ण (अणु १०६, ठा ५, १—पत्र २९१)। २ वि पीला, जिसका रंग पीला हो वह (पण्ण १—पत्र २५, सूअ २, १, १५, भग, औप)। ३ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

हालिया स्त्री [हालिका] देखो हलिआ (राज)।

हालुअ वि [दे] क्षीव, मत्त (दे ८, ६६)।

हाव सक [हापय्] १ हानि करना। २ त्याग करना। ३ परिभव करना। ४ लोप करना, 'थंडिलसामायारिं हावेइ' (वव १), हावए (उत्त ५, २३, सट्ठि २१ टी)। हाव-इज्जा (दस ८, ४१)। वकृ हावित (विसे २७४६)।

हाव पु [हाव] मुख का विकार-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३२, भवि)।

हाव वि [दे] जवाल, द्रुतगामी, वेग से दौड़ने-वाला (दे ८, ७५)।

°हाव देखो भाव=भाव, 'ईसरहावेण' (अच्चु २५)।

हावण वि [हापन] हानि करनेवाला (हे २, १७८)।

हाविर वि [दे] १ जवाल, द्रुतगामी। २ दीर्घ, लम्बा। ३ मन्थर। ४ विरत (दे ८, ७५)।

हास देखो हस=हस्। वकृ. 'न हासमाणो वि गिरं वइज्जा' (दस ७, ५४)।

हास सक [हासय्] हँसाना। हासेइ (हे ३, १४९)। कर्म हासीअइ, हासिज्जइ (हे ३, १५२)। वकृ हासेंत (औप)। कवकृ हासिज्जंत (सुपा ५७)।

हास पु [हास] १ हास्य, हँसी (औप, गच्छ २, ४२, उव, गा ११, ३३२)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से हँसी आवे वह कर्म (कम्म १, २१, ५७)। ३ अलंकार-शास्त्रोक्त रस-विशेष (अणु १३५)। °कर वि [°कर] हास्य-कारक (सुपा २४३)। °कारि वि [°कारिन्] वही (गउड)।

[illegible] ३२, [illegible])। ४ विशेष। ५ [illegible]। ६ [illegible]। ७ शोक। ८ मनुष्य। ९ [illegible] (कुमा, पउड, गा २४२, २६४, ६०२, ६४८, पिंग [illegible] २, २१७)।

हिअ वि [हृत] १ [illegible], छीना हुआ (णाया [illegible], १६—पत्र २१५, पउम ५, ७३, ३०, २०, सुर [illegible] ७५)। २ नीत, जो दूसरी जगह ले जाया गया हो वह (पाअ, [illegible] १, १२८)। ३ [illegible], [illegible] (पिंड ४१४)। ४ आकृष्ट, खींचा हुआ, 'हयहिंयए' ([illegible])।

हिअ न [हित] १ मङ्गल, कल्याण। २ उपकार, भलाई (उत्त १ ६, पउम ६५, २१, [illegible], ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, आचू ४)। ३ वि हित कारक, उपकारी (उत्त १, २८, २६, उव ३२६, ४५०, आचू १४)। ४ स्थापित, निहित ([illegible] ७८)। °कर वि [°कर] १ हितकारक (ठा ६)। २ पुं. [illegible] (नओघ ५८)। ३ एक वणिक् का नाम (पउम ५, २८)। °कार वि [°कार] हितकारक ([illegible] १४२)। °यर देखो °कर (पउम ६४, २०)।

°हिअ देखो हिअय = हृदय (हे १, २६९, [illegible])। °इट्ठ वि [°इष्ट] [illegible] (पउम ८४ २३)। °गमण वि [°गमन] [illegible] (णाया १, १—पत्र १८७)। २ चित्त का [illegible] ([illegible], २—पत्र ३६)।

[illegible] [illegible] पो (सुपा १८, ४३)।

[illegible]

[illegible] (उत्त १ ४, २६)।

[illegible]

[illegible]

हिअय देखो हिअ = हित, 'कुट्टेहि णेहि जणो पयाणगो हिययमग्गम्मि' (उप ७६८ टी)।

हिअयगम वि [हृदयगम] मनोहर, चित्ताकर्षक (दे १, १)।

हिआली स्त्री [हृत्याली] काव्य-समस्या विशेष, गूढार्थक काव्यविशेष (वज्जा १२४)।

हिइ स्त्री [हृति] १ अपहरण। २ स्थानान्तर में ले जाना (भवि ५)।

हिएसग वि [हितैषक] हितेच्छु, हित चाहने-वाला (उत्त ०४, २८)।

हिएसि वि [हितैषिन्] ऊपर देखो (उत्त १३, १५, उप ७२८ टी, सुपा ४०४, पुप्फ १०)।

हिं अ [हम्] गत फल (प्रति ५६, प्राप, पि १३४)।

हिंग पु [दे] जार, उपपति (दे १, ४)।

हिंगु पुंन [हिङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, हींग का गाछ (पराण १—पत्र ३४)। २ हींग, 'आए लोणे हिंगू संकामण फाडणे धूमे' (पिंड २५०, प २५८, चाप ७)। °सिव पु [°शिव] व्यन्तर का विशेष (धर्मि १, ६६)।

हिंगुल पुंन [हिङ्गुल] पार्थिव धातु विशेष, हिंगुल, सिंगरफ (पराण १—पत्र २५, जी २, जो ३, सुपा ३६, ७५)।

हिंगुलु पुं [हिङ्गुलु] ऊपर देखो (उप ३६, ७५, हप)।

हिंगोल पु [दे] [illegible] २ [illegible] (भास [illegible], १, ४, १)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ८, ६८)।

हिंडर [illegible] [हिंडार] [illegible] (दे ६, [illegible], १३२)।

[illegible]

यव्व (उप पृ ५०, महा)। सकृ. हिंडिय (महा)। हेकृ. हिंडिउं (महा)।

हिडग वि [हिण्डक] १ भ्रमण करनेवाला (पचा १८, ८)। २ चलनेवाला (अणु १२६)।

हिंडण न [हिण्डन] १ परिभ्रमण, पर्यटन (पउम ६७, १८, स ४६)। २ गमन, गति (उप १०१७)। ३ वि. भ्रमण-शील (दे २, १०६)।

हिंडि स्त्री [हिण्डि] परिभ्रमण, पर्यटन, 'वासुदेवाइणो हिंडी राय-वसुभवाण वि। तारुण्णेवि कह हुता न हुत जइ कम्मय (कर्म १६)।

हिंडि पुं [हिण्डिन्] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३)।

हिंडिअ वि [हिण्डित] १ चला हुआ, चलित, गत (महा ३४)। जहा पर जाया गया हो वह, 'हिंडिय असेस गाम' (महा ६१)। ३ न. गति, गमन, विहार (णाया १, ६—पत्र १६५, ओघ २५४)।

हिंडुअ पु [दे. हिण्डुक] आत्मा, जीव, जन्मान्तर माननेवाला आत्मा, हिन्दु (भग २०, २—पत्र ७७६)।

हिडोल न [दे] १ खेत मे पशुओ को रोकने की आवाज। २ क्षेत्र की रक्षा का यन्त्र (दे ८, ६६)।

हिडोल देखो हिदोल (स ५२१)।

हिंडोल्लग न [दे] १ रत्नावली, रत्नमाला। २ क्षेत्र की रक्षा की आवाज, खेत में पशु आदि को रोकने का शब्द (दे ८, ३६)।

हिंडोलय देखो हिंडोल (दे ८, ६६)।

हिंताल पुं [हिन्ताल] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी, कुमा)।

हिंद सक [ग्रह्] स्वीकार करना, ग्रहण करना। हिंदइ (प्राकृ ७०, धात्वा १५७)। कर्म. हिंदिज्जइ (धात्वा १५७)। सकृ. हिंदिऊण (प्राकृ ७०, धात्वा १५७)।

हिंदोल सक [हिन्दोलय्] झूलना। वकृ. हिंदोलअत (कप्पू)।

हिंदोल पुं [हिन्दोल] हिंडोला, झूलना, दोला (कप्पू)।

हिंदोलग न [हिन्दोलन] झूलना, दोलन (कप्पू)।

हिंविअ न [दे] एक पेर से चलने की बाल-क्रीडा (दे ८, ६८)।

हिंस सक [हिंस्] १ वध करना। २ पीडा करना। हिंसइ, हिंसई (आचा, पव १२१)। भूका. हिंसिसु (आचा, पव १२१)। भवि. हिंसिस्सइ, हिंसिस्सति, हिंसेही (वि ५१६, आचा, पव १२१)। वकृ. हिंसमाण (आचा)। कृ. हिंस, हिंसियव्व (उप ६२५, पण्ह १, १—पत्र ५, २, १—पत्र १००, उव)।

हिंस वि [हिंस्र] १ हिंसा करनेवाला, हिंसक (उत्त ७, ५, पण्ह १, १—पत्र ५, विसे १७६३, पचा १, २३, उप ६२५, स ५०)। °प्पदाण, °प्पयाण न [°प्रदान] हिंसा के साधन-भूत खड्ग आदि का दान (ओप, राज)।

हिंस° देखो हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५)। °प्पेहि वि [°प्रेक्षिन्] हिंसा को देखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३००)।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करनेवाला
हिंसग } (भग, ओघ ७५२, उत्त ३६, २५६, उव, कुप्र २६)।

हिंसण न [हिंसन] हिंसा, 'अहिंसण सव्व-जियाण धम्मो' (सत्त ८२)।

हिंसा स्त्री [हिंसा] १ वध, घात (उवा, महा, प्रासू १४३)। २ वध, बन्धन आदि से जीव को की जाती पीड़ा, हैरानी (ठा ४, १—पत्र १८८)।

हिंसा स्त्री [हेषा] अश्व का शब्द, 'गयगज्जि हयहिंसं च तप्पुरओ केवि कुव्वता' (सुपा १६४)।

हिंसिय वि [हिंसित] हिंसा-प्राप्त (राज)।

हिंसिय न [हेषित] अश्व शब्द (पउम ६, १८०, दस ३, १ टी)।

हिंसी स्त्री [हिंसी] लता-विशेष (गउड)।

हिंहु पु [दे] हिन्दू, हिन्दुस्तान का निवासी (पिंग)।

हिक्का स्त्री [दे] रजकी, धोबिन (दे ८, ६६)।

हिक्का स्त्री [हिक्का] रोग-विशेष, हिचकी (सुपा ४८६)।

हिक्कास पु [दे] पङ्क, कादा (दे ८, ६६)।

हिक्किअ न [दे] हेषा-रव, अश्व-शब्द (दे ८, ६८)।

हिज्ज देखो हर = हृ।

हिज्ज° देखो हा।

हिज्जा } अ [दे. ह्यस्] गत कल (पड्;
हिज्जो } दे ८, ६७, पाअ, प्रयो १३, पि १३४)।

हिज्जो अ [दे] आगामी कल (दे ८, ६७)।

हिट्ट वि [दे] आकुल (दे ८, ६७)।

हिट्ठ देखो हेट्ठ (सुर ८, २२५, महा, सुपा ६८)।

हिट्ठ देखो हट्ठ = हृष्ट (उव, सम्मत्त ७५)।

हिट्ठाहिड वि [दे] आकुल (दे ८, ६७)।

हिट्ठिम देखो हेट्ठिम (सिरि ७०८, सुज्ज १०, ५ टी)।

हिट्ठिल्ल देखो हेट्ठिल्ल (सम ८७)।

हिडिंब पु [हिडिम्ब] १ एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०)। २ एक राक्षस (वेणी १७७)। ३ देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

हिडिंबा स्त्री [हिडिम्बा] एक राक्षसी, हिडिम्ब राक्षस की बहिन (हे ४, २६६)।

हिडोलणय देखो हिंडोलग (दे ८, ७६)।

हिड्डु वि [दे] वामन, खर्व (दे ८, ६७)।

हिणिद वि [भणित] उक्त, कथित, 'खणपा-हुणिआ देअरजाआ ए सुहअ किं ति दे ह-(हि)णिदा' (गा ६६३)।

हिण्ण सक [ग्रह्] ग्रहण करना। हिण्णइ (धात्वा १५७)।

हिण्ण (अप) देखो हीण (पिंग)।

°हिण्ण देखो भिण्ण (गा ५६३)।

हितअ } (पे) देखो हिअअ = हृदय (प्राप्र,
हितप } पड्, वाअ १६, पि २५४, हे ८, ३१०, कुमा, प्राकृ १२४)।

हित्थ वि [दे] १ लज्जित (दे ८, ६७, धण ६)। २ त्रस्त, भय-भीत (दे ८, ६७, हे २, १३६, प्राप्र, गा ३८६, ७६३, सुर १६, ६१, कुमा)। ३ हिंसित, मारा हुआ, 'हित्थो व ण हित्थो मे सत्तो, भणियँ व न भणिय मोस' (वव १)।

हित्था स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ८, ६७)।

हीर देखो हर = हर (हे १, ५१, कुमा, पड्)।

हीर पु [हीर] १ विषम भंग, असमान छेद (पण्ण १—पत्र ३७)। २ बारीक कुत्सित तृण, कन्द आदि में होती बारिक रेखा (जीव ३, ४, जी १२)। ३ पुन. हीरा, मणि-विशेष (स २०२, सिरि ११८६, कप्पू)। ४ तृण-विशेष (पिंग)। ५ दाढा का अग्र भाग (से ८, ८४)।

हीर पुन [दे] १ सूई की तरह तीक्ष्ण मुँह वाला काष्ठ आदि पदार्थ (दे ८, ७०, वज्जा)। २ भस्म (दे ८, ७०)। ३ प्रान्त, अन्त भाग (गउड)।

हीरंत देखो हर = हृ।

हीरणा स्त्री [दे] लाज, शरम (दे ८, ६७, पड्)।

हीरमाण देखो हर = हृ।

हील सक [हेलय्] १ अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। २ निन्दा करना। ३ कदर्थन करना, पीडना। हीलइ (उव, सुख २, १६), हीलति (दस ६, १, २, आसू २६)। वकृ. हीलंत (सट्टि ८६)। कवकृ हीलिज्जंत, हीलिज्जमाण (उप पृ १३३, णाया १, ८—पत्र १४८, आसू १६५)। कृ. हीलणिज्ज (णाया १, ३), हीलियव्व (पण्ह २, १—पत्र १००, २, ५—पत्र १५०)।

हीलण स्त्रीन [हेलन] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ निन्दा (सुपा १०८)। स्त्री. °णा (पण्ह २, १—पत्र १००, औप, उत्त, दस ६, १, ७, सट्टि १००)।

हीला स्त्री [हेला] ऊपर देखो (उत्त, उप पृ २१६, उप १४२ टी)।

हीलिअ वि [हीलित] १ निन्दित। २ अपमानित, तिरस्कृत (सुख २, १७, ओघ ५२६, कस, दस ६, १, ३)। ३ पीडित, कदर्थित (आचा २, १६, ३)।

हीसमण न [दे हेषित] हेषारव, अश्व—घोडे का शब्द (दे ८, ६८, हे ४, २५८)।

हीही } (शौ) अ. विदूषक का हर्ष-सूचक
हीहीभो } अव्यय (हे ४, २८५, कुमा, प्राकृ ६७, मोह ४१)।

हु अ [खलु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय— १ निश्चय (हे २, १६८, से १, १५, कुमा, प्राकृ ७८, प्रासू ५४)। २ ऊह, वितर्क (हे २, १६८, कुमा, प्राकृ ७८)। ३ संशय, संदेह (हे २, १६८, कुमा)। ४ संभावना (हे २, १६८, कुमा, प्राकृ ७८)। ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १६८, कुमा)। ६ किन्तु, परन्तु (प्रासू १०१)। ७ अपि, भी, 'हु अविमद्दयम्मि व त्ति' (धर्मसं १८० टी)। ८ वाक्य की शोभा (पचा ७, ३५)। ९ पादपूर्त्ति, पाद-पूरण (पउम ८, १८६, कुमा)।

हु } देखो हुव = भू। हुअइ, हुएइ, हुति,
हुअ } हुइरे, हुअइरे, हुज्ज, हुएज्ज, हुएइरे, हुएज्जइरे (पि ४७६, हे ४, ६१, पि ४५८, ४६६)। भवि. हुक्खामि, होक्खामि, हुक्ख (उत्त २, १२, सुख २, १२)। वकृ. हुंत (हे ४, ६१, स ३४)।

हुअ देखो हुण—हु। हुअइ (प्राकृ ६६)। वकृ. हुअंत (धात्वा १५७)।

हुअ वि [हुत] १ होमा हुआ, हवन किया हुआ (सुपा २६३, स ५५, प्राकृ ६६)। २ न होम, हवन (सूअ १, ७, १२, प्राकृ ६६)। °वह पु [°वह] अग्नि, आग (गा २११, पाअ, णाया १, १—पत्र ६३, गउड)। °स पु [°श] अग्नि (गउड, अज्झ १५०, भवि, हि १३)। °सन पु [°शन] वही अर्थ (भग, से ५,५७, पाअ)।

हुअ देखो हूअ—भूत (प्राप्र, कुमा, भवि, सण)।

हुअंग देखो भुअंग, 'चंदनलट्ठिव्व हुअंगदूमिआ किं णु दूमेसि' (गा ६२६)।

°हुअंग देखो भुअंग (गा ८०६, पि १८८)।

हुं अ [हुम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ दान। २ पृच्छा, प्रश्न (हे २, १६७, प्राप्र, कुमा)। ३ निवारण (हे २, १६७, कुमा)। ४ निर्धारण (प्राप्र, रंभा)। ५ स्वीकार (श्रा १२, कुप्र ३४५)। ६ हुङ्कार, 'हुं' शब्द, 'हुं करति घुग्घव्व' (सुपा ४९२)। ७ अनादर (सिरि १५३)।

हुंकय पुं [दे] अञ्जलि, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंकार पुं [हुङ्कार] १ अनुमति-प्रकाशक शब्द, हाँ (विसे ५६५, से १०, २४, गा ३५६, आत्मानु ६)। २ 'हुं' आवाज, 'हुं' ऐसा शब्द (हे ४, ४२२, कप्पू, सुर १, २४६)।

हुंकारिय न [हुङ्कारित] 'हुं' ऐसी की हुई आवाज (स ३७७)।

हुंकुरव पु [दे] अञ्जलि, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंड न [हुण्ड] १ शरीर की आकृति-विशेष, शरीर का बेडब अवयव (ठा ६—पत्र ३५७, सम ४४, १४६)। २ कर्म-विशेष जिसके उदय से शरीर का अवयव असपूर्ण बेढब—प्रमाण शून्य अव्यवस्थित हो वह कर्म (कम्म १, ४०)। ३ वि. बेढब अंगवाला (विपा १, १—पत्र ५)। °वसप्पिणी स्त्री [°वसर्पिणी] वर्तमानहीन समय (विचार ५०३)।

हुंडी स्त्री [दे] घटा (पाअ)।

हुंबउट्ठ पु [दे] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप, भग ११, ६—पत्र ५१५, ५१६)।

हुहुय अक [हुंहुं + कृ] 'हुं' 'हुं' आवाज करना। वकृ हुहुयंत (चेइय ४६०)।

°हुच्च देखो पहुच्च = प्र + भू।

हुट्ट देखो होट्ट (आचा, पि ८४, ३३८)।

हुड पु [दे] १ मेष, मेढा (दे ८, ७०)। २ श्वान, कुत्ता (मृच्छ २५३)।

हुड्डअ पु [दे] प्रवाह (दे ८, ७०)।

हुडुक पुस्त्री [दे हुडुक] वाद्य-विशेष (औप, कप्पू, सण, विक्र ८७)। स्त्री °क्का (राय, सुपा ५०, १७५, २४२)।

हुडुम पु [दे] पताका, ध्वजा (दे ८, ७०, पाअ)।

हुड्डु पुस्त्री [दे] होड, बाजी, पण, शर्त, दाँव। स्त्री. °ड्डा (दे ८, ७०, सुपा २७९, पव ३८), 'हुड्डाहुड्डु सुयतेहिं' (सम्मत्त १४३)। देखो होड्डु।

हुण सक [हु] होम करना। हुणइ (हे ४, २४१, भग ११, ९—पत्र ५१६, कुमा)। कर्म हुव्वइ, हुणिज्जइ, हुणिज्जए (हे ४, २४२, कुमा)। कवकृ हुणिज्जमाण (सुपा ६७)। संकृ हुणिऊण, हुणेऊण, हुणित्ता (पड्, भग ११, ९—पत्र ५१६)।

°हुणण [illegible] हुण = धुन = धाव् (ति ६, [illegible])।

हुम्म [illegible] हुम्म = [illegible] (प्राप्त, प्राप्त, [illegible] १६०)।

हुहुअ [illegible] [हुहुक] देखो हुहुअ (पणु ६६, १३६)।

हुहुअंग [illegible] [हुहुकाङ्ग] देखो हुहुअंग (पणु ६६, १३६)।

हुहुक पु [हुहुक] मधुरस्वर-वाद्यविशेष, [illegible] (हे ४, ४२०, कुमा)।

हू [illegible] हू = [illegible] (हे ४, ६४, कुमा, [illegible] १६, [illegible], भाव १०४)।

हूअ वि [हूत] आहूत, आकारित (हे २, २६१)।

हूअ [illegible] हूअ = हूत [illegible] पुरा [illegible] मिहसमपत्तुओवि [illegible] जिणवरे (रना २५)।

हूण पु [हूण] १ एक अनार्य देश। २ वि [illegible] १—पत्र [illegible] कुमा)।

हूम [illegible] = [illegible] (हे ३, १०३, पड्)।

हूमलय पु [हे] [illegible] (दे ८, ७१)।

हूरग देखो हूणग (भा ६४५, ति १८८)।

हूहू पु [हूहू] [illegible] (पण्ह [illegible] ४६)।

हूहूअ [illegible] [हूहूक] [illegible] (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु [illegible])।

हूहूअंग [illegible] [हूहूकाङ्ग] [illegible] (ठा २, ४—पत्र ८६, [illegible])।

हे अ [हे] [illegible] —१ [illegible] (हे ४, २६५, [illegible])।

[illegible]

[illegible] (ति ८७७)।

[illegible] [illegible] १ [illegible]

[illegible]

के फल या वस्तु लिए हुए हाथ से निवारण (दे ८, ७२)।

हेउ पु [हेतु] १ कारण, निमित्त, 'हेऊइ' (स्वप्न २६, उवा, पण्ह २, २—पत्र ११४, सण, गउड, जी ५१, महा, वि ३५८)। २ अनुमान-वाक्य, पंचावयव वाक्य (उत्त ६, ८, सुज ६, ८)। ३ अनुमान का साधन (धर्मसं ७०, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ४ प्रमाण (अणु)। °वाय पु [°वाद] १ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ दृष्टिवाद (ठा १०—पत्र ४६१)। २ तर्कवाद, युक्तिवाद (सम्म १४०, १४२)।

हेउअ वि [हेतुक] १ हेतुवाद को माननेवाला, तार्किक, 'जो हेउवायपक्खम्मि हेउओ आगमे य आगमिओ' (सम्म १४२, उवर १५१)। २ हेतु का, हेतु से सम्बन्ध रखनेवाला। स्त्री. °उई (विसे ५२२)।

हेच } देखो हा = हा।
हेच्चाण }

हेज्ज देखो हर = हृ।

हेट्ठ अ [अधस्] नीचे, गुजराती में 'हेठ', 'तरुणाहहेट्ठम्मि' (सुर १, २०५, ति १०७, हे २, १४१, कुमा, गउड), 'हेट्ठा' (महा)। स्त्री. °ट्ठा (पाअ, महा, वि १०७, ११४)। °मुह वि [°मुख] अधोमुख, नीचे मुँह कीया हुआ जो (विपा १, ६—पत्र ६८, से ४, ६३, भवि)। °भाणि वि [°भाणी] महाराष्ट्र देश का निवासी, मरहट्टा—मरट्ठा (पिंड ६१६)।

हेट्ठिम } वि [अधस्तन] नीचे का (सम १६, ४१, भग, हे २, १६३, पव ८७, पड्, भौप)।
हेट्ठिल्ल }

हेड्डा स्त्री [दे] १ पशु, मनुष्य (सुपा ३८६, ४३०)। २ मनुष्य आदि जीवों का समान समूह (धर्म १२ टी)।

हेडिल } (अप) [illegible] (पि २२१)।
हेडिम }

हेडिय [illegible] [दे] [illegible], ऊँचा (षड्)।

हेम न [हेम] १ सुवर्ण, सोना (पाअ, [illegible], कप्पू १७)। २ धतूरा। ३ [illegible] [illegible]। ४ पु. [illegible] [illegible] ६ [illegible] [illegible] (उत्त १८, ४१)। °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible]

सुप्रसिद्ध जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (दे ८, ७७, सुपा ६५८)। ३ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि (सिरि १३४१)। °जाल न [°जाल] सुवर्ण की माला (ओप)। °तिलय पु [°तिलक] विक्रम की चोदहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य (सिरि १३४०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर नगर (इक)। °मय वि [°मय] सोने का बना हुआ (सुपा ८८)। °महिहर पु [°महिधर] मेरु पर्वत (गउड)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] एक दिक्कुमारी देवी (इक)। °व पु [°वत्] फाल्गुन मास (सुज्ज १० १९)। °विमल पु [°विमल] एक जैन आचार्य (कुम्मा ३५)। °भ पु [°भ] चोथी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (निर १, १)।

हेमंत पुं [हेमन्त] १ ऋतु-विशेष, मगसिर या अगहन तथा पोस या पूस महिना (पाअ, आचा, कप्प, कुमा)। २ शीतकाल (दस ३, १२)।

हेमंत वि [हैमन्त] हेमन्त ऋतु मे उत्पन्न (सुज्ज १२—पत्र २१६)।

हेमंतिअ वि [हैमन्तिक] ऊपर देखो (कप्प, औप, गा ६६, राय ३८)।

हेमग वि [हैमक] हिम का, हिम-सबन्धी (ठा ४ ४—पत्र २८७)।

हेमवइ } पुन [हैमवत] १ वर्ष विशेष, क्षेत्र-
हेमवय } विशेष (इक, सम १२, ज ४—पत्र २९९, ३००, ठा २, ३ टी—पत्र ६७, पउम १०२, १०६)। २ हिमवत पर्वत का एक शिखर। ३ कूट-विशेष (इक)। ४ वि. हिमवत पर्वत का (राय ७४, औप)। ५ पु हैमवत क्षेत्र का अधिष्ठाता देव (ज ४—पत्र ३००)।

हेम्म देखो हेम (सक्खि १७)।

हेर सक [दे] १ देखना, निरीक्षण करना। २ खोजना, अन्वेषण करना। वकृ. हेरत (पिंग)। सकृ हेरऊण (धर्मवि ५४)।

हेरंब पु [दे] १ महिष, भैंसा। २ डिण्डिम, वाद्य-विशेष (दे ८, ७६)।

हेरण्णवय पुंन [हैरण्यवत] १ वर्ष-विशेष, एक युगलिक-क्षेत्र (इक पउम १०२, १०६)। २ रुक्मि पर्वत का एक शिखर। ३ शिखरी पर्वत का एक शिखर (इक २१८)।

हेरण्णिअ पु [हैरण्यिक] सुवर्णकार (उप पृ २१०)।

हेरन्नवय देखो हेरण्णवय (ठा २, ३—पत्र ६७, ७९)।

हेरिअ पु [हेरिक] गुप्त चर, जासूस (सुपा ४६८, ५८६)।

हेरिंब पु [दे हेरम्ब] विनायक, गणेश (दे ८, ७२, पड्)।

हेरुयाल सक [दे] क्रुद्ध करना, गुस्सा उपजाना। हेरुयालंति (णाया १, ८—पत्र १४४)।

हेला स्त्री [हेला] १ स्त्री की शृङ्गार-सबन्धी चेष्टा-विशेष (पाअ)। २ अनादर (पाअ, से १,५५)। ३ अनायास, अल्प प्रयास, सहलाई, सरलता (से १, ५५, कप्पू, प्रवि ११, पि ३७५)।

हेला स्त्री [दे हेला] वेग, शीघ्रता (दे ८, ७१ कप्पू, प्रवि ११, पि ३७५)।

हेलिअ पु [हैलिक] एक तरह की मछली (जी १ टी—पत्र ३६)।

हेलुअ न [दे] क्षुत, छींक (दे ८, ७२)।

हेलुअ स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी (दे ८, ७२)।

हेल्लि(अप) अ [हले] सखी का आमन्त्रण, हे सखि (हे ४, ४२२, ३७९, पि १०७)।

हेव (शो) देखो हेव (पि ३३६)।

हेवाग [हेवाक] स्वभाव, आदत (राज)।

हेसम वि [दे] उन्नत, ऊँचा (पड्)।

हेसा [हेषा] अश्व-शब्द (सुपा २८८, श्रा २७)।

हेसिअ [हेषित] ऊपर देखो (दे ८, ६८, पउम ९, ३०, ओप, महा, भवि)।

हेसिअ [दे. हेषित] रसित, चीत्कार (पड्)।

हेहभूअ [दे] गुण-दोष के ज्ञान से रहित और निर्-अज्ञ किन्तु निरालस (वव १)।

हेहय पु [ग] १ एक राजा (राज)। २ °डिंव पु [डिम्ब] एक विद्याधर राजा (पउम १०)।

हो देखो =भू। होइ, होअइ, होअए, होएइ, होइरे, होअइरे (हे ४, ६०, पड्, कप्पव, महा, पि ४५८, ४७६)। होज, होजाएज, होएज्जा, होउ (हे ३, १५९, १७७, भग, प्राप्र, पि ४६६)। भूका. होत्था, होहीअ (कप्प, प्राप्र)। भवि होहिइ, होहिंति, होहामि, होहिमि, होस्स, होस्सामि, होक्खइ, होक्ख (हे ३, १६६, १६७, १६९, प्राप्र, पि ५२१), होसइ (अप) (हे ४, ३८८)। कर्म होइज्जइ, होइज्जए, होईअइ (पड, पि ४७६) वकृ होंत, होमाण (हे ३, १८०, ४, ३५५, ३७२, कुमा, पि ४७६)। संकृ. होऊण, होऊण, होअऊण, होइऊण, हविय, होत्ता (गउड, पि ५८५, ५८६, कुमा)। हेकृ. होउ, होत्तए (महा, पि ४७५ कप्प)। कृ. होयव्व (कप्प, महा, उव, प्रासू १६, ६१)।

हो अ [हो] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य (पाअ, नाट—मृच्छ ११२)। २ सबोधन, आमन्त्रण (सक्खि ४७, उप ५९७ टी)।

होउ वि [होतृ] होम-कर्ता (गा ७२७)।

होंड देखो हुंड (विचार ५०७)।

होट्ठ पु [ओष्ठ] होठ, ओठ (आचा)।

होड्डु देखो हुड्डु, 'तो हं छोडेमि होड्डुओ' (सुपा २७७, २७८)।

होढ पु [होड] मोष, चोरी की वस्तु (णाया १, २—पत्र ८६, पिंड ३८०)।

होण देखो हूण=हूण (पव २७४, विचार ४३)।

होत्तिय पु [होत्रिक] १ वानप्रस्थ तापसो का एक वर्ग, अग्निहोत्रिक वानप्रस्थ (ओप, भग ११, ९—पत्र ५१५)। २ न. तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

होम पु [होम] हवन, अग्नि मे मन्त्र-पूर्वक घृत आदि का प्रक्षेप (अभि १५९)।

होम सक [होमय्] होम करना। हेकृ. होमिउ (ती ८)।

होमिअ वि [होमित] हवन किया हुआ, 'अणत्थपडियकुकव्वहविहोमिओ' (स ७१४)।

होरंभा स्त्री [होरम्भा] वाद्य-विशेष, महा-ढक्का, बडा ढोल (राय ४६)।

होरण न [दे] वस्त्र, कपडा (दे ८, ७२, गा ७७१)।

मडुग, मडूअ, मडूक, मडूर पुं [मण्डूक] १ मेढक, दादुर, 'मंडुगगइसरिसो खलु अहिगारो होइ सुत्तस्स' (वव ७, कुमा)। २ वृक्ष-विशेष, श्योनाक, सोनापाठा। ३ वन्द्य विशेष (मक्षि १७), 'मडूरो' (प्राप्र)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °प्पुअ न [°प्लुत] भेक की चाल। २ पु ज्योषि-प्रसिद्ध योग-विशेष, भेक की गति की तरह होनेवाला योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

मडोवर न [मण्डोवर] नगर विशेष (ती १५)।

मत सक [मत्रन्य्] १ गुप्त परामर्श करना, मसलहत करना। २ आमत्रण करना। मतइ (महा, भवि)। भवि मतही (अप) (पिंग)। वकृ मतत, मतयत (सुपा ५३५, ३०७, अभि १२०)। सकृ मतिअ, मतिऊण, मतेऊण (अभि १२८, महा)।

मत पुन [मन्त्र] १ गुप्त बात, गुप्त आलोचना, 'न कहिज्जइ एसिमेरिस मतं' (सिरि ६२५), 'कुट्टिस्सइ वोहित्थ महिलाजणकहिय-मत व' (धर्मवि १३, कुमा)। २ जप्य, जाप करने योग्य प्रणवादिक अक्षर-पद्धति (णाया १, १८, ठा ३, ४ टी—पत्र १५६, कुमा, प्रासू १८)। °जभग पु [°जृम्भक] एक देव-जाति (भग १४, ८ टी—पत्र ६५४)। °देवया स्त्री [°देवता] मन्त्राधिष्ठायक देव (श्रा १)। °न्नु वि [°ज्ञ] मन्त्र का जानकार (सुपा ६०३)। °वाइ वि [°वादिन्] मान्त्रिक, मन्त्र को ही श्रेष्ठ माननेवाला (सुपा ५६७)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हो वह। २ बहु-मन्त्र। ३ प्रधान मन्त्रवाला, 'साहोणसव्वमतो बहुमतो वा पहाणमतो वा, नेओ स मतसिद्धो' (आवम)।

मत वि [मान्त्र] मन्त्र-सम्बन्धी, मान्त्रिक। स्त्री 'मती ठक्कारपतिन्व' (धर्मवि २०)।

मत देखो मा = मा।

मतक्ख न [दे] १ लज्जा, शरम। २ दुःख (दे ६, १४१)। ३ अपराध, 'न लेइ गरुयपि णाम मतक्ख' (गउड)।

मतण न [मन्त्रण] १ गुप्त आलोचना, गुप्त मसलहत (पउम ५, ६६, ८२, ४६)। २ मसलहत, परामर्श, सलाह, 'मतणत्थं हक्का-रिओ अणेण जिणदत्तसेट्ठी' (कुप्र ११६)। ३ जाप, 'पुणो पुणो मतमतण सुहय (चेइय ७६३)।

मतर देखो यतर (कप्प)।

मता अ [मत्वा] जानकार (सूअ १, १०, ६, आचा १, १, ५, १, १, ३, १, ३, पि ५८२)।

मति पु [मन्त्रिन्] १ मन्त्री, अमात्य, दीवान (कप्प, ओप, पाअ)। २ वि मन्त्रो का जान-कार (गु १२)।

मति पु [दे] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्वित् (दे ६, १११)।

मतिअ वि [मन्त्रित] गुप्त रीति से आलो-चित (महा)।

मतिअ देखो मत = मन्त्रय्।

मतिअ वि [मान्त्रिक] मन्त्र का ज्ञाता, 'मतेण मतियस्स व वाणीए ताडिओ तुज्भ' (धर्मवि ६, मन ११)।

मतिण देखो मति = मन्त्रिन्, निगूहिओ मति-णेहि कुसलेहिं' (पउम २१, ६०, ६५, ८, भवि)।

मंतु वि [मन्तृ] १ ज्ञाता, जानकार। २ पु जीव, प्राणी (विसे ३५२५)।

मतु देखो मण्णु (हे २, ४४, पड्, निचू २)। °म वि [°मत्] क्रोधवाला, कोप युक्त। स्त्री °मई (कुमा)।

मतु पुन [°मन्तु] अपराध, 'मतु विलिय विप्पिय' (पाअ)।

मतुआ स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६, ११६, भवि)।

मतेल्लि स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ६, ११६)।

मथ सक [मन्थ्] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक क्लेश पाना। मथइ (हे ४, १२१, प्राकृ ३३, पड्)। कवकृ मथिज्जत, मथिज्जमाण, मच्छत (पउम ११३, ३३, सुपा २५१, १६५, पण्ह १, ३—पत्र ५३)। सकृ मथित्तु (सम्मत्त २२६)।

मथ पु [मन्थ] १ दही विलोने—महने का दण्ड, मथनी (विसे ३८८)। २ केवलि समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश-समूह (ठा ६, ओप)।

मथ (अप) देखो मत्थ = मस्त (पिंग)।

मथण न [मन्थन] १ विलोडन, विलोने की क्रिया, 'खीरोअमथणुच्छलिअदुद्धमित्तो व्व महुमहणो' (गा ११७)। २ घर्षण, 'मथण-जोए अग्गी' (संबोध १)। ३ पुन मथनी, दही आदि मथने की लकडी (प्राकृ १४)।

मथणिआ स्त्री [मन्थनिका] १ मथनी, महानी, दही मथने की छोटी लकडी (राज)। २ मथानी, दधि-कलशी, दही महने की हँडिया (दे २, ६५)।

मथणी स्त्री [मन्थनी] ऊपर देखो (दे २, ५५)।

मथर वि [मन्थर] १ मन्द, धीमा (से १, ३८, गउड, पाअ, सुपा १)। २ विलम्ब से होनेवाला (पचा ६, २२)। ३ पु मन्थन-दण्ड, 'वीसाममथरायमाणसेलवोच्छिण्णदूर-वडणाओ' (गउड)।

मथर वि [दे मन्थर] १ कुटिल, वक्र, टेढा (दे ६, १४५, भवि)। २ स्त्रीन कुसुम्भ, वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड (दे ६, १४५)। स्त्री °रा, 'मथरा कुसुभी' (पाअ)।

मथर वि [दे] बहु, प्रचुर, प्रभूत (दे ६, १४५, भवि)।

मंथरिय वि [मन्थरित] मन्थर किया हुआ (गउड)।

मथाण पु [मन्थान] १ विलोडन-दण्ड, 'तत्तो विसुद्धपरिणाममेरुमथाणमहियभवज-लही' (धर्मवि १०७, दे ६, १४१, वज्जा ४, पाअ, सम्र १५०)। २ छन्द विशेष (पिंग)।

मथिअ वि [मथित] विलोडित (दे २, ८८, पाअ)।

मथु पुन [दे] १ वदरादि चूर्ण (पण्ह २, ५, उत्त ८, १२, सुख ८, १२, दस ५, १, ६८, ५, २, २४, आचा)। २ चूर्ण, चूर, बुकनी (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ (पिंड २८२)।

मंद पु [मन्द] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु (पाम; प्रासू १३२)। ४ अल्प, थोडा (प्रासू ७१)। ५ मूर्ख, जड़, अज्ञानी (सूअ १, ४, १, ३१, पाअ)। ६ नीच, खल, 'मुत्तमेव अहीणं तह य मदस्स' (प्रासू १६)। ७ रोग ग्रस्त, रोगी (उत्त ८,७)। °उण्णिया स्त्री [°पुण्यका] देवी विशेष (पंचा १६, २४)। °भग्ग वि [°भाग्य] कमनसीव (सुपा ३७६, महा)। °भाअ वि [°भाग, °भाग्य] वही अर्थ (स्वप्न २२, कुमा)। °भाइ वि [°भागिन्] वही अर्थ (स ७५६, सुपा २२६)। °भाग देखो °भाअ (सुर १०, ३८)।

मंद न [मान्द्य] १ बीमारी, रोग, 'न य मंदेण मरई कोइ तिरिओ अहव मणुओ वा' (सुपा २२६)। २ मूर्खता, वेवकूफी, 'वालस्स मदय वीय' (सूअ १, ४, १, २६)।

मंदक्ख न [मन्दाक्ष] लज्जा, शरम (राज)।

मंदग } न [मन्दक] गेय-विशेष, एक प्रकार
मंदय } का गान (राज, ठा ४, ४—पत्र २८५)।

मंदर पु [मन्दर] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत (सुज्ज ५, सम १२, हे २, १७४, कप्प; सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, मरयकुमार का पुत्र (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव (ज ४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, (इक)।

मंदा स्त्री [मन्दा] १ मन्द-स्त्री (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं मे तीसरी अवस्था २१ से ३० वर्ष तक की दशा (तदु १६)।

मंदाइणी स्त्री [मन्दाकिनी] १ गगा नदी, भागीरथी (पउम १०, ५०, पाअ)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम (पउम १०६, १२)।

मंदाय क्रिवि [मन्द] शनै, धीमे से, 'मदायं मंदाय पच्चइयाए' (जीव ३)।

मंदाय न [मन्दाय] गेय-विशेष (ज १)।

मंदार पुं [मन्दार] १ कल्पवृक्ष-विशेष (सुपा १)। २ पारिभद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल, 'मदारदामरमणिज्जभूयं' (कप्प, गउड)। ४ परिभद्र वृक्ष का फूल (वज्जा १०६)।

मंदिअ वि [मान्दिक] मन्दता वाला, मन्द, 'वाले य मदिए मूढे' (उत्त ८, ५)।

मंदिर न [मन्दिर] १ गृह, घर (गउड, मवि)। २ नगर-विशेष (इक, आचू १)।

मंदिर वि [मान्दिर] मन्दिर नगर का, 'सीहपुरा सीहा वि य गीयपुरा मदिरा य वहुणाया' (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [दे] १ शृखल, साँकल। २ मन्थान-दण्ड (दे ६, १४१)।

मंदुय पु [दे. मन्दुक] जलजन्तु विशेष (पण्ह १, १—पत्र ७)।

मंदुरा स्त्री [मन्दुरा] अश्व-शाला (सुपा ६७)।

मंदोदरी } स्त्री [मन्दोदरी] १ रावण-पत्नी
मंदोयरी } (से १३, ९७)। २ एक वणिक्-पत्नी (उप ५६७ टी)।

मंदोशण (मा)। वि [मन्दोष्ण] अल्प गरम (प्राकृ १०२)।

मंधाउ पु [मान्धातृ] हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९७)।

मंधादण पु [मन्धादन] मेष, गाडर, 'जहा मंधादए (? णे) नाम थिमिअं भुजती दगं' (सूअ १, ३, ४, ११)।

मंधाय पुं [दे] आढ्य, श्रीमत (दे ६, ११६)।

मंभीस (अप)। सक [मा + भी] डरने का निषेध करना, अभय देना। सक्र. मंभीसिवि (भवि)।

मंभीसिय देखो माभीसिअ (भवि)।

मंस पुंन [मांस] मास, गोश्त, पिशित, 'अयमाउसो मंसे अयं अट्ठी' (सूअ २, १, १६, आचा, ओघभा २४६, कुमा, हे १, २९)। °इत्त वि [°वत्] मास-लोलुप (सुख १, १५)। °खल न [°खल] मास सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। °चक्खु पुन [°चक्षुस्] १ मास-मय चक्षु। २ वि. मास-मय चक्षुवाला, ज्ञान-चक्षु-रहित, 'अद्दिस्से मंसचक्खुणा' (सम ६०)। °ासण वि [°ाशन] मास-भक्षक (कुमा)। °ासि, °ासिण वि [°ाशिन्] वही अर्थ (पउम १०५, ४४, महा) 'मसासिएस्स' (पउम २६, ३७)।

मंस न [मांस] फल का गर्भ, फल का गुद्दा (आचा २, १, १०, ५, ६)।

मंसल वि [मांसल] पीन, पुष्ट, उपचित (पाअ, हे १, २९, पण्ह १, ४)।

मंसी स्त्री [मांसी] गन्ध-द्रव्य-विशेष जटामासी (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

मंसु पुन [श्मश्रु] दाढी-मूँछ—पुरुष के मुख पर का वाल (सम ६०, औप कुमा), 'मंसू' (हे १, २६, प्राप्र), 'मसूइं' (उवा)।

मंसु देखो मंस, 'मसूणि छिन्नपुव्वाइं' (आचा)।

मंसुंडग न [दे, मांसोन्दुक] मांस-खण्ड (पिंड ५८६)।

मंसुल्ल वि [मांसवत्] मांसवाला (हे २, १५९)।

मक्कंडेअ पु [मार्कण्डेय] ऋषि-विशेष (अभि २४३)।

मक्कड पु [मर्कट] १ वानर, वनरा, वन्दर (गा १७१, उप पृ १८८, सुपा ६०६, दे २, ७२, कुप्र ९०, कुमा)। २ मकडा, जाल वनानेवाला कीडा (आचा, कस, गा ६३, दे ६, ११६)। ३ छन्द का एक भेद (पिंग)। °वध पुं [°वन्ध] वन्ध-विशेष, नाराच वन्ध (कम्म १, ३९)। °संताण पु [°सतान] मकडा का जाल (पडि)।

मक्कडवध न [दे] शृखलाकार ग्रीवा-भूषण (दे ६, १२७)।

मक्कडी स्त्री [मर्कटी] वानरी वनरी (कुप्र ३०३)।

मक्कल (अप) देखो मक्कड (पिंग)।

मक्कार पु [माकार] १ 'मा' वर्ण। २ 'मा' के प्रयोगवाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति (ठा ७—पत्र ३९८)।

मक्कुण देखो मकुण (पव २६२, दे १, ६६)।

मक्कोड पु [दे] १ यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि, जन्तर गठने के लिए वनाई जाती राशि (दे ६, १४२)। २ पुस्त्री. कीट-विशेष, चींटा, गुजराती मे 'मकोडो', 'मंकोडो' (निचू १, आवम, जी १६)। स्त्री °डा (दे ६,१४२)।

मक्ख सक [म्रक्ष्] १ चुपड़ना, स्नेहान्वित करना। २ घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना। मक्खइ (पड्), मक्खति (उप १४७ टी), मक्खिज्ज, मक्खेज्ज, (आचा २, १३, २, ३)। हेक्. मक्खेत्तए (कस)। कृ मक्खियव्व (ओघ ३८५ टी)।

मक्खण न [म्रक्षण] १ मक्खन, नवनीत (स २५८, पभा २२)। २ मालिश, अभ्यग (निचू ३)।

मक्खर पु [मस्कर] १ गति। २ ज्ञान। ३ वश वांस। ४ छिद्रवाला वांस (सक्षि १५, पि ३०६)।

मक्खिअ वि [म्रक्षित] चुपडा हुआ (पाअ, दे ८, ६२, ओघ ३८५ टी)।

मक्खिअ न [माक्षिक] मक्षिका-सचित मधु (राज)।

मक्खिआ स्त्री [मक्षिका] मक्खी (दे ६, १२०)।

मगइअ वि [दे] हस्त पाशित, हाथ मे बांधा हुआ (विपा १, ३—पत्र ४८, ४६)।

मगण पुं [मगण] छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरो की सज्ञा (पिंग)।

मगदतिआ स्त्री [दे] १ मालती का फूल। २ मोगरा का फूल, 'कुसुअ वा मगदतिअ' (दस ५, २, १४, १६)।

मगदन्तिआ स्त्री [दे मगदन्तिका] १ मेंदी या मेहँदी का गाछ। २ मेंदी की पत्ती (दस ५, २, १४, १६)।

मगर पुं [मकर] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष (पएह १, २, ओप, उव, सुर १३, ४२, णाया १, ४)। २ राहु (सुज्ज २०)। देखो मयर।

मगरिया स्त्री [मकरिका] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

मगासर स्त्रीन [मृगशिरस्] नक्षत्र विशेष 'कत्तिय रोहिणी मगसिर अद्दा य' (ठा २, ३—पत्र ७७)। स्त्री °रा, 'दो मगसिराओ' (ठा २, ३—पत्र ७७)।

मगह देखो मागह। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष (इक)।

मगह } पु व [मगध] देश विशेष (कुमा)।
मगहग } °वरच्छ [°वराक्ष] आभरण-विशेष (ओप पृ ४८ टि)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)। देखो मगह।

मगा अ [दे] पश्चात्, पीछे, मराठी मे 'मग' (दे १, ४, टी)।

मगुद देखो मउद = मुकुन्द (उत्तनि ३)।

मग्ग सक [मार्गय्] १ मागना। २ खोजना। मग्गइ, मग्गति (उव, पड्, हे १, ३४)। वकृ मग्गत, मग्गमाण (गा २०२, उप ६४८ टी, महा, सुपा ३०८)। सकृ मग्गेविणु (अप) (भवि)। हेकृ मग्गिउ (महा)। कृ मग्गिअव्व मग्गेयव्व (से १४, २७, सुपा ५१८)।

मग्ग सक [मग्] गमन करना, चलना। मग्गइ (हे ४, २३०)।

मग्ग पु [मार्ग] १ रास्ता, पथ (ओघ ३४, कुमा, प्रासू ५०, ११७, भग)। २ अन्वेषण, खोज (विसे १३८१)। °ओ अ [°तस्] रास्ते से (हे १, ३७)। °ण्णु वि [°ज्ञ] मार्ग का जानकार (उप ६४४)। °त्थ वि [°स्थ] १ मार्ग मे स्थित। २ सोलह से ज्यादा वर्ष की उम्रवाला (सूअ २, १, ६)। °दग वि [°दय] मार्ग-दर्शक (भग, पडि)। °विउ वि [°वित्] मार्ग का जानकार (ओघ ८०२)। °ह नि [°घ्न] मार्ग नाशक (श्रु ७४)। °ाणुसार वि [°ानुसारिन्] मार्ग का अनुयायी (धर्म २)।

मग्ग पु [मार्ग] १ आकाश (भग २०, २—पत्र ७७५)। २ आवश्यक-कर्म, सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

मग्ग } पु [दे] पश्चात्, पीछे (दे ६,
मग्गअ } १११, से १, ५१, सुर २, ५६, पाअ, भग)।

मग्गअ वि [मार्गक] मांगनेवाला (पउम ६६, ७३)।

मग्गण पु [मार्गण] १ याचक (सुपा २४)। २ वाण, शर (पाअ)। ३ न अन्वेषण, खोज (विसे १३८१)। ४ मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन (ओप, विसे १८०)।

मग्गण° } स्त्री [मार्गणा] १ अन्वेषण,
मग्गणया } खोज (उप पृ २७६, उप ६६२,
मग्गणा } ओघ ३)। २ अन्वय-धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना (कम्म ४, १, २३, जीवस २)।

मग्गणया स्त्री [मार्गणा] ईहा-ज्ञान, ऊहापोह (णदि १७५)।

मग्गण्णिर वि [दे] अनुगमन करने की आदतवाला (दे ६, १२४)।

मग्गसिर पु [मार्गशिर] मास-विशेष, मगसिर मास, अगहन (कप्प, हे ४, ३५७)।

मग्गसिरी स्त्री [मार्गशिरी] १ मगसिर मास की पूर्णिमा। २ मगसिर की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

मग्गिअ वि [मार्गित] १ अन्वेषित, गवेषित (से ६, ३६)। २ मांगा हुआ, याचित (महा)।

मग्गिर त्रि [मार्गयितृ] खोज करनेवाला (सुपा ५८)।

मग्गिल्ल वि [दे] पाश्चात्य, पीछे का (विसे १३२६)।

मग्गु पु [मद्गु] पक्षि-विशेष, जल काक (सूअ १, ७, १५, हे २, ७७)।

मघ पु [मघ] मेघ (भग ३, २, पएण २)।

मघमघ अक [प्र + सृ] फैलना, गन्ध का पसरना, गुजराती मे 'मघमघवु', मराठी मे 'मघमघणें'। वकृ मघमघत, मघमघित, मघमघेत (सम १३७, कप्प, औप)।

मघव पु [मघवन्] १ इन्द्र, देव-राज (कप्प, कुमा ७, ६४)। २ तृतीय चक्रवर्त्ती राजा (सम १५२, पउम २०, ११०)।

मघवा स्त्री [मघवा] छठवी नरक-भूमि, 'मघव त्ति माघवत्ति य पुढवीए नामधेयाइ' (जीवस १२)।

मघा स्त्री [मघा] १ ऊपर देखो (ठा ७—पत्र ३८८, इक)। २ देखो महा = मघा (राज)।

मघोण पु [दे मघवन्] देखो मघव (पड्, पि ४०३)।

मच्च अक [मद्] गर्व करना। मच्चइ (पड, हे ४, २२५)।

मच्च (अप) देखो मच, 'मकुणमच्चइ सुत्त वराई' (भवि)।

मच्च न [दे] मल, मैल (दे ६, १११)।

मच्च } पु [मर्त्य] मनुष्य, मानुष (स
मच्चिअ } २०८, रभा, पाअ, सूअ १, ८, २, आचा)। °लोअ पु [°लोक] मनुष्य-

लोक (कुप्र ४११)। °लोईय वि [°लोकीय] मनुष्य-लोक से सम्बन्ध रखनेवाला (सुपा ५१६)।

मग्घिअ वि [दे] मल-युक्त (दे ६, १११ टी)।

मच्चिर वि [मदितृ] गर्व करनेवाला (कुमा)।

मच्चु पु [मृत्यु] १ मौत, मरण (आचा, सुर २, १३८, प्रासू १०६, महा)। २ यम, यमराज (पड्)। ३ रावण का एक सैनिक (पउम ५६, ३१)।

मच्छ पुं [मत्स्य] १ मछली (णाया १, १, पाअ, जो २०, प्रासू ५०)। २ राहु (सुज्ज २०)। ३ देश-विशेष (इक, ती)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। °खल न [°खल] मत्स्यों को सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। °बंध पुं [°बन्ध] मच्छीमार, धीवर (पण्ह १, १, महा)।

मच्छ पु न [मत्स्य] मत्स्य के आकार की एक वनस्पति (आचा २, १, १०, ५, ६)।

मच्छंडिआ स्त्री [मत्स्यण्डिका] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर (पण्ह २, ४, णाया १, १७, पण्ण १७, पिंड २८३, मा ४३)।

मच्छंडी स्त्री [मत्स्यण्डी] शक्कर (अणु १४७)।

मच्छत देखो मथ=मन्थ्।

मच्छंध देखो मच्छ-बंध (विपा १, ८—पत्र ८२)।

मच्छर पु [मत्सर] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-संपत्ति की असहिष्णुता (उव)। २ कोप, क्रोध। ३ वि ईर्ष्यालु, द्वेषी। ४ क्रोधी। कृपण (हे २, २१)।

मच्छर न [मात्सर्य] ईर्ष्या, द्वेष (से ३, १६)।

मच्छरि वि [मत्सरिन्] मत्सरवाला (पण्ह २, ३, उवा, पाअ)। स्त्री °णी (गा ८४, महा)।

मच्छरिअ वि [मत्सरित, मत्सरिक] ऊपर देखो (पउम ८, ४६, पचा १, ३२, भवि)।

मच्छल देखो मच्छर=मत्सर (हे २, २१, पड्)।

मच्छिअ देखो मक्खिअ=माक्षिक (पव ४—गाथा २२०)।

मच्छिअ वि [मात्स्यिक] मच्छीमार (श्रा १२, अभि १८७, विपा १, ६, पिंड ६३१)।

मच्छिका (मा) देखो माउ=मातृ (प्राकृ १०२)।

मच्छिगा देखो मच्छिया (पि ३२०)।

मच्छिया } स्त्री [मक्षिका] मक्खी (णाया
मच्छी } १, १६, जो १८, उत्त ३६, ६०, प्राप्र, सुपा २८१)।

मज्ज सक [मद्] अभिमान करना। मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज (उव, सूअ १, २, २, १, धर्मसं ७८)।

मज्ज अक [मस्ज्] १ स्नान करना। २ डूबना। मज्जइ (हे ४, १०१), मज्जामा (महा ५७, ७, धर्मसं ८९४)। वकृ मज्जमाण (गा २४६, णाया १, १)। संकृ मज्जिऊण (महा)। प्रयो., संकृ मज्जावित्ता (ठा ३, १—पत्र ११७)।

मज्ज सक [मृज्] साफ करना, मार्जन करना। मज्जइ (पड् प्राकृ ६६, हे ४, १०५)।

मज्ज न [मद्य] दारू, मदिरा (ओप, उवा, हे २, २४, भवि)। °इत्त वि [°वत्] मदिरा लोलुप (सुख १, १५)। °व वि [°प] मद्य-पान करनेवाला (पाअ)। °वीअ वि [°पीत] जिसने मद्य-पान किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६७)।

मज्जग वि [माद्यक] मद्य-सम्बन्धी, 'अन्न वा मज्जगं रसं' (दस ५, २, ३६)।

मज्जण न [मज्जन] १ स्नान। २ डूबना (सुर ३, ७६, कप्पू, गउड, कुमा)। °घर न [°गृह] स्नान-गृह (णाया १, १—पत्र १६)। °धाई स्त्री [°धात्री] स्नान करानेवाली दासी (णाया १, १—पत्र ३७)। °पाली स्त्री [°पाली] वही अर्थ (कप्प)।

मज्जण न [मार्जन] १ साफ करना, शुद्धि (कप्प)। २ वि. मार्जन करनेवाला (कुमा)। °घर न [°गृह] शुद्धि गृह (कप्प, ओप)।

मज्जर देखो मंजर (प्राकृ ५)। स्त्री °री, 'को जुन्नमज्जरिं कजिएण पवियारिउ तरइ' (सुर ३, १३३)।

मज्जविअ वि [मज्जित] १ स्नपित। २ स्नात, 'एत्थ सरे रे पहिअ गयवइवहुयाउ मज्जविया' (वज्जा ६०)।

मज्जा स्त्री [दे. मर्या] मर्यादा (दे ६, ११३, भवि)।

मज्जा स्त्री [मज्जा] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा (सण)।

मज्जाइल्ल वि [मर्यादिन्] मर्यादावाला (निचू ४)।

मज्जाया स्त्री [मर्यादा] १ न्याय्य-पथ-स्थिति, व्यवस्था, 'रयणायरस्स मज्जाया' (प्रासू ६८, आवम)। २ सीमा, हद, अवधि। ३ कूल, किनारा (हे २, २४)।

मज्जार पुंस्त्री [मार्जार] १ बिल्ला, बिलाव (कुमा, भवि)। २ वनस्पति विशेष, 'वत्थुल-पोरगमज्जारपोइवल्ली य पालका' (पण्ण १—पत्र ३४)। स्त्री °रिआ, °री (कप्पू, पाअ)।

मज्जार पु [मार्जार] वायु-विशेष (भग १५—पत्र ६८६)।

मज्जाविअ वि [मज्जित] स्नपित (महा)।

मज्जिअ वि [दे] १ अवलोकित, निरीक्षित। २ पीत (दे ६, १४४)।

मज्जिअ वि [मज्जित] स्नात, (पिंड ४२३, महा, पाअ)।

मज्जिअ वि [मार्जित] साफ किया हुआ (पउम २०, १२७, कप्प, ओप)।

मज्जिआ स्त्री [मार्जिता] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य, श्रीखण्ड (पाअ, दे ७, २, पव २५६)।

मज्जिर वि [मज्जितृ] मज्जन करने की आदत-वाला (गा ४७३, सण)।

मज्जोक्क वि [दे] अभिनव, नूतन (दे ६, ११८)।

मज्झ न [मध्य] १ अन्तराल, मझार, बीच (पाअ, कुमा, द ३६, प्रासू ५०, १६७)। २ शरीर का अवयव-विशेष (कप्पू)। ३ संख्या-विशेष, अन्त्य और परार्ध्य के बीच की संख्या (हे २, ६०, प्राप्र)। ४ वि. मध्यवर्ती, बीच का (प्रासू १२५)। °एस पु [°देश] देश-विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त (गउड)। °गय वि [°गत] १ बीच का, मध्य में स्थित (आचा, कप्प)। २ पुं. अवधिज्ञान का एक भेद (णंदि)।

°गेवेज्जय न [°ग्रैवेयक] देवलोक-विशेष (इक)। °ट्ठिअ वि [°स्थित] तटस्थ, मध्यस्थ (रयण ८८)। °ण्ण, °ण्ह पुं [°ाह्न] दिन का मध्य भाग, दोपहर (प्राप्र, प्राकृ १८, कुमा, अभि ५५, हे २, ८४, महा)। २ न तप विशेष, पूर्वार्ध तप (संबोध ५८)। °ण्हतरु पुं [°ाह्नतरु] वृक्ष-विशेष, मध्याह्न समय में मध्याह्न फूलनेवाले लाल रँग के फूलवाला वृक्ष (कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] तटस्थ (उव, उप ६४८ टी, सुर १६, ६५)। २ बीच में रहा हुआ (सुपा २५७)। °देस देखा °एस (सुर ३, १६)। °न्न देखो °ण्ण (हे २, ८४, सण)। °म वि [°म] मध्य का, मझला, बीच का (भग, नाट—विक्र ५)। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ (उप १३६, ७२८ टी)। °रयणि स्त्री [°रजनि] मध्य रात्रि (स ६३६)। °लोग पुं [°लोक] मेरु पर्वत (राज)। °वत्ति वि [°वर्तिन्] अन्तर्गत (मोह ६४)। °वलिअ वि [°वलित] १ बीच में मुडा हुआ। २ चित्त में कुटिल (वज्जा १२)।

मज्झअ पु [दे] नापित, नाई, हजाम (दे ६, ११५)।

मज्झआर न [दे] मझार, मध्य, अन्तराल (दे ६, १२१, विक्र २८, उव, गा ३, विसे २६६१, सुर १, ४५, सुपा ४६, १०३, खा १), 'अमोगवणिआइ मज्झयारम्मि' (भाव ७)।

मज्झतिअ न [दे] मध्यन्दिन, मध्याह्न (दे ६, १२४)।

मज्झदिण न [मध्यन्दिन] मध्याह्न (दे ६, १२४)।

मज्झमज्झ न [मध्यमध्य] ठीक बीच (भग, विपा १, १, सुर १, २४)।

मज्झयार देखो मज्झआर (राज)।

मज्झण्हिय वि [माध्याह्निक] मध्याह्न-संबन्धी (धर्मवि १०५)।

मज्झत्थ न [माध्यस्थ्य] तटस्थता, मध्यस्थता (उप ६१५, संबोध ४५)।

मज्झिम वि [मध्यम] १ मध्य-वर्ती बीच का (हे १, ४८, सम ४३, उवा, कप्प, ओप, कुमा)। २ पु स्वर-विशेष (ठा ७—पत्र ३६३)। °रत्त पु [°रात्र] निशीथ, मध्यरात्रि (उप ७२८ टी)।

मज्झिमगंड न [दे] उदर, पेट (दे ६, १२५)।

मज्झिमा स्त्री [मध्यमा] १ बीच की उंगली (ओघ ३६०)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

मज्झिमिल्ल वि [मध्यम] मध्य-वर्ती, बीच का (अणु)।

मज्झिमिल्ला देखो मज्झिमा (कप्प)।

मज्झिल्ल वि [माध्यिक, मध्यम] मझला, बीच का (पव ३६, देवेन्द्र २३८)।

मट्ट वि [दे] शृङ्ग-रहित (दे ६, ११२)।

मट्टिआ स्त्री [मृत्तिका] मट्टी, मिट्टी, माटी (णाया १, १, ओप, कुमा, महा)।

मट्टी स्त्री [मृत्, मृत्तिका] ऊपर देखो (जी ४, पडि, दे)।

मट्टुहिअ न [दे] १ परिणीत स्त्री का कोप। २ वि कलुष। ३ अशुचि, मैला (दे ६, १४६)।

मट्ठ वि [दे] अलस, आलसी, मन्द, जड (दे ६, ११२, पाअ)।

मट्ठ वि [मृष्ट] १ मार्जित, शुद्ध (सूअ १, ६, १२, ओप)। २ मसृण, चिकना (सम १३७, दे ८ ७)। ३ घिसा हुआ (ओप, हे २, १७४)। ४ न मिरच, मरिच (हे १, १२८)।

मड वि [दे मृत] १ मरा हुआ, निर्जीव (दे ६, १४१), 'मडोव्व अप्पाणं' (वज्जा १४८), 'मडे' (मा) (प्राकृ १०३)। °इ वि [°ादिन्] निर्जीव वस्तु को खानेवाला (भग)। °ासय पुं [°ाश्रय] श्मशान (निचू ३)।

मड पु [दे] कंठ, गला (दे ६, १४१)।

मडंब पुंन [दे मडम्ब] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव (णाया १, १, भग, कप्प, ओप, पण्ह १, ३, भवि)।

मडक्क पुं [दे] १ गर्व, अभिमान, 'न किउ वयणु सचलिय मडक्कइं' (भवि)। २ मटका, कलश, घडा, मराठी में 'मडकें' (भवि)।

मडक्किया स्त्री [दे] छोटा मटका, कलशी (कुप्र ११६)।

मडप्प, मडप्फर, मडफ्फर पु [दे] गर्व, अभिमान, अहंकार, 'मज्जवि कंदप्पमडप्पखंडणे वहइ पडिवं' (सुपा २६, कुप्र २२१, २८४, पउ, दे ६, १२०, पाअ, सुपा ६, प्रासू ८५, कुप्र २५५, सम्मत्त १८६, धम्म ८ टी, भवि, सण)।

मडभ वि [मडभ] कुब्ज, वामन (राज)।

मडमड, मडमडमड अक [मडमडाय] मड मड आवाज करना। २ सक. मड मड आवाज हो उस तरह मारना। मडमडमडति (पउम २६, ५३)। भवि. मडमडइस्सं, मडमडाइस्सं (मा), (पि ५२८, चारु ३५)।

मडमडाइअ वि [मडमडायित] 'मड' 'मड' आवाज हो उस तरह मारा हुआ (उत्तर १०३)।

मडय न [मृतक] मुडदा, मुर्दा, शव (पाअ, हे १, २०६, सुपा २१६)। °गिह न [°गृह] कब्र (निचू ३)। °चेइअ न [°चैत्य] मृतक के दाह होने पर या गाडने पर बनाया गया चैत्य—स्मारक-मन्दिर (आचा २, १०, १६)। °डाह पु [°दाह] चिता, जहाँ पर शव फूंके जाते हों (आचा २, १०, १६)। °थूभिया स्त्री [°स्तूपिका] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप (आचा २, १०, १६)।

मडय पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५)।

मडवोज्झा स्त्री [दे] शिबिका, पालकी (दे ६, १२२)।

मडह वि [दे] १ लघु, छोटा (दे ६, ११७, पाअ, सण)। २ स्वल्प, थोडा (गा १०५, स ८, गउड, वज्जा ४२)।

मडहर पु [दे] गर्व, अभिमान (दे ६, १२०)।

मडहिय वि [दे] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ (गउड)।

मडहुल्ल वि [दे] लघु, छोटा, 'मडहुल्लियाए किं तुह इमीए किं वा दलेहिं तलिणेहिं' (वज्जा ४८)।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला (दे ६, ११४)।

मडुवइअ वि [दे] १ हत, विध्वस्त। २ तीक्ष्ण (दे ६, १४६)।

मड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। मड्डइ (हे ४, १२६, प्राकृ ६८)।

मड्डुय पुं [दे. मड्डुक] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती (दे ६, १४०, पाअ, सुर ३, १३६, सुख २, १५)। २ आज्ञा, हुकुम (दे ६, १४०, सुपा २७६)।

मड्डिअ वि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (हे २, ३६, षड्, पि २६१)।

मड्डुअ देखो मद्दुअ (राज)।

मढ देखो मड्ड। मटइ (हे ४, १२६)।

मढ पुन [मठ] संन्यासियों का आश्रय, व्रतियों का निवासस्थान, 'मढो' (हे १, १९९, सुपा २३४, वज्जा ३४; भवि), मढ' (प्राप्र)।

मढिअ देखो मड्डिअ (कुमा)।

मढिअ वि [दे] १ खचित, गुजराती में 'मढेलु', 'एयाउ ओमहीओ तियाउमटियाउ धारिज्जा' (सिरि ३७०)। २ परिवेष्टित (दे २, ५५, पाअ)।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ (सुपा ११३)।

मण सक [मन्] १ मानना। २ जानना। ३ चिन्तन करना। मणइ, मणसि (षड्, कुमा)। कवकृ मणिज्जमाण (भग १३, ७, विसे ८१३)।

मण पुंन [मनस्] मन, अन्त करण, चित्त (भग १३, ७, विसे ३५२५, स्वप्न ४५, दं २२, कुमा, प्रासू ४४, ४८, १२१)। °अगुत्ति स्त्री [°अगुप्ति] मन का असयम (पि १५६)। °करण न [°करण] चिन्तन, पर्यालोचन (श्रावक ३३७)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन को सयम मे रखनेवाला (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] मन का सयम (उत्त २४, २)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ मन को जाननेवाला, मन का जानकार। २ सुन्दर, मनोहर (प्राकृ १८)। °जीविअ वि [°जीविक] मन को आत्मा माननेवाला (पण्ह १, २—पत्र २८)। °जोअ पु [°योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार (भग)। °ज्ज, °ण्णु, °ण्णुअ देखो °जाणुअ (प्राकृ १८, षड्)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] विद्या विशेष, मन को स्तब्ध करनेवाली दिव्य शक्ति (पउम ७, १३७)। °नाण न [°ज्ञान] मन का साक्षात्कार करनेवाला ज्ञान, मन -पर्यव ज्ञान (कम्म ३, १८, ४, ११, १७, २१)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मन -पर्यव नामक ज्ञानवाला (कम्म ४, ४०)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलो को मन के रूप मे परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४)। °पज्जव पुं [°पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जाननेवाला ज्ञान (भग, औप, विसे ८३)। °पज्जवि वि [°पर्यविन्] मन पर्यव ज्ञानवाला (पव २१)। °पसिण-विज्जा स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या (सम १२३)। °बलिअ वि [°बलिन्, °क] मनो-बलवाला, दृढ मनवाला (पण्ह २, १, औप)। °मोहण वि [°मोहन] मन को मुग्ध करनेवाला, चित्ताकर्षक (गा १२८)। °योगि वि [°योगिन्] मन की चेष्टावाला (भग)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप मे परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह (राज)। °वज्ज न [°वज्र] एक विद्याधर नगर (इक)। °समिइ स्त्री [°समिति] मन का सयम (ठा ८—पत्र ४२२)। °समिय वि [°समित] मन को सयम मे रखनेवाला (भग)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष (पिंग)। °हर वि [°हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक (हे १, १५६, औप, कुमा)। °हरण पुन [°हरण] पिंगल-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्धति (पिंग)। °भिराम, °भिरामेल्ल वि [°अभिराम] मनोहर (सम १४६, औप, उप पृ ३२२, उप २२० टी)। °म वि [°आप] सुन्दर, मनोहर (सम १४६, विपा १, १, औप, कप्प)। देखो मणो°।

मण देखो मणय (प्राकृ ३८)।

मणंसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मनवाला (हे १, २६)। स्त्री. °णी (हे १, २६)।

मणंसिल° } स्त्री [मन शिला] लाल वर्ण
मणंसिला } की एक उपधातु, मनशिल, मैनशिल (कुमा, हे १, २६)।

मणग पु [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शय्यभवसूरि का पुत्र और शिष्य (कप्प, धर्मवि ३८)। देखो मणय।

मणगुलिआ स्त्री [दे] पीठिका (राय)।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना। २ समझना (विसे ३५२५)। ३ चिन्तन (श्रावक ३३७)।

मणय पु [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६)। देखो मणग।

मणय अ [मनाग्] अल्प, थोडा (हे २, १६६, पाअ, षड्)।

मणस देखो मण = मनस्, 'पसन्नमणसो करिस्सामि' (पउम ६, ५६), 'लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अदीणमणसस्स' (ओघ ५३७)।

मणसिल° } देखो मणंसिला (कुमा, हे १,
मणसिला } २६, जी ३, स्वप्न ६४)।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित (पण्ण ३४—पत्र ७८२, सुपा २४७)।

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन मे रखना। मणसीकरे (उत्त २, २५)।

मणस्सि देखो मणंसि (धर्मवि १४६)।

मणा देखो मणय (हे २, १६६, कुमा)।

मणाउ } (अप) ऊपर देखो (कुमा, भवि, पि
मणाउं } ११४, हे ४, ४१८, ४२६)।

मणाग ऊपर देखो (उप १३२, महा)।

मणाल देखो मुणाल (राज)।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल (तदु २०)। देखो मुणालिआ।

मणासिला देखो मणंसिला (हे १, २६, पि ६४)।

मणि पुस्त्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न (कप्प, औप, कुमा, जी ३, प्रासू ४)। °अंग पु [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है (सम १७)। °आर पु [°कार] जोहरी, रत्नों के गहनो का व्यापारी (दे ७, ७७, मुद्रा ७६, णाया १, १३, धर्मवि ३६)। °कंचण न [°काञ्चन] रुक्मि-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ७०)। °कूड न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °क्खइअ वि [°खचित] रत्न-जटित (पि १९६)। °चइया स्त्री [°चयिता] नगरी-

विशेष (विपा २, ६)। °चूड पु [°चूड] एक विद्या-धर नृप (महा)। °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला (ग्रोप)। °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष (महा)। °प देखो °व (से ६, ४३)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका (महा)। °प्पभ पु [°प्रभ] एक विद्याधर (महा)। °भद्द पु [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि खचित जमीन (स्वप्न ५४)। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न निर्वृत्त (सुपा ६२, महा)। °रह पु [°रथ] एक राजा का नाम (महा)। °व पु [°प] १ यक्ष। २ सर्प, नाग (से २, २३)। ३ समुद्र (से ६, ५०)। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष (विपा २, ६—पत्र ११४ टि)। °वंध पु [°बन्ध] हाथ ग्रौर प्रकोष्ठ के बीच का ग्रवयव (मण)। °वालय पु [°पालक, °वालक] समुद्र (से २, २३)। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष (राज)। °हियय पु [°हृदय] देव-विशेष (दीव)।

मणिअ न [मणित] सभोग-समय का स्त्री का ग्रव्यक्त शब्द (गा ३६२, रंभा)।

मणिअ देखो मणय (पड्, हे २, १६६, कुमा)।

मणिअड (ग्रप) पु [मणि] माला का सुमेर (हे ४, ४१४)।

मणिच्छिअ त्रि [मनईप्सित] मनोऽभीष्ट (सुपा ३८४)।

मणिज्जमाण देखो मण = मन्।

मणिट्ठ वि [मनइष्ट] मन को प्रिय (भवि)।

मणिणायहर न [दे मणिनागगृह] समुद्र, सागर (दे ६, १२८)।

मणिरइआ स्त्री [दे] कटीसूत्र (दे ६, १२६)।

मणीसा स्त्री [मनीषा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा (पाग्र)।

मणीसि त्रि [मनीषिन्] बुद्धिमान्, पण्डित (कप्पू)।

मणीसिद वि [मनीषित] वाञ्छित (नाट—मृच्छ ५७)।

मणु पु [मनु] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष (विसे १५०८, उप १५० टी)। २ प्रजापति-विशेष, 'चोद्दहमणुचोग्गुणाग्रो' (कुमा, राज)। ३ मनुज, मनुष्य, 'देवत्ताग्रो मणुत्तं' (पउम २१, ६३, कम्म १, १६, २ १३)। ४ न. एक देव-विमान (सम २)।

मणुअ पुं [मनुज] १ मनुष्य, मानव (उवा, भग, हे १,८, पाग्र, कुमा, स ८२, प्रासू ४५)। २ भगवान् श्रेयांसनाथ का शासन यक्ष (संति ७)। ३ त्रि मनुष्य सम्बन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहिया-सिया' (सूग्र १, २, २, १५)।

मणुइंद पु [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति (पउम ८५, २२, सुर १, ३२)।

मणुई स्त्री [मनुजी] मनुष्य-स्त्री, नारी, महिला (णदि १२६ टी)।

मणुएसर पु [मनुजेश्वर] ऊपर देखो (सुपा २०४)।

मणुन्न } वि [मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर
मणुण्ण } (पाग्र, उप १४२ टी, सम १४६, भग)।

मणुय } पुस्त्री [मनुष्य] १ मानव, मर्त्य
मणुस्स } (ग्राचा, पि ३००, ग्राचा ठा ४, २, भग, श्रा २८, सुपा २०३, जी १६, प्रासू २८)। स्त्री °स्सी (भग, पण्ण १८, पत्र २४१)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक (जीव ३)। °सेणियापरिकम्म पु [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८)।

मणुस्स वि [मानुष्य] मनुष्य सम्बन्धी, 'दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहियएण' (ग्राप २१)।

मणुस्सिंद पु [मनुष्येन्द्र] राजा, नर-पति (उत्त १८, ३७, उप पृ १४२)।

मणूस देखो मणुस्स (हे १, ४३, ग्रौप, उवर १२२, पि ६३)।

मणे ग्र [मन्ये] विमर्श-सूचक ग्रव्यय (हे २, २०७, पड्, प्राकृ २६, गा १११, कुमा)।

मणो° देखो मण = मनस्। °गम न [°गम] देवविमान-विशेष, 'पालगपुप्फगसोमणसमसिरि-वच्छनदियावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमल-सव्वग्रोभद्दसरिसनामवेज्जेहिं विमाणेहिं ग्रो-दरणं' (ग्रप)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, उप २६४ टी)। २ पुं गुल्म-विशेष, 'सरियए णोमालियकोरिंटय-वत्थुजीवगमणोज्जे' (पण्ण १—पत्र ३२)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, पि २७६)। °भव पुं [°भव] कामदेव, कन्दर्प (सुपा ६८, पिंग)। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक (पउम ८, १४३)। °भू पु [°भू] कामदेव, कन्दर्प (कप्पू)। °मय वि [°मय] मानसिक, 'सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। °माणसिय वि [°मानसिक] मन में ही रहनेवाला—वचन से ग्रप्रकटित—मानसिक दुःख ग्रादि (णाया १, १,—पत्र २६)। °रम वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय (पाग्र)। २ पुं एक विमानेन्द्रक, देवविमान विशेष (देवेन्द्र १३६)। ३ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। ५ किन्नर-देवों की एक जाति। रुचक द्वीप का ग्रधिष्ठायक देव (राज)। ७ तृतीय ग्रैवेयक-विमान (पव १६४)। ८ ग्राठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान (इक)। ९ एक देव-विमान (सम १७)। १० मिथिला का एक चैत्य (उत्त ६, ८, ६)। ११ उपवन-विशेष (उप ६८६ टी)। °रमा स्त्री [°रमा] चतुर्थ वासु-देव की पटरानी का नाम (पउम २०, १८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका (सुपा ७५, विचार १२६)। ३ शक्र की ग्रञ्जुका नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °रह पु [°रथ] १ मन का ग्रभिलाष (ग्रोप, कुमा, हे ४, ४१४)। २ पक्ष का तृतीय दिवस (सुज्ज १०, १४—पत्र १४७)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष (पिंग)। °हर पु [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस (सुज्ज १०, १४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ वि. रमणीय, सुन्दर (हे १, १५६, पड्, स्वप्न ५२, कुमा)। °हरा स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °हव देखो °भव (स ८१, कप्पू)। °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर (भवि)।

मणोसिला देखो मणसिला (हे १, २६, कुमा)।

मण्ण देखो मण = मन्। मण्णइ (पि ४८८)।

कर्म. मरिणज्जइ (कुप्र १०६)। वकृ. मण्णमाण (नाट. चैत १३३)।

मण्णण न [मानन] मानना, आदर (उप १५४)।

मण्णा देखो मन्ना (राज)।

मण्णिय देखो मन्निय (राज)।

मण्णु देखो मन्नु (गा ११, ५०८, दे ६, ७१, वेणी १७)।

मण्णे देखो मणे (कप्प)।

मत्त वि [मत्त] १ मद युक्त, मतवाला (उवा, प्रासू ६४, ६८, भवि)। २ न मद्य, दारू (ठा ७)। ३ मद, नशा (पव १७१)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३, इक)।

मत्त देखो मेत्त = मात्र, 'वयणमत्तमिट्ठाण' (रंभा)।

मत्त न [अमत्र, मात्र] पात्र, भाजन (आचा २, १, ६, ३, ओघ २५१)। देखो मत्तय।

मत्त (अप) देखो मच्च = मर्त्य (भवि)।

मत्तगय पु [मत्ताङ्गक, °ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, मद्य देनेवाला कल्पतरु (सम १७, पव १७१)।

मत्तंड पु [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सम्मत्त १४५, सिरि १००८)।

मत्तग न [दे] पेशाब, मूत्र (कुलक ६)।

मत्तग, मत्तय पुन [अमत्र, मात्रक] १ पात्र, भाजन। २ छोटा पात्र, विइज्जओ मत्तओ होइ' (बृह ३, कप्प)।

मत्तय देखो मत्तग = दे (कुलक १३)।

मत्तट्टी स्त्री [दे] बलात्कार (दे ६, ११३)।

मत्तवारण पुन [मत्तवारण] वरंडा, वरामदा, दालान (दे ६, १२३, सुर ३, १००, भवि)।

मत्तवाल पुं [दे] मतवाला, मदोन्मत्त (दे ६, १२२, पड्, सुख २, १७, सुखा ४८६)।

मत्ता स्त्री [मात्रा] १ परिमाण (पिंड ६५१)। २ अंश, भाग, हिस्सा (स ४८३)। ३ समय का सूक्ष्म नाप। ४ सूक्ष्म उच्चारण-कालवाला वर्णावयव (पिंग)। ५ अल्प, लेश, लव (पाअ)।

मत्ता अ [मत्वा] जानकर (सूअ १, २, २, ३२)।

मत्तालव पु [दे मत्तालम्ब] वरंडा, वरामदा (दे ६, १२३, सुर १, ५७)।

मत्तिया स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी (पएण १—पत्र २५)। °वई स्त्री [°वती] नारी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी (पव २७५)।

मत्थ, मत्थग, मत्थय पुन [मस्त, °क] माथा, सिर (से १, १, स ३८५, औप)। °त्थ वि [°स्थ] सिर मे स्थित (गउड)। °मणि पु [°मणि] शिरोमणि, प्रधान, मुख्य (उप ६४८ टी)।

मत्थय पुन [मस्तक] गर्भ, फल आदि का मध्यभाग—अन्त सार (आचा २, १, ८, ६)।

मत्थयधोय वि [दे धौतमस्तक] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ (णाया १, १—पत्र ३७)।

मत्थुलुग, मत्थुलुय न [मस्तुलुङ्ग] १ मस्तक-स्नेह, सिर मे से निकलता एक प्रकार का चिकना पदार्थ (पराह १, १, तंदु १०)। २ मेद का फिप्फिस आदि (ठा ३, ४—पत्र १७०, भग, तंदु १०)।

मथिय देखो महिअ = मथित (पराह २, ४—पत्र १३०)।

मद देखो मय = मद (कुमा, प्रयौ १६, पि २०२)।

मद (मा) देखो मय = मृत (प्राकृ १०३)।

मदण देखो मयण (स्वप्न ६३, नाट—मृच्छ २३१)।

मदणसला(गा) देखो मयणसलागा (पएण १—पत्र ५४)।

मदणा देखो मयणा = मदना (णाया २—पत्र २५१)।

मदणिज्ज वि [मदनीय] कामोद्दीपक, मदन-वर्धक (णाया १, १—पत्र १६, औप)।

मदि देखो मइ = मति (मा ३२, कुमा, पि १६२)।

मदीअ देखो मईअ (स २३२)।

मदुवी देखो मउई (चड)।

मदोली स्त्री [दे] दूती, दूत कर्म करनेवाली स्त्री (पड्)।

मद्द सक [मृद्] १ चूर्ण करना। मालिश करना, मसलना, मलना। मद्दाहि (कप्प)। कर्म मद्दीअदि (नाट—मृच्छ १३५)। हेकृ. मद्दिउ (पि ५८५)।

मद्दण न [मर्दन] १ अंग-चप्पी, मालिश (सुपा २४)। २ हिंसा करना, 'तसथावरभूय मद्दण विविहं' (उव)। ३ वि. मर्दन करनेवाला (ती ३)।

मद्दल पु [मर्दल] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग (दे ६, ११६, सुर ३, ६८, सिरि १५७)।

मद्दलिअ वि [मार्दलिक] मृदंग बजानेवाला (सुपा २६४, ५५३)।

मद्दव न [मार्दव] मृदुता, नम्रता, विनय, अहंकार निग्रह (औप, कप्प)।

मद्दवि वि [मार्दविन्] नम्र, विनीत, 'अज्ज-विय मद्दविय लाघविय' (सूअ २, १, ५७, आचा)।

मद्दविअ वि [मार्दविक, °त] ऊपर देखो (बृह ४, वव १)।

मद्दिअ देखो मड्डिअ (पाअ)।

मद्दी स्त्री [माद्री] १ राजा शिशुपाल की मा का नाम (सूअ १, ३, १, १ टी)। २ राजा पाण्डु की एक स्त्री का नाम (वेणी १७१)।

मद्दुअ पुं [मद्दुक] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक (भग १८, ७—पत्र ७५०)।

मद्दुग पु [मद्गु, °क] पक्षि-विशेष, जल-वायस (भग ७, ६—पत्र ३०८)। देखो मग्गु।

मद्दुग देखो मुदुग (राज)।

मधु देखो महु (पड्, रंभा, पिंग)।

मधुघाद पु [मधुघात] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

मधुर देखो महुर (निचू १, प्राकृ ८५)।

मधुसित्थ देखो महुसित्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

मधूला स्त्री [दे मधूला] पाद-गण्ड (राज)।

मन अ [दे] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं (कुमा)।

मनुस्स देखो मणुस्स (चड, भग)।

मन्न देखो मण्ण मन्नइ, मन्नसि (आचा, महा), मन्नते, मन्नेसि (रंभा)। कर्म, मन्निज्जउ (महा)। वकृ मन्नंत, मन्नमाण (सुर १४, १७१, आचा, महा, सुपा ३०७, सुर ३, १७४)।

मन्न देखो माण = मानय्। कृ मन्न, मन्नाय मन्नणिज्ज, मन्नियव्व, मन्निय (उप १०३६, धर्मवि ७६, भवि, सुर १०, ३८, सुपा ३६८, ठा १ टी—पत्र २१, सं ३५)।

मन्ना स्त्री [मनन] १ मति, बुद्धि (ठा १—पत्र १६)। २ आलोचन, चिन्तन (सूम २ १, ४१, ठा १)।

मन्ना स्त्री [मान्या] अभ्युपगम, स्वीकार (ठा १—पत्र १६)।

मन्नाय देखो मन्न = मानय्।

मन्नाविय वि [मानित] मनाया हुआ (सुपा १५६)।

मन्निय वि [मत] माना हुआ (सुपा ६०५, कुमा)।

मन्नु पु [मन्यु] १ क्रोध, गुस्सा (सुपा ६०४)। २ दैन्य, दीनता, 'सोयसमुब्भूयगरुय-मन्नुवगा' (सुर ११, १४४)। ३ अहंकार। ४ शोक, अफसोस। ५ क्रतु, यज्ञ (हे २, २५, ४४)।

मन्नुइय वि [मन्यवित] मन्यु-युक्त, कुपित (सुख ४, १)।

मन्नुसिय वि [दे] उद्विग्न (स ५६६)।

मन्ने देखो मुण्णे (हे १, १७१, रंभा)।

मप्प न [दे] माप, वाट, 'तेण य सह वरु-णेण आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि' (सुपा ३६२)।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [मा भैषी] अभय-
मब्भीसा } वचन (हे ४, ४२२)।

ममक्कार पु [ममकार] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह (गच्छ २, ४२)।

ममच्चय वि [मदीय] मेरा (सुख २, १५)।

ममत्त न [ममत्व] ममता, मोह, स्नेह (सुपा २६)।

ममया स्त्री [ममता] ऊपर देखो (पचा १५, ३२)।

ममा सक [ममाय्] ममता करना। ममाइ, ममायए (सूम २, १, ४२, उव)। वकृ ममायमाण, ममायमीण (आचा, सूम २, ६, २१)।

ममाइ वि [ममत्विन्] ममतावाला (सूम १, १, १, ४)।

ममाइय वि [ममायित] जिसपर ममता की गई हो वह (आचा)।

ममाय वि [दे] ग्रहण करना। ममायति (दस ६, ४६)।

ममाय वि [ममाय] ममत्व करनेवाला (निचू १३)।

ममि वि [मामक] मेरा, मदीय, 'मम वा ममि वा' (सूम २, २, ६)।

ममूर सक [चूर्णय्] चूरना। ममूरइ (धात्वा १४८)।

मम्म पुन [मर्मन्] १ जीवन-स्थान। २ सन्धि-स्थान (गा ४४६, उप ६६१, हे १, ३२)। ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि (णाया १, ८)। ४ गुप्त बात (प्रासू ११, सुपा ३०७)। ५ रहस्य, तात्पर्य (श्रु २८)। °य वि [°ग] मर्म-वाचक (शब्द) (उत्त १, २५, सुख १, २५)।

मम्मक पु [दे] गर्व, अहंकार (षड्)।

मम्मक्का स्त्री [दे] १ उत्कण्ठा। २ गर्व (दे ६, १४३)।

मम्मण न [मन्मन] १ अव्यक्त वचन (हे २, ६१, दे ६, १४१, विपा १, ७, वा २६)। २ वि अव्यक्त वचन बोलनेवाला (श्रा १२)।

मम्मण पु [दे] १ मदन, कन्दर्प। २ रोष, गुस्सा (दे ६, १४१)।

मम्मणिआ स्त्री [दे] नील मक्षिका (दे ६, १२३)।

मम्मर पु [मर्मर] शुष्क पत्तो की आवाज (गा ३६५)।

मम्मह पु [मन्मथ] कामदेव, कन्दर्प (गा ४३०, अभि ६५)।

मम्मी स्त्री [दे] मामी, मातुल-पत्नी (दे ६, ११२)।

मय न [मत] मनन, ज्ञान (सूम २, १, ५०)। २ अभिप्राय, आशय (ओघनि २६०, सूअनि १२०)। ३ समय, दर्शन, धर्म, 'समओ मय' (पाअ, सम्मत्त २२८)। ४ वि माना हुआ (कम्म ४, ४६)। ५ इष्ट, अभीष्ट (सुपा ३७१)। °न्नु वि [°ज्ञ] दार्शनिक (सुपा ५८२)।

मय पु [मय] १ उष्ट्र, ऊँट (सुख ६, १)। २ अश्वतर, खच्चर, 'मयमहिससरहकेसरि—(पउम ६, ५६)। ३ एक विद्याधर-नरेश (पउम ८, १)। °हर पु [°धर] ऊँटवाला (सुख ६, १)।

मय वि [मृत] मरा हुआ, जीव-रहित (णाया १, १, उव, सुर २, १८, प्रासू १७, प्राप्र)। °किच्च न [°कृत्य] मरण के उपलक्ष मे किया जाता श्राद्ध आदि कर्म (विपा १, २)।

मय पुन [मद] १ गर्व, अभिमान, 'एयाइ मयाइ विगिंच धीरा' (सूम १, १३, १६, सम १३, उप ७२८ टी, कुमा, कम्म २, २६)। २ हाथी के गण्ड-स्थल से झरता प्रवाही पदार्थ (णाया १, १—पत्र ६५, कुमा)। ३ आमोद, हर्ष। ४ कस्तूरी। ५ मत्तता, नशा। ६ नद, बडी नदी। ७ वीर्य, शुक्र (प्राप्र)। °करि पु [°करिन्] मदवाला हाथी (महा)। °गल वि [°कल] १ मद से उत्कट, नशे मे चूर, 'मयगलकुंजरगमणी' (पिंग)। २ पु. हाथी (सुपा ६०, हे १, १८२, पाअ, दे ६, १२५)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °णासणी स्त्री [°नाशनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)। °धम्म पु [°धर्म] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४३)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (महा)। °वारण पु [°वारण] मदवाला हाथी, 'मयवारणो उ मत्तो निवा-डियालाणवरखंभो' (महा)।

मय पु [मृग] १ हरिण (कुमा, उप ७२८ टी)। २ पशु, जानवर। ३ हाथी की एक जाति। ४ नक्षत्र-विशेष। ५ कस्तूरी। ६ मकर राशि। ७ अन्वेषण। ८ याचन, माँग। ९ यज्ञ-विशेष (हे १, १२६)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र-वाली (सुर ४, १६, सुपा ३५, कुमा)। °णाह पु [°नाथ] सिंह (स ११२)। °णाहि पुंस्त्री [°नाभि] कस्तूरी (पाअ, सुपा २००, गउड)। °तण्हा स्त्री [°तृष्णा] धूप में जल-भ्रान्ति (दे, से ६, ३५)। °तण्हिआ स्त्री [°तृष्णिका] वही अर्थ (पि ३७५)। °तिण्हा देखो °तण्हा (पि ५४)। °तिण्हिआ देखो °तण्हिआ (पि ५४)। °धुत्त पु [°धूर्त] शृगाल, सियार (दे ६, १२५)। °नाभि देखो °णाहि (कुमा)। °राय पु [°राज]

सिंह, केसरी (पउम २, १७, उप पृ ३०)। °लछण पुं [°लाञ्छन] चन्द्रमा (पाग्र, कुमा; सुर १३, ५३)। °लोअणा स्त्री [°रोचना] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष (अभि १२७)। °रि पुं [°रि] सिंह (पाअ)। °रिदमण पुं [°रिदमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)। °हिव पु [°धिप] सिंह, केसरी (पाअ, स ६)। देखो मिअ, मिग = मृग।

मयक } देखो मिअक (हे १, १७७, १८०, मयंग } कुमा, षड्, गा ३६६, रभा)।

मयग देखो मायंग = मातंग, 'कूवर वरुणो भिउडी गोमेहो वामणा मयगो' (पव २६)।

मयंग पु [मृदङ्ग] वाद्य-विशेष (प्राकृ ८)।

मयगय पु [मतङ्गज] हाथी, हस्ती (पउम ८०, ६६, उप पृ २६०)।

मयगा स्त्री [मृतगङ्गा] जहां पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान (णाया १, ४—पत्र ६६)।

मयतर न [मतान्तर] भिन्न मत, अन्य मत (भग)।

मयद देखो मइंद = मृगेन्द्र (सुपा ६२)।

मयध वि [मदान्ध] मद के कारण अन्धा बना हुआ, मदोन्मत्त (सुर २, ६६)।

मयग वि [मृतक] १ मरा हुआ। २ न. मुर्दा (णाया १, ११, कुप्र २६, औप)। °किच्च न [°कृत्य] श्राद्ध आदि कर्म (णाया १, २)।

मयड पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५)।

मयण पुं [मदन] १ कन्दर्प, कामदेव (पाअ, घण २५, कुमा, रभा)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ६१, २०)। ३ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ वि. मद-कारक, मादक, 'मयणा दग्निव्वलिया निव्वलिया जह कोद्दवा तिविहा' (निसे १२२०)। ६ न. मीन, मोम, 'मयणो मयण विअ विलीणो' (धण २५, पाअ, सुर २, २४६)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] काम-प्रिया, रति (कुप्र १०६)। °तालक पुं [°तालङ्क] छन्द-विशेष (पिंग)। °तेरसी स्त्री [°त्रयोदशी] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि (कुप्र ३७८)। °दुम पु [°द्रुम] वृक्ष-विशेष (मे ७, ६६)। °फल न [°फल] फल-विशेष, मेंनफल, 'तओ तेणुप्पल मयणफलेण भाविय मणुस्सहत्थे दिन्नं, एयं वररुइस्स देआहि' (मुख २, १७)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री का नाम। २ एक श्रेष्ठि-कन्या (महा)। °रेहा स्त्री [°रेखा] एक युवराज की पत्नी (महा)। °वेय पु [°वेग] पुरुष-विशेष का नाम (भवि)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] राजा श्रीपाल की एक पत्नी (सिरि ५३)। °हरा स्त्री [°गृह] छन्द विशेष (पिंग)। °हल देखो °फल, 'मयणहलगंधओ ता उव्वमिया चद-हाससुरा' (धर्मवि ६४)।

मयणकुस पु [मदनाङ्कुश] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश (पउम ६७, ६)।

मयणसलागा } स्त्री [दे. मदनशलाका] मयणसलाया } मैना, सारिका (जीव १ टी—पत्र ४१, दे ६, ११६)।

मयणसाला स्त्री [दे मदनशाला] सारिका-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मयणा स्त्री [दे मदना] मैना, सारिका (उप १२६ टी, श्राव १)।

मयणा स्त्री [मदना] १ वेरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ शक्र के लोकपाल की एक स्त्री (ठा ४, १—पत्र २०४)।

मयणाय पु [मैनाक] १ द्वीप-विशेष। २ पर्वत-विशेष (भवि)।

मयणिज्ज देखो मदणिज्ज (कप्प, पण्ण १७)।

मयणिवास पु [दे] कन्दर्प, कामदेव (दे ६, १२६)।

मयर पु [मकर] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ (औप, सुर १३, ४६)। २ राशि-विशेष, मकर राशि (सुर १३, ४६, विचार १०६)। ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °केउ पुं [°केतु] कामदेव, कन्दर्प (कप्पू)। °द्धय पुं [°ध्वज] वही (पाअ, कुमा, रभा)। °लछण पु [°लाञ्छन] वही (कप्पू, पि ५४)। °हर पुन [°गृह] वही (पाअ, से १, १८; ४, ४८, वज्जा १५४, भवि)।

मयरद पु [दे मकरन्द] पुष्प-रज, पुष्प-पराग (दे ६, १२३, पाअ, कुमा ३, ५४)।

मयरद पु [मकरन्द] पुष्प-रस, पुष्प-मधु (दे ६, १२३, सुर ३, १०, प्रासू ११३, कुमा)।

मयल देखो मइल = मलिन (सुपा २६२)।

मयलणा देखो मइलणा (सुपा १२४, २०६)।

मयलवुत्ती [दे] देखो मइलपुत्ती (दे ६, १२५)।

मयलिअ देखो मलिणिअ (उप ७२८ टी)।

मयल्लिगा स्त्री [मतल्लिका] प्रधान, श्रेष्ठ, 'कूडक्खरविओ(?उ)मयल्लिगाए' (रभा १७)।

मयह देखो मगह। °सामिय पु [°स्वामिन्] मगध देश का राजा (पउम ६१, ११)। °पुर न [°पुर] राज-गृह नगर (वसु)। °हिवइ पुं [°धिपति] मगध देश का राजा (पउम २०, ४७)।

मयहर पुं [दे] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया (पव २६८, महा, पउम ६३, १६)। २ वि वडील, मुखिया, नायक, 'सयलहत्थारोहपहाणमयहरेण' (स २८०, महानि ४, पउम ६३, १७)। स्त्री °रिगा, °रिया, °री (उप १०३१ टी, सुर १, ४१, महा, सुपा ७६, १२६)।

मयाइ स्त्री [दे] शिरो-माला (दे ६, ११५)।

मयार पुं [मकार] १ 'म' अक्षर। २ मका-रादि अश्लील—अवाच्य शब्द, 'जत्थ जयार-मयारं समणी जपइ गिहत्थपच्चक्ख' (गच्छ ३, ४)।

मयाल (अप) देखो मराल (पिंग)।

मयालि पु [मयालि] जैन महर्षि विशेष—१ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि (अनु १)।

मयाली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ६, ११६, पाअ)।

मर अक [मृ] मरना। मरइ, मरए (हे ४, २३४, भग, उव, महा, षड्), मर (हे ३, १४१)। मरिज्जइ, मरिज्जउ (भवि, पि ४७७)। भूका. मरही, मरीअ (आचा, पि ४६६)। भवि. मरिस्ससि (पि ५२२)। वकृ. मरंत.

मरमाण (गा ३७५, प्रासू ६८, सुपा ४०५, भग, सुपा ६५१, प्रासू ८३)। सकृ. मरिऊण (पि ५८६)। हेकृ. मरिउं, मरेउं (सम्मि ३८)। कृ -मरियव्व (अत २४, सुपा २१५, ५०१, प्रासू १०६), मरिएव्वउं (अप) (हे ४, ४३८)।

मर पु [दे] १ मशक। २ उल्लू, घूक (दे ६, १४०)।

मरअद } पुन [मरकत] नील वर्णवाला
मरगय } रत्न-विशेष, पन्ना (सम्मि ६, हे १, १८२, ओप, पड्, गा ७५, काप्र ३१), 'परिकम्मिओवि बहुसो काओ कि मरगओ होइ' (कुप्र ४०३)।

मरजीवय पु [दे. मरजीवक] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह (सिरि ३८५)।

मरट्ट पु [दे] गर्व, अहंकार (दे ६, १२०, सुर ४, १५४, प्रासू ८५, ती ३, भवि, सण, हे ४, ४२२, सिरि ६६२), 'अखिलमइ(?र)ट्टन्दप्पमद्दणे लद्धजयपडायस्स' (धर्मवि ६७)।

मरट्टा स्त्री [दे] उत्कर्ष,

'एईइ अहरहरिआहरिणमरट्टाइ
(?इ) लज्जमाणाइ।
विवफलाइ उब्बंधण व
वल्लीसु विरयति॥'
(कुप्र २६६)।

मरट्ठ (अप) देखो मरहट्ठ (पिंग)।

मरढ देखो मरहट्ठ। स्त्री °ढी (कप्पू)।

मरण पुन [मरण] मौत, मृत्यु (आचा, भग, पाअ, जी ४३, प्रासू १०७, ११८), 'मेसा मरणा सव्वे तब्भवमरणेण णायव्वा' (पव १७६)।

मरल पु [मराल] = मराल, हंस (प्राकृ ७)।

मरह सक [मृष्] क्षमा करना, 'मरहतु ण देवाणुप्पिया' (णाया १, ८—पत्र १३५)।

मरहट्ठ पुन [महाराष्ट्र] १ बडा देश। २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा, 'मरहट्ठो मरहट्ठं' (हे १, ६६, प्राकृ ६, कुमा)। ३ सुराष्ट्र (कुमा ३, ६०)। ४ पु महाराष्ट्र देश का निवासी, मराठा (पण्ह १, १—पत्र १४, पिंग)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)।

मरहट्ठी स्त्री [महाराष्ट्री] १ महाराष्ट्र की रहनेवाली स्त्री। २ प्राकृत भाषा का एक भेद (पि ३५४)।

मराल वि [दे] अलस, मन्द, आलसी (दे ६, ११२, पाअ)।

मराल पु [मराल] १ हंस पक्षी (पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मराली स्त्री [दे] १ सारसी, सारस पक्षी की मादा। २ दूती। ३ सखी (दे ६, १४२)।

मरिअ वि [मृत] मरा हुआ (सम्मत्त १३६)।

मरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ। २ विस्तीर्ण (पड्)।

मरिअ देखो मिरिअ (प्रयौ १०५, भास ८ टी)।

मरिइ देखो मरीइ, 'अह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तओ य निक्खतो' (पउम ८२, २४)।

मरिस सक [मृष्] सहन करना, क्षमा करना। मरिसइ, मरिसेइ, मरिसेउ (हे ४, २३५, महा, स ६७०)। कृ मरिसियव्व (स ६७०)।

मरिसावणा स्त्री [मर्पणा] क्षमा (स ६७१)।

मरीइ पु [मरीचि] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र और भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था (पउम ११, ६४)। २ पुंस्त्री किरण (पण्ह १, ४—पत्र ७२, धर्मसं ७२३)।

मरीइया स्त्री [मरीचिका] १ किरण-समूह। २ मृग तृष्णा, किरण में जल भ्रान्ति (राज)।

मरीचि देखो मरीइ (ओप सुज्ज १, ६)।

मरीचिया देखो मरीइया (ओप)।

मरु पु [मरुत्] १ पवन, वायु। २ देव, देवता। ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा (पड्)। ४ हनुमान का पिता (पउम ५३, ७६)। °णंदण पु [°नन्दन] हनुमान् (पउम ५३, ७६)। °सुय पु [°सुत] वही (पउम १०१, १)। देखो मरुअ = मरुत्।

मरु } पु [मरु, °क] १ निर्जल देश
मरुअ } (णाया १, १६—पत्र २०२, ओप)। २ देश-विशेष, मारवाड (ती ५, महा, इक, पण्ह १, ४—पत्र ६८)। ३ पर्वत, ऊँचा पहाड (निचू ११)। ४ वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। ५ ब्राह्मण, विप्र (सुज्ज २, २७)। ६ एक नृप वंश। ७ मरु वंशीय राजा, 'तस्स य पुट्ठीए नदो पणपन्नसय च होइ वासाण। मरुयाण अट्ठसय' (विचार ४६३)। ८ मरु देश का निवासी (पण्ह १, १)। °कतार न [°कान्तार] निर्जल जंगल (अच्चु ८५)। °त्थली स्त्री [°स्थली] मरु-भूमि (महा)। °भू स्त्री [°भू] वही (श्रा २३)। °य वि [°ज] मरु देश में उत्पन्न (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअ देखो मरु = मरुत् (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ एक देव-जाति (ठा २, ३)। °कुमार पु [°कुमार] वानरद्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६, ६७)। °वसभ पुं [°वृषभ] इन्द्र (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअअ } पु [मरुवक] वृक्ष-विशेष, मरुआ,
मरुअग } मरुवा (गउड, पण्ण १—पत्र ३४)।

मरुआ स्त्री [मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)।

मरुइणी स्त्री [मरुकिणी] ब्राह्मण-स्त्री, ब्राह्मणी (विसे ६२८)।

मरुड देखो मुरुड (अंत, ओप, णाया १, १—पत्र ३७)।

मरुकुंद पु [दे मरुकुन्द] मरुआ, मरुवे का गाछ (भवि)।

मरुग देखो मरुअ = मरुक (पण्ह १, १—पत्र १४, इक)।

मरुदेव पु [मरुदेव] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। २ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०, पउम ३, ५५)।

मरुदेवा } स्त्री [मरुदेवा, °वी] १ भगवान्
मरुदेवी } ऋषभदेव की माता का नाम (उव, सम १५०, १५१)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत)।

मरुदेवा स्त्री [मरुदेवा] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

मरुल पु [दे] भूत-पिशाच (दे ६, ११४)।

मरुवय देखो मरुअअ (गा ६७७, कुमा, विक्र २६)।

मरुस देखो मरिस। मरुसिज्ज (भवि)।

मल सक [मल्] धारण करना (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल देखो मद्द। मलइ, मलेइ (हे ४, १२६, प्राकृ ६८, भवि), मलेमि (से ३,६३), मलेंति (सुर १, ६७)। कर्म. मलिज्जइ (पचा १६, १०)। वकृ मलेंत (से ४, ४२)। कवकृ. मलिज्जंत (से ३, १३)। संकृ. मलिऊण, मणिऊण (कुमा, पि ५८५)। कृ. मलेव्व (वै ६६, निसा ३)।

मल पुं [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १११)।

मल पुंन [मल] १ मैल (कुमा, प्रासू २५)। २ पाप (कुमा)। ३ बँधा हुआ कर्म (चेइय ६२२)।

मलपिअ वि [दे] गर्वी, अहंकारी (दे ६, १२१)।

मलण न [मर्दन, मलन] मर्दन, मलना (सम १२५, गउड, दे ३, ३४, सुपा ४४०, पचा १६, १०)।

मलय पु [दे मलक] आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३, १, १७—पत्र २२६)।

मलय पु [दे मलय] १ पहाड का एक भाग (दे ६, १४४)। २ उद्यान, बगीचा (दे ६, १४४, पाअ)।

मलय पु [मलय] १ दक्षिण देश मे स्थित एक पर्वत (सुपा ४५६, कुमा, पड्)। २ मलय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष (पव २७५, पिंग)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १४३)। ५ न. श्रीखण्ड, चन्दन (जीव ३)। ६ पुस्त्री मलय देश का निवासी (पण्ह १, १)। °केउ पुं [°केतु] एक राजा का नाम (सुपा ६०७)। °गिरि पुं [°गिरि] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (इक, राज)। °चद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६४५)। °द्दि पु [°द्रि] पर्वत-विशेष (सुपा ४७७)। °भव वि [°भव] १ मलय देश मे उत्पन्न। २ न. चन्दन (गउड)। °मई स्त्री [°मती] राजा मलयकेतु की स्त्री (सुपा ६०७)। °य [°ज] देखो °भव (राज)। °रुह पुं [°रुह] चन्दन का पेड (सुर १, २८)। २ न. चन्दन-काष्ठ (पाअ)। °ाचल पु [°ाचल] मलय पर्वत (सुपा ४५६)। °ाणिल पुं [°ानिल] मलयाचल से वहता शीतल पवन (कुमा)। °ायल देखो °ाचल (रंभा)।

मलय वि [मालय] १ मलय देश मे उत्पन्न (अणु)। २ न चन्दन (भवि)।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति (दे ६, १२४)।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि (दे ६, १२०)।

मलि वि [मलिन्] मलवाला, मल-युक्त (भवि)।

मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ११०, कुमा, हे ३, १३५, औप, णाया १, १)।

मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र। २ कुण्ड (दे ६, १४४)।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन, 'मलमलियदेहवत्था' (सुपा १६६, गउड)।

मलिज्जंत देखो मल = मृद्।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त (कुमा, सुपा ६०१)।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (उव)।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला (पाअ)।

मलेव्व देखो मल = मृद्।

मलेच्छ देखो मिलिन्च्छ पि ८४, नाट—चैत १८)।

मल्ल सक [मल्ल्] देखो मल = मल् (भग ६, ३३ टी)।

मल्ल पु [मल्ल] १ पहलवान, कुश्ती लडने-वाला, बाहु योद्धा (औप, कप्प, पण्ह २, ४, कुमा)। २ पात्र, 'दीवसिहापडिपिल्लण-मल्ले मिल्लति नीसासे' (कुप्र १३१)। ३ भीत का अवष्टम्भन-स्तम्भ। ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ठ (भग ८, ६—पत्र ३७६)। °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती (कप्पू, हे ४, ३८२)। °दिन्न पुंन [°दत्त] एक राज-कुमार (णाया १, ८)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रंथकार (सम्मत्त १२०)।

मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल (ठा ४, ४)। २ फूल की गुँथी हुई माला (पाअ, औप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्पमाला (हे २, ७६)। ४ एक देव-विमान (सम ३६)। ५ वलि, 'मल्ल ति वलीए णाम' (आव० चूर्णि० भा० १ पत्र ३३२)।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °क्रिन्] नृप-विशेष (भग, औप, पि ८६)।

मल्लग } न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष, मल्लय } शराव (विसे २४७ टी, पिंड २१०, तदु ४४, महा, कुलक १४, णाया १, ६, दे ६, १४५, प्रयौ ६७)। २ चषक, पानपात्र (दे ६, १४५)।

मल्लय न [दे] अपूप-भेद, एक तरह का पूआ। २ वि. कुसुम्भ से रक्त (दे ६, १४५)।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ११२, पाअ, प्राकृ ३८)।

मल्लि वि [मल्लिन्] धारण-कर्ता (भग ६, ३३ टी)।

मल्लि वि [माल्यिन्] माल्य-युक्त, मालावाला (औप)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीसवें जिन-देव का नाम (सम ४३, णाया १, ८, मगल १२, पडि)। २ वृक्ष-विशेष, मोतिया का गाछ (दे २, १८)। °णाह, °नाह पु [°नाथ] उन्नीसवे जिन-देव (महा, कुप्र ६३)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] पुष्प-विशेष (भग ६, ३३ टी)।

मल्लिअज्जुण पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम (कुमा)।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्प-वृक्ष-विशेष (णाया १, ६, कुप्र ४६)। २ पुष्प-विशेष (कुमा)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

मल्लिहाण न [माल्याधान] १ पुष्प-बन्धन-स्थान। २ केश-कलाप (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल्ली देखो मल्लि (णाया १, ८, पउम २० ३५, विचार १४८, कुमा)।

मल्ह अक [दे] मोज मानना, लीला करना। वकृ. मल्हत (दे ६, ११६ टी, भवि)।

मल्हण न [दे] लीला, मौज (दे ६, ११६)।

मव सक [मापय्] मापना, माप करना, नापना। मवति (सिरि ४२५)। कर्म 'ग्राउयाइं मविज्जति' (कम्म ५, ८५ टी)। कवकृ. मविज्जमाण (विसे १४००)।

मविय वि [मापित] मापा हुआ (तदु ३१)।

मच्छी (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली (पि २३३)।

मस, मसअ पुं [मश, °क] १ शरीर पर का तिलाकार काला दाग, तिल (पव २५७)। २ मच्छड, क्षुद्र जन्तु-विशेष (गा ५६०, चारु १०, वज्जा ४६)।

मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वय प्रासाद्य विमान (देवेन्द्र २६३)।

मसग देखो मसअ (भग, ओप, पउम ३३, १०८, जी १८)।

मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना। २ सुकुमाल, कोमल, अकर्कश। ३ मन्द, धीमा (हे १, १३०, कुमा)।

मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना। सकृ 'दसवि करगुलीउ मसरक्किवि (अप)' (भवि)।

मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट (गा ४०८, प्राप्र, कुमा)।

मसार पु [दे. मसार] मसृणता-सपादक पाषाण विशेष, कसोटी का पत्थर (णाया १, १—पत्र ६, ओप)।

मसारगल्ल पु [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति (णाया १, १—पत्र ३१, कप्प, उत्त ३६, ७६, इक)।

मसि स्त्री [मसि] १ काजल, कज्जल (कप्पू)। २ स्याही, सियाही (सुर २, ५)।

मसिहार पु [मसिहार] क्षत्रिय-परिव्राजक विशेष (ओप)।

मसिण देखो मसण (हे १, १३०, कुमा, ओप, से १, ४५, ५, ६४)।

मसिण वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ६, ११८)।

मसिणिअ वि [मसृणित] १ मृष्ट, शुद्ध किया हुआ, मार्जित, 'रोसिणिअ मसिणिअ' (पाअ)। २ स्निग्ध किया हुआ (से ६, ६)। ३ विलुलित, विमर्दित (से १, ५५)।

मसी देखो मसि (उवा)।

मसूर, मसूरग, मसूरय पु न [मसूर, °क] १ धान्य-विशेष, मसूरि (ठा ४, ३, सम १४६, पिंड ६२३)। २ उच्छीर्षक, ग्रासीसा (सुर २, ८३, कप्प)। ३ वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार ग्रासन (पव ८४)।

मस्सु देखो मसु (सक्षि १२, पि ३१२)।

मस्सूरग देखो मसूरग, 'मस्सूरए य चित्तुगे' (जीवस ५२)।

मह सक [काङ्क्ष्] चाहना, वाञ्छना। महइ (हे ४, १६२, कुमा, सण)।

मह सक [मथ्] १ मथना, विलोडन करना। २ मारना। महेज्जा (उवा)।

मह सक [मह्] पूजना। महइ (कुमा), महेइ (सिरि ५६६)। सकृ महिअ (कुमा)। कृ महणिज्ज (उप पृ १२६)।

मह पु न [मह] उत्सव (विपा १, १—पत्र ५, रभा, पाअ, सण)।

मह पु [मख] यज्ञ (चड, गउड)।

मह वि [महत्] १ बडा, वृद्ध। २ विपुल, विस्तीर्ण। ३ उत्तम, श्रेष्ठ, 'एग मह सत्तुस्सेह' (णाया १, १—पत्र १३, काल, जी ७, हे १, ५)। स्त्री °ई (उव, महा)। °एवी स्त्री [°देवी] पटरानी (भवि)। °कंतजस पु [°कान्तयशस्] राक्षस वंश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २६५)। °कमलग न [°कमलाङ्ग] सख्या-विशेष, ८४ लाख कमल की सख्या (जो २)। °कव्व न [°काव्य] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रंथ (भवि)। °काल देखो महा-काल (देवेन्द्र २८)। °गइ पु [°गति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६५)। °गह देखो महा-गह (सम ६३)। °ग्घ वि [°अर्घ] महा-मूल्य, कीमती (सुर ३, १०३, सुपा ३७)। °ग्घविअ वि [°अर्घित] १ महँगा, दुर्लभ (से १४, ३७)। २ विभूषित, 'विमलगोवगगुणमहग्घविया' (सुपा १, ६०)। ३ सम्मानित, 'अच्चियवदियपूइय-सक्कारियपणमिओ महग्घविओ' (उव)। °ग्घिम (अप) वि [°अर्घित] बहु-मूल्य, महँगा (भवि)। °चद पु [°चन्द्र] १ राजकुमार-विशेष (विपा २, ५, ६)। २ एक राजा (विपा १, ४)। °च्च वि [°अर्च] १ बडा ऐश्वर्यवाला। २ बडी पूजा—सत्कार-वाला (ठा ३, १—पत्र ११७, भग)। °च्च वि [°अर्च्य] अति पूज्य (ठा ३, १, भग)। °च्छरिय न [°आश्चर्य] बडा आश्चर्य (सुर १०, ११८)। °जक्ख पुं [°यक्ष] भगवान् अजितनाथ का शासना-धिष्ठायक देव (पव २६, सति ७)। °जाला स्त्री [°ज्वाला] विद्यादेवी-विशेष (सति ६)। °ज्जुइय वि [°द्युतिक] महान् तेजवाला (भग, ओप)। °ड्ढि स्त्री [°ऋद्धि] महान् वैभव (राय)। °ड्ढिय, °ड्ढीअ वि [°ऋद्धिक] विपुल वैभववाला (भग, ओघभा १०)। °ण्णव पु [°अर्णव] महा-सागर (सुपा ४१७, हे १, २६९)। °ण्णवा स्त्री [°अर्णवा] १ बडी नदी। २ समुद्र-गामिनी (कस ४, २७ टि, बृह ४)। °तुडियग न [°त्रुटिताङ्ग] ८४ लाख त्रुटित की सख्या (जो २)। °त्तण न [°त्व] बडाई, महत्ता (श्रा २७)। °त्तर वि [°तर] १ बहुत बडा (स्वप्न २८)। २ मुखिया, नायक, प्रधान (कप्प, औप, विपा १, ८)। ३ अन्त पुर का रक्षक (ओप)। स्त्री °रिया, °री (ठा ४, १—पत्र १६८, इक)। °त्थ वि [°अर्थ] महान् अर्थवाला (णाया १, ८, श्रा २०)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, बडा हथियार (पउम ७१, ६७)। °त्थिम पुस्त्री [°अर्थत्व] महार्थता (भवि)। °दलिल्ल वि [°दलिल] बडा दलवाला (प्रासू १२३)। °दह पुं [°द्रह] बडा ह्रद (णाया १, १—पत्र ६४, गा १८६ अ)। °द्दि स्त्री [°अद्रि] १ बडी याचना। २ परिग्रह (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। °द्दुम पु [°द्रुम] १ महान् वृक्ष (हे ४, ४४५)। २ वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °द्धि वि [°ऋद्धि] बडी ऋद्धिवाला (कुमा)। °धूम पुं [°धूम] बडा धुआँ (महा)। °न्नव देखो °ण्णव (श्रा २८)। °पाण न [°प्राण] ध्यान-विशेष (सिरि १३३०)। °पुडरीअ पुं [°पुण्डरीक] ग्रह-विशेष

(हे २, १२०)। °प्प पुं [°आत्मन्] महान् आत्मा, महा-पुरुष (पउम ११८ १२१)। °प्फल वि [°फल] महान् फलवाला (सुपा ६२१)। °बाहु पु [°बाहु] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। °बोह पु [°अम्बोध] महा-सागर,

'इय वुत्तंत सोउ रयणा
निव्वासिया तहा सुगया।
महबोहे जंतूणं जह
पुणरवि नागया तत्थ'
(सम्मत्त १२०)।

°ब्बल पु [°बल] १ एक राज-कुमार (विपा २ ७, भग ११, ११, अंत)। २ वि विपुल बलवाला (भग, औप)। देखो महा-बल। °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक (पण्ह १, १)। °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य (सूत्र २, १, २२)। °मरुय पु [°मरुत्] एक महर्षि, अन्तकृद् मुनि-विशेष (अंत २५)। °मास पु [°अश्व] महान् अश्व (औप)। °यर देखो °त्तर (णाया १, १—पत्र ३७)। °रव पुं [°रव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६६)। °रिसि पु [°ऋषि] महर्षि, महा-मुनि (उव, रयण ३७)। °रिह वि [°अर्ह] बडे के योग्य, बहु-मूल्य, कीमती (विपा १, ३, औप, पि १४०)। °वाय पु [°वात] महान् पवन (ओघ ३८७)। °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रतवाला (सुपा ४७४)। °व्वय पु न [°व्रत] महान् व्रत, 'महव्वया पंच हु ति इमे' (पउम ११, २३), 'सेसा महव्वया ते उत्तरगुणसजुयावि न हु सम्म' (सिक्खा ४८, भग, उव)। °व्वय पु [°व्यय] विपुल खर्च (उप पृ १०८)। °सलाग स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६)। °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता (सम १५२)। °सुक्क देखो महा-सुक्क (देवेन्द्र १३५)। °सेण पु [°सेन] १ आठवें जिनदेव का पिता (सम १५०)। २ एक राजा (महा)। ३ एक यादव (उप ६४८ टी)। ४ न वन-विशेष (विसे १४८४)। देखो महा-सेण। देखो महा°।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक (दे ६, १२३)।

महइ° अ [महाति] १ अति बडा। २ अत्यन्त विपुल। °जड वि [°जट] अति बडी जटा-वाला (पउम ५८, १२)। °महाइदइ पु [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६)। °महापुरिस पुं [°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ पुरुष। २ जिनदेव, जिन भगवान् (पउम १, १८)। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त बडा, 'महइमहालयसि ससारसि' (उवा, सम ७२)। स्त्री. °लिया (भग, उवा)।

महई देखो मह = महत्।

महंग पु [दे] उष्ट्र, ऊँट (दे ६, ११७)।

महत देखो मह = महत् (आचा, औप, कुमा)।

महच्च न [माहत्य] १ महत्त्व। २ महत्त्ववाला (ठा ३, १—पत्र ११७)।

महण न [दे] पिता का घर (दे ६, ११४)।

महण न [मथन] १ विलोडन (से १, ४६, वज्जा ८)। २ घर्षण (कुप्र १४८)। ३ वि. मारनेवाला, 'दरितनागदप्पमहणा' (पण्ह १, ४)। ४ विनाश करनेवाला, 'नाणं च चरणं च भवमहणं' (सबोध ३५, सुर ७, २२५)। स्त्री °णी (श्रा ४६)।

महण पु [महन] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)।

महणिज्ज देखो मह = मह्।

महति° देखो महइ° (ठा ३, ४, णाया १, १, औप)।

महती स्त्री [महती] वीणा-विशेष, सौ तांत-वाली वीणा (राय ४६)।

महत्थार न [दे] १ भाण्ड, भाजन। २ भोजन (दे ६, १२५)।

महप्पुर पु [दे] माहात्म्य, प्रभाव, 'तुह मुहचंदपहाए फरिसाण महप्पुरो एसो' (रंभा ४३)।

महमह देखो मघमघ। महमहइ (हे ४, ७८, षड्, गा ४६७), महमहेइ (उव)। वकृ महमहंत (कप्र ६१७)। सकृ. महमहिअ (कुमा)।

महमहिअ वि [प्रसृत] १ फैला हुआ (हे १, १४६, वज्जा १५०)। २ सुरभित (रंभा)।

महम्मह देखो महमह, 'जिअलोअसिरी महम्म-हइ' (गा ६०४)।

महया° देखो महा°, 'महयाहिमवतमहतमलय-मदरहिंदसारे' (णाया १, १ टी—पत्र ६, औप, विपा १, १, भग)।

महर वि [दे] असमर्थ, अशक्त (दे ६, ११३)।

महलयपक्ख देखो महालवक्ख (षड्—पृष्ठ १७६)।

महल्ल वि [दे महत्] १ वृद्ध, बडा (दे ६, १४३, उवा, गउड, सुर १, ५४, पचा ५, १६, सबोध ४७, ओघ १३६, प्रासू १४६, जय १२, सुपा ११७)। २ पृथुल, विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, १४३, प्रवि १०, स ६६२, भवि)। स्त्री °ल्लिया (औप, सुपा ११३, ५८७)।

महल्ल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, बकवादी (दे ६, १४३, षड्)। २ पु जलधि, समुद्र (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह (दे ६, १४३, सुर १, ५४)।

महल्लिर देखो महल्ल, 'हरिनहकढिणमहल्लिर-पयनहरपरंपराए विकरालो' (सुपा ११)।

महव देखो मघव (कुमा, भवि)।

महा स्त्री [मघा] नक्षत्र-विशेष (सम १२, सुज्ज १०, ५, इक)।

महा° देखो मह = महत् (उवा)। °अडड न [°अटट] सख्या-विशेष, ८४ लाख महाअट-टांग की सख्या (जो २)। °अडडग न [°अटटाङ्ग] सख्या-विशेष, ८४ लाख अटट (जो २)। °आल देखो °काल (नाट—चैत ८२)। °ऊह न [°ऊह] सख्या-विशेष, ८४ लाख महाऊहांग की सख्या (जो २)। °कइ पु [°कवि] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि (गउड, चेइय ८४३, रंभा)। °कंदिय पुं [°क्रन्दित] व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४, औप, इक)। °कच्छ पुं [°कच्छ] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-क्षेत्र—प्रान्त (ठा २, ३, इक)। २ देव-विशेष (ज ४)। °कच्छा स्त्री [°कच्छा] अतिकाय नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २, इक)। °कण्ह पु [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक

पुत्र (निर १, १)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °कप्प पु [°कल्प] १ जैन ग्रन्थ-विशेष (णदि)। २ काल का एक परिमाण (भग १५)। °कमल न [°कमल] सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलाग की सख्या (जो २)। °कव्व देखो °मह-कव्व (सम्मत्त १८६)। °काय पु [°काय] १ महोरग देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, इक)। २ वि महान् शरीरवाला (उवा)। °काल पु [°काल] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता (सुज्ज २०, ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमा-धार्मिक देवो की एक जाति (सम २८)। ५ वायु कुमार देवो का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ७ नव निधियो मे एक निधि, जो धातुओ की पूर्त्ति करता हे (उप ९८६ टी, ठा ९—पत्र ४४९)। ८ सातवी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८)। ९ पिशाच देवो की एक जाति (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर (कुप्र १७८)। ११ शिव, महादेव (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक श्मशान (अंत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १४ न एक देव-विमान (सम ३५)। °काली स्त्री [°काली] १ एक विद्या-देवी (सति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की शासन-देवी (सति ९)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °किण्हा स्त्री [°कृष्णा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °कुमुद, °कुमुय न [°कुमुद] १ एक देव-विमान (सम ३३)। २ सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदाग की सख्या (जो २)। °कुमुयअग न [°कुमु-दाङ्ग] सख्या, कुमुद को चोरासी लाख से गुणने पर [illegible]सख्या लब्ध हो वह (जो २)। °कुम्म पु [°कूर्म] कूर्मावतार (गउड)। °कुल न [°कुल] १ श्रेष्ठ कुल (निचू ८)। २ वि. प्रशस्त कुल मे उत्पन्न, 'निक्खता जे महाकुला' (सूत्र १, ८, २४)। °गगा स्त्री [°गङ्गा] परिमाण-विशेष (भग १५)। °गह पुं [°ग्रह] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क (सार्ध ८७)। °गह वि [°आग्रह] आग्रही, हठी (सार्ध ८७)। °गिरि पु [°गिरि] १ एक जैन महर्षि (उव, कप्प)। २ वडा पर्वत (गउड)। °गोव पु [°गोप] १ महान् रक्षक। २ जिन भगवान् (उवा, विसे २९५९)। °घोस पु [°घोष] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २९)। ५ न देवविमान-विशेष (सम १२, १७)। °चद पु [°चन्द्र] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५४)। °जणिअ पु [°जनिक] श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोग (कुमा)। °जलहि पु [°जलधि] महा-सागर (सुपा ४७४)। °जस पु [°यशस्] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८—पत्र ४२९)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव (सम १५४)। ३ वि महान् यशस्वी (उत्त १२, २३)। °जाइ स्त्री [°जाति] गुल्म-विशेष (पएण १)। °जाण न [°यान] १ वडा यान—वाहन। २ चारित्र, सयम (आचा)। ३ एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)। ४ पु मोक्ष, मुक्ति (आचा)। °जुद्ध न [°युद्ध] वडी लडाई (जीव ३)। °जुम्म पु न [°युग्म] महान् राशि (भग ३५)। °ण देखो °यण, 'गामदुआरब्भासे अगडसमीवे महाणमज्झे वा' (ओघ ९६)। °णई स्त्री [°नदी] वडी नदी (गउड, पउम ४०, १३)। °णदियावत्त पु [°नन्द्यावर्त] १ घोष नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। २ न एक देवविमान (सम ३२)। °णगर देखो °नगर (राज)। °णलिण देखो °नलिण (राज)। °णील न [°नील] १ रत्न-विशेष। २ वि अति नील वर्णवाला (जीव ३, औप)। °णीला देखो °नीला (राज)। °णुभाअ, °णुभाग वि [°अनुभाग] महानुभाव, महाशय (नाट—मालती ३९, गच्छ १, ४, भग, सिरि १६)। °णुभाव वि [°अनुभाव] वही अर्थ (सुर २, ३५, द्र ६६)। °तमपहा स्त्री [°तम-प्रभा] सप्तम नरक-पृथिवी (पव १७२)। °तमा स्त्री [°तमा] वही (चेइय ७५६)। °तीरा स्त्री [°तीरा] नदी-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °तुडिय न [°त्रुटित] महात्रुटिताग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह, सख्या-विशेष (जो २)। °दामड्ढि पु [°दामार्धि] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति (इक)। °दामड्ढि पु [°दामर्द्धि] वही अर्थ (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °दुम देखो मह-द्दुम (इक)। २ न एक देव-विमान (सम ३५)। °दुमसेण पु [°द्रुमसेन] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। °देव पुं [°देव] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव (पउम १०९, १२)। २ शिव, गौरी-पति (पउम १०९, १२, सम्मत्त ७६)। °देवी स्त्री [°देवी] पटरानी (कप्पू)। °धण पु [°धन] एक वणिक् (पउम ५५, ३८)। °धणु पु [°धनुष्] वलदेव का एक पुत्र (निर १, ५)। °नई स्त्री [°नदी] वडी नदी (सम २७, कस)। °नदिआवत्त देखो °णदियावत्त (इक)। °नगर न [°नगर] वडा शहर (पण्ह २, ४)। °नय पु [°नद] ब्रह्मपुत्रा आदि वडी नदी (आवम)। °नलिण न [°नलिन] १ सख्या-विशेष, महानलिनाग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २)। २ एक देव-विमान (सम ३३)। °नलिणग न [°नलिनाङ्ग] सख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २)। °निज्जामय पु [°निर्यामक] श्रेष्ठ कर्णधार (उवा)। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मृत्यु, मरण (पउम ६, १९८)। °निनाद, °निनाय वि [°निनाद] प्रख्यात, प्रसिद्ध (ओघ ८६, ८६ टी)। °निसीह न [°निशीथ] एक जैन आगम-ग्रन्थ (गच्छ ३, २९)। °नीला स्त्री [°नीला] एक महानदी

(ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °पउम पुं [°पद्म] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर (सम १५३)। २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि (णाया १, १६—पत्र २४३)। ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५२, पउम २०, १४३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। ५ एक राजा (ठा ८)। ६ एक निधि (ठा ६—पत्र ४४६)। ७ एक द्रह (सम १०४, ठा २, ३—पत्र ७२)। ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर १, १)। ९ देव-विशेष (दीव)। १० वृक्ष-विशेष (ठा २, ३)। ११ न. संख्या-विशेष, महापद्माग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। १२ एक देव-विमान (सम ३३)। °पउमअंग न [°पद्माङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °पउमा स्त्री [°पद्मा] राजा श्रेणिक की एक पुत्र-वधू (निर १, १)। °पंडिय वि [°पण्डित] श्रेष्ठ विद्वान् (रंभा)। °पट्टण न [°पत्तन] बड़ा शहर (उवा)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धिवाला (उप ७७३, पि २७६)। °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १३)। °पभा स्त्री [°प्रभा] एक राज्ञी (उप १०३१ टी)। °पम्ह पु [°पक्ष्म] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त (ठा २, ३)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन (राज, आक)। °पसु पु [°पशु] मनुष्य (गउड)। °पह पु [°पथ] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग (भग, पण्ह १, ३, औप)। °पाण न [°प्राण] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (उत्त १८, २८)। °पायाल पु [°पाताल] बड़ा पाताल-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६, सम ७१)। °पालि स्त्री [°पालि] १ बड़ा पल्य। २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु,

'अहमासि महापाणे
जुइमं वरिससओवमे।
जा सा पालिमहापाली दिव्वा
वरिससओवमा'
(उत्त १८, २८)।

°पिउ पु [°पितृ] पिता का बड़ा भाई (विपा १, ३—पत्र ४०)। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी)। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान (सम २२)। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान (सम २२)। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल (राय)। २ पु ग्रह-विशेष (सम १०४)। ३ देव विशेष। ४ देखो °पुंडरीअ (राज)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर नगर (इक)। २ नगर-विशेष (विपा २,७)। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापक्ष्म-विजय की राजधानी (ठा २,३—पत्र ८०)। °पुरिस पु [°पुरुष] १ श्रेष्ठ पुरुष (पण्ह २, ४)। २ किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °पुरी देखो °पुरा (इक)। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान (स ३३)। देखो °पुंडरीय (ठा २, ३—पत्र ७२)। °फल देखो मह-प्फल (उवा)। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट (राज)। °बल वि [°बल] १ महान् बलवाला (भग)। २ पु ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर (सम १५४)। ३ चक्रवर्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, ४, ठा ८—पत्र ४२६)। ४ सोमवंशीय एक नर-पति (पउम ५, १०)। ५ पाँचवें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १९०)। ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव (सम १५४)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव (सम १५४)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव (आव ४)। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष (पव २७१)। °भद्दप-डिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो (औप)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत (ठा २, ३—पत्र ६४)। °भय देखो मह-ब्भय (आचा)। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय (अभि १७४, महा, सुपा १९८, उप पृ ३)। °भीम पुं [°भीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ भारतवर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ३ वि. बड़ा भयानक (दस ४)। °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °भुअ पु [°भुज] देव-विशेष (दीव)। °भुअग पु [°भुजङ्ग] शेष नाग (से ७, ५९)। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °मउंद पुन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष (भग)। °मंति पु [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य, प्रधान मन्त्री (औप, सुपा २२३, णाया १, १)। २ हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष (णाया १, १—पत्र १९)। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस (कप्पू)। °मच्च पु [°अमात्य] प्रधान मन्त्री (कुमा)। °मत्त पु [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत,

'तत्तो नरसिंहनिवस्स कुंजरा
सिंहभयविहुरहियया।
अवगणियमहामत्ता मत्तावि
पलाइया झत्ति'
(कुप्र ३९४)।

°मरुया स्त्री [°मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)। °मह पु [°मह] महोत्सव (आव ४)। °महंत वि [°महत्] अति बड़ा (सुपा ५६४, स ६६३)। °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष (पिंग)। °माउया स्त्री [°मातृका] माता की बड़ी बहन (विपा १, ३—पत्र ४०)। °माढर पु [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी (संति ६)। °माहण पु [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण (उवा)। °मुणि पु [°मुनि] श्रेष्ठ साधु (कुमा)। °मेह पु [°मेघ] बड़ा मेघ (णाया १, १—पत्र ४, ठा ४, ४)। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान् (उप १४२ टी)। °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा बेवकूफ (उप १०३१ टी)। °यण पु [°जन] श्रेष्ठ लोग (सुपा २९१)। °यस देखो °जस (औप, कप्प)। °रक्खस पु [°राक्षस] लंका नगरी का एक राजा जो घनवाहन का पुत्र था (पउम ५, १३९)। °रह पु [°रथ] १ बड़ा रथ (पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ वि. बड़ा रथवाला। ३ बड़ा योद्धा, दस

हजार योद्धाओं के साथ अकेला जूझनेवाला (सूअ १, ३, १, १, गउड)। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ (उप ७२८ टी)। °राय पुं [°राज] १ बडा राजा, राजाधिराज (उप ७६८ टी, रंभा, महा)। २ सामानिक देव, इन्द्र-समान ऋद्धिवाला देव (सुर १५, ६)। ३ लोकपाल देव (सम ८६)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] बलि नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)। °रिसि पु [°ऋषि] बडा मुनि, श्रेष्ठ साधु (उव)। °रिह, °रुह देखो मह-रिह (पि १४०, अभि १८७)। °रोरु पु [°रोरु] अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा मे स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २४)। °रोरुअ पु [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकवास —नरक-स्थान (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१, इक)। °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या (राज)। °लजर पु [°अलञ्जर] बडा जल कुम्भ (ठा ४, २—पत्र २२६)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या (उप ७२८ टी)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी। ४ लक्ष्मी-विशेष (नाट)। °लयग न [°लताङ्ग] सख्या विशेष, लता नामक सख्या को चोरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक, जो २)। °लया स्त्री [°लता] सख्या-विशेष, महालताग को चोरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २)। °लोहिअक्ख पु [°लोहिताक्ष] बलीन्द्र के महिष-सेन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-सबद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय (उप ८५६)। °वच्छ पु [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त (ठा २, ३, इक)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही (इक)। °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन (ती ७)। °वण पुन [°आपण] बडी दूकान (भवि)। °वप्प पु [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °वय देखो मह-व्वय (सुपा ६५०)। °वराह पु [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार (गउड)। २ बडा सूअर (सूअ १, ७, २५)। °वह देखो °पह (से १, ५८)। °वाउ पु [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °वाड पु [°वाट] बडा वाडा, महान् गोष्ठ, 'निव्वाणमहावाड' (उवा)। °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मास, मद्य और माखन (ठा ४, १—पत्र २०४, अत)। °विजय वि [°विजय] बडा विजयवाला, 'महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ' (कप्प)। °विदेह पु [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष (सम १२, उवा, औप, अत)। °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह (उवा)। °विल न [°बिल] कन्दरा आदि बडा विवर (कुमा)। °वीर पु [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर (सम १, उवा, विपा १, १)। २ वि महान् पराक्रमी (किरात १६)। °वीरिअ पु [°वीर्य] इक्ष्वाकु वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)। °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] बडा बाजार (पउम ६६, ३४)। २ श्रेष्ठ मार्ग (आचा)। °वेग पु [°वेग] एक देव-जाति, भूतों की एक प्रकार की जाति (राज, इक)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] बडी पताका, विजय-पताका, (कप्पू)। °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री (उप ७२८ टी, पडि)। °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] बडी श्रद्धावाला (आचा, पि ३३३)। °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी (द्र ११, महा)। °समुद्द पु [°समुद्र] महासागर (उवा)। सयग, °सयय पु [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक (उवा)। °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान (सम ३३)। °साल पु [°शाल] एक युवराज (पडि)। °सिलाकटय पु [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लडाई (भग ७, ६—पत्र ३१५)। °सीह पु [°सिंह] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७)। °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिक्कीलिय न [°सिंहनिष्क्रीडित] तप-विशेष (राज, पव २७१—गाथा १५२२)। °सीहसेण पु [°सिंहसेन] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक मे उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २)। °सुक्क पु [°शुक्र] १ एक देवलोक, सातवाँ देवलोक (सम ३३, विपा २, १)। २ सातवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ न एक देव-विमान (सम ३३)। °सुमिण पु [°स्वप्न] उत्तम फल का एक सूचक स्वप्न (णाया १, १—पत्र १३, पि ४४७)। °सुर पुं [°असुर] १ बडा दानव। २ दानवों का राजा हिरण्यकशिपु (से १, २, गउड)। °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका (कप्प, आवम)। °सूला स्त्री [°शूला] फासी (श्रा २७)। °सेअ पु [°श्वेत] एक इन्द्र, कूष्माण्ड नामक वान-व्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक, ठा २, ३—पत्र ८५)। °सेण पु [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। ३ एक राजा (विपा १, ६—पत्र ८८)। ४ एक यादव (णाया १, ५)। ५ न एक वन (विसे २०८६)। देखो मह-सेण। °सेणकण्ह पु [°सेनकृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पि ५२)। °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५)। °सेल पु [°शैल] १ बडा पर्वत (णाया १, १)। २ न नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °सोआम, °सोदाम पु [°सौदाम] वैरोचन बलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १, इक)। °हरि पु [°हरि] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्त्ती का पिता (सम १५२)। °हिमव, °हिमवत पु [°हिमवत्] १ पर्वत-विशेष (पउम १०२, १०५, ठा २, ३, महा)। २ देव-विशेष (ज ४)।

महाअत्त वि [दे] आढ्य, श्रीमन्त (दे ६, ११६)।

महाइय पु [दे] महात्मा (भवि)।

महाणड पु [दे महानट] रुद्र, महादेव (दे ६, ४, १२१)।

महाणस न [महानस] रसोई-घर, पाक-स्थान (णाया १, ८, गा १३, उप २५६ टी)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई बनानेवाला, रसोइया। स्त्री. °णी (णाया १, ७—पत्र ११७)।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो (विपा १, ८)।

महाविल न [दे. महाविल] व्योम, आकाश (दे ६, १२१)।

महामति पु [महामन्त्रिन्] महावत, हस्तिपक (राय १२१ टी)।

महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा (जय ३०)।

महाल पु [दे] जार, उपपति (दे ६, ११६)।

महालक्ख वि [दे] तरुण, जवान (दे ६, १२१)।

महालय देखो मह = महत् (णाया १,८, उवा, ओप), 'मा कासि कम्माइं महालयाइं' (उत्त १३, २६)। स्त्री. °लिया (ओप)।

महालय पुन [महालय] १ उत्सवों का स्थान (सम ७२)। २ बडा आलय। ३ वि बृहत्काय, बडा शरीरवाला (सूअ २, ५, ६)।

महालवक्ख पु [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७)।

महावल्ली स्त्री [दे] नलिनी, कमलिनी (दे ६, १२२)।

महाविजय पुं [महाविजय] एक देवविमान (आचा २, १५, २)।

महासउण पु [दे] उल्लू, घूक-पक्षी (दे ६, १२७)।

महासद्दा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १२०, पाअ)।

महासेल वि [माहाशैल] महाशेल नगर से सबन्ध रखनेवाला, महाशैल का (पउम ५५, ५३)।

महि° देखो मही (कुमा)। °अल न [°तल] भू-पीठ, भूमि-पृष्ठ (कुमा, गउड, प्रासू ४५)। °गोयर पु [°गोचर] मनुष्य (भवि, सण)। °पट्ठ न [°पृष्ठ] भूमि-तल (पड्)। °पाल पु [°पाल] राजा (उव)। °मंडल न [मण्डल] भू-मण्डल (भवि, हे ८, ३७२)। °रमण पु [°रमण] राजा (श्रा २७)। °वइ पु [°पति] राजा (णाया १, १ टी, ओप)। °वट्ठ देखो °पट्ठ (हे १, १२९, कुमा)। °वल्लह पु [°वल्लभ] राजा (गु १०)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा, नरपति (हे १, २२९)। २ व्यक्ति वाचक नाम (भवि)। °वेढ पु [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल, भू-तल (से १, ४, ४९)। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा (कुमा)। °हर पु [°धर] १ पर्वत (पाअ, से ३, ३८, ४, १७, कुप्र ११७)। २ राजा (कुप्र ११७)।

महिअ वि [मथित] विलोडित (से २, १८, पाअ)।

महिअ वि [महित] १ पूजित, सत्कृत (से १२, ८७, उदा, ओप)। २ न. एक देव-विमान (सम ४१)। ३ पूजा, सत्कार (णाया १, १)।

महिअ वि [महीयस] बडा, गुरु, 'राअ-निओओ महिओ को णाम गआगअमिह करेइ' (मुद्रा १८७)।

महिअट्टुअ न [दे] घी का किट्ट, घृत-मल (राज)।

महिआ स्त्री [महिका] १ सूक्ष्म वर्षा, सूक्ष्म जल-तुषार (पएण १, जो ५)। २ धूमिका, धुध, कुहरा (ओघ ३०, पाअ)। ३ मेघ-समूह, 'घणनिवहो कालिआ महिआ' (पाअ)। देखो मिहिआ।

महिंद पु [महेन्द्र] १ बडा इन्द्र, देवाधीश (ओप, कप्प, णाया १, १ टी—पत्र ६)। २ पर्वत-विशेष (से ६, ५९)। ३ अति महान्, खूब बडा (ठा ८, २—पत्र २३०)। ४ एक राजा (पउम ५०, २३)। ५ ऐरवत वर्ष का भावी १५ वा तीर्थंकर (पव ७)। ६ पुन एक देव-विमान (सम २२, देवेन्द्र १४१)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। °केउ पुं [°केतु] हनूमान के मातामह का नाम (पउम ५०, १९)। °ज्झय पु [°ध्वज] १ बडा ध्वज। २ इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज, बडा इन्द्र-ध्वज (ठा ४, ४—पत्र २३०)। ३ न एक देव-विमान (सम २२)। °दुहिया स्त्री [°दुहिता] अञ्जनासुन्दरी, हनूमान की माता (पउम ५०, २३)। °विक्कम पु [°विक्रम] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। °सीह पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा (उप ७२८ टी)। २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का एक मित्र (महा)।

महिंद वि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्बन्धी। २ उत्पात-विशेष (अणु २१५)।

महिंदुत्तरवडिंसय न [महेन्द्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २७)।

महिगा देखो महिआ (जीवस ३१)।

महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकांक्षी (सूअ २, २, ६१)।

महिच्छा स्त्री [महेच्छा] महत्वाकांक्षा, अपरिमित वाञ्छा (पण्ह १, ५)।

महिट्ठ वि [दे] मट्ठा से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित (विपा १, ८—पत्र ८३)।

महिड्ढि, महिड्ढिय, महिड्ढीय वि [महर्द्धि, °क] बडी ऋद्धि-वाला, महान् वैभववाला (श्रा २७, भग, ओघभा ६, ओप, पि ७३)।

महिम पुस्त्री [महिमन्] १ महत्त्व, माहात्म्य, गौरव (हे १, ३५, कुमा, गउड, भवि)। २ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (हे १, ३५)।

महिला देखो मिहिला (महा, राज)।

महिला स्त्री [महिला] स्त्री, नारी (कुमा, हे ३, ४१, पाअ)। °थूभ पु [°स्तूप] कूप आदि का किनारा (विसे २०६४)।

महिलिया स्त्री [महिलिका, महिला] ऊपर देखा (णाया १, २, पउम १४, १४५, प्रासू २४)।

महिलिया स्त्री [मिथिलिका, मिथिला] देखो मिहिला (कप्प)।

महिस पुं [महिष] भैंसा (गउड, ओप, गा ५४८)। °सुर पु [°सुर] एक दानव (स ४३७)।

महिसद पुं [दे] वृक्ष विशेष, शिगु का पेड (दे ६, १२०)।

महिसिअ वि [महिषिक] भैंसवाला, भैंस चरानेवाला (अणु १४४)।

महिसिक्क न [दे] महिषी-समूह (दे ६, १२४)

महिसी स्त्री [महिषी] १ राज-पत्नी (ठा ४, १)। २ भैंस (पाअ, पउम, २६, ४१)।

महिस्सर पु [महेश्वर] एक इन्द्र, भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो महेसर।

मही स्त्री [मही] १ पृथिवी, भूमि, धरती (कुमा, पाअ)। २ एक नदी (ठा ५, २—पत्र ३०८)। ३ छन्द विशेष (पिंग)। °नाह पु [°नाथ] राजा (उप पृ ६१)। °पहु पु [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °पाल पु [°पाल] वही अर्थ (उप ११ टी, उव)। °रुह पु [°रुह] वृक्ष पेड (पाअ, सुर ३, ११०, १६, २८८)। °वइ पु [°पति] राजा (श्रा २८, उप १४६ टी, सुपा ३८)। °वीढ न [°पीठ] भूमि-तल (सुर २, ७४)। °स पु [°श] राजा (श्रा १४)। °सक्क पुं [°शक्र] वही अर्थ (श्रा १४)। देखो महि°।

महु पु [मधु] १ एक दैत्य (से १, १, अच्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु, 'सुरही महू वसंतो' (पाअ, कुमा)। ३ चैत्र मास (सुर ३, ४०, १६, १०७ पिंग)। ४ पाँचवाँ प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ५ एक राजा (श्रु ६१)। ६ मथुरा का एक राज-कुमार (पउम १२, २)। ७ चक्रवर्त्ती का एक देव-कृत महल (उत्त १३, १३)। ८ मधूक का पेड, महुआ का गाछ (कुमा)। ९ अशोक वृक्ष (चड)। १० न मद्य, दारू (से २, ७७)। ११ क्षौद्र शहद (कुमा, पव ४, ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस। १३ मधुर-रस। १४ जल, पानी (प्राप्र, हे ३, २५)। १५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ मधुर, मिष्ट वस्तु (पण्ह २, १)। °अर पुस्त्री [°कर] भ्रमर, भौंरा (पाअ, स्वप्न ७३, श्रोप, कप्प, पिंग)। स्त्री °रिआ °री (अभि १६०, नाट—मृच्छ ५७)। °अरवित्ति स्त्री [°करवृत्ति] माधुकरी, भिक्षा वृत्ति (सुपा ८३)। °अरगीय न [°करगीत] नाट्य-विधि-विशेष (महा)। °आसव वि [°आश्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धिवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)। °गुलिआ स्त्री [°गुटिका] शहद की गोली (ठा ८, २)। °पडल न [°पटल] मधुपुडा (दे ३, १२)। °भार पु [°भार] छन्द-विशेष (पिंग)। °मक्खिया, °मच्छिआ स्त्री [°मक्षिका] शहद की मक्खी, 'अह उड्डियाउ तं।मरमुहाउ महुक्खि (?मक्खि)याउ सव्वत्तो' (धमवि १२४, गा ६३४)। °मय त्रि [°मय] मधु से भरा हुआ (से १, ३०)। °मह पु [°मथ] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र (पाअ, से १, १७)। २ भ्रमर (से १, १७)। °मह पु [°मह] वसन्त का उत्सव (से १, १७)। °महण पुं [°मथन] १ विष्णु (से १,१, वज्जा २४, गा ११७, हे ४,३८४, पि १४३, पिंग)। २ समुद्र, सागर। ३ सेतु, पुल (से १, १)। °मास पुं [°मास] चैत मास (भवि)। °मित्त पु न [°मित्र] कामदेव (सुपा ५२६)। °मेहण न [°मेहन] रोग-विशेष, मधु-प्रमेह (आचा १, ६, १, २)। °मेहणि वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोगवाला (आचा)। °मेहि पु [°मेहिन्] वही अर्थ (आचा)। °राय पुं [°राज] एक राजा (रयण ७४)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] १ ओषधि-विशेष, यष्टिमधु, मुलेठी, जेठी मधु। २ इक्षु, ईख (हे १,२४७)। °वक्क पु [°पर्क] १ दधियुक्त मधु, दही और शहद। २ षोडशोप-चार पूजा का छठवाँ उपचार (उत्तर १०३)। °वार पु [°वार] मद्य, दारू (पाअ)। °सिंगी स्त्री [°शृङ्गी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। °सूयण पुं [°सूदन] विष्णु (गउड, सुपा ७)।

महुअ पु [मधूक] १ वृक्ष विशेष, महुआ का गाछ (गा १०३)। २ न महुआ का फल (प्राप्र, हे १, १२२)।

महुअ पुं [दे] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी। २ मागध, स्तुति-पाठक (दे ६, १४४)।

महुण सक [मथ्] १ विलोडन करना। २ विनाश करना। वकृ 'विमुक्कट्टट्टहासा जलियजलणपिंगलकेसा महुणित-जालाकराल-पिसाया मुक्का' (महा)।

महुत्त (अप) देखो मुहुत्त (भवि)।

महुप्पल न [महोत्पल] कमल, पद्म, 'महुप्पल पकय नलिणं' (पाअ)।

महुमुह पु [दे. मधुमुख] पिशुन, दुर्जन, खल (दे ६, १२२)।

महुर पु [महुर] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश मे रहनेवाली अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

महुर वि [मधुर] १ मीठा, मिष्ट (कुमा, प्रासू ३३, गउड, गा ४०१)। २ कोमल (भग ६, ३३, श्रोप)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी (पउम ६, १३३)।

महुरा स्त्री [मथुरा] भारत की एक प्रसिद्ध नगरी, मथुरा (ठा १०, सम १५३, पण्ह १, ३, हे २, १५०, कुमा, वज्जा १२२)। °मंगु पु [°मङ्गु] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सिक्खा ६२)। °हिव पु [°धिप] मथुरा का राजा (कुमा)।

महुरालिअ वि [दे] परिचित (दे ६, १२५)।

महुरिम पुस्त्री [मधुरिमन्] मधुरता, माधुर्य (सुपा २६४, कुप्र ५०)।

महुरेस पु [मथुरेश] मथुरा का राजा (कुमा)।

महुला स्त्री [दे] रोग-विशेष, पाद-गण्ड (निचू २)।

महुसित्थ न [मधुसिक्थ] १ मदन, मोम (उप पृ २०६)। २ पङ्क-विशेष, स्त्री के पैर मे लगा हुआ अलता तक लगनेवाला कादा (ओघभा ३३)। ३ कला-विशेष (स ६०२)।

महुस्सव देखो महूसव (राज)।

महूअ देखो महुअ=मधूक (कुमा, हे १, १२२)।

महूसव पुं [महोत्सव] बडा उत्सव (सुर ३, १०८, नाट—मृच्छ ५४)।

महेंद देखो महिंद (से ६, २२)।

महेड्डु पु [दे] पङ्क, कादा (दे ६, ११६)।

महेब्भ पु [महेभ्य] बडा शेठ (श्रा १६)।

महेभ पु [महेभ] बडा हाथी (कुमा)।

महेला स्त्री [महेला] स्त्री, नारी (हे १, १४६, कुमा)।

महेस पु [महेश] नीचे देखो (त्रि ९४, भवि)।

महेसर पु [महेश्वर] १ महादेव, शिव (पउम ३५, ६४, धर्मवि १२८)। २ जिनदेव, अर्हन् (पउम १०९, १२)। ३ श्रीमन्त, आढ्य (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)। °दत्त पु [°दत्त] एक पुरोहित (विपा १, ५)।

महेसि देखो मह-रिसि (सम १२३, पराह १, १, उप ३५७, ७२८ टी, ग्रभि ११८)।

महोअर पु [महोदर] १ रावण का एक भाई (से १२, ५४)। २ वि. बहु-भक्षी (निचू १)।

महोअहि पुं [महोदधि] महासागर (से ५, २, महा)। °रव पुं [°रव] वानर-वंश का एक राजा (पउम ६, ६३)।

महोच्छव देखो महूसव (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो महोअहि (पराह २, ४, उप ७२८ टी)।

महोरग पुं [महोरग] १ व्यन्तर देवो की एक जाति (पराह १, ४—पत्र ६८, इक)। २ बडा साप। ३ महा-काय सर्प की एक जाति (पराह १, १—पत्र ८)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष (महा)।

महोरगकंठ पु [महोरगकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

महोसव देखो महूसव (नाट—रत्ना २४)।

महोसहि स्त्री [महौषधि] श्रेष्ठ औषधि (गउड)।

मा श्र [मा] मत, नही (चेइय ६८४, प्रासू २१)।

मा स्त्री [मा] १ लक्ष्मी, दौलत (से ३, १५, सुर १६, ५२)। २ शोभा (से ३, १५)।

मा } अक [मा] १ समाना, अटना। २
माअ } सक. माप करना। ३ निश्चय करना, जानना। माइ, माग्रइ, माइज्जा, माएज्जा (पव ४०, कुमा, प्राकृ ६६, सवेग १८, औप)। वकृ मत, माअत (कुमा, ४, ३०, से २, ६, गा २७८)। कवकृ मिज्जत, मिज्जमाण (से ७, ६६, सम ७६, जीवस १४४)। कृ माअव्व, 'वाया सहस्स-मइया', माइअ (से ६, ३, महा, कप्प)। देखो मेअ = मेय।

माअडि पु [मातलि] इन्द्र का सारथि (से १५, ५१)।

माअरा देखो माइ = मातृ (कुमा, हे ३, ४६)।

माअलि देखो माअडि (से १५, ४६)।

माअलिआ स्त्री [दे] मातृष्वसा, माता की बहन (दे ६, १३१)।

माअही स्त्री [मागधी] काव्य की एक रीति (कप्पू)। देखो मागहिआ।

माआरा } स्त्री [मातृ] १ मां, जननी (षड्,
माइ } ठा ४, ३, कुमा, सुपा ३७७)। २ देवता, देवी (हे १, १३५, ३, ४६, सुख ३, ६)। ३ स्त्री, नारी। ४ माया (पंचा १७, ४८)। ५ भूमि। ६ विभूति। ७ लक्ष्मी। ८ रेवती। ६ ग्राखुकर्णी। १० जटामासी। ११ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण (षड्, हे १, १३५, ३, ४६)। °घर न [°गृह] देवी-मन्दिर (सुख ३, ६)। °ट्ठाण, °ठाण न [°स्थान] १ माया-स्थान (पचा १७, ४८, सम ३६)। २ माया, कपट-दोष (पचा १७, ४८, उवर ८४)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमे माता का वध किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। °हर देखो °घर (हे १, १३५)। देखो माउ, माया = मातृ।

माइ वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (भग, कम्म ४, ४०)।

माइ श्र [मा] मत, नही (प्राकृ ७८)।

माइ } वि [दे] १ रोमश, रोमवाला, प्रभूत
माइअ } बालो से युक्त (दे ६, १२८, णाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेषवाला (औप, भग, णाया १, १ टी—पत्र ५, अत)।

माइअ वि [मात] समाया हुआ, अटा हुआ (सुख ६, १)।

माइअ वि [मायिक] मायावी (दे ६, १४७, णाया १, १४)।

माइअ वि [मात्रिक] मात्रा-युक्त, परिमित (तदु २०, पन्ह १, ४ पत्र ६८)।

माइअ देखो मा = मा।

माइ देखो माइ = मा (हे २, १६१, कुमा)।

माइगण न [दे] वृन्ताक, भंटा (उप ५६३)।

माइंद [दे] देखो मायंद (प्राप्र, स ४१६)।

माइंद पु [मृगेन्द्र] सिंह, केसरी, 'एकसर-पहरदारियमाइंदगइंदजुज्झमाभिडिए' (वज्जा ४२)।

माइंदजाल } न [मायेन्द्रजाल] माया-कर्म,
माइंदयाल } बनावटी प्रपच (सुर २, २२६, स ६६०)।

माइंदा स्त्री [दे] ग्रामलकी, ग्रामला का गाछ (दे ६, १२६)।

माइण्हिआ स्त्री [मृगतृष्णिका] धूप मे जल की भ्रान्ति (उप २२० टी, मोह २३)।

माइलि वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माइल्ल देखो माइ = मायिन् (सूत्र १, ४, १, १८, ग्राचा, भग, ग्रोघ ४१३, पउम ३१, ५१, औप, ठा ८, ४)।

माइवाह } पुंस्त्री [दे. मातृवाह] द्वीन्द्रिय
माईवाह } जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (उत ३६, १२६, जी १५, पुष्फ २६५)। स्त्री. °हा (सुख १८, ३५, जी १५)।

माउ देखो माइ = मातृ (भग, सुर १, १७६, औप, प्रामा कुमा, षड्, हे १, १३४; १३५)। °ग्गाम पु [°ग्राम] स्त्री-वर्ग (बृह १)। °च्छा देखो °सिआ (हे २, १४२, गा ६४८)। °पिउ पुं [°पितृ] मा-बाप (सुर १, १७६)। °म्महीं स्त्री [°मही] मां की मां, नानी (रभा २०)। °सिआ, °सी, °स्सिआ स्त्री [°ष्वसृ] मां की बहन, मौसी (हे २, १४२, कुमा, विपा १, ३, सुर ११, २१६, पि १४८, विपा १, ३—पत्र ४१)।

माउ } वि [मातृ, °क] १ प्रमाता,
माउअ } प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञानवाला। २ परिमाण-कर्ता, नापनेवाला। ३ पु जीव। ४ ग्राकाश, 'माऊ', 'माउग्रो' (षड्, हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८, हे १, १३४)।

माउअ वि [मातृक] माता-सबन्धी (हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८, राज)।

माउअ पुन [मातृक, °का] १ अकार ग्रादि छयालीस अक्षर, 'बभीए ण लिवीए छायालीस माउयक्खरा' (सम ६६, ग्राव ५)। २ स्वर। ३ करण (हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८)। नीचे देखो।

माउआ स्त्री [मातृका] १ माता, मा (णाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर देखो (सम ६६)। °पय पुन [°पद] शास्त्रो के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य (सम ६६)।

माउआ स्त्री [दे मातृका] दुर्गा, पार्वती, उमा (दे ६, १४७)।

माउआ स्त्री [दे] १ सखी, सहेली (दे ६, १४७, पाग्र, णाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर के होठ पर के बाल, मूँछ, 'रत्तगड-

मणुयाहि माउयाहि उवसोहियाइं' (णाया १, ६—पत्र १५८)।

माउआपय न [मातृकापद] मूलाक्षर, 'अ' से 'ह' तक के अक्षर (दसनि १, ८)।

माउक्क वि [मृदुक, °क] कोमल, कुमार (हे १, १२७, २, ९९, कुमा)।

माउक्क न [मृदुत्व] कोमलता (हे १, १२७, २, २, कुमा)।

माउच्छा स्त्री [दे मातृष्वसृ] देखो माउ-च्छा (षड्)।

माउत्रा स्त्री [दे] सखी, सहेली (षड्)।

माउच्छ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२९)।

माउत्त } देखो माउक्क=मृदुत्व (कुमा, हे
माउत्तण } २, २, षड्)।

माउल पु [मातुल] माँ का भाई, मामा (सुर ३, ८१, रंभा, महा)।

माउलिअ देखो मउलिअ (से ११, ६१)।

माउलिंग देखो माहुलिंग (राज)।

माउलिंगा } स्त्री [मातुलिङ्गा, °ङ्गी] बीजोरे
माउलिंगी } का गाछ (पण्ण १—पत्र ३२, पउम ४२, ९)।

माउलुंग देखो माहुलिंग (हे १, २१४, अनु)।

मागंदिअ पु [माकन्दिक] माकन्दिकपुत्र नामक एक जैन मुनि (भग १८—१ टी)। °पुत्त पु [°पुत्र] वही अर्थ (भग १८, ३)।

मागसीसी स्त्री [मार्गशीर्षी] १ अगहन मास की पूर्णिमा। २ अगहन की अमावास्या (इक)।

मागह } वि [मागध °क] १ मगध-
मागहय } देशीय, मगध देश में उत्पन्न, मगध देश का, मगध संबन्धी (ओघ ७१३, विसे १४९९, पव ६१, णाया १, ८, पउम ९९, ५५)। २ पु स्तुति-पाठक, बन्दी, चारण (पाअ, ओप)। °भासा स्त्री [°भाषा] देखो मागहिआ का पहला अर्थ (राज)।

मागहिआ स्त्री [मागधिका] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद। २ कला-विशेष (ओप)। ३ छन्द-विशेष (सुख २, ४५, अजि ८)।

माघवई स्त्री [माघवती] सातवीं नरक-भूमि (पव १४३, इक, ठा ७—पत्र ३८८)।

माघवा } [माघवा, °वी] ऊपर देखो, 'मघव
माघवी } त्ति माघव त्ति य पुढवीण नामधेयाइं' (जीवस १२, इक)।

माज्जार देखो मज्जार (संक्षि २)।

माडंविअ पु [माडम्बिक] १ 'मडंब' का अधिपति (णाया १, १, औप, कप्प)। २ प्रत्यन्त—सीमा-प्रान्त का राजा (पण्ह १, ५—पत्र ९४)।

माडंविय वि [माडम्बिक] चित्र मडप का अध्यक्ष (राय १४१)।

माडिअ न [दे] गृह, घर (दे ६, १२८)।

माढर पु [माठर] १ सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)। ३ शास्त्र विशेष (णंदि)।

माढर पुस्त्री [माठर] माठर गोत्र में उत्पन्न (णंदि ४९)।

माढरी स्त्री [माठरी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

माढिअ वि [माठित] सन्नाह युक्त, वर्मित (कुमा)।

माढी स्त्री [माठी] कवच, वर्म, बखतर (दे ६, १२८ टी, पण्ह १, ३—पत्र ४४, पाअ, से १२, ६२)।

माण सक [मानय्] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणंति, माणेमि (हे १, २२८, महा, कुमा; सिरि ९९)। वकृ माणंत, माणेमाण (सुर २, १८२, णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ माणिज्जंत (गा ३२०)। हेकृ माणिउं, माणेउं (महा, कुमा)। कृ माणणिज्ज, माणणीअ माणेअव्व (उव, सुर १२, १६५, अभि १०७, उप १०३१ टी), 'जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अ-माणिमो' (दसचू १, ५)।

माण पुन [मान] १ गर्व, अहंकार, अभिमान, 'अड्डद्धीकयमाणिणिमाणो' (कुमा), 'पुव्व विवुहसमक्खं गुरुणो एयस्स खंडिय माणं' (सम्मत्त ११९)। २ माप, परिमाण। ३ नापने का साधन, बाट—बटखरा आदि (अणु, कप्प, जी ३०, श्रा १४)। ४ प्रमाण, सबूत (विसे ९४६, धर्मसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार (णाया १, १, कप्प)। ६ पु. एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५४५)। °इत, °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] मानवाला (षड्, हे २, १५९, हेका ७३, पि ५९५) स्त्री °त्ता, °त्ती (कुमा, गउड)। °तुंग पु [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि (नमि २१)। °वई स्त्री [°वती] १ मानवाली स्त्री (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। °सघ न [°सघ] एक विद्याधर नगर (इक)। °वाइ वि [°वादिन्] अहंकारी (आचा)।

माण वि [मान] मान-संबन्धी, मान का, 'कोहाए माणाए मायाए' (पडि)।

माण न [दे] परिमाण-विशेष, दस शेर का नाप, गुजराती में 'माणु' (उप १५४)।

माणसि वि [दे] १ मायावी, कपटी (दे ६, १४७, षड्)। २ स्त्री चन्द्र-वधू (दे ६, १४७)।

माणसि देखो मणसि (काप्र १९९, संक्षि १७, षड्)।

माणण न [मानन] १ आदर, सत्कार (आचा)। २ मानना (रयण ८४)। ३ अनुभव। ४ सुख का अनुभव, 'सुहसमाणणं' (अजि ३१)।

माणणा स्त्री [मानना] ऊपर देखो (पण्ह २, १, रयण ८४)।

माणय देखो माण=(दे) (सुपा ३५८)।

माणव पु [मानव] १ मनुष्य, मर्त्य (पाअ, सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण (ठा ९—पत्र ४५१, कप्प)।

माणवग } पु [मानवक] १ एक निधि,
माणवय } अस्त्र शस्त्रों की पूर्ति करनेवाला निधि (उप ९८६ टी, ठा ९—पत्र ४४९, इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३, सुज्ज २०)। ३ सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ (सम ६३)।

माणवी स्त्री [मानवी] एक विद्या-देवी (संति ६)।

माणस न [मानस] १ सरोवर-विशेष (पण्ह १, ४, औप, महा, कुमा)। २ मन, अन्त-करण (पाअ, कुमा)। ३ वि मन संबन्धी,

मन का (सुर ४, ७५)। ४ पु. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक (इक)।

माणसिअ वि [मानसिक] मन-सबन्धी, मन का (श्रा २४, श्रौप)।

माणसिआ स्त्री [मानसिका] एक विद्या-देवी (सति ६)।

माणि वि [मानिन्] १ मान-युक्त, मानवाला (उव, कुप्र २७६, कम्म ४, ४०)। स्त्री. °णिणी (कुमा)। २ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६ २)। ३ पर्वत-विशेष। ४ कूट-विशेष (राज, इक)।

माणिअ वि [दे. मानित] अनुभूत (दे ६, १३०, पाअ)।

माणिअ वि [मानित] सत्कृत (गउड)।

माणिक्क न [माणिक्य] रत्न विशेष, माणिक (सुपा २१७, वज्जा २०, कप्पू)।

माणिग देखो माणि (पउम ७३, २७)।

माणिभद्द पु [माणिभद्र] १ यक्ष निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, इक)। २ यक्षदेवों की एक जाति (सिरि ६६६, इक)। ३ देव-विशेष। ४ शिखर-विशेष (राज, इक)। ५ एक देव-विमान (राज)।

माणिम देखो माण = मानय्।

माणी स्त्री [मानिका] २५६ पलों का एक माप (मणु १५२)।

माणुस पुन [मानुष] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य (सूअ १, ११, ३, पण्ह १, १, उव, सुर ३, ५६, प्राप्र, कुमा), 'ज पुण हिययाणद जणेइ त माणुस विरल' (कुप्र ६), 'मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सव्वाणि' (कुप्र २६)। २ वि. मनुष्य-सबन्धी, 'तिविह कहावत्थु ति पुव्वायरियपवाओ, तं जहा, दिव्व दिव्वमाणुस माणुस च' (स २)।

माणुसी स्त्री [मानुषी] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी (पव २४१, कुप्र १६०)। २ मनुष्य से संबन्ध रखनेवाली, 'माणुसी भासा' (कुप्र ६७)।

माणुसुत्तर } पु [मानुषोत्तर] १ पर्वत-
माणुसोत्तर } विशेष, मनुष्यलोक का सीमा-कारक पर्वत (राज, ठा ३, ४, जीव ३)। २ न. एक देव-विमान (सम २)।

माणुस्स देखो माणुस (श्राचा, श्रौप, धर्मवि १३, उपप २, विसे ३००७), 'माणुस्स लोग' (ठा ३, ३—पत्र १४२), 'माणुस्सगाइं भोगभोगाइं' (कप्प)।

माणुस्स } न [मानुष्य, °क] मनुष्यत्व,
माणुस्सय } मानुसपन, मनुष्यता (सुपा १६६, स १३१ प्रासू ४७, पउम ३१, ८१)।

माणुस्सी देखो माणुसी (पव २४०)।

माणूस देखो माणुस (सुर २, १७२, ठा ३, ३—पत्र १४२)।

माणेसर पु [माणेश्वर] माणिभद्र यक्ष (भवि)।

माणोरामा (अप) स्त्री [मनोरमा] छन्द-विशेष (पिंग)।

मातग देखो मायग (श्रौप)।

मातजण देखो मायजण (ठा २, ३—पत्र ८०)।

मातुलिंग देखो माहुलिंग (श्राचा २, १, ८, १)।

मादलिआ स्त्री [दे] माता, जननी (दे ६, १३१)।

माढु देखो माउ = स्त्री (प्राकृ ८)।

माधवी देखो माहवी = माधवी (हास्य १३३)।

माभाइ पुस्त्री [दे] अभय-प्रदान, अभय-दान, अभय (दे ६, १२६, षड्)।

माभीसिअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १२६)।

माम अ कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय (पउम ३८, ३६)।

माम } पु [दे] मामा, माँ का भाई (सुपा
मामग } १६, १६५)।

मामग } वि [मामक] १ मदीय, मेरा
मामय } (श्राचा, अच्चु ७३)। २ ममतावाला (सूअ १, २, २, २८)।

मामय देखो मामग = (दे) (पउम ६८, ५५, स ७३१)।

मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की वहू (दे ६, ११२)।

मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' वोलनेवाला, निवारक (श्रोघ ४३५)।

मामास पु [मामाष] १ अनार्य देश-विशेष। २ अनार्य देश मे रहनेवाली मनुष्य जाति (इक)।

मामि अ. सखी के आमन्त्रण मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे २, १९५, कुमा)।

मामिया } स्त्री [दे] मामा की बहू (विपा
मामी } १, ३—पत्र ४१, दे ६, ११२, गा २०४, प्राकृ ३८)।

माय वि [मात] समाया हुआ (कम्म ५, ८५ टी, पुप्फ १७२, महा)।

माय वि [मायावत्] कपटवाला, 'कोहाए माणाए मायाए लोभाए' (पडि)।

माय देखो मेत = मत्र, 'लोमुक्खणणमायमवि' (सूअ २, १, ४८)।

माय° देखो माया = माया (श्राचा)।

माय° देखो मत्ता = मात्रा। °न्न वि [°ज्ञ] परिमाण का जानकार (सूअ २, १, ५७)।

मायइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)।

मायग पु [मातङ्ग] १ भगवान् सुपार्श्वनाथ का शासनयक्ष। २ भगवान् महावीर का शासन-यक्ष (संति ७, ८)। ३ हस्ती, हाथी (पाअ, सुर १, ११)। ४ चाण्डाल, डोम (पाअ)।

मायगी स्त्री [मातङ्गी] १ चाण्डालिन (निचू १)। २ विद्या-विशेष (आचू १)।

मायजण पु [मातञ्जन] पर्वत-विशेष (इक)।

मायंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सुपा २४२, कुप्र ८७)।

मायंद पु [दे माकन्द] आम्र, आम का पेड (हे २, १७४, प्राप्र, दे ६, १२८, कुप्र ७१, १०६)।

मायंदिअ देखो मागंदिअ (भग १८, १)।

मायंदी स्त्री [माकन्दी] नगरी-विशेष (स ६, कुप्र १०६)।

मायंदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी (दे ६, १२६)।

मायण्हिया स्त्री [मृगतृष्णिका] किरण मे जल की भ्रान्ति, मरु-मरीचिका,

'जह मुद्धमओ मायण्हियाए
तिसिओ करेइ जल-बुद्धिं।
तह निव्विवेयपुरिसो
कुणइ अधम्मेवि धम्ममइं'
(सुपा ५००)।

मायहिय (अप) देखो मागहिया (भवि)।

माया = देखो माइ = मातृ, 'मायाइ अह भणिओ' (धर्मवि ५, पाअ, विपा १,६, पड्)। °पिइ, °पिति पुन [°पितृ] माँ-बाप (पि ३६१, स १८४)। °मह पु [°मह] माँ का बाप (सुर ११, ४६, सुपा ३८४)। °वित्त देखो °पिइ, 'दुहियाए होइ सरण मायावित्त महिलियाए' (पउम १७, २१), 'तेणेव देवेण तहिं मायावित्ताइ रोवमाणाइं' (सुर ६, २३५, ९, २३६, धर्मवि २१, महा)।

माया देखो मत्ता = मात्रा, 'नो अइमायाए पाणभोयण आहारेत्ता (उत्त १६, ८, ओप, उव कम)।

माया स्त्री [माया] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा (भग, कुमा, ठा ३, ४, पाअ, प्रासू १७५)। २ इन्द्रजाल (दे ३, ५३, उप ८२३)। ३ मन्त्राक्षर-विशेष, 'ह्रीं' अक्षर (सिरि १९७)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °णर पुं [°नर] पुरुष-वेश धारी स्त्री-आदि (धर्मसं १२०८)। °वीय न [°बीज] 'ह्रीं' अक्षर (सिरि ४०१)। °मोस पुन [°मृषा] कपट-पूर्वक असत्य वचन (णाया १, १, पण्ह १, २, भग, ओप)। °वत्तिअ, °वत्तीय वि [°प्रत्ययिक] कपट से होनेवाला, छल-मूलक (भग, ठा २, १ नव १७)। °वि वि [°विन्] मायायुक्त (पउम ८८, ११)। स्त्री. °विणी (सुपा ६२७)।

मायि वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (उवा, पि ४०५)।

मार सक [मारय्] १ ताडन करना। २ हिंसा करना। मारइ, मारेइ (आचा, कुमा, भग)। भवि मारेहिसि (पि ५२८)। कर्म. मारिज्जइ (उत्त)। वकृ. मारत, मारेंत (भत्त ६२, पउम १०५, ७६)। कवकृ मारिज्जत (सुपा १५७)। सकृ मारेत्ता (म्हा), मारि (अप) (हे ४, ४३९)। हेकृ. मारेउ (महा) कृ. मारियव्व, मारेयव्व (पउम ११, ४२), मारणिज्ज (उप ३५७ टी)।

मार पु [मार] १ ताडन (सुपा २२६)। २ मरण, मौत (आचा, सूअ २, २, १७, उप पृ ३०८)। ३ यम, जम (सूअ १, १, ३, ७)। ४ कामदेव, कंदर्प (उप ७६८ टी)। ५ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५, देवेन्द्र १०)। ६ वि. मारने-वाला (णाया १, १६—पत्र २०२)। °वहू स्त्री [°वधू] रति (सुपा ३०४)।

मार पु [मार] मणि का एक लक्षण (राय ३०)।

मारग वि [मारक] मारनेवाला। स्त्री °रिगा (कुप्र २३५)।

मारण न [मारण] १ ताडन। २ हिंसा (भग, स १२१)।

मारणअ (अप) वि [मारयितृ] मारनेवाला (हे ४, ४४३)।

मारणंतिअ वि [मारणान्तिक] मरण के अन्त समय का (सम ११, ११९, ओप, उवा, कप्प)।

मारणया } स्त्री [मारणा] मारना (भग, मारणा } पण्ह १, १, विपा १, १)।

मारय देखो मारग (उव, सगोव ४३)।

मारा स्त्री [मारा] प्राणि-वध का स्थान, सूना (णाया १, १६—पत्र २०२)।

मारि स्त्री [मारि] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग (स २४२)। २ मारण (आवम)। ३ मौत, मृत्यु (उप ३२६)।

मारि देखो मार = मारय्।

मारि वि [मारिन्] मारनेवाला (महा)।

मारिज्ज पु [मारीच] रावण का एक सुभट (पउम ५९, ७)। देखो मारीअ।

मारिज्जि देखो म रिइ (पउम ८२, २६)।

मारिय वि [मारित] मारा हुआ (महा)।

मारिलग्गा स्त्री [दे] कुत्सित स्त्री (दे ६, १३१)।

मारिव पुन [दे] गौरव, 'गोरवे मारिवे' (सक्षि ४७)।

मारिस वि [मादृश] मेरे जैसा (कुमा)।

मारी स्त्री [मारी] देखो मारि (स २४२)।

मारीअ पु [मारीच] ऋषि-विशेष (अभि २४९)। देखो मारिज्ज।

मारीइ } पु [मारीचि] एक विद्याधर मारीजि } सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २७)।

मारुअ पुं [मारुत] १ पवन, वायु (पाअ, सुपा २०४, सुर ३, ४०, १३, १९४, आप १४, महा)। २ हनूमान का पिता (से २, ४४)। °तणय पु [°तनय] हनूमान (से ४४, हे ३, ८७)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, वातास्त्र (पउम ५९, ६१)।

मारुअ वि [मारुक] मरु देश का, मरु-सबन्धी, 'णो अमयवल्लरी मारुयम्मि कत्थइ थले होइ' (उप ९८६ टी)।

मारुइ पुं [मारुति] हनूमान (से १, ३७)।

माल अक [माल्] १ शोभना। २ वेष्टित होना। कृ 'अच्चिसहस्समालणीय' (णाया १, १—पत्र ३८)।

माल पु [दे] १ आराम, बगीचा (दे ६, १४६)। २ मञ्च, आसन-विशेष (दे ६, १४६, णाया १, १—पत्र ६३, पचा १३, १४)। ३ वि मञ्जु (दे ६, १४६)।

माल पुं [दे माल] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। २ घर का उपरि-भाग, तला, मजिल, गुजराती मे 'माळो' (णाया १, ९—पत्र ५७, चेइय ४८१, पचा १३, १४, ठा ३, ४—पत्र १५९)। ३ वनस्पति-विशेष (ज १)।

माल° देखो माला। °गार वि [°कार] माली (उप पृ १६६)।

मालइ° } स्त्री [मालती] १ लता-विशेष। मालई } २ पुष्प-विशेष (पउम ५३, ७९, पाअ, कुमा)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

मालकार पु [मालङ्कार] वेरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)।

मालणीय देखो माल = माल्।

मालय देखो माल = दे माल (ठा ३, १—पत्र १२३)।

मालव पु [मालव] १ भारतीय देश विशेष (इक, उप १४२ टी)। २ मालव देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १—पत्र १४)।

मालव पु [मालव] म्लेच्छ विशेष, आदमी को उठा ले जानेवाली एक चोर जाति (वव ४)।

मालवंत पुं [माल्यवत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६९, ८०, सम १०२)। २ एक रामकुमार (पउम ६, २२०)। °परियाग, °परियाअ पु [°पर्याय] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, ६९)।

मालविणी स्त्री [मालविनी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [माला] १ फूल आदि का हार, 'मल्ल माला दाम' (पाअ, स्वप्न ७२, सुपा ३१६, प्रासू ३०, कुमा)। २ पंक्ति, श्रेणी (पाअ)। ३ समूह, 'जलमालकद्दमाल' (सूअनि १६१)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °इल्ल वि [°वत्] माला वाला (प्राप्र)। °कारि वि [°कारिन्] माली, पुष्प व्यवसायी। स्त्री °णी (सुपा ५१०)। °गार वि [°कार] वही अर्थ (उप १४२, टी, श्रत १८, सुपा ५६२, उप पृ १५६)। °वर पु [°वर] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष (चेइय ६३)। °यार, °र देखो °गार (अंत १८, उप पृ १५७, गा ५६६)। स्त्री. °री (कुमा, गा ५६७)। °हरा स्त्री [°वरा] छन्द-विशेष (पिंग)।

माला स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका (दे ६, १२८)।

मालाकुंकुम न [दे] प्रधान कुंकुम (दे ६, १३२)।

मालि पुस्त्री [मालि] वृक्ष-विशेष (सम १५२)।

मालि पु [मालिन्] १ पाताल-लंका का एक राजा (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष (इक)। ३ वि माली, पुष्प-व्यवसायी (कुमा)। ४ शोभनेवाला (कुमा)।

मालिअ पु [मालिक] ऊपर देखो (दे २, ८, पण्ह १, २, सुपा २७३, उप पृ १५७)।

मालिअ वि [मालित] शोभित, विभूषित, 'परलोए पुण कल्लाणमालिआमालिआ कमेणेव' (सा २३, पाअ, उप २६४ टी)।

मालिआ स्त्री [मालिका, माला] देखो माला = माला (सा २३, स्वप्न ५३, औप, उवा)।

मालिज्ज न [मालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मालिणी स्त्री [मालिनी] १ माली की स्त्री (कुमा)। २ शोभनेवाली (औप)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ मालावाली (गउड)।

मालिण्ण } न [मालिन्य] मलिनता (उप
मालिन्न } पृ २२, सुपा ३५२, ५८६)।

मालुग } पुं [मालुक] १ त्रीन्द्रिय जन्तु-
मालुय } विशेष (सुख ३६, १२८)। २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१, णाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [मालुका] १ वल्ली, लता (सूअ १, ३, २, १०)। २ वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [मालुधानी] लता-विशेष (गउड)।

मालूर पु [दे मालर] कपित्थ, कैथ का गाछ (दे ६, १३०)।

मालूर पु [मालूर] १ बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ (दे ३, १६, गा ५७६, गउड, कुमा)। २ न. बेल का फल (पाअ, गउड)।

माल्हव } पु [मातुल] मामा (पुष्पमाला
माम्वह } ३२ श्लो० ८ भवभावना)।

माविअ वि [मापित] मापा हुआ (से ६, ६०, दे ८, ४८)।

मास देखो मस = मांस (हे १, २९, ७०, कुमा, उप ७२८ टी)।

मास पु [मास] १ महिना, तीस दिन का समय (ठा २, ४, उप ७६८ टी, जी ३५)। २ समय, काल, 'कालमासे कालं किच्चा' (विपा १, १, २, कुप्र ३५), 'पसवमासे' (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष, 'वीरुणा- (? णी) तह इक्कडे य मासे य' (पण्ण १—पत्र ३३)। °उस देखो °तुस (राज)। °कप्प पु [°कल्प] एक स्थान मे महिना तक रहने का आचार (वृह ६)। °खमण न [°क्षपण] लगातार एक मास का उपवास (णाया १, १, विपा २, १, भग)। °गुरु न [°गुरु] तप-विशेष, एकाशन तप (सवोध ५७)। °तुस पु [°तुष] एक जैन मुनि (विवे ५१)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष, भृंगी देश की राजधानी (इक)। २ 'वर्त' देश की राजधानी, 'पावा भंगी य, मासपुरी वट्टा' (पव २७५)। °पूरिया स्त्री [°पूरिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °लहु न [°लघु] तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप (सवोध ५७)।

मास पु [माष] १ अनार्य देश-विशेष। २ देश विशेष मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य विशेष, उड़द (दे १, ९८)। ४ परिमाण विशेष, मासा (वज्जा १००)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

मासल देखो मसल (हे १, २९, कुमा)।

मासलिय वि [मासलित] पुष्ट किया हुआ (गउड, सुपा ४७४)।

मासाहस पु [मासाहस] पक्षि-विशेष, 'मासाहससउणिसमो किं वा चिट्ठामि घघलिओ' (सवे ६, उव, उर ३, ३)।

मासिअ पु [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ६, १२२)।

मासिअ वि [मासिक] मास-सम्बन्धी (उवा, औप)।

मासिआ स्त्री [मातृष्वसृ] माँ की बहिन (धर्मवि २२)।

मासु देखो मंसु = श्मश्रु (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे ६, १३०, पाअ)।

माह पु [माघ] १ मास-विशेष, माघ का महिना (पाअ, हे ४, ३५७)। २ संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि। ३ एक संस्कृत काव्य-ग्रंथ, शिशुपाल वध काव्य (हे १, १८७)।

माह न [दे] कुन्द का फूल (दे ६, १२८)।

माहण पुस्त्री [माहन, ब्राह्मण] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक—१ मुनि, साधु, ऋषि। २ श्रावक, जैन उपासक। ३ ब्राह्मण (आचा, सूअ २, २, ४८, ५४, भग १, ७, २, ५, प्रासू ८०, महा)। स्त्री °णी (कप्प)। °कुंड न [°कुण्ड] मगध देश का एक ग्राम (आचू १)।

माहप्प पुन [माहात्म्य] १ महत्व, गौरव। २ महिमा, प्रभाव (हे १, ३३, गउड, कुमा, सुर ३, ५३, प्रासू १७)।

माहप्पया स्त्री. ऊपर देखो (उप ७६८ टी)।

माहय पु [दे] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (उत्त ३६, १४९)।

माहव पु [माधव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (गा ४४३, वज्जा १३०)। २ वसन्त ऋतु। ३ वैशाख मास (गा ७७७, कम्मि ५३)। °पणइणी स्त्री [°प्रणयिनी] लक्ष्मी (स ५२३)।

माहविआ स्त्री [माधविका] नीचे देखो (पाअ)।

माहवी स्त्री [माधवी] १ लता-विशेष (गा ३२२, अभि १६६, स्वप्न ३६)। २ एक राज-पत्नी (पउम ६, १२६, २०, १८४)।

माहारयण न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा। २ वस्त्र-विशेष (दे ६, १३२)।

माहिंद पुं [माहेन्द्र] १ एक देव-लोक (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ ज्वर-विशेष, 'माहिंदजरो जाओ' (सुपा ६०६)। ४ दिन का एक मुहूर्त्त (सम ५१)। ५ वि. महेन्द्र-सम्बन्धी (पउम ५५, १६)।

माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रयव, कोरैया का बीज (उत्तनि ३)।

माहिल पु [दे] महिषी-पाल, भैंस चरानेवाला (दे ६, १३०)।

माहिवाय पु [दे] १ शिशिर पवन (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन (षड्)।

माहिसी देखो महिसी (कप्प)।

माही स्त्री [माघी] १ माघ मास की पूर्णिमा। २ माघ की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

माहुर वि [माथुर] मथुरा का (भत्त १४५)।

माहुर न [दे] शाक, तरकारी (दे ६, १३०)।

माहुर } वि [माधुर, °क] १ मधुर रस-
माहुरय } वाला। २ आम्ल रस से भिन्न रसवाला (उवा)।

माहुरिअ न [माधुर्य] मधुरता (प्राकृ १६)।

माहुलिंग पु [मातुलिङ्ग] १ बीजपूर वृक्ष, बीजौरानीबू का पेड़ (हे १, २१४, चंड)। २ न बीजौरे का फल (षड्, कुमा)।

माहेसर वि [माहेश्वर] १ महेश्वर-भक्त (गिरि ८८)। २ न नगर-विशेष (पउम १०, ३४)।

माहेसरी स्त्री [माहेश्वरी] १ लिपि-विशेष (सम ३५)। २ नगरी-विशेष (राज)।

मि (अप) देखो अवि—अपि (भवि)।

मि° स्त्री [मृत्] मिट्टी, मट्टी, 'जह मिल्लेवाउगमादलाबुणोवरमेव गइभावो' (विसे ३१४२)। °पिंड पु [°पिण्ड] मिट्टी का पिंडा (अभि २००)। °म्मय वि [°मय] मिट्टी का बना हुआ (उप २४२, पिंड ३३४, सुपा २७०)।

मिअ देखो मय = मृग, 'सव्वणिदियदोसेणं मिओ मओ वाहवाणेण' (सुर ८, १४२, उत्त १, ५, पण्ह १, १, मम ६०, रंभा, ठा ४, २, पि ५४)। °चक्क न [°चक्र] विद्या-विशेष, ग्राम प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या (सूअ २, २, २७)। °णअणी, °नयणा स्त्री [°नयना] देखो मय च्छी (नाट, सुर ६, १५३)। °मय पु [°मद] कस्तूरी (रंभा ३५)। °रिउ पु [°रिपु] सिंह (सुपा ५७०)। °वाहण पु [°वाहन] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मिअ पु [मृग] हरिण के आकार का पशु-विशेष, जो हरिण से छोटा और जिसका पुच्छ लम्बा होता है। °लोमिअ वि [°लोमिक] उसके बालों से बना हुआ (अणु ३५)।

मिअ देखो मित्त = मित्र (प्राप्र)।

मिअ वि [दे] अलंकृत, विभूषित (षड्)।

मिअ वि [मित] मानोपेत, परिमित (उत्त १६, ८, सम १५२, कप्प)। २ थोड़ा, अल्प, 'मिअ तुच्छं' (पाअ)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को परिमित माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२७)।

मिअ देखो मिव = इव (गा २०६ अ, नाट)।

मिअ° देखो मिआ। °ग्गाम पु [°ग्राम] ग्राम विशेष (विपा १, १)।

मिअआ स्त्री [मृगया] शिकार (नाट—शकु २७)।

मिअंक पु [मृगाङ्क] १ चन्द्र, चाँद (हे १, १३०, प्राप्र कुमा, काप्र १६४)। २ चन्द्र का विमान (सुज्ज २०)। ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। °मणि पु [°मणि] चन्द्रकान्त मणि (कप्पू)।

मिअंग देखो मयग = मृदंग (कप्पू)।

मिअसिर देखो मगसिर (पि ५४)।

मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी (विपा १, १)। २ राजा बलभद्र की पत्नी (उत्त १६, १)। °उत्त, °पुत्त पु [°पुत्र] १ राजा विजय का एक पुत्र (विपा १, १, कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलश्री था (उत्त १६, २)। °वई स्त्री [°वती] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)। २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम (विपा १, ५)।

मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण। २ हद, अवधि, 'किं दुक्करमुदायाए न मिई जमुवायसत्तीए' (धर्मवि १४३)।

मिइ देखो मिउ = मृत् (धर्मस ५५८)।

मिइंग देखो मयग = मृदंग (हे १, १३७, कुमा)।

मिइंद देखो मइंद = मृगेन्द्र (अभि २४२)।

मिउ स्त्री [मृद्] मिट्टी, मट्टी, 'मिउदंडचक्कचीवरसामग्गीवसा कुलालुव्व' (सम्मत्त २२४), 'मिउपिंडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहु त्ति' (उप २५५ टी)।

मिउ वि [मृदु] कोमल, सुकुमार (ओप, कुमा, सण)।

मिउ वि [मृदु] मनोज्ञ, सुन्दर, 'मिउमद्दवसपन्ने' (णंदि ५२)।

मिचण न [दे] मीचना, निमीलन (दे ३, ३०)।

मिंज° } स्त्री [मज्जा] १ शरीर-स्थित धातु-
मिंजा } विशेष, हाड़ के बीच का अवयव-
मिंजिय } विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८, महा, उवा, ओप)। २ मध्यवर्त्ती अवयव, 'पेहुणमिंजिया इवा' (पण्ण १७—पत्र ५२६)।

मिंठ } पु [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत
मिंठिल } (उप १२८ टी, कुप्र ३६८, महा, भत्त ७६, धर्मवि ८१, १३५, मन १०, उप १३०)। देखो मेंठ।

मिंढ } पुस्त्री [मेढ्र] १ मेढा, भेड़, मेष, गाडर
मिंढय } (विसे ३०४ टी, उप पृ २०५, कुप्र १६२), 'ते य दरा मिंढया ते य' (धर्मवि

१४०)। स्त्री. °ढिया (पात्र)। २ न पुरुष-लिंग, पुरुष-चिह्न (राज)। °मुह पु [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ न. नगर-विशेष (राज)। देखो मेढ।

मिंढिय पुं [मेण्ढिक] ग्राम-विशेष (कर्म १)।

मिग देखो मय=मृग (विपा १, ७, सुर २, २२७, सुपा १६८, उव), 'सीहो मिगाण सलिलाण गंगा' (सूत्र १, ६, २१)। °गंध पु [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की एक जाति (इक)। °नाह पुं [°नाथ] सिंह (सुपा ६३२)। °वइ पु [°पति] सिंह (पण्ह १, १, सुपा ६३६)। °वालुंकी स्त्री [°वालुङ्की] वनस्पति-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३०)। °ारि पु [°ारि] सिंह (उव, सुर ६, २७०)। °ाहिव पु [°ाधिप] सिंह (पण्ह २, ५)।

मिगया स्त्री [मृगया] शिकार (सुपा २१४, कुप्र २३, मोह ६२)।

मिगव्व न [मृगव्य] ऊपर देखो (उत्त १८, १)।

मिगसिर देखो मगसिर (सम ८, इक, पि ४३६)।

मिगावई देखो मिआ-वई (पउम २०, १८४ २२, ५५, उव, अंत, कुप्र १८३, पडि)।

मिगी स्त्री [मृगी] १ हरिणी (महा)। २ विद्या-विशेष (राज)। °पद न [°पद] स्त्री का गुह्य स्थान, योनि (राज)।

मिच्चु देखो मच्चु (षड्, कुमा)।

मिच्छ (अप) देखो इच्छ=इष्, 'न उ देइ कप्पु मिच्छइ न न देंदु' (भवि)।

मिच्छ पु [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य (पउम २७, १८, ३४, ४१, ती १५, सवोध १६)। °पहु पुं [°प्रभु] म्लेच्छों का राजा (रंभा)। °पिय न [°प्रिय] पलाण्डु, प्याज, लशुन, 'मिच्छप्पिय तु भुत्त जा गधो ता न हिंडति' (बृह ५)। °ाहिव पु [°ाधिप] यवनों का राजा (पउम १२, १४)।

मिच्छ न [मिथ्य] १ असत्य वचन, भूठ। २ वि असत्य, भूठा, 'मिच्छ ते एवमाहसु' (भग), 'त तहा, नेव मिच्छ' (पउम २३, २६)। ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नहीं रखनेवाला, तत्त्व का अश्रद्धालु, 'मिच्छो हियाहियविभागनाणसण्णासमन्निओ कोइ' (विसे ५१६)।

मिच्छ° देखो मिच्छा (कम्म ३, २, ४)। °कार पुं [°कार] मिथ्या-करण (आवम)। °त्त न [°त्व] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा, सत्य धर्म का अविश्वास (ठा ३, ३, आचू ६, भग, औप, उप ५३१, कुमा)। °त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास नहीं करनेवाला, परमार्थ का अश्रद्धालु (दं १८)। °दिट्ठि, °दिट्ठीय, °दिद्दि, °द्दिट्ठिय वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखनेवाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को माननेवाला (सम २६, कुमा, ठा २, २, औप, ठा १)।

मिच्छा अ [मिथ्या] १ असत्य, झूठा (पात्र)। २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म (कम्म २, ४, १४)। ३ गुण-स्थानक विशेष, प्रथम गुण-स्थानक (कम्म २, २, ३, १३)। °दसण न [°दर्शन] १ सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा (मन ८, भग, औप)। २ असत्य धर्म (कुमा)। °नाण न [°ज्ञान] असत्य ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान (भग)। °सुअ न [°श्रुत] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र (णंदि)।

मिज्ज अक [मृ] मरना। मिज्जति (सूत्र १, ७, ६)। वकृ मिज्जमाण (भग)।

मिज्जंत, मिज्जमाण } देखो मा=मा।

मिज्झ वि [मेध्य] शुचि, पवित्र (उप ७२८ टी)।

मिट सक [दे] मिटाना, लोप करना। मिटिजसु (पिंग)। प्रयो. मिटावह (पिंग)।

मिट्ठ वि [मिष्ट, मृष्ट] मीठा, मधुर, 'मुहमिट्ठा मणदुट्ठा वेसा सिट्ठाण कहमिट्ठा' (धर्मवि ६५, कप्पू, सुर १२, १७, हे १, १२८, रंभा)।

मिण सक [मा, मी] १ परिमाण करना, नापना, तोलना। २ जानना, निश्चय करना। मिणइ (विसे २१८६), मिणसु (पव २५४)।

मिणण न [मान] मान, माप, परिमाण (उप पृ ६७)।

मिणाय न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ६, ११३)।

मिणाल देखो मुणाल (प्राकृ ८, रंभा)।

मित्त पुं [मित्र] १ सूर्य, रवि (सुपा ६४५, सुख ४, ६, पात्र, वज्जा १४४)। २ नक्षत्रदेव-विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२)। ३ अहोरात्र का तीसरा मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३)। ४ एक राजा का नाम (विपा १, २)। ५ पुन. दोस्त, वयस्य सखा, 'मित्तो सही वयसो' (पात्र), 'पहाणमित्ता' (स ७०७), 'तिविहो मित्तो हवइ' (स ७१५, सुपा ६४५, प्रासू ७६)। °केसी स्त्री [°केशी] रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी, 'अलंबुसा मित (?त्त) केसी' (ठा ८—पत्र ४३७, इक)। °गा स्त्री [°गा] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °णदि पु [°नन्दिन्] एक राजा का नाम (विपा २, १०)। °दाम पु [°दाम] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °देवा स्त्री स्त्री [°देवा] अनुराधा नक्षत्र (राज)। °व वि [°वत्] मित्रवाला (उत्त ३, १८)। °सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र (सुपा ५०७)।

मित्त देखो मेत्त=मात्र (कप्प, जी ३१, प्रासू १४५)।

मित्तल पुं [दे] कन्दर्प, काम (दे ६, १२६, सुर १३, ११८)।

मित्ति स्त्री [मति] १ मान, परिमाण। २ सापेक्षता,

'उस्सग्गववायाण मित्तीए अह ण भोयण दुट्ठ। उस्सग्गववायाण मित्तीइ तहेव उवगरण' (अज्झ ३७)।

मित्तिआ स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी, मट्टी (अभि २४३)। °वई स्त्री [°वती] दशार्ण देश की प्राचीन राजधानी (विचार ४८)।

मित्तिज्ज अक [मित्रीय्] मित्र को चाहना। वकृ मित्तिज्जमाण (उत्त ११, ७)।

मित्तिय न [मैत्रेय] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

मित्तिवय पु [दे] ज्येष्ठ, पति का बडा भाई (दे ६, १३२)।

मित्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (सूत्र २, ७, ३६, श्रा १८, प्रासू ८)।

मिथुण देखो मिहुण (पउम ६६, ३१)।

मिट्टु देखो मिउ (अभि १८३, नाट—रत्ना ८०)।

मिरिअ पुन [मिरिच] १ मरिच का गाछ। २ मिरच, मिर्चा (पराण १७—पत्र ५३१, हे १, ४६, ठा ३, १ टी, पव २५६)।

मिरिआ स्त्री [दे] कुटी झोपडी (दे ६, १३२)।

मिरिइ, मिरी, मिरीइ, मिरीअ पुस्त्री [मरीचि] किरण, प्रभा, तेज, 'चत्तलमिरिइकवयं' (औप), 'सप्पहा समिरि (?री) या' (औप), 'निक्ककडच्छाया समिरीया' (औप, ठा ८, १—पत्र २२६), 'विज्जुघणमिरीइसूरदिप्पततेय—' (औप), 'सूरमिरीयकवय निरिणम्मुयतेहिं' (पराह १, ४—पत्र ७२)।

मिल अक [मिल्] मिलना। मिलइ (हे ४, ३३२, रंभा, महा)। कर्म. मिलिज्जइ (हे ४, ४३४)। वकृ. मिलत (से १०, १६)।

मिलक्खु पुन देखो मिच्छ = म्लेच्छ (ओघ ४४०, धर्मसं ५०८, ती १५, उत्त १०, १६), 'मिलक्खूणि' (पि ३८१)।

मिलण न [मिलन] मेल, मिलना, एकत्रित होना, 'लोगमिलणम्मि' (उप ५७८, सुपा २५०)।

मिलणा स्त्री ऊपर देखो (उप १२८ टी, उप ७०६)।

मिला, मिलाअ अक [म्लै] म्लान होना, निस्तेज होना। मिलाइ, मिलाअइ (दे २, १०६, ८, १८, २४०, पड्)। वकृ. मिलाअत, मिलाअमाण (पि १३६, ठा ३, ३, णाया १, ११)।

मिलाअ, मिलाण वि [म्लान] निस्तेज, विच्छाय (णाया १, १—पत्र ३७, स ४२५, हू २ १०६, कुमा, महा)।

मिलाण न [दे] पर्याण (?) '—यासगमिलाणचमरोगउपरिमडियकडीए' (औप)।

मिलाणि स्त्री [म्लानि] निच्छायता (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (गा ४४३, कुमा)।

मिलिअ वि [मेलित] मिलाया हुआ (कुमा)।

मिलिच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ (हे १, ८४, हम्मीर ३४)।

मिलिट्ठ वि [म्लिष्ट] १ अस्पष्ट वाक्यवाला। २ म्लान। ३ न अस्पष्ट वाक्य (प्राकृ २७)।

मिलिमिलिमिल अक [दे] चमकना। वकृ. मिलिमिलिमिलित (पराह १, ३—पत्र ४४)।

मिलीण देखो मिलिअ (ओघभा २२ टी)।

मिल्ल सक [मुच्] छोडना, त्यागना। मिल्लइ (भवि)। वकृ मिल्लत (सुपा ३१७)। कृ मिल्लेव (अप) (कुमा)। प्रयो, कवकृ मिल्लाविज्जत (कुप्र १६२)।

मिल्लाविअ वि [मोचित] छुडाया हुआ (सुपा ३८८, हम्मीर १८, कुप्र ४०१)।

मिल्लिअ (अप) देखो मिलिअ (पिंग)।

मिल्लिर वि [मोक्तृ] छोडनेवाला (कुमा)।

मिल्ह देखो मिल्ल। मिल्हइ (आत्मानु २२), मिल्हति (कुप्र १७)। भवि मिल्हिस्स (कुप्र १०)। कृ मिल्हियव्व (सिरि ३५७)।

मिल्हिय वि [मुक्त] छोडा हुआ (श्रा २७)।

मिव देखो इव (हे २, १८२, प्राप्र, कुमा)।

मिस सक [मिस्] शब्द करना। वकृ मिसत (तदु ४४)।

मिस न [मिष] बहाना, छल, व्याज (चेइय ८३१, सिक्खा २६, रंभा, कुमा)।

मिसमिस अक [दे] १ अत्यन्त चमकना। २ खूब जलना। वकृ मिसमिसत (णाया १, १—पत्र १६, तदु २६, उप ६४८ टी)।

मिसल (अप) सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ (भवि)।

मिसल (अप) देखो मीस, मीसालिअ (भवि)।

मिसिमिस देखो मिसमिस वकृ मिसिमिसत, मिसिमिसित, मिसिमिसिमाण, मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसेंत मिसिमिसेमाण (औप, कप्प, पि ५५८, उवा, पि ५५८, णाया १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [दे] उद्दीप्त, उत्तेजित (सुर ३, ५०)।

मिस्स सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मिस्सइ (हे ४, २८)।

मिस्स देखो मीस = मिश्र (भग)।

°मिस्स पु [°मिश्र] पूज्य, पूजनीय, 'वसिठ्ठमिस्सेसु' (उत्तर १०३)।

मिस्साकूर पुन [मिश्राकूर] खाद्य-विशेष, 'अणुराहाहिं मिस्साकूर भोच्चा कज्ज साधेंति' (सुज्ज १०, १७)।

मिह अक [मिध्] स्नेह करना। मिहसि (सुर ४, २१)।

मिह देखो मिस = मिष, 'निग्गओ अलियगामतरगमणमिहेण' (महा)।

मिह देखो मिहो (आचा)।

मिहिआ स्त्री [दे] मेघ-समूह (दे ६, १३२)। देखो महिआ।

मिहिआ स्त्री [मेघिका] अल्प मेघ (से ४, १७)। देखो महिआ।

मिहिर पु [मिहिर] सूर्य, रवि (उप पृ ३५०, सुपा ४१६, धर्मा ५),

'सायरनिसायराण मेहसिहडीण मिहिरनलिणीण।
दूरेवि वसताण पडिवन्न नन्नहा होइ' (उप ७२८ टी)।

मिहिला स्त्री [मिथिला] नगरी विशेष (ठा १०, पउम २०, ४५, णाया १, ८—पत्र १२४, इक)।

मिहु, मिहु देखो मिहो (उप ९४७, आचा)।

मिहुण न [मिथुन] १ स्त्री पुरुष का युग्म, दपती (हे १, १८७, पाअ, कुमा)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)।

मिहो अ [मिथस्] परस्पर, आपस मे (उप ६७६, स ५३६, पि ३४७)।

मीअ न [दे] समकाल, उसी समय (दे ६, १३३)।

मीण पु [मीन] १ मत्स्य, मछली (पाअ, गउड, ओघ ११६, सुर ३, ५३, १३, ४६)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष (सुर ३, ५३, विचार १०६, सबोध ५४)।

मीत देखो मित्त = मित्र (सक्षि १७)।
मीमस सक [मीमास्] विचार करना। कृ· 'अ-मीमसा गुरू' (स ७३०)।
मीमसा स्त्री [मीमासा] जैमिनीय दर्शन, पूर्वमीमासा (सुख ३, १, धर्मवि ३८)।
मीमसिय वि [मीमांसित] विचारित (उप ९८६ टी)।
मीरा स्त्री [दे] दीर्घ चुल्ली, वडा चुल्हा (सूअनि ७६)।
मील अक [मील्] मीचाना, वन्द होना, सकुचाना। मीलइ (हे ४, २३२, षड्)।
मील देखो मिल (वि ११)।
मीलच्छीकार पु [मीलच्छीकार] १ यवन देश-विशेष, 'मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो खप्परखाणराया' (हम्मीर ३५)। २ एक यवन राजा (हम्मीर ३५)।
मीलण न [मीलन] सकोच (कुमा)।
मीलण देखो मिलण, 'खणजणमणमीलणोवमा विसया' (वि ११, राज)।
मीलिअ देखो मिलिअ = मिलित (पिंग)।
मीस सक [मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। कर्म मीसिज्जइ (पि ६४)।
मीस वि [मिश्र] १ सयुक्त, मिला हुआ, मिश्रित (हे १, ४३, २, १७०, कुमा, कम्म २, १३, १५, ४, १३, १७, २४, भग, औप, द २२)। २ न. लगातार तीन दिनो का उपवास (सवोध ५८)।
मीसालिअ वि [मिश्र] सयुक्त, मिला हुआ (हे २, १७०, कुमा)।
मीसिय वि [मिश्रित] ऊपर देखो (कुमा, कप्प, भवि)।
मुअ सक [मोदय्] खुश करना। कवकृ. मुइज्जत (से ७, ३७)।
मुअ सक [मुच्] छोडना। मुअइ (हे ४, ९१), मुअंति (गा ३१९)। वकृ मुअत, मुयमाण (गा ६४१, से ३, ३६, पि ४८५)। संकृ. मुइत्ता (भग)।
मुअ वि [मृत] मरा हुआ (से ३, १२, गा १४२, वज्जा १५८, प्रासू ५७, पउम १८, १९, उप ६४८ टी)। °वहण न [°वहन] शव-यान, ठठरी, अरथी (दे २, २०)।

मुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (सूअ २, ७, ३८, आचा)।
मुअक देखो मिअक (प्राकृ ८)।
मुअग देखो मिअग (षड्, सम्मत्त २१८)।
मुअगी स्त्री [दे] कीटिका, चीटी (दे ६, १३४)।
मुअग्ग पु [दे] 'आत्मा वाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलो से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान (ठा ७ टी—पत्र ३८३)।
मुअण न [मोचन] छुटकारा, छोडना (सम्मत्त ७८, विसे ३३१६, उप ५२०)।
मुअल (अप) देखो मुअ = मृत (पिंग)।
मुआ स्त्री [मृत्न] मिट्टी (सक्षि ४)।
मुआ स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी, आनन्द, 'सुरयरसाओवि मुय अहिय उवजणइ तस्स सा एसा' (रभा)।
मुआइणी स्त्री [दे] डुम्बी, डोमिन, चाण्डालिन (दे ६, १३५)।
मुआविअ वि [मोचित] छुडवाया हुआ (स ४४६)।
मुइ वि [मोचिन्] छोडनेवाला (विसे ३४०२)।
मुइअ वि [मुदित] १ हर्षित, मोद-प्राप्त (सुर ७, २२३, प्रासू १०५, उव, औप)। २ पुं रावण का एक सुभट, (पउम ५६, ३२)।
मुइअ वि [दे] योनि-शुद्ध, निर्दोष मातावाला, 'मुइओ जो होई जोणिसुद्धो' (औप—टी)।
मुइअगा देखो मुअगी, 'उवलिप्पते काया मुइअगाई नवरि छट्टे' (पिंड ३५१)।
मुइग देखो मिअग (हे १, ४६, १३७, प्राप्र, उवा, कप्प, सुपा ३९२, पाअ)। °पुक्खर पुन [°पुष्कर] मृदग का ऊपरवाला भाग (भग)।
मुइंगलिया } स्त्री [दे] कीटिका, चीटी (उप
मुइगा } १३४ टी, सथा ८६, विसे १२०८, पिंड ३५१ टी)।
मुइगि वि [मृदङ्गिन्] मृदग वजानेवाला (कुमा)।
मुइद देखो मइद = मृगेन्द्र (प्राकृ ८)।
मुइज्जत देखो मुअ = मोदय्।
मुइर वि [मोक्तृ] छोडनेवाला (सण)।
मुउ देखो मिउ (काल)।

मुउउद पुं [मुचुकुन्द] १ नृप-विशेष (अच्चु ६६)। २ पुष्पवृक्ष-विशेष (कप्पू)।
मुउद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण (नाट—चैत १२९)।
मुउर देखो मउर = मुकुर (षड्)।
मुउल देखो मउल = मुकुल (षड्, मुद्रा ८४)।
मुंगायण न [मृङ्गायण] गोत्र-विशेष, विशाखा नक्षत्र का गोत्र (इक)।
मुच देखो मुअ = मुच्। मुचइ, मुचए (षड्, कुमा)। भूका मुची (भत्त ७६)। भवि. मोच्छ, मोच्छिहि मुचिहिइ (हे ३, १७१, पि ५२६)। कर्म मुच्चइ, मुचए, मुचति (आचा, हे ४, २०६, महा भग)। भवि. मुचिहिति (भग)। वकृ मुचत (कुमा)। कवकृ मुचत (पि ५४२)। सकृ. मोत्तु, मोत्तुआण, मोत्तूण (कुमा, षड्, प्राकृ ३४)। हेकृ मोत्त (कुमा), मुचणहि (अप) (कुमा)। कृ. मोत्तव्व, मुत्तव्व (हे ४, २१२, गा ६७२, सुपा ५८९)।
मुज पुन [मुञ्ज] मूँज, तृण-विशेष, जिसकी रस्सी वनाई जाती है (सूअ २, १, १६, गच्छ २, ३६, उप ६४८ टी)। °मेहला स्त्री [°मेखला] मूँज का कटिसूत्र (णाया १, १६—पत्र २१३)।
मुजइ न [मौञ्जकिन्] १ गोत्र विशेष। २ पुत्री, गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।
मुजकार पु [मुञ्जकार] मूँज की रस्सी वनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)।
मुजायण पु [मौञ्जायन] ऋषि-विशेष (हे १, १६०, प्राप्र)।
मुजि पु [मौञ्जिन्] ऊपर देखो (प्राकृ १०)।
मुट वि [दे] हीन शरीरवाला,
'जे वभचेरभट्ठा पाए पाडति वभयारीण।
ते हति टुटमुटा वोहीवि सुदुल्लहा तेसिं' (सवोध १४)।
मुंड सक [मुण्डय्] १ मूँडना, वाल उखाडना। २ दीक्षा देना, सन्यास देना। मुडइ (भवि), मुडेह (सूअ २, २, ६३)। प्रयो, वकृ मुंडावेंत (पंचा १०, ४८ टी)। हेकृ. मुडावेउ, मुडावित्तए, मुडावेत्तए (पंचा १०, ४८, ठा २, १, कस)।

मुंड पुन [मुण्ड] १ मस्तक, सिर (हे ४, ४८६, पिंग)। २ वि मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित (कप्प, उवा, पिंड ३१४)। °परसु पु [°परशु] नंगा कुल्हाडा, तीक्ष्ण कुठार (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

मुंडण न [मुण्डन] केशों का अपनयन (पचा २, २, स २७१, सुर १२, ८५)।

मुंडा स्त्री [दे] मृगी, हरिणी (दे ६, १३३)।

मुंडाविअ वि [मुण्डित] मूँडाया हुआ (भग, महा, णाया १, १)।

मुंडि वि [मुण्डिन्] मुण्डन करनेवाला (उव, ओप, सन १००)।

मुंडिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त (भग, उप ६३४, महा)।

मुंडी स्त्री [दे] नारङ्गी, शिरो वस्त्र, घूँघट (दे ६, १०३)।

मुंढ, मुंढाण पु [मूर्धन्] मूर्धा, मस्तक, सिर (हे १, २६, २, ४१, षड्)। देखो मुद्ध = मूर्धन्।

मुक्कलाव सक [दे] भेजवाना, गुजराती मे 'मोकलाववु'। सक्र मुक्कलाविऊण (सिरि ४०४)।

मुकुर पु [मुकुर] दर्पण, आईना (दे १, १४)।

मुक्क (अप) सक [मुच्] छोडना, गुजराती मे 'मूकवु'। मुक्कइ (प्राकृ ११९)। सक्र मुक्किअ (नाट—चैत ७६)।

मुक्क वि [मूक] वाक्-शक्ति से रहित, गूँगा (हे २, ९९, सुपा ५५२, षड्)।

मुक्क देखो मुक्क (पिंग ५५०)।

मुक्क वि [मुक्त] १ छोडा हुआ, त्यक्त (उवा, सुपा ४७१, महा, प्राप्र)। २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त (हे २, २)। ३ लगतार पाँच दिन का उपवास (संबोध ५८)। देखो मुत्त = मुक्त।

मुक्कय न [दे] दुर्वाहन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह (दे १, १३५)।

मुक्कल वि [दे] १ उचित, योग्य (दे ६, १४७)। २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त (दे ६, १४०, सुर १, २३३, सिरि १८, गउड, सिरि ३४३, पाग्र, सुपा १९८)।

मुक्कलिअ वि [दे] बन्धन मुक्त किया हुआ, अनियन्त्रित (दे १, १५६ टी)।

मुक्कुडी स्त्री [दे] जूट (दे ६, ११७)।

मुक्कुरुड पु [दे] राशि, ढेर (दे ६, १३६)।

मुक्ख देखो मुक्क = मुक्त (प्रासु १६८)।

मुक्ख पु [मोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सुर १४, ६५, हे २, ८९, सार्ध ८६)। २ छुटकारा, 'रिणमुक्ख' (रयण ६५, धर्मवि २१)।

मुक्ख वि [मूर्ख] अज्ञानी, बेवकूफ (हे २, ११२, कुमा, गा ८२, सुपा २३१)।

मुक्ख वि [मुख्य] प्रधान, नायक (हास्य १२५)।

मुक्ख पुन [मुष्क] १ अण्डकोष। २ वृक्ष-विशेष। ३ चोर, तस्कर। ४ त्रि मांसल पुष्ट (प्राप्र)।

मुक्खण देखो मोक्खण (सिक्खा ४५)।

मुक्खणी स्त्री [मोक्षणी] स्तम्भन से छुटकारा करनेवाली विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।

मुख देखो मुह = मुख (प्रासू ६, राज)।

मुख पु [मुख] १ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)। २ गाडी के ऊपर का ढक्कन (अणु १५१)।

मुग देखो मुग्ग, 'एगमुगभरुव्वहणे असमत्थो कि गिरिं वहइ' (सुपा ४६१)।

मुगुंद देखो मउंद = मुकुन्द (आचा २, १, २, ४, विसे ७८ टी)।

मुगुस पुस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी (पण्ह १, १—पत्र ८)। स्त्री °सा (उवा)। देखो मगुस, मुग्गस।

मुग्ग पुं [मुद्ग] १ धान्य-विशेष, मूँग (उवा)। २ राग विशेष (ति १०)। ३ पक्षि-विशेष, जल-काक (प्राप्र)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °सेल पु [°शैल] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भीगनेवाला एक पर्वत (उप ७२८ टी)।

मुग्गड पु [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष (हे ४, ४०९)। देखो मोग्गड।

मुग्गर न [मुद्गर] १ पुष्प विशेष (वज्जा १०६)। २ देखो मोग्गर (प्राप्र, औप ३६, कप्प)।

मुग्गरय न [दे मुग्धारत] मुग्धा के साथ रमण (वज्जा १०६)।

मुग्गल देखो मुग्गड (ती १५)।

मुग्गस पुं [दे] नकुल, न्यौला (दे ६, ११८)।

मुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना। मुग्गाहइ (?) (धात्वा १४८)।

मुग्गिल, मुग्गिल्ल पु [दे] पर्वत-विशेष (ती ७, भत्त १६१)।

मुग्गुसु देखो मुग्गस (दे ६, ११८)।

मुग्घड देखो मुग्गड (हे ४, ४०९)।

मुग्घुरुड देखो मुक्कुरुड (दे ६, १३६)।

मुचकुंद, मुचुकुंद देखो मुउंद (सुर २, ७६, कुमा)।

मुच्छ अक [मूर्च्छ्] १ मूर्छित होना। २ आसक्त होना। ३ बढना। मुच्छइ मुच्छए (कस, सूअ १, १, ४, २)। वकृ मुच्छंत, मुच्छमाण (गा ५४६, आचा)।

मुच्छणा स्त्री [मूर्च्छना] गान का एक अंग (ठा ७—पत्र ३९५)।

मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] १ मोह (ठा २, ४, प्रासू १७९)। २ अचेतनावस्था, बेहोशी (उव, पडि)। ३ गृद्धि, आसक्ति (सम ७१)। ४ मूर्च्छना, गीत का एक अंग (ठा ७—पत्र ३९३)।

मुच्छाविअ वि [मूर्छित] मूर्छा-युक्त किया हुआ (से १२, ८८)।

मुच्छिअ वि [मूर्छित] १ मूर्च्छा-युक्त (प्रासू ५७, उवा)। २ पु नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)।

मुच्छिज्जंत वि [मूर्च्छायमान] मूर्च्छा को प्राप्त होता (से १३, ४३)।

मुच्छिम पु [मूर्च्छिम] मत्स्य विशेष, वायाए काएण मणेरहिंयाए न दारुण कम्म। जोअणमहस्समाणो मुच्छिममच्छो उआहरण' (मन ३)।

मुच्छिर वि [मूर्च्छितृ] १ बढनेवाला। २ बेहोशीवाला (कुमा)।

मुज्झ अक [मुह्] १ मोह करना। २ घबडाना। मुज्झइ (आचा, उव, महा)। भवि मुज्झिहिति (औप)। कृ मुज्झियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९, उव)।

मुट्टिम पुंस्त्री [दे] गर्व, अहंकार, गुजराती में 'मोटाई', 'कयमुट्टिमगीकारो' (हम्मीर ३५)। देखो मोट्टिम।

मुट्ठ वि [मुष्ट, मुषित] जिसकी चोरी हुई हो वह (पिंड ४६६, सुर २, ११२, सुपा ३६१, महा)।

मुट्ठि पुंस्त्री [मुष्टि] मुट्ठी, मूठी, घूँसा, मुक्का, 'मुट्ठिणा', मुट्ठीअ' (पि३७६, ३८५, पाअ, रभा, भवि)। °जुज्झ न [°युद्ध] मुष्टि से की जाती लड़ाई, मूकामूकी (आचा)। °पुत्थय न [°पुस्तक] १ चार अंगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक। २ चार अंगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक (पव ८०)।

मुट्ठिअ पु [मौष्टिक] १ अनार्य देश-विशेष। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मुट्ठी से लड़नेवाला मल्ल (पण्ह २, ५—पत्र १४६)। ४ वि. मुष्टि-सम्बन्धी (कप्प)।

मुट्ठिअ पु [मुष्टिक] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२, पिंग)। २ अनार्य देश-विशेष। ३ एक अनार्य मनुष्य जाति (इक)।

मुट्ठिका स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी (दे ६, १३४)।

मुड्ढ देखो मुढ (कुमा)।

मुड्ढ वि [मुग्ध, मूढ] मूर्ख, बेवकूफ (हम्मीर ५१)।

मुण सक [ज्ञा, मुण्] जानना। मुणइ, मुणति, मुणिमो (हे ४, ७, कुमा)। कर्म. मुणिज्जइ (हे ४, २५२), मुणिज्जामि (हास्य १३८)। वकृ. मुणंत, मुणिन (महा, पउम ४८, ६)। कवकृ मुणिज्जमाण (से २, ३६)। संकृ मुणिय, मुणिउ, मुणिऊण, मुणेऊण (औप, महा)। कृ. मुणिअव्व मुणेअव्व (कुमा, से ४, २४, नव ४२, कप्प, उव, जी ३२)।

मुणण न [ज्ञान मुणन] ज्ञान, जानकारी (कुप्र १८४, सबोध २५, धर्मवि १२५, सण)।

मुणमुण सक [मुणमुणाय्] अव्यक्त शब्द करना, बड़बड़ाना। वकृ. मुणमुणत, मुणमुणित (महा)।

मुणाल पुन [मृणाल] १ पद्मकन्द के ऊपर की वेल—लता (आचा २, १, ८, ११)। २ बिस, पद्मनाल। ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत्र (पाअ, णाया १, १३, औप)। ४ वीरण का मूल। ५ पद्म, कमल, 'मुणालो', 'मुणाल' (प्राप्र, हे १, १३१)।

मुणालि पु [मृणालिन्] १ पद्म-समूह। २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमलवाला स्थान, 'मुणाली वाणाली' (सुपा ४१३)।

मुणालिआ } स्त्री [मृणालिका, °ली] १ बिस तन्तु, कमल-नाल का सूता (नाट—रत्ना २६)। २ बिस का अंकुर (गउड)। ३ कमलिनी (राज)। देखो मणालिया।
मुणाली }

मुणि पु [मुनि] १ राग द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यति (आचा, पाअ, कुमा, गउड)। २ अगस्त्य ऋषि, 'जलहिजल व मुणिणा' (सुपा ४८६)। ३ सात की संख्या। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °चंद पु [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रंथकार, जो वादी देवसूरि के गुरु थे (धम्मो २५)। २ एक राज-पुत्र (महा)। °नाह पु [°नाथ] साधुओं का नायक (सुपा १६०, २५०)। °पुंगव पु [°पुङ्गव] श्रेष्ठ मुनि (सुपा ६७, श्रु ४१)। °राय पु [°राज] मुनि-नायक (सुपा १६०)। °वइ पु [°पति] वही अर्थ (सुपा १८१, २०६)। °वर पुं [°वर] श्रेष्ठ मुनि (सुर ४, ५६, सुपा २४४)। °वेजयंत पु [°वैजयन्त] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि (सूअ १, ६, २०)। °सीह पु [°सिंह] श्रेष्ठ मुनि (पि ४३६)। °सुव्वय पु [°सुव्रत] १ वर्तमान काल में उत्पन्न भारतवर्ष के बीसवें तीर्थंकर (सम ४३)। २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मुणि पु [दे. मुनि] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम (दे ६, १३३, कुमा)।

मुणिअ वि [ज्ञात, मुणित] जाना हुआ (हे २, १६६, पाअ, कुमा, अवि १६, पण्ह १, २, उप १४३ टी)।

मुणिअ वि [दे मुणिक] ग्रह-गृहीत, भूताविष्ट, पागल (भग १५—पत्र ६६५)।

मुणिंद पुं [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि (हे १, ८४, भग)।

मुणिर वि [ज्ञातृ, मुणितृ] जाननेवाला (सण)।

मुणीश पु [मुनीश] मुनि-नायक (उप १४१ टी, भवि)।

मुणीसर पु [मुनीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ३६६)।

मुणीसिम (अप) पुन [मनुष्यत्व] १ मनुष्यपन। २ पुरुषार्थ (हे ४, ३३०)।

मुत्त सक [मूत्रय्] मूतना, पेशाब करना। मुत्तति (कुप्र ६२)।

मुत्त न [मूत्र] प्रस्रवण, पेशाब (सुपा ६१६)।

मुत्त देखो मुक्क = मुक्त (सम १, से २, ३०, जी २)। °लय पुंस्त्री [°लय] मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (इक)। स्त्री °या (ठा ८,—पत्र ४४०, सम २२)।

मुत्त वि [मूर्त] १ मूर्तिवाला, रूपवाला, आकारवाला (चैत्य ६१)। २ कठिन। ३ मूढ। ४ मूर्च्छा युक्त (हे २, ३०)। ५ पुं. उपवास, एक दिन का उपवास (संबोध ५८)। ६ एक प्राण का नाम (कप्प)।

मुत्त° देखो मुत्ता (औप, पि ६७, चैत्य १४)।

मुत्तव्व देखो मुच।

मुत्ता स्त्री [मुक्ता] मोती, मौक्तिक (कुमा)। °जाल न [°जाल] मुक्ता-समूह, मोतियों की माला (औप, पि ६७)। °दाम न [°दामन्] मोतियों की माला (ठा ४, २)। °वलि, °वली स्त्री [°वलि, °ली] १ मोती की माला, मोती का हार (सम ४४, पाअ)। २ तप-विशेष (अंत ३१)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (राज)। °सुत्ति स्त्री [°शुक्ति] १ मोती की सीप। २ मुद्रा-विशेष (चेइय २४०, पंचा ३, २१)। °हल न [°फल] मोती (हे १, २३६, कुमा, प्रासू २)। °हलिल्ल वि [°फलवत्] मोतीवाला (कप्पू)।

मुत्ति स्त्री [मूर्त्ति] १ रूप, आकार, 'मुत्ति-विमुत्तेसु' (पिंड ५६, विसे ३१८२)। २ प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्त्ति, प्रतिमा, 'चउमुहमुत्ति-

चटक' (सबोध २)। ३ शरीर, देह (सुर १, ३, पाअ)। ४ काठिन्य, कठिनत्व (हे २, ३०, प्राप्र)। °मत वि [°मत्] मूर्त्तिवाला, मूर्त, रूपी (धर्मवि ६, सुपा ३८६, श्रु ९७)।

मुत्ति स्त्री [मुक्ति] १ मोक्ष, निर्वाण (आचा, पाअ, प्रासू १५५)। २ निर्लोभता, संतोष (श्रा ३१)। ३ मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (ठा ८—पत्र ४४०)। ४ निस्संगता (आचा)।

मुत्ति त्रि [मूत्रिन्] बहु-मूत्र रोगवाला, 'उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणि' (आचा)।

मुत्ति वि [मौक्तिन्, मौक्तिक] मोती पिरोने या गूँथने वाला (उप पृ २१०)।

मुत्तिअ न [मौक्तिक] मुक्ता, मोती (से ५, ४९, कुप्र ३, कुमा, सुपा २४, २८९, प्रासू ३९, १७१)। देखो मोत्तिअ।

मुत्तोली स्त्री [दे] १ मूत्राशय (तंदु ४१)। २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे सकीर्ण और मध्य में विशाल हो (राज)।

मुत्थ त्रि [मुस्त] मोथा, नागरमोथा (गउड)। स्त्री °त्था (सबोध ८८, कुमा)।

मुदग्ग देखो मुअग्ग (ठा ७—पत्र ३८२)।

मुदा स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी। °गर वि [°कर] हर्षजनक (सूअ १, ६, ९)।

मुदुग पु [दे] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति (जीव १ टी—पत्र ३६)।

मुद सक [मुद्रय्] १ मोहर लगाना। २ बन्द करना। ३ अंकन करना। मुद्देइ (धम्म ११ टी)।

मुद्दग पु [दे] १ उत्सव। २ सम्मान (?) (स ६६३, ६६४)।

मुद्दग } पु [मुद्रिका] अँगूठी (उवा), 'लद्धो
मुद्दय } मद्द। तुमं किं अह अंगुलिमुद्दओ एसो' (पउम ५३, २८)।

मुद्दा स्त्री [मुद्रा] १ मोहर, छाप (सुपा ३२१, वज्जा १५६)। २ अँगूठी (उवा)। ३ अंग-विन्यास-विशेष (चैत्य १८)।

मुद्दिअ वि [मुद्रित] १ जिस पर मोहर लगाई गई हो वह। २ बंद किया हुआ (णाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १—पत्र १२३, कप्पू, सुपा १८४, कुप्र ३१)।

मुद्दिअ° } स्त्री [मुद्रिका] अँगूठी (पण्ह १,
मुद्दिआ } ४, कप्प, औप, तंदु २९)। °बंध पु [°बन्ध] ग्रन्थि बन्ध, बन्ध-विशेष (ओघ ४०२, ४०५)।

मुद्दिआ स्त्री [मृद्वीका] १ द्राक्षा की लता (पण्ण १—पत्र ३३)। २ द्राक्षा, दाख (ठा ४, ३—पत्र २३९, उत्त ३४, १५, पव १५५)।

मुद्दी स्त्री [दे] चुम्बन (दे ६, १३३)।

मुद्दुय देखो मुद्दुग (पण्ण १—पत्र ४८)।

मुद्ध देखो मुंढ (औप, कप्प, ओघभा १९, कुमा)। °न्न वि [°न्य] १ मस्तक में उत्पन्न। २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर। ३ मूर्धस्थानीय रकार आदि वर्ण (कुमा)। °य पु [°ज] केश, बाल (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। °सूल न [°शूल] मस्तक-पीडा, रोग विशेष (णाया १, १३)।

मुद्ध वि [मुग्ध] १ मूढ, मोह युक्त। २ सुन्दर, मनोहर, मोह जनक (हे २, ७७ प्राप्र, कुमा, विपा १, ७—पत्र ७७)।

मुद्धा स्त्री [मुग्धा] मुग्धा स्त्री, नायिका का एक भेद, काम-चेष्टा-रहित अंकुरित यौवना (कुमा)।

मुद्धा (अप) देखो मुहा (कुमा)।

मुद्धाण देखो मुंढ (उवा, कप्प, पि ४०२)।

मुब्भ पु [दे] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ, गुजराती में 'मोभ' (दे ६, १३३)। देखो मोब्भ।

मुमुक्खु वि [मुमुक्षु] मुक्त होने की चाह-वाला (सम्मत्त १८०)।

मुम्मुइ } वि [मूकमूक] १ अत्यन्त मूक।
मुम्मुय } २ अव्यक्तभाषी (सूअ १, १२, ५, राज)।

मुम्मुर सक [चूर्णय्] चूरना, चूर्ण करना। मुम्मुरइ (प्राकृ ७५)।

मुम्मुर पु [दे] करीष, गोइठा (दे ६, १४७)।

मुम्मुर पु [दे मुर्मुर] १ करीषाग्नि, गोइठा की आग (दे ६, १४७, जी ६)। २ तुषाग्नि (सुर ३, १८७)। ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण (उप ६४८ टी, जी ६, जीव १)।

मुम्मुही स्त्री [मुन्मुखी] मनुष्य की दश दशाओं में नववीं दशा—८० से ९० वर्ष तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१९, तंदु १६)।

मुर अक [लड्] १ विलास करना। २ सक. उत्पीडन करना। ३ जीभ चलाना। ४ उपक्षेप करना। ५ व्याप्त करना। ६ बोलना। ७ फेंकना। मुरइ (प्राकृ ७३)।

मुर अक [स्फुट्] खीलना। मुरइ (हे ४, ११४, षड्)।

मुर पु [मुर] दैत्य विशेष। °रिउ पु [°रिपु] श्रीकृष्ण (ती ३)। °वेरिअ पु [°वैरिन्] वही अर्थ (कुमा)। °ारि पु [°ारि] वही अर्थ (वज्जा १५४)।

मुरई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ६, १३५)।

मुरज } पु [मुरज] मृदंग, वाद्य-विशेष (कप्प,
मुरय } पाअ, गा २५३, सुपा ३९३, अत, धर्मवि ११२, कुप्र २८८, औप, उप पृ २३६)। देखो मुरव।

मुरल पु.ब. [मुरल] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश, 'दिअर ण दिट्ठा तुए मुरला' (गा ८७६)।

मुरव देखो मुरय (औप, उप पृ २३६)। २ अंग-विशेष, गल-घण्टिका (औप)।

मुरवि स्त्री [दे मुरजिन्] आभरण-विशेष (औप)।

मुरिअ वि [स्फुटित] खीला हुआ (कुमा)।

मुरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ (दे ६, १३५)। २ मुड़ा हुआ, वक्र बना हुआ (सुपा ५४७)।

मुरिअ पु [मौर्य] १ प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (उप २११ टी)। २ मौर्य वंश में उत्पन्न, 'रायगिहे मू(? मु)रियबलभद्दे' (विसे २३५७)।

मुरुंड पु [मुरुण्ड] १ अनार्य देश-विशेष (इक, पव २७४)। २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा (पिंड ४९४, ४९८)। ३ पुस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री °डी (इक)।

मुरुंढि स्त्री [दे] पक्वान्न-विशेष (सण)।

मुरुक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख (हे २, ११२, कुमा, सुपा ६११, प्राकृ ९७)।

मुरुमुड ु [दे] जूट, केशों की लट (दे ६, ११७)।

मुरुमुरिअ न [दे] रणरणक, उत्सुकता (दे ६, १३६, पाअ)।

मुरुह देखो मुरुक्ख (षड्)।

मुलासिअ पुं [दे] स्फुलिंग, अग्नि-कण (दे ६, १३५)।

मुल्ल (अप) देखो मुंच। मुल्लइ (प्राकृ ११६)।

मुल्ल } पुन [मूल्य] कीमत, 'को मुल्लो'
मुल्लिअ } (वज्जा १५२, औप, पाअ, कुमा, प्रयौ ७७)।

मुव (अप) देखो मुअ = मुच्। मुवइ (भवि)।

मुव्वह देखो उव्वह = उद् + वह्। मुव्वहइ (हे २, १४७)।

मुस सक [मुष्] चोरी करना। मुसइ (हे ४, २३६, सार्ध ६२)। भवि. मुसिस्सइ (धर्मवि ४)। कर्म. मुसिज्जामो (पि ४५५)। वकृ मुसत (महा)। कवकृ मुसिज्जत, मुसिज्जमाण (सुपा ४५०, कुप्र २४७)। संकृ मुसिऊण (स ६६३)।

मुसढि देखो मुसुढि (सम १३७, पण्ह १, १—पत्र ८, उत्त ३६, १००, पण्ण १—पत्र ३५)।

मुसण न [मोषण] चोरी (सार्ध ६०, धर्मवि ५६)।

मुसल पुन [मुसल] १ मूसल या मूसर, एक प्रकार की मोटी लकडी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते है (औप, उवा, षड्, हे १,११३)। २ मान-विशेष (सम ६८)। °धर पु [°धर] बलदेव (कुमा)। °उह पु [°ायुध] बलदेव (पाअ)।

मुसल वि [दे] मासल, पुष्ट (षड्)।

मुसलि पुं [मुसलिन्] बलदेव (दे १, ११८, सण)।

मुसली देखो मोसली (ओघभा १६१)।

मुसह न [दे] मन की आकुलता (दे ६, १३४)।

मुसा अ. स्त्री [मृषा] मिथ्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण (उवा, षड्, हे १, १३६, कस), 'अयाणता मुस वए' (सूअ १, १, ३, ८, उव)। °वाद देखो °वाय (सूअ १, ३, ४, ८)। °वादि वि [°वादिन्] झूठ बोलनेवाला (पण्ह १, २, आचा २, ४, १, ८)। °वाय पु [°वाद] झूठ बोलना, असत्य भाषण (सम १०, भग, कस)।

मुसाविअ वि [मोषित] चुरवाया हुआ, चोरी कराया हुआ (ओव २६० टी)।

मुसिय वि [मुषित] चुराया हुआ (सुपा २२०)।

मुसुढि पुस्त्री [दे] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (ओप)। २ वनस्पति-विशेष (उत्त ३६, १००, सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [भञ्ज] भागना, तोडना। मुसुमूरइ (हे ४, १०६)। हेकृ. 'तेसिं च केसमवि मुसुमु[? सुमू]रिउमसमत्थो' (सम्मत्त १२०)।

मुसुमूरण न [भञ्जन] तोडना, खण्डन (सम्मत्त १८७)।

मुसुमूराविअ वि [भञ्जित] भँगाया हुआ (सम्मत्त ३०)।

मुसुमूरिअ वि [भग्न] भागा हुआ (पाअ, कुमा, सण)।

मुह देखो मुज्झ, 'इय मा मुहसु मणेण' (जीवा १०)। संकृ मुहिअ (पिंग)। कवकृ मुहिज्जत (से ११, १००)।

मुह न [मुख] १ मुँह, वदन (पाअ, हे ३, १३४, कुमा, प्रासू १६)। २ अग्र भाग (सुज ४)। ३ उपाय (उत्त २५, १६, सुख २५, १६)। ४ द्वार, दरवाजा। ५ आरम्भ। ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष। ७ नाक आदि का शब्द-विशेष। ८ आद्य, प्रथम। ९ प्रधान, मुख्य। १० शब्द, आवाज। ११ नाटक। १२ वेद-शास्त्र (प्राप्र, हे १, १८७)। १३ प्रवेश (निचू ११)। १४ पु. वृक्ष-विशेष, बडहल का गाछ (सुज १०, ८)। °णतग, °णतय न [°ानन्तक] मुख-वस्त्रिका (ओघभा १५८, पव २)। °तूरय न [°तूर्य] मुह से बजाया जाता वाद्य (भग)। °धोवणिया स्त्री [°धावनिका] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि, 'मुहधोवणिय खिप्प उवणमेहि' (उप ६४८ टी)। °पत्ती स्त्री [°पत्री] मुख-वस्त्रिका (उवा, ओघ ६६६, द्र ५८)। °पुत्तिया, °पोत्तिया, °पोत्ती स्त्री [°पोतिका] मुख-वस्त्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड (सबोध ५, विपा १, १, पव १२७)। °फुल्ल न [°फुल्ल] १ बडहल का फूल। २ चित्रा-नक्षत्र का संस्थान (सुज १०, ८)। °भंडग न [°भाण्डक] मुखाभरण (औप)। °मंगलिय, °मंगलीअ वि [°माङ्गलिक] मुँह से पर-प्रशंसा करनेवाला, खुशामदी (कप्प, औप, सूअ १, ७, २५)। °मक्कडा, °मक्कडिया स्त्री [°मर्कटा, °टिका] गला पकड कर मुँह को मोडना, मुख-वक्रीकरण (सुर १२, ६७, णाया १, ८—पत्र १४४)। °वंत वि [°वत्] मुँहवाला (भवि)। °वड पु [°पट] मुँह के आगे रखने का वस्त्र (से २, २२, १३, ५६)। °वडण न [°पतन] मुँह से गिरना (दे ६, १३६)। °वण्ण पु [°वर्ण] प्रशंसा, खुशामद (निचू ११)। °वास पु [°वास] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनानेवाला पदार्थ (उवा ४२, उर ८, ५)। °वीणिया स्त्री [°वीणिका] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह से वाद्य का शब्द करना (निचू ५)। °हड देखो मुहल। °सय न [°शय] एक नगर (ती १५)।

मुहत्थडी स्त्री [दे] मुँह से गिरना (दे ६, १३६)।

मुहर देखो मुहल = मुखर (सुपा २२८)।

मुहरिय वि [मुखरित] वाचाल बना हुआ, आवाज करता (सुर ३, ५४)।

मुहरोमराइ स्त्री [दे] भ्रू, भौं (दे ६, १३६, षड्, १७३)।

मुहल न [दे] मुख, मुँह (दे ६,१३४, षड्)।

मुहल वि [मुखर] १ वाचाट, बकवादी (गा ५७८, सुर ३, १८, सुपा ४)। २ पु काक, कौआ। ३ शंख (हे १, २५४, प्राप्र)। °रव पु [°रव] तुमुल, कोलाहल (पाअ)।

मुहा अ स्त्री [मुधा] व्यर्थ, निरर्थक (पाअ, सुर ३, १, धर्मसं ११३२, श्रा २८, प्रासू ६), 'मुहाइ हारिंति अप्पाणं' (सबोध ४६)। °जीवि वि [°जीविन्] भिक्षा पर निर्वाह करनेवाला (उत्त २५, २८)।

मुहिअ न [दे] मुफत, बिना मूल्य, मुफत मे करना (दे ६, १३४)।

मुहिआ स्त्री [दे मुधिका] ऊपर देखो (दे ६, १३४, कुमा, पाअ), 'ते सव्वेवि हु कुमरस्स

तस्स मुहिआइ सेवगा जाया' (सिरि ४५७), 'जिणनासणेपि कहमवि लद्धु हारेसि मुहियाए' (सुपा १२८), 'मुह (? हि) याइ गिएह लक्ख' (कुप्र २३७)।

मुहु } अ [मुहुस्] बार बार (प्रासू २६, मुहू } हे ८, ४८८, पि १८१)।

मुहुत्त } पुन [मुहूर्त्त] दो घडी का काल, मुहुत्ताग } अड़तालीस मिनिट का समय (ठा २, ४, हे २, ३०, ओप, भग, कप्प, प्रासू १०५, इक, स्वप्न ६८, आचा, ओघ ५२१)।

मुहुमुहु देखो महुमुहु (पाअ)।

मुहुल देखो मुहल = मुखर (पाअ)।

मुहुल्ल देखो मुद्ध = मुग्ध (हे २, १६४, षड्, भवि)।

मूअ देखो मुक्क = मूक (हे २, ९९, आचा, गउड, विपा १, १)।

मूअ देखो मुअ = मृत, 'लज्जाइ कह ण मूओ सेवंतो गामवाहलिय' (वज्जा ५४)।

मूअल } वि [दे मूक] मूक, वाक्-शक्ति मूअल्ल } से हीन (दे ६, १३७, सुर ११, १५८)।

मूअल्लइअ } वि [दे. मूकायित] मूक बना मूअल्लिअ } हुआ (से ५, ४१, गउड, पि ५९५)।

मूइंगलिया } देखो मुइंगलिया (उप १३४ मूइंगा } टी, ओघ ५५८)।

मूइल्लअ } वि [मृत] मरा हुआ, मूयल्लिअ }

> 'एणिह वारेइ जणो तइआ
> मूअल्लओ, कहिं व गओ।
> जाह विस व जाअ
> सव्वगपहोलिर पेम्म'
> (गा ६६६ अ)।

मूड } पु [दे] अन्न का एक दीर्घ परिमाण, मूढ } 'दुगमूढलक्खमत्तयमवि धन्न अत्थि तायगिहे' (सुपा ४२७) 'तो तेहि ताडिओ सो गाढं कणमूढव्व लउडेहि' (धर्मवि १८०)।

मूढ वि [मूढ] मूर्ख, मुग्ध (प्राप्र, कस, पउम १, २८, महा, प्रासू २६)। °नइय न [°नयिक] श्रुत विशेष, शास्त्र-विशेष (प्रावम)। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष (सुपा १३)।

मूण न [मौन] चुप्पी (स ४७७, पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

मूयग पु [दे मूयक] मेवाड देश मे प्रसिद्ध एक प्रकार का तृण (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

मूर सक [भञ्ज्] भांगना, तोडना। मूरइ (हे ४, १०६)। भूका मूरीअ (कुमा)।

मूरग वि [भञ्जक] भागनेवाला, चूरनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [मूल] १ जड (ठा ६, गउड, कुमा, गा २३२)। २ निबन्धन, कारण (पण्ह १, ३—पत्र ४२)। ३ आदि, आरम्भ (पण्ह २, ४)। ४ आद्य कारण (आचानि १, २, १—गाथा १७३, १७४)। ५ समीप, पास, निकट (ओघ ३८४, सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२३)। ७ व्रतो का पुन स्थापन (ओप, पचा १६, २१)। ८ पिप्पली-मूल (आचानि १, २, १)। ९ वशीकरण आदि के लिए किया जाता ओपधि-प्रयोग, 'अमतमूल वसीकरण' (प्रासू १४)। १० आद्य, प्रथम, पहला। ११ मुख्य (सबोध ३, श्रावम, सुपा ३६४)। १२ मूलधन, पुजी (उत्त ७, १४, १५)। १३ चरण, पेर। १४ सूरण, कन्द-विशेष, ओल। १५ टीका आदि से व्याख्येय ग्रन्थ (सक्षि २१)। १६ प्रायश्चित्त-विशेष (विसे १२४६)। १७ पुन कन्द-विशेष, मूली (अनु ६, श्रा २०)। °छेज्ज वि [°छेद्य] मूल नामक प्रायश्चित्त से नाश-योग्य (विसे १२४६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] कृष्ण-पुत्र शाम्ब की एक पत्नी (अत १५)। °देव पु [°देव] व्यक्ति वाचक नाम, (महा, सुपा ५२६)। °देवी स्त्री [°देवी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)। °नायग पु [°नायक] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओ मे मुख्य प्रतिमा (सबोध ३)। °प्पाडि वि [°उत्पाटिन्] मूल को उखाडनेवाला (सक्षि २१)। °बिंब न [°बिम्ब] मुख्य प्रतिमा (सबोध ३)। °राय पु [°राज] गुजरात का चोलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा (कुप्र ४)। °वत वि [°वत्] मूलवाला (ओप, णाया १, १)। °सिरि स्त्री [°श्री] शाम्ब-कुमार की एक पत्नी (अत १५)।

मूलग } न [मूलक] १ कन्द-विशेष, मूली, मूलय } मुरई (पण्ण १, जी १३)। २ शाक-विशेष (पव १५४, कुमा)।

मूलगत्तिआ स्त्री [मूलगतिका] मूले—मूली की पतली फाक (दस ५, २, २३)।

मूलवेलि स्त्री [दे मूलवेलि] घर के छप्पर का आधार-भूत-स्तम्भ-विशेष (आचा २, २, ३, १ टी, पव १३३)।

मूलिगा स्त्री [मूलिका] ओपधि विशेष (उप ६०३)।

मूलिय न [मौलिक] मूलधन, पुजी (उत्त ७, १६, २१)।

मूलिल्ल वि [मूल, मौलिक] प्रधान, मुख्य 'मूलिल्लवाहणे' (सिरि ४२३)।

मूलिल्ल वि [मूलवत्] मूलधनवाला, पुजी-वाला, 'अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयलनामा सत्थवाहपुत्तो' (महा)।

मूली स्त्री [मूली] ओपधि-विशेष, वशीकरण आदि के कार्य मे लगती ओपधि (महा)।

मूस देखो मुस = मुष्। मूसइ (सक्षि ३६)।

मूसग } पु [मूषक, मूषिक] मूसा, चूहा मूसय } (उव, सुर १, १८, हे १, ८८, षड्, कुमा)।

मूसरि वि [दे] भग्न, भाँगा हुआ (दे ६, १३७)।

मूसल वि [दे] उपचित (दे ६, १३७)।

मूसल देखो मुसल = मुसल (हे १, ११३, कुमा)।

मूसा देखो मुसा (हे १, १३६)।

मूसा स्त्री [मूषा] मूस, धातु गालने—गलाने का पात्र (कप्प, आरा १००, सुर १३, १८०)।

मूसा स्त्री [दे] लघु द्वार, छोटा दरवाजा (दे ६, १३७)।

मूसाअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १३७)।

मूसिय देखो मूसय (आचा)। °ारि पु [°ारि] मार्जार, बिल्ला (आचा)।

मे अ [मे] १ मेरा। २ मुझसे (स्वप्न १५, ठा १)।

मेअ पु [मेद] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ पु स्त्री. चाण्डाल (सम्मत्त १७२)। स्त्री. मेई (सम्मत्त १७२)।

मेअ वि [मेय] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु (उत्त १८, २३)। २ नापने योग्य (षड्)। °न्न वि [°ज्ञ] पदार्थ-ज्ञाता (उत्त १८, २३, सुख १८, २३)।

मेअ पुन [मेदस्] शरीर-स्थित धातु-विशेष, चर्बी (तंदु ३८, णाया १, १२—पत्र १७३, गउड)।

मेअज्ज न [दे] धान्य, अन्न (दे ६, १३८)।

मेअज्ज पुं [मेदार्य] मेदार्य गोत्र में उत्पन्न (सूअ २, ७, ५)।

मेअज्ज पुं [मेतार्य] १ भगवान् महावीर का दसवाँ गणधर (सम १६)। २ एक जैन महर्षि (उव, सुपा ४०६, विवे ४३)।

मेअय वि [मेचक] काला, कृष्ण-वर्ण (गउड ३३६)।

मेअर वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ६, १३८)।

मेअल पु [मेकल] पर्वत-विशेष। °कन्ना स्त्री [°कन्या] नर्मदा नदी (पाअ)।

मेअवाडय पुन [मेदपाटक] एक भारतीय देश, मेवाड़, 'णाव दाहविअ सअलपि मेअ-वाडय हम्मीरवीरेहिं' (हम्मीर २७)।

मेइणि } स्त्री [मेदिनी] १ पृथिवी, धरती
मेइणी } (सुपा ३२, कुमा, प्रासू ५२)। २ चाण्डालिन (सुपा १६, सम्मत्त १७२)। °नाह पु [°नाथ] राजा (उप पृ १८६, सुपा १०८)। °पइ पु [°पति] १ राजा। २ चाण्डाल, 'जो विवुहपणयचरणोवि गोत्तभेई न, मेइणिपईवि न हु मायंगो' (सुपा ३२)। °सामि पु [°स्वामिन्] राजा (उप ७२८ टी)।

मेइणीसर पु [मेदनीश्वर] राजा (उप ७२८ टी)।

मेठ पु [दे] हस्तिपक, महावत (दे ६, १३८)। देखो मिंठ।

मेंठी स्त्री [दे] मेंढी, मेषी गडरिया (दे ६, १३८)।

मेंढ पुस्त्री [मेढ्र] मेढा, मेष, भेड, गाडर (ठा ८, २)। स्त्री. °ढी (दे ६, १३८)। °मुह पु [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °विसाणा स्त्री [°विषाणा] वनस्पति-विशेष, मेढाशिंगी (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो मिढ।

मेखला देखो मेहला (राज)।

मेज्ज न [मेय] मान, तोल, बाट, बटखरा, जिससे मापा जाय वह (अणु १५४)।

मेघ देखो मेह (कुमा, सुपा २०१)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नन्दन वन के शिखर पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °वई स्त्री [°वती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °वाहण पुं [°वाहन] एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६५)।

मेघंकरा स्त्री [मेघङ्करा] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

मेच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ (ओघ २४, औप, उप ७२८ टी, मुद्रा २६७)।

मेज्ज देखो मेअ = मेय (षड्, णाय १, ८—पत्र १३२, श्रा १८)।

मेज्झ देखो मिज्झ (महा ४, ११, ४०, २४)।

मेट देखो मिट। प्रयो मेटाव (पिंग)।

मेडंभ पुं [दे] मृग-तन्तु (दे ६, १३६)।

मेडय पुं [दे] मजला, तला, गुजराती में 'मेडो', 'तस्म य सयणट्ठाण सचारिमकट्ठमेड-यस्सुवरिं' (सुपा ३५१)।

मेड्ढ देखो मेढ (उप पृ २२४)।

मेढ पुं [दे] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करनेवाला (दे ६, १३८)।

मेढक पु [दे] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मेढि पु [मेथि] पशुबन्धन-काष्ठ, खले के बीच का काष्ठ, जहा पशु को बाध कर धान्य-मर्दन किया जाता है (हे १, २१५, गच्छ १, ८, णाया १, १—पत्र ११)। २ आधार, स्तम्भ, 'सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू मेढीभूए' (उवा), 'सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ अ' (श्रा १, कुप्र २६६, सवोध २४)। °भूअ वि [°भूत] १ आधार-सदृश, आधार-भूत (भग)। २ नाभि-भूत, मध्य मे स्थित (कुमा)।

मेणआ } स्त्री [मेनका] १ हिमालय की पत्नी।
मेणका } २ स्वर्ग की एक वेश्या (अभि ४२, नाट—विक्र ४७, पिंग)।

मेत्त न [मात्र] १ साकल्य, सपूर्णता। २ अवधारण, 'भोअणमेत्त' (हे १, ८१)।

मेत्तल [दे] देखो मित्तल (सुर १२, १५२)।

मेत्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (से १, ६, गा २७२, स ७१६, उव)।

मेधुणिया देखो मेहुणिआ (निचू १)।

मेर (अप) वि [मदीय] मेरा (प्राकृ १२०, भवि)।

मेरग पुं [मेरक, मैरेयक] १ तृतीय प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ पुन. मद्य विशेष (उवा, विपा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा; 'उच्छु-मेरंग' (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा स्त्री [दे. मिरा] मर्यादा (दे ६, ११३, पाअ, कुप्र ३३५, अज्झ ६७, सण, हे १, ८७, कुमा, औप)।

मेरा स्त्री [मेरा] १ तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई (पण्ह २, ३—पत्र १२३)। २ दशवें चक्रवर्ती की माता (सम १५२)।

मेरु पुं [मेरु] १ पर्वत-विशेष (उव, प्रासू १५४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मेरु पु [मेरु] पर्वत, कोई भी पहाड (आचा २, १०, २)।

मेल सक [मेलय्] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलति (भवि, पि ४८६)। संकृ. मेलित्ता, मेलिय (पि ४८६, महा)।

मेल पुं [मेल] मेल, मिलाप, सगम, सयोग, मिलन (सूअनि १५, दे ६, ५२, सार्ध १०६), 'दिट्ठो पियमेलगो मए सुविणो' (कुप्र २१०)।

मेलण न [मेलन] ऊपर देखो (प्रासू ३५)।

मेलय पु [मेलक] १ सवन्ध, सयोग (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना (दे ७, ८६, त्रि ८६)।

मेलव सक [मेलय्, मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। मेलवइ (हे ४, २८)। भवि मेलवेहिसि (पि ५२२)। सकृ मेलवि (अप) (हे ४, ४२६)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

मेलाय अक [मिल्] एकत्रित होना, 'पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति' (भग)। सक मेलागित्ता (भग)। कृ मेलाइयव्व (ओघभा २२ टी)।

मेलाव देखो मेलव। मेलावइ (भवि)।

मेलाव पुन [मेल] १ मिलाप, संगम, मिलन (सुपा ४६६), निच्च चिय मेलाव सुमग्गनिरयाण अइदुलहं' (सट्ठि १४३)।

मेलावग देखो मेलग (आवनि १६)।

मेलावड (अप) देखो मेलय, 'मणवल्लहमेलावडउ पुन्नेहि लब्भइ एहु' (सिरि ७३)।

मेलावय देखो मेलावग (सुपा ३६१, भवि)।

मेलाविअ वि [मेलित] मिलाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ (से १०, २८)।

मेलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (ठा ३, १ टी—पत्र ११६, महा, उत्त),
'एव सुसीलवंतो असीलवंतेहि मेलिओ संतो।
पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदासाणुसंगए'
(प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [दे] संहति, जन-समूह का एकत्रित होना, मेला (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो मिलीण (पउम २, ६), 'अएणोएणकडक्खंतरपेसिअमेलीणदिट्ठिपसराइं' (गा ६६६, ७०२ अ)।

मेल्ल देखो मिल्ल। मेल्लइ (हे ४, ९१), मेल्लेमि (कुप्र १६)। वकृ मेल्लंत (महा)। सकृ मेल्लिउं, मेल्लेप्पिणु (अप) (हे ४, ३५३, पि ५८८)। कृ मेल्लियव्व (उप ५५५)।

मेल्लण न [मोचन] छोडना, परित्याग (प्रासू १०२)।

मेल्लाविय वि [मोचित] छुडवाया हुआ (सुर ८, ६८, महा)।

मेव देखो एव (पि ३३६)।

मेवाड } देखो मेअवाडय (ती १५, मोह मेवाड } ८८)।

मेस पु [मेष] १ मेंढा, भेड, गाडर (सुर ३, ५३)। २ राशि विशेष (विचार १०६, सुर ३, ५३)।

मेह पु [मेघ] १ अभ्र, जलधर (ओप)। २ कालागुरु, सुगंधी धूप-द्रव्य विशेष (से ६, ४६)। ३ भगवान् सुमतिनाथ का पिता (सम १५०)। ४ एक जैन महर्षि (अंत १८)। ५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाया १, १—पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। ८ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। ९ एक जैनमुनि (कप्प)। १० देश-विशेष (राज)। ११ मुस्तक, ओषधि-विशेष, मोथा। १२ एक राक्षस। १३ राग-विशेष (प्राप्र, हे १, १८७)। १४ एक विद्याधर-नगर (इक)। °कुमार पु [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाया १, १, उव)। °ज्झाण पु [°ध्यान] राक्षसवंश का एक राजा, एक लंकापति (पउम ५, २६६)। °णाअ पुं [°नाद] रावण का एक पुत्र (से १३, ९०)। °पुर न [°पुर] वेताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर (पउम ६, २)। °मुह पु [°मुख] १ देव-विशेष (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप। ३ अन्तर्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °रव न [°रव] विन्ध्यस्थली का एक जैन तीर्थ (पउम ७७, ६१)। °वाहण पु [°वाहन] १ राक्षस वंश का आदि पुरुष, जो लंका का राजा था (पउम ५, २५१)। २ रावण का एक पुत्र (पउम ८, ६४)। °सीह पु [°सिंह] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। देखो मेव।

मेह पु [मेह] १ सेचन (सूअ १, ४, २, १२)। २ रोग विशेष, प्रमेह (श्रा २०, सुख १, १५)।

मेहंकरा देखो मेघंकरा (इक)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी (दे ६, १३९)।

मेहण न [मेहन] १ झरन, टपकना। २ प्रस्रवण, मूत्र, 'महुमेहण (आचा १, ६, १, २)। ३ पुरुष-लिंग (राज)।

मेहणि वि [मेहनिन्] झरनेवाला (आचा)।

मेहर पु [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया (दे ६, १२१, सुर १५, १९८)।

मेहरि पुस्त्री [दे] काष्ठ-कीट, घुन (जी १५)।

मेहरिया } स्त्री [दे] गानेवाली स्त्री (सुपा मेहरी } ३९४)।

मेहलय पु व. [मेखलक] देश-विशेष (पउम ९८, ६६)।

मेहला स्त्री [मेखला] काञ्ची, करधनी (पाअ, पण्ह १, ४, ओप, गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्त्री [मेखलिया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

मेहा स्त्री [मेघा] एक इद्राणी, चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)।

मेहा स्त्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा (सम १२५, से १, १६, हास्य १२५)। °अर वि [°कर] १ बुद्धि-वर्धक। २ पु छन्द विशेष (पिंग)।

मेहा स्त्री [मेधा] अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७४)।

मेहावई देखो मेघ वई (इक)।

मेहावण्ण न [मेघावर्ण] एक विद्याधर-नगर (इक)।

मेहावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ (ठा ५, ३, णाया १, १, आचा, कप्प, ओप, उप १६२ टी, कुप्र १४०, धर्मवि ९८)। स्त्री °णी (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो मेढि (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करनेवाला, 'महुमेहिण' (आचा)।

मेहिय न [मेधिक] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मेहिल पु [मेधिल] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि (भग)।

मेहुण } न [मैथुन] रति-क्रिया, संभोग मेहुणय } (सम १०, पण्ह १, ४, उवा, ओप, प्रासू १७९, महा)।

मेहुणय पु [दे] फूफा का लडका (दे ६, १४८)।

मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लडका (बृह ४)।

मेहुणिआ स्त्री [दे] १ साली, भार्या की बहिन (दे ६, १४८)। २ मामा की लडकी (दे ६, १४८, बृह ४)।

मेहुन्न देखो मेहुण, 'हिंसालियचोरिक्के मेहुन्नपरिग्गहे य निसिभत्ते' (ओघ ७८७)।

मेरेअ न [मैरेय] मद्य-विशेष (माल १७७)।

मो अ इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (सूअनि ८९, श्रावक १२५)। २ पाद-पूर्ति (पउम १०२, ८९, धर्मसं ६४५, श्रावक ९०)।

मोअ सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मोअइ (प्राक् ७०; ११६)। वकृ मोअंत (से ८, ६१)।

मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना, त्याग कराना। मोअअदि (शौ) (नाट—मालवि ४१)। कवकृ मोइज्जंत (गा ६७२)।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी (रयण १५, महा, भवि)।

मोअ वि [दे] १ अधिगत। २ पु. चिर्भट आदि का बीजकोश (दे ६, १४८)। ३ मूत्र, पेशाव (सूअ १, ४, २, १२, पिंड ४६८, कस, पभा १५)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] प्रस्रवण-विषयक नियम-विशेष (ठा ४, २—पत्र ६४, औप, वव ६)।

मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष, 'सल्लइ-मोयइमालुयवउलपलासे करजे य' (पएण १—पत्र ३१)।

मोअग वि [मोचक] मुक्त करनेवाला (सम १, पडि, सुपा २३४)।

मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिष्टान्न-विशेष (अत ६, सुपा ४०६)। देखो मोदअ।

मोअण न [मोचन] नीचे देखो (स ५७५, गउड)।

मोअणा स्त्री [मोचना] १ परित्याग (श्रावक ११५)। २ मुक्ति, छुटकारा (सूअ १, १४, १८)। ३ छुड़वाना, मुक्त कराना (उप ५१०)।

मोअय देखो मोअग (भग, पउम ११५, ६, सुपा ४०६, नाट—विक २१)।

मोआ स्त्री [मोचा] कदली वृक्ष, केला का गाछ (राज)।

मोआव सक [मोचय्] छुड़वाना। मोआ-वेमि, मोआविहि (नाट—शकु २५, मृच्छ ३१६)। भवि. मोआवइस्ससि (पि ५२८)। कर्म. मोयाविज्जइ (कुप्र २६१)। वकृ मोयावंत (सुपा १८६)।

मोआवण न [मोचन] छुटकारा कराना (सिरि ६१८, स ४७)।

मोआविअ } वि [मोचित] छुड़वाया हुआ
मोइअ } (पि ५५२, नाट—मृच्छ ८६, सुर १०, ६, सुपा ४७७, महा, सुर २, ३६, ६, ७८, सुपा २३२, भवि)।

मोइल पु [दे] मत्स्य-विशेष (नाट)।

मोंड देखो मुंड = मुण्ड (हे १, ११६, २०२)।

मोक पु [मोक] सर्प-कंचुक, साँप का केंचुल।

मोकल्ल सक [दे] भेजना, गुजराती मे 'मोकलवु', मराठी मे 'मोकलणें'। मोकल्लइ (भवि)।

मोक्क देखो मुक्क = मुक्त (षड्)।

मोक्कणिआ } स्त्री [दे] कृष्ण कर्णिका, कमल
मोक्कणी } का काला मध्य भाग (दे ६, १४०)।

मोक्कल देखो मोकल्ल, 'नियपियर भणसु तुम मोक्कलइ जेण सिग्घपि' (सुपा ६१२)।

मोक्कल देखो मुक्कल (सुपा ५८०, हे ४, ३६६)।

मोक्कलिय वि [दे] १ प्रेषित, भेजा हुआ (सुपा ५२१)। २ विसृष्ट (सुपा १४०)।

मोक्ख देखो मुक्ख = मोक्ष (ओप, कुमा, हे २, १७६, उप २६४ टी, भग, वसु)।

मोक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख (उप ५५५)।

मोक्ख न [दे] वनस्पति-विशेष (सूअ २, २, ७)।

मोक्खण न [मोक्षण] मुक्ति, छुटकारा (स ४१८, सुर २, १७)।

मोग्गड पु [दे] व्यन्तर-विशेष (सुपा ४०८)। देखो मुग्गड।

मोग्गर पु [दे] मुकुल, कलिका, बौर (दे ६, १३६)।

मोग्गर पु [मुद्गर] मुगरा, मोगरी। २ कमरख का पेड़ (हे १, ११६, २, ७७)। ३ पुष्पवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ (पएण १—पत्र ३२)। ४ देखो मुग्गर। °पाणि पु [°पाणि] एक जैन महर्षि (अंत १८)।

मोग्गरिअ वि [दे] संकुचित, मुकुलित (दे ६, १३६ टी)।

मोग्गलायण } न [मौद्गलायन, °ल्या°]
मोग्गल्लायण } १ गोत्र-विशेष (इक, ठा ७, सुज्ज १०, १६)। २ पुस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मोग्गाह देखो मुग्गाह। मोग्गाहइ (?) (धात्वा १४६)।

मोघ देखो मोह = मोघ, 'मोघमणोरहा' (पएह १, ३—पत्र ५५)।

मोच देखो मोअ = मोचय्। सकृ मोचिअ (अभि ४७)।

मोच न [दे] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता (दे ६, १३६)।

मोच देखो मोअ = (दे) (सूअ १, ४, २, १२)।

मोचग देखो मोअग = मोचक (वसु)।

मोट्टाय अक [रम्] क्रीडा करना। मोट्टायइ (हे ४, १६८)।

मोट्टाइअ न [रत] रति-क्रीडा, रत, मैथुन (कुमा)।

मोट्टाइअ न [मोट्टायित] चेष्टा-विशेष, प्रिय-कथा आदि मे भावना से उत्पन्न चेष्टा (कुमा)।

मोट्टिम न [दे] बलात्कार (पि २३७)। देखो मुट्टिम।

मोड सक [मोटय्] १ मोड़ना, टेढ़ा करना। २ भाँगना। मोडसि (सुर ७, ६)। वकृ. मोडत, मोडित, मोडयंत (भवि, महा, स २५७)। कवकृ मोडिज्जमाण (उप पृ ३४)। सकृ. मोडेउ (सुपा १३८)।

मोड पु [दे] जूट, लट (दे ६, ११७)।

मोडग वि [मोटक] मोडनेवाला (पएह १, ४—पत्र ७२)।

मोडण न [मोटन] मोडन, मोडना (वज्जा ३८)।

मोडणा स्त्री [मोटना] ऊपर देखो (पएह १, ३—पत्र ५३)।

मोडिअ वि [मोटित] १ भग्न, भाँगा हुआ (गा ५४६, णाया १, ६—पत्र १५७, पएह १, ३—पत्र ५३)। २ आम्रेडित, मोड़ा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८, स ३३५)।

मोढ पु [मोढ] एक वणिक्-कुल (कुप्र २०)।

मोढेरय न [मोढेरक] नगर-विशेष (दे ६, १०२, ती ७)।

मोण न [मौन] मुनिपन, वाणी का सयम, चुप्पी (औप, सुपा २३७, महा)। °चर वि [°चर] मौन व्रतवाला, वाणी का सयम-वाला, वाचयम (ठा ५, १—पत्र २९६,

पएह २, ?—पत्र १००)। °पय न [°पद] संयम, चारित्र (सूत्र १, १३, ६)।

मोणावणा स्त्री [दे] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण (उप ७६८ टी)।

मोणि वि [मौनिन्] मौनवाला (उव, सुपा १८, सत्रोध २१)।

मोत्त देखो मुत्त = मुक्त (धर्मसं ७५)।

मोत्तव्व देखो मुंच।

मोत्ता देखो मुत्ता (से ७, २५, सक्षि ४, प्राकृ ६, षड् ८०)।

मोत्ति देखो मुत्ति = मुक्ति (पएह १, ५—पत्र ६८)।

मोत्तिअ देखो मुत्तिअ (गा ३१०, स्वप्न ६३, औप, सुपा २३१, महा, गउड)। °दाम न [°दाम] छन्द-विशेष (पिंग)।

मोत्तुआण, मोत्तु, मोत्तूण } देखो मुंच = मुच्।

मोत्थ देखो मुत्थ (जी ६, सक्षि ८, पि १२५, प्रामा)।

मोदअ देखो मोअग = मोदक (स्वप्न ६०)। २ न छन्द-विशेष (पिंग)।

मोब्भ [दे] देखो मुब्भ (दे ८, ४)।

मोर पु [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोर पु [मोर] १ पक्षि विशेष, मयूर (हे १, १७१, कुमा)। २ छन्द विशेष (पिंग)। °बंध पु [°बन्ध] एक प्रकार का बन्धन (सुपा ३८५)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक महौषधि (ती ५)।

मोरउल्ला, मोरुल्ला } अ. मुधा, व्यर्थ (हे २, २१४, कुमा, चउप्पन्न० पत्र—७७, सुमतिजिन-चरित्र)।

मोरंड पुं [दे] तिल आदि का मोदक, खाद्य-विशेष (राज)।

मोरग वि [मायूरक] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न (आचा २, २, ३, १८)।

मोरत्तय पु [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोरिय पु [मौर्य] १ एक क्षत्रिय-वंश। २ मौर्य वंश में उत्पन्न (पि १३४)। °पुत्त पु [°पुत्र] भगवान् महावीर का एक गणधर—प्रधान शिष्य (सम १६)।

मोरी स्त्री [मोरी] १ मयूर पक्षी की मादा, मोरनी (पि १६६, नाट—मृच्छ १८)। २ विद्या-विशेष (सुपा ४०१)।

मोलग पु [दे मौलक] बाँधने के लिए गाडा हुआ खूँटा (उव)।

मोलि देखो मउलि (काल, सम १६)।

मोल्ल देखो मुल्ल (हे १, १२४, उव, उप पृ १०४, णाया १, १—पत्र ६०, भग)।

मोस पु [मोष] १ चोरी। २ चोरी का माल, 'राया जणइ मोसं एंति अप्पसु' (सुप्प २२१, महा)।

मोस पुन [मृषा] झूठ, असत्य भाषण, 'चउव्विहे मोसे पएणत्ते', 'दसविं मोसे पएणत्ते' (ठा ४, १, १०, औप, कप्प)।

मोसग वि [मोषक] चोरी करनेवाला (कुप्र ४७)।

मोसलि, मोसली } स्त्री [दे मुशली, मौशली] वस्त्रादि निरीक्षण का एक दोष, वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुसल की तरह ऊँचे या नीचे भीत आदि का स्पर्श करना, प्रतिलेखना का एक दोष, 'वज्जेयव्वा य मोसली तइया' (उत्त २६ २६, २५, ओघ २६५, २६६)।

मोसा देखो मुसा (उवा, हे १, १३६)।

मोह सक [मोहय्] १ भ्रम में डालना। २ मुग्ध करना। मोहइ (भवि)। वकृ. मोहंत, मोहेंत (पउम ४, ८६, ११, ६६)। कृ देखो मोहणिज्ज।

मोह देखो मऊह (हे १, १७१, कुमा, कुप्र ४३७)।

मोह वि [मोघ] १ निष्फल, निरर्थक (से १०, ७०, गा ८८२), 'मोहाउ पत्थणाए मो पुण सोएइ अप्पाणं' (अज्झ १७५, आत्म १)। क्रिवि 'मोह कओ पयासो' (चेइय ७५०)। २ असत्य, मिथ्या, 'मिच्छा मोह विहलं अलिअ असच्च असब्भूअं' (पाअ)।

मोह पु [मोह] १ मूढता, अज्ञता, अज्ञान (आचा, कुमा, पएण १, १)। २ विपरीत ज्ञान (कुमा २, ५३)। ३ चित्त की व्याकुलता (कुमा ५, ५)। ४ राग, प्रेम। ५ काम-क्रीडा, 'मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं विंति' (प्रासू २८, पएह १, ४)। ६ मूर्छा, बेहोशी (स्वप्न ३१, स ६६६)। ७ कर्म-विशेष मोहनीय कर्म (कम्म ४, ६०, ६६)। ८ छन्द-विशेष (पिंग)।

मोहण न [मोहन] १ मुग्ध करना। २ मन्त्र आदि से वश करना (सुपा ५६६)। ३ मूर्छा, बेहोशी (निसा ६)। ४ वशीकरण, मुग्ध करनेवाला मन्त्रादि-कर्म (सुपा ५६६)। ५ काम का एक बाण। ६ प्रेम, अनुराग (कप्पू)। ७ मैथुन, रति-क्रिया (स ७६०, णाया १, ८, जीव ३)। ८ वि व्याकुल बनानेवाला (स ५५७, ७८४)। ६ मोहक, मुग्ध करनेवाला, 'मोहणं पसूणंपि' (धमवि ६५, सुर ३, २६, कर्पूर २५)।

मोहणिज्ज वि [मोहनीय] १ मोह-जनक। २ न कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत कर्म (सम ६६, भग, श्रत, औप)।

मोहणी स्त्री [मोहनी] एक महौषधि (ती ५)।

मोहर न [मौखर्य] वाचालता, बकवाद (पएह २, ५—पत्र १४८, पुप्फ १८०)।

मोहर वि [मोखर] वाचाट, बकवादी (ठा १०—पत्र ५१२)।

मोहरिअ वि [मौखरिक] ऊपर देखो (ठा ६—पत्र ३७१, औप, सुपा ५२०)।

मोहरिअ न [मौखर्य] वाचालता, बकवाद (उवा, सुपा ५१८)।

मोहि वि [मोहिन्] मुग्ध करनेवाला (भवि)।

मोहणी स्त्री [मोहिनी] छन्द विशेष (पिंग)।

मोहिय वि [मोहित] १ मुग्ध किया हुआ (पएह १, ४, द्र १४)। २ न, निधुवन, मैथुन, रति-क्रीडा (णाया १, ६—पत्र १६५)।

मोहुत्तिय वि [मौहूर्त्तिक] ज्योतिष शास्त्र का जानकार (कुप्र ५)।

मौलिअ देखो मोरिय, 'णियेदेह दाव णदकुल-

णागकुलिसस्स मात्तिअकुलपडिट्ठाविकस्स अज-चाणक्कम्म' (मुद्रा ३०६)।

म्मि अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पिंग)।

म्मिव देखो इव (प्राकृ २६)।

म्हस देखो भस = भ्रश्। म्हसइ (प्राकृ ७६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि मयाराइसद्दसंकलणो एगतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

य

य पु [य] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार (प्राप्र, प्रामा)।

य अ [च] १ हेतु-सूचक अव्यय (धर्मसं ३८५)। २ देखो च = अ (ठा ३, १, ८; पउम ६, ८८, १५, २; श्रा १२; आचा, रंभा, कम्म २, ३३, ४, ६, १०; देवेन्द्र ११, प्रासू २७)।

°य देखो °ज (आचा)।

°य वि [°द] देनेवाला (ओप, राय, जीव ३)।

यउणा देखो जँउणा (संक्षि ७)।

°यच सक [अञ्च्] १ गमन करना। २ पूजा करना। संकृ °यंचिय (ठा ५, १—पत्र ३००)।

°यत वि [यत] प्रयत्नशील, उद्योगी, 'अ-यंते' (सूअ २, २, ६३)।

°यद देखो चद (सुपा २२६)।

°यक्क देखो चक्क, 'दिसा-यक्कं' (पउम ६, ७१)।

°यड देखो तड = तट (गउड)।

°यण देखो जण = जन (सुर १, १२१)।

यणद्दण (अप) देखो जणद्दण, 'तो वि ण देउ यणद्दणउ गोअरीहोइ मणस्सु' (पि १४ टि)।

°यण्ण देखो कण्ण = कर्ण (पउम ६६, २८)।

°यत्तिअ वि [यात्रिक] यात्रा करनेवाला, भ्रमण करनेवाला, 'सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं' (उवा, बृह १)।

यदावि अ [यद्यपि] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात (पचा १४, ३६)।

यन्नोवइय देखो जण्णोवईय (उप ६४८ टी)।

यम देखो जम = यम, 'दो अस्सा दो यमा' (ठा २, ३—पत्र ७७)।

°यर देखो कर = कर (गउड)।

°यल देखो तल = तल (उवा)।

या देखो जा = या, 'सुरनारगा य सम्मद्दिट्ठी जं यंति सुरमणुएसु' (विसे ४३१, कुमा ८, ८)।

याण सक [ज्ञा] जानना। याणइ, याणाइ, याणेइ, याणंति, याणामो, याणिमो (पि ५१०; उव, भग, धर्मवि १७, वै ६३, प्रासू १०२)।

याण देखो जाण = यान (सम २)।

°याल देखो काल (पउम ६, २४३)।

याव (अप) देखो जाव = यावत् (कुमा)।

°यावदट्ठ वि [यावदर्थ] यथेष्ट, जितने की आवश्यकता हो उतना (दस ५, २, २)।

°युत्त देखो जुत्त = युक्त, 'एयम् अयुत्त जम्हा' (अज्झ १६७, रंभा)।

येव } (पे मा) देखो एव (पि ६०,
येव्व } ६५)।

यूचिश (मा) } देखो चिट्ठ = स्था। यूचि-
यूचिश्त (पे) } शदि (शाकारी भाषा) (प्राकृ १०५)। यूचिश्तदि (पे) (प्राकृ १२६)।

य्येव (शो) देखो एव (हे ४, २८०)।

य्येव्व देखो येव (पि ६५)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि यआराइसद्दसंकलणो बत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

र

र पु [र] मूर्धन्य-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (सिरि १६६, पिंग)। °गण पु [°गण] छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध मध्य लघु अक्षरवाले तीन स्वरों का समुदाय (पिंग)।

र अ पाद-पूरक अव्यय (हे २, २१७, कुमा)।

र अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (दसनि २, १५२)।

रइ स्त्री [रति] १ काम-क्रीडा, सुरत, मैथुन (से १, ३२, कुमा)। २ कामदेव की स्त्री (कुमा)। ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग (कुमा, सुपा ५११)। ४ कर्म-विशेष (कम्म २, १०)। ५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या (पव ८)। ६ पु भूतानन्द नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)। °अर, °कर वि [°कर] १ रति-जनक (गा ३२०)। २ पु. पर्वत-विशेष (पएह १, ५, ठा १०, महा)। °कीला स्त्री [°क्रीडा] काम-क्रीडा (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] वही अर्थ (काप्र २०१)। °घर न [°गृह] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह (पि ३६६ ए)। °णाह, °नाह पु [°नाथ] कामदेव (कुमा, सुर ६, ३१)। °पहु पु [°प्रभु] वही अर्थ (कुमा)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] किंनर नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक ठा ४, १—पत्र २०४)। °प्पिय पु [°प्रिय] १ कामदेव (सुपा ७५)। २ एक इन्द्र। ३ किंनर देवों की एक जाति (राज)। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] वानव्यन्तरों के इन्द्र विशेष की एक अग्र महिषी (णाया २—पत्र २५२)। °भवण न [°भवन] कामक्रीडा-गृह (महा)। °मन वि [°मन्] १ राग-जनक। २ पु कामदेव, कन्दर्प (तदु ४६)। °मंदिर न [°मन्दिर] शयन-गृह (पाअ)। °रमण पु [°रमण] कामदेव (सुपा ४, २८६, कप्पू)। °लंभ पुं [°लम्भ] १ सुरत की प्राप्ति। २ कामदेव (स ११, ८)। °वइ पु [°पति] कामदेव (कुमा, सुपा २६२)। °विद्धि स्त्री [°वृद्धि] निद्रा विशेष (पउम ७, १६४)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक राजकन्या (उप ७२८ टी)। °सुहय पु [°सुभग] कामदेव (कुमा)। °सेणा स्त्री [°सेना] किंनरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पत्र २०४)। °हर न [°गृह] शयन गृह, सुरतमन्दिर (उप ६४८ टी, महा)।

रइ पु [रवि] सूर्य, सूरज (गा ३४, से १, १४, ३२, कप्पू)।

रइअ वि [रचित] बनाया हुआ, निर्मित (सुर ४, २४४, कुमा, ओप, कप्प)।

रइअ वि [रचित] महल आदि की पीठ-भित्ति (अणु १५४)।

रइआव सक [रचय्] बनवाना। संकृ रइआविअ (ती ३)।

रइगेल्ल वि [दे] अभिलषित (दे ७, ३)।

रइगेल्ली स्त्री [दे] रति-तृष्णा (दे ७, ३)।

रइज्जंत देखो रय = रचय्।

रइलक्ख न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १३, षड्)।

रइल्लक्ख न [दे. रतिलक्ष] रति-संयोग, मैथुन (दे ७, १३)।

रइल्लिय वि [रजस्वल] रज से युक्त, रजवाला (पि ५६५)।

रइवाडिया देखो राय-वाडिआ, 'नामिय रइवाडियाममग्गो' (सिरि १०६)।

रईसर पुं [रतीश्वर] कामदेव, कन्दर्प (कुमा)।

रउताणिया स्त्री [दे] रोग-विशेष, पामा, खुजली (सिरि ३०६)।

रउद्द देखो रोद्द = रौद्र, 'रउद्दखुद्देहिं असोह-णिज्जो' (वृति ४२, भवि)।

रउरव वि [रौरव] भयंकर, घोर। °काल पु [°काल] माता के उदर में पसार किया जाता समय-विशेष, 'नवमासहिं नियकुच्छिहिं धरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ' (भवि)।

रउस्सल वि [रजस्वल] रजो युक्त, धूलि-युक्त (भग ७, ७—पत्र ३०५)।

रओ° देखो रय = रजस् (पिंड ६ टी, सण)।

रंक वि [रङ्क] गरीब, दीन (पिंग)।

रंखोल अक [दोलय्] १ झूलना। २ हिलना, चलना, काँपना। रंखोलइ (हे ४, ४८, वज्जा ६४)।

रंखोलिय वि [दोलित] कम्पित (गउड)।

रंखोलिर वि [दोलितृ] झूलनेवाला (गउड, कुमा, पाअ)।

रंग अक [रङ्ग्] इधर-उधर चलना। वकृ. रंगत (कप्प, पउम १०, ३१, पएह १, ३—पत्र ५५)।

रंग सक [रञ्जय्] रँगना। कर्म रंगिज्जइ (सबोध १७)। वकृ 'रायगिहं वरनयरं वर-नय-रंगत-मंदिर अत्थि' (कुम्मा १८)।

रंग वि [राङ्ग] रँगा हुआ, रंग कर बनाया हुआ (दसनि २, १७)।

रंग न [दे] राँग, राँगा, धातु-विशेष, सीसा (दे ७, १, से २, २६)।

रंग पुं [रङ्ग] १ राग, प्रेम (सिरि ५१५)। २ नाट्यशाला, प्रेक्षा-भूमि (पाअ, सुपा १, कुमा)। ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि (धर्मसं ७८३)। ४ संग्राम, लड़ाई (पिंग)। ५ रक्त वर्ण, लाली (से २, २६)। ६ वर्ण, रँग (भवि)। ७ रँगना, रंजन, रंग चढ़ाना (गउड)। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक (से ६, ४२)। °विलि स्त्री [°आवलि] रंगोली (चउप्पन्न० पत्र ३२६ गा ७१४)।

रंगण न [रङ्गन] १ राग, रँगना। २ पु. जीव, आत्मा (भग २०, २—पत्र ७७६)।

रंगिर वि [रङ्गितृ] चलनेवाला (सुपा ३)।

रंगिल्ल वि [रङ्गवत्] रँगवाला (उर ६, २)।

रंज सक [रञ्जय्] १ रँग लगाना। २ खुशी करना। रंजए, रंजेइ (वज्जा १३६, हे ४, ४६)। कर्म रंजिज्जइ (महा)। वकृ. रंजंत (सत्त ३)। संकृ रंजिऊण (वि ५८६)। कृ. रंजियव्व (आत्महि ६)।

रंजग वि [रञ्जक] रञ्जन करनेवाला (रंभा)।

रंजण न [रञ्जन] १ रँगना (विसे २६६१)। २ खुशी करना, 'परचित्तरंजणेणं' (उव ६८६

टी, सवे ५)। ३ पु छन्द-विशेष (पिंग)। ४ वि खुशी करनेवाला, रागजनक (कुमा)।

रंजण पु [दे] १ घड़ा, कुम्भ (दे ७, ३)। २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ७, ३, पाग्र)।

रजविय } वि [रञ्जित] राग-युक्त किया
रजिअ } हुआ (सण, से ६, ४८, गउड, महा, हेका २७२)।

रडा स्त्री [रण्डा] रांड, विधवा (उप पृ ३१३, वज्जा ४८ कप्पू पिंग)।

रडुअ न [दे] रज्जु, रस्सी, गुजराती मे 'राटवु' (दे ७, ३)।

रध सक [रध्, राधय्] राधना, पकाना। 'रधो राधयते स्मृत' रधइ (प्राकृ ७०), रधेहि (स २४६)। वकृ रधत (णाया १, ७—पत्र ११७)। सकृ. रधिऊग (कुप्र २०५)।

रंध न [रन्ध्र] छिद्र, विवर (गा ६५२, रभा, भवि)।

रधण न [रन्धन, राधन] राधना, पचन, पाक (गा १८, पव ३८, सूअनि १२१ टी, सुपा १२, ४०१)। °घर न [°गृह] पाक-गृह (रयण ३१)।

रधण न [रन्धन] पाक गृह, रसोईघर (आचा २, १०, १८)।

रप सक [तक्ष्] छिलना, पतला करना। रंपइ (हे ८, १९४, प्राकृ ६५, षड्)।

रंपण न [तक्षण] तनू-करण, पतला करना (कुमा)।

रफ देखो रप। रंफइ, रफए (हे ४, १९४, षड्)।

रफण देखो रपण (कुमा)।

रंभ सक [गम्] जाना, गति करना। रंभइ (हे ४, १६२), रभति (कुमा)।

रभ देखो रफ। रभइ (वात्वा १८६)।

रभ सक [आ + रभ्] आरम्भ करना। रंभइ (षड्)।

रभ पु [दे] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का तख्ता (दे ७, १)।

रभा स्त्री [रम्भा] १ कदली, केला का गाछ (सुपा २५८, ६०५, कुप्र ११७, पाग्र)। २ देवागना-विशेष, एक अप्सरा (सुपा २५४, रयण ५)। ३ वैरोचन नामक वलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२, णाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ८)।

रक्ख सक [रक्ष्] रक्षण करना, पालन करना। रक्खइ (उव, महा)। भूका रक्खीअ (कुमा)। वकृ. रक्खत (गा ३८, ओप, मा ३७)। कवकृ रक्खीअमाण (नाट—मालती २८)। कृ. रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खिअव्व, रक्खेयव्व (से ३, ५, मार्थ १००, गउड, सुपा २४०)।

रक्ख पुन [रक्षस्] राक्षस (पाग्र, कुप्र ११३, सुपा १३०, सट्टि ६ टी, सबोध ४८)।

रक्ख वि [रक्ष] १ रक्षक, रक्षा करनेवाला (उप पृ ३६८, कप्प)। २ पु. एक जैन मुनि (कप्प)।

रक्ख देखो रक्ख = रक्ष्।

रक्खअ } वि [रक्षक] रक्षण-कर्ता (नाट—
रक्खग } मालवि ५३, रंभा, कुप्र २३३, सार्ध ६६)।

रक्खण न [रक्षण] रक्षा, पालन (सुर १३, १६७, गउड, प्रासू २३)।

रक्खणा स्त्री [रक्षणा] ऊपर देखो (उप ८५०, स ६६)।

रक्खणिया स्त्री [दे] रखी हुई स्त्री, रखेलिन, रखनी, रखात (सुपा ३८३)।

रक्खवाल वि [दे] रखवाला, रक्षा करनेवाला (महा)।

रक्खस पु [राक्षस] १ देवो की एक जाति (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यो का एक वंश (पउम ५, २५२)। ३ वंश-विशेष मे उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधरजाति, 'तेण चिय खयराण रक्खसनाम कयं लोए' (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद (से १५, १७, नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र की तीसवां मुहूर्त्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३)। °उरी स्त्री [°पुरी] लका नगरी (से १२, ८४)। °णअरी स्त्री [°नगरी] वही अर्थ (से १२, ७८)। °णाह पु [°नाथ] राक्षसो का राजा (से ८, १०४)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष (पउम ७१, ६३)। °दीव पु [°द्वीप] सिंहल द्वीप (पउम ५, १२६)। °नाह देखो °णाह (पउम ६, ३६)। °वइ पु [°पति] राक्षसो का मुखिया (पउम ५, १२३ मे १२, १)। °हिव पु [°धिप] वही अर्थ (से १५, ८७, ६१)।

रक्खसिंद पु [राक्षसेन्द्र] राक्षसो का राजा (पउम १२, ४)।

रक्खसी स्त्री [राक्षसी] १ राक्षस की स्त्री (नाट—मृच्छ २३८)। २ लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

रक्खसेद देखो रक्खसिंद (से १२, ७७)।

रक्खा स्त्री [रक्षा] १ रक्षण, पालन (श्रा १०, सुपा १०३, ११३)। २ राख, भस्म, 'सो चदण रक्खकए दहिज्जा' (सत्त २८, सुपा ६५७)।

रक्खिअ वि [रक्षित] १ पालित (गउड, गा ३३३)। २ पु एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प, विसे २२८८)।

रक्खिआ देखो रक्खसी (रभा १७)।

रक्खी स्त्री [रक्षी] भगवान् अरनाथ की मुख्य साध्वी (सम १५२, पव ८)।

रक्खोवग वि [रक्षोपग] रक्षण मे तत्पर (राय ११३)।

रगिल्ल [दे] देखो रइगेल्ल (षड्)।

रग्ग देखो रत्त = रक्त (हे २, १०, ८९, षड्)।

रग्गय न [दे] कुसुम्भ-वस्त्र (दे ७, ३, पाग्र, गउड)।

रघुस पु [रघुप] हरिवश का एक राजा (पउम २२, ९९)।

रच्च अक [दे रञ्ज्] राचना, आसक्त होना, अनुराग करना। रच्चइ, रच्चति, रच्चेह (कुमा; वज्जा ११२)। कर्म 'रत्ते रच्चिजए जम्हा' (कुप्र १३२)। वकृ. रच्चत (भवि)। प्रयो. रच्चावति (वज्जा ११२)।

रच्चण न [दे रञ्जन] २ अनुराग। २ वि. अनुराग करनेवाला, राचनेवाला (कुमा)।

रच्चिर वि [दे. रञ्जितृ] राचनेवाला (कुमा)।

रच्छा देखो रक्खा (रंभा १६)।

रच्छा स्त्री [रथ्या] मुहल्ला (गा ११६, ओप, कस)।

रच्छामय पु [दे रथ्यामृग] श्वान, कुत्ता (दे ७, ८)।

रज देखो रय = रजस् (कुमा)।

रजक } पुस्त्री [रजक] धोबी, कपड़ा धोने
रजग } का धन्धा करनेवाला (श्रा १२, दे ५, ३२)। स्त्री. °की (दे १, ११८)।

रजय देखो रअअ = रजत (इक)।

रज्ज अक [रञ्ज्] १ अनुराग करना, आसक्त होना। २ रँगाना, रँग-युक्त होना। रज्जइ (आचा, उव), रज्जह (णाया १, ८—पत्र १४८)। भवि रज्जिहिति (श्रौप)। वकृ रज्जंत, रज्जमाण (से १०, २०, णाया १, १७, उत्त २६, ३)। कृ रज्जियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

रज्ज न [राज्य] १ राज, राजा का अधिकृत देश। २ शासन, हुकूमत (णाया १, ८, कुमा, द ४७, नाग, प्रासू)। °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि शाखा (कप्प)। °वइ पु [°पति] राजा (कप्प)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य लक्ष्मी (महा)। °हिसेअ पुं [°भिषेक] राजगद्दी पर बैठाने का उत्सव (पउम ७७, ३६)।

रज्ज पुन नीचे देखो, 'वररज्जवेसु वद्धा' (पउम ३९, ११६)।

रज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी (पात्र, उवा)। २ एक प्रकार की नाप, 'चउदसरज्जू लोगो' (पव १४३)।

रज्जु वि [दे] लेखक, लिखने का काम करनेवाला (कप्प)। °सभा स्त्री [°सभा] १ लेखक गृह। २ शुल्क-गृह, चुंगी-घर, 'हत्थिपालस्स रण्णो रज्जुसभाए' (कप्प)।

रज्झिअ देखो रहिअ = रहित, 'अरज्झिया-भिनावा तहयी तवित्ति' (सूत्र १,५,१,१७)।

रट्ठ न [राष्ट्र] देश, जनपद (सुपा २०७, महा)। °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबेदार (विपा १, १ टी—पत्र ११, विपा १, १—पत्र ११)।

रट्ठिअ वि [राष्ट्रिय] १ देश-सम्बन्धी। २ पु नाटक की भाषा में राजा का साला (अभि १९४)।

रट्ठिअ पु [राष्ट्रिक] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबेदार (पण्ह १, ५—पत्र ९४)।

रड अक [रट्] १ रोना। २ चिल्लाना। रडइ (भवि)। वकृ रडंत (हे ४, ४४५, भवि)।

रडण न [रटन] चिल्लाहट, चीख (पिंड २२५)।

रडिय न [रटित] १ रुदन, रोना (पण्ह २, ५)। २ आवाज करना, शब्द-करण, 'परहुय-बहुय रडिय कुहूकुहूमहुरसद्देण' (रंभा)। ३ चिल्लाना, चीख (णाया १,१—पत्र ६३)। ४ वि कलहायित, झगड़ालू, झगड़ाखोर, 'कलहाइअं रडिअं' (पात्र)।

रडरडिय न [रटरटित] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष की आवाज (सुपा ५०)।

रड्डु वि [दे] खिसक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रडेलु' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [रड्डा] छन्द विशेष (पिंग)।

रण पुन [रण] १ संग्राम, लड़ाई (कुमा, पात्र)। २ पु शब्द, आवाज (पात्र)। °खंभउर न [°स्तम्भपुर] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर, 'रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०९०१)।

रणक्कार पु [रणत्कार] शब्द-विशेष (गउड)।

रणझण अक [रणझणाय्] 'रन् झन्' आवाज करना। रणझणइ (वज्जा १२८)। वकृ रणझणंत (भवि)।

रणझणिर वि [रणझणायितृ] 'रन् झन्' आवाज करनेवाला (सुपा ६४१, धमवि ८८)।

रणरण अक [रणरणाय्] 'रन् रन्' आवाज करना। वकृ रणरणंत (पिंग)।

रणरण } पु [दे रणरणक] १ निःश्वास,
रणरणय } नीसास, 'अइउण्हा रणरणया दुप्पेच्छा दूसहा दुरालोया' (वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीड़ा, अधृति, 'गरुयपियसंगमासा-भंसमसमुच्छलियरणरणाइन्नं' (सुर ८, २३०, पात्र)। ३ उत्कण्ठा, औत्सुक्य (दे १, १३६, गउड, धम्म ८८, सवे २)।

रणरणाय देखो रणरण = रणरणाय्। वकृ. रणरणायंत (पउम ६४, ३९)।

रणिअ न [रणित] शब्द, आवाज (सुर १, २४८)।

रणिर वि [रणितृ] आवाज करनेवाला (सुपा ३२७, गउड)।

रण्ण न [अरण्य] जंगल, अटवी (हे १, ६६, प्राप्र, श्रौप)।

रत्त पु [रक्त] १ लाल वर्ण, लाल रंग। २ कुसुम। ३ वृक्ष विशेष, हिज्जल का पेड़ (हे २, १०)। ४ न कुंकुम। ५ ताम्र, ताँबा। ६ सिंदूर। ७ हिंगुल। ८ खून, रुधिर। ९ राग (प्राप्र)। १० वि रँगा हुआ (हेका २७२)। ११ लाल रँगवाला (पात्र)। १२ अनुराग-युक्त (ओघ ७५७, प्रासू १५५, १६०)। °कंबला स्त्री [°कम्बला] मेरु पर्वत के पण्डक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है (ठा २, ३—पत्र ८०)। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष (राज)। °कोरिंटय पु [°कुरण्टक] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७९)। °क्ख, °च्छ वि [°क्ष] १ लाल आँखवाला (राज, सुर २, ६)। स्त्री °च्छी (ओघभा २२ टी)। २ पु महिष, भैंसा (दे ७, १३)। °ट्ठ पु [°र्थ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)। °धाउ पु [°धातु] कुण्डल पर्वत का एक शिखर (दीव)। °पड पु [°पट] परिव्राजक, सन्यासी (णाया १, १५—पत्र १९३)। °प्पवाअ पु [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °प्पह पु [°प्रभ] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर (दीव)। °रयण न [°रत्न] रत्न की एक जाति, पद्म-राग मणि (श्रौप)। °वई स्त्री [°वती] एक नदी (सम २७, ४३, इक)। °वड देखो °पड (सुपा ८, १३)। °सुभद्दा स्त्री [°सुभद्रा] श्रीकृष्ण की एक भगिनी (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °सोग, °सोय पु [°शोक] लाल अशोक का पेड़ (णाया १, १, महा)।

°रत्त पु [°रात्र] रात, निशा (जी ३४)।

रत्तग देखो रत्त = रक्त (महा)।

रत्तंदण न [रक्तचन्दन] लाल चन्दन (सुपा १८१)।

रत्तक्खर न [दे] सीधु, मद्य-विशेष (दे ७, ४)।

रत्तच्छ पुं [दे] १ हंस। २ व्याघ्र (७, १३)।

रत्तडि (अप) देखो रत्ति = रात्रि (पि ५६६)।

रत्तय न [दे रक्तक] बन्धूक वृक्ष का फूल (दे ७, ३)।

रत्ता स्त्री [रक्ता] एक नदी (सम २७, ४३, इक)। °वइप्पवाय पुं [°वतीप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)।

रत्ति स्त्री [दे] आज्ञा हुकुम (दे ७, १)।

रत्ति स्त्री [रात्रि] रात, निशा (हे २, ७६, कुमा, प्रासू ६०)। °अंधय वि [°अन्धक] रात को नहीं देख सकनेवाला (गा ६६७, हेका २६)। °अर वि [°चर] १ रात में विहरनेवाला। २ पुं. राक्षस (पड्)। °दिवह न [°दिवस] रात-दिन, अहर्निश (पि ८८)। देखो राइ = रात्रि।

रत्तिचर देखो रत्ति = अर (धर्मवि ७२)।

रत्तिदिअह न [रात्रिदिवस] रात-दिन, अहर्निश, निरन्तर (अच्चु ७८)।

रत्तिदिय } न [रात्रिन्दिव] ऊपर देखो
रत्तिदिव } (पउम ८, १६४, ७५, ८५)।

रत्तिंध वि [रात्र्यन्ध] जो रात में न देख सकता हो वह (प्रासू १७५)।

रत्तीअ पुं [दे] नापित, हजाम (दे ७, २, पाअ)।

रत्तुप्पल न [रक्तोत्पल] लाल कमल (पण्ह १, ४)।

रत्तोआ स्त्री [रक्तोदा] एक नदी (इक)।

रत्तोप्पल देखो रत्तुप्पल (नाट—मृच्छ १४५)।

रत्था देखो रच्छा (गा ४०, अत १२, सुर १, ६६)।

रद्ध वि [रद्ध, राद्ध] राधा हुआ, पक्व (पिंड १६५, सुपा ६३६)।

रद्धि वि [दे] प्रधान, श्रेष्ठ (दे ७, २)।

रन्न वि रण्ण (सुपा ४०१, कुमा)।

रप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। रप्पइ (प्राकृ ७३)।

रप्फ पुं [दे] वल्मीक, गुजराती में 'राफडो' (दे ७, १, पाअ)। २ रोग-विशेष, 'करि कंपु पायमूलिसु रप्फय' (सण)।

रप्फडिआ स्त्री [दे] गोधा, गोह (दे ७, ४)।

रब्बा वि [दे] राब, यवागू (श्रा १४, उर २, १२, धर्मवि ४२)।

रभस देखो रहस = रभस (गा ८७२, ८९४, ९३४)।

रम अक [रम्] १ क्रीडा करना। २ संभोग करना। रमइ, रमए, रमते, रमिज्ज, रमेज्जा (कुमा)। भवि. रमिस्सदि, रमिहिइ (कुमा)। कर्म रमिज्जइ (कुमा)। वकृ. रमंत, रम-माण (गा ४४, कुमा)। संकृ रमिअ, रमिउ, रमिऊण, रत्तूण (हे २, १४६, ३, १३६, महा, पि ३१२), रमेप्पि, रम्मेप्पिणु, रमेवि (अप) (पि ५८८)। हेकृ. रमिउं (उप पृ ३८)। कृ. रमिअव्व (गा ४६१), देखो रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म। प्रयो. रमावेंति (पि ५५२)।

रमण न [रमण] १ क्रीडा, क्रीडन। २ सुरत, संभोग, रति-क्रीडा (पव ३८, कुमा, उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि (कुमा)। ४ पुं. जघन, नितम्ब (पाअ)। ५ पति, वर, स्वामी (पउम ५१, १६, पिंग)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

रमणिज्ज त्रि [रमणीय] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य (प्राप्र, पाअ, अभि २००)। २ न. एक देव-विमान (सम १७)। ३ पुं नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि (पव २६९ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

रमणी स्त्री [रमणी] १ नारी, स्त्री (पाअ, उप पृ १८७, प्रासू १५५, १८०)। २ एक पुष्करिणी (इक)।

रमणीअ वि [रमणीय] रम्य, मनोरम (प्राप्र, स्वप्न ४०, गउड, सुपा २५५, भवि)।

रमा स्त्री [रमा] लक्ष्मी, श्री (कुम्मा ३)।

रमिअ देखो रम।

रमिअ वि [रत] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीडा (णाया १, ९—पत्र १६५; कुमा, सुपा ३७६, प्रासू ६५)।

रमिअ वि [रमित] रमाया हुआ (कुमा ३, ८९)।

रमिर वि [रन्तृ] रमण करनेवाला (कुमा)।

रम्म वि [रम्य] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर (पाअ, से ९, ४७, सुर १, ६९, प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का गाछ (से ९, ४७)। ४ न. एक देव-विमान (सम १७)।

रम्मग } पुं [रम्यक] १ एक विजय, प्रान्त-
रम्मय } विशेष (ठा २ ३—पत्र ८०)। २ एक युगलिक-क्षेत्र, जम्बू-द्वीप का वर्ष-विशेष (सम १२, ठा २, ३—पत्र ६७, इक)। ३ न. एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट (ज ४)।

रम्ह देखो रफ। रम्हइ (प्राकृ ६५)।

रय सक [रज्] रँगना, 'नो धोएज्जा, नो रएज्जा, नो धोयरत्ताइ वत्थाइ धारेज्जा' (आचा)।

रय सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना। रयइ, रएइ (हे ४,९४, पड्, महा)। कवकृ. रइज्जंत (से ८, ८७)।

रय पुंन [रजस्] १ रेणु, धूल (औप, पाअ, कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज (से ३, ४८)। ३ सांख्य-दर्शन में उक्त प्रकृति का एक गुण (कुप्र २१)। ४ बध्यमान कर्म (कुमा ७, ५८, चेइय ६२२, उव)। °त्ताण न [°त्राण] जैन मुनि का एक उपकरण (ओघ ६६८, पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °स्सला स्त्री [°स्वला] ऋतुमती स्त्री (दे १, १२५)। °हर पुंन [°हर] जैन मुनि का एक उपकरण (संबोध १५)। °हरण न [°हरण] वही अर्थ (णाया १, १, कस)।

रय वि [रत] १ अनुरक्त, आसक्त (औप, उव, सुर १, १२, सुपा ३०६, प्रासू १६६)। २ स्थित (से ९, ४२)। ३ न. रति-कर्म, मैथुन (सम १५, उव, गा १५५, स १८०, वज्जा १००, सुपा ४०३)।

रय पुं [रय] वेग (कुमा, से २, ७, सण)।

रय देखो रव (पउम ११४, १७)।

रयग देखो रयय = रजक (श्रा १२, सुपा ५८८)।

रयण न [रजन] रँगना, रँग-युक्त करना (सूअ १, ९, १२)।

रयण वि [रचन] करनेवाला, निर्माता, 'चेइईनचितारयणु' (सण)।

रयण पु [रदन] दांत, दशन (उप ९८६ टी, पाअ दाअ १-२, गउड; कुप्र ८३)।

रयण पुन [रत्न] १ माणिक्य आदि बहुमूल्य पत्थर, मणि, 'दुवे रयणा समुप्पन्ना' (निर १, १, उप ५६३, णाया १, १, सुपा १४७, जी ३, कुमा, हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्वजाति में उत्तम (उप २६, कुमा ३, ८७), 'तहवि हु चंदनसरिच्छा विरला रयणायर रयणा' (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष (णाया १, ६, पउम ५५, १०)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट (ठा ८, २, ८)। ६ पु व रत्न-द्वीप का निवासी (पउम ५५, १७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (सण)। °चित्त पु [°चित्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (णाया १, ६—पत्र १६५)। °निहि पु [°निधि] समुद्र, सागर (सुपा ७, २२६)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी (स १३२)। °पुर देखो °उर (कुप्र ६, महा, सण)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] १ पहली नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, औप, भग)। २ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज (उ १३३)। °मय त्रि [°मय] रत्नों का बना हुआ (महा)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि २४)। °मालि पु [°मालिन्] विद्याधर वंश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र (पउम ५, १४)। °मुस वि [°मुष्] रत्न का चुरानेवाला (पड्)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १४)। °रासि पु [°राशि] समुद्र (प्राकृ)। °वइ पु [°पति] रत्नों का मालिक, धनी, श्रीमंत (सुपा २६६)। °वई स्त्री [°वती] एक रानी (रयण ३)। °वज्ज पु [°वज्र] विद्याधर-वंशीय एक राजा (पउम ५, १४)। °वह वि [°वह] रत्न-धारक (गउड १०७१)। °संचय न [°संचय] १ रुचक पर्वत का एक कूट (इक)। २ एक नगर (इक, सुर ३, २०)। °संचया स्त्री [°सचया] १ मगलावती नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुन्धरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °समया स्त्री [°समया] मगलावती नामक विजय की एक राजधानी (इक)। °सार पु [°सार] १ एक राजा (राज)। २ एक शेठ का नाम (उप ७२८ टी)। °सिह पु [°सिंह] एक जैन आचार्य, संवेगचूलिकाकुलक कर्त्ता (सव १२)। °सिह पु [°शिख] एक राजा (उप १०३१ टी)। °सेहर पु [°शेखर] १ एक राजा (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (सिरि १३४०)। °ागर, °ागर पु [°ाकर] १ रत्न की खान (पड्)। २ समुद्र (पाअ, सुपा ३७, प्रासू ६७, णाया १, १७—पत्र २२८)। °ाभा स्त्री [°ाभा] देखो °प्पभा (उत्त ३६, १५७)। °ामय देखो °मय (महा, औप) °ायरसुअ पु [°ाकरसुत] १ चन्द्रमा। २ एक वणिक्-पुत्र (श्रा १६)। °ावलि, °ावली स्त्री [°ावलि, °ावली] १ रत्नों का हार (सम्म २२)। २ तप-विशेष (अंत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राजकन्या (पउम ६, ५२)। °ावह न [°ावह] नगर-विशेष (महा)। °ासव पु [°ाश्रव] रावण का पिता (पउम ७, ५६, ८१) °ासवसुअ पु [°ाश्रवसुत] रावण (पउम ८, २२१)। °ाहिय वि [°ाधिक] ज्येष्ठ, अवस्था मे बडा (राज)।

रयणप्पभिय वि [रात्नप्रभिक] रत्नप्रभा-सबन्धी (पच २, ६९)।

रयणा स्त्री [रचना] निर्माण, कृति (उत्त १५, १८, चेइय ८६६, सुपा ३०८, रंभा)।

रयणा स्त्री [रत्ना] रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि (पउ १७५)।

रयणि पुस्त्री [रत्नि] एक हाथ की नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण (कस, पव ५८, १७६)।

रयणि स्त्री [रजनि] देखो रयणी = रजनी (णाया १, २—पत्र ७६, कप्प)। °अर पुं [°चर] १ राक्षस (से १०, ६६, पाअ)। °अर, °कर पु [°कर] चन्द्रमा (हे १, ८ टि, कप्प)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (पाअ, सुपा ३३)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि मे खाना (सुपा ४९५)। °रमण पु [°रमण] चन्द्रमा (सण)। °वल्लह पु [°वल्लभ] चन्द्रमा (कप्पू)। °विराम पु [°विराम] प्रात काल, सुबह (पाअ)।

रयणिंद पु [रजनीन्द्र] चन्द्रमा (सण)।

रयणिद्धय न [दे] कुमुद, कमल (दे ७, ४, पड्)।

रयणी स्त्री [रत्नी] देखो रयणि = रत्नि (ठा १, सम १२, जीवस १७७, जी ३३, औप)।

रयणी स्त्री [रजनी] १ रात्रि, रात (पाअ, प्रासू १३६, कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र महिषी (ठा ५ १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। ५ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना, 'मगी कोरव्वीया हरी य रयणी(? यणी) सारकता य' (ठा ७—पत्र ३९३)। °भोअण न [°भोजन] रात मे खाना (श्रा २०)। °सार न [°सार] सुरत, मैथुन (से ३, ४८)। देखो रयणि = रजनि (हे १, ८)।

रयणी स्त्री [रजनी] ओषधि-विशेष—१ पिंडदारु। २ हरिद्रा, हलदी (उत्तनि ३)।

रयणुच्चय, रयणोच्चय पु [रत्नोच्चय] १ मेरु-पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७, इक)। २ कूट-विशेष (इक)।

रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुगुप्ता नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)।

रयत, रयद, रयय न [रजत] १ रूप्य, चांदी (णाया १, १—पत्र ६६, प्राकृ १२, प्राप्र, पाअ, उवा, औप)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दांत। ४ हार, माला। ५ सुवर्ण, सोना। ६ रुधिर, खून। ७ शैल, पर्वत। ८ धवल वर्ण। ९ शिखर-विशेष। १० वि. सफेद वर्णवाला, श्वेत (प्राकृ १२, प्राप्र, हे १, १७७, १८०, २०९)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष (णाया १, १, औप)। °वत्त न [°पात्र]

चाँदी का बरतन (गउड)। °मय वि [°मय] चादी का बना हुआ (णाया १, १—पत्र ५४, पि ७०)।

रयय पु [रजक] धोबी (स २८६, पाअ)।

रयवली स्त्री [दे] शिशुत्व, बाल्य (दे ७, ३)।

रयवाडी देखो राय वाडिआ (सिरि ७५८)।

रयाव सक [रचय्] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेइ, रयाविंति, रयावेह (कप्प)। संकृ. रयावेत्ता (कप्प)।

रयाविय वि [रचित] बनवाया हुआ (स ४३५)।

रल्ला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकांगनी (दे ७, १)।

रल्लि पुस्त्री [दे] लम्बा मधुर शब्द (माल ६०)।

रव सक [रु] १ कहना, बोलना। २ वध करना। ३ गति करना। ४ अक. रोना। ५ शब्द करना, 'सुद्ध रवति परिमाए' (सूअ १, ४, १, १८), रवइ (हे ४, २३३, सक्षि ३३)। वकृ रवत, रवंत (णाया १, १—पत्र ६५, पिंग, ओप)।

रव सक [रावय्] बुलवाना, आह्वान करना। वकृ. रवंत (ओप)।

रव सक [दे] आर्द्र करना। भवि—रवेहिइ (णदि)।

रव पु [रव] १ शब्द, आवाज (कप्प; महा, सण, भवि)। २ वि मधुर शब्दवाला; 'रव अलस कलमंजुल' (पाअ)।

रव (अप) देखो रय = रजस् (भवि)।

रवॅण } (अप) देखो रमण (भवि)।
रवण }

रवण न [रवण] आवाज करना, 'पचासत्ते य करेणुया सया रवणसीला आसी' (महा)।

रवण्ण } (अप) देखो रम्म = रम्य (हे ४,
रवन्न } ४२२, भवि)।

रवय पुं [दे] मन्थान-दण्ड, विलोने की लकडी. गुजराती में 'रवेयो' (दे ७, ३)।

रवरव अक [रोरुय्] १ खूब आवाज करना। २ बारबार आवाज करना। वकृ. रवरवत (औप)।

रवि वि [रविन्] आवाज करनेवाला (से २, २६)।

रवि न [रवि] १ सूर्य, सूरज (से २, २६, गउड, सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। ३ अर्क वृक्ष, आक का पेड (हे १, १७२)। °तेअ पु [°तेजस्] १ इक्ष्वाकु वश का एक राजा (पउम ५, ४)। २ राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६५)। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या (पउम ७, १४१)। °नंदण पु [°नन्दन] शनि-ग्रह (श्रा १२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६८)। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महोषधि (ती ५)। °भास पु [°भास] खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग (पउम ५५, २६)। °वार पु [°वार] दिन-विशेष, रविवार (कुप्र ४११)। °सुअ पुं [°सुत] १ शनिश्चर ग्रह (से ८, २८, सुपा ३६)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव (से १५, ५६)। °हास पु [°हास] सूर्यहास खड्ग (पउम ५३, २७)।

रविगय न [रविगत] जिसपर सूर्य हो वह नक्षत्र (वव १)।

रविय वि [दे] आर्द्र किया हुआ, भिजाया हुआ (विसे १४५६)।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, संदेश-हारक, 'जेण अवज्भो रव्वारिओ त्ति' (सुपा ४२८)।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ (गा ४३६)। वकृ. रसत (सुर २, ७४, सुपा २७३)।

रस पुन [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि, 'एगे रसे', 'एव गवाई रसाइ फासाइं' (ठा १०—पत्र ४७१, प्रासू १७४)। २ स्वभाव, प्रकृति (से ४,३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृगार आदि नव रस (उत्त १४, ३२, धर्मवि १३, सिरि ३६)। ४ जल, पानी (से २, २७, धर्मवि १३)। ५ सुख (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी (सत्त ५३, गउड)। ७ अनुराग, प्रेम (पाअ)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ (पण्ह १, १, कुमा)। ९ पारद, पारा (निचू १३)। १० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष (गउड)। ११ कर्म-विशेष (कम्म २, ३१)। १२ छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष (पिंग)। १३ माधुर्य आदि रसवाला पदार्थ (सम ११, नव २८)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। °न्न वि [°ज्ञ] रस का जानकार (सुपा २६१)। °भेइ वि [°भेदिन्] रसवाली चीजों का भेल-सेल करनेवाला (पउम ७५, ५२)। °मंत वि [°वत्] रस-युक्त (भग, ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °वई स्त्री [°वती] रसोई (सुपा ११)। °ल, °लु वि [°वत्] रसवाला (हे २, १५९, सुख ३, १)। °वण पुं [°पण] मद्य की दूकान (पव ११२)।

रस पुन [रस] निष्यन्द, निचोड, सार (दसनि ३, १६)।

रसण न [रसन] जिह्वा, जीभ (पण्ह १, १—पत्र २३, आचा)।

रसणा स्त्री [रसना] १ मेखला, काची (पाअ, गउड, से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ (पाअ)। °ल वि [°वत्] रसनावाला (सुपा ५५६)।

रसद्द न [दे] चुल्ली-मूल, चूल्हे का मूल भाग (दे ७, २)।

रसा स्त्री [रसा] पृथिवी, धरती (हे १, १७७, १८०, कुमा)।

रसाउ पु [दे रसायुष्] भ्रमर, भौंरा (दे ७, २, पाअ)।

रसाय पु [दे] ऊपर देखो (दे ७, २)।

रसायण न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष (विपा १, ७, प्रासू १६२, भवि)।

रसाल पु [रसाल] आम्र-वृक्ष, आम का गाछ (सम्मत्त १७३)।

रसाला स्त्री [दे रसाला] मार्जिता, पेय-विशेष (दे ७, २, पाअ)।

रसालु पु [दे रसालु] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड से बनता पाक (ठा ३, १—पत्र ११८, सुज्ज २० टी, पव २५९)।

रसि देखो रस्सि (प्राकृ २६)।

रसिअ वि [रसिक] १ रसज्ञ, रसिया, शौकीन (से १, ९)। २ रस-युक्त, रसवाला (सुपा २६, २१७, पउम ३१, ४६)।

रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रसवाला (पव २)। २ न. शब्द, आवाज (गउड, पण्ह १, १)।

रसिआ स्त्री [दे रसिका] १ पूय, पीब, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी' (आ १२, विपा १, ७, पण्ह १, १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

रसिंद पु [रसेन्द्र] पारद, पारा (जी ३, श्रु १५८)।

रसिग देखो रसिअ = रसिक (पचा २, ३४)।

रसिर वि [रसितृ] आवाज करनेवाला (सण)।

रसोइ (अप) देखो रस-वई (भवि)।

रस्सि पुंस्त्री [रश्मि] १ किरण, 'भरह समागियाओ आइच्चं चेव रस्सीओ' (पउम ८०, ६८, पाअ, प्राप्र)। २ रस्सी, रज्जु (प्रासू ११७)।

रह अक [दे] रहना। रहइ, रहए, रहेइ (पिंग, महा, सिरि ८६३), रहमु, रहह (सिरि ३५५, ३५३)।

रह सक [रह्] त्यागना, छोड़ना (कप्पू, पिंग)।

रह पु [रभस] उत्साह, 'पुणो पुणो ते स-रहं दुहंति' (सूअ १, ५, १, १८)। देखो रहस = रभस।

रह पुन [रहस्] १ एकान्त, निर्जन, 'तत्थ रहो त्ति आगच्छ' (कुप्र ८२), 'लहु मे रह देसु' (सुपा १७८, वज्जा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य (ठा ३, ४)।

रह पुन [रथ] १ यान विशेष, स्यन्दन, 'धम्मस्स निव्वाणपहे रहाणि' (उत्त १८, पाअ, कुमा)। २ पु एक जैन महर्षि (कप्प)। °कार पु [°कार] रथ-निर्माता, बर्धकि, बढ़ई (सुपा ४६८, कुप्र १०४, टा)। °चरिया स्त्री [°चर्या] रथ का हाँकना, 'सिक्खिय-तुरयरहचरियाकुसलो' (महा)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] उत्सव-विशेष (सुपा ५४१, सुर १६, ९६, सिरि ११७५)। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष (पउम २८, ७, ६४)। °णेउरचक्कवाल न [°नूपुरचक्रवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर (पउम ५, ६४, ६५)। °नेमि पु [°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई (उत्त २२, ३६)। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाइसवाँ अध्ययन (उत्त २२)। °मुसल पु [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई, राजा कोणिक और राजा चेटक का संग्राम (भग ७, ६)। °यार देखो °कार (पाअ)। °रेणु पु [°रेणु] एक नाप, आठ त्रसरेणु का एक परिमाण (इक)। °वीरउर, °वीरपुर न [°वीरपुर] एक नगर (राज, विसे २५५०)।

रहइ अ [रभसा] वेग से (स ७६२)।

रहंग पुंस्त्री [रथाङ्ग] १ चक्रवाक पक्षी, चकवा (पाअ, सुर ३, २४७, कुमा)। स्त्री. °गी (सुपा ४६८, सुर १०, १८५, कुमा)। २ न. चक्र, पहिया (पाअ)।

रहट्ट देखो अरहट्ट (गा ४६०, पि १४२)।

रहण न [दे] रहना, स्थिति, निवास (धर्मवि २१, रयण ६)।

रहण न [रहन] १ त्याग। २ विरति, विराम, 'रसरहण' (पिंग)।

रहमाण पु [दे] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर (ती १५)।

रहस पु [रभस] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा (कुमा)। २ वेग। ३ हर्ष। ४ पूर्वापर का अविचार (सक्खि ७, गउड)।

रहस देखो रहस्स = रहस्य, 'रहसाभक्खाणे' (उवा, संबोध ४२, सुपा ४५४)।

रहसा अ [रभसा] वेग से (गउड)।

रहस्स वि [रहस्य] १ गुह्य, गोपनीय (पाअ, सुपा ३१८)। २ एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का (ठा २, २०४)। ३ न तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ (ओघ ७६०, रंभा १६)। ४ अपवाद-स्थान (बृह ६)।

रहस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रावाला स्वर (उत्त २६, ७२)।

रहस्स न [ह्रास्व] १ लाघव, छोटाई। °मत वि [°वत्] लघु, छोटा (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिय वि [राहसिक] प्रच्छन्न, गुप्त (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [दे] स्थापित, रखवाया हुआ (हम्मीर १३)।

रहि वि [रथिन्] १ रथ से लड़नेवाला योद्धा (उप ७२८ टी)। २ रथ को हाँकनेवाला (कुप्र २८७, ४६०, धर्मवि १११)।

रहिअ वि [रथिक] ऊपर देखो, 'रहिएहिं महारहिणो' (उप ७२८ टी, पण्ह २, ४—पत्र १३०, धर्मवि २०)।

रहिअ वि [रहित] परित्यक्त, वर्जित, शून्य (उवा, द ३२)।

रहिअ वि [रहित] एकाकी, अकेला (वव १)।

रहिअ वि [दे] रहा हुआ, स्थित (धर्मवि २२)।

रहु पु [रघु] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (उत्तर ५०)। २ पु व रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय (से ४, १६)। ३ पु. श्रीरामचन्द्र, 'ताहे कयतगरिसी देइ रहु रिवुवले दिट्ठी' (पउम ११३, २१)। ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ (गउड)। °आर पु [°कार] रघुवंश नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्त्ता, कवि कालिदास (गउड)। °णाह पु [°नाथ] १ श्रीरामचन्द्र (से १४, १६, पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण (से १४, ६२)। °तणय पु [°तनय] वही अर्थ (से २, १, १४, २६)। °तिलय पु [°तिलक] श्रीरामचन्द्र (सुपा २०४)। °त्तम पुं [°उत्तम] वही अर्थ (पउम १०२, १७६)। °पुंगव पु [°पुङ्गव] वही (से ३, ५, हे २, १८८, ३, ७०)। °सुअ पु [°सुत] वही (से ५, १६)।

रहो° देखो रह = रहस् (कप्प, ओप)। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार (ठा ६—पत्र ४६०)।

रा सक [रा] देना, दान करना। राइ (धात्वा १४६)।

रा अक [रै] शब्द करना, आवाज करना। राइ (प्राकृ ६६)।

रा अक [ली] श्लेष करना, चिपकना। राइ (षड्)।

राअला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

राइ देखो रत्ति (हे २, ८८; काप्र १८९, महा, पड्)। २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात मे खाना (सुपा ८८५)। °भोअण न [°भोजन] वही अर्थ (सम ३९, कस)। देखो राई = रात्रि।

राइ स्त्री [राजि] पक्ति, श्रेणी (पाअ, ओप)। २ रेखा, लकीर (कम्म १, १९, सुपा १९७)। ३ राई, राज-सर्षप, एक प्रकार का मसाला (दे ६, ८८)।

राइ वि [रागिन] राग-युक्त, रागवाला (दमा ६)। स्त्री. °णी (महा)।

राइ वि [राजिन्] शोभनेवाला (निचू १६)।

राइ° देखो राय = राजन् (हे २, १४८, ३, ५२, ५३, कुमा)।

राइअ वि [राजित] शोभित (से १, ५६, कुमा, ६, ६३)।

राइअ वि [रात्रिक] रात्रि-सम्बन्धी (उत्त २६, ४९, ओप, पडि)।

राइआ स्त्री [राजिका] राई का गाछ, 'गोलाणईअ कच्छे चक्खंतो राइआइ पत्ताइं' (गा १७१ अ)। देखो राइगा।

राइंद पु [राजेन्द्र] बडा राजा (कुमा)।

राइंदिअ पु [रात्रिन्दिव] रात-दिन, अहोरात्र (भग, आचा, कप्प, पव ७८, सम २१)।

राइक वि [राजकीय] राज-सम्बन्धी (हे २, १४८, कुमा)।

राइगा स्त्री [राजिका] राई, राज-सरसो (कुप्र ४५)।

राइणिअ वि [रात्निक] १ चारित्रवाला, सयमी (पचा १२, ६)। २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की अवस्था से वडा (सम ३७, ५८, कप्प)।

राइणिअ वि [राजकल्प] राजा के समान वैभववाला, श्रीमन्त (सूअ १, २, ३, ३)।

राइण्ण } पुं [राजन्य] राजवंशीय, क्षत्रिय
राइन्न } (सम १५१, कप्प, औप, भग)।

राइलेऊण संकृ. चीरकर (नदीटिप्पनक मे थिम पादलिप्तकथा वैनयिकी बुद्धि विषयक)।

राइल्ल वि [रागिन्] राग-युक्त (देवेन्द्र २७८)।

राई स्त्री [राजी] देखो राइ = राजि (गउड, सुपा ३४, भासू ६२, पव २५९)।

राई स्त्री [रात्रि] देखो राइ = रात्रि (पाअ, णाया २—पत्र १५०, ओप, सुपा ४९१, कस)। °दिवस न [°दिवस] रात्रिदिवस, अहर्निश (सुपा १२७)।

राईमई स्त्री [राजीमती] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान् नेमिनाथ की पत्नी (पडि)।

राईव न [राजीव] कमल, पद्म (पाअ, हे १, १८०)।

राईसर पु [राजेश्वर] १ राजाओं के मालिक, महाराज। २ युवराज (ओप, उवा, कप्प)।

राउत्त पुं [राजपुत्र] राजपूत, क्षत्रिय (प्राकृ ३०)।

राउल पुं [राजकुल] १ राजाओं का यूथ, राज-समूह (कुमा, हे १, २६७, प्राप्र)। २ राजा का वश (पड्)। ३ राज-गृह, दरबार; 'ण ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्थ बम्हणावि एव विडम्बिज्जति' (मोह ११)। देखो राओल।

राउलिय वि [राजकुलिक] राजकुल-सम्बन्धी (सुख २, ..)।

राउल्ल देखो राइक्क (प्राकृ ३५)।

राएसि पुं [राजर्षि] १ श्रेष्ठ राजा। २ ऋषि-तुल्य राजा, सयतात्मा भूपति (अभि ३९, विक्र ६८, मोह ३)।

राओ अ [रात्रौ] रात मे (णाया १, १—पत्र ६१, सुपा ४९७, कप्प)।

राओल देखो राउल,

'तो किंपि घण सयणेहिं
विलसियं किंपि वाणिपुत्तेहिं।
किंपि गयं राओले एस
अपुत्तत्ति भणिऊण ॥'
(धर्मवि १४०)।

राग देखो राय = राग (कप्प, सुपा २४१)।

रागि देखो राइ = रागिन् (पउम ११७, ४१)।

राघव देखो राहव। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] सीता, जानकी (पउम ४६, ५७)।

राच } [चूपै. पै] देखो राय = राजन् (हे
राचि° } ४, ३२५, ३०४, प्राप्र)।

राज देखो राय = राजन् (हे ४, २६७, पि १६८)।

राजस वि [राजस] रजो-गुण-प्रधान, 'राज-सचित्तस्स पुरस्स' (कुप्र ४२८)।

राडि स्त्री [राटि] धूम, चिल्लाहट (सुख २, १५)।

राडि स्त्री [दे राटि] सग्राम, लडाई (दे ७, ४)।

राढा स्त्री [राढा] १ विभूषा (धर्मस १०१८, कप्पू)। २ भव्यता (वज्जा १८)। ३ बगाल का एक प्रान्त। ४ बगाल देश का एक नगरी (कप्पू)। °इत्त वि [°वत्] भव्य आत्मा, 'गजणरहिओ धम्मो राढाइत्ताण सपडइ' (वज्जा १८)। °मणि पु [°मणि] काच-मणि (उत्त २०, ४२)।

राण सक [वि + नम्] विशेष नमना। राणइ (?) (धात्वा १४९)।

राण पु [राजन्] राणा, राजा (चड, सिरि ११४)।

राणय पु [राजक] १ राणा, राजा (ती १५, सिरि १२३, १२५)। २ छोटा राजा (सिरि ९८६, १०४०)।

राणिआ } स्त्री [राज्ञिका, °ज्ञी] रानी, राज-
राणी } पत्नी (कुमा ३, श्रावक ९३ टी, सिरि १२५, २६७)।

राम सक [रमय्] रमण कराना। कृ. रामेयव्व (भत्त ८५)।

राम पुं [राम] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का बडा पुत्र (गा ३५, उप पृ ३७५, कुमा)। २ परशुराम (कुमा १, ३१)। ३ क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (ओप)। ४ बलदेव, बलभद्र, वासुदेव का बडा भाई (पाअ)। ५ वि. रमने-वाला (उप पृ ३७५)। °कण्ह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ४०, १६)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक राजर्षि (सूअ १, ३, ४, २)। °देव पुं [°देव] श्रीरामचन्द्र (पउम ४५, २९)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन मुनि (अनु २)। °पुरी स्त्री [°पुरी] अयोध्या नगरी (ती ११)। °रक्खिआ स्त्री [°रक्षिता]

ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक)।

रामणिज्जअ न [रामणीयक] रमणीयता, सौन्दर्य (विक्र २८)।

रामा स्त्री [रामा] १ स्त्री, महिला, नारी (तदु ५०, कुमा, पाअ, वज्जा १०६, उप ३५७ टी)। २ नववें जिनदेव की माता (सम १५१)। ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)।

रामायण न [रामायण] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्यग्रन्थ (पउम २, ११६, महा)। २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई (पउम १०५, १६)।

रामिअ वि [रमित] रमण कराया हुआ (गा ५६, पउम ८०, १६)।

रामेसर पु [रामेश्वर] दक्षिण भारत का एक हिन्दू तीर्थ (सम्मत्त ८८)।

राय अक [राज्] चमकना, शोभना। रायइ (हे ४, १००)। वकृ राय°, रायमाण (कप्प)।

राय देखो रा = रै। राअइ (प्राकृ ६६)।

राय पु [राग] १ प्रेम, प्रीति (प्रासू १८०)। २ मत्सर, द्वेष, 'न पेमराइल्ला' (देवेन्द्र २७८)। ३ रँगना, रजन। ४ वर्णन। ५ अनुराग। ६ राजा, नरपति। ७ चन्द्र, चाँद। ८ लाल वर्ण। ९ लाल रँगवाली वस्तु। १० षड्ज आदि स्वर (हे १, ६८)।

राय पु [राजन्] १ राजा, नर-पति, नरेश (प्रासू, उवा, श्रा २७, सुपा १०३)। २ चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा २७, हम्मीर ३, धर्मवि ३)। ३ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। ४ इन्द्र। ५ क्षत्रिय। ६ यक्ष। ७ शुचि, पवित्र। ८ श्रेष्ठ, उत्तम (हे ३, ४६, ५०)। ९ इच्छा, अभिलाषा (से १, ६)। १० छन्द-विशेष (पिंग)। °इज्ज वि [°कीय] राज-संबन्धी (प्राकृ ३५)। °उत्त पु [°पुत्र] राज-पुत्र, राजकुमार (सुर ३, १६५)। °उल देखो राउल (हे १, २६७, कुमा, पउ, प्राप्र, धर्मवि १८४)। °ईज देखो °ईअ (नाट—शकु १०४)। °कुल देखो °उल (महा)। °केर, °क्क वि [°कीय] राज-संबन्धी (हे २, १४८, कुमा, पड्)। °गिह न [°गृह] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगीर' नाम से प्रसिद्ध है (ठा १०—पत्र ४७७, उवा, अंत)। °गिहि स्त्री [°गृही] वही अर्थ (ती ३)। °चंपय पु [°चम्पक] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष (श्रा १२)। °धम्म पु [°धर्म] राजा का कर्तव्य (नाट—उत्तर ८१)। °धाणी स्त्री [°धानी] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहता हो (नाट—चैत १३२)। °पत्ती स्त्री [°पत्नी] रानी (सुर १३, ५, सुपा ३७५)। °पसेणीय वि [°प्रश्नीय] एक जैन आगम-ग्रन्थ (राय)। °पह पु [°पथ] राज-मार्ग (महा, नाट—चैत १३०)। °पिंड पु [°पिण्ड] राजा के घर की भिक्षा—आहार (सम ३९)। °पुत्त देखो °उत्त (गउड)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम १,८)। °पुरिस पु [°पुरुष] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी (पउम २८, ४)। °मग्ग पु [°मार्ग] राजपथ, सड़क (ओप, महा)। °मास पु [°माष] धान्य विशेष, बरबटी (श्रा १८, संबोध ४३)। °राय पु [°राज] राजाओं का राजा, राजेश्वर (सुपा १०७)। °रिसि देखो राएसि (णाया १, ५—पत्र १११, उप ७२८ टी, कुमा, मण)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (ओप)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] राज-वैभव (अभि १३१, महा)। °ललिय पु [°ललित] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३)। °वट्टय न [°वार्तक] राज-संबधी वार्ता-समूह (हे २, ३०)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °वाडिआ, °वाडी स्त्री [°पाटिका, °पाटी] चतुरंग सैन्य-श्रम-करण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी (कुमा, कुप्र ११६, १२०, सुपा २२२)। °सद्दूल पु [°शार्दूल] चक्रवर्ती राजा, श्रेष्ठ राजा (सम १५२)। °सिट्ठि पु [°श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ (भवि)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी (से १, १३)। °सुअ पु [°सुत] राजकुमार (कप्पू, उप ७२८ टी)। °सुअ पु [°शुक] उत्तम तोता (उप ७२८ टी)। °सुअ पु [°सूय] यज्ञ विशेष, 'पिइमेहमाइमेहे रायसुए आसमेहपसुमेहे' (पउम ११, ४२)। °सेण पु [°सेन] छन्द-विशेष (पिंग)। °सेहर पु [°शेखर] १ महादेव, शिव। २ एक राजा (सुपा ५२६)। ३ एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्त्ता (कप्पू)। °हंस पुंस्त्री [°हंस] १ उत्तम हंस पक्षी। २ श्रेष्ठ राजा (सुर १२, ३४, गा ६२४, गउड, सुपा १३६, रंभा, भवि)। स्त्री °सी (सुपा ३३४, नाट—रत्ना २३)। °हर न [°गृह] राजा का महल (पउम ८२, ८६, हे २, १४४)। °हाणी देखो °धाणी (सम ८०, पउम २०, ८)। °हिराय, °ाहिराय पु [°अधिराज] राजाओं का राजा, चक्रवर्ती राजा (काल, सुपा १०५)। °ाहिव पु [°ाधिप] वही अर्थ (सुपा १०५)।

राय देखो राव = राव (से ६, ७२)।

राय पु [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे ७, ४)।

राय पु [रात्र] रात्रि, रात (आचा)।

राय° देखो राय = राज्।

रायउअ } पुन [दे] १ वेतस या बेंत का
रायवु } पेड़ (पाअ, दे ७, १४)। २ पु. शरभ (दे ७, १४)।

रायस पुं [राजास] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि (आचा)।

रायसि वि [राजासिन्] राजयक्ष्मावाला, क्षय का रोगी (आचा)।

रायगइ स्त्री [दे] जलौका, जोंक (दे ७, ५)।

रायग्गल पु [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रायणिअ देखो राइणिअ = रात्निक (उव, ओघभा २२३)।

रायणी स्त्री [राजादनी] खिन्नी, खिरनी का पेड़ (पउम ५३, ७९)।

रायण्ण देखो राइण्ण (ठा ३, १—पत्र ११४, उप ३५६ टी)।

रायनीइ स्त्री [राजनीति] राजा की शासन करने की रीति (राय ११७)।

रायमइया स्त्री [राजीमतिका] देखो राई-मई (कुप्र १)।

रायस देखो राजस (स ३, से ३, १५)।

रायाण देखो राय = राजन्, (हे ३, ५६, षड्)।

राल, रालग, रालय पुंन [राल, °क] धान्य-विशेष, एक प्रकार की कगु (सूअ २, २, ११, ठा ७—पत्र ४०५, पिंड १६२, वज्जा ३८)।

राला स्त्री [दे] प्रियगु, मालकांगनी (दे ७, १)।

राव सक [दे] आर्द्र करना। भवि. रावेहिति (विसे २८६ टी)।

राव देखो रंज = रञ्ज्। रावेइ (हे ४, ४६)। हेकृ. राविउ (कुमा)।

राव सक [रावय्] पुकारना, आह्वान करना। वकृ रावेंत (ओघ)।

राव पु [राव] १ शोला, कलकल (पाअ)। २ पुकार, आवाज (सुपा ३४८, कुमा)।

रावण पु [रावण] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध लका-पति (पि ३६०)। २ गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र १२)।

राविअ वि [रञ्जित] रँगा हुआ (दे ७, ५)।

राविअ वि [दे] आस्वादित (दे ७, ५)।

रास, रासग पु [रास, °क] एक प्रकार का नृत्य, जिसमे एक दूसरे का हाथ पकडकर नाचते-नाचते और गान करते-करते मडलाकार फिरना होता है (दे २, ३८, पाअ, वज्जा १२२, सम्मत्त १४१, धर्मवि ८१)।

रासभ देखो रासह (सुर २, १०२)।

रासय देखो रामग (सुर १, ४६, सुपा ५०, ४३३)।

रासह पुंस्त्री [रासभ] गर्दभ, गदहा (पाअ, प्राप्र, रभा)। स्त्री °ही (काल)।

रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष (अजि १२)।

रासालुद्धय पुं [रासालुब्धक] छन्द-विशेष (अजि १०)।

रासि देखो रस्सि (सक्षि १७)।

रासि पुंस्त्री [राशि] १ समूह, ढग, ढेर (ओघ ४०७, औप, सुर २, ५, कुमा)। २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेष आदि बारह राशि (विचार १०६)। ३ गणित-विशेष (ठा ४, ३)।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास। २ वसन्त ऋतु (से १, १३)। ३ एक जैन आचार्य (उप २८५; सुख २, १५)।

राह पु [दे] १ दयित, प्रिय। २ वि निरन्तर। ३ शोभित। ४ सनाथ। ५ पलित, सफेद केशवाला (दे ७, १३)। ६ रुचिर, सुन्दर (पाअ)।

राहअ, राहव पु [राघव] १ रघुवंश मे उत्पन्न (उत्तर २०)। २ श्रीरामचन्द्र (से १२, २२, १, १३, ४७)।

राहा स्त्री [राधा] १ वृन्दावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी (वज्जा १२२, पिंग)। २ राधावेध मे रखी जाती पुतली (उप पृ १३०)। ३ शक्ति-विशेष। ४ कर्ण का पालन करनेवाली माता (प्राकृ ४२)। °मडव पुं [°मण्डप] जहां पर राधावेध किया जाय वह स्थान (सुपा २६६)। °वेह पु [°वेध] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमे चक्राकार घूमती पुतली की वाम चक्षु बीधी जाती है (उप ६३५, सुपा २५५)।

राहिआ, राही स्त्री [राधिका] ऊपर देखो (गा ८९, हे ४, ४४२, प्राकृ ४२)।

राहु पु [राहु] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८, पाअ)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)।

राहुहय न [राहुहत] जिसमे सूर्य और चन्द्र का ग्रहण हो वह नक्षत्र (वव १)।

राहेअ पु [राधेय] राधा-पुत्र, कर्ण (गउड)।

रि अ [रे] संभाषण-सूचक अव्यय (तंदु ५०, ५२ टी)।

रि सक [ऋ] गमन करना। कर्म. अज्जए (विसे १३६६)।

रिअ सक [री] गमन करना। रियइ, रियति, रिए (सूअ २, २, २०, सुपा ४४५, उत्त २४, ४)। वकृ. रियंत (पउम २८, ४)।

रिअ सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पेठना। रिअइ (हे ४, १८३, कुमा)।

रिअ न [ऋत] १ गमन, 'पुरओ रिय सोहमाणे' (भग)। २ सत्य (भग ८, ७)।

रिअ वि [दे] लून, काटा हुआ (षड्)।

रिउ देखो उउ (हे १, १४१, कुमा, पव १४१)।

रिउ वि [ऋजु] १ सरल, सीधा (सुपा ३८६)। २ न. विशेष पदार्थ, सामान्य-भिन्न वस्तु (पव २७०)। °सुत्त पुं [°सूत्र] नय-विशेष (विसे २२३१, २६०८)। देखो उज्जु।

रिउ पु [रिपु] शत्रु, वैरी, दुश्मन (सुर २, ६६, कुमा)। °महण पु [°मथन] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६३)।

रिउ स्त्री [ऋच्] वेद का नियत अक्षर-पादवाला अंश। °व्वेय पु [°वेद] एक वेद-ग्रंथ (णाया १, ५, कप्प)।

रिंखण न [रिङ्खण] सर्पण, गति, चाल (पउम २५, १२)।

रिंखि वि [रिङ्खिन्] चलनेवाला, 'गिद्धाव-रिंखि हद्दन्नए (?गिद्धु व्व रिंखी हदन्नए)' (पिंड ४७१)।

रिंग देखो रिग। रिंगइ, रिंगए (हे ४, २५९ टि, षड्, पिंग)। वकृ. रिंगंत (हास्य १४६)।

रिगण न [रिङ्गण] चलना, सर्पण (पव २)।

रिगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती मे 'रिंगणी' (दे २, ४, उर २, ८)।

रिगिअ न [दे] भ्रमण (दे ७, ६)।

रिगिअ न [रिङ्गित] १ रेंगना, कच्छप की तरह हाथ के बल चलना। २ गुरु-वन्दन का एक दोष (गुभा २४)।

रिंगिसिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राज)।

रिछ (अप) देखो रिच्छ = ऋक्ष (भवि)।

रिछोली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणी (दे ७, ७, सुर ३, ३१, विसे १४३९ टी, पाअ, चेइय ४४, सम्मत्त १८८, धर्मवि ३७, भवि)।

रिडी स्त्री [दे] कन्याप्राया, कन्था की तरह का फटा टूटा आच्छादन-वस्त्र (दे ७, ५)।

रिक्क वि [दे] स्तोक, थोडा (दे ७, ६)।

रिक्क देखो रित्त = रिक्त (आचा, पाअ, पउम ८, ११८, सुपा ४२२, चउ ३९)।

रिक्किअ वि [दे] शटित, सडा हुआ (दे ७, ७)।

रिक्ख अक [रिङ्ख्] चलना। वकृ. 'गिरिव्व अच्छिन्नपक्खो अंतरिक्खे रिक्खंतो लक्खिज्जइ' (कुप्र ६७)।

रिक्ख वि [दे] १ वृद्ध, बूढ़ा। २ पुं. वय-परिणाम, वृद्धता (दे ७, ६)।

रिक्ख पुं [ऋक्ष] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष (हे २, १९)। २ न. नक्षत्र (पाअ, सुर ३, २६, ८, ११६)। °पह पु [°पथ] आकाश (सुर ११, ७१)। °राय पुं [°राज] वानर-वंश का एक राजा (पउम ८, २३४)।

रिक्खण न [दे] १ उपलम्भ, अधिगम। २ कथन (दे ७, १४)।

रिक्खा देखो रेहा = रेखा (ओघ १७९)।

रिग } अक [रिङ्ग्] १ रेंगना, धीरे-धीरे
रिग्ग } और जमीन से रगड़ खाते हुए चलना। २ प्रवेश करना। रिगइ, रिग्गइ (हे ४, २५९, टि)।

रिग्ग पु [दे] प्रवेश (दे ७, ५)।

रिच श्रीन देखो रिउ = ऋच् (पि ५६, ३१८)। स्त्री °चा (नाट—रत्ना ३८)।

रिच्छ वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा (दे ७, ६)।

रिच्छ देखो रिक्ख = ऋक्ष (हे १, १४०, २, १९, पाअ)। °हिव पु [°धिप] जाम्बवान्, राम का एक सेनापति (से ४, १८, ४५)।

रिच्छभल्ल पु [दे] भालू, रीछ (दे ७, ७)।

रिजु देखो रिउ = ऋच् (भग)।

रिजु देखो रिउ = ऋजु (विसे ७८४)।

रिज्ज देखो रिअ = री। रिज्जइ (आचा)।

रिज्जु देखो रिउ = ऋजु (हे १, १४१, संक्षि १७, कुमा)।

रिज्झ अक [ऋध्] १ बढ़ना। २ रीझना, खुशी होना। रिज्झइ (भवि)।

रिट्ठ पुं [दे. अरिष्ट] १ अरिष्ट, दुरित (पड्, पि १४२)। २ दैत्य विशेष (पड्, से १, ३)। ३ काक, कौआ (दे ७, ६, णाया १, १—पत्र ६३, पड्, पाअ)। °नेमि पु [°नेमि] बाईसवें जिनदेव (पि १४२)।

रिट्ठ पु [रिष्ट] १ देव-विशेष, रिष्ट नामक विमान का निवासी देव (णाया १, ८—पत्र १५१। २ वेनम्ब और प्रभ-ञ्जन नामक इन्द्र के लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ३ एक दुष्ट साँड, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। ४ पक्षि-विशेष (पउम ७, १७)। ५ न रत्न-विशेष (चेइय ६१५, औप, णाया १, १ टी)। ६ एक देव-विमान (सम ३५)। ७ पुन फल-विशेष, रीठा (उत्त ३४, ४, सुख ३४, ४)। °पुरी स्त्री [°पुरी] कच्छावती-विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °मणि पु [°मणि] श्याम रत्न-विशेष (सिरि ११९०)।

रिट्ठा स्त्री [रिष्टा] १ महाकच्छ विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। २ पाचवीं नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८)। ३ मदिरा, दारू (राज)।

रिट्ठाभ न [रिष्टाभ] १ एक देव-विमान (सम १४)। २ लोकान्तिक देवों का एक विमान (पव २६७)।

रिट्ठि स्त्री [रिष्टि] १ खड्ग, तलवार (दे ७, ६)। २ अशुभ। ३ पु. रन्ध्र, विवर (संक्षि ३)।

रिड सक [मण्डय्] विभूषित करना। रिडइ (पड्)।

रिण न [ऋण] १ करजा या कर्ज, उधार लिया हुआ धन (गा ११३, कुमा, प्रासू ७७)। २ जल, पानी। ३ दुर्ग, किला। ४ दुर्ग भूमि। ५ आवश्यक कार्य, फरज। ६ कर्म (हे १, १४१, प्राप्र)। देखो अण = ऋण।

रिणिअ वि [ऋणित] करजदार, अधमर्ण (कुप्र ४३६)।

रिते अ [ऋते] सिवाय, बिना (पिंड ३७०)।

रित्त वि [रिक्त] १ खाली, शून्य (से ७, ११, गा ४९०, धर्मवि ६, ओघभा १६६)। २ न विरेक, अभाव (उत्त २८, ३३)।

रित्तुडिअ वि [दे] शातित, झड़वाया हुआ (दे ७, ८)।

रित्थ न [रिक्थ] धन, द्रव्य (उप ५२०, पाअ, स ६०, सुख ४, ६, महा)।

रिद्ध वि [ऋद्ध] ऋद्धि सपन्न (णाया १, १, उवा, औप)।

रिद्ध वि [दे] पक्व, पक्का (दे ७, ६)।

रिद्धि पुंस्त्री [दे] समूह, राशि (दे ७, ६)।

रिद्धि स्त्री [ऋद्धि] १ संपत्ति, समृद्धि, वैभव (पाअ, विपा २, १, कुमा, सुर २, १९८, प्रासू १२, ६२)। २ वृद्धि। ३ देव-विशेष। ४ ओषधि-विशेष (हे १, १२८, २, ४१, पचा ८)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °म, °ल्ल वि [°मत्] समृद्ध, ऋद्धि-सम्पन्न (ओघ ६८४, पउम ५, ५६, सुर २, ६८, सुपा २२३)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक वणिक्-कन्या (उप ७२८ टी)।

रिपु देखो रिवु (कप्प)।

रिप्प न [दे] पृष्ठ, पीठ (दे ७, ५)।

रिभिय न [रिभित] १ एक प्रकार का नाट्य (ठा ४, ४—पत्र २८५)। २ स्वर का घोलन। ३ वि. स्वर घोलना से युक्त (राज, णाया १, १—पत्र १३)।

रिमिण वि [दे] रोने की आदतवाला (दे ७, ७, पड्)।

रिरसा स्त्री [रिरसा] रमण की चाह, मैथुनेच्छा (अज्झ ७९)।

रिरिअ वि [दे] लीन (दे ७, ७)।

रिल्ल अक [दे] शोभना। वकृ रिल्लंत (भवि)।

रिवु देखो रिउ = रिपु (पउम १२, ४१, ४४, ५०, स १३८, उप पृ ३२१)।

रिसभ } पु [ऋषभ] १ स्वर-विशेष (ठा
रिसह } ७—पत्र ३९३)। २ अहोरात्र का अठाइसवाँ मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३)। ३ संहत अस्थि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट, 'रिसहो य होइ पट्टो' (जीवस ४९)। देखो उसभ (औप, हे १, १४१, सम १४९, कम्म २, १९, सुपा २६०)।

°रिसह पु [°ऋषभ] श्रेष्ठ, उत्तम (कुमा)।

रिसि पुं [ऋषि] मुनि, संत, साधु (औप, कुमा, सुपा ३१, अवि १०१, उप ७६८ टी)। °घाय पुं [°घात] मुनि हत्या (उप ४६६)।

रिह सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिहइ (पड्)।

री } अक [री] जाना, चलना। रीयइ,
रीअ } रीयए, रीयते, रीएज्जा (आचा, सूअ १, २, २, ५, उत्त २४, ७)। भूका रीइत्था (आचा)। वकृ रीयंत, रीयमाण (आचा)।

रीइ स्त्री [रीति] प्रकार, ढंग, पद्धति, 'तं जए निउणंति निय नयनयरीईंद' (धर्मवि ३२, कप्पू)।

रीड सक [मण्डय्] अलंकृत करना। रीडइ (हे ४, ११५)।

रीडण न [मण्डन] अलंकरण (कुमा)।

रीढ स्त्रीन [दे] अवगणन, अनादर (दे ७, ८)। स्त्री. °ढा (पाअ, धम्म ११ टी, पंचा २, ८, बृह १)।

रीण वि [रीण] १ क्षरित, स्नुत। २ पीडित (भत्त २)।

रीर अक [राज्] शोभना, चमकना, दीपना। रीरइ (हे ४, १००)।

रीरिअ वि [राजित] शोभित (कुमा)।

रीरी स्त्री [रीरी] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र ११, सुपा १४२)।

रु स्त्री [रुज्] रोग, बीमारी, 'अरु (? रु) उवसग्गो' (तदु ४६)।

रुअ अक [रुद्] रोना। रुअइ (षड्, सिरि ३६, प्राकृ ६८, महा)। भवि. रोच्छं (हे ३, १७१)। वकृ. रुअ°, रुअंत, रुयमाण (गा २१६, ३७६, ४००, सुर २, ६६, ११२, ४, १२६)। संकृ. रोत्तूण (कुमा, प्राकृ ३४)। हेकृ. रोत्तुं (प्राकृ ३४)। कृ. रोत्तव्व (हे ४, २१२, से ११, ६२)। प्रयो. रुयावेइ (महा), रुआवंति (पुप्फ ४८७)।

रुअ न [रुत] शब्द, आवाज (से १, २८, णाया १, १३, पव ७३ टी)।

रुअ देखो रूअ = रूप (इक)।

रुअ देखो रूअ = (दे) (औप)।

रुअंती स्त्री [रुदती] वल्ली-विशेष (संबोध ४७)।

रुअंस देखो रुअस (इक)।

रुअग पु [रुचक] १ कान्ति, प्रभा (पण्ह १, ४—पत्र ७८, औप)। २ पर्वत-विशेष, 'नगुत्तमो होइ पव्वओ रुयगो' (दीव)। ३ द्वीप-विशेष (दीव)। ४ एक समुद्र (सुज्ज १६)। ५ एक विमानावास—देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। ६ न. इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। ७ रत्न-विशेष (उत्त ३६, ७६, सुख ३६, ७६)। ८ रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट (दीव)। ९ निषध पर्वत का आठवाँ कूट (इक)। °प्पभ न [°प्रभ] महाहिमवत पर्वत का एक कूट (ठा २, ३)। °वर पु [°वर] १ द्वीप-विशेष (सुज्ज १६)। २ पर्वत-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३०)। ३ समुद्र-विशेष। ४ रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३—पत्र ३६७)। °वरभद्द पु [°वरभद्र] रुचकवर द्वीप का अधिष्ठायक एक देव (जीव ३—पत्र ३६६)। °वरमहाभद्द पु [°वरमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३)। °वरमहावर पु [°वरमहावर] रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरावभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] रुचकवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरावभासमहाभद्द पु [°वरावभासमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३)। °वरावभासमहावर पु [°वरावभासमहावर] रुचकवरावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरावभासवर पु [°वरावभासवर] वही अर्थ (जीव ३—पत्र ३६७)। °वरोद पु [°वरोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)। °वरोभास देखो °वरावभास (सुज्ज १६)। °विई स्त्री [°विनी] एक इन्द्राणी (णाया २—पत्र २५२)। °ोद पु [°ोद] समुद्र-विशेष (जीव ३—पत्र ३६६)।

रुअगिंद पु [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सम ३३)।

रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष (इक)।

रुअण न [रोदन] रुदन, रोना (संबोध ४)।

रुअय देखो रुअग (सम ६२)।

रुअरुइआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा (दे ७, ८)।

रुआ स्त्री [रुज्] रोग, बीमारी (उव, धर्मसं ५६८)।

रुआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ (गा ३८६)।

रुइ स्त्री [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज (सुर ७, ४, कुमा)। २ अनुराग, प्रेम (जो ५१)। ३ आसक्ति (प्रासू १६६)। ४ स्पृहा, अभिलाष। ५ शोभा। ६ बुभुक्षा, खाने की इच्छा। ७ गोरोचना (षड्)।

रुइअ वि [रुचित] १ अभीष्ट, पसंद (सुर ७, २४३, महा)। २ पुन विमानावास-विशेष, एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

रुइअ देखो रुण्ण = रुदित (स १२०)।

रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनोरम (पाअ)। २ दीप्र, कान्ति-युक्त (तदु २०)। ३ पुन. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३१)।

रुइर वि [रोदितृ] रोनेवाला। स्त्री. °री (पि ५६६, गा २१६ अ)।

रुइल वि [°रुचिर, °ल] १ शोभन, सुन्दर (औप, णाया १, १ टी, तदु २०)। २ दीप्त, चमकता हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ७८, सूअ २, १, ३)। ३ पुन. एक देव-विमान (सम ३८)।

रुइल्ल न [रुचिर, रुचिमत्] एक देव-विमान (सम १५)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम १५)। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देवविमान (सम १५)। °लेस न [°लेश्य] एक देवविमान (सम १५)। °वण्ण न [°वर्ण] देवविमान-विशेष (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देवविमान (सम १५)। °ावत्त न [°ावर्त्त] एक देवविमान (सम १५)।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [रुचिरोत्तरावतंसक] एक देवविमान (सम १५)।

रुंच सक [रुञ्च्] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना। वकृ. रुंचंत (पिंड ५७४)।

रुंचण न [रुञ्चन] रुई से कपास को अलग करने की क्रिया (पिंड ५८८)।

रुंचणी स्त्री [दे] घरट्टी, दलने का पत्थर-यन्त्र (दे ७, ८)।

रुंज अक [रु] आवाज करना। रुंजइ (हे ४, ५७, षड्)।

रुंजग पु [दे रुञ्जक] वृक्ष, पेड, गाछ 'कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाई अ' (दसनि १)।

रुंजिय न [रवण] शब्द, आवाज, गर्जना (सुर ४२०)।

रुंट देखो रुंज। रुंटइ (हे ४, ५७, षड्)। वकृ. रुंटंत (स ६२, पउम १०५, ५५, गउड)।

रुंटणया स्त्री [दे] अवज्ञा, अनादर (पिंड २१०)।

रुंटणिया स्त्री [दे रुंटणिका] रोदन क्रिया (णाया १, १६—पत्र २०२)।

रुंटिअ न [रुत] गुञ्जारव, आवाज, 'रुंटिअ अलिविन्द्रं' (पाअ, कुमा)।

रुंड पुन [रुण्ड] बिना सिर का धड, कबन्ध, 'पडिया य रुंडमुंडा' (कुप्र १३५, गउड, भवि, सण)।

रुंढ पु [दे] आक्षिक, कितव, जुआडी (दे ७, ८)।

रुंढिअ वि [दे] सफल (दे ७, ८)।

रुंद वि [दे] १ विपुल, प्रचुर (दे ७, १४, गा ४०२, सुपा २६०, वज्जा १२८, १६२)। २ विशाल, विस्तीर्ण (विसे ७१०, स ७०२, पव ६१, औप)। ३ स्थूल, मोटा, पीन (पाअ)। ४ मुखर, वाचाल (दे ७, १४)।

रुंदी स्त्री [दे] विस्तीर्णता, लम्बाई (वज्जा १६४)।

रुंध सक [रुध्] रोकना, अटकाना। रुंधइ (हे ४, १३३, २१८)। कर्म रुंधिज्जइ, रुब्भइ, रुज्झइ (हे ४, २४५, कुमा)। वकृ रुंधंत (कुमा)। कवकृ रुज्झंत, रुब्भमाण, रुब्भंत (पउम ७८, ३६, से ४, १७, भवि)। कृ. रुंधिअव्व (अभि ५०)।

रुंधिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

रुंप पु [दे] १ लता, सूक्ष्म छाल (गा ११६, १२०, वज्जा ४२)। २ उल्लिखन (वज्जा ४०)।

रुंपण न [रोपण] रोपाना, वपन कराना, बोना (पिंड १६२)।

रुंफ देखो रुंप (पि २०८)।

रुंभ देखो रुंध। रुंभइ (हे ४, २१८, प्राप्र)। वकृ रुंभंत (पि ५३५)। कृ रुंभिअव्व (से ६, ३)।

रुंभण न [रोधन] रोक, अटकाव, अवरोध (पण्ह १, १, कुप्र ३७७, गा ६२०)।

रुंभय वि [रोधक] रोकनेवाला (स ३८१)।

रुंभाविअ वि [रोधित] रुकवाया हुआ, बंद किया हुआ (श्रा २७)।

रुंभिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (हेका ६६, सुपा १२७)।

रुक्क न [दे] बैल आदि की तरह शब्द करना (अणु २६)।

रुक्किणी देखो रुप्पिणी (पि २७७)।

रुक्ख पुन [वृक्ष] पेड, गाछ, पादप (णाया १, १; हे २, १२७; प्राप्र, उव, कुमा, जी २७, प्रति ६, प्रासू १६८), 'रुक्खाइ, रुक्खाणि' (पि ३५८)। २ संयम, विरति (सूअ १, ४, १, २५)। °मूल न [°मूल] पेड की जड (कस)। °मूलिय पु [°मूलिक] वृक्ष के मूल में रहनेवाला वानप्रस्थ (औप)। °सत्थ न [°शास्त्र] वनस्पति-शास्त्र (स ३११)। °ाउवेद पु [°ायुर्वेद] वही अर्थ (विसे १७७५)।

रुक्खल्ल ऊपर देखो (षड्)।

रुक्खत्तण पुन [वृक्षत्व] वृक्षपन (षड्)।

रुग्ग वि [रुग्ण] भग्न, भाँगा हुआ (पाअ, गउड, ५६१)।

रुच } सक [दे] पीसना। रुचति, रुच्चति, रुच्च } भूका रुचिंसु, रुच्चिंसु, भवि. रुचिस्सति, रुच्चिस्सति (आचा २, १, ६, ५)।

रुचिर देखो रुइर (दे १, १४६)।

रुच्च अक [रुच्] रुचना, पसन्द पडना। रुच्चइ, रुच्चए (वज्जा १०६, महा, सिरि १०६, भवि। वकृ रुच्चंत, रुच्चमाण (भवि, उप १४३ टी)।

रुच्च सक [दे] व्रीहि आदि को यन्त्र में निस्तुष करना। वकृ रुच्चंत (णाया १, ७—पत्र ११७)।

रुच्चि देखो रुइ = रुचि (कप्पू)।

रुच्छ देखो रुक्ख (गडि १५)।

रुच्मि देखो रुप्पि (हे २, ५२, कुमा)।

रुज्ज न [रोदन] रुदन, रोना, 'दीहुण्हा णीसासा, रणरणओ, रुज्जगग्गिर गेअं' (गा ८८३)।

रुज्झ देखो रुंध। रुज्झइ (हे ४, २१८)।

रुज्झ° देखो रुह = रुह्।

रुज्झंत देखो रुंध।

रुज्झिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

रुट्टिया स्त्री [दे] रोटी (सट्ठि ३६)।

रुट्ठ वि [रुष्ट] रोषयुक्त (उवा, सुर २, १२१)। २ पु. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २८)।

रुणरुण न [दे] करुण क्रन्दन (भवि)।

रुणरुण अक [दे] करुण क्रन्दन करना। रुणरुणइ (वज्जा ५०, भवि)। वकृ. रुणरुणंत (भवि)।

रुणुरुण देखो रुणरुण (पउम १०५, ५८)।

रुणुरुणिय वि [दे] करुण क्रन्दनवाला (पउम १०५, ५८)।

रुण्ण न [रुदित] रोदन, रोना (हे १, २०६, प्राप्र, गा १८)।

रुते देखो रिते (वव ४)।

रुत्थिणी देखो रुप्पिणी (षड्)।

रुदिअ देखो रुण्ण (नाट—मालती १०६)।

रुद्द पु [रुद्र] १ महादेव, शिव (सम्मत्त १४५, हेका ५६)। २ शिव-मूर्त्ति-विशेष (णाया १, १—पत्र ३६)। ३ जिन देव, जिन भगवान् (पउम १०६, १२)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। ५ नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता (पउम २०, १८२, सम १५२)। ६ ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२)। ७ अंग-विद्या का जानकार पुरुष (विचार ४८४)। ८ वि. भयंकर, भय-जनक (सम्मत्त १४५)। देखो रोद्द = रुद्र।

रुद्द देखो रोद्द = रौद्र (सम ६)।

रुद्दक्ख पु [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)।

रुद्दाणी स्त्री [रुद्राणी] शिव-पत्नी, दुर्गा (मधु १५४)।

रुद्ध वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

रुद्र देखो रुद्द (हे २, ८०)।

रुन्न देखो रुण्ण (सुर २, १२६)।

रुप्प सक [रोपय्] रोपना, बोना, 'सद्धार-भरियदमरुप्पसि वत्तूरय तुम वच्छे' (धर्मवि ६७)।

रुप्प न [रुक्म] १ काञ्चन, सोना। २ लोहा। ३ धत्तूरा। ४ नागकेसर (प्राप्र)। ५ चांदी, रजत (ज ४)।

रुप्प न [रूप्य] चांदी, रजत (औप, सुर ३, ६, कप्पू)। °कूड पु [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (राज)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °कूला स्त्री [°कूला] १ एक महानदी (ठा २, ३—पत्र ७२, ८०, सम २७, इक)। २ एक देवी। ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट (ज ४)। °मय वि [°मय] चांदी का बना हुआ (णाया १, १—पत्र ५२, कुमा)। °ाभास पुं [°ाभास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रुप्प वि [रौप्य] रूपा का, चांदी का (णाया १, १—पत्र २४, उर ८, ४)।

रुप्पय देखो रुप्प = रूप्य, 'रुणय रययं' (पाअ, महा)।

रुप्पि पुं [रुक्मिन्] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई (णाया १, १६—पत्र २०६, कुमा, रुक्मि ४२)। २ कुणाल देश का एक राजा (णाया १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षधर-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १२, ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव-विशेष (ज ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट (ज ४)। ७ त्रि सुवर्णवाला। ८ चांदी वाला (हे २, ५२, ८९)। °कूड पुन [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (ठा २, ३, सम ६३)।

रुप्पिणी स्त्री [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी (पउम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-महिषी (पउम २०, १८७, पडि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी (सुपा ३३४)।

रुप्पोभास पुं [रूप्यावभास] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि रजत की तरह चमकता (ज ४)।

रुब्भत } देखो रुव।
रुब्भमाण }

रुम्मिणी देखो रुप्पिणी (षड्)।

रुम्ह सक [म्लापय्] म्लान करना, मलिन करना। 'प-रुम्हाइ जसं' (से ३, ४)।

रुरु पु [रुरु] १ मृग-विशेष (पउम ६, ५६, पण्ह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। ३ एक अनार्य देश। ४ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

रुरुअ अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ बारबार चिल्लाना। वकृ. रुरुवेत (स २१३)।

रुल अक [लुठ्] लेटना। वकृ. रुलत, रुलित (पण्ह १, ३—पत्र ४५, 'पडियगय-घडतुरय रुलतनरसुहडधडसयाइन्नं' (धर्मवि ८०)।

रुलुघुल अक [दे] नीचे साँस लेना, नि श्वास डालना। वकृ. रुलुघुलत (भवि)।

रुव देखो रुअ = रुद्। रुवइ (हे ४, २२६; प्राकृ ६८, संक्षि ३६, भवि, महा), रुवामि (कुप्र ६६)। कर्म. रुव्वइ, रुविज्जइ (हे ४, २४९)।

रुवण न [रोदन] रोना (उप ३३५)।

रुवणा स्त्री. ऊपर देखो (ओघभा ३०)।

रुवणा स्त्री [रोवणा] आरोपणा, प्रायश्चित्त का एक भेद (वव १)।

रुविल देखो रुइल (औप)।

रुव्व देखो रुअ = रुद्। रुव्वइ (संक्षि ३६, प्राकृ ६८)।

रुसा स्त्री [रोष] रोष, गुस्सा (कुमा)।

रुसिय देखो रुसिअ (पउम ५५, १५)।

रुह अक [रुह्] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सुखाना। रुहइ (नाट)। कर्म 'जेण विदारियद्दोति खग्गाइपहारो इमीए पक्खालणेयएणपि पणट्ठेयण तक्खणा चेव रुज्झइ त्ति' (स ४१३)।

रुह वि [रुह] उत्पन्न होनेवाला (आचा)।

रुहण न [रोधन] निवारण (वव १)।

रुहरुह अक [दे] मन्द मन्द बहना, 'वामगि सुत्ति रुहरुहइ वाउ' (भवि)।

रुहुरुहय पु [दे] उत्कण्ठा (भवि)।

रूअ न [दे रूत] रुई, तूल (दे ७, ९, कप्प, पव ८४, देवेन्द्र ३३२, धर्मसं ६८०, मण, सबोध ३१)।

रूअ पु [रूप] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७)। ३ आकृति, आकार (गा १३२)। ४ वि. सदृश, तुल्य (दे ६, ४६)। °कंत पु [°कान्त] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका (राज)। °प्पभ पु [°प्रभ] पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७, १९८)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी [णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो रूव = रूप (गउड)।

रूअस पु [रूपांश] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७, १९८)।

रूअसा स्त्री [रूपांशा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा६—पत्र ३६१)।

रूअग } पुन [रूपक] १ रुपया (हे ४, ४२२)। २ पु. एक गृहस्थ (णाया
रूअय }
२—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन (णाया २—पत्र २५२)। °वडिंसय न [°ावतंसक] रूपा देवी का भवन (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक गृहस्थ स्त्री (णाया २)। °ावई स्त्री [°वती] भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)। देखो रुवय = रूपक।

रूअरुइआ [दे] देखो रुअरुइआ (षड्)।

रूआ स्त्री [रूपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८)।

रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छन्द-विशेष (पिंग)।

रूआर वि [रूपकार] मूर्त्ति बनानेवाला, 'मोत्तुमजोग्गं जोग्गे दलिए रूवं करेइ रूआरो' (विसे १११०)।

रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८)।

रूढ त्रि [रूढ] १ परपरागत, रूढि-सिद्ध। २ प्रसिद्ध, 'रूढक्कमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा' (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तदुरुस्त (पाअ)।

रूढ वि [रूढ] उगा हुआ, उत्पन्न (दस ७, ३५)।

रूढि स्त्री [रूढि] परम्परा से चली आती प्रसिद्धि 'पासहमहोच्छवीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ' (सुपा २६८, ४५४)।

रूप पु [रूप] पशु, जानवर (मृच्छ २००)। रूअ = रूप (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूपि पु [रूपिन्] [illegible], रसाई (मृच्छ २००)।

रूरुइअ न [दे] उत्सुकता, रणरणक (पाअ)।

रूव पुन [रूप] १ आकृति, आकार (णाया १, १ पाअ)। २ सौन्दर्य सुन्दरता (कुमा, ठा ४, २, प्रासू ८७, ७१)। ३ वर्ण, शुक्ल आदि रंग (आचा, ठा १, २, ३)। ४ मूर्त्ति (विसे ११७०)। ५ स्वभाव (ठा ६)। ६ शब्द, नाम। ७ श्लोक। ८ नाटक आदि दृश्य काव्य (हे १, १४२)। ९ एक की संख्या, एक (कम्म ४, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१)। १०-११ [illegible], वर्णमाला (हे १, १४२)। १२—देखो रूअ, रूप = रूव। °कंता देखो रूअ-कंता (ठा ६—पत्र ३६१, टी)। °जक्ख पु [°यक्ष] धर्मपाठक (व्यव० भा० गा० ६१४)। °धार वि [°धार] रूप धारी, 'जणयरमज्झगएण अणेगमच्छाइरूवधारेण' (गा ६)। °प्पभा देखो रूअप्पभा (टी)। °मंत देखो °वंत (पउम १२, ७५, ६०, २०)। °वई स्त्री [°वती] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र महिषी (ठा ६—पत्र ३६१)। २ सुरूप नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिक्कुमारी महत्तरिका (ठा ६)। °वं, °वंत वि [°वत्] रूपवाला, सुन्दर (सम १०, उवा, उप पृ ३३२, सुपा ३४ ३३)।

रूवग पुन [रूपक] १ रुपया (उप पृ २८०, धम्म ८ टी, सुर ४, १४) २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार (सुर १, २६, विसे ९९९ टी)। देखो रूवय = रूपक।

रूवणिआ स्त्री [दे] [illegible] (दे ७, ९)।

रूवय देखो रूवग (सुर १२३, ४१३, नाय ३४)।

रूवसिणी देखो रूवस्सिणी (पड्)।

रूवा देखो रूआ (इक)।

रूवि वि [रूपिन्] रूपवाला (आचा, भग, स ८३)।

रूवि पुस्त्री [दे] गुच्छ विशेष, अर्क-वृक्ष, आक का पेड़ (पण्ण १—पत्र ३२, दे ७, ६)।

रूस अक [रुष्] गुस्सा करना। रूसइ, रूसए (उव, कुमा, हे ४, २३६, प्राकृ ६८, षड्)। कर्म रूसिज्जइ (हे ४, ४१८)। हेकृ रूसिउ, रूसेउं (हे ३, १४१, पि ५७३)। कृ रूसिअव्व, रूसेयव्व (गा ४६६, पण्ह २, ५—पत्र १५०, सुर १६, ६४)। प्रयो, सकृ रूसविअ (कुमा)।

रूसण न [रोषण] १ रोष, गुस्सा (गा ६७५, हे ४, ४१८)। २ वि गुस्साखोर, रोष करनेवाला (सुख १, १४, सबोध ४८)।

रूसिअ वि [रुष्ट] रोष-युक्त (सुख १, १३, १६)।

रे अ [रे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिहास। २ अधिक्षेप (संक्षि ४७)। ३ संभाषण (हे २, २०१, कुमा)। ४ आक्षेप (संक्षि ३८)। ५ तिरस्कार (पव ३८)।

रेअ पु [रेतस्] वीर्य, शुक्र (राज)।

रेअव सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। रेअवइ (हे ४, ९१)।

रेअविअ वि [मुक्त] छोड़ा हुआ, त्यक्त (कुमा, दे ७, ११)।

रेअविअ वि [दे रेचित] क्षणीकृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ (दे ७, ११, पाअ, से ११, २)।

रेआ स्त्री [रे] १ धन। २ सुवर्ण, सोना (षड्)।

रेइअ वि [रेचित] रिक्त किया हुआ (से ७ ३१)।

रेकिअ वि [दे] १ आश्लिष्ट। २ लीन। ३ व्रीडित, लज्जित (दे ७, १४)।

रेकार पु [रेकार] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज (पव ३८)।

रेट्ठि देखो रिट्ठि (संक्षि ३)।

रेणा स्त्री [रेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी (कप्प, पडि)।

रेणि पुस्त्री [दे] पङ्क, कर्दम (दे ७, ९)।

रेणु पुस्त्री [रेणु] १ रज, धूली (कुमा)। २ पराग (स्वप्न ७६)।

रेणुआ स्त्री [रेणुका] ओषधि-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

रेभ पु [रेफ] १ 'र' अक्षर, रकार (कुमा)। २ वि दुष्ट। ३ अधम, नीच। ४ क्रूर, निर्दय। ५ कृपण, गरीब (हे १, २३६, षड्)।

रेरिज्ज अक [राराज्य्] अतिशय शोभना। वकृ. रेरिज्जमाण (णाया १, २—पत्र ७८, १, ११—पत्र १७१)।

रेल्ल सक [प्लावय्] सराबोर करना। वकृ. रेल्लंत (कुमा)।

रेल्लि स्त्री [दे] रेल, स्रोत, प्रवाह (राज)।

रेवइनक्खत्त पु [रेवतीनक्षत्र] आर्य नागहस्ती के शिष्य एक जैन मुनि (णंदि ५१)।

रेवइय पु [रैवतिक] स्वर-विशेष, रैवत स्वर (अणु १२८)।

रेवइय न [रैवतिक] एक उद्यान का नाम (कप्प)।

रेवइआ स्त्री [रैवतिका] भूत-ग्रह विशेष (सुख २, १६)।

रेवई स्त्री [रेवती] १ बलदेव की स्त्री (कुमा)। २ एक श्राविका का नाम (ठा ९—पत्र ४५५, सम १५४)। ३ एक नक्षत्र (सम ५७)।

रेवई स्त्री [दे रेवती] मातृका, देवी (दे ७, १०)।

रेवत पु [रेवन्त] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष, 'रेवंततणुभवा इव असकिसोरा सुलक्खणिणो' (धर्मवि १४२, सुपा ५६)।

रेवज्जिअ वि [दे] उपालब्ध (दे ७, १०)।

रेवण पु [रेवण] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य ग्रंथ का कर्ता (धर्मवि १४२)।

रेवय न [दे] प्रणाम, नमस्कार (दे ७, ९)।

रेवय पु [रैवत] गिरनार पर्वत (णाया १, ५—पत्र ९९, अंत, कुप्र १८)।

रेवय पु [रैवत] स्वर विशेष (अणु १२७)।

रेवलिआ स्त्री [दे] वालुकावर्त्त, धूल का आवर्त (दे ७, १०)।

रेवा स्त्री [रेवा] नदी-विशेष, नर्मदा (गा ५७८, पाअ, कुमा, प्रासू ६७)।

रेसणिआ } स्त्री [दे] १ करोटिका, एक
रेसणी } प्रकार का कास्य-भाजन (पात्र, दे ७, १५)। २ अक्षि-निकोच (दे ७, १५)।

रेसम्मि देखो रसम्मि, जो उण सद्धा-रहिओ दाणं देइ जसकित्तिरेसम्मि' (स १५७)।

रेसि (अप) देखो रेसि (हे ४, ४२५, सण)।

रेसिअ त्रि [दे] छिन्न, काटा हुआ (दे ७, ६)।

रेसिं (अप) नीचे देखो (हे ४, ४२५)।

रेसिम्मि अ निमित्त, लिए, वास्ते, 'दसण-नाणचरित्ताण एस रेसिम्मि सुपसत्थो' (पंचा १६, ४०)।

रेह अक [राज्] दीपना, शोभना, चमकना। रेहइ, रेहए (हे ४, १००, धात्वा १५०, महा)। वकृ. रेहंत (कप्प)।

रेहा स्त्री [रेखा] १ चिह्न-विशेष, लकीर (ओघ ४८६, गउड, सुपा ४१, वज्जा ६४)। २ पंक्ति, श्रेणि (कप्पू)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

रेहा स्त्री [राजना] शोभा दीप्ति (कप्पू)।

रेहिअ न [दे] छिन्न पुच्छ, कटी हुई पूँछ (दे ७,१०)।

रेहिअ त्रि [राजित] शोभित (सुर १०, १८६)।

रेहिर वि [रेखावत्] रेखावाला (हे २, १५६)।

रेहिर } वि [राजितृ] शोभनेवाला (सुर
रेहिल्ल } १, ४०, सुपा ५६), 'नयरे नयरे-हिल्ले' (उप ७२८ टी)।

रेहिल्ल देखो रेहिर = रेखावत् (उप ७२८ टी)।

रोअ देखो रुअ = रुद्। रोअइ (सक्षि ३६, प्राकृ ३८)। वकृ. रोअंत, रोयमाण (गा ५४६, उप पृ १२८, सुर २, २२६)। हेकृ रोउं (सक्षि ३७)। कृ रोअत्तअ, रोइअव्व (से ३, ४८, गा ३४८, हेका ३३)।

रोअ देखो रुच = रुच्। रोयइ, रोयए (भग, उव), 'रोएइ जं पहूण तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं' (रंभा)। वकृ. रोयंत (श्रा ६)।

रोअ सक [रोचय्] १ रुचि करना। २ पसन्द करना, चाहना। रोयइ, रोएमि, रोएहि (उत्त १८, ३३, भग)। सकृ रोयइत्ता (उत्त २६, १)।

रोअ सक [रोचय्] निर्णय करना। रोअए (दस ५, १, ७७)।

रोअ पु [रोच] रुचि,
दुक्कररोया विउमा बाला
भणियेपि नेव बुज्झंति।
तो मज्झिमबुद्धीए हियत्थमेसो
पयासो मे' (चेइय २६०)।

रोअ पुं [रोग] आमय, बीमारी (पात्र)।

रोअग वि [रोचक] १ रुचि-जनक। २ न. सम्यक्त्व का एक भेद (संबोध ३५, सुपा ५५१)।

रोअण न [रोदन] रोना, रुदन (दे ५, १०, कुप्र २३५, २८६)।

रोअण पु [रोचन] १ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)। २ न. गोरोचन (गउड)।

रोअणा स्त्री [रोचना] गोरोचन (से ११, ४५, गउड)।

रोअणिआ स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७, १२, पात्र)।

रोअत्तअ देखो रोअ = रुद।

रोआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ (गा ३५७, सुपा ३१७)।

रोइ वि [रोगिन्] रोगवाला, बीमार (गउड)।

रोइ देखो रुइ = रुचि, 'अवि सुदरेवि दिण्णे दुक्कररोई कलहमाई' (पिंड ३२१)।

रोइअ वि [रोचित] १ पसंद आया हुआ (भग)। २ चिकीर्षित (ठा ६—पत्र ३५८)।

रोइर वि [रोदितृ] रोनेवाला (गा ३८६, पड्)।

रोंकण वि [दे] रक, गरीब (दे ७, ११)।

रोंच सक [पिष्] पीसना। रोंचइ, (हे ४, १८५)।

रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, अति सिक्त (षड्)

रोक्कणि } वि [दे] १ शृगी, शृंगवाला।
रोक्कणिअ } २ नृशंस, निर्दय (दे ७, १६)।

रोग पु [रोग] १ बीमारी, व्याधि (उवा, पण्ह १, ४)। २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक (उप ५३६)।

रोगि वि [रोगिन्] बीमार (सुपा ५७६)।

रोगिअ वि [रोगिक, °त] ऊपर देखो (सुख १, १४)।

रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)।

रोगिल्ल देखो रोगि (प्रामा)।

रोघस वि [दे] रक, गरीब (दे ७, ११)।

रोच्च देखो रोंच। रोच्चइ (षड्)।

रोज्झ पु [दे] ऋश्य, पशु-विशेष, गुजराती मे 'रोझ' (दे ७, १२, विपा १, ४, पात्र)।

रोट्ट पुन [दे] १ तंदुल पिष्ट, चावल आदि का आटा, पिसान, गुजराती मे 'लोट' (दे ७, ११, ओघ ३६३, ३७४, पिंड ४४, बृह १)।

रोट्टग पु [दे] रोटी, राट (महा)।

रोड सक [दे] १ रोकना, अटकाना। २ अनादर करना। ३ हेरान करना। रोडिसि (स ५७५)। कवकृ. रोडिज्जंत (उप पृ १३३)।

रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण (दे ७, ११)।

रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ व्रणी की शिबिका (दे ७, १५)।

रोत्तव्व देखो रुअ = रुद।

रोद पु [रौद्र] १ अहोरात्र का पहला मुहूर्त (सम ५१)। २ एक नृपति, तृतीय बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७)। ३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसो मे एक रस (अणु)। ४ वि दारुण, भयकर, भीषण (ठा ४, ४, महा)। ५ न ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन (ओप)।

रोद पु [रुद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। देखो रुद = रुद्र।

रोद्ध वि [दे] १ कुणिताक्ष। २ न. मल (दे ७, १५)।

रोम पुंन [रोमन्] लोम, बाल, रोआ (ओप, पात्र, गउड)। °कूव पु [°कूप] लोम का छिद्र (णाया १, १—पत्र १३, सुर २, १०१)।

रोम न [रोम] खान मे होता लवण (दस ३, ८)।

रोमंच पु [रोमाञ्च] रोओ का खड़ा होना, भय या हर्ष से रोओ का उठ जाना, पुलक (कुमा, काल, भवि, सण)।

रोमंचइअ } वि [रोमाञ्चित] पुलकित,
रोमंचिअ } जिसके रोम खड़े हुए हो वह (पउम ३, १०४, १०२, २०३, पात्र, भवि)।

रोमंथ पुं [रोमन्थ] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुन चबाना, पागुर (दे ६, ८७, पाअ, सण)।

रोमंथ } अक [रोमन्थय्] चबाई हुई
रोमंथाअ } चीज का फिर से चबाना, पगुराना, जुगाली करना। रोमंथइ (हे ४, ४३)। वकृ. रोमंथाअमाण (चारु ७)।

रोमग } पुं [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष,
रोमय } रोम देश (पव २७४)। २ रोम देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

रोमय पुं [रोमज] पक्षि विशेष, रोम की पाँखवाला पक्षी (जी २२)।

रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोमलयासय न [दे] पेट, उदर (दे ७, १२)।

रोमस वि [रोमश] रोम युक्त, रोमवाला (दे ३, ११, पाअ)।

रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोर पुं [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोर वि [दे] रंक, गरीब, निर्धन (दे ७, ११, पाअ सुर २, १०४ सुपा २६६)।

रोरु पुं [रोरु] सातवीं नरक पृथिवी का एक नरकावास (देवेन्द्र २८, इक)।

रोरुअ पुं [रौरुक, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३)। २ रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक (देवेन्द्र ५)। ३ सातवीं नरकपृथिवी का एक महानरक—नरक स्थान (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८, इक)। ५ चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोल पुं [दे] १ कलह, झगड़ा (दे ७, १५)। २ रव, कोलाहल, चिल्लाने की आवाज (दे ७, १५ पाअ, कुमा सुपा ५७६, चेइय १८४, मोह ५)।

रोलंब पुं [दे रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर (दे ७, ३, सुर ४८)।

रोवणा स्त्री [रोपणा] दण्ड विशेष (निचू)।

रोव सक रुद्=रुद्। रोवइ (हे ४, २२६, ... ३६, प्राकृ ६८, ... महा, सुर १०, १०१, भवि)। कृ. रोअव्व, रोवणीअ (उत्तम १०, ३०, सुर २, १२४, ६, २३५, पउम ११०, ३५)। संकृ. रोविऊण (पि ५८६)। हेकृ. रोविउं (स १००)।

रोव पुं [दे रोप] पौधा, गुजराती में 'रोपो' (सम्मत्त १४४)।

रोवण न [रोदन] रोना (सुर ६, ७६)।

रोवण न [रोपण] वपन, बीज बोना (वव १)।

रोवाविअ देखो रोआविअ (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [रोपित] १ बोया हुआ। २ स्थापित (से १३, ३०)।

रोविंदय न [दे] गेय विशेष, एक प्रकार का गान (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोविर देखो रोइर (दे ७, ७, कुमा, हे २, १४५)।

रोविर वि [रोपयितृ] बोनेवाला (हे २, १४५)।

रोस देखो रुस। रोसइ (?) (धात्वा १५०)।

रोस पुं [रोष] गुस्सा, क्रोध (हे २, १९०, १९१)। °इत्त, °इल वि [°वत्] रोष-(सक्षि २०, प्राप्र)।

रोसण वि [रोषण] रोष करनेवाला, गुस्साखोर (उप १४७ टी, सुख १, १३)।

रोसविअ वि [रोषित] कोपित, कुपित किया हुआ (पउम ११०, १३)।

रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्ध करना। रोसाणइ (हे ४, १०५, प्राकृ ६६, षड्)।

रोसाणिअ वि [मृष्ट] शुद्ध किया हुआ, मार्जित (पाअ, कुमा, पिंग)।

रोसिअ देखो रोसविअ (पउम ६६, ११, भवि)।

रोह अक [रुह्] उत्पन्न होना। रोहंति (गउड)।

रोह देखो रुंध। संकृ. रोहिऊण, रोहेउं (काल, बृह ३)।

रोह पुं [रोध] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन (णाया १, ८—पत्र १४६, उप पृ ८४, कुप्र १५८)। २ रुकावट, रोक, अटकाव (कुप्र ६, द्रव्य ४६)। ३ कैद (पुप्फ १८६)।

रोह पुं [रोधस्] तट, किनारा (पाअ)।

रोह पुं [रोह] १ एक जैन मुनि (भग)। २ प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना (दे ६, ६५)। ३ वि रोहक, रोहण-कर्त्ता (भवि)।

रोह पुं [दे] १ प्रमाण। २ नमन। ३ मार्गण (दे ७, १६)।

रोहग वि [रोधक] घेरा डालनेवाला, अटकाव करनेवाला, 'रोहगसजुत्तीए रोहिओ कुमारेण' (स ६३५), 'रोहगसजुत्ती उण कीरउ' (सुर १२, १०१)।

रोहग देखो रोह=रोध (स ६३५, सुर १२, १०१)।

रोहग पुं [रोहक] एक नट-कुमार (उप पृ २१५)।

रोहगुत्त पुं [रोहगुप्त] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य (विसे २४५२)।

रोहण न [रोधन] १ अटकाव (आचा ७२)। २ वि रोकनेवाला (द्रव्य ३४)।

रोहण व [रोहण] १ चढना, आरोहण (सुपा ४३८, कुप्र ३६६)। २ उत्पत्ति (विसे १७५३)। ३ पुं पर्वत-विशेष (सुपा ३२, कुप्र, ६)। ४ एक दिग्हस्ति-कूट, (इक)।

रोहिअ [दे] देखो रोज्झ (दे ७, १२, पाअ, पण्ह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [रोधित] घेरा हुआ, 'रोहिय पाडलिपुर तेण' (धर्मवि ४२, कुप्र ३६६, स ६३५)।

रोहिअ वि [रोहित] १ गुखाया हुआ (घाव) (उप पृ ७६)। २ पुं द्वीप विशेष (ज ४)। ३ पुं मत्स्य विशेष (स २५०)। ४ न तृण-विशेष (पणण १—पत्र ३३)। ५ कूट-विशेष (ठा २, ३, ८)।

रोहिअंस पुं [रोहितांश] एक द्वीप (ज ४)।

रोहिअंस° } स्त्री [रोहितांशा] एक नदी
रोहिअंसा } (सम २७, इक)। °प्पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३, ज ४)।

रोहिअप्पवाय पुं [रोहिताप्रपात] द्रह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ स्त्री [रोहित, रोहिता] एक नदी (सम २७, इक, ठा २, ३—पत्र ७२, ८०)।

रोहिंसा स्त्री [रोहिदंशा] एक नदी (इक)।

रोहिणिअ पुं [रौहिणेय] एक प्रसिद्ध चोर का नाम (श्रा २७)।

रोहिणी स्त्री [रोहिणी] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी (श्रा १६)। ३ ओषधि-विशेष (उत्त ३४, १०, सुर १०, २२३)। ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थंकर होनेवाली एक श्राविका (सम १५४)। ५ नववें बलदेव का माता का नाम (सम १५२)। ६ एक विद्या देवी (संति ५)। ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६)। ८ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ९ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। १० तप-विशेष (पव २७१, पंचा १९ २३)। ११ गो, गैया (पाग्र)। °रमण पु [°रमण] चन्द्रमा (पाग्र)। रोहीडग न [रोहीतक] नगर-विशेष (संथा ६८)।

॥ इग्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि रआराइसद्दसकलणो

तेत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ल

ल पु [ल] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण विशेष (प्राप्र)।

लइ अ. ले, अच्छा, ठीक (भवि)।

लइ देखो लय = ला।

लइअ वि [द. लगित] १ परिहित, पहना हुआ। २ अंग में पिनद्ध (दे ७, १८, पिंड ५६१, भवि)।

लइअल्ल पु [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १९)।

लइआ स्त्री [लतिका, लता] देखो लया (नाट—रत्ना ७, गउड, उप ७६८ टी)।

लइणा } स्त्री [दे] लता, वल्ली (षड्, दे
लइणी } ७, १८)।

लउअ पु [लकुच] वृक्ष-विशेष, बडहल का गाछ (ओप, पि ३६८)।

लउड } पु [लकुट] लकडी, लाठी, डंडा, लउर,
लउल } यष्टि (दे ७, १६, सुर २, ८, ओप)।

लउस } पु [लकुश] १ अनार्य देश-विशेष
लउसय } (पव २७४, इक)। २ पुंस्त्री लकुश देश का निवासी मनुष्य। स्त्री °सिया (णाया १, १—पत्र ३७, ओप, इक)।

लंका स्त्री [लङ्का] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी (से ३, ६२, पउम ४६, १६, कप्पू)। °लय वि [°लय] लंका-निवासी (वज्जा १२०)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान की एक पत्नी (पउम ५२, २१)। °सोग पुं [°शोक] राक्षस वंश का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हिव पुं [°धिप] लंका का राजा (उप पृ ३७५)। °हिवइ पु [°धिपति] वही अर्थ (पउम ४६, १७)।

लंका स्त्री [दे] शाखा (वज्जा १३०)।

लंख } पुंस्त्री [लङ्ख] बडे बाँस के ऊपर खेल
लंखग } करनेवाली एक नट-जाति (णाया १, १—पत्र २, पण्ह २, ५—पत्र १३२, ओप, कप्प)। स्त्री. °खिगा (उप १०१४)।

लंगल न [लाङ्गल] हल, 'खित्तेसु वहंति लंगलाए सया' (धर्मवि २४, हे १, २५६, षड् ८०)।

लंगलि पु [लाङ्गलिन्] बलभद्र, बलदेव (कुमा)।

लंगलि° } स्त्री [लाङ्गली] वल्ली-विशेष,
लंगली } शारदी लता (कुमा)।

लंगिम पुंस्त्री [दे] १ जवानी, यौवन। २ ताजापन, नवीनता, 'पिसुणइ तणुलट्ठी लंगिम चंगिम च' (कप्पू)।

लंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (हे १, २५६, पाग्र, कप्प, कुमा)।

लंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] पुच्छवाला, पशु (कुमा)।

लंगोल देखो लंगूल (सुज्ज १०, ८)।

लंघ सक [लङ्घ्, लङ्घय्] १ लाँघना, अतिक्रमण करना। २ भोजन नहीं करना। लंघइ, लंघेइ (महा, भवि)। कर्म. लंघिज्जइ (कुमा)। वकृ. लंघंत, लंघयंत (सुपा २७१, पउम ६७, २१)। संकृ लंघित्ता, लंघिऊण (महा)। हेकृ. लंघेउं (पि ५७३)। कृ लंघणिज्ज (से २, ४४), लंघ (कुमा १, १७)।

लंघण न [लङ्घन] १ अतिक्रमण (सुर ५, १९२)। २ अ-भोजन (उप १३५ टी)।

लंघि वि [लङ्घिन्] लंघन करनेवाला (कप्पू)।

लंघिअ वि [लङ्घित] जिसका लंघन किया गया हो वह (गउड)।

लंच पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ७, १७)।

लंचा स्त्री [लञ्चा] घूस, रिश्वत, उत्कोच (पाग्र, पण्ह १, ३—पत्र ५३, दे १, ६२, ७, १७, सुपा ३०८)।

लंचिल्ल वि [लाञ्चिक] घूसखोर, रिश्वत ले कर काम करनेवाला (वव १)।

लंछ सक [लञ्छ्] १ आँगना, तोडना। २ कलंकित करना। कर्म लंछिज्जइ (दसनि ८, १४)।

लंछ पु [लञ्छ] चोरों की एक जाति (विपा १, १—पत्र ११)।

लञ्छण न [लाञ्छन] १ चिह्न, निशानी (पाअ)। २ नाम। ३ अङ्कन, चिह्न करना (हे १, २५, ३०)।

लञ्छणा स्त्री [लाञ्छना] चिह्न करना (उप ५२२)।

लञ्छिअ वि [लाञ्छित] चिह्नित, कृत चिह्न (पव १५८, णाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १, कप्प, कप्पू)।

लंडिअ वि [दे लण्डित] उत्क्षिप्त, 'चउण-चादनतुत्था विश्व वराञ्जो पच्चदासा दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि' (नाट ३)।

लन्तक, लन्तग, लन्तय पुं [लान्तक] १ एक देवलोक, छठवाँ देवलोक (अणु, आव, अंत, ठा)। २ एक देवविमान (सम २०, देवेन्द्र १३८)। ३ छठ्ठ देवलोक के निवासी देव। ४ छठ्ठ देवलोक का इन्द्र (राज, ठा २, ३—पत्र ८५)।

लन्द पुं [लन्द] काल, समय (कप्प, पव ७०)।

लन्दय पुं [दे] गतिन्दक, गो आदि का खाने-पान (पव २)।

लपट वि [लम्पट] लालुप, लालची, लुब्ध (पाअ सुपा १०७, ५६६, सुर ३, १०)।

लपाग पुं [लम्पाक] देश विशेष (पउम ६८, ५६)।

लंपिक्खय पुं [दे] चोर, तस्कर (दे ७, १९)।

लंब सक [लम्ब] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ सक लटकना। लंबेइ (महा)। वकृ लंबमाण (औप, सुर ३,७१,४, २८८ रयण ४७)। संकृ लंबिऊण (महा)।

लंब वि [लम्ब] लम्बा, दीर्घ, 'दट्ठा वट्टम्मि भए लम्बा' (उवा, णाया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पुं [दे] गोवाट, गो का वाड़ा (दे ७, २६)।

लंबण न [लम्बन] नवनिका, नाभिपर्यन्त लटकता हार आदि (कप्प २३)।

लंबणा स्त्री [लम्बना] रज्जु, रस्सी (प १०१)।

लंबा स्त्री [दे] १ वल्लरी, लता (दे)। २ केश, बाल (दे , २०, २६)।

लंबाली स्त्री [दे] पुष्प विशेष (दे ७, १६)।

लंबि वि [लम्बिन्] लटकता (गउड)।

लंबिअ, लंबिअय वि [लम्बित] १ लटकता हुआ (गा ५३२, सुर ३, ७०)। २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद (औप)।

लंबिर वि [लम्बितृ] लटकनेवाला (कुमा, गउड)।

लंबुअ वि [लम्बुक] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला। २ भीत में लगा हुआ ईंटों का समूह (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुं [लम्बोत्तर] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्टे को नाभि मंडल से ऊपर रख-कर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना (चेइय ४८४)।

लंबूस पुं [दे लम्बूष] कन्दुक के आकार का एक आभरण, 'छत्त चमर-पडाया दप्पण-लंबूसया वियाणं च' (पउम ३२, ७६, ६६, १२)।

लंबोदर, लंबोयर वि [लम्बोदर] १ बड़ा पेटवाला (सुज्ज १, १८, उवा)। २ पुं. गणपति, गणेश (श्रा १२, कुप्र ६७)।

लभ सक [लभ्] प्राप्त करना, 'अज्जेवाहं न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया' (उत्त २, ३१)। भवि लब्भिस्सं (पि ५२५)। कर्म लभीअदि, लभीआमो (शौ) (पि ५४१)। संकृ लभिअ, लभित्ता (मा १६, नाट—चैत ६१, ठा ३, २)।

लभ सक [लम्भय्] प्राप्त कराना। संकृ लभिअ (नाट—चैत ८४)। कृ लभइदव्व (शौ), लभाणज्ज, लभणीअ (मा ५१, नाट—मालती ३६, चैत १२५)।

लभ पुं [लाभ] प्राप्ति (पउम १००, ४३, से ११, ३८, गउड, गिरि ८२२, सुपा ३६८)। देखो लाह = लाभ।

लभण पुं [लम्भन] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८४)।

लभिअ देखो लभ = लभ्, लम्भय्।

लभिअ वि [लब्ध] प्राप्त (नाट—चैत १२४)।

लभिअ वि [लम्भित] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित (सूअ २, ७, ३७, स ३१०, अच्चु ७०)।

लउड न [दे लकुट] यष्टी, यष्टि, छड़ी, लाठी (दे ७, १८, पाअ)।

लक्ख सक [लक्षय्] १ जानना। २ पहचानना। ३ देखना। लक्खइ (महा)। कर्म लक्खिज्जए, लक्खीयमि (विसे २१४६, महा, काल)। कवकृ लक्खिज्जंत (से ११, ४५)। कृ लक्खणीअ (नाट—शकु २४), देखो लक्ख = लक्ष्य।

लक्ख पुन [दे] काय, शरीर, देह (दे ७, १७)।

लक्ख पुन [लक्ष] संख्या-विशेष, लाख, सौ हजार (जी ४५, सुपा १०३, २४८, कुमा, प्रासू ६६)। °पाग पुं [°पाक] लाख रुपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक (ठा ६)।

लक्ख वि [लक्ष्य] १ पहचानने योग्य, 'चिर-लक्खणो' (पउम ८२, ८४)। २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक, 'भुयदप्पवी-अलक्ख चाव' (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना, 'लक्खविंधण—' (धर्मवि ५२, दे २, २६, कुमा)।

लक्ख° देखो लक्खा (पडि)।

लक्खग वि [लक्षक] पहचाननेवाला (पउम ८२, ८४, कुप्र ३००)।

लक्खण पुन [लक्षण] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न। २ वस्तु स्वरूप (ठा ३, ३, ८, १, जी ११, विसे २१४६, २१४७, २१४८)। ३ चिह्न, 'लक्खणपुण्णं' (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र, 'लक्खणमाहित्तपमाण-जोइसाईणि सा पढइ' (सुपा १४१, ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र। ६ प्रतिपाद्य, विषय (हे २, ३)। ७ पुं लक्ष्मण। ८ सारस पक्षी, 'लक्खणो' (प्राकृ २२)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष विशेष (सुज्ज १०, २०)।

लक्खण पुं [लक्ष्मण] श्रीराम का छोटा भाई (से १, ४८)। देखो लखमण।

लक्खण न [लक्षण] कारण, हेतु (सुपा १, १८)।

लक्खणा स्त्री [लक्षणा] १ शब्दवृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति, जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है (द १, ३)। २ एक महौषधि (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [लक्ष्मणा] १ आठवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति

पानेवाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री (उप ७२८ टी)।

लक्खणिय वि [लाक्षणिक, लाक्षण्य] १ लक्षणों का जानकार। २ लक्षण-युक्त (सुपा १३६)।

लक्खमण } पु [लक्ष्मण] विक्रम की बार-
लखमण } हवीं शताब्दी का एक जैन मुनि और ग्रंथकार (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [लाक्षा] लाख, लाह, जतु, चपडा (णाया १, १—पत्र २४, पण्ह २, ५)। °रुणिय वि [°रुणित] लाख से रँगा हुआ (पाअ)।

लक्खिअ वि [लक्षित] १ जाना हुआ। २ पहचाना हुआ। ३ देखा हुआ (गउड, नाट—रत्ना १४)।

लग न [दे] निकट, पास (पिंग)।

लगड न [लगण्ड] वक्र काष्ठ (पचा १८, १६, स ५६६)। °साइ वि [°शायिन्] वक्र काष्ठ की तरह सोनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००, ओप, कस, पचा १८, १६, ठा ५, १—पत्र २६६)। °सण न [°सन] आसन विशेष (सुपा ८५)।

लगुड देखो लउड (कुप्र ३८६)।

लग्ग सक [लग्] लगना, संग करना, संबंध करना। लग्गइ (हे ४, २३०, ४२०, ४२२, प्राकृ ६८, प्राप्र, उत्र)। भवि लग्गिस्स, लग्गिहिइ (पि ५२७)। लग्गंत, लग्गमाण (वेइय ११२, उप ६६६, गा १०५)। संकृ. लग्गूण (कुप्र ६६), लग्गिवि (अप) (हे ४, ३३६)। कृ लग्गिअव्व (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [दे] १ चिह्न। २ वि अघटमान, असम्बद्ध (दे ७, १७)।

लग्ग न [लग्न] १ मेष आदि राशि का उदय (सुर २, १७०, मोह १०१)। २ वि. संसक्त, संबद्ध (पाअ, कुमा, सुर २, ५६)। ३ पु स्तुति-पाठक (हे २, ६८)।

लग्गण न [लगन] संग, संबन्ध, 'वडपाय-वसाहालग्गणेण' (सुर १४, १४, उप १३४, ५३८)।

लग्गणय पु [लग्नक] प्रतिभू, जमानत करनेवाला, जामीन (पाअ)।

लग्गूण देखो लग्ग = लग्।

लघिम पुस्त्री [लघिमन्] १ लघुता, लाघव। २ योग की एक सिद्धि, जिसके प्रभाव से मनुष्य छोटा बन सकता है, 'लंघिज्ज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू' (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

लचय न [दे] तृण-विशेष, गण्डुत् तृण (दे ७, १७)।

लच्छ देखो लक्ख = लक्ष्य (नाट)।

लच्छ° देखो लभ।

लच्छण देखो लक्खण = लक्षण (सुपा ६४, प्राकृ २२, नाट—चैत ५५)।

लच्छि° } स्त्री [लक्ष्मी] १ संपत्ति, वैभव। २
लच्छी } धन, द्रव्य। ३ कान्ति। ४ ओषध-विशेष। ५ फलिनी वृक्ष। ६ स्थल-पद्मिनी। ७ हरिद्रा। ८ मुक्ता, मोती। ९ शटी नामक ओषधि (कुमा, प्राकृ ३०, हे २, १७)। १० शोभा (से २, ११)। ११ विष्णु पत्नी (पाअ, से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। १६ छन्द-विशेष (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी (७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट (इक)। °निलय पु [°निलय] वासुदेव (पउम ३७, ३७)। °मई स्त्री [°मती] १ छठवें वासुदेव की माता (सम १५२)। २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न (सम १५२)। °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष (सुपा ६३२)। °वइ पु [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण (प्राकृ ३०)। °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। °हर पु [°धर] १ वासुदेव (पउम ३८, ३४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न नगर-विशेष (इक)।

लज्जुक (अशो) देखो रज्जु = (दे) (कप्प—रज्जु)।

लज्ज अक [लस्ज्] शरमाना। लज्जइ (उव, महा)। कर्म. लज्जिज्जइ (हे ४, ४१६)। वकृ लज्जंत, लज्जमाण (उप पृ ५५, महा, आचा)। कृ. लज्जणिज्ज (से ११, २६, णाया १, ८—पत्र १४३)।

लज्जण } न [लज्जन] १ शरम, लाज
लज्जणय } (सा ८, राज)। २ वि लज्जा-कारक, 'किं एत्तो लज्जणयं जं पह-रिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा' (सुपा २१५, भवि)।

लज्जा स्त्री [लज्जा] १ लाज, शरम (औप, कुमा, प्रासू ६६ गा ६१०)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ संयम (भग २, ५, औप)।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयितृ] लजानेवाला, 'जुवइवेसलज्जापइत्तअ' (मा ४२)।

लज्जालु वि [लज्जालु] लज्जावान्, शरमिंदा (उप १७९ टी)।

लज्जालु } स्त्री [लज्जालु] १ लता-विशेष,
लज्जालुआ } लाजवंती, लजवनी, छुईमुई
लज्जालुइणी } (षड्, हे २, १५९, १७४)। २ लज्जावाली स्त्री (षड्, हे २, १५९, १७४, सुर २, १५९, गा १२७, प्राकृ ३५)।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री (षड्)।

लज्जालुर } वि [लज्जालु] लज्जाशील,
लज्जालुर } शरमिंदा। स्त्री °री (गा ४८२, ६१२ अ)।

लज्जाव सक [लज्जय्] शरमिंदा बनाना, लजवाना। लज्जावेदि (शौ) नाट—मृच्छ ११०)। कृ. लज्जावणिज्ज (स ३६८, भवि)।

लज्जावण वि [लज्जन] शरमिन्दा करनेवाला (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जाविय वि [लज्जित] लजवाया हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जिअ वि [लज्जित] १ लज्जा-युक्त (पाअ)। २ न लज्जा, शरम, 'न लज्जिअं अप्पणोवि पलिआए' (श्रा १४)।

लज्जिर वि [लज्जितृ] लज्जा-शील (हे २, १४५, गा १५०, कुमा, वज्जा ८, भवि)। स्त्री °री (पि ५९६)।

लज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी, लजुरी, लेजुरी या लेजुर। २ वि रस्सी की तरह सरल, सीधा, 'चाई लज्जू धन्ने तवस्सी' (पण्ह २, ५—पत्र १४९, भग)।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जावाला, शरमिन्दा; 'एसणासमिओ लज्जू गामे अनियओ चरे' (उत्त ६, १७)।

लज्जु देखो रिज्जु = ऋजु (षड्)।

लज्जे° देखो लज्ज।

लट्ट । न [दे] १ सनसन आदि का तेल
लट्टय ∫ (पाअ ३१)। २ कुसुम्भ, 'लट्टयरत्ता' (दे ७, १७)।

लट्टा स्त्री [दे लट्टा] वाद्य-विशेष, कुसुम्भ [illegible] (पव ४४८)।

लट्टा स्त्री [लट्टा] १ वृक्ष-विशेष (कुमा)। २ कुसुम्भ (वृह ४)। ३ गौरैया, पक्षि-विशेष। ४ भ्रमर, भौरा। ५ वाद्य-विशेष (दे ७, ११)।

लट्ठ वि [दे] १ अन्यासक्त (दे ७, २६)। २ मनोहर, सुन्दर, रम्य (दे ७, २६, पाअ, णाया १, १, पण्ह १, ४, सुर १, २६, कुप्र ४१, सुख ३४, गउड २२, [illegible] ४ [illegible] २२८)। ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी (दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य, 'समियज्जो पवरा [illegible] लट्ठवट्ठं' (उप ७२८ टी)। °दंत पु [°दन्त] १ जैन मुनि (अनु २)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप। ३ द्वीप-विशेष में रहनेवाला मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६ टी)।

लट्ठय वि [दे] सुन्दर, रमणीय (कुप्र २१०)।

लट्ठि स्त्री [यष्टि] लाठी, छड़ी (प्रासू कुमा)।

लट्ठिअ न [दे] [illegible], 'लट्ठि लट्ठिअ [illegible]' (कुप्र १०, १७)।

लड्ड वि [दे] १ रक्त, [illegible] (७, १७, सुपा [illegible] [illegible] ८७ ८७४, गउड, औप, [illegible], [illegible]) । २ सुकुमार, कोमल ([illegible])। ३ विदग्ध, [illegible] (दे ७ १७)। ४ प्रधान, मुख्य (कुमा)।

लड्डलसिअ वि [दे] [illegible] (दे ७, २२)।

लड्डा स्त्री [दे] [illegible] (पड्)।

[illegible] (प्राकृ ८०, [illegible] २४०)।

लड्डु [illegible] [दे] [illegible] (दे)।

लड्डुअ । पु [लड्डुक] [illegible] [illegible]
लड्डुग ∫ (णा ६४, [illegible] ८० [illegible] २०६, [illegible] पव ८४, [illegible] ८३७)।

लड्डुयार वि [लड्डुककार] लड्डू बनानेवाला, हलवाई (कुप्र २०६)।

लढ सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। लढइ (हे ४, ७४)। वकृ. लढंत (कुमा)।

लढिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ)।

लण्ह वि [श्लक्ष्ण] १ चिकना, मसृण (सम १३७, ठा ४, २, औप, कप्पू)। २ अल्प, थोड़ा। ३ न लोहा, धातु विशेष (हे २, ७७, प्राकृ १८)।

लत्त वि [लप्त, लपित] उक्त, कथित (सुपा २३४)।

लत्ता । स्त्री [दे] १ लात, पार्ष्णि-प्रहार
लत्तिआ ∫ (सुपा २३८, ठा २, ३—पत्र ६३)। २ आतोद्य विशेष (ठा २, ३, आचा २, ११, ३)।

लदण । (मा) देखो रयण = रत्न (प्राकृ
लदन ∫ १८४, प्राकृ १०२)।

लद्द सक [दे] भार भरना, बोझ डालना, लादना, गुजराती में 'लादवुं'। हेकृ. लद्देउं (सुपा २०४)।

लद्दण न [दे] भार-रोपण लादना (स ५३७)।

लद्दी स्त्री [दे] हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद' (सुपा १३७)।

लद्ध वि [लब्ध] प्राप्त (भग, उवा, औप, हे ३, २३)।

लद्धि स्त्री [लब्धि] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति (विसे २६८७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति (पव २७०, संबोध २८)। ३ अर्हिता (पण्ह २, १—पत्र ९६)। ४ प्राप्ति, लाभ (भग ८, २)। ५ इन्द्रिय और मन से होनेवाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग (विसे ४६६)। ६ योग्यता (धर्म)। °पुलाअ पुं [°पुलाक] लब्धि-विशेषवाला मुनि, 'संघाइयाण कज्जे चुण्णिज्जा चक्कवट्टिमवि जाए। तीए लद्धीए जुत्ता लद्धिपुलाओ' (संबोध २८)।

लद्धिअ वि [लब्धिक] प्राप्त (से ९९)।

लद्धिल्ल वि [लब्धिमत्] लब्धि-युक्त (पंच ३, ७)।

लद्धुं । देखो लभ।
लद्धूण ∫

लप्पसिया स्त्री [दे] लपसी, एक प्रकार का पक्वान्न (पव ४)।

लब्भ नीचे देखो।

लभ सक [लभ्] प्राप्त करना। लभइ, लभए (आचा, कम्म, विसे १२१५)। भवि लच्छिमि, लभिस्सं, लभिस्सामि (उव, महा, पि ५२५)। कर्म लब्भइ, लब्भए (महा ६०, १६, हे १, १८७, ४, २४९, कुमा)। संकृ लभिय, लद्धुं, लद्धूण (पच ५, १६४, आचा, कम्म)। हेकृ. लद्धुं (कम्म)। कृ लब्भ (पण्ह २, १, विसे २८३७, सुपा ११, २०३, स १७५, महा)।

लय सक [ला] ग्रहण करना। लएइ, लयति (उव)। कर्म—लइज्जइ, लिज्जइ (भवि, सिरि ९९३)। वकृ लयंत (उप्पा २८, महा, सिरि ३७५)। संकृ लइ, लएवि, लएविणु (अप) (पिंग, भवि)। देखो ले = ला।

लय न [दे] नव-दम्पति का आपस में नाम लेने का उत्सव (दे ७, १६)।

लय देखो लव = लव (गउड, से ५, १४)।

लय पु [लय] १ श्लेष। २ मन की साम्यावस्था (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता। ४ तिरोभाव (विसे २९९६)। ५ संगीत का एक अंग, स्वर-विशेष (स ७०४, हास्य १२३)।

लय° देखो लया। °हरय न [°गृहक] लता-गृह (सुपा ३८१)।

लय पु [लय] तन्त्री का स्वन—ध्वनि-विशेष। °सम न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

लयग न [लतांग] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व, 'पुव्वाण सयसहस्सं चुलसीइगुण लयंगमिह होई' (जो २)।

लयण वि [दे] १ तनु, कृश, क्षाम (दे ७, २७, पाअ)। २ मृदु, कोमल। ३ न वल्ली, लता (दे ७, २७)।

लयण न [लयन] १ गिरि-वर्त, गुफा (विसे २८१०, दे ७, २४)। २ आस्थान (सुर ३, २०६)। ३ देखो लेण (राज)।

लयणी स्त्री [दे] लता, वल्ली (पाअ, पड्)।

लया स्त्री [लता] १ वल्ली, वल्लरी (पएण १, गा २८, काप्र ७२३, कुमा, कप्प)। २ प्रकार, भेद, 'सघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा' (वृह १)। ३ तप-विशेष (पव २७१)। ४ सख्या-विशेष, चौरासी लाख लताग-परिमित सख्या (जो २)। ५ कम्वा, छडी, यष्टि, 'कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य' (णाया १, २—पत्र ८६, विपा १, ६—पत्र ६६)। °जुद्ध न [°युद्ध] लडने को एक कला, एक तरह का युद्ध (ओप)।

लयापुरिस पु [दे] वह स्थान, जहाँ पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय, 'पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो' (दे ७, २०)।

लल अक [ळ, लड्] १ विलास करना, मौज करना। २ झूलना। ललइ, ललेइ (प्राकृ ७३, सण, महा, सुपा ४०३)। वकृ. ललत, ललमाण (गा ४४६, सुर २, २३७, भवि, ओप, सुपा १८१, १८७)।

ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी (तदु ५०, सुपा ४.७)।

ललाड देखो णडाल (औप, पि २६०)।

ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक (अभि ६५)।

ललिअ न [ललित] १ विलास, मौज, लीला (पाअ; पत्र १६६, औप)। २ अग-विन्यास-विशेष (पएह १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद (विपा १, २ टी—पत्र २२)। ४ वि क्रीडा-प्रधान, मौजी (णाया १, १६—पत्र २०५)। ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर (णाया १, १, औप, राय)। ६ मजु, मधुर (पाअ)। ७ ईप्सित, अभिलषित (णाया १, ६)। °मित्त पु [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१)। °वित्थरा स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ (चेइय २५६)।

ललिअंग पु [ललिताङ्ग] एक राज कुमार (उप ६८६ टी)।

ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष (अजि १८)।

ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री (उप ७२८ टी)।

लल्ल वि [दे] १ सस्पृह, स्पृहावाला। २ न्यून, अधूरा (दे ७, २६)।

लल्ल वि [लल्ल] अव्यक्त आवाजवाला (पएह १, २)।

लल्लक्क पु [लल्लक्क] छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)।

लल्लक्क वि [दे] १ भीम, भयकर (दे ७, १८, पाअ, सुर १६, १४८), 'लल्लक्कनरयविअणाओ' (भत्त ११०)। २ पु. ललकार, लडाई आदि के लिए आह्वान (उप ७६८ टी)।

लल्लि स्त्री [दे] खुशामद (धर्मवि ३८, जय १६)।

लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

लव सक [लू] काटना। सकृ लविऊण। हेकृ. लविउ। कृ. लविअव्व (प्राकृ ६६)।

लव सक [लप्] बोलना, कहना। लवइ (कुमा, सबोध १८, सण), लवे (भास ६६)। वकृ लवत, लवमाण (सुपा २६७, सुर ३, ६१)।

लव सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्ति कराना, 'णो विज्जू लवति' (सुज्ज २०)।

लव वि [लप] वाचाट, वकवादी (सूअ २, ६, १५)।

लव पु [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परिमाण, सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवाँ अश (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ८५)। २ लेश, अल्प, थोडा (पाअ, प्रासू ६६, ११८, सण)। ३ न कर्म (सूअ १, २, २, २०, २, ६, ६)। °सत्तम पु [°सप्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति (पएह २, ४, उत्त, सूअ १, ६, २४)।

लवअ पु [दे लवक] गोंद, लासा, चेप, निर्यास, 'लवओ गुंदो' (पाअ)।

लवइअ वि [दे लवकित] नूतन दल से युक्त, अकुरित, पल्लवित (ओप, भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

लवग पुन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, लौंग का पेड (पएण १—पत्र ३४, कुप्र २४६)। २ वृक्ष-विशेष का फूल, लौंग (णाया १, १—पत्र १२, पएह २, ५)।

लवण न [लवन] छेदन, काटना (विसे ३२०६)।

लवण न [लवण] १ लोन, नून, नोन, नमक (कुमा)। २ पु रस विशेष, क्षार रस (अणु)। ३ समुद्र विशेष (सम ६७, णाया १,६, पउम ६६, १८)। ४ सीता का एक पुत्र, लव (पउम ६७, १६)। ५ मधुराज का एक पुत्र (पउम ८६, ४७)। °जल पु [°जल] लवण समुद्र (पउम ५७, २७)। °ोय पुं [°ोद] लवण समुद्र (पउम ६४,१३)। देखो लोण।

लवणिम पुस्त्री [लवणिमन्] लावण्य (कुमा)।

लवल न [लवल] पुष्प-विशेष (कुमा)।

लवली स्त्री [लवली] लता-विशेष (सुपा ३८, कुप्र २४६)।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

लविअ वि [लपित] उक्त, कथित (सूअ १, ६, ३५, कुमा, सुपा २६७)।

लवित्त न [लवित्र] दात्र, दाँती, हँसुआ या हँसिया, घास काटने का एक औजार (दे १, ८२)।

लविर वि [लपितृ] बोलनेवाला (सण)। स्त्री °रा (कुमा)।

लस अक [लस्] १ श्लेष करना। २ चमकना। ३ क्रीडा करना। लसइ (प्राकृ ७२)। वकृ लसत (सण)।

लसइ पु [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, १८)।

लसक न [दे] तरु-क्षीर, पेड का दूध (दे ७, १८)।

लसण देखो लसुण (सूअ १, ७, १३)।

लसिर वि [लसितृ] १ श्लिष्ट होनेवाला। २ चमकनेवाला, दीप्र (से ८, ४४)।

लसुअ न [दे] तेल, तेल (दे ७, १८)।

लसुण न [लशुन] लहसुन, कन्द-विशेष (श्रा २०)।

लह देखो लभ। लहइ, लहेइ, लहए (महा, पि ४५७)। भवि लहिस्सामो (महा)। कर्म लहिज्जइ (हे ४, २४६)। वकृ लहत (प्रारू)। सकृ लहिउ, लहिऊण (कुप्र १, महा) लहेप्पि, लहेप्पिणु, लहेवि (अप, पि ५८८)। कृ. लहणिज्ज, लहिअव्व (श्रा १४, सुर ६, ५३, सुपा ४२७)।

लहग पुं [दे] बासी अन्न में पैदा होनेवाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (जी १५)।

लहण न [लभन] १ लाभ, प्राप्ति। २ ग्रहण, स्वीकार (श्रा १४)।

लहर पुं [लहर] एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१०)।

लहरि } स्त्री [लहरि, °री] तरंग, कल्लोल
लहरी } (सण, प्रासू ६६, कुमा)।

लहाविअ वि [लम्भित] प्रापित, प्राप्त कराया हुआ (सुर २३२)।

लहिअ देखो लद्ध (कप्प, पिंग)।

लहिम देखो लघिम (षड्)।

लहु } वि [लघु] १ छोटा, जघन्य (कुमा,
लहुअ } सुपा ३६०, कम्म , ७२, महा)। २ थोड़ा (दे ७, ८४, पाग)। ३ तुच्छ, निःसार (पण्ह १, ३—पत्र ५८, पण्ह २, २—पत्र ११६)। ४ श्लाघनीय, प्रशंसनीय (से १२, ५३)। ५ हलका, अल्प (सुपा ३१४)। ६ मनोहर सुन्दर (हे २, १२२)। स्त्री °हु °ई (षड्, प्राप्र २८, गउड, हे २, ११३)। ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य विशेष। ८ वीरण-तृण (हे २, १२२)। ९ शीघ्र, जल्दी (उव ८६, पण्ह २, २—पत्र ११६)। १० स्पर्श-विशेष (अणु)। ११ लघुस्पर्श नामक एक कर्म-भेद (कम्म १, ४१)। १२ पुं एक मात्रावाला अक्षर (हे ३, १३४)। °कम्म वि [°कर्मन्] जिसके अल्प ही कर्म अवशिष्ट रहे हों, शीघ्र मुक्ति-गामी (सुपा ३५४)। °करण न [°करण] दक्षता, चतुराई (णाया १, ३—पत्र ९२, उवा)। °परक्कम पुं [°पराक्रम] ईशानेन्द्र का एक पदाति-सैनिक (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °सत्तिज्ज न [°सत्त्वीय] सत्त्वा-[illegible] (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [लघय्, लघु + कृ] लघु करना, छोटा करना। लहुएइ, लहुएंति (श्रा २०, [illegible])। वकृ. लहुअंत (से १५, ३७)।

लहुअडअ पुं [दे] [illegible], बरगद का पेड़ (दे ७, २०)।

लहुआइअ } वि [लघूकृत] लघु किया
लहुइअ } हुआ (से ६, ४, १२, ४४, उप २०३, गउड)।

लहुई देखो लहु।

लहुग देखो लहु (कप्प, द ५८)।

लहुवी देखो लहु।

लाइअ वि [लागित] लगाया हुआ (से २, २६, वज्जा ५०)।

लाइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत (दे ७, २७)। २ धृष्ट (से २, २६)। ३ न भूषा, मण्डन (दे ७, २७)। ४ भूमि को गोबर आदि से लीपना (सम १३७, कप्प, ओप, णाया १, १ टी—पत्र ३)। ५ चर्मार्ध, आधा चमड़ा (दे ७, २७)।

लाइअव्व देखो लाय = लावय्।

लाइज्जंत देखो लाय = लागय्।

लाइम वि [लव्य] काटने योग्य (दस ७, ३४)।

लाइम वि [दे] १ लाजा के योग्य, खोई के योग्य। २ रोपण के योग्य, बोने लायक (आचा २, ४, २, १५)।

लाइल्ल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १९)।

लाउ देखो अलाउ (हे १, ६६, भग, कस, ओप)।

लाउल्लोइय न [दे] गोमय आदि से भूमि का लेपन और खड़ी आदि से भीत आदि का पोतना (राय ३५)।

लाऊ देखो अलाऊ (हे १, ६६, कुमा)।

लाख (अप) देखो लक्ख = लक्ष (पिंग)।

लाग पुं [दे] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी कर, लगान, गुजराती में 'लागो' (सिरि ४३३, ४३४)।

लाघव न [लाघव] लघुता, छोटाई, लघुपन (भग, कप्प, सुपा ४०३, कुप्र २७७, किरात १६)।

लाघवि वि [लाघविन्] लघुता युक्त, लाघव-वाला (उत्त २६, ४२, आचा)।

लाघविअ न [लाघविक] लघुता, छोटापन, लाघव (ठा ५, ३—पत्र ३४२, मिसि ७ टी, सूअ २, १, ५७, भग)।

लाज देखो लाय = लाज (दे ५, १०)।

लाड पुं [लाट] देश विशेष (सुपा ६५८, कुप्र २१४, सत्त ६७ टी, भवि, सण, इक)।

लाडी स्त्री [लाटी] लिपि विशेष (सिरि ४६४ टी)।

लाढ पुं [लाढ] देश-विशेष, एक आर्य देश (आचा, पव २७५, विचार ४९)।

लाढ वि [दे] १ निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करनेवाला, संयमी, आत्म निग्रही (सूअ १, १०, ३, सुख २, १८)। २ प्रधान, मुख्य (उत्त १५, २)। ३ पुं एक जैन आचार्य (राज)।

लाढ वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (आचा २, ३, १, ५)।

लाण न [लान] ग्रहण, आदान (से ७, ६०)।

लाबू देखो लाऊ (षड्)।

लाभ पुं [लाभ] १ नफा, फायदा (उव, सुख ८, १३)। २ प्राप्ति (ठा ३, ४)। ३ सूद, व्याज (उप ९५७)।

लाभंतराइय न [लाभान्तरायिक] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म (धर्मसं ९४८)।

लाभिय } वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ
लाभिल्ल } वाला (ओप, कर्म १७)।

लाम वि [दे] रम्य, सुन्दर (ओप)।

लामज्जय न [दे] तृण-विशेष, उशीर तृण, खस—गाँडर घास की जड़ (पाअ)।

लामा स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७, २१)।

लाय सक [लागय्] लगाना, जोड़ना। लाएसि (विसे ८२३)। वकृ. लायत (भवि)। कवकृ. लाइज्जंत (से १३, १३)। संकृ. लाइवि (अप) (हे ४, ३३१, ३७८)।

लाय सक [लावय्] १ कटवाना। २ काटना, छेदना। कृ लाइअव्व (से १५, ७५)।

लाय देखो लाइअ = (दे), 'लाउल्लोइय' (ओप)।

लाय वि [लात] १ आत्त, स्वीकृत, गृहीत। २ न्यस्त, स्थापित (ओप)। ३ न. लग्न का एक दोष, 'लायाइदोसमुक्के नरवर गइमोहण लग्गे' (सुपा १०८)।

लाय पुंस्त्री [लाज] १ भार्द्र तण्डुल। २ न. भ्रष्ट धान्य, भुँजा हुआ नाज, लाई (कप्पू)।

लायण न [लागन] लगवाना (गा ४५८)।

लायण्ण न [लावण्य] १ शरीर-सौन्दर्य विशेष, शरीरकान्ति (पाअ, कुमा, सण, वि १९६)। २ लवणत्व, क्षारता (हे १, १७७, १८०)।

लाल सक [लालय्] स्नेह-पूर्वक पालन करना। लालेति (तंदु ५०)। वकृ. लालिज्जंत (सुर २, ७३, सुपा २४)।

लालप अक [वि + लप्] विलाप करना, विकल होकर रोना। लालपइ (प्राकृ ७३)।

लालपिअ न [दे] १ प्रवाल। २ खलीन। ३ आक्रन्दित (दे ७, २७)।

लालभ देखो लालप। लालभइ (प्राकृ ७३)।

लालण न [लालन] स्नेह पूर्वक पालन (पउम २६, ८८)।

लालप्प देखो लालप। लालप्पइ (प्राकृ ७३)।

लालप्प सक [लालप्य्] १ खूब बकना। २ बारबार बोलना। ३ गर्हित बोलना। लालप्पइ (सूअ १, १०, १६)। वकृ. लालप्पमाण (उत्त १४, १०, आचा)।

लालप्पण न [लालपन] गर्हित जल्पन (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

लालम्भ } देखो लालप। लालम्भइ, लालम्हइ
लालम्ह } (प्राकृ ७३, धात्वा १५०)।

लालय न [लालक] लाला, लार (दे ५, १६)।

लालस वि [दे] १ मृदु, कोमल। २ खीन इच्छा (दे ७, २१)।

लालस वि [लालस] लम्पट, लोलुप (पाअ, हे ४, ४०१)।

लाला स्त्री [लाला] लार, मुँह से गिरता जल-लव (ओप, गा ५५१, कुमा, सुपा २२६)।

लालिअ देखो ललिअ, 'कुसुमिअहरिअदण-कणयदडपरिरभलालिअगीओ' (गउड)।

लालिअ वि [लालित] स्नेह पूर्वक पालित (भवि)।

लालिच (अप) पुं [नालिच] वृक्ष-विशेष (पिंग)।

लालिल्ल वि [लालावत्] लारवाला (सुपा ५३१)।

लाव सक [लापय्] बुलवाना, कहलाना। लावएज्जा (सूअ १, ७, २४)।

लाव देखो लावग (उप ५०७)।

लावज न [दे] सुगन्धी तृण-विशेष, उशीर, खस (दे ७, २१)।

लावक } पु [लावक] १ पक्षि-विशेष (विपा
लावग } १, ७—पत्र ७५, पण्ह १, १—पत्र ८)। २ वि काटनेवाला (विसे ३२०६)।

लावणिअ वि [लावणिक] लवण से संस्कृत (विपा १, २—पत्र २७)।

लावण्ण } देखो लायण्ण (ओप, रभा, काल,
लावन्न } अभि ६२, भवि)।

लावय देखो लावग (उवा)।

लाविय (अप) वि [लात] लाया हुआ (भवि)।

लाविआ स्त्री [दे] उपलोभन (सूअ १, २, १, १८)।

लाविर वि [लवितृ] काटनेवाला (गा ३५५)।

लास सक [लासय्] नाचना। लासति (राय १०१)।

लास न [लास्य] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि (कुमा)। २ नृत्य, नाच (पाअ)। ३ स्त्री का नाच। ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय (हे २, ६२)।

लासक } पु [लासक] १ रास गानेवाला।
लासग } २ जय शब्द बोलनेवाला, भाण्ड (णाया १, १ टी—पत्र २, ओप, पण्ह २, ४—पत्र १३२, कप्प)।

लासय पु [लासक, ह्लासक] १ अनार्य देश-विशेष। २ पु स्त्री अनार्य देश-विशेष का रहनेवाला। स्त्री °सिआ (ओप, णाया १, १—पत्र ३७, इक, अत)। देखो ल्हासिय।

लासयविहय पु [दे. लासकविहग] मयूर, मोर (दे ७, २१)।

लाह सक [श्लाघ्] प्रशसा करना। लाहइ (हे १, १८७)।

लाह देखो लाभ (उव, हे ४, ३९०, श्रा १२, णाया १, ६)।

लाहण न [दे] भोज्य भेद, खाद्य वस्तु की भेंट (दे ७, २१, ६, ७३, सट्ठि ७८ टी, रभा १३)।

लाहल देखो णाहल (से १, २५८, कुमा)।

लाहव देखो लाघव (किरात १७)।

लाहवि देखो लाघवि (भवि)।

लाहविय देखो लाघविअ (राज)।

लिअ सक [लिप्] लेपन करना, लीपना। लिअइ (प्राकृ ७१)।

लिअ वि [लिप्त] १ लीपा हुआ (गा ५२८)। २ न लेप (प्राकृ ७७)।

लिआर पु [लृकार] 'लृ' वर्ण (प्राकृ ६)।

लिंक पु [दे] बाल, लडका (दे ७, २२)।

लिंकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त। २ लीन (दे ७, २८)।

लिंखय देखो लख (सुपा ३५६)।

लिंग सक [लिङ्ग्] १ जानना। २ गति करना। ३ आलिंगन करना। कर्म. लिंगिज्जइ (सबोध ५१)।

लिंग न [लिङ्ग] १ चिह्न, निशानी (प्रासू २४, गउड)। २ दार्शनिकों का वेष-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेप (कुमा, विसे १५८५ टि, ठा ५, १—पत्र ३०३)। ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु (विसे १५५०)। ४ पुंश्चिह्न, पुरुष का असाधारण चिह्न (गउड)। ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुंलिंग आदि (कुमा, राज)। °द्धय पुं [°ध्वज] वेषधारी साधु (उप ४८६)। °जीव पु [°जीव] वही अर्थ (ठा ५, १)।

लिंगि वि [लिङ्गिन्] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु (विसे १५५०)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करनेवाला, साधु, सन्यासी (पउम २२,३, सुर २,१३०)। स्त्री °णी (पुप्फ ४५४)।

लिंगिय वि [लैङ्गिक] १ अनुमान प्रमाण (विसे ६५)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करनेवाला साधु, सन्यासी (मोह १०१)।

लिछ न [दे] १ चुल्ली-स्थान, चूल्हा का आश्रय। २ अग्नि-विशेष (ठा ८ टी—पत्र ४१६)। देखो लिच्छ।

लिड न [दे] १ हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद' (णाया १, १—पत्र ६३, उप २६४ टी, ती २)। २ शैवल-रहित पुराना पानी (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

लिडिया स्त्री [दे] अज—बकरा आदि की विष्ठा, लेडी, गुजराती में 'लिंडी' (उप पृ २३७)।

लिन देखो ले = ला।

लिप सक [लिप्] लीपना, लेप करना। लिंपइ (हे ४, १४६, प्राकृ ७१)। कर्म. लिप्पइ (आचा)। वकृ लिंपेमाण (णाया १, ६)। कवकृ लिप्पत, लिप्पमाण (ओघभा १६५, रयण २६)।

लिंपण न [लेपन] लेप, लीपना (पिंड २४६, सुपा ६१६)।

लिंपाविय वि [लेपित] लेप कराया हुआ (कुप्र १४०)।

लिंपिय वि [लिप्त] लीपा हुआ (कुमा)।

लिंब पु [निम्ब] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड़, मराठी में 'लिंब' (हे १, २३०; कुमा, स २४)।

लिंब वि [दे] १ कोमल। २ नम्र (राय ३५)।

लिंब पुं [दे लिम्ब] आस्तरण विशेष (णाया १, १—पत्र १३)।

लिंबड (अप) देखो लिंब = निम्ब, गुजराती में 'लिंबडो' (हे ४, ३८७; पि २४७)।

लिंबोहली स्त्री [दे] निम्ब-फल (सूक्त ८६)।

लिक्कार देखो लिआर (पि ७६)।

लिक्क अक [नि + ली] छिपना। लिक्कइ (हे ४, ५५, षड्)। वकृ लिक्कंत (कुमा)।

लिक्ख न [लेख्य] लेखा, हिसाब, 'लिक्ख गणिऊण चिंतए सिट्ठी' (सिरि ४१८; सुपा ४२५)। देखो लेक्ख।

लिक्ख स्त्रीन [दे] छोटा बाल (दे ७, २१)। स्त्री °क्खा (दे ७, २१)।

लिक्खा स्त्री [लिक्षा] १ लघु यूका, छोटा जूँ, लीख—नर के बालों में होता कीड़ा (दे ८, ६६; भ ६७)। २ परिमाण-विशेष (इक)।

लिखाव (अशो) सक [लेखय्] लिखवाना। भवि लिखापयिस्सं (पि ७)।

लिखापित (अशो) वि [लेखित] लिखवाया हुआ (पि ७)।

लिच्छ सक [लिप्स्] प्राप्त करने की चाहना। लिच्छइ (हे २, २१)।

लिच्छ देखो लिट्ठ (ठा ८—पत्र ४३७)।

लिच्छवि देखो लेच्छइ = लेच्छकि (भत)।

लिच्छा स्त्री [लिप्सा] लाभ की इच्छा (उप ६३०; धर्म २३)।

लिच्छु वि [लिप्सु] लाभ की चाहवाला (सुर ९, १ [illegible])।

लिंजिअ (अप) वि [लात] गृहीत (पिंग)।

लिट्ठअ न [दे] १ [illegible], चुगलखोर (दे ७, २०)। २ वि लम्पट, चातुर (सुपा ४६३)।

लिट्टु [illegible] लेट्टु (सुपा)।

लित्त वि [लिप्त] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ [illegible] २ सावृत (सूअ १, ३, ३, १३)।

लित्त पु [दे] [illegible] (दे ७, २२)।

लिप्प देखो लित्त (गा ५१६; गउड)।

लिप्प देखो लेप्प (कुप्र ३८४)।

लिप्पंत
लिप्पमाण } देखो लिंप।

लिप्पासण न [लिप्यासन] मसी-भाजन, दोत, दोआत, दावात (राय ६६)।

लिब्भंत देखो लिह = लिह्।

लिम्हिर वि [दे] १ हरा, आर्द्र। २ हरा रंगवाला, 'अइनिल्लिरपट्टघणमिसेण चोरसु पट्टबंध व जो फुड तत्थ उव्वहइ' (धर्मवि ७३)।

लिवि } स्त्री [लिपि, °पी] अक्षर लेखन प्रक्रिया
लिवी } (सम ३५; नाट)।

लिस अक [स्वप्] सोना, सूतना, शयन करना। लिसइ (हे ४, १४६)।

लिस सक [श्लिष्] आलिंगन करना। भवि लिसिस्सामो (सूअ २, ७, १०)।

लिसय वि [दे] तनूकृत, क्षीण (दे ७, २२)।

लिस्स देखो लिस = श्लिष्। लिस्सति (सूअ १, ४, १, २)।

लिह सक [लिख्] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ (हे १, १८७; प्राकृ ७०)। कर्म लिक्खइ (उव)। प्रयो लिहावेइ, लिहावति (कुप्र ३४८; सिरि १२७८)।

लिह सक [लिह्] चाटना। लिहइ (कुमा, प्राकृ ७०)। कर्म लिहिज्जइ, लिब्भइ (हे ४, २४५)। वकृ लिहंत (भत्त १४२)। कवकृ लिब्भंत (से ६, ४१)। कृ लेज्झ (णाया १, १७—पत्र २३२)।

लिहण न [लेहन] चाटन (उर १, ८; षड् रंभा १६)।

लिहण न [लेखन] १ लिखना, लेख (कुप्र ३६८)। २ रेखा करण (दसु ५०)। ३ लिखवाना, 'पायणलिहण सहस्से लक्ख निणभवण कारवणं' (सबोध ३६)।

लिहा स्त्री [लेखा] देखो रेहा = रेखा, 'जक्क विय महा [illegible] णयणा पन्नाए धू (? धु)रि लहइ पिह' (सिरि ६७७)।

लिहावण न [लेखन] लिखवाना (उप ७२४)।

लिहाविय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (सिरि १८०)।

लिहिअ वि [लिखित] १ लिखा हुआ (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित (कुमा)।

लिहुणअ (अप) वि [लात] लिया हुआ, गृहीत (पिंग)।

लीढ वि [लीढ] १ चाटा हुआ (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट, 'नरिंदसिरि (? सिर) कुसुमलीढपायवीढ' (कुप्र ५)। ३ युक्त (पव १२५)।

लीण वि [लीन] लय-युक्त (कुमा)।

लील पु [दे] यज्ञ (दे ७, २३)।

लीला स्त्री [लीला] १ विलास, मोज। २ क्रीड़ा (कुमा, पाअ, प्रासू ६१)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। °वई स्त्री [°वती] १ विलासवती स्त्री (प्रासू ६१)। २ छन्द विशेष (पिंग)। °वह वि [°वह] लीला वाहक (गउड)।

लीलाइअ न [लीलायित] १ क्रीडा, केलि (कप्पू)। २ प्रभाव, 'धम्मस्स लीलाइयं' (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [लीलाय्] लीला करना। वकृ लीलायंत (णाया १, १—पत्र १३; कप्प)। कृ लीलाइयव्व (गउड)।

लीव पु [दे] बाल, बालक (दे ७, २२; सुर १५, २१८)।

लीहा देखो लिहा (णाया १, ८—पत्र १४५; कुमा; भवि; सुपा १०६, १२४)।

लुअ सक [लू] छेदना, काटना। लुएज्जा (पि ४७३)।

लुअ देखो लुप। लुअइ (प्राकृ ७१)।

लुअ वि [लून] काटा हुआ, छिन्न (हे ४, २५८; गा ८; गा ८; से ३, ४२; दे ७, २३; सुर १३, १७४; सुपा ५२४)।

लुअ वि [लुप्त] १ जिसका लोप किया गया हो वह। २ न लोप (प्राकृ ७७)।

लुअंत वि [लूनवत्] जिसने छेदा किया हो वह (धात्वा १५१)।

लुक्क वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।

लुक्कणी स्त्री [दे] लुकना, छिपना (दे ७, २४)।

लुंख पुं [दे] नियम (दे ७, २३)।

लुंखाय पु [दे] निर्णय (दे ७, २४)।

लुंखिअ वि [दे] कलुष, मलिन (से १५, ४२)।

लुंच सक [लुञ्च] १ बाल उखाडना। २ अपनयन करना, दूर करना। लुंचइ (भवि)। भूका. लुंचिसु (आचा)।

लुंचिअ वि [लुञ्चित] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित (कुप्र २९२, सुपा ६४१)।

लुंछ सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] मार्जन करना, पोछना। लुंछइ (हे ४, १०५, प्राकृ ६७, धात्वा १५१)। वकृ. लुंछत (कुमा)।

लुंट सक [लुण्ट्] लूटना। लुंटति (सुपा ३५२)। वकृ. लुंटत (धर्मवि ११३)। कवकृ. लुंटिज्जत (सुर २, १४)।

लुंटण न [लुण्टन] लूट (सुर २, ४६, कुमा)।

लुंटाक त्रि [लुण्टाक] लूटनेवाला, लुटेरा (धर्मवि १२३)।

लुंठग वि [लुण्ठक] खल, दुर्जन, 'वडवद-वेडिआ उवहसिज्जमाणा लुंठगलोएण, अणु-कंपिज्जती धम्मिअजणेण' (सुख २, ६)।

लुंठिअ वि [लुण्ठित] बलाद् गृहीत, जबर-दस्ती से लिया हुआ (पिंग)।

लुंप सक [लुप्] १ लोप करना, विनाश करना। २ उत्पीडन करना। लुंपइ, लुंपहा (प्राकृ ७१, सूअ १, ३, ४, ७)। कर्म लुप्पइ (अचा), लुप्पए (सूअ १, २, १, १३)। कवकृ. लुपंत, लुप्पमाण (पि पि ५४२, उवा)। सकृ. लुंपित्ता (पि ५८२)।

लुंपइत्तु वि [लोपयितृ] लोप करनेवाला (आचा, सूअ २, २, ६)।

लुंपणा स्त्री [लोपना] विनाश (पण्ह १, १—पत्र ६)।

लुंपित्तु वि [लोप्तृ] लोप करनेवाला (आचा)।

लुंबी स्त्री [दे लुम्बी] १ स्तवक, फलों का गुच्छा (दे ७, २८, कुमा, गा ३२२, कुप्र ४६०)। २ लता, वल्ली (दे ७, २८)।

लुक्क अक [नि + ली] लुकना, छिपना। लुक्कइ (हे ४, ५५, षड्)। वकृ. लुक्कंत (कुमा, वज्जा ५६)।

लुक्क अक [तुड्] टूटना। लुक्कइ (हे ४, ११६)।

लुक्क वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

लुक्क वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ (गा ४९, ५५८, पिंग)।

लुक्क वि [रुग्ण] १ भग्न (कुमा)। २ बीमार, रोगी (हे २, २)।

लुक्क वि [लुञ्चित] मुण्डित, केश-रहित (कप्प, पिंड २१७)।

लुक्कमाण देखो लोअ = लोक्।

लुक्किअ वि [तुडित] टूटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

लुक्किअ वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ (पिंग)।

लुक्ख पु [रूक्ष] १ स्पर्श विशेष, लूखा स्पर्श (ठा १, सम ४१) २ वि रूक्ष स्पर्शवाला, स्नेह रहित, लूखा, रूखा (णाया १, १—पत्र ७३, कप्प, औप)। देखो लूह = रूक्ष।

लुग्ग त्रि [दे. रुग्ण] १ भग्न, भांगा हुआ (दे ७, २३, हे २, २, ४, २५८)। २ रोगी, बीमार (हे २, २, ४, २५८ षड्)।

लुच्छ देखो लुंछ = मृज्। लुच्छइ (षड्)।

लुट्ट सक [लुण्ट्] लूटना। लुट्टइ (षड्)।

लुट्ट देखो लोट्ट = स्वप्। लुट्टइ (कुमा ६, १००)।

लुट्ट वि [लुण्टित] लूटा गया (धर्मवि ७)।

लुट्ठ पुं [लोष्ट] रोडा, ढेला, ईंट आदि का टुकडा (दे ७, २९)।

लुड्ढ देखो लुद्ध (प्राकृ २१)।

लुढ अक [लुठ्] लुढकना, लेटना। वकृ. लुढमाण (स २५४)।

लुढिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुपा ५०३, स ३६९)।

लुण देखो लुअ = लू। लुणइ (हे ४, २४१)। कर्म. लुणिज्जइ, लुव्वइ (प्राप्र, हे ४, २४२)। सकृ. लुणिऊण, लुणेऊण (प्राकृ ६९, षड्), लुणेप्पि (अप) (पि ५८८)।

लुणिअ वि [लून] काटा हुआ (धर्मवि १२९, सिरि ४०४)।

लुत्त वि [लुप्त] लोप-प्राप्त, 'करेइ लुत्तो इकारो त्थ' (चेइय ६७७)।

लुत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल (श्रावक ९३ टी)।

लुद्ध पु [लुब्ध] १ व्याध (पण्ह १, २, निचू ४)। २ वि लोलुप, लम्पट (पाअ, विपा १, ७—पत्र ७७, प्रासू ७६)। ३ न लोभ (बृह ३)।

लुद्ध न [लोध्र] गन्ध-द्रव्य विशेष, 'सिणाण अदुवा कक्कं लुद्धं पउमगाणि अ' (दस ६, ६४)। देखो लोद्ध = लोध्र।

लुद्ध पुन [लोध्र] क्षार-विशेष (आचा २, १३, १)।

लुप्पंत, लुप्पमाण } देखो लुंप।

लुब्भ, लुभ } अक [लुभ्] १ लोभ करना। २ आसक्ति करना। लुब्भइ, लुब्भसि (हे ४, १५३, कुमा), लुभइ (षड्)। कृ. लुभियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

लुभ देखो लुह = मृज्। लुभइ (सक्षि ३५)।

लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (दे ७, २४)।

लुल देखो लुढ। लुलइ (पिंग)। वकृ. लुलंत, लुलमाण (सुपा ११०, सुर १०, २३१)।

लुलिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुर ४, ६८)।

लुलिअ वि [लुलित] घूर्णित, चलित (उवा, कुमा, काप्र ८६३)।

लुव देखो लुअ = लू। लुवइ (धात्वा १५१)।

लुव्व° देखो लुण।

लुह सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना। लुहइ (हे ४, १०५, षड्, प्राकृ ६६, भवि)।

लुहण न [मार्जन] शुद्धि (कुमा)।

लूअ देखो लुअ = लून (षड्)।

लूआ स्त्री [दे] मृगतृष्णा, सूर्य-किरण में जल की भ्रान्ति (दे ७, २४)।

लूआ स्त्री [लूता] १ वातिक रोग-विशेष (पचा १८, २७, सुपा १४७, लहुअ १५)। २ जाल बनानेवाला कृमि, मकडी (ओघ ३२३, दे)।

लूड [लुण्ट्] लूटना, चोरी करना। लूडइ, लूडेइ, लूडेह (धर्मवि ८०, सवेग २६, कुप्र ५६)। हेकृ. लूडेउं (सुपा ३०७, धर्मवि १२४)। प्रयो, वकृ. लूडावत (सुपा ३५२)।

लूड वि [लुण्ट] लुटेरा। स्त्री °डी
[illegible] जो
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥'
(वज्जा २६० गाथा ६१७)।

लूडण न [लुण्टन] लूट, चोरी (उप ४४४)।

लूडिअ वि [लुण्ठित] लूटा हुआ (स ४३६, उप ३०, ६७, कुमा ३००)।

लूण देखो लुअ = लून (दे ७, २३, सुपा ४२२ कुमा)।

लूण न [लवण] १ लून, नून, नोन, नमक (गा ४)। २ पु वनस्पति विशेष (श्रा २०, पव ४)। देखो लवण।

लूण न [लवण] लावण्य, सुन्दरता, शरीर-कान्ति (कुमा २६३)।

लूर सक [छिद्] काटना। लूरइ (हे ४, १२४)।

लूरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा ६, ८३)।

लूस सक [लूषय्] १ [illegible] करना, मार [illegible]। २ [illegible] करना, [illegible] करना। [illegible] करना। ४ [illegible] करना। ५ [illegible] करना। ६ [illegible] करना। ७ [illegible]। ८ [illegible]। [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] (आचा)। [illegible]।

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

लूसिअ वि [लूषित] १ लुण्ठित, लुटा गया (श्रा १२)। २ उपद्रुत, पीडित (सम्मत्त १७५)। ३ विनाशित (संबोध १०)। ४ हिंसित (आचा)।

लूह सक [मृज्, रूक्षय्] पोंछना। लूहेइ, लूहेंति (राय, णाया १, १—पत्र ५३)। संकृ लूहित्ता (पि २५७)।

लूह पु [रूक्ष] मुनि, साधु श्रमण (दसनि २, ६)।

लूह वि [रूक्ष] १ लूखा, रूखा स्नेह-रहित आचा, पिंड १२६ उव)। २ पु संयम, विरति, चारित्र (सूत्र, १, ३, १, ३)। ३ न तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)। देखो लुक्ख।

लूहिय वि [रूक्षित] पोंछा हुआ (णाया १, १—पत्र १६, कप्प, औप)।

ले सक [ला] लेना, ग्रहण करना। लेइ (हे ४ २३८, कुमा)। वकृ लिंत (सुपा २५२, पिंग)। संकृ लेवि (अप) (हे ४, ४४०)। हेकृ. लेविणु (अप) (हे ४, ४४१)।

लेक्ख न [लेख्य] १ व्यवहार, व्यापार (सुपा ४२४)। २ लेखा, हिसाब (कुप्र २३८)।

लेक्खा देखो लिहा (गउड)।

लेच्छ देखो लेच्छ = लेच्छ (सम ३५)।

लेच्छापित देखो लिच्छापित (पि ७)।

लेच्छइ पु [लिच्छवि] १ क्षत्रिय विशेष। २ एक प्रसिद्ध राज-वंश (सूत्र १, १३ १०, भग, उप औप, अंत)।

लेच्छइ पु [लिप्सुक लेच्छकि] १ वणिक्, वैश्य। २ पुं वणिक-जाति (सूत्र १, १, १३)।

लेच्छारिय वि [दे] खरंटित, लिप्त (पिंड २४०)।

लेट्टु देखो लिट्टु = [illegible]।

लेट्टु पु [लेष्टु] ढेला, पत्थर आदि का टुकड़ा (पि ३०४, औप, उत्त, कप्प, महा)।

लेट्टु पु [लेष्टु] ऊपर देखो (पाम, [illegible]) दे ७ २४)।

लेडुअ पु [दे] १ [illegible] [illegible]। २ [illegible] (दे ७, २६)।

लेडिअ न [दे] [illegible] (दे ७, २४)।

लेडुक पु [दे] रोडा, लोष्ट (दे ७, २५, पाम)।

लेण न [लयन] १ गिरि-वर्ती पाषाण-गृह (णाया १, २—पत्र ७६)। २ बिल, जन्तु-गृह (कप्प)। °विहि पुस्त्री [°विधि] कला-विशेष (औप)। देखो लयण = लयन।

लेप्प न [लेप्य] भित्ति, भीत (धर्मसं २६, कुप्र ३००)।

लेप्पगार पु [लेप्यकार] शिल्पी-विशेष, राज, राजगीर (अणु १४६)।

लेप्पा स्त्री [लेप्या] लेपन-क्रिया (उत्त १६, ६५)।

लेलु देखो लेट्टु (आचा, सूत्र २, २, १८, पिंड ३४६)।

लेव पु [लेप] १ लेपन (सम ३६ पउम २, २८)। २ नाभि प्रमाण जल (ओघभा ३४)। ३ पु भगवान् महावीर के समय का नालंदा-निवासी एक गृहस्थ (सूत्र २, ७, २)। °कड, °डि वि [°कृत] लेप मिश्रित (ओघ ५६५, पत्र ४ टी—पत्र ४६, पडि)।

लेवण न [लेपन] लेप-करण (पव १३३)।

लेवाड वि [लेपकृत्] लेप कारक (वव १)।

लेस पु [लेश] १ अल्प, स्तोक, लव, थोडा (पाम, दे ७, २८)। २ संक्षेप (द १)।

लेस वि [दे] १ लिखित। २ आश्वस्त। ३ नि शब्द, शब्द-रहित। ४ पु निद्रा (दे ७, २८)।

लेस पु [श्लेष] मश्लेष, संबन्ध, मिलान (राय)।

लेसण न [श्लेषण] ऊपर देखो (विसे ३ ०७)।

लेसणया } स्त्री [श्लेषणा] ऊपर देखो (औप, लेसणा } ठा ४, ४—पत्र २८०, राय)।

लेसणी स्त्री [श्लेषणी] विद्या विशेष (सूत्र २, २, २७, णाया १, १६—पत्र २१३)।

लेसा स्त्री [लेश्या] १ तेज, दीप्ति। २ मण्डल, बिम्ब। [illegible] [illegible] (उत्त २६)। ३ [illegible] (सुज्ज १६)। ४ सौन्दर्य (राय)। ५ आत्मा का परिणाम-विशेष, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम। ६ आत्मा [illegible] शुभ या अशुभ परिणाम [illegible]।

मे निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य (भग, उवा, ओप, पव १५२, जोवस ७४, सबोध ४८, पएण १७, कम्म ४, १, ३१)।

लेसा स्त्री [लेश्या] ज्वाला (राय ५६, ५७)।

लेसिय वि [श्लेषित] श्लेष-युक्त (स ७६२)।

लेसुरडयतरु पुं [दे] लसोडा, गु० गूंदा (चउप्पन्न० पत्र २४३)।

लेस्सा देखो लेसा (भग)।

लेह देखो लिह = लिख्। लेहइ (प्राकृ ७०)।

लेह देखो लिह = लिह्। लेहइ (प्राकृ ७०)।

लेह (अप) देखो लह = लभ्। लेहइ (पिंग)।

लेह पु [लेह] अवलेह, चाटन (पउम २, २८)।

लेह पु [लेख] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास (गा २४८, उवा)। २ पत्र, चिट्ठी (कप्पू)। ३ देव, देवता। ४ लिपि। ५ वि. लेख्य, जो लिखा जाय (हे २, १८९)। ६ लेखक, लिखनेवाला, 'अज्जवि लेहत्तणे तएहा' (वज्जा १००)। °वाह वि [°वाह] चिट्ठी ले जानेवाला, पत्र-वाहक (पउम ३१, १, सुपा ५१९)। °वाहग, °वाहय वि [°वाहक] वही अर्थ (सुपा ३३१, ३७२)। °साला स्त्री [°शाला] पाठशाला (उप ७२८ टी)। °रिय पु [°चार्य] उपाध्याय, शिक्षक (महा)।

लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५, उव)।

लेहण न [लेहन] चाटन, आस्वादन (पउम ३, १०७)।

लेहणी स्त्री [लेखनी] कलम, लेखनी (पउम २६, ५, गा २४४)।

लेहल देखो लहड (गा ४६१)।

लेहा देखो लिहा (ओप, कप्प, कप्पू, कुप्र ३६६, स्वप्न ५२)।

लेहिय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (ती ७)।

लेहुड पु [दे] लोष्ठ, रोडा, ढेला (दे ७, २४)।

लोअ देखो रोअ = रोचय्। सकृ लाएया (कस)।

लोअ सक [लोक्, लोकय्] देखना। वकृ लोअअंत (नाट)। कवकृ लुक्कमाण (उप १४२ टी)। संकृ. लोइउ (कुप्र ३)।

लोअ पुं [लोक] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत्, संसार, भुवन। २ जीव, अजीव आदि द्रव्य। ३ समय, आवलिका आदि काल। ४ गुण, पर्याय, धर्म। ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग (ठा १—पत्र १३, टी—पत्र १४, भग, हे १, १८०, कुमा, जी १४, प्रासू ५२, ७१, उत्त, सुर १, ६६)। ६ आलोक, प्रकाश (वज्जा १०६)। °ग्ग न [°ग्र] १ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान (णाया १, ५—पत्र १०५, इक)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (पाअ)। °ग्गथूभिआ स्त्री [°ग्रस्तूपिका] मुक्त-स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (इक)। °ग्गपडिबुज्झणा स्त्री [°ग्रप्रतिबोधना] वही अर्थ (इक)। °णाभि पु [°नाभि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °प्पवाय पु [°प्रवाद] जन-श्रुति, कहावत (सुर २, ४७)। °मज्झ पु [°मध्य] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °वाय पुं [°वाद] जन श्रुति, लोकोक्ति (स २६०, मा ४८)। °गास पुं [°काश] लोक-क्षेत्र, आलोक-भिन्न आकाश (भग)। °हाणय न [°भाणक] कहावत, लोकोक्ति (भवि)। देखो लोग।

लोअ पु [लोच] लुञ्चन, नोचना केशों का उत्पाटन, उखाडना (सुपा ६४९, कुप्र १७३, णाया १, १—पत्र ६०, ओप, उत्त)।

लोअ पु [लोप] अदर्शन, विध्वंस (चेइय ६६१)।

लोअंतिअ पु [लोकान्तिक] एक देव-जाति (कप्प)।

लोअग न [दे लोचक] गुण-रहित अन्न, खराब नाज (कम)।

लोअडी (अप) स्त्री [लोमपटी] कम्बल (हे ४, ४२३)।

लोअण पुन [लोचन] आंख, चक्षु, नेत्र (हे १, ३३, २, १८४, कुमा, पाअ, सुर २, २२२)। °वत्त न [°पत्र] अक्षि लोम, वरवनी, पक्ष्म (से ६, ६८)।

लोअणिल्ल वि [लोचनवत्] अ खवाला (सुपा २००)।

लोआणी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३६)।

लोइअ वि [लोकित] निरीक्षित, दृष्ट (गा २७१, स ७१३)।

लोइअ वि [लौकिक] लोक-संबन्धी, सांसारिक (आचा, विपा १, २—पत्र ३०, णाया १, ६—पत्र १६६)।

लोउत्तर वि [लोकोत्तर] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण, 'लोउत्तर चरिअ' (श्रा १६, विसे ८७०)। देखो लोगुत्तर।

लोउत्तरिय वि [लोकोत्तरिक] ऊपर देखो (श्रा १)।

लोक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।

लोग पु [लोक] मान-विशेष, श्रेणी से गुणित प्रतर (अणु १७३)। °ायत देखो °ायय (अणु ३६)।

लोग देखो लोअ = लोक (ठा ३, २, ३, ३—पत्र १४२, कप्प, कुमा, सुर १, ७९, हे १, १७७, प्रासू २५, ४७)। ७ न एक देव-विमान (सम २५)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २५)। °ग्गचूलिआ स्त्री [°ग्रचूलिका] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला (सम २२)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] लोक-व्यवहार, रोजी (णाया १, २—पत्र ८८)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] लोक-व्यवस्था (ठा ३, ३)। °दव्व न [°द्रव्य] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह (भग)। °नाभि पु [°नाभि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७)। °नाह पु [°नाथ] जगत् का स्वामी, परमेश्वर (सम १, भग)। °परिपूरणा स्त्री [°परिपूरणा] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी मुक्त-स्थान (सम २२)। °पाल पु [°पाल] इन्द्रों के दिक्पाल, देव-विशेष (ठा ३, १, ओप)। °प्पभ पु [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °बिंदुसार पुंन [°बिन्दुसार] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम ४४)। °मज्झावसिअ पुन [°मध्यावसित] अभिनय विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)। °मज्झावसाणिअ पुन [°मध्यावसानिक] वही अर्थ (राय)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)।

°नाह देखो °णाह (कुप्र १३५)। °वीर पुं [°वीर] भगवान् महावीर (उप)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °हिअ न [°हित] एक देव-विमान (सम २५)। °यत न [°यत] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन (णंदि)। °लोग पुं [°लोक] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत् (उप, वि २०२)। °वत्त न [°वर्त्त] एक देव विमान (सम २५)। °हाण न [°ख्यान] लोकोक्ति, जन-श्रुति (उप ८३० टी)। लोगंतिय देखो लोअंतिअ (पि ४६०)।

लोगिग देखो लोइअ = लौकिक (धर्मसं १२४८)।

लोगुत्तर देखो लोउत्तर। °वडिंसय न [°वतंसक] एक देव विमान (सम २५)।

लोगुत्तर पुं [लोकोत्तर] मुनि, साधु। २ जिन शासन, जैन सिद्धान्त (अणु २६)।

लोगुत्तरिअ वि [लोकोत्तरिक] १ साधु का। २ जिन शासन का (अणु २६)।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिअ (भाव ७६५)।

लोट्ट अक [स्वप्] लोटना, सोना। लोट्टइ (हे ४, १४६)। वह लोट्टंत° (पाप)।

लोट्ट अक [लुट्] १ लेटना। २ प्रवृत्त होना। लोट्टइ लोट्टती (प्राकृ ७२, सूम १, १४, १४)। वह. लोट्टंत (सुपा ४६६)।

लोट्ट पुं } [दे] १ कच्चा चावल (निचू
लोट्टग } ४)। २ मुर्गी आदि का दाना चारा (णाया १, १—पत्र ६३), स्त्री °ट्टिया (णाया १, १)।

लोट्टिअ वि [दे] उपविष्ट (दे ७, २१)।

लोड्ड वि [दे] [illegible] (दे)।

लोड्डु पुं [लोष्टु] [illegible] (दे ७, २४)।

लो[illegible] [लोटित] [illegible] (गा ७६)।

लोड [illegible] [दे] [illegible], [illegible]। [illegible]।

लोड पुं [दे] १ [illegible] (उत्त [illegible] १, ४४ [illegible])। २ [illegible] (ठा ४, भा

२०, सवोध ४४)। ३ वि. स्मृत। ४ शयित (दे ७, ७२६)।

लोढय पु [दे लोठक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र (गउड)।

लोढिअ वि [लोठित] लेटवाया हुआ, सुलाया हुआ (पउम ६१, ६७)।

लोण न [लवण] १ लून, नमक। २ लावण्य, शरीर-कान्ति (गा ३१६, कुमा)। ३ पु वृक्ष विशेष (पउम ४२, ७, आ २०, पव ४)। ४—देखो लवण (हे १, १७१, प्राप्र, गउड, ओप)।

लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-सम्बन्धी (ओघ ७७६)।

लोण्ण न [लावण्य] शरीर-कान्ति (प्राकृ ५)।

लोत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल (स १७३)।

लोद्ध पु [लोध्र] वृक्ष-विशेष (णाया १, १—पत्र ६५, पएण १, सूम १, ४, २, ७, ओप, कुमा)। देखो लुद्ध = लोध्र।

लोद्ध देखो लुद्ध = लुब्ध (पाम, गुर ३ ४७, १०, २२३, प्राप्र)।

लोप्प देखो लुप। 'जो एग वाय लोप्पइ सो तिन्निवि लोप्पयतो कि केणावि धरिउ पारीयइ' (स ४६२)।

लोभ सक [लोभय्] लुभाना, लालच देना। कवकृ लोभिज्जंत (सुपा ६१)।

लोभ पु [लोभ] लालच, तृष्णा (आचा, कप्प, ओप, उव, ठा ३, ४)। २ वि लोभ-युक्त (पडि)।

लोभणअ वि [लोभनक] लोभी, लालची (आचा २, १५, ५)।

लोभि } न [लोभिन्] लोभवाला (कम्म
लोभिल्ल } ४, ४०, पउम ८, ८६)।

लोम पुन [लोम] रोम, रोआँ, रूँगटा (उवा)। °पक्खि पु [°पक्षिन्] रोम के पंखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °स वि [°श] लोम युक्त (गउड)। °हत्थ पु [°हस्त] पीछी, रोमों का बना हुआ झाड़ू (विपा १, ७—पत्र ७८, औप, णाया १, २)। °हरिस पु [°हर्ष] १ नरकावास विशेष (देवेन्द्र २७)। २ रोमाञ्च, रोमों का खड़ा होना (उत्त ५, ३१)। °हार पु [°हार] जीव हर घन कठोरता पार (उत्त ६, २८)। °हार पु [°हार] रूँगटों से लिया जाता आहार, त्वचा से ली जाती खुराक (भग सूअनि १७१)।

लोमथिअ पु [दे] नट (नदि टिप्पण वेनयिक बुद्धिगत १३ वाँ कथानक)।

लोमसी स्त्री [दे] १ ककडी, खीरा (उप पृ २५२)। २ वल्ली विशेष, ककडी का गाछ (वव १)।

लोय न [दे] सुन्दर भोजन, मिष्टान्न (आचा २, १, ४, ३)।

लोर पुंन [दे] १ नेत्र, आंख। २ अश्रु, आंसू (पिंग)।

लोल अक [लुठ्] १ लेटना। २ सक. विलोडन करना। लोलइ (पिंड ४२२, पिंग), 'लोलेइ रासभवल' (पउम ७१, ४०)। वकृ. लोलत, लोलमाण (कप्प, पिंग, पउम ५३, ७६)।

लोल सक [लोठय्] लेटाना। लोलेइ, लोलेमि (उवा)।

लोल वि [लोल] १ लम्पट, लुब्ध, आसक्त (णाया १, १ टी—पत्र ५, ओप, पाम, कप्प, सुपा ३६५)। २ पु रत्न-प्रभा नरक का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५, देवेन्द्र ३०)। ३ शर्कराप्रभा नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का नववाँ नरकेन्द्रक—नरक स्थान (देवेन्द्र ७)। °मज्झ पु [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी—पत्र ३६७)। °सिट्ठ पु [°शिष्ट] नरकावास विशेष (ठा ६ टी)। °वत्त पु [°वर्त्त] नरकावास विशेष (ठा ६ टी, देवेन्द्र ७)।

लोलट्ठिअ न [दे] चाटु, खुशामद (दे ७, २२)।

लोलण न [लोठन] १ लेटना, घोलन (सूम १, ५, १, १७)। २ लेटवाना (उप ५६०)।

लोलपच्छ पु [लोलपार्श्व] नरक स्थान विशेष (देवेन्द्र ३०)।

लोलिक्क न [लौल्य] लम्पटता, लालुपता (पएण १, ३—पत्र ४३)।

लोलिम पुंस्त्री [लोलत्व] ऊपर देखो (कुमा)।

लोलुअ वि [लोलुप] १ लम्पट, लुब्ध (पउम १, ३०, २६, ४७, पाम, गुर १४, ३३)। २ पु. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास

(ठा ६—पत्र ३६५)। °च्चुअ पु [°च्युत] रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (उवा)।

लोलुंचाविअ वि [दे] रचित-तृष्ण, जिसने तृष्णा की हो वह (दे ७, २५)।

लोलुअ देखो लोलुअ (सूत्र २, ६, ४४)।

लोव सक [लोपय्] लोप करना, विध्वंस करना। लोवेइ (महा)।

लोव पुन [लोप] विध्वंस, विनाश, अदर्शन, 'कम-लोवकारया' (कुप्र ४), 'भ्रा दुट्ठे जासु वहि लोअ व तुम अदसणा होसु' (धमवि १३३)।

लोह देखो लोभ = लोभ (कुमा, प्रासू १७६)।

लोह पुन [लोह] १ धातु-विशेष, लोहा (विपा १, ६—पत्र ६६, पाग्र, कुमा)। २ धातु, कोई भी धातु, 'जह लोहाए सुवन्न तणाए धन्न धणाए रयणाइं' (सुपा ६३६)। °कार पु [°कार] लोहार (कुप्र १८८)। °जघ पुं [°जङ्घ] १ भारत में उत्पन्न द्वितीय प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४)। २ राजा चण्डप्रद्योत का एक दूत (महा)। °जघवण न [°जङ्घवन] मथुरा के समीप का एक वन (ती ७)।

लोह वि [लौह] लोहे का, लोह-निर्मित (से १४, २०)।

लोहगिणी स्त्री [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

लोहल पुं [लोहल] शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द (पड्)।

लोहार पु [लोहकार] लोहार, लोहे का काम करनेवाला शिल्पी (दे ८, ७१, ठा ८—पत्र ४१७)।

लोहि° } लोहिअ° } देखो लोही, 'कुंभीसु य पयणेसु य लोहियसु य कदुलोहिकुंभीसु' (सूअनि ८०, ७६)।

लोहिअ पु [लोहित] १ लाल रंग, रक्त-वर्ण। २ वि. रक्त वर्णवाला, लाल (से २, ४, उवा)। ३ न. रुधिर, खून (पउम ५, ७६)। ४ गोत्र विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०)।

लोहिअक पुं [लोहित्यक, लोहिताङ्क] अठासी महाग्रहों मे तीसरा महाग्रह (सुज्ज २०)।

लोहिअक्ख पु [लोहिताक्ष] १ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। ३ रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१, कप्प, उत्त ३६, ७६)। ४ एक देव विमान (देवेन्द्र १३२, १४४)। ५ रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड (सम १०४)। ६ एक पर्वत-कूट (इक)।

लोहिआ } लोहिआअ } अक [लोहिताय्] लाल होना। लोहिआइ, ओहिआअइ (हे ३, १३८, कुमा)।

लोहिआमुह पु [लोहितामुख] रत्नप्रभा का एक नरकावास (स ८८)।

लोहिच्च पु [लोहित्य] आचार्य भूतदिन्न के शिष्य एक जैन मुनि (णदि ५३)।

लोहिच्च } लोहिच्चायण } न [लौहित्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी, इक, सुज्ज १०, १६)।

लोहिणी } लोहिणीहू } स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५), 'लोहिणीहू य थीहू य' (उत्त ३६, ९९, सुख ३६, ९९)।

लोहिल्ल वि [दे लोभिन्] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५, पउम ८, १०७, गा ४८४)।

लोही स्त्री [लोही] लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, कराह (उप ८३३, चारु १)।

ल्हस देखो लस = लस्। ल्हसइ (प्राकृ ७२)।

ल्हस अक [स्रस्] खिसकना, सरकना, गिर पडना। ल्हसइ (हे ४, १९७, पड्)। वकृ ल्हसंत (वज्जा ९०)।

ल्हसण न [स्रसन] खिसकना, पतन (सुपा ५५)।

ल्हसाव सक [स्रसय्] खिसकाना। सकृ. ल्हसाविअ (सुपा ३०८)।

ल्हसाविअ वि [स्रसित] खिसकाया हुआ (कुमा)।

ल्हसिअ वि [स्रस्त] खिसक कर गिरा हुआ (कुप्र १८७, वज्जा ८४)।

ल्हसिअ वि [दे] हर्षित (चड)।

ल्हसुण देखो लसुण (पण्ण १—पत्र ४०, पि २१०)।

ल्हादि स्त्री [ह्लादि] आह्लाद, प्रमोद, खुशी (राज)।

ल्हाय पु [ह्लाद] ऊपर देखो (धर्मसं २१६)।

ल्हासिय पु [ल्हासिक] एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

ल्हिक्क अक [नि + ली] छिपना। ल्हिक्कइ (हे ४, ५५, पड् २०९)। वकृ ल्हिक्कंत (कुमा)।

ल्हिक्क वि [दे] १ नष्ट (हे ४, २५८)। २ गत (पड्)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि लआराइसद्दसकलणो चउत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

व

व पुं [व] १ [illegible] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, [illegible] (प्राप्र, प्रामा)। २ पुन. [illegible] (हे १, १, २ ६९)।

व अ [व] [illegible] (हे २, १९, गा १८, ६९, ८८, ७६, कुमा, हे २, १८२, प्राकृ २)।

व देखो व = व (हे ८, [illegible] गा ४९, १६४ [illegible] २८, [illegible])।

व° देखो वाया = वाच । °त्तिवय वि [°विद्] [illegible] (गा १४२ अ)। °पइराय पुं [°पतिराज] एक प्राकृत [illegible] गउडवहो काव्य का कर्ता (गउड)।

[illegible] [°] १ [illegible] २ दु [illegible] (पड्)।

वअल्ल धा [प्र + स्] पसरना, फैलना। वअलइ (पड्)।

व[illegible] देखो व[illegible] = वराह (नाट २)।

वइ अ [वै] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ [illegible] निश्चय (विसे १८००)। २ [illegible]। ३ संबोधन। ४ [illegible] (नाट)।

वइ अ [°] यदि, [illegible] 'कुसुमवइ-[illegible]' (कुमा ८६)।

वइ [illegible] [व्रतिन्] [illegible] (उत्त, [illegible] ४३६)। [illegible] (उत्त ४७१)।

वइ अ [वाच्] वाणी, [illegible] (उत्त २४, [illegible] ६०४ आ ३१, [illegible] १८४, [illegible] ४, ३४, ३७, ३८)। °गुत्त वि [°गुप्त] [illegible]। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] [illegible] (पव [illegible])। °जोग पुं [°योग] [illegible]। °वि[illegible] [°विनय] [illegible]। °[illegible] [°] [illegible] (प्रासू ३, १ ६, ६)। [illegible] [°] [illegible] [illegible] १२८, १३४ ८४४)। [illegible] यहाँ।

वइ स्त्री [वृति] बाड़, काँटे आदि से बनाई जाती स्थानपरिधि, घेरा, 'धन्नाण रक्खट्ठा कीरति वईओ' (श्रा १०, गउड, गा ६६, उत्त ३४८, पउम १०३, १११, वज्जा ८०), 'उच्छू योवंति वइं' (धर्मवि ७४, सबोध ४२)।

°वइ देखो पइ = पति (गा ६६, से ४, ३४, वण्ण, कुमा)।

वइ° देखो वय = वद्।

वइ° देखो वय = व्रज्।

वइअ वि [वि] १ पीत, जिसका पान किया गया हो वह (दे ७, ३४)। २ आच्छादित, ढका हुआ, 'उच्छाइअत्तुमिआइ वइआइ' (पाअ)।

वइअ वि [व्ययित] जिसका व्यय किया गया हो वह, 'सिमिह दव्वेण वइएणं वइएणं' (सुपा ७०, ७३, ४१०)।

वइअब्भ पुं [वैदर्भ] १ विदर्भ देश का राजा। २ वि विदर्भ देश में उत्पन्न (षड्)।

वइअर पुं [व्यतिकर] प्रसङ्ग, प्रस्ताव (सुर ४, १३६, महा)।

वइअव्व देखो व[illegible] = व[illegible]।

वइआ स्त्री [व्रजिका] छोटा गोकुल (पिंड ३०६, सुख २, ४ बृह ६४)।

वइआलिअ वि [वैतालिक] मंगल-स्तुति आदि [illegible] राजा का जगानेवाला मागध आदि (दे २, ११२)।

वइआलीअ पुन [वैतालीय] छन्द-विशेष (दे [illegible] १, १४१)।

वइएस वि [वैदेश] विदेश-संबन्धी, परदेशी (पउम ३३, २८, ३४ १, ११०, प्राकृ ६)।

वइएह पुं [वैदेह] १ वणिक्, वैश्य। २ [illegible] शूद्र [illegible] स्त्री [illegible] जात आदि-[illegible] । ३ [illegible] । ४ वि [illegible] । ५ मिथिला देश का (दे १, ११२, प्राकृ ६)।

वइएस पुं [दे] वैश्य, [illegible] (दे ७, १००)।

वइकच्छ पुं [वैकक्ष] उत्तरासंग (ओघ)।

वइकल्लि न [वैकल्य] विकलता (पाअ)।

वइकुंठ पुं [वैकुण्ठ] १ उपेन्द्र, विष्णु (पाअ)। २ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (उप १०३१ टी)।

वइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (पउम २, ७४, उवा, पडि)।

वइक्कम पुं [व्यतिक्रम] विशेष उल्लंघन, व्रत दोष-विशेष (ठा ३, ४—पत्र १५६, पव ६, टी, पउम ३१, ६१)।

वइगरणिअ पुं [वैकरणिक] राज कर्मचारि-विशेष (सुपा ५४८)।

वइगा देखो वइआ (सुख २, ५, बृह ३)।

वइगुण्ण न [वैगुण्य] १ वैकल्य, अपरि-पूर्णता, असम्पन्नता (धर्मसं ८८४)। २ विप-रीतपन, विपर्यय (राज)।

वइचित्त न [वैचित्र्य] विचित्रता (विसे ३११, धर्मसं ६५)।

वइजवण वि [वैजवन] गोत्र-[illegible] देश में उत्पन्न (हे १, १५१)।

वइण देखो वइ = व्रतिन्।

वइतुलिय वि [वैतुलिक] तुल्यता रहित (सिरि ११)।

वइत्तए } देखो वय = वद्।
वइत्ता }

वइत्ता देखो वय = वच्।

वइत्तु वि [वदितृ] बोलनेवाला, 'सुम वइत्ता भवति' (ठा ७—पत्र ३८६)।

वइदब्भ देखो वइअब्भ (हे १, १५१)।

वइदिस पुं [वैदिश] १ अवन्ती देश, मालव देश, 'वइदिस उज्जेणीए जियपडिमा एलगच्छं च' (उव २०२)। २ वि विदिशा नगरी का (बृह ६)।

वइदेस देखो वइएस (प्राप्र)।

वइदेसिअ वि [वैदेशिक] विदेशीय, परदेशी (सुपा ७, सुर ३८०, सिरि ३२३, सि ६१)।

वइदेह देखो वइएह (प्राप्र)।

वइदेही स्त्री [वैदेही] १ राजा जनक की स्त्री, सीता की माता (पउम २६, ७५)। २ जनकात्मजा, सीता। ३ हरिद्रा, हल्दी। ४ पिप्पली, पीपल। वणिक्-स्त्री (संक्षि ५)।

वइधम्म न [वैधर्म्य] विरुद्धधर्मता, विपरीतपन (विसे ३२२८)।

वइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] संमिलित (आचा २, १, ३, २)।

वइर देखो वेर = वैर (हे १, १५२)।

वइर पुन [वज्र] १ रत्न-विशेष, हीरक, हीरा (सम ६३, औप, कप्प, भग, कुमा)। २ इन्द्र का अस्त्र (पड्)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३, सम २५)। ४ विद्युत्, बिजली (कुमा)। ५ पु. एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प, हे १, ६, कुमा)। ६ कोकिलाक्ष वृक्ष। ७ श्वेत कुश। ८ श्रीकृष्ण का एक प्रपौत्र। ९ न. बालक, शिशु। १० धात्री। ११ काँजी। १२ वज्रपुष्प। १३ एक प्रकार का लोहा। १४ अस्त्र-विशेष। १५ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (हे २, १०५)। १६ कीलिका, छोटी कील (सम १४९)। °कंड न [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का एक वज्ररत्न-मय काण्ड (राज)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कूड न [°कूट] १ एक देव-विमान (सम २५)। २ देवी विशेष का आवासभूत एक शिखर (राज)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न तृतीय प्रतिवासुदेव (सम १५४)। २ पुष्कलावती विजय के लोहार्गल नगर का एक राजा (आव)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] प्रतिमा-विशेष, एक प्रकार का व्रत (ठा ४, १—पत्र १९५)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव विमान (सम २५)। °वण्ण न [°वर्ण] देवविमान-विशेष (सम २५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान का नाम (सम २५)। °सिंह पु [°सिंह] एक राजा (काल, पि ४००)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °सीह देखो सिंह (काल)। °सेण पु [°सेन] एक प्राचीन जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के शिष्य थे (कप्प)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ एक इन्द्राणी, दाक्षिणात्य वानव्यन्तरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (इक)। °हर पु [°धर] इन्द्र (पड्)। °मय वि [°मय] वज्र रत्नों का बना हुआ (सम ६३, औप, पि ७०, १३५), स्त्री °मई, °मती (जीव ३, पि २०३ टि ४)। °वत्त, न [°विर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °ोसभनाराय न [ऋषभनाराच] संहनन-विशेष (सम १४९, भग)। देखो वज्ज = वज्र।

वइरा स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वइराग न [वैराग्य] विरक्ति, उदासीनता (पउम २६, २०)।

वइराड पु [वैराट] १ एक आर्य देश। २ न प्राचीन भारतीय नगर-विशेष, जो मत्स्य देश की राजधानी थी, 'वइराड मच्छ वरणा अच्छा' (पव २७५)।

वइराय देखो वइराग (भवि)।

वइरि } वि [वैरिन्] दुश्मन, रिपु (सुर
वइरिअ } १, ७, काल, प्रासू १७४)।

वइरिक्क न [दे] विजन, एकान्त स्थान, देखो पइरिक्क, 'अहिअ सुएणाइ निरजणाइ वइरिक्कएणपुसिआइ' (गा ८७०)।

वइरित्त वि [व्यतिरिक्त] भिन्न, अलग (सुर १२, ४८, चेइय ५६४)।

वइरी स्त्री [वज्री] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वइरुट्टा स्त्री [वैरोट्या] १ एक विद्या-देवी (संति ६)। २ भगवान् मल्लिनाथजी की शासन-देवी (संति १०)।

वइरुत्तरवडिंसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

वइरेअ } पु [व्यतिरेक] १ अभाव (धर्मसं
वइरेग } ११२)। २ साध्य के अभाव में हेतु का नितान्त अभाव (धर्मसं ३९२, उप ४१३, विसे २९०, २२०४)।

वइरोअण पु [वैरोचन] १ अग्नि, वह्नि (सूअ १, ६, ६)। २ बलि नामक इन्द्र (देवेन्द्र ३०७)। ३ उत्तर दिशा में रहनेवाले असुर-निकाय के देव (भग ३, १, सम ७४)। ४ पुन. एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७, सम १४)।

वइरोअण पु [दे] बुद्ध देव (दे ७, ५१)।

वइरोड पु [दे] जार, उपपति (दे ७, ४२)।

वइवलय पु [दे] साँप की एक जाति, दुन्दुभ सर्प (दे ७, ५१)।

वइवाय पु [व्यतीपात] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (राज)।

वइवेला स्त्री [दे] सीमा (दे ७, ३१)।

वइस देखो वइस्स = वैश्य,
'वाणिज्जकरिसणाइगोरक्खणपालणेसु उज्जुत्ता।
ते होंति वइसनामा वावारपरायणा धीरा'
(पउम ३, ११६)।

वइसइअ वि [वैषयिक] विषय से उत्पन्न, विषय-सम्बन्धी (संक्षि ५)।

वइसंपायण पु [वैशम्पायन] एक ऋषि, जो व्यास का शिष्य था (हे १, १५१, प्राप्र)।

वइसम्म पुन [वैषम्य] विषमता, 'वइसम्मो' (संक्षि ५, पि ६१)।

वइसवण पु [वैश्रवण] कुबेर (हे १, १५२, भवि)।

वइसस न [वैशस] रोमाञ्चकारी पाप-कृत्य (उप ५७५)।

वइसाणर देखो वइस्साणर (धम्म १२ टी)।

वइसाल देखो [वैशाल] विशाला में उत्पन्न (हे १, १५१)।

वइसाह पु [वैशाख] १ मास-विशेष (सुर ४, १०१, भवि)। २ मन्थन-दण्ड। ३ पुन. योद्धा का स्थान-विशेष (हे १, १५१, प्राप्र)।

वइसाही देखो वेसाही (राज)।

वइसिअ वि [वैशिक] वेष से जीविका उपार्जन करनेवाला (हे १, १५२, प्राप्र)।

वइसिट्ठ न [वैशिष्ट्य] विशिष्टता, भेद (धर्मसं ६६)।

वइसेसिअ न [वैशेषिक] १ दर्शन-विशेष, कणाद-दर्शन (विसे २५०७)। २ विशेष, 'जोएज्ज भावओ वा वइसेसियलक्खणं चउहा' (विसे २१७८)।

वइस्स पुंस्त्री [वैश्य] वर्ण विशेष, वणिक्, महाजन (विपा १, ५)।

वइस्स वि [द्वैष्य] अप्रीतिकर (उत्त ३२, १०३)।

वइस्सदेव पु [वैश्वदेव] वैश्वानर, अग्नि (निर १, १)।

वइस्साणर पु [वैश्वानर] १ वह्नि, अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। ३ सामवेद का प्रवचन-शिष्य (हे १, १५१)।

वई देखो वइ = वाच् (प्राप्र)। °मय वि [°मय] वचनात्मक (दस ६, ३, ६)।

वईअ वि [व्यतीत] अतीत, गुजरा हुआ। °सोग पु [°शोक] एक जैन मुनि (पउम २०, २०)।

वईवय सक [व्यति + व्रज्] जाना, गमन करना। वकृ 'धान्नायन्न सन्निविन्नउ अदूर-सामंतेणं वईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ' (उवा)।

वईसाय देखो वइसाय (राज)।

वउ पुंस्त्री [दे] लावण्य, शरीर-कान्ति, 'वऊ य लावण्णे' (दे ७, ३०)।

वउ न [वपुस्] शरीर, रूप (राज)।

वउलिअ वि [दे] शूलप्रोत (दे ७, ४४)।

वउसाय देखो वव = वद्।

वओ° देखो वय = वयस् (प्राप्र)। °मय न [°मय] वाङ्मय, शास्त्र (विसे ५५१)।

वओ° देखो वय = व्रज् (पउम ४८, १२५)।

वओवत्थ } पु [दे] विषुवत्, समान
वओसत्थ } रात और दिवसवाला काल (दे ७, ४०)।

वं° देखो वा = वा। °नियम पु [°नियम] वाणी का संयम (उत्त ७२८ टी)।

वंक वि [वङ्क, वक्र] १ बाँका, टेढ़ा, कुटिल (कुमा; गउड ७२८; दे ७४)। २ नदी का मोड़ (हे १, २६, प्राप्र)।

वंक पु [दे] कलङ्क, दाग (दे ७, ३०)।

°वंक देखो पंक (से ६, २६, गउड)।

वंकचूल पु [वङ्कचूल] एक प्रसिद्ध राज-कुमार (धम्म १२, पडि)।

वंकचूलि पु [वङ्कचूलि] ऊपर देखो, 'एवं वंकचूलिनरिंदे' (धर्मवि ४३, ४६, ५०)।

वंकण न [वङ्कन, वक्रण] वक्रता, कुटिलता (ओघ ?, १—पत्र ४०)।

वंकिअ वि [वक्रित] बाँका किया हुआ (से ६, ५६)।

°वंकिअ वि [पङ्कित] पङ्क-युक्त (से ६, ५६)।

वंकिम पुंस्त्री [वक्रिमन्] वक्रता, कुटिलता (पि ७४, हे ४, ३४४, ४०१)।

वंकुड } देखो वंक = वक्र, 'विविहविसविंड-
वंकुण } विनिग्गयवंकुडतिक्खग्गकंटइए। एया-रिसम्मि य वणे' (स २५६, हे ४, ४१८, भवि, पि ७४)।

वंकुभ (शौ) ऊपर देखो (प्राकृ ६७)।

वंग न [दे] वृन्ताक, भंटा (दे ७, २६)।

वंग वि [व्यङ्ग] विकृत अंग, 'वंगवय-वलीपलियवंगदुब्बन्नवाहिदोहग्गसोयपुरुकाओ' (पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

वंगच्छ पु [दे] प्रमथ, शिव का अनुचर-विशेष (दे ७, ३६)।

वंगण न [व्यङ्गन] क्षत (राज)।

वंगिय वि [व्यङ्गित] विकृत शरीरवाला (राज)।

वंगेवड्ड पु [दे] सूकर, सूअर (दे ७, ४२)।

वंच सक [वञ्च्] ठगना। वंचइ (हे ४, ९३, षड्, महा)। कर्म. वंचिज्जइ (भवि)। संकृ वंचिऊण (महा)। कृ वंचणीअ (प्राप्र)। प्रयो, वकृ 'तो सो वंचाविंतो कुमरपहारं वणइ पुरवाहिं' (सुपा ५७२)।

वंच (अप) देखो वच = व्रज्। वंचइ (प्राकृ ११६)। संकृ वंचिवि (भवि)।

वंच सक [उद् + नमय्] ऊँचा उठाना। वंचइ (?) (धात्वा १५१)।

वंच वि [वञ्च] ठगनेवाला, धूर्त, 'कुडिलत्तणं च वंकत्तणं च वंचत्तणं असच्चं च' (वज्जा ११६, हे ४, ४१२)।

वंचअ } वि [वञ्चक] ऊपर देखो (नाट—
वंचग } मालती, श्रा २८)।

वंचण न [वञ्चन] १ प्रतारण, ठगाई (सम्मत्त २१७)। २ वि ठगनेवाला, ठग (सवाय ४१)। °चण वि [°चण] ठगने में चतुर (सम्मत्त २१७)।

वंचणा स्त्री [वञ्चना] प्रतारणा (उव, कप्पू)।

वंचिअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित (पाय)। २ रहित, वर्जित (गउड)।

वंछा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, चाह (सुपा ४०४)।

वंज सक [वि + अञ्ज्] व्यक्त करना, प्रकट करना। कर्म. वंजिज्जइ (विसे १६४, ४६३, धर्मसं ५३)।

वंज देखो वच = उद् + नमय्। वंजइ (?) (धात्वा १५१)।

वंज देखो वंद् = वन्द्।

वंजग देखो वंजय (राज)।

वंजण न [व्यञ्जन] १ वर्ण, अक्षर, 'अणक्खरं होज्ज वंजणक्खरओ' (विसे १७०), 'तो नत्थि अत्थभेओ वंजणरयणा परं भिन्ना' (चेइय ८६८)। २ स्वर-भिन्न अक्षर, क से ह तक वर्ण (विसे ४६१, ४६२)। ३ शब्द, पद, 'सो पुण समासओ चिअ वंजणनिअओ य अत्थनिअओ अ' (सम्म ३०, सूअनि ६, पडि, विसे १७०)। ४ तरकारी, कढी आदि रस व्यञ्जक वस्तु (सुपा ६२३, ओघ ३५६)। ५ शुक्र, वीर्य (विसे २२८)। ६ शरीर का मसा आदि चिह्न (पव २५७, ओघ)। ७ मसा आदि शरीर चिह्नों के फल का उपदेशक शास्त्र (सम ४६)। ८ कक्षा आदि के बाल (राज)। ९ प्रकाशन, व्यक्तीकरण (विसे ४६१)। १० श्रोत्रादि इन्द्रिय। ११ शब्द आदि द्रव्य। १२ द्रव्य और इन्द्रिय का संबन्ध (णदि, विसे २५०)। °वग्गह, °ोग्गह पु [°ावग्रह] ज्ञान-विशेष, चक्षु और मन को छोड़ कर अन्य इन्द्रियों से होनेवाला ज्ञान-विशेष (कम्म १, ४, ठा २, १)।

वंजय वि [व्यञ्जक] व्यक्त करनेवाला (भास २६)।

वंजर पु [मार्जार] बिल्ला, बिलार (हे २, १३२, कुमा)।

वंजर न [दे] नीवी, कटी वस्त्र (दे ७, ४१)।

वंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकटित (कुमा १, १८, २, ६६)।

वंजुल पु [वञ्जुल] १ अशोक वृक्ष (गा ४२२, स ११२)। २ वेतस वृक्ष (पाय), 'वंजुलसरणं विसं व पत्तो सुयइ ना पा ई' (धम्म ११ टी, वज्जा ६६, उत्त ७२८ टी)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वजुलि वि [वञ्जुलिन्] वेतस वृक्षवाला। स्त्री °णी (गउड)।

वंझ वि [वन्ध्य] शून्य, वर्जित (कुमा)।

वंझा स्त्री [वन्ध्या] बाँझ स्त्री, अपुत्रवती स्त्री (पउम २६, ८३, सुपा ३२४)।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तों का बन्धन (पिंड ४५)।

वटग पु [वण्टक] बाँट, विभाग (निचू १६)।

वठ पु [दे] १ अकृत-विवाह, अविवाहित, गुजराती में 'वाढो' (दे ७, ८३, ओघ २१८)। २ खण्ड, टुकड़ा। ३ गण्ड (दे ७, ८३)। ४ भृत्य, दास (दे ७, ८३, सुर २, १६८, रयण ८३, सिरि ११११५)। ५ वि. नि स्नेह, स्नेह-रहित (दे ७, ८३)। ६ धूर्त्त, ठग (श्रा १२)।

वंठ वि [वण्ठ] खर्व, वामन, नाटा, बौना (हे ४, ४४७)।

वठण (अप) न [वण्टन] बाँटना, विभाजन (पिंग)।

वडइअ वि [दे] पीडित (पड्)।

°वडु देखो पडु (गा २६५)।

वडुअ न [दे] राज्य (दे ७, ३६)।

°वडुर देखो पडुर (गा ३७४)।

वढ पु [दे] वन्ध (दे ७, २६)।

वत वि [वान्त] पतित, गिरा हुआ (दस ३, १ टी)।

वत पु [वान्त] १ जिसका वमन किया गया हो वह (उव)। २ पुन वमन, 'वते इ वा पित्ते इ वा' (भग)।

वतर पु [व्यन्तर] एक देव-जाति (द २७, महा)।

वंतरिअ पु [व्यन्तरिक] ऊपर देखो (भग)।

वतरिणी स्त्री [व्यन्तरी] व्यन्तर-जातीय देवी (सुपा ६१३)।

वता देखो वम।

°वति देखो पन्ति (गा २७८, ४६३)।

°वथ देखो पन्थ (से १, १६, ३, ४२, १३, २०, पि ४०३)।

वद सक [वन्द्] १ प्रणाम करना। २ स्तवन करना। वदइ (उव, महा, कप्प)। वकृ. वन्दमाण (ओघ १८, सं १०; अभि १७२)। कवकृ वन्दिज्जमाण (उप ८८६ टी, प्रासू १६५)। सकृ. वन्दिअ, वन्दिओ, वन्दिऊण, वन्दित्ता, वन्दित्तु, वंदेवि (कम्म १, १, चड, कप्प, पड्, हे ३, १४६, चड)। हेकृ. वंदित्तए (उवा)। कृ. वज, वंद, वदणिज्ज, वदणीअ, वदिम (राज, अजि १४, द्रव्य १, णाया १, १, प्रासू १६२, नाट—मृच्छ १३०, दसचू १)।

वद न [वृन्द] समूह, यूथ (पउम १, १, औप, प्राप्र)।

वदअ } वि [वन्दक] वन्दन करनेवाला
वदग } (पउम ६, ५८, १०१, ७३, महा, औप, सुख १, ३)।

वदण न [वन्दन] १ प्रणमन, प्रणाम। २ स्तवन, स्तुति (कप्प, सुर ४, ६२, उव)। °कलस पु [°कलश] मागलिक घट (ओप)। °घड पुं [°घट] वही अर्थ (ओप)। °माला, °मालिआ स्त्री [°माला] घर के द्वार पर मगल के लिए बँधी जाती पत्र-माला (सुपा ५४, सुर १०, ४, गा २६२)। °वडिआ, °वत्तिआ स्त्री [°प्रत्यय] वन्दन-हेतु (सुपा ४३२, पडि)।

वंदणा स्त्री [वन्दना] १ प्रणाम। २ स्तवन (पचा ३, २, पण्ह २, १—पत्र १००, अत)।

वदणिया स्त्री [दे] मोरी, नाला, पनाला, 'अत्थि कवलो, गणियाए नेमि। मुक्को। तओ तीमे दिन्नो। तीए च (? व) दणियाए छूढो' (सुख २, १७)।

वदर देखो वद = वृन्द (प्राप्र)।

वदाप (अशो) देखो वदाव। वदापयति (पि ७)।

वदारय पु [वृन्दारक] १ देव, देवता (पाअ, कुमा)। २ वि मनोहर (कुमा)। ३ मुख्य, प्रधान (हे १, १३२)।

वदारु वि [वन्दारु] वन्दन करनेवाला (चेइय ६२१, लहुअ)।

वंदाव सक [वन्दय्] वन्दन करवाना। वदावइ (उव)।

वदावणग न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम (श्रावक ३७४)।

वदिअ देखो वद = वन्द्।

वदिअ वि [वन्दित] जिसको वन्दन किया गया हो वह (कप्प, उव)।

वदिम देखो वद = वन्द्।

वदुरा स्त्री [मन्दुरा] वाजिशाला, घुड़साल, अस्तबल।

वंद्र न [वन्द्र] समूह, यूथ (हे १, ५३, २, ७६, पउम ११, १२०, स ६६६)।

वध पुं [वन्ध्य] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

वफ सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना। वफइ, वफए, वफति (हे ४, १६२, कुमा)।

वफ अक [वल्] लौटना। वफइ (हे ४, १७६, पड्)।

वफि वि [वलिन्] १ लौटनेवाला। २ नीचे गिरनेवाला (कुमा)।

वफिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा)।

वफिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे ७, ३५, पाअ)।

वस पु [दे] कलंक, दाग (दे ७, ३०)।

वस पुं [वश] १ वाँस, वेणु (पण्ह २, ५—पत्र १४८, पाअ)। २ वाद्य-विशेष, 'वाइओ वसो' (कुमा २, ७०, राय)। ३ कुल, 'धुलुगवसदीवओ' (कुमा २, ६१)। ४ सन्तान, सतति। ५ पृष्ठावयव, पीठ का भाग। ६ वर्ग। ७ इक्षु, ऊख। ८ वृक्ष-विशेष, सालवृक्ष (हे १, २६०)। °इरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ३६, ४)। °करिल्ल, °गरिल्ल पुन [°करील] वशाकुर, वाँस का कोमल नवावयव (श्रा २०, पव ४)। °जाली, °याली स्त्री [°जाली] वाँसो का गहन घटा (सुर १२, २००, उप पृ ३६)। °रोअणा स्त्री [°रोचना] वशलोचन (कप्पू)।

वसकवेल्लुय पुन [दे. वशकवेल्लुक] छत के नीचे दोनो तरफ तिरछा रखा जाता वाँस (जीव ३, राय)।

वसग देखो वसय (राज)।

वसप्फाल वि [दे] १ प्रकट, व्यक्त। २ ऋजु, सरल (दे ७, ४८)।

वसय वि [व्यसक] १ धूर्त, ठग। २ पु. दुष्ट हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

वंसा स्त्री [वंशा] द्वितीय नरक पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८; इक)।

वंसि° देखो वंसी = वंश (कप्प ?, २०)।

वंसिअ वि [वांशिक] वंश-वाद्य बजानेवाला (दे ?, ३०; कुमा)।

वंसिअ वि [व्यंसित] छलित, प्रतारित (पाअ)।

वंसी स्त्री [वंशी] १ मुरज-विशेष (सुज २)। २ बाँस की जाली (ठा ३, ? — पत्र १२?)। °कलंका स्त्री [°कलङ्का] बाँस की जाली से [illegible] (विपा ?, ३—पत्र ३८)। °पत्तिया स्त्री [°पत्रिका] योनि-विशेष, [illegible] के आकार की योनि (ठा ३, १)।

वंसी स्त्री [वंशी] वाद्य-विशेष, मुरली (सुज २)। °णहिया स्त्री [°नखिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३८)। °मुह पुं [°मुख] [illegible] जीव-विशेष (जीव १ टी—पत्र ३१)।

वंसी स्त्री [वंश] बाँस। °मूल न [°मूल] [illegible] (राय)।

वंसी स्त्री [दे] मस्तक पर स्थित माला (दे ७, ३०)।

[illegible] न [[illegible]] पद-समुदाय, शब्द-समूह ([illegible] ८३३; ८४६)।

[illegible] [[illegible]] [illegible], ग्राम (उप ८३६, [illegible])। °अध पुं [°[illegible]] [illegible] (विपा [illegible] ८)।

[illegible] देखो [illegible] (णाया १, ८—पत्र १, [illegible] १६[illegible], [illegible] २४८ ३४६)।

[illegible] [[illegible]] [illegible] (पउम ११?, [illegible] १६?)।

[illegible] [दे] [illegible] (पड्)।

[illegible] [[illegible]] [illegible] (कुम्मा [illegible])।

[illegible] [[illegible]] [illegible] ([illegible] १[illegible])।

[illegible] [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [दे] १ [illegible]। [illegible] (दे ७, ३?)।

वक्कडबंध न [दे] कर्णाभरण, कान का आभूषण (दे ७, ४१)।

वक्कम अक [अव + क्रम्] उत्पन्न होना। वक्कमइ (भग कप्प)। भूका. वक्कमिंसु (कप्प)। भवि वक्कमिस्सति (कप्प)। वकृ वक्कममाण (भग, णाया १, १—पत्र २०)।

वक्कर (अप) देखो वक्क = वक्र (भवि)।

वक्कल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (प्राप्र; सुपा २४२; हे ८, ३४१; ४११; प्रति ४)। °चीरि पुं [°चीरिन्] एक महर्षि, जो राजा प्रसन्नचन्द्र के छोटे भाई थे (कुप्र २८६)।

वक्कलि } वि [वल्कलिन्] वृक्ष की छाल वक्कलिग } पहननेवाला (तापस), (कुमा; भत्त १०० सम्बोध २?; पउम ३६, ८४)।

वक्कल्लस वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे ७, ४६)।

वक्कस न [दे] १ पुराना धान का चावल। २ पुरातन सत्तु-पिण्ड। ३ बहुत दिनों का बासी गोरस। ४ गेहूँ का माँड (आचा १, ६, ४, १०)

वक्किड (शौ) देखो वक्किअ (पि ७४)।

वक्ख देखो वच्छ = वृक्ष (चंड, उप ८८४)।

वक्ख देखो वच्छ = वक्षस् (सनि १४, प्राकृ २२; नाट—मृच्छ १३०)।

°वक्ख देखो पक्ख (गा ४८२; से ३, ४२, ४, २३ स ६४१)।

वक्खमाण देखो वय = वच्।

वक्खड वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (षड्)।

वक्खा सक [व्या + ख्या] १ विवरण करना। २ कहना। कृ वक्खेय (सिरि १३७०)।

वक्खा स्त्री [व्याख्या] विवरण, विशद रूप से प्रतिपादन (सिरि ६६४)।

वक्खाण न [व्याख्यान] १ ऊपर देखो (चेइय ३७१; सिरि ६६४)। २ कथन (हे २, ६०)।

वक्खाण सक [व्याख्यानय्] १ विवरण करना। २ कहना। वक्खाणइ (भवि)। भवि. वक्खाणइस्सं (शौ) (पि ५२८)। कर्म वक्खाणिज्जइ (सिरि ६८४)। वकृ. वक्खाणयंत (उप ६८; रयण २१)। संकृ. वक्खाणिऊण (सिरि ११)। कृ वक्खाणेअव्व (सुर ?)।

वक्खाणि वि [व्याख्यानिन्] व्याख्यान कर्ता (धर्मसं १२६१)।

वक्खाणिअ वि [व्याख्यानित] व्याख्यात (सिरि १०८७)।

वक्खाणीअ (अप) ऊपर देखो (पिंग ५०६)।

वक्खाय वि [व्याख्यात] १ विवृत, वर्णित (स १३२; चेइय ७७१)। २ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आचा १, ५, ६, ८)।

वक्खार पुं [दे] वखार, धान्य आदि रखने का मकान, गोदाम (उप १०३१ टी)।

वक्खार पुं [वक्षार, वक्षस्कार] १ पर्वत-विशेष, गज-दन्त के आकार का पर्वत (सम १०१; इक)। २ भू-भाग, भू-प्रदेश (पउम २, ४४; ४५; ५६; ५८)।

वक्खारय न [दे] १ रति-गृह। २ अन्तःपुर (दे ७, ४५)।

वक्खाव सक [व्या + ख्यापय्] व्याख्यान कराना। वक्खावइ (प्राकृ ६१)।

वक्खित्त वि [व्याक्षिप्त] १ व्यग्र, व्याकुल (ओघ १३; कुप्र २७)। २ किसी कार्य में व्यापृत (पव २)।

वक्खेय देखो वक्खा = व्या + ख्या।

वक्खेव पुं [व्याक्षेप] १ व्यग्रता, व्याकुलता (उवा; उप १३६ टी; १४०)। २ कार्य-बाहुल्य (सुर ३, १)।

वक्खेव पुं [अवक्षेप] प्रतिषेध, खण्डन (गा २४२ अ)।

वक्खो° देखो वच्छ = वक्षस्। °रुह पुं [°रुह] स्तन, थन (सुपा ३८६)।

वक्खु (शौ) देखो चक्खु = चक्षुस् (प्राकृ ८७)।

वखाण (अप) देखो वक्खाण = व्याख्यानय्। वखाणु (पिंग)।

वखाणिअ (अप) देखो वक्खाणिअ (पिंग)।

वगडा स्त्री [दे] बाड़, परिक्षेप (वव, ४ ६)।

वग्ग सक [वल्ग्] १ जाना, गति करना। २ कूदना। ३ बहु-भाषण करना। ४ अभिमान-पूर्वक बात करना, गूँजारना। वग्गइ (भवि; भग; पि २९६), वग्गंति (सुपा २८८)। कर्म वग्गिज्जइ (सो) (सिरि १०)। वकृ. वग्गंत (स ८८३; सुपा ६९३; भवि)। संकृ. वग्गिऊण (पि २९६)।

वग्ग पु [वर्ग] १ सजातीय समूह (णंदि, सुर ३, ४, कुमा)। २ गणित विशेष, दो समान संख्या का परस्पर गुणन (ठा १०—पत्र ४९६)। ३ ग्रन्थ-परिच्छेद, अध्ययन, सर्ग (हे १, १७७, २, ७९)। °मूल न [°मूल] गणित-विशेष, वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो, जैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है (जीवस १५७)। °वग्ग पु [°वर्ग] गणित-विशेष, वर्ग से वर्ग का गुणन, जैसे २ का वर्ग ४, ४का वर्ग १६, यह २ का वर्गवर्ग कहलाता है (ठा १०)।

वग्ग सक [वर्गय्] वग करना, किसी अंक को समान अंक से गुणना। वग्गसु (कम्म ४, ८४)।

वग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (उत्त १५, ४, रयण ८०)।

वग्ग देखो वक्क = वल्क (विसे १५४)।

वग्ग देखो वक्क = वाक्य, 'मुद्धा भणंति अहल वहु वग्गजाल' (रभा)।

वग्ग वि [वाल्क] वृक्ष त्वचा—छाल का बना हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

वग्गसिअ न [दे] युद्ध, लडाई (दे ७, ४६)।

वग्गचूलिआ स्त्री [वर्गचूलिका] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ (णंदि २०२)।

वग्गण न [वल्गन] कूदना (औप, कुप्र १०७, कप्प, णाया १, १—पत्र १९, प्राप)।

वग्गण न [वल्गन] वकवाद (रभा)।

वग्गणा स्त्री [वर्गणा] सजातीय समूह (ठा १—पत्र २७)।

वग्गय न [दे] वार्ता, वात (दे ७, ३८)।

वग्गा स्त्री [वल्गा] लगाम (उप ७६८ टी)।

वग्गावग्गि अ वर्ग रूप से (औप)।

वग्गि वि [वाग्मिन्] १ प्रशस्त वाक्य बोलनेवाला। २ पु. बृहस्पति (प्राप्र, पि २७७)।

वग्गिअ वि [वर्गित] वर्ग किया हुआ (कम्म ४, ८०)।

वग्गिअ न [वल्गित] १ बहु भाषण, वकवाद (सम्मत्त २२७)। २ वडाई की आवाज (मोह ८७)। ३ गति, चाल (सण)।

वग्गिर वि [वल्गितृ] १ खूँखार आवाज करनेवाला। २ गति-विशेषवाला (सुर ११, १७१)।

वग्गु देखो वाया = वाच्, 'वग्गूहिं' (औप, कप्प, सम ५०, कुम्मा १९)।

वग्गु देखो वग्ग = वर्ग, वग्गूहिं (औप)।

वग्गु वि [वल्गु] १ सुन्दर, शोभन (सूअ १, ४, २, ४)। २ कल, मधुर (पाअ)। ३ पु विजय-क्षेत्र-विशेष, प्रान्त विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ पुन. एक देव-विमान, वैश्रमण लोकपाल का विमान (देवेन्द्र १३१, २७०)।

वग्गुरा न [वागुरा] १ मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पण्ह १, १, विपा १, २—पत्र ३५)। २ समूह, समुदाय, 'मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' (उवा, प्राप)।

वग्गुरिय वि [वागुरिक] १ मृग-जाल से जीविका निर्वाह करनेवाला, व्याध, पारधि (ओघ ७६६)। २ पुं. नर्त्तक-विशेष (राज)।

वग्गुलि पुंस्त्री [वल्गुलि] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ रोग-विशेष (ओघभा २७७, श्रावक ९? टी)।

वग्गोज्ज वि [दे] प्रचुर, प्रभूत (दे ७, ३८)।

वग्गोअ पुं [दे] नकुल न्यौला (दे ७, ४०)।

वग्गोरमय वि [दे] रूक्ष, लूखा (दे ७,५२)।

वग्गोल सक [रोमन्थय्] पगुराना, चवी हुई वस्तु का पुन चवाना, गुजराती में 'वागोळवु'। वग्गोलइ (हे ४, ४३)।

वग्गोलिर वि [रोमन्थयितृ] पगुरानेवाला (कुमा)।

वग्घ वि [वैयाघ्र] व्याघ्र-चर्म का बना हुआ (आचा २, ५, १, ५)।

वग्घ पु [व्याघ्र] १ वाघ, शेर (पाअ, स्वप्न ७०, सुपा ४६३)। २ रक्त एरण्ड का पेड। ३ करञ्ज वृक्ष (हे २, ९०)। °मुह पु [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसमे रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)।

वग्घाअ पु [दे] १ साहाय्य, मदद। २ वि. विकसित, खिला हुआ (दे ७, ८६)।

वग्घाडी स्त्री [दे] उपहास के लिये की जाती एक प्रकार की आवाज, 'अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति' (णाया १, ८—पत्र १४४)।

वग्घारिअ वि [व्याघारित] १ वघारा हुआ, छौंका हुआ (नाट—मृच्छ २२१)। २ व्याप्त, 'सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा' (सम ३९)। ३ पिघला हुआ (दश० वै० वृ० चू० अ० ३ नि० गा० १६७)।

वग्घारिअ वि [दे] प्रलम्बित, पडिबद्धसरीर-वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे' (सूअ २, २, ५५), 'वग्घारियपाणी' (णाया १, ८—पत्र १५४, कप्प, औप, महा)।

वग्घावच्च न [व्याघ्रापत्य] एक गोत्र, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०, सुज्ज १०, १६, कप्प, इक)।

वग्घी स्त्री [व्याघ्री] १ बाघ की मादा (कुमा)। २ एक विद्या (विसे २४५४)।

वघाय देखो वाघाय, 'आउम्स कालाइचर वघाए, लद्धाणुमाणे य परस्स अट्ठे' (सूअ १, १३, २०)।

वचा स्त्री [वचा] १ पृथिवी, धरती (से २, ११)। २ ओषधि-विशेष, वच (मृच्छ १७०)। देखो वया = वचा।

वच्च सक [व्रज्] जाना, गमन करना। वच्चइ (हे ४, २२५, महा)। भवि वच्चिहिसि (महा)। वकृ वच्चत, वच्चमाण (सुर २, ७२, महा, गा १९)।

वच्च सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाप करना। वच्चइ, वच्चउ (हे ४, १९२, कुमा)।

वच्च देखो वय = वच्।

वच्च पुन [वर्चस्] १ पुरीष, विष्ठा (पाअ, ओघ १९७, सुपा १०९, तदु १४)। २ कूडा-करकट, 'भोगो तजोलाइ कुणतो जिणगिहे कुणइ वच्च' (संबोध ८)। ३ चोथा नरक का चौथा नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र १०)। ४ तेज, प्रभाव (णाया १, १—पत्र ६)। °घर, °हर न [°गृह] पाखाना, टट्टी (सूअ १, ४, २, १३, स ७४१)।

वच्च देखो वय = वचस् (णाया १, १—पत्र ६)।

वच्चंसि वि [वर्चस्विन्] प्रशस्त तेजवाला ([illegible] ३, १—पत्र [illegible])।

वच्चस्सि वि [वर्चस्विन्] तेजस्वी (णाया १, १ [illegible])।

व[illegible] [व्यत्यय] विपर्यास, उलट-पुलट ([illegible] १०४)। देखो वच्चास।

वच्चरा [illegible] (भवि)।

वच्चा [illegible] = [illegible]।

वच्चामेलिय देखो विच्चामेलिय (विसे १४८१)।

वच्चास पुं [व्यत्यास] विपर्यास, विपर्यय (धर्म २०१, कम्म ५, ८६)।

वच्चासिय वि [व्यत्यासित] उलटा किया हुआ (विसे ८४३)।

वच्चीसग पुं [वच्चीसक] वाद्य विशेष (अनु)।

वच्चो° देखो वच्च = वर्चस् (सुर ६, २८)।

वच्छ [illegible] [दे] पार्श्व, समीप (दे ७, ३०)।

वच्छ पुंन [वक्षस्] छाती, सीना ([illegible] प्राप्र, षड्, कुमा)। °[illegible] [°स्थल] उर-स्थल, छाती (कुमा, [illegible])। °सुत्त न [°सूत्र] प्रायुषण विशेष, [illegible]—[illegible] (ठा ६, ३३ टी—पत्र ४७७)।

वच्छ पुं [वृक्ष] पेड़, गाछ, द्रुम (प्राप्र, कुमा, [illegible], पाप्र)।

वच्छ पुं [वत्स] १ बछड़ा (सुर २, ८४, पात्र)। २ शिशु, बच्चा। ३ [illegible] [illegible] (प्राप्र)। [illegible] [illegible] (सुपा ९९)। [illegible] [illegible] — [illegible]। [illegible] [°र] [illegible]। °[illegible] [illegible]। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पउम [illegible])। °[illegible] पुं [°रा] [illegible] [illegible]। °[illegible] [°[illegible]] [illegible] [illegible]।

वच्छ वि [वात्स्य] वात्स्य गोत्र का (णंदि ४८)।

वच्छगावई स्त्री [वत्सकावती] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

वच्छर पुं [वत्सर] साल, वर्ष (प्राप्र, सिरि ६३५)।

वच्छल वि [वत्सल] स्नेही, स्नेह-युक्त (गा ३, कुमा, सुर ६, १३७)।

वच्छल्ल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुराग, प्रेम (कुमा, पडि)।

वच्छा स्त्री [वत्सा] १ विजय-क्षेत्र विशेष। २ एक नगरी (इक)। ३ लड़की (कप्पू)।

वच्छाण पुं [उक्षन्] बैल, बलीवर्द, 'उच्छा वसहा य वच्छाणा' (पाप्र)।

वच्छावई स्त्री [वत्सावती] विजय-क्षेत्र विशेष (ज ४)।

वच्छि° देखो वच्च = व्रज्।

वच्छिउड पुं [दे] गर्भाशय (दे ७, ४४ टी)।

वच्छिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन (षड्)।

वच्छिमय पु [दे] गर्भ शय्या (दे ७, ४४)।

वच्छीउत्त पुं [दे] नापित, हजाम (दे ७, ४७, पाप्र, ष ७४)।

वच्छीव पु [दे] गोप, ग्वाला (दे ७, ४१, पाप्र)।

वच्छुद्धलिअ वि [दे] प्रत्युद्धत (षड्)।

वच्छोम न [वत्सोम] नगर विशेष, कुन्तल देश की प्राचीन राजधानी (कप्पू)।

वच्छोमी स्त्री [दे] काव्य की एक रीति (कप्पू)।

वज्ज सक [त्रस्] डरना। वज्जइ, वज्जए (हे ४, १९८; प्राकृ ७४, धात्वा १५१)।

वज्ज देखो वच्च = व्रज। वज्जइ (नाट—मृच्छ २६३), वजिर (पि ४८८)।

वज्ज सक [वर्जय्] त्याग करना। करह वज्जिज्जइ (पउम १०, २७)। संकृ वज्जिय, वज्जेवि, वज्जिऊण, वज्जत्ता (महा, सण, [illegible] ४२, ६)। कृ वज्ज, वज्जणिज्ज, वज्जेयव्व (सिरि ४६२, [illegible] पण्ह २, ४, सुपा ४४४, महा, पउम ?, ४ सुपा ११०, उव ७०५)।

वज्ज सक [वद्] बजना, वाद्य आदि की आवाज होना। वज्जइ (हे ४, ४०६, सुपा ३३४)। वकृ. वज्जंत, वज्जमाण (सुर ३, ११५, सुपा ६५६)।

वज्ज न [वाद्य] बाजा, वादित्र (दे ३, ५८, गा ४२०)।

वज्ज वि [वर्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (सुर १०, २)। २ प्रधान, मुख्य (हे २, २४)।

वज्ज वि [वर्ज्य] १ रहित, वर्जित, 'जिणवज्ज-देवयाए न नमइ जो तस्स तणुसुद्धी' (श्रा ६), 'सहजनियोगजवज्जा पावं न पउंति घागारी' (चेइय ४७१), 'लोयववहारवज्जा तुब्भे परमत्थमूढा य' (धर्मवि ८४५, सिरि २८४०, श्रावक ३०७, सुर १४, ७८)। २ न. छोड़कर, बिना, सिवाय (श्रा ६, ८ १७, कम्म ४, ३४, ५३)। ३ पु हिंसा, प्राणि-वध (पण्ह १, १—पत्र ६)।

वज्ज देखो अवज्ज (सूअ १, ४, २, १६, बृह १)।

वज्ज देखो वइर = वज्र (कुमा, सुर ४, १५२, सु ५, हे १, १७७, २, १०५, षड्, कम्म १, ३६, जीवस, ४६, सम २५)। १७ पु विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६, १०, ८, १३३)। १८ हिंसा, प्राणि-वध (पण्ह १, १—पत्र ६)। १९ छन्द-विशेष (पएण १—पत्र ३६, उत्त, ३६, ९६)। २० न कर्म-विशेष, बँधाता हुआ कर्म (सूअ २, २, ६४, ठा ४, १—पत्र १६७)। २१ पाप (सूअ १, ४, २, १६)। °कंठ पु [°कण्ठ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६०)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २४)। °कंद पु [°कन्द] एक प्रकार का कन्द, वनस्पति विशेष (ठा २०)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २४)। °कंब पु [°[illegible]] एक विद्याधर वंशीय राजा (पउम ८, १३३)। °चूड पु [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। °जंघ पु [°जङ्घ] विद्याधर-वंशीय एक राजा (पउम ५, १७)। °णाभ पु [°नाभ] [illegible] [illegible] (सम १५२)। [illegible] °णाभ। °दत्त पु [°दत्त] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १७)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १८)। °धर पु [°धर] एक विद्याधर-

वंशीय राजा (पउम ५, १५)। °घर देखो °हर (पउम १०२, १५६, विचार १००)। °नागरी स्त्री [°नागरी] एक जैन मुनि शाखा (कप्प)। °नाभ पु [°नाभ] एक जैन मुनि (पउम २०, १९)। देखो °णाभ। °पाणि पु [°पाणि] १ इन्द्र (उत्त ११, २३, देवेन्द्र २८३, उप २११ टी)। २ एक विद्याधर-नरपति (पउम ५, १७)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °बाहु पुं [°बाहु] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] लाट देश का एक प्रदेश (आचा १, ९, ३, २)। °म (अप) देखो मय (हे ४, ३९५)। °मज्झ पु [°मध्य] १ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६३)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (औप २४)। °मय वि [°मय] वज्र का बना हुआ (पउम ६२, १०)। स्त्री °मई (नाट—उत्तर ४५)। °रिसहनाराय न [°ऋषभनाराच] सहनन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम बन्ध (कम्म १, ३८)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °व्व (अप) देखो °म (हे ४, ३९५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)। °वेग पु [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा)। °सिखला स्त्री [°शृङ्खला] एक विद्या-देवी (संति ५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °सुंदर पु [°सुन्दर] विद्याधर-वंश मे उत्पन्न एक राजा (पउम ५, १७)। °सुजण्हु पुं [°सुजह्नु] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १७)। °सेण पु [°सेन] १ एक जैन मुनि, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्व जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १७)। २ विक्रम की चौदहवी शताब्दी के एक जैन आचार्य (सिरि १३४९)। °हर पु [°धर] १ इन्द्र, देवराज (से १५, ८८, उव)। २ वि. वज्र को धारण करने-वाला (सुपा ३३४)। °उह पुं [°युध] १ इन्द्र (पउम ३, १३७, ५१, १८)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। °भ पुं [°भ] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °वत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °स पुं [°श] एक विद्याधर-राजा (पउम ५, १७)।

वज्जंक पुं [वज्राङ्क] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)।

वज्जंकुसी स्त्री [वज्राङ्कुशी] एक विद्या-देवी (संति ५)।

वज्जत देखो वज्ज = वद्।

वज्जधर पु [वज्रन्धर] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)।

वज्जघट्टिता स्त्री [दे] मन्द-भाग्य स्त्री (संक्षि ४७)।

वज्जण न [वर्जन] परित्याग, परिहार (सुर ४, ८२, स २७१, सुपा २४५, श्रु ६)।

वज्जणअ (अप) वि [वदितृ] बजनेवाला, 'पडहु वज्जणउ' (हे ४, ४४३)।

वज्जणया } स्त्री [वर्जना] परित्याग (सम
वज्जणा } ४४, उत्त १६, ३०, उव)।

वज्जमाण देखो वज्ज = वद्।

वज्जय वि [वर्जक] त्यागनेवाला (उवा)।

वज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। वज्जरइ, वज्जरेड (हे ४, २, पड्, महा)। वकृ. वज्जरत (हे ४, २, चेइय १४६)। सकृ. वज्जरिऊण (हे ४, २)। कृ वज्जरिअव्व (हे ४, २)।

वज्जर देखो वंजर = मार्जार (चड)।

वज्जर पुं [वर्जर] १ देश-विशेष। २ वि. देश-विशेष मे उत्पन्न, 'परिवाहिया य तेण वहवे वल्हीयतुरुक्कवज्जराइया आसा' (स १३)।

वज्जरण न [कथन] उक्ति, वचन (हे ४, २)।

वज्जरा स्त्री [दे] तरंगिणी, नदी (दे ७, ३७)।

वज्जरिअ वि [कथित] कहा हुआ, उक्त (हे ४, २, सुर १, ३२, भवि)।

वज्जा स्त्री [दे] अधिकार, प्रस्ताव (दे ७, ३२, वज्जा २)।

वज्जाव (अप) सक [वाचय्] वचवाना, पढाना। वज्जावइ (प्राकृ १२०)।

वज्जाव सक [वादय्] बजाना। वज्जावइ (भवि)।

वज्जाविय वि [वादित] बजाया हुआ (भवि)।

वज्जि पुं [वज्रिन्] इन्द्र (सबोध ८)।

वज्जिअ वि [दे] अवलोकित, दृष्ट (दे ७, ३९, महा)।

वज्जिअ वि [वादित] बजाया हुआ (सिरि ५२५)।

वज्जिअ वि [वर्जित] रहित (उवा, औप, महा, प्रासू ७९)।

वज्जियाव पु [दे] शेलडी (व्यव० भाष्य०)।

वज्जियावग पुं [दे] इक्षु, ऊख (वव १)।

वज्जिर वि [वदितृ] बजनेवाला (सुर ११, १७२, सुपा ४५, ८७, सिरि १५५, सण), 'गहिख(?रव)जिराउज्जगज्जिजज्जरियबभडभडो-यरो' (कुप्र २२४)।

वज्जुत्तरवडिसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

वज्जोयरी स्त्री [वज्रोदरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)।

वज्झ वि [वध्य] वध के योग्य (सुपा २४८, गा २९, ४६६, दे ८, ४९)। °नेवत्थिय वि [°नेपथ्यिक] मृत्यु-दड-प्राप्त को पहनाया जाता वेष वाला (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। °माला स्त्री [°माला] वध्य को पहनाई जाती माला, कनेर के फूलो की माला (भत्त १२०)।

वज्झ वि [वाह्य] १ वहन करने योग्य (प्राप्र, उप १५० टी)। २ न अश्व आदि यान (स ६०३)। °खेड्ड न [°खेल] कला-विशेष, यान की सवारी का इल्म (स ६०३)।

वज्झा स्त्री [हत्या] वध, घात (सुख ४, ६, महा)।

वज्झियायण न [वध्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

वञ्च (अप) देखो वच्च = व्रज्। वञ्चइ, वञ्चदि (पड्)।

वट्ट सक [वृत्] १ वर्त्तना, होना। २ आच-रण करना। वट्टइ, वट्टए, वट्टति (सुर ३, ३९, उव, कप्प)। वकृ. वट्टंत, वट्टमाण (गा ४१०, कम्म ३, २०, चेइय ७१३, भवि, उवा, पडि, कप्प, पि ३५०)। हेकृ वट्टेउ (चेइय ३६८)। कृ. वट्टियव्व (उव)।

वट्ट सक [वर्त्] १ वरतना। २ [illegible] बरतना। ३ [illegible]। ४ [illegible] उरना, [illegible] (पिंड २३६)। [illegible] वट्टिज्जमाण (श्रौप)।

वट्ट वि [वृत्त] १ वर्तुल, गोलाकार (सम [illegible])। २ श्रतीत, गुजरा हुआ। ३ [illegible]। ४ [illegible]। ५ श्रतीत। ६ [illegible]। ७ [illegible] (हे २, २६)। ८ न [illegible] (सुश्र [illegible])। °क्खुर, °खुर पु [°खुर] [illegible] (पाश्र ४३८ [illegible])। °वेड, °वेडु श्रोन [°वेड] [illegible] (णाया १, १—पत्र [illegible])। देखो वट्ठ-[illegible]। देखो वत्त वित्त = वृत्त। °वेयड्ढ पु [°वैताढ्य] पर्वत-विशेष (ठा १०)।

वट्ट न [वर्त्मन्] बाट, मार्ग, रास्ता 'पडि-[illegible] वट्टा [illegible] पाणुप्पमाणमित्तो वट्टो' ([illegible] पुष्फ [illegible], सुपा ३३०), वट्ट' ([illegible])। °पाहण पुं [°पाहन] [illegible], [illegible] (पुप्फ १३३), 'सो [illegible]' ([illegible] १२[illegible])।

वट्ट पुं [दे] [illegible], गुजराती में 'वाटको', [illegible] निरुविय [illegible] ([illegible])। [illegible], गुजराती [illegible] (सुपा ६६१)। ३ [illegible] (णाया १, १—पत्र [illegible])। ४ [illegible], [illegible] ([illegible] १४८)।

[illegible] ([illegible] ६७ टी)।

°वट्ट पुं [पट्ट] [illegible]। देखो पट्ट ([illegible] ३६)।

[illegible] देखो वट्ट = वृत्त।

[illegible] देखो वट्ट [illegible] १, वट्टंत [illegible] १, [illegible] ४४, सुपा ३, २, १०, ३६, ४३)।

वट्टण देखो वत्तण ([illegible])।

वट्टणा देखो वत्तणा ([illegible])।

वट्टणा न [वर्तन] [illegible] ([illegible])।

वट्टमाण देखो वट्ट = वृत।

वट्टमाग न [दे] १ अंग, शरीर। २ गन्ध-द्रव्य का एक तरह का अनुविलास (दे ७, ८६)।

वट्टय देखो वट्ट = दे (पउम १०२, १२०)।

वट्टय पुं [वर्तक] १ पक्षि-विशेष, बटेर (सूत्र १, ३, १, २, उत्ता)। २ बालकों के खेलने का एक तरह का कपड़े का बना हुआ गोल खिलौना (अणु ५, णाया १, १८—पत्र २३५)।

°वट्टय देखो पट्ट (गउड)।

वट्टा स्त्री [दे वर्त्मन्] देखो वट्ट = वर्त्मन् (दे ७, ३१)।

वट्टा स्त्री [वार्त्ता] बात, कथा (कुमा)।

वट्टाव सक [वर्तय्] बरताना, काम में लगाना। वट्टाविइ (उत्त)।

वट्टावण न [वर्तन] बरताना, कार्य में लगाना (उत्त)।

वट्टावय वि [वर्तक] बरतनेवाला, प्रवर्तक (उत्त, णाया १, १४—पत्र १८६)।

वट्टावय वि [वर्तक] प्रतिजागरक, शुश्रूषाकर्त्ता (वव १)।

वट्टि स्त्री [वर्ति] १ बत्ती, दीपक में जलनेवाली बत्ती। २ सलाई, आँख में सुरमा लगाने की सली या सलाई। ३ शरीर पर किया जाता एक तरह का लेप। ४ लेख, लिखना। ५ कलम, पींछी (दे ७, ३०)। देखो वत्ति, वित्ति।

वट्टिअ वि [वर्तित] १ परिवर्तित (दे ५, २७)। २ वर्तित (पव २१६ टी)। ३ वर्तुल, गोल (णाया १, ८—पत्र ७८, तंदु २०)। ४ प्रवर्तित (भवि)।

वट्टिआ स्त्री [वर्तिका] देखो वट्टि (भवि २४७ नाट—रत्ना २१ [illegible] २२६)।

वट्टिय वि [°] [illegible] (दे ७, ३४)।

वट्टिर वि [दे] [illegible] किया हुआ, [illegible] हुआ, गुजराती में 'वाटवुं', [illegible] ([illegible] २५४)।

वट्टिन न [दे] [illegible] (दे ७, ४०)।

वट्टी स्त्री [वर्ति] देखो वट्टि (कुमा २, ३०)।

°वट्टी स्त्री [पट्टी] पट्टी [illegible] (सुपा २६८, १६४)।

वट्टु न [दे] पात्र-विशेष (बृह १)। °कर पु [°कर] यन्त्र-विशेष (राज)। °करी स्त्री [°करी] विद्या विशेष (राज)।

वट्टुल वि [वर्तुल] १ गोल, वृत्ताकार (पाम)। २ पुन पलाण्डु—प्याज के समान एक तरह का कन्द-मूल (हे २, ३०, प्राकृ)।

°वट्ठ देखो पट्ठ—पृष्ठ (गउड, गा १५०, हे १, ८४, १२६)।

°वट्ठि देखो सट्ठि, 'वा वट्ठी' (सम ७५, पव ५, १८ वि २९५, ४४६)।

वड पु [दे] १ द्वार का एक देश, दरवाजे का एक भाग। २ क्षेत्र (दे ७, ८२)। ३ मत्स्य की एक जाति (पएण १—पत्र ४७)। ४ विभाग (निर् २)। देखो वडु 'वडमफर-पवहणाए' (सिरि ३८२)।

वड पु [वट] १ वृक्ष विशेष, बरगद, बड का पेड (पएण १—पत्र ३१, गा ६४, कप्पू)। २ न वस्त्र विशेष, 'वडजुगपट्टजुगाई' (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (पउम १०५, ८८)। °वद्द न [°पद्र] १ गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'वडोदा' नाम से प्रसिद्ध है (उप ५१६)। २ एक गोकुल (उप ५६७ टी)। °सावित्ती स्त्री [°सावित्री] एक देवी (कप्पू)।

वड देखो पड = पत्। वड 'उप्पहिम्मि उण वडंता' (से ७, ७)।

°वड देखो पड = पट, 'पवणाहयवडचलाभ्रो [illegible]' (सुर ४, ७६, स १०, १६, सुर १, ६१, ३, ६७, गा ३२६)।

वडग न [वटक] खाद्य-विशेष, बड़ा (पिंड ६३७)।

वडग देखो वड = वट (भ्रत)।

°वडण देखो पडण (गा ५९७, गउड, [illegible])।

वडप्प न [दे] १ लतागहन। २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ८४)।

वडभ वि [वडभ] १ वामन, ठूंठ (श्राचा ८२)। २ जिसका पृष्ठ-भाग बाहर निकल आया हो वह (आचा)। ३ जिसके ऊपर का भाग [illegible] हो वह (णाया १, १—पत्र ३३)। ४ पीछे का या आगे का

अग जिसका बाहर निकल आया हो वह (पव ११०)। ५ जिसका पेट बडा होकर आगे निकल आया हो वह। स्त्री °भी (णाया १, १—पत्र ३७, ओप, पि ३८७)।

वडय देखो वडग = वटक (सुपा ४८५)।

°वडल देखो पडल (गउड)।

वडवग्गि पु [वडवाग्नि] वडवानल, समुद्र के भीतर की आग (गा ४०३)।

वडयड अक [वि + लप्] विलाप करना। वडवडइ (हे ४, १४८), वडवडति (कुमा)।

वडवा स्त्री [वडवा] घोडी (पाअ, धर्मवि १४५)। °णल, नल पुं [°नल] समुद्र के भीतर की आग, वडवाग्नि (पि २४०, श्रा १६)। °मुह न [°मुख] १ वही अर्थ (से १, ८)। २ एक महा-पाताल (इक)। °हुआस पुं [°हुताश] वडवानल (समु १५४)।

वडह देखो वडभ (आचा १, २, ३, २)।

वडह पुं [दे] पक्षि-विशेष (दे ७, ३३)।

°वडह देखो पडह (से १२, ४७)।

वडही देखो वलही (गउड)।

°वडाआ देखो पडाया (गा १२०)।

°वडालि स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणि (दे ७, ३६)।

°वडाहा देखो पडाया, 'धवलधयवडाहो' (महा)।

°वडिअ देखो पडिअ (से ५, १०, कुप्र १८१, उवा)।

वडिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (सुर १, १६६)।

वडिस पु [वतंस] १ मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७८)। २ भूषण, 'रायकुलवडिसगा वि मुणिवसभा' (उव, कप्प)। ३ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)। ४ प्रधान, मुख्य। ५ श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प, महा)। ६ कर्णपूर, कान का आभूषण (णाया १, १—पत्र ३१)। देखो वडेंस, अवयस।

वडिणाय पु [दे] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (षड्)।

वडिया स्त्री [वृत्तिता] वर्तन, 'भयवंतदसण-वडियाए' (स ६८३; आचा २, ७, १)।

°वडिया देखो पडिया = प्रतिज्ञा (आचा २, ७, १)।

वडिसर न [दे] चूल्ली-मूल, चूल्हे का मूल (दे ७, ४८)।

वडिवस्सअ वि [वरिवस्यक] पूजक, पूजा करनेवाला (चारु १)।

वडिसाअ वि [दे] स्रुत, टपका हुआ (षड्)।

वडी स्त्री [दे] वडी, एक प्रकार का खाद्य (पव ३८)।

वडुमग } देखो वट्टमग (ओप, आचा)।
वडूमग }

वडेंस पु [वतंस] शेखर, मुकुट (भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)। देखो वडिस।

वडेंसा स्त्री [वतंसा] किंनर नामक किंनरेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २—पत्र २५२)।

वडेंसिया स्त्री [वतंसिका] अवतंस की तरह करना, मुकुटस्थानापन्न करना, 'अट्ठारसव-जणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीव पिट्ठिव-डेंसियाए परिवहेज्जा' (ठा ३, १—पत्र ११७)।

वड्ड वि [दे] बडा, महान् (दे ७, २९, तदु ५५, सुपा १२४, णाया २—पत्र २४८, सम्मत्त १७३, भवि, हे ४, ३६६, ३६७, ३७१)। °अत्थरग पु [°आस्तरक] ऊँट की पीठ पर रखा जाता आसन (पव ८४ टी)। °त्तण न [°त्व] वडप्पन, महत्ता (हे ४, ३८४, कप्पू)। °प्पण (अप) न [°त्व] वही (हे ४, ३६६, ४३७, पि ३००)। °यर वि [°तर] विशेष बडा (हे २, १७४)।

वड्डवास पुं [दे] मेघ, अभ्र (दे ७, ४७, कुमा)।

वड्डहुल्लि पुं [दे] मालाकार, माली (दे ७, ४२)।

वड्डार (अप) देखो वड्ड-यर (भवि)।

वड्डिम वि [दे] स्रुत, टपका हुआ (षड्)।

वड्डिल [दे] देखो वड्ड,

'नयणाण पडउ वज्जं अहवा
वज्जस्स वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे अणुवर्च
जाणि कुव्वंति'
(सुर ४, २०, वज्जा ६२)।

वड्डुअर देखो वड्ड-यर (षड्)।

वड्ढ अक [वृध्] वढना। वड्ढइ (हे ४, २२०, महा, काल)। भूका वड्ढित्था (कप्प)। वकृ वड्ढत, वड्ढमाण (सुर १, ११६, महा, गा ११५)। हकृ वड्ढिउ (महा)।

वड्ढ सक [वर्धय] १ वढाना, विस्तारना। २ वधाई देना। वड्ढति (उव)। वकृ. वड्ढअत (नाट—मृच्छ १८)। कर्म. वड्ढिज्जति (सिरि ४५४)। देखो वद्ध = वर्धय्।

वड्ढइ पु [वर्धकि] वढई, सुतार (सम २७, उप पृ १५३, पाअ, धर्मसं ४८९, दे ७, ४४)।

वड्ढइअ पुं [दे] चर्मकार, मोची (दे ७, ४४)।

वड्ढण न [वर्धन] १ वृद्धि, वढाव (कप्पू)। २ वि वृद्धि-जनक (महा, सुर १३, १३६)।

वड्ढणमिर वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ७, ५१)।

वड्ढगसाल वि [दे] जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे ७, ४६)।

वड्ढमाण देखो वड्ढ = वृध्।

वड्ढमाण } न [वर्धमान, °क] १
वड्ढमाणय } गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'वढवाण' के नाम से प्रसिद्ध है, 'सिरिवड्ढमाणनयरं पत्ता गुजरवरावलयं' (सम्मत्त ७५)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, उत्तरोत्तर वढता जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्यों का ज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०, कम्म १, ८)। ३ पुं. भगवान् महावीर (भवि)। देखो वद्धमाण।

वड्ढय देखो वट्ट = दे, 'पाणभरियं वड्ढयं पियावयणसमप्पियं पीयमाणं पि तोएं सुट्ठुयर भरियमसुएहिं' (स ३८२)।

वड्ढव सक [वर्धय्, वर्धापय्] १ वढाना, वृद्धि करना। २ वधाई देना, अभ्युदय का निवेदन करना। वड्ढवइ (प्राकृ ६०)।

वड्ढवअ वि [वर्धक] १ वढानेवाला २ वधाई देनेवाला (प्राकृ ६१)।

वड्ढवण न [दे] वस्त्र का आहरण (दे ७, ८७)।

वड्ढवण न [दे. वर्धापन] वधाई, अभ्युदय-निवेदन (दे ७, ८७)।

वड्डविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको बधाई दी गई हो वह (दे ६, ३४)।

वड्डार (अप) सक [वर्धय्] बढ़ाना, [illegible]'। वड्डारइ (भवि)।

वड्डाव देखो वड्ढव। वड्डावमि (प्राकृ [illegible], पि ५५२)।

वड्डावण देखो वड्ढवण (प्राकृ ६१, [illegible])।

वड्डाविअ वि [दे] समापित, समाप्त किया हुआ (दे ७, ४४)।

वड्डिर वि [वर्धितृ] बढ़नेवाला (से १, १)।

वड्डि स्त्री [वृद्धि] बढ़ती, बढ़ाव (हका, देवेन्द्र ३६७, सिरि २०४)।

वड्डिअ वि [वृद्ध] बढ़ा हुआ (कुमा ७, ५८; गा ४१७, महा)।

वड्डिअ वि [वर्धित] १ बढ़ाया हुआ, [illegible] वड्ढिदूणागो [illegible] विलसइ ([illegible] ६२७)। २ [illegible] किया हुआ, [illegible] हुआ ([illegible] १, [illegible])।

वड्डिआ स्त्री [दे] [illegible], [illegible] (दे ७, [illegible])।

वड्डिम स्त्री [वृद्धिमन्] वृद्धि, बढ़ाव, [illegible]' (प्राकृ ३३, कप्पू)।

[illegible] = [illegible] ([illegible] २, १७४, पि २०७)।

[illegible] [दे] [illegible], [illegible] से रहित ([illegible] ३६)।

वडर } [illegible] [वठर] १ [illegible]। २ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। ३ [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] १, ३४८, [illegible])।

[illegible] [वन] [illegible] [illegible]। [illegible] ४४०)।

[illegible] [दे] १ [illegible]। २ [illegible], [illegible] ([illegible] ७, ८०)।

[illegible] [वर्ण] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] ([illegible] ८७१, गा ३८१, [illegible])। [illegible] पु [°पद्] [illegible] [illegible] ४४८)।

[illegible] [वन] १ [illegible] [illegible] [illegible] (पाअ [illegible] १४४)। २ [illegible], [illegible] [illegible] ८८०, ३ [illegible]। ४ आलय (हे ३, ८८, प्राप्र)। ५ वनस्पति (कम्म ४ १०, १९, ३६, ८ १३)। ६ उद्यान बगीचा (उप ६८६ टी)। ७ पु देवों की एक जाति, वानव्यन्तर देव (भग, कम्म ३, १०)। ८ वृक्ष विशेष (राय)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] जंगल को काटने या बेचने का काम (भग ८, ५—पत्र ३७०, पडि)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] वनस्पति का कारखाना (आचा २, २, २, १०)। °गय पु [°गज] जंगली हाथी (से ३ ६३)। °ग्गि पु [°ाग्नि] दावानल (पाअ)। °चर वि [°चर] वन में रहनेवाला, जंगली (पण्ह १, १—पत्र १३)। स्त्री. °री (रयण ६०), देखो °यर। °च्छिंद वि [°च्छिन्द] जंगल काटनेवाला (कुप्र १०४)। °त्थली स्त्री [°स्थली] अरण्य-भूमि (से ३, ६३)। °दव पु [°दव] दवानल (णाया १, १—पत्र ६५)। °पव्वय पुन [°पर्वत] वनस्पति से व्याप्त पर्वत, 'वणाणि वा वणपव्वयाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)। °विराल पु [°बिडाल] जंगली बिल्ला (सण)। °माल न [°माल] एक देव-विमान (सम ४१)। °माला स्त्री [°माला] १ पैर तक लटकनेवाली माला (औप, अच्चु ३६)। २ एक राजपत्नी (पउम ११, १४)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ३६, ३२)। °य वि [°ज] वन में उत्पन्न, जंगली (वज्जा १२८)। °यर वि [°चर] १ वन में रहनेवाला, वनैला (णाया १, १—पत्र ६२, गउड)। २ पुंस्त्री. व्यन्तर देव (सिरि ७०७, पव १६०)। स्त्री. °री (उप पृ ३३०)। °राइ स्त्री [°राजि] वन-पंक्ति, वृक्ष-समूह (पउ, सुर ३, ४२, मनि ५५)। °राज, °राय पुं [°राज] १ विक्रम की आठवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (मोह १०८)। २ सिंह, [illegible] ([illegible])। °लआ, °लया स्त्री [°लता] १ [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])। २ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible])। °वाल पि [°पाल] [illegible], [illegible] ([illegible] ४८८ टी)। °वास पु [°वास] [illegible] [illegible] ([illegible] ३४१)। °वासी स्त्री [°वासी] [illegible] ([illegible])। °विदुग्ग [illegible] [°विदुर्ग] [illegible] [illegible] [illegible] (सूअ २, २, ८, भग)। °विरोहि पु [°विरोहिन्] आषाढ मास (सुज्ज १०, १९)। °संड पुंन [°षण्ड] अनेकविध वृक्षों की घटा—समूह (ठा २, ४, भग, णाया १, २, औप)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] जंगल का हाथी (से ८, ३६)। °ालि, °ोलि स्त्री [°ालि] वन पंक्ति (गा ५७९, हे २, १७७)।

वणइ स्त्री [दे] वन-राजि, वृक्ष पंक्ति (दे ७, ३८, पड्)।

वणण न [वनन] बछड़े को उसकी माता से भिन्न दूसरी गाय से लगाना (पण्ह १, २—पत्र २६)।

वणण न [दे. व्यान] बुनना। °साला स्त्री [°शाला] बुनने का कारखाना (दस १, १ टी)।

वणद्धि स्त्री [दे] गो-वृन्द, गो-समूह (दे ७, ३८)।

वणनत्तडिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (पड्)।

वणपक्कसावअ पु [दे] शरभ, श्वापद-विशेष (दे ७, ५२)।

वणप्फइ पु [वनस्पति] १ वृक्ष विशेष, फूल के बिना ही जिसमें फल लगता हो वह वृक्ष (हे २, ६९, कुमा)। २ लता, गुल्म, वृक्ष आदि कोई भी गाछ, पेड़ मात्र (भग)। ३ न. फल (कुमा ३, २६)। °काइअ वि [°कायिक] वनस्पति का जीव (भग)।

वणय पु [वनक] दूसरी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

वणरसि (अप) देखो वाणारसी (पिंग, पि ३५४)।

वणय पुं [दे] दावानल (दे ७, ३७)।

वणमाई स्त्री [दे] कोकिला, कोयल (दे ७, ५२, पाअ)।

वणस्सइ देखो वणप्फइ (हे २, ६९, जी २, ठा, पणण १)।

वणाय वि [दे] व्याध से व्याप्त (दे ७, ३७)।

वणार पु [दे] स्वाधीन बछड़ा (दे ७, ३७)।

वणि वि [व्रणिन्] घाववाला, जिसको घाव हुआ हो वह (दे ६, ९६; पिंड १६, ११)।

वण } पु [वणिज्] वणिक्, व्यापारी, वणिअ } [illegible] (औप, उप ७२८ टी, सुर

१४, ६६, सुपा २७६, सुर १, ११३, प्रासू ८०, कुमा, महा)।

वणिअ वि [व्रणित] व्रण-युक्त, घाववाला (गा ४५८, ६४६, पउम, ७५, १३)।

वणिअ पु [वनीपक] भिक्षुक, भिखारी, 'वणि जायणि त्ति वणिओ पायप्पाणं वणेइत्ति' (पिंड ४४३)।

वणिअ न [वणिज] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८, सूअनि ११)।

वणिआ स्त्री [वनिका] वाटिका, बगीचा, 'असोयवणिआइ मज्झयारम्मि' (भाव ७, उवा)।

वणिआ स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (गा १७, कुमा, तदु ५०, सम्मत्त १७५)।

वणिज देखो वणिअ = वणिज् (चारु ३४)।

वणिज } न [वाणिज्य] व्यापार, बेपार, वणिज्ज } 'एत्तियकालं हट्टे जइ तं चिट्ठेसि वणिजकई' (सुपा ५१०, २५२), 'उज्जेणी-आगओ वणिज्जेणं' (पउम ३३, ६३, स ४४३, सुर १, ६०, कुप्र ३६५, सुपा ३८४, प्रासू ८०, भवि, श्रा १२)। °रय वि [°कारक] व्यापारी (सुपा ३८३, उप पृ १०४)।

वणिम } देखो वणीमय (दस ५, १, ५१)। वणीमग } २ दरिद्र, निर्धन (दस ५, २, १०)।

वणी स्त्री [वनी] १ भीख से प्राप्त धन (ठा ५, ३—पत्र ३४१)। २ फली-विशेष, जिससे कपास निकलता है (राज)।

वणीमग } पु [वनीपक] याचक, भिक्षुक, वणीमय } भिखारी (ठा ५, ३, सुपा १६८, सण, ओघ ४३६)।

वणे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (हे २, २०६, कुमा)। २ विकल्प। ३ अनुकम्पनीय। ४ संभावना (हे २, २०६)।

वणेचर देखो वण-यर (रयण ५६)।

वण्ण सक [वर्णय्] १ वर्णन करना। २ प्रशंसा करना। ३ रँगना। वण्णआमो (पि ४६०)। कर्म वण्णिज्जइ (सिरि १२८८), वण्णिअइ (अप) (हे ४, ३४५)। वकृ. वण्णंत (गा ३५०)। हेकृ. वण्णिउं (पि ५७३)। कृ. वण्णणिज्ज, वण्णेअव्व (हे ३, १७६, भग)।

वण्ण पुं [वर्ण] १ प्रशंसा, श्लाघा (उप ६०७)। २ यश, कीर्त्ति (ओघ ६०)। ३ शुक्ल आदि रँग (भग, ठा ४, ४, उवा)। ४ अकार आदि अक्षर। ५ ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति। ६ गुण। ७ अंगराग। ८ सुवर्ण, सोना। ९ विलेपन की वस्तु। १० व्रत-विशेष। ११ वर्णन। ११ विलेपन क्रिया। १३ गीत का क्रम। १४ चित्र (हे १, १७७, प्राप्र)। १५ कर्म-विशेष, शुक्ल आदि वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, २४)। १६ संयम। १७ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। १८ न. कुंकुम (हे १, १४२)। °णाम, °नाम पुंन [°नामन्] कर्म-विशेष (राज, सम ६७)। °मंत वि [°वत्] प्रशस्त वर्णवाला (भग)। °वाइ वि [°वादिन्] श्लाघा-कर्त्ता, प्रशंसक (वव १)। °वाय पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा (पचा ६, २३)। °ावास पु [°ावास] वर्णन-प्रकरण, वर्णन-पद्धति (जीव ३, उवा)। °ावास पु [°व्यास] वर्णन-विस्तार (भग, उवा)।

वण्ण पु [वर्ण] पञ्चम आदि स्वर। °सम न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

वण्ण वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ। २ रक्त। (दे ७, ८३)।

°वण्ण देखो पण्ण (गा ६०१, गउड)।

वण्णग देखो वण्णय (उवा; ओप)।

वण्णण न [वर्णन] १ श्लाघा, प्रशंसा (कप्पू)। २ विवेचन, विवरण, निरूपण (रयण ४)।

वण्णणा स्त्री [वर्णना] ऊपर देखो (दे १, २१, सार्ध ४५)।

वण्णय पुन [दे वर्णक] १ चन्दन, श्रीखण्ड (दे ७, ३७, पचा ८, २३)। २ पिष्टातक-चूर्ण, अंगराग (दे ७, ३७, स्वप्न ६१)।

वण्णय पुं [वर्णक] वर्णन-ग्रन्थ, वर्णन-प्रकरण (विपा १, १, उवा, ओप)।

वण्णिअ वि [वर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह (महा)।

वण्णिआ देखो वन्निआ (गा ६२०)।

वण्हि पु [वृष्णि] १ एक राजा, जो अन्धक-वृष्णि नाम से प्रसिद्ध था, 'वण्हिह पिया धारिणी माया' (अंत ३)। २ एक अन्तकृद् महर्षि, 'अक्खोभ पसेणई वण्ही' (अंत)। ३ अन्धकवृष्णि-वंश में उत्पन्न, यादव (णंदि)। °दसा स्त्री ब. [°दशा] एक जैन आगम-ग्रन्थ (निर ५)। °पुंगव पु [°पुङ्गव] यादव-श्रेष्ठ (उत्त २२, १३, णाया १, १६—पत्र २११)।

वण्हि पु [वह्नि] १ अग्नि, आग (पाअ, महा)। २ लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१)। ३ चित्रक वृक्ष। ४ भिलावाँ का पेड़। ५ नीबू का गाछ (हे २, ७५)।

वत देखो वय = व्रत (चड)।

वति देखो वइ = व्रतिन् (उप ३८१)।

वति देखो वइ = वृति (चड)।

वतु पु [दे] निवह, समूह (दे ७, ३२)।

वत्त देखो वट्ट = वृत्। वत्तइ (भवि), वत्तदि (शौ) (स्वप्न ६०)।

वत्त देखो वट्ट = वर्तय्। वत्तइ (भवि)। वत्तेज्ज (आचा २, १५, ४२)। वत्तेज्जासि, वत्तेहामि (उवा, पि ५२८)।

वत्त न [वार्त्त] आरोग्य (उत्त १८, ३८)।

वत्त वि [व्याप्त] फैला हुआ, भरपूर (कप्प, विसे ३०३६)।

वत्त देखो वट्ट = वृत्त (स ३०८, महा, सुर १, १७८, ३, ७६, औप, हे १, १४५)।

वत्त वि [व्यक्त] प्रकट, खुला (धर्मसं ५५५)।

वत्त न [वक्त्र] मुख, मुँह (हे १, १८, भवि)।

°वत्त देखो पत्त = पत्र (गा ६०४, हेका ५०, गउड)।

°वत्त देखो पत्त = पात्र (गउड, गा ३००)।

वत्त° देखो वत्ता (भवि)। °यार वि [°कार] वार्त्ता कहनेवाला (भवि)।

वत्तअ पु [व्यत्यय] १ विपर्यय, विपर्यास। २ व्यतिक्रम, उल्लंघन (प्राकृ २१)।

वत्तए देखो वय = वच्।

वत्तडिआ } (अप) देखो वत्ता (कुमा, हे ४, वत्तडी } ४३२, सण)।

वत्तण न [वर्त्तन] १ जीविका, निर्वाह, 'किं न तुम मच्छएहिं कुडुंबवत्तणं करेसि' (कुप्र

[illegible] २ प्रवृत्ति [illegible] (दस १२, ६१ [illegible])। ४ [illegible]। ५ वर्तन, [illegible]। ६ [illegible]। ७ [illegible] (नि [illegible])।

वत्तणा स्त्री [वर्तन] ऊपर देखो, 'वत्तणा-[illegible]' (उत्त २६ १०, भावन)।

वत्तणी स्त्री [वर्तनी] मार्ग, रास्ता (पण्ह १, ३—पत्र ४४, विसे १२०७, सुपनि ६१ टी [illegible])।

वत्तड वि [दे] १ [illegible]। २ बहु शिक्षित (दे ७, ८५)।

वत्तमाण पुं [वर्तमान] १ काल-विशेष, [illegible] (प्राप्र [illegible])। २ वि [illegible]। ३ पुं विद्य-[illegible]।

°वत्तरि [illegible] (कप्प ८३, प्रासू १२६, [illegible])।

[illegible]।

[illegible] [दे] [illegible], मूत्र [illegible] (पण्ह १, ४—पत्र ७८, वहु २०)। देखो [illegible]।

वत्ता स्त्री [वार्ता] १ बात, कथा (दे ६, ३८, [illegible] ३८४, प्राप १, कुमा)। २ वृत्तान्त, [illegible]। ३ [illegible]। ४ [illegible]। ५ [illegible]। ६ [illegible]। ७ [illegible]। ८ [illegible] (दे [illegible])। °लाव पुं [°लाप] [illegible]।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ७, ४१)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ७ ३१)।

[illegible] (सुर [illegible] ६४८, विसे [illegible] १३८८)।

[illegible] [°वर्तन] [illegible]।

[illegible] [illegible] (सुर २ ८ २)।

[illegible]।

[illegible] स्त्री [illegible] [illegible] [°प्रदीप] [illegible] [illegible] की विधि [illegible] [illegible] १४।

[illegible] [illegible] [illegible] २ पुं, [illegible]

४६, विसे १४२०)। ३ ग्रंथ की टीका—व्याख्या (विसे १३८४)।

वत्तिअ वि [वर्त्तित] १ वृत्त—गोल किया हुआ (णाया १, ७)। २ भाच्छादित (पडि)।

°वत्तिअ देखो पच्चय = प्रत्यय (प्रोघ)।

वत्तिआ देखो वट्टिआ (प्राप्र)।

वत्तिणी स्त्री [वर्त्तिनी] मार्ग, रास्ता (पाम, स ८, सुर १२, १३६)।

°वत्ती देखो पत्ती = पत्नी (गा ७६, १०६, १७३)।

वत्तु देखो वय = वच्।

वत्तुकाम वि [वक्तुकाम] बोलने की चाह-वाला (स ३१८, प्रनि ४४, स्वप्न १०, नाट—विक्र ८०)।

वत्तुल देखो वट्टुल (राज)।

वत्थ पुंन [वस्त्र] कपड़ा (प्राचा २, १४, २२, उवा, पण्ह १, १, उप पृ ३३३, सुपा ७२, ४६८, कुमा, सुर ३, ७०)। °खेडु न [°खेल] क्रीडा-विशेष (जं २ टी—पत्र १३७)। °धोव वि [°धाव] वस्त्र धोनेवाला (सुप १, ४, २, १७)। °पूस पुं [°पुष्य] एक जैन मुनि (कुलक २२)। °पूसमित्त पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि (ती ७)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] विद्या-विशेष, जिससे प्रभाव से वस्त्र-स्पर्श कराने से ही बीमार अच्छा हो जाय (वव ५)। °सोहग वि [°शोधक] वस्त्र धोनेवाला (स ८१)।

वत्थ वि [व्यस्त] पृथग्, भिन्न, जुदा (सुर १६, ४७)।

वत्थउड पुं [दे वस्त्रपुट] तम्बू, कपड़-कोट, पटकुटी (दे ७, ४७)।

वत्थए देखो वस = वस्।

वत्थल पुं [वस्त्राढ्य] [illegible] की एक जाति, जो [illegible] का काम करता है (पउम १०२, १२१)।

°वत्थर देखो पत्थर = प्रस्तर (गा ४४१)।

वत्थव्व [illegible] [वस्तव्य] [illegible] रहने-योग्य (पव)।

[illegible] वि [वास्तव्य] रहनेवाला, निवासी (सुपा ४२४, सुर २, ६१, सुपा २६६, [illegible])।

वत्थाणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

वत्थाणीअ पुंन [दे] खाद्य-विशेष, 'हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा कज्ज साधेंति' (सुज्ज १०, १७)।

वत्थि पुं [वस्ति] १ दृति, मशक (भग १, ६, १८, १०, णाया १, १८), 'वत्थिव्व वायपुण्णो भमुरुकरिसेण जहा तहा लवइ' (सबोध १८)। २ अपान, गुदा, 'वत्थी भवाए' (पाम पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ छाते में शलाका—सली—लगाई बैठने का स्थान, छत्र का एक अवयव (प्रोघ)। °कम्म न [°कर्मन्] १ सिर आदि में चर्म-वेष्टन द्वारा किया जाता तैल आदि का पूरण। २ मल साफ करने के लिए गुदा में बत्ती आदि का किया जाता प्रक्षेप (विपा १, १—पत्र १४, णाया १, १३)। °पुडग पुंन [°पुटक] पेट का भीतरी प्रदेश (निर १, १)।

वत्थिय पुं [वास्तिक] वस्त्र बनानेवाला शिल्पी (अणु)।

वत्थी स्त्री [दे] उटज, तापसों का पर्ण कुटी (दे ७, ३१)।

वत्थु न [वस्तु] १ पदार्थ, चीज (पाम, उवा, सम्म ८, सुपा ४०२ प्रासू ३०, १६१, ठा ४, १ टी—पत्र १८८)। २ पूर्व पूर्व-ग्रन्थों का अध्ययन—प्रकरण, परिच्छेद (सम २५, णंदि, अणु, कम्म १, ७)। °पाल, °वाल पुं [°पाल] राजा वीरधवल का एक सुप्रसिद्ध जैन मंत्री (ती २, हम्मीर १२)।

वत्थु न [वास्तु] १ गृह, घर, '[illegible] परिमाणं करेई' (उवा)। २ गृहादि-निर्माण-शास्त्र (णाया १ १३)। ३ शाक-विशेष (उवा)। °पाढग वि [°पाठक] वास्तु-शास्त्र का जानकार (णाया १, १३, पत्र १३)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] गृह-निर्माण-कला (प्रोघ, जं २)।

वत्थुल पुं [वस्तुल] गुच्छ और गुल्म वनस्पति-विशेष, शाक-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२, ३४ [illegible])।

वत्थूल पुं [वस्तुल] ऊपर देखो, '[illegible] (पउम [illegible])।

वद देखो वय = वद्। वदसि, वदइ (उवा, भग, कप्प)। भूका. वदासी (भग)। हेकृ. वदित्तए (कप्प)।

वद देखो वय = व्रत (प्राकृ १२, नाट—विक्र ५९)।

वदिसा देखो वडेसा (इक)।

वदिकलिअ वि [दे] वलित, लौटा हुआ (दे ७, ५०)।

वदूमग देखो वडुमग (आचा)।

वद्दल न [दे वार्दल] १ वद्दल, बादल, मेघ-घटा, दुर्दिन (दे ७, ३५, हे ४, ४०१, सुपा ६५५, राय, आवम, ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ पु छठवीं नरक का दूसरा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)।

वद्दलिया स्त्री [दे. वार्दलिका] वदली, छोटा वद्दल, दुर्दिन (भग ६, ३३—पत्र ४६७, औप)।

वद्ध देखो वडढ = वर्धय्। कर्म. वद्धसि (सुपा ६०)।

वद्ध पुन [वर्ध्र] चर्म-रज्जु, 'वज्जो वद्धो (? वज्भो वद्धो)' (पाअ, दे ६, ८८, पव ८३, सम्मत्त १७४)।

वद्ध देखो विद्ध = वृद्ध (प्राप्र, प्राकृ ७)।

वद्धण न [वर्धन] १ वृद्धि, बढती (णाया १, १, कप्प)। २ वि बढानेवाला (उप ६७३, महा)।

वद्धणिआ } स्त्री [वर्धनिका, °नी] समार्जनी,
वद्धणी } झाड़ू (दे ८, १७, ७, ४१ टी)।

वद्धमाण पुं [वर्धमान] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, १०, सम ४३, अत, कप्प, पडि)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ६३, विचार ७६, ती १५, गु ८)। ३ स्कन्धा-रोपित पुरुष, कन्धे पर चढाया हुआ पुरुष (अत, औप)। ४ एक शाश्वत जिन-देव। ५ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५९)। ६ न गृह-विशेष (उत्त ९, २४)। ७ राजा रामचन्द्र का एक प्रेक्षा-गृह—नाट्य-शाला (पउम ८०, ५)। देखो वड्ढमाण।

वद्धमाणग } पु [वर्धमानक] १ अठासी
वद्धमाणय } महाग्रहों में एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—७८)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। ३ न पात्र-विशेष, शराव (णाया १, १—पत्र ५४, पउम १०२, १२०)। ४ पु पुरुष पर आरूढ पुरुष, पुरुष के कन्धे पर चढा हुआ पुरुष। ५ स्वस्तिक-पञ्चक। ६ प्रासाद-विशेष, एक तरह का महल (णाया १, १—पत्र ५४, टी—पत्र ५७)। ७ न एक गाँव का नाम, अस्थिक ग्राम, 'अट्ठियगामस्स पढम वद्धमाणय ति नाम होत्था' (आवम)। ८ त्रि. कृता-भिमान, अभिमानी, गर्वित (औप)।

वद्धय वि [द] प्रधान, मुख्य (दे ७, ३६)।

वद्धार सक [वर्धय्] बढाना, गुजराती में 'वधारवु'। वकृ वद्धारत (सट्टि १२, सवोध ४, द्र ८)।

वद्धारिअ वि [वर्धित] बढाया हुआ (भवि)।

वद्धाव सक [वर्धय्, वर्धापय्] वधाई देना। वद्धावेइ, वद्धावेंति (कप्प)। कर्म वद्धावीअसि (रभा)। वकृ. वद्धावित (सुपा २२०)। संकृ. वद्धावित्ता (कप्प)।

वद्धावण न [वर्धन, वर्धापन] बधाई, अभ्युदय-निवेदन (भवि, सुर ३, २४, महा, सुपा १२२, १३४)।

वद्धावणिया स्त्री [वर्धनिका, वर्धापनिका] ऊपर देखो (सिरि १३१९)।

वद्धावय वि [वर्धक, वर्धापक] बधाई देने-वाला (सुर १५, ७६, स ५७०, सुपा ३६१)।

वद्धाविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको बधाई दी गई हो वह (सुपा १२२, १६५)।

वद्धिअ पु [दे] १ षण्ढ, नपुंसक (दे ७, ३७)। २ नपुंसक-विशेष, छोटी उम्र में ही छेद दे कर जिसका अण्डकोष गलाया गया हो वह, बधिया (पव १०६ टी)।

वद्धिअ देखो वड्ढिअ = वृद्ध (भवि)।

वद्धी स्त्री [दे] अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्तव्य (दे ७, ३०)।

वद्धीसक } पुन [दे वद्धीसक] वाद्य-विशेष,
वद्धीसग } एक प्रकार का बाजा (पण्ह २, ५—पत्र १४९, अनु ६)।

वध देखो वह = वध (कुमा)।

वधय देखो वहय (भग)।

वधू देखो वहू (औप)।

वन्न देखो वण्ण = वर्णय्। वन्नेहि (कुमा, उव)। हेकृ. वन्निउ (कुमा)। कृ वन्नणिज्ज (सुर २, ६७, रयण ५४)।

वन्न देखो वण्ण = वर्ण (भग, उव, सुपा १०३, सत्त ५९, कम्म ४, ४० ठा ५ ३)।

वन्नग देखो वण्णय (कप्प, श्रा २३)।

वन्नण देखो वण्णण (उप ७६८ टी, सिरि ७२७)।

वन्नणा देखो वण्णणा (रभा)।

वन्नय देखो वण्णय (पिंड ३०८, कप्प)।

वन्निअ देखो वण्णिअ (भग)।

वन्निआ स्त्री [वर्णिका] १ बानगी, नमूना, 'सग्गस्स वन्निया मिव नयर इह अत्थि पाडली-पुत्त' (धर्मवि ६४)। २ लाल रँग की मिट्टी (जी ३)।

वन्हि देखो वण्हि = वृष्णि (उत्त २२, १३)।

वन्हि देखो वण्हि = वह्नि (चड)।

वपु देखो वउ = वपुस् (वव १)।

वप्प सक [त्वच् ?] ढकना, आच्छादन करना। वप्पइ (धात्वा १५१)।

वप्प पुं [वप्र] १ विजयक्षेत्र-विशेष, जबूद्वीप का एक प्रान्त, जिसकी राजधानी विजया है (ठा २, ३—पत्र ८०, ज ४)। २ पुन. किला, दुर्ग, कोट (ती ८)। ३ केदार, खेत, 'केआरो वप्पिण वप्पो' (पाअ, आचा २, १, ५, २, दे ७, ८३ टी)। ४ तट, किनारा, 'रोहो वप्पो य तडो' (पाअ)। ५ उन्नत भू-भाग, ऊँची-जमीन, 'वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा' (आचा २, १, ५, २)।

वप्प वि [दे] १ तनु, कृश। २ बलवान्, बलिष्ठ। ३ भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ८३)।

वप्पइराय देखो व-प्पइराय।

वप्पगा देखो वप्पा (राज)।

वप्पगावई स्त्री [वप्रकावती] जबूद्वीप का एक विजय क्षेत्र, जिसकी राजधानी का नाम अपराजिता है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।

वप्पा स्त्री [वप्र] उन्नत भू-भाग, टेकडा, ऊँची जमीन (भग १५—पत्र ६६९)।

वप्पा स्त्री [वप्रा] १ भगवान् नमिनाथजी की माता का नाम (सम १५१)। २ दशवें

[illegible]

वमग वि [वामक] उलटी करनेवाला (चेइय १०३)।

वमण न [वमन] उलटी, वान्ति, कै (आचा, णाया १, १३)।

वमाल सक [पुञ्जय्] १ इकट्ठा करना। २ विस्तारना। वमालइ (हे ४, १०२, षड्)।

वमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ९० पाअ स ४३५, ५२०, भवि)।

वमाल पुं [पुञ्ज] राशि, ढग (सण)।

वमालण न [पुञ्जन] १ इकट्ठा करना। २ विस्तार। ३ वि इकट्ठा करनेवाला। ४ विस्तारनेवाला (कुमा)।

वम्म पुंन [वर्मन्] कवच, सनाह, बख्तर (प्राप्र कुमा)।

वम्म देखो वम।

वम्मह / वम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव, कंदर्प (षड्, प्राप्र, हे १, २४२, २, ६१, पाअ)।

वम्मा देखो वामा (कप्प, पउम २०, ४६, सुपा २३, १, पत्र ११)।

वम्मिअ वि [वर्मित] कवचित, सन्नाहयुक्त (विपा १, २—पत्र २३)।

वम्मिअ / वम्मीअ पुं [वल्मीक] कीट विशेष-कृत मिट्टी का स्तूप, [illegible] (सूअ २, १, २६, हे १, १०१, षड्, पाअ, स १२३, सुपा ३१७)।

वम्मीइ पुं [वाल्मीकि] एक प्रसिद्ध ऋषि, [illegible] मुनि (उत्तर १०३)।

वम्मीसर पुं [दे] [illegible] (दे ७, ४०)।

[illegible]

(कुमा)। वर्त. नवि वक्ष वक्खमाण (विसे १०५३)। संकृ वइत्ता, वच्चा, वोत्तूण (ठा ३, १—पत्र १०८, सूअ २, १, ६ हे ४, २११, कुमा)। हेकृ वत्तए, वत्तु, वोत्तु (आचा दसनि १७२, हे ४, २११ कुमा)। कृ वच्च, वत्तव्व, वोत्तव्व (विसे २, उप १३६ टी, ६४८ टी, ७६८ टी, पिंड ८७, धर्मसं ९२२, सुर ४, ६७, सुपा १५०, ओप, उत्त, हे ४,२११)। देखो वयणिज्ज।

वय सक [वद्] बोलना, कहना। वयइ, वयंसि (कस, कप्प), वइज्जा, वएज्जा (कप्प)। भूका वयासि, वयासी (औप, कप्प, भग, महा)। वकृ. वयंत, वयमाण, वयमाण (कप्प, काल, ठा ४, ४—पत्र २७४, सम्म ६६, ठा ७)। संकृ. वइत्ता (आचा)। हेकृ. वइत्तए (कप्प)।

वय सक [व्रज्] जाना, गमन करना। वयइ (सुर १, २४८)। वयउ (महा), वइज्ज (गच्छ २, ६१)। कृ वयंत (सुर ३, ३७, सुपा ४३२)। कृ वइयव्व (राजा)।

वय पुं [वृक] पशु विशेष, भेड़िया (पउम ११८, ७)।

वय पुं [दे] गृध्र पक्षी (दे ७, २९, पाअ)।

वय पुं [वज] १ नमस्कार-करण। २ गमन। (श्रा २३)।

वय पुं [व्रज] १ देश विशेष (गा ११२)। २ गोकुल, दस हजार गौओं का समूह (णाया १, १ टी—पत्र ४३ श्रा २३)। ३ मार्ग, रास्ता। ४ नमस्कार-करण। ५ गमन, गति (श्रा २३)। ६ समूह, यूथ (श्रा २३, स २६७, सुपा २८८, सौ ३)।

वय पुं [व्यय] [illegible]

वय न [वयस्] [illegible]

वय पुं [वट] [illegible] (श्रा २३)।

वय पुंन [व्रत] [illegible]

२, प्रासू १५४)। °मत वि [°वत्] व्रती (आचा २, १, ६, १)।
वय पुन [वयस्] १ उम्र, आयु (ठा ३, ३, ४, ४, गा २३२; उप पृ १८, कुमा, प्रासू ४८, श्रा १४)। २ पक्षी (गउड, उप पृ १८)। °त्थ वि [°स्थ] तरुण, युवा (सुख १, १६)। °परिणाम पु [°परिणाम] वृद्धता, बुढापा (से ४, २३, पाअ)।
°वय पु [पच] पचन, पाक (श्रा २३)।
°वय देखो पय = पद (स ३४५, श्रा २३; गउड कप्पू, मे १, २४)।
°वय देखो पय = पयस् (कुमा)।
वयग न [दे] फल-विशेष (सिरि ११६८)।
वयंतरिअ वि [वृत्यन्तरित] बाड से तिरोहित (दे २, ६३)।
वयंस पुं [वयस्य] समान उमरवाला मित्र (ठा ३, १—पत्र ११७, हे १, २६, महा)।
वयंसि देखो वच्चंसि = वर्चस्विन् (राज)।
वयंसी स्त्री [वयस्या] सखी, सहेली (कप्पू)।
वयड पु [दे] वाटिका, बगीचा (दे ७, ३५)।
वयण न [दे] १ मन्दिर, गृह। २ शय्या, बिछौना (दे ७, ८५)।
वयण पुन [वदन] १ मुख, मुंह, 'वअणो, वअणं' (प्राकृ ३३, पि ३५८, सुर २, २४३, ३, ४७, प्रासू ६२)। २ न. कथन, उक्ति (विसे २७६४)।
वयण पुन [वचन] १ उक्ति, कथन, 'वयणा, वयणाइं' (हे १, ३३, पव २, सुर ३, ६४, प्रासू १४, १३४, १५०, कुमा)। २ एकत्व आदि संख्या का बोधक व्याकरण-शास्त्रोक्त प्रत्यय (पण्ह २, २ टी—पत्र ११८)।
वयणिज्ज वि [वचनीय] १ वाच्य, कथनीय, अभिधेय, 'वत्थु दव्वट्ठिअस्स वयणिज्जं' (सम्म ८, सूअ २, १, ६०)। २ निन्दनीय (सुपा ३००)। ३ उपालम्भनीय, उलहना देने योग्य (कुप्र ३)। ४ न. वचन, शब्द (से ४, १३, सम्म ५३, काप्र ८६६)। ५ लोकापवाद, निन्दा (स ५३२)।
वयर वि [दे] चूर्णित (दे ७, ३४)।
वयर देखो वइर = वज्र (कप्प, उव, ओघभा ८, साधं ३५, भग, औप)।
°वयर देखो पयर = प्रकर (से १, २२)।
वयराड देखो वइराड (सत्त ६७ टी)।
वयल वि [दे] १ विकसता, खिलता (दे ७, ८४)। २ पु कलकल, कोलाहल (दे ७, ८४, पाअ)।
वयली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३८, पाअ)।
°वयस देखो वय = वयस्, 'सवयस' (आचा १, ८, २, २)।
वयस्स देखो वयंस (स ३१४, मोह ४७, अभि ५५, स्वप्न ७६)।
वया स्त्री [वपा] १ विवर, छिद्र। २ मेद, चरबी (श्रा २३)।
वया स्त्री [वचा] १ ओषधि विशेष। २ मैना, सारिका (श्रा २३)। देखो वचा।
वया स्त्री [व्रजा] १ मार्ग-विशेष, ऊप को खींचने के लिए रज्जुबद्ध घट आदि डालने का मार्ग। २ प्रेरण-दण्ड (श्रा २३)।
वर सक [वृ] १ सगाई करना, सबन्ध करना। २ आच्छादन करना, ढकना। ३ याचना करना। ४ सेवा करना। वरइ (हे ४, २३४, सुज्ज १६, प्राप्र, षड्), 'वर वरेहिं' (कुप्र ८०), 'वरं वरसु इच्छिअं' (श्रा १२)। भवि वरिस्सइ (सिरि ८१६)। कृ. वरणीअ (पउम २८, १०४)।
वर सक [वरय्] १ प्राप्त करने की इच्छा करना। २ सस्पृष्ट करना। वरइ, वरयति (भवि, सुज्ज ७), 'के सूरिय वरयते' (सुज्ज १, १)। वकृ. वरिंत (सुज्ज ७)।
वर पु [वर] १ पति, स्वामी, दुलहा (स ७८, स्वप्न ४१, गा ४०४, ४७६, भवि)। २ वरदान, देव आदि का प्रसाद (कुमा, श्रा १२, २७, कुप्र ८०, भवि)। ३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प, महा, कुमा, प्रासू ५२, १७५)। ४ अभीष्ट (श्रा १२, कुप्र ८०)। ५ न. कुछ अभीष्ट, अच्छा, 'वर मे अप्पा दंतो' (उत्त १, १६, प्रासू २२, ३८, १०६)। °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् नेमिनाथजी का प्रथम शिष्य (सम १५२, कप्प)। २ एक राजकुमार (विपा २, १, १०)। °दाम न [दामन्] एक तीर्थ (ठा ३, १—पत्र १२२, इक, सण)। °धणु पु [°धनुष्] एक मन्त्रिकुमार, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का बालमित्र (महा)। °पुरिस पु [°पुरुष] वासुदेव (पण्ण १७—पत्र ५२६, राय, आवम, जीव ३)। °माल पु [°माल] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)। °माला स्त्री [°माला] वर को पहनायी जाती माला, वरत्व-सूचक माला (कुप्र ४०७)। °रुइ पु [°रुचि] राजा नन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण (कुप्र ४४७)। °वरिया स्त्री [°वरिका] अभीष्ट वस्तु माँगने के लिए की जाती घोषणा, ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा (णाया १, ८—पत्र १५१, आवम, स ४०१, सुर १६, १८, सुपा ७२)। °सरक्क न [°सरक] खाद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °सिट्ठ पुन [°शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान (भग ३, ७—पत्र १६७, देवेन्द्र २७०)।
वर देखो वार। °विलया स्त्री [°वनिता] वेश्या (कुमा)। °वर देखो पर, 'जीवाणमभयदाणं जो देइ दयावरो नरो निच्चं' (कुप्र १८२)।
वरइअ वि [दे] धान्य-विशेष (दे ७, ४६)।
वरइत्त पु [दे वरयितृ] अभिनव वर, दुलहा (दे ७, ४४, षड्; भवि)।
वरई देखो वरय = वराक।
वरउप्फ वि [दे] मृत (दे ७, ४७)।
वर देखो पर = परम्, 'अदो वर विरुद्धमम्हाण इत्थ अवत्थाणं' (मोह ६२, स्वप्न २०६)।
वरड पु [वरण्ड] १ दीर्घ काष्ठ, लम्बी लकडी। २ भित्ति, भीत (मृच्छ ६)।
वरड पु [दे] १ तृण-पुञ्ज, तृण सचय (चारु ३)। २ प्राकार, किला (दे ७, ८६, षड्)। ३ कपोतपाली, गाल पर लगाई जाती कस्तूरी आदि की छटा (दे ७, ८६)। ४ समूह (गा ६३०)।
वरडिया स्त्री [दे] छोटा वरडा, वरामदा, दालान (सुपा २०३)।
वरक्ख न [वराख्य] गन्ध-द्रव्य विशेष, सिल्हक (से ६, ४४)।
वरक्ख पुं [वराक्ष] १ योगी। २ यक्ष। ३ वि. श्रेष्ठ इन्द्रियवाला (से ६, ४४)।
वरक्खा स्त्री [वराख्या] त्रिफला (से ६, ४४)।

वरग [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

[illegible]

वराडिआ स्त्री [वराटिका] कपर्दिका, कौड़ी (उत्त ३६, १३०; ओघ ३३४ भा १)। २ न कौड़ियों का जुआ जिसे मालव देश में खेला जाता है (माह ८६)।

वराडिआ स्त्री [वराटिका] कपर्दिका, कौड़ी (सुपा २०३)।

वराह देखो वराग = वराक (गा ६१; ६६, ४३१, महा)। स्त्री. °राइआ, °राई (गा ४६३; ति ३४)।

वरानट्ठ पु व [वरानट्ट] देश-विशेष (पउम ६८, ६४)।

वराह पु [वराह] १ सूअर, शूकर (पाअ)। २ भगवान् सुविधिनाथ का प्रथम शिष्य (सम १५२)।

वराही स्त्री [वराही] विद्या-विशेष (विसे २४५३)।

वरि अ [वरम्] अच्छा, ठीक,

'वरि मरणं मा विरहो,
विरहो अइदूसहो क्ख पडिहाइ।
वरि एक्कं चिय मरणं,
जेण समप्पंति दुक्खाइं॥'
(सुर ४, १४२, वरि)।

वरिज देखो वज्ज = वर्ज (हे २, १०७; षड्)।

वरिज वि [वृत] १ स्वीकृत (स १२, ८८)। २ वेष्टित (वरि)। ३ जिसकी सगाई की गई हो वह (सुपा, महा)। ४ न सगाई करना, 'कुमरिय ति' (उप ६४८ टी)।

वरिट्ठ पुं [वरिष्ठ] १ भरत क्षेत्र का भावी आठवाँ राजा (सम १५४)। २ वि अतिश्रेष्ठ, प्रधान, उत्तम (उप ३६८; सुपा ४०२; भवि)।

वरिड पु [दे] वस्त्र-विशेष (कप्पू)।

वरिस सक [वृष्] बरसना, वृष्टि करना। वरिसइ (हे ४, २३५, प्राप)। वकृ. वरिसंत, वरिसमाण (सुपा २२४, ६२३)। कृ. वरिसिउ (हे १३४)।

वरिस पुं [वर्ष] १ वृष्टि, वर्षा (सुपा [illegible])। २ संवत्सर, साल (सुपा [illegible]; हे २, १०५; कप्पू, सम ९, ८८)। ३ भारत आदि क्षेत्र (सम [illegible]; १०५)। °धर पु [°धर] अन्तःपुर-रक्षक पण्ड-विशेष (णाया १, १—पत्र ३७, कप्पू, ओघ ५५ टि)। °वर पु [°वर] वही अनन्तरोक्त अर्थ (ओप)। देखो वास = वर्ष।

वरिसविअ वि [वर्षित] बरसाया हुआ (सुपा २२३)।

वरिसा स्त्री [वर्षा] १ वृष्टि, पानी का बरसना (हे २, १०५)। २ वर्षा-काल, श्रावण और भादों का महीना (प्रयौ ७४)। °काल पु [°काल] वर्षा ऋतु, प्रावृट् (कुप्र ७५)। °रत्त पु [°रात्र] वही अर्थ (ठा ६, णाया १, १—पत्र ६३)। °ल देखो °काल (पव ८५, महा)। देखो वासा।

वरिसि वि [वर्षिन्] बरसनेवाला (रंभा १११)।

वरिसिणी स्त्री [वर्षिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

वरिसोलक पु [दे वर्षोलक] पक्वान्न-विशेष, एक प्रकार का खाद्य (पव ४ टी)।

°वरिहरिअ देखो परिहरिअ (से ७, ३८)।

वरु } पुन [दे] देखो वरुअ। 'वणयाण्णा
वरुअ } वरुणा फुल्लंति सुरहिजलसिंचा (? सा)' (वजा ८७)।

वरुट्ट पुं [वरुण्ट] एक शिल्पि-जाति (राज)।

वरुड पुं [वरुड] एक मत्स्य-जाति (दे २, ८४)।

वरुण पुं [वरुण] १ चमर आदि इन्द्रों का पश्चिम दिशा का लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८; भग)। २ बलि आदि इन्द्रों का उत्तर दिशा का लोकपाल (ठा ४, १)। ३ [illegible] (णाया १, ८—पत्र १५१)। ४ भगवान् मुनिसुव्रत का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ८)। ५ [illegible] (सुर [illegible], १२)। ६ [illegible] (पउम [illegible])। ७ [illegible] जाति (राज)। ८ [illegible] (सुर १०, १३; [illegible])। ९ [illegible] (पउम ६, ७४, १६, १२)। १० [illegible] (सुपा ४४६)। ११ [illegible] (राज)। १२ [illegible] (और

३—पत्र ३४८)। १३ पुं. व. एक आर्य-देश (पव २७५)। °काइय पु [°कायिक] वरुण लोकपाल के भृत्य-स्थानीय देवों की एक जाति (भग ३ ७—पत्र १९६)। °देवकाइय पुं [°देवकायिक] वही अर्थ (भग ३, ७)। °प्पभ पु [°प्रभ] १ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३—पत्र ३८८)। २ वरुण लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वरुणप्रभ पर्वत की दक्षिण दिशा मे स्थित वरुण लोकपाल की एक राजधानी (दीव)। °वर पु [°वर] एक द्वीप का नाम (जीव २—पत्र ३८८, सुज्ज १९)।

वरुणा स्त्री [वरुणा] १ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी (पव २७५)। २ वरुणप्रभ पर्वत की पूर्व दिशा मे स्थित वरुण नामक लोक-पाल की एक राजधानी (दीव)। ३ एक राज-पत्नी (पउम ७, ४४)।

वरुणी स्त्री [वरुणी] विद्या विशेष (पउम ७, १४०)।

वरुणोअ } पु [वरुणोद] एक समुद्र (ठा
वरुणोद } पत्र ४०५, इक, सुज्ज १९)।

वरुल पु व [वरुल] देश-विशेष (पउम ९८, ६४)।

वरूहिणी स्त्री [वरूथिनी] सेना, सैन्य (पाअ)।

वरेइत्थ न [दे] फल (दे ७, ४७)।

वल अक [वल] १ लौटना, वापस आना। २ मुडना, टेढा होना, गुजराती मे 'वळवु'। ३ उत्पन्न होना। ४ सक. ढकना। ५ जाना, गमन करना। ६ साधना। वलइ (हे ४, १७६, षड्, गा ४४९, वाक्व १५२)। भवि. वलिस्स (गहा)। वकृ. वलत, वलय, वलाय, वलमाण (हे ४, ४२२, गा २५, से ५, ८७ ५, ४२, ओप, ठा २, ४, पव १५७)। कवकृ. वलिज्जत (से ४, २६)। संकृ वलिऊण (काल)। हेकृ वलिउ (गा ४८४, पि ५७६)। कृ वलियव्व (महा, सुपा ६०१)।

वल सक [आ + रोपय्] ऊपर चढाना। वलइ (दे ४, ८७, दे ७, ८६)।

वल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। वलइ (हे ४, २०९, दे ७, ८६)। वलणिज्ज (कुमा)।

वल पु [वल] रस्सी आदि को मजबूत करने के लिए दिया जाता वल (उत्त २६, २५)।

वलअगी स्त्री [दे] वृतिवाली, वाडवाली (दे ७, ४३)।

वलइय वि [वलयित] १ वलय—कगन की तरह गोलाकार किया हुआ, वलय की तरह मुडा हुआ (पउम २८,१२४, कप्पू)। २ वेष्टित (कप्पू)।

वलगणिआ स्त्री [दे] वाडवाली (दे ७, ४३)।

वलकिअ वि [दे] उत्सगित, उत्सग-स्थित (षड् १८३)।

वलक्ख वि [वलक्ष] श्वेत, सफेद (पाअ)।

वलक्ख न [वलाक्ष] आभूषण-विशेष एक तरह का गले मे पहनने का गहना (ओप)।

वलग्ग सक [आ + रुह्] आरोहण करना, चढना। गुजराती मे 'वळगवु'। वलग्गइ (हे ४, २०६, षड्, भवि)।

वलग्ग वि [आरूढ] जिसने आरोहण किया हो वह, चढा हुआ (पाअ)।

वलग्गणी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ७, ४३)।

वलग्गिअ देखो वलग्ग = आरूढ (कुमा)।

वलण न [वलन] १ मोडना, वक्र करना (दे १, ४२)। २ प्रत्यावर्तन, पीछे लौटना (से ८, ९, गउड)। ३ बाँक, वक्रता (हे ४, ४२२)।

वलण (शो मा) देखो वरण (प्राकृ ८५, हे २९३)।

वलणा स्त्री [वलना] देखो वलण = वलन (गउड)।

वलत्थ वि [दे] पर्यस्त (भवि)।

वलमय न [दे] शीघ्र, जल्दी, 'वच्च वलमय तत्थ' (दे ७, ४८)।

वलय पुन [वलय] १ ककण, कडा (ओप, गा १३३, कप्पू, हे ४, ३५२)। २ पृथिवी-वेष्टन, घनवात आदि (ठा २, ४—पत्र ८६)। ३ वेष्टन, वेठन। ४ वर्तुल, गोलाकार (गउड, कप्पू, ठा ५, १)। ५ नदी आदि के बाँक से वेष्टित भू-भाग (सूअ २, २, ८, भग)। ६ माया, प्रपच (सूअ १, १२, २२, सम ७१)। ७ असत्य वचन, मृषा झूठ (पण्ह १, २—पत्र २६)। ८ वलयकार वृक्ष, नारि-केल, नारियल आदि (पण्ण १, उत्त ३६,९६, सुख ३६ ९६)। °आर, °रअ पु [°कार, °कारक] ककण बनानेवाला शिल्पी (दे ७,५४)।

वलय वि [वलक] मोडनेवाला, 'छगलग-गल-वलया' (पिंड ३१४)।

वलय न [दे] १ क्षेत्र, खेत। २ गृह, घर (दे ७, ८४)।

वलय देखो वल = वल्। °मयग वि [°मृतक] १ सयम से भ्रष्ट होकर जिसका मरण हुआ हो वह। २ भूख आदि से तडफता हुआ जो मरा हो वह (ओप)। °मरण न [°मरण] सयम से च्युत होनेवाले का मरण (भग २, १)।

वलयणी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ७, ४३)।

वलयवाहा } स्त्री [दे] १ दीर्घ काष्ठ, जिसपर
वलयवाहु } ध्वजा आदि बाँधा जाता है वह लम्बा काष्ठ, 'ससारियासु वलयवाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु' (णाया १,८—पत्र १३३)। २ हाथ का एक आभूषण, चूडा, कडा (दे ७, ५२, पाअ)।

वलया देखो वडवा। °णल पु [°नल] वड-वाग्नि (हे १, १७७, षड्)। °मुह न [°मुख] १ वडवानल (हे १, २०२, प्राकृ, पि २४०)। २ पु एक बडा पाताल-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६, टी—पत्र २२८, सम ७१)।

वलया स्त्री [दे] वेला, समुद्र-कूल। °मुह न [°मुख] वेला का अग्र भाग,

'ति वलागमुहम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयामुहे।
ति सत्तक्खुत्तो जालेण, सइ छिन्नोदए दहे ॥
एयारिस मम सत्त, सढ घट्टियघट्टण।
इच्छसि गलेण घेत्तु, अहो ते अहिरीयया ॥'
(पिंड ६३२, ६३३)।

वलयाइअ वि [वलयायित] जो वलय की तरह गोल हुआ हो वह (कुमा)।

वलवट्टि [दे] देखो वलवट्टि (दे ६, ९१)।

वलवा देखो वडवा, 'गोमहिसिवलवपुण्णो' (पउम २, २, दे ७, ४१, इक, पि २४०)।

[illegible] (दे ७, ६१)।

[illegible]

[illegible] (गा ४२५, [illegible])।

[illegible]

वल्ल सक [वल्ल्] चलना, फिरना (कुप्र ८४)।

वल्लुड पुं [दे] शिशु, बालक (दे ७, ३१)।

वल्ल पुं [दे वल्ल] धान्य-विशेष, निष्पाव; गुजराती में 'वाल' (सुपा १३; ६३१; सम्मत्त ११८; पव)।

वल्लई स्त्री [वल्लवी] गोपी (दे ७, ३६ टी)।

वल्लई स्त्री [दे] गौ, गैया (दे ७, ३६)।

वल्लई } स्त्री [वल्लकी] वीणा (पाअ; दे
वल्लकी } ७, ३६ टी; णाया १, १७—पत्र २२९)।

वल्लह वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (षड्)।

वल्लभ देखो वल्लह (गा ६०४)।

वल्लर न [दे वल्लर] १ वन, जंगल (दे ७, ८६; पाअ; उत्त १९, ८१)। २ क्षेत्र, खेत (दे ७, ८६; पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ अरण्य-जल (पाअ)। ४ मधुरा-युक्त जोर (गा ८०२)।

वल्लर न [दे] १ अरण्य प्रदेश। २ निर्जल देश। ३ पुं महिष, भैंसा। ४ समीर, पवन। ५ वि युवा, तरुण (दे ७, ८६)। ६ [illegible]। ७ [illegible] (गा ५३४)।

वल्लरी स्त्री [वल्लरी] वल्ली, लता (पाअ; गउड; सुपा ४२९)।

वल्लरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

वल्लव पुं [वल्लव] ग्वाल, अहीर, ग्वाला (पाअ)। स्त्री °वी (गा ८९)।

[illegible] (दे ५, २)

[illegible] (षड्)।

[illegible] (दे ४, ३८३)। [illegible]

[illegible] ४३)।

वल्लाढय न [दे] आच्छादन, ढाँकने का वस्त्र (दे ७, ४५)।

वल्लार पुं [दे] १ श्येन पक्षी। २ नकुल, न्यौला (दे ७, ८४)।

वल्लि स्त्री [वल्लि] लता, वेल (कुमा)।

वल्लिर वि [वल्लितृ] हिलनेवाला 'न विरायइ वल्लिरपल्लवा वि वल्लिव्व फलहीणा' (कुप्र ८४)।

वल्ली स्त्री [वल्ली] लता, वेल (कुमा; गि ३८७)।

वल्ली स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

वल्हीअ पुं [वाह्लीक] १ देश-विशेष (स १३; नाट)। २ वि वाह्लीक देश में उत्पन्न, वाह्लीक देश का (स १३)।

वव सक [वप्] बोना, 'जे खत्तखित्तेसु ववंति वित्तं' (सत्त ७२)। वकृ. ववंत (आत्महि ७)। कवकृ. वविज्जंत (गा ३५८)।

वव सक [वप्] देना। ववइ (वव १)। [illegible] उप्पइ (कुप्र ४१)।

ववइस सक [व्यप + दिश्] १ कहना, प्रतिपादन करना। २ व्यवहार करना। ववइसंति (पंचस ४५२; मुणि १४१)।

'मले मणिंत्रमरणमलाववो
[illegible]
[illegible]
[illegible]' (वाक्य १६२)।

ववएस पुं [व्यपदेश] १ कथन, प्रतिपादन। २ व्यवहार (दे ३, २६)। ३ बहाना, [illegible] (महा)।

ववगम पुं [व्यपगम] नाश (धर्मसं)।

ववगय वि [व्यपगत] १ दूर किया हुआ (सुपा ४०)। २ [illegible] (२, ५—पत्र १४८)। [illegible] ([illegible] ११; पीप; [illegible])।

ववट्ठिअ पुं [व्यवस्थित] [illegible] (१४, ६९)।

[illegible]

ववट्ठिअ वि [व्यवस्थित] [illegible] (१ ४४ ४२)।

ववण न [वपन] बोना (वव १, श्रु ६)।

ववण स्त्रीन [दे] कार्पास, तूला, रूई, 'पलही ववणं तूलो रूवो' (पाअ)। स्त्री. °णी (दे ६, ८२, ७, ३२)।

ववत्थभ पु [दे] बल, पराक्रम (दे ७, ४६)।

ववत्था स्त्री [व्यवस्था] १ मर्यादा, स्थिति (स १३, कुप्र ११४)। २ प्रक्रिया, रीति। ३ इतजाम, प्रबन्ध (सुपा ४१)। ४ निर्णय (स १३)। °पत्तय न [°पत्रक] दस्तावेज (स ८१०)।

ववत्थावण न [व्यवस्थापन] व्यवस्था करना, 'जीववववत्थावणादिणा' (धर्मसं ५२०)।

ववत्थावणा न [व्यवस्थापना] ऊपर देखो (धर्मसं ५२०)।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था युक्त (स ८६, ७२७, सुर ७, २०५, सण)।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित] जिसने व्यवस्था की हो वह (दसनि ४, ३५)।

ववदेस देखो ववएस (उवा, स्वप्न १३२)।

ववदेसि वि [व्यपदेशिन्] व्यपदेश करने-वाला (नाट—शकु ६६)।

ववधाण न [व्यवधान] अन्तर, दो पदार्थों के बीच का अन्तर (अभि २२२)।

ववरोव सक [व्यप + रोपय्] विनाश करना, मार डालना। ववरोवेसि, ववरोवेज्जसि, ववरोवेज्जा (उवा)। कर्म. ववरोविज्जमि (उवा)। संकृ. ववरोवित्ता (उवा)।

ववरोवण न [व्यपरोपण] विनाश, हिंसा (सण)।

ववरोविअ वि [व्यपरोपित] विनाशित, मार डाला गया, 'जीवियाओ ववरोविआ' (पडि)।

ववस सक [व्यव + सो] १ करना। २ करने की इच्छा करना। ववसइ (राय १०८)।

ववस सक [व्यव + सो] १ प्रयत्न करना, चेष्टा करना। २ निर्णय करना। ववसइ (स २०२)। वकृ ववसत, ववसमाण (सुपा २३८, स ५६२)। संकृ. ववसिऊण (सुपा ३३६)। कवकृ ववसिज्जमाण (पउम ५७, ३६)। हेकृ ववसिदु (शौ) (नाट—शकु ७१)।

ववसाय पु [व्यवसाय] १ निर्णय, निश्चय। २ अनुष्ठान (ठा ३, ३—पत्र १५१, णदि)। ३ उद्यम, प्रयत्न (से ३, १४, सुपा ३५२, स ६८३, हे ४, ३८५, ४२२, कुप्र २६)। ४ व्यापार, कार्य, काम (औप, राय)।

ववसायसभा स्त्री [व्यवसायसभा] कार्य करने का स्थान, कार्यालय (राय १०४)।

ववसिअ न [दे] बलात्कार (दे ७, ४२)।

ववसिअ, ववसिअ वि [व्यवसित] १ उद्यत, उद्यम-युक्त, 'सेणिओ नाम राया पयासुहे सुह ववसिओ' (वसु, उत्त २२, ३०, उव)। २ त्यक्त, 'अवि जीविय ववसिय न चेव गुरुपरिभवो सहिओ' (उव)। ३ निश्चयवाला। ४ पराक्रमी (ठा ४, १—पत्र १७६)। ५ न. व्यवसाय, कर्म (णाया १, १—पत्र ५०)। ६ चेष्टित (स ७५६)। ७ उद्यम, प्रयत्न (से ३, २२)।

ववहर सक [व्यव + हृ] १ व्यापार करना। २ अक वर्तना, आचरण करना। ववहरई, ववहरए (उत्त १७, १८, स १०८, विसे २२१२)। वकृ ववहरत, ववहरमाण (उत्त २१, २, ३, भग ८, ८, सुपा १५, ४४६)। हेकृ. ववहरिउं (स १०५)। कृ. ववहरणिज्ज, ववहरियव्व (उप २११ टी, वव १, सुपा ५८५)।

ववहरग वि [व्यवहारक] व्यापार करने-वाला, व्यापारी (कुप्र २२४)।

ववहरण न [व्यवहरण] व्यवहार (णाया १, ८—१३५, स ५८५, उप ५३० टी, सुपा ४६८, विसे २२१२)।

ववहरय देखो ववहरग (सुपा ५७८)।

ववहरियव्व देखो ववहर।

ववहार पु [व्यवहार] १ वर्तन, आचरण (वव १, भग ८, ८, विसे २२१२, ठा ५, २, पव १२६)। २ व्यापार, धन्धा, रोजगार (सुपा ३३४)। ३ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण (विसे २२१२, ठा ७—पत्र ३६०)। ४ मुमुक्षु की प्रवृत्ति निवृत्ति का कारण-भूत ज्ञान-विशेष (भग ८, ८—पत्र ३८३, वव १, पव १२६, द्र ४६)। ५ जैन आगम-ग्रंथ विशेष (वव १)। ६ दोष के नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित्त, 'आयारे ववहारे पन्नत्ती चेव दिट्ठिवाए य' (दसनि ३)। ७ विवाद, मामला, मुकद्दमा, 'ववहार-निरायण कुणइ' (पउम १०५, १००, स ४६०, चेइय ५६०, उप ५६७ टी)। ८ विवाद-निर्णय, फेसला, चुकादा (उप पृ २८३)। ९ व्यवस्था (सूत्र २, ५, ३)। १० काम काज (विसे २२१२, २२१४)। ११ जीवराशि-विशेष (सक्खा ६)। °व वि [°वत्] व्यवहार-युक्त (द्र ४६)। °रासिय वि [°राशिक] जीवराशि-विशेष मे स्थित (सिक्खा ६)।

ववहार पु [व्यवहार] १ पूर्व-ग्रंथ। २ जीतकल्प सूत्र। ३ कल्पसूत्र। ४ मार्ग, रास्ता। ५ आचरण। ६ ईप्सितव्य (वव १)।

ववहारि पु [व्यवहारिन्] १ ऐरवत क्षेत्र मे उत्पन्न एक जिन-देव (सम १५३)। २ वि. व्यापारी, वणिक् (मोह ६४, श्रा १४, सुपा ३३४)। ३ व्यवहार क्रिया-प्रवर्तक (वव १)।

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार-सम्बन्धी (ओघ २८१, अणु)।

ववहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त (अणु, आवम)।

ववहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे ७, ४१)।

ववॉल देखो वमाल (मण)।

वविअ वि [उप्त] बोया हुआ (उप ७२८ टी, प्रासू ६)।

वविज्जत देखो वव।

ववेअ वि [व्यपेत] व्यपगत (सूत्र २, १, ४७)।

ववेक्खा स्त्री [व्यपेक्षा] विशेष अपेक्षा, परवाह (धर्मसं ११६७)।

वव्वय पु [वल्वज] तृण-विशेष, 'मूययवक्क (? व्व) यपुप्फफल—' (पण्ह २, ३—पत्र १२३, कस २, ३०)।

वव्वर वि [वर्बर] १ पामर। २ [illegible] (कुमा)।

वव्वा° देखो वव्वय (कस २, ३०)।

वव्वाड पु [दे] अर्थ, धन (दे ७, ३६)।

[illegible] (उप्प १११, ३ [illegible])।

[illegible] देखो वत्ति=वर्ति (प्राकृ १०० [illegible])।

[illegible] (प्राकृ १०१)।

वस [illegible] [वस] १ [illegible] रहना। [illegible] (कप्प [illegible])। [illegible] १६० [illegible] वसंत, वसमाण ([illegible] १६०, कुप्र [illegible])। [illegible] वसित्ताण ([illegible] ४८०; [illegible] पि ५७८, [illegible])। [illegible] (ठा ३, [illegible] कुप्र [illegible], [illegible] सुपा ४३८)।

वस [illegible] [वश] १ अधीन, [illegible] (प्रासू [illegible])। २ [illegible] (ठा [illegible])। ३ [illegible] (गाया १, १३, [illegible])। [illegible] [°ग] [illegible] (पउम ३०, ७० [illegible] कुप्र [illegible])। [illegible] [°ट्ट] [illegible] (प्राप्र [illegible])। [illegible] [illegible] (ठा २ [illegible] ६१ [illegible])। [illegible] [°त्त] [illegible] [illegible] [°त्त] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

३८, २१)। २ नर नाम (कुप्र १०, ७६)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)। °तिलअ पु [°तिलक] १ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८)। २ न एक उद्यान, जहाँ भगवान् [illegible] ने दीक्षा ली थी (पउम ३, १३४)। °तिलआ स्त्री [°तिलका] छन्द-विशेष (पिंग)।

वसवट्ट [illegible] [वशवर्त] [illegible] के अधीन रहनेवाला (धर्मवि ६)।

वसण न [वसन] १ वस्त्र, कपड़ा (पाअ, सुपा २४४, [illegible] ४८२, धर्मवि ६)। २ निवास, रहना (कुप्र ४८)।

वसण पु [वृषण] अण्ड-कोष, पोता (णाया [illegible], [illegible] पण्ह १, [illegible], विपा १, २, प्रास, कुप्र ३६५)।

वसण न [व्यसन] १ कष्ट, विपत्ति, दुःख (पाअ, कुप्र ३, १६२, महा, प्रासू २३)। २ द्यूतादि का अभ्यास (णाया १ २)। ३ [illegible] मद्य-पान आदि खराब आदत (कुप्र [illegible])।

वसणि [illegible] [व्यसनिन्] खराब आदतवाला (सुपा ४८८)।

वसभ पु [वृषभ] १ ज्योतिष प्रसिद्ध राशि-विशेष, वृष राशि (पउम १७, १०८)। २ [illegible] (विसे ५४१)। ३ [illegible] (पउम २०, ४६७)। ४ [illegible] [illegible] [°द्धय] [illegible] (पउम २, १०, २४)। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

वसनुद्ध पुं [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६)।

वसम देखो वसिम (महा)।

वसमाण देखो वस = वस्।

वसल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वसह पुं [वृषभ] वैयावृत्त्य करनेवाला मुनि (ओघ १५०)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ६, २०)। ३ बैल, साँड़, साँढ़ (पाअ)। ४ कान का छिद्र। ५ औषध-विशेष (प्राप्र)। °इंध पु [°चिह्न] शंकर, महादेव (गउड)। °केउ पु [°केतु] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। °वाहण पु [°वाहन] १ ईशान देवलोक का इन्द्र (ठा २—पत्र १५७)। २ महादेव शंकर (उत्ता ६०)। °वीही स्त्री [°वीथी] शुक्र ग्रह का एक क्षेत्रभाग (ठा ६—पत्र ४६८)।

वसहि देखो वसइ (हे १, २१४, कुमा, गा ५८२, पि ३८७)।

वसा स्त्री [वसा] १ शरीरस्थ धातु-विशेष, चरबी, [illegible] (पण्ह १, १—पत्र १४, णाया १, १२)। २ मेद, चरबी (आचा)।

°वसारअ वि [प्रसारक] फैलानेवाला (से ६, ४०)।

°वसारअ देखो पसारय (से ६, ४०)।

°वसाहा स्त्री [प्रसाधा] अलंकार, आभूषण (से १, १६)।

[illegible] देखो वसइ, '[illegible]' (कुप्र १, ४२)।

वसिअ वि [उषित] १ रहा हुआ, [illegible] (पाअ, [illegible] २६५, सुपा ४२१, [illegible] ११३, [illegible] ७)। २ बासी, पर्युषित, '[illegible]' (सम्मत्त ६)।

वसिट्ठ पु [वसिष्ठ] [illegible] (ठा [illegible] ४२६, [illegible]) [illegible] (पउम—[illegible] ८२)।

वसिट्ठ पु [वशिष्ठ] [illegible] (उत्त)।

वसिम न [वसिम] [illegible] (कुप्र [illegible])।

[illegible] [[illegible]] [illegible] [illegible] (कुप्र [illegible])।

वसियव्व देखो वस = वस् ।

वसिर वि [वसितृ] वास करनेवाला, रहनेवाला (सुपा ६८७, सम्मत्त २१७)।

वसीकय वि [वशीकृत] वश में किया हुआ, अधीन किया हुआ (सुपा ५२०, महा)।

वसीकरण न [वशीकरण] वश में करने के लिए किया जाता मन्त्र आदि का प्रयोग (गाया १, १४, प्रासू १८, महा)।

वसीयरणी स्त्री [वशीकरणी] वशीकरण-विद्या (सुर १३, ८१)।

वसीहूअ वि [वशीभूत] जो अधीन हुआ हो वह (उप ६८६ टी)।

वसु न [वसु] १ धन, द्रव्य (आचा, सूअ १, १३, १८, कुमा)। २ संयम, चारित्र (आचा, सूअ १, १३, १८)। ३ पु जिनदेव। ४ वीतराग, राग-रहित। ५ संयत, संयमी, साधु (आचा १, ६, २, १)। ६ आठ की संख्या (विवे १४८, पिंग)। ७ धनिष्ठा नक्षत्र का अधिपति देव (ठा २, ३, सुज्ज १०, १२)। ८ एक राजा का नाम (पउम ११, २१, भत्त १०१)। ९ एक चतुर्दश-पूर्वी जैन महर्षि (विसे २३३४)। १० एक छन्द का नाम (पिंग)। ११ स्त्री. ईशानेन्द्र की एक पटरानी (इक)। १२ न लोकान्तिक देवों का एक विमान (इक)। १३ सुवर्ण, सोना (कप्प ६८, भग १५, उत्त १२, ३६)। °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक, गाया २—पत्र २५३)। °देव पु [°देव] नववें वासुदेव श्रीकृष्ण और बलदेव का पिता (ठा ६, सम १५२, अंत, उव)। °नंदय पु [°नन्दक] एक तरह की उत्तम तलवार (सुर २, २२, भवि)। °पुज्ज पुं [°पूज्य] एक राजा, भगवान् वासुपूज्य का पिता (सम १५१)। °बल पु [°बल] इक्ष्वाकु-वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, ८)। °भाग पु [°भाग] एक व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °भागा स्त्री [°भागा] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (इक)। °भूइ पु [°भूति] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १७६, आवम)। °म, °मंत वि [°मत्] १ द्रव्यवान्, धनी, श्रीमंत (सूअ १, १३, ८, १, १५, ११, आचा)। २ संयमी, साधु (सूअ १, १३, ८, आचा)। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] १ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६, गाया २, इक)। °सद्द पु [°शब्द] छन्द-विशेष (पिंग)। °हारा स्त्री [°धारा] १ आकाश से देव-कृत सुवर्ण-वृष्टि (भग १५, कप्प ६८, उत्त १२, ३६, विपा १, १०)। २ एक श्रेष्ठिनी (उप ७२८ टी)।

वसुआ } अक [उद् + वा] शुष्क होना,
वसुआअ } सूखना। वसुआइ, वसुआअइ (हे ४, ११, ३, १४५, प्राकृ ७४)। वकृ. वसुअंत (कुमा)। प्रयो, कवकृ वसुआइज्जमाण (गउड)।

वसुआअ वि [उद्वात] शुष्क (पाअ, से १, २०, गउड, प्राकृ ७७)।

वसुआइअ वि [उद्वापित] शुष्क किया गया, सुखाया गया (से ६, २५)।

वसुआइज्जमाण देखो वसुआ।

वसुंधर पुं [वसुन्धर] एक जैन मुनि (पउम २०, १६१)।

वसुंधरा स्त्री [वसुन्धरा] १ पृथिवी, धरती (पाअ, धर्मवि ८१, प्रासू १४२)। २ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६, गाया २, इक)। ३ चमरेन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। ४ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। ५ नववें चक्रवर्त्ती राजा की पटरानी (सम १५२)। ६ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ७ एक श्रेष्ठि-पत्नी (उप ७२८ टी)। °वइ पु [°पति] राजा, भूपति (सुपा २८८)।

वसुधा (शौ) देखो वसुहा (स्वप्न ६८)।

वसुपुज्ज देखो वासुपुज्ज, 'वसुपुज्जमल्ली नेमी पासो वीरो कुमारपव्वइया' (विचार ११५, पंचा १६, १३, १७), 'वसुपुज्जजिणो जगुत्तमो जाओ' (पव ३५)।

वसुमइ° } स्त्री [वसुमती] १ पृथिवी, धरती
वसुमई } (उप ७६८ टी, पाअ, सुपा २६०, ४७१)। २ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र २०४, गाया २—पत्र २५२, इक)। °णाह, °नाह पु [°नाथ] राजा (उप ७६८ टी, पउम ७४, २६)। °भवण न [°भवन] भूमि-गृह, भोयरा (सुख ४, ६)। °वइ पुं [°पति] राजा (पउम ६६, २)।

वसुल पुस्त्री [दे वृषल] १ निष्ठुरता-बोधक आमन्त्रण-शब्द, 'होलि त्ति वा गोलि त्ति वा वसुलि त्ति वा' (आचा २, ४, २, ३), 'तहेव होले गोलि त्ति साणे वा वसुलि त्ति य' (दस ७, १४)। २ गौरव और कुत्सा बोधक आमन्त्रण शब्द, 'होल वसुल गोल णाह दइय पिय रमण' (गाया १, ६—पत्र १६५)। स्त्री °ली (दस ७, १६, आचा २, ४, २, ३)।

वसुहा स्त्री [वसुधा] पृथिवी, धरती (पाअ, कुमा)। °हिव पु [°धिप] राजा (सुपा ८७)।

वसू स्त्री [वसू] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक, गाया २—पत्र २५३)।

वसेरी स्त्री [दे] गवेषणा, खोज (सुपा ४७३)।

वस्स (शौ) देखो वरिस। वस्सदि (नाट—मृच्छ १५५)।

वस्स वि [वश्य] अधीन, आयत्त (विसे ८७५)।

वस्सोक न [दे] एक प्रकार की क्रीडा, 'अन्नया य वस्सोक्केण रमति राय (?या) णं राणियाउ पोत्तेण वाहिंति' (श्रावक ६३ टी)।

वह सक [वह्] १ पहुँचाना। २ धारण करना। ३ ले जाना, ढोना। ४ अक. चलना, 'परिमलबहलो वहइ पवणो' (कुमा, उव, महा), 'गंगा वहइ पाडलं' (सुख २, ४५), वहसि (हे २, १६४)। कर्म वहिज्जइ, वब्भइ, वुब्भइ (कुमा, धात्वा १५२, पि ५४१, हे ४, २४५) वकृ वहंत, वहमाण (महा, सुर ३, ११, औप)। कवकृ वुज्झमाण (उत्त २३, ६५, ६८)। हेकृ. वहेउं, वहित्तए, वोढुं (धात्वा १५२, कस, गा १५)। कृ. वाहअव्व, वोढव्व (धात्वा १५२, प्रवि ३)।

[illegible]

२०, २ कुमा १८२)। ४ वि वहन करने-वाला (दे ३ ६, गो ३)।

वहग (शौ) देखो पवग = प्रहृत (प्राकृ ९७)।

वहण (मा) देखो वमण = वमन (नाट)।

[illegible] स्त्री [वहना] निवहि (नाया १ [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] एक तरह का [illegible] [illegible] (दस २८)।

[illegible] देखो वहग = [illegible] (कुमा २, [illegible], [illegible] ८०, आवर २०८, नाट)।

[illegible] देखो वहलीव (दक)।

वहा देखो वह = [illegible]।

[illegible] [आहन्] वहन करना। कर्म [illegible] (आवर २४८ टी)।

[illegible] वि [अंचित] सरकाया हुआ (ना [illegible])।

[illegible] देखो पहाविअ (दे ६, १)।

वहिअ वि [व्यथित] पीडित (पउम ५, [illegible])।

वहिअ वि [ऊढ] [illegible] किया हुआ (पाअ [illegible])।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible] (ओघ १५०, पउम ५, १९५, [illegible] २३, २४)।

[illegible] वि [दे] [illegible] (उप)।

[illegible]

[illegible] [[illegible] + [illegible]] १ [illegible] (३११)।

[illegible] [[illegible]] १ [illegible] [illegible]।

[illegible]

वहियाली देखो वाहियाली, 'पुरउज्जाण-तडिट्ठियवहियालि नेइ त निव' (धर्मवि ४)।

वहिलग पुं [दे वहिल्लक] ऊँट, बैल आदि पशु (राज)।

वहिल्ल वि [दे] शीघ्र, शीघ्रता-युक्त, गुजराती में 'वहेलु' (हे ४, ४२२ कुमा, वज्जा १२८)।

वहु पुंस्त्री [दे] चिञ्चिडा, गन्ध-द्रव्य विशेष (दे ७, ३१)।

वहु° देखो वहू (हे १, ४, पड्, प्राप्र)।

वहुधारिणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे ७, ५०)।

वहुणी स्त्री [दे] ज्येष्ठ-भार्या, पति के बड़े भाई की बहू (दे ७, ४१)।

वहुमास पुं [दे] रमण-विशेष, क्रीडा विशेष, जिसमें सोता हुआ पति नवोढा के घर से बाहर नहीं निकलता है (दे ७, ४६)।

वहुरा स्त्री [दे] शिवा, सियारिन (दे ७, ४०)।

वहुलिआ (अप) स्त्री [वधूटिका] छोटी उम्र वाली स्त्री, बहुरिया (पिंग)।

वहुव्वा स्त्री [दे] छोटी सास (दे ७, ४०)।

वहुहाडिणी स्त्री [दे] एक स्त्री के रहते हुए ब्याही जाती दूसरी स्त्री (दे ७, ५०, पड्)।

वहू स्त्री [वधू] भार्या, नारी (राज [illegible], पाअ, हे १, ४)।

वहोल पुं [दे] [illegible] [illegible] (दे ७, ३६)।

वहोलिया स्त्री [दे] [illegible] [illegible] (२१४)।

वा सक [वा] गति करना [illegible] (हे ४, २४० [illegible] ४४१ कुमा)।

वा सक [[illegible]] सूखना [illegible] (हे ६, [illegible], ४, १८)।

वा सक [[illegible]] [illegible] [illegible] (अभि ?)।

वा अ [वा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विकल्प, अथवा (आचा कुमा) २ [illegible] (उत्त ८, १२ [illegible]) [illegible] [illegible] (पउम [illegible]) ४ [illegible] (पिंग १६६४) ५ [illegible]

उवमा, 'कप्पद्दुम तरोरोव कामकवड्डेण कामधेणु वा' (हि १७, सुम १, ४, २, १५, सुर २, ६, वव १)। ७ पाद-पूर्ति (उत्त २०, २८)।

वाअड पु [दे] शुक, तोता (षड्)।

वाअड देखो वावड = व्यापृत, 'रइवावडा स्पत पिअवि पुत्त सवइ मामा' (गा ८०२)।

वाइ वि [वादिन्] १ बोलनेवाला, वक्ता (आचा, भग, उव, ठा ४, ४)। २ वाद-कर्ता, शास्त्रार्थ में पूर्वपक्ष का प्रतिपादन करनेवाला (सम १०२, विसे १७२४, कुप्र ४४०, चेइय १२८, सम्मत्त १४१, श्रा ६)। ३ दार्शनिक, तीर्थिक, इतर धर्म का अनुयायी (ठा ४, ४)।

वाइ वि [वादिन्] बाजा, अभिव्यायक, कहनेवाला (विसे ८७४)।

वाइ देखो वाजि (राज)।

वाइअ वि [वाचिक] वचन संबन्धी (औप, गा २४ पडि)।

वाइअ वि [वाचित] १ पाठित, पढ़ाया हुआ (उत्त २७, १४, विसे २३५८)। २ पढ़ा हुआ, 'नाममिम वाइए तम्मि' (सुपा २७०), 'अलाहि किं वाइएण लेहेण' (हि २, १८६)।

वाइअ वि [वातिक] १ वात से उत्पन्न, वायु-जन्य (राग आदि) (भग, णाया १,१—पत्र ५०, तंदु १६)। २ वायु से फूला हुआ, वात-रोगवाला (विसे २५७६ टी, पत्र ६१)। ३ दर्पवाला, 'मयरकमराउलवाइएण नीमे पलीविय नियए' (उप), 'चिंतइ सूरो एवं निरमतो वाइअव्व दुट्ठमणो' (धमवि ७६)। ४ पु नपुंसक का एक भेद (पुप्फ १२७, धर्म २)।

वाइअ वि [वादित] १ बजाया हुआ (गा ५५७, कुमा २, ८, ६६, ७०)। २ वन्दित, अभिवादित, 'चलणेसु निवडिऊण वाइआ वअणा' (स २६०)।

वाइअ न [वाद्य] १ बाजा, वादित्र (कप्प)। २ बाजा बजाने की कला (सम ८३, औप)।

वाइअ वि [वात] बहा हुआ, चला हुआ, 'मुचकुंदकुंदयमदियरयगब्भिणवाइयसमीरो' (सुर ३, ७६)।

वाइंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (उप ५९७ टी, दे ७, २६)।

वाइंगणी, वाइंगिणी } स्त्री [दे] बैंगन का गाछ, वृन्ताकी (राज पण्ण १७—पत्र ५२७)।

वाइगा [दे] देखो वाइया (उप १०३१ टी)।

वाइज्जंत देखो वाय = वाचय्।

वाइज्जंत देखो वाय = वादय्।

वाइत्त न [वादित्र] वाद्य, बाजा (कुप्र ११०, भवि)।

वाइद्ध वि [व्याविद्ध] विपर्यय से उपन्यस्त, उलट-पुलट रखा हुआ (विसे ८५३)।

वाइद्ध वि [व्यादिग्ध] १ उपदिग्ध, उपलिप्त। २ वक्र, टेढ़ा (भग १६, ४—पत्र ७०४)।

वाइम देखो वा = व्ये।

वाइयव्व देखो वाय = वादय्।

वाईकरण देखो वाजीकरण (राज)।

वाउ पुं [वायु] १ पवन, वात (कुमा)। २ वायु शरीरवाला जीव (अणु, जी २, द ४, ३)। ३ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ४ सौधर्मेन्द्र के अश्व सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ नक्षत्र-देव विशेष, स्वाति-नक्षत्र का अधिपति देवता (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२ टी)। °आय पु [°काय] १ प्रचण्ड पवन (ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ वायु शरीरवाला जीव (भग)। °काइय पुं [°कायिक] वायु शरीरवाला जीव (ठा ३, १—पत्र १२३, पि ३५५)। °काय देखो °आय (जी ७, पि ३५५)। °कुमार पुं [°कुमार] १ एक देव-जाति, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (भग)। २ हनूमान का पिता (पउम १६, २)। °कलिया स्त्री [°उत्कलिका] वायु-विशेष, नीचे बहनेवाला वायु (पण्ण १—पत्र २६)। °क्काइय देखो °काइय (भग)। °क्काय देखो °आय (राज)। °त्तरवडिंसग पुन [°उत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)। °पवेस पु [°प्रवेश] गवाक्ष, झरोखा, वातायन (ओघभा ५८)। °प्पइट्ठाण वि [°प्रतिष्ठान] वायु के आधार में रहनेवाला (भग)। °भूइ पु [°भूति] भगवान् महावीर का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)।

वाउ पु [दे] इक्षु, ऊख (दे ७, ५३)।

°वाउड वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (भग २, १, पव ६१)। २ न. कपड़ा, वस्त्र (ठा ५, ३—पत्र ३३६)।

वाउत्त पु [दे] १ विट। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वाउप्पइया स्त्री [दे वातोत्पतिका] भुज-परिसर्प की एक जाति, हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, 'णउलमरडजाहगमुगुस-साडहिलवाउप्पि (प्पइ) यघोरोलियसिरीसिवगणे य' (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वाउब्भाम पु [वातोद्भ्राम] अनवस्थित पवन, 'वाउब्भा (ब्भा) मे वाउक्कलिया' (पण्ण १—पत्र २६)।

वाउय वि [व्यापृत] किसी कार्य में लगा हुआ (णाया १, ८—पत्र १४६, ओप)।

वाउरा स्त्री [वागुरा] मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पउम ३३, ६७, हका ३१, गा ६५७)। देखो वग्गुरा।

वाउरिय वि [वागुरिक] जाल में फँसाने का काम करनेवाला, व्याध (पण्ह १, १, विपा १, ५—पत्र ६४)।

वाउल वि [व्याकुल] १ घबड़ाया हुआ (उव, उप पृ २२०, कप्पू ३४, हे २, ६६)। २ पु. क्षोभ (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (उप २२० टी)।

वाउल वि [वातूल] १ वात-रोगी, उन्मत्त। २ पु वातसमूह (हे १, १२१, प्राकृ ३०)।

वाउलग्ग न [दे] सेवा, भक्ति, 'निच्चं चिय वाउलग्गं कुणंति' (राज)।

वाउल्लण न [व्यापरण] व्यावृत क्रिया, व्यापार (वव १)।

वाउलणा स्त्री [व्याकुलना] व्याकुल करना (वव ४)।

वाउलिअ वि [व्याकुलित] १ व्याकुल बना हुआ (सण)। २ विलोलित, क्षोभ-प्राप्त (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

वाउलिआ स्त्री [दे] छोटी खाई (गा ६२६)।

वाउल्ल देखो वाउल = व्याकुल (हे २, ६६, षड्)।

[illegible]

७०)। हू वागरिउ, वागरित्तए (कुप्र २३८; उवा)।

वागरण न [व्याकरण] १ कथन, प्रतिपादन, [illegible] २ निर्णय, उत्तर (प्रौप; उवा; रण)। ३ शब्दशास्त्र (पउवि ३८; मोह २)।

वागरणि वि [व्याकरणिन्] प्रतिपादन करनेवाला (सम्म ७)।

वागरणी स्त्री [व्याकरणी] भाषा का एक भेद, प्रश्न के उत्तर की भाषा, उत्तर रूप वचन (ठा ४, १—पत्र १८३)।

वागरिय वि [व्याकृत] उक्त, कथित (उवा; [illegible] टी; पत्र ७३ टी)। देखो वायड = व्याकृत।

वागल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (णाया १, १६—पत्र २०३)।

वागल वि [वाल्कल] वृक्ष की छाल—छाल [illegible] (नव ११, ६—पत्र ५१६)।

वागली स्त्री [दे] वल्ली विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

वागिल्ल वि [वाग्मिन्] बहु-भाषी, भाषाल (रंभ ७)।

वागुर पु [वागुर] [illegible], जाल, फन्दा [illegible] (नाट ७६)।

वागुरि वि [वागुरिन्, °रिक] व्याध

वागुरिअ [illegible]

[illegible] (पण्ह १, ३—पत्र २६; सुख २, २ [illegible] ८—पत्र ८३)।

[illegible]

वाघुण्णिय वि [व्याघूर्णित] डोलायमान, डोलता (णाया १, १—पत्र ३७)।

वाचेल पु [दे] एक अग्नि-रस (तो २६)।

वाच देखो वाय = वाचय्। कवकृ वाचीअमाण (नाट—मालवि ५१)। संकृ वाचिऊण (हम्मीर १७)।

वाचग देखो वायग = वाचक (द्रव्य ४६)।

वाचिय देखो वाइअ = वाचित (न ५२१)।

वाज देखो वाय = व्याज (कुप्र २०२)।

वाजि पु [वाजिन्] अश्व, घोड़ा (विपा १, ७)।

वाजीकरण न [वाजीकरण] १ [illegible] औषध विशेष। २ [illegible] आयुर्वेद का एक अंग (विपा १, ७—पत्र ७५)।

वाड पु [वाट] १ वाड़, कंटक आदि से की जाती गृहादि की परिधि (उत्त २२, १४; [illegible] १८५)। २ [illegible] (उवा; [illegible]), 'अह सो मागण [illegible]' (सिरि ४७६)। ३ वृत्ति आदि से परिवेष्टित [illegible] (उत्त २०, १८), 'अह [illegible]' ([illegible] ७६)।

वाडंतरा स्त्री [दे] कुटीर, [illegible] (दे ७, ५८)।

वाडग देखो वाड (पिंड ३३४; विपा १, ८—पत्र ८५; उप पृ ३८६)।

°वाडग देखो पाडग, [illegible] (कुप्र [illegible])।

वाडग पु [वाटक] [illegible]

[illegible]

[illegible]

वाडिम पु [दे] पशु-विशेष, गएडक, गेंडा (दे ७, ५७)।

वाडिल्ल पु [दे] कृमि, कीट (दे ७, ५६)।

वाडी स्त्री [दे] वृति, वाड, 'घरवारे कारिया कंटएहिं वाडी' (कुप्र २६, दे ७, ४३, ५८, पड्)।

वाडी स्त्री [वाटी] बगीचा, उद्यान (धर्मसं ४१)।

वाडि } पु [दे] वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र
वाडिअ } (दे ७, ५३)।

वाण सक [वि + नम्] विशेष नमना—नत होना। वाणइ (?) (धात्वा १५२)।

वाण वि [वान] वन में उत्पन्न, वन-सबन्धी (औप, मम १०३)। °पत्थ, °प्पत्थ पु [°प्रस्थ] वन मे रहनेवाला तापस, तृतीय आश्रम मे स्थित पुरुष (औप, उत्त ३७७)। °मंत, °मंतर °वंतर पुस्त्री [°व्यन्तर] देवो की एक जाति (भग, ठा २, २, सुर १, १३७, औप, जी २४, महा, पि २५१)। स्त्री °री (पएण १७—पत्र ४९९, जीव २)। °वासिआ स्त्री [°वासिका] छन्द-विशेष (अजि ३३)।

°वाण देखो पाण = पान। °वत्त न [°पात्र] पीने का प्याला (से १. १८)।

वाणय पु [दे] वलयकार, ककरण वनानेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वाणर पुन [वानर] १ बन्दर, कपि, मर्कट (पएह १, १, पाअ)। २ विद्याधर मनुष्यो का एक वश। ३ वानर-वश मे उत्पन्न मनुष्य (पउम ६ १)। °उरी स्त्री [°पुरी] किष्किन्धा नामक एक भारतीय प्राचीन नगरी (से १४, ५०)। °कउ पु [°क्रतु] वानर-वश का कोई भी राजा (पउम ८, २३५)। °दीव पु [°द्वीप] एक द्वीप (पउम ६, ३४)। °द्धय पु [°ध्वज] हनुमान (पउम ५३, ४३)। °वइ पु [°पति] सुग्रीव, रामचन्द्र का एक सेनापति (से २, ४१, ३, ५२)। देखो वानर।

वाणरिंद पु [वानरेन्द्र] वानर-वशीय पुरुषो का राजा वाली (पउम ९, ४०)।

वाणवाल पु [दे] इन्द्र, पुरन्दर (दे ७, ६०)।

वाणहा देखो पाणहा, वाहणा = उपानह् (पि १४१)।

वाणा देखो वायणा = वाचना। °यरिअ पु [°चार्य] अध्यापन करनेवाला साधु, शिक्षक, 'एसो च्चिय ता कीरउ वाणायरिओ, तओ गुरू भणइ' (उप ७४२ टी)।

वाणारसी स्त्री [वाराणसी] भारतवर्ष की एक प्राचीन नगरी, जो आज कल 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है (हे २, ११६, णाया १, ४, उवा, इक, उत्त, धर्मवि ५, पि ३५४)।

वाणि देखो वणि = वणिज् (भवि)। °उत्त, °पुत्त पु [°पुत्र] वश्य-कुमार, वनिया का लडका (कुप्र ३६, ८८, २२१, ४०४, सिरि ३८४, धर्मवि १०४)।

वाणि स्त्री [वाणि] देखो वाणी (सनि ४)।

वाणिअ पु [वाणिज] १ वनिया, व्यापारी, वैश्य (श्रा १२, सुर १, २४८, १३, २६, नाट—मृच्छ ५५, वसु, सिरि ४०)। २ एक गाँव का नाम (उवा, अत, विपा १, २)।

वाणिअ (अप) देखो वाणिज्ज (सरा)।

°वाणिअ देखो पाणिअ = पानीय (गा ६८२, सिरि ४०, सुपा २२९)।

वाणिअय पु [वाणिजक] वनिया, वैश्य, व्यापारी (पाअ, काप्र ८६३, गा ६५१, उव, सुपा २२६, २७५, प्रासू १८१)।

वाणिज्ज न [वाणिज्य] १ व्यापार, वैपार (सुपा ३४३, पडि)। २ एक जैन मुनि कुल का नाम (कप्प)।

वाणिज्जा स्त्री [वणिज्या] व्यापार, 'अहिच्छत्त नगर वाणिज्जाए गमित्तए' (णाया १, १५)।

वाणिज्जिय वि [वाणिजिक] वाणिज्य-कर्ता, व्यापारी (भवि)।

वाणी स्त्री [वाणी] १ वचन, वाक्य (पाअ)। २ वाग्देवता, सरस्वती देवी (कुमा, सति ४)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

°वाणीअ देखो पाणीअ (काप्र ९२५)।

वाणीर पु [दे] जम्बू वृक्ष, जामुन का पेड (दे ७, ५६)।

वाणीर पु [वानीर] वेतस-वृक्ष, वेत का पेड (पाअ, गा ५९९)।

वाणुजुअ पु [दे] वणिक्, वैश्य, 'एसो हला नवल्लो दीसइ वाणुजुओ कोवि' (उप ७२८ टी)।

वात देखो वाय = वात (ठा २, ४—पत्र ८६)।

वातिक } देखो वाइअ = वातिक (पएह १,
वातिय } ३—पत्र ४०, ओघ ७२६)।

वाद देखो वाय = वाद (राज)।

वादि देखो वाइ = वादिन् (उवा)।

वानर देखो वाणर (विपा १, २—पत्र ३६, विसे ८६३, सुपा ६१८), 'पुव्वभववानराणि व ताइ विलसति सिच्छाए' (धर्मवि १३१)।

वापफ देखो वावफ। वापफइ (पड्)।

वापिद (शौ) देखो वावड = व्यापृत (नाट—वेणी ६७)।

वाबाहा स्त्री [व्याबाधा] विशेष पीडा (णाया १, ४ चेइय ३५५)।

वाम सक [वमय्] वमन कराना, कै कराना। वामेइ वामेज्ज (भग, पिंड ६४६)। सक्ट वामेत्ता (भग, उवा)।

वाम वि [दे] १ मृत (दे ७, ४७)। २ आक्रान्त (पड्)।

वाम वि [वाम] १ सव्य, वाया (ठा ४, २—पत्र २१६, कुमा, सुर ४, ५, गउड)। २ प्रतिकूल, अननुकूल (पाअ, पएह १, २—पत्र २८, गउड ८८८, ९६४, कुमा)। ३ सुन्दर मनोहर, 'वामलोअणा' (पाअ)। ४ न. सव्य पक्ष, 'वामत्थो' (पउम ५५, ३१)। ५ वाया शरीर (गा ३०३)। °लोअणा स्त्री [°लोचना] सुदर नेत्रवाली स्त्री, रमणी (पाअ)। °लोकवादि, °लोगवादि पु [°लोकवादिन्] दार्शनिक-विशेष, जगत् को असद् माननेवाले मत का प्रतिपादक दार्शनिक (पएह १ २—पत्र २८)। °वट्ट वि [°वर्त] प्रतिकूल आचरण करनेवाला (बृह १)। °वत्त वि [°वर्त] वही अर्थ (ठा ४, २—पत्र २१६)।

वाम पु [व्याम] परिमाण-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनो हाथो के बीच का अन्तराल (पव २१२, औप)।

वामण पु न [वामन] १ सस्थान-विशेष, शरीर का एक तरह का आकार, जिसमे

वाय पु [व्याज] १ कपट, माया। २ बहाना, छल। ३ विशिष्ट गति (षा २३)।

वाय देखो वाग = वल्क (विपा १, ६—पत्र ६६)।

वाय पु [व्रात] समूह, राशी (षा २३)।

वाय पु [व्यात] विशिष्ट गमन (षा २३)।

वाय पुं [वाप] १ वपन, बोना। २ खेत, क्षेत (षा २३)।

वाय पु [वाय] १ गमन, गति। २ सूँघना। ३ जानना, ज्ञान। ४ इच्छा। ५ खाना, भक्षण। ६ परिणयन, विवाह (षा २३)।

वाय वि [व्याद] विशेष ग्रहण करनेवाला (षा २३)।

वाय वि [वाच्] वक्ता, बोलनेवाला (षा २३)।

वाय पुं [वात] १ पवन, वायु (जग; णाया १, ११; जी ७; कुमा)। २ वातार्त (उत ५४ टि)। ३ पुं. एक देवविमान (सम १०)। °कंत पुन [°कान्त] एक देवविमान (सम १०)। °करग न [°कर्मन्] अपान वायु का सरना, पादना, पाद, पर्दन (श्राव ६२२ टी)। °कूड पुन [°कूट] एक देवविमान (सम १०)। °रह पु [°रथ] पवन। ... °णिसग्ग पु [°निसर्ग] अपान वायु का सरना, पर्दन (पडि)। °पडिलोम ... °प्पम पु [°प्रभ] एक देवविमान (सम १०)। ...

वाय सक [वाचय्] १ पढ़ना। २ पढ़ाना। वाएइ वाएमि (कुप्र १६६) ... (कप्पूर), 'तुम्ह पाए...' (संबोध २४)। वाएत (कुमा २२३)। वाइज्जंत (कुप्र १६६)। वायणिज्ज (ठा ...)।

वाय सक [वा] बहना, गति करना, चलना। वायंति (गा ४, २)। वायंत (पिंड ... कुमा ४४०; दस ४, १, ८)।

वाय अक [म्लै] सूखना। वायइ (सुपा ... प्राप्र)। वायंत (गउड ११६४)।

वाय सक [वादय्] बजाना। वायंत, वायमाण (सुपा २६३; ४३२)। वाइउंव (स ३१८)।

वाय वि [वान] शुष्क, सूखा, म्लान (गउड, ... ४०, पाअ, प्राप्र कुमा)।

वाय पु [वाद] १ ... २ ... (... ३, ५३)।

वाय पु [व्याघ] ... (षा २३, नदि)।

वाय पि [व्याल] ... (षा २३)।

वाय सक [व्याहृ] ... (षा २३)।

वाय पु [वात] ... (षा २३)।

वाय पु [व्याप] ... (षा २३)।

वाय पु [वाद] ...

वाय पु [व्यात] १ ... २ ...

वाय [व्याघ] ... (षा २३)।

'वल्लहवाएण अलं मम' (गा १२३)। ४ बजाना, 'मद्दलवायचउप्फललोयं' (सिरि १५७)। ५ स्थैर्य, स्थिरता (श्रा २३)। °त्थ पु [°ार्थ] तत्त्व-चर्चा, तेहि समं कुणइ वायत्थं (पउम ४१, ६०)। °त्थि वि [°ार्थिन्] शास्त्रार्थ की चाहवाला (पउम १०५, २६)।

°वाय पु [पाक] १ रसोई। २ बालक। ३ दैत्य, दानव (श्रा २३)। देखो पाग।

°वाय पु [°पात] १ पतन (स ६५७, कुमा)। २ गमन। ३ उत्पतन, कूदन (से १, ५५)। ४ पक्षी। ५ न पक्षि-समूह (श्रा २३)।

°वाय वि [पातृ] १ रक्षा करनेवाला। २ पीनेवाला। ३ सूखनेवाला (श्रा २३)।

°वाय देखो °वाय (श्रा २३)।

°वाय पु [°पाद] १ पर्यन्त। २ पर्वत। ३ पूजा। ४ मूल। ५ किरण। ६ पेर। ७ चौथा भाग (श्रा २३)। देखो पाय = पाद।

°वाय देखो पाव = पाप (श्रा २३)।

°वाय पु [पाय] १ रक्षा, रक्षण। २ वि. पीनेवाला (श्रा २३)।

°वाय देखो अवाय = अपाय, 'बहुवायम्मि वि देहे विसुज्झमाणस्स वर मरणं' (उव)।

वायउत्त पु [दे] १ विट, भँडुआ। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वायंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (श्रा २०, संबोध ४४, पव ४)।

वायंतिय वि [वागन्तिक] वचन-मात्र मे नियमित (राज)।

वायग पु [वाचक] १ अभिधायक, अभिधा-वृत्ति से अर्थ का प्रकाशक शब्द (सम्मत्त १४३)। २ उपाध्याय, सूत्र-पाठक मुनि (गण ५, संबोध २५, सार्ध १४७)। ३ पूर्व-ग्रन्थो का जानकार मुनि (पण्ण १—पत्र ४, सम्मत्त १४१, पचा ६, ४५)। ४ एक प्राचीन जैन महर्षि और ग्रन्थकार, तत्त्वार्थ सूत्र का कर्ता श्री उमास्वातिजी (पचा ६, ४५)। ५ वि. कथक, कहनेवाला। ६ पढानेवाला (गण ५)।

वायग वि [वादक] बजानेवाला (कुमा ६, महा)।

वायग पु [वायक] तन्तुवाय, जुलाहा (दे ६, ५६)।

वायगवस पु [वाचकवंश] एक जैन मुनि-वंश (णंदि ५०)।

वायड पु [दे] एक श्रेष्ठि-वंश (कुप्र १४३)।

वायड वि [व्याकृत] स्पष्ट, प्रकट अर्थवाला (दसनि ७)। देखो वागरिय।

वायडघड पु [दे] वाद्य-विशेष, दर्दुर नामक बाजा (दे ७, ६१)।

वायडाग पु [दे] सर्प की एक जाति (पण्ण १—पत्र ५१)।

वायण न [वाचन] देखो वायणा (नाट—रत्ना १०)।

वायण न [वादन] १ बजाना (सुपा १९, २९३, कुप्र ४१, महा, कप्पू)। २ वि बजानेवाला (दे ७, ६१ टी)।

वायण न [दे] भोज्योपायन, खाद्य पदार्थ का बाँटा जाता उपहार, वायन (दे ७, ५७, पाअ)।

वायणया, वायणा स्त्री [वाचना] १ पठन, गुरु-समीपे अध्ययन (उप २६, १)। २ अध्यापन, पढाना (सम १०६, उव)। ३ व्याख्यान (पव ६४)। ४ सूत्र-पाठ (कप्प)।

वायणिअ वि [वाचनिक] वचन-संबन्धी (नाट—विक्र ३५)।

वायय देखो वायग = वायक (दे ७, २८)।

वायरण देखो वागरण (हे १, २६८, कुमा, भवि, षड्)।

वायव वि [वायव] वायु रोगवाला, वात-रोगी (विपा १, १—पत्र ५)।

°वायव देखो पायव (से ७, ६७)।

वायव्व वि [वायव्य] वायव्य कोण का (अणु २१५)।

वायव्व पु [वायव्य] १ वायुदेवता-संबन्धी, 'वारुणवायव्वाइं पट्ठवियाइं कमेण सत्थाइं' (सुर ८, ४५, महा)। २ न. गो के खुर से उडी हुई धूलि—रज, 'वायव्वण्हाणण्हाया' (कुमा)।

वायव्वा स्त्री [वायव्या] पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८, सुपा ९८, २९०)।

वायस पु [वायस] १ काक, कौआ (उवा, प्रासू १६६, हे ४, ३५२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग मे कौए की तरह दृष्टि को इधर-उधर घुमाना (पव ५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] विद्या-विशेष, कौए के स्वर और स्थान आदि से शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या (सूअ २, २, २७)।

वाया स्त्री [वाच्] १ वाचन, वाणी (पाअ, प्रासू ६, पडि, स ४६२, से १, ३७, गा ३२, ४०२)। २ वाणी की अधिष्ठायिका देवी, सरस्वती (श्रा २३)। ३ व्याकरण-शास्त्र (गउड ८०२)। देखो वइ = वाच्।

वायाड पु [दे वाचाट] शुक, तोता (दे ७, ५६)।

वायाड वि [वाचाट] वाचाल, बकवादी (सुपा ३६०, चेइय ११७, सक्षि २)।

वायाम पु [व्यायाम] कसरत, शारीरिक श्रम (ठा १—पत्र १९, णाया १, १—पत्र १९, कप्प, औप स्वप्न ३९)।

वायाम सक [व्यायामय्] कसरत करना, शारीरिक श्रम करना। वकृ 'मुट्ठु वि वायामेंतो कायं न करेइ किंचि गुणं' (उव)।

वायायण पुन [वातायन] १ गवाक्ष, झरोखा (पउम ३९, ९१, स २४१, पाअ, महा)। २ पु राम का एक सैनिक (पउम ६७, १०)।

वायार पु [दे] शिशिर वात, गुजराती मे 'वायरो' (दे ७, ५६)।

वायाल वि [वाचाल] मुखर, बकवादी (श्रा १२, पाअ, सुपा १८३)।

°वायाल देखो पायाल (से ५ ३७)।

वायाविअ वि [वादित] बजवाया हुआ (स ५२७, कुप्र १३६)।

वायु देखो वाउ = वायु (सुज्ज १०, १२, कुमा, सम १९)।

वार सक [वारय्] रोकना, निषेध करना। वारेइ (उव, महा)। वकृ वारंत (सुपा १८३)। कवकृ. वारिज्जंत (काप्र १६१, महा)। हेकृ. वारेउं (सूअ १, ३, २, ७)। कृ वारियव्व, वारेयव्व (सुपा ५५२, २७२)।

वार पु [दे वार] चषक, पान-पात्र (दे ७, ५४)।

वार पुं [वार] [illegible] ... वृक्ष ... [illegible]

[illegible]

वारगा स्त्री [वारगा] निवारण, प्रतिषेध (कुप्र १)।

वारत्त पुं [वारत्त] १ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। २ एक ऋषि (उत्त)। ३ एक [illegible]। ४ न. एक नगर (धम्म ६ टी)।

वारत्ताग पुं [वारत्तक] वरत्रा, चोंती (ठाम)।

वारय देखो वारग (रंभा. [illegible] ३, १९— पत्र १६०; उप पृ ३४२; उवा; प्रति)।

वारलिआ स्त्री [दे] मक्षिका, पुष्प [illegible] (दे ७ ६०)।

वारविलास [illegible] 'वारविलासिनी' (कुप्र ७१)।

वारा स्त्री [वारा] १ बार, दफा, [illegible] 'वारा' (कुप्र ४४६)। २ [illegible] (सुपा ६ टी), [illegible] (सिरि [illegible])।

[illegible] देखो वारसो (पंच, [illegible])।

वारावि [illegible] [वारित] [illegible] (कुप्र १४०)।

वारिद पुं [वारिद] [illegible] (पत्र [illegible])। २ [illegible]।

[illegible] स्त्री [वारुणी] १ [illegible] (पउम ७, १४३)। २ [illegible]।

वारि [वारि] १ जल, [illegible] १३३, [illegible]।

[illegible]

और जिन्होंने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अन्त ४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौबीसवें जिनदेव (सम १५३)। ४ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५९, महा)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ एक शाश्वती जिन प्रतिमा (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ अधोलोक में रहने-वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक २३१ टि)। ३ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१ इक)। ४ ऊर्ध्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक २३२)। °हर पुं [°धर] मेघ (गउड)।

वारिअ पुं [दे] नापित, नाई (दे ७, ४७)।

वारिअ वि [वारित] १ निवारित, प्रतिषिद्ध (पाम, से २, २३)। २ वेष्टित (से २, २३)।

वारिआ स्त्री [द्वारिका] छोटा दरवाजा, बारी (दे २).

'[illegible] परिगिलो
[illegible]।'

'[illegible]
[illegible]।
[illegible]'
(पर्णि १४६)।

वारिज्ज पुं [दे] विवाह, शादी (दे ७, ४४, पाम, [illegible] ८०)।

वारित्ता [illegible] (पउम २०७)।

[illegible] [illegible] १ [illegible] (पउम [illegible]) (पउम ८७)।

[illegible] [द्वार] [illegible] (दे २)।

[illegible] [illegible] (सुपा ४, ३२६, प्रास [illegible])।

[illegible] [वारि] [illegible]

[illegible]

वारुण न [वारुण] १ जल, पानी, 'निम्मल-वारुणमडलमंडिग्रससिचारपाणसुपवेसे' (सिरि ३६१)। २ वि. वरुण-सवन्धी (पउम १२, १२७, सुर ८, ४५, महा)। °त्थ न [°स्त्र] वरुणाधिष्ठित अस्त्र (महा)। °पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक)।

वारुणी स्त्री [वारुणी] १ मदिरा, सुरा, दारू (पाग्र, से २, १७, सुर ३, ५५, पराह २, ५—पत्र १५०)। २ लता-विशेष, इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायन (कुमा)। ३ पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, सुपा २५५)। ४ भगवान् सुविधिनाथ की प्रथम शिष्या का नाम (सम १५२, पव ६)। ५ एक दिक्कु-मारी देवी (इक)। ६ कायोत्सर्ग का एक दोष—१ निष्पन्न होती मदिरा की तरह कायोत्सर्ग में 'बुड-बुड' आवाज करना। २ कायोत्सर्ग मे मतवाला की तरह डोलते रहना (पव ५)।

वारुया } स्त्री [दे] हस्तिनी, हथिनी (स ७३५;
वारूया } ६४)।

वारेज्ज देखो वारिज्ज (स ७३८)।

वारेयव्व देखो वार = वारय्।

वाल सक [वालय्] १ मोडना। २ वापस लौटाना। वालइ, वालेइ (हे ४, ३३०, भवि, सिरि ४४२)। कवक वालिज्जत (सुर ३, १३६)। सक वालेऊण (महा)।

वाल पु [व्याल] १ सर्प, साँप (गउड, णाया १, १ टी—पत्र ६, औप)। २ दुष्ट हाथी (सुर १०, २१६, चेइय ५८)। ३ हिंसक, पशु, श्वापद (णाया १, १ टी—पत्र ६, औप)। देखो विआल = व्याल।

वाल न [वाल] १ एक गोत्र, जो कश्यप-गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

वाल देखो वाल = वाल (औप, पाग्र)। °य वि [°ज] केशों से बना हुआ (पउम १०२, १२१)। °वायणी स्त्री [°वीजनी] १ चामर 'पच रायककुहाई, त जहा—खग्ग छत्त उप्फेस वाहणाओ वालवीयणिए' (औप)। २ छोटा व्यजन—पंखा, 'सेयचामरवाल-वीयणीहि वीइज्जमाणी' (णाया १, १—पत्र ३२; सूत्र १, ६, १८)। °हि पु [°धि] वही अर्थ (पाग्र, सुपा २८१)।

°वाल देखो पाल = पाल (काल, भवि, कुमा १, ६६)।

वालफोस न [दे] कनक, सोना (दे ७, ६०)।

वालग न [वालक] पात्र-विशेष, गौ आदि के वालों का बना हुआ पात्र (आचा २, १, ८, १)।

वालगपोतिया } स्त्री [दे] देखो वालग्ग-
वालग्गपोइया } पोइआ (सुज्ज ४—पत्र ७०, उत्त ६, २४, सुख ६, २४)।

वालण न [वालन] लौटाना (सुर १, २४६)।

वालप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

वालय पु [वालक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (पाग्र)।

वालवास पु [दे] मस्तक का आभूषण (दे ५६)।

वालवि पु [व्यालपिन्] मदारी, साँपों को पकडने आदि का व्यवसाय करनेवाला, सँपेरा (पराह १, २—पत्र २६)।

वालहिल्ल पु [वालखिल्य] ऋतु से उत्पन्न पुलस्त्य कन्या के साठ हजार पुत्र, जो अगुष्ठ-पर्व के देह-मानवाले थे (गउड)। देखो वालिखिल्ल।

वाला पुंस्त्री [वाला] कङ्गू, अन्न विशेष, 'सपराण वालावल्लरअ' (गा ८७२)।

वालि पुं [वालि] एक विद्याधर-राजा, कपिराज (पउम ६, ६, से १, १३)। °तणअ पु [°तनय] राजा वालि का पुत्र, अगद (से १३, ८३)। °सुअ पुं [°सुत] वही अर्थ (से ४, १२, १३, ६२)।

वालि वि [वालिन्] वक्र, टेढ़ा (से १, १३)।

वालि वि [वालिन्] १ केशवाला। २ पु कपिराज (अणु १४२)।

वालिअ वि [वालित] मोडा हुआ (पाग्र, स ३३७)।

वालिआफोस न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ७, ६०)।

वालिंद पु [वालीन्द्र] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

वालिखिल्ल पु [वालिखिल्य] एक राजर्षि (पउम ३४, १८)। देखो वालिहिल्ल।

वालिहाण न [वालधान] पुच्छ, पूँछ (णाया १, ३, उवा)।

वालिहिल्ल देखो वालहिल्ल (गउड ३२०)।

वाली स्त्री [दे] वाद्य विशेष, मुँह के पवन से बजाया जाता तृण वाद्य (दे ७, ५३)।

°वाली स्त्री [पाली] रचना विशेष, गाल आदि पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा (कप्पू)। देखो पाली।

वालुअ पु [वालुक] १ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो नरक-जीवो को तप्त वालुका—वालू मे चने की तरह भुनते है (सम २६)। २ धूली-सम्बन्धी (उप पृ २०५)।

वालुअ° } स्त्री [वालुका] धूलि, वालू, रेत, रज
वालुआ } (गउड)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] तीसरी नरक-पृथिवी (पउम ११८, २)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] तीसरी नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, इक, अत १५)। °भा स्त्री [°भा] वही अर्थ (उत्त ३६, १५७)।

वालुक न [दे] पक्वान्न-विशेष, एक तरह का खाद्य, 'खीरदहिसूवकट्टरलभे गुडसप्पिवडग-वालु के' (पिंड ६३७)।

वालुंक न [वालुङ्क] ककडी, खीरा (अनु ६, कुप्र ५८)।

वालुंकी } स्त्री [वालुङ्की] ककडी का गाछ
वालुकी } (गा १०, गा १० अ)।

वालुग° देखो वालुअ° (स १०२)।

वाव सक [वि + आप्] व्याप्त करना। वावेइ (हे ४, १४१)।

वाव अ [वा] अथवा या (विसे २०२०)।

वाव पुं [वाप] वपन वोना (दे ६, १२६)।

वावइज्ज देखो वावज्ज। वावइज्जामि (स ७४१)।

वावंफ अक [दे] श्रम करना। वावंफइ (हे ४, ६८)।

वावंफिर वि [°दे] श्रम करनेवाला (कुमा)।

वावज्ज अक [वि + आ + पद्] मर जाना। वावज्जति (भग)।

२०१)। °भवण न [°भवन] वही अर्थ (महा)। °रेणु पु [°रेणु] सुगन्धी रज (औप)। °हर न [°गृह] शयन-गृह (सुर ६ २७ सुपा ३१२ अवि)।

वास पुं [व्यास] १ ऋषि-विशेष, पुराण-कर्ता एक मुनि (हे २, ५, कप्पू)। २ विस्तार (भग २, ८ टी)।

वास न [वासस्] वस्त्र, कपडा (पाअ, वज्जा १६०, सनि)।

°वास देखो पास = पाश (गउड)।

°वास देखो पास = पार्श्व (प्राकृ ३८, गउड)।

वासग पु [व्यासङ्ग] आसक्ति, तत्परता, 'ताहे सा पडिवुद्धा निसन्न मोत्तूण विसय-वासगं' (उप १३१ टी कुप्र ११८, उप पृ १२७)।

वासठ } (अप) पु [वसन्त] छन्द का एक वासत } भेद (पिंग १६३, १६३ टि)।

वासत पुं [वर्षान्त] वर्षा-काल का अन्त-भाग (उप ४८८)।

वासतिअ वि [वासन्तिक] वसन्त सम्बन्धी (मै ३)।

वासन्तिअ , स्त्री [वासन्तिका, °न्ती] लता-वासतिआ } विशेष (औप, कप्प, कुमा, पण्ण वासती } १—पत्र ३२, णाया १, ६—पत्र १६०, पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

वासद्दी स्त्री [दे] कुन्द का पुष्प (दे ७, ५५)।

वासग वि [वासक] १ रहनेवाला (उप ७६८ टी)। २ वासना-कर्ता, सस्काराधायक (धर्मसं ३२६)। ३ शब्द करनेवाला। ४ पु. द्वीन्द्रिय आदि जन्तु (आचा)।

वासण न [दे] पात्र, बरतन, गुजराती मे 'वासण', 'दिट्ठं च पयत्तट्ठविय चदणनामं-किय हिरण्णवासणं' (स ६१, ६२)।

वासण न [वासन] वासित करना (दसनि ३, २)।

वासणा स्त्री [वासना] सस्कार (धर्मसं ३२६)। °वासणा स्त्री [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (विसे १६७७, उप ८९७)। देखो पासणया।

वासय देखो वासग। °सज्जा स्त्री [°सज्जा] नायिका का एक भेद, वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा मे सज धज कर बैठी हो (कुमा)।

वासर पुन [वासर] दिवस, दिन (पाअ, गउड, महा)।

वासव पु [वासव] १ इन्द्र, देव-पति (पाअ, सुपा ३०४, चेइय ५८०)। २ एक राज-कुमार (विपा २,१—पत्र १०३)। °केउ पु [°केतु] हरिवंश का एक राजा, राजा जनक का पिता (पउम २१, ३२)। °दत्त पु [°दत्त] विजयपुर नगर का एक राजा (विपा २ ४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक आख्यायिका (राज)। °धणु पुन [°धनुष्] इन्द्र धनुष (कुप्र ४४६)। °नयर न [°नगर] अमरावती, इन्द्र-नगरी (सुपा ६०६)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (उप पृ १७६)। °सुअ पु [°सुत] इन्द्र का पुत्र, जयन्त (पाअ)।

वासवदत्ता स्त्री [वासवदत्ता] राजा चड प्रद्योत की पुत्री और उदयन—वीणावत्सराज की पत्नी (उत्तनि ३)।

वासवार पु [दे] १ तुरग, घोडा (दे ७, ५६)। २ श्वान, कुत्ता, 'विट्टालिज्जइ गगा कयाइ किं वासवारेहिं' (चेइय १३४)।

वासवाल पु [दे] श्वान, कुत्ता (दे ७, ६०)।

वासस न [वासस्] वस्त्र, कपडा, 'कुभोयणा कुवाससा' (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

वासा देखो वरिसा (कुमा, पाअ, सुर २, ७८, गा २०१)। °रत्ति स्त्री देखो वरिसा रत्त (हे ४, ३९५)। °वास पु [°वास] चतुर्मास मे एक स्थान मे किया जाता निवास (औप, काल, कप्प)। °वासिय वि [°वार्षिक] वर्षाकाल सबन्धी (आचा २, २, २, ८, ६)। °हू पु [°भू] भेक, मेढक (दे ७, ५७)।

वासाणिया स्त्री [दे वासनिका] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

वासाणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ७, ५५)।

वासि वि [वासिन्] १ निवास करनेवाला, रहनेवाला (सूअ १, १,६, उवा, सुपा ६१८, कुप्र ४६, औप)। २ वासना-कारक, सस्कार-स्थापक (विसे १६७७)।

वासि स्त्री [वासि] वसूला, बढई का एक अस्त्र—औजार, 'न हि वासिवड्ढईण इह अभेदो कहचिदवि' (धर्मसं ४८६)। देखो वासी।

वासिक } वि [वार्षिक] वर्षाकाल भावी वासिक्क } (सुज्ज १२—पत्र २१६)।

वासिट्ठ न [वाशिष्ठ] १ गोत्र-विशेष (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प, सुज्ज १०, १६)। २ पुस्त्री. वाशिष्ठ गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७)। स्त्री °ट्ठा, °ट्ठी (कप्प पत्त १४, २६)।

वासिट्ठिया स्त्री [वाशिष्ठिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वासित्तु वि [वर्षितृ] बरसनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

वासिद } वि [वासित] १ बसाया हुआ, वासिय } निवासित (मोह २१)। २ बासी रखा हुआ (अन्न आदि) (सुपा १२; ५३२)। ३ सुगन्धित किया हुआ (कप्प, पव १३३, महा)। ४ भावित, सस्कारित (आव)।

वासी स्त्री [वासी] बसूला, बढई का एक अस्त्र (पण्ह १, १, पउम १४, ७८, कप्प, सुर १, २८, औप)। °मुह पुं [°मुख] बसूले के तुल्य मुँहवाला एक तरह का कीट, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

वासुइ } पु [वासुकि] एक महा-नाग, वासुगि } सर्पराज (मै २, १३, गा ६६, गउड, ती ७, कुमा, सम्मत्त ७६)।

वासुदेव पु [वासुदेव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा, त्रिखण्ड भूमि का अधीश (सम १७, १५२, १५३, अत)।

वासुपुज्ज पु [वासुपूज्य] भारतवर्ष मे उत्पन्न बारहवें जिन भगवान् (सम ४३, कप्प, पडि)।

वासुली स्त्री [दे] कुन्द का फूल (दे ७, ५५)।

वाह सक [वाहय्] वहन कराना, चलाना। वाहइ, वाहेइ (भवि, महा)। कवकृ. वाहिज्जमाण (महा)। हेकृ वाहिउ (महा)। कृ. वाह, वाहिय (हे २, ७८ आचा २, ४, २, ६)।

वाह पुस्त्री [व्याध] लुब्धक, बहेलिया (हे १, १८७, पाअ)। स्त्री °ही (गा १२१, पि ३८५)।

वाह पु [वाह] १ अश्व, घोडा (पाअ, सूअ १, २, ३, ५, उप ७२८ टी, कुप्र १४७, हम्मीर १८)। २ जहाज, नौका, 'वाहोडुवाइ तरणं' (विसे १०२७)। ३ भारवहन, बोझ ढोना (सूअ १ ३, ४, ५)। ४ परिमाण-विशेष,

[illegible]

वाहरण न [व्याहरण] १ उक्ति, कथन (सुपा)। २ आह्वान (स २६२, ४०६)।

वाहरिअ वि [व्याहारित] बुलाया हुआ (सुर [illegible])।

[illegible] देखो वाहित्त = व्याहृत (सुर १, [illegible] सुपा १३२ [illegible])।

[illegible] [illegible] १ [illegible]। २ [illegible] 'वाहनेउरी', [illegible] निवतगुण [illegible] (धर्मवि १२८)।

[illegible]

वाहित्त वि [व्याहृत] १ उक्त, कथित (हे १, १२८; २, ९९; प्राप्र)। २ आहूत, आह्वित (पाअ; वज्जा १, २०)।

वाहित्ति स्त्री [व्याहृति] १ उक्ति, वचन। २ आह्वान (बृह २)।

वाहिप्प° देखो वाहर।

वाहिम देखो वाह = वाहय।

वाहियाली स्त्री [वाह्याली] घोड़ा खेलने की जगह (स १३; सुपा ३२७; महा)।

वाहिल्ल वि [व्याधिमत्] रोगी (धर्म ८ टी)।

वाही देखो वाह = व्याध।

वाहुडिअ वि [दे] गत, चलित 'ता वाहुडिउ जवणं' (सुपा ४४८)। देखो वाहुडिअ।

वाहुत्त देखो वाहित्त = व्याहृत (धर्म)।

वि देखो अवि = अपि (हे २, २१८; कुमा; गा १४; १७, २३; स्वप्न ४, १६, ६०, [illegible])।

वि अ [वि] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विरह, प्रतिभाव, 'विगय', 'विमल' (ठा ४, २; गच्छ १, ११; सुर २, २९४)। २ विशेष, 'विजिगाय' (सूअ १, १, २, २३; आचा १, १ टी)। ३ [illegible]

[illegible]

विअ सक [विद्] जानना। वियसि (विसे १६००)। भवि विच्छ, वेच्छ (पि ५२३, ५२६, प्राप्र, हे ३, १७१)। वकृ. विअंत (रभा)। संकृ विइत्ता, विइत्ताण, विइत्त (आचा, दस १०, १८)।

विअ न [वियत्] आकाश, गगन (से ६, ४८)। °चर वि [°चर] आकाश-विहारी। °चरपुर न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

विअ वि [विद्] १ जानकार, विद्वान्, 'तं च भिक्खू परिन्नाय विय तेसु न मुच्छए' (सूअ १, ०, ४, २)। २ विज्ञान, जानकारी (राज)।

विअ देखो इव (हे २, १८२, प्राप्र, स्वप्न २७, कुमा, पउम ११, ८१, महा)।

विअ पु [वृक] श्वापद जन्तु-विशेष, भेडिया (नाट—उत्तर ७१)।

विअ पु [व्यय] विगम, विनाश, 'पचविहे छेयणे पन्नत्ते, त जहा—उप्पाछेयणे वियच्छे दणे' (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

विअ वि [विगत] विनष्ट, मृत। °च्चा स्त्री [°र्चा] मृत आत्मा का शरीर (ठा १—पत्र १९)।

विअ देखो अविअ = अपिच (जीव १)।

विअइ वि [विजयिन्] जिसकी जीत हुई हो वह (मा २२)।

विअइ स्त्री [विगति] विगम, विनाश (ठा १—पत्र १९)।

विअइ देखो विगइ = विकृति (ठा १—पत्र १९, राज)।

विअइत्ता देखो विअत्त = वि + वर्त्तय्।

विअइल्ल पु [विचकिल] १ पुष्प-वृक्ष विशेष। २ न. पुष्प-विशेष (हे १, १६६, कप्पू, वा २३, कुमा)। ३ वि विकच, विकसित (सण)।

विअओलिअ वि [दे] मलिन (दे ७, ७२)।

विअग सक [व्यङ्गय्] अग से हीन करना—हाथ, कान आदि को काटना। वियगेइ (णाया १, १४—पत्र १८५)।

विअग वि [व्यङ्ग] अग हीन, 'वियगमगा' (पएह १, १—पत्र १८)।

विअगिअ वि [दे] निन्दित (दे ७, ६६)।

विअंगिअ वि [व्यङ्गित] खण्डित, छिन्न (पएह १, ३—पत्र ४५, टी—पत्र ४६)।

विअंजण देखो वजण = व्यञ्जन (प्राकृ ३१, सम्म ७२)।

विअजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकट किया हुआ (सूअ २, १, २७, ठा ५, २—पत्र ३०८)।

विअंदूत वि [दे] १ अवरोपित। २ मुक्त (षड् १७७)।

विअंति स्त्री [व्यन्ति] अन्त क्रिया। °कारय वि [°कारक] अन्त-क्रिया करनेवाला, कर्मो का अन्त करनेवाला, मुक्ति-साधक (आचा १, ८, ४, ३)।

विअभ अक [वि + जृम्भ्] १ उत्पन्न होना। २ विकसना। ३ जँभाई खाना। विअभइ (हे ४, १५७, षड्, भवि)। वकृ विअंभत, विअभमाण (धात्वा १५२, से १, ४३, गा ४२५, महा)।

विअभ वि [विदम्भ] निष्कपट, सत्य, 'अयाणय वियंभसुहस्स' (स ६९०)।

विअभण न [विजृम्भण] १ जँभाई, जम्हाई (स ३३६, सुपा १४९)। २ विकाश। ३ उत्पत्ति (भवि, माल ८४)।

विअभिअ वि [विजृम्भित] १ प्रकाशित (गा ५६४)। २ उत्पन्न (माल ८६)। ३ न. जँभाई (गा ३५२)।

विअसण वि [विवसन] वस्त्र-रहित, नग्न (प्राकृ ३२)।

विअसय पु [दे] व्याध, बहेलिया (दे ७, ७२)।

विअक्क सक [वि + तर्कय्] विचारना, विमर्श करना, मीमासा करना। वकृ वियक्कंत, वियक्कमाण (सुपा २९४, उप २२० टी)।

विअक्क पुस्त्री [वितर्क] विमर्श, मीमासा (औप, सम्मत्त १४१)। स्त्री. °क्का (सूअ १, १२, २१, पउम ६३, ६)।

विअक्किअ वि [वितर्कित] विमर्शित, विचारित (सण)।

विअक्ख सक [वि + ईक्ष्] देखना। वकृ वियक्खमाण (ओघभा १८८)।

विअक्खण वि [विचक्षण] विद्वान्, पण्डित, दक्ष (महा, प्रासू ४१, भवि, नाट—वेणी २४)।

विअग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (प्राकृ ३१)।

विअग्घ देखो वग्घ = व्याघ्र, —महिसवि (?विय)ग्घछगलदीविया—' (पएह १, १—पत्र ७, पि १३४)।

विअग्घ पु [वैयाघ्र] व्याघ्र-शिशु (पएह १, १—पत्र १८)।

विअज्झास देखो विवज्जास (नाट—मृच्छ ३२९)।

विअट्ट सक [विस + वद्] अप्रमाणित करना, असत्य साबित करना। विअट्टइ (हे ४, १२९)।

विअट्ट अक [वि + वृत्] विचरना, विहरना। वकृ, 'गिम्हसमयति पत्ते वियट्टमाणे (सु?) वणेसु वणकरेणुविविहदिएण्णकयपसुघाओ तुमं' (णाया १, १—पत्र ६५)।

विअट्ट वि [विवृत्त] निवृत्त, व्यावृत्त, 'विअट्टछउमेण जिणेण' (सम १, भग, कप्प, औप, पडि)। °भोइ वि [°भोजिन्] प्रतिदिन भोजन करनेवाला (भग)।

विअट्ट पुं [विवर्त] प्रपञ्च (स १७८)।

विअट्ट, विअट्टिअ वि [विसवदित] सवाद-रहित, अप्रमाणित, 'विअट्ट' विसवइअं' (पाअ, कुमा ६, ८८)।

विअट्ठ वि [विकृष्ट] १ दूर-स्थित। २ क्रिवि. दूर (णाया १, १ टी—पत्र १)।

विअड सक [वि + कटय्] १ प्रकट करना। २ आलोचना करना। वियडेइ (ठा १० टी—पत्र ४८५)। कवकृ. वियडिज्जत (राज)।

विअड वि [व्यर्द] लज्जित, लज्जा-युक्त णाया १, ८—पत्र १४३)।

विअड वि [विवृत] खुला हुआ, अनावृत (ठा ३, १—पत्र १२१, ५, २—पत्र ३१२)। °गिह न [°गृह] चारो तरफ खुला घर, स्थान-मण्डपिका (कप्प, कस)। °जाण न [°यान] खुला वाहन, ऊपर से खुला यान (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

[illegible]

विअंभिअ पुं [विजृम्भित] [illegible]

विअंभ पुं [विजृम्भ] [illegible]

[illegible]

विअक्खण पुं [विचक्षण] [illegible]

विअज्ज [illegible]

[illegible]

विअज्झणा स्त्री [विडम्बना] १ [illegible]। २ [illegible] (सुर [illegible])।

विअज्झ पुं [विजन] पंखा, व्यजन (प्राप्र, [illegible], पउम [illegible], १—पत्र ८)।

विअण वि [विजन] निर्जन, जन-रहित (नाट)।

विअणा स्त्री [वेदना] १ ज्ञान। २ दुःख, शारीरिक पीड़ा आदि का अनुभव। ३ विपाक (प्राप्र, [illegible])। ४ पीड़ा, दुःख, संताप (पाअ; [illegible])।

विअणिअ वि [वितनित, वितत] विस्तीर्ण (कुमा)।

विअणिर वि [विकणितृ] [illegible] (कुमा)।

विअण्ण वि [विपन्न] मृत (गा ४४६)।

विअण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित (गा ६३)।

विअत्त सक [वि + वर्तय्] [illegible]। वकृ. विअत्तंत, विअत्तमाण (पाअ [illegible])।

विअत्त वि [व्यक्त] १ परिस्फुट (सुपा [illegible])। २ प्रबुद्ध, विद्वान् (सुपा [illegible])। ३ [illegible]। ४ पुं. भगवान् महावीर का चतुर्थ गणधर—[illegible] (कप्प [illegible])। [illegible]

[illegible]

विअद्ध वि [विदग्ध] [illegible]

[illegible]

(कुमा ४७६)। वकृ. विअप्पंत (महा)। कृ. विअप्प (उत्त ७२८ टी)।

विअप्प पुं [विकल्प] १ विविध तरह की कल्पना, तं जयइ जिणिंद विच विकप्पजालं [illegible] (गउड)। २ विचार (महा)। ३ भेद, प्रकार [illegible] (सम्म ३)। देखो विगप्प = विकल्प।

विअप्पग न [विकल्पन] ऊपर देखो, एगंतुच्छेयम्मि य [illegible] (सम्म १८, भ ६८)।

विअप्पणा स्त्री [विकल्पना] ऊपर देखो (धर्मसं २००)।

विअब्भ देखो विदब्भ (प्राकृ ३८; पउम २६, ८)।

विअम्ह देखो विअस = वि + कस्। विअम्हइ (प्राकृ ७४)।

विअय देखो विअ = विद (प्राप्र, गउड)।

विअर वि [विवृत] १ विस्तीर्ण [illegible] (महा)। २ प्रकाशित, [illegible] (विसे २०६१, श्राव २०३)। °पडिमा पुं [°प्रतिमा] [illegible]।

विअरण [illegible]

[illegible]

विअर पुं [दर] [illegible]

[illegible]

विअरण न [वितरण] प्रदान, अर्पण, (पचा ७, ६, उप ५६७ टी, सण)।

विअरिय वि [विचरित] जिसने विचरण किया हो वह, विहृत (महा), 'विमलीकयम्ह चक्खू जहत्थया वियरिया गुणा तुज्झ' (पिंड ४६३)।

विअल अक [भुज्] मोडना, वक्र करना। विअलइ (धात्वा १५२)।

विअल अक [वि+गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ टपकना, झरना। वकृ. विअलंत (गा ३६८, सुर ५, १२७)।

विअल अक [ओजय्] मजबूत होना (सक्षि ३५)।

विअल वि [विकल] १ हीन, असपूर्ण (पण्ह १, ३—पत्र ४०)। २ रहित, वर्जित, वन्ध्य (सा २)। ३ विह्वल, व्याकुल, 'विअलुद्ध-रणसहावा हुवंति जइ केवि सप्पुरिसा' (गा २८५)। देखो विगल = विकल।

विअल सक [विकलय्] विकल बनाना। वियलई (सण)।

विअल देखो विअड = विकट (से ८, २१)।

विअल देखो विदल = द्विदल (सबोध ४४)।

विअलंगल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

विअलिअ वि [विगलित] १ नाश-प्राप्त, नष्ट (से २, ४५, सण)। २ पतित, टपक कर गिरा हुआ, 'विअलिअ उच्चत' (पाअ)।

विअल्ल अक [वि+चल्] १ क्षुब्ध होना। २ अव्यवस्थित होना, 'खलइ जीहा, मुह-वयणु वियल्लइ' (भवि)।

विअस अक [वि+कस्] खिलना। विअसइ (प्राकृ ७६, हे ४, १६५)। वकृ. विअसत, विअसमाण (औप, सुपा २०)।

विअसावग वि [विकासक] विकसित करनेवाला (गउड)।

विअसाविअ वि [विकासित] विकसित किया हुआ (सुपा २२५)।

विअसिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (गा १३, पाअ, सुर २, २२२, ४, ५८, औप)।

विअह देखो विजह = वि+हा। सकृ. वियहित्तु (आचा १, १, ३, २)।

विआउआ स्त्री [विपादिका] रोग-विशेष, विवाई, या बेवाई (दे ८, ७१)।

विआउरी स्त्री [विजनयित्री] व्यानेवाली, प्रसव करनेवाली (णाया १, २—पत्र ७६)।

विआगर देखो वागर। वियागरेइ, वियागरंति (आचा २, २, ३, १, सूअ १, १४, १८), वियागरे, वियागरेज्जा (सूअ १, ६, २५, विसे ३३६, सूअ १, १४, १६)। वकृ. वियागरेमाण (आचा २, २, ३, १)।

विआघाय देखो वाघाय (आचा)।

विआण सक [वि+ज्ञा] जानना, मालूम करना। वियाणइ, विआणंति (भग, गा ४८), वियाणासि (पि ५१०), वियाणाहि, वियाणेहि (पण्ण १—पत्र ३६, महा)। कर्म. वियाणिज्जइ (सट्ठि १६)। वकृ. वियाणंत, वियाणमाण (औप, उव)। सकृ. वियाणिआ, वियाणिऊण, विया-णित्ता (दसचू १, १८, महा, औप, कप्प)। कृ. वियाणियव्व (उप पृ ६०)।

विआण न [विज्ञान] जानकारी, ज्ञान, 'एक्कंपि भाय। दुलह जिणमयविहिरियण-सुवियाण' (सट्ठि १६)। देखो विन्नाण।

विआण न [वितान] १ विस्तार, फेलाव (गउड १७६, ३८६, ५६२)। २ वृत्ति-विशेष। ३ अवसर। ४ यज्ञ (हे १, १७७, प्राप्र)। ५ पुन चन्द्रातप, चँदवा, आच्छादन-विशेष (गउड २००, ११८०, हे १, १७७, प्राप्र)।

विआणग वि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ (उप पृ ११६)।

विआणण न [विज्ञान] जानना, मालूम करना (स २६७, सुर ३, ७)।

वियाणय देखो विआणग (सम्म १६०, भग, औप, सुर ६, २१, सण)।

विआणिअ वि [विज्ञात] जाना हुआ, विदित (स २६७, सुपा ३६१, महा, सुर ४, २१४, १२, ७१, पिंग)।

विआय सक [वि+जनय्] जन्म देना, प्रसव करना, 'गुजराती मे 'वियावु', 'वियायइ पढम ज पिउगिहे नारी' (उप ६६८ टी)। सकृ विआय (राज)।

विआर सक [वि+कारय्] विकृत करना। विआरेदि (शौ) (मा ५१)।

विआर सक [वि+चारय्] विचारना, विमर्श करना। विआरेइ (प्राकृ ७१, भग), वियारिज्ज (सत्त ३६)। वकृ विआरयंत (श्रा १६)। कवकृ. वियारिज्जंत (सुपा १४८)। सकृ विआरिअ (अभि ४४)। कृ विआरणिज्ज (श्रा १४)।

विआर सक [वि+दारय्] फाडना, चीरना। विआरे (अप) (पिंग)। सकृ. वियारिऊण (श २६०)।

विआर पु [विकार] विकृति, प्रकृति का भिन्न रूपवाला परिणाम (हे ३, २३, गउड, सुर ३, २६, प्रासू ४६)।

विआर पु [विचार] १ तत्त्व-निर्णय (गउड, विचार १, द १)। २ तत्त्व-निर्णय के अनुकूल शब्द रचना (जी ५१)। ३ ख्याल, सोच, 'अण्णो वक्करकालो अण्णो कज्जवि-आरकालो' (कप्पू)। ४ दिशा-फरागत के लिए बाहर जाना (पव २, १०१)। ५ गमन की अनुकूलता (पव १०४)। ६ विचरण। ७ अवकाश, 'अंतेउरे य दिण्णवियारे जाते यावि होत्था' (विपा १, ५—पत्र ६३)। ८ विमर्श, मीमांसा। ९ मत, अभिप्राय (भवि)। °धवल पु [धवल] एक राजा का नाम (उप ७२८ टी, महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] दिशा-फरागत जाने का स्थान (कप्प, उप १४२ टी)।

विआरण न [विचारण] १ विचार करना (सुपा ४६४, सार्ध ६०)। २ वि. विचार करनेवाला, 'जय जिणनाह समत्थवत्थुपरमत्थ-वियारण' (सुपा ५२)। ३ वि. विचरण करनेवाला, 'अंबरतरविआरणिआहिं' (अजि २६)।

विआरण न [विदारण] चीरना, फाडना (सार्ध ४६, स २४१)।

विआरण देखो वागरण (कुप्र २४५)।

विआरण वि [वैदारण] विदारण-सबन्धी, विदारण से उत्पन्न होनेवाला। स्त्री °णिआ (नव १६)।

विआरणा स्त्री [विचारणा] विचार, विमर्श (उप ७२८ टी, स २४७, पचा ११, ३४)।

विइण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (से २, १०, प्राप्र, गा ६३, १७६)।

विइत्त देखो विचित्त (गउड स २३६, ७४०)।

विइत्त देखो विविक्त (स ७४०)।

विइत्ता } देखो विअ = विद्।
विइत्ताणं }

विइत्तिद (शौ) देखो विचित्तिय (स्वप्न ३६)।

विइत्तु देखो विअ = विद्।

विइन्न देखो विइण्ण = वितीर्ण (सुर ४, ११)।

विइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

विउ वि [विद्, विद्वस्] विद्वान्, पण्डित, जानकार (णाया १, १६, उप ७६८ टी, सुर १, १३५, सूअ २, १, ६०, रंभा)। °प्पकड स्त्री [°प्रकृत] १ विद्वान् द्वारा प्रकान्त। २ विद्वान् द्वारा किया हुआ (भग ७, १० टी—पत्र ३२५, १८, ७—पत्र ७५०)।

विउअ वि [वियुत] वियुक्त, रहित, 'दव्वं पज्जवविउअं दव्व विउत्ता य पज्जवा नत्थि' (सम्म १२)।

विउअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (हे १, १३१)।

विउअ (अप) देखो विओअ = वियोग (हे ४, ४१९)।

विउच्चिआ स्त्री [दे विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा रोग का एक भेद, 'केवि विउच्चिअपामा-समन्निया सेवगा तस्स' (सिरि ११७)।

विउज सक [वि + युज्] विशेष रूप से जोडना। विउजति (सूअ २, २, २१)।

विउक्कति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति, 'अ-विउक्कतिय चयमाणे' (भग १, ७)।

विउक्कति स्त्री [व्युत्क्रान्ति, व्यवक्रान्ति] मरण, मौत (भग १, ७)।

विउक्कम सक [व्युत् + क्रम्] १ परित्याग करना। २ उल्लघन करना। ३ अक च्युत होना, नष्ट होना, मरना। ४ उत्पन्न होना। विउक्कमति (भग, ठा ३, ३—पत्र १४१)। सक्क विउकम्म (सूअ १, १, १, ६, उत्त ५, १५, आचा १, ८, १, २)।

विउक्कस सक [व्युत् + कर्षय्] गर्व करना, बडाई करना। विउक्कसेज्जा, (सूअ १, १३, ६), विउक्कसे (आचा १, ६, ४, २)।

विउक्कस्स पु [व्युत्कर्ष] गर्व, अभिमान (सूअ १, १, २, १२)।

विउच्छा देखो वि-उच्छा = विद्-जुगुप्सा।

विउच्छेअ पु [व्यवच्छेद] विनाश (पचा १७, १८)।

विउज्जम अक [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम करना। वकृ 'घणियपि विउज्जमताण' (पउम १०२, १३७)।

विउज्झ अक [वि + बुध्] जागना। विउज्झइ (भवि, सण)।

विउट्ट सक [वि + कुट्टय्] विच्छेद करना, विनाश करना। हेकृ विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६, कस)।

विउट्ट सक [वि + त्रोटय्] तोड डालना। विउट्टइ (सूअ २, २, २०)। हेकृ. विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विउट्ट अक [वि + वृत्] १ उत्पन्न होना। २ निवृत्त होना। विउट्टति (सूअ २, ३, १), विउट्टेज्जा (ठा ८ टी—पत्र ४१८)।

विउट्ट सक [वि + वर्तय्] १ विच्छेद करना। २ घूमकर जाना। विउट्टति (स १७८)। सकृ विउट्टाण (आचा १, ८, १, २)। हेकृ विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विउट्ट देखो विअट्ट = विवृत्त (कप्प)।

विउट्टण न [विवर्तन] निवृत्ति (ओघ ७९१)।

विउट्टण न [विकुट्टन] १ विच्छेद। २ आलोचना, अतिचार-विच्छेद (ओघ ७९१)। ३ वि. विच्छेद-कर्ता (धर्मसं ६६९)।

विउट्टणा स्त्री [विकुट्टना] १ विविध कुट्टन। २ पीडा, सताप (सूअ १, १२, २१)।

विउट्ठिअ वि [व्युत्थित] जो विरोध मे खडा हुआ हो वह, विरोधी बना हुआ (सूअ १, १४, ८)।

विउड सक [वि + नाशय्] विनाश करना। विउडइ (हे ४, ३१)। कर्म विउडिज्जति (स ६७६)।

विउडण न [विनाशन] १ विनाश (स २७, ६९१)। २ वि विनाश-कर्ता (स ३७, २८२)।

विउडिअ वि [विनाशित] नष्ट किया गया (पाअ, कुमा, उप ७२८ टी)।

विउण वि [विगुण] गुण रहित, गुण-हीन (दे ६, ७८)।

विउत्त वि [वियुक्त] विरहित, वियोग प्राप्त (सुर ३, १२, १०, १४५, सुपा ११०, काल, सण)।

विउत्ता देखो विअत्त = वि + वर्तय्।

विउत्थिअ देखो विउट्ठिअ (कुप्र २२४, ३६६)।

विउद देखो विउअ = विवृत (प्राप्र)।

विउद्ध वि [विबुद्ध] १ जागृत (सुपा १४०)। २ विकसित (स ७६८)।

विउप्पकड वि [व्युत्प्रकट] अतिशय प्रकट—व्यक्त (भग ७, १० टी—पत्र ३२५)।

विउब्भाअ अक [व्युद् + भ्राज्] शोभना, दीपना, चमकना। वकृ विउब्भाएमाण (भग ३, २—पत्र १७३)।

विउब्भाअ सक [व्युद् + भ्राजय्] शोभित करना। वकृ विउब्भाएमाण (भग ३, २)।

विउम वि [विद्वस्] विद्वान्, विज्ञ, 'विउमं ता पयहिज्ज सथव' (सूअ १, २, २, ११)।

विउर देखो विदुर (वेणी १२४)।

विउल वि [विपुल] १ प्रभूत, प्रचुर। २ विस्तीर्ण, विशाल (उवा, औप)। ३ उत्तम, श्रेष्ठ (भग ९, ३३)। ४ अगाध, गम्भीर (प्राप्र)। ५ पुं राजगिर के समीप का एक पर्वत (पउम २, ३८)। °जस पु [°यशस्] एक जिनदेव का नाम (उप ९८६ टी)। °मइ स्त्री [°मति] मन पर्यव नामक ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८, आवम)। २ वि. उक्त ज्ञानवाला (कप्प, औप)। °ारी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)। देखो विपुल।

विउव देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, २)।

विउवसिय देखो विओसिय = व्यवशमित (राज)।

विओरमण न [व्युपरमण] विराधना, विनाश, 'छक्कायविओरमणं' (ओघभा १६०, ओघ ३२६)।

विओल्ल वि [दे] आन्दोलित, उद्वेग युक्त (दे ७, ६३)।

विओवाय पुं [व्यवपात] भ्रंश, नाश (आचा, सूत्र १, ३, ३, ४)।

विओसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] १ परित्याग। २ तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का त्याग (औप)।

विओसमण देखो विउसमण (पण्ह २, २—पत्र ११८, २, ५—पत्र १४६)।

विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त किया हुआ (कस ६, १ टि)।

विओसरणया देखो विउसरणया (औप)।

विओसव सक [व्यव + शमय्] उपशान्त करना, ठण्ढा करना, दबा देना। संकृ. 'तं अहिगरणं अ- विओसवेत्ता' (कस)।

विओसविय } देखो विओसमिय, 'अवि-
विओसिय } ओसवियपाहुडे' (कस १, ३५, ४, ५), 'विओसविय वा पुणो उदीरित्तए' (कस ६, १; ४, ५ टि)।

विओसिज्जा अ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर (आचा १, ६, २, १)।

विओसिय वि [व्यवसित] पर्यवसित, समाप्त किया हुआ (सूत्र १, १, ३, ५)।

विओसिय वि [विकोशित] कोश-रहित, निरावरण, नगा, 'विउ(?ओ)सियवरासि—' (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

विओसिर देखो विऊसिर (पि २३५)।

विओह पु [विबोध] जागरण, जागृति (भवि)।

विंख न [दे] वाद्य-विशेष (राज)।

विंचिणिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ वारा (दे ७, ६३)।

विंचुअ पु [वृश्चिक] जन्तु-विशेष, विच्छू (हे १, १२८, २, १६, ८६)।

विंछ अक [वि + घट्] अलग होना। विंछइ (प्राकृ ७१)।

विंछिअ } देखो विंचुअ (हे १, २६, २,
विंछुअ } १६, सुख ३६, १४८, पउम ३६, १७, प्राप्र, प्राकृ २३, गा २३७ अ)।

विंजण देखो वंजण, 'तेत्तीसविंजणाइं' (चउ)।

विंजण देखो विअण = व्यजन, गुजराती मे 'विंजणो' (रंभा २०)।

विंझ पु [विन्ध्य] १ पर्वत विशेष, विन्ध्याचल (गा ११५, णाया १, १—पत्र ६४)। २ व्याध, बहेलिया (हे १, २५, २, २६, प्राप्र)। ३ एक जैन मुनि (विसे २५१२)। ४ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५७८)।

विंट सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना, गुजराती में 'विंटवु', 'विंटइ त उज्जाणं हयगयरहसुहडकोडीहिं' (सुपा ५७३)। प्रयो, संकृ विंटाविउ (सुपा १८६)।

विंट न [वृन्त] फल-पत्र आदि का बन्धन (हे १, १३६, प्राकृ ४, रंभा, प्रासू १०२)।

विंटल } न [दे] १ वशीकरण विद्या,
विंटलिअ } 'अन्नाइंपि कुंडलविं(?टलविं)-टलाइं करलाघवाइं कम्माइं' (सिरि ५७)। २ निमित्त आदि का प्रयोग (वृह १), 'विंटलिआणि पउंजति' (गच्छ ३, १३)।

विंटलिआ स्त्री [दे] गठरी, पोटली, गुजराती मे 'विंटलु', 'ताव कुमरेण खित्ता तप्पुरओ वत्थविंटलिया', 'तीए विंटलियाए' (सुपा २६१)।

विंटिया स्त्री [दे] १ गठरी, पोटली (सुख २, ५, उप १४२ टी)। २ मुद्रिका, अंगुलीयक, गुजराती मे 'वींटी', 'उच्चारोवरि मुक्का कणयमयविंटिया नियया' (सुपा ६११), 'पडिवन्नाओ मणिविंढि(?टि)याहि तह अगुलीओ त्ति' (स ७६)।

विंतर पु [व्यन्तर] १ विच्छू आदि दुष्ट जन्तु (उप ५६४), 'दुट्ठाण को न बीहइ विंतरमप्पाण व खलाण' (वज्जा १२)। २ एक देव-जाति, 'निस्सूगाण नराण हि विंतरा अवि किंकरा' (श्रा १२, दं २)।

विंतागी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ

विंद सक [विद्] १ जानना। २ प्राप्त करना, 'धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ' (सूग १, १४, २७)। वकृ विंदमाण (णाया १, १—पत्र २६, विपा १, २—पत्र ३४)।

विंद देखो वद = वृन्द (भवि, पि ३६८)।

विंदारग } देखो वदारय (सुपा ५०३, नाट—
विंदारय } शकु ८८)। °वर पु [°वर] इन्द्र (सम्मत्त ७५)।

विंदावण पुन [वृन्दावन] मथुरा का एक वन (ती ७)।

विंदुरिल्ल वि [दे] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान। २ मञ्जुल घोषवाला, मधुर कंठ। ३ विद्राण, म्लान। ४ विस्तृत, 'घटाहिं विंदुरिल्लासुरतरुणीविमाणणुसार लहती (कप्पू)।

विंद्र देखो वद्र (प्राकृ ३६)।

विंद्रावण देखो विंदावण (प्राकृ ३६)।

विंध सक [व्यध्] वींधना, छेदना, वेधना। विंधइ, विंधेज्जा (पि ४८६, भग)। वकृ. विंधत (सुर २, ६३)। संकृ. विंधिअ (नाट—मृच्छ २१३)। हेकृ विंधिउ (स ६२)। कृ. विंधेयव्व (सुपा २६६)।

विंधण न [व्यधन] छेदन, वेधना, 'लक्खविंधण'—(धर्मवि ५२)।

विंधिअ वि [विद्ध] जो वेधा गया हो वह, छिन्न (सम्मत्त १५८)।

विंभय देखो विम्हय = विस्मय (भवि)।

विंभर देखो विम्हर। विंभरइ (पि ३१३)।

विंभल वि [विह्वल] व्याकुल, घबड़ाया हुआ, 'विसविंभल' (उप ५९७ टी, कुप्र ६०, ५९८, भवि, ओघ ७३)।

विंभिअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित 'ओधुणइ दीवओ विंभ (?भि)ओ व्व पवणाहओ सीस' (वज्जा ६६, भवि)।

विंभिअ देखो विअंभिअ, 'सोहग्गविंभियासाए' (वज्जा ८६)।

विंसदि (शौ) स्त्री [विंशति] बीस, २० (प्रयौ २०)।

विकत्थ सक [वि + कत्थ्] प्रशंसा करना। विकत्थइज्जा (सूत्र १, १४, २१)।

विकंप अक [वि + कम्प्] हिल जाना, चलित होना। वकृ. विकंपमाणो (सूत्र १, १४, १४)।

विकंप सक [वि + कम्पय्] १ हिलाना, चलाना। २ त्याग करना, छोड़ना। ३ अपने मडल से बाहर निकलना। ४ भीतर प्रवेश करना। विकपइ (सुज्ज १, १)। संकृ. विकंपइत्ता (सुज्ज १, ६)।

विकंप वि [विकम्प] कम्प, हिलन (पंचा १८, १५)।

विओरमण न [व्युपरमण] विराधना, विनाश, 'छक्कायविओरमए' (ओघभा १६०, ओघ ३२६)।
विओल वि [दे] आकुल, उद्वेग युक्त (दे ७, ६३)।
विओवाय पुं [व्यवपात] भ्रंश, नाश (आचा, सूअ १, ३, ३, ४)।
विओसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] १ परित्याग। २ तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का त्याग (ओप)।
विओसमण देखो विउसमण (पण्ह २, २—पत्र ११८, २, ५—पत्र १४६)।
विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त किया हुआ (कस ६, १ टि)।
विओसरणया देखो विउसरणया (औप)।
विओसव सक [व्यव + शमय्] उपशान्त करना, ठण्डा करना, दबा देना। संकृ. 'तं अहिगरणं अ- विओसवेत्ता' (कस)।
विओसविय } देखो विओसमिय, 'अवि-
विओसिय } ओसवियपाहुडे' (कस १, ३५, ४, ५), 'विओसविय वा पुणो उदीरिसए' (कस ६, १, ४, ५ टि)।
विओसिज्जा अ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर (आचा १, ६, २, १)।
विओसिय वि [व्यवसित] पर्यवसित, समाप्त किया हुआ (सूअ १, १, ३, ५)।
विओसिय वि [विकोशित] कोश-रहित, निरावरण, नगा, 'विउ(?ओ)सियवरासि—' (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
विओसिर देखो विऊसिर (पि २३५)।
विओह पु [विबोध] जागरण, जागृति (भवि)।
विक्ष न [दे] वाद्य विशेष (राज)।
विचिणिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ धारा (दे ७, ६३)।
विचुअ पु [वृश्चिक] जन्तु-विशेष, बिच्छू (हे १, १२८, २, १६, ८६)।
विछ अक [वि + वट्] अलग होना। विछइ (प्राकृ ७१)।
विंछिअ } देखो विचुअ (हे १, २६, २,
विछुअ } १६, सुख ३६, १४८, पउम ३९, १७, प्राप्र, प्राकृ २३, गा २३७ अ)।

विजण देखो वजण, 'तेत्तीसविजणाइ' (चड)।
विंजण देखो विअण = व्यजन, गुजराती मे 'विजणो' (रभा २०)।
विंझ पु [विन्ध्य] १ पर्वत विशेष, विन्ध्याचल (गा ११५, णाया १, १—पत्र ६४)। २ व्याध, बहेलिया (हे १, २५, २, २६, प्राप्र)। ३ एक जैन मुनि (विसे २५१२)। ४ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५७८)।
विट सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना, गुजराती मे 'विंटवु', 'विंटइ त उज्जाए हयगयरहसुहडकोडीहि' (सुपा ५७३)। प्रयो, सकृ. विटाविउ (सुपा १८६)।
विंट न [वृन्त] फल-पत्र आदि का बन्धन (हे १, १३९, प्राकृ ४, रभा, प्रासू १०२)।
विटल } न [दे] १ वशीकरण विद्या,
विटलिअ } 'अणाइपि कुडलवि(?टलवि)- टलाइ करलाघवाइ कम्माइ' (सिरि ५७)। २ निमित्त आदि का प्रयोग (वृह १), 'विटलि- आणि पउजति' (गच्छ ३, १३)।
विंटलिआ स्त्री [दे] गठरी, पोटली, गुजराती मे 'विटलु', 'ताव कुमरेण खित्ता तप्पुरओ वत्थविटलिया', 'तीए विंटलियाए' (सुपा २६१)।
विटिया स्त्री [दे] १ गठरी, पोटली (सुख २, ५, उप १४२ टी)। २ मुद्रिका, अंगुलीयक, गुजराती मे 'वींटी', 'उच्चारोवरि मुक्का कणयमयविटिया नियया' (सुपा ६११), 'पडिवन्नाओ मणिविढि(?टि)याहि तह अगु- लीओ त्ति' (स ७६)।
वितर पु [व्यन्तर] १ बिच्छू आदि दुष्ट जन्तु (उप ५९४), 'दुट्ठाण को न बीहइ वितर- मप्पाण व खलाण' (वज्जा १२)। २ एक देव-जाति, 'निस्सूगाण नराण हि वितरा अवि किकरा' (श्रा १२, दं २)।
विंतागी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ
विद सक [विद्] १ जानना। २ प्राप्त करना, 'धम्म च जे विदति तत्थ तत्थ' (सूअ १, १४, २७)। वकृ विदमाण (णाया १, १—पत्र २६, विपा १, २—पत्र ३४)।
विद देखो वंद = वृन्द (भवि, पि ३६८)।
विदारग } देखो वदारय (सुपा ५०३, नाट—
विदारय } शकु ८८)। °वर पु [°वर] इन्द्र (सम्मत्त ७५)।

विदावण पुंन [वृन्दावन] मथुरा का एक वन (ती ७)।
विदुरिल्ल त्रि [दे] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान। २ मञ्जुल घोषवाला, मधुर कंठ। ३ निद्राण, म्लान। ४ विस्तृत, 'घटाहि विदुरिल्लासुर- तरुणीविमाणाणुसारं लहती (कप्पू)।
विद्र देखो वद्र (प्राकृ ३६)।
विद्रावण देखो विदावण (प्राकृ ३६)।
विध सक [व्यध्] बीधना, छेदना, वेधना। विधइ, विधेज्जा (पि ४८६, भग)। वकृ. विधत (सुर २, ६३)। सकृ. विधिअ (नाट—मृच्छ २१३)। हेकृ निविउ (स ६२)। कृ. विधेयव्व (सुपा २६६)।
विंधण न [व्यधन] छेदन, वेधना, 'लक्ख- विधण'—(धर्मवि ५२)।
विधिअ वि [विद्ध] जो वेधा गया हो वह, छिन्न (सम्मत्त १५८)।
विभय देखो विम्हय = विस्मय (भवि)।
विभर देखो विम्हर। विभरइ (पि ३१३)।
विंभल वि [विह्वल] व्याकुल, घबडाया हुआ, 'विसविभल' (उप ५९७ टी, कुप्र ६०, ५९८, भवि, ओघ ७३)।
विभिअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित 'ओघुणइ दीवओ विभ (?भि)ओ व्व पवणा- हओ सीस' (वज्जा ६६, भवि)।
विभिअ देखो विअभिअ, 'साहग्गविभियासाए' (वज्जा ८६)।
विसदि (शौ) स्त्री [विशति] बीस, २० (प्रयौ २०)।
विकथ सक [वि + कत्थ्] प्रशंसा करना। विकथइज्जा (सूअ १, १४, २१)।
विकप अक [वि + कम्प्] हिल जाना, चलित होना। वकृ. विकपमाणो (सूअ १, १४, १४)।
विकप सक [वि + कम्पय्] १ हिलाना, चलाना। २ त्याग करना छोडना। ३ अपने मडल से बाहर निकलना। ४ भीतर प्रवेश करना। विकपइ (सुज्ज १, १)। सकृ. विकपइत्ता (सुज्ज १, ६)।
विकप वि [विकम्प] कम्प, हिलन (पचा १८, १५)।

विकच वि [विकच] विकसित, प्रफुल्ल (दे ७, ८६)।
विकट्ट सक [वि + कृत्] काटना। वकृ विकट्टंत (महा ६)।
विकट्टिय वि [विकृत्त] काटा हुआ (तदु ४८)।
विकट्ठ देखो विअट्ठ (राज)।
विकड्ढ सक [वि + कृष्] खींचना। विकड्ढ (पण्ह १, १—पत्र १८)। वकृ. विकड्ढमाण (उवा)।
विकत्त देखो विकट्ट। विकत्तति (सूअ १, ५, २, २), विकत्ताहि (पण्ह १, १—पत्र १८)।
विकत्तु वि [विकर्तृ] विक्षेपक, विनाशक, 'अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य' (उत्त २०, ३७)।
विकत्थ देखो विकथ। विकत्थइ, विकत्थसि (उव, कुप्र १२५)। वकृ. विकत्थंत (सुपा ३१६)।
विकत्थण न [विकत्थन] १ प्रशंसा, श्लाघा। २ वि प्रशंसा-कर्ता (पुप्फ ३३०, धर्मवि ३६)।
विकत्थणा स्त्री [विकत्थना] प्रशंसा, श्लाघा (पिंड १२८)।
विकप्प देखो विअप्प (कम, पचभा)।
विकप्पण न [विकल्पन] छेदन, काटना, 'पओउ(?पउ)लण-विकप्पणाणि य' (पण्ह १, १—पत्र १८)।
विकप्पणा. देखो विअप्पणा (णाया १, १६—पत्र २१८)।
विकप्पिय देखो विगप्पिअ (राज)।
विकय देखो विगय = विकृत (पण्ह १, १—पत्र २३, १, ३—पत्र ४५)।
विकय देखो विकच (पिंग)।
विकर सक [वि + कृ] विकार पाना। कवकृ विकीरंत (अच्चु ४७)।
विकरण न [विकरण] विक्षेपण, विनाश, 'कम्मरयविकरणकर' (णाया १, ८—पत्र १५२)।
विकराल देखो विगराल (दे, राज)।
विकल देखो विअल = विकल, 'कला अविकला तुज्झ' (कुप्र ८, सिरि २२३, पंचा ६, ३६)। देखो विगल = विकल।
विकस देखो विअस। विकसइ (षड्)।
विकसिय देखो विअसिअ (कप्प)।
विकहा देखो विगहा (सम ४६)।
विकारिण वि [विकारिन्] विकार-युक्त, 'बालो अविकारिणो अमुद्धीओ' (पउम २६, ६०)।
विकासर देखो विआसर (हे १, ४३)।
विकिइ देखो विगइ = विकृति (विसे २६६८)।
विकिंचण देखो विगिंचण (ओघभा २०६ टी)।
विगिंचणया देखो विगिंचणया (ओघभा २०६ टी, ठा ८ टी—पत्र ४४१)।
विकिट्ठ वि [विकृष्ट] १ उत्कृष्ट, 'विकिट्ठत-वसोसियगो' (महा)। २ न लगातार चार दिनों का उपवास (संबोध ५८)। देखो विगिट्ठ।
विकिण सक [वि + क्री] बेचना। विकिणइ (हे ४, ५२)।
विकिणण न [विक्रयण] विक्रय, बेचना (कुमा)।
विकिण्ण वि [विकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (भग)। २—देखो विइण्ण, विकिन्न = विकीर्ण (दे)।
विकिदि देखो विगइ = विकृति (प्राकृ १२)।
विकिन्न वि [विकीर्ण] १ आकृष्ट (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ देखो विइण्ण = विकीर्ण (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
विकिय देखो विगिय (ओघभा २८६ टी)।
विकिर अक [वि + कृ] १ बिखरना। २ सक फेंकना। ३ हिलाना। कवकृ विइज्जंत, विकिरिज्जमाण (गउड ३३४, राज)।
विकिरण देखो विकरण (तदु ४१)।
विकिरिया स्त्री [विक्रिया] १ विविध क्रिया। २ विशिष्ट क्रिया (राजा)। देखो विक्किरिया।
विकीण देखो विकिण। विकीणइ, विकीणए (षड्)।
विकीरंत देखो विकर।
विकुच्छिअ वि [विकुत्सित] खराब, दुष्ट (भवि)।
विकुज्ज सक [विकुब्जय्] कुब्ज करना, दबाना। संकृ. विकुज्जिय (आचा २, ३, २, ६)।
विकुप्प अक [वि + कुप्] कोप करना। विकुप्पए (गा ६६७)।
विकुव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व्। विकुव्वति (पि ५०८)। भूका विकुव्विसु (पि ५१६)। भवि. विकुव्विस्सति (पि ५३३)। वकृ विकुव्वमाण, (ठा ३, १—पत्र १२०)।
विकुस पु [विकुश] बल्वज आदि तृण (ओप, णाया १, १ टी—पत्र ६)।
विकूड सक [वि + कूटय्] प्रतिघात करना। विकूडे (विसे ६३३)।
विकूण सक [वि + कूणय्] घृणा से मुंह मोड़ना। विकूणेइ (विवे १०६)।
विकोअ पु [विकोच] विस्तार, फैलाव (धर्मसं ३६५, भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।
विकोव देखो विगोव, 'जो पवयणं विकोवइ सो नेओ दीहससारी' (चेइय ८३०)।
विकोवण न [विकोपन] विकाम, प्रसार, फैलाव, 'मीसमइविकोवणट्ठाए' (पिंड ६७)।
विकोवणया स्त्री [विकोपना] विपाक, 'इ दिअत्थविकोवणयाए' (ठा ६—पत्र ४४६)।
विकोविय वि [विकोविद] कुशल, निपुण (पिंड ४३१)।
विकोस वि [विकोश] कोश-रहित (तंदु २०)।
विकोस } अक [विकोशाय्] १ कोश-
विकोसाय } रहित होना, निकसना। २ फैलना। विकोसइ (हे ४, ४२)। वकृ विकोसायंत (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
विकोसिअ वि [विकोशित] १ विकसित (कुमा)। २ कोश-रहित, नंगा (णाया १, ८—पत्र १३३)।
विक्क सक [वि + क्री] बेचना। वकृ. विक्कंत (पउम २६,६)। कवकृ. विक्कायमाण (दस ५, १, ७२)।
विक्कअ पु [विक्रय] बेचना (अभि १८४, गउड, स ४६)।
विक्कअ देखो विक्कव (षड्)।
विक्कइ वि [विक्रयिन्] बेचनेवाला (दे २, ६८)।

विक्कंत देखो विक्क।

विक्कंत वि [विक्रान्त] १ पराक्रमी, शूर (णाया १, १—पत्र २१, विसे १०५६, प्रासू १०७, कप्प)। २ पु पहली नरक-भूमि का बारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५)।

विक्कंति स्त्री [विक्रान्ति] विक्रम, पराक्रम (णाया १, १६—पत्र २१८)।

विक्कंभ देखो विक्खंभ = विष्कम्भ (देवेन्द्र ३०६)।

विक्कणण न [विक्रयण] विक्रय, वेचना (सुपा ६०६, सट्ठि ६ टी)।

विक्कम अक [वि + क्रम्] पराक्रम करना, शूरता दिखलाना। भवि. विक्कमिस्सदि (शौ) (पार्थ ६)।

विक्कम पु [विक्रम] १ शौर्य, पराक्रम (कुमा)। २ सामर्थ्य (गउड)। ३ एक राजा का नाम (सुपा ५६६)। ४ राजा विक्रमादित्य (रभा ७)। °जस पुं [°यशस्] एक राजा (महा)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (ती २१)। °राय पु [°राज] एक राजा (महा)। °सेण पु [°सेन] एक राज-कुमार (सुपा ५६२)। °इच्च, °इत्त पु [°आदित्य] एक सुप्रसिद्ध राजा (गा ४६४ अ, सम्मत्त १४६, सुपा ५६२, गा ८६४)।

विक्कमण पु [दे] चतुर चालवाला घोडा (दे ७, ६७)।

विक्कमि त्रि [विक्रमिन्] पराक्रमी, शूर (कुमा)।

विक्कव वि [विक्लव] व्याकुल, वेचैन (पव १६६, प्राप्र, सबोध २१)।

विक्कायमाण देखो विक्क।

विक्कि देखो विक्कइ, 'ते नाणविक्किणो पुण मिच्छत्तपरा, न ते मुणिणो' (सबोध १६)।

विक्किअ वि [दे] सस्कृत, सुधारा हुआ (दस ७, ४३)।

विक्कित वि [विकृत्त] छिन्न, काटा हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५८)।

विक्किट्ठ देखो विकिट्ठ (सबोध ५८)।

विक्किण सक [वि + क्री] वेचना। विक्किणइ (प्राप्र)। कर्म विक्किणीअति (पि ५४८)। वकृ. विक्किणंत, विक्किणित (पि ३६७, सुपा २७६)। सकृ. विक्किणिअ (नाट—मृच्छ ६५)।

विक्किणिअ } वि [विक्रीत] वेचा हुआ (सुपा
विक्किय } ६४२, भवि)।

विक्किय देखो विउव्व = वेक्रिय, 'कयविक्कियरूवो सुरो व्व लक्खियसि' (सुपा १८७), 'कयविक्किय-काओ देवुव्व' (सम्मत्त १०४)।

विक्किर सक [वि + कृ] विखेरना, छितराना, फैलाना। कवकृ विक्किरिज्जमाण (राय १४)।

विक्किरिया स्त्री [विक्रिया] विकृति, विकार, 'तीए नयणाइएहि विक्किरिय कुणइ' (सुपा ५१४)। देखो विकिरिया।

विक्कीय देखो विक्किय = विक्रीत (सुर ६, १६५, सुपा ३८५)।

विक्के सक [वि + क्री] वेचना। विक्केइ, विक्केअइ (हे ४, ५२, प्राप्र, धात्वा १५२)। कृ विक्केज्ज (दे ६, ४०, ७, ६६)।

विक्केणुअ वि [दे] विक्रेय, वेचने योग्य (दे ७, ६६)।

विक्कोण पु [विकोण] विकूणन, घृणा से मुँह सिकुडना (दे ३, २८)।

विक्कोस सक [वि + क्रुश्] चिल्लाना। विक्कोश (मा) (मृच्छ २७)।

विक्खंभ पु [दे] १ स्थान, जगह (दे ७, ८८)। २ अतराल, वीच का भाग (दे ७, ८८, से ६, ५७)। ३ विवर, छिद्र (से ३, १४)।

विक्खंभ पु [विष्कम्भ] १ विस्तार (पण्ण १—पत्र ५२, ठा ४, २—पत्र २२६, दे ७, ८८, पाअ)। २ चोडाई, 'जबुद्दीवे दीवे एग जोयणसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते' (सम २)। ३ वाहुल्य, स्थूलता, मोटाई (सुज्ज १, १—पत्र ७)। ४ प्रतिवन्ध, निरोध (सम्यकत्वो ८)। ५ नाटक का एक अग (कप्पू)। ६ द्वार के दोनो तरफ के वीच का अन्तर (ठा ४, २—पत्र २२५)।

विक्खंभिअ वि [विष्कम्भित] निरुद्ध, रोका हुआ (सम्यकत्वो ८)।

विक्खण न [दे] कार्य, काम, काज (दे ७, ६४)।

विक्खय वि [विक्षत] व्रण-युक्त, कृत-व्रण (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

विक्खर सक [वि + कृ] १ छितरना, तितर-वितर करना। २ फेलाना। ३ इधर उधर फेंकना। विक्खरइ (कप्पू), विक्खरेज्जा (उत्रा २०० टि)। कवकृ. विक्खरिज्जमाण (राज)।

विक्खवण न [विक्षपण] १ विनाश। २ वि विनाशक, 'वज्जभमरसपडिवक्खविक्खवण' (सुपा ४७)।

विक्खाइ स्त्री [विख्याति] प्रसिद्धि (भवि)।

विक्खाय वि [विख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (पाअ, सुर १, ४६, रभा, महा)।

विक्खास वि [दे] विरूप, खराव, कुत्सित (दे ७, ६३)।

विक्खिण्ण त्रि [दे] १ आयत, लम्बा। २ अवतीर्ण। ३ न, जघन (दे ७, ८८)।

विक्खिण्ण देखो विकिण्ण (कस)।

विक्खित्त वि [विक्षिप्त] १ फेंका हुआ (पाअ, कस, गउड)। २ भ्रान्त, पागल, 'पमुत्तविक्खित्तजणे परियणे' (उप ७२८ टी, दे १, १३३, महा)।

विक्खिर देखो विक्खर। विक्खिरेज्जा (उत्रा)।

विक्खिरिअ वि [विकीर्ण] विखरा हुआ, छितरा हुआ, फेला हुआ (सुर ५, २०६, सुपा २४६, गउड)।

विक्खिव सक [वि + क्षिप्] १ दूर करना। २ प्रेरना। ३ फेकना। विक्खिवइ (महा)।

विक्खिवण न [विक्षेपण] १ दूरीकरण। २ प्रेरणा (पव ६४)।

विक्खेव पु [विक्षेप] १ क्षोभ, 'छोहो विक्खेवो' (पाअ)। २ उचाट, ग्लानि, खेद (से ५, ३)। ३ ऊँचा फेंकना, ऊर्ध्व-क्षेपण (ओघभा १६३)। ४ फेकना, क्षेपण (गा ५८२)। ५ शृ गार-विशेष, अवज्ञा से किया हुआ मण्डन (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ६ चित्त-भ्रम (स २८२)। ७ विलव, देरी (स ७३५)। ८ सैन्य, लश्कर (स २४; ५७३)।

विक्खेवणी स्त्री [विक्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २—पत्र २१०)।

विक्खेविया स्त्री [विक्षेपिका] व्याक्षेप, विक्षेप (वव ६)।
विक्खोड सक [दे] निन्दा करना, गुजराती मे 'वखोडवु'। विक्खोडेइ (सिरि ८२५)।
विखंडिय वि [विखण्डित] खण्डित किया हुआ (पउम २२, ६२)।
विग देखो विअ = वृक (पण्ह १, १—पत्र ७, सण, णाया १, १—पत्र ६५)।
विगइ स्त्री [विकृति] १ विकार-जनक घृत आदि वस्तु (णाया १, ८—पत्र १२२, उव, स ७२, श्रा २०)। २ विकार (उत्त ३२, १०१)।
विगइ स्त्री [विगति] विनाश (विसे २१८६)।
विगइगाल वि [विगताङ्गार] राग-रहित (ओघ ५७६)।
विगइच्छ वि [विगतेच्छ] इच्छा-रहित, निःस्पृह (उप १३० टी, ६१३)।
विगच देखो विगिंच। संकृ विगचिउ, विगचिऊण (वव २, संबोध ५७)।
विगचण देखो विगिंचण, 'काए कडूयणं वज्जे तहा खेलविगचणं' (संबोध ३)।
विगचिअ देखो विइंचिअ (स १३५ टि)।
विगच्छ अक [वि + गम्] नष्ट होना। वकृ विगच्छंत (सम्म १३४)।
विगज्झ देखो विगह = वि + ग्रह्।
विगड देखो विअग = विकट (पण्ह १, ४—पत्र ७८, ओप)।
विगड देखो विअड = विवृत (ठा ३, १ टी—पत्र १२२)।
विगण सक [वि + गणय्] १ निन्दा करना। २ घृणा करना। कवकृ विगणिज्जंत (तंदु १८)।
विगत्त सक [वि + कृत्] काटना, छेदना। संकृ विगत्तिऊण (सूअ १, ५, २, ८)।
विगत्त वि [विकृत्त] काटा हुआ, छिन्न (पण्ह १, १—पत्र १८)।
विगत्तग वि [विकर्तक] काटनेवाला (सूअ २, २, ६२)।
विगत्तणा स्त्री [विकर्तना] छेदन (उव)।
विगत्थय वि [विकत्थक] प्रशंसा करनेवाला, आत्मश्लाघा करनेवाला (भवि)।

विगप्प देखो विअप्प = वि + कल्पय्। वकृ. विगप्पयंत, विगप्पमाण (सुर ६, २२४, ३, १२४)।
विगप्प पु [विकल्प] १ एक पक्ष मे प्राप्ति, 'चसद्दो विगप्पेण' (पंच ३, ४४)। २ देखो विअप्प = विकल्प (णाया १, १६—पत्र २१८, सुर ३, १०२, ४, २२२, सुपा १२६, जी २५)।
विगप्पण देखो विअप्पण (उत्तर २३, ३२, महा)।
विगप्पिअ वि [विकल्पित] १ उत्प्रेक्षित, कल्पित (पव २, उव)। २ चिन्तित, विचारित (पव १४५)। ३ काटा हुआ, छिन्न, 'हत्थपायपडिच्छिन्नं कन्ननासविगप्पिअं' (दस ८,५६)।
विगम पुं [विगम] विनाश (सुर ७, २२६, १२, १६)।
विगय वि [विकृत] विकार-प्राप्त (णाया १, २—पत्र ७६, १, ८—पत्र १३३)।
विगय वि [विगत] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट (सम्म १३४, विसे ३३७७, पिंड ६१०)। २ पु. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। °धूम वि [°धूम] द्वेष-रहित (ओघ ५७६)। °सोग पु [°शोक] एक महा-ग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८), देखो वीअ-सोग। °सोगा स्त्री [°शोका] विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०)।
विगरण न [विकरण] परिष्ठापन, परित्याग (कस)।
विगरह सक [वि + गर्ह्] निन्दा करना। वकृ विगरहमाण (सूअ २, ६, १२)।
विगराल वि [विकराल] भीषण, भयकर (सुपा १८०, ५८५, सण)।
विगल सक [वि + गल्] टपकना, चूना। विगलइ (षड्)।
विगल पु [विकल] १ विकलेन्द्रिय—दो, तीन या चार ज्ञानेन्द्रियवाला जन्तु (कम्म ३, १०, ४, ३, १५, १६, जी ४१)। २ देखो विअल = विकल (उव, उप पृ १८१, पचा १४, ४७)। °देस पु [°देश] नय-वाक्य (अज्झ ६२)।

विगलिंदिय पु [विकलेन्द्रिय] दो, तीन या चार इन्द्रियवाला जन्तु (ठा २, २, ३, १—पत्र १२१)।
विगस अक [वि + क्रम्] खिलना, फूलना। विगसति (तंदु ५३)। वकृ विगसंत (णाया १, १—पत्र १६)।
विगह सक [वि + ग्रह्] १ लडाई करना। २ वर्ग-मूल निकालना। ३ समास आदि का समानार्थक वाक्य बनाना। संकृ 'भूओ भूओ विगज्झ मूलतिगं' (पंचा २, १८)।
विगह देखो विग्गह, 'हाउवनिवजिए विगह-मुक्के' (गच्छ २, ३३)।
विगहा स्त्री [विकथा] शास्त्र-विरुद्ध वार्त्ता, स्त्री आदि की अनुपयोगी बात (भग, उव, सुर १४, ८८, सुपा २५२ गच्छ १, ११)।
विगाढ वि [विगाढ] १ विशेष गाढ, अतिशय निविड (उत्त १०, ४ टी)। २ चारो ओर से व्याप्त (राज)।
विगाण न [विगान] १ वचनीय, लोकापवाद (दे ३, ३)। २ विप्रतिपत्ति, विरोध (धर्मसं २६६, चेइय ७५६)।
विगार पु [विकार] विकृति, प्रकृति का अन्यथा परिणाम (उप ६८६ टी, विसे १६८८)।
विगारि वि [विकारिन्] विकृत होनेवाला (पिंड २८०, पउम १०१, ४८)।
विगाल देखो विआल = विकाल (सुर १, ११७)।
विगालिय वि [विगालित] विलम्बित, प्रतीक्षित, 'एत्तियमेत्त काल विमा (?गा)लिय जेण आनाए' (सुर ६ २३)।
विगाह सक [वि + गाह्] १ अवगाहन करना। २ प्रवेश करना। संकृ विगाहिआ (सम ५०)।
विगिंच सक [वि + विच्] १ पृथक् करना, अलग करना। २ परित्याग करना। ३ विनाश करना। विगिंचइ, विगिंचए, विगिंचति (आचा, कस, श्रावक २६२ टी, सूअ १, १, ८, १२, पिंड ३६६), विगिंच (सूअ १, १३, २१, उत्त ३, १३, पिंड ३६५)। वकृ विगिंचंत, विगिंचमाण (श्रावक २६२ टी, आचा)। संकृ विगिंचि-ऊण, विगिंचित्ता (पिंड ३०५, आचा)।

हेकृ. विगिंचिउं (पिंड ३६८)। कृ. विगिंचियव्व (पि ५७०)।

विगिंचण न [विवेचन] परिष्ठापन, परित्याग (पिंड ४८३, कस)।

विगिंचणया, विगिंचणा, विगिंचाणआ } स्त्री [विवेचना] १ निर्जरा, विनाश (ठा ८—पत्र ४४१)। २ परित्याग (ओघभा २०६, स ५१, ओघ ६०६, ८७)।

विगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संदेह, संशय, वहम (आ ३, पडि)।

विगिट्ठ देखो विकिट्ठ; 'अन्ने तव विगिट्ठं काउं थोवावसेससमारा' (पउम २, ८३, ४, २७, गच्छ २, २५, उत्त ३६, २५३)। °खमग पु [°क्षपक] तपस्वी साधु (राज)। °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार चार या उससे अधिक दिनों का उपवास करनेवाला (कप्प)।

विगिय देखो विगय = विकृत (ओघभा २८६)।

विगिला, विगिलाअ } अक [वि + ग्लै] विशेष ग्लान होना, खिन्न होना। विगिलाइ, विगिलाएज्जा (पि १३६, आचा २, २, ३, २८)।

विगुण वि [विगुण] १ गुण-रहित (सिरि १२३३ प्रासू ७१)। २ अननुगुण, प्रतिकूल (पंचा ६, ३२)।

विगुत्त वि [विगुप्त] १ तिरस्कृत, अवधीरित (श्रा १२)। २ जो खुला पड गया हो वह, जिसकी पोल खुल गई हो वह, जिसकी फजीहत हुई हो वह; 'सदुक्कयविगुत्तो' (श्रा १८, धर्मवि ७७)।

विगुप्प° देखो विगोव।

विगुव्वणा देखो विउव्वणा (ठा १—पत्र १६)।

विगुव्विय देखो विउव्विअ (पउम ३६, ३२)।

विगोइय वि [विगोपित] जिसका दोष प्रकट किया गया हो वह (सण)।

विगोव सक [वि + गोपय्] १ प्रकाशित करना। २ तिरस्कार करना। ३ फजीहत करना। भवि 'न पुन खु चउवेयगुत्तगो भोदु सुद्दविसखं पवजिय अप्पाएं विगोविस्स' (मोह १०)। कर्म. विगुप्पसु (धर्मवि १३४), विगुप्पहि (अप) (भवि)। संकृ. विगोवित्ता, विगोवइत्ता (कप्प, णाया १, १६—पत्र २४४)।

विगोवण न [विकोपन] विकास; तहवि य दसिज्जतो सीसमइविगोवणमदुट्ठा' (श्रावक २२८)।

विग्गह पु [विग्रह] १ वक्रता बांक (ठा २, ४—पत्र ८६)। २ शरीर, देह (पाअ, स ७२६, सुपा १६)। ३ युद्ध, लडाई (स ६३४)। ४ समास आदि के समान अर्थवाला वाक्य (विसे १००२)। ५ विभाग (ठा १०)। ६ आकृति, आकार; वरवइरविग्गहए' (भग २, ८)। °गइ स्त्री [°गति] बांकवाली गति, वक्र गति (ठा २, १—पत्र ५५, भग)।

विग्गहिय वि [वैग्रहिक] शरीर के अनुरूप; 'विग्गहिय उन्नयकुच्छी' (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

विग्गहीअ वि [विग्रहिक] युद्ध-प्रिय; 'जे विग्गहीए अनायभासी' (सूत्र १, १३, ६)।

विग्गाहा (अप) स्त्री [विगाथा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विग्गुत्त वि [दे] व्याकुल किया हुआ (भवि)।

विग्गुत्त देखो विगुत्त (धर्मवि ५८, ६८)।

विग्गोव देखो विगोव। संकृ विग्गोवित्ता (कप्प, ओप)

विग्गोव पु [दे] आकुलता, व्याकुलता (दे ७, ६४, भवि, वज्जा २३)।

विग्गोवणया स्त्री [विगोपना] १ तिरस्कार। २ फजीहत (उव)।

विग्घ पुन [विघ्न] १ अन्तराय, व्याघात, प्रतिबन्ध (सुपा २६५, कुमा, प्रासू ५४, १३५, कप्प, कम्म १, ६१, षड्)। २ कर्म-विशेष, आत्मा के वीर्य, दान आदि शक्तियों का घातक कर्म (कम्म १, ५२, ५३)। °कर वि [°कर] प्रतिबन्ध-कर्ता (कम्म १, ६१)। °ह वि [°घ] विघ्न-नाशक (श्रु ७५)। °विह वि [°विह] विघ्नवाला (सुर १, ४३)।

विग्घर वि [विगृह] गृह-रहित; 'तह उग्घर-विग्घरनिरंगणोवि न य इच्छिय लहइ' (णाया १, १० टी—पत्र १७१)।

विग्घिय वि [विघ्नित] विघ्न-युक्त (हम्मीर १४)।

विग्घुट्ठ वि [विघुष्ट] चिल्लाया हुआ (विपा १, २—पत्र २६)। देखो विघुट्ठ।

विघट्ट सक [वि + घट्टय्] १ वियुक्त करना। २ विनाश करना। विघट्टेइ (सत्त)।

विघट्टण न [विघट्टन] विनाश (नाट)।

विघडग देखो विहडण (राज)।

विघत्थ वि [विघस्त विग्रस्त] १ विशेष रूप से भक्षित। २ व्याप्त; वाहिविघत्थस्स मत्तस्स' (महा, प्राप्र)।

विघर देखो विग्घर (उव)।

विघाय पु [विघात] विनाश (कुमा)।

विघायग वि [विघातक] विनाश-कर्ता (धर्मसं ५२६)।

विघुट्ठ न [विघुष्ट] विरूप आवाज करना (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। देखो विग्घुट्ठ।

विघुम्म अक [वि + घूर्णय्] डोलना। वकृ विघुम्ममाण (सुर ३, १०६)।

विचक्खु वि [विचक्षुष्क] चक्षु रहित, अन्धा (उप ७२८ टी)।

विचच्चिया स्त्री [विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा (राज)।

विचलिर वि [विचलितृ] चलायमान होनेवाला (मण)।

विचल्लिय वि [विचलित] चचल बना हुआ (भवि)।

विचार देखो विआर = वि + चारय्। विचारति (मृच्छ १०४)।

विचारग वि [विचारक] विचार-कर्ता (रभा)।

विचारण देखो विआरण = विचारण (कुप्र ३६७)।

विचारणा देखो विआरणा = विचारणा (धर्मसं ३०६)।

विचाल न [विचाल] अन्तराल (दे ७, ८८)।

विचिअ वि [विचित] चुना हुआ (दे ७, ६१)।

विचिंत सक [वि + चिन्तय्] विचार करना। विचिंतेइ (महा)। वकृ विचिंतेंत (सुर १२, १६६)। कृ विचिंतियव्व, विचिंतिज्ज (पंचा ६, ४६, द्रव्य ५०)।

विचितण न [विचिन्तन] विचार, विमर्श (श्रु ६)।

विचितिअ वि [विचिन्तित] विचारित (सुर ८, ३)।

विचितिर वि [विचिन्तयितृ] विचार-कर्ता (श्रा १२, सण)।

विचिक्की स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

विचिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संशय, धर्म कार्य के फल की तरफ संदेह (सम्मत्त ६५)।

विचिट्ठिअ वि [विचेष्टित] १ जिसकी कोशिश की गई हो वह (सुपा ४७०)। २ न चेष्टा, प्रयत्न (उप ३२० टी)।

विचिण } सक [वि + चि] १ खोज
विचिण्ण } करना। २ फूल आदि चुनना। विचिणंति (पि ५०२)। वकृ विचिण्णंत (मा ४६)।

विचित्त वि [विचित्र] १ विविध, अनेक तरह का, 'विचित्ततवो कम्मेहिं' (महा, राय, प्रासू ४२)। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक, 'विहिणो विचित्तय जाणिऊण' (सुर १३, ४)। ३ अनेक रँगवाला, शबल (णाया १, ६, कप्प)। ४ अनेक चित्रों से युक्त (कप्प, सुज्ज २०)। ५ पु पर्वत विशेष (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। ६ वेणुदव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। °कूड पु [°कूट] शीतोदा नदी के किनारे पर स्थित पर्वत विशेष (इक)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४६)।

विचित्ता स्त्री [विचित्रा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ७—पत्र ४३७)। २ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)।

विचित्तिय वि [विचित्रित] विचित्रता से युक्त (सण)।

विचुणिद (शौ) देखो विचिअ (नाट—मालती १४१)।

विचुन्नण न [विचूर्णन] चूर-चूर करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना (द्र ३०)।

विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित, निर्जीव (उप पृ ४६)।

विचेल वि [विचेल] वस्त्र वर्जित, नंगा (पिंड ४७८)।

विच्च सक [वि + अय्] व्यय करना। विच्चेइ (ती ८)। देखो विव्व।

विच्च पुन [दे] व्यूत, बुनने की क्रिया (राय ६२)।

विच्च न [दे वर्त्मन्] १ बीच, मध्य, 'विच्चम्मि य सज्झाओ कायव्वो परमपयहेऊ' (पुप्फ ४२७), 'ठिओ अह कूडकवाडविच्चे' (निसा १६)। २ मार्ग, रास्ता (हे ४, ४२१, कुमा, भवि)।

विच्च सक [दे] समीप में आना। विच्चइ (भवि)।

विच्चवण न [विच्यवन] भ्रंश, विनाश (विसे २६१)।

विच्चामेलिय वि [व्यत्याम्रेडित] १ भिन्न भिन्न अंशों से मिश्रित। २ अस्थान में ही छिन्न हो कर फिर ग्रथित, तोड कर सांधा हुआ (विसे ८५५)।

विच्चाय पुं [वित्याग] परित्याग, 'पूयम्मि वीयराय भावो विष्फुरइ निसयविच्चाया' (सबोध ८)।

विच्चि स्त्री [वीचि] तरंग, कल्लोल (पउम १०६, ४१)।

विच्चु } देखो विचुअ (उप ५६३, पि
विच्चुअ } ५०, पण्ण १—पत्र ४६)।

विच्चुइ स्त्री [विच्युति] भ्रंश, विनाश (विसे १८०)।

विच्चोअय न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८)।

विच्छ° देखो विअ = विद्।

विच्छड्ड सक [वि + छर्दय्] परित्याग करना। वकृ विच्छड्डेमाण (णाया १, १८—पत्र २३६)। संकृ विच्छड्डइत्ता (कप्प)।

विच्छड्ड पु [विच्छर्द] १ ऋद्धि, वैभव, संपत्ति (पाअ, दे ७, ३२ टी, हे २, ३६, षड्)। २ विस्तार (कुमा, सुपा १६२)।

विच्छड्ड पु [दे] १ निवह, समूह (दे ७, ३२, गउड, से २, २, ६, ७२, गा ३८७)। २ ठाटबाट, सजधज, धूमधाम, 'महया विच्छड्डेण मोहणलग्गम्मि गुरुपमोएणं। कमलावई उ रन्ना परिणीया' (सुर १, १६६, कुप्र ४१, सम्मत्त १६३, धर्मवि ८२)।

विच्छड्डि स्त्री [विच्छर्दि] १ विशेष वमन। २ परित्याग (प्राप्र)। ३ विस्तार, 'निम्मलो केवलालोअलच्छिविच्छि (?च्छ)ड्डिकारओ' (सिरि १०६१)।

विच्छड्डिअ वि [विच्छर्दित] १ परित्यक्त, 'पामुक्क विच्छड्डिअ अवहत्थिअ उज्झिअ चत्त' (पाअ, णाया १, १, ठा ८, औप)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ (से १०, ४६)। ४ विच्छादित, आच्छादित (हम्मीर १७)।

विच्छड्डेमाण देखो विच्छड्ड = वि + छर्दय्।

विच्छद्दिअ देखो विच्छड्डिअ (नाट—मालती १२६)।

विच्छय वि [विक्षत] विविध तरह से पीडित (सूअ १, २, ३, ५)। देखो विक्खय।

विच्छल देखो विब्भल (षड् ४०)।

विच्छवि वि [विच्छवि] १ विरूप आकृति-वाला, कुडौल (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। २ पु. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

विच्छाइय वि [विच्छायित] निस्तेज किया हुआ (सुपा १६६)।

विच्छाय वि [विच्छाय] निस्तेज, कान्ति-रहित, फीका (सुर ४, १०६, कप्पू, प्रासू १३७, महा, गउड)।

विच्छाय सक [विच्छायय्] निस्तेज करना, 'विच्छाएइ मियंकं तुसारवरिसो अणुगुणोवि' (गउड)। वकृ. विच्छाअंत (कप्पू)।

विच्छिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ विचित, चुना हुआ। ३ विरल (दे ७, ६१)।

विच्छिअ देखो विछिअ (उत्त ३६, १४८, पि ५०, ११८, ३०१)।

विच्छिंद सक [वि + छिद्] तोड़ना, अलग करना। विच्छिंदइ (पि ५०६)। भवि. विच्छिंदिहिति (पि ५३२)। वकृ. विच्छिंद-माण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

विच्छिण्ण वि [विच्छिन्न] अलग किया हुआ (विपा १, २ टि—पत्र २८, नाट—मृच्छ ८६)।

विच्छित्ति स्त्री [विच्छित्ति] १ विन्यास, रचना (पाअ, म ६१५, सुपा ५४, ८३, २६०, गउड)। २ प्रान्त भाग (सुर ३, ७०)। ३ अगराग (गा ५८०)।

विच्छिन्न देखो विच्छिण्ण (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

विच्छिप्प सक [वि + स्पृश्] विशेष रूप से स्पर्श करना। कवकृ विच्छिप्पमाण (कप्प, ओप)।

विच्छिव सक [वि + क्षिप्] फेंकना। संकृ विच्छिविअ (नाट—चैत ३८)।

विच्छु } देखो विंचुअ (गा २३७, जी
विच्छुअ } १८, उत्त ३६, १४८, प्रासू १६, णाया १, ८—पत्र १३३)।

विच्छुडिअ वि [विच्छुटित] १ बिछुड़ा हुआ, जो अलग हुआ हो, विरहित, 'जइवि हु कालवसेण ममो समुद्दाओ कहवि विछु (?च्छु)डिओ' (वज्जा १५६)। २ मुक्त (राज)।

विच्छुरिअ वि [दे] अपूर्व, अद्भुत (षड्)।

विच्छुरिअ वि [विच्छुरित] १ खचित, जड़ा हुआ, 'उचिअ विच्छुरिअय जडिअ' (पाअ)। २ सबद्ध, जोड़ा हुआ (से १४, ७९)। ३ व्याप्त (पउम २, १०१, सुपा ६, २१२, सुर २, २२१)।

विच्छुह सक [वि + क्षिप्] फेंकना, दूर करना। विच्छुहइ (से १०, ७३, गा ४२४ अ)। कृ. विच्छुहेअव्व (से १०, ५३)।

विच्छुह अक [वि + क्षुभ्] विक्षोभ करना, चचल हो उठना। विच्छुहिर (हे ३, १४२)।

विच्छूढ वि [विक्षिप्त] १ फेंका हुआ, दूर किया हुआ (से ६, १६)। २ प्रेरित (पाअ)।

विच्छूढ वि [दे] वियुक्त, विरहित, विघटित, 'विच्छूढा जूहाओ' (स ६७८)।

विच्छूढव्व देखो विच्छुह = वि + क्षिप्।

विच्छेअ पु [दे] १ विलास। २ जघन (दे ७, ६०)।

विच्छेअ पु [विच्छेद] १ विभाग, पृथक्करण (विसे १००६)। २ वियोग (गा ९१३)। ३ अनुबन्ध विनाश, प्रवाह-निरोध (कप्पू)।

विच्छेअण न [विच्छेदन] ऊपर देखो (राज)।

विच्छेअय वि [विच्छेदक] विच्छेद-कर्ता (भवि)।

विच्छेइ वि [विच्छेदिन्] ऊपर देखो (कुप्र २२)।

विच्छेइअ वि [विच्छेदित] विच्छिन्न किया हुआ (नाट—विक्र ८२)।

विछोइय वि [दे] विरहित (भवि)।

विच्छोड देखो विच्छोल। संकृ विच्छोडिवि (अप) (हे ४, ४३९)।

विच्छोम पु [दे विदर्भ] नगर-विशेष, 'विदर्भे विच्छोमो' (प्राकृ ३८)।

विच्छोय पु [दे] विरह, वियोग (भवि)। देखो विच्छोह।

विच्छोल सक [कम्पय्] कँपाना। विच्छोलइ (हे ४, ४६)। वकृ. विच्छोलंत, विच्छोलित (कप्पू, सुर १०, १०७, १५, १३)।

विच्छोलिअ वि [कम्पित] कँपाया हुआ (कुमा, गउड)।

विच्छोलिअ वि [विच्छोलित] धौत, धोया हुआ, 'धोअ विच्छोलिअ' (पाअ)।

विच्छोव सक [दे] वियुक्त करना, विरहित करना,

'कालेण रूढपेम्मे परोप्पर
हिययनिव्वडियभावे।
अकलुणहियओ एसो
विच्छोवइ सत्तसंघाए'
(स १८६)।

विच्छोह पु [दे] विरह, वियोग (दे ७, ६२, हे ४, २९६)।

विच्छोह पु [विक्षोभ] १ विक्षेप, 'जे समुहागअवोलतवलिअपिअपसिअच्छिविच्छोहा' (गा २१०), 'पुलइयकवोलमूला विमुक्ककडक्खविच्छोहा' (सम्मत्त १९१)। २ चचलता (उप पृ १५८)।

विछल सक [वि + छलय्] छलित करना, ठगना। कर्म. विछलिज्जइ (महा)।

विछोय देखो विच्छोव। विछोयइ (स १८६ टि)।

विजइ वि [विजयिन्] विजेता, जीतनेवाला (कप्पू, नाट—विक्र ५)।

विजंभ देखो विअंभ = वि + जृम्भ्। वकृ. विजंभत (काप्र १८९)।

विजढ वि [वित्यक्त] परित्यक्त (उत्त ३६, ८३, सुख ३६, ८३, ओघ २४९)।

विजण देखो विअण = विजन। 'लक्खण ! देसो इमो विजणो' (पउम ३३, १३, हे १, १७७, कुमा)।

विजय सक [वि + जि] १ जीतना, फतह करना। २ अक उत्कर्ष मे वर्त्तना, उत्कर्ष-युक्त होना। विजयइ (पव २७६—गाथा १५९९), 'विजयतु ते पएसा विहरेइ जत्थ वीरजिणनाहो' (धर्मवि २२)। कृ. विजेतव्व (पे) (कुमा)।

विजय पु [विजय] १ निर्णय, शास्त्र के अर्थ का ज्ञान-पूर्वक निश्चय (ठा ४, १—पत्र १८८, सुज्ज १०, २२)। २ अनुचिन्तन, विमर्श (ओप)।

विजय पु [विजय] आश्रय, स्थान (दस ६, ५६)।

विजय पु [विजय] १ जय, जीत, फतह (कुमा; कम्म १, ५५, अभि ८१)। २ एक देव-विमान (अनु, सम ५७, ५८)। ३ विजय-विमान-निवासी देवता (सम ५६)। ४ एक मुहूर्त, अहोरात्र का बारहवाँ या सतरहवाँ मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३, कप्प, णाया १, ८—पत्र १३३)। ५ भगवान् नमिनाथजी का पिता (सम १५१)। ६ भारतवर्ष के बीसवें भावी जिनदेव (सम १५४, पव ४६)। ७ तृतीय चक्रवर्ती के पिता का नाम (सम १५२)। ८ आश्विन मास (सुज्ज १०, १९)। भारतवर्ष मे उत्पन्न द्वितीय बलदेव (सम ८४, १५८ टी, अनु, पव २०९)। १० भारतवर्ष का भावी दूसरा बलदेव (सम १५४)। ११ ग्यारहवें चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२)। १२ एक राजा (उप ७६८ टी)। १३ एक क्षत्रिय का नाम (विपा १, १—पत्र ४)। १४ भगवान् चन्द्रप्रभ का शासन-देव (संति ७)। १५ जबूद्वीप का पूर्व द्वार। १६ उस द्वार का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५)। १७ लवण समुद्र का पूर्व द्वार। १८ उस द्वार का अधिपति देव (ठा ४, २—पत्र

२२६, इक)। १६ क्षेत्र विशेष, महाविदेह वर्ष का प्रान्त-तुल्य प्रदेश (ठा ८—पत्र ४३५, इक, ज ४)। २० उत्कर्ष, 'जएण विजएण वद्धाविइ (णाया १, १—पत्र ३०, ओप, राय)। २१ पराभव करके ग्रहण करना (कुमा)। २२ विक्रम की प्रथम शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)। २३ अभ्युदय (राय)। २४ समृद्धि (राज)। २५ धात की खण्ड का पूर्व द्वार (इक)। २६ कालोद समुद्र, पुष्करवरद्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का पूर्व द्वार (राज)। २७ रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। २८ एक राजकुमार (धम्म ११)। २६ छन्द-विशेष (पिंग)। ३० वि जीतनेवाला, 'वरतुरए विहगाहिवविजयवेगवरे' (सम्मत्त २१६)। °चरपुर न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण (धर्मवि ५६)। °ढक्का स्त्री [°ढक्का] विजय-सूचक भेरी (सुपा २६८)। °देव पु [°देव] अठारहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (अज्झ १)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक २२३, २२४, ३२६)। °पुरा, पुरी स्त्री [°पुरी] पक्ष्मकावती नामक विजय-क्षेत्र की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °माण पु [°मान] एक जैन आचार्य (द्र ७०)। °वंत वि [°वत्] विजयी, विजेता (ति १४)। °वत्त न [°वर्त] चैत्य-विशेष (कलटिप्पनक)। °वद्धमाण पुन [°वर्धमान] ग्राम-विशेष (विपा १, १)। °वेजयन्ती स्त्री [°वैजयन्ती] विजय सूचक पताका (ओप)। °सागर पुं [°सागर] एक सूर्यवंशी राजा (पउम ५, ६२)। °सिंह, °सीह पु [°सिंह] १ सुप्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य (सुपा ६५८)। २ एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ६, १५७)। °सूरि पु [°सूरि] चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य (धर्मवि ४४)। °सेण पु [°सेन] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो आम्रदेव सूरि के शिष्य थे (पव २७६—गाथा १४६६)।

विजयंता } स्त्री [वैजयन्ती] १ पक्ष की
विजयंती } आठवीं रात (सुज्ज १०, १४)। २ एक रानी का नाम (उप ७२८ टी)।

विजया स्त्री [विजया] भगवान् शान्तिनाथ की दीक्षा शिबिका (विचार १२६)।

विजया स्त्री [विजया] १ भगवान अजित-नाथजी की माता का नाम (सम १५१)। २ पाँचवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ भगवान नमि जिन की एक पटरानी (ठा ८, १—पत्र २०४)। ४ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। ५ पूर्व-रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ पाँचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—स्त्री-रत्न (सम १५२)। ७ विजय नामक देव की राजधानी (सम २१)। ८ वप्रा नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। ६ पक्ष की सातवीं रात (सुज्ज १०, १४)। १० एक वेष्ठिनी (सुपा ६२६)। ११ भगवान् विमलनाथजी की शासन-देवी (पव २७, संति १०)। १२ भगवान् सुमतिनाथजी की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)। १३ एक पुष्करिणी (इक)।

विजल वि [विजल] १ जल-रहित (गउड)। २ न जल-रहित पंक (दस ५, १, ४)। देखो विज्जल।

विजह सक [वि + हा] परित्याग करना। विजहइ (पि ५७७)। संकृ. विजहित्तु (उत्त ८, २)।

विजहणा स्त्री [विहान] परित्याग (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

विजाइय वि [विजातीय] भिन्न जाति का, दूसरी तरह का (उप १२८ टी)।

विजाण देखो विआण = वि + ज्ञा। संकृ. विजाणित्ता, विजाणिय (कप्प)।

विजाणग } वि [विज्ञायक] जाननेवाला,
विजाणय } विज्ञ (आचा, सूत्रनि १४५)।

विजाणुअ वि [विज्ञ, विज्ञायक] ऊपर देखो (प्राकृ १८)।

विजादीअ (शौ) देखो विजाइय (नाट—चैत ८८)।

विजाय न [दे] लक्ष्य, निशाना, 'लक्ख विजायं' (पाअ)।

विजिअ वि [विजित] पराभूत, हारा हुआ (सुर ६, २५, स ७००)।

विजुत्त वि [वियुक्त] विरहित (धर्मसं १७४)।

विजुरि (अप) स्त्री [विद्युत्] बिजली (पिंग)।

विजेट्ठ वि [विज्येष्ठ] मध्यम, 'जेट्ठ विजेट्ठा कणिट्ठा य' (चेइय १५३)।

विजेतव्व देखो विजय = वि + जि।

विजोज सक [वि + योजय्] वियोग करना, अलग करना। संकृ. विजोजिय (पव ५, १२६)।

विजोजण न [वियोजन] वियोग, विरह (मोह ६८)।

विजोजिअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ (कुप्र २८८)।

विजोयावइत्तु वि [वियोजयितृ] वियोजक, अलग करनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २३८, २३६)।

विजोहा स्त्री [विज्जोहा] छन्द विशेष (पिंग)।

विज्ज अक [विद्] होना। विज्जइ, विज्जए (षड्, कम, भग, महा), विज्जई (सूअ १, ११, ६)। वकृ. विज्जंत, विज्जमाण (सुर २, १७६, पंचा ६, ४७)।

विज्ज सक [वीजय्] पंखा चलाना, हवा करना। कर्म. विज्जिज्जइ (भवि)। कवकृ. विज्जिज्जंत (पउम ६१, ३७, वज्जा ३६)।

विज्ज पु [वैद्य] चिकित्सक, हकीम (सुर १२, २४, नाट—विक्र ६५)।

विज्ज पु व [दे] देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

विज्ज पु [विद्वस्, विज्ञ] पण्डित, जानकार (हे २, १५, कुमा, प्राकृ १८, सूअ १, ६, ५)।

विज्ज देखो वीरिअ (पउम ३७, ७०)।

विज्ज° देखो विज्जा। °हर (अप) देखो विज्जा-हर (पि २१६)। °त्थि वि [°र्थिन्] छात्र, अभ्यासी (सम्मत्त १४३)।

विज्ज° देखो विज्जु (कुप्र ३६६)।

°विज्जंतअ देखो विज्जंत (से २, २४, पि ६०३)।

विज्जय न [वैद्यक] चिकित्सा (उर ८, १०, भवि)।

विज्जल पु [विजल] १ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। २ वि जल-रहित (निचू १)।

विज्जल } न [दे विजल] कर्दम, पंक,
विज्जुल } कांदो, कादा (आचा २, १, ५, ३, २ १०, २)।

विज्जलिया स्त्री [विद्युत्] बिजली (कुप्र २८५)।

विज्जा स्त्री [विद्या] १ शास्त्र ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, सम्यग् ज्ञान (उत्त २३, २, णदि, धर्मवि ३६, कुमा, प्रासू ८३)। २ मन्त्र, देवी-अधिष्ठित अक्षर पद्धति। ३ साधनावाला मन्त्र (पिंड ०९४, औप, ठा ३, ४ टी—पत्र १५६)। °अणुप्पवाय न [°अनुप्रवाद] जैन अंग ग्रन्थांश विशेष, दसवां पूर्व (सम २६)। °चारण पु [°चारण] शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि (भग २०, ९—पत्र ७९३)। °चारणलद्धि स्त्री [°चारणलब्धि] शक्ति-विशेष (भग २०, ९)। °णुप्पवाय देखो °अणुप्पवाय (राज)। °णुवाय न [°नुवाद] दसवाँ पूर्व (सिरि २०७)। °पिंड पु [°पिण्ड] विद्या के बल से अर्जित भिक्षा (निचू १३)। °मंत वि [°वत्] विद्या-संपन्न (उप ८२५)। °लय पुन [°लय] पाठशाला (प्रामा)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सर्व विद्याओं का अधिपति, सभी विद्याओं से संपन्न। २ जिसको कम से कम एक महाविद्या सिद्ध हो चुकी हो वह, 'विज्जाण चक्कवट्टी विज्जासिद्धो स, जस्स वेगावि सिज्झेज्ज महाविज्जा' (आवम)। °हर पु [°धर] १ क्षत्रियों का एक वंश (पउम ५, २)। २ पुस्त्री. उस वंश में उत्पन्न (महा)। स्त्री. °री (महा, उव)। ३ वि विद्या-धारी, शक्ति विशेष-संपन्न (औप, राय, ज ८)। °हरगोवाल पु [°धरगोपाल] एक प्राचीन जैन मुनि, जो सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध आचार्य के शिष्य थे (कप्प)। °हरी स्त्री [°धरी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °हार (अप) न [°धर] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्जावच्च (अप) देखो वेयावच्च (भवि)।

विज्जाहर वि [वैद्याधर] विद्याधर-सम्बन्धी, स्त्री 'एसा विज्जाहरी माया' (महा)।

विज्जाडिय देखो विज्झिडिय (राज)।

विज्जु पुं [विद्युत्] १ विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १८)। २ देवों की एक जाति, भवनपति देवों का एक भेद (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। ३ आमलकप्पा नगरी का निवासी एक गृहस्थ (णाया २—पत्र २५१)। ४ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। ५ स्त्री ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी—पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ चमर नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२, णाया २—पत्र २५१)। ७ पुस्त्री बिजली, 'विज्जुणा, विज्जूए' (हे १, ३३, कुमा, गा १३५)। ८ सन्ध्या, शाम (हे १, ३३)। ९ वि. विशेष रूप में चमकनेवाला, 'विज्जुसोयामणिप्पभा' (उत्त २२, ७)। °कार देखो °यार (जीव ३—पत्र ३४२)। °कुमार पु [°कुमार] एक देव-जाति (भग, इक)। °कुमारी स्त्री [°कुमारी] विदिग्रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी, 'चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्त-रियाओ पण्णत्ताओ' (ठा ४, १—पत्र १९८)। °जिब्भ (?), °जिब्भ पु [°जिह्व] अनुवेलंधर नागराज का एक आवास पर्वत (इक, राज)। °तेअ पु [°तेजस्] विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, १८)। °दंत पु [°दन्त] १ एक अन्त-र्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६)। °दत्त पु [°दत्त] विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, १८)। °दाढ पु [°दंष्ट्र] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम (पउम ५, १८)। °पह, °प्पभ, °प्पह पु [°प्रभ] १ एक वक्षस्कार पर्वत का नाम (सम १०२ टी, ठा २, ३—पत्र ६९, ५, २—पत्र ३२६, ज ४, सम १०२, इक)। २ कूट-विशेष, विद्युत्प्रभ वक्षस्कार का एक शिखर (ज ४, इक)। ३ देव-विशेष, विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का अधिष्ठाता देव (ज ४)। ४ अनुवेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। ५ उस पर्वत का निवासी देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ६ देवकुरु वर्ष में स्थित एक महाद्रह (ठा ५, २—पत्र ३२६)। ७ न. एक विद्याधर-नगर (इक ३२९)। °मई स्त्री [°मती] एक स्त्री का नाम (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °मालि पुं [°मालिन्] १ पंचशैल द्वीप का अधिपति एक यक्ष (महा)। २ रावण का एक सुभट (से १३, ८४)। ३ ब्रह्मदेवलोक का इन्द्र (राज)। °मुह पु [°मुख] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १८)। २ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °मेह पु [°मेघ] १ विद्युत्प्रधान मेघ, जल-रहित मेघ। २ बिजली गिरानेवाला मेघ (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °यार पु [°कार] बिजली करना, विद्युद्-रचना (भग २, ६)। °लआ, °लया स्त्री [°लता] विद्युत्, बिजली (नाट—वेणी ६६, काल)। °लयाइद न [°लतायित] बिजली की तरह आचरण (कप्पू)। °विल-सिअ न [°विलसित] १ छन्द-विशेष (अजि २१)। २ बिजली का विलास (से ४, ४०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक रानी का नाम (महा)।

विज्जुआ स्त्री [विद्युत्] १ बिजली (नाट—वेणी ६६)। २ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी, 'मित्तगा सुभद्दा विज्जुत्ता (? या) असणी' (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। ३ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५१, इक)।

विज्जुआइत्तु वि [विद्युत्कर्तृ] बिजली करने-वाला (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

विज्जुला | देखो विज्जु = विद्युत् (हे २
विज्जुलिआ | १७३, षड् १६१, कुमा, प्राकृ
विज्जुली | ३६, प्राप्र, पि २४४)।

विज्जू° देखो विज्जु। °माला स्त्री [°माला] छन्द विशेष (पिंग)।

विज्जे अ [दे] १ मार्ग से, रास्ता से। २ लिए (भवि)।

विज्जोअ पु [विद्योत] उद्योत, प्रकाश, 'जोव्वणं जीविअं रूवं विज्जुविज्जोअचंचलं' (हित ९)।

विज्जोइय } वि [विद्योतित] प्रकाशित,
विज्जोविय } चमका हुआ (उप पृ ३३, स ५७६)।

विज्झ सक [व्यध्] वींधना, वेध करना, भेदना। विज्झति (सूअ १, ५, १, ६), विज्झमे (गा ४४१) सकृ विद्धूण (सूअ १, ५, १, ६)। कृ विज्झ (पड्)।

विज्झ अक [वि + घट्] अलग होना। विज्झइ (वज्जा १४२)।

विज्झ न [दे] बीझ, धक्का, ठेला, 'तो हत्थी तम्मि पडे विज्झ दाऊण कुमरमणुमग्गे' (धर्मवि ८१),
'ताव वणवारणेण य विज्झाइ
(? इ) नर अपावमाणेण
कुविएण विइण्णाइ वणिय
नग्गोहरुक्खम्मि' (स ११३)।

विज्झ वि [विद्ध] विधा हुआ, 'जइ तपि तेण वाणेण विज्झमे जेण हु विज्झा' (गा ४४१)।

विज्झ देखो विउझ = व्यध्।

विज्झडिअ वि [दे] १ मिश्रित, व्याप्त, 'मीउण्हखरफरुसवायविज्झडिया' (भग ७, ६—पत्र ३०७, उव)।

विज्झल देखो विब्भल = विह्वल (भग ७, ६ टी—पत्र ३०८)।

विज्झव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना, दीपक आदि को गुल करना, ठंढा करना। विज्झवइ (गउड, कुप्र ३६७)। कर्म विज्झविज्जइ (गा ४०७, स ४८६)। सकृ. विज्झवेऊण, विज्झविय (धर्मसं ६५८, स ४६६)। कृ विज्झवियव्व (पउम ७८, ३७)।

विज्झवण स्त्रीन [विध्यापन] बुझाना, उपशान्ति (स ४८६, सम्मत्त १६२, कुप्र २७०)। स्त्री °णा (सया १०६)।

विज्झविअ वि [विध्यापित] बुझाया हुआ, गुल किया हुआ, ठंढा किया हुआ (से ८, १६, १२, ७७, गा ३३३, पउम २०, ६२)।

विज्झा } अक [वि + ध्यै] बुझना, ठंढा
विज्झाअ } होना, गुल होना। विज्झाइ (गा ४३०, हे २, २८)। वकृ. विज्झाअत (गा १०६)।

विज्झाअ } वि [विध्यात] १ बुझा हुआ,
विज्झाण } उपशान्त (से १, ३१, णाया १, १—पत्र ६६, १, १४—पत्र १९०, गउड, सुपा ४४८, प्रासू १३७, पउम ५, १८२)। २ संक्रम विशेष, 'विज्झायनामगेण संकममेतेण सुज्झति' (सम्यक्त्वो २१)।

विज्झाव देखो विज्झव। विज्झावेइ (गा ८३६)।

विज्झावण देखो विज्झवण (उप २६४ टी)।

विज्झाविअ देखो विज्झविअ (महा)।

विञ्झिडिय पुं [दे] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

विटंक देखो विडंक (माल २३४, राज)।

विट्टाल सक [दे] अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना, बिगाड़ना, दूषित करना, अपवित्र करना। विट्टालिंति (सुपा १, १५)। कर्म 'विट्टालिज्जइ गंगा कयाइ किं वासवारेहिं' (चेइय १३४)। वकृ विट्टालयंत (सिरि ११३२)।

विट्टाल पु [दे] अस्पृश्य-संसर्ग, उच्छिष्टता, अपवित्रता, 'तुह घरम्मि चंडालो, विट्टाल कुणइ', 'सा घरबाहिं चिट्ठइ भुंजइ य, न तेण देइ विट्टालो' (कुप्र २४३, हे ४, ४२२)।

विट्टालण न [दे] ऊपर देखो (स ७०१)।

विट्टालि वि [दे] बिगाड़नेवाला, अपवित्र करनेवाला। स्त्री °णी (कप्पू)।

विट्टालिअ वि [दे] उच्छिष्ट किया हुआ, अपवित्र किया हुआ, बिगाड़ा हुआ (धर्मवि ४५, सिरि ७१६, सुपा ११५, ३६०, महा)।

विट्टी स्त्री [दे] गठरी, पोटली (ओघ ३२४)। देखो विटिया।

विट्ठ वि [वृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३७, पड्)।

विट्ठ वि [विष्ट] १ प्रविष्ट, पैठा हुआ (सूअ १, ३, १, १३)। २ उपविष्ट, बैठा हुआ (पिंड ६००)।

विट्ठ वि [दे] सुप्तोत्थित, सो कर उठा हुआ (पड्)।

विट्ठअ न [विष्टप] भुवन, जगत् (मुच्छ १०६)।

विट्ठभ सक [वि + ष्टम्भय्] १ रोकना। २ स्थापित करना, रखना। विट्ठभति (औप)। सकृ. विट्ठभित्ता (औप)।

विट्ठभणया स्त्री [विष्टम्भना] स्थापना (औप)।

विट्ठर पुन [विष्टर] आसन, 'विट्ठरो' (प्राप्र, पउम ८०, ७, पाअ, सुपा ६०)।

विट्ठा स्त्री [विष्ठा] बीट, पुरीष, मल (पाअ, ओघभा २९८ प्रासू १४८)। °हर न [°गृह] मलोत्सर्ग-स्थान, टट्टी (पउम ७४, ३८)।

विट्ठि स्त्री [विष्टि] १ कर्म, काज, काम (दे २, ४३)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण, अर्ध तिथि (विसे ३३४८, स २९५, गण १६)। ३ भद्रा नक्षत्र (सुर १६, ६०)। ४ वेगार, मजूरी दिए विना ही जबरदस्ती या वेमन का कराया जाता काम (उर ६, ११)।

विट्ठि स्त्री [वृष्टि] वर्षा, बारिश (हे १, १३७, प्राकृ ८, सक्षि ५, पउम २०, ८७, कुमा, रंभा)। देखो वुट्ठि।

विट्ठित वि [दे] अर्जित (पड्)।

विट्ठिय न [विस्थित] विशिष्ट स्थिति (भग ६, ३२ टी—पत्र ४६६)।

विड पु [विट] १ भँडुआ (कुमा, सुर, ३, ११६, रंभा)।

विड न [विड] लवण विशेष, एक तरह का नमक (दस ६, १८)।

विडंक पुन [विटङ्क] कपोतपाली, प्रासाद आदि के आगे की ओर काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान, छतरी (णाया १, १—पत्र १२, दे ७, ८६, गउड)।

विडंकिआ स्त्री [दे] वेदिका, वेदी, चौतरा (दे ७, ६७)।

विडंग देखो विडंक (पण्ह १, १—पत्र ८)।

विडंग पुन [विडङ्ग] १ ओषध-विशेष। २ वि अभिज्ञ, विदग्ध,
'विज्ज न एसो जरओ न
य वाही एस कोवि सभूओ।
उवसमइ सलोणेण विडंगजोया-
मयरसेण' (वज्जा १०४)।

विडव सक [वि + डम्बय्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना। २ दुःख देना। ३ नकल करना। विडवइ, विडवति, विडवेमि (भवि, कुप्र १९४, स ६९३)। वकृ

विडवंत (पउम ८, ३२)। कवकृ. विडंविज्जंत (सुपा ७०)।

विडव सक [वि+डम्वय्] विवृत करना, फैलाना। विडवेइ (भग ३, २—पत्र १७३)।

विडव पुन [विडम्व] १ तिरस्कार, अपमान (भवि)। २ माया जाल, प्रपच, 'अरिगच्च च कामाए सेवाविडव' (श्रु ६, कप्पू)।

विडवग वि [विडम्वक] विडवना-जनक, 'जइवेसविडवगा नवर' (सवोध १४, उव)।

विडवण न [विडम्वन] नीचे देखो (भवि)।

विडवणा स्त्री [विडम्वना] १ तिरस्कार, अपमान (दे)। २ दु ख, कष्ट (धण ४२)। ३ अनुकरण, नकल। ४ उपहास। ५ कपट-वेष (कप्पू)।

विडविय वि [विडम्वित] विडम्वना-प्राप्त (कप्प, गउड, ३०२)।

विडज्झमाण वि [विदह्यमान] जो जलाया जाता हो वह, जलता हुआ (आचा १, ६, ४, १)।

विडड्ढ देखो विदड्ढ (गा ६७१)।

विडप्प } पु [दे] राहु (दे ७, ६५, पाअ,
विडय } गउड, वज्जा ६८, दे ७, ६५)।

विडव पु [विटप] १ पल्लव (सुर ३, ४५)। २ शाखा (भवि ११०)। ३ पल्लव-विस्तार। ४ स्तम्व गुच्छा (प्राप्र)।

विडवि पु [विटपिन्] वृक्ष, पेड, दरख्त (पाअ, सुपा ८८, गउड, सण)।

विडविड } सक [रचय्] वनाना, निर्माण
विडविड्ड } करना। विडविडइ, विटविड्डइ (हे ४, ६४, पड्)। भूका. विडविड्डीअ (कुमा)।

विडिअ वि [व्रीडित] लज्जित (से ११, ५०, पि ८१)।

विडिंचिअ } वि [दे] विकराल, भीषण,
विडिंचिर } भयकर (दे ७, ६६)।

विडिम पु [दे] १ वाल-मृग (दे ७, ८६)। २ गण्डक, गेंडा (दे ७, ८६, गउड)। ३ वृक्ष, पेड, 'दुमा य पायवा रुक्खा आगमा विडिमा तरू' (दसनि १, ३५)। ४ शाखा (पण्ह २, ४—पत्र १३० औप, तदु २१)।

विडिमा स्त्री [दे] शाखा (पण्ह २, ४, तदु २१, राज)।

विडुच्छिअ वि [दे] निषिद्ध, प्रतिपिद्ध (पड्)।

विडुविल्ल वि [दे] भीषण, भयकर (नाट—मालती १३७)।

विडूर पु [विदूर] १ पर्वत-विशेष। २ देश-विशेष, जहाँ वैदूर्य रत्न पैदा होता है (कप्पू)।

विडोमिअ पुं [दे] गण्डक मृग, गेंडा (दे ७, ५७)।

विड्ड वि [दे] १ दीर्घ, लम्वा (दे ७, ३३)। २ प्रपच, विस्तार (दे १, ४)।

विड्ड वि [व्रीड, व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा, 'लज्जिया विलिया विड्डा' (निर १, १, पि २४०)।

विड्डर देखो विड्डिर, 'अकडविड्डरमेय किं देव पारद्धं' (उप ७६८ टी)।

विड्डा स्त्री [व्रीडा] लज्जा, शरम (दे ७, ६१, पि २४०)।

विड्डार न [विद्वार] देखो विड्डेर (राज)।

विड्डिर न [दे] १ आभोग (दे ७, ६०)। २ आटोप, आडम्वर (पाअ)। ३ वि रौद्र भयकर (दे ७, ६०)।

विड्डिरिल्ला स्त्री [दे] रात्रि, निशा (दे ७, ६७)।

विड्डुम देखो विद्दुम (पाअ)।

विड्डुरी स्त्री [दे] आटोप, आडम्वर, 'किं लिंगविड्डुरीधारणेण' (उव)।

विड्डुरिल्ल वि[वैडूर्यवत्] वैदूर्य रत्नवाला (सुपा ५६)।

विड्डेर न [दे विड्डेर] नक्षत्र-विशेष, पूर्व द्वारवाले नक्षत्रो मे पूर्व दिशा से जाने के वदले परिचम दिशा से जाने पर पडता नक्षत्र (विसे ३४०६)। देखो विड्डार।

विढज्ज (शौ) सक [वि+दह्] जलाना। सकृ विढज्जिअ (पि २१२)।

विढणा स्त्री [दे] पार्ष्णि, फीली का नीचला भाग (दे ७, ६२)।

विढत्त वि [आर्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (हे ४, २५८, गउड, श्रा १०, प्रासू ७४, भवि)।

विढत्ति स्त्री [अर्जिति] अर्जन, उपार्जन (श्रा १२)।

विढप्प अक [व्युत्+पद्] व्युत्पन्न होना। विढप्पति (प्राकृ ६४)।

विढप्प° नीचे देखो।

विढव सक [अर्ज्] उपार्जन करना पैदा करना। विढवइ (हे ४, १०८ महा, भवि)। कर्म विढविज्जइ, विढप्पइ (हे ४, २५१, कुमा, भवि)।

विढवण न [अर्जन] उपार्जन (सुर १, २२१)।

विढविअ वि [अर्जित] पैदा किया हुआ (कुमा, सुपा २८०, महा)।

विढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ (सुपा ३८८)।

विणइ वि [विनयिन्] दूर करनेवाला, 'मारभविणईण' (आचा)।

विणइत्त वि [विनयवत्] विनयवाला, विनय को ही सर्व-प्रधान माननेवाला (सूअनि ११८)।

विणइत्तु वि [विनेतृ] विनीत वनानेवाला, विनय की शिक्षा देनेवाला (उत्त २६, ४)।

विणइत्तु देखो विणी = वि+नी।

विणइय वि [विनयित] शिक्षित किया हुआ, सिखाया हुआ (राज)। देखो विणय।

विणइल्ल देखो विणइत्त (कुमा)।

विणएत्तु देखो विणी = वि+नी।

विणट्ठ वि [विनष्ट] विनाश-प्राप्त (उव, प्रासू ३१, नाट—मृच्छ १५२)।

विणड सक [वि+नटय्, वि+गुप्] १ व्याकुल करना। २ विडम्वना करना। विणडेइ (गउड ६८), विणडति (उव), विणडउ (हे ४, ३८५, पि १००)।

विणडिअ देखो विनडिअ (गा ६३० टी)।

विणण न [वान] वुनना (वृह १)।

विणभ सक [खेदय्] खिन्न करना। विणभइ (धात्वा १५३)।

विणम सक [वि+नम्] विशेप रूप से नमना। वकृ विणमंत (नाट—मालवि ३४)।

विणमि देखो विनमि (राज)।

विणमिअ वि [विनत] विशेष रूप से नत (भग, औप, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

विणमिअ वि [विनमित] नमाया हुआ (गउड)।

विणय पुं [विनय] १ अभ्युत्थान, प्रणाम आदि भक्ति शुश्रूषा, शिष्टता, नम्रता (आचा, ठा ८, ४ टी—पत्र २८३, कुमा, उवा, ओप, गउड, महा, प्रासू ८)। २ संयम, चारित्र (सम ५१)। ३ नरकावास विशेष, एक नरक स्थान (देवेन्द्र २६)। ४ अपनयन, दूरीकरण। ५ शिक्षा, सीख। ६ अनुनय। ७ वि विनय युक्त, विनीत। ८ निभृत, शान्त। ९ क्षिप्त, फेंका हुआ। १० जितेन्द्रिय संयमी (हे १, २४५)। ११ पुं शास्त्रानुसार प्रजा का पालन (गउड ६७)। °मंत वि [°वत्] विनय युक्त (उप पृ १६६)।

विणय वि [विनत] १ विशेष रूप से नमा हुआ (ओप)। २ पुं एक देव-विमान (सम ३७)।

विणय° देखो विणया। °तणय पुं [°तनय] गरुड पक्षी (वज्जा १२२)। °सुअ पुं [°सुत] वही अर्थ (पाअ)।

विणयइत्तु देखो विणइत्तु (सुख २६, ८)।

विणयंधर पुं [विनयन्धर] एक शेठ का नाम (उप ७२८ टी)।

विणयण न [विनयन] विनय-शिक्षा, शिक्षण, 'आयारदेसणाओ आयरिया, विणयणादुव-ज्झाया' (विसे ३२००)।

विणया स्त्री [विनता] गरुड की माता का नाम (गउड)। °तणय पुं [°तनय] गरुड पक्षी (से १८, ६१, सुपा ३५४)।

विणस देखो विणस्स। विणसइ (उर ७, ३, कुमा ८, २१)।

विणसिर वि [विनश्वर] विनाश शील, नश्वर (दे १, ६०)।

विणस्स अक [वि + नश्] नष्ट होना, विध्वस्त होना। विणस्सइ, विणस्सए, विणस्स (उव, महा, धर्मसं ८०१)। भवि विणस्सिहिमि (महा)। वक्र विणस्समाण (उवा)। हेकृ विणस्सिउं (धर्मसं ४०२, ८०३)।

विणस्सर देखो विणसिर (पि ३१५)।

विणा अ [विना] सिवाय, बिना (गउड, प्रासू १०, १५६, द १७)।

विणामिद (शौ) देखो विणमिअ = विनमित (नाट—मृच्छ २१८)।

विणायग पुं [विनायक] यक्ष, एक देव-जाति, 'तत्थेव आगओ सो विणायगो पूयणो नाम' (पउम ३५, २२)। २ गणपति, गणेश (सट्ठि ७८ टी)। ३ गरुड (पउम ७१, ६७)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र विशेष, गरुडास्त्र (पउम ७१, ६७)।

विणास देखो विणस्स। विणासइ (भवि)।

विणास सक [वि + नाशय्] ध्वंस करना, नष्ट करना। विणासेइ (उव, महा)। भवि. विणासिहो, विणासेहामि (पि ५२७, ५२८)। कर्म विणासिज्जइ (महा)। कवकृ विणा-सिज्जंत (महा)। कृ. विणासियव्व (सुपा १८५)।

विणास पुं [विनाश] विध्वंस (उव, हे ४, ४२४)।

विणासग वि [विनाशक] विनाश-कर्ता (द्र १७)।

विणासण न [विनाशन] १ विनाश, विध्वंस (भवि)। २ वि विनाश-कर्ता (पण्ह २, १—पत्र ६६, दस ८, ३८)।

विणासिअ वि [विनाशित] विनाश प्राप्त (पाअ, महा, भवि)।

विणि° देखो विणी।

विणिअंसण न [विनिदर्शन] खास उदाहरण, विशेष दृष्टान्त (स १२, ६६)।

विणिअसण वि [विनिवसन] वस्त्र-रहित, नगा (गा १२५)।

विणिइत्तु देखो विणइत्तु (उत्त २६, ४)।

विणिउत्त वि [विनियुक्त] कार्य में प्रवर्तित (उप पृ ७५)।

विणिओग पुं [विनियोग] १ उपयोग, ज्ञान (विसे २८३७)। २ कार्य में लगाना (पंचा ७, ६)। ३ विनिमय, लेनदेन (कुप्र २०६)।

विणिओय सक [विनि + योजय्] जोडना, लगाना। विणिओयइ (भवि)।

विणित देखो विणी = विनिर् + इ।

विणिकुट्टिय वि [विनिकुट्टित] कूट कर बैठाया हुआ, 'अमविणिकुट्टियाहिं पत्तराहिं सालहंजीहिं' (सुपा १८८)।

विणिक्कम देखो विणिक्खम। विणिक्कमइ (गउड २७५, पि ४८१)।

विणिकस सक [विनि + कृष्] खींच कर निकालना। संकृ. विणिकस्स (सूअ १, ५, १, २२)।

विणिक्खंत वि [विनिष्क्रान्त] १ बाहर निकला हुआ। २ जिसने गृह-त्याग किया हो वह, संन्यस्त (उप १८७ टी, कुप्र ३६, महा)।

विणिक्खम अक [विनिस् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ संन्यास लेना। विणि-क्खमइ (गउड ८५१, ११८१)। संकृ. विणिक्खमित्ता (भग)।

विणिक्खमण न [विनिष्क्रमण] १ बाहर निकलना। २ संन्यास लेना (पंचा १८, २१)।

विणिक्खित्त वि [विनिक्षिप्त] फेंका हुआ (नाट—मृच्छ ११६)।

विणिगिण्ह सक [विनि + ग्रह्] निग्रह करना, दंड देना। वकृ विणिगिण्हंत (उप पृ २३)।

विणिगूह सक [विनि + गूहय्] गुप्त रखना, ढकना। विणिगूहिज्जा (आचा २, १, १०, २)।

विणिग्गम पुं [विनिर्गम] निःसरण, बाहर निकलना (गउड)।

विणिग्गय वि [विनिर्गत] बाहर निकला हुआ, बाहर गया हुआ (से २, ५, महा, भवि)।

विणिघाय पुं [विनिघात] १ मरण, मौत। २ संसार, भव-भ्रमण (ठा ५, १—पत्र २६१)।

विणिच्छ सक [विनिस् + चि] निश्चय करना। विणिच्छइ (सण)। संकृ विणि-च्छिऊण (सण)।

विणिच्छय पुं [विनिश्चय] निश्चय, निर्णय, परिज्ञान (पण्ह १, १—पत्र १, ठा ३, ३, उव)।

विणिच्छिअ वि [विनिश्चित] निश्चित, निर्णीत (भग, उवा, कप्प, सुर २, २०२)।

विणिजुज सक [विनि + युज्] जोड़ना, कार्य में लगाना, प्रवृत्त करना। विणिजुजइ (कुप्र ३६१)।

विणिज्जतण वि [विनियन्त्रण] १ नियन्त्रण-रहित। २ प्रकटित, खुला। ३ निर्व्याज, कपट-रहित (से ११, २१)।

विणिज्जमाण देखो विणी = वि + नी।

विणिज्जरण न [विनिर्जरण] निर्जरा, विनाश (विसे ३७७६, सबोध ५१)।

विणिज्जरा स्त्री [विनिर्जरा] ऊपर देखो (सबोध ४६)।

विणिज्जिअ वि [विनिर्जित] पराभूत, जिसका पराभव किया गया हो वह (महा, रभा, नाट—विक्र ६०)।

विणिद वि [विनिद्र] खिला हुआ, विकसित (पात्र)।

विणिद्दलिय वि [विनिर्दलित] विदारित, तोड़ा हुआ (सण)।

विणिद्धुण सक [विनिर् + धू] कँपाना। वकृ. विणिद्धुणमाण (पि ५०३)।

विणिप्फन्न वि [विनिष्पन्न] संसिद्ध, संपन्न (उप ३६६)।

विणिप्फिडिअ वि [विनिस्फिटित] विनिर्गत, बाहर निकला हुआ, 'सालिग्गामाउ तओ वयणहउ विणिप्फिटिओ' (पउम १०५, २३)।

विणिबुड्ड देखो विणिवुड्ड (पि ५६६)।

विणिब्भिन्न वि [विनिर्भिन्न] विदारित, 'कुतविणिब्भिन्नकरिकलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि' (णमि १६)।

विणिमीलिअ वि [विनिमीलित] मीचा हुआ, मूँदा हुआ, 'अलिअपसुत्तअविणिमीलिअच्छ दे सुहअ मज्झ ओआस' (गा २०)।

विणिमुक्क देखो विणिम्मुक्क (पि ५६६)।

विणिमुय देखो विणिम्मुय। वकृ. विणिमुयत (औप, पि ५६०)।

विणिम्मविअ वि [विनिर्मित] विरचित, बनाया हुआ, कृत (उप ७२८ टी)।

विणिम्माण न [विनिर्माण] रचना, कृति (विसे ३३१२)।

विणिम्मिअ देखो विणिम्मविअ (गा १५६, २३५, पाअ, महा)।

विणिम्मुक्क वि [विनिर्मुक्त] परित्यक्त, 'सव्वकम्मविणिम्मुक्कं त वय बूम माहण' (उत्त २५, ३४)।

विणिम्मुय वि [विनिर् + मुच्] छोड़ना, परित्याग करना। वकृ. विणिम्मुयमाण (णाया १, १—पत्र ५३, पि ४८५)।

विणिय देखो विणीअ (भवि)।

विणियट्ट देखो विणिवट्ट। विणियट्टिज्ज (दस ८, ३४)। वकृ. विणियट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विणियट्ट वि [विनिवृत्त] १ पीछे हटा हुआ। २ प्रणष्ट, 'विणियट्ट ति पणट्ठ' (चेइय ३४६)।

विणियट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवृत्ति (उत्त २६, १)।

विणियत्त देखो विणियट्ट (सुपा ३३५, भवि, गा ७१, कुप्र १८२)।

विणियत्ति स्त्री [विनिवृत्ति] निवृत्ति, उपरम (कुप्र १८२, गउड)।

विणिरोह पु [विनिरोध] प्रतिबन्ध, अटकाव (भवि)।

विणिवट्ट अक [विनि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना। वकृ. विणिवट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विणिवट्टण देखो विनियट्टण (राज)।

विणिवट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवर्तन, विराम (भग १७, ३—पत्र ७२७)।

विणिवडिअ वि [विनिपतित] नीचे गिरा हुआ (दे १, १५७)।

विणिवत्ति देखो विणियत्ति (उप ७२८ टी)।

विणिवाइ वि [विनिपातिन्] मार गिरानेवाला (गा ६३०)।

विणिवाइज्जत देखो विणिवाए।

विणिवाइय न [विनिपातिक] एक तरह का नाटक (राज)।

विणिवाइय वि [विनिपातित] मार गिराया हुआ, व्यापादित (उप ६४८ टी, महा, स ५६, सिक्खा ८२)।

विणिवाए सक [विनि + पातय्] मार गिराना। कवकृ. विणिवाइज्जत (पउम ४५, ८)।

विणिवाडिअ देखो विणिवाइय (दे १, १३८)।

विणिवाद } पुं [विनिपात] १ निपात,
विणिवाय } अन्तिम पतन, विनाश, 'परखग्गेण वि दिट्ठो विणिवादो किं न लोगम्मि' (धर्मसं १२५, १२६, स २६५, ७ २)। २ मरण, मौत (से १३, १६, गउड, गा १०२)। ३ संसार (राज)।

विणिवायण न [विनिपातन] मार गिराना (पउम ४, ४८)।

विणिवार सक [विनि + वारय्] रोकना, निवारण करना, निषेध करना। विणिवारइ (भवि)। कवकृ. विणिवारीअत (नाट—मृच्छ १५४)।

विणिवारण न [विनिवारण] १ निवारण, प्रतिषेध। २ वि निवारण करनेवाला (पचा ७, ३२)।

विणिवारि वि [विनिवारिन्] निवावरण-कर्ता (पचा ७, ३२)।

विणिवारिय वि [विनिवारित] प्रतिषिद्ध, निवारित (महा)।

विणिविट्ठ वि [विनिविष्ट] १ उपविष्ट, स्थित (कुप्र १५२), 'सकम्मविणिविट्ठमरिसकयचेट्ठो' (उव, वै ६०)। २ आसक्त, तल्लीन (आचा)।

विणिवित्त देखो विणियट्ट (उप ७८६)।

विणिवित्ति देखो विणियत्ति (विसे २६३६, उवर १२७, श्रावक २५१, २५२, पचा १, १७)।

विणिवुड्ड वि [विनिमग्न] निमग्न, बुडा हुआ, तराबोर, सराबोर, 'तइया ठिओ सि ज किर पलोट्टसरभसेयविणिवुड्डो' (गउड ४६०)।

विणिवेइअ वि [विनिवेदित] जनाया हुआ, ज्ञापित (से १४, ४०)।

विणिवेस पु [विनिवेश] १ स्थिति, उपवेशन। २ विन्यास, रचना (गउड)।

विणिवेसिअ वि [विनिवेशित] स्थापित, रखा हुआ (गा ६७४, सुर ३, ६७)।

विणिव्वर न [दे] पश्चात्ताप, अनुशय (दे ७, ६८)।

विणिव्ववण न [विनिर्वपन] शान्ति, दाहो-पशम (गउड)।

विणिस्सरिय वि [विनिःसृत] बाहर निकला हुआ (सण)।

विणिस्सह वि [विनिस्सह] श्रान्त, थका हुआ, 'कद्यावि ससपरिस्समविणिस्सहो दीहीयासु मज्जेइ' (सुपा ४६)।

विणिह° देखो विणिहण।

विणिहट्टु देखो विणिहा।

विणिहण सक [विनि + हन्] मार डालना। विणिहणेज्जा, विणिहंति (सूत्र १, ११, ३७; १, ७, १६)। कर्म. विणिहम्मति (उत्त ३, ६)।

विणिहय वि [विनिहत] जो मार डाला गया हो, व्यापादित (महा)।

विणिहा सक [विनि + धा] १ व्यवस्था करना। २ स्थापन करना। संकृ. विणिहट्टु, विणिहाय, विणिहित्तु (चेइय २६८; सूत्र १, ७, २१; कप्प)।

विणिहाय देखो विणिघाय (णाया १, १८—पत्र १८६)।

विणिहिअ, विणिहित्त वि [विनिहित] स्थापित (गा ३६८; सुपा ६२)।

विणिहित्तु देखो विणिहा।

विणी अक [विनिर् + इ] बाहर निकलना। विणिंति, विणेंति (गा ६५८; वि ४९३)। वकृ. विणित (गउड १३८)।

विणी सक [वि + नी] १ दूर करना, हटाना। २ विनय-ग्रहण कराना। विणिंति (णाया १, १—पत्र २६, ३०), विणिज्जामि, विणएज्ज, विणएज्ज, विणेउ (णाया १, १—पत्र २६, सूत्र १, १३, २१, वि ८६०, णाया १, १—पत्र ३०)। संकृ. विणइत्तु (सूत्र १, १२, ३)। भवि. विणेहिइ (पि ५२१)। वकृ. विणेमाण (णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ. विणिज्जमाण (णाया १, १—पत्र २६)। हेकृ. विणएत्तु (आचा १, ५, ३, ४, पि ५७७)।

विणीअ वि [विनीत] १ अपनीत, दूर किया हुआ, हटाया हुआ (णाया १, १—पत्र ३३), 'सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे' (उत्त २६, १३)। २ विनय-युक्त, नम्र, शिष्ट (ठा ४, ४—पत्र २८५; सुपा ११६, उत्त)। ३ शिक्षित, 'भद्दो विणीअविणओ' (उत्त ६)।

विणीआ स्त्री [विनीता] अयोध्या नगरी (सम १५१; कप्प; पउम ३२, ५०; ती १)।

विणील वि [विनील] विशेष हरा रंग का (गउड)।

विणु (अप) देखो विणा (हे ४, ४२६; षड्; हम्मीर २८; कुमा १२; भवि; कम्म २, ६; २६, २७, ३, ५; कुमा)।

विणेअ वि [विनेय] शिक्षणीय, शिष्य, अन्तेवासी, चेला (सार्ध ७०; उप १०३१ टी)।

विणेमाण देखो विणी = वि + नी।

विणोअ सक [वि + नोदय्] १ खण्डित करना। २ दूर करना, हटाना। ३ खेल करना। ४ कुतूहल करना। विणोएइ, विणोयति (गउड), विणोदेमि (शौ) (स्वप्न ५१)। भवि. विणोदइस्सामो (शौ) (पि ५२८)। वकृ. विणोदअन्त (शौ) (नाट—उत्तर ६५)। कवकृ. विणोदीअमाण (शौ) (नाट—मालवि ४८)।

विणोअ पुं [विनोद] १ खेल, क्रीडा। २ कौतुक, कुतूहल (गउड, सिरि ५६, सुर ४, २१६, हे १, १४६)।

विणोइअ वि [विनोदित] विनोद-युक्त किया हुआ (सुर ११, २३८, सण)।

विणोदअन्त देखो विणोअ = वि + नोदय्।

विणोयक, विणोयग वि [विनोदक] कुतूहल-जनक (रंभा)।

विणोयण न [विनोदन] १ अपनयन, दूर करना, परिस्समविणोयणत्थं' (उप १०३१ टी; कुप्र १८७)। २ कुतूहल, कौतुक (गा ८८७)।

विण्ण देखो विण्णु (सदि १६)।

विण्णउद्दव्व देखो विण्णव।

विण्णत्त वि [विज्ञप्त] निवेदित (सुपा २२)।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] १ निवेदन, प्रार्थना (कुमा)। २ ज्ञान (सूत्र १, १२, १७)।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] विज्ञान, विनिर्णय (सदि १३४)।

विण्णय देखो विण्णइअ (ठा १०—पत्र ५१६)।

विण्णय देखो विण्ण (विपा १, २—पत्र ३६, १, ८—पत्र ८८)।

विण्णव सक [वि + ज्ञपय्] १ विनती करना, प्रार्थना करना। २ मालूम करना, विदित करना। ३ कहना। विण्णवइ, विण्णवेमि, विण्णवेमो (पि ५५३, ५५१)। भवि. विण्णविस्स (विक्र ८१)। वकृ. विण्णवंत (काल)। संकृ. विण्णविअ (नाट—मृच्छ २६४)। हेकृ. विण्णविदुं (शौ) (अभि ५३)। कृ. विण्णउद्दव्व (शौ) (पि ५५१)।

विण्णवणा स्त्री [विज्ञापना] विज्ञापन, निवेदन (उवा)। देखो विन्नवणा।

विण्णा सक [वि + ज्ञा] जानना। संकृ. विण्णाय (दस ८, ५६)। कृ. विण्णेय (काल)।

विण्णाउ देखो विन्नाउ (राज)।

विण्णाण देखो विन्नाण (उवा; महा; षड्)।

विण्णाण न [विज्ञान] अवाय-ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान (सदि १७६)।

विण्णाणि वि [विज्ञानिन्] निपुण, विचक्षण (कुमा)।

विण्णाय वि [विज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (पाअ, गउड १२०)। २ न विज्ञान (कप्प)।

विण्णाव देखो विण्णव। विण्णावेमि, विण्णावेहि (मा ३८, ३९)।

विण्णास वि [वि + न्यासय] स्थापना करना, रखना। वकृ. विण्णासत (पउम ८३, २६)।

विण्णास देखो विन्नास (मा ५१)।

विण्णासणा स्त्री [विन्यासना] स्थापना (उप ३५४)।

विण्णु, विण्णुअ वि [विज्ञ] पण्डित, जानकार, विद्वान् (सण, प्राकृ १८)।

विण्णेय देखो विण्णा।

विण्हावणक न [विस्नापनक] मन्त्र आदि द्वारा संस्कृत जल से कराया जाता स्नान (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

विण्हि देखो वण्हि = वृष्णि (राज)।

विण्हु पुं [विष्णु] १ भगवान् श्रेयांसनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ श्रवण नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २,३—पत्र ७७)। ३ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का नववाँ पुत्र (अंत ३)। ४ एक जैन मुनि, विष्णुकुमार नामक मुनि (कुलक ३३)। ५ एक श्रेष्ठी (उप १०१४)। ६ वासुदेव नारायण, श्रीकृष्ण। ७ व्यापक। ८ वह्नि, अग्नि। ९ शुद्ध। १० एक स्मृति-कर्ता मुनि (हे २,७५)। ११ आर्य जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि (राज)। १२ स्त्री ग्यारहवें जिनदेव की माता का नाम (सम १५१)। °कुमार पु [°कुमार] एक विख्यात जैन मुनि (पाड)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक सार्थवाह-पत्नी (महा)। देखो विन्हु।

वितंड देखो वितड्ड (आचा)।

वितण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (उप २६८ टी)।

वितत पु [वितत] १ वाद्य का एक प्रकार का शब्द (ठा २, ३—पत्र ६३)। २ एक महाग्रह (सुज्ज २०—पत्र २९५)। देखो विअत्त। ३ देखो विअय = वितत (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वितत न [दे] कार्य, काम काज (दे ७, ६४)।

वितत्त वि [वितप्त] विशेष तृप्त (पगह १, ३—पत्र ६०)।

वितत्थ पु [वितस्त] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २,३—पत्र ७८)। २ वि भय-भीत, डरा हुआ (महा)।

वितत्था स्त्री [वितस्ता] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

वितद्द वि [वितर्दि] १ हिंसक। २ प्रतिकूल (आचा)।

वितर देखो विअर = वि + तॄ। वितराम, वितरामो (पि १०, ४५५)।

वितर (अप) अक [वि + स्तारय्] विस्तार करना। वितर (पिंग)।

वितरण देखो विअरण = वितरण (राज)।

वितल वि [वितल] शबल, चितकबरा (राज)।

वितह वि [वितथ] मिथ्या, असत्य, झूठा (आचा कप्प, मण)।

वितिकिच्छिअ वि [विचिकित्सित] फल का तरह संदेह वाला (भग)।

वितिकिण्ण देखो विइकिण्ण (निचू १५)।

वितिकंत देखो विइकंत (भग)।

वितिगिछ सक [वि + चिकित्स्] १ विचार करना, विमर्श करना। २ संशय करना। ३ निन्दा करना। वितिगिछइ (सूअ २, २, ४९, ५०, पि ७४, २१५)।

वितिगिछा देखो वितिगिच्छा (आचा १, ३, ३, १ १, ५, ५, २, पि ७४)।

वितिगिछिय देखो वितिकिच्छिअ (पि ७४ २१५)।

वितिगिच्छ देखो वितिगिछ। वितिगिच्छामि (पि २१५, ३२७)।

वितिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] १ संशय, शंका, वहम (सूअ १, ३, ३ ५, पि ७४)। २ चित्त-विप्लव, चित्त-भ्रम। ३ निन्दा (सूअ १, १०, ३, पि ७४)।

वितिगिच्छिअ देखो वितिकिच्छिअ (भग)।

वितिगिट्ठ देखो विइगिट्ठ (राज)।

वितिमिर वि [वितिमिर] १ अन्धकार-रहित, विशुद्ध, निर्मल (सम १३७, पगण १७—पत्र ५१९, ३६—पत्र ८४७, कप्प)। २ अज्ञान-रहित (ओप)। ३ पु. ब्रह्म देवलोक का एक विमान-प्रस्तट (ठा ६—पत्र ३६७)।

वितिरिच्छ वि [वितिर्यञ्च्] वक्र, टेढा (स ३३५, पि १५१, भग ३, २—पत्र १७३)।

वित्त वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वित्त न [वित्त] १ द्रव्य, धन (पाअ, सूत्र १, २, १, २२, ओप)। २ वि प्रसिद्ध, विख्यात (सूअ २, ७, २, उत्त १, ४८)। °म वि [°वत्] धनी (द्र ५)।

वित्त न [वृत्त] १ छन्द, पद्य, कविता (सूअनि ३८, सम्मत्त ८३)। २ चरित्र, आचरण (सिरि १०९३)। ३ वृत्ति, वर्त्तन (हे १, १२८)। ४ वि उत्पन्न, संजात (स ७०७, महा)। ५ अतीत, गुजरा हुआ (महा)। ६ दृढ, मजबूत। ७ वर्तुल, गोल। ८ अधीत, पठित। ९ मृत (हे १, १२८)। १० ससिद्ध, पूर्ण (सुर ४, ३९, महा)। °प्पाय वि [°प्राय] पूर्ण-प्राय (सुर ७, ८८)। देखो वट्ट = वृत्त।

वित्त देखो वेत्त = वत्र (सूअनि १०८)।

°वित्त देखो पित्त (उप ५२२)।

वित्तइ वि [दे] १ गर्वित, अभिमानी। २ पु विलसित, विलास। ३ गर्व, अहंकार (दे ७, ९१)।

वित्तंत पु [वृत्तान्त] समाचार, खबर (पउम २३, १८, सुपा २०४, भवि)।

वित्तत्थ देखो वितत्थ (सुख ९, १, नाट—वेणी २९)।

वित्तविय देखो वट्टिअ, वत्तिअ = वर्तित (भवि)।

वित्तास सक [वि + त्रासय्] भयभीत करना, डराना। वित्तासए (उत्त २, २०)। वकृ. वित्तासंत (पउम २८, २६)।

वित्तास पु [वित्रास] भय, त्रास, डर (सुपा ४४१)।

वित्तासण न [वित्रासन] भय-प्रदर्शन (आव)।

वित्तासिअ वि [वित्रासित] डरा कर भगाया हुआ (सुपा ६५२)।

वित्ति पु [वेत्रिन्] दरवान, प्रतीहार (कम्म १, ९)।

वित्ति स्त्री [वृत्ति] १ जीविका, निर्वाह-साधन (णाया १, १—पत्र ३८ स ६७६, सुर २, ४९)। २ टीका, विवरण (सम ४९, विसे १४२२, सार्ध ७३)। ३ वर्त्तन, आचरण। ४ स्थिति। ५ कौशिकी आदि रचना-विशेष। ६ अन्तःकरण आदि का एक तरह का परिणाम (हे १, १२८)। °अ वि [°द] वृत्ति देनेवाला (ओप, अंत, णाया १, १ टी—पत्र ३)। °आर वि [°कार] टीका-कार, विवरण-कर्त्ता (कप्पू)। °च्छेअ, °च्छेय [°च्छेद] जीविका-विनाश (आचा, सूअ १, ११, २०)। देखो वित्ती° = वृत्ति।

वित्तिअ वि [वित्तिक] वित्त से युक्त, धन-वाला, वैभवशाली (ओप, अन्त, णाया १, १ टी—पत्र ३)।

वित्ती° देखो वित्त=वृत्त । °कप्प वि [°कल्प] सिद्धप्राय, पूर्ण-प्राय (तदु ७)।

वित्ती° देखो वित्ति=वृत्ति । °सखेव पु [°सक्षेप] बाह्य तप का एक भेद—खाने, पीने और भोगने की चीजों को कम करना (सम ११)। °सखेवण न [°सक्षेपण] वही अर्थ, वित्तीसखेवए रसच्चाग्रो' (नव २८, पडि)।

वित्तेस पु [वित्तेश] धनी, श्रीमत (उव ७२८ टी)।

वित्थ पुन [वित्त] सुवर्ण, सोना (से १, १)।

वित्थक्क अक [वि+स्था] १ स्थिर होना। २ विलम्ब करना। ३ विरोध करना। वकृ. वित्थक्कत (से ३, ४, १३, ७०, ७४)।

वित्थक्क देखो वियक्क (स ६३४ टि)।

वित्थड } वि [विस्तृत] १ विस्तार-युक्त, वित्थय } विशाल (भग, ग्रोप, पाग्र, वसु, भवि, गा ८०७)। २ सवद्ध, घटित (से १, १)।

वित्थर अक [वि+स्तृ] १ फैलना। २ बढना। वित्थरइ (प्राकृ ७६, स २०१, ६८४, सिरि ६२७, मन २५)। वकृ. वित्थरत (से ३, ३१, स ६८६)। हेकृ वित्थरिउ (पि ५०५)।

वित्थर पुन [विस्तर] १ विस्तार, प्रपच (गउड)। २ शब्द समूह (गउड ८६)।

वित्थर देखो वित्थड, 'तत्थ वित्थरा कज्ज-धुरा' (से ४, ४६), वित्थर च तलवट्ट' (वज्जा १०४)।

वित्थरग वि [विस्तरण] १ फैलानेवाला। २ वृद्धिजनक (कुमा)।

वित्थरिअ देखो वित्थड (सुर ३, ५४, सुपा २६८, पि ५०५, भवि, सण)।

वित्थार सक [वि+स्तारय्] फैलाना। वित्थारइ (भवि), वित्थारेदि (शो) (नाट—शकु १०८)।

वित्थार पु [विस्तार] फैलाव, प्रपञ्च (गउड, हे ८, ९९५, नाट—शकु ६)। °रुइ वि [°रुचि] सम्यक्त्व विशेष वाला, सब पदार्थों को विस्तार से जानने की चाहवाला सम्यक्त्वी (पव १४६)।

वित्थारइत्तअ (शो) वि [विस्तारयितृ] फैलानेवाला (ग्रभि २८, पि ६००)।

वित्थारग वि [विस्तारक] फैलानेवाला (रभा)।

वित्थारण न [विस्तारण] फैलाव, 'सीसमइ-वित्थारणमित्तत्थोय कग्रो समुल्लावो' (सम्म १२२, सिरि १२०७)।

वित्थारिय वि [विस्तारित] फैलाया हुआ (सण, दे)।

वित्थिण्ण } वि [विस्तीर्ण] विस्तार-युक्त, वित्थिन्न } विशाल (नाट—मृच्छ ६४, पाग्र, भवि)।

वित्थिय देखो वित्थड (स ६६७, गा ४०७ ग्र)।

वित्थिर न [दे] विस्तार, फैलाव (पड्)।

वित्थुय देखो वित्थड (स ६१०)।

वियक्क वि [विस्थित] जो विरोध मे खडा हुआ हो, विरोधी बना हुआ (स ४६७, ६३४)।

विद देखो विअ=विद्। वकृ विदत (उप २८० टी)। सकृ विदित्ता, विदित्ताण (सूग्र १, ६, २८, पि ५८३)।

विदड पु [विदण्ड] कक्षा तक लम्बी लट्ठी (पव ८१)।

विदसग देखो विदसय (पण्ह १, १ टी—पत्र १५)।

विदसण न [विदर्शन] अन्धकार-स्थित वस्तु का प्रकाशन (पण्ह १, १—पत्र ८)। देखो विदरिसण।

विदसय वि [विदशक] श्येन आदि हिंसक पक्षी (उत्त १९, ६५, सुख १९, ६५)।

विदड्ढ } वि [विदग्ध] १ पण्डित, विच-विदद्ध } क्षण (सक्षि ८)। २ विशेष दग्ध (पव १२५)। ३ अजीर्ण का एक भेद (राज)। देखो विदड्ढ।

विदब्भ पुस्त्री [विदर्भ] १ देश-विशेष, 'इग्रो य विदब्भदेसमडण कुडिए नयर' (कुप्र ४८, गा ८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ के गणधर—मुख्य शिष्य का नाम (सम १५२)। ३ पुस्त्री. विदर्भ देश की प्राचीन राजधानी, कुण्डिनपुर, जो आजकल 'नागपुर' के नाम से प्रसिद्ध है, 'दूरे विदब्भा' (कुप्र ७०)।

विदरिसण न [विदर्शन] जिसके देखने से भय उत्पन्न हो वह वस्तु, विरूप आकारवाली विभीषिका आदि, 'एस ए तए विदरिसणे दिट्ठे' (उवा)। देखो विदसण।

विदल न [विदल] वश, बाँस (सुख १०, १, ठा ४, ४—पत्र २७१)।

विदल न [द्विदल] १ चना आदि वह शुष्क धान्य जिसके दो टुकडे समान होते हैं,

'जम्मि हु पीलिज्जते नेहो न
हु होइ विति त विदल।
विदलेवि हु उप्पन्न नेहजुय
होइ नो विदल' (सबोध ४४)।

२ वि जिसके दो टुकडे किए गए हो वह (सूग्रनि ७१)।

विदलिद (शो) वि [विदलित] खण्डित, चूर्णित (नाट—वेणी २६)।

विदाअ देखो विद्दाय=विद्रुत (से १३, २५)।

विदारग } वि [विदारक] विदारण कर्त्ता, विदारय } 'कम्मरयविदारगाइ' (पण्ह २, १—पत्र ६६, राज)।

विदालण न [विदारण] विविध प्रकार से चीरना, फाडना (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विदिअ देखो विइज (ग्रभि १२३, पउम ३६, ६८)।

विदिण्ण देखो विइण्ण=वितीर्ण (विपा १, २—पत्र २२)।

विदिण्ण वि [विदीर्ण] फाडा हुआ, चीरा हुआ (नाट—मृच्छ २५५)।

विदित्ता } देखो विद=विद्।
विदित्ताण }

विदिन्न देखो विदिण्ण=वितीर्ण (विपा १, २ टी—पत्र २२, सुर ५, १८७)।

विदिस (ग्रप) स्त्री [विदिशा] एक नगरी का नाम (भवि)।

विदिसा } स्त्री [विदिश्] १ विदिशा, विदिसि° } उपदिशा, कोण (आचा, पि ४१३, पण्ण १—२६)। २ विपरीत दिशा, असयम (आचा)।

विदु देखो विउ (पचा १६, ७)।

विदुगुञ्छा देखो विउञ्छा (राज)।

विदुग्ग न [विदुर्ग] समुदाय (भग १, ८)।

विदुम वि [विद्वन्] विद्वान्, जानकार (सूअ १, २, २, १७)।

विदुर वि [विदुर] १ विचक्षण, विज्ञ (कुमा)। २ धीर। ३ नागरिक, नागर (हे १, १७७)। ४ पु कौरवों के एक प्रख्यात मन्त्री (णाया १, १६—पत्र २०८)।

विदुलतग न [विद्युल्लताङ्ग] संख्या-विशेष, हाहाहूहू को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुलता स्त्री [विद्युल्लता] संख्या-विशेष, विद्युल्लताग को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुस देखो विदु, 'ण पमाए अत्थि विदुसाण' (धमस ८८०)।

विदूसग } पु [विदूषक] मसखरा, राजा के
विदूसय } साथ रहनेवाला मुसाहब (सार्ध ६५, सम्मत्त ३०)।

विदेस देखो विएस = विदेश (णाया १, २—पत्र ७६, ओघ, पउम १, ६६, विसे १६७१, कुमा, प्रासू ४४)।

विदेसि वि [विदेशिन्] परदेशी (सुपा ७२)।

विदेसिअ वि [वैदेशिक] ऊपर देखो (सिरि ३६४)।

विदेह पु [विदेह] १ राजा जनक (ती ३)। २ पु ब देश-विशेष, विहार का उत्तरीय प्रदेश जो आजकल 'तिरहुत' के नाम से प्रसिद्ध है, 'इहेव भारहे वासे पुव्वदेसे विदेहा णाम जणवया' (ती १७, अंत)। ३ पुन. वर्ष-विशेष, महाविदेह-क्षेत्र (पत्र १६३)। ४ वि. विशिष्ट शरीरवाला। ५ निर्लेप, लेप-रहित। ६ पु अनङ्ग, कामदेव। ७ गृह-वास (कप्प ११०)। ८ निषध पर्वत का एक कूट। ९ नीलवन्त पर्वत का एक कूट (ठा ६—पत्र ४५४)। °जंबू स्त्री [°जम्बू] जम्बूवृक्ष विशेष, जिसके नाम से यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (ज ४, इक)। °जच्च पु [°जात्य, °यात्य] भगवान् महावीर (कप्प ११०)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् महावीर की माता, रानी त्रिशला (कप्प)। °दुहिआ स्त्री [°दुहितृ] राजा जनक की पुत्री, सीता (ती ३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कूणिक (भग ७, ८)।

विदेहदिन्न पु [वैदेहदत्त] भगवान् महावीर (कप्प ११० टी)।

विदेहा स्त्री [विदेहा] १ भगवान् महावीर की माता, त्रिशला देवी (कप्प ११० टी)। २ जानकी, सीता (पउम ४६, १०)।

विदेहि पु [वैदेहिन्] विदेह देश का अधिपति, तिरहुत का राजा (सूअ १, ३, ४, २)।

विदेही स्त्री [वैदेही] राजा जनक की पत्नी, सीता की माता (पउम २६, २)।

विद्दडिअ वि [दे] नाशित, नष्ट किया हुआ (दे ७, ७०)।

विद्दड्ढ पु [विदग्ध] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विद्दव सक [वि + द्रावय्] १ विनाश करना। २ हैरान करना, उपद्रव करना। ३ दूर करना, हटाना। ४ भरना, टपकना। विद्दवई (कुप्र २८०)। वकृ. विद्दवयंत (रयण ७२)। कवकृ 'रज्ज रक्खइ न परेहिं विद्दविज्जंत' (कुप्र २७, सुर १३, १७०)।

विद्दव पु [विद्रव] १ उपद्रव, उपसर्ग, 'परचक्कचरडचोराडविद्दवा दूरमुवगया सव्वे' (कुप्र २०)। २ विनाश (णाया १, ६—पत्र १५७, धर्मवि २३)।

विद्दविअ वि [विद्रवित] १ विप्लावित (से ४, ६०)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (गा ८८)। ३ विनाशित (भवि, सण)।

विद्दा अक [वि + द्रा] खराब होना। विद्दाइ (से ४, २६)।

विद्दाण वि [विद्राण] १ म्लान, निस्तेज, फीका, 'विद्दाणमुहा ससोगिल्ला' (सुर ६, १२४), 'अदीणविद्दाणमुहकमलो' (यति ४३), 'दारिद्दमविद्दाण नज्जइ आयारमित्तओ तुज्झ' (कुप्र १६५)। २ शोकातुर, दिलगीर, 'विद्दाणो परियणो' (स ४७३, उप ६०४, उप ३२० टी)।

विद्दाय वि [विद्रुत] १ विनष्ट (कुमा)। २ पलायित। ३ द्रव-युक्त, द्रव-प्राप्त (हे १, १०७, षड्)।

विद्दाय अक [विद्वस्य्] खुद को विद्वान् मानना। वकृ विद्दायमाण (आचा)।

विद्दार देखो विद्धार (वव १)।

विद्दारण (अप) वि [विदारण] चीरनेवाला, फाडनेवाला। स्त्री °णी (भवि)।

विद्दाविर देखो विद्दविअ (भवि)।

विद्दुम पु [विद्रुम] १ प्रवाल, मूँगा (से २६, गउड, जी ३)। २ उत्तम वृक्ष (से २, २६)। °भ पु [°भ] नववें बलदेव का पूर्व-जन्म का गुरु (पउम २०, १६३)।

विद्दुय वि [विद्रुत] अभिभूत, पीडित, 'अग्गिभयविद्दु(?द्द)या (णाया १, १—पत्र ६५)।

विद्दूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५)।

विद्देस पु [विद्वेष] द्वेष, मत्सर (पण्ह १, २—पत्र २६)।

विद्देस वि [विद्वेष्य] द्वेष-योग्य, अप्रिय (पण्ह १, २—पत्र २६)।

विद्देसण न [विद्वेषण] एक प्रकार का अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर में शत्रुता होती है (स ६७८)।

विद्देसि वि [विद्वेषिन्] द्वेष-कर्ता (कुप्र ३६७)।

विद्देसिअ देखो विद्देसिअ (श्रा १२)।

विद्देसिअ वि [विद्वेषित] द्वेष-युक्त (भवि)।

विद्ध सक [व्यध्] बींधना, छेद करना। विद्धइ (धात्वा १५३, नाट—रत्ना ७)। कवकृ विद्धिज्जंत (व ८८)। संकृ. विद्धूण (सूअ १, ५, १, ६)।

विद्ध वि [विद्ध] बींधा हुआ, वेध किया हुआ (से १, १३, भवि)।

विद्ध देखो वुड्ढ = वृद्ध (उत्त ३२, ३, हे १, १२८, भवि)।

विद्धंस अक [वि + ध्वंस्] विनष्ट होना। विद्धंसइ (ठा ३, १—पत्र १२३)। वकृ. विद्धंसमाण (सूअ १, १५, १८)।

विद्धंस सक [वि + ध्वंसय्] विनष्ट करना। भवि. विद्धंसेहिंति (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

विद्धंस पु [विध्वंस] १ विनाश (सुर १, १२)। २ वि विनाश-कर्ता, 'जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठंते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

विद्धंसण न [विध्वंसन] विनाश (णाया १, १—पत्र ४८, पण्ह १, ३—पत्र ५५, सूअ १, २, २, १०, चेइय ६६४, उप पृ १८७)।

विद्धंसणया स्त्री [विध्वंसना] विनाश (भग)।

विद्धंसित त्रि [विध्वंसित] विनाशित (चंड ३, ५)।

विद्धंसिय } वि [विध्वस्त] विनष्ट (पउम
विद्धत्थ } ८, २३७, १६, ३०, पव १५५)।

विद्धि स्त्री [वृद्धि] १ बढाव, बढती (उप ७२८ टी, सुर ४, ११५)। २ समृद्धि (ठा १०—पत्र ५२५, विसे ३४०८)। ३ अभ्युदय। ४ संपत्ति। ५ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)। ६ कलान्तर, सूद (विपा १, १—पत्र ११)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध स्वर का विकार (विसे ३४८२)। ८ ओषधि-विशेष (राज)।

विद्धूण देखो विद्ध = व्यध्।

विधम्म देखो विहम्म (राज)।

विधम्मिय वि [विधमित] तिरस्कृत (विसे २३४६)।

विधवा देखो विहवा (निचू ८)।

विधा अ [वृथा] मुधा, निरर्थक, व्यर्थ (धर्मसं ४११)।

विधाण देखो विहाण = विधान (बृह १)।

विधाय देखो विहाय = विघातृ (राज)।

विधार सक [वि + धारय्] निवारण करना। सक्र विधारेउ (पिंड १०२)।

विधि (शौ) देखो विहि (हे ४, २८२, ३०२)।

विधुर त्रि [विधुर] १ व्याकुल, विह्वल, 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा' (कुप्र ५४)। २ विषम, असमान (धर्मसं १२२३, १२२४)। देखो विहुर।

विधुव (शौ) देखो विहुण = वि + धू। विधुवेदि (पि ५०३)।

विधूण देखो विहुण = वि + धू। सक्र. विधूणित्ता (सूअ २, ४, १०)।

विधूम पु [विधूम] अग्नि, वह्नि (सूअ १, ५, २, ८, वसु)।

विधूय वि [विधूत] क्षुण्ण, सम्यक् स्पृष्ट, 'विधूयकप्पे' (आचा १, ३, ३, ३, १, ६, ३, १)। देखो विहूअ।

विनड देखो विणड। विनडइ (भवि), 'अइ हिअअ पसिअ विरमसु दुल्लहपेम्मेण किं नु विनडेसि' (रुक्मि ५८)। कवकृ विनडिज्जंत, विनडिज्जमाण (सुपा ६५५ १३४)।

विनडण न [विनटन] १ व्याकुल करना। २ विडम्बना (सुपा २०८)।

विनडिअ वि [विनटित] १ व्याकुल बना हुआ। २ विडम्बित, 'तण्हाछुहाविनडिओ फलजलरहियम्मि सेलम्मि' (सम्मत्त १५६, सुपा २६०)।

विनमि पु [विनमि] भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (धण १४)।

विनास देखो विणास = वि + नाशय्। विनासए (महा)।

विनिज्झा सक [विनि + ध्यै] देखना। विनिज्झाए (दस ५, १, १५)।

विनिबद्ध वि [विनिबद्ध] संबद्ध, बँधा हुआ (महा)।

विनिमय पु [विनिमय] व्यत्यय, 'इअ सव्व-भासविनिमयपरिहिं' (कुमा)।

विनियट्ट देखो विणिवट्ट। वकृ. विनियट्ट-माण (आचा १, ५, ४, ३)।

विनियट्टण न [विनिवर्त्तन] निवृत्ति, विराम (आचा)।

विनिरय वि [विनिरत] लीन, आसक्त (कुप्र ६६)।

विनिहन्न सक [विनि + हन्] मार डालना, विनाश करना। विनिहन्निज्जा (उत्त २, १७)।

विनिहाय देखो विणिघाय (विपा १, २—पत्र ३१)।

विनीय देखो विणीअ (कस)।

विन्नत्त देखो विण्णत्त (काल)।

विन्नत्ति देखो विण्णत्ति (द ४७, कुमा)।

विन्नप्प देखो विन्नव।

विन्नव देखो विण्णव। विन्नवइ, विन्नवेइ (पउम ३६, ११४, महा), विन्नवेज्जा (कप्प)। वकृ. विन्नवेमाण (कप्प)। संकृ विन्नविउ, विन्नवित्ता (सुपा ३२३, पि ५८२)। कृ विन्नप्प, विन्नवणीय, विन्नवियव्व (पउम ४६, ४६, मोह ८२, सुपा १६२, २१६, ३२१)।

विन्नवण न [विज्ञपन] निवेदन, विज्ञापन (सुपा २६७)।

विन्नवणा स्त्री [विज्ञापना] १ प्रार्थना, विनती (सूअ १, ३, ४, १०)। २ महिला, नारी (सूअ १, २, ३, २)। देखो विण्णवणा।

विन्नविय वि [विज्ञापित] निवेदित (महा)।

विन्ना देखो विण्णा = वि + ज्ञा। कृ. विन्नेय (भग, उप ३३६ टी)।

विन्ना देखो विन्ना। °यड न [°तट] एक नगर का नाम (उप पृ ११२)।

विन्नाउ वि [विज्ञातृ] जाननेवाला (आचा)।

विन्नाण न [विज्ञान] १ सद्बोध, ज्ञान (भग, आचा)। २ कला, शिल्प, 'तं नत्थि किंपि विन्नाणं जेण धरिज्जइ काया' (वै ७), 'कुसुम-विन्नाणं' (कुमा, प्रासू ४३, ११२)। ३ मेधा, मति, बुद्धि, 'मेहा मई मणीसा विन्नाणं धी चिई बुद्धी' (पाअ)।

विन्नाणिय } देखो विण्णाय (उप १५० टी,
विन्नाय } सुर २, १३१, पि १०६, पाअ)।

विन्नाविय देखो विन्नविय (सुपा १४४)।

विन्नास पुं [विन्यास] १ रचना, विच्छित्ति, 'विन्नासो विच्छित्ती' (पाअ), 'वयणविन्नासो' (स ३०१, सुपा १७, २६६, महा)। २ स्थापना (भवि)।

विन्नासण न [विन्यासन] संस्थापन (स ३१८)।

विन्नासिअ वि [विन्यासित] संस्थापित (स ५६०)।

विन्नासिअ (अप) देखो विणासिअ (हे ४, ४१८)।

विन्नु देखो विण्णु (आचा), 'एगा विन्नू' (ठा १—पत्र १६)।

विन्नेय देखो विन्ना = वि + ज्ञा।

विन्हु पु [विष्णु] एक जैन मुनि, जो आर्य-जेहिल के शिष्य थे (कप्प)। देखो विण्हु। °पअ न [°पद] आकाश (समु १५०)। °पदी स्त्री [°पदी] गंगा नदी (समु १५०)।

विपंची स्त्री [विपञ्ची] वाद्य-विशेष, वीणा (पराह १, ४—पत्र ६८, २, ५—पत्र १४६)।

विपक्क वि [विपक्व] पका हुआ (उप पृ २११)। देखो विवक्क।

विपक्ख देखो विवक्ख, 'निजियविपक्खलक्खो' (सुपा १०२, २८०)।

विपक्खिय वि [विपक्षिक] विरोधी, दुश्मन (सबोध ५६)।

विपच्चइय न [विप्रत्ययिक] बारहवें जैन अंग ग्रन्थ का सूत्र-विशेष (सम १२८)।

विपच्चमाण वि [विपच्यमान] १ जो पकाया जाता हो वह (श्रा २०, स ८६), 'आमासु अप्पक्कासु विपच्चमाणासु मंसपेसीसु' (सबोध ४४)। २ दग्ध होता, जलता, 'तव्विरहानलजालाविपच्चमाणस्स मह निच्च' (रयण ४१)।

विपज्जय देखो विवज्जय (राज)।

विपज्जास देखो विवज्जास (नाट—मृच्छ २२६)।

विपडियत्ति देखो विप्पडिवत्ति (विसे २६१४, सम्मत्त २२८)।

विपडिसेह सक [विप्रति + सिध्] निषेध करना। कृ. विपडिसेहेयव्व (भग ५, ७—पत्र २३४)।

विपणोल्ल सक [विप्र + नोदय्] प्रेरणा करना। विपणोल्लए (आचा १, ५, २, २, पि २४८)।

विपण्ण देखो विवण्ण = विपन्न (चारु ८)।

विपत्ति देखो विवत्ति = विपत्ति (गा २८२ अ, राज)।

विपत्थाविद (शौ) वि [विप्रस्तावित] आरब्ध, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह, 'एदाए चोरिआए एसम्हं घरे कलहो विपत्थाविदो' (हास्य १२१)।

विपरामुस सक [विपरा + मृश्] १ समारम्भ करना, हिंसा करना। २ पीडा उपजाना, हैरान करना। ३ अक. उत्पन्न होना, उपजना। विपरामुसइ, विपरामुसंति, विपरामुसह (आचा, पि ४७१)। देखो विप्परामुस।

विपराहुत्त वि [विपराङ्मुख] विशेष पराङ्मुख, अतिशय उदासीन (पउम ११५, २२)।

विपरिकम्म न [विपरिकर्मन्] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि क्रिया (आचा २, ८, १)।

विपरिकुंचि वि [विपरिकुञ्चिन्] विपरिकुंचित नामक वन्दन दोषवाला, 'देसकहावित्तंते कहेइ दरवंदिए विपरिकुंची' (बृह ३)।

विपरिकुंचिय देखो विप्पलिउंचिय (राज)।

विपरिखल अक [विपरि + स्खल्] १ स्खलित होना, गिरना। २ भूल करना। वकृ. विपरिखलंत (अच्चु २२)।

विपरिणम अक [विपरि + णम्] १ बदलना, रूपान्तर को प्राप्त होना। २ विपरीत होना, उलटा होना। विपरिणमे (पिंड ३२७)। वकृ. विपरिणममाण (भग ७, १०—पत्र ३२५)।

विपरिणय वि [विपरिणत] रूपान्तर को प्राप्त (पिंड २६५)।

विपरिणाम सक [विपरि + णमय्] १ विपरीत करना, उलटा करना। २ बदलवाना, रूपान्तर को प्राप्त करना। विपरिणामेइ (स ५१३)। हेकृ. विपरिणामित्तए (उवा)।

विपरिणाम पुं [विपरिणाम] १ रूपान्तरप्राप्ति (आचा, औप)। २ उलटा परिणाम, विपरीत अध्यवसाय (धर्मसं ५११)।

विपरिणामिय वि [विपरिणमित] रूपान्तर को प्राप्त (भग ६, १ टी—पत्र २५१)।

विपरिधाव सक [विपरि + धाव्] इधर उधर दौडना। विपरिधावई (उत्त २३, ७०)।

विपरियास देखो विप्परियास (राज)।

विपरिवसाव सक [विपरि + वासय्] रखना। विपरिवसावेइ (णाया १, १२—पत्र १७५)। वकृ. विपरिवसावेमाण (णाया १, १२)।

विपरीअ देखो विवरीअ (सूअ १, १, ४, ५, गा ५४ अ)।

विपलाअ अक [विपरा + अय्] दूर भागना। वकृ. विपलाअंत (गा २६१)।

विपल्हत्थ देखो विवल्हत्थ (पि २८५)।

विपस्सि वि [विदर्शिन्] देखनेवाला (आचा)।

विपाग देखो विवाग (राज)।

विपिक्ख देखो विप्पेक्ख। वकृ. विपिक्खंत (राज)।

विपिण देखो विविण (कुमा)।

विपित्त वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विपुल देखो विउल (णाया १, १—पत्र ७५, कप्प, पराह २, १—पत्र ६६)। °वाहण पुं [°वाहन] भारतवर्ष में होनेवाला बारहवां चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

विप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

विप्प पु [विप्र] ब्राह्मण, द्विज (हे १, १७७, महा)।

विप्प पु [विप्रुष्, विप्र] १ मूत्र और विष्ठा के बिन्दु। २ विष्ठा और मूत्र, 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा अन्ने विडित्ति विट्ठा भासंति य पत्ति पासवणं' (विसे ७८१, औप, महा)।

विप्पइट्ठ देखो विप्पगिट्ठ (राज)।

विप्पइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ, इधर उधर पटका हुआ (से २, ५, कस)।

विप्पइर सक [विप्र + कृ] इधर उधर पटकना, बिखेरना। विप्पइरामि (उवा)। वकृ. विप्पइरमाण (णाया १, ६—पत्र १५७)।

विप्पउज सक [विप्र + युज्] १ विरुद्ध प्रयोग करना। २ विशेष रूप से जोडना, 'अदुवा वायाओ विप्पउजंति' (आचा १, ८, १, ३)।

विप्पओअ } पु [विप्रयोग] अलहदा, अलग, विप्पओग } जुदा, विरह, वियोग (उत्तर १५, स २८१, चउ, पउम ४५, ४६, जी ४३, उत्त १३, ८, महा)।

विप्पकड वि [विप्रकट] विशेष रूप से प्रकट (भग ७, १०—पत्र ३२४)।

विप्पकिर देखो विप्पइर। वकृ. विप्पकिरेमाण (णाया १, १—पत्र ३६)।

विप्पक्ख देखो विपक्ख (पि १६६)।

विप्पगब्भिय वि [विप्रगल्भित] अत्यन्त धृष्ट (सूअ १, १, २, ५)।

विप्पगरिस पु [विप्रकर्ष] दूरी, आसन्नता का अभाव, 'देसाइविप्पगरिसा' (धर्मसं १२८७)।

विप्पगाल सक [नाशय्, विप्र + गालय्] नाश करना। विप्पगालइ (हे ८, ३१; पि ५५३)।

विप्पगालिअ वि [नाशित, विप्रगालित] नाशित (कुमा)।

विप्पगिट्ठ वि [विप्रकृष्ट] १ दूरवर्ती, दूरी पर स्थित (स २२६)। २ दीर्घ, लम्बा, 'णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं' (णाया १, १५)।

विप्पचय सक [विप्र + त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। कृ विप्पचइयव्व (तंदु ३५)।

विप्पच्चय पु [विप्रत्यय] १ संदेह, संशय (उत्त २३, २८)। २ वि प्रत्यय-रहित, अविश्वसनीय (उव)।

विप्पजढ वि [विप्रहीण] परित्यक्त (णाया १, २—पत्र ८४; पचा १८, ६; पव १२३)।

विप्पजह सक [विप्र + हा] परित्याग करना, छोड़ देना। विप्पजहइ, विप्पजहंति, विप्पजहे (कम, उवा, सूअ २, १, ३८; उत्त ८, ४)। भवि विप्पजहिस्सामो (पि ५३०)। वकृ. विप्पजहमाण (ठा २, २—पत्र ५६; पि ५००)। संकृ विप्पजहित्ता, विप्पजहाय (उत्त २६, ७३; भग)। कृ विप्पजहणिज्ज, विप्पजहियव्व (णाया १, १—पत्र ८८; पि ५७१; णाया १, १८—पत्र २४१)।

विप्पजह न [विप्रहाण] परित्याग। °सेणिया स्त्री [°श्रेणिका] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक परिकर्म—अंश विशेष (सम १२८)।

विप्पजहणा } स्त्री [विप्रहाणि] प्रकृष्ट
विप्पजहणा } त्याग, परित्याग (उत्त २६, ७३; औप; विसे ३०८६; पण्ण ३६—पत्र ८४०)।

विप्पजहिय वि [विप्रहीण] परित्यक्त (पि ५६५)।

विप्पजाग देखो विप्पओअ (चंड)।

विप्पडइ अक [विपरि + इ] विपरीत होना, उलटा होना। विप्पडिएइ (सूअ १,१२,१०)।

विप्पडिघाय पु [विप्रतिघात] प्रतिबन्ध, अटकाव (णाया १, १६—पत्र २०८)।

विप्पडिवह पु [विप्रतिपथ] विपरीत मार्ग (उप १०३१ टी)।

विप्पडिवण्ण देखो विप्पडिवन्न (पव ७३ टी)।

विप्पडिवत्ति स्त्री [विप्रतिपत्ति] १ विरोध (विसे २८८०)। २ प्रतिज्ञा-भंग (उप ५१६)।

विप्पडिवन्न वि [विप्रतिपन्न] १ जिसने विशेष रूप से स्वीकार किया हो वह, 'मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए जाए यावि होत्था' (णाया १, १३—पत्र १७८)। २ विरोध-प्राप्त, विरोधी बना हुआ (आचा १, ८, १, ३; सूअ १, ३, १, ११)।

विप्पडिवेअ } सक [विप्रति + वेदय्]
विप्पडिवेद } १ जानना। २ विचारना। विप्पडिवेएइ (आचा १, ५, ४, ४), विप्पडिवेदेंति (सूअ २, १, १५)।

विप्पडिसिद्ध वि [विप्रतिषिद्ध] आपस में असमत (उवर ३)।

विप्पडीव वि [विप्रतीप] प्रतिकूल (माल १७७)।

विप्पणट्ठ वि [विप्रनष्ट] पलायित, नाश-प्राप्त (स ३५३; उवा)।

विप्पणम } सक [विप्र + णम्] १ नमना।
विप्पणव } २ अक तत्पर होना। विप्पणवंति (सूअ १, १२, १०)। वकृ. विप्पणमंत (राज)।

विप्पणस्स अक [विप्र + नश्] नष्ट होना, विनाश-प्राप्त होना। विप्पणस्सइ (कस) भवि विप्पणस्सिहिइ (महानि ८)

विप्पणास पु [विप्रणाश] विनाश (धर्मवि ५७)।

विप्पतार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्पतारमि (धर्मवि १८७)। कर्म विप्पतारीअदि (शौ) (नाट—शकु ७५)।

विप्पदीअ } (शौ) देखो विप्पडीव (नाट—
विप्पदीव } मालती १०६, ११६, मृच्छ ८८)।

विप्पमाय पु [विप्रमाद] विविध प्रमाद (सूअ १, १४, १)।

विप्पमुच सक [विप्र + मुच्] छोड़ना, मुक्त करना। कर्म विप्पमुच्चइ (उत्त २५, ४१)।

विप्पमुक्क वि [विप्रमुक्त] विमुक्त (औप; सुर २, २३७; सुपा ४४५)।

विप्पय न [दे] १ व्रज-भिक्षा। २ दान। ३ वि वापित। ४ पु वैद्य (दे ७, ८६)।

विप्पयार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्पयारंति, विप्पआरेमि (कुप्र ६; त्रि ८८)। कर्म विप्पयारीअइ (कुप्र ४८)। संकृ. विप्पआरिअ (त्रि ८८)।

विप्पयारणा स्त्री [विप्रतारणा] वञ्चना, ठगाई (कुप्र ४८, मोह ६८)।

विप्पयारिअ वि [विप्रतारित] वञ्चित, ठगा हुआ (मोह १०१)।

विप्परद्ध वि [दे] विशेष पीडित, 'करचरणदंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धं समाणे तं चेव महद्दह पाणीयं पादेउ (?पाउ) समोयरेंति' (णाया १, १—पत्र ६८)। देखो परद्ध।

विप्परामुस देखो विपरामुस, 'आवंती केयावंती लोगंसि विप्परामुसंति अट्ठाए अणट्ठाए वा, एएसु चेव विप्परामुसंति' (आचा)।

विप्परिणम देखो विपरिणम। भवि विप्परिणमिस्सति (भग)।

विप्परिणय देखो विपरिणय (भग ५, ७ टी—पत्र २३६, काल)।

विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरि + णमय्। विप्परिणामंति विप्परिणामेंति (आचा)। संकृ विप्परिणामइत्ता (भग)।

विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरिणाम (आचा, भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।

विप्परिणामिय देखो विपरिणामिय (भग ६, १—पत्र २५०)।

विप्परियास सक [विपरि + आसय्] व्यत्यय करना, उलटा करना। विप्परियासेइ (निचू ११)। वकृ विप्परियासंत (निचू ११)।

विप्परियास पु [विपर्यास] १ व्यत्यय, विपरीतता (आचा, सूअ १, ७, ११)। २ परिभ्रमण (सूअ १, १२, १३; १, १३ १२)।

विप्परियासणा स्त्री [विपर्यासना] व्यत्यय करना (निचू ११)।

विप्परुद्ध वि [विप्ररुद्ध] तिरस्कृत, 'हयमिह यविप्परुद्धो तुमो' (पउम ८, ८५)।

विप्पल देखो विप्प = विप्र (प्राकृ ३७)।

विप्पलभ सक [विप्र + लभ्] ठगना। विप्पलभेमि (स ५०६)।

विप्पलम्भ पु [विप्रलम्भ] १ वञ्चना, ठगाई (उप २८)। २ शृङ्गार की एक अवस्था—जिसमें उत्कृष्ट अनुराग होने पर भी प्रिय समागम नहीं होता (सुपा १६४)। ३ विपर्यास, व्यत्यय, वपरीत्य (धर्मसं ३०४)। विरह, वियोग (वज्जा)।

विप्पलभअ वि [विप्रलम्भक] प्रतारक, ठगनेवाला (मृच्छ ८७)।

विप्पलम्भिअ वि [विप्रलम्भित] १ प्रतारित। २ विरहित (सुपा २१६)।

विप्पलद्ध वि [विप्रलब्ध] वञ्चित, प्रतारित (वाह ८५ स ४१८, ६८०)।

विप्पलय पुन [दे] विविधता, विचित्रता, 'तदट्ठु नो सव्व जाणइ सवधविप्पलयं' (धर्मवि १२७)।

विप्पलविद (शौ) न [विप्रलपित] निरर्थक वचन, बकवाद (स्वप्न ८१)।

विप्पलाअ देखो विपलाअ। भूका. विप्पलाइत्था (विपा १, २—पत्र २६)। वकृ विप्पलायमाण (णाया १, १—पत्र ६५)।

विप्पलाअ, विप्पलाव } पु [विप्रलाप] १ परिदेवन, रोना, क्रन्दन, 'अविओगो विप्पलाओ' (तदु ८७, रयण ६८)। २ निरर्थक वचन, बकवाद (उत्त १२, ३३)। ३ विरहालाप (पउम ४८, ६८)।

विप्पलिउंचिअ न [विपरिकुञ्चित] गुरु-वन्दन का एक दोष, सपूर्ण वन्दन न करके बीच में बातचीत करने लग जाना (पव २—गाथा १५२)।

विप्पलुपग वि [विप्रलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा (पण्ह १, ३—पत्र ४८)।

विप्पलोहण वि [विप्रलोभन] लुभानेवाला (स ७६३)।

विप्पव पु [विप्लव] १ देश का उपद्रव, क्रान्ति। २ दूसरे राजा के राज्य आदि से भय (हे २, १०६)। ३ शरीर की विसस्थुलता, अस्वस्थता (कुमा)।

विप्पवर न [दे] भल्लातक, भिलावाँ (दे ७, ६६)।

विप्पवस अक [विप्र + वस्] प्रवास में जाना, देशान्तर जाना। संकृ. विप्पवसिय (आचा २, ५, २, ३)।

विप्पवसिय वि [विप्रोषित] देशान्तर में गया हुआ, प्रवास में गया हुआ (णाया १, २—पत्र ७६, १, ७—पत्र ११५)।

विप्पवास पु [विप्रवास] प्रवास, देशान्तर-गमन (प्रति १००)।

विप्पसन्न वि [विप्रसन्न] १ विशेष प्रसन्न, खुश। २ प्रसन्न-चित्त का मरण (उत्त ५, १८)।

विप्पसर अक [विप्र + सृ] फैलना। भूका 'बहवे हत्थी··· दिसो दिसं विप्पसरित्था' (पि ५१७)।

विप्पसाय सक [विप्र + सादय्] प्रसन्न करना। विप्पसायए (आचा १, ३, ३, १)।

विप्पसीअ अक [विप्र + सद्] प्रसन्न होना। विप्पसीएज्ज (उत्त ५, ३०, सुख ५, ३०)।

विप्पहय वि [विप्रहत] आहत, जखमी (सुर ६, २२१)।

विप्पहाइय वि [विप्रभाजित] विभक्त, बँटा हुआ (ओप)।

विप्पहीण, विप्पहूण } वि [विप्रहीण] रहित, वर्जित (स ७७, स १६१, पि १२०, ५०३)।

विप्पावग वि [दे] हास्य-कर्ता, उपहास करनेवाला (सुख १, १३)।

विप्पिअ पुन [विप्रिय] १ अप्रिय, अनिष्ट (णाया १, १८—पत्र २१३, गा २५०, से ८, ३६, हे ४, ४२३)। २ अपराध, गुनाह (पात्र)। °आरय वि [°कारक] १ अप्रिय-कर्ता। २ अपराध-कर्ता (हे ४, ३४३)।

विप्पिडिअ वि [दे] नाशित (दे ७, ७०)।

विप्पीइ स्त्री [विप्रीति] अप्रीति (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

विप्पु स्त्री [विप्रुष्] बिन्दु, अवयव, अंश, 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसा विप्पा' (ओप, विसे ७८१)।

विप्पुअ वि [विप्लुत] उपद्रुत, उपद्रव युक्त (दे ६, ७६)।

विप्पुस पुंन. देखो विप्पु, 'असुइस्स विप्पुसेणवि' (पिंड १६५)।

विप्पेक्ख सक [विप्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना। वकृ विप्पेक्खत (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विप्पेक्खिअ वि [विप्रेक्षित] निरीक्षित (पण्ह २, ४—पत्र १२१, भग ६, ३३—पत्र ४६६)।

विप्पोसहि स्त्री [विप्रौषधि] आध्यात्मिक-शक्ति-विशेष, जिसके प्रभाव से योगी के विष्ठा और मूत्र का बिन्दु औषधि का काम करता है (पण्ह २, १—पत्र ६६, औप, विसे ७७६, सति २)।

विप्फंद अक [वि + स्पन्द्] इधर-उधर चलना, तडफना। वकृ विप्फंदमाण (आचा)।

विप्फंदिअ वि [विस्पन्दित] इधर-उधर भटका हुआ, परिश्रान्त,

'खज्जतेण जलथले सकम्म-
विप्फडि(?दि)एण जीवेण।
तिरियभवे दुक्खाइं छुहतण्हा-
ईणि भुत्ताइं।' (पउम ६५, ५२)।

विप्फरिस पु [विस्पर्श] विरुद्ध स्पर्श (प्राप्र)।

विप्फाडग वि [विपाटक] चीरनेवाला, विदारक (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

विप्फाडिअ वि [दे विपाटित] नाशित (दे ७, ७०)।

विप्फारिय वि [विस्फारित] १ विस्तारित (उप पृ १५२)। २ विकासित (सुपा ८३)।

विप्फाल सक [दे] पूछना, पृच्छा करना। विप्फालेइ (वव १)।

विप्फाळ देखो विफाल। सकृ विप्फालिय (राज)।

विप्फाल पु [दे] पृच्छा, प्रश्न (वव १ टी)।

विप्फालणा स्त्री [दे] ऊपर देखो (वव १ टी)।

विप्फालिय देखो विप्फारिय (राज)।

विप्फुड वि [विस्फुट] स्पष्ट, व्यक्त (रंभा)।

विप्फुर अक [वि + स्फुर्] १ होना। २ विकसना। ३ तडफडना। ४ फरकना, हिलना। विप्फुरइ (सबोध ३४, काल, भवि)। वकृ विप्फुरत (उत्त १६, ५४, पउम ६३, ३)।

विप्फुरण न [विस्फुरण] १ विजृम्भण, विकास (श्रावक २८५, सुर २, २३७)। २ स्पन्दन, हिलन (गउड)।

विप्फुरिय वि [विस्फुरित] विजृम्भित (सुपा २०८, मण)।

विप्फुल्ल वि [विफुल्ल] विकसित, प्रफुल्ल, 'तह तह सुएहा विप्फुल्लगंडविवरमुही हसइ' (वज्जा ८४)।

विप्फोडअ पु [विस्फोटक] फोडा (नाट—शकु २८, पि ३११, प्राप्र)।

विफंद देखो विप्फंद। वकृ विफंदमाण (आचा १, ४, ३, ३)।

विफाल सक [वि + पाटय्] १ विदारण करना। २ उखाड़ना। संकृ विफालिय (आचा २, ३, २, ६)।

विफुट्ट अक [वि + स्फुट्] फटना। वकृ 'चिततिं कि विफुट्टत चडवभंडयस्स रवो' (सुपा ४५)।

विफुरण देखो विप्फुरण (सुपा २५)।

विबंधक वि [विबन्धक] विशेष रूप से बाधनेवाला (पच २, १)।

विबद्ध वि [विबद्ध] १ विशेष बद्ध। २ सहित (सूअ १, ३, २, ६)।

विबाहग वि [विबाधक] विरोधी, बाधक (धर्मसं ४६६)।

विबुद्ध वि [विबुद्ध] जागृत (सिरि ६१५)।

विबुव (शौ) नीचे देखो (पि २६१)।

विबुह पु [विबुध] १ देव, त्रिदश (पाअ, सुर २, ८५)। २ पण्डित, विद्वान् (सुर १, ८५)। °चंद पु [°चन्द्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सुपा ६५८)। °पहु पु [°प्रभु] इन्द्र (सुर १, १७२)। °पुर न [°पुर] स्वर्ग (सम्मत्त १७५)।

विबुहेसर पुं [विबुधेश्वर] इन्द्र (श्रावक ५०)।

विबोह पु [विबोध] जागरण (पचा १, ८२)।

विबोहग देखो विबोहय (कप्प)।

विबोहण न [विबोधन] ज्ञान कराना, 'अणुहुग्गणविबोहणकरम्म' (मन १२३)।

विबोहय वि [विबोधक] १ विकासक, 'कुमुयवणविबोहय' (कप्प ३८ टि)। २ ज्ञान-जनक (निसे १७८)।

विब्बोअ पु [विब्बोक] विलास, लीला, 'हेला ललिअं लीला विब्बोओ विब्भमो विलासो य' (पाअ)। देखो विब्बोअ।

विब्भंग देखो विभंग (भग, पव २२६, कम्म ४, १४, ४०)।

विब्भंगि वि [विभङ्गिन्] विभंग-ज्ञानवाला (भग)।

विब्भंत वि [विभ्रान्त] १ विशेष भ्रान्त, चक्कर में पड़ा हुआ (आचा १, ६, ४, ३)। २ पु प्रथम नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—स्थान-विशेष (देवेन्द्र ४)।

विब्भंस पु [विभ्रंश] अतिपात, हिंसा, प्राण-वियोजन (राज)।

विब्भट्ठ वि [विभ्रष्ट] विशेष भ्रष्ट (प्रति ४०)।

विब्भम पु [विभ्रम] १ विलास (पाअ, गउड ५५, १६७, कुमा)। २ स्त्री की शृंगार के अंग-भूत चेष्टा विशेष (गउड, गा ५)। ३ चित्त-भ्रम, पागलपन (राय)। ४ शृंगार-सम्बन्धी मानसिक अशान्ति (कप्पू)। ५ विशेष भ्रान्ति (सुपा ३२७, गउड)। ६ सदेह। ७ आश्चर्य। ८ शोभा (गउड)। ९ भूषणों का स्थान-विपर्यय (कुमा)। १० रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६)। ११ मैथुन, अब्रह्म। १२ काम-विकार (पण्ह १, ४—पत्र ६६)।

विब्भल वि [विह्वल] १ व्याकुल, व्यग्र (सुर ८, ५७, १२, १६८)। २ व्यासक्त, तल्लीन। ३ पुं विष्णु, नारायण (षड् ४०, हे २, ५८)।

विब्भलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा)।

विब्भवण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८)।

विब्भाडिय वि [दे] नाशित (भवि)।

विब्भार देखो वेब्भार (पि २६६)।

विब्भिंडि पु [दे] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८३)।

विब्भेइअ वि [दे] सूई से विद्ध (दे ७, ६७)।

विभंग पु [विभङ्ग] १ विपरीत अवधिज्ञान, वितथ अवधिज्ञान, मिथ्यात्व-युक्त अवधिज्ञान (पव २२६ टी)। २ ज्ञान-विशेष (सूअ २, २, २५)। ३ विराधना, खण्डन। ४ मैथुन, अब्रह्म (पण्ह १ ४—पत्र ६६)। देखो विहंग = विभंग।

विभंगु पुस्त्री [दे] तृण-विशेष, 'एरंडे कुरुविंदे करकरसुंठे तहा विभंगू य' (पण्ण १—पत्र ३३)।

विभंगुर वि [विभङ्गुर] विनश्वर (सुपा ६०५, प्रासू ६६, पुप्फ २२०)।

विभंज सक [वि + भञ्ज्] भाग डालना, तोड़ना। संकृ विभंजिऊण (काल)।

विभंतडी (अप) स्त्री [विभ्रान्ति] विशिष्ट भ्रम (हे ४, ४१४)।

विभग्ग वि [विभग्न] भागा हुआ, खण्डित (पउम ११३, २६)।

विभज सक [वि + भज्] १ बाँटना, विभाग करना। २ विकल्प से प्राप्त करना, पक्षतः प्राप्ति करना—विधान और निषेध करना। कर्म. विभज्जति (तदु २)। कवकृ विभज्जमाण (णाया १, १ पत्र ६०, उप २६४ टी)। संकृ विभजिऊण (धर्मवि १०५)। देखो विभज्ज।

विभजण न [विभजन] विभाग, भाग-बटाई (पव ३८)।

विभज्ज देखो विभज। विभज्ज (कम्म ६, १०)।

विभज्जवाद } पु [विभज्यवाद] स्याद्वाद,
विभज्जवाय } अनेकान्तवाद, जैन दर्शन (धर्मसं ६२१, सूअ १, १४, २२, उवर ६६)।

विभत्त वि [विभक्त] १ विभाग-युक्त, बाँटा हुआ (नाट—शकु ८६, कप्प)। २ भिन्न, अलग, जुदा, 'विभत्त धम्म भोसमाणे' (आचा, कप्प, महा)। ३ न विभाग (राज)।

विभत्ति स्त्री [विभक्ति] १ विभाग, भेद (भग १२, ५—पत्र ५७४, सूअनि ६६, उत्तनि २६), 'लोगस्स पएसेसु अणंतरपरंपराविभत्तीहिं' (पच २, ३६, ८०, ८१)। २ व्याकरण प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (ओघभा ८, चेइय २६८, सूअनि ६६)।

विभमण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८ टी)।

विभय देखो विभज। विभए, विभयति (कम्म ६, ३१; आचा, उत्त १३, २३)।

विभयणा स्त्री [विभजना] विभाग (सम्म १०१)।

विभर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। विभरइ (पि ३१३)।

विभव देखो विहव (उव, महा)।

विभवण न [विभवन] विरूप-करण, खराब करना (राज)।

विभाइम वि [विभाज्य] विभाग योग्य (ठा ३, २—पत्र १३८)।

विभाइम वि [विभागिम] विभाग से बना हुआ (ठा ३, २—पत्र १३४)।

विभाग पु [विभाग] अंश, बाँट (काल, सण)।

विभागिम देखो विभाइम = विभागिम (उप पृ १८१)।

विभाय देखो विभाग (रंभा)।

विभाय न [विभात] प्रकाश, कान्ति, तेज (सण)।

विभाय पु [विभाव] परिचय, 'कत्थ विम-मदसाविभाओ न होइ' (स १९८)।

विभाव सक [वि + भावय्] १ विचार करना, ख्याल करना। २ विवेक से ग्रहण करना। ३ समझना। वकृ विभावन, विभावेंत, विभावेमाण (सुपा ३७७, उप ५९७ टी, कप्प)। कवकृ विभाविज्जत, विभाविज्जमाण (से ८, ३२, स ७५०)। हेकृ विभावेत्तए (कस)। कृ विभावणीय (पुप्फ २५८)।

विभाव देखो विभव, 'तओ महाविभावेण पूइऊण पेसिया गया य' (महा)।

विभावसु पु [विभावसु] १ सूर्य, रवि। २ रविवार (पउम १७, १७७)। देखो विहावसु।

विभाविय वि [विभावित] विचारित (सण)।

विभास सक [वि + भाष्] १ विशेष रूप से कहना, स्पष्ट कहना। २ व्याख्या करना। ३ विकल्प से विधान करना। विभासइ (पव ७३ टी)। कृ विभासियव्व (उतनि ३६, पिंड १२८)। हेकृ. विभासिउ (विसे १०८५)।

विभासण न [विभाषण] व्याख्या, व्याख्यान (विसे १४२८)।

विभासय वि [विभाषक] व्याख्याता, व्याख्या-कर्त्ता (विसे १४२५)।

विभासा स्त्री [विभाषा] १ विकल्प-विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विधि और निषेध का का विधान (पिंड १४३, १४८, १४५, २३५, ३०२, उप ८१५ टी द्र १६)। २ व्याख्या, विवरण, स्पष्टीकरण (विसे १३८५, १४२१, पिंड ६३७)। ३ विज्ञापन, निवेदन (उप ६८०)। ४ विविध भाषण (पिंड ४३८)। ५ विशेषोक्ति (देवेन्द्र ३६७)। ६ परिभाषा, संकेत (कम्म १, २८, २९)। ७ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित, उद्योतित (सम्मत्त ६२)।

विभिण्ण } देखो विहिण्ण = विभिन्न (गउड ५७०, १८०, उत्त १६, ५५)।
विभिन्न }

विभीसण पु [विभीषण] १ रावण का एक छोटा भाई (पउम ८, ६२)। २ विदेह वर्ष का एक वासुदेव (राज)।

विभीसावण वि [विभीषण] भय-जनक, भयकर (भवि)।

विभीसिया स्त्री [विभिषिका] भय-प्रदर्शन (उव)।

विभु पु [विभु] १ प्रभु, परमेश्वर (पउम ५, ११२)। २ नाथ, स्वामी, मालिक (पउम ७०, १२)। ३ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। ४ वि व्यापक (विसे १६८५)।

विभूइ स्त्री [विभूति] १ ऐश्वर्य, वैभव (उव, ओप)। २ ठाटबाट, धूमधाम, 'महाविभूईए चलिओ जिणजत्ताए' (सुर ३, ६२, महा)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ९९)।

विभूसण न [विभूषण] १ अलंकार, गहना। २ शोभा, दिव्वालंकारविभूसणाइ' (उव, ओप)।

विभूसा स्त्री [विभूषा] १ सिंगार की सजावट, शरीर पर अलंकार-वस्त्र आदि की सजावट (आचा १, २, १, ३, ओप, जीव ३)। २ शरीर-शोभा, 'मेहुणाओ उवसतस्स किं विभूसाइ कारिअं' (दस ६, २, ६५, ६६, ६७; उत्त १६, ९)।

विभूसिय वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत, शोभित (भग उत्त १६, ९, महा, विपा १, १—पत्र ७)।

विभेद } पु [विभेद] १ भेदन, विदारण (धर्मसं ८२९), 'जयवारणकुंभ-
विभेय } विभेयक्खमे' (गउड, उप ७२८ टी)। २ भेद, प्रकार, 'उड्ढाहोतिरियविभेय तिहुयणंपि' (चेइय ६६४)।

विभेयग वि [विभेदक] भेदनकर्त्ता, परमम्म-विभेयगो' (धर्मवि ७९)।

विमइ स्त्री [विमति] छन्द-विशेष (पिंग)।

विमइअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ७, ७१)।

विमउल वि [विमुकुल] विकसित, खिला हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ३, औप)।

विमंतिय वि [विमन्त्रित] जिसके बारे में मस-लहत—गुप्त युक्ति की गई हो वह (सुर ११, ६७)।

विमंसिअ वि [विमृष्ट, विमर्शित] विचारित, पर्यालोचित (सिरि १०४५)।

विमग देखो विमय (राज)।

विमग्ग सक [वि + मार्गय्] १ विचार करना। २ अन्वेषण करना, खोजना। ३ प्रार्थना करना, मागना। ४ इच्छा करना, चाहना। विमग्गइ, विमग्गहा (उव, उत्त १२, ३८)। वकृ विमग्गत, विमग्गमाण (गा ३५१, सुर २, १७, से ४, ३६, महा)।

विमग्गिअ वि [विमार्गित] १ याचित, माँगा हुआ (सिरि १२७, सुर ४, १०७)। २ अन्वेषित, गवेषित (पाअ)।

विमज्झ न [विमध्य] अन्तराल (राज)।

विमण वि [विमनस] १ विषण्ण, खिन्न, शोक-सन्तप्त (कप्प, सुर ३, १६८, महा)। २ शून्य-चित्त, सुन्न चित्तवाला (विपा १, २—पत्र २७)। ३ निराश, हताश (गा ७६)। ४ जिसका मन अन्यत्र गया हो वह (से ४, ३१, गउड)।

विमद्द सक [वि + मर्दय्] १ संघर्ष करना। २ मर्दन करना। कवकृ विमद्दिज्जमाण (गरि १०३८)।

विमद्द पु [विमर्द] १ विनाश, 'आसत्तपुरिससतइद्दालिद्दविमद्दसजराय' (सुपा ३८, गउड)। २ संघर्ष (गा ७२२, सुर ८६)।

विमद्दण न [विमर्दन] ऊपर देखो (भवि)।

विमन्न सक [वि + मन्] मानना, गिनना। वकृ 'रूवा दुसिरा व त विमन्नतो' (सुर ४, २८

विमय पु [दे] पर्व-वनस्पति-विशेष (पराग १—पत्र ३३)।

विमर (अप) नीचे देखो। विमरह (पिंग)।

विमरिस सक [वि + मृश्] विचारना। कृ विमरिसिदव्व (शौ) (अभि १८४)।

विमरिस पु [विमर्श] विकल्प, विचार (राज)।

विमल त्रि [विमल] १ मल-रहित, विशुद्ध, निर्मल (कप्प, औप, से ८, ८६, पउम ५१, २७, कुमा, प्रासू २, १५७, १६१)। २ पु इस अवसर्पिणी-काल मे उत्पन्न तेरहवे जिनदेव (सम ४३, पडि)। ३ भारतवर्ष मे होनेवाले बाईसवें जिन भगवान् (सम १५४)। ४ एक प्राचीन जैन आचार्य और कवि जिन्होंने विक्रम की प्रथम शताब्दी मे 'पउमचरिअ' नामक जैन रामायण बनाई है (पउम ११८ ११८)। ५ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ६ भगवान् अजितनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम१५१)। ७ पुन सहस्रार देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ८ ब्रह्म-देवलोक मे स्थित एक देव-विमान (सम १३, देवेन्द्र १४०)। ९ एक ग्रैवेयक देव-विमान (सम ४१, देवेन्द्र १४१)। १० लगातार छ दिनो का उपवास। ११ लगातार सात दिनो का उपवास (संबोध ५८)। १२ पु अहिंसा, दया (पण्ह २, १—पत्र ९९)। °घोस पु [°घोष] एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °चंद पु [°चन्द्र] एक जैन आचार्य (महा)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भगवान् शीतलनाथजी की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)। °वर पु [°वर] आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८)। °वाहण पु [°वाहन] १ भारतवर्ष के भावी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे नाम देवसेन तथा महापद्म होंगे (ठा ९—पत्र ४५९)। २ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १०४, १५०, १५३, पउम, ३, ५५)। ३ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। ४ एक जैन, जो भगवान् अभिनन्दन के पूर्व जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १२, १७)। ५ भगवान् संभवनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५१)। °सामि पु [°स्वामिन्] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (सिरि २०४)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] षष्ठ वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

विमलण न [विमर्दन] मणि आदि को शाण पर घिसना, घर्षण (दे १, १४८)।

विमलहर पु [दे] कलकल, कोलाहल (दे ७, ७२)।

विमला स्त्री [विमला] १ ऊर्ध्व दिशा (ठा १०—पत्र ४७८)। २ धरणेन्द्र के लोकपालो की अग्र-महिषियो के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ गीतरति और गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रो की अग्र महिषियो के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)।

विमलिअ त्रि [विमर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, घृष्ट (से ६, ७)।

विमलिअ वि [दे] १ मत्सर से उक्त। २ शब्द सहित, शब्दवाला (दे ७, ७२)।

विमलेसर पु [विमलेश्वर] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (सिरि ७७३)।

विमलोत्तर पु [विमलोत्तर] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

विमहिद (शौ) वि [विमथित] जिसका मथन किया गया हो वह (नाट—मालवि ४०)।

विमाउ स्त्री [विमातृ] सौतेली मा (सत्त ३५, १७१)।

विमाण सक [वि + मानय्] अपमान करना, तिरस्कार करना। विमाणेज्जह (महा ५६)।

विमाण पुन [विमान] १ देव का निवास भवन (सम २, ८, ९, १०, १२, ठा ८, १०, उवा, कप्प देवेन्द्र २५१, २५३, पण्ह १,४—पत्र ६८, ति १२)। २ देव-यान, आकाश यान, आकाश मे गति करने मे समर्थ रथ (से ९, ७२, कप्प)। ३ अपमान, तिरस्कार। ४ वि मान रहित, प्रमाण शून्य (से ९, ७२)। °पविभत्ति स्त्री [°प्रविभक्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष (सम ६६)। °भवण न [°भवन] विमानाकार गृह (कप्प)। °वासि पु [°वासिन्] देवो की एक उत्तम जाति, वैमानिक देव (पण्ह १, ४—पत्र ६८, ति १२)।

विमाणणा स्त्री [विमानना] अवगणना, तिरस्कार (चेइय १३२)।

विमाणिअ वि [विमानित] अपमानित (पिंड ४१३, कप्प, महा)।

विमिस्स अ [विमृश्य] विचार करके। °गारि वि [°कारिन्] विचार-पूर्वक करनेवाला (स १८४, ३२४)।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ, युक्त (पच २, ७, महा)।

विमिस्सण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट (सम्मत्त १७१)।

विमीसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित (भवि)।

विमुउल देखो विमउल (राज)।

विमुच सक [वि + मुच्] १ छोडना, बन्धन-मुक्त करना। २ परित्याग करना। विमुचइ (सण)। कर्म विमुच्चई (आचा २, १, ६, ९)। वकृ विमुचंत (महा). विमुच [?मुच] माण (णाया १, ३—पत्र ९५)। कृ विमोत्तव्व (उप २६४ टी), विमोय (ठा २, १—पत्र ४७)।

विमुकुल देखो विमउल (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

विमुक्क वि [विमुक्त] १ छुटा हुआ, छूटा, बन्धन-रहित, 'जवनिमुक्केण आसेण' (महा ४९, पाअ आचानि ३४३)। २ परित्यक्त, 'विमुक्कजीयाण' (महा ७७)। ३ नि संग, संग रहित (आचा २, १६, ८)।

विमुक्ख पुं [विमोक्ष] छुटकारा, मुक्ति (से ११, ५६, आचानि २५८, २५६ अजि ५)।

विमुक्खण देखो विमोक्खण (उत्त १४, ४, कुप्र ३६६)।

विमुच्छिअ वि [विमूर्च्छित] मूर्छा-प्राप्त (से ११, ५६)।

विमुत्त देखो विमुक्क 'मुत्तिविमुत्तेसुवि' (पिंड ५६)।

विमुत्ति स्त्री [विमुक्ति] १ मोक्ष, मुक्ति (आचानि ३४३, कुप्र १६)। २ आचारांग सूत्र का अन्तिम अध्ययन (आचा २, १६, १२)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)।

विमुयण न [विमोचन] परित्याग (सबोध १०)।

विमुह वि [विमुख] १ पराङ्मुख, उदासीन (गउड, सुपा २८, भवि)। २ पुं एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। ३ पुन. आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

विमुह अक [वि + मुह्] घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना। वकृ विमुहिज्जंत (से २, ८६, ११, ४६)।

विमुहिअ वि [विमुग्ध] घबराया हुआ (से ४, ४४, गा ७६२)।

विमुहिअ वि [विमुखित] पराङ्मुख किया हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

विमूढ वि [विमूढ] १ घबराया हुआ। २ अस्फुट, अस्पष्ट (गउड)।

विमूरण वि [विभञ्जक] तोडनेवाला, खण्डन-कर्ता, 'जं मंगलं बाहुबलिस्स आसि तेअस्सिणो माणविमूरणस्स' (मंगल १०)।

विमोइय वि [विमोचित] छुडाया हुआ (णाया १, २—पत्र ८८, सण)।

विमोक्ख देखो विमुक्ख (से ३, ८)।

विमोक्खण न [विमोक्षण] १ छुटकारा, छुडाना, बन्धन-मोचन (आचा, सूअ २, ७, १०, पउम १०२, १८८, स ६८, ७४२)। २ वि छुडानेवाला, विमुक्त करनेवाला, 'सव्वदुक्खविमोक्खण' (सूअ १, ११, २, २, ७, १०)। स्त्री. °णी (उत्त २६, १)।

विमोक्खय वि [विमोक्षक] छुटकारा पाने-वाला, 'ते दुक्खविमोक्खया' (सूअ १, १, २, ५)।

विमोडण न [विमोटन] मोडना (दे)।

विमोत्तव्व देखो विमुच।

विमोय सक [वि + मोचय्] छुडाना, मुक्त करना। सकृ विमोइऊण (सण)।

विमोव देखो विमुच।

विमोयग वि [विमोचक] छोडनेवाला, दूर करनेवाला, 'न ते दुक्खविमोयगा' (सूअ १, ६, ३)।

विमोयण न [विमोचन] १ छुटकारा, मुक्ति। २ वि छुडानेवाला, 'दुहसयविमोयणकाइ' (पण्ह २, १—पत्र ६६)।

विमोयणा स्त्री [विमोचना] छुटकारा (सूअ १, १३, २१)।

विमोह सक [वि + मोहय्] मुग्ध करना, मोह उपजाना। विमोहेइ (महा)। संकृ विमोहित्ता, विमोहेत्ता (भग १०, ३—पत्र ४६८)।

विमोह देखो विमोक्ख (आचा)।

विमोह वि [विमोह] १ मोह-रहित (उत्त ५, २६)। २ पुं विशेष मोह, घबराहट (सम्मत्त २२६)। ३ आचारांग सूत्र का एक अध्ययन (सम १५, ठा ६ टी—पत्र ४४५)।

विमोहण न [विमोहन] १ मोह उपजाना। (सुर ६, ३८)। २ वि मोह उपजानेवाला (उप ७२८ टी)।

विमोहिअ वि [विमोहित] मोह-प्राप्त (महा २३, ५२)।

विम्म न [वेश्मन्] गृह, घर (राज)।

विम्हइअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित, चमत्कृत (सुर १, १६०)।

विम्हय अक [वि + स्मि] चमत्कृत होना, विस्मित होना, आश्चर्यान्वित होना। कृ. विम्हयणिज्ज विम्हयणीअ (हे १, २४८, अभि २०२)।

विम्हय पुं [विस्मय] आश्चर्य, चमत्कार (हे २, ७४, षड्, प्राप्र, उव, गउड, अवि १)।

विम्हर सक [स्मृ] याद करना। विम्हरइ (हे ४, ७४)।

विम्हर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, याद न आना, भूल जाना। विम्हरइ (हे ४, ७५, प्राकृ ६३, षड्)। वकृ. विम्हरंत (श्रा १६)।

विम्हरण न [विस्मरण] विस्मृति (पत्र ६, सबोध ४३, सूक्त ८०)।

विम्हराइअ वि [दे] १ मूर्च्छित, मूर्छा-प्राप्त। २ विस्मापित (से ६, ४१)।

विम्हरावण वि [स्मरण] स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला, 'बाबरणदीरकविम्हरावणा' (कुमा)।

विम्हरिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, याद न किया हुआ (कुमा, पाअ)।

विम्हल देखो विब्भल (उप ५३० टी)।

विम्हलिअ देखो विब्भलिअ (अच्चु २२)।

विम्हारिअ वि [विस्मारित] भुलाया हुआ (कुमा, श्रा २८)।

विम्हारिअ (अप) देखो विम्हरिअ (सण)।

विम्हाव सक [वि + स्मापय्] आश्चर्य-चकित करना। विम्हावेइ (महा, निचू ११)। वकृ. विम्हावंत (उत्त ३६, २६२)।

विम्हावण न [विस्मापन] आश्चर्य उपजाना, विस्मय-करण (ओप)।

विम्हावणा स्त्री [विस्मापना] ऊपर देखो (निचू ११)।

विम्हावय वि [विस्मापक] विस्मय-जनक (सम्मत्त १७४)।

विम्हाविअ वि [विस्मापित] आश्चर्यान्वित किया हुआ (धर्मवि १४७)।

विम्हिअ वि [विस्मित] विस्मय-प्राप्त, चमत्कृत (श्रा २८—पत्र १६०, उव)।

विम्हिय (अप) देखो विम्हय। विम्हियइ (सण)।

विम्हिर वि [विस्मेर] विस्मय पानेवाला, चमत्कृत होनेवाला (श्रा १२, २७)।

वियच्छा देखो विअ-च्छा।

वियट्ट अक [वि + वृत्] बरतना, होना। हेकृ वियट्टित्तए (आचा २, २, २, ३)।

वियद्द पुं [व्यर्द, व्यट्ट] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

विर सक [भञ्ज्] भाँगना तोडना। विरइ (हे ४, १०६)।

विर अक [गुप्] व्याकुल होना। विरइ (हे ४, १५०), विरति (कुमा)।

विर (अप) देखो वीर (सण)।

विरइ स्त्री [विरति] १ विराम, निवृत्ति। २ सावद्य—पाप कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग (उव, आचा)। ३ छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, यति (पिंग ५०७)।

विरइअ वि [विरचित] १ कृत, निर्मित, बनाया हुआ। २ सजाया हुआ (पाअ, औप, कप्प, पउम ११८, १२२, कुमा, महा, रंभा, कप्पू)।

विरइअ देखो विराइअ (कप्प)।

विरइयव्व देखो विरय = वि + रचय्।

विरंचि पु [विरञ्चि] ब्रह्मा, विधाता (कुप्र ४०३, ति ८७, सम्मत्त १६२)।

विरज्ज } अक [वि+रञ्ज्] १ रिक्त होना, विरंज } उदासीन होना। २ रँग-रहित होना। विरज्जइ (उव, उत्त २९, २, महा)। वकृ विरज्जंत, विरज्जमाण, विरंजमाण (से ८, १४, भवि, उत्त २९, २, गा १४६, २९६)।

विरत्त वि [विरक्त] १ उदासीन, विराग प्राप्त (सम ५७, प्रासू १५१ १६६, महा)। २ विविध रँगवाला (आचा १, २, ३, ५)।

विरत्ति स्त्री [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता (उप पृ ३२)।

विरम अक [वि + रम्] निवृत्त होना, अटकना। विरमइ (गा ७०८), विरमउ (आचा), विरम, विरमसु (गा ३४१, ४८६)। प्रयो, हेकृ विरमावेउ (गा ३४६)।

विरम पु [विरम] विराम, निवृत्ति (गउड, गा ४१६, ६०६, सुर ७, १६३)।

विरमग देखो वेरमण (राज आमा)।

विरमाल सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरमालइ (धात्वा १५३)।

विरमाल सक [प्रति + ईक्ष्] राह देखना, बाट जोहना, प्रतीक्षा करना। विरमालइ (हे ४, १९३)। सकृ विरमालिअ (कुमा)।

विरमालिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पात्र)।

विरय सक [वि + रचय्] १ करना, बनाना। २ सजाना, सजावट करना। विरयइ, विरयंति, विरयआमि, विरयउ (प्राप्र ५८, कप्पू, पि ५६०, सण)। वकृ विरयमाण (सुर १६, १५)। संकृ विरइअ (नाट)। हेकृ विरइउं° (सुपा २)। कृ विरइयव्व (पउम ६, १६)।

विरय वि [विरत] १ निवृत्त, रुका हुआ विराम-प्राप्त (उवा, गा ५४१, द ४६)। २ पाप-मार्ग से निवृत्त संयमी, त्यागी (ठा, उत्त)। ३ न विरति, विराम। ४ संयम, त्याग (द ४६, कम्म २, २)। °विरय वि [°विरत] आंशिक संयम रखनेवाला, जैन उपासक श्रावक (सम २६)।

विरय पु [दे] छोटा जल-प्रवाह, छोटी नदी (दे ७, ३६), 'विरया तणुसरिआओ' (पाअ)।

विरय पु [विरजस्] १ महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

विरयण स्त्रीन [विरचन] १ कृति, निर्माण। २ सजावट (नाट—मालती २८, कप्पू)। स्त्री °णा (सुपा ६५, स १५, ७१), 'पडिट्ठइ विअ तमर-विरअणा' (कप्पू)।

विरया स्त्री [विरजा] १ गो-लोक में स्थित राधा की एक सखी। २ उसके शाप से बनी हुई एक नदी, 'लविअविरआसरिअ' (अच्चु ८२)।

विरल वि [विरल] १ अल्प, थोड़ा, 'परदुक्खे दुक्खिआ विरला' (हे २, ७२, ४, ४१२, उव, प्रासू १८०, गउड)। २ अनिबिड। ३ विच्छिन्न (गउड, उव)।

विरलि स्त्री [दे] वस्त्र विशेष, डोरिया, डोरीवाला कपड़ा, 'विरलिसाडि सूरिसेणा' (पव ८४ टी)।

विरलिअ वि [विरलित] विरल बना हुआ, विरल किया हुआ (गउड)।

विरली देखो विराली (राज)।

विरल्ल सक [तन्] विस्तारना, फैलाना। विरल्लइ, विरल्लेइ, विरल्लंति (हे ४, १३७, षड्, गउड)।

विरल्ल पु [तान] विस्तार, फैलाव, (वव ४)।

विरल्लण न [तनन] विस्तार, फैलाव, 'अट्ट-मयविरल्लणे नया रमइ' (उव)।

विरल्लिअ वि [तत] विस्तारवाला, विस्तारित (दे ७, ७१, पाअ, कुमा, णाया १, १७—पत्र २३२, ठा ४, ४—पत्र २७६), 'जह उल्ला साडीया आसुं सुक्कइ विरल्लिया संती' (विसे ३०३२)।

विरल्लिअ देखो विरलिअ (राज, भवि)।

विरल्लिअ वि [दे] जलार्द्र, भीजा हुआ (दे ७, ७१)।

विरस अक [वि + रस्] चिल्लाना, क्रन्दन करना। वकृ विरसंत (सण)।

विरस वि [विरस] रस-रहित, शुष्क (णाया १, ५—पत्र १११, गउड, हे १, ७, सण)। २ विरुद्ध रसवाला (भग ७, ६—पत्र ३०५)। ३ पु रामभ्राता भरत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३) ४ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)।

विरस न [दे] वर्ष, साल, बारह मास (दे ७, ६२)।

विरसमुह पु [दे] काक, कौआ (दे ७, ६६)।

विरसिय वि [विरसित] रस-हीन, रस-विरहित (हम्मीर ५१)।

विरह सक [वि + रह्] १ परित्याग करना। २ अलग करना। कवकृ विरहिज्जंत (नाट—शकु ८२)। कृ विरहियव्व (णो) (नाट—शकु ११७)।

विरह पु [विरह] १ वियोग, विछोह, जुदाई (गउड, हे १, ८४, ११५, प्रासू १५६, कुमा, महा)। २ अंतर, व्यवधान (भग)। ३ पु वृक्ष-विशेष, 'फुल्लंति विरहरुक्खा सोऊण पंचमुग्गारं' (सबोध ४७, श्रा ३५), 'अगविओ पंचासंसे विरहो नाम तरू, वाइऊण वीणं फुल्लाविओ सो' (कुप्र १३६), 'फुल्लंति विरहिणो विरहयव्व लहिऊण पंचम वंसि' (कुप्र २४८)। ४ अभाव। ५ विनाश (राज)। ६ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८)।

विरह वि [विरथ] रथ-रहित (पउम १२, ६३)।

विरह पुन [दे] १ एकान्त, विजन (दे ७, ९१, णाया १, २—पत्र ७९, पुप्फ ३४८), 'नामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणीओ २ विहरति' (विपा १, ९—पत्र ८९)। २ कुसुम्भ से रँगा हुआ कपडा (दे ७, ९१)।

विरहान्न न [दे] कुसुम्भ से रँगा हुआ वस्त्र (दे ७, ६८)।

विरहि वि [विरहिन्] वियोगी, विछुडा हुआ (कुमा)।

विरहिअ वि [विरहित] विरह-युक्त (भग, उव, हे ४, ३७७)।

विरा अक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ द्रवित होना, पिघलना। ३ अटकना, निवृत्त होना। विराइ (हे ४, ५६)।

विराइ वि [विरागिन्] विरागवाला, विरक्त, उदासीन। स्त्री. °णी (नाट)।

विराइ वि [विराजिन्] शोभनेवाला, चमकता (से २, २९)।

विराइ वि [विराविन्] शब्द-युक्त, आवाज-वाला (से २, २९)।

विराइअ देखो विराय = विलीन (से २, २९)।

विराइअ वि [विराजित] सुशोभित (उवा, ओप, महा)।

विराग पु [विराग] १ राग का अभाव, वैराग्य, उदासीनता (सुज्ज १३, उप ७२८ टी)। २ वि राग रहित, वीतराग (पञ्च १०४ ओप)।

विराड पु [विराट] देश विशेष (उप ६४८ टी)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २०९)।

विराध (अप) पु [विराध] एक राक्षस का नाम (पिंग)।

विराम पु [विराम] उपरम, निवृत्ति, अवसान (गउड)।

विरामण न [विरमण] विरत करना, निवर्तन, विरमाना, 'वेरविरामणपज्जवसाण' (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

विराय अक [वि + राज्] शोभना, चमकना। विरायइ (पाअ)। वकृ विरायंत, विरायमाण (कप्प, ओप, णाया १, १ टी—पत्र २, सुर २, ७६)।

विराय वि [विलीन] १ विशीर्ण, विगलित, नष्ट (से ७, ६४, गउड, कुमा ६, ३८)। २ पिघला हुआ (पाअ)।

विराय देखो विराग (पण्ह २, ५—पत्र १४९, कुमा, सुपा २०५, वज्जा ६, कुप्र १११)।

विराल देखो बिराल (णाया १, १—पत्र ६५, पि २४१)।

विरालिआ स्त्री [विरालिका] १ पलाश-कन्द। २ पर्ववाला कन्द (दस ५, २, १८)। देखो बिरालिआ।

विराली स्त्री [विराली] १ वल्ली-विशेष (पव ४, श्रा २०, सबोध ४४)। २ चतुरिन्द्रिय जतु की एक जाति (उत्त ३६, १४८, सुख ३६, १४८)। देखो बिराली।

विराव पु [विराव] शब्द, आवाज (गउड)।

विरावि वि [विराविन्] आवाज करनेवाला (गउड)।

विराह सक [वि + राधय्] १ खण्डन करना, भाँगना, तोडना। विराहति (उव)। वकृ विराहत, विराहेंत (सुपा ३२८, उव)।

विराहअ } वि [विराधक] खण्डन करनेवाला,
विराहग } तोडनेवाला, भंजक (भग, णाया १, ११—पत्र १७१)।

विराहणा स्त्री [विराधना] खण्डन, भंग (सम ८, णाया १, ११ टी—पत्र १७३, पण्ह १, १—पत्र ६, ओघ ७८८)।

विराहिअ वि [विराधित] १ खण्डित, भग्न (भग)। २ अपराद्ध, जिनका अपराध किया गया हो वह, 'अविराहियवेरिएहिं' (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ पु. एक विद्याधर नरेश (पउम ७६, ७)।

विरिअ वि [भग्न] भांगा हुआ, तोडा हुआ (कुमा)।

विरिअ देखो वीरिअ (सूअनि ९१, ९४, ओप)।

विरिंच सक [वि + भज्] विभाग ग्रहण करना, भाग लेना, बाँट लेना, 'सयणो वि य से रोग न विरिंचइ, नेय नासेइ' (स १०७)।

विरिंच पुं [विरिञ्च] ब्रह्मा, विधाता (पाअ)।

विरिंचि पु [विरिञ्चि] ऊपर देखो (सुर १२, ७८)।

विरिंचिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ विरक्त, उदासीन (दे ७, ९३)।

विरिंचिर पु [दे] १ अश्व, घोडा। २ वि विरल (दे ७, ९३)।

विरिंचिरा स्त्री [दे] धारा, प्रवाह (दे ७, ९३)।

विरिक्क वि [दे] पाटित, विदारित (दे ७, ६४)।

विरिक्क वि [विरिक्त] जो खाली हुआ हो वह (पउम ४५, ३२, सुपा ४२०)।

विरिक्क वि [विभक्त] १ बाँटा हुआ, 'जेण चित्तयराण सभा समभागेहि विरिक्का' (महा)। २ जिसने भाग बाँट लिया हो वह, अपना हिस्सा ले कर जो अलग हुआ हो वह, 'एगम्मि सन्निवेसे दो भाउया वणिया ते य परोप्पर विरिक्का' (ओघ ४९४ टी)।

विरिक्का स्त्री [दे] बिन्दु, लव, लेश (सुख २, २७)।

विरिचिर वि [दे] धारा से विरेचन करनेवाला (षड्)।

विरिज्जय वि [दे] अनुचर, अनुगत (दे ७, ६६)।

विरिल्ल सक [वि + स्तृ] विस्तारना, फैलाना। विरिल्लइ (प्राकृ ७६)।

विरीअ (अप) देखो विवरीअ (पिंग)।

विरीह सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरीहइ (प्राकृ ७५, धात्वा १५३)।

विरु } अक [वि + रु] रोना, चिल्लाना।
विरुअ } वकृ विरुयमाण (उप ३३९ टी)।

विरुअ न [विरुत] ध्वनि, पक्षी की आवाज, शब्द (गा ६४, से १, २३, नाट—मृच्छ १३६)।

विरुअ वि [दे विरूप] १ खराब, कुडौल, दुष्ट रूपवाला, कुत्सित (दे ७, ६३, भवि)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल (षड्)। देखो विरूअ।

विरुट्ठ पु [विरुष्ट] नरक स्थान विशेष (देवेन्द्र २८)।

विरुद्ध वि [विरुद्ध] विरोधवाला, विपरीत, प्रतिकूल उलटा (ओघ, गउड)। °यारि वि [°चारिन्] विपरीत आचरण करनेवाला (उप ७२८ टी)।

विरुव देखो **विरूव** (दे ६, ७५)।

विरुह अक [वि + रुह्] विशेष रूप से उगना, अङ्कुरित होना। विरुहंति (उत्त १२, १३)।

विरूह देखो **विरुह** (पण्ह १—पत्र ४६, श्रा २०)।

विरूअ } वि [विरूप] १ कुरूप, भोंडा, **विरूव** } कुत्सित, खराब, कुत्सित (गा २६३, भवि, स्वप्न ४८, सुर १, २६, उप ७२८ टी)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा (सुर ११, ८०)। ३ बहुविध, अनेक तरह का, नानाविध (आचा)।

विरूढ पुन [विरूढ] अङ्कुरित द्विदल धान्य (पव ४)।

विरेअ सक [वि + रेचय] १ मल को नीचे से निकालना। २ बाहर निकालना। विरेअइ (हे ४, २६)। वकृ **विरेअंत** (कुमा ६, १७)।

विरेअण न [विरेचन] १ मल-निस्सारण, जुलाब (उवकु २५, णाया १, १३—पत्र १८१)। २ वि भेदक, विनाशक, 'सयल-दुक्खविरेयण रमणत्तणंति' (स २७८, ६६३)।

विरेल्लिअ देखो **विरिल्लिअ** = तत (णाया १, १७ टी—पत्र २३४, गउड ४३५)।

विरोयण पु [विरोचन] अग्नि, वह्नि (भत्त १२३)।

विरोल सक [मन्थ्] विलोडना, विलोडन करना। विरोलइ (हे ४, १२१, षड्)।

विरोल सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना, चढ़ना। विरोलइ (वज्जा १५६)।

विरोलिअ वि [मथित] विलोडित (पाअ, कुमा, भवि)।

विरोह सक [वि + रोधय्] विरोध करना। विरोहंति (सबोध १०)।

विरोह पु [विरोध] विरुद्धता, प्रतीपता, वैर, दुश्मनाई (गउड, नाट—मालती १३८, भवि)।

विरोहग वि [विरोधक] विरोध-कर्ता (भवि)।

विरोहि वि [विरोधिन्] दुश्मन, प्रतिपन्थी (पि ४०५, नाट—शकु ९६)।

विरोहिय वि [विरोधित] विरोध-प्राप्त (वज्जा ७०)।

विल अक [व्रीड्] लज्जा करना, शरमिन्दा होना। संकृ **विलिऊण** (स ३७५)।

विल न [विल] नमक विशेष, एक तरह का नोन (आचा २, १, ६, ६)।

विलइअ वि [दे] १ अधिज्य, धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ। २ दीन, गरीब (दे ७, ९१)। ३ ऊपर चढ़ाया हुआ, आरोपित 'आणा जस्स विलइआ सीसे सेसव्व हरिहरेहिं पि' (वण २५), 'पढुम चिअ रहुवइणा उवरि हिअए तुलिओ भरोव्व विलइओ' (से ३, ५)।

विलओलग पु [दे] लुटाक, लुटेरा (राज)।

विलओली स्त्री [दे] १ विस्वर वचन। २ विलोकना, तलाशी (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। देखो **विलक्कोली°**।

विलंघ सक [वि + लङ्घ्] उल्लंघन करना। विलंघेंति (धर्मसं ८४२)। वकृ **विलंघंत** (काप्र)।

विलंघण न [विलङ्घन] उल्लंघन, अतिक्रमण 'ही ही सीलविलंघणं' (उप ५६७ टी)।

विलंपल (अप) देखो **विहलंघल** (सण)।

विलंपलिअ (अप) वि [विह्वलाङ्गित] व्याकुल शरीरवाला, 'मुच्छविलंपलिउ' (सण)।

विलंब देखो **विडंब** = वि + डम्बय्। वकृ **विलंबमाण** (धर्मसं १००५)।

विलंब अक [वि + लम्ब्] १ देरी करना। २ सक लटकाना, धारण करना। कर्म **विलंबीअदि** (शौ) (नाट—विक्र ३१)। वकृ. **विलंबंत** (से ३, २६)। संकृ **विलंबिअ** (नाट—वेणी ७)। कृ **विलंबणिज्ज** (श्रा १४)।

विलंब पु [विलम्ब] १ देरी, अशीघ्रता (गा ५८८)। २ तप-विशेष, पुरार्ध तप (सबोध ५८)। ३ न नक्षत्र-विशेष, सूर्य के द्वारा परिभोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र (विसे ३४०९)।

विलंबग वि [विलम्बक] धारण करनेवाला (सूअ १, ७, ८)।

विलंबणा देखो **विडंबणा** (प्रासू १०३)।

विलंबणा स्त्री [विडम्बना] निर्वर्तना, बनावट, कृति (अणु १३९)।

विलंबि न [विलम्बिन्] १ सूर्य के द्वारा भोगकर छोड़ा हुआ नक्षत्र। २ सूर्य जिसपर हो उसके पीछे का तीसरा नक्षत्र (वव १)।

विलंबिअ वि [विलम्बित] १ विलम्ब-युक्त (कप्प)। २ न नक्षत्र-विशेष (वव १)। ३ नाट्य-विशेष (राय)।

विलक्ख वि [विलक्ष] १ लज्जित, शरमिन्दा (से १०, ७०, सुर १२, ६६, सुपा १६८, ३२८, महा, भवि)। २ प्रतिभा-शून्य, मूढ़ (से १०, ७०)।

विलक्ख न [वैलक्ष्य] विलक्षता, लज्जा, शरम (सुर ३, १७६)।

विलक्खिम पुस्त्री ऊपर देखो, 'उवममियविल क्खिम—' (भवि)।

विलग्ग सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना, सहारा लेना। २ चढ़ना, आरोहण करना। ३ पकड़ना। ४ चिपटना। गुजराती में 'वळगवुं'। विलग्गसि, विलग्गेजामि (महा)। वकृ **विलग्गंत** (पि ४८८)।

विलग्ग वि [विलग्न] १ लगा हुआ, चिपटा हुआ, संलग्न, 'जह लोहसिला अप्पंपि बोलए तह विलग्गपुरिसंपि' (सबोध १३, से ४, २, ३, १४२, गा १८८, ५९, महा)। २ अवलम्बित (सुर १०, ११४)। ३ आरूढ़, 'अन्नया आयरिया सिद्धसेल तेण सम वदगा विलग्गा' (सुपा १, ३)।

विलज्ज अक [वि + लस्ज्] शरमाना। विलज्जामि (कुप्र ५७)।

विलट्ठि पुस्त्री [वियष्टि] साढ़े तीन हाथ से चार अंगुल कम लट्ठी, जैन साधुओं का उप-करण-दंड (पव ८१)।

विलद्ध वि [विलब्ध] अच्छी तरह प्राप्त, सुलब्ध, (विंग)।

विलप्प पुं [विलाल्मन्] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलभ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना। विलभेइ (प्राकृ ६७)।

विलमा स्त्री [दे] ज्या, धनुष की डोरी (दे ७, ३८)।

विलय पुं [दे] सूर्य का अस्त होना (दे ७, ६३, पाअ)।

विलय पुं [विलय] १ विनाश (कुप्र ५१, सुपा १६७, ती ३)। २ तल्लीनता (ती ३)। ३ पुं एक नरक स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलया स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (पाअ, हे २, १२८, पड्, कुमा, रंभा, भवि)।

विलव अक [वि + लप] रोना, कांदना, चिल्लाना। विलवइ (पड्, महा)। वकृ. विलवंत, विलवमाण (महा, णाया १, १—पत्र ४७)।

विलवण वि [विलपन] रोनेवाला, चिल्लानेवाला। °या स्त्री [°ता] विलाप, क्रन्दन (औप)।

विलविअ न [विलपित] विलाप, क्रन्दन (पाअ, औप)।

विलविर वि [विलपितृ] विलाप करनेवाला (कुमा, सण)।

विलस अक [वि + लस्] १ मोज करना। २ चमकना। विलसइ, विलसेसु (महा)। वकृ. विलसंत (कप्प, सुर १, २२८)।

विलसण न [विलसन] १ विलास, मौज (उप पृ १८१)। २ वि. मोज करनेवाला (सुर १, २२१ टि)।

विलसिय न [विलसित] १ चेष्टा-विशेष। २ दीप्ति, चमक (महा)।

विलसिर वि [विलसितृ] विलासी, विलास करनेवाला (सुपा २०८, २५४, धर्मवि १६, सण)।

विला देखो विरा, 'मयणं व मणो मुणिणोवि हत सिग्घ चिय विलाइ' (भत्त १२७), 'तावेण व नवणीय विलाइ सो उद्धरिजतो' (कुप्र १०५)।

विलाल देखो विराल (पि २४१)।

विलाव पु [विलाप] क्रन्दन, विलख-विलख या विकल होकर रोना परिदेवन (उव)।

विलाविअ वि [विलापित] विलाप-युक्त (वै ८६, भवि)।

विलास पु [विलास] १ स्त्री का नेत्र-विकार। २ स्त्री की शृंगार-चेष्टा विशेष, अंग और क्रिया-सम्बन्धी स्त्री की चेष्टा-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३२, औप, गउड)। २ दीप्ति, चमक (कुमा, गउड)। ३ चेष्टा-विशेष, मोज (गउड)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (सुपा ६२२)। °वई स्त्री [°वती] स्त्री, नारी, महिला (से १०,७१, गउड)।

विलासि वि [विलासिन्] १ मौजी, शौकीन (हास्य १३८, गउड)। २ चमकनेवाला। स्त्री. °णी, 'चदविलासिणीओ चदद्धसमललाडाओ' (औप)।

विलासिअ वि [विलासिक, °सित] विलास-युक्त (गा ४०५)।

विलासिणी स्त्री [विसिनी] १ नारी, स्त्री। २ वश्या (गा २९३, ८०३ अ, गउड, नाट—रत्ना ६, पि ३४६, ३८७)। देखो विलासि।

विलिअ न [व्यलीक] १ कदर्प-सम्बन्धी अपराध, वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय, गुनाह (कुमा, गा ५३)। २ अकार्य (गा ५३)। ३ अप्रिय, विप्रिय (गा ५३, पाअ)। ४ अनृत, असत्य। ५ प्रतारणा, ठगाई। ६ गति-विपर्यय। ७ वि अपराधी। ८ अकार्य-कर्ता। ९ विप्रिय-कर्ता। १० झूठ बोलनेवाला (हे १, ४६, १०१)।

विलिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा (पाअ, पड्)।

विलिअ न [दे व्रीडित] लज्जा, शरम (दे ७, ६५, सण)।

विलिइअ वि [व्यलीकित] व्यलीक युक्त, 'विलि (?लिइ)ए विट्टे' (भग १५—पत्र ६८१, राज)।

विलिंग सक [वि + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, स्पर्श करना। विलिंगेज (आचा २, ६, ३)।

विलिजरा स्त्री [दे] धाना, भुने हुए जो (दे ७, ६६)।

विलिप सक [वि + लिप्] लेप करना, लेपना, पोतना। विलिंपइ (सण)। संकृ. विलिंपिऊण (सण)। हेकृ. विलिंपित्तए (कस)। प्रयो., वकृ. विलिंपावंत (निचू १७)।

विलिज्ज अक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ पिघलना। विलिजइ, विलिज्जति, विलिज्ज (हे ४, ५६, ४१८, भवि अज्झ ५५, सबोध ५२, गच्छ २, २६)। वकृ विलिज्जंत, विलिज्जमाण (पउम ६, २०, ३, २१, २२)।

विलित देखो विलिअ = व्रीडित (उप २९६)।

विलित्त वि [विलिप्त] लिपा हुआ, जिसको विलेपन किया गया हो वह (सुर ३, ६२, १०, १७, भवि)।

विलिव्विली स्त्री [दे] कोमल और निर्बल शरीरवाली स्त्री, नाजुक बदनवाली नारी (दे ७, ७०)।

विलिह सक [वि + लिख्] १ रेखा करना। २ चित्र बनना। ३ खोदना। विलिहइ (भवि)। वकृ विलिहमाण (पउम ७, १२०)। कवकृ विलिहिज्जमाण (कप्प)। हेकृ विलिहिउ (कप्पू)।

विलिह सक [वि + लिह्] १ चाटना। २ चुम्बन करना। विलिहतु (कप्पू)। वकृ. विलिहंत (गच्छ १, १७, भत्त १४२)।

विलिहण न [विलेखन] रेखा-करण (तंदु ५०)।

विलिहिअ वि [विलिखित] चित्रित (सुर १२, २०)।

विलीअ देखो विलिअ = व्रीडित, 'सोगविवसो विलीओ' (कुप्र १३५)।

विलीअ देखो विलिअ = व्यलीक, 'मज्झ विलीय नरवइस्स परिवसइ किंपि चित्ते' (सुपा ३००)।

विलीइर वि [विलेतृ] द्रवण-शील, पिघलनेवाला (कुमा)।

विलीण वि [विलीन] १ पिघला हुआ, द्रवीभूत। २ विनष्ट, 'सोवि तुह झाणजलणे मयणो मयण विअ विलीणो' (सण २५, पाअ, महा, भवि)। ३ जुगुप्सित (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विलुगयाम वि [दे] निग्रन्थ, अकिंचन, साधु, 'एस विलुगयामो सिआए' (आचा २, १, २, ४)।
विलुंचण न [विलुञ्चन] उन्मूलन, जड से उखाड़ना (पण्ह १, १—पत्र २३)।
विलुंप सक [वि + लुप्] १ लूटना। २ काटना। ३ विनाश करना। विलुंपति, विलुंपह (आचा, सूअ २, १ १६, पि ४७१), 'अयं चोरा विलुंपति' (महा)। वकृ. विलुंपमाण (सुपा ५७४)। कवकृ विलुप्पंत, विलुप्पमाण (पउम १६, ३१, सुपा ८०, सुर २, २१, उत्त)।
विलुंप सक [काङ्क्ष्] अभिलाष करना, चाहना। विलुंपइ (हे ४, १९२)।
विलुंपइत्तु वि [विलोप्तृ] विलोप-कर्ता, काटनेवाला (सूअ २, २, ८)।
विलुंपय पु [दे] कीट, कीड़ा (दे ७, ६७)।
विलुंपिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा ७, ३८, दे ७, ६६)।
विलुंपिअ पु [दे विलुप्त] आशित, कवलित, खाया हुआ, 'घत्थं कवलिअं असिअं विलुंपिअं वक्खिअं खइअं' (पाअ)। देखो विलुत्त।
विलुंपित्तु देखो विलुंपइत्तु (आचा)।
विलुक्क [दे] छिपा हुआ (भवि)।
विलुक्क वि [विलुञ्चित] विमुण्डित, सर्वथा केश-रहित किया हुआ (पिंड २१७)।
विलुत्त वि [विलुप्त] १ काटा हुआ, छिन्न, 'विलुत्तनासं' (पउम १०२, ५३, पण्ह १, ३—पत्र ५४)। २ लुण्टित, लूटा हुआ, 'इमाइ अडवीइ वाणियगसत्थो। मह पुरिसेहि विलुत्तो, पत्त वित्त तहिं पउर' (सुर ११, ८८)। ३ विनष्ट, 'तुम उण जलविलुत्तप्पमाणए जेव मुमरसि' (कप्पू)।
विलुत्तहिअअ वि [दे] जो समय पर काम करने को न जानता हो वह (दे ७, ७३)।
विलुप्पंत } देखो विलुंप।
विलुप्पमाण }
विलुलिअ वि [विलुलित] उपमर्दित (से ६, १२)।
विलून वि [विलून] काटा हुआ, छिन्न (सुपा ६)।

विलेवण न [विलेपन] १ शरीर पर लगाने का चन्दन, कुंकुम आदि द्रव्य (कुमा, उवा, पाअ)। २ लेपन-क्रिया (ओघ)।
विलेविअ वि [विलेपित] विलेपन युक्त (सण)।
विलेविआ स्त्री [विलेपिका] पान-विशेष (राज)।
विलेहिअ वि [विलेखित] चित्रित किया हुआ (सुर १२, ११७)।
विलोअ सक [वि + लोक्] देखना। कम विलोइज्जति, विलोईअति (पि ११)। कवकृ विलोइज्जमाण (उप पृ ६७)। संकृ विलोइऊण (काप्र १६५)।
विलोअ पु [विलोक] आलोक, प्रकाश (उप पृ ३५८)।
विलोअ देखो विलोव (सुपा ४४०)।
विलोअण पुन [विलोचन] आंख, नेत्र (काप्र १६१, गा ९७०, सुपा ५२९)।
विलोअण न [विलोकन] १ देखना, निरीक्षण। २ वि देखनेवाला, 'लोयालोयविलोयणकेवलनाणेण नायभावस्स' (सुर ४, ८६)।
विलोट्ट अक [विस + वद्] १ अप्रमाणित होना, झूठा साबित होना। २ उलटा होना, विपरीत होना। विलोट्टइ, विलोट्टए (हे ४, १२९, भवि, स ७१६)।
विलोट्ट } वि [विसंवदित] १ जो झूठा
विलोट्टिअ } साबित हुआ हो (कुमा ६, ८८)। २ जो कहकर फिर गया हो, प्रतिज्ञा-च्युत, 'कत्ताए सयणमहिलाईलोयवग्गओ विलिट्टो सो' (उप ५९७ टी)। ३ विरुद्ध बना हुआ, 'चउरो महनरवइणो विलोट्टि (? ट्टि) या चउद्दिसि पि अइबलिणो' (सुपा ४५२)।
विलोड सक [वि + लोडय्] मथन करना। विलोडेइ (कुप्र ३४७)।
विलोडिय वि [विलोडित] मथित (कुप्र ७८)।
विलोभ सक [वि + लोभय्] १ लुब्ध करना, लुभाना, आसक्त करना। २ लालच देना। ३ विस्मय उपजाना। कृ विलोभणिज्ज (कुप्र १३८)।

विलोल देखो विलोड। वकृ. विलोलत (उप पृ ८७)।
विलोल अक [वि + लुठ्] लेटना, 'विलोलति महीतले विसूणियगमगा' (पण्ह १, १—पत्र १८)।
विलोल वि [विलोल] चचल, अस्थिर (से २, १६, गउड, कप्पू)।
विलोव पु [विलोप] लूट, डकैती, 'सत्थविलोवे जाए' (सुर १५, १८)।
विलोवण न [विलोपन] ऊपर देखो, 'परधणविलोवणाईण' (उव)।
विलोवय वि [विलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा, 'अद्धाणम्मि विलोवए' (उत्त ७, ५)।
विलोह देखो विलोभ। हेकृ विलोहइदु° (शौ) (मा ४२)।
विलोहण वि [विलोभन] १ आश्चर्य-कारक। २ लुभानेवाला, 'मुद्धमइविलोहणए नेय' (श्रावक १३२)।
विल्ल अक [वेल्ल्] चलना, हिलना, 'विल्लति दुदुमपल्लवा' (रभा)।
विल्ल देखो बिल्ल (हे १, ८५, राज)।
विल्ल वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ। २ विलसित, विलास-युक्त (दे ७, ८८)। ३ पुन सुगंधी द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है, 'उज्झतविल्लगुग्गुलुपवियभियधूमसघाय' (स ४३६)।
विल्लअ देखो चिल्लअ (ओघ)।
विल्लय देखो वेल्लग (सुपा २७६)।
विल्हरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।
विल्हल देखो विब्भल (दक)।
विल्हल देखो वेब्भल (प्रवि २३)।
विल्ली स्त्री [विल्ली] गुच्छ वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।
विल्ह वि [दे] धवल, सफेद (दे ७, ६१)।
विव देखो इव (हे २, १८२, गा २९०, ६०९ अ, कुमा)।
विवइ स्त्री [विपद्] विपत्ति, कष्ट, दुःख (उप ७७१, हे ४, ४००)। °गर वि [°कर] दुःख जनक (कुमा)।
विवइ स्त्री [विवृति] व्याख्या, विवरण, टीका (कुप्र १६)। देखो विवदि।

विवइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ (पउम ७८, २६ से ५, ५२, १३, ८६)।

विवक्क वि [विवक्र] विशेष बाका, टेढा (स २५१)।

विवच्चिआ स्त्री [विपञ्चिका] वाद्य-विशेष, वीणा (पाअ)।

विवक्क वि [विपक्व] १ अच्छी तरह पूर्ण किया हुआ। २ प्रकर्ष को प्राप्त, अत्यन्त पका हुआ। ३ उदय मे आगत, फलाभिमुख, 'विवक्कतवबभचेराणं देवाण अवन्न वदमाणे' (ठा ५, २—पत्र ३२१)।

विवक्ख पु [विपक्ष] १ दुश्मन, रिपु, विरोधी, 'विवक्खदेवीहिं' (गउड, स ५६४, अच्चु ३१)। २ न्याय शास्त्र-प्रसिद्ध विरुद्ध पक्ष, वह वस्तु जहां साध्य आदि का अभाव हो (दसनि १—गाथा १४२)। ३ विपरीत धर्म (अणु)। ४ वैधर्म्य, विसदृशता (ठा १ टी—पत्र १३)।

विवक्खा स्त्री [विवक्षा] कहने की इच्छा (पच १, १० भास ३१, दसनि १, ७१)।

विवग्घ वि [विव्याघ्र] व्याघ्र के चमडे से मढा हुआ, व्याघ्र-चर्म-युक्त (आचा २, ५, १, ५)।

विवच्चास पु [विपर्यास] विपर्यय, विपरीतता, व्यत्यास, उलटा (उत्त ३०, ४, सुख ३०, ४, ओघ २६८)।

विवच्छा स्त्री [विवत्सा] १ एक महानदी (ठा १०—पत्र ४७७)। २ वत्स-रहित स्त्री (राज)।

विवज्ज अक [वि + पद्] मरना, नष्ट होना। विवज्जइ, विवज्जामि (स ११६, पच्च १४, सुज २, ४५)। भवि. विवज्जिही (कुप्र १८६)। वकृ. विवज्जत (नाट—रत्ना ७७)।

विवज्ज सक [वि + वर्जय्] परित्याग करना। विवज्जेइ (उव)। वकृ विवज्जयत, विवज्जमाण (उव, धर्मसं १०३२)। कृ विवज्जणिज्ज, विवज्जणीअ (उप ५६७ टी, अभि १८३)।

विवज्ज वि [विवर्ज] १ रहित, वर्जित, 'मउडविवज्जाहरणं सव्वं से देइ भट्टस्स' (सुपा २७१)। २ परित्याग, परिहार (पिंड १२६)।

विवज्जग वि [विवर्जक] वर्जन करनेवाला (सूअ २, ६, ५)।

विवज्जण न [विवर्जन] परित्याग (रत्न २२)।

विवज्जणया, विवज्जणा स्त्री [विवर्जना] परित्याग, परिहार, वर्जन (सम ४४, उत्त ३२, २, दसचू २, ५)।

विवज्जत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (पचा ११, ३७, कम्म १, ५१)।

विवज्जय पु [विपर्यय] विपर्यास, व्यत्यास, वैपरीत्य (पाअ, उप १४२ टी, पव १३३, पचा ६, ३०, कम्म १, ५५)।

विवज्जास पु [विपर्यास] १ विपर्यय, व्यत्यय (पाअ, पचा ८, ११)। २ भ्रम, मिथ्याज्ञान (सुर ६, १५४)।

विवज्जिअ वि [विवर्जित] रहित, वर्जित, परित्यक्त (उव, द ३६, सुर ३, १५५, रंभा, भवि)।

विवट्ट अक [वि + वृत्] वरतना, रहना। विवट्टइ (हे ४, ११८)। वकृ. विवट्टमाण (कुमा ६, ८०, रभा)।

विवडिय वि [विपतित] गिरा हुआ (पउम १६, २२, भग ७, ६ टी—पत्र ३१८)।

विवड्ढ अक [वि + वृध्] बढना। वकृ. विवड्ढमाण (णाया १, १० टी—पत्र १७१)।

विवड्ढण वि [विवर्धन] बढानेवाला, 'मयविवड्ढणं' (उत्त १६, ७)। स्त्री. °णी (उत्त १६, २)। देखो विवद्धण।

विवड्ढि स्त्री [विवृद्धि] बढाव, वृद्धि (पचा १८, १३)।

विवड्ढिअ वि [विवृद्ध] बढा हुआ (नाट—पिंग)।

विवणि पुस्त्री [विपणि] १ बाजार (सुपा ५३०)। २ हाट, दूकान, 'विवणी तह आवणो हट्टो' (पाअ)।

विवणीय वि [व्यपनीत] दूर किया हुआ, हटाया हुआ (कप्प)।

विवण्ण देखो विवन्न = विपन्न (उत्त २०, ४४, गा ५५० अ)।

विवण्ण वि [विवर्ण] १ कुरूप, कुडौल (से ५, ४७, दे ६७६)। २ फीका, निस्तेज, म्लान (णाया १, १—पत्र २८, से ८, ८७)।

विवण्ण वि [द्विपर्ण] १ दो पत्रवाला। २ पु वृक्ष, पेड (राज)।

विवत्त पु [विवर्त] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

विवत्ति स्त्री [विपत्ति] १ विनाश (णाया १, ६—पत्र १५७, विपा १, २—पत्र ३२, सुपा २३५, उव)। २ मरण, मौत (सुर २, ५१, स ११६)। ३ कार्य की असिद्धि (सुपा २३५, उत्त, बृह १)। ४ आपदा, कष्ट (सुपा २३५)।

विवत्तिअ वि [विवर्त्तित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (से ६, ८०)।

विवत्थ पु [विवस्त्र] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विवदि स्त्री [विवृति] १ विवरण, टीका। २ विस्तार (संक्षि ६)।

विवद्धण न [विवर्धन] वृद्धि, बढाव (कप्प)। देखो विवड्ढण।

विवद्धणा स्त्री [विवर्धना] वृद्धि, बढाव (उप ६७५)।

विवद्धि पु [विवर्धि] देव विशेष (अणु १४५)।

विवन्न देखो विवण्ण = विवर्ण (सुपा ३१६)।

विवन्न वि [विपन्न] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट (णाया १, ६—पत्र १५७, स ३४५, सुपा ५०६)। २ मृत, मरा हुआ (पउम ४४, १०, उत्त १०, ४४, स ७५६, सूअनि १६२, धर्मवि १४४)।

विवय अक [वि + वद्] झगडा करना, विवाद करना। वकृ विवयत (सुपा ५४६, सम्मत्त २१५)।

विवय वि [दे] विस्तीर्ण (षड्)।

विवया स्त्री [विपद्] कष्ट, दुःख (उप ७२८ टी)।

विवर सक [वि + वृ] १ बाल सँवारना। २ विस्तारना। ३ व्याख्या करना। विवरइ (भवि), विवरेहि (स ७१७)। वकृ 'केसे निवसस विवरन्ती' (कुप्र २८५)।

विवर न [विवर] १ छिद्र (पात्र, गउड, प्रासू ७३)। २ कन्दरा, गुहा (से ६, ४६)। ३ एकान्त विजन, 'कामजन्याण गणियाए बहूणि अन्तराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे विहरति' (विपा १ २—पत्र ३८)। ४ पुन आकाश (भग २०, २)।

विवरमुह वि [विपराङ्मुख] विमुख, पराङ्मुख (पउम ७३, ३०, से ६, ८२)।

विवरण न [विवरण] १ व्याख्यान, 'सोऊण सुमिणविवरणं' (सुपा ३८)। २ व्याख्या-कारक ग्रंथ, टीका (विसे ३०२२, पव—गाथा ३८, सम्मत्त ११६)। ३ बाल सँवारना (दे १ ११० पव ३८)।

विवरामुह देखो विवरमुह (नवि, से ११, विवराहुत्त ८५)।

विवरिअ वि [विवृत] व्याख्यात (विसे १०६६, स ७८७)। देखो विवुअ।

विवरिअ (अप) नीचे देखो (मण)।

विवरीअ वि [विपरीत] उलटा, प्रतिकूल (भग १, १ टी, गउड, कप्पू, जी १२, सुपा ६१०)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उलटा, जाननेवाला (धर्मसं १२०४)।

विवरीर } (अप) ऊपर देखो वह विवरीरी
विवरेर } बुद्धडी हाइ विणासहो कालि' (हे ४, ४२४), 'माइ कज्जु विवरेरओ दीसइ' (नवि)।

विवरुक्ख } वि [विपरोक्ष] परोक्ष, अ-
विवरोक्ख } प्रत्यक्ष, 'तावच्चिय दइयवयणो विवरोक्खया आवलीए घुयाए' (पउम ६, ११)। २ न अभाव, 'पासम्मि अहकारो हाहि वह वा गुणाण विवरुक्खे' (गउड ७६)। ३ परोक्षता, अप्रत्यक्षपन,
'इय ताहि आसावयच्चावायतणरसटगुणाण।
विवरोक्खम्मि वि जाया कईण सलाहणायासा' (गउड १२०४)।

विवल अक [वि + वल्] मुड़ना, टेढ़ा होना (गउड ४०४)।

विवला } अक [विपरा + अय्] पलायन
विवलाअ } करना, भाग जाना। विवलाइ, विवलायइ, विवलाअंति (गउड ६३४, ११७६, पि ५६७)। वकृ. विवलाअंत,

विवलाअमाण (से ३, ६०, गा २६१, गउड १६६, से १५, १४, गउड ७०२)।

विवलाअ वि [विपलायित] भागा हुआ (से १, २, १४, ३०)।

विवलिअ वि [विवलित] मोड़ा हुआ, परावर्त्तित (गा ६८०, गउड ४२४, काप्र १६५)।

विवलीअ देखो विवरीअ, 'विवलीअमायए' (अणु)।

विवल्हत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (से ६, ८)।

विवस वि [विवश] १ अधीन, परायत्त, परतन्त्र (प्रासू १०७ कुमा, कम्म १, ५७)। २ लाचार, लाचार (कुप्र १३४)।

विवह सक [वि + वह्] विवाह करना, शादी करना (प्रामा)।

विवहण न [विव्ययन] विनाश (णाया १, १—पत्र ६५)।

विवाइअ वि [विपादित] व्यापादित, जो जान से मार डाला गया हो वह, 'छिद्देण विवाइओ वाली' (पउम ३, १०, उत्त १६, ५६, ६३)।

विवाउग वि [विवादक] विवाद-कर्ता (स ४५६)।

विवाग पु [विपाक] १ कर्म-परिणाम, सुख-दुःखादि भोग रूप कर्म फल (ठा ४, १—पत्र १८८, विपा १, १, उव, सुपा ११०, मण, प्रासू १२२)। २ प्रकर्ष, 'जयविवाग-परिणामा' (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ३ पाककाल, जं से पुणो होइ दुह विवागं' (उत्त ३२, ३३)। °विजय पुन [°विचय] धर्मध्यान का एक भेद, कर्म-फल का अनु-चिन्तन (ठा ४, ४—पत्र १८८)। °सुय न [°श्रुत] ग्यारहवाँ जैन अङ्ग-ग्रन्थ (सम १, विपा १, १, औप)।

विवागि वि [विपाकिन्] विपाकवाला (श्रा १२३)।

विवाद } पु [विवाद] झगड़ा, तकरार, वाक्-
विवाय } कलह, जबानी लड़ाई (उवा, उव, स ३८५, सुपा २८२, ३६१)।

विवाय सक [वि + पादय्] मार डालना। विवाएमि (विसे २३८५)। वकृ. विवाएन्त, विवायंत (पउम ५७, ३२, २७, ३७)।

विवाय देखो विवाग (सुर १२, १३६, स २७५, ३२१, स ११८, सण)।
'सव्व चिय सुहदुक्ख
पुव्वज्जियसुकयदुक्कयविवाया।
जायइ जियाण ज ता
को खेओ सकयउवभोगे'
(उप ७२८ टी)।

विवायण वि [विवादन] विवाद-कर्ता, 'ते दोवि विवायण व्व रायकुले' (धर्मवि २०)।

विवाविड न [दे] अतिशय गौरव (सजि ८७)।

विवाह सक [वि + वाहय्] लग्न करना, शादी करना। विवाहेमो (कुप्र १३१)।

विवाह देखो विआह = विवाह (उवा, स्वप्न ५१, सम १, ८८)। °गणय पुं [°गणक] ज्योतिषी, जोशी (द ६, १११)। °जन्न पु [°यज्ञ] विवाह-उत्सव (मोह ४८)।

विवाह देखो विआह = विवाध (सम १, ८८)।

विवाह° देखो विआह° = व्याख्या (सम १, ८८)।

विवाहाविय वि [विवाहित] जिसकी शादी कराई गई हो वह (महा)।

विवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी हुई हो वह (महा, मण)।

विविदिसा स्त्री [विविदिषा] जानने की इच्छा, जिज्ञासा (अज्झ ६६)।

विविक्क देखो विवित्त (सूअ १, ४, २, १७)।

विविच सक [वि + विच्] पृथक् करना, अलग करना। सकृ विविचित्ता (सूअ २, ४, १०)।

विविण न [विपिन] जंगल, वन (गउड, नाट—चैत ७२)।

विवित्त वि [विविक्त] १ रहित, वर्जित। २ पृथग्भूत (दस ८, ५३, भग ६, ३३, उत्त २६, ३१, उव)। ३ विविध, अनेकविध, 'आसणेहिं विवित्तेहिं तिप्पमाणो हियासए। गवेहिं विवित्तेहिं आउकालस्स पारए' (आचा १, ८, ८, ६, १०)।

४ न एकान्त, विजन, 'किंतु विवित्तमाइसउ ताओ' (स ७४३)।

विवित्त वि [विविक्त] १ विवेक-युक्त। २ सन्दिग्ध, भय-भीरु (सम ४)।

विविदिअ वि [विविदित] विशेष रूप से ज्ञात (पराह २, १—पत्र ६६)।

विविदिसा देखो विविइसा (पचा ३, २७)।

विविद्धि पु [विवृद्धि] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७)।

विविह वि [विविध] अनेक प्रकार का, बहुविध, भाति भाति का (आचा, राय, उव, महा)।

विवुअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (सक्षि ४)।

विवुज्झ अक [वि + बुध्] जागना। विवुज्झदि (शौ) (प्राप्र)।

विवुड्ढि देखो विवड्ढि (ओघभा १३६, स १३५)।

विवुद देखो विवुअ (प्राकृ ८, १२)।

विवुदि देखो विवदि (प्राकृ १२)।

विवुह देखो विबुह (सण)।

विवेअ देखो विवेग (कुमा, महा ५२, ७७)। °न्नु वि [°ज्ञ] विवेक ज्ञाता (पउम ५३, ३८)।

विवेअ पु [विवेप] विशेष कप (सुपा १४)।

विवेइ वि [विवेकिन्] विवेकवाला (सुपा १४८, कुमा, सण)।

विवेग पु [विवेक] १ परित्याग (सूअ १, २, १, ८, ठा २, ३, ओप, आचानि ३०३)। २ ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय, विनिश्चय (ओप कुमा)। ३ प्रायश्चित्त (आचा १, ५, ४, ६)। ४ पृथक्करण (ओप)।

विवेगि देखो विवेइ (सुपा ५८३, कुप्र ४७)।

विवेच सक [वि + वेचय्] विवेचन करना, ठीक-ठीक निर्णय करना, विवेक करना। कर्म विवेचिजइ (धर्मसं १३१०)। हेकृ. विवेचितु (धर्मसं १३११)।

विवेयण न [विवेचन] विवेक, निर्णय (विसे १६४२)।

विवोल पुं [दे] विशेष कोलाहल, कलकल आवाज, 'विवोलेण सवणसुहय' (स ५७१)।

विवोलिअ वि [दे] व्यतिक्रान्त, गुजरा हुआ, 'कहकहवि विवोलिया मे रयणी' (स ५०६)।

विवोह देखो विबोह (भवि)।

विव्व सक [वि + अय्] व्यय करना, खर्च करना, 'चिंतामणिप्पभावा सपजइ तस्स दविणमइपउर। त विव्वइ जिणभवणे' (सुपा ३८२)। कृ 'विव्वेयव्वो' (सुपा ४२४, ५८६)। देखो विच्च = वि = अय्।

विव्वाय वि [दे] १ अवलोकित। २ विश्रान्त (दे ७, ८६)।

विव्वोअ देखो विब्बोअ (कुमा)।

विव्वोयण [दे] देखो विब्बोयण (कप्प)।

विस सक [विश्] प्रवेश करना। विसइ, विसति (वज्जा २६, सण, गउड)। वकृ विसत (गउड)। सकृ विसिऊण (गउड)।

विस सक [वि + शृ] १ हिंसा करना। २ नष्ट करना। कवकृ विसिज्जमाण, विसीरत (विसे ३४३८, अच्चु ७४)।

विस पुन [विष] १ जहर, गरल, हलाहल, 'झत्ति नट्ठो दुहावि विमोहविसो' (सम्मत्त २२६, उवा, गउड, प्रासू १२०, कुमा)। २ पानी, जल (से ८, ६३)। °नंदि पुं [°नन्दिन्] प्रथम बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। °न्न [°ान्न] विष-मिश्रित अन्न (उप ६४८ टी)। °मइअ, °मय वि [°मय] विष का बना हुआ (हे १, ५०, पड्)। °व वि [°वत्] १ विषवाला, विष युक्त। २ पु सर्प, साप (से ७, ६७)। °हर पु [°धर] साप, सर्प (से २, २५, सुर १, २४६, महा)। °हरवइ पु [°धरपति] शेष नाग (से ६, ७)। °हरिंद पु [°धरेन्द्र] शेष नाग (गउड)। °हारिणी स्त्री [°हारिणी] पनीहारी, पानी भरनेवाली स्त्री (हे ४, ४३६)।

विस देखो विस (गा ६५२, गउड)।

विस पु [वृष] १ बैल, साड, वृषभ (सुर १, २४८, सुपा ३६३, ५६७, सुख ८, १३)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (सुपा १०८, विचार १०७)। ३ मूषक, चूहा (दे ७, ६१, पड्)। ४ धर्म। ५ बल-युक्त। ६ ऋषभ नामक ओषध। ७ पुरुष विशेष (सुपा ३६३)। ८ काम, कन्दर्प। ९ शुक्र युक्त, वीर्य-युक्त। १० शृङ्गवाला कोई भी जानवर (सुपा ५६७)।

विसंगि वि [विसङ्गिन्] विसङ्गवाला, विसङ्ग-युक्त (विसे २७६०)।

विसक वि [विशङ्क] शका-रहित, नि शक (उप १३६ टी)।

विसखल वि [विशृङ्खल] स्वच्छन्द, स्वैरी, निरकुश, उद्धत (पाअ, स १८०, से ५, ६८)।

विसखल सक [विशृङ्खलय्] निरकुश करना, अव्यवस्थित कर डालना। सकृ. विसखलेऊण (सुख २, १५)।

विसघट्टिय वि [विसंघट्टित] वियुक्त, विघटित (कुप्र ६)।

विसंघड अक [विस + घट्] अलग होना, जुदा होना। वकृ विसघडत (गा ११५)।

विसघडिय वि [विसघटित] वियुक्त, जो जुदा हुआ हो वह (णाया १, ८—१४१, महा)।

विसघाइय वि [विसघातित] सहत किया हुआ (अणु १७६)।

विसघाय सक [विस + घातय्] सहत करना। कर्म. विसघाइज्जइ (अणु १७६)।

विसजुत्त वि [विसयुक्त] वियुक्त, जो अलग हुआ हो (सम्म २२, सूअनि १२१ टी)।

विसजोअ पु [विस + योजय्] वियुक्त करना, अलग करना। विसजोएइ (भग)।

विसजोअ } पु [विसयोग] वियोग, विघटन,
विसजोग } पृथग्भाव, जुदाई (कम्म ५, ८२, पच ३, ५४)।

विसठुल वि [विसस्थुल] १ विह्वल, व्याकुल (पाअ, से १४, ४१, हे २, ३२, ४, ४३६, मोह २२, धम्मो ५)। २ अव्यवस्थित (गा १४६, कुप्र ४१७, दे १, ३४)।

विसतव पु [द्विषन्तप] शत्रु को तपानेवाला, दुश्मन को हैरान करनेवाला (हे १, १७७)।

विसथुल देखो विसठुल (पउम ८, २००, स ५२१)।

विसथुलिय वि [विसस्थुलित] व्याकुल बना हुआ (सण)।

विसंधि पु [विसन्धि] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि बन्धन रहित (राज)। °कप्प, °कप्पेल्लय पु [°कल्प] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विसंनिविट्ठ न [विसंनिविष्ट] विविध रथ्या, अनेक महल्ला (औप)।

विसंभ देखो वीसंभ (महा)।

विसंभणया देखो विस्संभणया (आचा १, ८, ६, ४)।

विसंभोइय वि [विसंभोगिक] जिसके साथ भोजन आदि का व्यवहार न किया जाय वह, मण्डली बाह्य, नमाज-बाह्य (ठा ५, १—पत्र ३००)।

विसंभोग पु [विसंभोग] साथ बैठकर भोजन आदि का अव्यवहार (ठा ३, ३)।

विसंभोगिय देखो विसंभोइय (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

विसंवइय वि [विसंवदित] १ सबूत रहित, अप्रमाणित (पाअ, स ५७६)। २ विघटित, वियुक्त (स ४१, ३६)।

विसंवय अक [विसं + वद्] १ अप्रमाणित होना, असत्य ठहरना, सबूत न सिद्ध न होना। २ विघटित होना, अलग होना। ३ विपरीत होना, अन्यथा होना। विसंवयइ, विसंवयंति (हे ४, १२६, उव), 'सो तारिसो धम्मो नियमेण फले विसंवयइ' (स ६४८, ७१६), 'चरिएण तह विसंवयसि' (सन २६), विसंवएज्जा (महानि ४)। वकृ विसंवयंत (प उप ७६८ टी, सम्मत ८८३)।

विसंवयण न [विसंवदन] विसंवाद, सबूत का अभाव (उप पृ २६८)।

विसंवाइ वि [विसंवादिन्] १ विघटित होनेवाला, विच्छिन्न होनेवाला (कुमा ६, ८६)। २ अप्रमाणित होनेवाला, सबूत से सिद्ध नहीं होनेवाला, असत्य ठहरनेवाला (कुप्र २६४, सम्मत १२३)।

विसंवाइय वि [विसंवादित] विसंवाद युक्त (दे १, ११४, से ३, ३०)।

विसंवाद देखो विसंवाय = विसंवाद (धर्मसं १४८)।

विसंवादण देखो विसंवायण (उत्त २६, ४८)।

विसंवादणा देखो विसंवायणा (ठा ४, १—पत्र १६६)।

विसंवाय वि [दे] मलिन, मैला (दे ७, ७२)।

विसंवाय पु [विसंवाद] १ सबूत का अभाव, विरुद्ध सबूत, विपरीत प्रमाण, 'अण्णोण्ण-विसंवाओ' (सबोध १७, सुपा ६०८)। २ व्याघात (गा ६१६)। ३ विचलता (से ३, ३०)।

विसंवायग वि [विसंवादक] १ सबूत रहित, प्रमाण-रहित। २ ठगनेवाला, वंचक (सुपा ६०८)।

विसंवायण न [विसंवादन] नीचे देखो (उत्त २६, ४८, सुख २६, ४८)।

विसंवायणा स्त्री [विसंवादना] १ असत्य कथन। २ वंचना, ठगाई (ठा ४, १—पत्र २६६)।

विससरिय वि [विसंसृत] उठ गया हुआ, 'पहायसमए य विससरिएसु थाणएसु' (स ५३७)।

विसहणा देखो विस्संभणया (आचा)।

विसकल वि [विशकल] नीचे देखो (राज)।

विसकलिय वि [विशकलित] टुकडा टुकडा किया हुआ, खण्डित (आवम)।

विसग्ग पु [विसर्ग] १ निसर्ग, त्याग, 'सिसि-णेवि सुरयसमरकिरियामजणियवजणविसग्गा' (सिरि २२८)। २ विसर्जन, छुटकारा, छोड देना (पिं २०५)। ३ अक्षर-विशेष, विसर्ज-नीय वर्ण (पिंग)।

विसज्ज सक [वि + सृज्, सर्जय्] १ विदा करना, भेजना। २ त्यागना। विसज्जेइ (महा)। संकृ विसज्जिऊण, विसज्जिअ (महा, अभि ८६)। हेकृ विसज्जिदुं (शौ) (अभि ६०)। कृ विसज्जिदव्व (शौ) (अभि ५०)।

विसज्जणा स्त्री [विसर्जना] विदाई (वव ४)।

विसज्जिअ वि [विसृष्ट, विसर्जित] १ विदा किया हुआ, भेजा हुआ (औप, अभि ११६, महा, सुपा १५० ५७)। २ त्यक्त, 'जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाणि' (उव)।

विसट्ट अक [दल्] फटना, टूटना, टुकडे-टुकडे होना। विसट्टइ (हे ४, १७६, षड्) विसट्टंति (गउड), 'तम्स विसट्टउ हिअयं' (कुमा)। वकृ विसट्टंत (स ५७६)।

विसट्ट अक [वि + कस्] विकसना, खिलना, फूलना। विसट्टइ (प्राकृ ७६), विसट्टंति (वज्जा १३८)। वकृ विसट्टंत, विसट्टमाण (वज्जा ६०, ठा ४, ४—पत्र २६४)।

विसट्ट सक [वि + कासय्] विकसित करना, फुलाना, प्रफुल्ल करना। विसट्टइ (धात्वा १५३)।

विसट्ट अक [पत्] गिरना, स्खलित होना। विसट्टंति (सुर ७, २६)।

विसट्ट वि [दे] १ विघटित, विश्लिष्ट (पाअ, गउड १००६)। २ विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (प्राकृ ७७, गउड ६६७, ८०५, कुमा, सुर ३, ४२, सन ३०)। ३ दलित, विशीर्ण, खण्डित, जिसका टुकडा-टुकडा हुआ हो वह (से ६, ३०, गउड ५५६, भवि)। ४ उत्थित (गउड ७)।

विसट्टण न [विकसन] विकास, प्रफुल्लता, 'देव। पणयजणकमलाणकयविसट्टणगतमि-हराणुगारिणो' (धर्म ५)।

विसड } देखो विसम (षड्, हे १, २४१,
विसढ } कुमा, द ७, ६२), 'ढंकेण तहा विसटा, विसटा जह मफलिया जाया' (उव)।

विसढ वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ नीरोग, राग-रहित (दे ७, ६२)। ३ विषोढ, सहन किया हुआ (उव)। ४ विशीर्ण, टुकडे-टुकडे किया हुआ (से ६, ६६)। ५ आकुल, व्याकुल (से ११, ८६)।

विसढ वि [विशठ] १ अत्यंत दम्भी, अतिशय मायावी, देवेहि पाडिहेरं किं व कयं एत्थ विसढेहिं (पउम १०२, ५२)। २ पु एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५५०)।

विसण देखो वसण = वृषण (दे ६, ६२)।

विसण न [वेशन] प्रवेश (राज)।

विसण्ण वि [विसंज्ञ] संज्ञा-रहित, चैतन्य-वर्जित (से ६, ६८)।

विसण्ण देखो विसन्न = विषण्ण (महा, वसु, राज)।

विसत्त वि [निःसत्त्व] सत्त्व-रहित (वव ६)।

विसत्थ देखो वीसत्थ (णाया १, १—पत्र १३, स्वप्न १६, उप ७२८ टी)।

विसद देखो विसय = विशद (पण्ह १, ४—पत्र ७२ कप्प, त्रि ६७)।

विसद्द पु [विशब्द] १ विशिष्ट शब्द। २ वि. विशिष्ट शब्दवाला (गउड)।

विसन्न वि [विषण्ण] १ खिन्न, शोक ग्रस्त, विषादयुक्त (पण्ह १, ३—पत्र ५५, सुर ६, १८०, श्रु १२)। २ आसक्त, तल्लीन (सूअ १, १२, १४)। ३ निमग्न, 'अतरा चेव सेयंमि विसन्ने' (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पु असंयम (सूअ १, ४, १, २९)।

विसन्न देखो विस-न्न।

विसन्ना स्त्री [विसंज्ञा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

विसप्प अक [वि + सृप्] फैलना, विस्तरना, व्याप्त होना। वकृ विसप्पंत, विसप्पमाण (कप्प, भग, ओप, तदु ५३)।

विसप्प पुं [विसर्प] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विसप्पि वि [विसर्पिन्] फैलनेवाला (सुपा ४४७)।

विसप्पिर वि [विसर्पितृ] ऊपर देखो (मण)।

विसम देखो वीसम = वि + श्रम्। विसमडु (रंभा ३१)।

विसम वि [विषम] १ ऊँचा-नीचा, उन्नता-वनत (कुमा, गउड)। २ असम, असमान, अतुल्य (भग, गउड)। ३ अयुग्म, एकी सख्या, जैसे—एक, तीन, पाँच, सात आदि। ४ दारुण, कठिन, कठोर। ५ संकट, सकरा, कम चौड़ा, संकीर्ण (हे १, २४१, षड्)। ६ पुन आकाश (भग २०, २)। °क्खर वि [°क्षर] अपसिद्धान्तवाला, असत्य निर्णय-वाला (से ४, २४)। °लोअण पु [°लोचन] महादेव, शिव (वेणी ११७)। °वाण पु [°बाण] कामदेव (सण)। °सर पु [°शर] वही (स १, सुपा १६३, सण)।

विसमय न [दे] भल्लातक, भिलावाँ (दे ७, ६६)।

विसमय देखो विस-मय।

विसमिअ वि [विषमित] १ बीच बीच में विच्छेदित (से ६, ८७)। २ विषम बना हुआ (गउड)।

विसमिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, अस्मृत (से ६, ८७)।

विसमिअ [विश्रमित] विश्रान्त किया हुआ, विश्राम-प्रापित (से ६, ८७)।

विसमिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ उत्थित (दे ७, ६२)।

विसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला। स्त्री. °री (गा ५२, प्राकृ ३०)।

विसम्म अक [वि + श्रम्] विश्राम करना, आराम करना। भवि. विसम्मिहिइ (गा ५७५)। कृ. विसम्मिअव्व (से ६, २)।

विसय वि [विशद] १ निर्मल, स्वच्छ (कुप्र ४१५, सट्ठि ७८ टी)। २ व्यक्त, स्पष्ट (पाअ)। ३ धवल, सफेद (ओप)।

विसय पुन [विशय] १ गृह, घर (उत्त ७, १)। २ संभव, संभावना (आचू १)।

विसय पु [विषय] १ गोचर, इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ—शब्द, रूप, रस आदि वस्तु (पाअ, कुमा, महा)। २ जनपद, देश (ओघभा ८, कुमा, पउम २७, ११, सुपा ३१, महा)। ३ काम-भोग, विलास, 'भोग-पुरिसो समज्जियविसयसुहो' (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, कम्म १, ५७, सुपा ३१, महा)। ४ वावत, प्रकरण, प्रस्ताव, 'जोइसविसए' (उप ९८६ टी, ओघभा ६)। °ाविहइ पु [°ाधिपति] देश का मालिक, राजा (सुपा ४६४)।

विसर सक [वि + सृज्] १ त्याग करना। २ विदा करना, भेजना। विसरइ (षड्)।

विसर अक [वि + सृ] सरकना, धसना, नीचे गिरना, खिसकना। वकृ. विसरंत (णाया १, ९—पत्र १५७, से १४, ५४)।

विसर सक वि + स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसरइ (प्राकृ ६३)।

विसर पु [दे] सैन्य, सेना, लश्कर (दे ७, ६२)।

विसर पु [विसर] समूह, यूथ, संघात (सुपा ३, सुर १, १८५, १०, १४)।

विसरण न [विशरण] विनाश (राज)।

विसरय पुंन [दे] वाद्य-विशेष (महा)।

विसरा स्त्री [विसरा] मच्छी पकड़ने का जाल विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

विसरिअ वि [विस्मृत] याद नहीं आया हुआ (पि ३१३)।

विसरिया स्त्री [दे] सरट, कृकलास, गिरगिट (राज)।

विसरिस वि [विसदृश] असमान, विजा-तीय (मण)।

विसलेस पु [विश्लेष] जुदाई, वियोग, पृथग्भाव (चड)।

विसल्ल वि [विशल्य] शल्य-रहित (पउम ६३ ११, चेइय ३८७)। °करणी स्त्री [°करणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

विसल्ला स्त्री [विशल्या] १ एक महौषधि (ती ५)। २ लक्ष्मण की एक स्त्री (पउम ६३, २९)।

विसस सक [वि + शस्] वध करना, मार डालना, 'विससेह महिसे' (मोह ७६)। कवकृ विससिज्जंत (गउड ३१९)।

विसस देखो विस्सस = वि + श्वस्। कृ-विससिअव्व (स १०८)।

विससिय वि [विशसित] वध किया हुआ, जो मार डाला गया हो वह (गउड, ४७५, सम्मत्त १४०)।

विसह सक [वि + षह्] सहन करना। विसहंति (उव)। वकृ विसहंत (से १२, २३, सुपा २३३)। हेकृ. विसहिउ (स ३४६)।

विसह वि [विषह] सहन करनेवाला, सहिष्णु, 'वसुधरा इव सव्वफासविसहे' (कप्प, ओप)।

विसह देखो वसभ (गउड)।

विसहण न [विषहण] १ सहन करना (धर्मसं ८९७)। २ वि. सहिष्णु (पव ७३ टी)।

विसहिअ वि [विषोढ] सहन किया हुआ (से ६, ३३)।

विसाअ (अप) स्त्री [विश्वा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विसाइ वि [विषादिन्] विषाद युक्त, शोक ग्रस्त (सबोध ३६)।

विसाण न [विषाण] १ हाथी का दाँत (पण्ह १, १—पत्र ८, अणु २१२)। २ शृंग, सींग (सुर ६, १, पाअ, औप)। ३ सूअर का दाँत (उवा)। ४ पु ब. देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

विसाण सक [विशाणय्] घिसना, शाण पर चढ़ाना। कर्म विसाणीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ १३६)।

विसाणि वि [विषाणिन्] १ सींगवाला। २ पुं. हाथी, हस्ती। ३ शृ गाटक, सिंघाडा। ४ ऋषभ नामक औषध (अणु १४२)।

विसाअ सक [वि + स्वादय्] विशेष चखना, खाना। वकृ विसाएमाण (णाया १, १—पत्र ३७, कप्प)।

विसाअ पु [विषाद] खेद, शोक, दिलगीरी, अफसोस (उव, गउड, सुपा १०४, हे १, १५५)। °वत वि [°वत्] खिन्न, शोक-ग्रस्त (श्रा १४)।

विसाअ वि [विसात] १ सुख रहित (विवे १३६)। २ पुन एक देव-विमान (सम ३८)।

विसाअ वि [विस्वाद] स्वाद-रहित, 'आम-यकारि विसाय मिच्छत्त कयसण व ज भुत्त' (विवे १३६)।

विसार सक [वि + सारय्] फैलाना। वकृ विसारत (उत्त २२, ३४)।

विसार पु [दे] सैन्य, सेना (षड्)।

विसार वि [विसार] सार-रहित, नि स्सार (गउड)।

विसारण न [विशारण] खण्डन (पिंड ५६०)।

विसारणिअ वि [विस्मारणिक] स्मारणा-रहित, जिसको याद न दिलाया गया हो वह (ठाण)।

विसारय वि [दे] धृष्ट, ढीठ, साहसी (दे ७, ६६)।

विसारय वि [विशारद] विद्वान्, पण्डित, दक्ष (पण्ह, १, ३—पत्र ५३, भग, औप, सुर १, १३, प्रासू १६)।

विसारि वि [विसारिन्] फैलनेवाला, व्यापक (गउड)। स्त्री °णी (कप्पू)।

विसारि पुं [दे] कमलासन, ब्रह्मा (दे ७, ६२)।

विसाल वि [विशाल] १ विस्तृत, बडा, विस्तीर्ण, चौडा (पाअ, सुर २, ११६, प्रति १०)। २ पु एक ग्रह-देवता, अठासी महा-ग्रहो मे एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ एक इन्द्र, क्रन्दित निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ पुन देव-विमान विशेष (सम ३५, देवेन्द्र १३६, पव १६४)। ५ न. एक विद्या-धर-नगर (इक)।

विसालय पु [दे] जलधि, समुद्र (दे ७, ७१)।

विसाला स्त्री [विशाला] १ एक नगरी का नाम, उज्जयिनी, उज्जैन (सुपा १०३, उप ६८८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। ३ जबूवृक्ष विशेष, जिससे यह जबूद्वीप कहलाता है। ४ राजधानी-विशेष (इक)। ५ भगवान् महावीर की माता का नाम (सूअ १, २, ३, २२)। ६ एक पुष्करिणी (राज)।

विसालिस देखो विसरिस (उत्त ३, १४)।

विसासण वि [विशासन] विघातक, विना शक, 'कुसुमयविसासण' (सम्म १)।

विसासिअ वि [विशासित] १ मारित, हिंसित, जिसका वध किया हो वह। २ विशेष रूप से धर्षित। ३ विश्लेषित, वियुक्त किया हुआ। ४ मार भगाया हुआ (से ८, ६३)।

विसाह पुं [विशाख] स्कन्द, कार्तिकेय (पाअ)।

विसाहा स्त्री [विशाखा] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ व्यक्ति वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (वज्जा १२२)। ३ एक विद्याधर-कन्या (महा)।

विसाहिअ वि [विसाधित] १ सिद्ध किया गया। २ न ससिद्धि, 'सग्गविसाहिउ जहि लहहु पिय तहि देसहि जाहु' (हे ४, ३८६, ४११)।

विसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा। २ वैशाख मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

विसि स्त्री [दे] करि-शारी, गज पर्याण (दे ७, ६१)।

विसि देखो विसि (हे १, १२८, प्राप्र)।

विसिज्जमाण देखो विस = वि-शृ।

विसिट्ठ वि [विशिष्ट] १ प्रधान, मुख्य (सूअ १, ६, ७, पण्ह २, १—पत्र ६६)। २ विशेष-युक्त (महा)। ३ विशेष शिष्ट, सुसभ्य (वज्जा १६०)। ४ युक्त, सहित (पण्ण २३—पत्र ६७१)। ५ व्यतिरिक्त, भिन्न, विलक्षण (विसे)। ६ पु एक इन्द्र, द्वीपकुमार-देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। ७ न लगातार छ दिना का उपवास (सबोध ५८)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] अहिंसा (पण्ह २, १)।

विसिट्ठि स्त्री [विसृष्टि] विपरीत क्रम (सिरि ८७८)।

विसिण वि [दे] रोमश, प्रचुर रोमवाला (दे ७, ६४)।

विसिस सक [वि + शिष्] विशेषण युक्त करना। कर्म 'किरिया विस(?सि)स्सए पुण नाणाउ, सुए जओ भणिअ' (अज्झ ५८, ५६)।

विसिह पु [विशिख] १ बाण, तीर (पाअ, पउम ८, १००, सुपा २२, किरात १३)। २ वि शिखा रहित (गउड ५३६)।

विसी देखो विसी (हे १, १२८, प्राप्र)।

विसी स्त्री [विंशति] बीस, बीस का समूह, 'केत्ती(?त्ति)आओ भाअवदाए विसीआ' (हास्य १३६)।

विसीअ अक [वि + सद्] १ खेद करना। २ निमग्न होना, डूबना। विसीयइ विसीअति, विसीअए, विसीयह (सूअ १, ३, ४, १, १, ३, ४, ५, ठा ४, ४—पत्र २७८, उव)। वकृ विसीयत (पि ३९७)।

विसीइअ वि [विशीर्ण] १ जीर्ण, त्रुटित। २ न टूटना, जर्जरित होना, 'सव्वेहि विहडिय पिव विसीइय सव्वअगेहि' (सुर १२, १६६)।

विसीरत देखो विस = वि + शृ।

विसील वि [विशील] १ ब्रह्मचर्य-रहित, व्यभिचारी (वसु, उप ५६७ टी)। २ खराब स्वभाववाला, विरूप आचरणवाला (उत्त ११, ५)।

विसुज्झ अक [वि + शुध्] शुद्धि करना। विसुज्झइ (उव)। वकृ विसुज्झत, विसुज्झमाण (उप ३२० टी, णाया १, १—पत्र ६८, उवा, औप, सुर १६, १६१)।

विसुणिअ वि [विज्ञात] विज्ञात (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

विसुत्त वि [विस्रोतस्] १ प्रतिकूल। २ खराब, दुष्ट (भवि)।

विसुत्तिया देखो विसोत्तिया (श्रावक ५६, दस ५, १, ६)।

विसुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्मल, निर्दोष (सम ११६, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्रासू २२, उव, हे ३, ३८)। २ विशद, उज्ज्वल (पण्ण १७—पत्र ४८६)। ३ पु. ब्रह्मदेवलोक का एक प्रतर (ठा ६—पत्र ३६७)।

विसुद्धि स्त्री [विशुद्धि] निर्दोषता, निर्मलता (औप, गा ७३७)।

विसुमर सक [वि + स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसुमरइ, विसुमरामि (महा, पि ३१३), विसुमरेहि (स २०४)।

विसुमरिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (स २६५, सुख २, २६, सुर १४, १७)।

विसुराविअ वि [खेदित] खिन्न किया हुआ, 'अरविलासविसुरावियाए निव्वडइ सोहग्ग' (गउड १११)।

विसुव न [विषुवत्] रात और दिन की समानतावाला काल, वह समय जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं (दे ७, ५०)।

विसूइआ स्त्री [विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा (उव, सुर १६, ७२, आचा २, २, १, ४)।

विसूणिय वि [विशूनित] १ फुला हुआ, सुजा हुआ (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ काटा हुआ, उत्कृत्त (सूअ १, ५, २, ६)।

विसूर देखो विसुमर। विसूरइ (प्राकृ ६३)।

विसूर अक [खिद्] खेद करना। विसूरइ (हे ४, १३२, प्राप्र, उव)। वकृ विसूरंत, विसूरमाण (उव, गा ४१४, सुपा ३०२, गउड)। कृ. विसूरियव्व (गउड)।

विसूरण न [खेदन] १ खेद। २ पीडा (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

विसूरणा स्त्री [खेदना] खेद, अफसोस, दुःख (से ५, ३)।

विसूरिअ वि [खिन्न] खेद-युक्त, दिलगीर (से १०, ७६)।

विसूहिय पुन [विष्वग्हित] एक देव-विमान (सम ४१)।

विसेढि स्त्री [विश्रेणि] १ विदिशा सम्बन्धी श्रेणि, वक्र रेखा। २ वि विश्रेणि में स्थित (णंदि, पि ६६, ३०४)।

विसेस सक [वि + शेषय्] विशेष युक्त करना, गुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना, विशेषण से अन्वित करना, व्यवच्छेद करना। विसेसइ, विसेसेइ (भवि, सण, सूअनि ६१ टी, भग, विसे ७६, महा)। कर्म विसेसिज्जइ (विसे ३१११)। संकृ विसेसिउं (विसे ३१४)। कृ विसेसणिज्ज, विसेस्स (विसे २१५६, १०३५)।

विसेस पुन [विशेष] १ प्रभेद, पार्थक्य, भिन्नता, 'ण सपरायासि विसेसमत्थि' (सूअ २, ६, ४६, भग, विसे १०५, उव)। २ भेद, प्रकार, 'दसविहे विसेसे पन्नत्ते' (ठा १०, महा, उव)। ३ असाधारण, अमुक, व्यक्ति, खास (उव, जी ३६, महा, अभि २१०)। ४ पर्याय, धर्म, गुण (विसे २६७)। ५ अधिक, अतिशय, ज्यादा, 'तओ विसेसेण त पुज्ज' (भग, प्रासू १७६, महा, जी ३६)। ६ तिलक। ७ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध अलकार-विशेष। ८ वैशेषिक-प्रसिद्ध अन्त्य पदार्थ (हे १, २६०)। °न्नु [°ज्ञ] विशेष जानने वाला (स ३२, महा)। °ओ अ [°तस्] खास करके (महा)।

विसेस पु [विश्लेष] पृथक्करण (वव १)।

विसेसण न [विशेषण] दूसरे से भिन्नता बतानेवाला गुण आदि (उप ४४४, भास ८६, पच १, १२, विसे ११५)।

विसेसणिज्ज देखो विसेस = वि + शेषय्।

विसेसय पुन [विशेषक] तिलक, चन्दन आदि का मस्तक स्थित चिह्न (पाअ, से १०, ७४, वेणी ४६, गा ६३८, कुप्र २५५)।

विसेसिअ वि [विशेषित] १ विशेषण युक्त किया हुआ, भेदित (सम्म ३७, विसे २६८०)। २ अतिशयित (पाअ)।

विसेस्स देखो विसेस = वि + शेषय्।

विसोग वि [विशोक] शोक-रहित (आचा)।

विसोत्तिया स्त्री [विस्रोतसिका] १ विमार्ग-गमन, प्रतिकूल गति। २ मन का विमार्ग मे गमन, अपध्यान, दुष्ट चिन्तन (आचा, विसे ३०१२, उव, धर्मसं ८१२)। ३ शका (आचा)।

विसोपग } **विसोवग** } पुन [दे. विशोपक] कौडी का बीसवाँ हिस्सा (धर्मवि ५७, पंचा १४, २२)।

विसोह सक [वि + शोधय्] १ शुद्ध करना, मल रहित करना, निर्दोष बनाना। २ त्याग करना। विसोहइ, विसोहेइ (उव, सण, कस)। विसोहिज्ज (आचा २, ३, २, ३)। हेकृ विसोहित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विसोह वि [विशोभ] शोभा-रहित (दे १, ११०)।

विसोहण न [विशोधन] शुद्धि करण (कस)।

विसोहणया स्त्री [विशोधना] ऊपर देखो (ठा ८—पत्र ४४१)।

विसोहय वि [विशोधक] शुद्धि-कर्ता (सूअ १, ३, ३, १६)।

विसोहि स्त्री [विशोधि] १ विशुद्धि, निर्मलता, विशुद्धता (पउम १०२, १६६, उव, पिंड ६७१, सुपा १६२)। २ अपराध के योग्य प्रायश्चित्त (ओघ २)। ३ आवश्यक, सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)। ४ भिक्षा का एक दोष, जिस दोषवाले आहार का त्याग करने पर शेष भिक्षा या भिक्षा-पात्र विशुद्ध हो वह दोष (पिंड ३६५)। °कोडि स्त्री [°कोटि] पूर्वोक्त विशोधि-दोष का प्रकार (पिंड ३६५)।

विसोहिय वि [विशोधित] १ शुद्ध किया हुआ। २ पु मोक्ष मार्ग (सूअ १, १३, ३)।

विस्स देखो विस = विश्, 'देवीए जेण समयं अहयं अग्गीए विस्सामि' (सुर २, १२७)।

विस्स न [विस्र] १ कच्ची गन्ध अपक्व मांस आदि की बू। २ वि कच्ची गन्धवाला (प्राप्र, अभि १८८)। °गंधि वि [°गन्धिन्] आमगन्धि, अपक्व मांस के समान गंधवाला (अभि १८८)।

विस्स पु [विश्व] १ एक नक्षत्र-देवता उत्तराषाढा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७, अणु १४५, सुज्ज १०, १२)। २ न सर्व सकल, सब (विसे १६०३, सुर १२, ५६)। ३ पुन जगत्, दुनियाँ (सुपा १३६, सम्मत्त १६०, रंभा)। °इ पुं [°जित्] यज्ञ विशेष (प्राकृ ९५)। °कम्म पु [°कर्मन्] शिल्पी-विशेष, देव-वर्धकि (स ००, कुप्र ६)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (सुपा ६३५)। °भूइ पु [°भूति] प्रथम वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१, भत्त १३७, ती ७)। °यम्म देखो °कम्म (स ६१०)। °वाइअ पुं [°वादिक] भगवान् महावीर का एक गण (ठा ९—पत्र ४५१)। °सेण पु [°सेन] १ भगवान् शान्तिनाथजी का पिता, एक राजा (पम १५१, १५२)। २ अहोरात्र का एक मुहूर्त (सम ५१)। देखो वीस = विश्व।

विस्सअ (मा) देखो विम्हय = विस्मय (षड्)।

विस्सत देखो वीसत (सुपा ५८३)।

विस्संतिअ न [विश्रान्तिक] मथुरा का एक तीर्थ (ती ७)।

विस्संद सक [वि + स्यन्द्] टपकना, झरना, चूना। विस्संदति (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

विस्संभ सक [वि + श्रम्भ्] विश्वास करना। कृ विस्संभणिज्ज (श्रा १४, उवप १६)।

विस्संभ पु [विश्रम्भ] विश्वास, श्रद्धा (प्रयौ ६६, महा)। °घाइ वि [°घातिन्] विश्वास-घातक (णाया १, २—पत्र ७६)।

विस्संभण न [विश्रम्भण] विश्वास (माल १६६)।

विस्संभणया स्त्री [विश्रम्भणा] विश्वास (आचा)।

विस्संभर पु [विश्वम्भर] जन्तु-विशेष, भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५, ओघ ३२३)। २ मूषक, चूहा (ओघ ३२३)। ३ इन्द्र। ४ विष्णु, नारायण (नाट—चेत ३८)।

विस्संभरा स्त्री [विश्वम्भरा] पृथिवी, धरती (कुप्र २१३)।

विस्संभिय वि [विश्रब्ध] विश्वास-प्राप्त, विश्वासी (सुख १, १४)।

विस्संभिय वि [विश्वभृत्] जगत्-पूरक (उत्त ३, २)।

विस्सत्थ देखो वीसत्थ (नाट—शकु ५३)।

विस्सद्ध देखो वीसद्ध (अभि १९३, मुद्रा २२३)।

विस्सम अक [वि + श्रम्] थाक लेना। विस्समइ (प्राकृ २६)। कृ विस्समिअ (नाट—मालती ११)।

विस्सम पु [विश्रम] विश्राम, विश्रान्ति (स्वप्न १०६)।

विस्समिअ देखो विस्संत (सुपा ३७२)।

विस्सर सक [वि + स्मृ] भूलना। विस्सरइ (वाक्वा १५३)।

विस्सर वि [विस्वर] खराब आवाजवाला (सम ५०, पण्ह १, १—पत्र १८)।

विस्सरण न [विस्मरण] विस्मृति, याद न आना (पभा २४, कुल १४)।

विस्सरिय वि [विस्मृत] भुला हुआ (उप पृ ११३)।

विस्सस सक [वि + श्वस्] विश्वास करना, भरोसा करना। विस्ससइ (प्राकृ २६)। वकृ विस्ससंत (श्रा १४)। कृ विस्ससणिज्ज (श्रा १४, भत्त ९९)।

विस्ससिअ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त, भरोसा-पात्र (श्रा १४, सुपा १८३)।

विस्साणिय वि [विश्राणित] दिया हुआ, अर्पित (उप १३८ टी)।

विस्साम देखो वीसाम (प्राकृ २६, नाट—शकु २७)।

विस्सामण न [विश्रामण] चप्पी, अंग-मर्दन आदि भक्ति, वैयावृत्त्य (ती ८)।

विस्सामणा स्त्री [विश्रामणा] ऊपर देखो (पव ३८, हित २०)।

विस्साव देखो विसाय = वि + स्वादय्। कृ. विस्सायणिज्ज (णाया १, १२—पत्र १७४)।

विस्सार सक [वि + स्मृ] भूल जाना। संकृ 'कोऊहलपरा विस्सारिऊण रायसासणं अगणिऊण नियभूमिं पविट्ठा नयरिं' (महा)।

विस्सार सक [वि + स्मारय्] विस्मरण करवाना (नाट—मालती ११७)।

विस्सारण न [विसारण] विस्तारण, फैलाना (पव ३८)।

विस्सावसु पुं [विश्वावसु] एक गन्धर्व, देव-विशेष (पउम ७२, २९)।

विस्सास पु [विश्वास] भरोसा, प्रतीति, श्रद्धा (सुख १, १०, सुपा ३५२, प्राप्र)।

विस्सासिय वि [विश्वासित] जिसको विश्वास कराया गया हो वह (सुपा १७७)।

विस्साहल पुं [विश्वाहल] अंग विद्या का जानकार चतुर्थ रुद्र-पुरुष (विचार ४७३)।

विस्सुअ वि [विश्रुत] प्रसिद्ध, विख्यात (पाअ, ओप, प्रासू १०७)।

विस्सुमरिय देखो विसुमरिअ (उप १२७)।

विस्सेणि } स्त्री [विश्रेणि, °णी] निःश्रेणि,
विस्सेणी } सीढी (आचा)।

विस्सेसर पुं [विश्वेश्वर] काशी-विश्वनाथ, काशी में स्थित महादेव की एक मूर्त्ति (सम्मत ७५)।

विस्सोअसिआ देखो विसोत्तिआ (हे २, ९८)।

विह सक [व्यथ्] ताडन करना। वकृ विहमाण (उत्त २७, ३, सुख २७, ३)।

विह देखो विस = विष (आचा, पि २६३)।

विह पुन [दे] १ मार्ग, रास्ता (ओघ ७०९)। २ अनेक दिनों में उल्लंघनीय मार्ग (आचा २, ३, १, ११, २, ३, ३, १४)। ३ अटवी-प्राय मार्ग (आचा २, ५, २, ७)।

विह पुन [विहायस्] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५, दसनि १, २३)। देखो विहग = विहायस्।

विह पुस्त्री [विध] १ भेद, प्रकार (उवा, कप्प)। २ पुन आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५, आचा १, ८, ४, ५, दसनि १, २३)।

विहइ स्त्री [दे] वृन्ताकी, बेंगन का गाछ (दे ७, ६३)।

विहंग पु [विहङ्ग] पक्षी, चिड़िया, पखेरू (पाअ, गउड, कप्प, सुर ३, २४५, प्रासू १७२)। °णाह पु [°नाथ] गरुड पक्षी (गउड ८२३, ८२४, १०२२)।

विहंग पु [विभङ्ग] विभाग, टुकड़ा, अंश (पराह १, ३—पत्र ५४, गउड ४०४)। देखो विभंग (गउड, भवि)।

विहंगम पु [विहंगम] पक्षी, चिड़िया (गउड, मोह ३२, श्रु ७७, सण)।

विहंज सक [वि + भञ्ज्] भांगना, तोड़ना, विनाश करना। सक्र. विहंजिवि (अप) (भवि)।

विहंजिअ वि [विभक्त] बांटा हुआ, 'आगम-जुत्तिपमाणविहंजिओ' (भवि)।

विहंड सक [वि + खण्डय्] विच्छेद करना, विनाश करना। विहंडइ (भवि)।

विहंडण न [विखण्डन] १ विच्छेद, विनाश (सम्मत्त ३०)। २ वि विच्छेद-कर्ता, विनाशक (सण)।

विहंडण वि [विभण्डन] भांडनेवाला, गालि-सूचक, 'भणसि रे जइ विहंडण वअण' (गा ६१२)।

विहंडिअ वि [विखण्डित] विनाशित (पिंग, सण)।

विहग पु [विहग] पक्षी, चिड़िया (पउम १४, ८०, स ६९७, उत्त २०, ६०)। °हिव पु [°धिप] गरुड पक्षी (सम्मत्त २१६)।

विहग पुन [विहायस्] आकाश, गगन। °गइ स्त्री [°गति] १ आकाश में गमन (पचा ३, ६)। २ कर्म-विशेष, आकाश में गति कर सकने में कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म १, २४, ४३)।

विहट्ट देखो विघट्ट। विहट्टइ (भवि)।

विहट्टिअ वि [विघट्टित] खण्डित, द्विधाभूत (से २, ३२)।

विहड अक [वि + घट्] नियुक्त होना, अलग होना, टूट जाना। विहडइ, विहडेइ (महा, प्राकृ ७१)। वकृ. विहडंत (से ३, १४)।

विहड सक [वि + घटय्] तोड़ना, खण्डित करना। सकृ विहडिऊण (सण)।

विहड देखो विहल = विह्वल (से ४, ५४)।

विहडण न [विघटन] १ अलग होना, वियोग (सुपा ११६, २४३)। २ अलग करना। ३ खोलना, 'तह भीणा जह मउलि-यलोयणउडविहडणे वि असमत्था' (वज्जा ८८)।

विहडण पु [दे] अनर्थ (षड्)।

विहडणा स्त्री [विघटना] वियोजन, अलग करना, 'सज्जणविहडणावावडेण विहिणा जणो नडिओ' (धर्मवि ४२)।

विहडप्फड वि [दे] १ व्याकुल, व्यग्र (हे २, १७४)। २ त्वरित, शीघ्र (भवि)।

विहडा स्त्री [विघटा] विभेद, अनैक्य, फाट-फुट, 'जह मह कुडुंबविहडा न घडइ कइयावि दंतकलहेण' (सुपा ४२१)।

विहडाव सक [वि + घटय्] वियुक्त करना, अलग करना। विहडावइ (महा)।

विहडावण न [विघटन] वियोजन (भवि)।

विहडाविय वि [विघटित] वियोजित (सार्ध ७१)।

विहडिय वि [विघटित] १ वियुक्त, विच्छिन्न (महा ३६, ५)। २ खुला हुआ (महा ३०, ३०)।

विहण देखो विहन्न। विहणति (पि ४९०)। सकृ. विहत्तु (सूत्र १, ५, १, २१)।

विहणु वि [दे] सपूर्ण, सकल (सण)।

विहण्ण न [दे] पिंजन, पीजना, धुनना (दे ७, ६३)।

विहत्त देखो विभत्त (से ७, १५, चेइय २७४, सुर १, ४७, सुपा ३६६)।

विहत्ति देखो विभत्ति (पउम २४, ५, उप पृ १४७)।

विहत्तु देखो विहण।

विहत्थ वि [विहस्त] १ व्याकुल, व्यग्र (से १२, ४९, कुप्र ४०६, सिरि ३८६, ८३६, सम्मत्त १६१)। २ कुशल, दक्ष, 'पहरणवि-हत्थहत्था' (कुप्र १०३, २०६)। ३ पुं. विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ, 'पढम उत्तरिऊण धवलो जा जाइ पाहुडवि-हत्थो' (सिरि ६९१), 'सद्दवभाणविहत्थो' (उव)। ४ क्लीव (सम्मत्त १६१)।

विहत्थि पुस्त्री [वितस्ति] परिमाण-विशेष, बारह अंगुल का परिमाण (हे १, २१४, कुमा, अणु १५७)।

विहदि स्त्री [विधृति] १ विशेष धैर्य। २ वि धैर्य-रहित (संक्षि ९)।

विहन्न } सक [वि + हन्] १ मारना,
विहम्म } ताडन करना। २ नाश करना। ३ अतिक्रमण करना। विहन्नई (उत्त २, २२)। कर्म विहन्निज्जा (उत्त २, १)। वकृ. विहम्ममाण, विहम्माण (पि ५६२, उत्त २७, ३)। कवकृ. विहम्ममाण (सूअ १, ७, ३०)।

विहम्म वि [विधर्मन्] भिन्न धर्मवाला, विभिन्न, विलक्षण, 'मोत्तूणायसहाव वसेज्ज वत्थु विहम्मम्मि' (विसे २२४१)।

विहम्म सक [विधर्मय्] धर्म-रहित करना। वकृ विहम्मेमाण (विपा १, १—पत्र ११)।

विहम्म न [वैधर्म्य] १ विधर्मता, विरुद्ध-धर्मता। २ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध उदाहरण-भेद, वैधर्म्य-दृष्टान्त (सम्म १५३)।

विहम्माणा स्त्री [विधर्मणा, विहनन] कद-र्थना, पीडा (पराह १, ३—पत्र ५३, विसे २३५०)।

विहय वि [दे] पिंजित, धुना हुआ (दे ७, ६४)।

विहय वि [विहत] १ मारा हुआ, आहत (पउम २७, २८)। २ विनाशित (महा)।

विहय देखो विहग = विहग (गउड, सण)।

विहय देखो विहव = विभव (दे ३, २६, नाट—मालवि ३३)।

विहर अक [वि + हृ] १ क्रीडा करना, खेलना। २ रहना, स्थिति करना। ३ सक. गमन करना, जाना। विहरइ (हे ४, २५९, उवा, कप्प, उव), विहरति (भग), विहरेज्ज (पव १०४)। भूका विहरिंसु, विहरित्था (उत्त २३, ९, पि ३५०, ५१७)। भवि. विहरिस्सइ (पि ५२२)। वकृ विहरंत,

विहरमाण (उत्त २३, ८, सुपा २३, ७, ओप १२८, महा, भग)। सक्र विहरित्ता, विहरिअ (भग, नाट—वक्र १०२)। विहरित्तए, विहरिउ° (भग, ठा २, १—पत्र ५६, उव)। कृ विहरियव्व (उप १३१ टी)।

विहर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहरइ (षड्)।

विहर देखो विहार (उप ८३३ टी)।

विहरण न [विहरण] विहार (कुप्र २२)।

विहरिअ न [दे] सुरत, संभोग (दे ७, ७०)।

विहरिअ वि [विहृत] जिसने विहार किया हो वह (आव २२०, उव, कुप्र १६६)।

विहल अक [वि + ह्वल्] व्याकुल होना। वकृ विहलंत (से ८१५)।

विहल देखो विहड = वि + घट्। वकृ विहलंत (से १८, २६)।

विहल वि [विह्वल] व्याकुल, व्यग्र (हे २, ५८, प्राकृ २८, पउम ८, २००, से ५, ५८, गा २८७, प्रासू ५, हास्य १४०, वज्जा २८, षड्, गउड)।

विहल देखो विअल = विकल (सवि ८)।

विहल वि [विफल] १ निष्फल, निरर्थक (गउड, सुपा ३६६)। २ असत्य, झूठा, 'मिच्छा माह विहल अलिअ असच्च असब्भूअं' (पाअ)।

विहल सक [विफलय्] निष्फल बनाना, निरर्थक करना। विहलेति (उव)।

विहलंघल } वि [विह्वलाङ्ग] व्याकुल विहलप्फल } शरीरवाला (पाअ १६६, से २१५, सुपा १८, ३५, सुर ६, १७३, सुपा ४८३), 'विरणाविहलंघला पडिया' (सुर ११, २०८)।

विहलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा ३, ८३, प्राप, महा)।

विहलिअ देखो विहडिअ (से ७, ८६)।

विहलिअ वि [विफलित] विफल किया हुआ (सण)।

विहर सक [वि + कृ, वि + स्तृ ?] १ आवाज करना। २ सक विस्तार करना। विहरइ (धात्वा १४३)।

विहल्ल पु [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पडि)।

विहव पु [विभव] समृद्धि, संपत्ति, ऐश्वर्य (पाअ, गउड, कुमा, हे ८, ६०, प्रासू ७२, ७६)।

विहवण न [विव्यवन] विनाश (राज)।

विहवा स्त्री [विधवा] जिसका पति मर गया हो वह स्त्री, राँड (ओप, उव, गा ५३६, स्वप्न ५६, सुर १, ८३)।

विहवि वि [विभविन्] संपत्ति-शाली, धनाढ्य (कुमा, सुपा ४२२, गउड)।

विहव्व देखो विहव = विभव (नाट—मृच्छ ६६)।

विहस अक [वि + हस्] १ विकसना, खिलना, प्रफुल्ल होना। २ हास्य करना, मध्यम प्रकार का हास्य करना। विहसइ, विहसए, विहसेइ, विहसति (प्राकृ २६, सण, कुमा, हे ८, ३६५)। विहसेज्ज, विहसेज्जा (कुमा ५, ८५)। भवि विहसिहिइ, विहसेहिइ (कुमा ५, ८३)। वकृ विहसंत, विहसेंत (से २, ३६, कुमा ३, ८८, ५, ८४)। सकृ विहसिऊण, विहसिअ, विहसेऊण (गउड ८८५, ६१५, नाट—शकु ६८, कुमा ५, ८२)। हेकृ. विहसिउ, विहसेउ (कुमा ५, ८२)।

विहसाव सक [वि + हासय्] १ हँसाना। २ विकसित करना। सकृ विहसाविऊण, विहसावेऊण (प्राकृ ६१)।

विहसाविअ वि [विहासित] १ हँसाया हुआ। २ विकसित किया हुआ (प्राकृ ६१)।

विहसिअ वि [विहसित] १ विकसित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, 'विहसियदिट्ठीए विहसियमुहीए' (महा, सम्मत्त ७६)। २ न मध्यम प्रकार का हास्य (गउड६६६, ७५१)।

विहसिर वि [विहसितृ] खिलनेवाला, विकसित होनेवाला।

विहसिव्विअ वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विहस्सइ देखो विहस्सइ (पाअ, ओप)।

विहा अक [वि + भा] शोभना, चमकना। विहादि (शौ) (पि ४८७)।

विहा सक [वि + हा] परित्याग करना। सकृ. विहाय (सूअ १, १८, १)।

विहा अ [वृथा] निरर्थक, व्यर्थ, मुधा (पचा १२, ५)।

विहा स्त्री [विधा] प्रकार, भेद (कप्प, महा, अणु)।

विहा° देखो विहग = विहायस् (धर्मसं ६१६)।

विहाइ वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (चेइय ८०२, उप ७६८ टी, धमवि १३६)।

विहाउ वि [विधातृ] १ कर्ता, निर्माता (विसे १५६७, पचा ६, ३८)। २ पु पणपन्नि देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

विहाड सक [वि + घटय्] १ वियुक्त करना, अलग करना। २ विनाश करना। ३ खोलना, उघाटना। विहाडेइ, विहाडति (राय १०८, महा, भग), 'कम्मसमुग्ग विहाडेंति' (ओप, राय)। सकृ 'समुग्गय त विहाडेउ' (धर्मवि १५)। कृ विहाडियव्व (महा)।

विहाड वि [विघाट] विकट (राज)।

विहाड वि [विहाट] प्रकाश-कर्ता (सम्म २)।

विहाडण न [दे] अनर्थ (दे ७, ७१)।

विहाडिअ वि [विघटित] १ वियोजित, अलग किया हुआ (धर्मसं ७४२)। २ विनाशित (उप ५६७ टी)।

विहाडिअ वि [विघटित] उद्घाटित, खोला हुआ (उप पृ ५४, वसु)।

विहाडिर वि [विघटयितृ] अलग करनेवाला वियोजक (सण)।

विहाण पु [दे] १ विधि, विधाता, दैव, भाग्य (दे ७, ९०), 'माणुसमयजूहवह विहाणवाहो करेमाणो' (स १३०, भवि)। २ विहान, प्रभात, सुबह (दे ७, ९०, से ३, ३१, भवि, हे ८, ३३०, ३६२, सिरि ५२५)। ३ पूजन अर्चन, 'अग्गो चेव कूरदेवयाविहाणनिमित्त पयारिऊण परियण एयाए वावाइओ हविस्सइ' (स २६६)।

विहाण न [विधान] १ शास्त्रोक्त रीति (उप ७६८, पव ३५)। २ निर्माण, रचना (पचा

७, ५, रंभा, महा)। ३ प्रकार, भेद (से ३, ३१, पराह १, १, भग)। ४ व्याकरणोक्त विधि-विशेष (पराह २, २—पत्र ११४)। ५ अवस्था-विशेष (सूत्र २, १, ३२)। ६ विशेष, 'विहाणमग्गण पडुच' (भग १, १ टी)। ७ रीति (महा)। ८ क्रम, परिपाटी (बृह १)।

विहाण न [विहान] परित्याग (राज)।

विहाणिय (अप) वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (सण)।

विहाय अक [वि + भा] १ शोभना। २ प्रकाशना, चमकना, दीपना। विहायति (स १२)। वकृ विहायत (सिरि २६८)।

विहाय पुं [विघात] १ अवसान, अंत (से १, १६)। २ विरोधी, दुश्मन, परिपन्थी (से ८, ५४, स ४१२)।

विहाय देखो विभाग (गउड, से ६, ३२)।

विहाय वि [विभात] १ प्रकाशित, 'निसा विहाय त्ति उट्ठिओ कण्हो' (कुप्र २६८)। २ न प्रभात, प्रात काल (से १२, १६)।

विहाय देखो विहग = विहायस् (श्रा २२)।

विहाय देखो विहा = वि + हा।

विहाय (अप) देखो विहिअ (भवि)।

विहार सक [वि + धारय्] १ अपेक्षा करना। २ विशेष रूप से धारण करना। वकृ विहारत (पउम ८, १५६)।

विहार पु [विहार] १ विचरण, गमन, गति (पव १०४, उवा)। २ क्रीडा-स्थान (सम १००)। ३ देव-गृह, देव-मन्दिर (उत्त ३०, ७, कुमा)। ४ अवस्थान, अवस्थिति, 'अमासय दट्ठु इम विहार' (उत्त १४, ७)। ५ क्रीडा (ठा ८, कप्प)। ६ मुनि-वर्त्तन, मुनि-चर्या, साध्वाचार (वव १, णदि, उव)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वाध्याय स्थान (आचा २, १, १, ८, कस, कप्प)। २ विचरण-भूमि (वव ४)। ३ क्रीडा-स्थान। ४ चैत्य की जगह (कप्प, राज)।

विहारि वि [विहारिन्] विहार करनेवाला (आचा, उव, श्रा १४)।

विहालिय देखो विहाडिअ, 'दुवार विहालिय पासइ' (उप ६४८ टी)।

विहाव देखो विभाव = वि + भावय्। विहावइ, विहावेमि (भवि, रुम्मि ५७)। कवकृ विहाविज्जमाण (स ८१)। कृ. विहावियव्व (उप ३८२)।

विहावण न [विधापन] निर्मापण, करवाना (चेइय ६६)।

विहावण न [विभावन] आलोचना, 'एव विचितियव्व गुणदोसविहावण परम' (पचा ६, ४६)।

विहावरी स्त्री [विभावरी] रात्रि, निशा (पाअ, उप ७६८ टी, सुपा ३६३)।

विहावसु पु [विभावसु] अग्नि, आग (पाअ)। देखो विभावसु।

विहाविअ वि [विभावित] दृष्ट, निरीक्षित, 'दिट्ठ विहाविअ' (पाअ, गा ५०७)।

विहाविअ वि [विधावित] उल्लसित, प्रस्फुरित (स ६७)।

विहास पु [विहास] हँसी, उपहास (भवि)।

विहास, विहासाव } देखो विहसाव। सकृ. विहासिऊण, विहासेऊण, विहासाविऊण, विहासावेऊण (प्राकृ ६१)।

विहासाविअ, विहासिअ } देखो विहासाविअ (प्राकृ ६१)।

विहि पु [विधि] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विधाता (पाअ, अच्चु ३७, धर्मस ६२६, कुमा)। २ पुस्त्री प्रकार, भेद (उवा), 'सव्वाहि नयविहीहि' (पव १४६)। ३ शास्त्रोक्त विधान, अनुष्ठान, व्यवस्था (पचा ६, ४८, औप)। ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी (बृह १)। ५ रीति। ६ नियोग, आदेश, आज्ञा। ७ आज्ञा-सूचक वाक्य। ८ व्याकरण का सूत्र-विशेष। ९ कर्म। १० हाथी का खाने का अन्न (हे १, ३५)। ११ दैव, भाग्य, 'अणुकूलो अहव विही किवा त ज न करेइ' (सुर ६, ८१, पाअ, कुमा, प्रासू ५८)। १२ नीति, न्याय। १३ स्थिति, मर्यादा (बृह १)। १४ कृति, करण (पचा ११)। °न्नु वि [°ज्ञ] विधि का जानकार (णाया १, १—पत्र ११, सुर ८, ११८)। °वयण न [°वचन] विधि-वाक्य, विधि-वाद, विध्युपदेश (चेइय ७४४)। °वाय पु [°वाद] वही पूर्वोक्त अर्थ (भास ७५, चेइय ७४४)।

विहिअ वि [विहित] १ कृत, अनुष्ठित, निर्मित (पाअ, महा)। २ चेष्टित (औप)। ३ शास्त्र मे जिसका विधान हो वह, शास्त्रोक्त (पचा १४, २७)।

विहिंस सक [वि + हिंस्] विविध उपायो से मारना, वध करना। विहिंसइ (आचा १, १, १, ४)। कृ. विहिंस (पराह १, २—पत्र ४०)।

विहिंस वि [विहिंस] हिंसा करनेवाला, 'अ-विहिंसे सुव्वए दते' (आचा १, ६, ४, ३)।

विहिंसग वि [विहिंसक] वध करनेवाला (आचा, गच्छ १, १०)।

विहिंसण न [विहिंसन] विविध प्रकार से मारना (पराह १, १—पत्र १८)।

विहिंसा स्त्री [विहिंसा] १ विशेष हिंसा (पराह १, १—पत्र ५)। २ विविध हिंसा (सूत्र १, २, १, १४)।

विहिण्ण, विहिन्न } वि [विभिन्न] १ जुदा, अलग (से ७, ५३, १३, ८६, भवि)। २ खण्डित, भाग कर टुकडा-टुकडा बना हुआ (से ३, ६०)।

विहिम न [दे] जगल, अरण्य (उप ८४२ टी)।

विहिमिहिय वि [दे] विकसित, प्रफुल्ल (षड्)।

विहियव्व देखो विहे = वि + धा।

विहिविल्ल सक [वि + रचय्] बनाना, निर्माण करना। विहिविल्लइ (प्राकृ ७४)।

विहीण वि [विहीन] १ वर्जित, रहित (प्रासू १७२)। २ त्यक्त (कुमा)।

विहीर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, वाट जोहना। विहीरइ (हे ४, १९३), विहीरह (स ४१८)।

विहीर वि [प्रतीक्ष] प्रतीक्षा करनेवाला (कुमा ७, ३८)।

विहीरिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पाअ)।

विहीसण देखो विभीसण (से ४, ५५)।

विहीसिया देखो विभीसिया (सुपा ५४१)।

विहु पु [विधु] १ चन्द्र, चाद (पाअ)। २ विष्णु, श्रीकृष्ण। ३ ब्रह्मा। ४ शंकर,

महादेव। ५ वायु, पवन। ६ कपूर (हे ३, १६)।

विहुअ वि [विधुत] कम्पित (गा ६६०, गउड)। २ उन्मूलित, उखाड़ा हुआ (से १, ५५)। ३ त्यक्त (गउड)।

विहुंतुअ पुं [दे] राहु, ग्रह-विशेष (दे ७, ६५)।

विहुण सक [वि + धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ त्याग करना। ४ पृथग् करना, अलग करना। विहुणइ, विहुणति (भवि, पि ५०३), विहुणाहि (उत्त १०, ३)। कर्म विहुव्वइ (पि ५३६)। वकृ विहुणंत, विहुणमाण (सुपा २७२, पउम ६४, ३५)। कवकृ विहुव्वंत (से ६, ३५, ७, २१)। संकृ विहुणिय (सूअ १, २, १, १५, यति २१, स ३०८)।

विहुणण न [विधूनन] १ दूरीकरण (पउम १०१, १६)। २ व्यजन, पंखा (राज)।

विहुणिय वि [विधुत] देखो विहुअ (सुपा ७५३, यति २२)।

विहुर वि [विधुर] १ विकल, व्याकुल, विह्वल (स्वप्न ६३, महा, कुमा, दे १, १५, सुपा ६२, गउड, मण)। २ क्षीण (गउड १०३६)। ३ विवश, विलक्षण, विषम, 'अविगिट्ठम्मि वि जाणम्मि नत्थि होइ विहुरया' (आव ४४)। ४ विश्लिष्ट, वियुक्त (गउड ८३६)। ५ न व्याकुल-भाव, विह्वलता, 'विनाढुण विहुरम्मि' (स ७४६, वज्जा ३२, ६४, प्राप ५८, भवि, मण)।

विहुराइअ वि [विधुरायित] व्याकुल बना हुआ (गउड ३४४ टी)।

विहुरिज्जमाण वि [विधुरायमाण] व्याकुल बनता (सुपा ४१६)।

विहुरिय वि [विधुरित] १ व्याकुल बना हुआ (सुर २, २४६, ६ १२५, महा)। २ वियुक्त बना हुआ, बिछुड़ा हुआ, विरहित (गउड)।

विहुरीकय वि [विधुरीकृत] व्याकुल किया हुआ (कुमा)।

विहुल देखो विहुर (प्राप्र)।

विहुल्ल वि [विफुल्ल] १ खिला हुआ। २ उत्साही, 'नियकज्जविहुल्ली' (भवि)।

विहुव्वंत देखो विहुण।

विहूअ वि [विधूत] १ कम्पित, (माल १७८)। २ वर्जित, रहित, 'नयविहिवि-हूयबुद्धी' (पउम ५५, ४)। देखो विधूय, विहुअ।

विहूइ देखो विभूइ (अच्चु १४, भवि)।

विहूण देखो विहुण। संकृ विहूणिया (आचा १, ७, ८, २४, सूअ १, १, २, १२, पि ५०३)।

विहूण देखो विहीण (कुमा, उव)।

विहूणय न [विधूनक] व्यजन, पंखा (सूअ १, ४, २, १०)।

विहूसण देखो विभूसण (दे ६, १२७, सुपा १६१, कुप्र २६)।

विहूसा स्त्री [विभूषा] १ शोभा (सुपा ६२१, दे ६, ८३)। २ अलंकार आदि से शरीर की सजावट (पचा १०, २१)।

विहूसिअ वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत (भवि)।

विहे सक [वि + धा] करना, बनाना। विहेइ, विहेंति, विहेसि, विहेमि (धर्मसं १०११, स ६३४, ७१२, गउड, ३३२, कुमा ७, ६७)। संकृ विहेऊण (पि ५८५)। हेकृ विहेउं (हित ?)। कृ विहेयव्व, विहेअ, विहेअव्व (सुपा १५८, हि २२, धम्मो ४, महा, सुपा १६३, श्रा १२, हि २, पउम ६६, १८, सुपा १५६)।

विहेड सक [वि + हेटय्] १ मारना, हिंसा करना। २ पीड़ा करना। वकृ विहेडयंत (उत्त १२, ३६)। कवकृ. 'विहम्ममाणा विहेड (?डि)यंता' (पण्ण १, ३—पत्र ५३)।

विहेडय वि [विहेठक] अनादर-कर्ता (दस १०, १०)।

विहेडि वि [विहेटिन्] १ हिंसा करनेवाला। २ पीड़ा करनेवाला, 'अग मते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो' (सूअ १, ८, ४)।

विहेडिय वि [विहेटित] पीड़ित (भत्त १३३)।

विहेडणा स्त्री [विहेठना] कदर्थना, पीडा (उव)।

विहोड सक [ताडय्] ताडन करना। विहोडइ (हे ४, २७)।

विहोडिअ वि [ताडित] जिसका ताडन किया गया हो वह (कुमा)।

विहोय (अप) देखो विहव (भवि)।

वी देखो वि = अपि, वि, 'एक्क वियं जाव न वी, दुक्ख वोलेइ जणिमपियविरहं' (पउम १७, १२)।

वीअ सक [वीजय्] हवा डालना, पंखा करना। वीअअति (अभि ८६), वीयति (सुर १, ६६)। वकृ वीअंत (गा ८६, सुर ७, ८८)। कवकृ. विइज्जंत, वीइज्जमाण (से ६, ३७, णाया १, १—पत्र ३३)।

वीअ वि [दे] १ विधुर, व्याकुल। २ तत्काल, तात्कालिक, उसी समय का (दे ६, ६३)।

वीअ देखो बीअ = द्वितीय (कुमा, गा ८६, २०६, ४०६, गउड)।

वीअ वि [वीत] विगत, नष्ट (भग, अज्झ ६६)। °कम्ह न [°कश्म ?] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। °धूम वि [°धूम] द्वेष-रहित (भग ७, १—पत्र २६१)। °भय, °भय न [°भय] १ नगर-विशेष, सिन्धुसौवीर देश की प्राचीन राजधानी (धर्मवि १६, २१, इक, विचार ४८, महा)। २ वि भय-रहित (धर्मवि २१)। °मोह वि [°मोह] मोह-रहित (अज्झ ६६)। °राग, °राय वि [°राग] राग-रहित, क्षीण राग (भग, स ४१)। °सोग पुं [°शोक] एक महाग्रह (सुज्ज २०, ठा २, ३—पत्र ७६)। °सोगा स्त्री [°शोका] सलिलावती नामक विजय-प्रान्त की राजधानी, नगरी विशेष (णाया १, ८—पत्र १२१, इक, पउम २०, १४२)।

वीअजमण देखो बीअजमण (दे ६, ६३ टी)।

वीअण न [वीजन] १ हवा करना, पंखा से हवा करना (कप्पू)। २ क्लीन, पंखा, व्यजन (सुर १, ६६, कुप्र ३३३, महा)। स्त्री °णी (ओप, सूअ १, ६, ८, णाया १, १—पत्र ३२)।

वीआविय वि [वीजित] जिसको पखा से हवा कराई गई हो वह (स ५४६)।

वीइ पुस्त्री [वीचि] १ तरग, कल्लोल (पात्र, औप)। २ आकाश, गगन (भग २०, २—७७५)। ३ सप्रयोग, सबन्ध (भग १०, २—पत्र ८९०)। ४ पृथग्भाव, जुदाई (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)। °दव्व न [°द्रव्य] प्रदेश से न्यून द्रव्य, अवयव-हीन वस्तु (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)।

वीइ स्त्री [विकृति] १ विरूप कृति, दुष्ट क्रिया। २ वि दुष्ट क्रियावाला (भग १०, २—पत्र ४९५)। ३ देखो विगइ (कम्म ४, ५ टी)।

वीइंगाल वि [वीताङ्गार] राग-रहित (भग ७, १—पत्र २९२, पि १०२)।

वीइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] १ व्यतीत, गुजरा हुआ, 'वासोए राइदिएहिं वीइक्कंतेहिं' (सम ८९)। २ जिसने उल्लघन किया हो वह (भग १०, ३ टी—पत्र ४९९)।

वीइक्कम सक [व्यति + क्रम्] उल्लघन करना। वकृ वीइक्कममाण (कस)।

वीइज्जमाण देखो वीअ = वीजय्।

वीइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

वीइय वि [वीजित] जिसको हवा की गई हो वह (औप, महा)।

वीइवय सक [व्यति + व्रज्] १ परि-भ्रमण करना। २ गमन करना, जाना। ३ उल्लघन करना। वीइवयइ, वीइवइज्जा, वीइवएज्जा (सुज्ज २० टी, भग १०, ३—पत्र ४९८)। वकृ वीइवयमाण (णाया १, १—पत्र ३१)। सकृ वीइवइत्ता, वीइवएत्ता (भग २, ८, १०, ३—पत्र ४९९)।

वीई स्त्री देखो वीइ = वीचि (पात्र, भग १०, २, २० २)।

वीई अ [विविच्य] पृथग् होकर, जुदा होकर (भग १०, २—पत्र ४९५)।

वीई अ [विचिन्त्य] चिन्तन करके (भग १०, २—पत्र ४९५)।

वीईवय देखो वीइवय। वोईवयइ (भग, सुज्ज २० टी, भग ७, १०—पत्र ३२४)। वकृ. वीईवयमाण (राय १६, पि ७०, १५१)।

वीचि देखो वीइ = वीचि (कप्प, भग १४, ६—पत्र ६४४)।

वीचि स्त्री [दे] लघु रथ्या, छोटा मुहल्ला (दे ७, ७३)।

वीज देखो वीअ = वीजय्। वीजइ, वीजेमि (हे ४, ५, षड् मै ६६)।

वीजण देखो वीअण (कुमा)।

वीजिय देखो वीइय (स ३०८)।

वीडग } देखो वीडग (स ६७)।
वीडय }

वीडय पु [व्रीडक] लज्जा, शरम (गउड ७३१)।

वीडिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा (णाया १, ८—पत्र १४३)।

वीडिआ स्त्री [वीटिका] सजाया हुआ पान, वीडा (गउड)। देखो वीडी।

°वीढ देखो पीढ (गउड, उप पृ २२९, भवि)।

वीण सक [वि + चारय्] विचार करना। वीणइ, वीणेइ (धात्वा १५३, प्राकृ ७१)।

°वीण देखो पीण (सुर १३, १८१)।

वीणण न [दे] १ प्रकट करना (उप पृ ११८)। २ विदित करना, ज्ञापन (उप ७६५)।

वीणा स्त्री [वीणा] वाद्य-विशेष (औप, कुमा, गा ५६१, स्वप्न ६७)। °यरिणी स्त्री [°करी] वीणा-नियुक्त दासी, 'ता लहु वीणायरिणिं सद्देहि, सद्दिया वीणायरिणी' (स ३०९)। °वायग वि [°वादक] वीणा बजानेवाला (महा)।

वीत देखो वीअ = वीत (ठा २, १—पत्र ५२, पण्ण १७—पत्र ४६४, सुज्ज २०—पत्र २९५)।

वीतिकंत } देखो वीइक्कंत (भग १०, ३—
वीतिक्कंत } पत्र ४९८, णाया, १, १—पत्र २४, २९)।

वीतिवय } देखो वीइवय। वीतिवयति (भग)।
वीतीवय } वीतीवयइ (णाया १, १२—पत्र १७४)। वकृ. वीतिवयमाण (कप्प)। सकृ वीतिवइत्ता (औप)।

वीमंस सक [वि + मृश्, मीमांस्] विचार करना, पर्यालोचन करना। संकृ. वीमंसिय (सम्मत्त ५६)।

वीमंसय वि [विमर्शक, मीमांसक] विचार-कर्ता (उव)।

वीमंसा स्त्री [विमर्श, मीमांसा] विचार, पर्यालोचन, निर्णय की चाह (सूत्र १, १, २, १७, विसे २८९, ३९६, ५६५, उप ५२०)।

वीमंसिय वि [विमर्शित, मीमांसित] विचारित, पर्यालोचित (सम्मत्त ५४)।

वीर पु [वीर] १ भगवान् महावीर (पण्ह १, १—पत्र २३, १, २, सुज्ज २०, जी १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ साहित्य-प्रसिद्ध एक रस (अणु १३६)। ४ वि पराक्रमी, शूर (आचा, सूत्र १, ८, २३, कुमा)। ५ पुन एक देव-विमान (सम १२, इक)। ६ न वताढ्य पवत की उत्तर श्रेणी मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १२) °कण्ह पु [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १, पि ५२)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °कूड पुन [°कूट] एक देव-विमान (सम १२)। °गत पुन [°गत] एक देव-विमान (सम १२)। °जस पु [°यशस्] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। °ज्झय पुन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १२)। °धवल पु [°धवल] गुजरात का एक पसिद्ध राजा (ती २, हम्मीर १३)। °निहाण न [°निधान] स्थान-विशेष (महा)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १२)। °भद्द पु [°भद्र] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गण-धर (सम १३, कप्प)। °मई स्त्री [°मती] एक चोर-भगिनी (महा)। °लेस पुन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १२)। °वण्ण पुन [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १२) °वरण न [°वरण] प्रतिसुभट से युद्ध का स्वीकार, 'इस योद्धा से मैं लडूँगा' ऐसी युद्ध की माँग (कुमा ६, ४६, ५२)। °वरणी स्त्री

[°वरणी] प्रतिभट से प्रथम शस्त्र-प्रहार की याचना (सिरि १०२४)। °वलय न [°वलय] सुभट का एक आभूषण, वीरत्व-सूचक कडा (कप्प, तदु २६)। °विराली स्त्री [°विराली] वल्ली विशेष (पएण १—पत्र ३३)। °सिंग पुन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १२)। °सिट्ठ पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १२)। °सेण पु [°सेन] एक प्रसिद्ध वीर यादव का नाम (णाया १, ५—पत्र १००, अंत, उप ६४८ टी)। °सेणिय पुन [°सैनिक, श्रेणिक] एक देव-विमान (सम १२)। °वित्त पुन [°वृत्त] देवविमान विशेष (सम १२)। °सण न [°सन] आसन विशेष, नीचे पैर रखकर सिंहासन पर बैठने के जैसा अवस्थान (णाया १, १—पत्र ७२, भग)। °सणिय वि [°सनिक] वीरासन से बैठनेवाला (ठा ५, १—पत्र २९९, कस, औप)।

वीरगय पु [वीराङ्गद] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। २ एक राजकुमार (उप १०३१ टी)।

वीरण स्त्रीन [वीरण] तृण-विशेष उशीर, खस (अणु २१२, पाअ)।

वीरल्ल पु [वीरल्ल] श्येनपक्षी (पएह १, १—पत्र ८, १३)।

वीरिअ पु [वीर्य] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-गण। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२९)। ३ पुन शक्ति, सामर्थ्य (उवा, ठा ३, १ टी—पत्र १०६)। ४ अन्तरंग शक्ति, आत्म-बल (आचू ४६, भत्त ९५)। ५ पराक्रम (कम्म १, ५२)। ६ एक देव विमान (देवेन्द्र १३१)। ७ शरीर-स्थित एक धातु, शुक्र। ८ तेज, दीप्ति (हे २, १०७, प्राप्र)।

वीरणी स्त्री [वीरणी] पर्व-वनस्पति विशेष, 'वीरणा (? णी) तह इक्कडे य मासे य' (पएण १—पत्र ३३)।

वीरुत्तरवडिसग पुन [वीरोत्तरावतंसक] एक देव विमान (सम १२)।

वीरुहा स्त्री [वीरुधा] विस्तृत लता (कुप्र ६५, १३६)।

वीलण वि [दे] पिच्छिल, स्निग्ध, मसृण, चिकना (दे ७, ७३)।

वीलय देखो वीलय (दे ६, ९३)।

वीली स्त्री [दे] १ तरंग, कल्लोल (दे ७, ७३)। २ वीथी, पंक्ति, श्रेणी (षड्)।

वीवाह देखो विवाह = विवाह, 'एसा एक्का धूया वल्लहिया ता इमीए वीवाहं' (सुर ७, १२१, महा)।

वीवाहण न [विवाहन] विवाह करण, विवाह क्रिया (उव ९८६ टी, सिरि १५१)।

वीवाहिग वि [वैवाहिक] विवाह सम्बन्धी (धर्मवि १४७)।

वीवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी की गई हो वह (महा)।

वीवी स्त्री [दे] वीचि, तरंग (षड्)।

वीस देखो विस्स = विस्र (सूअ २, २, ६६, सक्षि २०)।

वीस देखो विस्स = विश्व (सूअ १, ६, २२)। °उरी स्त्री [°पुरी] नगरी विशेष (उप ५९२)। °सअ वि [°सृज] जगत्कर्ता (षड्)। °सेण पुं [°सेन] १ चक्रवर्त्ती राजा, 'जोहेसु णाए जह वीससेणे' (सूअ १, ६, २२)। २ पु. अहोरात्र का १८ वाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)।

वीस° } स्त्री [विंशति] १ संख्या-विशेष, वीसइ } बीस, २०। २ जिनकी संख्या बीस हो वे (कप्प, कुमा, प्राकृ ३१, सक्षि २१)। °म वि [°म] १ बीसवाँ, २० वाँ (सुपा ४५२, ४५७, पउम २०, २८, पव ४६)। २ न लगातार नव दिनों का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °हा अ [°धा] बीस प्रकार से (कम्म १, ५)।

वीसंत वि [विश्रान्त] १ विश्राम-प्राप्त, जिसने विश्रान्ति ली हो वह, 'परिस्संता वीसंता नग्गोहतरुतले' (कुप्र ६२, पउम ३३, १३, दे ७, ८६, पाअ, सण, उप ६४८ टी)।

वीसंदण न [विस्यन्दन] दही की तर और आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य (पव ४, पभा ३३)।

वीसंभ देखो विस्संभ = वि + श्रम्भ्। वीसंभइ (सूअनि २१ टी)।

वीसंभ देखो विस्संभ = विश्रम्भ (उव, प्राप्र, गा ४३७)।

वीसज्जिअ देखो विसज्जिअ (से ६, ७७, १५, ९३, पउम १०, ५२, धर्मवि ४६)।

वीसत्थ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त (प्राप्र, गा ६०८)।

वीसद्ध वि [विश्रब्ध] विश्वास युक्त (गा ३७६, अभि ११६, भवि, नाट—मृच्छ १६१)।

वीसम देखो विस्सम = वि + श्रम्। वीसमइ, वीसमामो (षड्, महा, पि ४८९)। वकृ. वीसममाण (पउम ३२, ४२, पि ४८९)।

वीसम देखो विस्सम = विश्रम (षड्)।

वीसम देखो वीस-म।

वीसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला (सण)।

वीसर देखो विस्सर = वि + स्मृ। वीसरइ (हे ४, ७५, ४२६, प्राकृ ६३, षड्, भवि), वीसरेसि (रंभा)।

वीसर देखो वीसर = विस्वर, 'वीसरसर रसंतो जो सो जोणीमुहाओ निप्फिडइ' (तंदु १४)।

वीसरणालु वि [विस्मर्तृ] भूल जानेवाला (ओघ ४२५)।

वीसरिअ देखो विस्सरिय (गा ३६१)।

वीसव (अप) सक [वि + श्रमय] विश्राम करवाना। वीसवइ (भवि)।

वीसस देखो विस्सस। वीससइ (पि ६४, ४९६)। वकृ वीससंत (पउम ११०, ५)। कृ. वीससणिज्ज, वीससणीअ (उत्त २९, ४२, नाट—मालवि ५३)।

वीससा अ [विस्रसा] स्वभाव, प्रकृति (ठा ३, ३—पत्र १५२, भग, णाया १, १२)।

वीससिय वि [वैस्रसिक] स्वाभाविक (आवम)।

वीसा देखो वीसइ (हे १, २८, ९२, ठा ३, १—पत्र ११९, षड्)।

वीसा स्त्री [विश्वा] पृथिवी, धरती (नाट)।

वीसाण पुं [विष्वाण] आहार, भोजन (हे १, ४३)।

वीसाम पु [विश्राम] १ विराम, उपरम। २ प्रवृत्त व्यापार का अवसान, चालू क्रिया का अंत (हे १, ४३; से २, ३१, महा)।

वीसामण देखो विस्सामण (कुप्र ३१०)।

वीसामणा देखो विस्सामणा (कुप्र ३१०)।

वीसाय देखो विसाय = वि + स्वादय्। कृ. विसायणिज्ज (पराण १७—पत्र ५३२)।

वीसार देखो विस्सार = वि + स्मृ। वीसारेड (धर्मवि ५३१)।

विसारिअ वि [विस्मारित] भुलवाया हुआ (कुमा)।

वीसाल सक [मिश्रय्] मिलाना, मिलावट करना। वीसालइ (हे ४, २८)।

वीसालिअ वि [मिश्रित] मिलाया हुआ (कुमा)।

वीसावँ (अप) देखो वीसाम (कुमा)।

वीसास देखो विस्सास (प्राप्र, कुमा)।

वीसिया स्त्री [विंशिका] वीस संख्यावाला (वव १)।

वीसु न [दे] युतक, पृथग्, जुदा (दे ७, ७३)।

वीसु अ [विष्वक्] १ समन्तात्, सब ओर से। २ समस्तपन, सामस्त्य (हे १, २४, ४३, ५२, षड्, कुमा, दे ७, ७३ टी)।

वीसुभ देखो वीसभ = वि + श्रम्भ्। वीसुभेज्जा (ठा ५, २—पत्र ३०८, कस)।

वीसुभ अक [दे] पृथग् होना, जुदा होना। वीसुभेज्जा (ठा ५, २—पत्र ३०८, कस)।

वीसुभण न [दे] पृथग्भाव, अलग होना (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुंभण न [विश्रम्भण] विश्वास (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुय देखो विस्सुअ (पराह १, ४—पत्र ६८)।

वीसेढि } देखो विसेढि (भास १०, णदि
वीसेणि } १८८)।

वीहि पुन [व्रीहि] धान, धान्य-विशेष, 'सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कगूणि वा' (सूत्र २, २, ११, कस)।

वीहि }
वीहिया } स्त्री [वीथि, °का, °थी] १ मार्ग, रास्ता (आचा, सूत्र १, २, १, २१, प्रयौ १००, गउड ११८८)।
वीही }
२ श्रेणी, पंक्ति (स १४)। ३ क्षेत्र-भाग (ठा ६—पत्र ४६८)। ४ बाजार (उप २८, महा)।

वुअ वि [दे] १ बुना हुआ। २ बुनवाया हुआ, 'जन्न तयट्ठा कीयं नेव वुयं जं न गहियमन्नेसिं' (पव १२५)। देखो वूय।

वुअ } वि [वृत] १ प्रार्थित। २ प्रार्थना
वुइय } आदि से नियुक्त, 'वुओ' (सक्षि ४)। ३ वेष्टित, 'कुकम्मवुइया' (सुपा ६३)।

वुइय वि [उक्त] कथित (उत्त १८, २६)।

वुज (?) सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। वुजइ (धात्वा १५४)।

वुताकी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ (दे ७, ६३)।

वुंद देखो वंद = वृन्द (गा ५५६, हे १, १३१)।

वुंदारय देखो वंदारय (दे १, १३२, कुमा, षड्)।

वुंदावण देखो विंदावण (हे १, १३१, प्राप्र सक्षि ४, कुमा)।

वुंद्र देखो वंद्र (हे १, ५३, कुमा १, ३८)।

वुक्क देखो वुक्क = दे (सण)।

वुक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] १ अतिक्रान्त, व्यतीत, गुजरा हुआ, 'वोलीणं वुक्कंत अइच्छिअ वोलिअ अइकंतं' (पाअ), 'वुक्कंतो बहुकालो तुह पयसेवं कुणंतस्स' (सुपा ५६१)। २ विध्वस्त, विनष्ट (राज)। ३ निष्क्रान्त, बाहर निकला हुआ (निचू १६)। देखो वोक्कंत।

वुक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति (राज)।

वुक्कम पु [व्युत्क्रम] १ वृद्धि, बढाव (सूत्र २, ३, १)। २ उत्पत्ति (सूत्र २, ३, १, २, ३, १७)।

वुक्कस सक [व्युत् + कृष्] पीछे खींचना, वापस लौटाना। वुक्कसाहि (आचा २, ३, १, ६)।

वुक्कार देखो वुक्कार (सण)।

वुक्कार सक [दे वूत्कारय्] गर्जन करना। वुक्कारेंति (राय १०१)।

वुक्कारिय न [दे वूत्कारित] गर्जना (स ५४८)।

वुग्गह पु [व्युद्ग्रह] १ कलह, झगड़ा, विग्रह, लड़ाई (ठा ५, १—पत्र ३००, वव १, पव २६८)। २ धाड, डाका (उप पृ २४५)। ३ बहकाव (सबोध ५२)। ४ मिथ्याभिनिवेश, कदाग्रह (राज)।

वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्राहिक] कलह-कारक, 'नय वुग्गहिअं कहं कहिज्जा' (दस १०, १०)।

वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्रहिक] कलह संबन्धी (दस १०, १०)।

वुग्गाह सक [व्युद् + ग्राहय्] बहकाना, भ्रान्त-चित्त करना। वुग्गाहेमो (महा)। वकृ. वुग्गाहेमाण (णाया १, १२—पत्र १७४, औप)।

वुग्गाहणा स्त्री [व्युद्ग्राहणा] बहकाव (ओघभा २५)।

वुग्गाहिअ वि [व्युद्ग्राहित] बहकाया हुआ, भ्रान्तचित्त किया हुआ (कस, चेइय ११७, सिरि १०८१)।

वुच° देखो वय = वच्।

वुचमाण वि [उच्यमान] जो कहा जाता हो वह (सूत्र १, ६, ३१, भग, उप ५३० टी)।

वुचा अ [उक्त्वा] कह कर (सूत्र २, २, ८१, पि ५८७)।

वुच्छ देखो वच्छ = वृक्ष (नाट—मृच्छ १५४)।

वुच्छ° देखो वोच्छ° (कम्म १, १)।

वुच्छ° देखो वोच्छिद।

वुच्छिण्ण देखो वुच्छिन्न (राज)।

वुच्छित्ति देखो वोच्छित्ति (विसे २४०५)।

वुच्छिन्न वि [व्युच्छिन्न, व्यवच्छिन्न] १ अपगत, हटा हुआ। २ विनष्ट (उव)। ३ न. लगातार चौदह दिनों का उपवास (सबोध ५८)।

वुच्छेअ देखो वोच्छेअ (पव २७३, कम्म २, २२, सुपा २५४)।

वुच्छेयण देखो वोच्छेयण (ठा ६—पत्र ३५८)।

वुज्ज अक [त्रस्] डरना। वुज्जइ (प्राप्र)। देखो वोज्ज।

वुज्जण न [दे] स्थगन, आच्छादन, ढकना (धर्मसं १०२१ टी, ११०२)।

वुज्झन्त वि [उह्यमान] पानी के वेग से खींचा जाता, बह जाता (पउम १०२, २८), 'गिरि-निज्झरणाईहिं वुज्झन्ता' (से ८२)। देखो वह = वह।

वुज्झण देखो वुज्झण (धर्मसं १०२१)।

वुज्झमाण देखो वुज्झन्त (पउम ८३, ४)।

वुञ्च (अप) देखो वच्च = व्रज्। वुञ्चइ (हे ४, ३९२, कुमा)। संकृ. वुञ्चेप्पि, वुञ्चेप्पिणु (हे ४, ३९२)।

वुट्ठ अक [व्युत् + स्था] उठना, खड़ा होना। वुट्ठा (पि ३३७)।

वुट्ठ वि [वृष्ट] १ बरसा हुआ (हे १, १३७, विपा २, १—पत्र १०८, कुमा २, ८५)। २ न वृष्टि (दस ८, ६)।

वुट्ठि देखो विट्ठि = वृष्टि (हे १, १३७, कुमा)। °काय पु [°काय] बरसता जल-समूह (भग १४, २—पत्र ६३४, राय)।

वुट्ठिय वि [व्युत्थित] जो उठ कर खड़ा हुआ हो वह (भवि)।

°वुड देखो पुड = पुट, 'जयइ कयजलिवुडा' (पउम ६३, २२)।

वुड्ड अक [वृध्] बढ़ना (संति ३८)। वुड्डंति (सण ४, ८)।

वुड्ड सक [वर्धय्] बढ़ाना। वह वुड्डन्त (द्र २३)।

वुड्ड वि [वृद्ध] १ जरा अवस्थावाला, बूढ़ा (ओघ, सुर ३, १०८, सुपा २२७, सम्मत्त १५८, प्रासू ११६, सण)। २ बड़ा, महान् (कुमा)। ३ वृद्धि प्राप्त। ४ अनुभवी, कुशल, निपुण। ५ पंडित, जानकार (हे १, १३१, २, ४०, ९०)। ६ निभृत, शांत, निर्विकार (ठा ८)। ७ पु तापस, संन्यासी (णाया १, १५—पत्र १९३, अणु २४)। ८ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। °त्त, °त्तण न [°त्व] बुढ़ापा, जरावस्था (सुपा ३६०, २४२)। °वाइ पु [°वादिन्] एक समर्थ जैनाचार्य जो सुप्रसिद्ध कवि सिद्धसेन दिवाकर के गुरु थे (सम्मत्त १४०)। °वाय पु [°वाद] किंवदन्ती, दन्तकथा, जनश्रुति (द २०७)। °सावग पु [°श्रावक] ब्राह्मण (णाया १, १५—पत्र १९३, औप)। °ाणुग वि [°ानुग] वृद्ध का अनुयायी (स ३३)।

वुड्ड वि [दे] विनष्ट (राज)।

वुड्डि स्त्री [वृद्धि] १ बढ़ाव, बढ़ना (आचा, भग, उवा, कुमा, सण)। २ अभ्युदय, उन्नति। ३ समृद्धि संपत्ति। ४ व्याकरण-प्रसिद्ध ऐकार आदि वर्णो की एक संज्ञा (सुपा १०३, हे १, १३१)। ५ समूह। ६ कलान्तर, सूद। ७ ओषधि-विशेष। ८ पु गन्धद्रव्य विशेष (हे १, १३१)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कर्ता (सुर १, १२६, द्र २४)। °वड्ढय वि [°वर्धक] बढ़नेवाला, वर्धन-शील (आचा)। °म वि [°मत्] वृद्धिवाला (विचार ४९७)।

वुणण न [दे] बुनना (सम्मत्त १७३)।

वुणिय वि [दे] बुना हुआ, 'अ वुणिया खट्टा' (कुप्र २२)।

वुण्ण वि [दे] १ भीत, त्रस्त (दे ७, ९४, विपा १, २—पत्र २८)। २ उद्विग्न (दे ७, ९४)।

वुत्त वि [उक्त] कथित (उवा, अनु ३, महा)।

वुत्त वि [उप्त] बोया हुआ (उव)।

वुत्त न [वृत्त] छन्द, कविता, पद्य (पिंग)। देखो वट्ट = वृत्त।

°वुत्त देखो पुत्त (प्रयौ २२)।

वुत्तन्त पु [वृत्तान्त] खबर, समाचार, हकीकत, बात (स्वप्न १५३, प्राप्र, हे १, १३१, स ३५)।

वुत्ति देखो वत्ति = वृत्ति, 'जायामायावुत्तिएणं' (सूअ २, १, ५०, प्राकृ ८)।

वुत्थ वि [उषित] बसा हुआ, रहा हुआ (पाअ, णाया १, ८—पत्र १४८, उप, धण ४३, उप पृ १२७, सुख २, १७, से ११, ८०, कुप्र १८७)।

वुद देखो वुअ = वृत (प्राकृ ८)।

वुदास पु [व्युदास] निरास (विसे ३४७५)।

वुदि देखो वइ = वृति (प्राकृ ८)।

वुद्ध देखो वुड्ड = वृद्ध (षड्)।

वुद्धि देखो वुड्डि (ठा १०—पत्र ५२५, सम ९७, संति ४)।

वुन्न देखो वुण्ण (सुर ६, १२४, सुपा २५०, सणि १०, भवि, कुमा, हे ४, ४२१)।

वुप्पन्त वि [उप्यमान] बोया जाता, 'पेच्छइ य मगहसएहिं वप्पिएहिं करिसगेहिं वुप्पन्त' (श्राक २५, पि ३३७)।

वुप्पाय वि [व्युत् + पादय] व्युत्पन्न करना, होशियार करना। वकृ वुप्पाएमाण (णाया १, १२—पत्र १७४, औप)।

वुप्फ न [दे] शेखर, शिर-स्थित (दे ७, ७४)।

वुब्भ° देखो वह = वह्।

वुब्भमाण देखो वुज्झमाण (कुप्र २२३)।

°वुर देखो पुर (अच्चु १६)।

°वुरिस देखो पुरिस = पुरुष (अउम ६५, ६५)।

वुल्लाह पु [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

वुसह देखो वसभ (चारु ७, गा ४६०, ८२०, नाट—मृच्छ १०)।

वुसि स्त्री [वृषि] मुनि का आसन। °राइ, राइअ वि [°राजिन्] संयमी, जितेन्द्रिय, त्यागी, साधु (निचू १६)। देखो वुसि, वुसी।

वुसि वि [वृषिन्] संविग्न, साधु, संयमी, मुनि, 'वुसि सविग्गो भणिओ' (निचू १६)।

वुसिम वि [वश्य] वश में आनेवाला, अधीन होनेवाला, 'निस्सारिय वुसिम मन्नमाणा' (निचू १६)।

वुसी स्त्री [वृषी] मुनि का आसन। °म वि [°मत्] संयमी, साधु, मुनि 'एवं धम्म वुसीमओ' (सूअ १, ८, १९, १, ११, १५, १, १५, ४, उत्त ५, १८, सुज ५, १८)। देखो वुसि।

वुस्सग्ग देखो विओसग्ग, 'सच्चित्ताण पुप्फाइयाण दव्वाण कुणइ वुस्सग्ग' (उत्त १४२, संबोध ५१, ५२)।

वूढ देखो वुड्ढ = वृद्ध (सुपा ५१०, ५२०)।

वूढ वि [व्यूढ] १ धारण किया हुआ, 'सीआपरिसट्टेण व वूढो तेणावि णिरंतरं रोमंचो' (से १, ४२, धण २०, विचार २२९, णंदि ५२)। २ ढोया हुआ, 'मुणिवूढो सील-भरो विसयपसत्ता तरंति ना वोढुं' (प्रति १७, स १६२)। ३ बहा हुआ, वेग में खिंचा

गया (भत्त १२२)। ४ उपचित, पुष्ट (से ६, ५०)। ५ नि सृत, निकला हुआ,
'जम्मुहमहद्दहाओ दुवालसंगी महानई वूढा। ते गणहरकुलगिरिणो सव्वे वंदामि भावेण' (चेइय ४)।

वूणक पुन [दे] बालक बच्चा (राज)।

वूय वि [दे] बुना हुआ, 'ज न तयट्ठा वूय नय किणियं नेय गहियमन्नेहिं' (सुपा ६४३)। देखो वुअ = (दे)।

वूह पुन [व्यूह] १ युद्ध के लिए की जाती सैन्य की रचना विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ४४, ओप, स ६०३, कुमा)। २ समूह (सम १०६, कुप्र ५६)।

वे देखो वइ = वे (प्राकृ ८०, राज)।

वे अक [वि + इ] नष्ट होना। वेइ (विसे १७६४)।

वे } सक [व्ये] संवरण करना। वेइ,
वेअ } वेअइ, वेअए (षड्)।

वेअ सक [वेदय्] १ अनुभव करना, भोगना। २ जानना। वेअइ, वेएइ, वेएति (सम्यक्त्वो ६, भग)। वकृ. वेअंत, वेयमाण, वेयमाण (सम्यक्त्वो ५, पउम ७५, ४५, सुपा २४३, णाया १, १—पत्र ८६, ओप, पंच ५, १३२, सुपा ३६८)। कवकृ वेइज्जमाण (भग, पण्ह १, ३—पत्र ५५)। संकृ वेयइत्ता (सूअ १, ६, २७)। कृ. वेय, वेअव्व, वेइयव्व (ठा २, १—पत्र ४७, रयण २४, सुख ६, १, सुपा ६१४, महा)। देखो वेअ = (वेद्य), वेअणिज्ज, वेअणिय।

वेअ अक [वि + एज्] विशेष काँपना। वेयइ (णंदि ८२ टी)। वकृ. वेयंत (ठा ७—पत्र ३८३)।

वेअ अक [वेप्] काँपना। वकृ वेअमाण (गा ३१२ अ)।

वेअ पु [वेद] १ शास्त्र-विशेष, ऋग्वेद आदि ग्रंथ (विपा १, ५ टी—पत्र ६०, पाअ, उव)। २ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म का एक भेद, जिसके उदय से मैथुन की इच्छा होती है (कम्म १, २२, उप पृ ३५३)। ३ आचारांग आदि जैन ग्रन्थ (आचा १, ३, १, २)। ४ विज्ञ, जानकार (भग)। °व वि [°वत्] वेदों का जानकार (आचा १, ३, १, २)। °वि, °विउ वि [°विद्] वही अर्थ (पि ४१३, आ २३)। °वत्त न [°व्यक्त] चैत्य-विशेष (आचा २, १५, ३५)। °ावत्त न [°ावर्त] देखो °वत्त (आचा २, १५, ५)।

वेअ न [वेद्य] कर्म-विशेष, सुख तथा दुःख का कारण भूत कर्म (कम्म १ ३)।

वेअ पुं [वेग] शीघ्र गति, दौड़, तेजी (पाअ, से ५, ४३, कुमा महा, पउम ६३, ३६)। २ प्रवाह। ३ रेतस्। ४ मूत्र आदि निःसारण-यन्त्र। ५ संस्कार-विशेष (प्राकृ ४१)। देखो वेग।

वेअंत पु [वेदान्त] दर्शन विशेष, उपनिषद् का विचार करनेवाला दर्शन (अच्चु १)।

वेअग वि [वेदक] १ भोगनेवाला, अनुभव करनेवाला (सम्यक्त्वो १२, सबोध ३३, श्रावक ३०६)। २ न सम्यक्त्व का एक भेद (कम्म ३, १६)। ३ वि सम्यक्त्व-विशेष वाला जीव (कम्म ४, १३, २२)। °छिहिय त्रि [छिन्नवेदक] जिसका पुरुष चिह्न आदि काटा गया हो वह (सूअ २, २, ६३)।

वेअच्छ न [वैकक्ष] १ उत्तरासंग, छाती में यज्ञोपवीत की तरह पहना जाता वस्त्र, माला आदि। २ बन्ध विशेष, मर्कट-बन्ध। ३ कन्धे के नीचे लटकना (णाया १, ८—पत्र १३३)।

वेअड सक [खच्] जड़ना। वेअडइ (हे ४, ८६, षड्)।

वेअडिअ वि [खचित] जड़ा हुआ, जड़ाऊ (कुमा, पाअ, भवि)।

वेअडिअ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७)।

वेअडिअ पुं [दे वैकटिक] मोती वेधनेवाला शिल्पी, जौहरी (कप्पू)।

वेअड्डि देखो विअड्डि (ओप)।

वेअड्ढ न [दे] भल्लातक, भिलावा (दे ७, ६६)।

वेअड्ढ पु [वैताढ्य] पर्वत-विशेष (सुर ६, १७, सुपा ६२६, महा, भवि)।

वेअड्ढ न [वैदग्ध्य] विदग्धता, विचक्षणता (सुपा ६२६)।

वेअण न [वेतन] मजूरी का मूल्य, तनखाह (पाअ, विपा १ ३—पत्र ४२, उप पृ ३६८)।

वेअण न [वेपन] १ कम्प, काँपना (चेइय ४३५, नाट—उत्तर ६१)। २ त्रि काँपनेवाला (चेइय ४३५)।

वेअण न [वेदन] अनुभव, भोग (आचा, कम्म २, १३)।

वेअणा देखो विअणा (उवा, हे १, १४६, प्रासू १०४, १३३, १७४)।

वेअणिज्ज } त्रि [वेदनीय] १ भोगने योग्य।
वेअणिय } २ न. कर्म-विशेष, सुख-दुःख आदि का कारण-भूत कर्म (आउ, ठा २, ४, कप्प, कम्म १, १२)।

वेअय देखो वेअग (विसे ५२८)।

वेअरणी स्त्री [वैतरणी] १ नरक नदी (कुप्र ४३२, उव)। २ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो वैतरणी की विकुर्वणा करके उसमें नरक-जीवों को डालता है (सम २६)। ३ विद्या-विशेष (आवम)।

वेअल्ल देखो वेइल्ल = विचकिल, 'वेयल्लफुल्लनियरच्छलेण हसइव्व गिम्हरिऊ' (धर्मवि २०)।

वेअल्ल वि [दे] १ मृदु, कोमल (दे ७, ७५)। २ न. असामर्थ्य (दे ७, ७५, पाअ)।

वेअल्ल न [वैकल्य] विकलता, व्याकुलता (गउड)।

वेअव्व देखो वेअ = वेदय्।

वेअस पु [वेतस] वृक्ष-विशेष, वेत का पेड़ (हे १, २०७, षड्, गा ६४५)।

वेआगरण वि [वैयाकरण] व्याकरण-संबंधी, संदेह-निराकरण से सम्बन्ध रखनेवाला (पचभा)।

वेआर सक [दे] ठगना, प्रतारणा करना। वेयारइ (भवि)। कर्म. वेआरिज्जसि (गा ६०६)। हेकृ वेआरिउ (गा २८६, वज्जा ११८)।

वेआरणिय वि [वैदारणिक] विदारण-सम्बन्धी, विदारण से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिअ वि [दे] प्रतारण-सम्बन्धी, ठगने से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।
वेआरणिय वि [वैचारणिक] विचार-संबंधी (ठा २, १—पत्र ४०)।
वेआरिअ वि [दे] १ प्रतारित, ठगा हुआ (दे ७, ६४, पउम १८, ८६, सुपा १५२)। २ पुं केश, बाल (दे ७, ६४)।
वेआल पुं [वेताल] १ भूत-विशेष, विद्धन पिशाच, प्रेत (पण्ह १, ३—पत्र ४६, गउड, महा, पिंग)। २ छन्द विशेष (पिंग)।
वेआल वि [दे] १ अन्धा। २ पुं अन्धकार (दे ७, ९५)।
वेआलग वि [विदारक] विदारण-कर्ता (सूअनि ३६)।
वेआलण न [विदारण] फाड़ना, चीरना (सूअनि ३६)।
वेआलि पुं [वैतालिन्] बन्दी, स्तुति पाठक (उप ७२८ टी)।
वेआलिअ देखो वइआलिअ (पाअ, हे १, १५२, चेइय ७४६)।
वेआलिय वि [वैक्रिय] विक्रिया से उत्पन्न (सूअ १, ५, २, १७)।
वेआलिय वि [वैकालिक] विकाल-सम्बन्धी, अपराह्न में बना हुआ (दसनि १,६, १५)।
वेआलिय न [विदारक] विदारण-क्रिया (सूअनि ३६)।
वेआलिय देखो वइआलीअ (सूअनि ३८)।
वेआलिया स्त्री [वैतालिकी] वीणा विशेष (जीव ३)।
वेआली स्त्री [वेताली] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से अचेतन काष्ठ भी उठ खडा होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है (सूअ २, २, २७)। २ नगरी विशेष (णाया १, १६—पत्र २१०)।
वेइ स्त्री [वेदि] परिष्कृत भूमि विशेष, चौतरा (कुमा, महा)।
वेइ वि [वेदक] १ जाननेवाला (चेइय १२६, गउड)। २ अनुभव करनेवाला (पच ५, ११६)।
वेइअ वि [वेदित] १ अनुभूत (भग)। २ ज्ञात, जाना हुआ (ठा ८, १, पउम ६६, ३)।
वेइअ देखो वेविअ = वेपित (गा ३६२ अ)।
वेइअ वि [वैदिक] १ वेदाश्रित, वेद-संबन्धी (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार (दसनि ८, ३५)।
वेइअ वि [वेगित] वेलावाला, वेग-युक्त (णाया १, १—पत्र २६)।
वेइअ वि [व्येजित] १ कम्पित, काँपा हुआ (भग १, १ टी—पत्र १८)। २ कँपाया हुआ (राय ७४)।
वेइआ स्त्री [दे] पनीहारी, पानी ढोनेवाली स्त्री (दे ७, ७६)।
वेइआ स्त्री [वेदिका] १ परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (भग, कुमा, महा)। २ अंगुलि-मुद्रा, अंगूठी (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्जनीय प्रतिलेखन का एक भेद, प्रत्युपेक्षणा का एक दोष (उत्त २६, २६, सुख २६, २६, ओघभा १६३)।
वेइज्ज अक [वि + एज्] काँपना। वकृ वेइज्जमाण (भग १, १ टी—पत्र १८)।
वेइज्जमाण देखो वेअ = वेदय्।
वेइड्ढ वि [दे] १ ऊँचा किया हुआ। २ विसस्थुल। ३ आविद्ध। ४ शिथिल (दे ७, ९५)।
वेइल्ल देखो विअइल्ल (हे १, १६६, २, ९८, कुमा)।
वेउंठ देखो वेकुंठ (गउड)।
वेउट्टिया स्त्री [दे] पुन: पुन:, फिर-फिर (कप्प)।
वेउव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व्। सकृ वेउव्विऊण (सुपा ४२)।
वेउव्व वि [वैक्रिय] १ विकृत, विकार-प्राप्त (विसे २५७९ टी)। २ देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, १६)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] शक्ति-विशेष, वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पउम ७०, २६)।
वेउव्वि देखो विउव्वि (पण्ह २, १—पत्र ६६, तप्प, ओघ, ओघभा ५७)।
वेउव्विअ देखो विउव्विअ = विकृत, विकुर्वित, 'वेउव्विय अनुदत्तमान अइचिक्कण ताणेण' (स ७६२, सुपा ८७)।
वेउव्विअ वि [वैक्रिय, वैक्रियिक, वैकुर्विक] १ शरीर-विशेष, अनेक रूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर (सम १४१, भग, द ८)। २ वैक्रिय शरीर बनाने की शक्तिवाला (सम १०३, पव—गाथा ६)। ३ विकुर्वणा से बनाया हुआ, 'विक्कगिरिसमीवगय एय वेउव्विय च मह भवण' (सुपा १७८)। ४ वैक्रिय शरीरवाला (विसे ३७५)। ५ वैक्रिय शरीर से सबन्ध रखनेवाला (भग)। ६ विभूषित (भग १८, ५—पत्र ७४६)। °लद्धिअ वि [°लब्धिक] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने की शक्तिवाला (भग)। °समुग्घाय पुं [°समुद्घात] वैक्रिय शरीर बनाने के लिए आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालना (ग्रत)।
वेउव्विया स्त्री [दे] पुन:-पुन:, फिर-फिर (कप्प)।
वेंकड पुं [वेङ्कट] दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (अच्चु १)। °णाह पुं [°नाथ] विष्णु की वेंकटाद्रि पर स्थित मूर्ति (अच्चु १)।
वेंगी स्त्री [दे] वृतिवाली, बाडवाली (दे ७, ४३)।
वेंजण देखो वंजण (प्राकृ ३१)।
वेंट देखो विंट = वृन्त (गा ३५६, हे १, १३९, २, ३१, कुमा, प्राकृ ४)।
वेंटल देखो विंटल (ओघ ४२४)।
वेंटली देखो विंटलिआ, 'तओ तेण तस्स (करिणो) पुरओ वेंटलीकाऊण पक्खित्त-मुत्तरीय' (महा)।
वेंटिआ देखो विंटिया (ओघ २०३, ओघभा ७९, उप १४२ टी, धव १)।
वेंड पुं [वेतण्ड] हाथी, हस्ती (प्राकृ ३०)। देखो वेयंड।
वेंढसुरा स्त्री [दे] कलुष मदिरा (दे ७, ७८)।
वेंढि पुं [दे] पशु (दे ७, ७४)।
वेंढिअ वि [दे] वेष्टित, लपेटा हुआ (दे ७, ७६, महा)।
वेंभल देखो विंभल (पण्ह १, ३—पत्र ४५, पउम ५, १९२)।
वेकच्छ देखो वेअच्छ, 'वकच्छउत्तरीआ' (कुमा)।
वेकच्छिया, वेकच्छा } देखो वेगच्छिया (ओघभा ३१८, ओघ ६७७)।
वेकिल्लिअ न [दे] रोमन्थ, चबी हुई चीज को फिर से चबाना (दे ७, ८२)।

वेकुंठ पु [वैकुण्ठ] १ विष्णु, नारायण। २ इन्द्र, देवाधीश। ३ गरुड पक्षी। ४ अर्जक वृक्ष, सफेद बबँरी का गाछ। ५ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (हे १, १९९)। ६ पुन. मथुरा का एक वैष्णव तीर्थ (ती ७)।

वेग देखो वेअ = वेग (उवा, कप्प, कुमा)। °वई स्त्री [°वती] एक नदी का नाम (ती १५)। °वत वि [°वत्] वेगवाला (सुर २, १६७)।

वेगच्छ देखो वेअच्छ (उवा)।

वेगच्छिया, वेगच्छी स्त्री [वैकक्षिका, °क्षा] कन्धा के पास पहना जाता वस्त्र, उत्तरासंग (पव ६२), 'कयतिलग्रो वेगच्छि आणगवक्षारपणड्व' (सबोध ६)।

वेगड त्रीन [दे] पोत-विशेष, एक तरह का जहाज, 'चउसट्ठी वेगडाए' (सिरि ३८२)।

वेगर पु [दे] द्राक्षा, लोंग आदि से मिश्रित चीनी आदि (उर ५, ६)।

वेगुन्न देखो वइगुण्ण (धर्मस ८८४, सुपा २९०)।

वेग्ग देखो विअग्ग (प्राकृ ३०)।

वेग्ग देखो वेग (भवि)।

वेग्गल वि [दे] दूर-वर्ती, गुजराती मे 'वेगळु' (हे ४, ३७०)।

वेच्चित्त देखो वइचित्त (भास ३०, अज्झ ४६)।

वेच्च देखो विच्च = वि + अय। वेच्चइ (हे ४, ४१९)।

वेच्छ° देखो विअ = विद्।

वेच्छा देखो वगच्छिया। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत की तरह पहनी जाती माकली (भग ९, ३३ टी—४७७, राय)।

वेजयत पुन [वैजयन्त] १ एक अनुत्तर देव-विमान (सम ५६, ओप, अनु)। २-७ जबू-द्वीप, लवण समुद्र, घातकी खण्ड, कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का दक्षिण द्वार (ठा ४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४ २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२९, ३३१, ३४७)। ८-१३ पु जबूद्वीप, लवण समुद्र आदि के दक्षिण द्वारो के अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४, २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२९, ३३१ ३४७)। १४ एक अनुत्तर देवविमान का निवासी देव (सम ५६)। १५ जबू-मन्दर के उत्तर रुचक पर्वत का एक शिखर, विजए य वि(? वे) जयते (ठा ८—पत्र ४३६)। १६ वि प्रधान, श्रेष्ठ (सूअ १, ६, २०)।

वेजयती स्त्री [वैजयन्ती] १ ध्वजा, पताका (सम १३७, सूअ १, ६, २०, सुर १, ७०, कुमा)। २ षष्ठ बलदेव की माता का नाम (सम १५२)। ३ अगारक आदि महाग्रहो की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ पूर्व रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ५ विजय-विशेष की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। ६ एक विद्याधर-नगरी (सुर ५, २०४)। ७ रामचन्द्रजी की एक सभा (पउम ८०, ३)। ८ भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)। ९ उत्तर अजनगिरि की दक्षिण दिशा मे स्थित एक पुष्करिणी (ठा ४, २—पत्र २३०)। १० पक्ष की आठवीं रात्रि का नाम, 'विजया य विजयता (? वेजयती)' (सुज १०, १४)। ११ भगवान् कुन्थुनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)।

वेज्ज वि [वेद्य] भोगने योग्य, अनुभव करने योग्य (सबोध ३३)।

वेज्ज पु [वैद्य] १ चिकित्सक, हकीम (गा २३७, उत्र)। २ वृक्ष-विशेष। ३ वि पण्डित, विद्वान् (हे १, १४८, २, २४)। °सत्थ न [°शास्त्र] चिकित्सा-शास्त्र (स १७)।

वेज्जग, वेज्जय न [वैद्यक] १ चिकित्सा-शास्त्र (ओघ ६२२ टी, स ७११)। २ वैद्य-संबन्धी क्रिया, वैद्य-कर्म (अणु २३४, कुप्र १८१)।

वेज्झ वि [वेध्य] वीधने योग्य (नाट—साहित्य १५८)।

वेट्ठण देखो वेढग (नाट—मालती ११९)।

वेट्ठणग पु [वेष्टनक] १ सिर पर बांधी जाती एक तरह की पगडी। २ कान का एक आभूषण (राज)।

वेट्ठया देखो विट्ठा (सुर १६, १७५)।

वेट्ठि देखो विट्ठि, 'रायवेट्ठि व मन्नता' (उत्त २७, १३, प्राकृ ५)।

वेट्ठिद (शौ) देखो वेढिअ (नाट—मृच्छ ९२)।

वेड [दे] देखो वेड (दे ६, ९५, कुमा)।

वेडइअ पु [दे] वाणिजक, व्यापारी (दे ७, ७८)।

वेडवग देखो विडवग, 'जह वेडवगलिंगे' (सबोध १२)।

वेडस पु [वेतस] वृक्ष-विशेष, वेत का गाछ (पाअ, सम १५२, कप्प)।

वेडिअ पु [दे] मणिकार, जोहरी (दे ७, ७७)।

वेडिकिल्ल वि [दे] सकट, सकरा, कमचोडा (दे ७, ७८)।

वेडिस देखो वेडस (प्राप्र, हे १, ४६, २०७, कुमा, गा ७६०)।

वेडुयक, वेडुवग वि [दे] नृपादि कुल मे उत्पन्न (आव० परि नि० गा० ७६ आव० दीपिका भा० २ पत्र, ७०, २)।

वेडुज्ज, वेडुरिअ देखो वेरुलिअ (हे २, १३३, पाअ, नाट—मृच्छ १३९)।

वेडुल्ल वि [दे] गर्वित, अभिमानी (दे ७, ४१)।

वेड्ढ देखो वेढ = वेष्ट्। वेड्ढइ (प्राप्र)।

वेड्ढय पु [वेष्टक] छन्द-विशेष (अजि ९)।

वेढ सक [वेष्ट्] लपेटना। वेढइ, वढेइ (हे ४, २२१, उवा)। कर्म वेढिज्जइ (हे ४, २२१)। वकृ वेढत, वेढेमाण (पउम ४९, २१, णाया १, ६)। कवकृ वेढिज्ज-माण (सुपा ९४)। सकृ वेढित्ता, वढेत्ता, वेढिउ, वेढेउ (पि ३०४, महा)। प्रयो. वेढावेइ (पि ३०४)।

वेढ पुं [वेष्ट] १ छन्द-विशेष (सम १०६, अणु २३३, णादि २०९)। २ वेष्टन, लपेटन (गा ९६, २२१, से ६, १३)। ३ एक वस्तु-विषयक वाक्य-समूह, वर्णन-ग्रन्थ (णाया १, १६—पत्र २१८, १, १७—पत्र २२८, अनु)।

°वेढ देखो पीढ (गउड)।

वेढण न [वेष्टन] लपेटना (से १, ६०, ६, ४३, १२, ६५, गा ५६३ धम्म ४६७)।

वेढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ (उत्त, पाअ, सुर २, २३८)।

वेढिम वि [वेष्टिम] १ वेष्टन से बना हुआ (पण्ह २, ५—पत्र १५०, णाया १, १३—पत्र १७८, ओप)। २ पुत्री खाद्य विशेष (पएह २, ५—पत्र १४८, राज)।

वेण पु [दे] नदी का विषम घाट (दे ७, ७४)।

वेण (अप) देखो वयण = वचन (हे ४, ३२६)।

वेणइअ न [वैनयिक] १ विनय, नम्रता (ठा ४, २—पत्र ३३१, दस ६, १, १२, नंदि १०६ टी)। २ मिथ्यात्व विशेष, सभी देवा और धर्मो को सत्य मानना (संबोध ५२)। ३ वि विनय संबन्धी (सम १०६, भग)। ४ विनय को ही प्रधान माननेवाला, विनय वादी (सूत्र १, ६, २७)। °वाद पु [°वाद] विनय का ही मुख्य माननेवाला दर्शन (धर्मसं ६६५)।

वेणइगी } स्त्री [वैनयिकी] विनय से प्राप्त वेणइया } होनेवाली बुद्धि (उप पृ ३८०, णाया १, १—पत्र ११)।

वेणइया स्त्री [वैणकिया] लिपि-विशेष (सम ३५, पएण १—पत्र ६२)

वेणा स्त्री [वेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (पव, पडि)।

वेणि स्त्री [वेणी] १ एक प्रकार की केश रचना, बालों की गूंथी हुई चोटी (उवा)। २ जल-प्रवाह (भग)। ३ गंगा और यमुना का संगम-स्थान (राज)। °वच्छराय पु [°वत्सराज] एक राजा (कुप्र ४४०)।

वेणिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७४, पड्)।

वेणी स्त्री [वेणी] देखो वेणि (से १, ३६, गा २७३, कप्पू)।

वेणु पु [वेणु] १ वंश, बांस (पाअ, कुमा, पड्)। २ एक राजा (कुप्र)। ३ वाद्य-विशेष, बंसी (हे १, २०३)। °दालि पु [°दालि] एक इन्द्र, सुपर्णकुमार देवों का उत्तरदिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४, इक)। °देव पु [°देव] १ सुपर्णकुमार-नामक देव जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६७, ७६)। ३ गरुड पक्षी (सूत्र १, ६, २१)। °याणुजाय पु [°कानुजात] गणितशास्त्र-प्रसिद्ध दस योगों में द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र सूर्य और नक्षत्र वंशाकार में अवस्थान करते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

वेणुणास } पु [दे] भ्रमर, भौंरा (दे ७, वेणुसाअ } ७८, पड्)।

वेण्ण वि [दे] आक्रान्त (पड्)।

वेण्णा स्त्री [वेन्ना] नदी-विशेष। °यड न [°तट] नगर-विशेष (पउम ४८, ६३, महा)।

वेण्हु देखो विण्हु (सक्षि ३, प्राकृ ५)।

वेताली स्त्री [दे] १ तट, किनारा, 'जन्न नावा पुव्ववेतालीउ दाहिणवेतालिं जलपहेण गच्छति' (पएण १६—पत्र ४८०)। २ गली (आव० वृ० पत्र ३५५)।

वेत्त न [दे] स्वच्छ वस्त्र (दे ७, ७५)।

वेत्त पु [वेत्र] वृक्ष-विशेष, बेंत का गाछ (पएण १—पत्र ३३, विपा १, ६—पत्र ६६)। °सण न [°सन] बेंत का बना हुआ आसन (पउम ६६, १८)।

वेत्तव्व वि [वेत्तव्य] जानने योग्य (प्राप्र)।

वेत्तिअ पु [वैत्रिक] द्वारपाल, चपरासी (सुपा ७३)।

वेद देखो वेअ = वेदय्। वेदेइ, वेदति, वेदेंति (भग, सूत्र १, ५, ४, ठा २, ४—पत्र १००), वेदेज्ज (धर्मसं १६६)। भूका वेदसु (ठा २, ४, भग)। भवि. वेदिस्सति (ठा २, ४, भग)। वकृ. वेदिज्जमाण (ठा १०—पत्र ४७२)।

वेद देखो वेअ = वेद (पएह १, २—पत्र ४०, धर्मसं ८६२)।

वेदग देखो वेअग (धर्मसं ८६३)।

वेदग } देखो वेअग (पएह १, २—पत्र वेदग } २८, धर्मसं १६६)।

वेदणा देखो विअणा (गा. स्वप्न ८०, नाट—मालवि १४)।

वेदब्भी स्त्री [वैदर्भी] प्रद्युम्न कुमार की एक स्त्री का नाम (अंत १४)।

वेदस (शौ) देखो वेडिस (प्राकृ ८३, नाट शाकु ६८)।

वेदि देखो वेइ = वेदि (पउम ११, ७३)।

वेदग पु [वादक] एक इभ्य मनुष्य-जाति,

'अवट्ठा य कलदा य
वेदेहा वेदिगातिता (? इया)।
हरिता चुंचुणा चेव
छप्पेता इब्भजाइओ।।'
(ठा ६—पत्र ३५८)।

वेदिय देखो वेइअ = वेदित (भग)।

वेदिस न [वैदिश] विदिशा की तरफ का नगर (अणु १४६)।

वेदुलिय देखो वेरुलिअ (चंड)।

वेदूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५)।

वेदेसिय देखो वइदेसिअ (राज)।

वेदेह पु [वेदेह] एक इभ्य मनुष्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)। देखो वइदेह।

वेदेहि पु [विदेहिन्] विदेह देश का राजा (उत्त ६, ६२)।

वेधम्म देखो वइधम्म (धर्मसं १८५)।

वेधव्व देखो वेहव्व (मोह ६६)।

वेन्ना देखो वेण्णा (उप पृ ११५)।

वेप्प वि [दे] भूत आदि से गृहीत, पागल (दे ७, ७४)।

वेप्पुअ न [दे] १ शिशुपन, बचपन। २ वि. भूत गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ७६)।

वेफल्ल न [वैफल्य] निष्फलता (विसे ४१६, धर्मसं २२, अज्झ १३३)।

वेब्भल वि [विह्वल] व्याकुल (प्राप्र)।

वेब्भार } पु [वैभार] पर्वत विशेष, राजगृही वेभार } के समीप का एक पहाड़ (णाया १, ५—पत्र ३३, मिरि ४)।

वेम देखो वेमय। वेमए (प्राकृ ७४)।

वेम पु [वेमन्] तन्तुवाय का एक उपकरण (निसे २१००)।

वेमइअ वि [भग्न] भागा हुआ (कुमा ६, ६८)।

वेमणस्स न [वैमनस्य] १ मनमुटाव, भीतरी द्वेष (उव)। २ दैन्य, दीनता (पएह १, १—पत्र ५)।

वेमय सक [भञ्ज्] भांगना, तोड़ना। वेमयइ (हे ४, १०६, षड्)।

वेमाउअ } वि [वैमातृक] विमाता की वेमाउग } सन्तान (सम्मत्त १७१, मोह ८८)।

वेमाणि पत्री [विमानिन्] विमान-वासी देवता एक उत्तम देव जाति (दं २)। स्त्री °णिणी (पराण १७—पत्र ५००, पचा २, १८)।

वेमाणिअ पु [वैमानिक] एक उत्तम देव-जाति, विमानवासी देवता (भग, ओप, पराह १, ४—पत्र ६३, जी २४)।

वेमाया स्त्री [विमात्रा] अनियत परिमाण (भग १, १० टी)।

वेम्मि क्रि [ब्रवीमि] मैं कहता हूँ (चड)।

वेयड पु [वेतण्ड] हस्ती, हाथी (स ६३०, ७३५)। देखो वेड।

वेयावच्च } न [वैयावृत्त्य, वैयापृत्य] वेयावडिय } सेवा, शुश्रूषा (उव, कस, णाया १, ५, ओप, ओवमा ३२१, आचा णाया १, १—पत्र ७५, धर्मसं ६६५, श्रु ५३)।

वेर न [वैर] दुश्मनाई, शत्रुता (दे १, १५२, अंत १२, प्रासू १२३)।

वेर न [द्वार] दरवाजा (षड्)।

वेरग्ग न [वैराग्य] विरागता, उदासीनता (उव, रयण ३०, सुपा १७३, प्रासू ११६)।

वेरग्गिअ वि [वैराग्यिक] वैराग्य-युक्त, विरागी (उव, स १३५)।

वेरज्ज न [वैराज्य] १ वैरि-राज्य, विरुद्ध राज्य (सुख २, ३५, कस)। २ जहाँ पर राजा विद्यमान न हो वह राज्य। ३ जहाँ पर प्रधान आदि राजा से विरक्त रहते हों वह राज्य (कस, बृह १)।

वेरत्तिय वि [वैरात्रिक] रात्रि के तृतीय पहर का समय (उत्त २६, २०, ओघ ६६२)।

वेरमण न [विरमण] विराम, निवृत्ति (सम १०, भग, उवा)।

वेराड पु [वैराट] भारतीय देश-विशेष, अल-वर तथा उसके चारों ओर का प्रदेश (भवि)।

वेराय (अप) पु [विराग] वैराग्य, उदासीनता (भवि)।

वेरि } देखो वइरि (गउड, कुमा, पि वेरिअ } ६१)।

वेरिज्ज वि [दे] १ असहाय, एकाकी। २ न. सहायता, मदद (दे ७, ७६)।

वेरुलिअ पुन [वैडूर्य] १ रत्न की एक जाति, 'सुचिर पि अच्छमाणो वेरुलिओ कायमणीअ उम्मीसो' (प्रासू ३२, पाअ), 'वेरुलिअं' (हे २, १३३, कुमा)। २ विमानावास-विशेष (देवेन्द्र १३२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। ४ महा-हिमवत पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०, ठा ८—पत्र ४३६)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ वि. वडूर्य रत्नवाला (जीव ३, ४, राय)। °मय वि [°मय] वैडूर्य रत्नों का बना हुआ (पि ७०)।

वेरोयण देखो वइरोअण = वैरोचन (णाया २, १—पत्र २४७)।

वेल न [दे] दन्त-मांस, दांत के मूल का मांस (दे ७, ७४)।

वेलंधर पु [वेलन्धर] एक देव-जाति, नाग-राज-विशेष (सम ३३)। २ पर्वत-विशेष। ३ न नगर-विशेष (पउम ५४, ३६)।

वेलंधर पु [वैलन्धर] वेलन्धर सबन्धी (पउम ५५, १७)।

वेलंब पु [वेलम्ब] १ वायुकुमार नामक देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, इक)। २ पाताल-कलश का अधिष्ठाता देव-विशेष (ठा ४, १—पत्र १९८, ४, २—पत्र २२६)।

वेलंब पु [दे विडम्ब] १ विडम्बना (दे ७, ७५, गउड)। २ वि. विडम्बना कारक (पराह २, २—पत्र ११४)।

वेलंबग पु [विडम्बक] १ विदूषक, मसखरा (ओप, णाया १, १ टी—पत्र २, कप्प)। २ वि. विडम्बना करनेवाला (पुप्फ २२६)।

वेलक्ख न [वैलक्ष्य] लज्जा, शरम (गउड)।

वेलणय न [दे व्रीडनक] १ लज्जा, शरम (दे ७, ६५ टी) २ पु साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, लज्जा-जनक वस्तु के दर्शन आदि से उत्पन्न होनेवाला एक रस (अणु १३५)।

वेलव सक [उपा + लभ्] १ उपालम्भ देना, उलाहना देना। २ कँपाना। ३ व्याकुल करना। ४ व्यावृत्त करना, हटाना। वेलवइ (हे ४, १५६, षड्)। वकृ. वेलवंत (से २, ८)। कवकृ वेलविज्जंत (से १०, ६८)। कृ वेलवणिज्ज (कुमा)।

वेलव सक [वञ्च्] १ ठगना २ पीडा करना। वेलवइ (हे ४, ९३)। कर्म वेल-विज्जति (सुपा ४८२, गउड)।

वेलविअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित, ठगा हुआ (पाअ, वज्जा १५२, विवे ७७, वे २६)। २ पीडित हैरान किया हुआ (खा ११)।

वेला स्त्री [दे] दन्त मांस, दांत के मूल का मांस (दे ७, ७४)।

वेला स्त्री [वेला] १ समय, अवसर, काल (पाअ, कप्पू)। २ ज्वार, समुद्र के पानी की वृद्धि (पराह १, ३—पत्र ५५)। ३ समुद्र का किनारा (से १, ६२, ओप, गउड)। ४ मर्यादा (सूअ १, ६, २९)। ५ वार, दफा (पंचा १२, २९)। °उल न [°कुल] बन्दर, जहाजों के ठहरने का स्थान (सुर १३, ३०, उप ५९७ टी)। °वासि पुं [°वासिन्] समुद्र-तट के समीप रहनेवाला वानप्रस्थ (ओप)।

वेलाइअ वि [दे] मृदु, कोमल। २ दीन, गरीब (दे ७, ९६)।

वेलाव (अप) सक [वि + लम्बय्] देरी करना, विलम्ब करना। वेलावसि (पिंग)।

वेलिल्ल वि [वेलावत्] वेला-युक्त (कुमा)।

वेली स्त्री [दे] १ लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३४)। २ घर के चार कोणों मे रखा जाता छोटा स्तम्भ (पव १३३)।

वेलु देखो वेणु (हे १, ४, २०३)।

वेलु पु [दे] १ चोर, तस्कर। २ मुसल (दे ७, ९४)।

वेलुंक वि [दे] विरूप, खराब, कुत्सित (दे ७, ६३)।

वेलुग } पुन [वेणुक] १ वेल का गाछ। २ वेलुय } वेल का फल (आचा २, १, ८, १४)। ३ वंश, वांस, 'वेलुयाणि तणाणि य' (पराण १—पत्र ४३, पि २४३)। ४

वाक्करिला, वनस्पति-विशेष (दस ५, २, २०)।

वेलुरिअ } देखो वेरुलिअ (प्राप्र; पि २४१; वेलुलिअ } दे ७, ७७)।

वेलूणा स्त्री [दे] लज्जा, लाज (दे ७, ६५)।

वेल्ल अक [वेल्ल्] १ कांपना। २ लेटना। ३ सक कँपाना। ४ प्रेरना। वेल्लइ (पि १०७)। वेल्लंति (गउड)। वकृ वेल्लंत, वेल्लमाण (गउड; हे १, ६६; पि १०७)।

वेल्ल अक [रम्] क्रीडा करना। वेल्लइ (हे ४, १६८)। कृ वेल्लणिज्ज (कुमा ७, १४)।

वेल्ल पु [दे] १ केश, बाल। २ पल्लव। ३ विलास (दे ७, ९४)। ४ मदन वेदना, काम-पीडा। ५ त्रि अविदग्ध, मूर्ख (सिरि ४७)। ६ न देखो वेल्लग (सुपा ७७६)।

वेल्लइअ देखो वेल्लाइअ (पड्)।

वेल्लग न [दे] १ एक तरह की गाडी, जो ऊपर से ढकी हुई होती है, गुजराती में 'वेल'। २ गाडी के ऊपर का तला (श्रा १२)।

वेल्लण न [वेल्लन] प्रेरणा (गउड)।

वेल्लय देखो वेल्लग (सुपा २८१, २८२)।

वेल्लरिअ पुं [दे] केश, बाल (पड्)।

वेल्लरिआ स्त्री [दे] वल्ली, लता (पड्)।

वेल्लरी स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना (दे ७, ७६; पड्)।

वेल्लविअ देखो वेल्लिअ (से १, २६)।

वेल्लाइअ वि [दे] विलसित, पीता हुआ (स १, २६)।

वेल्लहल } वि [दे] १ कोमल, मृदु (दे ७, वेल्लहल्ल } ९६; पड्; गउड; सुपा ५६२; स ७०४)। २ विलासी (दे ७, ९६; पउ; सुपा ५२)। ३ सुन्दर (गा ५९८)।

वेल्ली स्त्री [दे वल्ली] लता, वल्ली (दे ७, ९४)।

वेल्लुलिअ वि [दे] कुञ्चित, सकुचा हुआ (दे ७, ७६)।

वेल्लि देखो वल्लि (उप; कुमा)।

वेल्लिअ वि [वेल्लित] १ कँपाया हुआ (से ७, ४०)। २ प्रेरित (से ?, ६५)।

वेल्लिर वि [वेल्लितृ] कांपनेवाला (गउड)।

वेल्ली देखो वल्लि (गा ८८२, गउड)।

वेव अक [वेप्] कांपना। वेवइ (हे ४, १४७; कुमा, पड)। वकृ वेवंत, वेवमाण (रंभा; कप्प; कुमा)।

वेवज्झ न [विवाह्य] विवाह, शादी (राज)।

वेवण्ण न [वैवर्ण्य] फीकापन (कुमा)।

वेवय पुन [वेपक] रोग-विशेष, कम्प (आचा)।

वेवाडअ वि [दे] उल्लसित, उल्लास-प्राप्त (दे ७, ७९)।

वेवाहिअ त्रि [वैवाहिक] सम्बन्धी, विवाह-संबन्धवाला (सुपा ४९६; कुप्र १७७)।

वेविअ त्रि [वेपित] १ कम्पित (गा ३९२; पाप्र)। २ पु एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

वेविर त्रि [वेपितृ] कांपनेवाला (कुमा; हे २, १४५; ३, १३५)।

वेव्व अ [दे] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (हे २, १९४; कुमा)।

वेव्व अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ भय, डर। २ वारण, रुकावट। ३ विषाद, खेद। ४ आमन्त्रण (हे २, १९३; १९४; कुमा)।

वेस पु [वेष] शरीर पर वस्त्र आदि की सजावट (कप्प; स्वप्न ५२; सुपा ३८६; ३८७; गउड; कुमा)।

वेस वि [त्र्येष्य] विशेष रूप से वाञ्छनीय (वव ३)।

वेस पु [वेष] १ विरोध, वैर। २ घृणा, अप्रीति (गउड; भवि)।

वेस त्रि [वैष्य] वेषोचित, वेष के योग्य (भग २, ५—पत्र १३७; सुज्ज २०—पत्र २९१)।

वेस त्रि [द्वेष्य] १ द्वेष करने योग्य, अप्रीतिकर (पउम ८८, १६; गा १२६; सुर २, २०८; दे १, ४१)। २ विरोधी, शत्रु, दुश्मन (सुपा १५२; उप ७६८ टी)।

वेस देखो वइस्स = वैश्य (भवि)।

वेसइअ त्रि [वैषयिक] विषय से संबन्ध रखनेवाला (पि ६१)।

वेसपायण देखो वइसंपायण (हे १, १५२; पड्)।

वेसंभ पु [विश्रम्भ] विश्वास (पउम २८, ५४)।

वेसभरा स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली (दे ७, ७७)।

वेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यता, विरोध, दुश्मनाई (दे ७, ७९)।

वेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७५)।

वेसण न [वेषण] जीरा आदि मसाला (पिंड ५४)।

वेसण न [वेसन] चना आदि द्विदल—दाल का आटा, वेसन (पिंड २५६)।

वेसमण पु [वैश्रमण] १ यक्षराज, कुबेर (पाप्र; णाया १, १—पत्र ३९; सुपा १२८)। २ इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकपाल (सम ८६; भग ३, ७—पत्र १९९)। ३ एक विद्याधर नरेश (पउम ७, ६९)। ४ एक राजकुमार (विपा २, ०)। ५ एक शेठ का नाम (सुपा १२८, ६२७)। ६ अहोरात्र का चोदहवां मुहूर्त (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। ७ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)। ८ क्षुद्र हिमवान् आदि पर्वतों के शिखरों का नाम (ठा २, ३—पत्र ७०; ८०; ८—पत्र ४३६; ९—पत्र ४५४)। °काइय पुं [°कायिक] वैश्रमण की आज्ञा में रहनेवाली एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र १९९)। °दत्त पु [°दत्त] एक राजा का नाम (विपा १, ९—पत्र ८८)। °देवकाइय पु [°देवकायिक] वैश्रमण के अधीनस्थ एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र १९९)। °प्पभ पु [°प्रभ] वैश्रमण के उत्पात-पर्वत का नाम (ठा १०—पत्र ४८२)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (विपा २, ३)।

वेसम्म न [वैषम्य] विषमता, असमानता (अज्झ ५; पत्र २१६ टी)।

वेसर पुस्त्री [वेसर] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ अश्वतर, खच्चर। स्त्री °री (सुर ८, १९)।

वेसलग पुं [वृषल] शूद्र, अधम-जातीय मनुष्य (सूअ २, २, ५४)।
वेसवण पु [वैश्रवण] देखो वेसमण (हे १, १५२, चड, देवेन्द्र २७०)।
वेसवाडिय पु [वेशवाटिक] एक जैन मुनि-गण (कप्प)।
वेसवार पु [वेसवार] धनिया आदि मसाला (कुप्र ६८)।
वेसा देखो वेस्सा (कुमा, सुर ३, ११६, सुपा २३५)।
वेसाणिय पु [वैषाणिक] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप विशेष मे रहनेवाली मनुष्य जाति (ठा ४, २—पत्र २२५)।
वेसानर देखो वइसानर (सट्ठि ६ टी)।
वेसायण देखो वेसियायण (राज)।
वेसालिअ वि [वैशालिक] १ समुद्र मे उत्पन्न। २ विशालाख्य जाति मे उत्पन्न। ३ विशाल, बडा, विस्तीर्ण, 'मच्छा वेसालिया चेव' (सूअ १, १, ३, २)। ४ पु. भगवान् ऋषभदेव (सूअ १, २, ३, २२)। ५ भगवान् महावीर (सूअ १, २, ३, २२, भग)।
वेसाली स्त्री [वैशाली] एक नगरी का नाम (कप्प, ३३०)।
वेसास देखो वीसास, 'को किर वेसासु वेसासो' (वमवि ६५)।
वेसासिअ वि [वैश्वासिक, विश्वास्य] विश्वास-योग्य, विश्वसनीय, विश्वास-पात्र (ठा ५, ३—पत्र ३४२, विपा १, १—पत्र १५, कप्प, ओप, तदु ३५)।
वेसाह देखो वइसाह (पाअ, वव १)।
वेसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा। २ वैशाख मास की अमावस (इक)।
वेसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करनेवाला (पउम ८, १८७, सुर ६, ११५)।
वेसिअ देखो वइसिअ (दे १, १५२)।
वेसिअ पुस्त्री [वैशिक] १ वैश्य, वणिक् (सूअ १, ६, २)। २ न जैनेतर शास्त्र-विशेष, काम शास्त्र (अणु ३६, राज)।
वेसिअ वि [वैषिक] वेष-प्राप्त, वेष-सवन्धी (सूअ २, १, ५६, आचा २, १, ४, ३)।
वेसिअ वि [व्येषित] १ विशेष रूप से अभिलषित। २ विविध प्रकार से अभिलषित (भग ७, १—पत्र २६३)।
वेसिट्ठ देखो वइसिट्ठ (धर्मसं २७१)।
वेसिणी स्त्री [दे] वेश्या, गणिका (गा ४७४)।
वेसिया देखो वेस्सा, 'कामासत्तो न मुणइ गम्मागम्मपि वेसियाणुव्व' (भत्त ११३, ठा ४, ४—पत्र २७१)।
वेसियायण पु [वैश्यायन] एक बाल तापस (भग १५—पत्र ६६५, ६६६)।
वेसी स्त्री [वैश्या] वैश्य जाति की स्त्री (सुख ३, ४)।
वेसुम पु [वेश्मन्] गृह, घर (प्राकृ २८)।
वेस्स देखो वइस्स = वेश्य (सूअ १, ६, २)।
वेस्स देखो वेस = द्वेष्य (उत्त १३, १८)।
वेस्स देखो वेस = वेष्य (राज)।
वेस्सा स्त्री [वेश्या] १ पण्यागना, गणिका (विसे १०३०, गा १५६, ८६०)। २ ओषधि-विशेष, पाढ का गाछ (प्राकृ २६)।
वेस्सासिअ देखो वेसासिअ (भग)।
वेह सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना, 'जहा सगामकालसि पिट्ठतो भीरु वेहइ' (सूअ १, ३, ३, १)।
वेह सक [व्यध्] वीधना, छेदना। वेहइ (पि ४८९)।
वेह पु [वेध] १ वेधन, छेद (सम १२५, वज्जा १४२)। २ अनुवोध, अनुगम, मिश्रण। ३ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (सूअ १, ६, १७)। ४ अनुशय, अत्यन्त द्वेष (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।
वेह पु [वेधस्] विधि, विधाता (सुर ११, ५)।
वेहण न [वेधन] वेधन, छेद करना (राय १४६, धर्मवि ७१)।
वेहम्म देखो वइधम्म (उप १०३१ टी, धर्मसं १८५ टी)।
वेहल्ल पु [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु १, २, निर १, १)।
वेहव सक [वञ्च्] ठगना। वेहवइ (हे ४, ९३, षड्)।
वेहव न [वैभव] विभूति, ऐश्वर्य (भवि)।
वेहविअ पुं [दे] १ अनादर, तिरस्कार। २ वि क्रोधी (दे ७, ९६)।
वेहविअ वि [वञ्चित] प्रतारित (दे ७, ९६ टी)।
वेहव्व न [वैधव्य] १ विधवापन, रँडापा, राडपन (गा ६३०, हे १, १४८, गउड, सुपा १३६)।
वेहाणस देखो वेहायस (आचा २, १०, २, ठा २ ४—पत्र ९३, सम ३३, णाया १, १६—पत्र २०२, भग)।
वेहाणसिय वि [वैहायसिक] फांसी आदि से लटक कर मरनेवाला (औप)।
वेहायस वि [वैहायस] १ आकाश-सम्बन्धी, आकाश मे होनेवाला। २ न. मरण-विशेष, फांसी लगा कर मरना (पव १५७)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु)।
वेहारिय वि [वैहारिक] विहार-सम्बन्धी, विहार-प्रवण (सुख २, ४५)।
वेहास न [विहायस] १ आकाश, गगन (णाया १, ८—पत्र १३४)। अन्तराल, वीच भाग (सूअ १, २, १, ८)।
वेहास देखो वेहायस (पव १५७, अनु १)।
वेहिम वि [वैधिक, वेध्य] तोडने योग्य, दो टुकडे करने योग्य (दस ७, ३२)।
वैउठ देखो वेकुंठ (समु १५०)।
वैभव देखो वेहव (त्रि १०३)।
वोअस देखो वोक्कस। कवकृ. वोयसिज्जमाण (भग)।
वोइय वि [व्यपेत] वर्जित, रहित (भवि)।
वोंट देखो विंट = वृन्त (हे १, १३९)।
वोकिल्ल वि [दे] गृह-शूर, घर मे वीर बनने-वाला, झूठा शूर (दे ७, ८०)।
वोकिल्लिअ न [दे] रोमन्थ, चबी हुई चीज को पुन चबाना (दे ७, ८२)।
वोक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना। वोक्कइ (हे ४, ३८)। वकृ वोक्कत (कुमा)।

वोक्क सक [व्या + हृ, उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। वोक्कइ (षड्, प्राकृ ७४)।

वोक्क सक [उद् + नट्] अभिनय करना। वोक्कइ (प्रा ७४)।

वोक्कत वि [व्युत्क्रान्त] १ विपरीत क्रम से स्थित (हे १, ११६)। २ अतिक्रान्त, 'पज्जनयवोक्कंतं तं वत्थु दव्वट्ठिअस्स वयणिज्जं' (सम्म ८)। देखो वुक्कंत।

वोक्कम सक [व्यप + क्रम्] ह्रास प्राप्त करना, कमी करना। कवकृ वोक्कमिज्जमाण (भग ५, ६—पत्र २२८)।

वोक्कम देखो वोक्कम (सूत्र १, ६, २)।

वोक्कस देखो वुक्कस = व्युत् + क्रम्। वोक्कसाहि (नाना २, ३, १, १४)।

वोक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'डक्काबोक्काए रवा विर्यानिआ रायपगणए' (सुपा २४२)। देखो वुक्का।

वोक्का स्त्री [व्याहृति] पुकार (उप ७६८ टी)।

वोक्कार देखो वोक्कार (सुर १, २४६)।

वोक्स देखो वोक = उद् + नद्। वोक्सइ (धात्वा १५४)।

वोक्खन्न पु [अवस्कन्द] आक्रमण (महा)।

वोक्खारिय वि [दे] विभूषित 'पवरदेवगवत्थवोक्खारियसरीरं' (स २३६)।

वोगड वि [व्याकृत] १ कहा हुआ, प्रतिपादित (सूत्र २, ७, २८, भग कम)। २ परिस्फुट (आचानि २६०)।

वोगडा स्त्री [व्याकृता] प्रकट अर्थ वाली भाषा (पएण ११—पत्र ३७४)।

वोगसिअ वि [व्युत्क्रामित] निष्कामित, बाहर निकाला हुआ (तंदु २)।

वोच } सक [नद्] बोलना, कहना। वोचइ, वोच्च } वोच्चइ (धात्वा १५४)।

वोच्चत्थ वि [व्यत्यस्त] विपरीत, उल्टा, 'ट्टियनिग्गम (?वा)वुड्ढिआवेई' (उत्त ८, ५ सुर ८, ४, विसे ८५३)।

वोच्चत्थ न [दे] विपरीत रत (दे ७, ५८)।

वोच्छं° देखो वय = वच्।

वोच्छिद सक [व्युत्, व्यव + छिद्] १ भागना, तोडना, खण्डित करना। २ विनाश करना। ३ परित्याग करना। वोच्छिदइ (उत्त २६, २)। भवि वोच्छिदिहिति (पि ५३२)। कर्म वुच्छिज्ज, वोच्छिज्जइ, वोच्छिज्जए (कम्म २, ७, पि ५४६, काल)। भवि वोच्छिज्जिहिति (पि ५४६)। वकृ वोच्छिदत, वोच्छिदमाण (से १५, ६२, ठा ६—पत्र ३५६)। कवकृ वोच्छिज्जत, वोच्छिज्जमाण (से ८, ५, ठा ३, १—पत्र ११६)।

वोच्छिण्ण देखो वोच्छिन्न (विपा १, २—पत्र २८)।

वोच्छित्ति स्त्री [व्यवच्छित्ति] विनाश, 'समारवोच्छित्ती' (विसे १ ३३)। °णय पु [°नय] पर्याय नय (णंदि)।

वोच्छिन्न देखो वुच्छिन्न (भग, कप्प, सुर ४, ६६)।

वोच्छेअ } पु [व्युच्छेद, व्यवच्छेद] वोच्छेद } १ उच्छेद, विनाश, 'समारवोच्छेयकरे' (णाया १, १—पत्र ६०, धर्मसं २२८)। २ अभाव, व्यावृत्ति (कम्म ६, २३)। ३ प्रतिबन्ध, रुकावट, निरोध (उवा, पचा १, १०)। ४ विभाग (गउड ७४०)।

वोच्छेयण न [व्युच्छेदन] १ विनाश (चेइय ५२४, पिंड ६६६)। २ परित्याग (ठा ६ टी—पत्र ३६०)।

वोज्ज देखो वुज्ज। वोजइ (हे ४, १६८ टी)।

वोज्ज सक [वीजय्] हवा करना। वोजइ (हे ४, ५, षड्)। वकृ वोज्जंत (कुमा)।

वोज्जिर वि [त्रसितृ] डरनेवाला (कुमा)।

वोज्झ देखो वह = वह्। भवि 'तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगासिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जलं वोज्झिहिति' (भग ७, ६—पत्र ३०७)। कृ 'नासानीसासवायवोज्झं असुयं' (णाया १, १, १—पत्र २५, राय १०२, प्राप)।

वोज्झ } पु [दे] बोझ, भार, 'अमिवोज्झमल्ल } वोज्झं फलयवोज्झमल्लं च' (दे ७, ८०)।

वोज्झर वि [दे] १ अतीव। २ भीत, त्रस्त (दे ७, ६६)।

वोट्टि वि [दे] सक्त, लीन (षड्)।

वोड वि [दे] १ दुष्ट। छिन्न कर्ण, जिसका कान कट गया हो वह (गा ५४६)। देखो वोड।

वोडही स्त्री [दे] १ तरुणी, युवति। २ कुमारी, 'सिक्खतु वोडहीओ' (गा २६२)। देखो वोद्रह।

वोडु वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (उव)।

वोढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ (धात्वा १५४)।

वोढ वि [दे] देखो वोड (गा ५५० अ)।

वोढव्व देखो वह = वह्।

वोढु वि [वोढृ] वहन-कर्ता (महा)।

वोढु देखो वह = वह।

वोढूण अ [उड्ढ्वा] वहन कर (पि ५८६)।

वोत्तव्व देखो वय = वच्।

वोत्तुआण अ [उक्त्वा] कह कर (षड्—पृ १५३)।

वोत्तु } देखो वय = वच्। वोत्तूण }

वोदाण न [व्यवदान] १ कर्म निर्जरा, कर्मों का विनाश (ठा ३, ३—पत्र १५६, उत्त २६, १)। २ शुद्धि, विशेष रूप से कर्म-विशोधन (पचा १५, ४ उत्त २६, १, भग)। ३ तप, तपश्चर्या (सूत्र १, १४, १७)। ४ वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३४)।

वोद्रह वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०), 'वोद्रहद्रहम्मि पडिआ' (हे २, ८०)। स्त्री. °ही, 'सिक्खतुवोद्रहीओ' (हे २, ८०)।

वोभीसण वि [दे] वराक, दीन, गरीब (दे ७, ८२)।

वोम न [व्योमन्] आकाश, गगन (पाअ, विसे ६५६)। °विन्दु पुं [°विन्दु] एक राजा का नाम (पउम ७, ५३)।

वोमज्झ पु [दे] अनुचित वेष (दे ७, ८०)।

वोमज्झिअ न [दे] अनुचित वेष का ग्रहण (दे ७, ८० टी)।

वोमिल पु [व्योमिल] एक जैन मुनि (कप्प)।

वोमिला स्त्री [व्योमिला] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वोय पुं [वोक] एक देश का नाम (पउम ६८, ६४)।

वोरच्छ वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०)।

वोरमण न [व्युपरमण] हिंसा, प्राणि-वध (पएह १, १—पत्र ५)।

वोरल्ली स्त्री [दे] १ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि मे होनेवाला एक उत्सव। २ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी (दे ७, ८१)।

वोरविअ वि [व्यपरोपित] जो मार डाला गया हो वह, 'सक्कारित्ता जुयल दिन्न विइएण वोरविओ' (वव १)।

वोरुल्ली स्त्री [दे] रूई से भरा हुआ वस्त्र (पव ८४)।

वोल सक [गम्] १ गति करना, चलना। २ गुजारना, पसार करना। ३ अतिक्रमण करना, उल्लघन करना। ४ अक. गुजरना, पसार होना। वोलइ (प्राकृ ७३, हे ४, १६२, महा, धर्मंस ७५४), 'काल वोलेइ' (कुप्र २२८), वोलति (वज्जा १४८, धर्मवि ५३)। वकृ वोलत, वोलेंत (कुमा, गा २१०, २२०; पउम ६, ५४, से १४, ७५, सुपा २२४, से ६, ६६)। सकृ. वोलिऊण, वोलेत्ता (महा, श्राव)। कृ. वोलेअव्व (से २, १, स ३६३)। प्रयो., सकृ वोलाविउ, वोलावेउ (सुपा १४०, गा ३४६ अ ?)। देखो वोल = व्यति + क्रम्।

वोल देखो वोल = दे (दे ६, ६०)।

वोलट्ट अक [व्युप + लुट्] छलकना। वकृ. वोलट्टमाण (भग)।

वोलाविअ वि [गमित] अतिक्रामित (वज्जा १४, सुपा ३३४, गा २१)।

वोलिअ, वोलीण वि [गत] १ गया हुआ (प्राकृ ७७)। २ गुजरा हुआ, जो पसार हुआ हो वह, व्यतीत (सुर ६, १६, महा, पव ३५, सुर ३, २५)। ३ अतिक्रान्त, उल्लघित (पाअ, सुर २, १, कुप्र ४५, से १, ३, ४, ४८, गा ५७, २५२, ३४०, हे ४, २५८, कुमा, महा)।

वोल्ल सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। वोल्लइ (धात्वा १५४)।

वोल्लाह पु [वोल्लाह] देश-विशेष (स ८१)।

वोल्लाह वि [वौल्लाह] देश-विशेष मे उत्पन्न (स ८१)।

वोवाल पु [दे] वृषभ, बैल (दे ७, ७६)।

वोसग्ग पु [व्युत्सर्ग] परित्याग (विसे २६०५)।

वोसग्ग, वोसट्ट अक [वि + कस्] १ विकसना, खिलना। २ बढना। वोसग्गइ, वोसट्टइ (षड्, हे ४, १६५, प्राकृ ७६)। वकृ. वोसट्टमाण (भग, गा ८२८)।

वोसट्ट सक [वि + कासय्] १ विकास करना। २ बढाना। वोसट्टइ (धात्वा १५४)।

वोसट्ट वि [विकसित] विकास-प्राप्त (हे ४, २५८, प्राकृ ७७)।

वोसट्ट वि [दे] भर कर खाली किया हुआ (दे ७, ८१)।

वोसट्टिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (कुमा)।

वोसट्ठ वि [व्युत्सृष्ट] १ परित्यक्त, छोडा हुआ (कप्प, कस, ओघ ६०५, उत्त ३५, १६, आचा २, ८, १, पचा १८, ६)। २ परिष्कार-रहित, साफसूफ वर्जित (सूअ १, १६, १)। ३ कायोत्सर्ग मे स्थित (दस ५, १, ६१)।

वोसमिय वि [व्यवशमित] उपशमित, शान्त किया हुआ, 'खामिय वोसमियाइ अहिगरणाइ तु जे उदीरेंति। ते पावा नायव्वा' (ठा ६ टी—पत्र ३७१)।

वोसर, वोसिर सक [व्युत् + सृज्] परित्याग करना, छोडना। वोसरिमो, वोसिरइ, वोसिरामि (पव २३७, महा, भग, औप), वोसिरेज्जा, वोसिरे (पि २३५)। वकृ. वोसिरंत (कुप्र ८१)। संकृ. वोसिज्ज, वोसिरित्ता (सूअ १, ३, ३, ७, पि २३५)। कृ. वोसिरियव्व (पत्र ४६)।

वोसिर वि [व्युत्सर्जन] छोडनेवाला (उप पृ २६८)।

वोसिरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (हे २, १७४, श्रा १२, श्रावक ३७६, ओघ ८५)।

वोसिरिअ देखो वोसट्ठ (पउम ४, ५२, धर्मंस १०५१, महा)।

वोसेअ वि [दे] उन्मुख-गत (दे ७, ८१)।

वोहित्त न [वहित्र] प्रवहण, जहाज, नौका (गा ७४६)। देखो वोहित्थ।

वोहार न [दे] जल-वहन (दे ७, ८०)।

व्वुड पुं [दे] विट, भडुआ (षड्)।

व्रद देखो वंद = वृन्द (प्राप्र)।

व्रत्त (अप) देखो वय = व्रत (हे ४, ३६४)।

व्राक्रोस (अप) पु [व्याक्रोश] १ शाप। २ निन्दा। ३ विरुद्ध चिन्तन (प्राकृ ११२)।

व्रागरण (अप) देखो वागरण (प्राकृ ११२)।

व्राडि (अप) पुं [व्याडि] सस्कृत व्याकरण और कोष का कर्ता एक मुनि (प्राकृ ११२)।

व्रास देखो वास = व्यास (हे ४, ३६६, प्राकृ ११२, षड्, कुमा)।

व्व देखो इव (हे २, १८२, कप्प, रभा)।

व्व देखो वा = अ (प्राकृ २६)।

°व्वअ देखो वय = व्रत (कुमा)।

व्ववसिअ देखो ववसिय = व्यवसित (अभि १२४)।

°व्वाज देखो वाय = व्याज (मा २०)।

°व्वावार देखो वावार = व्यापार (मा ३६)।

°व्वावुड देखो वावुड (अभि २४६)।

°व्वाहि देखो वाहि (मा ४४)।

व्विव देखो इव (प्राकृ २६)।

व्वे अ [दे] सबोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि वआराइसद्दसकलणो पचतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

श

शिआल (मा) पु [शृगाल] वह्नू का भाई, सियार (प्राकृ १०२; मृच्छ २०८)।

श्चिट (मा) देखो चिट्ठ=स्था। श्चिटदि (धात्वा १५८, प्राकृ १०३)।

॥ इत्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि शआराइसद्दसंकलणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

स

स पुं [स] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान दाँत होने से यह दन्त्य कहा जाता है (प्राप्र)। °अण, °गण पु [°गण] पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम के दो ह्रस्व और तीसरा गुरु अक्षर होता है (पिंग)। °गार पु [°कार] 'स' अक्षर (दसनि १०, २)।

स देखो सं=सम् (षड्, पिंग)।

स पु [श्वन्] श्वान, कुत्ता (हे १, ५२, ३, ५६, षड्)। °पाग पु [°पाक] चण्डाल (उत्त)। °मुहि पुस्त्री [°मुखि] कुत्ते की तरह आचरण, कुत्ते की तरह भषण—भूँकना (णाया १, ६—पत्र १६०)। °वच पु [°पच] चाण्डाल (दे १, ६८)। °वाग, °वाय देखो °पाग (पं ५६, पाअ)।

स अ [स्वर्] सुरालय, स्वर्ग (सिरि १८८३)।

स वि [सत्] १ श्रेष्ठ, उत्तम (उवा, कुमा, सुपा १८०)। २ विद्यमान, जो वर्तमान हो (सूअ १, १, १, १६)। °उरिस पु [°पुरुष] श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन (गउड)। °क्कय वि [°कृत] संमानित (पण्ह १, ४—पत्र ६८), देखो °किअ। °कह वि [°कथ] सत्य कथा (स ३२)। °क्किअ न [°कृत] सत्कार, सम्मान (उत्त ११, ५), देखो °क्कय। °गइ स्त्री [°गति] उत्तम गति—१ स्वर्ग। २ मुक्ति, मोक्ष (भवि, राज)। °ज्जण पु [°जन] भला आदमी, सत्पुरुष (उव, हे १, ११, प्रासू ७)। °त्तम वि [°तम] अतिशय साधु, सज्जनों में अतिश्रेष्ठ (सुपा ६५५, श्रा १४, सार्ध ३)। °त्थाम न [°स्थामन्] प्रशस्त बल (गउड)। °धम्मिअ वि [°धार्मिक] श्रेष्ठ धार्मिक (श्रा १२)। °न्नाण न [ज्ञान] उत्तम ज्ञान (श्रा २७)। °प्पभ वि [°प्रभ] सुन्दर प्रभा वाला (राय)। °प्पुरिस पु [°पुरुष] १ सज्जन, भला आदमी (अभि २०१, प्रासू १२)। २ किंपुरुष-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ श्रीकृष्ण (कुप्र ४८)। °प्फल वि [°फल] श्रेष्ठ फलवाला (अच्चु ३१)। °ब्भाव पु [°भाव] १ सम्भव, उत्पत्ति (उप ७२६)। २ सत्त्व, अस्तित्व (सम्म ३७, ३८, ३६)। ३ सुन्दर भाव, चित्त का अच्छा अभिप्राय, 'सब्भावो पुण उज्जुजणस्स कोडि विसेसेइ' (प्रासू ६, १७२, उव, हे २, १६७)। ४ भावार्थ, तात्पर्य (सुर ३, १०२)। ५ विद्यमान पदार्थ (अणु)। °ब्भावदायणा स्त्री [°भावदर्शन] आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुर्वादि के समक्ष प्रकटीकरण (ओघ ७६१)। °ब्भाविअ वि [°भावित] सद्भाव-युक्त (स २०१, ६६८)। °ब्भूअ वि [°भूत] १ सत्य, वास्तविक, सच्चा, 'सब्भूएहिं भावेहिं' (उवा)। २ विद्यमान (पंचा ४, २४)। °याचार पु [°आचार] प्रशस्त आचरण (रयण १५)। °रूव वि [°रूप] प्रशस्त रूपवाला (पउम ८, ६)। °ल्लग पु [°लग] प्रशस्त संवरण, इन्द्रिय-संयम (सूअ २, २, ५७)। °वाय पु [°वाद] प्रशस्त वाद (सूअ २, ७, ५)। °वाया स्त्री [°वाच्] प्रशस्त वाणी (सूअ २, ७, ५)।

स पु [स्व] १ आत्मा, खुद (उवा, कुमा, सुर २, २०६)। २ ज्ञाति, नात (हे २, ११४, षड्)। ३ वि. आत्मीय, स्वीय, निजी (उवा, ओघभा ६, कुमा, सुर ४, ६०)। ४ न धन, द्रव्य (पचा ८, ६, आचा २, १, १, ११)। ५ कर्म (आचा २, १६, ६)। °कडब्भि, °गडब्भि वि [°कृतभिद्] निज के किए हुए कर्मों का विनाशक (पि १६६, आचा १, ३, ४, १, ४)। °जण पु [°जन] १ ज्ञाति, सगा। २ आत्मीय लोग (स्वप्न ६७, षड्)। °तंत वि [°तन्त्र] १ स्वाधीन, स्व-वश (विसे २११२, द ३, ४३, अच्चु १)। २ न स्वकीय सिद्धान्त (निचू ११)। °त्थ वि [°स्थ] १ तंदुरुस्त, स्वभाव-स्थित। २ सुख से अवस्थित (पाअ, पउम २६, ३१, स्वप्न १०६, सुर १०, १०४, सुपा २७६, महा, सण)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ साधर्मिक,

समान धर्मवाला (द्र १७)। २ तरफदार (कुप्र ११६)। ३ अपना पक्ष (सम्म २१)। °पाय न [°पात्र] निज का नाम, बुद्ध की संज्ञा (राज)। °प्पभ वि [°प्रभ] निज से ही शोभनेवाला (सम १३७)। °ब्भाव, °भाव पु [°भाव] प्रकृति, निसर्ग, 'वणियारतरू नवकणिआरसुदेरदरिअमब्भाओ' (कुमा ३, ४८, सम्म २१, सुर १, २७, ४, १२५),

'कुवियस्स आउरस्स य
वसणामत्तस्स आयरत्तस्स।
मत्तस्स मरतस्स य
सब्भावा पायडा हुंति''
(प्रासू ६४)।

°भावन्नु वि [°भावज्ञ] स्वभाव का जानकार (पउम ८६, ८१)। °यण देखो °जण (उवा, हे २, ११४, सुर ४, ७६, प्रासू ७६, ६५)। °रूय, °रूव न [°रूप] स्वभाव (गउड, धर्मसं ६१३, कुमा, सुपा, सुर २, १४२)। °संवेयण न [°संवेदन] स्व-प्रत्यक्षज्ञान (धर्मसं ४८)। °हाअ, °हाव देखो °भाव (से ३, १५, ७, १७, गउड, सुर ३, २२, प्रासू २, १०३)। °हाववाद पु [°भाववाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (उप १००३)। °हिअ न [°हित] १ निज का भला, स्वीय—अपनी भलाई। २ त्रि निज का भला करनेवाला, स्वहितकर (सुपा ४१०)।

स° वि [स°] १ सहित, युक्त (सम १३७, भग, उवा, सुपा १६२, सण)। २ समान, तुल्य, 'सगुत्ते', 'सपक्खे' (कप्प, निर १, १)। °अण्ह वि [°तृष्ण] उत्कण्ठित, उत्सुक (से १२, ८, गा ३४८, गउड, सुपा ३८४)। °अर त्रि [°कर] कर-सहित (से २, २६)। °अर वि [°गर] विष युक्त, जहरीला (से २, २६)। °इण्ह देखो °अण्ह (सुपा ४१२)। °उण वि [°गुण] गुण-युक्त (सुपा १८५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्य-युक्त, पुण्य शाली (महा, सुर २, ८८, सुपा ६३५)। °ओस त्रि [°तोष] सन्तुष्ट (उप ७२८ टी)। °ओस वि [°दोष] दोष-युक्त (उप ६२८टी)। °काम वि [°काम] १ समृद्ध मनोरथवाला (स्वप्न ३०)। २ मनोरथ युक्त, इच्छावाला (राज)। °काममणिज्जरा स्त्री [°कामनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक भेद (राज)। °काममरण न [°काममरण] मरण-विशेष, पण्डित-मरण (उत्त ५, २)। °किय वि [°कृत] १ गृहस्थ। २ प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४)। °क्खर वि [°क्षर] विद्वान्, जानकार (वज्जा १५८ सम्मत्त १६३)। °गार त्रि [°गार] गृहस्थ (ओघभा २०)। °गार त्रि [°आकार] आकार-युक्त (धर्मवि ७२)। °गुण वि [°गुण] गुणवान्, गुणी (उत्त, सुपा ३८५, सुर ८, १६६)। °ग्ग वि [°अग्र] श्रेष्ठ, उत्तम (से ६, ४७)। °ग्गह वि [°ग्रह] उपरक्त, ग्रहण-युक्त, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त (गच्छ, वव १)। °घिण त्रि [°घृण] दयालु (अच्चु ५०)। °चक्खु, °चक्खुअ वि [°चक्षुष, °चक्षुष्क] नेत्र-वाला, देखता (पउम ६७, २३, वसु, स ७८, विपा १, १—पत्र ५)। °चित्त वि [°चित्त] चेतनावाला, सजीव (उवा, पडि)। °चेयण वि [°चेतन] वही अर्थ (विसे १७५३)। °च्चित्त देखो °चित्त (ओघ २२, सुपा ५२५, ६२६, ति १६६, ३५०)। °जिय देखो °ज्जीअ (सुर १२, २१०)। °जोइ त्रि [°ज्योतिष्] प्रकाश युक्त (पि ४११, सूअ १, ५, १, ७)। °जोणिय वि [°योनिक] उत्पत्ति-स्थानवाला, संसारी (ठा २, १—पत्र ३८)। °ज्जीअ, °ज्जीव वि [°जीव] १ ज्या-युक्त, धनुष की डोरी-वाला। २ सचेतन, जीववाला (पि १६६, से १, ४५)। ३ न कला-विशेष, मृत धातु वगैरह को सजीवन करने का ज्ञान (ओप, राय, ज २ टी—पत्र १३७)। °ड्ढ वि [°अर्ध] डेढ। °ड्ढकाल पु [°अर्धकाल] तप-विशेष, पुरिमड्ढ तप (संबोध ५८)। °णप्पय, णप्फइ, °णप्फय वि [°नखपद] नख युक्त पैरवाला, सिंह आदि श्वापद जंतु (सूअ २, ३, २३, ठा ४, ४—पत्र २७१, सूअ १, ५, २, ७, पण्ण १—पत्र ४६, पि १४८)। °णाह वि [°नाथ] स्वामी-वाला, जिसका कोई मालिक हो वह (विपा १, २—पत्र २७, रभा, कुमा)। °तण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त, उत्कण्ठित, उत्सुक (से १, ४६)। °त्तर त्रि [°त्वर] १ त्वरा-युक्त, वेगवाला। २ न. शीघ्र, जल्दी (सुपा १५६)। °द्ध वि [°अर्ध] अर्ध सहित, डेढ (पउम ६८, ५४)। °धवा स्त्री [°धवा] सौभाग्यवती स्त्री, जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सुपा ३६५)। °नय त्रि [°नय] न्याय-युक्त न्याजवी (सुपा ५०८)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ पाँखवाला, पाँखों से युक्त (से २, १८)। २ सहायता करनेवाला, सहायक, मित्र (पत्र २३६, स ३६७)। ३ समान पार्श्ववाला, दक्षिण आदि तरफ से जो समान हो वह (निर १, १)। °पुन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, पुण्यवान् (सुपा ३८४)। °प्पभ त्रि [°प्रभ] प्रभा-युक्त (सम १३७, भग)। °प्परिआव, °प्परिताव वि [°परिताप] परिताप—संताप से युक्त (श्रा ३७, पड)। °प्पिसल्लग वि [°पिशाचक] पिशाच-गृहीत, पागल (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। °प्पिवास वि [°पिपास] तृषातुर, सतृष्ण (हे २, ६७)। °प्पिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला (दे ७, २६)। °प्फंद वि [°स्पन्द] चलायमान (दे ८, ८)। °प्फल, °फल वि [°फल] सार्थक (से १५, १८, हे २, २०४, प्राप, उप ७२८ टी)। °ब्बल त्रि [°बल] बल वान्, बलिष्ठ (पिंग)। °भल देखो °फल (हे १, २३६, कुमा)। °मण वि [°मनस्] १ मनवाला, विवेक-बुद्धिवाला (धण २२)। २ समान मनवाला, राग द्वेष आदि से रहित, मुनि, साधु (अणु)। °मणक्ख वि [°मनस्क] पूर्वोक्त अर्थ (सूअ २, ४, २)। °मय वि [°मद] मद-युक्त (से १, १६, सुपा १८८)। °महिड्ढिअ वि [°महर्द्धिक] महान् वैभव-वाला (प्रासू १०७)। °मिरिईअ, °मिरीय वि [°मरीचिक] किरण-युक्त (भग, औप, ठा ४, १—पत्र ३२६)। °मेर वि [°मर्याद] मर्यादा-युक्त (ठा ३, २—पत्र १२६)। °यण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त (गउड, सुपा ३८४)। °याण त्रि [°ज्ञान] सयाना, जानकार (सुपा ३८५)। °योगि वि [°योगिन्] १ व्यापार-युक्त, योगवाला। २ न. तेरहवाँ गुण स्थानक (कम्म २, ३१)।

°रय वि [°रत] कामी (से १, २७)। °रहस वि [°रभस] वेग-युक्त, उतावला (गा ३५४, सुपा ६३२, कप्पू)। °राग वि [°राग] राग-सहित (ठा २, १—पत्र ५८)। °रागसंजत, °रागसंजय वि [°रागसंयत] वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो (पण्ण १७—पत्र ४९४, उत्त)। °रूव वि [°रूप] समान रूपवाला (पउम ८, ६)। °लूण वि [°लवण] लावण्य युक्त (सुपा २९३)। °लोग वि [°लोक] समान, सदृश (सट्ठि २१ टी)। °लोण देखो °लूण (गा ३१६, हे ४, ४४४, कुमा)। स्त्री °लोणी (दे ४, ४२०)। °वक्ख देखो °पक्ख (गउड, भवि)। °वण वि [°व्रण] घाववाला, व्रण युक्त (सुपा २८०)। °वय वि [°वयस्] समान उम्रवाला (दे ८, २२)। °वय वि [°व्रत] व्रती (सुपा ४५१)। °वाय वि [°पाद] सवा (स ४४१)। °वाय वि [°वाद] वाद सहित (सूअ २, ७, ५)। °वास वि [°वास] समान वासवाला, एक देश का रहनेवाला (प्रासू ७९)। °विज्ज वि [°विद्य] विद्यावान्, विद्वान् (उप पृ २१५)। °व्वण देखो °वण (गउड, श्रा १२)। °व्ववेक्ख वि [°व्यपेक्ष] दूसरे की परवाह रखनेवाला, सापेक्ष (धर्मसं ११९७)। °व्वाव वि [°व्याप] व्याप्ति युक्त, व्यापक (भग १, ६—पत्र ७७)। °वित्थर वि [°विस्तर] विस्तरण-युक्त, सविस्तर (सुपा ३९४)। °संक वि [°शङ्क] शंका युक्त (दे २, १०९, सुर १६, ५५, सुप्र ४४५, गउड)। °संकिअ वि [°शङ्कित] वही (सुर ८, ४०)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] सगर्भा, गर्भिणी स्त्री (उत्त २१, ३)। °सिरिय, °सिरीय वि [°श्रीक] श्री-युक्त, शोभा-युक्त (पि ९८, णाया १, १, गाथा)। °सिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला (कुमा)। °सिह वि [°शिख] शिखा-युक्त (राज)। °सूग वि [°शूक] दयालु (उत्त)। °सेस वि [°शेष] १ बाकीशेष, बाकी रहा हुआ (दे ८, ५९, गउड)। २ शेषनाग-सहित (गउड १५)। °सोग, °सोगिल्ल वि [°शोक] दिलगीर, शोक-युक्त (पउम ६३, ४, सुर ६, १२४)। °स्सिरिअ, °स्सिरीअ देखो °सिरिय (पि ९८, अभि १५९, भग, सम १३७, णाया १, ९—पत्र १५७)।

सअ सक [स्वद्] १ प्रीति करना। २ चखना, स्वाद लेना। सअइ (प्राकृ ७५, धात्वा १५४)।

सअ न [सदस्] सभा (षड्)।

सअअ न [दे] १ शिला, पत्थर का तख्ता। २ वि घूर्णित (दे ८, ४६)।

सअक्खगत्त पु [दे] कितव, जुआरी (दे ८, २१)।

सअज्जिअ, सअज्झिअ पुस्त्री [दे] प्रातिवेशिमक, पडोसी (गा ३३५)। स्त्री. °आ (गा ३६, ३९ अ), 'सअज्झिअ संठवतीए' (गा ३६, पिंड ३४२)। देखो सइज्झिअ।

सअडिआ देखो सगडिआ (पि २०७)।

सअढ पु [दे] लम्बा केश (दे ८, ११)।

सअढ पु [शकट] १ दैत्य-विशेष (प्राप्र, संक्षि ७, हे १, १९६)। २ पुन यान-विशेष, गाडी (हे १, १७७, १८०)। °रि पु [°रि] नरसिंह, श्रीकृष्ण (कुमा)। देखो सगड।

सअर देखो स अर = स-कर, स-गर।

सअर देखो सगर (से २, २९)।

सआ अ [सदा] १ हमेशा, निरन्तर (प्राप्र, हे १, ७२, कुमा, प्रासू ४९)। °चार पु [°चार] निरन्तर गति (रयण १५)।

सआ स्त्री [स्रज्] माला (षड्)।

सइ देखो सआ = सदा (पाअ, हे १, ७२, कुमा)।

सइ अ [सकृत्] एक वार, एक दफा (हे १, १२८, सम ३५, सुर ८, २४४)।

सइ स्त्री [स्मृति] स्मरण, चिन्तन, याद (श्रा १९)। °काल पु [°काल] भिक्षा मिलने का समय (दस ५, २, ६)।

सइ देखो स = स्व, 'सइकारियजिणपडिमाए' (सुपा ५१०, भवि)।

सइ देखो सय = शत, 'अस्सीयव्व सोभावि फुट्टए ज न सइाउ' (सुर १४, २)। °कोडि स्त्री [°कोटि] एक सौ करोड, एक अब्ज—अरब (षड्)।

सइ देखो सइ = स्वयम् (काल, हे ४, ३९५, ४३०)।

सइ° देखो सई = सती (सुपा ३०१)।

सइअ वि [शतिक] सौ का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७)। देखो सइग।

सइअ वि [शयित] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २८, गा २५४, पउम १०१, ६०)।

सइएल्लय देखो स = स्व, 'ताव य आगओ परिव्वायओ जक्खदेउलाओ सइएल्लए दालिद्द-पुरिमे घेत्तूण' (महा)।

सइं देखो सइ = सकृत् (आचा)।

सइं देखो सय = स्वयम् (ठा २, ३—पत्र ६३, हे ४, ३३६, ४०२, भवि)।

सइग वि [शतिक] सौ (रुपया आदि) की कीमत का (दसनि ३, १३)।

सइज्झ, सइज्झिअ पुस्त्री [दे] प्रातिवेशिमक, पडोसी (दे ८, १०)। स्त्री. °आ (सुपा २७८, पिंड ३४२ टी, वज्जा ९४)।

सइज्झिअ न [दे] प्रातिवेश्य, पडोसिपन (दे ८, १० टी)।

सइण्ण न [सैन्य] सेना, लश्कर (षड्)।

सइत्तए देखो सय = शी।

सइदसण वि [दे स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट, चित्त मे अवलोकित, विचार मे प्रतिभासित (दे ८, १९, पाअ)।

सइदिट्ठ वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो (दे ८, १९)।

सइन्न देखो सइण्ण (हे १, १५१, कुमा)।

सइम वि [शततम] सौवाँ, १०० वाँ (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सइर न [स्वैर] १ स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (हे १, १५१, प्राप्र, णाया १, १८—पत्र २३६)। २ वि. मन्द, अलस (पाअ)। ३ स्वैरी, स्वच्छन्दी (पाअ, प्राप्र)।

सइरवसह पुं [दे स्वैरवृषभ] स्वच्छन्दी सांढ, धर्म के लिए छोडा जाता बैल (दे २, २५, ८, २१)।

सइरि वि [स्वैरिन्] स्वच्छन्दी, स्वेच्छाचारी (गच्छ १, ३८)।

सइरिणी स्त्री [स्वैरिणी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा (पउम ५, १०५)।

सइल देखो सेल (हे ४, ३२६)।

सइलभ पि [दे स्मृतिलम्भ] देखो सइ-दसण (दे ८, १९, पाअ)।

सइलासअ } पु [दे] मयूर, मोर (दे ८,
सइलासिअ } २०, षड्)।

सइव पुं [सचिव] १ प्रधान, मन्त्री, अमात्य (पाअ)। २ सहाय, मदद-कर्ता। ३ काला धतूरा (प्राकृ ११)।

सइसिलिंध पुं [दे] स्कन्द, कार्तिकेय (दे ८, २०)।

सइसुह वि [दे.स्मृतिसुख] देखो सइदसण (दे ८, १६, पाअ)।

सई स्त्री [शची] इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, णाया २—पत्र २५३, पाअ, सुपा ६८, ६२२, कुप्र २३)। °स पु [°श] इन्द्र (कुमा)। देखो सची।

सई स्त्री [सती] पतिव्रता स्त्री (कुप्रा २३, सिरि १४३)।

°सई स्त्री [°शती] सौ, १००, 'पचमई' (धर्मवि १४)।

सईणा स्त्री [दे] अन्न-विशेष, तुवरी, रहर (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।

सउ } (अप) देखो सहु (सण, भवि)।
सउं }

सउंत पुं [शकुन्त] १ पक्षी, पाखी (पाअ)। २ पक्षि-विशेष, भास-पक्षी (स ४३६)।

सउंतला स्त्री [शकुन्तला] विश्वामित्र ऋषि की पुत्री और राजा दुष्यंत की गन्धर्व-विवाहिता पत्नी (हे ४, २६०)।

सउंदला (शौ) ऊपर देखो (अभि २६, ३०, पि २७५)।

सउण वि [दे] रूढ, प्रसिद्ध (दे ८, ३)।

सउण पुन [शकुन] १ शुभाशुभ-सूचक बाहु-स्पन्दन, काक-दर्शन आदि निमित्त, सगुन, 'सुहजोगाई सउणो कंदिअसद्दाई इअरो उ' (धर्म २, सुपा १८५, महा)। २ पु. पक्षी, पाखी (पाअ, गा २२०, २८५, कप्प ३४, सट्ठि ६ टी)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। °विउ वि [°विद्] सगुन का जानकार (सुपा २६७)। °रुअ न [°रुत] १ पक्षी की आवाज। २ कला-विशेष, सगुन का परिज्ञान (णाया १, १—पत्र ३८, ज २ टी—पत्र १३७)।

सउण देखो स-उण = स-गुण।

सउणि पु [शकुनि] १ पक्षी, पखेरू, पाखी (औप, हेका १०५, सबोध १७)। २ पक्षि-विशेष, चील पक्षी (पाअ)। ३ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण जो कृष्ण चतुर्दशी की रात मे सदा अवस्थित रहता है (विसे ३३५०)। ४ नपुसक विशेष, चटक की तरह बारबार मैथुन-प्रसक्त क्लीब (पव १०६, पुप्फ १२७)। ५ दुर्योधन का मामा (णाया १, १६—पत्र २०८, सुपा २६०)।

सउणिअ देखो साउणिअ (राज)।

सउणिआ } स्त्री [शकुनिका, °नी] १
सउणिगा } पक्षिणी, पक्षी की मादा (गा
सउणी } ८१०, श्राव १)। २ पक्षि-विशेष की मादा, 'सउणी जाया तुमं' (ती ८)।

सउण्ण देखो स-उण्ण = सपुण्य।

सउत्ती स्त्री [सपत्नी] एक पति की दूसरी स्त्री, समान पतिवाली स्त्री, सौत, सौतिन (सुपा ६८)।

सउन्न देखो स-उन्न।

सउम पुं [सद्मन्] १ गृह, घर। २ जल, पानी (प्राकृ २८)।

सउमार वि [सुकुमार] कोमल (से १०, ३४, षड्)।

सउर पु [सौर] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर। २ यम, जमराज। ३ वृक्ष-विशेष, उदुम्बर का पेड। ४ वि सूर्य का उपासक। ५ सूर्य-सबन्धी (चड, हे १, १६२)।

सउरि पु [शौरि] विष्णु, श्रीकृष्ण (पाअ)।

सउरिस देखो स-उरिस = सत्पुरुष।

सउल पुं [शकुल] मत्स्य, मछली, 'सउला सहरा मीणा तिमी झसा अणिमिसा मच्छा' (पाअ)।

सउलिअ वि [दे] प्रेरित (दे ८, १२)।

सउलिआ } स्त्री [दे. शकुनिका, °नी]
सउली } १ पक्षि-विशेष की मादा, चील पक्षी की मादा (ती ८, अणु १४१, दे ८, ८)। २ एक महौषधि (ती ५)। °विहार पु [°विहार] गुजरात के भरोच शहर का एक प्राचीन जैन मन्दिर (ती ८)।

सउह पु [सौध] १ राज महल, राज-प्रासाद (कुमा)। २ न. रूपा, चाँदी। ३ पु. पाषाण-विशेष। ४ वि. सुधा-सबन्धी, अमृत का (चड, हे १, १६२)।

सएज्झिअ देखो सइज्झिअ (कुप्र १६३)।

सओस देखो स ओस = स-तोष- स-दोष।

सं अ [शम्] सुख, शर्म (स ६११, सुर १६, ४२, सुपा ४१६)।

सं अ [सम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष। अतिशय (धर्मसं ८६७)। २ सगति। ३ सुन्दरता, शोभनता। ४ समुच्चय। ५ योग्यता, व्याजवीप्त (षड्)।

सक्क सक [शङ्क्] १ सशय करना, सदेह करना। २ अक भय करना, डरना। संकइ, सकए, सकति, सकसि, सकसे, सकह, सकत्थ, सकामि, संकामो, सकामु, सकाम (सक्षि ३०), 'असकिआइं सकति' (सूअ १, १, २, १०, ११), "जं सम्ममुज्जमताण पाणि (?णी) ण सकए हु विही" (सिरि ६६६)। कर्म सकिज्जइ (गा ५०६)। वकृ. संकत, सकमाण (पव, रंभा ३३)। कृ सकणिज्ज (उप ७२८ टी)।

सकंत वि [सक्रान्त] १ प्रतिबिम्बित (गा १, से १, ५७)। २ प्रविष्ट, घुसा हुआ (ठा ३, ३, कप्प, महा)। ३ प्राप्त। ४ सक्रमण-कर्ता। ५ सक्राति-युक्त। ६ पिता आदि से दाय रूप से प्राप्त स्त्री का धन (प्राप्र)।

सकंति स्त्री [सक्रान्ति] १ सक्रमण, प्रवेश (पव १५५, अज्झ १५३)। २ सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि मे जाना, 'आरब्भ कक्कसकतिदिवसओ दिवसनाहु व्व' (धर्मवि ६६)।

सकंदण पु [सक्रन्दन] इन्द्र, देवाधीश (उप ५३० टी, उपप १)।

सकट्टिअ वि [सकर्तित] काटा हुआ, 'धन्न-सकट्टितमोणा' (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

सकट्ठ वि [सकृष्ट] व्याप्त (राज)।

सकट्ठ देखो सकिट्ठ (राज)।

सकड वि [सकट] १ सकीर्ण, कम-चौडा, अल्प अवकाशवाला (स ३६२, सुपा ४१६, उप ८३३ टी)। २ विषम, गहन (पिंड ६३४)। ३ न. दु ख,

'धम्मागमि ते धन्ना
पुरिसा निस्सीमसत्तिसंजुत्ता ।
जे जिणवयणेसुवि पडियानि
चयंति ण धम्मं ॥'
(रयण ७३)।

संकडिय वि [संकटित] संकीर्ण किया हुआ (कुप्र ३६०)।

संकट्ठि वि [दे] निश्छिद्र, छिद्र-रहित (दे ८, १५, सुर ४, २४३)।

संकड्ढिय वि [संकर्षित] आकर्षित (राज)।

सकुण न [शकुन] [illegible] नष्ट (दस ६, ५६)।

संकप्प पु [संकल्प] १ अध्यवसाय, मन-परिणाम, विचार (उवा, कप्प, उव १०३५)। २ सतत आचार, सदाचार (उप १०३५)। ३ अभिलाष, चाह (गउड)। °जोणि पु [°योनि] कामदेव, कंदर्प (पाअ)।

संकम सक [सं + क्रम्] १ प्रवेश करना। २ गति करना, जाना। संकमइ, संकमंति (पिंड १०८, सूअ २, ४, १०)। वकृ संकममाण (राज ३६, सुज्ज २, १, रंभा)। हेकृ संकमित्तए (कस)।

संकम पु [संक्रम] १ सेतु, पुल, जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बांधा हुआ मार्ग (स ६, ६४, दस ५, १, ४, पण्ह १, १)। २ संचार, गमन, गति, 'पाउआई संकमट्ठाए' (सूअ १, ४, २, १५, श्राक २२३)। ३ जीव जिस कर्म-प्रकृति को बांधता हो उसी रूप से अन्य प्रकृति के दलों का प्रयत्न द्वारा परिणमाना, बंधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य कर्म-प्रकृति के दल को डाल कर उसे बंधी जाती कर्म-प्रकृति के रूप से परिणत करना (ठा ४, २—पत्र २२०)।

संकमग वि [संक्रामक] संक्रमण-कर्ता (धर्मसं १०३०)।

संकमण न [संक्रमण] १ प्रवेश, 'नयर [illegible] परसंकमणं करेंति' (सबोध १४)। २ संचार, गमन (श्रावू १०४)। ३ चारित्र, [illegible]। ४ देखो संकम का तीसरा अर्थ (ठा ३, ४८)। ५ प्रतिबन्धन (गउड)।

संकर पु [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ८, ६)।

संकर पु [शङ्कर] १ शिव, महादेव (पउम ५, १२२, कुमा, सम्मत्त ७६)। २ वि सुख करनेवाला (पउम ५, १२२, दे १, १७७)।

संकर पु [संकर] १ मिलावट, मिश्रण (पण्ह १, ४—पत्र ६२)। २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष (उवर १७)। ३ शुभाशुभ-रूप मिश्र भाव (सिरि ५०६)। ४ अशुचि-पुंज, कचरे का ढेर (उत्त १२, ६)।

संकरण न [संकरण] अच्छी कृति (सबोध ६)।

संकरिसण पु [संकर्षण] भारतवर्ष का भावी नववाँ बलदेव (सम १५४)।

संकरी स्त्री [शङ्करी] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२, महा)। २ देवी-विशेष। ३ सुख करनेवाली (गउड)।

संकल सक [सं + कलय्] संकलन करना, जोड़ना। संकलेइ (उव)।

संकल पुन [शृङ्खल] १ सांकल, निगड। २ लोहे का बना हुआ पाद-बन्धन, बेड़ी (विपा १, ६—पत्र ६६, धर्मवि १३६, सम्मत्त १६०, हे १, १८९)। ३ सिकड़ी, आभूषण-विशेष (सिरि ८४१)।

संकलण न [संकलन] मिश्रता, मिलावट (माल ८७)।

संकला स्त्री [शृङ्खला] देखो संकल = शृङ्खल (स १७१, सुपा २६१, प्राप)।

संकलिअ वि [संकलित] १ एकत्र किया हुआ (उप पृ ३४१, तदु २)। २ युक्त, 'तत्थ य भमिओ स पुणो कायट्ठिईकालसंगम-कलिओ' (सिक्खा १०)। ३ योजित, जोड़ा हुआ (सिरि १३४०)। ४ संगृहीत (उव)। ५ न. गणन, कुल जोड़ (वव १)।

संकलिआ स्त्री [संकलिका] १ परंपरा (पिंड २३६)। २ संकलन। ३ सूत्रकृताङ्ग सूत्र का पनरहवाँ अध्ययन (राज)।

संकलिआ } स्त्री [शृङ्खलिका, °ली] सांकल,
संकली } सिकड़ी, जंजीर, निगड (सूअ १, ५, २, २०, प्रासा)।

संकहा स्त्री [संकथा] संभाषण, वार्तालाप (पउम ७, १५८, १०६, ६ सुर ३, १२६, उप पृ ३७८, पिंड १६४)।

संका स्त्री [शङ्का] १ संशय, संदेह (पडि)। २ भय, डर (कुमा)। °लुअ वि [°वत्] शंकावाला, शंका युक्त (गउड)।

संकाम देखो संकम = सं + क्रम्। संकामइ (सुज्ज २, १, पंच ५, १४७)।

संकाम सक [सं + क्रमय्] संक्रम करना, बंधी जाती कर्म प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-दलों को प्रक्षिप्त कर उस रूप में परिणत करना। संकामेंति (भग)। भूका. संकामिंसु, (भग)। भवि संकामिस्सति (भग)। कवकृ संकामिज्जमाण (ठा ३, १—पत्र १२०)।

संकामण न [संक्रमण] १ संक्रम-करण (भग)। २ प्रवेश कराना (कुप्र १४०)। ३ एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना (पंचा ७, २०)।

संकामणा स्त्री [संक्रमणा] संक्रमण, पैठ (पिंड २८)।

संकामणी स्त्री [संक्रमणी] विद्या-विशेष, जिससे एक से दूसरे में प्रवेश किया जा सके वह विद्या (णाया १, १६—पत्र २१३)।

संकामिय वि [संक्रामित] एक स्थान से दूसरे स्थान में नीत (राज)।

संकार देखो सक्कार = सत्कार (धर्मसं ३५४)।

संकास वि [संकाश] १ समान, तुल्य, सरीखा (पाअ, णाया १, ५, उत्त ३४, ४, ५, ६, कप्प, पंच ३, ४०, धर्मवि १४६)। २ पु. एक श्रावक का नाम (उप ४०३)।

संकासिया स्त्री [सांकाशिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

संकि वि [शङ्किन्] शंका करनेवाला (सूअ १, १, २, ६, गा ८७३, सबोध ३४, गउड)।

संकिअ वि [शङ्कित] १ शंकावाला, शंका-युक्त (भग, उवा)। २ न संशय, संदेह (पिंड ४६३, महा ६८)। ३ भय, डर (गा ३३३), 'संकिअमवि नेव दमिअस्स' (श्रा १४)।

संकिट्ठ वि [संकृष्ट] विलिखित, जोता हुआ, खेती किया हुआ (औप, णाया १, १ टी—पत्र १)।

संकिट्ठ देखो संकिलिट्ठ (राज)।

संकिण्ण वि [संकीर्ण] १ सँकरा, तंग, अल्पावकाशवाला (पाअ, महा)। २ व्याप्त (राज)। ३ मिश्रित, मिला हुआ (ठा ४, २, भग २५, ७ टी—पत्र ६१६)। ४ पु हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)।

संकित देखो संकिअ (णाया १, ३—पत्र ६४)।

संकित्तण न [संकीर्तन] उच्चारण (स्वप्न १७)।

संकिन्न देखो संकिण्ण (ठा ४, २, भग २५, ७)।

संकिर वि [शङ्कितृ] शङ्का करने की आदत वाला, शंकाशील (गा २०६, ३३३, ५८२, सुर १२, १२५, सुपा ४६८)।

संकिलिट्ठ वि [संक्लिष्ट] संक्लेश युक्त, सक्लेशवाला (उत्त ओघ, पि १३६)।

संकिलिस्स अक [सं + क्लिश्] १ क्लेश पाना, दुःखी होना। २ मलिन होना। संकिलिस्सइ, संकिलिस्सति (उत्त २९, ३४, भग, औप)। वकृ संकिलिस्समाण (भग १३, १—पत्र ५९६)।

संकिलेस पु [संक्लेश] १ असमाधि दुःख, कष्ट, हैरानी (ठा १०—पत्र ४८९, उत्त)। २ मलिनता, अविशुद्धि (ठा ३, ४—पत्र १५६, पचा १५, ८)।

संकीलिअ वि [संकीलित] कील लगाकर जोड़ा हुआ (से १४, २८)।

संकु पुं [शङ्कु] १ शल्य अस्त्र। २ कीलक, खूँटा, कील, 'अतोनिविट्ठसकुव्व' (कुप्र ४०२, राय ३०, आवम)। °कण्ण न [°कर्ण] एक विद्याधर-नगर (इक)।

संकुइय वि [संकुचित] १ सकुचा हुआ, संकोच-प्राप्त (आव, रंभा)। २ न. संकोच (राज)।

संकुक पु [शङ्कुक] वताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी का एक विद्याधर-निकाय (राज)।

संकुका स्त्री [शङ्कुका] विद्या-विशेष (राज)।

संकुच अक [सं + कुच्] सकुचना, संकोच करना। संकुचए (आचा, सबोध ४७) वकृ संकुचमाण, संकुचेमाण (आचा)।

संकुचिय देखो संकुइय (दस ४, १)।

संकुड वि [संकुट] सँकरा, संकीर्ण, संकुचित, 'अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंदसूराए' (सुज्ज १९)।

संकुडिअ वि [संकुटित] सकुचा हुआ, संकुचित (भग ७, ६—पत्र ३०७, धर्मस ३८७, स ३५८, सिरि ७८९)।

संकुद्ध वि [संक्रुद्ध] क्रोध-युक्त (वज्जा १०)।

संकुय देखो संकुच। संकुयइ (वज्जा ३०)। वकृ संकुयंत (वज्जा ३०)।

संकुल वि [संकुल] व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ (से १, ५७, उव, महा, स्वप्न ५१, धर्मवि ५५, प्रासू १०)।

संकुलि, संकुली° देखो सक्कुलि (पि ७४, ठा ४, ४—पत्र २२६, पव २६२, आचा २, १, ४, ५)।

संकुसुमिअ वि [संकुसुमित] अच्छी तरह पुष्पित (राय ३८)।

संकेअ सक [सं + केतय्] १ इशारा करना। २ मसलहत करना। संकृ संकेइय जोगिणिमेग' (सम्मत्त २१८)।

संकेअ पुं [संकेत] १ इशारा, इंगित (सुपा ४१५, महा)। २ प्रिय-समागम का गुप्त स्थान (गा ६२६, गउड)। ३ वि. चिह्न युक्त। ४ न. प्रत्याख्यान विशेष (आव)।

संकेअ वि [साङ्केत] १ संकेत-संबन्धी। २ न प्रत्याख्यान विशेष (पव ४)।

संकेइअ वि [संकेतित] संकेत-युक्त (श्रा १४, धर्मवि १३४, सम्मत्त २१८)।

संकेल्लिअ वि [दे] सकेला हुआ, संकुचित किया हुआ (गा ६९४)।

संकेस देखो संकिलेस (उप ३१२, कम्म ५, ६३)।

संकोअ सक [सं + कोचय्] संकुचित करना। वकृ संकोअत (सम्मत्त २१७)।

संकोअ पुं [संकोच] संकोच, सिमट (राय १४० टी, धर्मस ३६५, सबोध ४७)।

संकोअण न [संकोचन] संकोच, सकुचाना (दे ५, ३१, भग, सुर १, ७६, धर्मवि १०१)।

संकोइय वि [संकोचित] संकुचित किया हुआ, सकेला हुआ (उप ७२८ टी)।

संकोड पु [संक्रोट] सकोडना, संकोच (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

संकोडणा स्त्री [संकोटना] ऊपर देखो (राज)।

संकोडिय वि [संक्रोटित] सकोड़ा हुआ, संकोचित (पण्ह १, ३—पत्र ५३, विपा १, ६—पत्र ६८, स ७४१)।

संख पुन [शङ्ख] १ वाद्य विशेष, शंख (णंदि, राय, जी १५, कुमा, दे १, ३०)। २ पु. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ महाविदेह वर्ष का प्रान्त-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ नव निधि मे एक निधि, जिसमे विविध तरह के वाजो की उत्पत्ति होती है (ठा ९—पत्र ४४९, उप ९८६ टी)। ५ लवण समुद्र मे स्थित वेलन्धर-नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६, सम ९८)। ६ उक्त आवास-पर्वत का अधिष्ठाता एक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ७ भगवान् मल्लिनाथ के समय का काशी का एक राजा (णाया १, ८—पत्र १४१)। ८ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक काशी-नरेश (ठा ८—पत्र ४३०)। ९ तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जित करनेवाला भगवान् महावीर का एक श्रावक (ठा ९—पत्र ४५५, सम १५४, पव ४६, विचार ४७७)। १० नववें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १९१)। ११ एक राजा (उप ७३६)। १२ एक राज-पुत्र (सुपा ५६९)। १३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३४)। १४ छन्द-विशेष (पिंग)। १५ एक द्वीप। १६ एक समुद्र। १७ शंखवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (दीव)। १८ पुन ललाट की हड्डी (धर्मवि १७, हे १, १०)। १९ नखी नामका एक गन्ध-द्रव्य। २० कान के समीप की एक हड्डी। २१ एक नाग-जाति। २२ हाथी के दाँत का मध्य भाग। २३ संख्या-विशेष, दस निखर्व की संख्यावाला (हे १, ३०)। २५ आँख के समीप का अवयव (णाया १, ८—पत्र १३३)। °उर देखो °पुर (ती ३, महा)। °णाभ पु [°नाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °णारी स्त्री [°नारी] छन्द-

विशेष (पिंग)। °वसग पु [°श्रावक] धान्य की एक जाति (राज)। °धर पु [°धर] श्रीकृष्ण, विष्णु (कुमा)। °पाल देखो °वाल (ठा ४, १—पत्र १९७)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर नगर (इक)। २ नगर विशेष जो आजकल गुजरात में सखेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °पुरी स्त्री [°पुरी] कुरुजगल देश की प्राचीन राजधानी, जो पीछे से अहिच्छत्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई थी (सिरि ७८)। °माल पु [°माल] वृक्ष की एक जाति (जीव ३—पत्र १४५)। °वण न [°वन] एक उद्यान का नाम (उवा)। °वण्णाभ पु [°वर्णाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वन्न पु [°वर्ण] ज्योतिष्क महाग्रह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वन्नाभ देखो °वण्णाभ (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वर पु [°वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव, इक)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव)। °वाल पु [°पाल] नाग कुमार-देवों के धरण और भूतानन्द नामक इन्द्रों के एक एक लोकपाल का नाम (इक)। °वालय पु [°पालक] १ जैनेतर दर्शन का अनुयायी एक व्यक्ति (भग ७, १०—पत्र ३२३)। एक आजीविक मत का एक उपासक (भग ८, ५—पत्र ३७०)। °ल्ला वि [°वत्] शखवाला (णाया १, ८—पत्र १३३)। °वई स्त्री [°वती] नगरी विशेष (ती ५)।

सख वि [सख्य] सख्यात, गिना हुआ, गिनती-वाला (कम्म ४, ३६, ४१)।

सख न [साख्य] १ दर्शन विशेष, कपिलमुनि-प्रणीत दर्शन (णाया १, ५—पत्र १०५, सुपा ५६६)। २ वि साख्य मत का अनुयायी (औप, कुप्र २४)।

सख पु [दे] मागध, स्तुति पाठक (दे ८, २)।

सखइज्ज वि [सख्येय] जिसकी सख्या हो सके वह (वि १६७० अणु ९० टी)।

सखड न [दे] कलह, झगडा (पिड ३२४, ओघ ११७)।

सखडि स्त्री [दे] १ विवाह आदि के उपलक्ष्य मे नात—नातेदार आदि को दिया जाता भोज, जेवनार (आचा २, १,२,४, २ १ ३, १, २, ३, पिड २२८, ओघ १२, ८८, नाम ६२)।

सखडि स्त्री [सस्कृति] ओदन-पाक (कप्प)।

सखणग पु [शङ्खनक] छोटा शख (उत्त ३६, १२९, पण्ण १—पत्र ४८, जीव १ टी—पत्र ३१)।

सखदह पु [दे] गोदावरी ह्रद (दे ८, १४)।

सखवइल्ल पु [दे] कृषक की इच्छानुसार उठ कर खडा होनेवाला बैल (दे ८, १६)।

सखम वि [सक्षम] समर्थ (उप ९८६ टी)।

सखय पु [सक्षय] क्षय, विनाश (से ६, ४२)।

सखय वि [सस्कृत] सस्कार युक्त, 'णय सखयमाहु जीविय' (सूत्र १, २, २, २१, १, २, ३, १०, पि ४९), 'असखय जीविय मा पमायए' (उत्त ४, १)।

सखलय पु [दे] शम्बूक, शुक्ति के आकार-वाला जल जन्तु विशेष (दे ८, १८)।

सखला देखो सकला (गउड, प्रामा)।

सखलि पुस्त्री [दे] कर्ण-भूषण विशेष, शख-पत्र का बना हुआ ताडक (दे ८, ७)।

सखव सक [स + क्षपय्] विनाश करना। सकृ सखवियाण (उत्त २०, ५२)।

सखविअ वि [सक्षपित] विनाशित (अच्चु ८)।

सखा सक [स + ख्या] १ गिनती करना। २ जानना। सकृ सखाय (सूत्र १, २, २, २१)। कृ सखिज्ज, सखेज्ज (उवा, जी ४१, उत्त, कप्प)।

सखा अक [स + स्त्यै] १ आवाज करना। २ सहत होना, सान्द्र होना, निविड बनना। सखाइ, सखाअइ (हे ४, १५, षड्)।

सखा स्त्री [सख्या] १ प्रज्ञा, बुद्धि (आचा १, ६, ४, १)। २ ज्ञान (सूत्र १, १३, ८)। ३ निर्णय (धर्म)। ४ गिनती, गणना (भग, अणु, कप्प, कुमा)। ५ व्यवस्था (सूत्र २, ७, १०)। °ईअ वि [°तीत] असंख्य (भग १, १ टी, आव १ टी—पत्र १३, धर्म ४१)। °दत्तिय वि [°दत्तिक] दत्ती की गिनती से भिक्षा लेने का व्रतवाला सयमी, जितनी कि अमुक गिने हुए प्रक्षेपों में प्राप्त हो जाय (ठा २, ४—पत्र १००, ५, १—पत्र २९९, औप)।

सखाण न [सख्यान] १ गिनती, गणना, सख्या। २ गणित शास्त्र (ठा ४, ४—पत्र २९३, भग, कप्प, औप, पउम ८५, ६, जीवस १३५)।

सखाय वि [सस्त्यान] १ सान्द्र, सघन, निविड (कुमा ६, ११)। २ आवाज करनेवाला। ३ सहत करनेवाला। ४ न स्नेह। ५ निविड-पन। ६ सहति, सघात। ७ आलस्य। ८ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ७४, ४, १५)।

सखाय देखो सखा = स + ख्या।

सखाय वि [सख्याक] सख्या-युक्त (सूत्र १, १३, ८)।

सखायण न [शाङ्खायन] गोत्र विशेष (सुज्ज १०, १६, इक)।

सखाल पु [दे] हरिण की एक जाति, साबर मृग (दे ८, ६)।

सखालग देखो सखालग = शङ्ख-वत्।

सखावई देखो सखवई = शङ्खावती।

सखाविय वि [सख्यापित] जिसकी गिनती कराई गई हो वह (सुपा ३६२, स ४१६)।

सखिग देखो सखिय = शाङ्खिक (स १७३, कुप्र १४९)।

सखिज्ज देखो सखा = स + ख्या।

सखिज्जइ वि [सख्येयतम] सख्यातवाँ (अणु ६१)।

सखित्त वि [सक्षिप्त] सक्षेप-युक्त, छोटा किया हुआ (उवा, द ३, जी ५१)।

सखिय वि [शाङ्खिक] १ मगल के लिए चन्दन-गर्भित शख को हाथ मे धारण करने-वाला। शख बजानेवाला (कप्प, औप)।

सखिय देखो सख = सख्य (स ४४१, पच २, ११, जीवस १४९)।

सखिया स्त्री [शङ्खिका] छोटा शख (जीव ३—पत्र १४६, ज २ टी—पत्र १०१, राय ४५)।

सखुड्ड अक [रम्] क्रीडा करना, सभोग करना। सखुड्डइ (हे ४, १६८)।

सखुड्डुण न [रमण] क्रीडा, सुरत क्रीडा (कुमा)।

संखुत्त (अप) नीचे देखो (भवि)।

सखुद्ध वि [सक्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त (स ५६८, ६७४, सम्मत्त १५६, सुपा ५१७, कुप्र १७४)।

संखुभिअ } वि [संक्षुब्ध, संक्षुभित]
सखुहिअ } ऊपर देखो (सम १२५, पव २७२, पउम ३३, १०६, पि ३१६)।

सखेज्ज देखो सखा = स + ख्या।

सखेज्जइ } देखो सखिज्जइ (अणु ६१,
सखेज्जइम } विसे ३६०)।

सखेत्त देखो सखित्त (ठा ४, २—पत्र २२६, चेइय ३२५)।

सखेव पु [सक्षेप] १ अल्प, कम, थोडा (जी २५, ५१)। २ पिंड, सघात, सहति (ओघभा १)। ३ स्थान, 'तेरसमु जीवसखेवएसु' (कम्म ६, ३५)। ४ सामायिक, सम-भाव से अव-स्थान (विसे २७६६)।

सखेवण न [सक्षेपण] अल्प करना, न्यून करना (नव २८)।

सखेविय वि [सक्षेपिक] संक्षेप-युक्त। °दसा स्त्री व. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष (ठा १०—पत्र ५०५)।

संखोभ } सक [स + क्षोभय्] क्षुब्ध
संखोह } करना। सखोहइ (भवि)। कवकृ. सखोभिज्जमाण (णाया १, ६—पत्र १५६)।

संखोह पु [सक्षोभ] १ भय आदि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता, क्षोभ (उव, सुर २, २२, उपपृ १३८, गु ३, त्रि ६४, गउड)। २ चचलता (गउड)।

सखोहिअ वि [सक्षोभित] क्षुब्ध किया हुआ, क्षोभ-युक्त किया हुआ (से १, ४६, अभि ६०)।

सग न [शृङ्ग] १ सीग, विषाण (धर्मस ६३, ६४)। २ उत्कर्ष (कुमा)। ३ पर्वत के ऊपर का भाग, शिखर। ४ प्रधानता, मुख्यता। ५ वाद्य-विशेष। ६ काम का उद्रेक (हे १, १३०)। देखो सिंग = शृङ्ग।

सग न [शार्ङ्ग] शृङ्ग-सबन्धी (विसे २८६)।

सग पुन [सङ्ग] १ सपर्क, सबन्ध (आचा, महा, कुमा)। २ सोहवत, 'तह हीणायारज-इजणसग सद्दाण पडिसिद्ध' (सबोध ३६, आचा, प्रसू ३०)। ३ आसक्ति, विषयादि-राग (गउड, आचा, उव)। ४ कर्म, कर्म-बन्ध (आचा)। ५ बन्धन, 'भोगा इमे सगकरा हवति' (उत्त १३, २७)।

सगइ स्त्री [सगति] १ औचित्य, उचितता (सुपा ११०)। २ मेल (भवि)। ३ नियति (सूअ १, १, २, ३)।

सगइअ वि [साङ्गतिक] १ नियति-कृत, नियति-सबन्धी (सूअ १, १, २, ३)। २ परिचित, 'मुहो ति वा सहाए ति वा सग(? गइ)ए ति वा' (ठा ४, ३—पत्र २४३, राज)।

सगथ पु [सग्रन्थ] १ स्वजन का स्वजन, सगे का सगा (आचा)। २ सबन्धी, श्वशुर-कुल से जिसका सबन्ध हो वह (पण्ह २, ४—पत्र १३२)।

सगच्छ सक [स + गम्] १ स्वीकार करना। २ अक. सगत होना, मेल रखना। सगच्छइ (चेइय ७७६, षड्), सगच्छह (स १६)। कृ सगमणीअ (नाट—विक्र १००)।

सगच्छण न [सगमन] स्वीकार, अगीकार (उप ६३०)।

सगम पु [सगम] १ मेल, मिलाप (पाअ, महा)। २ प्राप्ति, 'सग्गापवग्गसगमहेऊ जिण-देसिओ धम्मो' (महा)। ३ नदी-मीलक, नदियो का आपस मे मिलान (णाया १, १—पत्र ३३)। ४ एक देव का नाम (महा)। ५ स्त्री-पुरुष का सभोग (हे १, १७७)। ६ एक जैन मुनि का नाम (उव)।

सगमय पु [सगमक] भगवान् महावीर को उपसर्ग करनेवाला एक देव (चेइय २)।

संगमी स्त्री [संगमी] एक दूती का नाम (महा)।

सगय वि [दे] मसृण, चिकना (दे ८, ७)।

सगय न [सगत] १ मित्रता, मैत्री (सुर ६, २०६)। २ सग, सोहवत (उव, कुप्र १३४)। ३ पु एक जैन मुनि का नाम (पुप्फ १८२)। ४ त्रि. युक्त, उचित (विपा १, २—पत्र २२)। ५ मिलित, मिला हुआ (प्रासू ३१, पचा १, १, महा)।

सगयअ न [सगतक] छन्द विशेष (अजि ७)।

सगर देखो संकर = सकर (विसे २८८८)।

सगर न [संगर] युद्ध, रण, लडाई (पाअ, काप्र १६३, कुप १३, धर्मवि ६३, हे ४, ३४५)।

सगरिगा स्त्री [दे] फली-विशेष, जिसकी तरकारी होती है, साँगरी (पव ४—गाथा २२६)।

सगल सक [स + घटय्] मिलना, सघटित करना। सगलइ (हे ४, ११३)। सकृ संगलिअ (कुमा)।

सगल अक [स + गल्] गल जाना, हीन होना। वकृ. सगलत (से १०, ३४)।

सगलिया स्त्री [दे] फली, फलिया, छीमी (भग १५—पत्र ६८०, अनु ४)।

संगह सक [स + ग्रह्] १ सचय करना। २ स्वीकार करना। ३ आश्रय देना। सगहइ (भवि)। भवि. सगहिस्स (मोह ६३)।

सगह पु [दे] घर के ऊपर का तिरछा काठ (दे ८, ४)।

सगह पु [सग्रह] १ सचय, इकट्ठा करना, बटोरना (ठा ७—पत्र ३८५, वव ३)। २ सक्षेप, समास (पाअ, ठा ३, १ टी—पत्र ११४)। ३ उपधि, वस्त्र आदि का परिग्रह (ओघ ६६६)। ४ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण, सामान्य रूप से वस्तु को देखना (ठा ७—पत्र ३६०, विसे २२०३)। ५ स्वीकार, ग्रहण (ठा ८—पत्र ४ ९२)। ६ कष्ट आदि मे सहायता करना (ठा १०—पत्र ४६६)। ७ वि सग्रह करनेवाला (वव ३)। ८ न नक्षत्र-विशेष, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र (वव १)।

सगहण न [सग्रहण] सग्रह (विसे २२०३, सबोध ३७, महा)। °गाहा स्त्री [°गाथा] सग्रह-गाथा (कप्प ११८)। देखो सगिण्हण।

सगहणि स्त्री [सग्रहणि] सग्रह-ग्रन्थ, सक्षिप्त रूप से पदार्थ-प्रतिपादक ग्रथ, सार-सग्राहक ग्रन्थ (सग १, धर्मसं ३)।

सगहिअ वि [साङ्ग्रहिक] संग्रहवाला, संग्रह-नय को माननेवाला (विसे २८५२)।

सगहिअ वि [संगृहीत] १ जिसका संचय किया गया हो वह (हे २, १९८)। २ स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (णाया)। ३ पकड़ा हुआ, 'संगहिआ हत्थी' (कुप्र ८१)। देखो संगिहीअ।

संगा सक [सं+गै] गान करना। कवकृ संगिज्जमाण (उप ५९७ टी)।

सगा स्त्री [दे] वल्गा, घोड़े की लगाम (दे ८, २)।

सगाम सक [सङ्ग्रामय्] लड़ाई करना। संगामेइ (भग तदु १९)। वकृ सगामेमाण (णाया १, १६—पत्र २२३, निर १, १)।

संगाम पुं [सङ्ग्राम] लड़ाई, युद्ध (आचा, पाअ महा)। °सूर पुं [°शूर] एक राजा का नाम (श्रु २८)।

संगामिअ वि [साङ्ग्रामिक] संग्राम-संबंधी, लड़ाई से संबन्ध रखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०२, आप)।

संगामिया स्त्री [साङ्ग्रामिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी जो लड़ाई की खबर देने के लिए बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

संगामुडामरी स्त्री [सङ्ग्रामोडामरी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से लड़ाई में आसानी से विजय मिलती है (सुपा १४४)।

संगार पुं [दे] संकेत (ठा ४, ३—पत्र २४३, णाया १, ३, ओघभा ३२, गुरु २, १०, सूअनि २६, धर्मसं १३८८ उप ३०९)।

संगाहि वि [संग्राहिन्] संग्रह-कर्ता (विसे १४३०)।

संगि वि [सङ्गिन्] संग-युक्त (भग, संबोध ७, कप्पू)।

संगिज्जमाण देखो संगा = सं + गै।

संगिण्ह देखो संगह = सं + ग्रह्। संगिण्हइ (विसे २२०३)। कर्म संगिज्जते (विसे २२०३)। वकृ संगिण्हमाण (भग ५, ६—पत्र २३१)। संकृ संगिण्हित्ताण (पि ५८३)।

संगिण्हण न [संग्रहण] आश्रय-दान (ठा ८—पत्र ४४१)। देखो संगहण।

सगिल्ल वि [सङ्गवत्] बद्ध, संग-युक्त (पाअ)।

सगिल्ल देखो सगेल्ल (राज)।

सगिल्ली देखो सगेल्ली (राज)।

सगिहीय वि [संगृहीत] १ आश्रित (ठा ८—पत्र ४४१)। २ देखो सगहिअ = संगृहीत।

सगीअ न [संगीत] १ गाना, गान-तान (कुमा)। २ वि जिसका गान किया गया हो वह, 'तेए संगीओ तुह चेव गुणग्गामो' (सुपा २०)।

संगुण सक [सं+गुणय्] गुणकार करना। संगुणए (सुज्ज १०, ६ टी)।

सगुण वि [संगुण] गुणित, जिसका गुणकार किया गया हो वह (सुज्ज १०, ६ टी)।

सगुणिअ वि [संगुणित] ऊपर देखो (ओघ २१, देवेन्द्र ११६, कम्म ५, ३७)।

सगुत्त वि [संगुप्त] १ छिपाया हुआ, प्रच्छन्न रखा हुआ (उप ३३९ टी)। २ गुप्ति-युक्त, अकुशल प्रवृत्ति से रहित (पव १२३)।

सगेल्ल पुं [दे] समूह, समुदाय (दे ८, ४, वव १)।

संगेल्ली स्त्री [दे] १ परस्पर अवलम्बन, 'हत्थसंगेल्लीए' (णाया १, ३—पत्र ९३)। २ समूह, समुदाय (भग ६, ३३—पत्र ४७८, आप)।

सगोढण वि [दे] व्रणित, व्रण-युक्त (दे ८, १७)।

सगोप्फ } पुं [संगोफ] बन्ध-विशेष, मर्कट-
सगोफ } बन्ध रूप गुम्फन (उत्त २२, ३५)।

सगोह न [दे] संघात, समूह (षड्)।

सगोल्ली स्त्री [दे] समूह, संघात (दे ८, ४)।

सगोव सक [सं+गोपय्] १ छिपाना, गुप्त रखना। २ रक्षण करना। संगोवइ (प्राकृ ६६)। वकृ संगोवमाण, संगोवेमाण (णाया १, ३—पत्र ९१, विपा १, २—पत्र ३४)।

सगोवग वि [संगोपक] रक्षण-कर्ता (णाया १, १८—पत्र २४०)।

सगोवाव देखो सगोव। सगोवावसु (स ८९)।

सगोविअ वि [संगोपित] १ छिपाया हुआ (स ८९)। २ संरक्षित (महा)।

सगोवित्तु } वि [संगोपयितृ] संरक्षण-कर्ता
सगोवेत्तु } (ठा ७—पत्र ३८५)।

सघ सक [कथ्] कहना। सघइ (हे ४, २), संघसु (कुमा)।

सघ पुं [संघ] १ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं का समुदाय (ठा ४, ४—पत्र २८१, णदि, महानि ४, सिग्घ १, ३, ५)। २ समान धर्मवालों का समूह (धर्मसं ९८८)। ३ समूह, समुदाय (सुपा १८०)। ४ प्राणि-समूह (हे १, १८७)। °दास पुं [°दास] एक जैन मुनि और ग्रन्थ-कर्ता (ती ३, राज)। °पालिय, °वालिय पुं [°पालित] एक प्राचीन जैन मुनि, जो आर्यवृद्ध मुनि के शिष्य थे (कप्प, राज)।

सघअ वि [संहत] निबिड, सान्द्र (से १०, २९)।

सघस पुं [संघर्ष] १ घिसाव, रगड़। २ आघात, धक्का (णाया १, १—पत्र ६५, श्रा २८)।

सघट्ट सक [सं+घट्ट्] १ स्पर्श करना, छूना। २ अक. आघात लगाना। सघट्टइ (भवि), सघट्टेइ (णाया १, ५—पत्र ११२, भग ५, ६—पत्र २२९), सघट्टए (दस ८, ७)। वकृ. सघट्टंत (पिंड ५७५)। संकृ. सघट्टिऊण (पव २)।

सघट्ट पुं [संघट्ट] १ आघात, धक्का, संघर्ष (उव, कुप्र १६, धर्मवि ५७, सुपा १४)। २ अर्ध जंघा तक का पानी (ओघभा ३४)। ३ दूसरा नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—स्थान विशेष (देवेन्द्र ६)। ४ भीड़, जमावड़ा (भवि)। ५ स्पर्श (राय)।

सघट्ट वि [संघट्टित] संलग्न (भवि)।

सघट्टण न [संघट्टन] १ समर्दन, संघर्ष (णाया १, १—पत्र ७१, पिंड ५८९)। २ स्पर्श करना (राज)।

सघट्टणा स्त्री [संघट्टना] संचलन, संचार, 'गब्भे संघट्टणा उ उट्ठट्ठुसमाणीए' (पिंड ५८९)।

सघट्टा स्त्री [संघट्टा] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

सघट्टिय वि [सघट्टित] १ स्पृष्ट, छुआ हुआ (णाया १, ५—पत्र ११२, पडि)। २ सर्पापित, समर्दित (भग १६, ३—पत्र ७६६, ७६७)।

सघड अक [स + घट्] १ प्रयत्न करना। २ सवद्ध होना, युक्त होना। कृ. सघडियव्व (ठा ८—पत्र ४४१)। प्रयो. सघडावेइ (महा)।

सघड वि [संघट] निरन्तर, 'सघडदसिणो' (आचा १, ४, ४, ४)।

सघडण देखो संघयण (चड—पृ ४८ भवि)।

सघडणा स्त्री [सघटना] रचना, निर्माण (समु १५८)।

संघडिअ वि [सघटित] १ सवद्ध, युक्त (से ४, २४)। २ गठित, जटित (प्रासू २)।

सघदि (शौ) स्त्री [सहति] समूह (पि २६७)।

सघयण न [दे सहनन] १ शरीर, काय (दे ८, १४, पाअ)। २ अस्थि-रचना, शरीर, के हाडों की रचना, शरीर का वाँध (भग, सम १४६, १५५, उव, ओप, उवा, कम्म १, ३८, पड्)। ३ कर्म-विशेष, अस्थि-रचना का कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म १, २४)।

सघयणि वि [दे सहननिन्] सहनन-वाला (सम १५५, अणु ८ टी)।

सघरिस देखो सघंस (उप २६४ टी)।

सघरिसिद (शौ) वि [सघर्पित] सघर्प-युक्त, घिसा हुआ (मा ३७)।

सघस सक [स + घृप्] सघर्ष करना। सघसिज (आचा २, १, ७, १)।

सघस्सिद देखो सघरिसिद (नाट—मालवि २६)।

सघाइअ वि [सघातित] १ सघात रूप से निष्पन्न (से १३, ६१)। २ जोडा हुआ (आव)। ३ इकट्ठा किया हुआ (पडि)।

सघाइम वि [सघातम] ऊपर देखो (ओप, आचा २, १२, १, पि ६०२, अणु १२, दसनि २, १७)।

सघाड देखो सघाय = सघात (ओघभा १०२, राज)।

सघाड } पु [दे सघाट] १ युग्म,
सघाडग } युगल (राय ६६, धर्मस १०६५, उप पृ ३६७, सुपा ६०२, ६२३, ओघ ४११, उप २७५)। २ प्रकार, भेद, 'सघाडो ति वा लय ति वा पगारो ति वा एगट्ठा' (निचू)। ३ ज्ञाताधर्म-कथा नामक जैन अग-ग्रन्थ का दूसरा अध्ययन (सम ३६)।

सघाडग देखो सिघाडग (कप्प)।

सघाडगा स्त्री [सघटना] १ सवन्ध। २ रचना, 'अक्खरगुणमतिसघाय (? ड)णाए' (सुअनि २०)।

सघाडी स्त्री [दे. सघाटी] १ युग्म, युगल (दे ८, ७, प्राकृ ३८, गा ४१६)। २ उत्तरीय वस्त्र-विशेष (ठा ४, १—पत्र १८६, णाया १, १६—पत्र २०४, ओघ ६७७, विसे २३२६, पत्र ६२, कस)।

सघाणअ पु [शिङ्घानक] श्लेष्मा, नाक में से वहता द्रव पदार्थ (तदु १३)।

सघातिम देखो सघाइम (णाया १, ३—पत्र १७६, पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

सघाय सक [सं + घातय्] १ सहत करना, इकट्ठा करना, मिलाना। २ हिंसा करना, मारना। सघायइ, सघाएइ (कम्म १, ३६, भग ५, ६—पत्र २२६)। कृ. सघायणिज्ज (उत्त २६, ५६)।

सघाय पु [सघात] १ संहति, सहत रूप से अवस्थान, निविडता (भग, दस ४, १)। २ समूह, जत्था (पाअ, गउड, ओप, महा)। ३ सहनन-विशेष, वज्रऋषभ-नाराच नामक शरीर-बन्ध, 'सघाएण सठाणेण' (ओप)। ४ श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)। ५ सकोच, सकुचाना (आचा)। ६ न. नामकर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से शरीर-योग्य पुद्गल पूर्व-गृहीत पुद्गलो पर व्यवस्थित रूप से स्थापित होते हैं (कम्म १, ३१, ३६)। °समास पुं [°समास] श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

सघायण न [सघातन] १ विनाश, हिंसा (स १७०)। २ देखो 'सघाय' का छठवाँ अर्थ (कम्म १, २४)।

सघायणा स्त्री [सघातना] सहति। °करण न [°करण] प्रदेशो को परस्पर सहत रूप से रखना (विसे ३३०८)।

सघार पु [संहार] १ वहु-जतु क्षय, प्रलय (तदु ४५)। २ नाश (पउम ११८, ८०, उप १३६ टी)। ३ सक्षेप। ४ विसर्जन। ५ नरक-विशेष। ६ भैरव-विशेष (हे १, २६४, पड्)।

सघार (अप) देखो सहर = स + हृ। सकृ. सघारि (पिग)।

सघारिय वि [सहारित] मारित, व्यापादित (भवि)।

सघासय पु [दे] स्पर्धा, वरावरी (द ८, १३)।

सघिअ देखो सघिअ = सहित (प्राप)।

सघिल्ल वि [सघवत्] सघ-युक्त, समुदित (राज)।

सघोडी स्त्री [दे] व्यतिकर, सवन्ध (दे ८, ८)।

सच (अप) देखो सचिण। सचइ (भवि)।

सच (अप) पुं [सचय] परिचय (भवि)।

सचइ } वि [सचयिन्] सचयवाला,
सचइग } सग्रही, सग्रह करनेवाला, (दसनि १०, १०, पव ७३ टी)।

सचइय वि [सचयित] सचय-युक्त (राज)।

सचक्कार पु [दे] अवकाश, जगह,

'अविगणिय कुलकलंकं इय
कुहियकरककारणे कीस।
नियरमि सचक्कार त
नारयतिरियदुक्खाण ॥''
(उप ७२८ टी)।

सचत्त वि [सत्यक्त] परित्यक्त (अज्झ १७८)।

सचय पु [सचय] १ सग्रह (पण्ह १, ५—पत्र ९२, गउड, महा)। २ समूह (कप्प, गउड)। ३ सकलन, जोड (वव १)। °मास पुं [°मास] प्रायश्चित्त-सवन्धी मास-विशेष (राज)।

सचर सक [स + चर्] १ चलना, गति करना। २ सम्यग् गति करना, अच्छी तरह चलना। ३ धीरे धीरे चलना। सचरइ (गउड ४२६, भवि)। वकृ. सचरत (से २,

२४, सुर ३, ७६, नाट—चैत १३८)। कृ. सचरणिज्ज, सचरिअव्व (नाट—वेणी २४, से १४, ७८)।

सचरण न [सचरण] १ चलना, गति। २ सम्यग् गति (गउड पि १०२, कप्पू)।

सचरिअ वि [सचरित] चला हुआ, जिसने सचरण किया हो वह (उत्त २ ३५८, नमि ५६, भवि)।

सचलण न [सचलन] सचार, गति (गउड)।

सचलिअ वि [सचलित] चला हुआ (सुर ३, १४८, महा)।

सचल सक [स + चल] चलना, गति करना। सचलइ (भवि)।

सचलिअ (अप) देखो सचलिअ (भवि)।

सचल्लिअ देखो सचलिअ (महा)।

सचाइअ वि [सशक्ति] जो समर्थ हुआ हो वह (भग ३, २ टी—पत्र १७८)।

सचाअ अक [स + शक्] समर्थ होना। संचाएइ (भग, उवा, पव), सचाएमो (सूअ २, ७, १०, णाया १, १८—पत्र २४०)।

सचाग पु [सत्याग] परित्याग (पचा १३, ३८)।

सचार सक [स + चारय्] सचार कराना। सचारइ (भवि)। सकृ सचारि (अप) (भवि)।

सचार पु [सचार] सचरण, गति (गउड, रभा भवि)।

सचारि वि [सचारिन्] गति करनेवाला (रभा)।

सचारिअ वि [सचारित] जिसका सचार कराया गया हो वह (भवि)।

सचारिम वि [सचारिम] सचार योग्य, जो दूसरे स्थान में ले जाया जा सके (पिंड ३००, सुपा ३४१)।

सचारिआ स्त्री [दे] दूती-कर्म करनेवाली स्त्री (पाअ ४०)।

सचाल सक [स + चालय्] चलाना। सचालइ (भवि)। वकृ सचालिज्जत, सचालिज्जमाण (से ६, ३६, णाया १, ६—पत्र १४६)।

सचालिअ वि [सचालित] चलाया हुआ (से ८, २७)।

सचिअ वि [सचित] सगृहीत (ओघ ३२६ भवि, नाट—वेणी ३०, सुपा ७५२)।

सचितण न [सचिन्तन] चिन्तन, विचार (हि २२)।

सचितणया स्त्री [सचिन्तना] ऊपर देखो (उत्त ३२ ३)।

सचिक्ख अक [स + स्था] रहना, ठहरना, अच्छी तरह रहना, समाधि से रहना। सचिक्खइ (आचा १, ६, २, २)। सचिक्खे (उत्त २, ३३, ओघ ६६)।

सचिक्खमाण देखो सचिण।

सचिट्ठ देखो सचिक्ख। सचिट्ठइ (भग, उवा, महा)।

सचिट्ठण न [सस्थान] अवस्थान (पि ४८३)।

सचिण सक [स + चि] १ सग्रह करना, इकट्ठा करना। २ उपचय करना। सचिणेइ, सचिणइ, सचिणति (कुं १०७, पि ५०२)। सकृ सचिणित्ता (सूअ २, २, ६५, भग)। वकृ सचिणमाण (आचा २, १, ३, २)।

सचिणिअ वि [सचित] सगृहीत (स ४०३)।

सचिन्न वि [सचीर्ण] आचरित (सण)।

सचुण्ण सक [स + चूर्णय्] चूर-चूर करना, खड खड करना, टुकडा-टुकडा करना। कवकृ सचुण्णिज्जत (पउम ५६, ४४)।

सचुण्णिअ } वि [सचूर्णित] चूर-चूर
सचुन्निअ } किया हुआ (महा, भवि, णाया १, १—पत्र ४७, सुर १२, २४१)।

सचेयणा स्त्री [सचेतना] अच्छी तरह सुख, भान, 'लद्धसचेयणाउ' (सिरि ६५०)।

सचोइअ वि [सचोदित] प्रेरित (ठा ४, ३ टी—पत्र २५८)।

सछइअ } वि [सछन्न] ढका हुआ (उप
सछण्ण } पृ १०३, सुर २, २४०, सुपा
सछन्न } ५६२, महा, सण)।

सछाइअ वि [सछादित] ढका हुआ (सुपा ५६२)।

सछाअ सक [स + छादय्] ढाकना। वकृ सछायत (पउम १६, ८७)।

सछुह सक [स + क्षिप्] एकत्रित कर छोडना, इकट्ठा करना, 'सछुहई एगगेहम्मि' (पिंड ३११)।

सछोभ पु [सक्षेप] अच्छी तरह फेंकना, क्षेपण (पच ५, १५६, १८०)।

सछोभग वि [सक्षेपक] प्रक्षेपक (राज)।

सछोभण न [सक्षेपण] परावर्तन (राज)।

सजइ पुस्त्री [सयति] उत्तम साधु, मुनि, 'सजईए दव्वलिंगीणमतर मेरुसरिसवसरिच्छं' (संबोध ३६)।

सजई स्त्री [सयती] साध्वी (ओघ १६, महा, द्र २७)।

सजणग वि [सजनक] उत्पन्न करनेवाला (सुर ११, १६६)।

सजणण न [सजनन] १ उत्पत्ति। २ वि. उत्पन्न करनेवाला (सुर ६ १४२, सुपा ३८२)। स्त्री °णी (रत्न २८)।

सजणय देखो सजणग (चेइय ६१५, सुपा ३८, सिक्खा ७६)।

सजणिय वि [सजनित] उत्पादित (प्रासू १४६, सण)।

सजत्त सक [दे] तैयार करना। सजत्तेह (स २२)।

सजत्ता स्त्री [सयात्रा] जहाज की मुसाफिरी (णाया १, ८—पत्र १३२)।

सजत्ति स्त्री [दे] तैयारी, 'आणत्ता निय-पुरिमा सजत्ति कुणह गमणत्थ' (सुर ७, १३०, स ६३५, ७३५, महा)। देखो सजुत्ति।

सजत्तिअ वि [दे] तैयार किया हुआ (स ४४३)।

सजत्तिअ } वि [सायात्रिक] जहाज से
सजत्तिग } यात्रा करनेवाला, समुद्र मार्ग का मुसाफिर (सुपा ६५५, ती ६, सिरि ४३३, पव २०६, द्र १, ७०, महा, णाया १, ८—पत्र १३५)।

सजत्थ वि [दे] १ कुपित, क्रुद्ध। २ पु. क्रोध (दे ८, १०)।

सजद देखो सजय = सयत (प्राप्र, प्राकृ १२, नाट—शकु ६)।

सजम अक [स + यम्] १ निवृत्त होना। २ प्रयत्न करना। ३ व्रत नियम करना। ४ सक. बाधना। ५ काबू में करना। कर्म.

सजमिज्जति (गउड २८६)। वक्ृ सजमेत, सजमअत सजममाण (गउड ८४०, दसनि १, १८०, उत्त १८, २६)। कवक्ृ सजमीअमाण (नाट—विक्र ११२)। सक्ृ सजमित्ता (सूअ १, १०, २)। हेकृ सजमिउ (गउड ४८७)। कृ. सजमिअव्व, सजमितव्व (भग, णाया १, १—पत्र ६०)।

सजम सक [दे] छिपाना। संजमेसि (दे ८, १५ टी)।

सजम पुं [सयम] १ चारित्र, व्रत, विरति हिंसादि पाप-कर्मों से निवृत्ति (भग, ठा ७, ओप कुमा, महा)। २ शुभ अनुष्ठान (कुमा ७, २२)। ३ रक्षा, अहिंसा (णाया १, १—पत्र ६०)। ४ इन्द्रिय निग्रह। ५ बन्धन। ६ नियन्त्रण काबू (हे १, २४५)। °ासजम पु [°ासयम] श्रावक-व्रत (ओप)।

सजमण न [सयमन] ऊपर देखो (धर्मवि १७, गा २६१ सुपा ५५३)।

सजमिअ वि [दे] सगोपित, छिपाया हुआ (दे ८, १५)।

सजमिअ वि [सयमित] बाँधा हुआ बद्ध (गा ६४६ सुर ७, ५, कुप्र १८७)।

सजय अक [स + यत्] १ सम्यक् प्रयत्न करना। २ सक अच्छी तरह प्रवृत्त करना। सजयए सजए (पव ७२, उत्त २, ४)।

सजय वि [सयत] साधु मुनि व्रती (भग, ओघभा १७, काल), 'ममावि मायावित्ताणि सजयाणि' (महा)। °पता स्त्री [°प्रान्ता] साधु को उपद्रव करनेवाली देवी आदि (ओघभा ३७ टी)। °भद्दिगा स्त्री [°भद्रिका] साधु को अनुकूल रहनेवाली देवी आदि (ओघभा १७ टी)। °ासजय वि [°ासयत] किसी अश मे व्रती और किसी अश मे अव्रती, श्रावक (भग)।

सजय पु [सजय] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)।

सजयत पु [सजयन्त] एक जैन मुनि (पउम ५, २१)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)।

सजर पु [सज्वर] ज्वर, बुखार (अच्चु ६७)।

सजल अक [स + ज्वल्] १ जलना। २ आक्रोश करना। ३ क्रुद्ध होना। सजले (सूअ १, ६, ३१, उत्त २, २४)।

सजलण वि [सज्वलन] १ प्रतिक्षण क्रोध करनेवाला (सम ३७)। २ पुं कषाय-विशेष (कम्म १ १७)।

सजलिअ पु [सज्वलित] तीसरी नरक भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

सजलिअ (अप) वि [सज्वलित] आक्रोश-युक्त (भवि)।

सजव देखो सजम = स + यम्। सजवहु (अप) (भवि)।

सजव देखो सजम = (दे)। सजवइ (प्राकृ ६६)।

सजविअ देखो सजमिअ = (दे) (पाअ, भवि)।

सजविअ देखो सजमिअ = सयमित (भवि)।

सजा देखो सगा (हे २, ८३)।

सजाणय वि [सज्ञायक] विज्ञ, विद्वान्, जानकार (राज)।

सजात } देखो सजाय = सजात (सुर २,
सजाद } ११४, ४, १६०, प्राप्र, पि २०४)।

सजाय अक [स + जन्] उत्पन्न होना। सजायइ (सण)।

सजाय वि [सजात] उत्पन्न (भग, उवा, महा, सण, पि ३३३)।

सजीवणी स्त्री [सजीवनी] १ मरते हुए को जीवित करनेवाली औषधि (प्रासू ८३)। २ जीवित-दात्री नरक-भूमि (सूअ १, ५, २, ६)।

सजीवि वि [सजिविन्] जिलानेवाला, जीवित करनेवाला (कप्पू)।

सजुअ वि [सयुत] सहित, सयुक्त (द्र २२, मिरुखा ४८, सुर ३, ११७, महा)। देखो सजुत।

सजुअ न [सयुग] १ लडाई, युद्ध, सग्राम (पाअ)। २ नगर-विशेष (राज)।

सजुज सक [स + युज्] जोडना। कर्म 'अविसिट्ठे सब्भावे जलेण सजुअ(? ज)ती जहा वत्थं' (धर्मसं १८०)। कवक्ृ. सजुज्जत (सम्म ५३)।

सजुत्त न [सयुत] छन्द-विशेष (पिग)। देखो सजुअ = सयुत।

सजुता स्त्री [सयुता] छन्द-विशेष (पिंग)।

सजुत्त वि [सयुक्त] सयोगवाला, जुडा हुआ (महा, सण पि ४०४, पिंग)।

सजुत्ति स्त्री [दे] तैयारी (सुर ४, १०२, १२, ८०१, स १०३, कुप्र २००)। देखो सजत्ति।

सजुदु वि [दे] स्पन्द युक्त थोडा हिलने-चलनेवाला, फरकनेवाला (दे ८ ६)।

सजूह पुन [सयूथ] १ उचित समूह (ठा १०—पत्र ४६५)। २ सामान्य, साधारणता। ३ सक्षेप, समास (सूअ २, २, १)। ४ ग्रन्थ-रचना, पुस्तक निर्माण (अणु १४६)। ५ दृष्टिवाद के अठासी सूत्रो मे एक सूत्र का नाम (सम १२८)।

सजोअ सक [स + योजय्] सयुक्त करना, सबद्ध करना, मिश्रण करना। सजोएइ, सजोयइ (पिंड ६३८, भग, उव, भवि)। वकृ सजोयत (पिंड ६३६)। सकृ सजोएऊण (पिंड ६३६)। कृ सजोएअव्व (भग)।

सजोअ सक [स + दृश्] निरीक्षण करना, देखना। सकृ. सजोइऊण (श्रु ३२)।

सजोअ पु [सयोग] सबन्ध, मेल-मिलाप, मिश्रण (षड्, महा)।

सजोअण न [सयोजन] १ जोडना, मिलाना (ठा २, १—पत्र २६)। २ वि जोडनेवाला। ३ कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धि नामक क्रोधादि चतुष्क (विसे १२२६, कम्म ५, ११ टी)। °विहरणिया स्त्री [°धिकरणिकी] खड्ग आदि को उसकी मूठ आदि से जोडने की क्रिया (ठा २, १—पत्र ३६)।

सजोअणा स्त्री [सयोजना] १ मिलान, मिश्रण (पिंड ६३६)। २ भिक्षा का एक दोष स्वाद के लिए भिक्षा-प्राप्त चीजो को आपस मे मिलाना (पिंड १)।

सजोइय वि [सयोजित] मिलाया हुआ, जोडा हुआ (भग, महा)।

सजोइय वि [संयोजित] युक्त, नियोजित (भवि)।

सजोग देखो सजोअ = संयोग (हे १, २४५)।

सजोगि वि [सयोगिन्] संयोग-युक्त, संबन्धी (संबोध ४६)।

सजोगित्तु वि [संयोजयितृ] जोड़नेवाला (ठा ८—पत्र ४२६)।

सजोत्त (अप) देखो सजोअ = सं + योजय्। संकृ सजोत्तिवि (भवि)।

सज्झ° देखो सज्झा (णाया १, १—पत्र ४८)। °च्छेयावरण वि [°च्छेदावरण] १ सन्ध्या-विभाग का आवारक। २ पु. चन्द्र, चाँद (अणु १२० टी)। °प्पभ पुन [°प्रभ] शक्र के सोमलोकपाल का विमान (भग ३, ७—पत्र १९५)।

सज्झा स्त्री [सन्ध्या] १ साँझ, शाम, सायंकाल (कुमा, गउड, महा)। २ दिन और रात्रि का संधि-काल। ३ युगों का संधि-काल। ४ नदी-विशेष। ५ ब्रह्मा की एक पत्नी (हे २, ३०)। ६ मध्याह्न काल 'तिसंझं' (महा)। °गय न [°गत] १ जिस नक्षत्र में सूर्य अनन्तर काल में रहनेवाला हो वह नक्षत्र। २ सूर्य जिसमें हो उससे चौदहवाँ या पनरहवाँ नक्षत्र। ३ जिसके उदय होने पर सूर्य उदित होता हो। ४ सूर्य के पीछे के या आगे के नक्षत्र के बाद का नक्षत्र (वव १)। °च्छेयावरण देखो सज्झ-च्छेयावरण (पव २६८)। °णुराग पु [°नुराग] साँझ के बादल का रंग (पउम २—पत्र १०६)। °वली स्त्री [°वली] एक विद्याधर कन्या का नाम (महा)। °विगम पु [°विगम] रात्रि, रात (पव १६)। °विराग पु [°विराग] साँझ का समय (ओघ ३, ४)।

सज्झाअ सक [सं + ध्यै] ध्यान करना, ठीक तरह ध्यान करना। सज्झाअहि (उप) (पि ४७२, ४७८)। वकृ सज्झायंत (सुपा ८)।

सज्झाअ सक [सन्ध्याय] सन्ध्या की तरह आचरण करना। सज्झाअइ (गउड ६३२)।

सज्झस पु [साध्वस] भय, डर (पिंड ३६८)।

सठ वि [शठ] धूर्त, मायावी (कुमा, दे ६, १११)।

सठ (चूपै) देखो सढ (हे ४, ३२५)।

सठप्प देखो सठव।

सठव सक [सं + स्थापय्] १ रखना, स्थापना करना। २ आश्वासन देना, उद्वेग-रहित करना, सान्त्वना करना। सठवइ, सठवेइ (भवि महा)। वकृ सठवंत (गा ८९)। कवकृ संठविज्जंत (सुर १२, ४१)। संकृ संठवेऊण (महा), सठप्प (उव), सठविअ (पिंग)।

सठवण देखो सठावण (मुच्छ १५४)।

सठविअ वि [संस्थापित] १ रखा हुआ (हे १, ६७, प्राप्र, कुमा)। २ आश्वासित। ३ उद्वेग-रहित किया हुआ (महा)।

सठा अक [सं + स्था] रहना, अवस्थान करना, स्थिति करना। सठाइ (पि ३०९, ४८३)।

सठाण न [संस्थान] १ आकृति, आकार (भग, ओप, पत्र २७६, गउड, महा, द ३)। २ कर्म विशेष, जिसके उदय से शरीर के शुभ या अशुभ आकार होता है वह कर्म (सम ६७, कम्म १, २४, ४०)। ३ सनिवेश, रचना (प्रासू ८७)।

सठाव देखो सठव। संकृ. सठाविअ (नाट—चैत ७५)।

सठावण न [संस्थापन] रखना, 'तेरिच्छ-सठावणं' (पव ३८)। देखो सथावण।

सठावणा स्त्री [संस्थापना] आश्वासन, सान्त्वना (से ११, १२१)। देखो सथावणा।

सठाविअ देखो सठविअ (हे १, ६७, कुमा, प्राप्र)।

सठिअ वि [संस्थित] १ रहा हुआ, सम्यक् स्थित (भग, उवा, महा, भवि)। २ न आकार (राय)।

सठिइ स्त्री [संस्थिति] १ व्यवस्था (उप्प १, १)। २ अवस्था, दशा, स्थिति (उप १३६ टी)।

सड पु [शण्ड, षण्ड] १ वृष, बैल, साँड, 'मत्तो जुव्व संडे विव्वसेइ अ' (धा १२, सुर १५, १८०)। २ पुन पद्म आदि का समूह, वृक्ष आदि की निबिडता (णाया १, १—पत्र १६, भग, कप्प, ओप, गा ८, सुर ३, ३०, महा, प्रासू १४५), 'नियसतरुसंडो' (गउड)। ३ पु. नपुंसक (हे १, २६०)।

सडास पुन [सदंश] १ यन्त्र-विशेष, सँड़सी, चिमटा (सूअ १, ४, २, ११, विपा १, ६—पत्र ६८, स ६६६)। २ ऊरु-संधि, जाँघ और ऊरु के बीच का भाग (ओघ २०६, ओघभा १५५)। °तोंड पु [°तुण्ड] पक्षि-विशेष, सँड़सी की तरह मुखवाला पाखी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

सडिज्झ } न [दे] बालकों का क्रीडा-स्थान
सडिब्भ } (राज, दस ५, १, १२)।

सडिल्ल पु [शाण्डिल्य] १ देश-विशेष (उप १०३१ टी, सत्त ६७ टी)। २ एक जैन मुनि का नाम (कप्प, णंदि ४९)। ३ एक ब्राह्मण का नाम (महा)। देखो सडेल्ल।

सडी स्त्री [दे] वल्गा, लगाम (दे ८, २)।

सढेय पु [पाण्डेय] षढ-पुत्र, षढ, नपुंसक, 'कुक्कुडसडेयगामपउरा' (ओप, णाया, १, १ टी—पत्र १)।

सडेल्ल न [शाण्डिल्य] १ गोत्र-विशेष। २ पुस्त्री, उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। देखो सडिल्ल।

सडेव पु [दे] पानी में पैर रखने के लिए रखा जाता पाषाण आदि (ओघ ३१)।

सडेवय (अप) देखो सडेय, 'गामई कुक्कुड-सडेवयाइं' (भवि)।

सडोलिअ वि [दे] अनुगत, अनुयात (दे ८, १७)।

सढ पु [पण्ढ] नपुंसक (प्राप्र, हे १, ३०, सबोध १६)।

सढी स्त्री [दे] गाड़नी, ऊँटनी (सुपा ५८०)।

सढोइय वि [सढौकित] उपस्थापित (सुपा ३२३)।

सण वि [संज्ञ] जानकार, ज्ञाता (भास १, ५, ६, १०)।

सणक्कुमार देखो सनक्कुमार (राज)।

सणज्ज न [सानाय्य] मन्त्र आदि से संस्कार किया जाता घी वगैरह (प्राकृ १६)।

सणज्झ अक [सं + नह्] १ कवच धारण करना, बखतर पहनना। २ तैयार होना। सणज्झइ (पि ३०१)।

सणडिअ वि [सनटित] व्याकुल किया हुआ, विडम्बित (वज्जा ७०)।

सणद्ध वि [सनद्ध] सनाह-युक्त, कवचित (विपा १, २—पत्र २३, गउड)।

सणय देखो सनय (राज)।

सणवणा स्त्री [सज्ञापना] सज्ञप्ति, विज्ञापन (उवा)।

सणा स्त्री [सज्ञा] १ आहार आदि का अभिलाप (सम ६, भग, पएण १, ३—पत्र ५५, प्रासू १७६)। २ मति, बुद्धि (भग)। ३ सकेत, इशारा (से ११, १३४ टी)। ४ आख्या, नाम। ५ सूर्य की पत्नी। ६ गायत्री (हे २, ४२)। ७ विष्ठा, पुरीष (उप १४२ टी)। ८ सम्यग् दर्शन (भग)। ९ सम्यग् ज्ञान। (राय १३३)। °इअ वि [°कृत] टट्टी फिरा हुआ, फरागत गया हुआ (दस १ १ टी)। °भूमि स्त्री [°भूमि] पुरीषोत्सर्जन की जगह (उप १४२ टी, दस १, १ टी)।

सणामिय वि [सनामित] अवनत किया हुआ (पचा १६, ३६)।

सणाय वि [सज्ञात] १ ज्ञात, नात का आदमी (पच १०, ३६)। २ स्वजन, सगा (उप ६५३)। देखो सनाय।

सणास पु [सन्यास] ससार-त्याग, चतुर्थ आश्रम (नाट—चैत ९०)।

सणासि वि [सन्यासिन्] ससार-त्यागी, चतुर्थ-आश्रमी, यति, व्रती (नाट—चैत ८८)।

सणाह सक [स+नाहय्] लडाई के लिए तेयार करना, युद्ध-सज्ज करना। सणाहेहि (औप ४०)।

सणाह पु [सनाह] १ युद्ध की तेयारी (से ११, १३४)। २ कवच, बखतर (नाट—वेणी ६२)। °पट्ट पु [°पट्ट] शरीर पर बाँधने का वस्त्र-विशेष (बृह ३)।

सणाहिय वि [सानाहिक] युद्ध की तेयारी से सम्बन्ध रखनेवाला, 'सणाहियाए भेरीए सद्दं सोचा' (णाया १, १६—पत्र २१७)।

सणि वि [सज्ञिन्] १ सज्ञावाला, सज्ञा-युक्त। २ मनवाला प्राणी (सम २, भग, औप)। ३ श्रावक, जैन गृहस्थ (ओघ ८)। ४ सम्यग् दर्शनवाला, सम्यक्त्वी, जैन (भग)। ५ न. गोत्र-विशेष, जो वासिष्ठ गोत्र की शाखा है। ६ पुस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

सणिक्खित्त देखो सनिक्खित्त (राज)।

सणिगास देखो सणियास (णाया १, १—पत्र ३२)।

सणिगास देखो सनिगास = सनिकर्ष (राज)।

सणिचय देखो सनिचय (राज)।

सणिचिय देखो सनिचिय (आचा २, १, २, ४)।

सणिउझ देखो सनिउझ (गउड)।

सणिणाय देखो सनिनाय (राज)।

सणिवाइ देखो सणिहाइ (नाट—मालती २९)।

सणिवाण देखो सनिहाण (नाट—उत्तर ४४)।

सणिपडिअ वि [सनिपतित] गिरा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८)।

सणिभ देखो सनिभ (राज)।

सणिय वि [संज्ञित] जिसको इशारा किया गया हो वह (सुपा ८८)।

सणियास पु [सनिकाश] समान, सदृश (पउम २०, १८८)। देखो सनियास।

सणिरुद्ध वि [सनिरुद्ध] रुका हुआ, नियन्त्रित (आचा २, १, ४, ४)।

सणिरोह पुं [सनिरोध] अटकाव, रुकावट (से ५, ६४)।

सणिवय अक [सनि+पत्] पडना, गिरना। वकृ. सणिवयमाण (आचा २, १, ३, १०)।

सणिवाय पु [सनिपात] सम्बन्ध (पचा ७, १८)।

सणिविट्ठ देखो सनिविट्ठ (णाया १, १ टी—पत्र २)।

सणिवेस देखो सनिवेस (आचा १, ८, ६, ३, भग, गउड, नाट—मालती ५६)।

सणिसिज्जा, सणिसेज्जा } देखो सनिसिज्जा (राज)।

सणिह देखो सनिह (गा २५८, नाट—मृच्छ ६१)।

सणिहाइ वि [सनिधायिन्] समीप-स्थायी (माल ५२)।

सणिहाण देखो सनिहाण (राज)।

सणिहि देखो सनिहि (आचा २, १, २, ४)।

सणिहिअ वि [सनिहित] सहायता के लिए समीप-स्थित, निकट-वर्ती (महा)। देखो सनिहिअ।

सणेउझ देखो सनेउझ (गउड)।

सत देखो स = सत् (उवा, कप्प, महा)।

सत वि [शान्त] १ शम युक्त, क्रोध-रहित (कप्प, आचा १, ८, ५, ४)। २ पु रस-विशेष, 'विणयता चेव गुणा सततरसा किया उ भावता' (सिरि ८८२)।

सत वि [श्रान्त] थका हुआ (णाया १, ४, उवा १०१, ११२, विपा १, १, कप्प, दे ८, ३६)।

सतइ स्त्री [सतति] १ सतान, अपत्य, लडकावाला, दुट्ठसीला खु इत्थिया विणासेइ सतइ' (स ५०५, सुपा १०४)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (उत्त ३६, ९, उप पृ १८१)।

सतच्छण न [सतक्षण] छिलना (सूअ १, ५, १, १४)।

सतच्छिअ वि [सतक्षित] छिला हुआ (पएह १, १—पत्र १८)।

सतट्ठ वि [सत्रस्त] डरा हुआ, भय-भीत (सुर ९, २०७)।

सतति देखो सतइ (स ६८४)।

सतत्त वि [सतत] १ निरन्तर, अविच्छिन्न। २ विस्तीर्ण,

'अच्छिनिमीलियमित्त नत्थि सुह
दुक्खमेव सतत्त।
नरए नेरइयाए अहोनिसि
पचमाणाए।'
(सुर १४, ४९)।

सतत्त वि [सतप्त] सताप-युक्त (सुर १४, ५९, गा १३६, सुपा १६, महा)।

सतत्थ देखो सतट्ठ (उव, श्रा १८)।

सतप्प अक [स+तप्] १ तपना, गरम होना। २ पीडित होना। सतप्पइ (हे ४, १४०, स २०)। भवि सतप्पिस्सइ (स

६८१)। हृ. सतप्पिज्जन्त (स ६८१)। वकृ. सतप्पमाण (सुअ ६)।

सतप्पिअ वि [सतप्त] १ सताप-युक्त (सुपा ३, ७४)। २ न. सताप (स २०)।

सततम न [सततमस्] १ अन्धकार, अंधेरा (पाम; सुपा २०५)। २ अन्ध-कूप, अंधेरा कुँआ (सुर १०, १५८)।

सतत्त देखो सतत्त = सतत (पाअ; भग)।

सतर सक [स + तॄ] तैरना, तैर कर पार करना। हृ. सतरित्ता (कस)।

सतरण न [सतरण] तैरना, तैर कर पार करना (आव ३८; चेइय ७४३; सुख २२०)।

सतस अक [स + त्रस्] १ भय-भीत होना। २ उद्विग्न होना। सतसे (उत्त २, ११)।

संता स्त्री [शान्ता] सातवें जिन भगवान् की शासन देवता (सति ६)।

सताण पु [सन्तान] १ वंश (कप्प)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (विसे २३६७, २३६८; गउड; सुपा १६८)। ३ तन्तु-जाल, मकड़ी आदि का जाल, 'मक्कडासताणए' (आचा; पडि; कस)।

सत्ताण न [सत्राण] परित्राण, सरक्षण (बृह १)।

सताणि वि [सन्तानिन्] १ अविच्छिन्न धारा [illegible], सताणिणो न विणणो [illegible] (विसे २३६८, धर्मसं २३५)। २ वंश का उत्पन्न, परंपरा [illegible], '[illegible]' अपि पत्तो उज्जाणे [illegible]। [illegible] नाम गणहरो (धर्मा १३)।

सतार [illegible] [सन्तार] १ तारनेवाला, पार उतारनेवाला (पउम २, ४४)। २ पु. तैरना, तरण (विसे)।

सतारिअ वि [सन्तारित] पार उतारा हुआ (विसे)।

सतारिम वि [सन्तारिम] तैरने योग्य (आचा २, ३, १, १३)।

सताव सक [स + तापय्] १ गरम करना, तपाना। २ हैरान करना। सतावेंति (पुप्फ ६)। वकृ. सतावित (सुपा २४८)। कवकृ. सताविज्जमाण (नाट—मृच्छ १३७)।

सताव पु [सन्ताप] १ मन का खेद (पण्ह १, ३—पत्र ५५; कुमा; महा)। २ ताप, गरमी (पण्ह १, ३—पत्र ५५; महा)।

सतावण न [सतापन] सताप, सतप्त करना (सुपा २३२)।

सतावणी स्त्री [सतापनी] नरक-कुम्भी (सूअ १, ५, २, ६)।

सतावय वि [सतापक] सताप-जनक (भवि)।

सतावि वि [सतापिन्] सतप्त होनेवाला, जलनेवाला (कप्पू)।

सताविय वि [सतापित] सतप्त किया हुआ (काल)।

सतास सक [स + त्रासय्] भय-भीत करना, डराना। सतासइ (विसे)।

सतास पु [सत्रास] भय, डर (स ७४४)।

सतासि वि [सत्रासिन्] त्रास-जनक (उप ७६८ टी)।

सति स्त्री [शान्ति] १ क्रोध आदि का जय, उपशम, प्रशम (आचा १, १, ७, १; चेइय ५६४)। २ मुक्ति, मोक्ष (आचा १, २, ४, ४; सूअ १, १, १, ठा ८—पत्र ४२५)। ३ अहिंसा (आचा १, ६, ५, ३)। ४ उपद्रव निवारण (विपा १, ६—पत्र ६१; सुपा ३६४)। ५ विषयों से मन को रोकना। ६ चैन, आराम। ७ स्थिरता (उप ७२८ टी; सति १)। ८ दाहोपशम, ठंडाई (सूअ १, ३, ४, २०)। ९ देवी विशेष (पचा १६, २४)। १० पु. सोलहवें जिनदेव का नाम (सम ४३; कप्प; पडि)। °उदअ न [°उदक] शान्ति के लिए मस्तक में दिया जाता मन्त्रित पानी (वि १६२)। °कम्म न [°कर्मन्] उपद्रव निवारण के लिए किया जाता होम आदि कर्म (पण्ह १, २—पत्र ३०; सुपा २६२)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] जहाँ शान्ति कर्म किया जाता हो वह स्थान (आचा २, २, २, ६)। °गिह न [°गृह] शान्ति कर्म करने का स्थान (कप्प)। °जल न [°जल] देखो °उदअ (धर्म २)। °जिण पु [°जिन] सोलहवें जिन देव (कुमि १)। °मई स्त्री [°मती] एक श्राविका का नाम (सुपा ६२२)। °य वि [°द] शान्ति प्रदाता (उप ७२८ टी)। °सूरि पु [°सूरि] एक जैनाचार्य और ग्रन्थकार (जी ५०)। °सेणिय पु [°श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि (कप्प)। °हर न [°गृह] भगवान् शान्तिनाथजी का मन्दिर (पउम ६७, ५)। °होम पु [°होम] शान्ति के लिए किया जाता हवन (विपा १, ५—पत्र ६१)।

सतिअ } वि [दे सत्क] सबन्धी, सबन्ध
सतिग } रखनेवाला, 'अम्मा-पिउसतिए वद्धमाणे' (कप्प), 'नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा सागारियसतिय सेज्जासथारय आयाए अहिगरण कट्टु संपव्वइत्तए' (कस; उत्त; महा; स २०६; सुपा २७८, ३२२; पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

सतिज्जाघर देखो सति-गिह (महा ६८, ८)।

सतिण्ण वि [सतीर्ण] पार-प्राप्त, पार उतरा हुआ, 'सतिण्णसव्वभया' (अजि १२)।

सतुट्ठ वि [सतुष्ट] सतोष प्राप्त (स्वप्न २०; महा)।

सतुयट्ट वि [सत्वग्वृत्त] जिसने पार्श्व घुमाया हो वह, जिसने करवट बदली हो वह, लेटा हुआ (णाया १, १३—पत्र १७६)।

सतुलणा स्त्री [सतुलना] तुलना, तुल्यता, सरीखाई (सार्ध २०)।

सतुस्स अक [स + तुष्] १ प्रसन्न होना। २ तृप्त होना। सतुस्सइ (सिरि ४ २)।

सतेज्जाघर देखो सतिज्जाघर (महा ६८, १४)।

सतो अ [अन्तर्] मध्य, बीच, 'अतो सतो च मव्वार्वे' (प्राकृ ७९))।

सतोस सक [स + तोषय्] १ प्रसन्न करना, खुशी करना। २ तृप्त करना। कर्म सतोसीअदि (शौ) (नाट—रत्ना ८०)।

सतोस पु [सतोष] तृप्ति, लाभ या अभाव, हरद अणूवि परगुणो गरुयम्मिवि नियगुणे न सतोसो' (गउड; कुमा; पण्ह १, ५—पत्र ९३; प्रासू १७७; सुपा ४३९)।

सतोसि स्त्री [सतोषि] सन्तोष, तुष्टि, तृप्ति (उत्त)।

सतोसि वि [सतोषिन्] १ सन्तोष-युक्त, लाभ-रहित, निर्लोभी, तृप्त (सूअ १, १२,

१५, सुपा ४३६)। २ आनन्दित, खुशी (कप्पू)।

संतोसिअ पुं [संतोषिक] संतोष, तृप्ति (उवा १६)।

सतोसिअ वि [संतोषित] संतुष्ट किया हुआ (महा सण)।

सथ वि [सस्थ] सस्थित (विसे ११०१)।

सथड } वि [सस्तृत] १ आच्छादित, सथडिय } परस्पर के संश्लेष से आच्छादित (भग, ठा ४, ४)। २ घन, निबिड (आचा २, १, ३, १०)। ३ व्याप्त (उत्त २१, २२, ओघ ७४७)। ४ समर्थ। ५ तृप्त, जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह (कस, आचा २, ४, २, ३, दस ७, ३३)। ६ एकत्रित (आचा २, १, ६, १)।

सथण अक [स + स्तन्] आक्रन्द करना। संथणती (सूअ १, २, ३, ७)।

सथर सक [स + स्तृ] १ बिछौना करना, बिछाना। २ निस्तार पाना, पार जाना। ३ निर्वाह करना। ४ अक. समर्थ होना। ५ तृप्त होना। ६ होना, विद्यमान होना। सथरइ (भग २, १—पत्र १२७, उवा, कस), 'ण समुच्छे णो सथरे तण' (सूअ १, २, २, १३, आचा), सथरिज्ज, सथरे, सथरेज्जा (कप्प, दस ५, २, २, आचा)। वकृ. सथर°, सथरत, सथरमाण (उवर १४२, ओघ १८२, १८१, आचा २, ३, १, ८)। सकृ सथरित्ता (भग, आचा)।

सथर पुं [सस्तर] निर्वाह (पिंड ३७५, ४००)।

सथर देखो सथार (सुर २, २४७)।

सथरण न [सस्तरण] १ निर्वाह (वृह १)। २ बिछौना करना (राज)।

सथव सक [स + स्तु] १ स्तुति करना, श्लाघा करना। २ परिचय करना। सथवेज्जा (सूअ १, १०, ११)। कृ. सथवियव्व (सुपा २)।

सथव पुं [सस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुईं' (निचू २, वव ३, पिंड ४८४)। २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिंड ३१०, ४८४, ४८५, श्रावक ८८)। ३ वि स्तुति-कर्ता (णाया १, १६ टी—पत्र २२०, राज)।

संथवण न [सस्तवन] ऊपर देखो (सबोध ५६, उप ७६८ टी)।

सथवय वि [सस्तावक] स्तुति-कर्ता (णाया १, १६—पत्र २१३)।

सथविअ देखो सठविअ (पउम ८३, १०)।

सथार } पु [सस्तार] १ दर्भ—कुश आदि सथारग } की शय्या, बिछौना (णाया १, १—सथारय } पत्र ३०, उवा, उव, भग)। २ अपवरक, कमरा (आचा २, २, ३, १)। ३ उपाश्रय, साधु का वास-स्थान (वव ४)। ४ सस्तार-कर्ता (पव ७१)।

सथाव देखो सठाव। वकृ सथावत (पउम १०३, २४)।

सथावण न [सस्थापन] सान्त्वना, समाश्वासन (पउम ११, २०, ४९, ८, ६५, ४७)। देखो सठावण।

सथावणा स्त्री [सस्थापना] सस्थापन, रखना (सा २४)। देखो सठावणा।

सथिद (शौ) देखो सठिअ (नाट—मृच्छ ३०१)।

सथुअ वि [सस्तुत] १ सबद्ध, सगत (सूअ १, १२, २)। २ परिचित (आचा १, २, १, १)। ३ जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (उत्त १, ४६, भवि)।

सथुइ स्त्री [सस्तुति] स्तुति, श्लाघा, प्रशसा (चेइय ४६६, सुपा ६५०)।

सथुण सक [स + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना। सथुणइ (उव, यति ६)। वकृ सथुणमाण (पउम ८३, १०)। कवकृ. सथुणिज्जत, सथुव्वत (सुपा १६०, श्राक ७)। सकृ सथुणित्ता (पि ४६४)।

सथुल वि [सस्थुल] रमणीय, रम्य, सुन्दर (चारु १६)।

सथुव्वत देखो सथुण।

सद अक [स्यन्द्] १ झरना, टपकना। सदति (सूअ १, १२, ७)।

सद पु [स्यन्द] १ झरन, प्रस्रव (से ७, ५६)। २ रथ, 'रवि-सदु(? दु)व्व भमतो (धर्मवि १४४)।

सद वि [सान्द्र] घन, निबिड (अच्चु ३७, विक्र २३)।

सदस पु [सदंश] दक्षिण हस्त, 'छिदाविओ निवेण कोववसा तहवि तस्स सदसो' (कुप्र २३२)।

सदसण न [सदर्शन] दर्शन, देखना, साक्षात्कार (उप ३५७ टी)।

सदट्ट वि [सदष्ट] जो काटा गया हो वह, जिसको दश लगा हो वह (हे २, ३४, कुमा ३, ८, पड्)।

सदट्ट } वि [दे] १ सलग्न, सयुक्त, सदट्टय } सबद्ध (दे ८, १८, गउड, २३६)। २ न सघट्ट, सघर्ष (दे ८, १८)।

सदड्ढ वि [सदग्ध] अति जला हुआ (सुर ६, २०५, सुपा ५६६)।

सदण पु [स्यन्दन] १ रथ (पाअ, महा)। २ भारतवर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी काल मे उत्पन्न तेइसवा जिनदेव (पव ७)। ३ न. क्षरण, प्रस्रव। ४ वहन, बहना। ५ जल, पानी, 'जत्थ ण नई निच्चोयगा निच्चसदणा' (कप्प)।

सदब्भ पु [सदर्भ] रचना, ग्रथन (उवर २०३, सण)।

सदमाणिया } स्त्री [स्यन्दमानिका, °नी] सदमाणी } एक प्रकार का वाहन, एक तरह की पालकी (औप, णाया १, ५—पत्र १०१, १, १ टी—पत्र ४३, औप)।

सदाण सक [कृ] अवलम्बन करना, सहारा लेना। सदाणइ (हे ४, ६७)। वकृ. सदाणत (कुमा)। कवकृ. सदाणिज्जत (नाट—मालती ११६)।

सदाणिअ वि [सदानित] बद्ध, नियन्त्रित (पाअ, से १, ६०, १३, ७१, सुपा ३, कुप्र ६६, नाट—मालती १६६)।

सदामिय वि [सदामित] ऊपर देखो (स ३१६, सम्मत्त १६०)।

सदाव देखो सताव = सताप (गा ८१७, ६६४, पि २७५, स्वप्न २७, अभि ६१, माल १७६)।

सदाव पुं [सद्राव] समूह, समुदाय (विसे २८)।

सदिट्ठ वि [सदिष्ट] १ जिसका अथवा जिसको सँदेशा दिया गया हो वह, उपदिष्ट, कथित (पाअ, उप ७२८ टी, ओघभा ३१,

मे)। २ जितना भाग दी गई हो वह, 'पुव्विल्ल[illegible]संदिट्ठेण' (पव)। ३ कहा हुआ, [illegible] (चाकर आदि) (पव [illegible])।

संदिट्ठ [illegible] [illegible] [illegible] (पाअ)।

संदित्त [illegible] [illegible] उत्कोच [illegible] (पउम ७८)।

संदि[illegible] वि [स्यन्दिन] [illegible] टपकता हुआ (सुर ३, ७६)।

संदिर वि [स्यन्दि[illegible]] [illegible] (सण)।

संदिस सक [सं+दिश्] १ संदेशा देना, समाचार पहुँचाना। २ आज्ञा देना। ३ अनुमति देना, सम्मति देना। ४ दान के लिए संकल्प करना। संदिसइ (षड्, महा), संदिसह (कप्प)। वकृ संदिस्सत (पिंड २३०)। प्रयो, संकृ संदिसाविऊण (पंचा ४, ३८)।

संदिसण न [संदर्शन] उपदेश, कथन, 'पुव्वो[illegible]संदिसणं' (संबोध ३४)।

संदीण पुं [संदीन] १ द्वीप विशेष, पक्ष या मास आदि में पानी से [illegible] द्वीप। २ थोड़े [illegible] तक रहनेवाला दीपक। ३ क्षुद्र। ४ अन्य, आश्रणीय (आचा १, ६, ३, ३)।

संदीवग वि [संदीपक] उत्तेजक, उद्दीपक, [illegible] (सुपा)।

संदीवण न [संदीपन] १ उत्तेजना, उद्दीपन (उप ४८८ टी—उत्तर ५६)। २ वि [illegible], उत्तेजना करनेवाला (उप [illegible])।

[illegible] [संदीपित] उत्तेजित, उद्दीपित [illegible]।

[illegible] [सं + [illegible]] [illegible]। संदुमइ ([illegible])।

संदुट्ठ वि [संदुष्ट] [illegible] (कुमा ११)।

संदुम [illegible] [सं + [illegible]] [illegible], [illegible]। संदुमइ (हे ४, १५२ कुमा)।

संदु[illegible] वि [[illegible]] [illegible] हुआ, [illegible] हुआ (कुमा)।

संदेव पुं [दे] १ सीमा, मर्यादा। २ नदी-मेलक, नदी-संगम (दे ८, ७)।

संदेस पुं [संदेश] संदेशा, समाचार (गा ३८२, ८३३; हे ४, ४३४, सुपा ३०१, ५१६)।

संदेह पुं [संदेह] संशय, शंका (स्वप्न ६६, गउड, महा)।

संदोह पुं [संदोह] समूह, जत्था (पाअ, सुर २, १४६, सिरि ७६४)।

संध सक [सं + धा] १ साधना, जोड़ना। २ अनुसंधान करना, खोज करना। ३ चाहना, चाहना। ४ वृद्धि करना, बढ़ाना। ५ करना 'मग्ग व साइ रह सो' (कुप्र १०२), संधइ, संधए (आचा, सूत्र १, १४ २१, १, ११, ३४, ३५)। भवि संधिस्सामि, संधिहिसि (पि ५३०)। वकृ संधत (से ५, २४)। कवकृ संधिज्जमाण (सण)। हेकृ संधिउ (कुप्र ३८१)।

संध° देखो सब्भ° (दे ११७०)।

संधण स्त्रीन [संधान] १ साधना, संधि, जोड़ (धम्म १०१७)। २ अनुसंधान (पंचा १२, ४३)। स्त्री °णा (आचानि १०५, सूत्रनि १६७, ओघ ७२७)।

संधणया स्त्री [संधना] साधना, जोड़ना (नव ७)।

संधय वि [संधक] संधान कर्ता (दस ६, ४, ५)।

संधया देखो संध = सं + धा। संधयाती (सूत्र २, ६, २)।

संधा स्त्री [संधा] प्रतिज्ञा, नियम (श्रा १२, उप पृ ३३३, सम्मत्त १५१)।

संधाण न [संधान] १ दो हाड़ों का संयोग-स्थान (सुर १२, ६)। २ संधि, सुलह (हम्मीर १४)। ३ मद्य, सुरा, दारू (धर्मसं ५६)। ४ जोड़, संधान, मिलान (आचा, कुमा, सवि)। ५ अचार, आम आदि का बनाया हुआ खाद्य विशेष (पव ४)।

संधारण न [संधारण] सान्त्वना, आश्वासन (स ४१२)।

संधारिअ वि [दे] योग्य, लायक (दे ८, १)।

संधारिअ वि [संधारित] रखा हुआ, स्थापित (णाया १, १—पत्र ६६)।

संधाव सक [सं + धाव्] दौड़ना। संधावइ (उत्त २०, ४६)।

संधि पुंस्त्री [संधि] १ छिद्र, विवर। २ संधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान (सूत्र १, १, १, २०, २१, २२, २३, २४)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरों के संयोग से होने वाला वर्ण-विकार (पण्ह २, २—पत्र ११४)। ४ सेंध, चोरी के लिए भीत में किया जाता छेद (चारु ६०, महा, हास्य ११०)। ५ दो हाड़ों का संयोग स्थान, 'चक्काओ मज्भ-संधीओ' (सुर ४, १६५, १२, १६६, जी १२)। ६ मत, अभिप्राय, 'अहवा चिंचित्त-संधिणो हि पुरिमा हवंति' (स २६)। ७ कर्म, कर्म-संतति (आचा, सूत्र १, १, १, २०)। ८ सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति। ९ चारित्र-मोहनीय कर्म का क्षयोपशम। १० अवसर, समय, प्रसंग। ११ मीलन, संयोग (आचा)। १२ दो पदार्थों का संयोग-स्थान (विपा १, ३—पत्र ३६, महा)। १३ मेल के लिए कतिपय नियमों पर मित्रता-स्थापन, सुलह (कप्पू, कुमा ६, ४०)। १४ ग्रंथ का प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद (भवि)। °गिह न [°गृह] दो भीतों के बीच का प्रच्छन्न स्थान (कप्प)। °च्छेयग, °छेयग वि [°च्छेदक] सेंध लगा कर चोरी करनेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६, विपा १, ३—पत्र ३६)। °पाल, °वाल वि [°पाल] दो राज्यों की सुलह का रक्षक (कप्प, ओप, णाया १, १—पत्र १६)।

संधिअ वि [दे] दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (दे ८, ८)।

संधिअ वि [संहित] साथ हुआ, जोड़ा हुआ (से १, ४८, गा ५३, स २६०, गउड ३६, वज्जा ७०)।

संधिअ वि [संधित] प्रार्थित (गउड)।

संधिआ देखो संझिआ (आप ६२)।

संधिउ देखो संध = सं + धा।

संधिन देखो संधिअ = संहित (सण)।

संधिविग्गहिअ पुं [सान्धिविग्रहिक] राजा की संधि और लड़ाई के कार्य में नियुक्त मन्त्री (कुमा)।

सवीर सक [स + वीरय्] आश्वासन देना, धीरज देना। वकृ. सवीरत (सुपा ४७६)।

सवीरविय वि [सवीरित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह, आश्वासित (सुर ४, १११)।

सधुक्क अक [प्र + दीप् स + धुक्ष्] १ जलना, सुलगना। २ सक जलाना। ३ उत्तेजित करना। सधुक्कइ (हे ४, १५२, कुमा)। कर्म सधुक्किज्जइ (वज्जा १३०)।

सधुक्कण न [सधुक्षण] १ सुलगना, जलना। २ प्रज्वालन सुलगाना (भवि)। ३ वि. सुलगानेवाला (स २८१)।

सधुक्किअ वि [सधुक्षित] १ जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा ५०१)। २ जला हुआ, प्रदीप्त, सुलगा हुआ (पाअ, महा, स २७)। ३ उत्तेजित, 'अविवेयपवणसधुक्किओ पज्जलिओ मे मणम्मि कोवाणलो' (स २८१)।

सधुच्छिद (शौ) ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २३३)।

सधुम देखो सद्दुम। सधुमइ (पड्)।

सधे देखो सव = स + वा। सवेइ, सधेति, सधेज्जा (आचा १, १, १, ५, पि ५००, सूअ १, ४, १, ५)। वकृ. सवेत, सवेमाण (पउम ६८, ३१, पचा १४, २७, आचा, पि ५००)।

सन देखो सण (आचा १, ५, ६, ४)।

सनक्खर न [सज्ञाक्षर] अकार आदि अक्षरो की आकृति (णदि १८७)।

सनज्झ देखो सणज्झ। सनज्झइ (भवि)। सकृ सनज्झिऊण (महा)। हेकृ. सनज्झिउ (स ३७६)।

सनण न [सज्ञान] इशारा करना, सज्ञा करना (उप २६०)।

सनत देखो सनय (पण्ह १, ८—पत्र ७८)।

सनद्ध देखो सणद्ध (ओप, विपा १, २ टी—पत्र २३)।

सनय वि [सनत] नमा हुआ, अवनत (ओप, वज्जा १५०)।

सनव सक [स + ज्ञापय्] सभाषण से सतुष्ट करना। सनवेइ (राय १४०)।

सनह देखो सणज्झ। सनहइ (भवि), सनहह (धर्मवि २०)।

सनहण न [सनहन] सनाह (पउम १०, ६४)।

सनह्निय देखो सणद्ध (सुपा २२)।

सना देखो सणा (ठा १—पत्र १६, पण्ह १, ३—पत्र ५५, पाअ, सुर ३, ६७, पिड २४५, उप ७७१, द ३)।

सनाय वि [सज्ञात] पिछाना हुआ, पहिचाना हुआ, 'संनाया परियणेण' (महा)। देखो सणाय (पव १५३)।

सनाह देखो सणाह = स + नाहय्। सनाहेइ (ओप, तदु ११)। सकृ. सनाहित्ता (तदु ११)।

सनाह देखो सणाह = सनाह (महा)।

सनाहिय वि [सनाहित] तय्यार किया हुआ, सजाया हुआ (ओप)।

सनाहिय देखो सणाहिय (णाया १, १६—पत्र २१७)।

सनि देखो सणि (सम २, ठा २, २—पत्र ५६, जी ४३, कम्म १, ६)।

सनिकास देखो सनिगास (ठा ६—पत्र ४५६, कप्प)।

सनिकिट्ठ वि [सनिकृष्ट] आसन्न, समीप मे स्थित (सुख ४, ८)।

सनिक्खित्त वि [सनिक्षिप्त] डाला हुआ, रखा हुआ (कप्प)।

सनिगास वि [सनिकाश] १ समान, तुल्य (भग २, १, णाया १, १—पत्र २५, ओप, स ३८१)। २ पु अपवाद (पचू)। ३ पुन. समीप, पास (पउम ३६, २८)।

सनिगास पु [सनिकर्ष] सयोग, 'सजोग सनिगासो पडुच्च सवध एगट्ठा' (णदि १२८ टी)।

सनिचय पु [सनिचय] १ निचय, समूह (आचा)। २ सग्रह (आचा १, २, ५, १)।

सनिचिय वि [सनिचित] निविड किया हुआ (पव १५८, जीवस ११६)।

सनिजुज सक [सनि + युज्] अच्छी तरह जोडना। कवकृ. सनिजुज्जत (पिंड ४५५)।

सनिज्झ न [सानिध्य] सहायता करने के लिए समीप मे आगमन, निकटता (स ३८२)।

सनिनाय पु [सनिनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (कप्प)।

सनिभ देखो सनिह (णाया १, १—पत्र ४८, उवा, ओप १)।

सनिमहिअ वि [सनिमहित] १ व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ। २ पूजित, 'चपा नाम नयरी पडुरवरभवणसनिमहिया' (ओप, णाया १, १ टी—पत्र ३) 'अत्थि मगहा जणवओ गामसतसनिमहिओ' (वसु)।

सनिय देखो सणिय (सिरि ८६०, भवि)।

सनियट्ट वि [सनिवृत्त] रुका हुआ, विरत। °चारि वि [°चारिन्] प्रतिषिद्ध का वर्जन करनेवाला (कप्प)।

सनियास देखो सनिगास (पउम ३३, ११६)।

सनिलयण न [सानलयन] आश्रय, आधार, 'लोभवसा ससार अतिवयति सव्वदुक्खसनिलयण' (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

सनिवइय देखो सणिपडिअ (णाया १, १—पत्र ६५)।

सनिवाइ वि [सनिपातिन्] सयोगी, सम्बन्धी, 'सव्वक्खरसनिवाइणो' (कप्प, ओप, सम्मत्त १४८)।

सनिवाइ वि [सनिवादिन्] सगत बोलनेवाला, व्याजबी कहनेवाला (भग १, १—पत्र ११)।

सनिवाइय वि [सानिपातिक] सनिपात रोग से सम्बन्ध रखनेवाला (णाया १, १—पत्र ५०, तदु १६, ओप ८७)। २ भाव-विशेष, अनेक भावो के सयोग से बना हुआ भाव (अणु ११३, कम्म ४, ६४, ६८)। ३ पु. सनिपात, मेल, सयोग (अणु ११३)।

सनिवाइय वि [सानिपातिक] देखो सनिवाइ, 'सव्वक्खरसनिवाइयाए' (ओप ५६)।

सनिवाडिय वि [सनिपातित] विध्वस्त किया हुआ (णाया १, १६—पत्र २२३)।

सनिवाय पु [सनिपात] सयोग, सम्बन्ध (कप्प, ओप)।

सनिविट्ठ न [सनिविष्ट] १ मोहल्ला, रथ्या (ओप)। २ वि. जिसने पडाव डाला हो वह, नगर के बाहर पडाव डालकर पडा हुआ (कस)। ३ सहत और स्थिर आसन से व्यवस्थित—बैठा हुआ (णाया १, ३—पत्र ६१, राय २७)।

सन्निवेस पुं [सन्निवेश] १ नगर के बाहर का प्रदेश, [illegible] ग्रामीर [illegible] लोग रहते हों। २ [illegible], नगर आदि स्थान (णा १, १—पत्र ३६)। ३ यात्री आदि का डेरा, [illegible] स्थान, पड़ाव (उत्त ३० १७)। ४ [illegible] (पिंड ३८८)। ५ रचना (उत्त [illegible])।

सन्निवेसणया स्त्री [सन्निवेशना] संस्थापन (उत्त २६ [illegible])।

सन्निवेसिअ वि [सन्निवेशिन्] रचनावाला, ([illegible])।

सन्निसन्न वि [सन्निषण्ण] बैठा हुआ, सम्यक् स्थित (णाया १ [illegible]—पत्र १६ [illegible] सुपा ४६६ [illegible] १२, महा)।

सन्निसिज्जा } स्त्री [सन्निषद्या] ग्रासन-
सन्निसेज्जा } विशेष, पीठ आदि ग्रासन (सम २१, उत्त १[illegible] ३, उत्त)।

सन्निह वि [सन्निभ] समान, सदृश (प्रासू ६६ महा)।

सन्निहाण न [सन्निधान] १ ज्ञानावरणीय आदि [illegible] (पाचा)। २ [illegible] विशेष, अधिकरण [illegible] (विसे २०६६, ठा ८—पत्र ४[illegible])। ३ सान्निध्य, निकटता ([illegible])। °सत्थ न [°शस्त्र] [illegible]। °सत्थ न [°शास्त्र] [illegible] (ग्राचा)।

सन्निहि पुंस्त्री [सन्निधि] १ [illegible] (ग्राचा [illegible])। २ [illegible] (ग्राचा १, २, [illegible], ३)। ४ [illegible] (उप पु [illegible] सुर [illegible])। ५ समीप, [illegible] (ग्राचा [illegible], ३, ८, २४)।

[illegible] [सन्निहित] [illegible] (णाया १, १—पत्र [illegible])। [illegible] (पाया १, १ टी—[illegible])।

[illegible]

[illegible] (सुर [illegible] २८३)।

[illegible] ([illegible] १३, [illegible] ११८, सुपा)।

सपइ अ [सम्प्रति] १ इस समय, अधुना, अब (पाअ, महा, जी ५०, द ४६, कुमा)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन राजा, सम्राट् अशोक का पौत्र (कुप्र २, धर्मवि ३७, पुष्फ २६०)। °काल पुं [°काल] वर्तमान काल (सुपा ८४६)। °कालीण वि [°कालीन] वर्तमान-काल-सम्बन्धी (विसे २२२६)।

सपइण्ण वि [सप्रकीर्ण] व्याप्त (राय)।

सपउत्त वि [सम्प्रयुक्त] संयुक्त, संबद्ध, जोडा हुआ (ठा ४ १—पत्र १८३, सूत्र २, ७, २, उवा, ग्रोप, धर्मसं ६६५ राय १४६)।

सपओग पुं [सम्प्रयोग] संयोग, सबन्ध (ठा ४, १—पत्र १८३, स ६१४, उत ७२८ टी सुप्र ३७३ ग्रोप)।

सपकर देखो सवगर। सपकरेइ (उत्त २१, १६)।

सपक्क पुं [सपर्क] सम्बन्ध (सुपा ५८, सम्मत्त १४१)।

सपक्कि वि [सपर्किन्] सपर्कवाला, संबन्धी (पण्ह, काप्र १७)।

सपक्खाल पुं [सप्रक्षाल] तापस का एक भेद जो मिट्टी वगैरह घिस कर शरीर का प्रक्षालन करते हैं (णाय)।

सपक्खालिय वि [सप्रक्षालित] धोया हुआ (धर्म ३)।

सपक्खित्त वि [सम्प्रक्षिप्त] प्रक्षिप्त, फेका हुआ, डाला हुआ (पउम ५, १५७)।

सपगर सक [सप्र + कृ] करना। सपगरइ (उत्त २१, १६)।

सपगाढ वि [सम्प्रगाढ] १ प्रबल आसक्त (उत्त २०, ४४, सुप्र २, ६, २२)। २ व्याप्त (सुप्र १, ५, १, १७)। ३ स्थित, वर्त्ती वत (सुप्र १, १२, १२)।

सपगिद्ध वि [सम्प्रगृद्ध] ग्रति ग्रासक्त (पह १, ४—पत्र ८५)।

सपग्गहिअ वि [सम्प्रगृहीत] खूब ग्रादर से गृहीत, विशेष अभिमान युक्त (दस ६, ४, २)।

सपज्ज ग्रक [सं + पद्] १ संपन्न होना, सिद्ध होना। २ मिलना। सपज्जइ (षड्, महा)। भवि. सपज्जिस्सइ (महा)।

सपज्जलिअ पुं [सम्प्रज्वलित] तीसरा नरक का नववाँ नरकेन्द्रक, नरकावास विशेष (देवेन्द्र ६)।

सपट्ठिअ देखो सपत्थिअ = सप्रस्थित (उप १४२ टी, ग्रोप, संबोध ५५, सुपा ७७, उवर १५८)।

सपड ग्रक [सं + पद्] १ प्राप्त होना, मिलना, गुजराती में 'सापडवु'। २ सिद्ध होना, निष्पन्न होना। सपडइ सपडति (वज्जा १२६, सबु १५०, वज्जा ५०)। वकृ सपडत (से १४, १, सुर १०, ६७)।

सपडिअ वि [दे सपन्न] लब्ध मिला हुआ, प्राप्त (दे ८ १४ [illegible])।

सपडिवूह सक [सम्प्रति + बृंह्] प्रशंसा करना तारीफ करना। सपडिवूहन्ति (सुम २, २, ५५)।

सपडिलेह सक [सम्प्रति + लेखय्] प्रति-जागरण करना, प्रत्युपेक्षण करना, अच्छी तरह निरीक्षण करना। सपडिलेहए (उत्त २६, ४३)। कृ सपडिलेहिअव्व (दसचू १, १)।

सपडिवज्ज सक [सम्प्रति + पद्] स्वीकार करना। सपडिवज्जइ (भग)।

सपडिवत्ति स्त्री [सम्प्रतिपत्ति] स्वीकार, ग्रगीकार (विसे २६१४)।

सपडिवाइअ वि [सम्प्रतिपादित] स्थित (उत्त २२, ४६, सुख २२, ४६)। २ स्थापित (दस २, १०)।

सपडिवाय सक [सम्प्रति + पादय्] संपादन करना, प्राप्त करना। सपडिवायए (दस ६, २, २०)।

सपणाइय } देखो सपणाइय (राय, कप्प)।
सपणादिय }

सपण्णा देखो सवण्णा (द ८, ८)।

सपणाइअ } वि [सम्प्रणादित] [illegible] शब्दवाला, गुंजित [illegible] (ग्रौप ३, ४—पत्र २२४ [illegible] २२० टी)।
सपणादिय }

सपणाम सक [सप्र + नामय्] प्रर्पण करना। सपणामए (उत २३, १७)।

सपणिवाअ } पुं [सम्प्रणिपात] प्रणाम,
सपणिवाय } समीचीन नमस्कार (पउम ३, १८, सिरि २३०)।

सपणुण्ण वि [सप्रनुन्न] प्रेरित, उत्तेजित, 'अक्खडचडानिलसपणुण्णविलोलजालामयम-मुलम्मि' (उप ४५)।

सपणुल्ल } सक [सप्र + नुद्] प्रेरणा
सपणोल्ल } करना। संकृ सपणुल्लिया, सपणोल्लिया (दस ५, १, ३०)।

सपण्ण देखो सपन्न (णाया १, १—पत्र ६, हेका ३३१, नाट—मृच्छ ६)।

सपण्णा स्त्री [दे] घेवर या घीवर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने का आटा, गेहूँ का वह आटा जिसका घृतपूर बनता है (दे ८, ८)।

सपत्त वि [संप्राप्त] १ सम्यक् प्राप्त (णाया १, १, उवा, विपा १, १, महा, जी ४०)। २ समागत, आया हुआ (सुपा ४१६)।

सपत्त पुन [सपात्र] सुन्दर पात्र, सुपात्र (सुपा ४१६)।

सपत्ति स्त्री [संपत्ति] १ समृद्धि, वैभव, सम्पदा (पाअ, प्रासू ६६, १२८)। २ संसिद्धि। ३ पूर्त्ति, तव दोहलस्स सपत्ती भविस्सइ' (विपा १, २—पत्र २७)।

सपत्ति स्त्री [संप्राप्ति] लाभ, प्राप्ति (चेइय ८६४, सुपा २१०)।

सपत्तिआ स्त्री [दे] १ बाला, कुमारी, लडकी (दे ८, १८, वज्जा ११६)। पिप्पली-पत्र, पीपल की पत्ती (दे ८, १८)।

सपत्थिअ न [दे] शीघ्र, जलदी (दे ८, ११)।

सपत्थिय } वि [संप्रस्थित] १ जिसने
सपत्थित } प्रयाण किया हो वह, प्रयात, प्रस्थित (अत २१, उप ६६६, सुपा १०७, ६५१, णाया १, २—पत्र ३२)। उपस्थित, 'गहियाउहेहि जइवि हु रक्खिजइ पंजरोवरच्छो (? रुद्धो)वि। तहवि हु मरइ निरुत्त पुरिसो संपत्थिए काले॥"

(पउम ११, ६१)।

सपद अ [साप्रतम्] १ युक्त, उचित (प्राकृ १२)। २ अधुना, अब (अभि ५६)।

सपदत्त वि [संप्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित (महा, प्राप)।

सपदाण देखो सपयाण (णाया १, ८—पत्र १५०, आचा २, १५, ५)।

सपदाय पु [संप्रदाय] गुरु परपरागत उपदेश, आम्नाय (संबोध ५३, धर्मसं १२३७)।

सपदावण न [संप्रदापन, संप्रदान] कारक-विशेष, 'ततिआ करणम्मि कता चउत्थी सपदावणे' (ठा ८—पत्र ४२७)।

सपदि देखो सपइ = संप्रति (प्राकृ १२)।

सपदि देखो सपत्ति = संपत्ति (संक्षि ६, पि २०४)।

सपधार देखो सपहार = सप्र + धारय्। सपधारेदि (शो) (नाट—मृच्छ २२६)। कर्म सपधारीअदु (शो) (पि ५४३)।

सपधारणा स्त्री [संप्रधारणा] व्यवहार-विशेष, धारणा व्यवहार (वव १०)।

सपधारिय वि [संप्रधारित] निश्चित, निर्णीत (सण)।

सपधूमिय वि [संप्रधूमित] धूप-वासित, धूप दिया हुआ (कस, कप्प, आचा २, २, १, १)।

सपन्न वि [संपन्न] १ सपत्ति-युक्त (भग, महा, कप्प)। २ संसिद्ध (विपा १, २—पत्र २६)।

सपाप देखो सपाव।

सपबुज्झ अक [सप्र + बुध्] सत्य ज्ञान को प्राप्त करना। सपबुज्झति (पचा ७, २३)।

सपमज्ज सक [सप्र + मृज्] मार्जन करना, झाडना, साफ सूफ करना। सपमज्जेइ (ओप ४८)। संकृ. सपमज्जेत्ता, सपमज्जिय (ओप, आचा २, १, ४, ५)।

सपमार सक [सप्र + मारय्] मूर्च्छित करना। सपमारए (आचा १, १, २, ३)।

सपय वि [साप्रत] विद्यमान, वर्तमान, 'पाएण सपए चिय कालम्मि न याइदीहका-लएणा' (विसे ५१६)।

सपय देखो सपद (पाअ, महा, सुपा ५६८)।

सपयट्ट अक [सप्र + वृत्] सम्यक् प्रवृत्ति करना। सपयट्टेज्जा (धर्मसं ६३१)। वकृ सपयट्टत (पचा ८, १४)।

सपयट्ट वि [संप्रवृत्त] सम्यक् प्रवृत्त (सुर ४, ७६)।

सपया स्त्री [संपद्] १ समृद्धि, सपत्ति, लक्ष्मी, विभव (उवा, कुमा, सुर ३, ६८, महा, प्रासू ६६)। २ वाक्यो का विश्राम-स्थान (पव ६)। ३ प्राप्ति, 'बोहीलाभो जिणधम्मसपया' (चेइय ६३१, पव ६२)। ६२)। ४ एक वणिक्-स्त्री का नाम (उप ५६७ टी)।

सपयाण न [संप्रदान] १ सम्यक् प्रदान, अच्छी तरह देना, समर्पण (आचा २, १५, ५, गा ६८, सुपा २६८)। २ कारक-विशेष, चतुर्थी-कारक, जिसको दान दिया जाय वह (विसे २०६६)।

सपयावण देखो सपदावण, चउत्थी सपयावणे' (अणु १३३)।

सपराइग } वि [साम्परायिक] सपराय-
सपराइय } सबन्धी, सपराय मे उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ३६, सूअ १, ८, ८, भग, श्रावक २२६)।

सपराय पु [सपराय] १ ससार, जगत् (सूअ १, ५, २, २३, दस २, ५)। २ क्रोध आदि कषाय (ठा २, १—पत्र ३६)। ३ बादर कषाय, स्थूल कषाय (सूअ १, ८, ८)। ४ कषाय का उदय (ओप)। ५ युद्ध, सग्राम, लडाई (णाया १, ६—पत्र १५७, कुप्र ४००, विक्र ८८, दस २, ५)।

सपरिकित्ति पुं [सपरिकीर्त्ति] राक्षस वश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २६०)।

सपरिक्ख सक [सपरि + ईक्ष्] सम्यक् परीक्षा करना। संकृ. सपरिक्खाए (संबोध २१)।

सपरिक्खित्त } वि [सपरिक्षिप्त] वेष्टित
सपरिखित्त } (भग, पउम, ३, २२, णाया १, १ टी—पत्र ४)।

सपरिफुड वि [सपरिस्फुट] सुस्पष्ट, अति व्यक्त (पउम ७८, १६)।

सपरिवुड वि [सपरिवृत] १ सम्यक् परि-वृत, परिवार-युक्त (विपा १, १—पत्र १, उवा, ओप)। २ वेष्टित (सूअ २, २, ५५)।

सपरी सक [सपरी + इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। सपरीइ (विसे १२७७)।

सपल (अप) अक [स + पत्] आ गिरना। संपलइ (पिंग)।

सपलग्ग वि [संप्रलग्न] १ सयुक्त, मिला हुआ। २ जो लडाई के लिए भिड गया हो वह (णाया १, १८—पत्र २३६)।

स[illegible] वि [संप्र[illegible]दित] [illegible], [illegible] [illegible] (णाया १, २ पत्र ८६)।

सपक्खलिय वि [संप्रस्खलित] जिसका अच्छी तरह [illegible] हुआ हो वह; 'तुरुगसत्तविया' (धात)।

सपल्लिअ पुं [संपल्लि] [illegible] (दस)।

सपलिअंक पुं [संपर्यङ्क] पद्मासन (सम, [illegible] राज [illegible])।

सपलित्त वि [संप्रदीप्त] प्रज्वलित, जलता हुआ (आचा १, १—१, ६३, पउम २२, [illegible], [illegible] ६७०, सुपा २६८, सण)।

सपलिमज्ज सक [संपरि + मृज्] प्रमार्जन करना। [illegible] सपलिमज्जमाण (आचा [illegible])।

सपलेइ सक [संपरि + इ] जाना, गति करना। [illegible] (सूअ १, १, २, ७)।

सपवेय } अक [सं + वेप] कांपना। सपवेव } [illegible], [illegible] (आचा २, [illegible], ३)।

सपवेस पुं [संप्रवेश] प्रवेश [illegible] (गउड)।

सपव्वय सक [संप्र + व्रज्] गमन करना, जाना। वकृ सपव्वयमाण (आचा १, ५, [illegible] ठा [illegible]—पत्र [illegible])। हेकृ सपव्वइ[illegible] ([illegible])।

सपसार पुं [संप्रसार] [illegible] होना, सम-[illegible] ([illegible])।

सपसारग } वि [संप्रसारक] १ विस्ता-सपसारय } रक, [illegible] (सूअ १, [illegible])। २ पर्यालोचनकर्ता (आचा १, [illegible])।

[illegible] वि [संप्रसारिन्] [illegible] (सूअ १, [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] (ठा [illegible])।

[illegible] सक [सं + [illegible]] [illegible] [illegible] [illegible] (ठा [illegible])।

[illegible] सक [सं + पारय] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

(सुअ २, १, १८, २६)। संकृ संपहारिऊण (स ८-६)

सपहार पुं [संप्रधार] निश्चय, निर्णय (पउम १६, २६, उप १०३१ टी, भवि)।

सपहार पुं [संप्रहार] युद्ध, लड़ाई (से ८, ८६)।

सपहारण न [संप्रधारण] निश्चय (पउम ८८, ८८)।

सपहाव सक [संप्र + धाव्] दौड़ना। सपहावेइ (आचा २, १, ३, ३)।

सपहिट्ठ वि [संप्रहृष्ट] हर्षित, प्रमुदित (उत्त २४, ३)।

सपा स्त्री [दे] काञ्ची, मेखला, करधनी (दे ८, २)।

सपाउअव वि [संपादितवत्] जिसने सम्पादन किया हो वह (हे ४, २६५, बिसे ६३८)।

सपाइम वि [संपातिम] १ भ्रमर, कीट, पतंग आदि उड़नेवाला जन्तु (णाया, पिंड २४, सुपा ४६१, श्राघ ३८८)। २ आने-वाला, गति कर्ता, 'तिरिच्छसपाइमा वा तसा पाणा' (आचा २, १, ३, ६, २, ३, १, १४)।

सपाडय वि [संपातित] १ आगत, आया हुआ। २ मिलित, मिला हुआ (भवि)।

सपाडय वि [संपादित] साधित, सिद्ध किया हुआ, 'संपाडयउडुकजि' (नाण)।

सपाउण सक [संप्र + आप्] अच्छी तरह प्राप्त करना। संपाउणइ, संपाउणति (उत्त २६, ५८, पि ५०४)। भवि संपाउणिस्सामो (णाया १, १८—पत्र २४१)। 'अयो विप्पाण परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि' (उत्त ११, ३२)।

सपाओ अ [संप्रातर्] १ जब प्रभात होता है तब। २ अति प्रभात, बड़ी सुबह। ३ हर प्रभात (ठा ३, १ टी—पत्र ११८)।

सपागड वि [संप्रकट] प्रकट, खुला, 'संपा-गडसेवी' (ठा ४, १—पत्र २०३, उप)।

सपाड सक [सं + पादय्] १ सिद्ध करना, निष्पन्न करना। २ अर्पित करना, देना, दान करना। ४ प्राप्त करना। 'देइ सो जम्मिणिय, संपाडेइ वत्थाभरणाइयं' (महा), 'संपाडेमि भयवओ आणं ति' (स ६८४), संपाडेउ (स ६६)। कृ संपाडेयव्व (स २१४)।

सपाडग वि [संपादक] कर्ता, निर्माता 'ता को अन्नो तस्सुत्तरईए संपाडगो होज्जा' (उप १४२ टी)।

सपाडण न [संपादन] १ निष्पादन (स ७४८)। २ करण, निर्माण (पंचा ६, ३८), 'परत्थसंपाडणेक्करसिअत्त' (सा ११)।

सपाडिअ वि [संपादित] १ सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (स २ ४, सुर २, १७०)। २ प्राप्त किया हुआ (उप पृ १२४)। ३ दत्त, अर्पित (स २३५)।

सपातो देखो संपाओ (ठा ३, १—पत्र १२७)।

सपाद (शौ) देखो सपाड = सं + पादय्। संपादेदि (नाट—शकु ६५)। कृ. संपाद-णीअ (नाट—विक्र ६०)।

संपादइत्तअ (शौ)। वि [संपादयितृ] सपादन-कर्ता, संपादक (पि ६००)।

सपादिअवद (शौ) देखो संपाउअव (पि ५६६)।

सपाय पुं [संपात] सम्यक्‌पतन, 'सलिल-संपायकयकहमुल्लीलयं' (सुर ३ ११६)। २ संबन्ध, संयोग, 'णारीरमणसमणेयसुग्गसंपा-यकलिय ति' (सुर ४, ७५, गउड) ३ व्यर्थ का भूठ, निरर्थक असत्य-भाषण (पण्ह १, ५—पत्र ६२)। सग, संगति (श्रा ६, पंचा १, ४१)। ५ आगमन (पंचा ७, ७२)। ६ पतन, गिरना (उत्त १८, २३, सुपा १८, २३)।

सपाय देखो संपाओ (राज)।

सपायग वि [संपादक] संपादन-कर्ता (उप पृ २६, महा, जेइय ६०५)।

सपायग वि [संप्रापक] १ प्राप्त करानेवाला, 'रिंगिगुणसपायगा हाई' (चेइय ६०५)। २ प्राप्त करानेवाला (उप पृ २६)।

सपायण देखो सपाडण (सुर ४, ७३, सुपा २८, ३४३, जेइय ७६७)।

सपायणा स्त्री [सम्पादना] ऊपर देखो (पंचा १३, १७)।

सपाल सक [स + पालय्] पालन करना। सपालइ (भवि)।

सपाव सक [सम् + आप्] प्राप्त करना। सपावेइ (भवि)। संकृ सपप्प (संवेग १२)। हेकृ. सपाविउं (सम १, भग, ग्रोप)।

सपाव सक [सम्र + आपय्] प्राप्त करवाना। सपावेइ (उवा)।

सपावण न [सम्प्रापण] प्राप्ति, लाभ (णाया १, १८—पत्र २४१, सुर ८, ५७)।

सपाविअ वि [सम्प्राप्त] प्राप्त, लब्ध (सुर २, २२६, सुपा १६५, मण)।

सपाविअ वि [सम्प्रापित] नीत जो ले जाया गया हो वह (राज)।

सपामंग वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ८, ११)।

सपिंडग न [सपिण्डन] १ द्रव्यों का परस्पर संयोजन (पिंड २)। २ समूह (ओघ ४०७)।

सपिंडिअ वि [सपिण्डित] पिण्डाकार किया हुआ, एकत्र किया हुआ (ओप, जी ४७, मण)।

सपिक्ख देखो सपेह = सम्र + ईक्ष्। सपिक्खई (दसचू २, १२)।

सपिट्ठ वि [सपिष्ट] पिसा हुआ (सूत्र १, ४, ८)।

सपिणद्ध वि [सम्पिनद्ध] नियन्त्रित, 'रज्जुपिणिद्धो व इदकेतू विसुद्धणेगगुणसपिणद्धे' (पण्ह २ ४—पत्र १३०)।

सपिहा सक [समपि + धा] आच्छादन करना, ढकना। संकृ सपिहित्ताण (पि ५८३)।

सपीड पु [सम्पीड] संपीडन, दबाना (गउड)। देखो सपील।

सपीडिअ वि [सपीडित] दबाया हुआ (गउड १४४)।

सपीणिअ वि [सम्प्रीणित] खुश किया हुआ (सण)।

सपील पु [सम्पीड] संघात, समूह (उत्त ३२, २६)।

सपीला स्त्री [सम्पीडा] पीडा, दुःखानुभव (उत्त ३२, ३६, ५२, ६५, ७८)।

सपुच्छ सक [स + प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। सपुच्छदि (शौ) (नाट—विक्र २१)।

सपुच्छण स्त्रीन [सम्प्रच्छन, सम्प्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (सूत्र १, ६, २१, सुपा २१)। स्त्री °णी (दस ३, ३)।

सपुच्छणी स्त्री [सम्पुञ्छनी] झाडू, समार्जनी (राय २१)।

सपुज्ज वि [सम्पूज्य] समाननीय, आदरणीय (पउम ३३, ४७)।

सपुड पु [सपुट] १ जुड़े हुए दो समान अंश वाली वस्तु, दो समान अंशों का एक दूसरे से जुड़ना, 'कवाडसपुडघणम्मि' (वण ३), 'दलसपुडे' (कप्पू, महा, भवि, से ७, ५६)। २ संचय, समूह (सूत्र १, ५, १, २३)। °फलग पु [°फलक] दोनों तरफ जिल्द बँधी पुस्तक, हिसाब की वही के समान किताब (पव ८०)।

सपुड सक [सपुटय्] जोड़ना, दोनों हिस्सों को मिलाना। सपुडइ (भवि)।

सपुडिअ वि [सम्पुटित] जुड़ा हुआ (णाया १, १—पत्र ६३)।

सपुण्ण वि [सम्पूर्ण] १ पूर्ण, पूरा (उवा, महा)। २ न दश दिनों का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

सपूअ सक [स + पूजय्] सम्मान करना, अभ्यर्चना करना। संकृ सपूइऊण (पंचा ८, ७)।

सपूजिय वि [सपूजित] अभ्यर्चित (महा)।

सपूयण न [सपूजन] पूजन, अभ्यर्चन (सूत्र १, १०, ७, धर्मसं ६३४)।

सपूरिय वि [सपूरित] पूर्ण किया हुआ, 'सपूरियदोहला' (महा, सण)।

सपेल्ल पु [सपीड] दबाव (पउम ८, २७२)।

सपेस सक [सम्र + इष्] भेजना। सपेसइ (महा, भवि)।

सपेस पु [सम्प्रेष] प्रेषण, भेजना (णाया १, ८—पत्र १४७)।

सपेसण न [सम्प्रेषण] ऊपर देखो (णाया १, ८—पत्र १४६, स ३७६, गउड, भवि)।

सपेसिय वि [सम्प्रेषित] भेजा हुआ (सुर १६, ११५)।

सपेह सक [सम्र + ईक्ष्] देखना, निरीक्षण करना। सपेहइ, सपेहेइ (दसचू २, १२, पि ३२३, भग, उवा, कप्प)। सकृ सपेहाए, सपेहित्ता (आचा १, २, ४, ४, १, ५, ३, २, सूत्र २, २, १, भग)।

सपेहा स्त्री [सम्प्रेक्षा] पर्यालोचन (आचा १, २, २, ६)।

सफ न [दे] कुमुद, चन्द्र-कमल (दे ८, १)।

सफाल सक [स + पाटय्] फाड़ना, चीरना। सफालइ (भवि)।

सफाली स्त्री [दे] पंक्ति श्रेणि (दे ८, ५)।

सफास सक [स + स्पृश्] स्पर्श करना, छूना, 'माइट्ठाण सफासे' (आचा २, १, ३, ३, २, १, ७, ५, २, १, ६, २, ४, ५)।

सफास पु [सस्पर्श] स्पर्श (आचा, उप ६४८ टी, पव २ टी, हे १, ४३, पडि)।

सफासण न [सस्पर्शन] ऊपर देखो, 'आणावीरियसफासणभावतो' (पंचा १०, २८)।

सफिट्ट पु [दे] संयोग, मेलन (श्रा १६)।

सफुल्ल वि [सफुल्ल] विकसित (प्राकृ १४)।

सफुसिय वि [समृष्ट] प्रमार्जित, 'दसणकरनियरसफुसियदिसिमुहमला' (सुपा २६३)।

सब पु [शाम्ब] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र (णाया १, ५—पत्र १००, अंत १४)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)।

सब पुन [शम्ब] वज्र, इन्द्र का आयुध (सुर १६, ५०)।

सबंध सक [स + बन्ध्] १ जोड़ना। २ नाता करना। कर्म सबज्झइ (चेइय ७२७)।

सबध पु [सबन्ध] १ ससर्ग, संग (भवि)। २ संयोग (कम्म १, ३५)। ३ नाता, सगाई, रिश्तेदारी (स्वप्न ४३)। ४ योजना, मेल (वव ५)।

सबधि वि [सबन्धिन्] सम्बन्ध रखनेवाला (उवा, सम्म ११७, स ५३६)।

सबर पु [शम्बर] मृग-विशेष, हरिण की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ७, दे ८, ६, कुप्र ४२६)।

संबल न [शम्बल] १ पाथेय, रास्ते में खाने का भाता, 'धन्नाणं चिय परलोयसंबलो निवडइ हत्थाओ' (सम्मत्त १४३, पाअ, सुर १६, ४०; ३६, १०८; महा; सण; सुपा ६४)। २ एक नागकुमार देव (आवम)।

सबलि देखो सिंबलि = शिम्बलि (आचा २, १, १०, ४)।

सबलि स्त्री [शाल्मलि] वृक्ष-विशेष, सेमल का पेड़ (सुर २, २३४; ८, ५७)। देखो सिंबलि।

संबाधा देखो संबाहा (पउम २, ८६)।

संबाह सक [सं + बाधू] १ पीड़ा करना। २ दबाना, चप्पी करना। संबाहिज्जा (निचू ३)।

संबाह पुं [संबाध] १ नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण आदि चारों वर्णों की प्रभूत वस्ती हो वह शहर (उत्त ३०, १६)। २ पीड़ा, 'संबाहा बहवे भुज्जो दुरइक्कमा अजाणओ अपासओ' (आचा)। ३ वि संकीर्ण, सकरा, 'संबाह सन्निवेसं' (पाअ)।

संबाहण न [संबाधन] देखो संवाहण (आचा १, ९, ४, २)।

संबाहणा स्त्री [संबाधना] देखो संवाहणा (ओघ)।

संबाहणी स्त्री [संबाधनी] लिपि विशेष (पउम ३, १३७)।

संबाहा स्त्री [संबाधा] १ पीड़ा (आचा १, ४, ४, ३)। २ अंग-मर्दन, चप्पी (निचू ३)।

संबाहिय वि [संबाधित] १ पीड़ित (सूअ १, ४, २, १८)। २ देखो संवाहिय (ओप)।

संबुक्क पुं [शम्बूक] १ शंख (ठा ४, २—पत्र २१९; सुपा ४०, १९४)। २ रावण की बहिन चन्द्रनखा—सूर्पणखा का पुत्र (पउम ४३, १८)। ३ एक गाँव का नाम (राज)।

संबुक्का स्त्री [°का] [illegible] आवर्त के [illegible] (उत्त ३०, १९)। [illegible]

संबुज्झ अक [सं + बुध्] [illegible]। संबुज्झइ, संबुज्झंति, संबुज्झह (महा, न ४८६; सूअ १, २, १, १; पि ५०७)। वकृ. संबुज्झमाण (आचा १, १, २, ५)।

संबुद्ध वि [संबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त (उवा; महा)।

संबुद्धि स्त्री [संबुद्धि] ज्ञान, बोध (अज्झ ३६)।

संबूअ पु [शम्बूक] जल-शुक्ति, शुक्ति के आकार का जल-जन्तु-विशेष (दे ८, १६, गउड)।

संबोधि स्त्री [संबोधि] सत्य धर्म की प्राप्ति (धर्मसं १३६६)।

संबोह सक [सं + बोधय्] १ समझाना, बुझाना। २ आमन्त्रण करना। ३ विज्ञप्ति करना। संबोहइ, संबोहेइ (भवि; महा)। कवकृ. संबोहिज्जमाण (णाया १, १८)। कृ. संबोहेअव्व (ठा ४, ३—पत्र २४३)।

संबोह पुं [संबोध] ज्ञान, बोध, समझ (आत्म २०)।

संबोहण न [संबोधन] १ ऊपर देखो (विसे २३३२; सुख १०, १; चेइय ७७५)। २ आमन्त्रण (गउड)। ३ विज्ञप्ति (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संबोहि देखो संबोधि (उप पृ १७६; वै ७३)।

संबोहिअ वि [संबोधित] १ समझाया हुआ (यति ४८)। २ विज्ञापित (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संभंत वि [संभ्रान्त] १ भीत, घबड़ाया हुआ, त्रस्त (उत्त १८, ७; महा; गउड)। २ पुं प्रथम नरक का पाचवाँ नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र ४)। ३ न. भय, घबराहट (महा)।

संभंति स्त्री [संभ्रान्ति] संभ्रम, उत्सुकता (भग १३, ५—पत्र ७०६)।

संभंतिय वि [साम्भ्रान्तिक] संभ्रम से बना हुआ (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभग्ग वि [संभग्न] चूर्णित (उत्त १६, ६१)।

संभण सक [सं + भण्] कहना। संकृ. संभणिऊण (सिरि)।

संभणिअ वि [संभणित] कथित, उक्त (सिरि)।

संभम सक [सं + भ्रम्] १ अतिशय भ्रमण करना। २ अक भय-भीत होना, घबड़ाना। वकृ. संभमंत (पि २७५)।

संभम पु [संभ्रम] १ आदर, 'संभमो आयरो पयत्तो य' (पाअ)। २ भय, घबराहट, क्षोभ, 'संखोहो संभमो तासो' (पाअ, प्रासू १०५, महा)। ३ उत्सुकता (ओप)।

संभर सक [सं + भृ] १ धारण करना। २ पोषण करना। ३ संक्षेप करना, संकोच करना। वकृ. संभरमाण (स ७, ४१)। संकृ. संभार (अप) (पिंग)।

संभर सक [सं + स्मृ] स्मरण करना, याद करना। संभरेइ, संभरिमो (महा; पि ४५५)। वकृ. संभरंत, संभरमाण (गा २६; सुपा ३१७; से ७, ४१)। कृ. संभरणिज्ज, संभरणीय (धम्मो १८; उप ५३८ टी)।

संभरण न [संस्मरण] स्मरण, याद (गा २२२; णाया १, १—पत्र ७१; दे ७, २५; उवकु १४)।

संभरणा स्त्री [संस्मरणा] ऊपर देखो (उप ५३० टी)।

संभराविअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (दे ८, २५; कुप्र ४२१)।

संभरिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (गउड; काप्र ८६२)।

संभल सक [सं + स्मृ] याद करना। संभलइ (उप पृ ११३)। कर्म. संभलिज्जइ (वज्जा ८०)। संकृ. संभलि (अप) (पिंग २६०)।

संभल सक [सं + भल्] १ सुनना, गुजराती में 'सांभळवुं'। २ अक संभलना, सावधान होना। संभलइ (भवि), 'संभलसु मह पइन्न' (सम्मत्त २१७)। संकृ. संभलि (अप) (पिंग २८६)।

संभली स्त्री [दे. संभली] १ दूती (दे ८, ६; पव ४)। २ कुट्टनी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग करानेवाली स्त्री (कुमा)।

संभव अक [सं + भू] १ उत्पन्न होना। २ संभावना होना, घट सकना, शक्य होना। संभवइ

(पि ४७५, काल, भवि)। वकृ संभवंत (सुपा ५६)। कृ. संभव्व (श्रा १२, सुअनि ६५)।

संभव पु [संभव] १ उत्पत्ति (महा, उव, हे ४, ३९५)। २ संभावना (भवि)। ३ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न तीसरे जिनदेव का नाम (सम ४३, पडि)। ३ एक जैन मुनि जो दूसरे वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे (पउम २०, १७६)। ५ कला-विशेष (औप)।

संभव पु [दे] प्रसव-जरा, प्रसूति से होनेवाला बुढापा (दे ८, ४)।

संभव (अप) देखो संभम = सम्भ्रम (भवि)।

संभवि वि [संभविन्] जिसका सम्भव हो वह (पच ५, २५, भास ३५)।

संभविय देखो संभूअ (चेइय ५५६)।

संभव्व देखो संभव = सं + भू।

संभाणय न [संभाणक] गुजरात का एक प्राचीन नगर (राज)।

संभार सक [सं + भारय्] मसाला से संस्कृत करना, वासित करना। संभारेइ, संभारेंति, संभारेह (णाया १, १२—पत्र १७५, १७६)। संकृ. संभारिय (पिंड १६३)। कृ. संभारणिज्ज (णाया १, १२)।

संभार पु [संभार] १ समूह, जत्था, 'उत्तुंगथंभसंभारभासमाणं करावए राया' (उप ६८८ टी, श्रावक १३०)। २ मसाला, शाक आदि में ऊपर डाला जाता मसाला (णाया १, १६—पत्र १६६)। ३ परिग्रह, द्रव्य-संचय (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। ४ अवश्यतया कर्म का वेदन (सूअ २, ७, ११)।

संभारिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (से १४, ६५)।

संभारिअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (णाया १, १—पत्र ७१, सुर १४, २३५)।

संभाल सक [सं + भालय्] संभालना। संभालइ (भवि)।

संभाल पु [संभाल] खोज, अन्वेषण, 'उदिए सूरम्मि जा न जणणोए पायपणामनिमित्तं समागओ ताव संभालो जाओ तस्स, न कत्थवि जाव पउत्ती कहंचि उवलद्धा' (उप २२० टी)।

संभालिअ वि [संभालित] संभाला हुआ (सण)।

संभाव सक [सं + भावय्] १ संभावना करना। २ प्रसन्न नजर से देखना, 'न संभावसि अवरोहं' (मोह ६), संभावेमि (संवेग ४), सम्भावेहि मोह २९)। कर्म संभावीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ २०)। वकृ. संभावअंत (नाट—शकु १३४)। संकृ. संभाविअ (नाट—शकु ६७)। कृ संभावणिज्ज, संभावणीअ (उप ७६८ टी, स ६१, श्रा २३)।

संभाव अक [लुभ्] लोभ करना, आसक्ति करना। संभावइ (हे ४, १५३, षड्)।

संभावणा स्त्री [संभावना] संभव (मि ८, १९, गउड)।

संभावि वि [संभाविन्] जिसका संभव हो वह (श्रा १४)।

संभाविअ वि [संभावित] जिसकी संभावना की गई हो वह (नाट—विक्र ३४)।

संभास सक [सं + भाष्] बातचीत करना, आलाप करना। कृ. संभासणीय (सुपा ११५)।

संभास पु [संभाष] संभाषण, वार्तालाप (उप पृ ११२, सबोध २१ सण, काल, सुपा ११५, ५८२)।

संभासण न [संभाषण] ऊपर देखो (भवि)।

संभासा स्त्री [संभाषा] संभाषण, बातचीत (ओप)।

संभासि वि [संभाष] संभाषण, 'संभासिस्साणरिहो' (काल)।

संभासिय वि [संभाषित] जिसके साथ संभाषण—वार्तालाप किया गया हो वह (महा)।

संभिंडण न [संभेदन] आघात (गउड)।

संभिण्ण } वि [संभिन्न] १ परिपूर्ण (पव संभिन्न } १९८)। २ किंचिद् न्यून, कुछ कम (देवेन्द्र ३४२)। ३ व्याप्त। ४ बिलकुल भिन्न—भेदवाला (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ५ खंडित (दसचू १, १३)। °सोअ वि [°श्रोतस् °श्रोतृ] लब्धि विशेषवाला, शरीर के कोई भी अंग से शब्द को स्पष्ट रूप से सुनने की शक्तिवाला (पण्ह २, १—पत्र ९९, औप)।

संभिन्न न [दे] आघात (गउड ६३४ टी)।

संभिय वि [संभृत] १ पुष्ट, 'आरभसंभिया' (सूअ १, ९ ३)। २ संस्कार-युक्त संस्कृत, 'बहुसंभारसंभिए' (णाया १, १६—पत्र १९६, स ९८ विसे २९३)।

संभु पु [शम्भु] शिव, शंकर (सुपा २४०, सार्ध १३५, समु १५)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] गौरी, पार्वती (सुपा ४४२)।

संभुंज सक [सं + भुज्] साथ भोजन करना, एक मण्डली में बैठकर भोजन करना। संभुंजइ (कस)। हेकृ. संभुंजित्तए (सूअ २, ७, १६, ठा २, १—पत्र ५६)।

संभुंजणा स्त्री [संभोजना] एकत्र भोजन-व्यवहार (पंचू)।

संभुल्ल वि [दे] दुर्जन, खल (दे ८, ७)।

संभूअ वि [संभूत] १ उत्पन्न, संजात (सुपा ८०, ५०७, महा)। २ पु एक जैन मुनि जो प्रथम वासुदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (सम १५३, पउम २०, १७६)। ३ एक प्रसिद्ध जैन महर्षि जो स्थूलभद्र मुनि के गुरु थे (धर्मवि ३८, सार्ध १३)। ४ व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °विजय पु [°विजय] एक जैन महर्षि (कुप्र ४५३, विपा २, ५)।

संभूइ स्त्री [संभूति] १ उत्पत्ति (पउम १७ ९८, गा ६८४, सुर ११, १३५, पव २४४)। २ श्रेष्ठ विभूति (सार्ध १३)।

संभूस सक [सं + भूष्] अलंकृत करना। संभूसइ (सण)।

संभोअ पु [संभोग] सुन्दर भोग (सुपा ४९८, कप्पू)। देखो संभोग।

संभोइअ वि [सांभोगिक] समान सामाचारी-क्रियानुष्ठान होने के कारण जिसके साथ खान-पान आदि का व्यवहार हो सके ऐसा साधु (ओघभा २०, पंचा ५, ४१, द्र ५०)।

संभोग पु [संभोग] समान सामाचारीवाले साधुओं का एकत्र भोजनादि-व्यवहार (सम २१, औप, कस)।

सभोगि वि [सभोगिन्] देखो सभोइअ (सुर १७२)।

सभोगिय देखो सभोइअ (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

संमइ स्त्री [संमति] १ अनुमति (सूअ १, ८, १४ विसे २२०६)। २ पुं वायुकाय पवन। ३ वायुकाय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)।

संमज्ज पुं [संमार्ज] मार्जन, साफ करना (पिंड ६२८)।

संमज्जग पुं [संमज्जक] वानप्रस्थ तापसों की एक जाति (औप)।

संमज्जण न [संमार्जन] साफ करना, मार्जन (धर्मवि १४६)।

संमज्जणी स्त्री [संमार्जनी] झाडू (दे ६, ६७)।

संमज्जिय वि [संमार्जित] साफ किया हुआ (सुपा ४०, औप, भवि)।

संमट्ठ वि [संमृष्ट] १ प्रमार्जित, साफ किया हुआ (राय १००, णाया, पव १३३)। २ चूर्ण किया हुआ (ओघ ११६, पव १४८)।

संमद्द पुं [संमर्द] १ युद्ध, लड़ाई (हे २, ३६)। २ परस्पर संघर्ष (हे २, ३६, कुमा)।

संमड्डिअ वि [संमर्दित] संघृष्ट (हे २, ३६)।

संमद्द सक [सं + मृद्] मर्दन करना। संकृ संमद्दिआ (ठा ४, २, १६)।

संमद्दा देखो संमद्द (उत्त १३६ टी, पाअ, दे १, ६३, सुपा २२२, प्राकृ ८६)।

संमद्दी स्त्री [संमर्दी] प्रत्युपेक्षणा-विशेष, [illegible] —निरो- [illegible] (ओघ २६६ ओघभा [illegible])।

[illegible] [illegible] १ [illegible]। २ [illegible] ([illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] ([illegible])।

[illegible] [सं + [illegible]] [illegible]। [illegible]।

[illegible] [सं + [illegible]] [illegible], [illegible]।

समाणेमो (भवि, उवा महा, कप्प, पि ४७०)। भवि समाणेहिति (पि ५२८)। वकृ समाणत, समाणेत (सुपा २२४, पउम १०५, ७६)। संकृ. समाणिऊण, समाणेऊण, समाणित्ता (महा, कप्प)। प्रयो— कवकृ समाणिज्जमाण (काल)। कृ समाणिज्ज (णाया १, १ टी—पत्र ४, उवा)।

समाण पु [समान] आदर, गौरव (उव, हे ८, ३१६, नाट—मालवि ६३)।

समाणण न [सन्मानन] ऊपर देखो (सुपा २०८)।

समाणिअ वि [सन्मानित] जिसका आदर किया गया हो वह (कप्प, महा)।

समिअ (शौ) वि [समित] १ तुल्य, समान। २ समान परिमाणवाला (अभि १८६)।

समिल अक [स + मिल्] मिलना। समिलइ (भवि)।

समिल्लिअ वि [समिल्लित] मिला हुआ (भवि)।

संमिल्ल अक [सं + मील्] सकुचाना, संकोच करना। समिल्लइ (हे ८, २३२, षड्, धात्वा १५५)।

समिस्स वि [समिश्र] १ मिला हुआ, युक्त (महा)। २ उगती हुई छालवाला (आचा २, १, ८, ६)।

समील देखो समिल्ल। समीलइ (हे ८, २३२, षड्)।

समीलिअ वि [समीलित] संकुचित (से १२, १)।

समीस देखो समिस्स (सुर २, १११, सण)।

समुइ पु [समुचि] भारतवर्ष में भविष्य में होनेवाला एक कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)।

समुच्छ अक [सं + मूर्च्छ्] उत्पन्न होना। एत्थ वि णं संमुच्छति प्राणा रसगा... असंमुच्छति (सूअ ६)।

संमुच्छण स्त्री [संमूर्च्छन] स्त्री-पुरुष के संगम के बिना ही तृणादि की तरह होनेवाली उत्पत्ति (पंचि १०७०)। स्त्री °णा (पव २०२१)।

समुच्छिम वि [सम्मूर्च्छिम] स्त्री-पुरुष के समागम के बिना उत्पन्न होनेवाला प्राणी (आचा, ठा ५, ३—पत्र ३३४ सम १४६, जी २३)।

समुच्छिअ वि [संमूर्च्छित] उत्पन्न (सुअ ६)।

समुज्झ अक [स + मुह्] मोह करना, मुग्ध होना समुज्झइ (सवोध ५२)।

समुत्त देखो समुत्त (राज)।

समुस सक [स + मृश्] पूर्ण रूप से स्पर्श करना। वकृ. समुसमाण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

समुह वि [सम्मुख] सामने आया हुआ (हे १, २६, ४, ३६५, ४१४, महा)। स्त्री °ही (काप्र ७२३)।

समूढ वि [सम्मूढ] जड, विमूढ (पाअ, सुपा ५४०)।

समेअ पु [समेत] १ पर्वत विशेष जो आजकल 'पारसनाथ पहाड' के नाम से प्रसिद्ध है (णाया १, ८—पत्र १५६, कप्प, महा, सुपा २११, ५८४, विवे १८)। २ राम का एक सुभट (पउम ५६, ३७)।

समेल पुं [समेल] परिजन अथवा मित्र का जिमनवार, प्रीति-भोजन (आचा २, १, ४, १)।

समोह पु [समोह] १ मूढता, अज्ञान (मणु, स ३५८)। २ मूर्च्छा (तिस्रा ४२)। ३ दुःख, कष्ट (से ३, १३)। ४ सन्निपात रोग (उप ११०)।

समोह न [सामोह] १ मिथ्यात्व का एक भेद—रागी को देव, रागी—परिग्रही को गुरु और हिंसा को धर्म मानना (संबोध ४२)। २ वि समोह-सम्बन्धी (ठा ४, ४—पत्र २७४)। स्त्री °हा, °ही (ठा ४, ४ टी—पत्र २७४, बृह १)।

समोहण न [समोहन] १ मोहित करना। २ मूर्च्छित करना (कुप्र २५०)।

समोहा स्त्री [समोहा] दर्शन-विशेष (निंग)।

संरभ पु [संरम्भ] १ हिंसा करने का संकल्प, 'संरम्भो संरंभो' (संबोध ४१, श्रा ७)। २ क्रोध (सुपा १, २०, ६ ६२)। ३ उद्यम (सुपा ८, ७०)। ४ आटोप (पाअ)।

संरक्खग वि [संरक्षक] अच्छी तरह रक्षा करनेवाला (णाया १, १८—पत्र २४०)।

संरक्खण न [संरक्षण] समीचीन रक्षण (णाया १, १४; पि ३६१)।

संरक्खय देखो संरक्खग (उत्त २६, ३१)।

संरद्ध सक [सं + राध्] पकाना। कृ. संरद्धियव्व (कुप्र ३७)।

संरुध सक [सं + रुध्] रोकना, अटकाना। कम. संरुधिज्जइ, संरुज्झइ (हे ४, २४८)। भवि. संरुधिहिइ, संरुज्झिहिइ (हे ४, २४८)।

संरोह पुं [संरोध] अटकाव (कुप्र ५१; पव २३८)।

संरोहणी स्त्री [संरोहणी] घाव को रुझानेवाली ओषधि-विशेष (सुपा २१७)।

संलक्ख सक [सं + लक्षय्] पहिचानना। कर्म. संलक्खीअदि (शौ), (नाट—वेणी ७८)।

संलग्ग वि [संलग्न] लगा हुआ, संयुक्त (सुपा २२६)।

संलग्गिर वि [संलगितृ] संयुक्त होनेवाला, जुड़नेवाला (ओघ ६८)।

संलत्त वि [संलपित] संभाषित, उक्त, कथित (सुर ३, ६१; सुपा ३२६, ३८५; महा)।

संलप्प नीचे देखो।

संलव सक [सं + लप्] संभाषण करना। संलवइ, संलवेमि (महा; पव १४८)। वकृ संलवमाण (णाया १, १—पत्र १३; कप्प)। कृ. संलप्प (राज)।

संलव पुं [संलाप] संभाषण, वार्तालाप (सूअनि ५८)।

संलाव सक [सं + लापय्] बातचीत करना। संलाविति (कप्प)।

संलाव देखो संलव = संलाप (औप; से २, ३६; गउड; श्रा ६)।

संलाविअ वि [संलापित] १ उक्त, कथित। २ कहलवाया हुआ (गा १११)।

संलिट्ठ वि [संश्लिष्ट] संयुक्त (संबोध १६)।

संलिह सक [सं + लिख्] १ निर्लेप करना। २ शरीर आदि का शोषण करना, कृश करना। ३ घिसना। ४ रेखा करना। संलिहिज्जा (आचा २, ३, २, ३)। संलिहे (उत्त ३६, २४६; दस ८, ४, ७)। संकृ संलिहिय (कप्प)।

संलिहिय वि [संलिखित] जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो वह (स १३०)।

संलीढ वि [संलीढ] संलेखना-युक्त (णंदि २०६)।

संलीण त्रि [संलीन] जिसने इन्द्रिय तथा कषाय आदि को काबू में किया हो वह, संवृत (पव ६)।

संलीणया स्त्री [संलीनता] तप विशेष, शरीर आदि का संगोपन (सम ११; नव २८; पव ६)।

संलुंच सक [सं + लुञ्च्] काटना। कवकृ संलुंचमाण सुणएहिं (आचा १, ६, ३, ६)। संकृ. संलुंचिआ (दस ५, २, १४)।

संलेहणा स्त्री [संलेखना] शरीर, कषाय आदि का शोषण, अनशन-व्रत से शरीर-त्याग का अनुष्ठान (सह ११६; सुपा ६४८)। °सुअ न [°श्रुत] ग्रन्थ-विशेष (णंदि २०२)।

संलेहा स्त्री [संलेखा] ऊपर देखो (उत्त ३६, २५०; सुपा ६४८)।

संलोअ पु [संलोक] १ दर्शन, अवलोकन (आचा २, १, ६, २; उत्त २४, १६; पव ६१)। २ दृष्टि-पात, दृष्टिप्रचार। ३ जगत्, संपूर्ण लोक। ४ प्रकाश (राज)। ५ वि दृष्टि-प्रचारवाला, जिस पर दृष्टि पड़ सकती हो वह (उत्त २४, १६)।

संलोक सक [सं + लोक्] देखना। कृ संलोकणिज्ज (सूअ १, ४, १, ३०)।

संवइयर पु [संव्यतिकर] व्यतिसंबन्ध, विपरीत प्रसंग (उव)।

संवग्ग पु [संवर्ग] १ गुणन, गुणाकार (वव १; जीवस १५४)। २ गुणित, जिसका गुणाकार किया गया हो वह (राज)।

संवच्छर पु [संवत्सर] वर्ष, साल (उव; हे २, २१)। °पडिलेहणग न [°प्रतिलेखनक] वर्ष-गाँठ, वर्ष की पूर्णता के दिन किया जाता उत्सव (णाया १, ८—पत्र १३१; भग; अंत)।

संवच्छरिय पु [सांवत्सरिक] १ ज्योतिषी, ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् (स ३४; कुप्र ३२)। २ वि. संवत्सर संबंधी, वार्षिक (धर्मवि १२६; पडि)।

संवच्छल देखो संवच्छर (हे २, २१)।

संवट्ट सक [सं + वर्तय्] १ एक स्थान में रखना। २ संकुचित करना। संवट्टेइ (औप)। संवट्टेज्जा (आचा १, ८, ६, ३)। संकृ. संवट्टइत्ता (ठा २, ४—पत्र ८६), संवट्टित्ता (आचा १, ८, ६, ३)।

संवट्ट पुं [संवर्त] १ पीडा (उप २६६)। २ भय-भीत लोगों का समवाय—समूह (उत्त ३०, १७)। ३ वायु-विशेष तृण को उडानेवाला वायु (पण्ण १—पत्र २६)। ४ अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७)। ५ घेरा। ६ जहा पर बहुत गाँवों के लोग एकत्रित हो कर रहें वह स्थान, दुर्ग आदि (राज)। देखो संवत्त।

संवट्टइअ वि [संवर्तकित] तूफान में फँसा हुआ (उप पृ १४३)।

संवट्टग पु [संवर्तक] वायु-विशेष (सुपा ४१)। देखो संवट्टय।

संवट्टण न [संवर्तन] १ जहाँ पर अनेक मार्ग मिलते हों वह स्थान (णाया १, २—पत्र ७६)। २ अपवर्तन (विसे २०४५)।

संवट्टय पु [संवर्तक] अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७)। देखो संवट्टग।

संवट्टिअ वि [दे संवर्तित] संवृत, संकोचित (दे ८, १२)।

संवट्टिअ वि [संवर्तित] १ पिंडीभूत, एकत्रित (वव १)। २ संवर्त-युक्त (हे २, ३०)।

संवड्ढ अक [सं + वृध्] बढना। संवड्ढइ (महा)।

संवड्ढण देखो संवद्धण (अभि ४१)।

संवड्ढिअ वि [संवृद्ध] बढा हुआ (महा)।

संवड्ढिअ वि [संवर्धित] बढ़ाया हुआ (नाट—रत्ना २२)।

संवत्त पु [संवर्त] १ प्रलय काल (से ५, ७१; १०, २२)। २ वायु-विशेष, 'जुगंतसरिस संवत्तवाय विउव्विऊण' (कुप्र ६६)। ३ मेघ। ४ मेघ का अधिपति विशेष। ५ वृक्ष-विशेष, बहेडा का पेड। ६ एक स्मृतिकार मुनि (संक्षि १०)। देखो संवट्ट = संवर्त।

संवत्तण देखो संवट्टण (हे २, ३०)।

संवत्तग वि [संवर्तक] १ अपवर्तन कर्ता। २ पुं [illegible]। ३ [illegible] (हे २, ३०, [illegible])।

[illegible] पुं [संवर्तोद्धृत] उलट पुलट (स [illegible])।

संवद्धण न [संवर्धन] १ वृद्धि बढ़ाना। २ वि [illegible] करनेवाला ([illegible] ७२३)।

संवय सक [सं + वद्] १ बोलना, कहना। २ प्रमाणित करना, सत्य साबित करना। संवयइ, संवएज्जा (सुत्र १८७, सुत्र १, १४, २०)। वकृ. संवयंत (धर्मसं ८८३)।

[illegible] वि [संवृत] आवृत, आच्छादित ([illegible] ३५)।

संवर सक [सं + वृ] १ निरोध करना, रोकना। २ [illegible]। ३ बंध करना। ४ ढकना। ५ गोपन करना। संवरइ, संवरेमि, संवरेंति ([illegible] सण, [illegible] १३०, पत्र २२६ टी; संवरहि (सुत्र ३११)। वकृ. संवरेमाण (भग)। संकृ. संवरेवि ([illegible])।

संवर पुं [संवर] १ कर्म-निरोध, नूतन कर्म-बन्ध का अटकाव (सं पण्ह १, १, नव ११)। २ [illegible] अठारहवें [illegible] (पव ४६, सम १५४)। ३ चौथे [illegible] (सम १५०)। ४ [illegible] (पउम २०, २०)। ५ [illegible] (उप १०४)। ६ दैत्य-विशेष। ७ [illegible] (दे ८, १००)।

[illegible] [संवरण] १ निरोध, अटकाव [illegible] संवरण' [illegible] (सुपा ३०१)। [illegible]

(पण्ह २, १—पत्र १०१)। २ संकोचित (दे ८, १२)। ३ आच्छादित (वृह ३)।

संवलण न [संवलन] मिलन (गउड; नाट—मालती ५७)।

संवलिअ वि [संवलित] १ व्याप्त (गा ७५, सुर ६, ७०, ८, ४३, सम्मि ६०)। २ युक्त, मिलित, मिश्रित (सुर ३, ७८, धर्मवि १३६; सरसा वि दुमा दावाणलेण डज्झति सुक्खसंवलिया' (वज्जा १४)।

संववहार पुं [संव्यवहार] व्यवहार (विसे १८५३)।

संवस अक [सं + वस्] १ साथ में रहना। २ रहना, वास करना। ३ संभोग करना। संवसइ (कस)। वकृ. संवसमाण (ठा ५, २—११२, ११४, गच्छ १, ३)। संकृ. संवसित्ता (गच्छ १, २)। हेकृ. संवसित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)। कृ. संवसेयव्व (उत पृ १६)।

संवह सक [सं + वह्] १ वहन करना। २ अक सज्ज होना, तय्यार होना। वकृ. संवहमाण (सुपा ४६४, णाया १, १३—पत्र १८०)। संकृ. संवहिऊण (मण)।

संवहण न [संवहन] १. ढोना, वहन करना। (राज)। २ वि. वहन करनेवाला (आचा २, ४, २, ३, दा ७, २५)।

संवहणिय वि [सांवहनिक] देखो संवाहणिय (उत)।

संवढिअ वि [संवढ] जो सज्ज हुआ हो वह, तय्यार बना हुआ; [illegible] पुरिसपोया [illegible] (सिरि ४६६, [illegible] १४०)।

संवाइ वि [संवादिन्] प्रमाणित करनेवाला, [illegible] (सुर १२, १७६)।

संवाद वि [संवादित] १ सत्य किया हुआ, [illegible] (स २९६)। २ प्रमाणित (स ३१४)।

संवाद } पुं [संवाद] १ पूर्वापर की सत्य संवाय } साबित करनेवाला ज्ञान, [illegible], प्रमाण ([illegible] १४८ स ३४६, [illegible] ७२८ [illegible])।

"इय आओ संवाओ तंमि पुत्तस्स कारणे गवओ। तं कोरेणं भणिय रायसमीवे समागच्छ॥' (सुपा ६०)।

संवाय सक [सं + वादय्] खबर देना, समाचार कहना। संवाएमि, संवाएहि (स २६१, २६६)।

संवायय पुं [दे] १ नकुल, न्योला। २ श्येन पक्षी (दे ८, ४८)।

संवास सक [सं + वासय्] साथ में रहने देना। हेकृ. संवासेउ (वव १०, ८८ टी)।

संवास पुं [संवास] १ सहवास, साथ में निवास (उव २२३, ठा ४, २—पत्र १६७, [illegible] ६७ [illegible] १७ [illegible] ६ १३)। २ मैथुन के लिए स्त्री के साथ निवास (ठा ४, १—पत्र १६३)।

संवासिय (अप) वि [संवासित] जिसको आवास दिया गया हो वह; [illegible] घणवइ संवासिउ' (भवि)।

संवाह सक [सं + वाहय्] १ वहन करना। २ तय्यारी करना। अंग मर्दन—चम्पी करना। संवाहइ (भवि)। कवकृ. संवाहिज्जंत (सुपा २००, ३४६)।

संवाह पुं [संवाह] १ दुर्ग-विशेष, जहाँ कृषक-लोग धान्य आदि का रक्षा के लिए ले जाकर रखते हैं (ठा २, ४—पत्र ८६, पण्ह १, ४—पत्र ६८, औप, कप्प)। २ लग्न, विवाह (सुपा २५५)। ३ गिरि-शिखरस्थ ग्राम।

संवाहण न [संवाहन] १ अंग-मर्दन, चंपी (पण्ह २, ४—पत्र १३१, सुर ४, २४०, गा ४६४)। २ संबाधा, [illegible] (गा ४६४)। ३ पुं एक राजा का नाम (उत)। ४ वि. वहन करनेवाला (आचा २, ४, २, १०)।

संवाहणा स्त्री [संवाहना] [illegible]।

संवाहणिय वि [सांवाहनिक] [illegible] के काम में आता [illegible] (उत)।

संवाहय वि [संवाहक] [illegible] (पाव २६)।

संवाहिअ वि [संवाहित] [illegible]

सुर ४, २४२)। २ वहन किया हुआ (भवि)।

संविक्खिण्ण वि [संविकीर्ण] अच्छी तरह व्याप्त (पएह २—पत्र १००)।

संविक्ख सक [संवि + ईक्ष्] सम भाव से देखना, रागादि-रहित हो कर देखना। वकृ. संविक्खमाण (उत्त १४, ३३)।

संविग्ग वि [संविग्न] संवेग युक्त, भव-भीरु मुक्ति का अभिलाषी, उत्तम साधु (उव, पचा ५, ४९; सुर ८, १६६, ओघभा ४६)।

संविग्ण } वि [संविदीर्ण] संविचरित, संविचिन्न } आसेवित (णाया १, ५ टी—पत्र १००, णाया १, ५—पत्र ६६)।

संविज्ज अक [सं + विद्] विद्यमान होना। संविज्जइ (सूअ १, ३, २, १८)।

संविट्ठ सक [सं + वेष्टय्] १ वेष्टन करना, लपटना। २ पोषण करना। सकृ. संविट्ठमाग (णाया १, ३—पत्र ६१)।

संविढत्त वि [समर्जित] पेदा किया हुआ, उपार्जित (स ५)।

संविणीय वि [संविनीत] विनय-युक्त (ओघभा १३४)।

संवित्त देखो संवीअ (सूअ १, ३, १, १७)।

संवित्त वि [संवृत्त] १ संजात, बना हुआ (सुर ६, ८६)। २ वि अच्छा आचरण-वाला। ३ बिलकुल गोल (सिरि १०९३)।

संवित्ति स्त्री [संवित्ति] संवेदन, ज्ञान (विसे १६२६, धर्मसं २६६)।

संविद सक [सं + विद्] जानना, 'जिच्चमाणो न संविदे' (उत्त ७, २२)।

संविद्ध वि [संविद्ध] १ संयुक्त (उत्तर १३३)। २ अभ्यस्त। ३ दृष्ट, 'संविद्धपहे' (आचा १, ५, ३, ६)।

संविधा स्त्री [संविधा] संविधान, रचना, बनावट (चारु १)।

संविधुण सक [संवि + धू] १ दूर करना। २ परित्याग करना। ३ अवगणना, तिरस्कार करना। सकृ. संविधुणिय, संविधुणित्ताण (आचा १, ८, ६, ५, सूअ १, १६, ४; ओप)।

संविभत्त वि [संविभक्त] बाँटा हुआ, 'देवगुरुसंविभत्त भत्त' (कुप्र १५३)।

संविभाअ } पु [संविभाग] १ विभाग संविभाग } करना, बाँट (णाया १, २—पत्र ८६, उवा, ओप)। २ आदर, सत्कार (स ३३४)।

संविभागि वि [संविभागिन्] दूसरे को दे कर भोजन करनेवाला (उत्त ११, ६, दस ६, २, २३)।

संविभाव सक [संवि + भावय्] पर्या-लोचन करना, चिन्तन करना। सकृ संवि-भाविऊण (राज)।

संविराय अक [संवि + राज्] शोभना। वकृ संविरायंत (पउम ७, १४६)।

संविल्ल देखो संवेल्ल। वकृ संविल्लंत (वै ४२)। सकृ. संविल्लिऊण (कुप्र ३१५)।

संविल्लिअ वि [संवेल्लित] चालित (उवा)।

संविल्लिअ देखो संवेल्लिअ = संवेष्टित (कुमा)।

संविल्लिअ देखो संवेल्लिअ = (दे) (उवा, जं १)।

संविह पु [संविध] गोशाले का एक उपासक (भग ८, ६—पत्र ३६६)।

संविहाण न [संविधान] १ रचना, बनावट (सुपा ५८६, धर्मवि १२७, माल १५१, १६३)। २ भेद, प्रकार (वै १०)।

संवीअ वि [संवीत] १ व्याप्त (सूअ १, ३, १, १६)। २ परिहित, पहना हुआ, 'संवी-यदिव्ववसणो' (धर्मवि ६)।

संवुअ देखो संवुड (हे १, १३१, सक्षि ४, ओप)।

संवुट्ट देखो संवुत्त (रंभा ४४)।

संवुड वि [संवृत] १ सकट, सकडा, अवि-वृत (ठा ३, १—पत्र १२१)। २ संवर-युक्त, सावद्य प्रवृत्ति से रहित (सूअ १, १, २, २६, पचा १४, ६, भग)। ३ निरुद्ध, निरोध-प्राप्त (सूअ १, २, ३, १)। ४ आवृत। ५ संगोपित (हे १, १७७)। ६ न. कषाय और इन्द्रियों का नियन्त्रण (पएह २, ३—पत्र १२३)।

संवुड्ढ वि [संवृद्ध] बढ़ा हुआ (सूअ २, १, २६, ओप)।

संवुत्त वि [संवृत्त] संजात, बना हुआ, 'पव्वइया ते संसारंतकरा संवुत्ता' (वसु, कुप्र ४३५, किरात १७, स्वप्न १७, अभि ८२, उत्तर १४१, महा, सण)।

संवुद देखो संवुड (प्राकृ ८, १२, प्राप्र)।

संवुदि स्त्री [संवृति] संवरण (प्राकृ ८, १२)।

संवूढ वि [संव्यूढ] १ तय्यार बना हुआ, सज्जित, 'जइ इह नगरनरिंदो सव्वबलेणावि एइ संवूढो' (सुरा ५८५, सुर ६, १५२)। २ वह कर किनारे लगा हुआ, वह कर स्थित, 'तए ण ते मागदियदारगा तेण फलयखंडेणं उवु- (?वु)ज्झमाणा २ रयणदीवतेण संवु-(?वू)ढा यावि होत्था' (णाया १, ६—पत्र १५७)।

संवेअ वि [संवेद्य] अनुभव-योग्य (विसे ३००७)।

संवेअ } पु [संवेग] १ भय आदि के कारण संवेग } से होती त्वरा—शीघ्रता (गउड)। २ भव-वैराग्य, संसार से उदासीनता। ३ मुक्ति का अभिलाष, मुमुक्षा (द्र ६३, सम १२६, भग, उव, सुर ८, १६५, सम्मत्त १६६, १६५, सुपा ५४१)।

संवेयण न [संवेदन] १ ज्ञान (धर्मसं ४४ कुप्र १४६)। २ वि बोध-जनक। स्त्री. °णी (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयण वि [संवेजन] संवेग-जनक। स्त्री °णी (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयण वि [संवेगन] ऊपर देखो (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेल्ल सक [सं + वेल्ल्] चालित करना, कँपाना (से ७, २६)।

संवेल्ल सक [सं + वेष्ट्] लपेटना। संवेल्लइ (हे ४, २२२, संक्षि ३६)।

संवेल्ल सक [दे] सकेलना, समेटना, संकुचित करना। संवेल्लेइ (भग १६, ६—पत्र ७१२)। वकृ. संवेल्लेत, संवेल्लेमाण (उव, भग १६, ६)। सकृ संवेल्लेऊण (महा)।

संवेल्लिअ वि [दे] संवृत, संकुचित, 'संवे-ल्लिअ मउलिअ' (पाअ, दे ८, १२, भग १६, ६—पत्र ७१२, राय ४५)।

संवेल्लिअ वि [संवेल्लित] चलित (से ७, २९)।

संवेल्लिअ वि [संवेष्टित] [illegible] हुआ (गा ६९६)।

संवेह पुं [संवेध] [illegible] 'पज्जत्तअपज्जत्तग-[illegible]' (महा), [illegible] तम्मीवे [illegible]' (पंचा [illegible])।

संस अक [स्रंस्] खिसकना, गिरना। संसइ (हे ४, १९७, षड्)।

संस सक [शंस्] १ कहना। २ प्रशंसा करना। संसइ (विसे ७३७ टी), संसति (पिंड १८०)। कृ संसणिज्ज (पउम ११८, ११४)।

संस वि [सांश] अंश-युक्त, सावयव (धर्मसं ७०८)।

संसइ वि [संशयिन्] संशय करनेवाला, शंका-[illegible] (विसे १५५७; सुर १३, ७; सुपा १८७)।

संसइअ वि [सांशयिक] संशयवाला, शंकित ([illegible] १०६, सुर १२, १०८)।

संसइअ न [सांशयिक] मिथ्यात्व-विशेष ([illegible] २; श्रा ६; [illegible] ५२; कम्म ४, ५१)।

संसग्ग पुंस्त्री [संसर्ग] संबन्ध, संग, सोहबत (सुपा २४८, प्रासू ७१, गउड)। स्त्री °ग्गी ([illegible] १ टी—पत्र १५१; प्रासू ३३, सुपा ५३१),

'[illegible]

[illegible] संसग्गि।

[illegible]

[illegible]'

(सुर २, २१६)।

संसज्ज अक [सं + सञ्ज्] [illegible] करना, [illegible]। संसज्जंति (सम्मत्त २२०)।

संसज्जिम वि [संसक्तिमत्] जीव [illegible] (४८)।

संसट्ठ वि [संसृष्ट] १ [illegible]। २ [illegible] °संसट्ठ।

संसण न [शंसन] १ कथन। २ प्रशंसा। [illegible]

पज्जत्तगणसंसिद्धं' (उप ६४८ टी, उवकु १६)।

संसणिज्ज देखो संस = शंस्।

संसत्त वि [संसक्त] १ संसर्ग-युक्त, सम्बद्ध (णाया १, ५—पत्र १११, ओघ, सं ६, उत्त २, १६)। २ श्वापद-जन्तु-विशेष (पण्ह)।

संसत्ति स्त्री [संसक्ति] संसर्ग (सम्मत्त ११६)।

संसद्द पुं [संशब्द] शब्द, आवाज (सुर २, ११०)।

संसप्पग वि [संसर्पक] १ चलने-फिरने-वाला। २ पुं चींटी आदि प्राणी (आचा १, ८, ८, ६)।

संसप्पिअ न [दे संसर्पित] कूद कर चलना (दे ८, १५)।

संसमण न [संशमन] उपशम, शान्ति (पिंड ६५६)।

संसय पुं [संशय] संदेह, शंका (हे १, ३०, भग, कुमा, प्रासू ११०, महा, संबि)।

संसया स्त्री [संसद्] परिषत्, सभा (उत्त १, ४७)।

संसर सक [सं + सृ] परिभ्रमण करना। वकृ संसरंत, संसरमाण (प्रवि १, वै ८८, नाथ ११, अच्चु ६७)।

संसरण न [संस्मरण] स्मृति, याद (श्रु ७)।

संसवण न [संश्रवण] श्रवण, सुनना (सुर १, २४२, रंभा)।

संसह सक [सं + सह्] सहन करना। संसहइ (धर्मसं ६८२)।

संसा स्त्री [शंसा] प्रशंसा, श्लाघा (पव ७१ टी, भग)।

संसाअ वि [दे] १ आरूढ। २ चूर्णित। ३ पीत। ४ उद्विग्न (षड्)।

संसार पुं [संसार] १ नरक आदि गति में परिभ्रमण, एक जन्म से जन्मांतर में गमन (आचा, ठा ४, १—पत्र १८८, ४, २—पत्र २१६, दसनि ४, ४९, उत्त २६, १, उप, पउम, औप ४४)। २ जगत्, विश्व (उव, कुमा, गउड, पउम १०३, १४१)। °वत्त वि [°वर्त] संसारवाला, संसार विषयक, संसारी (पउम २, ६२)।

संसारि } वि [संसारिन्] नरक आदि
संसारिण } योनि में परिभ्रमण करनेवाला जीव (जी २), 'संसारिणस्स ज पुण जीवस्स सुहं तु फरिसमाईणं' (पउम १०२, १७४)।

संसारिय वि [सांसारिक] ऊपर देखो (स ४०२, उव)।

संसारिय वि [सांसारिक] संसार से सम्बन्ध रखनेवाला (पउम १०६, ४३, उप १४२ टी, स १७६, सिक्खा ७१, सण, काल)।

संसारिय वि [संसारित] एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थापित, संसारियासु वलयबाहासु' (णाया १, ८—पत्र १३३)।

संसाहण स्त्रीन [दे] अनुगमन (दे ८, १६, दसनि ३८८)। स्त्री °णा (वव १)।

संसाहण न [संकथन] कथन (सुपा ४१५)।

संसाहिय वि [संसाधित] सिद्ध किया हुआ (सुपा ३६७)।

संसि वि [शंसिन्] कहनेवाला (गउड)।

संसिअ वि [शंसित] १ श्लाघित (सुर १३, ६८)। २ कथित (उप पृ १६१)।

संसिअ वि [संश्रित] आश्रित (विपा १, ३—पत्र ३८, पण्ह १, ४—पत्र ७२, औप ८८, अणु १५१)।

संसिच सक [सं + सिच्] १ पूरना, भरना। २ बढ़ाना। ३ सिंचन करना। कवकृ. संसिच्चमाण (आचा, पि ५४२)। संकृ. संसिचियाण (आचा १, २, ३, ४)।

संसिज्झ अक [सं + सिध्] अच्छी तरह सिद्ध होना। संसिज्झंति (स ७६७)।

संसिट्ठ देखो संसट्ठ (भग)। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] संसृष्ट हाथ अथवा भाजन से दी जाती भिक्षा को ही ग्रहण करने के नियमवाला मुनि (पण्ह २, १—पत्र १००)।

संसित्त वि [संसिक्त] सींचा हुआ (सुर ४, १४, महा, हे ४, ३९५)।

संसिद्धिअ वि [सांसिद्धिक] स्वभाव-सिद्ध (हे १, ७०)।

संसिलेस देखो संसेस (राज)।

संसिलेसिय देखो—संसेसिय (राज)।

संसीव सक [सं + सिव्] सीना, सिलाई करना। संसीविज्जा (आचा २, ५, १, १)।

ससुद्ध वि [सशुद्ध] १ विशुद्ध, निर्मल (सुपा ५७३)। २ न लगातार उन्नीस दिन का उपवास (सबोध ५८)।
ससूयग वि [ससूचक] सूचना-कर्ता (रंभा)।
ससेइम वि [ससेकिम] ससेक से बना हुआ (निचू १५)। २ उबाली हुई भाजी जिस ठंढे जल से सिंची जाय वह पानी (ठा ३, ३—पत्र १८७, कप्प)। ३ तिल की धोवन (आचा २, १, ७, ८। ४ पिष्टोदक, आटा की धोवन (दस ५, १, ७५)।
ससेइम वि [सस्वेदिम] १ पसीने से उत्पन्न होनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।
ससेय अक [स + स्विद्] बरसना, 'जावं च णं वहवे उराला वलाहया ससेयति' (भग)।
ससेय पुं [सस्वेद] पसीना। °य वि [°ज] पसीने से उत्पन्न (सूअ १, ७, १, आचा)।
ससेय पु [ससेक] सिंचन (ठा ३, ३)।
ससेविय वि [ससेवित] आसेवित (सुपा २२७)।
ससेस पु [संश्लेष] सम्बन्ध, संयोग (आचा २, १३, १)।
ससेसिय वि [संश्लेषिक] संश्लेषवाला (आचा २, १३, १)।
ससोवण न [संशोधन] शुद्धि-करण (पिंड ८५९)। देखो समोहण।
ससोवित वि [संशोधित] अच्छी तरह शुद्ध किया हुआ (सूअ १, १४, १८)।
ससोय सक [स + शोचय्] शोक करना। कृ ससोयणिज्ज (सुर १४, १८१)।
ससोहण न [संशोधन] विरेचन, जुलाब (आचा १, ६, ४, २)। देखो ससोवण।
ससोहा स्त्री [संशोभा] शोभा, श्री (सुपा ३७)।
ससोहि वि [संशोभिन्] शोभनेवाला (सुपा ४८)।
ससोहिय देखो ससोवित (राज)।
सह देखो सय (नाट—विक्र २५)।
सहडण देखो सघयण (चड)।
सहदि स्त्री [संहृति] संहार (संक्षि ६)।
सहय वि [संहत] मिला हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
सहर सक [स + हृ] १ अपहरण करना। २ विनाश करना। ३ संवरण करना, संकेलना, समेटना। ४ ले जाना। सहरइ (पव २६१, हे १, ३०, ४, २५९)। कवकृ सहरिज्जमाण (णाया १, १—पत्र ३७)।
सहर पु [संभार] समुदाय, संघात, 'संघाओ सहरो निअरो' (पाअ)।
सहरण न [संहरण] संहार (श्रु ८७)।
सहार देखो संभार = स + भारय्। कृ. सहारणिज्ज (णाया १, १२—पत्र १७६)।
सहार देखो संधार (हे १, २६४, षड्)।
सहारग न [संधारण] धारण, बनाये रखना, टिकाना, 'कायसहारणट्ठाए' (आचा)।
सहाव देखो संभाव = स+भावय्। वकृ. सहावअत (शौ) (पि २७५)।
सहिदि देखो सहदि (प्राकृ १२)।
सहिच्च अ [संहत्य] साथ मे मिलकर, एकत्रित होकर (णाया १, २ टी—पत्र ९३)।
सहिय देखो सविअ = सहित (कप्प, नाट—महावी २९)।
सहिया स्त्री [संहिता] १ चिकित्सा आदि शास्त्र, 'चिगिच्छासहियाओ' (स १७)। २ अस्खलित रूप से सूत्र का उच्चारण, 'अक्खलियसुत्तुच्चारणरूवा इह सहिया मुणेयव्वा' (चेइय २७२)।
सहुदि स्त्री [संभृति] अच्छी तरह पोषण (संक्षि ४)।
सक देखो सग = शक (पण्ह १, १—पत्र १४)।
सक्कण्ण देखो सकन्न (राज)।
सकथ न [सकथ] तापसो का एक उपकरण (निर ३, १)।
सकवा देखो सकहा, 'चेइयखभेसु जिणसकथा सणिक्खित्ता चिट्ठति' (सुज्ज १८)।
सकयं अ [सकृत्] एक वार, 'किं सक (? क)यं वोलीणं' (सुर १६, ४५)।
सकन्न वि [सकर्ण] विद्वान्, जानकार (सुर ८, १४६, १२, ५४)।
सकल देखो सयल = सकल (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
सकहा स्त्री [सक्थिन्] अस्थि, हाड (सम ६३, सुपा ६५७, राय ८९)।
सकाम देखो स-काम = सकाम।
सकुत पुं [शकुन्त] पक्षी (कुप्र ६८, अणु १४१)।
सकुण देखो सक = शक्। सकुणेमो (स ७६५)।
सकेय देखो स-केय = सकेत।
सक्क अक [शक्] सकना, समर्थ होना। सक्कइ सक्कए (हे ८, २३०, प्राप्र, महा)। भवि सक्ख, सक्खामो, सक्किस्सामो (आचा, पि ५३१)। कृ सक्क, सक्कणिज्ज, सक्किअ (संक्षि ६, सुर १, १३०, ४, २२७, स ११८, सबोध ४०, सुर १०, ८१)।
सक्क सक [सृप्] जाना, गति करना। सक्कइ (प्राकृ ६५, धात्वा १५५)।
सक्क सक [ष्वष्क्] गति करना, जाना। सक्कइ (पि ३०२)।
सक्क न [शल्क] छाल (दे ३, ३४)।
सक्क वि [शक्त] समर्थ, शक्ति-युक्त, 'को सक्को वेयणाविगमे' (विवे १०२, हे २, २)।
सक्क देखो सक्क = शक्।
सक्क पुं [शक्र] १ सौधर्म नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, उवा सुपा २९९)। २ कोई भी इन्द्र, देव-पति (कुमा)। ३ एक विद्याधरराजा (पउम १२, ८२)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °गुरु पुं [°गुरु] बृहस्पति (सिरि ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] शक्र का एक उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °सार न [°सार] एक विद्याधर-नगर (इक)। °वदार (शौ) न [°वतार] तीर्थ-विशेष (अभि १८३)। °वियार न [°वतार] चैत्य-विशेष (स ४७७, द्र ६१)।
सक्क पु [शाक्य] १ बुद्ध देव (पाअ)। २ वि बौद्ध, बुद्ध का भक्त (विसे २४१९, श्रावक ८८, पव ९४, पिंड ४४५)।
सक्क (अप) देखो सग = स्वक (भवि)।
सक्कंदण पु [संक्रन्दन] इन्द्र (सुर १, ६ टि, ४, १६०)।

[illegible] (नाट— [illegible])।

[illegible] = [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] युक्त [illegible] [illegible] (गा [illegible] [illegible]) [illegible] पिण्डिया [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [°पुढवी] [illegible] °प्पभा [°प्रभा] [illegible] (ठा [illegible]—पत्र ३८८ टी)।

[illegible] [illegible] (णाया १ [illegible], सुपा ८४ सुर ३, १४) [illegible] ३ शत्रु, [illegible] [°न] [illegible] (ठा ७—पत्र २६०) °णी [illegible] [°नी] [illegible] (उत ३६, १७३)।

[illegible] [illegible] [illegible] (सुपा [illegible] १८६ [illegible] १४, २६०)।

[illegible] पुं [illegible] [illegible] [illegible] ६ व्याकरण [illegible] ७ [illegible] क्रिया। [illegible] ३८ २, ४ प्राकृ [illegible]।

[illegible] [illegible] करना, [illegible] [illegible] [illegible]— [illegible]।

[illegible]

सक्कारि वि [सत्कारिन्] सत्कार करनेवाला, सम्मानकर्ता (गउड)।

सक्कारिय वि [सत्कारित] सम्मानित (सुपा २, १३, महा)।

सक्कारिय वि [सत्कारित] सत्कार युक्त किया हुआ (धर्मसं ८०३)।

सक्काल देखो सक्कार = सत्कार (हे १, २८)।

सक्कि देखो सक्क = शाक्य, 'अह तु ताव उवज्झाएहिंतो दिक्खिओ विय सक्किसमणओ गिण्हइ ण जाणामि' (चारु ५६)।

सक्किअ देखो स = शक्।

सक्किअ वि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो वह (से २८, कुप्र ३)।

सक्किय वि [स्वकीय] निज का, आत्मीय, 'नि (? न) सक्कियमुवरिं च तहा पडिनेहंतो न वेमि गया' (कुलक ५, ६)।

सक्किअ देखो सक्कि अ = संस्कृत।

सक्किरिआ स्त्री [सत्क्रिया] सत्कार, सत्कृति (प्राकृ ३३)।

सक्कुण देखो सक्कुण। सक्कुणदि (शौ) (प्राकृ ६४), सक्कुणामि (स २४, माल ७)।

सक्कुलि स्त्री [शष्कुलि] १ कर्ण-विवर, कान का छिद्र (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ तिलपापड़ी, एक तरह का खाद्य पदार्थ (पण्ह २, ५—पत्र १४८, दस ५, १, ७१, धर्म, विसे २६६)। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक)।

सक्क° देखो सक्क = शक्।

सक्ख न [सख्य] मैत्री, दोस्ती (उत्त १४, २७)।

सक्ख न [साक्ष्य] साक्षित्व, गवाही (सुपा ४०६, सम्मत्त १७०)।

सक्खं अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, प्रकट रूप से, प्रकट (हे १, २४, सिरि ११४)।

सक्खण देखो सक्ख = साक्ष्य (अ २ टी— पत्र ४८)।

सक्खर देखो स-क्खर = साक्षर।

सक्खि [illegible] (भग [illegible], [illegible] ५, २२१, २२, [illegible] ११४)।

सक्खि वि [साक्षिन्] साक्षी साक्षा, गवाह (पण्ह १, २—पत्र २६, धर्मसं १२००, कप्पू, श्रा १४, स्वप्न १३१)।

सक्खिअ देखो सक्ख = सख्य, 'कादवरी-सक्खिअं अम्हाणं पढमसोहिदं इच्छावदि' (अभि १८८)।

सक्खिज्ज न [साक्षित्य] गवाही, साख (श्रावक २६०)।

सक्खिण देखो साक्खण (हे २, १७४, षड्, सुर ६, ४४)।

सग [स्वक] देखो स = स्व (भग पण्ण २१—पत्र ६२८, पउम ८२, ११७, उत्त २०, २६, २७, संबोध ५०, चेइय ५६१)।

सग देखो सत्त = सप्तन् (रयण ७२, उर ५, ३, २, २३)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] सत्तावन, पचास और सात (कम्म ६, ६०, श्रु १११, कम्म २ २०)। °वीस स्त्रीन [विंशति] सत्ताईस (श्रा २८, रयण ७२, संबोध २६)। °सयरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर (कम्म २, ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी (कम्म २, ९६)।

सग देखो सत्तम (कम्म ४, ७६)।

सग पुं [शक] १ एक अनार्य देश, अफगानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश (सुपनि ६६, पउम ६८, ६४ टि)। २ उस देश का निवासी (राज)। ३ एक सुप्रसिद्ध राजा जिसका शक संवत् चला है (विचार ४९७, ५१३)। °कूल न [°कूल] एक म्लेच्छ-देश का किनारा (राज)।

सग° स्त्री [स्रज्] माला, 'सगचंदणवित-मल्लाइजोगओ जस्स मह य दीसति' (श्रावक १८९)।

सगड न [शकट] १ गाड़ी (उवा, पाया २, ३, १६)। २ पुं एक सार्थवाहपुत्र (विपा १, ४—पत्र ४, ५, ४—पत्र ५५)। °भद्दिआ स्त्री [°भद्रिका] जैनेतर शास्त्र-विशेष (णंदि १९४, अणु ३)। °मुह न [°मुख] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन उद्यान (राज)। °वूह पुं [°व्यूह] सेना-विशेष, गाड़ी के आकार में सेना की रचना (औप)। °आ सगडा।

सगडब्भि देखो स-गडब्भि = स्वकृतभिद् ।

सगडाल पुं [शकटाल] राजा नन्द का सुप्रसिद्ध मन्त्री और महर्षि स्थूलभद्र का पिता (कुप्र ४४३) ।

सगडिया स्त्री [शकटिका] छोटी गाडी (भग, विपा १, १—पत्र ८, णाया १, १—पत्र ७४) ।

सगडी स्त्री [शकटी] गाडो (णाया १, ७—पत्र ११८) ।

सगण देखो स-गण = स-गण ।

सगन्न देखो सन्न (कुप्र ४०३) ।

सगय न [दे] श्रद्धा, विश्वास (दे ८, ३) ।

सगर पु [सगर] एक चक्रवर्त्ती राजा (सम ८२, उत्त १७, ३५) ।

सगल्ल देखो सयल = सकल (णाया १, १६—पत्र २१३, भग, पच १, १३, सुर १, ११६, पव २१६, सिक्खा ३७) ।

सगसग अक [सगसगाय्] 'सग-सग' आवाज करना । वकृ. सगसगेत (पउम ४२, ३१) ।

सगार देखो स-गार = सागार, साकार ।

सगार देखो स गार = स-कार ।

सगास न [सकाश] पास, निकट, समीप (ओप, सुपा ४५२, ४८८, महा) ।

सगुण देखो स-गुण = स-गुण ।

सगुणि देखो सउणि (पण्ह १, ४—पत्र ७८) ।

सगुत्त वि [सगोत्र] समान गोत्रवाला, एकगोत्रीय (कप्प) ।

सगेद्द न [दे] निकट, समीप (दे ८, ६) ।

सगोत्त देखो सगुत्त (कुप्र २१७) ।

सग्ग पुन [स्वर्ग] देवो का आवास-स्थान (णाया १, ५—पत्र १०५, भग, सुपा २९३), 'वेरग्ग चेवमिह सग्ग' (श्रु ५८) । °तरु पु [°तरु] कल्पवृक्ष (से ११, ११) । °सामि पु [°स्वामिन्] इन्द्र (उप २६४ टी) । °वहू स्त्री [°वधू] देवागना, देवी (उप ७२८ टी) ।

सग्ग पु [सर्ग] १ मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्म (ओप) । २ सृष्टि, रचना (रभा) ।

सग्ग देखो स-ग्ग = साग्र ।

सग्ग देखो सग = स्वक (उत्त २०, २६, राज) ।

सग्गइ देखो स-ग्गइ = सद्गति ।

सग्गह वि [दे] मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (दे ८, ४ टी) ।

सग्गह देखो स ग्गह = स-ग्रह ।

सग्गीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी (विसे १८००) ।

सग्गु देखो सिग्गु (उप १०३१ टी) ।

सग्गोकस पु [स्वर्गौकस] देव, देवता (धर्म ६) ।

सग्घ सक [कथ्] कहना । सग्घइ (षड्) ।

सग्घ वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय (सूअ १, ३, २, १६, विसे ३५७८) ।

सघिण देखो स-घिण = स-घृण ।

सचक्खु } देखो स-चक्खु = स-चक्षुष् ।
सचक्खुअ }

सचित्त देखो स-चित्त = स चित्त ।

सचिव देखो सइव (सण) ।

सची देखो सई = शची (धर्मवि ६६, नाट—शकु ६७) । °वर पु [°वर] इन्द्र (सिरि ४२) ।

सचेयण देखो स-चेयण = स चेतन ।

सच्च न [सत्य] १ यथार्थ भाषण, अमृषा-कथन (ठा १०—पत्र ४८९, कुमा, पण्ह २, ५—पत्र १४८, स्वप्न २२, प्रासू १५०, १७७) । २ शपथ, सोगन । ३ सत्य युग । ४ सिद्धान्त (हे २, १३) । ५ वि यथार्थ, सच्चा, वास्तविक, 'मच्चपरक्कमे' (उत्त १८, ४९, श्रा १२, ठा ८, १—पत्र १९६, कुमा) । ६ पु सयम, चारित्र (आचा, उत्त ६, २) । ७ जिनागम, जेन सिद्धान्त (आचा) । ८ अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१) । ९ एक वणिक्-पुत्र (उप ५१६) । °उर न [°पुर] भारत का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'साचोर' नाम से मारवाड मे प्रसिद्ध हे (ती ७, सिग्घ ७) । °उरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पडि) । °णेमि, °नेमि पुं [°नेमि] भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ले मुक्ति पानेवाला एक मुनि जो राजा समुद्रविजय का पुत्र था (अत, अत १४) । °प्पवाय न [°प्रवाद] छठवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६) । °भामा स्त्री [°भामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अत १५) । °वाइ वि [°वादिन्] सत्य-वक्ता (पउम १०, ३१) । °सन्न वि [°सन्ध] सत्य प्रतिज्ञावाला, प्रतिज्ञा-निर्वाहक (उप पृ ३३३, सुपा २८३) । °सिरी स्त्री [°श्री] पाचवें आरे की अन्तिम श्राविका (विचार ५३४) । °सेण पु [°सेन] ऐरवत वर्ष मे होनेवाला एक जिनदेव (सम १५४) । °हामा देखो °भामा (पि ३४) । °वाइ देखो °वा (आचा १, ८, ६ ५, १, ८, ७, ५) ।

सच्चइ पु [सत्यकि] १ आगामी काल मे बारहवा तीर्थंकर होनेवाला एक साध्वी-पुत्र (ठा ९—पत्र ४५७, सम १५४, पव ४६) । २ विषय लम्पट एक विद्याधर (उव, उर ७, १ टी) । ३ श्रीकृष्ण का सबन्धी एक व्यक्ति (रुक्मि ४९) । °सुय पु [°सुत] ग्यारह रुद्रो मे अन्तिम रुद्र पुरुष (विचार ४७३) ।

सच्चंकार वि [सत्यकार] सत्य साबित करनेवाला, लेन-देन की सच्चाई के लिए दिया जाता बहाना, 'गहिओ सजमभारो सच्चकारु व्व सिद्धीए' (धर्मवि १४, आप ६६, रयण ३४) ।

सच्चव सक [दृश्] देखना । सच्चवइ (हे ४, १८१, षड्, सण) । कर्म सच्चविज्जइ (कुप्र ९८) ।

सच्चव सक [सत्यापय्] सत्य साबित करना । सच्चवइ (सुपा २९०) । कर्म 'अलिअपि सच्चविज्जइ पहुत्तण तेण रमणिज्ज' (सूक्त ८५) ।

सच्चवण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (कुमा, सुपा २२९) ।

सच्चवय वि [दर्शक] द्रष्टा (सबोध २४) ।

सच्चविअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (गा ५३९, ८०९, सुर ४, २२५, पाअ, महा) ।

सच्चविअ वि [दे] अभिप्रेत, इष्ट (दे ८, १७, भवि) ।

सच्चा स्त्री [सत्या] १ सत्य वचन (पण्ण ११—पत्र ३७६) । २ श्रीकृष्ण की एक

[illegible] (सुपा २२८)। ३ [illegible] ([illegible])। °मेल वि [[illegible]] [illegible], [illegible] मिला हुआ [illegible] ([illegible] ४०)।

[illegible] = [illegible]।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], यथार्थ ([illegible])।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], मिलित ([illegible])।

[illegible] ([illegible] सुपा ३०)।

[illegible]

[illegible] ([illegible])।

[illegible] (सम्मत्त ३६)।

[illegible]

[illegible] (सुपा [illegible] २४६)।

[illegible] (पउम [illegible], २४६)।

[illegible]

[illegible] (सुर १२, २१ [illegible])।

[illegible]

सज्जोणिअ देखो सज्जोणिय = सद्योनिक।

सज्ज सक [सस्ज्] १ आसक्ति करना। २ सक. आलिंगन करना। सज्जइ (उत्त २४, २०), सज्जइ (गाया १, ८—पत्र १४८)। वकृ सज्जमाण (सूअ १, ७, २७, दस २, १०; उत्त १४, ६, उवर १२)। कृ सज्जियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

सज्ज सक [सज्ज्] १ तय्यार होना। २ सक तय्यार करना, सजाना। सज्जइ, सज्जति (कुमा गाया १, ८—पत्र १३२)। कर्म सज्जिज्जति (पिंग)। कवकृ सज्जिज्जंत (पिंग)। संकृ सज्जिऊण, सज्जेउ (स ६४, महा)। कृ सज्जियव्व, सज्जेयव्व (सत्त ४०, स ७०)। प्रयो, संकृ. सज्जाविऊण (महा)।

सज्ज पुं [सर्ज] वृक्ष-विशेष (गाया १, १—पत्र २४, विसे २६८२ स ४२१, कुमा)।

सज्ज पुं [षड्ज] स्वर विशेष (कुमा)।

सज्ज वि [सज्ज] तय्यार, प्रगुण (गाया १, ८—पत्र १४६, सुपा १२२, १६७, हेका ४८, पिंग)।

सज्ज } अ [सद्यस्] तुरन्त, जल्दी शीघ्र, सज्जं } 'तं सायणं तं सम्मणजोग पउजामि' (स १०८, सुर ८ १३, गा ४६७ अ, [illegible])।

सज्जंभव पुं [शय्यम्भव] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (सार्ध ९२)।

सज्जग [illegible] = सज्जन।

सज्जा देखो सेज्जा (राज)।

सज्जिअ वि [सज्जित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (पाअ, कुमा, महा)।

सज्जिअ वि [[illegible]] बनाया हुआ ([illegible] १, १३८)।

सज्जि पुं [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

सज्जिआ स्त्री [[illegible]] क्षार विशेष, सज्जी [illegible] (णाया १, ४—पत्र १०६)।

सज्जाव } [illegible] = [illegible]।
सज्जाव }

सज्जीहव सक [सज्जी + भू] सज्ज होना, तय्यार होना। सज्जीहवेइ (धर्म १४)।

सज्जो देखो सज्ज = सद्यस् (सुपा ३६७)।

सज्जोप वि [[illegible]] प्रत्यग्र, नूतन, ताजा (दे ८, ३)।

सज्झ वि [साध्य] १ साधनीय, सिद्ध करने योग्य। २ वश में करने योग्य, 'बलिमा हु दुमो नत्तू तारं व सज्झो न पुरिसगारस्स' (सुर ८, २६ गा २४)। ३ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध अनुमेय पदार्थ जैसे धूम से ज्ञातव्य वह्नि (पचा १४, ३५)। ४ पुं साध्ययाना, [illegible] (विसे १०७७)। ५ देवगण-विशेष। ६ योग विशेष। ७ मन्त्र विशेष (हे २, २६)।

सज्झ पुं [सह्य] १ पर्वत-विशेष (स ६७६)। २ वि सहन योग्य (हे २, २६, २४)।

सज्झंतिय पुं [[illegible]] [illegible] (राज)।

सज्झंतिया स्त्री [[illegible]] भगिनी, बहिन (राज)।

सज्झंतेवासि पुं [सहाध्यायान्तेवासिन्] विद्या-शिष्य (सुर २, ८५)।

सज्झसाण वि [साध्यमान] जिसकी साधना की जाती हो वह (स्यण ४०)।

सज्झस सक [[illegible]] [illegible] करना, बहुमान करना। सज्झसहि, सज्झसेमि (सुर २, १५)।

सज्झस न [साध्वस] भय, डर (हे २, २६, कुमा)।

सज्झाय वि [स्वाध्याय] १ जिसमें पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्र [illegible], काल आदि (ठा १०—पत्र ४९५)। २ न स्वाध्याय, शास्त्र-पठन आदि (पव २६८, [illegible] २०७ टी)।

सज्झाय पुं [स्वाध्याय] शास्त्र अध्ययन, शास्त्र का पठन, आवर्तन आदि (औप, [illegible], २६, कुमा, [illegible] २६)।

[illegible] ([illegible] ५५, ६२)।

सज्झि [illegible] पुं [[illegible]] [illegible] ([illegible] २५४, २०७, [illegible] ४२८)।

सज्झिल्लगा स्त्री [[illegible]] भगिनी, बहिन [illegible] ([illegible] २०७)।

सज्झिल्लग [illegible] (राज)।

सट्ट पुंस्त्री [दे] १ सट्टा, विनिमय, बदला (सुपा २३३)। स्त्री °ट्टी (सुपा २७५, वज्जा १४२) २ वि. सटा हुआ, 'पीणुण्णय-सट्टइं थणवट्टइं' (भवि)।

सट्ट } पुन [सट्टक] १ एक तरह का नाटक
सट्टय } (कप्पू, रंभा १०), 'रंभ त्ति परिणेदि अद्दुमतियं एयम्मि सट्टे वरे' (रंभा १०)। २ खाद्य-विशेष (रंभा ३३)।

सट्ठ न [शाठ्य] शठता, धूर्तता (उप ७२८ टी, कुमा २४)।

सट्ठ (शौ) देखो छट्ठ (चारु ७, प्रबो ७३, पि ४४६)।

सट्ठि स्त्री [षष्टि] १ संख्या-विशेष, साठ, ६०। २ साठ संख्यावाला (सम ७४, कप्प, महा, पि ४४८)। °तंत, °तंत न [°तन्त्र] शास्त्र-विशेष, सांख्य-शास्त्र (भग, णाया १, ५—पत्र १०५, औप, अणु ३६)। °म वि [°तम] साठवाँ (पउम ६०, १०)।

सट्ठिक } वि [षष्टिक] १ साठ वर्ष की
सट्ठिय } वयवाला (तदु १७, राज)। २
सट्ठीअ } पुन. एक प्रकार का चावल (राज, श्रा १८)।

सड अक [सद्] १ सडना। २ विषाद करना, खिन्न होना। ३ सक गति करना, जाना। सडइ (हे ४, २१९, प्राप्र, षड्, धात्वा १५५)।

सड अक [शद्] १ सडना। २ खेद करना। ३ रोगी होना। ४ सक. जाना। सडइ (विपा १, १—पत्र १६)।

सडंग न [षडङ्ग] शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द और ज्योतिष। °वि वि [°विद्] छ अंगों का जानकार (भग, औप, पि ३४१)।

सडण न [शटन] विशरण, सडना (पण्ह १, १—पत्र २३, णाया १, १—पत्र ४८)।

सडा देखो सढा (से १, ५०, पि २०७)।

सडिअ वि [सन्न, शटित] सडा हुआ, विशीर्ण (विपा १, ७—पत्र ७३, श्रा १४, कुमा)।

सडिअग्गिअ वि [दे] १ वर्धित, बढाया हुआ। २ प्रेरित (षड्)।

सड्ढ सक [शद्] १ विनाश करना। २ कृश करना। सड्ढइ (धात्वा १५५)।

सड्ढ पुस्त्री [श्राद्ध] १ श्रावक जैन गृहस्थ (ओघ ६०, महा)। स्त्री. °ड्ढी (सुपा ६५४)। २ वि. श्रद्धेय वचनवाला, जिसका वचन श्रद्धेय हो वह (ठा ३, ३—पत्र १३६)। देखो सद्ध = श्राद्ध।

सड्ढ देखो स-ड्ढ = सार्ध।

सड्ढइ पु [श्राद्धकिन्] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप)।

सड्ढा स्त्री [श्रद्धा] १ स्पृहा, अभिलाष, वाञ्छा (विपा १, १ पत्र २)। २ धर्म आदि में विश्वास, प्रतीति। ३ आदर, सम्मान। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रसन्नता (हे १, ४१, षड्)। देखो सद्धा।

सड्ढि वि [श्राद्धिन्] १ श्रद्धालु, श्रद्धावान् (ठा ६—पत्र ३५२, उत्त ५, ३१, पिंडभा ३३)। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ (कप्प)।

सड्ढिअ वि [श्राद्धिक] देखो सड्ढ = श्राद्ध (पि ३३३, राज)।

सड्ढी देखो सड्ढ = श्राद्ध।

सढ वि [शठ] १ धूर्त, मायावी, कपटी (कुमा, उप २८४ टी, ओघभा ५८, भग, कम्म १, ५८)। २ कुटिल, वक्र (पिंड ६३३)। ३ पु. धत्तूरा। ४ मध्यस्थ पुरुष (हे १, १९९, सक्षि ८)।

सढ पु [दे] १ पाल, जहाज का वादवान, गुजराती में 'सढ' (सिरि ३८७)। २ केश, बाल (दे ८, ४६)। ३ स्तम्ब, गुच्छा (दे ८, ४६, पाअ)। ४ वि. विषम (दे ८, ४६)।

सढय न [दे] कुसुम, फूल (दे ८, ३)।

सढा स्त्री [सटा] १ सिंह आदि की केसरा। २ जटा। ३ व्रती का केश समूह। ४ शिखा (हे १, १९६)।

सढाल पु [सटाल] सटावाला, सिंह (कुमा)।

सढि पु [दे सटिन्] सिंह (दे ८, १)।

सढिल वि [शिथिल] ढीला (हे १, ८९, कुमा)।

सण पुन [शण] १ धान्य-विशेष (श्रा १८, पव १५४, पण्ह २, ५—पत्र १४८)। २ तृण-विशेष, पाट, जिसके तंतु रस्सी आदि बनाने के काम में लाए जाते हैं (णाया १, १—पत्र २४, पण्ण १—पत्र ३२, कप्पू)। °बंधण न [°बन्धन] सन का पुष्प-वृन्त (औप, णाया १, १ टी—पत्र ६)। °वाडिआ स्त्री [°वाटिका] सन का बगीचा (गा ६)।

सण पु [स्वन] शब्द, आवाज (स ३७०)।

सणंकुमार पु [सनत्कुमार] १ एक चक्रवर्ती राजा (सम १५२)। २ तीसरा देवलोक (अनु, औप)। ३ तीसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °वडिंसग पुन [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम १३)।

सणप्पय }
सणप्फइ } देखो स-णप्पय = स-नखपद।
सणप्फय }

सणा अ [सना] सदा, हमेशा। °तण °यण वि [°तन] सदा रहनेवाला, नित्य शाश्वत (सूअ २, ६, ४७), 'सिद्धाण सणायणओ परिणामिओ दव्वओवि गुणो' (सबोध २)।

सणाण न [स्नान] नहाना, नहान अवगाहन (उवा)।

सणाह देखो स-णाह = स-नाथ।

सणाहि पु [सनाभि] १ स्वजन, ज्ञाति, 'बघू समणो सणाही य' (पाअ)। २ समान, सदृश (रंभा)।

सणि पु [शनि] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर (पउम १७ ८१)। २ शनिवार (सुपा ५३२)।

सणिअ पु [दे] १ साक्षी, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८, ४७)।

सणिअं अ [शनैस्] धीरे, हौले (णाया १, १६—पत्र २२६, गा १००, हे २, १६८ गउड, कुमा)।

सणिंचर पुं [शनैश्चर] ग्रह-विशेष, शनि-ग्रह (पि ८४)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३४४)।

सणिचारि } पु [शनैश्चारिन्] युगलिक
सणिंचारि } मनुष्यों की एक जाति (इक, भग ६, ७—पत्र २७६)।

सणिच्चर } देखो सणिंचर (ठा २, ३—
सणिच्छर } पत्र ७७, हे १, १४९, औप, कुमा, सुज्ज १०, २०, २०)।

[illegible] (उप ७, ७०६; कुमा)। [illegible] [illegible] विचार [illegible] (टी) [illegible]।

[illegible] [illegible] (हे ३, ७७)।

[illegible] [illegible] १४८।

[illegible] [illegible] (ठा ६—पत्र ३४३; उप ७६८ टी; सुपा ४०२, ४६४)।

सण्णिरु देखो सण्णिरु (राज)।

सण्णुबिज्झ वि [दे] १ मतिविज्ञ। २ गर्वित, [illegible] (दे ८, ४८)।

[illegible] (दे ८, ४८ टी)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ८, ६)।

[illegible] [illegible] (विपा १, ८—[illegible])। [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] (पउम [illegible])।

[illegible] [illegible] (उप [illegible] ६६)।

[illegible]

[illegible] वि [°] (दे ८, ६)।

[illegible]

न क्षत्र-विशेष (सम २६)। °रिसभ पु [°ऋषभ] अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त (सम ५१)। °वन्द पु [°वन्त] पक्षि-विशेष (पण्ह १—पत्र ८)। °पाडिया स्त्री [°पादिका] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)।

सत्त देखो सत्त = सप्तन् (पिंग)। °र वि [°दशन्] सतरह, १७; 'ज सागवयणुणि [illegible] पडिरुत्तमः सत्तरोम्दरतोम्' (सिरि १२८८; कम्म २, [illegible] १६)। °रसय न [°दशशत] एक सौ सत्तरह (कम्म २, १३)।

सतन देखो स तण = स्वजन।

सतन देखो सतम = सतन (राज)।

सतय देखो सतक = शतक (सम ११४)।

सतर न [सतर] दधि, दही (ओघ ४८)।

सति देखो सइ = स्मृति (ठा ४, १—पत्र १८७; ओघ)।

सती देखो सई = सती (कुप्र ६०)।

सतीणा देखो सईणा (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।

सतेरा स्त्री [शतेरा] विदिक्-रुचक पर रहने वाली एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८ टी)।

सत्त वि [शक्त] समर्थ (षड् २, २; षड्)।

सत्त वि [शप्त] जिसको शाप दिया गया हो वह (पउम ४४, ६; पव १०६ टी; प्रति ८६)।

सत्त देखो सत्त = सप्त (प्रति १८६; पिंग)।

सत्त वि [सक्त] आसक्त, लुब्ध, तल्लीन (सूअ १, १, ६; कुमा; [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (अंत २०)।

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उत्साह (पिंड ६३३; धणु; आम ७१)। ५ विद्यमानता (धर्मसं १०५)। ६ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

सत्त वि [सप्तन्] सात संख्यावाला, सात (विपा १, ७—पत्र २; कप्प; कुमा जो ३३, ४१)। °क्खित्ती, °क्खेत्ती स्त्री [°क्षेत्री] जिन-चैत्य, जिन-बिम्ब, जैन आगम, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका ये सात धन-व्यय स्थान (ती ८; श्रु १२६ टी)। °ग न [°क] सात का समुदाय (४ ३५ कम्म २, २६, २७, ६, १३)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] सैंतालीसवाँ, ४७ वाँ (पउम ४७, ५८)। °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] सैंतालीस, ४७ (उप ६७)। °च्छय पु [°च्छद] वृक्ष-विशेष, सतवन का पेड़, सतोना (पाअ १७, २३; णाया १, १६—पत्र २१४, सण)। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] १ संख्या-विशेष, सड़सठ, ६७। २ सड़सठ संख्या वाला (सम १०६; कम्म ६, २४, ३२; २, ६)। °ट्ठिम वि [°षष्ठिक] सड़सठ प्रकार का (सुज १२—पत्र २२८)। °णउइ देखो °णउइ (राज)। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] सैंतीसवाँ, ३७ वाँ (पउम ३७, ७१)। °तंतु पु [°तन्तु] यज्ञ (पाअ)। °दस वि [°दशन्] सतरह, १७ (पउम ११७, ४३)। °दस्स देखो °पण्ण (राज)। °भूम वि [°भूम] सात तलावाला प्रासाद (श्रा १२)। °भूमिय वि [°भूमिक] वही पूर्वोक्त अर्थ (महा)। °म वि [°म] सातवाँ, ७ वाँ (कप्प)। स्त्री °मा (सम २६)। °मासिअ वि [°मासिक] [illegible]। °मासिआ स्त्री [°मासिकी] [illegible] [illegible] [illegible] (सम [illegible])। [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] (कम्म २, [illegible])।

[illegible] [illegible] (राज)।

°रस वि [°दश] [illegible] १७ (पउम)। °रह, °रसम [illegible] [°दश] [illegible]

(कम्म ८, १६, पउम १७ १२३ पत्र ४६)। °रह देखो °रस = °दशन् (पड)°रि स्त्री [°ति] सत्तर, ७० (सम ८१, कप्प, पउ)। रिसि पु [°ऋषि] सात नक्षत्रों का मडल-विशेष (सुपा ३५८)। °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ वृक्ष-विशेष, सतोना (ओप, भाग)। २ देव-विशेष (राय ८०)। °वन्नव-डिसग पु [°पर्णावतसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राय ५६)। °विह वि [°विध] सात प्रकार का (जी १६ प्रासू १०८ पि ४५१)। °वीसइ, °वीसा स्त्री [°विंशति] सताईस २७ (पि ४४५ ...)। °सइय वि [°शतिक] सात सौ की संख्या-वाला (णाया १, १—पत्र ६८)। °सट्ठ वि [°षष्ट] सडसठवा, ६७वाँ (पउम ६७, ५१)। °सट्ठि देखो °ट्ठि (सम ७६) °सत्त-मिया स्त्री [°सप्तमिका] प्रतिज्ञा-विशेष, नियम-विशेष (अत)। °सिक्खावइय वि [°शिक्षाव्रतिक] सात शिक्षाव्रतवाला (णाया १, १२, ओप)। °हत्तर वि [°सप्तत] सतहतरवा, ७७ वा (पउम ७७, ११८)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या-विशेष, सतहत्तर की संख्या, ७७। २ सतहत्तर संख्या-वाला (सम ८८, भग, श्रा २८)। °हा अ [°धा] सात प्रकार का, सप्तविध (पि ४५१)। °हुत्तरि देखो °हत्तरि (नव ८)। °ईस (अप) देखो °वीसा (पि ४४५)। °णउइ स्त्री [°नवति] सतानवे, ६७ (सम ६८)। °णउय वि [°नवत] १ सतानवेवा, ६७ वा (पउम ६७, ३०)। २ जिसमे सता-नवे अधिक हो वह, 'सताणउयजोयणसए' (भग)। °रह (अप) देखो °रह (पिग)। °वण्ण °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] १ संख्या-विशेष, सतावन, ५७। २ सतावन संख्यावाला (पडि, पिग, सम ७३ नव २)। स्त्री. °ण्णा °न्ना (पिंग, पि २६५, ४४०)। °वन्न वि [°पञ्चाश] सतावनवा, ५७वा (पउम ५७, ३७)। °वीस न [°विंशति] १ संख्या-विशेष, सताईस। २ सताईस की संख्यावाला, 'एए सत्तावीस भगा णेयव्वा' (भग)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा)। °विसइम वि [°विंशतितम] सताईसवाँ, २७ वा (पउम २७, ४२)। °वीसइविह वि [°विंशतिविध] सताईस प्रकार का (पएण १७—पत्र ५३४)। °वीसा स्त्री देखो °वीस (हे १, ४, षड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी, ८७ (सम ९३)। °सीइम वि [°शीतितम] सतासीवा, ८७ वाँ, (पउम ८७, २१)।

सत्तग वि [सप्ताङ्ग] १ राजा, मन्त्री, मित्र कोश-भंडार, देश, किला तथा सैन्य ये सात राज्याङ्गवाला (कुमा)। २ न. हस्ति-शरीर के ये सात अवयव—चार पैर, सूँढ, पुच्छ और लिंग, 'सत्तगपइट्ठिय' (उवा १०१)।

सत्तण्ह देखो स-त्तण्ह = स तृष्ण।

सत्तत्थ वि [दे] अभिजात, कुलीन (दे ८, १०)।

सत्तम देखो सत्तम = सत्-तम।

सत्तर देखो स-त्तर = स-त्वर।

सत्तर देखो सत्त-र = सप्त-दशन्, दश।

सत्तल न [सप्तल] पुष्प विशेष (गउड)।

सत्तला, सत्तली स्त्री [सप्तला] लता-विशेष, नव-मालिका का गाछ (पाअ, गा ६१६, पउम ५३, ७६)।

सत्तली स्त्री [दे सप्तला] लता-विशेष, शेफालिका का गाछ (दे ८, ८)।

सत्तवीसजोयण देखो सत्तावीसजोअण (चड)।

सत्ता स्त्री [सत्ता] १ सद्भाव, अस्तित्व (णदि १३६ टी)। २ आत्मा के साथ लगे हुए कर्मो का अस्तित्व, कर्मों का स्वरूप से अप्रच्यव—अवस्थान (कम्म २, १, २५)।

सत्तावरी स्त्री [शतावरी] कन्द-विशेष, 'सत्ता-वरी विराली कुमारि तह थोहरी गलोई य' (पव ४, रावोध ४४, श्रा २०)।

सत्तावीसजोअण पु [दे] चन्द्र, चन्द्रमा (दे ८, २२), 'सत्तावीसजोअणकरपसरो जाव अज्जवि न होइ' (वज्जा १५)।

सत्ति स्त्री [दे] १ तिपाई तीन पाया वाला गोल काष्ठ विशेष। २ घडा रखने का पलग की तरह ऊंचा काष्ठ-विशेष (दे ८, १)।

सत्ति स्त्री [शक्ति] १ अस्त्र-विशेष (कुमा)। २ त्रिशूल (पएह १, १—पत्र १८)। ३ सामर्थ्य (ठा ३, १—पत्र १०६, कुमा, प्रासू २६)। ४ विद्या विशेष (पउम ७, १४२)। °म, °मत वि [°मत्] शक्तिवाला (ठा ६—पत्र ३५२, सबोध ८, उप १३६ टी)।

सत्ति पु [सप्ति] अश्व, घोडा (पाअ)।

सत्तिअ वि [सात्त्विक] सत्त्व-युक्त, सत्त्व-प्रधान (सुअनि ६२, हम्मीर १६, स ४)।

सत्तिअणा स्त्री [दे] आभिजात्य, कुलीनता (दे ८, १६)।

सत्तिवण्ण, सत्तिवन्न देखो सत्त-वण्ण (सम १५२, पि १०३, विचार १४८)।

सत्तु पु [शत्रु] रिपु, दुश्मन, वैरी (णाया १, १—पत्र, कप्पू, सुपा ७)। °इ वि [°जित्] १ शत्रु को जीतनेवाला। २ पु एक राजा का नाम (प्राकृ ९५)। °ग्घ वि [°घ्न] १ रिपु को मारनेवाला (प्राकृ ९८)। २ पु रामचन्द्र का एक छोटा भाई (पउम २५, १४)। °निहण [°निघ्न] वही पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०, ६६)। °मद्दण वि [°मर्दन] शत्रु का मर्दन करनेवाला (सम १५२)। °सेण पु [°सेन] एक अन्तकृद् मुनि (अंत ३)। °हण देखो °ग्घ (पउम ८०, ३८)।

सत्तु, सत्तुअ पु [सक्तु] सत्तू, सतुआ, भुजे हुए यव आदि का चूर्ण (पि ३६७, निचू १, स २५३, सुर ५, २०६, सुपा ४०६, महा)।

सत्तुंज न [शत्रुञ्ज] १ एक विद्याधर-नगर (इक)। २ पु रामचन्द्रजी का एक छोटा भाई, शत्रुघ्न (पउम ३२, ४७)।

सत्तुंजय पु [शत्रुञ्जय] १ काठियावाड मे पालीताना के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत जो जैनो का सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ है (सुर ५, २०३)। २ एक राजा का नाम (राज)।

सत्तुंदम पु [शत्रुन्दम] एक राजा का नाम (पउम ३८, ४५)।

सत्तुग देखो सत्तुअ (कुप्र १२)।

सत्तुत्तरि स्त्री [सप्तसप्तति] सतहत्तर, ७७ (कम्म ६, ४८)।

सत्थ वि [शस्त] प्रशस्त, श्लाघनीय (वेइय ५७२)।

सत्थ न [शस्त्र] हथियार, आयुध प्रहरण (आचा उप, भग, प्रासू १०५)। °कोस पु

[°द्ध] [illegible]—[illegible] का [illegible] (गाया [illegible]) । °[illegible] वि [°[illegible]] [illegible] मारने योग्य (गाया [illegible], १६—पत्र २२२) । °[illegible] न [°[illegible]] [illegible] (गाया [illegible], १६—पत्र २२२ [illegible]) ।

[illegible] [दि] [illegible] (दे ८, १) ।

[illegible]

[illegible] [illegible] (गाया १, ३—[illegible]) ।

[illegible] [सार्थ] १ [illegible] [illegible] १४—पत्र १६१, उत्त [illegible]) । २ [illegible] (दे [illegible], ६३) । ३ वि. [illegible] (विसे ४३२) । °[illegible] [°[illegible]] [illegible] मुखिया [illegible] [illegible] [illegible]—पत्र [illegible]) । °[illegible] [°[illegible]] [illegible] [illegible] । °[illegible] [°[illegible]] सार्थ [illegible] [illegible] (सुपा ४६०) । °[illegible] पु [°[illegible]] [illegible] (सुपा ४६४) ।

[illegible] [°[illegible]] [illegible] (विसे १३८४, [illegible]) ।

[illegible] [illegible] (पउम [illegible], [illegible]) । [illegible] (विसे ३२०) । [illegible] (पउम [illegible], [illegible]) ।

[illegible] [illegible] (दे ८, १०) ।

[illegible] (दे ८, ८) ।

[illegible] (गाया [illegible], [illegible], गउड) ।

[illegible] (दे [illegible] ३३, [illegible]) ।

[illegible]

[illegible]

सत्थि अ.स्त्री [स्वस्ति] १ आशीर्वाद, 'सत्थि करेइ कविला' (पउम ३५, ६२) । २ क्षेम, कल्याण, मंगल । ३ पुण्य आदि का स्वीकार (हे २, ४५, सुपा २०) । °मई स्त्री [°मती] १ एक विप्र-स्त्री, क्षीरकदम्बक उपाध्याय की स्त्री (पउम ११, ६) । २ एक नगरी (ठा ६ २) । ३ सन्निवेश-विशेष (स २०३) । देखो सोत्थि ।

सत्थिअ पु [स्वस्तिक] १ माङ्गलिक विन्यास-विशेष, मंगल के लिए की जाती एक प्रकार की चावल आदि की रचना-विशेष (श्रा २७, सुपा ४२) । २ स्वस्तिक के आकार का आसन-बन्ध (सुर ३) । ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०) । °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (श्रा २७) । देखो सत्थिअअ ।

सत्थिअ वि [सार्थिक] १ सार्थ-सम्बन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि (सुर ६२, स १२६, सुर ६, १६२, सुपा ६४१, धर्मवि १२०) । २ पु सार्थ का मुखिया (सुर ७) ।

सत्थिअ न [सास्थिक] [illegible] (स २६२) ।

सत्थिआ स्त्री [शस्त्रिका] छुरी (प्राप्र) ।

सत्थिम देखो सत्थिअ = स्वस्तिक (पंचा ८, २३) ।

सत्थिल्ल देखो सत्थिअ = सार्थिक (सुर १०, २०८) ।

सत्थिल्लय देखो सत्थ = सार्थ (महा, भवि) ।

सत्थु वि [शास्तृ] शासन-कर्ता, सीख देने वाला (प्राचा सूत्र २, ४, ८, १, १३, २) ।

सत्थुअ देखो सथुअ (प्राकृ ३३, पि ७६) ।

सदा देखो सआ = सदा (गउ) ।

सदावरी देखो सयावरी = शतावरी (उत्त ३६, १३६) ।

सदिस (शौ) देखो सरिस = सदृश (नाट—मृच्छ ११३) ।

सद्द सक [शब्दय्] १ आह्वान करना । २ पुकार करना, बुलाना । सद्दइ (भवि) ।

सद्द पुं [शब्द] १ ध्वनि, आवाज (हे १, २६०, २, ७९, कुमा, प्रासू १४), 'सद्दाणि विरूवरूवाणि' (सूअ १, ६, ९, ६), 'सद्दा' (आचा २, ४, २, ४) । २ पु [illegible]

(ठा ७—पत्र ३९०, विसे २१८१) । ३ छन्द-विशेष (पिंग) । ४ नाम, आख्या (महा) । ५ प्रसिद्धि (औप गाया १, १ टी—पत्र ३) °वेहि वि [°वेधिन्] शब्द के अनुसार निशाना मारनेवाला (गाया १, १८—पत्र २३६, गउड) । °वाइ पु [°पातिन्] एक वृत्त वैताढ्य पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०, ४, २—पत्र २२३, इक) ।

सद्दल न [शाद्वल] हरित हरा घास (पाप, गाया १, १—पत्र २४, गउड) ।

सद्दलिय वि [शाद्वलित] हरा घासवाला प्रदेश (गउड) ।

सद्दह सक [श्रद् + धा] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना । सद्दहइ सद्दहामि (हे ४, ६, भग, उवा) । भवि. सद्दहिस्सइ (पि ५३०) । वकृ सद्दहंत, सद्दहमाण सद्दहाण (पव ३६, हे ४, ९, सुर २३) । संकृ सद्दहित्ता (उत्त २९, १) । कृ सद्दहियव्व (उप, स ८६ सुपा २४६) ।

सद्दहग देखो सद्दहाण (हे ४, २३८, कुमा) ।

सद्दहणया } स्त्री [श्रद्धान] श्रद्धा, विश्वास,
सद्दहणा } प्रतीति (ठा ६—पत्र ३५५, पंचा) ।

सद्दहा देखो सद्धा = श्रद्धा (सट्ठि १२७) ।

सद्दहाण न [श्रद्धान] श्रद्धा विश्वास (श्रावक ६२, पव ११६, हे ४, २३८) ।

सद्दहाण देखो सद्दह ।

सद्दहिअ वि [श्रद्धित] जिस पर श्रद्धा की गई हो वह, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५, पि ३३३) ।

सद्दाइद (शौ) वि [शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (नाट—मृच्छ २८६) ।

सद्दाण देखो सद्दाव । सद्दाणइ (पड्) ।

सद्दाल वि [शब्दवत्] शब्दवाला (हे २, १५९, पउम २८, ८०, प्राप्र, सुर ३, ९६, पाप, औप) ।

सद्दाल न [दे] नूपुर (दे ८, १०, पड्) । °पुत्त पु [°पुत्र] एक [illegible] उपासक (उवा) ।

सद्दाव सक [शब्दय्, शब्दाय्] आह्वान करना, बुलाना । सद्दावइ, सद्दावेइ, सद्दावेंति (पाप, कप्प, उवा) । सद्दावेह

(स्वप्न ६२)। कर्म. सद्दावीअदि (अभि १८८)। सकृ सद्दावित्ता, सद्दावेत्ता (पि ५८२ महा)।

सद्दाविय वि [शब्दित, शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (कप्प, महा, सुर ८, १३३)।

सद्दिअ वि [शब्दित] १ प्रसिद्ध (औप, णाया १, १ टी—पत्र ३)। २ आहूत (सुपा ४१३, महा)। ३ वार्तित, जिनको बात कही गई हो वह (कुमा ३, ३४)।

सद्दिअ वि [शाब्दिक] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता (अणु २३४)।

सद्दूल पुं [शार्दूल] १ श्वापद पशु की एक जाति, वाघ (पाअ, पण्ह १, १—पत्र ७, दे १, २४, अभि ५५)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °विक्कीडिअ न [°विक्रीडित] उन्नीस अक्षरों के पादवाला एक छन्द (पिंग)। °सट्ट पुन [°सट्टक] छन्द-विशेष (पिंग)।

सद्ध देखो स-द्ध = सार्ध।

सद्ध न [श्राद्ध] १ पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण पिण्डदानादि (अच्चु १७, पुप्फ १६७)। २ वि श्रद्धावाला, श्रद्धालु (उप ८६८)। देखो सड्ढ = श्राद्ध (उप १६६)। °पक्ख पुं [°पक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७)।

सद्ध देखो सज्झ = साध्य (नाट—चैत ३५)।

सद्धउ पुं [श्राद्ध] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)।

सद्धरा स्त्री [स्रग्धरा] एकवीस अक्षरों के चरणवाला एक छन्द (पिंग)।

सद्धल पुं [शद्धल] एक प्रकार का हथियार, कुन्त, बर्छी (पण्ह १, १—पत्र १८)। देखो सव्वल।

सद्धस देखो सज्झस (प्राकृ २१, प्राप्र)।

सद्धा देखो सड्ढा (हे २, ४१, णाया १, १—पत्र ७४, प्रासू ६६, पाअ)। °ल वि [°वत्] श्रद्धावाला (चउ, श्रावक १७५)। °लु वि [°लु] वही अर्थ (सबोध ८)। स्त्री °लुगा (गा ४ ५)।

सद्धिअ वि [श्राद्धिक] श्रद्धावाला (पण्ह १, ३—पत्र ४८, वसु, ओघभा १६ टी)।

सद्धिं अ [सार्धम्] सहित, साथ (आचा, उवा, उत्त १६३)।

सद्धेय वि [श्रद्धेय] श्रद्धास्पद (विसे ४८२)।

सधम्म वि [सधर्मन्] समान धर्मवाला (स ७१२)।

सधम्मिअ देखो स-धम्मिअ = सद्-धार्मिक।

सधम्मिणी स्त्री [सधर्मिणी] पत्नी (दे २, १०६ सण)।

सधवा देखो स-धवा = स-धवा।

सनय देखो स-नय = स-नय।

सन्न वि [सन्न] १ क्लान्त (पाअ)। २ अवसन्न, मग्न (सूअ १, २, १, १०)। ३ खिन्न (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

सन्नाण देखो स-न्नाण = सज्ज्ञान।

सन्नाम सक [आ + दृ] आदर करना, सम्मान करना। सन्नामइ, सन्नामेइ (षड्, हे ४, ८३)।

सन्नामिअ वि [आदृत] सम्मानित (कुमा)।

सन्निअत्थ वि [दे] परिहित, पहना हुआ (सुपा ३६)।

सन्निड (अप) देखो सणिअ (भवि)।

सन्निर न [दे] पत्र-शाक, भाजी (दस ५, १, ७०)।

सन्नुम सक [छादय्] आच्छादन करना ढाकना। सन्नुमइ (हे ४, २१)।

सन्नुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

सन्ह देखो सण्ह = श्लक्ष्ण (कप्प)।

सप देखो सव = शप्। सपइ (विसे २२२७)।

सपक्ख देखो स-पक्ख = स-पक्ष।

सपक्ख देखो स-पक्ख = स्व-पक्ष।

सपक्खिं अ [सपक्षम्] अभिमुख, सामने (अंत १४)।

सपक्खी स्त्री [सपक्षी] एक महौषधि (ती ५)।

सपज्जा स्त्री [सपर्या] पूजा (अच्चु ७०)।

सपडिदिसिं अ [सप्रतिदिक्] अत्यन्त समुख, ठीक सामने (अंत १४)।

सपत्तिअ वि [सपत्रित] बाण से अतिव्यथित (दे १, १३५)।

सपह देखो सवह (धर्मवि १२६)।

सपाग देखो स-पाग = श्व-पाक।

सपिसल्लग देखो सप्पिसल्लग (पि २३२)।

सप्प सक [सृप्] १ जाना, गमन करना। २ आक्रमण करना। सप्पइ (धात्वा १५५), 'घोरविसा वि हु सप्पा सप्पंति न वद्धवयणव्व' (सुर २, २४३)। वकृ. सप्पंत, सप्पमाण (गउड, कप्प)। कृ. सप्पणीअ (नाट—शकु १४७)।

सप्प पुंस्त्री [सर्प] १ साँप, भुजगम (उवा, सुर २ १४३, जी २१, प्रासू १६, ३८, ११२)। स्त्री. °प्पी (राज)। २ पुं. अश्लेषा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२, ठा २ ३—पत्र ७७)। ३ एक नरकस्थान (देवेन्द्र २७)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °सिर पु [°शिरस्] हस्त-विशेष, वह हाथ जिसकी उंगलियाँ और अंगूठा मिला हुआ हो और तला नीचा हो (दे ८, ७२)। °सुगंधा स्त्री [°सुगन्धा] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

सप्पभ देखो स-प्पभ = स्व-प्रभ, सत्-प्रभ, स-प्रभ।

सप्पमाण देखो सप्प = सृप्, सव = शप्।

सप्परिआव } देखो स-प्परिआव = स-परिताप।
सप्परिताव }

सप्पि न [सर्पिस्] घृत, घी (पाअ, पव ४, सुपा १३, सिरि ११८४, सण)। °आसव °यासव वि [°आस्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसका वचन घी की तरह मधुर होता है (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सप्पि वि [सर्पिन्] १ जानेवाला, गति करनेवाला (कप्प)। २ रोगि-विशेष, हाथ में लकड़ी के सहारे से चल सकनेवाला रोगि-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १००)।

सप्पिसल्लग देखो स-प्पिसल्लग = स पिशाचक।

सप्पी देखो सप्प = सर्प।

सप्पुरिस देखो स-प्पुरिस = सत्-पुरुष।

सप्फ न [शष्प] बाल तृण, नया घास (हे २, ५३, प्राप्र)।

सप्फ न [दे] कुमुद, कैरव, 'चदुज्जय तु कुमुअं गद्दहय केरवं सप्फं' (पाअ)।

सप्फंद देखो स-प्फंद = स-स्पन्द।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] करना।
[illegible]।

[illegible] [illegible] हुआ [illegible]।

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मनुष्य जाति, [illegible] पाप [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] करना, [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सब्भाविय वि [साद्भाविक] पारमार्थिक, वास्तविक (उत्त [illegible])।

सभा [illegible] देखो सभा, [illegible] (आचा २, १०, २)।

सफर पुंस्त्री [शफर] मत्स्य, मछली (कुमा)। [illegible] (उ [illegible], २३६, प्राकृ [illegible])।

सफर पु [illegible] क्षुद्र पक्षी (दे ८, ३)।

सफरा[illegible] न [शफरायित] जिसमें मत्स्य की तरह आचरण किया हो वह (कुमा)।

सफल्ल [illegible] स-फल = सफल।

सभा स्त्री [सभा] १ परिषद् (उवा, रयण ८३ [illegible] ६)। २ गाँव के ऊपर की [illegible] (अ १२)।

सभाज सक [सभाजय्] पूजा करना। [illegible] (सौ) (प्रति १६०)।

सभार देखो स-भार [illegible]।

सम अक [शम्] १ शान्त होना, उपशान्त होना। २ नष्ट होना। ३ [illegible] होना। [illegible], समति (हे ४, १६७, कुमा), 'जइ [illegible] पिस ता कि पढाणाए' (गिरि ६६६)। वकृ. [illegible] (आचा १, ४, १, ३)।

सम [illegible] [illegible] १ उपशान्त करना, [illegible]। २ नाश करना। वकृ. [illegible] [illegible]' (धर्म ३)।

सम पु [श्रम] १ परिश्रम, आयास। २ खेद, थकावट (पाअ ८४, [illegible] ७७, [illegible] १, १३१, [illegible] २४, सुपा ५२४, गउड, सण, कुमा)। °जउ न [°जल] पसीना (पाअ)।

सम पु [शम] शान्ति, प्रशम, क्रोध आदि का [illegible] (कुमा)।

सम वि [सम] १ समान, तुल्य, सरिखा ([illegible] ७४, [illegible] कुमा, [illegible] ७२, [illegible] ४, [illegible], ६२)। २ [illegible], मध्यस्थ, उदासीन, [illegible] (सुअ १, १३, [illegible] ठा ८)। [illegible] (सु [illegible])। ४ पुं. [illegible] (भ [illegible])। [illegible] (संक्षि [illegible], सिरि १४२१)। [illegible] (ठा २०, २—पत्र [illegible])। °चउरंस न [°चतुरस्र] [illegible] [illegible]

आकृति विशेष (ठा ६—पत्र ३५७, सम १४६, नव, कम्म १, ४०)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] वृत्त, गोलाकार (सुज्ज ४)। °ताल न [°ताल] १ कला विशेष (स्रोप)। २ वि. समान तालवाला (ठा ७)। °धम्मिअ वि [°र्धमिक] समान धर्मवाला (उप ५३० टी)। °पादपुत पुन [°पादपुत] आसन-विशेष, जिसमें दोनो पैर मिलाकर जमीन में लगाए जाते हैं वह आसन-बन्ध (ठा ५, १—पत्र ३००)। °पास वि [°दर्शिन्] तुल्य दृष्टिवाला, समदर्शी (गच्छ १, २२)। °प्पभ पुन [°प्रभ] एक देव विमान (सम १३)। °भाव पु [°भाव] समता (सुपा ३२०)। °या स्त्री [°ता] राग-द्वेष का अभाव, मध्यस्थता (उत्त ४, १०, पउम ४६, ४०, श्रा २७)। °वत्ति पु [°वर्तिन्] यमराज, जम (सुपा ४३३)। °सरिस वि [°सदृश] अत्यन्त तुल्य, सदृश, (पउम ४६, ५७)। °सहिय वि [°सहित] युक्त, सहित (पउम १७, १०५)। °सुद्ध पु [°शुद्ध] एक राजा जो छठें जिनदेव का पिता था (पउम २०, १८२)।

समइअ वि [सामयिक] समय संबन्धी, समय का (नव)।

समइअ वि [समयित] संकेतित (धर्मसं ५०५)।

समइअ न [समयिक] सामायिक नामक संयम विशेष (कम्म ४, १८, ४, २१, २८)।

समइच्छिअ देखो समइच्छिअ (से १२, ७२)।

समइक्कंत वि [समतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (सुपा २३)।

समइक्कम सक [सम् + अति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ प्र., गुजरना, पसार होना। वकृ. समइक्कममाण (श्रौप, सण)।

समइच्छिअ वि [समतिक्रान्त] १ गुजरा हुआ। २ उल्लंघित (उप ७२८ टी, से ८, २०, स ४४)।

समइज वि [समतीत] १ गुजरा हुआ (पउम ४, १४२)। २ पुं गुजरा काल (आरा ४८)।

समईअ देखो समइअ = सामयिक (कम्म ४, ४६)।

समउ (अप) नीचे देखो (भवि)।

समं अ [समम्] साथ, सह (गा १०२, १६४, २६५, उत्त १६, ३, महा, कुमा)।

समंजस वि [समञ्जस] उचित, योग्य (आचा, गउड, भवि)।

समंत° देखो समता, 'वसिओ अगेसु समंत-पीणफणकब्बुरो सेओ' (गउड)।

समंत देखो सामन्त (उप पृ ३२७)।

समंत (अप) देखो समत्थ = समस्त (पिंग)।

समंतओ अ [समन्ततस्] सर्वत, चारो तरफ (गा ६७३, सुर २, २३८)।

समंता, समंतेण } अ [समन्तात्] ऊपर देखो (पाअ, भग, विपा १, २—पत्र २६, से ६, ५१, सुर २, २८, १३, १६५)।

समक्कंत वि [समाक्रान्त] १ जिसपर आक्रमण किया गया हो वह (से ५, ५७)। २ अवरुद्ध, रोका हुआ (से ८, ३३)।

समक्ख न [समक्ष] नजर के सामने, प्रत्यक्ष (गा ३७०, सुपा १५०, महा)। देखो समच्छ।

समक्खाय, समक्खिअ } वि [समाख्यात] उक्त, कथित (उप २११ टी, ६६४, जी २५, श्रु १३३)।

समग देखो समय = समकम् (पव २३२, सुपा, ८७, सण)।

समग्ग वि [समग्र] १ सकल, समस्त (सुपा ६६)। २ युक्त, सहित (पण्ह १, ३—पत्र ४४, कुप्र ७)।

समग्गल वि [समर्गल] अत्यधिक (सिरि ८६७, सुपा ३६७, ४२०)।

समग्गल (अप) देखो समग्ग (पिंग)।

समग्घ वि [समर्घ] सस्ता, अल्प मूल्यवाला (सुपा ४४५, ४४७, सम्मत्त १४१)।

समच्चण न [समर्चन] पूजन, पूजा (सुपा ६)।

समच्चिअ वि [समर्चित] पूजित (पउम ११६, ११)।

समच्छ अक [सम् + आस्] १ बैठना। २ सक अवलम्बन करना। ३ अधीन रखना। वकृ समच्छेत (उप ६६८ टी)।

समच्छ वि [समक्ष] प्रत्यक्ष का विषय (सक्षि १५)। देखो समक्ख।

समच्छायग वि [समाच्छादक] ढकनेवाला (स ६६)।

समज्ज, समज्जिण } सक [सम् + अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना। समज्जइ, समज्जिणइ (सण, पव १०, महा)। वकृ. समज्जिणमाण (विपा १, १—पत्र १२)। सकृ समज्जिवि (अप) (सण)।

समज्जिणिय, समज्जिय } वि [समार्जित] उपार्जित (सण, ठा ३, १—पत्र ११४, सुपा २०५, सण)।

समज्झासिय वि [समध्यासित] अधिष्ठित (सुज्ज १०, १)।

समट्ठ वि [समर्थ] सगत अर्थ, व्याजवी, न्याय-युक्त (णाया १, १—पत्र ६२, उवा)। देखो समत्थ = समर्थ।

समण न [शमन] १ उपशमन, दबाना, शान्त करना (सुपा ३६६)। २ पथ्यानुष्ठान (उवर १४०)। ३ एक दिन का उपवास (सवोध ५८)। ४ वि. उपशमन करनेवाला, दबानेवाला (उप ७८२, पवा ४, २६, सुर ४, २३१)।

समण देखो स-मण = स-मनस्।

समण देखो सवण = श्रवण (पउम १७, १०७, राज)।

समण पुं [समण] सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला, मुनि, साधु (अणु)।

समण पु [श्रमण] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, ३)। २ पुत्री, निर्ग्रन्थ मुनि साधु, यति, भिक्षु, सन्यासी, तापस, 'निग्गथ-सक्कतावसगेरुयआजीव पचहा समणा' (पव ६४, अणु, आचा, उवा, कप्प, विपा १, १, घण २१, सुर १०, २२४)। स्त्री °णी (भग, गच्छ १, १५)। °सीह पु [°सिंह] १ एक जैन मुनि जो दूसरे बलदेव के पूर्वभवीय गुरू थे (पउम २०, १६२)। २ श्रेष्ठ मुनि (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °ोवासग, °ोवासय पुत्री [°ोपासक] श्रावक, जैन गृहस्थ (उवा)। स्त्री. °सिया (उवा, णाया १, १४—पत्र १८७)।

समणतरु (अप) न [समनन्तरम्] अनन्तर, बाद मे, पीछे (सण)।

समणक्ख देखो स-मणक्ख = स-मनस्क।

समणुगच्छ, समणुगम } सक [समनु + गम्] १ अनुसरण करना। २ अच्छी तरह व्याख्या करना। ३ अक सबद्ध होना, जुड जाना। वकृ समणुगच्छमाण (णाया १, १—पत्र २५)। कवकृ समणुगम्मत, समणुगम्ममाण (औप, सूअ २, २, ७६, णाया १, [illegible]—पत्र ३२, कप्प)।

समणुगय वि [समनुगत] १ [illegible] (स ७२०)। २ अनुविद्ध, जुडा हुआ (पचा [illegible], ४६)।

समणुचिण्ण वि [समनुचीर्ण] आचरित, विहित, 'तवो समणुचिण्णो' (पउम ६, १६४)।

समणुजाण सक [समनु + ज्ञा] १ अनुमोदन करना, अनुमति देना। २ अधिकार प्रदान करना। समणुजाणइ, समणुजाणाइ समणुजाणेज्जा (आचा)। वकृ. समणुजाणमाण (आचा)।

समणुजाय वि [समनुजात] उत्पन्न, सजात (पउम १००, २४, सुपा ५७८)।

समणुनाय वि [समनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पउम ८, ७)।

समणुन्न वि [समनुज्ञ] अनुमोदन कर्ता (आचा १, १, १, ५)।

समणुन्न वि [समनोज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर। २ सुन्दर वेष आदिवाला (आचा १, ८, १, १)। ३ सविग्न, सवेग-युक्त मुनि (आचा १, ८, २, ६)। ४ समान समाचारीवाला—साभोगिक मुनि (ठा ३, ३—पत्र १३६, व्व १)।

समणुन्ना स्त्री [समनुज्ञा] १ अनुमति, संमति २ अधिकार-प्रदान (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

समणुन्नाय देखो समणुनाय (आचा २, १, १०, ४)।

समणुपत्त वि [समनुप्राप्त] सप्राप्त (सुर १, १८३, १०, १२०, सिरि ४३०, महा)।

समणुबद्ध वि [समनुबद्ध] निरन्तर रूप से व्याप्त (णाया १, ३—पत्र ६१, औप, उव)।

समणुभूअ वि [समनुभूत] अच्छी तरह जिसका अनुभव किया गया हो वह (वे ६२)।

[illegible]

[illegible] तहिअड़
[illegible] णाण हुँतो।
[illegible]
[illegible] अप्पा[illegible]'
(गा ७३०)।

समत्त [illegible] समत्त = सम्यक्त्व (पि ४, २८, [illegible] १ १२१, १६, ४[illegible])।

समत्थ वि [समर्थ] शक्त, शक्तिमान् (पाप्र, [illegible] — पत्र २८३ पत्र २३ १८२, [illegible])।

समत्थिय वि [समर्थित] प्रतीत [illegible] (पत्र ३[illegible])।

समत्ति[illegible] वि [समाप्त] १ पूरा पूरा किया गया (सुत्र [illegible] सुपा २६६)। २ पूरा किया हुआ (सुपा १६, ६५)। ३ प्रमाणित, साबित किया हुआ (सम्क १२१)।

समत्तामित वि [समात्मित] प्रतिष्ठित (पउम [illegible])।

समत्थि [illegible] समत्थि (गा ७२६)।

समत्ताग [illegible] समणागार (आव ७३८, [illegible] १ — पत्र ९४, [illegible] ठा ३, १ — पत्र ११०)।

समत्ति सक [समनु + इ] १ अनुसरण करना। २ प्राप्त [illegible] होना, मिलना। [illegible] (पउम २[illegible])।

समत्ति [illegible] [समन्वित] युक्त, सहित (पउम ३, [illegible] २०, ८, १२०, [illegible])।

[illegible] समत्त।

समप्प सक [समर्+अर्पय्] अर्पण करना, [illegible] (कप्प)। [illegible] समप्पेइ, समप्पेत, समप्पेत [illegible] ५५, पउम ३५, [illegible] समप्पिज्जड [illegible] समप्पेद [illegible] (सुपा २६ [illegible])।

[illegible]

[illegible] [समर्पित] अर्पित, [illegible] ३, २२ [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

समप्पिय वि [समर्पित] दिया हुआ (सुपा, काल)।

समब्भस सक [सम् + अभि + अस्] अभ्यास करना। समब्भसह (द्रव्य ८७)।

समब्भहिअ वि [समभ्यधिक] बहुत अधिक (पउम १५, ८५)।

समब्भास पु [समभ्यास] निकट, पास (पउम ३३, १७)।

समब्भिडिअ वि [दे] भिड़ा हुआ, लगा हुआ (पउम ८६, ४८)।

समभिआवण्ण वि [समभ्यापन्न] संमुख आया हुआ (सूत्र १, ८, २, १४)।

समभिजाण सक [समभि + ज्ञा] १ निर्णय करना। २ प्रतिज्ञा-निर्वाह करना। समभिजाणिया समभिजाणाहि (आचा)। वकृ समभिजाणमाण (आचा)।

समभिद्दव सक [समभि + द्रु] हैरान करना। समभिद्दवंति (उत्त २२, १०)।

समभिधस सक [समभि + ध्वंस्] नष्ट करना। समभिधंसेज, समभिधंसेंति (आचा)।

समभिपड सक [समभि + पत्] आक्रमण करना। कृ समभिपडित्ताण (पउम २१)।

समभिभूअ वि [समभिभूत] पराभूत (उत्त, धर्मवि ३८)।

समभिरूढ पु [समभिरूढ] नय विशेष (ठा ७ — पत्र ३९०)।

समभिलोअ सक [समभि + लोक्] देखना, निरीक्षण करना। समभिलोएइ (आव ३४ पत्र [illegible])। वकृ समभिलोएमाण (पउम १ — पत्र ४१८)।

समभिलोइअ वि [समभिलोकित] निरीक्षित, दृष्ट (पउम ४४ — पत्र [illegible])।

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] (पउम [illegible])।

[illegible] पु [illegible] [illegible] (पउम [illegible], [illegible] [illegible] (आचा) [illegible] (पउम, [illegible]

सूअनि २६, कुमा, द २२)। ५ पदार्थ, चीज, वस्तु (सम्म १ टी पृष्ठ ११४)। ६ सकेत, इशारा (सूअनि २६, पिंड ६, प्राप, से १, १६)। ७ समीचीन परिणति, सुन्दर परिणाम। ८ आचार, रिवाज। ९ एकवाक्यता (सूअनि २६)। १० सामायिक, सयम-विशेष (विसे १४२१)। °क्खेत्त, °खेत्त न [°क्षेत्र] कालोपलक्षित भूमि, मनुष्य-लोक, मनुष्य-क्षेत्र (भग सम ६८)। °ज्ञ, °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] समय का जानकार (पण ३६, गा ४०५, पि २७६)।

समय देखो स-मय=स-मद।

समय } अ [समकम्] १ युगपत्, एक समय } साथ (पव २१६ टी, विसे १६६६, १६६७, सुर १, ५, महा, गउड ११०६)। २ सह, साथ (गा ६१)।

समया देखो सम-या।

समया अ [समया] पास, नजदीक (सुपा १८८)।

समर सक [स्मृ] याद करना। कृ समरणीय (चउ २७, नाट, शकु ६), समरियव्व (रयण २८)।

समर देखो सवर (हे १, २५८, षड्)। स्त्री. °री (कुमा)।

समर पुन [समर] १ युद्ध, लडाई (से १३, ४७, उप ७२८ टी, कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ लोहकारशाला (उत्त० अध्य० १ गा० २६)। °इच्च पु [°ादित्य] अवन्ती-देश का एक राजा (स ५)।

समर वि [स्मार] कामदेव-सबन्धी, कामदेव का (मन्दिर आदि), (उप ४५४)।

समरइत्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता (सम १५)।

समरण न [स्मरण] स्मृति, याद (धर्मवि २०, श्राप ६८)।

समरसद्दय पु [दे] समान उम्रवाला (दे ८, २२)।

समराइअ वि [दे] पिष्ट, पिसा हुआ (षड्)।

समरी देखो समर=शवर।

समरेत्तु देखो समरइत्तु (ठा ६—पत्र ४४४)।

समलंकर सक [समलम्+कृ] विभूषित करना। समलंकरेइ (आचा २, १५, ५)। संकृ समलंकरेत्ता (आचा २, १५, ५)।

समलंकार सक [समलम्+कारय्] विभूषित करना, विभूषा-युक्त करना। समलंकारेइ (औप)। संकृ समलंकारेत्ता (औप)।

समलद्ध (अप) वि [समालब्ध] विलिप्त (भवि)।

समल्लिअ अक [समा+ली] १ सबद्ध होना। २ लीन होना। ३ सक आश्रय करना। समल्लियइ (आक ४७)। वकृ समल्लिअंत (से १२, १०)।

समल्लीण वि [समालीन] अच्छी तरह लीन (औप)।

समवइण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (सुपा २२)।

समवट्ठाण न [समवस्थान] सम्यग् अवस्थिति (अज्झ १४७)।

समवट्ठिइ स्त्री [समवस्थिति] ऊपर देखो, 'कोई विति मुणीए सहावसमवट्ठिई हवे चरण' (अज्झ १४६)।

समवत्ति देखो सम-वत्ति=सम-वर्तिन्।

समवय° देखो समवे।

समवसर देखो समोसर=समव+सृ (प्रामा)।

समवसरण देखो समोसरण (सूअनि ११६)।

समवसरिअ देखो समोसरिअ=समवसृत (धर्मवि ३०)।

समवसेअ वि [समवसेय] जानने योग्य, ज्ञातव्य (सा ४)।

समवाइ वि [समवायिन्] समवाय सबन्ध का, समवाय-सबन्धी (विसे १९२६, धर्मसं ४८७)।

समवाय पु [समवाय] १ सबन्ध विशेष, गुण-गुणी आदि का सबन्ध (विसे २१०८)। २ सबन्ध (पउम ३६, २५, धर्मसं ४८१, विवे ११६)। ३ समूह, समुदाय (सूअ २, १, २२, ओघ ४०७, अणु २७० टी, पिंड २, आरा २, विसे ३५९३ टी)। ४ एकत्र करना, 'काउ तो सघसमवाय' (विसे २५४६)। ५ जैन अग-ग्रथ-विशेष, चौथा अंग-ग्रंथ (सम १)।

समवे अक [समव+इ] १ शामिल होना। २ सबद्ध होना। समवेदि (शौ) (मोह ९३), समवयति (विसे २१०६)।

समवेद (शौ) वि [समवेत] समुदित, एकत्रित (मोह ७८)।

समसम अक [समसमाय्] 'सम्' 'सम्' आवाज करना। वकृ. समसमंत (भवि)।

समसरिस देखो सम-सरिस।

समसाण देखो मसाण, 'सममाणे सुन्नघरे देवउले वावि तं वमसु' (सुपा ४०८)।

समसीस वि [दे] १ सदृश, तुल्य। २ निर्भर (दे ८, ५०)। ३ न. स्पर्धा (से ३, ८)।

समसीसिआ } स्त्री [दे] स्पर्धा, बराबरी समसीसी } (सुपा ७, वज्जा २४, कप्पू, दे ८, १३, सुर १, ८, वज्जा ३२, १५४, विवे ४५, सम्मत्त १४५, कुप्र ३३४)।

समस्सअ सक [समा+श्रि] आश्रय करना। समस्सअइ (पि ४७३)। संकृ. समस्सइअ (पि ४७३)।

समस्सस अक [समा+श्वस्] आश्वासन प्राप्त करना, सान्त्वना मिलना। समस्ससघ (शौ) (पि ४७१)। हेकृ समस्ससिदु (शौ) (नाट, शकु ११९)।

समस्ससिद (शौ) देखो समासत्थ (नाट—मृच्छ २५८)।

समस्सा स्त्री [समस्या] बाकी का भाग जोडने के लिए दिया जाता श्लोक-चरण या पद आदि (सिरि ८६८, कुप्र २७, सुपा १५५)।

समस्सास सक [समा+श्वासय्] सान्त्वना करना, दिलासा देना। समस्सासदि (शौ) (नाट)। वकृ समस्सासअंत (अभि २२२)। हेकृ. समस्सासिद (शौ) (नाट—मृच्छ ८१)।

समस्सास पुं [समाश्वास] आश्वासन (विक्र ३५)।

समस्सासण न [समाश्वासन] ऊपर देखो (मे ७५)।

समस्सिअ वि [समाश्रित] आश्रय मे स्थित, आश्रित (स ६३५, उप पृ ४७, सुर १३, २०४, महा)।

[illegible]

समाउट्ट वि [समावृत्त] [illegible] (पव १)।

समाउत्त वि [समायुक्त] युक्त, सहित (पउम [illegible])।

समाउल वि [समाकुल] १ व्याप्त, मिश्रित ([illegible])। २ व्याप्त (सुपा ३०५)। ३ आकुल, व्याकुल ([illegible] सुर ६, १०४)।

समाउलिअ वि [समाकुलित] व्याकुल बना हुआ ([illegible] ६६)।

समाएस पु [समादेश] १ आज्ञा, हुकुम ([illegible] १०२१ टी)। २ विवाह आदि के [illegible] जीमन में बचा हुआ [illegible] जिसको निर्ग्रन्थों में बाँटने का [illegible] किया गया हो (पिंड २२९ २३०)।

समाएसण न [समादेशन] आज्ञा, हुकुम ([illegible])।

समाओग पु [समायोग] स्थिरता (सट्ठ [illegible])।

समाओगिय वि [समायोगित] संयुक्त किया हुआ ([illegible])।

समाकरिस सक [समा + कृष्] खींचना। [illegible] समाकरिसिउ (पि ५७५)।

समाकरिसण न [समाकर्षण] खींचाव (सुपा ८)।

समागर सक [समा + गर] [illegible] करना, [illegible]। वकृ समागरिंत (सम्मत्त [illegible])।

समाग[illegible] समागय = समा + गम।

समागम देखो समागम (सुर २, ८०)।

समागम सक [समा + गम्] १ सामने आना। २ [illegible] करना। ३ जानना। [illegible] ([illegible])। [illegible] समागमिस्सइ ([illegible])। वकृ समागच्छंत (पि [illegible]), [illegible] ([illegible])।

समाचर सक [समा + चर्] १ [illegible] [illegible] करना। २ [illegible] ([illegible])।

[illegible]

[illegible]

समागूढ वि [समागूढ] आश्लिष्ट, आलिंगित (पउम ३१, १२२)।

समाज पु [समाज] समूह, सभा (पव [illegible] २२३)। देखो समाय = समाज।

समाजुत्त न [समायुक्त] समाजत, [illegible] (राय ४०)।

समाढत्त वि [समारब्ध] १ आरब्ध जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह (काल, [illegible] २२३, २८६)। २ जिसने प्रारम्भ किया हो वह, एव भणिउ समाढत्तो' (सुर १, ६९)।

समाण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। समाणइ (हे ४, ११० कुमा)।

समाण सक [सम् + आप्] समाप्त करना, पूरा करना। समाणइ (हे ४, १४२), समाणेमि (स ३७६)।

समाण वि [समान] १ सदृश, तुल्य, सरिखा (प्रासू)। २ मान-सहित, अहंकारी (स ३, ८६)। ३ पुं, एक देव विमान (पव [illegible])।

समाण वि [सत्] विद्यमान, होता हुआ (उवा, विपा १, २—पत्र २४)। [illegible] (भग, प्रासू)।

समाण देखो समाण = समान (स ३, ८६)।

समाणअ वि [समापक] समाप्त करनेवाला (स ३, ८६)।

समाणण न [भोजन] भोजन, खाना 'सज्जो समाणणपज्जाउत्तवयणाए' (स ७२)।

समाणत्त वि [समाज्ञप्त] जिसको हुकुम दिया गया हो वह (महा)।

समाणिअ देखो समाणिअ (स ३, ९८)।

समाणिअ वि [समानीत] जो लाया गया हो वह, आनीत (महा, सुपा [illegible])।

समाणिअ वि [समाप्त] पूरा किया हुआ ([illegible] ६, ६२, [illegible] १, ८—पत्र [illegible] ३, ५, [illegible] ६, [illegible])।

समाणिअ वि [दे] [illegible] [illegible] ([illegible] २८)।

समा[illegible] [भुक्त] [illegible] ([illegible] ३[illegible])।

समा[illegible] [समीलिता] [illegible] ([illegible])।

समाणी सक [समा+नी] ले आना। समाणेइ (विसे २३२५)।

समाणी देखो समाण=सत्।

समाणु (अप) देखो सम (हे ४, ४१८; कुमा)।

समादह सक [समा+दह] जलाना, सुलगाना। वकृ समादहमाण (आचा १, ६, २, १८)।

समादा सक [समा+दा] ग्रहण करना। सकृ समादाय (आचा १, २, ६, ३)।

समादाण न [समादान] ग्रहण (राज)।

समादिट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (मोह ८६)।

समादिस सक [समा+दिश्] आज्ञा करना। सकृ समादिसिअ (नाट)।

समादेस देखो समाएस (नाट—मालती ४६)।

समाधारणआ स्त्री [समाधारणा] समान भाव से स्थापन (उत्त २६, १)।

समाधि देखो समाहि (ठा १०—पत्र ४७३)।

समापणा स्त्री [समापना] समाप्ति (विसे ३५६५)।

समाभरिअ वि [समाभरित] आभरण-युक्त (अणु २५३)।

समाय पु [समाज] १ सभा, परिषत् (उत्त ३०, १७; अच्चु ४)। २ पशु-भिन्न अन्यों का समूह, सघात। ३ हाथी (षड्)।

समाय पु [समाय] सामायिक, सयम-विशेष (विसे २८२१)।

समाय देखो समवाय; 'एते चेव य दासा पुरिससमाएवि इत्थियाणंपि' (सूअनि ६३; राज)।

समाय देखो समय (भग २६, १—पत्र ६८०)।

समाअण्ण सक [समा+कर्णय्] सुनना। सकृ समाअण्णिऊण (महा)।

समायण्णण न [समाकर्णन] श्रवण (गउड)।

समाअण्णिअ वि [समाकर्णित] सुना हुआ (काल)।

समायय सक [समा+दद्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। समाययति (उत्त ४, २)।

समायय देखो समागय (भवि)।

समायर सक [समा+चर्] आचरण करना। समायरइ (उवा, उव), समायरेसि (निसा ५)। कृ समायरियव्व (उवा)।

समायरिय वि [समाचरित] आचरित (गउड)।

समाया देखो समादा। सकृ. समायाय (आचा १, ३, १, ४)।

समायाय वि [समायात] समागत (उप ७२८ टी)।

समायार पु [समाचार] १ आचरण (विपा १ १—पत्र १२)। २ सदाचार (अणु १०२)। ३ वि. आचरण करनेवाला (णंदि ५२)।

समार सक [समा+रचय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ करना, बनाना। समारइ (हे ४, ९५; महा)। भूका समारीअ (कुमा)। वकृ समारत (पउम ६८, ४०)।

समार सक [समा+रभ्] प्रारभ करना। समारइ (षड्)।

समार वि [समारचित] बनाया हुआ, 'अद्धसमारम्मि जरकुडीरम्मि' (सुर २, ९९)।

समारभ सक [समा+रभ्] १ प्रारम्भ करना। २ हिंसा करना। समारंभेज्जा (आचा)। वकृ. समारभत, समारभमाण (आचा)। प्रयो समारभावेज्जा (आचा)।

समारंभ पु [समारम्भ] १ पर-परिताप, हिंसा (आचा; पण्ह १, १—पत्र ५; श्रा ७); 'परितावकरो भवे समारंभो' (सबोध ४१)। २ प्रारभ (कप्पू)।

समारचण } न [समारचन] १ ठीक करना, समारण } दुरुस्त करना; 'कारेइ जिणहराण समारण जुण्णभग्गपडियाण' (पउम ११, ३)। २ वि. विधायक, कर्ता (कुमा)।

समारद्ध देखो समाढत्त (सुर १, १, स ७६४)।

समारभ } देखो समारभ=समा+रभ्। समारह } समारभे, समारभेज्जा, समारभेज्जासि, समारहइ (सूअ १, ८, ५; पि ४६०; षड्)। सकृ. समारब्भ (पि ५९०)।

समारिय वि [समारचित] दुरुस्त किया हुआ (कुप्र ३३४)।

समारुह सक [समा+रुह्] आरोहण करना, चढना। समारुहइ (भवि; पि ४८२)। वकृ. समारुहत (गा ११)। सकृ समारुहिय (महा)।

समारुहण न [समारोहण] आरोहण, चढना (सुपा २५३)।

समारूढ वि [समारूढ] चढा हुआ (महा)।

समारोव सक [समा+रोपय्] चढाना। सकृ समारोविय (पि ५९०)।

समालक्कार } देखो समलकार=समल+ समालके } कारय्। समालकारेइ, समालकेइ (ओप, आचा २, १५, १८)। सकृ समालकारेत्ता, समालकेत्ता (ओप; आचा २, १५, १८)।

समालब पु [समालम्ब] आलम्बन, सहारा (सबोध ४०)।

समालभण न [समालम्भन] अलकरण, विभूषा करना, 'मगलसमालभणाणि गिरएमि' (अभि १२७)। देखो समालभण।

समालत्त वि [समालपित] उक्त, कथित, 'पवणजओ समालत्तो' (पउम १५, ८८)।

समालभण न [समालभन] विलेपन, अगराग (सुर १६, १४)। देखो समालभण।

समालव सक [समा+लप्] विस्तार से कहना। समालवेज्जा (सूअ १, १४, २४)।

समालवणी स्त्री [समालपनी] वाद्य-विशेष, 'वेणुवीणासमालवणिरवसुदर भल्लरिवोमसमीसखरसुहिसर' (सुपा ५०)।

समालविअ देखो समालत्त (भवि)।

समालह सक [समा+लभ्] १ विलेपन करना। २ विभूषा करना, अलकार पहनना। सकृ समालहिवि (अप) (भवि)।

समालहण देखो समालभण (सुपा १०८; दस ३, १ टी; नाट—शकु ७३)।

समालाव पु [समालाप] बातचीत, सभाषण (पउम ३०, ३)।

समालिगिअ वि [समालिङ्गित] आलिंगित, आश्लिष्ट (भवि)।

समालीढ वि [समाश्लिष्ट] ऊपर देखो (भवि)।

[illegible] [समालोच] [illegible] (उप [illegible])।

[illegible] [समालोचन] [illegible] (दे [illegible])।

[illegible] [सम् + आप्] [illegible] करना। [illegible]

[illegible] [समावर्जन] [illegible] हुआ [illegible]।

[illegible] [समा + वस्] [illegible] करना, [illegible]। २ [illegible]

[illegible] [समावास] [illegible]

[illegible] [समावर्जित] १ [illegible] (उप [illegible] २०३)। [illegible]

[illegible] [समावृत] [illegible] (उप [illegible])।

[illegible] [समावास] [illegible], [illegible]

[illegible] [समा + वह्] [illegible], [illegible]।

[illegible]

(पउम ४, २—पत्र ११४; भग विसे १००३)। ४ मनोज्ञ (दस पै० वृद्ध० पत्र)।

समासग पुं [समासङ्ग] संयोग (गा ६६१ ?)।

समासगय वि [समासगत] संगत, सम्बद्ध (उप)।

समासज्ज देखो समासाद।

समासत्थ वि [समा + श्वस्त] १ आश्वासन-प्राप्त (पउम १८, २८; १२, ३७; सुर २, ६)। २ स्वस्थ बना हुआ (स १२०; सुर ३, ६६)।

समासय पुं [समाश्रय] आश्रय, स्थान (पउम ७, १६८; ६२, ३१)।

समासस अक [समा + श्वस्] आना, आश्वस्त करना। समासस्सदि (द्रव्य ३१)।

समासस देखो समस्सस। [illegible] समासस्सि-ऊण (से ११, ६१)।

समासाद (शौ) सक [समा + सादय्] प्राप्त करना। समासादिहि (स्वप्न ३७)। [illegible] समासादइस्सम् (मा ३६)। संकृ. समासज्ज, समासिज्ज (आचा २, ८, ८, १; [illegible] २२)।

समासादिअ वि [समासादित] प्राप्त (स्वप्न १, १ टी)।

समासासिय वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (महा)।

समासि सक [समा + श्रि] अच्छी तरह आश्रय करना। [illegible], समासिज्जइ, समासिज्जि (गउड २२२)।

समासिज्ज देखो समासाद।

समासिय वि [समाश्रित] आश्रय प्राप्त (पउम ८०, ६४)।

समासिय वि [समासित] उपविष्ट, बैठा हुआ ([illegible])।

समासीण वि [समासीन] बैठा हुआ (महा)।

समाहट्टु देखो समाहर।

समाहय वि [समाहत] १ विद्ध, [illegible], [illegible] (आचा २, १ [illegible])। २ [illegible] (गउड)।

समाहय वि [समाहृत] [illegible] (सुर ४, [illegible])।

समाहर सक [समा + हृ] ग्रहण करना। २ एकत्रित करना। संकृ. समाहट्टु (सूय १, ८, २६; १, १०, १४), समाहरिवि (भवि) (भवि)।

समाहरिअ वि [समाहृत] आहूत, बुलाया हुआ (धर्मवि ६०)।

समाहाण न [समाधान] १ समाधि (उत्त ३२० टी)। २ मो मुख-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, चित्त-स्वस्थता (सण ११६; सुपा ५८८)।

समाहार पुं [समाहार] १ समूह, 'इत्थ-समाहारो भाविज्जइ एस गिहनाहो' (सुपा ११४)। °द्द पुं [°द्वन्द्व] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (चेइय ६६०)।

समाहारा स्त्री [समाहारा] १ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। २ पक्ष की बारहवीं रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

समाहि पुंस्त्री [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७; उत्त १६, १; सुपा ४६, ४, चेइय ७७७)। २ स्वस्थता, 'नाणादि दसणमंतो धम्मादि चित्ताहि गंथाहि वदर नागु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता रूप ध्यानावस्था (सूय १, १०, १; सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ [illegible]। ७ चारित्र, सम्यगनुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६४)। ८ पुं [illegible] के भावी तीर्थंकर (सम १५४; पत्र ४६)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] समाधि विषयक प्रतिज्ञा (ठा ४, १)। °पाण न [°पान] शक्कर आदि का पानी (बृह ४०)। °मरण न [°मरण] समाधि-युक्त मौत (पंचा)।

समाहिअ वि [समाहित] १ समाधि-युक्त (सूय १, ४, २, [illegible] १०६; [illegible] १४, [illegible] १०, २४; [illegible])। २ [illegible] स्वस्थ। ३ [illegible] (आचा १, ८, ६, ३)। ४ [illegible] ([illegible] ३४६३)। ५ [illegible]। ६ [illegible]। ७ [illegible] (सूय १, ३, ४, १४)।

समाहिअ वि [समाहृत] गृहीत (आचा १, ८, ५, २)।

समाहिअ वि [समाख्यात] सम्यग् कथित (सूअ १ ६, २६, आचा २, १६, ४)।

समाहुत्त (अप) नीचे देखो (भवि)।

समाहूअ वि [समाहूत] बुलाया हुआ, आकारित (मार्व १०५)।

समाहे सक [समा + धा] स्वस्थ करना, 'सुकज्झाए समाहेइ' (सबोध ५१)।

समि स्त्री [शमि] देखो समी (अणु, पाअ)।

समि, समिअ वि [शमिन्, °क] १ शम-युक्त। २ पु साधु, मुनि (सुपा ४३६, ६८२, उप १८२ टी)।

समिअ देखो सत = शान्त (गिरि ११०४)।

समिअ वि [समित] सम्यक् प्रवृत्ति करनेवाला, सावधान होकर गति आदि करनेवाला (भग, उप ६०८, कप्प, ओप, उव, सूअ १, १६, २, पव ७२)। २ राग-आदि से रहित (सूअ १, ६, ८)। ३ उपपन्न (सुज ६)। ४ सम्यग् गत (सूअ १, ६, ४)। ५ सन्तत (ठा २, २—पत्र ५८)। ६ सम्यग् व्यवस्थित (सूअ २, ५, ३१)।

समिअ वि [सम्यञ्च्] १ सम्यक् प्रवृत्तिवाला (भग २, ५—पत्र १८०)। २ अच्छा, सुन्दर, शोभन, समीचीन (सूअ २, ५, ३१)।

समिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (विसे २८५८, औप, पण्ह २, ५—पत्र १८८, सण)।

समिअ वि [श्रमित] श्रम-युक्त (भग २, ५—पत्र १८०)।

समिअ वि [समिक] सम, राग-द्वेष-रहित, 'समियभावे' (पण्ह २, ५—पत्र १८६)।

समिअ न [साम्य] समता, रागादि का अभाव, सम-भाव (सूअ १, १६, ५, आचा १, ८, ८, १८)।

समिअ वि [समित] प्रमाणोपेत (णाया १, १—पत्र ६२, भग)।

समिअ वि [सामित] गेहूँ के आटा का बना हुआ पक्वान्न-विशेष, मण्डक (पिंड २४५)।

समिअ अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा, पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

समिआ स्त्री. अ ऊपर देखो (भग २, ५—पत्र १४०, आचा १, ५, ५, ४), 'समियाए' (आचा १, ५, ५, ४)।

समिआ स्त्री [समिता] गेहूँ का आटा (णाया १, ८—पत्र १३२, सुख ४, ५)।

समिआ स्त्री [समिका, शमिका, शमिता] चमर आदि सब इन्द्रों की एक अभ्यन्तर परिषद् (भग ३, १० टी—पत्र २०२)।

समिइ स्त्री [समिति] १ सम्यक् प्रवृत्ति, उपयोग पूर्वक गमन-भाषण आदि क्रिया (सम १०, ओघभा ३, उव, उप ६०२, रयण ४)। २ सभा, परिषद्, 'नत्थि किर देवलोगेवि देवसमिईसु ओगासो' (विवे १३६ टी, तदु २५ टी)। ३ युद्ध, लड़ाई (रयण ४)। ४ निरन्तर मिलन (अणु ४२)।

समिइ स्त्री [स्मृति] १ स्मरण। २ शास्त्र-विशेष, मनुस्मृति आदि (सिरि ५५)।

समिइम वि [समितिम] गेहूँ के आटे की बनी हुई मडक आदि वस्तु (पिंड २०२)।

समिजग पु [समिज्जक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

समिक्ख सक [सम् + ईक्ष्] १ आलोचना करना, गुणदोष-विचार करना। २ पर्यालोचन करना, चिन्तन करना। ३ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। समिक्खए (उत्त २३, २५)। सक्. समिक्ख (सूअ १, ६, ८, उत्त ६, २, महा, उपप २५)।

समिक्खा स्त्री [समीक्षा] पर्यालोचना (सूअ १, ३, ३, १४)।

समिक्खिअ वि [समीक्षित] आलोचित (धर्मसं ११११)।

समिञ्च देखो रामे।

समिञ्छण न [समीक्षण] समीक्षा (भवि)।

समिञ्छिय देखो समिक्खिअ (भवि)।

समिज्झा अक [सम् + इन्ध्] चारों तरफ से चमकना। समिज्झाइ (हे २, २८)। वकृ समिज्झन्त (कुमा ३, ४)।

समिता देखो समिआ = समिका (ठा ३, २—पत्र १२७, भग ३, १०—पत्र ३०२)।

समिद्ध वि [समृद्ध] १ अतिशय संपत्तिवाला (औप, णाया १, १ टी—पत्र १)। २ वृद्ध, बढ़ा हुआ (प्रासू १३)।

समिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ अतिशय संपत्ति। २ वृद्धि (हे १, ४४, षड्, कुमा, स्वप्न ६५, प्रासू १२८)। °ल वि [°ल] समृद्धिवाला (सुर १, ८६)।

समिर पु [समिर] पवन, वायु (सम्मत्त १५६)।

समिरिईअ, समिरीय देखो स-मिरिइअ = समरीचिक।

समिला स्त्री [शमिला, सम्या] युग-कीलक, गाड़ी की धोसरी में दोनों ओर डाला जाता लकड़ी का खीला (उप पृ १२८, सुपा २५८)।

समिल्ल देखो समिल्ह। समिल्लइ (षड्)।

समिहा स्त्री [समिध्] काष्ठ, लकड़ी (अत ११, पउम ११, ७६, पिंड ४४०)।

समी स्त्री [शमी] १ वृक्ष विशेष, छोकर का पेड़ (सूअ १, २, २, १६ टी, उप १०३१ टी, वज्जा १५०)। २ शिंबा, छिमी, फली (पाअ)। °खल्लय न [दे] छोकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट (सूअ १, २, २, १६ टी, बृह १)।

समीअ देखो समीव (नाट—मालति ५)।

समीकय वि [समीकृत] समान किया हुआ, 'जं किंचि अणगं तात तपि समीकतं' (सूअ १, ३, २, ८, गउड)।

समीचीण वि [समीचीन] साधु, सुन्दर, शोभन (नाट—चैत ८७)।

समीर सक [सम् + ईरय्] प्रेरणा करना। समीरए (आचा १, ८, ८, १७)।

समीर पुं [समीर] पवन, वायु (पाअ, गउड)।

समीरण पु [समीरण] ऊपर देखो (गउड)।

समील देखो समील। समीलइ (षड्)।

समीव वि [समीप] निकट, पास (पउम ६६, ८, महा)।

समीह सक [सम + ईह्] चाहना, वाञ्छा करना। वकृ समीहमाण (उप ३२० टी)।

समीहा स्त्री [समीहा] इच्छा, वाञ्छा (उप १०३१ टी)।

[illegible]

...(पउम २६—पत्र ८२७ महा)। २ [illegible] (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

समुक्कड (शौ) वि [समुद्धत] समुत्सुक, [illegible] (नाट—मालती १२६)।

समुग्गम पुं [समुद्गम] उत्पत्ति (नाट—रत्ना ३)।

समुग्गिअ वि [दे] प्रशान्त (दे ८ १३)।

समुग्गिण्ण वि [समुद्गीर्ण] उगला हुआ [illegible] ऊपर उठाया हुआ (पउम २५, ७४)।

समुग्गिर सक [समुद् + गृ] ऊपर उठाना, उगलना। वकृ. समुग्गिरंत (पउम ६५, ४८)।

समुग्घाडिअ वि [समुद्घाटित] खुला हुआ (पाचि [illegible])।

समुग्घाइअ वि [समुद्घातित] विनाशित (आरा [illegible])।

समुग्घाय पुं [समुद्घात] कर्म-निर्जरा [illegible] विशेष, आत्मा पैदा, कषाय आदि [illegible] उस समय वह [illegible] आत्मा [illegible] उन प्रदेशों से वेदना, कषाय आदि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जरा—विनाश करता है [illegible] समुद्घात [illegible]—वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवलि (पण्ण ३६—पत्र ७९३ [illegible], [illegible] ३-७०)।

समुग्घा[illegible] [समुद्घातन] विनाश ([illegible] ३२८०)।

समुग्घुट्ठ वि [समुद्घोषित] उद्घोषित ([illegible] ११, ३९)।

समुग्घाय देखो समुग्घाय ([illegible])।

समु[illegible] पुं [समुद्गक] [illegible] ([illegible] ८ [illegible] ३२४, [illegible])।

स[illegible] [समुद् + [illegible]] [illegible] ([illegible] ६४१)।

स[illegible] वि [समु[illegible]] [illegible] हुआ [illegible]।

स[illegible] [स[illegible] + [illegible]] [illegible] ([illegible] १२६)।

समुचिय वि [समुचित] एक क्रिया आदि में अन्वित (विसे ५७६)।

समुच्छिद सक [समुत् + छिद्] १ उन्मूलन करना, उखाड़ना। २ दूर करना। समुच्छे (सूअ १, २, २, १३)। भवि. समुच्छिहिंति (सूअ २, ५ ४)। संकृ. समुच्छित्ता (सूअ २, ४, १०)।

समुच्छइय वि [समवच्छादित] सतत आच्छादित (पउम ६३, ७)।

समुच्छणी स्त्री [दे] समार्जनी, झाडू (दे ८ १७)।

समुच्छल अक [समुत + शल्] १ उछलना, ऊपर उठना। २ विस्तीर्ण होना। समुच्छले (गच्छ १ १५)। वकृ. समुच्छलंत (सुर २, २३६)।

समुच्छलिअ वि [समुच्छलित] १ उछला हुआ। २ विस्तीर्ण (गच्छ १, ६, महा)।

समुच्छारण न [समुत्सारण] दूर करना (भवि ६०)।

समुच्छिअ वि [दे] १ तोषित, संतुष्ट किया हुआ। २ समारचित। ३ न अंजलि करण, नमन (दे ८, ४९)।

समुच्छिद (शौ) वि [समुच्छ्रित] समुन्नत (पि २८७)।

समुच्छिन्न वि [समुच्छिन्न] क्षीण, विनष्ट (ठा ४, १ पत्र—१८७)।

समुच्छुंभि[illegible] वि [समुच्छुम्भित] [illegible] (भवि [illegible])।

समुच्छुग वि [समुत्सुक] अति उत्कण्ठित (सुर २, २२४, ४, १००)।

समुच्छेअ, समुच्छेय पुं [समुच्छेद] [illegible] (ठा ८—पत्र ४२५, [illegible])। °वाइ वि [°वादिन्] पदार्थ का प्रति क्षण [illegible] मानने वाला (ठा ८—पत्र ४२५, टी)।

समुज्जम अक [समुद् + यम्] [illegible] करना। वकृ. समुज्जमंत (पउम १०२, ७०६ [illegible] १२०)।

समुज्जल वि [समुज्ज्वल] १ [illegible] २ [illegible] (सार्ध ८८)।

समुज्झ[illegible] [समु[illegible]] [illegible] ([illegible])।

समुन्नाय वि [समुन्नत] १ निर्गत (विसे २६०६)। २ ऊँचा गया हुआ (कप्प)।

समुज्जोअ अक [समुद् + द्युत्] चमकना, प्रकाशना। वकृ. समुज्जोयंत (पउम ११६, १७)।

समुज्जोअ पु [समुद्योत] प्रकाश दीप्ति (सुपा ४० महा)।

समुज्जोवय सक [समुद् + द्योतय्] प्रकाशित करना। वकृ. समुज्जोवयंत (स ३४०)।

समुज्झ सक [सम् + उज्झ्] त्याग करना। संकृ. समुज्झिऊण (व ८७)।

समुट्ठा अक [समुत् + स्था] १ उठना। २ प्रयत्न करना। ३ ग्रहण करना। ४ उत्पन्न होना। संकृ समुट्ठिऊण (सण), समुट्ठाए, समुट्ठिऊण (आचा १, २, २, १, १, २, ६, १, सण)।

समुट्ठाइ वि [समुत्थायिन्] सम्यग् यत्न करनेवाला (आचा)।

समुट्ठाइअ देखो समुट्ठिअ (स १२५)।

समुट्ठाण न [समुपस्थान] फिर से वास करना। °सुय न [°श्रुत] जैन शास्त्र विशेष (णंदि २०२)।

समुट्ठाण न [समुत्थान] १ सम्यग् उत्थान। २ निमित्त, कारण (राज)। देखो समुत्थाण।

समुट्ठिअ वि [समुत्थित] १ सम्यक् प्रयत्नशील (सूअ १, १४, २२)। २ उपस्थित। ३ प्राप्त (सूअ १, ३, २, ६)। ४ उठा हुआ, जो खड़ा हुआ हो वह (सुर १, ९६)। ५ अनुष्ठित, विहित (सूअ १, २, २, ३१)। ६ उत्पन्न (णाया १, ६—पत्र १५६)। ७ आश्रित (राज)।

समुड्डीण वि [समुड्डीन] उड़ा हुआ (वज्जा ६२, मोह ६३)।

समुण्णइय देखो समुत्तइय (राज)।

समुत्त न [समुक्त] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न, 'समुता (?त्ता)' (ठा ७—पत्र ३९०)। देखो समुत्त।

समुत्तइय वि [दे] गर्वित (पिंड ४६५)।

समुत्तर सक [समुत् + तॄ] १ पार जाना। २ अक नीचे उतरना। ३ अवतीर्ण होना। समुत्तरइ (गउड ६४१, १०६६)। संकृ समुत्तरेवि (अप) (भवि)।

समुत्तारिअ वि [समुत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ कूप आदि से बाहर निकाला हुआ (स १०२)।

समुत्तास सक [समुत् + त्रासय्] अतिशय भय उपजाना। समुत्तासेदि (शौ) (नाट—मालती ११९)।

समुत्तिण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (पउम १०६, ८२)।

समुत्तुंग वि [समुत्तुङ्ग] अति ऊँचा (भवि)।

समुत्तुग वि [दे] गर्वित (गउड)।

समुत्थ वि [समुत्थ] उत्पन्न (स ८८, ठा ८, ४ टी—पत्र २८०, सुर ३, २२५, कुमा ४७०)।

समुत्थइउ देखो समुत्थय = समुत् + स्थगय्।

समुत्थाण न [समुत्थान] उत्पत्ति (णाया १, ६—पत्र १५७)।

समुत्थय सक [समुत् + स्थगय्] आच्छादन करना, ढकना। हेकृ. समुत्थइउ (गा ३६८ अ, वि ३०९)।

समुत्थय वि [समवस्तृत] आच्छादित (कुप्र १६२)।

समुत्थल्ल वि [समुच्छलित] उछला हुआ (स ५७८)।

समुत्थाण न [समुत्थान] निमित्त, कारण (विसे २८२८)। देखो समुट्ठाण।

समुत्थिय देखो समुट्ठिअ (भवि)।

समुदय पु [समुदय] १ समुदाय, संहति, समूह (ओघ, भग, उवर १८९)। २ समुन्नति, अभ्युदय (कुप्र २२)।

समुदाआर } देखो समुआचार (स्वप्न
समुदाचार } ४५, नाट—शकु ७७, औप, स ५९५)।

समुदाण न [समुदान] १ भिक्षा (ओघ)। २ भिक्षा-समूह (भग)। ३ क्रिया विशेष, प्रयोग-गृहीत कर्मों को प्रकृति स्थित्यादि रूप से व्यवस्थित करनेवाली क्रिया (सूअनि १६६)। ४ समुदाय (आव ४)। °चर वि [°चर] भिक्षा की खोज करनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)।

समुदाण सक [समुदानय्] भिक्षा के लिए भ्रमण करना। संकृ समुदाणेऊण (पण्ह २, १—पत्र १०१)।

समुदाणिअ देखो सामुदाणिअ (ओघ, भग ७, १—पत्र २९३)।

समुदाणिगा स्त्री [सामुदानिकी] क्रिया-विशेष, समुदान-क्रिया (सूअनि १६८)।

समुदाय पु [समुदाय] समूह (अणु २७० टी, विसे ९२१)।

समुदाहिय वि [समुदाहृत] प्रतिपादित, कथित (उत्त ३६, २१)।

समुदिअ देखो समुइअ = समुदित (सूअनि १२१ टी, सुर ७, ५६)।

समुदिण्ण देखो समुइन्न (राज)।

समुदीर सक [समुद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ कर्मों को खींच कर उदय में लाना, उदीरणा करना। वकृ. समुदी [?दी] रेमाण (णाया १, १७—पत्र २२९)। संकृ. समुदीरिऊण (सम्यक्त्वो ५)।

समुद्द पु [समुद्र] १ सागर, जलधि (पाअ, णाया १, ८—पत्र १३३, भग, से १,२१, हे २,८०, कप्प, प्रासू ६०,। २ अन्धकवृष्णि का ज्येष्ठ पुत्र (अंत ३)। ३ आठवें बलदेव और वासुदेव के पूर्वजन्म के धर्म-गुरु (सम १५३)। ४ वेलन्धर नगर का एक राजा (पउम ५४, ३९)। ५ शाण्डिल्य मुनि के शिष्य एक जैन मुनि (णंदि ४९)। ६ वि मुद्रा-सहित (से १, २१)। °दत्त पु [°दत्त] १ चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ एक मच्छीमार का नाम (विपा १, ८—पत्र ८२)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ हरिषेण वासुदेव की एक पत्नी (महा ४४)। २ समुद्रदत्तमच्छीमार की भार्या (विपा १, ८)। °लिक्खा स्त्री [°लिक्षा] द्वीन्द्रिय जंतु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। °विजय पु [°विजय] १ चौथे चक्रवर्त्ती राजा का पिता (सम १५२)। २ भगवान् अरिष्टनेमि का पिता (सम १५१, कप्प, अंत)। °सुआ स्त्री [°सुता] लक्ष्मी (सम १५२)। देखो समुद्र।

[illegible]

समुआइअ वि [समुदाचित] समुचित, उचित (उप ५९६, ६९७)।

समुग्घाय [समुद् + घात्] ... (सम ३, ३—पत्र ८५)।

समुड्डिअ देखो समुट्टिअ (पव ३, २६)।

समुद्धुर वि [समुद्धुर] दृढ़, मजबूत (जय ...)।

समुद्धुणिअ वि [समुद्धुणित] [illegible] (सुर २१०, ... १८०...)।

समुद्द पुं [समुद्र] [illegible] (... ८०)।

समुद्दाअ पुं [समुदाय] [illegible] (... ८०)।

[illegible]

समुद्दस्य [illegible] श्री [illegible]।

समुदेस पुं [समुद्देश] [illegible] समुद्देसाण ... समुद्देसिया ...।

[illegible]

समुप्पित्थ वि [दे] उत्रस्त, भय-भीत (सुर १३, ७४)।

समुप्पेक्ख, समुप्पेह सक [समुत् + प्र + ईक्ष्] ... वकृ. समुप्पेक्खमाण, समुप्पेहमाण (... आचा १, ४, ४, ४)। संकृ समुप्पेह (... ७, ३)। देखो समुपेक्ख।

समुप्फालिअ वि [समुत्पाटित] उखाड़ कर फेंका हुआ, ... जलनिहिसमुप्फालिअ ... (... २२)।

समुप्फालिअ वि [समुत्फालित] आस्फालित (...)।

समुप्फुड सक [सम् + उत् + स्फुट्] ... समुप्फुडंत (... ४, ४०)।

समुप्फोडण न [समुत्स्फोटन] आस्फालन (पउम ६, १८०)।

समुब्भड वि [समुद्भट] प्रचंड (प्रासू १०२)।

समुब्भव सक [समुद् + भू] उत्पन्न होना। ... (... २४)।

समुब्भव पुं [समुद्भव] उत्पत्ति (उप ... आदि)।

समुब्भिन्न वि [समुद्भिन्न] उत्पन्न ... (सुपा ८८ आदि)।

समुब्भुअ (अप) [illegible] (...)।

समुब्भूअ वि [समुद्भूत] उत्पन्न (... ४०६, सुर २, २३५, सुपा २८४)।

समुयाण ... समुयाणा = समुदान (... ३, २— ... ७८४)।

समुयाण देखो समुदाण ... समुयाणिअ (... ३, १...)।

समुयाणिअ देखो समुदाणिअ (...)।

समुयार पुं समुदाय (...)।

[illegible]

[illegible]

समुल्लस अक [समुन् + लस्] उल्लसित होना, विकसना। समुल्लसइ (नाट—विक्र. ७१)। वकृ. समुल्लसन (कप्प, सुर २, ८५)।

समुल्लसिय वि [समुल्लसित] उल्लास-प्राप्त (सण)।

समुल्लालिय वि [समुल्लालित] उछाला हुआ (णाया १, १८—पत्र २३७)।

समुल्लाव पुं [समुल्लाप] आलाप, संभाषण (विपा १, ७—पत्र ७८, महा, णाया १, १६—पत्र १६६)।

समुल्लास पु [समुल्लास] विकास (गउड)।

समुवइट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (उप २८८)।

समुवउत्त वि [समुपयुक्त] उपयोग-युक्त, सावधान (जीवम ३६३)।

समुवगय वि [समुपगत] समीप आया हुआ (वव ४)।

समुवज्जिय वि [समुपार्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (सुपा १००, सण)।

समुवत्थिय वि [समुपस्थित] हाजिर, उपस्थित (उप ४३५)।

समुवयंत देखो समुवे।

समुवविट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (राय ७५)।

समुवसपन्न वि [समुपसपन्न] समीप मे समागत (धर्म ३)।

समुवहसिअ वि [समुपहसित] जिसका खूब उपहास किया गया हो वह (सण)।

समुवागय वि [समुपागत] समीप मे आगत (णाया १, १६—पत्र १६६, सण)।

समुवे सक [समुपा + इ] १ पास मे आना। २ प्राप्त करना। समुवेइ, समुवेंति (यति ४२, पि ४९३)। वकृ समुवयंत (स ३७०)।

समुवेक्ख } सक [समुप + ईक्ष्] १
समुवेह } निरीक्षण करना। २ व्यवहार करना, काम मे लाना। वकृ समुवेक्खमाण, समुवेहमाण (णाया १, १—पत्र ११, आचा १, ५, २, ३)।

समुव्वत्त वि [समुद्वृत्त] ऊँचा किया हुआ (से ११, ५१)।

समुव्वत्तिय वि [समुद्वर्तित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (सुर १३, ४३)।

समुव्वह सक [समुद् + वह्] १ धारण करना। २ ढोना। समुव्वहइ (भवि, सण)। वकृ. समुव्वहंत (से ६, २, नाट—रत्ना ८३)।

समुव्वहण न [समुद्वहन] सम्यग् वहन—ढोना (उत्त)।

समुव्विग्ग वि [समुद्विग्न] अत्यन्त उद्वेग-वाला (गा ४९२)।

समुव्वूढ वि [समुद्व्यूढ] १ विवाहित (उप पृ १२७)। २ उत्तानित, ऊँचा किया हुआ (से ११, ६०)।

समुव्वेल्ल वि [समुद्वेल्लित] अत्यन्त कँपाया हुआ, सचालित, 'गयजूहसमायड्ढियविसमस-मुव्वेल्लकमलसघाय' (पउम ६४, ५२)।

समुसरण देखो समोसरण (पिंड २)।

समुस्सय पुं [समुच्छ्रय] १ ऊँचाई, ऊर्ध्वता (सूअ २, ४, ७)। २ उन्नति, उत्तमता (सूअ १, १५, ७)। ३ कर्मो का उपचय (आचा)। ४ सघात, समूह, राशि, ढग (दस ६, १७, अणु २०)।

समुस्सविय वि [समुच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ४०, ६)।

समुस्ससिय वि [समुच्छ्वसित] १ उल्लास-प्राप्त, 'समुस्ससियरोमकूवा' (कप्प)। २ उच्छ्वास-प्राप्त (पउम ६४, ३८)। देखो समूससिअ।

समुस्सिअ वि [समुच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित, ऊँचा रहा हुआ (सूअ १,५,१,१५, पि ६४)।

समुस्सिणा सक [समुन् + श्रु] १ निर्माण करना, बनाना। २ सम्कार करना, सँवारना जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुस्सि-णासि, समुस्सिणामि (आचा १,८,२,१,२)।

समुस्सुग } देखो समूसुअ (द्र ४८, महा)।
समुस्सुय }

समुह देखो समुह (हे १, २६, गा ६५६, कुमा, हेका ५१, महा, पाअ)।

समुद्दय वि [समुद्धत] समुद्घात-प्राप्त (श्रावक ६८)।

समुहि देखो स-मुहि = श्व-मुखि।

समूसण न [समूषण] त्रिकटुक—सूँठ, पीपल तथा मरिच या मिरचा (उत्तनि ३)।

समूसविय देखो समुस्सविय (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समूसस अक [समुन् + श्वस्] १ ऊँचा जाना। २ उल्लसित होना। ३ ऊर्ध्व श्वास लेना। समूससंति (पि १४३)। वकृ समू-ससत, समूससमाण (गा ६०४, गउड, से ११, १३२)।

समूससिअ न [समुच्छ्वसित] १ नि श्वास (से ११, ५६)। २ देखो समुस्ससिय (णाया १, १—पत्र १३, कप्प, गउड)।

समूसिअ देखो समुस्सिअ (भग, ओप, सूअ १, ५, १, ११ टी, पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समूसुअ वि [समुत्सुक] अति उत्कंठित (सुपा ४७७, नाट—विक्र ६२)।

समूह पुन [समूह] समुदाय, राशि, सघात, 'मतीहि य उवसमिय भुयगमाण समूह व' (पउम १०८, १५, ओघ ४०७, गउड, भवि)।

समूह (अप) देखो समुह (भवि)।

समे सक [समा + इ] १ आगमन करना, आना, समुख आना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। ४ अक सहत होना, इकट्ठा होना। समेइ, समेति (भवि, विसे २२६६)। वकृ. समेमाण (आचा १, ८, १, २)। सकृ. समिच्च, समेच्च (सूअ १, १२, ११, पि ५९१, आचा १, ६, १, १६, पच ३, ४५)।

समेअ } वि [समेत] १ समागत, समायात,
समेत } 'सीलवउ परिणेउ गिट्ट समेओ महिड्ढीए' (श्रा १६)। २ युक्त, सहित, 'तेहि समेतो अहय वयामि जा कित्तियपि भूभाग' (सुर १, १६८, ३, ८८, सुपा २५६, महा)।

समेर देखो स-मेर = स-मर्याद।

समोअर अक [समव + तॄ] १ समाना, समावेश होना, अन्तर्भाव होना। २ नीचे

[illegible] १, [illegible] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible] ७, २८ ।।

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible] १, ८, [illegible]

[illegible]

सम्मइ देखो सम्मुइ = सन्मति, स्वमति (उत्त २८, १७, आचा)।

सम्मङग देखो सामाङग (मजोव ४५)।

सम्म अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा, सुअ १, १४, ११, महा)।

सम्मुइ स्त्री [सन्मति] १ सगन मति। २ सुन्दर बुद्धि, विशद बुद्धि (उत्त २८, १७, सुम २८, १७, कप्प, आचा)। ३ पुं एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५२)।

सम्मुइ स्त्री [स्वमति] स्वकीय बुद्धि (आचा)।

सम्भरिअ वि [संस्मृत] अच्छी तरह याद किया हुआ (अच्चु ३१)।

सय अक [शी, स्वप] सोना, शयन करना। सयइ सए, सएज्जा (कप्प, आचा १, ७, ८, १३, २, २, ३, २५, २६), सयति (भग १३, ६—पत्र १७१)। वकृ सयमाण (आचा २, २, ३ २६)। हेकृ सइत्तए (पि ५७८)। कृ देखो सयणिज्ज, सयणीअ।

सय अक [स्वद्] पचना, जीर्ण होना, माफिक आना। सयइ (आचा २, १, ११, १)।

सय अक [स्रु] झरना, टपकना। सयइ (सूअ २, २, ५६)।

सय सक [श्रि] सेवा करना। सयति (भग १३, ६—पत्र ६१७)।

सय देखो स = सन्, 'सदणिज्जो सयाण' (स ६६५)।

सय देखो स = स्व (सूअ १, १, २, २३, णाया १, १८—पत्र १६०, आचा, उवा, स्वप्न १६)।

सय देखो सग = सप्तन्। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर, ७७ (श्रा २८)।

सय अ [सदा] हमेशा, निरन्तर, 'असवुडो सय करेइ कदप्प' (उव)। °काल न [°काल] हमेशा, निरन्तर (सुपा ८५)।

सय पुन [शत] १ सख्या-विशेष, सौ, १००। २ सौ की सख्यावाला (उवा, उव, गा १०१, जी २६, द ६)। ३ बहुत, भूरि, अनल्प सख्यावाला (णाया १, १—पत्र ६५)। ४ अध्ययन, ग्रथ प्रकरण, ग्रन्थांश-विशेष, 'विवाहपन्नत्तीए एकासीति महाजुम्मसया पन्नत्ता' (सम ८८)। °कत न [°कान्त] १ रत्न-विशेष। २ वि शतकान्त रत्नो से बना हुआ (देवेन्द्र २६८)। °कित्ति पु [°कीर्ति] एक भावी जिन-देव (पव ४६), 'सत्त (?य) कित्ती' (सम १५३)। °गुणिअ वि [गुणित] सौगुना (श्रा १०, सुर ३, २३२)। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] १ यन्त्र-विशेष, पाषाण-शिला-विशेष (सम १३७, अत, ओप)। २ चक्री, जाता (दे ८, ५, टी)। °जल न [°ज्वल] १ वरुण का विमान (देवेन्द्र २७०)। देखो सयजल। २ रत्न की एक जाति। ३ वि शतज्वल-रत्नो का बना हुआ (देवेन्द्र २६६)। ४ पुन विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। °दुवार न [°द्वार] एक नगर (अत)। °धणु पु [°धनुष्] १ ऐरवत वर्ष मे होनेवाला एक कुलकर पुरुष (सम १५३)। २ भारत वर्ष मे होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)। °पई स्त्री [°पदी] क्षुद्र जन्तु की एक जाति (श्रा २३)। °पत्त देखो °वत्त (णाया १, १—पत्र ३८)। °पाग न [°पाक] एक सौ ओषधियो से बनता एक तरह का उत्तम तेल (णाया १, १—पत्र १६, ठा ३, १—पत्र ११७)। °पुप्फा स्त्री [°पुष्पा] वनस्पति-विशेष, सोया का गाछ (पण्ण १—पत्र ३४, उत्तनि ३)। °पोर न [°पर्वन्] इक्षु, ऊख (पव १७० टी)। °बाहु पु [°बाहु] एक राजर्षि (पउम १०, ७४)। °भिसया, °भिसा स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष (इक, पउम २०, ३८)। °यम वि [°तम] सौवाँ, १०० वाँ (पउम १००, ६४)। °रह पु [°रथ] एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °रिसह पु [°वृषभ] अहोरात्र का तेईसवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °वई देखो °पई (दे २, ६१)। °वत्त न [°पत्र] १ पद्म, कमल (पात्र)। २ सौ पत्तीवाला कमल, पद्म-विशेष (सुपा ४६)। ३ पु पक्षि-विशेष, जिसका दक्षिण दिशा मे बोलना अपशुकन माना जाता है (पउम ७, १७)। °सहस्स पुन [°सहस्र] सख्या-विशेष, लाख (सम २, भग, सुर ३, २१, प्रासू ६, १३४)। °सहस्सइम वि [°सहस्रतम] लाखवाँ (णाया १, ८—पत्र १३१)। °साहस्स वि [°साहस्र] १ लाख-सख्या का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७)। २ लाख रुपया जिसका मूल्य हो वह (पव १११ दसनि ३, १३)। °साहस्सि वि [°साहस्रिन्] लखपति, लक्षाधीश (उप पृ ३१५)। °साहस्सिय वि [°साहस्रिक] देखो °साहस्स (स ३६६, राज)। °साहस्सी स्त्री [°साहस्री] लक्ष, लाख (पि ४४७, ४४८)। °सिक्कर वि [°शर्कर] शत खडवाला, सौ टुकडावाला (सुर ८, २२, १५३)। °हा अ [°धा] सौ प्रकार से, सौ टुकडा हो ऐसा (सुर १४, २४२)। °हुत्त अ [°कृत्वस्] सौ बार (हे २ १५८, प्राप्र षड्)। °उ पु [°ायुष्] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ मदिरा-विशेष (कुप्र १६०, राज)। °णिय, °णीअ पु [°ानीक] एक राजा का नाम (विपा १, ५—पत्र ६०, अत, ती १०)।

सय° देखो सय = स्वय, 'सयपालणा य एत्थ' (पचा ५, ०६)।

सय देखो सउ = सकृत् (वै ८८)।

सय अ [स्वयम्] आप, खुद, निज (आचा १, ६, १, ६, सुर २, १८७, भग, प्रासू ७०, अभि ५६, कुमा)। °कड वि [°कृत] खुद किया हुआ (भग)। °गाह पुं [°ग्राह] १ जबरदस्ती ग्रहण करना। २ विवाह-विशेष (ति १, ३४)। ३ वि, स्वय ग्रहण करनेवाला (उव १)। °पभ पु [°प्रभ] १ ज्योतिष्क ग्रह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ भारतवर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी काल मे उत्पन्न चौथा कुलकर पुरुष (सम १५०)। ३ आगामी उत्सर्पिणी काल मे भारत मे होनेवाला चौथा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल मे इस भारतवर्ष मे होनेवाले चौथे जिन-देव (सम १५३)। ५ एक जैन मुनि जो भगवान् सभवनाथ के पूर्वजन्म मे गुरु थे (पउम २०, १७)। ६ एक हार का नाम (पउम ३६, ४)। ७ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। ८ नन्दीश्वर द्वीप के मध्य मे पश्चिम-दिशा स्थित एक अजन-गिरि (पव

सयय त्रि [सतत] निरन्तर (उप, सुर १, १३, महा)।

सयय पुं [शतक] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिनदेव (सम १५३)। २ आगामी उत्सर्पिणी में भारत वर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम, जो भगवान् महावीर का श्रावक था (ठा ६—पत्र ४५५)। ३ न सौ का समुदाय (गा ७०६, मच्छ १०१)।

सयर देखो सागर = सागर (पिंग ११८७)।

सयरह देखो सयराह (स ७६२)।

सयरा देखो सफरा, 'सयरं रहिं न हुत्तु तुरंतो पुणपुणु साहिज' (पउम ११४, ८)।

सयराह) अ [दे] १ शीघ्र, जल्दी (दे ८, सयराहा) ११, कुमा, गउड, वेइय ६१०)। २ युगपत्, एक साथ (पिंड ६५६)। ३ अकस्मात् (सोम)।

सयरि देखो सत्तरि = सप्तति (पि २४५, ४४६)।

सयरी स्त्री [शतावरी] गुल्म-विशेष, शतावर का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

सयल न [शकल] खंड, टुकड़ा (दे १, २८)।

सयल त्रि [सकल] १ संपूर्ण, पूरा। २ सब, समग्र (गा ४३०, कुमा, सुपा १८७ ८ ४६० गा ३६ प्रासू १०८, १६४)। °चंद पुं [°चन्द्र] श्रुतप्रवर्तक एक जैन मुनि (श्रा ६६)। °भूसण पुं [°भूषण] एक जैन मुनि (पउम १०२, ५७)। °दिस पुं [°दिश] मांगलिक बाद्य ... (पउम ६२)।

सयालु पुं [शयालु] ... (दे ८, ११)।

सयवट्ठिय ... [सौवस्तिक] ...

सयसाहस्स देखो सयसहस्स ...

अठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पव ४६, सम १५४)। देखो भयालि।

सयालु वि [शयालु] सोने की आदतवाला, आलसी (कुम)।

सयावरी स्त्री [सदावरी] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६, सुख ३६, १३६)।

सयावरी देखो सगरी = शतावरी (राज)।

सयास देखो सगास = सकाश (काल, अभि १२५, नाट—मृच्छ ५२)।

सयासव वि [शताश्रव, सदाश्रव] सूक्ष्म छिद्रवाला (भग)।

सय्य देखो सज्ज = सज्ञम्, 'सय्यभवृत्ति सय्य भत्रोयहीपारगा जग्रो तेरा' (धर्मवि ३८)।

सय्यभव देखो सज्जभव (धर्मवि ३८)।

सय्ह देखो सज्झ = सह्य (हे २, १२४, षड्)।

सर सक [सृ] १ सरना, खिसकना। २ अवलम्बन करना, आश्रय लेना। ३ अनुसरण करना। सरइ (हे ४, २३४), सरेज्जा (उपप २५)। कृ सरणीअ (चउ २७), सरेअव्व (सुपा ४१४)।

सर सक [स्मृ] याद करना। सरइ (हे ४, ७४, गुरु १२, प्राप्र)। वकृ सरत (सुपा ५६०), सरमाण (णाया १, ६—पत्र १६५, पउम ८, १६४, सुपा ३३६)। हेकृ सरित्तए (पि ५७८)। कृ सरणीअ, सरेअव्व, सरिअव्व (चउ २७, धम्मो २०, सुपा ३०७)। प्रयो सरयंति (सूअ १, ५, १, १६)।

सर सक [स्वर्] आवाज करना। सरइ, सरति (विसे ४६२)।

सर पुन [शर] १ वाण, 'मज्झे सराणि वरिसयंति' (णाया १, १४—पत्र १६१, कुमा, सुर १, ६४, स्वप्न ५५)। २ तृण विशेष, 'सो नरवणे निलोणो रहिओ तक्खिव्व पच्छन्नो' (धर्मवि ६२, पएण १—पत्र ३३, (कुप्र १०)। ३ छन्द-विशेष। ४ पाच की संख्या (पिंग)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] तृण-विशेष, = मुञ्ज का घास (राज)। °पत्त न [°पत्र] अस्त्र-विशेष (विसे ५१३)। °पाय न [°पात] धनुष (सूअ १, ४, २, १३) °ासण पुन [°ासन] धनुष (विपा १, २—पत्र २४, पाअ, ओप)। °ासणपट्टी, °ासणवट्टिया स्त्री [°ासनपट्टी, °ासनपट्टिका] १ धनुर्यष्टि, धनुर्दण्ड। २ धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाधा जाता चर्मपट्ट—चमडे का पट्टा (विपा १, २—पत्र २४, औप)। °ासरि न [°ाशरि] वाण-युद्ध (सिरि १०३२)।

सर पु [स्मर] कामदेव (कुमा, से ६, ४३)।

सर वि [सर] गमन कर्ता (दस ६, ३, ६)।

सर पु [स्वर] १ वर्ण-विशेष, 'अ' से 'औ' तक के अक्षर (पएह २, २, विसे ४६१)। २ गोत आदि की ध्वनि, आवाज, नाद (सुपा ५६, कुमा)। ३ स्वर के अनुरूप फलाफल को बतानेवाला शास्त्र (सम ४६)।

सर पुन [सरस्] तडाग, तालाव (से ३, ६, उवा, कप्प, कुमा, सुपा ३१६)। °पंति स्त्री [°पङ्क्ति] तडाग-पद्धति (ठा २, ४—पत्र ८६)। °रुह न [°रुह] कमल, पद्म (प्राप्र, हे १, १५६, कुमा)। °सरपंतिया स्त्री [°सर पङ्क्ति] श्रेणि-बद्ध रहे हुए अनेक तालाव (पएह २, ५—पत्र १५०)।

सर देखो सरय = शरद् (गा ७१२)। °इंदु पु [°इन्दु] शरद ऋतु का चन्द्र (सुर २, ७०, १६, २४६)।

सरऊ स्त्री [सरयू] नदी-विशेष (ठा ५, २—पत्र ३०८, ती ११, कस)।

सरंग (अप) पु [सारङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरंब पु [शरम्ब] हाथ से चलनेवाले सर्प की एक जाति (पएह १, १—पत्र ८)।

सरक्ख सक [स + रक्ष्] अच्छी तरह रक्षण करना। सरक्खए (सूअ १, १, ४, ११ टि)।

सरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ शैव-धर्मी, शिव-भक्त, भौत, शैव (ओघ २१८, विसे १०४०, उप ६७७)। २ वि रजो-युक्त (श्राव ४)।

सरक्ख पुंन [सद्रजस्] १ धूलि, रज, 'ससरक्खेहिं पाएहिं' (दस ५, १, ७)। २ भस्म (पिंड ३७, ओघ ३५६)।

सरग देखो सरय = शरक (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरग वि [शारक] शर-तृण से बना हुआ (शूर्प आदि) (आचा २, १, ११, ३)।

सरंगिका (अप) स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरड पु [सरट] कृकलास, गिरगिट (णाया १, ८—पत्र १३३, ओघ ३२३, पुप्फ २६७, दे ८, ११, उप पृ २६८, सुपा १७७)।

सरडु न [शलाटु, °क] वह फल जिसमें अस्थि—गुठली न बँधी हो, कोमल फल (पिंड ४५, आचा २, १, ८, ६, पि ८२, २५६)।
सरडुअ

सरण पुन [शरण] १ त्राण, रक्षा (आचा, सम १, प्रासू १५६, कुमा)। २ त्राण-स्थान (आचा कुमा २, ४५)। ३ गृह, आश्रय, स्थान, 'निरायसरणप्पईवमिव चित्त' (सवोध ५१)। °दय वि [°दय] त्राण-कर्ता (भग, पडि)। °गय वि [°गत] शरणापन्न (प्रासू ५)।

सरण न [स्मरण] स्मृति, याद (ओघ ८, विसे ५१८, महा, उप ५६२, औप, वि ६)।

सरण न [स्वरण] आवाज करना, ध्वनि करना (विसे ४६१)।

सरण न [सरण] गमन (राज)।

सरणि पुस्त्री [सरणि] १ मार्ग, रास्ता (पाअ, सुपा २, कुप्र २२), 'सरलो सरणी समग कहिओ' (सार्ध ७५)। २ आलवाल, क्यारी (गउड)।

सरण्ण वि [शरण्य] शरण-योग्य, त्राण के लिए आश्रयणीय (सम १५३, पएह १, ४—पत्र ७२, सुपा २६१, अच्चु १५, सबोध ४८)।

सरत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी, सहसा (दे ८, २)।

सरद देखो सरय = शरत (प्राप्र)।

सरन्न देखो सरण्ण (सुपा १८३)।

सरभ देखो सरह = शरभ (भग, णाया १, १—पत्र ६५, पएह १, १—पत्र ७, ... ७४२, पिंग)।

[illegible]

सरसी स्त्री [सरसी] [illegible] —उप्पन्न [illegible] (सुपा [illegible])। °रुह न [°रुह] कमल (उप्पन्न १२०, १३६)।

सरस्सई स्त्री [सरस्वती] १ वाणी, भारती, [illegible]। २ [illegible] देवी (सुर [illegible])। ३ [illegible] (पउम [illegible])। [illegible]

सर पुं [स्मर] १ [illegible] (सुपा ६३२)। [illegible] (पउम ३२, ८८)। ३ [illegible] (पउम ६७, ३०)। ४ [illegible] (पउम ८, १३२)। ५ [illegible]

सरह पुं [शरभ] [illegible] (१८, ७०)। २ [illegible] (२८, ४०, सुर २, २२२)।

सराइ (अप) [illegible] प्रकाशित [illegible]।

[illegible]

°नाह पुं [°नाथ] समुद्र (धर्मवि १०१)। देखो सरिआ।

सरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (उप्प ३०, ५८, सुपा २२१, ५६२)।

सरिअ [illegible] सरि = सदृश्, [illegible] [illegible] सरिअं' (प्राप्र)।

सरिअ न [सूत्र] [illegible], पंक्ति, [illegible] बहुमोत्तिएण सरियं' (स्वप्न ७०)।

सरिआ स्त्री [सरित्] नदी (कुमा, [illegible] १५ महा)। °वइ पुं [°पति] समुद्र ([illegible] ७, ४१ ६, २)।

सरिआ स्त्री [दे] माला, हार (पउम १, ८—पत्र ६८, सुर ३, सुपा ३४३)।

सरिक्ख } वि [सदृक्ष] [illegible], समान,
सरिच्छ } तुल्य (प्राकृ ८६, पाअ, [illegible] १४२, २, १७, सुपा)।

सरिच्छ वि [स्मर्तृ] [illegible] (ठा — पत्र ४४४)।

सरिमसा स्त्री [दे] [illegible], [illegible] [illegible] 'सरसई', [illegible] [illegible] सरिसो' ([illegible] १०)।

सरिर [illegible] शरीर (पि २०४)।

सरिवाय पुं [दे] आसार, [illegible] (दे ८, १२)।

सरिस वि [सदृश] समान, सरीखा, तुल्य ([illegible] उत्त [illegible] ४८)।

सरिस पुं [दे] १ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (सुपा [illegible])।

[illegible]

सरिसरि [illegible] सरिसरी ([illegible])।

सरिसव पुं [सर्षप] [illegible]

[illegible]

[illegible]

सरी स्त्री [दे] माला, हार (सुपा २३१)।

सरीर पुन [शरीर] देह, काय, तनु (सम ६७, उवा, कुमा, जी १२) 'कइ ण भंते सरीरा पण्णत्ता' (पण्ण १२)। °णाम, °नाम पुन [°नामन्] कर्म-विशेष, शरीर का कारण-भूत कर्म (राज, सम ६७)। °बंधण न [°बन्धन] कर्म-विशेष (सम ६७)। °संघायण न [°संघातन] नाम कर्म का एक भेद (सम ६७)।

सरीरि पु [शरीरिन्] जीव, आत्मा (पउम ११२, १७)।

सरीसव, सरीसिव पुं [सरीसृप] १ सर्प, साँप (स्वा ११; सूम १, २, २, १४)। २ सर्प की तरह पेट से चलनेवाला प्राणी (सम ६०)।

सरूय, सरूव देखो स-रूव = स्व-रूप।

सरूव देखो स-रूव = सद्-रूप, स रूप।

सरूवि पु [स्वरूपिन्] जीव, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८)।

सरेअव्व देखो सर = स्मृ।

सरेवअ पु [दे] १ हंस। २ घर का जल-प्रवाह, मोरी (दे ८, ४८)।

सरोअ न [सरोज] कमल, पद्म (कुमा, अच्चु ८२, सुपा ५६, २११, कुप्र २६८)।

सरोरुह न [सरोरुह] ऊपर देखो (प्राप्र, कुमा, कुप्र ३०४)।

सरोवर न [सरोवर] बड़ा तालाव (सुपा २६०, महा)।

सलभ देखो सलह = शलभ (राज)।

सलली स्त्री [दे] सेवा (दे ८, ३)।

सलह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। सलहइ (हे ४, ८८)। कर्म सलहिज्जइ (पि १३२)। कृ सलहिज्ज (कुमा)। देखो सलाह।

सलह पु [शलभ] १ पतङ्ग (पाअ, गउड, सुपा १८२)। २ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)।

सलहण न [श्लाघन] प्रशंसा, श्लाघा (गा ११४, पि १३२)।

सलहत्थ पु [दे] कुडछी आदि का हाथा (दे ८, ११)।

सलहिअ वि [श्लाघित] प्रशंसित (कुमा)।

सलहिज्ज देखो सलह = श्लाघ्।

सलाग न [शालाक्य] चिकित्सा शास्त्र—आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें श्रवण आदि शरीर के ऊर्ध्व भाग के सम्बन्ध में चिकित्सा का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (विपा १, ७—पत्र ७५)।

सलागा, सलाया स्त्री [शलाका] १ सली, सलाइ (सूत्र १, ४, २, १०, कप्पू)। २ पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६, कम्म ४ ७३, ७५)। °पुरिस पु [°पुरुष] २४ जिनदेव, १२ चक्रवर्ती ९ वासुदेव। ९ प्रतिवासुदेव तथा ९ बलदेव ये ६३ महापुरुष (सवार ११)।

सलाह देखो सलह = श्लाघ्। सलाहइ (प्राकृ २८)। वकृ. सलाहमाण (गा २४६, सम्म १५६)। कृ सलाहणिज्ज सलाहणिय, सलाहणीअ (प्राकृ २८, णाया १, १६—पत्र २०१, कुर ७, १०१, रयण ३५, पउम ८२, ७३, पि १३२)।

सलाहण न [श्लाघन] श्लाघा, प्रशंसा (गा ११८, उप पृ १०६)।

सलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (प्राप्र, हे २, १०१, षड्)।

सलाहिअ देखो सलहिअ (कुमा)।

सलिल पुन [सलिल] पानी, जल, 'सलिला ण संदति ण वंति वाया' (सूत्र १, १२, ७, कुमा, प्रासू ३५)। °णिहि पु [°निधि] सागर, समुद्र (से ६, ६)। °नाह पु [°नाथ] वही (पउम ९, ६६)। °बिल न [°बिल] भूमि-निर्झर, जमीन में बहता झरना (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °रासि पु [°राशि] समुद्र (पाअ)। °वाह पु [°वाह] मेघ (पउम ८०, ३४)। °वर पु [°वर] वही (से ६, ६४)। °वई, °वती स्त्री [°वती] विजय-क्षेत्र-विशेष (राज, णाया १, ८—पत्र १२१)। °वत्त न [°वर्त] वैताढ्य पर्वत पर उत्तर दिशा-स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सलिला स्त्री [सलिला] महानदी, बड़ी नदी (सम १२२)।

सलिलुच्छय वि [सलिलोच्छ्रय] प्लावित, डुबोया हुआ (पाअ)।

सलिस अक [स्वप्] सोना, शयन करना। सलिसइ (षड्)।

सलूण देखो स-लूण = स-लवण।

सलोग पु [श्लोक] श्लाघा, प्रशंसा (सूत्र १, १३, १२)। देखो सिलोग।

सलोग देखो स-लोग = स लोक।

सलोण देखो स-लोण = स-लवण।

सलोय देखो सलोग = श्लोक (सूत्र १ ६, २२)।

सल्ल पुन [शल्य] १ शस्त्र-विशेष, तोमर, साँग, 'तओ सल्ला पण्णत्ता' (ठा ३, ३—पत्र १८०)। २ शरीर में घुसा हुआ काँटा, तीर आदि (सूत्र २ २, , पंचा ९, १६, प्रासू २०)। ३ पापानुष्ठान, पाप-क्रिया, 'मायन्नियाणसल्लो' (उत्त, सूत्र १, १५, २१)। ४ पापानुष्ठान से लगनेवाला कर्म (सूत्र १, १५, २४ वग १)। ५ पु. भरत के साथ दीक्षा लेनेवाले एक राजा का (पउम ८५, ७)। ६ न. छन्द विशेष (पिंग)। °ग वि [°क] शल्यवाला, शूल आदि शल्य से पीड़ित (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। °ग न [°ग] परिज्ञान, जानकारी (सूत्र २, २, ५७)।

सल्ल पुस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय जन्तु की एक जाति (सूत्र २, ३, २५)।

सल्लइअ वि [शल्यकित] शल्य-युक्त, जिसको शल्य पैदा हुआ हो वह (णाया १, ७—पत्र ११६)।

सल्लई स्त्री [सल्लकी] वृक्ष-विशेष (णाया १, ७ टी—पत्र ११६, उप १०३१ टी कुमा, धर्मवि १३०, सुपा २६१)।

सल्लग देखो सल्ल ग = शल्य क, श ल्य ग।

सल्लग देखो स-ल्लग = सत्-लग।

सल्लहत्त पुन [शाल्यहत्य] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें शल्य निकालने का प्रतिपादन किया गया हो वह शास्त्र (विपा १, ७—७५)।

सल्ला स्त्री [शल्या] एक महौषधि (ती ५)।

सल्लिअ वि [शल्यित] शल्य-पीड़ित (सुर १२, १५२, सुपा २२७, महा भवि)।

सल्लिह देखो सलिह = स + लिख्। सल्लिहदि (आरा ३५)।

(पव १६४)। ६ एक नगर का नाम (विपा १, ५—पत्र ६१) ७ अच्युतेन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८, औप)। ८ दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८)। ९ पु यक्ष की एक जाति (राज)। १० देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३६, १४१)। °ओभद्दा स्त्री [°तोभद्रा] प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (औप ठा २, ३—पत्र ६४, अंत २६)। °कामसमिद्ध पु [°कामसमृद्ध] पक्ष का छठवाँ दिवस, षष्ठी तिथि (सुज्ज १०, १४)। °कामा स्त्री [°कामा] विद्या-विशेष, जिसकी साधना से सर्व इच्छाएँ पूर्ण होती हैं (पउम ७, १०७)। °गत वि [°गत] व्यापक (अच्चु १०)। °गा स्त्री [°गा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४०७)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक जैन मुनि (पउम २०, १६)। °ज्ञ वि [°ज्ञ] १ सर्व पदार्थों का जानकार। २ पु. जिन भगवान्। ३ बुद्धदेव। ४ महादेव। ५ परमेश्वर (हे २, ८३, षड्, प्राप्र)। °ट्ठ पु [°र्थ] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)। २ पुन सहस्रार देवलोक का एक विमान (सम १०५)। ३ अनुत्तर देवलोक का सर्वार्थसिद्ध-नामक एक विमान (पव १६०)। ४ पु. सब अर्थ (आचा १, ८, ८, २५)। °ट्ठसिद्ध पुन [°र्थसिद्ध] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१) २ एक सर्व श्रेष्ठ देव-विमान, अनुत्तर देवलोक का पाँचवाँ विमान (सम २, भग, अंत, औप)। ३ पु ऐरवत वर्ष में उत्पन्न होनेवाले उठवें जिनदेव (पव ७)। °ट्ठसिद्धा स्त्री [°र्थसिद्धा] भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६)। °ट्ठसिद्धि स्त्री [°र्थसिद्धि] एक देव विमान (देवेन्द्र १३७)। °ण्णु देखो °ज्ञ (हे १, ५६, षड्, औप)। °त्त देखो °त्थ (सुपा १५०)। °त्तो देखो °ओ (प्राप्र)। °त्थ अ [°त्र] सब स्थान में, सब में (गउड, प्रासू ३६, ६८)। °दंस, °दरिसि वि [°दर्शिन्] १ सब वस्तुओं को देखनेवाला। २ पु जिन भगवान्, अर्हन् (राज, भग, सम १, पडि)। °देव पु [°देव] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य (सार्ध ८०)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)। °द्दंसि देखो °दंसि (चेइय ३५०)। °द्धा स्त्री [°द्धा] सब काल, अतीत आदि सर्व समय (भग)। °पत्ता स्त्री [°पत्ता] व्यापक, सर्व-ग्राहक (विसे ३४६१)। °न्नु देखो °ज्ञ (सम १, प्रासू १७०, महा)। °प्पग त्रि [°ात्मक] १ व्यापक। २ पु लोभ (सूत्र १ १, २, १२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)। °भक्ख वि [°भक्ष] सब को खानेवाला, सर्व-भोजी, 'अग्गिमिव सव्वभक्खे' (णाया १, २—पत्र ८६)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] प्रतिज्ञा विशेष, व्रत विशेष (पव २७१)। °भावविउ पु [°भावविद्] आगामी काल में भारत वर्ष में होनेवाले बारहवें जिन-देव (सम १५३)। °य वि [°द] सब देनेवाला (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °या अ [°दा] हमेशा, सदा (रंभा)। °रयण पु [°रत्न] १ एक महा-निधि (ठा ६—पत्र ४४६)। २ पुन पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक)। °रयणा स्त्री [°रत्ना] ईशानेन्द्र की वसुमित्रा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °रयणामय वि [°रत्नमय] १ सब रत्नों का बना हुआ (पि ७०, जीव ३, ४)। २ चक्रवर्त्ती का एक निधि (उत्त ६८६ टी)। °विग्गहिअ वि [°विग्रहिक] सर्व-संक्षिप्त, सबसे छोटा (भग १३, ४—पत्र ६०६)। °विरइ स्त्री [°विरति] पाप-कर्म से सर्वथा निवृत्ति, पूर्ण संयम (विसे २६८४)। °संगय [°सङ्गत] मृत्यु (पउम—पत्र० ३२१, पर्व ११०, गा० ४४)। °संजम पु [°संयम] पूर्ण संयम (राय)। °सह वि [°सह] सब सहन करनेवाला, पूर्ण सहिष्णु (पउम १४, ७६)। °सिद्धा स्त्री [°सिद्धा] पक्ष की चौथी, नवमी और चोदहवीं रात्रि तिथि (सुज्ज १०, १५)। °सो अ [°शस्] सब ओर से, सब प्रकार से (उत्त १, ४, आचा)। °स्स न [°स्व] सकल द्रव्य, सब धन (स ४५६, अभि ४०, कप्पू)। °हा अ [°था] सब प्रकार से, सब तरह से (गा ८६७, महा, प्रासू ३, १८१)। °णंद पु [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। °णुभूइ पु [°ानुभूति] १ भारत वर्ष में होनेवाले पाँचवें जिन भगवान् (सम १५३)। २ भगवान् महावीर का एक शिष्य (भग १५—पत्र ६७८)। °ाण्हा स्त्री [°ाह्ना] विद्या-विशेष (पउम ७ १४०)। °ाय वि [°ाप] संपूर्ण (भग)। °ासण पु [°ाशन] अग्नि आग (हे ४ ३६५)।

सव्वक्कस वि [सर्वोत्कर्ष] १ सर्वातिशायी, सर्व से विशिष्ट (कप्पू)। २ न. पाप (आव)।

सव्वग वि [सर्वाङ्ग] १ संपूर्ण (ठा ४, —पत्र २०८)। सर्व-शरीर-व्यापी (राज)। °सुंदर वि [°सुन्दर] १ सर्व अंगों में श्रेष्ठ। २ पुन तप-विशेष (राज, पव २७१)।

सव्वंगिअ } वि [सर्वाङ्गीण] सर्व अवयवों
सव्वंगीण } में व्याप्त (हे २, १५१, कुमा, से १५, ५४), 'सव्वंगीणाभरणं पत्तेयं तेण ताण कयं' (कुप्र २३५, धर्मवि १४६)।

सव्वण देखो स-व्वण = स व्रण।

सव्वराइअ वि [सार्वरात्रिक] संपूर्ण रात्रि से सम्बन्ध रखनेवाला, सारी रात का (सूत्र २, २, ५५, कप्प)।

सव्वरी स्त्री [शर्वरी] रात्रि, रात (पाअ, गा ६५३, सुपा ४६१)।

सव्वल पु [दे शर्वल] कुन्त, बर्छा (राज, काल)। देखो सव्वल।

सव्वला स्त्री [दे शवला] कुशी लोहे का एक हथियार (दे ८, ६)।

सव्ववेक्ख देखो स-व्ववेक्ख = स-व्यपेक्ष।

सव्वाव देखो स-व्वाव = सर्वाप।

सव्वाव देखो स-व्वाव = स-व्याप।

सव्वावंति अ [दे] सर्व, सब, संपूर्ण, 'एयावंति सव्वावंति लोगंसि' (आचा), सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरिणीए' (सूत्र २, १, ५), 'सव्वावंति च णं लोगंसि' (सूत्र २, ३, १), 'सव्वं ति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ' (भग १, ६—पत्र ७७)।

सव्विड्ढि स्त्री [सर्वर्द्धि] संपूर्ण वैभव (णाया १, ८—पत्र १३१)।

ससिविवर देखो स-विवर = स-विवर।

ससिप्पभा स्त्री [शशिप्रभा] १ लता-विशेष, जिसके प्रभाव से शरीर की वक आदि सब चीज ओपति का काम करती है (पएह २, १—पत्र ६६)। २ वि कान्ति विशेष को प्राप्त (राज)।

ससम अक [सम्] श्वास लेना सांस लेना। ससइ (स्वप्न ६)। वकृ. ससंत (गाया १, १—पत्र ६३ गा ५४६, सुर १०, १६४, नाट—मृच्छ २२०)।

सस पुं [शश] खरगोश (गाया १, १—पत्र ७४ ६)। °इंध पुं [°चिह्न] चन्द्रमा (गउड)। °हर पुं [°धर] चन्द्रमा (गाया १, ११, सुर १६, ६० हे १३, ८४, कुमा, वज्जा १६, रंभा)।

ससंक पुं [शशाङ्क] १ चन्द्रमा, चांद (कप्प, सुर १६ ११, सुपा २, कप्पू, रंभा)। २ नृप विशेष (पउम ५, ४३, ८५, २)। °वंस पुं [°वंश] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)।

ससंक देखो स-संक = स-शङ्क।

ससंकिअ देखो स-संकिअ = स-शङ्कित।

ससग देखो ससग = शशाङ्क।

ससंवेयण देखो स-संवेयण = स्व-संवेदन।

ससक्ख वि [सत्साक्ष्य] साक्षीवाला (राय ४०)।

ससग पुं [शशक] देखो सस = शश (उत्त)।

ससण पुं [श्वसन] १ शुण्डा-दण्ड, हाथी की सूंढ (सद्दु २ ओघ)। २ वायु, पवन। ३ न श्वास (राज)।

ससत्ता देखो स-सत्ता = स-सत्त्वा।

ससरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ रजो-युक्त, धूलीवाला (आचा २, १, ६, ३, २, २, ३, ३३, आव ४)। २ पु. बौद्ध मत का साधु (सुपा ७८, ४३, मग्न)।

ससरीर वि [°] निविष्ट, पिया हुआ (दे ८, २)।

ससा स्त्री [स्वसृ] बहन, भगिनी (पिड ३९० ह ३, ३५ कुमा)।

ससि पुं [शशिन्] १ चन्द्रमा, चांद (सुज्ज २०—पत्र २९१, उत्त, कप्प, कुमा, पि ४५)। २ एक विद्याधरी का नाम (पउम ५ ९८)। ३ चन्द्र नाडी, वाम नाडी (सिरि ३६१)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। ५ छन्द विशेष (पिंग)। ६ एक राजा का नाम (उत्त)। ७ दक्षिण रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६)। °अंत पुं [°कान्त] चन्द्रकान्त मणि (गउड ७८)। °कला स्त्री [°कला] चन्द्र की कला, सोलहवां भाग (गउड)। °कंत देखो °अंत (कुमा, मण)। °पभ °पह पुं [°प्रभ] १ आठवें जिनदेव, भगवान् चन्द्रप्रभ। २ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५)। °पहा स्त्री [°प्रभा] एक रानी, कर्पूरमञ्जरी की माता (पउम ६, ६२, कप्पू)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] चन्द्रकान्त मणि (से ६, ६०)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्द्र की कला (सुपा ६०३)। °वक्कय न [°वक्कय] आभूपण विशेष (आप)। °वेग पुं [°वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी)। °सेहर पुं [°शेखर] महादेव, शिव (सुपा ३३)।

ससिअ न [श्वसित] श्वास, सांस (से १२, ३२)।

ससिण देखो ससि (कप्पू)।

ससिणिद्ध वि [सस्निग्ध, सस्निग्ध] स्नेह-युक्त (आचा २, १ ०, १०, कप्प)।

ससिरय न [ससिक्थ] आटा आदि से लिप्त हाथ या बरतन आदि का धोवन (पडि)।

ससिरिय } ससिरीय } देखो स-सिरिय = स-श्रीक।

ससिह देखो स-सिह = स-स्पृह स शिख।

ससुर पुं [श्वशुर] ससुर, पति और पत्नी का पिता (पउम १८, ८ हका ३०, कुमा, सुपा ३७७)।

ससूग देखो स-सूग = स-शूक।

ससेस देखो स-सेस = स-शेष।

ससोग } ससोगिल्ल } देखो स-सोग = स-शोक।

सस्स न [शस्य] १ क्षेत्र-गत धान्य (गा ६६६, महा, सुपा ३२)। २ वि प्रशंसनीय, श्लाघ्य (सुपा ३२)। देखो सास = शस्य।

सस्सवण वि [सश्रवण] सकर्ण, निपुण (सुपा ६४५)।

सस्सिय पुं [शस्यिक] कृषीवल, कृपक (राज)।

सस्सिरिअ देखो स-स्सिरिअ = स-श्रीक।

सस्सिरिली देखो सिरिस्सिरिली (उत्त ३६, ९८)।

सस्सिरीअ देखो स-स्सिरीअ = स-श्रीक।

सस्सू स्त्री [श्वश्रू] सास, पति या पत्नी की माता (प्राकृ ३८ सिरि ३५५)।

सह अक [राज्] शोभना, विराजना। सहइ (हे ४, १००, पाअ, कुमा, सुपा ४)।

सह अक [सह्] सहन करना। सहइ, सहति (उव महा, कुमा), सहइरे, सहेइरे (पि ४५८) वकृ. सहंत, सहमाण (महा, पट्)। सकृ. सहिअ (महा)। हेकृ. सहिउं, सोढुं (महा, वाल्वा १५५, १५७)। कृ सहिअव्व, सोढव्व (वाल्वा १५५, सुर १४, ८०, गा १८, कप्पू, उप ७२८ टी, वाल्वा १५७)।

सह सक [आ + ज्ञा] हुकुम करना आदेश करना, फरमाना। सहइ (वाल्वा १५७)।

सह वि [दे] १ योग्य, लायक (दे ८, १)। २ सहाय, मदद-कर्ता (सूअ १, ३, २, ६)।

सह वि [स्व] देखो स = स्व (आचा)। °देस पुं [°देश] स्वदेश, स्वकीय देश (सिंग)। °संबुद्ध वि [सबुद्ध] १ निज से ही ज्ञान को प्राप्त। २ पु जिन-देव (ओप)।

सह वि [सह] १ समर्थ, शक्तिमान् (पाअ, से ५, २३)। २ सहिष्णु, सहन-कर्ता (आचा)। ३ पुं युगलिक मनुष्य की एक जाति (दक, राज)। ४ अ साथ, संग (स्वप्न ३४, आचा जी ४३, प्रासू ३८)। ५ युगपत्, एक साथ (राज)। °आर पुं [°कार] १ आम का पेड़ (कण)। २ साथ मिलकर काम करना। ३ मदद, साहाय्य (हे १ १७७)। °आरि वि [°कारिन्] १ साहाय्य-कर्ता (पचा ११, १२)। २ कारण-विशेष (विसे ११६८, श्रावक २०९)। °गत, °गय वि [°गत] संयुक्त (पएण, २०—पत्र ६३७, उत्त)। °गारि, °गारिअ देखो °आर (धर्मसं ३०६, उप ४३२, उत्तर ७६)। °चर देखो

°अर (कुमा)। °चरण न [°चरण] सहचर, साथ रहना, मेलाप, 'रयणनिहाणेहिं भमउ सहचरणं' (श्रु ८४)। °ज पु [°ज] १ स्वभाव (कुमा, पिंग)। २ वि. स्वाभाविक (चेइय ४७१)। °जाय वि [°जात] एक साथ उत्पन्न (णाया १, ५—पत्र १०७)। °देव पु [°देव] १ एक पाण्डव, माद्री-पुत्र (धर्मवि ८१)। २ राजगृह नगर का एक राजा (उप ६४८ टी)। °देवा स्त्री [°देवा] ओषधि-विशेष (धर्मवि ८१)। °देवी स्त्री [°देवी] १ चतुर्थ चक्रवर्ती की माता (सम १५२ महा)। २ एक महौषधि (ती ५)। °धम्मआरिणी स्त्री [°धर्मचारिणी] पत्नी, भार्या (प्रति २२)। °पंसुकीलिअ वि [°पांशुक्रीडित] बाल-मित्र (सुपा २५८, णाया १, ५—पत्र १०७)। °य देखो °ज (चेइय ४८६, राज)। °यर वि [°चर] १ सहाय, साहाय्य-कर्ता। २ वयस्य, दोस्त। ३ अनुचर (पाअ, कुप्र २। अच्चु ६०, नाट—शकु ६१)। °यरी स्त्री [°चरी] पत्नी, भार्या (कुप्र ४५१, से ८, ६६)। °यार देखो °कार (पाअ, हे १, १७७)। °राग वि [°राग] राग-सहित (पउम १४, ३२)। °र देखो °कार (पउम ५३, ७६)।

सह° देखो सहा = सभा (कुमा)।

सहउत्थिया स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।

सहगुद्द पु [दे] घूक, उल्लू, पक्षि-विशेष (दे ८, १६)।

सहडामुह न [शकटामुख] वेताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सहण अ [दे] सह, साथ में (सून० चूर्णि० गा० २५७)।

सहण न [सहन] १ तितिक्षा, मर्षण। २ वि. सहिष्णु, सहन करनेवाला (स २६)।

सहर पुंस्त्री [शफर] मत्स्य, मछली (पाअ, गउड)। स्त्री °री (हे १, २३६, गउड)।

सहर वि [दे] साहाय्य-कर्ता, सहाय, 'न तस्स माया न पिया न भाया, कालम्मि तम्मि (?म्मी) सहरा भवंति' (व ८३)।

सहल वि [सफल] फल-युक्त, सार्थक (उप १०३१ टी, हे १, २३६, कुमा स्वप्न १६)।

सहरा देखो सहस्स (श्रा ४६, पि ६२, ६६)। °किरण पु [°किरण] सूर्य, रवि (सम्मत्त ७६)। °क्ख पु [°ाक्ष] १ इन्द्र (सुपा १३०)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

सहसक्कार पु [सहसाकार] १ विचार किए विना करना (आचा)। २ आकस्मिक क्रिया अकस्मात् करना (भग २५, ७—पत्र ६१६)। ३ त्रि विचार किए विना करनेवाला (आचा)।

सहसत्ति अ अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (पाअ, पाक ८१)।

सहसा अ [सहसा] अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी (पाअ, प्रासू १५१, भवि)। °वित्तासिय न [°वित्रासित] अकस्मात् स्त्री के नेत्र-स्थगन आदि क्रीडा (उत्त १६, ६)।

सहस्स पुन [सहस्र] १ संख्या-विशेष, दस सौ, १०००। २ वि हजार की संख्यावाला (जी २७, ठा ३ १ टी—पत्र ११६, प्रासू ४, कुमा)। ३ प्रचुर बहुत (कप्प, औपम, हे २, १९८)। °किरण पु [°किरण] १ सूर्य, रवि (सुपा ३७)। २ एक राजा (पउम १०, ३४)। °क्ख पु [°ाक्ष] इन्द्र, देवाधिपति (कप्प, उत्त ११, २३)। °णयण °नयण पु [°नयन] १ इन्द्र (उव, हम्मीर ५, महा)। २ एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६७)। °पत्त अ [°पत्र] हजार दल-वाला कमल (कप्प)। °पाग पुन [°पाक] हजार ओषधि से बनता एक प्रकार का तैल (णाया १, १—पत्र १६, ठा ३, १—पत्र ११७)। °रस्सि पुं [°रश्मि] सूर्य, रवि (णाया १, १—पत्र १७ भग, रयण ८३)। °लोयण पु [°लोचन] इन्द्र (स ६२२)। °सिर वि [°शिरस्] १ प्रभूत मस्तक-वाला। २ पु विष्णु (हे २, १९८)। °वत्त देखो °पत्त (से ६, ३८, सुपा ८६)। °सो अ [°शस्] हजार-हजार, अनेक हजार (श्रा १२) °हा अ [°धा] सहस्र प्रकार से (सुपा ५३)। °हुत्त अ [°कृत्वस्] हजार वार (प्राप्र, हे २, १५८)। देखो सहस, सहास।

सहस्सअंबवण न [सहस्राम्रवण] एक उद्यान, आम के प्रभूत पेडोंवाला वन (णाया, १, ८—पत्र १५२, अंत, उवा)।

सहस्सार पु [सहस्रार] १ आठवाँ देवलोक (सम ३५, भग, अंत)। २ आठवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक देव विमान (देवेन्द्र १३५)। °वडिंसय पुन [°ावतंसक] एक देव विमान (सम ३५)।

सहा स्त्री [सभा] समिति, परिषत् (कुमा, स १२६, ५१६, सुपा ३८८)। °सय वि [°सद] सभ्य, सदस्य (पाअ, स ३८५)।

सहा देखो साहा = शाखा (गा २३)।

सहाअ देखो स-हाअ = स्व-भाव।

सहाअ पु [सहाय] साहाय्य-कर्ता (णाया १, २—पत्र ८८, पाअ, से ३, ३, स्वप्न १०६ महा भग)।

सहाइ वि [साहायिन्] ऊपर देखो (सिरि ६७, सुपा ५६३)।

सहाइया स्त्री [सहायिका] मदद करनेवाली (उवा)।

सहार देखो सह-यार = सह-कार।

सहाव देखो स-हाव = स्व-भाव।

सहास देखो सहस्स (नवि)। °हुत्तो अ [°कृत्वस्] हजार वार (षड्)।

सहासय देखो सहा सय = सभा-सद।

सहि वि [सखि] मित्र, दोस्त (पाअ, उर २ ६)। देखो सही°।

सहि° देखो सही (कुमा)।

सहिअ वि [सोढ] सहन किया हुआ (से १, ५५, धात्वा १५५)।

सहिअ वि [सहित] १ युक्त, समन्वित (उव, कुमा, सुपा ६१)। २ हित-युक्त (सूअ १, २ २, २३)। ३ पु ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सहिअ पु [सभिक] द्यूत-कारक, जुआ खेलनेवाला (दे ६, ८२, पाअ सुपा ४८८)।

सहिअ देखो सहिअ = स्व-हित।

सहिअ देखो सह = सह्।

सहिअ) वि [सहृदय] १ सुन्दर चित्त-
सहिअय) वाला। २ परिणत बुद्धिवाला (हे १, २६६, दे १, १, काप्र ४२१)।

सहिआ देखो सही (महा)।

सहिज्ज वि देखो सहाअ = सहाय, 'हुति सहिज्जा विहुरे कुवियावि सहोयरा चेव' (सुपा ४२७, महा, कुप्र १२)। स्त्री °ज्जी (सुपा १६ टि)।

सहिण देखो सण्ह = श्लक्ष्ण (आचा २, ५, १, ७, स २६४, ३२६, ३३०)।

सहिण्हु, सहिर वि [सहिष्णु] सहन करने की आदतवाला (राज, पि ५६६)। स्त्री °री (गा ४७, पि ५६६)।

सही स्त्री [सखी] सहेली, भगिनी (स्वप्न १४१, कुमा)।

सही° देखो सहि। °वाय पु [°वाद] मित्रता-सूचक वचन (सूअ १, ९, २७)।

सहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्व-वश (पउम २०, १७, उत्त, दस ८, ६)।

सहु वि [सह] समर्थ, शक्तिमान् (ओघ ८७, ओघभा ६८, उवर १४२, वव ४)।

सहु (अप) देखो सव्व (सदि ३६)।

सहु (अप) अ [सह] साथ, संग (हे ४, ४१६, कुमा)।

सहेज्ज देखो सहिज्ज (महा)।

सहेर (अप) पु [शेखर] षट्पद छन्द का एक भेद (पिंग)।

सहेल वि [सहेल] हेला युक्त, अनायास होनेवाला, सरल, गुजराती में 'सहेलु' (प्रति ११)।

सहोअर वि [सहोदर] १ तुल्य, सदृश (से ६, ४)। २ पु सगा भाई (पाअ, काल)।

सहोअरी स्त्री [सहोदरी] सगी बहिन (राज)।

सहोढ वि [सहोढ] चोरी के माल से युक्त, स-मोष (पिंड ३८०, णाया १, २—पत्र ८६)।

सहोदर देखो सहोअर (सुपा २४०, महा)।

सहोवास वि [सहोपवास] एक-स्थान-वासी (दे २, ४८)।

साअड्ढ सक [कृष्] १ चास करना, कृषि करना। २ खींचना। साअड्ढइ (हे ४, १८७ षड्)।

साअड्ढिअ वि [कृष्ट] खींचा हुआ (कुमा ७, ३१)।

साअद (शौ) देखो सागद (अभि १०२, नाट—मृच्छ ८, पि १८५)।

साइ वि [शायिन्] सोनेवाला, शयन-कर्ता (सूअ १, ४, १, २८, आचा, दस ४, २६)।

साइ वि [सादि] १ आदि सहित, उत्पत्ति-युक्त (सम्म ६१)। २ न संस्थान-विशेष, शरीर की आकृति विशेष, जिस शरीर में नाभि से नीचे के अवयव पूर्ण और नाभि के ऊपर के अवयव हीन हो ऐसी शरीराकृति (सम १४९, अणु)। ३ कर्म-विशेष, सादि-संस्थान की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०)।

साइ न [साचि] १ सेमल का पेड़, शाल्मली वृक्ष। २ संस्थान विशेष, देखो साइ = सादि का दूसरा और तीसरा अर्थ (जीव १ टी—पत्र ४३)।

साइ पुस्त्री [स्वाति] १ नक्षत्र विशेष (सम २६, कप्प), 'जा साई तं च जलं पत्तविसेसेण अंतरं गरुयं' (प्रासू ३६)। २ पु भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि (णंदि ४६)। ४ हैमवत-वर्ष के शब्दापाती पर्वत का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०)।

साइ पु [सादिन्] घुडसवार (उप ७२८ टी)।

साइ पुस्त्री [साति] १ अच्छी चीज के साथ खराब चीज का मिश्रण, उत्तम वस्तु के साथ हीन वस्तु की मिलावट (सूअ २, २, ६५)। २ अविश्रम्भ, अविश्वास। ३ असत्य वचन, झूठ (पण्ह १, २—पत्र २६)। ४ सातिशय द्रव्य, अपेक्षा कृत अच्छी चीज (राज ११४)। °जोग पु [°योग] १ मोहनीय कर्म (सम ७१)। २ अच्छी चीज से हीन चीज की मिलावट (राय ११४ टी)। °संपओग पु [°संप्रयोग] वही अर्थ (राय ११४)।

साइ पुस्त्री [दे] केसर, 'सालतले सारिठिआ अच्छइ चंडि समाइदउमेहिं' (दे ८, २२)।

साइज्ज सक [स्वादय्, सात्मी + कृ] १ स्वाद लेना, खाना। २ चाहना, अभिलाष करना। ३ स्वीकार करना, ग्रहण करना। ४ आसक्ति करना। ५ अनुमोदन करना। ६ उपभोग करना। साइज्जइ, साइज्जामो (आचा, कस, कप्प—टी, भग १५—पत्र ६८०, औप), साइज्जेज्ज (आचा २, १, ३, २)। भवि साइज्जिस्सामि (आचा)। हेकृ साइज्जित्तए (औप)।

साइज्जण न [स्वादन] अभिष्वङ्ग, आसक्ति (विसे २६८५)।

साइज्जणया स्त्री [स्वादना] उपभोग, सेवा (ठा ३, ३ टी—पत्र १४७)।

साइज्जिअ वि [दे] अवलम्बित (दे ८, २६)।

साइज्जिअ वि [स्वादित] उपभुक्त (कप्प—टी)। २ उपभुक्त सम्बन्धी। स्त्री. °गा (कप्प)।

साइम वि [स्वादिम] पान, सुपारी आदि मुखवास (ठा ४, २—पत्र २१६, आचा, उवा, औप, सम २६)।

साइय वि [सादिक] आदिवाला (कम्म १, ६, नव ३६)।

साइय देखो सागय = स्वागत (सुर ११, २१७)।

साइय न [दे] सत्कार (दे ८, २५)।

साइयंकार वि [दे] स-प्रत्यय, विश्वस्त (पिंडभा ४२)।

साइरेग वि [सातिरेक] साधिक, सविशेष (सम २, भग)।

साइसय वि [सातिशय] अतिशयवाला (महा, सुपा ३६७)।

साई देखो सई = शची (इक)।

साउ वि [स्वादु] स्वादवाला, मधुर (पिंड १२८, उप ६७७, से २, १८, कुमा, हे १, ५)।

साउग वि [स्वादुक] स्वादिष्ठ भोजनवाला, मधुर भोजनवाला, 'कुलाइं जे धावइ साउगाइं' (सूअ १, ७, २३)।

साउज्ज न [सायुज्य] सहयोग, साहाय्य (अच्चु ६५)।

साउणिअ वि [शाकुनिक] १ पक्षि-घातक, पक्षियों के वध का काम करनेवाला (पण्ह १, १, २—पत्र २६, अणु १२६ टि विपा १, ८—पत्र ८३)। २ शकुन शास्त्र का जानकार (सुपा २६७, कुप्र ५)। ३ श्येन पक्षी द्वारा शिकार करनेवाला (अणु १२६ टि)।

साउय देखो साउग (राज)।

साउस वि [सायुष्] आयुवाला, प्राणी (ठा ३, १—पत्र ३८)।

साउल वि [सकुल] व्याप्त, भरपूर (सुर १०, १८)।

साउलय वि [साकुलक] आकुलता युक्त, व्याकुल, व्यग्र 'इदियसुहसाउलओ परिहिंडइ सोत्ति संसारे' (पउम १०२, १९७)।

साउल्ली स्त्री [दे] १ वस्त्राञ्चल (गा २६६)। २ वस्त्र, कपड़ा (गा ६०५)। देखो साहुली।

साउल्ल पु [दे] अनुराग, प्रेम (हे ८, २४, षड्)।

साएज्ज देखो साइज्ज। साएज्जइ (भवि १०, २)।

साएय न [साकेत] अयोध्या नगरी (इक, सुपा ५५०, पि ६३)। °पुर न [°पुर] वही अर्थ (उप ७२८ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही (पउम ४ ४)। देखो साकेय।

साएया स्त्री [साकेता] अयोध्या नगरी (पउम २०, १ णाया १, ८—पत्र १३१)।

सातवण न [सान्तपन] व्रत-विशेष (प्रबो ७३)।

साक देखो साग (दे ६, १३०)।

साकेय न [साकेत] १ नगर-विशेष, अयोध्या (ती ७)। २ वि गृहस्थ-संबन्धी। ३ न प्रत्याख्यान विशेष (पव ४)।

साकेय वि [साङ्केत] १ संकेत का, संकेत-सम्बन्धी। २ न प्रत्याख्यान का एक भेद (पव ४)।

साग पु [शाक] १ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७, दे १, २७)। २ तक्र-सिद्ध वड़ा आदि खाद्य, 'सागा सो तक्कसिद्ध जं' (पव २५६)। ३ शाक, तरकारी (पि २०२, ३६४)।

सागडिअ वि [शाकटिक] गाड़ीवान, गाड़ी चला कर निर्वाह करनेवाला (सुर १६, २२३ स २६२ उत्त ५, १४, श्रा १२)।

सागय न [स्वागत] १ शोभन आगमन, प्रशस्त आगमन (भग)। २ अतिथि सत्कार आदर बहु-मान (सुपा २५६)। ३ कुशल (कुमा)।

सागर पु [सागर] १ समुद्र (पण्ह १, ३—पत्र ४४, प्रासू १३४)। २ एक राज-पुत्र (उप ९३७)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक वणिक्—व्यापारी (उप ७२८ टी)। ५ सातवें बलदेव तथा वासुदेव के पूर्व भव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ६ पुन कूट-विशेष (इक)। ७ समय-परिमाण-विशेष, दश कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल (नव, ६, जी ३६, पत्र २०४)। ८ एक देव विमान (सम २)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव विमान (सम २)। °चंद पु [°चन्द्र] १ एक जैन आचार्य (काल)। २ एक व्यक्तिवाचक नाम (उप, पडि, राज)। °चित्त पुन [°चित्र] कूट विशेष (इक)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक जैन मुनि (सम १५३)। २ तीसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। ३ एक श्रेष्ठि-पुत्र (महा)। ४ एक सार्थवाह का नाम (विपा १, ७)। ५ हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा ४४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)। २ भगवान् विमलनाथजी की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)। °मित्त पु [°मित्र] हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा)। °वूह पु [°व्यूह] सैन्य की रचना विशेष (महा)। देखो सायर = सागर।

सागारिअ देखो सागारिय (पिंड ५६८, पव ११२)।

सागरोवम पुन [सागरोपम] समय-परिमाण विशेष, दस-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल (ठा २, ४—पत्र ९०, सम २, ८ ९, १०, ११, उत्त, पि ४४८)।

सागार वि [साकार] १ आकार-सहित, आकृतिवाला। २ विशेषांश को ग्रहण करने की शक्ति, विशेष ग्रहण, ज्ञान (ओप, भग, सम्म ६५)। ३ अपवाद-युक्त (भग ७, २—पत्र २९५, उप ७२८ टी)। °पस्सि वि [°दर्शिन्] ज्ञानवाला (पण्ण ३०—पत्र ७५८)।

सागार वि [सागार] गृह-युक्त, गृहस्थ (आचम)।

सागारि } वि [सागारिन्, °रिक] १
सागारिय } गृह का मालिक उपाश्रय का मालिक साधु को स्थान देनेवाला गृहस्थ, शय्यातर (पिंड ३१०, आचा २, २, ३, ५, सूअ १, ९ १६, ओघ १६९)। २ सूतक, प्रसव और मरण की अशुद्धि, अशौच (सूअ १, ९, १६)। ३ गृहस्थ से युक्त, 'सागारिए उवस्सए' (आचा २, २, १ ४, ५)। ४ न मैथुन (आचा १, ९, १, ६)। ५ वि शय्यातर गृहस्थ का, उपाश्रय के मालिक से सबन्ध रखनेवाला, 'सागारिय पिंड भुंजेमाणे' (सम ३९)।

सागेय देखो साकेय = साकेत (णाया १, ८—पत्र १३१ उप ७२८ टी)।

साड सक [शाटय्, शातय्] सड़ाना, विनाश करना। हेक्ृ साडेत्तए (विपा १, १—पत्र १६)।

साड पु [शाट, शात] १ शाटन, विनाश (विसे ३ २१)। २ शाटक, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर (पव ३८)। ३ वस्त्र, कपड़ा, 'एगसाडे अदुवा अचेले' (आचा, सुपा ११)।

साडअ } पुन [शाटक] वस्त्र, कपड़ा (सुपा
साडग } १५३, राज)।

साडण न [शाटन, शातन] १ विशरण, विनाश (विसे ३३१९, स ११९)। २ छेदन (सूअनि ७२)।

साडणा स्त्री [शाटना, शातना] खण्ड-खण्ड होकर गिराने का कारण, विनाश-कारण (विपा १, १—पत्र १६)।

साडिअ वि [शाटित, शातित] सड़ाकर गिराया हुआ, विनाशित (सुर ५, ३, दे ७, ८)।

साडिआ स्त्री [शाटिका] वस्त्र, कपड़ा (ओप, कप्प)।

साडिल्ल देखो साड = शाट, 'नियसियआजाणु-मतिणसाडिल्लो' (सुपा ११)।

साडी स्त्री [शाटी] वस्त्र, कपड़ा (कुप्र ४१२)।

साडी स्त्री [शकटी] गाडी। °कम्म पुन [°कर्मन्] गाडी बनाना, बेचना, चलाना आदि शकट-जीविका (उवा, श्रा २२)।

साडीआ देखो साडिआ, 'जह उल्ला साडीया आसु सुक्कइ विरल्लिया सती' (विसे ३०३२)।

साडोल्ल देखो साड (गाया १, १८—पत्र २३५)।

साण सक [शाणय] शाण पर चढाना, तीक्ष्ण करना। माणिज्जदि (शो) (नाट)।

साण पुस्त्री [श्वान] १ कुत्ता (पात्र, पण्ह १, १—पत्र ७ प्रासू ८, ६ हे १, ५२)। स्त्री. °णी (सुपा ११४)। २ पुं छन्द-विशेष (पिंग)।

साण वि [श्यान] निबिड, घनीभूत (गा ६८२)।

साण पुं [शाण, शान] शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यन्त्र (गउड २५१)।

साण वि [शाण] सन का बना हुआ, पाट का बना हुआ। स्त्री. °णी (दस ५, १, १८)।

साण देखो सासायण (कम्म ३, २१)।

साणइअ वि [दे शाणित] उत्तेजित (दे ८, १३)।

साणय न [शाणक] सन का बना हुआ वस्त्र (ठा ५, ३—पत्र ३३८, कप्प)।

साणि स्त्री [शाणी] सन का बना हुआ कपड़ा (दस ५, १, १८)।

साणिअ वि [दे] शान्त (षड्)।

साणी देखो साण = श्वान।

साणी स्त्री [शाणी] देखो साणि 'साणीपावारपिहियं' (दस ५, १, १८)।

साणु पुन [सानु] पर्वत पर का समान भूमि-वाला प्रदेश (पात्र, सुर ७, २१४, स ३६५)। °मंत पुं [°मत्] पर्वत (उप १०३१ टी)। °लट्ठिया स्त्री [°यष्टिका] ग्राम-विशेष (राज)।

साणुक्कोस वि [सानुक्रोश] दयालु (ठा ४, ४—पत्र २८५, पण्ह १, ४—पत्र ७२, स्वप्न ४६, ६४, प्रासू)।

साणुग्गग न [सानुद्गम] प्रात काल, प्रभात-समय (बृह १)।

साणुबंध वि [सानुबन्ध] निरन्तर, अविच्छिन्न प्रवाहवाला (उप ७७२)।

साणुबीय वि [सानुबीज] जिसमें उत्पादन-शक्ति नष्ट न हुई हो वह बीज (आचा २, १, ८, ३)।

साणुवाय वि [सानुवात] अनुकूल पवन-वाला (उव)।

साणुसय वि [सानुशय] अनुताप-युक्त (अभि १११ गउड)।

साणूर न [दे] देव-गृह, देव-मन्दिर (दे ८, २४)।

सात न [सात] १ सुख (ठा २, ४)। २ वि सुखवाला। स्त्री °ता (पण्ण ३५—पत्र ७८६)। °वेयणिज्ज न [°वेदनीय] सुख का कारण-भूत कर्म (ठा २, ४—पत्र ६६)।

साति देखो साइ = स्वाति, सादि, साचि, साति (सम २, ठा २, ३—पत्र ८०, ६—पत्र ३५७, जीव १—पत्र ४२, पण्ह १, २—पत्र २६, सम ७१)।

सातिज्जणया देखो साइज्जणया (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

साद पुं [साद] अवसाद, खेद (दे १, १६८)।

सादिव्व वि [सदैव] देवता-प्रयुक्त, देव-कृत (पव २६८)।

सादिव्व देखो साइव्व (पिंड ४२७)।

सादीअ देखो साइअ = सादिक (भग, ओघ)।

सादीणगंगा स्त्री [सादीनगङ्गा] आजीविक मत में उक्त एक परिमाण (भग १५—पत्र ६७४)।

सादेव्व न [सादिव्य] देव का अनुग्रह—सानिध्य, 'सादेव्वाणि य देवयाओ करेंति उच्चवयणे रयाए' (पण्ह २, २—पत्र ११४, उप ८०३)।

साद्दूलल्लट्ठ (अप) देखो सद्दूल-ल्लट्ठ (पिंग)।

साव देखो साह = शावय्। सावेंति (सुज्ज १०, १७)।

सावग देखो सावग (धर्मसं १४२ ३२३)।

साधम्म देखो साहम्म (धर्मसं ८७७)।

साधम्मिअ देखो साहम्मिअ (पउम ३५, ७४)।

साधारण देखो साहारण = साधारण (त्रि ८२)।

साधारणा स्त्री [सधारणा] वासना, धारणा, स्मरणशक्ति (णंदि १७६)।

साधीण देखो साहीण (नाट—मालती १११)।

सापद (शौ) देखो सावय = श्वापद (नाट—शकु ३०)।

साफल्ल } देखो साहल्ल (विसे २५३२,
साफल्लया } उप ७६८ टी, धर्मवि ६६, स ७०८, ७०६)।

साबाह वि [सावाध] आबाधा-सहित (उप ३३६ टी)।

साभरग पुं [साभरक] रुपया, सोलह आने का सिक्का (पव १ १)।

साभव्व देखो साहव्व (विसे १३६)।

साभाविक } देखो साहाविअ (सूअनि १६,
साभाविय } कप्प श्रावक २५८ टी)।

साम पुंन [सामन्] १ शत्रु को वश करने का उपाय-विशेष, एक राजनीति (गाया १, १—पत्र ११, प्रासू ६७)। २ प्रिय वाक्य (कुमा, महा १४)। ३ एक वेद-शास्त्र (भग, कप्प)। ४ मैत्री, मित्रता (विसे ३४८१)। ५ शर्करा आदि मिष्ट वस्तु, 'महुरपरिणाम साम' (आव १)। ६ सामायिक, संयम-विशेष (सबोध ४५), 'साम समं च सम्मं इगमवि सामाइयस्स एगट्ठा' (आव १)। °कोट्ठ पुं [°कोष्ठ] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एकीसवें जिनदेव (सम १५३)। देखो सामि-कुट्ठ।

साम पुं [श्याम] १ कृष्ण वर्ण, काला रंग। २ हरा वर्ण, नीला रंग। ३ त्रि. काला वर्ण-वाला। ४ हरा वर्णवाला (आचा, कुमा, सुर ४, ६४)। ५ पुं परमाधर्मी देवों की एक जाति (सम २८, सूअनि ७२)। ६ एक जैन मुनि, श्यामार्य (णंदि ४६)। ७ न तृण-विशेष, गन्ध-तृण (सूअ २, २, ११)। ८ पुन आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १०, ४—पत्र ५०१)।

सामइअ त्रि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (कुमा)।

सामइअ देखो सामाइअ (विसे २६२४, २६३०, २६३४, २६८६)।

सामइअ } पु [सामयिक] १ एक गृहस्थ
सामइग } का नाम (सूअनि १६७)। २ वि. समय-सम्बन्धी (पंच ५, १६६)। ३ सिद्धान्त का जानकार (पिंडभा ६)। ४ आगम आश्रित, सिद्धान्त-आश्रित (ठा ३, ३—पत्र १५१)। ५ बौद्ध विद्वान् (दसनि ४, ३५)।

सामइग देखो सामाइअ (विसे २७१६)।

सामइगि वि [सामायिकिन्] सामायिक-वाला (विसे २७१६)।

सामंत पुन [सामन्त] १ निकट, समीप, पास, 'तस्स ण अदूरसामंते' (णाया १, २—पत्र ७८, उवा, कप्प)। २ पुं अधीन राजा (महा, काल)। ३ अपने देश के अनन्तर देश का राजा, समीप देश का राजा (कप्प)।

सामंती स्त्री [दे] सम-भूमि (दे ८, २३)।

सामंतोवणिवाइय न [सामन्तोपनिपातिक] अभिनय का एक भेद (राय ५४)।

सामंतोवणिवाइया } स्त्री [सामन्तोपनिपा-
सामंतोवणीआ } तिकी] क्रिया-विशेष, चारों तरफ से इकट्ठे हुए जन-समुदाय में होनेवाली क्रिया—कर्म बन्ध का कारण (ठा २, १—पत्र ४०, नव १८)।

सामंतोवायणिय पुन [सामन्तोपपातनिक] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

सामक्ख देखो समक्ख, सभरिय चिय वयणं, 'जं तं अणरण्णमित्तसामक्खं। भणियं अईयकाले' (पउम १०, ८४)।

सामग देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामग्ग सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। सामग्गइ (हे ४, १९०)।

सामग्ग } न [सामग्र्य] सामग्री, सम्पूर्णता,
सामग्गिअ } सकलता (से ६, ४७, आचा २, १, १, ६, महा)।

सामग्गिअ वि [श्लिष्ट] आलिङ्गित (कुमा)।

सामग्गिअ वि [दे] १ चलित। २ अवलम्बित। ३ पालित, रक्षित (दे ८, ५३)।

सामग्गी स्त्री [सामग्री] १ समस्तता। २ कारण-समूह (सम्मत्त २२४, महा, कप्पू, रंभा)।

सामच्छ सक [दे] मन्त्रणा करना, पर्यालोचन करना। सक. सामच्छिऊण (पउम ४२, ७५)।

सामच्छ न [सामर्थ्य] समर्थता, शक्ति (हे २, २२ कुमा)।

सामच्छण देखो सामत्थण (राज)।

सामज्ज न [साम्राज्य] सार्वभौम राज्य, बडा राज्य (उप ३५७ टी)।

सामण } वि [श्रामण, °णिक] श्रमण-
सामणिअ } संबन्धी (राज)।

सामणिअ देखो सामण्ण = श्रामण्य (सूअ १, ७, २३, दस ७, ५६)।

सामणेर पु [श्रामण] श्रमण का अपत्य, साधु की संतान (सूअ १, ४, २, १३)।

सामण्ण न [श्रामण्य] श्रमणता, साधुपन (भग, दस २, १, महा)।

सामण्ण पु [सामान्य] १ अणपन्नी देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ (धर्मसं २५६)। ३ वि. साधारण (गा ८९१, ९६६, नाट—रत्ना ८१)।

सामत्थ देखो सामच्छ (दे)। सक. सामत्थेऊण (काल)।

सामत्थ देखो सामच्छ = सामर्थ्य (हे २, २२, कुमा, ठा ३, १—पत्र १०६, सुपा २८२, प्रासू १४४)।

सामत्थ } न [दे] पर्यालोचन, मन्त्रणा,
सामत्थण } 'काम हरामोत्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति गुज्झं' (पण्ह १, ३—पत्र ४६, पिंड १२१, बृह १)।

सामन्न देखो सामण्ण = श्रामण्य (भग, कप्प, सुर १, १)।

सामन्न देखो सामण्ण = सामन्य (उव, स ३२५, धर्मवि ५६, कम्म १, १०, ३१)।

सामय सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना (हे ४, १९३, षड्)।

सामय पु [श्यामाक] धान्य-विशेष, सांवा (हे १, ७१, कुमा)।

सामरि पुस्त्री [दे शाल्मलि] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड (दे ८, २, पाअ)।

सामरिस वि [सामर्ष] ईर्ष्यालु, असहिष्णु (सुर २, ६०)।

सामल वि [श्यामल] १ काला, कृष्ण वर्ण-वाला (से १, ५६, सुर ३, ६५, कुमा)। २ पु. एक वणिग—बनिया (सुपा ५५५)।

सामलइअ वि [श्यामलित] काला किया हुआ (से ८, ६६)।

सामलय वि [श्यामलक] १ काला। २ काला पानीवाला (से १, ५६)। ३ पु. वनस्पति-विशेष (राज)।

सामला स्त्री [श्यामला] १ कृष्ण वर्णवाली स्त्री। २ सोलह वर्ष की स्त्री, श्यामा (वज्जा ११२)।

सामलि पुस्त्री [शाल्मलि] सेमल का गाछ (सूअ १, ६, १८, उत्त, औप)।

सामलिअ देखो सामलइअ (सुर ४, १६७)।

सामली देखो सामला (गउड, गा १२३, २३८, ७६४, सुपा १८५)।

सामलेर पु [शाबलेय] काबरचित्र गौ—चित-कबरी गाय का वत्स (अणु २१७)।

साम स्त्री [श्यामा] १ तेरहवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ तृतीय जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ३ रात्रि, रात (सूअ २, १, ५६, से १, ५६, ओघ ३८७)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी—पटरानी (पउम १०२, १५९)। ५ प्रियंगु वृक्ष (पण्ण १—पत्र ३३, १७—पत्र ५२६, अणु ४)। ६ एक महौषधि (ती ५)। ७ लता-विशेष, साम-लता (औप)। ८ सोम लता (से १, ५६)। ९ नारी, स्त्री (से १, ५६, अणु १३६)। १० श्याम वर्णवाली स्त्री (कुमा)। ११ सोलह वर्ष की उम्रवाली स्त्री (वज्जा १०४) १२ सुन्दर स्त्री, रमणी (से १, ५६, गउड)। १३ यमुना नदी। १४ नील का गाछ। १५ गुग्गुल का गाछ। १६ गुडूची, गलो। १७ गुन्द्रा। १८ कृष्णा। १९ अम्बिका। २० कस्तूरी। २१ वटपत्री। २२ वन्दा की लता। २३ हरी पुनर्नवा। २४ पिप्पली का गाछ। २५ हरिद्रा, हलदी। २६ नील दूर्वा। २७ तुलसी। २८ पद्

२६ गो गैया। ३० छाया। ३१ शिंसपा, सीसम का पेड। ३२ पक्षि-विशेष (हे १, २६०)। °स पु [°ग] रात्रि-भोजन (सूअ २, १ ५६ आचा १, २, ५, १)।

सामाइअ न [सामायिक] संयम-विशेष, सम भाव, राग द्वेष रहित अवस्थान (विसे २६६, २६८०, २६८१, २६६०, कम्म, औप नव)।

सामाइअ वि [सामाजिक] समाज का, समूह से संबन्ध रखनेवाला, सभ्य (उत्त ११, २६, सुख ११, २६)।

सामाइअ त्रि [श्यामायित] रात्रि सदृश (गा ५६०)।

सामाग पु [श्यामाक] भगवान् महावीर के समय का एक गृहस्थ, जिसके ऋजुवालिका नदी के किनारे पर स्थित क्षेत्र में भगवान् महावीर को केवलज्ञान हुआ था (कप्प)। देखो सामाय = श्यामाक।

सामाजिअ देखो सामाइअ = सामाजिक (हास्य ११८)।

सामाण देखो समाण = समान, 'लोहो हलिद्दखंजणकद्दमकिमिरागसामाणो' (कम्म १, २०, पुप्फ २८७)।

सामाण पुन [सामान] एक देव विमान (सम ३३)।

सामाणिअ वि [सामानिक] १ संनिहित, निकट-वर्ती नजदीक में स्थित (विसे २६७६)। २ पु इन्द्र के समान ऋद्धिवाले देवों की एक जाति (सम ८७, ठा ३, १—पत्र ११६, उवा, औप, पउम २, ४१)।

सामाय अक [श्यामाय्] काला होना। सामाइ, सामायइ, सामायति (गउड)। वकृ सामायंत (गउड)।

सामाय देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामाय पु [सामाय] संयम विशेष, सामायिक (विसे १४२१, संबोध ४५)।

सामायारि वि [समाचारिन्] आचरण करनेवाला (उत्त)।

सामायारी स्त्री [सामाचारी] साधु का आचार—क्रिया कलाप (गच्छ १, १५, उव, उप ६६६)।

सामास देखो सामा-स = श्यामा-श।

सामासिय वि [सामासिक] समास-संबन्धी (अणु १४७)।

सामि } वि [स्वामिन्] १ नायक, अधि-
सामिअ } पति। २ ईश्वर, मालिक (सम ८६, विपा १, १ टी—पत्र ११, उव, कुमा प्रासू ८८)। स्त्री °णी (महा)। ३ पु प्रभु, भगवान् (कुमा १, ४, ७, ३७, सुपा ३५)। ४ राजा, नृप। ५ भर्ता, पति (महा)। °कुट्ठ पु [°कुष्ट] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक्कीसवें जिन देव (पव ७)। देखो साम-कोट्ठ। °त्त न [°त्व] मालकियत, आधिपत्य (सम ८६, स २२)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५६७ टी)।

सामिअ वि [दे] दग्ध, जलाया हुआ (दे ८, २३)।

सामिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (सुपा ३५)।

सामिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ अति संपत्ति। २ वृद्धि (प्राप्र, हे १, ४४, कुमा)।

सामिधेय न [सामिधेय] काष्ठ-समूह (अत ११, स ५६१)।

सामिली न [स्वामिलिन्] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

सामिसाल देखो सामि (पउम ८, ६८, सुपा २६३, भवि, सण)। स्त्री °ली (स २०६)।

सामिहेय देखो सामिधेय (स ३४०, ३८४, महा)।

सामीर वि [सामीर] समीर-संबन्धी (गउड)।

सामुंडुअ पु [दे] तृण-विशेष, वरु तृण, जिसकी कलम की जाती है (पाअ)।

सामुग्ग वि [सामुद्ग] संपुटाकारवाला, 'सामुग्गनिमग्गगूढजाणू' (औप)।

सामुच्छेइय वि [सामुच्छेदिक] वस्तु को एकान्त क्षणिक माननेवाला एक मत और उसका अनुयायी (ठा ७—पत्र ४१०, विसे २३८६)।

सामुदाइय वि [सामुदायिक] समुदाय का, समुदाय से संबन्ध रखनेवाला (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सामुदाणिय वि [सामुदानिक] १ भिक्षा-संबन्धी, भिक्षा से लब्ध (ठा ४, १—पत्र २१२, सूअ २, १, ५६)। २ भिक्षा, भैक्ष (भग ७, १ टी—पत्र २६३)।

सामुद पु [दे] इक्षु समान तृण विशेष (दे ८, २३)।

सामुद } वि [सामुद्र, °क] १ समुद्र-
सामुद्दय } सम्बन्धी, सागर का (णाया १, ८—पत्र १४५, भग ५, २—पत्र २११, दस ३, ८)। २ न. छन्द-विशेष (सूअनि १३६)।

सामुद्दिअ न [सामुद्रिक] १ शास्त्र-विशेष, शरीर पर के चिह्नों का शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र (श्रा १२)। २ शरीर की रेखा आदि चिह्न, 'सामुद्दियलक्खणाण लक्खपि' (संबोध ४२)। ३ वि सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता (कुप्र ५)।

सामुयाणिय देखो सामुदाणिय (उत्त १७, १६)।

साय देखो साइज्ज = स्वाद्, सात्मी + कृ। सायए (आचा २, १३, १), साएज्जा (वव १)।

साय देखो साग = शाक, 'भोत्तव्वं संजएण समियं न सायसूयाहियं' (पण्ह २, ३—पत्र १२३, पण्ण १—पत्र ३४)।

साय न [सात] १ सुख (भग, उव)। २ सुख का कारण-भूत कर्म (कम्म १, १२, ५५)। ३ एक देव-विमान (सम ३८)। °वाइ वि [°वादिन्] सुख-सेवन से ही सुख की उत्पत्ति माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५)। °वाहण पु [°वाहन] एक प्रसिद्ध राजा (काल)। °गारव पुन [°गौरव] १ सुख-शीलता (सम ८)। २ सुख का गर्व (राज)। °सुक्ख न [°सौख्य] अतिशय सुख (जीव ३)। देखो साव = सात।

साय पु [स्वाद] रस का अनुभव (विसे ७६६, पउम ३३, १०, उप ७६८ टी)।

साय न [दे] १ महाराष्ट्र देश का एक नगर। २ दूर (दे ८, ५१)।

साय अ [सायम्] १ सन्ध्या-समय, शाम (पाअ, गउड, कप्पू)। २ सत्य, सच्चा (ठा

१०—पत्र ४६५)। °कार पु [°कार] १ सत्य। २ सत्य-करण (ठा १०—पत्र ४६५)। °तण वि [°तन] सन्ध्या-समय का (विक्र १६)।

सायदूर न [दे] नगर-विशेष (दे ८ ५१ टी)।

सायदूला स्त्री [दे] केतकी, केवडे का गाछ (दे ८, २५)।

सायकुंभ न [शातकुम्भ] १ सुवर्ण, सोना। २ वि. सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०१)।

सायग पु [सायक] बाण, तीर (सुपा ६५१)।

सायग वि [स्वादक] स्वाद लेनेवाला (दस ४, २६)।

साअणा स्त्री [शातना] खण्डन, छेदन (सम ५८)।

सायणी स्त्री [शायनी, स्वापनी] मनुष्य की दस दशाओं में दसवीं—९० से १०० वर्ष की उम्रवाली—दशा (तदु १६)।

सायत्त वि [स्वायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र (स २७६)।

सायय देखो सागय (पाअ, स ५४८)।

सायर पुं [सागर] १ समुद्र (सुपा ५६, ८८, जी ४४, गउड, प्रासू ८७, १४४, प्राप्र, हे २, १८२)। २ ऐरवत वर्ष में होनेवाले चोथे जिन-देव (पव ७)। ३ मृग-विशेष। ४ सख्या-विशेष (प्राप्र)। ५ एक सेठ का नाम (सुपा २८०)। °घोस पु [°घोष] एक जैन मुनि जो आठवें वलदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (पउम २०, १९३)। °भद्द पु [°भद्र] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा (पउम ५, ४)। देखो सागर = सागर।

सायर वि [सादर] आदर युक्त (गउड, सुर २, २४५)।

सायार देखो सागार = साकार (सम्म ६४, पउम ६, ११८)।

सार सक [प्र + हृ] प्रहार करना। सारइ (हे ४, ८४)। वकृ सारंत (कुमा)।

सार सक [स्मारय्] याद दिलाना। सारे (वव १)।

सार सक [सारय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ प्रख्यात करना, प्रसिद्ध करना। ३ प्रेरणा करना। ४ उन्नत करना, उत्कृष्ट बनाना। ५ सिद्ध करना। ६ अन्वेषण करना, खोजना। ७ सरकाना, खिसकाना, एक स्थान से अन्य स्थान में ले जाना। सारए (सुपा १५४), सारंति, सारयइ (सूअ १, २, २, २६, २, ६, ४), 'सारेहि वीणं' (स ३०६), सारेह (सूअ १, ३, ३, ६)। कर्म 'हसाण मरेहि सिरि सारिज्जइ अह मराण हसेहिं' (गा ६५३, काप्र ८६२)। कवकृ सारिज्जत (सुपा ५७)।

सार सक [स्वरय्] १ बुलवाना। २ उच्चारण-योग्य करना। सारति (विसे ४६२)।

सार वि [शार] १ शबल, चितकबरा (पाअ, गउड ३७८, ५३०)। २ पु. सार, पासा, खेलने के लिए काठ आदि का चौपहल रगविरगा साँचा (सुपा १५४)।

सार पुन [सार] १ धन, दौलत (पाअ, से २, १, २६, सुज्ज २६७)। २ न्याय्य, न्याय-युक्त, 'एय खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण' (सूअ १, १, ४, १०)। ३ बल, पराक्रम (पाअ, से ३, २७)। ४ परमार्थ (आचानि २३९)। ५ प्रकर्ष (आचानि २४०)। ६ फल (आचानि २४१)। ७ परिणाम (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ८ रस, निचोड (कप्पू)। ९ एक देव विमान (देवेन्द्र १४३)। १० स्थिर अंश (से ३, २७, गउड)। ११ पु. वृक्ष-विशेष (पणण १—पत्र ३४)। १२ छन्द विशेष (पिंग)। १३ वि श्रेष्ठ, उत्तम, 'जह चंदो ताराणं गुणाण सारा तहेह दया' (धम्मो ६, से २, २६)। °कंता स्त्री [°कान्ता] षड्ज ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। °य वि [°द] सार देनेवाला (से ६, ४०)। °वई स्त्री [°वती] छन्द विशेष (पिंग)। °वत वि [°वत्] सार-युक्त (ठा ७—पत्र ३९४, गउड)। °वती देखो °वई (पिंग)।

सारइअ वि [शारदिक] शरद् ऋतु का (उत्त १०, २८, पणण १७—पत्र ५२९, ती ५, उवा)।

सारग वि [शार्ङ्ग] १ सींग का बना हुआ। २ न धनुष। ३ आर्द्रक, आदी (हे २, १००, प्राप्र)। ४ विष्णु का धनुष (हे २ १००, सुपा ३४८)। °पाणि पु [°पाणि] विष्णु (प्राकृ २७)।

सारंग पु [सारङ्ग] १ सिंह, मृगेन्द्र (सुर १, ११, सुपा ३४८)। २ चातक पक्षी (पाअ, से ६, ८२)। ३ हरिण, मृग (से ६, ८२, कप्पू)। ४ हाथी। ५ भ्रमर। ६ छत्र। ७ राजहंस। ८ चित्र मृग, चितकबरा हरिण। ९ वाद्य-विशेष। १० शंख। ११ मयूर। १२ धनुष। १३ केश। १४ आभरण, अलंकार। १५ वस्त्र। १६ पद्म, कमल। १७ चन्दन। १८ कपूर। १९ फूल। २० कोयल। २१ मेघ (सुपा ३४८)। °रूअक, °रूपक (अप) पुन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिंग)।

सारंग न [सारा*ग] प्रधान दल, श्रेष्ठ अवयव (पण्ह २, ५—पत्र १५०, सुपा ३४८)।

सारंगि पु [शार्ङ्गिन्] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)।

सारंगिका } स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष
सारंगिक्का } (पिंग)।

सारंगी स्त्री [सारङ्गी] १ हरिणी (पाअ)। २ वाद्य विशेष (सुपा १३२)।

सारंभ देखो सरंभ (ठा ७—पत्र ४०८)।

सारकल्लाण पु [सारकल्याण] वलयाकार वनस्पति-विशेष (पणण १—पत्र ३४)। देखो सालकल्लाण।

सारक्ख सक [स + रक्ष्] परिपालन करना, अच्छी तरह रक्षण करना। सारक्खइ (तदु १३)। वकृ सारक्खत, सारक्खमाण (पि ७६, उवा)।

सारक्खण न [सरक्षण] सम्यग् रक्षण, त्राण (णाया १, २—पत्र ६०, सूअ १, ११, १८, ओप)।

सारक्खणया स्त्री [सरक्षणा] ऊपर देखो (पि ७६)।

सारक्खि वि [सरक्षिन्] सरक्षण-कर्ता (पि ७६)।

सारक्खिअ वि [सरक्षित] जिसका सरक्षण किया गया हो वह (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

सारक्खेत्तु वि [संरक्षितृ] संरक्षण-कर्ता (ठा ७—पत्र ३८८)।

सारग देखो सारय = स्मारक (आचा, ओघ)।

सारज्ज न [स्वाराज्य] स्वर्ग का राज्य (विसे १८८३)।

सारण पु [सारण] १ एक यादव-कुमार (अंत ३, कुप्र १०१)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। ३ रावण का मन्त्री (से १२, ६८)। ४ रावण का एक सुभट (से १४, १३)। ५ न ले जाना, प्रापण (ओघ ४४८)।

सारण न [स्मारण] १ याद कराना (ओघ ४४८)। २ वि याद दिलानेवाला। स्त्री °णया, °णी (ठा १०—पत्र ४७३)।

सारणा न [स्मारणा] १ याद दिलाना (सुर १५, २४८ विचार २०८, काल)।

सारणि } स्त्री [सारणि, °णी] १ आलवाल, सारणी } नीक, कियारी (वण २६, कुप्र ५८)। २ परंपरा (सम्मत्त ७७)।

सारत्थ न [सारथ्य] सारथिपन (णाया १, १६, पउम २८, ३८)।

सारदा देखो सारया (रंभा)।

सारदिअ देखो सारइग (अभि ६६)।

सारमिअ वि [दे] स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८, २५)।

सारमेअ पु [सारमेय] श्वान, कुत्ता (उत ७६८ टी, कुप्र ३६३, सम्मत्त १८६, प्रासू १५८)।

सारमेई स्त्री [सारमेयी] कुत्ती, शुनी (सुर १८, १११)।

सारय वि [शारद] शरद् ऋतु का (सम १५३ पण्ह १, ४—पत्र ६८, विसे १४६६, अजि १३, कप्प, ओघ)।

सारय वि [सारक] १ श्रेष्ठ करनेवाला (से ३, ४८)। २ सारक सिद्ध करनेवाला (कप्प, से ६, ८)।

सारय वि [स्मारक] १ याद करनेवाला। २ याद दिलानेवाला (नव, आचा १, ८, ८, १, कप्प)।

सारय वि [स्वारत] आसक्त, खूब लीन (आचा १, ८, ४, १)।

सारय देखो सार-य।

सारया स्त्री [शारदा] सरस्वती देवी (सम्मत्त १४०)।

सारव देखो सार = सारय्। भवि सारविस्स (वव १)।

सारव सक [समा + रच्] साफ करना, ठीक-ठाक करना, दुरुस्त करना। सारवइ (हे ४, ६५), 'सारवह सयलसरणीओ' (सुर १५, ८२)। वकृ सारवेंत (गउड)। कवकृ. सारविज्जंत (सण)।

सारव सक [समा + रभ्] शुरूआत करना, प्रारम्भ करना। सारवइ (षड्)।

सारवण न [समारचन] समार्जन, साफ करना (ओघ ७३)।

सारविअ वि [समारचित] दुरुस्त किया हुआ, साफ किया हुआ (दे ८, ४९, कुमा, ओघभा ८)।

सारस पु [सारस] १ पक्षि विशेष (कप्प, ओप, स्वप्न ७०, कुमा, सण)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सारसी स्त्री [सारसी] १ षड्ज ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। मादा सारस-पक्षी। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

सारस्सय पु [सारस्वत] १ लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१, पि ३५८)।

सारह न [सारघ] मधु, शहद (पाअ, दे ८, २७)।

सारहि पु [सारथि] रथ हांकनेवाला (सम १, पाअ, महा)।

साराडि पुस्त्री [दे] पक्षि विशेष, शरारि पक्षी (दे ८, २४)।

साराय अक [सारय्] सार-रूप होना। वकृ साराअंत (उत ७२८ टी)।

साराव सक [सारय्] चिपकवाना, लगवाना, सील कराना। सकृ. 'साराविऊण लक्ख नीरवत्त तत्थ कय' (धर्मवि ५)।

सारि स्त्री [शारि] १ पक्षि-विशेष, मैना (गा ५५०)। २ पासा खेलने का रंग बिरंगा साँचा (गा १३८)। ३ युद्ध के लिए गज-पर्याण (दे ७, ६१, भवि)।

सारि देखो सारी (दे) (पाअ)।

सारिअ वि [सारिक] सारवाला, 'आरोग्ग-सारिअं माणुसत्तणं सच्चसारिओ धम्मो' (श्रा १८)।

सारिअ वि [सारित] चिपकाया हुआ, सील किया हुआ, 'तत्तो कुभीए निक्खिविऊण तीए सम्म मुह पुंछिऊण उवरि लक्खाए सारियाए' (सम्मत्त २२६)।

सारिआ } स्त्री [सारिका] मैना, पक्षि-सारिइआ } विशेष (गा ५८६, पाअ, दे ८, २४)।

सारिक्ख न [सादृक्ष्य] समानता, सरीखाई (हे २, १७, कुमा, धर्मसं ४२५, सुपा १८०, विसे ४६६)।

सारिक्ख } वि [सदृक्ष] समान, सरीखा, सारिच्छ } 'सारिक्खविप्पलंभा तह भेदे किमिह सारिक्ख' (धर्मसं ४२५, सुपा १७६, प्राप, हे १, ४४, कुमा, गा ३०, ६४)।

सारिच्छ देखो सारिक्ख = सादृक्ष्य (हे २, १७, सुर १२, १२२)।

सारिच्छिआ स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (दे ८, २७)।

सारिज्जंत देखो सार = सारय्।

सारिस देखो सरिस = सदृश (सक्षि २, वज्जा ११४)।

सारिस } न [सादृश्य] समानता, सरीखाई सारिस्स } (राज, नाट —रत्ना ७६)।

सारी स्त्री [दे] बृसी, ऋषि का आसन (दे ८, २२, ६१)। २ मृत्तिका, मिट्टी (दे ८, २२ टी)।

सारी स्त्री [शारी] देखो सारि = शारि, 'सज्जिओ कच्चणगुडासारीहिं हत्थी' (कुप्र १२०)।

सारीर वि [शारीर] शरीर का, शरीर संबन्धी (उव, सुर ४, ७५)।

सारीरिय वि [शारीरिक] ऊपर देखो (सुर १२, १०, सण)।

सारूवि } पु [सारूपिन्, °क] जैन साधु सारूविअ } के समान वेष को धारण करने-वाला रजोहरण-वर्जित स्त्री-रहित गृहस्थ,

साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला जैन पुरुष (सबोध ३१, ५४; बृह १ वव ४)।

सारूविअ न [सारूप्य] समान रूपता (सुअ २, ३, २ २१)।

सारेच्छ देखो सारिच्छ = सादृक्ष्य (गउड)।

सारोहि वि [सरोहिन] सरोहण-कर्ता (पि ७६)।

साल पु [साल, शाल] १ ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वृक्ष-विशेष, साखू का पेड (सम १५२; ओप; कुमा)। ३ वृक्ष, पेड। ४ किला, प्राकार (सुपा ४६७)। ५ एक राजा, 'साल महासाल-सालिभद्दो य' (पडि)। ६ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १ टी—पत्र १०)। ७ पुन एक देव-विमान (सम ३५)। °कोट्ठय न [°कोष्ठक] चैत्य-विशेष (राज)। °वाहण, °हण [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विचार ५३१; हे १ २११; प्राप; पि २४४; पड्; कुमा)।

साल देखो सार = सार (सुपा ३८४; णाया १, १६—पत्र १९६)। °इय वि [°चित] सार युक्त (णाया १, १६)।

साल न [शाला] घर, गृह, 'मायामहासालपि हु कालेण सयलमुच्छन्न' (सुपा ३८४)।

साल पु [श्याल] साला, वहू का भाई (मोह ८८; सिरि ६८८ भवि; नाट मृच्छ ३५)।

साल पु. देखो साहा = (दे), 'जम्म मालम्म भगसस्स', 'परित्तजीवे उ से साले' (पण्ण १—पत्र ३७; ठा ८—पत्र ४२९)। °मन वि [°वत्] शाखावाला (णाया १, १ टी—पत्र ४; ओप)।

साल° देखो सा ला = शाला। °गिह, °घर न [°गृह] १ भित्ति-रहित घर (निचू ८)। २ बरामदावाला घर (राय)।

सालइय देखो सारइय = शारदिक (णाया १, १६ पत्र १९६)।

सालंकायण न [शालङ्कायन] १ कोशिक गोत्र का एक शाखा-गोत्र। २ पुंस्त्री उस गोत्रवाला (ठा ७—पत्र ३९०)।

सालकी स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ८, २४)।

सालगगी स्त्री [दे] सीढ़ी, नि श्रेणी (दे ८, २६; कुप्र १२०)।

सालच वि [सालम्ब] अवलम्बन युक्त, आश्रय-युक्त (गउड; राज)।

सालकल्लाण पु [शालकल्याण] वृक्ष विशेष (भग ८ ३ टी—पत्र ३६०)। देखो सारकल्लाण।

सालकिआ स्त्री [दे] सारिका, मैना (पड्)।

सालग न [दे] १ वृक्ष की बाहरी छाल (निचू १५)। २ लम्बी शाखा (आव १)। ३ रस, 'अवसालग वा अवदालग वा भोत्तए वा पायए वा' (आचा २ ७, २, ७)।

सलणय न [सारणक] कढ़ी के समान एक तरह का खाद्य (भवि)।

सालभजी देखो सालहजी (धमवि १४७; कुमा)।

सालस वि [सालस] आलस्य-युक्त, आलसी (गउड; सुपा २५०)।

सालहजिया स्त्री [शालभञ्जिका, सालहजी °ञ्जी] काठ आदि की बनाई हुई पुतली (सुपा ४३, ५४)।

सालहिआ } स्त्री [दे] सारिका, मैना (पाअ; सालही } आ २८; दे ८, २४)।

साला स्त्री [शाला] १ गृह, घर। २ भित्ति-रहित घर (कुमा; उप ७२८ टी)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

साला स्त्री [दे] शाखा (दे ८, २२; पण्ह १, ३ पत्र ५४ दस ७, ३१; राय ८८)।

सालाइय देखो सलाग (राज)।

सालाणय वि [दे] १ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह। २ स्तुत्य, स्तुति-योग्य (दे ८, २७)।

सालाहण देखो साल हण = शाल-वाहन।

सालि पुन [शालि] १ व्रीहि, धान, चावल (सूअ २, २, ८१; गा ५०२; ६६१; कुमा; गउड)। २ वलयाकार वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। °भद्द पु [°भद्र] एक प्रसिद्ध श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (उव; पडि)। °भसेल, °भसेह पु [दे] धान के कणिश—बाल का तीक्ष्ण अग्रभाग (राज; उवा)। °रक्खिआ स्त्री [°रक्षिका] धान का रक्षण करनेवाली स्त्री, कलम-गोपी (पाअ)। °वाहण पुं [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (सम्मत्त १३७)। देखो साल-वाहण। °सच्छिय पुं [°सास्थिक] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)। °सित्थ पु [°सिक्थ] मत्स्य-विशेष (आरा ६३)।

°सालि वि [°शालिन] शोभनेवाला (गउड; कुमा)।

सालिआ स्त्री [शालिका] घर का कमरा, एण्हि मुवति घरमज्झिमसालिआसु' (कप्पू)।

सालिआ देखो सड्डिआ (राज)।

सालिणिआ } स्त्री [शालिनिका, °नी] १ सालिणी } शोभनेवाली, 'पीणसोणिथ-णसालिणिआहिं' (अजि २६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सालिभजिया स्त्री [शालिभञ्जिका] पुतली (पउम १६ ३७)।

सालिय पु [शालिक] तन्तुवाय, जुलाहा (निमि २६०१)।

सालिय वि [शाल्मलिक] शाल्मलि वृक्ष का, सेमल के गाछ का, 'एग सालियापोड बद्धो आमेलगो होइ' (उत्तनि ३)।

सालिस देखो सारिस = सदृश (णाया १, १—पत्र १३; ठा ४, ४—पत्र २६५, कप्प)।

सालिहीपिउ पु [शालिहीपितृ] एक जैन गृहस्थ (उवा)।

साली स्त्री [श्याला] पत्नी-भगिनी, भार्या की बहन (दे ६, १४८)।

सालुअ पुन [शालूक] जल-कन्द विशेष, कमल कन्द (आचा २, १, ८, ३; दस ५, २, १८)।

सालुअ न [दे] १ शम्बूक, शंख। सूखे यव आदि धान्य का अग्र भाग (दे ८, ५२)।

सालूर पुंस्त्री [शालूर] १ भेक, मेढक (पाअ; सुर ०, ७४; सुपा ९२; सार्ध १०६; सूक्त २०)। स्त्री °री (गा ३९१)। २ न छन्द-विशेष (पिंग)।

साव सक [श्रावय्] सुनाना। सावेंति (श्रोप)। वकृ. सावन, माविन, सावेंत (श्रोप, राज, पउम १०, ५७)।

साव पु [शाप] १ सराप, आक्रोश (श्रोप, कुमा, प्रति ६६)। २ शपथ, सोगव (प्राप्र, हे १, २३१)।

साव पु [शाव] बालक, बच्चा (समु १५६, प्राकृ ८५)।

साव पु [स्वाप] स्वपन, शयन, सोना (विसे १७५५)।

साव (अप) देखो सव्व = सर्व (हे ४, ४२०)।

सावइज्ज देखो सावएज्ज (कप्प)।

सावइत्तु वि [श्रावयितृ] सुनानेवाला (सूअ २, २ ७६)।

सावएज्ज न [स्वापतेय] धन, द्रव्य (कप्प)।

सावक्क न [सापत्न्य] सपत्नीपन, सोतिनपन (कुप्र २५५)।

सावक्क वि [सापत्न] सौतेली माँ की संतान (धमवि ८७)।

सावक्का स्त्री [सपत्नी] सोतेली मा, विमाता, गुजराती में 'सावकी', सावक्का सुयनयणी पासत्था गहिय वायए लेहं' (धर्मवि ८७)।

सावग पुन [श्रावक] १ जैन उपासक, अर्हद्-भक्त गृहस्थ (ठा १०—पत्र ४६६, उवा, णाया १, २—पत्र ६०)। २ ब्राह्मण। ३ वृद्ध श्रावक (णाया १ १५—पत्र १६३, अणु २८), तओ सागरचंदो कमलामेला य गहियाणुव्वयाणि सावगाणि सवुत्ताणि' (श्राक ३१)। ४ वि सुननेवाला। ५ सुनानेवाला (हे १, १७७)। °धम्म पु [°धर्म] प्राणातिपात-विरमण आदि बारह व्रत, जैन गृहस्थ का धर्म (णाया १, १८—पत्र २६१)।

सावज्ज वि [सावद्य] पाप युक्त, पापवाला (भग उत्र, ओघ ७६३, विसे ३४६६, सुर ८, ८२)।

सावण न [श्रावण] १ सुनाना (उप ७२८ टी सुपा २८८)। २ पु मास विशेष, सावन का महीना (पउम ६७, ७ कप्प, हे ४, ३७७, ३६६)। ३ वि श्रवणेन्द्रिय सम्बन्धी, श्रावण-प्रत्यक्ष का विषय जो कान से सुना जाय वह (धर्मसं १२८१)।

सावगा स्त्री [श्रावगा] सुनाना (कुप्र ६०)।

सावणी स्त्री [स्वापनी] देखो सावणी (ठा १०—पत्र ५१६)।

सावतेज्ज } देखो सावएज्ज (णाया १, १—
सावतय } पत्र ३६, श्रोप, सूअ २, १, ३६)।

सावत्त देखो सावक्क (दे १, २५, भवि, सिरि ४६, कप्पू)।

सावत्थिगा स्त्री [श्रावस्तिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प—पृ ८१)।

सावत्थी स्त्री [श्रावस्ती] कुणाल देश की प्राचीन राजधानी (णाया १, ८—पत्र १४०, उवा)।

सावन्न (अप) देखो सामन्न = सामान्य (भवि)।

सावय देखो सावग (भग, उवा, महा), 'एय कहेहि सुदर सवित्थर सच्चभावओ तुहय' (पउम ५३, २६)।

सावय पु [श्वापद] शिकारी पशु, हिंसक जानवर (णाया १, १—पत्र ६५, गउड, प्रासू १५४, महा, मण)।

सावय पु [दे] १ शरभ, श्वापद पशु विशेष (दे ८, २३)। २ बालों की जड में होनेवाला एक तरह का क्षुद्र कीट (जी १६)।

सावय पु [शावक] बालक, बच्चा, शिशु (नाट)।

सावरी स्त्री [शावरी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

सावसेस वि [सावशेष] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ, 'जाजाऊ सावसेसं' (उव)।

सावहाण वि [सावधान] अवधान-युक्त, सचेत (नाट, रंभा)।

साविअ वि [शापित] १ जिसको शाप दिया गया हो वह। २ जिसको सोगव दिया गया हो वह (णाया १, १—पत्र २६, भग १५—पत्र ६८२, स १२६)।

साविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ (भग १५—पत्र ६ २, णाया १, १—पत्र २६, पउम १०२, १५, ६६, मार्च १८)।

साविआ स्त्री [श्राविका] जैन गृहस्थ-धर्म पालनेवाली स्त्री (भग, णाया १, १६—पत्र २०४, कप्प, महा)।

साविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा-युक्त, अपेक्षा-वाला (श्रा ६, सबोध ४१)।

साविगा देखो साविआ (ठा ४—पत्र ४६६, णाया १, २—पत्र ६०, महा)।

साविट्ठी स्त्री [श्राविष्ठी] १ श्रावण मास की पूर्णिमा। २ श्रावण की अमावस (सुज्ज १०, ६, इक)।

सावित्ती स्त्री [सावित्री] ब्रह्मा की पत्नी (उप ५६७ टी, कुप्र ४०३)।

साविह पु [श्वाविध] श्वापद पशु विशेष, साही (दे २, ५०, ८, १५)।

सावेक्ख देखो साविक्ख (पउम १००, ११, उप ८७०)।

सास सक [शास्] १ सजा करना। २ सीख देना। ३ हुकुम करना। भूका सासित्था (कुप्र १४)। कर्म सासिज्जइ, सीसइ (नाट—मृच्छ २००, कुप्र ३६६)। वकृ सास°, सासंत (उत्त १ ३७, श्रौप, पि ३६७)। कृ. सासणीअ (नाट—विक्र १०४)। कवकृ. सासिज्जंत (उप १४६ टी)।

सास सक [कथय्] कहना। सासइ (षड्)। कर्म. सासइ (प्राकृ ७७)।

सास पु [श्वास] १ साँस (गा १४१, १४७)। २ रोग-विशेष, श्वास-रोग (णाया १, १३—पत्र १८१, उवा विपा १, १)। °हरा स्त्री [°धरा] जीवन धारण करनेवाली (दस° वृ० हारि० पत्र ६४, २)।

सास पुन [शस्य, सस्य] १ क्षेत्र-गत धान्य (पण्ह १, ४—पत्र ७२, स १३१), 'सासा अकिट्ठजाया' (पउम ३३, १४)। २ वृक्ष आदि का फल। ३ वि वध योग्य (हे १, ४३)। देखो सस्स = शस्य।

सासग पुन [सस्यक] रत्न की एक जाति, 'पुलगवइरिंदनीलसासगकक्केयणलोहियक्ख—' (कप्प)।

सासग पु [सासक] वृक्ष विशेष, बीयक नाम का पेड़ (णाया १, १—पत्र २४)।

सासण न [शासन] १ द्वादशांगी, बारह जैन अंग ग्रन्थ, आगम, सिद्धान्त, शास्त्र, 'अणु-सासणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११, अणु ३८, सम्म १, विसे ८६४)। २ प्रतिपादन (णदि, उप वृ ३७४)। ३ शिक्षा, सीख

(अणु)। ४ आज्ञा हुकुम (पण्ह २, १—पत्र १०१, महा)। ५ ग्रास, निर्वाह-साधन, 'जीवतसामिपडिमाए सासणं विअरिऊण भत्तीए' (कुलक २३)। ६ वि. प्रतिपादक, प्रतिपादन कर्ता (सम्म १, गण २२, णंदि ४८)। ७ प्रतिपाद्य, जिसका प्रतिपादन किया जाय वह (पण्ह २ १—पत्र ९९)। °देवी स्त्री [°देवी] शासन की अधिष्ठात्री देवी (कुमा)। °सुरा स्त्री [°सुरी] वही अर्थ (पचा ८, ३२)।

सासण देखो सासायण (कम्म २, २ ५, १४, ४ १८, २६, ५, ११, ६, ५६ पच २, ४२)।

सासणा स्त्री [शासना] शिक्षा (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सासणावण न [शासन] आज्ञापन (स ४६३)।

सासय वि [शाश्वत] नित्य, अविनश्वर (भग, पाअ, से २, ३, सुर ३, ५८, प्रासू १४१)।

सासय पु [स्वाश्रय] निज का आधार (से २, ३)।

सासव पु [सर्षप] सरसों (आचा २, १, ८, ३)। °नालिया स्त्री [°नालिका] कन्द-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।

सासवुल्ल पु [दे] कपिकच्छू का पेड़, कोंच, किवाँच, कवाछ (दे ८, २५)।

सासाण } न [सास्वादन] १ गुण-स्थानक-सासायण } विशेष, द्वितीय गुण स्थान (कम्म ४, १३, ४९)। २ वि द्वितीय गुण-स्थान मे वर्तमान जीव (सम्य १६, सम्म २६)।

सासि वि [श्वासिन्] श्वास-रोगवाला (तंदु ५०)।

सासित्तु (शौ) वि [शासितृ] शासन-कर्ता, शिक्षा-कर्ता (अभि २१४)।

सासिल्ल देखो सासि (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सासुया देखो सासू (सुर ६, १५७, ६, २३३, सिरि ९८६)।

सासुर न [श्वाशुर] श्वशुर गृह (सुर ८, १६४)।

सासुर (अप) देखो ससुर = श्वशुर (भवि)।

सासू स्त्री [श्वश्रू] सासू, पति तथा पत्नी की माता (पाअ, पउम १७, ४, गा ३३६)।

सासूय वि [सासूय] असूया-युक्त, मत्सरी (सुर ३, १६७, उप ७२८ टी)।

सासेरा स्त्री [दे] यान्त्रिक नाचनेवाली, यन्त्र की बनी हुई नर्त्तकी (राज)।

साह सक [कथय्, शास्] कहना। साहइ, साहेइ (हे ४, २, उव, काल, महा)। साहसु, साहेसु (महा)। भवि. साहिस्सइ, साहिस्सामो (महा, आचा १, ४, ४, ४)। वकृ. साहेंत, साहयंत (हेका ३८, काप्र ३०, सुर ६, १३२)। कवकृ साहिज्जंत, साहिप्पंत, साहिय्यंत, साहियमाण (चउ, सुर १, ३०, सुपा २०५, चउ, सुपा २६३, उप पृ ४२, चउ)। संकृ. साहिऊण, साहेत्ता (काल)। हेकृ साहिउं (काल, महा)। कृ साहियव्व, साहेअव्व (महा, सुर १, १५४)।

साह देखो सलाह = श्लाघ्। कृ. साहणीअ (प्राप)।

साह सक [साध्] १ सिद्ध करना, बनाना। २ वश मे करना। साहइ, साहेइ, साहेंति (भग, कप्प, उव, प्रासू २७, महा)। वकृ साहंत, साहित, साहेमाण (सिरि ९२८, महा सुर १३, ८२)। कवकृ. साहिज्जमाण (नाट)। हेकृ साहिउं (महा)। कृ साहणिज्ज, साहणीअ, साहियव्व (मा २६, पउम ३७, ३०, सुर ३, २८)।

साह पु [दे] १ वालुका, बालू। २ उलूक, उल्लू। ३ दधिसर, दही की मलाई (दे ८, ५१)। ४ प्रिय, पति (सक्षि ४७)।

साह (अप) देखो सव्व = सर्व (हे ४, ३६६, कुमा)।

साहंजण } पु [दे] गोक्षुर, गोखरू (दे साहंजय } ८, २७)।

साहंजणी स्त्री [साभाञ्जनी] नगरी विशेष (विपा १, ४—पत्र ५४)।

साहग वि [साधक] सिद्धि करनेवाला, साधना करनेवाला (णाया १, ८ टी—पत्र १५५, कप्प, नव २५, सुपा ८४, धर्मसं ७०, हि २०)।

साहग वि [शासक, कथक] कहनेवाला (सुर १२, ३०, स ३६१)।

साहज्ज न [साहाय्य] सहायता, मदद (विसे २६५८ गण ६, रयण १४, सिरि ३६८, कुप्र ९२)।

साहट्ट सक [सं + वृ] संवरण करना, समेटना। साहट्टइ (हे ४ ८२)।

साहट्टिअ वि [संवृत] समेटा हुआ, संहृत किया हुआ, पिंडीकृत (कुमा)।

साहट्टु अ [संहृत्य] समेट कर, संकुचित कर 'दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु' (कप्प), 'साहट्टु पाय रीएज्जा' (आचा २, ३, १, ६), वियडेण साहट्टु य जे सिणाई' (सूअ १, ७, २१)।

साहट्ठ वि [संहृष्ट] पुलकित (राज)।

साहण सक [सं + हन्] संघात करना, संहत करना, चिपकाना। साहणंति (भग)। कर्म साहन्नंति (भग १२, ४—पत्र ५६१)। कवकृ साहण्णंत, साहन्नंत (राज, ठा २,३—पत्र ६२)। संकृ साहणित्ता (भग)।

साहण न [साधन] १ उपाय, कारण, हेतु (विसे १७०६)। २ सैन्य, लश्कर (कुमा, सुर १०, १२१)। ३ वि सिद्ध करनेवाला, 'जह जीवाण पमाओ अणत्थसयसाहणो होइ' (हि १३, सुर ४, ७०)। स्त्री. °णा, °णी (हे ३ ३१, षड्)।

साहणण न [संहनन] संघात, अवयवों का आपस मे चिपकना (भग ८, ९—पत्र ३९५, १२, ४—पत्र ५ ७)।

साहणिअ पु [साधनिक] सेना-पति (सुपा २९२)।

साहणिज्ज देखो साह = साध्।

साहणी देखो साहण = साधन।

साहणीअ देखो साह = श्लाघ्, साध्।

साहण्णंत देखो साहण = सं + हन्।

साहत्थि अ [स्वहस्तेन] १ अपने हाथ से। २ साक्षात् (णाया १, ६—पत्र १६३, उवा)।

साहत्थिया } स्त्री [स्वाहस्तिकी] क्रिया-विशेष, साहत्थी } अपने हाथ से गृहीत जीव आदि द्वारा हिंसा करने मे होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १—पत्र ४०, नव १८)।

साहन्नत देखो साहण = सं + हन्।

साहम्म न [साधर्म्य] १ समान धर्म, तुल्य धर्म (सम्म १५३, पिंड १३६)। २ सादृश्य, समानता (विसे २५८६, ओघ ४०४, पंचा १८, ३५)।

साहम्मि वि [सधर्मिन, साधर्मिन्] समान धर्मवाला, एक-धर्मी (पिंड १३६, १८६, १८७) स्त्री °णी (आचा २, १, १, १२, महा)।

साहम्मिअ } वि [साधर्मिक] ऊपर देखो
साहम्मिग } (ओघ १५, ७७६, ओप उत्त २६, १, कस सुपा ११२ पंचा १६, २२)।

साहय देखो साहग = साधक (उप ३६०, स ८५, काल)।

साहय देखो साहग = शासक, कथक (सम्म १८३)।

साहय वि [संहृत] संक्षिप्त, समेटा हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ८८, औप, तंदु २०)।

साहर सक [सं + वृ] संवरण करना। साहरइ (हे ४, ८२)।

साहर सक [सं + हृ] १ संकोच करना संक्षेप करना, सकेलना, समेटना। २ स्थानान्तर में ले जाना। ३ प्रवेश कराना। ४ छिपाना। ५ व्यापार-रहित करना। साहरइ, साहरे साहरंति (भग ५, ४—पत्र २१८, कप्प उव, सूअ १, ८, १७, पि ७६)। साहरिज्ज (भग ५, ४)। भवि साहरिज्जिस्सामि (कप्प)। कवकृ साहरिज्जमाण (कप्प, ओप)। संकृ साहरित्ता (कप्प)। हेकृ साहरित्तए (भग ५, ४—पत्र २१८)।

साहरण न [संहरण] एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना, स्थानान्तर-नयन (पिंड ६०६ ६०७)।

साहरय वि [दे] गत-मोह, मोह-रहित (दे ८, २६)।

साहरिअ वि [संहृत] १ स्थानान्तर में नीत (सम ८६, कप्प)। २ अन्यत्र क्षिप्त (पिंड ५२०)। ३ संलीन किया हुआ, संकोचित (ओप)।

साहरिअ वि [संवृत] संवरण-युक्त (कुमा, पाअ)।

साहल्ल न [साफल्य] सफलता (ओत्र ७३)।

साहव देखो साहु = साधु, 'अह पेच्छइ साहवं तहिं वालिं' (पउम ९, ६१, ७७, ९४)।

साहव न [साधव] साधुता, साधुपन (पउम १, ९०)।

साहव्व न [स्वाभाव्य] स्वभावता, स्वभाव-पन (धर्मसं ६६)।

साहस न [साहस] १ बिना विचार किया जाता काम (उव, महा)। २ पु एक विद्याधर नरेन्द्र, साहस गति (पउम ८७, ८७)। °गइ पु [°गति] वही अर्थ (पउम ४७, ४५, महा)।

साहस देखो साहस्स = साहस्र (राज)।

साहसि वि [साहसिन्] साहस कर्म करने-वाला साहसिक, 'ते धीरा साहसिणो उत्तम-सत्ता' (उप ७२८ टी, किरात १४)।

साहसिअ वि [साहसिक] ऊपर देखो (ओप, सूअ २, २, ६२, चारु ३७, कुप्र ४१९)।

साहस्स वि [साहस्र] १ जिसका मूल्य हजार (मुद्रा, रुपया आदि) हो वह वस्तु (दसनि ३, १०, उव, महा)। २ हजार का परिमाणवाला, 'जोयणसयसाहस्सो वित्थिण्णो मेरुनाभीओ' (जीवस १८५)। ३ न. हजार (जीवस १८५)। °मल्ल पु [°मल्ल] व्यक्ति-वाचक नाम (उव)।

साहस्सिअ वि [साहस्रिक] १ हजार का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७, कप्प)। २ हजार आदमी के साथ लड़नेवाला मल्ल (राज)।

साहस्सी स्त्री [साहस्री] हजार, दस सौ, 'गिहत्थाण अणेगाओ साहस्सीओ समागया' (उत्त २३, १९, सम २६, उवा, ओप, उत्त २२, २३, हे ३, १२३)।

साहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (सम ५१)।

साहा अ [स्वाहा] देवता के उद्देश से द्रव्य-त्याग का सूचक अव्यय, आहुति-सूचक शब्द (ठा ८—पत्र ४२७, ओघभा ५७)।

साहा स्त्री [शाखा] १ एक ही आचार्य की संतति में उत्पन्न अमुक मुनि की सन्तान-परम्परा, अवान्तर संतति (कप्प)। २ वृक्ष की डाल, डाली (आचा २, १, ७, ६, उव, ओप, प्रासू १०२)। ३ वेद का एक देश (सुज ४, ६)। °भग पु [°भङ्ग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव (आचा २, १, ७, ६)। °मय, °मिअ, °मिग पु [°मृग] वानर, बन्दर (पाअ, ती २, सुपा २६२, ६१८)। °र, °ल वि [°वत्] १ शाखावाला, शाखा-युक्त (धम्म १२ टी सुपा ४७४)। २ पु. वृक्ष, पेड़ (सुपा ६३८)।

साहाणुसाहि पु [दे] शक देश का सम्राट्, बादशाह, 'पत्तो सगकूलं नाम कूलं, तत्थ जे सामंता ते साहिणो भण्णंति जो सामंता-हिवई नयलनरिंदवंदचूडामणी सो साहाणुसाही भण्णइ' (काल)।

साहार सक [सं + धारय्] अच्छी तरह धारण करना। साहारइ (भवि)।

साहार पु [सहकार] आम का गाछ 'होसइ किल साहारो साहारे अंगणम्मि वड्ढंते' (वज्जा १३०, सुपा ६३८)।

साहार पु [दे साधुकार] साहुकार, महा-जन (धम्म १२ टी)।

साहार पु [संधार सहकार] अच्छा आधार, सहारा, अवलम्बन, सहायता, मदद, उपकार, 'परचित्तरंजणेण न वेममेत्तेण साहारो' (उव, पुप्फ २२५), 'भुंजतो आहारं गुणोवयारसरीरसाहारं' (ओघ ५८३, स ४२५, वज्जा १३०, सण)।

साहार वि [साहकार] आम के गाछ से उत्पन्न, आम्र-वृक्ष-सम्बन्धी (कप्पू)।

साहार } पुन [साधारण] १ वनस्पति-
साहारण } विशेष, जहां एक शरीर में अनन्त जीव हो वह वनस्पति, कन्द आदि। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से साधारण-वनस्पति में जन्म होय वह कर्म (कम्म २, २८, पण्ह १, १—पत्र ८, कम्म १, २७, जी ८, पण्ण १—पत्र ४२)। ३ कारण (ग्रासू १)। ४ पु साधारण वनस्पति-काय का जीव (पण्ण १—पत्र ४२)। ५ वि सामान्य। ६ समान, तुल्य (पण्ह १—पत्र ४२)। ७ पुन उपकार, सहायता, मदद, 'साहारणट्ठा जे कइ गिलाणम्मि उवट्ठिए। पभू ण कुणई किंच' (सम ५१)। °सरीरनाम न [°शरीर-

नामन्] देखो ऊपर का दूसरा अर्थ (सम ६७)।

साहारण न [संधारण] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना, 'अभिक्कमे पडिक्कमे संकुचए पसारए कायसाहारणट्ठाए' (आचा १, ८, ८, १५)।

साहारण न [स्वाधारण] सहारा करना, उपकार करना (सम ५१)।

साहारण न [संहरण] संकोचन, समेटन (विसे ३०५२)।

साहारिअ वि [संधारित] ठीक तरह धारण किया हुआ (भवि)।

साहाविअ वि [स्वाभाविक] स्वभाव सिद्ध, नैसर्गिक, कुदरती (गा २२५, गउड, कप्प, सुपा ४६३)।

साहि पु [शाखिन्] वृक्ष, पेड (पाअ, सण, उप पृ १५३)।

साहि पु [दे] १ शक देश का सामन्त राजा, 'पत्तो सगकूल नाम कूल। तत्थ जे सामंता ते साहिणो भण्णंति' (भग)। २ देखो साही (दे ८, ६, से १२, ९२)।

साहि (अप) देखो सामि = स्वामिन् (पिंग)।

साहिअ वि [कथित, शासित, स्वाख्यात] कहा हुआ, उक्त, प्रतिपादित (सुपा २७९, सुर १, २०४, काल, पाअ, आचा)।

साहिअ वि [साधित] सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (अंत १३, सुर ६, ९९, भवि)।

साहिअ वि [साधिक] सविशेष, सातिरेक (कप्प, सुपा २७९)।

साहिअ वि [स्वाहित] स्वहित से विरुद्ध, निज का अहित (सुपा २७९)।

साहिकरण वि [साधिकरण] १ अधिकरण-युक्त (निचू १०)। २ कलह करता, झगडता (ठा ३—पत्र ३५२)।

साहिकरणि वि [साधिकरणिन्] अधिकरण-युक्त, शरीर आदि अधिकरणवाला (भग १६, १—पत्र ६९८)।

साहिगरण देखो साहिकरण (राज)।

साहिगरणि देखो साहिकरणि (भग १६, १ टी—पत्र ६९९)।

साहिज्ज देखो साहज्ज (अंत १३, सुपा २०५, गउड, कुप्र १३)।

साहिज्जंत देखो साह = कथय्।

साहिज्जमाण देखो साह = साध्।

साहिण (अप) त्रि [कथिन्] कहनेवाला (सण)।

साहित्त न [साहित्य] अलंकार-शास्त्र (सुपा १०३ ४५३)।

साहिप्पंत } देखो साह = कथय्।
साहिप्पमाण }
साहिप्पंत }

साहिर वि [शासितृ, कथयितृ] शासन करनेवाला, कहनेवाला (गउड)।

साहिलय न [दे] मधु, शहद (दे ८ २७)।

साही स्त्री [दे] १ रथ्या, मुहल्ला (दे ८, ६, से १२, ९२)। २ वर्तनी, मार्ग, रास्ता (पिंड ३३४)। ३ राजमार्ग (से १२, ९२)। ४ खिडकी, छोटा दरवाजा (ओघ ६२२)।

साहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्वतन्त्र (पाअ, गा १९४, चारु ४३, सुर ३, ५६, प्रासू ६९)।

साहीय देखो साहिअ = साधिक, 'तेत्तीस उयहिनामा साहीया हुंति अजयसम्माणे' (जीवस २२३)।

साहु पु [साधु] १ मुनि, यति (विसे ३६००, आचा, सुपा ३४२)। २ सज्जन, सत्पुरुष, 'साहवो सुअणा' (पाअ)। ३ वि सुन्दर, शोभन, अच्छा (आचा, स्वप्न ६७, कुप्र ४५९)। °कम्म न [°कर्मन्] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)। °कार, °क्कार पु [°कार] धन्यवाद, साधुवाद, प्रशंसा (वेणी ११४, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, पउम ५६, २३, से १३, १९, महा, भवि, विक्र १०९)। °नाह पु [°नाथ] श्रेष्ठ मुनि, आचार्य (सुपा ५४५)। °वाय पुन [°वाद] प्रशंसा, 'जाय च साहुवाय' (सिरि ३३४, स ३८५, सुपा ३७०)।

साहुई स्त्री [साध्वी] १ स्त्री-साधु, श्रमणी, यतिनी। २ सती स्त्री। ३ अच्छी (प्राकृ २८)।

साहुणी स्त्री [साध्वी] स्त्री-साधु, यतिनी (काल, उप १०१४, सुपा ९७, ३३२, सार्ध २६, कुप्र २१४)।

साहुलिआ } स्त्री [दे] १ वस्त्र, कपडा (दे
साहुली } ८, ५२, गा ६०९ अ, कप्पू, पाअ, सुपा २२०, २४६)। २ शिरोवस्त्र-खंड (रंभा)। ३ शाखा, डाली (दे ८ ५२ षड्, पाअ)। ४ भ्रू, भौं। ५ भुज, हाथ। ६ पिकी, कोयल। ७ सदृश, समान। ८ सखी, सहचरी (दे ८, ५२)। ९ मयूर-पिच्छ (स ५२३ टि)।

साहेज्ज देखो साहज्ज (दे ७, ८६, सुपा १५२, गउड महा, उवर २८)।

साहेज्ज वि [दे] अनुगृहीत (दे ८, २६)।

साहेमाण देखो साह = साध्।

सिअ देखो सिव = शिव (सक्षि १७)।

सिअ वि [श्रित] आश्रित (से ६, ४८ उत्त १३, १५, सूअ , ७, ८)।

सिअ देखो सिआ = स्यात् (भग श्रावक १२८, धर्मसं २५८, ११९२, गण ५, कुप्र १५९)।

सिअ वि [शित] तीक्ष्ण धारवाला (सुपा ४७५)।

सिअ वि [सित] अच्छी तरह प्राप्त (विसे ३४४५)।

सिअ पु [सित] १ शुक्ल वर्ण। २ वि श्वेत, सफेद, शुक्ल (ओघ, उव, नाट—विक्र ७१, सुपा ११, भवि)। ३ बद्ध, बँधा हुआ (विसे ३०२९)। ४ न. नाम-कर्म का एक भेद, श्वेत वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०)। °किरण पु [°किरण] चन्द्र, चांद (उप १३३ टी)। °गिरि पु [°गिरि] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर नगर (इक)। °ज्झाण न [°ध्यान] सर्व-श्रेष्ठ ध्यान, शुक्ल ध्यान (सुपा १)। °पक्ख पु [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (सुपा १७१)। °यर पु [°कर] चन्द्रमा (उप ७२८ टी)। °वड पु [°पट] पाल, जहाज का बादबान, 'सकोडिओ नियवडो पारद्धा देवयाण विन्नत्ती' (उप ७२८ टी)। °वास पु [°वासस्] श्वेताम्बर जैन (ती १५)।

सिअ (अप) देखो सिरी = श्री (भवि)। °वत वि [°मत्] लक्ष्मी-सपन्न, धनाढ्य (भवि)।

सिअअ देखो सिचय (गा ८७७, ८९८, कप्पू)।

सिअग पु [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१)।

सिअंबर पु [श्वेताम्बर] जैनों का एक सम्प्रदाय, श्वेताम्बर जैन (सुपा ६५८)।

सिअंडि पुस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (स २५६)। देखो सीअंडि।

सिआ देखो सिवा = शिवा (से १३, ६५)।

सिआ अ [स्यात्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा। २ अस्तित्व, सत्ता। ३ संशय, सन्देह। ४ प्रश्न। ५ अवधारण, निश्चय। ६ विवाद। ७ विचारणा (हे २, १०७)। ८ अनेकान्त, अनिश्चय, कदाचित् (सूअ १, १०, २३; वृह १, पएण ५—पत्र २३७)। °वाइ पु [°वादिन्] जिनदेव, अर्हन् देव (कुमा)। °वाय पु [°वाद] अनेकान्त दर्शन, जैन दर्शन (हे २, १०७ नड पड्)।

सिआ स्त्री [सिता] १ लेश्या विशेष, शुक्ल-लेश्या (पत्र १५२)। २ द्राक्षा आदि का संग्रह (राज)।

सिआल पु [शृगाल, सृगाल] १ पशु-विशेष, सियार, गीदड (णाया १, १—पत्र ६५)। २ दैत्य विशेष। ३ वासुदेव। ४ निष्ठुर। ५ खल, दुर्जन (हे १, १२८; प्राप्र)।

सिआली स्त्री [दे] डमर, देश का भीतरी या बाहरी उपद्रव (दे ८, ३२)।

सिआली स्त्री [शृगाली] मादा सियार (नाट, पि ५०)।

सिआलीस स्त्रीन [षट्चत्वारिंशत्] छेआलीस, चालीस और छ (विसे ३४६ टी)।

सिआसिअ पु [सितासित] १ बलभद्र, बलराम। २ त्रि श्वेत और कृष्ण (प्राप्र)।

सिइ पु [शिति] १ हरा वर्ण। २ वि हरा वर्णवाला। °वारण पु [°वारण] बलराम, बलभद्र (कुमा)।

सिइ स्त्री [दे शिति] सीढ़ी, नि श्रेणि (पिंड ४७३; वव १०)।

सिउ [illegible] देखो ससु (नंदि)।

सिउंटा स्त्री [दे असिकुण्ठा] साधारण वनस्पति विशेष (पएण १—पत्र ३५)।

सिअंतर त्रि [सितेतर] कृष्ण, काला (प्राप्र)।

सिक्कला देखो सक्कला (अच्चु ८०)।

सिखल न [दे] नूपुर (दे ८, १०; कुप्र ६८)।

सिखला देखो सक्कला (से १, १८; प्राप; नाट—मृच्छ ८६)।

सिग न [शृङ्ग] १ लगातार छब्बीस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। २—देखो सग = शृङ्ग (उवा; पाअ; राय ८; कप्प; उप ५६७ टी; सुपा ४३२; विक्र ८६, गउड; हे १, १३०)। °णाइय न [°नादित] प्रधान काज (पचभा ३)। °पाय न [°पात्र] सींग का बना हुआ पात्र (आचा २, ६, १, ५)। °माल पु [°माल] वृक्ष-विशेष (राज)। °वडण न [°वादन] ललाट से नमन (बृह ३)। °वेर न [°वेर] १ आर्द्रक, आदी। २ शुएठी, सोंठ (उत्त ३६, ६७; दस ५, १, ७०; भास ८ टी; पएण १—पत्र ३५)।

सिग त्रि [दे] कृश, दुर्बल (दे ८, २८)।

सिगय वि [दे] तरुण, जवान (दे ८ ३१)।

सिगरीडी देखो सिगिरीडी (राज)।

सिगा स्त्री [दे] फली, फलिया (भास ८ टी)।

सिंगार पु [शृङ्गार] १ नाट्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, 'सिंगारो णाम रसो रइसंजोगाभिलासजणणो' (अणु)। २ वेष, भूषण आदि की सजावट, भूषण आदि की शोभा (ओप; विपा १, २)। ३ लवङ्ग, लौंग। ४ सिन्दूर। ५ चूर्ण, चून। ६ काला अगरु। ७ आर्द्रक, आदी। ८ हाथी का भूषण। ९ अलंकार, भूषण (हे १, १२८; प्राप्र)। १० वि अतिशय शोभावाला, 'तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकियविभूसियं चिट्ठइ' (भग)।

सिंगार सक [शृङ्गारय] सिंगार करना, सजावट करना। सिंगारइ (भवि)।

सिंगारि वि [शृङ्गारिन्] सिंगार करनेवाला, शोभा करनेवाला (सिरि ८४४)।

सिंगारिअ वि [शृङ्गारित] सिंगारा हुआ, सजाया हुआ (सिरि १५८)।

सिंगारिअ वि [शृङ्गारिक] शृङ्गार-युक्त (उवा)।

सिंगि वि [शृङ्गिन्] १ सींगवाला (सुव ८, १३; दे ७, १६)। २ पु. मेष, भेंट। ३ पर्वत। ४ भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत। ५ मुनि-विशेष। ६ वृक्ष (अणु १४२)।

सिंगिणी स्त्री [दे] गो, गैया (दे ७, ३१)।

सिंगिया स्त्री [शृङ्गिका] पानी छिड़कने का पात्र विशेष, पिचकारी (सुपा ३२८)।

सिंगिरीडी स्त्री [शृङ्गिरीटी] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

सिंगी स्त्री [शृङ्गी] देखो सिंगिया (सुपा ३२८)।

सिंगेरिवम्म न [दे] वल्मीक (दे ८, ३३)।

सिंघ सक [शिङ्घ्] सूँघना। सिंघइ (कुप्र ८४)। सकृ सिंघिउ (धर्मवि ६४)। हेकृ सिंघेउ (धर्मवि ६४)।

सिंघ देखो सिंह (हे १, २६; विपा १, —पत्र ५५; पड्)।

सिंघल देखो सिंहल (सुर १३, २६; सुपा १५; पि २६७)।

सिंघाडग } पुन [शृङ्गाटक] १ सिंघाड़ा, सिंघाडय } पानी फल (पएण १—पत्र ३६; आचा २, १, ८, ५)। २ त्रिकोण मार्ग (पएह १, ३—पत्र ५४; ओप; णाया १, १ टी—पत्र ३; कप्प)। ३ पु राहु (सुज्ज २०)।

सिंघाण पुन [शिङ्घाण] १ नासिका-मल, श्लेष्मा (ठा ५, ३—पत्र ३४२; सम १०; पएह २, ५—पत्र १४८; ओप; कप्प; कस; दस ८, १८; पि २६७)। २ पु. काला पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

सिंघासण देखो सिंहासण (स ११७)।

सिंघुअ पु [दे] राहु (दे ८, ३१)।

सिंच सक [सिच्] सींचना, छिड़कना। सिंचइ (हे ४, ९६; महा)। भूका. सिंचिअ (कुमा)। भवि सिंचिस्स (पि ५२६)। कृ सिंचेयव्व (सुर ७, २३५)। कवकृ सिंचंत, सिंचमाण (पि ५४२; उप २११ टी; स ३८६)।

सिंचण न [सेचन] छिड़काव (सूअ १, ७, १, २१; मोह ३१)।

सिंचाण पु [दे] पक्षि विशेष, श्येन पक्षी, बाज, गुजराती में 'सिंचाणो' (सण)।

सिचाविअ वि [सेचित] छिडकवाया हुआ (उप १०३१ टी, स २८०, ५४६)।

सिचिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ, छिडका हुआ (कुमा)।

सिंज अक [शिञ्ज्] अस्फुट आवाज करना। वकृ सिंजत (सुपा ५०, सण)।कृ. सिंजि-अव्व (गा ३६२)।

सिंजण न [शिञ्जन] १ अस्पष्ट शब्द, भूषण की आवाज। २ वि अस्पष्ट आवाज करने-वाला (सुपा ४)।

सिंजा स्त्री [शिञ्जा] भूषण का शब्द (कप्पू, प्राप)।

सिंजिणी स्त्री [शिञ्जिनी] धनुर्गुण, धनुष की डोरी (गा ५४)।

सिंजिय न [शिञ्जित] अव्यक्त आवाज (उप १०३१ टी, कप्पू)।

सिंजिर वि [शिञ्जितृ] अस्फुट आवाज करने-वाला, 'सद्दाल सिंजिर करणिर' (पाअ)।

सिंझ पुन [सिध्मन्] कुष्ठ रोग-विशेष (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

सिंड वि [दे] मोटित, मोडा हुआ (दे ८, २६)।

सिंढ पु [दे] मयूर, मोर (दे ८, २०)।

सिंढा स्त्री [दे] नासिका-नाद, नाक की आवाज (दे ८, २६)।

सिंढाण न [दे] विमान (उप १४२ टी)।

सिंदी स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का गाछ (दे ८, २६, पाअ, आवम)।

सिंदीर न [दे] नूपुर (दे ८, १०)।

सिंदु स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (दे ८, २८)।

सिंदुरय न [दे] १ रज्जु, रस्सी। २ राज्य (दे ८, ५४)।

सिंदुवण पु [दे] अग्नि, आग (दे ८, ३२)।

सिंदुवार पु [सिन्दुवार] वृक्ष-विशेष, निर्गुंडी, सम्हालु का गाछ (गउड, कुमा, उप १०१६, कुप्र ११७)।

सिंदूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।

सिंदूर न [सिन्दूर] १ सिंदूर, रक्त वर्ण, चूर्ण-विशेष (पउम २, ३८, गउड, महा)। २ पु. वृक्ष-विशेष (हे १, ८५, सक्षि ३)।

सिंदूरिअ वि [सिन्दूरित] सिन्दूर-युक्त किया हुआ (गा ३००)।

सिंदोल न [दे] खजूर, फल-विशेष (पाअ)।

सिंदोला स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का पेड (दे ८, २९)।

सिंधव न [सैन्धव] १ सिंध देश का लवण, सेंधा नोन (गा ६७६, कुमा)। २ पु घोडा (हे १, १४९)।

सिंधविया स्त्री [सैन्धविका] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

सिंधु स्त्री [सिन्धु] १ नदी-विशेष, सिन्धु नदी (धर्मवि ८३, ज ४—पत्र २९० सम २७)। २ नदी, 'सरिआ तरंगिणी निण्णया नई आवगा सिंधू' (पाअ)। ३ सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (ज ४)। ४ पु समुद्र, सागर (पाअ, कुप्र २२, सुपा १, २६४)। ५ देश विशेष, सिन्ध देश (मुद्रा २४२, भवि, कुमा)। ६ द्वीप विशेष। ७ पद्म-विशेष (ज ४—पत्र २९०)। °णद न [°नद] नगर-विशेष (पउम ८, १६८)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र (समु १५१) °देवी स्त्री [°देवी] सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (उप ७२८ टी)। °देवीकूड पु [°देवीकूट] क्षुद्र हिमवंत पर्वत का एक शिखर (ज ४—पत्र २९५) °प्पवाय पुन [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहा पर्वत से सिन्धु नदी गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °राय पु [°राज] सिन्ध देश का राजा (मुद्रा २४२)। °वइ पु [°पति] १ समुद्र, सागर (स २०२)। २ सिन्ध देश का राजा (कुमा)। °सोवीर पु [°सौवीर] सिंधु नदी के समीप का देश-विशेष (भग १३, ६, महा)।

सिंधुर पु [सिन्धुर] हस्ती, हाथी (सुपा ८३, सम्मत्त १८७, कुमा)।

सिंप देखो सिंच। सिंपइ (हे ४, ९६)। कर्म सिंप्पइ (हे ४, २५५) कवकृ सिंप्पंत (कुमा ७, ६०)।

सिंपिअ देखो सिंचिअ (कुमा)।

सिंपुअ वि [दे] पागल, भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ८, ३०)।

सिंबल पु [शाल्मल] सेमल का गाछ (रंभा २०)।

सिंबलि देखो सबलि = शाल्मलि (हे १, १४६, ८, २३, पाअ, सुर १४, ४३, पि १०९, सया ८५, उत्त १६, ५२)।

सिंबलि स्त्री [शिम्बलि, शिम्बा] कलाय आदि की फली, छीमी, फलिया (भग १५—पत्र ६८०, आचा २, १, १०, ३, दस ५, १, ७३)। °थालग पुन [°स्थालक] १ फली की थाली। २ फली का पाक (आचा २, १, १०, ३)। देखो सबलि।

सिंबलिका स्त्री [सिम्बलिका] टोकरी (जिन-दत्ताख्यान)।

सिंबा स्त्री [शिम्बा] फली छीमी 'कोसी समी य सिंबा' (पाअ)।

सिंबाडो स्त्री [दे] नाक की आवाज (दे ८, २९)।

सिंबीर न [दे] पलाल, घास (दे ८, २८)।

सिंभ पु [श्लेष्मन्] श्लेष्मा कफ (हे २, ७४, तदु १४ महा)।

सिंभलि देखो सिंबलि = शाल्मलि (सुपा ८४)।

सिंभि वि [श्लेष्मिन्] श्लेष्म-युक्त, श्लेष्म-रोगी (सुपा ५७६)।

सिंभिय वि [श्लैष्मिक] श्लेष्म-सम्बन्धी (तदु १६, गाया १, १—पत्र ५०, औप, पि २६७)।

सिंह पु [सिंह] १ श्वापद पशु विशेष, मृग-राज, केसरी (प्रासू १५४, १६९)। २ एक राज-कुमार (उप ९८६ टी)। ३ एक राजा (रयण २६)। ४ भगवान् महावीर का एक शिष्य, मुनि-विशेष (राज)। ५ व्रत-विशेष, त्रिविधाहार को संलेखना—परित्याग (संबोध ५८)। °अवलोअण (अप) न [°अवलोकन] १ सिंह की तरह पीछे देखना। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °उर न [°पुर] पंजाब देश का एक प्राचीन नगर (भवि)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। °केसर पु [°केसर] एक प्रकार का उत्तम मोदक—लड्डू (उप २११ टी)। °दत्त पु [°दत्त] १ व्यक्ति-वाचक नाम। २ वि सिंह ने दिया हुआ (हे २, ९२)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार (मोह १३)।

°विलोक पु [°विलोक] १ सिंह की तरह पीछे की तरफ देखना। २ छन्द विशेष (पिंग)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, राजासन, राज-गद्दी (महा)। देखो सीह।

सिहल पु [सिंहल] १ देश विशेष, सिंहल-द्वीप, लंका द्वीप (इक; सुर १३, २५, २७)। २ पुंस्त्री सिंहल-द्वीप का निवासी (ओप)। स्त्री °ली (ओप; णाया १, १—पत्र ३७)।

सिहलिआ स्त्री [दे] शिखा चोटी (पाअ)।

सिहिणी स्त्री [सिंहिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिंहीभूय न [सिंहीभूत] व्रत-विशेष, चतुर्विध आहार की सलेखना—परित्याग (सबोध ५८)।

सिकता } स्त्री [सिकता] बालू रेत (अणु सिकया } २७० टी; पउम १२, १७; विसे १७३६)।

सिक पु [सृक] हाथ का अन्त भाग (दे ?, ८)।

सिकग पुन [शिक्यक] सिकहर, सीका, छीका, रस्सी की बनी डोलनुमा एक चीज जो छत में लटकायी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती हैं जिससे उसमें चीटियाँ न चढ़ें और उसे बिल्ली न खाय (राय ६३; उवा; निर १, श्रावक ६३ टी)।

सिकड पुन [दे] खटिया, मचिया; 'कोव-भवणम्मि जरजिण्णसिकडे पडइ जरियव्व' (सुपा ६)।

सिकय देखो सिकग (राय ६३; श्रावक ६३ टी; न ५८३)।

सिकरा स्त्री [शर्करा] खड, टुकड़ा; 'सय-सिकरो' (स ६६३)।

सिक्करिअ न [सीत्कृत] सुरत से उत्पन्न आवाज (गा ३६२)।

सिक्करिआ स्त्री [दे सीकरी] जहाज का आवरण विशेष (सिरि ३८७)।

सिक्कार पु [सीत्कार] १ सुरत की आवाज (गा ७२०; भवि; सण; नाट—मृच्छ १३६)। २ पानी की छिलाहट, 'कुंतनिहिणिभिन्नरि-पहगुत्तसिक्कारवम्मि समरम्मि' (सुमि १६)।

सिक्किआ स्त्री [शिक्या, शिक्यिका] रस्सी की बनी हुई एक चीज जो चढ़ने के काम में आती है (सिरि ४२४)।

सिक्ख सक [शिक्ष्] सीखना, पढ़ना, अभ्यास करना। सिक्खइ (गा ४७७, ५२४), सिक्खतु सिक्खह (गा ३६२; गुण ४)। भवि सिक्खिस्सामि (स्वप्न ६७)। वकृ सिक्खंत, सिक्खमाण (नाट—मृच्छ १४१; पि ३६७, सूअ १, १४, १)। संकृ. सिक्खिअ (नाट—रत्ना २१)। हेकृ सिक्खिउं (गा ८६२)।

सिक्ख देखो सिक्खाव। वकृ सिक्खयंत (पउम ८२, ६२)। कृ सिक्खणीअ (पउम ३२, ५०)।

सिक्खग वि [शिक्षक] शिक्षा-कर्ता, 'दुक्खाण सिक्खग त परिणदमिह मे दुक्कयं' (रंभा)।

सिक्खग पु [शैक्षक] नूतन शिष्य (सूअनि १२८)।

सिक्खण न [शिक्षण] १ अभ्यास, पाठ (कुप्र २३०)। २ सीख, उपदेश (सुर ८, ५१)। ३ अध्यापन, पाठन (सिरि ७८१)।

सिक्खव देखो सिक्खाव। सिक्खवेसु (गा ७५०, ६४८)। कवकृ सिक्खविज्जमाण (सुपा ३१५)। कृ सिक्खवियव्व (सुपा २०७)।

सिक्खवअ वि [शिक्षक] शिक्षा देनेवाला, पढ़ानेवाला, शिक्षक (प्राकृ ६१)।

सिक्खविअ वि [शिक्षित] १ सिखाया हुआ, पढ़ाया हुआ (गा ३५२)। २ न शिक्षा देना, अभ्यास कराना, अध्यापन (सुपा २५)।

सिक्खा स्त्री [शिक्षा] १ सजा, दण्ड (कुप्र ११०)। २ वेद का एक अङ्ग, वर्णों के उच्चारण सम्बन्धी ग्रंथ विशेष, अक्षरों के स्वरूप को बतलानेवाला शास्त्र, 'सिक्खाया-गरणछंदकप्पछंदो' (समवि ३८; ओप; कप्प; अत)। ३ शास्त्र और आचार सम्बन्धी शिक्षण, अभ्यास, सीख, सिखाई, उपदेश (ओप; बृह १; महा; कुप्र १६७)। °वय न [°व्रत] व्रत-विशेष, जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत (ओप; महा; सुपा ५४०)। °पय न [°पद] शिक्षा-स्थान (आव)।

सिक्खा (अप) स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिक्खाण न [शिक्षाण] आचार-सम्बन्धी उपदेश देनेवाला शास्त्र (कप्प)।

सिक्खाव सक [शिक्षय्] सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना। सिक्खावेइ (पि ५५६)। भवि सिक्खाविहिति (ओप)। संकृ सिक्खा-वेत्ता (ओप)। हेकृ सिक्खावित्तए, सिक्खावेत्तए, सिक्खावेउं (ठा २, १—पत्र ५६; कस; पचा १०, ४८ टी)।

सिक्खावअ देखो सिक्खवअ (गा ३५८, प्राकृ ६१)।

सिक्खावण न [शिक्षण] सिखाना, सीख, हितोपदेश (सुख २ १६; प्राकृ ६१; कप्पू)।

सिक्खावणा स्त्री [शिक्षणा] ऊपर देखो (सूअनि १२७; उप १५० टी)।

सिक्खाविअ वि [शिक्षित] सिखाया हुआ (भग; पउम ६७, २२; णाया १, १—पत्र ६०; १, १८—पत्र २३६)।

सिक्खिअ वि [शिक्षित] सिखा हुआ, जानकार, विद्वान् (णाया १, १४—पत्र १८७; ओप)।

सिक्खिर वि [शिक्षितृ] सीखने की आदतवाला, अभ्यासी (गा ६६१)।

सिखा स्त्री [शिखा] छन्द विशेष (पिंग)।

सिखि देखो सिहि-शिखिन् (नाट—विक्र ३४)।

सिगया देखो सिकया (राज)।

सिगाल देखो सिआल (सण)।

सिगाली देखो सिआली = शृगाली (चारु ११)।

सिग्ग वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (दे ८, २८; ओघ २३)। २ पुन परिश्रम, थकावट (वव ४)।

सिग्गु पु [शिग्रु] वृक्ष विशेष, सहिजना का पेड (दे -, २०; पाअ)।

सिग्घ न [शीघ्र] १ जल्दी, तुरंत। २ वि. शीघ्रता युक्त, त्वरा-युक्त (पाअ; स्वप्न ५८; चड; कप्पू; महा; सुर १, २१०; ४, ६६; सुपा ५८०)।

सिचय पु [सिचय] वस्त्र, कपड़ा (पाअ; गा २६१; कुप्र ४३३)।

सिचंत, सिच्चमाण } देखो सिच = सिच्।

सिच्छा स्त्री [स्वेच्छा] स्वच्छन्द (सुपा ३१६)।

सिज्ज अक [स्विद्] पसीना होना। सिज्जइ (षड् २०३)। वकृ सिज्जंत (नाट—उत्तर ६१)।

सिज्ज° देखो सिज्जा (सम्मत्त १७०)।

सिज्जंभण पु [शय्यंभण] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि (कप्प—पृ ७८, णंदि)।

सिज्जंस देखो सेज्जंस = श्रेयांस (कप्प, पडि, आचा २, १५, ०)।

सिज्जा स्त्री [शय्या] १ बिछौना (सम १५, उवा, सुपा ५७३)। २ उपाश्रय, वसति (ओघ १६७)। °तरी, °यरी स्त्री [°तरी] उपाश्रय की मालकिन (ओघ १६७, पि १०१)। °वाली स्त्री [°पाली] बिछौना का काम करनेवाली दासी (सुपा ६४१)। देखो सेज्जा।

सिज्जिअ (अप) वि [सृष्ट] उत्पन्न किया हुआ, बनाया हुआ (पिंग)।

सिज्जिर वि [स्वेत्तृ] जिसको पसीना हुआ करता हो वह, पसीनावाला (गा ४०७, ४०८, ७७४, कुमा)। स्त्री °री (हे ४,२२४)।

सिज्जूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।

सिज्झ अक [सिध्] १ निष्पन्न होना, बनना। २ पकना। ३ मुक्त होना। ४ मंगल होना। ५ सक. गति करना, जाना। ६ शासन करना। सिज्झइ (हे ४, २१७, भग, महा) सिज्झति (कप्प)। भूका सिज्झिसु (भग, पि ५१६)। भवि सिज्झिहिइ, सिज्झिस्सति, सिज्झिहिति, सिज्झिही (उवा, भग, पि ५२७, महा)। वकृ सिज्झंत (पिंड २५१)।

सिज्झ देखो सिंझ (राज)।

सिज्झणया, सिज्झणा } स्त्री [सेधना] १ सिद्धि, मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (सम १४७, उप १३१, ७६६, पव ८८, धर्मवि १५१, विसे ३०३७)। २ निष्पत्ति, साधना,

'सव्वो परोवयार करेइ
नियकज्जसिज्झणाभिरओ।
निरविक्खो नियकज्जे
परोवयारी हवइ धन्नो॥'
(रयण ४६)।

सिट्ठ वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम (उप ८७६)।

सिट्ठ वि [सृष्ट] १ रचित, निर्मित (उप ७२८ टी, रंभा)। २ युक्त। ३ निश्चित। ४ भूषित। ५ बहुल, प्रचुर। ६ त्यक्त (हे १, १२८)।

सिट्ठ वि [शिष्ट] १ कथित, उक्त, उपदिष्ट (सुर १, १६५, २, १८४, जी ५०, वज्जा १३६)। २ सज्जन, भलामानस, प्रतिष्ठित (उप ७६८ टी, कुप्र ६४, सिरि ४५, सुपा ४७०)। °यार पुं [°चार] भलमनसी, सदाचार (धर्म १)।

सिट्ठ वि [दे] सो कर उठा हुआ (षड्)।

सिट्ठि स्त्री [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण, जगद्-रचना (सुपा ११, महा)। २ निर्माण, रचना। ३ स्वभाव। ४ जिसका निर्माण होता हो वह (हे १, १२८)। ५ सीधा क्रम, अविपरीत क्रम, 'चक्काइ जंतजोगेण सिट्ठि-विसिट्ठिकमेण एगतरिय भमताइं' (सिरि ८७८)।

सिट्ठि पु [दे. श्रेष्ठिन्] नगर सेठ, नगर का मुख्य साहूकार, महाजन (कप्प, सुपा ५८०)। °पय न [°पद] नगर सेठ की पदवी (सुपा ३४२)। देखो सेट्ठि।

सिट्ठिणी स्त्री [श्रेष्ठिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, सेठानी (सुपा १२)।

सिड्ढी स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणि (अज्झ ७०)।

सिढिल वि [शिथिर, शिथिल] १ श्लथ, ढीला। २ अदृढ, जो मजबूत न हो वह। ३ मन्द (हे १, २१५, २५४, प्राप्र, कुमा, प्रासू १०२, गउड)।

सिढिल सक [शिथिलय्] शिथिल करना। सिढिलेइ, सिढिलति, सिढिलेंति (उव, वज्जा १०, से ६ ६५) सढिलेहि (वेणी २४३, पि ४६८)। वकृ. सिढिलेंत (से ५, ४२)।

सिढिलाविअ वि [शिथिलित] शिथिल कराया हुआ (प्राकृ ६१)।

सिढिलिअ वि [शिथिलित] शिथिल किया हुआ (कुमा, गउड, भवि)।

सिढिलीकय वि [शिथिलीकृत] शिथिल किया हुआ (सुर २, १६, १७३)।

सिढिलीभूय वि [शिथिलीभूत] शिथिल बना हुआ (पउम ५३, २४)।

सिण देखो सण = शण (जी १०, सुपा १८६, गा ७९८)।

सिणगार देखो सिंगार = शृङ्गार, 'सिणगार-चारवेसो' (सबोध ४७), 'कारिअसुरसुंदरिसि-णगार' (सिरि १५८)।

सिणा अक [स्ना] स्नान करना, नहाना। सिणाइ (सूअ १, ७, २१, प्राकृ २८)। संकृ सिणाइत्ता (सूअ २, ७, १७)। हेकृ सिणाइत्तए (औप)।

सिणाउ पुस्त्री [स्नायु] नाडी-विशेष, वायु वहन करनेवाली नाड़ी (प्राकृ २८)।

सिणाण न [स्नान] नहान, अवगाहन (सम ३५, ओघ ४६६, रयण १४)।

सिणात देखो सिणाय = स्नात (ठा ४, १—पत्र १९३, ५, ३—पत्र ३३६)।

सिणाय देखो सिणा। सिणायति (दस ६, ६३)। वकृ सिणायंत (दस ६, ६२, पि १३३)।

सिणाय, सिणायग, सिणायय } वि [स्नात, °क] १ प्रधान, श्रेष्ठ (सूअ २, २, ५६)। २ मुनि-विशेष, केवलज्ञान प्राप्त मुनि, केवली भगवान् (भग २५, ६, णंदि १३८ टी, ठा ३, २—पत्र १२६, धर्मसं १३५८, उत्त २५, ३४)। ३ बुद्ध शिष्य, बोधि सत्त्व (सूअ २, ६, २९)।

सिणाव सक [स्नपय्] स्नान कराना। सिणावेदि (शौ) (नाट—चैत ४४)। सिणावति, सिणावेंति (आचा २, २, ३, १०, पि १३३)।

सिणि स्त्री [सृणि] अंकुश (सुपा ५३७, सिरि १०५८)।

सिणिज्झ अक [स्निह्] प्रीति करना। सिणिज्झइ (प्राकृ २४)। कर्म. सिप्पइ (हे ४, २५५)। कवकृ. सिप्पंत (कुमा ७, ९०)।

सिणिद्ध वि [स्निग्ध] १ प्रीति-युक्त, स्नेह-युक्त (स्वप्न ५३, प्रासू ९२)। २ आर्द्र, रस-युक्त (कुमा)। ३ मसृण, कोमल। ४ चिकना। ५ न. भात का मांड (हे २, १०९, प्राप्र)।

सिणेह देखो सणेह (भग; णाया १, १३—पत्र १८१; स्वप्न १५, कुमा, प्रासू ६)।

सिणेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेहवाला (स ७३३)।

सिण्ण वि [स्विन्न] स्वेद-युक्त (गा २८४)

सिण्ण देखो सिन्न = शीर्ण (नाट—मृच्छ २१०)।

सिण्ह पुन [शिश्न] पुश्चिह्न, पुरुष-लिंग (प्राप्र; द ८, ५)।

सिण्हा स्त्री [दे] १ हिम, आकाश से गिरता जल-कण (दे ८, ५३)। २ अवश्याय, कुहरा, कुहासा (दे ८, ५३ पाग्र)।

सिण्हालय पुन [दे] फल-विशेष (अनु ६)।

सिति देखो सिइ = (दे) (जय १०)।

सित्त वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुर ८, १८५; कुमा)।

सित्तुज देखो सेत्तुज (मुक्त ५२)।

सित्थ न [दे] गुण, धनुष की डोरी; 'सित्थ व अमाणगय मह मए उत्र दूमेइ' (कुप्र ५८; पाग्र)।

सित्थ, सित्थय न [सिक्थ] १ धान्य-कण (पण्ह १, ३—पत्र ५५, कप्प, ग्रौप, अणु १८२)। २ मोम (दे १, ५२, पाग्र; उप ७२८ टी)। ३ मत्स्य-विशेष, नीली, नील (दे २, ७०)। ४ पुन. कवल, ग्रास; 'मास मास उ जो अज्जा एगसित्थेण पारए' (गच्छ ३, २८, प्राप्र)।

सित्था स्त्री [दे] १ लाला। २ जीवा, धनुष की डोरी (दे ८, ...)।

सिदि पु [दे] मत्स्य मछली (दे ८, २८)।

सि... वि [दे] परस्पर..., विदारित, चीरा हुआ (दे ८, ३०)।

सि... वि [...] १ मुक्त, मोक्ष प्राप्त, निर्वाण-प्राप्त (ठा १—पत्र २५, भग, कप्प, विसे ३०२७, २६, सम्म ८६, जी २५, सुपा २६८, ३८२)। २ निष्पन्न, बना हुआ (प्रासू ७७)। ३ पका हुआ (सुपा ६३३)। ४ शाश्वत, नित्य (चेइय २७६)। ५ प्रतिष्ठित, लब्धप्रतिष्ठ (चेइय ६७६, सम्म १)। ६ निश्चित निर्णीत (सम्म १)। ७ विख्यात, प्रसिद्ध (चेइय ६ ०)। ८ शब्द-विशेष, साध्य-विलक्षण शब्द (भास ८६)। ९ साधित किया हुआ। १० प्रतीत, ज्ञात (पचा ११, २६)। ११ पु. विद्या, मन्त्र, कर्म, शिल्प आदि में जिसने पूर्णता प्राप्त की हो वह पुरुष (ठा १—पत्र २५, विसे ३०२८, वज्जा ६८)। १२ समय-परिमाण विशेष, स्तोक-विशेष (कप्प)। १३ न. लगातार पनरह दिनों के उपवास (संबोध ५८)। १४ पुन महाहिमवत आदि अनेक पर्वतों के शिखरों का नाम (ठा ८—पत्र ४३६, ९—पत्र ४५४, इक)। °क्खर पुन [°क्षर] 'नमो अरिहंताणं' यह वाक्य (भास)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] सिद्ध सम्बन्धी एक ग्रन्थ-प्रकरण (भग)। °चक्क न [°चक्र] अर्हन् आदि नव पद (सिरि ३८)। °न्न न [°ान्न] पकाया हुआ अन्न (सुपा ६३३)। °पुत्त पु [°पुत्र] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला पुरुष (संबोध ३१, निचू १)। °मणोरम पु [°मनोरम] पक्ष का दूसरा दिन (सुज्ज १०, १४)। °राय पु [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध राजा, जो सिद्धराज जयसिंह के नाम से प्रसिद्ध था (कुप्र २२, नाग्र १५)। °वाल पु [°पाल] बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध जैन कवि (कुप्र १७६)। °सेण पु [°सेन] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य (सम्मत्त १४१)। °सेणिया स्त्री [°श्रेणिया] बारहवें जैन अंग ग्रन्थ का एक अंश (णदि)। °सेल पु [°शैल] शत्रुंजय पर्वत, सौराष्ट्र देश में पालीताना के पास का जैन महा-तीर्थ (सुपा १, ३, सिरि ५५२)। °हेम न [°हेम] आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ (मोह २)।

सिद्धंत पु [सिद्धान्त] १ आगम, शास्त्र (उव, बृह १, णदि)। २ निश्चय (स ७०३)।

सिद्धत्थ पु [दे] रुद्र, देव-विशेष (दे ८, ३१)।

सिद्धत्थ वि [सिद्धार्थ] १ कृतार्थ, कृतकृत्य (पउम ७०, ११)। २ पु भगवान् महावीर के पिता का नाम (सम १५१, कप्प, पउम २, २१, सुर १, १०)। ३ ऐरवत वर्ष के भावी दूसरे जिन-देव (सम १५४)। ४ एक जैन मुनि जो नववें बलदेव के दीक्षा-गुरु थे (पउम २०, २०६)। ५ वृक्ष विशेष (सुपा ७७, पिंड ५६१)। ६ सर्षप, सरसों (अणु २३, कुप्र ४६०, पव १५४, हे ४, ४२३, उप पृ ६६)। ७ भगवान् महावीर के कान से कील निकालनेवाला एक वणिक् (चेइय ६६)। ८ एक देव-विमान (सम ३८, आचा २, १५, २, देवेन्द्र १४५)। ९ यक्ष-विशेष (आक)। १० पाटलिसंड नगर का एक राजा (विपा १, ७—पत्र ७२)। ११ एक गाँव का नाम (भग १५—पत्र ६६४)। °पुर न [°पुर] अंग देश का एक प्राचीन नगर (सुर २, ६८)। °वण न [°वन] वन-विशेष (भग)।

सिद्धत्था स्त्री [सिद्धार्था] १ भगवान् अभि-नन्दन स्वामी की माता का नाम (सम १५१)। २ एक विद्या (पउम ७, १४५)। ३ भगवान् संभवनाथजी की दीक्षा शिबिका (विचार १२६)।

सिद्धत्थिया स्त्री [सिद्धार्थिका] १ मिष्ट-वस्तु-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३३)। २ आभ-रण-विशेष, सोने की कंठी (ग्रौप)।

सिद्धय पु [सिद्धक] १ वृक्ष-विशेष, सिंदुवार वृक्ष, सम्हालु का गाछ। २ शाल वृक्ष (हे १, १८७)।

सिद्धा स्त्री [सिद्धा] १ भगवान् महावीर की शासन-देवी, सिद्धायिका (संति १०)। २ पृथिवी विशेष, मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला (सम २२)।

सिद्धाइगा स्त्री [सिद्धायिका] भगवान् महा-वीर की शासन-देवी (गण १२)।

सिद्धाययण पुन [सिद्धायतन] १ शाश्वत मन्दिर—देव-गृह। २ जिन-मन्दिर (ठा ४, २—पत्र २२६, इक, सुर ३, १२)। ३ अमुक पर्वतों के शिखरों का नाम (इक, ज ४)।

सिद्धालय पुन [सिद्धालय] मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला (ग्रौप, पउम ११, १२१, इक)। स्त्री. °या (ठा ८—पत्र ४४०, सम २२)।

सिद्धि स्त्री [सिद्धि] १ सिद्ध-शिला, पृथिवी-विशेष, जहाँ मुक्त जीव रहते हैं (भग, उव, ठा

८—पत्र ४४०, ओप, इक)। २ मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष (ठा १—पत्र २५, पडि, ओप, कुमा)। ३ कर्म-क्षय (सूअ २, ५, २५, २६)। ४ अणिमा आदि योग की शक्ति (ठा १)। ५ कृतार्थता, कृतकृत्यता (ठा १—पत्र २५, कप्प, ओप)। ६ निष्पत्ति, 'न कयाइ दुव्विणीओ सकज्जसिद्धि समाणेइ' (उत्र)। ७ सम्बन्ध (दसनि १, १२२)। ८ छन्द विशेष (पिंग)। °गइ स्त्री [°गति] मुक्ति-स्थान में गमन (कप्प, ओप, पडि)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] ग्रन्थ-प्रकरण-विशेष (भग ११, ९—पत्र ५२१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (कुप्र २२)।

सिन्न वि [शीर्ण] जीर्ण, गला हुआ (सुपा ११, विवे ७० टी)।

सिन्न देखो सिण्ण = स्विन्न (सुपा ११)।

सिन्न पुंन [सैन्य] १ मिला हुआ हाथी घोडा आदि। २ सेना का समुदाय (हे १, १५०, कुमा)। स्त्री. 'ता अन्नदिणे नयरे पवेढिय सत्तुसिन्नाए' (सुर १२, १०८)।

सिप्प देखो सिंप। सिप्पइ (पड्)।

सिप्प न [दे] पलाल, पुआल, तृण-विशेष (दे ८, २८)।

सिप्प न [शिल्प] कारु-कार्य, कारीगरी, चित्रादि-विज्ञान, कला, हुनर, क्रिया-कुशलता (पण्ह १, ३—पत्र ५५, उत्रा, प्रासू ८०)। २ तेजस्काय, अग्नि-सघात। ३ अग्नि का जीव। ४ पु तेजस्काय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)। °सिद्ध पु [°सिद्ध] कला मे अतिकुशल (आवम)। °जीव वि [°जीव] कारीगर, कला—हुनर से जीविका-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

सिप्पा स्त्री [सिप्रा] नदी-विशेष, जो उज्जैन के पास से गुजरती है (स २६३, उप पृ २१८, कुप्र ५०)।

सिप्पि वि [शिल्पिन्] कारीगर, हुनरी, चित्र आदि कला मे कुशल (ओप, मा ४)।

सिप्पि स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा (हे २, १३८, उवा, पड्, कुमा, प्रासू ३६, पि ३८५)।

सिप्पिअ वि [शिल्पिक] शिल्पी, कारीगर (महा)।

सिप्पिर न [दे] तृण-विशेष, पलाल, पुआल (पण्ण १—पत्र ३३, गा ३३०)।

सिप्पी स्त्री [दे] सूची, सूई (पड्)।

सिप्पीर देखो सिप्पिर (गा ३३० अ, पि २८१)।

सिबिर देखो सिविर (पउम १०, २७)।

सिब्भ देखो सिभ (चड)।

सिभा स्त्री [शिफा] वृक्ष का जटाकार मूल (हे १, २३६)।

सिम स [सिम] सर्व, सब (प्रामा)।

सिम° देखो सीमा, 'जाव सिमसनिहाण पत्तो नगरस्स बाहिरुज्जाणे' (सुपा १६२)।

सिमसिम } अक [सिमसिमाय्] 'सिम
सिमसिमाय } सिम' आवाज करना। सिमसिमायति (वज्जा ८२)। वकृ सिमसिमंत (गा ५६१ अ)।

सिमिग देखो सुमिण (हे १, ४६, २५६)।

सिमिर (अप) देखो सिविर (भवि)।

सिमिसिम } देखो सिमसिम। वकृ
सिमिसिमाअ } सिमिसिमंत, सिमिसिमाअंत (गा ५६०, पि ५५८)।

सिमिसिमिय वि [सिमिसिमित] 'सिम सिम' आवाज करनेवाला (पउम १०५, ५५)।

सिर सक [सृज्] १ बनाना, निर्माण करना। २ छोड़ना, त्याग करना। सिरइ (पि २३५), सिरामि (विसे ३५७६)।

सिर न [शिरस्] १ मस्तक, माथा, सिर (पाअ, कुमा, गउड)। २ प्रधान, श्रेष्ठ। ३ अग्र भाग (हे १, ३२)। °क्क न [°क] शिरस्त्राण, मस्तक का बख्तर (दे ५, ३१, कुमा, कुप्र २६२)। °ताण, °त्ताण न [°त्राण] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा, स ३८५)। °वत्थि स्त्री [°बस्ति] चिकित्सा विशेष, सिर मे चर्म-कोश देकर उसमे सस्कृत तैल आदि पूरने का उपचार (विपा १, १—पत्र १४), 'सिरावेढेहि (?सिरवत्थीहि)य' (णाया १, १३—पत्र १८१)। °मणि देखो सिरो मणि (सुपा ५३२)। °य पु [°ज] केश, बाल (भग, कप्प, औप, स ५७८)। °हर न [°गृह] मकान के ऊपर की छत, चन्द्रशाला (दे ३, ४६)। देखो सिरो°।

सिर° देखो सिरा (जी १०)।

°सिरय } देखो सिर = शिरस् (कप्प, पण्ह
°सिरस } १, ४—पत्र ६८, ओप)।

सिरसावत्त वि [शिरसावर्त, शिरस्यावर्त] मस्तक पर प्रदक्षिणा करनेवाला, शिर पर परिभ्रमण करता (णाया १, १—पत्र १३, कप्प, ओप)।

सिरा स्त्री [शिरा, सिरा] १ रग, नस, नाडी (णाया १, १३—पत्र १८१, जी १०, जीव १)। २ धारा, प्रवाह (कुमा, उप पृ ३६६)।

सिरि° देखो सिरी (कुमा, जी ५०, प्रासू ५२, ८०, कम्म १, १, पि ९८)। °उत्त पु [°पुत्र] भारतवर्ष मे होनेवाला एक चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५५०)। °कंठ पु [°कण्ठ] १ शिव, महादेव (कुमा)। २ वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ३)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ एक राज-पत्नी (पउम ८, १८७)। २ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०)। ३ एक राज-कन्या (महा)। ४ एक पुष्करिणी (इक)। °कंदलग पुं [°कन्दलक] पशु-विशेष, एक-खुरा जानवर की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४९)। °करण न [°करण] १ न्याया-यालय, न्याय-मन्दिर। २ फैसला (सुपा ३९१)। °करणीय वि [°करणीय] श्री करण सबन्धी (सुपा ३९१)। °कूड पुन [°कूट] हिमवत पर्वत का एक शिखर (राज)। °खड न [°खण्ड] चन्दन (सुर २, ५६, कप्पू)। °गरण देखो °करण (सुपा ५२५)। °गीव पुं [°ग्रीव] राक्षस वश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २६१)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक जैन महर्षि (कप्प)। °घर न [°गृह] भडार, खजाना (णाया १, १—पत्र ५३, सुअनि ५५)। °घरिअ वि [°गृहिक] भडारी, खजानची (विसे १४२५)। °चद पुं [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (पव ४६, सुपा ६५८)। २ ऐरवत क्षेत्र मे होनेवाले एक

जिनदेव (सम १५८, पव ७)। ३ आठवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम (पउम २०, १६०)। °चंदा स्त्री [°चन्द्रा] १ एक पुष्करिणी (इक)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)। °ड्ढ पु [°आढ्य] एक जैन मुनि (कप्प), °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधरनगर (इक)। देखो °नयर। °णिकेतण न [°निकेतन] वैताढ्य की उत्तर-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर नगर (इक)। °णिलय न [°निलय] वैताढ्य पर्वत की दक्षिण-श्रेणि में स्थित एक नगर (इक)। देखो °निलय। °णिलया स्त्री [°निलया] एक पुष्करिणी (इक)। °णिहुवय पु [°कामक] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)। °नाली स्त्री [°नाली] वृक्ष-विशेष (कप्पू)। °दत्त पु [°दत्त] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न पाँचवें जिन-देव (पव ७)। °दाम न [°दामन्] १ शोभावाली माला (ज ५)। २ आभरण-विशेष (आवम)। ३ पु एक राजा (विपा १, ६—पत्र ६४)। °दामकंड, °दामगंड पुन [°दामकाण्ड] १ शोभावाली मालाओं का समूह (ज ५)। २ एक देव-विमान (सम ३६)। °दामगंड पुन [°दामगण्ड] १ शोभावाली मालाओं का दण्डाकार समूह (ज ५)। °देवी स्त्री [°देवी] १ देवी-विशेष (राज)। २ लक्ष्मी (धर्मवि १४७)। °देवीनंदण पु [°देवी-नन्दन] कामदेव (धर्मवि १४७)। °नंदण पु [°नन्दन] १ कामदेव। २ वि श्री से समृद्ध (सुपा २२८, धम्म १३ टी)। °नगर न [°नगर] दक्षिण देश का एक शहर (कुमा)। देखो °णयर। °निलय पु [°निलय] वासुदेव (पउम २८, ४०)। देखो °णिलय। °पट्ट पु [°पट्ट] नगर-सेठाई का सूचक एक राज-चिह्न (सुपा २८३)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (पउमा ६८)। °पह पु [°प्रभ] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (धर्मवि १५२)। °पाल देखो °वाल (सिरि ३४)। °फल पु [°फल] बिल्व-वृक्ष (कुमा)। देखो °हल। °भूइ पु [°भूति] भारतवर्ष में होनेवाले छठवें चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °म देखो °मत (उप पृ ३७४)। °मई स्त्री [°मती] १ इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी (पउम ६, ३)। २ एक राज पत्नी (महा)। ३ एक सार्थवाह कन्या (महा)। °मंगल पु [°मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश (उप ७६८ टी)। °मंत वि [°मत्] १ शोभावाला, शोभा युक्त (कुमा)। २ पु. तिलक वृक्ष। ३ अश्वत्थ वृक्ष। ४ विष्णु। ५ शिव, महादेव। ६ श्वान, कुत्ता (हे २, १५६, षड्)। °मलय न [°मलय] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर नगर (इक)। °महिअ पुन [°महित] एक देव विमान (सम २७)। °महिआ स्त्री [°महिता] एक पुष्करिणी (इक)। °माल पु [°माल] एक प्रसिद्ध वंश (कुप्र १४३)। °मालपुर न [°मालपुर] एक नगर (ती १५)। °यंठ देखो °कंठ (गउड)। °यन्दल देखो °कन्दलग (पण्ह १, १—पत्र ७)। °वइ पु [°पति] श्रीकृष्ण, वासुदेव (सम्मत्त ७५)। °वच्छ पु [°वत्स] १ जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा अवयवाकार चिह्न (औप, सम १५३, महा)। २ महेन्द्र देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ३ एक देव-विमान (सम ३६, देवेन्द्र १४०, आव)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] भगवान् श्रेयांसनाथजी की शासन-देवी (संति ६)। °वडिंसय न [°अवतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राज)। °वण न [°वन] एक उद्यान (अंत ४)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] वृक्ष विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °वत्त (अप) देखो °मंत (भवि)। °वद्धण पु [°वर्धन] एक राजा (पउम ५, २६)। °वय पु [°वद] पक्षि विशेष (दे १, ६७, ८, ५२ टी)। °वारिसेण पु [°वारि-षेण] ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौबीसवें जिनदेव (पव ७)। °वाल पु [°पाल] १ एक प्रसिद्ध जैन राजा (सिरि ३२०)। २ राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि (कुप्र २१६)। °सउंजा स्त्री [°सञ्ज्ञा] पक्ष की छठवीं रात (सुज्ज १०, १४)। °सिचय पु [°सिचय] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिनदेव (पव ७)। °सेण पु [°षेण] एक राजा (उप ६८६ टी)। °सेल पुं [°शैल] हनूमान (पउम १७, १२०)। °सोम पु [°सोम] भारतवर्ष में होनेवाला सातवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °सोमणस पुन [°सोमनस] एक देव-विमान (सम २७)। °हर न [°गृह] भंडार (श्रा २८)। °हर पु [°धर] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-गण। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)। ३ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न सातवें जिनदेव। ४ ऐरवत वर्ष में वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न बीसवें जिनदेव (पव ७, उप ६८६ टी)। ५ वासुदेव (पउम ४७, ४६, षड्)। °हर वि। [°हर] श्री को हरण करनेवाला (कुमा)। °हल न [°फल] बिल्व फल (पाअ), देखो °फल।

सिरिअ पु [श्रीक, श्रीयक] स्थूलभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक मन्त्री (पडि)।

सिरिअ न [स्वैर्य] स्वच्छन्दता (से ७३)।

सिरिंग पु [दे] विट, लम्पट, कामुक (दे ८, ३२)।

सिरिद्दह पुस्त्री [दे] पक्षियों का पान पात्र (पाअ, दे ८, ३२)।

सिरिमुह वि [दे] मद-मुख, जिसके मुँह में मद हो वह (दे ८, ३२)।

सिरिया देखो सिरी (सम १५१)।

सिरिली स्त्री [दे श्रीली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

सिरिवच्छीव पु [दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सिरिवय पु [दे] हंस पक्षी (दे ८, ३२)।

सिरिवय देखो सिरि-वय।

सिरिस पु [शिरीष] १ वृक्ष-विशेष, सिरसा का पेड़ (सम १५२, हे १, १०१)। २ न. सिरसा का फूल (कुमा)।

सिरी स्त्री [श्री] १ लक्ष्मी, कमला (पाअ, कुमा)। २ संपत्ति, समृद्धि, विभव (पाअ, कुमा)। ३ शोभा (औप, राय, कुमा)। ४

पद्मह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ५ उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ६ देव प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भगवान् कुन्थुनाथ जी की माता का नाम (पव ११)। ८ एक श्रेष्ठि-कन्या (कुप्र १५२)। ९ एक श्रेष्ठि पत्नी (कुप्र २२०)। १० देव, गुरु आदि के नाम के पूर्व में लगाया जाता आदर-सूचक शब्द (पत्र ७, कुमा, पि ९८)। ११ वाणी। १२ वध-रचना। १३ धर्म आदि पुरुषार्थ। १४ प्रकार, भेद। १५ उपकरण, साधन। १६ वृद्धि, मती। १७ अधिकार। १८ प्रभा, तेज। १९ कीर्ति, यश। २० सिद्धि। २१ वृद्धि। २२ विभूति। २३ लवग, लौंग। २४ सरल वृक्ष। २५ बिल्व-वृक्ष। २६ ओषधि विशेष। २७ कमल, पद्म (हे २, १०४) देखो सिअ, सिरि°, सी = श्री।

सिरीस देखो सिरिस (णाया १, ९—पत्र १६०, ओप, कुमा)।

सिरीसिव पु [सरीसृप] सर्प, साप (सूअ १, ७, १५, पि ८१, १७७)।

सिरो° देखो सिर = शिरस्। °धरा (शौ) देखो °हरा (पि ३४७)। °मणि पु [°मणि] प्रधान, अग्रणी, मुख्य, 'अलससिरोमणी' (गा ९७०, सुपा ३०१, प्रासू २७)। °रुह पु [°रुह] केश, बाल (पाअ)। °विअणा स्त्री [°वदना] सिर की पीडा (हे १, १५६)। °वत्थि देखो सिर-वत्थि (राज)। °हरा स्त्री [°धरा] ग्रीवा, गला, डोक (पाअ, णाया १, ३, स ८, अभि २२४)।

सिल° देखो सिला (कुमा)। °प्पवाल न [°प्रवाल] विद्रुम (ओप)।

सिलअ देखो सिलिअ (पाअ)।

सिलउ पु [दे] उञ्छ, गिरे हुए अन्न-कणो का ग्रहण (दे ८, ३०)।

सिला स्त्री [शिला] १ सिल, चट्टान, पत्थर (पाअ प्राप्र, कप्प, कुमा)। २ ओला (दस ८, ६)। °जउ पु न [°जतु] शिलाजित, पर्वतो से उत्पन्न होनेवाला द्रव्य-विशेष, जो दवा के काम मे आता है, शिला-रस (उप ७२८ टी, धर्मवि १४१)।

सिलाइच्च पु [शिलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सिलागा देखो सलागा (स ८४)।

सिलाघ (शौ) नीचे देखो। कृ सिलाघणीअ (प्रयौ ९७)।

सिलाह सक [श्लाघ्] प्रशसा करना। कृ. सिलाहणिज्ज (रयण १९)।

सिलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशसा (मै ८८)।

सिलिंद पु [शिलिन्द] धान्य-विशेष (पव १५६, सबोध ४३, श्रा १८, दसनि ६, ८)।

सिलिंध पु न [शिलान्ध्र] १ वृक्ष-विशेष, छत्रक वृक्ष, भूमिस्फोट वृक्ष (णाया १, १—पत्र २५, ९—पत्र १६०, ओप, कुमा)। २ पु पर्वत-विशेष (स २५२)। °निलय पुं [°निलय] पर्वत-विशेष (स ४२४)।

सिलिंब पु [दे] शिशु, बच्चा (दे ८, ३०, सुर ११, २०६, सुपा ३४)।

सिलिट्ठ वि [श्लिष्ट] १ मनोज्ञ, सुन्दर, 'अइरुकंतविमप्पमाणमउयसुकुमालकुम्मसठिय-सिलिट्ठचरणा' (पण्ह १ ४—पत्र ७९)। २ सगत, सुयुक्त (ओप)। ३ आलिङ्गित। ४ सश्लिष्ट। ५ श्लेषालकार-युक्त (हे २, १०६, प्राप्र)।

सिलिपइ देखो सिलिवइ (राज)।

सिलिम्ह पु स्त्री [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ (हे २, ५५, १०६, पि १३६)। देखो सेम्ह।

सिलिया स्त्री [शिलिका] १ चिरैता आदि तृण, ओषधि-विशेष। २ पाषाण-विशेष, शस्त्र को तीक्ष्ण करने का पाषाण (णाया १, १३—पत्र १८१)।

सिलिसिअ देखो सिलिट्ठ (कुमा ७, ३४)।

सिलिवइ वि [श्लीपदिन्] श्लीपद नामक रोगवाला, जिससे पैर फुला हुआ और कठिन हो जाता है उस रोग से युक्त (आचा, बृह १)।

सिलीमुह पु [शिलीमुख] १ बाण, तीर (पाअ, सुर ६, १४)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, ३६)।

सिलीस देखो सिलेस = श्लिष्। सिलीसइ (भवि)। सिलीसति (सूअ २, २, ५५)।

सिलुच्चय पु [शिलोच्चय] १ मेरु पर्वत (सुज ५)। २ पर्वत, पाहाड (रंभा)।

सिलेच्छिअ पुं [शिलैक्षिक] मत्स्य-विशेष (जीव १ टी पत्र ३६)।

सिलेम्ह देखो सिलिम्ह (षड्)।

सिलेस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना, भेंटना। सिलेसइ (हे ४, १९०)।

सिलेस पु [श्लेष] १ वज्रलेप आदि सधान (सूअनि ७८)। २ आलिङ्गन भेट (सुर १६, २४३)। ३ ससर्ग। ४ दाह (हे २, १०६ षड्)। ५ एक शब्दालकार (सुर १, ३९ १६, २४३)।

सिलेस देखो सिलिम्ह (अनु ५)।

सिलोअ } पु [श्लोक] १ कविता, पद्य, सिलोग } काव्य (मुद्रा १९८, सुपा ५६४, अजि ३, महा)। २ यश, कीर्ति (सूअ १, १३, २२, हे २, १०६)। ३ कला-विशेष, कवित्व, काव्य बनाने की कला (ओप)।

सिलोच्चय देखो सिलुच्चय (पाअ, सुर १, ७, राज)।

सिल्ल पु [दे] १ कुन्त, बरछा, शस्त्र-विशेष (सुपा ३११, कुप्र २८, काल, सिरि ४०३)। २ पोत-विशेष, एक प्रकार का जहाज (सिरि ३८३)।

सिल्ला देखो सिला। °र पुं [°कार] शिला-वट, पत्थर गढनेवाला शिल्पी (ती १५)।

सिल्हग न [सिह्लक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

सिल्हा स्त्री [दे] शीत, जाडा (से १२, ७)।

सिव न [शिव] १ मङ्गल, कल्याण। २ सुख (पाअ, कुमा, गउड)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ४ पुन मुक्ति, मोक्ष (पाअ, सम्मत्त ७६, सम १, कप्प, ओप, पडि)। ५ वि मङ्गल-युक्त, उपद्रव-रहित (कप्प, ओप, सम १, पडि)। ६ पु. महादेव (णाया १, १—पत्र ३९, पाअ, कुमा, सम्मत्त ७६)। ७ जिनदेव, तीर्थंकर, अर्हन् (पउम १०९, १२)। ८ एक राजर्षि, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०, भग ११, ९)। ९ पाँचवें वासुदेव तथा बलदेव का पिता (सम १५२)। १० देव-विशेष (राय, अणु)। ११ पौष मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)।

१२ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। १३ छन्द-विशेष (पिंग)। °कर न [°कर] १ शैलेशी अवस्था की प्राप्ति। २ मुक्ति-मार्ग (बृप्रनि ११५)। °गइ स्त्री [°गति] १ मुक्ति, मोक्ष। २ वि. मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (राज)। ३ पु भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न चौदहवें जिन-देव (पव ७)। °तित्थ न [°तीर्थ] काशी, बनारस (ह ४, ४४२)। °नंदा स्त्री [°नन्दा] आनन्द श्रावक की पत्नी (उवा)। °भूइ पु [°भूति] १ एक जैन महर्षि (कप्प)। २ बोटिक मत—दिगम्बर जैन संप्रदाय का स्थापक एक मुनि (विसे २५५१)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] फाल्गुन (गुजराती माघ) मास की कृष्ण चतुर्दशी तिथि (सट्ठि ७८ टी)। °सेण पु [°सेन] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक अर्हन् (सम १५३)।

सिवंकर पु [शिवङ्कर] पाँचवें केशव का पिता (पउम २०, १८२)।

सिवक } पु [शिवक] १ घड़ा तैयार होने
सिवय } के पूर्व की एक अवस्था (विसे २३१६)। २ वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (इक)।

सिवा स्त्री [शिवा] १ भगवान नेमिनाथ जी की माता का नाम (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६, णाया २—पत्र २५३)। ३ पनरहवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—मुख्य साध्वी (पव ९)। ४ शृगाली, मादा सियार (अणु, वज्जा १४८)। ५ पार्वती (पाअ)।

सिवाणंदा देखो सिव-नंदा (उवा)।

सिवासिव पु [शिवाशिव] भरतक्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न बारहवें जिनदेव (पव ७)।

सिविण देखो सुमिण (हे १, ४६, प्राप्र, रंभा, कुमा, षड्)।

सिविया स्त्री [शिबिका] सुखासन, पालकी, डोली [illegible]।

सिविर न [शिबिर] १ स्कन्धावार, सैन्य-निवास-स्थान, छावनी (कुमा)। २ [illegible], डेरा, तम्बू (कुमा ६)।

सिव्व सक [सीव्] सीना, साँधना। सिव्वइ (षड्, विसे १३६८)। भवि. सिव्विस्सामि (आचा १, ६, ३, १)।

सिव्व देखो सिव = शिव (प्राकृ २६, सक्षि १७)।

सिव्विअ वि [स्यूत] सिया हुआ (पव ६२)।

सिव्विणी } स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ८,
सिव्वी } २६)।

सिस देखो सिलेस = श्लिष्। सिसइ (षड्)।

सिसिर न [दे] दधि, दही (दे ८, ३१, पाअ)।

सिसिर पु [शिशिर] १ ऋतु विशेष, माघ तथा फागुन का महिना (उप ७२८ टी, हे ४, ३५७)। २ माघ मास का लोकोत्तर (सुज्ज १०, १९)। ३ फागुन मास, 'सिसिरो फग्गुण-माहो' (पाअ)। ४ वि जड़, ठढा, शीतल (पाअ, उप ७६८ टी)। ५ हलका (उप ७६८ टी)। ६ न. हिम (उप ९८६ टी)। °किरण पु [°किरण] चन्द्रमा (धर्मवि ५)। °महीहर पु [°महीधर] हिमालय पर्वत (उप ९८६ टी)।

सिसिरली देखो सिसिरिली (राज)।

सिसु पुन [शिशु] बालक, बच्चा (सुपा ५८८, सम्मत्त १९२), 'सा खाइ पायसेसं सिसूणि वीय पढमपहरं' (कुप्र १७३)। °आल पु [°काल] बाल्य, बाल-काल (नाट—चैत ३७)। °नाग पु [°नाग] क्षुद्र कीट-विशेष, अलस (उत्त ५, १०)। °पाल पु [°पाल] एक प्रसिद्ध राजा (णाया १, १६—पत्र २०८, सूअ १, ३, १, १, उप ६४८ टी, कुप्र २५६)। °यत्त पुन [°यत्र] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। °वाल देखो °पाल (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सिस्स पुस्त्री [शिष्य] १ चेला, छात्र, विद्यार्थी (णाया १, १—पत्र ६०, सूअनि १२७)। स्त्री. °स्सा, °स्सिणी (मा ६, णाया १, १४—पत्र १८८)।

सिस्स देखो सीस = शीर्ष (सम ५०)।

सिस्सिरिली स्त्री [दे] कन्द विशेष (उत्त ३६, ९८)।

सिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना। सिहइ (ह ४, ३४, प्राकृ ३३)। कृ सिहणिज्ज (दे ८, ३१ टी)।

सिह पु [दे] भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

सिहंड पु [शिखण्ड] शिखा, चूला, चोटी (पाअ, अभि १११)।

सिहंडइल्ल पु [दे] १ बालक, शिशु। २ दधि-सर, दही की मलाई। मयूर, मोर (दे ८, ५४)।

सिहंडहिल्ल पु [दे] बालक, बच्चा (षड्)।

सिहंडि वि [शिखण्डिन्] १ शिखाधारी (मल्ल १००, ओघ)। २ पु मयूर-पक्षी, मोर (पाअ, उप ७२८ टी)। ३ विष्णु (सुपा १४२)।

सिहण देखो सिहिण (रंभा)।

सिहर न [शिखर] १ पर्वत के ऊपर का भाग, शृङ्ग (पाअ, गउड, सुर ४, ५६, से ६, २८)। २ अग्रभाग (णाया १, ९)। ३ लगातार अठाईस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। °अग्ग वि [°चण] शिखरो से प्रसिद्ध (से ६, १८)।

सिहरि पु [शिखरिन्] १ पहाड़, पर्वत (पाअ, सुपा ४९)। २ वर्षधर पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६९, सम १२, ४३)। ३ पुन कूट-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०)। °वइ पु [°पति] हिमालय पर्वत (से ८, ६२)।

सिहरिणी } स्त्री [दे शिखरिणी] मार्जिता
सिहरिल्ला } खाद्य-विशेष, दही-चीनी आदि से बनता एक तरह का मिष्ट खाद्य (दे १, १५४, ८, ३३, पण्ह २, ५—पत्र १४८, पव ४, पभा ३३, कस, सण)।

सिहली } स्त्री [शिखा] १ चोटी, मस्तक
सिहा } पर के बालों का गुच्छा (पचा १०, ३२, पव १५३, पाअ, णाया १, ५—पत्र १०८, संबोध ३१)। २ अग्नि की ज्वाला (पाअ, कुमा, गउड)।

सिहाल वि [शिखावत्] शिखावाला, शिखा-युक्त (गउड)।

सिहि पु [शिखिन्] १ अग्नि, आग (गा १०, पाअ, सुपा ५१९)। २ मयूर, मोर (पाअ, हेका ४५, गा ५२, १७३)। ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। ४ पर्वत। ५ ब्राह्मण। ६ मुर्गा। ७ विनु

ग्रह। ८ वृक्ष। ९ अश्व। १० चित्रक-वृक्ष। ११ मयूरशिखा-वृक्ष। १२ बकरे का रोग। १३ वि. शिखा-युक्त (अणु १४२)।

सिहि पु [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ८, २८)।

सिहिअ वि [स्पृहित] अभिलषित (कुमा)।

सिहिण पुन [दे] स्तन, थन (दे ८, ३१, सुर १, ९, पाअ, षड्, रंभा, सुपा ३२, भवि, हम्मीर ५०, सम्मत्त १६)।

सिहिणी स्त्री [शिखिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिही (अप) स्त्री [शिखी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सी (अप) स्त्री [श्री] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो सिरी।

सीअ अक [सद्] १ विषाद करना, खेद करना। २ थकना। ३ पीड़ित होना, दुःखी होना। ४ फलना, फल लगना। सीअइ, सीअति (पि ४८२, गा ८७८) जया सोवत्थि सीयइ' (पिंड ८२), 'सीयंति य सव्वअगाइं' (सुर १२, २)। वकृ. सीअंत (पाअ ५०७, सुपा ५१०, कुप्र ११८)।

सीअ न [दे] सिक्थक, मोम (दे ८, ३३)।

सीअ वि [स्वीय] स्वकीय, निज का, 'सीयनेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए', 'सीओसिणा तेयलेस्सा' (भग १५—पत्र ६६६)।

सीअ देखो सिअ = सित, 'सीआमीअं' (प्राप्र)।

सीअ पुन [शीत] १ स्पर्श-विशेष, ठंढा स्पर्श (ठा १—पत्र २५, पव ८६)। २ हिम, तुहिन (से ३, ४७)। ३ शीत-काल (राज)। ४ ठंढ, जाडा (ठा ८, ८—पत्र २८७, ओघ, गउड, उत्त २, ६)। ५ कर्म-विशेष, शीत स्पर्श का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४१, ४२)। ६ वि शीतल, ठंढा (भग, ओघ, णाया १, १ टी—पत्र ४)। ७ पु प्रथम नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४)। ८ न तप-विशेष, आयंबिल तप (संबोध ५८)। ९ वि. अनुकूल (सूअ १, २ २, २२)। १० न सुख (आचा)। °घर न [°गृह] चक्रवर्ती का वर्धकि-निर्मित वह घर, जहाँ सर्व ऋतु में स्पर्श की अनुकूलता होती है (वव ३)। °च्छाय वि [°च्छाय] शीतल छायावाला (ओघ, णाया १, १ टी—पत्र ४)। °परीसह पु [°परीषह] शीत को सहना (उत्त २, १)। °फास पु [°स्पर्श] ठंढ, जाडा, सर्दी (आचा)। °सोआ स्त्री [°स्रोता, स्रोता] नदी-विशेष (इक, ठा ३, ४—पत्र १६१)। °ालोअअ पु [°ालोकक] १ चन्द्रमा। २ शीतकाल, हिम-ऋतु (से ३, ४७)।

सीअ° देखो सीआ = शीता। °प्पवाय पु [°प्रपात] द्रह-विशेष, जहाँ शीता नदी पहाड पर से गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीअ° देखो सीआ = सीता (कुमा)।

सीअउरय पु [दे शीतारक] गुल्म-विशेष, 'पत्तउरसीयउरए हवइ तह जवासए य बोधव्वे' (पण्ण १—पत्र ३२)।

सीअण न [सदन] हैरानी (सम्मत्त १९६)।

सीअणय न [दे] १ दुग्ध-पारी, दूध दोहने का पात्र। २ श्मशान, मसान (दे ८, ५५)।

सीअर पु [शीकर] १ पवन से क्षिप्त जल, फुहार जल कण (हे १ १८४, गउड, कुमा, सण)। २ वायु, पवन (हे १, १८४, प्राकृ ८४)।

सीअरि वि [शीकरिन्] शीकर-युक्त (गउड)।

सीअल पु [शीतल] १ वर्तमान अवसर्पिणी काल के दसवें जिन-देव (सम ४३, पडि)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ३ वि ठंढा (हे ३, १०, कुमा, गउड, रयण ५७)।

सीअलिआ स्त्री [शीतलिका] १ ठंढी, शीतला, 'सीयलिय तेअलेस्सं निसिरामि' (भग १५—पत्र ६६६)। २ लूता-विशेष (राज)।

सीअल्लि पुस्त्री [दे] १ हिमकाल का दुर्दिन। २ वृक्ष-विशेष (दे ८, ५५)।

सीआ स्त्री [शीता] १ एक महा-नदी (सम २७, १०२, इक)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, सिद्ध-शिला (इक)। ३ शीताप्रपात द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ज ४)। ४ नील पर्वत का एक शिखर। ५ माल्यवत् पर्वत का एक कूट (इक)। ६ पश्चिम रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। °मुह न [°मुख] एक वन (ज ४)।

सीआ स्त्री [सीता] १ जनक-सुता, राम-पत्नी (पउम ३८, ५६)। २ चतुर्थ वासुदेव की माता का नाम (पउम २०, १८४, सम १५२)। ३ लाङ्गल-पद्धति खेत में हल चलाने से होती भूमि-रेखा (दे २, १०४)। ४ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (उत्त ३६, ६२, चेइय ७२५)। ५-६ नील तथा माल्यवत् पर्वतों के शिखर-विशेष (इक)। ७ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

सीआ देखो सिबिआ (कप्प, ओघ, सम १५१)।

सीआण देखो मसाण = श्मशान (हे २, ८६, वव ७)।

सीआर देखो सिक्कार (णाया १, १—पत्र ६३)।

सीआला स्त्री [सप्तचत्वारिंशत्] सैंतालीस ४७, (कम्म ६, २१)।

सीआलीस स्त्रीन ऊपर देखो (पि ४४५, ४४८)। स्त्री. °सा (सुज्ज २, ३—पत्र ५१)।

सीआव सक [सादय्] शिथिल करना, 'सीयावेइ विहारं' (गच्छ १, २३)।

सीइआ स्त्री [दे] झडी, निरन्तर वृष्टि (दे ८, ३४)।

सीइय वि [सन्न] खिन्न, परिश्रान्त (स ८५)।

सीई स्त्री [दे] सीढी, निःश्रेणि (पिंड ९८)।

सीउग्गय वि [दे] सुजात (दे ८, ३४)।

सीउट्ट न [दे] हिम काल का दुर्दिन (षड्)।

सीउण्ह न [शीतोष्ण] १ ठंढा तथा गरम। २ अनुकूल तथा प्रतिकूल (सूअ १, २, २, २२, पि १३३)।

सीउल्ल देखो सीउट्ट (षड्)।

सीओअ° देखो सीओआ। °प्पवाय पु [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहां शीतोदा नदी पहाड से गिरती है (ज ४—पत्र ३०७)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (ज ४—पत्र ३०७)।

सीओआ स्त्री [शीतोदा] १ एक महा-नदी (ठा २, ३—पत्र ७२, इक, सम २७, १०२)। २ निषध पर्वत का एक कूट (ठा ९—पत्र ४५४)।

सीकोत्तरी स्त्री [दे] नारी, स्त्री, महिला (सिरि ३९०)।

सीत देखो सीअ = शीत (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

सीता देखो सीआ = शीता, सीता (ठा ८—पत्र ४३६, ६—पत्र ४४८)।

सीतालीस देखो सीआलीस (सुज्ज १, ३—पत्र ५१)।

सीतोद° देखो सीओअ° (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीतोदा } देखो सीओआ (पण्ह २, ४—
सीतोया } पत्र १३०, सम ८४)।

सीदण न [सदन] शैथिल्य, प्रमत्तता (पचा १२, ४६)।

सीधु देखो सीहु (णाया १, १६—पत्र २०६ उवा)।

सीभर देखो सीअर (प्राप्र, कुमा, हे १, १८४, षड्)।

सीभर वि [दे] समान, तुल्य (अणु १३१)।

सीमआ स्त्री [सीमन्] १ मर्यादा। २ अवधि। ३ स्थिति। ४ क्षेत्र। ५ वेला, समय। ६ अण्डकोष, पोता (षड्)। देखो सीमा।

सीमंकर पु [सीमङ्कर] १ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलकर (सम १५३)। ३ वि मर्यादा-कर्ता (सूअ २, १, १३)।

सीमंत पु [सीमन्त] १ बालों में बनाई हुई रेखा विशेष (से ६, २०, गउड, उप ७२८ टी)। २ अपर काय (गउड ८५)। ३ ग्राम से लगी हुई भूमि का अन्त, सीमा, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड २७३, २७७, उप ७२८ टी)। ४ सीमा का अन्त, हद्द, 'एसो च्चिय सीमंतो गुणाण दूरं फुरंताण' (गउड)।

सीमंत पु [सीमान्त] १ सीमा का अन्त भाग, गाँव का पर्यंत भाग (गउड ३६७, ४५)। २ हद्द (गउड ८८-)।

सीमंत सक [दे. सीमान्तय्] बेचना। संकृ. सीमंतिऊण (गा)।

सीमंतग } पु [सीमन्तक] प्रथम नरक-भूमि
सीमंतय } का एक नरका-वास, नरक-स्थान (देवि १, ठा ३, १—पत्र १२६, सम ६८)। °प्पभ पु [°प्रभ] सीमन्तक नरकावास को पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °मज्झिम पु [°मध्यम] सीमन्तक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °वसिट्ठ पु [°विशिष्ट] सीमन्तक की दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २१)। °वित्त पु [°वर्त] सीमन्तक की पश्चिम तरफ का एक नरकावास (देवेन्द्र २१)।

सीमंतय न [दे] सीमंत—बालों की रेखा-विशेष में पहना जाता अलंकार-विशेष (दे ८, ३५)।

सीमंतिअ वि [सीमन्तित] खण्डित, छिन्न (पाअ)।

सीमंतिणी स्त्री [सीमन्तिनी] स्त्री, नारी, महिला (पाअ, उप ७२८ टी, सम्मत्त १६१, सुपा ७)।

सीमंधर पु [सीमन्धर] १ भारतवर्ष में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत वर्ष का एक भावी कुलकर (सम १५३)। ३ पूर्व-विदेह में वर्तमान एक अर्हन् देव (काल)। ४ एक जैन मुनि, जो भगवान् सुमतिनाथ के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। ५ भगवान् शीतलनाथ जी का मुख्य श्रावक (विचार ३७८)। ६ वि. मर्यादा को धारण करनेवाला, मर्यादा का पालक (सूअ २, १, १३)।

सीमा स्त्री [सीमा] देखो सीमआ (पाअ, गा १६८, ७५१, काल, गउड)। °गार पु [°कार] जलजन्तु विशेष, ग्राह का एक भेद (पण्ह १, १—पत्र ७)। °धर वि [°धर] मर्यादा धारक (पडि हे ३, १३४)। °ल वि [°ल] सीमा के पास का, सीमा के निकट-वर्ती, 'सीमाला नरवइणो सव्वे ते सेवमावन्ना' (सुपा २२२, ३५२, ४६३, धर्मवि ५६)।

सीर पु न [सीर] हल, जिससे खेत जोतते हैं (पउम ११३, ३२, कुमा, पडि), 'समयवसु-हासीरा' (धर्मवि १६)। °धारि पु [°धारिन्] बलदेव, बलभद्र, राम (पउम २०, १६३)। °पाणि पु [°पाणि] वही (दे २, २३, कुमा)। °सीमंत पु [°सीमन्त] हल से फाड़ी हुई जमीन की रेखा (दे)।

सीरि पु [सीरिन्] बलभद्र, बलदेव (पाअ)।

सीरिअ वि [दे] भिन्न, 'सीरिओ भिन्नो' (पाअ)।

सील सक [शीलय्] १ अभ्यास करना, आदत डालना। २ पालन करना 'सीलेज्जा सीलमुज्जलं' (हित १६), 'सव्वसील सीलह पव्वज्जगहणेण' (श्रा १६)। देखो सं लाव।

सील न [शील] १ चित्त का समाधान, 'सील चित्तसमाहाणलक्खणं भण्णए एयं' (उप ५६७ टी)। २ ब्रह्मचर्य (प्रासू २२, ५१, १५८, १६६, श्रा १६, हित १६)। ३ प्रकृति, स्वभाव, 'सील पयई' (पाअ); 'कलहसील' (कुमा)। ४ सदाचार, चारित्र, उत्तम वर्तन (कुमा, पचा १४, १, पण्ह २, १—पत्र ६६)। ५ चरित्र, वर्तन (हे २, १८४)। ६ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °इ पु [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक का एक भेद (ओप)। °ड्ढ वि [°ाढ्य] शील-पूर्ण (ओघ ७८४)। °परिघर पु न [°परिगृह] १ चारित्र-स्थान। २ अहिंसा (पण्ह २ १—पत्र ६६)। °मंत, °व वि [°वत्] शील-युक्त (आचा, ओघ ७७७, श्रा ३६)। °व्वय न [°व्रत] अणुव्रत, जैन श्रावक के पालने योग्य अहिंसा आदि पाँच व्रत (भग)। °सालि वि [°शालिन्] शील से शोभनेवाला (सुपा २४०)।

सीलाव सक [शीलय्] तंदुरुस्त करना। कर्म सीलप्पए (वव १)।

सीलुट्ट न [दे] त्रपुस, खीरा, ककड़ी (दे ८, ३५, पाअ)।

सीव सक [सीव्] सीना, सिलाई करना, साँधना। भवि सीविस्सामि (गाचा)। संकृ. सीविऊण (स ३५०)।

सीवणा स्त्री [सीवना] सीना, सिलाई (उप पृ २६८)।

सीवणी स्त्री [दे] सूची, सूई (गउड)। देखो सिव्विणी।

सीवण्णी } स्त्री [श्रीपर्णी] वृक्ष-विशेष (ओघ
सीवन्नी } ४४६ टी, पिंड ८१, ८२, उप १०३१ टी)।

सीविअ देखो सिव्विअ (से १४, २८, दे ४, ७, ओघभा ३१५)।

सीस सक [शिष्] १ वध करना, हिंसा करना। २ शेष करना, बाकी रखना। ३ विशेष करना। सीसइ (हे ४, २३६, षड्)।

सीस सक [कथय्] कहना। सीसइ (हे ४, २, भवि)।

सीस न [सीस] धातु विशेष, सीसा (दे २, २७)।

सीस देखो सिस्स = शिष्य (हे १, ४३, कुमा, द ४७, गाया १, ५—पत्र १०३)।

सीस पु न [शीर्ष] १ मस्तक, माथा (स्वप्न ६० प्रामू ३)। २ स्तबक, गुच्छा (आचा २, १, ८, ६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °अ न [°क] शिरस्त्राण (वेणी ११०)। °घडी स्त्री [°घटी] सिर की हड्डी (तदु ३८)। °पकंपिअ न [°प्रकम्पित] सख्या-विशेष, महालता को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] सख्या-विशेष, शीर्षप्रहेलिकाग को चोरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)। स्त्री. °आ (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ६०, अणु ६६)। °पहेलियग न [प्रहेलिकाङ्ग] सख्या-विशेष, चूलिका को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु ६६)। °पूरग, °पूरय पु [°पूरक] मस्तक का आभरण (राज, तदु ४१)। °रूपक, °रुअ (अप) । पु न [°रूपक] छद विशेष (पिंग)। °वेढ पु [°वेष्ट] गीले चमडे आदि से मस्तक को लपेटना (सम ५०)।

सीस° देखो सास = शास्।

सीसक्क न [दे. शीर्षक] शिरस्त्राण, मस्तक का कवच (दे ८, ३४, से १५, ३०)।

सीसम पु न [दे] सीसम का गाछ, शिशपा (उप १०३१ टी)।

सीसय वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ८, ३४)।

सीसय न [सीसक] देखो सीस = सीस (महा)।

सीसवा स्त्री [शिशपा] सीसम का गाछ (पणण १—पत्र ३१)।

सीह देखो सिग्घ = शीघ्र (राज)।

सीह पु [सिंह] १ श्वापद जन्तु-विशेष, केसरी, मृग-राज (पण्ह १, १—पत्र ७, प्रासू ५१, १७१)। २ वृक्ष-विशेष, सहिजने का पेड (हे १, १४४, प्राप्र)। ३ राशि विशेष, मेष से पाचवी राशि (विचार १०६)। ४ एक अनुत्तर देवलोक गामी जैन मुनि (अनु २)। ५ एक जैन मुनि, जो आर्य-धर्म के शिष्य थे (कप्प)। ६ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६८५)। ७ एक विद्याधर सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। ८ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५०६)। ९ एक देव-विमान (सम ३३, देवेन्द्र १४०)। १० एक जैन आचार्य, जो रवतीनक्षत्र नामक आचार्य के शिष्य थे (णदि ५१)। ११ छन्द-विशेष (पिंग) °उर न [°पुर] नगर-विशेष (सण)। °कंत पु न [°कान्त] एक देव-विमान (सम ३३)। °कडि पु [°कटि] रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)। °कण्ण पु [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप (इक)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] कन्द-विशेष (उत्त ३६, १००)। °केसर पु [°केसर] १ आस्तरण-विशेष, जटिल कम्बल (णाया १ १—पत्र १३)। २ मोदक-विशेष (श्रत ६, पिंड ४८२)। °गइ पु [°गति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। °गिरि पु [°गिरि] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (उव, उप १४२ टी, पडि)। °गुहा स्त्री [°गुहा] एक चोर-पल्ली (णाया १, १८—पत्र २३६)। °चूड पु [°चूड] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५,४६)। °जस पु [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (पउम ५, ३)। °णाय पु [°नाद] सिंहगर्जन, सिंह की गर्जना के तुल्य आवाज (भग)। °णिक्कीलिय न [°निष्क्रीडित] १ सिंह की गति। २ तप-विशेष (अत २८)। °णिसाइ देखो °निसाइ (राज)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार, राज-प्रासाद का मुख्य दरवाजा (कुप्र ११६)। °द्धय पु [°ध्वज] १ विद्याधरवश का एक राजा (पउम ५, ४३)। २ हरिषेण चक्रवर्ती के पिता का नाम (पउम ८, १४४)। °नाय देखो °णाय (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। °निक्कीलिय, °निक्कीलिय देखो °णिक्कीलिय (पव २७१, अत २८, णाया १, ८—पत्र १२२)। °निसाइ वि [°निषादिन्] सिंह की तरह बैठनेवाला (सुज्ज १०, ८ टी)। °णिसिज्जा स्त्री [°निषद्या] भरत चक्रवर्ती द्वारा अष्टापद पर्वत पर बनवाया हुआ जैन मन्दिर (ती ११)। °पुच्छ न [°पुच्छ] पृष्ठ वर्ध्र, पीठ की चमडी (सूअनि ७७)। °पुच्छण न [°पुच्छन] पुरुष चिह्न का तोडना लिंग-त्रोटन (पण्ह २, ५—पत्र १५१)। °पुच्छिय वि [°पुच्छित] १ जिसका पुरुष-चिह्न तोड दिया गया हो वह। २ जिसका कृकाटिका से लेकर पुत-प्रदेश—नितम्ब तक की चमडी उखाड कर सिंह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह (औप)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, विजय-क्षेत्र की एक राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °मुह पु [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष। २ उसमे रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °रव पु [°रव] सिंह-गर्जना, सिंह-नाद, सिंह की तरह आवाज (पउम ४४, ३५)। °रह पु [°रथ] गन्धार देश के पुड्र-वर्धन नगर का एक राजा (महा)। °वाह पु [°वाह] विद्याधर-वश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °वाहण पु [°वाहन] राक्षस-वश का एक राजा (पउम ५, २६३)। °वाहणा स्त्री [°वाहना] अम्बिका देवी (राज)। °विक्कमगइ पुं [°विक्रमगति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८, इक)। °वीअ पुंन [°वीत] एक देव-विमान (सम ३३)। °सेण पु [°सेन] चौदहवें जिनदेव का पिता, एक राजा (सम १५१)। २ भगवान् अजितनाथ का एक गणधर (सम १५२)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २)। ४ राजा महासेन का एक पुत्र (विपा १, ६—पत्र ८६)। ५ ऐरवत क्षेत्र मे उत्पन्न एक जिनदेव (राज)। °सोआ स्त्री [°स्रोता] एक नदी (ठा २, ३—पत्र ८०)। °वलोइय न [°विलोकित] सिंहावलोकन, सिंह की तरह चलते हुए पीछे की तरफ

दसना (महा)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन (जंग)। देखो सिंह।

सीह वि [सैंह] सिंह संबन्धी। स्त्री. °हा (णाया १, १—पत्र ३१)।

°सीह पुं [°सिंह] श्रेष्ठ, उत्तम (नाम १, पडि)।

सीहंडय पुं [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८)।

सीहणही स्त्री [दे] १ वृक्ष विशेष, करौंदी का गाछ। २ करौंदी का फल (दे ८, ३१)।

सीहपुर वि [सैंहपुर] सिंहपुर संबन्धी (पउम ५५, ५३)।

सीहर देखो सीअर (हे १, १८४, कुमा)।

सीहरय पुं [दे] आसार, जोर की वृष्टि (दे ८, १२)।

सीहल देखो सिंहल (पण्ह १, १—पत्र १४, इक, पउम ६६, ५५)।

सीहलय पुं [दे] वस्त्र आदि का धूप देने का यन्त्र (दे ८ ३४)।

सीहलिआ स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी। २ नवमालिका, नवारी का गाछ (दे ८, ५५)।

सीहलिपासग पुंन [दे] ऊन का बना हुआ कंकण, जो वेणी बाँधने के काम में आता है (सूअ १, ४, २, ११)।

सीही स्त्री [सिंही] स्त्री-सिंह, सिंह की मादा (नाट)।

सीहु पुंन [सीधु] १ मद्य, दारू। २ मद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १५०, दे १, ४६, पाअ गा ५४५ मा ४३)।

सु अ [सु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा श्लाघा (विसे ३४४३, सूअनि ८८)। २ अतिशय, अत्यन्तता (श्रु १६)। ३ सम्यक्तता (सट्ठि १६)। ४ अतिशय योग्यता (विसे)। ५ पूजा। ६ कष्ट, मुश्किली। ७ अनुमति। ८ समृद्धि (पउ १२२, १०३, १३४)। ९ अनायास (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

सुअ सक [स्वप्] सोना। सुअइ (हे ४, १४६, प्राकृ ६०, पि ४९७, उव), सुयामि (निचू १) 'सामणि मा सुय चोरत्थो' (धात्वादि ६)। ह्रौं सुवर (हे २, १७६)।

वकृ सुयंत, सुयमाण (सुर ५, २१६, सुपा ५०५, महा ३७, १२, पि ४९७)। हेकृ. सोउं (पि ४९७)। कृ. सोअव्वा (अप) (हे ४, ४३८)।

सुअ सक [श्रु] सुनना। वकृ सुअंत (धात्वा १५६)।

सुअ पुं [सुत] पुत्र, लड़का (सुर १, १०, प्रासू ८६, कुमा, उव)।

सुअ पुं [शुक] १ पक्षि-विशेष, तोता (पण्ह १, १—पत्र ८, उत्त ३४, ७, सुपा ३१)। २ रावण का मन्त्री (से १२, ६३)। ३ रावणाधीन एक सामंत राजा (पउम ८, १३३)। ४ एक परिव्राजक (णाया १, ५—पत्र १०५)। ५ एक अनार्य देश (पउम २७, ७)।

सुअ वि [श्रुत] १ सुना हुआ, आकर्णित (हे १, २०९, भग, ठा १—पत्र ६)। २ न ज्ञान-विशेष, शब्द-ज्ञान, शास्त्र ज्ञान (विसे ७६, ८१, ८५, ८६, ९४, १०४, १०५, णदि, अणु)। ३ शब्द, ध्वनि, आवाज। ४ क्षयोपशम, श्रुतज्ञान के आवरक कर्मों का नाश विशेष। ५ आत्मा, जीव, 'तं तेण तओ तम्मि व सुणेइ सो वा सुअं तेण' (विसे ८१)। ६ आगम, शास्त्र, सिद्धान्त (भग, णदि, अणु, से ४, २७, कम्म ४ ११, १४, २१, बृह १, जी ८)। ७ अध्ययन, स्वाध्याय (सम ५१, से ४, २७)। ८ श्रवण (प्राकृ ७०)। °केवलि पुं [°केवलिन्] चौदह पूर्व ग्रंथों का जानकार मुनि (राज)। °क्खंध, °खंध पुं [°स्कन्ध] १ अंग-ग्रन्थ का अध्ययन समूहात्मक महान् अंश—खण्ड (सूअ २, ७, ४०, विपा १, १—पत्र ३)। २ बारह अंग-ग्रंथों का समूह। ३ बारहवाँ अंग-ग्रंथ, दृष्टिवाद (राज)। °णाण देखो °नाण (ठा २, १ टी—पत्र ४१)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] शास्त्र ज्ञान-संपन्न, शास्त्रों का जानकार (भग)। °णिस्सिय न [°निश्रित] मति ज्ञान का एक भेद (णदि)। °तिहि स्त्री [°तिथि] शुक्ल पंचमी तिथि (रयण २)। °थेर पुं [°स्थविर] तृतीय और चतुर्थ अंग-ग्रंथ का जानकार मुनि (ठा ३, २)। °देवया स्त्री [°देवता] जैन शास्त्रों की अधिष्ठात्री देवी (पडि)। °देवी स्त्री [°देवी] वही (सुपा १, कुमा)। °धम्म पुं [°धर्म] १ जैन अंग-ग्रंथ (ठा २, १—पत्र ५२)। २ शास्त्र ज्ञान (आगम)। ३ आगमों का अध्ययन शास्त्राभ्यास (णदि)। °धर वि [°धर] शास्त्रज्ञ (सुपा ६५२, पण्ह २, १—पत्र ९९)। °नाण पुंन [°ज्ञान] शास्त्रज्ञान (ठा २, १—पत्र ४९, भग)। °नाणि देखो °णाणि (वव १०)। °निस्सिय देखो °णिस्सिय (ठा २, १—पत्र ४९)। °पंचमी स्त्री [°पञ्चमी] कार्तिक मास की शुक्ल पंचमी तिथि (भवि)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले सुना हुआ (उप १४२ टी)। °सागर पुं [°सागर] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

सुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (भग)।

सुअंध पुं [सुगन्ध] १ अच्छी गन्ध, खुशबू (गा १४)। २ वि. सुगन्धी (से ८, ६२, सुर १, २८)।

सुअंधि वि [सुगन्धि] सुन्दर गन्धवाला (से १, ६२, दे ८ ८)। देखो सुगंधि।

सुअक्खाय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ (सूअ २, १, १५, १६, २०, २९)।

सुअच्छ वि [स्वच्छ] निर्मल, विशुद्ध (भवि)।

सुअण पुं [सुजन] सज्जन, भला आदमी (गा २२४, पाअ, प्रासू ८, ४, सुर २, ४६, गउड)।

सुअण न [स्वपन] सोना, शयन (सूक्त ३१)।

सुअणा स्त्री [दे] अतिमुक्तक, वृक्ष विशेष (दे ८, ३८)।

सुअणु वि [सुतनु] १ सुन्दर शरीरवाला। २ स्त्री. नारी, महिला (गा २६६, ३८४, ५६६, पि ३८६, गउड)।

सुअण्ण देखो सुवण्ण (प्राकृ ३०)।

सुअम वि [सुगम] सुबोध (प्राकृ १०)।

सुअर वि [सुकर] जो अनायास से हो सके वह, सरल (अभि ६६)।

सुअर पुं [शूकर] सूअर, वराह (विपा १, ७—पत्र ७५, नाट—मृच्छ २२२)।

सुअरिअ न [सुचरित] सदाचार, सद्वर्तन (अभि २५३)।

सुअलंकिय वि [स्वलङ्कृत] अच्छी तरह विभूषित (णाया १, १—पत्र १६)।

सुआ स्त्री [सुता] पुत्री लडकी (गा ३०२, ८६३ (कुमा)।

सुआ (शौ) अक [शी] शयन करना, सोना। सुआदि (प्राकृ ६८)।

सुआ स्त्री [स्रुच्] यज्ञ का उपकरण-विशेष, घी आदि डालने की कडछी या कलछी (उत्त १२, ४३, ४४)।

सुआइक्ख वि [स्वाख्येय] सुख से—अनायास से कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुआउत्त वि [स्वायुक्त] अच्छी तरह ख्याल रखनेवाला (उव)।

सुइ पु [शुचि] १ पवित्रता, निर्मलता, 'जिणवम्मठिया मुणिणो व वच्छ दीसंति सुइरहिया' (सुपा १६६)। २ वि श्वेत, सफेद (कुमा)। ३ पवित्र, निर्मल (ओप, कप्प, श्रा १२, महा, कुमा)। ४ स्त्री शक्र की एक अग्र-महिषी (इक)।

सुइ स्त्री [श्रुति] १ श्रवण, आकर्णन, सुनना (उत्त ३, १, वसु, विसे १२५)। २ कर्ण, कान (गा ६४१, सुर ११, १७४, सम्मत्त ८८, सुपा ८६, २८७)। ३ वेद शास्त्र (पाअ, अच्चु ८, कुमा)। ४ शास्त्र, सिद्धान्त (सथा ७, प्रासू ४६)।

सुइ स्त्री [स्मृति] स्मरण (विपा १, २—पत्र ३४)।

सुइअ देखो सूइअ = सूचिक (दे १, ६६)।

सुइण देखो सुमिण (सुर ६, ८२, उप ७२८ टी, हे ४, ४३४)।

सुइंदि स्त्री [सुदन्ति] १ पुण्य। २ मङ्गल, कल्याण। ३ सत्-कर्म (प्राप्र, पि २०४)।

सुइयारिणिया स्त्री [दे सूतिकारिणी] सूति-कर्म करनेवाली स्त्री (सुपा ५७८)।

सुइर न [सुचिर] अत्यन्त दीर्घ काल, बहु काल (गा १३७, ४६०, सुपा १, १२७, महा)।

सुउल देखो सुक्क = शुक्ल (हे २, १०६)।

सुउव्व वि [श्वस्तन] आगामी कल से सबन्ध रखनेवाला, कल होनेवाला (पिंड २४१)।

सुई स्त्री [दे] बुद्धि, मति (दे ८, ३६)।

सुई स्त्री [शुकी] शुक पक्षी की मादा, मैना (सुपा ३६०)।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुकार] अतिशय सयम मे रहनेवाला, सुसयमी (सूअ १, १३, ७)।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुचार] अतिशय सरल आचरणवाला (सूअ १, १३, ७)।

सुउमार } देखो सुकुमाल (स्वप्न ६०, सुउमाल } कुमा)।

सुउरिस पु [सुपुरुष] सज्जन, भला आदमी (प्राप्र, हे १, ८, कुमा)।

सुए अ [श्वस्] आगामी कल (स ३६, वे ४१)।

सुंक न [शुल्क] १ मूल्य (णाया १, ८—पत्र १३१, विपा १, ६—पत्र ६३)। २ चुगी, विक्रेय वस्तु पर लगता राज-कर (धम्म १२ टी, सुपा ४४७)। ३ वर-पक्ष के पास से कन्या पक्षवालो को लेने योग्य धन (विपा १, ९—पत्र ६४)। °ठाण न [°स्थान] चुगी-घर (धम्म १२ टी)। °पालय वि [°पालक] चुगी पर नियुक्त राज-पुरुष (सुपा ४४७)। देखो सुक्क = शुल्क।

सुंकुअ } पुन [दे] किशारु, धान्य आदि का सुंकल } अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सुंकलि पुन [दे] तृण-विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

सुंकविय वि [शुल्कित] जिसकी चुगी दी गई हो वह (सुपा ४४७)।

सुंकाणिअ पु [दे] नाव का डाड खेनेवाला व्यक्ति, पतवार चलानेवाला (सिरि ३८५)।

सुंकार पु [सूत्कार] अव्यक्त शब्द विशेष (सुर २, ८, गउड)।

सुंकिअ वि [शौल्किक] शुल्क लेनेवाला, चुगी पर नियुक्त पुरुष (उप पृ १२०)।

सुंख देखो सुक्ख = शुष्क (सक्षि १६)।

सुंग देखो सुक्क = शुल्क (हे २, ११, कुमा)।

सुंगायण न [शौङ्गायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

सुंघ सक [दे] सूँघना। वकृ. सुंघत (सिरि ६२२)।

सुंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ८, ३७)।

सुंचल न [दे] काला नमक, 'सुंठिसुंचलाईयं' (कुप्र ४१४)।

सुंठ पुन [शुण्ठ] पर्वं वनस्पति विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

सुंठय पुन [शुण्ठक] भाजन-विशेष, 'मोरासु य सुंठएसु य कट्ठसु य पयडएसु य पयति' (सूअनि ७६)।

सुंठी स्त्री [शुण्ठी] सूँठ या सोंठ (पभा १५; कुप्र ४१४, पचा ५, ३०)।

सुंड वि [शौण्ड] १ मत्त, मद्यप, दारू पीनेवाला (हे १, १६०, प्राकृ १०, सक्षि ६)। २ दक्ष, कुशल (कुमा)। देखो सोंड।

सुंडा देखो सोंडा (आचा २, १, ३, २, आवम)।

सुंडिअ पु [शौण्डिक] कलवार, दारू बेचनेवाला (प्राकृ १०, सक्षि ६)।

सुंडिआ स्त्री [शौण्डिका] मदिरा-पान मे आसक्ति (दस ५, २, ३८)।

सुंडिक्क देखो सुंडिअ (दे ६, ७५)।

सुंडिक्किणी स्त्री [शौण्डिकी] कलवार की स्त्री (प्रयो १०६)।

सुंडीर देखो सोंडीर (भवि)।

सुंद पु [सुन्द] राजा रावण का एक भागिनेय, खरदूषण का पुत्र (पउम ४३, १८)।

सुंदर वि [सुन्दर] १ मनोहर, चारु, शोभन (पएह १, ४, सुपा १२८, २६५, कप्पू, काप्र ४०८)। २ पु. एक सेठ का नाम (सुपा ६४३)। ३ तेरहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ४ न तप-विशेष, तेला, तीन दिनो का लगातार उपवास (सबोध ५८)। °बाहु पु [°बाहु] सातवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)।

सुंदरिअ देखो सु[ं]दर (हे २, १०७)।

सुंदरिम पुस्त्री देखो सुंदेर (कुप्र २२१)।

सुंदरी स्त्री [सुन्दरी] १ उत्तम स्त्री (प्रासू ५७, वि १८)। २ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री (ठा ५, २—पत्र ३२६, सम ६०, पउम

३, १२ वि १८)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ९)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ मनोहरा शोभना, 'सुंदरी ण देवाणुप्पिया गामालस्स मनलिपुत्तस्स धम्म-पण्णत्ती' (उवा)।

सुंदेर } न [सौन्दर्य] सुन्दरता, शरीर
सुंदेरिम } का मनोहरपन (प्राप्र, हे १, ५७, कुमा सुपा ४, ६२२, धम्म ११ टी)।

सुंब न [शुम्ब] १ तृण विशेष (ठा ४ ४—पत्र २७१, सुत्र १०, १)। २ तृण विशेष की बनी हुई डोरी—रस्सी (जिसे १२४)।

सुंभ पु [शुम्भ] १ एक गृहस्थ जो शुंभा नामक इन्द्राणी का पूर्व-जन्म मे पिता था (णाया २, २—पत्र २५१)। २ दानव-विशेष (पि ३६०, ३६७ ए) °वडेंसय न [°वतंसक] शुम्भा देवी का एक भवन (णाया २, २)। °सिरी स्त्री [°श्री] शुम्भा देवी की पूर्व-जन्मीय माता (णाया २, २)।

सुंभा स्त्री [शुम्भा] बलि नामक इन्द्र की एक पटरानी (णाया २, २—पत्र २५१)।

सुंसुमा स्त्री [सुसुमा] धन सार्थवाह की कन्या का नाम (णाया १, १८—पत्र २३५)।

सुंसुमार पु [सुसुमार, शिशुमार] १ जल-चर प्राणी की एक जाति, सूँस, मोस या सूसर (णाया १,४,पि ११७)। २ द्रह विशेष (भत्त ६६)। ३ पर्वत विशेष। ४ न एक अरण्य (न ८६)। देखो सुसु-मार।

सुक देखो सुअ=शुक (सुपा २३४)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भगवान् सुविधिनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६)।

सुकइ पुं [सुकवि] अच्छा कवि (गा ५००, ६००, महा)।

सुकंठ वि [सुकण्ठ] १ सुन्दर कण्ठवाला। २ पु एक वानर-पुत्र (श्रा १६)। ३ एक चार सेनापति (महा)।

सुकच्छ पु [सुकच्छ] विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °कूड पुन [°कूट] शिखर विशेष (इक, राज)।

सुकड देखो सु य (पउ ५८)।

सुकण्ह पु [सुकृष्ण] एक राज-पुत्र (निर १, १, पि ५२)।

सुकण्हा स्त्री [सुकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुकद देखो सुकय (संक्षि ९)।

सुकम्माण वि [सुकर्मन्] अच्छा कर्म करने-वाला (हे ३, ५६, षड्)।

सुकय न [सुकृत] १ पुण्य (पण्ह १, २—पत्र २८, पाअ)। २ उपकार (से १, ४६)। ३ वि अच्छी तरह निर्मित (राज)। °जाणुअ, °ण्णु, °ण्णुअ वि [°ज्ञ] सुकृत का जानकार, उपकार की कदर करनेवाला (प्राकृ १८, उप ७६८ टी)।

सुकयत्थ वि [सुकृतार्थ] अत्यन्त कृतकृत्य (प्रासू १५५)।

सुकर देखो सुयर (आचा १, ६, १, ८)।

सुकाल पु [सुकाल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)।

सुकाली स्त्री [सुकाली] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुकिअ देखो सुकय (हे ४, ३२९, भवि)।

सुकिट्ठ वि [सुकृष्ट] अच्छी तरह जोता हुआ (पउम ३, ४५)।

सुकिट्ठि पु [सुकृष्टि] एक देव विमान (सम ९)।

सुकिदि वि [सुकृतिन्] १ पुण्य शाली। २ सत्कर्म-कारी (रंभा)।

सुकिल } देखा सुक्क=शुक्ल (हे २, १०६,
सुकिल्ल } पि १३६)।

सुकुमार } वि [सुकुमार] १ अति कोमल।
सुकुमाल } २ सुन्दर कुमार अवस्थावाला (महा, हे १, १७१, पि १२३, १६०)।

सुकुमालिअ वि [दे] सुघटित, सुन्दर बना हुआ (दे ८, ४०)।

सुकुल पुन [सुकुल] उत्तम कुल (भवि)।

सुकुसुम न [सुकुसुम] १ सुन्दर फूल। २ वि सुन्दर फूलवाला (हे १, १७७, कुमा)।

सुकुसुमिय वि [सुकुसुमित] जिसको अच्छी तरह फूल आया हो वह (सुपा ५९८)।

सुकोसल पु [सुकोशल] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४, पव ७)। २ एक जैन मुनि (पउम २२, ३९)।

सुकोसला स्त्री [सुकोशला] एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)।

सुक्क अक [शुष्] सूखना। सुक्कइ (पिंग २ ३२, पव ७०), सुक्कंति (दे ८, १८ टी)।

सुक्क वि [शुष्क] सूखा हुआ (हे २, ५, णाया १, ६—पत्र ११४, उवा, पिंड २७६, सुर ३, ९५, १०, २२३, धात्वा १५६)।

सुक्क न [शुल्क] १ चुंगी, वेचने की वस्तु पर लगता राज-कर (णाया १, १—पत्र ३७, कुमा, श्रा १४, सम्मत्त १५६)। २ स्त्री धन विशेष। ३ वर पक्ष से कन्या पक्षवालों को लेने योग्य धन। ४ स्त्री को सम्भोग के लिए दिया जाता धन। ५ मूल्य (हे २ ११)। देखो सुक।

सुक्क पु [शुक्र] १ ग्रह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८, सम ३६, वज्जा १००)। २ पुन. एक देव-विमान (सम ३३, देवेन्द्र ४३)। ३ न वीर्य, शरीरस्थ धातु विशेष (ठा ३, ३—पत्र १४४, धर्मसं ९८४, वज्जा १००)।

सुक्क पु [शुक्ल] १ वर्ण-विशेष, सफेद रँग। २ सफेद वर्णमाला, श्वेत (हे २, १०६, कुमा, सम २९)। ३ न शुभ ध्यान विशेष (औप)। ४ वि. जिसका संसार अर्ध पुद्गल-परावर्त काल से कम रह गया हो वह (पंचा १, २)। °ज्झाण, °झाण न [°ध्यान] शुभ ध्यान-विशेष (सम ९, सुपा ३७, अंत)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ जिसमे चन्द्र की कला क्रमश बढ़ती है वह आधा महीना (सम २९, कुमा)। २ हंस पक्षी। ३ काक, कौआ। ४ बगला, बक पक्षी (हे २, १०६)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] वह आत्मा जिसका संसार अर्ध पुद्गल परावर्त से कम रह गया हो (ठा २, २—पत्र ५९)। °लेस देखो °लेस्स (भग)। °लेसा देखो °लेस्सा (सम ११, ठा १—पत्र २८)। °लेस्स वि [°लेश्य] शुक्ल लेश्यावाला (पण्ण १७—पत्र ५११)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] आत्मा का अध्यव-साय विशेष, शुभतम आत्म-परिणाम (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

सुक्कड } देखो °सुकय (सम १२५, पउम
सुक्कय } १५, १००)।

सुक्कव सक [शोषय] सुखाना। वकृ. सुक्कवेमाण (णाया १, ६—पत्र १ ४)।

सुक्काणग न [दे] जहाज के आगे का ऊँचा काष्ठ, गुजराती मे 'सुकान' (सिरि ४२८)।

सुक्काभ न [शुक्राभ] १ एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७)। २ वैताढ्य पर्वत की दक्षिण श्रेणि मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सुक्किग्र देखो सुकय (भवि)।

सुक्किग्र देखो सुक्कीअ (राज)।

सुकिल } देखो सुक्क = शुक्ल (भग, सुक्किल्ल } ओप, हे २, १०६, पव ५ सुकिल्ल } ३३, अणु १०६), 'मुत्तु सुक्किलवत्थं' (गच्छ २, ४६, कप्प, सम ८१ धर्मसं ८२४)। स्त्री. 'एगो सुकिलियाएं एगो सवलाए वग्गो कओ' (श्राक ७)।

सुक्कीअ वि [सुक्रीत] अच्छी तरह खरीदा हुआ 'सुक्कीअ वा सुविक्कीअ (दस ७, ४५)।

सुक्ख देखो सुक्क = शुष्। वकृ. सुक्खत (गा ४१४, वज्जा १८६)।

सुक्ख देखो सुक्क = शुष्क (हे २, ५, गा २६३, मा ३१, उप ३२० टी)।

सुक्ख न [सौख्य] सुख (कप्प, कुमा, सार्ध ५१, प्रासू २८, १४५)।

सुक्खव देखो सुकव। कर्म सुक्खवीअति (पि ३५६, ५४३)।

सुक्खिय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ, प्रतिज्ञात, 'तओ सूइवइयराजपणे ज ते सुक्खियमासि वुद्धिलेण अद्धलक्ख, तन्निमित्त-मेसो पेसिओ चालीससाहस्सो हारो त्ति वोत्तु समप्पिउ च हारकरंडिय गओ दासचेडो' (महा)।

सुखम (पे) देखो सण्ह = सूक्ष्म, 'सुखमवरिसो' (प्राकृ १२४)।

सुग देखो सुअ = शुक (उप ९७२, स ८६, उर ५, ७, कुप्र ४३८, कुमा)।

सुगइ स्त्री [सुगति] १ अच्छी गति (ठा ३, ३—पत्र १८६)। २ सन्मार्ग, अच्छा मार्ग (सूअनि ११५)। ३ वि. अच्छी गति को प्राप्त (आवम)।

सुगंध देखो सुअंध (कप्प, कुमा, ओप, सुर २, ५८)।

सुगंधा स्त्री [सुगन्धा] पश्चिम विदेह का एक विजयक्षेत्र (इक)।

सुगंधि देखो सुअंधि (ओप)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि मे स्थित एक विद्या-धर-नगर (इक)।

सुगण वि [सुगण] अच्छी तरह गिननेवाला (पड्)।

सुगम वि [सुगम] १ अल्प परिश्रम से जाया जा सके वैसा सुखगम्य (ओघभा ७५)। २ सुबोध (चेइय ३६३)।

सुगय वि [सुगत] १ अच्छी गतिवाला (ठा ४, १—पत्र २०२, कुप्र १००)। २ सुस्थ। ३ धनी। ४ गुणी (ठा ४, १—पत्र २०२, राज हे १, १७७)। ५ पुं. बुद्धदेव (पाअ, पव ९४)।

सुगय वि [सौगत] बुद्ध-भक्त, बौद्ध (सम्मत्त १२०)।

सुगर वि [सुकर] सुख-साध्य, अल्प परिश्रम से हो सके ऐसा (आचा १, ६, १, ८)।

सुगरिट्ठ वि [सुगरिष्ठ] अति वडा (श्रु १६)।

सुगिज्झ वि [सुग्राह्य] सुख से ग्रहण करने योग्य (पउम ३१, ५८)।

सुगिम्ह पु [सुग्रीष्म] १ चैत्र मास की पूर्णिमा (ठा ४, २—पत्र २१३)। २ फाल्गुन का उत्सव (दे ८, ३६)।

सुगिर वि [सुगिर] अच्छी वाणीवाला (पड्)।

सुगिहिय } वि [सुगृहीत] विख्यात, सुगिहीय } विश्रुत (स ६६, १३)।

सुगी देखो सुई = शुकी (कुमा)।

सुगुत्त पु [सुगुप्त] एक मत्री का नाम (महा)।

सुगुरु पु [सुगुरु] उत्तम गुरु (कुमा)।

सुग्ग न [दे] १ आत्म-कुशल (दे ८, ५६, सण)। २ वि निर्विघ्न, विघ्न-रहित। ३ विसर्जित (दे ८, ५६)।

सुग्गइ देखो सुगइ (सुपा १६१, स ८१)।

सुग्गय देखो सुगय = सुगत (ठा ४, १—पत्र २०२)।

सुग्गाह सक [प्र + ग्राहय्] फेलना। सुग्गाहइ (धात्वा १५६)।

सुग्गीव पु [सुग्रीव] १ नागकुमार देवों के इन्द्र भूतानन्द के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ भारतवर्ष में होनेवाला नववाँ प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४)। ३ राक्षस-वश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६०)। ४ नववे जिनदेव के पिता का नाम (सम १५१)। ५ राजा वालि का छोटा भाई (पउम ६, ६; से १, ४६ १४, ३६)। ६ एक राजा का नाम (सुर २ २१८)। ७ न नगर-विशेष (उत्त १९, १)।

सुघ (अप) देखो सुह = सुख (हे ४ ३९६)।

सुघट्ठ वि [सुघृष्ट] अच्छी तरह घिसा हुआ (राय ८० टी)।

सुघरा स्त्री [सुगृहा] मादा-पक्षी की एक जाति जो अपना घोसला खूब सुन्दर बनाती है (आव ४)।

सुघोस पु [सुघोष] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)। २ एक पुरोहित का नाम (उप ७२८ टी)। ३ पुंन सनत्कुमार देवलोक का एक विमान (सम १२)। ४ लान्तक नामक देवलोक का एक विमान (सम १७)। ५ त्रि सुन्दर आवाजवाला (जीव ३, १, भवि)। ६ एक नगर का नाम (विपा २,८)।

सुघोसा स्त्री [सुघोषा] १ गीतरति नामक गन्धर्वेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ गीतयशनामक गन्धर्व की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ सुधर्मेन्द्र की प्रसिद्ध घटा (पण्ह २, ५—पत्र १४६ सुपा ८५)। ४ वाद्य-विशेष (राय ८६)।

सुचंद पु [सुचन्द्र] ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न दूसरे जिन देव (सम १५३)।

सुचरिअ न [सुचरित] १ सदाचरण, सदा-चार (कप्प, गउड)। २ वि सदाचरण सपन्न (गउड)। ३ अच्छी तरह आचरित (पउम ७५, १८, गाथा १, १६—पत्र २०५)।

सुचिण्ण } वि [सुचीर्ण] १ सम्यग् आच-सुचिन्न } रित, 'तवसजमो सुचिण्णोवि' (पउम ६, ८८ ६४, ३२, ठा ४, २—पत्र २१०)। २ न पुण्य (ओप, उत्त)।

सुचिर न [सुचिर] अत्यन्त चिर काल, सुदीर्घ काल (सुपा २७, महा, प्रासू ३२)।

सुचोइअ वि [सुचोदित] प्रेरित (उत्त १, ४४)।

सुच्च वि [शोचित] अफसोस करने योग्य, 'सुच्चा ते जियलोए जिणवयणं जे नरा न जाणंति' (संबोध १७)।

सुच्चा देखो सुण = श्रु।

सुजपिअ न [सुजल्पित] आशीर्वाद (णाया १, १—पत्र ३६)।

सुजड पु [सुजट] एक विद्याधर-नरेश (पउम १०, २०)।

सुजस पु [सुयशस्] १ एक जिनदेव का नाम (उत्त १०, १ टी)। २ वि यशस्वी (श्रा १६)।

सुजसा स्त्री [सुयशस्] १ चौदहवें जिन-देव की माता (सम १५१)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)।

सुजह वि [सुहान] सुख से जिसका त्याग हो सके वह (उत्त ८, ६)।

सुजाइ वि [सुजाति] प्रशस्त जातिवाला, जात्य (महा)।

सुजाण वि [सुज्ञ] सयाना, अच्छा जानकार (सिरि ६१ प्रासू १३ सुपा ५८८)।

सुजाय वि [सुजात] १ सुन्दर जाति में उत्पन्न, कुलीन, खानदानी (उत्त ७२८ टी)। २ अच्छी तरह उत्पन्न, सुन्दर रूप से उत्पन्न (ठा ४, [illegible] २०८ औप, जीव ३, ४, उवा)। ३ न सुन्दर जन्म (औप)। ४ पु एक राजकुमार (विपा २, ३)। ५ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र २७२)।

सुजाया स्त्री [सुजाता] १ कालवाल आदि लोकपालों की अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुजेट्ठा स्त्री [सुज्येष्ठा] एक महासती राज-कुमारी, राजा चेटक की पुत्री थी (पडि)।

सुजुत्ति स्त्री [सुयुक्ति] सुन्दर युक्ति (सुपा १११)।

सुजेट्ठा [illegible] सुजिट्ठा (राज)।

सुजोसिअ वि [सुजुष्ट] अच्छी तरह सेवित (सूअ [illegible], २, २६)।

सुज्ज [illegible] [सुज [illegible]] [illegible] [illegible] (णाया १, २, २, २६)।

सुज्ज पु [सूर्य] १ सूरज, रवि। २ आक का पेड़। ३ देव-विशेष (हे २, ६४, प्राप्र)। ४ पुन एक देव-विमान (सम १५)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५)। °कूड पुन [°कूट] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ पुन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १५)। °लेस पुन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १५)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °सिंग पुन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १५)। °सिट्ठ पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मण-कन्या (महानि २)। °सिव पु [°शिव] एक ब्राह्मण का नाम (महानि २)। °हास पु [°हास] तलवार की एक उत्तम जाति (पउम ४३ [illegible] ६)। °भ न [°भ] वैताढ्य की उत्तर-श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °वत्त पुन [°वर्त] एक देव-विमान (सम १५)। देखो °सूर, सूरिअ = सूर सूर्य।

सुज्जाण वि [सुज्ञान] सुजान, सयाना, सुज्ञ (षड्, पिंग)।

सुज्जुत्तरवडिंसग पुंन [सूर्योत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १५)।

सुज्झ अक [शुध्] शुद्ध होना। सुज्झइ (महा)। सङ्कृ सुज्झिऊण (सम्यक्त्वो ८)।

सुज्झंत वि [शुध्यमान] सूझता, दीख पड़ता, मालूम होता 'अन्नंमि य सुज्झंत। भुजंत-एण रत्तिं' (पउम १०३, २५)।

सुज्झणया स्त्री [शोधना] शुद्धि (उप ८२४)।

सुज्झय न [दे] १ रौप्य, चाँदी। २ पु रजक, धोबी (दे ८, ५६)।

सुज्झरय पु [दे] रजक, धोबी (दे ८, ३६)।

सुज्झवण न [शोधन] शुद्धि, प्रक्षालन (उप ६८५)।

सुज्झाइ वि [सुध्यायिन्] शुभ ध्यान करने-वाला (संबोध ४७)।

सुज्झाइय वि [सुध्यात] अच्छी तरह चिन्तित (राज)।

सुट्ठिअ वि [सुस्थित] [illegible] स्थित (कप्प)। २ पु लवण समुद्र का अधिष्ठायक देव (णाया १, १६—पत्र २१७)। ३ आर्यसुहस्ति आचार्य का शिष्य एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुट्ठु } अ [सुष्ठु] १ अच्छा, शोभन सुन्दर
सुट्ठु } (आचा भग, स्वप्न २३, सुर २, १७८)। २ अतिशय, अत्यन्त (सुर ४, २४, प्रासू १३७)।

सुठिअ देखो सुट्ठिअ (पात्र)।

सुढ सक [स्मृ] याद करना। सुढइ (प्राकृ ६३)।

सुढिअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (दे ८, ३६, गउड, सुपा १७६, ५३०, सुर १०, २१८)। २ सङ्कुचित अङ्गवाला (महा)।

सुण सक [श्रु] सुनना। सुणइ, सुणेइ (हे ४, ५८, २४१, महा)। सुणउ, सुणेउ, सुणाउ (हे ३, १५८)। भवि सुणिस्सइ, सुणि-स्सामो, सोच्छिइ, सोच्छिहिइ, °च्छ, सोच्छिस्स, सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छि-स्सामि, सोच्छिहामि (पि ५३१, औप, हे ३, १७२)। कर्म सुणिज्जइ, सुव्वइ, सुव्वए, सुम्मइ, सुणीअइ (हे ४, २४२, कुमा, महा, पि ५३६)। वकृ सुणंत, सुणित, सुणमाण, सुणेमाण (हेका १०५, सुर ११, ३७, पि ५६१, विपा १, १, सुर ३, ७६)। कवकृ सुम्मंत, सुव्वंत, सुव्वमाण (सुर ११, १६६, ३, ११, से २, १०, ६, ४६)। सकृ. सुणिअ, सुणिऊण, सुणित्ता, सुणेत्ता, सोऊण, सोउआण, सोउआण, सोउ, सोच्चा, सोच्च, सुच्चा (अभि ११६, षड्, हे ४, २४१, पि ५८२, हे ४, २३७, २, १४६, कुमा हे २, १५, पि ११४, ३४६, ५८७)। हेकृ सोउं (कुमा)। कृ. सुणेअव्व, सोअव्व (भग, पण्ह १, १—पत्र ५, ठा २, १०, गउड, अभि ३८)।

सुणअ देखो सुणय।

सुणंद पु [सुनन्द] १ एक राजर्षि (धम्म)। २ भगवान् वासुपूज्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ३ पुन एक देव-विमान (सम २६)। देखो सुनंद।

सुणंदा स्त्री [सुनन्दा] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य श्राविका (कप्प)। २ तृतीय चक्रवर्ती

की पटरानी—तीसरा स्त्री-रत्न (सम १५२, महा)। ३ भूतानन्द आदि इन्द्रों के लोकपालों की अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुणक्खत्त पु [सुनक्षत्र] १ एक जैन मुनि (अनु २)। २ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६७८)।

सुणक्खत्ता स्त्री [सुनक्षत्रा] पक्ष की दूसरी रात (सुज्ज १, १४)।

सुणग देखो सुणय (आचा; पि २०६)।

सुणण न [श्रवण] सुनना (स ५३)।

सुणय, सुणह पुस्त्री [शुनक] १ कुक्कुर, कुत्ता (हे १, ५२; गा ५५०, ६८८; ६९०; णाया १, १—पत्र ६५; गा १३८ १७५; सुर २, १०३; ६, २०४; श्रा १६; कुप्र १५३; रभा)। स्त्री सुणई सुणिआ (कुमा; गा ६८९)। २ पु. छन्द-विशेष (पिंग)।

सुणहिल्लया स्त्री [शुनकी] कुत्ती, मादा-कुक्कुर (वज्जा ८६)।

सुणावण न [श्रावण] सुनाना (सिन २८८५)।

सुणाविअ वि [श्राविन] सुनाया हुआ (सुपा ६०२)।

सुणासीर पु [सुनासीर] इन्द्र, देव-राज (पाअ; हम्मीर १२)।

सुणाह देखो सुनाभ (राज)।

सुणिअ देखो सुण।

सुणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा; रयण ४४)।

सुणिअ पु [शौनिक] कसाई (सिरि १०७७)।

सुणिउण देखो सुनिउण (राज)।

सुणिप्पकंप देखो सुनिप्पकंप (राज)।

सुणिम्मिय वि [सुनिर्मित] चारु रूप से बना हुआ (कप्प)।

सुणिव्वुय वि [सुनिर्वृत] अत्यन्त स्वस्थ (णाया १, १—पत्र ३२)।

सुणिसंत वि [सुनिशान्त] अच्छी तरह सुना हुआ, 'इहमेगेसिं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति' (आचा १, ८, १, २, २, २, २, १०, १३, १५)।

सुणुसुणाय सक [सुनसुनाय_] 'सुन' 'सुन' आवाज करना। वकृ. सुणुसुणायत (महा)।

सुण्ण न [शून्य] १ निर्जन स्थान (गउड ५२४)। २ वि. रिक्त, रीता, खाली (स्वप्न ३१ गउड)। ३ निष्फल व्यर्थ निष्प्रयोजन (गउड ८४२, ९७२)। ४ न तप-विशेष, एकाशन-व्रत (संबोध ५७)। देखो सुन्न।

सुण्णआर देखो सुण्णार (दे ३, ५४)।

सुण्णइअ, सुण्णाविअ वि [शून्यित] शून्य किया हुआ (... १२, ४०; गउड; गा २६, १६६ ६०९)।

सुण्णार पु [सुवर्णकार] सुनार, सोनी (दे ५, ३९)।

सुण्ह देखो सण्ह = सूक्ष्म (हे १, ११८; कुमा)।

सुण्हसिअ वि [दे] स्वपन शील, सोने की आदतवाला (दे ८, ३९ षड)।

सुण्हा स्त्री [सास्ना] गौ का गल-कम्बल (हे १, ७५; कुमा)। °ल पु [°ल] वृषभ, बैल (कुमा)। °लंछिय पु [°लचिह्न] १ भगवान् ऋषभदेव। २ महादेव (कुमा)।

सुण्हा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू (णाया १, ७—पत्र ११७; सुर ४, ९८)।

सुतणु स्त्री [सुतनु] नारी, स्त्री (सुर २, ८६)।

सुतरं अ [सुतराम्] निश्चित अर्थ के अतिशय का सूचक अव्यय (विमे ८९१)।

सुतवस्सिय न [सुतपस्सित] सुन्दर तप, तपश्चर्या का सुन्दर अनुष्ठान (राज)।

सुतवस्सि वि [सुतपस्विन्] अच्छा तपस्वी (सम ५१)।

सुतार वि [सुतार] १ अत्यन्त निर्मल। अति-शय ऊचा। ३ अच्छा तैरनेवाला। अत्युच्च आवाजवाला (हे १, १७७)।

सुतारया, सुतारा स्त्री [सुतारा] १ भगवान् सुविधि-नाथजी की शासन-देवी (संति ९)। २ सुग्रीव की पत्नी (पउम १०, ९)। ३ आभूषण-विशेष (कुमा)।

सुतितिक्ख वि [सुतितिक्ष] सुख से सहन करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २९६)।

सुतोसअ वि [सुतोष्य] सुख से तुष्ट करने योग्य (दस ५, २, ३४)।

सुत्त सक [सूत्रय] बनाना। सुत्तइ (सुपा २३५)।

सुत देखो सुअ = श्रुत, 'पच्चक्खमोहिमण-केवल च परोक्ख मइसुत्त' (जीवस १४१)।

सुत्त देखो सोत = स्रोतस् (भवि)।

सुत्त देखो सोत्त = श्रोत्र (रभा; भवि)।

सुत्त वि [सुप्त] सोया, शयित (ठा ५, २—पत्र ३१६, स्वप्न १०४; प्रासू ९८; श्रा २५)।

सुत्त वि [सूक्त] १ सुचारु रूप से कहा हुआ। २ न सुभाषित सुन्दर वचन 'मुक्खइव्व सुत्त-उत्तीए' (सुपा ३३)।

सुत्त न [सूत्र] सूता, धागा, वस्त्र तन्तु (विपा १, ८—पत्र ८५, सुपा २८४)। २ नाटक का प्रस्ताव (मोह ४८, सुपा १)। ३ शास्त्र-विशेष (भग, ठा ४, ४—पत्र २८८ जी ३९)। °आर पु [°कार] ग्रन्थकार (स्वप्न)। °कंठ पु [°कण्ठ] ब्राह्मण विप्र (पउम ४, ६५)। °कड न [°कृत] द्वितीय जैन आगम-ग्रंथ (सुपनि २)। °ग न [°क] यज्ञोपवीत (औप)। °धार पु [°धार] देखो °हार (सुपा ८, नाह ४८)। °फासि णिज्जुत्ति स्त्री [°स्पर्शिकनिर्युक्ति] सूत्र की व्याख्या (अणु)। °रुइ स्त्री [°रुचि] शास्त्र श्रद्धा (औप)। °हार पु [°धार] १ प्रधान नट, नाटक का मुख्य पात्र (प्रासू ६३)। २ सुतार, बढ़ई (कम्म १, ४८)।

सुत्ति स्त्री [शुक्ति] सीप घोघा (हे २, १३८; कुमा)। °मई स्त्री [°मती] चेदि देश की प्राचीन राजधानी (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सुत्ति स्त्री [सूक्ति] सुन्दर वचन, सुभाषित। °वत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प—पृ ७९ टि राज)।

सुत्तिअ देखो सोत्तिअ = मौक्तिक (वव ९)।

सुत्तिय वि [सूत्रित] सूत्र-निबद्ध (राज)।

सुत्थ वि [सुस्थ] १ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। २ सुखी (सक्षि १२, गा ४७८; महा; चेइय २६६ उप १०३१ टी)।

सुत्थ न [सौस्थ्य] १ तंदुरुस्ती, स्वस्थता। २ सुस्थित्त (सक्षि १२, कुप्र ४७६; सुपा १८, १२८; स १३५; उप ९०२; धर्मवि २२)।

सुत्थिय देखो सुट्ठिअ (सुपा ६३२)।

सुथिर वि [सुस्थिर] अतिशय स्थिर, अति-निश्चल (प्रासू ८६, सुपा ८८ सुपा)।

सुथोव वि [सुस्तोक] अत्यल्प (पउम ८, १८२)।

सुदंताली [सुदन्ती] सुन्दर दाँतवाली (उप ७६८ टी)।

सुदंसण पु [सुदर्शन] १ भगवान् अरनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ तीसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ३ भारतवर्ष में होनेवाला पाँचवाँ बलदेव (सम १५४)। ४ धरणेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ६ मेरु पर्वत (सुज्ज ५, ६ सुज्ज ५)। ७ एक विख्यात श्रेष्ठी (विपा २, १, ६)। ८ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८६)। ९ विष्णु का चक्र (पउम ३ ०)। १० भगवान् अरनाथ का प्रथम शिष्य। ११ भगवान् पार्श्वनाथ का पूर्व भव का नाम (सम १५१)। १२ पुन. एक वनस्पति। (रम्भा १३६)। १३ वि जिसका दर्शन सुन्दर हो वह (वि १६)। १४ पु. एक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)।

सुदंसणा स्त्री [सुदर्शना] १ जम्बू नामक वृक्ष, जिस पर द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (सम १०, पएह २, ४—पत्र १३०)। २ भगवान् महावीर की ज्येष्ठ बहिन का नाम (आचा २, ४, ३ टप)। ३ धरण आदि इन्द्रों के लोकपालों की एक एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ एक तरह महोरग-नामक निकायेन्द्रों की अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)। ६ चतुर्थ बलदेव की माता (सम १५२)।

सुदरिसणय वि [सुदर्शनक] दर्शनीय (पउम १२, ४३१)।

सुदढ वि [सुदृढ] अति दृढ़ (सुपा २१०)।

सुदरिसण देखो सुदंसण (सम २, १०५ पउम २०, १०२ १६० पउम १९४ टी)।

सुदाम पु [सुदाम] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५०)।

सुदारु न [सुदारु] सुन्दर काष्ठ (गउड)।

सुदारुण पु [दे] चण्डाल (दे ८, ३६)।

सुदिट्ठ वि [सुदृष्ट] सम्यग् विलोकित (गा २२५)।

सुदिप्प अक [सु + दीप्] अतिशय चमकना। वकृ सुदिप्पंत (सुपा ३५१)।

सुदीह } वि [सुदीर्घ] अत्यन्त लम्बा (सुर
सुदीहर } २, १२५, १६८)। °कालीय वि [°कालिक] सुदीर्घ-काल-सम्बन्धी (सुर १५, २८)। °दंसि वि [°दर्शिन्] परिणाम का विचार कर कार्य करनेवाला (सं ३०)।

सुदुक्कर वि [सुदुष्कर] जो अत्यन्त दुःख से किया जा सके वह, अति मुश्किल (उप पृ १६०)।

सुदुक्खत्त वि [सुदुःखार्त] अति दुःख से पीड़ित (सुर ७, ११)।

सुदुक्खिअ वि [सुदुःखित] अत्यन्त दुःखित (सुपा ३०४)।

सुदुग्ग वि [सुदुर्ग] जहाँ दुःख से गमन किया जा सके वह (पउम ३०, ४६)।

सुदुच्चअ वि [सुदुस्त्यज] मुश्किल से जिसका त्याग हो सके वह, 'महाजोगो वि सुदुच्चओ' (श्रा १२)।

सुदुत्तार वि [सुदुस्तार] कठिनता से जिसको पार किया जा सके वह (ओप, पि ३०७)।

सुदुद्धर वि [सुदुर्धर] अति दुःख से जो धारण किया जा सके वह (श्रा ४६ प्रासू ८८)।

सुदुन्निवार वि [सुदुर्निवार] अति कठिनाई से जिसका निवारण किया जा सके वह (सुपा ६४)।

सुदुप्पिच्छ वि [सुदुर्दर्श] अतिशय मुश्किल से देखने योग्य (सुर १२, १६६)।

सुदुब्भेअ वि [सुदुर्भेद] अति दुःख से जिसका भेदा जा सके वह (उप २५३ टी)।

सुदुम्माणा स्त्री [दे] ग्लानि, खेद (दे ८, ४०)।

सुदुल्लह वि [सुदुर्लभ] अत्यन्त दुर्लभ (राज)।

सुदूसह वि [सुदुःसह] अत्यन्त दुःख से सहन करने योग्य (सुर ६, १५८)।

सुदेव पु [सुदेव] उत्तम देव (सुपा २५६)।

सुद्द पु [शूद्र] मनुष्य की अधम जाति, चतुर्थ वर्ण (विपा १, ५—पत्र ६१, पउम ३, ११७, श्रु १३)।

सुद्दय पु [शूद्रक] एक राजा का नाम (मोह १०५, १०६)।

सुद्दिणी (अप) स्त्री [शूद्रा] शूद्रजातीय स्त्री (पिंग)।

सुद्ध पु [दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सुद्ध वि [शुद्ध] १ शुक्ल, उज्ज्वल, 'वइसाह-सुद्धपंचमिरत्तीए सोहणे लग्गे' (सुर ४, २०१, कुप्र ७०, पचा ६, ३४)। २ पवित्र। ३ निर्दोष। ४ केवल, किसी से अमिश्रित। ५ न सैंधा नून—नमक। ६ मरिच, मिर्चा (ह ८, २६०)। ७ लगातार १८ दिनों के उपवास (सबोध ५८)। ८ पु छन्द-विशेष (पिंग)। °गंधारा स्त्री [°गान्धारा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। °दंत पु [°दन्त] १ भारतवर्ष में होनेवाले चौथे जिनदेव (सम १५४)। २ एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि (अनु २)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (इक)। °पक्ख पु [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (पउम ६, २७)। °प्प पु [°ात्मन्] पवित्र आत्मा (कप्प)। °प्पवेस वि [°प्रवेश्य] पवित्र और प्रवेश के लिए उचित (भग)। °प्पवेस वि [°त्मवेश्य] पवित्र तथा वशावित (भग)। °वाय पुं [°वात] वायु-विशेष मन्द पवन (जी ७)। °वियड न [°विकट] उष्ण जल (कप्प)। °सज्जा स्त्री [°षड्जा] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

सुद्धंत पु [शुद्धान्त] अन्तःपुर (उप ७६८ टी, कुप्र ५४, कुमा २६, गा)।

सुद्धवाल वि [दे] शुद्ध-भूत, शुद्ध और पवित्र (दे ८, ३८)।

सुद्धि स्त्री [शुद्धि] १ शुद्धता, निर्दोषता, निर्मलता (सम्मत्त २३०, कुमा)। २ पता,

खवर, खोई हुई चीज की प्राप्ति, 'वद्धाविजह पियाइ सुद्धीए' (सुपा ५१७, कुप्र २०२, सम्मत्त १७२, कुम्मा ६)।

सुद्धेसणिअ वि [शुद्धैषणिक] निर्दोष आहार की खोज करनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सुद्धोअण पु [शुद्धोदन] बुद्धदेव के पिता का नाम। °तणय पु [°तनय] बुद्ध देव (सम्म १४५)। देखो सुद्धोदण।

सुद्धोअणि पु [शौद्धोदनि] बुद्धदेव (पाअ)।

सुद्धोदण देखो सुद्धोअण। °पुत्त पु [°पुत्र] बुद्ध देव (कुप्र ४४०)।

सुधम्म पु [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (कुमा)। २ एक जैन मुनि (विपा २, ४)। ३ तीसरे बलदेव के गुरु—एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ४ एक जैन मुनि, जो सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १६३)। ५ एक जैनाचार्य, 'तह अज्जसमुद्दसूरि अज्जसुधम्मं च धम्मरयं' (सार्ध २२)। देखो सुहम्म।

सुधा देखो छुहा = सुधा (कुमा)।

सुनंद पु [सुनन्द] १ भारतवर्ष के भावी दसवें जिनदेव के पूर्वभव का नाम (सम १५४)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। देखो सुणंद।

सुनक्खत्त देखो सुणक्खत्त (भग १५—पत्र ६७८, ६८७)।

सुनच्चिरा स्त्री [सुनर्तिनी] अच्छी तरह नृत्य करनेवाली स्त्री (सुपा २८६)।

सुनयण पु [सुनयन] १ राजा रावण के अधीनस्थ एक विद्याधर सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। २ वि सुन्दर लोचनवाला (आवम)।

सुनाभ पु [सुनाभ] अमरकंका नगरी के राजा पद्मनाभ का पुत्र (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सुनिउण वि [सुनिपुण] १ अत्यन्त सूक्ष्म (सम ११४)। २ अति चतुर (सुर ४, १३६)।

सुनिग्गुण वि [सुनिगुण] अतिशय निश्चित गुणवाला (सम ११०)।

सुनिग्गल वि [सुनिर्गल] चिर-स्थायी (विसे ७६६)।

सुनिच्छय वि [सुनिश्चय] दृढ निर्णयवाला (सुपा ४६८)।

सुनिप्पकंप वि [सुनिष्प्रकम्प] अत्यन्त निश्चल (सुपा ६५३)।

सुनिम्मल वि [सुनिर्मल] अतिशय निर्मल (पउम २८, ६२)।

सुनिरूविय वि [सुनिरूपित] अच्छी तरह तलाशा हुआ (सुपा ५२३)।

सुनिविन्न वि [सुनिर्विण्ण] अतिशय खिन्न (सुर १४, ५८, उव)।

सुनिव्वुड देखो सुणिव्वुय (द्र ४७)।

सुनिसाय वि [सुनिशात] अत्यन्त तीक्ष्ण (सुपा ५७०)।

सुनिसिअ वि [सुनिशित] ऊपर देखो (दस १०, ७)।

सुनिस्संक वि [सुनिःशङ्क] बिलकुल शङ्का-रहित (सुपा १८८)।

सुनीविआ स्त्री [सुनीविका] सुन्दर नीवी—वस्त्र-ग्रन्थिवाली स्त्री (कुमा)।

सुनेत्ता स्त्री [सुनेत्रा] पाचवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

सुन्न न [शून्य] १ बिन्दी (सुर १६, १४६)। २—देखो सुण्ण (प्रासू १०, महा, भग, आचा, स ३६, रंभा)। °पत्तिया स्त्री [°प्रत्ययिका, °पत्रिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सुन्नयार देखो सुण्णआर (सुपा ५६४, धर्मवि १२)।

सुन्नार देखो सुणार (सुपा ५६२)।

सुन्हा देखो सुण्हा (वा ३७, भवि)।

सुप सक [मृज्] मार्जन करना, शोधन करना। सुपइ (प्राप्र)।

सुपइट्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] १ न्याय-मार्ग में स्थित। २ प्रतिज्ञा-शूर (कुमा ७, २८)। ३ अतिशय प्रसिद्ध। ४ जिसकी स्थापना विधि-पूर्वक की गई हो वह (कुमा ७, ४०)। ५ पु भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ अंग-विद्या का जानकार पाचवा रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। ७ भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सुपा ३६)। ८ भाद्रपद मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १६)। ९ पात्र-विशेष (राय)। १० न एक नगर का नाम विपा १, ६—पत्र ८८)। °भ पुन [°भ] एक देव-विमान (सम १४, पत्र २६७)।

सुपइट्ठिय वि [सुप्रतिष्ठित] अच्छी तरह प्रतिष्ठा-प्राप्त (भग, राय)।

सुपक्क वि [सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ (प्रासू १०२, नाट—मृच्छ ५७)।

सुपडाय वि [सुपताक] सुन्दर ध्वजावाला (कुमा)।

सुपडिबुद्ध वि [सुप्रतिबुद्ध] १ सुन्दर रीति से प्रतिबोध को प्राप्त (आचा १, ५, ४, ३)। २ पु एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुपडिवत्त वि [सुपरिवृत्त] जो अच्छी तरह हुआ हो वह (पउम ६४, ४५)।

सुपणिहिय वि [सुप्रणिहित] सुन्दर प्रणि-धानवाला (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

सुपण्ण देखो सुपन्न (राज)।

सुपण्ण } पु [सुपर्ण] गरुड पक्षी (नाट, कुप्र सुपन्न } ६३)।

सुपन्नत्त वि [सुप्रज्ञप्त] १ सुन्दर रूप से कथित (आचा १, ८, १, ३)। २ सम्यग् आसेवित (दस ४, १)।

सुपभ देखो सुप्पभ (राज)।

सुपम्ह पु [सुपक्ष्मन्] १ एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ पुन एक देव-विमान (सम १५)।

सुपरिकम्मिय वि [सुपरिकर्मित] सुन्दर संस्कारवाला (णाया १, ७—पत्र ११६)।

सुपरिक्खिय } वि [सुपरीक्षित] अच्छी सुपरिच्छिय } तरह जिसकी परीक्षा की गई हो वह (उव, प्रासू १५)।

सुपरिणिट्ठिय } वि [सुपरिनिष्ठित] अच्छी सुपरिनिट्ठिअ } तरह निपुण (राज, भग)।

सुपरिप्फुड वि [सुपरिस्फुट] सुस्पष्ट (पउम ४१, २६)।

सुपरिसंत वि [सुपरिश्रान्त] अतिशय थका हुआ (पउम १०२, ४५)।

सुपरुन्न वि [सुप्ररुदित] जिसने जोर से रोने का आरम्भ किया हो वह (णाया १, १८—पत्र २४०)।

सुपवित्त वि [सुपवित्र] अत्यन्त विशुद्ध (सुपा ३५०)।

सुपवित्तिय [सुपवित्रित] अत्यन्त पवित्र किया हुआ (सुपा ३)।

सुपव्व पं [सुपर्वन्] १ देव। २ न सुन्दर पर्व (उप ६०)।

सुपसाइअ वि [सुप्रसादित] अच्छी तरह प्रसन्न किया हुआ (स्वप्न)।

सुपसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] अति विख्यात (जिं)।

सुपस्स वि [सुदर्श] सुख से देखने योग्य (ठा ४, ३—पत्र २४१; ४, ४—पत्र २६६)।

सुपह पं [सुपथ] शुभ मार्ग (उत; सुपा ३७०)।

सुपहाय न [सुप्रभात] मांगलिक प्रातःकाल (हे २, ७४)।

सुपाव वि [सुपापक] अतिशय पापी (उत्त १२, १४)।

सुपास पं [सुपार्श्व] १ भारतवर्ष में उत्पन्न सातवें जिन भगवान् (सम ४३; [illegible] सुपा २)। २ भगवान् महावीर के पिता के भाई (ठा ६—पत्र ४५५; विचार ४७८)। ३ [illegible] नाम (सम १५०)। ४ [illegible] भावी तीसरे जिनदेव (सम १५३)। ५ [illegible] उत्पन्न [illegible] जिनदेव (सम [illegible])। ६ [illegible] आगामि [illegible] जिनदेव (सम १५४ [illegible])। ७ भारतवर्ष के भावी [illegible] (सम १५[illegible])।

सुपासा स्त्री [सुपार्श्वा] एक [illegible] (ठा ६—पत्र ४४०)।

सुपा [illegible] पुं [सुपात्र] [illegible] (पा [illegible])।

सुपु [illegible] [सुपु[illegible]] एक देव-विमान (सम २२)।

सुपु [illegible] [सुपुण्ड्र] एक [illegible] (सम २२)।

सुपु [illegible] [सुपु[illegible]] एक [illegible] विमान (सम २२)।

सुपुरिस पुं [सुपुरुष] [illegible] (पा [illegible] १२, २५, [illegible] ३)।

सुपेसल वि [सुपेशल] अति मनोहर (उत्त १२, १३)।

सुप्प अक [स्वप्] सोना। सुप्पइ (हे २, १७९)।

सुप्प पुंन [शूर्प] सूप, छाज, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (उवा; पण्ह १, १—पत्र ८)। °णह वि [°नख] सूप के जैसे नखवाला (गाया १, ८—पत्र १३३)। °णहा स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम (प्राप्र ७२)।

सुप्पइट्ठ देखो सुपइट्ठ (राज)।

सुप्पइट्ठिय देखो सुपइट्ठिय (राज)।

सुप्पइण्णा } स्त्री [सुप्रतिज्ञा] दक्षिण रुचक
सुप्पइन्ना } पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज; इक)।

सुप्पइण्णि न शीतकारक वस्त्र-विशेष (भग० वृ० पत्र ३६४; स्ना १०, ४६)।

सुप्पउज्जल वि [सु[illegible]] अत्यन्त ऋजु—सीधा (कप्प)।

सुप्पडिआणंद वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के किये हुए उपकार को माननेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

सुप्पडिआर न [सुप्रतिकार] उपकार का बदला, प्रत्युपकार (ठा ३, १—पत्र ११७)।

सुप्पडिबुद्ध देखो सुपडिबुद्ध (राज)।

सुप्पडिलग्ग वि [सुप्रतिलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ, अवलम्बित (सुपा ५६१)।

सुप्पणिहाण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान (ठा ३, [illegible]—पत्र १२१)।

सुप्पणिहिय देखो सुपणिहिय (पण्ह २, १—पत्र १०१)।

सुप्पन्न वि [सु[illegible]] सुन्दर बुद्धिवाला (सूअ १, ६, ३३)।

सुप्पबुद्ध पुंन [सुप्रबुद्ध] एक ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३६; पव १६४)।

सुप्पबुद्धा स्त्री [सुप्रबुद्धा] दक्षिण रुचकपर [illegible] देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।

सुप्पभ पुं [सुप्रभ] भारत [illegible] अवसर्पिणी-काल [illegible] (सम ७१)। २ [illegible] होनेवाला चौथा बलदेव (सम १५४)। ३ भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १९७; इक)। ५ पुं न एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। °कंत पुं [°कान्त] हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १९७)।

सुप्पभा स्त्री [सुप्रभा] १ तीसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ धरण आदि दक्षिण-श्रेणि के कई इन्द्रों के लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ घनवाहन नामक विद्याधर नरेश की पत्नी (पउम ५, १४८)। ४ भगवान् अजितनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९; सम १५१)।

सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] अति प्रचुर (पउम ५५, ३६)।

सुप्पमत्त } वि [सुप्रमत्त] अत्यन्त प्रमाद-
सुप्पमत्त } युक्त (नाट—मालती १३१; भवि)।

सुप्पसार वि [सुप्रसार्य] सुख से पसारने योग्य (सुख २, २९)।

सुप्पसारिय वि [सुप्रसारित] अच्छी तरह पसारा हुआ (ओघ)।

सुप्पसिद्ध देखो सुपसिद्ध (सम १५१; पि ३५०)।

सुप्पसूय वि [सुप्रसूत] सम्यग् उत्पन्न (ओघ)।

सुप्पहूय (अप) देखो सुप्पभूय (भवि)।

सुप्पाडोस पुं [°दे] अच्छा पड़ोस (श्रा २७)।

सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय (उत्त ११, ८; सुपा ४६५)।

सुप्पुरिस देखो सुपुरिस (रयण २४)।

सुफणि स्त्रीन [सुफणि] जिसमें तक्र आदि उबाला जाय ऐसा तपेला आदि पात्र (सूअ १, ४, २, १०)।

सुबंधु पुं [सुबन्धु] १ दूसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ भारतवर्ष का भावी [illegible] कुलकर (सम १५३)।

सुबंभ पुंन [सुब्रह्मन्] एक देव-विमान (सम १६)।

सुबंभण पु [सुब्राह्मण] प्रशस्त विप्र (पि २५०)।

सुबद्ध वि [सुबद्ध] अच्छी तरह बँधा हुआ (उव)।

सुबल पु [सुबल] १ सोम-वंश का एक राजा (पउम ५, ११)। २ पहले बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (पउम २०, १९०)।

सुबलिट्ठ वि [सुबलिष्ट] अतिशय बलवान् (श्रु ८८)।

सुबहु वि [सुबहु] अति प्रभूत (उव)।

सुबहुल वि [सुबहुल] ऊपर देखो (कप्पू)।

सुबाहु पु [सुबाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २, १—पत्र १०३)। २ स्त्री रुक्मिराज की एक कन्या (णाया १, ८—पत्र १४०)।

सुबुद्धि स्त्री [सुबुद्धि] १ सुन्दर प्रज्ञा (श्रा १४)। २ पु राम-भ्राता भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३)। ३ एक मन्त्री (महा)।

सुब्भ वि [शुभ्र] १ सफेद, श्वेत (सुपा ५०६)। २ न एक प्रकार की चाँदी (राय ७५)।

सुब्भ न [शौभ्र्य] सफेदी श्वेतता (सबोध ५२)।

सुब्भि पुं [सुरभि] १ सुगन्ध, खुशबू (सम ४१, भग, णाया १, १२)। २ वि. सुगन्धी, सुगन्ध युक्त (उत्त ३६, २८, आचा १, ६, २, ३)। ३ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर (णाया १, १२—पत्र १७४)।

सुब्भिक्ख न [सुभिक्ष] सुकाल (सुपा ३५८)।

सुब्भु स्त्री [सुभ्रू] नारी, महिला (रंभा)।

सुभ पु [शुभ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का प्रथम गणधर (ठा ८—पत्र ४२९, सम १३)। २ भगवान् नमिनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ एक मुहूर्त (पउम १७, ८२)। ४ न नाम कर्म का एक भेद (सम ६७, कम्म १, २६)। ५ मंगल, कल्याण। ६ वि. मंगल-जनक, मांगलिक, प्रशस्त (कप्प, भग, कम्म १ ४२, ४३)। °घोस पु [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का द्वितीय गणधर (सम १३)। °णुवम्म पु [°ानुधर्मन्] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। देखो सुह = शुभ।

सुभंकर न [शुभंकर] वरुण नामक लोकान्तिक देवों का विमान (राज)। देखो सुहंकर।

सुभग वि [सुभग] १ आनन्द-जनक (कप्प)। २ सौभाग्य-युक्त, वल्लभ, जन-प्रिय (सुज्ज २०)। ३ न पद्म-विशेष (सुज्ज २, ८, १८, राय ८२)। ४ कर्म-विशेष (सम ६७, कम्म १, २६, ५०, धर्मसं ६२० टी)।

सुभगा स्त्री [सुभगा] १ लता-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)। २ सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४ णाया २—पत्र २५३, इक)।

सुभग्ग वि [सुभाग्य] भाग्य-शाली, जिसका भाग्य अच्छा हो वह (उव ०३१ टी)।

सुभड देखो सुहड (नाट—मालती १३८)।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन कुशल (उव)।

सुभद्द पु [सुभद्र] १ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम २८, १३६)। २ दूसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ३ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। ४ ४ नगर-विशेष (उप १०३१ टी)।

सुभद्दा स्त्री [सुभद्रा] १ दूसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ प्रथम स्त्री-रत्न, भरत चक्रवर्ती की अग्र-महिषी (सम १५२)। ३ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोक-पालों की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ भूतानन्द आदि इन्द्रों के कालवाल नामक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ राम के भाई भरत की पत्नी (पउम २८, १३६)। ७ राजा कोणिक की स्त्री (ओप)। ८ राजा श्रेणिक की एक स्त्री (अंत २५)। ९ एक सती स्त्री (पडि)। १० एक सार्थवाह-पत्नी (विपा १, २—पत्र २२)। ११ जम्बूवृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जंबू द्वीप कहलाता है (इक)।

सुभय देखो सुभग (भग १२, ६—पत्र ५७८)।

सुभरिय वि [सुभृत] अच्छी तरह भरा हुआ, भरपूर, परिपूर्ण (उव)।

सुभा स्त्री [शुभा] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५ १—पत्र ३०२)। २ एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)।

सुभासिय देखो सुहासिय (उत्त २०, ५१, दस ६ १ १७)।

सुभासिर वि [सुभाषितृ] सुन्दर बोलने-वाला। स्त्री °री (सुपा ५९८)।

सुभिक्ख देखो सुब्भिक्ख (उव, सार्ध ३९)।

सुभिच्च पु [सुभृत्य] अच्छा नौकर (सुपा ४६१ ह ४, ३३४)।

सुभीम वि [सुभीम] अति भयंकर (सुर ७ २३३)।

सुभीसण पु [सुभीषण] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)।

सुभूम पु [सुभूम] १ भारतवर्ष में उत्पन्न आठवाँ चक्रवर्ती राजा (ठा २, ४—पत्र ९९)। २ भारतवर्ष के भावी दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। भगवान् अमरनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)।

सुभूसण पु [सुभूषण] विभीषण का एक पुत्र (पउम ६७, १६)।

सुभोगा स्त्री [सुभोगा] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक)।

सुभोयण न [सुभोजन] व्रत विशेष, एकाशन तप (संबोध ५८)।

सुम न [सुम] पुष्प, फूल (सम्मत्त १९)। °सर पु [°शर] कामदेव (रंभा)।

सुमइ पु [सुमति] १ पाँचवाँ जिन भगवान् (सम ४३)। २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (सम १५३)। ३ एक जैन उपासक (महानि ४)। ४ वि शुभ बुद्धि वाला (गउड)। ५ पु एक नैमित्तिक विद्वान् (सुर ११, १३२)।

सुमंगल पु [सुमङ्गल] ऐरवत वर्ष में होने वाले प्रथम जिनदेव (सम १५४)।

सुमंगला स्त्री [सुमङ्गला] १ भगवान् ऋषभ-देव की एक पत्नी (पउम ३, ११९)। २ सूर्यवंशीय राजा विजयसागर की पत्नी (पउम ५ २)।

सुमग्ग पु [सुमार्ग] अच्छा रास्ता (सुपा ३३०)।

सुवो देखो सुवे (षड्, प्राप्र)।

सुव्व न [शुल्व] १ तांबा, ताम्र (से २)। २ रज्जु, रस्सी। ३ जल-समीप। ४ आचार। ५ [illegible] (है ४, ७६)।

सुव्वअ देखो सुव्वय।

सुव्वत देखो सुव्वय (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सुव्वत्त वि [सुव्यक्त] स्फुट, सुस्पष्ट (अत ३०, [illegible]—[illegible] ३८)।

सुव्वमाण देखो सुण।

सुव्वय पुं [सुव्रत] १ भारतवर्ष में उत्पन्न बीसवें जिनदेव, मुनिसुव्रत स्वामी (तो ८, पव ३४)। २ [illegible] एक भावी जिनदेव (सम [illegible])। ३ [illegible] जिनदेव के [illegible] (१५४)। ४ [illegible] मुनि [illegible] (पउम २० १८२)। ५ [illegible] (पउम २०, २०६)। ६ भगवान् पार्श्वनाथ का मुख्य श्रावक (कप्प)। ७ एक ज्योतिष्क [illegible]। ८ एक दिन का नाम ([illegible] १५, कप्प)। ९ न एक [illegible] (कप्प)। १० वि सुन्दर व्रतवाला (पव ३४)। °ग्गि पुं [°ग्नि] एक दिन का नाम (कप्प)।

सुव्वया स्त्री [सुव्रता] १ भगवान् धर्मनाथ की माता ([illegible])। २ एक जैन साध्वी (सुर [illegible] महा)।

सुव्विआ स्त्री [दे] अम्बा, माता (दे ८, ३८)।

[illegible] (पउम २३४, [illegible] (सुर ४, २२६)।

[illegible] [सुसमाद] [illegible]।

[illegible] वि [सुसंगत] [illegible]।

[illegible] [दे] [illegible] ८, [illegible]।

[illegible] [सु [illegible]] [illegible] ८ ४)।

[illegible]

सुसपरिग्गहिय वि [सुसपरिगृहीत] खूब अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ (राय ६३)।

सुसपिणद्ध वि [सुसपिनद्ध] खूब अच्छी तरह बँधा हुआ (राय)।

सुसब्भत वि [सुसंभ्रान्त] अतिशय व्याकुल (उत्त २०, १३)।

सुसंभिय वि [सुसंभृत] अच्छी तरह सत्कृत (स १८९ उप ६४८ टी)।

सुसमय वि [सुसंमत] अच्छी तरह संमति-युक्त (सुर १०, ८२)।

सुसवुड } वि [सुसंवृत] १ परिगत, सुसंवुड } व्याप्त। २ अच्छी तरह पहना हुआ (णाया १, १—पत्र १६, पि २२६)। ३ जितेन्द्रिय। ४ ढका हुआ (उत्त २, ४२)।

सुसहत वि [सुसंहत] अतिशय संश्लिष्ट (प्राप)।

सुसज्ज वि [सुसज्ज] अच्छी तरह तय्यार (सुपा ४८१)।

सुसण्णप्प देखो सुसन्नप्प (राज)।

सुसद्द वि [सुशब्द] १ सुन्दर आवाजवाला। २ प्रसिद्ध, विख्यात (सुपा ५६६)।

सुसन्नप्प वि [सुसंज्ञाप्य] सुख-बोध्य (कप्प)।

सुसमत्थ वि [सुसमर्थ] खूब, अतिशय सामर्थ्यवाला (सुर १, २३२)।

सुसमदुसमा } स्त्री [सुषमदुःषमा] काल-सुसमदूसमा } विशेष, अवसर्पिणी काल का तीसरा और उत्सर्पिणी का चौथा आरा (इक, ठा २, [illegible]—पत्र ७६)।

सुसमसुसमा स्त्री [सुषमसुषमा] काल विशेष, अवसर्पिणी का पहला और उत्सर्पिणी का छठा आरा ([illegible], ठा १—पत्र २७)।

सुसमा स्त्री [सुषमा] १ काल विशेष, अवसर्पिणी का दूसरा और उत्सर्पिणी का पांचवा आरा (ठा २, ३—पत्र ७६, इक)। २ छन्द विशेष (पिंग)।

सुसमा [illegible] [सु [illegible] + [illegible]] अच्छी तरह [illegible] करना। सुसमाए (सूअ १, ८, ३०)।

सुसमाहिअ वि [सुसमाहित] अच्छी तरह समाहित ([illegible], ? ६, उत्त २०, ४)।

सुसमिद्ध वि [सुसमृद्ध] [illegible] समृद्ध (आदि—पत्र [illegible])।

सुसर पुन [सुस्वर] १ एक देव-विमान (सम १७)। २ न नामकर्म का एक भेद, जिसके उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (सम ६७, कम्म १, २६, ५१)। देखो सुस्सर, सुसूर।

सुसा स्त्री [स्वसृ] बहिन, भगिनी (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सुसा देखो सुण्हा = स्नुषा (कुमा)।

सुसागय न [सुस्वागत] सुन्दर स्वागत (नाट)।

सुसागर पुन [सुसागर] एक देव-विमान (सम २)।

सुसाण न [श्मशान] मुर्दाघाट, मरघट (णाया १, २—पत्र ७९, हे २, ८६, स ५६७, धा १४, महा)।

सुसामण्ण न [सुश्रामण्य] अच्छा साधुपन (उवा)।

सुसाय वि [सुस्वाद] स्वादिष्ठ, सुन्दर स्वाद-वाला (पउम ८२, ६६, १०२, १२२)।

सुसाल पुन [सुशाल] एक देव विमान (सम ३५)।

सुसावग } पु [सुश्रावक] अच्छा श्रावक—सुसावय } जैन गृहस्थ (कुमा, पडि, द्र २१)।

सुसाहय देखो सुसहय (पण्ह १, ४—पत्र ७९)।

सुसाहु पु [सुसाधु] उत्तम मुनि (पण्ह २, १—पत्र १०१, उव)।

सुसिअ वि [शुष्क] सूखा हुआ (सुपा २०४, कुप्र १३)।

सुसिअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (महा, वज्जा १५०, कुप्र १३)।

सुसिक्खिअ वि [सुशिक्षित] अच्छी तरह शिक्षा को प्राप्त (गा २०)।

सुसिणिद्ध वि [सुस्निग्ध] अत्यन्त स्नेह-युक्त (सुर ४, १६६)।

सुसिमरअ देखो सुसिम = सास्म्य (सनि १२)।

सुसिण्ण वि [सुशीर्ण] अति सड़ा हुआ (सुपा ४६६)।

सुसिर वि [शुषिर] १ पोला, खाली। २ छिद्र (उप ७२८ टी, कुप्र १६२)। ३ पुं एक देव विमान (सम ३७)।

सुमण } न [सुमनस्] १ पुष्प, फूल (हे १, ३२, सुपा ८६)। २ पु
सुमणस } [illegible], सुर (सुपा ८६, ३३४)। ३ वि सुन्दर मनवाला, सज्जन (सुपा ३०४, पउम ३६, १३० [illegible] १७, [illegible] ३)। ४ हर्षवान् आनन्दित, सुखी (ठा ३ २—पत्र १३)। ५ पुन [illegible] [illegible] विमान (देवेन्द्र १३६)। °भद्द पु [°भद्र] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाने वाला एक गृहस्थ (अंत १८)। २ आर्य संभूतिविजय के एक शिष्य एक जैन मुनि (कप्प)।

सुमणदाम स्त्री [सुमनोदामन्] पक्षी विशेष (आचा २—पत्र ९३)।

सुमणस पुं [सुमनस्] १ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम शिष्य (सम १५२ पत्र ६)। २ [illegible] के [illegible] एक लोकपाल की [illegible] अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। ४ एक जम्बू वृक्ष का नाम (इक)। ५ शक्र की पद्मा नामक अग्रमहिषी का [illegible] राजधानी (इक)। ६ मालती का फूल (स्वप्न ६१)।

सुमणो° देखो सुमण (उप पृ ५८)।

सुमणोहर वि [सुमनोहर] अत्यन्त मनोहर (उप पृ ५८)।

सुमर सक [स्मृ] याद करना। सुमरइ (हे ४, ७४)। [illegible] सुमरिज्जति (वि ४२२)। [illegible] सुमरिज्जइ ([illegible] ४९६, वि ५३७)। [illegible] सुमरंत ([illegible] ६ [illegible] सुपा [illegible] [illegible] ५८, ६)। [illegible] सुमरिऊण (पउम ५ १८६, [illegible]—[illegible] ११०)। [illegible] सुमरिअ, सुमरिऊण ([illegible], काल)। [illegible] सुमरेअव्व [illegible] ([illegible] ४६५ ५७८)। [illegible] [illegible] सुमरमाण, सुमरणीअ (सुपा [illegible] ३, ८२ २१६, प्रति १५०)।

सुमर पु [स्मर] काम [illegible] ([illegible]—[illegible] ८१)।

सुमरण न [स्मरण] याद, स्मृति (सुपा, [illegible], [illegible] सुपा ७१ १५६, ३३ [illegible] [illegible] (स ६७०, सुपा २००)।

सुमराविअ [illegible] [स्मारित] [illegible] [illegible] (सुर १४ ४१)।

सुमराविअ वि [स्मारित] याद कराया हुआ (सुर १४, ४८ २४३)।

सुमरिअ देखो सुमर=स्मृ।

सुमरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ)।

सुमरुया स्त्री [सुमरुत्] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुमहुर वि [सुमधुर] अति मधुर (विपा १, ७ पत्र ७७)।

सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्त मनवाला, सज्जन (पउम १०२ २७)।

सुमाणुस पु [सुमानुष] सज्जन, उत्तम मनुष्य (सुपा २५६)।

सुमालि पु [सुमालिन्] एक राज-कुमार (पउम ६ २२)।

सुमिण पुन [स्वप्न] १ स्वप्न, सपना (हे १, ४६, कुमा सण, पडि, सुर ३, ६१, ६७)। २ स्वप्न के फल को बतलानेवाला शास्त्र (स्वप्न ४१)। °पाढअ वि [°पाठक] स्वप्न के फल बतलानेवाले शास्त्र का जानकार (णाया १, १—पत्र २०)। देखो सुविण।

सुमित्त पुं [सुमित्र] १ भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी का पिता—एक राजा (सम १५१)। २ द्वितीय चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। ३ चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (पउम २० १९०)। ४ प्रथम बलदेव के धर्मगुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ५ एक वणिक् का नाम (उप ७२८ टी)। ६ अच्छा मित्र, 'सुमित्तावरविणयम्मो' (सुपा २३४)। ७ भगवान् शान्तिनाथ का प्रथम भिक्षा देनेवाले एक गृहस्थ का नाम (सम १५१)।

सुमित्ता स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता और राजा दशरथ की एक पत्नी (पउम २५, ४) °तणय पु [°तनय] लक्ष्मण (से ४, १५, ४८ ३२)।

सुमित्ति पु [सौमित्रि] सुमित्रा का पुत्र—लक्ष्मण (पउम ५५ ३६)।

सुमुइय वि [सुमुदित] अति मुदित (पण्ह)।

सुमुह देखो समुह। (विग)।

सुमुग्गअ वि [सुमुग्ध] अति मूढ़ बना हुआ (सुपा २८२)।

सुमुह पु [सुमुख] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक राज-कुमार (अंत ३)। २ राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका पति (पउम ५, २६१)। ३ न छन्द-विशेष (अजि २०)।

सुमुही स्त्री [सुमुखी] छन्द विशेष (पिंग)।

सुमेघा स्त्री [सुमेघा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

सुमेरु पु [सुमेरु] मेरु पर्वत (पाअ, पउम ७५, ३८)।

सुमेहा देखो सुमेघा (इक)।

सुमेहा स्त्री [सुमेधा] सुन्दर बुद्धि (उप पृ ३६८)।

सुम्मत देखो सुण=श्रु।

सुम्ह पु न [सुम्ह] देश-विशेष (हे २ ७४)।

सुर पु [सुर] १ देव, देवता (पण्ह १ ४—पत्र ६८, कप्प जी ३३, कुमा)। २ एक राजा का नाम (उप ७६५)। °उण न [°वन] नन्दन वन (से ६, ८६)। °अरु पु [°तरु] कल्प वृक्ष (नाट)। °करडि पु [°करटिन्] ऐरावण हाथी (सुपा १०६)। °करि पु [°करिन्] वही अर्थ (सुपा २६१)। °कुंभि पु [°कुम्भिन] वही (सुपा २०१)। °कुमर पु [°कुमार] भगवान् वासुपूज्य का शासन यक्ष (पव २६)। °कुसुम न [°कुसुम] लवंग, लौंग (वि १४)। °गय पु [°गज] ऐरावण हस्ती, ऐरावण (पाअ, से ५ २२)। °गिरि पु [°गिरि] मेरु पर्वत (सुपा २, ३१, ३५४ कुमा)। °गेह देखो °हर (उप ७६८ टी)। °गुरु पु [°गुरु] १ बृहस्पति (पाअ, सुपा १०६)। २ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य (मोह १०१)। °गोव पु [°गोप] कीट विशेष, इन्द्रगोप (णाया १ ९—पत्र १६०, पाअ)। °घर न [°गृह] १ देव मन्दिर (कुप्र ४)। २ देव-विमान (कुमा)। °चमू स्त्री [°चमू] देव-सेना (सुपा ४५)। °चाव पु [°चाप] इन्द्र-धनुष (स ५९४ ६०८ सुपा १२४)। °जाल न [°जाल] इन्द्रजाल (गउड)। °जेट्ठा स्त्री [°ज्येष्ठा] गंगा नदी (पाअ)। °णाह पु [°नाथ] इन्द्र (सा ८६४, ६)। °तरंगिणी

स्त्री [°तरङ्गिणी] गंगा नदी (सण)। °तरु देखो °अरु (सण)। °त्ताण पु [°त्राण] यवननृप, सुलतान (ती १५)। °दारु न [°दारु] देवदार की लकडी (स ६३३)। °धंसी स्त्री [°ध्वंसिनी] विद्या विशेष (पउम ७, १३७)। °धणु, °धणुह न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (कुमा, सण)। °नई देखो °णई (श्रु ७७)। °नाह देखो °णाह (सण)। °पहु पु [°प्रभु] इन्द्र, देव-राज (सुपा ५०२, उप १४२ टी सण)। °पुर न [°पुर] देव-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (पउम ७०, १ सण)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पाअ, कुमा)। °प्पिअ पु [°प्रिय] एक यक्ष (अत)। °बंदी स्त्री [°बन्दी] देवी, देव-स्त्री (मे ६, ५०)। °भवण न [°भवन] देव प्रासाद (भग, सण)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] बृहस्पति (सुपा ३२६)। °मंदिर न [°मन्दिर] १ देहरा, मन्दिर (कुप्र ४)। २ देव-विमान (सण)। °मुणि पु [°मुनि] नारद मुनि (पउम ६०, ८)। °रमण न [°रमण] रावण का एक बगीचा (पउम ४६, ३७)। °राय पु [°राज] इन्द्र (सुपा ८५, सिरि २४)। °रिउ पु [°रिपु] दैत्य, दानव (पाअ)। °लोअ पु [°लोक] स्वर्ग (महा)। °लोइय वि [°लौकिक] स्वर्गीय (पुप्फ २५८)। °लोग देखो °लोअ (पउम ५२, १८)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र, देव-राज (पाअ, सुपा ४४, ४८, ८८, ४०२)। २ इन्द्र नामक एक विद्याधर-नरेश (पउम ७, २७)। °वण्ण पुन [°वर्ण] एक देव विमान (सम १०)। °वधू देखो °वहू (पि ३८७)। °वन्नी स्त्री [°पर्णी] पुनाग वृक्ष (पाअ)। °वर पु [°वर] उत्तम देव (भग)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] इन्द्र, देव-राज (श्रा ०७)। °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी (कुमा)। °वारण पु [°वारण] ऐरावण हस्ती (उप २११ टी)। °संगीय न [°संगीत] नगर-विशेष (पउम ८, १८)। °सरि स्त्री [°सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी (गउड, उप पृ ३६, सुपा ३३, २८६)। °सिहरि पु [°शिखरिन्] मेरु पर्वत (सण)। °सुंदर पु [°सुन्दर] रथचक्रवाल-नगर का एक विद्याधर-नरेश (पउम ८, ४१)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] १ देव-वधू, देवाङ्गना (सुर ११, ११५, सुपा २००)। २ एक राज-पुत्री (सुर १० १४३)। ३ एक राज-कुमारी (सिरि ५)। °सुरहि स्त्री [°सुरभि] काम-धेनु (रयण १३)। °सेल पु [°शैल] मेरु-पर्वत (सुपा १३)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] ऐरावण हाथी (मे ६, ६)। °ाउह न [°ायुध] वज्र (पाअ)। °ादेव पुं [°ादेव] एक श्रावक का नाम (उवा)। °ादेवी स्त्री [°ादेवी] पश्चिम रुचक पर रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४०६, इक)। °ारि पु [°ारि] राक्षसवंश का एक राजा, एक लंका पति (पउम ५, २६२)। °ालय पुन [°ालय] स्वर्ग (पाअ, सूअ १, ६, ६, सुपा ५६६)। °ाहिराय पु [°ाधिराज] इन्द्र (उप १४२ टी)। °ाहिव पु [°ाधिप] इन्द्र (मे १५, ५३)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] वही (सुपा ४६)।

सुरइ स्त्री [°सुरति] सुख (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरइय वि [सुरचित] अच्छी तरह किया हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरंगणा स्त्री [सुराङ्गना] देव वधू (सुपा २४६)।

सुरंगा स्त्री [°सुरङ्गा] सुरंग, जमीन के भीतर का मार्ग (उप पृ २६, महा, सुपा ४५४)।

सुरंगि पुस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शिग्रु वृक्ष, सहिजना का गाछ (दे ८, ३७)।

सुरजेट्ठ पु [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१)।

सुरट्ठ पु व [सुराष्ट्र] एक भारतीय देश जो आजकल काठियावाड के नाम से प्रसिद्ध है (णाया १, १६—पत्र २०८, हे २, ३४, पिंड २०२)।

सुरणुचर वि [स्वनुचर] सुख से करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुरत } देखो सुरय (पउम १६, ८०, संक्षि
सुरद } ६, प्राकृ १२)।

सुरभि पुस्त्री [सुरभि] १ वसन्त ऋतु। २ स्त्री गौ, गैया (कुम्मा १४)। ३ वि सुगन्ध-युक्त, सुगंधी (सम ६०, गा ८६१, कप्प, कुम्मा १८)। ४ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। °गंध वि [°गन्ध] सुगन्धी (आचा)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (राज)। देखो सुरहि।

सुरमणीअ वि [सुरमणीय] अत्यन्त मनोहर (सुर ३, ११२)।

सुरम्म वि [सुरम्य] ऊपर देखो (औप)।

सुरय न [सुरत] मैथुन, स्त्री-संभोग (सुर १३, २०, गा १५५, काप्र ११३)।

सुरयण न [सुरत्न] सुन्दर रत्न (सुपा ३२७)।

सुरयणा स्त्री [सुरचना] सुन्दर रचना (सुपा ३२)।

सुरस त्रि [सुरस] १ सुन्दर रसवाला (णाया १, १२—पत्र १७४)। २ न तृण विशेष (दे १, ५४)। °लया स्त्री [°लता] तुलसी-लता (दे ५, १४)।

सुरसुर पु [सुरसुर] ध्वनि-विशेष, 'सुर सुर' आवाज (ओघ २८)।

सुरसुर अक [सुरसुराय्] 'सुर सुर' आवाज करना। वकृ सुरसुरंत (गा ७४)।

सुरह सक [सुरभय्] सुगन्धित करना। सुरहेइ (कुमा, प्रामू ६)।

सुरह पुन [सौरभ] सुन्दर गन्ध, खूशबू, 'गंधोव्विअ सुरहो मालईइ मलणे पुणो विणासो' (भत्त १२१)।

सुरह पु [सुरथ] साकेतपुर का एक राजा (महा)।

सुरहि पुस्त्री [सुरभि] १ वसंत ऋतु (रंभा, पाअ, कप्पू)। २ चैत्र मास (गा १०००)। ३ वृक्ष-विशेष, शतद्रु वृक्ष (आचा २, १, ८, ०)। ४ स्त्री गौ, गैया (रयण १३, धमवि ६७, पाअ, प्रासू १६८)। ५ न. नाम कर्म का एक भेद जिसके उदय से प्राणी के शरीर मे सुगन्ध उत्पन्न होती है (कम्म १, ४१)। ६ वि सुगन्ध युक्त (उवा, कुमा, गा ३१७, ३६६, सुर ३, ३६, हे २, १५५)। देखो सुरभि।

सुरा स्त्री [सुरा] मदिरा, दारू (उवा)। °रस पु [°रस] समुद्र-विशेष (दीव)।

सुरिंद पु [सुरेन्द्र] १ इन्द्र, देव स्वामी (सुर २, १५३, गउड, सुपा ४४)। २ एक

विद्याधर नरेश (पउम ५, २६)। °दत्त पु [°दत्त] एक राजकुमार (उप ९३६)।

सुरिंदय पु [सुरेन्द्रक] विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३०)।

सुरा स्त्री [सुरा] देखो (सुपा)

सुरभा देखो सुरहा (पउम ८ १८८)।

सुरवन पु [°वन] वन-विशेष ([illegible] ९, ३, ८८)। °ज वि [°ज] वन-विशेष में उत्पन्न (सुपा)।

सुरहि [illegible] [सुरभि] [illegible] (पउम ६८, २५)।

सुरया स्त्री [सुरता] [illegible] (णाया २—पत्र २५२)। देखो सुरया।

सुरूव पुं [सुरूप] १ भूत-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न सुन्दर रूप। ३ वि. सुन्दर रूपवाला (उवा, भग)।

सुरूवा स्त्री [सुरूपा] १ सुरूप तथा प्रतिरूप नामक इन्द्रों की एक एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८, १—पत्र ४३८; ६—पत्र ३६१)। ४ एक कुमार [illegible] (सम ११०)। ५ सुन्दर रूपवाली ([illegible])।

सुरेस पु [सुरेश] १ देवपति, इन्द्र। २ [illegible] (सुपा [illegible])।

सुरेसर पु [सुरेश्वर] इन्द्र, देव-राज (सुपा ७७, कुप्र ४)।

सुरोवणीअ वि [सुरोपनीत] उत्तम [illegible] ([illegible] १४२)।

सुलग्ग वि [सुलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ ([illegible])।

सु[illegible] वि [सु[illegible]] [illegible] (णाया १, १—पत्र २४, [illegible])।

सु[illegible] } वि [सु[illegible]] [illegible] ([illegible] १२ [illegible] २, १४, [illegible])।

सु[illegible] पु [सु[illegible]] [illegible] ([illegible])।

सु[illegible] [दे] [illegible] (दे ८, ३७)।

सु[illegible] } स्त्री [दे] [illegible] (दे ८, [illegible] [illegible])।

सुलसा स्त्री [सुलसा] १ नववें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। २ भगवान् महावीर की एक श्राविका, जिसका आत्मा आगामि काल में तीर्थंकर होगा (ठा ९—पत्र ४५५, सम १५४)। ३ नाग नामक गृहपति की स्त्री (अंत ४)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (पउम १०२, १५६)। ५ जयपुर के राजा सुन्दर की पत्नी (महा)।

सुलह देखो सुलभ (स्वप्न ४८, महा, द ४६)।

सुलाह पु [सुलाभ] अच्छा नफा (सुपा ४४८)।

सुली स्त्री [दे] उल्का, आकाश से गिरती आग (दे ८, ३६)।

सुलसुल } अक [सुलसुलाय] 'सुल' 'सुल' सुलसुलाय } आवाज करना। सुलुसुलायइ (तदु ४१)। वकृ सुलुसुलिंत, सुलुसुलेंत (तदु ४४, महा)।

सुलूह वि [सुरूक्ष] अत्यन्त रूखा—रूखा (सूत्र १, १३, १२)।

सुलोअ देखो सिलोअ = श्लोक (प्रवि १६)।

सुलोयण पु [सुलोचन] एक विद्याधर नरेश (पउम ५, ६६)।

सुलोल वि [सुलोल] अति चपल (कप्पू)।

सुल्ल न [शल्य] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३६, पाम)।

सुव अक [स्वप] सोना। सुवइ, सुवति (हे १, ६४, षड्, महा, रंभा)। भवि सुविस्सं (पि ५२९)। वकृ सुवंत, सुवमाण (पाम, से १, २१, भग)। संकृ सुविऊण (कुप्र ५६)।

सुव देखो स = स्व (१, १९४, षड्, कुमा)।

सुव (अप) देखो सुअ = श्रुत, सुत (भवि)।

सुवंस पु [सुवंश] १ अच्छा वंश। २ वि सुन्दर कुल में उत्पन्न, खानदानी (स ४, ४१६)।

सुवग्गु पुं [सुवल्गु] एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी खड्गपुरी है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।

सुवच्छ पु [सुवत्स] १ अमरावती का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ एक विजय क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी कुंडला नगरी है (ठा २ ३—पत्र ८०, इक)।

सुवच्छा स्त्री [सुवत्सा] १ अधोलोक में रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। २ सोमनस पर्वत पर रहनेवाली एक देवी (इक)।

सुवज्ज पु [सुवज्र] १ एक विद्याधर वंशीय राजा (पउम ५ १६)। २ पुन एक देव-विमान (सम २५)।

सुवट्टिय वि [सुवर्तित] अतिशय गोल किया हुआ (राज)।

सुवण न [स्वपन] शयन (ओघ ८७, पचा १, ४५, उप ७६२)।

सुवण्ण पु [सुपर्ण] १ गरुड पक्षी (उत्त १४, ४७)। २ भवनपति देवों की एक जाति (औप)। ३ आदित्य, सूर्य (गउड)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (इक)।

सुवण्ण पु [दे] अर्जुन वृक्ष (दे ८, ३७)।

सुवण्ण न [सुवर्ण] १ सोना, हेम (उवा, महा, णाया १, १७, गउड)। २ पु भवन-पति देवों की एक जाति (भग)। ३ सोलह कर्म-मापक का एक बाट (अणु १५५)। ४ सुन्दर वर्ण। ५ वि. सुन्दर वर्णवाला (भग)। °आर, °कार पुं [°कार] सोनी, सुनार (दे महा)। °कुंभ पु [°कुम्भ] प्रथम बलदेव के धर्म-गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। °कुसुम न [°कुसुम] सुवर्ण-यूथिका लता का फूल (राय ३१)। °कूला स्त्री [°कूला] नदी-विशेष (सम २७, इक)। °गुलिया स्त्री [°गुलिका] एक दासी का नाम (महा)। °सिला स्त्री [°शिला] एक महौषधि (ती ५, राज)। °गार पु [°कर] सोने की खान (णाया १, १७—पत्र २२८)। °ार पु [°कार] सोनी (उप पृ ३५१)। देखो सुवन्न = सुवर्ण।

सुवण्णबिंदु पुं [दे] विष्णु (दे ८, ४०)।

सुवण्णिअ वि [सौवर्णिक] सुवर्ण मय, सोने का बना हुआ (हे १, १६०, षड्, प्राप्र ३६)।

सुवत्त देखो सुउवत्त (राज)।

सुवन्न न [सुवर्ण] १ सोना (स ५०, प्रासू २, कुप्र १, कुमा)। २ वि. सुन्दर अक्षरवाला (कुप्र १)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (भग, सम ८३)। °कूलप्पवाय पु [°कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँ से सुवर्णकूला नदी वहती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °गार पु [°कार] सोनी (णाया १, ८—पत्र १४०, उप पृ ३५३)। °जूहिया स्त्री [°यूथिका] लता-विशेष (पणण १७—पत्र ५२६)। °यार देखो °गार (सुपा ५६५)। देखो सुवण्ण = सुवर्ण।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का वना हुआ (कुप्र ४)।

सुवन्नालुगा स्त्री [दे] दतवन करने का पात्र—लोटा आदि (कुप्र १७०)।

सुवप्प पुं [सुवप्र] एक विजय क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुवयण न [सुवचन] सुन्दर वचन (भग)।

सुवर } (अप) देखो सुमर। सुवरइ, सुवँरहि
सुवँर } (भवि, पि २५१)।

सुवहु देखो सुबहु (प्राप)।

सुवाय पुन [सुवात] एक देव-विमान (सम १०)।

सुवास पु [सुवर्ष] १ सुन्दर वृष्टि (उप ८४६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सुवासणी देखो सुवासिणी (धर्मवि १२३)।

सुवासव पु [सुवासव] एक राज-कुमार (विपा २, ८)।

सुवासिणी स्त्री [दे सुवासिनी] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सिरि १५६)।

सुवाहा अ [स्वाहा] देवता को हविष आदि अर्पण का सूचक अव्यय (सिरि १६७)।

सुविआज्जिअ वि [सुव्यर्जित] विशेष रूप से उपार्जित (तदु ५६)।

सुविअड्ढ वि [सुविदग्ध] अत्यन्त चतुर (नाट—रत्ना ६)।

सुविदिय वि [सुविदित] अच्छी तरह ज्ञात (उव, सुपा ४०४)।

सुविउ वि [सुविद्] अच्छा जानकार (श्रा २८)।

सुविउल वि [सुविपुल] अति विशाल (उव)।

सुविक्कम पु [सुविक्रम] भूतानन्द नामक इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)।

सुविक्खाय वि [सुविख्यात] सुप्रसिद्ध (सुर ६, ६८)।

सुविगा स्त्री [शुकिका, शुकी] मैना (उप ६७३, ६७५)।

सुविज्जा स्त्री [सुविद्या] उत्तम विद्या (प्रासू ५३)।

सुविण देखो सुमिण (सुर ३, १०१, महा, रंभा)। °न्नु वि [°ज्ञ] स्वप्न-शास्त्र का जानकार (उप पृ ११६, सुर १०, ६८)।

सुविणट्ठ वि [सुविनष्ट] विलकुल नष्ट (गा ७४०)।

सुविणिच्छिय वि [सुविनिश्चित] अच्छी तरह निर्णीत (उव)।

सुविणिम्मिय वि [सुविनिर्मित] अच्छी तरह वनाया हुआ (णाया १, १—पत्र १२)।

सुविणीय वि [सुविनीत] १ अतिशय दूर किया हुआ (उत्त १, ४७)। २ अत्यन्त विनय-युक्त (दस ६, २, ६)।

सुवित्त न [सुवृत्त] अत्यन्त गोलाकार। २ सदाचार, अच्छा आचरण (सुर १, २१)।

सुवित्थड वि [सुविस्तृत] अति विस्तारयुक्त (अजि ४०, प्रासू १२८, द्र ५८)।

सुवित्थिन्न वि [सुविस्तीर्ण] ऊपर देखो (सुर १, ४५, १२, १)।

सुविधि देखो सुविहि (सम ४३)।

सुविभज्ज वि [सुविभज्य] जिसका विभाग अनायास हो सके वह (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुविभत्त वि [सुविभक्त] अच्छी तरह विविक्त (णाया १, १ टी—पत्र ५, औप, भग)।

सुविम्हिअ वि [सुविस्मित] अतिशय आश्चर्यान्वित (उत्त २०, १३)।

सुवियक्खण वि [सुविचक्षण] अति चतुर (सुपा १५०)।

सुवियाण न [सुविज्ञान] अच्छा ज्ञान, सुन्दर जानकारी, पंडिताई (सट्ठि १६)।

सुविर वि [स्वप्तृ] स्वपन-शील, सोने की आदतवाला (ओघभा १३३, दे ८ ३६)।

सुविरइय वि [सुविरचित] अच्छी तरह घटित, सुघटित (उवा २०६)।

सुविराइय वि [सुविराजित] सुशोभित (सुपा ३१०)।

सुविराहिय वि [सुविराधित] अतिशय विराधित (उव)।

सुविलास वि [सुविलास] सुन्दर विलासवाला (सुर ३, ११४)।

सुविवेइय वि [सुविवेचित] सम्यग् विवेचित (उव)।

सुविवेच सक [सुवि + विच्] अच्छी तरह व्याख्या करना। सक्. सुविवेचित (?य) (धर्मसं १३११)।

सुविसट्ट वि [सुविकसित] अच्छी तरह विकसित (सुर ३, १११)।

सुविसत्थ पु [दे] व्यभिचारी पुरुष (वज्जा ६८)।

सुविसाय पुन [सुविसात] एक देव-विमान (सम ३८)।

सुविहाणा स्त्री [सुविधाना] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

सुविहि पु [सुविधि] १ नववाँ जिन भगवान् (सम ८५, पडि)। २ पुस्त्री. सुन्दर अनुष्ठान (पण्ह २, ५ टी—पत्र १४६)। ३ न रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक यान, 'चकमण हवइ सुविहि-नामेण' (पउम ८०, ८)।

सुविहिअ वि [सुविहित] सुन्दर आचरण-वाला, सदाचारी (सम १२५, भास १, उव, स १३०, सार्ध ११५, द्र ३२)।

सुवीर पु [सुवीर] १ यदुराज का एक पौत्र (अंत)। २ पुन एक देव-विमान (सम १२)।

सुवीसत्थ वि [सुविश्वस्त] अच्छी तरह विश्वासप्राप्त (सुर ६, १५६, सुपा २११)।

सुवुण्णा स्त्री [दे] संकेत, इशारा (दे ८, ३७)।

सुवुरिस देखो सुपुरिस (गउड)।

सुवे अ [श्वस्] आगामी कल (हे २, ११४, चंड, कुमा)।

सुवेल पु [सुवेल] १ पर्वत-विशेष (से ८, ८०)। २ न. नगर-विशेष (पउम ५४,४३)।